

गांधी पुराना पढ़ गया ?

गांधीजी ने जोले-जी जो सवाल उठाये थे क्या वे हल हो गये? अगर हल हो गये तो गांधी की अब कोई जरूरत नहीं। अगर उन सवालों के कोई नये जवाब निकल आये हों तब भी गांधी को जरूरत नहीं है। हम मान लें कि गांधी भाये, और जो करना था करते गये। हम नये जमाने में हैं, नये जमाने की बात सोचेंगे, गांधी से अपने को क्यों बांधें ?

लेकिन गांधी के जाने के इतने वर्ष बाद भी हम देख रहे हैं कि जो सवाल गांधी ने उठाये थे वे आज जनता के सवाल बन गये हैं, और यह उनका हल पाने के लिए अभीर हो रही है।

पणजा के सवाल क्या हैं ? अधिक नहीं, हम कुछ ही सवालों को चुन लें। देश के करोड़ों लोगों के सामने सबसे बड़ा सवाल है रोटी का। कल-भारखाने बने, व्यापार बढ़ा, नवी-नयी मशीनियां निकली, फिर भी बेरोजगारी की सच्चा बड़ती हो जा रही है। सो में केवल एक आदमी है जिसकी एक दिन की कामदती दवाई खपे या द्राघे ज्यादा है। घाट फोसदी लोग तो सारी बिल्खी आधा पेट साकर जिता देने की विनय हैं। नीचे की बड़ती हुई गरीबी, ऊपर की बड़ती हुई अमीरी : यह खाई चौड़ी होती ही जा रही है। क्या हमने सोचा कि ऐसा क्यों है ? एक-के-बाद दूसरी पंचवर्षीय योजनाओं का क्या हुआ ? क्या गरीबी मिटी, विपन्नता पटी ? इतने दिन बाद अब योजना के जानकार लोग भी कहने लगे हैं कि सामान्य आदमी को योजना का प्रसाद नहीं मिला। योजना रोजगार की बननी चाहिए; सेती-उद्योग की बननी चाहिए; योजना बनाने का काम विकेंद्रित होना चाहिए। मूल दोष योजना की कल्पना में ही था।

गांधीजी ने क्या कहा था ? गांधीजी ने कहा था कि हमारे देश में जीवन की इकाई गांव है, जिंदा या राख नहीं। इसलिए गांव को ही विकास की इकाई मानना चाहिए। गांव में नया ज्ञान और नये साधन पहुंचाने चाहिए ताकि गांववाले हर खेव का उत्पादन बढ़ायें और हर घर का उपयोगीकरण करें। अपने बच्चे मात से बनने ही हायों परना माल सैदार करें। लेकिन यह नहीं हुआ। हुआ यह कि हमने उनको साधन दिया जो सम्पन्न थे, और उनके भरोसे उत्पादन बढ़ाया। अगर ऐसा हुआ होता तो क्या होता ? सारे देश में एक नया जीवन दिखायी देता, करोड़ों हाथ उत्पादन करते और मुँह भोग लगाते दिखायी देते; भूय विन्डो, विपन्नता पटती, दिमाग खुलना, समसाम्यों से अपने के लिए नया पुरापाथ जगता, देश में नयी चेतना, नया सपना, नयी एजजा दिखायी देती। बिदेयी अर्थनीति से गहर मुन्नत होते और गहरी

अर्थनीति के शोषण से गांव। ऐसे मुन्नत स्वायत्त गांवो का महासंघ भारत होता, और उन्हीके, सर्वसम्पन्न प्रतिष्ठितियों के हाथो में सरकार रहती। न आज की दलबन्दी होती, न राजनीति बरसाय बनती।

गरीबों के देश में हमने औद्योगिक नगरों के रूप में कुछ दो-तिने बमारी के 'पाकेट' बनाये और मान लिया कि देश 'आधुनिक' हो रहा है। हमने विकास में जनता को नही धरकी जिना। उसे छोड़कर बसो, बिधेपतो, बचतों और पूँजीपतियों (पूँजी सत्कारी या जिन्दी) के मेले से दोखत पैदा की गयी। स्वभावतः जनता बर्षित रह गयी। सारी 'दोखत उन्हीके पास चली गयी जिन्हीने जनता को अलग रखा था। यह इसलिए हुआ कि हमने उत्पादन को सारी पद्धति, और उसके बंध बादि केन्द्रित रखे, और धम के स्थान पर पूँजी को प्रधानता दी। बानी परम्परा और परिस्थिति के अनुसार नयी पद्धति और यंत्रिकी नहीं विकसित की। गांधीजी की स्वदेशी को हमने भुना दिया।

गांधीजी ने दखिनारायण की बात कही थी। 'अन्तिम व्यक्ति' को विकास का मायबक माना था। यह कहा था कि अगर पूँजी का कोई मानिक है, तो व्यक्ति भी अपने धम का मानिक है, दोनों मानिको की ममान हैसियत है। गांधीजी कहते थे कि जिसके हाथ में सम्पत्ति है वह सम्पूर्ण स्वामी नहीं, 'दुस्ती' है जिसे अपने दुस्त का अपने स्वार्थ के लिए इस्तेमाल करने का अधिकार नहीं है। ऐसी व्यवस्था में शोषण के लिए बहाना त्पात है ? हम अपनी योजनाओं से स्वामित्व, दुःखसाधो; और शोषण की व्यवस्था जरा भी नहीं बदल सके।

दूसरा प्रश्न शिक्षण का सोचिए। शिक्षण में ही किसी देश का भविष्य है। लेकिन हमारे शिक्षण की जो दुर्गति है वह इस बात का अन्तिम प्रमाण है कि देश के वर्णधारों के सामने भविष्य का कोई चित्र नहीं है। गांधीजी ने नये समाज के लिए नयी तालीम की बात कही थी—ऐसी नयी तालीम, जो विद्यार्थी को उत्पादक बनाये, उसके दिमाग को सोचे, चरित्र को उँचा उठाये, और उसे प्रवृत्ति और समान के साथ जोड़े। लेकिन हमने नया समाज बनाने की बात ही नहीं सोची सो शिक्षा को नवी शक्तें बनाये ? बुनामी का हाडा बदना, विन्नु गुनामी की शिक्षा नहीं बदली। परिष्कार हमने है—हाथ से बेकार, दिमाग से गुनाम, स्वात्म से जबर, सत्कारी से भूय दुबक और युवगी। देश के भविष्य की हाजा करनेवाली शिक्षा 'बल रही' है।

मान्य में स्वर्ज भारत के नेताओं और छात्रों ने देश को ऐसी शिक्षा दे दी जो गांधी को दिया नहीं था। उन्होंने मान लिया कि देश का भविष्य सरकार में है, समाज में नहीं। उन्हां सारा समय मलवार बनाने-बिनाइने में समया रहा है, समाज बनाने में नहीं। जो बसो समाज के ठेक और स्वर्जता के सेनाती थे वे मृत्यु में चले गये। यह सोचकर नये दि जगता राग

बन्दाबन्दी होगी। बन्दाबन्दी राज्य में गांधी के रचनात्मक कार्य की क्या जरूरत ? लेकिन सत्ता में जाकर वे स्वयं झूठ हूए, और समाज को बुग स्वार्थों और हमस्वार्थों के जंगल में घटकने को छोड़ दिया। मरने के पहले अपने अन्तिम वसीयतनामों में गांधीजी ने कांग्रेस के लोगों को सलाह दी थी कि सरकार द्वारा के हाथ छोड़कर उन्हें समाज में जाना चाहिए। गिब का स्थान इराखन पर नहीं, शम्भो के साथ श्मशान में है। नैसर्ग इन्फ़ॉर्म का वैभव छोड़कर शिव बनने को तैयार नहीं थे। गांधीजी को बिना भी कि श्वेतभजा तो मिल रही निन्तु गाँव-गाँव, शहर-शहर या 'स्वराज्य' बँधे होंगे ? स्वराज्य सरकार के राज्य से नहीं होगा, उनके लिए समाज की शक्ति चाहिए—सोचशक्ति चाहिए। वह जानते थे कि जब राज्य की शक्ति बढ़ती है तो जनता की शक्ति घटती है। वह गाँव और शहर में सोचशक्ति को सर्वाधिक करना चाहते थे और राज्यशक्ति को समाज सीमित। हमने एकटा ठीक उल्टा किया। इसी कारण से हम जानते अंतो के सामने देख रहे हैं कि स्वयंभवा के हतने सभी कोड जनता विनयी अवस्था, हत्या, और पुन्यार्थहीन हो गयी है। उनमें अगमों सम्प्रदायों के जलने की शक्ति नहीं रह गयी है। जीवन में जैसे कोई मृत्यु हो नहीं रह गये हैं। शरों और अत्याय, अभाव, और भयानक बोलचाल है, फिर भी जनता अचेत है, 'अत्यंत सजुचित स्वार्थों और सपनों में डूबी हुई।

चिन्ते चौरही करों में क्या देश में कुछ हुआ नहीं ? हुआ, बहुत कुछ हुआ। 'मध्य भजन बने, गाँवों बनीं, रेलें, विद्यालयाँ, हवाई अड्डाएँ बने, सड़कें-बड़े बाजारवाले सड़के हुए, विज्ञान सम्मान स्थापित हुए, बाजार शोकीनी के मामानों के पट लगे, लेकिन ... ? लेकिन मनुष्य नहीं बना। उमरा बोर्ड सवाल नहीं हल हुआ। उसके दरवार उठे नहीं उठे। नेता उसे पुन्यत्र की चूँटी और धारों के टॉर्नक पर पाएते रहे। लेकिन वह क्षम भी बचित, बहिष्कार, मुसल्ट है। सही दिशा में दो-चार कदम भी तो उठे होंगे।

समाजकार की चर्चा है। पूँजीवाद बढ़ना ही जा रहा है। शक्ति की कमी है। दिया नहीं पकटी। नैतिकता की पाठ दिवायी जाती है, अनैतिकता और भ्रष्टाचार की बोर्ड सीमा नहीं

है। अन्तर को दुहाई दी जाती है, हर जगह नेतावाही और नीचरवाही हो जाती है। गाँव के लेखर दिखी तक हर जगह एक 'लिफ्टिंग वर्ग' (एथोड) बन गया है जो अपने ही हित को देश का हित मानता है।

धरत यह सच ही तो हम संकट का समाधान निकले पाए है ? क्या राजनीति के पास है ? बोर्ड की दल ही, हर दल का विश्वास दसा में है तथा उनके विश्वास-योजना और शिष्टा-नीति में है जो सरकार द्वारा सोचो जाय, सरकार द्वारा बनगये जाय-मसलें सरकार उपकी हो। बिशो कामपकी दल ने जो अभी तक 'स्वामित्व' (ऑनरशिप) की बोर्ड मयी योजना नहीं रखी है, तबे समाज की रचना का बोर्ड किन नहीं प्रानुन बिना है। सब सोचतक चाहते हैं, लेकिन अहिंसा में विश्वास नहीं जमता। क्या हिंसा के साथ सोचतक चल सकता है ? हम दम भरते है विज्ञान का लेकिन सत्य से भूँह मोड़ते हैं। जो विज्ञान सत्य के सिवाय दूसरी बोर्ड सत्ता नहीं मानता—ईश्वर की भी नहीं—वह अमध्य के साथ बँधे दिवंग ? जब हम दाने अज्ञान और हिंसा से बिते हुए हैं तो हमें सत्य और अहिंसा नहीं तो और रिय चीज की जरूरत है ? अगर नहीं जरूरत है तो भ्रष्टाचार और मिथ्याचार से पबदाहट क्यों ?

जो गांधी अविध या वह घर बुवा। लेकिन मरने के पटने वह जो साथ छोड़ गया, जो दिशा बना गया, जो मृत्यु स्थापित कर गया, विद्याय, राजनैतिक सपटन की जो कुरोरता बना गया, उनही मृत्यु बँधे होगी ? वह जो सवाल उठा गया वे ज्यों-के-य्यों हैं। वह जो उतर बना गया वे पुराने नहीं पड़े हैं। उन उतरों के सिवाय अभी तक दूसरे उतर कहां हैं ? प्रश्न आये मूँदकर मान लेने का नहीं, सीखें सोचकर देखते जोर सभक्षने का है।

पश्चिम में पैमब से उठे हुए युवकों-युवतियों के लिए एक ही उत्तर है : गांधी। भारत की सुनी, सगी, टूटी जनता के लिए एक ही उत्तर है : गांधी। गांधी सत्य का नाम है, पुराने या नये में अविश्वस्य का नहीं।

एक बार हम आग्रहों को छोड़कर गांधी की बही बागों को फिर पलक तो लें। ●

सच्चे लोकतंत्र का अभिप्राय

● स्वराज्य से मेरा अभिप्राय है लोक-सम्मति के अनुसार होनेवाला भारतपर्यं का शासन। लोक-सम्मति का निश्चय देश के बसिग लोनों को बड़ी-से-बड़ी तादाव के मत द्वारा हो, फिर से चाहे रिशवाँ हों या पुरुष। ये लोग ऐसे हों जिन्होंने अपने शारीरिक श्रम के द्वारा राज्य को कुछ सेवा की हो और जिन्होंने मतदाताओं की सूची में अपना नाम लिखावा लिया हो।

● सच्चा लोकतंत्र केन्द्र में बैठे हुए बीस व्यक्तियों द्वारा नहीं चलाया जा सकता। उसे प्रत्येक गाँव के लोगों को नीचे से चलाना होगा।

मो० क० गांधी

गांधी, सर्वोदय, विनोबा और आधुनिक चिंतन

ज्यांफरी मांस्टरगांट

सर्वोदय विचार के मुख्य स्रोत गांधी थे। गांधी के विना निरवेष्ट, डेर या शेर, भारत राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त कर लेता, लेकिन उनके विना कोई सर्वोदय आन्दोलन नहीं होता। गांधी कर्मयोगी थे। वह सामाजिक या राजनीतिक सिद्धान्तकार (थिअरिस्ट) नहीं थे। उनके विचार अधिकतर उनके अपने अनुभव और गहरे चिंतन पर आधारित होते थे। यद्यपि उन्होंने बहुत कुछ लिखा परन्तु किसी भी अवसर पर अपने दर्शन को उन्होंने व्याख्यान तौर पर पेश नहीं किया। दूसरों ने जब इसका प्रयत्न किया, (यह आवश्यक नहीं है) तो उनके दर्शन में उन्हें काफी कमियाँ, अक्षमताएँ, असामंजस्य नजर आये। गांधी स्वयं इन अक्षमताओं को जानते थे, परन्तु उन्हें उन्होंने महसूस नहीं किया। सत्य की खोजनेवाला होने के नाते उन्होंने कभी पूर्णतः सार्जनस्य का दावा नहीं किया, यह माना कि सभी सत्य सापेक्ष हैं और अपने अनुयायियों को यह बताना कि किसी विशेष क्षण पर उनके अन्तिम वक्तव्य को प्रमाण माना जाये, परन्तु भारतीय संस्कृति के तौर पर नहीं। यह रूप प्रचलित सर्वोदय सिद्धान्त की विशेषता है।

यह एक विवासशील सिद्धान्त है, जो अब तक कला संरक्षा के रूप में उन लोगों द्वारा व्यक्त किया गया है जो गांधी के संदेशों में 'सत्य के प्रयोग' में लगे हुए हैं। यह एक प्रयोग-रत सिद्धान्त है जो अपने आप को केवल कर्म में और कर्म के द्वारा व्यक्त करता है। इससे एक संकेत यह मिलता है कि प्रचलित सर्वोदय विचार में गांधी का क्या स्थान है। उनके उत्तराधिकारी उनके बन्धों पर टाँके हैं, और जहाँ तक उन्होंने देखा था उससे आगे देख सकते हैं। जहाँ तक अब तक पीछे पड़ा है उससे

गांधी के मौलिक सिद्धान्त को चुनौती नहीं दी जाती परन्तु उन सिद्धान्तों का कार्यान्वयन कैसे होगा, बदलती हुई परिस्थिति, नये अनुभव और नयी अन्तर्दृष्टि की रोशनी में यह एक अनुकूल संयोजन की बात है। इससे सम्बन्धित यह वास्तविकता है कि गांधी के उत्तराधिकारों, विनोबा ने गांधी के विचारों को क्रान्तिकारी स्वरूप दिया और आगे बढ़ाया। गांधी ने हमेशा यह साफ साफ बताया कि उनके विचार क्रान्तिकारी हैं, परन्तु उनके समय में व्याप्त राजनीतिक स्वतंत्रता के संघर्ष पर लगे होने के कारण उनके क्रान्तिकारी स्वरूप को दबा देना दूसरों के लिए आसान था। ऐसे लोगों में बहुत से काँग्रेसी भी थे।

गांधी एक व्यावहारिक आदर्शवादी थे। उनका आदर्श समाज 'ज्ञान के प्रकाश से युक्त अराजकता' की परिस्थिति की। परन्तु उन्होंने इस दर्शन को व्यक्त करने में अतिन्यतम नहीं खराया। वे व्यावहारिक कर्म करने के लिए अधिक उत्सुक थे। उनके रचनात्मक कार्यक्रम को आसानी के साथ सामाजिक सुधार का कार्यक्रम कहा जा सकता है, जो आदर्श आधारित है न कि मूल्य, विचार और सिद्धान्त आधारित। वास्तव में गांधी स्वयं कार्यक्रम को इस निगाह से नहीं देखते थे, और न उनका उत्तराधिकारी, सर्वोदय का, इसे इस निगाह से देखता है। एक आदर्श आधारित कार्यक्रम में भूदान एक अनुपूरक विषयसंगणक है। परन्तु इसका दिया हुआ क्रान्तिकारी रस जल्दी ही सामने धर गया है, युद्ध रूप के 'बद भूदान' यामदान हो गया। कुछ लोगों का मानना है कि विनोबा ने गांधी के विचार के सुटीपियाई पैटर्न पर जोर दिया है। और यह सिद्धान्त अब क्रान्ति का स्वरूप धारण कर गया है—सामूहिक रूप से नये मूल्यों पर समाज के पुनर्निर्माण

की उनकी पुनार देखल भारत के लिए नहीं बल्कि पूरे मानव समुदाय के लिये है। सर्वोदय विचार पर आखिरी काम राय को शक्ति में बदलाना बहिन है। इसका सम्बन्ध है भारतीय संस्कृति के पारम्परिक धर्मों से। इस विचार को सर्वोदय या भारतीय दर्शन कहा जा सकता है, मुख्यतः समाजवाद या भारतीय बुद्धिकोण, और यह युद्ध भारतीय मूल्यों को नवीन रूप देना चाहता है।

सर्वोदय विचार पारम्परिक है या आधुनिक? इस प्रश्न का उत्तर है कि यह दोनों में से कोई एक नहीं है, यह दोनों का मिश्रण है, अर्थात् उसकी दृष्टि है, जिस पर पारम्परिक और आधुनिक मूल्यों को स्वीकार किया जाये या समाप्त किया जाये। वास्तव में 'पारम्परिक' और 'आधुनिक' का भेद करना गलत होगा। बोक ने गांधी के बारे में उद्दीही कहा है 'उन्हें पुनर्जा या नये समाज में रखना बहिन है, यद्यपि उनका प्रतीकवाद पारम्परिक है। उनके विचार और व्युत्पन्नत्व में पहिना, रचना-गत्या, समसोज तथा समत पर जोर है। उनका यह बीजत, परमांधविधि, भाष्यवादियों तथा कर्मवादियों, सबके लिए रोचक है।'

गांधी के बचनों का भाव्य करते समय यह देखने की आवश्यकता रहती है कि उनका कर्म क्या है, और वे किस उद्देश्य से आते गये हैं। मानव में, गांधी ने उन्हें नये जन आन्दोलन के उद्देश्य और उच्चतम आवश्यकताओं के अनुपूरण किया, जिनका उद्देश्य राष्ट्रीय स्वतंत्रता, सामंजस्य और आत्म-सम्मान है।

गांधी की संस्कृति में, हर्ष पारंपरिक और आधुनिक प्रतीकवाद का संकुचित मिश्रण मिलता है। विनोबा के मानने में वे कम संकुचित मान्य होते हैं, क्योंकि उनके भाव्य अधिकतर प्रामाणिकों के बीच हुए हैं। परन्तु जैसा कि संस्कृत और हिन्दू ने किया है कि वह बरने दर्शन

की धर्मों के धर्मों में बराबरी है, संरक्षण से परिचित पुराने मुहावरें, परिभाषा, और समर्थन का प्रयोग करते हैं, परन्तु उनके भाषणों में धर्मों की पारंपरिक बलवताओं में परिवर्तन हो गया है, क्योंकि वे आधुनिक परिचित के अनुसार नया ढंग से हैं और उनपर पश्चिम के उदार-मानव परंपराओं का प्रभाव आ गया है। गर्वी की तरह विनोबा भी पारंपरिक बलवताओं की नये और आधुनिक अर्थ देते हैं। विनोबा के पारंपरिक मुहावरों के पूरक स्वयं जयप्रकाश नारायण की संसारी आधुनिक मुहावरों में है। वह सर्वोदय के विचार को निर्दिष्ट लोगों के जल्दी समाने योग्य भाषा में करते हैं। प्रश्न है कि उन्हें क्यों की निर्दिष्ट के लिए सर्वोदय की पारंपरिक बलवताओं का धारण किया जाता है, क्या वे आधुनिक हैं? पर यह एक स्वयं मुद्दा है। दूसरा आधार यह बात पर है कि क्या 'आधुनिकता' से क्या समझते हैं। अगर 'आधुनिकता' का अर्थ 'पश्चिमोन्मुखी' है तो निम्नलिखित सर्वोदय आधुनिक नहीं है। परन्तु हमी पढ़ते पर तो समझते हैं।

सर्वोदय : भारतीय अराजकतावाद
 हमको सर्वोदय विचार को अराजकतावाद का भारतीय स्वरूप मानते हैं। ऐसे समय के मान्यदर्शन हीन नहीं है, क्योंकि यह सर्वोदय हीन मानने को अराजकतावादी नहीं बल्कि है। परन्तु पश्चिमी देशों की तरह अराजकतावाद को दिया के समन्वित समझा जाता है, और दासतावाद की तरह, जो पश्चिमी देशों में अतिरिक्त अराजकतावाद के सबसे बड़े आधारभूत हैं, सर्वोदयवादी द्वारा अनेक पठन करते हैं विषय अराजकतावाद की कोई संघ नहीं है। अगर हम सर्वोदय के सामाजिक और राजनैतिक विज्ञान को अर्थ तो यह अराजकतावाद की एक विषय गहरा मानेगा।

सर्वोदय हम सर्वोदय विद्वानों की तुलना पश्चिमी अराजकतावाद से करते हैं जो आधुनिक से एक ही तरह अराजकतावाद होता हुआ अन्ततः एक भाषा है।

सर्वोदय और पश्चिमी अराजकतावाद में बहुत ही एक समानता है उ दोनों आधुनिक राज्य को एक बड़ी मात्रा मानते हैं, कारण राज्य और एक दबाव के बाद की संघों का एकाधिकार (सोवियत) रखने का दावा करता है, और एक स्वयं, सहयोगी सामाजिक व्यवस्था में, जिनमें लोग स्वयंकार का अन्वहार करते हैं, बड़ी दबाव मानता है। पश्चिम अराजकतावाद के सत्र में विनोबा एक जगह बोलते हैं 'अगर मैं किसी दूसरे मनुष्य के मानन में हूँ तो, मेरी अपनी स्वयंकार नहीं है? अपनी स्वयंकार का अर्थ है अपने पर शासन करना। स्वराज्य का एक अर्थ यह है कि स्वयंकार के किसी बाहरी व्यक्ति को अपने पर नियंत्रण न करने दिया जाये और स्वराज्य का दूसरा अर्थ यह है कि किसी दूसरे पर शक्ति का प्रयोग न किया जाय-यह दोनों मिलकर स्वराज्य है—जिसमें न तो शासन-समर्थन है और न शोषण।

अराजकतावादी और सर्वोदय दोनों यह मानते हैं कि शक्ति का अर्थ यह है कि वह राजनैतिक शासन-शासन से पहले माने विवेक का बहाना माने, और यह अधिपत महत्वपूर्ण है। हमें से कोई भी ऐसा समझ नहीं चाहता है, जिनमें अन्वित पर कुछ दबाव हो। परन्तु दोनों ही यह मानते हैं कि एक अन्वित समर्थन के लिए जो दबाव आवश्यक है, वह अन्वित ही। दोनों ही सामाजिक नियंत्रण और समाज स्थापित करने के लिए अन्वित समर्थन पर जोर देने हैं और मानते हैं कि अगर अन्वित सामाजिक समर्थन मिले, तो यह पूरे और से राजनैतिक और बाह्यी स्वयंकार का स्थान से सज्जी है।

अनेक पर मानन करनेवाले अन्वितों का एक स्वयं समर्थन स्थापित करने की जो आवश्यक परिस्थिति है उनको प्राप्त करने के लिए दोनों के बीच कोई अन्वित नहीं है। सर्व प्रथम यह है कि अन्वित के शासन की अन्वित से स्वयंकार निर्दिष्ट की दरवाहों का आधार। परिहार की तरह, समर्थन में भी, निर्दिष्ट अन्वित ही, जिनमें एक ही अन्वितों के

अनुसार नाम करे और अन्वितता के अनुसार पाये। आज के भारत के सर्वोदयवादी के लिए एक ही अर्थ है सामदान द्वारा हीन की जमीन की मिलिक्रय प्राप्त-समा को बनाना और सर्वोदय के बाह्य वाणीजी के अन्वितों के विद्वानों की अन्वित। (अन्वितों का विचार यह है कि कोई भी अन्वित अन्वित रूप सकता है, परन्तु वह अन्वित समर्थन की ओर से रखता है, और उसे समर्थन ही अन्वित के लिए प्रयोग में लाता है।)

सर्वोदयवादी और अराजकतावादी दोनों एक ऐसे समर्थन के अन्वित हैं, जिनमें सामाजिक शासन भी हो और अन्वित भी। पूर्ण समर्थन अन्वित नहीं है, परन्तु ऐसा कि विनोबा ने इसे कहा है कि जो अन्वितों का हाथ ही पांच अन्वितों में है वह उसके अधिक नहीं होगी। सर्वोदय और अन्वित-अन्वितता जिस बात पर जोर देने हैं वह यह है कि अन्वित अन्वित जो अन्वित अन्वित के नाम बने हैं, उनका समर्थन नैतिक, सामाजिक और अन्वित मूल्य मानने की आवश्यकता है। अन्वितों के अन्वितों का अर्थ और दासता के शोषण-शोषण (बेह निवार) पर जोर की दुहाई है हीन शोषण और विनोबा सामाजिक और सामाजिक अन्वित में अन्वित करने, और हमें से अन्वित मानने का अर्थ हीन अन्वित करने के लिए बहने हैं। सर्वोदय का अन्वित पर जोर है, वह इन बात का अन्वित है कि अन्वित अन्वित सभी अन्वितों और अन्वितों के अन्वित अन्वित हीन अन्वित अन्वित।

सर्वोदय और अन्वितों के अन्वित समर्थन की एक महत्वपूर्ण बात, जिसपर अन्वित-अन्वितों और सर्वोदयवादी दोनों और देने हैं, अन्वितों का अर्थ, अन्वितों सामाजिक अन्वितों का अर्थ अन्वितों पर अन्वितों का अर्थ देना अन्वित। 19वीं अन्वितों के अन्वित-अन्वितों के अन्वितों के लिए यह परिस्थिति प्राप्त हो पाये, अगर सामाजिक अन्वितों सामाजिक शासन की अन्वितों द्वारा माना जाये। (अन्वितों अन्वितों में अन्वितों अन्वितों होते हुए,

यह संघात्मक तौर पर स्थानीय, राष्ट्रीय स्तर पर दूसरे कम्प्यूनों से सम्बन्धित होंगे।) सर्वोदयवालों के लिए गाँव सुनिश्चयी इकाई होंगे। हर गाँव एक छोटा गणराज्य होगा, और दूसरे गाँवों से सम्बन्धित होगा, ऐसा कि गांधीजी ने कहा है, त्तर की तरह नहीं, बल्कि नीचे से ऊपर की ओर। ऐसे विकेंद्रित शासनतंत्र में अर्थ-व्यवस्था भी विकेंद्रित होगी। बड़े स्तर के उद्योगों के केन्द्रों से बचना है या इन्हें कम-से-कम कर देना है। उद्योगों को गाँवों में लाना है, ताकि गाँव या गाँव के समूह के लिए सम्भव हो सके कि वे एक कृषि शोधोपेक्षक समुदाय बन सकें जो वहाँ के लोगों की सुनिश्चयी आवश्यकताओं की पूर्ति में धारण-निर्भर हो। सर्वोदय की वर्तमान पीढ़ी १९वीं शताब्दी के अराजकतावादियों की तरह अर्थप्रबन्ध के विकेंद्रिकरण को समय के पीछे से जानने की कोशिश नहीं मानते। विनोबा आधुनिक तकनीक-विज्ञान को अपनाय नहीं करते। इससे भिन्न शोषाटनिक की तरह वे मजदूरी के घाटन रूढ़ानों और उत्पादन बढ़ाने का स्वागत करते हैं। वह एक बात पर जोर देते हैं कि 'गिल्पविज्ञान को सामाजिक शोषण की पद्धति न बनने दिया जाये और उसे सभी लोगों की भलाई में लगाया जाये।

अराजकतावादियों की तरह सर्वोदय भी परम्परागत राजनैतिक कार्रवाई के विरुद्ध है। राज्य को कोई सेवा नहीं करना चाहिए। विनोबा कहते हैं कि "मेरी भावना अच्छी सरकार के विरुद्ध उठी है, खरी सरकार को वो महाभारत में व्याघ्र बहुत पहले ही फटकार चुके हैं। लोग अच्छी तरह जानते हैं कि खरी सरकार की नहीं रहने देना चाहिए, और लोग हर जगह इसके विरुद्ध प्रतिरोध करते हैं। परन्तु जो बात हमें गलत लगती है, वह है अच्छी सरकार का भी अपने ऊपर शासन चलने देना। जो व्यक्ति राजनैतिक सत्ता भलाई करने के लिए भी प्राप्त करते हैं वे आखिर में अष्ट हो जाते हैं। सत्ता की गरी, इसके प्राप्त करनेवाले पर जाड़ कर देती है।"

कई कारणों से संघीय चोकरेंद्र को भी बुरा कहा गया है। चुनाव के बाद-वृद्ध राजन की नीति जनमत के द्वारा मार्गदर्शन नहीं लेती। इसमें बहुसंख्यक के शासन का विद्वान्त माना जाता है जिसका अर्थ-हारिक अर्थ यह हो सकता है कि अर्थ-सम्पन्न पर बहुसंख्यक का अर्थ-व्यवहार है, न कि सबकी भलाई। सर्वोदयियों के लिए ऐसा निश्चय केवल सर्वसम्मति से हो सकता है। फिर संघीय लोकतंत्र में राजनैतिक दल होते हैं जो सत्ता के लिए घूस, धमकी, जबरदस्ती, सबके-काम लेते हैं। विरोधी उम्मीदवारों को बदनाम भी करते हैं। "दृष्टिकोण का मतभेद एक स्वस्थ चिन्ह है" विनोबा कहते हैं, "परन्तु जब विभिन्न विचार को सुनिश्चय पर दल बनते हैं तो उनका सम्बन्ध विचार से कम और संघटन, अनुशासन और प्रचार से अधिक होता है। दल राजनैतिक सत्ता प्राप्त करने का एक ढंग है। सत्ता का महत्त्व अधिक होता है, और विचार केवल सत्ता और राजनैतिक स्थिति का टुकड़ा बन जाता है।"

परम्परागत राजनैतिक कार्रवाई के बदले, सर्वोदयो, अराजकतावादियों की तरह, लोगों के द्वारा प्रत्यक्ष कार्रवाई के समर्थक हैं। राजनीति की जगह लोकनीति होनी चाहिए, क्योंकि राजनीति में टकरार, मुकाबला, बुद्धिबोधियों का संघर्ष, दबाव, सोदेबाजों साम्यवाजिकता, और दूसरे खेत होते हैं जबकि लोकनीति में लोग अपनी पीछती खिच से परिचित होते हैं, और अपनी समस्याओं का स्वयं समाधान करते हैं। विनोबा इसके अन्तर्गत की बताते हुए कहते हैं— "मूदान का उद्देश्य समाज की मजबूत करना है, इसलिए यह एक राजनैतिक आन्दोलन है, परन्तु जो भाव के राजनैतिक तरीकों से भिन्न है। हमनेगाँवों का उद्देश्य एक नये प्रकार की राजनीति बनाना है।"

यही नयी तरह की राजनीति की जिसने १९५२ में महान समाजवादी

नेता जयप्रकाश नारायण जैसे व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित किया। अपने निरन्तर 'समाजवाद से सर्वोदय की ओर' में जयप्रकाश नारायण ने उन कारणों का उल्लेख किया है जिन्होंने उनसे यह कदम उठाया। "मैंने दलगत और सत्ता की राजनीति से अलग होने का निश्चय किया। अतिउत्पन्न मायुष्य और नरकल के कारण नहीं किया, बल्कि इसलिए कि मुझे यह स्पष्ट मान हुआ कि राजनीति से उद्देश्य—समाजवाद, स्वतंत्रता, भाईचारा—नहीं प्राप्त। सर्वोदय की राजनीति का न तो कोई दल हो सकता है, और न सत्ता से सम्बन्ध। बल्कि इसका उद्देश्य यह देना होगा कि सत्ता के सभी केन्द्र हल हो जायें। इस नयी राजनीति का अितना अधिक विश्वास होगा, पुरानी राजनीति उजड़ी ही सिमटेगी। राज्य वास्तविक तौर पर सुरक्षा अर्थात्।

नये राजनीति की रणनीति इस विश्वास पर आधारित है कि—'कान्ति कभी भी सत्ता या दलगत राजनीति से सम्भव नहीं होती।' सर्वोदय कान्ति अराजकतावादी कान्ति की तरह केवल नीचे से लायी जा सकती है, ऊपर से नहीं। सर्वोदय बांधवर्ता कान्तिधारी दल नहीं बनाते। वे केवल सहायता और सहाई देते हैं परन्तु लोगों को प्रोत्साहित के लिए स्वयं पहल करना होता है। (मूल अर्थों की पुस्तक 'श्री अर्थिस पुनर्निर्माण' से।)

श्वानियर में आचार्यकुल

श्वानियर आचार्यकुल भी ओर से स्थानीय मध्यभारत हिंदी साहित्य समा-भवन में श्वानियर संभाग के राष्ट्रीय पुस्तकालय प्राय विद्यार्थी का सम्मान-समारोह आयोजित किया गया। बिना प्रामाण्य-समिति श्वानियर के सुपठक श्री प्रेमनाथयम गर्मा ने बताया कि आचार्यकुल श्वानियर शिबि के सम्मान पृष्ठ अधिवान में अपना पूरा योगदान देगा।

—प्रोफेसर सुरेशचन्द्र मंडोकर

बंगला देश बनाम अहिंसा

—मनमोहन बोधरी

बंगला देश में हो रही घटनाओं पर सर्वोच्च आन्दोलन में सवे पुरे भारत के कार्यकर्ताओं ने जिस तरह अपनी प्रति-क्रिया जाहिर की, उससे इस आन्दोलन का मूलभूत सामाजिक स्वभाव झलकता है। सर्वोच्च कार्यकर्ताओं ने मकद में चिरे लोगों के दुःख-व्यथा को पुरे हार्दिक समर्थन दिया। उनको इस दृष्टि से समझ है बाहर के कुछ शांति-वादी विचारों के मन में उनके प्रति निर-स्वार के भी धाव जये हो। प्रश्न यह उठाना पया है कि 'बंग अहिंसा के पुनारी को किसी दृष्टिक सधर्ष का समर्थन करना चाहिए? वह वीरुल लोगों के प्रति सहायक रिखा सखता है, उनकी माका-दाओं की वह प्रगसा कर सखता है, परन्तु दृष्टिक सधर्ष का वह समर्थन कैसे कर सखता है?'

गोपीजी द्वारा प्रतिपादित अहिंसा को जैसा मैंने समझा है, यह कोई ऐसा मूल्य या गुण नहीं है जो मानव के कमिकार, गणन, राजनिक सचतता आदि मूल्यों से अलग-अलग हो और अपने काय में कोई मूल्य या गुण हो। उससे विपरीत, सही बात तो यह है कि ये, और अनेक अन्य गुण और मूल्य 'अहिंसा' के उदर में हैं। मैं किसी भी व्यक्ति की बखला ही नहीं कर सखता जो सगल में दिखता नहीं करे और रस-भेद, जाति-भेद आदि बखला हुआ अहिंसा-वादी भी हो सखता है। परन्तु दूसरी तरफ, मेरा यह दृष्टिक यह है कि जिस आन्दो-का उदर कहे मूल्यों में गवका विरगस है वह अहिंसा के पथ पर कई बरस आगे बढ़ चुका है। दूसरी बात यह है कि अहिंसा बखले के लिए निरविना प्रारं-भिक बिन्दु है। सही कारण है कि गोपीजी ने बताया था कि वो मनुष्य अपनी प्रविधा की रखा के लिए हिंसा करना है वह उस कारण से सगल दुःख अन्ना

है जो अपना बखल्य छोड़ प्राण सखा होता है। सही कारण है कि पौलक-बालो ने आर्यों के आक्रमण का जो प्रतिगोध विना था, वह सदाय हिंसक था, ठकार्य गोपीजी ने उसकी प्रगसा की की और उसे 'करोड़-करोड़ अहिंसा' कहा था।

बंगला देश के लोग सखये हुए हैं। उन्होंने मनुष्य को तरह जीने के अपने अधिकार की सुरक्षा के लिए हथियार उठाया है। वे अपने से इन्कार कर रहे हैं। वे अपनी सधर्षविक भुक्ति पाएते हैं। वे जाति-भेद से अपने को मुक्त करना चाहते हैं। निरभुस शासन के आगे कार्यों की तरह पुटने देते से वे इन्कार कर रहे हैं। ऐसे कदमों की मैं बहादुरी के बरस मानता हूँ। इसलिए मैं पुर दिन से उनका समर्थन करता हूँ। ऐसा सधर्ष दृष्टिक होने पर भी एक राष्ट्र के सुरधर्म के विचार भी एक बड़ी है। मेरी ये सीमा तानकर सखे हो रहे हैं। अतः इनका पुरधर्म विरसित हो रहा है। इस तरह की निर्भरता और पुन-धर्म के बिना अहिंसा सख ही नहीं है।

हाँ, मैं आक्रामक और मुद्रात्मक हिंसा में एक हद तक भेद अवरस करता हूँ। आम पुनाय का उपयोग करने की विन्ता विवे विना, आम जनता का समर्थन प्रस्त करने और गलतय की और मुद्रने के प्रस्ताव की सभासताओं की अनेक विवे विना—यह प्रस्ताव चाहे विरतता भी प्रामक सभे रखा होता—बंगला देश के किसी क्षण में यदि मान-साही का सखा उदार केने के लिए कोई दिगम्यक पश्यस रखा होगा तो बास दूसरी होती। उस हालत में उन सब को हमसाराओं के प्रति मैंने सहायक प्रगट की होती, परन्तु उसके सगके का समर्थन नहीं विना होता।

परन्तु क्षत्रीय सींग ने ही गणत-की और दूसरे के प्रस्ताव की नेरनीयती

से भवन विना, और बाते जब इमसे विपरीत की बले सगी तो अपने अहिं-सात्मक अग्रहयोग का सहाय विना। उसके आन्दोलन का वह पहलु मनुष्य के इतिहास में अहिंसा की सखलता का एक अत्यन्त गौरवपूर्ण अध्याय की तरह रिखा जायगा। क्षत्रीय लोग के सधर्षता में लोगों ने तानाशाही की नीयत पर जब कोई सखा नहीं थी, सब अपने अत्यन्त ही दयालुता और बर्बरता से लोगों पर हथले बोल दिये। तानाशाही शासन ने तो समझा कि यह सब तरह के विरोधों को सदा के लिए समाप्त कर देगा। उसमें विन्ते लोगों की क्षीमनी जाले ही जायेंगी, एमका हिंसक उदने एकदम नहीं लगया। उनलोगो ने तो यह सोचा था कि मामला एक सप्ताह में समाप्त हो जायगा। बंगला देश के लोगों ने 'उक' चिये बिना सीता तानकर अपनी अहृतिवा चढ़ायी। मानव की भावना विम तरह अत्रिय हो सखती है यह उनका एक सखल उदाहरण है।

बंगला देश के लोग यदि हिंसा का पुरात त्याग कर दिये होते और बर्बरान क्रूर दमन के बावजूद अहिंसक सधर्ष जारी रने होते तो यह अधिक भय्य उपनिधि होती। परन्तु उन्हें दूसरा अन्नाय नहीं कराना पया। पुधीय की बात हो यह है कि मात्र दुनिया में एक भी ऐसा आरमी नहीं है जो अहिंसक प्रतिकार का तरीका जानता हो और उससे भी बड़ी बखे यह है कि बंगला देश में जो सहायक दमन का चक्र चलता जा रहा है उसके विपरीत अहिंसक सधर्ष चलने की सगल गज किसी आदमी में नहीं है। मैं इस बात को बार-बार नीर देकर बखता हूँ कि आर्य दुनिया में एक भी ऐसा अर्यात मोदद नहीं है जिसे ऐसी परिस्थिति में प्रभायपूर्ण अहिंसक कार्यरताप चलाने की सिधा सामुह हो एवं उनमें यह योग्यता हो। हमसाराओं की साद सखता चाहिए कि यह प्रतीना-त्मक प्रसंन बनने का प्रसल नहीं है, परन्तु ताड़े साउ करीह सीमों की

आजादी का नेतृत्व करने का प्रश्न है। हम परिस्थिति में अहिंसक प्रतिकार करने में जो विफलता है वह बंगला देश के लोगों की नहीं परन्तु उन लोगों की विफलता है जो अहिंसा का आग्रह रखते हैं। इतने पर भी मैं दुहरा कर यह कहता हूँ कि इस विपत्ति के प्रति भारतीय सर्वोदय आन्दोलन की जो प्रतिक्रिया हुई वह यह जाहिर करती है कि इस आन्दोलनवाले लोगों ने गांधीजी की आन्तिकारी अहिंसा की भावना को ठीक-ठीक ग्रहण कर लिया है और इसे एक निर्विघ्न ऋद्धि में परिवर्तित नहीं किया। इस तरह इस द्वार में भविष्य की सफलता के योग्य अब भी मौजूद है।

ऐसे समय में मेरा कर्तव्य क्या होता है ?

ऐसी हालत में भारत में सर्वोदय आन्दोलन के द्वारा अहिंसा की शक्ति की और अधिक प्रगट करने में अपने को मैं नम्रता-पूर्वक लगा दूँगा, और बंगला देश के लोगों को उस काम के लिए उपदेश देने में चुपकी लगाये रहूँगा, जो काम इस समय न तो मैं स्वयं कर सकता हूँ और न सरार का कोई जोर आदमी ही।

लोगों में राजनीतिक चेतना जगाने, अधिकारियों का प्रतिरोध करने के लिए उनको संगठित करने आदि जिस किसी भी काम में मैं जीवन भर सक्रिय रहा और उससे जो पाठ मैंने सीखे उस अनुभव को मैं नम्रतापूर्वक बंगला देश के लोगों की सेवा में इस आशा से रख रहा हूँ कि मेरे अनुभव के कुछ कण उन्हें अपने प्रतिकार को तेज और मजबूत करने में मददगार होंगे और उनकी सत्य-सिद्धि की शीघ्रता में सहायक होंगे।

जैसा कि मैं समझता हूँ अहिंसात्मक प्रतिरोध और आन्तिकारी छापागार युद्ध-नीति में एक बहुत ही महत्वपूर्ण तत्व समान है। दोनों ही तरह के संघर्षों की जड़ जनता में रहे यह आवश्यक है। दोनों का समर्थन लोगों द्वारा हो, यह भी आवश्यक है। संक्षेप में यह

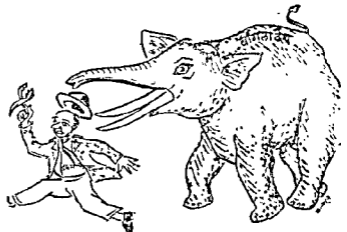
पहले कि जनता को यह अनुभूति होना आवश्यक है कि दोनों तरह का संघर्ष उसी ना है। इसके लिए आवश्यक यह है कि लोगों में बहुत ही ऊँची कोटि की राजनीतिक चेतना हो। जिनमें यह योग्यता हो कि अलग-अलग एक दूसरे से बड़ी हुई हालत में रहकर भी अपने को समाले लें। चेहरे पर जरा भी शिकन साथे बगैर धोर बन्द सन्ने की उनमें क्षमता हो। स्वतंत्रता के लिए लड़नेवालों का रख लोगों के प्रति सेना के रख से बिल-कुल भिन्न होगा। सेना में भरती लोगों का रख सामन्तवादी होता है। उनका मिजाज लोगों पर हुनम बसाने का होता है। परन्तु छापागार युद्ध के संघर्षों को अपने को लोगों का एक अंग मानकर चलना पड़ता है।

बहुत दिनों तक चलाये जायेवाले आन्तिकारी संघर्ष के लिए साफ, सुव्यव-स्थित सामाजिक उद्देश्य और आदर्श लोगों के सामने रहने चाहिए त्रिने जनता के बड़े समूह को प्रेरणा मिले सके। राष्ट्र की स्वतंत्रता-प्राप्ति के लिए जिस जातेवाला संघर्ष विरुद्ध उत्पन्न मानवतावादी दृष्टिकोण रख सकता है, जैसा कि रवि बाबू की और गांधीजी की राष्ट्रीयता में था अथवा, जैसा

कि कुछ हद तक कम्युनिस्ट आन्तिकारियों ने किया था। दूसरे-दूसरे अनेक तत्व भी हैं जिनके बल से दोनों तरह के संघर्ष के फल को समझा जा सकता है।

मैं बंगला देश के लिए सडनेवालों की मदद नम्रतापूर्वक इस तरह कहूँगा कि हिंसक और अहिंसक संघर्ष के तथ्यों को, उनके भेद को, वे समझ सकें, परल सकें, और सही निर्णय ले सकें। मैं यह इस आशा से कहूँगा कि क्रम-क्रम से बंगला देशवासी अहिंसा के रास्ते पर आगे बढ़ सकेंगे और उनमें अहिंसक प्रतिकार की शक्ति उत्पन्न हो जायगी।

'शांति बनाये रखने' के अर्थ में एक विरह्यापन आ गया है। उसके कारण समझौता, सतिपूर्ति, लेने-देने आदि का मधुर अथवा बेसुरा राग हटते समाया रहता है। कम-बेश दो बराबर शक्तिवाले दलों में जब कोई संघर्ष हो, तब यह तरीका काम दे सकता है। समझौतेवालों की अभाज छोटी हो या बड़ी कम-बेश बराबर ताकतवाले दो देशों, जाटियों, वर्गों, भाषाओं अथवा दो व्यक्तिवों का ही समझा नहीं न हो, उनके बीच उस तरह का समझौता करना ठीक है। परन्तु जब एक दल दूसरे के मुखाबिने अत्यन्त अधिक शक्तिमानी हो और वह



दुर्ग बंगाल के आन्तिकार गवर्नर ब्रिजिन्दाक मजिस्ट्रेट की कुर्से।

उसकी राय पर धारा हो, उसकी राय ही रीढ़ रहा हो, उस हालत में समझौता और पुनर्निर्माण की बातचीत करना हथपा-एत है। यह अभी समय है जब कमजोर फौज पलायन चयन से मुक्त हो जाय और आने की भारी कमजोरी से भी मुक्त महसूस करने लगे। इसलिए शान्ति-सन्ध्या के नाम में यह बात भी शामिल है कि उस क्षेत्र में भी यहाँ वास्तविक शान्ति है, वैसी शान्ति जिसे उचित रूप में ही राष्ट्रीय 'वस्तुता की शान्ति' कहने में, अन्वय को मिटानेवाला शासक बयोर कर सक्ता है वरिना जाय और हृत्पल पैदा किया जाय।

एक वर्ष में एक शान्तिवादी कान-कान की स्थिति से भी यह चाहेंगे कि परिवर्तन परिस्थिति में भी समतल मिटाने वाला शासक बड़ा हो—वहाँ की शाखा-शाही के प्रति लोग विरोध कर दें और अपना दुःख आने कथि पर वे उत्तर केरें। मैं यह चाहता हूँ कि किसी देशों के से लोग भी अधिक सुविधा की विधि में है देशाजय विचारों कि कभी काँटे और विरोधी, विपक्षवादी आदर एव हीन परिवर्तन परिस्थिति की जाय तक पहुँचें। 'बंगला देश परिवर्तन का आन्दोलन मानना है' ऐसा कहनेवाले उस क्षेत्र में बहुत लोग हैं। 'आन्दोलन मानना' मानक कथा का उपयोग सरकार के लिए कुछ नाम का हो सकता है। इन्डिया में कुछ ऐसी परिणत हैं जब एक विचार ने कुछ हर एक बड़े देशों को छोड़े देनी के सामने से गिनी न सिंगी बहरी हृत्पल कथि से रोता। परन्तु आरंभ बंगला देश में पुन-सुविधि है। वहाँ कथा के पर में कथि कथा हृत्पलवाले के एक समूह ने आने ही देश के लोगों को समझे का अभिमत मुक्त कर दिया है। कम्युनिस्टों ने एक दिन यह विचार प्रकट किया है कि युवता के बन्दूक एक ही कार्य। सरकार के विरोधी को विरोधी की उलगा की लक्ष्मीयों की हृत् करने का समूह आला विपक्ष भारत है। उनके इस आन्दोलन बुद्धिमान का भी हृत्पल प्रकट रहा है। यह अन्वय मान है कि

वाचपीन

वाचुराव की चेचैनी

सतीश कुमार : सर्वोच्च-मार्गि की स्मरणता वाली स्मारक और सर्वापीन होने हुए भी भारत के युवा कर्तव्यपरियों को उसके प्रति आकर्षण दिखाई नहीं देता। बल्कि वे हमें गुप्तारवाही युद्धों का बहुर नगर देते हैं। कभी नहीं है ?

वाचुराव : कभी उन युवकों की है, यह कह देना बाकी संकट होगा। वे हमारी विचार-धारा का अध्ययन नहीं करते इसलिए उन्हें हमारा शान्तिवादी आन्दोलन समझ में नहीं आता, यह कह देना भी आसान होगा। परन्तु यह उत्तर सवाल को टालने जैसा है, क्योंकि आरके

पड़ता है। शान्ति-जीवी ही तरफों को शान्ति की ओर आकृष्ट कर सकता है। राष्ट्रीय के जीवन में शान्ति के दर्शन होने से और राष्ट्रीय के प्रतिशक्ति के विप्लव उदरक लक्ष्य हो जाते हैं। विचार के प्रति भी लोगों का आकर्षण अपनी पुस्तकों पढ़कर नहीं हुआ बल्कि उनकी परम्परा ने, जो कि शान्ति को जीने का एक माध्यम था, युवकों को आकृष्ट किया। पुस्तकें पढ़कर तो केवल विचारों की समझ होती है।

सतीश कुमार : तो क्या आरका समय है कि हुए सर्वोच्च-मार्गि शान्ति-जीवी नहीं हैं, केवल शान्ति-वादी हैं ?

वाचुराव : युवा वर्ग के साथ आरके एक उलान का उत्तर स्वीकारात्मक देना पड़ेगा। जब हम आरका की तरफ हँसते हैं या सेवा विचारों बँटते हैं, तब हमारे जेजा शान्तिवादी बर्द नहीं होता पर हम मान 'उदेलक' बनकर अपना समाधान और आत्म-न्याय कर देते हैं। उनसमयों में या विचारकों ने आरका शान्ति करने में कामयाबी पायी होती या भारत में अदरक हृत्पल शान्ति हो रही होती। शान्ति मान-प्रदान या शान्ति-प्रदान नहीं बल्कि बर्न-प्रदान होती है, जब कि उदेलक और शान्ति के विपु विचार का महत्त्व शान्ति होता है और बर्न का स्थान गीन। शान्तिवादी के लिए बर्नोपी ही हर विचार कीर्द धारा नहीं। इतना यह आकर्षण नहीं कि शान्तिवादी जन और शान्ति के समूह होता है। सेवा लागने बनता हो है कि शान्ति और बृत्ति का आन्दोलनविध समन्वय है। सर्वोच्च शान्ति-मन में लगे हुए हृत्पलियों का जीवन, आर देखें तो सर्वोच्च-विचार के दर्शन सुविध से होते। यदि हमारे जीवन में सर्वोच्च नहीं है तो और हमारी ओर आकृष्ट क्यों हों ?



बहुतसे आचार्य . शान्ति के लिए समर्थन सरकार का उत्तर दाता मान और भागत नहीं है। लक्ष्यों की कभी भी पुनर्पीन शान्ति के प्रति आकर्षण नहीं होता। युवाओं में पढ़ने के शान्ति को समझना समझ भी नहीं है। राष्ट्रीय के प्रति लोगों का आकर्षण युवाओं पढ़कर नहीं हुआ। शान्ति की जीना एतकी आर में कम्युनिस्ट सरकारों ने आनी मना विपुल करने में हम बन्धन का उपयोग किया है। गिने देश के लोगों का जब विपुलता से दमन किया जाय है तब यह उम देता का आन्दोलन मानना नहीं रहे जाय, बलक यह संसार के सब देशों के लोगों की विपुल का मानना बन जाता है।

सतीश कुमार : क्या आप सर्वोदय कार्यकर्ता को पवित्रतावादी बनाना चाहते हैं ?

बाबूराव : बतई नहीं । मैं किसी भी धर्म में पवित्रतावाद का हामी नहीं हूँ । हमारे जीवन और विचार में अन्तर्विरोध न हो, इतना ही मैं चाहता हूँ । भूमि के साथ, संपत्ति के साथ, देहेज प्रथा के साथ, विवाह-प्रथा के साथ, हमारे रक्त में और हमारी कृति में यदि भेद है तो हम अपने विचार को स्थापित करने में कामयाब नहीं हो सकते । इससे भी बड़ी बात जो मैं कह रहा था, उसका सम्बन्ध हमारे व्यक्तिगत जीवन से इतना नहीं, जितना सामाजिक प्रतिबद्धता के साथ है । अन्याय का विरोध लिखकर या बोलकर करना एक सुधारवादी तरीका है । उस अन्याय के विरुद्ध खड़े हो जाना और उसे समाप्त किये बिना चैन से न बैठना क्रांतिकारी तरीका है । इस क्रांतिकारी तरीके में अन्यायी से प्रेम और अन्याय से सघर्ष करना पड़ता है । यह अहिंसक संघर्ष क्रांति को जन्म देता है । अहिंसक संघर्ष से रहित होकर अन्याय का विरोध तो सभी करते हैं । पर उसमें से क्रांति पैदा नहीं होती ।

सतीश कुमार : जब हम विचार को समझेंगे ही नहीं तो क्रांतिकारी कैसे बनेंगे ? अपनी पुस्तकों, लेखों और भाषणों को 'उपदेश' की धेनी में शनकर क्रांति के मार्ग अन्त हो जाने का खतरा पैदा कर दिया है । विरोध रूप से अहिंसक-क्रांति तो शुद्ध रूप से विचारों पर ही आधारीत है और विचारों के वाहक हैं—भाषण, लेख, पुस्तकें आदि ।

बाबूराव : इस तरह से बातचीत करने में यह खतरा है कि आप मुझे पुस्तकों, लेखों और भाषणों का विरोधी मान बैठेंगे । पर आप जानते हैं कि मैं खुद भी एक लेखक हूँ । पर यद्यत्त यह है कि भारतीय क्रांति केवल पढ़े-लिखे की क्रांति नहीं हो सकती । इसे सर्व-जन-

क्रांति होना चाहिए । सर्व-जन आपके इन शहरी माध्यमों से परिचित नहीं हैं । गाँव के सरस और भावनाशील किसान बुद्धि-जीवियों के वर्क-वितर्क से ज्यादा जीवित और ज्वलन्त उदाहरण की मांगती थे समझ सकते हैं । गाँव में जो अन्याय हो रहा है, उसको समाप्त करने का 'उपदेश' देने के बजाय उसे समाप्त करने के लिए आपने अहिंसक संघर्ष, सत्याग्रह, अन्यायी के साथ असहयोग आदि चलाये वो लोगों के तुरन्त समझ में आयेगा कि आपका 'क्रांति' से क्या तात्पर्य है और व घोर-धीरे आपकी तरफ आकृष्ट होंगे ।

सतीश कुमार : लेकिन इस तरह का अहिंसक संघर्ष या सत्याग्रह हम सर्वोदय कार्यकर्ता चलायें या जनता खुद चलाये ?

बाबूराव जब काम का अखली भौका जाता है, तब हम जनता से अपने को अलग करके बच निकलें यह ठीक नहीं । हम और जनता जब तक अलग-अलग रहेयें, तब तक हमें क्रांति की बात करने का कोई अधिकार नहीं । हम भी नहीं न वही के नागरिक हैं । हम समाज के साथ हमारा तादात्म्य का सम्बन्ध है । हम आसमान से टपके हुए कोई जन-शिक्षक नहीं कि हम जनता को राह बनायें और जनता उस राह पर चले । हम और

जनता एक हैं । जहाँ भी हमारी सव्या अन्याय का प्रतिवार करने के लिए सयाम हो, वहाँ हमें प्रतिवारालयक कार्रवाई से पीछे नहीं हटना चाहिए : तभी आम जनता और विरोध रूप से तथ्य इस अहिंसक क्रांति की ओर आकृष्ट होंगे । वरना उनके सामने गणसत्तवादी कार्रवाई के अनावा कोई विकल्प ही नहीं रहता ।

सतीश कुमार : विनोबा सुदन सत्याग्रह को बात कहते हैं । क्या आप उनके सहमत हैं ?

बाबूराव : असहमत होने का कोई सयान ही नहीं है । जिस क्रांतिकारी की संवेदनशीलता सुदम-स्तर तक पहुँच जाये, उसके लय वही स्तर सर्वोदधेष्ट होगा । हम सभी उस स्तर पर पहुँचें ऐसी कोशिश करनी चाहिए । पर कोई यह बहे कि स्वात्म्य के लिए दूध बहुत लम्बा है, पर दूध जगमग कर सक्ने की हमारी क्षमता न हो तो रोटी खानी ही नहीं चाहिए, तो यह ठीक नहीं । दाल-रोटी दूध की तथ्य सम्पूर्ण भोजन भले ही न हो, बह भूख तो मिटाती ही है । इसी तरह अहिंसक प्रतिवार की कार्रवाई सुदम सत्याग्रह क्रांति आध्यात्मिक और भरिपूर्ण भले ही न हो, बह तात्कालिक अन्याय को मिटाने की शक्ति तो हमें प्रदात करती ही है । ●

स्वास्थ्य, इलाज एवं शक्ति के लिये

वैद्यनाथ स्वामि

भद्रा स्वामि

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन प्रा० लि०



उद्योगों की स्थापना के लिए विहार में सुनहला अवसर

राज्य सरकार रांची, बोकारो, आदित्यपुर (जमशेदपुर) तथा धरौनी में सड़क, जल तथा बिजली आदि की व्यवस्था से विकसित पूरक उद्योग क्षेत्रों में १९ वर्षों के पट्टे पर जमीन दे रही है ।

भारी अभियंत्रण निगम, बोकारो स्टील प्रोजेक्ट, धरौनी रिफाइनरी तथा भारतीय उर्वरक निगम (धरौनी) और जमशेदपुर के औद्योगिक क्षेत्रों में पूरक तथा अन्य प्रकार के उद्योगों के लिए सुनहला अवसर खुला है ।

इसके अलावा निम्नलिखित विशेष सुविधाएँ भी उद्योगों के लिए खुली हैं :—

- १—लघु उद्योग इकाई के मामले में जमीन का मूल्य दस किस्तों में देय है ।
- २—लघु उद्योगों तथा बड़े और मध्यम उद्योगों के लिए विक्री-फर आदि की रियायतें भी मिलती हैं ।
- ३—औद्योगिक फर्मचारियों को गृह-निर्माण के लिए सहायता मुलभ है ।
- ४—उद्योगों के लिए प्रोजेक्ट-रिपोर्ट तैयार करने में भी सहायता दी जाती है । उनके लिए अविलम्ब आर्थिक सहायता भी स्विकृत की जाती है ।
- ५—धरोजगार इंजीनियरों को विशेष सहूलियत मिलती है ।

रांची, आदित्यपुर, बोकारो और धरौनी की जमीन के विस्तृत विवरण के लिए उद्योग निदेशक विहार, पटना । अथवा उद्योग निदेशक, रांची । विशेष पदाधिकारी, आदित्यपुर । निदेशक, भूमि-परियोजना, बोकारो और पुनर्वास निदेशक, धरौनी को साथ सम्पर्क स्थापित करें ।

—जन सम्पर्क विभाग, विहार सरकार
द्वारा प्रेषित

पुष्टि में लगे हुए साथियों की दूसरी गोष्ठी

३०, ३१ अगस्त १९७१ : भवानीपुर : पूर्णियाँ

विहार के मजदूर पुष्टि क्षेत्रों में लगे हुए साथियों की दूसरी बैठक ३०, ३१ अगस्त को भवानीपुर (पूर्णियाँ) में हुई। कौनों के बाद भवानीपुर दूसरा प्रखण्ड है जो सपर पुष्टि के लिए लिया गया है।

गोष्ठी में ब्राह्मण (मुण्डे), मुसहरी और बैजारी (मुसकरपुर) तथा हरीली और भवानीपुर (पूर्णियाँ) के साथी आये थे। श्री बैठकस्थ बाबू और श्री राम-मुनिजी भी दोनो दिन शरीक रहे।

सबसे पहले साथियों ने अपने-अपने क्षेत्र के पुष्टि-कार्यों की सारा-सारा बातें बतानी।

ब्राह्मण (मुण्डे) श्री शिवालय भाई - प्रखण्ड में कुल १८१ गाँव हैं। १९६१ का ग्रामदान हुआ है। १७६ में ग्राम-स्वराज्य समाज बना है। ८६ में बीपा-बन्दा बंदा है। ५६ में ग्रामसेवा विभाग बना है। क्षेत्र में २२ प्रतिष्ठान आदिवासी हैं जिनमें सपर ७५ प्रतिष्ठान ग्रामदान में शामिल हैं। मुसमान लगभग २५ प्रतिष्ठान हैं जिनमें तीन चौथाई ग्रामदान में शामिल हैं।

प्रखण्डस्वराज्य समाज तथा अधिकांश ग्रामस्वराज्य-समाजों की बैठकें नियमित होती हैं। लोग बड़ी सहायता में शरीक होते हैं। सामान्य लोग भी आते हैं, क्योंकि इन बैठकों में वे अपनी मांग सुनकर बह सकते हैं।

क्षेत्र में कानूनी-दारी विभाग जोरदार साथियों की सच पर लाने में बहुत सहायक हुई है। उनके द्वारा अनेक गाँवों के हिन बरदा हुआ है, और लोगों को नास्तानिय नाम भी बना दिया है। बने लगी है। यह भी टूटा पुष्टि और विकास के नामों की विना कार्य-कार्यों से उतर कर नीचे ग्रामस्वराज्य-समाजों तक पहुँच रही है।

लोग अन्धकार और अज्ञान के प्रति आसक्त हो रहे हैं। आगे बढ़ने की

आकांक्षा पैदा हो रही है। मये लोग जिम्मेदारी लेने के लिए सामने आ रहे हैं।

कुल ५६ गाँवों में २० हजार में अधिक का ग्रामसेवा बरदा हुआ है। प्रखण्डस्वराज्य-समाज के पास लगभग दोनो बार हजार का विकास बरदा है। कुल ५० हजार का विकास बरदा करने का प्रयत्न है।

पुष्टि के लिए साक्षा के साथ चलाई प्रखण्ड भी जोड़ा गया है। ५६ ग्राम-स्वराज्य-समाजों बन चुकी है।

मुसहरी भी उभयस्वराज्य विदेशी यहाँ १७ पचासों, ११८ रेवेन्यू गाँव हैं। ७२ रेवेन्यू गाँवों और १६ टोपी में ग्रामस्वराज्य-समाजों बनी हैं। लगभग ३० प्रतिष्ठान गाँवों में बीपा-बन्दा विभाग है। मुसहरी शहर का प्रखण्ड है। शहर के प्रभाव के कारण गाँव-गाँव में राजनीति है और मुसहरी भी जहाँ-तहाँ सपटित है। अनेक बड़ी जमीनचोरों, मुष्टिया, भ्रष्टान, तथा विडाल नहे जन्मेवाले प्रोफेसर आदि पुण्य-पुण्य विरोध में हैं।

ग्रामस्वराज्य-समाजों का वातावरण उत्साहवर्धक है। बैठकें होती हैं। उनकी तारीखें निश्चित कर दी गयी हैं। कोशिश रहती है कि हर परिवार से कम-से-कम एक व्यक्ति अवश्य आये। इस आधार पर लगभग एक चौथाई ग्रामस्वराज्य-समाजों में ७५ प्रतिष्ठान उपस्थित होती हैं, वेप लोग चौथाई में ५० प्रतिष्ठान। ग्रामसेवा विभाग रहा है। विनियोग की बटिनाई है। कुछ जगह लोग में हर 'दान' का अलग खाता है। मुसहरी को अन्धकार पर अंधार १ मन दिखा जाना है तो वह १ मन १० सेर बाण्ड करता है। बीमारी में भी महापडा ही गयी है। जिन गाँवों में ग्रामस्वराज्य-समाजों बनी हैं उनसे कोई नया मायना अज्ञान में नहीं गया है।

मुसहरी टोपी में भी शब्दों, सपर ही पैदा बन जाते हैं। लेकिन अर यह

जोर दिया गया कि अनुपात के अनुसार ग्रामस्वराज्य-समाज के पदों में मजदूरी की स्थान मिलना चाहिए, तो मिला।

ग्रामस्वराज्य-समाजों की बैठकों के कारण बर्न-विदेश 'घटा है, लेकिन सामान्य 'एटी-दुख' पुराना ही है। न्याय की भावना नहीं आयी है, सयता का मानव नहीं बन रहा है। जो बोले उसे ठोक कर देने या पुष्टि में मिनकर सयते की नीति ठोक मानी जाती है।

मुस समाजों की नीति में हस्तारण करने लगी है।

मजदूरी नहीं बढ़ी है। कहीं-कहीं मुसहरी से २ बने तक (साधा दिन) के नाम के लिए मूला ५० पैसा देने हैं। मजदूरी में अण्डा अज्ञान देना, लोग से सहानुता देना, मजदूर के माथ माथीट का व्यवहार न करना, झूठे मुसहरी में न पयाता—इन बातों में मुसहरी हुआ है।

हिमाचलों की सक्रियता जारी है। मजदूरी के रजिस्टर्ड मुनियत्र भी बन रहे हैं। हिमाचलों बहने हैं : 'हय तरह किन्ता समय बरिगा ? मूनि के दुकड़े बोटकर भूमिहीनता मिडानी है या विप-मना को मुक्ति दिवानी है ? विकास के काम बरिगों की और अधिक धनी बना रहे हैं, उनके मजदूरी को क्या मिलेगा ?' मजदूरों का मुसहरी अभी भी उप-बाधियों की ओर अधिक है।

रवालीय मैसुर की 'बवालिटी' नहीं बदल रही है।

विकास के नामों से परमुसहरी-विना बर रही है। जिनको हमारे विकास-कार्यों से लाभ नहीं पहुँचा है वे बिरौती हो जाते हैं। लोगों के मन में विकास के लाभ ही मुख्य प्रेरणा बन गये हैं।

बैजारी (मुसकरपुर) - धो-रस-मग-देन को .

न बाहर के साथी हैं, न साथ। मुसहरी में पूर्ण स्वातन्त्र्य है। विकास की व्याक मायता है। बड़े लोगों का भी विशेष प्रबट नहीं हुआ है। विकास आदि का कोई आसयन नहीं है। कमील बहुत अधिक कीमती है इसलिए

बीषा-रद्वय देना शारी लगवा है।

जो भी बीषा-रद्वय जमीन बँटी है उसके मजदूरों में बाधा नहीं है। एक प्रामस्वराज्य-सभा यनी है। तीन पंचायतों का सीमित क्षेत्र लिया गया है।

प्रसङ्ग भर में सर्वोदय मित्र बनाना शुरू हुआ है। १ हजार का वसूय है।

श्रीलंका-भवान्नीपुर (पूषिया) - श्री अनिरुद्र बापू :

श्रीलंका में २१ पंचायतों, ४६ रेवेन्यू गाँव हैं। ६८ प्रामस्वराज्य-सभाएँ गठित हुईं, जिनमें ३६ रेवेन्यू गाँव तथा ३१ टोले हैं।

कुछ प्रामस्वराज्य-सभाएँ बहुत सक्रिय हैं। एक ने मजदूरी का भी सवाल उठाया है। मतियों ने मजदूरी बढ़ा दी।

बाड़ के कारण सरकार की ओर से जो जलवाली रिलीफ में प्रामस्वराज्य-सभाओं की सक्रियता के कारण प्राथम्य बहुत कम हो सकी।

सभाएँ गाँव के मामले भी हल कर रही हैं।

प्रामस्वराज्य-सभाओं को पुष्ट करने की ओर विशेष ध्यान है। क्षेत्र पहले से आन्दोलन-प्रधान है। मजदूरों को मुक्त बिले में बटने का अन्वेषण है। दलबन्दी की राजनीति खूब है। सभी दलबन्दी प्रामस्वराज्य-सभा के मंच पर आ रहे हैं—गाँव के बाहर अपने अलग मंच पर कुछ भी करें।

२२ गाँवों का कायम कानूनी पुष्टि के लिए तैयार हुआ है। ●

चिंगलिंग (उपन्यास)

देश की अनेकविध समस्याओं का निवृत्त से देखने, समझने के कारण लेखिका के विचारों में नवसमाज निर्माण की जो आतिशयारी धारा प्रवाहित है, उद्यत दर्शन इस मौलिक उपन्यास में चीन की एक सुवर्ती चिंगलिंग के माध्यम से हुआ है।

सख्त, रोचक चीनी का यह उपन्यास सुवह, सुवर्तियों को एक ऐसे धरातल पर पहुँचाता है, जहाँ वे स्वयं होकर निर्माण की भूमि में प्रवेश कर जाते हैं।

मूल्य ६० १.००

सर्वे सेवा संघ प्रकाशक
राजघाट, धारागस्तो-१

उत्तर प्रदेश में स्वर्ण नियंत्रण से प्रभावित व्यक्तियों के पुनर्वासन हेतु

शासन द्वारा प्रदत्त सुविधाएँ

- १—इच्छानुसार मये व्यवसाय अथवा उद्योग चलाने के लिये आसान शर्तों, कम ब्याज व सन्धी अवधि वाले ऋण। (दिनांक ३१-३-६६ तक प्रस्तुत आवेदन पत्रों पर ऋण वितरण की व्यवस्था)
- २—बिजली, कच्चा माल, आयात व निर्यात, कृषि हेतु भूमि आदि की सुविधाएँ।
- ३—कक्षा ७ से कक्षा १० तक के छात्र व छात्राओं को नियमानुसार मासिक पुनर्वासन छात्रवृत्तियाँ।
- ४—तकनीकी प्रशिक्षण के लिए सुरक्षित स्थान तथा विशेष सुविधाएँ।
- ५—केन्द्रीय तथा राज्य सरकारी धर्म ३ व ४ की नौकरियों में प्राथमिकता। (उच्च में ५ वर्ष की तथा टाइप की फूट आदि)।

- ६—दीन, दुःखी, रोगी, असहाय वृद्ध पुरुष, विधवाओं तथा अनाथ बच्चों के लिए विशेष अनुदान सहायता। (परिचय प्रमाण-पत्र सहित प्राथम्यपत्र आने पर)
- ७—बस मा टैक्सी तथा स्कूटर रिकशा के परिमित के लिए प्राथमिकता व अन्य सुविधाएँ।
- ८—सस्ते गल्ले, शक्कर तथा कोयला डिणो, मिट्टी के तेल, ईट भट्टा आदि की दूकानों सम्बन्धी सहायता।
- ९—हर जिले में स्वर्णकारों के पुनर्वासन हेतु जिला परामर्शदात्री समितियों का गठन।
- १०—तोले की घोर-जानारी (स्मॉलिंग) तथा भ्रष्टाचार-सम्बन्धी सूचनाएँ भी भेजें।
- ११—उपरोक्त तथा अन्य किसी भी प्रकार की कठिनाई या समस्या के निराकरण व जानकारी के लिए नीचे लिखे पते पर लिखें।

जगदीश प्रसाद सिंह

मन्त्रि तट्टर परामर्शदात्री समिति एवं सहायक मन्त्रि उद्योग तथा आबकारी उ० प्र०, तथा सर्वमन्त्रि तट्टरण अधिकारी, उ० प्र० शासन, नवलखंड।

जिला तरुण-शांतिसेना शिविर : सहरसा

शिक्षा में क्रांति की आवाज देकर सशस्त्रता को अंतर्निहित करने का प्रयास सहरसा में भी बहुत सफल रहा। हमारा प्रयास तो मिना १ अगस्त, 'विद्यार्थी में क्रांति दिवस' को ही जब जिनके घर के विभिन्न स्वकारों व गैर-स्वकारी स्कूलों के छात्र व शिक्षक कटीक ३ हजार की संख्या में जुटने निकलने लगे थे।

यह बात सर्वमान्य है कि सामाजिक क्रांति से अलग शिक्षा में क्रांति का कोई अर्थ ही नहीं रह जाता है। इसलिए सोचा गया कि अब एक शिविर के माध्यम से स्कूलों में सामाजिक क्रांति का संदेश पहुंचाया जाय। हर स्कूल की 'तरुण-शांतिसेना' के प्रभारों तथा सदस्यों को अपने जिन स्कूलों में सफाई नहीं हो सके या उनमें से एक शिक्षक तथा एक छात्र को आमंत्रण भेजा गया कि ४, ५, ६ अक्टूबर को सधेपुरा नगर के जैनलाल उच्च विद्यालय में भारतीय तरुण-शांतिसेना की ओर से विनाशकारी शिविर के आयोजन में शामिल होंगे।

फूँट शिविर के अर्थ तथा व्यवस्था का भार बंधने तत्काल तारकेश्वरराज-समिति नहीं उठा सकती थी इसलिए एक दिन की जिम्मेदारी स्थानीय आवागमन तथा एक दिन की प्रांतीय तरुण-शांतिसेना समिति ने उठायी।

शिविर के संचालन हेतु कुछ राष्ट्रीय तथा प्रांतीय स्तर के व्यक्तियों को भी आमंत्रण दिया गया था पर कुछ-न-कुछ विद्येय कारणों से वे नहीं आ सके। अब परिस्थितिबद्धता गणधेवनरत भंडारी ही गयी। तत्कालेवकल सचन रहा ऐसा हम बहु धरते हैं क्योंकि रात्रि में होनेवाली पुराने चर्चा में सुझने पर भी निजी में व्यवस्था का व्यवहार के प्रति कोई तिरा-सा नहीं की।

जिनके घर के २२ उच्च विद्यालयों, दो हाईस्कूलों तथा तीन सामाजिकों के सुबहों ने शिविर में भाग लिया, कुछ

बिनाकर शिविराचारियों की संख्या ६५ थी जिनमें ४५ छात्र तथा २० शिक्षक थे। परम्परासुद्धत मार्गव्यय का पूरा भार तथा शिक्षण सहायकों से अन्वय लेने की पूरी जिम्मेदारी शिविराचारियों पर ही थी।

विचार के घूँट पित्तने का भार मुख्यतः श्री धीरेन्द्र मजूमदार पर ही पड़ा। श्री कृष्णराज भाई तथा श्री कामेश्वर प्रसाद बहुगुणाजी ने भी कुछ कार्य में सहयोग दिया। बहुगुणाजी ने गुरु और

विद्यार्थी के सम्बन्धों को चर्चा करने हुए कहा कि छात्र के जमाने में इस सम्बन्ध का आधार सम्बन्ध ही हो सकता है। उन्होंने यह भी धारित किया कि यह हमारा नया नहीं, पुराना ही मूल्य है। श्री कृष्णराज भाई ने आवागमन, तरुण-शांतिसेना तथा धामेश्वरराज के कार्यक्रमों की इस श्रुति में रखा कि यह काम कार्यकर्ताओं का नहीं, नागरिकों का ही है। नागरिकों का अर्थ है कि वे इन जिम्मेदारियों को उठावें। यह साक्ष्य शिक्षक तथा छात्रों के लिए बहुत प्रेरक सिद्ध हुआ। पहले ही दिन अपने उद्घाटन भाषण में

राष्ट्रपिता को वर्षगांठ के पुनीत अवसर पर

- गांधी जी के स्वर्णों का समाज बनाने के लिए
- देश में समाजवादी व्यवस्था कायम करने के लिए
- राष्ट्रीय एकता और धर्म निरपेक्षता को मजबूत करने के लिए

प्रदेश और राष्ट्र के स्तर पर किये जा रहे प्रयासों में

सक्रिय सहयोग देकर ही,

हम उनके प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर सकते हैं।

विज्ञापन सहाय-४ : सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रसारित

संपादक
सत्यभूमि

सर्व सेवा संघ
सर्वसेवा

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

भद्राना-यज्ञ

भद्राना-यज्ञ सिलिकोन्मो गोरम गान्धी विचारकेंद्रानि का अन्तर्भावार्थी संपादनार्थिक

वर्ष : 15
संका : 3-2

पाठका विभाग, सर्व सेवा संघ, राजपाल, वाराणसी-1
सर्व सेवा • टोल 2-2

सामना
21 अक्टूबर '67



ब्रह्म और तथ्य

काम नहीं, दाम नहीं, आराम नहीं

अभी हाल में एक गौत्र के मुसहूर टोपे में हैरा फँसा। एक सड़का मर गया। १ जवान मुसहूर हैजे के शिखर होकर बीमार पड़े थे। पाप की एक सेवा सस्य में अस्तान था। गौत्र के पूज मजबूत थे वहाँ खबर थी। मस्मा के डाक्टर गये। गौत्र में मोर्ची की टीका लगाया, और जिसो तरह सनझा-बुझाकर मरीजों को अस्तान ले गये। वहाँ उनको दो दिन तक चिन्तितना हुई। अब अच्छे हो गये। परन्तु देने का समय आया। प्रश्न हुआ थावन कहाँ से आवेगा? मुसहूरों के घर में एक दाता थावन नहीं था। जिन माँजनों के यहाँ से मुसहूर मजदूरी करते हैं उन्हेंमे पत्र के लिए थावन देने की जरूरत समझी गयी। हैरा तो क्या लेकिन पेट की प्रशाना कैसे भिटे? वृद्धों पर मानस हुआ कि बाप है नहीं, मजदूरी जिनको नहीं, तो घर में थावन कहाँ से आवे?

एक मुसहूर की औरत अपने बर्तन—पान्की, लोटा जो भी रद्दा होगा—निरट्टी रखे, और दो किलो (मोटा, पत्थर भित्त) थावन खानी। पम्प बना, पेट में कुछ बुराक पड़ी।

बिहार में १९६१ की जलमजला में २९ प्रतिशत भूमिहीन मजदूर थे। १९७१ में उनकी संख्या बढ़कर ३६ प्रतिशत हो गयी। यह संख्या बढ़ी-कहीं ६० प्रतिशत तक है। अगर बंदाईदारों की भी भूमिहीन हो मान लें तो भूमिहीनों की संख्या बहुत कम रह जायी है। अब तक भूमिहीन मजदूर ज्यादातर हरियन और खासिणों से, लेकिन अब दूसरी जातियों के गरीब भी आने लगे हैं। इनका धारण है कि अब धारण रहेगा, बटेगा, दौना जायगा, उन तक पेट बने पात्रा जायगा? न कोई उद्योग है, न धर्म, और न मिर्चा खादि करने का ही कोई काम है। मजदूर बना रहे, बीड़े-दो बीड़े का भोगिहट बने खीरे? मजदूरों ने भीना देखाए इस भर्त्स पर रसना देना शुरू किया है कि जब धान बटेगा तो गरीब दान खचन लिये हुए बर्त्स की अजागगी से अपना पाल १२ रुपये मूल के दिवाज से मजबूत करे देना। धान बटने के दो महीने पहिने ही दिहा गया, और अब कपन पर बाजार-भाव २५ रुपये मूल से कम नहीं होगा तो इस १२

रुपये मूल में ही दिहा गया!! धान बटेगा, पविहाज से महावन के घर जायगा। जित गरीब ने जोता-जोता उसके घर गया जायेगा? मजा बर्त्स, नया मूद, बेरोजगारी और भूख के सलड दिन और सलड रातें!

अभी पहिने डा० सोहिधा ने अपने बीवन-कात में सलड के एक भाग्य में कहा था कि देश के ६० फीसदी लोग २० फीसे रोज पर गुजर कर रहे हैं। उन से बढ़ती हुई बीमारी के कारण २० फीसा खिलक कर नीचे आ गया होगा और ६० प्रतिशत बंदर ऊपर पहुँच गया होगा। इस बीच देश खलन के अजागगी अज में भी स्वावलंबी हो चुका है। लेकिन यहाँ उदाहर चाते और देखिए तो गरीबी ही नहीं गरीबी से भी नीचे जिनजुन क्या-किसक फेती हुई दिखाई देती है। अगर सलबार पहिने तो बढ़ती हुई मनुष्य के आँकड़ों की भण्डार खूबी है। आँकड़ों से बंदर खनित्रियों के आँकड़ों की मजदूरी नीचे भी है?

अर्थशास्त्रियों में एक बहुत ठिड़ी हुई है कि गरीबी से बेरोजगारी पैदा होती है या बेरोजगारी से गरीबी? इनमें से कौन कारण है और कौन परिणाम? दूर करता ही हो तो रिसे पहिले दूर किया जाय? जो बेरोजगार है, धुप है उसे पहिने-गीछे की दान सलस में नहीं आती, वह इतना ही चाइया है कि उसे बराबर काम मिलना रहे और पूरी मजदूरी मिलनी रहे। वह जानता है कि काम नहीं मिलेगा तो खानी पेट रद्दा होगा, और काम मिलता भी किन्तु दाम पूरा न मिला तो खुद को और बर्त्स की बाधे पेट खाकर मोना बड़ेगा।

नाम मनाजवाब हो, या कोई और, करोडो लोगों के सामने सराज है काम का, दाम का, धारण का। वे इस पपी की जानते हैं, और उनकी ओर से माँग भी इन पपी की ही है। पञ्चवर्षीय योजनाएँ दस बडे से शुरू हुई थी कि भारत के हर कानो, पुण-सभी, को राम मिलेगा, दाम मिलेगा, धारण मिलेगा। लेकिन कहाँ मिला? योजनाओं के माप-साप बेरोजगारी बढ़ती ही गयी, बढ़ती ही आ रही है। कारखानों के माल के दाम घेउटाया बड़े, लेकिन छोटे मिलाज, खेतिहर मजदूर, दरकार की मिननेपाली दाम मिलने बडे? और, धारण की तो बाज ही बेकार है। नेहलू का बट्टा कि 'धारण हारण है' करोडो के लिए रिनी दमरे लप में सार्थक हो गया है।

योजनाएँ बड़े-बड़े उद्योगों से शुरू हुईं। उद्योगों के नाम से मनुष्य के बडे-बडे 'गोप' बने, रेपिहलान में मजदूरियाज बनर जाते। अब वे तीर्थ बन चुके तो दूजल यह नाम तथा कि खेती में उदारन बना चाहिए ताकि बिदेको अज की मुट्टाओं से। खेती में 'हाल प्रगति' हुई, उदाजत बना, बाजार अज से भर गये। लेकिन बाजारों का भलता एक बात है, और लोगों के पेटों का भलन जिनजुन दूसरी। पेट भरने के लिए काम चाहिए, काम नहीं होगा तो अज के लिए दाम कहाँ से आवेगा? इतिहास अब इनमें रिनी बाड यह कहा जा रहा है कि 'सोनीय विहाज' (परिना देवकामिन्ट) की योजनाएँ बननी चाहिए

ताकि खेती, खेती के साथ चन्पेनेवाले उद्योग, तथा क्षेत्र की भूमि, इन तीनों का विरासत साथ-साथ हो ताकि क्षेत्र की मनुष्य-जनित हम त्रिविध खेती-नेदित विद्यालय-योजना में रख सकें। योजना कोई भी हो; सरकार ही उसे बदाली है, और मन्कार ही उसे बदाली है। सरकार मानती ही गती कि उगाही प्रसार के जलवायु क्षेत्र में जलवायु की भी शक्ति होती है, जिन्से विना विकास होना नहीं, देना बदला गयी।

सर्वोपम आन्दोलन विद्युत् क्षेत्र वर्गों में ब्यापक बढ़ता जा रहा है कि हमारी समस्याओं की कुलीन केवल कुछ बड़े-बड़े उद्योगों में है, न मछे-मछे फार्मों में, वह है गाँवों पाँच लाख गाँवों में। हट गाँव का विकास होना चाहिए। कुछ लुटे हुए गाँवों का विकास नहीं, बल्कि एक टुकड़े के रूप में सम्पूर्ण गाँव का समग्र विकास—एंगला विकास जिसमें गाँव का हट स्थित तरीक हो, पुरापाय में ली, और प्रसाद में भी। विद्यालय गाँव की खेती का, उद्योग का, शिक्षा का, स्वास्थ्य का, मध्यम का, व्यवस्था का—हट चीज का। गाँव-गाँव के श्रम, पूँजी तथा अन्य साधनों को, ग्राम-हित और राष्ट्र-हित में लगाने की एकेन्ती सपष्टि गाँव ही हो सकता है।

गाँव को सामने रखने पर गाँव के माध्यमों के, मुख्य रूप से भूमि के, स्वामित्व का प्रश्न सबसे पहिले पैदा होता है। भूमि सामिन्नों के हित में वेचो और खरीदी जाती रहे, तो गाँव की खेती-औद्योगिक अर्थनीति का कोई आधार नहीं रह जाता। भूमि निम्नो होगी, उसे कौन जोतेगा-बोयेगा, तथा उससे होनेवाली चम्पाई निम्नो तितली मिलेगी, ये सब बातें तय होनी चाहिए। उत्पादन का बहना तथा बाँचक है जब उत्पादन भी बड़े। उत्पादन बड़े तो धन बढ़ेगा। धन बढ़ेगा तो गाँव का और शहर तथा गाँव और शहर का क्या सम्बन्ध होगा, यह भी तय होना चाहिए। गाँव की स्वायत्तता और गाँव की स्वायत्तता, दोनों साथ साथ चलनीचालनी चीजें हैं। राष्ट्र के नाम में सरकार हट चीज पर हामी होती जाय, और राष्ट्रियकरण के नाम में सत्कारीकरण होना जाय, दण्डे जलवायु का ह्रास हो होना, विनाश नहीं। और अगर गाँवों का

और सरकार का भी हानि अविनाश है, बसकि २० लाख प्राहुक, करदाता, और मजदूरी गाँवों में ही रहते हैं। प्राचीन अर्थनीति का विरासत भूमि की निजी मानसिद्ध के आधार पर नहीं हो सकता। भूमि पर गाँव का सम्पूर्ण स्वायत्तता नाम होना चाहिए। खेती की सपष्टि परिस्थिति, सरकार, साहुदिक, गाँवों अन्तर्गत जाय। गाँव का स्वामित्व वाली गाँव में उत्पादन सभी दानियों को लेकर बनी हुई स्वायत्त सामस्य-सामस्य का स्वामित्व। यह सामस्य-सामस्य जो गाँव के विरासत और खेती की धक्का की जिम्मेदारी ले सकती है। यह काम सरकार की शक्ति के बाहर है।

इसलिए जहाँ तक सर्वोपम सामस्य का सम्बन्ध है वह काम जोर काम, खरीदी और बेचोखारी के प्रश्न को दूरी दूर से देखना है। वह मानना है कि सामस्य समस्याओं के समाधान के लिए सामस्यों की ही शिक्षा और गाँव के द्वारा कुछ करना चाहिए ताकि उनमें यह सामस्य जाये कि वह काम काम और धारणा की बनी की घन-घन पूँजी तक है। दली धन मजदूर पर भी लागू होनी है। वानुज, धन, ज्ञान-विज्ञान का कर्म, विनाश भा कर्मजो अभाव, अभाव, और अज्ञान को दूर कर गये देना सामस्य-सामस्य (और सामस्य-सामस्य) को उत्पादन बसाया सरकार का काम है। खेती गाँव (नगर) को ले, गाँव ही गाँव समाज और सरकार के हों। उर शरीर है गाँव-गाँव में, घन-घन में, सोचना और सम्बन्धता पहुँचाने का। दली खरीदी है जन-जन के जीवन में सामस्य और सम्पत्ति काय।

तो काम पाये, और उन्हे काम न मिले, तो काम करें और उन्हे पूरा काम न मिले, क्या ऐसा सम्बन्धता कर कर चलेंगे ? किंतु काम काम और सामस्य नहीं निक रहा है, और विचारों तथा दिग्दर्शन बर रहते हैं, ये सब यह प्रश्न भी पूछो लगे हैं 'ऐसा सम्बन्धता को बनने ही बनी देना चाहिए ?' जब मनुष्य देवता है कि सम्बन्धता नहीं बदल रही है तो वह परिवर्तनी से बदला लेने पर जाय हो जाय है। हमारे देव का खोप-माल्य दली करने की धारणा में सम्बन्धता जा रहा है। जब काम नहीं, काम नहीं, तो सामस्य बने क्या ?

अन्तरराष्ट्रीय शान्ति-आन्दोलन

इन्टरनेशनल सेन्सिबल आन सेन्सिबल-निष्पन्न के २० सदस्यों की एक बैठक लोन्डन के ओर नामक स्थान में १६ से २० अक्टूबर तक हुई। परिवर्तन यूरोप के नौ देशों के प्रतिनिधि उसमें शरीक थे। बाकी दक्षिण-मुस्लिम के बाद सीज दाडी पर ये एक मजदूर है।

पहली बात यह कि यूरोपिय शहर पर काम करनेवालों का एक समुदाय सपष्टित किया जाय जो यूरोप की मजदूरों

का किरोपन और सम्बन्ध बने और यह तय करे कि नाडी, बामन माईट सर्दि केनि घटनाओं पर अहिंसक प्रतिरोध का क्या सम्बन्ध हो।

दूसरी बात यह है कि एक अन्तर-राष्ट्रीय प्रतिरोध केन्द्र हो। इन केन्द्र पर अहिंसा के सिद्धांत, अहिंसक सम्पत्ति और सम्बन्ध का प्रतिरोध प्रसार कार्य द्वारा हो। एक राष्ट्र के सम्बन्धों दूसरे राष्ट्र में काम करने में बंधे मजदूरों को सबसे यह प्रक्रिया यहाँ से विचार्य होगी।

यह बात यह है कि यूरोप के सभी देशों में एक-एक कर सम्बन्ध बने देशों का एक सम्बन्ध दिशा में जाय का धारणा यूरोप समग्र देशों काय भी है। वह यूरोप के सिन्धु देशों के सिन्धु के देशों में सामस्य-सामस्य दाला, प्रतिरोध के दूरी सम्बन्धता का काम का यहाँ करने में सम्बन्धता का, अहिंसक दालों के प्रतिरोध के सम्बन्धता सम्बन्धता करेगा, जिसमें प्रतिरोधों का भी प्रतिरोध हो।

—सोवियत समाज (सीज एम्ब के)

सुलभ ग्रामदान और सूक्ष्म सत्याग्रह की प्रक्रिया

सनसोहन चौधरी

विद्यते मुद्द दिनों से मैं सुलभ ग्राम-दान-आन्दोलन से सम्बन्धित एक प्रसंग पर गम्भीरता से सोच रहा हूँ। ग्रामदान-आन्दोलन के प्रारम्भिक दिनों में विनोबाजी ने भूमिहीनों के लिए छटा दिव्या भूमि की माँग की थी। बाद में उन्होंने एक माँग की घटायर बोधवाँ हिस्सा दिया। इस कदम का औचित्य उन्होंने सत्याग्रह की मूढ से मूढतर प्रक्रिया बहकर सिद्ध किया। उनका तर्क यह था कि छटा दिव्या भूमि को माँग से भूमिदान चापशील हो जाते हैं। फिर वे 'भाग्यदारी' (हिस्सा बाँट कर देने) के विचार की ओर से अपने विभाग का दरवाजा बन्द कर लेते हैं। तब ही उनके विभाग को 'भाग्यदारी' का विचार स्वीकार करने के लिए बाध्यता। बोधवाँ हिस्से की माँग से वे भूमिहीन नहीं होते। इसके भूमिदानों के हृदय में प्रवेश करने में सहानुभूति मिलती है। 'सुलभ ग्रामदान' के पक्ष में भी यही तर्क दिया गया था। उन समय तो इस तर्क से मुझे कुछ समझान हो गया था। पर इसर हाउस में मेरे विभाग में इस तर्क पर भारवाँ उठते सही हैं।

'सूक्ष्म से सूक्ष्मतर' प्रक्रिया की सूक्ष्मतरणी और तापत यह है कि पीड़ित समुदाय अपनी माँग घटा कर अपनी उदारता दिखाना है। परन्तु उदारता का उद्देश्य-अन्य आन्दोलन कतिन की भावना हो न कि विनयता की भावना। जब भी बड़े समुदाय पर दूसरे के सामने हो जिनको हैनियन में एक दूसरे से बचन आनन्द हो—एक की मुट्टी में सभी समान हो, मना में सब दयाल हो और दूसरा की उन्मोचन पूर्ण समझ और समझीर हो—तब सत्याग्रह की प्रक्रिया में परन्तु कदम यह हागा कि कमजोर फरीफ के मत से उठनी निरीक्षण और कमजोरी की भावना हटा दी जाय और उभरे सत्य एक आन्दोलन कतिन की भावना जपायी जाय, तबसे कि यह

महत्त्व करने लगे कि त्रिमते उनका मुनासिदा है उठते वह कमजोर नहीं है, बरन उमके बराबर है। सभी यह अपनी विलगुल उचित माँग की बम कर मवता है अपना अपनी माँग की—अधिकतरमुक्त (राष्ट्रपूत्र) माँग की—छोड़ भी वे छवता है त्रिमते कि वह अपने पूर्वकतिन विरोधी पर हृदय जीउ सके। परन्तु जब तक यह यह महत्त्व करता है कि वह देगन है, मेवारा है, कमजोर है, जब तक यह यह नहीं महत्त्व करता कि उसमें भी आन्दोलन कतिन है, तब तक उसकी माँग की बम करता 'सूक्ष्म से सूक्ष्मतर' सत्याग्रह की प्रक्रिया नहीं होगी, बरन वह उगायी निरीहता की, उमकी कमजोरी की भावक होगी। नतीजा कि-कुल स्पष्ट है। विराधी पर कोई सतर नहीं होगा, अपतिन अवर की हो बाय दूर है।

ग्रामदान-आन्दोलन में जमीन के बड़े-बड़े मालिक तावतवान फरीफ हैं, और भूमिहीन परीव विधान कमजोर और पीड़ित फरीफ। भूमिहीनों में अधिकतर हरिजन और आदिवासी हैं। वे शिक आधिपः सुविधानो से हो बांयन नहीं है बकि सामाजिक स्तर पर भी पीड़ित और बलि है। आन्दोलन ने यदि इन लोगों की अपनी कतिन का भाव कराना होला और भूमिहीनों का हृदय जीउके लिए उन्कोने यदि अपनी माँग घटा दी होती तब इसका सम्बन्ध कोई अवर हागा। परन्तु बरगुत्थोः ना यह है कि वे आन भी उमी कतिन में है त्रिम त्रिपि में पठते थे। पहले उकी माँग करके जीउ बाद की छे बम करदेवाते हो विनोबा और सरोय बापोल है। इनमें भूमिहीनों और परीव त्रिमानो की कतिन और उदारता की दानक का कोई प्रथ ही नहीं है। यही कारण है कि 'सूक्ष्म से सूक्ष्मतर' सत्याग्रह की प्रक्रिया की अपतिन प्रभाव इसमें बहा है ही नहीं।

एा बाद की तापयन देसाई ने 'सत्याग्रह' का विचार रखा था। इस

मुसाव में भी वे ही कतिन है। इसीसे अवरुदर में सभी तापयन का सत्या है जब दोनो दन करीव - करीव समान तापयनते हो। परन्तु यहाँ यह बाजार नहीं है यहाँ सत्याग्रह की प्रक्रिया यह होगी कि पक्ष कमजोरी के हृदय में आन्दोलन कतिन जगायी जाय और विनयता की भावना से उन्हें सुकन दिया जाय। सत्याग्रह वा यह सर्व प्रथम लगर होगा।

सुलभ आन्दोलन ने भावजोर से एक छे तापयन का विनोबा दिया, त्रिमते गरीबों के हृदय में भावता की एक कतिन जगी, उमकी मुक्त बापोलानी। परन्तु उनकी अपने हृदय में कतिन का कोई भाव नहीं हुआ। इस आन्दोलन में उन्नीकन और सत्याग्रह के विरुद्ध जिन सत्ता में प्रतिरोध और सत्याग्रह गुन्म-सुलना मण्डित किया गया है यहाँ उन्नीकनी को अपना कतिन का भाव आन्य हुआ है। सामाजिक गरीबों के गरीबों, हरिवनों और आदिवासियों को जबनक यह भाव नहीं हो जायगा कि ग्रामदान से उनकी कतिन जगती है तब तक वे सत्याग्रह उन्नीकन आन्दोलन की और आनकतिन होगी रह्ये।

गरीबों और दलितों, के मत में यह कतिन जगाने में ग्रामदान-सत्या, समय हो सगती है। सत्य और बड़े विधान सत्याग्रह पर सामान्य के सतिन होने के विरुद्धी है। इसका कतिन है कि सत्याग्रह सत्याग्रहों का उन्नीकन कतिन गया है। परन्तु परीव तापयन उन्की और वे उदासीन है। उनके मत से सत्या है, ना है, कि यदि के बड़े लन सामान्य पर की उगी तरह हासी रहनी त्रिम तरह अवनक के सोव के सामाजिक, आर्थिक और सामूहिक जीवत पर हापी रहे है। येरा उदाय है कि 'सत्याग्रह' पर हृदयनीय का जीउ देते है, उन्की उठ में जाते पर, गरीबों की दन आनना में मुक्ति की सम्भावना रिमाई देनी। यहाँ गरीब तापयन वे यहाँ 'सत्याग्रह' महत्त्व अमाननी के हो सगती है, बरन, के

पुत्रने टैक देने के भारी है। गाँव के बड़े लोगों की ओर से जो प्रस्ताव, शक्ति में रखे जाते हैं उन्हें वे फिर शुकाकर मान लेते हैं। ग्रामसभाओं को सामाजिक परिवर्तन का समझल माध्यम नहीं बताया जाय, अभी तक हम लोगों के हाथ यह कुन्नी नहीं थायी है।

अभी पिछले दिनों जब किन्तोबाजी से मेरी मुलाकात हुई, तब मैंने अपनी शर्कार उनके सामने रखी। गरीबों के दात के सुगम प्रभाव पर उन्होंने जोर देते हुए कहा कि जब उन्होंने हर आदमी से, गरीब किसानों से भी, भूदान माँगना शुरू किया था तब गरीबों से छोटे-छोटे दात के साथी दात-पत्र मिले थे। उसी से राजा रामगड और राजा राका जैसे बड़े-बड़े भूमिदातों के हृदय के द्वार खुले और साथों एकड़ का भूदान मिला। उन्होंने यह भी कहा कि लोग यदि सिर्फ दूधरों से हड़पने की बात सोचेंगे और उनके पास जो है उसमें भागीदारी की बात नहीं सोचेंगे तो यह प्रक्रिया सत्मायह से बिल्कुल भिन्न होगी और परिणाम अपेक्षानुसार नहीं आयेगा। उन्होंने कहा कि देने को हर एक के पास कुछ न कुछ है। यहाँ तक कि अस्पताल में पड़ा सड़के का मरणाशय रोपी भी दूधरों की कुछ न कुछ दे ही सकता है—दूधरों के लिए प्रमाथु के दो बूँद ही सही। दात देने की मत्स्य की यह शक्ति ही उसमें यह प्रतीति पैदा करती है कि समाज में उसका भी मूल्य है, उसका भी स्थान है। उसके दात की शक्ति से दूसरे दूधमकर से प्रभावित होते हैं। यह भी उन्होंने कहा कि उन्होंने जमीन का जो हिस्सा माँगना शुरू किया था वह भूमिहोनों का प्रतिनिधि होकर। इसी हीनत्व से उन्होंने भूमि की माँग छोड़ा हिस्सा से पचाकर बीमवा हिस्सा कर दिया था।

मैंने किन्तोबाजी से कहा कि मैं यह महसूस करता हूँ कि 'दात' और 'भागीदारी' का सामाजिक प्रभाव सर्वह

से परे है। दात का जब व्यापक प्रयोग होता है तब वह सामाजिक शक्ति बन जाता है। पर यह 'दात' दाता को समाज के ऊँचे और सम्पन्न वर्ग के लोगों की सामाजिक और आर्थिक सुस्थिति से सुख नहीं कर सकता। अपने से अधिक विपन्न लोगों के लिए उसके हृदय को करपा उसे अपने ऊपर होनेवाले जन्माप और शर्यापार से बचा नहीं पाती। इसके वह अपने भ्रष्ट को उत्तारकर फेंक नहीं पाता। मैंने जो प्रश्न उठाया वह 'हड़प बनाम दात' का नहीं था, परन्तु कुछ वैसी प्रक्रिया शुरू करने का था जिससे विपन्नो भी विपन्नता की भावना दूर हो।

मैंने यह सुझाव दिया कि गाँव के लोग जब दात दे चुकें तब उन्हें यह तय करने का अधिकार रहे कि दूसरे जितनी जमीन देंगे। 'सूक्ष्म से सूक्ष्मतर' की ओर जाने का यह वास्तविक प्रारम्भ-विन्दु हो सकता है। यह इस बात से सहमत हुए। उन्होंने कहा कि लोग हैं जिन्हें की माँग गो माय शकैतिक है। यह सोने, "मैं तो यह कहता ही रहा हूँ कि सभी बाँचें, अल्पिय बात तक, मैं ही बचो नहीं। मेरे बाद आनेवाले लोगों के लिए भी बहने और करने लिए कुछ होना चाहिए। मैं जो बीमवा हिस्सा माँग रहा हूँ वह प्राप्य माय है। ग्रामस्वराज्य-सभा में बैठकर दार्मीगो को यह तय करने का अधिकार होगा कि गाँव का कौन कौन किस जितनी जमीन देगा।"

यह इस बात से भी सहमत हुए कि गरीब लोग जब शसस्वराज्य-सभा में बराबर की शक्ति से भाग लेते लगे तो उनके मन से बेबनी की भावना पटने लगेगी और अउतः समाज ही जायगी। उन्होंने यह भी कहा कि यह बात टोक है कि गाँव के गरीब ग्रामगश में अर्थों के हावी हो जाने के भय से अथनीत है। आपस का विश्वास और प्रेम जब अविश्वस्त और भय को दूर कर देगा, तब ग्रामसभा की शक्ति बढ़ेगी।

मैंने यह बताया कि ग्रामदात धान्यों में बीसवें हिस्से को लीक बना देने का सुझाव है। गाँववाले दात में लिगी जमीन दें, यह तय करने का अधिकार ग्रामसभा का है, यह बात यदि स्पष्ट कर दी जाय तो अग्रोपतन में बल आयेगा। मैंने यह भी सुझाव कि व्यापक के रोते और सहयोग की आवश्यकता है, इसमें शक नहीं, तभीय जब तक भाय और अविश्वस्त का पर्दा दूर नहीं हटता, तब तक यह आ नहीं सकता। इसे जिस तरह दूर हटाया जा सकता है उस सम्बन्ध में अभी तक हम लोगों के सामने कोई ठाक विन नहीं उभरा है।

यह मेरे सुझाव के पहले हिस्से से सहमत हुए पर साथ ही इस बात पर उन्होंने जोर दिया कि सम्मिलित स्थिति को इस बारे में अपनी राय व्यक्त करने का अधिकार होने चाहिए।

एत नयन के दूसरे हिस्से के सम्बन्ध में उन्होंने कहा कि भय और अविश्वस्त कोई नयी बात नहीं है। कोई आउ-दल-तो लो से यह पता आ रहा है। भय के विश्रायन के विचार को आधार मान कर वर्षों का निर्माण हुआ था। इतिहास के किसी क्षण में सङ्घी-मती जातिपथा ने उठता स्थान से लिया। एत समय आने देश में अग्रविपन्न जातिपथ और उरजाविपन्न हैं। गिब्यों को दबा कर रगने को प्रथा भी उसी तरह दुस्त है। एत एर बायों को बदलना है। यह एर बाय भागान नहीं है।

इस बातचीत से जो एफ वगुड पट्टन का मुद्दा निकला, वह यह कि ग्रामदाती गाँव में किस आदमी को जितनी जमीन दात में देने के लिए कहा जाए, यह अधिकार ग्रामसभा को हो। मेरा सुझाव है कि एत आधार को स्वीकार कर लेने से अग्रोपतन अधिक सबबुत होगा। सर्व विषा शप की उपाय विचार करना चाहिए।

(सूत्र प्रयोग से)
अनुवादक—हेनराय सिंह

आज की रही तालीम को आचार्यकुल ही बदल सकेगा

आज रही से रही तालीम की जा रही है। अगर नहीं यह जाहिर किया जाय कि सबसे रही तालीम का कोई नमूना पेश करो, ऐसा जो नमूना पेश करने का उद्योग महावीर चक्र देंगे, अगर ऐसा नहीं जाहिर किया जायगा, तो मेरा खयाल है कि यह भी खीन है सरकार की, उनी की महावीर चक्र मिलेगा। हमने बहुत विद्यालय बनाया चाहे तो बना नहीं सकेगे; पुराने पतले की बन चुकी है एक पटा, और वही जारी है।

जब स्वतन्त्रता प्राप्त हुई, उन दिनों में देश में काम करता था। मुझे बताया गया कि आज तो आठवाँ मिन पती है और अठारवाँ भाग्य बढ़ाई सर्वा में रहता है। मैंने कहा ठीक है। सर्वा में मैं गया और लोगों से पूछा, "आज तो पुराना सामान्य का जो अर्थ बनता था, वह क्या है?" लोग "नहीं खीनगा। आज साधा बदल गया है।" तो मैंने कहा कि, "आज अगर साधा बदल गया है, तो तालीम भी आज ही बदलनी चाहिए। पुरानी तालीम अगर जारी है, तो मसला चाहिए कि पुराना सब की सब गढ़ा है। नाम भले नया रख है, लेकिन पुराना है। तालीम पुरानी नहीं होनी चाहिए, नयी तालीम होनी चाहिए। जैसे हाया नया, जैसे तालीम नयी। और नयी तालीम की एक योजना बाबू ने पेश की थी, पर माल नोतिव कि यह योजना सबसे पसन्द नहीं आती तो मैं क्या करूँगा? सरकार प्रोत्ति के बाद मैं जाहिर करूँगा कि मैं नहीं सब विद्वानों की सहाय्ये होंगी और मैं नहीं सबों के लोग निर्णय करने सिद्धा का और जो निर्णय होगा, वदनुसार किया खानी जायेगी। सब एक आचार्य बन रहेगी, और सब

विद्यार्थियों को गुलना की जा रही है कि एक संतो में जाकर काम करो, गुलना गाओ, स्वराज्य मिला है, बाँटो जिन ही खुलो में? खुलू ६ महीने का है। गुलना मैं करना और मैं महीने के बाद जो योजना सब लोग पेश करने, तदनुसार तालीम चलती है।"

परन्तु उन्ना हुआ। वही रही तालीम ही जारी रही। और उस पर दो-दो कर्मियों बैठते गये और एक-एक कर्मियों की रिपोर्ट पेश खान है छात्र-आठ की पत्नी से काम नहीं होगी। ये बड़ी-बड़ी रिपोर्टें हो गयी और सब-की-सब वेप्री ही पढ़ी रही। और यहाँ तक कि हवारी प्रधान मंत्री इन्दिराजी बोली कि स्वराज्य के बाद हमने कई पलनियों की हैं, उनमें एक गलती यह है कि पुरानी तालीम ही खानी गयी। वही का वही पुराना हाँवा बन रहा। अब मवान यह है कि जब इन्दिराजी भी जियायत करती हैं इस तालीम की, तो अस्तित्व यह तालीम है बिमके हाथ में? तो खीनने है कि वह पुस्तकों का खेन है। वह करते हैं, प्राणा का काम है। अब प्रान्तराला नहना है कि अगर वे धारण मिले, हेनू से, तदनुसार करना खकटा रहना। वेदनाया नहना है प्राणा का काम है। तो यह पुस्तकों का खेन था, टालने रहे, एयर से उपर और धाज सब कुछ भी पढ़े हुआ नहीं। जो तालीम पुराने जमाने में चलती थी, जिनसे उन करने बाबा ने तालीम लेना छोड़ दिया, यहाँ तालीम आज भी चल रही है।

आज की तालीम में गुलसीदाग की समापन पढ़ाई नहीं जायेगी। क्यों? क्योंकि यह 'सेक्डर स्टेट' है, इस वाले समापन नहीं चाहिए। परन्तु सब क्या करें? समापन की एक साहित्य की किताब है, इस वाले एक कीड़ा था अब,

दिलको 'पीठ' कहते हैं खेनो में, तमूने के और पर खेनो—गुलसीदाग का, सुरदाग का! समापन पढ़ी नहीं जा सकती, बाँटित सब नहीं खचती, गुलार होंगी नहीं। महाराष्ट्र में आनेखरी गिहानी पढ़नी है आचार्य से एम० ए० के समापन में, साहित्य होने के नाते। और ये कथकल पुराने जो खल हो गये, उनमें कुछ साहित्यिक भी हो गये। सब क्या किया जाय? साहित्य के पतले उनकी विनाशो को छोड़ा खना ही पढ़ता है। विन्तु जहाँ तक हो सके, साहित्यिक गद्य ही मने, उरली खपनी जो गद्य है वह न सके। यह जो नीति है खपनी, क्या नीति है वह?—सब धर्म के लिए समान 'अभाव', सब धर्म खपन खपान; धार्मीकी का गुन था सब धर्म खपान, लेकिन यह सब धर्म समान खपान की तालीम चलती है; परिणाम तो उलगा यह है कि विद्यार्थियों को साध्यात्मिक पढ़ना पंदा नहीं होगी। यह हावल खान की तालीम की है।

एक वाले यह खारी तालीम बदलना यह हमारे खीन में आता है। इतना सारा प्रचलन माने, यह आचार्यगुन कर खेना क्या? तो मेरा खयाल है कि यही कर खेनो। और ये खपर नहीं कर खपन तो गुलना कोई कर खनेखाना नहीं है। इतना मसला मेना चाहिए कि यह खीन वेवल खानके प्रभे है। अगर वे साहित्यिक भी गढ़े हैं और शिक्षक भी पढ़े हैं, और खेनो प्रचार की खकित भावी दुनिया बना खानी है। मैंने जाहिर किया था कि इस दुनिया में दो चीजें खेनगी—एक तो विज्ञान, जिनसे रोच खीन बदलेगा। दूसरा खपानम। और खीनरा एन खेनो की खीनखाना एक साहित्यिक, दूसरा खपानम। ये खेनो विज्ञान और खपानम की जोड़ने का काम करेंगे। यह जोड़ने का काम करनेखाने का है। इसलिए आरका खपियत उल्लखल है, और खानके कथे पर जो धार है, यह दूसरा कोई उठा नहीं खकता। और खपन में 'कुल की भावना' रही, एवता भी भावना

सर्वोदय डाइजेस्ट

सर्व सेवा संघ

अंक १, अक्टूबर ७१

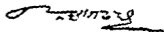
इस डाइजेस्ट के विषय में

सर्वोदय आन्दोलन से सहायुभूति रखनेवालों तथा मित्रों को मगया देश के विभिन्न भागों में बहुत ही ज़ोर वह दिनोदिन बढ़ रही है। पर दुर्भाग्य यह है कि इस आन्दोलन की प्रगति की समुचित जानकारी के अभाव में, सामान्य तौर पर उनकी यह धारणा बनी है कि सर्वोदयवालों द्वारा कुछ हो नहीं रहा है। दूसरी ओर, वस्तु-स्थिति यह है कि आजादी ईमानों के बाद देश में समस्त-कार्यकर्ताओं का कोई दूसरा समूह या मण्डल ऐसा नहीं है जो पूरे देश के लाखों गाँवों—गाँवों पाँच लाख में करीब होने दो लाख गाँवों—के करीब-करीब हर घर में एक नयी आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था का आगम और जगमग बढ़ाने वाला संदेश और उसे प्राप्त करने की युक्ति लेकर पहुँचा हो।

गत वर्ष विनोबाजी की ७५ वीं वर्षगांठ के अवसर पर प्राम्बन्धान्य-कोष-संग्रह के सिलसिले में हम लोगों का प्थान आन्दोलन की हम कमी की ओर ध्यान तौर से गया। हम लोगों में मेरे अनेक को यह देखकर बहुत प्रसन्नता हुई थी कि लोगों में, बुद्धिजीवियों में भी, विनोबाजी एवं सर्वोदय कार्यकर्ताओं द्वारा गत कुछ वर्षों में शिथिल गये काम के लिए गहरी और व्यापक प्रशंसा है। इन मित्रों की आन्दोलन की गतिविधि की प्रति निरतिशय

ज्ञानकारी मिलती रहे, तो उनकी यह भावना एक प्रशंसा प्रमाणः सहायुभूति, समर्थन और सहायता में बदल सकती है।

इसलिए सर्व सेवा संघ ने यह निश्चय किया है कि सर्वोदय-आन्दोलन की गतिविधियों का एक सहायक विवरण (डाइजेस्ट) मास में कम-से-कम तीन बार प्रकाशित किया जाय। हम लोगों की यह योजना है कि इस आन्दोलन में लगे हुएारे साथी विभिन्न शहरी में युवकों, शिक्षकों, व्यापारियों, राजनीतिकों, महिलाओं आदि मित्रों के हाथ में यह विवरण स्वयं जाकर दें। हम आशा करते हैं कि इस तरह के व्यक्तिगत सम्पर्क से हम लोगों को इस आन्दोलन को और अधिक विस्तृत पृष्ठभूमि में आँकने का मौका मिलेगा। इन मित्रों को भी हमसे आन्दोलन की अधिक स्पष्ट जानकारी हो सकेगी। आन्दोलन में लगे और आन्दोलन के बाहर के उन साथियों के साथ, जो एक नयी सामाजिक रचना में दिव्यचस्ती रखाते हैं, जानकारी के आदान-प्रदान का, बातचीत का, यह पात्र प्रारम्भ है। अतः हमारा विश्वास है कि ऐसा करने से हमारी नयी तरफ से विचार-विनिमय करने में समर्थ हो सकेंगे।



सर्वोदय का दृष्टिकोण

[विनोबा के प्रवचनों से संकलित]

ग्रामदान क्या है ?

ग्रामदान यानी सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् की प्रथी । सत्य वह जिसकी हमें आज अत्यन्त आवश्यकता है । सत्य यानी परिस्थिति की वास्तविकता, जिसकी हम अवहेलना नहीं कर सकते । भारत में द्रिद्रता मरने बड़ा सत्य है । ग्रामदान इसके सम्पूर्णतः निराकरण के लिए है ।

दूसरा, ग्रामदान प्रेम से प्रेरित करके त्याग करने का आह्वान करता है । साम्यवाद के साथ ही सिर काटना जुड़ा हुआ है । ग्रामदान 'शिवम्' है, क्योंकि उसके द्वारा खुश-हाली और कल्याण होता है ।

तीसरा, ग्रामदान के रास्ते पर चलने से गाँव का एक सुन्दर स्वरूप बनता है । सबके पाम खेती करने के लिए भूमि होगी, गाँव साफ-सुथरा होगा, पूरा गाँव समुदाय एक सुगठित परिवार जैसा होगा । यह सुन्दरम् है । इसलिए थोड़े में ग्रामदान सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् है !

केवल ग्राम-स्वामित्व और भूमिहीनों को भूमि का मिलना ही ग्रामदान नहीं है, बल्कि ग्रामदान का अर्थ और अधिक व्यापक है । ग्रामदान गाँव के हर घर से असत्य को मिटाने, मनुष्य और मनुष्य के बीच स्नेहभाव पैदा करने, गाँव की हर तरह की गंदगी दूर करने, और एक सुन्दर जीवन विकसित करने के लिए है । अगर गाँव का जीवन सब तरह से सुन्दर बनेगा, तो नगरी और महानगरी के लोग उसका अनुकरण करेंगे । आज ठीक इसके विपरीत है । गाँव के लोग शहर के लोगों की नकल करते हैं ।

साम्यवाद और ग्रामदान

साम्यवाद में पहले राज्य रास्ता प्राप्त करेगा, जोर तब श्रान्ति आयेगी, लेकिन साम्यवादी यह नहीं कह सकते कि कब राज्यसत्ता जनता को सौंपी जायगी । इसका मतलब कि वे स्वप्नलोक में रह रहे हैं । लेकिन हम जो गाँवों में कर रहे हैं, वह अपेक्षाकृत अधिक व्यावहारिक है ।

सर्वोदय मासिक

बंगलादेश

सम्पूर्ण यूरोप 'क्रिश्चियन' है लेकिन 'क्रिश्चियनिटी' उनको एक राष्ट्र में सघटित नहीं कर सकी है । मजहब अब 'आउट-डेटेड' हो चुका है । भूख का सबाल प्रमुख है । आज भूखा कौन है ? नि.सन्धेह बंगलादेश । और भूखों का कोई धर्म नहीं होता ।

पश्चिम पाकिस्तान द्वारा पूर्व बंगाल में लोगों का विधिवत शोषण और दमन होता रहा है । पूर्व बंगाल में अधिक लोग रहते हैं लेकिन पाकिस्तान की शासकीय सेवाओं और सेनाओं में उनको उचित स्थान नहीं दिया गया । इनमें पश्चिम पाकिस्तान के ही लोग बहुत अधिक संख्या में जमे रहे हैं । विकास का अधिकतम फायदा पश्चिमी पाकिस्तान ने उठाया है । पूर्व बंगाल दरिद्र बना रहा है, और आज भी इस उप-महादीप में वहाँ सबसे अधिक गरीब हैं । पहली बार हुए आम चुनाव में मुजिब की अवामी लीग को ६८ प्रतिशत मत प्राप्त हुए और पाकिस्तान की 'नेशनल असेम्बली' में भी उन्हें स्पष्ट बहुमत प्राप्त हुआ । लेकिन उन्हें धोखा दिया गया और उनको लोकतांत्रिक शासन स्थापित नहीं करने दिया गया ।

जेलखानेकी मानसिकता

आज सामान्य मनुष्य की स्थिति आश्चर्यजनक है । जब वह किसी के मुकामों के बारे में सुनता है, तो झट उस पर विश्वास बर लेता है, लेकिन जब उसे किसी के मुकामों की जानकारी मिलती है, तो वह सबूत चाहता है । बच्चाई के लिए सबूत चाहिए, बुराई के लिए नहीं । इसे में जेलखाने की मानसिकता कहता हूँ ।

हर मनुष्य मूलतः अच्छा है

मूलतः हर मनुष्य अच्छा है, ईमानदार है, और अगर कोई व्यक्ति बदनाम है, लेकिन किसी अच्छे काम में लगता है, तो भी उसका स्वागत करना चाहिए । •

कुछ प्रमुख घटनाएँ

ग्रामस्वराज्य-कोष समर्पण

गत वर्ष २ अक्टूबर '७० को ग्रामस्वराज्य-कोष समर्पण के अवसर पर सेवाग्राम की बैठक में सभी राज्यों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। आचार्य विनोबा भावे ने उसमें प्रवचन किया। कोष के महत्व के सम्बन्ध में बोलते हुए उन्होंने पुराने समय में मूल व्यक्तियों की यादगार में इकट्ठा किये गये कुछ वीरों के नाम गिनाये, और कहा कि यह कोष एक जीवित ब्यापक के नाम से इकट्ठा किया गया है। ग्रामस्वराज्य के लक्ष्य को लोगों का समर्पण प्राप्त है, इसका यहाँ सबसे बड़ा सबूत है। दूसरे कोषों से यह कोष भिन्न है। इसका विनियोग राज्य स्तर और जिला स्तर पर होगा। यह तीन वर्ष में समाप्त कर दिया जायगा। उन्होंने यह राय दी कि सर्वोदय-आन्दोलन की गतिविधि तेज करने के लिए लोगों के समर्पण से ग्रामस्वराज्यकोष-ग्रहण हमें प्राप्त किया जाय।

ध्यापक आवेष्टन

इस बैठक के बाद सर्वे सेवा मध्य का अधिबेशन हुआ। उसमें इस बात की खर्चा हुई कि गाँवों के पुन-निर्माण में अधिक लोगों की लगना चाहिए—उन लोगों को भी लगना चाहिए जिन्होंने ग्रामस्वराज्य-कोष में दान दिया है। लोकनैतिक के प्रतिज्ञापन को इस दृष्टि से सुशोध्य करने का निश्चय किया गया कि जिन लोगों ने ग्रामस्वराज्य के विचार को समर्थन दिया है, उन्हें हम आन्दोलन में भाग लेने का अधिक अवसर मिल सके।

तरुण-शान्तिसेना-शिविर

२३ और २४ अक्टूबर '७० को अखिल भारत तरुण-शान्तिसेना का शिविर और सम्मेलन बादा धर्माधिकारी और आचार्य राममूर्तिजी के मार्गदर्शन में इन्दौर में हुआ। शिविर और सम्मेलन की अध्यक्षता मन्दाकिनी दवे

नाम की एक लड़की ने की। उसने अपने भाषण के क्रम में कहा कि "हम लोग यहाँ इसलिए एकत्रित हुए हैं कि हमारे सामने, समाज के सामने, धाज जो अनेक ज्वलन्त समस्याएँ हैं उन्हें हम अहिंसक तरीके के सूत्रज्ञ बनने हैं, इस दान में हम अपना पक्का विश्वास जाहिर कर सकें।"

कलकत्ता में शान्ति-कूच : शान्ति का आक्रमण

चारी तरफ हिंसा और आतंक का वातावरण देख लोगों का धारण-विश्वास पुन जगाने के लिए पश्चिमी बंगाल के सर्वोदय कार्यकर्ताओं ने एक प्रभावकारी शान्ति आन्दोलन चलाया। गत २४ दिसम्बर '७० को हुगली जिले के त्रिवेणी नामक स्थान से उन्होंने एक शान्ति-यात्रा निकाली। इसमें एक दर्जन से अधिक शान्ति-सैनिक सम्मिलित हुए थे। हुगली और हावड़ा के उद्योग-क्षेत्रों से गुजरते हुए इस दल में कलकत्ते की यात्रा की। लोगों ने यात्रियों का स्वागत किया और उत्साह बढ़ाया। विभिन्न स्थानों पर विभिन्न स्तरो के लोग यात्रियों में साथ भी रहे। इस तरह शान्ति के आक्रमण का शोभापूर्ण हुआ।

इसके बाद पश्चिम बंगाल सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष श्री बाबूचन्द्र भण्डारी ने कलकत्ते में पचास दिनों की यात्रा की। श्री प्रफुल्लचन्द्र सेन आदि राज्य के प्रमुख लोगों ने उनका साथ दिया। उन लोगों ने जन मुहूर्तों में पड़ाव रये जिन्हें उपवादियों का गढ़ समझा जाता है। उस क्रम में उन मुहूर्तों के निवासियों की पद-यात्रियों के साथ बहुत लम्बी बहर्षे भी होती थी। नक्सलवादियों ने भी बहर्षे में साथ लिया। दोनों शान्ति-यात्रियों में आतंकवादी लोगों के मन में विचित्रता जगा। उपवादियों के भी ध्यान में यह आया कि शान्ति की जो उनकी तमन्ना है, वह गलत दिया में मुड़ी हुई है।

गत १६ और २० जनवरी '७१ को वाराणसी में ग्रामदान विकास समिति (सोसाइटी फार डेवलपिंग ग्रामदान) के तत्वावधान में ग्रामदान-विकास पर एक गोष्ठी हुई। श्री जयप्रकाश नारायण ने इसकी अध्यक्षता की। देश के विभिन्न भागों से आये प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इन प्रतिनिधियों में संस्थाओं के एवं ग्रामनिर्माण क्षेत्र में काम कर रहे अन्य कार्यकर्ता भी थे।

एक सुझाव यह सामने आया कि ग्रामदान विकास कार्य के लिए कार्यकर्ताओं का एक दल तैयार किया जाय। इंजीनियरिंग और टेक्नीकल इंस्टीट्यूट के नव-जवान, जिन्हें अब तक कहीं काम नहीं मिला है, उन्हें इस काम में लगाया जाय। इसके लिए एक योजना बनाने का निश्चय किया गया।

सर्वोदय के लिए विस्तृत आधार

गत २१, २२ और २३ जनवरी '७१ को वाराणसी में सर्व सेवा संघ की प्रवृत्त-समिति की बैठक में यह निर्णय लिया गया कि विभिन्न कामों में लगे सर्वोदय विचार एवं आन्दोलन से सहानुभूति रखनेवाले मित्रों से व्यक्तिगत सम्पर्क बनाने रखा जाय।

जगन्नाथजी का उपवास

सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री जगन्नाथजी ने गत ३० जनवरी से भूमि-समस्या के समाधान के लिए उपवास किया था। पूर्वी तंजावर जिले में ६० प्रतिशत हरिजन भूमिहीन हैं। उनके पास अपने रहने का घर बनाने साम्प्रदायिक भी जमीन नहीं है। लगातार की जा रही हरिजननों की इस उपेक्षा से वे काफी दुःखी थे। हरिजनों को वास की जमीन वहाँ के जमींदार दें, इसके लिए यह उपवास उनसे प्रार्थना-स्वरूप किया गया था।

बलीबलम गाँव में मन्दिर की जमीन से हरिजनों को गैरकानूनी ढंग से बेदखल किया गया था। उसके लिए सत्याग्रह का अन्तिम चरण उपवास था। हरिजनों

सर्वोदय सम्मेलन, नासिक

इस वर्ष अखिल भारत सर्वोदय सम्मेलन गत ८, ९ और १० मई '७१ को नासिक में हुआ। श्री सिद्धराज ढड्डा ने अध्यक्षता की। श्री जयप्रकाश नारायण ने सम्मेलन के उद्घाटन-समारोह में भाग लिया। देश के विभिन्न भागों से सम्मेलन में आये हुए प्रतिनिधियों ने पूरे आन्दोलन का सिंहावलोकन किया और साथ बैठकर व्यात्मचिन्तन किया। आन्दोलन की धोभी गति पर नवजवान अघोर दिखाई पड़े और देश के सामने खड़ी समस्याओं के समाधान के लिए उन्होंने अधिक उग्र कदम उठाये जाने की माँग की। सम्मेलन में बोले हुए श्री जयप्रकाश नारायण ने स्वतंत्रता-संग्राम में जूझ रहे बंगलादेश के लोगों को हर तरह से मदद करने की अपील की। सत्सार-व्यापी क्रान्तियों का इतिहास बताते हुए उन्होंने इस आन्दोलन की सही पृष्ठभूमि प्रस्तुत की। कुछ प्रतिनिधियों ने विरोध-प्रदर्शनों द्वारा तात्कालिक लक्ष्य प्राप्त करने के जो सुझाव दिये, उनमें वे सहमत नहीं हुए। उन्होंने कहा, "हमलोग समाज में व्यक्तियों के आपसी सम्बन्ध में परिवर्तन लाने को चेष्टा कर रहे हैं। उसकी सफलता को राजनैतिक मापदण्ड से नहीं नापा जा सकता।"

जयप्रकाश नारायण का जागतिक भ्रमण

बंगलादेश के लिए सत्सार के प्रमुख देशों की एक यात्रा जे० पी० ने की। दिल्ली में १५ मई को निकलकर वे कई देशों की राजधानियों में गये और वहाँ बंगलादेश में हो रहे नरसंहार के विरुद्ध विरय-निवेदक जाणूट करने का प्रयत्न किया। भ्रमण बल में वह सरकार चलाने-वाले जन-प्रतिनिधियों एवं जनमत निर्माण करनेवाले नेताओं से मिले। वे आम-भनाओं में एवं पत्र-प्रतिनिधियों की गोष्ठियों में बोले। उन्होंने रेडियो और टेलीविजन के माध्यमों में भी अपने विचार प्रकट किये। धानीत दिनों की यात्रा कर वे वापस भारत लौटे।

कुछ महत्वपूर्ण निर्णय

शक्ति-केन्द्र

३, ४, ५ अक्टूबर '७० को मेवाड़ग्राम में सर्व मेवाड़ सच के वार्षिक अधिवेशन में यह निर्णय लिया गया कि पूरे देश में कुछ शक्ति-केन्द्र स्थापित किये जायें। प्रारम्भ में बिहार, महाराष्ट्र, मैसूर और उत्तर-प्रदेश में ऐसे ५१ केन्द्र स्थापित करने का निर्णय लिया गया।

विस्तृत आधार

बाराणसी में मग २१, २२ और २३ जनवरी को बैठक में सर्व सेवा सच की प्रबन्ध समिति ने यह निर्णय किया कि सर्वोदय आन्दोलन में लगने का आधार अधिक विस्तृत बनाने के लिए लोक-सेवाक प्रतिज्ञा-पत्र की शर्तें ऐसी बनायी जायें कि अधिक-से अधिक लोगों को लोक-सेवाक बनने में सुविधा हों। यह भी निर्णय लिया गया कि ग्रामस्वराज्य-कोष संग्रह में जिन इत्रारों याताओं ने सहयोग दिया है, कोष के विनियोग के सम्बन्ध में उनको भी जानकारी दी जाय।

नगर में सर्वोदय कार्य

प्रबन्ध समिति ने एक प्रस्ताव द्वारा यह तय किया कि शहरी से ग्रामस्वराज्य कोष के लिए जो चन्दा मिला है, उसका अर्थ वही रखे किया जाय। प्रबन्ध समिति को आम राय यह थी कि वह अंश शहरी में शान्ति-स्थापना के काम में, उद्योग-पन्थों बनानेवालों के मजदूरों और मालिकों के सम्बन्ध सुधारने में एवं नागरिक शान्ति स्थापित करने में खर्च किया जाय।

कर्मचारी नेत्र

एक प्रस्ताव में प्रबन्ध समिति ने कर्मचारियों में हुई उन घटनाओं पर गहरी चिन्ता व्यक्त की, जिनमें तीन कर्मचारी नेत्राश्रु के कर्मचारियों और जनमत संग्रह मोर्चे पर प्रतिबन्ध लगाया गया तथा बहुत से लोगों को गिरफ्तार किया गया। नगर के चुनाव के चन्द गजाह पट्टे उठाये गये सरकार के इन बदमाशों पर खेद प्रकट किया गया। सरकार के इस नाम से गणतंत्र में चुनाव के इस तरीके पर होना और अर्थ व्यक्त किया जाने लगा है।

मतदाना शिक्षण

प्रबन्ध समिति ने तय किया कि संगठन के महासचिव चुनाव के पूर्व करण साठ घण्टे हुए संगठन चुनाव-सेना में

पुरजोर मतदाना शिक्षण का कार्यक्रम चलाया जाय। और इस बात पर रहे कि हरे मतदाता को अपना मत स्वतन्त्रतापूर्वक प्रकट करने का अवसर मिले और वोट प्राप्त करने के लिए कोई भी किसी गन्दे तरीके का इस्तेमाल न करे। समिति ने तय किया कि मतदाना-शिक्षण कार्यक्रम का एक अर्थ यह हो कि मतदाताओं के लिए एक चुनाव घोषणा-पत्र प्रसारित किया जाय, जिसमें विभिन्न पहलुओं पर सर्वोदय-आन्दोलन का रक्ष किया है, यह बताया जाय।

समय की दिव्यता नहीं

वैसिक सम्मेलन के ठीक पहले सर्व सेवा सच की एक बैठक में एक प्रस्ताव द्वारा यह तय किया गया:

ग्रामदान श्रोत के लिए हस्ताक्षर-अभियान वर्षों-पूर्वक चलता रहे; हस्ताक्षर प्राप्त करने और ग्रामदान पुष्टि का कार्यक्रम चलाने के तरीके को इससे स्पष्ट किया गया। इसमें यह कहा गया कि ग्रामदान का सकल और पुष्टि एक ही कार्य के दो पहलू हैं, इसलिए दोनों कार्यों के बीच अधिक समय की रिक्तता नहीं रहनी चाहिए, एक के बाद दूसरा काम लगातार किया जाय।

कुछ तथ्यपरक आंकड़े (३१ अगस्त '७१ तक)			
राज्य	ग्रामदान	प्रबन्धदान	जिलादान
बिहार	६०,०६५	५७३	१५
तमिलनाडु	३०,६०५	३१४	११
उत्तर-प्रदेश	३२,६६३	१८६	८
उड़ीसा	१२,६३६	७०	२
मध्य प्रदेश	१०,८८६	४०	७
बिहार प्रदेश	४,२३१	१५	१
महाराष्ट्र	४,६२५	१७	१
मैसूर	१,६२४	१४	१
राजस्थान	२,०६७	२	१
पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश	५,०११	७	—
असम, मेघालय	१,६८२	१	—
गुजरात	१,११६	३	—
पश्चिम बंगाल	७७८	—	—
केरल	४१८	—	—
दिन्दी	७४	—	—
जम्मु-काश्मीर	१	—	—
कुल योग	१,६६,०२८	१,२४२	४७

एक अध्ययन

अक्टूबर १९६६ के अन्तिम सप्ताह में ज० भा० सर्वोदय समाज सम्मेलन राजगीर में बिहारदान की घोषणा हुई। बिहार राज्य देश का प्रथम ग्रामदानो राज्य हो गया। फिर बिहार में ही ग्रामस्वराज्य-निर्माण का यानी ग्रामीण जीवन व्यवस्था और अर्थ-व्यवस्था के पुनर्निर्माण का काम शुरू किया गया। इसे ग्रामदान-पुष्टि कहा जाता है। विनोबाजी का आग्रह यह रहा है कि ग्रामदान-पत्र पर हस्ताक्षर कर ग्रामीणों ने जो घोषणा की, उसको कार्यरूप में परिणत किया जाना चाहिए। अपने आग्रह, बर्षा चोटों के पहले बिहार छोड़ते समय उन्होंने कार्यकर्ताओं से निवेदन किया कि 'बिहारदान की पुष्टि एक वर्ष में होनी चाहिए।'

आन्दोलन में उत्तार-चढ़ाव होते रहते हैं। बिहार-दान के समय बिहार में उत्साह का जो ज्वार था, वह वाद में भाटे में परिवर्तित हो गया। कई जगह ग्रामदान-पुष्टि के छिट-पुट प्रयास किये गये। गया जिले के कौआकोल प्रखण्ड में और मुंगेर जिले के साझा प्रखण्ड में खास चेन्टाएँ हुईं। परन्तु ठोस काम तो जून १९७० में मुजफ्फरपुर जिले के मुसहरी प्रखण्ड में शुरू हुआ। बहुत थक जाने के बाद जयप्रकाशजी हिमालय में विश्राम करने गये थे। मुसहरी के गाँवों में कल का कई घटनाएँ घटी थीं। दो सर्वोदय कार्यकर्ताओं को भी उनकी हत्या की धमकी दी गयी। जयप्रकाशजी को यह मालूम हुआ और वे विश्राम के लिए हिमालय में नहीं रुके, सीधे मुसहरी आये, जहाँ उन्होंने घोषणा की कि समाज के जीवन से हिंसा के कारणों को मिटाने के काम में वे प्राणपण से जुट रहे हैं। इसके लिए उन्होंने ग्रामदान-पुष्टि से काम की शुरुआत की, और इस काम को एक तीव्र गति प्राप्त हुई।

श्री जयप्रकाश नारायण ने अपनी गतिविधि मुसहरी तक ही सीमित रखी। यह मुजफ्फरपुर जिले का एक प्रखण्ड है। कार्यकर्ताओं ने यह महसूस किया कि मुसहरी से प्रेरणा लेकर वे बिहार के एक क्षेत्र में लगे। बिहार को विनोबाजी काफी अच्छी तरह जानते हैं। उन्होंने यह सुझाव दिया कि इस आन्दोलन का सबसे अधिक शक्तिशाली व्यक्ति राज्य के सबसे कठिन जिले

में लगे हैं, इसलिए अन्य कार्यकर्ताओं को पुष्टि के लिए सबसे पहले जिले को चुनना चाहिए। वैसे जिला सहरसा है। इस सुझाव को तत्काल स्वीकार कर लिया गया और इस तरह सहरसा ग्रामदान-पुष्टि का राष्ट्रीय मोर्चा बन गया।

अखिल भारत स्तर से श्री कृष्णराज मेहता और सुधो निर्मला देशराष्ट्रे सहरसा में आयीं। पुष्टि की हवा बनाने के लिए उन लोगों ने विभिन्न राजनैतिक दलों के स्थानीय नेताओं, सरकारी कर्मचारियों, प्रखण्ड अधिकारियों, शिक्षकों एवं अन्य व्यक्तियों को इस काम में लगाने की चेष्टा की। उन लोगों ने उत्साहवर्धक अनुकूलता प्रकट की। सहरसा जिला पॉडिमो से बाढ़ और कोशी के कटाव में सताया हुआ है। यह मिथिला का एक अंग है। यहाँ के लोग तो मानो कुच्छ बन्ने जाने की बात ही जोह रहे थे। दिसम्बर '७० से यहाँ चहल-बहल शुरू हुई। बिहार ग्रामस्वराज्य समिति का प्रधान कार्यालय सहरसा लाया गया। यह कैम्प कार्यालय पूर जिले के चहल-बहल का केन्द्र बन गया।

पहले मरीना प्रखण्ड को हाथ में लिया गया। फिर महिषी, सुपौल और चौसा में हाथ लगाया गया। श्री महेंद्रनारायण सिंह के प्रगतिशील नेतृत्व में जिले के सर्वोदय कार्यकर्ता मरीना में भिड़ गये। राज्य के बाहर से आनेवाले कार्यकर्ता गृहिणा में लगे। बिहार छोड़ो ग्रामोद्योग सघ के कार्यकर्ताओं के एक दल ने सुपौल का जिम्मा लिया। बिहार ग्रामस्वराज्य समिति के मन्त्री श्री विद्यासागर के नेतृत्व में बिहार के कार्यकर्ताओं ने चौसा प्रखण्ड में अपनी शक्ति लगाने का निश्चय किया। इन प्रखण्डों में करीब २४० कार्यकर्ताओं ने काम प्रारंभ किया। कृष्णराजजी और निर्मलाजी की उपस्थिति ने लोगों को बराबर प्रेरणा मिलती रही है।

प्रारंभ से ही इस अभियान का लक्ष्य यह रहा कि अधिक-से-अधिक स्थानीय लोगों, खासकर क्षेत्र के जाग्रत लोगों, को इस काम में शामिल होने और इन अपनी जिम्मेदारी मानने के लिए, उनके अन्दर सामाजिक जिम्मेदारी को भावना जगायी जाय और उन्हें यह भाव करा दिया जाय कि उनकी मदद उनकी अपने अन्दर की शक्ति में ही सम्भव है। अभियान का लक्ष्य या लोकमान्य जाग्रत करना, इसलिए, जमीन घटाने के काम

को प्रथम चरण के रूप में नहीं लिया गया। जितने भी भौतिक बनावट और लोगों की मन स्थिति को देख यह चरण बहुत आवश्यक था।

यही कारण है कि प्रारंभ में जिले के २३ प्रखण्डों में से ४ प्रखण्डों में ग्रामसभा बनाकर सबसे पहले लोक-शक्ति सर्पटिव करने पर जोर दिया गया। स्वभावतः सबसे पहले ग्रामसभाएं बनायी गयीं। इसके पीछे दृष्टि यह रही कि ये ग्रामसभाएं तदर्थ भले हो हों, पर जब तक ग्रामदान की पुष्टि नहीं होती, ये काम करें। इसके साथ-साथ गांव के जवानों की शक्ति को गांव के निर्माण में लगाने की दृष्टि से ग्राम-शक्तिसेना बना ली जाती है, जिनमें नवजवानों के साथ मिलकर नवजवान भी काम कर सकें।

ग्रामदान के लिए पुष्टि के कागजात प्राप्त करने में और पुष्टि के लिए दाखिल करने के लिए इन कागजातों की खाना-पूति का काम पूरा करने में सर्वोद्यम-कार्यकर्ता ग्रामसभा के सदस्यों को मदद करते हैं। ग्रामदान की पुष्टि के लिए ये कागजात बहुत आवश्यक हैं। गांव की बोधा-बट्टा (२०वां भाग) जमीन निकालने में भी कार्यकर्ता मदद करते हैं। यह सब कर चुकने के बाद ग्रामस्वराज्य के आदर्श के अनुकूल गांव के काम को जिम्मेदारी ग्रामसभा पर आ जाती है।

एक दूसरा प्रमुख काम, जो इन साथियों ने हाथ में लिया, है कचहरो से मुकदमे वापस कराकर ग्रामसभा द्वारा उसको सुलझवाना। इसके लिए खुली अदालत होती है, जिसमें सब कोई भाग ले सकता है।

इनके साथ ही गांव की टाऊ में से ग्रामकोष के लिए भग्नेरा (५० वा भाग) निकाला जाने लगा है। नवदूरी करनेवाले भी अपनी कमाई का तीसवां हिस्सा ग्रामकोष में देते हैं। ग्रामकोष का उपयोग ग्रामीण स्वयं-सहायता के काम में करते हैं।

ग्रामसभा के पदाधिकारियों और नेताओं को ग्रामस्वराज्य का विचार और कार्य-पद्धति समझाने के लिए अनेक निबिंदर लयाये गये और सम्मेलन किये गये। गांव के निर्माण का दृष्टिकोण को प्रतिक्षण देने के लिए शक्तिसेना के निबिंदर भी लिये गये। इन काम में सह-मन्वित्त व्यक्तियों आदि के साथ नियमित सम्पर्क रखा जाने लगा।

जून '७१ तक में मरौना प्रखण्ड में पुष्टि का काम पूरा हो गया। प्रखण्ड के ६८ गांवों में से ७४ गांवों में पुष्टि की गयी। प्रखण्ड के ६८ गांवों की ७५% में अधिक जनसंख्या एवं १% से अधिक भूमि ग्रामदान में शामिल हो गयी। भूमिहीनों में १८० एकड़ जमीन बांटी गयी। ६६ ग्रामसभाएं सक्रिय हैं। १७ में ग्रामकोष निकाला जाता है। एक हजार में अधिक व्यक्ति ग्राम-शक्तिसेना में शामिल हुए हैं, और २६ शिक्षक आचार्यकुल में।

मर्ची प्रखण्ड में भी काम को प्रगति प्रभावकारी एवं उल्लासजनक है। इस प्रखण्ड में मुख्यतः ग्रामदान रहते हैं। इसमें काम करनेवाले कार्यकर्ता मुख्यतः राज्य के बाहर के हैं। प्रखण्ड में ७६ रेवेन्यू गांव हैं। दोनो की सत्या कुल मिलाकर एक सौ से कुछ अधिक ही हैं। इनमें से ६४ गांवों का ग्रामदान हो चुका है। अधिक गांवों में काम-चलाऊ ग्रामसभाएं बना ली गयी हैं। और भी बनायी जा रही हैं। १४ गांवों में बाधा-बट्टा में प्राप्त जमीन भी बांटी गयी है। इस प्रखण्ड में एक दर्जन में अधिक शक्तिसेना-निबिंदर लयाये जा चुके हैं, और करीब ६०० वृद्ध-शक्तिमैत्रिक बन चुके हैं। ४४ शिक्षक आचार्यकुल के सदस्य हैं।

मुगील प्रखण्ड में खादी-क्षेत्र के अनुभवों कार्यकर्ता लगे हुए हैं। जून '७१ तक ७४ गांवों का ग्रामदान हो चुका है। २३ गांवों में ग्रामसभाएं बन चुकी हैं। भूमिहीनों में बोधा-बट्टा में प्राप्त ३० एकड़ जमीन बांटी जा चुकी है। ३०४ वृद्ध-शक्तिमैत्रिक बने हैं, और ५० शिक्षक आचार्यकुल के सदस्य।

बोसा प्रखण्ड में काम १६७१ की फरवरी से शुरू हुआ। प्रखण्ड की १६ पंचायतों में से ६ में पुष्टि-कार्य शुरू किया गया है। ११ गांवों में ग्रामसभाएं बनी हैं। ३ अन्य गांवों में कामचलाऊ ग्रामसभाएं बनायी गयी हैं। भूमिहीनों में बोधा-बट्टा में प्राप्त करीब ४० एकड़ जमीन बांटी गयी है। ४६ शिक्षक आचार्यकुल के तथा २०० नवजवान वृद्ध-शक्तिसेना के सदस्य बने हैं।

अभी कुछ दिनों पहले सिद्धेश्वर प्रखण्ड में काम शुरू किया गया है। काम का मिलसिला इन प्रखण्डों में भी वही है, जो अन्य प्रखण्डों में है।

—प्रभाय जोशी
सर्वोद्यम इतरादेश

आपकी रुचि की कुछ पुस्तकें

सर्व सेवा संघ, वाराणसी

अंग्रेजी

मूल्य

₹० १०

पीपुल्स ऐकशन, नयी दिल्ली

६—यू ऐण्ड एलेक्शन

(ए पीपुल्स ऐक्शन पैम्फलेट)

₹-००

७—जय वाराणा

₹-००

१—फ्रैगमेंट्स आफ ए विजन :

ए जर्नी थ्रू इंडिया'ज कन्ट्रीसाइड

लेखिका—एरिका लिण्डन

₹५-००

२—डे-टू-डे विषय गांधी—नेक्रोटरीज डायरी

—महादेव देसाई

पापुनर एडिशन

₹५-००

लाइब्रेरी एडिशन

₨०-००

३—इन्टीग्रल रिवोल्यूशन : ऐन अनेलिटिकल स्टडी

आफ गांधियन थाट

—इन्दु टिकेकर

सजिल्द १०-००

अजिल्द ६-००

हिन्दी

सस्ता माहित्य, नयी दिल्ली

८—विनोबा : व्यक्तित्व और विचार

₨०-००

सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी

हिन्दी

९—विनोबा और सर्वोदय क्रान्ति —बाका कालेकर

₨० ५-००

१०—गांधी : जैसा देखा समझा विनोबा ने

सम्पादकता : कानिलाल भाहू

₨० ५-००

११—आपने सामने (फेम-टू-डेस का हिन्दी सम्करण)

—जयप्रकाश नारायण

अजिल्द ₹० ०-५५

सजिल्द ₹० १-००

नवचेतना प्रकाशन, वाराणसी

४—फेम-टू-डेस

—जयप्रकाश नारायण

₹-००

आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

५—बी जेन्टल अनाकिस्ट्स (ए स्टडी आफ दो

सर्वोदय मूवमेन्ट)—प्रोफेसर आस्टरगाड ५-५० पौंड

१२—आंखो देखा हान

—ग्रामदानी गाँवो की बिकाम कथा

₨० १-५०

१३—पान्ति : प्रयोग और चिन्तन

—धीरेन्द्र मन्मदार

₨० ६-००



सर्व सेवा संघ द्वारा प्रकाशित

प्रधान कार्यालय गोपुरी, बरौ, महाराष्ट्र

क्षेत्र चुन लेने के बाद

(1) मित्र प्राप्ति करना : क्षेत्र में पहुँचकर सबसे पहिले हम अपने मुख्य मित्रों और सहयोगियों की (मित्रों उसी क्षेत्र के नहीं, बल्कि पूरे जिले के) एक छोटी बैठक बुला लें और पुष्टि के कार्यक्रम पर विचारपूर्वक चर्चा कर लें। अपना विनया सन्दर मिलेगा, विनये पत्रों का स्थानीय क्षेत्र पर प्रकाश हो सकेगा; कुछ समय बाद विनये सापी मिलेंगे, आसिक समय देनेवाले विनये मिलेंगे, आसिक बाणों पर चर्चा कर लेनी चाहिए। काम को आगे सभी बढ़ाना चाहिए पर बाहर के और स्थानीय कार्यकर्ताओं तथा सश्रम सहयोगियों की सहाय २२ से ३२ तक हो। यह सहाय एक प्रयत्न के लिए है। इसके बाद ही काम शुरू करना। केवल आसिक समय देनेवाले सहयोगियों से ही काम नहीं चलता। कम-से-कम ४-५ स्थानीय कार्यकर्ता होने ही चाहिए, सभी आसिक समय देनेवाले सहयोगियों के समय पर काम बिना का सकता है।

(२) संपर्क : जब मित्रों की एक छोटी गोष्ठी के पुष्टि के कार्यक्रम को मानना मिल जाय, और ऐसा मने कि स्थानीय सहयोग मिल सकता है तो हमें पोसा व्यवस्था संपर्क करना चाहिए। निम्नलिखित विविध लोगों से बिनार उनके सामने पुष्टि की योजना रखनी चाहिए और सहयोग का निवेदन करना चाहिए :

(क) जिले के सरकारी अधिकारी— जिला मजिस्ट्रेट, एम० पी०, जिला निधो-अन अधिकारी, पंचायत अधिकारी, शिक्षा अधिकारी, एम० पी०, एम० एन० ए०, जिला पुलिस के कन्स्टाबल, एक्साइज अधिकारी के साथ।

(ख) सर्व-उपरीजन के एम० पी० ओ०

(ग) संपन्न-वर्ग के लिए जिले वाले-बाजे अथवा के बी०बी०ओ०, तथा अन्य सब अधिकारी, स्कूलों और कालेजों के हेडमास्टर-प्रिंसिपल, उस क्षेत्र के एम०

एम० ए०; बी० बी० सी० के सदस्य, अन्य मुख्य सामाजिक, राजनैतिक कार्यकर्ता।

जो न मिले उनके घर एक छोड़ देना चाहिए। एक बात का ध्यान रहे कि कोई मुख्य कार्यज्ञ होने न पाये। सब लोगों में सबसे अधिक सहयोग की आशा विद्यार्थियों के मित्र-सहयोगियों तथा पी० बी० ओ० के रहनी है।

(३) शहरी गोष्ठी बनाना सफल बनाने पर पना चल जाना है कि विनये संग्रह अनुभव है, विनये सश्रम सहयोग करेंगे, और विनये पूरा, वा आसिक, समय देकर काम करेंगे; जिले भर के ऐसे लोगों की धनक-धनक सूची बना लेनी चाहिए। सूची बन जाय तो क्षेत्र (जिसमें काम करना हो) के मुख्य सहयोगी आसक्त से गोष्ठी का स्थान और समय तय करें। सम्पर्क क्षेत्र गोष्ठी के बीच कम-से-कम सघन योजना चाहिए।

अगर कोई मंत्रि एंजा हो जो गोष्ठी अपने वहाँ आसिक करे तो सबसे अच्छा। लेकिन यदि सब से दूरी दूर न हो कि लोगों को पहुँचने में बहुत अनुविधा हो। भाजन सब के लिए स्वाभाविक आधार आवश्यक है। प्रतिदिन मंत्रि के घर-घर में बैठकर खा सकते हैं। अगर क्षेत्र बनाना भी यही बन मन्थना हो उसकी अनुसूचना का क्या बर्ण है ?

अगर मंत्रि कोई ऐला न हो, और स्थानीय तोर पर सब की व्यवस्था हो गयी हो, तो गोष्ठी किसी विद्यार्थ्य में हो जा सकती है। प्रत्येक के क्षेत्रीय स्थान पर भी हो जा सकती है।

शहरीय तय हो जाने पर सबसे पाय व्यवस्था केन देना चाहिए। विनये लोगों से मित्र वा अपने बिनार आने का अनु-रोध करना चाहिए। गोष्ठी में विनये लोग आने हैं, उदर्जी विना बन्द नहीं बननी चाहिए। गोष्ठी एक ही दिन की हो। दोपहर के पहले दो-तीन परे की बैठक हो, और १०:३० के बीच भोजन करने के बाद वे छात्र छात्र, पाँच बजे तक दूसरी बैठक। इतना समय बसती है।

गोष्ठी में काम को पूरी चलाना और

योजना रख देनी चाहिए। सर्व का पीटा अनुदान भी बना देना चाहिए। कार्य-योजना और बजट पहिले से बनाकर रखना चाहिए ताकि बैठक में जल्दी-जल्दी कुछ बहने की बेवसी न हो।

गोष्ठी में उन क्षेत्र के जो सहयोगी हो उन्हें बताना चाहिए कि वे कार्यक्रम बिना तरह वहाँ से शुरू करना चाहते हैं।

दूसरी गोष्ठी में यह भी तय हो जाना चाहिए कि कार्यक्रम के प्रारम्भ में कार्य-बताओं का का प्रतिष्ठक-मित्रित होगा, वह वहाँ होगा, और मोटे तोर पर उनका सर्वं बना होगा।

आये हुए सञ्चाली में जो सब मन्त्रे उन्हें उम्मी अजह 'सर्वोद्यम-मित्र' (३ ६५०० कार्यक) बना लेना चाहिए।

चर्चा के बाद में उन प्रयत्न को 'प्रत्येक तत्पर शासक-राज्य समिति' बनानी चाहिए, जो उस क्षेत्र में पुष्टि का काम करेंगे। समिति बन जाने के बाद उस क्षेत्र में पुष्टि का जितना काम हो तब समिति के नाम से हो।

मन्थना के कार्यकर्ता समिति के सदस्य भले ही हूँ, पदाधिकारी न बनें, लेकिन मन में बराबर यह बात रखें कि काम पूरा उन्हें ही बनना है नाम दूसरे का होगा।

तबमें शासक-राज्य समिति के सदस्यों से निवेदन करना चाहिए कि वे ०० ३,६५० देकर 'सर्वोद्यम-मित्र' बन जायें, तथा (उनमें जो चुने गये क्षेत्र के हों) वे सबसे पहिले अपना कीका-पट्टा समझारोह बाँटने के लिए तैयार रहे। अब तब वे शुरू आये मन्त्रि करेंगे, एक एक दूसरे से आगे बढ़ने को बत बहेते, जो क कहेंगे सो तो समर क्या होगा ?

—सामर्थन

भूदान-सहरीक
उर्दू पाठिक
 वालागा चंदा : चार रुपये
 पत्रिका विभाग
 कर्ष सेवा सत्र, राजस्थान, वाराणसी-१

बल्देवगढ़ की गाड़ी आगे बढ़ी

बल्देवगढ़ विकास सख्त का मुख्यालय और साठे तीन हजार की जनसंख्या वाला गाँव है। ७ जून '७१ को यहाँ दृष्टि अभियान श्री कागिनाथ त्रिवेदी के मार्ग-दर्शन और श्री चतुर्भुज पाठक के सजीव-बत में शुरू हुआ था। २२ जुलाई को यहाँ की ग्रामसभा ने सर्वसम्मति से ग्रामस्वराज्य के विचार को अंगीकार कर दिया था। और ऐसी कठिन स्थिति गाँव में पैदा हो गयी थी कि केन्द्र में रहनेवाले कार्यकर्ताओं का गाँव में निकलना, बैठना, दूमर हो गया था। सब जगह हमलोग उपेक्षा और अत्याचार की दृष्टि से देखे जाने लगे थे। गाँव में कोई भी भाई-बहन हम लोगों से बात करने तक को राजी नहीं थे। चालीस पचासती वाले विकास सख्त क्षेत्र में बल्देवगढ़ के बिल्कुले अत्याचार का प्रतिबन्ध प्रभाव पड़ा और सब जगह ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य की चारों दिशाओं के प्रारम्भ करने में इन्कारों की आवाज या रही थी।

इन प्रकार प्रतिकूल वातावरण को देख और समझकर इस अभियान में लगे हुए सभी तांत्रिकों ने बल्देवगढ़ गाँव और क्षेत्र की जनता के नाम एक धरिया, १ अगस्त '७१ को प्रसारित की। उस धरिया के प्रभावस्वरूप गाँव के लोग मिलने-जुलने लगे। केन्द्र के सार्वीय कार्य-कर्ताओं के चौर परिषद के फनरस्वरूप १८ अगस्त '७१ को ग्राम बल्देवगढ़ में एक ग्रामसभा हुई और ग्रामस्वराज्य के विचार को पुनः लोगों के सामने प्रस्तुत किया गया। परिणामतः उनी ग्रामसभा में ग्रामस्वराज्य की पूच्छभूमि को भली-भाँति समझते हुए तीन विचारों ने अपनी भूमि की मार्गनिर्गत ग्रामसभा को छोड़ने हुए २० वीं दिनांक बुधवार को देने की घोषणा की। ९ छोटे बिरानों ने भी ग्रामस्वराज्य के विचार को मानकर उपयुक्त घोषणा की। गाँव के प्रमुख

व्यक्तियों में २ लोगों ने अपनी आमदनी का तीसवाँ हिस्सा, और गाँव के दो प्रमुख मजदूरों ने गाँव के मजदूरों की ओर से एक दिन की नमाई ग्रामसभा में देने की घोषणा की। इस प्रकार बल्देवगढ़ में ग्रामस्वराज्य की दिशा में हुए एक कदम आगे बढ़े।

दिनांक १९ अगस्त से २५ अगस्त तक एक सप्ताह का कार्यक्रम बल्देवगढ़ के समीप की छ पचासवाँ में विचार-प्रचार के लिए बना और सभी साथी छ टोलियों में बँट कर क्षेत्र में फैल गये।

दिनांक २ सितम्बर '७१ को बल्देवगढ़ की ग्रामसभा की बैठक हुई। इस बैठक में ग्रामसभा ने २२ जुलाई के प्रस्ताव को निरस्त करने के लिए सदा प्रस्ताव पारित किया। इस प्रस्ताव में ग्रामस्वराज्य के सम्पूर्ण विचार को खींचा करते हुए ग्रामदान की चार बुनियादी बातों में से प्रथम दो, ग्रामसभा एवं ग्रामकोष, को प्रारम्भ करने का निश्चय, और उन्हें नियंत्रित करने के बाद दो बातों को और कदम बढ़ाने का सर्वसम्मति से निर्णय हुआ। इस निर्णय का भी प्रभाव क्षेत्र में ग्रामस्वराज्य के काम को एगि प्रदान करने में सहायक सिद्ध हुआ है।

११ सितम्बर, विनोबा-जयंती के सितारिये में अनेक कार्यकर्ता के साथ गाँव की ग्रामस्वराज्यसभा का गठन करने के लिए एग विष्णोत ग्रामसभा हवाई गयी जिसमें सर्वोच्च विचार की देश और दुनिया में आवश्यकता पर विभिन्न चक्राओं ने प्रजाग ठाला। एनी ग्राम-सभा में बल्देवगढ़ की ग्रामस्वराज्यसभा के भङ्ग और ग्रामसभा की स्थापना का प्रस्ताव पारित हुआ। सर्वसम्मति से एनी स्वरूप मिहू ग्रामसभा के अध्यक्ष घोषित किये गये। एनी अगस्त पर शास्त्रीय अधिकाारी एवं नागरिकों ने ग्रामकोष की स्थापना हेतु नक्द धनि ग्रामसभा में अध्यक्ष की बँट की, और

एक प्रकार विनोबा-जयंती के संगत दिवस पर बल्देवगढ़ की ग्रामसभा का गठन और ग्रामकोष की स्थापना हुई। ग्रामसभा स्थापना हुआ।

ग्राम सौखिण्य से सुचना आयी है कि ११ सितम्बर को यहाँ भी ग्रामदान की चारों दिशाओं सर्वसम्मति से स्वीकार हो गयी है, तथा बड़े उस्ताह के साथ गाँव और क्षेत्र में कार्यक्रम लागू करने का वातावरण पैदा हो रहा है।

बल्देवगढ़ में और जासपास के क्षेत्रों में तरण-शासितना एवं ग्राम-शासितना के गठन का काम भाई श्री रामगोपाल दीक्षित के नेतृत्व में चल रहा है।

—ग्रामसभ कुमर लिपु

बंगलादेश अन्तरराष्ट्रीय मित्र समिति

नाच १८ से २० सितम्बर तक दिल्ली में हुए अगला दिन पर अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों ने गठित अन्तरराष्ट्रीय मित्र समिति के लिए सन्देश को अपना मुख्यालय चुना है। यह निर्णय भी अन्तरराज्य की अध्यक्षता में हुई एक बैठक में किया गया।

बैठक ने भारत में अपना कार्ययोजना देने के लिए कन्वन्स को चुना है तथा श्री अन्तरराज्य नारायण को इस मित्र समिति के गठन की पूरी जिम्मेदारी सौंप दी है। इस समिति के विभिन्न देशों में कार्ययोजना की जायेगी जो अपने-अपने क्षेत्र के नागरिकों को अपना देश की युक्ति उद्योग की आवश्यकताओं को पूरित करने में सहायक करने की नीति करेंगे। यह समिति अन्तरराष्ट्रीय सप्टनों, देशी-विदेशी स्वकारी, और उद्योगी सप्टनों और उद्योगसख्त एग की भी अपना देश को सारी सहायता से पूरी तरह परिचर रखेगी।

सम्मेलन के विदेशी प्रतिनिधियों को अन्तरराष्ट्रीय मित्र समिति में शामिल करने के लिए सजीवक चुने गये है। (अन्तर)

इन्दौर का राष्ट्रीय सहमति मंच-सम्मेलन

【पत्र ११, १२, १३ वितम्बर, १९७१ को राष्ट्रीय सहमति मंच का प्रथम सम्मेलन इन्दौर में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में भाग लेनेवाले नेताओं और प्रतिनिधियों ने देश की राष्ट्रीय समस्याओं के बारे में कर्ष-तामूलक हल निकालने का प्रयास किया। उस सम्मेलन की एक संक्षिप्त रिपोर्ट यहाँ प्रस्तुत है। —समाचारक】

यू.राज का रायपाल श्री श्रीमान्-
 वाराणसी ने भारत के प्रथम राष्ट्रीय सहमति
 मंच, के तीन दिवसीय अधिवेशन का ११
 वितम्बर, सन् ५ बने इन्दौर के राष्ट्रीय
 सहमति मंच में उद्घाटन किया। उद्घाटन
 के पूर्व सहमति मंच का इतिहास बताते
 हुए श्री रामेश्वरदास चौतारा ने कहा
 कि सन् १९७० की २, ३ फरवरी की
 दिनों में सभी दलों के लगभग १००
 व्यक्तियों की बैठक गौरी कान्ति
 प्रतिष्ठान के सभाखण्ड में हुआगी
 गयी। इस बैठक में देश के गिरे हुए
 वैदिक स्तर, हिंसा व अनाथ, युवकों की
 समस्याओं व नेतृत्व के अभाव पर चिन्ता
 प्रकट की गयी और इस समस्याओं पर
 इन्दौर में सहमति प्राप्त करने हेतु यह
 पहला अधिवेशन बुलाने का निर्णय किया
 गया। अगले एक मंच का कार्य एक
 प्रायोगिक समिति की स्थापना की
 गयी है।

सहाय्य विद्या सभा के अध्यक्ष
 बाबा साहब भारदे ने कहा कि देश में
 एन-राज होने के लिए अनेक युद्ध हैं
 जबकि महामेरे के कम। देश में अन्ध
 ब्राम के लिए भी चुनौती है। पश्चिम देश
 के चुनावों में गन्दगी है, अन्धकार है,
 हिंसा है लेकिन लोकतन्त्र के लिए चुनौत
 नहीं है।

मंच की प्रायोगिक समिति के अध्यक्ष
 श्री आर० आर० दिवाकर ने अपने
 भाषण में कहा कि मंच की अराजकता
 स्तर पर चलाकर ही समाजवादी ब्राम
 बनना होगा। सहमति मंच के द्वारा
 पुनः भाव एवं पुनः मत से सोचने
 समझने की प्रेरणा मिल सके, ताकि हम
 हर स्थिति को धारणा से हासिल कर
 सकें। सभी हमारा यह अधिवेशन सफल
 सिद्ध होगा।

अधिवेशन की स्वागत समिति के श्री
 सुदृष्ट कुलकर्णी, श्री मनोहर सिंह मेहता,
 श्री प्रताप सिंह बाणा एवं श्री आर०
 एम० चौतारा ने प्राग्भ में अतिथियों का
 भावभीता स्वागत किया।

मंच के अधिवेशन में लगभग २००
 प्रतिनिधियों ने देश के विभिन्न क्षेत्रों से
 आकर भाग लिया। सहमति मंच के
 दूसरे दिन की कार्यवाही के अन्तर्गत सुबह
 के अधिवेशन में सात वक्ताओं के
 भाषण हुए। समाजवादी नेता श्री एन०
 बी० मोरे और जनसंघ के श्री बीराम्बर
 दास ने अपने भाषण के पूर्व खास तौर
 पर स्पष्ट किया कि वे इस मंच पर अपने
 दलों के प्रतिनिधि के रूप में नहीं आये हैं,
 लेकिन समय आने पर अपने दलों की
 मंच के विचारों के अग्रण और सहमत
 करा सकते हैं। राजस्थान के श्री मोहन
 सिंह मेहता ने कहा कि इस सम्मेलन में
 कुछ दलों के प्रतिनिधित्व का अभाव
 एक सन्देह वाली बात है। मंच भी था
 कि सत्ता कायंश जाती इन्दिरा सरकार
 का कोई प्रतिनिधि इस मंच के सम्मेलन में
 प्रतिनिधित्व नहीं करने आया। कुछ
 सदस्यों ने सम्मेलन की अग्रे उपासिधि
 पर भी कुछ प्रकट किया और बताया कि
 सम्मेलन में देश भर के ९७ प्रतिनिधि
 आये हैं और वेप स्वाधीन प्रतिनिधियों
 ने भाग लिया।

सम्मेलन के भाग ले रहे प्रतिनिधियों
 के भाषणों के बाद सामूहिक चर्चा का
 दौर चला। सामूहिक चर्चा के बाद
 प्रमुख विषय थे। गिरता हुआ नैतिक
 स्तर, हिंसा तथा साम्प्रदायिक तनाव,
 युवकों की समस्याएँ, उचित नेतृत्व का
 अभाव। इस दिन दोपहर के सत्र में
 हुए सत्रों की चर्चाओं एवं उनकी
 सिफारिशों पर १३ वितम्बर की प्रातः

प्रस्ताव पारित हुए एवं बहनों हुईं और
 सहमति के लिए जोरदार मंचन चला।

अधिवेशन के तीसरे दिन सुबे सम्मे-
 लन की अध्यक्षता करते हुए मंच के
 अध्यक्ष श्री आर० आर० दिवाकर ने हर
 बटिन काम को करने का विवधान विचारों
 हुए राष्ट्रीय परिषद को उभार कराने का
 काम पर अधिक ध्यान दिया और अन्त में
 देश के विभिन्न भागों से आये प्रतिनिधियों
 एवं अधिवेशन के कार्यकर्त्तियों के प्रति
 आभार प्रकट किया। अधिवेशन की
 समाप्ति पर अन्तिम भाषण देते हुए
 श्री मोनला ने कहा कि मंच ही कोई
 एक ही कार्यक्रम बनाया लेकिन यह ठोस
 हो, उन पर सभी दलों की सहमति हो,
 और उद्यत क्रियान्वयन किया जा सके।
 अन्त जो देश में सामूहिक विद्रोह है
 वही अग्रणीय का मूल कारण है। अतः
 कानि विचारों में हो, मत में हो, क्योंकि
 आज हम यहाँ १०० प्रतिनिधि ही हैं,
 बल यह सकता बरकर लानी होगी।

देश में यू तो अनेक अधिवेशन,
 सम्मेलन आयोजित होते रहते हैं, लेकिन
 सहमति मंच मायद इत सखे टूटकर
 एक अलग और देश की अन्धकार परि-
 स्थितियों के लिए अग्रण महत्वपूर्ण
 रहा। (ग्रंथ) —रमेश शर्मा 'निर्धन'

'दी कामन मैन्'

आजकल सामान्य आरपी (दी कामन
 मैन्) की बहुत चर्चा होनी है। वही
 नीरतज का 'उदास' है। राजकीय
 जसो पर चल रही है, जा रही है, पग
 रही है। वह 'कामन मैन्' कौन है? क्या
 सत्तक पर चाने काका, रिक्ता खीचने
 काका, खोता होने काका आदमी 'कामन
 मैन्' है? नहीं। 'कामन मैन्' मनुष्य का
 वह 'उदास' है जो हृदय, आरसें, सखें,
 तमाल रूप से मोड़र है पानी 'कामन'
 है। सामान्य आरपी का दिन-राज जरा
 करने वाले नेताओं और धर्म-गुरुओं ने
 इस सामान्य आर को नहीं पहचाना?

'दी कामन मैन्' की वह परिभाषा
 स्वर्गीय आनन्द गुपार स्वामी ने दी है,
 जो भारतीय बर्षा के जाती है।

अफगानिस्तान में शान्ति-यात्रा

अफगानिस्तान में मेरी विषयवस्तु पदयात्रा का कार्यक्रम, उसकी स्वरचना और संपोषण विषय बन रहा है, यह मेरी चिन्ता का विषय था। 'वाइल्ड टाइम्स' को मेरे जाने की सूचना थी, इन्टरन्यू हुआ और फोटो सहित आधे पेज का समाचार छपा। सरकारी एजेंसी और अन्य समाचार-पत्र वालों ने भी इन्टरन्यू लिखे। फोटो सहित समाचार छापे। अफगानिस्तान रेडियो ने यात्रा का उद्देश्य प्रसारित किया।

अफगानिस्तान सरकार की ओर से विदेश सचिव ने कहा कि हमारी सरकार शान्ति चाहती है, युद्ध तथा अणु-आयुधों का समाप्त, उसने सख्त विरोध किया है, और मैं उसी का कार्य कर रहा हूँ।

शिक्षा सचिव ने कहा, "शान्ति का यह कार्य लोकशिक्षण का कार्य है। शिक्षा-संस्थाओं पर हमको ध्यान देने की आवश्यकता है। लोकशिक्षण के इस कार्य में अफगानिस्तान की शिक्षण संस्थाएँ आपके साथ हैं। सरकार का समर्थन, आजीविका और सुखकामना आपके साथ है।"

विदेश उपसचिव द्वारा पुलिस, सिपाही तथा गवर्नर के दफ्तरो को मेरी यात्रा पद-यात्रा का कार्यक्रम तथा उद्देश्य सहयोग देने की सूचना दी गयी और मुझे एक परिचय-पत्र मिला। शिक्षा सचिव ने वैन-प्रवास कायम किया और रातों के ६ 'प्रार्थना-विद्यालय-आयुर्वेदिक-आफ-एन्कुरेशन' को टेलीफोन से स्वयं आग्रह करने के भीतर-भीतर इतिहास को और उनके नाम पर तैयार करवा कर मुझे दिये गये। उन्होंने उठते-उठते कहा, "मैं यदि जवान होता तो अवश्य आपके साथ चलता। आजकी कोई तकनीक रास्ते में हों तो टेलीफोन से प्रस्ताव कीजिएगा।"

अब मैं सरकारी मेहमान था। इससे पूर्व मैंने इतकी गलतफहमी नहीं की थी।

काबुल यूनिवर्सिटी में १-६ बंदों हुईं। इन्टरन्यू बैम्बर आफ कामर्श की भी बंदी हुई और उसमें मेरे प्रवास के

लिए एक हजार अफगानी मुद्रा की सहायता करने का विषय हुआ, जिसका अन्ततः आक-सर्व में उपयोग किया गया।

अफगानिस्तान की इस पद-यात्रा में शिक्षकों तथा विद्यार्थियों का सक्रिय सहयोग रहा। मेरे कार्यक्रम को पहले से सब जगह सूचना दी और एक पड़ाव से दूसरे पड़ाव तक की व्यवस्था बहुत ही अच्छे ढंग से की गयी। भाषा की समस्या का विशेष सामना नहीं करता पड़ा। शिक्षा-विभाग की ओर से अग्रणी जानने वाले शिक्षक की व्यवस्था दो-भाषियों के रूप में की गयी। इनमें मैं ज.गों के सामने युद्ध के खिनाफ मानवता के प्रति जपन सरकार, पूर्ण निष्पत्तीकरण की मांग तथा विर-शान्ति के विद्यमान पर स्वतंत्रता-सुरक्षा विचार रख सता। हर स्कूल में शिक्षकों तथा विद्यार्थियों की सभा तथा गांवों में सार्वजनिक सभाएँ होती थीं। शिक्षकों तथा विद्यार्थियों का भरपूर स्नेह मिला। एक पड़ाव से दूसरे पड़ाव तक स्कूल के विद्यार्थियों की जानर सेवा बंदी जगह जगह-पूर्व अफगानों की जमात साथ थी। प्रत्येक के शिक्षा निदेशक ने मेरे सफर कार्यक्रम के लिए हर सम्भव प्रयत्न किये। सन्ने-शोने की हर जगह मुक्तिदायक व्यवस्था थी।

अफगानिस्तान में आतिथ्य-कार्य की मिशाल क्लोली है। यद्यपि मेरी व्यवस्था शिक्षण संस्थाओं के क्रिये थी, लेकिन विद्यार्थियों के द्वारा मेरे आसन की सूचना ग-वर्णन तक पहुंच चुकी थी। जिस गांव से निकलूँ, वहाँ मित्र दूध की ताजी बान अपना बट्टा, रोटी और मूसा मैदा खाते बिना मिलने की दस्तावेज नहीं होती थी। बाइर में खाना होने पर मुझे 'पोची' जानि से विशेष ध्यान रहने की चेतावनी दी गयी थी। यह खाद्य-पदार्थ जाति है और चाफिने के चाफिने हमने रहने है। लेकिन मुझे तो उगाता भी प्रेमव जातिविन मिला। उनके निर्मल मन और प्रेम व्यवहार की वाद

मुझे अब भी वाद-वार आती है। यद्यपि वे आधिक दृष्टि से बरीब हैं, लेकिन मन के अमीर हैं। दुग्ध के दुग्ध चाफिने अति से और निदल जाने से लेकिन खाने में हर चाफिने की ओर से मुझे आतिथ्य सत्कार मिला चार और रोटी के साथ। अफगानिस्तान का ऐसा कोई वर्ग नहीं था, जिनके साथ हमारा सम्पर्क न गया हो। यद्यपि, बाइल और कवार प्रदेशों के महामहिम राजावालों से मित्रता भी हुआ और उनका समर्थन, सुन-सामना और शान्तिव चीज-चीज में मिलती रही।

अफगानिस्तान में पुलिस विभाग ने मेरी सुरक्षा के लिए एक पुलिस का आरथी नियुक्त किया, जिसे मैंने एक दिन के बाद साइर बिदा कर दिया क्योंकि मुझे वहाँ की जनता में भरोसा हो गया था। इसलिए मैंने कहा कि "अफगानिस्तान में मुझे कोई डर नहीं है और मैं यदि भाग जाऊँ तो इसकी जिम्मेदारी मेरी स्वयं की होगी।" अन्त में शिक्षा-विभाग की ओर से दो हाउस मेरे साथ हो जिने, जो रास्ते भर साथ रहे।

आगर से हूँत तक के रास्ते में ५०-६० मील के फासते पर न सरीरी है, न पंख की छाया और न पानी है, इसलिए हम राठे को मैंने मोटर से पार किया। हैरात में अच्छा भोजन कर रहा।

अब मैं बाइर पड़ेवा था, तब मैं चिन्ती से भी परिचित नहीं था और वहाँ से खाना होने पर मुझे तयनग डेढ़ की ऐसे मित्रों से बिना कभी पड़ी जिन्हीं मधुर स्मृतिना यात्राविज्ञान के प्रवास में मुझे हरदम आदायित्व बरती रही था। और उन हमारी मित्रों से दूर होने पर हार्दिक-वेदना भी महल करनी पड़ी, जिकि सम्पर्क में आना पर पदयात्रा में आना था।

अफगानिस्तान और भारत के सम्पर्क बहुत दुर्लभ है। दोनों देशों की गलत और सम्पर्क पर रही है। यद्यपि सम्पर्क-भोगोपिना दृष्टि से हम काय बनग है, लेकिन आदायित्व दृष्टि से दोनों देश एक हैं, दोनों में कोई अन्तर नहीं है।

—सामन्तल पुरोहित

गर्भपात कानून

—विद्वान् दृष्टव्य

स्वातंत्र्य पर गर्भापात का अन्त नहीं लाया जा सकेगा।

(५) ऊपर बताये गये अनुसार गर्भपात के लिए समय-मर्यादा, स्थात-मर्यादा और दो डाक्टरों की सम्मति आदि की मर्यादा, बीजों में जाती है। लेकिन कोई रजिस्टर्ड चिकित्सक प्रामाणिकता से ऐसा मन्तव्य कि गर्भवती स्त्री को जिन्दगी बचाने अथवा उसके शारीरिक या मानसिक स्वास्थ्य को सम्भारने व स्वार्थी हानि होने से रोकने के लिए तत्प्रायः गर्भापात पर बल बलाना जरूरी है, तो वह उत्तुंगतम मर्यादाओं का पालन न करते हुए भी वैसा कर सकेगा।

(६) इस कानून के अनुसार कोई रजिस्टर्ड चिकित्सक प्रामाणिकता के साथ या वैसे दायित्व से गर्भापात का अन्त करे और उसके कुछ हानि हा या हानि को न-आवना ही तो उसके विनाश करारवत् में कोई बाध-बन्दी नहीं की जा सकेगी। उल्लेखित धारों से वह स्पष्ट ही जानना कि कानून की दृष्टि से अब गर्भपात की मर्यादाओं को हटाना आसान और होना बनाया जा रहा है कि उनके लिए कोई धारा दायित्व नहीं रह जायेगी। इसी गर्भपात की दृष्टि आदि करने और डाक्टर जबसे महत्त्व ही तो लोगों के लिए मार्ग प्रशस्त है। डाक्टर के लिए तो यह बर्दाश्त का साधन है इतिहास सद्भव होना सारी जिम्मेदारी स्त्री अधिकांश का हाथ में दिने लगे हैं। कानून में लक्षण विन्यास (गुणकथन) पर बल-बल-बल-बल-बल दिया गया है। लेकिन डाक्टर ने प्रामाणिकता से काम नहीं किया, यह तो भी साबित करना समझना चाहिये है, पर इस कानून में तो दलील दिना है और डाक्टर को कोई खतरा नहीं है।

गुणकथन कानून में स्त्री की प्राणरक्षा को ही गर्भपात के लिए आवश्यक कारण माना गया है लेकिन नये कानून में प्राण-रक्षा के अलावा स्त्री के शारीरिक या मानसिक स्वास्थ्य की हानि होने का

गर्भवती स्त्री या जीवन बचाने के विनाश विधि को दूसरे कारण से गर्भपात करना या बचाना, यह उस स्त्री तथा गर्भपात करने वाले दोनों के लिए मारल के मोहक्य कारण (दोषित फिलसोफी, धारा ३२२) में पूर्ण माना गया है। इसी प्रकार के वास्तव भी वास्तव कानून धुनिया के दूसरे दोनों में जो वे अथवा है।

एक वा जीवन बचाने के लिए दूसरे वा जीवन लेना कुछ सनोती में अराजक नहीं माना जाता है, पर इसके अलावा किसी भी मानव-प्राणी को हत्या सामान्य और मरिजा, दोनों दृष्टि से अराजक है। गर्भपात या प्रसूतकृता भी उन्नी धरती में है। इसके अतिरिक्त, गर्भपात के परिणाम केवल सम्मिश्रित अर्थात् सुरु निर्मित नहीं रहते हैं, उनके सामाजिक परिणाम भी बहुत व्यापक और विविध रहते हैं। ऐसे स्वतंत्र में रहकर ही भारतीय समाजशास्त्रियों ने प्रसूतकृता को निम्नो महत्त्वपूर्ण में री है।

आज भी धुनिया में प्रसूतकृता के नाम पर एकदम धरदार की ओर धुनार बज रहा है, और कई देशों में प्रसूतकृता से सम्बन्धित कानूनों को खोल दिया जा रहा है। भारत सरकार ने जो कानून अब बनाया है उसकी धुनार बचने-बचने लिये अनुसार है:

(१) इस कानून में बताये गये मर्यादों और कारणों से गर्भपात किया जाये तो यह अपराध नहीं माना जायेगा।

(२) गर्भापात हुए १२ हफ्तों से अधिक समय नहीं हुआ हो, तो कोई भी रजिस्टर्ड चिकित्सक (मेडिकल प्रैक्टिसर) और १२ हफ्तों से अधिक लेकिन २० हफ्तों से अधिक समय न हुआ हो, कोई भी जो

रजिस्टर्ड चिकित्सक, प्रामाणिकता (इन टुड सेव) से इस बात के हैं कि गर्भ-पात कानून रहने देने में गर्भवती स्त्री के जीवन को खतरा है, अथवा उसके शारीरिक या मानसिक स्वास्थ्य को हानि होने का खतरा है, अथवा जन्म लेने पर अज्ञान को ऐसी शारीरिक या मानसिक विकृति होने का खतरा है, जिसे वह पशु (इन्टेलिजेंट) रह जायेगा तो गर्भापात का अन्त किया जा सकता है।

स्पष्टीकरण - (४) कोई गर्भवती स्त्री यह बड़े कि गर्भापात धरदार के द्वारा है, तो ऐसे गर्भापात से उत्पन्न परिणाम से स्त्री के मानसिक स्वास्थ्य को हानि होना सम्भव है, ऐसा मान लेना धरिष्ट है।

(५) समाज की सहायता धरिष्ट करने के लिए कोई निर्वाह स्त्री या यथा पति अंतिम उपलब्ध धरिष्ट से गर्भापात हो गये, तो उस प्रकार अतिरिक्त से हुए गर्भापात से परिणाम पैदा होगा, जिसे स्त्री के मानसिक स्वास्थ्य को हानि होना माना जायेगा।

(६) गर्भपात कानून रहने देने में स्वास्थ्य को हानि होने का खतरा है या अज्ञान-मग्न के कारण (मोहक्य निरव्य भविष्य में होने वाले) को ध्यान में रखा जा सकेगा।

(७) सरकारी अस्पताल या अस्पताल द्वारा स्त्री-स्वातंत्र्य के विनाश का निषेध

खतरा' भी गर्भपात के लिए एक कारण माना गया है। यहाँ तक भी गर्भगत बी, लेकिन गर्भधान चाबू रहने से स्त्री को शारीरिक अपवा मानसिक हानि का खतरा था या नहीं, इस बारे में आगे जाकर कोई सवाल सड़ा न हो और कानून की पकड़ करीब-करीब न रहे इस दृष्टि से स्त्री कानून में यह पहलू से ही लप कर दिया गया है कि किन परिस्थितियों में यह मान ही लिया जाना चाहिए कि गर्भवती स्त्री के मानसिक स्वास्थ्य को गर्भहीर हानि होगी। इस प्रकार कानून में आती हुई गर्भवती का बहुत ध्यान नहीं रह जाता।

गर्भधान रोहिने का दृष्टिम उपाय लिया गया या नहीं और करने पर भी वह अयक्य हुआ, यह तो सम्बन्धित स्त्री या पुत्र ही कह सकता है, डाक्टर कैसे जाने? डाक्टर को तो जो वह कुहेरी उसे मानना होगा। और दृष्टिम उपाय करने के बादबुद गर्भधान होता है तो उससे स्त्री को इतना ध्यान मानसिक परिचाप होगा कि गर्भपात जरूरी है— यह विधान तो धारण्येदनक है। इसमें ऐसी कोई भयभीती भी नहीं है कि दो-तीन सन्तानें हो चुकी हो और फिर ऐसे उपाय निष्पन्न जायें तो गर्भपात करवा। प्रथम गर्भधान में भी गर्भपात किया जा सकता है। इसके लिए स्त्री को बिचनी को खरना बयबा शारीरिक हानि की सम्भावना हो, यह भी जरूरी नहीं है। केवल इतना काफी है कि इतना नहीं चाहिए, उसके लिए दृष्टिम उपाय किये लेकिन वह निष्पन्न गये, इसलिए गर्भपात करवा है। इससे अधिक स्वच्छन्द व्यवहार की कल्पना करवा मुमकिन है।

ऊपर दो नयी कानून की ध्याप्या के पैरा नं० २ में गर्भवती स्त्री के 'आत्म-प्राप' के (सामाजिक, धार्मिक) वादावरण का जिक्र है, और यह भी केवल सीधुता वातावरण का गही बरिच नयरीकी भविष्य में हो सके बरिच वातावरण का भी, यह भी ऐसा विधान है कि जिससे गर्भपात चाहते बानी स्त्री को अपवा कराने बरिच को पूरी छूट मिलती है।

इस नये कानून के लिए कारण यह दिया जाता है कि पुराना कानून सख्त होने से बहुत बड़ी सख्या में गर्भपात का काम छिपे-चोरी 'नीम हकीम' लोगों के बरिच होता था, जिसकी बजह से स्त्री को शारीरिक हानि और जान की जोखिम रहती थी।

नये कानून के लिए लोगों का समर्थन प्राप्त करने की दृष्टि से भाव्य सरकार की ओर से जो प्रचार किया जा रहा है उसमें एक और तो बरिचगहे गर्भधान के बोझ और शर्म से दुषी स्त्री का चिच खीसा जाता है जिससे लोगों की दया-भावना को उभारा जा सके और दुषी और छिपे-चोरी, गन्दे-गन्दे बाजा-बरण में, मनबाहा पैसा ऐंठने की दृष्टि से गर्भपात कराने वाली अयक्यरी दाइयो या डाक्टरों की रासगी प्रविमा छड़ी की जाती है जिससे लोगों को यह लगे कि सरकार शोषक और हृदयहीन लोगों से बचाव के लिए ही यह कानून बना रही है।

स्वास्थ्य और परिवार नियोजन विभाग के केन्द्रीय राज्यमत्री श्री डी० पी० बट्टी-पाठ्याय ने कहा है कि राज्यसभा ने जो बिल पास किया है वह 'मिनलतरी की कुछ बातों को ठीका करने के बलावा और कुछ नहीं करता।' पर कानून को जो धाराएँ उभार दी गयी हैं उनसे यह स्पष्ट है कि इस कानून का उद्देश्य सिर्फ पुत्रों को कानून की सखती को ठीका करने या सिचों की प्राणरता बयबा उभारी शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा का नहीं है बरिच उसकी मरुदर तो जन-सदसा-वृद्धि की रोने के लिए गर्भपात का सहारा देने का है। सखति न होने के लिए दृष्टिम उपाय किया जाय यह धन्य न हो सकता है, लेकिन उसके लिए धून हल्ला करता भी जाय है, यह उल्लालक विधान है और गर्भरता-पूर्वक सोचने की बात है। आय परिवार नियोजन के लिए दृष्टिम उपायों का ध्याक प्रचार हो रहा है, उनके साथ-साथ अब धूनहल्ला का भी प्रचार होगा और उभारी योजना भी?

स्त्री को शारीरिक और मानसिक हानि से बचाने के लिए अयबा उभारी जान की जोखिम कम करने के लिए गर्भपात जरूरी है ऐसा कहा जाता है, लेकिन स्वयं गर्भपात से भी उभारी शारीरिक और मानसिक हानि होती है इसके बारे में कुछ गही कहा जाता। निम्नान उभारी का कहना है कि:

'अगर गर्भ के कारण मानसिक दुष्परिणाम हो सकता है तो वह गर्भपात से भी हो सकता है। ऐसी सिचों बहुत कम होती हैं, मते ही वे अयबाहू हुए गर्भधान से बिनना भी मुक्त होता चाहती हो, जिनको गर्भपात के बाद पयचाताप नहीं होता। यह प्रतिबिम्बा मानुष की स्वाभाविक भावना अयबा पुति के कारण होती है। अयब वास्तव में स्त्री को यह भरोसा हो कि गर्भपात उभारी जान की बचाने के लिए जरूरी था, जब तो बायद यह प्रतिबिम्बा कुछ नरम पड़ जाती है, लेकिन अयब गर्भपात कुछ, वास्तविक भावनायम किया गया हो तो स्त्री फिर जीवनर बपने इस अयराय की धारना से दुष जाती रहती है।'

गर्भपात का यह विधान वास्तव में उभारी सिचों के निहाय बयबो की— ऐसे प्राणियों की जो पुत्राबिला नहीं कर सकते—हवा को मानुष्य देने के समान है। इसका सामाजिक और नीतिक पदम और भी सखिम गभीरता से बिचार करने सयक है। आने बहवार में मनुष्य यह मान लेता है कि उसके रुद के सातारानिक मुक्त अयबा स्वच्छाधार के लिए साधो नि महान प्राणियों की हत्या करवा भी जायज है। हजारों बपों की साधना और प्रयत्न से सां गये जीवन के पाकिर (किनेटरी) के मनुष्य को मुक्त सयध के लिए मठ करने की जोखिम की आ रही है। आगदर सिचों के ध्यान में यह भावा चाहिए कि यह उभारी केन चीन का साधना बमाने की ओर उनके स्वीय और मानुष्य को मठ करने की योजना है।

संपादक
साम्बन्ध



4/11/78

राज्य

सर्व सेवा संघ का मुख

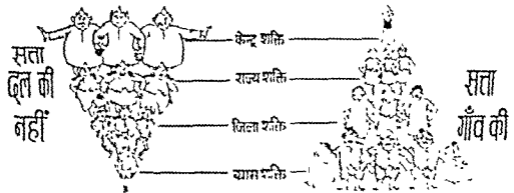
शिक्षण-युद्ध

उद्वेगनयन मूलक सामोवापुत्रयावद्विहिसर्वकान्ति कोसिन्देसुबाहक-साज्नाहिके

पृष्ठ १८
मंक २

पत्रिका विभाग, सर्व सेवा संघ, राजघाट, बाराबंकी-१
सं. १०१ मेरठ पोस्ट १८१२१

सामयिक
१ अक्टूबर '७१



ग्रामस्वराज्य का लक्ष्य

बंगला देश और भारत का भविष्य

जैसी कि बर्षों का पी बर्षों-अनु समाप्त होते ही हमारे सत्ता-घोशों की जवान लुग पयो है और उन्होंने अंधेसाधुभार हस्ता गुल्ला करना शुरू कर दिया है। सबसे जोरदार भावान में हमारे योग्य सुरक्षा मन्त्री बोल रहे हैं। परन्तु ये इन देश के लोगों को बुद्धि का अपमान कर रहे हैं और दुनिया को नजर में अपने को हास्यास्पद बना रहे हैं। अन्य देशों के लोगों को सही सही बातों की जानकारी हमारा जितना अन्धान है उससे अधिक है। जालंधर में सुरक्षा मन्त्री ने कहा, 'करीब आधा पाकिस्तान तो समाप्त हो चुका है। भारत को युद्ध करने की जरूरत ही नहीं होगी। जेतनस पहिया लॉ यह महगुल्य कर रहे हैं कि बंगला देश में मुक्ति बाहिनी विजयी हो रही है और धीरे धीरे संसार का सौकरभत पाकिस्तान के प्रतिवृत्त होता जा रहा है।' उनका जो सबसे अधिक हास्यास्पद बयान है वह यह है कि 'बंगला देश को स्वतंत्र करने के लिए मुक्ति बाहिनी के सिर्फ एक और धके की जरूरत है।'

इसमें सन्देह नहीं कि सुरक्षा मन्त्री भी जगजीवन राम की जानकारी अधिक स्पष्ट है। बंगला देश के छात्राधारों के पास कितने का हथियार हैं और उनके पास तोप, बमगोल, आधुनिक हथियार और युद्ध के भारी सामान कितना कम है, नाम-निहाय से भी कम, इस बात को वे अच्छी तरह जानते हैं। इस तरह के हथियारों से रहित और अधरक्षरों दुनिया बानी मुक्ति-बाहिनी बंगला देश में पाकिस्तान के पांच डिविजन मन्त्र से रोग फौज को मार भगायेगी, ऐसा सोचना बिलकुल विधा-तन्त्र के जेरा है। सबसे दुखद बात तो यह है कि ऐसे कथनों से देश के लोग बेहद भ्रम में पड़ते हैं।

यह ठीक है कि अपनी आजादी प्राप्त करने के लिए लड़ने का काम बंगला देश के लोगों का है। परन्तु इतने भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि बंगला देश के लोग बिना किसी भी मदद के अपने बल-बूते पाकिस्तानी फौज को नहीं हरा सकते, चाहे वे दिल्ली भी बहादुरी, लगन और सफाई बुद्धि से लड़ें न लगे रहें। विलो न किलो को उनकी मदद में लगना ही है। भारत के अलावा और किसकी सहाय है कि वह ऐसा करे? यह सिर्फ पड़ोसी को सहाय्य देने का प्रश्न नहीं है।

बंगला देश भारत के जीवन-मरण का प्रश्न है। विरुद्ध एक करोड़ शापाधियों के बोझ का प्रश्न नहीं है। इस और अमेरिका यदि पाकिस्तान को नहीं मना सके तो अरपाधियों की सहाय्य यदि पाकिस्तान को नहीं मना हो जा सकती है। हमारे देश की आर्थिक हालत पहले से ही नाशुक है। अरपाधियों के आने का ठीका यदि इसी तरह बंधा रहा तो इस देश की सामाजिक, आर्थिक

और राजनीतिक सुरक्षा का क्या हान होनेसता है क्या एक मन्दबुद्धिवाला आदमी भी समझ सकता है।

प्रश्न हमारे जीवन मरण का है—हम यदि संसार में आत्म-सम्मान और प्रतिष्ठा के साथ जीना चाहते हैं तो। निश्चय और दोनोनों को समझ में यह बात भणे ही न आवे, पर दिल्ली के शांतिकों को यो समझ लेना ही चाहिए कि बंगला देश जब तक स्वतंत्र सार्वभौम सत्ता प्राप्त नसे नहीं बन जाता जब तक एक भी शरणार्थी लौटकर जानेसता नहीं है—जब से जब एक भी पैर-मुगलमान या राजनीतिक बेचना बाना मुगलमान को नहीं लौटगा। क्यापविन अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा चाहे जितना भी प्रेरित किया जाय बंगला देश की स्वतंत्रता पर धारणित कोई भी 'राजनीतिक समाधान' पहिया था को स्वीकार हो नहीं सकता।

अमेरिका और रूस की बात छोड़िये। वे दोनो ही पारि-स्तान के मामलों को अपने देश के हित की दृष्टि से देखते हैं। भारत के शासकों में अब भी वे लोग हैं जो आजादी हासिल करने के विश्वासी रहे हैं। यह पाकिस्तान के लौटने का प्रश्न नहीं, बंगला देश को उपनिवेशवाद के पगुन से मुक्त करने का आन्दोलन है। बंगला देश के लोग साथ महीने से लड़ रहे हैं। वे अपनी सार्वभौम स्वतंत्रता के मरण को पोषणा पार बर कर रहे हैं। फिर भी भारत के नेता 'बाबकीय द्वारा राजनीतिक हथ' निरानने की बात किये जा रहे हैं।

पार्लियामेंट में बाहर प्रदान मन्त्री बंगला देश से सम्बन्धी भारत की दृष्टि के विषय में बहुत ऊँची-ऊँची बातें बहती रही हैं। परन्तु समय बीतता जा रहा है, और परिस्थिति गंभीर से गंभीरतर होती जा रही है। इस तरह की बात और बयान में जो अन्तर है उस कारण संसार में इस देश की प्रतिष्ठा बहुत घटी है। ऐसी निरिक्ता ऊँची बाँधों का दूधका मुगलान यह हुआ है कि देश के लोगों में एक छुट्टि की बुझि सा गयी है और वे पाकिस्तान की ओर से निश्चिन्त से हो पड़े हैं। स्वतंत्रता के बाद हमारे देश के सबसे बड़िया चक्रे में मेनुष्य का जो दिमाग पिट रहा है, उसकी बचपना नहीं की जा सकती।

मैं प्रदानमंत्री का विरोधी और की टोका नहीं कर रहा हूँ। वह मजद बहादुरी से बोलने का नहीं, हिम्मत से बयान उतारने का है। बंगला देश का राजनीतिक हथ भारत के हाथों में है। भारत निरिक्ता नहीं है। भारत को दूनरो की आबाधकता है तो दूनरो को भी भारत की आबाधकता है।

मेरा तम मुताब यह है कि देश के इस मजद बाप में लल के मोह से ऊपर उठकर प्रदानमंत्री पूरे देश को अपने नेतृत्व में छाप लें, लोगों को माठ माठ बसतों कि राउड की हिम्मत से जोंके के तिर लोगों को दिल्ली बुर्जनी देनी होगी। देश उनका साथ देगा।

—अनुराधा आर्य

(२७, २८ अक्टूबर के 'इण्डियन एक्सप्रेस' में प्रकाशित लेख के आधार पर)

पुष्टि अभियान का सन्दर्भ : समस्याएँ और उनका हल

प्रश्न : ग्रामन्या का नाम ग्राम-स्वराज्य-सभा, प्रशासन-स्वराज्य-सभा और जिना स्वराज्य-सभा हो अथवा ग्रामनया, प्रशासन-सभा और जिना-सभा हो ?

उत्तर : आदर्शवादीक दृष्टि से ग्राम-स्वराज्य-सभा नाम सही होगा। कुछ राज्यों में ग्राम पंचायतों को 'ग्रामनया' की संज्ञा दी गयी है। हमारा यह सफल उद्योग भिन्न है, ऐसा सीखना चाहिए। तद्विपरीत दृष्टि से भी ग्रामस्वराज्य शब्द उत्तम है। क्योंकि इस शब्द का मूल अर्थ राज्य के अर्थानुसार स्वराज्य की स्थापना करना है। इस दुनिया के सामने राज्य और स्वराज्य की वैचारिक विभक्तियों को खत्म करना ही है। उन्हीं उद्देश्यों के तहत ग्रामस्वराज्य शब्द का प्रयोग होना चाहिए।

प्रश्न : ग्रामस्वराज्य-सभा का स्वरूप और उसका कार्य-कार्यक्रम क्या हो ? 'स्वरूप' से मेरा तात्पर्य कार्य-प्रणालि की प्रकृति और उसके कार्य-विधि से है।

उत्तर : ग्रामस्वराज्य-सभा 'लोक' द्वारा सर्वसम्मति से चुनी हुई सभा है। इसके तारे काम सीधे ही सभा के अंग में हो सकते, इसके लिए आवश्यक तैयारियों की प्रक्रिया चलनी चाहिए। तैयारियों की प्रक्रिया चलनी चाहिए। तैयारी के अभाव में नयी प्रतिष्ठानों को स्थापित करना ही सभा की प्रकृति है, इस उद्योग को सफल बनाना चाहते हैं। इस प्रत्यक्ष-प्रयोग की स्थापना करना चाहते हैं। अगर किसी विधिगत नाम के लिए कुछ शक्ति-योग्य प्रतिष्ठानों को प्रयोग के साथ ही स्थापित करने की आवश्यकता हो तो ग्रामस्वराज्य-सभा कृपापूर्वी उत्तर-प्रदेशियों को प्रेरित करेगी, जिनकी असीम उद्यमिता का पूरा फल ही है।

प्रश्न : गरीबों, निरक्षरों और शोषण-ग्रस्तों के लिए ग्रामस्वराज्य-सभा

का कार्य ? शोषण-वर्ग से न तो मुक्ति-दान मिलती है, और न जिनको जमीन मिलती है उनको भी अक्षर-भर मिल पाती है। वैश्व शांति में विश्वास के बहुत साधन भी इकट्ठे कर दिए जायें तो उनको क्या लाभ मिलेगा, जिनके पास जीविका का कोई साधन ही नहीं है। उन हालत में ग्रामस्वराज्य-सभा की क्या कार्य-प्रणालि रहे जायेंगी ?

उत्तर : शोषण-वर्गों को मुक्ति-दान देने के लिए ही ग्रामस्वराज्य-सभा का कार्य-कार्यक्रम है। यह शक्ति और मजदूर के बीच सम्बन्ध विभाजित कर देगा, ऐसा मतलब है। मुद्रियों के शोषण और दमन की कार्य-प्रणालियों के कारण शक्ति और मजदूर एक दूसरे के सामने-सामने अन्तर्निहित न्यति में खड़े हैं। अगर हम ग्रामस्वराज्य या ग्रामपरिषद बनाया चाहते हैं तो सर्वप्रथम इनके बीच सद्भाव पैदा करना होगा ताकि वे एक दूसरे के शोषण-कार्य पूरे समाज के अन्तर्गत समाज बना सकें। यह जो सामाजिक-साधनों की प्रक्रिया है, इसी की शक्ति से समृद्धि निर्माण या चिन्तन शुरू होगा, जिसके अन्तर्गत गरीबों को मुक्ति-दान देना ही प्रथम-कार्य है। हम इस प्रक्रिया को प्रारम्भ करने के लिए शुरू कर देंगे, तो हम प्रभाव-प्रदान करने के लिए वैसा बनेंगे और यह अन्तर्निहित के बीच के अन्तर्गत में मूल बनेगा।

प्रश्न : प्रशासन-स्वराज्य-सभा के गठन की प्रणालि, उसका स्वरूप और कार्य-कार्यक्रम क्या होना चाहिए ? गांव की विकास-योजना में उनकी क्या भूमिका रहनी चाहिए ?

उत्तर : प्रशासन-स्वराज्य-सभा के प्रति-निधियों का चुनाव सभा उनकी संस्था की निर्धारण द्वारा स्वराज्य-सभा करेगी।

प्रतिनिधि गांव का कोई भी सदस्य हो सकता है। सर्वोप-निर्णयों में इस बात पर ध्यान-रक्षणी है। वे इन प्रतिनिधियों या महासभों से राजनीतिक दलों के सदस्यों को बनाया रखना पसन्द करते हैं। वे भूत-जाते हैं कि उनका लक्ष्य प्रामुख्य समाज-जाने का है। जो लोग पहले ही प्रामुख्य हैं, उन्हें मुक्ति की साधना कली है क्या ? मुक्ति की साधना जो उन्हें कली है जो प्रामुख्य पद्धति के अन्तर्गत है। जब उन्हें प्रामुख्य कार्य-क्रम में शामिल किया जायेगा तभी तो उनको अवसर मिलेगा। हर एक के साथ एक प्रामुख्य मूल-जब काम करने लगेंगे तब उनकी प-भावना के अन्तर्गत की प्रक्रिया शुरू होगी।

प्रश्न : जिना स्वराज्य-सभा का गठन, स्वरूप और कार्य-कार्यक्रम क्या होगा ? गांव की योजना के साथ उनका क्या सम्बन्ध होगा ?

उत्तर : जिना स्वराज्य-सभा का निर्माण ग्रामस्वराज्य-सभा द्वारा प्रत्यक्ष-निर्वाह में होगा। उसके कुल निष्कारण एक-दूसरे से लेकर ही शुरू करके प्रारम्भ जिना स्वराज्य-सभा के ही जायेंगे। जब ग्रामस्वराज्य-सभा के स्वरूप पर परस्पर समझ और सहकार का अभाव काफ़ी विरहित हो जायेगा, तब उनकी सद्भाव का संघान्तन बहुत कठिन नहीं होगा। बिहार के इतिहास में वैश्यानी के गणराज्य का उदाहरण सामने है ही, जिसमें ७७७७ सदस्य एक साथ बैठकर सर्वसम्मति से राज्य का कार्य-कार्यक्रम में वैसा होगा जिना के क्षेत्र में सद्भाव नहीं होगा।

प्रश्न : विश्व-स्वराज्य-सभा की स्थापना कैसे होगी तथा 'लोक' के साथ उनका क्या सम्बन्ध होगा ?

उत्तर : विश्व-स्वराज्य-सभा की स्थापना ही लोक-संघों की प्रकृति है। स्वराज्य की स्थापना में मुख्य-विशेषता ही और तब ही ग्रामस्वराज्य-सभा में होगी और वे ही प्रथम-कार्य की विशेषता प्रकृत, जिना-स्वराज्य-सभा में होगी। जब तक समुचित-विशेष-प्रक्रिया द्वारा जिना-स्वराज्य-सभा

कार्य-वाचन अथवा स्थित नहीं हो जाता है, तब तक यह कल्पना नहीं की जा सकती है कि जिले के बाहर के मृतो के लिए वित्त अनुदान में और किम प्रकार के कार्यक्रम लेप रहेंगे। उसका अन्तान लगने पर ही लोगों के चुत्तों का स्वरूप तथा परस्पर सम्बन्ध की कल्पना की जा सकती है।

प्रश्न : प्रत्यक्ष स्वराज्य-सभा में आचार्यकुल तथा ऐसी ही अन्य प्रखण्ड स्तरीय संस्थानों का क्या स्थान होगा ? कुछ प्रमुख लोगों को, उनकी सेवा उपयोगी होने पर, प्रत्यक्ष-सभा के सदस्यों द्वारा सर्वसम्मति से नामजद किया जा सकता है या नहीं ?

उत्तर : प्रत्यक्षस्वराज्य - सभा के साथ आचार्यकुल का सम्बन्ध 'गुरु-शिष्य' का होगा। आचार्यकुल सभा के विद्य कर्मों से ऊपर रहकर तथा पूरे समाज पर विहंगम दृष्टि और भविष्य पर दूर दृष्टि रखकर समाज का मार्गदर्शन करेगा।

प्रश्न : ग्रामकोष में ग्रामस्वराज्य-सभा के सदस्यगण स्वेच्छा से सहज और नियमित रूप से अग्रदान नहीं करते हैं। ग्रंथ, सुरक्षा, विद्यालय और विनियोग की दृष्टि से ग्रामकोष का कार्य ग्रामदान प्राप्त और योजना-रूढ़ता निकालने से भी बढ़त कठिन है। ऐसी हातव में कौन-सा तरीका हो सकता है, जिससे यह काम वास्तव हो जाय ?

उत्तर : ग्रामसभा के सदस्य स्वेच्छा से अग्रदान तभी करेंगे, जब हम शिष्य-प्रक्रिया से ग्रामभावना तथा ग्रामस्वराज्य के लिए स्वाभिमान पैदा करेंगे। वस्तुतः हमारी कान्ति मौखिक परिवर्तन के परिवर्तन के लिए नहीं है, बल्कि समाज की मनःस्थिति के परिवर्तन के लिए है। मनःस्थिति-परिवर्तन के परिणामस्वरूप जो परिवर्तन का परिवर्तन होगा, उसी का नाम ग्रामस्वराज्य है। अगर केवल बाह्य संघटन एवं यंत्रणा द्वारा परिवर्तन परिवर्तन हो भी गया, तो वह 'स्वराज्य' नहीं होगा, राज्य की एक प्राथमिक इकाई मान होगा। जिसको राष्ट्रीय राज्य के सहारे ही बनाये रखना

सम्भव होगा। वस्तुतः सर्वोदय की यह कान्ति तुमिदायी तौर पर नयी संस्कृति के निर्माण की कान्ति है। तब तक समाज ने यह माना है कि हिंसा और बल की कान्ति ही एकमात्र सामाजिक शक्ति है। गांधी पहला मनुष्य हुआ, जिसने सामाजिक शक्ति के रूप में शस्त्रनिरपेक्षता की बात कही। हम अस्त्रनिरपेक्ष सामाजिक-संस्कृति निर्माण करना चाहते हैं।

दूसरी बात यह है कि सबसे समाज की समस्त क्रियाशीलता के लिए विशिष्ट व्यक्ति तथा विशिष्ट संस्थानों को ही साधन माना गया है। हम वैयक्तिक या संस्थावादी क्रियाशीलता को समाप्त कर प्रत्यक्ष रूप से सामाजिक क्रियाशीलता

को अधिष्ठित करना चाहते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि उपनिषदात्मक में जिस तरह नयी संस्कृति के अधिष्ठान के लिए स्थान-स्थापन पर मोक्षिकानो का ज्ञान बना था और अलग-अलग लोचनिक परिभाषक के रूप में जन-जन में फैले हुए थे, उसी तरह आज भी जीवनदायी मोक्षिकों को स्थान-स्थापन पर बैठना तथा लोकतान्त्रिक व्यवस्था में माना करनी चाहिए। यह आवश्यक है। केवल यंत्रण वैधानिक तथा संघटनमयक पुष्टि से कान्ति की निष्पत्ति नहीं होगी। यही कारण है कि दरभंगा का विद्रोह होने ही किन्तुवानी ने देश को आचार्यकुल का संदेश दिया। ●

विज्ञान भी अज्ञान का साथी

मन-चिन्तना (साइकेट्री) मनो-विज्ञान की एक मुख्य शाखा है जिसका प्रयोग मानसिक रोगों की चिकित्सा में मुख्यतया पूर्वक किया जा रहा है। लेकिन जब विज्ञान जीवन के ऊँचे मूल्यों से अलग हो जाता है तो जिस तरह अज्ञान का साथी और दुःखाय (ब्रेडविथ) का समकक्ष बन जाता है, वह मन-चिन्तना के हाथों पर दृष्टिकोण से प्रकट है।

१—सम-तीव्रक सम्बन्ध रखने वाली (होमोसेरगुल) को कमेडिटी समाज होनेका से अपराधी समझता रहा है, और उन्हें तरह-तरह की सजाओं का शिकार बनाता रहा है। मन-चिन्तना मानती है कि ऐसे लोग 'रोगी' हैं जिनका एही पलायन होना चाहिए। रोगी होने का यह अर्थ तो होता ही है कि रोगी अपने आचरण पर अनुभूति रख सकते हैं। यह सोचकर रोगी समझा जावेगा अतः भी चैट-जिम्मेदार बन जाता है, और अज्ञान भी समझने लगता है कि वह हैतनी कामवाला या शिकार है, जब कि वही बात यह है कि स्वाभाविक या अस्वाभाविक, लैंगिक प्रेरणा एक ही है। विज्ञान इस सम्बन्ध में शक्य अधिक कभी कुछ कहने की स्थिति में नहीं है, फिर भी समाज जिसे अपराधी मानता है उसे

विज्ञान द्वारा रोगी कहनाकर समाज से अलग माना जा रहा है।

२—मन-चिन्तना में ऐसी बातें जिनकी ओर नहीं गयी हैं, जिनसे समाज को शिष्यो को हीन समझने का एक बहाना मिल गया है। कायद में यही माना कि स्त्री को गुण और सम्पूर्णता को अनुभूति तभी होती है जब मदें को मर्दाना शक्ति का उपर 'प्रभुत्व' हो। अतः भी मन-चिन्तना यही रहती जा रही है कि स्त्री को गुण का गणना चाहिए, और उसे गुण की सफल और गणना की अतिवर्तन मान-मन्यता है, आदि। तरह-तरह की बातें कहकर स्त्री की हीनता (पैसिबिटी) का गुण-मान दिया जाता है, और गुण का 'दुष्प्राप्य' बताया जाता है।

३—अमेरिका में गरीब और बगो के प्रति दुःख एक राष्ट्रीय रोग बन गया है। मन-चिन्तक समुदाय भी इस रोग से मुक्त नहीं है। मन-चिन्तक भी अमीर और गरीब की जित तरह चिन्तना करते हैं, उस तरह गरीब और बगो को मरी करते हैं। यह मान लिया जाता है कि बगो के मनोविचारों का हीन उनके समाज में है जब कि गरीब के मनोविचार मनोवैज्ञानिक बगो से हैं। दुःख का यह रस अपनी चिन्तना को आमतौर पर प्रभावित करता है। ●

पुष्टि-क्षेत्र : आशा और विश्वास का क्षेत्र

पुष्टि के बारे में एक बात स्पष्ट में रखनी चाहिए। हमारा आन्दोलन जन-आन्दोलन कैसे बने, यह बिना स्वाभाविक है, और हममें से हर एक को होनी चाहिए, लेकिन निम्न की यह भाव है कि हमें परिस्थिति की सही परामर्श होनी चाहिए। देश की मोड़दा परिस्थिति समाज-परिवर्तन के द्वितीय प्रवृत्ति पर व्यापक जन-आन्दोलन के अनुप्राण नहीं है। किसी तात्कालिक प्रश्न पर विरोध और 'प्रोटेस्ट' का प्रयोग समर्थित करना एक बात है, और मधुपर्क परिस्थिति से विद्रोह की प्रेरणा देना करना विषमवृत्त दुर्गम। देश में किमती मूल मुक्ति और सत्ता की है उन्नती अभी व्यापक और समता की नहीं हुई है—बम-से-बम उस व्यापक और समता की नहीं है किमती इसके नीचेबाने की हमारी बराबरी में जाने की बात है। क्रान्ति के गरीब मूलों का लोक-आत्म में अभी पहला प्रवेश नहीं हुआ है। इस स्थिति के बड़े कारण हैं, लेकिन स्थिति गरीब है। और हमी स्थिति में हमें काम करना है। हमें अपना और कार्यकर्ता दोनों में प्राथमिकता की कानि के प्रति एक नया विरासत देना करना है। दोनों के मन में गंजा है, जगाम्मा है। लोग चाहते हैं कि सर्वोच्च का नहीं 'दिव्यदुर्लभ' हो। लोग आनन्द की व्यापकदुर्लभता का प्रथम प्रमाण चाहते हैं। क्या सर्व-व्यय भूमिबाने भूमि का स्वाभाविक छोड़ सकते हैं? भूमिहीन की अपनी जीत की भूमि दे सकते हैं? गरीब के सर्वोच्च विद्रोह केवल आशा के प्रयोग पर आशाएँ हम से छोड़ सकते हैं? पुष्टि समता के बिना भी काम चल सकता है? इस तरह के अनेक प्रश्न हर जगह पूछे जाते हैं। मूठने बानों की हम अपने लक्ष्य से कुछ नहीं कर दें, लेकिन वास्तविक रूप लोगों के विम में संशय है।

इसलिए पुष्टि का पहला उद्देश्य है विश्वास देना करना, जनता के अन्दर आशा और आस्था का मंचार करना। यह 'तपस्वता' नहीं है, यह अद्विष्टक ज्ञानि की शक्ति प्रकट करने की चुनौती है किमती उन्मुख अपने आनन्द किताबाल-राज्यवाद के बाद किमती हालत में नहीं की जा सकती।

१९२० में आन्दोलन न हुई होगी, तो आनन्द १९२० का आन्दोलन न हुआ होता। हमें देशभर में व्यापक-प्रवृत्ति की सज्ज 'आन्दोलित' बनानी है ताकि जनता का सोना देना विश्वास बराम आये, क्रान्ति नये निरं से मोक्षदान में प्रतिष्ठित हो। त्रि-निज भाषों में हमारे साथी परिस्थिति से जुड़ रहे हैं वे अपनी भावना से बच कर रहे हैं। उनके मन में 'बचो या मरो' की प्रेरणा है। जनता की शक्ति से पुष्टि हो यह सबसे अच्छी बात होगी, लेकिन अगर किमती क्षेत्र में कार्यकर्ताओं की शक्ति से, उनके सामर्थ्य और समर्थन से, प्रभावित होकर गाँव के लोग पुष्टि की दिशा में बढ़ने लगे हैं और उनमें शक्तिहीनता देना होनी है तो उन स्थिति का भी, आशा की परिस्थिति में, हमें साधना करना चाहिए। यह कहकर कि यहाँ कार्यकर्ता शक्ति प्रधान नहीं है, शोचनीय लोग, हमें इन सफलता का ऐतिहासिक महत्त्व घटाना नहीं चाहिए। सत्तारक्षक और बन्धनबद्ध से हटी हुई क्रान्तिकारी लोककति के निर्माण और शक्ति का पूरा प्रथम प्रयोग की आवश्यकता है। अद्विष्टक के लिए जो प्रयोग है ही, दिशा के लिए भी है। दिशा भी कार्य-समर्थन से दूर जाकर एक और आनन्द और दुर्गम की संशय प्रवृत्ति का प्रवृत्ति के दृष्टिकोण में बन गयी है। अद्विष्टक के लिए जो हर जगह मुजाम्मा का प्रतीक बन रहा है।

इन बानों की साधने उलटकर हमें

पुष्टि के बारे में अपनी सारी शक्ति से आगे बढ़ने का प्रयत्न करना चाहिए। समय लोगों के हाथ हाथ से निजल रहा है। बहुत अच्छा होगा कि देश के हर विनाशकारी क्षेत्र में सपन पुष्टि के लिए एक वा दो व्यक्ति निरं आरं, लेकिन यदि साथी और साथियों के अभाव में ऐसा नहीं हो पाता है तो पूरे राज्य में कुछ चुने हुए क्षेत्र निरं आरं, और पूरी शक्ति और साधना के साथ उनमें सजा जाय, लेकिन इस बात का प्रयास रहे कि प्रचार क्षेत्र पूरे राज्य का सजा जाय, और अद्विष्टक-निष्ठा जगहों में शक्ति-हेतु, शक्ति-शक्तिहेतु, कार्यकर्ता आदि प्रवृत्तिवादी किमती किमती रूप में बनती रहे ताकि क्रान्ति की मूल बराबर बनी रहे। इस दृष्टि से जब हम कुछ किमती से पुष्टि के सज्ज कार्य-क्षेत्र चुनें, तो साथ-साथ यह भी सोचें कि पूरे किमती की (नगरीय क्षेत्र) प्रभाव क्षेत्र और राज्य की प्रचार क्षेत्र कैसे बनाया जा सकता है। हमारी योजना में तीनों मोड़ियाँ ही पुष्टि-क्षेत्र, प्रभाव-क्षेत्र, प्रचार-क्षेत्र।

पुष्टि-क्षेत्र : व्यूह रचना

१—सभी देश के त्रि-निज क्षेत्रों में पुष्टि का सज्ज कार्य हो रहा है, उनमें हर एक में कोई-न-कोई ऐसा व्यक्ति बँठा हुआ है जिसका क्षेत्र में जाने शक्तिहीन और सेवा के कारण प्रभाव है। ऐसा होना स्वाभाविक है। अद्विष्टक लोककति का निर्माण शक्तिहीनों का क्षेत्र नहीं है। इसमें शक्ति से मुक्त व्यक्तिओं को प्रेरणा ही चाहिए। प्राथमिक के पहले अपनी सामर्थ्य 'रक्षक' नहीं से।

तो, सबसे पहले यह तय करना चाहिए कि पुष्टि-क्षेत्र में कौन कौन व्यक्ति मुख्य रूप से जवान समर्थ और शक्ति देगा, कौन उनके साथी होंगे, और क्या आर्थिक व्यवस्था होगी। आनन्द-राज्य क्षेत्र का इतनेसा सबसे पहले पुष्टि में होना चाहिए।

२—सबसे मोटी-सबसे पहिले क्षेत्र के मुख्य सर्वोच्चियों (कार्यकर्ता और

नापाक) व मिलकर उनकी गोष्ठी करनी चाहिए और पुष्टि की पूरी योजना सामने रखनी चाहिए। क्षेत्र में ऐसे थार छः लोग जरूर होने चाहिए जो अपना पूरा या आधिका समय देने की तैयार हों। गोष्ठी में पुष्टि-कार्यों की प्राथमिकता-रेखा तैयार कर लेनी चाहिए।

३ - दूसरी गोष्ठी: पहली छोटी गोष्ठी के बाद श्रीप्र दूगरी बड़ी गोष्ठी ब्लॉक के किसी केंद्रीय स्थान पर बुलाई जाएगी जिसमें अपने मुख्य सहयोगी ही हों ही, उनके अलावा ऐसे सरकारी, अर्द्ध-सरकारी और गैर-सरकारी लोग भी हों जिनके प्रभाव का लाभ हमें काम में लेना है। कुछ लोगों को 'नीकर' समय कर या कुछ को 'गैता' बहकर छोड़ देना ठीक नहीं है। हमारा मान्यता 'सर्व' का है, हमें 'सर्व' के सामने अपनी बात रखनी ही चाहिए और जिसका जितना सहयोग मिल जाय लेना चाहिए।

दूसरी गोष्ठी में लोगों के हाथ में रखने के लिए हमारे पास निम्नलिखित प्रकार साहित्य होना चाहिए :

(क) ग्रामदान की मुख्य शर्तें - जमीन की खरीद-बिक्री, बंधक, स्वामित्व आदि के बारे में जरूरी बातें लिखी हो। नोटिस छोटी हो, एक ओर साफ-साफ कुछ बड़े टाइट में छपी हो—एसी ही जिसे पढ़कर ग्रामदान की मुख्य बातें धीरे-धीरे सामने आ जायें।

(ख) ग्रामदान से ग्रामस्वराज्य : ग्रामस्वराज्य क्या है? इनमें जोड़ें में ग्रामस्वराज्य के उत्तम समझाये गये हों। ग्रामस्वराज्य-यथा पर विशेष जोर दिया गया हो। प्रथमस्वराज्य तथा का भी उल्लेख हो।

(ग) क्षेत्र के निवासियों से पुष्टि के लिए अनुरोध। ड्राफ्ट पहिले से तैयार हो जिस पर गोष्ठी में भाग लेए सरकारी के हस्ताक्षर करा लिये जायें। क्षेत्र के कुछ व्यक्तियों के हस्ताक्षर से क्षेत्र की पहचान के काम करनी होनी चाहिए।

—राममूर्ति

अंततेश्वर सरयाग्रह सफल

अंततेश्वर (पुनराव) के आदिवासियों ने भी हस्तिसम्पन्न भाई परीत के नेतृत्व में जमींदार से अपनी जमीन मुक्त कराने के लिए गत साल चार बार अहिंसक और शांतिमय ढंग से हत्याग्रह किया था और इस हत्याग्रह के दरम्यान २०० आदिवासी बहनों व भाइयों की जिन में भी जाना पड़ा था। आरमासुनी के बाबजुद समस्या हल नहीं हुई। इसलिए इस साल पुनः उन्होंने और अधिक सशक्त सत्याग्रह की तैयारी की। बाहिर में सरकारी तब का जड़ता टूटी और जगत अन्धकार को दूर करने के लिए कुछ सही कदम उठाने से उन्हें मजबूर होना पड़ा। उसी तरह जमींदार के दिल पर भी आदिवासियों की अहिंसा और शांतिमय तरीके से अपनी मांग बेंच करने का असर पड़ा और वे २० एकड़ ३४ इंचमित जमीन अपनी मालिकों से मुक्त करने का राजी हो गये। दोनों ओर से मुकदमों का बर्खास्त किया गये। फरवरी '७२ तक अपनी

जलन कटने के बाद जमींदार जमीन दे हंगे, पैसा तय हुआ।

ऐसा सुख समाधान हो जाने से सबकी बरतान लुगी हुई। सवाबों के बाद जब अंततेश्वर गवि के दो निवास नेवा जमींदार को नयन करने शुरू तां जमींदार ने दोनों के हाथ पकड़ लिये और उनके हाथ बिनगये। विगत और जमींदार के मिशन का यह दृश्य सबके दिल को छु गया। ●

सिंहभूम जिला सर्वोदय मण्डल का गठन

सन १४ नितेश्वर को चारबंगला में लोकसेवकों की बैठक में सिंहभूम जिला सर्वोदय मण्डल का पुनर्गठन हुआ। श्री शुक्रनाथ देवनाथ अध्यक्ष, श्री मोतीरर त्रिपारी और आरिफ गद्दी मन्त्री तथा श्री अयुज सी सर्व सेवा तथा के प्रतिनिधि चुने गये। ●

जय श्रद्धिया से पानित
गाय धर्म
 ब्राह्मी आयुर्वेद
काला दत्त मजुन
 उपरोक्त उत्पादन केवल जिला से ही उपलब्ध है।
 आयुर्वेदिक औषधियाँ हैं।

1- आयुर्वेद सेवाश्रम प्रा. लि. रायपुर • रायपुर • इलाहाबाद

बंगला देश विश्व विवेक जागरण पदयात्रा

—नारायण देसाई

गर् १४ अक्टूबर को मुम्बईवासी जिना के ब्रह्ममुठ मगर से बंगला देश से दिल्ली तक की विषय-विवेक जागरण पदयात्रा का आरम्भ हुआ।

परवारी में ३३ लक्ष भारतीयों, जो मार्च महीने के पार्लियामेन्ट हद्दामात्र के बाद कई महीनों तक बंगला देश में रहकर स्वाधीनता का संघाम लड़ चुके हैं। अधिकांश परवारी बालिक या युनि-वर्सिटी के छात्र हैं। दो ऐसे हैं जो विज्ञा-भ्यास के माध्यम करके जोरों पर रहे थे। पदयात्रियों में अधिक मुसलमान हैं, हिन्दू उनके कुछ कम हैं। लेकिन अपने धारणी हिन्दू या मुसलमान बहुताया पदयात्री पसन्द नहीं करते। वे अपने भाषाकी बगानी बहुता अधिक पसन्द करते हैं।

विषय-विवेक जागरण पदयात्रा का उद्देश्य जगत का विवेक बगला देश को समझने के सम्बन्ध में जागृत करने का है। ३० जनवरी १९५१ को वे दिल्ली पहुँचने की उम्मीद रखते हैं। दिल्ली में विभिन्न देशों के दूतावासों में जाकर वे अपनी बातें रखेंगे। रातों में धान-धान और मगर-मगर में वे अपनी बातें समझाने पाते हैं। इसीके द्वारा अपनी बात सारे जगत के लोगों तक पहुँचाने की भी उम्मेद उम्मीर है।

पदयात्रियों की माँग पार्लियामेन्ट सरकार से यह है कि वे सुरेश बंगला देश छोड़ कार्य और सारे भारतीयों की पानवता के अधिकारों का हृदय समझ करें। कमरीर, रिजिड तथा अन्य सारणीय से उनकी यह माँग है कि वे पार्लियामेन्ट की दो जालेवाली सिकिठ तथा अन्य सहायता कर करें, भारत सरकार से वे यह माँग करेंगे कि वह ऐसे बन्द उद्योग विषय बंगला देश में ऐसी स्थिति बन सके कि यहाँ के आगे गल्पानी बाणध पर या सके। वे भारत सरकार से

आज तक सहायित्वो तथा बगला देश सरकार की जो सहायता दी है उनके लिए आभार भी प्रकट करेंगे।

यात्रा ७० भा० गाँजि-सेना मडल द्वारा आयोजित की गयी है। हिन्दू रिजि-रिजि-रिजि में उनके स्वागत के लिये स्वागत-समितियाँ गठित की जा रही हैं, जो स्थानीय व्यवस्था का सारा भार उठा रही हैं। यद्यपि यह किसी राजनैतिक पक्ष की ओर से आयोजित कार्यक्रम नहीं है, फिर भी बगला में यह यात्रा गया कि आदि कादम, बंगला बालेग, नव बालेस और धान परिषद के कार्यकर्ताओं ने इसकी सहायता के लिए पूर्ण मदद की। सभी ने अपने कुछ कार्यकर्ताओं की पदयात्रा में कुछ दिनों के लिए शामिल होने के लिए भी भेजा।

पदयात्रियों के पास खूबो नहीं थे। कुछ के बगल दूट गये। कुछ के पैदो में छाले पड़ गये। हाम में चपटा उठाकर कई पाशों बचने पाये गये। मडल कीप हो दूधे पदयात्रा के योग्य जून दिनादि का प्रबन्ध कर रहा है। विधी पदयात्री के पास जिला नहीं है। बंदों के पास बदलने के बचने भी नहीं है। उनकी यात्रा-काल के दरम्यान उत्तर भारत को सडक सडक से गुजरना पड़ेगा। इसके लिए भी प्रबन्ध करना होगा। उनके तेल, छात्रुन तथा अन्य जेब-सचके के लिए भी व्यवस्था करनी होगी। सभी ओर से सहायता बनेशिन है।

समाजों में जनवर दो या तीन पर-वारी तथा दूसर रिजिड अतिरिक्त बोलते हैं। पदयात्री जगत बगला में ही बोलते हैं, अपनी बहानी सुनाते हैं और अपने विचार भी रखते हैं। इन जगतों की सप्टुमबिन की भावना से अंतर्गत देख-कर बलाया मुण्ड हो जाते हैं। दिन-र दिन इन बगलाओं के मुँहों में भी कृष्टि हो रही है।

पदयात्रा के अनुयायन के नियम पदयात्री लोग स्वयं ही तय करके बना लेते हैं। यात्रा के समय पूरा समय दो दो बत्ता बत्ताकर चलते हैं। रातों में अतिरिक्त बालिक करने की इजाजत नहीं रखते हैं।

वीच में जब विषय होता है तब बैठने, खेतने या डिप्रेट फोने को छूट हांती है। पदयात्रा के नायक, ब्राह्मण, पंथया बालेनवाले आदि धारी-धारी से बदलते हैं। लेकिन सब समाजों में सभी पदयात्री अपना अपना परिचय देते हैं।

पोषणार्थ भी कुछ दिल बरप है
जब बगला— जय बगला।
मुक्ति सभाम— धनद, धनद।
सब कथार दीप बचा—क्षमाया देते
स्वाधीनता।
आमार भाई लोभार भाई—मुनीव
भाई, मुनीव भाई।
विषय-विवेक— जगो जगो।

व्याकरणों में कभी अविचलत अनु-भरों की बहानी सुनाई जाती है, कभी बगला देश की स्वाधीनता के सभाम का इतिहास सुनाया जाता है, कभी धर्म-निरपेक्षता, गणतन्त्र और मुक्ति का आग्रह उतना करो है यह समझना जाता है। किन्तु सब व्याकरणों में एक स्वर सभाम है : राजनैतिक समाधान अब एक ही स्वीकार किया जा सकता है— बगलादेश की सपूर्ण स्वाधीनता।

पदयात्रा २ नवम्बर को बिहार के जामताड़ा प्राय में प्रवेश करेगी। ६ दिसम्बर को यात्रा उत्तर प्रदेश के संद-रामा प्राय में प्रवेश करेगी और २० जनवरी को पार्लियामेन्ट से दिल्ली की सीमा में प्रवेश करेगी।

पदयात्रा के आयोजन के लिए आधिक महामता की माँग है। धरने-धरने स्थानों में हरदोहरों की भी अपेक्षा है। इनके प्रचार की भी माँग है। बिहार, उत्तर प्रदेश और दिल्ली के बालेन-धन लय होने पर पदयात्रा में प्रकृति विधे जायेंगे।

आगरा में सर्वोदय-सेवाकार्य

आगरा में शुरू से यह परम्परा चली आ रही है कि कार्यकर्ताओं में आपस का स्नेह है, और यह परम्परा सर्वोदय के काम में भी चली आ रही है। बाँस के दो टुकड़े हो गये, उसमें जहर आदमी को फेंकने में बँट गये, लेकिन जो आदमी हमारे साथ सर्वोदय में काम कर रहे थे, वे अपने स्यात पर हैं। हमने नये-नये आदमी भी इस काम के लिए खोज कर निकाले हैं।

हमने काम का बँटवारा कर रखा है। विद्यापियों में, गिझको में और इन्डि-जोवियों में। धारा काम गांधी प्रतिष्ठान के जरिये होता है। वही पर गोपियाँ होती हैं और हम सबलोक सहयोग देते हैं। मही पर नये-नये लड़के भी दबदूठे होते हैं। कुछ नौजवान निराले हैं, जिन्होंने वे क्षमता शिक्षा में शामिल-दिवस का बड़ा अच्छा उपयोग किया और अब भी वे हमारे काम में सहयोग देते हैं।

सर्वोदयकार्य के लिए हमने यहाँ दो संस्थाएँ बनायी हैं :

(१) सर्वोदय चरखा मण्डल—यह उन कार्यकर्ताओं का सभ्य है जो चर्खा फालते हैं और हर रविवार को इकट्ठे होते हैं। वे लोग सतत कार्य करते हैं। अब तक एक भी रविवार नहीं छूटा। इन लोगों में महीनो और बरखों हरिजन वस्त्रियों में बैठ कर वहाँ की सफाई करायी, फर्श पक्के कराये, नल लगवाए, बिजली लगवाई, तब वहाँ से हटे। इस प्रकार खरर भट्टी नाम के स्थान में मेहरोत्री की बस्ती में लगानार बैठने के बाद एक स्कूल की बिल्डिंग बनवाई। और वहाँ अब एक स्कूल चलता है जिसमें करीब २०० बच्चे पढ़ते हैं और दोगहर को काम करने के बाद जब औरतों कोट जाती है तब उनको सफ़ाया जाता है, और कुछ दूसरे काम सिधाये जाते हैं। इसी सभ्य के द्वारा मोहारा मटोले में सर्वोदय-पाथ खरर एक धर्मशास्त्र बनवायी। वहाँ पर १९ जोरों परसे चलायी है।

ये औरतें पहले शराब 'बेचती' थी, और कोई अच्छे काम नहीं करती थी। अब गांधी आश्रम के सहयोग से करीब १०० दो लडुको का सम्बर चले चल रहे हैं। इनमें से एक बहुत ६ रुपये रोज़ कमाती है।

(२) अस्पताल सर्वोदय समिति—इसमें बहुत-से शहर के कार्यकर्ता हैं। वे लोग नियमपूर्वक सरोजनी नामक अस्पताल में जाते हैं। यह राधा रजिस्टर्ड है। मरीजों का खाना देखते हैं, दवायें दिलवाते हैं, कोई परीच होता है, उसको अपने पास से दवा दिलवाते हैं। इस समिति की हर महीने के पहले सोमवार को मीटिंग होती है, और महीने भर के काम की रिपोर्ट पेश की जाती है। इस समिति के पास कोई माहवारी फीस लेने का प्रवचन नहीं है, मगर कभी धन की बर्नी नहीं पड़ती।

इसके अलावा सर्वोदय सेवा मण्डल नाम से भी एक संस्था बनायी है। हमने सर्वोदय के सिद्धान्तों को मानने वाला कोई भी व्यक्ति शामिल हो सकता है। यह संस्था भी रजिस्टर्ड है। हमारे कार्यकर्ताओं ने सर्वोदय-पाथ के जरिये, चंदे आदि से धन एकत्रित करके एक सर्वोदय-नेश्र नाम की इमारत लड़ी की है। इसमें हमारे कार्यकर्ता रहते हैं, जो जन-आधारित हैं। श्री गुड म्याल भूरान-पस मंगाले हैं और उसको बाँटते हैं, तथा और जो काम होते हैं वे इसी केन्द्र से होते हैं। इस सर्वोदय सेवा मण्डल में सब लोग मिलकर काम करते हैं। इसमें अधि-तर ऐसे आदमी हैं जो अपना खाने-पाने का काम करते हैं, और बाकी जो समय निकता है, वह इस काम में लगाते हैं। लीज-सेबक की कुछ ऐसी निपटायें थीं, जिनको सबलोक नहीं मान सकते थे, इसलिए यह संस्था बनायी थी, और धारा काम इसी के जरिये होता आ रहा है।

हमारे यहाँ प्रामदाय का नाम बहुत दिन पहले शुरू हुआ था। डॉ० पन्नायक आये थे। उन्होंने अभिमान शुरू किया था। दानवनों पर हलाकर कराने थे और

बाठ-आठ दिन में एक-एक लहरील दान-दान में था गयी थी। इस प्रकार धारा जिला प्रामदाय में २ अक्टूबर १९६९ के पेशवर हो गया था, और दोषनी पोषणा हमने २ अक्टूबर के तनारोह में कर दी थी। उस प्रामदाय में केवल हलाकर कराने गये थे, वह भी मास्टरों द्वारा, दूसरे जिले और हमारे जिले के कार्यकर्ताओं द्वारा। इस प्रामदाय के काम में शुरू-शुरू में हमारे साथ जिले में गांधी आश्रम के कार्यकर्ताओं ने काम किया और भी चिनन सात भाई ने भी काम किया। अब गांधी-आश्रम के श्री चन्द्रमाल सिंह ने सारे जिले का काम सम्हाल लिया है।

हमारे यहाँ से पाँच कार्यकर्ता शहरला गये थे। उनमें से तीन सोट आये हैं, और अब केवल दो आदमी वहाँ हैं।

जिले में प्रामदाय-मुक्ति का काम शुरू करने का इरादा है। अभी हमने कुछ नाम शमशावाद स्तर में शुरू किया है। शमशावाद में हमें अच्छे कार्यकर्ता मिल गये हैं। वहाँ पर अक्षयक भी अच्छा काम कर रहे हैं। लहरील सर्वोदय मण्डल की स्थापना हो गयी है। शमशावाद में सर्वोदय अन्तर्गत भी खोला है। वहाँ परीचों को नि शुरुक दवाई बाँटी जाती है। हर रविवार को वहाँ बैठक होती है और शहर से कोई-न-कोई वहाँ पहुँच आता है।

हमलोगों के पास एक सर्वोदय-सुख-मण्डल भी है। यह सुख-मण्डल बाल मुन्दल बस्ती के वहाँ है। वे ही साहित्य मंगाले हैं, और हम सबलोक उसे बेचते हैं। दो महीने पहले माई की मण्डी खाने खुला था। बरखों उपमे दिग्गु और सुजनमनों की, गिरी और पंजाबियों की मिथिज आरानी है। वहाँ घर-पर में आकर बुल्ले बेची गयीं। बरखे बाठ तो परी से सगरी हुमा और नये-नये कार्यकर्ता जिले। उधरे बड़ा उपाय बड़ा। छर बनना देस छहययय समिति भी गलायी। उसके जरिये ५-२ हमारे दाय हमने दरदूठे बिले। बगुने व बगादारी भी दरदूठी करके लेक की।

—डॉ० एम० शिरोडिया

प्रस्तावित प्रेस बिल

इसमें भी गणनाधिक देग वा अन्वयार उस देग के लोपी के विचार व्यक्त करते बा सबसे बड़ा पुरनोर लिपि है। इतिहास गणनाधिक देगों में यह सारथानी रहती पड़ती है कि अलवारों के मुँह पर हाथार लाने न सपाये। अलवारों में लिखने और अपनी बात फैलाने की आवाही का उद्योग यह किया जाय है कि सरदार द्वारा दिये गये मान्य काम के विराध अमान बनाना या उनके और सरदार को मजबूर किया या उनके कि वह मान्य नीति छोड़ें और उनके बदले छठी नीति अपनाये। सरदार यदि नहीं मुने तो फिर चुनाव के द्वारा उसे बदला जा सपाय है। इन सब बातों में अलवार बहुत मरदानर होते हैं।

अलवारों की इस आवाही का कुछ लोग कभी-कभी दुहावीय करते हैं। ऐसे लोग कभी-कभी ऐसी बातें भी छापीते हैं जिनसे देग के एक छम के मान्यताये, एक मान्य में रहनेवाये, एक माया कोरनेवाये लोग दुपरे छम, मान्य, आमायाने लोगों से तह्म शर्म और हग तरह अमसा निओ और तरह से देग में भेद-भाद बढ़ जाय एर देग कमजोर पड़ जाय, देग के टाड़ें टाड़ें हो जायें। अलवारों के इस मतन उद्योग की भी रोचने की आवाही रहती पड़ती है। कभी-कभी तो यह मुखिय होय है कि इन सारथानियों के नाम पर मान्य करने बनाने बाने विरोधियों को चुपाने की कोशिस करना है, एतदि यह भी सारथानी रहती पड़ती है कि सरदार के हाथ में ऐसी भी शक्ति न दी जाय कि अलवार की आवाही ही दिद जाय।

मगर के दुबरे-दुबरे पूँजीवारी देगों की तरह सरार के भी प्रमुल अलवारों के शक्ति बन्द पूँजीवति हैं। एतदि एक पूँजीवति के तो बड़े बड़े अलवार हैं, अलवार बना, अलवारों की पूँजी कभी

उनके हाथ में है। नजीबा यह होय है कि जिस बान को देग के सामने वे रखवा चाहते हैं वे ही बायें अलवारों में छाती हैं। इन मानी में वे अलवार आत्मनोपी की राय जाहिर करने के साधन परी रह पाये, कुछ लोगों की राय जाहिर करने के हफुडे बन जाते हैं।

ऐसा मयसा जाना है कि यदि ऐसी कोई व्यवस्था की जा सके, जिससे अलवार की शक्ति बन्द लोगों के हाथ में सीमित रहने से रोका जाय तो अलवार में राय जाहिर करने की आवाही बनी रहती। इसी सरार से सरार सरदार एक ऐसा मान्य बनाने की बात सोच रहती है जिससे अलवारों की शक्ति कुछ हदों में सिमटने से बच सके।

दुगरी और कुछ लोग यह अलवार व्यक्त करते हैं कि बड़ी ऐसा न हो कि बड़े-बड़े पूँजीवतियों की शक्ति के विनाये जाने के बम में अलवार सरवार के चपुन में पड़ जायें। यदि ऐसा हुआ तो और दुग होय, माले की बीचने की आवाही बहारी से निरत कर चुले में आ विरोधी। अलवारोंके नियं जाने पर ही सरदार का अधुल हुरियन न रहें। यदि प्रेस के सम्बन्ध में सरदार कोई बिल सरार में लाये भी तो यह सारथानी करते कि उन पर मोरमउ सफुड करने के बाद ही उसे अ-उज कर दे।

—हेमनाथ मिश्र

नरकटिपागंज, चम्पारण में किमानों की दुविधा

आज-कलसर बापेकष की प्रयथा यहाँ के बड़े-बड़े किसान करते हैं। इस कार्यक्रम के सफल हेतु भी जयप्रकाश नारायण की सम्बन्ध रहे हैं, और विनोबाजी का आकार स्वीकार करने हैं। परन्तु बीजा-बूटा विकलने में अन्तर नहीं है। एतका कहा है कि हम इस काम

की आगे बढ़कर करेंगे तो चारों तरफ से यहाँ के किसान हमारा विरोध करेंगे। अहमंग नहीं देंगे। कम जमीन बालें और परीय बेजमीन बाने उन्हीं के बम में होये, पीके उनके पास जाल नहीं है। बड़े का नहीं, छोटे का भी प्रय है। क्षेत्र के बाहर भी तो किसान हैं, यहाँ कुछ हो नहीं रहा है, उनके जमीन की मांग नहीं की जा रही है। भूदान में जमीन देनेवालों की चिन्ता करर नहीं है समाज में यह छाये है। बल्कि जिन बापउकारों ने गरीबी, वे आताक रहतीये, यह सम्प है। वे मुनहरी की चर्चा करते हुए पूछते हैं, 'यहाँ विनोबा भूमि सिन्धी और विनोबा माफुडका का विकास हुवा है ?'

यहाँ की आम्बरवाण समिति के अध्यक्ष ने अपनी कुल भूमि वा बीसवीं हिस्सा जमीन निराल दिय है, और बापउ तथा बन्ने की सारमउछया जमीन कुल पेशीम एकड़ का विवरण छ. घार परिवारों में कर चुके हैं।

—उदितनारायण चौधरी

रायचौली में ग्रामस्वराज्य अभियान

जिला सरोधम मन्थन रायचौली के मद्योग से विमम्बर में सरोधम विद्यार्थी कण्ठ बनेय, माले द्वारा आम्बरवाण-अभियान बनाया गया बिलवा सचालन डा० यथाधि पदनायक ने किया। इन अभियान में दामोदर कलाको के ४०५ छात्रों ने १०० गाँवों की पदयात्रा की और विचार प्रचार किया। विरलण की सम्बन्ध निय का सदाहनीय योगदान रहा।

बहुबद में भी गाँवी विद्यालय बढारों में आम्बरवाण अभियान हुवा। इन अभियान में ३०० छात्रों ने ७५ गाँवों की पदयात्रा की। ३२५ गाँवों ने समय दान दिया है। डा० पठारक, प्रकाश भाई, सरजू प्रभाद बाजपेयी और श्री रामनिधोर चतुर्वेदी (विद्यार्थ) ने दामो की मार्गदर्शन किया। —कवि अलवारों

क्रान्ति : प्रयोग और चिन्तन

एक परिशीलन

धीरेन्द्र भाई अक्सर गूढ़ा करते हैं कि वे 'शास्त्री' नहीं 'मिस्त्री' हैं। जहाँसे वे सिद्धान्तों का प्रतिपादन करने वाले व्याख्याता नहीं, बल्कि उनको क्रियान्वित करने वाले कारीगर हैं। लेकिन जिस तरह क्रियाशून्य ज्ञान या सिद्धान्त केवल 'वाद' बन जाता है और उसमें से 'विवाद' के सिवाय कोई लाभ निष्पत्ति नहीं होती, उसी तरह क्रिया के पीछे भाग जान की योग्यता और उसकी प्रेरण-शक्ति न रहे तो वह क्रिया जड़ रुद्ध बन जाती है।

इस किताब को पढ़ने वाले देखेंगे कि धीरेन्द्र भाई सिर्फ मिस्त्री नहीं हैं। भले ही वे किसी विश्वविद्यालय में प्राध्यापक 'शास्त्री' न बने हों, लेकिन उनकी हर छोटी-से-छोटी क्रिया के पीछे भी चिन्तन है। उनके हर कदम के पीछे कोई-न-कोई उद्देश्य और योजना है, कदम उठा चुकने और क्रिया कर लेने के बाद भी वे बड़ी बेचैनी के साथ उसकी परखते रहते हैं, उसकी सज्जी-सज्जी बखर्क करके सामने रख देते हैं, ताकि उस रास्ते पर चलने वाले दूसरे लोग जाहें तो उससे फायदा उठा लें। वे न शुष्क पठित हैं, और न जड़ मिस्त्री। वे एक वैज्ञानिक प्रयोगकार हैं जो क्रिया के आधार पर शास्त्र बनाते जाते हैं और शास्त्र की बसोटी पर क्रिया को बसते जाते हैं।

शास्त्र की सैली शून्य होती है। शास्त्री अपने चिन्तन का तिपोड़ कम-से-कम शब्दों में सूत्र के रूप में रखते हैं जिनका वा अन्वय करता है। प्रयोगकार अपने प्रयोगों का वर्णन विस्तार से करता है। क्यों उसने ऐसा किया? ऐसा करने के पीछे उसकी क्या दृष्टि थी? ऐसा करने का तरीका क्या निकला? जिन उद्देश्य से ऐसा किया था, उसमें सफलता मिली या असफलता? यह सब वह विस्तार से बोलकर रख देता है जिससे दूसरे सहजानी फायदा उठा सकें। इन

किताब की पढ़ते हुए फायदा पाऊँक को बची यह सगे कि हर वाद इतनी तपस्वील से देने की क्या जरूरत थी, तो उसका शीघ्रिच्य इसमें हे कि यह एक प्रयोग की नहानी है।

समाज-शास्त्र के क्षेत्र में एक क्रान्ति-कारी प्रयोग का यह वर्णन मनुष्य नहानी की तरह रोचक है। पर्थों के रूप में निरुद्ध दुःख होने से इसकी रोचकता और भी बढ़ गयी है, क्योंकि पर्थों में निकटता और तपस्वील भावपूर रहती है। जिन तरह भौतिक क्षेत्र में इन्जीनियरिंग के विज्ञान कर्मियों की कहानी दिनकर होती है उसी तरह सामाजिक इन्जीनियरिंग का प्रयोग भी कम भावपूँक नहीं होता। परिस्थितियों के परिवर्तन का खेल, मनुष्यों की भावनाओं और आस्थाओं के बदलते हुए नजर, और परिणामों की दृष्टि से आवा-निराशा के उतार-चढ़ाव तो इस पुस्तक में हैं ही, साथ ही धीरेन्द्र भाई ने एक वैज्ञानिक की तरह अपनी असफलताओं का चित्रण भी इनमें तटस्थ रुद्धि से किया है। यह पुस्तक पढ़ने हुए सभी-कभी पाठक को लग सकता है कि धीरेन्द्र भाई ने इस प्रयोग में जिन बातों को अपनी गवांतिर्मा माना है वह समझने के लिए नहीं प्रयोग करने की क्या आवश्यकता थी, वे तो शुरू से ही स्पष्ट होनी चाहिए थी। पर सामाजिक क्षेत्र में क्रान्तिकारी काम करने वाले जाते हैं कि प्रयोग के बाद जिन बातों की सफलता एक सामान्य मनुष्य भी देख सकता है वे प्रयोग के समय उनकी स्पष्ट नहीं होती। रुद्धि से निरुद्धि बात को समझ लेना असंभव है लेकिन कार्यरूप में उसे परिणत करना, और वह भी सामाजिक क्षेत्र में, इतना आसान नहीं है। सामाजिक क्षेत्र के इन्जीनियर को छोटी-छोटी बातों में भी बड़ी-बड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है और सभी ऐसे निर्णय भी करने पड़ते

हैं जो बाद में देखने या सुननेवाले को सहज ही गलत लगें। और इन्जिनियरों के प्रयोग के बाद भी धीरेन्द्र भाई जैवों के लिए भी कई बातों का धोरण गाना सम्भव नहीं होता है।

जिन क्रान्तिकारी उद्देश्य की लेकर यह सामाजिक प्रयोग किया गया उसका सार धीरेन्द्र भाई ने अपनी भूमिका में सलेखर रख दिया है। मनुष्य अकेला अपना जीवन नहीं जी सकता है। वह सामाजिक प्राणी है, अर्थात् समाज में रहकर ही वह विकास कर सकता है और जीवन चला सकता है। समाज में रहने हुए मनुष्यों के परस्पर सम्बन्धों में सार्थक, उन्नतित समस्याओं के समाधान और आगामी सपनों में न्याय देने के लिए मनुष्य ने राज-सत्ता का आविष्कार किया। राज-सत्ता लोगों से अपनी बात मनवा सके इसके लिए दृढ-मस्तिष्क उसके हाथ में दी गयी। यह दृढ-मस्तिष्क ही राज-सत्ता का पीठबल या उसकी 'संरक्षण' है।

समाज की आन्तरिक क्रान्ति के लिए सखी की गयी यह दृढ-मस्तिष्क बाह्यी आक्रमण से रक्षा के लिए बाजार में संय-मस्तिष्क के रूप में परिवर्तित हो गयी। संय-मस्तिष्क के रूप पर धीरे-धीरे राज-सत्ता समाज पर हावी हो गयी। पिछले २०० वर्षों में विज्ञान के अचूतपूर्व विकास का उपयोग करके यह हिमर-मस्तिष्क इतनी प्रबल हो गयी है और विनाश के अरन-शासक इतने विपरास और शक्तिशाली हो गये हैं, कि आज के युग में दृढ और हिमर-मस्तिष्क समस्याओं के समाधान या विनाश के साधन न रहकर सर्वनाश के उपादान हो गये हैं। इसलिए समाज में दृढ-मस्तिष्क का विरुद्ध सड़ा करना आवश्यक हो गया है।

पर दृढ-मस्तिष्क या हिमर-मस्तिष्क के अभाव में समाज में क्रान्तिर्हित सपनों का नियन्त्रण होन करेगा, और फायदेनक विज्ञान जिन से लोका? नहीं बाल्यक में आज के युग की सूत्र बुनीटी है। दृढ-मस्तिष्क और राज-सत्ता का आविष्कार

मनुष्य के विराय में मदद करने के लिए हुआ था, वे भीने जीवन का आधार नहीं हैं। समाज जीवन का आधारक तब वे सर्वोप और सर्वोपित ही ही बनता है। स्वतंत्रता, समता और बहुधुव ही मनुष्य जीवन का मूल्य ही बनता है और इसीलिए धीरे-धीरे लोकतंत्र के विचार पर मनुष्य पहुँचा है। लोकतंत्र का आधार द्विध-मक्ति है-ध्विज नहीं हो सकती। समाज के मूल्यों के लिए सम्मति-हित और आन्तिक विपक्षों के समझाने के लिए हस्ताह-मक्ति—दस्ता विचार ही मात्र के मूल की आधारता है। दस्ता मता वसा पर आधारित है और इसीलिए यह सम्मति-हित की विरोधी है। इसके स्थान पर लोक-हित का विचार मात्र के युवा की पाम आवश्यकता हो गयी है।

सर्वोप आन्दोलन और सामन्तवाद का कार्यक्रम इसी मक्ति को प्रकट करने का प्रयत्न कर रहा है। सामन्तत्व की स्वाभाविक परिधि केन्द्रित्व की ओर होती है, यहाँ लोक-हित के विचार का मन्त्र ही मता का विरोधीकरण है। सर्वोपवाद के प्रयोग लोक-हित के विचार के प्रयोग है। सर्वोप कार्यकर्ताओं के लिए ही नहीं, सामान्य नागरिकों और समाज-कारिणों के लिए भी उनकी यह दृष्टिकल्प उपरोधी होगी।*

—विद्याराज ठक्कर
 *प्रकाशक : सर्वोप मय प्रकाशन संस्थान, बाणगो। मूल्य २५८, मूल्य २० ६.००।

सहज मित्रा सर्वोद्यम मण्डल का मठन

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के शोचनकारी को एक वैदिक म्नामी हृष्यानन्द को धरमभार में ७ अक्टूबर को शिरा सर्वोप मण्डन के मठन के लिए हुई विमये सर्वोप सामन्तहीर जागा— (अध्या) राम गोपार पाल— (मन्त्री) रामप्रदेश साम्नी—सर्वोप शिरा मय के प्रतिनिधि और महादेव कुचराहा— (संस्थापक), चले गये।

—कविता प्रवर्तनी

उत्तर प्रदेश तरुण शान्तिसेना

उत्तर प्रदेश तरुण शान्तिसेना के प्रथम निरिधर व सम्मेलन में तिन चार सूची कार्यक्रम को स्वीकार किया गया था उनका सफल करने हेतु किमिन्न अर्थों की सूचना मिली है। शारे प्रदेश में उन्माह का आरम्भक म्नाम है, चार सूची कार्य-क्रम निम्न है -

१—१० नवम्बर से २५ नवम्बर तक सारस्वता पत्राज्ञा म्नाया जाय।

२—प्रदेश विवे में स्थानीय इन्टर व रिपी कार्यो के छात्रों तथा निधको का प्रतिनिधि-निधिर किया जाय निधमें सर्वोद्यम-आन्दोलन की भूमिवा का समझन-कार्य पर जोर दिया जाय।

३—साहित्य प्रचार के कार्यक्रम 'सदामन', 'नयी तारीय' व 'सर्वोद्यम' (मूलाय वसा) की साहज तरुण ब्रह्मयी जीय तथा उपयोगी पुस्तकों की विज्ञो हो।

४—वसाय दश के सारणाविषयों के लिए कार्य करण विषय कार्य। ६ अक्टूबर में उत्तर प्रदेश में ह्वाण जानेवाले 'विद्य विवेक आरण्य परासा' शारी व विद्य ह्वाण-मित्री का मन्त्रण किया जाय।

शारे प्रदेश में सरस्वता पत्राज्ञा म्नाये की सैदानी चय रही है। दक्षिण में विद्य-मन्त्रीय लक्षण शान्तिसेना तथा आचार्यपुर का सम्मेलन २३-२४ अक्टूबर को सफल हुआ। बालपुर में विद्यता सरोध तरुण शान्तिसेना का २१ अक्टूबर से २ नवम्बर तक विविधभाष निधिर का आयोजन किया जा रहा है। मयुग, सारसाधार, अनीयड, आगरा, मुन्नासादर, सहारनपुर आदि में निरुधर चरिध में निधिर सम्मेलन होने की सूचना मिली है। वाराणसी आदि कुछ जगहों से विन्वागिणों के लिए कार्य करण होने की सूचना मिली है।

१० नवम्बर से २५ नवम्बर तक म्नाया आनिशाग म्नायता पत्राज्ञा प्रदेशीय संगठन की विरुधुण करने में प्रहृण-सूयों म्मिवा निधयेवत ऐसी जागा है। —वेद्यप्रिय कार्योचय सचिव, ३० प्र० मण्य शान्तिसेना

उत्तरा राण्ड में पुष्टि कार्य

उत्तर बाणी (उत्तराण्ड) के धी पुन्धर दत्त भट्ट ने म्नायकार मेला है कि पुणेला विचार क्षेत्र के म्नायों में सामान्य पुष्टि कार्य मान्य है। धी म्नायकार कठिना पुम-पुम कर पामस्वराण-शमाओ की म्नाय कर रहे है। टोल नदी उद्यम का यह क्षेत्र विचारय का बहुत ही विद्यता हुआ एव उन्मिध क्षेत्र है। ●

यूगंय में बांग्लादेश प्रदर्शनी

ब्रिटेन के प्रमुख विद्य म्नायकारी केन्दर कागिण के निधमण पर सर्वोद्यम कार्यकर्ताओं की सजीवपुमकार और बहानी-मन्त्रीय सम्मेलनय युगेय गये है। ये जगने माय बागारण के सम्मेलन केने फोटा, विद्य कार्यय म्नाय भी ले गये है, निधनी म्नायों सर्वोद्यम मय के म्नायकारण में का गयीं यो। एा विधो की प्रदर्शनी का आयोजन दुष्काणय सारसाय से १३ म् १८ अक्टूबर तक किया गया। म्नायित माय का म्नायणो ता की आधारक विद्य म्नाय, निधमें केन्दर कागिण, सर्वोद्यमकार, वमन्तर, कात विद्य, म्नाय एरपी, दु-चर दृष्टि-मन्त्रीय विद्य वसाता ले म्नाय। देग में म्नाय-मता की म्नायण करने की। म्नाय की।

अर सजीवपुमकार और सम्मेलनय वेन्-मन्त्रीय, ह्वाणड, टेलमारी, सरोधन, जर्मनी, आन्टिया, स्विडनलैंड, मन्त्र और टटपी की दो म्नाये की म्नाय कर्ते और विद्यकर में माय लोड जाने कर कार्यक्रम है।

सर्वोद्यम मय और म्नायों के म्नाय-वादिधो के इव सम्मिधन प्रत्यय का उद्देश्य है—वसाय देग की प्नाय-विधि से विद्य-मन्त्रीय की म्नाय करण और म्नाय कार्यकर्ता म्नायण करने के लिए वागिण-मन्त्रीय पर और म्नाय। ●

उ० प्र० तरुण शान्तिसेना शिविर व सम्मेलन

उ० प्र० तरुण शान्ति सेना का पहला सम्मेलन बरेली में दिनांक २५ सितम्बर से ३० सितम्बर तक बना। कुछ शिक्षार्थी १८ थे जो २५ जिनमें तथा ७ विरक्त-विद्यार्थियों के ३० कालेजों का प्रतिनिधित्व करते थे। शिक्षार्थी भादयों की संख्या और गुणात्मकता के दूसरी ओर बौद्धिक दृष्टि से स्थिति अत्यन्तोपजनक रही, क्योंकि आमंत्रित बंका शिक्षार्थियों में उपस्थित नहीं हो सके। डा० रामजी सिंह भी अन्तिम दिन पहुँचे। इस प्रकार 'पीर, चाबवा, पिण्डवी, खर' सभी की भूमिका अत्यन्त ही भाई, विद्वान भाई और दीक्षित जी की निभायी पड़ी। इस दृष्टि से यह शिविर की प्रशंसा भी करनी पड़ेगी कि यणसेवकत्व का स्वरूप सामने आया—

अस्पष्ट ही सही। एक ओर भी महत्वपूर्ण तथ्य उजागर हुआ कि अब आन्दोलन की इस भाँग को समझ लेना चाहिए कि यह हरफन मीना खोजवा है, विशेषतः नहीं—

हास्यिक विशेषता से कोई वैर नहीं है। शिविर जीवन की कई कमियों को मिटा या खटा है। पर मेरी दृष्टि में उनको दूर करने का सर्वाधिक प्रयास ज्यादा महत्व रखता है। भिन्न-भिन्न जिलों से आया तरुण मानस, इनका समन्वयकारी और विचारणीय होना इसकी कल्पना दूर से नहीं की जा सकती है। इस दृष्टि से मधुरा से आये स्तुती बच्चों का पल विशेष उल्लेखनीय था और तरुणों पर बृहद दृष्टि का प्रभाव (और पक्क) जिज्ञासा घातक होना है इसका उदाहरण मागुर के एक कानेन का दल था, जिसे बीच में ही जाना पड़ा।

धर्म की समुचित योजना नहीं रहने के कारण शिक्षार्थियों में अज्ञानता या और शिक्षा के लिए रुझान करने को वे वेगार भी नहीं थे।

सांस्कृतिक भावबोध, आनंद की दिव्यी मनोभूति के टीकित थे। पर अल्पे गीत, नवितार सराही गीतों और गितेमा से

अलग भी कुछ होना चाहिए, इसकी प्रतीति हुई। 'पहली रोटी' मध्य सघीत का अथिगत प्रभावशाही रहा।

पत्रों के विषय थे—तरुण-शान्तिसेना तथा उसका संघटना, कार्यक्रम, तरुण-शान्तिसेना बनाम छात्रसंघ, छात्र-आंदोलन और इसकी दिशा, आमत्यराज्य का दर्शन एवं उसका र्जन तथा आत्मज्ञान-विज्ञान। प्रत्येक वर्ग के बाद उस विषय पर खुली प्रश्नोत्तरी के कारण बातें बहुत स्पष्ट होती रही। शिविर उद्घाटन के दिन लन्दन स्तुल जाफ नानवापनेन के निदेशक रेवेरेन्ड नॉल्डस हेरैटस ने पश्चिम के विषय में छाये अनेक प्रश्नों का निवारण किया। पत्राग्रीकरण, हिंसा बनाम अहिंसा, अहिंसात्मक आन्दोलन की दिशा आदि कई विषयों की चर्चा करते हुए आपने कहा कि, 'अहिंसा कोई तरुणक नहीं है, तरुण जीने का रास्ता है। पश्चिम का यज्ञीकरण उद्योगी आत्मा को छोड़ता है और भारत के लिए यह साधन हो जाने की घड़ी है।'

२९ सितम्बर को बागपुर के श्री शिवहराज सिंह की अध्यक्षता में सम्मेलन शुरू हुआ। सम्मेलन का उद्घाटन विहार के तरुण-शान्तिसेना के कुमार प्रभाव ने किया। छात्र-संघ, चुनाव आदि की चर्चा करते हुए आपने कहा कि, 'समय तेज गति के भाग रहा है। उसके साथ समुचित बनावे रखने के लिए हमारी गति भी उसके अनुसर होनी चाहिए, अन्यथा तरुण पीछे छूट जायेंगे। सरकारें हमारा यह ध्या-निर्धायी तथा अरिष्ट से पराजय-वादी होती हैं। छात्र-संघों का वर्तमान संघा, इन संघ-अस्थाओं का ही छोटा रूप है। अब वगल समस्या भी ब्रह्मसंघों, अन्यथा अन्त्या के प्रतिहार की जगह दे क्ष माय का सहकार करने लगे।'

यजनास राज्य जम श्री वामजनास गुला ने जोग और होश के समन्वय पर

जोर देते हुए कहा कि तरुण-शान्तिसेना की अक्षमता अनिवार्य है, क्योंकि इसके विचार और कोई उपाय नहीं है। आन-मान की मुझा देनात कागुत और पुनित से होगी, यह बौद्ध मय है—बहु कर्ण ही है, जो पाप करता है। प्राचीन, गविधान को समाजवाद नहीं सरकराता का वाहक बनाते हुए आपने इसकी अर्थता बताया। साथ ही इसमें सवोपर के प्रभाव का विरोध करते हुए आपने कहा कि यह सरकरावाद के प्रभाव का विचार विषय था रहा है। यह वेगोर्तरी नहीं वेगोर्तरी है। सरकारी पत्रे मरभूत हो रहे हैं। पत्रे में अविनयत मिलिभ्यत को सपात कर अविनयत आचर्यताओं की पहचान की। मालन ने जाने-अनजाने इसकी आग्री बात पकड़ी। पर हमारे सविधान ने मुँजना पर की बणल बढीरी पर मनु की बल, हवापो सक्षुति में पणनी बाउ, पर ध्यान ही नहीं दिया। तरुण-शान्तिसेना इन मूल्यों की प्रतिस्थापना कर सकेगी तो उसरी फलदाता अक्षरिण है।

'जगता देय : जगत बनाम सरकार' विषय पर बोलकर माराज्य भाई गिनि-रथियों से तादात्य स्थापित कर चुके थे। आपने सम्मेलन में तरुण-शान्ति सेना की स्वरिगत और तरुण-शान्ति सेना की सामूहिक विनिष्टता की चर्चा विस्तार से की। अविनयत चित्तवृद्धि और सामाजिक क्रान्ति का विचार तरुण-शान्तिसेना के लिए एक है। यही अन्त्याम है और इसमें साधना, स्वरिगत होे हुए भी आरम्भिक होगी। इस साधना में तीन बाउह सर है—बहू-बाउ, काम तथा पूर्वाह। बहू-बाउ का निगकरण प्रेम से होगा। प्रेम अर्थात् देना। रिश समान में क्रान्ति करना चाहते हैं परने उगरी बनकर उगरी दो। जिज्ञासी उगे उगरी घेजना उगेगी। काम के रिश मरत तथा पूर्वाह के लिए कक्षा की माधता पर मन देते हुए आने बहू कि अपने प्रमुख का विस्तार माधता है। इसे जिज्ञासा निरगत कर सके, उगरी

सदन साधना होगी; जब आप कीर्ति-
 चरित्र समाप्त करते हैं तो विचार
 कीर्ति ही क्या आप में उपर्युक्त साधना
 की समझा जड़ी, क्या विपुल (सर्व, प्रेम
 काया) बड़े, क्या विशेष (अहंकार,
 पाप, पूर्वजन्म) कम हुए, अनुमान
 (धर्म, सेवा, स्वाध्याय) बढ़ा? यदि
 नहीं तो आप का कार्यकर्म, उचित का
 कार्यकर्म नहीं था। आप में धर्म का
 महत्कार नहीं होता चाहिए। धर्म की
 मुझा और तपुता से दूर हयारा धर्म
 मान्यकारी और उपासनामूलक होना
 चाहिए।

आगे अग्रणी साधना में श्री गिरि-
 सहाय मिश्र ने भारतीय सामाजिक क्रांति
 का विवेचन करते हुए सधन-शास्त्र सेना
 से उदाहरण बताने की अपेक्षा की।
 समेकन का समाप्त विहार के डा०
 रायजी सिंह ने किया, जिनके प्रबंधन
 'विमान और आध्यात्म' ने एक दिन
 पूर्व गिरिशास्त्री को बेचना को बुरी तरह
 साक्षर दिया था। अतिरिक्त साधना
 और सामाजिक क्रांति के अद्भुत सम्बन्ध
 की विवेचना करते हुए डा० रायजी सिंह
 ने उन आचार्यों की ब्याख्या की जिन पर
 सामाजिक क्रांति टिकेगी। नवतन्त्रवादियों
 की तीव्रता को प्रशंसा करते हुए आपने
 कहा कि वे निराश्रय, धके हुए पाण्डे हैं।
 उनका ग्राहक बुरा बन्ना है। विध्वंस का
 काम ही निराशा से होता है। मूलतः
 उनकी शक्तियों से बहुत दूर है। सधन-
 शास्त्रियों का सामाजिक परिवर्तन की
 हीरा लेकर, मूलतः का प्रारम्भ करेगी।
 मनुष्य से मनुष्य के सम्बन्धों का अधिष्ठान
 मात्र, धर्म, शक्ति ही होगा और तप-
 शास्त्रियों का वह अनुमान भी है मनुष्य
 भी है। सधन-शास्त्रियों का उक्त मुक्ति
 का, अतिरिक्त सधना का कोई भव्य
 नहीं मानेगा जो समूह की मुक्ति का
 कारण न बन सके।

हमें समझते हैं कि मनुष्यों के साथ
 समेकन समाप्त हुआ और प्रदेग घर में
 गये उदाहरण से बड़े सधन विचारक—रायजी

सर्वोदय-साहित्य-भण्डार का वार्षिकोत्सव

'विश्वी विचार का प्रकार अपने में
 गत है। क्रिया प्रचार करना पड़ना
 है, यह सोचे की वस्तु हो जाती है।
 सर्वोदय विचार नहीं है, उसे विचार
 नहीं होना चाहिए। सर्वोदय एक दर्शन
 है। दर्शन जन्म चीज है और विचार
 विपुल जन्म वस्तु।' ये हैं वे उदाहरण
 जो सर्वोदय-दर्शन के सुसिद्ध आध्यात्मिक
 आचार्य दादा शर्माधिकारी ने गन १०
 अक्टूबर को इन्दौर में प्रकट किये।

ये महात्मा स्वामी वि-सर्जन साधना
 द्वारा संचालित सर्वोदय-साहित्य भण्डार
 के ११ वें वार्षिक स्थापना दिवस उत्सा-
 रोह की श्रमशला करते हुए बोल रहे थे।

आगे उन्होंने कहा कि, 'दर्शन से
 मतलब है जीवन की तरह देखने का
 एक दृष्टिकोण। सर्वोदय को हमें विचार-
 धारा बनने से बचना है। इसलिए
 सर्वोदय-विचार का प्रकार नहीं, प्रवृत्त
 होना चाहिए। विचार के प्रकार में
 विज्ञानवादी हावी है।'

क्रान्ति के विविध चतुर्धुओं का विवे-
 चन करते हुए दादा शर्माधिकारी ने कहा
 कि 'वाक्य का यह यश-यश है कि मनुष्य
 मनुष्य के निरन्तर बने आये। सामाजिक
 और समाजिक मनुष्य को एक दूसरे से
 सजग करते हैं। इसके निरन्तर के विचार
 क्रांति समर्थ नहीं। गांधीजी ने कहा
 था कि मेरे लिए मनुष्य के नजदीक जलना
 ही ईश्वर के नजदीक जलना है। विचारों
 की दृष्टि ही मुक्ति का मार्ग समझते हैं।
 मनुष्य को मनुष्य से भिन्नता ही मूलभूत
 क्रांति है। इस क्रांति का दर्शन साहित्य
 की ओर से होता है। समाज को चाहिए
 कि वह साहित्य की ओर से मनुष्य को
 देखे और वर्तमान में आने नरम के-
 से बढ़ाये।'

नयी और कठिन भी नहीं है। इनका
 समुचित विवेचन उत्तर प्रदेश में एक
 बड़ी सारण बनकर उभर सकता है।

—पुनार प्रताप

एक अक्षर पर सुदूर अतिथि वज्र
 के रूप में बोलते हुए मध्यप्रदेश के शिक्षा
 मंत्री श्री जगदीश नारायण अग्रवाली ने
 मुझा दिया कि राज्य के सभी विद्य-
 विद्यालयों में 'गांधी वेयर' की स्थापना
 की जानी चाहिए।

समारोह के प्रारम्भ में मध्यप्रदेश
 दृष्टिहीन कल्याण सच के बालकी ने
 सुमनुर बठ से एक प्रश्न प्रस्तुत किया।
 श्री दादाभाई नारड ने अतिथियों का
 पुष्पाहार से स्वागत किया।

भण्डार के संचालक श्री जगन्नाथराव
 भाईजी ने भण्डार का सक्षिप्त प्रवृत्ति-
 विवरण पढ़ा और श्री सीधू मेहता ने
 भाषाओं की बधाई रखी।

यह उल्लेखनीय है कि एक अक्षर
 पर तीन व्यक्तियों की, (जिनमें एक
 विद्यार्थी, एक मजदूर और एक सत्या-
 गांधी है) उनके द्वारा भण्डार से प्रवि-
 स्तापन विपुल साहित्य सहायों पर
 'विन्तार अतिथि और विचार' नामक
 पुस्तक भेंट-स्वस्व देकर उन्हें सम्मानित
 किया गया। सवा का संचालक श्री
 मानव मुनि ने किया। श्री दादाभाई
 देसाई ने मन में सफल प्रति भाषार प्रकट
 किया। (संकेत)

आन्ध्र प्रदेश में पुष्टि कार्य का प्रारम्भ

आन्ध्र प्रदेश के मद्रास नगर के स्वयंसेवक
 मन्त्र में पुष्टि का नाम प्रारम्भ हुआ है।
 १० गांधी में सामर्थ्यको का गठन हुआ
 है। १० एच १० अक्टूबर की स्वयंसे-
 वक में मद्रास नगर शिक्षा सचिव सम्मे-
 सव हुमा विद्यया उद्घाटन करें सेवा
 सच के मंत्री श्री टाकुरराव जग ने
 किया। इस सम्मेलन में मानव भद्र में
 पुष्टि सक्षिप्त विज्ञान का निरन्तर किया
 गया। जिनके के ११ प्रकटों में से तीन
 प्रकटमान हो गये हैं। अर्थात् मानव जन्म-
 चरणा प्रकट में वाचकान्ति प्राणि एक पुष्टि
 का कार्य करने का निरन्तर किया गया।

उत्तर क्षेत्र के नशाबंदी सम्मेलन की माँग

शाहाबाद जिंसा सर्वोदय मण्डल की बैठक

उत्तरों क्षेत्र के नशाबंदी का काम करनेवाले कार्यकर्ताओं का १० तथा ११ फिल्टर १९७१ को दिल्ली में एक सम्मेलन हुआ जिसमें तमिलनाडु सरकार की नशाबंदी का काम करने की कड़ी आलोचना की गयी और प्रस्ताव पान दिये गये ।

और जनता के सामाजिक, आर्थिक और नैतिक स्तर में जो उपति हुई थी, उगला पान होगा । तमिलनाडु सरकार ने अपनी इस कार्यवाही से अन्नादुराई की आत्मा को दु छी किया है, क्योंकि वह अन्याय-रण के भले के लिए नशाबंदी की अने-वार्न मानते थे, और वह इन नीति पर सदा पाम रहे । सम्मेलन ने तमिलनाडु सरकार से यह क्षण की, कि वह अपने इस गलत निर्णय को वापस ले ।

सम्मेलन में तमिलनाडु की डी० एम० के० सरकार की नशाबंदी खत्म करने की कार्यवाही की निन्दा करते हुए कहा गया कि तमिलनाडु में २३ साल से नशाबंदी का-कू वाणू पा, -लेखे रू-कारके राज्य सरकार ने केवल निहित स्वार्थियों का भला किया है और लाखों शरीरों और निम्न वर्ग के लोगों की सुखहालों पर प्रहार किया है । इस कार्यवाही में जन-साधारण का कोई भला न होगा, मजदूरी और शरीरों का आर्थिक शोषण बढ़ेगा,

सम्मेलन में तमिलनाडु के सामाजिक कार्यकर्ताओं की प्रणवा की गयी, और सरकार की इन कार्यवाही के विरुद्ध उनके शान्तिमय आवाज करने के पहले का समर्थन किया गया । सम्मेलन ने देशभर के सभी तबकों के सामाजिक कार्यकर्ताओं से नशाबंदी के लिए मान्दोवन करने की अपील की ।

शाहाबाद जिंसा सर्वोदय मण्डल की बैठक पन ६ अक्टूबर को जेठारी में हुई । तब विचा गया कि २१ अक्टूबर १ श्योरा और भगवानपुर प्रयोग में प्राय-दान युष्टि अभिगत सपन रूप से चरना जाय ।

भगुना जोर सहनराम अनुमण्डनी में भूरान विधानो नी देवदानी के विचारण के लिए भूदान विगत देवदानी के निरापण सम्मेलन करने का निश्चय किया गया ।

—महेन्द्र कुमार सिंह,
मधी सर्वोदय मण्डल

'शास्त्राधिक समाया' के सम्पदन में दिखवारी करने वाले सम्पर्क करें—
महाशान कजाज
अ० भा० मानिठ देना मण्डल,
राजपाठ, वाराणसी-१ (उ० प्र०)

जयप्रकाश-जयन्ती

मुजफ्फरपुर जिंसा सर्वोदय मण्डल के आह्वान पर गत विजयादशमी (दुर्गाष्टुका) को लक्ष्मीनारायण भवन, सर्वोदयग्राम (मुजफ्फरपुर) में जयप्रकाश जयन्ती समारोह मनाया गया । समारोह की अध्यक्षता श्री सोहनलाल शुक्ल और उद्घाटन निरक्षर प्रमण्डल आयुक्त ने किया । सुमहरी प्रसन्न के लगभग १० ग्रामस्वराज्य समझों के प्रतिनिधियों ने इन समारोह में, भाग लिया । सभी ने जयप्रकाश बाबू और प्रभावती देवी के घोषणा होने की कामना की ।

के अवसर पर गया जिले के बगौड़ू नेता श्री यदुनन्दनगर्मा की अध्यक्षता में एक विचार गोष्ठी हुई ।

गोष्ठी में लोगों ने जयप्रकाशजी के जीवन के इस पल्लू को महारूप में माना कि वे मान, दल और देश की सीमा से मुक्त होकर विस्तार एव मनव करते हैं और अपने विचार निर्भीकता से प्रगट करते हैं । इस कारण कुछ लोग मधी-व नी विरोधाभास के भ्रम में पड़ जाते हैं । पर ध्यान देने की बात यह है कि जयप्रकाशजी का चिन्तन मानव-मूल्यों एवं मानवहित का होते हुए भी राष्ट्रहित की अवस्था नहीं करता ।

जयप्रकाशजी की ७० वीं वर्ष गाँठ के प्रतीक के तौर पर ७० दोन जलाकर लोगों ने सम्मान प्रकट किया और उनके दीर्घजीवन की कामना प्रगट की ।

—सिध्दार्थ सिंह

शामनिर्माण मण्डल एव प्रा० समिति, गया

इस अंक में	
बगनादेग और भाल का भविष्य	—महारकीय १०
सबान बगना देग का नदी है ।	—सुमनति १२
युष्टि अभिगत का मण्डल : समझाई और जनता हल	—श्रीरेखादे १३
युष्टि . निर्माण, चिन्ती, कंठे ?	—राजमणि १४
बगना देग विरु विवेक जागरण पदपाया	—नारायण देवारी २०
आगरा में सर्वोदय कार्य	—डी० एम० शिरोमणि २८
प्रस्तावित पंग विन—हेमनाथ सिंह कानि : प्रयोग और विस्तार	—विष्णुदान वड्डा १०
उत्तर प्रदेश तरण शान्तिसेना	—हुमना प्रभात १२
अन्य स्तम्भ	
आपके पत्र, मान्दोवन के सहायक	

साहित्यिक प्रार्थना के बाद समारोह का विमर्जन हुआ । —रा० प्र० विधेदी जिंसा सर्वोदय मण्डल मुजफ्फरपुर

● गत ११ अक्टूबर को गया नगर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन भवन, आजाद पार्क, में जयप्रकाशजी की ७० वीं वर्षगाँठ

वार्षिक मुक्त । १० प० (सफेद कलाज : १२ प०, एक प्रति २५ पैसे), विदेश में २५ प० ; भा० शीतल या ४ हाल । इस अंक का मूल्य २० पैसे । भोजपुरप्रदायक मण्डल द्वारा सत्य सेवा संघ के लिये इकायित एवं प्योहूर संत, आरणाती में मुद्रित

क्रान्तिकारी जन-आन्दोलन के लिए सघन कार्य करने का आवाहन

—सर्व सेवा संघ के भोपाल अधिवेशन में सर्व-सम्मति से पारित ऐतिहासिक प्रस्ताव—

सारे देश में—डेढ़ लाख से अधिक ग्रामदलों के सकल प्राप्य कर चुकाने के बाद अब उन संस्थानों को कार्यान्वित करने का—पानी पुष्टि का—काम डेढ़-दो सत्रों से ग्रामस्वराज्य आन्दोलन के अगले क्रम के तौर पर हमारे सामने खड़ा है। इस काम को अत्यन्त त्वरा की दृष्टि से करने के लिए उसमें अपनी सारी शक्ति एकत्रित तथा साधन के साथ लगाने के लिए जयप्रकाशजी का मुसहरी प्रसन्न में आ कर बैठने से तथा चिनोबाजी की प्रत्यक्ष प्रेरणा से सहृदय जिले में पुष्टि के काम को हाथ में लिया जाने से—सारे सर्वोदय जगत को प्रेरणा मिलेगी और फलस्वरूप, सारे देश में, प्रांत-प्रांत में, पुष्टि के कार्य में सैकड़ों शेरक लगान से जुट पड़े हैं।

अनुभव से पाया जाता है कि ग्राम-दान संकल्प से नहीं अधिक पुष्टि का काम गाँव के सारे समाज को, उसकी सारी मान्यताओं को गहरे ढंग से छूना है, उन्हें शकशोर देना है। उसके सिलसिले में यदि अधिक जटिल समस्याएँ हमारे सामने आती हैं। इसलिए पुष्टि का काम शेरकों के सारे प्रयत्न और ध्यान के बावजूद अपेक्षा से मन्द गति से आगे बढ़ रहा है।

पर यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि इस सिलसिले में हमें ग्रामसमाज का बहुत निकट का तथा गहरा दायें और उसकी अन्तर्दली प्रक्रियाओं का अधिक साव मिल रहा है, जनचित्त के धोतों के अधिक निकट हम पहुँच रहे हैं, और इस तरह आन्दोलन की क्रान्तिकारी जन-आन्दोलन का रूप देने की सम्भावना अधिक बढ़ती जा रही है।

यह स्पष्ट है कि ग्रामदान या पुष्टि

का काम सिर्फ जमीन के बँटवारे का, ग्रामकोष स्थापित करने का तथा ग्रामसभा को औपचारिक ढंग से चालू करने का सवाल नहीं है, बल्कि गाँव की विभिन्न प्रजातों और वर्गों में परस्पर सम्बन्ध बढ़ाने का, उसके दबे हुए वर्गों में निर्भयता और आत्मशक्ति जागृत करने का, सबमें समानता और एकता स्थापित करने का तथा उनमें अधिकतम जागृत करने का काम इन कार्योंको के जरिये हमें करना है। इन ध्येयों के बारे में कोई मतभेद न होते हुए कार्य करने की प्रजातों के बारे में अलग-अलग दृष्टिकोण हमारे सामने आते हैं। एक विचार यह है कि वैर-मालिक तथा छोटे मालिकों के मालिकत्व-विचरन और आपसी एकता-स्थापन करके बड़े मालिकों पर नैतिक असर डालना आवश्यक है तथा दूसरा विचार आया है कि इन आन्दोलन में पहले बड़े मालिकों के द्वारा प्रभावित के तौर पर होना चाहिए। दोनों विचार शायद एक दूसरे के पूरक हैं। और, हमें सब वर्गों तथा तबके के साथ सम्पर्क रखकर सबमें अधिकतम जगाने का काम करना है। जनचित्त के जागरण के लिए दान, सघन तथा शोक पर प्रति-कार, इन तीनों की सम्मिश्रित या समन्वित रूप से आवश्यकता है। पर सब यह भी महसूस करता है कि आज देश के विभिन्न भागों की विभिन्न-विभिन्न परिस्थिति की तथा इस विज्ञान काम के मुकाबिले में हमारे कुछ अनुभव और जानकारों की अल्पता को देखते हुए भिन्न-भिन्न स्थान पर विध-भिन्न ढंग से काम करने का अवसर है।

इसलिए सब महसूस करता है कि सहृदय तथा मुसहरी के प्रयोग को, प्राथमिकता देते हुए तथा उनमें राष्ट्रीय

शक्ति लगाने के अलावा हर प्रांत में भी एक-दो स्थान पर पुष्टि का काम सघन रूप से चलना चाहिए। ये सारे प्रयत्न द्विध-विधिन रूप से न चलकर उन परस्पर घनिष्ठ सम्पर्क बनाये रखन चाहिए, जिससे हरेक के अनुभव का साथ सबको मिल सके और कुछ मिलाकर एक राष्ट्रीय प्रयत्न के ही हिस्से वे बनें।

अनुभव से बीसठा है कि जाशक्ति के उत्पन्न-स्रोत के तौर पर ग्रामस्वराज्य-सभा का बहुत बड़ा महत्व है। अतः उसे सक्रिय करने पर विशेष ध्यान दिया जाय।

शिक्षक, विद्यार्थी तथा अन्य शौ-जवानों की पराक्रम-शक्ति का आवाहन आन्दोलन का अनीष्ट है। अतः आपार्य-कुल, लक्ष्य-भाविन्देता तथा ग्राम-पालि-सेवा के माध्यम से इन्हें बड़े पैमाने पर आन्दोलन में छोटा जाय तथा उनके वैचारिक तथा भावद्वारिक ज्ञान की वृद्धि के लिए ताकी की अन्वेषी और पर्याप्त व्यवस्था की जाय।

प्रसन्न रतार के संगठन

प्रसन्न स्वराज्य-समाजों का इस काम में एक महत्व की भूमिका है। इसके माध्यम से गाँवों के सघनता को परस्पर सम्पर्क का बल मिलेगा तथा राष्ट्रीय स्तर के साथ सम्बन्ध अवस्थित रूप से स्थापित हो सकेगा। अतः प्रसन्न स्वराज्य-समाजों के सघनता पर विशेष ध्यान दिया जानना चाहिए।

एक सालता है कि आज हम सहृदय तथा मुसहरी के प्रयत्नों को तथा देश के दूसरे भागों में मननैतले सघन प्रयत्नों को एक-डेढ़ साल में सघन कर देने में तो शायद इस आन्दोलन के लिए जन-आन्दोलन का स्वरूप देने का मार्ग सीध ही खुल जायेगा।

भोपाल, ३१-१०-'७१

‘टोअर्स ऑफ ज्वाय’

मिथुन तार्किक-मन्मथन की समारम्भ पर सर्वोदय-आन्दोलन की एक प्रमुख प्राथमिक प्रक्रिया के सम्राटक ने अपनी बातचीत में जब अपनी प्रतिक्रिया प्रथम के रूप में व्यक्त की कि ‘एक सम्बन्ध की विशेष विशेषता में क्या निम्नता ज्ञाय ?’ तो यथा था कि प्रश्न यही प्रवाल मेरे सामने भी है। लेकिन भोग्य-अधि-वेदन के अन्तर्गत पर सर्व संज्ञा सच के समीचीन ठाकु-दास बग ने जब एक दिन भोजन करते समय मद्रक ही पूछा, ‘राही, अधि-वेदन का वास्तविक कौशा फल रहा है ?’ तो उनके बुजान संपादन के लिए बधाई देनी पड़ी। और, शान्त मेरी इस प्रश्नाना ने अधिवेदन में भाग लेनेवाले अन्य छात्रों भी सहमत्त होगे।

अधिवेदन से एक दिन पूर्व प्रायदास-गुप्टि की गोष्ठी के आन्दोलन के पीछे पूरे अधिवेदन को आन्दोलनमय बनाये रखने की बात आन्दोलन के मन में रही हो या न रही हो, उजवा परिष्कार यही होना चाहिए था और हुआ भी। तार्किक की कुछ मन्मथन सामग्री, और बहुत कोशिश करके भी तेजी से आगे न बढ़ पाये की विचारा के कारण पैदा हुई हुई निराशा से पीछे मुद्रक पुनरावलोकन की प्रेरणा दी थी, वैचारिक समय का दौर सर्वोदय-आन्दोलन में लगे सक्रिय छात्रियों के अन्तर् में दृष्ट हो गया था, और ऐन सीके पर, जबकि गुप्टि-गोष्ठी में प्रेश की गयी प्रश्न की जलवायुओं के वास्तविक एक प्रकार की भट्टवन, एक प्रहार, एक गतिहीनता का अनुभव ही रहा था, दादा सर्वोधि-धारी ने एक ‘विचार-रत्न’ का विस्फोट दिया। और ऐसा लगा कि उनके समक्ष से इन सोचएक शब्दके के साथ बग गये हैं, तब्रा को अन्त एक नयी रचना आ गयी है।

दादा के एक भाषण (देखें : पृष्ठ ६९) पर अपनी प्रतिक्रिया प्रथम करते हुए सर्वे ज्ञेया सच के अन्वय ही एक-अन्वय-व्यक्तु ने कहा, ‘मिथुन कीज वही मैं एक-से-एक भाषण हमने सुने हैं, लेकिन दादा का यह भाषण उन सब में विशिष्ट है और मैंने इसकी जड़ें रखा यहसुच की कि मेरी आंखों में आनन्दानु (टोअर्स ऑफ ज्वाय) धनक गये।’

मुद्रकिय दार्शनिक छात्रों ने मिथुने दिले यह विचार व्यक्त किया है कि निन्दक अन्वय, और कार्यवाहक अन्वय, यह मिथुन काकाय बननी चाहिए। निन्दक कार्यवाहक भी हो और कार्य-वाहक निन्दक भी बने, यह तर्कित अनन्तत क्रान्ति के लिए आवश्यक है। छात्र एक कार्यवाही दार्शनिक माने जाते हैं, लेकिन किसी ‘कार’ से बड़े नहीं है, एलीनिय कार्यवाही होते हुए भी उन्होंने सम्पूर्ण की ‘विशेषी-प्रतिपक्ष’ (सिद्धांत-वेदा) और ‘दार्शनिक’ (कार्यवाहक) के अन्वय-अन्वय अतिरिक्त को नकारते हुए इन सब प्रकार के कार्यवाही व्यक्तित्व की कल्पना की है।

इस सब बात का गौरव कर सकते हैं कि सर्वोदय-आन्दोलन की दृष्टि निन्दक ने परंपरा-आधर में रहकर विचित्र किया है, और फिर उन सिद्धांतवाद के सहारे आन्दोलन चलाने की कोशिश की गयी है, यह स्थिति एक आन्दोलन की कभी नहीं रहती। निन्दक विचार और सिद्धांत-प्रयोग भी रहे और भूदा-प्रामाण्य के लक्षित कार्यवाहक और आणित्य माध्यम भी। दादा सर्वोधि-धारी भवे ही उस रूप में अपने को कार्यवाहक मानते थे इसलिए करें, लेकिन हम जानते हैं कि शुरू से आरंभ तक आन्दोलन के कार्य-वेध से वे अनुसंधान रहे हैं। जे० पी० और सोरेन्द भाई महिन सर्वोदय-आन्दोलन में लगे सभी साम्यी दम नयी क्रान्ति के दर्शन और मार्ग-खोजन की प्रक्रिया में लगे हैं, और कम-से-कम अपना योगदान दे रहे हैं। एगनिय एक क्रान्ति के आरोपण में हर भौड़ पर हम अपने आदर्शों, अपने आन्दोलन को, एक ही पूरी प्रक्रिया को जंचने-नखने चले, यह अनिवार्य है। सर्वोदय दादा से जब कहा कि, ‘माझी बातों का मेरे बित पर ऐसा असर हुआ कि मेरा दिन कुछ बैठ गया’ या जब जे० पी० ने कहा कि ‘प्रश्न की उत्पत्तियों में से अन्वित तारक नहीं पैदा हो पायी, हमारी अपनी कमजोरियों के कारण, वो प्रेशनलों को बने सतत-विशेषी बनें अन्वयार मिता हो। सर्वोदय-प्रश्न के रूप होते का’, लेकिन हम आश्चर्यचकित हैं हमने तो अपने को सारा पर बालने की आवश्यकता का अनुभव किया।

एक है कि सर्वोदय-आन्दोलन रिकी पूर्व-विनि और विर-दिन क्रान्ति-दर्शन तथा उनकी प्रक्रिया को व्यवहार में उतारने का प्रयत्न नहीं है कि प्रेशन की सम्मुखिनि में से, अतिर और उसके सम्मुखों की आरंभ को हाव न है, जयमें से क्रान्ति की प्रक्रिया शुरू करने की कोशिश है। पूर्व-विनि और विरदिन पूर्वों को बचन कल्पने की कोशिश में जो क्रान्ति प्रकट होगी, यह माननीय नहीं रहे सकती, यह निहाम-विन्दक तथा है। एलीनिय सम्प्रदायान्त मनुष्य और उसके सम्मुखों में से क्रान्ति प्रकट करने की हमारी चेष्टा है, तर्क यह क्रान्ति मानवीय ही सके।

क्रान्ति के एक सर्वथा सही प्रयोग में कभी विचार की सूत्र रहते होगी है, और इस उसके मनुष्यार किताबीय होते हैं, और कभी समरपाथों के उज्जवा में अपने आरंभ की समर्थिनि काने पर कोई विचार या सिद्धांत सुझा है। इस प्रकार एक अतिरिक्त क्रान्ति का दमन और उसकी प्रक्रिया का विनाश हो रहा है। आन्दोलनमय की अब तक सन्कट हुई करेला का विकास इसी प्रक्रिया में हुआ है। जिसमें हम पूरे दाम-अन्वय की द्विचरियों की सम्यी प्रारंभों के आधर पर दृष्टकों में नहीं बंधे, एक सुबह प्रायहि की शान्त और परिस्थिति में दाम-अन्वय को मले का अन्वय करते हैं, मनुष्यों की सुन सोमार्थों में वेले की

जगह एक विशाल मानव परिवार के मने आयाम में दाखिल करना चाहते हैं। लेकिन विभिन्न स्तरों पर जो रहे व्यक्ति, समुदाय इस भूमिका में कैसे आयें; यह जटिल प्रश्न है। मरुप स्पष्ट है, और उस ओर [बढ़ने की] हमारी क्रिया उस सत्य के अनुकूल होनी चाहिए, यानी 'क्षम्य के अनुकूल ही साधन भी होना चाहिए' यह गांधीजी का सूत्र भी सार है।

पचास अब तक हमारे काम की जो पद्धति रही है, उससे असमाधान इस अधिवेशन में खलकर व्यक्त हुआ, बावजूद इसके यह दावा किसी का नहीं था कि हमने पूरी ताकत लगाकर इसे ध्यानमा लिया है। एक बहुत बड़ा सवाल अधिक तीव्रता के साथ पिछले अनुभवों के आधार पर सामने आया कि सदियों से जो लोग पीड़ित हैं, जिनके अन्दर अपने अस्तित्व का भी एहसास नहीं है, उन्हें क्या केवल विचार का शिक्षण देकर हम धामहित की व्यापक मनोभूमिका में ला सकते हैं? क्या 'मूल' जगती चेतना पर सर्वोपरि सार्य बंधक छापी नहीं रहती? और क्या जिनके कारण सदियों से शोषण-अमान होता रहा है, वे भी केवल विचार-शिक्षण से निम्नतम भूमिकावालों को समान भूमिका में स्वीकार करेंगे? विचार की शक्ति के बारे में कोई शंका नहीं, लेकिन इन दो छोरों की मनःस्थितियों में काम करने की प्रक्रिया क्या नहीं होगी, जो अनेकानेक कुछ आगुत समान में होगी? इसी एक बहुत बड़े प्रश्न-चिन्ह के करीब ठके हुए बहुत-से साधियों को उस समय एक समाधान दिखायी पड़ा, जब दादा धर्माधिकारी ने कहा कि 'हमें परिस्थिति में नैतिक दबाव पैदा करना होगा।' इसका स्पष्टीकरण करते हुए दादा ने कहा कि 'छोटे मानिक अपनी मानिकी का बँटवारा पैदास्तिकी के साथ करें और इस प्रकार वे एक नैतिक शक्ति प्रकट कर भूमिहीनों के साथ समष्टि होकर भूमिवासी पर परिस्थिति का ध्यान करें।'।

इस प्रक्रिया में हमारी भूमिका पूर्ण तैयारी करनेवाले क्रांतिक के शिक्षक की होगी, क्रांति के लिए क्रियाशीलता 'लोक' की होगी, क्योंकि वे अपने उन्मुखों को बदलने के लिए सक्रिय प्रयत्न करेंगे। एक व्यापक मध्यन समान में शुरू होगा, जिस परिस्थिति की उपेक्षा कोई नहीं कर सकेगा। यही परिस्थिति का प्रभाव होगा; लेकिन जैसा कि ऊपर स्पष्ट है, नैतिक होगा। शायद हम सब तक इस प्रक्रिया में हिंसा की गन्ध महसूस करते रहे हैं, और इसीलिए इसके बचते रहे हैं। लेकिन शायब यह है कि क्या सुसुलितों को पूर्ण अहिंसक मनोभूमिका में एकबारगी लाया जा सकेगा? क्या वह शायबवक नहीं कि आज उनका अस्तित्व, जो सेजरी से प्रतिरोध की भावना में व्यवस्था का रहा है, उसे विद्यायक दिशा देने के लिए, हिंसा के सुरक्षक से उन्हें बचाने के लिए, उनके अन्दर क्षमाभाव सहते से प्रवृत्त करने की शक्ति पैदा की जाय? शायद ऐसा नहीं किया गया तो निरन्तर बढ़ती जा रही प्रतिरोध की उन्नता सबको मरम कर देगी। पूरे देश में, तमिलनाडु में थी जयजय और गुजरात में थी हरिश्चन्द्रम परीक्ष ने इस दिशा के प्रयोग किये हैं, और परिणाम

उत्साहवर्धक है। यह ध्यान देने की बात है कि दोनों जगहों में कहीं भी हिंसा स्पष्ट पड़ी हो, ऐसा अनुभव नहीं आया है।

इसलिए वैशिक्षक सर्व सेवा संघ ने इस आन्दोलन का प्रस्ताव (देश : पृष्ठ ६६) अधिवेशन की अन्तिम बैठक में पूर्ण बहुमत और उत्कृष्टता के आवाहन में पारित किया। इस दिशा में हर प्रदेश में सतत्य और छात्रता के साथ संकल्पपूर्वक क्षेत्र चुनकर लग जाने का निवेदन सभी साधियों से संघ के अध्यक्ष ने किया।

अधिवेशन में बंगला देश, लौकनीति, नवावदी और कार्य-नीति सम्बन्धी चार और प्रस्ताव भी पारित हुए, और सम्बन्धित विषयों पर सर्वोपर्य आन्दोलन का दृष्टिकोण स्पष्ट किया गया। प्रस्तावों पर अपनी प्रतिशिक्षण व्यक्त करने में प्रतिनिधियों ने जो बौद्धिक सक्रियता प्रकट की, वह ही इस अधिवेशन की विशेषता ही मानी जायगी। 'मतेभेदो' के बावजूद 'मतेभेद' से दूर रहकर 'सर्वसम्मति' के विरासत की यह जो एक स्वल्प प्रक्रिया शुरु हुई है।

अधिवेशन में हम प्रस्ताव पारित करते हैं जनता के समक्ष इस आन्दोलन का दृष्टिकोण प्रस्तुत करने के लिए लेकिन हमारे प्रस्ताव बसबारा में महत्वपूर्ण ध्यान नहीं पाते। क्योंकि व्यवहारवाले 'सत्ता' की शक्ति को देख-सुन-समझ पाते हैं, या फिर किसी भी स्थागित सत्ता के विरुद्ध ध्वनित हो उठे 'भैरवनाद' की ओर अपना ध्यान जाना है। हम जिस 'लोक' की आराधना कर रहे हैं, उसकी 'सत्ता' है ही नहीं? हम जिस 'सक्ति' की उपासना में लगे हैं वह अभी प्रकट नहीं हुई है? इसलिए हमारी 'आवाज' की उपेक्षा व्यवहारवाले करते हैं, तो वह हमारी चिन्ता का विषय नहीं होना चाहिए।

इस अधिवेशन में एक नया आग-संचार हुआ। सचनों ने भी समान-समय पर वैज्ञानिक अन्गना मठ प्रकट किया और पूरे अधिवेशन के माहौल में एक उत्कृष्टतायक पहल-पहल दिखायी पड़ी। अपने क्रांतिकारी जीवन की इस मजिल पर पहुँचकर, विनोद के शब्दों में ७१ साल के जवान, धीरेन्द्र गाँई ने उद्घरण में निरन्तर धूमते रहने का, 'लोक-गवा' में प्रवाहित होने का सफल किया है। कई अधिवेत्तों के बाद उनकी उपस्थिति और 'बरो या सरो' की इस वेना में क्रांति-सिद्ध के मनोरंजन के लिए सजाये गये इच्छिया-सरो की छोड़कर इस क्रांति के क्षेत्र में बूट पड़ने का उनका आवाहन हमारे अन्त में मध्यन पैदा कर पड़ा है, इसमें कोई शक नहीं।

आज हम कालचक्र के जिस बिन्दु पर पड़े हैं, यहाँ वारी दुनिया खड़ी है, उसमें से ही 'करो या सरो' की चुनौती आ रही है। श्री वैजनायवावृ जैते दुर्गुन ने अधिवेशन की समष्टि पर भावपूर्ण शब्दों में कहा, 'इस अधिवेशन में पाग लेकर मैंने धन्यता का अनुभव किया है।' और इस बिन्दु पर, इस चुनौती के सन्दर्भ में हम क्रांति का नया सचन अपनी निगाहों में लिये असाव छापर में बूट पड़ने तो निरन्धय ही हम सबका जीवन धन्य हो जायगा। इतिहास ने हमें यह अवसर प्रदान किया है, यह लोचनर उपपुत्र शक्तों में मान-न्याय धारक पड़ते हैं!

—एसी

हिंसा और वर्ग-संघर्ष से भय खाना छोड़ें परिस्थिति में नैतिक दबाव पैदा करें

छोटे किसान और भूमिहीनों को संगठित करके क्रान्ति की ठोस बुनियाद बनाने के लिए दादा धर्माधिकारी का क्रान्तिकारी आह्वान

आपकी बातों का मेरे वित्त पर ऐसा असर हुआ कि मेरा दिन कुछ बँट गया। आपने क्रांति विचारण में सब बातों की केवल जमीन की छोड़कर। हम धारों के धारों कांपकता, जिसमें मैं अपनी की भी शामिल करता हूँ, जमीन की बात छोड़कर और क्षारी बातें करना चाहते हैं। मैं तो मानता हूँ कि पूर्वी के दक्षिणी गोवा में जमीन का मजदूरी नहीं मुजज्जोगा को सामाजिक क्रान्ति नहीं होगी। अमरीका, यूरोप, इतर चीन तक की भी खंडें तो उनके दक्षिणी हिस्से में जमीन का ही असर मजदूरी है। क्योंकि वह कुछ का कुछ हिस्सा जमीन प्रदान है। यहाँ उत्तरी गोवा में भी क्रान्ति का अनुकरण नहीं किया जा सकता। आज यहाँ सबने कहा है कि और सब कुछ तो हो सके, गिराव जमीन के बँटवारे के। सब हथ निकले तो इसलिए है कि जमीन के प्रति मनुष्य का जो दख है, इस देश में या एत देश जैसे अन्य देशों में, उनको हम बदनाम चाहते हैं। मानिक और मजदूर का सम्बन्ध बदनाम उत्तरी गोवा में भी क्रान्ति है। लेकिन दक्षिणी गोवा में जमीन के साथ मनुष्य का और उनके कर्म मनुष्य के साथ मनुष्य का जैसा सम्बन्ध बना है उसको बदलने की क्रान्ति की आवश्यकता है। यह हमारी वित्तिष्ठ धार है। इस बुनियाद की लेकर जो काम हम कर सके, उसीसे कोई परिणाम मिल सकेगा।

प्रचलित हिंसा के प्रति संतोष

इस संदर्भ में मैं आगे पढ़ना निवेदन

वह करना चाहता हूँ कि हम इनका अवयव मन में रखें, कि किसी कारण के लिए मनुष्य मनुष्य को नहीं मारेंगे। लेकिन मित्रों! अहिंसा को आप सिद्धांत नहीं बनाइए। जिस मनुष्य को हम शर्ती पर रहने की जगह नहीं, जो गंगा है, भूला है उसके साथ अहिंसा की बात करें और उसके आशा रखें कि वह अहिंसक रहे, और समाज में जिसने उसके शून को चुनकर अपनी सम्पत्ति बनायी है उसकी जा प्रचलित हिंसा है, कुछ हिंसा है, उसके प्रति आपके मन में संतोष न हो, मैं बोध की बात नहीं करता, संतोष बढ़ा हूँ, तो मैं समझता हूँ कि हममें से क्रान्ति नहीं होगी। क्रान्ति के लिए तेज की आवश्यकता होती है। बरणा के साथ तेज होना ही चाहिए। तभी क्रान्ति सम्भव है। तेजहीन करणा निष्पन्न होती है, उसका कुछ असर नहीं होता।

हमें तरीकों का पक्षपाती होना चाहिए

हम वर्ग-संघर्ष से डरते क्यों हैं? कंसा वर्ग? आज का अमीर वल गरीब होगा, आज का गरीब वल अमीर होगा। गरीब कोई पहिना नहीं है। अमीर कोई श्रेष्ठान नहीं है। गरीब और अमीर दोनों बीमार हैं। अमीर अपनी बीमारी भिदाना नहीं चाहता और गरीब अपनी बीमारी भिदाना चाहता है। दोनों में इतना ही फर्क है, इसलिए गरीब के साथ हमारा सहयोग स्वाभाविक है, क्योंकि वह अपनी बीमारी भिदाना चाहता है। हम गरीब का पक्षपाती बनना चाहिए। गरीब के लिए पक्षपात

करना गलत नहीं है। हम पक्षपात अवयव करेंगे। हिंसा भले न करें। क्या कारण है कि गरीब हमको अपना पक्षपाती नहीं मानता? वह नवसानकारी बगुनित्त को अपना पक्षपाती मानता है, अपना शेरष्वाह मानता है। हमारे धारों में मानता है कि हम तउभय हैं। अब तटरक्षणा कोई उदाघोमता नहीं है। मित्रों! उसमें ग्याय-सुद्धि होती है। तटरक्षता में ग्याय का माप देना शामिल है। ग्याय यह कहना है कि अन्याय, अत्याचार जिस पर होना है उनके साथ हम होना चाहिए। यहाँ कहा गया कि लोग हमें देखकर भाग जाते हैं यह जमीन-बाने साथे है। लेकिन मैं पूछता हूँ कि कौन भागता है? डरने भयक जिसके पास होता है, वह भागता है। आप अत्याचार नहीं करना चाहते फिर भी आपकी परिस्थिति में दबाव पैदा करना होगा—एक नैतिक दबाव। नैतिक दबाव में आसक नहीं है। लेकिन इस विचार से कि सम्पत्तिधारी भाग जायेगा उसके लिए हमारे मन में इतनी बीमन भावना हो, लेकिन जिसने सम्पत्ति का मुँह तक नहीं देखा, उसके लिए बीमन भावना क्यों न हो? गरीब के साथ है ही क्या कि वह डरे? सम्पत्तिवाल भीड़ा बहुत डरना। तो भी समझना चाहिए कि वह भय स्वयंभ भय है, हिंसक भय नहीं है। आज हरिकल्पन वह रहा था कि कभी-कभी अन्यायित वर प्रदर्शन हम कर देते हैं। प्रदर्शन किसलिए? नैतिक दबाव के लिए।

आत्म-आलोचना की चेला

मित्रो! आज समय था गया है जबकि हमें इस पर गंभीरतापूर्वक सोचना चाहिए। आत्म-आलोचना की चेला है। एक पान समझनी चाहिए कि समाज क्रांतिकारी हमारा प्रतिपक्षी नहीं। गरीबी और शोषण हमारे बसल प्रतिपक्षी हैं। यदि हम समाज क्रांतिकारी की अपना प्रतिपक्षी मान लेंगे और उसका मुकाबला करने में ही उनका जयमें तो क्रांति को भूल जायेंगे। यहाँ कोई नवसंवाद आया हो और उसने आपकी यह सारी चर्चा सुनी हो तो वह आपको बहेगा कि पहले प्रत्यक्ष के बाद भी आप लोग बीपान-नद्वय नहीं बँटवा सके, अब हमारे साथ जा आओ! आप लोग पृथ्वी पे कि काम क्यों नहीं हो रहा है? तो नवसंवादी आपको बह देगा कि 'आप लोगों ने बजल रास्ता पकड़ा है। छोड़ो वह रास्ता, चलो हमारे साथ।' धर्मनिरपेक्ष गहराई के साथ विचार करने की आवश्यकता है।

हिंसा से भय करनेवाला

ग्रहितक नहीं

सारे विचार में हमारे काम में दो कारणों से दोष था गया है। हम दो चीजों से भय खाते हैं। पहली चीज हम हिंसा से डरते हैं। जो हिंसा से डरता है वह कभी अहिंसक नहीं हो सकता। दूसरी चीज हम वर्ग-समर्प से डर खाते हैं। लेकिन मैं कहना हूँ कि इस हावभावलिपि को अपने चित्त में से निकाल दें। आज तो आप बंगला देश के सदस्य हैं इसमें से निकल ही चुके हैं। युद्ध की बात इसी संघ से ही रखी है। बंगला देश के प्रति तो आप के मन में इतनी करुणा है कि उसे आप के आत्मनोस्ट (करीब-करीब) अहिंसा मान लिया है। और यहाँ यह बेचार्य जरा आंस भी दिला दे एब भी 'वसुधायैव कुटुम्बकम्' करने लगते हैं। तो हमें समझ लेना होगा कि हमारा दुश्मन करीबी है, मुहताबी है। नवसंवादी हमारा दुश्मन तो क्या प्रतिपक्षी

भी नहीं है। मैं यह नहीं कहता कि हमारी वृत्ति से अभीर के धिरे में आत्मक पैदा हो। लेकिन साथ ही उसके चित्त से किसी प्रकार का आभवात्म हो, यह भी मैं नहीं चाहता। नहीं तो उसमें से इति नहीं पैदा होगी। आज जो बीपान भाग जमीन बँट रही है, यह पृथ्वी किमत है, दुश्मन है। आगे आपकी और जमीन बँटेंगे। यह उचित कहना चाहिए। इसमें हम आपका सहयोग चाहते हैं। लेकिन किसमें सहयोग? आपके आत्म-समूह में! आपलोग विचार प्रचार की आवश्यकता बता रहे थे। विचार प्रचार किन बात का? इस विचार की ही आपको समझाना पड़ेगा। अगर आप उन लोगों का इलाका विह्वल रखें तो एक महान व्यय होगा। उन्हें साफ-साफ कहना चाहिए कि हम भूमि के स्वामित्व का निराकरण करना चाहते हैं। इसमें हम आपका सहयोग चाहते हैं। आप सहयोग करेंगे तो हम आपके सहकार में भी नहीं तो प्रतिस्कार से भी हम यह करके रहेंगे। गुच्छामद से तो युद्ध भी राजी नहीं होना। आज हम मानिस के पाम जाते हैं तो वह बात नहीं करती। मानिस के श्प-उपर की बातें तो करते हैं लेकिन भूमि के सवाल को नहीं छूने, नहीं छुना चाहते। महाराष्ट्र में एक कहावत है 'छाद्य भीगने जाते हैं, बर्गन छिगने हैं।' यह अवश्य सच है बहुत स्पष्ट शब्दों में आपको यह बातें साफ-साफ कहनी होंगी। फिर नवसंवादीको की उत्तर देने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

और हमारा साहित्य-प्रचार?

कानि चाह (मुद्रात) जोर दुगरो ने जो और उद्योगों की बाँट रही वह आज हमारे लिए अपरानुत है। हम जैसे कृषि-प्रधान राष्ट्र में जमीन के सम्बन्ध को बदलना, यही हमारे लिए पहली और आखिरी कानि है। आखिर इतना लिहाज रखकर भी कितनी जमीन आप बँटवा सके? तो, सत्य तो बातें! और नहीं तो कुछ साहित्य प्रचार बनेरू करते रहेंगे।

और वह भी कैसा साहित्य प्रचार? गीता-प्रवचन दस लाख सेब दिया। एमें कोन-को बड़ी बात की! पैनी दुश्मनों हमको अरब लोग जेल में भी बन्दे के लिए देने थे। पर तो सुरात का प्रचार कर दिया। किन्तु वह सब तो विवक्षित निष्पत्ती साहित्य है। उगारा प्रचार विजना भी कर दो तो भी क्या? मैं पूछता हूँ कि आगरा उपद्रवी साहित्य विजना जाता है? यहाँ बड़ी भाषा (समाहण वजात) हो तो शूरो मोक कर दें। गीत में कोई जमीन पर मानिक नहीं रहेगा, हमारा बन्दोलन नहीं एक पड़ना है, जब जाने यहाँ पड़नेगा, आदि का साहित्य विजना सपता है? वह तो साध अत्यात्म है विजना परमोक के सम्बन्ध है।

छीनने की बात नहीं, लेकिन संघर्ष करेंगे

एक एक आखिरी बात कहकर समाप्त करता हूँ। मनमोहन बाबू ने कहा था कि हम जीने की बात नहीं कर रहे हैं। जमीन की विनिपत्त के हस्तान्तरण की बात कर रहे हैं। मैं मानता हूँ कि जीने की बात करेंगे तो जोस आयेगा। लेकिन हम जीने की बात नहीं करेंगे, समर्प की करेंगे। और मेरा यह निवेदन है कि जमीन की विनिपत्त के हस्तान्तरण के लिए पैर-जमीन सते और छोटे मानिसों के उपद्रव की आशंका है। हम उन लोगों को एक करेंगे और बड़े मानिक को 'आशंका' करेंगे। छोटे मानिक की जमीन ईश्वर लगाकर नहीं ली जा सगनी और यह छोटी भी नहीं जा सगनी। करोड़ों के जगदा सचम हैं है। बारसने में मानिक माँड़े हो हैं और मरदूर पगारा। छोटी का निज दससे विवक्षित जगदा है। बड़ी मानिक पगारा है और मरदूर माँड़े हैं। और मानिक भी छोटे-छोटे हैं। इहाँए छोटे-छोटे मानिसों को अपनी मानिकी निरासनी होगी और पैर-मानिसों के साथ बाँटनी होगी। यह बात है। एमें से उतरी-

विचारधारा के तले विकेंद्रित शासन-पद्धति का हम स्वागत करते हैं। गाँव के स्तर पर ग्रामस्वराज का लक्ष्य हमारे सामने है। वैसे ही केन्द्र तथा प्रदेश की मर्यादाओं को निर्धारित कर हमें कार्य करना चाहिए। गाँववाले यह महसूस करते हैं कि जैसे केन्द्र (बिल्की) में अधिकतर अधिकार जमा हुआ है, वैसे ही प्रदेशों में भी अर्थात्सहित सत्ता जमी हुई है। केन्द्र से प्रान्त को, तथा प्रान्त से गाँव को, बहुत जल्दी ही अधिकार चला जाना चाहिए। कुछ बड़े-बड़े अधिकार केन्द्र और प्रदेश में ही रहते हैं। इसके बारे में ठीक-ठीक नीति निर्धारित करनी चाहिए। देश की समस्याओं को सही-सही दृष्टि से न देखकर, राष्ट्र-व्यथान की दृष्टि से जानना चाहिए।

तमिलनाडु में प्रान्तीय स्वतन्त्रता की माँग पर जोर देने के लिए पाकिस्तान को पूर्वी बंगाल की समस्या की ओर इशारा करते हैं। पूर्वी बंगाल के लोगों की मर्यादित स्वायत्तता की माँग की जब अवहेलना की गयी, तब वहाँ के लोगों की असहयोग-गतिन अधिक मात्रा में प्रकट हुई। सैनिक शासन की क्रूरता तथा पशु-पक्ष के कारण लाखों के बलि हो जाने के बाद वहाँ प्रदेश स्वातन्त्रता की माँग छूट गयी, परन्तु जनम राष्ट्र-प्राप्त होकर विभक्तवाद की जीत शक्ति हुई—इसकी ओर भी इशारा करते प्रान्तीय स्वतन्त्रता की माँग पर अधिक जोर देते हैं। तमिलनाडु की इस हालत को बिनोबाजी को जब बताया गया तो उन्होंने यह सलाह दी कि देश की एकता के लिए एक लक्ष्य आवश्यक है। हमें इस पर ध्यान देना चाहिए। दक्षिणी प्रान्तों के सर्वोदय साहित्य तथा पत्र-पत्रिकाओं में कुछ लक्ष्य विचार तथा समाचार नामी लिपि में, और उही तरह, उत्तर के प्रदेशों के हिन्दी साहित्य तथा पत्र-पत्रिकाओं में बोझा अथ दक्षिणी भाषाओं में अनुवादित नामी लिपि में प्रकाशित करना चाहिए। मूल

सर्वोदय साहित्य भी उसी तरह नामी लिपि में प्रकाशित होना चाहिए।

राज्यों की सीमाएँ :

इसके अलावा सर्वोदय आन्दोलन को इस पर जोर देना चाहिए कि किसी राजनैतिक या दलीय दृष्टि से नहीं, बल्कि देश की भलाई को ध्यान में रखते हुए केन्द्रीय तथा प्रादेशिक सरकारों की मर्यादाएँ निर्धारित करें। मैं समझता हूँ अब यह समय आ गया है। केन्द्रीय तथा प्रादेशिक सरकारों के अधिकार के सम्बन्ध में तमिलनाडु शासन ने राजमन्त्र कमीटी नियुक्त की और उसकी रिपोर्ट भी प्रकाशित हुई है। केन्द्रीय सरकार ने इस रिपोर्ट की जाँच न कर, इस समस्या को स्थगित रखा है, ऐसा मानना पड़ता है। फिर भी सर्वोदय आन्दोलन के राजनैतिक निष्पत्तों को चाहिए कि वे राजमन्त्र कमीटी रिपोर्ट तथा तत्सम्बन्धी अन्य विचारों की जाँच करें। केन्द्रीय सरकार से राष्ट्रीय सरकार की, राज्यकीय शासन से ग्रामस्वराज की, बितना ज्यादा अधिकार मिले और केन्द्रीय तथा प्रादेशिक सरकार को बितना कम अधिकार हो—ये सारी बातें निर्धारित कर जनता के सामने रखें। इसे करने की जिम्मेदारी सर्वोदय आन्दोलन को लेनी चाहिए। मैं समझता हूँ कि यह बहुत आवश्यक है। दल में देरी करना अप्रतिम है। अधिकारों को बाँटते समय देश की एकता हमारा लक्ष्य होना चाहिए। ग्रामस्वराज के मुक्त-विक्रम इस विदेशीकरण की नीति निर्धारित करने का एक सर्वोदय वाला को ही है। दल में भी जयप्रकाशजी व अन्य सर्वोदयी नेताओं का मार्गदर्शन आवश्यक है। ऐसा भी मानता हूँ। मुझे आशा है कि यदि इस विषय पर भिन्न-भिन्न विचार एकट्ठा होंगे तो एक कान्सेप्टुवलि की तैयार होगी।

बंगला देश

पूर्वी-बंगाल की स्वतन्त्रता की माँग को भारत, पाकिस्तान या बिभाजन नहीं समझता। जनता की लोकतान्त्रिक भागीदारी का हमन कर, प्रमाणक मिलिटरी शासन

फातिम पद्धति का सहारा लेकर, लक्ष्य पाकिस्तान पूरे संसार के विचारधारा का पालन बना है। चाहे अमेरिका के कुछ राज, जिनका लक्ष्य व्यापारिक शोषण है, पाकिस्तान की इस पालन के पीछे ताल दे सकते हैं, परन्तु अब दुनिया की कोई भी शक्ति बंगला देश की इस माँग का न समन कर सकती है, न इसे टाल सकती है। बंगला देश के लोगों की तो इतिहासिक माँग का समर्थन कर, उसके पक्ष में किसी को आवाज पहने पहले हमारे देश में उठी तो वह भी जयप्रकाशजी की। इसका हमें बड़ा गर्व है। अब से आज तक, बंगला-देश के स्वायत्त सभ्यता का समर्थन कर, उसके पक्ष में दुनिया के लोगों के बिना एक करने में सर्वोदय आन्दोलन सहायक बनकर रहा है। साहित्य सम्मेलन में कुछ दास योजनाएँ बनी, दुनिया के देशों में भी जयप्रकाशजी का प्रथम तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन, इन दोनों से काफी फल मिला। गांधीजी के समय के बाद, इतने बड़े पैमाने में जनआन्दोलन के दौर पर अहितक सजाई, मुझे बुरे-हमान के नेतृत्व में चलना पड़े हैं। लेकिन, हिन्दुत्व के शासन की क्रूरता से अधिक क्रूर पाकिस्तान के भयकर मिलिटरी शासन से लाखों लोगों की मौत के पाठ उतारा और जनता की अहितक क्षति को दुर्बल किया। मुझे बुरे-हमान के नेतृत्व से बचते जनसमुदाय ने भयकर अराजकारण को सहन कर अवहलीय सबट कीने। फातिम पद्धति से टकरा लेने वाले और अहितक क्षति का मार्गदर्शन करनेवाले नेता, पाकिस्तान के बाराक में रहने लगे।

विरव-शान्तिसेना : बिनोबा के सुभ्य

बिनोबा ने हिन्दुत्व के एराशितल शासन को न मूर्खों के राज्यों में अहितक का मार्ग दिखाया। विदेशीयों का महत्पूर्ण गुनाह कि सात लाख शान्ति-सैनिकों की एक शान्तिसेना ५० एन० थो० में काम बानी चाहिए। यह गुनाह उन थोड़े साधकों तक लागू नहीं। यदि ऐसी एक फौज ५० एन० थो० की तरह से मुझे बंगाल

करता है। ग्रामदान के बाद ग्राम-स्वराज्य की ओर आगे कौसे बढ़ें ?— विज्ञान की दृष्टि से, ओर व्यावहारिक तौर पर हमें योजनाएँ बनानी चाहिए। इनके दिन के पुष्टि-कार्य का अनुभव हमें क्या बताता है ? ग्रामसभा के संघटन के बाद बीसवाँ भाग का भूमि वितरण करा कर हमें रक जाना नहीं चाहिए, बल्कि भूमिपत्या को लेकर उसके हक के लिए काम करना आवश्यक है—ऐसा मैं समझता हूँ। कई ग्रामदानी क्षेत्रों में कृषि-आय बहुत कम है। इस कृषि-आय को बढ़ाने के लिए उचित कार्रवाई करनी चाहिए। बेदखली जैसे समाजविरोधी कार्य होने से रोकना चाहिए। 'टैनेन्तो एक्ट' पर देश भर में अमल नहीं हो रहा है। ग्रामसभाओं को चाहिए कि वे जल्दी-से-जल्दी ऐसे कदम उठाएँ ताकि जमीन सम्पत्तियों कायम कानून पर्याप्तित्व हो। मन्दिर, मठ तथा सरकारी 'पुरखोला' (शेर-मजरा) जमीन जो सामान्य तौर पर बड़े निराश्रितों के कब्जे में है, उन्हें उनके शोषण से मुक्त करके भूमिहीन कृषकों को दिलबाना चाहिए। जो स्वयं जमीन पर काम नहीं करते तथा जो भूस्वामी भेदभावित रहते हैं उनको जमीन ग्राम-सभा ठेके में ले सकती है और अपने सब कर उचित मुआवजा देकर ग्रामसभा स्वयं उसे अपने अधिकार में ले सकती है। इसी तरह वास्तविक जमीन गरीब को मिले, ऐसी योजनाएँ तैयार होनी चाहिए। यदि ग्रामसभाएँ ऐसे कार्य में लगे जायें तो गाँव के लोग जाग्रत होंगे—एक कृषिज्ञान की शक्ति प्रकट होगी।

केन्द्रीय व प्रादेशिक सरकारों की योजनाओं के फलस्वरूप करोड़ों एकड़ जमीन कृषि के लायक तथा उर्वर बनी है। गाँव और शहर योजना के अन्दर लाखों एकड़ सूखी कृषि योग्य भूमि सिंचित हुई है। अधिक जल उपलब्ध के लिए करोड़ों रुपये खर्च कर वहाँ 'पेंकेज योजना' चालू करती है। लेकिन सिंचित जमीन के क्षेत्रों में ही विपणन

अधिक है—कमाली राज करती है। उर्बा जमीन के क्षेत्रों की जनता कमाली में मर रही है। खाद्यकर इन्हीं क्षेत्रों में राजनैतिक पक्षों के हिसक बन्दोबस्त बल पाते हैं। सूखी जमीन के क्षेत्रों में बीसवाँ भाग चिन्नी तरल मिल जाता है, पर सिंचित जमीन के क्षेत्रों में वह नहीं मिलता है। जहाँ शोषण अधिक मात्रा में है, जहाँ जमीन एकाग्र लोगों के पास केन्द्रित है, वहाँ सब जमीन का ग्रामदान में आना व्यर्थ कठिन है। तन्नाथूर जिला इनका एक उदाहरण है। पिछले डेढ़ साल से ग्रामसभाएँ स्थापित कर कार्य करते पर भी अब तक कोई बीसवाँ भाग जमीन देने के लिए आगे नहीं आया। भूस्वामी व मजदूर के बीच मतभेद बढ़ता है। एक ओर जमीन का एकाग्र लोगों के पास केन्द्रित रहना और दूसरी ओर भूमिहीनों की समस्या बढ़ना, इस हालत में बीसवाँ भाग मिलने पर भी इतना फायदा हो सकता है ? हाथों की मूस बहाँ ओर झुरमुटा कहाँ ? इन बारे में धी-मनमोहन चौधरी का एक मोट उचित समय पर हमको मिला है। जब बीसवाँ भाग ही नहीं मिलता तो बरें क्या ?

जजायूर जिले में बीसवाँ भाग नहीं मिलने की इस स्थिति के बारे में जब विनोबाजी से कहा गया, तो उन्होंने बीसवाँ भाग मिलने की खनाह दी। यह बिचित्र लग सकता है, परन्तु मैं ऐसा नहीं समझता। दूसरे विनोबाजी की ज़ान्दिकारी दृष्टि है। जमीन का बीसवाँ भाग ही नहीं, बल्कि सगणतः सारे के हिसाब से जितनी जमीन लोगों के पास ही उतनी न मिलने पर हमारे सामने एक ही रास्ता खुल रहा—बढ़े से अवहोण या राक्षस्यत का। जातुंजन भूमि सम-समाजों को हल करने के कार्य में ग्रामगना लोगों को उल्लेख जाल आवेगी और जाग्रत होगी। सोशलिज्म को भी जिद्ध होंगी, अहिंसा शक्ति प्रकट होगी। इसके बारे

में यूव सोव विचार कर कार्य करने का समय अब पास आ गया है, ऐसा मैं समझता हूँ।

मद्य-निषेध

ग्रामदान 'प्राप्ति', 'पुष्टि' नामों में लगे रहने के दरम्यान नई तरह के सवाल उठ सकते होते हैं। ग्राम चुनाव स्वी सूझान में सोशलिज्म विचार-विचार हो जाती है, गाँव विचार-विचार हो जाता है। राजका एतान है 'लोकनीति', जो सर्वोच्च बन्दोबस्त का एक अर्थ है। लेकिन लोकनीति को कैसे मा सकते हैं ? कहाँ ? और कब ? ये सवाल हमारे साम्मुख उठते हैं। कई प्रांतों में मद्यनिषेध रह चुका है। जनता नीचे की ओर खिच गयी। भिक्ष-भिक्ष प्रादेशिक सरकारों ही इसका कारण है। कई तरह के बहाने किये और मद्यनिषेध पर किसी ने तीव्र रूप से अमल नहीं किया। जिस तमिलनाडु ने अधिक तीव्र रूप से अमल किया था उनसे भी इसे छोड़ दिया। नई वर्षों के बाद आज तमिलनाडु का सामाजिक जीवन पीछे ढरेल दिया गया। वास्तविक मद्यनिषेध रद्द करने से गरीब जनता ही ही बलि होनी है। मद्यदान की आशय में पड़कर झूठे हुए खादिवासियों, हरिजन व विद्यार्थे हुए जनसमुदाय की तरफ़ी में बाधा पड़ती है। जब तक ये पीने की आदान में पड़े रहेंगे, जब तक दूसरी जाति नापुष्टिरेन है। जब तक मद्यनिषेध कानून पर पूर्ण रूप से अमल नहीं होता, जब तक ग्रामदान, सारी दर्यादि जो भी कार्य-अर्थ हो, फेल हो जायेंगे। इस तरह से मानव-दृष्टि का मास करके मनुष्य को पाशा में बँधने दिया। मद्यनिषेध को फिर से अमल में लाने का क्रिया सर्वोत्तर कार्य-बलाओं का है। यह भी नच, बहाँ और केंसे करें, यह तय करना चाहिए।

लोकनीति

बगला देग में लोकनीतिज्म आन्दोलन ने भी हमारा ध्यान खींचा है। 'लोकनीति', 'मद्यनिषेध' जैसे राजनीतिज्म-सामाजिक कार्य-कर्मों का लावनीति

ज्ञान पूर्ण करना ही वो धामस्वराज्य-सभा के अन्तर्गत कोई अन्य शक्ति नहीं दीखता। राजा शाही नहीं होगा कि एकाग्र देश-प्राप्त समाजसेवक इसके बारे में चिन्ता करें। धार्मिक स्वतंत्रता की वकूद में उन्हें और मध्य वर्ग के लोगों ने अधिक रुचना में लक्ष्य देना वा नैतुव किया। मोहन शास्त्र ऐसा जमाना था गया है, जब समाज के नीचे के स्तर में रहनेवाले लोग सामाजिक क्रान्ति के लिए तैयार बनें। अब परिस्थि बदलवाने लोग ही धारण हैं और नैतुव करें। जनता की बहुलक चालि का संघर्ष है धामस्व-राज्य-सभा। प्रथम के स्तर पर तथा चिन्ता स्तर पर धामस्वार्थ सार्थक करके मूर्त्तिसोनीति, मद्यनिषेध आदि कार्यक्रम को चलाया ही एक ठोस योजना मान्य होती है। धामस्वानी धामस्वराज्य-सभा 'मद्यनिषेध' को सिधर करेगी। और 'मद्य-निषेध' और 'सोनीति' जैसे कार्यक्रम धामस्वराज्य-सभा को सिधर करेंगे। इस-लिए मुझे लगता है कि इन योजनाओं को धामस्वानी लोगों में चलाना अत्यवश्यक है। इनके द्वारा भी धामस्वराज्य-सभाओं में वेकी अयोग्य, त्रिषेध सोनीति प्रवृत्त होगी। सोनीति ने सोनीति के बारे में काफी सोच रूप से चिन्ता की है और उन्होंने अपने विचार व्यक्त रिसे हैं। उनसे मेरी विनती है कि सोनीति पर ध्यान करने के लिए वो सुनिचादी द्वाइयों है उन्हें सार्थक कर इस कार्य में आधिकी शीघ्रता से लग सकें।

धामस्वराज्य-सभा के संपन्न के बाद 'हररो काम' 'गबररो रोडी'—ये गूणवाम बाधनशक्ति को वृत्ति इस धाम-स्वराज्य-सभा करेगी। जब तक धाम-स्वराज्य-सभाएँ—इस जिम्मेदारी को नहीं उठाएँ, तब तक कोहीँ रुपये खर्च कर बाँटे दिवसी संवर्धनीय योजनाएँ प्रमाँ, पटना को कुछ कामग नहीँ मिलेगा।

धम के बारे में 'बन्धोदीय' को धामस्व-राज्य-सभाओं के द्वारा बचाने से गाँव में काम-धन्दा तथा रोजगारी मिलेगी। धाम-स्वराज्य-सभा ही धामस्वराज्य-अभिमुख

शाही को दीखता धामस्वराज्य से जोड़ने की आवश्यकता हम महसूस करते हैं। साथ उदाहरण तथा अन्य ग्राहक पत्रांचे उद्योग धामस्वानी की ओर से ही बनें। सादी इन सबका केन्द्र है। धारी धामस्वराज्य को चाहिए कि बहुध्यापार की वृत्ति से हटकर धामस्वराज्य-अभिमुख शान्तिधारी धामस्व-राज्य के रूप में शीघ्र बदले।

हमारे अपने बारे में थो शोध

मुझे लगता है कि हमारी अपनी 'साधना-गुरुदा' की धामस्वराज्य की मन्द गति का मुख्य कारण है। सोभाव से हमें ऐसे नेता मिले हैं जो 'साधना' के सिद्धर हैं, जाली बनना पूरा जीवन जो 'साधना' ही में बनाकर आज भी मध्य साधना में लगे हुए हैं। हमाराँ कल में कभी-कभी ही विरोधारी के समान महान-गुण इन दुनिया की मिलते हैं। मद्युक्त साधनाओं को पूर्ण करने के बाद उन्होंने जानबूझकर अपने की धामस्वराज्य के नैतुव से मुक्त कर लिया और आज एक दार्शनिक के गले गीर से देख रहे हैं कि हम बिच साह काम कर रहे हैं। मैं समझता हूँ, शोध यह भी उनकी अपनी साधना का एक अंग है। वे निरपूह हो, पूर रहकर फिर उसी समय धामस्वराज्य के ध्यान में ही निमग्न हैं। विरोधारी ने आन्दोलन की उत्पत्ति के लिए जानबूझकर जो इन साधना को अपनाया है, उसे न समझनेवाले कुछ लोग उन पर आरोप करते हैं कि विरोधारी धामस्वराज्य से धीरे हट गये। लेकिन यह धोष देनेवाली की बमजारी है।

हममें साधना नहीं है। हममें से कई अपने लिए धाम-स्वराज्य, जमीन-सोन रक्ष रहे हैं। छेउ में कोड़ा भी इन धम नहीं बनते, फिर भी हममें से कई लोग अपनी त्रिषेध की जमीन रखते हैं। बरा उन्हीं समाज की दे देना नहीं चाहिए? मैरी 'साधना' हम सबकी होगी चाहिए। सच्चा, आत्म्य आदि के काम हम जमीन रखते हैं और उनका दल भोगते हैं त्रिषेध जनता का भोग्य करते हैं धारीर धामस्वराज्य से लगे हुए हमनेगी की चाहिए कि हम जब तक जमीन पर परिधम नहीं करते

तब तक जमीन की भाँति की जोड़ देते की इन 'साधना' में शामिल हो।

इसके अलावा धम के रूप में हम कुछ नहीं करते। गांधीजी के दैनिक जीवन में बताई एक साधना के रूप में उनके आधारी रूप तक नियमित रूप से चलती थी। विरोधारी ऐसे मद्युक्त हैं जिन्होंने कई साधना बताई की तथा घेत पर धाम करके जीवन बिताया। इस जर्जर दुष्टार में भी मध्यम योग के गले रोज धाम-सोच घटे कूटे-कूटे साध करने तथा धाम-सूच निरवाने का क्या अर्थ है? यह, उनके लिए धामयोग और साधना है। हममें से कई लोग रोज धामे घटे की बताई-साधना में भी नहीं लगे। धम करने वाली से एक होने के लिए इनकार करते हैं। वे सब हमें कमजोर करते हैं।

आन्दोलन जीवन की साधना-भूदितियों की भी धामस्वराज्य अपनाते नहीं। विरोधारी ने हमें, रोज एक घण्टा, महीने में एक दिन एक एक घाल में एक हजारा धाम-साध करने का सुच दिया है। धामस्वराज्य अधमन व धाम-सूदितियों के लिए, जीवन में हमें साधना को जगह देनी चाहिए। हमें ईश्वर-भक्ति या धामस्वराज्य मानकर धामस्वराज्य न करे। हमारे मद्युक्त शान्तिधारी भी साधना में धाम-सोच रहनेवाले हैं। वे मद्युक्त की उदाहरण करने हुए, उमे धाम-साध धार करते हैं। उनकी साधना के धामस्वराज्य प्रवर्धित होनेवाली है 'वास्तव' नामक पत्रिका। उनकी त्रिषेध की एक दूध मूँच भी नहीं है, न वेब के खाने में एक पैसा है। एक छोटी बरती में ही वे अपने साधनामय जीवन धामस्वराज्य करते हैं। विरोधारी का बल केवल साधना का मत है। धामस्व-राज्य, उपवास और साधना हम सबको चाहिए। अपनी साधना के बल से ही धामस्वराज्य के लिए हम मद्युक्त पाव जवने। यह सब कोई उदाहरण नहीं, बल्कि मेरी अपनी कमजोरी को, यहाँ इस धर्म सेवा रूप के अधिवेशन में इच्छे हुए धामस्वराज्य के समने विचारार्थ पैश करता हूँ।

ग्रामस्वराज्य की ओर द्रुत गति से बढ़ना है

नासिक-अधिबेशन के साढ़े पाँच माह के बाद हम सब भाई-बहन भोगान में निरत रहे हैं। नासिक में ग्राम-दान-पुष्टि-प्राप्ति, संपटन एवं भगना देश, इन तीन विषयों पर हमने निर्णय लिये थे। इन निर्णयों को हमने इन दिनों में कहाँ तक कार्यान्वित किया? पुष्टि एवं प्राप्ति के द्वारा ग्रामस्वराज्य आंदोलन निरन्तर आगे बढ़ा? जनतावित्त वित्तों प्रकट हुई? संपटन की क्या हासल है? संपटन के प्रायस्वरूप कार्यक्रमों का क्या निरन्तर विकास हुआ? वणश देश का प्रभु हल करने में सर्वोद्योग-व्यापार ने क्या रोल अदा किया? इन प्रश्नों के मौन से उत्तर हमने का साढ़े पाँच माह में दिये?

पुष्टि :

प्रथम पुष्टि को ही लें। सर्व सेवा सम के अध्येस ने नासिक के अपने प्रास्ताविक मायण में कहा था कि कम-से-कम एक ही क्षेत्र देश भर में बनाकर उनमें जमकर बैठना चाहिए और जनतावित्त की खोज करनी चाहिए। इस दिशा में कुछ प्रगति हुई, यद्यपि वह पर्याप्त नहीं मानी जायेगी। बिहार में पुष्टि का काम इन दिनों कुछ आगे बढ़ा है। इस अवधि में राष के अध्येस बिहार, महाराष्ट्र, तमिलनाडु में और मनी बिहार, महाराष्ट्र एवं आंध्र में पुष्टि-कार्य को बल पहुँचाने के लिए पूरे।

सहरसा जिले में यहाँ जलनेवाले काम को मदद करने संघ के मंत्री तीखरी वार गये एवं भूमि-जयन्ती से चरखा-जयन्ती तक यहाँ चलाने जानेवाले अभियान के लिए देश भर के प्रमुख छात्रियों से यहाँ मदद देने के लिए निवेदन किया। देश भर के कई अनुभवी छात्रों सह सात भर में बीस-बीस में यहाँ आते रहे हैं। पर ११ सितम्बर से २ अक्टूबर तक के अभियान में कई छोटी-के-छापी यहाँ

गये। राष के अध्येस भी यहाँ पाँच दिनों के लिए गये। बाढ़ के बावजूद जिले के चौबीस प्रखंडों में से बाईस प्रखंडों में पुष्टि का अभियान चला। स्थानीय राजनैतिक नेताओं एवं शिक्षकों का अच्छा सहयोग भी मिला। फलस्वरूप सहरसा के पुष्टि-अभियान में एक नये पर्व का प्रारम्भ हुआ है। बंगाल देश के काम में यही अवसरवाज्यों के साथ जाने से उत्तरी अनुपविधि में भी मुसहरी में काम आगे बढ़ रहा है। पूर्णियाँ जिले में कसौली के बाद भवानो-पुर प्रखंड में पुष्टि का काम प्रारम्भ हुआ है। मुँगेर जिले में साँसा की प्रखंड-स्वराज्य-समा देश की प्रथम प्रखंड-स्वराज्य-समा है जो हर माह मिलती है और समस्याओं पर विचार करती है। अब यहाँ नजदीक के पकौड़ी प्रखंड में पुष्टि-कार्य प्रारम्भ हुआ है। गया जिले में कौवाकोल, दरभंगा जिले में बिरौल, चम्पारन जिले में नर-कटियागब, मुन्नाफरपुर जिले में बेवाली, मुँगेर जिले में चौधम, बेवदौर, भागलपुर जिले में नोगाधिया, गोपालपुर, नाथनगर इत्यादि प्रखंडों में यही काम और यही अधिक पुष्टि का काम चल रहा है। तमिलनाडु के तञ्जावूर जिले के पृथ्वी हिस्से में मण-नन्दिन की जमीन के प्रश्न पर सफलता मिलने से अब पुष्टि का काम आसान होगा। जैसे तमिलनाडु के छः जिलों के चौदह प्रखंडों में बढ़ा काम शुरू हुआ है। तमिलनाडु में जमीन-मालिकों का एड गैरदाखिल मालिकों का सहयोग फंसे मिले, यह विचारणीय प्रश्न है।

राजस्थान में बीकानेर जिले में पुष्टि का काम थोड़ा आगे बढ़ा है। यहाँ अब ग्रामदान-कानून के नियमों का इन्चार्ज किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश में उत्तर काशी जिले में पुरीया प्रखंड में अच्छा से अच्छा काम यहाँ के छात्रियों ने गर्गों के दिनों में किया। बलिया, पछेंछावादा एवं आगरा जिलों में पुष्टि कार्य प्रारम्भ

हुआ है। मध्य प्रदेश में टीकमगढ़ जिले में बलदेवगढ़ प्रखंड में प्राथमिक बाधाओं को पार किया गया है और इन्दौर जिले में सवैर प्रखंड में काम का ठीक प्रारम्भ हुआ है। गुजरात में मरुच जिले के अमोद प्रखंड में सुवस्ता के छापी निष्ठा से काम में उठे हैं। महाराष्ट्र में अकोला जिले में छकोट, मध्याह्न जिले में मोहादो, याना जिले में भिबंजी और कोल्हापुर एवं सांगली जिले में कल शुरू हुआ है। आंध्र में महबूबनगर जिले में आचमपेट प्रखंड में गणना प्रारम्भकों का गठन हुआ है।

सुदूर अलग में तेजपुर, सिमलागर, लक्ष्मीपुर एवं कामरूप जिले में पुष्टि-कार्य प्रारम्भ हुआ है। यद्यपि यह मिनती एक ही नहीं होगी फिर भी, करीब पचास प्रखंडों में कुछ वरिष्ठ छापी निष्ठा से जननर बैठे हैं, यह प्रसन्नता की बात है। अधिक मरुचा में छापी देश के अधिक प्रखंडों में बैठें और सफल में वृद्धि ही तो देश में सल भर में एक ही प्रखंड बन-छात्रि-निर्माण की दृष्टि से सपन शंभ के रूप में विवसित हो सकते हैं। यह बँधे होगा ?

पुष्टि-कार्य की करत-नरते कई प्राथ निर्माण हुए हैं। यही ग्रामसमा का गठन ठीक से हुआ है और यही केवल अंतर का वर्ग ही ग्रामसमा की कार्य-मिति में स्थान पा सहा है। मुँगेरियों का, अल्प गरीबों का, पिछड़ी हुई जात्रियों का एवं स्त्रियों का प्रतिनिधित्व ग्रामसमा की कार्य-मिति में पंचवि मात्रा में बँधे होगा ? ग्रामसमा की बैठकें नियमित हों और उनमें छापी लोग सक्रीय हों, यानी ग्राम-समा केवल कायम पर न रह जाय, यह कौसे हो ? पाँच प्रतिशत जमीन का बँटवारा बँधे होगा ? ज्यादातर मनों में एक-ही प्रतिशत जमीन भी नहीं बँटी है, यह बँटवारा से दीखता है। भूमिहीनों को बम-ते-बम आबयक जमीन दी जा रही है या प्रसाद-स्वरूप कौसी-सी जमीन देकर गाँव एवं कार्यकर्ता सन्तोष मात्र लेते हैं ?

शामशराय की प्राथमिक एवं सबसे महत्वपूर्ण आई शायरवराज-सभा स्वयं प्राप्ति की होगी ? ऐसे कई महत्वपूर्ण प्रश्न उपस्थित होते हैं ।

प्राप्ति :

अपन भी छोड़कर इस अवधि में संरक्षित श्रमदान का काम नहीं नहीं हुआ । असम में दो सामूहिक पदयात्राएँ एवं चार संरक्षित श्रमदान हुए । नवम्बर में काशी में जड़बराता प्रसङ्ग में प्राप्ति-पुष्टि को समन्वित पदयात्राओं का आयोजन किया गया है । कार्यकर्ताओं की शक्ति पुष्टि में लग जाने से अभी तक नयी प्राप्ति की और जनका क्याल नहीं गया, यह बड़ा धाड़ सचता है । लेविन जहाँ पुष्टि का काम नहीं है वहाँ यह काम बरों नहीं हुआ यह प्रश्न रोप रह जाता है ।

पदयात्राएँ :

पुष्टि के लिए आवश्यक पदयात्राओं के अलावा बर्नार्डक में मुष्टिजी के एक सिद्धांत युवकी के नेतृत्व में दो सप्ताह पदयात्राएँ चल रही हैं । इससे विचार-प्रचार एवं साहित्य-विकी का अच्छा काम हो रहा है । शक्ति से बंदापुर तक सर्व-प्रथम-समयाव पदयात्रा महाराष्ट्र में निराली गयी । भारत के पश्चिम प्रदेशों के लोगों में, वायव्य बहनों में जागरण का अद्भुत काम करती हुई चार समर्थ बर्नों की संज्ञापात्र अज्ञापक रूप से चल रही है ।

संघटन :

दस कार्यस्थान में कार्यकर्ताओं का श्रम संघटन की ओर गया है यह प्रसन्नता की बात है । लोकसेवकों की सहाय में बाकी मुष्टि हुई है । बाबू लोकसेवकों की संघटा ११११ है । ११६ विना सरोवर में बहनों का गठन देश पर में हुआ है । बट्टा बम बिनो में ही बने न हो, प्राथमिक सरोवर प्रथम भी बने है । २०० बिनो के कार्यकर्ता बाबा के पास शक्ति रिपोर्ट भी भेजने लगे हैं । इन रिपोर्टों से प्रतीत होता है कि श्रमदान-प्राप्ति, पुष्टि,

शान्तिसेना आदि सर्वोदय के हृदिमादो कार्यक्रम चलाकर बिनो में न किये जाकर अथ सुदूर कार्यक्रमों में कार्यकर्ता लगे हैं । यह भागी बन्धी की दूर होगी ? तब, प्रदेश सर्वोदय मण्डलों एवं प्रगत कार्यकर्ताओं, इन सबके लिए यह चुनौती है ।

शान्तिसेना :

उत्तर शान्तिसेना बनायी जा रही है । उत्तर शान्तिसेना बढ रही है । पुष्टि-कार्य शुरू हो जाने के कारण शान्तिसेना कायकी न रह जाय और इनकी शक्ति बढ़ाने के कार्यक्रम बनाये जा रहे हैं, यह संकल्प निहायत जरूरी है । इन वर्ष 'एबीस-नयास' महुरों में अगस्त के प्रारम्भ में 'शिक्षा में क्रान्ति दिन' उत्तर शान्तिसेना में मनाया । इससे एक नया आनाम सर्वोदय-आन्दोलन में शामिल हुआ है । इस कार्यक्रम के 'दर्शन-अप' के रूप में नागपुर विश्वविद्यालय के दीशान्त ममारोह के दिन नएन शान्तिसेना ने शिक्षा में क्रान्ति के लिए भी प्रदर्शन किया । गुजरात, महाराष्ट्र, भागतपुर, कानपुर एवं देश के अन्य कई नगरो में उत्तर शान्तिसेना द्वारा नियमित रूप से अल्पयन केन्द्र चल रहे हैं । इन वर्ष उत्तर शान्तिसेना का अखिल भारतीय विधिर चलचला एवं सततता में हुआ और बगला देश के शिखायिकों की सेवा करने में उल्टेने हाथ बँटाया । गरबी की श्रुष्टियों में शक्ति के ऐक्यिकता छोड़ने के सेवा-शक्ति आदि दरजन श्रमदात्री क्षेत्रों में शक्ति गये । इस कार्यक्रम में अनाक सभासदाएँ दिगी पकी है । एक साक देनेवालों की सरोवरी सन बरें प्रगत हुई थी । इस अवधि में उत्तर नया पानी शक्ति नहीं हुआ है । यह खीन निर निरन्तर बढ़ने रहता साहित्य । दक्षिण में एवं पञ्जाब-उत्तराखण्ड में उत्तर शान्तिसेना बँधे बनेगी, यह भी एक प्रश्न है ।

लोकनीति :

बापानी पुनाई के सरोवरे में हयाग बना रोप हो, इस विषय में महाराष्ट्र, आंध्र, बिहार में बिबरमयन हुआ है ।

प्रचार्यकुल :

आचार्यकुल का काम धीरे-धीरे आगे बढ रहा है । दक्षिण भारत में एक उत्तर, १० बगल और असम में अभी इनके जड़ नहीं पकड़ी है । भारत के अन्य प्रदेशों में यह गति पकड़ रहा है । निम्बर में परघाण-पत्रकार में हुई आचार्यकुल समिति की बैठक में शिक्षा का भोपणा-पत्र तय किया गया और आचार्यकुल का विधान बना ।

प्रकाशन :

एक करोड़ रुपये के साहित्य की योजना का प्रारम्भ हुआ है । १ अक्टूबर की कुछ बड़े शहरों के सरो-भदारी में योजना का उद्घाटन हुआ । अच्छे साहित्य के निर्माण के लिए प्रकाशन में एक समिति बनायी है । आंध्र, कर्नाटक, गुजरात, उत्तर, पश्चिम बंगाल आदि प्रदेशों की युवा-युविकाओं ने बिनोबाओं के परामर्श पर कुछ पत्र नगरी लिपि में प्रकाशित करना प्रारम्भ किया है । इसमें राष्ट्रीय एकात्मता के बीच लिपे पड़े हैं ।

नगर-कार्य :

नगर-समिति ने कार्य प्रारम्भ किया है । बीकानेर नगर में नगर-संस्थाओं के विचार-प्रचार के लिए दो गी कर्तार लगाएँ हुईं । बालपुर में मजदूरों की शिक्षा का सर्वोदय किया गया । तपरो में चार हजार सर्वोदय-प्रेमियों से समर्थ सरोवर उनके पास 'सर्वोदय डाइरेक्ट' पहुँचाया गया ।

सर्व की जायदाद :

सर्व सेना सन में सेवाग्राम में ६१ एकड़ भूमि का विनय भूमिहीनों में करके एक हृदिमादो काम, देरी से ही बने न हो, आरम्भ किया । इस दिशा में सच को सच देन पर भी सभाओं की बाढी आगे बढ़ना है । उत्तराखण्ड के साधन के विषय में मुष्टिरोप का दूतभूत परिवर्तन होना निहायत जरूरी है ।

संसार में बनीतन्त्र में धीमाजी इष्टमयन जयप्रभात के नेतृत्व में धामीय बहनों को सारथक कला पदा । यह के

घारे में और मंदिरों की जमीन के बारे में एक सर्वपक्षीय परिषद स्थानीय सर्वोच्च मंडल ने की, और यह मामला न्यायालय में हो चला गया। इसमें गरीब श्रमिकों को सफलता मिली। इसके में पिछले बीस वर्षों से जापन अधिकारों को प्राप्ति के लिए हित्वात्मक मार्ग का अवलंबन दोनों पक्षों ने बार-बार किया और सफलता नहीं मिली थी।

इस समय का सफल सत्याग्रह यह बताता है कि सब राजनीतिक पक्षों को इकट्ठा कर प्राणीय नेतृत्व सर्वोच्च ढङ्ग पर और आवश्यकता पड़े तो सत्याग्रह का भी अवलंबन किया जाय तो सरकार एवं न्यायालय का भी पहारा मिलता है और अत्याय-निराकरण हो जाता है। गद्दी अनुभव गुजरात में अनंतेश्वर एवं मच्छ में खडिग में आया। अनंतेश्वर के प्रश्न पर श्री हरिलाल परीख के मार्गदर्शन में गत वर्ष सत्याग्रह हुआ था। इस वर्ष भी सत्याग्रह की वैधानिकी थी।

खाटेक में भी मजदूरों को निर्घोषित मजदूरी न मिलने के कारण श्री मणिपाल समर्थी के मार्गदर्शन में अनशन करता पड़ा था। गुजरात के राज्यपाल की सफल मध्यस्थता से इन दोनों प्रश्नों का उत्तोप-जनक हल निकला है। इनसे सिद्ध होता है कि संपाठित शांतिमय उपाय अपनाये गये तो सरकार के प्रमुख, न्यायालय, राजनीतिक पक्ष, सबकी सहभाग्युति उत्पन्न की मिलती है और सत्याग्रह से इन सबको व्यापारधंध होकर या कभी-रभी सत्याग्रह उपायोत्तम भावे हुए भी अत्याय-निराकरण ही सरता है। ऐसे अत्याय अग्रह-अग्रह भारत भर में हो रहे हैं। स्थानीय सर्वोच्च मंडल यदि अत्याय गुन्य नाम करते हुए अत्यायों के निराकरण के लिए प्रयत्न करें तो देखने-रेतने प्राम-सभाएँ सक्रिय हो सकती हैं।

खाटी :

खानी अर्जुन के 'भूमिपुत्र' में 'बरप केज' नाम का एक लेख खाटी की खाज की हालत पर लिखा है। विनोदानी ने कुछ

दिन पूर्व कहा कि बरप-स्वावलंबन के लिए हर गांव में बिजली से चलनेवाली छोटी पावर-मिल खड़ी हो तो बरप-स्वावलंबन सुलभ होगा और बेकारी घटेगी। बरप के इस सुलभ से इस दिशा में खाधी-जनत में गद्या बिलन शुरू हुआ। तीन बिलों वजन के एक अम्बर चरखे का नमूना बनाने में प्रयोग-समिति ने सफलता प्राप्त की है।

शराबबंदी :

तमिलनाडु में शराबबंदी उठ गयी है। उत्तर प्रदेश में भी उच्च न्यायालय के एक फैसले से शराबबंदी के बारे में जस्टी गंगा बहने लगी है। श्री एल० आर० गुजराथम् ने तमिलनाडु में उपाय विद्या एवं अन्य रचनात्मक कार्यकर्ताओं ने कुछ बदन उठाये। हरियाणा में भी बाबा गणेशीनाथ ने सांघेनिक उपाय विद्या। गुजरात के श्री व्यापाराम भाई भट्ट ने दिल्ली में २१ दिनों का उपवास किया। इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न की खबर देना का स्थल किये जाय, यह एक प्रश्न है।

कार्यकर्ता :

महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश एवं गुजरात में नये लोगों के प्रतिस्थाप-वर्ग बनाये गये। इनमें से नये कार्यकर्ता मिले। अन्त-प्रशा-स्य का प्रारंभ कर एक कुछ विप्लो के गहरे अध्ययन की योजना बनाकर कार्य-कर्ताओं का बोद्धिक-स्तर उँचा उठाने का प्रयत्न संपन्न कर रहा है।

छंगला देना :

देव के नामने इन दिनों यह सबसे प्रमुख प्रश्न रहा है। और इन प्रश्न के बारे में सच में निम्न बायम विने हैं : विद्या-विनी के विविधों में मेधा-वार्ध, बाय करते सपाई-वार्ध, बरता जारी है। इनमें बंगाल के कार्यकर्ताओं का भी गहरे पड़ा हिस्सा है ही, उत्तम के एक दूजगल के कार्यकर्ताओं ने सेवा का स्तुत्य काम किया। बरहात्मपुत्र से दिल्ली तक बंगला देना के नालखियों की एक शक्ति-व्यापार परवाना बरने-बरेत जन-व्यापार का काम कर रही है। श्री अजयनामनी ने इसी

प्रश्न को लेकर विद्यवाया की। बंगला देना के प्रश्न पर गांधी शांति प्रतिष्ठान के संजी श्री राधाकृष्ण के अनवरत प्रयत्न से नयी दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय परिषद हुई। हमारे शांतिसेवा मंडल ने पूर्व गांधी शांति प्रतिष्ठान ने इन सब कामों में सहज की। बंगला देना का प्रश्न किये, सब सुन-संगा यह भविष्य के वर्ष में है। कितना ही ने इस विषय के सम्बन्ध में कहा कि 'पूनी को शांति-वार्ध के लिए साक्षर सेवा के बजाय नि साक्षर सेवा रखनी चाहिए। यह सेवा ६ लाख की रहीं हो रखने से भारतीय १ लाख हो। यदि ऐसा हुआ तो इसमें मैं भी हिस्सा ले सरता हूँ।' इस अधिवेशन में इन पर विचार किया जाना चाहिए।

प्रमुख प्रश्न :

प्रामदान-पुष्टि एवं प्राप्ति, संपन्न, योगनीति एवं सगला देना, इस अधिवेशन के ये प्रमुख प्रश्न हैं। इन पर अच्छी तरह विचार करते काम को आगे बढ़ाना है। निम्नसे यह कार्यक्रम प्रामदानार के क्षेत्र की खबर दूना गति से हमें ले जा सके।

बिहार में भूमि विवरण और फान्सी पुष्टि

बिहार में कुल प्राण २१, १७, ४९४ एकड़ भूदान की जमीन में ४, १८, २२१ एकड़ जमीन २, २४, ४९२ मूनि-हीनों के बीच बाँटी गयी। १, ९९, १०० एकड़ जमीन बाँटना जारी है। बीच जमीन खोजने काज नही है। ११, ८१४ प्रान्त रिपानो की सगलाबन्दी हुई।

बिहार प्रामदान बाँटने के सुधारित २१० गाँवों के प्रामदान की पुष्टि हुई। १०१ गाँवों में प्रामदाना हुई। पुण्डरी प्रमंड, गृहणा और दुर्गना विने स पुष्टि का काम सगल का में अतिनात के मन में जा रहा है।

—उत्तम प्रजारा सिंह
काजी

बिहार प्रामदान-व्यत काजको

ग्रामस्वराज्य की 'टेकनीक' सहरसा में विकसित करें

—विनोद

हमारा देश भी बड़ा है, सधवा भी बड़ी है, समस्याएँ अनेक हैं। इसलिए अनेक विचार मानने आवश्यक, विचार के अनेक पक्ष होने, एक मनुष्य एक पक्ष पर जोर देगा, दूसरा दूसरे पक्ष पर जोर देगा और दोनों में संपात होगा। लेकिन हम सोचें लोग हैं, यानी सहरसा में कार्य है, इसलिए हमने इन दिनों, जो भी काम, उसको एक ही बात बड़ी कि मुझ सहरसा जाना।

अब सहरसा कोई छोटा क्षेत्र नहीं है। एक जिन्हा है तो भी वहाँ १८-२० लाख लोग हैं और २३-२४ प्रखंड हैं। सब प्रकार की समस्याएँ वहाँ मौजूद हैं। जमीन का दरबार प्रति ग्रामित ३०-३२ सेंट, यानी ३ मनुष्यों के पीछे एक एकड़ वर्षा है। और हर साल बोधी की बाढ़ आती है, तो हमारे गाँव जनमम हो जाते हैं, इस साल भी और भी ज्यादा हुआ है। उसके कारण अनेक बीमारियाँ भी होती हैं। सन्नीवैटरी उद्योग कोई बालू नहीं है; जो सबसे गरीब जिले हैं भारत में, उनमें हमकी गिनती होती है। उत्तर बिहार में सर्वत्र मछी है, प्रति अर्ध ३०-३२ सेंट जमीन का एकड़ है। लेकिन उसमें भी जो आयतन जिला हमको दिला, वह सहरसा है। इसलिए हमने सहरसा को चुना। दूसरे जिलों की मदद उस सहरा मिल सकती है, भागलपुर, पूर्णिया, दरभंगा, पटना से सब जिले अपनी बाढ़ों को मदद दे सकते हैं। इसलिए बंदिन जिलों में जो क्षामान है, वह हमने बिना। जयप्रकाशजी ने क्या किया? बंदिन जिलों में से बंदिन जिला लिया। वह चुनकर लिया ऐसी बात नहीं। वहाँ एक घटना बनी, उस कारण प्रसिद्ध होकर लोहे के नाले उन्हीने वहाँ जोर लगाया बैचन एक प्रखंड में। उसमें उनकी कुछ पशु भी मिलेगा, कुछ-कुछ काम बनेगा, तो कुछ बिनाकर परिणाम यह निश्चय

कि जयप्रकाशजी जैसा मनुष्य वहाँ लगा है इतना ही समय जागा है, फिर भी परिणाम कुछ नहीं ऐसा अगर जनमतसंग्रह पर पड़ेगा। इसलिए हमने सोचा कि 'ग्राम संचयन दू संचयन' जाना चाहिए। इसलिए कठिन से कठिन क्षेत्र में जो कामान, और सबसे दुर्लभ और पुरानी परम्परा में बहुत अच्छा क्षेत्र लिया जाए, सब सोचने हुए सहरसा जिला लिया।

उस बात को अब लगभग एक साल हुआ है। उसका परिणाम क्या है, उसका विषय वहाँ काम करनेवाले लोगों ने हमारे सामने रखा है। उसका मतलब होता है कि गांधी ने गाँव भी। मुकाम पर पहुँचने में जितना समय लगेगा, लगेगा। वह बात सत्य है। लेकिन गाँधी बकी हुई थी, वह चलने लगी है। इस बातें उसे अब अपना भारत का क्षेत्र मानकर, वहाँ कोसट्रूट करना चाहिए। जैसे फोन में करते हैं। वहाँ आवश्यकता होती है, पशु की आवश्यकता होती है, वहाँ सारी चीज भेज देते हैं। यह हमारे प्रान्त में जाया रि उस एरिया में बहुत सारे समस्याएँ पड़ी हैं। आजको प्रखंड क्षेत्र मिलेगा। उस समस्या को हल में लेने की प्रक्रिया आचरने विवेकी। खोज होगी। इस बातें अखिल भारत समस्या लेकर इन दिनों में माँचवा नहीं हैं। इसलिए एक मनुष्य का क्षेत्र ही जाता है, तो जवरी स्याक करना बंदिन नहीं जाया। और फिर उसका एक काम बनेगा। ग्रामस्वराज्य की टेकनीक क्या है, वह हाथ में आवेगी। बजाय इसके कि भिन्न भिन्न क्षेत्र में तावत लगावें, उत्तर की साम होना है, भिन्न-भिन्न अनुभव आते हैं, लेकिन हमारे कार्यकर्ता काम है, इसलिए हमको सवा कि हममें सब तावत लगानी चाहिए, एक बार हमको पूरा करना चाहिए। दूसरे लोगों की तरफ न देखना भी अच्छा रहेगा, वहाँ तक भेज मन जाता है।

अखिल भारतीय संसदत्व बने : एक और बात सोचना है। इन दिनों अखिल भारतीयता टूट रही है। अगर हम सोचें कि अखिल भारतीय होना है, तो केन्द्रीय सभी और भिन्न-भिन्न पार्टी के नेता हैं, वे अखिल भारतीय माने जा सकते हैं। लेकिन वे भारत को जोड़नेवाले नहीं होते, तोड़नेवाले होते हैं। इस बावले तिम हेतु से हम अखिल भारत की कल्पना करते हैं, वह पूर्ण नहीं होनी। इस बावले अब अखिल भारत संघटन—नेतृत्व को तो हम मानते नहीं—बनना चाहिए। आज और संघटन हैं? ऐसे जय-प्रकाशजी हैं, दास धर्मधारा हैं, ऐसे निकटने कुछ। उनमें से कोई जागतिक भी है लेकिन वे सारे ६५ साल के ऊपर बने शूद्र पुरुष हैं। वह वर्षा नहीं। इसलिए जो नये लोग हैं उनकी अखिल भारतीयता विष्ट होनी चाहिए। वह भी होगा अगर सब उस क्षेत्र में लग जाते हैं। मान लीजिए एक साल लग जाता है इस काम को, तो कोई हरज नहीं।

यह हमारे मन में मुख्य विचार चलता है। इन दिनों जो समस्या है राजनैतिक, वह तो अपनी जगह सगत चरती रहती। उस प्रकार से सभी लोक-कामिल हुई रही है। आज मुजब के हाथ में भी सत्ता की जाय, वह समस्या हल हुई मज में, तो भी क्या होगा? वही होगा जो आज यहाँ होता है। योग सोचें कि हमारी समस्याएँ मुजबुद्ध-मान हल करेंगे, जैसे वहाँ सोचते हैं कि इतिहासी हल करेंगी। उत्तर बिहार सबसे गरीब क्षेत्र है, उसमें गरीब उत्तम बगात, उसमें भी अर्थिक केरल और उसमें भी प्रयास बगना देय है। वहाँ पार मनुष्यों के पीछे एक एकड़ जमीन है, जिनमें नदियाँ नाले हैं, बाढ़ आती रहती है। बोधी-मुकाम होगा रहना है, गोपिन मुक है। ऐसी हालत में मुजबुद्धमान क्या करेगा? अचरीका की, भारत की याचना करता रहेगा। इस बावले वर्षा विन्हीने राजनीति की दृष्टि

ये बहुत बड़ी चीज सिद्ध की है; लोकजीति की दृष्टि से देखा जाये तो उसमें से सारा कुछ निकलेगा नहीं। एक समय था, जब मैं जग पटना पर बहुत चिन्तन करता था। अन्तिर मैंने देखा कि यह इतिहासों के ह्रास में है। वे कहती हैं कि योग समय पर मान्यता देंगे, नहीं देंगे ऐसा नहीं कहती है। योग समय कौन-सा? वह मैं नहीं ठीक यह मेरा अविश्रुत विचार होगा। मेरे पास जानकारों नहीं से जाती है? एक जो अक्षय्यर मे और कोई दूसरा व्यक्ति वहाँ जाकर आवे, जो उससे। यह मेरी आवश्यकता के धोखे है। उनके पास तो पूरी जानकारी रहती है। तो योग समय कौन-सा, यह नहीं तय कर सकती है। इस वाक्ये जब आपने बोध देकर आता भला-बुरा उनके ह्रास में सीपा है और नहीं देंगे मान्यता, ऐसा वे सोचती नहीं, उस हालत में इस समस्या का भार उन पर छोड़ना ही बेहतर है। यह मैंने इसलिए कहा कि उस पर मैं जो ध्यान करता था, इन दिनों कम किया है। वह क्यों किया, उसके कारण यद्यप्ये। एक, वह लोकजीति का काम है नहीं। दो, वह गारा इन्दिरा जी के ह्रास में है। लेकिन आप लोग यहाँ जाकर सेवा कार्य करते हैं, वह मैं पसंद करता हूँ क्योंकि उसके साथ को सेवा-कार्य की शिक्षा मिलती है, लेकिन उसके समस्या का हल नहीं होता। हाँ, यह बात अलग है, जो मैंने कहा था कि ७ लाख की शान्तिसेना की जगह, पूरे आदिसेना २० और अपने भारत का शासनी हिस्सा हो, ऐसा होता है और वह सेवा वहाँ जायेगी और धर्मियों, तो यह मैं समझ सकता हूँ। यह बहुत बड़ी चीज होती है। लेकिन केवल भारत की सेवा मानेंगे और यह नहीं जानेंगे, जो कोई लाभ नहीं। इन्दिराजी उसे जाने की इच्छावश होगी, तो यह कुछ उनमें 'दलवार' होगी और उस हालत में फ्रिडरिखल पर हमला किया ऐसा ही हो सकता है। अखिल जागतिक सेवा यहाँ आ सकती है। लेकिन वह अपने

भार कम न पड़े

अन्याय, परचाचाप करने का मौका आयेगा

प्राथमिक आन्दोलन का अच्छा प्रभाव पड़ रहा है। हृद्योग विनाश परिषदा करते हैं, उस पर से पद को मानना चाहिए, तो ध्यान में आयेगा कि प्रयत्न को जोरों बहुत ज्यादा फल हमें मिला है। एगसे भी जल्दी काम पूरा हो, ऐसा चाहते हैं, जो पूरा समय इस काम के लिए देना होगा, उसके लिए मर मिटना होगा। क्रांतियार्थी कुख्यात से नहीं होती। 'हड़ताल इपसं वार' (श) एगस का मुद्दा) प्रसिद्ध है इतिहास में। जो सत्त तक सहाई चलती रही। एक के बाद एक पाँच पीढ़ियाँ हो गयीं एक सहाई के काल में। लेकिन ये क्रांति का काम शुरू किया १९१० में। २४ साल के बाद आज भी दुनिया में कहीं लेकिन की इच्छा के मुनाबिक क्रांति हुई नहीं है। लेकिन का मानना था कि 'स्टेट बिल विदर अबे' (स्टेट टोरे-टोरे उद्यम हॉगो) और

व्यवस्थापन सामान्य जनता के ह्रास में आना चाहिए। धाज क्या रूप में, क्या चीज में, स्टेट पक्षी हुई है और मान्यता सामान्य जनता के ह्रास में नहीं, मिलिटरी के ह्रास में है। क्रांति हुई नहीं। तो समझना चाहिए कि क्रांति का विचार पलटा रहता है। मरना क्रांति है। मरण कितनी बार आयेगा? एक बार। तब तक उसकी धोर जाता है।

आज धोरनमाई जैता बुद्ध पुत्र पूरे उत्साह और उत्थित से धामदान मुक्ति के लिए सहस्रा में उठ कर बैठा है। प्रिय भाई ७१ साल के उवान हैं, किन्तुने पापीजों के आधापन पर कबिन छोड़ दिया और आज २० साल से उसी काम में लगे हैं। ऐसा व्यक्ति आप के पास किसे पाँच साल की माँष कर रहा है। उन्होंने कहा कि 'स्वराज्य-भाविक के लिए तो हमें ४० साल देने पड़े, लेकिन आप—

की बात है। उससे अधिक और कुछ हम कर सकते ऐसे रिपारि नहीं है। इसलिए अगला देश पर इवाल देना मैंने कम किया है। गीरा मुख्य ध्यान इन दिनों: एक—मुख्य सहस्रा पर, दो—बोझा शान्तिसेना पर और तीन—भारत के लिए एक निधि हो, इन पर है।

सहस्रा में काम पूरा होता है, जो एक टेक्नीक ह्रास में आयेगी। मैं सेवता हूँ कि लोगों की कमी नहीं है, टेक्नीक ह्रास में नहीं भागी है। हृद्योग वा-वार सोचते हैं कि यह अन्धधौलन लोक-आन्दोलन कम होगा, उसका अर्थ इतना ही है कि कुछ उसको कर छुड़ने, कम पुञ्ज होगी? इसलिए हमको समझना चाहिए कि परमात्मा हमसे काम लेना चाहता है, यह हमें करना है। इस वाक्ये छोटे भाई ने कहा है कि ब्रह्म विद्या के सिवा यह होगा नहीं। प्रकृत विद्या मन्दिर ही हमने चलाया है यहाँ प्रयोग के

तौर पर। लेकिन हमारे विजने कार्यकर्ता बड़ी जायेंगे, तो वे ब्रह्मविद्या-मन्दिर में लगे और अपने काम में लगे।

दूसरे प्रान्त के प्रमुख लोग, जो हिन्दी नहीं जानते हैं वे न कायें। जिनको कुछ थोड़ी हिन्दी आती है, वे जायें, तो हिन्दी सीखना भी आसान होगा। इधरा मतलब यह नहीं कि प्रान्त का काम बंद पड़े। भास में चीनसेर है—जो विद्व-राजनी सहस्रा जायें। बड़ी जाकर समय देंगे और यहाँ का मुक्ति काम पूरा होकर वापस जायें तो बोझसेर के नाम में अधिक शक्ति मिलेगी। और मात लें वे यहाँ मर भी जायें तो बोझसेर में ही अधिक शक्ति मिलेगी। और जब तक मुदर मनुष्य हलवा नहीं, तब तक दूसरे लोग जिम्मेवारी लेने के लिए जायें नहीं जायें।

सब सेबा सज के प्रमुख कार्यकर्ताओं के बीच से ब्रह्म विद्यामन्दिर: (२१-१०-७१)

नया मोड़ : किधर ?

ता० २६ और २८ सितम्बर को विनोबाजी के साथ सादी के बारे में जो चर्चा हुई उसका गोट राधाहृण्य बजात्र ने कमलन के समझ रखा। उस पर कमलन (सर्वे हेवा संघ के प्रमुख व्यक्तियों) में विचार विनिमय होकर तय रहा कि श्री ह्री० रामचन्द्रन एक गोट बनाकर विनोबाजी के समझ रहें।

अनुसार प्रारम्भ में रामचन्द्रनजी ने पावर ड्राग मूल उत्पादन तक कार्य किया जायगा तो जिल्ला पूँजी लगेगी, विभिन्न लोगों को पूरा सात भर काम मिल गया है और बननेवाला बपड़ा मिल भी तुलना में बिलना भोग्या पड़ेगा, इसके कुछ औरड़े निम्न प्रकार रहे

१. एक हजार जनसंख्या वाला (दो सौ परिवार) एक गाँव रख करह तीन गाँवों को मिलाकर एक पावर यूनिट बना दिया जाय।

२. प्रति व्यक्ति २० मोटर बपड़े के डिग्रा से प्रति गाँव २० हजार मोटर बनाया जायगा। यानी तीन गाँव के एक यूनिट में साठ हजार मोटर बपड़ा होगा।

३. साठ हजार मोटर बपड़े के लिए साठ से सत्तर हजार रुपये की पूँजी साधन मामलों के लिए लगेगी।

४. साढ़े पार साध गाँवों के लिए देड़ साल पावर यूनिट साढ़े करने होंगे, जिनमें दो सौ करोड़ रुपये की पूँजी लगेगी।

नारायण काम ऐसा है कि अगर कार्यकर्ता गाँव सात को-ऑप से उगने लग जाते हैं, तो काम पूरा हो जायेगा। अब, अगर यह मुन कर हजार कार्यियों की बहाँ या कर पराक्रम करने की संख्या हो, तो बभ्दा ही है। अथवा बार में परवासाय करने का मोहर न आये कि सुदूर ही बहाँ पास करते पर गये—धीरेधीरे ७१ सात के हैं, कभी भी भर सकते हैं—और

५. हर वर्ष तो सौ करोड़ मोटर बपड़ा जैसा। प्रति मोटर दाम ४० २.५० होगा। यानी दो हजार करोड़ रुपये का बपड़ा बनेगा।

६. सात भर में ३०० दिन काम और तीन सौ अरसी दिन का वेतन मस-कर प्रति बतित ३ रुपये, प्रति सुतकर ५ रुपये, अन्य कारीगर ४ रुपये और व्ययस्वायक ५ रुपये मजदूरी पड़ेगी।

७. एक यूनिट में तीस-पैंतीस व्यक्ति की बानी प्रति गाँव दस-बापड़ व्यक्ति की—काम मिलेगा। २५ डिग्रा से साढ़े पार लाख गाँवों में पचास लाख लोगों को छाल भर काम मिल सकेगा।

८. यह बपड़ा मिल के अपने से दस प्रतिशत मँहोती रहेगा।

९. आज सादी ग्रामोद्योगों में दस लाख लोगों को अधिक समय काम मिल रहा है। पावर यूनिट योजना में पचास लाख लोगों को पूरा समय का एक करोड़ लोगों को आधा समय काम मिलेगा।

१०. यदि तो सौ करोड़ की साधन सामग्री हम ही ठेकार बटें तो दस लाख अधिक लोगों को काम मिलेगा। उपर्युक्त योजना पर चर्चा के दर-म्यान निम्न प्रश्नों पर हुए।

प्रश्न क्या पावर यूनिट से बनने-वाने कपड़े की भी सादी बढा जायगा ?
(विनोबा . यह सादी ही होगी।
हरिद्वार में गया है, बाघों में गया है,

काम आरूपा रहा, धीरे-धीरे के बहने के अनुसार हम बहाँ जाने तो काम पूरा ही जाय। काम तो होनेवाला ही है। लेकिन, "बेदर एण्ड फाउंड वाइडिंग" (ठीका और भार की कमी निरन्तर) ऐसा है। जो पहल करता है, वह गार साया है। पहला जिना ही काया है, तो फिर दूसरे की देद नहीं लगेगी।—विनोबा पञ्जाद . सितम्बर १६७१

पटने में गया है, हर जगह उमका रूप निभ है, लेकिन नाम गया ही है। सादी का बाया यह है कि उसमें किसी का जोषण नहीं होगा। गाँव बनने लिए पावर से बपड़े बनायेगा और स्वयं पहु-नेमा तो इसमें किसी का जोषण नहीं होगा, गाँववालों की अपने गाँव में काम मिलेगा, इसलिए इसे सादी ही बहना होगा।

प्रश्न . यह काम किसरी और से किया जायगा ? सरकार इसे स्वीकार नहीं करेगी तो क्या होगा ?

विनोबा सरकार नहीं बरेगी तो हम करेंगे। जो गाँव सम्भव करेगा कि हमारा बपड़ा हम ही तैयार करेंगे वहाँ प्रारम्भ किया जाय। वहाँ नवरीक ३ मील पर सुरमाँव है। उस गाँव का कामशन हो गया है। वहाँ ४५ कोई क्षमता बोट में नहीं आता है। असाधन मुक्ति हो गयी है। वहाँ प्रयोग करके अनुभव लिया जाय। मैं यहाँ हूँ तो मैं भी इसमें मदद दे सकता हूँ। अन्य कुछ स्थानों में भी किया जाय। प्रयोग मफल हुआ तो सारे गाँवों में फैल सकेगा।

अपने पास करीब तीस हजार सादी के कार्यकर्ता हैं और नून छ हजार प्रखण्ड हैं। तो हर प्रखण्ड में पाव कार्य-कर्ता गाँवों की मदद में हो जाते हैं। ये लोग गाँवों के कार्यकर्ताओं को आश्चर्यक डुमिंग से लेकिन यह सादी योजना काम-समा के सम्म्य से और उनके आधार पर चलनी चाहिए। प्रारम्भ में भले हम सरसावानी इसकी जानू करते हैं पहल करते।

प्रश्न बतित को प्रति दिन ३ रुपये मिले ऐसा यूनिट बनाने में तो पचास लाख लोगों का काम मिलेगा। लेकिन २ रुपये मिले, ऐसा यूनिट बनाने में तो अधिक लोगों का काम मिल सकेगा है।

विनोबा . आज की परिस्थिति देखते हुए २ रुपये दोब मिले और अधिक लोगों को काम मिले तो यह योजना पसंद है।

—श्री० रामचन्द्रन

गुड़िया-घरों का मोह छोड़कर मैदान में कूद पड़ें

—सन् १९४२ की तरह आज 'करो या मरो' की चुनौती है—

सर्व सेवा संघ-अधिवेशन में श्री धीरेन्द्र भाई की क्रांतिकारी अपील

पिछले दो-तीन सालों से मैंने भाषण करने का पत्र कर दिया है। कार्यकर्ताओं में। इसलिए कि कभी मेरे पास कोई ऐसी नयी बात नहीं आती रही है, जिसे मैं एक बार नहीं बोलने का बहाना नहीं बना सकूँ। लेकिन यहाँ का गया। और पिछले दो दिनों में आप लोगों के दिग्गजों में हलचल मची है, यह देखा। राधा ने जो भाषण किया था, उसके उल्टे-पल्टे विचार ही प्रसिद्ध नहीं पैदा की थी, मेरे लिए भी की थी। उन भाषण के बाद दूसरे दिन दिनभर लोगों ने उनसे राधात पूछे और मेरे आगे ही लोगों ने सवाल पूछा कि क्या कि यह क्या बात है? आप कुछ कहते हैं, राधा कुछ और कहते हैं! क्यों नहीं आप सब एक कमरे में बैठकर एक फलमूलक विचारों को जिस पर हम आते।

हमें लोक छोड़कर चलना है

तो मित्रों! आप जो काम करने जा रहे हैं, उस क्रांति का जो पूरा उत्तर है, सत्य है, उसकी भूमिका में हम सब बिनाहर एक कमरे में बैठकर एक-दूसरे का निकालें और आप जबकी तरह जायें, तो इस क्रांति के लिए यह एक भयंकर अभिवाण होगा। वह सम्भव नहीं है, संभव नहीं है। आखिर, हम कर क्या रहे हैं? हम किसी परम्परागत 'लोक' पर चलना नहीं चाहते, हम लोक छोड़कर चलना चाहते हैं। परम्परागत 'लोक' क्या है? समाज की समझावों का समझाव, समाज-परिचलन इत्यादि के लिए हिंसा की क्रांति और हमारे की पद्धति, यह 'लोक' है। आप उससे छोड़कर अहिंसा की क्रांति और सामर्थ्य की पद्धति खोजना चाहते हैं। इसलिए चर-पत्र सालों से मैं कहता आ रहा हूँ, जब कभी लोग मुझसे पूछते हैं कि आप मार्गदर्शन करें, तो मैं कहता हूँ कि हमको

खर ही मार्ग मानना पड़े। हम क्या मार्गदर्शन करें? 'लोक' छोड़कर जो जायगा, उसके लिए मार्गदर्शन करने वाला कोई नहीं होगा, वह चारों-दिशाओं की यात्रा होगी। इसलिए मैं एक बात का प्रयोग करता हूँ। हमारे लिए मार्गदर्शन की आवश्यकता नहीं है, हमारे लिए मार्ग-सोचन की बात है। 'मार्ग' सोचन को प्रक्रिया में सब मिलकर कायदा से एक 'लोक' सोचें, और उस पर चलें। राधा की चला दें तो आप सब जाकर राह में मिलेंगे।

शरस्त्री को 'दर्शन' होता है, शरस्त्री 'दिखता' है

आज मुझे आने एक 'शरस्त्री' (राधा) को मुना, उन मित्रों को मुन रहे हैं। शरस्त्री और शरस्त्री में फर्क यह होता है कि शरस्त्री को 'दर्शन' होता है, शरस्त्री 'दिखता' है। शरस्त्री को भीषण की सुनना होगा, शरस्त्री को भी सुनना होगा, और सुनकर मार्गसोचन में लगना होगा। वह सिद्ध होगा, और शरस्त्री भी हीं गाना है। इसलिए राधा जो दो दिन से परेशान हो रहे हैं, शरस्त्री को कहे और उसे सब से निकालें सोचिए। वृत्ति यह क्यों पतली है, लोक कल हमारे एक लकड़ें ने आकर कहा कि आपसो कमरे में बैठकर क्या चर्चा करेंगे, यहाँ आकर करें तो अपना सिद्धांत होगा। इसीलिए आपको हमने ही हम चर्चा कर रहे हैं, यद्यपि आवश्यकता नहीं रही।

जैसा कि राधा ने कहा कि हमारे बीच चिन्ता करनी पड़ी है, विरोध नहीं है। और मैं मानता हूँ कि बहुत कुछ चिन्ता नहीं है, उनको ही चिन्ता है, कि मैं कहता हूँ कल का राधा, राधा कहते हैं कल के माना का राधा। और

आपके आत्मिक चिन्ता की चिन्ता हो, लेकिन कोई ऐसी बात नहीं है।

अहिंसा : सिद्धान्त नहीं, जीवन की प्रकृति घने

राधा ने कहा कि अहिंसा को हरे सिद्धान्त नहीं माना जायें। मैं भी मानता हूँ। अहिंसा को सिद्धान्त नहीं मानने की जो चेतावनी राधा ने दी, उसे मैं अत्यन्त मानता हूँ। मैं मानता हूँ, अहिंसा सिद्धान्त नहीं होती जायें, अहिंसा जीवन की प्रकृति होती जायें। आपकी प्रकृति अहिंसा होगी तो आपकी इच्छा और अभिप्राय हर तरह अहिंसा होंगे।

संघर्ष से भय नहीं,

लेकिन योजना मिलाना को

दूसरी बात उनको नहीं कि संघर्ष से भय नहीं, परन्तु यह अत्यन्त नहीं है। आपकी प्रकृति में अहिंसा आती है तो किसी चीज से आपकी भय नहीं की जरूरत नहीं है। हमारा संघर्ष का भय नहीं है। यद्यपि देश के लोग सोचते जायें हैं तो हम चर्चा नहीं है, जना और ही करते हैं। उन परिस्थिति में उनको ऐसा करना पड़ा। हमारे देश को भी परिस्थिति है, उसमें जो रहे हुए है, के कुछ हिंसा कर भी सकते, हो सकते हैं कि बिना संघर्ष में हम काम कर रहे हैं, और बिना संघर्ष में भी काम कर रहे हैं, और बिना संघर्ष में भी काम कर रहे हैं, उनसे परिणामरत्न का सब से मैं हमारा किसी गड़बड़ी के कारण भी कुछ हिंसा हो जाय, उसके भी चर्चा नहीं की जरूरत नहीं है। लेकिन संघर्ष से हमको भय नहीं है, इसलिए कल राधा को हम नहीं करते तर्क। इन

योजना सचपं की नहीं घोषिते। संगला देम का, बुजिण पीव का गौरव हम बनते है, इगनिए हिन्दुस्तान में अहिंसा मानने वाले गांधी-विचार के नेतृत्व में योजना दिशा की नहीं बनारिये। यद्यपि सन् १९५२ में नहीं-नही दिशा हुई। लेकिन उमदी योजना गांधी-विचार माननेवालों ने नहीं बनायी। बनने से भय नहीं है, इसलिए योजना बनने की नहीं बनारिये, योजना तो जोने की ही बनारिये। योजना बनारी सम्पत्ति की बनारी होगी, हाथ निगाने की बनारी पढ़ेगी, सचपं हुवा वो बनारी सचपाने की जरूरत नहीं। इतना अर्थ यह नहीं है कि हम सचपं से भय कायें। और बूकि सच नहीं है, इसलिए योजना ही सचपं की बनाने सचं तो नहीं हुवा कि मूयु का भय नहीं है, इतनिए योजना ही मूयु की बनाने सचं। योजना जीने की बनानी होगी। अणुएव कोई बनार हुमायी और दारा की बाणो में नहीं है।

हमारा 'अप्रोच' क्या होगा ?

फिर हमारा 'अप्रोच' क्या होगा, हमारी मूह-रचना क्या होगी ? हम समाज के हर समुदाय के जो लोग है, उनको अलग-अलग योगियों में नहीं बाँटिये। यह 'मुक्तिहीन है, यह बड़ा मानिक है, यह छोटा मानिक है, यह धर्मशारी है, यह फनाता है', इस तरह के मयुय समुदाय को हम नहीं बाँटिये। हम पूरे समाज को सामने रखकर शिक्षण का काम करिये। फिर बिनाही जिध प्रकार की मन रिपनि और परिस्थित है, उनको ध्यान में रखते हुए हम मिनिमम बेअरह के सम्बन्धित नये विचारों का निरासन करिये। क्योंकि हम मयुयका-मयुयवर्तन बनाने चाहते हैं और मयुयका खानी एक ही है। 'देव' और 'देवता' करके दो नहीं हैं, और कानी मिनिमन के लिए साठी बनाने में सबको मान्यता एक है। हमने देखा है सड़क पर एक काह बैठकर भीस मांगते हुए एक मयुय को। अगर वही कोई हुमायी निगारो बाहर बैठ जाय वो गाठी बेकर उगाह विर फोड़ देगा।

'मिनिमन' में उमरा उमरा ही 'वेस्टेड एटरेन्ट' (मयुय खास) है, जिन्ना विनी वक्के मानिक का। इतनिए जैसा कि दास ने कहा कि वर्ष है ही नहीं, उमसे में पूर्वत. महामा है। उन्होंने कहा कि आज अमीर गरीब हो सकता है और गरीब अमीर हो सकता है। मैं कहता हूँ कि हरेक के दिल में मिनिमन की और उसके न्यस्त स्वार्थ की भावना समाज है, सम्पत्ति विनी के पास उगादा है, विनी के पास कम है। समाज-अवस्था की जो पढ़ाई है, उनके कारण हुवा हुआ है।

'रिश्ताप्रोचमेड'

इतनिए मीने कहा है, और 'मूहज-यस' में हमारे विनी में हुई बहय भी आपने पढ़ी होगी। सात्र एग बड़ा फरत हो गया है—मयान में सोचन है, अन्धकार है, नहीं है ऐसा हम नहीं मानते, देखा है, इतना ही नहीं, लोभ उसके प्रति जागरक भी है—दखे हुए लोग यह अनुभव करते हैं कि हम शापित हैं, पीड़ित हैं। और आज समाजवार और सर्वोपय बेअरह-नारह के कारण तथा लोभजब कादि के विचार के फलत से, जो उदारराने है (और गोगन-अन्धकार करते हैं कहना सामय मयुय होना) निकके कारण सोचन कीर अन्धकार होता है, वे भी अंध घन रहे हैं कि वे ऐसा करते हैं। उनके सामने आज यह निचिन है कि—अनात्मि धर्म न ख से प्रवृत्ति। मोह है, भगवा है इतनिए पूरे समाज के प्रति हमारा समग्र निवेदन होगा। यह पढ़नी बात है, और इसमें हमारी जो दृष्टि होगी वह हाथी, निरको में 'विश्वोचमेड' कहना है। यह जो निचिन हो गयी है, विनी समाज के दुर्जन की प्रस्था से नहीं, समाज की अवस्था के कारण। जो गजन भावना है, विप्लव है, उल्लास छोड़ने के लिए, जैसा कि बिरोधा बन्दे हैं, नहीं दिशा में सोचने के लिए सहभाग, हरेक के लिए आसश्यक है।

समाज ने एक कृत्रिम को जो अत्यन्तैयस बनारिये है, वह बाहिर कायी

सम्बेदना और अपील

अभी पिछले दिनों उड़ीसा में जो भयंकर भूकम्प के रण में प्राकृतिक प्रकीर बाया, उनमें २५ हजार के करीब लोग वानपस्त हुए और लाखों लोग इस समय अमह्य, वष्ट की जिन्दगी जिता रहे हैं। सर्वोपय-परिवार इससे अत्यन्त दुखी है और धर्मियों के लिए अपनी हार्दिक सम्बेदना व्यक्त करता है।

उड़ीसा में प्राथमिक सर्वोपय मन्डल के सत्वावधान में पीड़ितों की सेवा के लिए एक गैर-सरकारी राहन समिति सर्वोपय नेता श्री मन-मोहन चौधरी की अध्यक्षता में गठित हुई है। समिति ने देश-विदेश के समाज सेवी मयुयों से उदारतरण पूर्वक राशन सामग्री और धन देने की अपील की है। समर्क वर वना:

उत्कल सर्वोपय मन्डन,
धारिया साठी, बटक-२

बनारी है ? इतनिए दलायी है कि हर मयुय में सहृदय और विद्वित, ये दो तार हैं। जिने गाठी बहने से कि हरेक के दिम में देवासुर का युद्ध होता है। जो धम 'अत्यन्तैयस' के अत्युत्तर अज्ञान का प्रयास रहा है कि वह जो विद्वित है, वट जो अमुर पृथि है, उनका निरासन हो, निरासन हो, उगादा कुछ निराकरण भी हो। यज सब एक कृत्रिम द्वारा होता रहा। हुमरी और साधना, शिक्षण द्वारा साहसिक कर्तियो के विनाम का प्रयास भी होगा रहा। हम उस 'अत्यन्तैयस' को छोड़ना चाहते हैं। यैरिक वह विद्वित की गविज है। छिटफुट विद्वित को सचपत विद्वित निम-चित करे, कम उसमें धनता ही है। हमारा प्रयास यह है कि विद्वित शक्ति से विद्वित शक्ति का निरसन का विनयन नहीं, सहृदयि शक्ति से उगादा निरासन का निराकरण हो। यारी हमारी कर्तनि साहसिक कर्तनि है।

आज समाज में बर्न नहीं है, लेकिन ऐसे लकके हैं जो सोचिन और दनिन हैं, अन्धकार पीड़ित हैं। चाहे रिची की बन्दोबदी के कारण न हो, सामाजिक अवस्था के परिणाम से हो। हमारे यथेन में कुछ ही, लेकिन हम देखते हैं कि विद्वित तो प्राकृतिक है, वह दोनों में

विचार की सम्भावना हमको प्रष्ट करती है। इस स्थिति पर हम आये हैं। अथवा सम्भावना प्रष्ट नहीं हुई, तो हमारा विचार, लोक-सम्मति के बावजूद, आदर के बावजूद स्वीकार्य नहीं होगा। तब निराश्रित राहों पर चल रही है, वही जो गीत वाला चरता है, हिला की शक्ति और शक्ति की पद्धति का जो परम्परागत मान है, मनुष्य उद्योग पर जायेगा, क्योंकि आदर के बचाने में यह बहुत खरी है, वही रहना नहीं चाहता। तो, आज बहुत शोच कर मनुष्य-रक्षा करनी है, और सब काम करके सम्भावना प्रष्ट करनी है।

यह धुनौती है हमारे लिए

मैं नहीं कहना हूँ कि नमूना देश गता है। क्योंकि मैं मानता हूँ कि क्रांति की अगर कोई पटना नहीं मानकर सारोहण की प्रक्रिया मानते हैं, तो क्रांति का नमूना देश नहीं किया जा सकता। आन्तरिकता के सारोहण की प्रक्रिया में जो सजते माने होगा, वही नमूना होगा। और विचार काले बढ़ता जायेगा, मनुष्य पीछे पड़ जायेगा। इसलिए हमलोग 'दे' रहे हैं, जिनोवा, खे पीठ रहने दे है, कि इसमें 'मनुष्य-राश' की पुत्राश दे है। हम न कहना में नमूना देश कर माने हैं, न मनुष्यी में और न अथ नहीं। लेकिन हम समय मात्र को मान-विचार को परिष्कार परिष्कार में भी धीरे धीरे धीरे ही जो उत्पन्न है उबली धुनौती का वही रास्ता है, इसलिए यह सम्भव है, तबसे सम्भावना प्रष्ट करे। यह काम हमारे सामने धुनौती है।

शेष छोटा नहीं, कम-से-कम विचारस्वर का ले

लेकिन एक बात मैं मानता हूँ कि समय की मायता को बदलने के लिए, सामाजिक परिवर्तन के लिए लोग शेष सम्भावना नहीं होगा। मात्र के अन्त में, जबकि दुनिया में कौनाहन परम्परा पर धुँचा हुआ है, छोटे-छोटे क्षेत्रों में हम-आर दुनिया का स्थान नहीं शोच करने। दुनिया को मासिक कर

सजते हैं अथवा मात्र एक प्रत्यक्ष लेहर, लेकिन हम-आर ऐसा नहीं कर सते। मरुत की धार बनाने के लिए कोई मोटी सजती मिल जाय तो एक ही काशी होनी है, लेकिन कमजोर लड़कियों का 'केवा' बनाना पडता है।

इसलिए हम और आप सजे क्षेत्र में लगे। और हम सब क्रांति को धुनौती के वेगाने पर न सोचें, एक विचार के वेगाने पर सोचें। अतिस विचार तक हम शोच नहीं सजते, अतिस नहीं है, तो कम-से-कम एक आ-तोन हम भारत में चलता है, हम आग्राम में सोचें। हमें हर प्रदेश में करना है, जगह-जगह छोटे-छोटे क्षेत्रों में करना है, ऐसा सोचें तो सबका जोड़ में करना है, लेकिन दुनिया का भार्गव अधिष्ठ होना, विभाग पर प्रभाव डालने के लिए 'संस्था' चाहिए। जब हम प्रत्यक्ष प्राप्ति का काम जगह-जगह करते थे, तो उनका प्रभाव अन्तर्गत पर उलटा नहीं पडा था, जिनका कि दरवाजा जिनका धार के बाद पडा।

एक बड़ा क्षेत्र था, वही भी लें। एक पूरे प्रदेश को वे सजते तो वही मज्जी मान होनी, लेकिन शक्ति वही है। यदि भारत के कार्यकर्ताओं को कुल विरोधी शक्ति भी उतनी नहीं है, तो कम-से-कम शक्ति का क्षेत्र किया जाय। एक दूसरे छोटा क्षेत्र नहीं किया जाय। एक प्रदेश का एक शक्ति लें और प्रदेश के सब कार्यकर्ता उठते लगे। शक्ति प्रदेश के भी नहीं देते के स्तर पर सोच जाय। राष्ट्रीय मोर्चा बनाने सहजता को मानता है, तो जिनने कार्यकर्ताओं की वही बसल है, वही जायें, बाकी सब तो शक्ति लें या और वही वे जाय लगे। लेकिन जिनने क्षेत्र आ लें, उन्हें राष्ट्रीय मोर्चा के रूप में मैं, स्थानीय मोर्चा के रूप में नहीं।

अहिंसा में सेनापति का आदेश नहीं, संकेत इस समय दुनिया में हिला शक्ति का विस्तार हो रहा है। सारी दुनिया एक

जगलामुखी के ऊपर बैठी है। मात्र आश्चर्यजनक है कि कुछ-न-कुछ आप सब मिलकर सदा करें। आप ने पहचाना, मुसहरी चुना है, जो उन्हें पूरा करने में पापी ताकत लगनी चाहिए। क्योंकि मैं मानता हूँ कि सहजता की निर्णय और 'सम्पूर्ण निराशा' दोनों में से किसी एक को चुनने की स्थिति में आप धुँच गये हैं।

मैं मानता हूँ कि दो मित्रों के नाम हलका की धमकी का पत्र आया था उस क्रियते में अथवा मात्र धुनौती में जाकर बैठ गये, यह एक प्रत्यक्ष मान है, मुसहरी यह है कि वह जमाने की मान थी। इसीलिए सुरत विनोदा ने मुसहरी बहन जेनो को 'करो या सरो' के संदेश के साथ अथवा मात्र के पास भेज दिया। हिला में सेनापति आदेश देता है, अहिंसा में सेनापति उभरे करता है। हमारे सेनापति ने संकेत दिया है कि आज करना गया है।

'करो या सरो' का सवाल

बड़े शक्तिमान हमने मिलते हैं, बड़े सामी मिलते हैं, बहते हैं कि हलका 'लौड' नहीं मिल रहा है। जतिस उठाने है। अब और क्या 'लौड' चाहिए? नार परड कर, उमर मार कर बहते हैं कि वही नर 'लौड' होगा। अथवा मात्र धुनौती मनुष्य वही जाकर बैठे, विनोदा जैसे मनुष्य ने, जिनको रने सात तक (ब्र विद्या मंदिर से) बही हलके की प्रभाव नहीं थी, उन्हें वही भेज दिया, एक अथवा राष्ट्रीय मोर्चा बनाने के लिए सह-रक्षा बढाया, उन और क्या 'लौड' हो सता है? तो, मात्र 'करो या सरो' का सवाल है। सर्वोच्च-समाज में बहुत कार्यकर्ता हैं। और सब लोग स्थिति-स्थिति रचनात्मक प्रवृत्ति में लगे हुए हैं। सारी है, तैयारी है, धारणा है, सब कार्यकर्ता में वे पाय चलते हैं, और वे सब काम करने अथवा सहज है, लेकिन राष्ट्र के लिए उनको भी है। लेकिन हर चीज का समय होता है। आसारी के

मरुत-यह। सोमवार, ५ दिसम्बर, ७१

बाल्योत्पन्न में भी हमलोग रचनात्मक काम में लगे थे और आश्रमपूर्वक भाषीजी ने हमलोगों को राजनीतिक हलकों से दूर रखा था कि तुम लोगों को यही काम करना है। मुझे याद है कि साहोदरों के समय, जबकि पूर्ण स्वतंत्रता के एलाउ करने की बात थी, उस समय वे बेरुठ आये थे। मीने पूछा था कि 'बापू, जब हम लोगों को क्या करना है? हम लोगों को भी तो इतमें लग जाना होगा?' हंस दिने। बोले, 'तुम देखरूक हो। तुम्हारे ही सहारे हम स्वतंत्रता घोषित करेंगे? तुम जो करते हो करो।' फिर भी जब 'करो या मरो' का स्वागत था, तो सारे रचनात्मक कार्यक्रमों को स्वाहा करने लगने की बात हुई। उससे काम बनर नहीं हुआ। उसके बाद रचनात्मक कार्यक्रम बहुत बड़े पैमाने पर चला। जब भाषीजी मना करते थे कि बाल्योत्पन्न में भाग मत लो, तो एक मैत्र ने पूछा कि 'बापू ये लोग हैं किन्तु कि?' यो जल्दोने कहा, 'दीज आर द सोलजर्स इन द ब्रीक' (ये छात्रवृत्तों के चीफ हैं!) जब लड़ाई शुरू होगी यो 'ब्रीक' से निकलकर जायेंगे। यो आज जितनी रचनात्मक सहाय्य हैं, और जेबा कि कारण भाई ने कहा कि हम सब एक हैं, जेते उन दिनों में हम सब कांसिस में थे, 'सोलजर्स इन द ब्रीक' के रूप में, वेते आज भी हैं। तो, जिख तरह सन् '४२ में 'करो या मरो' के तारे पर सब लोग 'ब्रीक' से निकल पड़े थे, उणी तरह आज ब्रीक के 'सोलजर्स' के निकल पड़ने की पड़ी आयी है।

जब हमलोग छोटी-छोटी प्रकृतियों में लगे रहे और मूल क्रान्ति 'साइड बिजनेस' के रूप में करेगे, यह नहीं चलेगा। आज की आवश्यकता है कि आज सब गणोखला से लोचें। विनोबा 'करो या मरो' बहने हैं, जयप्रकाश बापू हड़दी गिराने को कहते हैं। हमारी आज संरक्षण जो है, धीरे-धीरे वे पुनः ते मूल्यों की ओर फिसलती जा रही है। यही सामत-

वारी, पूँजीवादी प्रथा, मुठ वी० आई० पी० (बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति) और कुछ वी० एन० डब्ल्यू० (प्राग उत्तर के सेवक)। हम भूल जाते हैं कि हमारी क्रान्ति समृद्धि की नहीं सम्पन्न की है। मानव के सम्पन्न की है। लेकिन हमारी कार्य पद्धति क्या है? मनुष्य के साथ 'डोल' (ध्वंसहार) करेगा वी० एन० डब्ल्यू० और कापन के साथ 'डोल' करेगा वी० आई० पी०। ऐसा नहीं चलेगा। हमारे अन्ततम वी० आई० पी० भी वी० एन० डब्ल्यू० बनकर राब में जा सकते हैं; और छोटे वी० आई० पी० बहने हैं कि हम नहीं जा सकते। एक विदम्बना है हमारे इस सर्वोदय समाज की।

तो मैं आज से निवेदन करना चाहता हूँ, कि जो आज 'क्रान्ति' का काम है, विनोबा ने रास्ता लगाने की बात कही, मैं वह नहीं कहता हूँ, जयमें दोषय वरु के साथियों को लगाकर अन्ततम वरु के साथियों को 'करो या मरो' के सन्तत दम्ब ने लोचणया कहा, उन लोचणया की धारा में बहना होगा। तो आज सब जितने समर्थ साथी हैं, उनते मेरा निवेदन है, कि आज बनने से छोटे साथियों को क्रान्ति नारा में लगाकर निकल पड़ें। वे भी बनने, आप भी बनने और दुनिया भी बननेगी। भाग निकल पड़ें। फिर चिन्ता हुआ देखें। जितने जिते देवमर में ते सकते हैं यह देखें। हर काम होगा। नहीं तो निश्चित रूप से आज जाने को निराशा में डालेंगे और दुनिया को भी निराशा में डाल देंगे। फिर आज जो रुका रहे हैं यह सब, यह भी नहीं चलेगा। मुठन क्रान्ति की निर्णय अगर नहीं हुई तो जाय वा यह सब नहीं चलेगा।

गुडिया-घर का मोह छोड़ें और मैदान में फूट पड़ें

आज की क्रान्ति इन प्रकृतियों में से नहीं प्रकट हो सकती है। हर बीज की

एक भाव होती है। छोटे बच्चों के समाधान के लिए एक गुडिया-घर बना दिया जाना है उसकी मस्ती और विकास के लिए। लेकिन वह बच्चा जब बड़ा हो जाता है, तो उसे उस गुडिया-घर से समाधान नहीं मिल सकता। वह मैदान में, खेत में कूदता है। खेत का खेल खेलता है, गुडिया का खेल छोड़ देता है। हम भावों की प्रेरणा से समाज-क्रान्ति के काम में लगे और सत्याज्यों में छोटे-छोटे गुडिया-घर बना लिये। लेकिन अब वह क्रान्ति गिरु नहीं है। ४०-५० साल पहले जिस क्रान्ति-गिरु के समाधान के लिए, विराग के लिए, हमने जो गुडिया घर सजाये थे, आज की क्रान्ति को उसमें मस्ती और आकर्षण नहीं है, उसके मार्ग उलटा विकास नहीं होने वाला है। मैदान में जाकर क्रान्ति का खेल खेलना होगा, गुडिया-घरों को छोड़कर।

विनो! जो मैं मुख्य बात कहता था वह यह है कि आभासी के मुठ के लिए '४२ में जो परिचित थी, दृष्ट समान-क्रान्ति के लिए आज नहीं स्थिति है— 'करो या मरो' की। आज सब लोचें, और एन मोह को तोड़कर, दृष्ट रणिय काम को निवेदाओं के हाथों में छोड़कर मैदान में कूदें। प्रयोग सब तो गाँवों में वी० आई० पी० को ही जाता होगा, नहीं तो हमने जो बड़ी उर्खोचन की बात, विचार के उर्खोचन की बात, यह काम नहीं हो सकेगा। मुझे भाव है हमारे सब मित्र इस बात पर सोचें, और मैं हाल भर से बहने लगा हूँ कि सम्पन्नता पाँच साल इस काम में देना होगा। विनोबा बहुत बड़ा महात्मा हैं, बहुत बड़ा साक्षात्कारी हैं, तो एक काम बड़ा है, लेकिन आज अगर दृष्ट आरंभ और पाँच साल में सम्पादन प्रकट हो जायगी, सब भी आर दुनिया को बसा लेंगे, ऐसा मैं मानता हूँ। जय बापू!

मोपाल : ३०-१०-७१

पुष्टि का प्रभाव : समस्याओं का दवाव

२० अक्टूबर '७१ को सोमनाथ में छत्र-अभिषेकन से पूर्व पुष्टि-कार्य में लगे कार्यकर्ताओं की एक गोष्ठी श्री शिवालय भाई (सिम्लनगला, मुंटे, बिहार) की अध्यक्षता में हुई। इस गोष्ठी में देश के विभिन्न प्रदेशों से लगभग ८० लोगों ने भाग लिया। गोष्ठी में आठ प्रदेशों के लगभग १० पुष्टि-सोचों में हो रहे पुष्टि-कार्य की जानकारी प्रस्तुत की गयी।

मुम्बई (सुबकचपुर) प्रखण्ड की जानकारी देते हुए श्री वापेश्वरभाऊ ने बताया कि ग्रामदान-पुष्टि में बचपन से होने के कारण पुष्टि-कार्य के साथ शक्ति का कार्य करना पड़ता है। जमीन का विवरण प्राप्त करने के लिए सराफ के कार्यालय में भी दौड़ना पड़ता है। जगह कार्यलय में भी बाण्ड नहीं मिल पाता। लोगों का प्याल विकसित की तरफ है। शिक्षा, पंचायत, कर्म, रिभीक कार्य किया गया है।

उत्तम क्षेत्र की एक जलकारी देते हुए श्री कैलाशभाऊ ने पुष्टि-कार्य की कठिनाई की बर्ताने करते हुए कहा कि यहाँ के लोग बड़े भूमि-मालिक बन्दर-बन्दर विरोधी प्रकृत करते हैं। उनका बर्ताने की बातें भी बर्ताने रहती हैं। बान्सी पुष्टि की पेशगी के कारण भी कार्य-काय बर्ताने कार्य में कठिन है। परम्परा की दृष्टि में लोग जाने नहीं। ग्रामपंचायत बाहरी शक्ति के द्वारा बर्ताने करके भी होती है, लेकिन अपने शक्ति की समझा के लिए शक्ति नहीं होती। ग्रामपंचायत के विचार नहीं आती। भूमि-हीनता नहीं मिल रही है। मजदूर कार्य नहीं हो रहा है। हमारा बान्सीवन स्थानीय ही रहता है, ब्यापक नहीं बन पाता। राजनीतिक दलों के लोग के कारण प्रखण्डभा के बन्दे में कठिनाई पैदा हो रही है।

सुबकचपुर के विचारों का विवरण भी जाने-पहचाने प्रखण्ड बाण्ड ने देता किया।

उन्होंने बताया कि मुम्बई के कार्य में जो कठिनाई है वही कठिनाई सुबकचपुर में भी है। उन्होंने कहा कि मुम्बई लोगों की साजसज्जा के साथ पुष्टि-कार्य में लगना चाहिए। बर्ताने और शिवाको के सभ्यता की कोशिश करके-बान्सीवन, ग्राम-पुष्टि-कार्य, आचार्यकुल के माध्यम से भी जा रही है। सुबकचपुर जिले के बाहरी और कर्वा में भी नगरपालिका का कार्य किया जा रहा है। ६ छोटे-बड़े नगरों में नगरपालिका समितिना बनायी गयी है, और ये समितियाँ अपने क्षेत्र में सक्रिय हैं। श्री सुबकचपुर भाई ने बताया कि सुबकचपुर में कार्य करते हुए यह अनुभव धारा है कि हमने विचार-विधान का प्रियता भी कार्य किया है यह अपमान है, विचार-विधान को ब्यापक करने की कोशिश की जाती चाहिए। ग्रामपंचायत बान्सीवन जन-आधारित ही, इसके लिए लोगों की सक्रिय करने की आवश्यकता है। बान्सीवन को जन-आधारित करने के लिए ग्रामपंचायतों को सक्रिय करने की कोशिश की जा रही है। शिक्षक और तक्षक एक बान्सीवन के प्रति आर्यित हुए हैं। वहाँ का शिक्षा-विभाग भी अनुसूचित हुआ है। एक विद्यालय बन्द बन रहा है कि यह बान्सीवन ब्यापक बँधे ही।

दुबोकी (पुणिया) का विवरण देते करते हुए श्री सीताराम बाण्ड ने कहा कि हम बान्सी शक्ति की देखे बिना बग़रा बँध उठा लेते हैं, और परिणाम होता है कि हम बँध बँध नहीं पाते और उन्नत जाते हैं। जय. हमें अपनी शक्ति के अनुसार ही कार्य-कर्म करना चाहिए। उन्होंने कहा कि कार्य-कर्म-विधान शक्ति आवश्यक है। इसकी योजना बनानी जाती चाहिए।

मवालीपुर और दानीपौर (पुणिया) की रिपोर्ट देते करते हुए श्री रामचन्द्र बाण्ड ने कहा कि यहाँ भूमि-मालिक हमसे बचते रहते हैं, बियके कारण उल्लेख-वर्तित

नहीं हो पायी। आचार्यकुल और शक्ति-मेवा के माध्यम से तक्षकों और शिक्षकों से सम्पर्क करने की कोशिश शुरू हुई है।

शाखा (मुंटे) प्रखण्ड की जानकारी देते हुए श्री शिवालय भाई ने बताया कि शाखा में प्रखण्डभा का गठन २० दिसम्बर '७० को हुआ, जिसका उद्घाटन श्री जयप्रकाशजी ने किया था। इस प्रखण्डभा का उद्घाटन ही गया है और इसी प्रखण्डभा के माध्यम से विकास तथा निर्माण-कार्य करने की योजना है। यह सुनी की बात है कि प्रखण्डभा की बैठक समय से होती है और इसकी बैठक में दो-दो से जाई-सो लोगों की उपस्थिति रहती है। हमारे भूमि-मालिकों का प्रकट विरोध है। जय-विभाग का अनुभव यह नहीं है जिसके कारण बर्ताने जारी है।

गमा जिले का विवरण श्री दिवाकर भाई ने सुनाया। उन्होंने कहा कि बाराकचूरी, वेरवादी और बौआकोल—तीन प्रखण्डों में पुष्टि-कार्य हो रहा है। ग्रामपंचायत के पदाधिकारियों के चुनाव में मतभेद पैदा होता है। लोग का विचार ठीक ठग से नहीं उठा जाता है, जो पदाधिकारियों में मतभेद शुरू हो गया है। महाजन कर्म देने में बामदारी लोगों को मोड़ने का कार्य करता है। ग्रामपंचायत में वेरवादी के सत्रान को अपने हाथ में लिया था।

मदनिया (दरभंगा) प्रखण्ड की रिपोर्ट देते करते हुए श्री पलटन बाण्ड ने कहा कि वान्सी पुष्टि में कठिनाई आती है। इसका कोई विचार बँधना चाहिए। सर्वधिया में नगरपालिका की सक्रिय है।

तजपुर का विवरण श्री एम० माणिकभाऊ ने देता है। उन्होंने बताया कि वहाँ पर वेणामी, मंदिर की जमीन की समस्या है। इस तरह की जमीन को भूमि-मालिकों में बाँटने की कोशिश की गयी। इसके लिए बर्ताने भी करना पड़ा। इस प्रकार की २१२ एकर जमीन १४० भूमि-मालिकों में बाँटी गयी। बौआ-बर्ताने प्रखण्ड-भा : सोमवार, ८ दिसम्बर, '७१

की यकीन यही मंत्री है। तबानुर में योय
ज्याक में पुष्टि-कार्य हो रहा है।

महाराष्ट्र जिले में ५ जनाक में काम
हो रहा है। श्री भारत-धरदरने के नाम
कि धामसभा यानी है, लेकिन योधा-नददा
की भूमि यमी तक बंट रही है। सुवध-
धामदान-दानुन नही बनने के कारण भी
पुष्टि-कार्य में कठिनाई आती है।

तिरुनेलवेली के जिन प्रसंगों में
पुष्टि-कार्य हो रहा है। श्री कालकृष्ण ने
पतासा कि तिरुनेलवेली में भूमिसेना द्वारा
निर्बाई के लिए पुंजा सुराई का कार्य
रिवाज जाय है। कुछ महीने से यह कार्य
बन्द है। ४ धामसभाओं में अन्तर बरखा
चलता है बिहने द्वारा २० बहनों को
पूर्ण धिया पिला है। तावुला मंडल को
५२ बोध पाल गीनों से मिला है। एक
महीने पर धामसभा की बैठक होती है।

तमिलनाडु के पुष्टि-कार्य की बरि-
नारुको का बिज करते हुए श्री जगन्नाथ
ने कहा कि प्रामदान के पुत्रने पुत्र के
कारण कारुणी पुष्टि नहीं होनी। तमिल-
नाडु की भूमि भूमिदारी, यद्दे जमींदारों
के पास है, सरकारी जमीन को जमींदारों
के पास है। भूमिमानिको वा बन्धुविस्टो
से सम्पत्तिक विरोध है। योधा-नददा
में भूमि नहीं-मिला रही है। कम्प्लिट
भूमिहीनों को धामसभा में शामिल होने
से मना करते हैं। ६ ठाकुरों में दिसा
यद्दे वेगोन पर है। धामसभा की बैठकों
में दसही चर्चा होती है। भूमि समस्या
के हद के लिए सर्वदलीय लोगों की
मिस्तानर प्रयत्न किया गया। सत्याग्रह
की जिंभे पड़े। बहनों ने सत्याग्रह में
काम लिया। ६ महीने और एक वर्ष
का कार्यकाल-प्रतिपाद्य होता है। एक
ज्याक में नवम्बर से कार्य शुरू होनेवाला
है और जनवरी तक कार्य पूरा किया
जावेगा। इस प्रयत्न के हिता में भी
कमी आयीगी।

उत्तर प्रांती (उत्तर प्रदेश) के
पुरीना प्रसंग में पुष्टि-कार्य हो रहा है।
बहों की बालकारी भी मुकेश्वरदा मनु ने
की। यहाँ पर भूमिहीनता का प्रश्न
गड़ी है। यहाँ ही समस्या है कि योधा-
नददा की भूमि बिल्लो दे ६ परन्तु
मन्कर गरीबी है। अधिशा भी है।
धामसभाओं से संवत् सगके की आवश्यक-
कता है।

कर्णाल्याद के काम की जानकारी
श्री गोरखसिंह भारतीय में दी। उन्होंने
बहा कि बापेंवां के समार में पुष्टि-कार्य
नहीं हो पाता। पुष्टि-कार्य शुरू करने
की क्या जिंभा ही, यही हम तप नहीं कर
पा रहे हैं।

बीकानेर की रिपोर्टें पेश करते हुए
श्री बड़ीप्रसाद श्वाभी ने बताया कि योग्य
कार्यकर्तियों का अभाव है। गांव और
गांधी दूर-दूर होनी है, इसलिए भी गांव
के लोगों से संपर्क करने में कठिनाई
होती है। कायिक कठिनाई भी है और
राजकीयिक नेतृत्वों का विरोध है।

अयोध (मुजफ्फर) का विरंगण
श्री श्री डारकावास ने प्रस्तुत किया
उन्होंने कहा कि सत्याग्रह में कमी नहीं
आती चाहिए। जिले से नाम को कार्य
का क्षेत्र न माना जाय, फले ही दो-बीन
प्रसंगों में काम हो।

बड़ौदा की रिपोर्टें श्री हरिकेशदास
भाई ने सुनायी। उन्होंने कहा कि १२७
गांव महाजन के कार्य से गौध मुक्त होने।
धामसभासभ्य योधादारी ने इसकी जिम्मे-
दारी ली है। धामसभा, गांव के लोगों
और युवकों के लिए हो रहे हैं।
उन्होंने कहा कि 'लोन-मोवन के प्रश्नों
के लिए १०० से १,००० रुप की मदद
में लोगों की परभाव का ज्योत्स्न एक
वर्ष में दो-बार किया जाय है। पुष्टि-
कार्य में हम अनुभव आया है कि अगर
धामसभासभ्य परांपर सत्य हो की धाम-
दान-मार्गिक की प्रक्रिया में ही विरंगण का

कार्य किया जा सकता है। इसकी
आवश्यकता गांव के लोगों की आवाज देने
वने, यह एक प्रश्न है जिस पर सोचना
चाहिए।

मध्यप्रदेश के इन्दौर और टीकमगा
जिले में काम हो रहा है। श्री राज
कुमार आजाद ने बताया कि इन्दौर के
साथे वल्लोच में काम प्रारंभ किया है।
धामसभा के पदाधिकारियों के प्रतिपक्ष-
विन्दित होने हैं। युवकों के विचार और
पदाधारों की हृद है। श्री चतुर्भुज पाठक
ने टीकमगा की रिपोर्टें में कहा कि एक
में धामदान के नाम का विरोध हुआ था,
परन्तु विरोध के कारण हमारी गाँव
बढ़ी है। अब अनुकूल स्थिति बनी है।

उड़ीसा की जानकारी श्री विष्णुधर
पटनायक ने दी। ५ जिले में कार्य हो
रहा है। महाजन का विरोध है। ४४
धामदान समितियाँ काम कर रही हैं।
उनके पास कानूनी पूर्वी है।

महाराष्ट्र के ६ जिले में कार्य शुरू
है। यहाँ राजकीयिक दलगत अन्तर से
अनुराग दिखते हैं लेकिन अन्तर से प्रतिकूल
है। धामसभा की बैठकों में लोग मग
जाते हैं।

—इन्द्रकुमार

इस अंक में-	
सर्व सेना धय वा प्रस्ताव	१६
टीकत अंक नाम —समाचारिका	१७
बादा धर्मविचारों का बाह्य	१९
अध्यय वा उद्घोषण	७१
ममी वा प्रविष्टय	७५
धामसभासभ्य की टीका—विरोध	७६
नार बय न पड़े —विरोध	८०
नया मोक्ष विचार—श्री रामकृष्ण	८१
करो वा मरो—टीकित महामदार	८५
पुष्टि वा प्रयाय समसभ्यो का दली	८७
	—इन्द्रकुमार

पार्षिक मुद्रक। १० पं (संविद अन्तः १२ पं, एक प्रति २५ सेते इस अंक का ४० पं), १३दिन में २२ पं, या ३० दिनिन का
४ आतर। इस अंक का मूल्य ३० सेते। श्रीकृष्णदास मनु द्वारा हीन देवा संघ के लिये प्रकाशित एक अनुरोध प्रस, धामसभ्यों में प्रति

आपके पुत्र

गर्भपात काचून : पुरुष प्रधान समाज की एक और ज्यादाती

गर्भपात सम्बन्धी वास्तु को लेकर कुछ पत्र-पत्रिकाओं में चर्चाई चली है। जब २० दिसम्बर के 'भ्रूतान-वर्षा' में समाजदलीय और २५ अक्टूबर के अंक में श्री सिद्धरान दहडा का लेख, उस विषय पर पढ़कर कुछ बातें मन में उभर आयीं।

जनता का इतराण करनेवाली सरकार अपने स्वामी की मूर्ति के लिए जिस तरह लोगों को शापक विनाकर उसका अक्षयण कर रही है। जैसे ही अणु समाज-अन्वेषण के मान पर वह गर्भपात की मान्यता देकर समाज में बर्हें ताह की अनिश्चिता, अष्टाचार की भी परीक्षण से प्रोत्साहन देती।

गर्भपात मानो एक भीषणघाती की जातघुसकर हुवा करना। भवे ही एक की आग्रशता के लिए दूसरे के प्राण विवे गये हो, लेकिन उसी वह शिक्षा अहिंसा में परिवर्तित नहीं हो जायेगी, भले ही उसकी सम्म मान लिया जाय। क्या अपने निजी स्वार्थवश, अपने सुख-लन व भोगविलास के कारण एक जिन्दा रहने के अधिकारी वालक की हुवा करने वाली की भी हन लता कर सेंगे ? करने वाली को क्या हण हुवाये नहीं बहने ? नालन उनको हुवा करने की छूट देता है। लेकिन अगर ऐसा सम्भव होना कि वे बीषघाती भूषण अपने जिन्दा होने के अधिकार की मांग कर सकते, तो नालन क्या करेता और समाज क्या बहता ?

एक लम्बे अधिक विस्तरीय बात हो यह है कि हमारे समाज की नैतिकता इस हद तक गिर गयी है कि आगामी से गरावार ऐसे समाज-विरोधी कानून

बना लेवी है और कोई बँक तक नहीं करता।

इस कानून की भीषणा होने पर कई एनो-हिंसेपी लोगों ने लिखे की साक्ष्यान होने और अपने भविष्य के बारे में गम्भीरता के साथ सोचने की सलाह दी है, लेकिन मुझे यह सुवात परेशान कर रहा है कि हमारे मर्मत में ऐसी विचलनी बहने हैं, जो अपने सम्मानपूर्व जीवन के बारे में, अपनी स्वतंत्रता के बारे में समाज में अपना दली जैना बगाने के सम्बन्ध में छोचती हैं ?

परम्परा से यह चसता था रहा है कि पुरुष समाज में जो गुण-दुर्गुण एनो में आरोपित किये, जिस दर्ज को उनकी मान्य, लिखने ने भी अपने को बैठा ही मान लिया। एनो की भोग का साधन मान्यता ही वह भोग का साधन चुनचार गनी रही, जमाक पुरुष ने अपने से हीन मान्यता, अवला और अनुगामिनी बह्रा, एनो ने जो अपने बारे में बैठा हो तोचा-समसा। उसको बाजार भी, अनाार चलाने की परतु व विज्ञापनी के लिए आकर्षक साधन के रूप में बाजारों में, दिवारो पर, बीराहो पर तथा सजा कर दिया गया, यह इस भद भी पूरा रही, एतना ही नहीं विज्ञापनी के पोस्टरी के अनुपार फँसान नानाकार उखने पैठा ही रूप-रस, वेसभूवा भी जनता विवा। धारो के बाजार में तो यह एसे खड़ी है कि उसको पसन्द करनेवाली को दुपानार भी दिया जाता है, एतन्वै धामतोर पर तहरो मा-बात के लिए धाषिणा बन गनी है। या तो उनके लिए सहरा खरोरना पड़ता है, या वही सड़के के हाथ बेची जाती है।

इतना मज कुछ सहरा करनेवाली एनो गर्भपात की मान्य करनेवाला वास्तु बन जाने से गर्भपात नहीं बरानी रहेगी या ऐसी परिस्थितियाँ पैदा हो नहीं होंगे देंगी, एनो बाधा जिस आधार पर की जा सकती है ? वह भोग का साधन बन कर धर्मनारा करानी रहेगी, एतमें मुझे

सन्देह नहीं है। एनो वह बात में एहनिग लिख रही हैं कि एंगान न लिखत है लिखको की बमनोरी पर एतना कलता नहीं बाहनी। नर्वाकि एनोको को हण करते की सत्रसे पहली मने यह हुवा है कि नमनोरी लिखापी के और महणुत एनो लने, लिखापी तो वह उरके काय बरिणी व। और मैं समझती हूँ कि नैकी की सबसे बड़ी बमनोरी वही है कि उगी अपनी गुणमनी गुनमनी तहो सखी, कली बमनोरी लिखापी तहो देवी और धमन ने उसको बैठा बाह्रा पैठा इतमानलिग, लेकिन उसके लिए वह हव नमिणकर है, सोपी है एसा उसने सोचा नहीं।

गर्भपात की मान्यता देनाका बाण फिर उसके लिए एा बहुत बड़ी मुनोरीके रूप में उसके आत्मरक्ष के सबत प्रतुन हुवा है। क्या उसके यह बाधा खँकि वह अयोगी, कली उज्जयन भविष्य के निं सोचेंगे, विरोध करेंगे और कली एं वसता व समाज के लिए किरणी व बहनी रहेगी ?

बनी एक नैकी को बर्हें बहो, व तो एक पधीम रही, लेकिन मर लोगों ने नपुरी बन बहने की जो गवरी की है उगवी ने भी बनी दोहराई ? कानो-बने लोगों ने लिखो को संपन होने की मा बही, वह तो ठीक ही है, लेकिन उगी पुरवों के बारे में एक बाण भी बहनी की अकरत महणुत नहीं हुई क्या ? हा इशविणु कि पुण्य वर व्यविचार, दुषकाय, भोगलिखा समाज-माण है ? पुण्य के शीन धम होने का कोई एतान ही नहीं उठता ? उनके लिए गर्भपात बराने की कोई परिस्थिति पैदा नहीं होती ? हा सम्बन्ध में उगवी कुछ भी सोचने में अकरत नहीं है ? उगवी अपने लिखो सहर के कोई परिवर्तन माती में अकरत नहीं है ? नैतिकता, पतिता साधनीला और एतानार अरिं बरिणी धानन केवन लिखो के हाथ होंगे ? अकरत एतम्ब जोवन की सनेगी ? क यह जाता है कि निन्दन बह्रा निर्दली है, उनही आगे बने की अकरत है।

इन चार का क्या ?

धर्मिक, हितचिन्त, आर्थिक। स्त्री . स्वतंत्र भारत में इन चार की स्थिति अच्छी हो रही है या बिगड़ रही है, यह प्रश्न है। इन विचारों इनकी सच्चा २५ करोड़ में २५ करोड़ से कम नहीं है, दली ६२ प्रतिशत से ऊपर। यह हमारे देश का 'मजबूत' बड़ा जातिवादा समुदाय है। लेकिन यही समुदाय है जिसमें समाज को धारण करने की क्षमता है, और यही समुदाय है जो अग्रत विभक्त उसे तो समाज को तटस्थ-महसूस भी कर सकता है। धर्मिक और स्त्री, ये ही दो पैर हैं जिनपर खम्बना खड़ी है।

धर्मियों की बहुत बड़ी सच्चा खोसिहर क्षेत्र में है। उनकी स्थिति स्थिति विनाशनी वा रही है। १९४० में एक खोसिहर मजदूर की साक्षात् आय ४०० रुपये थी जो १९५६ में घटकर ४२० रुपये हो गयी। इसी तरह साल में काम के दिन १९५० में २०० थे, जो १९५६ में १७० रह गये। इसके ऊपर वरें १९५० में १०५ १० था, जो १९५६ में बढ़कर १३० शायदा हो गया। १९५० से १९५६ के बीच का यह असाध्य दण के पैमाने पर, मजदूर हितचिन्त के, भाव भी निराश्रित जा रही है।

हितचिन्त ने जवाहरन तो बनाया है लेकिन जगते खोसिहर पुँजीदार भी तो वरें पैमाने पर मजदूरिया किया है। इस उदाहरण से स्त्री को सम्भावनाएँ बहुत बढ़ गयी हैं, किन्तु उदाहरण की एक पद्धति में धर्मिक का बड़ा स्थान है, उसे समाज के साधनों के कारण बड़े हुए उदाहरण का बड़ा भाग मिलेगा, उसकी समाज में हितचिन्त निष्पत्ती बढेगी, आदि जगल जहाँ-कहाँ बने रह गये। निराश इसके कि हितचिन्त के कुछ साध संकों में कुछ मजदूरों को अग्रत काम मिलने लगा, और स्त्री के विविध अवसरों पर अग्रत मजदूरी भी मिलने लगी, खोसिहर क्षेत्र में न तो सामाजिक न्याय बड़ा है और न केवलकारी पड़ी है। उसके विज्ञान और पुँजी के पैर के कारण भारतीय स्त्री में खोसिहर मजदूर जिन

तरह खोसिहर हो रहा है, वह समाजवाद तो कौन कहे प्रगतिशील पुँजीदार भी नहीं है।

ऐसा लगता है जैसे पूरे देश में एक सघटित योजना-सी है कि स्त्री में मजदूर के पैर न जमाने पायें, और उसे भूमि न मिलने पाये, वह बच्चों से छुटकारा न पाये, और समाज में उसकी सम्मान-पूर्ण स्थिति न बनने पाये। उसकी मुन्नामी और वैपरी बनी रहे। वह 'गुल' का शूद्र रहे, इसके अधिक कुछ न हो। ऐसी स्थिति हितचिन्त न आये कि पैर के लिए मेहनत बेचने से उसे मुक्ति मिले। २० वर्षों में कानून उसे उस भूमि पर भी बन्ना नहीं रिला पाया है जिस पर उसकी होपकी खड़ी है।

बड़ा जाता है कि अब मजदूरों-हितचिन्तों पर मार पहुँचे के मुन्नामिने बन्ना पड़ती है। हो सकता है कि ऐसा हो। लेकिन १९६६, '६७, '६८ के तीन वर्षों में देशभर में ११०० हितचिन्तों की हत्या की खबर है। मध्यप्रदेश के ४०० गाँवों का सर्वेक्षण हुआ तो पता चला कि १०२ गाँवों में हितचिन्तों की धार्मिक कुलों से पत्नी मृतो भरने दिया जाता, २०४ में उनके लिए मन्त्रियों के दरवाने बन्द हैं, मिक ०२ गाँवों में नाई उनकी हत्यामन बनाने हैं, और २३ में ही शाही जवरा कपड़ा धोने हैं। यहाँ तक कि २०६ गाँव हूँ ऐसे हैं जहाँ पंचायत में हितचिन्त पको को बूझते जातियों के पको के साथ बैठने दिया जाता है। ये शौकते क्या बताते हैं? सच्चाई यह है कि हितचिन्तों और आर्थिकवादीयों के हितों को लेकर स्थिति इनकी धारण है कि धारणी १९६०-६९ की रूप में अनुभूति जातियों और पन्-जातिया के कमिन्तर ने वहाँ तक बड़ दिया है कि जब तक वे प्रत्यक्ष अहिंसक नारबाई का रास्ता नहीं अरनायेंगे, उनके अर्थिकारों की रक्षा कानून द्वारा नहीं होगी। होपन में सबको साथ साथ पीने दसहर यह नहीं बड़ा का सफा कि छुआछूत मिट गयी। स्वतंत्रता के बाद इन वर्षों के विन्दू आगवा पहुँचे से अधिक सघटित हुआ है, सामाजिक और आर्थिक दुराव के साथ-साथ जबरदस्त राजनैतिक सीवाने खड़ी हुई है, अब गाँव-गाँव में खण, बँचक, हितचिन्त, और आर्थिकवादी स्वारी मोचकवादी की स्थिति में रह रहे हैं। जगह-जगह शीत पूटपुल का

पीने में बाँटें मान लो, लेकिन विचारों के विभक्त होने काय से ही पुण आगे बढ़े हुए है। ऐसा मान लेना बड़े तक सही है? जिन मामलों को लेकर यहाँ खर्च पड़ती गयी है उनमें पुण स्त्री से ऊपर भी आगे गयी है कि न के सिद्धि से काफी पीछे है। इसलिए मुझे लगता है कि समाज को धारण और नीतिपाल बनाने के लिए स्त्री को मजबूत और स्थिति बनाने की आवश्यकता है।

स्त्री मजबूत से लेकर हमारे तक स्त्री-पत्नी रहती है, सामाजिक स्थिति

निराश और मान्यनाएँ उनका और अग्रतार बनाने हैं, जबकि पुँजी को ऐसी प्रतिपुनार का सामना नहीं बनना पडता। स्त्री-विचारों की आगे बढने के लिए उनके साथ की जबरन पड़ती है। अभी वह खरी पैरों पर खड़ा रहने की स्थिति तक नहीं पहुँच सकी है।

गाँवों में यह मान बहुत अग्रतों मजबूत मजबूत थी थी, और स्थिति-जगहों में ऐसे बड़े कार्यक्रम बनाये गिनेके माध्यम से स्त्री-स्थिति ऊपर कर सामने आयी, स्थिति को आगे आरम्भितारण और आरम्भ

बन की अनुभूति हुई। आज सर्वोच्च आन्दोलन के पास बड़ा ऐसा कोई कार्यक्रम है जिसके माध्यम से वह दण उपस्थित करे जो आगे बढ़ने में सहायता कर सके? अग्रत ऐसा कोई कार्यक्रम वह बना लगी है उसे में समर्थन कि आन्दोलन दण दिया में कोई स्थिति प्रयत्न भी कर रहा है। लेकिन अगर अभी तक कोई ऐसा स्थिति को आगे लानेवाला कार्यक्रम नहीं बनाया गया हो, तो क्या अब भी आन्दोलन यह महसूस करता है कि ऐसा प्रयत्न होना चाहिए?

भातावरण है। अन्याय पहने भी था लेकिन गाँव में उनके लिए मान्य स्थान था। अब वह बात नहीं है।

मजदूर, हरियन और आदिवासी की दो यह कथा है, लेकिन स्त्री की? इस प्रश्न पर लोच प्रधानमंत्री को नमूने के तौर पर पेश कर देते हैं। अपवादों के मौखिक से गौरवान्वित होते रहने का हमें सम्पास-या हो गया है। जहर कानून में स्त्री को बोट का अधिकार है, राष्ट्रीय जीवन का हर दरवाजा उसके लिए खुला हुआ है, लेकिन कानून और संविधान का झुकीया पहलकर हम अक्षयवीर की मन तक छिपाते रहते हैं? घर-घर में स्त्री रोज का जो जीवन जी रही है वह दुःख की कहानी के विषय और कुछ नहीं है। उसका शरीर अपना नहीं। उसकी जीविका अपनी नहीं, उसका प्रतिष्ठा अपना नहीं। ऐसा गूल प्राणी भारतीय नारी है।

मजदूर, हरियन, आदिवासी और स्त्री : ये चारों उदाहरण हैं इस बात के, कि बिना तरह एक समाज-रचना और अपने विकसित जीवन के संस्कार ऐसे जड़नीले होते हैं कि करोड़ों मानवों को जीते-जी मृत बना देते हैं।

देवताशा बढ़ती हुई जनसंख्या, गोटिक भोजन का निर्वात क्षमा, और व्यापक बेरोजगारी, ये तीन समस्याएँ ऐसी हैं जिन्होंने भारत-वैश्व विकासशील देश के बढ़ते पैरों की बंदी की तरह जकड़

रखा है। लेकिन इन चीतों परस्परमाओं की संघर्षे नड़ी मार मजदूर-हरियन, आदिवासी और स्त्री को ही भोगनी पड़ रही है, क्योंकि ये समाज की सबसे निचली छड़ी पर हैं; क्योंकि समाज का भार वहन करते हुए भी वे हर सुविधा, साधन और सुखसुख से वंचित हैं। ऐसे बड़े भाग को वंचित रखते हुए विकास प्रचण्ड विचार नहीं हो और क्या होगा?

समाज की परम्परा में जो जलें मूँदी ही थी, नये नेतृत्व ने भी इन प्रश्नों की ओर से बाल-कान दोनों बंद कर लिये हैं। अगर ऐसा न होता तो कम-से-कम उन राज्यों में जो कुछ नयी बात दिखायी देती जहाँ नेतृत्व 'सवर्ध' नहीं है। एबे हुए और दुर्बल सपुदारों में भी जो गया नेतृत्व चपरा है वह हल-हूँ पैदा ही है जैसा दूसरा नेतृत्व है। 'धोटा' जब 'बड़ा' होता है तो 'छोटे' को 'छोटा' समझकर ही अपना वक्षण कायम रखता है। एक और शिक्षा ने मजदूर के बेटे को 'बाबू' बनाया, दूसरी और राजनीति ने उसे 'बड़ा' बनने का अवसर दिया। निरतो ने न भय की प्रतिष्ठा बढायी, न धर्मिक की हैसियत। धर्मिक, हरियन, आदिवासी और स्त्री की मानवता का विरसकार होता ही जा रहा है। इन चार के विरसकार के कारण भारत की पूरी संस्कृति का ज़ूठ हुआ, इनके विरसकार से अब सम्पूर्ण भारतीय जीवन खतरे में है। ●

तरुण-शांतिसेना-शिविर-सम्मेलन सम्पन्न

अप्रत्याय उन्वतर माध्यमिक विद्यालय बेलगंज में गया जिले के १३ माध्यमिक विद्यालयों, १ महाविद्यालयों के ५९ तरुण-शांतिसेनिकों का निदिबन्धीय प्रविषाथ शिविर २ अक्टूबर को पाषो जपन्वी के बंदसर पर बी० एन० कालेज पटना के प्राध्यापक डा० महेश्वरनाथपण कर्ण के उद्घाटन भाषण से प्रारम्भ हुआ। शिविर का संचालन अखिल भारतीय शान्ति सेना मण्डल के श्री अमरनाथमैत्री ने किया और अध्यक्षता श्री नवलकिशोर सिंह, मंत्री, बिहार तरुण-शांतिसेना समिति ने की।

शिविर में विशेषरूप से आज के अत्यान्त और विस्मयपूर्ण घातावरण में शान्ति के तत्वों के सघट्टा प्रयास की टेकनीक, समान-परिवर्तन और शिक्षा में क्रान्ति की शान्तिपूर्ण पद्धति के विकास, बंगला देश के स्वतंत्र्य संग्राम की प्रेरणाएँ आदि विषयों पर शिविराध्यियों का मार्ग-दर्शन भागलपुर विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डा० रामजी सिंह, बिहार मूदानय

विमटी के अध्यक्ष श्री बडी नारायण सिंह, राजेश्वर स्मारक ग्रामनिधि के मंत्री श्री प्रभु नाथ तिवारी आदि नेवाओं ने किया।

जिले से माध्यमिक विद्यालय और महाविद्यालयों में तरुण-शांतिसेनिकों की सर्वो, शान्ति केन्द्र की स्थापना, प्रविषाथ और उपायबेबा की पाषो योजना पर विचार किया गया और आपानी कार्यक्रम निर्धारित किये गये। कार्यक्रम के कार्या-मन्वयन के लिए १५ सदस्यीय गया जिला तरुण-शांतिसेना समिति का गठन भी इस अवसरपर किया गया, जिसके संयोजक श्री केशव मिश्र बनाये गये।

शिविर में बौद्धिक वर्ग के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के सैन, सामूहिक भोजन, सन्तुष्ट गान, योगासन, सामूहिक प्रार्थना और शान्ति-कूल ने विशेष रूप से लोगों का ध्यान आकृष्ट किया।

दिनांक ५ अक्टूबर की ३ बजे अन्तराह्न में गया जिला तरुण-शांतिसेना का दीवाना समारोह डा० रामजी सिंह की

अध्यक्षता में हुआ, जिसका उद्घाटन 'विशा में शान्ति योजना' के अखिल भारतीय सपटक श्री सतीशकुमार भारतीय ने किया।

सम्मेलन के विवेक अतिथि राष्ट्र बलि श्री राजशारी सिंह दिनकर ने देश की आर्थिक विविध अर्थ समसामों के सहायान के लिए शान्तिसेना के प्रयत्नों की अनिवाईता पर बल देने हुए कहा कि 'सुख की आरागता के अनुभव समाज को बदलने का काम नहीं हुआ, तो शय है कि विमुष्य और अशांति पैदा करते-शांति के नेतृत्व में संघटित हिंसा देश का अर्थव्यवस्था नहीं ओसल न कर दें।' राष्ट्रपति ने बखिता पाठ से अपना उपायन मन्वय किया। वैचारिक उन्वतर माध्यमिक विद्यालय के प्राध्यापकी श्री चन्द्रन सिंह ने प्रारम्भ में शुभेन्द्र के शान्तिपत्रों का शान्ति स्वगत किया और अन्त में गया जिला शान्ति-स्वगत समिति के मंत्री श्री केशव मिश्र ने प्रणयार सारन किया। शिविर और सम्मेलन के एक-एक सपण के प्रोत्साहन और जवाबदाता प्रत्येक शरण-अन्य पाठशालों ने उत्तरदायुर्वक प्रेम के पाप किया था।

वर्हितक क्रान्ति का संदर्भ : हिंसा का 'भय' और वर्ग-संघर्ष का 'होना'

—दादा धर्माधिकारी द्वारा मोयाल-अधिवेशन में एक विचारप्रेरक विरलेपण—

आज कुछ सोचने का बेरा विचार तो नहीं था, लेकिन जैसा कि मैंने विवेचन किया था, जब यह देखा कि वर्षों कुछ बिखर रही है, तो मैंने सोचा कि कुछ सहायता में आग लोचो की बर्तें। उनके बाद बर्देमिन्न मुझसे मिलने आये और लगभग उन्होंने मुझसे प्रश्न पूरे। परिणाम यह हुआ कि सरेरे से रात तक मुझे एक ही चीज दोहरानी पड़ती थी। और मैं घब भी जाता था, पूरी बात निजी को सुना नहीं सकता था। मैंने साक्षात्कारों से विवेचन किया कि अच्छा यह हो कि ये जो प्रश्न मुझसे पूछे गये हैं, उनके विषय में मुझे जो कहना है मैं सबके लिए बहूँ हूँ, तो छुटकारा मिल सके।

मुझे इस बात में बड़ी धन्यता का अनुभव होता है कि आलोचकों ने उस आग (८ नवम्बर '७१ के : मुदान-यज्ञ के संकट का पृष्ठ ६९ देखें) की तरफ ध्यान दिया। लेकिन कुछ आवश्यक भी हुआ। लोगों ने मुझसे कहा कि बीच छान में ऐसी बात हमने कभी सुनी नहीं। और मैं तो मुझ से यही बात करता आया। जो बात उस दिन बड़ी, वह बात आगे 'सर्वोदय-दर्शन' में भी मिलेगी। मैंने कोई नयी बात नहीं कही। नयी बात मेरे पास है भी नहीं। मैं कोई बर्तें और उपमाएँ आगे ले हूँ नहीं। जो बहना है वही बहना ही। उनके बाद कुछ लोगों के मन में यह संदेह हुआ कि जो महात्मावत इस आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं उनकी बातों में और मेरी बातों में बहुत अन्तर है, कुछ बड़ा अन्तर है, विशेष तो नहीं बहना, लेकिन अन्तर है। तो इसमें भी मुझे कोई आशय नहीं मानूँ हूँ कि उन महात्मावतों से कुछ भिन्न बातें हैं, विशेषीयतः बहनी हो तो विशेषीय भी हूँ। 'विशेष' के लिए, बहुमत के

लिए, विशेष के लिए आयाकी इस जमान में पूरा पूरा अवकाश है। तो वह भी मैं बह तो करना था, लेकिन मैंने सपसने की कोशिश की। क्योंकि एक भेदे मन में सन्तोक भी था। मैं कोई बात प्रयत्न करता नहीं हूँ, कोई अनुभव भी नहीं है काम था। और बैठे छोटे बातों का जमाना खर्च करता हूँ। तो यहाँ ऐसे अनुभव जो यह अधिप्राण है कि वह प्रत्यक्ष आन्दोलन के विषय में कुछ बहें? लेकिन आशासक मुझे सभापतिजी ने दिया। उन्होंने कहा कि हमारी तुमसे कोई अपेक्षा तो है ही नहीं, लेकिन तुम हमारे साथ बैठकर अगर सोचते हो और कोई बात तुम्हारे दिमाग में आती है तो हमारी सहायता ही होती है।

राजनीति की मुख्य धारा ?

इस आन्दोलन के मुख्य वर्णधार तो बाबर हैं, पूज्य विनोबा हैं। वही रहेंगे, वही रह सके हैं। क्योंकि आन्दोलन के संचालन में केवल बुद्धि की आवश्यकता नहीं होती है, जिसे अर्थों में परिष्कार (विभूति मूल) कहते हैं, इस विभूति-मूल की भी आवश्यकता होती है। स्वराज्य की स्थापना के बाद अन्तर्गत शरणाग्रहण एक दिन में, उनसे गांधी ने अपनी छात्री उम्र में भी नहीं किये। लेकिन उनका अन्तर कुछ नहीं हुआ। यह प्रश्न सोचिये तो पूछा था राजनीति से। और सोचिये, राजनीति, व्यवस्था का बाबू, दादा इत्यादी, इन सबको मैं विभूतिपूर्ण मानता हूँ। लेकिन सोचिये, राजनीति बगैर विभूतिपूर्ण होने हुए भी सफल हो सके। जयप्रकाश ने बहुत आन्तरिक से, इन्तरे में से विचारकर, गणतंत्र के प्रकार से बात की। लोग कहते हैं कि राजनीति उन्होंने छोड़ दी है। मैं कहता हूँ कि राजनीति नहीं छोड़ दी है, राजनीति की मुख्य धारा मैं से आ गये हैं।

मुख्य धारा से हथ भग्न है, हम पर एक आशय है तो ही होता है। मुख्य धारा

भीन-सी है? क्या मुख्य धारा सत्ता की राजनीति है, क्या मुख्य धारा चुनाव की राजनीति है, क्या मुख्य धारा मजदूरी राजनीति है? या मुख्य धारा लोक-शासन की है, जो गांधी में बहनी है? मुख्य धारा जहाँ 'सावरेटी' है, जहाँ सर्वोक्ति सत्ता का अधिष्ठाता है वह गांधी, मुख्य धारा वहाँ पर है। उस मुख्य धारा को जय-प्रकाश बाबू ने खूब धपना शोध माना है। उसमें अवगाहन करेंगे, उसमें दुबकी लगादिये, उसमें लैटिंग, और जहाँ तक हो सके दूबने से बर्चेंगे। भीन-धारा हैं इन आन्दोलन में, जो अतिरिक्त क्रान्तिवादी है। हमारी कुछ भावनाएँ, कुछ विचार, उद्यम के हैं। डीरेण्ड भाई लिये जर्मन से प्रेरणा पाते हैं। ये इस मिट्टी के बने हुए हैं। हमारी मिट्टी में कुछ मिश्रण है।

जब मुझसे कहा गया, तुम इतने महा-मुभावा, धर्यास्पद महादुभावा के साथ बैठो, और अपनी बात उनसे बहो, तो मैं इसके लिए हमेशा ही तैयार रहता हूँ। मेरे स्वभाव में आग्रह नहीं है। और आग्रह ही ही निर्माण ? है ही क्या जिसके लिए आग्रह लिये ? कुछ नाम ही नहीं करता हूँ तो आग्रह किसलिए रखूँ ? एतन्निज जब बग साहब ने मुझे कहा कि ऐसी एक बर्चा बनो न हो, तो मैंने समझा कि मैं बहुत गौरवान्वित हुआ हूँ। इन महादुभावों के साथ मैं बैठे और बहुत धन्यता के साथ मैं विवेचन करता आहूँ। मुझे, जो कुछ मैंने कहा था, उसमें एक अन्तर का भी परिवर्तन करने की आवश्यकता नहीं मानूँ होती। जो कुछ मैंने कहा था उसे साहब-मोस्टान करके विवरित किया गया है, और उसमें मेरा विचार है और निरुत्सवानी का चिन्ता है मुझे मायूस नहीं, मैंने पढ़ा नहीं है, लेकिन जो कुछ उन लोगों ने कहा, उस पर से कहा। जयप्रकाश बाबू ने तो सारा मैं ही कहा था कि उसका एक-एक वाक्य आपकी विद्वान्ता और मननीय मानना चाहिए।

*प्रकाशक डॉ. मेधा साहू प्रकाशक, राजगढ़, बाराणसी-१

बहुत महान है वे ! बड़ी वा हृदय भी बड़ा होता है। वैद्यनाथ का, पीरुषा और जगन्नाथस्वामी, बग साहब, कृष्णराज, सिद्धराज भाई, रभी, मटारपी, अतिरपी, मैं इन सबके साथ बैठ और मैंने कोशिश की कि मेरी स्लेट शुद्ध हो जाय। और आज मैं सतोप के साथ भागते यह कह सकता हूँ, कि उन्होंने मुझे 'सिद्धिचिन्त' दे दिया कि जो बहते हो, वह सते हो, और बहना चाहिए। कुछ भिन्नता है, विरोध नहीं है। और मेरे कहने से तो आज कुछ करनेवाले हैं नहीं, करना तो उम्मीद की है। लेकिन उन्होंने यह भी कहा कि हम जिस तरीके से काम करते हैं, वह जो हो ही सकता है, हो ही रहा है, लेकिन तुम जो कह रहे हो, उजवा भी प्रयोग कोई करना चाहे तो कर सकता है, करना चाहिए।

सर्वसम्मति : सद्ध सिद्धान्त नहीं

बच हमारा लोचनीयिक के विषय में भी कुछ परिसंवाद हुआ। उस वक़्त एक बात में जो आसते बहना चाहता था वह बहना भूल गया। वह है कि लोचनीयिक में एक और चीज भी जाती है—फ़ालू के लिए 'संरक्षण' पंदा करना। लोचनीयिक का अधिष्ठान क्या हो? लोचराज्य का, लोचसत्ता का अधिष्ठान, 'संरक्षण', क्या हो? चीज हो, दण्ड-शक्ति हो या लोक-सम्मति हो, 'कन्सेन्ट' हो? दण्ड-शक्ति से लोक-सम्मति की तरह अभिमान का नाम लोचराज्य है। राज्यसत्ता का अधिष्ठान दण्ड-शक्ति नहीं होगी, लोगों की सम्मति होगी, लोक-सम्मति। इस लोक-सम्मति के बारे में बच एक बात हमसे बड़ी गयी, जो धारुदा ने बड़ी, और उनके जैसे अनुभवों, ज्ञान-विज्ञान से सम्पन्न अनुभवों व्यक्तित्व ने कही, 'आज की व्यवस्था में इतना ही के बाबर हो जाओ है और उम्मान शून्य के बाबर हो जाना है।' इसलिए आज यह है कि यह जो लोक-सम्मति होगी, यह सर्व-सम्मति होगी। लोक-सम्मति की अभिव्यक्ति सर्व-सम्मति से हो। मेरा निवेदन यह

है कि लोचसम्मति को सर्वसम्मति की तरह हम ने जो सते हैं लेकिन सर्व-सम्मति का आशय रखते यानी सर्वसम्मति को अन्तर हम एक 'विशालिय', विशालिय से मेरा मतलब है सद्ध-सिद्धान्त, अपने गिराहू का, बचने समुदाय का नाम, चदन काटी का बनायेगे, इसे हम बचने आन्दोलन का या बचनी व्यवस्था का सद्ध-सिद्धान्त बनायेगे, तो एक ची के बाबर हो सकता है, और निम्नान्ते शून्य के बाबर हो सकता है। निम्नान्ते आजमी एक तरह है, और एक ही जादमी लवण है, और वह कह रहा है कि मुझे वह स्वीकार नहीं है, तो निम्नान्ते शून्य बन जायगा, एक ही ची हो जायेगा। इसे 'सोदो' कहते हैं। तो इसका भी विचार करना होगा। मैं 'संरक्षण' की बात कह रहा हूँ। दण्ड-शक्ति से लोचसम्मति की तरह जाना है। और लोचसम्मति, सर्व-सम्मति हो, इसके लिए फिर सर्वानुवर्तित की बात आयी। 'यूनिवर्सिटी' नही, 'कन्सेन्स', सर्वानुवर्तित सब की सोच हुई।

इसके लिए जो सम्मति देने, यानी जिस समाज की सम्मति की लोच है, उस समाज का नक्सा क्या हो? यह समाज कैसे बने, यह हमारी दूसरी सोच है। बच एक मित्र ने मुझसे यह कहा कि तुम पूरा नक्सा बना दो। मैंने कहा कि यह तो मैं बकर बना सकता हूँ, क्योंकि यह कल्पना की चीज है, हृदय की चीज है। ऐसी चीज है जिसे कोई भी सुगी, मुद्रित बना सकता है। इसके लिए किसी कानिस्वारी की आवश्यकता नहीं है। नये बनानेवाले कानिस्वारी नहीं होते। नया विचार होता है। इसके कुछ आधारभूत सिद्धान्त हमारी सोचने होंगे हैं और उनको विचार चलना होगा है।

अहिंसा : सिद्धान्त नहीं

मेरे भाषण के दो तरह के परिणाम हैं। एक में तो कुछ लोगों ने आकर, वे आज लोगों के साथ ही कि नहीं, मैं नहीं जानता, बाहर के भी हो सकते हैं, मुझसे आकर कहा कि बच माँके की बात बड़ी, पते की बात बड़ी। लोचनी यह बात

बड़ी? वो एक बात यह बड़ी कि अहिंसा को सिद्धान्त बन जायगी। दूसरी बात यह बड़ी कि 'बर्गसवर्ग' के 'होने' से मत डरो। और तीसरी बात यह बड़ी कि छोटे मालिक और गैर-मालिकों को संघ-टिक्ट करो।' तो मैंने उनके पूछा कि इसमें मैंने ऐसी चीज-सी बात यह की, जिससे बाबरों एतना सतोप हुआ? वे बहुत बात तो नहीं कह सकते थे, लेकिन दबी जब से यह कहा कि 'अहिंसा का आशय तुम छोड़ दिया।' मैंने समझ लिया कि पहाँ कु ऐसी भी मनोवृत्ति है कि अन्तर अहिंसा व हम छोड़ सकें, तो भगवान से पिछा रहें तो इसमें मुझे कोई आसक्ति नहीं। मित्रों मेरा निवेदन इतना है कि अन्तर निरा प्रतिवार से अत्यन्त प्रतिवार की हन भेद मानते हैं, तो हमारे निराशय प्रतिवार। कभी भी प्राण नहीं जायेगा। उतम प्रतिवार जब अत्यन्त प्रतिवार है, तो हमारा दिमाग तो उठी की पूजा करेगा, जो। चाहेगा कि अत्यन्त प्रतिवार की दमक हमें प्राप्त हो। निराशय प्रतिवार उस तरह जाने की पहली छोड़ी है। उस सोचान की एक छोड़ी है। निराशय प्रतिवार ही बर्गसवर्ग, परिणामसम है, यह अन्तर हमारे चित्त में ही तो हमारी आने से पूछना चाहिए, अपना हृदय टटोल लेना चाहिए।

मैंने यह कहा कि अहिंसा को आ सिद्धान्त न बनाये। सिद्धान्त से मेरा मतलब है 'केटिग'। 'केटिग' वह निर्बीज देवता, जिसकी हम पूजा करते हैं, और पूजा के लिए बलिदान देते हैं। अहिंसा अन्तर हमारा देवता बन जायगी, हमारी देवी बन जायगी, तो मित्रों, हम यदुप्यों की बलि उनके चरणों में बचायेंगे। इसलिए मैंने दूसरा भावना कहा। मुझे याद है, सात भाषण तो मुझे याद नहीं है, लेकिन लोगों ने बार-बार उतान पूरे थे, तो बार ही गया, तो मैंने दूसरा भावना कहा या कि किसी भी बारण से, किसी भी शर्त पर यदुप्य यदुप्य की हत्या नहीं करेगा। यह हमारी धर्मदा है, अहिंसा का सिद्धान्त नहीं। अहिंसा का सिद्धान्त

बौद्धों ने माना, वैशियों ने माना, ईसा-
दुस्रो ने माना, सिद्धान्त रह गया, अहिंसा
नहीं रही। 'बाप' हो 'बाप' हुए मर्यादा।
इसलिए मैं बौद्ध हूँ, और जिनको शक्ति
मेरे शब्दों में था शक्ति है, उनको शक्ति
के साथ छोड़ना हूँ कि मेहनतानी बनके
बाप कहना भी सिद्धान्त न बनाये।
मनुष्य मनुष्य है, मनुष्यों को एक दूसरे के
साथ रहना है, मनुष्यों को एक दूसरे के
व्यथीक करना है, मनुष्य मनुष्य की हत्या
नहीं करेगा।

हमारा धारा आन्दोलन या हमारी
सारी प्रवृत्तियाँ इस अतिशय पर है।
मैंने हमेशा कहा था कि तीव्रता
को हम मानते हैं। एक दूसरे के मन-
परिवर्तन पर आधारित जो व्यवस्था है,
उन व्यवस्था का नाम मोक्ष है। हमें
बिन्धन बन वा आरत है, बिन्धन मत की
प्रतिष्ठा है। हम एक दूसरे को समझाते हैं,
'बन्धन' करने, एक दूसरे का मन परि-
वर्तन करने। मैं हृदय परिवर्तन नहीं
बहना, मन-परिवर्तन बहना हूँ। क्योंकि
मन-परिवर्तन बुद्धि का विषय है। हृदय-
परिवर्तन के लिए बुद्धि के अतिरिक्त
दूसरी कुछ शक्तियों की आवश्यकता होती
है। इसीलिए मैं मन-परिवर्तन बहना।
सोचमत्ता का राज्य ही सोचमत्ता है।
सोचमत्ता की मत्ता सोचमत्ता है। मान-
समता की मत्ता, सोचमत्ता की मत्ता। मत्ता
मत्ता परिवर्तनीय है। इसीलिए मैं आज से
वह कहना चाहता हूँ कि सोचमत्ता में स्थान
जगता था है, उन्नी था नहीं, हाथ उठाने
था है, चलने था नहीं। मत्ता सोचमत्ता का
अतिशय स्पष्टीकरण से भिन्न है। इसीलिए
उसे 'सिद्धि परवर्तन' बहने हैं, परिवर्-
तना नहीं, सोचमत्ता, मानपरिवर्तन।
सहयोग और साम्य हिंसा

यह भी मैं आज के सामने रखना
चाहता था, जो हमको रोहना हूँ कि
कहिना को सिद्धान्त नहीं बनाये, नहीं
बनाया अहिंसा। अहिंसा देवी नहीं है,
त्रिभुक्तो हम कुछ करने, और उन्नी की मत्ता-
देवी पर मनुष्यों की मत्ता अहिंसा। आजको
बाद होता, मैंने यह कहा था कि अगर बगल

देश का आन्दोलन 'आत्मसंरक्षण' अहिंसा है,
तो मैं जो हमारे गरीब भाई हैं; आज जानते
हैं कि मैंने मनुष्य में समुत्पन्न नहीं रह
जाना, आज जानते हैं दूर पर ये नाम को
जो संघर्ष करने मूल मिश्रण अहिंसा, कुछ
खाना नहीं मिला, किसी ने सोचें मुँह बाज
नहीं कर परते, ऐसा मान्य उन मूल
रखी मनुष्य का अन्तर बन गया है, तो
मैं हाना ही बहना चाहता हूँ कि उसकी
हिंसा सभ्यता नहीं है, उसकी हिंसा
समाज-मान्य नहीं है, लेकिन उसकी
हिंसा साम्य नहीं तो सहयोग अक्षय्य है।
उसकी हिंसा सहयोग है, लेकिन क्या उन
हिंसा से जानते हो सकते हैं ? यह भागे
वा सवाज है। उन्नी भी अहिंसा ध्यान
मैंने दिनात्मता।

पञ्चदशक अर्थ

हिंसा उसकी सहयोग है, और मैं तो
सम्यक् भी मानता हूँ। पुत्रिण और सेना
के सिपाही की हिंसा को क्या हम सौम्य-
रखी कुशी मनुष्य की 'समावेष्टिकता'
(अन्तर्गत) हिंसा है, दूरपर सहयोग
है, साम्य भी है। साम्य यह है कि क्या
हमसे जाति हो जाती है ? इसीलिए
मैंने परमेश्वर से एक बात बहो कि
आज वर्ग-समर्थन के होने को रोक दें। दो
बानें बहो भी। एक तो यह बहना था कि
सोम हमसे करते हैं, दूसरे मन परवर्तन।
वह मन परवर्तन है, दूरपर भी है कि
ये सोम अक्षय्य मैंने जाते हैं, अक्षय्य मत्ता
आने हैं, अक्षय्य कुछ करने के लिए
आने हैं, अक्षय्य आये। एक मन को मैं
बुद्ध नहीं मानता। यह 'देर' नहीं है,
आरत नहीं है, आरत कानि का दुष्मन
है। लेकिन यह जो मन है, इन मन का
निवारण हो सकता है। आरत जो रक्षा
जिना जाता है, प्रथम रक्षा नहीं करना
चाहते। वह अनिवार्य रक्षा होता है,
तो वह स्वयं है। स्वयं-स्वयं यह तो
मानते हैं कि आरत ही ऐसे हैं जो आरत
की शक्ति-व्यवस्था का अन्त करना
चाहते हैं। मैंने आज से कहा था कि
एक देश में समर्थन अहिंसा और सत्य

महत्त्वपूर्ण जो नाम है, यह आज कर रहे
हैं। आज तो मैंने अक्षय्य है ही।
कुछ सभ्यताओं को छोड़कर आरत ही
सारी अक्षय्य की मैंने पवित्र अक्षय्य मानता
हूँ। लेकिन आजके आरत का अक्षय्य
पवित्र है। कुछ नाम ऐसे होते हैं, कुछ
कोई ऐसे होते हैं, जो छोटे अक्षय्यों को
बड़ा बना देते हैं। यह नाम ऐसा ही है,
जिसे अक्षय्य उठाया है। एक नाम में
आरत क्या सोचते हैं कि, 'बहो ऐसा न हो
कि वर्ग-समर्थन ही आज 'वर्ग-समर्थन'
ही आज। और इस हिंसा के कारण एक
सभ्यता रक्षा हो गयी है। तो मैंने आजके
निवेदन किया था कि वर्ग-समर्थन होता नहीं
है। हमारे बापको को इतने के लिए उन्नत
हम होना उन्नत करते हैं या परिश्रम को
इतने के लिए मत्ता में 'मत्ता' शक्ति करते
हैं, तो बहो को इतने के लिए यह भी
समर्थन उठाया जाता है, उन्नी को उन्नत
है हमने बिना यह वर्ग-समर्थन। वर्ग-समर्थन
से हमको उन्नत नहीं है। अगर वर्ग-
समर्थन से हिंसा नहीं है, अगर वर्ग-समर्थन
अनिवार्य है, तो वर्ग-समर्थन ही होकर
रहेगा, हम करें क्या ? लेकिन एक बात
इतने के साथ मैंने नहीं की कि क्या वर्ग है ?

'वर्गसमर्थन' की कल्पना और

हिंसा-अक्षय्य

यह वर्ग समर्थन अक्षय्य था है। मनुष्य
का अक्षय्य वर्ग-समर्थन से उन्नत होता
है। तो वर्ग समर्थन की मान्यता
क्या है ? जिनके पास समर्थन है एक वर्ग
के हैं, जिनके पास केवल अक्षय्य है, समर्थन
नहीं है, वे दूसरे वर्ग के हैं। यह समर्थन
को वर्ग की मान्यता है, अक्षय्य, अक्षय्य-
समर्थन की। अक्षय्य यह, जिनके पास
मान्यता है, मैंने उन्नत करना हो या न
करना हो, अक्षय्यसमर्थन यह है जो मैंने उन्नत
करता है, लेकिन समर्थन नहीं है।

मैंने निवेदन किया था कि वर्ग के
सोच में उन्नत वर्गसमर्थन है ही नहीं। वर्गों
में जिन वर्गों की अक्षय्य की ही उन्नत
वर्गसमर्थन को वर्गों को उन्नत, लेकिन की

क्रान्ति से जब किसान भद्रपुर के हाथ क्रान्ति का अग्रदूत बना। मेल्टन को भद्रपुरी ने ही किया, लेकिन किसान उसके पीछे गया। लेकिन क्रान्ति के इतिहास में एक बहुत बड़ा क्रान्तिकारी परिवर्तन किसी ने किया तो वह माओ ने। पहली बार संसार के इतिहास में किसान की क्रान्ति हुई। और इसके लिए यह स्टाविन या लेनिन का शिष्य नहीं रहा। उनको कहा कि मीने क्रान्ति की एक नयी प्रक्रिया की खोज की है—किसान की क्रान्ति की। तो वर्ग का जो स्वरूप है, वह कृषि के क्षेत्र में इस प्रकार का है, ज्यादा हैं छोटे मालिक; गैर-मालिक-कम हैं, और बड़े मालिक सबसे कम हैं। दूसरी विशेषता है, किसान बिल्दे हुए हैं, सघटित रूप से एक जगह किसान काम नहीं करते। तीसरी चीज यह है कि कारखाने का भद्रपुर मालिक का काम करता है और किसान अपना काम करता है। ये तीन विशेषताएँ कृषि के क्षेत्र में ऐसी हैं, जो कृषि के क्षेत्र की क्रान्ति की प्रक्रिया का स्वरूप बदलती हैं। इसलिए मीने आसरे निवेदन किया था कि हमें वर्ग-संघर्ष से बचने की क्या जरूरत है? अगर वर्गों का स्वरूप कुछ अलग है तब कि क्षेत्र में, तो वर्ग-संघर्ष होगा, क्यों नहीं होगा? और उसके हम हिककेंगे क्यों? क्या आवश्यकता है? एक मर्यादा तो हमको माननी है मनुष्य मनुष्य की हत्या नहीं करेगा। तो उसके बाद क्यों हिककेंगे? परन्तु यह तो देलना होना न, यह अल्पमत का विषय है, कि आखिर कृषि के क्षेत्र में वर्गों का स्वरूप क्या है? वह मीने आपके सामने रखा। इस क्षेत्र में गैर-मालिक कम हैं, छोटे मालिक अधिक हैं, और बड़े मालिक मुद्री भर हैं।

अब मेरा निवेदन यह है कि ये जो मुद्री भर मालिक हैं, बड़े मालिक हैं, समाज में इनका प्रभाव है। यह प्रभाव मार्क्सवाद के आधार पर है। तो इसको हम कम करना चाहते हैं। धर्मियों के प्रभाव को नहीं, उस प्रभाव के आधार

को। और जहाँ इसे स्पष्ट करें: पुलित का प्रभाव मनुष्य के नाते नहीं, पुलित के दण्ड के नाते है। वह जब वर्गों उत्तार देता है और दण्ड उसके हाथ में नहीं होता, सब जो उसका प्रभाव है, वह मनुष्य का प्रभाव है। हम मनुष्य को यानी निष्पाधिक मानव की प्रतिष्ठा समाज में स्थापित करना चाहते हैं। निष्पाधिक मानव—जिसके पास दण्ड नहीं, पैली नहीं, कुर्सी नहीं। ऐसा जो निष्पाधिक मानव है, इसके पास औजार ही औजार हैं कुछ छात्रों के साथ। इस निष्पाधिक मानव की प्रतिष्ठा हमको समाज में कायम करनी है।

इसलिए इस क्रान्ति की प्रक्रिया में, हम सम्पत्ति और स्वामित्व के कारण समाज में जो प्रतिष्ठित है, उसका सहयोग लेंगे, उसकी सहायता मांगेंगे, लेकिन उसके बजन का उपयोग अगर हम करते हैं, तो आन की सामाजिक भी प्रतिष्ठाएँ हैं, उनको सीचते हैं। उनकी जड़ों को भद्रपुर करते हैं। अब इस फर्क को तो भाव बहुत अच्छी तरह समझ लें। हम कमिस्तर, और मिनिस्टर, प्रेसिडेण्ट आंक इत्याद, सबकी सहायता लेंगे, अपना सहयोग लेंगे, लेकिन कही ऐसा न हो कि हमारा सारा काम इनके बजन से हो रहा हो। तो फिर प्रतिष्ठाओं का हम अंत करना चाहते हैं, वही प्रतिष्ठाएँ भद्रपुर हो जाती हैं। मीने मजरा में एक बाग्य बहा था कि कुला दुम को हिलारिया या दुम ही कुले को हिलारिया? तो आन की ये जो सामाजिक प्रतिष्ठाएँ हैं, वे सामाजिक प्रतिष्ठाएँ इस क्रान्ति की प्रक्रिया में क्षीय होनी चाहिए। हम बुद्धिमानों का भी सहयोग लेंगे, धनवानों का भी सहयोग लेंगे, हम मालिकों का भी सहयोग लेंगे, हम सलाहकारियों का भी सहयोग लेंगे, लेकिन यह सहयोग होगा, आशय नहीं, सहाय नहीं। नित्रो, जो सहाय लेता है, वह कबित खोज है, जिसका सहाय लिया जाता है, वह शक्ति पाता है। हम पाकिस्तान के उस्ताफ सल का सहाय लेते हैं, तो ताकत

सब को बढ़ती है, अमेरिका का लेते हैं तो ताकत अमेरिका की बढ़ती है, अमनो नहीं।

समझते को क्रान्ति
समझते में डूब जाती है

हम निश्चय प्रतिष्ठित करना चाहते हैं? उसको प्रतिष्ठित करना है, जिसके पास सम्पत्ति नहीं, स्वामित्व नहीं। जो उदाहरक है। चीन बरतनेवाले को नहीं, खरीदनेवाले को नहीं, चीन बनावेवाले को। आनद अगली बार हो, एक बात मैं लगातार कहना आना है, चीन बनावेवाले की प्रतिष्ठा बढ़ेगी, खरीदनेवाले की नहीं, और, छीनेवाले की भी नहीं। छीनेवाले की अगर प्रतिष्ठा बढ़ेगी तो दण्डबन्धित बढ़ेगी। दण्डबन्धित से मेरा मतलब 'गनिलेन्ट' से नहीं, दण्ड से है। दण्ड की ताकत, दण्ड का स्वभाव समाज में बढ़ेगा, अगर छीनेवाले की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। भूमि हबगे, भूमि छीनेगे, तो उसकी प्रतिष्ठा होगी जो भूमि छीन सकेगा है। हुआ क्या? पुंजीवाद में खरीदनेवाले की प्रतिष्ठा है, आसरी क्रान्ति में छीनेवाले की प्रतिष्ठा बढ़ेगी, चीन बनावेवाला तो हाथ मलता रह गया। यह क्रान्ति नहीं हुई। दण्ड की क्रान्ति क्रान्ति नहीं है। क्योंकि आन की समाज की रचना में एक मुदर सहाय बाजार है। मन्दिर नहीं, मन्दिर नहीं, विश्व-विद्यालय नहीं, विद्यालय नहीं, आपके आशय नहीं और आपकी दूसरी तोरें पब्लिक सहाय नहीं। आन की दुनिया की, आन की समाज-रचना को मुदर सहाय बाजार है। जीवन के तीर-नरीये, वर्ग-पटन सब बाजार से चलते हैं।

बाजार में तीन चीजें हैं, जीवियों में है—तीरा, सट्टा, सलेद; दूसरी—दुआ, प्योपि और पोरी। इन तीन की प्रतिष्ठा है आन के समाज में। लोगों ने मुझे कई बार पूछा कि यह चोरखाना है, झट्टावार है, इसको हबको समाज करना है। आन मित्र आने से कुछ, मीने उनसे कहा कि समाज की दुनियाद अगर आन नहीं बदलना चाहते है, तो पूर याद

रखिये, यह सोच, छुटा और माकेट, जुना, पत्रोपिण और घोरी की प्रतिष्ठा समाप्त हैं रहनी, आगही नहीं। और बाजार के मूठो की जागरी स्वीकार करना पड़ेगा। हमारी रायी में इसे स्वीकार कर ही लिया है, बरण भाई धमा करे, हमने बाजार के मूठों को नहीं बदला, बाजार में ही खारी को बदल दिया। हमारे साहित्य का भी हार नहीं है। हम बाजार के मूठों को नहीं बदल रहे हैं, बाजार के सामने मुठ रहे हैं। यह हो रहा है। इसे 'बामोमाएउ रिओमून' कहते हैं, मधोती के कानि सामतीने में हूष जाते हैं। इतिहास मेरा विवेक यह है कि धार की समझ-बझ-रथा के जो प्रतीक है, इनके रहने का हार कीलक करने के धर्याधार को नष्ट करने के लिए, कभी नहीं होगा। का को खारी बेचने के लिए सामर्थ्यों की धारण करने पड़ेगी, साहित्य बेचने के लिए मेरी पड़ेगी, मिन के मनुष्यों में साहित्य बेचने की आशा काय जब मिनपानिक देगा वह आर का साहित्य बिनेगा। यह सब ही रहा है। ती में आज से विवेक पर कर रहा पाठि बाजार के मूठों की बदलने का नहीं से आरम्भ करना होगा, और वह आरम्भ आप के सामर्थ्य में होगा। इन प्रतीकों को तबक मल का धारण किया रहा है।

सामर्थियानुः अन्वयमूलक समाज-व्यवस्था का उपकरण

छोटा मानिक और गैर-मानिक तो आर अर्थव्यवस्था है, बरोडि आज की व्यवस्था अन्वयमूलक है। दूसरी और धन और समानि कितने पाठ है, यह उस कायम का उपकरण है। उसे आप गैरमान मन्विये, यह धारण नहीं है, यह मानव नहीं है। धीरे-धीरे भाई नहीं बँडे है। धीरे-धीरे के बारे में दरदरा रहने पर शिवा का कि यह तो कंठ का राय है। विनोय से उड़ोने निकटतम की, 'यह धीरे-धीरे का आशा, हमको क्या कहता है, जानी देगा है।' तो विनोय

ने पूछते पूछा कि तुम क्या कहोगे ? धीरे-धीरे या नहीं बँडे ही हुए थे। मैंने कहा कि धीरे-धीरे मुँहफट धारणो है, भागा नहीं जानने है, सोधी भागा में कुछ कह देते हैं। कहता चाहिए कि 'बुल्ल के माया का राज है।' जब यह केवल विनोद नहीं है। कच की कोई आति नहीं, कस की बटून बूण की मा ही सक्ती है। डिपण-कषण की भी कोई आति नहीं, उधरा पुन प्रह्लाद पगवान भवत हो सक्ता है। अमीर गैरमान नहीं है। हर गरीब अमीर बन सकता है, हर अमीर गरीब बन सकता है। यह बात मैंने उक्त जिन नहीं की, उषी को साफ कर रहा हूँ।

तो, किस कारण अन्वय का वह उपकरण बन गया है ? और अब उस उपकरण से हम क्या रहे है कि हमको डोड दो। एक तरफ को बीमारी है व। एक बीमारी है 'आवेमिरी' की। इतना बीमार हो गया कि पुनकर बुणा हो गया, गुष्वाच हो गया; दूसरी तरफ एक बीमारी है, इतना दुबला हो गया कि निष्काय बन गया। जो दुबला हो गया वह तो कहता है कि बीमारी से बचना चाहता हूँ, मुझे चाहिए कोई औषधि और औषधि। लेकिन जो दुबारा बन गया है, वह अपनी बीमारी छोड़ना ही नहीं चाहता। यह हमारी स्थिति है। अगर वह यह कहता है कि यह बीमारी में छोड़ना चाहता हूँ तो स्वाभ है, आरम्भ-गता भी है। लेकिन यह समझकर कि बीमारी छोड़ रहा हूँ, मेहरजानी नहीं कर रहा हूँ। बीर बाप है, लेकिन क्या नहीं है, दना नहीं है। यह अपनी बीमारी से बचना चाहता है तो उसे सब छोड़ना ही छोड़ना पड़ता है, लेकिन क्या करे ? बीमारी अगर सोझने की ही है तो उसे 'बुल्ल हाच' ही लेना पड़ेगा। और अपनी बीमारी अगर दुबलाने की है तो उसे सब्जी सिझाने में कोई दूधरा जगान नहीं है। नतीजा यह है कि गरीब जानी गरीबी को बीमारी मानता है, लेकिन हमने छुटा चाहता है, अमीर

बनोती को बीमारी नहीं मानता और न ही उनसे छुटना चाहता है। यह है आज की वस्तुस्थिति। इसमें जो अमीर कहता कि मैं भी अपनी बीमारी से छुटना चाहता हूँ, मैं आता मे विवेक करता हूँ कि आप उनकी पालवी अपने कंधे पर लेकर उसका दुरुप निकालिए। लेकिन वह अगर कहता है कि 'अब क्या करें, यो तो जाने ही वाली है अमीन, थोडो दे देता हूँ।' और फिर अपनी समीप की मधोती में कुछ प्रतिष्ठा भी पा लेता है, जो कानि नहीं होगी, प्रबलित प्रतिष्ठाओं की बन लियेगा।

दूसरी ओर मैंने आप से उक्त 'आवेमिरी' करने की बात नहीं की। उन 'आवेमिरी' करते से मेरा मतलब यह नहीं था कि उनका बहिष्कार करेते। मैं यह कहता हूँ कि उनकी आर समझाये। चीज उनकी समझ में आन नहीं आती है, यो उसका डंप नहीं, मल्लर भी नहीं। यह अन्वय मानव की कानि नहीं है, यह अन्वय डंप और ईर्ष्या की कानि नहीं है, यह कानि प्रतिक्रिया की भी कानि नहीं है। इसलिए मैंने आप से विवेक लिया कि छोटे मानिक से आरम्भ करिए। और सचतन इसे होगा छोटे मानिकों का ? अपनी मानिकियन को छोड़ने से। अब अपनी मानिकियन को छोड़ने के बाधार पर बड़ा सचतन होगा है, तो यह बताइये कि उससे अधिक विपानक सचतन बुनिया में और कौन-सा होगा ? यह अधिक-से-अधिक विचारक सचतन है। मैं जब यह कहता हूँ कि छोटा मानिक अपनी मानिकियन को छोड़ दे, अपनी मेहनत को गैर मानिक की मेहनत के साथ मिला दे, ये दोनों जब एक हो जाते हैं, निरी मानिकियन दोनों को नहीं है, तो इसमें कहाँ आर की विरोध दिखाई देता है ? इसे मैंने कहा था कि 'मोकरानि का यह दवाव है, और नैतिक दवाव है।' यह दवाव इतिहास है कि हम जिन तरह की सामाजिक व्यवस्था चाहते हैं, उस दवाव व्यवस्था के लिए यह आरम्भ होगा है।

आन्दोलन की प्रगति धीमी क्यों ?

—जयप्रकाश नारायण



[भोपाल अधिवेशन में जे० पी० ने धामद्वारा-आन्दोलन के संदर्भ में जो आत्म-निरोधन प्रवृत्तियाँ बताईं, वह हम यहाँ मूल रूप से उद्धृत कर रहे हैं। यह उनके पूरे भाषण का आन्दोलन सम्बन्धी अंश है। इसी भाषण के आधार पर प्रेसवालों ने यह समाचार प्रकाशित किया था कि जे० पी० ने धुरान-धामद्वारा आन्दोलन को विफल घोषित कर दिया। वास्तव में उन्होंने जो कहा था, आज के सामने है। सर्वोत्तम आन्दोलन कायदा की बुनियाद पर ही ठिक सफाई है, इसलिए अगर हमने कहीं कभी है, तो लम्बी इकोकार करना आन्दोलन के लिए हम हितकर मानते हैं—स०]

किस रास्ता ने समारोह बिना धाम-दास की चर्चा का। समारोह मुझे बरता था, लेकिन मुझमें न उतरी चढ़ाई है, न उतना जग है कि इतना सुन्दर समारोहिक भावना में कर सकता। अच्छा हुआ कि मुझे मुसलमानों के निमन्त्रण पर भाग ले छुट्टी नांग कर उनके यहाँ उपस्थित होना पड़ा था। अच्छा ही हुआ। अल्पज ही सुन्दर वह भाषण है। और मुझे भाग्य ही कि भाग्य सब उनकी एक-एक पंक्ति को हृदयगम्य करने में। धामद्वारा के प्रत्येक 'केल टू प्रेस' में, 'आपने-आपने' वाले भावने सेख में जो कुछ मैं लिख चुका हूँ, उनके कई विचार धारा के विचारों से मिलते-जुलते हैं। उसके आगे मेरा विचार कभी गया नहीं है, इसलिए कि उनके आगे मेरा अनुभव नहीं होता है।

नभमानवाद से कोई क्रांति नहीं
 इन दिनों नभमानवाद की बड़ी चर्चा है। यहाँ भी उसकी चर्चा कई बार उठी। मैं भी मानता रहा कि ये लोग बड़े क्रांतिकारी हैं, और उनके अन्दर बहुत ही ठेकाखी लोग हैं। इनका आदि विश्वविद्यालयों के फर्स्ट क्लास पर्यटन ए० पास बिचे विद्यार्थी हैं, उनमें से कुछ पी० एच० डी० भी पास बिचे हुए विद्यार्थी हैं। लेकिन बड़े जो नभमानवादियों का बन् था, उसमें बड़ा भाग परिवर्तन हो चुका है। भाग्ये का नाम लेते हैं, भाग्ये हमारा मेला है ऐसा बहने हैं, लेकिन कोई भाग्यवाद नहीं। क्रांतियुत हुआ जो साम्यवादी क्रांति का आन तक बिनी ने

साध्य नहीं माना है। अतन्त्रवाद ही वास्तविकता के रूप में बगट हो गया है। समाज में जो वायु की विपत्ति है, जो दाखिल है, जो लोपण है, जो अन्त्या है, जो उसके मूल कारण है, उनमें नभमानवादी क्रांति कर सकते, अपना मुझे कोई विश्वास नहीं। मैंने कई बार कहा है कि अगर मुझे रसवार में और माओवादी में चुनाव करना पड़े, तो मैं अक्षर ही चुनाव रसवार माओवादी का आर माओ के भाषण को सीखिये, और धार सीखिये, नीचे लिख दीजिये महात्मा गांधी, सो ब्याकी फर्क नहीं मानूय पड़ेगा कि ये गांधी के वाक्य हैं या माओ के वाक्य हैं। एक फासीवी मित्र ने मुझसे कहा कि माओ के बहुत से वाक्य ऐसे हैं, जिनके नीचे जीसस क्रारस्ट लिख दिया जाय, तो कोई फर्क नहीं मानूय पड़ेगा। आशा लैना कि ये जीसस क्रारस्ट के ही वाक्य हैं। हिमा है, जो उन्होंने प्रयोग बिचे काली बनी आबादी के देख में, जिन छात्रों से बिचे, उनमें से बहुत से उपाय मुझे मान्य नहीं होने, पर जो कुछ दिखा उसके पीछे एक साम्यवादी क्रांति की दृष्टि रहे है।

लेकिन मैं अपने मुसहरी प्रस्ताव में देखता हूँ कि नभमानवादी हवाएँ जो होती हैं, उनके पीछे क्रांति का विचार नहीं है, उनके पीछे गाँव के भाग्ये भाग्ये हैं, पारिवारिक भाग्ये हैं, मुसहरीवादी के भाग्ये हैं। तोरवान बहूय से है, बेगार है, आ० ए०, बी०

जयप्रकाश नारायण हर्षा की बात ए० पास करके, बी० एम० बी० बरके बैठे हैं देहालों में, निटले है, अशुद्ध है, क्रांतिकारी बन् जाते हैं। कुछ बम बनाया नील लेते हैं, कुछ पिलीन बनाया सीख लेते हैं, और एयर बुद्ध बनाया सीख लेते हैं, और एयर बुद्ध हवा कर दो, उधर बुद्ध हवा कर दो। आर में नभमानवाद को आदर की दृष्टि से नहीं देखाय। देहात लव उनका धेन नहीं खा। क्रिस्टुट कही-कही हलवाय है। और बहुरों में क्या करते हैं? नेताजी की मुनिवाँ तोड़ने, गांधीजी की तोड़ने, पुन-नायकों को जवायमें, विद्यालयों में आकर हवाएँ करने। दसों कोई क्रांति होनी, एंश तो समझ है नहीं। हमारी पारिवारिक निबंदाता के दुष्परिणाम

लेकिन एक बात जान से बहूँगा। बिनी, हमारे आन्दोलन को प्रगति अघिक नहीं हो रही है, धारा एक बाल यह भी है—हमारे पारिव्य भी निबंदा। पचास हन लता से दूर हैं, लेकिन हम देखते हैं बिहार में, छोटे-छोटे पनो के लिए, निचको लो लो धारो विनते हैं, बिचको सबा लो धारो विनते हैं, एंसी छोटी-छोटी बाजों के लिए बायन में धिनी बढ़ना है, बाँक एटन्दी है। हटाया बड़ा बाय, दसनी बड़ी क्रांति करने के लिए हम बायें बड़े हैं, लेकिन हम उनके योग्य नहीं

धुरान-यात। सोमवार, १२ नवम्बर, १९५१

कृषि क्रान्ति : जोर-जबरदस्ती से हो नहीं सकती

अंत में एक बात कहूँगा। अगर कोई मुझे यह समझा दे, कि कृषि के क्षेत्र में छोटी मालिकियत का निराकरण जोर-जबरदस्ती और हिंसा से हो सकता है, तो मैं उसके पीछे जाने की तैयार हूँ। इसलिए मैंने छह दिन थापसे कहा था, कि उसका 'एक्सप्रोपियेशन' नहीं हो सकता। किसी ने ध्यान तक नहीं दिया। चीन ने नहीं, रूस ने नहीं, नक्सालवादी भी कर नहीं सके। एक नक्सालवादी से पूछा, 'जबे मालिकों की मालिकियत तुम छीन लोगे, छोटे मालिकों के साथ क्या करोगे?' तो उसने कहा कि 'उपको समझावेंगे।' वे तो तो मैं से अरसी हैं। वेर-मालिकों को छोड़ देंगे, मालिकों में से मैं से अरसी छोटे मालिक हैं। अरसी को अगर तुम समझा लोगे तो बीस को समझाने की चिंता नहीं, वे अपने आप समझ जायेंगे। इसका मतलब यह है कि एक्सप्रोपियेशन (सम्पत्तिहारा), टेक्वेशन (संगठनवादी), फार्मिजेशन (सुशुद्ध), इन तीनों का प्रयोग छोटी मालिकियत के क्षेत्र में नहीं हो सकता है। छोटी मालिकियत के निराकरण को एकात्मक प्रक्रिया, चाहे बिनाबा के जमाने में यह संभव हो, चाहे जनतापन्थी के जमाने में संभव हो, या चाहे हमारे क्रिश्चो के सामने में संभव न हो, लेकिन कृषि क्रान्ति एक ही तरह से पूरी हो सकती है कि छोटा मालिक अपनी मालिकियत का स्वेच्छा से विचारन कर दे। इसके बिना कोई रास्ता नहीं है।

यहाँ आकर माओ की क्रान्ति टिक गयी। माओ विज्ञान की क्रान्ति का पैगम्बर है, इसलिए मैं उसके बरण छूने को तैयार हूँ, लेकिन उसकी क्रान्ति मध्य ही गयी, विंगड गयी, क्योंकि उसने विज्ञान को जवान (सेलिफ) बना दिया। आखिर सभी जवान बर्षीन-बर्षी विज्ञान तो ये ही। अगर विज्ञान की क्रान्ति चाहते हैं या जवान बने हुए

विज्ञान की क्रान्ति चाहते हैं? अगर विज्ञान जवान बन जामना हो क्रान्ति जवान की होगी, विज्ञान को नहीं। तो, यह एक कदम आगे है जो बिनाबा रख रहा है, कि विज्ञान विज्ञान रहेगा और क्रान्ति करेगा। लेकिन विज्ञानियत में क्रान्ति, छोटे मालिकों की ही क्रान्ति हो सकती है। तो इसका जबरदस्त छोटा मालिक होगा।

दूसरा कोई रास्ता नहीं

मिर्चो, क्रान्तिवादी के शब्दोंप में 'डिफीट' शब्द नहीं है, पराजय शब्द नहीं है। उसके शब्दोंप में भी नहीं है, और उसके हृदय में भी नहीं है। अक्षय-तार्दी है, और शायद अक्षयता का बरण को कर सकते हैं, जन्म अधिक बीरता की भावसम्पत्ता होगी है। नच तने बापसे कहा था कि आपका सारा दर्द तो यही है कि हमें कोई नहीं पूछता? लेकिन दाएँ भी आगे जा सकते हैं। कोई नहीं

पूछता, इतना ही नहीं होगा, शायद एक-दो सात भी ऊपर से मां दे। लेकिन 'कह रहेग प्रदिशर बर्षों, को भुगु पारो खत।' विज्ञान की क्रान्ति इन युग में, माओ की क्रान्ति और चीन की क्रान्ति के बाद, जो क्रान्ति होगी, मिर्चो यह 'बैरलेव' क्रान्ति होगी, इसमें आपकी कोई धमकाव नहीं देगा। हो सकता है कि आपकी बोसे खाने पड़े। निवेदन इतना ही है, इस बात की अच्छी तरह समझ लीजिए, कि विज्ञान की क्रान्ति का छोटे मालिक की मालिकियत के बिहर्दन के अभाव और कोई रास्ता नहीं; वैज्ञानिक भी नहीं, व्यावहारिक भी नहीं। कोई रास्ता नहीं हो सकता है इसके बिना। इसमें आर परामुद नहीं होयें, अक्षयन होयें। आपकी अक्षयता दुपमभू नहीं होगी, भूयमभू होगी, पन्ध के बरण के समस्त।

सबे हेतु साथ क्रान्तिवादन,
भोगाल . १०-१०-७१

गया जिला आचार्यकुल सम्मेलन

राज्य परिवर्तन के दक्षिण में अधिकांशों के लिए नहीं, बल्कि आने परंपर्य के प्रति जागरूक रहकर, गया और दक्षिण राजस्थानी से भिन्न शिक्षा को सरकार से मुक्त कराकर उसे स्वतंत्रता प्रदान करने का संकल्प प्रकट करनेवाले शिक्षक मण्डल आचार्यकुल के गया विभा के सदस्यों का प्रथम सम्मेलन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय वेलागञ्ज में दिनांक ५ अक्टूबर को भागलपुर विश्वविद्यालय के प्राचार्य डा० रामजी सिंह की अध्यक्षता में सफल हुआ। सम्मेलन का उद्घाटन राष्ट्रपति श्री रामधारी सिंह दिनकर ने किया। श्री दिनकर ने अपने उद्घाटन भाषण में शिक्षा क्षेत्र में बड़ी हुई गिरावट और शिक्षकों के बर्तन को चर्चा करते हुए कहा कि 'राजनीति के दौल-पैल से दूर रहकर अक्षयनशील, विनयी और सेवामयी शिक्षक ही आज की परिस्थिति में परिवर्तन आचार्यकुल के संघ के सा सफल है। क्योंकि आचार्य-

कुल का सफल हो शिक्षा का पूंछा सफल है जो शिक्षकों के बर्तन के प्रति उसे प्रेरित करता है। आचार्यकुल की प्रति और उनके प्रेरणा-प्रद बर्तनों के प्रति आनी सुपदासनाएँ स्थापित करने हुए श्री दिनकर ने उनके उद्घाटन भविष्य की कामना की और कहा कि आचार्य विनयीकारी के निर्देशन से संपन्न शिक्षा आचार्यकुल अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में सफल होगा।

सम्मेलन के पूर्व उक्त स्थान पर ही आयोजित आचार्यकुल संशोध्यी श्री रामेश्वर प्रसाद सिंह, मनोविन, के सभापिताव में हुई, जिसमें राष्ट्रीय विद्यालय के आचार्यकुल के सदस्य, उनके प्राचीन बर्तन का निर्धारण और उनके सम्बन्धित अन्य समस्याओं पर विचार किया। साथ ही शिक्षा आचार्यकुल संघ में सुविधा का सदन किया जिसके संघीयता थी राष्ट्रीय प्रसाद सिंह, प्राचार्य, राज्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय दिवारी, विना-मया, बनाये गये।

आन्दोलन की प्रगति धीमी क्यों ?

—जयप्रकाश नारायण

[भोपाल अधिवेशन में जे० पी० ने रामवरायण-आन्दोलन के संदर्भ में जो आत्म-निरीक्षण प्रस्तुत किया था, वह हम यहाँ मूलतः में संक्षिप्त कर रहे हैं। यह उनके पूरे भाषण का आन्दोलन तक नहीं था है। इसी भाषण के आठार पर अंतर्दालों ने यह समाचार प्रसारित किया था कि जे० पी० ने सुदान-आन्दोलन आन्दोलन को विफल घोषित कर दिया। वास्तव में उन्होंने जो कहा था, सार के सामने है। यथोक्त आन्दोलन सारा की बुनियाद पर ही टिक सकता है, इसलिए अंतर हमने नहीं किया है, तो उसकी स्वीकार करना आन्दोलन के लिए हम हिनकार मानते हैं—सं०]



जयप्रकाश नारायण हृदय की बात

ए० पाव करने, बी० एम०० बल्कि खेरे दे देना में, निराले हैं, समस्त है, कानिकारी बन जाने है। कुछ बंध बनाना सीमा लेने है, कुछ विरोध बनाना सीमा लेने है, और अंतर कुछ हत्या कर दी, उधर कुछ हत्या कर दी। मात्र में नरघातकार को आठर की दृष्टि से नहीं देखना। देहात अथ उनका सीप नहीं रहा। छिटाट्ट बड़ी-बड़ी हत्या कर दी। और लहते में बग करने हैं। वेतारी की मजिबों सोहने, पाकीकी की सोहने, पुस्त-मालको को उजाहने, विद्यालयों में नार हत्या करी करी। इतने कोई कानिकारी, ऐसा तो सम्भव है नहीं।

हमारी धारितिक निर्बलता के दुष्टपरिणाम

केरिन एठ रात सार से बहूना। निर्रो, हमारे आन्दोलन की प्रगति अधिक धीमी रही है, इसका एक कारण यह भी है—हमारे पारिवारिक भी निर्बलता। प्रचलित हम उपाय से दूर है, केरिन हम देखते हैं विहार में, सोहने-खोहे पको के लिए, रिक्तरी को ही अपने मिलते हैं, निरलरी उपाय को अपने मिलते हैं, ऐसी छोटी-छोटी बाणों के लिए मायसे में निरली बहना है, कानि कुम्बन्वी है। इतना बड़ा काम, इतनी बड़ी कानिकारी के लिए हम आगे बढ़े हैं, लेकिन हम उसके योग्य नहीं

सामन नहीं माना है। आत्मनकार ही आज नरघातकार के रूप में उभर चुका है। यमात्र में जो मात्र की विधी है, जो दारिद्र्य है, जो सीपण है, जो अन्धकार है, जो लहके मून नारण है, उनमें नरघातकारी कानि कर मरने, इसका सुते कोई विधात नहीं। मीने कई बार कहा है कि अगर मुझे स्वराज में और माजीवाद में चुनाव पाला पड़े, तो मैं स्वराज ही चुनाव करूँगा माओवाद का। आर बाओ के साथ ही मीरिगे, और साथ हीरिगे, मीने निम खीरिगे महीना गांधी, तो बाओ फर् नहीं मायुव वहीँ है कि वे गांधी के बाहर हैं या गांधी के बाहर हैं। एक पाकीकी निम ने मूषिगे कहा कि गांधी के बहूत से साथ ऐसे हैं, निरने मीने खीरिगे कानि विम विम पार, तो कोई फर् नहीं मानूव पड़ेगा। बाओ लीपण कि वे खीरिगे बाएस्ट के ही साथ हैं। इला है, जो उन्होंने प्रवीण रिगे बाओ पनी आशरिगे के देश में, निम उपायों से निने, उनमें से बहूत से उपाय मुझे समन नहीं होने, पर जो कुछ किया उसके पीछे एक सामाजिक कानि की दृष्टि रही है।

केरिन में जाने मुहुरी प्रकण्ड में देखना है कि नरघातकारी हत्याओं की हीरी है, उनके पीछे कानि का विचार नहीं है, उनके पीछे सीप के आशरी समने हैं, पारिवारिक समने हैं, मुकरमेबाकी के समने हैं। नरघात नरघूत से हैं, खीर है, बा० ए०, बी०

नम दादा ने समागार किया राम दाद की चर्चा का। समागार मुझे करता था, लेकिन मुझमें न उठती गहराई है, न उठना आज है कि दाना सुन्दर समागारीय भाषण में कर सता। मण्डा हुआ कि मुझे मुक्यमकी के, निममण पर आर से छुट्टी मांग कर उनके यहाँ उगडिबल होला पका था। मण्डा ही हुआ। यमन्त ही सुन्दर यह भाषण है। और मुझे आशर है कि अगर सब उनकी एक-एक पकिन को हृदयमय करेगी। रामदाद के प्रम पर 'वेड दू फेज' में, 'आमने-आमने' बानि मरने लेव ने जो कुछ में निम चुप्रा है, उसके कई विचार दादा के विचारों से मिलने-जुलने हैं। उसके आगे मेरा विचार अभी गया नहीं है, इसलिए कि उनके आगे मेरा सम्भव नहीं हुआ है।

नरमालावाद से कोई कानि नहीं

अन निर्रो नरमालावाद ही नहीं चर्चा है। यहाँ भी उसकी चर्चा कई बार उठी। मैं भी मालाया रहा कि वे लोग पड़े कानिकारी हैं, और उनके क्लर बहूत ही तेजस्वी लोग हैं। कानिकारी आदि विरुधितानियों के इतने-कतान फण्ट एम० ए० पाव रिगे विचारों हैं, स्वयं से कुछ पी० एम० बी० भी पाव रिगे हुए विचारों हैं। लेकिन यह जो नरमालावादियों का दम था, उसमें बड़ा भारी परिवर्तन हो चुका है। माओ का नाम लेते हैं, माओ हत्याकाण्ड है ऐसा कहते हैं, लेकिन कोई माओवाद नहीं। कानिगण हत्या को सामाजिक कानि का आठर तक निररी ने

हैं। हमारे बाब कोई पीढ़ी जायेगी, वह हमसे योग्य होगी, करेगी। हम में से निराले लोग होंगे जो इसके योग्य होंगे, सबकी बात में नहीं वह रहा है, लेकिन बर्धनाह हम आत्म-मग्न हो करें! मैं जानता हूँ कि भ्रान्त की जमीन कितने गलत रूप से उन लोगों में बँटी गयी है, जिनके पास पहले से जमीन थी। और बँटनेवाले ने हमारा किया। यह हुआ होता कि एक गाँव में कितना गये, भाग गये, हम गये, वहाँ जितनी जमीन मिली, वही पर बँटवारा उत्तरा होता, भ्रामतवा द्वारा होता, और लाखों एकड़ बँटवारे का, सच्चा का मोह छोड़कर हम भूमिवासी से बहने कि आज जमीन से रहे हैं वो अपने हाथों से भूमि का पट्टा लिखकर अपने गाँव के भूमिहीनों को बीजिए, अपने दस्तखत से बीजिए, सरकारी पट्टा बाद में उनकी मिल जायगा, जो आज हम भ्रामतवा में कराते हैं, तो यह सच नहीं होगा।

उसी तरह से पहले जो भ्रामतवा था, इस कृषि-क्रान्ति का, इस भू-क्रान्ति का वह पूर्ण स्वरूप था। भूमि का विसर्जन ही नहीं था, बल्कि गाँवों में जमीन का बँटवारा था। समता की स्थापना थी। गणित की सफल नहीं, बल्कि जिसके परिवार में कितने व्यक्ति है, वितनी जितनी आवश्यकता है, उन आवश्यकताओं की देखभाल के, अनुपात गिनत करके, कि बपस्कों को दलना, नाबालिगों को दलना, इस हिसाब से बँटवारे की बातें थी। गाड़ी धीरे-धीरे चल रही थी। बाबा की नजरों में, और हम सबकी नजरों में स्थापना का रूप था, विराट रूप, कि सामाजिक क्रान्ति होगी नहीं, जब तक उसमें स्थापना नहीं जायेगी। एक कदम हम पीछे भी हटा लें, भ्रामतवा को सुनब-भ्रामतवा भी कर लें, जमीन का पत्ते ही बराबर बँटवारा न हो, बीगबे हिस्से का ही दाव हो जाय, स्वामित्व का विसर्जन ही जाय, सरकारी खाते में जमीन प्राप्तवस्था के नाम पड़ जाय, लेकिन जमीन उसके बन्ने में रहे, बीगबे हिस्सा से से, बँटवारा का कुछ हिस्सा से से; यह गुण-

भता पैदा हुई, इस ध्यान से कि आन्दोलन व्यापक होगा। छोटा भी बन्द हो और लाखों-करोड़ों लोग नहीं कल्प लडाएँ, सभी समाज जागे बरहा है, इसमें कोई सन्देह नहीं।

लेकिन जब पुष्टि का काव आया, तब हमारी परीक्षा हुई। राजगीर में जब विहार दाल की घोषणा हुई, जब कि १२ प्रखण्ड २५७ प्रखण्डों में से बच गये थे, इनमें प्रखण्डदाल नहीं हुआ था, उन समय बाबा ने कहा, कि ३ या ४ बरस में यह सुझान चला तो विहारदाल हुआ, अब 'अति तुफान' करो। बाबा ने कहा कि सन् '७२ तक तुम्हारा यहाँ कार्य पूरा नहीं हुआ और राजनीति पर तुम्हारा 'दम्पवट' नहीं पड़ा, तो इतिहास में तुम्हारी कोई हस्ती नहीं रहेगी। अति सुझान की बात बड़ी भी लड़ोने। लेकिन आज देखिये कि इतना काम हो पाया है। किसी शंभ में दो गाँवों में भ्रामतवाएँ बन पायी हैं, किसी में बट, नियम स्थापना आयी है?

श्रुतभव भिन्न आया

सुरी घाट पड़ता है कि आन्दोलन में सम्मिलन हुआ था आरंभिय गोडुतभाई के नेतृत्व में, तो वहाँ गैने कहा था कि 'जब बाँधी भाड़ी है, तो उसमें चल भी लड़ती है, और धूसी हुई सरणी भी लड़ती है, लेकिन हवा तो है! पूजन में मुख्य तो हवा ही है। जब बाढ़ भाड़ी है तो उनमें मिट्टी तिनारे की गिली है, पैर भी गिले हैं, फिर भी तो बाढ़ पानी का ही रहता है। गाड़ी की भी क्रान्ति में भी तो डिगारें हुई, उन जमाने में भी तो कुछ लोगों ने वेईमरिजों की, माफिना जैलों में जाकरके पायी, तो क्रान्ति में ऐसा होता है।' हमारा यह स्वावल या कि नये लीडरी काम लड़ी हो रहा है, दस लीडरी काम गजत हो रहा है। लेकिन अनुभव दूसरा माना। तो मुझे आज सजता है कि सुनब-भ्रामतवा की तरफ हमने अपना कदम मोड़ा था, वह कानद गलत किया था।

आज जितने गाँव पुष्ट हुए हैं, उनमें

क्रान्ति बारीक रह गयी है। जितनी जमीन बीगबे हिस्से में बँटी पाएँ, उतनी भी नहीं बँट पायी है। जितने पुष्ट गाँवों की आज संख्या है मुन अपने देश में, अगर गमरोठ गाँव के भ्रामतवा से आज तक एक सच लगे होवे पूर्ण भ्रामतवा के नाम में, जो पूर्ण क्रान्ति थी, तो आज एक पुष्ट हुए गाँवों से कम भ्रामतवा नहीं हुए होते, बरदा ही हुए होते और उनमें सम्पूर्ण क्रान्ति हुई होती। लेकिन अब कदम मोड़ तो जाने गयी हैं। अब जो कदम उसी तरफ बढ़ाना है। आत्मनिरीक्षण हुआ है। बाबा ने आपरो कुछ बताया भी है। कहा भी है कि पनासज से न डरो। पन बिसबा सेते हो, इसरा ध्यान करो। जगता, जो पीड़ित है, दलित है, प्रताड़ित है, उधारी न सेते हो। बर्ण-सर्पण से बचो परदाते हो। उज्जोने कहा कि छोटे किसानों को, मजदूरों को एक करने की कोशिस करो, उनकी सम्पूर्ण क्षति होगी, तो अतिक्रमण पड़ेगा उन बड़े भूमिमांसिनों पर, जिनकी सजता बढ़त होगी है।

सत्याग्रह के लिए प्रयाप्त मार्ग

सम्बुन्धित है, जिन्होंने बई बाद छोटे किसानों और गरीब मजदूरों को मिलाने की कोशिस की, लेकिन लच्छनज उनको प्राप्त नहीं हुई। कुछ अजीब स्वामित्व का अगर होता है। छोटा किसान भी अपने को बड़े किसानों का सजातीय मानता है। और एक ऐसी मतोभूतिया बँटवारा छोटे किसानों को बड़ी बाबाएँ से आनी तरफ कर लेने है। बाबाएँ तब जाने बरियार मार्ग से बिके के मार्ग से श्रेय के मार्ग से, बड़ना पैदा न करने हुए वह सजित पैदा कर लें। अगर बँटवारे जिन बाबा हैं, गाँव के १०-१२ प्रतिशत लोग, जो छोटे किसान और मजदूर हैं, जो १०-१२ प्रतिशत लोग बनत नहीं रह सकते हैं। उनमें से लिए जो बना बनान, एक प्रयाप्त मार्ग मिलेगा लड़ने से।

मोतापः २०-१०-११

साम्बो छलांग के लिए सघन प्रयोग

—मनमोहन चौधरी

इस अभियोग में औरदार मयन पना, यह देखकर मुग्ध हो रही है। आन्दोलन २१ वर्षों का हुआ, यह मयन परिवर्तन का प्रमाण है। निम्न-निम्न विचार व्यक्त हुए। विचार की परिवर्तन बनाने की रिखा में यह अन्वया सकेत है। हमें इन-आन्दोलन कलत्र है। इतिवृत्त यहाँ बिजने है उनसे ही नहीं, बल्कि सामो लोगो के विचार-भोग प्रमाहित होने चाहिए। इतरा आरम्भ महा हुआ, प्रयोगे आनर का अनुभव होता है।

उपरोक्त-मन्त्री के शब्द नये नहीं थे। युवायन शब्दों में उन्होंने अपने हृदय की बात मनके मयन रख दी। शान शोरी चुनो, लेकिन इसी आवश्यकता है। मलभार में नही सम्पन्नर छात्र गये। प्राणि या आन्दोलन में जो दोग होने हे छिपे नही रह सकते। कोई नेत्रा एष्य रूप से अपने छपे प्रकट करता है, छी एप्ये शासन बनूनी है। तदनुसार जे० पी० पी बायो से काम ही होगा।

पीलेन भाई और बाबा के विचार सामने आये। यह अन्वया हुआ। ह्यारी प्रति और दिशा की जिनकी अधिक शरार्द हो सकेगी, उजनी ही हमारी तावन बनूगी। समाज में दो वर्ग हैं : (1) बीडिन वर्ग, (२) बीडर का उराम बननेवाला वर्ग। इतरा वर्ग जिनके कारण पीडा फैलती है, उसमें दयार परिवर्तन हूँगा है, छी बीडरों पर उनका अघर अराम पड़ना है। जिनके हृदय से दयान बाग होगा है, वे दान ही सनसहार उलत कामों को छोड़ दें, छी यह इतिवृत्ती परिवर्तन होगा। पीलेन पाई की बायो में यह छल निहित है।

बाबा ने अन्वयो सरवृ से सम्पन्नता कि अदरिग नमात्र में विपर्यय है, दो वर्ग हैं। अघर कोई नेत्रा पना दयापेना तो श्राव छत्र छपे सम्पन्नता, यह ती उीर है

लेकिन हममें नेत्रा भी नही अमिअम होगा कि नही? शोरी की सराराष्ट्र में यह छल बा। शोरी की सराराष्ट्र में छपण है और 'गिजमोचमेव' (पुर्तबान) भी है। शोरी के सरारर दुनिया मट में श्राष्ट्र ही जिनो ने युवर्ण विषय होगा। वर्ण-छपण में शिक्षा या टैप ही हो, यह सावगण नहीं है। लोकशाही में प्रविचार या विचार करने के तरीके को जिनोना ने शोरी बनन दिया।

पाँव के तोग शोरी हन छत्र दने हुए हैं। उनको सम्मान की श्राव है। मलशोप औरर बना रहे, एतिवृत्त छी उरटे जमिन, उरंगम आदि देना है। शीमेन भाई के विचार बाबा के विचारों के पूरक है। प्रविचलन पढ़न कर, जैसे ही प्रविचलन-शरीर योगों की ओर से भी सम्पन्नर ही, यह आवश्यक है। जननी मारित्री नर, जो कुछ भी हो, जगमें से वे तथाग कटे और अलना हिंसा याद, यह जरूरी है। प्रामगता को छक्ति सँके विद्या बाग, दयकी वर्ण बन रही है। जिहास, उरिला ना अनुभव वताता है कि बड़े पाँव के बडे आरम्भी आनर शोच बनाये रखना चाहते हैं। पाँव के अर्थनय पर अलना बनना जमाये रखना चाहते हैं। प्रामगता में भी नडे सांगो कट ही कोमग्याना रहेगा, ऐंसा गरीबो को लगना है। आन्दोलन का यह मारिभक विन्दु है। इत्ये लिए प्रवि-वात्मक कार्य करने होंगे। परस्पर का छलर्न करके जगता हन कोमता होगा। इत्ये लिए प्रयोग करने होंगे।

वैतिक दयान या उपदेश से प्रामगता की एकता टिनावी नहीं या छपनी। अल्यारद की प्रक्रिया द्वारा दने हुए श्रावणों को प्रकट करना होगा। प्रामगता को सरारर का भाग कराना होगा। यह मर्म-दयल की सगरदा है। उषयो ह्यप में लेने से वापसमा छक्ति सकेगी।



मनमोहन चौधरी

जिनो में कम और जिनो में अधिक, मेजिन पराक्रम की वृत्ति हर पाँव में है। उनजिये बडे बडे परिवर्तन हो गारं है। यह शक्ति आन्दोलन का तन्त्रयी बनानेवी। नरनुभव और सिद्धा अभावान के प्रति आगमिण हुए है। जननी तात्पि की योचना बनानी चाहिए। आन्दोलन की मारिभक दृष्टि का दर्शन जनता कराना चाहिए। जगलमर में जो उषन-युषन हो रही है, जगता एन हिंसा अपना आन्दोल है। दुनिया का सुदर्न समझाने हे यह दृष्टि विकसित होगी। और तदनुसार एष आन्दोलन की ओर आह्वार होंगे।

सहयता में द्विगुम्पान की तावत लगे, ऐंसा बाबा ने कहा। ४०० लोगों में भी यह बाग बढी। वेगन सहरवा नही, अण्य प्राणों में भी शोच बनने चाहिए। देम के १५-२० लोगों में प्रयोगशाखा के मय में प्रयोग बनने चाहिए। विविध अनुभवों के आधार पर ही काम को स्यासक बना सकेंगे। बड़ा बड़ा दूषान पड़ना बनने की कोटा दृष्टि छत्र करने का बाग बनना चाहिए। पारम्परिक राति की छोड़कर प्रयोगों के द्वारा श्रावे का मार्ग सोजेंगे, जो बहुत सन्वी छलांग करने की तावत भी उसीसे प्राप्त होगी।

मोवाल, २०-१०-३१

उपयुक्त समय पर हमें रोशनी मिली है

भोपाल-अधिवेशन में सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री जगन्नाथन् के समारोपीय उद्घार

अभी सहरसा में मैं गया था। वहाँ धीरेनभाई की देखभाल एक नया दर्शन हुआ। धीरेनभाई ने पूछते ही रहते वा एकल्प दिया है। उन्हें देखकर महापुरुष का जमाना वाद आया। भीष्म की शरणागत याद आयी। हमारे आलोचन के लिए भीष्म की शरणागत धीरेनभाई यहन कर रहे हैं।

उनकी पुकार बल लगी। पता नहीं कितने लोग उसको सुने। बहुत बम लोन शोक-सन्ध्या की सूत्रिया में लगे हैं। धीरेन भाई के 'करो या मरो' के आह्वान पर हमें इस भूमिका में लगने की तैयार होना है। सहरसा में कुछ लोग दंडे हैं। लेकिन हमें जितने सागर के साथ लगना चाहिए, उतने साहस के साथ हम नहीं लगे हैं। हम ही गेड हैं, इसलिए आलोचन की गति में दमाल पड़ती है। मैं नम्रनायुर्विक यह निवेदन करना चाहता हूँ कि धीरेनभाई की पुकार हम सुनें। चाहे मुझही, चाहे सहरसा, चाहे कोई शोक लेकर हम साहस्य और सत्यपुर्वक बँठें। यह मेरी विनम्र अपील है।

सहरसा को राष्ट्रीय मोर्चा गमना चाहिए। सर्व सेवा संघ का, जिनका वा विचार है कि जितने लोग सहरसा में जा सकते हैं जायें। यह हमारा बतौर्य है। सहरसा को सत्य बढाना हमारा प्रथम बतौर्य बन गया है।

हम अधिवेशन में दादा और धीरेनभा ने स्पष्ट रास्ता दिखाया। दोनों की बातों में कोई विरोध नहीं है। दोनों परस्पर पूरक हैं। अब एक आलोचन में जो कमिषर् नहीं है, उनकी ओर उधेने हमारा ध्यान खीना है। मेरा आत्म-विश्वास लुप्टे बना है।

हम भूमिहीन के पास पहुँचे नहीं हैं। प्रामत्तमा सजिय नहीं बनती है। प्रामत्तमा क्यों सजिय नहीं बनती? दादा अटनी

कारण दादा ने बताया है। कुछ लोगों को महसूस हुआ कि २० सालों में इतना अच्छा दादा का भाषण नहीं सुना। मुझे ऐसा लगता है कि उपयुक्त समय पर भगवान का यह निर्देश मिला है। जहाँ हम खटके हुए थे, उस जगह हमें रोशनी मिली है। मेरी तो बाँधों में आनन्दानु खनक पड़े। ऐसा लग कि जतना के दिव में जो उत्पन्न भावबलता है उसको हमारे सामने दादा ने पेश कर दिया है। यह उन्हें कैसे मिला? दादा प्रत्यक्ष काम में नहीं लगे फिर भी? तो मुझे स्मरण हुआ कि हृष्य महाशयल में सड़ने नहीं के इसलिए शोक वन पर सही मार्गदर्शन कर गये।

धीरेनभा और दादा की बातें परस्पर विरोधी नहीं हैं और दोनों वा अलग-अलग प्रयोग नहीं होना चाहिए। दोनों एक साथ होना चाहिए। दोनों तरह के 'अजीब' से एक क्षेत्र में, एक ही जगह, एक साथ काम होना चाहिए। प्रामत्तमा सजिय हो चके इसके विवे यह जरूरी है।

हम क्षेत्र में गवके पास जायेंगे। भूदान के तबव हम भूमिहीनों के पास भी बहुत गये। वह धिक्किया एवं छोड़ना नहीं है। प्रामदान में यह शामिल है। लेकिन प्रामदान में उस पर जोर कम हुआ था, इसलिए बनि धीमी पडी। दादा का शोक समर्थ पर गवने निना। हमें अब भूमिहीनों के पास भी जाना है, उनका पता लना है। तमिसवान् में अपना प्रयोग हुआ। अपना वो परदापारु हूँ। सदा-अह हुए। इसके प्रभाव में दिन नहीं बढता, लेकिन तो भी 'सर्द बनान' वा ही सही, शरशाह हुआ और सजिय हुआ। यकीकि सोपों की जमीन मिली। और जमीनवालों ने एक वैदिक प्रभाव से आरंभ जमीन दी।

यहूँ हमें हर भा कि चीजे के बडे

हूए लोको को जगामे के हिना उधेरेकी। लेकिन दादा ने निर्देश कर दिया कि हम उसके बडे नहीं। धीरेनभा ने कहा कि बरो मत, लेकिन हिना पैदा नहीं करो। मुझे ऐसा लगता है कि पहले से ही जो इह है उसे निवारने वा यह काम हूँगा। उवे विचारि के लिए बडे हुए लोको को जगाम करना जरूरी है, ऐसा मुझे लगता है।

सुलभ प्रामदान

३० पी० ने कुछ पता प्रारंभ की। मेरे मन में भी ऐसा ही था। दादा से कहा कि दूध में सागने पानी डाल दिया। यही भावना मेरे मन में थी। लेकिन मैं देखता हूँ अतुभव थे, कि भूदान से प्रामदान अलग था, उसके बाद सुलभ प्रामदान था। वही ठीक है। क्योंकि उसके मार्गदर्शक प्रामदान में जरा भी अधिक्किये-अधिक्किये शामिल करने के लिए, आलोचन प्रारंभ करने के लिए ऐसा हृष्ये किया। जतना के आलोचन के बिना हम कुछ भी बताने नहीं कर सकते। इसलिए हम भर में प्रामदान पैकना चाहिए। बम जमीन दादा, भूमिहीनों और कुछ बडे लोगों वा भी धमकते हमको विन जासना। पर स्थिति देख कर मैं अपनी चाहिए उपमें ते ही प्रामत्तमा बने, यह जायन होनी चाहिए। वह प्राणिक को भूमिहीनी इराई है। वह शिष्यपर बतौर्य है। जिनका ने यह 'माशर को' हूँ मैं ही है, ऐसा मुझे लगता है। प्रामत्तमा के दर्शन के लिए हमें शैतार हुआ है। शोक को तैयार बनना है। दुनिया को दादा निरं और आध्यात्मिक प्राणिक वा विचार बडे तक नहीं मिला है।

हमें प्राणिक, मुक्ति एवं साथ बनने रहना चाहिए। हमको जगाम की गलत विचारों को ही हूँ बाव बर माने। हम एक सत्यपुर्वक, सत्यपुर्वक इस नाम में लग जायें, पर मेरा निवेदन है।

(भोपाल अधिवेशन के सफादी कार्यक्रम) ३-१०-७३

प्रदेशिक पत्र

उत्तर प्रदेश सर्वोच्च मण्डल की कार्यकारिणी समिति की बैठक

उत्तर प्रदेश सर्वोच्च मण्डल की कार्यकारिणी समिति की बैठक को दिन (५-६ अप्रैल के) इलाहाबाद में मण्डल के अध्यक्ष स्वामी हज्जामदारजी की अध्यक्षता में हुई। इसमें प्रदेश के विभिन्न भागों के मजदूर लोग प्रमुख कार्यकर्ता बने थे। उनके विचार व मोर्चा की व्यवस्था स्थानीय स्तर हस्तगत करना है, जो, बिचके लिए सर्वोच्च समिति नामित की जायें।

कार्यकारिणी समिति में जिन विचारों पर चर्चा हुई उनमें से मुख्य वे थे—
 प्राथमिक शिक्षा को गति देना, गाँवों और मठों में प्राथमिक सर्वोच्च मण्डल और सोशलिस्ट क्लब, गाँवों में और एएन-सोशलिस्ट के कार्य की बढ़ावा देना, सर्वोच्च-मार्गदर्शन का प्रचार करना और नगरिकों के लिए प्रयत्न करना।

सभी एक राय रही कि समाजवाद बुद्धि का जो धार चम्पारन के दिने में शुरू हुआ है, उसे एक-एक प्रणव लेकर पूरा किया जाय। प्रदेश के ३२ जिलों में सर्वोच्च मण्डल स्थापन कर देते हैं, जारी २२ जिलों में भी उनका संघन किया जाय।

पेशी सुनिश्चय, शिक्षा कक्षाओं और एएन-सोशलिस्ट के कार्य-विभाग, उद्योग-सम्मिलित और आचार्य-सम्मिलितों की प्रवृत्तियों की जांच-पड़ताल, और जहाँ के काम की कमीला शुरू की। प्रदेश में अल्प अल्प दलितों और गिरिज करती का निरन्तर हुआ अर्थ-सम्मिलितों का एक ही मण्डल स्थापन हो सके।

उत्तर प्रदेश सर्वोच्च मण्डल की कार्यकारिणी समिति के सदस्यों ने प्रदेश मण्डल की नगरिकों समिति नीति में निर्णय पर अनुसूचित मजदूरों के उत्साह-धाम के अतिरिक्त सर्वोच्च मण्डल की सुन्दर

मान बढ़ाना है बजाय कि बहुतायत दोषों में अगर मान की इतनी फिर से जाल की जायेंगी, तो बड़ा क्लेश होगा। इसके बहाँ की जगह उसे सट्टन मूठी कर पायेंगी और विशेष करेगी। बर्तमान ने सर्वोच्चमिति से एक प्रस्ताव पास किया जिसमें प्रदेश सरकार ने आज की हि नगरिकों की सम्पत्ती तथा कानून विद्यालय तथा नैतिक-सम्मिलितों पर पाठ्यक्रम, ताकि कार्य प्रदेश में नगरिकों लागू हो सके, विद्येय-कार्यकर्ता की शीर्ष स्तरों में—प्रधान, नगरिकों मण्डल, प्रयोगकर्ता और उत्तर-कार्य तथा टिड्डरी एडवाइज में।

अपने सर्वोच्च सर्वोच्च समिति के

लिए, जो आगामी जगहरी में होगा, जो लोग प्रकाश को गीत द्वारा दिया गया मण्डलवाद जिनके का निरन्तर स्वोच्चमिति का मण्ड।

—सुनिश्चय

सुशिक्षितों का धर्म

इन्फाइल भाई तगोरी

पृष्ठ ५८
 मूल्य २-०५ पैसे
 इसी म धर्म के बारे में अन्य समिति-मन्त्री जगह की सुन्दर व्यवस्था की बुद्धि से वह सुन्दर बनी हो जगहों की है। इसके हम परस्पर निरन्तर धारित है।

सर्वोच्च मण्डल प्रकाशन (अध्याय, वाराणसी-१)

देश की रक्षा के लिए

सीमाओं पर सैनिक तैयार खड़े हैं

हम सबको भी सावधान रहना है

- आन्तरिक एकता की मजबूत क्रांति
- हर क्षेत्र में उत्पादन बढ़ाकर
- कीमतों का बढ़ना रोक कर
- अफ़वाहों फैलाने वालों से सावधान रहकर

तथा

- नागरिक सुरक्षा के विधियों का पालन करके

हम अपने जवानों के हाथ

और भी मजबूत करेंगे।

सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा

प्रसारित विज्ञापन संख्या-५

शरावणन्दी के लिए श्री सुन्दर लाल बहुगुणा का अनिश्चित काल तक उपवास

गांधी : जैसा देखा-समझा विनोबा ने

पृष्ठ : २०० मुख्य अग्रिम ३-०० सत्रिम ५-००

बापू के विषय में पृथक् विनोबा की वाली में की कुछ प्रबल हुआ है यह ध्यानपूर्वक भी है, राष्ट्र की नीति के लिए विशा-सर्जन भी है और गांधीजी की समय दृष्टि से सहायने के लिए प्रेरक आधार भी है।

इस दृष्टि के अनुसरण और एतन्-पाठन से भाव की लहर भीड़ी की, जिससे गांधीजी का दर्शन नहीं किया है, फलस्वरूप ही जीवन-अनायास प्रवास मिलेगा।

सर्व सेवा संघ प्रकाशन राजपाट, बारापली-१

विद्यते वेद वर्ग से प्राप्त मन्त्रविषय की घोषणे के विरोध में दमोनी जिले के दृष्टाताय गोपबन्धन में एक विशाल प्रदर्शन हुआ, जिसमें बुर-दूर के गर्वों से विदल चलाकर आनेवाले अराध्य पुरुष-महिमाओं ने भांग की उत्तराखण्ड में पूर्ण शरावणन्दी रहे। उत्तर प्रदेश सरकार प्रसन्न शोचन्यक संतोष्य करे। जलता की शोचन्यक विनोबा के लिए स्थानीय जन-समूह का मन्त्रा भाव नहीं के उद्योगों की मिले तबों स्वतन्त्रता के २५ वर्षों के बाद भी उपेक्षित हरिजनों के प्रति समाज ठीक न्याय करे।

पूर्ण मन्त्रावन्दी की भांग के अतिरिक्त रिडर-जिन्दर और नसीमी औपचारिकों की विक्री पर 'ड्रग एक्ट' में समोक्षित करके पावन्दी मगाने पर भी बल दिया गया।

X X X

'हिन्दुस्तान' दैनिक से प्राप्त समाचार के अनुसार उत्तराखण्ड के प्रमुख सर्वोच्च सेवक श्री सुन्दरलाल बहुगुणा ने २ नवम्बर से उत्तराखण्ड में पूर्ण शरावणन्दी के लिए अनिश्चित काल के लिए सरकारी देशी शराव की दुकान के सामने उपवास प्रारंभ कर दिया है।

विहरी स्थित दिव्य जीवन संघ के अध्यक्ष स्वामी विद्यावन्धनी ने मन्त्रविषय आन्दोलन का श्रीगणेश करते हुए कहा कि, 'आत्मा की शक्ति का सामना कोई भौतिक शक्ति वाली शक्ति नहीं कर सकती। हमारी इस संपन्नित शक्ति से महाम्बा भी साध्य हो जायेंगी। उत्तराखण्ड की जनता के नाम प्रसारित एक पत्रोत्तर में स्वामीजी ने कहा है कि 'भारत की प्रोत्साहित देना जन्मन अनाराध है, यह वास्तविकता की प्रोत्साहित करने जैसा ही है।'

पुत्रों की शान्त में रहना होने के पहले उपस्थित इस विमान जनसमुदाय की स्वामी विद्यावन्धनी के अलावा सुन्दरलाल बहुगुणा, उत्तराखण्ड सर्वोच्च पञ्चम के सभी श्री बंधीप्रसाद भट्ट, विद्यायक श्री पद्मगोपी बहो आदि ने सम्बोधित किया।

उमा के बाद डोल, नगाड़े, माल, डमरू आदि बजाते हुए यह काल विहरी आया। प्रदर्शनकारियों ने जिलाधिकारी की एक शान्त दिया जिसमें उत्तराखण्ड में

पाकिस्तानी दूतावासों के सामने संसार भर में उपवास

'वॉररकन ओमेगा' २२ नवम्बर की शहर के सभी बसों वेगों की सभ्यताओं में पाकिस्तानी दूतावास के सामने दैनिक के उपवास का कार्यक्रम बना रहा है।

सामारण नागरिकों द्वारा पाकिस्तानी दूतावासों के सामने विदे जायेंगी के उपवास दस दिन तक चलेंगे। उपवास करनेवाला प्रत्येक व्यक्ति दम-लेन-म २५ पण्टे तक उपवास पर बैठेगा।

उपवास करनेवालों की चार श्रेणियों हैं—(१) पूर्वी बंगाल से पंचम पाकिस्तान की शासन वेगों हवाई जामें, (२) रेल मुज्जिबुद्दहमान की रिहा बिना जाय, (३) पूर्व बंगाल के निर्जिवित प्रतिनिधियों की छाटा होपने और सब समझा की सुनसाने का खबर दिना जाय, और (४) सभी सरकारों पाकिस्तान की दैनिक सरकार की दायित्व रात्र-नीतिक और दैनिक मदद देना बन्द करे। (समेत)

संशोधन मन्त्रालय ८ नवम्बर '७१ पृष्ठ ६८ की १५ भी सारत एत प्रकाश पड़े, सर्वसम्मति के विचार की यह एक सभ्य प्रक्रिया मुद हुई है।

इस अंक में

गर्मपात बाबूत पुरुष प्रवाल समाज की एक और उपाय ? — १०

एत चार की क्या ? — सम्प्रदायिक ११

अद्विक शक्ति का सदर्भ : हिता का 'मय' और वर्ग संघर्ष का 'हीना' — शोभा प्रमोदिया ११

आन्दोलन की प्रगति छोपी क्यों ? — जयप्रकाश माधव ११

गांधी दर्शन के लिए समय प्रयोग — मधुसूदन चौधरी १०१

उपभुक्त समय पर हम रोतनी किनी — एम० नवनाथ १०२

अन्वय स्तम्भ

साहित्य के उपाय

वारिक मुद्रक : १० ह० (समेत काल : १२ ह०, एक प्रति १२ पैसे), (सितम्बर में २४ ह०; या ३० तिथि का ४ अक्षर। एक अंक का मुख्य २० पैसे। श्रीगणेश सङ्घ द्वारा सर्व सेवा संघ के विदे प्रकाशित एवं मनेहूर प्रेस, बारापली में मुद्रित

हिंसा और अहिंसावाद

दिनेश चिन्मो वर्धा में कुछ तरुण-वाचिन् संविदों पर गारक मिलन आयोजित हुआ था। यदि एक दूसरे को समझने और समझाने के लिए कोई मिलन हो तो यह कर्ष्य जा नहीं सकता, इसलिए वह नाहन-मिलन भी नाहक नहीं गया, अनेक उपयोगी विचार्य निकले। पर मैं ध्यान हम वान की ओर सीधना चाहता हूँ कि हिंसा और अहिंसा के मवाल पर मतेक्य नहीं हो गता साधिवो वा।

कुछ कविचो ने हिंसा को दर किनार नहीं किया, एमके घोले यह दृष्टा नहीं हो गवती कि हिंसा पुनःप्रतिष्ठित हो वान यह शरा होमे कि अहिंसा वही 'पाद' न बन जाय। यह वान विगडुन सही है कि अहिंसा का विचार मान्य करनेवालो को दस वा के लिए सतत जाग्रक रहना होमा कि अहिंसा वा वाद अस्तित्व में न आवे। वाद वनते ही अहिंसा पलायनवाद में परिणत हो जावगी वा हिंसा वा हो एक रूप है। हिंसा और अहिंसावाद दोनों की जड़ पलायनवाद में है। अतः साधिवो को भावना प्रगावीय है, अवैतन है। पर सवाल यह सडा होमा है कि अहिंसा का नाम मही वने एमके लिए हिंसा के प्रयोग करने की आवश्यकता है क्या? मैं समझता हूँ ऐसी कोई आवश्यकता नहीं है वरिक्त आवश्यकता उस वाद की है कि हम अहिंसा के प्रयोग करें। किसी विचार को वाद नहीं बनने दिया जान इसके त्रिवे यही आवश्यक है कि उन विचार का सतत विनास किया जाय और विचार के विनास के लिए विचार के प्रयोग आवश्यक है और विनास प्रयोग आवश्यक है।

गांधी के पर्वत जीवन के सामाजिक आधामो में भी अहिंसा प्रयुज हो, एवना कोई भी उचितनीय प्रयास नहीं हुआ था। वरना जब तक के दृष्टाचो वर्धा का दृष्टिहारा वहता है कि सामाजिक सतर पर हमने

हिंसा और विकें हिंसा के प्रयोग त्रिवे है। कुछ अथवाद हो सकते है। परिणाम हमारे सामने है। हिंसा के गत्य और शासन दोनों अत्यन्त विवर्धित हो चुके हैं। यह वान अथवा है कि आज हिंसा का दृष्टिहारा वनतिन है और भविष्य सर वृत्ता है। यह हिंसा के वनितसित रवकष का प्रमाण नहीं है वरन उसमें निहित प्रवल और स्पष्ट हो चुके अन्तर्विरोधो वा परिणाम है। लेकिन एतने विचार के वाद भी वाज्य नहीं भी हिंसा का वाद नहीं सडा हो सता है। दृष्टा एक मान्य कारण है कि हिंसा के प्रयोग होते रहे हैं। हिंसा के प्रयोगो के कारण हिसक वृत्ति निमित्त हो गई, है लेकिन हिंसा-वाद निमित्त नहीं हो सता है। अतः यदि अहिंसा के भी सामाजिक प्रयोग हो तो निरवय हो अहिंसक वृत्ति वा निर्माण होमा परन्तु अहिंसावाद निमित्त न हो सकेगा, और यही हमारी आशा है। यदि हम अपने प्रयोगों में हिंसा के प्रयोग की वासित्य कर में तो एमके उम हर वा हिंसा वा ही विचार्य होमा। फिर हिंसा के प्रयोगो वा अहिंसा के अविच्छादन में सरद को भी अवैधा हम कैसे रख सतते है? नहीं रख सतते हैं। अतः यह तरुण-मगत नहीं लगता कि अहिंसा को वाद वनने के बजाये के लिए हम हिंसा के प्रयोग भी करें। हाँ, अहिंसा के प्रयोग में सतर्विरोधी होकी। हो सता है हिंसात्मक जीवन मूज हो और हिंसा हो जाय। लेकिन पूँक यह हमारा प्रयोग होमा अतः सतः बरकर हमारी सतर्विरोधी, मुषासूदन नरेंगी। हिंसात्मक जीवन मूजें टियानन सहीकी सीत उन आधमी। इसलिए सतर्विरोधी हिंसा के भय के हमें प्रयोग हो गही छोड़ देने चाहिए। अर्थात् अहिंसा वा विचार हो और एवना वाद नहीं की इसके लिए हमें अहिंसा के ही प्रयोग करने हगे। हमारा कोई कारण नहीं है।

अब और एक वान की ओर ध्यान सीधना चाहेंगा। किसी विद्वान का प्रयोग हम वृत्ती दृष्टाई के माय, पूरे मन और प्राण से करें तभी हम उच्च विद्वान्य वा सही मूल्यांकन कर सतते है और वैती

सतन से प्रयोग करने के लिए यह आवश्यक है कि उन विद्वान पर हमारी पूर्ण निष्ठा हो। यह वान मोहित शास्य के साधारण प्रयोगो पर भी नाए होती है तो फिर हम जो जीवन के सम्पूर्ण आधामो में अहिंसा के प्रयोग करना चाहते है यह दम निष्ठा के त्रिना सम्भव कैसे होमा? लेकिन यहाँ भी यह अर्थनामं होमा कि हम अपनी निष्ठा को कड़ि नहीं बनते हैं। इसके लिए हमें अपने प्रयोग और अपनी निष्ठा के प्रति भी हर क्षण जाग्रक रहना पड़ेगा। हमारी निष्ठा वही अर्थनामना व बन जाय, इतनी सूर्यता से वरसती रहना होमा। जन्मा द्वारा प्रयोग, सामाजिक-बला लो देगा और हम प्रयोग की वावना लो देंगे। परन्तु यह वाद भी स्पष्ट कर लेनी चाहिए कि निष्ठा के प्रति जाग्रक वा अर्थ देना नहीं है। हमें निष्ठा के प्रति सतर्विरोधी चाहिए अनास्था नहीं। निष्ठा के प्रति सतर्विरोधी उत्पन्न वैधा वागी है वो अनास्था अनास्था को जन्म देती है। प्रवोरी के त्रिवे उत्साह अनास्था है, निरान्ता निष्ठा। — सुप्रसन्न

पाठकों के नाम एक पत्र

आपको सत्यद मान्य होमा कि मैं दिनेश दो-तीन मासो से मागरी विधि और हिन्दी माध्यम से सतित भाषा वा प्रचार कर रहा हूँ। एमके लिए मैं कुछ पुस्तको भी प्रकाशित की है।

१. सतर्विरोधी-प्रवेश-नागरी विधि।
२. सतर्विरोधी-प्रवेश-अभिन् विधि।
३. सतर्विरोधी विधि वा परिषद-वाच्य।

दुबके द्वारा हिन्दी आनवसे सतित भाषा को आधामो में सतः सतते है। हिन्दी विचार परिषद मान्य सतर्विरोधी को बुद्धिवा भी प्रकाशित की है, जो जानी की पदार्थ के लिए उपरनी होगी। गदर कोई चाहे तो उक्त पुस्तकों मेंरे पाण से प्राण कर सतते है। —राजेश्वर

सतर्विरोधी विचार्य, नयी सतर्विरोधी सतर्विरोधी (महाराज)

विश्वक जमाने निकले

बगला देग के औरीय मुजक बचकला से दिनीं ठक की पदपाठा पर निकले है। तब दिवासी है। हिन्दू-मुसलमान साथ रहते हैं, साथ साथे-सीते है। साथ एक दिन है। कामादी के दीवाने, जब ये बोलेते हैं तो उनके एक-एक कदम में जैसे देग-म-ब-ब की भाव निकलती है, जमाने देग की वातावती के लिए क्रिया की क्षाम लेने की तय्यारी प्रकती है।

परमदिवी की यह दानी ३० जवानी से दिनीं पदुनिनी। वही कर्तव्यक भारत खराब से बरनी: 'हम मानना की, हृदयगार की।' जब ये पदवानी यह सोच करेते तो ये जवानी होये कि उनके साथ दग देग का हृदय है, और जवानी 'मंग' दग दग की भाव है।

वेरिग, ये पदवानी केवल दग बनने नहीं दिवते हैं। ये हृदय और दिवक का विवेक जमाने दिवते हैं। गहामुसुनि देग दिवती जिन घबानी की शिवा सुनी है, अब दण्ड दिवक का कड पहिए। दिवक का वरासा है कि अब हम समझे कि बगला दग पर प्रजत मान सहायुसुनि के पदे जा चुका है। बगला देग बार उम दौर से गुजर रहा है जिससे भारत १९५२ में गुजर था। 'विगत पद' उलका वारा है, 'बनने का करेते', उलका स-र-प। इस घोषणा के होे हू। जवानी चाहे जिानी हो, जवानी कदा नानीका हंते पाता है? अरने और भाषो में जवानी उलकी था, बोधि अश्वेज जितना भी जाविम था उलका मानव मंग नहीं था, और पावो तो महासावज था ही। अलि वारवानी के प्रि-दिगि वदिगा और मानवता के प्रकिनिधि सुबोय में कर नचां होनी? उ-उ यावने गामने जिग भी दिग जाओ जो लक हूत में पदा ब-र-ग एा दगत के सिवाय हूनी भाषा नहीं समझा। हृदय सुनि के सिवाय हृदयी भाषा नहीं समझा।

विवेक का हृदय उलका यह है कि सहायुसुनि का बोध अब भारत की बर्तमान के माहुर हो रहा है। एक करोड़ प्रपथानी, दिवनी सदा बोधे दिनीं में दो करोड़ की हो क्षती है। जवानी उलका के साथ जवने वर न लेते तो भारत का पुरातन अलमिग और उलका का क्षेत्र बन पाया, और उलके-वेधने उलक हृदय। गिजुजवानी वारा हो जायगा। जो वदिगायाहो हूनी बगला में अगलावानी की समान वर चुनी है, अमनितपेसना की गदिग अलमानी लोग की कुचल चुकी है, बगला देग के वेडन उलकी लका कामादी के दीवाने जामो सुकरी-सुबोयिनी की बोड के घडि उलक चुनी है, और जवानी एा बनेक जवकना की भारत के पदने मग चुनी है, जवे वर और बना कलक बोरी वह मगर है? आक्रमण बना लकी माना जायगा अब बनकला और दिवनी पर पहिए के कम निकले नहीं? मुसलमनुजना आक्रमण होना ही मार

विश्विग हूतो बदिन न होये। इस माट से जवानी का उपाय चाहे जो हो, वेरिन स्वना स्पष्ट है कि बगला देग का माट माक का माट बन चुका है। अलिम उपाय के सिवाय वर हूतका उपाय नहीं। जो ही नगाई बगला देग की मुगवाहिनी लते, वेरिग भारत उपायी हूर का औसिप नहीं उठा मरता। आग-रक्षा में भारत की महाभाग की बरला पड़े तो आगदामे समदा-वर उसे वह विधि बरीवार बानी पड़ेगी। हुनिग जवानी हे माट मुद नही पाएगा, वेरिन दिनीं स्वयं दल की आगहृया बनने के लिए गनी नहीं जिग जायगा। भारत के वि-धी, लगत है, 'बनो या मरो' की ही बड़ी भावनी है।

बगला देग का सफ्ट भारत का तबट है। वेरिन दिनीं बुविने से प्रमोविग होकर भाग के हूत में मुसलमान भावो ने मान रखा है कि कश्मीर का माट उला माट है। माता (मुने) के बगला देग समनेल में गरमाहो के प्रोकिर हूफो ने लुने मजो में बड़ा कि भारत क मुसलमाना त स्वयो दिव रुपी ने है कि बगला देग की विजय हो। बगला देग की विजय प्रमोविगवशक की विजय है। प्रमोविगमना में हो मुसलमानो की लु ला है। उ-दी की ग-ला-न-दा, जो र भाव और पाविस्वाक दाता के विरु अमनि पाया हो मान उलका की मारटी है। इस गीघी बाल का उगाये दलबार्ग, हिन्दू और मुसलमान दोन, वर समनेते। बगर जाउ हमार मुसलमान भावो में वह विवेक न बना कि उनका अरिदक अमनि पद बरदा और अमनिपद तथा स्वयंज बगला देग की मीठा है ही, तो इतिहास नहीं बहैगा कि उ-दीने अपने को वर अरन से उरी बना नी। उला यह समझा निविरा हो पाविरा है कि पहिया उलका की ग्या वर ग्या है, वा अर्मे वा बोर कोन के हूयो विकार वह कीई ग्या। उलामनी लका बगला त-र-वनेगा। उलमुच वह लोम उलका बी' परारलान देग वर सबते बड़ा जगु विदु होगा।

बगला देग के ज ३४ भाई पादा वर निकले ? ज मानो यह बड़ रहे है कि दिनीं देग की स्वयंज और उनी जवानी उलका की उलका में दिवना जवनी है। अरन पाविस्वाक में उ-दीउ बगानी जवनी, जिगला बरुमन है, जिग माट पुनाय रट लकी है ? वेरिन बकी पदवानीय का ध्यान, वा माट वरवत देग के नेलर का उला, उ-दी बल की और नही मार है कि जवनी की स्वयंज जवने ही नहीं है कि अदिगा के लल हाने वर चुनर हंते लने, और लवार्दे बनने-दिगदने लगे। यह पाविस्वाक भारत में बोधीग बोरी हो रहा है। हा, भारत में विवर की जो स्वयंज है उनके भी पाविस्वाक की बोयो भावनाहो ने वही की जवानी को चमित कर रखा है। हिन्दु जवानी को वास्त-विग स्वयंज लगे तो बोयो की स्वयंज पर दिवक है। यानी ने बामनराज में उलदी स्वयंज की माधकला देली थी। बगला देग का ध्यान पायी की दल बाउ की ओर गया है ? मुद के बीव की मुद के वार की बाल लोकर उलके लिए नेपा

सम्राट : राजनीति के मैदान में

पिछले दिनों सम्राटों के नाम भारत में नजर आये। जापान के सम्राट होरोहीतो अपने देश के इतिहास में पहली बार बाहर विजये और यूरोप तथा अमेरिका के घेरे पर गये। दूसरे हैं ईरान के सम्राट् आर्सेमैहर राजा साह पहलवी, जिन्होंने ईरान में साम्राज्य की स्थापना के बाद हजार साल की यात्रा में १२ अक्टूबर से १५ अक्टूबर तक आई हवास्वी वर्षगांठ मनायी। और, तीसरे हैं इथोपिया के सम्राट हेनगिस्तासी, जिन्होंने चीन का दौरा किया।

जापान के सम्राट् हीगोहीतो का मरुतन इसके आदि होना है कि यह अपने खानदान के १२४ वें सम्राट है। और जापान में जापान साम्राज्य का इतिहास २६० वर्ष पूर्व ईसा मसीह से चाला जाता है। वहीं सम्राटों को मूर्त देवता की सत्ता माना जाता है। और १९४७ तक जापान के सम्राट को देवता माना जाता था।

द्वितीय विश्वयुद्ध ने कम पुजने राज को समाप्त कर दिया, परन्तु आसन बच गया। युद्ध के बाद उद्योग में जापान का उभरना आश्चर्यजनक माना जाता है। अफ्रीका और एशिया में उसके अधिक विस्तारित औद्योगिक देश दूसरा कोई नहीं है। और जापानी बेन ने अमेरिकी छात्र की श्रमक उखाड़ कर दी है। जापान, पश्चिमी जर्मनी की तरह विद्युत आर्थिक नावाजात देश है।

जापान का कोई सम्राट कभी भी देश से बाहर नहीं गया था, परन्तु अब जब कि अमेरिका और चीन की विपत्तय हो रही है, जिसकी शुरुआत अमेरिका ने जापान की सुनता दिखे बिना की,

यद्यपि जापान अमेरिका का सहयोगी है; वो जापान की स्थिति एशिया में तबने में पड़ती जा रही है। इसलिए जापान के सम्राट को देश ने बाहर निकलना पड़ा। और, वह यूरोप और अमेरिका के घेरे पर गये। द्वितीय विश्वयुद्ध के बीच और मुख्यतः परत हारवर पर आक्रमण के कारण दोषर और अमेरिका में जापान के सम्राट के विरुद्ध एक बचा-बचा सा विरोध पाया जाता है। इस घेरे के बीच सम्राट् हीगोहीतो जटिल-जटिल भी गये, यह विरोध चिसी-न-चिसी का भी प्रकट हुआ।

अमेरिका और जापान के मतभेद बहुत गहरे हैं और उनकी पृष्ठभूमि में चीन की समस्या है, इसलिए अमेरिका की पक्ष-पक्षियों ने उनको इस घेरे को 'यूरोप में गये मिन की तांज' कहा है। सम्राट आर्सेमैहर राजा साह पहलवी के इन महारण्य को सबसे बड़ी विरोधता यह है कि इन पर १२५ कराठ टाकर चर्च किया गया, और वह यात्रा-यात्री नहीं कि अतिक्रमण की यात्र ताजो हो गयी।

ईरान के इन उद्योग के बीच छाटर मुहम्मद मुर्शिदा और छाटर फायसो का नाम एक बार भी नहीं लिया गया, परन्तु यह वास्तविकता है कि तेज वी दोस्त की एंगो-ईरानी आन्व कम्पनी के बहुत से निष्ठावत और ईरान के द्वि में एम्पनाम करने का सेह्रा इनके मिर है। उन्ही के प्रदल से तेज पर से विदेशी एकादेशरी राख हो सरी।

ईरान केवल सम्राटो या तेन के मेठो का देश नहीं, ईरान ऊनी कसोन बनाने वाले का भी देश है, जिन्होंने मुख्यतः वा अंतर्राष्ट्रीय स्तर आपन कर दिया है। यह करनी, फिलीपी, हाकिम, सीराम,

और राजो का देश भी है, जिन्होंने ईरान व भारत को ही नहीं, यूरोप को भी सम्पत्ता की रोगनी दी। ईरान उन सूफियो का भी देश है जिन्होंने मलजज की मानव से करीब लाते था काम मात्र इतिहास में सबसे पहले शुभ किया।

आज जब ईरान की सरकार अपना कई हजास्वी तातामहोला मना रही है, और समार के राजनीतिक नामों पर नये मोहरे बिदा रही है, इन सांस्कृतिक तरीके को यह उम्मादारीस भुना नहीं सकता।

ईरानी साम्राज्य की स्थापना के कई हजास्वी सातना-महोलास और साईस महान वी याद सम्राट आर्सेमैहर के मारण वी आर सके करवा है। साईस महान उखार वा पहला सम्राट है जिनने मानव को बुनियादी अधिकार दिए थे।

सम्राट हेनगिस्तासी के भी के घेरे का बहुत यह है कि चीन जाने पर आश्चर्य-मुग से उरनी मुनाताम हुई और नामों के मरने के घेरे में जो शकशक चीन रही थी, सख दुई। उरनी चीन का दौरा अर्थात के एक ऐसे सम्राट का दौरा है जो आन्वर्तिक दौर पर परिवर्तो देको वा ताजो है। हेनगिस्तासी का दौरा जापान के सम्राट हीगोहीतो से मुगो और अमेरिका के घेरे वी तरह, पल आर परिवर्तो बसो के बने हुए सम्पन्न और मने गति-गुणन वी कोर संकेन करता है। हेनगिस्तासी अर्थात वा राजनीति में बहुत महान रतेो है। आर इतरास वीर अरब देन दोषो हा उरनी गुणाम कर रहे हैं। अर्थात में पानरवी सम्राटो से भी उरना सम्पन्न रहा है, यद्यपि वे उन्हें सच की निगाह से देखती रही हैं।

→ रहना, अपने मोझा का काम है। कान्ति तो उसके बिना अचूरी ही रह जाती है।

जब भारत का विभाजन हुआ तो गांधीजी ने कहा था कि 'देश के टुकड़े तो हो गये लेकिन दिल के टुकड़े न होने पायें।' दिल के भी टुकड़े हुए, और अन्धी तरह हुए। आज दिखायी देता है

कि हमारे ये सुकर बदवानी हिन्दू-मुसलमान के, भारत कोर मयता देश के टूटे दिनों को जोड़ रहे हैं। यद्दिना की नीतिगत है कि दिन तिथी तरह टुकड़े न पायें। दूरो की तो बसाई है। ऐसे सङ्घर्ष में अर्थों कि जिन्को जकरा है, जिना की उरये बम नहीं है।

जगता और उनके सर्वसम्मत निर्धारित
 नैतिकता को विधा पूर्ण स्वयंभवा के और
 कोई विचार संकट नहीं होगा। इसके
 कम आधार पर कोई भी राजनैतिक हल
 बाधक मूल्य से ही सम्भव नहीं हो और अब
 भी निश्चिन्त नहीं है, यह साबित हो चुका
 है। इस निश्चिन्त में सब भारत सरकार
 के विदेश मंत्री सरदार स्वर्ण सिंह ने
 २९ जनवरी को नयी दिल्ली में जो बयान
 दिया, उसका स्वागत करता है। इस बयान
 में विदेश मंत्री ने इस बात से इन्कार किया
 कि भारत ईरान देश की समस्या के हल
 के लिए पाकिस्तान के अन्तर्गत किसी
 राजनैतिक हल के बारे में सोच रहा है।
 स्वतंत्र इरान देश के धर्म का सम्बन्ध
 करने के अपने निश्चय से सरकार पीछे
 नहीं हटी है।

सब की यह दृढ़ मान्यता है कि अब
 भारत सरकार के लिए अपना देश की
 स्वतंत्रता और उस देश की मानुसम्मान
 सरदार को सुरक्षित सम्पत्त में देने का कोई
 कारण नहीं है। अपना देश के स्वातंत्र्य
 संप्रदाय में जो सबसे महत्वपूर्ण मूल्य यह
 देश पहुँचा सकता है वह है अविनाश्य
 मान्यता, जो बहुत पहले ही ही जानी
 चाहिए थी। इस मान्यता के अन्तर्राष्ट्रीय
 क्षेत्र में अपना देश की समस्या के राज-
 नैतिक हल की जो व्यर्थ सूच निर्देशक नहीं
 चल रही है उसकी समाप्ति होगी, अपना
 देश के लोगों का नैतिक बल अंधा चढ़ेगा,
 उनकी सरकार को राजनैतिक प्रतिष्ठा
 मिलेगी। अपना देश की आजादी के अहस्त-
 भूत रहनेवाले दूसरे मुक्त के मान्यता
 प्राप्त करने में उस सरकार को आशाही
 होगी और अपना देश के सर्वमान्य और
 लोकप्रिय नेता जेम्स मुन्नीडरहमान की
 अविनाश्य विहाई की जगि को बल मिलेगा।

सब इस बात से अवगत है कि अपना
 देश की सरकार को मान्यता देने से परि-
 स्तान की सरकार से भारत का राजनैतिक
 सम्बन्ध टूट सकता है। लेकिन यह बात
 स्पष्ट होनी चाहिए कि इस सम्बन्धों का
 टूटना पाकिस्तान की जनता के प्रति

किसी प्रकार के वैमत्य या दुश्मनी का
 प्रतीक नहीं होगा, लेकिन अपना स्वतंत्र
 सिद्ध उस दौर विस्मयकार मूल्य हल का
 सम्बन्धकार होगा जो आज दुश्मन से
 पाकिस्तान की सरकार पर हाथों है
 और जो म बेचन अपना देश की मान्य-
 तान्ता अन्तर्गत की कुचलने की प्रतिक्रिया
 कर रहा है बल्कि स्वयं अपने देश की
 जनता की छाती पर आघातों काकर
 बैठा हुआ है।

सब की यह दृढ़ मान्यता है कि राज-
 नैतिक और सामाजिक समस्याओं का
 समाप्ति हल साक्षिक तरीकों से ही सम्भव
 है। यह बात अन्तर्गत है कि अपना
 देश के लोगों ने, और उनके नेताओं ने
 पाकिस्तान के साथ के अपने हाथों को
 वैधानिक, आधिपत्य और अन्तर्गत तारी-
 से हल करने की परमात्र कोशिश की थी।
 लेकिन दुश्मन से अपना देश के स्वातंत्र्य
 प्रेमियों को अन्तर्गत सुधी परिस्थिति का
 सामना करना पड़ा जिसमें साक्षिक प्रतिक-
 कार की अपनी सम्पत्ता की मान्यता का
 नहीं, ऐसा उठे सथा। अपना देश के
 मुक्ति सैनिक जिस बहादुरी, हिम्मत और
 अदमनीय साहस के साथ पाकिस्तान की
 सैनिक मुक्त के नहीं अन्तर्गत शक्तिशाली,
 निर्दोष और समानार चतुर्बन्धों जून और
 हिम्मत का प्रभावकार करते हैं, उनके
 लिए सब अपनी हार्दिक प्रणवा अन्त-
 करता है। सब की आदरकारी में अपना
 देश की मुक्ति साक्षिकी की अन्तर्गतों के
 अन्तर्गत रोसमों के जीवन की आवश्यक
 धर्मशी, जैसे अन्त, सदा, तथा अन्तर्गत
 की भी आदरकारी है। सब मान्य तथा
 भारत के अन्तर्गत के समस्त लोगों के मुक्ति
 साक्षिकी को हृद सम्भव मन्दर पहुँचाने की
 अन्तर्गत करता है।

सब को दृढ़ विश्वास है कि आज
 जो बातें भारत अपना देश पर अन्तर्गत रहे
 हैं वे शीघ्र ही दिन-दिन हल में और
 अन्तर्गत के मुक्ति की अन्तर्गत सब
 की अन्तर्गत करेगी। अपना देश के
 स्वातंत्र्य सदा की मन्दर में - को मान्य-

ता की पुनरा है और सदा अन्तर्गत की
 है—यदि भारत देश और अपनी जनता
 को और भी मन्दर रहने पर तो यह उन्हें
 मन्दर हीनेंगे, ऐसा सब की विश्वास है।

मृतदाता-शिक्षण

१. मीन ही देश में सब पुनरा
 होने का रहे है। तोरतन के जीवन में
 पुनरा का विशेष स्थान होता है। उस
 अन्तर्गत पर मृतदाता सागरिन्-सागर को
 प्रभावित कर सकता है। मही तोरतन
 का अर्थ है कि वह लोक प्रभाव हो तथा
 तन उल्लेखनीय और लोक के अन्तर्गत
 होगा जब। इसके लिए जनकी यह है
 कि लोकप्रियता का प्रभाव साधक हो।
 लोक जिनके अधिक प्रभाव हीने, साधक
 पाती तन उठा ही मुश्किलिय होगा।
 यह परिचय पुनरा के साक्षिक से सम्भव
 है। परन्तु अन्तर्गत यह है कि तन की
 निध प्रारंभ का नाम है और विश्व
 प्रसार के सबसे ता पुनरा में उल्लेख हो।
 है उनके शक्तिशाली अन्तर्गत ही अन्तर्गत
 है। अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत ही अन्तर्गत
 होनेवाले अन्तर्गत, सदा, सदा तथा अन्तर्गत
 अन्तर्गत अन्तर्गत की अन्तर्गत की अन्तर्गत
 सदा तथा अन्तर्गत की अन्तर्गत की अन्तर्गत
 सदा अन्तर्गत है। अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत
 म और साधक की अन्तर्गत मन्तर्गत हीने
 का रही है। यह विधा तोरतन के
 प्रेमियों के लिए अन्तर्गत का अन्तर्गत का
 मन्तर्गत है अन्तर्गत पुनरा तथा अन्तर्गत के लिए
 हृद अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत।

इस अन्तर्गत में मीन अन्तर्गत ने
 हल की अन्तर्गत की अन्तर्गत तथा अन्तर्गत
 उल्लेख तथा अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत
 सब अन्तर्गत होगा अन्तर्गत लोक अन्तर्गत
 मन्तर्गत में अन्तर्गत अन्तर्गत हीने अन्तर्गत

पन्तु अन्तर्गत यह है कि सब पुनरा
 पर अन्तर्गत के प्रभाव अन्तर्गत हृद हृद अन्तर्गत
 के अन्तर्गत अन्तर्गत मन्तर्गत में ही की अन्तर्गत
 अन्तर्गत का अन्तर्गत है अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत
 नरें। अन्तर्गत है कि पुनरा में अन्तर्गत का
 अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत होगा अन्तर्गत

अपनी कमजोरियों का स्वीकार हमारा आत्मबल बढ़ायेगा

—सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री जगन्नाथन् से एक महत्वपूर्ण चर्चा—

अबतुबर के अन्तिम दिनों में भोगल में सर्व सेवा संघ का जो अर्द्ध-वार्षिक अधिवेशन हुआ, उसमें आन्दोलन से सम्बन्धित कई प्रश्नों के उत्तर मिले। लेकिन इन उत्तरों में से कुछ प्रश्न भी पंदा हुए हैं। इन प्रश्नों में से कुछ के उत्तर यो जगन्नाथन् ने दिये हैं।

प्रश्न—श्रावणी राय में भोगल-अधिवेशन का क्या संदेश है ?

उत्तर—इस अधिवेशन में लोकनीति और ग्रामशान-व्युष्टि-कार्य पर विशेष रूप से और सविस्तार चर्चा हुई। दूधरे विषय को भी पर खास और इन्हीं पर पर था। अधिवेशन का वातावरण सन्तोषाधिक, मजबूत और स्नेहित था। और जो भी बोलना चाहते थे, उन्हें समय देने की भरपूर कोशिश की गयी। इसीलिए कि सरको अभिव्यक्ति का मौका मिले, हमने अधिवेशन चार दिवस का रखा था। मोर-सेवाको ने विचार-विनिमय में बहुत रुचि ली और चार सौ से श्रावण लोग ब्याखरी बैठक तक रहे। जयप्रकाशजी, भासा धर्म-धिकाारी और सीरेशर बा दूरे समय नहीं रहे और उन उन्हीने हर चर्चा में भाग लिया। फिर भी मोरसेवाको की रुचि बनी रही। प्रायः हर विषय पर लोग बोलते और जिस सचलाई और उत्प्रेरण से बोलते उससे हमें बड़ा सन्तोष हुआ। क्योंकि यह उनके मजबूत, प्रतिबद्धता का उदाहरण है। बिना निराशा और बट्टा के चुनकर जो चर्चा हुई और जिस भावना से लोगों ने उसमें भाग लिया—बहु भावना ही सब प्रदान जाने तो भीपाल अधिवेशन का संदेश है।

आगामी कामचुनाव में भवशरा प्रविष्टन का कार्यक्रम चलाने की आवश्यकता पर अधिवेशन में सर्वसम्मति रही। प्रो० गोरा और कुछ दूरने भादपो के विचार मिले थे पर उनकी भी बात प्रस्ताव में समाहित की गयी। हमारा विचार तो था कि इस बार व्युष्टि सेवा की ग्रामसभाएँ जनता के उन्मीलन सङ्गे करें। लेकिन लगता है कि अभी वह संभव नहीं जाया है। स्थिति की वजहों को देखते हुए ही मजबूत-विषय का कार्यक्रम चलाना तब किया गया। अब गहने में तो यह काम हल करेंगे ही, लेकिन व्युष्टि के उन लोगों में विशेष रूप से करेंगे जहाँ हमें राजनीति की जगह लोकनीति की प्रस्थापित करना है। यह व्युष्टि कार्य के अविचार्य अथ के रूप में ही जलाना जायेगा।

फिर सुवाल है सर्वोप-पोषणार्थ विचार करने का। अब हम चाहते हैं कि ग्रामसभाएँ अपने पीछे जनता के उन्मीलन-कार सङ्गे करने की स्थिति में हो, तो हमें मजबूत-विषय को यह अज्ञान बहरी है कि हम क्या चाहते हैं। पोषणार्थ विचार को का काम यो मजबूत-चौखरी को सीना गया है। धी कुमाएना ने भी पहले एक पोषणार्थ विचार किया था। लेकिन उसे अब सुपर के अनुसार बदलना होगा।

भीपाल अधिवेशन से एक और महत्व भी बात यह निकली कि ग्रामसभा को पूरे राष्ट्रीय स्तर की प्राथमिक दकई बनाया गया और उसे राष्ट्रीय जीवन में नया रोल दिया गया। जो अज्ञान हम स्थापित करना चाहते हैं उसके लिए प्राथ-



श्री जगन्नाथन्

घराओं का इतना महत्वपूर्ण होता अविचार्य है।

प्रश्न—जे० पी० ने आन्दोलन और कार्यकर्ताओं के बारे में जो बातें कही उन्हें क्या-क्या बोने के बारे में बाटार छपा। लेकिन जैतो के छोड़ें उनसे क्या आपकी राय में कार्यकर्ताओं का मनोबल बियेना और आन्दोलन की 'इमेज' बियेनेगी ?

उत्तर—जैता कि आने रह ही है जे० पी० की बातें मजबूत से नाट कर और सोझ-मोडरन अलवाको में छोड़ी गयी है। ऐसा लगता है कि छिद्र बूझने में संभवानों का अज्ञान बना क्षमा है। वे यह तो छापते हैं कि जमीन बाँटने में कुछ लोगों ने सचीनन किया और अपनी कर्मियों के कारण आन्दोलन सफल नहीं हो रहा है। लेकिन अब जे० पी० आन्दोलन और कार्यकर्ताओं की निष्ठा के बारे में कहते हैं तो वे छापते ही नहीं। अब इस वृत्ति का कोई दमन नहीं। आसिर हमारा एक आन्दोलन चल रहा है। जो एक गतिशील विषय आन्दोलन में नहीं होता ? हमको एक गतिशील को दियेते नहीं और सर्व-जनिक रूप से स्वीकार करते हैं तो इसका मतलब यह कि हममें कुछ अन्दरकी ताकत है और हम सड़के बल बनना नहीं है। आन्दोलन में सफल है तो उल्टी 'इमेज' बियेनेगी नहीं। और बहूँ तक कार्यकर्ताओं के मनोबल का अज्ञान है आने देता ही कि किस तरह वे आसिर तक रहे और

उसके जगमह में कोई कर्म नहीं आया । बल्कि मेरा मानना है कि ये प्रकृत हो कर ही गये हैं ।

प्रश्न—आरा घण्टाघाटी में भोगान में भूमिहीनों और छोटे वायुवाहको का सवटन बनाने का आह्वान बिना नासि कड़े भूमिहीनों पर नैतिक दबाव डालना जा नके, तबकि छोटेपे या ने पुन जोर दिरा कि कड़े मानिरी को समझाने-बुझाने और वर्ग धारना बुर करने से ही कानि होयो । जे० पी० ने कहा कि मुझ समझान बनाना हो मतउ या और पूरे जन्मदान पर पुनरिवाह करना चाहिए । बस आरपी समता है कि यह सचुचित बि नन के अलाव का सत्यक है और हमने प्राचीन-वन कीई एक राउ पर नहीं चन पायेगा ?

उत्तर—मैं ऐसा नहीं सोचता । मैं मानता हूँ कि दोरी ही दुष्टरोग जरी है । यारा घण्टाघाटी कीदो सभर से हमके यह रहे है कि जब लक्ष्य भूय-होने और छोटे वायुवाहको का सवटन नहीं बनाने और सीधी आह्वान कार्य-वाही का मामें प्रकृत नहीं करेगी तब तक आन्दोलन और जार नहीं चकड़ेगा । लेकिन हमकोर सारे खबर जनकी इस लयाई की अन्वेचना करते रहे । लेकिन मुझे तो का विचकुउ लगता है कि हमके बिना काम चलता नहीं ।

बाबा जब स्वयं आन्दोलन की दुखियागिरी कर रहे थे तब बाब अजय थी । बाबा अपनी याबा पर निरालन थे श्री उनही तादना का इतना खबर था कि सब सोच उनके पाल आने थे । वे किसी भूमिदान के पात्र तबि नहीं थे—भूमिदान, छोटे भूमिदाउ, भूमिहीन, वायु-रक सभो उनके पात्र आते थे । कुछ हर मर ऐसा जे० पी० के साथ भी होगा है । लेकिन जब हमारा साधारण कार्यकर्ता बड़े भूमिदान की समझाने जाना है तो यह नहीं मुझा । उनके पीछे जब भूमिहीनों और छोटे वायुवाहको का नैतिक समर्थन होगा तो भूमिदान जवही पान मुझेगा ।

किर इसके अलावा भूमिहीनों और छोटे वायुवाहको की आवाजी हवाको प्राचीन आवाजी की न० प्रतिपाउ है । हमने इन लंगो की तो वधुनिदों के लिए छंउ रिग और बड़े भूमिदो को समझाने रहे । इनका जो नतीजा हुआ है—बहु हमारे सामने है । प्राचीन आवाजी के इतने बड़े ठिठके थे छोड़ कर हम जिताउन कसि रहते हैं कि साम-न एवं मिका नहीं हनी । अब एपी प्रामयसाएँ बग सँका होया जिनके मरी, अल्पस जमादार या बड़े भूमि है । प्रामयसा के संकट होने से जरीके बरा तास-हुतन है ? प्रामयसा की संकितना से आशा-आशासाएँ तो भूमिहीनों और छोटे वायुवाहको की जुदी हुई है और हमतापो ने उनही कीई बिना नहीं री ।

लेकिन एक बात पर रमनी चाहिए कि इस दुष्टरोग के स्वीकार का मतलब यह नहीं है कि हमने दूसरे दुष्टरोग का निरन्तन कर रिता है । नहीं, ऐसा बिन-कुन नहीं है । मेरा विश्वास है कि इन दापो लगीर को एक ही जगह और एर ही समय जब हम लागू करेते तबो आन्दोलन सही गति पकड़ेगा । मैं इस बात से सहमत नहीं हूँ कि एक जगह हम भूमि-हीनों और छोटे वायुवाहको का सवटन बना कर बड़े भूमिद पर नैतिक दबाव डारें और दूसरो जगह भूमि की समझाने हवाको का लगीर जानाये । मैं यह भी नहीं मानता कि एक जगह पर हम पहले एक तरीका प्रचार्य और उसके किठन होने के बाद दूसरा । नहीं, ऐसा करने से भी काम नहीं चलेगा । अच्छा यह है कि दोरी तरीके एक साथ एक ही जगह अपनाये जायें ।

हमके ध्यान पर अकरी है कि हमारा अशोक मान अराव हो । अब तक का हमारा सारा साहित्य चक्रे-निये और बुद्धकोचो वर्ग नर माहितर रहा है । जनता के लिए हमारे पान क्या है ? हमें ऐसा साहित्य चाहिए जो कल हो, कार्यक

हो, लोहवापा में लोह को बराता हो । किर हमें जिन्से, बहागीर, नाउर आदि भी नैतर करने चाहिए । हम यह भी लोह साहसक प्रवृत्तियों में आये बिना हम लोह को कंठि 'दुपान्त' करेंगे । हम यह तो करने नहीं थोर बना ठान और प्रवृत्तियों में लगाने रहते हैं ।

प्रश्न—आरा ने कार्यकर्ताओं से आह्वान किया है कि वे सहरसा जायें और सहरसा की रोग के सामने नमूने के रूप में पेश करें । जे० पी० ने भी कुछ इसी तरह के संकेत दिये हैं । क्या आप सोचते हैं कि नमूनावाद के इतने खिलाफ हमारे के बाद आन्दोलन अब नमूने पर चलेगा ?

उत्तर—मैं नहीं सोचता कि हम सहरसा की नमूना बनाने जा रहे हैं । हम कुछ क्षणों का चुन रहे हैं और यही क्या कैरिअर कर रहे हैं सोच कुछ तो हमारे सोचसाएँ है और कुछ बड़ी की प. (सिक्किना) में चुनी है । इससे पान दाते वायुवाहको तो है नहीं कि व सपन बुधित-काम के लिए पूरे देग में विचार जायें । जैसे वायुवाहको हमें इस पार्थ के जिग चाहिए वेग बहुत है नहीं । इसलिए हम पाँदल चुनते हैं । किर हम ऐसे पाँदल में चुनते हैं नहीं चुनी है ।

मैं नहीं मानता कि जे० पी० मुझरी में इसलिए चले कि वहाँ के कोई नमूना छाडा करना चाहते हैं । वे इसलिए गये कि मुझरी में एक चुनी थी और एक चक्रे योद्धा की तरह जे० पी० ने वह चुनी ही स्वीकार की । मैं भी लखनूर में जाकर बैठता तो इसलिए नहीं कि उले नमूना बनाना चाहता हूँ बल्कि इसलिए कि वहाँ की हिया और धानक की चुनी थी है ।

किर आपकी यह भी ध्यान रखना चाहिए कि बाबा ने कहा कि हमें एक विजय से दूसरी विजय की ओर जाना चाहिए । अब वे एक विजय से दूसरी विजय की बात कर रहे हैं तो नमूने की बात जरी ही नहीं । (सर्वेभ)

कहते हैं इन दोनों बातों का जोरदार खंडन किया, विषय अनवरत नई माँगें-माँगों पर यह हुआ कि चारा बर्न-संपर्क और हिंसा को कुछ हद तक मान्यता दे रहे हैं। हमारे दिन दसरा ने स्वयं होकर यह बात बिना कि वे साथ ही बैठक में आते बात फिर से स्पष्ट करने और उपद्रुवार सोचने दिन संपत्ति की बैठक में लगभग एक घंटे तक उनका मापन हुआ, जिसमें उन्होंने अहिंसाक कान्ति के आगमो वा मार्मिक विस्लेषण किया। बात में यही—'हमारे अल्पो-सकन वा केन्द्रबिन्दु मनुष्य है। मनुष्य मनुष्य को हटा बिना भी कारण से नहीं बनेगा यह हमारा सुविचारों और अस्ति-वर्तनीय सचन है। पर हमने अपना कुशा अहिंसा को 'पंडित' मत बनाये। जमीनो को विश्व प्रकाश का धा उपन। न हरे हम खाना के मरिसे के परदेन और सोवियत मरीचो को अजर बाज के काम द्वारा मुक्ति का साधनन नहीं मिला तो भाष की कान्ति जिस काम को है। हम-संपर्क जारी जान को टाट करते हुए उन्होंने कहा कि 'मांस' की काली की बलना उद्योग के टोंक को उडर की। हृदय के टोंक में धोड़ों से मासिक और अस्तिवर सर्वहारा—दोहे बर्न ही ही नहीं। इस टोंक में छोटे मांसको की सधना ही प्यादा है। अहिंसक कान्ति में हमें विश्वासिक मानव की प्रसिद्ध प्रपम करनी है। हमें मांसिक की सहानुता जरूर चाहिए पर मांसिक मनुष्य की कान्तिविक के बचन को नहीं। मांस-विषय की प्रसिद्धा जैसे आज के मूख सीध हीने चाहिए। सदयोग हम सबका तबे तेलिन सहारा वा आशय नहीं।'

उसके बाद की बैठक में फिर धीरे-धीरे बाई कोवि। बाई कोवि से धीरे-धीरे बाई की उबीवक ठीक नहीं रहनी है और वे धाराम-कुसी पर गेते हुए कोतेत वा नरि करते हैं। सप-अस्तिवसन धं की उन्होंने इसी प्रकार अपना अशय आगम-मुसी पर गेते हुए दिया। सब के अशयत को जगना-कू ने ठीक ही धीरे-धीरे बाई के लिए

बिनोबा-कथित इस्लाम के चौदह स्त

- (१) विचार समूह बनार।
- (२) देवता नियंत्र।
- (३) विचार इतलवेष्य
- (४) तथापि नर्भे विचार एवं कृत।
- (५) मानव वा ईवीमन विधि।
- (६) भक्ति संस्था व संघ।
- (७) युवा की हिंसा हवीकन, पन्तु अहिंसा सेनर।
- (८) प्रकथ्य को अरेशा नहीं पन्तु उपरि विपद में आर।
- (९) सधना के बारे में यही मुक्ति।
- (१०) नैतिक माप विहित है।
- (११) मरथोत्तर जीवन है।
- (१२) सुवर्तन्य को परिवर्तना नहीं मणपि ऐसा नहीं करा वा सबको विरेशा विधि है।
- (१३) अति न्याय वा वि।
- (१४) काविभेद नहीं।

वा-संघना पर गेते हुए भीम-विशमह के विवेकन का प्रयोग किया वा। जा उन समय नहीं हुआ। पर उनर धीरे-धीरे बाई को कान्तिवादी बायो और आनीन को मोडना नहीं वे अन्य उन काम धीरे-धीरे 'जरो वा मरो' को लीवारी से सहसना के मंडन में वृद्ध करने के जोरवारी माहून वा अनर दुःखिया नहीं रहा हुआ। ७१ वा के वा को जमीन को सुनः कायन में धीरे-धीरे बाई ने उरविषय मनुष्य को म् १९६२ को धार विनामो और नर कि बैसा ही सबर अजर सामभगय आन्दोलन में उरविषय हुआ है। हलाय आन्दोलन २१ बर्न वा काविग हा रहा है। आन्दोलन के बननरन में हयो खारी कादि मिल-विष प्रकाश के नामो से जना दुःखना-पर सधना वा। जसानी में इन मुक्ति को उरकर हवे भीनन में उरेशा हीना। एक धार जसानी धारी ठारत सधनार हने अजर धारन-धामनमको के अरिषेकोमनित को प्रक नहीं विना तो मरवूर होकर कोष हिंसा की ओर मुक्ति। हमारे विचार के बारे में अज लोगो को मना नहीं है, मना यह है कि वह बीमन पर अनर सधना है वा नहीं। यह हूँ विन्दु करके बताया होगा। हमारे सामने यही चुनौती है।

अहिंसा और सप-संपर्क वाले काम के प्रसिधान से मनी सधनिक प्रक करने हुए धीरे-धीरे बाई ने उन बायो को और को रक्य किया। उन्होंने कहा, 'अहिंसा हमारा सिद्धांत न हो पर वह जीवन की प्रसिद्धा बन जारी रहिए। और जहाँ तक सप-संपर्क के भय वा सधन है,

विश्वे अहिंसा को साधनता कर निज है वह विचार चान से भय नहीं छाया। अहिंसक कान्ति ही सके मनी में विधेन ही मान्य है। कैनिन संपर्क से हम मन न काये सधना सधनर यह नहीं है कि सप-संपर्क को हम जोरना कायें। मृत्यु से हम धर न कायें, उरना सधनर यह बोड़े ही होष है कि मृत्यु को हम जोरना कायें। जीवन की हम जीने को ही करते है। मौन काये मन जगा मृत्तु सधनर करने को जेवारी रहको चाहिए। हव दिना को जग्य अहिंस की, और सप-संपर्क जग्य सप-संपर्क को मृत्तु विरहित करना कायें है।'

इन प्रकार भीनन वा अस्तिविक विना विनो पूर्व-विचार वा आगम के बाई विचार-संघ और अरक बन गया। धीरे-धीरे बाई, जे० पी० और दादा के रूप में आनरवारी को अहिंसक कान्ति के इला-विषय-प्रेशे की निर्णय की उर-विषय, और प्रपमनन उनके सुविचारो उदायोग से अस्तिविक कायेंको पृथ मना जग्य और काम को विरिषय दिता सेवर मरथोत्तर के ने दिर जारी और विषय नरे।

इलाहाबाद स्टेशन पर समीक्ष-साहित्य-मंडार

एकद्वारा स्टेशन पर सर्वोत्त-कारित-सधनर के दिग् नेले के मंड के मनुष्य विनो है और २ मरथर ७१, मर थमक का-शी के दिन भी सध-प्रकाशकी ने पृथ हैं हव सधनर अहिंस-विनो का बर्न म्मन कर दिना है। सा-कण की सधनन में सधनर सधनर सधनर हो गायगा।

मानव अधिकार के अपने सभी प्रस्तावों के वास्तविक उद्देश्य इतनी भी हिंस्र नहीं था तभी कि यह 'खेतार' का एक शब्द भी होना। चीन के प्रवेश से राष्ट्रसंघ का प्रतिनिधि परिषद बंद हो जायेगा परन्तु प्रतिष्ठित स्थापित करने में यह इसे अधिक प्रभावशाली नहीं बना संकेत। राष्ट्रसंघ के लिए सबसे बड़ी उपायनी बात यह है कि विदेशों में अन्तर्राष्ट्रीय सन्धि प्रदान के लिए जो कुछ भी हुआ है, यह सुरक्षा संघटन से बाहर की बातों का परिणाम है।

हिंस्रता टारमस लिखा है। वास्तव में अन्तर्राष्ट्रीय के चीन को सन्धि और राष्ट्रसंघ को निष्कारण के प्रस्ताव पर वीटो के फैसले से अमेरिका को बड़ा घबरा लगा है, और उसे कुछ डुभा है। अमेरिका जिन देशों पर निर्भर कर रहा था, वे उनसे इच्छा के अनुसार करने में अक्षम बनकर रहे। यह तब तक अमेरिका को हार हुई है और पेरिस के बैठने की अंतिम समझौता या समझौता हो गया है।

राष्ट्रसंघ में शिरकाव के लिए पेरिस को कर्तव्य भी कि राष्ट्रसंघ को निराशा जाय। यह हो गया। परन्तु राष्ट्रसंघ का प्रश्न अभी बाकी है। जब तक अमेरिकी सुरक्षा को शक्ति द्वारा हमको सुरक्षा होती है, यह चीनी अमेरिकी सम्बन्ध में क्रांति की तरह चुपचा रहेगा और दक्षिण पूर्व में शान्ति प्रग होवे या खतरा बना रहेगा। राष्ट्रसंघ में पेरिस को उन्निहित—सोवियत पावर के साथ—अमेरिका के सीदेवाजी वांछित दिशा पर बदल जानेकी। मचाई यह है कि यह परिषद वाणिज्य पेरिस का प्रवेश चाहता था परन्तु उसे यह आजा न थी कि यह इतनी जल्दी हो जायेगा। मिस्टर मिलिगम संकेत में नहीं था कि राष्ट्रसंघ का निष्कारण जाना संभव नहीं होगा। परन्तु यह यह अन्तर्गत न समझ सके थे कि राष्ट्रसंघ वास्तव में निराश्रित हो जायेगा।

इकोनामिक टारमस लिखा है। चीन अन्तरीचीन पर अन्तर्राष्ट्रीय संघटन में

आया है। अमेरिका को स्वयं ही उसकी सीमात राष्ट्रसंघ को निहित जाने की आवश्यकता नहीं पड़ी है। जबकि पेरिस में इस सम्झौता पर प्रतिक्रिया प्रकट करने में सुन्नी बन्धी है, राष्ट्रसंघ में अमेरिकी प्रतिनिधि मार्जें बुच ने उसे राष्ट्रसंघ के लिए हठबंदी की सही कहा है। यह आजा रखनी चाहिए कि वाणिज्य अन्तर्राष्ट्रीय समझौता में सन्तुलित वास्तविकता प्राप्त करेगा।

पेरिस अन्तर्राष्ट्रीय सन्ध का फिर से संघटन चाहता है और सुरक्षा भी पर के एक स्थानीय संरक्षण की ही संरक्षण से उस उद्देश्य के लिए अपने प्रभाव और शक्ति का प्रयोग करेगा। बिना पेरिस के सम्बन्ध के अब राष्ट्रसंघ कुछ भी नहीं कर सकता। राष्ट्रसंघ को, राष्ट्रसंघ के निष्कारण दिखे जाने पर, अमेरिका के नेताओं द्वारा दी गयी आर्थिक सहायता बन्द करने की धमकी को भी यशस्वी बनाना है। अमेरिका अभी सन्ध के सन्ताना छुट्टी का एक निष्कारण देता है जो सबसे बड़ा हिंस्र है। मान्य होता है कि सन्ध के संरक्षण से अमेरिका की हठ धमकी पर अन्तिम प्रभाव नहीं दिया है। जबकि सन्ध दिनांकितकरण के करीब है, या तो संरक्षण से इसे धोखा समझा या यह सोचा कि अमेरिकी सहयोगिता बन्द होने पर भी सन्ध चल सकता है। अगर अमेरिकियों ने वास्तव में ऐसा किया तो बहुत जल्द संरक्षण बन्धी और जाना पसन्द करेगा। ऐसे राज्यों की धमकी नहीं है जो राष्ट्रसंघ को एक पक्ष पर दबा चाहेंगे।

हृषीको (भारत) को चाहिए कि ऐसी सन्ध करे, जो सन्ध के सन्ध पर एक मान्य समझ में केन्द्रीय विद्युत् पर बना रही है, नवरीकी सम्झौता पर। ऐसा सम्झौता केन्द्र न्यूयार्क में सोवियत प्रतिनिधियों के बीच ही नहीं होगा चाहिए, बल्कि बिना देर दिने सम्झौता के द्वारा ही सम्भव। सम्झौता में होना चाहिए। स्टेट्समैन के लिखा है। राष्ट्रसंघ की अन्तर्गत एशिया की सम्झौता शुरू होने से पहले ही यह बात स्पष्ट हो चुकी कि अब

पेरिस सन्ध को यह स्थान देने के लिए बहुत चाहेगा, जिससे अब एक द्वन्द्व प्रकट किया जाना रहा है। यह बात उनी सन्ध स्पष्ट हो गयी थी जब राष्ट्रसंघ निराश्रित ने अपने पहले के राष्ट्रसंघों की नीति में परिवर्तन दिया। यह नीति राष्ट्रसंघ में चीन के प्रवेश की योजना की थी। केवल यह एक हीना शक्ति था कि सन्ध बना होगी। अमेरिका का राष्ट्रसंघ से निष्कारण बना ऐसा था कि राष्ट्रसंघ निष्कारण मुखिय से ही अन्तर्राष्ट्रीय के प्रस्ताव के अनुसार सम्झौता की निराश्रित जाने की बात पर राजी हो सके। अमेरिकी प्रतिनिधि मार्जें बुच का स्वर यह यह सन्ध संरक्षण कर रहे थे, कि राष्ट्रसंघ केवल एशिया की संरक्षण बना रहेगा, जहाँ सुरक्षा परिषद की स्वामी संरक्षणों उन्निहित नहीं रहेगी। पक्षता ने कुछ और ही सिद्ध किया।

पेरिस में पक्षता ही पक्ष दिया था कि अगर राष्ट्रसंघ में निराश्रित गया तो वह राष्ट्रसंघ में प्रवेश नहीं करेगा।

भारत ने जल्द कूटनीतिक राजा की संरक्षण से जरा जरा है। उसे जरा यह भी संरक्षण चाहिए कि सन्ध यह अन्तर्गत अन्तरीचीन नहीं है। यह चीन से पूर्ण कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित करे।

दैनिकी १९७२

के लिए धोखा करना

सर्वेक्षण सन्ध प्रस्ताव द्वारा प्रस्तावित १९५२ की दैनिकी का स्वर अन्तरीचीन सम्झौता हो रहा है। विदेशी वास्तव में निराश्रित है कि वे अन्तरीचीन सम्झौता के अनुसार दैनिकी सन्ध में और सन्ध कर दें। स्टाक में न रहने पर केवल में हृषीको सम्झौता रहेगी।

विदेशी सर्व भी हृषीको सम्झौता की नीति पूर्ण नहीं कर सके। सम्झौता (कोटी) का मूल्य २०४-०० सम्झौता सम्झौता (कोटी) का मूल्य २०४-०० सर्वेक्षण सन्ध सम्झौता, सम्झौता, सम्झौता-१

श्री जयप्रकाश नारायण का स्वास्थ्य

सन् १७ नवम्बर '७१ की आरामवाणी से प्रभावित, श्री जयप्रकाश नारायण के अवालात समीरन रूप से अस्वस्थ होने के, समाचार की सुनकर हम सब निमित्त हो उठे थे। लेकिन ईश्वरकृपा से उनका स्वास्थ्य अज सामान्य हो गया है। फिलहाल वो कोई बात नहीं है। डाक्टरों की सलाह के अनुसार वे इस समय सर्वोत्तम, मुजफ्फरपुर में पूर्ण विश्राम से रहे हैं।

मुजफ्फरपुर से फोन कर श्री कौताब प्रसाद गर्गी के साथ हुई बातचीत के अनुसार जे. पी० वी० शर्मा में पहले से दर्द था, धनादत भी महसूस कर रहे थे, लेकिन मुजफ्फरपुर के लम्बे डॉक्टरों में जरावर भाग से रहे थे। १६ नवम्बर '७१ की शाम को दर्द बढ़ गया और केवैनी महसूस हुई। डाक्टरों ने विजय की सलाह दी है, उनकी अस्वस्थता का समाचार सुनकर पटना से बिहार के राजपाना, मुजफ्फरपुर, मुजफ्फरपुर और डाक्टरों का एक दल १७ नवम्बर '७१ को मुजफ्फरपुर से मुजफ्फरपुर पहुँचा। डाक्टरों ने जे० पी० वी० के दोनो तक पूर्ण विश्राम की सलाह दी। प्रयास त सुननाओं के अनुसार जे० पी० वी० को बेहोश हुए थे, और न ही जन्हे रित का बोधा पडा था। अतः अति गंभीरता और धारणात धरान ही उनकी अस्वस्थता का मुख्य कारण है।

ऐसे बड़े राज्यों के विराम की योजना कैसे बनेगी? बिहार और उत्तर प्रदेश को देखिए। जान भी वे दोनों राज्य प्रशासन की दृष्टि से बहुत सिद्धे हुए हैं, और दाने नई भाग अग्रज तरीके में पिन रहे हैं। बम्बई निकल करिए तो महागण्ड में भी क्या रह जाना है गिनाय मरीदी और रिठड़िया के? इसलिए जल-शरक है कि बड़े राज्य छोड़े जायें और उनके छोटे टुकड़े बनाये जायें।

ये राज्य जो, जैसे हैं, टोक हैं

राज्य	जनसंख्या अनुमानित २००१ में
अनम	२ करोड़ ७० लाख
हरियाणा	१ " ७२ "
गुजरात	४ " ६५ "
जम्मू-कश्मीर	६१ "
केरल	३ " ८४ "
मैसूर	४ " ४२ "
उड़ीसा	३ " ९८ "
राजस्थान	४ " ४८ "
पंजाब	१ " ७० "

— योजना है, यदि १०० वर्गफुटों का प्रतिक्षण हो सके।

शिविर में भाग लेने वाले कार्यकर्ताओं के आने-जाने का सर्वे उनकी धरणा बहुत बढ़ेगी और शिविर में रहने वाले-प्रशिक्षण आदि का प्रबंध शिविर की ओर से रहेगा। इस शिविर के सफल की जलसंतोषायकों, मूहपति श्री गुजारी रायजी एच मूहपात्रा स्वतन्त्र की श्री गुजारीदाई रहेगी। पहले शिविर का उद्घाटन श्री देवेन्द्र कुमार मुजफ्फरपुर करेंगे।

राष्ट्रीय-संस्थाओं से एवं अन्य सर्वोत्तम साहित्य भंडारों से प्राप्ति है कि वे अपने कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण के लिए भेजकर इस योजना का लाभ उठावें। जो संस्थाएं कार्यकर्ता भेजना चाहती हैं वे अपनी से कार्यकर्ताओं की संख्या, नाम आदि श्री जयप्रकाश नारायण, सर्वोत्तम साहित्य भंडार, महात्मा गांधी मार्ग, इन्दौर की भेजना दें और उनकी सूचना सर्व सेवा सच प्रशासन, राजपाना, वाराणसी को भी भेजें।

इतने बड़े-बड़े राज्य ?

क्या हम जानते हैं कि अपने हीम वरों में हमारे देश की जनसंख्या? अरब हो जायगी? और १९ में से ७ राज्यों की संख्या साठे सात करोड़ से ज़ेयर होने १७ करोड़ तक हो जायगी? ये सात राज्य हैं: बिहार, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु। इतने बड़े-बड़े राज्यों का प्रशासन कैसे होगा?

४ करोड़ के आसपास की जनसंख्या के राज्य प्रशासन की दृष्टि से कल्पित माने जाते हैं। लेकिन २ हजार हस्तों के पहुँचने-पहुँचने केवल ६ राज्य ऐसे रहेगी जिनकी जनसंख्या ४ करोड़ के लगभग रह जायगी। वे हैं: अरुण, हरियाणा, जम्मू और कश्मीर, केरल, उड़ीसा और पंजाब। गुजरात, राजस्थान और मैसूर की जनसंख्या लगभग ५ करोड़ होगी। अन्य सब राज्यों की गाँडे या ४ करोड़ होगी। बिहार की गाँडे दस करोड़ और उत्तर प्रदेश की १६ करोड़ ७४ लाख हो जायगी।

ये राज्य, जिन्हें छोटा करवाना चाहिए

आंध्रप्रदेश	८ करोड़	१७ लाख
बिहार	१० "	४४ "
१० बंगाल	७ "	१३ "
मध्य प्रदेश	७ "	३२ "
महाराष्ट्र	६ "	९८ "
उत्तर प्रदेश	१६ "	७४ "
तमिलनाडु	७ "	९२ "

हम अंक में

बिहार अगले चरण में	— ५५ करोड़	१०७
संघात: राजकीय के मिलाव में		१०८
सर्व सेवा सच के योजना-अभिवेदन में परिचित पार महाराष्ट्र प्रशासन		१०९
जन्मी वधनीयों का स्वीकार हुआय		
असमवल बंधारणा	— जगद्वारा	११२
राष्ट्रीय दिना	— मूला: सामाजिक	११४
सर्वोत्तम प्राप्ति की विमूर्ति		
	— गिद्धराज वरुडा	११४
चीन समुदाय का ४५ सच में		११७
	अन्य स्वतंत्र	
	जानने पन, साप्तीकर-समाचार	

वार्षिक मुद्रा: १० व० (सोवें काल: १२ व०, एक प्रति २५ पैसे), विदेश में २५ व०; या ३० तिथि या ४ बाहर।
 मुद्रा अंक का मूल्य २० पैसे। श्रीकृष्णदास कृष्ण द्वारा सर्व सेवा सच के लिये प्रकाशित एवं मनीषर प्रेस, वाराणसी में मुद्रित

संपादक
साम्प्रति

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

सर्वोदय

भूतना-यज्ञ

भूतना-यज्ञ

सोपान, २६ मार्च, ७६

एनिका विभाग, सर्व सेवा संघ, पाणवट, बाराकली-२
ता. कर्ण प्रेम चौरा : २५३११

वर्ष : १८
अंक : ९



• बंगला देश के शरणार्थी : तानाशाही के शिकार

आपके पुत्र

विज्ञान भी अज्ञान का साथी (?)

१ नवम्बर १९७१ के भ्रूदान-यज्ञ में एक अति सशक्त तेल पड़ने को मिला— 'विज्ञान भी अज्ञान का साथी।' जहाँ तक बालों और गोरी के बीच शेट-माच करने का प्रश्न है, उसकी (वैज्ञानिकों द्वारा शेर-घाव विषे जाने की) मुझे जानकारी नहीं है पर पहली दो बारों के बारे में कुछ कहना है।

होमोपैथनसुश्रूष को विज्ञान ने रोपी धोपिन किया है जिसका विरोध करते हुए उस लेख में कहा गया है "और समाज भी समझने लगता है कि यह हैबानी कामवाचना का निकार है जबकि यही बात यह है कि स्वाभाविक या अस्वाभाविक सैमिक प्रेरणा एक ही है। ***किर भी समाज जिसे बरखाधी मानता है उसे विज्ञान द्वारा रोपी बहुला कर समाज से अलग माना जा रहा है।"

यदि मुझे भूल सके और मैं दान-दान के बन्दे (या अतिरिक्त) जूने, मिट्टी, कपड़े और सरङ्गिनी खाना छूक कर दूँ तो माग क्या कहेंगे? दोनो की प्रेरणा तो मेरी भूल ही है! आप कहेंगे—गायव-पन! मनुष्य के सामान्य और असाधारण व्यवहारों में क्या अन्तर है? कम-से-कम क्षान्त अन्तर तो अन्तर ही है कि एक से उसके अतिरिक्त की सामान्यता का बोध होता है और दूसरे से उसकी विभूति का। मन की विभूति ही तो मानसिक रोप है। और यह सत्य है कि इस तरह के असाधारण व्यवहारियों की बीजाणुओं में क्रोमोसोम की संख्या असाधारण (XXY) होती है।

दूसरी बात ये भी मेरा विरोध है। मैं फायर के विचारों का समर्थन नहीं

के प्रमुख की बात कही गयी है, पर मैं इसका समर्थन करता हूँ कि एक स्त्री को पुरुष का सरक्षण चाहिए और एक बाउ जोरूँगा कि हर पुरुष को स्त्री का सरक्षण चाहिए। जब स्त्री और पुरुष दोनो एक दूसरे के बराबर सम्बन्ध में होंगे तो उत्तरा रूप बिलकुल बदल जायगा और एक दूसरे को शक्ति प्रदान करेगा। पर-स्तर सरक्षण से स्त्री व पुरुष दोनों बहुत ऊँचाई तक उठें हैं इसके बा और बाउ (हालांकि बा और बाउ के सम्बन्ध कई कई मायनों में पुराने संस्कारों से मुक्त नहीं थे) जैसे कुछ और उदाहरण दिये जा सकते हैं।

साज जो स्त्री-मुखि-आन्दोलन मनुष्य विश्व में, विशेष कर पश्चिम में हो रहा है उसमें अतिरिक्त परिचिन तो नहीं हैं पर ऐसा लगता है, सोरों पुरुष बनना चाहती है। यह स्वाभाविक है क्यों कि हमारा बड़ और बड़दिलों से भरे समाज ने सारोरीक सक्ति की ही सामाजिक उत्तर पर भी मनुष्यों की ऊँचाई-नीचाई की माग माना और बड़दिल पुरुषों का समाज में ऊँचा स्थान रखा। (यह पद-साम्राज के सन्दर्भ में टीक हो सता है पर मान्य न सारो-रिक्त सक्ति की सीमा को बच का पार कर लिया और अब भी माग की उगी दरारें का बना रहता सखरता है।) लगता है इसीलिए रिचर्स जाने सारोरीक को पोंड पुराण की "ऊँचाई" पता चाहती है। यही कारण है कि सारोरीक या मापुष को पारदिलाना बाग उरुँके अन्तरता है— यदि सखदुष अन्तरता है तो पर पुरुष बनने की चाह ही उनकी हीन मानता का परिचायक है। यह समझ में नहीं आता कि पुरुषों का सुदुर्लभ तो गुणवत्ता ही रहा पर सारोरीक सारोरीक उगी हीनता क्यों ही गयी? यह जैसे भी हुआ हो गनर है। पुरुषों और रिचर्स में सौँचक सगन के सिकर सारोरीक की बाग बनता और अनेको-सोम तक में (पुरुष XXY, स्त्री XX) बहुत अन्तर है। सारोरीक का पदान सखरता में

मगर विन्य है। टीक रूप के पहिलों सा। बाँस पहिला टीक दाहिने सा होना हुआ भी दाहिना नहीं है।

यह भावना है कि इन विपरीत-मुख समाज के गुणों को उनके पुराण और विद्वत् की ओर सारोरीक की उनके सारोरीक और मापुष की पारदिलाने बाग। सारोरीक सारोरीक और मापुष बचाकर ही साज पुरुषों के प्रमुख से उत्तर उठ सगती है। सखने सारोरीक की सारोरीक अन्तर्गत होती चाहिए। सखने न तो "स्त्री की हीनता का गुणवत्ता" है और न ही "पुराण का सखरता" है।

लेख का सौँचक "वैज्ञानिक भी अज्ञान के साथी" होता तो पगाय टीक हास। सौँचक विज्ञान अज्ञान का साथी क्यों नहीं हो सताता। अज्ञान का समर्थन करना विज्ञान, विज्ञान नहीं अज्ञान ही है। बस अनेक सगन रिचर्स ने सता है? दूष का रिचर्स सगन सक्ति के हास सगन बाग ही सखने। सुदुर्लभ का प्रभाव गरी है, टीक उगी सारोरीक बाग का वैज्ञानिक हास बना बाग ही उगी वैज्ञानिकता को प्रभावित गरी सताता। साज तो दूष अन्तर्गत सारोरीक बाग है कि सारोरीक, सखने, सगन और सक्ति गरी सारोरीक-सखने। सगन में होने है। जहाँ कीटा विज्ञान—विषयक, जहाँ सारोरीक विज्ञान—सखने के सगन प्रमुख सगन बाग है। सौँचक सगन उगाय रिचर्स सखने हास है और उनकी अन्तर्गत सगन का प्रभाव हास है। पर यह भी सगती है कि वैज्ञानिकों द्वारा सगने को सखने सगन तीर-सगने सगती का सखने सगने ही उनके हास सगनता सगती "सखने" सखने सगन हास है। हमें सगने परक हास चाहिए।—सुदुर्लभ सगनता

धमा याचना

हमें मेरा है कि २२ सखने '७१ के अन्त में उगी सगन में सखने सगने सगने के सगने का सगन सगने की सगने के सुदुर्लभ

'लोकरो दुनिया' के जो सदस्य हैं, जिनकी सहायता दोस्त की दी-
निहाई है, वे बोलते लगे हैं कि चीन उनका अग्रगण्य बनेगा। चीन
पश्चिम के मुहाबिते पूरक की, पोरों के मुहाबिते कालो की, और
साम्राज्यवादियों के मुहाबिते साम्राज्यवाद के विरोधियों की
आशाज माना जाने लगा है। दुनिया अक्षय्य लगे रही है कि
चीन सद्युक्त राष्ट्र सभ में पहुँचा है तो विश्व-राजनीति में कौन-
सा नया मोड़ लायेगा ? राष्ट्र सभ की जवाबों में सोड़ जरूर
लायेगा, लेकिन क्या इतना ही होकर रह जायेगा ?

चीन अमेरिका में, इंग्लैण्ड योरप में

जब चीनी प्रतिनिधिमंडल के ३२ सदस्य—दर और वरि, अमेरिका की 'अद्वैत जनता' के लिए 'गहरी मित्रता' संकट 'सुभाष' पहुँचे, और इन्वैट होटल पर इन्वैटिड चीन का सभ संसा पहुँची दिना, तब सभसा एक सांभस्य अमेरिकी निवासियों की शिष्याय नही हुना कि बहु सग हो गया। उणे सग सासुप कि इन्ने सगों से इतिव चीन की उधने अपना सद्युक्त मान रखा या पठ किनसे होकर सब उनके दरवाजे पर पहुँच गया है। चीनी प्रतिनिधियों ने सभसे होटल के ३७ कमरे सग सग चीने चीन सास सभे साहस्यार हिरोने बट ने लिये हैं। यही उनका निवास और कायलिय है, पही से वे 'साम्राज्यवादियों' और 'विस्मारकवादियों' की नीमने सद्युक्त राष्ट्र सभ की बैठकों में जाने हैं।

चीन ५० करोड बा देस है, अमेरिका २२ करोड बा। सभे-
रिया सास दुनिया का सबसे पकी, और सैनिक शक्ति में सबसे
जलकारी देस है। दुनिया भर में उतना व्यापार है और सैनिक
अद्वै है। चीन बा अमेरिका का सल वा सैनिक शक्ति में कोई
मुहाबिता नही है। तबिन सास रूप और अमेरिका के सग
उतना सभ सिग जाने सगा है। चीन ने यह सदानता सीरे-
सीरे सिस्को में सभने सलोसे पर प्रलन की है। उनने दुनिया की
विषम किया है कि उणे बड़ा माना जाय। उनने अपने देस के साह्य
अन्या कोई सैनिक सपुटा नही बनायी है, बहु सभने कायिक विकास
के लिए विदेशी सदानता नही लेता, और दुनिया में नही रूप
सौर अमेरिका के सोंनों की तरह उतना 'प्रभुत्व-लोक' भी नही है।
उने ऐसी कोई चीनसा नही की है, फिर भी सद्युक्त राष्ट्र सभ में

अमेरिका, रूप, जापान, सासा साजार के सोरोपीय देस,
और चीन: वे सहरें होकी जिनसे अन्तर्राष्ट्रीय शतरज खेला
जायगा। सभ सोवेया, अर अमेरिका और चीन पिन सने हो
नया होसा ? अमेरिका सोवेया, अर सस और चीन एक ही
पर सने सगा होसा ? चीन सोवेया, अर अमेरिका और रूप जुड
सने तो सगा होसा ? अमेरिका और चीन बा सासा-सासा देससद
जायगा सद्युक्त हुना है। बहु अमेरिका का कायिक सविद्यवी है,
और चीन बा सभनीतिक। सैनिक उणे, कास्ट्रुनिवा और किस्ति-
पादन को सभसद चीन ने दोसनी करनी ही पड़ेगी। पश्चिमी
योरप के बहु देस चीन जैसे बहु साजार को नही सोड़ सते।
किस्ती-सविद्यो रूप में, सगता है, चीन की दोसनी की सभने
उकरत है। सगा सभनिय कि पश्चिम के देस चीन की भारत को
नही—एशिया की मुख्य शक्ति के रूप में देस रहे हैं ?

सोनी से बदलतो हुई दुनिया में दो देस है जिनसे सोंनों से
सगता सनी सद्युक्त सन कर सने हैं— योरप में इंग्लैण्ड, एशिया में
भारत। इंग्लैण्ड ने सग कर लिया है कि बहु पश्चिमी योरप की
सिस्को में रहेगा, अमेरिका का सिस्कोय सनकर नही रहेगा।
अमेरिका का प्रसुता शिपों को सकोर नही है। अमेरिका सनी
शिपों को सभसद रहा है, तभी ना बहु शाले में सिस्कोया या
रहा है। सभ की योरप के सिस्कोय सट हो रहेगा साहता है।

भारत सग करेगा ? सभनीतिक शतरज का सोसादी बनेगा ?
उनके सभने सस सगता सभनीतिक, सको बा सोड़ और वडी
सभियों का सिस्कोय सने बा है। सगता ससदा सनी श्रंती
शक्तियों की सिस्कोय सने और सिस्को, सिस्को रहने हुए,
सकोयियों से सभसे सभस्य सने बा है। सीतरी सभियों के
सिस्कोय की सद्युक्त सने है कि देस का सभसद सने, सिस्को सने,
सिस्कोय की सद्युक्त सने, सकि हार सभित ३५ करोड के सिस्कोय
सभिसार में सुय चीन सभसा का सभसद करे। यह सग पूरी
नही हो रही है। भारत सनर सनी शक्ति से बहु सभसद सने
करने से सद्युक्त ही बहु एशिया और अफ्रीका की सभसद सने का
लिए सभसा सीट अद्युक्त सन जायगा। यही भारत का सिस्कोय
की है। चीन अमेरिका में सद्युक्त सभ, इंग्लैण्ड योरप में सिस्कोय
जाय, और भारत अद्युक्त-सगता रह जाय, यह सभसद नही है।

युद्ध और क्रान्ति

एक समय या जब सीमित शासन-शक्ति से भी बड़ा परिवर्तन लाया जा सकता था। लेकिन तब सरकारी सेना की शक्ति उतनी विरहित नहीं थी जितनी आज है।

पहले एक देश में कोई उपम-मुचल होती थी तो विदेशी शक्तियाँ प्रायः हस्त-क्षेप नहीं करती थीं। क्रान्तिकारियों की सेना और सरकारी सेना, दोनों अक्षर-मुकाबिले की होती थी। क्रायवेस की सेना चार्ल्स प्रथम की सेना से कम अच्छी नहीं थी। फ्रांस की राज्यक्रान्ति में तो सैन्यो ने वास्तविक के किले को तोड़ दिया था। इसका अर्थ यह है कि क्रान्तिकारी केवल सीमित शक्तियों से और बड़ी सत्ता के बल पर सरकारी सेना को हरा देते थे। लेकिन १९ की शताब्दी के प्रारम्भ में जब फ्रांस की शक्ति नैपोलियन के हाथ में गयी तो पाछा चलने लगा।

१९१७ की रूसी क्रान्ति में जार की सेना हार गयी थी जिसके कारण सेना में खानि पैदा हुई, पगानत हुई। मातृविक्रम क्रान्तिकारियों ने इसका फायदा उठाया। सेना के एक भाग ने क्रान्तिकारियों का साथ दिया। उनके पक्ष में विचार की शक्ति थी, जनता का जबरदस्त समर्थन था। फिर भी १९१४ के पहले विश्व-युद्ध के समाप्त होते ही १८ देशों की सेनाओं ने रूस की क्रान्ति को कुचलने की अक्षरणा कोशिश की। रूस की क्रान्ति में प्रवर्धित सेना का योगदान फ्रांसीसी क्रान्ति की अपेक्षा अधिक था। जिन नागरिकों ने क्रान्ति की ओर से युद्ध किया था उनसे भी बाद की हथियार रक्षा जितने गये। जिन शक्तिशाली की मार्शल और एजिन्स ने १८७१ के पेरिस कम्यून के आघात पर इतनी महिमा गायी थी वे निहत्थे बना दिये गये, और सारी शक्ति एक सरासरी केन्द्रित सत्ता के हाथ में चली गयी।

चीन की क्रान्ति में कम्युनिस्ट और

विप्लव की सेनाओं में युद्ध हुआ। विप्लव की सेनाएँ कमशा: हारती चली गयीं। बेतहाशा बढ़े हुए मूल्यों के कारण जनता भी विप्लव से नायब थी। अमेरिका की सरकार ने भी विप्लव की उतनी मदद नहीं की, जितनी की उसे जरूरत थी। फल यह हुआ कि कम्युनिस्ट शासन-शक्ति ने विप्लव की विरोधी शासन-शक्ति पर विजय पायी। जो विजयी हुआ उसे सत्ता मिली—कम्युनिस्ट सेना को।

भारत में गांधीजी ने अहिंसक अग्रह-योग को पद्धति में बाम लिया। १९२१ से १९४२ तक आन्दोलन होते ही रहे। इन आन्दोलनों की बढोतत भारतीयों को अहिंसक सङ्घर्ष लड़ने की बोला मिलती रही। भारत की अहिंसक सङ्घर्ष के अनुकूल यह बात भी थी कि ब्रिटेन में राजनैतिक सौजन्य का विकास होता जा रहा था, इसलिए अग्रेशो शासक उतनी ब्याप्तुयिक नहीं हो सकते थे जितने स्पेनी, पुर्तगाली, जपान फ्रांसोसी शासक थे।

स्वतंत्रता के बाद से आज तक यह हुआ कुछ-न-कुछ बनी हुई है। विद्ये वेपों में नई तरह के उत्साह हो चुके हैं, यद्यपि उनसे देश में स्वतंत्रता के पद्वे जैसे हुआ नहीं पैदा हो सकी। यह महत्ता कठिन है कि क्या कोई सरकार ऐसे सार्वप्रह को वर्धित कर सकती है जिसका राज्य-नैतिक-आर्थिक ढांचे को पूरा-पूरा बदल देना हो ?

बंगला देश की हलचल हमारी आँखों के सामने है। पूर्वी बंगाल के मुचलमालों ने पाकिस्तान के निर्माण में पंजाबियों की अपेक्षा ज्यादा भाग लिया था। जब बंगाल एक पा सो यहाँ मुस्लिम लीग की सरकार थी, जब कि पञ्जाब में गैर-लीगों 'युगिय-निस्ट' सरकार थी। देश मुस्लिम-सर्वहान स्वयं मुस्लिम लीग में थे, और मुहुरावर्दी के प्रशासक थे। १९ अगस्त १९४६ को मतकत्ता में 'प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस' मुहुरावर्दी के ही सरक्षण में संपन्न हुआ

था। लेकिन जब विभाजन सामने आ गया तब मुहुरावर्दी और कुछ दूसरे नेताओं ने 'संयुक्त स्वतंत्र बंगाल' की बात उठायी, लेकिन बात बहुत जगो बढ़ चुकी थी।

विभाजन हुआ। पाकिस्तान बना। लेकिन शीघ्र पाकिस्तान में 'पूर्वी पाकिस्तान' के प्रतिरूप हुआ बहने लगी। आज यहाँ हिंसक 'धर्मयुद्ध' छिडा हुआ है। यह युद्ध अहिंसक अग्रहयोग से शुरू हुआ था। अक्षर बंगला देश के लोग अपनी अहिंसक शक्ति से फौजी तातनाही पर विजय पाते तो वे उस अहिंसक शक्ति से अपने देश में जो परिवर्तन पाते, कर लेते। लेकिन अनेक परिस्थितियों के कारण बंगला देश की जनता को हिया मरनानी पड़ी। जो लोग आज स्वतंत्रता की सङ्घर्ष लड़ रहे हैं वे स्वतंत्रता के बाद क्या करेंगे ? वे चाहे स्वतंत्र बंगला देश की सेना में भरती होंगे, या उन्हें अपनी स्वतंत्र सरकार के सामने अपने शासन-शासन समर्पित करने पड़ेंगे। ऐसा ही पद्वे की सारी शक्तियों में हुआ है। एकका अर्थ यह है कि जनता जहाँ की तहाँ रह जायगी—शक्तिहीन, राज्य-शक्ति पर आश्रित। बंगला देश के स्वतंत्र होने पर भी यहाँ नहीं आर्थिक ढांचा बना रहेगा जो आज है ? आर्थिक-सामाजिक अन्वयता में कितना परिवर्तन होगा ? जगदा-से-जगदा एक सोच-भलायाचारी राज्य बाम्य होगा, रास्रीय राजनीति और शक्ति अर्पनीति चलेंगी !

इतनी शक्तियों के बाद आज मनुष्यता के सामने एक संकट है। अब तक हा अनुभव है कि सत्ता शक्ति-शक्ति के बिना मिलती नहीं, और शक्ति-शक्ति से प्राप्त सत्ता जनता की शक्ति विरहित होने देती नहीं। सरकार की शक्ति पेशेवर सेवा तथा नये-नये मदन-वास्की के कारण दिवो-दिन बढ़ती जा रही है, यहाँ तक कि अनेक क्रान्ति—हिंसक या अहिंसक—बहना भी शक्ति होता जा रहा है।

—डा० टी० पी० सिंह
'व्याप्त सार' दिन्तो, मे प्रवर्धित लेख के आधार पर

बंगला देश और भारत का भविष्य अभिन्न हो गया है

बंगला देश की पराजय भारत की पराजय होगी

—श्री जयप्रकाश नारायण की चेतावनी—

आज मानते हैं कि पिछले दिनों मुख्य काम होने बंगला देश का अपने हाथों में लिप्या : विदेश भाषा भी की, और कई बार परिवर्तन बंगाल करा। अगस्तला गया, और जगह गया। मुंबईवासी के ईश्वरों में गया। उनके बाद दिल्ली के शीत में एक अनुभव था काम किया। और आर भी करने का प्रयत्न कर रहा है। जनसंख्या एक सम्मेलन भी हुआ। उसमें २२ देशों के प्रतिनिधि आये थे। मेरा बड़ा दुःखीय हुआ कि किसी रूप के कारण अभिन्न समय बरिस् (सुभाष) का बहुमोल उस सम्मेलन को नहीं मिला। उनका मुझे बहुत दुःख है। यद्यपि उस सम्मेलन की तैयारी-संयोजन में, कार्यवाही पर पूर्व-सौचारी समिति बड़ा सोचते, उस समिति में सबीसैना महोदय के द्वारा नियुक्त श्रीमती सुलेखु देवा, डा० बबुल देवाज शर्मा समया थे। उनके अतिरिक्त इत्यादय भी थे।

यह सम्मेलन आपत्त साबित रहा। उस विचार में हमारा ही बड़ेका कि जो प्रतिनिधि आये थे, उनमें से बरब देशों के प्रतिनिधियों को छोड़कर देय सभी बंगला देश के स्वतन्त्र के पूर्णत्व से सम्बंध थे। बरब देशों के जो प्रतिनिधि थे, वे स्वयं बंगला स्वतन्त्र की दुःखन की ताक से हुए और जो १६ अगस्त, धरणाचार के निन्दक और विरोधी थे, परन्तु परिस्थाल की एका बनो गट, उनके से बहुत दुःख है। बरबोत से केवल एक और प्रतिनिधि थे नारायणदेव के, जिन्होंने बहुत उल्लास से सम्मेलन के सहाय्य का सम्बंध किया। और इस बात की ताक किता, कि ता-रुदिया राष्ट्र की विदेश के ताक जो सातक देश हुआ था, उस जाते थे, उन प्रस से बंगला देश का प्रस विस्तृत

कि प्र है। यह एक राष्ट्र के टूटने का प्रस नहीं है, बल्कि एक साम्राज्य के टूटने का प्रस है।

परिभव परिस्थाल में और पूर्व परिस्थाल में जो सम्बन्ध रहा, वह बि-भूत बैसा ही रहा पिछले २४ वर्षों में, जैसा किसी साम्राज्यवादी देश का अपने किसी उपनिवेश के साथ रहा है।

मलेसिया के प्रतिनिधि मूय भारतीय ही थे। एक हमारी थी, दो हिन्दू थे। अपने देश के लोगों की ताक से उन्होंने बंगला देश के स्वातन्त्र्य का पूर्ण सम्बंध लिप्या। और अपने देश जोड़े के बाद बड़ी तक से तैयारी करने का भी उन्होंने मय किया। मलेसिया दुनिया का सब सबसे बड़ा मुस्लिम राष्ट्र बन गया है। अब इसलिए बहता है कि परिस्थाल तो टूट चुका है, उसके टूटने का अब नया कोई शक नहीं है। और यह भारत के किसी पर्यन्त ने नहीं किया है, बल्कि उनको शीका है पहिले सात थे, और मुझे ने।

एक बरिस् को दुनिया सम्मत्त को नहीं है, तो भी आज की दुनिया में, दुनिया के भोगों में, मने ही अच्छे हरे का कुछ स्थान ही, मने ही कुछ मानवता के मुख्य ही परन्तु बरिस्थाल मूय का यह जो अभिभावक है, जिसकी 'नेशन स्टेट' हय करते हैं, बरिस् की दुनिया का 'नेशन स्टेट' नहीं है, बिगना कोई मरिज कातल (नैतिक वेगना) ही। महामना की बराबर यह बहो है कि मरिज की तो कामना होगी है, लेकिन मानव की, राउर बडे, स्टेट बरिस् को कामना नहीं होगी। और हमका पूर्ण परिभव (यह कल्पे बरिस् को ० पी० कुछ थको तक मासेट्रेक में मोन नहीं पाये थे।—००) अपनी विदेश भाषा में पुनो लिप्या। भारत के 'नेशन स्टेट' की भी मैं इसत मान्य नहीं करता हूँ।

बंगला देश का सम्बंध मैं कर ५२ हूँ। इसलिए कि एक व्यक्ति के जाने मूय में बाल्या लो है, लेकिन इस बात को कि मैं सम्मत्त हूँ कि अपने राष्ट्र का हित और बंगला देश का हित इस प्रकार से एक दूसरे से मिल चुके हैं, कि बंगला देश की पराजय भारत की पराजय होगी, दुर्लभ मुझे अब कोई संशय नहीं है। प्रधान मन्त्री ने लोकसभा में २४ मई को बहुत ही प्रभावशाली परबन्ध दिया था। उसमें वर्णित किया था कि जिस प्रकार हुए राष्ट्र अपने राष्ट्रहित का ध्यान करता है। जिस प्रकार वे परिस्थाल का प्रयास हो रहा है कि वह अपने सम्बन्धों को हक बडे भारत की पराजय पर, और भारत की पराजयों पर, हय इसे बरबान्त नहीं कर सकते, इत्यादि-पर्यादि बरिस् उन्होंने बहो भी। और यही तक बहो था कि यह जो दुनिया है आज की, अगर उनके जाने बरिस् का ध्यान नहीं किया, तो प्रधान मन्त्री की हैसियत से मैं एतल करती हूँ कि अपने देश की सुरक्षा के लिए और सामा-बिक एक अधिक जो हवाका स्वयन्त है, उसकी रक्षा के लिए वे सब उपाय हय करनेवाले करेंगे, जो हय कर सकते।

मैं सम्मत्त हूँ कि आज भी अपने देश के लोगों का ध्यान बंगला देश की ताक अगर है तो परीगापर की दृष्टि से है। बंगला देश की परर हय करते हैं, तो मानवता की दृष्टि से, भारत के लोगों की मानवता से सम्बंधित होकर करते हैं। लो ही करता है, तालाकियों में भाग्य है, और दुनिया के नारायणों में भी है। मैंने देखा, सब जगह देखा कि लोगों में बड़ी हमदर्दी है। यही तक कि बहो की लोकसभाओं में, धारासभाओं में जो प्रतिनिधि हैं, राबरोति में होते हुए बहुत गहरी जनता सम्मत्त है और बहुत गहरी जनकी महादुःखि है। लेकिन इस बात की भारत के नारायण भाव नहीं सम्मत्त रहे हैं अच्छी तरह, कि बंगला देश के प्रस के साथ, उसके प्रतिभव में साथ सातल का प्रस, उल्ला परिभव नूट गया है, परिभव-

• कल्याणकारी राज्य : किस कीमत पर ?

★ खादी के वारे में गम्भीरता से सोचने का समय

—सिद्धराज दंडा

■ राजनीतिक नेता अथवा सरकार के बचिदे लोगों के कल्याण की बात कियी जाती है : भारत में भी पहले कल्याणकारी राज्य की ही बात बड़ी जाती थी। समाजवाद का नाम तो कल्याणकारी राज्य की अवधारणाओं की जिम्मेदारी से बचने के लिए और लोगों को इस घोड़े में सताने के लिए कि अब उन्हें दूसरी कोर्दे और वैद्वार नीच मिलेगी, लगाया जा रहा है। समाजवाद की बातों का योगा-पन इसी बात से सिद्ध है कि समाजवाद का नाम लेनेवाले लोग वैश्वर्षी के साथ, एक या दूसरे कारणों से, अपनी सुख-सुवि-पाओं की और शान-शोहत को छोड़कर लोगों की गरीबी और तकलीफों में हिल्ला बटाने की तैयार नहीं हैं। राष्ट्रपति के लिए अभी हाल ही में लाखों रुपये की सामग्री से जो शास्त्रावर मोटर गाड़ी बिरेश

से भौंगाई भयी, यह इतना ताजा उदाहरण है।

कल्याणकारी राज्य के नाम पर लोगों को कुछ दुर्घट्टे फँक दिये जाते हैं। इन दुर्घट्टों की कीमत भी किस तरह लोगों को ही भुक्तानी पड़नी है इसका एक उदा-हरण प्रसिद्ध अमेरिजन सामाजिक 'यू.एन.बी.' के द्वारा स ११ अक्टूबर के अर्ध में प्रका-शित दक्षिण अमेरिका के उल्गुने देश की परिस्थिति से मिलता है। पिछले ५० वर्षों से कल्याणकारी राज्य के नाम पर उल्गुने के शासक अपने देश के नागरिकों को 'निःशुल्क विकिरसा, निःशुल्क पत्रार्थ और दूरे भेजना की योजना' जैसी सुविधाएँ देते रहे हैं। देश के २५ प्रतिशत लोग सरकारी नौकरों के रूप में सार्वजनिक खजाने से वेतन पा रहे हैं, और इसमें धनाढ्य १५ प्रतिशत लोग पैन्शन ! बीई भी शुल्क

→हो गया है। अगर बहो महिमा खान की विवरण हो जाती है, तो इसमें तो कोई शक नहीं है कि संभला देश के लोग लड़ते रहते, अब तक कि वे स्वाधीन नहीं होंगे। यह जो स्वाधीनता की लड़ाई है, रूप धर यहाँ बैठी है, जो नीरवजन है, उनको छोड़कर, हम सब भारत की स्वाधीनता की लड़ाई के विपरीत रहे होंगे। हम जानते हैं कि यह ऐसी बात होती है, जो सुखी नहीं है। जितने सारी तक उनकी यह सहाई बलियाँ, मैं भी जालिया, लेकिन इतना जानता हूँ कि जो लड़ है या वैश्वर्य करामों लोग और रोष भुंजी के हाथों में हलिन यही रहेगा। यह भारत से मरन नहीं मिलेगी, जब 'यूनाइ-टेड नेशन' कुछ कर नहीं सकेगा, अब क्या हाल हुआ ? कहीं जायेंगे, विधर

जायेंगे वे लोग ? कहीं से छहानदा मिलेगी ? दक्षिण एशिया का अर्थिय मैं इस छपके में देखता हूँ। मैं देखता हूँ कि अगर संभला देश की विवरण हो यही, तो विनोय का स्थान, अवधारणात वैश्वर्य का स्थान, ५१० राम मनोहर जोषिदा का स्थान, मेरा अपना स्थान साधार होता। दक्षिण-पूर्व एशिया का एक महानमद बन रहेगा। इस महा भुसणके के लिए दूसरा कोई प्यार नहीं है। यह धारा इतना सब तक एक दूसरे को मरन करके, एक साथ मिजबुन कर के खी गये दैयना, तब तक हम बुनिया की बड़ी-बड़ी मरितीय के मुहताज बने रहते दैसा कि शाय हम बने हुए हैं। (मोपाल अधिवेशन में चिने गये मरुण के) २०-१०-७१

एक तरह की 'कल्याणकारी' व्यवस्था पर सब तक ठिक संकता है ? यह धारा लोक-कल्याण मोट धारण-धरण कर या इनके राष्ट्रों की सुधारी लोकार करने उनसे कम लेकर सम्भव है। उल्गुने की सुध हर साल २० प्रतिशत के परिमाण में बढ़नी या रही है। नीचा यह हुआ है कि गरीब गरीब होते जा रहे हैं, बीमारी बढ़नी या रही है, पैसेवाले लोग पैसे से सब चीजें खीयकर उपयोग कर लेते हैं और देश का धारण आर्थिक जीवन धर धर गया है।

ऐसी परिस्थिति हिया और जगा-पत के लिए बहुत बन्दुल होती है। उल्गुने में मध्यम वर्ग के बुद्धिजीवी लोग सशक्ति बनावट पर जनाक हो रहे हैं, वेही में धारा बताते हैं, और-ब्रवरस्की से अपना काम खनते हैं। सरकार के लिए उनको कार्यवाहियों को रोकना जरूरीतर अवम्भव हो रहा है। पर उल्गुने के राष्ट्रपति ने इन सब बातों की परवाह न करते हुए और परिस्थिति से कोई अवक न लेकर कुछ दिने माइ होने-वन्ते गुणाओं में लोगों के मोट प्राय करने की इच्छा है अभी हाल ही में मजदूरों के वेतन में २० प्रतिशत की बुद्धि की घोषणा की है। उल्गुने के मरुन के अनुसार मुनाब के सार् में दरवारी मोररी की वेतन बुद्धि नहीं हो जा सकती, पर इसके लिए राष्ट्रपति ने इतना तरीका निकाल कर मरवारी नौकरों को खजाने से बिना ध्यान के खन देने को व्यवस्था कर दी।

और यह मातक उल्गुने दैते सुध-धाय देश में ही नहीं बल्कि मोन-कल्याण के नाम पर राजनीतिक नेता सब लयल बना रहे हैं। गरीबा यह हो रहा है कि हर देश में सुधा बढ़नी जा रही है और उनके साम-नाय मरुर्गाई। अमोर लोग या हताशापीर पैसे के सहारे अपना काम बना लेते हैं, बीज सारा अवपणिया जनता पर पड़ रहा है। लोग सब इन बात को समझते कि राजनीतिक नेता उन्हें वैश्वर्य बनाकर लिक्के फनके मोट प्राय करने के लिए

घर-घर के चारे करते हैं, नारे लगाते हैं और समाज को खतराक घड़े की बोर धकेलने जाते हैं ?

+ + +

★ गांधीजी ने सारी को पुनर्जीवन दिया, उसे आधी शताब्दी पूरी हो रही है। आज के भारतीय और सार्वभौमिक युग में गांधीजी ने जिस तरह हाथ से बने, हाथ से बुने कपड़े का देशभारतीय उपयोग फिर से छात्रा किया था, तथा उसे राष्ट्रीय मान्यता और आदर दियाथा था, वही एक बरिश्ता ही था। गांधीजी ने सारी की बलवा केवल गाँव-गाँव में उपयोग बनाने और लोगों को काम देने के रूप में ही नहीं की थी, हालांकि उनका यह पक्ष महत्त्वपूर्ण है। उनकी दृष्टि में चर्खा केन्द्रित और गांधीजीकरण के धार के युग के अविभाज्य के सिद्धांत ब्यापक वा प्रतीक था। ब्यापक तो बाल तो दूर रही, आज तो सारी उसी हस्ती की दासी या माधुर्य बनो हुई है जिसके विनाशक खड़े होने की कलावा उसके लिए की गयी थी। सारी निर्णय और निष्पन्न हो गयी है।

सारी को हमने आधुनिक-आधुनिक के विविध कार्यक्रम का एक अंग माना है। पर उपरोक्त श्रमार्थ मानव 'प्रामा-भिमुख' सारी से है, यह संपन्न स्थान में रहना चाहिए। आज सारी का जो काम बन रहा है वह प्रामाभिमुख नहीं है। वह बाजारोन्मुख है। हमने आशा रखी थी कि सारी-सत्याग्रह प्रामाभिमुख बनेगी पर मोडरा सारी-सत्याग्रह सरकारी वंश के पाठ में इतना उलटा गरी है कि उनसे ऐसी आशा करना उनके प्रति न्याय नहीं होगा। सारी प्रामाभिमुख हो इसके लिए नैसा व्यवस्थाओं ने कहा है, यह भी बकरी है कि गाँव सारी अभिमुख हों। यह आधुनिक-युक्ति के अविभाज्य में ही सम्भव है। अब समय आता है कि हमें इस और गम्भीरता से ध्यान देना चाहिए।

केवल सारी का जो मोडरा काम है उसके पीछे भी जिन्दी-न-किन्दी रूप में सर्वोच्च धर्म का वैदिक बल है, चाहे वह किसका

को अग्रदत्त हो या शीम हुआ हो। इन समय सारी-युक्ति और सारी-सत्याग्रह एक अविभाज्य मोड पर खड़ी हैं। हो सत्या है उनमें से बहुतेको को सर्वोच्च रूप की सत्या या मार्ग-दर्शन की आवश्यकता न महसूस होती हो, पर दूसरी ओर कई सारी-सत्याग्रहों और कार्यक्रमों की यह अनुरोध है कि सर्वोच्च रूप सारी-युक्ति के चारे में व्यस्त नहीं देना। साथ ही सारी समिति से यह अनुरोध पूरी नहीं हो रही है, बाल्य इसके जो भी हो। यह आवश्यकता तबतक है कि यह इन सारे विषय पर गम्भीरता से सोचकर आगे नीति स्पष्ट करे।

सारी के कुछ ही समय बाद जब सारी के लिए सरकारी छद्मता लेने और अविन भारतीय सारी बोर्ड (जो अब 'नभोसत' है) की स्थापना की जानी, तब भी कई सारी कार्यक्रमों को सत्या या कि सरकारी द्वारा सारी नाम के लिए अक्षमि से छन मित्रने जगना तो अपने सारी कार्य-कर्तव्यों का मानव विगड़ना और सारी कार्य विगड़ना होगा। पर सार्व सारी के विस्तार के लोभ में आकर, उस समय हमने वह तरीका ही भी कि हमें सरकारी के सहयोग या वंश से इतना नहीं चाहिए, हम मानते हैं कि तो उनका उपयोग करके काम की बसा रहने।

केवल हुआ नहीं ब्रिगल कर था। हम बचपन से सार्विन हुए। सारी-सत्याग्रहों को जो सार्वो शर्या सिद्धा, उनके काम का विस्तार तो हुआ, लेकिन आशा की ये प्राप्ति होनेवाले पीछे के कारण जो दीप आ जाते हैं, वे उनमें भी आ गये। आज भी सारी-सत्याग्रहों के कारण कई अन्धे काम हो रहे हैं जो हमने नहीं कर रहे हैं, परन्तु सारी से सार्वी ने या अन्ध सार्वी ने जो क्रांतिकारी वंशशाएँ रखी सो वे उनसे पूरी नहीं हो रही हैं। येरे जैसे बर्तन को, जो सन् १९४१-४२ के चर्खा खप के निर्णय में शामिल था, आज प्रायविकर की आवश्यकता में हो रही है। सरकारी

महापता लेने का हमारा निर्णय महत्त्व सामिल हुआ, ऐसा मुझे लगता है।

सारी-सत्याग्रहों के पीछे सार्वी ने प्रमाण-पत्र का एक विनयन वैदिक बल सत्या किया था। वही सारी-सत्याग्रहों का पीठबल भी था और वही उनकी शुद्धता की गारंटी थी। पर हमें मजबूर करना चाहिए कि इन सार्वी का ठीक उपयोग करके हम सारी-सत्याग्रहों में सुनने वाली सुगड़को को रोक नहीं सके। आज बीबीसी सारी-सत्याग्रहों हैं जिनमें प्रमाण-पत्र की सार्वी के विनाशक गहन काम हो रहे हैं, पर हम उन्हें नहीं रोक पाते। कहा जाता है कि अगर हम उन्हें रोकें, और प्रमाण-पत्र सार्वी करे, तब सँ, तो वे सार्वी के भी सार्वी हैं। एआय मानने में यह भी प्रमाण करके देना जाना तो अक्षम होगा। सार्वी सार्वी के पीछे सार्वी के लिए उत्कलनीय सर्वोच्च न्यायकर्म, सिद्धी कीविन तक गये थे और वहाँ से भी उन्होंने सार्वी मान सार्वी की। अन्धता होता है यह इस मामले में कहीं नहीं बने। न्यायकर्म का केंद्रना प्रमाण-पत्र समिति के सिद्धांत बाता तो हम प्रविष्ट-युक्ति ऐसे सार्वी काम को छोड़ देते।

आज तो कई सारी-सत्याग्रह प्रमाणपत्र को ही और प्रमाण-पत्र की आवश्यकता, और सार्वी नियमों के भी विनाशक काम करती हैं। सार्वी सार्वी के अन्ध-अधिशार्वी ने यह कर बचन किया है कि आज तो सारी-सत्याग्रहों को भी छोड़ें राष्ट्रीय सार्वी की वम बोल प्रतिशत रकम ही सार्वी में है, एए-डी बरत सार्वी उसमें से अधिकांश सार्वी में आ सार्वी है। इस विरुद्ध का अन्ध सर्वोच्च सार्वी पर ही होता आवश्यक है। वह उसे सहन कर सार्वी या नहीं यह सार्वी सार्वी से सोचने का विषय है।

सारी के आज के काम को और सार्वी की सार्वी को हम प्रामाभिमुख बना सके, यह सम्भव नहीं है। उपरोक्त विरुद्ध को हम रोक सके या मोडरा सारी काम को बन्द करा सके, यह भी →

बंगला देश और यूरोपीय नजर

यूरोपीय देशों के लोग अभी भी बंगला देश के सवाल को किसी ब्रजात प्रवेश का ऐसा सवाल मानते हैं, जिससे वे सीधे सम्बन्धित नहीं हैं। जबकि यह दुर्भाग्यपूर्ण बँटवारा, और भारतीय उप-महाद्वीप को ये सम्पत्तियाँ विद्रिप्त विरासत है, पर कुछ प्रबुद्ध शान्तिवाधियों और कर्मठ कार्यकर्ताओं को छोड़कर आमजनों को समझ को इस सवाल ने सुझा नहीं है। हाँ, अखबारों ने इस प्रश्न को काफी विस्तार और सावक्य के साथ प्रसारित किया है। पर धीरे-धीरे अखबारों के समाचार जातकारों और सूचना की दीवार को फाँद कर वही समझ और जागरूकता के अंगन तक पहुँचने में नाकामयाब प्रयत्न हो रहे हैं। इसलिए विषयनाम, विनायक, अल्टर, मध्यमपूर्व आदि अनेक सपनों की तरह यह भी एक सबक है, जो हिन्दू-मुसलमान के दरमँ और चीन-अमेरिका के परिवेश में ली गया है। जो लोग दावा करते हैं कि उनका चुनाव-प्रणाली, प्रातिनिधिक जनतन्त्र, सखतीय प्रभावण आदि में विषय है, उनकी हितोन्मुखी (बोय) शक्त हो गयी है कि वास्तव में उनका दावा सतही है और उनका अपनी विस्वास अपने व्यावसायिक, सैनिक और सत्तायुक्त स्वार्थों में ही है।

पर इसमें कोई संदेह नहीं कि कर्मठ और प्रबुद्ध शान्तिवाधियों का एक छोटा समुदाय है, जो व्याकुल और विवित है, तथा कुछ करने के लिए सतपटा रहा है।

“शांतिवादी” के सवाक और प्रसिद्ध कल्याणिकार-उपन्यासकार कनलेखर भी

→ सम्भव नहीं है। छात्री-संस्थानों का अपना एक निहित स्वार्थ लड़ा हो गया है। क्या अब यह समय नहीं आया है जब सर्व सेना सय की इस सारे काम के पीछे से अपना वैकिक शक्त (जो कुछ भी वह बना है)

केर साप यूरोप जाने हैं और हम दोनों ने मिलकर अपने व्यक्तिगत स्तर पर पूरे यूरोप को माना शुरू की है। दलंष्ट्र से हमलोग बेविजयन आये। दूष्ण्ड में दो सभाएँ, तथा लियेक विश्वविद्यालय में एक बहुत बड़ी सभा हुई। जब इन्डो में जागरूकता का और प्रतिबद्धता का अमान था तो बेविजयन से ज्यादा आशा करना बेमानी होगा। पर हमें आश्चर्य हुआ कि सँकड़ो विद्याधियों ने हमारी सभाओं में भाग लिया और २२ नवम्बर से १० दिन का यूरोप में जनताध आनोजित करने का फैसला किया गया। यह उपवास पाकिस्तानी दुतावासों के सामने होगा और १० दिन तक चलेगा। फिर हम आम्पटरहाम आये। २ दिन तक हमारी प्रदर्शनी एनोकंक हाउस में लगी रही, जिसे सँकड़ो लोगों ने देखा। अखबारों ने पूरे पृष्ठ में हमारे साथ के इतक्यु छाये। टेलिविजन ने प्रदर्शनी को प्रसारित किया। हॉलैंड के लगभग ७० प्रतिष्ठित सेकंडो, ससद सदस्यों, सार्वजनिक कार्यकर्ताओं और राजनीतिको ने मिलकर एक वक्तव्य प्रसारित किया जिसमें कहा गया कि, ‘बंगला देश में जो कुछ हो रहा है, वह पाकिस्तान का अन्धलो मानवा नहीं है और विषय-समुदाय को इस मामले में दखत देने की जरूरत है।’ वहाँ से हम कोरेन, रेशन आये, वहाँ सभी बड़े अखबारों ने इस विषय को उजवा और हमारी प्रेस काफेन्स को अच्छा कबरेर मिला। फिर रशोन में भी उही प्रकार अच्छी सभाएँ और गोष्ठियाँ हुईं।

हमें आशा नहीं थी कि बीन,

हटा लेता चाँहिए? कत शायद यह भी सम्भव न हो। सर्व सेना संघ को अपना ध्यान और अपनी शक्ति प्रामाणिक्युद्ध छात्री के काम को खड़ा करने में ही लगानी चाहिए। ●

(पश्चिमी जर्मनी) में हमें लोगों का इतना सहयोग मिलेगा। पर हमारी सभा में लगभग दो सौ आदमी थे, जिसे टेलिविजन-प्रधान देश में हमारे जैसे अग्रिमद व्यक्तिओं की सभा के लिए छाठी अच्छी उत्पत्ति माननी चाहिए। इन सभी देशों में २२ नवम्बर से उपवास का आयोजन किया गया। फिर अब हम विपना में हैं। मजोम से चल थोमती गाँवों भी वहाँ थी। उनकी सभा शाम को ६ बजे थी। फिर हमारी सभा ९ बजे अलवत स्वाइन्जर हाउस में की। वहाँ भी उपवास का आयोजन होगा। वहाँ से हम यूरोपलायिका, रिड्न्जरसेक, फॉर और इतकी जायेंगे।

बंगलादेश का आन्दोलन सामरथ या शक्तिवय के कौनो में नहीं है। पश्चिम के राजनीतिको और लोगों को विज्ञो भी आन्दोलन पर ‘वाच’ या ‘वलिण’ का तबल लगाने की इतनी आस है ही बुकी है कि वे जग परिधि से बाहर निष्क ही गयीं पावे। यदि यह आन्दोलन विवत-नाम की तरह अपने राष्ट्रीय सर्मों से बटकर सामरथी ही जाता तो शायद चीन और रुष सोड़कर मर में आते। यदि यह आन्दोलन ताइवान या प्रोस की तरह बाम्युनिस्ट विरोध का मोर्चा होता, या नेहरोतीतायिका, हंगरी आदि की तरह साम्यवादी सेवे से स्वतन्त्र होने जैसी बौर् पृष्ठभूमि होती, तो शायद सारा पश्चिम भीख-बिल्लावर बंगलादेश का पराधर बन पाता। पर ठिके मानवीय मुक्ति की प्रेरणा आज के राजनीति सङ्गल सभार में पर्यत नहीं है और इसलिए मानवीय-स्वातन्त्र के आन्दोलन मुचने जाते देखकर भी किसी के कानों पर चूँ नहीं रेंगती। पर यूरोप का तरण अभी भी हमारी धारणा को जगाता है। (जो ब्रजप्रयाग मारायण की तित्ते नये एक पत्र से)

—सतोत कुमार

बिजना : २६-१०-७१

दरवाजे पर विश्वविद्यालय

(चीन का एक शिक्षण-प्रयोग)

१. मात्रो के मार्गदर्शन में हिण्मी सम्प्रदाय धर्म-विश्वविद्यालय की स्थापना १९२० में हुई थी। सांस्कृतिक क्रांति के जिलों में विश्वविद्यालय और लक्षिक पूर्ण और पुष्ट हुआ। इस समय उस विश्वविद्यालय और उनकी स्थापना के १ लाख २० हजार स्वयंसेवक समाजवादी क्रांति और समाजवादी निर्माण के कार्य में लगे हुए हैं।

हिण्मी का धर्म-विश्वविद्यालय शिक्षण की दृष्टि में एक विनमूल नये बंग का प्रयोग है। वेरह वरं पढ़ने उसने मात्रो के इन शिक्षण-विद्यार्थियों के आधार पर बाध शुभ किया था।

(क) शिक्षण से जनता को राजनीति (प्रान्तिरीयन पानिडिस) की योग्य विचार बाहिए।

(ख) शिक्षण का उत्पादक धर्म (धोड-विद्य वेकर) से समन्वय होना चाहिए।

(ग) धर्मियों को कारीगर बनाना चाहिए।

इन विद्यार्थियों पर चलकर हिण्मी ने शिक्षण और विद्यार्थियों की सहाय्य से शिक्षा में स्वावलम्बन माया है, और एक पूरी नयी पीढ़ी को शिक्षित किया है, जिसकी उपस्थिति में उत्थान का दृष्टि भी है और विचार में समाजवाद की उभरी प्रथा भी।

२. विश्वविद्यालय और उसकी १३२ छात्राओं के २० हजार विद्यार्थियों ने विद्यार्थी वेरह वरं में ३९० छात्र, १२० छात्राएँ, तथा शिक्षण ही वर्षाओं, पद्याराम और जयन सगाने के वेरह स्थापित किये हैं। इन छात्रों और छात्रों के पास वरह ह्वार एरह के लक्षण धर्म के धर्म, कनिष्ठ सेवी की मुमि, योग्य और बाध है।

३. विश्वविद्यालय के क्षम्याराम में सांस्कृतिक और साहित्यिक शिक्षा

साथ-साथ दी जाती है, और उसका सीधा सम्बन्ध गाँवों तथा क्षेत्र के सम्पूर्ण और उत्पादन-जीवियों के साथ है। शिक्षण-पद्धति के तीन मुख्य पहलू हैं। एक, वर्ग-समर्थन (क्लास रूनिग), दो, उत्पादन के लिए प्रवृत्ति से सघन, तीस, सांस्कृतिक शोध और प्रयोग। क्षेत्र की व्यापक-कला को देखते हुए खेती, जगन, पशु-पालन, स्वास्थ्य-विचार, स्वास्थ्य, साहित्य विषयों पर अधिक जोर दिया जाता है। सांस्कृतिक शिक्षण (थ्योरिटिकल टोनेत्र) की विचारों के अनुभवों और पद्धतियों तथा विचार के नये सोचों और प्रयोगों के साथ जोड़ा जाता है। सारे शिक्षण का मुख्य विद्यार्थ्य है कि 'नाम करने आओ, सोचते जाओ' वृत्त, जगन, पशु आदि सभी शिक्षण, बाध और उत्पादन के आधार हैं। शिक्षण, योग्य और उत्पादन की सभी की विचार-विशेष-पद्धति पूरी होती है। शिक्षण और विद्यार्थियों के सामने हर वरन क्षेत्र का जीवन और वहाँ की प्रवृत्ति रहने है। इसके कारण विद्यार्थियों को हर क्षेत्र का व्यावहारिक ज्ञान होता है, और उसे वे सुरक्षित प्रत्यक्ष रूप से लागू कर सकते हैं।

४. इस शिक्षण पद्धति की बुनियादी विशेषता यह उदाहरण से स्पष्ट हो जायगी। मान लीजिए कि क्षेत्रों के शिक्षण-विद्यार्थियों को हिण्मी क्षेत्र की पहली मान मिट्टी का सम्बन्ध कला है, तो वे सबसे पहले वह जगन की क्रांति करनी कि वहाँ के किसानों ने जिन जगनों के अन्तर्गत मिट्टी को सुखाते के प्रयत्न किये हैं, और उन्हें क्या अनुभव आने हैं। इन अनुभवों को धारण करके वे शिक्षण, प्रयोग, और योग्य के लिए छात्रों को तैयार करेंगे। प्रयोग के बाद वे स्वयं सुधार को योजनाओं में स्थानीय

क्षेत्रों के साथ करीब रहेंगे। इन पद्धतियों से नाम करने एक विभाग ने एक पहलू की संरक्ष, मान मिट्टी के ५० एकड़ में बाध और क्षेत्र के वृक्ष उगाएँ, जो नाम पढ़ने सम्भव समझा जाता था।

५. हिण्मी विश्वविद्यालय के अनेक स्नातक क्षेत्र के जीवन में बाध गये हैं। के पाठ-स्तर के कार्यकर्ता हैं, शिक्षारी हैं, पद्याराम, और शिक्षार्थी आदि के साथ कर रहे हैं। बहुत-से अपने सम्पूर्ण में या गाँव के उत्पादन-विशेष में 'नये पाठ्य पथनेजाने' आधार हैं। वे सब मिलकर समाजवादी, सामाजिक समाज-रचना का काम कर रहे हैं। समाज-निर्माण उनके जीवन का लक्ष्य बन गया है।

हिण्मी विश्वविद्यालय के निर्माण में सरकार का बहुत कम धर्म हुआ है। बाधु धर्म के लिए वह धर्म जगन-निर्भर है। विद्यार्थी १०-१२ वर्षों में शिक्षण और विद्यार्थियों ने विचार ५।। नाम वर्ग-मोटर छात्रों की सहाय्य बनायी है। एक विद्यार्थी विभाग अपने लिए कान, लेन, मांस, सभी आदि नाम उगा लेते हैं।

विश्वविद्यालय अपने ही अन्तर्गत में सोचन नहीं है। जगन और से निरन्तर-वर्षों पहली धर्मों के गरीब शिक्षार्थियों के लिए साक्षात् सुधी हुई है। विद्यार्थियों से गाँवों के युवक भी शामिल हैं। इन छात्राओं में शिक्षार्थियों के सम्बन्धों को समाज-वादी केन्द्र और साहित्य का शिक्षण मिलता है। उनके अलावा निरन्तर शिक्षार्थी और सम्बन्धों को भी साक्षात्कार-निर्भर-साक्षात्कार का शिक्षण मिलता है, एतना ही नहीं, उन्हें वैज्ञानिक और साहित्यिक बाध भी बनायी जाती है।

३० जुलाई १९६१ को मात्रो ने विश्वविद्यालय की इन सन्तों में प्रस्ताव को 'बाध लोग बाधा धर्म का काम करते हैं, बाधा धर्म पढ़ते हैं, और सरकार से एक वरं की भी माँग नहीं करते। साथ ही बाधा देहानों में प्राथमिक और माध्यमिक स्तर और कान्ठ भी बना रहे →

कच्छ के रण में

बनासराज जिला का अन्तिम पहाव पीपराला से हम कच्छ की ओर बढ़े। भारी तरह बगोरा छाया हुआ था फिर भी हम तेज गति से चल रहे थे क्योंकि यह था राजमार्ग। महापुरव माधव देव थे कहा है—

हरि भवित राजमार्गं परपुर-वस-
सन्त प्रकाशित

श्रुति जननीर पर-वप अनुसरि ।

पुरो हुन्या आमि आनन्दित स्थलन
माहिके कदाचित

महाजन सव जानिया निबन्ध करि ।

हर भवित के राजमार्ग पर पुर-वस-सन्त-प्रकाश का प्रभाव पड़ रहा है और आगे-आगे श्रुति जननी चल रही है। ऐसे रास्ते पर तेज गति से भी कोई चौंकेगा तो भरे रखन होगा यही।

हमारे साथ में जो भाई चल रहे थे उन्होंने बताया कि कच्छ का रण शुरू हो गया। रास्ते के इस तरफ छोटा रण और दूसरी तरफ बड़ा रण, दृष्टि खाली तो देखा पैली हुई विशाल पृथ्वी और ऊपर मुनज आकाश। हर एक क्षितिज दिशाओं दिशा।

हर साल समुद्र का पारा पानी चरमाल के मोसम में रण में घुस जाता है और छ साल महीनो में प्रोरे-धीरे सुख जाता है। नमकीन पानी से भीना वह भू-भाग सूख जाने के बाद सक्त बन जाता है। उस पर एक साथ एक ही कठार में दोस-दालीय गाड़ियाँ चल सकती हैं। एपी रण पर १९६६ में पाकिस्तान ने हमला किया था। यह रण बीच-बालीय भील

—हैं। बास्सब में ऐसी ही विश्वविद्यालय होना चाहिए।

क्रिष्णो प्रान्त कुञ्जीमिनय के जमाने में आशिक और सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत विख्यात हुआ था। यह एक विश्वविद्यालय की ही देन है कि वहाँ की जनता ने विजयो के टैशन मोत जिये हैं, भूमि-

ते लेकर साठ सत्तर मोत तक चोड़ा है। कच्छ जिले के उत्तर तरफ कच्छ का बड़ा रण और उस पार पश्चिमी पाकिस्तान, दक्षिण की तरफ छोटा रण और दक्षिण पश्चिम की ओर समुद्र है। पहली स्वागत सभा में ही एक प्रमुख सत्रजन ने कहा, "हमारा कच्छ शैक्षणिक दृष्टि से विख्यात हुआ है। आशिक दृष्टि से भी विख्यात हुआ है। ईश्वर की कृपा दृष्टि पर हमारी सेती निर्भर करती है। खास उद्योग-धंधे भी नहीं हैं। यातायात की सुविधा अभी-अभी हुई है इत्यादि। आज हर जगह हर संघ को भौतिक दृष्टि से देखा जाता है, इसलिए लोग यहते हैं कि हम पिछड़े हुए हैं।

कच्छ जिले की २१ दिन की यात्रा में हमने महसूस किया कि शैक्षणिक, आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए लोगों को पिछड़े हुए नदी वह खपते। क्योंकि उन्हें आध्यात्मिक बार्से जागनी से समझ में आ जाती है। एक सभा में जब उन्हें पूछ रहे थे कि 'आप को राम चाहिए कि माया?' अलग-अलग बहनों के मुँह से भी निराल पड़ा, 'माया किस काम की, हमें तो राम चाहिए।' 'माया की अकारता समुद्र है। वे जानती हैं कि माया न इस लोक में समाधान दे सकती है न उस लोक में। इसलिए राम चाहती हैं। राम मिलेगा ही माया जाने आए पूर जायेगी। 'राम' इल्लो-परलोक दोनों में काम जाने जाते हैं।

उप दिव्य बहिनो की विशाल सभा हो रही थी। श्रुते समता है कि गाँव की करीव-करीव सभी बहिनें अपनी सुधार किया है, सेती के लोदार बनाने हैं, नयी सेती-पद्धति का प्रचार किया है, और एक नयी पर्वतीय अर्पेनीति का विचार किया है। वहाँ के लोग बहते हैं : 'विश्वविद्यालय हम में से हर एक के दावाये पर है।'

—रामभूति

शामिल थी, कोई गुनने की इच्छा से तो कोई देखने की इच्छा से। बनासराज जिले के आसिर के कुछ गाँवों से बहन-भाइयों की पोजार्न बदल गयी। बहनों के शरीर पर रंग-बिरंगे कपड़े दोखने लगे। वृष्ट भो आ गया। गहरो का तो बहना ही बना। एक-एक वन में चार-पाँच होर। उसमें बाँदी-नोने के भारी गहनें, गता जो बुल का बुल मणियों की माला से ढका हुआ। और हाव में जो बाईं तर बजत की हाथी दाँव की चूड़ियाँ, जो हाथों में चिपकी हुई होती हैं। उनके अलावा बाकी जितने बच्चे शरीर के दिखाई देते हैं उन पर गुदाई करके बाने रण से उनकी डिजाइन करदा सेती हैं। नयी-नयी गड़ियाँ भी उस रुद्रि के बचन में बंधती आ रही है। पुताये समय में लोग इधर-उधर पगदा नहीं जाते थे। अबने ही हमान में रहते थे। सेतिन आर जाजीविका के लिए भी लोगों को दूर-दूर जाया पड़ता है। वहाँ का पढ़नावा अलग होने के कारण वहाँ के समाज में एकरव होना बहनों को मुश्किल हो जाता है। गहने उजार सचो है, सेतिन शरीर का यह भावत डिजाइन निदासत, काव के बड़े-छोटी की मिश्रता सभन गहरी है। बहनों को जब एम एम्बन्ध में समझते हैं तो वे समता पाती हैं। कपी-नपी नयी सड़ियाँ बनने कुन हायुगर की उजारने की हिम्मत करती हैं।

प्रीमती इन्दिरा गांधी हवाये देग की प्रशान्तकी है। देव था बायोदार बनानी हैं। यह बात अनपढ़ बहनों को भी मायुम है। उठते बहनों के अन्दर जब आत्म-निश्चाल पंदा होता है। शिरोनि धार तर्न बनने को हीन माना था, नम-पौर माना था वे बहनों कि रिजयो की रुद्रि पुहनीं से बम गहरी है। रिजयो पुत्र से रिजो तरह बम गहरी है। इतलिए एक बहल भीन उठी, 'वे (संदिन गहरी) पूर्व-जन्म का तेकर क्षयो है।'

बन्धु में प्रवेक के दिन उठ सत्रन ने यह भी कहा था कि हवाये रज सेन

की बहुत विद्युत् हुई है। इसलिए ही समाज विद्युत् हुआ है। उस समय के जेठे जब हर पुरुष की यह बात समाज में आनेकी कि विद्युत् के विद्युत् हुई होने के कारण समाज लगी गयी आगे लगी बढ़ने है तब पुरुष स्वयं ही स्त्रियों को जानी छोटी छोटी बनाने की कोशिश करेगे। आरंभ तो पुरुषों को स्त्रियों की शक्ति का मान नहीं है। इसलिए स्त्रियों को लोग या विरक्ति की वस्तु समझते हैं। बहुतों को अपनी शक्ति की जलजारी देते-देते हम पुरुषों को समाजिक की कोशिश करती हैं। स्त्रियों को आरंभ तक समर्थ नहीं बनाया गया है। वे सामाजिक की अवस्था में रही गयी हैं। ऐसी स्त्रियाँ, जो पति पर जीवन का बुरा भरोसा रखती हैं, उन्हें अपर समाज माना जाता है। सामाजिक की अवस्था में स्त्रियों की कार्य, तो उनकी सामाजिक की विद्या हुआ होगा। पहले समाज को जो सामाजिक की लगेगी वह ही है ही, अपना वक्तो पर अच्छा व्यवहार नहीं पड़ेगा। लड़कों ने कहा है

मौना (सहरसा) में प्रखण्ड-स्वराज्य समाज का गठन

मौना के अन्तर्गत श्री एम० अण्णाभाय् १० तबस्मान को मौना प्रखण्ड की वाक्ता के विनिधि विमली पत्रिका। उसी दिन २-३० बजे अण्णाभाय् ने विमली में आयोजित एक आमनामा में उन्होंने भाग लिया। तब तबस्मान पर बहो विहार सरकार के अग्रणी मन्त्री को सहजत चौधरी, विहार प्रामस्वराज्य समिति के मन्त्री की विद्यासागर जी, सुधी विमली बहन, महेन्द्र साई, सहरसा के विद्याधाराजी की निजामी साहूब, स्थानीय प्रखण्ड विकास पदाधिकारी के अनामा विमली नगर तथा मौना प्रखण्ड के कई सभ्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। मौना प्रखण्ड में बनी सभी ग्रामसमाजों के प्रतिनिधियों के अनामा लुबारी को सहरसा में लोग बाड़े-गाड़े और सर्वोप-उद्देश्यों के साथ उभर आधोत्रय में सम्मिलित होने काये थे।

श्री महेन्द्र साई ने उक्तिधियों का पंचम उपस्थित लोगों से कटाप। श्री अण्णाभाय् जी ने अपने भाषण में कहा कि मैं यहाँ के ग्रामस्वराज्य के कामों को देख कर पेरथा लेने आया हूँ कि यहाँ ग्राम-समाज किस तरह काम कर रही है और ग्रामस्वराज्य का स्वरूप किस प्रकार वि-सित और समर्थित हो रहा है। सारे देश की नजर अभी यहाँ लगी हुई है। विनीतजी का आना भी बराबर यहाँ ही समाज लुगा है। आधीनों से मिलकर मुने बढ़ी

की बहुत विद्युत् हुई है। इसलिए ही समाज विद्युत् हुआ है। उस समय के जेठे जब हर पुरुष की यह बात समाज में आनेकी कि विद्युत् के विद्युत् हुई होने के कारण समाज लगी गयी आगे लगी बढ़ने है तब पुरुष स्वयं ही स्त्रियों को जानी छोटी छोटी बनाने की कोशिश करेगे। आरंभ तो पुरुषों को स्त्रियों की शक्ति का मान नहीं है। इसलिए स्त्रियों को लोग या विरक्ति की वस्तु समझते हैं। बहुतों को अपनी शक्ति की जलजारी देते-देते हम पुरुषों को समाजिक की कोशिश करती हैं। स्त्रियों को आरंभ तक समर्थ नहीं बनाया गया है। वे सामाजिक की अवस्था में रही गयी हैं। ऐसी स्त्रियाँ, जो पति पर जीवन का बुरा भरोसा रखती हैं, उन्हें अपर समाज माना जाता है। सामाजिक की अवस्था में स्त्रियों की कार्य, तो उनकी सामाजिक की विद्या हुआ होगा। पहले समाज को जो सामाजिक की लगेगी वह ही है ही, अपना वक्तो पर अच्छा व्यवहार नहीं पड़ेगा। लड़कों ने कहा है

मौना प्रखण्ड में जुन १० पचासवें हैं। जिनमें ३८ राजस्व गाँव तथा ७३ टोले हैं। राजस्व गाँवों तथा टोलों को मिलाकर अब तक कुल १० ग्रामस्वराज्य-समाजें बनायी गयी हैं। वहाँ कुल ६,२४२ परिवारों में ३६,३१४ जन-संख्या है जिनमें २,४४८ परिवार (३,२२५ भूमिगत तथा २,३२३ भूमिगत) और ३१,७१६ जनसंख्या ग्रामदान में शामिल हो चुकी है। अब तक ४६१ दाताओं द्वारा प्रायः १८५ को ७०० १०० पुर बनीं ७४४ आदातों के बाँटी गयी है। मातृत्व है कि यहाँ का ८३ बोधा १०० एकड़ के बराबर होता है। २९ ग्रामस्वराज्य समाजों में ग्रामकोष बना हो रहा है तथा पुरे प्रखण्ड में १,११८ शक्ति सौंकि बने हैं।

वै आता है। फिर भी सामाजिकी नमक के मातृक नहीं हैं। जिनके पास पूँजी है, वे नमक के मातृक है और मन्तूर बनकर प्राप्ति मोग ही नमक बना देते हैं। पूँजी गाँव एक ही जाप तो जो लगी मन्तूर हैं वे ही नमक उद्योग के मातृक बन सकते है और सब लोगों को उधवा पापदा विभ मरां है। निजान का उधवा से उधवा पापदा लेना है, तो सामूहिक भावना को जगाना होगा।

बच्छ वा अन्तिम पडाव था बजता। सुन्दर वा जितरा। जहाँ बह बन्दर। विभिन्न प्रान्तों के लोग यहाँ रहे हैं।

मौना (सहरसा) में प्रखण्ड-स्वराज्य समाज का गठन

मौना के अन्तर्गत श्री एम० अण्णाभाय् १० तबस्मान को मौना प्रखण्ड की वाक्ता के विनिधि विमली पत्रिका। उसी दिन २-३० बजे अण्णाभाय् ने विमली में आयोजित एक आमनामा में उन्होंने भाग लिया। तब तबस्मान पर बहो विहार सरकार के अग्रणी मन्त्री को सहजत चौधरी, विहार प्रामस्वराज्य समिति के मन्त्री की विद्यासागर जी, सुधी विमली बहन, महेन्द्र साई, सहरसा के विद्याधाराजी की निजामी साहूब, स्थानीय प्रखण्ड विकास पदाधिकारी के अनामा विमली नगर तथा मौना प्रखण्ड के कई सभ्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। मौना प्रखण्ड में बनी सभी ग्रामसमाजों के प्रतिनिधियों के अनामा लुबारी को सहरसा में लोग बाड़े-गाड़े और सर्वोप-उद्देश्यों के साथ उभर आधोत्रय में सम्मिलित होने काये थे।

श्री महेन्द्र साई ने उक्तिधियों का पंचम उपस्थित लोगों से कटाप। श्री अण्णाभाय् जी ने अपने भाषण में कहा कि मैं यहाँ के ग्रामस्वराज्य के कामों को देख कर पेरथा लेने आया हूँ कि यहाँ ग्राम-समाज किस तरह काम कर रही है और ग्रामस्वराज्य का स्वरूप किस प्रकार वि-सित और समर्थित हो रहा है। सारे देश की नजर अभी यहाँ लगी हुई है। विनीतजी का आना भी बराबर यहाँ ही समाज लुगा है। आधीनों से मिलकर मुने बढ़ी

इसलिए सहज ही बच्चों की दो-चार भाषणें आ जाती हैं। ऐसे स्थानों से देश की भावनात्मक एवता सहज गद्य जाती है।

१५ अक्टूबर को वाक्ता गठो चली। रोज वा कार्यक्रम बनाने गया। दोपहर डाई बने कलमा पोर्ट से हमारी वाक्ता शुरू हुई। ईदल नहीं बने, पर कुल वाक्ता में हमारे साथ रहने वाले मणिभाई और मन्त्र लुकी जन मागर के विनादे सहं थे। कुछ ही क्षणों में वे अंतो स बोधान हो गये। और बच्छ की स्मृतिवो सहित हमने बोधाप्य में प्रवेश किया।

प्रसन्न हो रही है। समाज की जठरजना श्री मन्त्री भाई कर रहे थे, जो एक ग्राम-स्वराज्य समाज के मन्त्री की हैं। अतिथियों का स्वागत विमली उभर विद्यालय के प्रजाप सभ्यमान्य श्री राजजी वाक्ता ने तथा अण्णाभाय् साहब श्री सुरज साहू ने किया। समाज में लगभग ३ हजार लोग उपस्थित थे।

एनी बोके पर प्रखण्ड ग्रामस्वराज्य समाज का वाक्ताप्य गठन हो गया जिसके अध्यक्ष श्री नारायण वाक्ता तथा सभी मन्त्री प्रजाप वाक्ता बतये गये हैं। मातृत्व है कि इसके पदों यहाँ एक वर्ष प्रखण्ड ग्रामस्वराज्य समिति का गठन की दुर्गा था।

मौना प्रखण्ड में जुन १० पचासवें हैं। जिनमें ३८ राजस्व गाँव तथा ७३ टोले हैं। राजस्व गाँवों तथा टोलों को मिलाकर अब तक कुल १० ग्रामस्वराज्य-समाजें बनायी गयी हैं। वहाँ कुल ६,२४२ परिवारों में ३६,३१४ जन-संख्या है जिनमें २,४४८ परिवार (३,२२५ भूमिगत तथा २,३२३ भूमिगत) और ३१,७१६ जनसंख्या ग्रामदान में शामिल हो चुकी है। अब तक ४६१ दाताओं द्वारा प्रायः १८५ को ७०० १०० पुर बनीं ७४४ आदातों के बाँटी गयी है। मातृत्व है कि यहाँ का ८३ बोधा १०० एकड़ के बराबर होता है। २९ ग्रामस्वराज्य समाजों में ग्रामकोष बना हो रहा है तथा पुरे प्रखण्ड में १,११८ शक्ति सौंकि बने हैं।

टिहरी में शरावबन्दी आन्दोलन : जनशक्ति का जोर

मार्च १९७० में जलान्दोलन के पश्चात् उत्तरप्रदेश के सर्वोच्च विधायक शरावबन्दी हुई थी जिससे वहाँ पर मोटर दुर्घटनाओं, पारस्परिक झगड़ों में बर्फी हुई थी और गरीबों को इससे प्रत्यक्ष लाभ भी हुआ था। गाँवों में शांति का वातावरण बनने लगा, माँ-बहिनो की इज्जत-आयतन सुरक्षित होने लगी। लेकिन दूसरी ओर शराब के व्यापारियों को बेदर दुखान होने लगा। मान का घातनरूप जगदा के स्वास्थ्य के बदले इस व्यापार से होनेवाले आर्थिक लाभ को ज्यादा महत्व देता है। क्योंकि इससे न केवल खाद्यपदार्थों के रूप में मान मिलता है बल्कि बुलावों के लिए मोटी रकम भी ऐसे ही तर्कों से मिलाने लगती है। इस नरम से इस व्यापारियों का मोहताजा और फिर उन्हें बान्दूती शरण का मिलना स्वाभाविक ही था। शराब के टंकेदारों ने स्वाहावाद जल्प स्वाभाविक में बान्दूत के टंकेदारों के सामने अपनी परिचायक रखी, वे सुनी पयी और उन्हें विद्वान् मिला। शराब की दुकानों पर १ नवम्बर से खोलने की छूट हो गयी। लेकिन इस निर्णय के साथ ही जनता ने इसके विरुद्ध आन्दोलन छेड़ने की भी घोषणा कर दी। शासन ने आन्दोलन को निमृष्ट करने के लिए प्रस्तावित १ सारीस को २ सारीस तक के लिए रणमित ३५५। और जब दुकानें एपी तो देखते-देखते पिपबकड़ों की बन बाधो। अतमपत होकर विवरण करनेवाला जलपुर क्षेत्र का एक लेखकाल शराब के नये में पहाड़ से निरकर मर गया और दूसरा देवागान १६००) हान्ये छुप में हाट बन नीकरी से निकाला गया, तीसरे शराबी ने बरजल गाँव में अपनी पत्नी के तिर पर धरम दाल की पत्नी को छेकर मारी और बहु बेचारी अत्यन्त में अन्तिम हाँसि निज रही है, चौथे शराबी ने शायी गाँव में अपनी पत्नी की माक हो लोड़ डाली।

हृद संकल्प
सामाजिक नायकत्वों की वो ऐसे परिणामों की जाचना पहले से ही थी, इसलिए उन्होंने आन्दोलन-कारवाण, आरम्भ कर दिया। इनमें महिलाओं ने आशाहीन सहयोग देना शुरू किया क्योंकि सराबियों के अर्थशरार विचार बेचारी जननी पत्निदाँ ही होती हैं। पिछले आन्दोलन में इन्होंने बड़ी हिम्मत और निर्भयता के साथ शरावबन्दी करने में सफलता पायी थी, अब फिर उन्हें घोषण का निवार छोना पडे, यह अब गैवारा न था। पहली सन्धर की टिहरी इन्टर रहा गया। प्रतिमान भर गये— मे ईश्वर की साक्षी करके प्रतिज्ञा करता हूँ कि बभी शराब नहीं पीऊँगा, न शराब खरूँगा, न खेचूँगा और न बजाऊँगा। दूसरे लोगों से जो शराब छुड़ाने का प्रयास करेगा।" कथन लेने के लिए गणतक की पुरानी पद्धति बजाना भी गयी—हाथ में रखी गये सोटे के नमक की पवित्र जन में छोड़ने हुए बहु बहना—'दरि में अपनी प्रतिज्ञा के उर्था तो ईश्वर मुझे रखी नमक की तरह गला देवे।'

टिहरी जिले के गाँवो स्थान (मुनि की देवी, गेठानगर, टिहरी, काँडीवाल और घनोटी) जो शराबबन्दी निर्वाणों से प्रभावित होने वाले थे, सामूहिक रूप से जिरोत के लिए उठ खड़े हुए। यमोनी जिले के मुन्दागल गोवंशर में विमान प्रदर्शन हुआ। १२ नवम्बर को टिहरी नगर की बन्धूरी में महिलाओं का जलप पूजने लगा, रेडू की दुकानों को बन्धूरी छोड़कर विमान और जननी महिलाएँ १५ नवम्बर के विमान प्रदर्शन में हिम्म-निज हो गयी। सत्यवाह में परकी होने के लिए होड़ लग गयी। पिछले आन्दोलन में जेन का अनुभव प्राप्त है। बनीर शराब खोलने जिहु पुन. कथन उठा और उचका साथ दिना एर ६० यमोनी मुदू स्थिति में।

भी बहुगुणा का उपवास
आन्दोलन के सामूहिकरण में एक केन्द्रीय बिन्दु बने उत्तरप्रदेश के प्रमुख शरीरक लेक भी मुन्दरमान बहुगुणा और जगना उपवास। सहानुभूति में टिहरी जिले के चारों प्रखणों की महिलाएँ दोन और नगाडे के बीच जोबीने स्वयं में हुंवरने लगीं, 'सरकार तुम्हें नरानयो के लिए शरदत जारी करे अन्यथा जिले की सारी महिलाओं के उपवास का निपट भविष्य में सामना करे। अब पुराने विवाहबारी इतने की ओर नहीं सोचेंगे।' थरु की ओर माताओं को आन्दोलित करने के लिए हथकड़ियाँ तैयार बुतिस पुनने लगी और बन्ने लगी कि 'कद तो हाँसिरेट का पीगला है। जो एत चार निरनगर होना, उसे जीवन भर वेत में छुड़ा होगा।' कुछ मोप पतियों से बहुगुणा गया कि मुम दगा-पहाड में सहयोग दोषो को घर बाधक नहीं माने दिया जायेगा। फिर भी १५ नवम्बर के इस मुमुप में महिलाओं के हृदय की प्रबल भाँज-भाजना ने भय पर विजय पायी क्योंकि इस आन्दोलन का धीमेधीमे बरते हुए आदिदेव निज शराबनर कायम के पू० स्वामी और निज जीवन संघ के अग्रणा रत्नामी विधानन्द ने जनता आह्वान करते हुए एर मुतामा या कि—'आमा की कतिन का सामना कोई भीडिण बुति कागी भविज नहीं कर सकती। हमारी घोषित कतिन के असाथ भी साथ ही जायेगा। सत्य की मोरसाहन देना अजय कारण है, शरु आरमदरुण को मोरसाहन करने देना हो है।'

उपवास पर जाने से पूर्व भी बहुगुणा ने अपने दर्शन की सत्य करते हुए बहो कि मेरा उपवास उत्तरप्रदेश में शराबबन्दी के सत्य की तुटि के लिए कतिन प्राप्त करने के लिए है और यह कतिन बहो है किटने का पर मनु १९६१ के आज ठर शराबबन्दी के आन्दोलन की है। मैं एवी का जाओर हूँ। पिछले तीन माह से इस आन्दोलन के लिए एकी की जगाने का प्रयास करता रहा हूँ। बरनु-

श्री बहुगुणा का उषवास दृष्टा

११ नवम्बर '७१ को दिहरी से श्री मन्त्री प्रकाश झाका प्रेषित तार के अनुसार १२ दिनों के उपरांत के बाजपुर की मुख्यतः बहुगुणा मर्याद और प्रत्यक्ष में। उनका बचन १२ पौण्ड घट गया था। वे मिर्क गयाजन से रहे थे। श्री बहुगुणा के उपरांत से म्याक मोन-जागुनि वीस हुई है।

२१ नवम्बर '७१ को दिहरी से ही श्री सुयोग राम झाका प्रेषित एक तार

जात्र से लोगों में भय और जात्र का जो भावनात्मक बलाया गया है पहले उसकी समयावधि बढ़ाया जा रहा है। सराबबन्दी के उपसर्क जरा निर्भय होकर बाहर लौ निकलें और यह प्रकट करें कि लोकजन में बाहुल्य का आधार बनना ही एकमात्र होनी, पुनित का उपाय नहीं।

राज्य सरकार का हृत्कृतनामा

उत्तर प्रदेश की सरकार को छत्रसामग्री विद्यमाना भी देखिये। उच्च न्यायालय में दखने अपने हृत्कृतनामों में कहा है कि पहाड़ों में छायाबन्दी सफल रही है। हम अथवा सराबबन्दी को गीति पर काले बंध रहे हैं और यह काम सरकार ने तत्काल के निर्देशक विद्यमानों की धारा ४० के अन्तर्गत किया है। कुछ दिनों में दखने यथा में कहा है कि यह तो अपने पास की असा-यन में गहन करने के लिए कहा गया होगा। यह साक्षात्कार पर एवम भिन्न है तो बलाया नहीं की जा सकती कि कोई सरकार अपने राज्य के सर्वोच्च म्याक के मंच को भी छोला दे सकती है और यह हृत्कृतनामों को समाप्त करने का कोई भी उपाय नहीं है।

मान्योवन के परिणाम अपने ही निरुप रहे हैं। १२ नवम्बर को दिहरी के मुख्य दूध की सपकाय दिहरी में भी हरीम उदियाप के कार्यवाही पर दिहरी मन्त्र की भीड़का म्याक की दुकान को

के अनुसार २० नवम्बर '७१ को उत्तर-बाकी, धनोरी, दिहरी जिलों से आये दूध हठार से अधिक उद्योग में नर-नारियों की एक विभाज्य सांस्कृतिक कमा हुई, जिसमें न्यायाज्जी के लिए उद्योग किया गया और लोगों ने मर्यादा में भाग लेने के लिए अपने नाम दर्ज कराये। श्री सुन्दर साह बहुगुणा ने २० नवम्बर '७१ की ही आधाव्य विनोय की मर्याद और उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री के आशयान पर अपना उषसक तोड़ा।

कहाँ से हटाने का आशय दिये, सराबब के मर्यादियों ने अतन्वीयत से अपने के लिए युवाय स्वीकृत स्थान के अत्राय मोटर स्टैट और मुद्राये के पास दूधान घालने की मद्रुरी के ली थी। युवाय स्थान पर दूधान संजने की उन्हे हिम्मत नहीं हो रही है क्योंकि अदूर की महिषमयी ने दूधको न घुलने देने के लिए बमर वस की है। सरकार के ध्यातरी नियमाता लामोय कान से दूधको के लिए टिज गये और १३ नारोय की प्राय दिहरी धार कर भाग गये। निर्णयाना केवल दूधान पर नियरो हुई हीणवी है। कान्दोय-उ और धरोयवी से स्थान न विदने के राज्य हाईकोर्ट का आशय गया हो रहे गया, दूधान नहीं गुन पायी है। (अपने)

सकलमन्त्री जोयदहाय अथवाय मर्य सेना सप के मन्त्री श्री ठाकर दास बंग का उत्तर प्रदेश में कार्यक्रम

- | | | |
|------------|---|------------|
| १ दिगम्बर | } | आगरा |
| २ दिगम्बर | | |
| ३ दिगम्बर | | सहायपुर |
| ४ दिगम्बर | | मुजफ्फरपुर |
| ५ दिगम्बर | | बरेली |
| ६ दिगम्बर | | समस्तीपुर |
| ७ दिगम्बर | | बाजपुर |
| ८ दिगम्बर | | दुमराहापुर |
| ९ दिगम्बर | | बनिया |
| १० दिगम्बर | | बाजपुर |

मान्योवन के समाचार

बिहार में ग्रामदानो गाँवों की कानूनी पुष्टि

बिहार में चुनाव '७१ तक कानूनी रूप में पुष्टि का जो कार्य हुआ है, उसकी जानकारी देने हुए बिहार मन्त्रालय नयिनी ने निम्ना है कि राज्य के मयली-पुर, मन्थली, दामधारा, सहर, मुजफ्फरपुर, मुजिफा, मधानगरमहा, पटना एवं गंगा (बोझराय) से ही पुष्टि सम्पत्ती कायम मुख्य रूप से पुष्टि के लिए प्रकट हुए हैं। चुनाव '७१ तक इन स्थानों के कुल १४९६ गाँवों के कुल ७९,७०० सम्पत्ति-पत्र (३४,६३९ भूमि-पत्र और ४५,०६१ भूमिहीन) कार्यालय में दर्जित हुए। १,६०४ गाँवों और ६९,२२६ सम्पत्ति-पत्रों (३०,७२७ भूमि-पत्रों और ३८,४९९ भूमिहीनों) पर गणित जारी की गयी, जिसमें १,३३१ गाँवों और ६३,०३३ सम्पत्ति-पत्रों (२६,९४६ भूमिपत्रों और ३६,०८७ भूमिहीन) की पुष्टि किया गया। ९,२९४ सम्पत्ति-पत्रों की यह किया गया और ४,५०० सम्पत्ति-पत्र विचारणीय हैं। ७६१ गाँवों का प्रत्यक्ष न उपाय करने का प्रकट किया गया, जिसमें ४६९ गाँवों का प्रमाण दूध। धारा ६ के अन्तर्गत ४४६ गाँवों की सन्तुष्टि हुई और ४१० गाँवों का प्रमाण दर्जित किया गया। धारा ३०१ धायददा की स्थानों की गयी तथा ४६ प्रमाणपत्रों में पुष्टि पदा-विधायी द्वारा पुनः कटाया गया।

उक्त अन्तर्गत बिहार प्रामत्तराज्य समिति के अनुसार राज्य के विभिन्न जिलों में अब तक कुल २२००० काम बनाये प्रामत्तराई गीत की गयी हैं, तथा २४४०० कार्यालयों में २७३ भी ७ क ० २ पूर बना ३६१ एकत्र ३८ दिगमिन्त ज्योन, जो बोधा-मददा में प्राप्त हुई, विदित की गयी है।

आन्दोलन सम्बन्धी प्रस्ताव का समर्थन

यमतामूक समाज-रचना के लिए भोगाल-प्रतिरोधन ने सर्वोच्च आन्दोलन में बदला के साथ प्रतिवार की प्रक्रिया बनाने का जो ऐतिहासिक निर्णय लिया, उस पर सहचिन्तन करने के लिए गत २१ नवम्बर, '७१ रविवार को गांधी आन्दोलन प्रतिष्ठान केन्द्र-नामपुर में एच विभा-गोष्ठी का आयोजन नगर मजदूर मण्डल तथा केन्द्र के सदस्य तत्समाज में किया गया। दिवस भाई ने गोष्ठी को प्रस्तावना रखी और इरपाल भाई ने विवरण प्रवेश किया। श्री शत्रुघ्नशरी मेहरोत्रा, श्री रामदुनारे तिवेरी, श्री श्यामकर श्रीवास्तव, श्री धीरेन्द्रनाथ पाण्डेय और श्री इरपाल कुमार किाठी ने भी अपने विचार रखे। सर्वोच्च विचारक डा० सोमनाथ गुप्त ने सत्ता के आधार पर समाज-प्रतिकर्षण करने वाले समाजवादी आन्दोलन की विफलता का उल्लेख करते हुए सर्वोच्च-आन्दोलन की जननिष्ठा के प्रति विश्वास ध्यस्त किया और सहकार तथा प्रतिहार की प्रक्रियाओं को गण-जमुना को बाधित मिलकर चलने में आन्दोलन के विकास के प्रति आशाओं व्यक्त की।

बनोभूट विनक श्री नर्मदा प्रसार अवरणी ने वाचार्थ दादा धर्माधिकारी द्वारा व्यक्त सरवाग्रह की प्रक्रिया की पुष्टि की और भूमिहीन मजदूरों एवं छोटे भूमि मालिकों को सघटित करने के लिए एक सज्जन लोग जुनने पर बल दिया। जिला सर्वोच्च मण्डल के अध्यक्ष श्री रामचन्द्र वर्मा और श्री श्री सुयंत्रप्रसाद द्विवेदी ने इस प्रकार के प्रयोग की भूमिका बनाना स्वीकार किया।

अन्त में विरारविवाह विचारक एवं लोकज्ञानी श्री जयप्रकाश बाबू के स्वागत-ताम एव दीर्घायु की कामना और प्रवेश के निष्ठावान सर्वोच्च ठेकर श्री सुन्दर-नाथ बहुगुणा द्वारा गत ८ नवम्बर से

दिहरी में मदनविषय के लिए किये जा रहे उपवास के प्रति सचेतना एवं सहमति व्यक्त करते हुए प्रस्ताव पारित किये गये।

—विजय बहुदुर सिंह

ग्राम-शान्तिसेना शिबिर

जिला ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य समिति, रामपुर (म० प्र०) को ओर से दशरथपुर में ता० १०-१०-७१ से १३-१०-७१ तक एक त्रिदिनीय ग्राम-शान्तिसेना शिबिर उगमन हुआ।

शिबिर में विविध कार्यक्रमों के द्वारा ग्रामस्वराज्य प्राप्ति के काम पर जोर दिया गया तथा इन कार्यक्रमों में सहजों को भी शामिल करने की कोशिश करनी चाहिए, ऐसा महसूस किया गया। ग्राम-शान्तिसेना प्रान्तसेवा की भूमिका में काम करें, इस बात को भी बन्द नुसार ने स्पष्ट किया। श्री रामगोपाल दीक्षित ने कहा कि ग्राम-शान्तिसेना में शोका, निर्वेला, निष्ठा, अनुशासन व भाईचारे की प्राथमता का होना आवश्यक है। ग्रामदान का आन्दोलन भाई-चारे को बढ़ाने का आन्दोलन है।

शिबिरागमियों ने अलग-अलग टोपियों में बैठकर गांवों की समस्याओं के बारे में चर्चा की और मुख्य २४ समस्याओं की सूची बनाकर श्री दीक्षित के सामने पेश किया। उन्होंने समस्याओं के हल सुझाते हुए कहा कि सामाजिक, धार्मिक अस्तित्वताओं को मिटा कर ही इन समस्याओं को हल किया जा सकता है। ग्रामदान-आन्दोलन जन्मूज से क्रांति करने का, इन समस्याओं का हल ढूँढ़ने का बुनियादी आयोजन है।

इसके बाद गांव-गांव में ग्राम-शान्ति सेना का सघटन बनाने के लिए विचार किया। ●

पड़रौना में तरुण-शान्तिसेना शिबिर

देवरिया जिले के पड़रौना कस्बे में गत २३-२४ अक्टूबर '७१ को स्थानीय तरुण-शान्तिसेनाकेन्द्र के सहायधान में यहाँ के टिथी बालेज में एक द्विदिनीय शिबिर जिले के तरुण-शान्तिसेनाओं और आनन्दकुल के सदस्यों का सम्मिलित रूप से उगमन हुआ। पड़रौना की तरुण-शान्तिसेना उरखो की एक ऐसी सक्रिय दलाई है जिसमें आचार्यकुल का भी सक्रिय सहयोग है। पिछले दिनों दोनों सघटनों के सम्मिलित प्रयत्न से आचार्य-आन्दोलन किया गया और २ अक्टूबर '७१ को गाराब की दूधान पर धरना और २४ गते का उपवास भी किया गया।

इस शिबिर के लिए उरखो ने कस्बे में और कस्बे के बाहर आसपास के गांवों में भी जाकर वृत्त शौर अल्प वा सग्रह किया था। शिबिर का उद्घाटन भागलपुर विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र के प्राध्यापक डा० रामजी सिंह के बीरब्रवी भाषण से हुआ और समाजसेवा भी सुप्रसन्न ने किया। शिबिर में ८ विद्यार्थियों के साथ और १४ विद्यार्थियों के शिष्टाने भी भाग लिया। श्री अमरनाथ भाई, प्रिंसिपल, शान्तिसेना द्वारा शिबिर का संचालन हुआ। शिबिर में सर्वोच्च विनय व्यवस्था और रामचन्द्र दाहने ने आचार्यकुल और तरुण-शान्तिसेना की, सामाजिक क्रांति के सदस्यों में, सहृदयपूर्ण भूमिका स्पष्ट करते हुए चर्चा के मुद्दे प्रस्तुत किये। श्री सज्जन भारतीय ने तरुण-शान्तिसेना के संपटनान्तक पहलू पर प्रकाश डाला। द्विदिनीय शिबिर मुदर रूप से आचार्य-कुल और तरुण-शान्तिसेना की क्रांति-नारी विचार को स्पष्ट करने में सफल रहा। जिसमें डा० रामजी सिंह के विचारोत्तेजक भाषणों का महत्त्वपूर्ण योगदान मिला। 'देवरिया जिले के आचार्यकुल से सज्जन श्री रामचन्द्र सिंह ने इस आयोजन के लिए काफी परिश्रम किया। स्थानीय महाविद्यालय के छात्राध्यक्षों ने प्रायः सभी की वागुदाय के नेतृत्व में प्रमुख भूमिका निभायी। ●

हम आखिरी दम तक बंगला देश की पूर्ण स्वाधीनता के लिए लड़ते रहेंगे

‘बंगला देश विश्व विवेक जागरण’ पदयात्रियों के उद्गार

पटना: २५ नवम्बर '७१ को बिहार की राजधानी पटना में बंगला देश से दिल्ली तक विश्वविवेक की जागृत करने के लिए पदयात्रा कर रहे बंगला देश के ३० सदस्यों का हासिक भाव व्यक्त हुआ। बंगला देश के इन लाख छात्रों की यह परवाना अ० भा० गतिविधि मजबूत द्वारा संचालित की गयी है।

पदयात्रियों ने पटना स्थित बिहार राष्ट्रीय हातेज की छात्रमण्डल पदा मंडल के छात्रसभ द्वारा आयोजित विवेक दिने अभिनन्दन समारोह एवं राष्ट्रीय मंडल की विभाग संचालित सभा में भारत द्वारा बंगला देश की प्रायः महाभूति, समर्थन और सहयोग के लिए आभारपूर्ण भारतवासियों को संबोधित सलाम करते हुए अपना संकल्प दोहराया कि हम बंगला देश की पूर्ण स्वाधीनता के लिए आखिरी दम तक लड़ते रहेंगे।

पदयात्रियों के एक प्रवक्ता के अनुसार ये पदयात्री ३० जनवरी '७१ को

दिल्ली पहुँच कर महात्मा गांधी की समाधि पर श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद दुनिया के भूगोलीय के माध्यम से अपना संदेश अपने देशों तक पहुँचायेंगे। उक्त प्रवक्ता के अनुसार इस्लाम की माननेवाले राष्ट्रों से उनका कहना है कि इस्लाम शब्द ही शान्ति का प्रतीक है; जो कोई भी लाखों मनुष्यों को मारने के उद्देश्य के लिए मरना चाहता है, वह इस्लाम की शान्ति नहीं मानता, वह काफिर है, और ऐसे लोगों का समर्थन देनेवाले राष्ट्र तथा इस्लाम और पश्चिम कुतल के माननेवाले को मूल नहीं गये हैं? तीसरा यह समझना कि टिहरी पीटनेवाले देशों से इस्लाम कहना है कि दुनिया के तीनतांत्रिक सिद्धांत में आज तक किसी दल को ९५-९९% जनमत नहीं प्राप्त हुआ है, जो देशसुजीव की ओर उनकी लगामों लोग को प्राप्त हुआ। बावजूद इसके इन को समर्थन न दे कर तुरंत तलाशाह

जनवर जनता की छाती पर शस्त्रजल से शारीक महिला को समर्थन देना और बंगला देश की छात्र छात्र परोट जनता के दमन-पञ्च में प्रेरणा या अग्रयण मदद करना नहीं का उद्देश्य है? और वे कोयलसुख दुनिया को लिये शान्ति का उद्देश्य करनेवाले देशों से कहना चाहते हैं कि प० पाकिस्तान द्वारा पिछले २५ वर्षों से ही रहे भयंकर शारीक, सामाजिक, राजनीतिक कोयल के दुःख के इस संघर्ष को समर्थन देने के बजाय शीघ्रता को दमन के लिये शस्त्र और प्रशिक्षण देना क्यों की कार्यकारिण है?

पदयात्रियों का कहना है वे इन प्रश्नों पर दुनिया का विवेक जागृत करना चाहते हैं, ताकि विश्व के राष्ट्रवाक्य अपने सृष्टित स्वतंत्र स्वामी से ऊपर उठकर विवेक के नाम लें।

इस जंक में

- श्रीग अर्धोत्पल में,
- इस्लाम शीरष में —सम्पादकीय १२३
- युद्ध और शान्ति
- डा० टी० पी० सिंह १२४
- बंगला देश और भारत का भविष्य
- जयप्रकाश नारायण १२५
- पदयात्रियों का क्या निष्कर्ष पर ?
- छात्रों के बारे में—विदुषाज ठंडा १२६
- बंगला देश और यूरोपीय मजदूर
- सतीश कुमार १२७
- परवाने पर विश्व विद्यालय
- रामगुप्त १२९
- गण्ड की रण में —लोचबाबा से १३०
- टिहरी में शारायकवी आन्दोलन —१३१
- अन्य स्तम्भ
- आपके पत्र, आन्दोलन की समाचार



विश्व विवेक जागरण के लिए बंगला देश के पदयात्री : बंगला देश से दिल्ली

वार्षिक मुक्त १० व० (समेत कागज : १२ व०, एक प्रति २५ पैसे), विदेश में २५ व०; या ३० टिकिब या ४ टिकर । एक अंक का मूल्य २० पैसे। श्रीकृष्णदत्ता मठ द्वारा सर्व सेवा संघ के लिये प्रकाशित एवं मनोहर प्रेस, वाराणसी में मुद्रित

नं. : 10, बक - 10, होमवार, 4, विहवार, 5।
 रविना विषय, सर्व सेवा, 6।
 रातार, सापारने-1
 मार : सर्विमा * वीर. 19111
 उपसदक
 सापारने-1

सर्वांग
 सर्व सेवा संघ का मुख, पत्र, 1911

सर्व सेवा संघ

...



आरत संविदर भाई देवा बूट पुण्य पूरे असाह और प्रकृति में सापारने-मुक्ति के लिए महारणा
 में बचा है। संविदर भाई 1911 साल के अंत में, दिल्ली में गवर्नरी के आकाशवाणी पर अतिथि
 छोड़ दिया और आज 20 साल में उसी काम में लागे हैं। देवा अतिथि अंग में 20 साल की
 मूल्य कर रहे हैं।
 ...अपने अपने अतिथि को बड़ी महारत बचाकर करने की प्रेरणा ही ही असाह है। आजका
 आरत में परंपरागत करने का जीवन में लाते।

मैं जोषन के अंग 100 भाग पूरे हो चुके हैं। भारत को बरगार है अंश के अतिथि
 विर गया तट पर बिजने की। ये अंग अंग-मया के तट पर रहेगा। - संविदर भाई

क्या गरीब अमीरी को भी बीमारी मानता है ?

भोपाल-अधिवेशन में दादा शर्मा-विद्यारी के भाषण पर खूब चर्चाएँ हुईं और बन्दोलन की नयी दिशा का आधार भी यह भाषण बना, ऐसा 'भूदान-यज्ञ' पढ़ने से लगा। दादा का दूसरा भाषण, जो पहले ही स्पष्ट करने की दृष्टि से दिया गया, 'भूदान यज्ञ' के १५ नवम्बर के अंत में पढ़कर कुछ संभारें हुईं, जिनको विचारार्थ प्रस्तुत कर रही हैं।

दादा ने गरीब और अमीर की अनी-भुक्ति का विश्लेषण करते वीर दोनों में भेद बताते हुए कहा है कि गरीब अपनी बीमारी छोड़ना चाहता है और इसलिए हम बनवा साथ दें, लेकिन अमीर अपनी अमीरी को बीमारी नहीं मानता है, और न ही उससे छूटना चाहता है। अगर कोई अमीर अपने भूदान करना चाहता है, तो हम उसका सम्मान करें, स्वागत करें, साथ दें, आदि बातें उन्हीं के हैं।

अब मेरे मन में सवाल यह उठता है कि अमीर तो अपनी अमीरी को बीमारी नहीं मानता है, लेकिन गरीब भी अमीरी को बीमारी मानता है क्या ? गरीब अपनी बीमारी से छूटना कब तक चाहता है। वीर यह बात साफ है कि अमीर के समाज में उन्हीं प्रतिष्ठा गरीब है। लेकिन प्रतिष्ठा है उन अमीरों की जिसको 'हम' पते ही बीमारी मानते, लेकिन गरीब उसे बीमारी नहीं मानता। वल्कि उस प्रतिष्ठा को प्राप्त करना चाहता है। अगर वह अमीरी को बीमारी नहीं मानता है, तो वह उस प्रतिष्ठा को प्राप्त करना चाहता ही, यह स्वामंत्रिक है।

दूसरी बात यह है कि जब तक अमीर यह नहीं समझता उसके पास जो अधिक रोटी है, वह भूखों की रोटी है और 'मुझे गरीबी के हिस्से की रोटी उन्हीं दे देनी चाहिए' यह मान्यता उसकी नहीं बनेगी, तब तक भूखों की रोटी कौन मिल सकेगी ? गरीब को तो रोटी चाहिए ही। लेकिन उन्को चाहते भर से वो उसे रोटी नहीं मिल रही है। अब हमारा पहला कर्तव्य यह हो जाता है कि जिनके पास अब भूख की रोटी पड़ी है, उनको हम यह महसूस करावें। गरीब भी जब तक यह महसूस नहीं करेगा कि रोटी रोटी अमीर के पास पड़ी है, तब तक वह साधारण स्वामि-मान के साथ रोटी की मांग नहीं कर सकेगा, यह होगा कृपासिन्धु, अक्षय-सद बना रहेगा। वीर अमीर भी उसे दान देगा, दया करेगा।

इसलिए जब तक दोनों की वेतना इस दिशा में ब्यापृत नहीं होनी, और दोनों इस भूमि पर आकर कुछ करने की तैयार नहीं होते, तब तक दोनों की बीमारी नहीं मिटेगी। कोई मूल्य परिवर्तन नहीं होगा। इसलिए जब हम भूमि-हीन और छोटे मालिकों का संपन्न करने की बात सोचते हैं तो हमें मूल्य परिवर्तन की दिशा में उनको तो जाने हुए उनके सामने यह बात साफ करनी होगी कि वे गरीबी सिद्धांत पते हैं लेकिन अमीरों पते के लिए नहीं। हम न गरीबी चाहते हैं, न अमीरी। अमीरों और गरीबों दोनों ही सामाजिक मर्ज हैं। यह हमारी भूमिका उनके मनमें स्थापित हो जायेगी, तभी हमारा कार्य क्रांति की बुनियाद बनने वाला बनेगा, ऐसा मुझे लग रहा है।

पत्र संचयन

जासूसर से दयाविधिजी निवृत्त है कि उन्को विजयपुर में ५ प्रान्तों की यात्रा की, राजस्थान, उ० प्र०, हरियाणा और पंजाब।

उन्कोने अपनी यात्रा के दौरान नगरों और शहरों में समाज के तथा सामान्य-मानस्यराज्य के विचार का प्रचार किया।

उन्कोने प्रायःपणों व विचारधाराओं के साथ सम्पर्क करके सर्वोच्च बन्दोलन का विचार समझाया तथा प्रान्तस्तर पर विचार विधियों के जरिये गाँव गाँव में फेरे इसके लिए प्रेरणा दी। करीब ५०० विद्यार्थी इस अभियान में भाग लिये।

सोच-समर्पण से उनको महसूस हुआ कि पारो तरफ राजनीतिक हो, स्वार्थ, हिंसा आदि के नाशक सामान्य अन्तः महसूस करती है कि प्रेम और सेवा के जरिये ही समस्या का सही हल निकलेगा।

श्रीता सबलपुर से श्री मदनमोहन साहू सरोवर के काम की जानकारी देते हुए लिखते हैं कि एक दिने में दश लाख के प्रारम्भ से सर्वोच्च कार्य जो कि एक तरह से ठप ही गया था, उसे सफल करने की कोशिश की जा रही है। २५ सोरसेवक बनाये गये हैं और शालग्रामों की सक्रिय बनाने व प्रामाण्य एवम्बित करने की तैयारी चल रही है। इस दिने वा सबसे बड़ा शीर पापीमोरा जिसको एक जामुन गाँव की राजा श्री भीरुदेव भाई ने दी। अब यह पुष्टि-नाम तीजगति से चल रहा है। गत जनवरी से अब तक १५ लाख शालग्रामों को बँटते हुए हैं। शालग्राम में करीब ३० हजार रुपये जमा हुए थे जिसमें से १५ हजार रुपये के शीर पर गाँव में दिया गया।

संती में विचार करने की दृष्टि से यहाँ इतिहास चलाने का निर्णय लिया गया है। पाणिमोरा, पदमपुर जोर पाणिमोरा में सारी काम को नये विधे से शुरू किया गया है। पदमपुर केन्द्र में कृषि-कार्य की बड़ी सफलता मिली है। कृषि काम के जरिये शीर निर्माण का काम करने का लक्ष्य बनाया है। कृषि से शरीर मानो-दोनों को भी बन सिनेगा ऐसी जगो उम्मीद है।

पाणिमोरा के विरट नरविहृष्य में करीब दस एकर जमीन तैयार कृषि-मोपान्त तालीम के लिए एक केन्द्र का प्रारम्भ कर दिया है।

आप सब भगवान के भक्त हैं ; दीया बर्ती खाते हैं, कीर्तन करते हैं ; सब ठीक है लेकिन यदि इस भक्ति को फर्म से नहीं जोड़ा तो वह बेकार है । जनता भगवान है ; मैं जनता को भक्ति करवा, उसको सेवा करना चाहता हूँ । उसीसे मुझे नशाबन्दी के काम को चलाने की भक्ति मिलेगी । जब जनशक्ति सभ्यतित हो पुरी हो शासन-संस्था का प्रणाल तो छोड़ ही दें, बड़े-बड़े सरायों का इन निकलने लगना है । दरमियान इतने वर्षों से मैं इस जनता की पूजा करता रहा हूँ । जनता की भक्ति क्यों ? क्यों बड़ शक्लों पर क्यों सन्धान दें ? नहीं, हमसे सफलता नहीं मिलेगी । आतने देखा हागा कि सच्चा को गणित जब पदादा जाता है तो पहले जोड़-घटाव-गुणा-भाग से बढ़ने-बढ़ते फिर उध डेंडें । गिन पर आते हैं जो मन्त्रे कठिन दिखते हैं । लेकिन यदि सच्चा जोड़-घटाव में ठीक बड़ना रहे वो मद्र रण टेडी-सी दिखनेवाली उध मिय को बहुत सामग्री से हल कर लेता है । तो इन्फार्मि मिलनी भी टेडी दिखते हैं, सामाजिक टेडी दिखते, वे इस जनता से हो हल होंगे ।

वही शामिल होते वो मुझे चाहते थे—मेरे मजदीक थे । लेकिन आज वो आग सब उपरिपत्र हैं वे, एंसा लगता है कि मुझे नहीं चाहते, शासनबन्दी को चाहते हैं, उने क्रियात्मिक देखना चाहते हैं ।

आप आतने साथ ग्राम देवनाजी को लेकर आये हैं । वे क्या नहूँने यदि देवभूमि में सराव बहानी रही तो । आप सकल करें कि जब तक उत्तराखण्ड में सराव नहीं साम कर लें, तब तक चैत नहीं होंगे । आप अकेले नहीं हैं । आपके साथ सैकड़ों छात्र हैं, पत्रकारी हैं, शिक्षक हैं, मजदूर हैं, धानक हैं । उन सबको सहायता लगातार बडे इसके लिए मजदूर सभ्यतन चाहिए । गाँव-गाँव में मजदूरिये सभिय बने और आन्दोलन का सब हूर परिवार से प्रान एक मुठ्ठी अनाज के कोर से थने । ऊड़ी हुआने सुने, वहाँ रिक्वेरिज करें । आप सब यदि मुझे चाहते हैं, मेरे प्राणी को बचाना चाहते हैं तो इन बानी को उठाएँ । लेकिन काम का तरीका हयारा प्रेम, शान्ति और अहिंसा का होगा । आप को भक्ति बनना है । आप धार्मिक उत्सवों पर रात जागरण का प्रारंभती हैं तो रिक्वेरिज को भी बैसा हो मानिये । जो हाथ आज आप भेरे लिए छोड़ रहे हैं उससे कभी भी सराव को बाँसल न पकड़ना !

कुछ लोगों ने कहा कि हम डेकेवारों को उठाएँ देंगे, सराव की हुआने में आप तगा देंगे, यह बिनकुन नहीं हो । एगारे हम केवल नमसकार के लिए उठें, भारते के लिए नशागि नहीं । मेरी लिफ्टा अहिंसा है । मेरे गहने बिधी को कुछ हुआ, पीड़-फोड़ हुई तो मेरो वहनी आहूति होनी ।

हम युनिवर्स के खिलाफ भी नहीं होंगे । आसित नवो हों, वे भी हमारे भाई हैं । मेरे गिना भी एक युनिवर्स के अधिनारी से ।

हमें विचार का दायरा लगातार बढ़ाना है । हमने दोेदारों से भी मिलने की कोसित की । उनसे कहा कि वे अपने

साथसे लीटा दें । भगवान उन्हे सद्-बुद्धि दें ।

उत्तराखण्ड से यह अद्भुत काम शुरू होना था । आप सबकी जिम्मेदारी है अब इसे चलाने को । अब यह मेरा जम्हवार होगा यदि मैं यह मानकर चार्नु कि इस काम के लिए मेहनत मैं ही हूँ । उत्तराखण्ड से नशाबन्दी का उदम पूरे देश में फैले । (सत्रम)

सेवाग्राम में अखिल भारत नयी तालीम सम्मेलन

सर्व-सेवा-सभ्य की नयी-तालीम-समिति के सत्याग्रहान में अखिल भारत नयी तालीम सम्मेलन, वर्षा, महाराष्ट्र में २६, २७ दिसम्बर, १९७२ को सम्पन्न हुआ । बुनियादी शिक्षण सत्याग्रहों के शिक्षक, सर्वोपर कार्यकर्ता जो स्थलासनक काम तथा प्राथमिकी क्षेत्रों में शिक्षण का काम कर रहे हैं, शिक्षक और अन्य व्यक्ति जो राष्ट्रीय डारा बनाये गये शैक्षणिक समस्याओं के हल में अचिन्तक रखते हैं उन सबकी इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए आमन्त्रित किया गया है ।

सम्मेलन में निम्नलिखित विषयों पर विशेष चर्चा होगी । 'शिक्षा में वर्तमान सफट : वर्तमान समाज की समस्याओं के निराकरण के लिए शिक्षा में क्रांति को आवश्यकता' 'नयी तालीम के क्षेत्र में गैर-सरकारी समस्याओं के अभिनय व उनकी हलसत्याग्रह' 'प्राथमिकी क्षेत्रों में शिक्षण की योजना' 'पढ़ाई की प्रवृत्ति के तीर पर सम्मेलन देश की शिक्षण नीति पर लोगों के विचारार्थ ध्यान निवेदन देश के सामने रखेगा ।

केन्द्र और राज्यों के शिक्षा विभागों को आने-जाने प्रतिनिधियों की 'निरीक्षा' के तीर पर सम्मेलन में भाग लेने के लिए आमन्त्रित किया गया है । कुछ प्रमुख शिक्षा शास्त्रियों को भी चर्चा में भाग लेने के लिए बुलाया गया है । (सत्रसे)

जन्मदिन सभ्यतित हो रही है । इनकी बड़ी संख्या में वे भातगै-बहनें, हमारे भाई बहुत दूर-दूर से बनकर यहाँ आये हैं । बार एगो-विद्येगन, शिक्षक सभ, मोटर धानक सभ, उत्तराखण्ड मोटर मजदूर सभ, पत्रकारी सभ आदि ने इसके समर्थन में प्रस्ताव भेरे हैं । मुहम्मदजी का भी वन क्षारा है, उनमें उनही मजदूरों हाजकी है । मैंने उनरो उत्तर दिया कि क्षारा टोच कार्यक्रम बठाएँ ।

लेकिन मुझे यह कहना है कि यदि आर सबसुव नशाबन्दी के लिए आये हैं तो आग कुछ टोच नदम उठाएँ । मैं भर रहा हूँ, एंसा मानकर इनकी बड़ी सहदा में एंफ्र हूँ तो यह टोच नहीं । समस्त-साथ जीवन का एक बड़ा उलार होगा है । लेकिन मुझे एंसा विश्वास है कि मेरी स्थलात-प्राथ का इतने सीम व आने,

आश्रमों के उद्देश्य

[दिनांक १३, १४ व १५ नवम्बर, १९१७ को वि-सर्वज्ञ आश्रम, इन्दौर के कुछ कार्यकर्ताओं पु० विनोबाजी से पत्राचार (वर्षा) विषय उनके परमप्रथम आश्रम में मिले और वि-सर्वज्ञ आश्रम के सम्बन्ध में कार्य और उद्देश्य पर उनके पत्राचार। इन पत्राचार पर दिनांक १३ नवम्बर को शायं प्रायश्चित्त से पूर्व विनोबा ने जो उद्गार प्रकट किए वे यहाँ प्रस्तुत हैं। —सम्पादक]

बाबा के द्वारा जो कुछ काम हुए उनके मूल्य जाने के जमाने में क्या होगा वहना मुश्किल है। जैसे तो सृष्टि के विधात बापों में मनुष्य द्वारा जो काम बनता है उसमें कुछ क्षम मूल्य है नहीं। वह तो बाबा के मत में साफ है।

जो काम हुए जामें एक है आश्रमों की स्थापना। छ जगह भारत भर में छः आश्रमों की स्थापना की। जाते हुए भी कि ऐसे कई आश्रम भारत में आज हैं— बनेक नामों के लिए प्रवृत्ति चरती हैं। छाडी-आश्रम है, माथी-आश्रम है, हरिनन्द-आश्रम है, इत्यादि इत्यादि। तो इनके रहते जो छः आश्रमों की, जो नये स्थापित किये गए, उनकी जरूरत ही क्या थी? लेकिन बाबा को यह महसूस हुआ कि वे जो गुराने आश्रम है वे चिरकालिक मूल्य बहुत रखते नहीं।

(१) अहिंसा, सत्य, धरतेय, ब्रह्मचर्य, अक्षय्य इत्यादि जो जीवन के आधार मूल बात हैं, उनका विद्यापूर्ण पालन हो।

(२) अन्न को टाल नरके जो भी क्रिया जायगी, वह बापों के जमाने के लिए निरुपयोग है। इस वास्ते श्रमनिष्ठ होनी चाहिए। केवल श्रम नहीं, श्रमनिष्ठ।

(३) भयदान की भावना हो। शरीर प्रायश्चित्त चरती है वैसी नहीं। "सर्वमें एव रहिया प्रभु एक", ऐसी ऐसी अन्नक बिर-साई—सर्वत्र प्रभु विराजमान हैं, उनका निरन्तर भाव यह है भावित। उसके लिए है—आरती, प्रायश्चित्त, भजन, सगीत। वह शापना है, परन्तु मुझ है शान। जो सदैव निरन्तर एक साध रखते हैं उनको एक-दूसरे की छोटी-छोटी चीजें हमेशा दीखती रहती हैं। इन नामों यह सारे परमात्मा के स्वरूप सामने लखे हैं, वह भावना

उनकी शीघ्र होगी ना सम्भव रहता है। परन्तु अगर भक्ति हृदय में बरी हो और सब साधक इकट्ठा होते हैं—'ममो मे भाविते'। मम भेटी कोमी" मेरी भाविते तोय मुझे मिलें। "आत्मदेवता हरि कष्टकर प्राप्तो" जिनको मरदान हृदय से प्यारे हैं, उनकी भाविते में तिल आनन्द भक्ति बढ़नी रहनी चाहिए।

फिर स्वाध्याय। आत्मस्वरूप क्या है? यह पहचानने के लिए तपुस्यों की यथो इत्यादि का अध्ययन, 'केवल' धर्म अध्ययन के लिए नहीं, 'स्व' के अध्ययन के लिए।

वे दो-चार चीजें हैं उनके बात से आश्रमों की स्थापना मुख्य प्राल हो सक्ता है। इस प्रकार आश्रम-स्थापना का हमने उपक्रम किया जो (तब) हमारे सामने संकल्पित था। उन्होंने भारत के बार कोने में चार आश्रम स्थापित किये और एक-एक सिन्धु बहा रस दिये। अब १२०० आश्रम हुए, वे अब आश्रम बन रहे हैं। कमजोर हुए हैं, फिर भी चलते हैं। बाब और सोचों के लिए बाकी स्थापना के स्थापित है। सामने तो यह चित्र था। लेकिन वह पुराना जमाना था। अब यह नया जमाना आया है। इन जमानों में विज्ञान की गति बहुत तीव्र है। मनुष्यों के विचारों में पहले से जमानों में जितना परिवर्तन हो सक्ता था, उनका अब यह जमाने में होता है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी, पुराने-दर-पुराने एकरम विचार में बहुत अन्तर हो जाता है। ऐसी हालत में जो जमाना जाने बड़ा रहा है, उसके अनुकूल आश्रम का जो निरान बना उपलब्ध स्वरूप लोगों की दीख पड़े, तब इन आश्रमों की सोचा है। जो आश्रम स्थापित हुए उन सबमें यह भीज जो की अभी रही, वह छायाचित्र है, आश्रम है।

इसके मताना हरेक आश्रम का अपना-अपना कार्य है। उनके विषय में उन-उन आश्रमों की स्थापना हुई तब दाग ने कहा था।

बाबा के मत में कई दफा विचार आता है कि बाब ने आश्रम अपने उद्देश्यों के लिए बहुत सोच खासित किये होते ही तो बना उनही मन्त्र न कला टीक रहेगा? ऐसा विचार मत में आता है। परन्तु फिर भी बाबा मर ले नाम भेला है। पूं तो पकर कि जिन उद्देश्यों की लेकर आश्रमों की स्थापना की गयी, वे उद्देश्य आज के जमाने के लिए और जाने के जमाने के लिए भी बहुत सामर्थ्य की ही उन उद्देश्यों के प्रीति होकर हमने बड़ा-बड़ा अधिक योग्यतावाने लोग जाने जायेंगे। की बहुत दफा कहा है, पुराना बाबन है।

पुराने इष्टोत्तर परामर्श।
शिवान्त इष्टोत्तर परामर्श।

गुरु बाह्या है कि उतरा विषय उतरा परामर्श करे। बाब बाह्या है कि पुत्र उतरा परामर्श करे। अगर ऐसा नहीं हुआ तो बाब ने जन्म दिया गुरु की वह कर्म बना। अगर वह बापों बड़े है तो समाज की प्रगति के लिए गुरुआश्रम उपयुक्त हुआ। लेकिन अगली पीढ़ी को पैदा होती है, पुत्रों की पीढ़ी वह अगर कमजोर होती है तो गुरुआश्रम का बर्तन ही शीघ्र हुआ। ऐसे ही गुरु-सिन्धु के बारे में है। गुरु के बाद उनका सिन्धु बहा रस दिये जायेंगे। ऐसी भावना गुरु बना है। फिर बाबा यह सोचा करता है कि बाबा की प्रतिष्ठा, विद्वान-सक्ति दा भक्ति है उनके बहुत विद्वान-सक्तिवाने, प्रतिष्ठावाने, सक्ति वाले निराने और वे इन आश्रमों का उपयोग करेंगे। और वे आश्रम ऐसे नहीं होंगे कि किसी को निरिहय और एस्टेड होंगे। ऐसी बात रख नरके से आश्रम गुरु किये।

संगठन में बहुरूप है जतन करना है "असहस्यो हि दुर्लभो"। बाब गुरु न

खादो : किस मोड़ पर ?

— श्री पीरेन्द्र भाई से एक महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर —

प्रश्न : किनोवालो ने बनाई महिन खादी की समस्त क्रियाओं में 'पावर' का उपयोग करने की जो दवावत दी है, उसके बारे में आखिरी राय क्या है ? 'पावर' की पर्याय क्या होगी ?

उत्तर : किनोवालो ने बनाई महिन खादी की प्रक्रिया में पावर का उपयोग करने की जो दवावत दी है, उर्ध्व में वावश्यक मानता हूँ। आज पावर सर्व-प्रापी हो गया है। अतः त्वमान मनुष्य अथ हाथ से काम नहीं करता चाहेगा। मैरिन क्वाज-आकषया में पावर के इस्तेमाल के विषय में विवेक रखना होगा। पावर का इस्तेमाल धा-धर हूँ, वही इष्ट है, लेकिन उसका इस्तेमाल दुमरे के प्रयोग के लिए ही चाहे व्यवहाराय हो, समुह्यन या सामान हो, शक्ति दही होता चाहिए।

प्रश्न : अगर पावर का कर्ता मूल और पावरशुन पर बना बपटा खादी में बेट माना है तो फिर मिल के बपटे के उपयोग में क्या हूने है ?

उत्तर : खादी उपयोग के रूप में नहीं चल सकेगी। अगर उपयोग के रूप में चलाना चाहे तो अरके प्रश्न के संदर्भ में कहना होगा कि पावर के ब-ली और पावर के मूल से बनी खादी में और मिल के बपटे में कोई फर्क नहीं रहे जाया, क्योंकि उनमें खादी में मूल विचार की रक्षा नहीं होगी। उद्योग कारखाने के पावर से बनेया भी आकार में पिछान और पावना न रक्षा नहीं होता है। लेकिन यदि बपटे के लिए पावर से मूल बनाया जाय है और काम पर चलाना लिया जाय है तो वह खादी होगी। मिल के बपटे के

मिल होगी। उनमें आकार नहीं रहेगा इसलिए सोचन नहीं होगा।

प्रश्न : एक या दो लघुने के अन्तर से तो खादी महिनी पड़ेगी। गाँववाले मशीनों में नहीं। इसकी अर्थात् अर्थ लघुने का बचाव धने तो खादी सली होगी और प्रावस्था-व्यवस्था आगल होगा।

उत्तर : मेने अभी कहा है कि खादी आकार से आदर की चीज है। वह धरेनु चीज है। मेरो विचिवा राय है कि बचाव अपने मूल मथ को छोड़कर नहीं चल सकता है। वह मूल मथ है 'बखला अहिंसा का प्रतीक है।' इसी मथ के अनुमोधान में तकनीक को बनने सोचनी होगी। इसका भी सचेत शुद्ध गांधीजी ने कर लिया है। 'जो वाहे सो पढ़ने और जो पढ़ने वह प्रथम राते।' इसका अर्थ यह हुआ कि बखला परिवार-उद्योग की चीज है। परिवार को विदेर नर अहिंसक समाज नहीं बन सकता, क्योंकि अहिंसा की शक्ति से ही परिवार चल सकता है। बहुकारी समाज भी पूरा अहिंसक समाज नहीं बन सकता। क्योंकि बहुकारी समाज में बहुकार वैधकित होता है और परिवार का बहुकार मानना प्रीति तथा स्वयंकुल होता है। गाँधीजी ने कहा था कि 'अहिंसक समाज का रचना सामुद्रिक चतुर्लो (सोशलिज्म कतिरिज्म) में होना चाहिए। इन चतुर्को का न-र किन्तु परिवार ही हो सकता है। क्योंकि उनको परिवारित हो हो सकता है। अर्थात् उनको परिवारित हो हो सकता है। इस हद तक समाज को परिवारिक भूमिदा में परिवर्तित किया जा सकेगा, उसी हद तक अहिंसक समाज साम्यविक होगा। इसलिए विनाशकारी

कहते हैं कि साम्यविकार करने से ही साम्यविकार होगा।

परिवार भी महत्व तथा स्वाभाविक मर होगा जब उनका बानावण आनन्द-वाचक क्रियाशीलता से पूँजा रहेगा। परिवार के अंतर्गत से पुन उद्योग निरार करने से यहाँ उपयोग तथा आनन्दवाचक क्रियाशीलता की मृद समाप्त हो जायगी। फिर यहाँ जो उद्योगवाला बालाकरण पैदा होगा, उनमें से निरार नंद होने और पारलमिज्म स्नेह का धार होगा। जब दुनिपाद में अहिंसक का या स्नेह का बालाकरण नहीं रहेगा, तो समाज का विनाश नहीं हो सकेगा। इसलिए मैं कहता हूँ कि हर घर में ऐसा उद्योग हो प्रियमें घर के लोग शक्त रहे, लेकिन उद्योगधन में आनन्द और आराम भी विचनता रहे यानी मृद-उद्योग के जोशार पैदा बनाने हूँगे। आखिलोय बाईं काँ बने, लेकिन दो उद्योगों को परिवार के लिए छोड़ दे त्रिके साम्यम से परिवार का वैधानिक तथा आर्थिक विकास हो। वे दो उद्योग हैं चुन्हा और धरखा। वे दो मन तीवरे उद्योग 'बपटो' को भी इच्छीम जोड़ने का है और उधमें श्री वैज्ञानिक व्याज हूनी चाहिए। लेकिन किनहान में उनका अग्रह नहीं रखता।

विज्ञान कर्तवी का विनाश करने हुए और साथ साथ हाथ को लानी करने हुए 'आदिमजिन से आगे बकर 'साधकमेतव' तक पहुँच गया है। त्रिके कलत्रकन विनोपजी का बहना है कि अमेरिका में मूल उद्योगों के लिए १०० आदमी लगे। फिर आर के मूल में १०००००० से समाज का नारा बन रहा है। अब १०० आदमी भी क्या काम करे ? साम्य की भाँव है कि हर आदमी काम करे या बर्बाद न करे। कोई काम न करे यह सम्भव नहीं है। क्योंकि उद्योगधन तो चाहिए ही। इसलिए ऐसी युक्ति निकालनी चाहिए कि सब काम करे। लेकिन यह ध्यान रखना होगा कि विज्ञान के युग में उद्योग-वाला काम कोई नहीं करेगा, बले ही शूरा घर जाय। इसलिए ऐसे बीमारों का

शेषा वि-सर्जन आश्रमधनो में मोचा होगा, अगर धर्म में कि जिन उद्योगों से स्थापित किया है, उनको पूँज दन आश्रमों से बहुत कम है तो उनको समाप्त कर दो (सर्जें)

पत्रकार, १६ नवम्बर, १९७१

— बपटा यह अर्थ नकर एक, सलीमम अर्थ। लेकिन अर्थ नकर एक शक्ति, क्योंकि आश्रमों का आश्रम कर दिया। जो मूल विज्ञान है उनको परिपूर्ण करना, यह अर्थ नकर दो है। तो बपटे-कम दो नकर अर्थन तो हीनी चाहिए।

कार करता होगा, जिससे तन्मय सिद्धान्त चरित्रार्थ हो :

- हर हाथ को काम
- हर मन को धारण
- हर मन को आनन्द

एक ठगुवे के चरखे के घोर को पकड़ कर ही इस सिद्धान्त को चरित्रार्थ दिया जा सकता है।

विज्ञान के इस युग में हर मनुष्य को जन्म से वैज्ञानिक दृष्टि और चरित्र निर्माण का अवसर मिलना ही चाहिए, नहीं तो आन को नोकरवाही के साथ-साथ विरोध-वैज-वैज जुड़ जायगा, इसलिए भी घरेलू उद्योग की आवश्यकता है।

उपरोक्त सिद्धान्त के अनुसार मैं मानता हूँ कि चरखा चाहे पावर से भले, लेकिन एक ठगुवे का चरखा ही नवाना चाहिए। हर घर में एक ठगुवे का चरखा चलने पर भी जितना कपड़ा चाहिए उससे अधिक ही सूत बत जायगा। खाना बनाने के सराया के बिनाल के साथ-साथ ऐंशो परिस्थिति निर्माण होगी, जिससे खाना बनाने के साथ बगल के टेबल पर बिजली चालित एक ठगुवे के चरखे पर ध्यान देना कठई कठिन नहीं होगा।

प्रश्न : पावर की इजाजत ही जायगी तो खालू कालेवाली कतितो का क्या होगा ?

उत्तर : एक बाल स्पष्ट रूप से समझ लेनी चाहिए कि चरखे को मजदूरी, रोजगार या उद्योग की दृष्टि से नहीं बनाना चाहिए। अगर बनाने की कोशिश करेंगे तो भी नहीं चलेगा। क्योंकि पैदी स्थिति में धार चाहे जितनी हिनमत लगावने उद्यम कपड़ा बाजार की दरवा में टिक नहीं सकेगा। केवल बैकारी-निवारण को बुद्धि से भी दूसरे बाजारों के मुहाने बिले चरखा सावद ही टिक सके !

अनुभव के आधार पर मैं कहना चाहता हूँ कि लेडी, गोपालन के प्रश्न को अलग रखकर बैकारी की समस्या हल नहीं की जा सकती। सामाजिक धार और धार्मिक सेतो से हस्त क्रान्ति होनी रहे

और चरखे से बैकारी की समस्या हल हो, यह असम्भव है। चरखे को छोड़कर बाकी सामाजिक और सेतो में धम की प्रक्रिया को बढ़ाकर हस्त क्रान्ति के प्रयास से ही बैकारी की समस्या हल हो सकती है। दूसरा कोई तरीका नहीं है, ऐसा मैं मानता हूँ। अगर धार लोग सोचते हैं कि केवल सामाजिक से ही बैकारी की समस्या हल कर सेंगे, तो यह अरन्ध भ्रमक स्थान है।

प्रश्न : जब तक का अनुभव यह है कि पूनी अच्छी होने से ही सूत और खादी अच्छी होगी है। मिला का प्लांट बनाकर स्तर पर लगाया जाय तो कैसा रहेगा ?

उत्तर : पूनी के लिए मिला का प्लांट बनाकर स्तर पर लगायेंगे, तो मिला या प्रान्त स्तर पर यही न लगायेंगे, इतना उत्तर नहीं दिया जा सकता। स्वराज्य वाली ग्रामस्वराज्य की भूमिका में धाम स्तर के प्लांट के लिए तर्क मजबूत उत्तर है, जो बनाकर स्तर के लिए नहीं है। मैं मानता हूँ कि अगर बत्ताई उद्योग को आत्मस्वराज्य बनाना है तो पूनी सरोजन हानी चाहिए। जिसका धारवां बिनाकौट भी मसलिन कपड़ा की पूनी ही सकती है। अगर आम्का बिलाज उस स्तर की पूनी बनाने के लिए धाम स्तर का प्लांट नहीं बना सता है, तो फिनहान सामाजिक दृष्टि रखकर सधिराल के लिए बनाकर स्तर का प्लांट बना सकते हैं। लेकिन अच्छी वह प्लांट धाम स्तर का बन जाय, इतना भरोस्य प्रयास करने की जरूरत है, नहीं तो धार खादी के दिवार की भूमिका में निष्कृत जायेंगे। जब जहाँ है वहाँ बनना बहिन है। आगे बढ़ना होगा या पीछे हटना होगा।

प्रश्न : मजिष्य में खादी का जो कार्य चलेगा वह वर्तमान खादी-संस्थाओं या सामसंभाजो के मार्केट चलेगा या और किसी तरीके से चलेगा ?

उत्तर : भविष्य में खादी सामस्वराज्य समाजो के द्वारा ही चलेगी। किसी संस्था द्वारा चलेगी तो वह घुमन्धिर कर बाजार के जाप में फँस जायगी। यहाँ एक महत्त्व-

पूर्ण मुद्दे को धोर ध्यान देना चाहिए। इस युग में कोई भी चीज तभी चलेगी जब उसके लिए सरकारी-सहाय या संरक्षक संस्था होगा। सभी प्रतिद्वन्द्वी या बहिष्कार होगा। केवल संस्था-संरक्षण या जम्मा-सहाय से कोई चीज चल नहीं सकती। इसीलिए सामाजिक सुख खादी नहीं चलेगी। खादी अभिसुख धाम बनाने का प्रयास करना होगा। खादी जड़ है और धाम पेनन है। धाम ही खादी को तरफ का सकता है।

प्रश्न : धार की खादी संस्थाओं और धार की खादी का भविष्य क्या होगा ?

उत्तर : अब तक मैंने जो कहा है उससे स्पष्ट हो गया होगा कि धार की खादी संस्थाओं का और धार की खादी का भविष्य सुभ्य है।

प्रश्न : धारो हर घर में बत्ताई की धार नहीं है। यह अगर होता है तो दुर्गाई सज्जो की वास्तविक स्वायत्तत्व के लिए उपयोग हो सकता है। इस विचार में धार बना सोचने है ?

उत्तर : चरखा अगर अहिन बा प्रतीक है और स्वराज्य का साधन है तो दुर्गाई सज्जो की सामस्वराज्य को तरफ के मिलनी चाहिए, न कि सत्कार की तरफ से। धानी धार में मुम्ह्यार, बार्दी बार्दी की धार की तरफ ही। दुर्गाई की धार की विनिमय करना होगा। सब एक युय अधि के लिए सरकारी सज्जो की धार में धीन सते है। जब तक धाम-समाज को सज्जो की धार के लिए जायज नहीं बनायेंगे, तब तक यह सज्जो की धार को मालेवाली प्रभावकारी साधन ही बनी रहेगी। (श्री राज.दृश्य ब्रजेश के साथ हुए यानोसर)

भूदान-तहरीक
उर्दू पाठिक
 सासना चंदा : धार १२२०
 पत्रिका विभाग
 सभं सेवा संघ, राजप्राय, बाराणसी-१

सर्वोदय का क्रान्ति-दर्शन और पश्चिम का अराजकतावाद

— ज्यॉर्ज आस्टरगार्ड तथा मेरविल फ्यूरैल

सर्वोदय और अराजकतावाद में बहुत समानता है, फिर भी उनके बहुत हैं। सर्वोदय क्रान्तिमान को समझने के लिए दोनों के अन्तर की समझना अधिक महत्वपूर्ण है। अराजकतावाद के बड़े विचारकों में केवल टॉनस्ट्राय की अराजकता का आधार धार्मिक था। पश्चिमी अराजकतावादियों में, बहुसंख्यक ने, वास्तुगत की तरह, भगवान और राज्य को एक साथ जोड़ दिया है। और इसी कारण वे दोनों को मानते थे इनकार करते हैं। पश्चिम में सामन्तशाही और अराजकतावाद एक दूसरे का पगा है। सर्वोदय का अराजकतावाद अनिष्टकारी तौर पर धार्मिक है, भगवान में दृढ़ विश्वास और आत्मा के महत्व पर आश्रय, अधिकांश सर्वोदयियों (सभी के नहीं) के दर्शन की बुनियाद है। उनके धार्मिक दृष्टिकोण की साम्यवादी-रूढ़िवादी एक महत्वपूर्ण बात है। गांधी और लिबोवा हिन्दू हैं, परन्तु वे हिन्दू धर्म के लिए कोई विशेष स्थान का सना नहीं करते। वे मानते हैं कि सभी धर्म भगवान को जाने के विभिन्न रास्ते हैं। गांधी के अनुसार एक अच्छा नास्तिक भी एक धार्मिक व्यक्ति हो सकता है। अगर वह नास्तिक भगवान के स्वरूपिता और नैतिक शक्त में विश्वास रखता है, तो भगवान को न मानने के बावजूद उसमें धर्म के स्वत्व है। गांधी के नरसीक मरन ही भगवान है, यह भगवान की सबसे पूर्ण परिभाषा है। हाफ्ट होर से सर्वोदयियों के लिए, धर्म का महत्व एक निरपेक्ष नैतिक व्यवस्था में है।

निःक्रिय प्रतिरोध और सहायक

भगवान में विश्वास और नैतिकता सम्बन्धित हो जाते हैं। नैतिक निरपेक्षा निरपेक्ष बन जाती है। नैतिक निरपेक्षा यह बनाती है कि पश्चिमी अराजकतावादियों जैसे—नॉर्दविन और

क्रॉपटविन) से, जिन्होंने अपने नैतिक सिद्धान्तों को प्रवृत्ति और सुविचार का आधार रिया है, सर्वोदयवादी का विना अन्तर है। नैतिकता के सम्बन्ध में विभिन्न दृष्टिकोण का परिणाम सर्वोदय के केन्द्रीय नैतिक सिद्धान्त-अहिंसा में स्पष्ट हो-सकता है।

सर्वोदयवादी के लिए अहिंसा सार-विवाद का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह है कि या तो इसे स्वीकृत किया जाय या छोड़ दिया जाय। ताब के अनुसार इस पर विचार नहीं किया जाता चाहिए। इस निर्धारण में यह महत्व की बात है कि गांधी को नरसर में निःक्रिय प्रतिरोध और सहायक में अन्तर है। निःक्रिय प्रतिरोध यह उत्तरीक है, जो उन लोगों के द्वारा प्रयोग किया जाता है जो विधेय परिस्थिति में हिंसा के प्रयोग को उचित मानते हैं। निःक्रिय प्रतिरोध के प्रयोग का आधार यह है कि प्रतिरोध करनेवाला के पास प्रतिरोध का कोई और साधन है जो उसका ही प्रभावकारी है। इस प्रकार की अहिंसा की गांधी नरसरोरों की अहिंसा मानते हैं। सहायक सहायक लोगों को अहिंसा है, जिसे दृष्टिकोण अपनाया जाता है कि यही केवल नैतिक तौर पर सही कार्यवाही लगती है। इसका प्रयोग उस समय भी होता है, जबकि प्रतिरोध करनेवालों के पास सहायक अहिंसा शारीरिक शक्ति भी है। आज कुछ ही पश्चिमी अराजकतावादी अहिंसा को केवल नैतिक निरपेक्षा मानते हैं। यद्यपि बहुत सारे अराजकतावादक हिंसा को सुखदा की हिंसा के सुख मानने के लिए तैयार होते हैं। बहुत सारे शक्ति में निरपेक्षा रखनेवाले अराजकतावादी यह भी कहेंगे कि किसी भी परिस्थिति में हिंसा का प्रयोग उचित नहीं होगा।

अहिंसा कट्टरता के साथ नहीं

सर्वोदय के शेष अहिंसा को पूर्णतः

मानते हैं, परन्तु कट्टरता के साथ नहीं। उसमें पश्चिम के लोगों को अराजकतावाद तब बना है। कट्टरता को सभी का कारण गांधीजी का अन्तिम सचवाई पर थाप, अपूर्ण मानकर चलना है जो मानक को अतिरिक्त है। एक मनुष्य विजना ही बन्धा क्यों न हो, वह केवल सम्बन्धित मात्र एक ही पदुंन मरता है। यदि अहिंसा सत का रास्ता है, इसलिए कोई भी मनुष्य पूर्णतः अहिंसा प्राप्त नहीं कर सकता है। मनुष्य कामगोर ने अहिंसा होता है, आर्यों केवल मनुष्य के बाद ही प्राप्त होता है। इसीलिए बहुत सारे सर्वोदय, १९६२ के चीन-भारत युद्ध के अन्त में यह मानते थे कि गांधी और लिबोवा के प्रयोगों के बावजूद, भारत के लोग अपने मनुष्य नहीं थे कि अहिंसा अपनाये। और यही सही अहिंसा लिबोवा का सिद्धान्त है, और भारतवादी अहिंसा से हिंसा सम्बन्धी है, अर्थात् नैतिक प्रतिरोध भी होता है, परन्तु सर्वोदयों इनमें स्वयं भाग नहीं ले सकते।

इस विचार के कारण पश्चिमी अराजकतावाद और सर्वोदय में और भेद बढ़ जाता है। अराजकतावाद यह मानता है कि लोगों के लिए यह सम्भव है कि एक स्वतन्त्र जीवन बिना राज्य के बिनाये। परन्तु सभी उनके लिए ऐसा करना सम्भव नहीं है। वास्तुगत के स्वतः प्रेरित व्यक्ति के दृष्टिकोण के अनुसार, जना दृष्टि-अनुभवियों से प्रेरणा पाकर, जल्दी ही उठेंगे, और सदा के लिए राज्य की बनावटी जकीर लोक संकेतों। सर्वोदयों अराजकता के उद्देश्य को इसी प्रकार देखते हैं, जिसे प्रवृत्ति शक्ति के अन्त में, अर्थात् ऐसी कोई चीज मनुष्य उसी समय प्राप्त कर सकेगा, जब वह पूर्ण हो जायेगा। यह परिचित जिसे पश्चिम में 'दार्शनिक अराजकतावाद' कहती है, यह बनाती है कि सरकार को सत्ता के सम्बन्ध में सर्वोदय में हाफ्ट अराजकतावाद, क्या है। जब तक सारे लोग, या उनका एक बड़ा भाग, सरकार निरन्तर-भंग्य के

लिए अनुकूल नहीं है, उस समय तक सरकार रहेगी।

राज्यसुविधा की ओर

इस परिवर्तित में समाजवादी की बात यह है कि जो सरकार सबसे अच्छी है, समाज जिसके पोषण है, उसे स्वीकार किया जाय। सर्वोदय के लिए वह लोक-तांत्रिक सरकार ही है—जाने राष्ट्रीय बोधो के संयुक्त। विनोबा ने राजनैतिक विचार की तीन स्पष्ट मजिदों को बाध की है: पहली, एक स्वतंत्र केन्द्रीय सरकार; दूसरी, विकेंद्रित आत्मशासित राज्य, और तीसरी, पूर्णतः अराजकता, या सभी प्रकार की सरकारों से मुक्ति। राजनैतिक स्वतंत्रता का मिश्रण इस विस्तारण में भारत के लिए पहली मजिद थी, पंच-यतीराज का जन्म दूसरी मजिद। सर्वोदय का राजनैतिक प्रस्ताव, जिससे दल-विरुद्ध लोकतंत्र सम्मिलित है, इससे मजिद को निरास देखावे एवं सघर्षी जाते हैं। सर्वोदय के विचार से राज्य-विरुद्ध समाज, उत्कृष्ट ही उत्पन्न करना, जिसकी तांभो में आत्मनिर्भरता आनेकी ओर आत्मशासित संस्थाएँ बननी। इस विकेंद्रित तरह के राज्य पर केन्द्र द्वारा कोई प्रत्यक्ष आक्रमण नहीं होगा। यद्यपि ये विकेंद्रित आत्मशासित राज्य पूर्ण अराजकता की ओर बढ़ते रहेगे।

यह विचार अराजकतावाद और मार्क्सवादों से भिन्न है। मार्क्सवादियों को तरह, अराजकतावादियों को तरह नहीं, सर्वोदय मानना है कि एक वाग विरुद्धि में राज्य मूल ही जायगा। परन्तु अराजकतावादियों को तरह, और मार्क्सवादियों को तरह नहीं, ये यह मानते हैं कि समष्टि और अन्तिम हिंसा की संस्था से मुक्ति पाने के लिए अभी कार्यवाई करने की चाहिए।

यह स्पष्ट है कि अन्तिम साधनों से कोई वैदिक उद्देश्य प्राप्त नहीं किया जा सकता। अर्थ के इस दर्शन को एक राज्य-विरुद्ध समाज का अन्तिम उद्देश्य बनाने से यह स्पष्ट है कि समाज और उद्देश्य के

मिश्रण या अर्थ है कि परिवर्तन का कोई सधियाल नहीं है, या फिर हर शक्त सधियाल है। एक माधीनारी इन सिद्धांतों के द्वारा प्रभावित है, और अपना उद्देश्य—सर्व और अहिंसा—साधन और उद्देश्य दोनों रूप में प्राप्त करता है।

सोरेस और बर्गोसिन की तरह उद्योग के लिए "आन्दोलन ही सब कुछ है, उद्देश्य कुछ भी नहीं है।" यह कहा जा सकता है कि सर्वोदय 'यूटोपिया'—दूर-भविष्य में प्राप्त होनेवाली चीज नहीं है, यह वह चीज है जो मनुष्य यहाँ और अभी प्राप्त कर सकता है। महत्वपूर्ण बात यूटोपिया पर पहुँचना नहीं है, बल्कि उस दिशा में जाने का प्रयास करना है, और यह केवल उन लोगों के द्वारा किया जा सकता है जो सच्चाई, प्यार और वफा से काम ले। यह कहा जा सकता है कि ऐसा यूटोपिया उद्देश्य नहीं है। यह मूल्यों को आकार और ठोस रूप देने के बारे में सोचने का आसान तरीका है, भविष्य के लक्ष्य के लिए नहीं, बल्कि अभी के लक्ष्य के लिए मार्गदर्शक है।

केवल प्रतिरोध से संतोष नहीं

सर्वोदय और अराजकतावाद में एक और भी अंतर है। यह कहना पसंद होगा कि परिवर्तनी अराजकतावादियों की रचनात्मकताओं से कोई निजसरी नहीं थी। अराजकतावादियों द्वारा 'रोसाप-रेटिव' और 'समुदाय' बनाने की प्रयास कोशिशें हुई हैं, और अराजकतावादी सिद्धांतित यह मानते थे कि प्रकृष्टों की द्वैत सुनिश्चय बनाकर ये नये समाज का सघटन कर रहे हैं। परन्तु मुझ और वे परिवर्तनी अराजकतावादी वास्तुविद वा यह कहना मानते रहे हैं कि 'प्रत्यक्ष करत हो एक प्रकार की रचना है।' ऐतिहासिक प्रकृष्टि से अराजकतावाद प्रतिरोध का आन्दोलन मान्य होता है, पूरे समाज और मातृमित्र कोशिशित समाज के राजनैतिक अन्तः के सिद्ध प्रतिरोध का। जबकि सर्वोदय का प्रयास करने वालों की कमी की वजह प्रतिरोध से

आन्दोलन नहीं होता है। रचनात्मक कार्य-क्रम पर उनका सदा जोर रहा है। गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम में, अराजकतावादी पर जो जोर है वह सर्वोदय और अराजकतावाद के दुनारे अन्तर को बताता है। यद्यपि परिवर्तनी अराजकतावाद एकाध और तपस्वी प्रधान रहा है, और जीवन की सरल और सादा बनाने का प्रयास रहा है, परन्तु भारतीय अराजकतावादी समाज का पक्ष उससे बहुत धाते वा है। सर्वोदयी अराजकतावादी का स्वामी और तरलही रक्त गांधी के उन मूल्यों से स्पष्ट होता है, जो उन्होंने आत्मशासित के लिए अपनाये थे। एकाध और अहिंसा के अतिरिक्त वे मूल्य हैं धर्मार्थ, अस्वार्थ, सारिप्रह, अस्तेय, अश्व, अमेद, उदात्त-धर्म (जीविक प्रदान करने सामक), सर्व धर्म समभाव और स्वधर्म। परिवर्तनी अराजकतावाद की दो विशेषता हैं—मूल्य तोर से संयत सम्बन्धी स्वतंत्रता पर जोर, उद्योग आन्दोलन अराजकतावाद में एक अंग भी नहीं है। सर्वोदय, और परिवर्तनी अराजकतावाद की यह रचना में भी बड़ा अन्तर है।

उद्योगों की प्रतिरोध के मूल्यों की 'दुन-मूल्य' का तरन मानते हैं जो प्रतिरोध का पहला कदम है। अहिंसा और विरोध की असीत काले अहिंसा को बदलना जो नये मूल्य चुने गये हैं, उदात्त समाज की सम्पत्तियों से प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है, जेठ कि अहिंसा प्रकृष्ट की सम्पत्तय के रूप के लिए प्रकृष्टीय होने से अहिंसा सामाजिक परिवर्तन होता। यह अहिंसा एक अहिंसा के द्वारा होती है जो नये सामाजिक मूल्यों के अनुसार जीवन बिताते हैं। अन्तःकार प्रकृष्ट एक साहस है। एकाध प्रकृष्ट गांधी ने इसे एक आत्मी की अहिंसा को कहा है। पूँके नये मूल्यों के अनुसार अहिंसा विज्ञान कठिन है, यद्यपि एक कार्यक्रम बनाना जाता है, यदि सामाजिक आत्मी नये समाज की ओर आवाज से बर उनके। अहिंसा-प्रकृष्टीय प्रयासों से, मीन बने सत्य और नया सामाजिक जीवन बनाने हैं। यह दुर्दलीय सामाजिक

परिवर्तन का दृष्टिकोण है, केवल व्यक्ति के परिवर्तन का नहीं। यह समाज को उद्योगी तरीके से नहीं बदलता। सर्वोपर में विद्यमान रहनेवाले सामाजिक रचना बदलने से अधिक यन्त्र के परिवर्तन पर ध्यान और देने है कि उनका विद्यमान है कि स्थिति ही बर्तित करता है। जिस सामाजिक रचना की आवश्यकता है, उसे केवल बड़ी लोग प्रान कर सकते हैं, जो नैतिक चौर पर विशिष्ट हैं। वे मानते हैं कि सपर नये विचार की समुच्च परिस्थिति नहीं मिलनी है, तो वह सभीमें सार में कीट रहता है। व्यक्ति की नये मूर्तों में, परिवर्तित करने के लिए, सर्वोपर्य आन्दोलन सभी स्त्रो-पुरुषों से आगे करता है।

सभसे पड़ी विशेषता

सर्वोपर्य की भावित की कार्य पद्धति में किसी क्षण कार्य से अलग नहीं की जाती और यह सभी सचसे बनी विशेषता है। जबकि परिणामी धरातलतावाद का विचार एक संचालित सामाजिक आन्दोलन के रूप में आणिकारी की भावसंवादी रचनात्मिक के आधार पर हुआ। बाहुनिज, भोपासिन और सिद्धिक्रिये का धरातलतावाद मानसशास्त्र से बंधक रहता था। सुखीबारी समाज के विभेपण से धरातलतावाद और भावसंवादी में बहुत अन्तर होता है। सर्वोपर्य में वर्ष के अतीत या वर्ष समर्थ नहीं है क्योंकि यह मानता है कि किसी भी व्यक्ति को समूह का वास्तविक हित जारी मनुष्यों से कभी भी टकराया नहीं है। इस विचार से सर्वोपर्य-आन्दोलन ब्रिटेन के 'सुदार्पित समाजवाद' से मिलता-जुलता है। सर्वोपर्य, अर्थोनिष्ठता की संज्ञा, अपने आरम्भे सखर आरपी आन्दोलन मानता है।

जाने कार्यक्षेत्र में यह विशेष सामाजिक 'भ्रष्टों, नंगों, दोनों' की विस्मय बनाया जा रहा है परन्तु इसकी पूरी मान-क्या से दिल्परपी है। सर्वोपर्य समाज उद्योग समाज हीमा अर्थात् सभी लोग एक वर्ग को अपने दैनिक जीवन में जीवते।

विनोबा मिश्रा से

ज्ञानी अपने को गुलामी से मुक्त करें

—विनोबा

ज्ञान का समय है। विषय नग्न है, फिर भी जाने शब्द मरते हैं, अस्मय ज्ञानों शुद्ध होती हैं। ज्ञान, अस्मय, पपीता, नादयन, सारे वृक्ष अस्मय से शुद्ध सग जाते हैं। पत्ते भी उड़ने लगते हैं और शुद्ध होते हैं यथा। मोक्षार्थ से बहने दोषी-भोग्यो अस्मय की ओर जाते हैं। साठ पर बैठे, सिद्धरी से बाहर वा यह दुष्प बाबा अटक देखते हैं। सफाई के लिए तो जा नहीं सकते हैं, इसलिए बंके हैं। श्रीमी आचार्य में कोलना शुरू करते हैं, 'अस्मय में कार्यभोग्य रहा था।' और उचितियों पर मिलना भी शुरू होता है 'भूत-विस्मय, प्रेमस्मय, सधुस्मय, सुधी-स्मय' के चार ही गये। यह पुत्र शास्त्रा है। सपर पत्तियों जो इसा ही वो जंघ सचते हैं, विश्वपुत्रम्। बाबा के दोनों हाथ जुड़ जाते हैं, नमस्कार के लिए। मानो सामने विस्मय विस्मयता सदा हो। सामोको छा जाती है। वर्षों के पानी के छोटे अन्दर जाते हैं। धीरे-धीरे बाबा वा अस्मय मर जाता है। प्रार्थना होनी है। दिन अस्मय होता है।

अज्ञान विद्या के सूत्र

दूरे दिन सुबह का सूर्यमा प्रारंभ सत्य होने ही अज्ञान सत्य भोगते हैं। इन जिनो साम्य अपने पास साठ पर न पश्य रहते हैं, न कोई मोक्ष, जिसमें भाग्युक की कुछ बढ़ता ही वे विश्व सके। ऐसी मोक्ष भी हट गयी है। अज्ञान पक्षे पर किसी की कर्म से लेते हैं। जैसे ही कर्म पानी और उनके पास वो "सुधा" (गीर्वा, विष्णुसुधा) तथा अलग करे, अटका जाती हुई

इस अज्ञान भावित का सपरमय यह होया कि हृद तक सर्वोपर्य एक अज्ञान आन्दोलन नहीं रहता और अपने आरम्भे एक सचद पिन्ना देता है कि 'आन्दोलन' और 'समाज'

(विचार) रहता है, उद्यम प्रथम एक पर विचार —

काल—जानसम्, स्नेह—साधनम्
बहुक—अज्ञानम्, गुण-निवेदनम्

इस अज्ञान ही लिखकर उन्होंने गुलामी बाध में रह दिया। सप के विचन से सापर नल साम के उन शब्दों का यह अन्तर सस्मय गुलामी ही। दो दिन बाद साम की प्रार्थना के पहले इसी का चिक्र हुआ।

'स भूत स च सत्य जिज्ञासार्थि-पूरित जासिष्ठा'—भूत के लिए अज्ञानि होनी है, सत्य यानी प्रथम के लिए जिज्ञासा हीनी है। मधुर जायते, मिठाई खाते, आगरा जाते, ताक देखते। क्या करके इनके बारे में जिज्ञासा। इसका नाम है अज्ञान क्या करके इसके बारे में जिज्ञासा। दोनों की जासिष्ठा, यानी दोनों का आरण करो। इसलिए हमने कहा कालजासम्।

स्नेह साधनम्—दुखारी कवि है स्नेह। सामने दुष्मन साठ है। तो हमें क्या करना चाहिए? तब दाप एगिनी (दुष्मन पर प्यार करो)। सामने पत्नी की सदा है, तो क्या करना चाहिए? अज्ञान प्यार (पत्नी पर प्यार करो)। यान सीसिए, अपने परिवार का ही व्यक्ति सामने सदा है, तो हमें क्या करना चाहिए? मत्र अज्ञान (एक दूसरे पर प्यार करो)। सीनी हालत में प्रेम के निवाप कुछ करना ही नहीं। सप ही, पत्नी ही, स्नेही, साथी ही, एक ही स्नेह साधनम्।

कालजासम् यानी गुलामी बर्तें मूक बना रहते हैं। दास, परदास के

में कोई अन्दर न रहे। (सर्वोपर्य आन्दोलन पर लिखे गये अज्ञान ग्रंथ 'ही जेसिल अनाबिस्टल' से)

—ज्ञानुसर्वाः सैव गुलाम काल

पूरान-सप्तः सोमवार ६

यानी बंधपरम्परा से कुछ चीजें याद रखी जाती हैं। वट्टिन भी है। किन्तु कठिन काम के लिए ही हमारा जन्म है। शास्त्रकारणम् की आज्ञा उपनिषद् की है और स्नेहसाधनम् की आज्ञा ईसा की है। कठुर मरुतनम् की आज्ञा कबीर की है। गुणविघ्नवनम् की आज्ञा माधवदेव की है। माधवदेव ने लिखा है कि 'उत्तमोत्तमे अरण्यगुणक कल्प विस्तार।' जो उत्तमोत्तम पुरुर होता है वह मोड़ से गुण को बड़ा कर देता है। यह चार साधना हैं। अगर यह सब जाये तो प्रकृतियाँ सध जायेंगी। ब्रह्मविद्या मन्दिर के लिए हमने यह गुण बनाया। इससे सामूहिक साधना संभव है।

एक घट में साढ़ें रमता, कठुरा बचन मत दोस।

सामूहिक समाधि

वादा मन्दिर में बैठे-बैठे वा रहे थे। कबीर के दो चार भजन बाबा की प्रिय हैं, उनमें से यह एक है। उस दिन बाबा बहुत गम्भीर थे। वाद में उन्होंने कहा 'भीठे बचन तो बड़े-बड़े मुरखों भी बोलते हैं। वे मीठा-मीठा बोलेंगे, हँसिये और दूसरी तरफ सड़ाई की तैयारी करेंगे। इसलिए बड़बचन नहीं बोलना चाहिए, यह बहूषे के लिए बचन की जरूरत नहीं। यह तो मूर्खों भी बोलते हैं। लेकिन कबीर बहूषा है वह इसलिए कि घट-घट में है साढ़ें रमता। इस मन्दिर में भगवान की पूजा आरती तो करते हैं और सादासु को भगवन्मूर्ति सामने रखी है उसका जपमान करते हैं। हम त्रियों से बात कर रहे हैं तो भगवान से ही बात कर रहे हैं ऐसा समझकर बात करना चाहिए। सब बड़बचन की ध्यायना कौन थी? सामनेवाले को क्या लगा, उस पर ही बड़बा की परीक्षा होगी। अगर उनका हृदय दुखा तो समझना चाहिए कि हमारा बचन बड़बा। बड़बचन बोलना हमना ही बाकी नहीं। किसी के लिए वित्त में भी बड़बा नहीं जानी चाहिए। इसका स्वास्त किया करो, लिख कर रखो कि जिस दिन हमारे वित्त

में हमारे के लिए बड़बा आयी। वित्त में किसी के लिए भी बड़बा नहीं आयी, ऐसा होना सब सामूहिक समाधि संभव है। फिर गुणगुणाने लगे—दिन-दिन बढ़त चली। साधो सत्त्व समाप्त भलो!

'आपकी फोड़ी खीचता हूँ, ठहरिए।' रदागण पर दहलनेवाले बाबा की आज्ञा देनेवाली वह बानमूर्ति है युव तव के भारत की, जो अपनी पिता जगदीश भाई साहू के साथ सत्साह पर रहा। रहा था। उसकी भीठी आज्ञा का पालन करने बाबा सड़ हो जाते हैं। नये भारत का नमरा है इसबगोल का नागन का खाली दिव्या। उसमें एक छंद है, उसमें से अपनी आँसु लगाकर उजने न जाने बाबा की वितनी तस्वीरें खींची। वभी तो सफ ई करके-करते भी वह बाबा की बीच में रोकर लखीर उतारता था।

एक दोपहर करीब तीन बजे बर्षा के कुछ प्राध्यापक आये थे। प्राध्यापक वे तो क्या हुआ? आश्रम के अहले में अमरुद सभो-अभी पढ रहे थे। अमरुद देशकर खाने की दृष्टा न होना एण विशेष ही बात मानी जायेगी, तो उनमें से शायद दो-तीन प्राध्यापक महाशयों ने अमरुद तोड़कर खाना आरम्भ किया। जानभाई ने देखा तो प्राध्यापक महाशयों को समझाने की कोशिश की, 'माई इस तरह अमरुद तोड़कर खाना, बिना इजाजत के भला कहाँ तक उचित होगा?' उस पर कोई प्रश्न हुआ। फोड़ी देर बाद सारे प्राध्यापक बाबा के सामने खर्ज-मोलाजार में बैठकर के नीचे बंठ गये। उनसे साप उनके प्रश्नों की पर्चा बाबा ने की। बाकिर में बाबा के पास बिट्टी गयी। उससे बाबा की मामुस हुआ कि प्राध्यापक महाशयों ने अमरुद खाये। बड़ी उत्तुङ्घता से उनके मन ऊंचे हो गये कि बाबा का क्या बहूते हैं। बाबा, 'अमरुद तोड़ें तो कोई हर्ज नहीं। उनकी तोड़ने का अजिजार है ही। जब फेंको की पानी देने का मोला लयेगा, सब हम उनकी ब्राह्मि में अमरुद, बेर, ये सब के लिए हैं। किसी की मिलियत नहीं उन पर। बचपन में

हम भी फेंक पर बड़कर अमरुद खाते थे। एक बार फेंको के माकिर ने हमें बड़का और लाठी से पीटा। हमने तय किया था कि हमने अमरुद तो खाता ही है, उनके बदले में यह लाठी है। तो यह लाठी भी मोटी हो है।' सारी महफिज हँस पडी।

भगवान का भजन सूर्यें, काम हाल ही में माणपुर में ईमार्यों की अंतर्राष्ट्रीय विचारसिफित्तन कान्फेन्स हुई थी। उसमें आने हुए बई विदेशी भाई बाबा से मिलने आये थे।

"आपका हमारे लिए क्या संदेश है?"

"ईसा की मिखावन का अनुकरण करें?"

"भारत में हम गिगनरिधों से आप क्या संघर्ष करते हैं?"

"गरीबों की सेवा करें। आपकी सेवा ही आपका संदेश पंजापेगी। ईसा ने जो कहा है कि जो लोग 'हे भगवान, हे भगवान' बहूते हैं, वे मेरे नहीं हैं, बकिर जो भगवान का नाम बहूते हैं वे मेरे लोग हैं। ईसा ने यह भी कहा था कि आप सब अउर मनताना बातगो। (मेरे और गगन भी हैं)। अउर मनताना कौन सी है? हिन्दू, बौद्ध, इस्लाम, ये उनकी अउर मनताना हैं। ईसाई लोग यह समझते नहीं हैं। रोमन दफतिक तथा क्रॉस्टेट लोग एक साथ प्रार्थना नहीं कर सकते। मुझे बड़ा गया कि अब उन लोगों ने एक दिन निव्विन किया है, प्रिग दिन वे एक साथ प्रार्थना करने हैं। इसलिए अब आर सब के साथ सानी ईमार्यों में भी एक साथ, तथा हिन्दू, बौद्ध, इस्लाम के लोगों के साथ भी प्रार्थना कीजिए। इस्लाम प्रार्थना के लिए उत्तम प्रार्थना है मोन प्रार्थना। तो आर 'अउर मनताना' की भी बिजा बोजिए और पुर अपने अउर मनताना की भी। सर जयानों के गरीबों की सेवा करना तथा सब के साथ भिगडर प्रार्थना करना ये दो बातें आर कीजियेगा।"

यिके हुए संज्ञानिक :

परिचाम गिगनाराक

खानदेश के श्री भगवान दाखरी नगरानी के बट्टुवासी में १५ साल की उम

में १९४२ के आन्दोलन में पुनिनी की भार गयी। साथी चारों हुआ था। आधी बचकर घर आये वही। इतिहास कीनी ही गयी। उसके दोनो पात्रो को सुनसान हुआ। सुख छूटा हो गयी गया था, बर्बोदि उगी अस्थायी में एक छत्र चेत में रहना हुआ था। पशु अक्षयों बचपन की ही गयी। साथ दो-चार दिन यहाँ बिताये जाये थे। आगे के कुछ प्रयोगों में एक था—आज आशाएँ तथा विमान के बीच दूरार हुई है। दोनो अलग पद गये हैं। क्या किया जाये ?

बाबा, 'एकतरफा गुरु है कि वेग-निर्गम विमान बाले हैं। और कदोने उठाया विमान छत्रदार का देवा है। फिर मरका उठते वेगों कोन करने को कहूँ वैसी तोन में जोन करने हैं। छत्रदार दूरक देतो है कि हमें ऐसा बच बना दोन-एक हाँकि हूँ मही केटे केटे अचानो गानि से उठे बड़ी भी भेज हाँके। फिर के बच बनती है, मरनाथ की तैयारी कर देने है। उसके बरने में उठे बच मिलाया है ? गुनारे वा अन्तःशान्ति। दाने अन्तः शान्ति के गिण्ड उठोने अन्तः शान्ति देना है। मनु जो गुनारी गानी तोनो के कल्पे फिर पर उठा रही है, उसे पक देना हँगा। एकाद गुरुदर वैचारिकी ने काम किया हुआ तो विमान तथा आत्मज्ञान की दूरार गयी है। विमान-वहिन मरण होगे, तो यह कल्पान्त के साथ एकत्र हाँक छत्रार को जानै से जायेगे। इसलिए बाबा ने आँखरी दारें किया आचार्य-हून का—नन्दर सुन्दर राधेशांभे, जन-भक्ति से निम्नता रखने-माने जानी विमान छत्रार से गुनार होकर जाना काम रखना से बरें और उरगि-मनि से समान वा आदर्शन करें। सम्प्राप्त अन्तः शान्ति विनन्दर दुर्गम वा उदर होना। प्रथम-पद के द्वारा जन-भक्ति, कर्मभक्ति, और आचार्य-हून के द्वारा आदर्शन की, बर्बोदि-वही आर्ध-भौव गता निर्वाण कर सगेने।'

निस्वयते

हा विधि गुनोला बचन ब्रह्मिद मरण वेगान्त में रहती है। भेदरान बचने (वेगान्त) के विनन्दित में वा रिको कीर प्रश की वेहर यह बर्बोदि-वही आरा के साथ जारी रहती है। ऐसा ही कुछ प्रशर था। विष्णु-हायनाम वा पाठ पूरा हावे वा वे पढ़ीकी भी। उनका परना पड़कर बाबा बोले

"बाबा के आशे में वेगान्त मे गाने भरण १) वेदना बिकरी की। गुनविण वाता वा गुनान्त है कि वेगान्त वा आरम्भ तथा आह्वान की मरणात् आनिक्षेपा वा मृत्यु स्थान हा। पुनि जघारी से निस्वयती वाता ह नी से, काकी, प्रमाण, गया। आर के बचने में निस्वयती गारा है वेगान्त, कोनुरी, चरकर। वेगान्त है नानी, यह स्थान आर्ध-भेदा वा हा। कोनुरी है गरा, यह दामदान वा स्थान हा और यह पन्नार है प्रवाण, यहाँ की गनिनी वा मरण है, तो यह स्थान प्रवृत्तिया वा बने। 'राणी' में बँटने-बनानी कोन आन वाद (मर्क) काट्टि, मानी मुनि उतरागने। जोन में हा 'बाबी' छे-छरर जायेगे तो मुनि विना गही।'

गुनोला बहव, 'हमें तो मुनि की आशा भी नही, आशासा भी नही।'

बाबा, 'वो बहु पर भागना पाट्टी है।'

गुनोला बहव हँवने-हँवना निखने राणी, 'किर के हन गुनारा में आगे-ही वाय जेते मनी वा बरने और देवा वा मोरा निवेगा। क्या यह मुनि से गारा नही है ?'

बाबा, 'क्यो वात है। बहकर गुनगाने मने,

'हृदिना जन ती मुनि न सगो।'

रम-विरापी वासाक के जगत। तमिनगाइ के छात। उनका एक गानी-गारा है। गानी की छुट्टी में परगारा करते हैं। एत हात मयुर के बन्धुवारी तक गने थे। अब निकले हैं गाडी की बर्बो-

वहाँ रहे वे वा स्थानों वा बरने काले। वेवाधाम बाये थे। बाबा के गाने बँट गये। अब पर बचर पुनाते हुए बाबा ने कहा, 'मरने के बाद गानीकी जगें पढ़ीके हैं, बर्बोभी बचनेके पुनूचना बाहिर।' उनको बडा मडा आरा गुनार। फिर बचो वाता वा उगिन। बाबा तमिन के प्रथमे से एक-एक बचन बोचने लगे। छात्रों के वेदुणें पर आश्वर्य तथा आनन्द बमबने गये। उतर अन्त वा बरनि और तमिन वा इनका ज्ञान। तमिनगाइ के प्रवृत्त बनि भागिनार वा एक बचन है मयु अरिह भक्ति-वहिनते तमिन भागिनार, हृदिदामते-गुम कल्पे।

बिनाय आकाश है बिजनी भागानें से गतरा हूँ, उन मर में तमिन बहूँ मोठी है। बाबा ने कहा, 'मने दममें एक बगह परक किया है तमिनगोवि को बगह आनमति बडा है। भागभक्ति का अर्थ है वागु-बापा।

एत गुरु हाँक लीटे।

बाबा के गुनार पर चोरकड भाई बगानो की मना निखाते हैं। हाव में चरगत लेकर रीक धाम बी प्रवेगा थे पढ़ी-बोने से आरदेर मराराव वा मरन 'आर्ध मोनिना वा दिनु' गाने को बडा। बरताव गाये गये। हँव-भाई की छात्र हो गिने। तोनो गाते गये—

आर्ध मोनिना वा दिनु

अमुरते बयें एनु

बरका छत अमानु

प्रवृत्तता आनारा-गु

बाबा ने सर्व क्षमशास्त्र, 'यह छात्र गत सजान इच्छता हुआ है। इतिगु आर वा गुनगोनि है। गुन जिने मर मनी—मर के मून में, अचरकर से दू-मयूर रँट है। उस पर बचमानी विराज-काण है। परमपुर के वेकवा—बिरोवा ईट पर भाई हैं। आनदेर कहते हैं वह ईट मयूर की है।

बडापुर के बिरोवा वा एक बचन है गोदुरंग, एक दाव है बिच्छर। तमिन उरग मून बाव है केरा। इतिगु गाम

वीकानेर के पुष्टि-काम का अनुभव

—सिद्धराज ठट्टा

वीकानेर जिले में ग्रामदान वास्तुगत का प्रारम्भिक दौर पूरा हो चुका है। जिले के अधिकांश गांवों में ग्रामदान का एकलप हुआ, फिर गांवों का मोटे रूप में सर्वे हुआ, अधिकांश ग्रामदात्री गांवों में ग्रामसभाओं के पदाधिकारियों के निर्दिष्टीय चुनाव हुए और कई गांवों में साम-साहित्यिक पत्रों व सामकॉप वा प्रारम्भ हुआ। इस बीच सरकार की ओर से गांवों में पंचायतों के 'अलाउमेंट' का काम चला, उसमें भी हमलाओं ने सक्रिय हिस्सा लिया। गांव-गांव में पहुँच कर कार्यकर्ताओं ने भूमिहीनों के प्राथमिक-पत्र भराये, उन्हें अधिकांशों के पास साहित्य दिया, फिर अलाउमेंट के समय श्रवित रहकर उस काम में योग दिया।

इस प्रकार ग्रामदान के विचार और कार्यक्रम से जिले में लोगों का आग्रह साफ हो गया है। ग्रामदान के विचार से लोग उत्साहित नहीं रहे हैं। अब उन विचारों को अमल में लाने का 'पक्ष' बना है। इन बीच राक्षसों में नया ग्रामदान कागज भी बन गया है। पुष्टि-काम के लिए बड़े अग्रगण्यता निर्माण हुई है। अब कागज के अन्तर्गत ग्रामदात्री गांव को माध्याय विनाश का वाम भी सामने है। करी २० गांवों को चुनकर उनमें

वेच हेमता केवच का नाम लिये हैं।

कागज-पत्रों में केवच का नाम

किरावाती रहणें माध्याय-पत्रों

नामदेव का प्रेम केवच ही जानता है, केवच को हवेगा नामदेव के पास रहना है।

केवच तो नामा। नामा तो केवच केवच ही नामदेव है और नामदेव है केवच। इस रोग निष्पत्तुप्रवृत्तवाम के अंत में बसते हैं :

आकाशात् पतिर्न तोषं यथा मरुच्छनि

हम लोगों ने कागजी माध्याय के लिए काम भराने का काम प्रयोग के ठौर पर दिया था। अब तक के काम से लीने लिये अनुभव आये हैं :

१—ग्रामदान का विचार मोटे मोटे पर लोगों को समझ आता है, लेकिन प्रवृत्त अमीन भूमिहीनों के लिए विचारने और ग्रामदान में बंधन साधित करने की बात लोगों के गले में अटायी है। पिछले २०-२५ वर्षों में सारा वास्तव्य और वृत्ति देने की-वर्षा की-वर्षा है, अब 'दने' की यह बात लोगों को अच्छी नहीं लगती।

२—दने की वे बातें बुरी प्रकृति है, ग्रामदान की बातों के पीछे बुरा दृष्टि है, यह गांववालों की अच्छी तरह समझ खदेनालें कार्यकर्ता का हर टांगों में होता प्रकृति है। वाग्वी माध्याय के पक्ष भराने के लिए उसी तरह विचार समझाने की जरूरत है जिस तरह सरदा-पत्र भराने समय, अति-उपलब्ध अधिकांश। भूमिहीनों की बंधन देना अन्तर्गत करने स्वयं की बात है और इसी तरह ग्रामदान में दने की बात भी, यह लोगों को समझाने के एक-मात्र सुकर बात संसार में करना जानकर करने की है।

साधन

सर्वे देव ममकार केवच

प्रतिगच्छति

अरारा से निरा पानी नीले साधन के पास ही जाता है, वैसे ही सब देवों को किना ममकार केवच के पास ही जाता है। केवच। इसमें लीने अरारा है। 'क' का अर्थ है, केवच, दसा। इस यानी महेल। ओर 'व' यानी विष्णु। ब्रह्म, विष्णु, शक्ति हीने देवच नाम में एकर हुए हैं। (संको से)

—कृष्ण

इसके लिए सुद वाग्वीता द्वारा कल्या-प्रति रोग और रोग का उपहार देना करना जरूरी है, केवच बौद्धिक का से समझने के यह काम नहीं हो सकता।

३—ग्रामदान का विचार समझ लेने और उसके विरुद्ध मन में प्रतिरोध न रहने के बाद भी उसके अनुसार एकर बदले की समझ लोगों में नहीं है। इसके लिए बराबर लोगों के बीच रहकर उन्हें सहारा देने की जरूरत है।

४—गांव के लोग अलग-अलग गांव के का क्षेत्र के प्रत्येक स्थिति से कुछे बिना या उसी ही अज्ञान के बिना हावापार करने से इनकार करते हैं। वे प्रत्येक स्थिति पर, धारण, प्रयत्न या गतिविके के में योग होते हैं, जिन्होंने विभिन्न तरीकों से लोगों को अपने चतुर्ध में कर रखा है। लोग या ली दने के साथ आने स्वयं और सामक के नाथ बंधे हुए हैं या ग्रामान पहुँचाने की इतनी साधन के कारण इतने बड़े हुए हैं, और इसलिए इसी मर्जी के विनाश बुद्ध भी कर साने की हिम्मत उनमें नहीं है।

ग्रामदान विरम के अट्टाचार और डी-गच्छित के जटिल तो वे नेता लोग साधनकर बन ही बने हैं, पर एकरे मलास भी इन लोगों ने ऐसा साधन बना रखा है और ऐसे हथकण्डे बनाये हैं जिन्हें लोग दने के जान में बरकत हुए हैं। इसके उपारण गांव-गांव में बिचने हैं। सारा वातावरण बना बुद्धि है कि कोई अच्छी चीज पाने में बाधो विचरत है।

एक मरुच ने किसी चुनाव में सत्ता-धारी हुए वह गांव नहीं दिया। कुछ दिन बाद अरारा बाग भर बना और उसी मरुचों का अर्थोकि विना। विरोधी हुए बाग ऐव भोजन के समय मरुचों के से अर्थोकि एकर लाने पर एकर हजार एकर लुब्धा बना दिया। अब तक वह एकर लुब्धा ही है और लुब्धा नाथ बनने की कोशिस बात रही है। एक कान गांव में कुछ हुरजनों ने इनी तरह सत्ताधारी नेता महोदय की नाथन कर

रिपा। इसीमेला महोदय के बहुतेसे कवीर
१०-१२ बरस पढ़ते गाँव के अन्त लोको
के माध-भाग टन हिन-ब-रिवांगो ने भी
घर, मनेगी आदि के लिए कुछ गये बना
लिए। वर्षों बाद वर इन १५-२०
परिवारों को तहसील से कॉलेज में भेजी है
कि इसीमेले सरकारी जमीन पर साधारण
बनवा कर रखा है, अब उन पर बांन-
पारी क्यों न की जाए? इसी की त ह
उस गाँव में अन्य कई परिवारों द्वारा जो
इस तरह वाचना रिपा हुआ है सोचिन
उनकी कोई कोठिया नहीं मिली। अस्तो-
नवायें जो लोग वृथ्वी से अब प्रायों तो भी
२३ बार तहसील-केन्द्र तक जाने की
परेगाही और खर्च तो होगा ही। एक
गाँव में पंढराजी ने सरकारी आदेश के
अनुसार लोगों से मोल की वसूली शुरू
की। जिनके परिवार स्थानीय मेलाओं
के पक्ष के थे, उनको वसूली मेलाओं ने
रक्का दी। इस तरह उनको सराय मिन
पना, सुपरिचि वाद में उन लोगों को न्याय
कीर देना पड़ा।

एक प्रकार गाँव-गाँव में भय और
साधक का बाजारपन बना हुआ है।
विचार से लोगों को रिपाता भी मयसारा
जाय, अब तक वे इन प्रकार के भागक
और भागक में पड़े हुए हैं, तब तब वे
सामयान की नयी व्यवस्था में शामिल होने
की हिम्मत कैसे करते? तब यह साध-
शक लगना है कि अब इस प्रकार क सोचि-
दोटे समाय के पायका की हाथ में रिपा
जाय। तबो गाँव के लोगों में बेचका
बादेगी और वे बने बढ़ते भी हिम्मत
करेंगे।

उपरोक्त सभी दृष्टियों से अब यह
बकरी है कि समय-समय पर लोगों में
रंजिनी भेड़ा-बाध कराने के अजाय
पाँवों के बीच में मजबूत कार्यवाही करें और
वेदा भागों तथा सम्भाग के प्रतिहार आदि
के अधिमें लोगों का विश्वास मजबूत
करके उन्हें आगे बढ़ाने में मदद करें।

पीकासेर में आगे के काम
के बारे में सुझाव
१—जिनकी की काम तहसीलों में

काम-से-काम एक एक केन्द्र समय किया
जाय, तब पर दो या दोन मजबूत काम-
बर्ना रहें।

२—चारों तहसीलों के लिए चार
कार्यालयें गृहयुक्त, छाया, शिक्षा और
अपिषम वाके चाहिए। आराय-र-र-र-र-र-
प्राल के अन्त हिन्ता से वा प्राल के बाहर
मे भी अनुभवों कार्यालयें विवे अर्थात्।

३—तहसील क्षेत्रों के काम
(१) तहसील के गाँवों से मजबूत
रखना।

(२) उनके अजाय-अभियोग व सम-
स्थाओं में साम-अर्थ और मदद करना।

(३) क्षेत्र के अनुकूल गाँवों में काम-
रक्षण सभाओं को गठित करना।

(४) गाँव के गाँवों में ही मिलाएँ,
रखी वेचना तथा तथा इनके लिए आम
रक्षण सभाओं को गठित करना।

(५) समय-समय पर साम-गति-
सिद्धि तथा साम-गति-गति के प्रशिक्षण
सिद्धि कार्यक्रम करना।

(६) बावुरी युद्ध के काम करने के
लिए क्षेत्र के गाँवों को प्रशिक्षण करना।

४—जिन्ना-केन्द्र पर एक कार्यवाही
प्रचार-प्रधान के लिए, एक ४ तहसीलों युद्ध
तहसीलों कार्यवाही में मदद करने के लिए
तथा एक प्रकार की काम सम्हालने के
लिए—इन प्रकार की काम सम्हालने
कार्यवाही चाहिए। रिपा कार्यक्रम में वा
तहासक भी चाहिए।

५—साधारण यानु के अर्थमें
विशेष भाग कारखाने हो जाने पर लुप्त-
कारखाने तहसीलों में बावुरी सामन्त का
काम हाथ में लिना जाय। इन काम के
लिने के बाहर से भी लोग बावुरी
बावुरी को प्राणीय समष्ट के अर्थमें
निर्भर लिना जाय। म बावुरी काम-
कार्यों की सोचिने, देखने का तथा
कादि पूर्व मेलाओं भी जाय।

६—यस बीच यानु तहसील के २०
गाँवों की बावुरी सामन्त का बना हुआ
बाव भी युगा कर लिना जाय। ●

लोक-यात्रा के लिए
विनोमाजी का संदेश

पीम्पुवा ने मजगा में पास-तगा-
के लिए लोकर-गना के निम्नारे घुमते रहने
वा विशय लिना। यह सुचारु मुने
रमण हुआ, तुम्ही-गामको वा। मोर्डी-
वहने है —

तुम्हो तर मोर-नी-
मुम्हिल म्भर-मर्डी-
विषयक मनि देहि

मुने विशयक है, इन गति-गती
काम वा अर्थ हमारे कार्यवाही समझ
जायेंगे, योग धनेवृत्ता के साथ लो-
वार्य में एका ही तर जुड़ जायेंगे।

विनोमा का जय लक्ष्म
कथ विनायकि, पर-र-
२-१ २९-२१

योग अर्थात् क्षेत्रों का दौरा करें

विशय गति-गती भी गम-रक्षण
पुणेदिन दग हने इतकी के लक्षण एक
साह की पर-तारा समाज कर खो-द-
नीय में प्रवेश करने वा रहे हैं।

मिमा से लोकर हुपु यकी पुणेदिन वे
रिदरन में योग के दर्शन निने, लक्षण
दग विषय की इन वार्ता के दोरान
यकी पुणेदिन ने योग के प्रायका की कि वे
अने कै-र-र-र-र-र-र-र-र-
दग, अर-र-र-र-र-र-र-
जुम अजाय क्षेत्रों का दौरा कर दर्श
गति-गती-गती के लिए जायें कार्यवाही
प्रधान करें।

य पुणेदिन रकी-र-र-र-र-
रिषय जायेंगे इहाँ वे लक्षण लक्षण मय से
अनुकूल रहेंगे कि मिमा जायेंगे की मानरीय
व प्रायकायक मुनी पर रिषय रहने वा
युक्त कथि-र-र-र-र-र-
बावुरी अर्थि-र-र-र-
वा युगा दैन रिषय की युगा ही मने
रिषय के गति-गती प्रकार के लिए रिषय
माय पर रक्षात हुपु है। इस लक्षण मुने
की अर्थमें वे प्रव द-र-र-र-र-
रिषय, सोचिना, लक्षण व इतकी की
माय कर मुने है। (अर्थमें)

सहसा के चौसा प्रत्यक्ष में भूमिवितरण

५५ बरानो के प्राप्त ३२ को० १४ व० १५ घर भूमि ७६ आदाताओ के बीच बाँटी गयी है। मसजुमपुर और नलामन में ७ को० १० व० भूदान की जमीन भी ११ आदाताओ में बाँटी है, जो दो बरानो के प्राप्त हुई थी। ग्रामसरदार पददान के क्रम में १५ दाताओ के प्राप्त भूदान की ३७ बीघा जमीन ७५ आदाताओ के बीच बाँटी गयी। इनके अलावा प्रत्यक्ष में अब तक १६ ग्रामस्वराज्य-समर्पण तथा ४ ग्राम-समितिओं पटिन हुईं। यहिबारे विस्तृत जमीन का आविष्कार दाताओ और आदाताओ के साथ इन प्रकार है :

श्री धीरेन्द्र भाई की लोकयात्रा का शुभारम्भ

ग्रामपरराज्य का अखिल भारतीय प्रयोग सहसा जिले में पिछले एक साल से ही रहा है। इस कार्य का मार्गदर्शन मुख्य वायू के सहयोगी और देश के प्रख्यात सार्वजनिक विचारक बसोबुद्ध, तपस्वी अध्येषी धीरेन्द्र मजुमदार कर रहे हैं। उन्होंने अब यह निश्चय किया है कि सहसा में ग्रामस्वराज्य की स्थापना होने या स्वामी जीवन-यात्रा के अन्त तक के सहसा जिले में लोक-भगा के तट पर घूमते रह कर ग्रामस्वराज्य के लिए जन-आगरण का काम करते रहेंगे। उनकी उम्र ७१ वर्ष की है, किन्तु यह 'बृद्ध युवक' आज भी श्रान्ति देवी की अर्चना में रत है।

धीरेन्द्र दादा की यह लोकोयात्रा स्वर्गीय देवराज डा० सुजिन्द्र प्रसादजी की जयन्ती ३ दिसम्बर से सहसा के विश्वेश्वर प्रत्यक्ष में आरम्भ हो रही है।

सहसा-ग्रामस्वराज्य समिति, विश्वेश्वर

पति	जमीन का रकबा को० व० पुर	दान	आदाता
१-नलामन	३-१२-४	५	४
२-सिन्हा टोला	०-०५-०	४	३
३-मजुमपुर	३-०२-१६	५	५
४-अजगैवा	०-१६-००	७	१
५-मजुमपुरा दाता	०-०३-१०	२	२
६-नौबदिया दाता	१०-१७-००	३	१५
७-दुपट्टर (बड़ीवा)	१-११-१०	३	३
८-गोसावक गाँव	३-१२-१५	५	१३
९-दुमरोल	१-१५-००	१	३
१०-पुरैनी	१-००-००	३	४
११-देवीदास टोला	०-०६-००	२	१
१२-बिरीरी	१०-१०-००	५	७
योग	३२-१५-१५	५५	७६
भूदान की जमीन			
१-मसजुमपुर	५-००-००	१	७
२-नलामन	२-१०-००	१	४
३-सौआवापान	३७-००-००	१५	७५
कुल योग	७७-०४-१५	७५	१६५

जातिवाद ईश्वर के अस्वीकारण की कृति करना है, क्योंकि अगर यह सत्य सिद्धा नहीं है तो ईश्वर ही ही नहीं करता।

इस आंक में	
बना गयी जमीन की नीय मारी	
मात्रता है ?	—इस १३५
दिया का सिद्धा	
—समाप्त १३६	
पत्रपत्र संचालित हुई तो मडे-जे-वडे मसान हान होये	
—मुद्रास्तन मसजुमपुर १४२	
दाताओ के उद्देश्य	१४३
मात्रो : रिम मोड पर ?	१४३
सर्वोप बर अखिल दर्शन और	
परिपत्र को या आदिमात्र	
—उपरोकी मसजुमपुर १४५	
सारी जमीने की भूदान की के मुद्रा बडे	
—रिजो १३०	
वीरानेर में मुद्रि-बाय के लजुमन	
—शिवभार ददु १५०	

वार्षिक कुल १० व० (सर्वेक्ष कुल १२ व०, एक प्रति २५ देते), विदेश में २५ व०; या ३० विधि या ४ बाहर। एक आंक का मध्य २० देते। मोहम्मदस मद्र द्वारा सर्वो देवा संय के सिने प्रकाशित एक मसोहर प्रेष, आदाताओ में कृति

क्र. : १८, अंक : ११, सोमवार, १३ दिसम्बर, '७१
 सर्व सेवा संघ, पत्रिका विभाग,
 राहपाट, बाराणसी।
 तार : सर्वविधा * कोड ६५१११
 संपादक
 राजेश्वर झा

सर्वसेवा

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

सर्वसेवा

सर्वसेवा संघ का मुख पत्र

बंगला देश की हमारी हादिक शुभकामनाएँ

आज तारा में प्रधान मंत्री को
 यह घोषणा सुनकर कि भारत
 सरकार ने बंगला देश की गण-
 तांत्रिक सरकार को औपचारिक
 मान्यता दे दी है, अपने आनन्द-
 शूर्भों को रोकना शेरें लिए कठिन
 हो रहा है। यह सचमुच एक ऐति-
 हासिक घटना है जो बंगला भार-
 तीय उपमहाद्वीप में नहीं, पूरे
 दक्षिण एशिया में परिवर्तन ला
 देगी। मैं प्रधान मंत्री को तथा
 उनके सहयोगियों को हादिक सफाई
 देता हूँ, तथा बंगला देश के कार्य-
 वाहक राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री एवं
 अन्य सदस्यों को भी शपथी बधाई और हादिक शुभेच्छाएँ भेजता हूँ। साथ ही मैं यह कामना करता हूँ
 कि उनके स्वामंत्र्य सघर्ष का अंत शीघ्र पूर्ण विजय में हो। मैं यह भी आशा करता हूँ कि अब विश्व के
 दूसरे देश भारत के उदाहरण का अनुसरण करेंगे और गवोरित प्रभुमान्तागमन बंगला देश तथा उसकी
 गण सरकार को इसी प्रकार मान्यता प्रदान करेंगे।



शिव बंगला ।

जयसंकाश नारायण

आपातकालीन परिस्थिति और शान्तिसेना

अद्विज भारत शान्ति सेना मण्डल का यह मत है कि तारीख ३ दिसम्बर की मध्य रात्रि से जो युद्ध प्रारंभ हुआ उस दिन नहीं, बल्कि २५ मार्च को मध्यरात्रि से ही आरम्भ हो गया था, जब पाकिस्तानी जमीआही ने निरुद्धे यमनादेन-वाहियों पर अत्याचार हमला किया था। उस दिन के बाद भारत की भूमि पर अत्याचारों का जो आगमन शुरू हुआ यह परिस्थिति द्वारा भारत की अर्थव्यवस्था एवं समाजव्यवस्था पर हमला हो था।

भारत की सरकार ने आठ महीनों तक यह प्रतीक्षा की कि विश्व का विवेक जगें और इस समस्या के मूल को ही समाप्त करने के लिये पाकिस्तान सरकार को बाध्य करे। किन्तु, हालांकि जगन् के कई देशों ने मध्यरात्रि के बारे में सहायुक्ति विज्ञापनों, डेविड किंगी ने समस्या को सुझाने का कोई उचित उपाय नहीं किया। अतः जो युद्ध पाकिस्तानी तानाशाहों का वहाँ की बहुसंख्यक जनता के खिलाफ था वह अब समूचे भारतीय जन महाद्वीप का युद्ध बन गया है।

अब सभी समझदार लोगों को चोखित यह होनी चाहिए कि यह युद्ध समूचे दक्षिण-पूर्व एशिया का या पूरे विश्व का युद्ध न बन जाय।

इन व्यापककालीन परिस्थिति में जनता के कुछ विशेष वर्तकों को नुरा करने में सहमता देना शांतिसेना का विशेष दायित्व होगा। इस स्थिति में जनता का प्रथम वर्तक है, राष्ट्र का शक्ति धैर्य बन में रहना। उसके लिए यह जरूरी है कि राष्ट्र की एकता बनी रहे, कोई काम भय या आतंक से न किया जाय और सामर्थ्य जनता अपना प्राचीनक सज्जन न छोड़े। इन तीनों कार्यों में शान्तिसेना जनता के सहायक बन सकेगा है।

इस प्रसंग पर दिनों भी पटना की किन्नी प्रचार का समर्थन या सामर्थ्यक स्वरूप न दिया जाय। और सामर्थ्यक तनाव न बढ़े तथा राष्ट्र की एकता और सुवृद्धि बने, इसके लिए शांतिसेना विशेष प्रयत्न करेगी। हम यह मानने को तैयार नहीं हैं कि भारत का कोई समूह-विशेष पाकिस्तान को सन्तार का समर्थक है। इसलिए युद्ध को किसी समूह-विशेष के खिलाफ लोगों का मन उपसार्ने या बहाना नहीं देना चाहिए।

आपातकालीन परिस्थिति का लाभ उठाकर युद्ध लोग तरह-तरह की अपवाहों फैलाते हैं। अपवाहों में से पंच होनी हैं, भय से बड़वी हैं, और आतंक से जिनासवागी बन जाती हैं। शान्तिसेना को अपवाहों को रोकने से रोकने के लिए सक्रिय बनना चाहिए।

युद्ध की परिस्थिति में सामान्य व्यवहार को बरतुओ के नम हो जाने या उनके धाम बर जाने की सम्भावना होती है। शान्तिसेना को चाहिए कि ये अन्धे-अन्धे क्षेत्रों में इन दोनों बातों को होने से रोके। इसके लिए शान्ति सेना प्रमुख मामलों से मिलकर आशोधन करे। वे व्यापारियों से मिलकर इस राष्ट्रीय कार्य में सहायता प्राप्त करें। शान्ति-सेना, विशेषकर सरल-शांतिसेना, आसम्भयता पड़ने पर मूल्यवृद्धि, मुनाफाकारों तथा जमावों की रोकने के लिए चोखितव गठित करने तथा दूतारों पर निरेडिंग भी कर सकते हैं।

शान्तिसेना में नागरिक सुरक्षा के वर्ग पत्नी चाहिए और जनता को नागरिक सुरक्षा के सामान्य नियम समझाने में शान्तिसेना को विशेष रूप से सहायक बनना चाहिए। युद्धकालीन परिस्थिति के प्रचार में तथा पत्नी शिवार बन्दन है और सत्कारिता चुल हो जाती है। शान्तिसेना को चाहिए कि अपने रहन-सहन में, बोलने-सुनने तथा लिखने और प्रचार करने में वे सत्य और सवाधियाँ की कभी भंग न होने दें।

इस युद्ध से जिन लोगों की जान और माल का दुर्घटन होगा, उनके लिए हमारी सहायुक्ति है। यह युद्ध पाकिस्तान को जनता के खिलाफ नहीं है। युद्ध से भारत और पाकिस्तान दोनों की शरीर जनता पर प्राची आर्थिक बोझ पड़ेगा। उनके लिए हमारी सहायुक्ति है। यह मानना भी गलत होगा कि इस युद्ध को पाकिस्तान की जनता का समर्थन प्राप्त है। हर हालत में पाकिस्तान की जनता के बारे में भारत में बहुत मोर पूजा मही फैलनी चाहिए। हमारा विश्वास है कि इस युद्ध से पाकिस्तान की सरकार को भले ही आठ महीनों से बगला देश की सहायता की हान न कर पाने की बदनामी से बचने का बहाना मिला हो, पर पाकिस्तान की सामर्थ्य जनता को जो उन्नी हर प्रकार सुज्जन ही नुरासान होगा।

शांतिसेना मण्डल आशा करता है कि यह युद्ध शीघ्रतम समाप्त हो, बगला देश स्वतंत्र राज्य के नाते जगत् में भी मान्य हो, भारत में अन्धे सारणियों सुधपूर्वक स्वदेश लौट जायें, पश्चिम पाकिस्तान में जमीआही का स्थान जनतामानक शासन से और भारत तथा पाकिस्तान दोनों के सम्बन्ध में शीघ्रता से नये।

५ दिसम्बर, १९७१

जयप्रकाशमनारायण
अध्यक्ष

नारायण देसाई
सचिव

अद्विज भारत शान्ति सेना मण्डल, रात्राघाट, बाराणसी-१

कुछ और भी

एब्रॉन में पूरी निष्ठा रखनेवाले एक भिष ने प्रश्न उठाया है "युद्ध टिप्पण क्या है। देश अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ रहा है। क्या हमयोग दम बलन भी धाममान ही की वान करते रहेंगे, या युद्ध और भी क्यों?"

हम स्वयं है, और स्वतंत्र रहेगे इसमें दो राय की गजाल नहीं है। अगर मान ही स-राज ने विस्था काटी नीति धमकी हीनी और गहक विनी देश पर लाजमश विधा हला तो बाव हमरी हीनी और हम जो अहिंसा में विरागस (सनेवागे) कोण है, पीयन करने कि ऐसे युद्ध का समर्थन हम नहीं कर सकते। लेकिन बाव हमने बहुत विन है। हम जानते है कि भारत ने पिछले सहीतीने में विनने धर्म से बाध लिया है। बार-बार हमने दुनिया की अन्तरराज का युद्ध है। परकिरातन को सैकि सरकार ने बगला देश में तर-महार विधा है। अब हमने भारत पर कसकम विधा है। हमने जकार में भारत अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए सेना का सन्भारन करने पर विराग हुआ है। सैकिरि शाहि वा प्रानि कर सरकार धाने बतन का पालन कर रही है। अगर वह संसा न करती तो अपने धर्म से ध्युन हीनी। हमने गुन से बगला दस के सदान का समर्थन किया है क्यो कि वह मुक्ति का प्रदान है। यह सदान नरी की बगला पर बहिषा-पाही ने मोसा है। ऐसी स्थिति में भारत सरकार ने उस बतन मान उठाया है, जब कसक उठाने के विनाय उनके सामने दूसरा कोई विराग नहीं रह गया था।

देश के लिए ऐसे सडक के लयन कीदें नैनिह हो या नार्किरक, हर एन की यदो काभास है कि हमारे देश की स्वाभगा मुक्ति। रहे, और वह शक्तिशाली हो। आभाषक यह सभी न हो, लेकिन आक्रमण होने पर सामन-नमर्नन यह सभी न करे। इसके लिए हमें क्या करना चाहिए, यह सबके सोचने की बात है।

आज से थोड़ा छान पहले १९५० में विरोधियों ने जनरल में संघर्षा की थी कि सामान्य प्रतिष्ठा का उपाय (जिनेस मेरु) है। हमने हुनेया माना है कि देश को स्वामी रूप से शक्ति-पाली बनाने के लिए उसके सादें पोष सास शक्ति को शक्तिशाली होना आवश्यक है। भारत-बैया देश, जो अपने साधो शक्ति में बडडा है, केवल आन, सेना के दम पर, बाहि वह नितनी भी बन्दी और अनुनिर अर-नरको से मुक्तिबल प्रयो न हो, शक्ति-पाली नहीं हो पाता। शक्ति उनके नार्किरको में हीनी चाहिए, उसके हर शक्ति और मर में हीनी चाहिए। यह शक्ति को ही नहीं कानी। इसके लिए युद्ध भी भी करना पडता है। धाममान नहीं "युद्ध और" है। शक्ति-मर्न में धामनराग-मसा के सपटित

और सक्रिय हो जाने पर तथा राष्ट्रीय स्तर पर एक विमान शक्तिधेना के मन जाने पर गलतधारी सेना की आनयनता रह जायगी या नहीं, यह बापे सोचने का विषय होगा। किन्तु वह मान नहीं भविष्य की बात है। आज देश की सरकार है, देश की सेना है, उषवा नर्तन्य है देश की रक्षा करना।

युद्ध की कस विधि में हम देश रहे हैं कि हमारे शक्ति और गहक धरनी शक्ति से रक्षा का विराग के लिए यस्तु कुछ नहीं कर रहे है। वे सरकार की ही कोण बलने रहते है। यह शक्ति का मक्षण नहीं, शक्ति न हलने का लक्षण है। युद्ध की दम नानुष स्थिति में भी नहीं है वह मरुतन जो भाव-मान, गह-अदर में शक्ति बनाने रते, पबसाणी नार्किरको राक, ममाज-पीरुकी फार्न न हीने दे, सामन्तरागिक छद्मतामा न हुने दे, राष्ट्रिय सन्धति की रक्षा तथा दूसरे सारस्यन कांने करे। अगर प्रामदान के बाव धामनराग-मभादुं बन गरी हानी और धामन-नार्किरको की दुकिरिां शक्ति हो पाी हीनी तो आन हर शक्ति 'डिक्लेन वा किना' होना, और शक्ति के लोण बाने विनने की रक्षा के लिए तदार होते। तब सरकार का बाधा विनना टाका हीना, और नार्किरको की अनेय शक्ति स्वतंत्रता की रक्षा के लिए उतरना हीनी। लेकिन स्थिति यह है कि सन्धतन की रक्षा का पूरा भार सरकार और उधारी सेना पर ही है।

प्रबन युद्धविनाय विषय, तथा उनको उरह दूसरे विषयो, को सम्मान्य चाहिए कि देश के लिए धाममान से बडडर युद्ध और नहीं है। इस सतत के लयन भी तो हम यह मरुतन, और सतत सर धामन-धामनराग के बाव भी दूने उरहा से पूरा करें। सतत की बा भी युद्धमन नहीं है।

स्वतंत्रता पर प्रहार क्यों ?

सरकार ने उधर शक्तिधेन के कई सम्मान पात रिये है। उन सजोशो का सरकारकी और उ तो दूर विन सार्किरक बयल हुआ ही है। लोडनभा से ऐसे बूट बडा बडमउत भिना है, और बाहर बनता से भी उरहाह के मान ग्यालन दूसा है। क्यों ? हमने कि सार्किरक विन में सरकार का सन्धति अपने हाथ में लेनी और उसके बदन में जो दयन देनी उसके सम्बन्ध में कोई सुनवाई किनी ग्यामान्य में नहीं हा सार्किरको। यह लोक ही नर हुनने देश में जो सन्धति है एसा बडा भाग बांटे से हाथों में केन्द्रित है। यह स्थिति मिटनी चाहिए और सन्धति बंटनी चाहिए। सतत की दिगा में किना न भी छोडा दयन उठाया जाय वह नहीं है और उषवा मरुतन होत चाहिए, यस्कि यह बार लोचने की है कि सन्धतिशाली के हाथ से सन्धति निरुन कर सरकार के हाथ में जब पडुन बाध नी बहै तब सतत कायेगी। एक सतत या राष्ट्रीय-काल का बादू का। लेकिन अनेक देशो के भयुनक से यह यह बात साफ ही गरी है कि राष्ट्रीयरत्न सरकारीरत्न होकर यह बाजा है, और सतत हो या सन्धति इनमें से किनी का सरकार के हाथों-

में केन्द्रित हो जाता कम पावर नहीं है। समरसिवाजी का सुभा-
 दितता करने के अनेक उपाय हैं जैसे कानून, टेसल, लोकराजिन
 वगैरि, किन्तु जिन सरकार के हाथ में देश की राजनैतिक और
 आर्थिक शक्तियाँ केन्द्रित हैं, और जिनकी मर्जी की जनता पर
 लागू करने के लिए एक मुश्किलजित सेना तैयार खड़ा है उसका भूभूमिवा
 दिनादेशन कठिन होता जा रहा है। बसला देश की मिथान शक्तों
 के सामने है। इसलिए उचित यह है कि सम्पत्ति सीधे जनता के
 हाथ में जाय, न गान्धिक के हाथ रहे न सरकार के। पूँजीवाद का
 विकल्प सरना(खाद)—ईनिकवादी सरकारवाद—के विनाय दूसरा
 है ही नहीं, यह स्थिति जनता की हार्जित मान्य नहीं होगी चाहिए।
 इसके अलावा एक दूसरा प्रश्न भी है। क्या दाखल है कि
 संविधान की समिति की धारा में मशीनर साने के लिए अधिकार
 के साथ-साथ सरकार ने उन धाराओं पर भी अधिकार हाथ में ले
 लिया है जिनमें देश की जनता को विश्वास, धोखे, सबूत करने
 वगैरि के 'नागरिक अधिकारों, की मारटी दी गयी है। क्या समता

के नाम में नागरिक हस्तगतता को पड़ना आवश्यक है। क्यों,
 किनलिए, आवश्यक है ?

विचार की स्वतंत्रता के बिना लोकतंत्र नहीं बिना
 रहेगा ? मनुष्य की सबसे अनमोल सम्पत्ति है विचार। क्या
 सरकार चाहती है कि यह 'सम्पत्ति' भी उसी के हाथ में रहने
 चाहिए ? जो सरकार विचार शक्ति की नागरिक स्वतंत्रताओं पर
 रोक लगाने की बात सोचती है उसकी नीयत पर शरौता नहीं
 दिया जा सकता। मुझसे होता है कि गरीबी और विषमता से
 पीड़ित जनता को समता का भूभूमिवा देकर सरकार धीरे-धीरे
 उसकी स्वतंत्रता को, जितनी मारटी संविधान ने दी थी, छीन
 लेना चाहती है। यह तो शक्य पर प्रहार है। हम समने हो जायें।

हमें समता और स्वतंत्रता दोनों चाहिए। दोनों का सत्य
 रहना सम्भव है, उचित एक के बिना दूसरे का कोई साथ मूल्य
 नहीं है। जनता को जानना चाहिए कि उसके नाम में सरकार
 क्या कर रही है।

संविधान का २५ वाँ संशोधन : एक प्रतिगामी कदम

'चिरिहस हो मे मुझे सब तक कोई
 गम्भीर भविष्यवाणी या तात्कालिक वारं
 करने से रोगा है, जब तक अपनी हाल
 की अस्वस्थता के बाद मैं धुंध धारोभ्य
 साधन न करूँ। परन्तु इस समय जब
 कि संविधान का २५ वाँ संशोधन जो
 पहले गम्भीर महसूस था है, सबके के सामने
 विचारार्थ उपस्थित है, मैं यदि हस्तक्षेप
 न करूँ और प्रयास नहीं से तथा अपनी
 सरकार से निष्कर्षित किये जाते हुए
 उन्हें आवश्यक शक्तियों न दूँ तो अपने
 नागरिक बंधन में मैं स्पन्द होऊँगा।

"सापत्तिक अधिकार को सीमित या
 समाप्त करने की कोशिश करनेवाले २५ वें
 संशोधन की चाहें थी थी विरोधपूर्ण हो,
 नागरिकों के भाग्य एवं अभिव्यक्ति की
 स्वतंत्रता, संपत्ति या संपन्न बनाने की
 स्वतंत्रता, भारत के समस्त क्षेत्र में
 स्वतंत्रतापूर्वक विचरण करने तथा देश के
 किसी भाग में रहने और रहने की
 स्वतंत्रता के जो मौलिक अधिकार हैं, उन्हें
 किसी भी रूप में हस्तित करने के प्रयास
 को मैं एक प्रतिगामी और अधिनायकवादी
 कदम मानता हूँ। समाज के कल्याण और
 हित के नाम पर राज्य द्वारा अधिनायक

ता का अधिग्रहण हमेशा प्रतिगामी
 तथा कामधेयवादी कदम ही होगा, यह
 आवश्यक नहीं है। इसके विपरीत, यह
 शिष्टवृत्त संविधानवादी और प्रतिगामी
 कदम भी हो सकता है। कल्पना, सोच-
 तंत्र और अविनायकता का भेद ही
 समाप्त हो जायेगा और संघर्षवादी
 व्यवस्था ही सर्वाधिक प्रतिगामी व्यवस्था
 बन जायेगी। तब तो, प्रयास नहीं और
 उनके सहयोगी, संविधान के अन्तर्गतों
 द्वारा, जिनमें पंडित जवाहरलाल नेहरू
 भी शामिल हैं, गुणवत्त रूप से प्रतिगामी
 सोचधन की शक्तियों को गिनाये पर तुले
 हुए हैं। केन्द्रीय विधि मन्त्री के बरतण
 और उल्लेख भी अधिनायकवादी शक्ति
 मयतत् द्वारा एक विषय में प्रकट विवे
 चये विचार, प्रतिक्रियाकारी हैं, और
 सोचवादीक समाजवाद के बजाय अधि-
 नायकवाद के संकेतक हैं। नागरिकों के
 मौलिक अधिकार २५ वें संशोधन द्वारा
 राज्यीय नीति के निदेशक विधायकों के
 अधीन विवे जा रहे हैं, इस बात से समता
 है विधि मन्त्री को गंव न आसुभव होजा
 है। यह तो सर्व के बरते समता का
 विषय होता चाहिए कि भाग्य, सबूत

तथा विचरण का मौलिक स्वायत्तता
 भी, समाजवादी नीति की आवश्यकताओं
 के बढ़ाने, राज्य की संरक्षणवादिता के
 अधीन की जा रही है। समता में सरकार
 द्वारा विवे चये इन मौलिक स्वायत्तता का
 बाधन में कोई मूल्य नहीं है कि असांख्य
 संशोधन से हमारे मौलिक अधिकार
 प्रभावित नहीं होंगे। अतः मैं प्रयास नहीं
 से तथा उनके सहयोगियों से अलग बरतण
 हूँ कि वे सोझा टकरा कर गोप्य और शो-
 क्त के उन मौलिक आधाओं की रोगियों
 में जो समता के अन्तर्गत वांछते नहीं,
 अधिक मारण को खड़े हैं, दण्ड प्रत्य पर
 पुनर्विचार करें।

प्रयास नहीं का सोचधन में दो
 निर्धार बढूतन प्राप्त हैं, एक बात से उा
 पर यह विरोध व्यक्तित जास है कि वे
 जनता द्वारा विवे चये अधिकार का पुन-
 पयोग न करें। उनसे तथा उनकी सर-
 नाद को एक प्रश्न पर भी पुनर्विचार
 करना चाहिए कि किस तरह सर्वोच्च
 न्यायालय तथा उच्च न्यायालय, लोकतंत्र
 की आवश्यकताओं के अनुकूल, राज्यीय
 नीति के निर्देशक विधायकों को प्रभावित
 करने को दृष्टि से बनाये गये बाधनों के
 वैधानिक औचित्य पर विचार देते के अधि-
 नायक से अलग विवे चये जा सकते हैं।"

पटना, १ दिसम्बर '७१
 —जवाहरलाल नेहरू

मुस्लिम विद्युद्धारण

भारत के मुसलमानों में उदारवृत्ति-वाले शानियों की कमी क्यों है ? इस प्रश्न के उत्तर के अनेक पहलू हैं। एक बात निर्विवाद है। मुसलमानों के विद्युद्धारण की जड़ है मुसलमानों के चिन्तन की बनावट।

भारत के मुसलमानों का विश्वास है कि उनका सम्प्रदाय अपने आप में पूर्ण समाज है तथा भारत के अन्य सम्प्रदायों से ऊँचा है। ऐसा मानने के अनेक आधाराओं में एक यह धारणा है कि इस्लाम धर्म में पूर्ण समाज निर्माण की शक्ति (दूरदर्शिता) है इसलिए इसे अब और अधिक आगे ही बढ़कर कुछ क्षेत्रों की आवश्यकता नहीं। यह विचार विवादास्पद है। एक उदाहरण सीरिया—मुन्प्यो के अधिकांश की ओर हमारी आधुनिक धारणाएँ हैं "द्वैतार्थिक परसलन लॉ" (अतिव्यपत साम्यवादी उत्तरदायित्व, विवाद आदि से सम्बंधित मुसलमानों के कानून) उनसे विपरीत दिशा में है। इसमें निहित विरोधाभास स्पष्ट है, बहने की आवश्यकता नहीं कि उसे हटाते जाना ही है।

समस्याओं की उत्पत्तिकांक्षी दुसरी बात यह है कि भारतीय मुसलमानों की अल्पसंख्यक होना बुरा लगता है। वे अपने धर्म का पूरे देश में प्रचार करने का स्वप्न देखते हैं। ऐसा यदि नहीं हो सकता, तो कम-से-कम भारत पर शासन करने का वे स्वप्न देखते हैं। वे इस प्रश्न के चिन्तन हैं कि विद्यो समय उनकी बड़ी रीढ़वाहक थी। उनके मन पर यह सच्ची भी बँधी हुई है कि उनको सजाया जा रहा है। भारत के उर्दू अखबारों से, जमायत-ए-इस्लामी और मुस्लिम मजलिस-ए-मुताव्वरात के नेताओं के वक्तव्यों से मैं इसके अनेक उदाहरण दे सकता हूँ। देश का जब बँटवारा नहीं हुआ था उस समय भारत के मुसलमान क्रिश्चियनता के थे, उसमें ऐसे विचारों की जड़ है, ऐसा देखा जा सकता है। उस समय मुसलमानों का यह मानना था कि राज्य

के भीतर वे अपने आप में एक राज्य हैं। उधो तरह भारतीय समाज में रहकर भी वे अपने आपको एक अलग समाज माने हुए थे। आधुनिक प्रतिनिधित्व का उनका काल इमी विश्वास पर आधारित है। गणतंत्रिक समाज की कल्पना के यह विपरीत है। आज उनका विश्वास है कि बहुसंख्यक सम्प्रदाय के साथ वे समानांतर रूप से रहेंगे। उनके सम्प्रदाय को पूर्ण स्वायत्तता रहेगी। उनके "परसल लॉ" में कोई सवरीलीत न आने पावे इसके लिए उनकी चिन्ता, चिन्ती भी सवरीलीत के उनके विरोध की जड़ में यही बात है। धर्म-विरोध (परिवार नियोजन) का वे जो विरोध करते हैं उनके पीछे उनके मन का यह भ्रम है कि उनकी सख्या यदि बढ़ेगी तो वे सवरीलीत में प्रभावकारी हो सकेंगे। यह भी यही पुराना कल्पनाक रूप है जिससे पार्लियामेंट की मांग पैदा हुई थी और पार्लियामेंट बना था।

मुसलमानों का वैयक्तिक और साम्य-सम्प्रदायवादी है। वास्तव में धर्मवाद-स्वरूप उदार मुसलमानों का भारतीय मुस्लिम समाज में कोई स्थान नहीं है। भारत के मुसलमानों की आन्तरिक बात की आवश्यकता है यह वह है कि उनके बीच ऐसे लोग हों जो उदारता के विचारों पर दृष्टांत से आगे रहे और आधुनिक उदार विचारवादी अन्य स्थितियों के साथ बने-बनाया मिलाकर मुसलमान और हिन्दू दोनों ही सम्प्रदायवादिनों के विरोध में मोर्चा ले सकें। मुसलमानों में उदार विचारवादी बुद्धिवादी वर्ग का यदि सम्बुद्धन नहीं होगा तो भारतीय मुसलमान सम्प्रदायवादी, धर्म-विरोधी, धर्मशून्य विचार धाराओं और परम्पराओं से मुक्त रहे और फिर यह होगा कि साम्यवादी और सङ्घर्षीत रूप से वे मिट जायेंगे।

एक दूसरी बड़ी समस्याना यह है कि हिन्दुओं के बँटवारा को पुनर्निश्चित करने का जो जटिलन पता है वह उदारवादी हिन्दू विचारों पर हमारी होकर उन्हें समाप्त कर दे। उदारवादी हिन्दू और

मुसलमान एक दूसरे के सम्बंध के बन्धन होने और विद्यो भी तरह के प्रतिनिधित्व का सुधारवादी कर सकेंगे। मुसलमानों का विश्वास प्राप्त कर सकें, ऐसे नेताओं को भारतीय मुसलमानों में से ही आने जाना पड़ेगा। इसका पहला काम यह होगा कि मुसलमानों के मन पर सम्प्रदायवादिनों की जो जड़ अभी हुई है उसे वे उखाड़ दें। जमायत-ए-इस्लामी, मुस्लिम मजलिस-ए-मुताव्वरात और साम्य-ए-मिन्नात जैसे संस्थाओं के प्रभाव को समाप्त करना पड़ेगा। उदारवादी सम्प्रदायवादी मुसलमानों का, जो मूलतः सम्प्रदायवादी है, पराजित करना पड़ेगा। धर्म के नाम पर सम्प्रदाय-विरोधी विचारों को फैलानेवाले उलेमाओं का प्रचार बंद करना पड़ेगा। मुसलमानों में सम्प्रदायवाद का जहर फैलानेवाले उर्दू, अरबी का अन्य अखबारों के भूँह पर जाने पड़ने पड़ेगे। संशय में यह बूँह कि सम्प्रदायवादिनों के प्यार प्रभाव के विरोध में उदार मोर्चा नेता पड़ेगा।

आज भारत में कुछ ऐसे मुसलमान हैं जो उदारवादी भारतीय आधुनिक समाज के विचारों को अपना करते हैं। परन्तु उनके आधुनिक विचारों पर उनके सम्प्रदायवादी जो प्रतिनिधि हैं वे आगे बढ़ते हैं। ऐसे लोग निम्न विचारों की गढ़ी हैं, बलि वे भारतीय मुसलमानों की प्रगति के शत्रु भी हैं। वे या तो नैतिक का वे भीड़ हैं या एक बड़े साम्यवादी सवरीलीत की ओर वे उदारवादी हैं। यह साम्यवादी सवरीलीत भारत के धर्मधर्म की गढ़ी का सवरीलीत है। उनमें अब लो में एक बात पुरनी है। वे यदि भारतीय मुसलमान का उदारवादी को बँटवारा देने में सचने हैं तो नहीं पीछी को इस नाम को अस्वीकार देने का विचार करने पर नेता होगा।

आज यह कई दिना गंगा है कि मुसलमानों सम्प्रदायवाद हिन्दू सम्प्रदायवाद की प्रतिनिधि है, यह सब नहीं है। भारत में आज हिन्दू को अपनी की उदार

३० जनवरी शान्ति दिवस के रूप में मनायें

हर साल राष्ट्रीय महात्मा गांधी की पुण्य तिथि ३० जनवरी हम शान्ति-दिवस के रूप में मनाते आ रहे हैं। इस दिन जब देश पर युद्ध का शीत छाया हुआ है तब यह दिवस विशेष महत्व का है। ऐसी परिस्थिति में हम सब गांधीजी के विचारों से सन्तुष्टियों पर यह विशेष विनम्रता ही आ जाती है कि युद्ध का संरक्षण जो अपने दम से मुकामिला करेगी मगर हमको भी युद्ध का शान्तिपूर्वक मुकामिला करने के लिए तैयारी करनी चाहिए। जनता में युद्ध से घबराहट या उत्तरा उत्साह तथा प्रतिद्वंद्वी देश की अन्तर्गत के प्रति बढ़ता ही भावना न आ जाने इसका जो हमें विशेष भाग रहना ही चाहिए। देश में भी ऐसी समझौते, विचारों लिए गांधीजी के भावना रहितान दिना और उनको जो विचार कार्य से ऐसी शास्त्रात्मिक सम्पत्ता, सुशासन, शासकवर्गी, एतत्ता के कार्य पर जनता को जागृत करना चाहिए क्योंकि ये समझौते फिर से देश की दीशरी में दवार डाल रही हैं।

जातियों, सम्प्रदायों से अलग-थलग तथा शान्ति-दिवस बिल्कों की बिक्री करें।

मौन शान्ति जुगुन : इस पर विशेष ध्यान देना चाहिए। ३० जनवरी के पहले शान्ति मंत्रियों तथा शान्ति प्रेमी लोगों को जनता में आकर गांधीजी के विचारों विचार, युद्ध का नरि प्रविष्टत किया जाय, बढ़ता का उत्साह न देने और अपने-अपने स्थान पर कंठे शान्ति में तथा युद्ध के समय नरा करे कादि समझाएँ और विविध लोगों की ३० जनवरी के दिन शान्ति जुगुन में आने के लिए नियमित करें।

शान्ति जुगुन मौन हो तो उत्तम होगा। जुगुन का या मौन की कठार में सादरबद्ध किन्तुन निराच्छु हो। शान्ति सेनिक रस जुगुन में अला गन्धेश (संकेत बचने, विर पर केसरी साधा तथा कार्य हाय की बहि पर केसरी पट्टा लपट हुआ हो), विर पर शान्ति सेनिक निगा हुआ हो।) पहलकर शान्तिन ही तथा शान्ति प्रेमी और सहयोगी लोग भी संकेत बचनों में शामिल हो तो अच्छा होगा। जुगुन में गाने, सूत्र, काशीन किन्तुन नहीं करनी चाहिए। अपने विचार बचाने के लिए कुछ शान्ति सेनिक तथा शान्ति प्रेमी लोग हाय में योगदानक उदाहरण करें। इन योगदानको के लिए कुछ सूत्र सजान परिवर्तन में दे रहे हैं। यह मौन शान्ति जुगुन अन्त-अन्त के योग से आरम्भ हो और इन्ही योग से समाप्त हो।

नवीनकट निगा एक दुनिक अतिरिती ही करी हैं, इन निष्ठावान शान्ति सेनिक की हैं। इनको सवीर के कार्यक्रम में सहरी अभिर्तन है। उनका कहना है "दम (दुनिन के) मोप बन्दुके में ही विरक्षण रखतेगते है, किन्तु निरवर अतिरिती गीन का बँलान बन्दुके से नहीं हवा शान्ति-सेनियों की दृष्टि, केस परासना और सविधान की भावना के होना।

प्रायंता सभा : मौन जुगुन मगर या मौन के प्रथम स्वामी में सुबर कर एक जगह पर प्रायंता सभा के रूप में बदन जाय। मही एक सम्भव हो यह प्रायंता सभा एक घंटे से अधिक समय की न हो। सभा में पहले शान्तिसेना की सर्वधर्म प्रायंता या मौन प्रायंता की जाय, उनके बाद शान्ति सेनिक, शान्ति प्रेमी तथा स्वामीय प्रथम लोगों के भाषणान हो। व्याख्यानो में शान्तिसेना के महत्व, युद्ध का प्रतिद्वार, युद्ध के समय अन्तता का नरा फर्क ही और अपने देश के मुख्य लोक-शाही, सेधुपुन-गम, शरादबन्दी, राष्ट्रीय एतत्ता, जनसहित, सामदान के महत्व तथा जातिवार और दुशासुन पर विचार प्रकट करें तथा लोगों को शान्तिसेना का संकटन करने के लिए आवाहन करें।

शान्ति बिल्के हर साल के मुनारिक दम मान भी हमारे पास खरे हुए सैमा हैं। बिल्के दम वंशे में आर शान्तिसेना के प्रथागत या सहाय-काम देन करेगे। इस आशरी ६ बचने में एक जो विरता बनेर निर के दंगे। इनसे मौन या चार वंशे आरको अपने कार्य के लिए निर सनेगे। शान्ति विरती की पूरती रकम अविम भेजने अवश यी० पी० द्वारा भेजाने पर भेजे जायेंगे। इन विरती पर वारील नहीं निखी हुई है। दरगिए दूई द्या ३० जनवरी के बाद भी बच सनेगे। बिल्को के लिए आहंर या अविम दम हमारे पास आते से तुष्टत आरकी बिल्के भेज जायेंगे। बिने देवने से आरकी अतिर जनसमक होगा विरके आर जनता को गांधीजी, शान्तिसेना तथा आर को परिस्थिति के बारे में आने विचार सभा सनेगे।

हजार ३० जनवरी शान्ति-दिवस आरके स्थान पर दिन तरह सभास गया, इसको सुत्रा है अवतरा को निरकट हवे भेजने का कट करे।

अर जगु शान्तिसेना बरतन शारायन देकाई पंजमाद, वारागली-१, संजी

एक बर्त शान्ति-दिवस के लिए कुछ कार्यक्रम आरको मुगा रहे हैं :—

१. सेवा सभा सगरा के बारे
२. मौन शान्ति जुगुन
३. प्रायंता सभा
४. शान्ति बिल्कों की बिक्री।

सेवा तथा सगरा के बारे में सवेरे एक पंटा सारुकर साईई का कार्यक्रम तथा दिन में आने अन्तुन सभ में विविध

कार्यो के लिए उनके सवेस पड़ुपायें। सभासो में ६ बारायों से प्राण तीन बीधा सारे काउ बरुज जमोनी का विरक्षण केरह सुमहेन परिवाओं के बीच हुआ।

दुलिस प्रधिकारी की शान्ति-सेना के कार्य में दिलचस्पी

दुलिस प्रधिकार विरता के अतिरिक्त आरगी अगीसक (ए० ए० पी०) की

टैक्स वसूली की ढिलाई

बंगला देश से आये शरणार्थियों का बोझ अब भारत सरकार ने टोटी औरार के लोगों के कंधे पर भी प्रत्यक्ष रूप से डाला है। साल भर में सरकार उन मद में ६०० से ७०० करोड़ रुपये तक खर्च करेगी। जब लोकसभा अभी बैठती नहीं थी तब सरकार ने तीन वर्षे का लगाने के लिए तीन अध्यादेश जारी किये। ये हैं; डाक टिकट में ५ पैसे (रिपब्लिकी रिस्की टिकट) की, रेन टारिफ में ५ प्रतिशत की वृद्धि तथा हवाई अड्डा के किराये में, देश के भीतर की यात्रा में ५ प्रतिशत की वृद्धि।

अब लोकसभा की बैठक हुई तब तक २२ नवम्बर को सरकार ने उन अध्यादेशों को लोकसभा की स्वीकृति के लिए भेज दिया। विरोधी दल के सदस्यों ने इस पर जो टीकाएँ भी, उनमें एक यह है कि जब लोकसभा की बैठक बहुत ही शीघ्र होनेवाली थी, तब अध्यादेश द्वारा कर लगाना उचित नहीं था। दूसरी टीका यह थी कि वसूली की ढिलाई के कारण एक तरह टैक्स के बकाये की रकम बढ़ती चली जा रही है। और दूसरी तरफ नये भेदे कर लगाये जा रहे हैं। तीसरी टीका यह थी कि उन अध्यादेशों को जारी करने के पहले राजस्वार्थों और सुधन-मन्थियों की बैठक में बंगला देश के शरणार्थियों के लिए अतिरिक्त साधन जुटाने के प्रयत्न पर जो पर्चा हुई थी, यह लोकसभा की समझि का स्थान नहीं ले सकती।

इन टीकाओं के जवाब में सरकारी पक्ष ने परिस्थिति को सम्भोधना का संस्कार किया। बात जो हो, पर वसूली की ढिलाई के कारण टैक्स के बकाये की रकम जो दिन-दिवस बढ़ती जा रही है उसका एक उदाहरण यह है :

वर्ष	बकाये की रकम
१९५१-६० तक	६२ करोड़
१९६०-६१ तक	१६७ करोड़
१९६१-६२ तक	१४६ करोड़
१९६२-६३ तक	२६९ करोड़
कुल	५४० करोड़

१९६१ में और बार के बर्षों में इतना टैक्स एकट में सशोधन कर इतना टैक्स ऑफिसरी को दक्षेय प्राप्त दिया गया है जिनका ये इतना टैक्स और बकाये की रकम की वसूली में उपयोग कर सकते हैं। परन्तु ऊपर के आंकड़ों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि वसूली में ढिलाई जिस हद तक बढ़ी जा रही है।

देन की रकम के इस तरह के बकाये का असर देन देनेवालों और देन वसूलनेवालों की भेदभाव को जिस तरह प्रभावित करती है, यह स्पष्ट है। परन्तु हम के भाषित बहुत भी हैं। कर के बकाये की रकम का स्थान लेने की जब जगह कर लगाये जाते हैं तब शर्तार्थ अर्थ यह हुआ कि कर का बोझ उन लोगों के शिर पर से हट जाना है, जिन पर रकम भारी है और उनके शिर का बँटन है जिनको नया देन देना है। दूसरी ओर देन की रकम अचठी होनी पानी है और देन देनेवाले की उसकी तुलना में सराब। जो लोग अपनी बहादुरी एवं प्रमानसारी का पानन करते हैं उन पर टैक्स का बोझ अधिक पड़ता है।

दिए टैक्स वसूलनेवाले अफसर की ढिलाई स्वयं उनकी कमाई का एक साधन बन जाती है। उसे विना-विना कर देन देनेवाले बची रकम का प्रयोग अपनी सम्पन्ना बढ़ाने में करते हैं।

अभी हाल में टैक्स के बकाये के जो आँकड़े प्रकाशित हुए हैं उनके द्वारा सिनेमा जगत में नमाई करनेवालों पर सहज ही ध्यान दिख जाता है। देश भर के करीब १५० सिनेमाजिगारों और कारि-वालों पर करीब २ करोड़ रुपये टैक्स के भारी पड़े हैं। कुछ के बकाये की रकम आने से गयी है।

नाम	बाकी रकम
एम० जी० रामचन्द्र	१५ लाख ९९ हजार
महोदय साँ सरवर साँ	११ लाख ५२ हजार
राजगुरु	९ लाख २४ हजार

विमोद कुमार	५ लाख २६ हजार
एम० आर० राधा	७ लाख ७७ हजार
दिवीय कुमार	९ लाख ६५ हजार
बी० सी० गणेश	६ लाख ६४ हजार
ए. जॉनी बाबु	९ लाख ५२ हजार
ई. बी० आर० पन्तुसु	६ लाख ४० हजार
एन० एन० सिंगी	४ लाख ९९ हजार
प्रदीप कुमार	४ लाख ५५ हजार
ई० बी० सधेना	४ लाख ४५ हजार
महमूद मुमयान अभी	३ लाख ८२ हजार
सायत बाबू	३ लाख २९ हजार
राजकुमार फोहली	३ लाख २७ हजार

इस तरह ३० दिवम्बर, ७१ तक (शान्ति और परिष्करी बंगाल के सिनेमा अभिनेताओं को छोड़) १४४ अभिनेताओं पर १ करोड़ ८९ लाख ८० हजार रुपये भारी पड़े।

बम्बोवर एण्ड वॉल्टर जेन्सल वॉड सुधिया द्वारा प्रकाशित सबसे हाल की रिपोर्ट में यह बताया गया है कि टैक्स के ६८३ करोड़ रुपये के बकाये में ५ लाख रुपये से अधिक आमदनीवाले १५०० अभिनेता पर ४०० करोड़ रुपये भारी हैं। ये आँकड़े इन बात के प्रत्या गवाह हैं कि वसूली की ढिलाई जिस हद तक है।

हूरी और बदि माने फोटो-ग्राई के बलाया कोई भी पत्र किसी को लिखा कि बार को टैक्स देना पड़ा।

शान्ति-दिवस विप्लव

शान्ति-दिवस तथा गांधी स्मृति के लिए शान्ति-दिवस दिवसे तैयार किये गये हैं। प्रति किलो की कीमत पर पंजा है। २०० से परादा संग्रहणवाले को हेपर्टिज के बिना ६ पैसे प्रति किलो की दर से प्राप्त हो सकेगा। किलो ३० जनवरी के बार भी बंधे जा सकते हैं।

रकम कटिम भेजे या बी० पी० से भेजें।

५० भा० शान्ति देवा मंडल, राजपाट, काठमांडू-१ (उत्तरनेप)

लोक गंगा के तट पर पहला पड़ाव :

सन् १९९० के अर्द्ध सहस्र की शारीरिक को याद विग में विहंगम (सहस्रा) पढ़ते पढ़ा हैं ज्ञानि को जाने जाने साधक ज्ञानिवादी थी सोरेन्द्र भाई की लोकशासन के मुद्रा-भन की विरोधित करने। ६ अर्द्ध '७० की धार उपलब्ध पानो ही उठी है कि उपलब्ध धारो-पाम से बलिया (पुण्या बिले का वह भाव, जहाँ की सोरेन्द्र भाई सने केवा साथ के निर्वासनधार बलाया का प्रवेश करने गये थे।) तब ही उनकी यात्रा का महान्क प्रचार में गया था। सप्रायो की विश्वेन्द्रियो से पूर्वम मुकूट ही का एक विश्वविद्यालय की मुद्रिया में पाँच में बँडो के बा रहे थे। मुझे बार आनी है कही। विहन को यह बात जब मैंने उनके लिपि पढ़ते दूँ का त्रिपट खारीने का आग्रह किया तो के सोरेन्द्र दर्जे के दिनों में ऊपर गायान गवनेशारी पदवी पर विस्तार स्थाने का आग्रह देते हुए बोलने, श्री अर बाबत का बावनी हूँ, उनकी सज्ज ही काना मुने करती है। परमाभुद्र मे भोजन की सम्भवित अग्रथा बड़ी हो पावे पर सोरेन्द्र भोगिबा (बहुत दादे बाहार के) केव साधक आग्रह किया था, कि 'हो गया तो, वेद तो पर गया।' और बलिदा गान में पढ़ने पर हुई रचना तथा में उन्होंने कहा था, 'आज थे मैं आर के धारपरिवार का एक सदस्य हूँ।' यह को उनके साथ की अज्ञातकाम की पढ़ती संघा।

और बाब भोजनिकि के अग्रपल हेतु सोरेन्द्रिया कोषा करने-करने सोरुगना में छासहित हो जाने की इस वाचा की पढ़ती गायन को भी मैं उनकी बँडपानी की रूपन में बन रहा हूँ। विहार के मुद्रा मधो का सोरेन्द्र पाठियों काना धर्मिकता दूनर साने बना गया है, और उनके हाव जागरी गरी एक कोड़े पूट रही है। उत्पल-धर्मिक-नियंती के रूपे पुत्री धारण

सगा कर रामानन्दयान का उद्गम कर रहे हैं। बँडपानी के साथबाने ब्रह्मे की भावना गूँब रही है, सोरेन्द्रया अमर दूँ। विहंगम बाबार के लीग उल्लुभ निष्ठाया से कृपुष को विहार रहे हैं मकर के बोनों निगारे सके-सके। छोटे-छोटे पूज भुजित धारो की धारियाँ दीक्ष-दीक्ष कर संन्यासी के आने-नीचे से अग्रम सोने की पवित्र कर रही है। एर दोनों में आरस में बाड ही रही है, "हे हो, सोरेन्दी के देस का।" मुझे २-४ धार पहले की बाड साध ज्ञानि है। विहार के ही एक अधिविज्ञाती धारोण ने बहू ही साध-विश्राल के साथ बडामा पाकि "धारायो की हृपने देहा है, वे हमारे गाँव में आने थे। जमीन को बाब कहते थे।" और तब प्रमदा में बाया कि विलोया को एपने गांधी के रूप में देखा था। आज थे बामर भी सोरेन्द्र भाई को गांधी के रूप में देत रही हैं। गांधी एक विचार ज्ञानि का कही सल्ल न हावेसना विनविना है। गांधी अना ब-ओ सल्ल होया ? अग्रम-धर्मिषाओ में गांधी को अमर रूपने और जन पति-धारी की तोड़ कर गांधी को साथ कले की कोषिम करनेवाले विद्यने माने, सगरी और नासमझ सगरी है उस मकर के एक बाबर के समझ-हे हो, धरती को के देस का।

कुपुष विहंगम बाबार से आने सुलाग्रन गाँव की ओर बड रहा है। इस वाचा कर पहला पड़ाव है सुलाग्रन में। मेरी बयन में एक मूष संभल गुने तक छोनी पढ़ने, तन पर एक छोटी-सी धारर काम कोड़ी का की कमर पर हाव रहे पुरी लुहि और दिन के साथ बावें बड रहे है। उनके कले में तद्व दहा धेना धारो-कृष की याद दिया रहा है। मैं अनु-मान कर रहा हूँ कि साधक उनके मन में की धारो-कृष की याद ताकी हो आयी होगी। उनके दिनचर्या की व्यवस्थाधन

विशकाय दिया रहे है कि वे निग्रम ही खनचना सधाम के सेवारी रहे है, साधक एक पूष बनानो।

बाबार के गाँव और ऊँचे मशान पीछे छुट रहे है और सोरेन्द्रियो का गिर-विना सुख हो रहा है। जिनके देखा हो कुछ पडो पूर्व कहे गये पुराने प्राणिवादी जं० पी० के साथों प० रामानन्दन मिश्र के वावर बाबों में पुरा गूँब उठने हैं, "रम कँटना दिया है तेषिन गरीको की सोरेन्द्रियो के बीच कुपुषमिनार की ऊँचाई के महान बननाय उल्लेख की बड़ी किया है। ये महान क्षामिगत करते है कि 'ये बनवाले नामों और हमें मल्ल करो। हजारा-हजार भूमि-होयो की बलियो में हजारा-हजार बीषर भूमि की विविधय बना दिया है और यह विविध नहीं बदली तो गाँव को धावी मूल के साथ होनेवाली है। साध गरीब को अहिंसा की साथ की मुँठ पकड़ कर बैठायो बार बनत बाहो है तो बाब प्रावी धन में है। आर धारमदान के पत्र को बिन पर बाबने हल्लापर दिया है मुद्राने है ता बाब समझ में कि विम-विस्तर में क्षारपी विनियत दर्जे है उसे भी दिवाणवादी सगार कूरने के लिए बई माने हो बाबा है।"

बरम आने बड रहे है निचिन प० रामानन्दन विम की मारी की धार के साथ ही विहंगम का पुरा दिन लमों के साथने आ गाँव है। मुद्रा ही मण्ड के विचारयो से आवे विपयो की धारवाँकुल-गोष्ठी की बँडपान प्रचार धारोपी की मन्दापाड में जाकोबिड हुई है और पवित्र साधारण विम में विपयो के साथने मुद्रा धर्मिवादी अनाय पैग विने हूँ। सधये बना साधन दन मुद्र का वे पैग बनते है आर हर जगह एक विधायक है वह कँठे सके ? धारन जति आन बहो था रहो है ? सोरेन्द्र भाई से जड निधारी के मार्गदर्शन की बाउ बही जागी है तो वे बहो है, "मह जमाना मार्गदर्शन का है हो गही, गारे मार्ग निठ गये है। अर को मार्ग नाको की भेना का गरी है। हृष

सब मिनकर मार्ग खोजें। हम युग में एक जबरदस्त बेचना बागी है और बेचना में से एक स्वाभिमान प्रकट होता है। अबधेजना में स्वाभिमान नहीं होता। आज पुराने जमाने का समाज नहीं बचा पायेगा और न पुरानी शक्ति से चल पायेगा। दण्ड-शक्ति विफल हो चुकी है। इसलिए शक्ति को खोज बननी है। दण्डशक्ति का सत्यन बरुद्ध और साधक शक्ति है। सम्मति बचन का साधन विचार और साधक शक्ति है। श्री बंधनाथ बाबू हथ डाउ के लिए बाबाबाई का आभार मानते हैं कि उन्होंने ऐसे भक्ति को अपनी सत्ता का अर्थ बनकर उसे सम्मानित किया जिसका सम्मति विद्यालय से बहुत बचन में ही छूट गया था। कार्यक्रमों का सिद्धि सहायता चल रहा है। बड़ा जगुरता के साथ प्रतीक्षा ही रही है बिहार के मुख्यमंत्री श्री। भाई ससन और किशोर शून्को से साथ सदन-शास्त्रिकों को रेली आजीवन करना चाहते हैं। उसी तीव्रता में बचत है। मन पर उनके बीच आदि के कार्यक्रम चल रहे हैं। इसी बीच मुख्यमंत्री भी पधारते हैं और मन पर भीड़ मच जाती है। उनका कार्यक्रम रोक दिया जाता है। उदाहरण वजन को उमग को रोझना आक्रोश पैदा करता ही है। ससन मुन सागर ही जाता है। लेकिन भीड़ बहती जा रही है और सभा का माहौल जमाना जा रहा है।

आधिर, धीरेन भाई की चोखया का उद्घाटन कार्यक्रम भी शुरू होता है। स्वागत करते हैं इस प्रकाश के बुद्धों श्री बार्थिक बाबू। सहृदयता के काम की रिपोर्ट ग्रामस्वराज समिति के अध्यक्ष भी राजा बाबू पेश करते हैं और धीरेन भाई के अनेक दोस्त स्वर्ना बाबू उनका परिचय कराने के लिए सज्जे होते हैं। वही हैं "काम में तौ धीरेन भाई जाये बड़ा ही है उज में मुसल छोटा होने पर भी बड़ा ही दिखता है।" जो कार्यक्रम में करने जा रहे हैं वेना उदाहरण साधक ही नितो में पेश किया हो। हम आशा करते हैं कि वे बाबा दिनों तक जनता की सेवा

करते रहेंगे।" और अब पंडित रामलालन मिथा याता का भौतिक उद्घाटन करते हुए बहते हैं, "मेरे जीवन के श्रेष्ठ भाई धीरेन भाई, एक बड़ा निष्पेक्ष निष्ठा है कि वे जीवन का निजीय और-नगर में प्रवाहित होने देना चाहते हैं। मैं चाहता हूँ कि इन जीवन गवा के निजारे उनका जीवन पूर्ण हो और वे समाज को, जनता को जो देना चाहते हैं वह दे जायें।" "आज दुनिया निजात नहीं तो अर्थव्यवस्था के टार पर खड़ी है। महाभारत के बाद यह विनाश का सात पुन उग है। शक्ति को खोज में तगा हुआ मानव छोटी-छोटी शक्तियों के प्रदीर्घ भटक रहा है 'मि' का राशन सज्जे जला रहा है। ऐसी हानन में सामूहिक समाज के निर्माण को और दुनिया बचना चाहती है। शक्ति और समाज के सम्बन्धों का संतुलन रखते हुए ग्रामस्वराज ऐसे ही सामूहिक समाज के निर्माण के लिए है।

और अब धीरेन भाई स्वयं बोल रहे हैं, "मेरे मिथो, संग पूछो है कि यह आपने साह गवा बना निजानी है। आज जानते हैं कि सोरतन में लोक मुद्र है और सन उगाता बीजार है लेकिन आज जात देखते हैं कि सन का जाल इतना फीका है कि लोक नकार दे ही गया है। लोक की गवा रिपार्ड नहीं देनी। आज हानन यह है कि वैधानिकों के बोरा से सैन्य दन कर भर रहा है। लेकिन फिर भी यह सैन्य-वर्षियों का पैर छुता है और उसे अन्त उधारक मानता है। जनता के और ही यह मानता दृष्टी ही चाहिए। समाज लोक शक्ति से सज्जे, सैन्य भी शक्ति से नहीं। आज वही शक्ति बनती है। सोर-छोटी हनुमा को कोई चाहिए जो उधारी शक्ति को सादर दिखे। निजो भी सन के पीछे चलकर लोक का उद्धार नहीं होगा। आज याने 'मि' के चानरे में निरुद्ध हुए उज 'मि' को 'हम' में शक्ति करने के लिए साथ से निवेदन करने जायेंगे पान सा रहा है।" हम कार्यक्रमों की व्यवस्था कर रहे हैं कि जो भीना पाठ्यक्रम शारीर शायरानक शैली में शक्ति से

बढ़ कर याता का महाव बताने है और यह रहते हैं कि "जीवन याता का सन धीरेन भाई को लग गया है।"

यामने भीड़ इकट्ठी है। उद्घोषण ही रहे हैं। सुभासन का पना है। एक विद्यालय के बड़े मैदान में समूह के नीचे बड़ा-सा मच बना है। मुले आवाज के नीचे लोग बैठे हैं। जोरयाता की यह पहली प्रमथना है। मन पर धीरेन भाई के साथ ही मुख्यमंत्री भी पहुँचते हैं। भीड़ घीरेन दास और मुन.मनों के जा जयकार करती है। ओ-सभा की बर्तानाही चल होती है। एक के बाद एक शब्द के हर वाक् सतुर शक्ति मुख्यमंत्री के सामने कुछ अर्थ करने के लिए आतुर है। सबसे पहले एक जयकार अपनी दीनहीन विरीहता और अर्थव्यवस्था का सज्जे विनाश करते हुए मुख्यमंत्री को उद्धार की माँग करते हैं। सन पर जो बारात में गाँव दन है और सज्जे शक्ति के लिए भगवान पण है, एक के बाद एक सहायक शब्द और गाँव की विचार, विगमें पारो सज्जे का अन्त प्रमथ है, गिनायी जाती है और मुख्यमंत्री की सज्जे-मूर्त को सैन्योत्साव यत्नत कभे हुए उनसे माँग-सूत्रि या आग्रह किया जा रहा है। गाँव के मुखिया भी अपनी सैपली और द्विती की निरी-युती बोनी में उन माँगों को जोरदार उज से पेश करते हैं और जमोद करते हैं कि जब मुख्यमंत्री सन सन के मन में सवरी के घर गठारे हैं तो उद्धार होने में अब बाई नाश नहीं है। और दस माहों में जोर शक्ति के आराधक धीरेन भाई से दो गार बहने के लिए निवेदन किया जाया है। ने बहने है "एक सहीर समाज देम रहा है। जिन लोक शक्ति का बलन कर सारनेका बनो सता सम्मान रहे है या उसी लोक में लगे हुए हैं वही लोक शक्ति बाने को दीनहीन अन्तहाय परिचय कर रही है।" धीरेन भाई के दो सन पूरे होते हैं और दो-एक सज्जे के साथ पुन वही बर्ताने बहती जाती है। सन मुख्यमंत्री शरीर पर मिनट तक आराधनों से सदा

श्री जयप्रकाश नारायण एक साल के अवकाश पर

अपनी सत्कर्मों के जन्म दिवस के अव-
सर पर (११ अक्टूबर '७१) श्री जयप्रकाश
नारायण ने अपने अवतार '७१ से एक
साथ के लिए सार्वजनिक काम से अवकाश
लेने का निर्णय लिया है। इसकी जानकारी
उन्होंने सभी मित्रों को एवं सम्बन्धित
व्यक्तियों को एक पत्र के द्वारा दी है।
एन निम्न प्रकार है

श्राव ११ अक्टूबर १९७१ को मेरे
जीवन के ६९ वर्ष पूरे हुए। यदि मैं
जीवित रहा तो ११ अक्टूबर १९७२ को
मेरे ७० वर्ष पूरे हो जायेंगे।

मैं एक व्यक्ति के रूप में यह कहूँ कि
आने एक अनिश्चित निर्णय की सुचना
आवनी दे दूँ। प्रजासत्ताकी की पूरी सहमति
से मैंने यह निर्णय किया है कि ११ अक्टू-
बर १९७२ से लेकर ११ अक्टूबर १९७३
तक, पूरे एक वर्ष के लिए, मैं हर प्रकार
के सार्वजनिक कार्य से अवकाश में लूँगा,
सभी सम्बन्धों की सहायता या पेशी से
इच्छा है। इस प्रकार इस पत्र
द्वारा एक वर्ष की नोटिस दे रहा हूँ। मैं
आशा करता हूँ कि वे सभी सम्बन्धों
द्वारा मेरे सम्बन्ध रहे हैं। एक एक वर्ष
की नोटिस का साथ उचित करने का उचित
सहायक के लिए इस वर्ष में मेरे स्वागत
पर अन्य उचित व्यवस्था कर लेंगे।

आने अवकाश के एक वर्ष में मैं क्या
करना नहीं जानता। इसका जवाब यह है कि
पूरे ११ महीने रहूँगा। पर रहूँगा, आशय
करना और इसका सुवाच नहीं रहना

है उनमें एक बात है सर सर के मुझ
विरोध, दुर्भावना, अस्वीकार्य और
बहुधा एक गलत दृष्टि और है उदारताका
पारदर्शिता अक्षरों को भीतर परत
होते हैं। वे इस बात की परवाही रखते
हैं कि सम्बन्धित सर और बहुधा के संकर
हो, करो विरतना न उठायें। इसलिए
आवश्यकता इस बात की है कि सभी
उपर दुर्भावना अक्षरों की इन बात पर
सहमत हो कि सभी सहक के सम्बन्धित
के मोक्ष देने के लिए वे एक वेद-सह-

या जो करना चाहेंगे बहुत करेगा। न
निकी सार्वजनिक काम में जाऊँगा, न
निकी विचार-शक्ति आदि में, न किसी
सम्बन्धों की औपचारिक अपना अनौपचारिक
वैधानों में जाऊँगा। मैंने स्वच्छित केवल
मित्र रहेंगे। परन्तु उनसे किसी भी सार्व-
जनिक विषय अपना सत्यापन प्रश्न पर
न नहीं कहूँगा, न कोई परामर्श दूँगा।
कारणों से हम दूर रहकर निर्दोष,
परामर्श आदि देना अनुचित होगा।

मेरे एक दिवस को कोई भी पहचान
देना ठीक नहीं होगा। मेरे लिए यह न
निर्णय-निर्णय आधारित होगा, न किसी
चित्त सतत का ही जागरूक होगा।
यह तो एक सीधी मादी रहूँगे का
वर्ष होगा मेरे लिए। हाँ, यदि अन्त-वेत्ता
दुर्ग तो इस अवकाश का मैं कुछ
विश्रुता और इच्छा दुर्ग तो प्रशिक्षण की
करूँगा। परन्तु इस निर्णय के बोले ऐसा
कोई मेरा पूर्ण निश्चित उद्देश्य नहीं है।

एक ही ऐसी परिस्थिति की बलवा
इस समय कर सत्ता है जिसमें इस निर्णय
की सहायता कर साम्य हो सक्ता है। यह
है राष्ट्रीय महानुष्ठान का स्थिति, यानी
ऐसी कोई स्थिति की मुझसे राष्ट्रीय
महासह-परी प्रतीति हो, न कि कोई भी
नेशनल इपरनेशंस का भारत सरकार
पर्यन्त कर दे।

एक वर्ष के अवकाश का न कर क्या
करेगा यह इस समय नहीं जानता।

नीतिक आलोचक बनाने। यदि ऐसा नहीं
करना गया तो नतीजा यह होगा कि भारत
से उदारताका और समान सत्यता ही
जायगा। हमने बहुत बड़ा सहाय है।
सत्य इस बात पर आती है कि इस परि-
स्थिति की सहायकरने लोगों की सहाय
करना अक्षर है। अपने भी अक्षर
दुर्भावना की बात यह है कि सम्बन्धित का
सही रहना बाता है, इसकी जानकारी की
उत्ते बहुत बच है।

सुभाषचन्द्र : हेमनाथ सिंह

इसका जवाब यह है कि जब तक शरीर और
दिनांक काम देगा देना और दुनिया की
सेवा करता रहूँगा। यह भी जानता हूँ
कि उन समय की मेरी कार्य-पद्धति,
सर्वमान्य पद्धति से बहुत भिन्न होगी,
नतीके बाद का इस अवकाशक रूप से
समय और स्थिति दोनों का ही अवकाश
करता है। बाकी ईश्वर को इच्छा पर है।

जयप्रकाश नारायण

महसूब नगर जिले में ५६ गाँव ग्रामदान घोषित

५६४ एकड़ भूमि का मुक्त वितरण

सर्व सेवा सच कामालय द्वारा प्रका-
शित एक जनशक्ति के अनुसार ग्राम-
प्रदेश के महसूबनगर जिले में अक्षरना
महसूब में १५ से २४ नवम्बर तक कार्यो-
चित्त ग्रामदान घोषित एवं पुष्टि पर-
वाधानों के परिणाम स्वरूप ९२ गाँवों में
से ७७ गाँवों में ग्रामस्वराज्य का संस्था
पद्धतियाँ बना, जिनमें से ५६ गाँवों ग्राम-
दान घोषित हुए। इनमें से ३३ गाँवों में
से ५२ दामनी से ७७९ एकड़ भूमि (यह
उत्पत्तिसमेय है कि इनमें से ५७७ एकड़
भूमि घोषित बटाईगाँवों की है) मिली।
ग्राम भूमि में से २९४ एकड़ भूमि मुक्त
निर्वाण कर दो गये। ३९ गाँवों में
ग्राम-निर्वाणका का गठन किया गया।

उत्ता प्रथम प्रयाग की सहायता से
कार्यकर्ताओं के उपाहा की सहक दोष गयी
और एक वर्ष में ऐसी सम्बन्धित परवाधानों
का आवाहन कर माया शिवा प्रथमदान
को पुष्टि के साथ साने का निश्चय किया
गया।

उत्त निरिदर २५ परवाधानों में आश
में ५० कार्यकर्ताओं के अन्तर्गत सर्व सेवा
सच के मन्त्री श्री उद्युक्त बंन, श्रीमती
सुमन बघ एवं महाराष्ट्र के अन्य तीन
कार्यकर्ताओं ने भी भाग लिया। सार्व-
जनिक सभा में उपरोक्त के लिए आश
के उपसूचनाओं की देखी एवं सचिवों
की महसूबनगर की आर वे। (संकेत)

प्रखण्डस्वराज्य-सभा की बैठक में

श्री जयप्रकाश नारायण

मुसहरी प्रखण्ड में कुल १२१ गाँव में से ७७ राजस्व गाँवों में तथा २१ टोले में ग्रामसभा का गठन हो चुका है। सभी ग्रामसभाओं में प्रखण्डस्वराज्य-सभाओं के लिए धनकी प्रामत्तमाओं से दो-दो प्रतिनिधियों का चुनाव कर लिया है। उन प्रतिनिधियों की बैठक १५ नवम्बर को स्वामीनारायण स्मारक भवन, सर्वोदयगाँव में एक बड़े दिन में बुलाई गयी थी। बैठक में १४२ प्रतिनिधियों कास्थित हुए। दशक बीघों भी खसाल पला था। बैठक में सर्वोद्योग जयप्रकाश नारायण, प्रभावती बहून, चक्रा प्रसाद साहू, रामासति चौधरी, अण्णदा बिहार राजर खात्री प्रामोद्योग बोर्ड, जयलोक ठाकुर, मनो बिहार शास्त्री प्रामोद्योग सप, बन्नी नाथयण सिंह, अण्णदा बिहार भूदान पण कमिटी, कामेश्वर ठाकुर, अण्णदा मुक्तपुरपुर जिला सर्वोद्योग मण्डल एवं अन्य गणमान्य ग्रामनित व्यक्तित्व भी उपस्थित थे। सत्राध्य है कि २० जुलाई को प्रखण्डसभा के पदाधिकारियों एवं कार्य समिति के चुनाव के लिए एक बैठक बुलाई गयी थी। किन्तु तत्सम्मत न हो जाने के कारण चुनाव हो नहीं सका था। इस बीच कुछ और भी ग्रामसभाएँ गठित हुईं। और प्रतिनिधियों की संख्या भी बढ़ गयी। इस तरह कुछ नये प्रतिनिधि आ गये। ११ बजे दिन से ही प्रतिनिधियों एकत्रित होने लगे तथा मासक में चर्चा भी शुरू हो गयी। एक बड़े दिन में प्रतिनिधियों ने अपनी बैठक श्री देवेन्द्र पाठक की अध्यक्षता में विधिवत शुरू की। प्रारम्भ में श्री कैलाश बाबू ने सर्वोद्योग विन्तु स्वयंसेवा से प्रखण्डसभा के वास्तव एवं पदाधिकारियों के चुनाव की पद्धति पर प्रकाश डाला। स्वयंसेवा प्रतिनिधियों ने मासक में परामर्श प्रारम्भ किया। विभिन्न

पट्टियों से प्रतिनिधियों सर्वसम्मत चुनाव के सम्बन्ध में चर्चा करते रहे। विभिन्न पत्रों के लिए कई नाम आये। पानी-कनी चणता था कि सर्वसम्मत चुनाव जब सम्भव हो जायेगा। लेकिन अन्ततः कोई निवारक बिन्दु पर वे सीप गयी चहुँच मके। और २१ वार भी पदाधिकारियों का चुनाव सम्भव नहीं हो सका।

जब में जे० पी० ने प्रतिनिधि सभा को सम्बोधित करते हुए कहा 'प्रतिनिधियों की प्रखण्डस्वराज्य-सभा बन गयी है, लेकिन पदाधिकारियों का चुनाव न हो सता।' जब वे मुसहरी प्रखण्ड में आये, तो वाता ने कहा था कि जे० पी० चट्टान पर गये हैं। सबकुछ मुसहरी चट्टान साबित हो रहा है। 'अब तक प्रखण्डस्वराज्य-सभा की कार्यसमिति का सर्वसम्मत चुनाव नहीं होला है, तब तक श्री कामेश्वर बाबू, श्री कैलाश बाबू प्रखण्डस्वराज्य-सभा की बैठक को बुलाने रहेगे और हरेक बैठक में उन बैठक का समापन मुसहरी पानीगाही होला रहेगी। अब पदाधिकारियों के लिए आगे का काम रोजा नहीं जायेगा। अब प्रतिनिधि सभा अपनी कार्यसमिति का गठन करने की स्थिति में होला तो फिर आगे का काम सम्भालेगी।

'आम लोगो में यह धारणा है कि प्रखण्डसभा का पदाधिकारियों होने पर बहुत सारे अधिकार मिल जायेंगे, हुण्णत पलेगी, परम्परा के अनुसार मोरवागों के खर्चों में मनमाना करेंगे। यह सोचना एकदम गलत है। वस्तुतः यह तो नेतागिरियों का नहीं, सेवासिरी का धोष होगा। सेवासिरी भाव से आनेवाला ही इस जवाबदेही को सम्भाल सकेगा। सेवा का धोष विज्ञात है, पदाधिकारियों को मात्र नाम के हो। निर्णय तो प्रतिनिधि सभा ही करेगी।

पदाधिकारियों निर्णयों को कार्यान्वित करेंगे। मुसहरी से सारा काम तो ग्रामसभा को ही करना है।'

उन्होंने मुसहरी प्रखण्ड में अब तक हुए ग्रामसभाओं के कार्यों के प्रति उत्तुव व्यक्त किया। लेकिन इस बीच हुई इस प्रखण्ड की दुसरे घटनाओं के प्रति विन्तु व्यक्त की। उन्होंने कहा, 'अबत ग्रामस्वराज्य की सुनिश्चाल सुदृढ़ नहीं होला तागत ऐसी अग्रिम घटनाओं को पूर्णतः रोना के का दृश्य बाँदी हल नहीं है।'

ग्रामसभाओं की प्रतिनिधियों की चर्चा करते हुए जे० पी० ने आगे कहा कि एक और जहाँ सशान ग्रामसभाएँ अपने विकास पत्र पर अग्रिम हो रही हैं—बन्नी दुसरी और कुछ ग्रामसभाओं को समजोर करने का भी दुस्र्यात किया जा रहा है। मजदूर प्रधान मुक्तपुरपुर गाँव में ग्रामसभा बन चुकी है। लेकिन सगत के गाँव के कुछ स्थितियों समर्थ तोष तर-तरह से उन्हें सता रहे हैं। मुसहरी में फौजाहर लड़े तबाह करने का प्रयास कर रहे हैं। यह शोक नहीं है। सक्रिय ग्रामसभाओं को ऐसे पत्रों पर सोचना चाहिए और मिलकर ऐसे लोगों को समझाना चाहिए। ग्रामसभा में सामिम भूमिगतों का सीधा-बद्धा निराकरण के लिए एक ग्रामसभा (मिन्तुपुरवाला) के द्वारा उठाये गये पद्यों की तराहना करते हुए जे० पी० ने कहा, 'भूमिगतों को खना कोषा-पद्यों सीधे ही बाँट देना चाहिए। शक्ति इन्धे समस्या का पुरा निदान गही होला, लेकिन उष दिशा में सुभास्य तो माना ही जायगा।' सत्राध्य है कि ग्रामसभा में अपनी बैठक में निर्णय किया है कि गाँव के भूमिगतों से आग्रह किया जाय कि वे अपना सीधा-बद्धा १० दिसम्बर तक भूमिहीनों में विचारित कर दें, अन्यथा उनके बाद सीधे-बिना कर अग्रहकार का कोई पदम उठाया जायसक हो जायगा। पला पला है कि भूमिगतों ने सीधा-बद्धा वितरथ कर देने का मासकान्न किया है। १९ प्रकार ग्रामसभाएँ संघटित होकर सोकेगी तो

मण्डलों का विद्यालय मिल सकता है। सर-कारो रितीक कार्यों में कुछ कामकाजों में जो नगरपालिका दिवसकारी उन्नी प्रस्ताव करते हुए जे० पी० ने कहा कि इन प्रकार कामकाजों में स्थानीय सरकारी, गैर-सर्वकारी गणपद-योगों के विनियोग कर फौजदारी रखा सकता है। चुनाव के समय यह योग्य तथा जबरदस्ती मतदान, विभिन्न धनो द्वारा वोटों में भेद बुद्धि वंश को-ने भी नवीन कार्यों के प्रति को प्रवेष्ट रह ही सकती है।

समाज के जन में समाजवादी ने प्रति-विधियों को धारणा दिया और मुहूर्त-पुर सामन्तों की संपत्ति को खाने कुछ सर्वोपयोगों के साथ वास्तु देखने तथा निराले का मजदूर बनना सिना।

विहित है कि इस धार जे० पी० ने सत्य सत्य में यह विद्वान् विद्या या कि किसी सत्यनिष्ठ दान का सत्य प्रयत्न-समाज का धारणाकारी न हो। यदि किसी ऐसे व्यक्ति पर सर्वसम्पत्ति होती है तो उनको खाने दान से त्याग-दान दे देना होगा। इसका सभी प्रतिनिधियों में स्थापन सिना।

मुहूर्तों प्रयांठ के शिक्षकों के एक दल को सम्पन्न हेतु गांधी विद्या-पीठ, डेहली भेजने की तैयारी

गांधी विद्यापीठ डेहली, निम्न-गुरुकुल (गुरुकुल) के प्रचार्य को प्रोफेसर भाई देसाई ने दो माह मुहूर्तों प्रयांठ में रहकर, यहाँ के विद्यालयों तथा विद्यालयों का अध्ययन किया तथा जिस माह शिक्षा की योजनाओं को बनाया जा सकता है इस सम्बन्ध में शिक्षकों, गणपद-योगियों एवं सामन्तों के विचारों से विचार करवा की। उनकी योजनाओं कि उनके विद्यालय के ५० प्रतिशतों इस प्रस्ताव में दो माह रहकर इस विद्या में स्थानीय विचारों को सहायता करे। दिव्य सामन्तिक बरखाए एक माह के कारण काम की अनुभव नहीं देखकर यह कार्यकाल १६ कर सिना गया था। सब की घोषित भाई के मुताबिक पर इस प्रस्ताव के २० शिक्षक,

शिक्षाकार एवं सामन्तों के ५ ऐसे प्रतिनिधियों, जिनको शिक्षण कार्य में रवि है, गांधी विद्यापीठ डेहली में ही १५ दिनों की अध्ययन यात्रा पर जा रहे हैं। यदि गरीबों के मोठकर विद्यालयों में उच्च व्यापार पर योजना बनाकर नाम प्रारम्भ कर सकें। इस अध्ययन-यात्रा में भाग लेने वाले शिक्षकों को सम्बोधित करते हुए मुहूर्त शिक्षक सच के अध्यक्ष श्री ब्रज मन्थन जमाने ने कहा कि 'आज उच्च सर-कार बंधकार को मजदूर है, धी जग-प्रवास नारायण एवं प्रयोगिता रहे हैं। एक समय या जग हुआ तो मासो जीवनवात व्यवस्था के आहत पर आता मजदूर जोड़कर समाजवाद की स्थापना के लिए जाने जाये थे। और उन्नी का फल है कि आज देश में समाजवाद का मार्ग साफ होना जा रहा है। आज जब शिक्षकों का उन्होंने आह्वान किया है तो हम उच्च स्तरवादी देखे हैं कि हम एक साथ आकर दूसरे शिक्षक उन्नी संपत्तियों के साथ हैं। जब तक शिक्षण को राजनीति के प्रयत्न से मुक्त नहीं किया जायेगा, जब तक न तो शिक्षकों का न्याय होगा और न समाज का। उन्होंने इस काम में विद्या शिक्षक गण की ओर से सभी सत्य सहयोग करने का आग्रह किया। शिक्षकों के प्राण-व्यय के बाद में प्रयत्न शिक्षक सच के १०१०० रुपये, शिक्षा शिक्षक सच के १०१०० रुपये, शिक्षा शिक्षक सच के १०१०० रुपये तथा राज्य शिक्षक सच की ओर से श्रीमती ने १२१०० रुपये सहायता के रूप में देने की घोषणा की। जे० पी० ने शिक्षक सच के सहयोग की सहायता की और कहा कि "जब तक शिक्षण में सुविधाओं सुधार नहीं होता, जब तक आदमी शिक्षा का मसला हल होने को नहीं, और कहा कि उन्नी दिना में यह एक छोटा-सा प्रयास मात्र है।"

सामन्तों का गठन

जोधपुर — धीरे-धीरे एक-एक दिना में सामन्त बन रही रही हैं। जो अभी तक बन करिषी थी आर गुणाज हो गयी है।

श्री रिजोरी भाई एवं उनके अन्य साथियों के प्रयास से जोधपुर के सारे सामान्य हरिजन-परिजन, छोटे-बड़े सभी ने एक स्थान पर एक होकर सामन्तों का गठन किया और सर्वसम्पत्ति से सर्वोपयोग के पराधिकारी तथा सत्यों का गुणाज किया, जो इस प्रकार है, सर्वधी सामन्त-प्रवाद—अध्ययन, चक्र-प्रवाद—धर्म, राम चक्र साह—कोषाया तथा अन्य १२ सत्य। समा के लो० में कार्यसमिति के एक सत्य में हीरा के लिए सहायता छोड़ देने का सत्य किया।

जोधपुर . यह भी एक दिन था जब गांधीजी ने कहा था—'हमने तो सामान्य नहीं करने का सत्य कर लिया है। आप आरंभ नहीं सामान्य की नहीं करेगा,' देखते-देखते सत्य ने इस विषय में शिक्षा और एक-एक कर साम-दान में कार्यसमिति गये तथा १२ नवम्बर को यह दिन भी आया जब पूरे गाँव के लोगों ने एक साथ बैठ कर सामन्तों का विना किया। जिसमें सर्वसम्पत्ति से विन्-निश्चय पराधिकारी सहित १७ सत्यों की कार्यसमिति का गठन हुआ। सर्वधी बरखाए सच—अध्ययन, वेदार महा-उपस्थान, शिक्षा टाकुर-मकी, राधे टाकुर-सहमती और प्रयोग टाकुर-सो-गण्य एवं १२ अन्य सत्य।

इस सामन्तों के गठन का श्रेय सर्वधी रिजोरी रमण भाई, अतिरिक्त-चक्र की तथा श्रीरामजी की ही है।

सामन्त-प्रवाद—विना ११/११/२१ को मण्डलपुर सामन्तों का गठन हो गया है जिसके पराधिकारी सर्वसम्पत्ति से चुने गये। सर्वधी सर्वधी धार—सत्य, रामचक्र टाकुर-मकी, मोतीराम पराधन-योग्यता, एक आठ कार्यसमिति के सत्य। महा के गठन का श्रेय श्री प्रह्लाद सिंह एवं सर्व-योगियों को है।

सर्वधी रिजोरी रमण भाई—सामन्तों के काम के लिए मुहूर्तों प्रयांठ के अनुभवित एवं कठिन मासों में मण्डल रिजोरी रमण एक-एक गाँव में गयी जे० पी० का काम सर्वोपयोग अतिरिक्त दिना तक रहा। महा

के सम्पन्न भूमिदान प्राप्तता की बात सुनना तक नहीं चाहते थे। और अन्ततः एक रात में जे० पी० की कहना भी पड़ा था कि भविष्य में "हमारी दात नहीं मनी" और कार्याकर्तियों ने पूछा कि इस चाँद को रामस्वराम के लिए राजी करने से उन चाँद पर चढ़ना आसान है। निश्चय ही समय की मर्यादा को देखते हुए बिजनेस समर्थ और आमकक लोग उस गाँव में हैं, उन लोगों से रामस्वराम की इन्डिया-पार यात्रा में इतने अन्तःशिक्षित विलम्ब की अपेक्षा हृद्य सहाय्य कार्यकर्ता मर्द नहीं बन रहे थे। हमारे समय के तथान और बरिष्ठ साथी सदैव ही वहाँ के सभी परिवारों से घनिष्ठ सम्पर्क बनाये रखे। फल-श्रुति की आशावासे नहीं, वन्ग अपना सर्वोच्च निधान के द्वाारा से ही। पंडित रामनन्दन मिश्र जैसे प्रभूति विद्वात् कान्ति-कारी के ध्यापना यहाँ ही चुके थे। बीच बीच में हस्ताक्षर भी प्राप्त होते जा रहे थे किन्तु बड़ी मन्थनति से गाँव में आपसी चर्चा बनेकी बार होती रही। इस बीच बगन के कई गणों में राम-सभाएँ गठित हुईं और महत्त्वपूर्ण समस्याओं के निराकरण रामसभाओं के माध्यम से होने लगे। फिर चाँद भी अपने को इस सौम्य सत्याग्रह के सामने रोक नहीं सका और रामस्वराम की घरती पर आक्षेप उत्तर ही आया।

दिवस ७ नवम्बर की शाम, जबकि रामसभा की सभी गर्ने पूरी हो चुकी थी, गाँव के सभी लोग इकट्ठे हुए। सबके मन में उरसाह। देर आये घुस्त आये। और मन में लगन यह कि जिनका विलम्ब हुआ, उस वमी को मोक्ष पुरा करेंगे। सभा की कार्यवाही श्री कर्माचारिणों के प्रसाद सिंह के सभापतित्व में शुरू हुई। सर्वसम्मति से रामसभा के लिए निम्न पदाधिकारियों का चुनाव हुआ। सर्वश्री बाके बिहारी सिंह-अध्यक्ष, केदार राय-उपाध्यक्ष, कैलाश प्रसाद सिंह-संघी, पंडित जयकान्त पाठक-सहसंघी, रामकिशोर सिंह-सोपाध्यक्ष। इसके अतिरिक्त कार्य-कारिणी के आठ सदस्य मनोनीत किये

गये। इस रामसभा के गठन में मणिता बॅन्ग के बन्धु साथी श्री द्वितोषर झा एवं उनके सहयोगियों का कठिन प्रयास उल्लेखनीय है। इसी रामसभा की ओर से आभोजन प्राप्तता में १६ नवम्बर की माध्यम देकर लौटने पर जे० पी० अवस्थ हो गये।

जे० पी० ने अपने छोटे से निवेदन में उन सभा की सम्बोधित करने हुए रामसभा के गठन पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने वहाँ कि रामसभा जब तक सक्रिय न होगी, हमारे अस्थिाल की निष्पत्ति ब्रंत नहीं पड़ेगी। आत्र रामसभायतो के अधिकारियों को सलाह है कि रामसभा उन्हें नियंत्रण कर देगी। अतः रामसभाओं के बड़ते हुए प्रभावों के प्रति वे आश्चर्यित हैं। रामसभाओं को सम्बन्धा देने में उन्हें अपने अस्तित्व पर खतरा नजर आता है। लेकिन यात ऐसी है नहीं। आखिर इन्हीं रामसभाओं के सदस्यों ने तो उन्हें मुक्तिया या सरपंच बनाया है। मुखिया और सरपंच इतके बाहर के तो नहीं हैं। यदि प्रत्येक गाँव अपने मसलों और विकास कार्यों पर स्वतन्त्र चिन्तन-क्रिया आरम्भ करे तो यह और सुन माना जाना चाहिए। अन्ततः सार्वजनिक और सहकारी दुष्टि-कोण से मोक्षता चाहिए तथा विद्याय की दिशा में ही यहाँ-तत्र किया जाय— विघटन की दिशा में नहीं।

समारोह में ही दो भूमिपतियों ने एक थीया दल बट्टा जमीन ७ भूमिहीन परिवारों में अपना भीषा करदा विद्यालय कर विवरण की घोषणा की, जिसमें रामसभा के अध्यक्ष भी शामिल हैं।

जमालाबाद में समारोह

दिनांक १५-११-७१ की जमालाबाद आश्रम टोला, बसवा टोला एवं गांधी टोला तीनों का संयुक्त समारोह सन्ध्या ५ बजे आरम्भ हुआ। उन तीनों टोलों में राम-सभाएँ बन चुकी हैं। इस समारोह में जे० पी० के अतिरिक्त श्री कैलाश प्रसाद शर्मा, श्री बन्दी मारामण सिंह, श्री बन्दी शरण संपादक 'हिन्दी सा-साहित्य आन्दोलन',

श्री निमोत्पन्न सिंह एवं अन्य प्रमुख सहयोगी भी उपस्थित थे।

सभा की कार्यवाही जमालाबाद गण-यत के मुखिया एवं यहाँ के प्रायस्वराम्य अभियान के सक्रिय सहयोगी श्री संयुक्तमो वट्टम की अध्यक्षता में आरम्भ हुई। शान्ति रैजिस्टर श्री जमालाबाद ठाकुर एवं दिखोरी रमण भाई ने अपने शान्ति रिय सगीत एवं उद्बोधों से उपस्थित जनसु-दाय में नवरक्षण का संचार कर दिया। बॅन्ग के श्री जयनाथ भाई ने रामसभाओं के पदाधिकारियों का जे० पी० से परिचय कराया। श्री बन्दी शरण ने, जो जमालाबाद की समस्यार्यों के बाकी निरत रहे हैं, कहा कि आज सारे गाँव को एक साथ बैठे हुआ देखकर मुझे अति प्रसन्नता है। याद आता है पिछले वर्ष का समय जबकि गाँव में जितना तीव्र वनाय था। दर्जनों लोग जेत के अन्दर जले गये थे। सोय भागने-सामने नहीं हो पाते थे। मसत मुन्दमो की भरमार थी। गाँव मुखिस से सवाही का बसाइया बसा था। आज जबकि जे० पी० का अभियान इस प्रसन्न में आरम्भ हुआ, वातावरण में जैसे स्वाभाविक तन्वीरियाँ आने लगी। लोगों का मानस उपर्ये वे सङ्घोग की ओर उन्मुख होने लगे। रामस्वराम्य आन्दोलन का समय का रामसभाओं में दोबले लगे। यहाँ तक कि मुखिस-अदायत मुखिस का विचार लोगों ने हृदयगत किया। और आत्मी सद्भावना के द्वारा गाँव के सारे मुखमो और शगडो का निगटाटा होने की घोषणा सुनकर हृद्य सबो की अश्रीय सुधो तो है ही, हाथ ही अन्य गाँव भी इस दिशा में प्रेरित होगे—एतौ हृद्य कामना है।

छहर सगातर की इस्त यात्राओं के कारण जे० पी० बाकी यज्ञ का अनुभव करते थे। अतएव बोड़े में अपना उद्बोधन व्यक्त करते हुए रामसभाओं की जबाबदेहियों का निर्देश किया। सभाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि प्रसन्न में जो रोष गाँव है वहाँ रामसभाएँ नहीं बनी हैं, वहाँ भी रामसभा गठन

हुआ मनोरंजन प्राप्त करने है।

सोम गुण हो-होकर शक्तिहीन हो
रहे हैं। मुझे यही तो एक दुःख बन
झाली है कि जो राजनीतिज्ञ 'जा' बच्चा
जाता हो वह राजनीति नहीं। मुझ-
मन्त्रीजी मान अत्युप गणपति साँ के साथ
विशेष रूप से धरने जाते हैं के धारण
सम्बन्धों के लिए पदना की वाली २५
साथ की क्रियाओं के अनुभव कर को
मुझे वा सोच सङ्गठन नहीं कर सकते।
और मुझे जो लोग झाली को बहुत ही
धर्मोत्साहपूर्वक भावित करने में जीवन
का समय व्यतीत करते हैं। और यह मन
बहुते हुए बीच-बीच में भावनाओं का
पुनरावृत्ति को छोड़ देते हैं। हम मुझे वा
धीरज को देखते हैं तो धरने को उगते
बाई के धारण में उभरने को संशयित
करते हैं। साधित मन्त्रा सम्यक् होती है
क्योंकि मुझमन्त्रीजी को बरत जल्दी है।
मन पर मे छोड़ मुझमन्त्रीजी के पीछे-
पीछे उग होने को लक्ष्य बन्ती है जहाँ
भावनाओं को व्यसय है। हम बीच
साथी और स्थानीय की स्थिति को देख
बाई को उनके विचार स्थान तक पहुँचाने
के लिए बाई है। दिवनी प्रमाण मनो-
धर्मिता को बरतने के लिए धीरे-धीरे बाई
की लक्ष्य पर निरत है। एक छोटे के
बारे में विचार पर लेने के बाद धीरे-धीरे
बाई बनते हैं, और वेना कि हमें एक
कल्पना ही रहा था, उन्हें बाई उड़क
सबो है जो उनके मान्य भावपर के लिए
हिटकर नहीं। वे स्थानीय विचार के
विचार बनने हैं कि बात में बड़ी भी मन्त्रा
विशेष लक्ष्य में व की भाव। हम उन्हें
दिना लेते हैं। वेना अत्युप साथ नहीं दे
रहा है वह मे भाव को दे। कल्पना
में मन हो गये हैं। वेना हिटकर
तो मुझे जल्दा ही है।

हम विचार को और भावना को
रहे हैं। पत्रा सुधार में मन्त्रा हुआ है।
मन में भाव है कि वह इन भावों में
राज्यपाल के प्रतिष्ठित को बरतना

अनिवार्य था ? लोक शक्ति के विभाग में
राज्यपाल में लगे हुए शक्ति शक्ति के
भी परिणत के रूप में भवे उभरते महत्त्व
हो लैरिन विचार को हम पाता मार
कर बरत देना चाहते हैं उसी को जाने
मन पर सम्मान करके मन्त्रा शक्ति
धीन नहीं करते हैं जवना के सवत पा-
जाति को परिष्कार शक्ति नहीं करते ?
आजि सुधार में मन्त्रा को हम प्राण
भाई की साथ सुधार चाहते हैं ? स्थिति
परिष्कारनीय है। उसी सा-सक
नेरुप पर हमारी मन्त्रा है। वेना
पूर्वोक्त में, राजस्थानी वा लक्ष्य प्राप्त के
प्रतिष्ठाओं लगे को, हम इन स्थितियों के

बनाए, उनके अर्थ को नहीं नहीं देख
पाते ? मन्त्रा के लक्ष्य में धर्म, अर्थ
और मन्त्रा की लक्ष्य को वा स्थिति
के लिए विचार नहीं देना चाहते हैं वहाँ
उपके उभर को लक्ष्य प्राप्त की मन्त्रा-
कल्पना की सुधार है ?

विचार लक्ष्य-लक्ष्य ? विचार
को लक्ष्य प्राप्त की लक्ष्य है और मन
में कई धर्म, कई लक्ष्य, कई सम्मान-
नाई और कई अर्थ प्राप्त की लक्ष्य
है।

— राजपाल लक्ष्य

हमारी जीत निश्चित

दुश्मन के आक्रमण की आशंका

सही साधित हुई

हम सुदृढोद्देश्य जवाब देने के लिए कटिबद्ध हैं

संस्कृत की इस घड़ी में

धैर्य और साहस से काम लें

अपने सिद्धान्तों और जीवन-पद्धति को

सुरक्षित रखने के लिए लड़ें जा रही

इस लड़ाई में

हमारे जीत निश्चित है

विज्ञापन संख्या—६ सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रकाशित

मंत्री का पत्र

प्रिय मित्र,

जनवरी १ से नया वर्ष शुरू होगा। दिनांक ३१-१२-७१ को १९७१ में बने हुए लोकसेवकों की अवधि समाप्त हो जायगी। १ जनवरी १९७२ से नये लोकसेवक बनाना है। यह काम आगामी दो-तीन महीनों में आरंभ करने से करेगी ही, जिससे कि वे सब अवधि में होनेवाली सव-प्रतिष्ठान में भाग ले सकें। सर्वोत्तम संघ के सदस्यों को लागू होनेवाला निम्न नियम लोकसेवकों के लिए भी अर्थात् है।

१—सर्वोत्तम खासीदारों को, अर्थात् खुद वे या घट के बने हुए लोगों या प्रमाणित खासी पक्षियों को।

२—को लोकसेवक की जिम्मेदारी पूरी न कर सकें उन्हें आप सर्वोत्तम-मित्र बनायें। सर्वोत्तम मित्र व्यापक रूप से बनाये जा सकें, इसलिए उसका वार्षिक शुल्क रु० २-६५ से ४२१ १ रुपया मान कर दिया गया है। लोकसेवकों का शुल्क पूर्ववत् रु० २-६५ ही है।

३—सर्वोत्तम-मित्र रखनेवाले को तथा आचार्यकुल का शुल्क देनेवाले व्यक्ति को लोकसेवकों को दिव्या मंजूर हो, जो उसे लोकसेवक बनने के लिए शुल्क दुबारा देने की आवश्यकता नहीं रहेगी।

४—दिनांक १२-७-७१ को लिखने हुए परिपत्र में लिखित सर्वोत्तम मंडलों के अर्थात् सचिवों नियमों का आरंभ बढाव रखने ही। यह परिपत्र आपको जल्दी में भेजा गया था।

५—सोपाल की प्रवृत्ति समिति ने सोचा था कि हर प्रदेश सर्वोत्तम मंडल, मतदाता-निर्वाहण के काम को संचालन देने के लिए घोड़े से व्यक्तिओं की एक समिति बनाये। ये ही दिनांक १-११-७१ को सोपाल में हुई प्रदेश सर्वोत्तम मंडलों के सम्मेलन एवं सचिवों की बैठक में भी इस

वर्तमान राष्ट्रीय संकट की परिस्थिति में राष्ट्र के नाम श्री जयप्रकाश नारायण का संदेश

मुझे विस्वास है कि सारा राष्ट्र आज प्रधान मंत्री और उनकी सरकार के पीछे है और इस समय कोई भी राजनीतिक दल या नेता दलीय दृष्टिकोण से कुछ नहीं करेगा या कहेंगे। राष्ट्र का हित किसी भी दल के हित से बहुत बड़ा है। अब भी रचनात्मक आलोचना के लिए जगह रहेगी, लेकिन दलीय प्रवृत्ति का वर्णन, सम्प्रदायगत या संकीर्ण भावना के लिए कोई स्थान नहीं हो सकता। जैसा कि प्रधान मंत्री ने कहा है, "हर व्यक्ति को अपने कर्तव्य-स्थल पर, चाहे वह खेत में हो, कारखाने में हो, स्कूल-कालेज या दफ्तर में हो, अडिग रहना चाहिए और समर्पण तथा आत्म-बलिदान की भावना से अपना कर्तव्य पालन करना चाहिए।" पटना, ४ दिसम्बर '७१

समिति के मंडल के बारे में बायें हुई थी। इस काम को सुचारु रूप से चलाने के लिए एक व्यक्ति के निम्ने प्रवेश में यह काम सौंपा जाय। यह प्रदेश सर्वोत्तम मंडलों में किया ही होगा। आप इस बारे में क्या करने जा रहे हैं यह लिखिए।

विनोद
—ठाकुरदास शर्मा
पत्नी

भूदान-सहरीक
उर्दू पाक्षिक
साप्ताहिक चर्चा : चार रुपये
पत्रिका विभाग
सर्वोत्तम संघ, राजघाट, वाराणसी-१

इस अंक में	
आगतकालीन परिस्थिति और शान्तिमेता	—नारायण देसाई १५५
कुछ और भी स्वतंत्रता पर प्रहार क्यों ?	—सम्पदाकीय १५२
सविधान का २१ वाँ संशोधन : एक प्रतिपाद्यी कदम—अध्यात्म नारायण	१५६
धर्म-निर्देश एकीकरण	—हमीर दत्त १५७
श्री जयप्रकाश नारायण एक शांति के जनक का पत्र	१५९
प्रसंग-सर्वोत्तम-मंडल की बैठक में	—सर्वोत्तम नारायण १६०
३० जनवरी शान्ति दिवस के रूप में मनायें—नारायण देसाई	१६३
देसा नमूनी की दिव्या	—हेमनाथ सिंह १६५
सोपाल संघ के तट पर पहला पत्र	—सारी १६४
अध्यय स्वतंत्र	
मंजी ४१ पत्र	

वार्षिक शुल्क : १० रु० (संकेत कागज : १२ रु०, एक प्रति १५ पैसे), विदेश में २५ रु०; वा ३० तिलिप वा ५ कालर। एक अंक का मूल्य २० पैसे। श्रीरज्यदत्त कृष्ण द्वारा सर्वोत्तम संघ के लिये प्रकाशित एवं सज्जित प्रेष, वापसी में सुविधा

आपके पुत्र

सर्वोदय आन्दोलन और स्त्री-शक्ति का उदय

१५ नवम्बर '७१ के 'सूचना-पत्र' में 'गर्भवान कानून : पुरुष प्रधान समाज की एक और उगादनी' शीर्षक पत्र पड़ा। इसकी को साधुवाद कि उन्होंने नारी-समाज के सम्मुख विचारणीय तथ्य रखे हैं। भौतिकवादी सभ्य-समाज में नारी अपनी अविज्ञता से ही भोग का साधन बनती जा रही है। स्त्री-शक्ति के जागरण का काम ऐसा कोई भी आन्दोलन नहीं कर सकता, जिसकी जड़ नीतिकला में हो।

उत्तराखण्ड में पूर्ण नशाबन्दी के लिए जो आन्दोलन हो रहा है, उसमें स्त्री-शक्ति के उदय का सम्पूर्ण स्वरूप दिखाई दे सकता है। टिहरी नगर के सभापति परिवारी की महिलाएँ सत्याग्रह करने के कारण इस समय कारागार में सहाय्य प्राप्त कर रही हैं। गाँव की बच्चों में कितनी जागृति छापी है इसका ज्ञान तो उन लोगों को ही हुमा होगा, जिन्होंने १४ और २० नवम्बर की टिहरी नगर में विद्यालय जन-प्रदर्शन की देखा होगा। १४ नवम्बर की विद्यालय सार्वजनिक सभा की अर्धसता गाँव की एक साधारण महिला—हेमा बहन ने की। अर्धसतापद से बोलते हुए उनके ये शब्द स्त्री-शक्ति के उदय के परिचायक ही हैं—'भाइयो और बहनों ! मैं बिलकुल ही अनपढ़ हूँ। साधारण बीरत हूँ—जलल में धास काटनेवाली और मोबर होनेवाली। मेरा पति भी अनपढ़ और हल चलानेवाला आदमी है। मेरा बहनों से निवेदन है कि अब वे रण-बन्दी का रूप धारण कर दास के राजस का नाश करने के लिए सैरान हो जायें।' पू० सुन्दरलालजी की ६० वर्षीया वृद्धा सास सत्याग्रही महिलाओं में अग्रणी थीं। टिहरी से देहरादून जेल में सत्याग्रहिणी को ले जाने-

वाली पी० ए० सी० की गाड़ी में उनका हत्या कर दिया। सुन की बूँदों को देखकर मैंने कहा—'माताजी ! सुन की बूँदें बरस नहीं जायेंगी, तो उन्होंने तीन बार 'बिर-बीब रही' कहा। टिहरी नगर की श्रीमती सुशीला मैरोला को अपने छोटे-छोटे बच्चों को, पति को छोड़कर आन्दोलन में कूद पड़ी। टिहरी से लगभग एक सौ मील दूर श्रीमती से ५० से अधिक महिलाएँ २० नवम्बर के प्रदर्शन में सम्मिलित होने के लिए आयीं। इनमें से कइयों ने अपने आपको गिरफ्तारी के लिए पेश किया। गिरफ्तार महिलाओं में एक ही अर्धने दो

छोटे-छोटे बच्चों के साथ ही जेल की सीखची में बंद हैं।

दसवीं सफलता, स्त्री-शक्ति-जागरण की सफलता है। साथ ही मजबूत व्यवस्था पूर्ण नशाबन्दी-सम्बन्ध, देश भर की महिलाओं के लिए रचनात्मक कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम के द्वारा ही सत्संरक्षित सभ्य समाज के अनैतिक आचरणों से, नारी की पवित्र आत्मा को बिरुद्ध होने से बचाया जा सकता है। तभी विर-पुरातन और नवीन सभ्यता की बिरुद्ध होने से बचाया जा सकता है।

—सूर्यसिंह नेगी

श्री जयप्रकाशजी का वक्तव्य

पाकिस्तान द्वारा युद्ध-विराम मान लेने पर श्री जयप्रकाश जी ने पटना से जो वक्तव्य दिया है उसमें पाकिस्तान द्वारा भारत के एक-तरफा युद्ध रोकने प्रस्ताव को मान लेने का स्वागत किया है, और आशा व्यक्त की है कि इससे भारत-पाकिस्तान के सम्बन्धों में एक नया अध्याय जुड़ेगा। उन्होंने इत्यामावाद से व्याग्रह किया है कि 'जेहाद' का मध्ययुगीन गारा और धर्म का इस सतरासक ऋण से शोषण हमेशा के लिए छोड़ दे, वया जम्मू-कश्मीर पर सातचमरी निगाहों से देखना बन्द करे। उन्होंने आशा प्रकट की है कि पश्चिमी पाकिस्तान की अन्तत अपने लोकशासनिक अधिकारों को धामने सामेरी, संसिक-शासन को उखाड़ फेंकेगी, और एक ऐसे लोकशासनिक व्यवस्था कायम करेगी जिसमें पाकिस्तान के सभी लोग स्वतन्त्रता की हवा में साँस ले सकें। जयप्रकाशजी ने इस बात पर जोर दिया है कि पश्चिमी पाकिस्तान ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भौतिक दृष्टि से भारतीय उप-महाद्वीप का अंग है, और उसका भाग्य इस उप-महाद्वीप के निवासियों के साथ जुड़ा हुआ है। पश्चिमी पाकिस्तान की अन्तत अपने सच्चे हितों की हमरी। प्रधानमंत्री ने आश्वासन दे दिया है कि भारत के मन

में पश्चिमी पाकिस्तान की अन्तत के लिए सद्भावना के विनाय दूसरा कुल नहीं है। हम सब तीस महसूस करें कि दुनिया की बड़ी शक्तियों ने हमें सहायता प्रदान-कार की भावना से नहीं बल्कि अपने राष्ट्रीय और जागतिक स्वार्थों को धामने की दृष्टि से ही है। अब समय आ गया है कि हम कितने के ह्राय की पटुत्वनी न बनें और अपने पैरों पर सड़ें हों। हम आशा करें कि ह्राय के इस क्षण में पश्चिमी पाकिस्तान की अन्तत सचेतगी कि उसके वास्तविक हित क्या हैं और किस सच्चे से-अच्छे ढंग से वे साथ सजने हों।

श्रीमती गांधी के सम्बन्ध में जय-प्रकाशजी ने कहा है : पहिले वपलारेण के बारे में मैंने जो कुछ कहा है उसे वापस न लेने हुए मैं स्वतन्त्रता के बार देश के इस सबसे बिरुद्ध संघटन में प्रधानमंत्री के नेतृत्व की भरी दिल से प्रसन्नता करता हूँ। मैं पश्चिमी मोर्चे पर एक-तरफा युद्ध-विराम की घोषणा के निर्णय को ऊँची-छे-ऊँची बुद्धिमत्ता का बरम मानता हूँ। उन्होंने राष्ट्रपति जिससन की जो पत्र लिखा है वह, मेरा विश्वास है, इतिहास के सबसे महान और मार्मिक पत्रों में स्थान पायेगा।

(अगले अंक में श्रीमती इन्दिरा गांधी का पत्र पढ़ें)

ये काले, पीले, लोम

मनुष्य-राष्ट्र-मम में बगना देस के प्रस पर जो 'युद्ध रोकी' प्रचार पैग हुआ पर उनके पास में पाउ देसवाले, देसों में जगता-तर वे देस है जिनमें बाने या पीले लोग रहते हैं। अफिरा के काले गोरो देस, मध्य पूर्व के काले मुस्लिम देस, और एशिया के चीन, जापान, जैसे पीले लोगों के देस—सगलम इन सबका सम्बन्ध इन प्रजात को बिना। अमेरिका का गोरा देश दुबरी बगुआई कर रहा था। जाप और ब्रिटेन बनगये, कम भारत के भाग था। अरब का विरोध करतीये वे काले-पीले भी देस धर्मिक हैं जो बिगो-न-रिडी रूप में ईश्वर में विश्वास रखनेवाले हैं। भारत का सगल सत ठपका पूर्वी मूर्ति के उन देसों में जिया ब्रिटिशों धर्म और ईश्वर को अन्वीकार कर रहा है, जो नास्तिक हैं। ऐसा जैसे हुआ कि काले-पीले देस और आस्तिकता का सेन मिल गया ? नास्तिकता का चीन भी है, लेकिन उसकी नास्तिकता अभी बहुत गहरी नहीं गयी है, और नास्तिक होते हुए भी चीन चीना जो है! जापान आस्तिक है, चीना है, और चीन ठपका अमेरिका, दोनो से दबा, इरा हुआ है। बर्लिन अमेरिका, अफिरा और मध्य पूर्व के मुस्लिम देश 'शायर बोदेसह' अमेरिका की जूब में है। और हो और, बोद्ध धर्मात्मनी भारत का पड़ोसी धी मजा भी नहीं सवाम रहा है कि उसका स्थान कहाँ है।

बाने, पीले, देसों में लोगों के हाथों बनग युद्ध सहा है फिर जो उन्हेने बनग देस की पीड़ा नहीं सवामी। उन्हेने सुन गानी रकाना के लिए विना पूत बहाया है कि भी बगना देस को कु(आदि) की बट नहीं की। वे अपने धर्म में रोड ईश्वर का नाम लेते हैं फिर भी उन्हेने ईश्वर के बगानी बनी की आवाज नहीं पड़ना। यो ? ऐसा क्यों हुआ कि सयुक्त राष्ट्र में 1917 में 1917 और उन प्रजात के पास में सवे जिसमें मनुष्यता, स्वतंत्रता और सनाता का न म पी न मा, और जिनमें वह जानते तक कि क्रिश्चियन की कि बगना देस और भारत वे जिन-परीला से पुत्ररता बना हीश्वर किया है।

क्या ह्यारो बाने, पीले, भाई नहीं जानते कि बगना देस की सहाई विनाश है ? क्या उन्हे नहीं मायूस था कि 1 नहींों से मरीज भारत बाने पूरे पर साको-नास साकारियों का बोझ उठाना का रहा है और उन सारे सारों को मीसठा जा रहा है जो इनके साकारियों के काले से जपरी गुला और अन्धकार के लिए पैदा हो सके हैं ? क्या उन्हेने श्री ब्राह्मणस्यारसण जैसे सम्पन्न नेता और भारत के प्रजासमीची की देस-देश पुनकर बिके और सहाय्युक्त का सयुक्त बचते नहीं देना था ? क्या अस्तिक और पड़ोसीय का कोई उपाय था जिन भारत ने रखा था ? क्या कोई देस अपनी अस्तिक और स्याद विपदा का भारत

के अर्थक प्रमाण वे सारों था ? लेकिन दलमें क्या हुआ ? विनाये भारत की काय सुनी ? विनाये युद्ध के बिनाक आवाज उठायी ? अब तक नहीं था सयुक्त राष्ट्रस्य, उसकी सुरक्षा परिषद, और बिना की अन्तरात्मा ? भारत ने देस विदा कि दुनिया न्याय की पुरार नहीं, सान की सत्कार मजबूती है। क्या काले और पीलों ने भी सान का ही सान पढ़ते का निर्णय कर लिया है ?

आज जब सदाई विप गयी तो 'युद्ध रोकी' की रट लगायी जा रही है। युद्ध रोकी के साथ-साथ 'अन्वेषण रोकी' की भी रट बनी नहीं सगामी कात्री ? क्या इतिहास कि अस्तिक की काय में अन्वेषण को बनाये रखना है ? अमेरिका के साथ जिनके काले-पीले देश 1917 की सुनी में है वे सब प्राय वे ही हैं जिनको सगामी ने जन-जीवन पून बना रखा है। अफिरा के जन्य देशों की तो यूरोप के गोरे और सासःज्याकिनों ने रखना ही सत करत कर ही है कि मगलम हर देस में विभिन्न कबीलों के बीच गृहयुद्ध की रिपति है। इतिहास हर अफिरा काले सरकार स्वायत्तता और स्वतंत्रता के नाम से मग सारी है। युगाडा, केनिया, सुदान, नाइजीरिया, म्बियांगिया, सुमारिया (बिने प्रजात सेस विपदा था), जैम्बिया आदि सबका इतिहास है। वे नहीं चाहते कि दुनिया के रिडी देस में जनता की ओर में मुनिन को उस तरह की मीग ही जिस तरह की बनता देस में हुई। मजके विनाम में बिनाम नाप रहा है। बड़ी हानि सारे युद्ध-जन्य वनों का है, जिनमें बासगाँवों या पीली समानाहो की हुपुते है। यही कारण है कि वे सब एक दूसरे के साथ है। जिन देसों ने प्रजात का सम्बन्ध नहीं किया या सतस्य पड़े, उनके यहाँ रिडी सेन या सपुह के अनप होने की अनप समरवा नहीं है। अमेरिका विपसी, अस्तिक, सगामी की बनाये रखने में दुनिया में म्बरन है। भारत का विरोध करने में चीन के सवाधारी तो अपनी नाक तक बटा साने हैं, और जापान दुनिया में लाखर बन्दर का औद्योगिक देस होते हुए भी बेचारा बना हुआ है।

कुछ ही हो, अफिरा और अफिरा के दलों ने सयुक्त-राष्ट्र-स्य में बगना देस और भारत पर युद्ध के प्रस पर सित निरन्धे-पन का परिचय दिया है उन्हेने यह सारक पना बनता है कि सयुक्त जनता कोई 'स' नहीं है। इनका ही नहीं, जिन देसों में सैन्य-कारी राबिनीक सगल है, वे छोटे हो या बड़े, उन्हें सारा, पृथ्वीति, अस्तिक-सयुक्त अस्तिक के विपार दुबरी काई भाग सम्बन्ध में नहीं बानी। वे नाम में स्वतंत्र मरे ही हैं, उनके विनाम की गुलाकी उठी कण्ड बनी हुई है जैसी उन बनन की जूब के उपनिवेश थे। स्वतंत्र होने पर भी जनता की नास्तिक स्वतंत्रता अभी बहूना, बहुत दूर है। जनता ही जानती भी नहीं कि उसके नाम में नरा ही रहा है। बनता देस का मुनिन-सवान का भारत का उनके साथ युद्धना दुनिया के सवा-अस्तिकों के लिए एक इरादना मरना और अस्तिकता पटना है। न जाने कभी रिडी की गुलाकी बानी, पीले, जनता को सोवती है—अन्धे प्रजासकारियों की, और दुबरी सवाकारियों की ?

आर्थिक क्रान्ति के पाँच चरण

—धीरेन्द्र मजूमदार

मैंने इस क्रान्ति के पाँच 'स्टेज' माना है : डिक्लेरेशन, डिमान्डेशन, मोबिलाइजेशन, आर्गनाइजेशन इम्प्लीमेंटेशन।

अब तक दो प्रदेशों में तथा कुछ विचारक उड़कू बातें लोगों में जो ग्रामदान-संस्कार की घोषणा हुई है, उसे मैं डिक्लेरेशन यानी घोषणा कहता हूँ। इस घोषणा द्वारा देश और दुनिया में ग्रामदान तथा ग्रामस्वराज्य शब्द का अधिष्ठान हुआ है। दुनिया में राज्य बन चुका है। वर्तमान समस्या के समाधान में हमारे विचार का आश्रय हुआ है। लेकिन यहाँ है कि यह विचार जमीन पर उतर सकेगा क्या? लोगों को क्या है कि भाग्य एकान्तिवादी स्वार्थ-सिद्धि तथा उसके लिए संघर्ष का जो वातावरण बना हुआ है उसमें क्या सम्मति से युक्ति की बातें पूरी हो सकेंगी? इसलिए अब हमको दूसरे स्टेज पर काम करना है अर्थात् कार्यकर्ता-शक्ति से ही सही। इस बात का प्रदर्शन करना है कि आज के दूषित वातावरण में भी सम्मति-शक्ति द्वारा हमारा काम हो सकेगा, बल्कि दूषित वातावरण के कारण ही यह सम्भव है। यह काम हम चार प्रणालियों में कर रहे हैं। हम मानते हैं कि चार प्रणालियों में जो सम्भावनाएँ प्रकट हो रही हैं उनके फलस्वरूप पूरे जिले में अनुकूलता पैदा हो रही है, इसलिए दूसरे स्टेज की घोषणा आगे बढ़ाकर इस समय पदयात्रा तथा गोष्ठी और विभिन्न कामों द्वारा तीसरे स्टेज यानी जनता को इस काम के लिए मोबिलाइजेशन करने के स्टेज को हम हममें ले रहे हैं। इस स्टेज की शीर्ष के साथ पूरा करना है, चाहे इस बीच निष्पत्ति कुछ भी निकले। यद्यपि गोष्ठी-यात्रा निष्पत्ति या निकलेगी ही, इसमें शंका नहीं। लेकिन मोबिलाइजेशन ठीक-ठीक होता रहे और निष्पत्ति न भी निकले, तब भी लोगों को पूरा शीर्ष चलना होगा। इसी स्टेज में निष्पत्ति

निकलने के साथ-साथ प्रणालियों में ग्रामस्वराज्य-समा तथा प्रखण्डस्वराज्य-समा का गठन भी शुरू हो जायेगा। तब चौथे स्टेज यानी संगठन के स्टेज पर अपनी सारी शक्ति केन्द्रित करनी होगी। अपनी इस शक्ति का शीर्ष अब तक की प्रक्रिया द्वारा उभरी हुई नागरिक-शक्ति है। संगठन पूरा होने पर सारी शक्ति इम्प्लीमेंटेशन पर लगेगी। इसका मतलब यह नहीं है कि उसके पहले इम्प्लीमेंटेशन होगा ही नहीं।

इम्प्लीमेंटेशन तो अभी से ही रहा है। और हर स्टेज पर उसका परिणाम बढ़ता ही जायेगा। लेकिन इस बीच का इम्प्लीमेंटेशन इसीकेन्द्रित होगा, फुटकर रूप में होगा। व्यापक ढाँचे में संगठित नहीं होगा। वह जो पूरा-पूरा शीर्ष स्टेज पर ही होगा। इसका पूरा करने में तीन या चार साल लग सकते हैं। पहले हुआ तो भाग्यवत् कृपा।

तीसरा हिस्सा जमीन के विवरण के बारे में कहा जाता है कि एक बीघा या आधा बीघा एक आदमी को देना चाहिए। जमीन-वितरण के इस कार्यक्रम पर और गहराई से सोचने की जरूरत है। वस्तुतः बोधवाँ हिस्सा जमीन बाँटी जा रही है। वह सम्पत्ति बनाने के लिए—ऐसा हमेशा कर चलना होगा। यह तीसरे स्टेज की शक्ति को बंधित रखने का प्राथमिकता माना है। यह तीसरे ग्राम-परिवार बनाने के लिए ग्रामपालिका की प्रक्रिया पर गुणावृत्ति का प्रतीक है। इसलिए हमारी दृष्टि इस समय यह नहीं है कि एक व्यक्ति को जितनी जमीन मिली, बल्कि यह है कि जितने लोगों को मिली। आन्दोलन की प्रक्रिया में कोई छूट जाये यह हम नहीं चाहते। क्योंकि जो छूट जाये वे ग्रामपरिवार से अलग रहेंगे।

इस देश में जहाँ ७५ प्रतिशत लोग स्थायी रूप से बसावस्था हैं, वहाँ सम्पत्ति-निर्माण का काम अत्यन्त आवश्यक है। लेकिन हम मानते हैं कि ग्रामसमाज के सदस्यों के बीच आज के सम्बन्ध बने रहने पर चाहे जितना विकास का काम किया जाय सम्पत्ति नहीं आ सकेगी। इसलिए हम चाहते हैं कि जितनी भी जमीन निरलगी है वह अधिक-से-अधिक लोगों में बाँटे जाकर हजारों वर्षों से विलीन तथा अधिष्ठित वर्ग के साथ शोषक वर्ग के नजदीक आने के सम्बन्ध-निर्माण का गुणगान हो। जब समाज के परस्पर सम्बन्ध के आधार पर ग्रामसमाज के रूप में सामुदायिक उत्थान की स्थापना होगी तब वे सब मिश्रकर सम्पत्ति-निर्माण का उपाय सोचेंगे और इस सोचने में मदद करना हमारा काम होगा। तब जमीन के समानोकरण करने की बात भी उठेगी। इसी सम्बन्ध-निर्माण करने के लिए हम ग्रामसमाज के लिए पहला कदम मजदूरी बढ़ाने का नहीं उठाकर अनाज-युक्ति का नाम उठा रहे हैं। क्योंकि सम्बन्ध-निर्माण केवल मजदूर और मालिक के बीच में नहीं करना है बल्कि मालिक-मालिक और मजदूर-मजदूर के बिना ही सम्बन्ध भी गुणावृत्ति है।

सम्बन्धों के आधार पर ग्रामसमाज के सामने अनेक समस्याओं के साथ मजदूरी की समस्या भी आयेगी और तब उन्हें हम समाज का हल सोचना पड़ेगा। यह सही है कि बड़ी सामाजिक न्याय नहीं है और उनकी रक्षा करना ही है लेकिन किसी बाहरी श्रेणी से उम्मा आरोपण नहीं हो सकता। उसे समाज की आन्तरिक रक्षा से अनुचित ठहरे देना है। आरोपण-वृद्धि से अनुचित न्याय अधिक दिन तक स्थायी नहीं रह सकेगा या उसको स्थायित्व देने के लिए किसी बाहरी शक्ति को स्थायी बनाना होगा तब फिर स्वराम्य नहीं होगा। समाज को राज्य के नीचे ही रहना होगा। इसलिए मैंने इम्प्लीमेंटेशन की

हेदी बकारो : प्रतिकार की सीमाएँ

—सतीश कुमार

यह एक बसमिणी है। लेकिन इफ्तान नहीं है। वह विश्वविद्यालय में प्राध्यापिका थी। लेकिन शांति-आन्दोलन में अपना सर्वश्रेष्ठ चिन्तन समर्पित करने के लिए उसने अध्यापन छोड़ दिया। वह एक बसेठ कार्यकर्ता है। लेकिन इतालीकी शांति-आन्दोलन के नेताओं में नहीं गिनी जाती। वह 'केलोलिन मांड्रोकोन्सोलि-एन्स' नामक कालिष्ठ टास्या की बसो है। लेकिन सभी ऐसी सभ्यताओं के साथ मिल-बर काम करती है जिनका अहितकर हाथों में विप्लव है। उसके पति की इन 'शांति-आन्दोलनों' में विश्वास नहीं है। लेकिन वे सभी बसक नहीं जातीं। यह अपने परिवार के दायित्वों के प्रति जिम्मेदार है। लेकिन परिवार और सामाजिक बंधों के बीच उसने सामुहिक सानुलन साथ लिया है। इससे मैं इस तरह की एक समर्पित और मरुतम दायित्वकारी महिला है—हेदी बकारो। सतीश कुमार ने अपने प्रथम प्रकाश में हेदी के साथ मुलाकात 'मुलाक सस' के लिए विशेष रूप से की। रीम से बेसी हुई उनकी 'बातचीत' प्रस्तुत है: —

सतीश कुमार : यूरोप का 'शैक्षिक' आन्दोलन युद्ध के तार और तारों के प्रतिकार की सीमाओं में ही ज्यादातर खड़ा रहा। क्या आप बाजारों कि इतनी के शांति-आन्दोलन के क्या समाचार हैं ?

हेदी बकारो : सुगोनिनी के कांसिद-कामन-नाम में हमारे यहाँ वा शांति-आन्दोलन बहुत ही सीमित और अप्राम था। लेकिन युद्ध के बाद तीन सप्ताह पर शांति-आन्दोलन प्रथम—विचार, प्रति-हार और परिवर्तन। प्रत्येक आन्दो हासिली की विचार के तब पर आन्दो-लन की क्षतिपूर्ति मरुतम करने का श्रेय है। उन्होंने सबसे पहले मनु १९६१ में सभ्य १२ हजार लोगों को वेकजवा नगर में एकत्र किया और २० मील की एक प्रतिरक्षक शांति-यात्रा का आयोजन करके ह्योन्सल शांतिवादियों की अपनी

क्रियत वा बोध कराना। फिर उन्होंने अहिंसा के व्यावहारिक और मौखिक पहलुओं की व्याख्या करनेवाली अनेक पुस्तकें लिखीं। 'डेनोके देला मोल-विधो' नाम की उनकी पुस्तक कठोर-मिदल शांति-आन्दोलन का संक्षेप-मय जैसी मानित हुई।

सतीश कुमार : उनकी पुस्तकें अहिंसा के प्रतिरक्षकक पक्ष को उजागर करने-वाली थी या अन्य पक्षों का भी उनमें समावेश था ?

हेदी बकारो प्रोफेसर दायित्वी मूलतः एक निरा-पराधी थे। साथ ही वे एक कुलीन हुए विचारक भी थे। उन्होंने टॉल्स्टॉय तथा गांधी जैसे अनेक अहिंसा-वादियों की सूचना से हृदयमय विचार था। इसलिए वे मात्र प्रतिकारामक पक्ष तक मात्र रुक नहीं सकते थे। निरा-

भयस्था, समाजवादी, जर्मनीति, राजनीति अदि पहलुओं पर उन्होंने अहिंसाक समाज-रचना के मन्थन में पर्याप्त प्रकाश डाला। लेकिन उन्होंने सोचा कि एक बार १२ हजार लोगों को एकत्र कर लेने और कुछ किलों निरा देने मात्र से आन्दोलन खड़ा नहीं होगा। इसलिए उन्होंने मनु १९६३ में 'सुविमेटी मोनविपलेटी पेर ला पासे' (शांति के लिए अहिंसाक अन्दोलन) नाम से एक मण्डल बनाया और विदेशी पिछा नाम के एक उरण, बिना भीम एवं बसेठ छापी की उन्होंने इस मण्डल का मंत्री बनाया। इस तरह एक उज्ज्वल प्रोफेसर और तरल विचारक ने विचारक अहिंसाक आन्दोलन को नये तिर से सज्जित किया। और एक विचार-पूर्ण साहित्य-परिक्रमा 'एककोमेने नोन विपोवेला' नाम से भी प्रारम्भ की जो बाहर की नियमित रूप से प्रकाशित होती है और जो हमारे समाज की समस्याओं का गम्भीर, तत्पूर्ण एवं अहिंसात्मक विमोक्षण प्रस्तुत करती है।

सतीश कुमार : क्या यह आन्दोलन इतनी में प्रचारक रूप से चला है ? कभी-कभी हमका बजार बाधकी मनुष्य हो जाता है। हमका भी मरुतम बनाने के लिए दमक, पैसा, हमका जो चनासेवाली कार्यकारिणी अदि का बोध देना बड़ जाता है कि त्रिम काम के लिए तसका बनायी, वह काम बीछे ही छूट जाया है।

हेदी बकारो सत्पाठकता के जो बोध हैं, वे आपे बिना नहीं रने। इसे स्वीकार करना चाहिए कि प्रोफेसर दायित्वीनी के विद्ये वी स्वयंसाध ही जाने के बाद संस्यारकता और भी अधिक बड़ गयी है और दुर्भाग्य से विभिन्न सभ्यताओं के बीच जाणगी सहयोग के स्मान पर दायित्वीमता का बाधाकरण कराया रिच,ई देना है। वसति एव आन्दोलन के केरु बेनिम, पारोस, रीम व, मिदल और दुर्भाग्य जैसे लोगों में है, पर अजिन कार्य-कर्ताओं की सहाय विद्ये जाड शर्तों के बिन्दनर नाम के ब.व.व. १०० से अधिक नहीं है। अथ सभ्यताओं में लगे हुए कार्यकारिणी और अहिंसावादियों के साथ

→आसिरी स्टैंड में रखा है ताकि विचार-विशय तथा दूसरी प्रक्रिया से समाज के रिके का उद्घोषण कर नगरिक के अन्दर समस्या के समाधान की मांगना सिगित हो सके। इस बीच जो कुछ दायित्वीमता हो जातीया उनसे अहिंसा-विचार की व्यावहारिकता प्रकट करके देगी लेकिन अति ही अथवी विचारिणी नहीं निरवसेगी। अपनी विचारिण तक आसिरी बड़ एक के बाद स्टैंड के माध्यम से हम उन-मात्र की वस्तुएं कर सकें।

बड़ा पना है कि सामस्या में छोटे

विद्ययत व सुविहीन मरुतम मरुतम के पदाधिकारी हो। इसका प्रमण्डु कलना चाहिए। यह दुर्भाग्य भी सही नहीं है। हमको अपने मन में के ही अ विर तथ सामाजिक नेम-पेशी की निराण ही देना चाहिए। इस मूड को रिजना बाध करीमे उजवा ही बड़ तिर पर करेगा। इसलिए सामस्या बनाने समय ऐसा वातावरण दायित्वीमता बाध चाहिए रिचिने सोने के लभने हूँ कायकी मनुष्य के लगे अर्थात्त ही, अथ का स्वरण न हो। (समेक)

मिलकर काम काम में साधक विधेयो विद्या सहजवाते है। अथ २३-२५ मन्वन्तर को उन्होंने अहिंसा-आन्दोलन के साधन में सम्मेलन दिया, पर उसमें अन्य सम्साधों के लोगों को नहीं बुलाया गया। लेकिन विभिन्न नगरीयों में काम करनेवाले कार्यकर्ताओं और उनके केन्द्र का योग से युक्त है।

सतीश कुमार वैचारिक स्तर पर जो आन्दोलन चलता है, वह ज्यादा गहराई में नहीं जा सकता, जबतक कि उन विचारों को समाज के सन्दर्भ में संगठित न हो जाय और समस्याओं के सन्दर्भ में परलान न जाय।

हेरो बकरो : इस विषय को इटली के अहिंसावादी नेता डेनिसो डोलची ने खूब गहराई से समझा है। वे प्रदर्शन-मूलक प्रतिकार और विद्रोह विचार-प्रचार में विश्वास नहीं करते। युव जगत्ते हो कि दक्षिण एशिया और मिस्र की द्वीप दुनिया के किसी भी गरीब देश की पाति ही गरीब, अविश्वसित और उपेक्षित हैं। डेनिसो डोलची ने इटली में अपना केन्द्र बनाकर रचनात्मक और निर्माणत्मक योजनाएँ हाथ में ली हैं। वर्तमान पूँजी-वादी समाज-व्यवस्था को बदलने जिना न तो युद्ध समाप्त होगा और न मान्ति स्थापित होगी। युद्ध का अन्त कोई स्वतंत्र करिदाय नहीं है। हमारे पूँजी-वादी समाज की प्रतियोगितामूलक व्यवस्था की एक स्वाभाविक परिणति है युद्ध। इसीलिए डोलची समाजवादी, सहकारी और अहिंसक समाज का विरुद्ध दृष्टि में लगे हुए हैं। उनके प्रयोग रचनात्मक और विचारमूलक है। वे इसी की उपाय-कान्ति की सही प्रक्रिया मानते हैं। जब उनके प्रयोगों के लिए वर्तमान समाज-व्यवस्था, और मानव-व्यवस्था बाधाएँ पैदा करती हैं, तब वे प्रतिकार का हथियार हाथ में लेते हैं और कानून के साथ अवहमीय करके अहिंसक कान्ति के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

सतीश कुमार : ऐसा लगता है कि विधेयो विद्या का विचारत्मक आन्दोलन

और डेनिसो डोलची का रचनात्मक आन्दोलन एक दूसरे के पूरक हो सकते हैं।

हेरो बकरो : हो सकते हैं। होने भी चाहिए। अगर हो सकें तो इटली के शान्ति-आन्दोलन में नया जीवन आ जायेगा। पर दुर्भाग्य से रोमो के बीच कोई सहयोग नहीं है। अगर रोमो सहयोग से काम कर सकें तो वैचारिक आन्दोलन को सिखनी को वसुंधा और प्रयोग-भूमि मिल जायेगी और इटली के रचनात्मक काम को विचार-सम्पन्न और अहिंसा-प्रतिबद्ध कार्यकर्ताओं की सेवा मिल जायेगी। साथ ही रोमो से डेनिसो डोलची ने सिखनी की विश्व-विभूत अन्तः-राष्ट्र व्यवस्था-संगठन-माफिया के विनाश को अज्ञान छोड़ा है, उसके लिए पूरे देश में तपे हुए तक्षण कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है। पर डोलची अपने अविश्वसित से स्वयं ही इतने मोहित हैं कि वे छोटे और सामान्य कार्यकर्ताओं का सहयोग हासिल करने में असमर्थ हो जाते हैं। वे एक प्रखर, बुद्धिमान और कर्मठ नेता हैं। उनके काम का महत्व हम सब पहचानते हैं। परन्तु उनके निरुचित स्वभाव के साथ मेन पैदा पाला बहुत ही कठिन कार्य है। जो भी उनके केन्द्र में उनके साथ काम करता है, वह दो-तीन साथ से अधिक उनके साथ नहीं रह पाता।

सतीश कुमार : माफिया का खरपाय आन्दोलन तो इटली के जीवन और यहाँ की समाज एवं राज्य-व्यवस्था का एक अविश्वसित अन्तः-घटन है। माफिया के विनाश काई हो सकता खबरे से भी खानी नहीं है। डोलची के लिए यह माफिया-विरोधी आन्दोलन को बहुत कठिन कार्य होगा।

हेरो बकरो : माफिया के विनाश जो भी सदा हुआ, उसे करने प्राणों से हाथ धोना पड़ा। डोलची की अपराध-शक्ति ही उन्हें अचरस चबाये हुए है। लेकिन माफिया के संगठन को समाप्त करने या कमजोर करने में अभी तक डोलची को सफलता प्राप्त नहीं हुई है। हाँ, उन्होंने देश के सामने एक नैतिक

चुनौती पेश की है। माफिया हमारे देश के जीवन में और उच्च वर्ग में किस तरह फैला हुआ है, उनका पर्याय उपाधने ही डोलची को अवश्य सफलता प्राप्त हुई है। यह सफलता भी कोई कम बल नहीं। माफिया के विनाश को करने का नैतिक साधन ही अन्तः-घटन में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। एक ओर डोलची ने कान्ति, उपेक्षित और गरीब जन की हानि जवाब को धारण की तो दूसरी ओर उच्च वर्ग की आर्थिक खोटाहाट को भी उपाय। पर दुर्भाग्य से उनके पीछे जन-आन्दोलन सदा नहीं हो पाया है। उनको न तो समाज-वादीयों का समर्थन है और न उपवादी युवा-समाज का। यहाँ हमारे आन्दोलन की सबसे बड़ी कमजोरी है कि हम जन-समुदाय को अपने कार्यक्रमों के प्रति आकर्षित नहीं कर सके हैं। अभी भी शान्तिवादी और समाजवादी समाज-रचना की कार्यो पर आर्थिक-वादीयों के विनाश की 'बहुर' ही मानी जाती है।

सतीश कुमार : साधक इसीलिए युवमो, प्रदर्शनों, धरनों आदि के द्वारा सेवा का जो विरोध शान्तिवादीयों द्वारा किया जाता है, उसके प्रति भी लोगों का अब कोई मार्गदर्श नहीं रह गया है। युद्ध के नकार मान के शान्ति स्थापित नहीं होगी, ऐसा लोगों की लगता है। पर लोगों के डेनिसो डोलची ने और जेन जाये से आखिर क्या अंतर पड़ा है, इस तर्क का भी तो शान्ति-आन्दोलन को सामना करना पड़ना होगा।

हेरो बकरो : प्रतिकारत्मक कार्यवाई ही सब कुछ है, ऐसा हमारा भी मानना पड़ेगा। प्रतिकारत्मक आन्दोलन की शीमाओं को हम जानते हैं। इसीलिए अन्तः-घटन माफिया की ओर डेनिसो डोलची के काम का बहुत महत्व है। पर प्रतिकार भी आन्दोलन की तेजस्विता, दृढ़ता और प्रखरता के लिए आवश्यक है। विना प्रतिकार के चले-चलाये विचार और कार्य व्यापक हो जाता है और विना प्रतिकार के रचनात्मक कार्य भी एगोनी सेवा-कार्य या निरक्षर-कार्य बन जाता है। अतः

भोर में थी। सर्वोदय का काम कुछ बमबोर ही हुआ था। अतः मन में डर लग रहा था। पिनिरि के पहले दिन जडवरता बाहर में आम सभा की गयी। साधर प्रवेश के उपमुख्यमत्री और इसी मिले के लोकप्रिय हरिजन राजभमश्री भी महेन्द्रनाथ, इन लोगों ने शामनाल के सम्पर्कन में महुती सभा में भाग्य लिया। उसका बहुत अच्छा अवसर तोषो घर पड़ा। गाँव-गाँव के हरिजन इन्हे देवता की तरह मानते हैं।

१० तारीख की सुबह १० टोलिदा पल पड़ी। जिला सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष सयन्धी सुरजि सेव घर्मा, बम भोर में, तोतो एक टोली में थे। दो-दोई मौल पामरर जानूर बाम के एक छोटे-से गाँव में इन आये। गाँव एकदम साफ-सुपरा था। हरदम के मुताबिक गाँव के प्रवेश-द्वार पर नाक बन्द नहीं करनी पड़ी। इस क्षेत्र के बन्दाधर गाँव ऐसे ही रचबू पाये गये। आलूर में एक-दो किसान थे छोड़कर बाकी सब छोटे-छोटे किसान हैं। पू० बिनोबाजी की पदयात्रा के समय यहाँ के बड़े भूमि मालिक श्रीमन्तराव ने १३० एकड़ जमीन भूमिदान में दी थी। श्री अम्बरदास के पूर्वज महापात्र के रहनेवाले थे, लेकिन घर में कोई भी मराठी जाणया नहीं है। सब लोग बड़िया तेलुगू बोलते हैं। तेमगाना में जगह-जगह महाराष्ट्रीयन शासक मिले जा पुरे तलपू हो गये हैं। पैकवाओ के जमाने में कभी ये लोग यहाँ आये थे। श्री अम्बरदास ने जो जमीन भूदान में दी थी उसका बँटवारा हो चुका है। इस गाँव में कुल ३४ आवाता है। सब धान-दालियों ने प्राग्दान-धन पर हत्याधर कर दिये थे और अपनी बीसवाँ हिस्सा भूमि भी भूमिहीनों में बाँट दी थी। कुल १५० एकड़ भूदान यहाँ मिला था। परन्तु जमी भी चार भूमिहीन यहाँ पैप थे। इसलिए हमने श्री अम्बरदास से कहा कि गाँव के लोगों से और बीस एकड़ भूमि प्राप्त करने, जिससे गाँव में कोई भी परिवार भूमिहीन नहीं बचेगा। आगने जो पहले ही छेड़ हिस्से से भी ज्यादा भूमि

दे दी है। यह बँट भी चुकी है। आज हम उनकी फसल भी अपनी बालों से देखा थाये है। अतः आपको धन्यवाद। पर चलिये, धीरों से माँगिये। नोकवान श्री अम्बरदास ने सुरत जवाब दिया—

“महो, आज धीरों के पाव भूमि नहीं माँगियोगा। गाँव में सबको छोटे-छोटे गरीब किसान हैं। इस वर्ष सम्पूर्ण आग्न में अकाल भी है। मैं ही आपको और १५ एकड़ जमीन देता हूँ।” हमने कहा, “आपकी उदारता के लिए धन्यवाद। लेकिन-औरी को भी कुछ-कुछ भूमि तो देनी ही चाहिए। उसके बिना ग्राम-दान कैसे पूरा होगा?” हम उनके साथ गाँव में पूरे और उनके चर्चा होकर तब हुआ कि बन्दा करके अपने साल गाँव की ओर से प्राग्वासी पाँच एकड़ भूमि खरीदकर देंगे। इस गाँव में प्राग्वासा का सगठन हुआ।

तीन दिनों में हम चार गाँव पूरे। सब गाँवों में कहीं कम कहीं ज्यादा भूमि मिली और उष्ण समय कुछ भूमि का बँटवारा भी हुआ। शामसभा, प्राग्वासा-वि-वेत्ता का हर गाँव में सगठन सडा किया गया। सभा में लोग खूब आते थे। घर-घर से बहने भी जाती थी, गोद में नहने-नहने बच्चे, बदन पर धोड़ने के लिए कुछ नहीं, फिर भी वे साक्षण के नीचे घण्टी टण्डी में बँठती थी और बड़े ध्यान से शान्तिपूर्वक सब बातें सुनती थी। रिक्तों में उत्तर हिन्दुस्तान की अनेका स्वतन्त्रता-प्राप्ति ज्यादा विचार दी। सभा में बहनें बिनकुल सामने आकर बँठती थी और चीखे भाई लोग।

भूमिहीनों में भूमि की भूख भयकर है। हम लोग घरबारा से गाँव में पहुँचने के बाद परिवारों से थोड़ी बात करते थे और बाद में घर-घर जाकर उनका कुछ-कुल पूछते थे। लोगों में जतना उत्साह और हमारे बारे में इतनी उत्सुकता थी कि वो-वो लोग (तिरुपा, पुष्प, बच्चे) हमारे साथ-साथ चलते थे। दिन भर हमें घेरे रहते थे। भाग्य हम जानते

पड़ते थे। बुधमिले के नरिसे ओर तैय कीले हुए टूटे-भूटे तेलुगू शब्दों में काम चलाना पड़ता था। अतः न हम उनके खूबकर बाउ कर सकते थे न वे हमसे। घर-घर में हमने वेला भीषण साक्षिय और भवाणक बेहारी। अतः न के कारण जमीनें गरीब लोग आम्नील गर अपना पुनारा कर रहे हैं। हाथ पर हाथ घरे बैठे संकड़ो लोग काम के अक्षा में खाली बँडे हँ। सब ओर से एक ही पुकार ‘हमें नाम चाहिए, जमीन चाहिए।’ पर बने सुनेगा इतनी पुनार! क्या प्तागिण कमोशन की पुर्मत है इनकी ओर देखने की, किन्हीने अपने काम बन्द कर दिये हैं? क्या उनके कामों में मरीचो का यह बरण रदन पहुँच सकेगा? मान्य नहीं, खराबन के पन्थीस साकों में वो अभी टक नहीं पहुँचा है। तहाँ वो क्या बेकारी को बड़नेवाली मोनगाएँ और आन का शिक्षण चलता रहता?

‘हम सबको भूमि चाहिए। आज ज्यादा नहीं दे सकते तो एक-एक एकड़ दीजिये। जीवन के लिए कुछ तो साधन कीजिये।’ धुपुलकी गाँव के भूमिहीन बह रहे थे। २२ एकड़ भूमि यहाँ मिली। राउ की सभा में उसका बँटवारा हो रहा था। इनकी ही भूमि के लिए ही पणाल भूमि मिली थी। हरदम की तरह अलबोदय की बात भाई सुरजिजी से रही थीर बागों लोग अपना नाम बास में ऐसी अपील की। उसके बन्दा में भूमिहीन बोल रहे थे। राउ की सभा में भाषी समझावे घर भी वे नहीं माने। अउ तूतरे दिन सुबह हमें खतना पड़ा। फिर बँडे, फिर समझाया। नारी समझाने के बाद उन्होंने अपने से से जो ज्यादा गरीब थे, बिन्दना परिवार बढ़ा का ऐसे उस नाम दिये और विधिवत् उन्हें भूमि दी गयी।

हमारे यहाँ साधारणतः एक परिवार में पाँच लोग के हियाव से दम बरतेंगया

सोनार वांगला

क्षेत्रफल, जनसंख्या और साधन-साधनों

अज्ञान करते हैं। पर यहाँ बड़े शिक्षा के काम नहीं देना। यहाँ प्रति परिवार १०-१२ व्यक्ति पढ़ने पढ़ने हैं। उनके दो मुँह बाल है—शालावा परिवार और अर्धक बच्चे—परिवार-निर्भर साधन यहाँ नहीं पहुँच है।

इसके बाद दूसरी टोन्गो से सन्तर्क करके उनकी कठिनाइयों दूर करने का प्रयत्न करने की दृष्टि से हम चार दिन की यात्रा से शुरू हैं। त्रिपल टोन्गो के साथ सम्पर्क हो गया। जगन्नाथ टोन्गो में पाया गया कि कार्यकर्ता भूमि भीतने की दिग्गम नहीं कर रहे हैं। जब उन्हें साथ लेकर कुछ शाखाओं से भूमि प्राप्त की गयी। त्रिपल-नरिन से माया, खबने रिवा, निरी से नम, विरी से जगन्नाथ। एक ने भी ना नहीं कहा। यह देखकर कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ा। वे बाद में पढ़ने से भूमि माँगने लगे और उन्हें भूमि मिली थी। सनरह-बडाह टोन्गो में के जिन से टोन्गो से भूमि माँगी थी, उन सबकी भूमि मिली।

थी नरियंगू रेड्डी पुनर्वासियों के बड़े असौकर है। वे खुद विद्यालय ही और बंगला घेरी करते हैं। इस क्षेत्र में दरकी लेडी सर्वोत्कृष्ट मानी जाती है। यहाँ गाँव आसनों बने, यहाँ ग्रामपंचायत ही अब शिबिर में ही करने गति जाने का नियमन उन्होंने हमें दिया था। रात में खाद खाई हुई। सुनान में १ एकर भूमि इसके पदों के दो एक से। गाँव में भूमिहीन होने से हमने उनसे फिर से भूमि माँगी। उन्होंने कहा, 'अच्छी बात है। मेरे पास १२५ एकर भूमि है। सामान्य के लिए बीघाई दिग्गम बना यकरो है तो मैं सात-आठ एकर देने के लिए तैयार हूँ।' हमने कहा, 'आठ नहीं, एक एकर दीजिये जिससे हम दो भूमिहीनों के परिवारों में बाँट सकेंगे।' एक टांग भी न सोचने हुए 'तथाभ्यु' कहकर उन्होंने अपनी सम्पत्ति प्रयास की और छोटे भाई के पास पर की १२५ एकर भूमि में से भी और जमीन दी। सामान्य का पठन हुआ।

१. क्षेत्रफल, जनसंख्या

स्वतंत्र बंगला देश का क्षेत्रफल १,५६,७१० वर्ग किलोमीटर है। परिवर्षी परिष्कारन की जगला क्षेत्रफल में कम होने हुए थी इसी जनसंख्या अधिक है। परिवर्षी परिष्कारन का क्षेत्रफल ७,१४,६३२ वर्ग किलोमीटर है।

सन् १९६१ की जनगणना में (पूर्वी परिष्कारन) स्वतंत्र बंगला देश की जनसंख्या ५ करोड़ ० लाख ४० हजार २२५ थी, जब कि परिवर्षी परिष्कारन की जनसंख्या ४ करोड़ २० लाख ५० हजार २७० थी। आज स्वतंत्र बंगला देश की जनसंख्या ७५ लाख (७५) करोड़ है।

२. प्रशासकीय भाग

प्रशासकीय दृष्टि से इसको चार विभाजनों में बाँटा गया है, जिसमें १७ जिले हैं।

१—दादा डिबीजन —दाका, मेमनसिंह, फरीदपुर

२—पटणा डिबीजन :—पटणा, कोमिल्ला, नोमालानी, राजामन्नी, किलहट

३—राजसाही डिबीजन :—राजसाही, दोनापुर, मोषा, सैटपुर, रणपुर, पटना

४—सुनता डिबीजन :—जैमोर, सुनता, कारिमान, बकरगंज दाका प्रमुख सहर है, साथ ही राजवली है। इसकी जनसंख्या २० लाख है।

आर्थिक आधार

स्वतंत्र बंगला देश अर्थिक दृष्टि से

एक क्षेत्र में हमने जाना कि यहाँ के समय में सूत-बापूत का भाव बहुत ज्यादा है। हमारी टोन्गी में एक स्थानीय हरिजन बच्चे थे। हमारे साथ भोजन करने के लिए उन्हें हमने विनया लावह दिया पर वे नहीं माने। उन्होंने हमारे साथ बैठकर न कभी भोजन किया, न पर-पर्यटन के

स्वयंपूर्ण है। स्वतंत्र बंगला देश के अनुमानित बजट में राष्ट्रीय आय १५३ करोड़ ३४ लाख २० तथा खर्च १२२ करोड़, ७२ लाख रुपये दिखाया गया है, जब कि पिछली सन् ६९-७० की बजट-रिपोर्ट में १० करोड़ ६२ लाख रुपये की बजट दिखायी गयी है।

यह देश कृषि-प्रधान होने के कारण पर प्रतिक्षण जनता सेरी पर ही आधारित है। खासत तनाय मुख्य खाद्यपद है। बाजार का वार्षिक उत्पादन १ करोड़ टन है। इसके अतिरिक्त अन्य फसलों का उत्पादन निम्न अनुसार है— जूट (गन्ने) का वार्षिक उत्पादन ७६ लाख टन, गेहूँ ८५ हजार टन, दाने ४० हजार टन और भाव का उत्पादन २९ हजार टन है। मछली का अनुमानित वार्षिक उत्पादन लगभग ५५ हजार मेट्रिक टन है। ६ हजार ५ ली मन गहूँ का उत्पादन होता है।

विश्व के समूह युद्ध-उत्पादन का पर प्रतिक्षण भाग हम देश का है। सन् १९६३ में लगभग २४ लाख एकड़ में पटना जगला प्रायत वा और दूसरा उत्पादन १२ लाख २३ हजार टन था।

मनो में इमारती लकड़ी का उत्पादन प्रयास है। प्रतिवर्ष १ करोड़ ५० लाख घनफुट इमारती लकड़ी निर्यात की जाती है। विद्यालयों में तेल की घाटी है। १,०९५ औद्योगिक प्रतिष्ठानों, २२ बपट्टी को मिलों, ७ चीनी के कारखानों, १० विद्यालयों के कारखानों, ७ शीत के कारखानों, १,०० हीनरी की फैक्टरी, →

उन्हें साथ देने की ही नहीं। हर गाँव में बाघी हरिजन परिवार रहते हैं। वे बहुत गरीब होते हैं। उनका अत्यन्त कम करने के लिए गाँवों में गाँव को लोड से ही कुछ भूमि उन्हें सामूहिक रूप से जोतने के लिए दी जाती है। वे भीय फल जगत जगत में बाँट देते हैं।—सर्वेस

बंगला देश खोकर पाकिस्तान क्या खोयेगा ?

१५ लाख आकर हो गयी है ।

बंगला देश एक वास्तविकता हो गया । इसके बन जाने से पाकिस्तान का आर्थिक आधार बहुत कमजोर हो जायेगा । हो सस्ता है पाकिस्तान बन एक अल्पसंख्यक देश हो जाना ।

बंगला देश से पाकिस्तान को हर साल १५५ करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा निर्यात थी, जो पाकिस्तान के पूरे निर्यात का ४८ प्रतिशत है । पाकिस्तान का पूरा राष्ट्रीय उत्पादन ७,७२२ करोड़ रुपये (१९७०-७१) है । जिसमें ४,२९२ करोड़ रुपये अर्थात् ५७ प्रतिशत बंगला देश का हिस्सा है । बंगला देश के स्वतंत्र होने से पाकिस्तान अपनी वार्षिक आमदनी (राजस्व) २६८ करोड़ रुपये के पाटे में रहेगा । यह आमदनी उठे चुन्नी, बेन्द्रीय आवकशहरी, आयकर, नगरपालिकाकर, बिजलीकर, कृषि और सम्पत्तिकर के रूप में बंगला देश से हासिल होती थी ।

रुपये हीनी थी । इस आन्तरिक व्यापार की स्थिति ऐसी हो गयी थी कि बंगला देश पाकिस्तान की उन्निवेशिक मंडी बन गया था । इस तरह पाकिस्तान और बंगला के बाजार पर पनाबी जूनीबादियों का बचना था ।

इन सब बातों के कारण पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था कमजोर हो जायेगी । वही भी बंगला देश से ८ महीने की लड़ाई के कारण पाकिस्तान की हर माह ४४ करोड़ रुपये का घाटा हुआ है ।

पाकिस्तान का औद्योगिक उत्पादन बहुत नीचे गिर गया है । बीजों को बीजों बरतरी है ; निर्मात्र संकुचित होकर रह गया है । इसके कारण पाकिस्तान की सुरक्षित मुद्रा, जो एक साल पहले ३९ करोड़ ४० लाख डॉलर थी, अब घटकर २ करोड़

एना सम्भाव्य होना है कि पाकिस्तान को अब तक जो घाटा हो चुका है और बंगला देश निर्यात जाने से अब जो घाटा होगा उनके कारण वह जानी संशिक मजान की सम्भवत नहीं सनेगा, जिस पर ३४० करोड़ रुपये सावधान रखे हैं । उठे सम्भावने के लिए पाकिस्तान को अपनी आमदनी पर ७० प्रतिशत खर्च करना होगा । जिसका अर्थ यह है कि उसे अपनी सभी विनाश-योयताएँ बंद करने होगी । इसका प्रभाव यह पड़ेगा कि पाकिस्तान को जन-सुख और अर्थ-व्यवस्था के बीच एक बड़ी खाई पड जायेगी, और पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था बाल तक अपने दोरतो के दान पर निर्भर रहना होगा । कोई दोस्त दान दौ ही नहीं देता ।

(८-१२-७१ 'इन्टरनैशियल टाइम्स' से)

२५वाँ संशोधन और मूल नागरिक अधिकार

भारतीय संविधान के २५ वें संशोधन का निम्नलिखित प्रभाव होगा —

१—कैब्ररीय संसद या राज्यसभा में पास किये हुए कानूनो पर, जो संविधान के निर्देशक तत्वो (गारंटीड प्रिंसिपल्स) को बाधित करने के लिए होंगे, म्यामालयो (उन्स-उन्सतम) को विचार करने और फैसला करने का अधिकार नहीं रहेगा अर्थात् उन कानूनो को पारितानयो में चुनौती नहीं दी जा सकेगी, अथवा १५, १९, ३१ में दिये गये हैं) के विपक्ष हो ।

२—मुजाबजा (कम्प्लेसन) के बदले रकम (एवाउट) का खंड व्यवहार में लाना जायेगा, अर्थात् मुद्रावन्ने का प्रत्येक न्यायालय के विचार के अधिकार से बाहर होगा ।

३—धारा १९ (१-एस) का प्रभाव उच नज़र पर नहीं पड़ेगा जो संशोधित धारा से प्रभावित है ।

४—कुनियारी अधिकार, विधान और पर संशुति रखने का अधिकार, निर्देशक तत्वो के बाधित होने के रहने में रहतप न बनें, यही सम्बन्धों सम्बोधन का उद्देश्य है, और सरकार यह चाहती है कि म्यामालय उन सम्बन्धों के सम्पन्न में, जो सर्वजनिक कामो के लिए ली जायें मुद्रावन्ने के चक्कर में न पड़े ।

२५ वें संशोधन का त्रिन धाराओं पर बरत पड़ेगा ये १४, १९ और ३१ हैं । १९ की धारा तो बहुत महत्व की है क्योंकि उठमें निम्नलिखित अधिकार दिये गये हैं, जैसे विचारों को प्रगट करने की स्वतंत्रता, साहित्यपूर्ण हंग से और बिना ताल के एकत्र होने का अधिकार; संगठन बनाने का अधिकार; भारत के विरुद्ध भी हिंसे में स्वतंत्रतापूर्वक आने-जाने का अधिकार; भारत के विरुद्ध भी हिंसे में रहने-बसने का अधिकार; सम्पत्ति प्राप्त करने, रखने और बेचने का अधिकार; कोई भी देश, पन्था, व्यापार करने का अधिकार ।

पाकिस्तान में बंगला देश खोकर व्यापारिक व्यापार में सारे सत करोड़ बंगालियों की मंडी खोयी है जहाँ से उठे २५८ करोड़ रुपये प्राप्त होते थे । यह प्रतिश पाकिस्तान की बंगला देश में परिचामी पाकिस्तान की उद्योग की हुई बीजो को बेचकर होती थी । पाकिस्तान बंगला देश में मशीनों, यन्त्रो, हाथ की बनी हुई चीजें, कपास, सीमेंट, लकड़ी, कर्द, तम्बाकू और सूती कपड़े बेचना था जिससे १६९ करोड़ रुपये की आमदनी होती थी । और, यह बंगला देश से चाय, लूट के सामान, चमड़ा और कपास लाना करता था जिसकी बीजम ५२ करोड़

—२९ लूट मिलें, २८ अर्थमूलनियम की मिलें, १ कानून का कारमाना, १ सीमेंट फैक्टरी, एक टाट कारमाना, एक लूट प्रमाण के साथ यह स्वयं पूर्ण देश है । इतना सब है, लेकिन गरीबों और विधवाओं की भयकर है जिसका मुकामिला रक्तम बंगला देश की जनता और सरकार को सब

१५५ पड़ेगा । ●

मराणा म नया सम्भावनाएँ

विनोबाजी के नाम थी जगन्नादनजी का पत्र

महारा जिनके मरीना प्रयास में १० दिन बन्दे हुन्वय मिले। मरीना में ग्रामदान-पुष्टि में अच्छी प्रगति हुई है और कृषि बन्द के लायक बागावट बचा है। १० दिन में १६ गाँवों में गए थे। एक गाँव छोड़कर बाकी सभी गाँवों में ग्रामसभाएँ स्थापित हुई हैं। बीघा-नट्टा सबकी देना चाहिए, ऐसा विचार सामान्य तथा सभी गाँवों में फैला है। २-३ बीघा के छोटे विद्यालय भी बीघा-नट्टा प्रसन्नता से दिये हुए हैं। १६ गाँवों में से १०॥ बीघा जमीन २११ भूमिहीनों को दी गयी है। उनी गाँव में पहले से भूदान में प्राप्त ११२ बीघा जमीन १६३ भूमिहीनों को बँटी गयी है। इस तरह मरीना प्रखण्ड में करीब २०० गाँवों में भूदान की बीघा-नट्टा की जमीन सेवकों भूमिहीनों में वितरित हुई है। छोटे-बड़े विद्यालय, सड़के भूमि दी है। महेन्द्र-मार्ग जैसे साहयकाय कार्यकर्ता के साथ जनता का आधिकारिक सहकार इस सभ्यता का मुख्य कारण है। बिहार में सहृदयता जिनके अर्थित करीबी है। लेकिन जनता सजब व उदार मनोवृत्त की है। देने के मनोभाववाले बिहार में, साहकर सहृदयता जिनके में, है। पुष्टि-नाम के लिए माने सहृदयता नहीं पुनः, यह अच्छी महत्त्व करता है। नैदान की सीमा पर, सरकारी नौकरों में उपस्थित सहृदयता का आगे टिक ही पुनः बचा है। 'मरीना-द' से पुष्टि का प्रारम्भ किया है। मुख्य ग्रामदान से काये का पुष्टि-आन्दोलन सहृदयता जिनके में पुनः है, यह सिद्ध हुआ है। १६ गाँवों में १०० गाँवों में मरीना जमीन १० गाँवों में बीघा-नट्टा दिया है। सभी एक भूमिहीने बीघा-नट्टा नहीं दिया है उन गाँवों को भी खुद हीकर देने का बागावट मरीना में बचा है।

बीनी नदी के प्रसार रूप अच्छी जगहों मिट्टी यहाँ की है। लेकिन बाढ़ में इनकी फलन बरवान होनी

रहती है। घर भी जमीन में डूब जाते हैं। इस वैज्ञानिक प्रयोग को भी शास्त्र-वचन से सहने रहने की रस लोगों की आदत हो गयी है। भूमिहीनों द्वारा निर्गामी हुई वं घा-नट्टा की बहुत सारी प्रयोग को बीनी नदी से लेती है। जैसे विनारे की जमीन देने की मनोवृत्ति आम है, पर अब उसके बदले में दूसरी प्रयोग देने की भी मनोवृत्त बन रही है।

ग्रामसभा के द्वारा भूमिहीन घरों में अच्छी आशुत जायी है। ग्रामदान-आन्दोलन में उनका विरवास भजन, मान आदि के रूप में व्यवहृत हुआ है। आन्दोलन के प्राय-गोच के बसाह से गाते हैं। आ-शोलन के नई-नये नारे भी जनता ने निर्माण किये हैं। ये सब आन्दोलन के अच्छे बस हैं। कई ग्रामसभा में व्यवस्था, मनो पर की जिम्मेदारी जवानों ने उठायी है। ये सब अपने ग्रामदान-आन्दोलन के अनिवार्य के शुभ लक्षण हैं, ऐसा महत्त्व बर में सम्पादित हैं। १० दिन की यात्रा में ग्रामदान-आन्दोलन से जाचगिन करीब १०० नववहानी से मिलने का मोजा मिला। प्रखण्ड में और जगह नववहान होये, ऐसा लगता है।

मुख्य ग्रामदान के अनुसार (१) ग्रामसभा-गठन (२) बीघा-नट्टा भूमि-वितरण, (३) ग्रामसभा को भूमिगतित्व का सम्पूर्ण समर्थन, (४) ग्रामसभा-महत्त्व की योजना—मरीना प्रखण्ड में शुरू हो जाने के बाद जागे की आवश्यक योजना की राह में देता रहे है। ग्रामसभा की और बड़ होना है। बीघा-नट्टा की जमीन और निर्माणनी है। येरी यात्रा के २६ गाँवों में से ३ गाँवों में ही ग्रामसभा दूरस्था हुआ है। अन्य ग्रामसभाएँ जनवरी की फलन-जटनी में ग्रामसभा जया कर लेने की कोशिश में हैं। एक-दो माह में पुष्टि के अगले बन्द के लिए मरीना प्रखण्ड तैयार हो जायगा। अपनी बुद्धावस्था में भी मरीना सेवा करनेवाले 'बीघा-नट्टा' छोड़ने का

का मार्गदर्शन सहृदयताजिनके के लिए प्रयत्न हुआ है, यह भगवान की कृपा ही है। ३ दिसम्बर से जनता उनकी परमाणा का अनुभव करीकर पर बसायेगी। (यात्रा चल रही है) हमसे ग्राम जनता को बचपन शिक्षण मिलेगा। इसके साथ जाने (१) ग्राम-सभासभा, मन्त्री, (२) ग्रामसभा-संविधान, (३) ग्रामसभा-संविधान, ग्रामसभा के शिबिर बसाये जायेंगे, जिसके कारण हर गाँव में ग्राम-सभासभा के गिण्टकार तैयार हो जायेंगे। १-२ माह में ऐसे शिबिरों का मरीना प्रखण्ड में सिद्धिना प्रारम्भ हो जायगा, ऐसा विचार है। कोपी-विधि तैसी सम्पादन करने हय जिम्मेदारी को उठायेगे, ऐसी संघटना रखी गयी है।

शिबिर के साथ ग्रामसभा द्वारा जेनी का विकास, गोपालन, ग्रामोद्योग आदि की सुश्रुता होनी चाहिए। यहाँ आज भी जमीन विज्ञान के अभाव से पिट्टी हुई, पुरानी वृद्धि से चल रही है। जेनी की मुख्य छोटी-मोटों वैज्ञानिक पद्धतियों को भी ध्यान लेने से सिद्धता उभारने हो सकता है। मरीना प्रखण्ड में भंड-पावन है। धूम का मकलन निवारणकर बाहर भेजा जाता है। जूट भी बाहर भेजा जाता है। व्यापार में कोपी जनता का बहुत ही योगदान दिया जाता है। ग्रामसभा द्वारा जनता जागृत होकर एक होगी, तब इस तरह का योगदान रोक सकते हैं। गाँवों को जनता के पास वर्जित जमीन नहीं है। हर गाँव में ३० प्रतिशत जमीन बाहर में रहनेवाले या बड़ी बाहर के मानिक की है। इन जमीनों में बरानकार देने-वालों की बाबूल के अनुसार उदाहरण का हिस्सा नहीं मिलता है। इन सब प्रश्नों को हल करने के लिए मरीना प्रखण्ड में बागावट और जगहों का निर्माण हो रहा है। सहृदयता जिनके में मरीना मार्गदर्शक, प्रगतिशील प्रखण्ड रिहाई देना है। महाराज भारत को सम्पन्न करायेगा।

—एस० जगन्नादन
दिनांक २२-११-७१
(मूल अभिन के। अनुवादक: विवेकानन्द)

कानपुर नगर के दैनिक मजदूरों का सर्वेक्षण

एक मार्च के अन्तिम सप्ताह में सर्वेक्षण का कार्य विद्यावाचस्पत्यार नगर मन्त्रीय मण्डल का गठन हुआ। १९ मई को ७० प्र० सर्वेक्षण समान के अध्याय स्वामी कल्याणचन्द्रजी तथा मन्त्री भाई महाशयिरी सिद्धीजी की उपस्थिति में मण्डल की कार्य-कारिणी की बैठक हुई जिसमें अन्तःसर्वेक्षण के विचार से बन्धुपुर नगर के दैनिक मजदूरों की समस्याओं के हल का काम उद्योग का निरन्तर किया गया। एम हेतु एक मजदूर-समितिको का अन्तःसर्वेक्षण किया गया। समिति ने सर्वेक्षण मजदूरों की आवश्यकता का परिचय करने के लिए मजदूरों का सर्वेक्षण-कार्य किया। समिति के सदस्यों में सर्वेक्षण नगर के विभिन्न थोकियों, बच्चों पर भले होनेवाले मजदूर भाइयों से व्यक्तिगत सम्पर्क कर सर्वेक्षण सर्वेक्षण विवरण समिति के सदस्यों के समत रखा। सर्वेक्षण-कार्य पूरा के प्रथम सप्ताह से विभिन्न रूप से शुरू किया गया। प्रथम मजदूरों से सर्वेक्षण-कार्य पर विभिन्न विचार। सर्वेक्षण का कार्य १५ अक्टूबर से कर कर दिया गया। दो सप्ताह बाद ही जिनों की एम सर्वेक्षण-अर्थ में समिति के सदस्यों एक अन्य सर्वेक्षण कार्यवाही का प्रथम दिवस हुआ मजदूरों से सर्वेक्षण किया गया १५ मजदूरों से सर्वेक्षण सर्वेक्षण-कार्य द्वारा निरन्तर किया गया।

मजदूरों से सर्वेक्षण तथा सर्वेक्षण का कार्य मुख्य श्रमिक कौशल, शोशीलता कायदा, नकारण, हत्या, भाग्योन्मी के मजदूर अर्थ पर किया गया।

शोशीलता कायदा के मजदूर-अर्थ की अर्थ केन्द्र मान कर सर्वेक्षण अर्थिक स्थिति समायोजनी है। अर्थिक सर्वेक्षण, सर्वेक्षण-कार्य करके मजदूरों में जागृति कायदा संवर्धन करने का प्रयास किया गया। परिणामस्वरूप एक मजदूर भाई

ने निम्न में अन्तिम-रिक्त पर लक्षणक कायदा दुर्गम में काम किया। एक मजदूर ने सर्वेक्षण का कार्य करके उद्योग अर्थ पर मजदूरों की समस्याओं का हल करने हेतु शिष्टी। १५ अक्टूबर को सर्वेक्षण-समाप्ति मजदूर भाइयों ने स्वयं बताया। यह उल्लेखनीय है कि १५ अक्टूबर पर कई मजदूर भाई अपने घर को छोड़कर सर्वेक्षण में सम्मिलित हुए और उन्होंने सर्वेक्षण में अपने विचार रखे।

सर्वेक्षण के दौरान जिन मजदूर भाइयों से सम्पर्क हुआ उनमें से कुछेक ने कहा ही रोजक उद्योग दिने जिनें यहाँ निरन्तर अन्तिम न होगा। प्रस्ताव पर सर्वेक्षण एक मजदूर भाई से जब उनके घर सुधारने के बारे में अन्तिमकी कार्यवाही की उद्योग किया, 'पत्राचार सर्वेक्षण। एक मजदूर भाई से जब पूछा गया कि शहर में मजदूरों को करने आने ही तो उद्योग किया कि 'गोबिन्द नदी लगना था—शहर पहुँचने के शीघ्र में आने से। जब जेब में ईसे नदी रहे ही थोड़ा पर मजदूरों के लिए अर्थ हुआ पत्रा।' एक भाई से जब मजदूरों की समस्याओं पर सहानुभूति पत्रों की गयी तो उत्तरा कहा गया, 'शहर, तुमने कहीं अच्छे ही बरतवा देश के कारणाओं है जिनके अन्तिम-रिक्त की समस्याओं की समस्या-रम चिन्ता की है, हमारे और तो न कोई देखने-समय है।' एक मजदूर से जब शहर आने कर कारण पूछा गया तो उत्तर दिया, 'मुझे तो शहर में सामा गया है।' और अर्थ करके हुए उन्होंने कहा कि 'मुझे सर्वेक्षण के अर्थ में सुविधा कायदा नहीं थी, सब पर अर्थिक की सेवा ही थी। जब मजदूरों का सर्वेक्षण के लिए काम की उद्योग में थोड़ा थोड़ा था सामा है।' एक मजदूर से जब अर्थ द्वारा सर्वेक्षण के शोषण की कार्यवाही की गयी तो उत्तर दिया, 'अरे,

सर्वेक्षण कायदा तो मजदूर ही मजदूर की शोषण कर रहा है। सामान्य की तो सामान्य रूप में होविद्यार मजदूर काम का टार में लेते हैं और मजदूर भाइयों से काम लेकर मजदूरों का यही सर्वेक्षण नहीं करते।'

सामान्यतया कानपुर नगर में जिन सर्वेक्षण पूर्व श्रमिक मजदूर काम की उद्योग में रहते हैं, जो नगर के विभिन्न मजदूर अर्थों से अर्थों से सम्पर्क रखते हैं। यह सर्वेक्षण सर्वेक्षण के अर्थों पर सर्वेक्षण-कार्य ही रहती है। जिन अर्थों में गयीं में काम नहीं होता है उन अर्थों में सर्वेक्षण दुर्गम से भी अर्थिक ही जाती है तथा जिन दिनों में गयीं में काम होता है, यह सर्वेक्षण पत्र जाती है। नगर के विभिन्न शोषणिक प्रणितियों के अर्थों में व अर्थ होने से भी एम सर्वेक्षण पर प्रभाव पत्रा है। मजदूर अर्थों को एक ही अर्थों से सर्वेक्षण नहीं रखते हैं। वे प्रायः नगर के विभिन्न मजदूर अर्थों पर काम की उद्योग में पूरा करते हैं।

कुल ४२५ दैनिक मजदूरों का सामान्य विवरण सर्वेक्षण-कार्य पर अन्तिम किया गया जिसके आधार पर निम्नलिखित आँकड़ों मिली —

- १. शोषण दैनिक मजदूरों
- मजदूर २.०७ प्रतिशत, रात्रिक ७.१३ प्रतिशत
- २. सामान्य शोषण काम मिलने के दिन

माह में मजदूरों की औद्योगिक १५ प्रतिशत काम मिलता है। अन्तिम १५ प्रतिशत मजदूरों की काम नहीं मिलता है।

२७.७१% मजदूर विद्यार्थी न होने तथा कुशल पर अर्थिक सेवा होने हैं।

४२.२१% मजदूर विद्यार्थी के अर्थों में रहते हैं।

३१.५०% मजदूर शोषण के अर्थों पर सामान्य अर्थ है। एम ७५.१२% शोषण स्वयं बताते हैं या परिवार के सामान्य अर्थों से है। ६७.११% मजदूर

विवाहित हैं। ३२.१६% मजदूर अविवाहित हैं। अधिकांश मजदूर शहर में अकेले ही रहते हैं।

३. शहर में मजदूरी करनेवालों में मजदूरी करने के निम्न कारण बताये—

- (क) भूमिहीनता या अल्पपरिचय भूमि मालिकी व्यवस्था उद्योगों का अस्वाभाव्य रूप हो जाना। १४%
- परिवृत्त लोगों के कारण १.५०%
- प्राकृतिक प्रकोप १.२५%
- घर से चोरी से माने हुए १.२५%

(ख) २३.१२% बिहीन-पिछी प्रकार के उद्योग-धरो या शान रहते हैं, तथा सावर्जिन-मरम्मत, पेंटर, हनुवाई इत्यादी, बन्दर चर्रा, पम्पों का काम, खूब का काम।

(ग) २५.३१% अमानत पर रोजगार करने के लिए काम चाहते हैं। वेध ५.६९% नोकरी चाहते हैं।

(घ) २४.५८% मजदूर भूमिहीन हैं अर्थात् मजदूरी से ही जीवन-यापन करते हैं।

(ङ) ६६.८२% मजदूर विधिवत हैं (उनमें सशर भी शामिल हैं)।

२७.४१% मजदूर प्रारम्भिक तक शिक्षा प्राप्त हैं।

२५.४१% मजदूर अधिवार हाई स्कूल तक शिक्षा प्राप्त हैं।

७.२९% मजदूर जूनियर हाई स्कूल से अधिक, परन्तु हाई स्कूल से कम शिक्षा प्राप्त हैं।

५.८८% मजदूर हाई स्कूल से ऊपर तक शिक्षा प्राप्त हैं।

००.१५% मजदूर एल्टरमीडिएट तक शिक्षा प्राप्त हैं। वेध ३२.१८% मजदूर अक्षर हैं।

४. शहर में मजदूरी के लिए रहने की क्षमति

(क) ४२.८८ प्रतिशत मजदूर शहर में एक साल से अधिक समय से मजदूरी करते हैं।

(ख) ३७.५ प्रतिशत मजदूर शहर में एक माह में मजदूरी के लिए हैं।

(ग) वेध २०.६२ प्रतिशत मजदूर शहर

में दो माह से ९ माह तक मजदूरी करते हैं।

(घ) २२ प्रतिशत मजदूरी ने धाने को शहर में छोड़े दिन का मेहमान बताया।

उपरोक्त आँकड़ों से यही निष्कर्ष निकला कि केवल ४२ प्रतिशत मजदूर स्वामी रूप से शहर में मजदूरी पर मुस्तफा करते हैं, बाँध ५८ प्रतिशत मजदूर अस्थायी हैं जो कुछ समय तक ही शहर में मजदूरी हेतु रहेंगे। अतः मजदूरों का एक बड़ा भाग स्थिर नहीं रहता है।

५. मिश्र-मिश्र स्थाय के मजदूरों का भाग इस प्रकार है :

१० से १५ वर्ष तक की आयु के मजदूर	४.२%
१६ से २० वर्ष तक की आयु के मजदूर	२४.२५%
२१ से २५ वर्ष तक की आयु के मजदूर	३२.२५%
२६ से ३० " "	१९.५%
३१ से ४० " "	१३.४%
४१ से ५० " "	५.२%
५१ से ६० " "	००.७%
६१ से ७० " "	X X
७० से ऊपर " "	००.१%

६. मिश्र जिलों, प्रदेशों से आनेवाले मजदूरों के प्रतिनिधित्व इस प्रकार है —

उ० प्र० के कुल ३१ जिलों के मजदूर कानपुर में मिले।

- (क) १९.५% मजदूर कानपुर जिले के हैं।
- १.००% मजदूर उज्जैन जिले के हैं।
- ७.५% मजदूर रायबरेली जिले के हैं।
- ६.५% मजदूर फतेहपुर जिले के हैं।
- ५.००% मजदूर इलाहाबाद जिले के हैं।
- ३.७५% मजदूर प्रतापगढ़ जिले के हैं।
- १.८५% मजदूर हरदोई जिले के हैं।
- १.२५% मजदूर लखनऊ जिले के हैं।

(ख) गोरखपुर देवरिया काजमगड बल्ली गोंडा बहाइच फर्रुखाबाद मुन्बानपुर } ३६.७०%

घाटाकी गानेपुर मिर्जापुर } ३७.७०%
 पाटाकी बलिया जौनपुर

(ग) जातौन—हमीपुर बलिया—मलौगड इटावा—आगरा फर्रुखाबाद—सीतापुर गैन्पुरी } ३.५%

(घ) अन्य प्रदेशों से आनेवाले मजदूर बिहार मध्य प्रदेश सिन्धु बाम प्रदेश नेपाल } ४.२० प्रतिशत

७. कुछ विविध जानकारी (क) एक से अधिक मजदूरों ने बताया कि उन्हें छह दिन काम मिल जाता है।

(ख) बहुत से मजदूरों को रात्रि-कालीन विभाग की सुविधा दुकानों, मरानों, बंगलों में चौकीदारों (सुरक्षा) की दृष्टि से मिला जाती है।

(ग) महिला के रहने में रुचि पायी गयी। बहुत से मजदूर भूदान की पत्रिका पढ़ने की इच्छुक हैं।

८. मजदूरों की समस्याएँ

(क) शहर के विभिन्न मजदूर वर्गों में से किसी एक भी मजदूरी के लड़ने होने के लिए स्थान नियत नहीं है जहाँ छोट, ताप, वर्षा से डरती रहता हो सके।

(ख) रात्रिकालीन विभाग हेतु रूक-बसों का प्रबन्ध नहीं। घरेलू भोजनार्थक भी कोई व्यवस्था नहीं है।

(ग) काम न मिलने के दिन कम-से-कम भोजनपोषण व्यवस्था रात में व्यवस्था न होना।

(घ) काम केरु मजदूरी न देने-वालों से सुरक्षा की व्यवस्था।

(ङ) निश्चिन्ता की सुविधा नहीं। काम करते समय दुर्व्यवस्था का शिफारस हो जाने पर कोई छापाका भी व्यवस्था नहीं।

(च) गलत-जब की कोई सुविधा नहीं है।

(छ) बचत के वंशे जमा करने की व्यवस्था का अभाव।

—एवीए सिंह चौहान

पिछले एक वर्ष में
श्री दाताराम मफड़
द्वारा साहित्य-प्रचार तथा सर्वो-
दय कार्य का
प्रशंसनीय प्रयास

पुस्तक-बिक्री	११,३०-०-६७
भाषी आचर-बिक्री	६१६-५०
दैनिकी-बिक्री	१,६६९-१०
शान्ति-वैन-बिक्री	९०३-२०
पत्रिकाओं की बिक्री	४१२-९५
घाहक बनाये	११६
गीतों के	५६
मृदान-ग्रन्थ : हिन्दी	५४
पीपुल्स एज्युकेशन	५
भूमिपुत्र	५

जलसम्पर्क से आब
सर्वोदय पात्र से निभो तथा बाहर से

सम्पत्तिदान निवृत्तों	२०९-२०
हारगणियों के लिए चन्दा करके दिया	
भाषी पीपुल्स एज्युकेशन को	१,२२९-००
पाठकपत्र संजारी को	२,०५७-००
उल्लेखनीय है कि श्री दातारामजी	

—'की आवाज' पत्रिका बनाने का निर्णय किया है।' 'मृदान' तहरीक, ग्रामसभा की ओर से मंगायी जाया है, और उसका नियमित वाचन होता।

सिंचाई एवं पेय जल

हेतु चापाकल की आपूर्ति

बिहार रिलीफ कमिटी शाखा कार्यालय कोली द्वारा ग्रामीणों को सिंचाई एवं पेय जल के लिए चापाकल उपलब्ध कराने का कार्य श्री अनिरुद्ध प्रसाद सिद्ध, प्रभारी एवं श्री गंगा प्रसाद सिद्ध अभियंता, बिहार (राज्य) कमिटी के मार्गदर्शन से किया जा रहा है। बिहार सरकार द्वारा

सुदूरवर्षा में भी सर्वोदय की निष्ठा से विचार-प्रचार का कार्य पेशत पूरा-पूरकर निरंतर जारी रहते हैं। अनेक एक व्यक्ति का यह प्रयास अद्युत तथा प्रेरक है।

भूखसुधार

१. 'मृदान' के अंक ११, १३ दिसम्बर '७१ में पृष्ठ १६० पर 'प्रबुद्ध स्वराज्य सभा की बैठक में श्री जयप्रकाश नारायण' पढ़ें। श्री जयप्रकाश नारायण छूटें टाइट में होने से शेषक के नाम का अर्थ होता है।

२. उसी अंक में अन्तिम पृष्ठ पर सची के पत्र में ऊपर से चौथी पंक्ति में १ जनवरी १९७३ के बदले १ जनवरी १९७२ पढ़ें। भूल के लिए क्षमा।

दैनिकी १६७२

प्लास्टिक के विज्ञान-संकेत आचरण के अन्तर् प्रकाशित यह आचरण बड़ा ही उपयोग की है।

साइज ५" X ७" मूल्य रु० ४०० प्रति
साइज ५" X ९" मूल्य रु० ५०० प्रति
५० प्रतिपत्र मंगवाने पर दैनिक पढ़ें।
१ प्रति के लिए आक-व्यय रु० २-५० अथवा।
स्टाक समाप्ति पर है। सीधे मंगायें।

सर्वे सेवा संघ प्रकाशन
राजपाट, वाराणसी—१

विभाग की ओर से रानीको प्रसन्न की लघु सिंचाई योजना-अन्तर्गत सिंचाई के लिए एक हजार तथा पेयजल के लिए तीस ही आठ चापाकलों की स्वीकृति मिली है। प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्रामसभा के माध्यम से सिंचाई के लिए ३५० लघु ट्यूबों तथा पेयजल के लिए ८० स्प्रिंकलरों के अर्ध तक आवेदन पत्र प्राप्त हुए हैं। इनमें से नवम्बर '७१ तक आगवहीन करके ५२ चापाकल हरितन, आदिवासी परिवारों को मुक्त तथा अन्य जाति के लोगों को ५० प्रतिशत सीमा तक सेकुर दिखे जा चुके हैं। रोप चापाकलों की आपूर्ति सीधे करने की व्यवस्था की जा रही है।

रंगसा देश

विश्व विवेक-जागरण-पदयात्रा

पदयात्रा १३ दिसम्बर को वाराणसी में समाप्त हुई। यहाँ से दिल्ली के लिए सवारों द्वारा जाना प्रारम्भ हुई। उस दिन मुकुट लक्ष्मण १० बजे पदयात्री टोनी मुकुटसहाय से ९ मील चलकर राजपाट (वाराणसी) में सर्वे सेवा संघ के केन्द्र में पहुँची जहाँ उसका सार्वजनिक स्वागत हुआ। सीधे पहर २ बजे टाउनहाल के मैदान में सार्वजनिक सभा हुई। उसके बाद ४ बजे बाबी हिन्दू विश्वविद्यालय में सभा हुई। दिन भर का कार्यक्रम ७ बजे सर्वे सेवा संघ, प्रकाशन के हल में 'माटी-नाम' नाटक के उत्सव अभिनेता से समाप्त हुआ। रात्र की विभिन्न संस्थाओं के पदयात्रियों का स्वागत किया। जानकारी मिली है कि सखतक पहुँचकर याना रक्षित कर दो घंटी और बाकी बचने देव वासल पड़े गये।

इस अंक में

श्री जयप्रकाश नारायण का	
बचपन	१७०
से बचने, पीने, सोए—सम्पादन	१७१
कठिनक वाचित के पत्र पर	
—धीरे-धीरे अनुभव	१७२
हेदी बचपन, प्रतिहार की सीमाएँ	
—सीधे-सीधे	१७३
अज्ञान भाषा के प्रयोग में एक दिन	
—मुमल बच	१७४
सीतार बाणना	१७७
बचपन से ही शोध वाचिबन्धन का	
सोचना ?	१७८
सीताना में नवी सम्पादन	
—एन० जगन्नाथ	१७९
सहृदय में पदयात्री-अभियान की	
उत्पत्ति	१८०
बालपुर नगर के दैनिक बच्चों का	
संवेदन —स्वीडिश हिन्दू चोहर	१८१
राजीव प्रसन्न में परिभाषक दोहरों	
का अर्थ	१८२

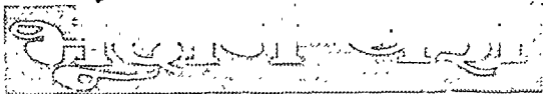
वार्षिक मुद्रक : १० रु० (सकेत आगक : १२ रु०, एक प्रति २५ पैसे), बिदेस में २५ रु०; या ३० निजिम या ४ आकर। एक अंक का मूल्य २० पैसे। सीधे-सीधे मद्रु द्वारा सर्वे सेवा संघ के लिखे अद्युत एच. एम. आर. वाराणसी में मुद्रित।

क्र. : १८, सं. : १३, सोमवार, २७ दिसम्बर, ७१
 सर्व सेवा संघ, परिषदा विभाग,
 रायपाट, पारागली-१
 वार. : सर्वधिया * फोन : ६४१९१

सम्पादक
रामभूनि

सर्वादय

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र



शिवालयजलकयाभोचामप्रधानभूदिसकमाति कासम्भवाहकनभापनाहिरह



प्रति पत्र
 30.00
 रायपाट

आपके पुत्र

सत्याग्रही की गिरफ्तारी

['दिल्ली के प्रमुख नवयुवाओं को भर्तनी भाई ने सुन्दरलासजी की जेल में ले जाकर लिखा था यह भेज रहे हैं' । उचित समय तो प्रकाशित करें—सुमन अंग]

पू० मंजी जी,
सादर प्रणाम,

सुख मंत्री एक और पत्र भेजते हैं कि जन-आन्दोलन बनाओ में साथ हैं, और दूसरी ओर जन-आन्दोलन बनाते वालों को जेल के अन्दर टूँटा जा रहा है । सरकार की ओर से आन्दोलन को दफनाने की योजना है ।

'भेरी' हर आन्दोलन में शान्ति सैनिक की भूमिका रही है । हजारों की संख्या में जाये हुए लोगों को स्वरूपिण और मन्डोल करता रहा, हमेशा डेरेदार और शराबियों को उत्तेजित कीड़े से यह कह कर बचाना रहा कि हमारी लड़ाई विधि शासक के है । जिन भीड़ को सरकार की पुलिस लाठी और अशुभ से शान्त नहीं कर सकती ऐसी भीड़ को नियंत्रण करने में सफलता प्राप्त करता रहा । परन्तु जब मुझ जैसे व्यक्ति पर भी बंद डेरेदारों के हाथ बिना हुआ दिल्ली का प्रशासन शान्ति-मंत्र का भारतीय सजा सकता है तो ऐसे प्रशासन और ऐसी सरकार का तर्क भी भरोसा नहीं रखता चाहिए । खैर ! मुझे किसी तरह से सजा गया । क्या आरोप लगाया गया इसकी चिन्ता नहीं । चिन्ता तो इस बात की है कि हम भले ही बिलगते रहे कि देश में शान्ति स्थापित हो, लोग हिंसा पर उताव न हो परन्तु आम की व्यवस्था ही ऐसी है जो लोगों को हिंसा के लिए मजबूर कर रही है । मुझे याद है कोर्टघर के आन्दोलन की । हथारी माताएँ-बहनें भवि-

भाव से मजबूत-नीतिगत तथा रामायण का पाठ कर रही थीं । हाथ जोड़कर आने वाली सराबी भाइयों से निवेदन कर रही थी कि आम के ऐसे यवाकर घर में सज्जों व कपड़ा ले जाओ । दूसरी ओर शासन के डेरेदार एण्डो को तैयार करके उधम बनाने के लिए भेज रहे थे । इस शान्ति-मय आन्दोलन के सुनवाई नई तरह व पत्र भेजे गये, परन्तु सरकार की ओर से कोई उत्तर नहीं मिला । जब बन्द डेरेदार यह कहते हैं कि हमें शान्ति भाग का खतरा है तो सुरन्त ६०-७० पी० एम० की संख्या के ऐसे जवानों को भेजा जाता है जिनके तिर पर सौते के टोप, हाथ में डठे होते हैं, सानो चीन व पाकिस्तान का साइमन हो गया हो । ठीक ३ बजे शरण की दूकान पर आकर मानसिद्ध भाई को एक गिनारे करके गांधी की सरकार की पुलिस गांधी के चिन को डठे थे तोड़कर फेंक देतो है और शरण की पेटियो को हूला-मुहारे अन्दर रखतो है । इतना ही नहीं, कोण्डर को सत्याग्रही भाई-बहनों को धक्के-मुक्के मारकर ले जाया जाता है । ऐसी परिस्थिति में कब हम शान्ति-शान्ति चिन्ता रहे पर उस बन्त ८० वर्ष का वृद्ध भी उत्तेजित होकर उठ्या टूटने लगा था । अब बताइये तरफों को इस व्यवस्था में कौसी शान्ति का पाठ पढ़ाया जाय ? जो विद्यार्थी शान्तिपूर्वक गाते और बोलते थे वे उन समय शासन की दूकान पर सजा लगाने के लिए तैयार हो गये थे । जिन उपायारी नेटानों को हम लोगों ने गांधीजी के अहिंसा के ध्येय के संकेताने में सफलता प्राप्त की थी उस समय विद्यार्थियों के बीच तोड़-फोड़ कराने पर उताव हो गये थे । मैं ही जानता हूँ कि किस तरह मैंने सब उत्तेजित लोगों को शान्त किया । मैं गिरफ्तारी से पूर्व व्यापको प्रणाम करने के लिए व्यास चाण्डाल था परन्तु द्वाजित नहीं मिली, सुमन खोज से ही दारोगाजी मुझे जाने ले गये । मुझे नहीं पता कैसा देश पर भिन्न दूर रहे । अब मेरे हाथ में हथकड़ी टापी

गयी तो मेरे हाथ-पास सड़ते होकराने भिन्न आने रोप को जोड़ दशाकर रोत रहे थे ।

२ बजे गिरफ्तार भवित को ३ बजे तक एम० डी० एम० की प्रतीक्षा करनी पड़ी तब तक मैं अरेमा ही एम० डी० एम० के बमरे में बैठा रहा । मुझे ऐसा लग रहा था कि दिल्ली का प्रशासन ही कचहरी छोड़कर चला गया । एम० डी० एम० जब कचहरी में आया तो मुझे वापस करने की हिम्मत न पड़ी । थोड़े पुलिस के हाथ में बाण परतू कर जेल में ले जाने का एकाध शिवा । पुलिस ने जेल कर्मचारियों के पास सीपकर बिदा की । नाम दर्ज कराने के बाद मैं सुरन्त सुमनजी की मुक्ति पर पून बढ़ाने गया । मुझे ऐसा लगा कि सुमनजी की मुक्ति और से हंस पडे हो और यह कह रही हो कि क्या सुमनजी हथकड़ियों का बन्त मेरो बंधियों से अधिक है ? जेल के बमरे में आकर लिखा था 'खतरावा', जहाँ बमरे में मुझे भी टूँटा गया है । बमरे में कुछ चीजकारी करनेवाले और कुछ बरतों तथा शासकजाने थे । सादर मुझे भी उम्मी भेयीं का भेरीं माना गया होगा । बमरे में सब लोग खूब खौट पड़े गया रहे थे । हाथ-ही हाथ धांग व बीड़ी का भी सब जोर चल रहा था ।

अब मैं न हथकड़ियों से बरता हूँ और न लोगों से । बापू ने हर व्यक्ति को निर्भय बनाया । जब मेरे ऊपर एचपी बांधी गयी तो मैं अरेमा पुलिस के हाथ बढ़ी मस्ती के साथ जेल में गया । दो दिन तक गिरफ्तारी भारी रहा और अब हल्के होने के बाद बड़ी के पेटियों का मजदुरीय के लिए प्रसन्नता कर रहा हूँ । मुझे खाना है कि यहाँ से बाहर निकलने पर कई बरी मजदुरीय के लिए काम करेगी ।

भारत
भारतीय दल

इन्द्रासन

अमेरिका ने भारत को मिलनेवाली 'एड' में कठोरी की है। अफ़सूस है। उसने हमें मार दिना दी कि घर को मूली रोटी निम्नो काहरी की हवा से मिली हुई कबोडो से अफ़सूसी होती है। फ़्रांसो के दिलो में एनई हमारा 'माई-बाग' बना हुआ था। तैरिन यह हम उससे इतन प्रहृष्ट हो न जाने क्या सोचकर हमने अमेरिका से अपना रेश और मुह, दोनों बला लिया। हम हर चीज के लिए अमेरिका के पास पहुँचने लगे। हमने उसने अपनी पोचवालों के लिए बुद्धि माँकी, उज्जोको के लिए पूँजी माँकी, सेवा के लिए शरन माँकी, सोच-समाधानों के लिए सहायता माँकी, अपने मुक़ो-मुक़िबों के लिए बुझिया वित्तों और चित्र माँकी, पहाँ तक कि साने-रोनी और चदन-महून के तीर-उरीके भी माँकी। हमारो रिजो माँकी की अमेरिका ने अस्वीकार नहीं किया। हमने मानव विद्याय सोना और हमने अपने मर का दरबारा। उसके पास विज्ञाना हृदा-हृचरा था सब उसने हमारे जीवन में दान दिया।

भारत जब भारत अग्नि-परीक्षा से गुजर रहा है तो अमेरिका के आगत हमें मरवृत्त कर रहे हैं कि हम उनकी छोटी, सन्धी, मरन देखें। इनके लिए हम उनके फ़्राँस हैं। इतने और भाग की तरह हमें देना का कभी कोई साम्राज्य नहीं था, किन्तु अमेरिका का मन सदा सा-साम्राज्यारी ही रहा। 'दाल-र-रिंग' अमेरिका ने दुनिया की आहार के अग्रिम कभी कुछ नहीं समझा। और, सिद्धे महायुद्ध में जब से उनके हाथ अणु-शक्ति आगे, विश्वको असीम यह अद्वैतक तक पहुँच गया, वह बाने की बाने ही एक नये सृष्टि का सारोको मानने लगा है। इसी प्रमाँ में भी यह मर न हो तो कच ही।

अमेरिका की नयी सृष्टि में आर्य का स्थान दुनिया की उन सभारों को है जो सन्धी-सन्धी हैं, निरनुक हैं, और जनता के मानवीय अभिप्रायों को बुझानेवाली हैं। का दक्षिण अमेरिका, बना अफ़िरा, और बना एशिया, जहाँ भी अष्ट और जातिम सभार है उनको अमेरिका का समर्थन है। ऐसा ही सभार पर दुनिया भर में ही अमेरिकी सृष्टिमा विभाग (सी-आई-ए) का काहलू है। तुर्की, ईरान, पाकिस्तान, सिन्धुनाथ, तैवान और मर में एड से-एड अड्डर कोही सभारोही मीरुड हैं जो अमेरिकी सभारण के पाती आद बैठनेवाले मुकुटधारी मर हैं। उन्हीं में से एक अदरल पहिया ही है किन्को एक अकच लाम मान-मान ही रही है। पाकिस्तान में योही सभारोही का बाने बानी तक बना रहना, अकचो अदरल भाग्य-विरोधी एक रचना, सिद्धे सहीनी

बंगला देश में तर-नहार करना, और अत में भारत के विश्व युद्ध छेड़ देना, यह सब दसलिए हुआ है कि अमेरिका ने उसे मरपूर 'एड' दी है, सहाई के हथियार दिये हैं, और सभारोही चीजों की है कि पहिया की सभारोही बनी रहे। दुनिया को अम्बुनिजम से बचाने के मारे ही आद में अमेरिका ने अपनी आर घन-गठित और शरन-शक्ति का इस्तेमाल दुनिया पर में शोचन-वारी सभार, सभारोही शरन, और शोचनोही सभारि को नडाका देने में किया है। का अमेरिका ऐसा है अपना सभारण राष्ट्र सभ में प्रकृत अड्डर है, फरॉकि अनेक देशों को उनसे आनी 'एड' से सगरे रखा है। उनके नेत्र में जिस मरुतन राष्ट्र सभ ने युद्ध टोकने के लिए भारत पर सभार सभार डाना उसने अपना देश में तर-सहार को रोने तथा सभार-अग्रिमो की रखा के लिए जैसी तक वही उठायी। का राष्ट्र सभ जलिय सभारों के सभारों की रखा के लिए बना था, मानव-अधि-कारों की रखा के लिए नही ?

भारत के आतम-सम्मान और राष्ट्रीय हित को अमेरिका ने जो उन पहुँचायी है वह बरदान सिद्ध हो सकती है, बगते हम चेत जाते। स्वयंसा के बाद हम जिस तरकीब सभारण और सिन्धुत विद्योको भावुनिकता के मंहु में पडकर अमेरिका के दरबार में पहुँच गये, उसे छोड़ना पडगा। राष्ट्रीय जीवन में स्वदेशी के जिस मर को हमने भुना दिया है उसे फिर याद करना पडेगा। स्वदेशी के बिना स्वाभिमान सभार नहीं है। जिस पंचिमी 'लोकनाथ' के नपूने पर हमने अपना सभारणिक सभारण किया, जिस विदेशी, मुचर रूप से अमेरिकी, पैसे के सभार पर हमने अकच विद्याय के लिए विद्यालयय केन्द्रित सभारण का सभारण पडगा, सही तक कि अपने लामो माँकी के विद्याय के लिए अमेरिकी सभारण से सामुदायिक विद्याय को जो योजनी सभारणी, उन सब पर नये निरे से विचार करना होगा। उम के अनेक शिक्षण, मीर, प्रसाशन और सभार के सभारण का अमेरिका के पैसे से बन रहे हैं उनके सारे में निर्णय लेना होगा। हम दुनिया के सभार-सभारण के लिए जगता सभारण हर सभार अकच लुना सभार और उसके अड्डर सभारों की सभार सभारण सभारण भी रहे, सिद्धे जो सभार हमें आने ही देता में सभारणो बना दें उन्हीं सभारणोसुबक सभारण के निर्णय को हम अक दाय नहीं सभारते। स्वदेशी को सुभार, स्वा-साविद, सही छोड़ने के सुभारणाम हय सभारण सभार चुके।

अब तक को बुझ हुआ उसके लिए हम सभारो निचे सभारणो—
 काने को यह अमेरिका की ? सभार हम स्वयं सभारो ही ही हमें अपने लोच दूर करने में देर नहीं करनी सभारिए। हम अले 'सभ' को सभ को पहुँचाने, और सभारण्य अकच के हर सभार में सिन्धुसुबक स्वदेशी के सिद्धाण को सभारण करें। स्वदेशी-सभारणता का नाम नहीं, अकच सभारण का और सभारणता का नाम है। स्वदेशी सभारणे या न सभारणे का सभारण नहीं, राष्ट्र के सभारण और सभारण विद्याय का सभारण है।

बंगला देश और हम

बंगला देश मुक्त हुआ। भारत को चण्वी है कि उसने अपना सर्वस्व पूरा किया। बंगला देश कृतज्ञ है कि भारत की शक्ति मिल जाने से उसे मुक्ति मिली। मुक्ति के आनन्द में दोनों शरीक हैं, क्योंकि मुक्ति की प्राप्ति के लिए दोनों ने साथ लूट बहाया था। शायद ही कोई दो राष्ट्र कभी इतने निकट रहे हों जितने भारत और बंगला देश आज हैं।

लेकिन दुनिया दोनों को देखेगी। वह देखेगी कि जो साथ मर सकते थे क्या वे साथ रह भी सकते हैं। क्रान्तियों और सुवि-सशक्तियों के इतिहास में ऐसे उदाहरण भरे पड़े हैं जिनमें क्रान्ति-कारी और मुक्ति के सैनिक जान हथेली पर रखकर साथ लड़े, साथ विजयी हुए, लेकिन विजय के बाद हाथ से हाथ मिलाकर बहुत दिन तक साथ-साथ चल नहीं सके। भारत और बंगला देश की नयी राह पर चलना है, और दुनिया को नयी राह दिखानी है।

भारत को यह बात मानी पड़ेगी कि स्वतंत्रता के बाद, नेहरू जैसे महान व्यक्ति के रहने, पड़ोसी देशों के साथ वह सम्बन्ध नहीं बन सगा जिसको इतिहास ने अतीत में बनाया था, और जिसे नये जमाने में बनना चाहिये था। इनमें शक नहीं कि हमने भूल हुई। हमने बहुत पगडा निगाह पश्चिम के देशों की ओर रखी। आश्चर्य नहीं, पड़ोसियों को लगा कि उनके साथ गरीब रिश्तेदारों जैसा बर्ताव हो रहा है, शायद हुआ भी। अब जरूरत है कि पुरानी भूल सुधारी जाय।

बंगला देश को मुक्ति इतनी जल्दी भारत की शक्ति-युक्ति से मिली है—अमेरिका और चीन के विरोध के बावजूद मिली है। इस निष्पत्ति पर भारत को गर्व होना स्वाभाविक है। लेकिन यह अत्यन्त हमारे दिनों में अहंकार की शर बनती है। अहंकार के प्रभाव में हमारे सामको का विवेक कुटिल हो सराया है। नई जगह यह आना उठने भी सगरी है कि एशिया में चीन अकेला 'सुपर-पावर' होना चाहता था, किन्तु अब भारत भी दौड़ में आ गया है। अगर हम सतर्क न रहे, तो सुपर-पावर-मनोवृत्ति की छाया हमारे और बंगला देश के, तथा हमारे और दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों के, साथ नये सम्बन्धों पर भी पड़ सकती है। अगर हमारी ऐंठ और अहंकार की हल्की भी झटक दिखायी देगी तो मित्रता चाहे जितनी गाड़ी हो लौम और सन्देह पैदा हुए बिना नहीं रहेगा। शीघ्र और सन्देह को भूमिका में समया और सहकार के सम्बन्ध नहीं विकसित हो सकते। अगर ऐसा हुआ तो कितना बड़ा दुर्भाग्य होगा ?

अगर इससे बचना है तो अपने का उपाय सोचना चाहिये। दुनिया के रक्षकों के खेत हुए यह निश्चिन्त-सा सगता है कि बड़े बड़े देशों की दिनों में अपनी-अपनी सड़ी धैली सेकर बंगला देश की ओर बढ़ेंगे। 'एड' और 'ट्रेड' के प्रलोभन चारों ओर से

दिये जायेंगे। विकास के लिए दुनों को भूला देना, विशेष रूप से जब वह महिमासाही की प्रलय-खीला का विचार हो चुका है, प्रलोभनों में पड़ने से कैसे बचेगा ? विदेशी पूँजी, तकनीक, और तरह-तरह के सहयोगी का प्रलोभन गरीब देशों को नहीं पहुँचाया है, यह हम सब जानते हैं। यह बंगला देश के नेतृत्व का सर्वस्व होगा कि वह विदेशी सहायता और सहकार को विशेषपूर्वक स्वीकार करते हुए स्वदेशी के साथ जो फिर एक बार बाद करे जिसका पहला उच्चारण १९०५ में बंगाल में ही हुआ था।

भारत बंगला देश के साथ किस चीज का लेन-देन करेगा, और किस स्तर पर करेगा ? बंगला देश सरकार की नीति पर भारत सरकार ने प्रस्तावक दिये हैं। त्रिसन्धि ? वहाँ के लोगों को मुलायम और सलाह देने के लिए या प्रशासन बनाने के लिए ? निश्चित ही बंगला देश में प्रशासन बनाना भारत का काम नहीं है। क्यागि हमारा यह काम नहीं है कि हम सरदाक बनकर बंगला देश पर अपनी बाज या अपने बादमी यों, उसका सविधान या विकास-योजना बनायें, और सापट रखें कि वह हमारी बाज माने। भारत में भारत और बंगला देश का सम्बन्ध क्रिया ही अधिक गैर-सरकारी स्तर पर सांस्कृतिक और वैचारिक होगा मित्रता उसकी ही टिकाऊ होगी और सन्देह से भरे रहेगी।

बंगला देश की जरूरत देश नीचे से ऊपर तक नये सिरे से बनाना है। उसे नया प्रशासन गठित करना है, लोकतन्त्र के लिए नयी पद्धति ढूँढनी है, अपने गाँवों और नगरों के लिए विरासत-मौलि तय करनी है, और शिक्षा को उदात्त और सर्वजनिक बनाना है। इन सभी चीजों में उम्मेद सामने भारत की २४ बरों की सफलताएँ और विफलताएँ दोनों हैं। उनको सामने रखकर शरीकों और विषयों के मुका होने के उपाय ढूँढने होंगे, एका कायम रखनी होगी, सगटन के नये स्वभा विकसित करने होंगे। बंगाल में मौलि प्रतिष्ठा की कमी नहीं है। जन-जन की प्रतिष्ठा को, और विनास जनता की अगम्यता को, उदात्त गणतन्त्र पुरुषार्थ के साथ जोड़ना नये नेतृत्व का काम होगा। यही उम्मेदी बतौटी भी होगी।

बंगला देश को अब शक्ति की शक्ति चाहिये। नये उपाय की नयी रचना शक्ति की ही शक्ति से हो सकती है। युद्ध से जितना होगा या हो चुका। शक्ति की शक्ति की शक्ति में भारत उदका साथी होगा। विदेशीकरण क्या गाँव और नगर की स्थापना और स्वायत्तता का विचार उसी खंभ के साथ मुदा हुआ है। भारत में गाँवों में जीवन भर शक्ति की शक्ति की ही शक्ति की। बंगला देश में देश मुझे ही हमान ने भी स्वतंत्रता के लिए अपनी ओर से शक्तिपूर्ण प्रतिवार दे ही मुक्त किया था। जित देख ने एका और स्वयं की इतनी उदात्त शक्ति पंग की है उसके लिए शक्ति को उदात्त-निर्माण के साथ जोड़ देना शक्ति नहीं होगा। ●

सर्वोदय नेता : उसका स्वरूप

—ज्यॉफ्रे थाम्पटन

१. 'सामान्य सर्वोदय नेता', वे १,००० मोनोडोर हैं, जो अक्टूबर १९१५ में सर्वोदय सेवा सच के समूह से सम्बन्धित थे। मोनोडोर की उपाधि लेकर अपने आने-आने की सोच का वह सेवा बना दिया है, जिसका गोपीजी की अन्तिम हल्का और यथोचित में उल्लेख है। उसका अपना काम जिसे का प्रतिनिधित्व करना है। इस पद के लिए, जिस बिन्दु में वह काम करना है उसके सोच-सोचों द्वारा सर्वोदयिता से बना जाता है।

२. यद्यपि वह गोपीजी की तरह मैट्रिक सम्मानना से विस्थापित रहता है फिर भी वह यह जानना है कि उसके बहुत सारे गोपीजी की तरह पुत्र हैं। लेकिन उनमें से हरेक में विरोधा की तरह प्रभाव की प्रतीति नहीं कर रही है। प्रत्येक माने में वह और उनके सामने कार्य भारतीय युवा से बनाने लगे हैं। उनमें से अग्रिम-तर किया है कि और उनके बच्चे हैं, जो अब बढाने लगे हैं। वह स्वयं ५० साल से ऊपर का है। इसका कार्य यह है कि वह अब साम्प्रदायिक में पिछले कीर्ति नहीं की जाती सेवा पर नजर डाल सकता है। उनमें २० वर्ष की उम्र में साम्प्रदायिक में बढाने रखा, स्वयं या बाल्य छोड़ने के सुन्दर बार जब गोपीजी जिन्दा थे और विरोधा के सुन्दर साम्प्रदायिक नहीं बनाना था।

३. अपने बचपन की याद करते हुए, वह जानना माने याद करता है, जिसमें वह पैदा हुआ और जाना गया, जो भारत के १,५०,००० गोपीजी में से एक है, जिसमें उनके देश के हर ६० में से ६० भारतीय रहने हैं। यह भारत में गोपीजी के लोगों के साथ है, जो नये भारत की स्थापना करने वाली द्वाइ है, गोपीजी दूर है। परन्तु वह गोपीजी के 'बच एक सम्पन्न' के स्वयं को समझ सकता है। भारत में मान, 'कोई से कमी' और बहुत सारे गोपीजी में पैदा हुआ है। आदि-गोपीजी और सुन्दर

भी भयकर है। परन्तु उस पद की उपहार विराम है कि उनमें सही कार्य में समुदाय बन जाने की इच्छा है, अथवा केवल गोपी-जनों को सम्मानना जान कि वह एक संयुक्त परिवार के संस्था है। उसे स्वयं समुदाय परिवार में जाना गया था और इसलिए वह एक ऐसे समाजिक समुदायी समूह के मुख्य की सम्पन्नता है। वह सुलभा है कि हमारे सुन्दर के प्रति जो हमारा संबंध है, उसका दोन सारे मान और सारे सकार के नर-नारिणों तक को न विरहित किया गया, परन्तु सेवा करने के लिए बहुत सारे परिवर्तन करने होंगे। यह परिवर्तन व्यक्ति के दिल और दिमाग में और शरीर-शरीर-साम्प्रदायिक सम्बन्ध में करने होंगे। साम्प्रदायिक, आर्थिक और राजनीतिक सम्बन्धों की सुविधा पर ही सही समुदाय बन सकता है। और इसका कार्य है कि जाति, धर्म और भिन्नियत का पुनरा विचार छोड़ा जाय। उसे इसका बहुत ब्याप है, क्योंकि वह हमारे बुराई को जानता है। अथवा वह पैदाशी काक्षण नहीं को वापस या वैश्व स्वरूप है, जिसे अनेक पहलू का क्षतिग्रस्त है। उसका पिता एक हुकर था, परन्तु गरीब निम्न यह सुनि-हीन मजदूर नहीं। उसका सम्बन्ध श्रेणी करने-करने जारी चलें थे है, जिनके पास २० एकर तक खेती की जमीन होती है, अर्थात् उसका पिता मध्यम वर्ग का था। यह स्थान देते तो भी काम में दिया था, परन्तु वह बार की तरह खेतों के काम में नहीं बना। उसे उनके पिता की पुत्रता में अन्तर्गत जिन्दा निनी, अपने द्वाइ सम्पन्न किया, उसके बाद उसने पढ़ाई का वैश्व सम्मानना, सही यह प्रयास देर नहीं दिया और फिर साम्प्रदायिक में पूर्ण होर से बन गया।

वह व्यक्ति जो वर्षों की मजदूर नहीं देना। वह आदि-गोपीजी और सर्वोदय सम्पन्न का सम्पन्न है। परन्तु वह जानता है कि

दुन्दरे उसे मध्यम वर्ग का कहेंगे। उनके पास पर है, बुद्ध भिन्नियत है, जिसका बुद्ध भाग अपने सुन्दर में दिया है। उनकी माहृहार धर्म-साथ २००० रु० से कम है। अगर उनके पुत्र जाय है कि उनका विश्व वर्ग से सम्बन्ध है तो वह मध्यम या निम्न मध्यम वर्ग रहता है। वह यह नहीं मजदूर करता है कि जाने पिता की तुलना में वह 'सम्पन्न में नीचे चला आया है।' उसे सम्पन्न में जाने स्थान का पुत्र बताया है, और अगर उसे नहीं यह मजदूर होता है कि वह नीचे स्तर पर था गया है तो यह अपने आपकी माद दिनामा है कि उनमें जान-बूझकर गरीबी का जीवन बनना है।

४. धर्म के क्षेत्र में वह हिन्दू है। परन्तु अपने बचपन के वातावरण ने उसे करते हुए वह उसे कट्टर नहीं कहना है। उसके भावा पिता हिन्दुत्व के आधुनिक और उदार पहलू को मानते थे। और ऐसा कारण उसे अपने धार्मिक विचारों को गोपीजी के वैश्व-साम्प्रदायिक विचारों से भिन्न में कोई क्षतिग्रस्त नहीं हुई। गोपीजी सभी धर्मों को, और कारुणिकता को भी, भगवान, सार और अन्तिम वास्तविकता तक पहुँचने का रास्ता मानते थे। यह गोपीजी के एक विभाग को स्वीकार करता है कि भगवान मजदूर की सेवा में है। इसलिए अब वह अपने धर्म को मानना रहता है। यद्यपि वह विरोधा की इन बात का समर्थन है कि (पुनः धर्म में) धर्म का जमाना खत्म हो गया है, अब विश्वास के साथ और आशा के आकर रहता है।

साम्प्रदायिक में जाने के बाद उसने मजदूर शिवा कि आन्दोलन उसके आदर्शों की भावनाशुक्ति जीवन में जाने की आशा रखी है। उसे यह गया कि वह गोपीजी की सेवा को प्रचार कराया है, उसे जोये। अब उन्हें सेवा सच में सोच-सोच कर प्रतिकारण जाना तो उनमें उसे सुन्दर स्वीकार किया। और दशमिय सन् १९१५ में विरोधा के प्रतिनिधिता के द्वारा के पुनः पर वह व्यक्ति मैट्रिक बना।

५. आन्दोलन के एक तन्त्र के ताले यह वह महसूस करता है कि वह धर्म, प्रेम, बख्शा का सेवक है। यह मानता है कि काम बलि है, और प्राणिक वन तथा बलिबलि, परन्तु वह कोई भावना काम नहीं करता है। सेवक और सभी होने की इच्छा बलिदानों को इच्छा कर देता है। सबसे बढ़कर इसकी प्रकृता हीनो है कि भारत के नये संव का साथ प्राप्त है। विनोबा एक सत हैं, बड़े गुणों का बलिब, गांधी का सही उत्तराधिकारी, इस बात का उसे पूर्ण विश्वास है। अगर ऐसा न होता तो यह लोगों के दिनों में कैसे परिष्कृत का बख्शा था, वह कैसे लालो नृसिंहिन किशानों को इस बात के लिए तैयार कर सकता था कि वे रामदास के लिए पहला कदम उठाये। यह आन्दोलन उद्योग बहुत कुछ गाँव करता है, परन्तु यह उद्योग जीवन के हर जग को अपने घेरे में गहरी गिरे हुए है। यह स्वतंत्र लोगों का आन्दोलन है। यह अपनी स्वतंत्रता को दूसरे स्वतंत्रों को भारभार में शिरकत करने में प्रयोग करता है। दूसरे संगठन का अपने, किसी भी प्रकार का संघर्ष नहीं है। लोकसेवक बनें समय उसके चल और सदा की राजनीति में भाग न लेने का फैसला किया था। जब गांधी जिन्दा थे, तो वह कांग्रेस का सदस्य था। परन्तु गांधी की मृत्यु के बाद उसकी राजनीति से सम्बन्धित विचार पर फिर से सोचा और कांसेस से इस्तीफा दे दिया। जगते गु १९५२ के चुनाव में कांग्रेस को बोट दिया, परन्तु उसके बाद फिर किसी चुनाव में बोट नहीं दिया। यह अब स्व-निर्देशन राजनीति के सिद्धांत, जो राजनिरपेक्ष समाज की ओर एक कदम है, को मानता है, जिसे विनोबा और अथर्वराज ने स्थापित किया है। कांग्रेस के दोषों के बावजूद उसे कांग्रेस से छद्म-भुक्ति है। सर्वोप समाजों के प्रति यह दल बहुत सहानुभूति रखता है। इन भावनाओं के सबसे बड़े विरोधी हैं कम्युनिस्ट—जो सर्व-समाज और हिन्दू समाज में विराट

रखते हैं, और हिन्दू साम्राज्यिक दल—जिसे जनसंग्रह है।

यद्यपि वह स्व-निर्देशन सोचन के सिद्धांत को माननेवाला है, परन्तु वह पूर्णतः तया स्पष्ट नहीं है कि इस सिद्धांत का अर्थ क्या है। एक ओर यह यह मानने के लिए तैयार नहीं है कि जन-मास में कर्मिक और सर्वोप आन्दोलन एक ही है, दूसरी ओर यह यह मानता है कि कांग्रेस सत्ताधारी दल है, और सभी भी गांधी के विचारों की जनता के लिए आगे दिख से ही नहीं—बुद्ध कर रही है। आन्दोलन को कांग्रेस की राज-सदस्यों के सहयोग की आवश्यकता है ताकि सामन्त या कानून बन सके और गाँव के विराट के लिए कोय मिल सके। फिर उसे यह भी विश्वास है कि आन्दोलन सर्वोप समाज की ओर गेजो से बनें, बगैर सरकार पंचायती राज के कर्मक्रम पर ध्यान दे। इमारी सरकार देश की सेवा को भी मजबूत कर रही है। यह यह स्वीकार करता है कि यह गांधीवादी भावों के विरुद्ध है। उसके कुछ भागों इस विषय पर सरकार के विरुद्ध अहमयोग का आन्दोलन चलाना चाहते हैं परन्तु उसे विश्वास है कि यह सतत कदम होना, उस समय तक के लिए जबतक कि आन्दोलन संकिक दल का अहितक विरुद्ध न दे सके। इस पर परिचयी दलों के आतिवादी भिन्न यह कह सकते हैं कि जर्मन राष्ट्रीयता की भावना मजबूत है। परन्तु यह उम्मा यह उचार देना कि राष्ट्रीयता और दूसरे राष्ट्यों के सम्मान में कोई टकराव नहीं है।

६. अब उसके सर्वोप आन्दोलन के उद्देश्य पूरे जाते हैं तो यह सामाजिक उद्देश्यों पर जोर देता है। यह उसके आर्थिक उद्देश्य, राजनीतिक उद्देश्य, साम्प्रदायिक अथर्वराज अथर्वराजवादी विचार, अध्यात्मिक उद्देश्य, महिला के प्रति बढ़ती जाति का उल्लेख नहीं करता। ये सब उद्योग लिए महत्त्व दी

रखते हैं, परन्तु विना मत से यह अधिक प्रभावित होता है वह सामाजिक व्यवस्था का मान है जिनमें आति और सर्व-सेवक समाज ही जाता है। सामाजिक समाजता जानी है, और मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण नहीं होता है। यह जानना है कि इस जीवन में बहुत से सम्बन्धकारी भी जगते सभी हैं, परन्तु यह जानना है कि सर्वोप के मार्ग से ही इसे कार्यान्वित किया जा सकता है।

मार्गदर्शक का राजा सत्ता की राज-नीति का शास्त्र नहीं है। यह प्रेम द्वारा बसतों में परिष्कृत करने का शास्त्र है। यह सतत चलता नहीं है, परन्तु आन्दोलन ने एक ऐसे कार्यक्रम को जिवित किया है, जिसे हमें इससे यह समझ है। इस कार्यक्रम को मुख्य बात प्राथमिक, सारी और दूसरे प्राथमिक उद्योगों की जनता और आतिवेता चलाना है। आतिवेता को यह एक अहितक बुनियात मानता है। यह इस बात से सहमत नहीं है कि अगर प्रेम फिर से भारत की उत्तरी सीमा पर आक्रमण करे तो अहितक प्रविष्टों के लिए यहाँ आतिवेता भेजो जाय।

धामदान के बारे में भी यह कुछ अस्पष्ट है। उसी गुणम धामदान की स्वीकार किया है, परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि यह किसी निरहितक के दल का समर्थन है। गुणम धामदान के डाटा धामदान के विचार को जोतना अमान्य रहेगा, और इससे दूसरा उद्योग करता चाहिए। परन्तु यह उद्योग यह है कि आन्दोलन को सामन्तों तक के विराट पर जोर देना चाहिए। केवल धामदान का 'धोपना पर' प्राप्त करने से अहितक दल ही अर्थ सामन्तों दलों काय कर सके।

विनोबा स्वयं धामदान के विचार के चलने को पसन्द करते हैं और विराट का काम गाँववालों और सरकार की 'अनुभूति देना' को भी इसका ही परदीप्त देना चाहते हैं। विनोबा एक विचार पर नहीं हो सकते हैं, परन्तु उसे मानव है।

कि क्या केवल प्रामाण्य के विचार से जाने पर जोर देना दैनिक के दृष्टिकोण से ठीक है। जीवनियों के सामने बहुत सारी समस्याएँ हैं, जैसे महंगाई, छापादि। उसे विचार है कि जनता को जगाने के लिए आन्दोलन को इन समस्याओं को उठाना चाहिए।

उपरोक्त विचार है कि आन्दोलन में अब तक वह नहीं प्राप्त किया है जिसका मुद्दा के आरम्भ के जमाने में वादा किया गया था। भूमिहीन किसानों की समस्या अब तक बाकी है। परन्तु उसे विस्थापित कि आन्दोलन में बहुत कुछ प्राप्त किया है, जिसका बहुत मुद्दा और सामान का बाँटा है। इनके परिचित आन्दोलन में भारत के सामाजिक वातावरण को बदलने और सामाजिक और राजनैतिक समस्याओं का समाधानपूर्ण समाधान खोजने में बड़ा रोल भरा गया है।

७. वह यह मुख्य खोज करता है कि आन्दोलन के साथे अपने से बहुत सारी छात्राएँ हैं। उनका कहना है कि इतिहास दार्शनिक बम पीतरी अतिरिक्त है। दार्शनिकों का सामाजिक और आर्थिक परिस्थिति है जिनमें आन्दोलन चल रहा है, जैसे जातिप्रथा, साम्प्रदायिकता, भविष्यदवादी। पीतरी छात्रों में आन्दोलन के कार्यकर्ताओं को बनी, तथा आन्दोलन और समर्थन को बनी भी है। वह आलोचना कुछ बड़े नेताओं पर भी सही जा रही है। उसी समय वह यह भी कह सकता है कि आन्दोलन बहुत आन्दोलनकारी है, छात्रों को भी दण्ड को बलि बलि है। इनके अतिरिक्त महत्त्वपूर्ण छात्रों आन्दोलन के समर्थन के योग्य हैं जैसे बचपन से छात्र, कार्यकर्ताओं और परिवारों को सुनकर-बनकर के लिए पैसों को बनी, और कार्यकर्ताओं को अर्थव्यवस्था देना। उदाहरण यह कि विचार है कि उद्योग द्वारा कार्यकर्ताओं में समर्थन है, परन्तु उनमें आने काय को प्रभावशाली रूप से

करते ही ट्रेनिंग को बनी है। यह उनके सभी छात्रों को बनी है। सर्व सेवा संघ की कार्यकर्ताओं के बारे में उनके छात्रों का ही सहमत है। परन्तु एक स्पष्ट बहुमत इस बात पर सहमत है कि केन्द्रीय संगठन की आवश्यकता है। उनका कहना है कि नियम के अन्तर्गत सभी कार्यकर्ता नीति का निष्पक्ष करने में भाग ले सकते हैं, परन्तु व्यवहार में छोटे-से लोग ही निष्पक्ष करने हैं।

८. भविष्य में आन्दोलन को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए वह क्या करेगा इस बारे में वह कोई ऐसी व्यावहारिक सलाह नहीं देता जो कि कार्यकर्ता नहीं भी जा रही है, या मुख्य कार्यकर्ता नहीं भी जायेगी। वह आन्दोलन के कार्यक्रम और नीति में उन्नति करने की बात करता है, जैसे नीयत इच्छा करना, समर्थन में परिवर्तन लाना, प्रचार बढ़ाना और उसे अधिक प्रभावशाली बनाना। जब उससे पूछा गया कि आन्दोलन को कुछ उद्देश्य—जैसे धूम्रपान और बड़े कन्दू में परिवर्तन लाना बाय ताकि प्रचलन लौकिक भावित हो सके उसे उम्मेदवाही कि नहीं। उपरोक्त विचार है कि आन्दोलन और समर्थन के बीच का अंतर ही है जो हर एक को अपने में पैदा करता है। उदाहरण विचार है कि कार्य की दैनिक से परिवर्तन लाना जाय, और गरीब और जमींदारों के विरुद्ध प्रति-कार्यक्रम सामर्थ्य लाने जायें। परन्तु जब उसे अंग्रेजी राज के विरुद्ध लोगों के अर्थव्यवस्था की बात दिखाने वाली है तो वह इन बातों से सहमत हो जाता है कि अगर अभी नहीं ही अपने बचकर प्रतिव्यवहारक आग्रह उद्योगी हो सकता है।

उसे विचारों के विचारक सराफा के विस्थापन से पूरी तरह समाधान नहीं है। वह आन्दोलन के भविष्य से काफी आशा रखता है। वह विचारों के वास्तविक समर्थन से १९९१ के भारत का विकास

करते हुए कहता है कि व्यक्तियों और राष्ट्रों की तरह आन्दोलन में भी उदार-वृद्ध होना है। वह विचारों को इस बात से सहमत है कि आन्दोलन के उत्तर का जमाना आरंभ ही गया और अब प्रचार का जमाना था रहा है।

९. जब उससे यह पूछा गया कि विचारों के बाद इस आन्दोलन का क्या होगा? वह उसी तरह का प्रश्न है जैसा परिवर्तनों देशों के लोग यह पूछते हैं कि नैतिक के बाद कौन होगा? विचारों के बाद कौन? उत्तर स्पष्ट है। जयप्रकाश नारायण—पहले लोकवादी।

हम लोगों का पारदर्शित रूप हो गया। अब हम अपने बचपन की स्थिति हैं। क्या हमने सर्वोदय लाना का सही चित्र लीका है? क्या वह हममें अपने आसनों पर बसने वाले हैं बड़ी महत्ता से कह देंगे कि परिवर्तनी बचपन और परिवर्तनी धर्म के द्वारा उनका चित्र बिलाल किया गया है?

महत्त्वपूर्ण आशावादी छात्रों का वह है, जो यह जानते हैं कि हम लोगों की उनके साथ सहानुभूति है, अगर हम यह सन्देश प्रकट करें कि वे एक अलग-अलग काम में नये हुए हैं और वे जो उनका अलग-अलग समाधान के अन्तर्गत से पैदा कर रहे जायेंगे।

क्या वे हमें छात्रों का यह विश्वास दार दिखाने कि हमारा काम अलग-अलग को सम्भव बनाता है? प्रकृति ने जो पीतरी छोड़े की है उन्हें फॉर जाना है। क्या वे पीतरी का यह विशेष दोहरावेंगे?

'जो कच्चा काम करता है उसे दुख नहीं होता।'

—'दो डेजिनल प्रवर्तित' के प्रतिपक्ष आन्दोलन के आन्दोलन पर प्रकृत। प्रकृतियों: मूलका कथान

भारत में गरीबो—१

[गरीबों, बेरोजगारों, विधवाओं और शोषण के प्रचुर देश के चिन्तन के अंग बन गये हैं। लेकिन हम इन प्रश्नों के सही स्वरूप को नहीं जानते। सभी तक हल के सही रास्ते भी नहीं सुझा रहे हैं। हाल में दो बड़े अर्थशास्त्रियों, श्री सी० एम० डांडेकर और श्री नीलकण्ठरय, ने गरीबों का सङ्ग्रहस्थित अध्ययन किया है जो अपने-बी में 'पावर्टी इन इण्डिया' के नाम से प्रसिद्ध हुआ है। हम उनके अध्ययन के आधार पर यह लेखमाला अपने पाठकों के लिए प्रकाशित कर रहे हैं। अध्ययन १९६०-६१ से शुरू होता है।—स०]

१. १९६० के १ जनवरी को भारत की जनसंख्या ४२.४ करोड़ थी, और राष्ट्र की आय १३.३०८ करोड़ रुपये। इस प्रकार प्रति व्यक्ति आय ३०६.७ रुपये थी। लेकिन देश की पूँजी और सरकारी खर्चों को नियंत्रित कर प्रति व्यक्ति घरेलू खर्च (कन्ज्यूमर एक्सपेंडिचर) के लिए केवल २७६.३ रुपये ही उपलब्ध थे। यानी ७५.७० पैसे प्रतिदिन प्रति व्यक्ति।

२. १९६०-६१ में ४२.४ करोड़ की कुल जनसंख्या में ३५.६ करोड़ देहात में रहते थे, और ७.८ करोड़ शहर में। देहात में रहनेवाले प्रति व्यक्ति का वार्षिक घरेलू खर्च २६१.९ रुपये था, जब कि शहर में रहनेवाले का ३५९.२ रुपये, यानी ग्रामीण से ३७.७ प्रतिशत अधिक। लेकिन शहर में शोध की अपेक्षा साधन-सुविधाएँ महँगी होती हैं।

यद्यपि १९६०-६१ में प्रति ग्रामीण व्यक्ति खर्च २६१.२ रु० था। फिर भी ६३.२६ प्रतिशत लोग इस सीमा के नीचे थे, और शहरी लोगों में ६५.५१ प्रतिशत लोग ३५९.२ रु० की सीमा के नीचे थे।

३. १९६०-६१ में देहात के ६.३८ प्रतिशत विलकुल नीचे के लोगों का खर्च ८ रु० प्रतिमास यानी २७ पैसे प्रतिदिन था। दूसरे ११.९५ प्रतिशत लोग ऐसे थे जिनका खर्च ११ रु० प्रति मास, यानी ३७ पैसे प्रतिदिन था। तीसरे ९.८८ प्रतिशत का वार्षिक खर्च १३ रु० और दैनिक ४३ पैसे था। अंत में चौथे ९.८२ प्रतिशत १५ रु० वार्षिक और ५० पैसे प्रतिदिन की श्रेणी में थे। इन चारों

श्रेणियों को विचारकर लगभग ४० प्रतिशत (ठीक-ठीक २८.०३) ग्रामीण जनता ऐसी थी जो ५० पैसे रोज से भी कम में गुजर करती थी।

शहरों का हाल शायद से अच्छा नहीं था। शहरी जीवन महँगा होता है, इसलिए ५० प्रतिशत लोग इस मूल्यनम स्तर से नीचे थे।

नीचे के टेबल से यही बात साफ़्फ़े में प्रकट होगी :

इन आँकों को देखकर लोगों को

१९६०-६१ में उपयोग के खर्च (कन्ज्यूमर एक्सपेंडिचर) के आँकड़ों पर जनता का वर्गीकरण

प्रतिमास प्रति व्यक्ति खर्च	ग्रामीण		शहरी	
	औसत वार्षिक प्रति व्यक्ति खर्च	कुल जनसंख्या का प्रतिशत	औसत वार्षिक प्रति व्यक्ति खर्च	कुल जनसंख्या का प्रतिशत
०—८ रु. की श्रेणी	७९.३ रु०	६.३८	७७.६ रु०	२.९५
८—११	११६.६	११.९५	११८.३	४.४९
११—१३	१५७.२	९.८८	१५४.०	७.१९
१३—१५	१७०.८	९.८२	१६९.७	६.८६
१५—१८	२००.०	१३.५९	२०१.२	१०.७१
१८—२१	२३७.३	११.५४	२३५.७	११.५०
२१—२४	२७३.५	९.०३	२७१.७	९.६८
२४—२८	३१३.०	७.७२	३१५.५	११.०३
२८—३४	३७५.१	७.६६	३७३.६	९.३६
३४—४३	४६०.८	५.९३	४६४.७	९.६१
४३—५५	५८३.४	३.१२	५९२.३	७.०४
५५ और ऊपर	१,००३.१	३.२८	१,०३२.५	९.५०
सभी श्रेणियाँ	२६१.२	१००.०	३५९.३	१००.००

विरासत नहीं होता कि गाँवों के ५० प्रतिशत और शहरों के ५० प्रतिशत लोग कड़े जिनदा रहते हैं। कितनी भयंकर गरीबी है ?

४. हम जरा हिसाब लगायें और देखें कि जो भी कमाई है वह खर्च होने किन चीजों पर है। गरीब लोगों को अपनी कमाई का बहुत बड़ा भाग भोजन पर खर्च करना पड़ता है जिसका तरीका यह होता है कि दूसरी चीजों के लिए बहुत कम बचता है।

१९६०-६१ में स्थिति यह थी कि ग्रामीण जनता के सबसे नीचे के ६.३८ प्रतिशत लोगों का शहर के २.९५ प्रतिशत लोगों का प्रति व्यक्ति वार्षिक खर्च ८ रु० से भी कम था—साल में ७१.३ रु० देहात में, ७७.६ रु० शहर में। इस अल्पत छोटो आयवर्ग का ९.० प्रतिशत से अधिक भोजन और ईंधन में खर्च हो जाता था—देहात में ६४.५२ प्रतिशत

और सामाजिक है और उद्देश्य शान्ति स्थापित करना और युद्ध एवं वैयक्तिक-शाही का प्रतिरोध है।

दक्षिण विद्यतनाम के विचारधर्मों का अन्वय

'शान्ति और राष्ट्रीय स्वतंत्रता की भावना से प्रेरित होकर हम दक्षिण विद्यतनाम के विचारधर्मों विन्मूलित अन्वय जारी कर रहे हैं। यह अन्वय उन प्रस्तावों के सम्बन्ध में है जिन्हें १ जुलाई १९७१ को दक्षिण विद्यतनाम की पोलिस में शान्ति के लिए अस्थायी शान्तिकारी अन्वयिक सरकार ने प्रस्तुत किया था।

यह प्रस्ताव विद्यतनाम के युद्ध के हल के लिए पैग दिये जानेवाले सभी प्रस्तावों से अग्रिम प्रथमश्रेणी है। इसमें शान्ति की शक्ति के लिए एक अनिवार्य आधार मिलता है, यह यह है कि अमेरिका अपने आक्रमण की शक्ति को और विद्यतनाम के लोग अपनी समस्याओं को रख हल करें।

पहला मुद्दा विद्यतनामियों की माँग के अनुसार है कि विदेशियों से विद्यतनाम मुक्त हो। इसमें विद्यतनाम और सत्तार के लोगों के लिए प्रेम और शान्ति का रास्ता है।

दूसरे मुद्दे में दक्षिणी विद्यतनाम के विभिन्न गुटों का अमेरिका द्वारा समर्थन और हस्तक्षेप खत्म करने के लिए कहा गया है। विभिन्न राजनैतिक, धार्मिक, और सामाजिक तत्त्वों को मिलाकर सेना में एक नयी सरकार बनाने पर जोर दिया गया है। इन तत्त्वों का स्वतंत्रता, मुक्त-निरपेक्षा, लोकतंत्र और शान्ति में विरासत अनिवार्य है ताकि युद्ध को खत्म करने की राह आगे बढ़े और नयी स्वतंत्र व्यवस्था स्थापित हो जिससे विद्यतनाम के लोगों की आकांक्षा पूरी हो।

तीसरा मुद्दा यह है कि विद्यतनाम के दल, राष्ट्रीय एकता के आधार पर, दक्षिणी विद्यतनाम की सैनिक समस्या को हल करें। यह भाषाई के अन्वयिक को रोकने के लिए बहुत जरूरी है। चौथे

मुद्दे का उद्देश्य है दक्षिणी और उत्तरी विद्यतनाम के बीच मित्रता शान्तिमय रूप से स्थापित करना और विद्यतनाम के शत्रुओं को सुपन्नाने के लिए १९२४ में की जानेवाली जेनेवा-सन्धि के आधार पर कोशिश करना।

५-६-७ वें मुद्दे वास्तव में, दक्षिणी विद्यतनाम की विशेष नीति जो शान्ति और निरपेक्षा पर आधारित है—के बीच विद्वान्त है। साम-ही-नाथ उनमें यह कहा गया है कि अमेरिका युद्ध से होनेवाली बदनामियों को पूरा करे और उसके लिए अंतर्राष्ट्रीय पारंटो से जान।

उत्तुत बाबो के आधार पर हम लोग यह घोषित करते हैं कि: १-निरपेक्षा-सरकार विद्यतनामी जनता के एहो उद्देश्यों को स्वीकार करे और अपना आक्रमण तुरन्त समाप्त कर ७ सूत्रीय शोयता स्वीकार करे।

२-राष्ट्रपति शत्रु को चाहिए कि वह अपनी जनता और राष्ट्र के हित में अपनी गद्दी छोड़ दें, जो कि स्वतंत्रता की शक्ति में एक एकाग्र है।

३-हम लोगों ने प्रतिज्ञा की है कि एक स्वतंत्र, सगठित शान्तिप्रिय और सम्पन्न विद्यतनाम के लिए शपथें जारी रखेंगे।

अमेरिकी कैदियों के सम्मन्विषयों के पर

दक्षिण विद्यतनाम के युद्ध बन्धियों के सम्बन्धियों में विद्यतनाम में कैद अमेरिकी बन्धियों के सम्बन्धियों के नाम एक पत्र लिखा है। यह पत्र अमेरिकी विचारधर्मों के प्रतिनिधि मंडल को दिया गया, जिसका नेतृत्व हारवर्ड मुनिस्विटी के प्रोफेसर नार्स वाल्ड कर रहे थे।

पत्र में विद्यतनामियों और अमेरिकी परिवारों के दुसों पर सहानुभूति प्रकट की गयी है। इसमें उन सभी अत्याचारों का उल्लेख विनता है जो विद्यतनाम के लोगों पर अमेरिका ने किया है। पत्र में कहा गया है:

"उत्तरी विद्यतनाम पर की जाने-

यात्री बमबारी से मौत, पर, स्कूल, बिरनापर, कारखाने, गुप्त, शस्त्रादि बरबाद हुए। विद्यतनाम के लोग १० साल से जो युद्ध-सतीना एक करके रचना कर रहे थे यह भी नष्ट हो गयी। स्कूल के लड़कें और लड़कियाँ स्कूलों में मरम मरने से दुःखित कर रहे गये, बूढ़ों को छोड़ी हुई हाथ में टुकड़े कर दिये गये। जमान मर्द-तोरतों को जब कि वे खलि-हानों और नकानों में फास कर रहे थे खत्म कर दिया गया। जर्मेली सैनिक-नीड बनानेवालों के उद्देश्य-तमों को जला दो, नष्ट कर दो, मार डालो—के अन्वय अमेरिकी वाइसेना के अफ़सरो ने विद्यतनामियों को दो परों का जानवर सम्बन्ध कर बरबाद कर दिया। 'दो हैं टुक एक साथ न रह सकें' की नीति बरती गयी।

'अगर आकी विद्यतनाम आने का अवसर मिले, और अगर वहाँ उन लोगों को देख सकें जो वहाँ मर चुके थे गयी है (जैसे अनाथा, धनापात्र और जेल आदि) तो माग अमेरिका की सरकार के प्रति शान्तिनाम के लोगों के पूजा की समझ सकेंगे और हाथ-ही-नाथ अथ यह भी समझ सकेंगे कि नये उत्तरी विद्यतनाम के लोगों ने आगे वायुधर्मों पर गोबी चलायी और अमेरिकी वायुधर्मों के चालकों को, जो आगे भाई नोर बेटे हैं, कैद किया।'

'दक्षिण विद्यतनाम में १३-१४ साल के बच्चे और बन्धियों, ६० साल के ऊपर के बूढ़े, और अनाथ पुराण एवं भाषियाँ विपन्नरिये जा रहे हैं, पीटे जा रहे हैं, कैद दिये जा रहे हैं। पत्रोकि वे देश-भक्ति और अपने देश-बाँधियों के प्रेम से विनत होकर शान्ति, और अपनी निरपेक्षा करने हार्यों देने के लिए और अमेरिकी सेना को निकालने के लिए शपथें कर रहे हैं। विद्यतनाम के कड़ी जैसे एग बँटसतों में रते फाते हैं किनमें न पर्वन्त सता होता है, न दवा, न रोगी, न हवा और

न टंकित से बचने के लिए बपडे । उनपर विभिन्न प्रकार के अत्याचार किये जाते हैं । विपत्तनाम के बंदी जो हमारे पति, बेटे, छोटे और बड़े भाई हैं, उनपर हर प्रकार का अत्याचार किया जा रहा है । अमेरिकी सरकार को आजा अन्तहार उन्हें हर चीज से वंचित कर दिया गया है । उन्हें कुपोषण पीटा प्राप्त है, उनके हाथ तोड़ दिये जाते हैं, उनकी बालें निरान ली जाती हैं, उनके पैर काट हाडि जाते हैं । विपत्तनाम को महिला कैदियों पर भी यही प्रहार के अन्त अत्याचार किये जाते हैं । अमेरिकी एलाइडर इन सब बानों को खाते हैं और इन कुशाघों में घरीक भी हैं ।

‘दुबारी सोम जो हमारे बेटे, पति, छोटे बोर बड़े भाई हैं, उन्हें कर्षों से वंचित किया गया है । उनसे न कोई मिल सकता है न वे पत्र-व्यवहार कर सकते हैं । उनकी मोन की भी पूजा हमें नहीं दी जाती । उत्तरी विपत्तनाम में हमें कुछ विश्वस्तरीय परिवारों जैसे ‘नेग्रोस’, ‘पेरिस मेक’ इत्यादि के द्वारा मनु मानुष होता है कि अमेरिकी साम्राज्य के पापकों के साथ विपत्तनाम के बंदियों की तुलना में मनुष्य व्यवहार किया जाता है ।

विपत्तनाम की महिलाओं की रात्र में दोनों तरफ के सोम अपने परिवारों से सभी मिल करके जबकि अमेरिकी फौज विपत्तनाम से निरत जाय । उन्होंने अमेरिकी महिलाओं से जो कहा है कि वे राष्ट्रपति निम्बर पर और अपने कि अमेरिकी फौज विपत्तनाम से हट जाय । उनका यह भी कहना है कि अमेरिकी बंदियों को पतिलों का अपने परिवारों को पुत्रों की शोकनाम में पेरिस बना अनुचित है, बर्निक दोस्तों तरफ से अमेरिकी के साथ अन्त अन्तहार के लिए अतिवर्ष है कि अमेरिकी आरक्षण प्राप्त हो ।

यह पर इन परिवारों से अन्त होता है :
‘मिटर विपत्तनाम, अपने विवेक, मान्ति, प्रेम, स्वयंभवा और त्याग के कारण हम

नीज आपकी यह पर मेहनत रहने है और आपसे यह अनुवीध करते हैं कि माया हुआ आप में ताकि राष्ट्रपति निम्बर को अमेरिकी सरकार अपने सेना की निरान से, युद्ध का आत्मा हो और अमेरिकी युद्ध अपने परिवारों से निरत करें । हमारे दोनो देशों में शांति स्थापित हो और अमेरिकी एक विपत्तनाम की नींद अपने परिवारों में

बिन लगे ।
—आपके स्नेही,
दक्षिण विपत्तनाम के बंदियों के सम्बन्धी
दिल्ली से आशियात तक शान्तिपानाम
मध्य पूर्व की शांति करने के बाद
सामग्रीय युद्धिद्वि निम्बर के मध्य में
इसकी कृपे । उत्तरी इस्ती में ७ इस्तिवय
अन्तरी यात्रा में अन्तक हुए ।

धीरेन् दा की लोक-गंगा-यात्रा

‘मैं लोक गंगा के किनारे पूर-पूरकर लोक-नाचि की जगने जा रहा हूँ ।’
३ दिसम्बर १९७२, जब जगत्, धाम-स्वराज्य, न विरत-जाति के गल-भारतों नाचों व शीतों तथा मूल के गुजार के बीच टारर पटियों की एक सैन्यगणों सागा-सगया, हिलनी होलनी, आगे ब-गरी चलनी जा रही है । कौन है इन संज्ञाओं में ?
‘लोक नाचिरी वचन गंगा-यात्रा करते हैं न । मैं लोक-गंगा यात्रा करूँगा । मेरे निर लोक ही गया है’—यह सत्य है ।

संग पूछते हैं, यह लोक गंगा क्या ?
धीरेन् दा विदेशर उच्च विद्यालय के प्राध्यापक में भारतीयिज जाने विराई-समारोह में दुबारी लोगों के बीच, उनके मन का यह सवाल खुद उठाने है, और मुकदल की तरह खुद ही समाधान भी प्रस्तुत करते हैं । लोक गंगा का मुख्य स्रोत है लोक, तब है उसके हाथ की बीमार, लेकिन मात्र दुनिया में तक ही जन दिसता है, लोक नदारत है, पानी गंगा नहीं दीकड़ी नहीं । इसनिर् लोक नरक पहुँचने का जरूरा है ।

‘नाम करके क्या पूर-पूरकर, लोक पूरने हैं । कर्षों की एक बढ़ती है । दो विन्नी रोटी से भायी कड़ो से । उसे बोटने से दोनो सगा पडी । सब एक बरद भावना रोटी बोटने और कुल रोटी कड़ी सा गया । रोटी तरह लोगों के रोटी पंडा की और सगुने लगे बोटने में । लगे प्रजापति के पाव । प्रजापति ने बरद मेक दिया, शिष्टर, नाम हुआ नृपति । धीरे-धीरे नृपति का बीसा ‘लोक’ पर बटने लगा,

तब जाने नृपति । बीसा दलना बड़ा कि विन्नी (लोक) प्राहि-प्राहि करने लगी, तब लोक ने नृपति को हटा दिया । पर विन्नी का ‘मिवाद’ ली गया नहीं था, इसलिए नृपति के बने नृपति जा गया । अब नारा हुआ नृपति की हटने का । नृपति की बगह का भवे सेवपति । और इन सेवपतियों के महात्राल में पूर समग्र र्ण गया । टोटल पैगम ही गया । लोक की सस्थाओं के तब में लोक गुम हो गया । सेवक के बीच के नीचे दरकर सेवक सर रहा है फिर भी सेवक सेवक का पैर छूना है ।

‘आज जगत् अपनी शक्ति की नहीं पहचानी । हम लोगों से बहते हैं : काना काम सार करी, ली कड़ो है, एक कार्यकर्ता भेजे । इनके विचारण के सेवकों के पैर नहीं पडा, ली अब सर्वोदय मार्ग मेरक प्राहि । मोडपतिज से समाज की चलना प्राहि, सेवक-नाचि से नहीं । इसनिर् कोई सेवा नहीं बरे, लोक को लोकपति की पहचान कराये । मैं लोक-गंगा के किनारे पूर-पूरकर लोक-नाचि की जगने जा रहा हूँ ।’

धाम स्वराज्य त्याग की नहीं, महल स्वामे की भाव है, लोक के स्वार्थ की रक्षा करने के लिए है । धाम-स्वराज्य तरह-तरह के परिवारों से बचने का मार्ग है । धाम-स्वराज्य में लोक का शिरी की सरकारों सेवक या धर्मपत्र के नीचे चक्कर बन्दार नहीं होना । उसे अपना उद्धार, अपना पना सार करता होना ।

अनुसूचरतः देवेन्द्र

श्रीमती इन्दिरा गांधी का निक्सन को पत्र

यदि विश्व के देश विभक्त कर अमेरिका में वयस्युश शॉल मुजीबुद्दहमान को रिहाई के लिए अपनी क्षमिता, प्रभाव और अधिकार का उपयोग किया जाता तो भारत और पाकिस्तान को बंध युद्ध बचाया जा सकता था।

यदि विश्व के देश गन्भीरता में बगला देश में उत्पन्न जागृति की स्थिति का दृष्ट नो महीनों में सच्चाई से अध्ययन कर लिए होते तो यह भयानक लड़ाई जो पाकिस्तान द्वारा हम पर लायी गयी है न हुई होती।

जिन हासलों में मैंने अपनी विप्लवी यात्रा की थी, उस समय भी बड़े राष्ट्रों द्वारा उनको पुकार गौर से नहीं सुनी गयी थी।

यदि उस समय तक भी रोख मुजीबुद्दहमान को रिहा कर दिया गया होता तो युद्ध की यह भयानक स्थिति रोधी जा सकती थी। परन्तु उस समय हमको यही दिनासा दिलाया गया कि शीघ्र ही नागरिक प्रशासन कायम किया जा रहा है और यह किम प्रकार का नागरिक प्रशासन था, उसे सभी जानते हैं। पाकिस्तान द्वारा एक झूठ-मूठ चुनाव की व्यवस्था की गयी जो पूरी न हो सकी। बिजने आरक्षक की बात है कि दुनिया के किसी कोने से रोख मुजीबुद्दहमान को सम्पर्क में लाने के लिए किसी ने मुँह से एक शब्द भी नहीं निकाला। हमने उस समय अमेरिकी सरकार का ध्यान रक्ष और भी विलाया था, परन्तु हमसे यही कहा गया कि राष्ट्रपति यहिया खाँ के शासन को खतरा पहुँचेगा। परन्तु उस समय अमेरिका के दिल में इस बात का आभास हो गया था कि पूर्वी पाकिस्तान की प्रजातान्त्रिक ढाँचे की सरकार नहीं दी जा रही है नसॉकि उससे यहिया खाँ को कुछ मुन्धे-बतों का सामना करना पड़ सकता था।

यथा वेल् मुजीबुद्दहमान (एक आदमी) को छोड़ने की तुलना में पूरी लड़ाई करना मानव था ?

हम हलने वही वाचात को और भी बरपाय कर सकते थे जो कि हम पिछले नो महीनों से सदन के साथ लेते आ

रहे थे, यदि हम पर यह युद्ध एकाग्र न घोषा गया होता। पाकिस्तान द्वारा अजानाग एम्बुसर, एटानग्रेट, अंगनवर, वननीपुर, उत्तरासाई, जोधपुर, अम्जाना और आगरा हवाई अड्डों पर अजानाग वम रक्षार्थ गयी थी। उस समय मैं और हमारे राशामनी राजधानी के बाहर थे। परन्तु यह सब कुछ होने के मायजूद हम यह स्पष्ट और पर नह देना चाहते हैं कि भारत की परिचमो पाकिस्तान तथा पूर्वी पाकिस्तान के क्षेत्र में, जो कि अज बगला देश माना गया है, किसी भी तरह से कोई क्षेय अधिधार में लेने की बंई इच्छा नहीं है।

पाकिस्तान का रक्षैया

पर क्या पाकिस्तान पिछले २४ सालों से निरर्थक और निरन्तर कश्मीर-अन्धगयी विवादा को छोड़ देगा ? क्या पाकिस्तानी भारत के विरुद्ध युवा फँसाने और लगान-वार दुश्मनी का रक्षैया मानने रहने की मनोवृत्ति छोड़ने के लिए तैयार है ? पिछले २४ वर्षों में मेरे पिताजी ने जोर मैंने न जाने कितनी बार पाकिस्तान से अनाक्रमण-सन्धि कराने को कहा। इस बात का इतिहास साक्षी है कि जब भी इस तरह का प्रस्ताव किया गया पाकिस्तान ने इसे तुल्य अस्वीकार कर दिया।

भूदे आरोप

हमें इस प्रकार के आरोपों और प्रचार से बहुत डेन खनी है कि भारत ने ही संकट पैदा किया और भारत ने ही समस्या हल करने के रास्ते में बाधा डाली। मैं नहीं जानती कि इस सब झूठी बातों के लिए कौन जिम्मेदार है। मैंने अपनी अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, जापान और वेनाजियम यात्रा के दौरान, सार्व-जनिक रूप से और दल सेनो के नेताओं के साथ बातचीत में 'एगो यात्र पर जोर दिया था कि राजनीतिक समाधान तुरन्त आवश्यक है। हमने नो महीने तक इतरी

प्रतीक्षा की। जब आउटर विंगियर बगल १९७१ में भारत पराजित तो भी मैंने उनसे जोर देकर कहा कि अज वही राजनीतिक समाधान करने की बड़ी आवश्यकता है। किन्तु हमें आज तक ऐसे किसी समाधान की कल्पना भी नहीं दी गयी जिसमें तथ्यों पर ध्यान दिया गया होता।

मेरी यह हार्थिक इच्छा है कि आप वम-से-वम मुझे यह बतायें कि हमने कहां गतनी की है जिससे आपके प्रतिनिधि या प्रवक्ता हमारे प्रति एंडो बठोर भाषा का प्रयोग कर रहे हैं। मैं आप से यह अनुरोध इसलिए कर रही हूँ क्योंकि आप मानव-सम्पर्कों को बहुत अच्छी तरह समझते हैं और अमेरिका के राष्ट्रपति के माते महान अमेरिकी जनता की इच्छा-सक्ति, आदर्श और आराधाओं के पतीक हैं।

मैं यह पत्र बहुत ही खेद के साथ उन समय लिख रही हूँ जब भारत और अमेरिका के सम्बन्ध पड़ हो गये हैं, लेकिन मैं सब पूर्वग्रह और आवेय छोड़कर बहुत ही आन्त होकर एक बार पुन यह स्पष्ट करने के लिए निख रही हूँ कि यह दुःख प्रकरण कंसे प्रारम्भ हुआ।

गम्भीरता, १५ दिसम्बर १९७१

तरुण शान्ति सेनिक की चिन्ता

यह लड़ाई बहुत लायन लेकर जारी है। इन वर्षों में यदि इस देश के नागरिक इस युद्ध की महत्ता न समझ सके और 'युव की हार में युवा' मनाते रहें तो शान्ति सेनिक एक श्राणिम लखर हो देगा। अजना देश से लेकर आर तक विस्तित होने लुई स्थिति, और उस संदर्भ में उद्घाटित होने हुए सदन, नागरिकों के बीच परिचित हो पायें वो एक अजर जनमनित सजी हो पंगेगी।

सुह-से-सुहले में, विद्यालय-विद्यालय में, चौखटे-चौखटे पर लगायें, मोटोरीय बरला, पने चिन्तना, पने बाटला, अजर भाते ही अजनाहो या दूने तर में बियेय बरला, आर शान्ति-सेना की जिम्मेवारी है और हमें इसे बहुत बला ही पहिँ।

—तुवार प्रभात

विनोत्रा निवास से

साहूद करै पर समर है। विष्णु-
हृदयनाभ का पाठ कर कहते भोजन के
लिए गयी है। बाबा विष्णुवदलनाभ को
निवास में मन्त्र, साठ पर भेजे हैं। इनके
में एक लक्ष्य बाबा है। फिर एक धारा
"हम अन्दर था सज्जी है?" अब एतना
साहूद बहुत अन्दर नहीं समझना। हम
बनव बाबा सोचते ही नहीं। लेकिन दर्शन
छापी सिद्धी में से मानने लगी है।
समूह की मुख्या पीछे-पीछी बदन
करीबी के दर में बहती है, "हमने
पहले बिट्टी निकली थी।" अब बाबा की
कमा बिट्टी का समझ नहीं रहेगा।
घर। कुछ क्षणों में हाथ समूह बँधे-बँधे
बाबा के सामने बैठ जाता है। ये है
हिनन पाठ बलिब को विनोत्रा।

प्रश्न पर परधा बाबा के सामने
आना है। "बच्चों को पूजा जैसे
देवध्यानी सम्पन्नता का आदर्श बनो
महो है? समझ में तो प्रथम प्रवृत्त है,
तो हम सत्य को वाचरण में बँधे लगे?
अबान अत्यन्त और विषय की ओर क्यों
घुटते हैं?" बहुर बाबा परधा साहू में
रख देने है।

"तुम लोगों को हमारी गीताई
चिन्ती है?" सज्जियों में अलग में बरान-
दुनी होगी है। संतोष के साठ एतन्त्र
पीनकी महो। फिर पीछे-पीछे दारी-दुबारी
बहती है कि "कोई हमो देखो है।"

"गीताई को साठ मान्य प्रदान कि
गयो है। सौन्दर्यो विचार लोगों में दुर्धी
बहुँक गयी है। फिर को तुम में से एत-सो
सज्जियों की मानगी है। बनिब में महन
धकार होता है। इसलिए बाबा ने
बनिब होठ दिख था। तुम क्या
पढ़ी हो?"

"अधेशी, अधेशाव" " "

"महासाहू को सज्जियों अधेशी
कीकी है। सज्ज को सज्जियों कागई
संजयी होंगी क्या? ये ही ज्ञानेश्वरी
सूरी पढ़ी होगी? और हम देवध्यानि

पढ़े, यह निरी मूर्खता है। तुममें बहुत
मारी सज्जियों भी बनेंगी। जो भी गीता
नहीं जानती है, वह बेटे की वरा विचार-
देवी, साह।

"मराठी विचार में ज्ञानेश्वरी का एक
अध्याय की० ए० जी वरा के लिए है।'
प्रोफेसर साहूद परधा करने के लिए बनी
पढ़ी है।

"हमारे विद्यार्थियों को जो ज्ञानेश्वरी
की विद्युत्तुल परमाह महो है। लेकिन बरें
क्या। ज्ञानेश्वरी सार्थक भी है। साहि-
त्य के लिए ज्ञानेश्वरी की जो हारा
अध्याय (२०० का एक छर) में से दो-
छो, छोट-छो आदित्य पौडा के लिए
रखती पढ़ी है। जो ज्ञानेश्वरी उतरा
नहीं करते हैं। उत्रनी ज्ञानेश्वरी परका।
विनोत्रा दुर्गा है यह विचार की।"

बाबा सज्जीर हो बने है। सामान्य
बने है। एक बिजोरी बहती है, "हम
दिवहास भी पढ़ी है।"

ज्ञानेश्वरी पढ़ी क्या? बोन क्या
होग बोन का, पढ़ी न? सात्रमहण,
बाठकरी, नूत्यारी औरनने। ऐसी एक
पढ़ीग्या। हम हमारा पीनव है। उता
बीरर हम करो दर्श। उनको क्या
मन्तो? हाँ। साचीनान के महापुत्र,
दूद, महावीर, माना, बबीर, उनकी
जानकारी तुम्हें हकी चाहिए। उनसे
बीनव बनेगा। समूह सज्जी हो
कि महो?

हने सारे समूह में एक ही लक्ष्य
सज्जी होगी है।

"सज्ज में क्या पढ़ी हो?"

"साहूद, पुराण।"

"दानी नाटक। साहूद के लिए
संज्ञक पढ़ा है क्या? सज्ज में तो
दोहा, एतन्त्र परधा चाहिए। सार
बर। धर्म बर। साहूद न प्रमादितम्।
समो न प्रमादितम्। मानुसेको बर।
सिद्धेशो बर। अन्तरदेशो बर। एक
साहूद साहूद कल्प होना चाहिए। नाटक

तो विद्यार्थी है। बासन-प्राणायाम
सीधरी हो क्या?"

"को महो।"

"दो ही सुना पर कि इन दिनों
कावेरी में साहूद-प्राणायाम सिखाते हैं।"

"विद्यार्थियों की योजना ही है,
पर होना महो।" प्रोफेसर महाशय जबाब
देतो है।

"विद्या में स्वभाव उत्तम विद्यार्थी
चाहिए। जिनकी उत्तम बानी चाहिए।
विद्या में गीता, विज्ञान, अध्यात्म, ये
बोते ही तो इन बालकों पर कुछ सत्कार
होगे। भक्ति, ज्ञान, धर्म, धीरो या सम-
न्वय विद्या में होना चाहिए।"

बाबा सामान्य समझ पर धूर में
दहने के लक्ष्य बाहुर नरपते है। लक्ष्य-
विषय का समूह चाहिए सारीदे बाबा
है। सोही देर बाठ गीताई, गोवा-वचन,
ज्ञानेश्वरी चिन्तिया, सजी-मनिब हस्तादि
किताबें बाबा के सामने हस्ताक्षर के लिए
आती हैं।

X X X

सामान्य विद्यालय के शिक्षक स्वामी
विष्णुसामन्त बनाई में योग सदा वेदान्त
का अध्यापन करते हैं। उनके लीन आचम
है और ३० वंश है, जहाँ वे योग और
वेदान्त विचारण है। अयोधे साहित्यिक
के लिए भाग्य बाने हैं। बाने हवाई
जहाँ से ऐसी जगह जाते हैं, जहाँ समान
है और बहाँ साहित्य के पत्रक मना मूर्ती
की बरें बरके आते हैं। एक साहूद को
बाबा से मित्रो बने थे। एक उन्होंने
बनाया कि साहूद में उनके पूजा बना कि
"क्या आप विनोत्रा के बने हैं?"

बाबा—"उनकी सगा होता कि यह
सच्य विनोत्रा के बने हो पावन दीक्षया
है। आज दुनिया में साहित्य की बाठ बरना
ही पावन है। आप साहित्य के लिए
धूर बरकते हैं, तो मोग बाबरी 'धूर'
(धूर) समझते होगे।"

स्वामी जी—"हम जिनके में साहित्य
की रानी बनते का रहे हैं। बाबा जरीर
के दिन्नी में फिर और मन से महो।"

प्रो० ठाकुरदास वंग तथा सुमन वंग उत्तर प्रदेश में

प्रो० ठाकुरदास वंग व श्रीमती सुमन वंग का १ दिसम्बर को थपराह् दिल्ली मद्रास जगता गाड़ी से रूमागंड़ी जागरा स्टेसन पर उतरने पर नगर के प्रमुख सर्वोदय एवं रचनात्मक कार्यकर्ताओं ने स्वागत किया।

रात्रि में नगर के प्रमुख उद्योगपति जी० जी० इण्टरट्रीज के सचालक श्री दुष्प्र-प्रताप भागव के निवासस्थान पर ट्यूटी-शिप पर चर्चा करते हुए प्रो० वंग ने कहा, 'इस कार्य के लिए कुछ उद्योगपतियों को जोशिम उठाकर आगे आना होगा।

दूसरे दिन प्रातः प्रो० प्रयाग चन्द्र अग्रवाल के निवास पर सहचिन्तन में श्रीक हूए तथा जिला सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष श्री गोपाल नारायण शिरोमणि के निवास पर जागरा मण्डल के क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए वंग साहब ने कहा कि प्रदेश में समूह बन्ना सहा हुआ है। सब कार्य की दृष्टि से कार्यकर्ताओं को आगे जाना होगा। सामदान-मुक्ति-कार्य में बन्ने को सहायता होगा। इस बैठक में ७ बिसों के कार्यकर्ताओं ने भाग लिया था। रपामी कुष्मानन्दजी ने अध्यक्षता की। महावीर भाई ने शेर की जानकारी दी। इस भव-सर पर श्री बचिप भाई भी उपस्थित थे।

तेनुष्ठी देवी बन्ना महाविद्यालय में समाज-परिवर्तन की भूमिका में दक्ष के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए श्रीमती

बाबा—“मैं उसटा कहूँ। शरीर से यहाँ रहूँगा, मन से वहाँ।”

स्वापीजी बहुत आग्रह करने लगे। बाबा ने कहा—“आज विज्ञान का जमाना है। इसर उधर जाना पुरानी बात ही रापी। आज एक जगह नैडकर में अभि-ध्यान से सबके साथ धर्मक रखता हूँ। देवीविजय के जमाने में इसर उधर जाने की जरूरत ही बना ?”

स्वामीजी—“अमेरिका के लोग अब पीछे जा रहे हैं। देवीविजय की

सुमन वंग ने युवतियों का अह्वान किया। उन्होंने आगरा नगर को प्रमुख-महिना-सत्या पनिता-विज्ञान में भी भाग्य दिया।

आगरा बालिक के भौतिक विज्ञान परिषद का उद्घाटन करते हुए प्रो० वंग ने कहा कि “मानव विज्ञान से जैसा है। मानव के विज्ञान को ही विकसित करके हम अहिम सत्यान की स्थापना कर सकते हैं।”

सायबल गांधी शांति प्रतिष्ठान केन्द्र पर ‘वर्तमान परिस्थिति और सर्वोदय विचार विषय पर उन्होंने विचार व्यक्त किये। रात्रि जात्र गाड़ी से चलकर दिल्ली पहुँचे, वहाँ से चलकर प्रातः मटारपुत्र।

३ दिसम्बर को प्रातः ९ बजे सहायन-पुर लेब से टिहरी के आये हुए नसाबन्दी के सत्याग्रहियों से भेंट की। उस दिन सत्याग्रही भाई रिहा होनेवाले थे। प्रो० वंग ने सत्याग्रहियों (भाई-बहनों) को सम्बोधित करते हुए उनके अदम्य सत्य और उतासाह के लिए बधाई दी।

गांधी आश्रम पर दोपहर सेनाय कार्यकर्ताओं के बीच बोधते हुए प्रो० वंग ने कहा कि “कार्यकर्ताओं में आपस में प्रेम और सहोदर्य अधिा से-अधिक स्थापित होना चाहिए। इस समय में मेरठ जेल के कार्यकर्ताओं ने काम लिया था। प्रारम्भ में श्री दत्तराम भाई ने स्वागत किया। श्री प्रकाश भाई ने शेर की जानकारी दी।

सत्यार्थ से जा गये हैं, पुत्रों पीन चाहते हैं।”

बाबा—“पुरारी सोच चाहते हैं वो पर्यायना करें।”

इस पर सब हँस पडे।

“दूसरे देनों के लिए जाना सपेय दीक्षिए।”

बाबा ने हाट एक वाक्य पर निस्त—“विश्वस्तानि के लिए बाबा की पुन-ब्रामना। सत्य, मेम, बरुपा। यही विर-शांति के लिए उपाय है।” —कुसुम (मैरी से सावत)

भा त पर फालिस्तान द्वारा जवानक हवाई आक्रमण हो जाने के कारण स्थानीय ग्राम सभा नहीं हो सकी, जैस माउट हो गया था।

४ दिसम्बर को सुहृद की कथित भाई के साथ प्रो० वंग कथित होते हुए टिहरी पहुँचे, जहाँ नसाबन्दी आन्दोलन चल रहा था। प्रो० वंग की प्रतीक्षा यह निर्णय करने के लिए हो रही थी कि आरिस्तान में नसाबन्दी सत्याग्रह चलाया चाहिए या नहीं। सभी कार्यकर्ताओं ने रिजिजि मा टा बदलने, तथा सत्याग्रह आपन लेने का निश्चय किया।

५ दिसम्बर को प्रातः टिहरी जेल में जाकर प्रो० वंग ने जैसी सत्याग्रहियों से भेंट की। दोपहर टिहरी में अमर सहोदर श्री सुमन पाठों में सामसना में सत्याग्रही आन्दोलन के स्वरूप के परिवर्तन पर सभा हुई जिसका समापन प्रो० वंग ने किया। श्री सुन्दरलाल बहुगुणा ने पूरी जानकारी दी। इस अत्रम पर श्री कथित भाई ने भी आशीर्वाद दिया।

६ दिसम्बर को प्रातः बरेली सेठुन जेल के जेलर श्री सहोमनार जिहू से प्रो० वंग ने भेंट की तथा फानी रिपे जनेवाके बन्दियों से भेंट की। वहाँ के जेलर ने प्रो० वंग का स्वागत किया तथा जानी विरीसाय पुलिसा में नोट लिख-वाया। सहोमनार जिहू ने कहा, ‘मैं बाबा के परणों में सब कुछ सर्वात कर पुरा हूँ।

दोपहर बरेली जेलर में एपों को सम्बोधित करते हुए प्रो० वंग ने कहा कि “जो एहवा इस समय हुई है उसे जानम सना हमारी इस नयी पीढ़ी का काम है। काम की नगर के कार्यकर्ताओं से भेंट की।

७ दिसम्बर को सनकर में रासमी हृष्यान्व, श्री साइंन भाई, धीरान्त भाई आदि जेलर कार्यकर्ताओं को वर्तमान मुद्द और हमारा बर्तान विरय पर चर्चा हुई।

अचानक प्रो० वंग को उनके पिताजी की बीमारी का खार मिला। अतः वह जागे के आरे कार्यकर्ताओं को २२ बजे के बर्ता रवाना हो गये। —कुसुमसाह सहाय

भारतीय के समाचार

दंगा में शान्ति-कार्य

सित्तो (म० प्र०) में २४/१२/७१ की हुए साम्प्रदायिक दंगे की यही खतरा जारी प्रयाग करने के लिए जिला सर्वोप्य मण्डल ने कुछ प्रयाग किये। लोगों के घर-घर जाकर सही चारणो वा पता लगाने की कोशिश की। उनकी रिपोर्ट के अनुसार दोनो पत्रों ने (हैडरू-मुगलमान) आने में बाहर ही साधारण बात को सचने वा हच दिया और पुजिन की सापरवाही के कारण दंगा बहुत बढ़ गया। दोनों पत्रों की अनुहानि व सम्पत्ति का नुकसान उठाना पड़े।

सर्वोप्य के कार्यकर्ताओं ने दंगे से प्रभावित प्रत्येक परिवार से सहानुभूति व्यक्त करने हेतु भेंट की और इस तरह की हिंसा को व्यर्थता समझाने की कोशिश की। सरकार द्वारा इस घटना से प्रभावित लोगों को मुआवजा के रूप में आर्थिक सहायता दी जा रही है।

कार्यकर्ता सम्मेलन

दुर्ग (म० प्र०) जिला सर्वोप्य कार्यकर्ताओं का १६ और १७ नवम्बर का दो दिन का सम्मेलन राबनादगाँव में सम्पन्न हुआ जिसमें ५० कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। इसी सम्मेलन में 'राजनादगाँव प्राथमिक सशैक्ष्य मण्डल' वा उद्घाटन की नरेन्द्र शूरे ने किया तथा शांतिसेना समिति के सचोकर श्री पन्नालाल साव और वाचार्यकुल के सचोकर श्री मन्मुराम गुप्त सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए। सम्मेलन में ग्राम एवं पंचर स्वराज्य-शास्त्रीयता की प्रति प्रदान करने हेतु कुछ

कार्यवाही की। जिले भर में १००० कोर-सेवर बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया। सन् '७२ में आनेवाले चुनाव में मतदाना विभाग का कार्यक्रम हाथ में लेने का लक्ष्य किया गया। जिला शांतिसेना समिति व वाचार्यकुल का गठन भी इसी सम्मेलन में हुआ। इस तरह जिला सर्वोप्य कार्यकर्ता सम्मेलन सौस्वाह सम्पन्न हुआ।

भूदान-वितरण

म० प्र० : भूदान यज्ञ बोर्ड द्वारा मुरैना जिले की खोरपुर तहसील में १ नवम्बर से ३० नवम्बर तक भूमि वितरण का कार्यक्रम हुआ। इसमें ७९ शोबी के १३१५ भूमिहीनों ने कुल १३०६२ बीघा भूमि का वितरण किया गया। इसमें कुल २१५ हरिजन परिवार, ६९३ आदिवासी परिवार एवं ३७१ सर्वश्रेष्ठ परिवार हैं। उनत भूमि का वितरण भूदान-यज्ञ बोर्ड के विभिन्न जिनो से माये हुए व कार्यकर्ताओं द्वारा किया गया। भाग्यनी भूमि वितरण का आयोजन मुरैना जिले की निजपुर तहसील में १० जनवरी से २५ जनवरी '७१ तक होनेवाली है।

युवजन विकास शिविर

तेनाली (आंध्र प्रदेश) सर्वोप्य सेवा संघ, गुट्टर जिला सर्वोप्य मण्डल व विजयवाड़ा गांधी शान्ति प्रतिष्ठान के संयोजित सहयोग से मोगरू (कोण) गाँव में ता० १२-११-७१ से १४-११-७१ तक का त्रिदिनसय शोभीय युवजन विभाग शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर का उद्घाटन करते हुए श्री बीराजी ने युव-जनों को ज्ञान व अनुचित सरकारी कार्यवाहियों के लिए सलाह करने की शक्ति दी। उन्होंने प्रजा के प्रतिनिधियों के द्वारा उनके अधिकारों के प्रवर्धन की रीकने के लिए सलाह व मार्ग समझाने की जरूरत पर जोर दिया। गुट्टर जिला

सर्वोप्य मण्डल के सभी श्री प्रदानन्दजी ने प्राथमिक गांधी तथा युवा-युवतियों को शोभीयता की धारणा के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करने के मायने रखे। इसके बाद शिविर में शोभीयता के अर्थ और विचारों पर भी बहस हुई। इसके बाद कि 'इति एवं' 'व्यक्ति', 'सामस्यार्थ' व सामाजिक स्वार्थ, 'प्राणी' युवा तथा सामाजिक विचार। भाषण, चर्चा, प्रार्थना आदि के अलावा सामस्यार्थ, युवजन जैसे कार्यक्रम भी शिविर में रहे गये। ग्राम-सेवा के लिए पाँच प्रोजेक्ट व पाँच सचो के वा एक दल भी बनाया गया। शिविर-कार्यो व पाकीयो पर इन शिविर का अच्छा प्रभाव पड़ा है, ऐसा शिविर मचा-तनी ने महसूस किया।

इस अंक में

तत्प्रायही की विवरणारी	—संगनी वत	१०६
दुःसाधन		१०७
बगला देस और हम	—समाचारकीय	१०८
सर्वोप्य सेवा उमका स्वहय		
—उर्गोके भाटरसाई		१०९
मास्ट में शरीरी —	—रामभूति	११२
दुनिया में शान्ति-शास्त्रीयता की प्रतिनिधि		११३
श्रीरूपा की लोक गण-शाहा	—देवेन्द्र	११५
श्रीमती शिवा गांधी वा विवरण की पत्र		११६
दिनीक-निवाह से	—उद्युम	११७
प्रो० टाकुप्राय मग तथा गुमन		
बग उत्तर प्रदेश में		११८
शारी-संगनी के संगीन		११९

बाधक शुल्क : १० प० (कोड कागज : १२ प०, एक प्रति २५ पैसे), बिदेस में २५ प०; या ३० शिल्प या ४ डालर। एक अंक का मूल्य २० पैसे। श्रीहृणदस मठ द्वारा रूय सेवा संघ के दिने प्रकाशित एवं मनोहर प्रेस, धारागढी में मुद्रित

क्र. ११, अंक १४, शोषण, जनवरी ३, '७२

सर्व सेवा संघ, पत्रिका विभाग,

राजघाट, वाराणसी-१

ठार : सर्वसेवा • कोन : ६४३११

समाप्त
सामग्री

सर्वांग

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

सर्वसेवा-समाप्त

सर्वसेवा संघ का मुख पत्र

तंत्रमुक्ति और शासनमुक्ति

हमारे आन्दोलन में दो बातें बराबर कही गयी हैं। एक है, शोषणहीन समाज और दूसरा शासनमुक्त समाज। ये दो बातें समाज के विषय में कही गयी हैं। अपने विषय में कहा गया है कि हमारा कार्यकर्ता निधि-मुक्त होगा, तंत्र-मुक्त होगा, ये हमारी प्रतिज्ञाएँ हैं। मुझे कुछ ऐसा मानून होता है कि हम इनकी तरफ से बराबर सापेक्ष रहें हैं। हमने इनका विचार अभी तक नहीं किया है।

संरोप में, तंत्र-मुक्ति की दिशा में जाने के लिए इतनी चीजें हैं :

१. मनुष्य के लिए नियम का विधान होगा, नियम के लिए मनुष्य का नहीं। यह कब होगा, जब मनुष्यों में अनुशासन नहीं, स्वयं शासन होगा, जिसे आप संघम कहते हैं। लेकिन यह पुराना संघम नहीं है। हमारे द्रष्टव्य में हमने किसी को और किसी का हमसे भय नहीं होगा, अपनी पत्नी से नहीं और पत्नी को हमने नहीं। अनुशासन जिन संस्था में अधिक होता है मनुष्यता उनमें कम होती है। मनुष्य की कदर न हो, तो संविधान और नियम मनुष्यों को अलग कर लेते हैं।

२. काम का सम्बन्ध दाम के साथ अगर होगा, तो जिसको अधिक दाम मिलेगा, उमकी प्रतिष्ठा होगी। सब आप पूँजीवादी मूल्यों की प्रतिष्ठा देंगे। हमारी संस्थाओं में पूँजीवादी मूल्यों को कम-से-कम प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए।

३. परस्पर विश्वास जितना अधिक होगा, निर्भ्रम-निरीक्षण उतना कम होगा; इसकी आवश्यकता उतनी कम होगी। हम परस्पर विश्वास की बुनियाद क्या होंगे? इसका आरम्भ विश्वास से करें, अविश्वास से नहीं।

४. बदलिष्ठा नहीं, बल्कि एक-दूसरे को पद देना चाहिए। अधिकार की अपेक्षा दायित्व का भाव अधिक होना चाहिए।

५. सदस्यता की तरफ से मनुष्यता की तरफ जाना चाहिए। मित्रता मनुष्यता है, सदस्यता औपचारिकता है। सदस्यता में से साहचर्य का विकास नहीं होता। सदस्यता शरीरजन्य है, क्योंकि संस्था में आत्मा नहीं होती। मित्रता मनुष्यों का सम्बन्ध है, इसलिए उसमें पवित्रता होगी है।

६. हम सोचविचार नहीं रहेंगे, क्योंकि लोगों का रस देखकर काम करना पड़ेगा। हम लोगों का नहीं, सोचविचार का रस देखेंगे।

—सर्वसेवा विचार

आपके पुत्र

द्वि.स्ता देश में ग्रामरक्षारज्य

१९४० में जब भारत साम्राज्य हुआ था तब देश के कृषि-करीब हर गाँव में स्वराज्य-प्राप्ति के आकाश में नया उल्लास था, लोगों के मन में नये राष्ट्र की कल्पना थी, उसे यदि सही दिशा दी गयी होती तो उस समय जगत् की मासिक-व्यवस्था मिटायी जा सकती थी, हरेक जंतु-जन्तुओं को जमीन दी जा सकती थी और सामन्तशासन का बन्ध विभंग तथा विना जा सरतस या बिगड़े किए आरंभ देखा जा रहा है। इस तरह ग्राम-स्वराज्य-समाज में हर व्यक्ति अपनी आजादी और जिम्मेदारियों सम्भूत करता और अद्विष्टक समाज-रचना की नींव डालती जाती जिसमें व्यक्ति से लेकर विश्व तक की आजादी समुद्री बस्तुओं (आंगनिक सभिस्य) की तरह एक दूसरे को महापुरु और उत्साहक होती। तर्जुन समाज के निर्माण का आरम्भ हो गया होता, परन्तु सरकार की ताकत से समाज की बरतने के मन्त गणित के कारण इस देश के अग्रज सरवाणेशरी राज्य के दमस्त में रूँक गये। एक ही छन्दे में पबिसनी देशों की बतार में आ बैठने की चलाओष में वे उनके आगे हाथ पसारते रह गये। बला-पकारी (बेसफैर) राज्य से सामाजिक सम्बन्धों को बदलने की बात तो दूर रही, बरोच और असीर को मान्यता हासिल में पहले की बलिष्ठा और क्रियाक दूरी बढी। गरीब अनहाथ और निराश हो गये। राजा या महापुरु आर असीरों की सम्पत्ति की बड़ी और शोचन करने की उनकी ताकत थी। ये बाले जब बगरी घुसानी हो गयी है। अपने को गद्दी पर बनाये रखने के लिए सम्पत्तिक नेत्र एक के बाद दूसरे मोहक गारे देने रहे है, आज भी वे रहे है। समाजिक का नाम से लेकर राजा की ताकत बढ़ाने जा रहे है जिनमें

कीज का महाराज प्रयाग और जलपा का विजयल शोध होता है। 'जता भी अपनी गतिन नदी बना गानी और एए बेगरी से राक्षसीय नेत्रों का मुँह ताकती रहती है। समग्र बलिष्ठा जाता है। अपनी सम्पदा घुसलने के बन्धे और भी उलटाही ज बौ है और वह निराशा और हिम्मतवन्ती (फरदुतन) में हिम्मा के घुसने दासियों की चपेट में वा छिद्रकृत हिंस्र के गायन से अपनी भुक्ति की बरतना करती है। यही समय पर सही दिशा में बचम उठाने के अनाथ में, नीरसगति को जगत् रानी में भारत में हम सफल नही हो पा रहे हैं।

यद्यपि देश के निर्माण का समर्थन भारत में सर्वोदय आन्दोलन में जरी हय लोग पहले मिल से ही कर रहे हैं। अभी क्विन् से नागरिक पबिस अधिक मजबूत हो यह हमारी सम्पदा है। भारत में उसी चित्र को सड़ा का ने के लिए भूदान-ग्रामदान का कार्यक्रम हबने हय में निवा है।

बतला देश में बचपि लोकरव और धर्म-निर्वंस्तता की प्रापणा की है तथापि बन्-निरपेक्ष सरकार और स-रा-नियेक्ष ग्रामरक्षारज्य का तब्य उसके सामने दाभी ध-क बढी है। सर्वोदय समाज की दाभी ग्रामरक्षारज्य की रक्षाता न तो मात्र भूदान वामदान आसीरन का मुहसात्र हो सकती है और न मात्र भारत तक ही रहना प्रयोग-शोध सीमिन हो सकता है। ग्रामरक्षारज्य का स्वरूप पड़ा करने के लिए यद्यपि देश उत्तना ही मौजूद शोध है किन्तु एतन ग्रामदानयाका शोध विहार कयमा अन्य कोई शोध। दिहार के एक जिये व्यवसाय शर्य शर्य प्रयत्नों में ग्रामरक्षारज्य के लिए जो वेष्टार्य की जा रही है वे आरम्भ की बाने, पर आरम्भ के सर्वोदय मार्गदर्शकों को बड़ भंड सोचना चाहिए कि जहाँ गोहा घरम है उन्हे टटा हो ज.ने के पढ़ने जय पर ताकत तथा बर उषे सर्वोदय आरम्भ दिया जान। भेरा मुगात्र यह है कि सर्व सेबा संव को ग्रामरक्षारज्य के विचार की मुक्ति देने के लिए यद्यपि देश को भी बतना

शोध माने।
पर अन्तर्राष्ट्रीय शोध में काम करने को नीति तब्य देना मय स्वीकार करेगा तो विभिन्न कार्यक्रमों के दमन विचार होने। कार्यकर्ता और रुच्य के बारे में भी अन्तर्राष्ट्रीय बंधनो पर सोचना जा सकता है।

विषय-व्यक्तिसेवा का संगठन, सतार के सब देशों में अद्विष्टक समग्र-रचना की वेष्टा करनेवाली संस्थाओं की भवित को एतन वर संचालित करने का काम आदि उन्नीत व्यग होगा।—हेमनाथ सिंह

खादी की दुर्गति

खादी के पतन में वृद्धि के साथ साथ उनकी आरमा ता उनकी अनुप्राप्त से तथा होता जा रहा है। तासी के उत्पादन के बारे में ओ. फोटो आरगो मिलती है उसकी एक टिकाई वास्तविक खादी का उत्पादन घायब होता होगा।

भू-दान-ज के १ १२-७१ के अरु में पराशिव धी नगरन प्रसाद जगदवाल के खादी की अर्द्ध ताजपरी तेल में बतया गया है कि १९४३-४४ में भारतवर्षी खादी ९०% थी, १९६४-६९ को यह ४०% को आ गयी और १९६०-६९ को यह १२ की उतर आयी। अतः आपके "अ.पे, और ध.पे" की प्रगति त बड़ दुर्गति ही मानना चाहिए।

खादी में जो अष्टाचार बत रहा है उच्छेदी जलन हो तथा खादी की गति की रिश और मोहना चाहिए यह तांचा बच। परमाण के अधिवासर्यों के सामने यह एक चुनौती आ सकी है।

हरी तदर्थ में भूदानज्य ता-१२-२-७१ के अरु मैत्र नाशिन धी धीरेन प्राई के अकार बड में पूरा हयर्थन बरना है। अर्थ-संसाधन के साथ साथ आधुनिक-सम एक कृत्रुता बरसा ग्रामरक्षारज्यनक तथा ग्रामरक्षारज्य की दृष्टि से बतना चाहिए। खादी की टिकना ही तो आरमा के साथ तथा श्रुत कर रहे है।

—मदन सिंह बड

बंगला देश की आजादी : भारत का कर्तव्य

—विनोबा

हिन्दुस्तान में 'डेमोक्रेसी' है। पाकिस्तान जन्म से बना है तब से आज तक वहाँ 'डेमोक्रेसी' नहीं बनी। लोगों को दरबार में रखने का ही बना है। केवल बंगला देश को दरबार है ऐसी बात नहीं, सिध, बसुविस्तान, परसुविस्तान दोनों को दरबार पजाबी लोगों ने। उन्हें भाषा तब पर लादनी पड़ेगी, ऐसा सम्भव अब भीसता नहीं। जंग वहाँ कि अच्छे हैं लेकिन नेताओं के अधीन हैं। यहिहा का हैं, भुटो है। अब यह भुटो कास्टिनावापुई हैं उनका विभाग भी राजनीतिक है। बंगला देश को छोड़ने के लिए अगर वे लोग तैयार हो जाते हैं तो बहुत बड़े बात मानी जायेगी। तब पिछले १-२० महिनो में जो हुआ वह सब गलत हुआ ऐसा उनको बखुद करता होगा। दरबार बखुद करने के लिए वे मुर्शिदादर तो हैं नहीं, इसलिए वहाँ तक बाबा भी मिश्रपुरतन का अक्षर-विश्व दर्शन है वहाँ तक बाबा का मानना है कि एक उत्तम सङ्घर्ष होनी चाहिए। इन्दिजाजी का धर्म

इन्दिराजी ने हृद दर्जें का धर्म दिखाया। जयप्रकाशजी भी नहने से और भाषा भी तो राय थी—यहिया ने बीच में जो बकवध दिया था मातर पूज में, माध में बहन शुक्र हुई उसके रो-नीत महीने बाद, उसके सप्ट हुआ था कि वह बगलर देश में डेमोक्रेसी बनने नहीं देगा। इस बातका के बाद मेरी राय है। इस बगलर देश को मान्यता देनी चाहिए और मान्यता देने का मतलब नैतिक मदर देनी चाहिए। जयप्रकाशजी

को ऐसा पढ़ाने से ही कहने थे। लेकिन इस से कुछ गया था इस विषय में तो मैंने कहा था कि जरी जो जालकारी है वह थलबायों से और नम्बर दो, हमारे कुछ लोग वहाँ जाकर बापड थलें हैं उनके मिलती है, वह है। मम्बर तीन, हमारा एक दर्शन है विमर वा। इन तीन आधारों पर हमारा विचार बनना है, परसु इन्दिराजी को ऐसे कई खबरें मिलती होंगी जो हमको नहीं मिलती। इसलिए यह जो करें ठीक होगा। हमको जो शोकाह है वैया मर हम प्रकट करते हैं जिससे भारत के लोगों को मज बगले में मदर हो और इन्दिराजी को निर्णय लेने में मदर मिले। बाहिर निर्णय से उन्हें ही करना है।

इन्दिराजी ने चार-पाँच देसों में जाकर समझाया। हृद दर्जें का धर्म उन्होंने दिखाया। उसके बाद भी उन्होंने देखा कि उनकी पीढ़ी बिबुल सामने आ गयी है और हार्द जहाज से हमने गुरु हुए हैं सब उन्होंने तम किया कि भर सङ्घर्ष गुरु हो। यह मैं नहीं कह सकता कि प्रथम हमसा बिबने गया। यह प्लास्ट तो सङ्घर्ष में हमसा बादबस्त रहता है। उस माह का जवाब इतिहास दिखाता है और यहिया ने कहा कि कि दर दिन के अन्दर मैं फास्टिवर पर होऊंगा, दरबार मजबूत है कि उसके विचार में जबर वा कि प्राक्मण करना चाहिए। फिर भी इन्दिराजी ने धर्म दिखाया।

सङ्घर्ष अपना मुरप उद्देश्य पूरा होने तक जारी रहनी चाहिए और वह उद्देश्य

पूर्ण होने के बाद ही शान्ति से बंगला देश बनाया जाएगा। और उसके ह्यारे सम्बन्ध अच्छे बनें। इसी प्रकार फास्टिवर, बसुविस्तान, विषय में हमारे जैसे भाषायी प्राण्य को—मले हो वे फास्टिवर के अन्दर हो और जैसे हमको आजादी मिली है जो उनको भी मिलनी चाहिए।

बंगला देश में प्रामस्वरराज्य

जाहिर है कि बंगला देश आजाद होगा और वहाँ कीरातही आयेगी लेकिन यह देश बहुत दुखी और शक्ति है, इसलिए वहाँ की जगता सरकार पर निर्भर रहेगी और फिर हा देश से, उस देश से मदर मायेवा जैसा भारत में बीच राज्य से चल रहा है। इसलिए जगता का वहाँ अपना कोई राज्य नहीं होगा। इसे मैं सोचनीति महता हूँ। इसलिए मेरी राय में उनको भी वहाँ प्रामस्वरराज्य प्रामस्वरराज्य की स्थापना करनी चाहिए। तो हमारी ओर से उनको क्या मदर हो सकती है? वही कि हम अपने देश में यह करके दिखायें तो उनको उत्तर-के-उत्तर मदर हम अहिंसा को माननेवाले लोगों ने जो ऐसा बंगला देश वा इतिहास रहेगा।

मुद्र और इतिहासवादी

'बोधयुग्' में हम पर टीका आयी है। गांधीजी होते तो मात्र जो सङ्घर्ष गुरु हुई है पाकिस्तान-हिन्दुस्तान के बीच, उसे बचा वे आशीर्वाद देने, जैसा कि उनके अनुयायी जयप्रकाश और किरीश देते हैं? और फिर एतका उत्तर लिखा है—वहाँ तक हम जगताते हैं नहीं देते। लेकिन वह जगता नहीं है 'बोधयुग्' वाता कि जब हमना हो रहा था बगलर पर फास्टिवर भी और वे सब जगतार लाजनी ने गांधीजी से राय ली थी।

—जयप्रकाश कीरतन में अब तक गांधी और सहोष की स्थापना की पारटो न हो, तब वह इतिहास स्वार्थी (नेस्टेड इंटरेस्ट) का धारकों पीन-वेन (एडवन्समेंट) होकर रह जाता है, और जगता विभाग को प्रक्रियाओं से जगता घुड़ी रह जाती है। जगता का भूट जगता किसी देश को, बिबेण रूप से भारत और बंगला देश जैसे जिताजमोल देसों को, शान्ति और सुखबन्धा के लिए सबसे बसा सतार है। वे दोनो देस सोचें कि वे बना करेंगे जिससे उनके

सौराज्य में सौर की प्रजापता मिले, तब हावी न होने पाये। भास और बंगला देश, दोनो देस एतक और एतकनासों के बीच एक पतली रेखा पर सङ्घर्ष है। इवर्जना से एक और सर्वनामक टापीपता का रास्ता मुतादा है, और दूसरी और संविनवादी टापीपता का। धारजना की बिबि कतिपय से इन देसों में अब एक के संकट का मुताबिका दिया है, जगी से वे कतिपय की सम्भावनाओं की भी प्रकट करेगी, यह आभास है।

प्राणी को दे उतार दिया था कि जिस हालत में तुम हो उस हालत में वहाँ कार्यायें बेकरी चाहिए।

सहरार के विना शान्ति हो सकती है अगर यू० एन० ओ० भी सरकार से निरासनीकरण का प्रस्ताव वेश किया जाय और सब मध्य-मध्य २५०० रुके जायें। मन्बर दो—यू० एन० ओ० ने एक शान्तिसेना खड़ी की है सधन-सुवर्ण। इसके बचने में एक खूबी शान्ति होगा—सधन सुवर्ण—सड़ो करे। ये दो बातें यह करेगा तो ही सहरार के विना शान्ति हो सकती है और यह जो हमने वजनपत्र कहा है उसके विना शान्ति नहीं होगी।

भारत के प्रति दावत

भारत-प्राण सम्मन्धों में सुधार की उपायवाही नहीं कर सकते। प्रथम तो भारत को यह तर्क ही ज्ञानी चाहिए। नम्बर दो—संसार में सुवर्ण से जीने के दावत बगल देना की वचनमूल्य मान्यता देनी चाहिए। क्योंकि दुनिया के देशों की आज गला है कि भारत उसे अपने कचरे में रखेगा या दोनो बगलों को एक करके रखेगा। सरकार ने चाहिए किया है कि हमारा ऐसा उद्देश्य नहीं है। अब भारत ने उसे सचमुच पुरी आजादी दी है, पड़ोसों के सम्बन्ध रक्षे हैं और सेना पुरी हटा ली है, ऐसा दावत होगा दुनिया को जब भारत के शासक पर दुनिया की इसीमान होगा। आज दुनिया भारत के शासकों के विचलनात् की दृष्टि से देखेगी। दोनो सरकारों ने कहा है कि वे बेचरिय स्टैंड रहेंगे और बगल देना में सफल, सफलतापूर्वक, सर्व-धर्म समता—एक आधार पर बहु सजा होगा। ऐसा चाहिए हुआ है।

अगर भारत के मन में जीत का काँटा नहीं रहेगा तो शान्तिमान के मन में हार का काँटा नहीं होगा। क्योंकि विजय का उम्मार हो सकता है। हमको मुक्त करना पड़ी है—धामरत्राण्य की विधि। इसके बगल देना की हृद उत्तम सेवा कर सकेंगे। सधन-सुवर्ण यह भी देना है जो कि भारत में हिन्दू-मुस्लिम सभ्य

जो हों, युद्ध अनिवार्य है, लेकिन युद्धोन्मत्त नहीं होना चाहिए। इसलिए हर सिपाही के पास गीठा-इन्वन्शन होना चाहिए। निर्वैर सज्जता है, वैर नहीं करना है। सज्जता अनिवार्य हो तो सज्जता लेविन वैर-भाव नहीं रखता—यह गीठा की जो गिजा है, कभी सज्जता नहीं चाहिए इस सिद्धान्त की ज़रूरत अधिक बटोरा है। शरय से सज्जता भी और वैर-भाव नहीं रखता, यह सबसे बड़िया है।

अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध और अहिंसक प्रतिकार

मेरे पास एक और बात सामने आती है। जब अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध होता है आज के जमाने में, और ऊपर से बन बरसाते हैं दण्डनीय सभ्यता पर, तो ऐसे समयों में क्या अहिंसक प्रतिकार हो सकता है? इतना कोई उत्तर मेरे पास नहीं है किन्तु इनके कि लक्ष्यों को धोखा करके मर जायें, लेकिन यह व्यवहार्य दीखता नहीं। क्योंकि अहिंसा के लिए लक्ष्यों को धोखा करके मर जायें, ऐसी ताकत ही तो उनकी सरकार भी अहिंसक होगी, लड़नी नहीं। सुर्वेन ने भी क्या किया, अछड़-

योग सिद्ध किया लेकिन अहिंसा नहीं सिद्ध की। इसके बारे में हम उनको बोध नहीं दे सकते। यह अपनी सोच का विषय है।

धामरत्राण्य अगर सफल हुआ, वनि वाल गाँवों में शमसुभा बनी और प्राणीय जलवा की ओर से लोग बुझे दमे और जेता में बार-बार बहता है, उस प्रकार दल-मुक्त सरकार और सरकार मुक्त जनता हुई तो लोकमत से सुर्वेनैरमी हम सामोरे दिखाई दे कर सकते हैं और प्रथम अक्षर दुनिया पर पड़ेगा।

फिर एक बात हमको और काली होगी—सादर एण्ड लिबरल्टी का मेन होना चाहिए। आज सादरिस्ट चारे सरकार के हाथ में है और सरकार विश्विनी काम की सोच में पड़ा देती है वे वही सोच करते हैं। तो आज सादरिस्ट सिवागत का प्रणाम बन गया है। इसके बजाय सादरिस्ट यह करे कि हम अहिंसा के अनुमूल ही सोच करेंगे, फले हूँ मन्बर से एक कीटी न मिले। यानी उनकी आध्यात्मिक कानिष्ठ प्रकृत होगी तो दुनिया का रूप ही बदल जायगा। (सर्वेन) ११ दिसम्बर, '७१)

सर्व सेवा संघ का वक्तव्य

बंगला देश की जनता और सरकार का प्रमिनन्दन

सर्व सेवा संघ ने भारत सरकार द्वारा बंगला देश की स्वतन्त्र सरकार को मान्यता देने वाले पर अपनी हार्दिक प्रमन्नता व्यक्त की है और बंगला देश की जनता और सरकार का अभिनन्दन किया है।

यह द्वारा प्रकाशित एक प्रिन्ट में इस बात पर बेट प्रकट किया गया है कि "विश्व के अनेक देशों के प्रबुद्ध लोगों का सम्बंध बंगला देश को प्राप्त है लेकिन कई देशों की सरकारों ने नहीं करे मुक्त समस्या के प्रति अपनी अति बन्ध कर लेता ही टीक समझा है। दुनिया के कई लोकतंत्रों में से एक अमेरिका की सरकार

प्रकार की नीतिक और आर्थिक मदद देती रही है। दुनिया के लोकतंत्र की वालोचना के साथ-साथ ऐसी सहमता का दिया जाना सम्बोधिका सरकार की नमसुधाभासकारी नीति को जाहिर करता है। सैनिक सन्तानाही सरकारों के साथ अमेरिका का यह गठबन्धन विकसनीय देशों की जनता के लिए बड़ा सज्ज है।

"मह अतना भारवर्ष की बाधा है, विश्व की महाशक्ति बनने की महत्वा-कांक्षा में चीन भी योग्य-मुक्ति, जन-कानिष्ठ, मान्यता आदि के सारे श्रेय और सिद्धाणों की ताक में रखकर सैनिक सन्तानाही का सम्बंध कर रहा है।

वंगला देश : समस्या और निदान

—इन्द्रनारायण तिवारी

हद और आन्ध्र के दो किनारे पर बसा इस त्रयोदश गण-प्रशासनी बंगला देश का अभिमान्य है। वण्टो की गलियों में बंगलादेश का कारखाने मिलने मुक्त बंग से बहता आ रहा है। वे खाने-पाने चीरान परो को लौट रहे हैं। मानव इतिहास में सामूहिक मुक्ति का एता आन्दोलन देखने को नहीं मिला था। फिर हदों के कारखाने का उदाहरण इतिहास में नहीं मिला था। लाखों मृत्यु के पाठ उभारे गये। लाखों बिना खान-पानों के मर गये हैं। अब पूर्व बंगलादेशों की अनुभूतियों पर वर्तमान की दिवसों पर आयोजित एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण करना है जो न केवल सारे राष्ट्र करीब बंगलादेशों की स्वच्छन्द जीवन प्रदान करे प्रत्युत सम्पूर्ण एशिया और विश्व के लिए एक उदाहरण बन जाय।

शान्ति की बेचैनी

अन्या भारतीय जनता और मुक्ति-बाहिनी ने आत्म बलिदान देकर शान्ति को प्राप्त किया। लेकिन शान्ति की बेचैनी कितनी घनोन्मत्त है। सीमित कठोरताम की, बरबादी की, कष्टों की बीजान की सभी माय करते होगे। लेकिन एक प्रथम हृद मन-भक्ति को भ्रष्टित करता होगा। एक ही घोषणा की और १५ करोड़ अर्धों होगी है। एक ही घोषण की लोभ हो रहा है। वे हैं बंगलादेश। यह लोभ है एक सन्ने दोनकण्यु की।

बंगलादेश की बिना छुड़ाने सचकी शान्ति इस क्षेत्र में स्थापित नहीं की जा सकती है। उनके छुड़ाने के लिए अमेरिका के राष्ट्रपति, जो बड़ी सम्मो-नम्बो करते हैं, उनसे राजनीतिक के नये मासक पर बनाय जानने को कहा जाय। फिर पाकिस्तानी नरपतिक प्रशासन, नवंबर और सेरा के जवानों को लव लव न छोड़ा जाय जब तक दोल मुकीद्वरहायन से मुक्त

न करा लिया जाय। फिर पाकिस्तान को जित भूमि पर भारतीय सेना का बचका है वह उसे तत्र लक्ष न दिया जाय जब तक बंगलादेश जेल से बाहर नहीं जा पाते हैं। यह युद्ध आने में एक जनीसा है, अतः जेनेसा समझौता लक्ष ही हृद सीमित नहीं रहे, हमें तो उसकी कमियों को भी दूर करना है। बंगलादेश को छुड़ाने के लिए अगर जेनेसा समझौता की 'शान्ति सुरक्षा' प्रारंभ को एक नया मर्यदें से लें तो हम अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति सुरक्षा के आन्दोलन में बंगला देश और भारतवासियों को एक बहुत बड़ी देन होगी।

बंगलादेश की अनुपस्थिति में भी जो सरकार बनेगी वह अच्छी होगी यह भरोसा तो है लेकिन उनके रहने पर एक ऐसे जीवन-रचना का संभव हो सकता है जो "सर्वोपर्युक्त" के मर्मों में अभि-मानिता होता और जो जगती जायस एव स्वयं के ऊपर एक जन-राजनीति की रचना करते, जवकि सम्पूर्ण बंगला देश इस क्रान्ति के बाद एक नयी स्पेस प्राप्त है।

हरादे की घोषणा और प्रार्थना की सृष्टि

बदलन मन में अनेक भाव-तरंगें उठती हैं। नहीं तब यह नैतिक होगा कि हृद भारतीय उनके बारे में लोभे कर के रखन जाने सुभों से दुष्टों को संभने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। फिर भी मात्र आत्म-संयोज के लिए कुछ लिखना है।

हरादे की घोषणा हो चुकी है। अब ६ सुभों को यहाँ बहने की जरूरत नहीं है। लेकिन जिन उद्देश्यों के लिए ६ सुभों को लड़ाई लड़ी गयी, उसका निश्चय तो नहीं किया जा सकता। सरकार प्रजा-शाक्तिक हो। मुक्त १६२ राष्ट्रीय संघ और २१ राज्य एम्बन्दी के सदस्यों का

पुनाय वन विस्तार में हो चुका है। उनमें से बहनों को पारताना मृत्यु के पाठ जगार चुकी है। कुछ लोभे हैं। अब एक नये संविधान-नम्बो का गठन हो और बंगला देश के एकात्मक या संघात्मक संविधान का निर्माण हो। मूल विद्वान्नी को संविधान में दृष्ट गणन नहीं भूरायण जाय तो बंगलादेश के ६ सुभों कार्यक्रम का वह अभिन्न भग है। पहली बहल यह कि हर बंगलादेशी को जनमत का अधिकार मिले। सरकार की प्रणाली संसदीय हो और सर्वव्यवसायी हो। फिर सरकार सर्वव्यवसायी के प्रति उत्तरदायी हो और हो सके तो बंगला देश की सरकार भी संघात्मक हो।

मूल पीड़ितों का कारखाने

साय-साय कुछ समस्याएँ ऐसी हैं जिनके ऊपर शीघ्रातिशय ध्यान देने की आवश्यकता है। १ करोड़ शरणार्थियों को बसाने का काम बड़ी मुश्किल से के साथ होना चाहिए। सबकी जान-माल की सुरक्षा होनी चाहिए। इतना ही नहीं प्रशासन-पीड़ित व्यक्तियों में भी राहत-कार्य का बसना अत्यन्त आवश्यक है। फिर दूसरों पारि-सन्धी संविधान के लिए जो दृष्ट तब से राष्ट्र का कार्य तत्र लक्ष करना होगा जब तक वे अपनी देश को लौट नहीं पाते।

एजेण्डा पर क्या है ?

बंगला देश की सामाजिक एवं आर्थिक पुनर्विपना किस प्रकार की होगी इसके बारे में कुछ कह सकता नहीं है। इतना कहा जा सकता है कि १९४४ के २१ सुभों कार्यक्रम और १९६६ के ११ सुभों कार्यक्रम की भुगतान नहीं जा सकता। कुछ शान्ति-संयोज के बारे में 'जरा देना यहाँ उचित होगा। बिना मुनाबजे के जमीन को राज्य के द्वारा प्राप्ति और भूमिहीनों में अपना विचार होना आवश्यक है। छोटे किसानों की कीट-व्याध जाना अत्यन्त आवश्यक है। इतना ही नहीं, सम्पूर्ण बंगला देश में विनाई का प्रत्यक्ष हरा देना ही नि-संभन की बचो न रहे। बड़े-बड़े उद्योगों के माय-पूट-भगाय

को समाजीकरण होता अर्थात् आवरणक है। फिर शिवा, सहकारिता और अन्य क्षेत्रों में भी सुधार लाने की आवश्यकता है। समाज पर सचं व्यक्त बम होना आवश्यक है। इसके साथ-साथ जैसे और बहुत कम वेतन पानेवालों के बीच की खाड़ी को समाप्त करना जरूरी है। १९५२ की योजना में ही रहें ताक बड़ा पना था कि एक मही मास १०० २० में अपना जीवन-मय करेगा। इस तरह से अनेक मुद्दे बनना वन के सिमित राज-नैतिक दलों ने क्यों से अने कार्यक्रम में रखे हैं। प्रथम इन कार्यक्रमों की योजना का नहीं, वास्तविक परिस्थिति में उनको कार्यक्रम देने का है। योजना की विधायिका से निराशा हुआ बनना देश एक एक के लिए भी विचित्र नहीं कर सकता। अनेक मान अल्पिक के लिए वहाँ की सरकार को सूचितनी, छोटे रिटालों, खेतिहर मजदूरों और औद्योगिक प्रतिष्ठानों के मजदूरों को दशा को हीन ही छोड़ करना होगा।

जनाधारित प्रशासन

बैसाक बनना देश में प्रशासकों को बनी होगी। उनकी भूमि वरं तरीकों से ही सचनी है। पूरे जगती को कमर जो परिवर्तन सिमित मर्म में से उन्हें ए-विन रिचा जाय। फिर योग राजाज्य सविश के अफिबरो को न-बकी डेकर बल्लो को भूमि की जाय। इसने अपना रूप, भाषेन, और राज् प्रशासन के अन्य निहायों के प्रशासकों की भूमि को वा सचनी है। कुछ भावीय प्रशासक भी प्राम्भ में अपनी सेवा अहित करने गये हैं। उन्हें बावध मह माय रहे कि वे वहाँ बाधन नहीं देवा काले गये है और फिर बिना सीध हो से लोड अले का प्रयत्न करें। दना ही नहीं उन्हें अपने भारतीय प्रशासन सेवा को अजुन को छोड़कर एक अतिरिक्त समाज की संसा-भावना का आधार करते हुए नये परिचरन की पड़ी में अठराजाही से हुए रहना

होगा। सचता तो यह होगा कि अर्थिक-से-अर्थिक योग्य लोकर जनता की सेवा के लिए वगला देन के प्रयत्नों में जायं न कि नविवास्तव में अपने ज्ञान-मयरी की होनी संतो रहे। इस अनुभूति से भारत के प्रशासकीय प्रक्रिया को एक नवी अनु-भूति प्राप्त होगी।

विरवनीडम् की मात्र इकाई

बनना देश की मायता से यह एक 'विरवनीडम्' की अपने दरार्ई हो पायेगा। मायता-पानि की सभी योग्य-ताएं इसके पास है। सम्पूर्ण वगदेन पर गयी सरकार का अहितार है। एक स्वामी प्रशासन-पणाली कायम हो रही है। सम्पूर्ण जनमन का समर्थन प्राप्त है। नयी सरकार का जन्म एक सर्वमाय अति-कारी प्रक्रिया में हो चुका है। फिर नयी सरकार अन्तराष्ट्रीय सम्प्रदा 'द्वीदी' के सहारे कर चुकी है। भारत और भूभाग की मायता भी प्राप्त ही चुकी है। दना ही नही विश के १३५ राज्यों में ११ बड़े महासंयुक्त सामन्तरी और प्रबालको राज्यों का समर्थन भी प्राप्त कर चुका है। बहुत उम्मीद है कि जिन देशों ने महासंघ में अपना मत जाहिर नहीं किया या मान्यता में भाग नहीं लिया है, उनसे भी नकारित चलना देश की मायता विन जाय। निर्भी भी स्थिति में मान्यता देकर विश्व समुदाय स्वयं क्राय होगा। नरॉकि नये बनना देश के उद्भव में विश्व पुनर्रचना के बीज भी निहित है।

सन्दर्भ शक्ति या जनशाक्ति

वरवम बनवाती 'खोदार, बांगला' वर 'मगला' रूप रखने के लिए जन-शक्ति की प्रयत्न हैं, न कि 'चर शक्ति' को। जो जनता १९४८ से आर तह मापनी अति, कोषण के विरुद्ध अति करती रही उन जन-भाषना का बार-बार होना चाहिए। जो जनता १९९९ की अति-के बार अयुक्तारी को समाप्त कर सको, विश्व जनसम्पू को एक करोड़ की समाज में जगपाथ के रूप में वर्द को

पाटियों में महीनों बितावा पड़ा, जिन मायत सम्पू में से लालों नर-नारी एवं बच्चों की हत्या कर दी गयी—उस जन-जीवन की नवरचना में वहाँ की चन्द शक्ति अनाज अतिपरन न बनाये नहीं थी फिर अति की ज्वाला बडक सकती है। दोहसुबीर के जन-पान्दोत्तन की विश्व एापरवर्ग, मजदूर वर्ग और जनता ने सामू-हित रूप से सकन बनाने का प्रयत्न किया यह फिर एक बार अहित जनशक्ति का प्रयत्न नव बाविक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर कर पायेगा।

जुटकर दूटे, टूटकर जुटें

सगला है इस भारत-महासागर तीर पर सदियों से जो अनेक अतिवि कारवाँ आते रहे है यही टूट-टूटकर खले जायें और नवमानव जाति का निर्माण होता रहेगा। भारत महाद्वीप में पचाने की समयी एक अजीब लिन है। मुकामल, विश, पारसी, ईसाई, जो भी आये अपने बन गये, जो अपने मही बने उन्हें अवार बन्द होना पड़ा। फिर अलफ भारत मयाद टूटना रहा, कई बार विशा और फिर सभित हो गया। भारत नीति से ब-ब-ब "संयमेन जमते" की सीमा का उत्सव करता है, टूटता है और अ-ह्वार में मिनता है विघटन और अल्प-समर्थन। ज-ज-ब-ब "असतो मा सद्ग-मय" को परम्परा पर चलता है तो भारत अतिरु दुष्ट से सोने की चिड़िया बन जाया है और नीति एव सांस्कृतिक जीवन को उड़ान मारता है।

हाल ही में परिवर्तन बना और फिर बंग देन का नवामन। इस तरह टूटकर जुटने और जुटकर टूटने की परम्परा से हुए सबारे निराशा-मुक्त होकर भारत जैसे महाकाय सागर तीर पर "वीर भाषा और सवाक मीमा अनुभवा" के आधार पर अपने-आपने जीवन की लुख और हुन, शक्ति और सहायि के तरंगों में अरब तरंगित करते रहता है।

विकास और प्राप्ति का एक नमूना

—सिद्धराज दहडाल

पटना के अंग्रेजी दैनिक 'इण्डियन नेबल' के २२ नवम्बर १९७१ के अंक में एक समाचार छपा था कि दरभंगा जिले के सन्पूर्ण मधुवनी सब-डिवीजन में अंड-विधान की धारा १४४ लागू कर दी गयी है। दरभंगा विहार का ही नहीं देश का सबसे बड़ा जिला है। उसकी आबादी करीब ५० लाख है। जिले में तीन सब-डिवीजन या अनुमंडल हैं जिनमें से मधुवनी एक है। इस अनुमंडल की आबादी २० लाख के आधारा है।

संकेतो वर्ष मोल और लाखों की आबादीवाले समूचे क्षेत्र में धारा १४४ लागू होने का कारण कोई दंगा या विद्रोह नहीं है, लेकिन यह बताया गया है कि अणुस्फोटि घात (घात) की फसल बरने पर गाँव-गाँव में बड़े पैमाने पर फसल बूटने जाने का खतरा पैदा हो गया है। मधुवनी के अनुमंडलीय अधिकारी (एम० डी० ओ०) के अनुसार कई गाँवों में फसल बूटने जाने की खबरों से शुरु भी हो गयी है और पुलिस की साफ़फ़्त करवाई से तूट-गाट को बड़ने से रोकना असम्भव है। मधुवनी अनुमंडल में १८ घांटे के अंतर में हर एक में केवल ९ पुलिस के जवान तैनात हैं।

समय से अक्षरार के इसी अंक में इसी पृष्ठ पर २१ नवम्बर को सुबहात राज्य के घरोई नामक स्थान पर साबर-मंडी नदी के बाँध की आदारखिना रखते हुए भारत की प्रधानमंत्री की यह गर्वोक्त मोटे अक्षरों में छपी है कि इस वर्ष की फसल पिछले सब सालों की अपेक्षा कमजोर हुई है और "हमारे पास देश के समाज लोगों को अस्थाने के लिए भरपूर अनाज है खतरा ही नहीं, इसके अलावा हमारे भण्डार भी भरे हुए हैं।"

एक तरफ सबकी भूल इतने के लिए भरपूर फसल और भरे हुए अन्न-

भण्डार, तथा दूसरी ओर गाँव-गाँव में फसल बूटने जाने के डर से हजारों गाँवों के पूरे लोग में धारा १४४, यह केंपी विधम्बना और कैसे विसंगति? देश में खूब 'विद्रोह' हुआ है, जगह-जगह बाँध बंधे हैं, फारखाने लगे हैं, खेती में भी खर तो 'हरित क्रान्ति' हो गयी है और पैसावार खूब बढ़ रही है। विकास हमारा नया देवता ही बन गया है। स्वर्णिप प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने प्रास्ता बाँध को देश का नया तीर्थ-स्थान बताया था। उनकी सुशुनी, कर्तमान प्रधानमंत्री भी प्रसन्न हैं कि देश में अनाज खूब पैदा हुआ है, और 'भण्डार भरपूर' है। लेकिन दूसरी ओर गाँव-गाँव में अनाज और कर्पसू, साड़ी और मोली। इसका क्या कारण है?

बाँधे दिन पवित्रत लोग, देश के अर्थ-शास्त्री, राजनेता और धनपति, सब यही कहते हैं कि उत्पादन बढ़ाओ, उर्वरि सब समझाएँ हल हो जायेंगे। हमारे जैसे लोग अगर यह कहते हैं कि भाई, उत्पादन तो अच्छर बढ़ाओ, लेकिन अन्न बढ़ी-बढ़ी पचवर्षीय मीनमाएँ उपलब्ध होने में, फसल बढ़ाने में, और फारखाने में भात तैयार होकर लोगों तक पहुँचाने में जो समय लगेगा उस बीच अपनी रोटी में से थोड़ा-छा हिला भूले भूँह तक बचें नहीं छोड़ना पड़ेगा इसी बीच यह भूखा मर जायगा, तो जवाब मिलता है कि ये 'कंचे दक्खिनपूसी' लोग हैं जो गरीबी बढ़ाने की ओर साठे-पीठे को भी गरीब बनाने की बात करते हैं? दुनियाँ में भाई-भाई में भी प्रेम नहीं है और ये लोग गरीब को कुछ देने की बात करते हैं? यह कोरा आदर्शवाद है। इस गरीब देश में आसन्न में अमीर है ही कौन? कहते हैं, देश एक है। देश के लिए सबकी कुर्बानी करनी पड़ेगी। और फिर गरीब को

भरने से बचाने के लिए अपने पास से कुछ बढ़ाने की बात को अल्पवर्षों बजाफ़ टाल देते हैं। व्यवहारवाद तथा धर्मशास्त्री का नमूना ही यह है कि एक तरफ़ प्रधानमंत्री भण्डार भर जाने से अल्प-योग्यताओं की सफ़रता पर नज़र कर रहे हैं, और उन्नी दिन भूखों की तूट-पाट के डर से संकेतो-नैवारों गाँवों में धारा १४४ लगायी पड़ती है, धुइन्वार, पुलिस और बन्दूकधारी सिपाही तेजात बरने पड़ते हैं।

और ऐसे वारंवाही भाँधों से सरकार पर्याप्त रूप से नहीं कर सकती। इसी खतर में आये बताया गया है कि कुछ दिन पहले प्रदेश के राज्यमंत्री (सूचना) ने सब सम्पन्नित अराजकता और तूट-पाट रोकने के लिए देहात में निरोधक कार्रवाई तथा धुइन्वार पुलिस तैनात करने का सब विचार को भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने इसका घोर विरोध किया। और पूँक विहार विधानसभा में सरकार से बाहर की दम है उनमें कम्युनिस्ट पार्टी की विधिति नियामक (सेवैरिप) है रणितप सरकार उनके निरोध की अरंसा नहीं कर सकती और मुश्ता को यह योजना टोक देने पड़ी। स्पष्ट है कि आज की राजनीति के पक्षते जनता की सुरक्षा की सम्भव नहीं है।

कुछ पत्रों का समझदार भोग कहते हैं कि वे भूँह और गरीब बड़े सज्जन हैं। को ही रहा है उरले उनको अन्वय ही नहीं होता। अपनी आरंभियाएँ बढ़ाने जाते हैं। इसका ही नहीं से बचकता बचने की पैदा करते जाते हैं, और फिर कहते हैं कि गरीबी नहीं मिटती। लेकिन इन बुद्धिमान लोगों की समझ में यह नहीं आता कि वे खर ही अपनी ऐग-आपाम और विनाश की क्रिदगी से, बड़े-बड़े बगलों और मानदार मोटों के अक्षररूप चरणों से, अपने केई-केईनों की आदी में सात-सात आदमियों को दायर करते से, गरीबों की आशाशांसी को विनाशने को बनाते हैं। उनको मान्य है

गरीब : वे कौन हैं ?

यह वैज्ञानिक तथ्य भी नहीं बाज़ा कि आवादी बढ़ने का एक बड़ा कारण गरीबी और बेकारी की है, क्योंकि अनुभव का काम खिन्न जाने से उनकी स्वाभाविक मूलतत्त्व संचित एक ही तरह मुड़नी है। ये समयानुसार लोग अपने लुप्त के स्वार्थ, अपनी शोषणवृत्ति के कारण ही काम जनता के हाथ से उर्जल-शक्ती छोड़कर उन्हें बेकार और गरीब बना रहे हैं। कन बड़ों वाली जनतन्त्र के लिए वे स्वयं भी बहुत हद तक जिम्मेदार हैं। बसवों और ईशों तक बढी है जब गरीब देखाता है कि वो हाथ हूवे हुए भी उसे बाप नहीं मिलता और भग्यार भरे रहने पर भी उसे रोटी नहीं मिलती तथा दूसरी तरह समाजवाद की बात करने-वाले, साक्षर-अज्ञान और अनहित को दुहाई देनेवाले, अपने ऐशोपाराम और सुल-भुविशासो को छोड़ने या अपनी रोटी में से कुछ हिस्सा बंटाने को तैयार नहीं है।

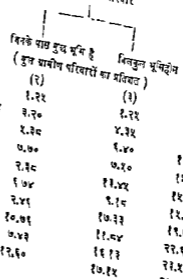
५—इतनी बजोर गरीबी में जीने-वाले ये गरीब कौन हैं, और इनकी गरीबी के कारण क्या है ? एक बात साफ़ इत्साई देनी है कि ब्रह्मि कार्यियों का होना और गरीबी का बोधा सम्भव है। श्राणीय जनता में १० प्रतिशत का जो सबसे निचला भाग है उनमें एा जीवन परिवार में ५०० ग्रामिन हैं। जैसे-जैसे हम ऊपर जान हैं यह १००० ग्राम होनी जाती है यहाँ तक कि सबसे ऊपर के १० प्रतिशत परिवार ३,००० ग्रामिनो के ही हैं। शहरो में सबसे गरीब १० प्रतिशत परिवारों में ६०९ ग्रामिन हैं, और ऊपर के सबसे धनो परिवारों में २२५ सस्य। महेश इतना नहीं है कि परिवार कितना बड़ा है, बल्कि इन बात का है कि कृषिप्राप्ति और उनके आर्थिक कितने हैं, और कुल कमाई कितनी है।

का हूकरा सहारा नहीं है। १९५६-५७ में श्राणीय परिवारों के २५ प्रतिशत संसिहर मजदूरों के थे। १९६२-६४ में यह संख्या घटकर २० प्रतिशत हो गयी, लेकिन ५ प्रतिशत मीर-संवेहर-मजदूर-परिवार बताये गये। मजदूर-परिवारों में ६० प्रतिशत के पास भूमि बिलकुल नहीं थी, और ये धानिय भूमि-बोधी थे। सेप ४० प्रतिशत के पास भूमि के अपने छोटे-छोटे टुकड़े थे, फिर भी मुष्क श्रापदनी मजदुरी की ही थी। मजदूरों में तीन-चौथाई धार्मिक (कैथुवन) मजदूर थे, जो काम मिलने पर काम करते थे नहीं ता बेकार रहते थे। एक-चौथाई श्राणीय मजदूर थे जो किसी मालिक के साथ जुड़े हुए थे। उनके पास धान पर का काम था। उन्हें चाहे मालिक ने भूमि दो थी, या वे कर्ज की जमायती में मालिक का काम करने लिए विवश थे। नीचे के टेबुल में विभिन्न श्राणीय मजदूर-परिवारों का बंटवारा दिखाया गया है।

श्राण

१९६२-६४ श्राणीय धर्मिक परिवार

बोड



विहास और प्रगति के शूटे गारो के, जलान बड़ाकर समरशाश्री का हृद करने के बोधे पडिनाबाद से पुर अपने ऐलो-बायम को न छोड़कर लोगो को सर्वोय का पाठ पढ़ाने, अपनी नीतियों की अड-पडना को तथा शोषण की अपनी जिन्यो को ढाने के लिए अडतवा-बजोरारी का बहाना बझने से और सपा-जवाद तथा वीर-रत्याग के नाम पर केवल अपनी सत्ता-धनता बढाने जाने की मरफाती से ऊपर उठकर बाप हन वस्तु-रियत पर ध्यान देने ? विज्ञान और जन-जागरण के इस युग में लाली, गोली और धारा १४४ कब तक हमारी रक्षा करेगी ?

[नोट :—यह मेल परिवारान के आक्यम के पहले लिखा गया था। पर हममें दिन श्रमिवादी विपणनियों की और ध्यान काश्य्प दिया गया है, वे नाम है, पाँडे धन बाप से श्राण्यार की उमड़ती हुई भावनाओं के बोधे सब गयीं हैं—वेबक]

११. महाराष्ट्र	८.९७	२१.३३	३०.००
१२. बिहार	१५.९४	१६.९४	३२.८८
१३. पं० बंगाल	१२.८७	२०.९५	३३.८२
१४. आन्ध्र प्रदेश	१०.०५	२४.६९	३४.७४
१५. तमिलनाडु	१०.३३	२५.९८	३६.३१
१६. केरल	२४.८३	११.८७	३६.७०
१७. भारत	९.९६	१५.५४	२५.५२

(खेतिहर भारत मजदूर परिवार)

जार के चाटें से स्पष्ट है कि खेतिहर-मजदूरों की मर्यादा पहले अधिक दक्षिण में केरल, तमिलनाडु और आन्ध्र में है— एक-दोहाई से अधिक—और उत्तर में पं० बंगाल, बिहार, और उड़ीसा में है— एक-दोहाई । महाराष्ट्र में खेतिहर मजदूर ३० प्रतिशत है ।

नीचे के टेबल से भारत के विभिन्न भागों में खेतिहर मजदूरों की छांटिक स्थिति का अनुमान होना है । ये आंकड़े १९५६-५७ के हैं ।

सालाना प्रति व्यक्ति उपभोग्य खर्च (रुपये में)	उत्तर भारत	पूर्व भारत	दक्षिण भारत	पश्चिमी भारत	मध्य भारत	उत्तर भारत	पूरु भारत
१०० से कम	२७.७७	२२.६४	२९.९६	२३.९८	३३.१३	११.१२	२५.८८
१०१ से १५०	३३.९२	२८.९२	३९.४१	३४.०७	३५.२२	२४.००	३१.०५
१५१ से २००	१९.२५	२१.६९	२०.२३	१९.१९	१४.३७	२२.७३	१९.९६
२०० से ऊपर	१९.०६	२६.७७	२०.४०	२२.९६	२४.०१	४१.३३	२३.११

हमने माना है कि ग्रामीण जीवन में १५ से २० प्रति व्यक्ति प्रति माह, या १८० से २४० प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष, की खपत ग्यून-तन होनी चाहिए । १९५६-५७ के मूल्यांकन पर यह खपत १५ से २० होती है । इसके अनुसार ५७ प्रतिशत खेतिहर मजदूर इस देश के नीचे हैं । भारत के मध्य क्षेत्र में यह प्रतिशत ६८.७ है । उत्तर एवं दक्षिण भारत में ९० प्रतिशत है । यह भी है कि गाँवों में जो परिवार प्रति व्यक्ति

प्रति वर्ष १०० से २०० की सीमा के नीचे रहते हैं उनमें ४० प्रतिशत खेतिहर मजदूरों के परिवार हैं । दक्षिण भारत में ऐसे परिवारों का प्रतिशत ५० से अधिक है ।

७—ग्रामीण गरीबों में लगभग आधे खेतिहर मजदूर हैं, और बांधे छंटे खेतिहर । १९५५-५६ में प्रति व्यक्ति प्रति माह आमदनी के अनुसार छोटे खेतिहरों का विभाजन इस प्रकार है ।

छोटे खेतिहर प्रति व्यक्ति प्रति माह उपभोग्य खर्च के अनुसार क्रिन्ता क्षेत्र : प्रति व्यक्ति प्रति माह (एक में)

०—८	८—११	११—१३	१३—१५	१६ और ऊपर
०.०१—०.४९	२५.९७	३६.१३	१५.२५	४.६९
०.५०—०.९९	२१.३५	२८.०९	१४.८२	८.५१
१.००—१.४९	२१.८४	३५.२२	१७.७९	४.२०
१.५०—२.४९	१७.८१	३३.१५	१६.६३	१०.१०
२.५०—३.४९	१५.९२	३३.२४	१४.२४	९.९०
३.५०—४.९९	११.१५	२६.९२	१९.७०	११.७४

०.५ एकड़ तक क्षेत्र रखनेवालों की स्थिति वस्तुतः बेसी ही है जैसी भूमि-हीन की । जैसे-जैसे ऊपर जाते हैं स्थिति कुछ-कुछ अच्छी होती दिखाई देती है । लेकिन ५ एकड़ के बीचवाले भी—यानी ६० प्रतिशत—१३.०० प्रति व्यक्ति प्रति माह से नीचे ही रहते हैं ।

यह स्पष्ट है कि गाँव में ५ एकड़ भूमिवाले की ओर गरीबी की दिशा में बढ़ा रहे हैं । उन क्षेत्रों में गाँव के दरवार भी शामिल हैं । शहरों में जो गरीब दिखाई देते हैं वे आखिर गाँव के ही गरीब हैं जो शहरों की तलाश में शहरों में पहुँच गये हैं ।

बिहार ग्रामस्वराज्य सम्मेलन

बिहार का प्रथम ग्रामस्वराज्य सम्मेलन २४, २५ फरवरी १९७२ को होना नियोजित हुआ है । यह सम्मेलन मुजफ्फरपुर जिले के पैगाली प्रखण्ड के सिहमा गाँव में सम्पन्न होगा । सम्मेलन की तैयारी प्रारम्भ हो गयी है । इस सम्मेलन में बिहार की ग्रामस्वराज्य-समाजों के अध्यक्षों, मंत्रियों या प्रतिनिधियों को आमन्त्रित किया जाएगा । बिहार ग्रामस्वराज्य सम्मेलन स्वागत समिति की ओर से निमन्त्रण भेजा जायेगा । सिहमा पहुँचने के लिए मुजफ्फरपुर-सोनापुर रेलवे लाइन के गुरीज स्टेशन पर उतरना होगा । सिहमा गाँव की दूरी स्टेशन से ३ मील है ।

सम्मेलन में शामिल होनेवाले सदस्यों को ५ से २० सदस्यता शुल्क देना होगा । सभी ग्रामस्वराज्य-समाजों अपने प्रतिनिधि सम्मेलन में भेजना भेजेंगे । पत्र-व्यवहार का पता—संजी, बिहार ग्रामस्वराज्य सम्मेलन स्वागत समिति, सिहमा, पो० गुरीज, जिला मुजफ्फरपुर ।

भूदान-सहरीक
उर्दू मासिक
 सालाना खर्चा : चार रुपये
 पत्रिका विभाग
 सर्व सेवा संघ, राजघाट, पारलामी-१

युवा-आन्दोलन

युवकन सदा स.मात्रिक सुधार, परि-
 वर्तन और प्रगति के सपने में आये आये
 रहे हैं। सस में बोधोत्थिक मन के उदरने
 के बहुत पढ़ने वहाँ के दूररो ने जार के
 मावन की समान बनने के लिए शेरत
 काफ कर दिया था। जिनकी मुकमत
 १८९० में शेट पीटर्स तर्ग के निर्दिष्ट
 आन्दोलन से हुई थी। युवा का उमरकी
 सामाज्य, जिसके आसिरी खीकीका मुन्दि
 मन्तुन हुमीद ये, न उत्पत्ता मंग बहू के
 युवजनों ने मुनि का बहु आन्दोलन नहीं
 आरम्भ किया होता, जिसे इतिहास में
 'यंग मुर्क' आन्दोलन बहूते हैं। इसी प्रकार
 इन्कीशिया में डा० मुहाफो की सत्ता की
 खल करने में भी वहाँ के युवकों का ही
 हाथ था।

आज बगना देश एक वास्तविकता
 है। बगना देश का यह उदय मानव
 अधिकार, नोफतन और धर्मनिरपेक्षता
 के आन्दोलों की जड़ गहरी करेगा, और
 अन्तरीष्ट्रीय राजनीति का एक नयी दिशा
 देगा, जिसका आधार राष्ट्रीय हित से
 अधिक मानव हित होगा। बगना देश के
 आन्दोलन की मुकमत भी कुछ युवकों ने
 ही की थी। अगस्त २४ मार्च १९४८ को
 द्वारा विश्वविद्यालय के सभारोह में युव
 युवकों ने कायदेआयम मुहम्मद खली
 जिनका के सामने प्रदर्शन करते की डिम्पन
 न की होती, अगस्त २ फरवरी १९४४
 की रकीउद्दीन, सताम, काबल और २२
 दूसरे युवक बंगाली अपनी भाषा और
 अपनी सभ्यता के साथ होनेवाले अत्याय
 का विरोध करते हुए सहीम न हुए होने,
 तो आठ शायद बगना देश न बना
 होता।

वे अमेरिका के युवक ही थे, जिन्होंने
 पहले पहल राष्ट्रीय हित की मुनाफर,
 मानव हित को सामने रखते हुए, विरत-
 नाम में होनेवाले युद्ध का विरोध किया
 है, जिसके फलस्वरूप अमेरिका का जनमत
 विरतनाम में युद्ध का ऐसा विरोधी हुआ
 कि अमेरिका सरकार को आज विरतनाम

से अन्ते मेंरिकी को बाधक बुजाना पड़
 रहा है। आका है कि वेगोल्कोवाक
 विश्वविद्यालय का विरतनामी अराज में अपने
 आप को जवाहर भस्म करना एक
 दिन रंग लायेगा और ऐतिहासिकीका
 से कही नियमन छास होगा। भारत के
 स्वतन्त्रता-संग्राम में भी युवकों की बहुत
 बड़ी भूमिका रही है।

परिचित से वेन्फासिखको, म्यूयार्क
 से टोफिपो, खनिन से अन्तैम खारखें और
 रोम से रिजोडिकनारियो तक हर जगह
 युवकों का आन्दोलन चल रहा है। वहीं
 यह आन्दोलन तीधे सामाजिक और राज-
 नीतिक व्यवस्था से टकराते रहा है और
 वहीं शिक्षानायो से मोठुना सिषा-अपद्रवि
 का विरोध कर रहा है।

अमेरिका का युवा-आन्दोलन विरत
 नाम के युद्ध, सिषा, नौकरी और सरकारी
 स्थानों पर गोरेनाले के भेद के विरोध में
 चल रहा है। आज अमेरिका सभार में
 हॉजियरों की जो अघिनार मिले हैं, उनमें
 अमेरिका के युवा-आन्दोलन का बड़ा
 हाथ रहा है। पूर्वी यूरोपीय देशों में युवा-
 आन्दोलन विदेशी शासन के विरुद्ध है।
 दूसरे शब्दों में उन देशों का आन्दोलन
 राष्ट्रीयता और स्वतन्त्रता के लिए एक
 संघर्ष है। भारत में यह आन्दोलन नौकरी,
 भाषा और अधिक समानता के लिए है।
 कुछ प्राणियों में राजनीतिक उद्देश्यों के लिए,
 जिसमें केन्द्र और राज्य (प्रान्त) के
 अधिकार भी मुख्य हैं। भारत के
 विश्वविद्यालयों में यह आन्दोलन सिषा
 की पद्धति और उसकी व्यवस्था के विरुद्ध
 है। कभी लड़के धर्मनिरपेक्ष प्रदर्शन करते हैं
 कि किसी कुलशक्ति को हटा दिया जाय,
 कभी इसलिए हुआमा होता है कि जिनकी
 सुविधाएँ उन्हें प्राप्त होगी चाँदिएँ भी,
 प्राप्त नहीं हैं। और कभी सुनो प्रती के
 लिए वे मोर करते हैं।

जिदें के विश्वविद्यालयों में और
 छात्र के सिषायायों में एकीएँ आन्दोलन

होता है कि सिषा की व्यवस्था में लड़कों
 को बराबर का प्रतिनिधित्व दिया जाय,
 व्यवस्था में उनकी सलाहें ली जाय और
 समान में जो सुविधाएँ प्राप्त हैं, वही
 सुविधाएँ उन्हें सिषायायों के अन्दर दी
 जायें।

यारखोन, नमन, बर्लिन, और बनारस
 के युवा-आन्दोलनों को देखने से यह पता
 लगता है कि वे ऐसी सिषा से सम्बुद्ध
 नहीं हैं जो सामाजिक और राष्ट्रीय
 जीवन की वास्तविकताओं और आवश्यक-
 ताओं से अलग अलग है। वे ऐसी सिषा
 चाहते हैं जो सामाजिक उत्तरदायित्व को
 निरादुने और सामूहिक विरासत में दोष
 मरद दे सके। वे नये विचार, नये मूल्य,
 और पढाई के, गहन सहज के, और नौकरी
 के नये तरीकों को खोज में है। यह बहाना
 मन्तन न होगा कि सिषायाय विरतन के
 सपने-मैन्ड हैं। वे चाहते हैं कि विज्ञान
 और शिष्य विज्ञान के मूल्यों के अतुपर
 आज की सिषा हो। वे यह महसूस करने
 हैं कि विश्वविद्यालयों की व्यवस्था में जो
 सौग है, क्या परिवर्तन कराए जाय
 इसके वास्तविक रूप से अरतिवित है।
 इसलिए वे चाहते हैं कि वहाँ की व्यवस्था
 में उन्हें बराबर का प्रतिनिधित्व दिया जाय।
 व्यवस्था के सिचकिते में जो कड़ेपने दिये
 जाते हैं उन चीजों पर युवकों का प्रत्यक्ष
 प्रभाव हो। और इसके लिए उन्हें विश्व-
 विद्यालय की मिनेट, कोषित, एडिडिक
 बोर्ड, और कमिडियो में बराबर का प्रति-
 निधित्व दिया जाय। ये सौग उन लोगों
 के सामने उत्तरदायी होये जिनका ये प्रति-
 निधित्व करेगा। इतरा प्रतिनिधित्व
 कितजुन लानताधिक छिड्ढामतों पर हो।
 यह सच है कि इन्हें व्यवस्था की पद्धति
 का पूरा अनुभव नहीं है, परन्तु इन्हें इस
 बात का अनुभव करार है कि जिन्हे सिषा
 दी जाती है वे क्या चाहते हैं, क्या सोचते
 हैं, और उनकी क्या इच्छा है।

यह बात अत्यन्त नहीं जाती है कि
 युवकों के आन्दोलन का अरिज सारनात्मक
 उद्देश्यही, अक्षम, और राजनीतिक है।

ह बात सही है, परन्तु इसका कारण यह है कि उनका वातावरण राजनैतिक है, और यह एक राजनैतिक वातावरण में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं, एक ऐसा वातावरण जहाँ नैतिक बाधे लौ बहुत कुछ करता है, परन्तु उनका असल बहुत कम ही करता है और जहाँ समस्याओं के वास्तविक हल के लिए किसी ठोस उपाय के बजाय गारो का प्रयोग होता है।

मुझको के आन्दोलन से विनाशित रखने वाली वो यह समस्या चाहिए कि शिक्षा-सभ्य कोई बाजार नहीं है जहाँ केवल दूसरे की कीमत पर काम उठाने की कोशिश की जाय।

कोनतेशिव, तारिक अमी, ए० ई० सोलोमन के नेतृत्व में चलनेवाले आन्दोलन यह बताते हैं कि मुझको को धना विराम है कि समाज रोगी है और वे अपने विश्वविद्यालयों में उसी रोगी समाज का प्रतिबिम्ब पाते हैं। इसलिए चाहते हैं कि या तो उन्हें नष्ट कर दें या उन्हें सामाजिक क्रान्तियों के केन्द्रों में बदल दें। वे समाज और उसके मूल्यों को स्वीकार नहीं करते। उनका आन्दोलन ऐसे समाज और ऐसे मूल्यों के आगे एक प्रश्न विज्ञ है। वे सन्तुष्टी की टोस सुनिवारों पर एक नयी बुनियाद बसाना चाहते हैं। आने-वाले काल की सुनिवार की वे आज शुरुआत करना चाहते हैं। वे काम करने के नये तरीके निगलने के इच्छुक हैं। ५-६ हजार तात का तिलिप इतिहास यह बताता है कि यह शब्दा और यह वैचैनी ही सचनी प्रगति की जन्म देती है। आज का मुझ-आन्दोलन एक नयी उभरने वाली बुनियाद के लिए सपर्य है। युक्त वर्धहीन मूल्यों, निरर्थक रीति-रिवाजों, दबिमानुषी परम्पराओं को मिटा देना चाहते हैं और नयी इतिहासों पर एक नया समाज बसाना चाहते हैं—एक ऐसा समाज जो सभी के प्रति न्याय और समती प्रदान-भूति रखता हो। इस युगकों को, अपनी भावनाओं और इच्छाओं का, जिनके कारण

उनके आन्दोलन होते हैं, पूरा-पूरा पता है, और उनमें आम-विश्वास भी है।

सचवाई यह है कि युवकों के द्वारा आज विश्वविद्यालयों में आधुनिक युग की सभी समस्याओं पर विचार किया जा रहा है—पूले तोर से और लुले विभाय से। अगर कोई बमी रह जाती है तो इसका कारण है कि कुछ हमारे लोगों में उनकी सहन करने की शक्ति नहीं है। युक्त अपनी राय देना चाहते हैं और मानी हुई राम को सेनावनी। आज की बुनियाद में जो अन्त्य होते हैं, वे उन्हे बहुत गहराई से मद्भाग्य करते हैं और जब वे यह देखते हैं कि दूसरे लोग उन समस्याओं के हल के लिए तैयार नहीं हैं, तो आगे आर को मजबूर पाकर आन्दोलन करते हैं।

उनका आन्दोलन और तीव्र होता है जब युवकों की यह पता लगता है कि उनके आन्दोलन की इगारो पर प्रतिक्रिया हो होती है, परन्तु वे सम्भीतापूर्वक और समझदारों से समस्याओं पर गौर करने के लिए तैयार नहीं हैं। मुझको के आन्दोलन की आलोचना करने के बदले यह उपादा अच्छा होगा कि उन्हें अपना जीवन बिताने के लिए अधिक-से-अधिक स्वतन्त्रता दी जाय। 'गिवासी' क्रिसम की लोग उन पर अपनी छपा डालने की कोशिश न करें। युवकों को स्वयं जिस प्रकार का समाज और वैसी सस्था चाहिए इसका पूरा-पूरा एहसास है। इसका अर्थ यह नहीं है कि समाज की शक्ति को भग होने दिया जाय।

मुझको के आन्दोलन का कारण यह है कि वे सामाजिक समस्याओं से परिचित हैं। अपने अधिहार और उत्तरदायित्व समझते हैं, परन्तु समाज ने कोई ऐसा तरीका नहीं विशिष्ट किया है जिससे उन समस्याओं का उपचार कर समाधान हो सके। यही कारण है कि वे अक्षर तोड़-फोड़ की शरबाई करते हैं, और समाज के विरुद्ध अपना विद्रोह प्रकट करते हैं।

—गुस्ताव बमाल

विनोवा निवास से

भाऊ (पानवे) की बेटी रखा का विवाह लमी हुआ। विवाह के दूसरे दिन भाऊ रखा तथा उसके प्रति अचोक्त कुछ बन्धु मित्रमालों के साथ पधारे। भरत राम मन्दिर में सुबह १-३० बजे सब इकट्ठा बैठे।

भाऊ बाबा के पास याददा हाल की सभ्र में आये थे। तब से लगातार बाबा के काम में रहे। बाबा की विशेष प्रीति भाऊ पर है।

बाबा ने मंगल भगवान विष्णु का श्लोक प्रारम्भ किया और उनकी आज्ञाें सुन्यनी। मंगल भगवान विष्णु। मंगल गहदभ्यन्त। इस मंगल पत्रन से प्रारम्भ कर बाबा ने कहा, मैं गुरुत्वाभ्रम को बहुत पवित्र मानता हूँ। हम सब सभी भगवान राम के मन्दिर में बैठे हैं। भाऊ के जीवन में राम की शक्ति है। उसी वातावरण में यह बेटी पती है। उसका बन्धु विवाह हुआ। उस दिनसि तब मैं उसे और उसके पतिदेव की गीता-प्रवचन की एक-एक प्रति दे रहा हूँ। उस पर एक काव्य मैंने लिख रखा है, वह मैं पढ़कर सुनाता हूँ।

'सप + सपम + सेवाभाव = गुरुत्वाभ्रम
बाबा के श्लोकीर्तन'

× × ×
"आत्मा इस शरीर में आने से पहले कहाँ थी?" एक भाई का प्रश्न।

"यह आकाश है। यह मरान करने के पहले आकाश कहाँ था? यही था। मरान करने के बाद भी यही है। मरान गिर आयेगा, टक भी यही होगा। मैंने ही बताया है और वह तो आकाश से भी अधिक व्यापक है और शून्य है। वह अपना स्थान छोड़ता नहीं। शरीर मरते हैं और जाते हैं। किसे ? बादन आये और वादन गये। आकाश कायम है।" बाबा का जवाब।

बाबा इन दिनों अपनी कुटी के पास रहते हैं। दिन-रत में तीन बार मिलकर देह पट में तीन मीत पूजना होता है। स्वास्थ्य ठीक है।

२६ जनवरी, गणतंत्र-दिवस ग्रामस्वराज्य-सभाएँ कैसे मनायें ?

१—समाचार (मुद्राकगपुर) में २६, २७ दिसम्बर को बिहार के वृत्ति-क्षेत्रों में जते हुए गांधियों की जो संवैधानिक मोट्टी हुई थी उसने भी वैचारिकता के सुझाव पर और प्रयोग के माध्यम २६ जनवरी के गणतंत्र-दिवस को ग्रामगांधी गांधी में ग्रामस्वराज्य को भूमिदा में मनाने के प्रश्न पर विचार किया । अब हुआ कि ग्रामस्वराज्य सभाएँ गणतंत्र-दिवस का समारोह आधिक सम्भव हो पूरी सेवाओं के साथ मनायें । पूरे समारोह का एक सुन्दर कार्य यह है कि उस दिन "ग्रामस्वराज्य या संघर्ष" जो पढ़ी जाय या रखा है, पढ़ा और देखा जाय । (युं सफल-पत्र को प्रतिगो हर संक जतने लिए उपस्था है)

२—उस दिन के लिए जो कुछ और कार्य तय हुई वे सुझाव के रूप में यहाँ भी जा रहें हैं । ग्रामस्वराज्य-सभाएँ अपनी सुविधा और परिस्थिति के अनुसार इसमें जोड़-घटाव कर सकती हैं ।

(क) सुबह प्रभात-वेदी, (ख) प्रातः का अभिवादन, (ग) अभिवादन के समय "ग्रामस्वराज्य के सफल को अर्थव्यय या अन्य कोई व्यक्ति पढ़ें और साथ-साथ ग्रामस्वराज्य-सभा के एक सचिव, बन्धे आदि, उसे बोझाने जायें, (घ) प्रसंगी, बच्चों के संग, बलाई-संगीतिका मिठाई-विप्रेण आदि । अच्छी संगी या सुगंध पद पालन जैसे उत्साहक कार्यों के लिए प्रस्ताव भी दिये जा सकते हैं । (ङ) रात को गान, कवि-सम्मेलन आदि ।

तिथेय रूप से इस बात का ध्यान रखा जाय कि उस दिन ये कार्य भी दिये जायें, जैसे बोधा-वृद्ध-विप्रेण, ग्राम-शोध की सूचना, परिवारों के आह्वान बनाया आदि ।

३—समारोह में महिला" शरीरक हों । एक साथ वे महिला-विद्यार्थी की महापिता को प्रायः । पूरे समारोह में ग्रामस्वराज्य-सभाएँ स्वतन्त्र विचारण,

आचारण, तथा भागिप्रेय आदि को शरीरक करें । इस अवसर पर ग्रामस्वराज्य के लिए अनुकूल पावना बनाया वा सुगन्ध-विषय प्रयत्न होना चाहिये ।

संरक्षण

"आज गणतंत्र-दिवस के अवसर पर हम वर्ग के साथ अनुभव करते हैं कि हम एक स्वतंत्र देश के नागरिक हैं, तथा हमें अपने अधिकारों में शोचने, निजने, कर्माने, सफल बनाने और आत्म धर्म मानने के वे सब अधिकार प्राप्त हैं जो हमारे सम्मान और विकास के लिए आवश्यक हैं । आज के दिन हम अपने पक्षीय वपतादेश के, उसके फौजी ताना-शाही से मुक्ति पाने पर, प्रसन्नता प्रकट करने हैं, और भारत के साथ स्वतन्त्रता को विरासदी में उसका स्वागत करते हैं ।

हम जानते हैं कि स्वतन्त्रता के दिग्दर्शकों की वयो में हमारे देश में निर्माण के अनेक काम हुए हैं जिनास काम हूयें जिन रहा हैं, विशेष रूप से संगी में जो सुधार हुए हैं उनसे अधिक के लिए हमें अज्ञान बाधा होती है ।

वैरिन दाना होने हुए भी प्रभी रई बालें हैं जो दुष्प्र देनेशाली हैं, और जो हमारे देश और समाज को समझकर कर रही हैं । आज भी हमारे गाँवों में ऐसे लोगों की सभा बढ़कर बड़ी है जो शंठ अथवा ना जीवन जिता रहे हैं, और जो अनेक कर्तों में अज्ञान और अज्ञान्य के विचार बने हुए हैं । गरीबों, बेरोजगारों, विधवाओं, बीमारों, तथा आराम के तनार और दुःख, आदि के कारण जीवन को बिचार पदने को बीत बड़े निर्दोष बड़ों या रहो हैं, और ऐसा लगना है जैसे हम दमन और शोषण के नये बन्धनों में फँसे जा रहे हैं । नया बाजार और नया सरकारी, हर जगह हम अपने को असह्य वा रहे हैं । हमारे गाँव आर्थिक और

सांस्कृतिक दृष्टि से हमने दिवस दे रहे हैं ।

इसका कारण क्या है ? हमारा मानना है कि स्वतन्त्रता प्राप्त होने पर देश की व्यवस्था में जो बुनियादी परिवर्तन होना चाहिये था वह नहीं हुआ । हमारा आन्दोलन सफल, प्रशासन को पदुति, विद्या की नीति-नीति, न्याय, और शिक्षा ऐसी चीजें हैं जिसे अर जग-देश-नर जग से परिवर्तन होना आवश्यक है ।

मिट्टे कुट्ट बजों में ग्रामदान-ग्राम-स्वराज्य आन्दोलन ने हमारे ताने धाई-धारे के नये समाज का एक सफ़ा और आधुनिक चित्र प्रस्तुत किया है । वह भिन्न यह है कि हमारा गाँव एक सफल बन रहा है, जिनकी व्यवस्था हम अपने विवेक के करें, जिसका विचार हमारे आती मोक्षता के अनुसार हो, जिसमें पत्रों होने के ताने सारे वैशवाय भुक्त-कर हम एक दूसरे के सुख-दुःख में बँधी हो, तथा "जर्मन हर एक वा सम्मान और जोविदा सुरक्षित रहे, चाई किसी का घुड़ाना न हो, और कोई किसी के साथ अन्याय या अज्ञान न करे । गाँवों में जिन स्वतंत्रों और गाँव के स्वराज्य की शान बड़ी थी उसको पूरी तनार हमें दब बिन में दिखाई देती है । हम मानते हैं कि अगर हमारे बालों गाँव ग्रामस्वराज्य की योजना के अनुसार स्वायत्त और स्वा-पक्षी होते तो ग्रामिक मोक्ष-कार्य प्रकट होगे और देश आत्म से बड़ी अधिक-शक्तिशाली होगा ।

हम विश्वास के साथ आज के दिन हम सफल करते हैं कि ग्रामदान की प्रयोग कर चुकने के बाद अब हम सफल होकर आने गाँव में ग्रामस्वराज्य को स्थापना की दिशा में दुःख के साथ आगे बढ़ेंगे । हमें अपने गाँव और देश को स्वतन्त्रता के लिए जो श्राव करवा रहेगा हम सहयोग करेंगे । ईश्वर हर्ष, शक्ति दे कि हम अपना सफल युवा कर ।"

बिहार सर्वोदय संघ के निर्णय

दिवस २५ से २७ नवम्बर तक बिहार सर्वोदय संघ की एक बैठक सर्वोदय प्रशासन समिति, पटना में हुई। बैठक की अध्यक्षता श्री धनबादसाह माण्डू ने की।

बैठक में बिहार के प्रायः सभी जिलों के प्रतिनिधियों तथा सर्वोदय सेवकों ने भाग लिया। तीन दिनों तक छत्र में मुजब और मानव वातावरण में आन्दोलन की कार्यप्रणाली और कार्यक्रम तथा सभ्य समाज के स्वरूप पर चर्चा की। महासेदार के सम्बन्ध में विचार हुआ। अन्त में निम्नलिखित वास्तविक समस्याओं के निर्णयों पर सबने अपनी स्वीकृति प्रकट की।

१- राष्ट्रीय मंचों सर्व सेवा संघ के निर्णय सुधार ग्रामस्वराज्य का राष्ट्रीय प्रयोग क्षेत्र सहयोग में कार्य करने के लिए बिहार के विभिन्न जिलों के ६ वरिष्ठ कार्यकर्ताओं से एक वर्ष का समय देने के लिए निर्देश किया गया। तत्पश्चात् श्री ब्रह्मचारी सर्वों ने अपना नाम सहस्रा के लिए घोषित किया। दाखला जिले के एक कार्यकर्ता श्री मोहल शा ने भी अपना नाम पेश किया।

२- शिक्षा-कार्यीय समस्येन — पुन अनुसंधान किया गया कि जो लोग सहस्रा के लिए अपना समय नहीं दे रहे हैं, वे अपने ही जिले के किसी प्रवक्ता में, सपन रूप से कार्य करने का निर्णय करें। तत्पश्चात् निम्नलिखित प्रवक्ताओं में कार्य करने का जिम्मा निम्नलिखित अधिकारियों ने लिया।

जिला प्रवक्ता	कार्यकर्ता
छाया जालपुर	श्री दीनेश चन्द्र
दरभंगा बिरकी	श्री मदन झा
सिद्धमति मजगाँव	श्री सुमानन्दबहादुर
भायलपुर गोपालपुर	श्री मोहोदर ठेक
भायलपुर नायलपुर	श्री भाई मोखले
मुजफ्फरपुर मुजहरी	श्री कैलाश
	प्रसाद शर्मा
मुजफ्फरपुर	श्री गिदामन्दारी
वेङ्गली	श्री लक्ष्मणेश सिंह

यथा शाराष्ट्री श्री केशव मिश्र पटना पटनापराती श्री लक्ष्मीकांत

ग्रामस्वराज्य के काम की प्रगति

बिहार में सहस्रा, मुजहरी, खीरी और छाया के ग्रामस्वराज्य कार्य के बारे में रोज के लोगों को पता है ही या फिर सर्वोदय पत्र पत्रिकाओं से उन्हें इन स्थानों की जानकारी मिलनी-सी रहती है। छिद्रकृत रूप में बिहार के अन्य स्थानों में भी ग्रामस्वराज्य के नाम संपादकीय कार्यकर्ताओं के प्रयास से रूढ़ रहा है। मुजफ्फरपुर से प्राप्त सूचनासुधार पत्रों के ६ प्रयत्नों मुजहरी, सहस्रा, मुजब, वेङ्गली वैरगाँवा और भायल में कुल विचार ७१ गाँवों के वास्तविक दुष्टि के लिए दार्शनिक विचार गया है, जिसमें ६६ गाँवों की दुष्टि लिखित हो गयी है। ३२ ग्राम-वासी गाँवों और २ ग्रामसभाओं का गठन भी हो गया है। १४४ ग्रामसभाओं का गठन भी हुआ है।

बनी पूजा रूप से मुजहरी प्रकट में ही काम चल रहा है। उस क्षेत्र में आन्दोलन का सूत्रा और छाया महीने से शुरू होनेवाला है। म.प्र दस कार्यकर्ता वहाँ काम करते रहेंगे। प्रकट में बनी ग्राम-सभाओं से वास्तविक विचार कर वहाँ के काम को जगने रूढ़ाने की योजना है।

बिहार सर्वोदय संघ की बैठक में जिले के कार्यकर्ताओं ने निम्नलिखित कार्य भी करने के अपने निश्चय की घोषणा की।

(क) जिले के ४० प्रकटों में से २२ प्रकटों में सपन रूप से समुद्र-निर्देश के लिए भरपूर प्रयास किया जाय। इसकी पूर्ण तैयारी की शुरू हो गयी है।

(ख) फरवरी ७२ में जिले के सर्वोदय प्रतिमियों का एक सम्मेलन किया जाय, जिसमें छाया-सादागाँवों की भी विवेक रूप से आमंत्रित करने का प्रयास किया

जा रहा है।

(ग) पंचवीस हजार रुपये का सर्वोदय-साहित्य-बिज्ञानी करने का प्रयास।

(घ) जिले में २ हजार सर्वोदय सहयोगी बनाये जायें। अब तक ४ सौ सहयोगी बनाये जा चुके हैं। ३१४ लोकसेवक सभी जिले में हैं। २०० और बनाने का प्रयास किया जाय।

इनके अलावा पत्र-पत्रिकाओं के प्रादुर्भाव बनाने, सफल-साहित्येता एवं साधक-कुल के संगठन का भी प्रयास हो।

भायलपुर नायलपुर में सप्त कर वसालत क्षेत्रों में शक्ति समिती का गठन हुआ है और जगदी बर्दी बैठकें भी हो गयी हैं। ग्रामसभा के गठन के लिए गोपालपुर, बिहड़ूर तथा नायलपुर में प्रयास प्रारम्भ हो चुका है। इस सिलसिले में कई बैठकें भी आयोजित में हुई हैं। कुछ प्रकटों में काम चलाने के लिए सर्वप्रथम स्वराज्यसमितीयों का भी गठन हो चुका है।

जिले के पाण साधक भी बनी हैं। मुद्र-पत्रों में सहस्र को देखते हुए जिले की सभ्य में और जित प्रकार के कार्य-कर्ताओं की जरूरत है, उसका तालमल समाय है। फिर भी जिला ग्रामस्वराज्य समिति ने निर्णय लिया है कि प्रकट की शक्ति-समय का साधक और प्रकट का कार्यक्रम निश्चित कर वर्ष और कार्य-कर्ताओं की शक्ति एकत्रित करने का प्रयास किया जाय। इस दिशा में प्रयास भी चल रहा है जो भी सीमित शक्ति सभी जिले के पास है, वह अक्षय्य दोषों से शक्ति-व्ययस्था में हो सग रही है। गोपालपुर के सधुशाकार थोट बिहड़ूर के रिक्तमपुर पंचायतों में ग्रामसभा के गठन की तैयारी के अन्तर्गत पर सर्व सेवा संघ के महामंत्री श्री टाडूर दाह बग से आकर कार्यकर्ताओं को उनके कार्य की प्रवृत्ति पर तथा कोशकर्म की कायूत करने-कने उनके छोटी-पट उन्हें काफ़ी उत्साहित किया। उन्होंने आशा व्यक्त की थी कि इसी तरह से जगता रूप आन्दोलन की अपने जग उठा धरती

है। उत्तरोक्त स्थानों में प्रायगर्भ गठित होने के पूर्व ही साक्ष का इतना महत्त्व कायम हुआ कि वही दूध नाम को छोड़ कर तुल्य तिलोक्त के काम को चुन करवा। पुन वही प्रायस्वात्म्य के काम को कारगर करने का प्रयास शुरू हो गया है।

पञ्चा. इस विवे में अब तक कुल ४९ नामसंज्ञा प्रायगर्भाएँ गठित हो गयी हैं। दो गौत्र अभिवृष्टि हुए हैं। मानि-वैदिको तथा अथन मानि-वैदिको की सहस्रा प्रमाण: २८ नंबर २४ है। वाचार्थकुल के सदस्यों की संख्या भी २८ है। २०४ हाथे वा सर्वोत्प-वर्द्धित विभ्र है। विवे में १६८ सर्वोदय विभ्र है। अब तक हुई प्रसन्न के पौर्वादाया गाँव में वीषा-गच्छा में प्राय ७ बोधा जमीन का विवरण हुआ है। विवे के प्राय सभी कार्यकर्ता महत्ता के मया संन में गज सात के ही लगे हुए हैं। अतिरिक्त सभी यहाँ का काम कर रहे हैं। अथ विवे के वास्तविक समय देखावे सर्वोत्प सेवकों के विवे के काम की जाने उद्घोष का विवरण किया है।

साराण विवे में अथन-रूप से काम करने की दृष्टि से गौत्री, मोरे एवं जगन्गुर प्रसन्नों को चुना गया है। अब तक गौत्री में २४, मोरे में २ और जगन्गुर में एक प्रायगर्भाएँ बनाये जा चुकी हैं। ३ गाँवों में सुनि-विशाल का भी काम हुआ है।

विना मानि होना समिति की ओर से ३५० घण्टि सैनिक बनाये गये हैं। कुल १० उच्च एवं उच्चतर विमानों में तारन-मानिसेना का संघटन किया गया है। विवे की ओर से जगन्गुर में तुलसी ब्रज से काम करने का जमीन-धरो नियंत्रण किया गया है। इस प्रसन्न में बिहार रिजर्व कमिंडो की ओर से सैन्य विभाई-बोचना का कार्य चल रहा है जिसमें श्री विजय कुमारी का विशेष सहयोग मिल रहा है। श्री विश्वेश्वर प्रसाद के मार्ग-दर्शन में वाचार्थकुल का काम भी शुरू किया गया है।

अथन-रूप: अथन-रूप में अब तक कुल २७ प्रायगर्भाओं तथा १७४ प्राय-समितिओं का गठन हो चुका है। एक प्रायगर्भा के प्रायगर्भ में ३४ मन तथा ३४ बोधा ही बनाये यहाँ भी प्रायगर्भ इच्छा करने का संकल्प लिया है। ९० आराधनों के बीच ३४ एकत्र भूमि का विवरण भी हुआ है। सात गाँवों में प्राय-समिति के का संघटन हुआ है तथा मानिसेना के कुल २२ सदस्य बने हैं। २०४ हाथे के साहित्य की दिक्की हुई है।

सर्वनीगुर इस अनुभवगत में अब तक ७१ के अब तक १० गाँवों की पुष्टि हुई और कुल १७ गाँवों का संकट हुआ है। १० प्रायगर्भाओं का गठन भी किया गया है। उस क्षेत्र में अब भूगर्भ तथा सामाज्य में निम्नी जमीन का अथन का से विवरण करने तथा बिहार गच्छ में प्रकाशित गाँवों में प्रायगर्भा का गठन करने की योजना बनो है।

भवानीगुर में पुष्टि-प्रभियान

भवानीगुर प्रसन्न (गुणिया) में रिजर्वे गाँव साक्ष से प्रायगर्भ-पुष्टि-प्रभियान चल रहा है। प्रायजानकारी के अनुसार अब तक (१) सोवडीहा (२) सोनडीहा सुरकुषा टोला (३) सोनडीहा बोवाही टोला (४) नथगडिया पायवात टोला (५) मज्जार मुजहरी (६) मज्जार लामो-हम्पद टोला। (७) भवानीगुर कपुषा टोला (८) कुगुहा (९) तेलिगारी मेडी-नगर (१०) तेलिगारी धागर टोला (११) सुरडीही धागर टोला और (१२) कुगुहा मिर्गीक गाँवों में जमीन एवं जलसंधा की सर्वे पूरी करके प्रायगर्भों का गठन किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त ६ गाँवों को परिवार भूची तैयार कर ली गयी है। १० राजस्व गाँवों के २३ साय सायवात की नाल हो चुकी है, तथा ३ गाँवों के २१ राजाओं से वीषा-बद्ध में प्राय २३२ बद्ध जमीन २७ आराधनों के बीच विवरण को गयी है। २ बहूने की अवधि में ३ छेमिनार और २ पौधाएँ एवं मयिक शैटकों को हरी है।

रानीगंज में वीषा-कच्छा विवरण

११ नम्बर की जमीन नलण्ड (गुणिया) के २ बोधा २ नहदर ३ पतिज टोला स्थित ५० आराधों से १७-४० एकत्र जमीन प्राय कर ११ आराधनों में सममा-गह १ नवतिर की गयी। यह अथन-रूपेण सर्वोत्प देना श्री नवधारा प्रसार बोजरी के सम्मान में वास्तुगत हुआ था। सम्पुष्टि जमीन के टापी नागक श्री सुभाष सिंह को उपा सर्वोत्प प्रसन्न के क्षेत्रीय अध्यक्ष श्री दत्तात्रय साहू के लक्षे प्रसाद के बाद यह कार्य समाप्त। पञ्चा. रानीगंज प्रसन्न में जन गमा गठन का कार्य २०४६ १७४१ है।

विनागरी की नवसंवादिता दो कृतिर्षी लोकनीति

'लोकनीति' विनागरी की एक खास बात है। राजनीति को सुदृढ़ करने के अतिरिक्त लोकशासन की प्रतिष्ठाओं की दृष्टि से लोकनीति गुणक महत्वपूर्ण है। इस युक्त के अंत तक अनेक संरक्षण हुए चुके हैं। लेकिन इस संरक्षण को नये तिरों से, नये प्रकारों में विचारित कर के साहित्य दिया है और अब यह एक परिपूर्ण सुखर के रूप में मानने है।

राजनीति में दिवस-परी रखनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को तथा भारत के नव-निर्माण का मान्य रखनेवाले को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए।

पृष्ठ १४४, मूल्य ६० २.००

सत्र-शक्ति

विनागरी के दिन में रवी-शक्ति के प्रति अत्यन्त प्रदोष है और जहाँ आशाया मान-नैदान-अथन बहूतें निरर्थक विचारों के समार का कारणकट कर सकें। विवेको में नील और भावीगमा हीनी है और वे ही मानव की प्रथम आशाओं हैं।

इस पुस्तक के अंत तक अथन अथन ही चुके हैं। लेकिन इस सत्र-शक्ति का संवादन सुनी निर्माता बहूतें ने नये तिरों से किया है। अथन-रूप में इस विचार का अथन होना चाहिए। मूल्य १.२०

सर्वे संसा सा प्रकाशन सारनगर, आराधनी

भूगर्भयत : सोमवार, ३ जनवरी, १७

(एक्ट २०१३ से)

सुविधन राष्ट्रों की सुविधा भी विविध रही है। इसमें से ही वृद्ध रही, बगला देश के करोड़ों सुविधाओं पर हुए अव्ययीय अद्वयानों के सिद्धांत भी उन्होंने आनाम उठाने की पुर्वाह नहीं की है।

“यह आनाम की कि संयुक्त राष्ट्र सभ विराम में मानवता के दुनियादी अधि-कारों का संयुक्त बनेगा लेकिन मानवता के मूलभूत अधिकारों के राष्ट्रसंघ द्वारा स्वीकृत वाटर्ड (घोषणापत्र) का सतत उत्तमपन होते रहने पर भी अपने कोई कार्यवाही नहीं की। ऐसा प्रतीत होता है कि संयुक्त राष्ट्र सभ सत्ता की राजनीति का बसाइया बन गया है और इन कारण मानवता के प्रति आनाम नतंत्र विभागे में जनमर्ष हो रहा है।

“बगला देश के मुक्ति-संघाम का समर्थन करने के कारण आज भारत पर जो संकट आना है उसका सामना सारे भारतवासियों को एतदा और हिमय के साम करना चाहिए।

“संघ मानवता है कि ऐसी कठिन परिस्थिति और संकट की बेला में वह जनशक्ति जागत और संगठित करने का अवसर है बिच्छे अन्ता गति-गति में, बाह्यो के मोहुरले और बलिषों में अपने संगठित प्रयासों से युद्ध के कारण पैदा होनेवाली समस्याओं, जैसे व्यवहार की वस्तुओं का अभाव, मृत्युवृद्धि, सुनाका-खोरी आदि का प्रतिकार किया जा सके। प्राथमिक शान्ति और सुस्था कायम रहना ही आवश्यक है।

“हमारा ध्येय यह ही होना चाहिए कि पाकिस्तान की अन्ता को पूर्ण सौा-साधिक तथा नागरिक अधिकार मिले और मुठ्ठी भर स्वार्थी तथा सत्ताभिन्नायो लोगों के दबाव और मोहप से उनको सुविज मिचे। इसलिये पाकिस्तान की अन्ता के

प्रति भारत में वदुता और घृणा नहीं फैलनी चाहिए तथा युद्ध और बिच्छे के उन्माद में हमें अपनी मानवता और उदारता को संयुक्त नहीं होने देना चाहिए। वस्तुतः युद्ध एक अन्त्यापी भटना है और इसलिये युद्धोत्तर परिणाम जीवन के चिरन्तन तत्वों को बिच्छु न जाय, इसके बारे में

भी हमें सावधान रहना चाहिए। “बगला देश स्वतंत्र राष्ट्र के नाते जनत भर में मान्य हो। भारत में अयो शरणाधी सम्मानपूर्वक स्वतंत्र होत जायें। पश्चिम पाकिस्तान में संविद्याही का स्थान जनतशासनक वास्तव से और भारत तथा पाकिस्तान के सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण हवें।”

ग्रामसभाएँ क्या करें ?

सर्वे सेवा संघ के अध्यक्ष का ग्रामसभाओं के लिए सुझाव

सर्वे सेवा संघ के अध्यक्ष श्री ए० जगन्नाथन् ने सहृदता के मरौता प्रसन्न का मत १० से १९ नवम्बर तक की यात्रा की तथा वे ग्रामसभाओं के पर्याप्तारिको से मिले। वहाँ के नाम को देखकर आने से उद्योग प्रकट किया। अपने २१ नवम्बर की कार्यकर्ताओं की बैठक में ग्रामसभाओं के कार्यों की चर्चा करते हुए सुझा दिया कि ग्रामसभाओं के पास जमी जो कई प्रकार के रजिस्टर रखे जाते हैं, उनको कोई खास आवश्यकता नहीं है। निम्न-नित्तित पांच तरह के रजिस्टर ही आव-शक हैं। १-गाँव में मूल वितनी जमीन है, बाहरवालों की जमीन इस गाँव से वितनी है, उनमें वितने सामान में शामिल हुए हैं, वितने तहो खादि बातों की आवश्यकता देनाना वाली जमीन सम्बन्धी रजिस्टर (२) ग्रामसभा की बाउ-वाही सम्बन्धी रजिस्टर (३) जिन सामग्री का पैमला सामममा में होता है, उस सम्बन्ध में पूरी जानकारी रखनेवाला रजिस्टर (४) शालि सिद्धों की सूची रखनेवाला रजिस्टर (५) ग्रामसभा का व्यवस्थापन हिसाब रखनेवाला रजिस्टर।

आने वाले मुताआ कि ग्रामसभाओं को घेटी के तरीकों में सुधार लाने तथा वैधानिक तरीकों से घेटी करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए तथा अपने आन्दोलन की ओर से बोई दिये की पूरी जानकारी रखनेवाला नियोग कार्यकर्ता कुच्छ दिनों के लिए बहाँ रले जायें। साम-

सभाओं को गाँव की लफाई, मधुमरधी-पालन, छोटे-मोटे प्राचीन कुडोर उद्योगों के बारे में भी उन्हे सोचना चाहिए।

गाँव के तहगो हा, कार्यकर्ताओं का अयकामीन प्रतिशत-गतिर किया जाला चाहिए। प्रतिशत-गतिर अण्ड-जगह अन्त्यापी तौर पर हो तथा जिनो भी जगह स्थायी केन्द्र जैसा या प्रविष्टाप विद्यालय जैसा न हो। वे बिचिर एक-एक या दो-दो दिनों के लिए हो बनें।

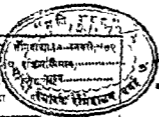
विक्रम सारभाई न रहे

रेडियो मन्मन्मन्ना परमाणु शक्ति आयोग के अध्यक्ष श्री विरमसारभाई का ३० डिसेम्बर को प्रातः हृदयगति रुक जाने से तिवेन्त्रम के एक होटल में देहान्त हो गया।

इस अंक में

बगला देश में शान्तस्वराज	
—देमनाथ गिह	२०२
युद्ध के बाद	—सामान्तीय
	२०९
बगला देश की आबादी	
भारत का परेडा	—विशेष
	२०४
बगला देश : समस्या और निदान	
—इन्द्रनाथपन विषारी	२०६
विदात और प्राणिक का एक नमूना	
—गिद्धाराज इह्वा	२०८
गरीब : वे कौन हैं ?	—सामान्तीय
	२०९
मुना-मान्तीय	—मुनाका इन्ता
	२११
२९ जनवरी, गणतंत्र दिवस प्राम-	
स्वराज्य-सभाएँ कौन बनायें ?	२१३
विदार की बिट्टी	२१४

वार्षिक मुद्रांक : १० रु० (सोड कागज : १२ रु०, एक प्रति २५ पैसे), वित्त में २५ रु०; या ३० शिलिप या ४ कासर। एक अंक का भाव २० पैसे। श्रीरमन्नाट मद्र द्वारा सर्वे सेवा संघ के निचे इकायित एवं मनोहर प्रेस, अन्त्यापी में मुद्रित

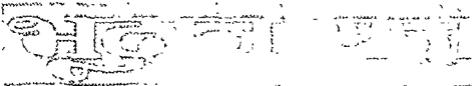


१९५१, २९, २९
 सर्व सेवा संघ
 रायपुर
 नगर ६ सर्व सेवा

संपादक
 डा. राजेश्वर प्रसाद

सर्वोदय

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र



विद्यया ऽ मृतमश्नुते, अविद्यांश्च मृतमश्नुते, अविद्यांश्च मृतमश्नुते, अविद्यांश्च मृतमश्नुते

“हम स्वतंत्रता के लिए दस लाख व्यक्तियों की आहुति दे सकते हैं।”

—नेता सुशीरुंगहमान

दण्ड पाप, प्रेम ताप, लीस ताप —
 क्षिणो मे आहुति दी है,
 जमी कौन पायो ?
 बगना देण की स्वतंत्रता
 आहुति की एक लहर बढ़ाये है,
 और मुझे उसके लहर रचयिता ।
 मुरीय ने तानाशाही के लुप्तो से
 जिन मानवीय मृत्यो को छोटकर
 मरुप्य को बापस दिये है
 वे एक नये एशिया और बिस्व की
 रचना करेंगे ।
 बन्द रहकर भी जिनसे
 बरत गरी मला
 डग मुजं ब ना
 हुनार बर इकणत ।



आपके पुत्र

कुछ स्पष्टीकरण

प्रिय सभासदजी,

मोक्षान् अधिवेशन में मैंने जो भाषण लिखे, सुनता हूँ कि उनके विषय में 'श्रुतान मत' में काफी बर्बादी होनी रही है। मोक्षान के बाद मैं अधिवक्ता एक स्थान से दूसरे स्थान का प्रवास करता रहा, इसलिए सारे धन देख नहीं पाया। फिर भी जितना कुछ पटा और सुना उसपर से प्रतीत होता है, कि कुछ लोगों के मन में कुछ प्रश्न उठे हैं। इसलिए थोड़ा-सा स्पष्टीकरण सद्यो में कर रहा हूँ :

१—गण्टी बात, मैंने मोक्षान में कोई नवी चीज नहीं कही। कुछ से लगातार मैं बड़ी पहला काया हूँ। परन्तु, भाव्य मोक्षान से पहले उसकी स्वीकृति के लिए परिस्थिति में आकाश उदरल नहीं हुई थी।

२—मैंने हमेशा यह माना है कि गरीबी और अमीरी दोनों बीमारियाँ हैं। वे स्वयं मानव का स्वभाव नहीं हैं। गरीब अपनी बीमारी से परेशान है। वह अरब-रोज-जय हमसे छुटकारा पाना चाहता है। छुटकारे के लिए आर्थिक समाज-परिवर्तन अनिवार्य है। इसलिए समाज-परिवर्तन में उसका अधिकार और पुरस्कार अधिक मुल्य है, उसी प्रकार उसका मह-योग भी। पकन दानवा ही है कि यह पुरस्कारों विरुद्ध प्रचार का हो? उत्तर यह है कि हमारे उद्देश्य में अनुपम ही। उद्देश्य है, मनुष्य को मनुष्य से सिद्धना। इसलिए समाज-परिवर्तन की प्रक्रिया में मानव-हत्या का हर्ष परिदोषित में निषेध है।

३—अमीरी का अधिवेशन ही मानव सम्पन्न और निष्पक्ष संवर्धन-सर्व-नविक और दण-नविक है। इसके अधिवक्ता अमीरी की पालि और संवर्धन के लिए अमीरों द्वारा होती ही रही है। जो बोधित, प्रदीक्षित और परिवर्धन

है, कल्प जो संवर्धित हिला का अधिवों से विकार रहा है, उसकी समुपठित और अधिवनकात्मिक शि्यों का प्रविकार परि हम भाषित के नाम पर कली है, और उसे अधिमा के पाठ विधाते है, तो हैम अनकाने वतमान समाज के पक्षगनी सिद्ध होते हैं।

४—जो फिर बना हो? हमारा उद्देश्य तो मनुष्यो को एक-दूसरे के मन-वीक बना है। इसलिए हम गरीब की ऐंठा राजा बतसायेने, विवधम बीरता के लिए निरन्तर अवकाश हो और समाज-परिवर्तन की अवोध धमता हो। यह रास्ता है सामूहिक, नैतिक दानन रा। उसे मतिरों के पाय जो समर्पित है, यह बड़ी निरिक्त का आधार है। उसके विवर्धन के लिए हम उन्हें प्रेरित करेगे। उन हेतु आनन्दक समान की रिशा सुनित करेगे। धान्योत्तन प्रतिदूषण वा नहीं, निवर्धन वा होगा, और आनन्दकदानुवार साम्प-मय प्रचार प्रविकार का भी होगा।

५—अमीरी भी बीमारी है। अमीर को हम उसकी बीमारी का होय विवादे की बोधित करेगे। अमीरों में से जो व्यति एक बात की समुदाय समाज-परिवर्तन में योगदान करेगे उनका हम स्वागत और सहाय भी करेगे। अन्य अमीर अधिवर्धों में सहयोग की प्रेरणा जागृत करने के लिए सतत सपेठ रहेगे। लेकिन, यदि मोहवध, या बुद्धिधन के कारण वे अपनी बीमारी को ही बनने जीवन का वैभव मानेगे तो उस अमाधि और उमाधि से उन्हें मुक्त कराने का निरन्तर हम प्रयत्न करेगे। इस प्रक्रिया में उन्हें क्रोध और दु:ख हो सकता है, उसे हम अपने लिए एक अनिवार्य आपति मानेंगे।

६—हर्ष करीब अमीरी का उन्मीलवार है। और अमीरी भी बनने में ही बीमारी है। मानव, एक तरह से गरीब भी अमीर की तरह समाज मनो-विकार से ग्रस्त है। 'देखी रिवाज में हम गरीब के पक्षगनी कैसे होकर रहे हैं?' प्रश्न विचारणीय है। गरीब अमीरी का उन्मील-वार नहीं है, कुछ का अन्वर्षी है। गरीबी

कोर अमीरी सारेव है। कुछ भी दु:ख का प्रविकार नहीं होगा चाहिए। सुन है स्वयं जीवन का आनन। जरीय रोग का प्रविकार नहीं है। आरोध स्वयं जीवन का सहायकवण है। उद्योग प्रसार कुछ है। अमीरी भी आनन का गरीब में पायी जाती है। यह परसुम्पित है। लेकिन यह आनन सहायकवण है। प्रविकार अर्थ-अनवस्था का वह अन्तर है। स्वयं आननका है, आनन्दमय जीवन की और समर्थ उमांग की। हमारा प्रयत्न होगा, कि दूधिन आननका वा लोन हो और स्वयं आननका जागृत हो।

७—अनुपदान-निवारण के लिए मरुतों के प्रायविचन-स्वरुध अधिवक्ता की आवश्यकता है। उसी प्रकार अमीरी और मतिरों के भी समुदाय और स्वाविक-विवर्धन-स्वरुध अधिवक्ता की भी आवश्यकता है। लेकिन सयात यह है, कि क्या समाज-परिवर्तन में गरीब की अधिवका भावस्य, विधापक और सकि पुरस्कार की नहीं होगी? और, यदि नहीं होगी तो समाज-परिवर्तन की प्रक्रिया में से उसके चात्रिय वा विवात कैसे होगा? उनके लिए तो यह समाज-परिवर्तन स्वावत और स्वपराकाविक नहीं होगा, दूसरी के पराक्रमों से उनका स्वयंसावक होगा। क्वचित के परसुत् जो समाज स्वावित होगा, उसकी अधिवका योग रह जायेगी। जय यह निजान आवश्यक है कि समाज-परिवर्तन की प्रक्रिया में गरीब के पराक्रम के लिए अमीर अनवरत रहे।

वे कुछ आवश्यक बातें हैं, जिनका स्पष्टीकरण जल्दी मागृत होगा। उनके अन्वय और भी बढ़ानी बातें हैं, लेकिन वे पुनर्बर्ह हैं। एव मुक्त बानो पर यदि हम एकत्रीयतापूर्वक विचार करें, तो एकत्रीय में सयात जाने-आव हन हो पायेगे।

मैंने कहा तो, कि अमीरों में स्पष्टीकरण बर्धना। यणद कुछ विचार हो गया हो तो सयासार्थी हैं।

उन्मीलवारन, पुन

२०-१२-'७९

मैदुधिन
धारा समाजिकारी

मानवसतन विक्रमभाई

डॉ० विक्रम माराभाई के अवसान से जगत ने एक बहुत बड़ा शान्तिप्रेमी और भारत ने एक बहुत बड़ा वैज्ञानिक गंवाया है, किन्तु मेरे जैसे अनेक ने तो अपना अनन्य मित्र खोया है।

जगत के इने-गिने कोसिमकरे तथा आणविक वैज्ञानिकों में जिसका स्थान था उसे अहंकार का स्वप्न भी नहीं हुआ था। इसीलिए तो वे इतने प्यार से हिलमिल सकते थे। सादगी उनके पूरे रहन-सहन में झलकती थी। उनकी अपना मानते में किसी को संकोच नहीं होता था।

वैज्ञानिक तो बहुत खारे होते हैं। लेकिन इनके मन में वैज्ञान मानव के लिए था, मानव विज्ञान के लिए नहीं। एक दिन मुझे कहने लगे, "कॉर्डे ऐसा कार्यकर्ता दिखाना, जो विद्वान में हमारे आणविक केंद्र में काम कर सके। यहाँ आदिवासी रहते हैं। उनके बीच ये उच्चतम शानवाले वैज्ञानिक जाकर रहेंगे। आदिवासियों का विचार मानवों के नाते कर सके ऐसा कार्यकर्ता चाहिए।"

अहमदाबाद के दंगों के समय कहा, "तुम्हारी सम्झना क्या है?" मैंने कहा, "इस समय तो पैसे की जरूरत है।" उनसे कभी पैसे भागे नहीं थे। हमारा सम्बन्ध उस प्रकार का नहीं था। उन्होंने कहा, "दिल्ली जा रहा हूँ, इन्दिराजी से भूंगा। वे कुछ पैसे जेब देगी।" मैंने कहा, "दिल्ली के पैसे मुझे नहीं चाहिए। अहमदाबाद का पाप धोने के लिए अहमदाबाद के पैसे चाहिए।"

नाराभाई परिवार से कीरन १५,००० २० मिल गये।

अग्रिरी बार भेंट हुई तब कह रहे थे, "अभी एक ही विचार दिमाग में चल रहा है। देश के प्रमुख वैज्ञानिकों का दिमाग देश की बेरोजगारी की समस्या को सुलझाने में लगना चाहिए। दुनियादी समस्या यही है।"

व्यवस्था-शाक्ति उनका आनुवंशिक गुण था। इसी के कारण डॉ० भाभा ने जो बनाया उसे डॉ० माराभाई मुचाकरूप से चलनेवाला कर गये। अहमदाबाद की अनेक संस्थाएँ इसी व्यवस्था-शाक्ति के कारण बनीं और पतनीं।

विक्रमभाई शान्तिप्रेमी थे लेकिन शान्तिवादी नहीं थे। हमारी पहली भेंट के समय उन्होंने एक वाक्य से अपनी सूक्ष्मका स्पष्ट कर दी थी, "मुझे लाइन्स पोलिंग मव बनाओ।" मैं तुरन्त इसे मान गया। उन्होंने भी मेरे मान जाने की कद्र की। विज्ञान को सर्वत्र समुल्लभ बनाने की उनकी एक खास वसन्ता थी। इसीलिए सेंट-छाइट टेलिविजन द्वारा धान के पूरे क्षेत्र को भारत के किसानों के लिए खोल देने का वे स्वप्न देखते थे। गुजरात के छावनों को रिजान उपलब्ध कराने के लिए वे एक विशेष योजना भी शुरू कर चुके थे। एक बार मैंने कहा, "हमारे प्रशिक्षकों को अनुसूक्तिक के चारे में कुछ सिखाओ।" वे हाँ कहते थे लेकिन कोई मौका नहीं मिलता था। एक दिन फोन आया: "कहाँ वारीय को अपने प्रशिक्षकों को लेकर बम्बई पहुँचो।" बम्बई पहुँचकर देखता हूँ कि यहाँ क्या, गोष्ठी थी। उन्होंने कहा "सिताना एक पक्ष से नहीं होता। कुछ लोग भी सीपोंमें, इस लोग भी सीपोंमें। गोष्ठी का नियम है 'परमाणु-शाक्ति के सामाजिक पक्ष' और सब विषयों पर चर्चा का आरम्भ हमारे वैज्ञानिक चरेंगे। 'परमाणु-शाक्ति और प्रतिक्रिया का प्रदर्शन' इस विषय का आरम्भ मुझे करना होगा।"

और इस लोगो की क्या गुन्तागरी थी। देश के प्रमुख वैज्ञानिकों के साथ शानसेना के प्राक्शक और कुछ तथ्या-प्रातिमैयिक भी घेठ गये गोष्ठी में। और जब अपनी वारी आयी तब मैंने भी कुछ बरबाम बर ही छाती। जब प्रदर्श के तीर हम पर छुटे, तब मेरा अभिय बरब बर कर खड़े हा गये विक्रमभाई।

विक्रमभाई अपने पीछे श्रद्धा माना मर्यादा, पत्नी गृणाकिनी बदन, संतान कार्तिकेय, मल्लिका, कार्तिकेय की बहू और छोटे बेटे की छोटी गये हैं। परिवार के सदस्य के नाते वे एक अत्यन्त प्रेमी पुत्र, पति व पिता थे। गृणाकिनी बदन अपने में ही विद्वारविक्रयता फलाकार हैं। कार्तिकेय और मल्लिका की प्रतिभा भी अपने माता-पिता से रावाई ही है। परिवार के दुःख में आन लारंगे लोग शामिल हैं। कौन करोडार्थपिपिता का लड़ना स्वयंताय की स्वेच्छा से छोडकर वैज्ञानिक बनता है? कौन वैज्ञानिक इतना सामाजिक होता है? और कौन सामाजिक इतना मानवीय होता है? डॉ० विक्रम माराभाई के निधन से संसार ने अपना एक मानवसतन खोया है।

—नादापल देसाई

भारत और बंगला देश : इतिहास की अनोखी घड़ी

—प्रसन्नक सेहता

लोकतंत्र का भारत

पाकिस्तान में शिमली भिड़ता है, भारत में उसके नहीं अर्थिक है। परन्तु भौतिक स्वयंसे, भारत में विभिन्न समुदायों के सम्बन्ध को राजनीय व्यापार है; और मजबूत बनाया है। परन्तु उससे अधिक महाभूयुक्त लोकतंत्र का अनुभव है। हमारे कुछ लोगों का—जैसे तथा, जिन्होंने और कम्पनी—एई हार अपना होने का विचार जगा, परन्तु लोकतंत्र के अनुभव में बहुत सम्भव बनाया है। अन्ततः ही परिपरता, भाईभाई की राजनीति के विवेक।

इसके कारण सरकार को बाईं-भाई-बाईं और मित्रता की दृष्टि में बचल गयी। मेधात्मक दृष्टा एक उदाहरण है। इसी विधान और भाईभाई की कमी की निम्नलिखित पाकिस्तान को मोड़ जगा। हमारे लोकतंत्र में बहुत बड़े शोध हो गये हैं, परन्तु उनमें हमारे लोगों को एकता प्रदान की है।

मगर के बहुत लम्बे राइट, किन्हीं अनेक बड़े सामाजिक लक्ष्य का साधना करना पड़ा है, अपना देश की समस्या पर भारत के विवेकी है। आशा है कि वे गरीब वर्ग कीर्ति है। भारत किन्हीं देश को नीडना नहीं चाहता। यह विश्वास और भाईभाई के मूल्यों को बढ़ाने की कामना करता है। भारत और पाकिस्तान के एक ही देश के दो दुश्मन हैं, मैं क्या समर्थ है। पाकिस्तान ने पूरे तीर से मना पर मरोड़ा किया, भारत ने मरणा पर। हृदय लोक अधिक विनाश में पीछे जबर रहे हैं, परन्तु वे बीना सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं के हृदय कल्प में हृदय लये उदाहरण और नयी योजना की है। कोई भी यह नहीं कह सकता कि लोकतंत्र ने सामाजिक प्रश्नों को हल करने में मदद नहीं की है।

अपना देश के एक स्वयंसेवक बनने से अग्रिमप्रेतता और सामर्थ्य में हृदय विश्वास को एक नयी शक्ति विनो है। बंगला देश का बर्धक विधान इसकी और मजबूत बनायेगा।

परिचय और पूरे बगल बहुत दिनों

परन्तु लोकतंत्र विचार में बगल देश की शक्ति हो गया है। आनन्द यह है कि कुछ ही वर्षों में पूर्वी पाकिस्तान एक ऐसे देश का बड़ा भाग होने लगा जिसे पाकिस्तान और भारत की दुस्वार्थ समर्थ पर ही, अन्त हो गया। धर्म और परम्परा में बगल देश के बहुसंख्यक नागरिकों का मात्र भी पैसा ही विश्वास है बिना पड़ने का। परन्तु इसे ७ का ४ को में ऐतिहासिक परिवर्तन जगा है।

१९४७ में जब अनेकों में भारत को दो हिस्सों में बाँट दिया तो पूर्व बंगाल ने पाकिस्तान का अंग बनना स्वीकार किया था। परन्तु दोष वर्षों के बाद ही पूर्ण पाकिस्तान में सम्मिलित होने का इच्छा हो गया। यह नहीं था कि जिसे पाकिस्तान बनाया, परन्तु पूर्व बंगाल के लोगों के विरुद्ध उठते दलन और कार्यक्रम में कोई अवरोध नहीं रह गया था।

१९५२ तक यह स्पष्ट हो गया कि उनके विरुद्ध राष्ट्रीयता का स्वाभाविक इरादा से बहुत जैसा है। उन्होंने अपनी भाषा और संस्कृति का, एक मजबूत की शक्ति के प्रयोग करने की शक्त थी। और पूर्व पाकिस्तान के लोग एक ही राष्ट्रीयता की ओर बढ़ने लगे, बिना के बारे में यह कहा जा सकता है कि 'एक देश एक है' सिद्धो की गई शक्ति है। उसे समय विश्वी पाकिस्तान के राष्ट्रीय नेतृत्व में एकता की शक्ति को का रही थी। विश्वी पाकिस्तान का एक सुनिश्चित बनाया और, 'आगे बढ़ो, आगे बढ़ो, आगे बढ़ो' की मर्मण जगा उस मान का स्पष्ट कर्तु है।

एक बड़ा प्रश्नकार
पूर्व पाकिस्तान सामाजिक दृष्टि से विचार हुआ था। कारण यह हो सकता है कि वैश्वी समाज में विश्वास के आधार नहीं हृदयों का बल के साथी में शिमली कोमिड बरती आदि ही उनकी नहीं

थी। परन्तु सामाजिक विचार की कमी को राजनीतिक प्रयोगों के द्वारा मिटा गया। पूर्व पाकिस्तान के लोगों का राजनीतिक प्रयास और विश्वी पाकिस्तान के राजनीतिक विचारों में बड़ा अन्तर है। ऐसे बात नहीं कि विश्वी पाकिस्तान के लोगों में राजनीतिक कार्य और शक्ति की परम्परा की कमी है। बिना उनकी शक्ति होने का दावा ही नहीं की। किन्हीं स्वयंसेवक के पदान (सामान्य) राजनीतिक स्तर पर चीकने से। किन्हीं ने ही उरी का विचार का अन्त था था। परन्तु भारत में समाजों ने हृदय में जगा रहा का गया, परन्तु यह बड़ा पूर्व पाकिस्तान के राजनीतिक प्रयोगों की धारण नहीं हो सारा। यद्यपि वे एक दुःखित ही जगल दिया। पूरे पाकिस्तान के अन्त लोको में राजनीति जगा, सामाजिक मूल्य, और आशाओं को उरें बहुत गहरी का चुकी थी।

एक जादवी बहने ही-० टाउनल ने समीक्षा के अनेक अवसरों में निम्नलिखित कि 'वे भी सामाजिक लोग थे किन्हीं दलन का पानी की।' इसी तरह पूर्व पाकिस्तान में अनेक और स्वामीना से गहरे लड़ा के कारण यह सम्भव है कि लड़ा कि लक्ष्य मुजीबुर्रहमान स्वयं के लक्ष्य में एक स्वयंसेवक का समर्थन करें। यही बात बंगला देश में अन्त और अन्ततः की शक्ति का ही कारण है।

दुर्भाग्यवश ही 'लोकतंत्र' के अन्त गहरे लक्ष्य सम्पन्नित विचार। पूर्व पाकिस्तान के नेताओं और यहाँ की जनता के बीच विश्वी पाकिस्तान 'वैकी पायी' बर्धक ही नहीं की और तभी सम्भव हो सारा कि वैश्वीय या आशियन एक बने बिना पर चरे। यह आशियन, जो सफल हो गया है, लोकतंत्र में विश्वास की एक नयी शक्ति देगा।

के निराशा के विचार थे। दोनों देशों में माओवाद का आदर्श बल था। वंश का सत्ता की राजनीति और वंचितक इनामदारी की वजह से चीनियों के लक्ष्य की दुनिया के सामने पेश कर दिया है। अन्ध निराशा के बहुत सारे कारण नाटकीय तौर पर खत्म हो गये हैं। बदली हुई परिस्थिति रचनात्मक प्रयास के लिए अवसर दे रही है।

संविधान रूप से बंगला देश की समस्या पर भारत का समर्थन किया है; नवोदय रूप समस्याओं से परिचित है। रूप के इन व्यवहार ने हम दोनों देशों के बीच मित्रता के बन्धन को मजबूत किया है। भारत और बंगला देश का हित एक ही है, यद्यपि बंगला देश एक स्वाधीन और स्वतंत्र देश है और हमेशा स्वाधीन रहेगा। पिछले महीनों की कुनठियाँ इन देशों की मित्रता को और मजबूत करेगी। अच्छा होगा कि सिवार्ड, कृषि, शिक्षा और बाढ़ के निराकरण में जो योजना बनायी जाए, उसमें इस बात का पूरा ध्यान रहे कि पूरा पूर्वी क्षेत्र एक ही है। हो सकता है कि बंगला देश अपने यहाँ विकास का लक्ष्य चीना होने के कारण भारत के साथ एक परस्पर मठी स्वोकार न करे। परन्तु जब कि दोनों देशों को अपने आर्थिक भविष्य को बनाना है तो तारीक देखने के प्रयत्नों में आप करना ठीक नहीं होगा। इस क्षेत्र में आपाजप के साधनों का बढावा अच्छा होगा। यद्यपि पुनर्वास का काम तारात्मिक महत्व का है परन्तु निर्यात के काम को भी स्थिति नहीं किया जा सकता।

खुली सीमाएँ

जह आशा की जाती है कि दोनों की सीमाएँ दृष्टेया खुली रहेंगी। दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग होगा। बंगला देश के लोगों की पुनार पर आराम होइ गया। दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग के लिए ऐसी ही भावनाओं को आवश्यकता होगी। खुली सीमाएँ और आर्थिक सहयोग दोनों देशों की उन्नति में भागीदारी का एक नया नमूना प्रस्तुत करेंगे।

एक ऐतिहासिक पत्र

निक्सन के नाम आन्द्रेमालरू का पत्र

पत्र के प्रसिद्ध विचारक और नीतिज्ञ आन्द्रेमालरू ने फ्रांस की प्रसिद्ध पत्रिका 'साफिनारो' में राष्ट्रपति निक्सन के नाम अपना पत्र प्रकाशित किया है। यह पत्र बंगला देश के सम्बन्ध में है। एक भाविकदारी, और उपनिवेशिक संघर्षों के एक बड़े विवाही के दिन की व्याख्या है।

पत्र निम्नलिखित है :

“मेरे राष्ट्रपति, बंगाल के करोड़ों कारणों अपने घर जा रहे हैं, आप भारत के नाम अपना एक पत्र लिख चुके होगे (फ्रांसीसी एंजेलिनी के अनुसार) जिसमें आपने यह वाद विनाश है कि सत्तार वा सबसे शक्तिशाली देश अमेरिका पाकिस्तान के साथ एक सवि संधा है। और, ऊन्ही एंजेलिनी की रिपोर्ट है कि अमेरिकी देश बंगला की खाड़ी की ओर बढ़ रहा है।”

“अपरा आप को मार्गव महिया खाँ से इतनी सहानुभूति है तो फिर आपने उनको पहले ही परामर्श क्यों नहीं दिया ? मैं आप के देश के बारे में जानता हूँ। आपके यहाँ के लोग खुला आन्दोलनवाले बरा हारमैनालो की भी जेल में देखा पसन्द नहीं करते हैं। वे यह भी पसन्द नहीं करते हैं कि उनके साथी

एक गरीब पहुँचती देव में एक बरूँक शरणाधिकों को डबैते है। दार से कोई अन्तर नहीं पड़ता। आप लोगों की भी दान दे सकते हैं।”

यद्यपि आता वायुमान एकात्मता पर संझटा रहा है, लेकिन अमेरिका कभी भी मरते हुए लोगों के बिरुद्ध लड़ने के लिए तैयार नहीं होगा। जब कि संसार में आपकी करने शक्तिशाली सेवा विनाशनाम में विराधित बिसातों को पराजित न कर सकी, तो क्या आप यह समझते हैं कि इस्लामवाद की सेवा एक ऐसे देश पर कब्जा कर लेगी जो इसके विनाश से बाध हो मौल दूर है और यहाँ एकात्मता-सहयोग के शोने भडक रहे है ?

आपको पता होगा कि भारत के दस युद्ध में शिरका से परे हथ में से बहुत से लोगों ने बंगाल की स्वतंत्रता के लिए शपथ उठाने का दारा किया था। बैसे में आप को याद दिला दूँ कि अपने आठ हवाई बडूँ पर बमबारी के बाद भारत युद्ध में शरीक हुआ है। देश को सीमित पराधिवारी हमारे साथ बंगला देश को बवंशता सहयोग लड़ने के लिए तैयार हो और साल भर में ही हमारी सहाय एक हजार हो जाओ। हम लोग १५ नवम्बर को निरचनेवाले थे, परन्तु उनके बाद हम →

बंगला देश के लोगों ने स्वाधीनता के लिए जो शपथ किया, इतिहास में उसका उदाहरण नहीं मिलता। और इस बात का भी उदाहरण नहीं मिलता कि पड़ोश का एक मित्र देश उसकी सहायता के लिए तहर्न सेदार हो गया। सिधो भी देश के एक भाग ने स्वतंत्रता दवनी सफलता से प्रशंसित नहीं की है। परन्तु हमें एवरो अधिक प्रशंसा की जाय यह है कि बंगला देश एक धर्मप्रदाय देश से एक धर्मविरुध्द और सौहार्दात्मिक देश बना। यह इतिहास की एक अनोखी पड़ो है।

वे विशेषताएँ दोनों देशों के बीच खुली सीमा और आर्थिक सहयोग की

सम्माननाओं को रोशन करती है। इस अवसर से काम उठाने के लिए उसी विवेक और दृष्टिकर्ष की आवश्यकता होगी, जिसका प्रशंसन पिछले दिनों हमारे लोगों ने किया। भविष्य की जो भी सफलताएँ और विनाशपूर्ण हो—नास्तबिकता यह है कि हमारे इतिहास में एक नया मोड़ आया है। बंगला देश परिवर्तनी पाकिस्तान की सुनारी से आजाद हो गया है। अब उसे अपने हस्त, आर्थिक विकास और स्वाधीनता को पूर्ण के लिए परिश्रम करना चाहिए। इस स्वतंत्र में हम दोनों राष्ट्रों के बीच दोस्ती के लिए भी स्थान है।

('स्टैट्समैन' १५ दिसम्बर १९७१)

लोगों को कोई छुनना नहीं मिले। मैं समझता हूँ कि हमारी यहाँ आन्दोलन नहीं रही। हम लोग ऐसे भोले नहीं हैं कि विदेशियों के एक दमने को साम्यो मेना से अधिक महत्त्व समझें, परन्तु जब तक परिस्थिति में भारत को युद्ध में नहीं डालता था, उस समय तक हम लोगों को सहानुभूति का गुण कल्पना था, क्योंकि हमारे विश्वास उसकी सहानुभूति के विपक्ष और बल तैयार था ?

मेरे साथी यह नहीं समझ पाते कि पूर्वी बंगाल के साथ बंगाल का सम्बन्ध क्यों नहीं किया जाया है। बंगाल जल्दी छिड़ की बात करते हैं। मुझे बड़े दीर्घचित्तों कि कभी समय है। बांगके इस युद्ध में शामिल होने के पहले बी। और एच. एच. में शामिल हो जाने का क्या होगा ?

बंगाल में खूबसूरत हुए थे। परिस्थिति की अपेक्षा जीत की आशा थी। परन्तु वह हार गया और इसके विरोधियों को १९५ में १९० स्थान मिले। जिस पर उन्होंने विरोधी नेता जे. ए. मुन्शीद्वारा की जैन सेन किया, जबकि उन्होंने अहिंसक और पर कल्पे पर यह प्रतिज्ञा की कि परिस्थिति विराही अन्तर उन्हें निरन्तर कर दें। और एच. एच. उन्होंने उन्हें संगठन की पद्धति विभागी। क्या यह उचित है कि बांग नहीं है कि अमेरिकी राष्ट्रपति के पर के लिए बंगाल की जनता के सम्बन्ध में और उस प्रकार का जैन जाते देखें। और और में जन नहीं हूँ या कभी भी जा सके समझा दस रहे हैं। यह बड़े ही ही छिड़ थी। ही की इतिहास कि एक करोड़ प्रती, विराह और अन्तर भारती विभागी जा रहे थे।

परिस्थिति विराही देशी जा रहनेवाले करते रहे। बड़े अल्पक दिन हुआ और पूर्वी बंगाल के लिए भागने लगे जिनमें मुन्शीद्वारा की एक बड़ी संख्या भी शामिल थी।

बांगी कृत्या सब विचार कि 'यह युद्ध है, यद्यपि यह सब युद्ध नहीं था। भारतीयता यह है कि भारत में एक

करोड़ भारतीयों का मेरे से जब कि परिस्थिति में भारत के एक भी मुस्लिम भारतीयों को स्वीकार नहीं किया था, क्योंकि वे भारतीयों की भी नहीं।

मेरे राष्ट्रपति, मैं यह देखना पसन्द नहीं कि हर अमेरिकी आते पहले कि 'हम विपक्षों के लिए तैयार' अगर पूर्वी बंगाल में सब कुछ ठीक-ठाक था तो फिर जिस प्रकार के कारण इनकी सहायता में ज जाया भारत में जा गये ? और, जे. ए. मुन्शीद्वारा की विद्वान्ता की जैन में नहीं पड़े है। क्या जन्म हुआ अगर बांग जाने साथी को उन्हें मुक्ति देने के लिए बड़े ?

बांगी जनता विभागी से जो बांग हुई थी उसे जाय गार करें। बांग ठीक अभी समय सत्ता में जाये से और बांगी अमेरिकी राजनीति पर हमसे बात की थी। मैं जाय मे कड़ा था कि 'अमेरिका संसार का बड़ा सभसे परिस्थिति दस है, जिससे बड़ा हीन नहीं बांग, लेकिन बड़ा बना। निरन्तर ने क्या बना बांग था, और ने और बनने के लिए बंगाल किया था, बांगने की समार वा स्वामी बना नहीं बांग, परन्तु बांग बेसमानी में समार के स्वामी बन बैठे हैं।

बंगाल की स. की में कुछ हवाई जहाज भेज दना, पर कि समार का भाग सार से है, कोई नहीं नहीं है। बांग चीन से बांग करने का यह है, जिसमें अमेरिका के चीन सार पर कोई सम्बन्ध नहीं रहा है—भारत के समार की चीन की सभसे गार से बांगनी।

बांग बांग स्वयं बंगाल के लिए भी प्रतीक्षा नहीं कर सकते, एक ही बांगी गार का जाय कि बंगाल की घोषणा करनेवाला देश एक भारतीय राष्ट्र को, जो बांगी स्वयं बंगाल के लिए समर्थ कर रहा है, कुन नहीं बांग ? मैं यह नहीं विराह कर सहाय हूँ कि बांग की प्रसिद्ध स्वयं बंगाल की मुक्ति बड़ी प्रवृत्तता के साथ देशीयता पर दस बंग की देखी है— भारतीयों का स्वयं, जो कभी यह गार

करते कि स्वयं बंग है। मैं जाय जो यह पड़ा है, यह मैं नहीं यह रहा है, यह बांग यह रहे है।

—बांग विराही सेन

['दिव्यत एवमेव' २५ दिव्यत १९७१ से]

भूमि की वापसी

गरीब आदिवासियों को जमीन जो गैर जातीय रूप के बड़े जमींदारों या साहूकारों के कब्जे में चली गयी है, वह वापस मुज जायियों को मिल सके जिसके लिए शासन की ओर से एक अधि-निर्धारण-कचन की स्थापना करने की सूचना महात्मा प्रामाण कीर्ति के अन्तर्गत, तथा निराजन मजल के भूपूर्व संस्करण की बांग के पीछे ने की है।

महात्मा (शुनिवा) गौरी के बीच आदिवासियों की करीब दस सौ एकड़ जमीन दस गाँव के बड़े जमींदारों के कब्जे में जा चुकी है। प्रत्यक्ष करने से जिनको भूमि है उन्हें लोटागो का सजायी है।

सांने प्रदेस की दृष्टि से परन्तु बांग दना बांगक व बांगी है कि केवल स्वयंसेवी सहाय के सूे का नहीं है। इसके लिए वैश्वीय स्वयंसेवी कार्य दिवसके लिए भी गरीबों में उपरोक्त अधि-निर्धारण का भी स्थापना का मुताबक प्रत्यक्ष किया है।

बांग के एक देहाय निहड में ऐसा एक अनुभव आया है कि सर्वोदयी नेना की गौरीद्वारा जिने की बांग पर ५ आदिवासियों की १० एकड़ जमीन जो बड़ जमींदारों के कब्जे में थी, सहा में ही वापस दे दी गयी। इस पट्टा का सार सर्वज बहल अन्तर्गत हुआ। दस प्रकार यदि गाँव-गाँव सम्बन्ध लोपो से बांगनी की जाय तो परिणाम अच्छे था सकते है।

प्रभुत्व सहाय पर सांने सहाय का तथा हासन का भी ध्यान केन्द्रित हो सके इसके लिए तां ३० बांगी को सहायता बांगीको के विरोध दिवस के निमित्त एक विभागी सहा एवं भूक जुनल का संयोजन की किया गया है।

बंगला देश का नया सन्दर्भ और अल्पसंख्यकों की समस्याएँ

—मुस्तफा कमाल

बंगला देश एक स्वतंत्र राष्ट्र की हृदयवत् स्थापित हो चुका है। आजा की जागी है कि सत्कार के द्वारे राष्ट्र और राष्ट्रपति उभे घोर हो मान्यता से देंगे। अगर देर भी हुई तो हज़ी होओ, शिवाजी की मान्यता निकले में हुई की। बंगला देश के निर्माण में भी भारत की बहुत भूमिका है। अगर भारत ने खतम मोन लेपर बंगला देश के 'कोर' के लिए युद्ध न किया होता तो न मालूम और कितना स्वतंत्रता नहीं होता।

भारत ने बंगला देश की स्वतंत्रता के लिए जो युद्ध किया उसका परिणाम बंगला से करीब मानना चाहिए। क्योंकि यह युद्ध स्वतंत्रता, स्वतंत्रता, स्वतंत्रता का राजनीतिकरण, शक्ति का प्रयोग, मूल सत्ताओं को नष्ट कर ऊपर से एक दूसरी सत्ता स्थापित की कोशिश, मानवविधवा की और लोकतन्त्रवादी आशाओं के अपमान के विरुद्ध था। इस युद्ध के परिणाम को अस्वीकार्य, वैध और मानवीय कहा जा सकता है। इतिहास में यह पहला युद्ध था, जो धर्म की बुनियाद पर साम्राज्य स्थापित करने के विरुद्ध लड़ा गया।

इसके भारत का सम्मान बहुत बढ़ा है और यह एक मध्य एशिया से बड़ी सामरिक प्रतिष्ठता बन गया है। अतिस यह कहना भी ठीक ही होगा कि यह विश्व परमाणु प्रतिष्ठता का एक 'धुर पावर' बन गया है, जिसके पास धर्म निरपेक्षा, लोकतन्त्र, और समाजवाद के हृदयकार हैं। अगर हम याद की अपनी तरह हमें यह याद है कि भारत ने अस्वी-अनुत्पन्न या अस्वी-अनुत्पन्न शक्ति बनने के लिए युद्ध नहीं किया था। भारत की प्रधान-मन्त्री ने विद्युत दिनों बार-बार यह स्पष्ट किया है कि महाभारतों और अस्वी-अनुत्पन्न की बात अब गयी-गुजरी ही

चुकी है और भारत की वैसी कोई महा-स्वाशाही नहीं है। लेकिन हम बात की बड़ी उन्मीद है कि एशिया और अफ्रीका के छोटे-छोटे देश, जो सोवियत और अन्तिमवाद के विरुद्ध लड़ रहे हैं, अब भारत में संगठित होंगे और परस्पर पूरक बनकर अपना विकास करेंगे।

यह तो हुआ सरकार का काम, लेकिन भारत की अग्नि बग्गी का उत्तर-दाहिने मुहों के हर नागरिक पर है जो धोखा-बहुत सामाजिक और राष्ट्रीय उत्तरदायित्व के प्रति चेतन है। भारत उसी समय भीने यह रहेगा जब यहाँ के समाज में जो गार्ड पड़ गये हैं सुनना-भी जायें। इसके लिए सबसे बड़ी जरूरत यह है कि यहाँ के अल्पसंख्यक—विशेष तौर से मुसलमानों की समस्या का उपाय खोज कर ले लो कोशिश की जाय जैसे महाभारत गयी है की थी। यह एक महत्वपूर्ण काम है; क्योंकि स्वतंत्रता-संघर्ष में मुसलमानों की अनुपस्थिति शरीर नहीं थी, और स्वतंत्रता के बाद मुसलमान राष्ट्रीय आशाओं से भरना पाया न जोड़ सकें। अगर यह परिस्थिति ज्यों कीरों रहती तो एक समय आयेगा जब अपने विच्छेदन के कारण मुसलमान राष्ट्रीय अर्थ-अवस्था पर एक बोतल बन जायेंगे, या उनके अन्दर असामाजिक तत्व बढ़ेंगे और इस तरह समाज की शक्ति और शिखरता के लिए एक बड़ी समस्या उत्पन्न हो जायेगी। (यह बात याद रखने की है कि नवशासनादी आन्दोलन की जो कार्यकर्ता भिने, उनमें मुसलमानों की संख्या उनकी संख्या के अनुपात से अधिक थी। हरिजनी, आदिवासीयों और दूसरी पिछड़ी जातियों के साथ मिलकर ये एक विच्छेद तो ही हो सकते हैं ?

अब यह है कि क्या किया जाय ?

उत्तर है, उनको शिक्षा दी जाय, उन्हें यह बताया जाय कि धर्म में अब उनकी शक्ति नहीं रह गयी है कि यह विभिन्न समुदायों, राष्ट्रीय और सामाजिक-सांस्कृतिक गुणों को एक साथ बाँटकर रखे थे। एन एच 'असमते हीन' की बुनियाद पर इस्लामी साम्राज्य के स्वतंत्र की छोड़कर उन्हें सामाजिक-सांस्कृतिक से करीब बना दिया। बंगला देश की बंगला यह बताती है कि यह युद्ध स्वतंत्रता का है जो महाभारत गयी के आनन्द-परायण या पहला काम है। हमें इस तरह का आनन्द-परायण बनना होगा कि मुसलमानों के अन्दर दंग और समाज के प्रति लगाव और भागीदारी की भावना बढ सके।

इसके लिए हमें इन बातों को ध्यान में रखना होगा कि हमारी धर्म-निरपेक्षता विचार्य हो। अन्तिम सामाजिक समारोहों में कोई भी ऐसी उम्मीद की जाय कि वह किसी धर्म से सम्बन्धित हो। इतिहास को तोड़-फाड़ कर पैदा करने का जो प्रयास देश में चल रहा है उसे रोक्ना होगा। राष्ट्रीय जीवन में जो मुसलमानों का योगदान रहा, उससे इन्कार नहीं करना चाहिए। (भारत में युद्ध जैसे दिवसों के विशेष दिनांक तो सदैव ही मिलना एकमात्र उद्देश्य है कि मुसलमानों के योगदान से प्रभावित करो। कोई नहीं है कि युद्ध-निर्माण अथवा स्वतंत्रता का न बनना था।) कोई दावा करता है कि सामरिकता और सामरिकता के बनाने वाले अथवा दिवस रखा थे।)

असम तोष भारत-युद्ध की बात करते हैं। समाज में यह बात नहीं जाती कि भारतीयकरण का अर्थ क्या है ? इतिहास कि भारत हिन्दू, इस्लाम, ईसाई, और दूसरे बड़े धर्मों का संगम रहा है। यहाँ की सभ्यता में ईरानी, अरबी, पर्सी अर्थों प्रभाव मिलजुलकर एक हो गये हैं। अब जो कुछ भी नगर आया है वह भारतीय है। इसलिए भारतीयकरण के नाम पर हिन्दूकरण का गारा बहुत ही धातक विरुद्ध हो सकता है।

काला जाय। प्राग्भवं में कामना भोगी-
सो लारी—एत-एत, दो-दो पाठशुभाश्री
से लोकर रख मेरी और उना दाम
मुक्तिमें में निमित्त कर देयो। हउ नउने-
वाना दा नउनेपली आनी अणभरवा
और अणभरवागार निजान और त्रिय त्रिम
वा कण्डा केना चाहैये तेने जामेने। अज
उन मून को कामना, नरवा की उपनीनी
सहायता से लगे गेव म उरना देवी
और बहु पण्डा फिर गोनको मून देकर
ते लेगे।

यदि तिमो के दोरे में कामना जावर-
बसा से अजिद होगो तो कामना उरवे
लरीदरर जाने पन खत तेनी।
इम उरवे से हर हाव की वाप अवार ही
मिथ जायेगा। एनी उरवे से गवि की
पाठशाला जन तानोच की (बुनिवादी
महुर देकर) सेत अकर विद्या देगी तो
प्रायसात्री त्रिय उरवे से चाहैये अरा
विवात खचने करते नते जायेगे। एना उरवे
से ही सारी वाजार से वाहर की चीज
बहु खरीगे, और कामना उरवे से कर
से मुक्त हो सहेगे। इन प्रक्रिया की और
जाये यदाया कामेना कि प्राय में जो कुछ
भी कोई उरवा करेगा उनका नाम मुक्तिमें
में अकि कर प्रायसभा से लेगी और जो
कुछ वह व्यक्ति तेना चाहैगा, वह सब
उन मुक्ति के आधार पर (प्रायसभा
के पास जो कुछ होवा) से लेना। इस
प्रकार शारीकीय प्राय में ही विराति हो
जायेगे। किसी कामवादी की अपनी
उत्तति को वाजार में न ले वाकर शोषण
का कारण बनवा पड़ेगा। जो सामान
प्रायसभा के पास बचेगा, वह सब
उरवे निवात वा प्रबन्ध करेगी।
आज तो केवल यही एक ढंग है जिससे
प्रायसभायन में एतपदा मिलती है।
विनीवासी ने जो पावर की मायदा सी है,
उरवे शायदप्रवना सम्भवनः आज से
५० वर्ष बाद पड़ेगी।

इस—अगर पावर का बसा मून
और पावरमून पर दवा कपडा लारी में
वेक सरता है तो फिर मित्र के बाड़े के
उपयोग में नरा हूँ है ?

उत्तर—प्राय न पावर विकेन्द्रित है
धीर न ही ५०-१०० वर्ष तक उनके
विकेन्द्रित होने की सम्भावना है। हमने
वर्तित्व हमारा मरिउच भी लारीक
की दृष्टि से इतना चित्तित नही हुआ,
इसलिए ५० वर्ष बाद की वाप को आज
गोनना अणभरवा एवं अराक्षीय है।
अभी तो मीने पहले प्रश्न के उत्तर में बं-
बसा है, उनी को जिवालयर का से
करता है।

प्राय—एक वा दो त्रुके के अन्त-
से तो खादी महोनी पड़ेगी। गविने
लरीदरे गरी। इसकी अवेदा जिकर उरवे
वा कपडा चगे तो लारी गरी हीयो
और प्रायसभायन प्राप्त जायत होगा ?

उत्तर—एक वा दो त्रुके का उहाँ
समान ही नही उरता होगा। पहले तो
हमें तनवानो की वा-मार्गिक च ले
(यरवदा चक) में ही वारण करना
होवा। अरवा, उरवा सामान (उकना,
बक जादि), मूनी वा आदरपदा की
अन्य वस्तुएँ दहे मून की गुठी के परगे
से ही मिलनी चाहिए। ये सब सामग्री
उरवे सारी के उपयोग के बने म
ही मिलेगी। उरवे सते महुँये का सवान
न उरकर मून ही होगा और यहाँ
रमण रहे कि कताई के बायें में हूँ
जगदा बचो और नूकी मो ही लगना
होवा, जो अकि और का काम नही कर
सते। वरहोँ की अने-अने प्रायोयों
में ही नये रहना है।

प्रश्न—पावर की इजाजत की कामेनी
तो चालू कानवेवली बलिनी वा वाग
होगा ?

उत्तर—मजदूरी करनेवाली दलित
जो हमने आर बनायी है, यदु पाकीरो
के सिद्धांत के विनष्टन विररीत है।
अरवा मजदूरी के लिए नही, स्वातन्त्र्य
के लिए है। बने तो पहले, पहले तो
बने। इसीलिए यदित के लारी होने का
समान ही नही पैदा होगा। सत्त्वार्थों की
मजदूरी पर मून बताना अनी से बन्द

नर देना चांिए, और उरवे मून के यदने
में मूरी, अरवे वा सामान, मण्डा,
मागुन, सेन जादि वायोजोगों की चीजें ही-
बिनी चाहिए। जो कण्डा बूँ के बच
जाय, वही अरवे में बिलना चाहिए।
विनायेसने नपडे तो प्रश्न नही मिलना
चाहिए। महुँों में विबीकेन्द्र बम करके
पूँकी और कायंगता, दोरी वा मूँह पाव
की और मोचना होवा।

प्रश्न—प्राय लक का अतुभव यह है
कि पूनी बन्दी होवे से हो मून जोर लारी
अच्छी होनी है। मिथ वा प्लाष्ट द्याक
कर पर लगना प्राय तो कैसा रहेगा ?

उत्तर—इम प्रश्न से वाचका अवि-
धान अरकर करन के लिए अच्छी मूनिवो
से है। जेव कि पहले में एरउ कर चुना
हूँ कि नवान चुतरर हाव की जोरनी से
ओर कर नव हाव अरवाँ से गाँव में ही
मूनिवो बनेगे तो उरवे मून बच्छा ही
जायेगा। प्राय मून का तो प्रश्न ही नही
उरवा। जब तक हमारा जन सामान्य
दुनी वैतनिक प्रगति न कर से, तब
तक, प्लाष्ट की वात सोचना असामयिक
होगा।

प्रश्न—जाये हर पर में कताई की
वात कही है। यह अगर होना है तो
दुर्गा-मन्त्री का माहात्मिक साव-
धान्य के लिए उरवांग हो सक्ता है।
इम विषय में अज क्या सोचते है ?

उत्तर—जो कुछ मीने ऊपर कहा है,
दहे कताई हर पर में ही नही, हर
व्यक्ति जाने लारी समय में करेगा, और
उनका प्रबन्ध प्रायसभा करेगी। व्यक्ति
वा सम्बन्ध सरदार के साथ न होकर,
प्रायसभा के साथ जुडना। व्यवस्था के सब
दम सारी पर नही चढ़ेगे, अतः एरवीही
न विनये पर भी कोई अन्तर न पड़ेगा।
कानेवाली की तो बपडा मून ही
मिथेगा। दयेके बड़कर कानेवाले की
मन्त्रीही बग हीयो कि उरवे बपडा मून
मिथे।

—प्रस्तुतकर्ता : डॉ० सी० त्रिय

जनसंख्या की श्रेणी	१९६०-६१ में प्रति व्यक्ति उपभोगता वस्तु	१९६७-६८ में प्रति व्यक्ति उपभोगता वस्तु
०—५	१६.२	७८.२
५—१०	१२९.७	११९.५
१०—२०	१५६.१	१४५.७
२०—३०	१९१.०	१८९.३
३०—४०	२२३.८	२२०.१
४०—५०	२५६.६	२५९.५
५०—६०	२९५.८	३०५.४
६०—७०	३४२.५	३५८.९
७०—८०	४२१.३	४४१.६
८०—९०	७५३.५	७८०.२
९०—९५	७५३.५	६८९.८
९५—१००	१२६८.८	१३३०.०
कुल	३४६.४	३६४.९

इन आँकड़ों से स्पष्ट होना है कि शहरी जनता के निचले ५० प्रतिशत भाग ने पिछले दस वर्षों के विरासत से कोई लाभ नहीं उठाया है। इसके विपरीत जनता प्रति व्यक्ति उपभोग घटा है, सबसे नीचे के १०% का तो बहुत ज्यादा घटा है। मध्यम वर्ग का उपयोग बढ़ा है, विशेष रूप से ऊपर के १० प्रतिशत का बहुत ज्यादा बढ़ा है।

८. विपन्नता में वृद्धि

हमने जरा भी धक नहीं है कि संचार के सभी भागों को विकास से समान लाभ नहीं पहुँचा है। उदाहरण के लिए ऊपर के ५० प्रतिशत लोगों को ही मिला है। मध्यम, निम्न-मध्यम गरीब वर्गों को बहुत थोड़ा लाभ पहुँचा है, जब कि सबसे निचले ५ प्रतिशत लोगों का घट गया है। देहातो से शहरी की स्थिति ज्यादा गम्भीर है। उनमें ४० प्रतिशत जनता, यानी निम्न-मध्यम, और गरीब वर्गों का उपभोग घटा है, और सबसे नीचे के १० प्रतिशत का उपभोग १५ से ९० प्रतिशत तक घट गया है। वृद्धि विपन्नता में निम्नवर्गीय वर्गों की बढ़ती ही गयी है।

९. शहरों में बढ़ती हुई गरीबी

पहले कहा जा चुका है कि १९६०-

६१ में शहर में प्रति व्यक्ति उपभोग देहात के प्रति व्यक्ति उपभोग से ३७.७% अधिक था। १९६७-६८ में यह घटकर ३५.९% हो गया। प्रश्न यह है कि शहर और देहात के बीच की यह विपन्नता घटी कैसे? क्या शहरी धनी और देहाती धनी में विपन्नता घटी या शहरी गरीब और देहाती गरीब में घटी? धनियों की तुलना करने पर मान्य होता है कि १९६०-६१ में शहरी और देहात के उच्च-मध्यम और धनी वर्गों में जो अंतर था वह १९६७-६८ में भी करीब-करीब वही रहा, वृद्धि हुई लेकिन मागूली; लेकिन मध्यम, निम्न-मध्यम और गरीब वर्गों की स्थिति बिलकुल भिन्न थी। शहरों के इन वर्गों की स्थिति देहात के उच्च वर्गों की स्थिति से सराबर रही है। शहर और देहात के निम्न-मध्यम और गरीब वर्ग एक दूसरे के करीब पहुँचते गये हैं।

हमने पहले देखा है कि देहात के सबसे नीचे के १०% १९६०-६१ में जहाँ से बढ़ी १९६७-६८ में भी रह गये। शहर के सबसे नीचे के १०% लोग दस वर्षों में देहात के सबसे नीचे के १०% के बिलकुल करीब पहुँच गये, यानी उनका

अंतर २७% से घटकर ४% रह गया। यह बताता या साता है कि १९६७-६८ में शहर के सबसे गरीब १०% लोग देहात के सबसे गरीब १०% लोगों से अधिक गरीब थे। इसका एक बड़ा कारण यह रहा है कि देहातों से लोग शहरी की तलाश में शहरी में जाने रहे हैं, और जो कुछ भी मजदूरी मिल गयी उसे खोना खरके वहाँ रहने रहे हैं।

१०. पिछले दस वर्षों के इन विवरण से हम निम्नलिखित निष्कर्षों पर पहुँचते हैं :

- देश के औसत व्यक्ति का उपभोगता वस्तु ११२ प्रतिशत से भी कम था है।
- यह मासूरी वृद्धि भी सभी वर्गों तक नहीं पहुँची है।
- देहात के सबसे नीचे के २० प्रतिशत लोगों की हालत जहाँ भी तहाँ रह गयी है।
- शहर के सबसे नीचे के २० प्रतिशत लोगों की स्थिति नीचे गिरी है। उसके ऊपर के २० प्रतिशत की जहाँ भी बढ़ाई हुई रह गयी है।
- जीविका की तलाश में देहाती से लोग बाजार शहरो में जाते रहे हैं, और वहाँ सरकारी के किनारे और वस्तुओं की पेश्व गरीबी की निम्नरी विराते रहे हैं।
- इन स्थिति में गरीब का उपयोग घटा रहा है, और गरीबी दूर न होने के कारण देश में तलाशा बढ़ती रहती है। देश के जीवन का यह बहुत अत्यन्त विपन्नताजनक होता जा रहा है।

—प्रमुखवर्ता : राधकान्त

बांग्ला देश का संघर्ष

लेखक—श्यामबहादुर "नक्ष"

मूल्य ५० पैसे

पत्ता—संघना देश तलाशा, धर्मिस्त

फ्लैट नं० १३, सी० २३।८९

तलाशा रोड, बाटापती

आन्दोलन के समाचार

मरीना प्रखण्ड ग्रामसंस्कारण-समा की बैठक

मरीना (सदरगा) प्रखण्ड ग्रामसंस्कारण-समा की कार्य-समिति के सदस्यों की बैठक गत १-१-२० दिवसका की निर्मणी में हुई। समिति के कुल ३३ सदस्यों में से २२ उपस्थित थे। बैठक की अध्यक्षता श्री लक्ष्मण प्रसाद दास ने की। सर्व-सम्मति से निम्नलिखित निर्णय लिये गये:

(१) जिन गाँवों में अब तक ग्रामसमा नहीं बनी है, वहाँ ग्रामसमा का शीघ्र गठन करावना। इसके लिए तीन क्षेत्रों में बंटाकर उन्हें विभाजित कर लिया गया।

(२) ग्रामसमा के अन्त पर विस्तार के कार्य शुरू हैं। तब हुआ कि तीन समितियों की एक समिति प्रखण्ड के जिन गाँवों में ग्रामसमा बना हुआ है, वहाँ पुनर्कर जायजगी प्राप्त करे, बटिंगाओं के बारे में सुझाव दे तथा परिचित श्री प्रदीप शिरोडि प्रसाद-समा की दे।

(३) बोला-बट्टा—सब हुआ कि कार्य-समिति के सभी सदस्य अपनी बैठक के पहले अपना बोला-बट्टा निकालकर बोट दें। ग्रामसमा के पराधिकारियों से भी ऐसा करने की माँग की जाय। प्रखण्ड-समा के अध्यक्ष और मंत्री के साथ कुछ लोगों को एक आरक्षित बंगाली मरीना बोला-बट्टा निकालने के काम में प्रेरित।

(४) प्रखण्ड ग्रामसंस्कारण समा का कार्यान्वयन निर्मणी में रहेगा।

(५) पूर्व गाँवों के बालक युक्ति के लिए ठेका है। दोष गाँवों के बालबाल लैण्ड करने के लिए जिन ग्रामसंस्कारण-कार्यवाह समिति की ओर से ३ कार्यकर्ता भिजे जा रहे हैं।

(६) तब हुआ कि ग्रामसमा समिति से प्रत्यक्ष में सब तक विवरित मरीना का

कार्यवाह ज्योत प्राण किया जाय। विवरण में जो गतिशील हुई हों या अन्य उपलब्ध पंदा हुई हों, उनका प्रकाशन तब प्रकाशना की मदद से निकालने का प्रयास किया जाय।

(७) प्रखण्ड में विद्यालय की दृष्टि से एक प्रखण्ड ग्रामसंस्कारण विभाग स्थापित कर भी गठन किया गया। आगे यह सत्यापन-समिति का भी कार्य है। प्रखण्ड के ग्रामसमा गाँवों के समस्त विद्यालय की रचना का महत्त्व बताने की ओर प्रयास किया जाय। समिति उद्योग-साधक सहायक बनी।

(८) प्रखण्ड में गठित १२ ग्राम-समाओं के पराधिकारियों वाली अध्यक्ष, मंत्री, बोला-बट्टा एवं आरक्षित-कार्यवाह, एक सत्रका दो दिवसीय जिन विचारों का भी निर्णय किया गया। ३ जनवरी से २६ जनवरी तक प्रखण्ड के सारे परा-धिकारियों का प्रशिक्षण १० दिनों में सम्पन्न करने की बात सोची गयी है।

(९) प्रखण्ड के आचार्यों तथा उनके आचार्यकुल सदस्यों का संस्कारण-कार्य के काम में सहयोग भिजे, उनकी योजना बनायी गयी है।

(१०) प्रखण्ड ग्रामसंस्कारण-समा की कार्यसमिति की बैठक तब महीने होगी।

प्रखण्ड	विद्युत्त मूल्य	दाता	कार्या	ग्रामीण समा	गठित
	मी० क० घ०			करनेवाले गाँवों	संख्या
मरीना	४०-०५-२०	२२६	२००	४	१७१
हड़दी	४०-१४-०६	१००	११०	६	१६१
मगसिहीन	२१-०२-१४	६५	१२	१	५६
मोलागाड़ा	१०-०६-११	२०	५१	२	३०
बेनगुडी	४-११-०१	१९	२२	२	२२
कुम्हारिया	०-१६-१०	३६	२५	२	१०५
मरीना बेनग	५-१०-००	४४	३२	०	५६
बहुतवाहनगुडी	१६-१०-००	४४	६१	२	१७५
मोराडा	१५-००-००	४०	३४	३	१०५
समसिहीन	१०-०९-०८	१४	५६	३	१५
	१०९-००-१०	६६	७४४	१७	१,११९

नोट: ०५ बोला १०० एकड़ के अन्तर्गत होता है।

मैसूर में सर्वोदय-कार्य

मैसूर के उन्नीस जिले में गत ३ जुलाई '०१ से २ दिवसका '०१ तक की विद्युत्तय युक्तियों के कार्यवाही में अन्त परदाया गयी, एक परदाया के अन्त से कार्यवाही जिले का हृत्केंद्र से कार्यवाही जिले सर्वोदय समिति का हृत्केंद्र हुआ। परदायियों में एक जिले के ००० की ००० वी.ए.ए.टी., ००० की ०००, माँकिया, मन्मथक, पन्थक सेक्टरों, माता-मताक, विद्यापीठ और अन्य उन्नीस-एक मन्थकों के कार्यवाही में एक कार्यवाही में सर्वोदय समा केन्द्र मरीना-वानी सह-युक्ति परदाय की।

मन्मथक का पहला दिन श्री श्रेष्ठिकर की (महागाष्ट) अध्यक्षता में ता० ३ दिवसका ७२ ३१ केंद्रों की कार्यवाही सम्पन्न हुआ, तबमें ५० कार्यवाहियों में भाग लिया। इस शिबिर में लिये गये विवरणों पर चर्चा हुई—

(१) सर्वोदय-समा के सभी लोकार्थक से उन्नीस में आरक्षित-युक्ति परदाया चलाने के बारे में कार्यवाही-कार्यवाहियों को विवेक प्राप्त।

(२) परदाया की समस्यार्थ।

(३) बलवाही जिला सर्वोदय समिति का अन्त परदाय।

ज्ञाना प्रखण्डस्वराज्य-सभा का वार्षिक सम्मेलन

विहार के सुौर जिले के शाखा प्रखण्ड में प्रायद्वारी गाँवों के लोकर सन्नी पत्तरी प्रखण्डप्रायद्वाराज्य-सभा का पहला वार्षिक सम्मेलन का २० दिवसपर की शाखा में हुआ। सम्मेलन में भाग लेनेवाले करीब ८० गाँवों के ३०० प्रतिनिधियों ने प्रखण्ड में समाज, अभाव न, व्यवस्था दूर करने की दिशा में रात रातें दिये गये कार्यों का मूल्यांकन करते हुए सन् '७२ की योजना पर विचार किया। प्रखण्डप्रायद्वाराज्य-सभा ने फेलसा किया है कि प्रति व्यक्ति एक बरखा कुएँ बन सन् '७२ के अग १५ पनाय हस्तांतरणवा से प्रखण्ड-नीय स्थापित करेगा। सभी तक इस बीप के लिए चार हजार रुपया जमा हो चुका है। प्रखण्ड शक्ति-क्षेत्र के लिए पाँच सौ ऐसे वार्डों की संघों का चयन आरम्भ हो गया है जो प्रखण्ड-सभा के निर्देश पर पूरे प्रखण्ड में कही

भी लाकर आने दत्तव्य निभा सेंगे। शाखा प्रखण्डप्रायद्वाराज्य-सभा का यह २० दिवसपर '७० को श्री लखनऊवा द्वारा उद्घाटन हुआ था। तब से प्रखण्ड-स्तर पर चलनेवाली योजनाएँ प्रायद्वाराज्य के माध्यम से ही लागू की जानी हैं। सभाओं के ऊँचे सर्वसम्मति से होते हैं। प्रखण्डप्रायद्वाराज्य-सभा बनने के बाद प्रखण्ड में कृषि और विचार के जो वायतारें बड़े पैमाने पर क्रियान्वित हो गयी हैं। प्रायद्वाराज्य गाँवों में विवाई और रोप वन के कुएँ, बाहुर (छोटे-छोटे बाँध) आदि का निर्माण मरहाती व गैर मरहाती स्वरूपों की संख्याओं के सहयोग से हुआ है। जिवा लाभ-हानि के चारा जिले केन्द्र, साय व गीज के डिग्री भी प्रायद्वाराज्य गाँवों में खाले जा रहे हैं। प्रखण्ड में जनसेवा के सभी निर्माण कार्य डेकराको के मध्यम से न

लोकर प्रायद्वाराज्य के हाथ में होते हैं, जिनमें पूरे गाँव के व्यक्ति व मजदूरी प्रयोजन करते हैं। निर्माण-कार्य में मजदूरी पदा की देखरेख विहार के अर्थशास्त्र-प्रखण्ड चोक इन्जिनियर श्री अशोरी परमेश्वर प्रयाद करते हैं।

प्रखण्डप्रायद्वाराज्य-सभा के नव निर्वाचित प्रशासिकाधिकारियों के नाम एवं प्रकार हैं - अध्यक्ष—श्री गोदान चरण सिंह, सचिव—श्री सुभाष बारी व कोषाध्यक्ष—श्री महाशेर। इनके अतिरिक्त प्रखण्ड-कार्य-समिति के विद् १९ गाँवों से २१ लोगों का समन-सर्वसम्मति से हुआ है। शीला पत्रों में सुन छँटेमन्त्रे-पत्रों की मन्त्रा १०० है। इनमें से १६१ का प मन्त्रा हा चुका है। १२६ गाँवों में प्रायद्वाराज्य वरी है तथा ८९ गाँवों में कोषा-कटका का विवरण हो चुका है। शाखा का प्रखण्डप्राय ४ मार्च १९५५ की त्रितीराज्य का स्वाधीनता, मुगैर में सर्वसम्मति किया गया था। (समेन)

- (४) कोषाल का अवन का प्रभाव।
- (५) बलक भू-पत्रिका देवनागरी लिपि के बारे में।
- (६) श्री भोवलेजी का सहस्रा अनुभव।
- (७) संगता देल की परिस्थिति के बारे में।
- (८) लोकर-नीति।

श्री बेंडोवा राज, श्री सिद्धराम शुक्ली, श्री महादेव गुणोड, श्री बमत कुमार, श्री सवगूर शर्मादि प्रमुख कार्यकर्ता उपस्थित थे।

बल्लारी जिला पदयात्रा-कलभ्रुति

घारवाड जिला पदयात्रा समाप्त करके ५ जुलाई '७२ से श्री सिद्धराम शुक्ली के मार्गदर्शन में बल्लारी जिले में पदयात्रा शुरू हुई। फरवरी ७०-८५-९० का राष्ट्रीय शांतिविक्रमी हुई, १९४४ भूदान-पत्रिका प्रारंभ, १५४ राष्ट्रीय दिव, १ सौसेवक और ३ एकड़ जमीन भूदान में मिली। इन पदयात्रियों की श्री संगता देल स्वागती, सदाशिवराय भोवले, श्री नारायण पवार, श्रीमती चल्मसा हरीकेरी, श्री भूमा बारा, और श्री महादेवव मुगोड आदि लोगों ने बीन-बीन में आकर सफल सहयोग दिया।

—संगता देल

इस अंक में	
मुठ सप्टीकरण—दादा प्रभाषिणारी २१५	मन की गाँवें खोल
	—सम्पादकीय २१९
मानवस्य विक्रमबाई	—नारायण देसाई २२३
भारत और बयनादेग : इतिहास की	अशोक मेहता २२१
निर्वाचन के नाम आन्दोलन	का पत्र २२२
यजना देग का मन्त्रा सन्ध्या और	अन्य सन्ध्या की
समस्याएँ	—मुस्ताफा कनाल २२४
जमातावार बुद्धि-भांजी	—हृण कुमार २२६
सन्ध्या : दिन भोड पत्र १	२२७
भारत में गरीबी-३	—प्रस्तुतकर्ता : रामभूष २२९
	अन्य सन्ध्या
	आशुतोष के समाचार

वार्षिक मुद्रक : १० स० (एकड़ कागज : १२ स०, एक प्रति २५ पैसे), विदेश में २५ स०; सा ३० सिलिब का ४ कातर।

एक अंक का मूल्य २० पैसे। श्री सुभाषदास गूट द्वारा सार्व सेवा संघ के लिये प्रकाशित एवें मन्त्रेतर प्रेत, भाराणती में मुद्रित

पृष्ठ : १८, मूल्य : १६, सौम्यवार्ता, १७ जनवरी, '७१

सर्वे सेवा संघ, पब्लिशिंग विभाग,
एन.ए.ए.ए., बाराकमोरी
द्वार : सर्विसा * फोन : ६२३१६

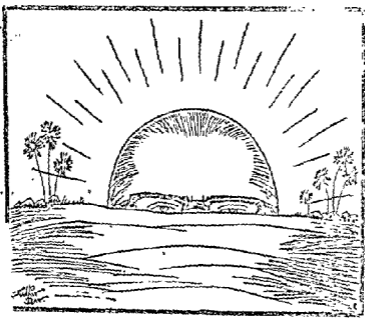
**समग्रिक
सामयिकी**

सर्वसेवा

सर्वे सेवा संघ का मुख पत्र



सर्वसेवा संघ द्वारा प्रकाशित एक मासिक सामयिकी



उपरोक्त चित्रे सुनी नारसानी भय नार्द, जारं नय नार्द ।
निन्दोती प्राण जे करिये दान दाय नार्द, नार शय नार्द ।

— रवीश काप रंणे

मुहम्मदी प्रसङ्ग की प्रामसमाजों के प्रतिनिधियों की

जयप्रकाशजी का सन्देश

संद है कि अभी तक मेरा स्वास्थ्य एक लाघव नहीं है कि मैं आपके बीच आ सकूँ। फिर भी दो साल आये बहना चाहता हूँ।

प्रसङ्ग-सभा के प्रतिनिधियों की दो बँटने पहिले ही चुकी है। मुझे इस बात का बड़ा दुख है कि दोनो बँटनों में पदाधिकारियों के सम्बन्ध में आप लोगों के बीच सहमति नहीं हो सकी। मनुष्य की जो आत्मा पढ़ जाती है, उनको मुसलमान हमारे विपु बना बर्धन होता है। पदों के बारे में संक्षेप यह सोचते हैं कि उन्हें प्रत्येक एकके कोई व्यक्तिगत लाभ उठा सकेंगे। यह तो उनका नाश होगा, अपना उनको कुछ दान मिलेगा या उनसे डारा वे कुछ कर्त्त-प्राप्ति कर सकेंगे। इन्हीं कारणों से पदों की सोलुप्रदाई हमारा छुटकारा नहीं होता। सर्वोत्तम विचार के अनुसार दारी का फैसला एक महत्त्व है कि उनके द्वारा समाज की सेवा की जा सकती है। हम मानना थे यदि हम पदाधिकारियों का चुनाव कर ले आरम्भ में कोई हीन या प्रतिस्पर्धा करने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।

मैंने मुहम्मदी में यह भी देखा है कि जो लोग पहिले से नेता बने चले आ रहे हैं और खिद्दीने सर्वोद्य-कार्य में कोई विशेष दिग्दर्शी भी नहीं दिखाई है, वे विशेष-निष्ठा पर के लिए आहुर हो जाते हैं। इस घातना से जो पदाधिकारी चुने जायेंगे, वे अभी भी निरपेक्ष भाव से सेवा नहीं कर सकेंगे। मैं समझता हूँ कि सर्वोत्तम दायं की गच्छी तरह प्रवृत्त करने में सभी कार्य लोगों को बांधी समय लगना। राजनीति का प्रभाव और राजनीतिक दायित्व के कारण ही हमारे काम में बाधा पड़ सकती है। यद्यपि आप जानते हैं कि हम किसी भी राजनीतिक दल के विपक्ष का नहीं कर रहे हैं,

बल्कि हमारा सहयोग ही चाहते हैं। परन्तु हम यह बताने चाहते हैं कि प्रामसमाजों के काम में तथा प्रसङ्ग प्रतिनिधि-सभा के काम में बाधियाँ हलकें न करें। हमारा यह कार्य पाठियों के परे है जो परेशानता से उनका सम्बन्ध है। यद्यपि राजनीति की जगह पर हम सोचनीति शब्द का प्रयोग करते हैं। सोचनीति के लिए आवश्यक है कि सभी फैसले एक राय या आम राय से विवे जायें, जिसमें किसी भी दल, प्राति कपचा कां कति का प्रभाव इन पर न पड़े। अभी हर क्रियाओं की चुनी हुई संस्थाएँ—आय-पचागत से लेकर नीरसता तक—बनी है, वे सभी दलों के हाथों में बलुगुणियों की तरह हैं। हम इस परम्परा को दूर करना चाहते हैं और निर्दलीय सोचनीति को स्थापना करना चाहते हैं।

परन्तु अन्वय से यह स्पष्ट हो जायगा है कि अभी आरम्भों की लेगी इस प्रकार से एक नाम होकर अव्यक्त के लिए दाय्य करने की नहीं हुई है। इसलिये मेरा विवेचन है कि अभी आप पदाधिकारियों का, यानी अध्यक्ष, मंत्री, कोषाध्यक्ष आदि का चुनाव न करें। केवल एक कार्यसमिति चुन लें। कार्यसमिति के निम्ने सदस्य होने चाहिए, यह आप स्वयं निश्चय करें, और समिति का चुनाव करते समय इस बात का ध्यान रखें कि प्रसङ्ग के हर क्षेत्र का इसमें प्रतिनिधित्व हो सके तथा भूमिहीनों का और गरीब किसानों का इसमें अधिक स्थान हो, क्योंकि प्रसङ्ग में उनको ही सहायता सर्वाधिक है। इस प्रकार जब आप कार्यसमिति चुन लें, तब कार्यसमिति की बैठक प्रतिमाह या प्रति दो माह पर हुनायें और हर बैठक के लिए एक अध्यक्ष चुन लें। दूसरी बैठक में दूसरा अध्यक्ष चुनें। समिति की कार्यवाही अन्वये तरह से किसी और रसी का हरे, इसके लिए अलग अलग सर्वसम्मति से किसी व्यक्ति को चुन लें जो अध्यक्ष होगा। जब तक यह सम्भव न हो, तब तक सर्वोत्तम के प्रमुख कार्य-वर्तकों में से किसी को यह भार दें।

मैं आशा करता हूँ कि इस बात की बैठक में आप कार्यसमिति का गठन सर्वसम्मति से बतान कर लेंगे।

इस अन्तर पर एक और बात शायद बहना चाहता हूँ। अब तक बहुत-सी प्रामसमाजों प्रसङ्ग में बन चुकी हैं। परन्तु उनमें तादद एग-नी को छोड़कर और कोई प्राणसभा नहीं होगी, जिन्हें आम-दान और प्रामस्वराज की सभी धर्मों—जैसे बोधान-पठना, निरुत्तमान-बोदना, आमकीय सहज करना, प्राण-विकास के लिए योजना तैयार करना आदि—पूरी हुई होगी। जिससे वे मेरे मतलब केवल प्राणिक नहीं हैं। सबसे आवश्यक तो नैतिक विकास है। प्राणी, जिस प्रकार से प्राणिक के समर्थ साध हो, प्राण में परस्पर सहयोग हो, प्राणिक के सुधी परिचार गरीबों पर कुछ ध्यान रखें और उन्हें भी अन्न उठाने का कुछ प्रयत्न करें, यह आवश्यक है। आपका यह भी वर्तक है कि जहाँ प्रामसभा नहीं बनी है, जहाँ प्रामसभा का गठन करने और उसके बाद फिर आम-दान की सभी शर्तें पूरी करने का प्रयत्न करें। आपके प्रसङ्ग में अब भी कई प्राणिक हैं, जहाँ मजदूरी बहुत कम से जाती है। प्रामसभा में बैठकर उचित मजदूरी तय करनी चाहिए। आप जो जानते होंगे कि मरतमा गांधीजी का स्वरूप यह नहीं था कि सर्वोत्तम या प्रामस्वराजोत्तम से ही होता है। अगर आप इस हुनियारी सिद्धान्त को ध्यान में नहीं रखेंगे तो प्राण-सभा, प्रसङ्ग-सभा आदि खतरा नहीं होना जो प्राणियों की सर्वसम्मति का हो रहा है।

मैं और भी बहुत-सी बातें आपसे बहना चाहता हूँ। परन्तु इस समय इतना ही काफी है। यह आशा की सर्वां पर है कि मैं फिर कब मुहम्मदी से छुटूँगा, यद्यपि मेरे हृदय की सात्ता तो यही है जन्म-मरण नहीं पाऊँ।

हासिक सुधारामनाओं के साथ,
आपका सहोदर,
११-१२-७१ —संयोजकता मारापन

बैज्ञानिक दृष्टि से नहीं किया गया है।
 मेडिन नामका होता था है इसका,
 मनुष्य की योजना का यह इतिहास है—
 दूत मेडिन का, जिसने उपकरण तैयार
 किया उस मनुष्य का। फिर क्या हुआ ?

अब मैं उसी का शब्द से रहा हूँ—'मैन
 ऐम्प्लिफाइड'। विचार हुआ। यानी हम
 शक्त की शक्ति हुई कि उसकी विजयी
 की बीर उसके अन्तर्गत की शक्ति विजयी
 न सक्ती है, शक्तिहीन विरतन हो सक्ती
 । फिर 'मैन माग्नेटिक'। यह शक्ति
 हुई कि उसमें जिस हर एक दृष्टि साथी
 का सक्ती है, प्रति की जा सक्ती है।
 मुझे से मरिचक टूट नहीं सक्ता, हथौडा
 भाया होगा। वेद पर हाथ पहुँच नहीं
 सक्ता, मुनेल भायी होगी। वह
 हिनार करता होगा तो यह भी हिनार
 कर सक्ता चाहिए। वह लड़ि निरीक्षण
 करता होगा तो वह निरीक्षण बन से भी
 हो सक्ता चाहिए। मनुष्य के मन और
 मस्तिष्क के कई शक्तों में उनका अनुसरण
 हुआ। यत्र मनुष्य का अनुसरण करने
 लगे। 'मैन मिनिकट'—हुआ। इसे आन्-
 बल सायबर (मैडिकल) कहा जाता है। इसके
 बाद 'मैन ट्रान्स्फार्मेट'। उसका
 स्थानांतरण हुआ। यानी धान के पीछे
 की तरह उसे धान स्थान से दूर स्थान में
 ले जाकर बसाया गया। यानी मनुष्य की
 भूमिका बदली। उत्पन्न के रूप में उसकी
 यो भूमिका थी वह धीरे-धीरे बदली।
 'मैन ट्रान्स्फार्मेट'। वह ट्रान्स्फार्मेट हुआ।
 और सब का मैं क्या होना चाहिए ?
 तो वह कहना है 'मैन मरिचक'।
 मनुष्य का जीवन नियमित नहीं, नियमित
 होना चाहिए। यकी से, नियमित उन्-
 करणों से नियमित जीवन होना चाहिए।
 इसका शब्द क्या है ? उसने इसका
 उद्देश्य बताया है—'हेल्थी पार्टनरशिप'
 निरन्तर और एण्ड यकीन'। हमें क्या
 करना है ? मनुष्य और यत्र में निरन्तर
 भागीदारी कायम करनी है। फिर यकी
 की मर्यादा क्या होगी ? 'मैन मेक'।
 हथौडा हुआ ही। कम्प्यूटर आपा। इस
 कम्प्यूटर के लिए उसने बहुत सारे उपकरण

प्रधानमंत्री और स्वदेशी

प्रधानमंत्री इन दिनों बराबर
 बाह्यिक स्वावलम्बन की बात कह रही
 है। यमला देश के प्रयास पर अमेरिका ने
 जो रुक लिया है उससे मालूम हो गया
 कि विदेशी वस्त्र का क्या नतीजा होता है।
 काब अन्तराष्ट्रीय सम्बन्धों की जो स्थिति
 है उसमें वस्त्र बँटा नहीं रह जाता, बल्कि
 कमजोर और गरीब को दबाने का साधन
 बन जाता है। इसलिए स्पष्ट है कि अगर
 भारत को अपने स्वतंत्र और सम्मान की
 रक्षा करनी है तो स्वावलम्बन की नीति
 बढोतरातपूर्वक लागानी ही पड़ेगी।
 स्वावलम्बन की आर्थिक क्षेत्र तक
 सीमित रहना न सम्भव है, न उचित।
 स्वावलम्बन तभी संघेय जब भारत
 स्वदेशी का मन सीसंगा। प्रधानमंत्री
 ने कहा भी है कि हमें अपनी सम्पत्तियों
 का समाधान अपने ढंग से निकालना
 चाहिए। इसका यह अर्थ है कि हमारा
 विभाग स्वदेशी होना चाहिए। अभी
 हमारे विभाग में अमेरिकियत और अमेरिकी-
 पन लगी जाह घुसा हुआ है, जिसका दूध
 बडे गहरों में तो भरपूर दिखाई देता ही
 है, लेकिन जितने गाँव भी नहीं बन पा
 रहे हैं। हमारे विभाग और विशेषतः तो
 सामान्य लोगों से भी ज्यादा विदेशीपन के

गुणाम दिखाई देने हैं।
 कोई देश विभाग से गुणाम लूकर
 केवल कार्पेटम के रूप में स्वदेशी को नहीं
 अपना सकता। स्वदेशी के लिए स्वदेशी
 विभाग चाहिए। ऐसा विभाग देश की
 परम्परा, परिस्थिति, और प्रतिभा के
 अनुकूल में होना ही और काम करने से
 बनता है, अर्थात् अन्तर दूसरों की नकल
 करते रहने से नहीं।

स्वदेशी प्रतिभा के विकास के लिए
 अनुकूल वृत्ति चाहिए, वातावरण चाहिए,
 व्यवस्था और कार्यक्रम चाहिए। ऐसा
 तभी हो सकता है जब राष्ट्र के स्वर पर
 स्वदेशी का अभिप्राय हो, और हर जगह
 स्वदेशी प्रतिभा के विकास के लिए अवसर
 का निर्माण किया जाय। इस दृष्टि से
 राष्ट्र का पूरा जीवन स्वदेशी का प्रयोग-
 क्षेत्र बन जाना चाहिए। प्रधानमंत्री
 पहले कई बार यह पुरोही हैं कि भारत
 स्वतंत्र तो हुआ, लेकिन न प्रशासन बनता,
 और न शिक्षा। समय का पया है कि इन
 शक्तियों को मजबूत रखकर पूरी राष्ट्रीय रीति-
 नीति पर नये सिरे से विचार किया जाय।
 स्वभावतः प्रधान मंत्री से ही अपेक्षा है
 कि यह पथन करें।

प्रयोग किया है—सायत वेगवान् देवकृत।
 यानी इस कम्प्यूटर में स्पीड है, वेग है,
 लेकिन अन्त नहीं है। अन्त का अर्थ
 क्या ? जो अन्तष्ट बाले हैं, जीवन के जो
 क्षेत्र मनुष्य की समझ में पूरी होर पर
 नहीं आये हैं उन्हें समझ लेने की शक्ति
 कम्प्यूटर में नहीं है। अन्वेषण-संश्लेषण एण्ड
 अन्वेषिक-व्यवस्था—जिनके बारे में उन्हें नहीं
 पता था सक्ता या जिनकी अपेक्षा नहीं
 की जा सक्ती—एंडी कोई बात उसमें
 नहीं आ सक्ती। एक सम्बन्धित कार्यक्रम
 के अनुसार ही वह कम्प्यूटर चल सक्ता
 है। हमारी एक महत्वपूर्ण ग्लूता उनसे
 बतायी है। वह अर्थिक मजदूर की है।
 समय है कम्प्यूटर कल यह सब करने
 लगे। लेकिन एक बात यह कभी नहीं कर
 सक्ता। जोसे की लागतता विनीतिय

कभी कम्प्यूटर में नहीं जा सक्ती। यह
 मनुष्य की विशेषता है। आज का मनी-
 विज्ञान यानी फायर, युग, एक्टर के
 बाद का मनोविज्ञान—इस मनोविज्ञान में
 सायकिक जिगा है। आज परिचय में यकीन
 का जो निरर्थक विकास हो रहा है उसमें
 मनुष्य के मन का ह्रास हो रहा है, यहाँ
 हर एक को मानसोपचार करना सेवा
 पड़ता है। ऐसी स्थिति है। इसलिए अब
 इस मनुष्य का जो मनुष्य होगा, उसका मन
 इस कम्प्यूटर से परे होना चाहिए। यानी
 मन के परेबला बन होना चाहिए। यह
 क्या सम्भव है? कृष्णभक्ति करने लगे
 हैं। कृष्णभक्ति है, अपने यहाँ विमला
 ठफार है, भाचार्य राजनीस हैं। वे कुछ
 व्यक्तिय हैं। यह समझ लेने की आन्-
 मरवा है कि 'मैन-मशीन रिलेशनशिप'
 में मनुष्य नहीं तक ना पहुँचा है।

बंगला देश : आर्थिक चुनौती

—सुमर कौत

यह लक्ष्यो वात है कि बंगला देश के पराधिपतियों और नेताओं ने आर्थिक निर्माण की समस्याओं पर ध्यान दिया है। शान्ति और विश्वास को समस्याएँ बहुत है और युद्ध एवं राजनैतिक मुक्ति से प्राप्त है। इसलिये कि बंगला देश के लोगों को अब आर्थिक समस्याओं का सामना करना है। देश को कच्चे सामानों को फिर से बसाना है। उन्हें पर और मोठरी देनी है। उसे अपनी टूटी हुई मातापिता को बनाना है, और नागरिक व्यवस्था को फिर से स्थापित करना है। दूसरे शब्दों में राष्ट्रीय जीवन को युद्ध से शान्ति को अन्तर्गत में लाना है, और आर्थिक स्वतन्त्रता एवं विश्वास की दिशा में चलना है।

सहायता.

यह बात बटल है। बंगला देश के प्रथम १०० एम० एम० एम० बजटप्रकार का प्रस्ताव है कि उन्हें हुए लोगों को बसाने और आर्थिक सुरक्षा में २,००० करोड़ रुपये लागेंगे। यह बड़ी रकम बंगला देश को काफी की हैसियत से बाहर है।

भारत ने स्वतंत्रता पाने में सहायता दी है और आगे हुए सम्भव सहायता देना रहेगा। प्रधान मंत्री ने यह बात घोषणा की है कि यह भी की घोषणा पर पुनः विचार करते समय यह बात को ध्यान रहे।

यह सहायता आर्थिक, भौतिक सामनों और देनीयता परामर्शों के रूप में होगी। इस देश ने एसी गल्ट की सहायता दूसरे बड़े देशों की भी है।

बंगला देश में समस्त ब्रह्मण्य कार्य के पहले की स्थिति में आता नहीं है। अगर बंगला देश नहीं एक करने की सोचिये करता है तो यह दिशा के चाली को बन्द कर देगा। युद्ध से टूटे-फूटे देश के विश्वास के उच्च स्तर प्राप्त करने के बहुत सारे उपाय हैं इतिहास में मिलते

हैं। दोनों जर्मनी हमके उदाहरण है कि जिस तरह एक टूटी हुई अर्थ-व्यवस्था का पुनः निर्माण हो सकता है। बंगला देश के निर्माण का कार्य केवल पुनर्वसि नहीं है। इसका अर्थ है—पुनर्वसि, सुधार, विश्वास। प्रशस्तता की बात है कि बंगला देश, मानवीय और धार्मिक सामनों से माना-मान है। इसका क्षेत्रफल १,४३,००० वर्ग किलोमीटर है।

यह संसार का आठवाँ सबसे बड़ा जनसंख्यायुक्त देश है। यह पावर में, जो बहुत ही सुख साया है, अर्थ-निर्भर, है। अगर और नदियोंवाले साधन बहुत सारे हैं। यह चाय, कागज (जिसके के और मूल्यवर्धित) पैदा करनेवाले बड़े देशों में से एक है। इसका सबसे बड़ा धन उत्र का उद्योग है।

पूर्व बंगाल की मुक्ति से पहले पाकिस्तान लूट और उत्र के साथ का सबसे बड़ा भ्रष्टारी था, और इसका ही अर्थशास्त्र पूर्णतः धीरे धीरे काया था। उत्र के बर्बादी जानेवाली विदेशी मुद्रा और मुनाफा की बड़ी रकम दक्षिणी पाकिस्तान के पोर्चुगेज वृद्धियों के हाथ में जाती थी, और वे उसके बनना देश में नहीं, दक्षिणी पाकिस्तान में उद्योग स्थापित करने थे। यह तरह दक्षिणी और पूर्वी पाकिस्तान से भी सम्बन्ध स्थापित हुआ, यह औद्योगिक था। परिणाम यह हुआ कि बंगला देश एक इतिहास देव रहा और इसे सभी औद्योगिक और उद्योग्यता की चीजें दक्षिणी पाकिस्तान से लेनी होगी थीं। एसी परिस्थिति को हँसवारी और से बदलना है। बंगला देश की सरकार ने अर्थ-व्यवस्था को बोलना विभाग के द्वारा एक उपायकारी उपाय स्थापित करने की प्रक्रिया की है। उसी बड़े उपाय, विदेशी व्यापार और अर्थ-व्यवस्था पत्रिक के स्तर में होगी। उद्योग और एकाधिकार के लिए कोई रणनीति नहीं होगा। दो-

कीर धरे लु उद्योगों में स्वतंत्र उद्योग को प्रोत्साहन दिया जायेगा। इति-सुधार भी लिये जायेंगे। इस सुधार का आधार होगा, 'सुवि जोड़नेवाले को मिलियन'।

साधन

वे सारे सुधार आवश्यक हैं। परन्तु केवल सुधार से परिणाम नहीं मिलेगा। देश के पास इन योजनाओं की पूर्ति के लिए साधन भी होने चाहिए। जर्मनी और दूसरे देशों में यह समस्या बड़ी पैमाने पर विदेशी सहायता से हल हुई है। भारत आवश्यक सहायता देगा। बर्से के अति-रिज यह देव आधुनिक औद्योगिक मशीनें और विद्युत बिजली के आनन्दार भी दे सकता है। परन्तु भारत की आर्थिक स्थिति बहुत मजबूत नहीं है, और यह आशा रखना मगज होगा कि यह देश बंगला देश का पूरा बोझ बर्साव करेगा। एसको अन्तर्गत ही बंगला देश के नेताओं ने दूसरे दिन देशों से विश्वास-प्राप्त सहायता की अपील की है।

विदेशी सहायता की काली समस्या होगी है। ऐसा कि भारत को पता है और बंगला देश को जानना चाहिए कि बिना काली के सहायता नहीं मिलेगी। और देश की स्वतंत्रता की बीमर पर सहायता पाने से सहायता में लेना बचना है। कुछ ऐसे देश अन्तर्गत होवे जो बंगला देश को बिना लड़ सहायता देंगे। परन्तु भारत को सहायता से अतिरिक्त आगार पर ध्यान देना चाहिए। यह केवल उत्र और उत्र के बने हुए मात्र शिपार ही १५० करोड़ रुपये बना सकता है। चाय से मिलने वाली विदेशी मुद्रा इसके अतिरिक्त होगी। यह कागज, मूल्यवर्धित और मशीन का भी बाहर के देशों से आगार कर सकता है। चीने-पेरी इति और उद्योग के विनि-नि होने के बाद बंगला देश युद्ध और युद्ध की चीजें भी बाहर के देशों में अन्तर्गत बाड़ी बिनेगी मुद्रा बना सकता है और उद्योग बाहर के देशों से मशीनें और युद्ध की चीजें खरीद सकता है। औद्योगिक और उद्योग के बी आगार-उद्योगी एवं अर्थ-व्य-

है, चल रही है, यह विपत्तनाम के बाद सभी बगला देश के प्रथम में भी जाहिर हो गया है। दूसरे देशों में यह स्थिति कम या अधिक, चल रही है। इसके प्रणाल, गैर सत्कारी स्तर पर श्री जयप्रकाश नारायण ने और सरकारी स्तर पर श्रीमती इन्दिरा गांधी ने पश्चिमी बंगाल की बाल्त्विक समस्या से विभिन्न देशों की जनता व सरकारों को परिचित कर उनका स्वायत्तिय समर्थन, सहयोग प्राप्त करने की दृष्टि से जो दौरा किया, जोर उठके अग्रगण्य समाचार-पत्र-पत्रिकाओं में दिने, उस तरहके सहृदय मिल रहे हैं।

आज बकरा है कि बगला देश, योग पाकिस्तान, भारत, इस उपमहादीप के राष्ट्र मुखतः और दुनिया के दूसरे भी राष्ट्र, एक नये मौखिक दृष्टिकोण से सोचना आरम्भ करे। मानव-समाज धर्म, राजनीति, राष्ट्र, जाति, धर्मरह को सीधियों से लपिटा नहीं किया जाना चाहिये। शोच-शोक की शयस्था, जनसेवा, धर्मरह में लगे शक्ति या दन जकडा के सन्धे प्रतिनिधि के रूप में कार्य करनेवाले होने चाहिये। विभिन्न लोगों के मानव-समुदाय एक दूसरे के सन्नदीक भावों, एक दूसरे के हितों के पूरक हों, इस का में बगला के बिन, उनके मनोबल और उनकी सामूहिक शक्ति का बिनाम व बहाणकारी उपयोग होना चाहिये।

भारत को चाहना ही है, पाकिस्तान को भी चाहिए और उनके लिए यह ही हितकर होगा, कि दोनों देश एक-दूसरे के सन्नदीक भावों। सन्धे लयवी धर्म-राज्य करने के लिए भी पाकिस्तान को अपनी संकीर्ण धार्मिक बहुरता से छुटकारा पाना चाहिये। नरभोर के मजबूत हो हन करने में एक सार्विकता-भरक और स्वतन्त्रक दृष्टिकोण बननाना जाना चाहिये। बगला देश के अस्तित्व को सन्नदीक, उसे बहिन जैसा बनना अग बनाने की साम-बानी छोड़ बनाना भिन-राष्ट्र बनाने की परिद-राज्य की नीतिगत बहुरा चाहिये। भारत, पाकिस्तान, बगला देश, सदा अहिंसा का छेला राष्ट्र-संघ भी बन सज्जा है, जो

सबके हितों का रक्षक और पोषक हो सज्जा है।

चीन, अमेरिका, रूस वगैरह भी, एशिया महादीप में व अग्रगण्य अन्धिका धर्मरह में, इस तरह अग्रगण्य मानव-समाज के हित में लगे, अपनी राष्ट्रनीति सेठी बनाने और उच्च प्रकार काम करने तब ही वास्तविक विरा-गान्ति हो सकेगी और तब, ऐसे राष्ट्रों का संयुक्त राष्ट्र संघ समुच्च अपने उद्देश्यों की पूर्ति में, बिना अस्व-गान्त-सज्जा के भी सशम, समर्थ और सज्जा हो सकेगा।

सन्तुतः बंगला देश के सार्वभौम में जा पटना-नगर बना उसने विरम-मानव के सामने बई परम्पर विरोधी दिखनेवाली

सुसहरी प्रखण्ड में आगे के कार्यक्रम

दिनांक ३० दिसम्बर ७१ को सुसहरी प्रखण्ड की सामल-राज्य-समाज के प्रतिनिधियों की एक बैठक सन्नदीक, सुसहरीपुर में की गयी। निम्न हुआ कि सुसहरी प्रखण्ड के दिन गांधी में साम-स्वराज्य-बना का गठन करो हुआ है उनमें साम-स्वराज्य-समा का गठन किया जाय। योग कार्य को पूरा करने की जिम्मेदारी प्रखण्ड प्रतिनिधि समा के १६ सदस्यों ने ली है। सुदित-कार्य को पूरा करने के लिए प्रतिनिधियों की एक दूसरी समिति बना ली गयी है।

अभी तक सुसहरी में प्रखण्ड समा के सार्विकारियों का बुनाम नहीं हो सज्जा है। एक सभासज्ज के प्रतिनिधि स्तर कार्य-समिति का गठन कर किया गया है। सही कार्य-समिति सभी बिना पदा-जिम्मेदारी के कार्य करेगी।

२६ जनवरी की सन्नदीक-दिन के अवसर पर साम-समाजों में साम-स्वराज्य के विभिन्न कार्य दिने जायेगे जैसे बीचा-बहुरा बहुरा, साम-संघ-सज्ज, सन्नदीक-सुदु, साम-सन्नदीक अहिंसा।

३० जनवरी के ३ सन्नदीक तक एक सज्जा की साम-स्वराज्य पदा-ज्या का मानोबल दिया गया है। इस पदा-ज्या में सार्विक साम-सुदिकी बहुरा रहेंगे।

समाज-संघ प्रस्तुत कर दो और कई में बोदा प्रथम उभार कर सज्जे कर दिये हैं।

बंगला देश की स्वतन्त्रता पर उठे बघाई देने और भारत बनने कर्तव्य-मानव में सज्जा हुआ उठके लिए गौरव अनुभव करने व उसकी प्रशंसा करने के समय नवी बन रही परिदिकारियों और सने उभार रहे प्रथरी से भारत, बगला देश अहिंसा सन्धे-सुदिके राष्ट्रों की साम-सज्जा होना चाहिये।

इस भूमिका से हमें बहना है कि
जय बगला ! जय भारत !!
जय सज्जा ! दुसन्दीक सज्जा !!
—सुसहरीपुर
सुसहरी, २५/१/७१

उपेक्षित डकैती छोड़ना चाहते हैं

सम्भवतः पाटली के कुछ सारू बनने के गांधी सेवाधर्म को। सो ऐसे सन्धे दिने है कि वे सन्धे छोड़कर साम-स्वराज्य साम-स्वराज्य का जीवन बिनाना चाहते हैं। सम्भवतः है कि इनमें के कुछ दन आगामी सन्धे में अग्रगण्य बन कर देंगे।

जोग में सुसहरी के लिए सन्नदीक बनाने-बाने की सुधाराज्य में सन्नदीक को एक सुवा-सज्ज में बनाया कि सन्नदीक सुसहरी को के सन्नदीक-संघ में लगे लगे में सन्नदीक पटी में लगे साम-स्वराज्य बनाने का प्रयास किया है कि सन्नदीक में सने सन्नदीक सने कार्य पर सुसहरी करे। सन्नदीक सन्नदीक और सन्नदीक की सन्नदीक को भी इस साम-स्वराज्य में साम-स्वराज्य की गयी है। सन्नदीक का एक सन्नदीक है और सन्नदीक साम-स्वराज्य है कि साम-स्वराज्य करनेवाले सारू सन्धे के साम-स्वराज्य पर वे मानसोव दृष्टि से बिचार करेगी। श्री सन्नदीक साम-स्वराज्य में इन सन्नदीकों के साम-स्वराज्य पर सन्नदीक को सन्नदीक को भी कि वे साम-स्वराज्य करने के दन के निर्माण में साम-स्वराज्य हैं। सन्नदीक को सुसहरी की सन्नदीक पर बनाये बाने की योजना है। (संकेत) ●

ग्रामस्वराज्य-समाजों के पदाधिकारों : उनका शिक्षण-प्रशिक्षण

(१) भूमिका

१—ग्रामस्वराज्य-समाजों के पदाधिकारियों के शिक्षण-प्रशिक्षण में दो बातों का ध्यान रखना आवश्यक है। वे हैं :

(क) उनके चित्त का धरातल ऊँचा उठे। उनमें सामन्यतया जगें। गाँव को एक नया, निष्पक्ष, प्रगतिशील नैतिक मिले।

(ख) नये उत्तरदायित्व की दृष्टि से उनकी व्यावहारिक क्षमता बढ़े।

२—इन लक्ष्यों को सिद्धि के लिए व्यापक चर्चा, संघोष्ठी, छात्रा, सम्मेलन आदि का माध्यम उचित होगा। लेकिन शैली चाहे जो हो, पद्धति समस्यामूलक चरण की ही होनी चाहिए। समस्याएँ ऐसी ही जहाँ जो गाँव या क्षेत्र में उनकी प्रत्यक्ष अनुभूति या देख-बिदेख की प्रचलित जानकारी, से जुड़ी हुई हो।

(२) तार्किक चिन्तन (प्रश्नों के माध्यम से)

३—नया गाँव के सभी लोग सुली हो सकते हैं ?

विज्ञान की सम्भावनाएँ, सोक्ष्ण के अवसर ? साधनों का संगोचन—सामूहिक हित में सबका हित !

→आयोग ने विकास-धारा के बाहर ही मान रखा है।

लेकिन पिछले दश वर्षों में जो अनुभव आया है उसके आधार पर यह मानना कठिन है कि गरीबों के लिए योजना-आयोग की इसी योजना भी पूरी होगी। अनुभव (ट्रेंड परसेप्टिविज) के अनुसार १९८०-८१ में प्रति व्यक्ति उपभोग ५३२-६६० ही होना चाहिए, न कि आयोग के अनुमान के अनुसार १९२.९६० (१९६०-६९ के मूल्यों पर) १९६०-६९ में जो विपणना की उसके आधार पर दूसरे १० प्रतिशत गरीबों का प्रति व्यक्ति उपभोग प्रति वर्ष २५० ६०

‘गुरु’ का बहिष्कार क्यों ? ‘गुरु’ का संक्षार क्यों ?

सबको ईमान की रोटी, इज्जत की जित्यगी। ऐसा नहीं होगा तो तनाव, टकराव।

४—नया समाज सम्भव है ? वोट का सबको समान अधिकार, देश के सब तार्किक।

रोटी-बेटी का व्यवहार अलग-अलग हो सकता है, लेकिन धूम्राष्ट्र या दुराव क्यों ?

सबके साथ सन्ध सम्बन्ध रहे—किसी के साथ दुर्भ्यवहार न हो।

कुर्ण, मन्दिर आदि की सार्वजनिक गुनिप्राप्त सबके लिए खुली रहे।

गाँव में एक जगह जन्म हुआ है, भगवान ने पढोसी बना दिया है, तो पढोसोपन क्यों न रहे ?

५—नया गाँव एक इकाई माना जा सकता है ?

(क) गाँव में सभी तरह के लोग हैं—धनी, गरीब, हिन्दू, मुसलमान, विभिन्न जातियों के लोग। लेकिन सब क्षेत्र और धेती से जुड़े हुए हैं—पालिष्ठ का क्षेत्र, मजदूर की मेहनत। एक क्षेत्र

या २१ ६० प्रति माह होगा। १९६०-६१ के मूल्यों पर यह १२ ६० से भी कम होगा। अगर १९६०-६१ के मूल्यों पर १२ ६० को बढ़ाकर २० ६० करना हो तो प्रति व्यक्ति उपभोग में ७० प्रतिशत की वृद्धि करनी होगी। राष्ट्रीय आय ३.७५ प्रतिशत बढ़े, और जनसंख्या १.७ प्रतिशत ही रहे तो प्रति व्यक्ति उपभोग २ प्रतिशत बढ़ेगा। इस आधार पर १९६०-६१ के २५ लाख आय वाली २००४ ६० में दूसरे १० प्रतिशत गरीब लोग मुसलमान उपभोग के पात्र हो सकेंगे। यह सुदूर से भी दूर के दायित्व की योजना है !

अस्तुतकता : सामुक्ति

का मालिक है, दूसरा मेहनत का मालिक। खेती के लिए खेत और मेहनत दोनों का होना अनिवार्य—फिर श्रमता क्यों ? नया समझौता, साधोबारी, सम्भव नहीं ?

(ख) गाँव के बारे में सर्वोदय तथा राजनीतिक दलों और सरकार के विचारों में अंतर।

सर्वोदय गाँव को एक ‘इकाई’ मानता है जिसे स्वायत्त, स्वायत्ती होना चाहिए। देश भर में गाँवों और शहरों की ऐसी नाखो स्वायत्त, स्वायत्ती इकाईयाँ हो जिनका महासंघ भारत हो।

राजनीतिक दल गाँव की मात्र गाँव मानते हैं जो अन्तःकृपा मान शहर के ह्रास भेजता है, और शहर का तैयार भाग खरीदता है, जहाँ के लोग गाँव और गरीब हैं, और जिन्हें सभ कहे जाने के लिए शहरी कौटुंबीको को व्यनजना चाहिए। नेताओं की नजर में गाँव के लोग सिर्फ ‘वोटर’ हैं और व्यापारियों की नजर में ‘बटलर’।

गाँव का विकास सब चाहते हैं लेकिन इकाई के रूप में नहीं।

गाँव मान धरो का समूह नहीं है, एक ‘इकाई’ है जिसका पुनः-निर्माण जीवन है।

६—गाँव का स्वराज्य (ग्रामस्वराज्य) कैसा होगा ? उसके लक्षण क्या हैं ?

ग्रामस्वराज्य के ६ लक्षण हैं :

(१) स्वायत्त ग्रामस्वराज्य-सभा (क) अपना निर्णय-सर्व सम्पत्ति, राक्षद्विपति।

अन्ति व्यवस्था—ग्रामस्वराज्य-सभा, पाम-गान्धितोषता। अन्तः न्याय, अन्तः शिक्षा। अन्तः विज्ञान-संज्ञता।

सरकार की सहायता हो, हस्तसंपन्न नहीं।

(ख) ग्रामस्वराज्य-सभा, प्रसन्न-स्व-राज्य-सभा, जिला-स्वराज्य-सभा, राज्य-स्वराज्य-सभा, राष्ट्र-स्वराज्य-सभा : सब स्वायत्त—सबके क्षेत्र, सबके वर्तमान-अलग-अलग।

(२) दलगत धायप्रतिनिधित्व

सरकार में स्वायत्त ग्राम और मगर
इकाइयों का प्रतिनिधित्व कैसे ?

ग्रामस्वराज्य-समा-प्रतिनिधि-निर्वाचन
मंडल की योजना ।

वन-प्रतिनिधित्व के बीच—आज सत्ता
रिक्त के हाथ में : दलों के या नज़द के ?
दैनिक जीवन में सोचलन होगा
बाह्य । सरकार की शक्ति में वृद्धि से
सोच-समिष्ट का विकास—पारिस्थान का
उदाहरण ।

(३) ग्रामाभिमुख अर्थनीति

(क) गांव की गहरी अर्थनीति—
गांव का सत्ता बचवा मान, सहर का
यहूना सैवार धार—मूलों के द्वारा
सोचल । सरकार की योजनाओं में सहरों के
धाम पलायन ।

(ख) विद्या के लिए धाम-योजना :

श्रम का ग्रामस्वामित्व—न परिवार
का स्वामित्व, न सरकार का—सोती का
हक सुरक्षित । सोती, उद्योग, व्यापार
का संयुक्त और विकास ।

अतिरिक्त उत्पादन की विक्री ।

आगत-निर्गत पर नियंत्रण ।

मुद्रापा, विद्या, मूद्र, मजदूरी
की सीमा ।

ग्रामकोष—पूँजी—भण्ड ।

आर्थिक प्रवृत्तियों में गांव का क्षेत्र,
परिवार का क्षेत्र—दोनों में समन्वय ।

अधिस भविष्य विचार का मापदंड ।

(४) दुर्लभ - असाध्य - निरवेस -
अवस्था :

(क) ग्राम-आन्विष्टेना—सरकारों की
रोकथाम—विद्या—दंड और दंडाई की
सीमा ।

(ख) आगो म्याय—दंड-म्याय—
कानून से अधिक सजायान पर जोर ।

विशेष स्थितियों में ही सरकार का
हस्तगोच ।

अविद्या स्वतंत्र, विद्या स्वतंत्र—ये
दोनों सरकार के हाथों से बाहर रहनी
चाहिए । म्याय-विद्या की तरह स्वतंत्रता
हो—सरकार अधिक सहायता दे लेकिन
निर्बंध स्वतंत्र हो । विद्याओं की स्वायत्त

अवस्था—विद्या, विद्याधी, अविद्याधक
की सम्मिलित समिति हो ।

विद्यी-नौकरी का सम्बन्ध न हो ।

विद्या उत्पादक हो,—सब विद्या-
धियों के लिए समान विद्यालय हो ।

गाँवों में घण्टे भर का विद्यालय—
जीवन-विद्या ।

(६) सर्व-धर्म-समाभाव
सब धर्मों के प्रति समान आदर ।

राज्य का धर्म से मजबूत नहीं । पूर्ण
आर्थिक स्वतंत्रता, लेकिन सामाजिक
अनैतिकता नहीं ।

मार्ग—वृद्धि ।
अव्यय का महाय—हर मनुष्य ईश्वर
का अंग ।

(७) देश स्वतंत्र तो गाँव परतंत्र
क्यों ?

(क) सरकार की विरासत योजनाएँ—
उनके बीच—आर के लोगों को ही लाभ ।
स्वतंत्रता के बाद का मूल्य—उसकी
सीमाएँ । गाँव शक्तिहीन—उनका समर्थित
अस्तित्व नहीं ।

(ख) ग्रामस्वराज्य में भारत स्वायत्त,
सहकारी, स्वाधीनी इकाइयों का महासम ।
केन्द्रीकरण—विवेकीकरण । समाजवाद—
साम्यवाद—सोच अन्वयवाद (संक्रान्त-
वाद)—समीक्ष । समोदय का आर्थिक और
प्रतिनिधित्व के सम्बन्ध में नया विचार ।

८—कुछ प्रचलित प्रश्न :

(१) गरीबी, बेरोजगारी, शोषण,
विपत्तय ।

(२) भूमि का प्रश्न—उचित हल ।

(३) नास्तिकता, सर्ववाद, सभ्यता-
वाद ।

(४) देश की एकता ।

(५) अत्याचार ।

(६) विद्या ।

(७) बड़ो दिहा ।

(३) व्यावहारिक
१—नव विचारों ? आशय के लिए ?
या, अन्तर्गत और देश के लिए ?
२—प्राथमिकताओं के हल और
कर्मण :

क. (१) सभ्यता—

आधुनिकता का प्रतीक । परस्पर
विश्वास पैदा करना—निष्पक्ष आचरण ।
सर्वसम्मति । न्याय । ग्रामकोष-समूह में
सहायता—विद्या-विद्याय आदि ।

(२) मन्त्री—

बैठक, कार्यवाही, रजिस्टर ।

(३) कोषाध्यक्ष—

योग-समूह, विद्या-विद्याय, आदि ।

(४) ग्राम-आन्विष्टेना का नामक

(क) समूह—प्रशिक्षण-विधि ।

हर सैनिक को कोई उत्पादन द्युत ।

गाँव के विकास में योगदान । गरीबों,
असहायों की सेवा । सैनिकों में भाईचारा,
अनंतहृदय । सामाजिक संघटन में राष्ट्र-
कार्य ।

(ख) ग्राम-आन्विष्टेना की दोनियाँ—
बाब-दोली, लकन-दोली, श्री-दोली,
बुद्ध-दोली, गरी-दोली । इनके अन्त-
अन्त कार्यदेय ।

(ग) गरी-दोली हाथ दिखों को
ग्रामस्वराज्य समा की बैठकों में शरीक
करना—घर के आँगन में नये हवा ।

ख. ग्रामराज्य के अन्तर्गत—हाटों की
पूर्ति—आन्तर-कुली ।

ग. विद्याय

(१) भूमिहीन
बीघा-बड़ो—गांव की भूमि—सर-
कारी भूमि ।

सही मजदूरी—अध्याय बनान ।
पुनित—आर्थिक—महाजन के धनत
से रखा ।

बैंडोडर को बंदरानी से रखा ।
(२) सोती की उन्नति—

नये यंत्र सामूहिक । अतिरिक्त उत्पा-
दन में शक्ति को मजदूरी के अतिरिक्त
निमित्त भाग ।

(३) उद्योग—
सोती के पुस्तक उद्योग, स्वतंत्र उद्योग ।
अन्य स्वायत्तत्व ।

(४) अन्न—
आयल अन्वयता । उचित मूल्य, पूँजी
सुरक्षित ।

(५) सहायता के सरकारी, अन्त-

जमालावाद पुष्टि-गोष्ठी-२

(गढ़ाक से आये)

ग्रामस्वराज्य-सभा सक्रिय कैसे हो ? दादा धर्मधिकारी व श्री धीरेन्द्र भार्गी धीरिसस

दूध दोनों विषयों को एक साथ लिया गया, क्योंकि यह माना गया कि इन दोनों का परस्पर सम्बन्ध है।

साचार्य रामभूतिजी ने कहा कि खादीग्राम में ग्रामस्वराज्य-सभाओं के कुछ पदाधिकारियों को जो गोष्ठी नवम्बर में हुई थी उसमें पदाधिकारियों ने दो प्रकार की समझौते व्यक्त की थी। एक बात उन्होंने बताया कि उन्हें गणप का अभाव रहता है और दूसरी बात यह कि वे प्रचलित मूल्यों को चुनौती नहीं दे सकते जितनी हम अपेक्षा रखते हैं।

साचार्यजी यह महसूस करते हैं कि बिहार में ग्रामस्वराज्य-सभाओं से तीन-चार सौ समर्थित लोगों का एक 'केन्द्र' बनना चाहिए। इसके लिए शिक्षण की एक प्रक्रिया निकालनी जाय। इस प्रकार के 'केन्द्र' के अलावा ग्रामस्वराज्य-सभा के पदाधिकारी होने। सौ-से-रक भी अलग होंगे।

श्री वीरनाथ प्रसाद चौधरी ने कहा कि सभी 'केन्द्र' बनने की स्थिति नहीं है। अतः सभी जितने कार्यकर्ता हैं उन्हीं को सामने रखकर काम ही समीक्षण हो।

→ सरकारी, गैर-सरकारी श्रोत। सहायता कैसे प्राप्त करें ?

प—न्याय।

साथसे समझौता—संच-संरक्षण। अदालत-सुविधा। माध्यमकीति का निराकरण—मजदूर की मेहनत, स्त्री का शील, अनाप, बुद्ध और बालक का उपराध, मालिक, महाजन को अल्प।

इ—शिक्षण।

(१) घटे घर का विद्यालय—सर्वोपय के मूल।

जब 'केन्द्र' बनने की स्थिति बनेगी तब 'केन्द्र' बनेगा।

श्री अक्षयदेवजी ने कहा कि ग्राम-कर्ता के अभाव में काम चलता है। उन्होंने कार्यकर्ता में वैचारिक अल्पव्यता का भी उल्लेख किया। कार्यकर्ता अध्ययन नहीं करते।

श्री देवानन्दजी ने कार्यकर्ता के अल्प-यत्न व विनय पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि अन्य विचारों का भी अध्ययन किया जाय।

श्री रामेश्वर ठाकुर मूषङ्गी प्रखण्ड के एक समर्थ कार्यकर्ता हैं, उन्होंने कहा कि दादा धर्मधिकारी ने भीमान अधिकारन में जो कार्य कहे हैं उन्हें हम अत्यन्त श्रेय में देखते हैं। बड़े मालिक ग्रामदान में शरीर नहीं होने। अतः छोटे मालिकों और गैर मालिकों को संगठित कर बड़े मालिकों पर नैतिक दबाव डाला जाय। उन्होंने कहा कि श्रेय से जब हमारा समर्थ टूट जाता है तो काम में अल्पव्यय आता है। एक बात की ओर और ध्यान दिया जाता चाहिए कि गांवों में हम पैदा न बनें।

पचा के दरम्यान प्रतिहार और सवायग्रह की बात उठी। जर्म गांवों में इसकी भूमिका तीव्र हुई है। इस पर पचा करते हुए श्री वीरनाथ प्रसाद चौधरी।

(२) गांव की एकता—गांव एक परिवार।

(१) स्वायत्त, सार्वभौम।

(२) सामूहिक चर्चा, उपपत्त।

प—ग्रामदान ऐवत्

ग्रामस्वराज्य-सभा—ग्राम पचायत।

११—दशनीतर।

पचा में आधा समय प्रश्नोत्तर के लिए रखना चाहिए। पचाओं का माता-बलाहर माध्यमोन्माहल प्रशिक्षण शोके का शर्तों को दृढ़त अल्पता होना। —रामभूति

ने कहा कि भूमिदान हो या भूमिहीन बहू अपना हिस्सा (बीघा बट्टा और ग्रामकोष) ग्रामस्वराज्य-सभा को देकर सवायग्रहों की पायता हासिल करे।

साचार्य रामभूतिजी ने कहा कि बड़े मालिकों के मुताबिक छोटे मालिक और गैर मालिक को संगठित करने की बात लेकर गांव में आयेगे तो दूध छोटे मालिक और गैर मालिक को ही सामिल का अल्प-दूध मानेंगे। आज दूध क्या मानते हैं ? दूध यह मानते हैं कि एक ग्रामदान में सामिल है और दूसरा नहीं सामिल है। ग्रामदान में सामिल होनेवाला भूमिदान भी हो सकता है और भूमिहीन भी। ग्रामदान में भूमिहीन और छोटे मालिक भी नहीं सामिल होते हैं। अतः हम अनाप, प्रभाव या दबाव का माध्यम केवल ग्रामस्वराज्य-सभा को मानेंगे, ग्रामस्वराज्य-सभा के अलावा अन्य संगठन को नहीं।

प्रश्न यह उठाया गया कि सवायग्रह सिर्फ सिखाया होगा ? जो ग्रामदान में सामिल नहीं है उनको सामिल करने के लिए सवायग्रह होगा अथवा अनाप, शोषण और दमन के सिवाय होगा ? इस पर शोषों की राय बनी कि सवायग्रह शोषण, अनाप और दमन के सिवाय ही होगा—ग्रामदान में शरीर करने के लिए नहीं।

एक प्रश्न यह भी उठा कि जिन लोगों ने ग्रामदान के बायन पर सवायग्रह किया है वे अपना शोषण-बट्टा क्यों नहीं निराकरते ? इनके सिवाय सवायग्रह किया जा सकता है ?

साचार्य रामभूतिजी ने कहा कि सवायग्रह सवा से लड़ने और अन्तरी व्ययन्ध से लड़ने की प्रक्रिया में अन्तर होगा। ग्राम-स्वराज्य-सभा में सवायग्रह-मालिक का ही उदय हो—निराकार का अल्पव्यय नहीं-पभी ही आना चाहिए।

गांवों में विषय प्रश्न के कार्यक्रम ग्रामस्वराज्य-सभाओं उठाये, एत प्रश्न पर पचा हुईं। निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर प्राप्त, ऐसी काम राय बनी।

- १—प्रयोग के प्रश्न
- २—सामूहिक विज्ञान के प्रश्न
- ३—मञ्जूरी के प्रश्न
- ४—ज्ञान का पर्व
- ५—धन-सूत्र

श्री केशव प्रसाद ताम्रि ने कहा कि पुष्टि के कार्य में जितने कार्यकर्ताओं की आवश्यकता थी उतने ही कार्यकर्ता पुष्टि के कार्य के लिए भी चाहिए, केवल उनका रोग बंद न आये। उन्होंने प्रसन्न हृदय पर कार्य के सञ्चालन की दृष्टि से कहा कि ५-६ साम्प्रदायिक-समाजों की मिनी-जुनी बोधोप स्तर पर २-३ पथके के लिए बैठक होगी चाहिए। धर्म-अधीन-अधीन साम्प्रदायिक-समाज की रिपोर्टें पत्र करेंगे। इसमें उनका परामर्श प्रतिलक्षण होगा। इस प्रकार की बैठक में कार्यकर्ता की शरीर होता चाहिए। बैठक में स्थानीय समाजों की पत्रों को और उनके हल का सक्रिय प्रयास किया जाए। उन्होंने मण्डली के सम्प्रदाय में तीन सम-स्थाओं की तरह स्थान काहूट दिया। मञ्जूरी का प्रश्न, २ पत्राधिकारियों को उनके समक के लिए पारिवारिक और ३ पत्रों की बेवारी। मञ्जूरी के प्रश्नों पर उत्तरी राय थी कि उनके प्रश्न साम्प्रदायिक-समाजों का ही हल कर दूर कर सकते हैं। पत्राधिकारियों की पारिवारिक देने की परामर्श न करने पर ही सन्तान और वा। पत्रों की बेवारी का कोई हल त्रिपट भविष्य में नहीं मिलता।

आजाने सामूहिकों ने कहा कि मञ्जूरी के प्रश्न पर कार्य करना है—

१. मञ्जूरी में जो अन्तर्भाव जाया है वह सामूहिक हो, २. मिनी-मञ्जूरी अन्तर्भाव में ही जाती है उसको तहो ठीक हो, ३. मञ्जूरी बढ़ानी काय और ४. अन्तर्भाव में मञ्जूरी को हिंसा मिले।

श्री केशवप्रसाद ने कहा कि सामूहिक प्रश्नों की सन्तान नहीं होनी चाहिए। श्री केशवप्रसाद प्रसन्न बोधोप ने कहा कि मञ्जूरी के प्रश्न से सञ्चालन ही उपाय, हल करने और से नहीं उपाय, सञ्चालन की बात हल कर दो।

साम्प्रदायिक-समाज के पत्राधिकारियों के पत्राधिकारियों की आवश्यकता उतने महत्त्वपूर्ण की। प्रतिलक्षण की दृष्टि से विनियमित कार्यक्रम सोचा गया १. परामर्श का सञ्चालन, २. कई साम्प्रदायिक-समाजों की मिनी-जुनी बैठक, ३. दोषोप विधि, जो दो-तीन दिन नर हो। हिमाचल-विभाग १. साम्प्रदायिक की दृष्टि से प्रतिलक्षण का अन्तर्भाव-अन्तर्भाव चाहिए।

कार्यकर्ता-प्रतिलक्षण की भी आवश्यकता महत्त्वपूर्ण की गयी परन्तु इस सम्प्रदाय में प्रस्ताव पत्रों नहीं हुई। कार्यकर्ता-प्रतिलक्षण के लिए उन प्रकार की मञ्जूरी को उपायोपनी माता गया। अब ज्ञान अन्तर्भाव होगा उनमें कार्य-कर्ता-प्रतिलक्षण की योजना की गयी है। अन्तर्भाव बैठक एक सम्प्रदाय के लिए मञ्जूरी के अन्तर्भाव में की गयी है। पत्रों १, २, ३ बैठक होगी, फिर ४ दिन सभी लोग संग में प्रस्ताव कार्य-कर्ता और सम्प्रदाय की आवश्यकता है। इसके बाद फिर २ दिन बैठक करके उन सम्प्रदायों पर पत्रों की रायें दी। नये प्रश्नों में कार्य-पद्धति क्या हो?

आज जितने प्रश्नों में पुष्टि-कार्य हो रहा है उनके अन्तर्भाव जितने प्रश्नों में काम शुरू हो उनमें अन्तर्भाव अन्तर्भाव के आशय पर दिन पद्धति से काम किया जाए? एक सुझाव यह था कि मञ्जूरी से पहले साम्प्रदायिक-समाज बन जाय और उन समाजों के प्रामाणिक के पुष्टि-कार्य के लिए तैयार किया जाय। मञ्जूरी ५ इन पद्धति से काम हुआ था और अब पत्रों की प्रसन्न विनियमों में भी शुरू किया जा रहा है। इस सम्प्रदाय में यह कहा गया कि साम्प्रदाय की योग्यता के पहिले साम्प्रदायिक-समाज न बने, बल्कि साम्प्रदायिक-समाज सञ्चालन बनानी चाहिए।

पुष्टि-कार्य जितने में पत्रों साम्प्रदाय के योग्यता-पर हलकाय कथने है, इनके बाद परिवारों की सुखे बनानी जाती है। यह साम्प्रदाय की मञ्जूरी की पुष्टि ही जाती है तब मञ्जूरी में एक सम्प्रदाय करके और साम्प्रदायिक-समाज का सञ्चालन

होता है।
 कई अन्तर्भावों में बोधा-कट्टा कटने के बाद ही साम्प्रदायिक-समाज बनाने है।
 इस विषय पर सबको आम राय थी कि किसी ऐसी प्रामाणिक पद्धति की सोच नहीं हुई है जिसे सब जगह लागू की जाय। अनेक पद्धतियों से कार्य हो रहा है और अन्तर्भाव से ही काम होना चाहिए।
 पुष्टि-कार्य के समय पुष्टि के सञ्चालन जेबों में क्या किया जाय?

विद्यमान समाज का पुष्टि-कार्य होने-वाला है। पुष्टि के सञ्चालन में पुष्टि-कार्य के अन्तर्भाव पर क्या करना चाहिए? इस विषय पर पत्रों हुई। बूँक अन्तर्भाव साम्प्रदायिक-समाजों के अन्तर्भाव पर सञ्चालन करने की विधि नहीं बननी है, इसलिए अन्तर्भाव सञ्चालन की बात नहीं सोपनी है। विनियमित कार्यक्रम जितने कार्य-कर्ता सञ्चालन राय थी।

१. मञ्जूरी के लिए आधार-सहित तैयार हो।

२. अन्तर्भाव की वा भी आवश्यक-सहित बने और इसका पत्रों अन्तर्भाव विनियम करना चाहिए।

३. साम्प्रदायिक-समाजों के लोग योग्य बोट न दें।

४. सञ्चालन में मञ्जूरी ही इतना प्रयास किया जाय।

५. मञ्जूरी के लिए किसी मञ्जूरी को मतदान में न आना जाय।

६. मञ्जूरी के माय पर बोट न पड़े।

७. जहाँ सम्भव हो, सञ्चालन मञ्जूरी का आयोजन हो।

८. अन्तर्भाव का विनियम सञ्चालन किया जाय।

विद्यमान साम्प्रदायिक सम्मेलन सञ्चालन (पुष्टि) में साम्प्रदायिक-समाजों के पत्राधिकारियों की बैठक हुई थी। उनमें यह विनियम किया गया था कि सञ्चालन का साम्प्रदायिक सम्मेलन किया जाना चाहिए। अन्तर्भाव के सञ्चालन में सञ्चालन करने की अन्तर्भाव तैयारी करनी है। इस मोजी में पत्रों करके

राष्ट्रीय विजय

की

इस घेना में हम यह नहीं मूलें कि
गतत जागरूकता से ही स्वतंत्रता
कायम रहेगी

हमारी सीमाएं सुरक्षित हैं

किन्तु

गरीबी और बेरोजगारी की बड़ी लड़ाई
अभी हमें जीतनी है।

आइए !

**मिलजुलकार इग मोर्चे को भी हम
फतह करें**

विज्ञापन संख्या ७—व्यवसाय-विभाग, उत्तर प्रदेश, द्वारा प्रसारित

क्षेत्रीय ग्रामस्वराज्य-गोष्ठी

मुम्बई प्रखण्ड के जमानाबाद एवं भीलानपुर पंचायत राज क्षेत्र ग्रामस्वराज्य एवं ग्रामस्वराज्य-समाज के गठन को दुर्दिन से बढ़ा बढ़ित भावना जागृत है। अग्रह-अग्रह पर विरोध था। कोई बात भी सुनने को तैयार न था। समय बरत गया तो तारा बालाभरण करत गया। अब तक भीखनपुर एवं जमानाबाद दो पंचायतों में छ ग्रामसमाजें बन चुकी हैं। जैसे देर तक मोना आरम्भ समय पर १९९२ पूर्वपक्ष के लिए जल्दी-जल्दी तैयार होता है इन पंचायतसमाजों की हालत भी वैसी ही है। पहले की जैसी ग्रामसमाजों से भी बाकी तार जाना चाहनी है। इसका विरोध क्षेत्र ग्रामसमाज के उत्साही सदस्यों का है उनके कम धैर्य जमानाबाद क्षेत्र के कार्यकर्ताओं को बचाना पड़ता था वही है। प्रखण्ड-स्वराज्य को दिशा में इन लोगों को अभी ताने का भी बचाना पड़ता पर प्रखण्ड स्तराधीन है।

२१ दिम्बर - '७१ को जमानाबाद क्षेत्र में जिहाद भूदान-यज्ञ समिति एवं जमानाबाद क्षेत्र के संचालक श्री बन्दी नारायण सिंह, जिहाद स्टेट पार्टी स्मारक निधि के सचिव श्री कैलाश प्रसाद शर्मा की उपस्थिति में भीलानपुर, भीलानपुर, बधवा, जमानाबाद गांवों टीका, जमानाबाद पंचायत क्षेत्र और जमानाबाद क्षेत्र में टीका ग्रामसमाजों के प्रतिनिधियों की प्रतिनिधित्व बैठक हुई, जिसमें सीमा-रक्षणा निमांश, ग्रामसमाज संरक्षण बली, उचित मन्त्रालय से तथा पंचायत की बैठक की निमित्त करने पर विचार लिया गया।

(जयप्रकाश मिश्र सभावाक से)

प्रश्नों कागने रखकर एक दूसरा दूसरे तीव्र करें।

इस गोष्ठी का दो दिन में कुल १ बैठकें हुईं। अतीत जमानाबाद क्षेत्र में किया। कार्यकर्ता एक नहीं लाजरी भेकर वापस गये। —कुल कुल

—निश्चय किया गया कि २४ और २५ फरवरी '७२ को वैशाली प्रखण्ड के सिद्धमा क्षेत्र में एक सम्मेलन किया जाय। इन सम्मेलन का नाम रखा गया—प्रथम बिहार ग्रामस्वराज्य सम्मेलन। प्रथम उद्यम कि सम्मेलन का निमन्त्रण बिहार क्षेत्र के क्षेत्र जाय। जसो बिहार एकर की कोई एक्की नहीं है इसलिए निश्चय हुआ कि एक सम्मेलन की जो स्वागत समिति होगी उसकी तरफ से निमन्त्रण भेजा जाय। ग्रामस्वराज्य-समाजें पणतय विषय कैसे मनाएँ ?

इन सम्मन्ध में जो कुछ निर्णय हुआ,

उपके लिए २ जनवरी, '७२ के 'भूदानयज्ञ' में पृष्ठ २१३ देखें।

ग्रामस्वराज्य-समाजों के संचालन के लिए साहसांग

एक इच्छा तैयार हुआ है। जगत कुछ अर्थ को कंसा प्रसार शर्मा ने पढ़ा और उपपर चर्चा की गयी। कुछ बात यह स्वीकार की गयी कि ग्रामस्वराज्य-समाजों के संचालन के लिए कानून का अवकाश हो सहाय किया जाय, जिनके के लिए कानून अरम्भ आवश्यक हो। इन सम्मन्ध में तब हुआ कि श्री कैलाश प्रसाद शर्मा और श्री बन्दी नारायण सिंह

दवाओं में अमेरिकी लूट !

जितनी दवाएँ (ड्रग) बनती हैं इतनी से मुक्ति से वे प्रतिगठ सरकार की ओर से (पब्लिक सेक्टर में) बनती हैं, रोग सब नकी-बकी चम्पनियाँ (जिनो सेक्टर में) बनती हैं।

ऐसी सब देशों चम्पनियाँ विदेशी चम्पनियों के हाथ मिलकर काम करती हैं, और उनका विदेशी माल भी बेचती हैं। विदेशी चम्पनियों में अमेरिकी चम्पनियाँ वैहिमाड गुलाफाखोरी कलती हैं। इतना ही नहीं बल्कि उन्हीं दवाओं को यूरोप में वे जित भाग पर बेचती हैं, उतने तीन गुना से लेकर एक सौ चौगुना तक अधिक मूल्य पर भारत तथा दूसरे विकासशील देशों के हाथ बेचती हैं। नीचे के आंकड़े देखिए :

वहाँ मिलती। अमेरिका की सिनेट में इस चोरी का पता चलता कि नई दवाएँ, जिनकी प्रती अमेरिका में बज्रित है, वगैरह वे निम्नी भाँति हो चुकी हैं, भारत और इस तरह के दूसरे देशों में भेज दी जाती हैं। ४ जनवरी १९७० को सिनेट चम्पनी ने कठिया भी एक दवा एफ भारतीय चम्पनी को ७ हजार ९ सौ ६० डॉलर प्रति टिलो में बेची, पर सि बिलकुल उसी तरह की दवा का नाम यूरोप में मात्र ५ सौ ५० डॉलर था। अमेरिका के डॉ० चार्ल्स एडवर्ड्स का, जो वहाँ के फूड और ड्रग कमिश्नर हैं, कहना है कि १९३८ से १९६२ तक जो हजारों दवाएँ बाजार में चिनी हैं, उनमें उन चुनो के होने का कोई प्रमाण

धर्म	दवा का नाम	मात्रा	भारत में मूल्य	यूरोप में मूल्य
१. सिनेटिड	टेट्रासाइक्लिन हाइड्रोक्लोराइड	१ टिलो २३० डॉलर	२५० ,,	२४ ,,
२. फीजर	डीमाडॉन	"	१,०५० ,,	२० डॉलर ५० सेन्ट
३. मर्क	डिजैनीमाइरिनो ट्रायफ्लुथीन पाइपरडीन	"	"	"

इसी तरह की दूसरी अनेक निताने हैं। सोचिए, हम लोग विदेशी दवाओं के लिए देश का निचला धन बाहर भेज रहे हैं। इसपर भी हमें सही हालत में दवाएँ

नहीं या जिनके लिए प्राइमो ने दाम दिया और दवाएँ खरीदीं !
कहाँ है हमारे देश के फागुल और वे क्या कर रहे हैं ?

अधिक थे। पर: मुक्ति के कार्य को प्राथमिकता देने का सक्षय रखकर ही सारी कार्रवाई हुई।

तरुण-शान्तिसेना शिविर,

भिण्ड, मुरैना, ग्वालिबर और गुला (म० प्र०) जिलों के ६० तरुण-शान्ति-सेनियों का द्विदिनभोज शिविर दिनांक २७ और २८ दिसम्बर, '७१ को शिक्षा महाविद्यालय, ग्वालिबर के प्रांगण में सम्पन्न हुआ। शिविर का सफलता अं० प्रा० शान्तिसेना मंडल के क्षेत्रीय सचिव श्री रामगोपाल दीक्षित ने किया।

कार्यकर्ता-प्रशिक्षण-शिविर

दुर्ग (म० प्र०) जिला सर्वोध्य कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण-शिविर २५ और २६ दिसम्बर '७१ को प्रथम ग्राम-दानी गांव साटाबोड़ में सम्पन्न हुआ। शिविर में दोनों दिव ४५ कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

शिविर का आयोजन उपरोक्त समिति की ओर से हुआ था, जिसका उद्घाटन और समापन श्री हरीशमत्री बेनेग जिला रायपुर ने किया। इस शिविर में साह साटाबोड़ और अंतराक्ष के कार्यकर्ता हो

चर्चाओं में मुख्य रूप से तरुण-शान्तिसेना के संगठन और उसके ध्यापक प्रसार के व्यावहारिक पहलुओं पर चर्चा हुई। अलग-अलग विचार भी गोपित्याँ थापित हुई। प्रातः व्यायाम और योगासन का भी अभ्यास कराया गया।
बौद्धिक वर्षों में भाज की जागतिक परिस्थिति में शांति की आवश्यकता और सर्वोद्य-विचार की चर्चा मुख्य रूप से की गयी। इसी अवसर पर चौदह नये तरुण-शान्तिसेनिक बने।

मूल-सुधार

'मूलान-यज्ञ' अंक १५, १० जनवरी '७२ में पृष्ठ २२४ पर लीचवो लाइल "अगर देर भी हुई तो इतनी नहीं होगी," पढ़ें। उसी पत्र के कालम तीन की अथाहवाँ बाय द्य प्रकार पढ़ें, "अर्थात् सामाजिक समारोहों में कोई भी ऐसी रसम न की जाय जिसका किसी धर्म से सम्बन्ध हो।"

इस अंक में	
जयप्रकाशजी का सन्देश	२२४
'जनता को सत्ता'	
—सम्पादकीय	२२५
यजुष्य का मनुष्य क्या है ?	
—दादा धर्मप्रियकारी	२३६
प्रधानमंत्री और स्वदेशी	२३७
बंगला देश : आर्थिक चुनौती	
—मुपर कौल	२३८
जय जगन्नाथ ! जय गण सन्देश ।	
—पूर्णचन्द्र जैन	२३९
भारत में गरीबी—४	२४४
ग्रामसवाराज्य-समाजों के पदाधिकारी :	
उनका शिक्षण-प्रशिक्षण	
—राममूर्ति	२४९
जगन्नाथदाद युधि-मोष्टी	
—कृष्ण कुमार	२५४
मुद्रापट्ट : ध्यय विषय	
—'हिन्दुत्वान टाइम' से साभार	
अन्य स्वल्प	
शायियों के गोपे से,	

वार्षिक मुद्रक : १० रु० (एकैव कालज . १२ रु०, एक प्रति २५ पैसे), दिवसे में २५ रु०; या ३० दिवस या ४ डॉलर।
क अंक का मूल्य २० पैसे। श्रीकृष्णयज्ञ सत्र द्वारा तर्क सेवा संघ के निवे प्रकाशितरूप बनोहर प्रेस, बाणरसी में मुद्रित

वर्ष : 12, संक 10, सोमवार, 27 जनवरी, '62

सर्व सेवा संघ केन्द्र विभाग,

राजवाट, बाराबंकी-

घर : सर्विका - कोट : 14191

संपादक
राजभूषण

सर्वांग

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

भूदान-यज्ञ

भूदान यज्ञ का अर्थ है जमीन के दान। यह एक ऐतिहासिक क्रान्ति का संकेत है।



हमें गरीबी से मुक्त करना है

आपके पुत्र

भारत, पाकिस्तान और बंगला देश की शान्ति-समस्या

सम्पादकी,

यह सब जानते हुए भी कि यहिया खाँ और उनकी सेना ने भोर अत्याचार बिना क्या विश्व के अच्छे-बुरे लोगों को मोत के पाठ उदाहरण। सोचना; यह है कि क्या राजनीति का यह प्रथम उदाहरण है, अथवा यह केवल इतिहास की पुनरावृत्ति है। यदि हम प्राचीन और वर्तमान इतिहास का अध्ययन करें तो हमको यह पता चलेगा कि ग्रीक और रोम की क्लेश लड़ाईयों में ऐसा ही हुआ। रोमन साम्राज्य तो इन्हीं अत्याचारों की एक बहानी है। आज भी अपने प्रभाव और विश्व की राजनीति में स्थान बनाये रखने तथा स्वतंत्रता की भावना रखने के लिए विगतमान में जो कुछ हो रहा है वह भी एक सजा उदाहरण है कि राजनीति में कुछ भी हो सकता है। दुनिया काधों में बँटी हुई है। सब के प्रसंग भी हो सकते हैं। अतः राज्यों की अथवा भासकों और राजनीतियों की यह लिखा कि हमारा अक्षय्य राज्य बनना वा हुनल करके बना रहे सम्भव नहीं है। फिर तो यह सब हुआ है और अभी भी जारी है। इसे एक-एक दिन समाप्त होना ही और सम्भावना के आधार पर ही राजनीति को खलना है। सभी विषय में सुख और शान्ति प्राप्त रह सकती है। सम्भावना के लिए कुछ भूल जाने और कुछ याद रखने की आवश्यकता होती है। मानवीय पर्यु याद करने साधक होते हैं। अमानवीय भूल जाये साधक होते हैं। यही बात बंगला देश, पाकिस्तान और भारत के बारे में भी कर्ती होगी। शीर्षिक जो कुछ हुआ है वह नया नहीं है। लेकिन हमको नयी दुनिया का निर्माण करना है तथा संसार में पूर्व पोषित अन्धकार, स्वतंत्रता और सम्भावना स्थापित हो सके एव सुख और शान्ति

के मार्ग पर विषय आगे बढ़ सके, इसके लिए आज भारत, बंगला देश तथा पाकिस्तान में जो कुछ हुआ उसे भूल जाना होगा। आगे के लिए मिलकर एक स्थान पर बैठकर नये दिरे से सोचना होगा, जिससे विश्व का एक नया मार्ग मिल सके। तदनुसार यहिया खाँ को और उनके अत्याचारों को भूल जाना ही आवश्यक है। उनको भी स्वतंत्र करना होगा। यहिया खाँ की जेल के शिरो मे बन्द रखना गलत होगा। आज बंगला देश स्वतंत्र है। अन्धकार से बहल-सी आगारें हैं। अमेरिका के स्वातंत्र्य संग्राम के बाद जब पीतरी युद्ध हुआ और उत्तरी अमेरिका अलग गया तो अष्टमर्निकल ने बिरुधियों को क्षमा करना अपना कर्तव्य समझा। ब्रिटीश अमेरिका पराजित हुआ और उसे संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ रहना पड़ा, कारण सामूहिक ही है। ब्रिटीश

अमेरिका का इतिहास की शुद्धता बनाये रखने की अत्याचारों भारत के सामने और अष्टमर्निकल का युवावी समाप्त करने का हुर निश्चय ऐसा था जिसमें शक्ति अमेरिका को पराजित होना ही था। उन्ने महार वगैर-यु का बगानियों को युवावी से युद्ध करने तथा ब्रिटीशों पाकिस्तान के अत्याचारों को समाप्त करने का हुर निश्चय ऐसा था जिसमें यहिया खाँ और उनकी सेना का पराजित होना तथा बंगला देश का स्वतंत्र होना अविचार्य था। बंगला देश स्वतंत्र हुआ और आज वह एक प्रभुसत्ता सम्पन्न देश है। संसार ने तथा पाकिस्तान ने इसकी सफलता लिया है। लेकिन बंगला देश तथा भारत और पाकिस्तान को सुख और शान्ति तथा विश्व को नया मार्गदर्शन देने के लिए यह आवश्यक है कि हम अतीत को भूल जायें और सुन्दर भविष्य में प्रवेश करने के लिए सन्भावनापूर्ण वातावरण में अन्धकार समाप्त हो कर हटें।

जय बंगला, जय भारत, जय पाकिस्तान, जय अन्तः।

—सिद्धार्थ

जनता की ओर से धन्यवाद : सरकार की ओर से शराव के ठेकों की नीलामी

दिल्ली, १५ जनवरी। उत्तराखण्ड में पूर्ण सन्निवेश की माँग को लेकर चलते गये जन-आन्दोलन के फलस्वरूप ७० प्र. के राज्यपाल द्वारा अल्पवयस्की के लिए अल्पवयस्की जारी करने और उनके परस्व विद्यालयों द्वारा सर्वोपस्थिति में विधेयक पास हो जाने पर यहाँ की जनता व्यगता से शराव की ठेकानों के बन्द होने की प्रतीक्षा कर रही थी, और इसके लिए स्थान-स्थान से रयादों के वार मेजें गये थे, परन्तु सरकार ने इन दिनों में अन्तर्गत वर्ष (१९७२-७३) के लिए भी शराव के ठेकों की नीलामी के आदेश भेज दिये हैं। दिल्ली जिले की ठेकों की नीलामी ८ और ९ जनवरी को नरेन्द्र

नगर में करने का जिलाधिकारी को आदेश दिया गया है।

दुबरी और रायबहिनो की ओर से निराधिकायियों के मार्फत शराव की ठेकानों पर सुन्दरता में स्थिति निकटवर्ती को पुन प्राप्त करने की सूचना सरकार को भेजा गया है और मन्त्रालय के अन्तर्गत में शराव की मोठूदा दूकानों का बन्द कर अन्तर्गत को हट कर लेने की माँग की गयी है। नये मान्य के अनुसार राज्य सरकार को कभी भी निराधिकायियों में शराव के असाधारणों को बिना कोई सुभा-यज्ञा शिथे शरावकरी करने का असाधारण आधार मिल चुका है।

—सुन्दरता

एक साथी की समस्या : प्रतिकार की नीति-नीति

आपने एक साथी ने पूछा है कि प्रखण्ड-स्वराज्य-समाज के बन जाने और सक्रिय होने की कोशिश करने से नई तरकीब का विरोध प्रकट होने लगा है। जो अनौचित्य और अन्वयाप करने से वे अब नये नारों की आड़ लेकर और मोहकित भी बालों बहकर विरोधी रव्य बनानाये लगे हैं। मुद्दे रूप से अतिरिक्त वार लोगों से दिखाई देती है। एक, सरकारों अधिकांशों-मंचकारी, दो, राजनीतिक नेता-कार्यकर्ता, तीन, पचासों के अधिकांश-गण, चार, मानव-महाजन। मानव-महाजन का स्थान चौथा है क्योंकि उनके पास कोई तादा नहीं है, अगर है तो जोर-जबरदस्ती है जो आती-पड़ती हुई भीत है। वे सरकारों अधिकांशों की तरह न बाल-प्यवस्था का साथ लया करते हैं, न नेता की तरह लोचन और न मुखिया की तरह आगउतारी का। प्रखण्ड स्वराज्य-समाज को इन तरकों का धुआँपना करना है, और हर अनौचित्य का प्रतिहार करना है। समस्या यह है कि ऐसी परिस्थिति में प्रतिहार की क्या नीति आनाही जाय ?

दानी बात स्पष्ट है कि अनौचित्य और अन्वयाप की बर्तान कर लेने का नाम अहिंसा नहीं है। लेकिन यह जान भी उतनी ही स्पष्ट होनी चाहिए कि प्रतिहार का स्थान अहिंसा में अग्रिम का है, जतिर दिया न उपाय वह निरव का भीत है। इसलिए सोने की नीति-नीति में सुन-सा खतर है।

अहिंसा का निगारो प्रम के हीनार से लड़ा है। खतर की भूमिका में उपाय विरक्तम सवने अहिंसा विचार की खतिर में होना है। इसलिए अन्वयाप वह मही बर्तित करता है कि प्रामने-सामने इतने को नीतय न आये, और अन्वयाप मानने, सभजाने-दुखाने, से दूर हा अन्व। यह सहाय का प्रखण्ड करता है, मगर प्रतिहार से पबझापा नही।

तो, प्रतिहार की क्या नीति आनाही जाय ? इस सम्बन्ध में कुछ बार्ता का स्थान रखना अच्छा होगा। वे ये हैं

- (१) प्रतिहार का निर्णय स्वयं प्रखण्ड-स्वराज्य-समाज करे। आरम्भक लेवारी भी नहीं करे। कार्यकर्ता अपने हाथ में निर्णय नहीं न ले।
- (२) हर तरह के साथ प्रतिहार की एक ही नीति नहीं आनाही जा सकती। मानव-महाजन जितने भी बुरे हों, वे पर्यो है, और आने भी पड़ती रहने। सामन्तवादिन के अन्वयत उपाय 'कक' गिान लेने को पूरी योजना है। सामन्तवादिन के साथ सामन्तवादिन-समाज की समाजता सामन्तवादिन का अन्वय उपाय है। इसलिए सामाजिक अनौचित्य का प्रतिहार नहीं तक

सम्भव हो प्रयास्यण द्वारा होना चाहिए। दुर्दा के साथ प्रत्यक्ष अन्वयगो उधके साथ का कदम है प्रयो की विरुद्ध सामाजिक बहिष्कार आदि का प्रयोग अनुचित भी है, अनावश्यक भी।

(३) सरकारी कर्मचारियों द्वारा जो अनौचित्य होती है वह देशद्रोह के बराबर है। इसलिए उनकी गैर कानूनी बर्तव्यवर्तियों को पढ़ने ऊपर के अधिकांशों के स्थान में लाना चाहिए, और यदि वे त्याग न कर सके तो मालत आदेशों की धुनकर अन्वयाप करनी चाहिए। अन्वयाप के लिए जो पंड भोगना पड़े उसके लिए तैयार रहना चाहिए।

(४) मुखियों-कार्यकों की अनौचित्य का उत्तर जनता की विप्रायक सहायक-सहित है। अगर सामन्तवादिन-समाज को अपने अन्वयों की निष्ठा प्राप्त है तो समाज की मुखियों-कार्यकों को छोटी देखा के ऊपर मही देखा लीचने जाना चाहिए। सामन्तवादिन-समाज को यह आग्रह रखनी चाहिए कि काम वह होगा जिदका निर्णय गाँव के लोग समा में बैठकर सामुहिक रूप से करेंगे।

(५) राजनीतिक नेता-कार्यकर्ता का उत्तर विचार ही शक्ति से ही दिया जा सकता है। अगर लोग सामुहिक सौच-सहित का विचार सभज और मान लेंगे तो आने-आप दनों की बात अन्वयुती करते जायेंगे।

लेकिन यह बात जोरदार उम से जनता के सामने रखनी चाहिए कि सामन्तवादिन-समाजों से, या प्रखण्डस्वराज्य-समाज से, पराधिकारी ऐसे लोग ही हो जो किसी दल में सक्रिय न हो। राजनीति का दनीय मय और सामन्तवादिन-समाज का निर्दनीय मय इस तरह के दो मयों पर कोई आदमी एक साथ सक्रिय नहीं हो सकता।

ये कुछ ऐसी मोटी बालें हैं जिनका स्थान रखने से निर्णय करने में सुविधा होगी। लेकिन अन्वयाप से अन्वयपति, उसकी अनौचित्य, उमये अन्वयगो, और उसकी अन्वयाप, हर सामाजिक का अन्वयविद्ध अधिकांश है। समय, परिस्थिति और पात्र देशकर पद्धति में भेद हो लाना है।

चंगला देश का इन्द्रधनुष

एक बोधवी कलापरी में भी पूरे दफ्तहर मय लगे भारतीय भुषण के हिन्दुओं और मुसलमानों को यह देखने और समझने से कि यह बहुरी नहीं है कि हिन्दू मुसलमान का वा मुसलमान हिन्दू का दुश्मन हो। हिन्दू को हिन्दू का दुश्मन हो सकता है, और मुसलमान भी मुसलमान का। जमाने के साथ-साथ दुश्मन भी बनते हैं, और दुश्मन के साथ-साथ दुश्मनी के तीर-तरीके भी।

अपेयों के अपने राज में मुसलमानों के दिल में यह बात फूट-फूटकर भर दी कि उनके सबसे बड़े दुश्मन हिन्दू हैं, और हिन्दुओं को सिखा दिया कि उनके सबसे बड़े दुश्मन मुसलमान हैं। दोनों का दुश्मन 'सैतानी अंधेरी राज' है, यह बात सिखाने

में कांग्रेस और गांधीजी को खिन्ने बरत लय गये, फिर भी यह शीघ्र लिखने लोगों के गये के नीचे खिन्नी जवरी ?

यह सही है कि अंग्रेजी राज में पहले भी भारत के जाति-प्रधान समाज में हिन्दू और मुसलमान कभी चीनी और पानी की तरह घुल-घुलकर घुलने-मिलते नहीं, वे हमेशा तेल और पानी की तरह रहे। वे एक-दूसरे के पास आये, कई बातों में बहुत पास आये, लेकिन 'एक' नहीं हो सके। कभी एक ने दूसरे का सहारा कर अपने ही बात को हाँकी ही नहीं। चीनी का सह-अस्तित्व बरकर रखा रहा। लड़ाईयों बनेक हुईं लेकिन कभी ऐसा नहीं हुआ कि किसी लड़ाई में एक और सिर्फे हिन्दू रहे हों, और दूसरी और सिर्फे मुसलमान। यह आदिभारत अरब शासकों के विभाग वा या जिन्होंने धर्म को राजनीति का भीचाँ बना दिया, जिसने हिन्दू को हिन्दू और मुसलमान को मुसलमान बनाकर, दोनों में किसी को भी भारतीय नहीं रहने दिया। भारतीयता की लड़ाई गांधीजी को अंग्रेजों से भी लड़नी पड़ी, और हिन्दुओं-मुसलमानों से भी। यह परदेशियों के होते किन्तु घरवालों के नहीं होत सके, और लड़ते-लड़ते समाप्त हो गये।

हिन्दू और मुसलमान, दोनों को बगाली बनाने का विचक्षण काम बंगला देश के 'मुन्नेत्र भाई' ने कर दिखाया। ऐसा नहीं है कि जब बंगला देश में आगम की हुकमिदाई नहीं होती, या हिन्दुओं और मुसलमानों नहीं होती, लेकिन जरूर अब हर हिन्दू की हर मुसलमान और हर मुसलमान की हर हिन्दू हमेशा हुकम रहने दिखाई देगा। साम्यवादीक धर्म पुराना पड़ गया, साम्यवादीक राजनीति के पाठ और गुंठ दोनों समाप्त हो गये।

बंगला देश के मुक्ति-संग्राम ने एक साथ खिन्नी ही चीनी पर चोट की है : मुसलमान के काफिर और हिन्दू के स्नेह पर,

संस्कृति के मुकामिले धर्म की प्रभुता पर, अंग्रेजी स्वामित्वा के मुकामिले नव-उपनिवेशवाद पर, तथा नागरिक के मुकामिले ऐतिक की उता पर। पुराने ढाँचे की दोबारा बह गयी !

भारत के हिन्दू और मुसलमान बंगला देश के आगम से जोे हुए इन्तज्जुब को 'कन आँसों के देख रहे हैं ? क्या उठी बंगला राज की दो हुई आँसों से ? ना, जब नये जमाने की नयी आँसों से ?

भारत के मुसलमानों को जब सनसना चाहिए कि परिनिष्ठान से डूला लेकिन इस्लाम बच गया। हिन्दुओं को समझना चाहिए कि राष्ट्रवाद गया लेकिन राष्ट्रीयता बच गयी ; बंगला देश की विजय भारतीय राष्ट्रवाद (जो हिन्दू सम्राज्यवाद का दूसरा रूप बनता वा रहा वा) की नहीं, भारतीय राष्ट्रीयता की विजय है। राष्ट्रीयता पक्षी की गले लगाती है, राष्ट्रवाद गला चोटता है। माने सभे इतिहास में भारत राष्ट्रवादी बनी रहा ही नहीं, इसलिए उसकी राष्ट्रीयता में, जिसका उत्तराधिकारी आज का बंगला देश उतना ही है जितना आज का भारत, संस्कृति की प्रधानता है। संस्कृति के बराने उसके लिए चुने रहते हैं।

जब भारत में रहकर हम बंगला देख के इन्तज्जुब को मनी आँसों से देखते हो तो अब मुसलमान को साम्यवादी, और हिन्दू को जातिवादी नहीं रहना चाहिए। जैसे बंगला देश में हिन्दू और मुसलमान, जाने हिन्दू-धर्म और इस्लाम को बायम रखे हुए भी, बगाली बन गये, उसी तरह भारत में हिन्दू-मुसलमान दोनों भारतीय बन सहने हैं, वन बरकर चाहिए। यह-अस्तित्व धर्म की माँग है, समन्वित अस्तित्व धर्म की बंगला है। बंगला देश ने धर्म के नाम में जान लेने और जान देने, दोनों को निरर्थक बना दिया है। हम पिछले ७५ वर्षों में काली जानें से और दे चुके, अब उसी निरर्थकता समत।

महत्वपूर्ण नवीन प्रकाशन

लोकनीति

विनोबा

लोकतन्त्र में लोकनीति ही बलनी चाहिए। लोकनीति के बिना लोकतन्त्र ही एक रचना में विनोबाजी ने लोकनीति के प्रायः सभी पहलुओं पर प्रकाश डाला है। नवसंपादित संस्करण।

मूल्य : दो रुपये

श्रुति विनोबा

श्री श्री. मन्नारायण

मैसूरु समाज के शीर्षक बनी से विनोबाजी के साम्प्रदाय-संग्रह से रहे हैं। विनोबा के अनेक जीवन-व्यवहारीयों को मैसूरु ने सुदृष्टता से पढ़न दिया है। जीवन, इति, विचार और देन के बारे में सर्वांगीण रचना।

मूल्य : सात रुपये

सर्वे सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, बाराणसी-२

दुनिया एक विश्व की ओर जा रही है सर्वनाश की ओर नहीं

—विनोबा

(दिनांक २२-२२-७२ को परमेश्वर आश्रम, पठनार (बर्मा) में श्री विनोबा द्वारा विद्वानों के कार्यकर्ताओं को दिये गये प्रश्न के उत्तर)

प्रश्न — बुद्ध लोगों का कहना है कि भारत की राज के साथ जो संधि हुई है, उससे भारत कम के पक्ष में फँस जायेगा और इन्दिराजी भारत को कम्युनिज्म की ओर ले जा रही है। आपकी क्या राय है ?

उत्तर — यह उर घुले नहीं है। भारत की सत्त के साथ हुई संधि के कारण भारत कम के पक्ष में जायेगा, पर इन्दिराजी उसकी कम्युनिज्म को तरफ ले जायेंगे ऐसा मैं समझता नहीं। वह भारत की सभ्यता का आदर रखते हैं। "सुल-दृश्य कमे इत्या साभानामो जयायुषी", ऐसा योवा का आदाव नकर वह बाकी है। वह भारतीय सभ्यता से प्यारी मिलित है। वह बोधन, धर्म के मान्य-विहित में और पूना में पढ़ी है। इन दो जगहों में उनका आचार्यभार विचारों से सम्पर्क हुआ है। समन्वय में नहीं मालता कि वह कम्युनिज्म लाया जायेगी। यह ठीक है कि कम्युनिज्म उनका 'एनस' साधन' (मैरपायल) करने की कोशिश करेंगे। यह तो हर एक पार्टी का रवैका है। हर पार्टी बिना ही मरता है नाम टटाने की कोशिश करती है।

विनाश कर रहा है। वैदिक-वेदांग (सोपन सात) तक पहुँच गया है। वह मनुष्य के विनाश पर बन्दुल (बाण) रहेगा। मुझे उममे बाकी जाना है। छोटे-छोटे शास्त्र जो होते हैं, वे अहिंसा के विनाश हैं। वेदिन वेगम अहिंसा के मनुष्य हैं, मन्वीक हैं। वे भारत के सबसे बड़े (एनीस) रखते हैं—दोस्त विदुष्यमन (सर्वनाश) या अहिंसा। इसलिए मुझे मज नहीं कि चीन, कम, अमेरिका जैसे बड़े राष्ट्र कागलित युद्ध में बूट पड़ेंगे। छोटी-छोटी सजाहरी चलती

रहेगी उसमें बोलिंग (सामुलन) की कोशिश करते रहेगे। अभी इन्दीरालों ने कहा है कि बयना देस की सरकार का बयना देस पर पूरा काबू होगा, तब हम उसकी मान्यता देंगे। मान्यता नहीं देंगे, ऐसा नहीं कहा। अमेरिका ने अभी 'बोसि' दिया (नैना दिव्यानी) है कि हम बयना देस को 'दुसुमनिटीशन' (मानवता की) मदर दे सजते हैं। तो शुरू होगा धीरे-धीरे। दुनिया 'वनरकड' (एक विश्व) की ओर जा रही है, सर्व-नाश की ओर नहीं। इसलिए कम से जो संधि हुई, उससे मुझे धय नहीं। जब वह हुई उसी वकत मैंने अहिंसा दिया था कि बहुत अच्छा काम हुआ। राजाजी ने भी उसको अच्छा माना। हम उस संधि के कारण जनता जेब में बने जाते हैं, तो बेरूफ साहित होये। और, इतना बेरूफ इन्दिराजी नहीं हैं। उन्होंने जो बहुत बुद्धिमत्तापूर्वक काम किया है, वह है एक-दम एनसर्वा 'सीम फायर' (युद्ध-विनाश)। एनस दुनिया चुक हो गयी। लोगों की समता था कि अब वह एनसम कबहीर बनेगा की तरफ हमारा करेगा। लेकिन हमने जो उद्देश्य अहिंसा दिया था वह था, बयना देस की सत्ता काता और विन्यासितों की समता का हल करना, और कुछ नहीं था। इसलिए वह पूरा होने ही, तुम्हल 'सीम फायर' कर दिया। बयना देस की स्वतन्त्र कर दिया, यह त्रिती बर्डी बसाई है, उससे भी बड़ी बसाई है 'सीम फायर'। -- बयना देस स्वतन्त्र हुआ, फिर भी परलंब है। क्योंकि अन्ता सजाहद पर ही आधारित है। जनता की सक्ति बने, इस बाकी हम यहाँ जो काम कर रहे हैं, वह बयना देस करती है। परन्तु सरकार हम ही

वह पूरा नहीं कर सके, तो हम उय देस की बयना मदर करसकेगे ?

प्रश्न — हम गाँवों में काम करते हैं, भक्षण, रैडियो आदि से सम्पर्क नहीं रखते। उसी साधन काबलत मरुमय नहीं होगी। क्या यह ठीक है ?

उत्तर — अच्छा, रेडियो आदि से सम्पर्क न रखने हुए अपने काम में तनमय ही जाना, अच्छा ही है। फिर भी जो परिस्थिति है, उससे बिलकुल ही सम्पर्क न रहा तो लोगों ने बयनीत करने में, कामसा-विचार समझाने में मदर नहीं होगी। परिस्थिति के साथ, हम जाना विचार समझाने है, तो जनता प्रमाय भी लोकमान्य पर अच्छा बकुता है। अगर सीममयन की जातारगी नहीं रही, तो उनके ससरकारक नहीं होये। बयना देस स्वतन्त्र हुआ, कि मो परलंब ही, वरीक जनता ससरकार पर ही आधारित है। जनता की सक्ति बने हम बास्ते हम नहीं कर सके, तो हम उस देस की क्या मदर कर सके ? इन तरफ से बयना देस के प्रश्न के साथ विचार ऐसा करेंगे, तो लोगों को समझाने में मदर होगी है। इसलिए परिस्थिति और नैरमानस से सम्पर्क रखना जरूरी है।

कार्यकर्ताओं के लिए सूचना

एनसमक कार्यकर्ता परिचय-कुत्तिका मार्च '७२ तक प्रसारित हो चरनी। अब तक १३०० कार्यकर्ताओं का परिचय पूरवित हुआ है। दिन कार्यकर्ताजी ने कभी तक परिचय न भेजा हो वे कृपया शीघ्र भेजना दें।

कार्यकर्ता से अपेक्षित जानकारी— नाम, पता, जन्म तिथि, मातृनामा, ज्ञान और कार्य के अनुभव। जिन्होंने अब तक फोटो नहीं भेजा है, वे अपना ज्ञान फोटो यथाशोभ भेजना दें।

संस्थागत
समन्वय विभाग, गाँधी मन्दिर, एक निधि राजघाट, नयी दिल्ली—१

दक्षिण पूर्व एशियाई देशों का दृष्टिकोण

भारत-पाक-युद्ध के सम्बन्ध में दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के दृष्टिकोण के अध्ययन से यह पता चलता है कि भारत की उच्च क्षेत्र में नया प्रतिष्ठा है। बहुत सारे देशों में दोनों देशों के लिए सहानुभूति व्यक्त हुई। जब पाकिस्तान द्वारा भारत के हवाई अड्डों पर बमबारी की जा रही थी तो बहुत सारी राजधानियों में इस बात की चिंता व्यक्त की जा रही थी कि कहीं अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध न हो जाय। आरम्भ में यह बात समझी जा रही थी कि एक भारी-भरकम दावब का युद्ध एक दुर्घटनाग्रस्त होने से हो रहा था, सरकारें कोई स्पष्ट आलोचना करने से परदा रही थी। यह भी माना जाता था कि भारत को सेना कोई सख्त प्रभाव नहीं डाल सकेगी, परन्तु यह विचार जल्दी ही बदलने लगा। दस्तावेजात्मक के प्रचार से भारतीय सेना की विजय पर परदा न पड़ सका। उनी समय कुछ सरकारों ने उपमहाद्वीप में मानि-सामना की बात सुन ली। बम-के-कम दी राज्यों के अल्पसंख्यकों ने खोमती गांधी और महिमा खाँ से युद्ध-विरोध के लिए अग्रणी की। परन्तु युद्ध-विरोध को अग्रणी के साथ ही भारत और पाकिस्तान, दोनों देशों के मित्रता की बात की गयी थी। यह दासविरोध बिनकुल भुना दी यों कि युद्ध का उत्तर-दाविश पाकिस्तान पर था। कुछ देशों में दोनों को बराबर रखने की कोशिश की गयी थी। बंगला देश की जनता पर पाकिस्तानी सेना ने जो अत्याचार किये थे उनको कोई विशेष महत्त्व नहीं दिया गया था। मलेशिया के लोगों में भारत के प्रति सहानुभूति थी परन्तु नवी दिल्ली की सरकार उम्मेद प्राप्त न उठा सकी। मलेशिया में भारतीय कूटनीति की अग्रगण्यता इस बात से अग्रगण्य ही है कि बंगला देश की परिस्थिति के सम्बन्ध में खोमती गांधी ने मलेशिया के प्रधानमंत्री मुन सन्तुल उज्जाक को जो पत्र

लिखा था उसका उत्तर दो महीना बोंट जाने के बाद अब तक नहीं आया है।

मलेशिया का दृष्टिकोण

मलेशिया की सरकार अपने सभी पक्षियों से अग्रिम यह बात नहीं रही कि युद्ध बन्द किया जाय। यह बात दोनों देशों से नहीं गयी। मानवीय मूल्यों के आधार पर तुल्य अन्तुल उज्जाक ने दो औपचारिक ज्ञापनों की। इस बात पर जोर दिया गया था कि मलेशिया अत्यन्त है परन्तु यह चाहता है कि जल्दी शांति स्थापित हो। परन्तु यह बात स्पष्ट है कि मलेशिया की सरकार पाकिस्तान को रज करना नहीं चाहती थी और दिल्ली के रज होने का उसे कोई आन न था। बंगलादेश पर भी जो नया बाधाबल बना है, जिसमें इस्लाम पर जोर दिया जाता है, इस नाते पाकिस्तान के लिए मलेशिया सरकार की सहानुभूति समझी जा सकती है। परन्तु भारतीय दृष्टिकोण से यह बात दुःख की है। दूसरा देश विमने कि एक सन्तुलित विचार अग्रिम किया था इण्डो-नेशिया था। यहाँ की धार्मिक विचारों ने राजनैतिक कारणों से पीछे डरेन दिया। सरकार का सबसे बड़ा मुद्दाम देश होने के नाते इण्डोनेशिया की सहानुभूति दस्तावेजात्मक के प्राप्त थे। अग्रिम राष्ट्रपति सुन्दरी ने यह स्पष्ट कर दिया था कि उनकी सरकार युद्ध के निरन्तरियों को दोगी नहीं उधारेगी और उत्तर देगी। युद्ध के बीच इण्डोनेशिया ने बीच-बचाव करने के लिए कहा था परन्तु इसका कोई परिणाम नहीं आया। कि भी यहाँ सरकार की यह इच्छा थी कि दोनों लड़नेवाले देशों में सम्मिलित बना रहे। पाकिस्तानी राष्ट्रपति को अज्ञात में जिनकी सहानुभूति प्राप्त हुई उनकी भारतीय राष्ट्रपति को नहीं। इसका कारण यह नहीं था कि भारत का राष्ट्रपति अपने देश की परिस्थिति की प्रभावशाली रूप में व्यक्त करते

में अग्रगण्य रहा था। बल्कि इसका कारण जनता और नवी दिल्ली के बीच निरन्तर दुःख वनों के बीच मतभेद था। भारत ने कम्बोडिया के सम्बन्ध में होनेवाली जनता सम्मेलन में शरीक होने से इनकार कर दिया था। सम्मेलन बुलानेवाला देश होने के नाते इण्डोनेशिया यह बात भूषण नहीं था। सम्मेलन की अवसरता का कारण भारत का उच्च सम्मेलन में शरीक न होना कहा जाता है। भारत-पाक-युद्ध में इण्डोनेशिया का दृष्टिकोण और अग्रगण्य को सुझावों के बाद के युग में दक्षिण पूर्व एशिया में अन्तर्राष्ट्रीय बीच-बचाव करनेवाले देश होने की कोशिश को नवी दिल्ली ने समर्थन नहीं दिया था। दक्षिण पूर्व एशिया में एक बड़े और जनसाधन वाले होने के नाते इण्डो-नेशिया उस मैदान में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका रखना चाहता है। यह मानता है कि वह नवी दिल्ली के अग्रगण्य से बाहर दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्रों में जनार्थ की सुझाव महत्त्वपूर्ण है। और, यह वह भी अग्रगण्य रखता है कि नवी दिल्ली उसकी इस भूमिका की स्वीकार करे।

पाइलैण्ड की प्रतिक्रिया

अभी पाकिस्तान सीधे एशिया का एक अग्रगण्य है कि भी यहाँ की सरकार अत्यन्त रही। युद्ध विरोध के बाद 'बेलाफ पोट' में देश पाकिस्तान का दृष्टिकोण प्रकाशित हुआ और पाकिस्तानी राष्ट्रपति महिमा खाँ के प्रतिनिधि के नाते विरोध का बंका गये। मैदान एशियाई राष्ट्रपति महिमा ने सभी परिस्थितियों का यह निर्देश दिया कि वे युद्ध को बन्द हुएवाले छात्र करें, नौई सम्मिलित अग्रगण्य नहीं।

पाकिस्तान की उत्पत्ता का कारण यह नहीं था कि उच्च परिस्थिति को समझ लिया था। बंकाक में यह समझ बना था कि भारत पाकिस्तान पाकिस्तान पर बंका कर गया। युद्ध की लड़ाई बढ़ रही थी और भाग के उद्देश्यों को बंकाक पूरे और के नहीं समझ पा रहा था। परन्तु पाइलैण्ड के लोग एक धार्मिक

आत्मनिर्भरता किसकी ? कैसे ?

—एत० एत० अग्रदर

प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने राजनैतिक और सैनिक एक महान विजय के साथ यह कहना शुरू किया है कि इस विजय के बाद हमें आराम से बैठना नहीं है, बल्कि हमारे ऊपर जो उदात्त दायित्व आया है उसके निर्वाह के लिए कठिनाई होना है, और कठिन-से-कठिन परिस्थिति के मुकाबिले के लिए तैयार रहना है। राजनैतिक और सैनिक विजय को काम में रखने के लिए अतिवादी है कि भारत आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बने और देश की गरिबी दूर हो। संकट की पड़ी में जिस प्रकार देश एकजुट होकर खड़ा हो गया उसी तरह श्रीमती इन्दिरा गांधी मानती हैं कि गरीबी हमारे लिए एक संकट है और इस संकट से उबरने के लिए पूरे देश को एकजुट होकर खड़ा हो जाना चाहिए और इसी कारण सर्वमान्य मानस का उपयोग करने के लिए उन्होंने युद्ध की भाषा में ही देश की जनता से अपील की कि यह समय आराम का नहीं है बल्कि हमें परीखने से युद्ध करने का है। उन्होंने आत्मनिर्भरता पर बल देते हुए कहा कि उदात्त बदाने की क्षीर पूरा काल देना होगा और उसी से गरीबी दूर होगी।

श्रीमती इन्दिरा गांधी की इस अपील के उत्तर में एत० एत० अग्रदर से एक साक्षात्कार में कुछ प्रश्न पूछे गये जिन्हें हम 'भूदान-यात्रा' के पाठकों के लिए गण-तन्त्र विचार के अन्तर्गत पर विचार रूप से यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

प्रश्न :—प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की यह घोषणा कि भारत ने एक युद्ध में विजय हासिल की है अब इसे युद्ध का अन्त मानना है या गरीबी से युद्ध करना है, यह केवल एक नारा है अथवा सचमुच गरीबी दूर करने का प्रयास आरम्भ हुआ है ?

उत्तर :—आत्मनिर्भरता और गरीबी दूर करने के लिए जिस प्रकार के समोजन की और वैसी तैयारी की ज़रूरत होती है वैसे ही संगीजन अथवा तैयारी दिखाई नहीं पड़ती है। इसलिए प्रधानमंत्री की यह सद्भावनापूर्ण, नेकनीयत घोषणा के प्रति मन में शका पैदा होती है और ऐसा मानना पड़ता है कि उनकी यह घोषणा मात्र नारा होकर रह जायेगी। मैं ऐसा नवो कह रहा हूँ इसके कुछ कारण हैं। देश और दुनिया की जनता को परिस्थिति है उसका अच्छी प्रकार से अध्ययन हुआ हो ऐसा नहीं सोचता। एक तरफ आत्मनिर्भरता की बात कही जा रही है और दूसरी तरफ इन्टरनेशनल डेवलपमेंट एजेंसियों के 31 करोड़ डालर का ऋण लिया जा रहा है और बहुत मोटिफ कायों के लिए ? ऐतने के साथ और लघु सिंचाई के लिए। इस देश में ऐतने का बिजना विकास हुआ है उसकी दस्त दूए बिदली सहायता की आवश्यकता नहीं है। उदात्त प्रकार लघु सिंचाई के लिए ता एक पंच की भी आवश्यकता नहीं है।

दूसरा उदाहरण देना चाहूँ। अपने देश के विभिन्न हिस्सों में जैसे उदात्त, बिजनीर, और गुणिया में भूमि के सवाल पर दृष्टिक घटनाएँ हुईं, हत्याएँ की गयीं ये सब अग्रदर की आन्दोलन के प्रतीक हैं। दुनिया में जो जमींदार देश हैं उनके सिवाक जिन प्रकार सड़ाई चल रही है उसी प्रकार अपने देश के अन्दर भी जो जमींदार हैं उनके सिवाक सड़ाई हो रही है। जबकि यह अन्दर की सड़ाई समाप्त नहीं होगी तब तक आत्मनिर्भरता की कोई भूमिका नहीं बनेगी।

मैं आगे के सामने एक-एक उदाहरण रखकर स्पष्ट करना चाहूँ कि आत्मनिर्भरता केवल नारा नहीं है। अब जा तोसरा उदाहरण देखिए। अमेरिका में 100 परिवारों के पास अमेरिका की

कम्पनियों में केवल 10 प्रतिशत है जबकि इन 100 परिवारों का वहाँ की सम्पत्ति के 50 प्रतिशत पर गन्ना है। उसी प्रकार इस देश में भी 10 परिवार ऐसे हैं जिनका यहाँ के व्यवसाय पर कब्जा है। अब भारत के इन 10 परिवारों का किसी-न-किसी रूप में अमेरिका के इन 100 परिवारों से साठ-गोठ है, इसका विचार-जुदा हिन है।

चौथा उदाहरण लीजिए। यह कहा जाता है कि अपने देश में साजन का बनाव है। अगर ऐसी बात है तो क्यों हम अपने साथियों का अकोहा, यूरोप और एशिया के देशों में उपयोग करने की अनुमति देते हैं ? भारत सरकार की ओर से निजी सामग्री को इन देशों में 10 कम्पनियों को खोलने की अनुमति दी गयी है।

पाँचवाँ उदाहरण 1961 से 1962 तक 125 करोड़ 50 लाख के रूप में और 15 करोड़ 50 लाख के रूप में भारत से बिदला कम्पनियों को खोलने देना है गयी।

अब ये कुछ ऐसे उदाहरण हैं जो हमें आत्मनिर्भरता जैसे प्रश्न पर सोचने समझने परते हैं। अतः हमारा मानना है कि यहाँ कदम यह होना चाहिए कि आर्थिक नीति स्पष्ट हो, अपने देश की कम्पनियों पर अग्रदर हो और यहाँ की विचार-धारा के अनुकूल हो। अभी तक ऐसा हमें कोई नहीं मिलता है कि ऐसा कुछ गोबा जा रहा है। बेरोजगारी-जैसे अर्थ समाज को एक देश में उठाना भी दृष्टि से देना है और अभी हमने कुछ समझना माना जा रहा है और यह माना जा रहा हो कि इस समस्या के समाधान से ही देश की प्रगति हो सकती है, ऐसा कोई मतलब नहीं सोचता। इस प्रकार की बात अग्रदर की तरह से अभी तक नहीं बहाने गयी है।

भारत सरकार के 1963 के आँकड़ों के अनुसार हमारे देश में 5 करोड़ एक भूमि क्षेत्रों के पास परती पड़ी हुई है। इस भूमि की उदात्त बनाकर भूमिहीनों

सर्वोदय क्रान्ति में निष्ठा रखनेवाले वृद्धजन लोकगंगा की उपासना में लगे

—लोकगंगा के तट से श्री धीरेन्द्र मजूमदार का एक पत्र श्री कृष्णराज मेहता के नाम—

पूज्य धीरेन्द्रवा,

बारही लोक-गंगा-यात्रा चलते करीब एक माह हो रहा है। दमके कई मित्रों का ध्यान आकर्षित हुआ है, कुछ वृद्धों को भी प्रेरणा हो रही है, परन्तु वे जानना चाहते हैं कि यात्रा में आपका आहार-विहार तथा आरोग्य कैसा रहा। "लोक-गंगा-यात्रा में लोक-वर्जित, लोक-प्रथम, लोक-दुःख के क्या अनुभव साथे?" सहारा, १-१-७२ — कृष्णराज × × × त्रिय कृष्णराज,

मुन्द्रा एक जनवरी का पत्र मिला। एक माह की यात्रा सफुल्ल पुरी हुई और ईश्वर का हृषीकेश स्वस्व रहा है। मैंने पहले पत्र पर (पुष्पागम में) शाप को देर तक चारों तरफ से सुने प्राप्ति-यानि में रहने से सर्व-जगती काफ़ी हो गयी थी, लेकिन यह निराश्रय कोई नहीं है। वह तो तुम सभी जानते हो कि योही ठंड हवा से मेरे लक्ष्मी, ताँतो उभर जाते हैं। एक सप्ताह तक खाँसी रही, फिर चली गयी। सोनी की दवा में हमेशा साथ रहता हूँ। फिट एक बार साइकिल के बैटियर पर तीन मील तक जाता पडा था, जिससे कमर का दर्द बढ़ गया था। लोगों ने सबा मील कहा था, रावा मील होना तो नहीं बटना। इसके यह अनुभव था कि इन प्रक्रिया से अब धन नहीं बनता हूँ। पहले कापी बना जाता था। अब विलमाफी पर पुष्पल तथा सौती सापिदो के निस्चरों वा हट लगाकर लेटने की सुविधा कर लेता हूँ। उसके जर्किय नहीं होती है। कुन मिलाकर मेरा स्वास्थ्य सहारा से अच्छा ही है। मैं मानता हूँ, हम सब त्रिभुक्तान में लगे हैं, वह भगवत्-योगीन्द्र है। यह त्रिभुक्ते जो नाम देता है, लम्के अनुसार उसे टीक भी रखता है। इसलिए तुम लोगों को विशेष दिवादा करने की जरूरत नहीं।

वैते हर पहाड पर भिन्न-भिन्न अनुभव आते हैं। वही रहने और खाने-पीने की सुविधा रहनी है, वही अनुविधा। ऐसा हमेशा ही रहेगा। अस्ति गंगा-तट पर विच रोड बना नहीं रहता है। कड़ी जेना, कड़ी नोबा, और वही रवा की बन्दगी रहनी है। गंगा की उपासना के सन्दर्भ कोई भी उसके तट पर चलाया जायेगा उसे इस प्रकार की स्थितियों से गार कम्भा होगा। लोक-गंगा भी उनसे भिन्न नहीं है, बल्कि, शाप, उमने शरदा उबड़-साबड़ है। इस उपासना की यही विशेषता है कि जहाँ बड़ गंगा स्थिर रहती है, वहाँ बड़ गंगा हिलती-डोलती भी है। इसलिए अनुभव की विचिन्ना अधि ६ है।

मैंने कोई भावावेश में अचानक यह निर्णय नहीं लिया है, बल्कि विचार-पूर्वक, अधिक दिन के चिन्तन के फलस्वरूप इस निर्णय पर पहुँचा हूँ। दमप में इस देश की पुरानी चीजों को बहुत मानता नहीं हूँ, फिर भी प्राचीन काल की साधन-व्यवस्था अत्यन्त वैज्ञानिक है, ऐसा मानता हूँ। ता मुझे आधम के बाद बानरस्थ और बानरस्थ के बाद सम्मान को भीमिक्त में परिश्रमक के रूप में लोक-गंगा में विव-रथ, अस्ति और समाज, दोनों के स्वा-स्थ के लिए अत्यन्त सामगरी है। इसके बिना समाज बिलकुल जड़ हो जायगा, उमकी कोई प्रगति नहीं होगी। मेरे लिए भिन्न-भिन्न सस्था ही गुरुमी रही है। साठ साल की उम्र होने पर विचारपूर्वक मैंने शरपाओ से मुक्त होकर एक विविष्ट प्रकार के स्वास्थ्यकी लोकसेवक के मार्ग सोचने में लगा था, जिसे मैं बालस्थ जीवन कहता रहा हूँ। कुछ साल बाद, छठ साल पूरा होने ही, मैंने लोक-गंगा-यात्रा की बात सोच ली थी और जून-७० के अन्तिम सप्ताह में, जब राधा बाबू (पं० राजेन्द्र मित्र) के घर पर

गया था तो उन्हें अपने इस निर्णय की सूचना दी थी। जूनई में हठात् दुर्घटना हो गयी, और फिर मैं बीमार पड़कर इनके लिए बहुत-बहुत चला गया। दिग्भर में अहमदाबाद से लौटते ही अपने सेनापति विनीत से सहारा का सकेन भिना, और साथ ही निर्मला तथा विद्यालार को और से सहारा में बैठकर मार्गदर्शन करने का आग्रह देता तो मैंने एक साल के लिए यात्रा स्थगित कर दी। साल भर में तुमलोगों को जितना मुझसे मिलना था, मिल चुका था, ऐसा अनुभव करने लगा और १० सितम्बर ७१ को यानो ७१ साल आयु पूरी होती ही मैंने अन्तिम रूप से यह निर्णय लेकर तुम लोगों को सूचना दे दी थी।

मैं मानता हूँ कि सार्वजनिक सेवकों को आधम-व्यवस्था के इस आग्रहक पहुँची की प्रतिष्ठा कड़ाई से स्वीकार करनी चाहिए। साठ और से हजारी क्रान्ति के सन्दर्भ में यह और आग्रहक है। क्रांति वा सशय विचार, मूल्य तथा पद्धति-परिवर्तन होता है। हम जिन मूल्यों तथा पद्धतियों को बदलना चाहते हैं, उन्हें प्रासिद्धिपूर्वक काल से मनुष्य प्रतिष्ठापूर्वक मानना आया है, और आज भी मानता है। आज के मनुष्य में अस्तित्व है, बदल भी चाहते हैं, उद्यमवादी है, लेकिन वह बाह्य मूल्य और पद्धति बदलने की नहीं, बल्कि सफल बदलने को है। अनएव क्रान्ति के इन आग्रहों में जहाँ पर आग्रहक है कि हम क्रान्ति के पारंपरिक चलाने के साथ-साथ विचारों का अतिष्ठान जन-मायस में करते रहे, एसा और पर खब, जब हम मानते हैं कि यह क्रान्ति जयात या नेवा द्वारा नहीं, जना द्वारा होती है तब, देशकी येहीन जनाओं, उनके लिए विचार का प्रवर्तन तथा लोक-पत्रिकी की वारायना के लिए लोक-गंगा की उपासना आवश्यक

जो निष्पत्तियाँ हैं, वे वैसी ही हैं जैसे तुलसी चौखने में तीन-चार छुट के बाद कुछ बानी दिखाई देता है। वह पानी जगरी सतह का होता है जो छोड़ देने पर गुरुत्व सुख जाता है। ऐसे सौदते रहता है, और यह तुलसी पत्तों की जगहगिरी से जगरी है। मैंने, जल्दी मुट्टि हों, प्रमत्तिए कहा कि वैसा हो जाने से ऋषि की सम्मानना प्रवृत्त होगी तथा जनमानस के व्यवहार में बन्नी साधने, विद्यते प्रकृति की उद्-योधन-प्रक्रिया सरल होगी।

तुलने मेरा साहार-विहार तथा दिनचर्या का विवरण पुस्तक है। मुझको एक पड़ाव से दूसरे पड़ाव पर पहुँचने में बारह से एक बज जाना है। उमरे बाद थोड़ा धारण करके गाँव से जो दो-चार मिनट आते हैं उनसे विप्रा-संधर्षा होती है। फिर दूसरे दिन सुबह नारायण करके लोड-मन्त्रिनी की प्रशिक्षणा और गोत्र-संज्ञन करने निरलता हूँ। गाँव के रिती सुबह से कहता हूँ, 'तुम मेरा पण्ड्य बनकर चौक-दर्शन कराओ।' दरवाजे-धवागे जाता हूँ। उनके यहाँ अपनी चुर्ची पर बैठता हूँ और कहता हूँ, 'मैं सबका दर्शन करने आया हूँ। यहाँ आन-पाव के परो के लोग भी छुट जाते हैं। वे जब हकवकार पृथ्वे हैं, 'हमारा दर्शन कैसा?' तो मैं उन्हें समझाता हूँ, 'दर्शन धी कापका ही करता है। राजतन में राजा का दर्शन दिया जाता है, तो लीरतन में लोक का ही दर्शन दिया जायगा न?' इसी सम्दर्भ में अपना विचार समझाता हूँ। उन्हें समझता हूँ, कि 'जब वह आप आने लोडरो को अपने से बड़ा मानेंगे, उन्हें मनान करके रहेंगे और आने की हानि मानेंगे तब तक आपका शोषण और धमन दिन-च-दिन बढ़ता ही रहेगा। इसीलिए मैं लोड-दर्शन और लोड-उपाधना का मिलमिता धरु किया है।' मैं देखता हूँ, मेरे दृक विचार से उनका चेहरा खिन्न जाता है। एक विधान मे ली यहाँ तक कहा, 'दत्ते दिन के बाद कम से-कम देण के एक नेण हमसे कुछ आता दिने दिना ही हमारा

दर्शन करने आता है।' मेरे उससे कहा, 'अब सिलगिता शुभ हो रहा है, आपने शक्ति होगी तो तुलने मेला इनो तरह आयेगे।' मैं मानता हूँ कि हमें हम सुट्टि से लोड-जन्मिनी आराधना करनी होगी। फिर अरराहू में आनसभा होती है, जहाँ निरतार से धामस्वराज्य के विचार उप-क्षार हूँ। मैं उन्हें स्पष्ट कर से रहता हूँ कि विद्योना का यह आह्वान समाज का नहीं बल्कि समाज का है।

अहाँ तक मेरे आन-पाव का दूसरी दिनचर्या का प्रश्न है, वह उसी तरह से निष्पन्न चलता है, जैसे सहासा में चलता

था। वैतनाडो को प्रकृति में अनिष्पन्नता के रूप का पं पहर के शोचन में अत्यधिक विमम्ब होता था, कभी-कभी दो-आई बन आते थे। रिखते पड़ाव से छाया बनाकर साथ रह लेता हूँ और समय हो जाने पर बैलगाड़ी में हो सा लेता हूँ। इस तरह उन समस्या का हल पा लिया है। मैं मानता हूँ कि धारे-रीरे परिस्थिति के अनुसार 'एडवट' करने पर जीवनकम सामान्य शरीर के अ पर बाला जा सकेगा। राजवाड, विद्यालय तथा दूसरे साधियों को प्रमाण और उतरो आलोचन।

मदनेह सुम्हारा, सोरनुमाई

२६ जूनवरी

इस वार समूचे राष्ट्र में नूतन आशाएँ और विश्वास जगायेगी गणतन्त्र दिवस के इस पुनीत अवसर पर आइए !

हम राष्ट्र की एकता और हर परिस्थिति में आगे बढ़ने की दृढ़ इच्छा-शक्ति को और अधिक सुदृढ़ बनाने का प्रयत्न लें।

तभी

हम अपने देश के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह कर सकेंगे और

सुख एवं समृद्धि से पूर्ण भारत के निर्माण में सहायक बनेंगे।

विज्ञापन संख्या ८—दुपना-विभाग, उत्तर प्रदेश, द्वारा प्रसारित

विदेश-यात्रा में प्रयास और अनुभव

—आर० आर० दिवाकर

१. मैं दिल्ली से ३१ जनव्वर को सुबह रवाना हुआ और लन्दन के रास्ते न्यूयार्क पहुँची नवम्बर की आधी रात के समय पहुँचा गया १० डिसेम्बर को भारत वापस आया। हम तरह में ५० दिनों तक बाहर रहें, और हम बीच-बाहर देगो में गया।

विदेश जाने का इजिप्ती उद्देश्य न्यूयार्क में होनेवाले शान्ति के सम्बन्ध में धर्म पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन था। जनव्वर १९७० में यह सम्मेलन विटो (जार्ज) में हुआ था, यह सम्मेलन उन्ही को एक बर्षी था। मैं एक उपाध्यक्ष और बौद्ध बोध आनन्देस्वर्ती का सदस्य हूँ।

गांधी शान्ति प्रतिष्ठान का आयोज होने के लिये मैं भारत को बहुत-से रचनात्मक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों से जुड़ा हुआ हूँ। मैंने लोहा, रानी अक्षर पर कुछ और स्थानों पर हो गये। उद्देश्य था कि पुश्तै सन्तर्कों को नया रिना आय और प्रसिद्ध व्यक्तियों एवं शान्ति-आन्दोलन से जुड़े लोगों और सस्थाओं से तथा सन्तर्क स्थापित किया जाय।

विदेश और गिला सभानय को सहजता से विदेश में भारतीय दूतावासों को शहर दी गयी। प्रज्ञानमयी और विदेशमयो से भी सहाय्य की गयी।

२. मैंने जिन दूतों पर भावों की से निम्नलिखित हैं

(१) शान्ति, निष्पक्ष-शान्ति और शान्ति-सहाय्य।

(२) गांधीवादी विचारधारा से दिल-पसरी रहनेवाले शान्ति और सहाय्य।

(३) सहाय्य।

(४) श्री अरविन्द की सजानदी।

३. अक्षर ७३२।

(५) योग की सहाय्य और सम्बन्ध।

(६) प्रसिद्ध पत्रकारों और सम्पादकों से सहाय्य।

(७) सांस्कृतिक प्रणयन, विधेय और पर मुक्ततात्मक अक्षर।

(८) विदेशों में भारतीय।

(९) सांस्कृतिक फिल्म-शीतली तथा बय।

(१०) बगना देह।

३. सभी विषयों पर हमारा अनुभव निम्नलिखित है:

(१) अहिंसा, शान्ति-प्रयास, धर्म और शान्ति, अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति, विना युद्ध का सत्कार और विना युद्ध के साक्ष्यों का निराधार आदि के सम्बन्ध में मैंने कई व्यक्तियों और दूतों से मुलाकात की। शान्ति के विनियमों में अत्यन्त-अन्य मार्ग और दूतों के अलग-अलग विचार हैं।

उपरोक्त 'शान्ति के साथ शान्ति' में विचार रखत है। बहुतों का यह धरात है कि अन्धी की स्थिति में धार्मिक सस्थाओं का विहित स्थाय है और उन्हें जाने व जाने का प्रयास बेकार है। सामग्री से लोग सोचते हैं कि इतनी शान्ति-सस्थाओं के प्रवृत्तों के बावजूद कुछ प्रगति नहीं हुई है। मैं समझता हूँ यह विचारों की बात है। जो लोग विचार रखते हैं, उन्हें रचनात्मक और से बितान करना चाहिए और अहिंसा द्वारा शान्ति स्थापित करने का विचार होना चाहिए।

अन्तर्राष्ट्रीय और पर लोग अहिंसा, सहाय्य राष्ट्र सय सहाय्य के प्रयास हुए हैं। संयुक्त राष्ट्र की दक्षिणी अफ्रीका को जानेवाले हथियार पर पाबन्दी लगाना अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में पाबन्दी के अन्वयार इधर से सहयोग की सहाय्य है। परन्तु राष्ट्रीय स्तर पर सज नहीं, केवल जनतही अहिंसा का समर्थन कर सकती है।

(२) बाजपीय का विषय कुछ भी ही लोगों और दूतों से मुझसे बगना देह की समझा पर जानकारी लेनी चाही। ३१ नवम्बर की जब मैंने भारत छोड़ो पा, युद्ध का इतना सजता नहीं था। अब

इन्दिराजी बड़ी शक्तियों से बिन्दुन निरास हो गयीं तो युद्ध अन्तिमार्थ हो गया। बड़ी शक्तियों ने अहिंसा ही को पक्ष बिलने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं किया। उन्होंने कोई साथ सहाय्य भी नहीं की। भारतीयों के विरुद्ध विदेश सहायता की साक्षरगटा यो उन्ही केवल एक सौधार्द सहाय्य मिली। मैंने लोगों को बताया कि बगना देह की समझा कैसे उरान हुई। बगना देह की समझा बगना भाया को बराने और आर्थिक शोषण का परिणाम है। अगर कोई सहाय्यों से मा पर नहीं आता तो भारत को कोई किच नहीं हानी। परन्तु १ करोड़ हिन्दू, मुसलमान, श्याई और बौद्ध भारत में आ गये, अन्धी बगना को कोई आशा नहीं की। कुछ लोगों का अब तक पार्कि-रान से सहजगृहीत है, नचोकि भारत एक बड़ा देश है। सहाय्य को हमने सहजो परिचिति शुरू से ही नहीं बजानी है। बहुत कम लोग का पना है कि भारत में ह रत में एक व्यक्तिय मुसलमान है और पूर्ण पार्किस्तान, पार्किस्तान का बहुसंख्यक राज्य था। मैंने लोगों को यह भी बजया कि गांधी सजान्दी के बीच माओवादी कार्यक्रमों ने पार्किस्तान-हिन्दुस्तान के लोगों से मिलने की राह ढूँढने की बहुत कोशिश की परन्तु पार्किस्तानी सरकार ने कोई उत्तर नहीं दिया।

(३) बहुत सारे छोटे दलों का विकास और प्रगति बसकर मैंने बहिन रह गया। ये देव दक्षिणी कोरिया, पार्किस्तान, तैवान, मलेशिया, इराक है। ये देव सड़कों, इमारतों, उद्योगों, सफाई, रोजगार, मोटो, डेजोरोवन तथा प्रगति और सुखी व यूरोपीय देशों के बराबर हैं, और भारत को सुख में बहुत आगे है। सार-प्रण तो यूरोपीय देश मालूम होता है। इराकईय भी एक नमूना है।

मैंने कि मैंने देह में कहा है, 'अहिंसा बलित देशों को बन्धी ही, विना बिनामि देशों के दोषों को दुहलने हुए बिनामि देह बन जाना चाहिए।' सारान और इराकईय में नास्ट नचको की सहाय्य नहीं

जाता है। यूरोपीय देशों में यद्यपि मडि-साखी की युक्ति के आन्दोलन हैं, परन्तु उन्हें भीखा समझा जाता है और उनके साथ वित्तियों की तरह खोला जाता है। यह व्यवस्था का विषय है कि वे देश जो पिछड़े हुए और पूर्वी बहुतायत में कंस और वरी इतनी लक्ष्मी कर पये कि वे आधुनिक मयों जाने हैं। क्यों भारत के नगरों में प्रगति, आधुनिक जीवन की आत्मनिर्दि, कीर आधुनिक सुविधाएँ पर्याप्त नहीं हैं। भारत में पत्र-पत्रिकाएँ कम पड़ी पायी हैं। मैं इसकी अन्वयार्थ-व्याख्या पर प्रमाण नहीं डाल रहा हूँ। भारत में जीवन का स्तर अभी बहुत भीखा है।

इसका स्तर में वृद्धि और लघोपर के विभाग के अतिरिक्त कुछ और प्रयोग दिये गये हैं, जो नये हैं। यहाँ के लोग शीघ्र ही रहते हैं। यह खेत का एक सामूहिक ढंग है। इनमें १०० परिवार भी हो सकते हैं। मैंने १२० परिवारों का एक निष्पन्न देखा। सभी परिवारों के बच्चे और यद्यपि साथ रहते हैं। उम्र के विज्ञान से उन्हें कोठरियाँ दी हुई हैं। उन्हें खान अल्पमा से हाई स्कूल तक शिक्षा भी जाती है। बच्चे ग्राम की जाने माता-पिता से मिलने जाते हैं। अनुशासन कर्म रखा जाता है। मणोल, कला, और शिष्टता की रीति को प्रोत्साहन दिया जाता है। शिक्षा के द्वारा स्थापित दिये हुए छोटो, छोटे उद्योगों और दूध के कारखानों में वे काम करते हैं। काम सौलभतामक ढंग से होता है, और खान आधुनिक तौर पर लाया जाता है। लक्ष्मी और लक्ष्मीयों में भारी-भरकम-वैद्य संरक्षण होता है।

कृषि, दूध के कारखानों और मुर्गी के फार्म, सभी हर तरह से वैज्ञानिक ढंग पर बाधम दिये गये हैं। यह आधुनिक जीवन की याद दिनांक है। परन्तु यहाँ एक पूरा समुदाय है, जिसकी भूमि और परिश्रम सामूहिक है।

युद्ध का वातावरण होते हुए यहाँ जीवन प्रगतिशील है। यहाँ की अरब आबादी भी पुण है। सीमा पर से लगभग ४०,००० अरब टोना पर से काम

के लिए आते हैं, और फिर वापस पले जाते हैं।

(४) मैं तिन देशों में गया बहुत भारत-पानियों में से कई से बातें हुईं। दूतावास के लोगों से भी बातें हुईं। मैंने भारतीयों के बीच पेरिस, रोम, और काहिरा में, काहिरा में भारत-पान-गुद्ध छिपने के बाद, हमारे देशवासी बड़े अभीले होने हैं, और भारत के अल्पम से परिचित नहीं हैं। यह जरूरी है कि भारत के लोग अपनी सरकृति, इतिहास और परम्पराओं की अपनी क्षीति से दखें, बाहरवालों की दृष्टि से नहीं।

(५) एशियाली, सरकृति और मया के विचार में भारत के वांगदान के विषय पर लोगों से बातें हुईं। मैंने राय दी कि इजरायली का अल्पम केवल सरकृति, पाली, अल्पमपत्री तक ही सीमित न रखी जाय, नकि दूसरी भारतीय प्रयासों में भी पड़ी जाये, क्योंकि आधुनिक भारतीय भाषाओं का भी समकृति की प्रगति में बड़ा योगदान है। मेरी सल्ल, लोस और दूसरे दो तीन स्थानों पर इजरायली-जिस्त से मुलाकात हुई। जिसे मैंने आशुवद के गंधों के तये पत्रुओं पर बातें की, जिनका दर्शन पोर्ण (मैमूर एण्ड) के देबरतनी की हुआ है और जिनका ज्जेल 'मन्तोदर्शन' में है। वे यह बात सुनकर बहुत अक्षित हुए।

(६) ह्वेन के गहरू वीले श्री मनोरवा में महाकृति महेल कोषी २००-२०० अमेरिकी भण्डों के साथ ठहरे हुए थे, जो 'ट्रैन्सेन्टन मेडीटेसन' का अल्पम कर रहे थे। महेल योगी की 'स्टुडेन्स एन्टलेक्शन मेडीटेसन सोसायटी' बननी है। ४० देशों से अधिक में इनके केन्द्र हैं। स्वयं अमेरिका में कई केन्द्र हैं। उनका हेडक्वार्टर सनीकेस में है।

(७) मैं महाराष्ट्र किम के सम्बन्ध में कुछ नहीं कर पाया।

(८) अर्थिक सहाय्यी के विनियमों में सरकार ने स्वयं दूतावासों को लिप्त

भेजा है। जोर लगान में एक कमिटी भी बनी है, थी अन्ना पत्र किमके अल्पम है।

(९) मैं श्री किंगटोफर हिलमके योग इन्स्टीट्यूट भी गया। उनकी पत्नी और उनके लक्ष्मीयों से भेंट हुई।

यदिन में श्री इलाहाबाद घोषणी योग की शिक्षा दे रहे हैं—आधुनिक जीवन देती।

पश्चिम के कुछ देशों में यहाँ और इसी धर्म के लोग योग की हित्कृत से जोड़ते हैं। महेल योगी इस दृष्टिकोण का लक्षण करते हैं।

मध्य प्रदेश ग्रामदान-अभियान

मध्य प्रदेश सर्वोदय मण्डल द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार आगामी १ से १० फरवरी तक उपर्युक्त विधि के प्रच्छद में ग्रामदान-आदि-गुणित अभियान आयोजित किया गया है। विद्युत् के अन्तर्गत कार्य-कारण गाँव-गाँव परमाणुओं द्वारा प्रभावित न हो सके। सन्देश पत्र-पत्रिकाएँ। इन विभिन्न शुरु में होनेवाले प्रशिक्षण-शिबिर में मार्गदर्शन एवं परामर्शों में भाग लेने के लिए सर्वे सेना सप के यहाँ प्रो-०ठाकुरदासबग, उनकी धर्म-परीक्षी श्रीमती सुजन बग और मण्डल के वर्य कार्य-कर्ताओं की एक टोली भी जा रही है।

साम्बर

साम्बर जिला सर्वोदय मण्डल द्वारा सार्वजनिक परिधि-विधि में नगर के कुछ युवकों में प्रारम्भ-समय की गयी। सांस्कृतिक स्थापन गोष्ठी का काम बना। विधि अथ पुन प्रारम्भ किया जा रहा है। आगामी महीने में जिनमें १०० लोचसेवक और २०० सर्वोदय विधि बनाना, जिनके प्रत्येक विभाग सप और पुनर धर्मों में सर्वोदय मण्डल की तात्काली स्थापित करना, सर्वोदय सक्षिप्त की विधि, सर्वोदय-पत्रों के प्राकृत बनाना, सर्वोदय पाठ साराना और २००० हजार की राशि दातस्वरूप एकात्र करने का लक्ष्य पूरा करना है।

सर्वोदय साहित्य-प्रचार हेतु प्रशिक्षण-शिविर

आज की परिस्थिति में सर्वोदय विचार-प्रचार की विशेष आवश्यकता है तथा इस हेतु साहित्य-प्रचार में कति क्षान्ता आवश्यक है, यह प्रायः महसूस किया जाता है। परन्तु साहित्य-प्रचार भी एक कला है और शास्त्र भी, अतः सर्वोदयियों को इसका विविध विषय हो तो वे अपने सीमित समय, शक्ति और परिस्थिति में भी काफी अच्छा और व्यापक प्रचार कर सकेंगे। इस दृष्टि से श्री रामकृष्ण व्याज, अध्यापक, सर्व सेवा तन्त्र प्रजापति के शिष्य आदि पर अभी हस्त में दो प्रशिक्षण शिविर सर्वोदय साहित्य प्रचार के माध्यम से विस्तृत आयोजन करने में हैं।

प्रथम शिविर का आयोजन १६ दिनांक को हुआ। शिविर का उद्घाटन पालिकाप्राम में म. प्र. सर्वोदय मण्डल के मनी श्री महेन्द्रकुमार की अध्यक्षता

में श्री दादाभाई नारई ने इन शब्दों के साथ किया, 'युग-परिवर्तन अवश्यमान है।' शिव-काल में विचार-प्रचार होगा अभी सच्चा प्राम-सदस्य और प्रामस्वरूप स्थापित होगा, जिसकी दुनियाद पर गंधीजी की कल्पना का रामरक्षण बन सकता है।

१७ को दीर्घमयीय बोद्धिक शिविर का समापन श्री कृष्ण साहू, कलेक्टर महोदय, इन्दौर ने इन शब्दों के साथ किया कि—'प्रामस्वरूप-आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य जनता का सक्रिय जागृत करना है। लोग स्वयं अपनी समस्याओं को समझें और मिल-जुगकर उन्हें प्रग-पूर्वक रूप करें, यही सच्चे लोकतन्त्र का उद्देश्य है। इस दृष्टि से पाठ्य साम-प्रति पूरी मदद करेगा।'

शिविर में म. प्र. के विभिन्न जिलों की रामस्वरूप समिति के १३ कार्यकर्ता

वित्त करते हैं।

४-बंगला देश के लोग सैनिकवाद को सस्वीकार कर दें और अपनी पूरी शक्ति देश-निर्माण में लगा दें। सभी शक्ति-आन्दोलनों से यह भ्रमण की जाती है कि वे भारत-यात्र उन्मूलन-द्वि में शक्ति और न्याय के लिए कोशिल करें।

रोडेशिया

वाट रजिस्टर इन्टरनेशनल चैट प्रिटेन की कान्ता से यह कथित करता है कि प्रोट प्रिटेन और रोडेशिया की सरकारों के बीच जो समझौता हुआ है उसे रद्द कर दें और सही समझौता करके वहाँ की समस्या का हल ढूँँ। अर्थात् वे रोडेशिया में यह संस्था के शासन के लिए आन्दोलन थवायें।

—डब्लू. डार० जे.ई. मूललेटर, ३१ दिसम्बर १९७१ से

और साहब पुष्टि-लेन के ७ पार्सलर्ता तथा अन्य ५ स्वतन्त्र साहित्य प्रेमी, इस प्रकार कुल २५ व्यक्ति शामिल हुए।

२१ दिसम्बर को दूसरे शिविर का (जो पूर्ण विषयानुसार और पूरा योजनानुसार वास्तव में पहला शिविर होना था) भी आरम्भ हुआ। इस दूसरे शिविर में कुल १० विद्यार्थी शामिल हुए जिनमें एक म. प्र. के बाहर (उदयपुर) के और दो अन्य प्रदेशों में से ५ छात्रों तथा दो के और ४ स्वतन्त्र साहित्य-प्रेमी कार्य-कर्ताओं थे। इनमें से एक बहुत भी थी।

एक भाषोन्त के मुख्य अतिथि श्री चन्द्र सिंहजी मन्त्रिणा ने सर्वोदय साहित्य के तार्किक और व्यापक अर्थ को समझाया, साथ ही साहित्य-प्रचार, पार्सलर्ता के स्वात्मन्त्र एम जीव-याग पर जोर दिया।

साहित्य-विभी तथा उसके प्रदर्शन, हिवाब दिनाब, पद-व्यवहार मारि के प्रत्यक्ष शिक्षण की दृष्टि से २२ से २५ दिसम्बर तक कोपूर बाद ६ बजे तक प्रशिक्षणार्थी सर्वोदय साहित्य प्रचार पर रहे।

—सजदत भाई

स्वतंत्र बंगला देश

संसार के शान्तिमय लोगों को और से टन्डू० आर० जे.ई० ने निम्नलिखित मति की है। वे मानें सभी वही शक्तिव्यो से हैं।

१—पाकिस्तान बंगला देश को स्व-तन्त्र राष्ट्र की शक्ति से मान्यता दे। ऐसा करते पाकिस्तान अपनी एक बड़ी गलती को सुधार सकता है।

२—संसार के सभी देश बंगला देश को स्वतन्त्रता की स्वीकार कर लें।

३—भारत और पाकिस्तान दोनों सैनिक कार्यवाही बन्द करें और अपनी सेनाएँ अपने-अपने क्षेत्र में वापस हला लें और बंगला देश में अपनी लोगों को अपनी ह्दयानुसार सरकार और मान्यता द्या-

इस अंक में

साथी की समस्या : प्रतिभार की रीति-नीति, बंगला देश का इन्द्रधनुष	—समिादरीय	२५१
दुनिया एक विश्व की ओर जा रही है...	—विनीवा	२५३
दक्षिण पूर्व एशियाई देशों का दृष्टिकोण	—वी० एम० नायर	२५४
आत्मनिर्भरता किसकी ? कौसे ?	—एम० एल० अम्बर	२५६
सर्वोदय शान्ति में निरुद्धा रखने-वाले वृद्धजन सोविया की जागना में लगे	—श्री प्रो० रमचन्द्र	२५८
विदेश-यात्रा में प्रयास और अनुभव	—श्री वार० वार० दिवापर	२६१
दुनिया का शान्ति-समाचार		२६३
अन्य रुझन आप के पत्र		

वार्षिक कुल : १० रु० (सकटे कागज : १२ रु०, एक प्रति २५ सेके), बिदेस में २५ रु०; या ३० सतिग पर ४ कागस। क संके का मुद्रण २० सेते। कोट्टुगपदस चट्टु द्वारा सर्व सेवा संघ के लिये श्रावणार्थम् मनोहर प्रेष, भारगरी सेमिति

वर्ष : १८, अंक : १८, सोहवार, २१ जनवरी, १९५२

सर्वे सेवा संघ, पत्रिका विभाग
राजमण्ड, धारमण्ड, १९५२
कार : सर्वसेवा संघ

सुधाकर
राजमण्ड

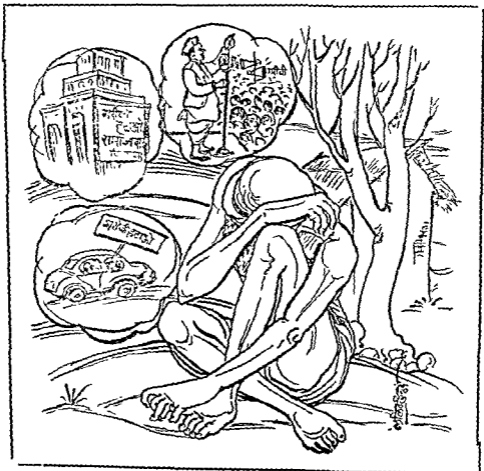


सर्वसेवा

सर्वे सेवा संघ का मुख पत्र

भ्रष्टान-रुद्ध

भ्रष्टान-रुद्ध अर्थोत्थान और प्रगति के लिए प्रयास - सा. १९५२



जोते उसकी जमीन

—महात्मा गांधी

यदि भारतीय समाज को शान्तिपूर्ण मार्ग पर सच्ची प्रगति करनी है, तो धनिक वर्ग को निश्चित रूप से स्वीकार कर लेना होगा कि किसान के भीतर भी वैसी ही आत्मा है जैसी उनके भीतर है और शान्ति शोषण के कारण वे मरौटों से घेरे नहीं हैं। जैसा जापान के उपराजों ने किया, उसी तरह उन्हें भी अपने-आपको सरदार मानना चाहिए। उनके पास बीघन है उसे यह समझकर रखना चाहिए कि उसका उपयोग उन्हें अपने संरक्षित किसानों की भलाई के लिए करना है। उस हालत में वे अपने परिश्रम के कमीशन के रूप में बाजिर खसम से ज्यादा नहीं लेंगे। इस समय धनिक वर्ग के सर्वथा अवाश्यक दिखापे और फिजूल-खर्चों में तथा जिन विमानों के बीच में वे रहते हैं उनके गवर्नरी घरे गाढावरण और कुचल डाकनेवाले पारिद्वय में कोई अन्वेषण नहीं है। इसलिए एक खास जमींदार विद्याभ्यास का बहुत कुछ बोझा, जो वे श्रमी उठा रहे हैं, एकदम पटा देगा। वह निमानों के गहरे समूहों में अथिया और उनकी आवागमनताओं को अन्तकर उस निराशा के स्थान पर, जो उनके प्राणों को सुरक्षा देता रही है, उनमें आशा का संचार करेगा। वह किसानों में पंजे छपाई और तन्तुसस्ती के नियमों के अज्ञान को दशक की तरह देखता नहीं रहेगा, बल्कि इस अज्ञान को दूर करेगा। किसानों के जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए वह स्वयं अपने को पट्टि बना लेगा। वह अपने किसानों की आर्थिक स्थिति का अध्ययन करेगा और ऐसे स्कूल खोलेगा, जिनमें किसानों के बच्चों के साथ-साथ अपने खुद के बच्चों को भी पढ़ायेगा। वह शोध के जुंभों और छात्रों को साक्ष्य करेगा। वह किसानों को अपनी सड़कों और खपने पहासि खुद आवश्यक परिश्रम करके साक्ष्य करना सिखायेगा। वह किसानों के लिए आरे

काय-कानोवे नि संकोच भाव से छोल देगा, धार्मिक स्वतंत्रता से उनका उपयोग कर सके। जो गैर-जल्दो दुमाराते वह अपनी भोजन के लिए रखता है, उनका उपयोग अस्पृश्यता, स्त्रुल या ऐसी ही अन्य बाणों के लिए करेगा।

यदि पूंजीपति वर्ग काल का सकेत समझकर सम्पत्ति के बारे में अपने इन विचार को बदल जाले कि उस पर उनका ईश्वर-प्रवृत्त अधिहार है, तो जो सात साक्ष्य पूरे आत्र गान बढ़लाते हैं उन्हें आनन-मानन में शान्ति, स्वास्थ्य और सुख के प्राम बनाना जा सकता है। मेरा दुष्ट विश्वास है कि यदि पूंजीपति जापान के उपराजों का अनुकरण करें तो वे सच-सुन कुछ खोयेंगे नहीं और सब कुछ पायेंगे। केवल दो मार्ग हैं जिनमें से उन्हें अपना मुलायम कर लेना है। एक तो यह कि पूंजीपति अपना अधिगत संपद स्वच्छा से छोड़ दें और उसके परिणाम-स्वरूप सबको वास्तविक सुख प्राप्त हो जाय। दूसरा यह कि अगर पूंजीपति समय रहते न लेंगे तो करोड़ी जापत किन्तु अज्ञान और पूरे शोध वेच में ऐसी पढ़वड़ी मचा दें, जिसे एक बलदाही हुकूमत की फौजी तागत भी नहीं रोक सकता। मैंने यह आशा रखी है कि भारतवर्ष इस विपत्ति से बचने में सफल रहेगा। उत्तर प्रदेश के कुछ भोजवान सायुकु-दारां से मेरा जो पत्रिष्ठ सणकें हुआ है उससे मेरी यह आशा नवपती बनी है।

(पंग इंडिया ५-१२-२९)

मैं जमींदारों और दूसरे पूंजीपतियों का अहिंसा के द्वारा हृदय-परिचयन करना चाहता हूँ और इसलिए वर्ग-युद्ध की अनिवार्यता को मैं स्वीकार नहीं करता। कम-से-कम संपर्क का रास्ता खेत मेरे अहिंसा के प्रयोग का एक जरूरी हिस्सा है। जमीन पर मेहनत करनेवाले किसान और मजदूर ज्यो ही अपनी ताकत पहचान लेंगे, एसी ही जमींदारी की दुहाई

या दुरापन दूर हो जायगा। अगर वे लोग यह कह दें कि उन्हें सभ्य जीवन की आवश्यकता के अनुसार बच्चों के भोजन, वस्त्र और शिक्षण आदि के लिए जब तक काफी मजदूरी नहीं दी जायगी, तब तक वे जमीन को जेतेंगे-जोयेंगे ही नहीं, तो जमींदार बेचारे, कर ही क्या सकते हैं? सब तो यह है कि मेहनत करनेवाला जो कुछ पैसा करता है उसका वही मालिक है। अगर मेहनत करनेवाले सुन्दरपूर्वक एक ही जार्ज तो वे एक ऐसी ताकत बन जायेंगे जिसका भुगताना कोई नहीं कर सकता और इसीलिए मैं वर्ग-युद्ध की कोई जरूरत नहीं देखता। यदि मैं उसे अनिवाच्य मानता होता तो उसका प्रचार करने में और लोगों को उसकी शान्ति देने में मुझे कोई तकलीफ नहीं होता। (हरिजन, ५-१२-२९)

विद्याभ्यास—वे भूमिहीन मजदूर हों या मेहनत करनेवाले जमीन-मालिक ही—स्वयं पहला है। उनके परिश्रम से ही पृथ्वी उपजाऊ और समृद्ध हुई है और इसलिए सच कहा जाय तो जमीन उनकी ही है या हीनो चाहिए, जसोन से दूर रहनेवाले जमींदारों को नहीं। लेकिन अहिंसा पद्धति में मजदूर या किसान इन जमींदारों से उनही जमीन बनपूर्वक नहीं खीन सकता। उसे इस तरह काम करना चाहिए कि उसका शोषण करना जमींदार के लिए अशक्य हो जाय। किसानों में आपस में घनिष्ठ सहकार होना नितांत आवश्यक है। इस हेतु की पूर्ति के लिए जहाँ वैसी समितियाँ न हो वहाँ वे बनायी जानी चाहिए। किसान पत्राचार आइ है। स्कूल आने की ऊारवालो को भी शान्ति को जिता दी जानी चाहिए। भूमिहीन शक्तिदर मजदूरों को मजदूरी सह हक बढ़ानी जानी चाहिए कि वे निश्चिंत रूप से सभ्य जीवन बिता सकें। यानी उन्हें सन्तुष्टि भोजन और बारीय की दृष्टि से जेतें चाहिए जैसे घर और कपड़े मिल सकें।

(दि गान्धे कॉलेजियल, २०-१०-४४)

गांधी हमारे करीब

कई लोग कहते सने हैं कि आज का भारत गांधी से बहुत अलग बढ गया है। अब उनके नाम की रट लगाते रहने से क्या लाभ ? बहुत अच्छी बात है अगर यद्यप्य ऐसा हो। गांधी देखा ही हूँ वे भारत को, और भारत के अंदर दुनिया को, जली बसाने के लिए।

अगर कुछ दिनों के प्रयासों की आशीर्षा का नाम लेकर देश को स्वदेशी की राह दिखा रही है। वह दिनकर ने कहा है कि बगला देग में जगती विद्या तो गांधीजी की हुई है।

बाग सही है कि जिना जीते-जी जीते थे, और गांधी मरने के बेईम जर्ज बर जीते। की मरणावस्था अपनी दिव्यता में जीता है ? अगर जिन्दगी में जोत जाय तो वह महापुरुष कैसे ? आने जीवन में उसे राजा भोगनी पड़नी है एक बात तो कि वह अपने समय की बुनिया से आगे नहीं बढ पाए ? लेकिन जब वह बढ चुका है, दुनिया को भाषा में शहीद हो जाता है तो समय पाकर लोग समझने लगते हैं कि जो मृत्यु प्रथम वह छोड़ गया वे यद्यप्य उनके प्रथम हैं। लेकिन उन प्रथमों के उत्तर कौन है ? उत्तर की खोज शुरू होती है तो प्रथम टटाने-फाँटे की धाग आनी है।

गांधी की प्रथम छोड़कर गये हैं वे, अन्ते-अन्ते समय बोग रहा है, भारत के करोड़ों लोगों के प्रथम बनते जा रहे हैं। भारत ही नहीं दुनिया के प्रथम बनते जा रहे हैं।

गांधी ने कहा था—विदेशी शासन का अन्त होगा बाकी नहीं, स्वतंत्रता जन-जन तक पहुँचनी चाहिए। स्वतंत्रता स्वतंत्रता में बरिदाप होनी चाहिए।

गांधी ने कहा था—साहू की समृद्धि बरधो नहीं है। यद्यप्य के भीतर की कर्मान्धन बूट होनी चाहिए।

गांधी ने "गाहट मैग" की श्राव नहीं की। गांधी ने "इतर मैग" की भी श्राव नहीं की। "गाहट मैग" समाज का श्राव है, "इतर मैग" अहिंसक का श्राव है।

आज के युग में अहिंसक अहिंस की उदाहरण समझ बड़ों जायगा, और भीतर का सौजन्यन तैकर समुद्र विज्ञान और लोहरत की बुद्धिगो का मुक्ति का पंथे बनेगा ?

परिस्थान की सामाज्यो ने स्वतंत्रता को बगानी कर नहीं पहुँचते दिया। भारत की विनाश-योग्यता, "अन्तम अहिंस" एक नहीं पहुँच रही है और बायडूर बोट के स्वतंत्रता सम्पन्न आ के अन्तम में बरतारिवाला नहीं बन पा रही है।

बरा गांधी के जाले के डाले बगों बरत रह चुकना पवन होगा कि बरा इन धार को पहुँचाने, और अहिंसा की तराज दिने जिना बुनिया की खगे ? क्या कोई एक देग भी आने बढ सकेगा ? क्या भारत अपनी कोई भी श्राव हन कर सकेगा ?

गांधी ने राज को जिता दिया की चेतावनी दी थी क्या उहका पमाण विप्लवम और बगला देग के बाद दुँडना बाकी है ? अति-समुद्धि में भी समुद्र्य भीतर से जिना कमान और द्विवा का जिना गुनाय रह सकता है, उहका उवाहरण सारी आधुनिक संभला है जिसमें पूँजीवाद और साम्यवाद सम्भन रूप से श्राविक हैं। अति-समिउ और अति-समुद्धि, क्या दोनों सम्भरा के सम्भितार नहीं बन गये हैं ?

समुद्र्य को सवा जीवन चाहिए, ममान की नयी सम्भला चाहिए, मूर्खों को सवा परिवेक चाहिए। है कोई गांधी के विराय जो समुद्र्य को एक विविध खोज में हाथ, सही रास्ता बता सके ? किसके पाठ सवा "अनुचित" है ?

जब तक समुद्र्य को उसके प्रथमों का उत्तर नहीं मिलेगा वह मूढ़-मूढ़ कर गांधी की देखा रहेगा। अगर गांधी की भद्रकी मानव के करीब जा रहा है।

नया नेतृत्व

जिन खोजे लगे में मुद्धि का उपन काम हो रहा है, और प्रामस्वरान-समझों के साधारण पर प्रसन्न-स्वराज्य-समाई मंडिन की पर गही है उनमें एक सवा नेतृत्व मानने जा रहा है। यह छोटी बात नहीं है कि जो छोटे लोग जब तक राजनीतिक दलों और साधारण के प्राच्यवी रात्र के पत्थर के नीचे दबे पड़े थे वे अब उठ रहे हैं। इन 'छोटे' लोगों की 'बुरी' बातें करते देखकर अपने आन्दोलन के वे आभाव प्रगता प्रकट होने लगते हैं जिन्हें अपने पहुँचे बल्पना से बढने के लिए बाकी योगिक करनी पड़नी थी। अपनी प्रामस्वरान-समा या प्रसन्न-स्वराज्य-समा में जब बमाल-सुहर से लेकर बालक-राजपूत तक, या निरपट निरपट से लेकर भी० ए०-म० ५० तक, लोग सान बैठने हैं और मान के प्रथमों पर अरने-बसने सन को बाग निरट हीनर बहते हैं तो समझ है कि "पव परमेस्वर" साधारण की बगला नहीं रही होगी। अहिंसक के निरट बरनी खड़ा बूट हीनी है कि आगिबो तबा दलों से दूरे हूँ हमारा समाज में भी एक सवा मच बन सकेगा है जहाँ सब साध बैठ सके हैं, और जहाँ गरीब सवनी पहुँची जिना का विराय बन सकेगा है। यह सच है स्वतंत्रराज्य-समा और प्रसन्न-स्वराज्य-समा का—सर्वान सनी उनही अशरा प्रासिमिक है।

लेकिन यह बात सेना भूय है कि बड़ने से ही प्रामस्वरान की मूय भावनाओं का प्रतिनिधित्व होने सगा है। अगला-अ-ज्वारा इतना ही माना जा सकता है कि इन सने लोगों ने साम्य-स्वराज्य का श्राव सुना है, और इनके हृदय में उस सारे से कुछ सट्टर उठो है। लेकिन इनके दिवाग सभी उन ६ बरों से दूर हैं जिन्हें हम 'प्रामस्वरान के सवा' बहते हैं। साधव जहाँ सही बग के वे बाँटे सभी तक बगानी भी नहीं सगी है। उनके दिग का बरसाता सभी उह सार के लिए नहीं सगा है कि स्वतंत्रराज्य में यत्रतूर नेतृत्व की बचीनत उत्तरान में आयेसार भी हो सगा है,

भूमि भवते ही उसकी न हो। उधो तरह सरकार भी धाव की तरह नं० १ शक्ति न रहकर लोकप्रति के मुकामि नं० २ शक्ति हो जायगी। ये धावें अपनी उनकी कल्पना के बाहर हैं। वे प्राम-विनाश की ही प्रामस्वरूप मान बैठे हैं।

बाजुर इन बमियों के यह भयोसा किया जा सकता है कि विनाश-कारा इस नेतृत्व को आगे बढ़ाया जा सकता है, और इस नये नेतृत्व के भीतर से इसके अधिक प्रगतिशील और नये नेतृत्व के निरन्तर के लिए श्रमिका बनयी जा सकती है। लेकिन ऐसा तब होगा जब उन्हें नये तानीय दी जायगी—निरप नयी तानीय। नित्य नयी तानीय ही सरकार की कर्मियों को दूर कर सकती है और रिनाय भी गाँधी को खोल सकती है।

प्रामस्वरूप-सभाओं का प्रलम्ब-स्वरूप-सभाओं के पदाधिकारियों के रूप में प्रवृत्त होनेवाले नये नेतृत्व के लिए नयी तानीय की योजना बनाने के पहिले हमारे सामने उसका रोम स्पष्ट हो जाना चाहिए। पदाधिकारियों के ६ रोम हो सकते हैं :

(१) शासन की पकड़ करना।

(२) गाँव में एतना और सहकर-वृत्ति का विकास।

(३) एक इकाई के रूप में गाँव का स्वायत्त सचयन, सामूहिक निर्णय।

(४) गाँव की प्रामस्वरूप के आरोहण में नेतृत्व प्रदान करना।

(५) गाँव का समग्र—आर्थिक, सांस्कृतिक—विकास।

(६) आगे सरकार में हलचलत प्राम-प्रतिनिधित्व के लिए मुहिमा बनाना।

ये रोम मुख्य हैं। इन्हें सामने रखकर ही प्रिलग-प्रशिक्षण के लिए सांस्कृतिक और व्यावहारिक सम्पादन बनाने चाहिए, और शिक्षित, मोठी, आदि के भाग्यन पूरे किये जाने चाहिए। चुनाव के रूप में श्रमसम्पन्न की एक योजना 'भूदान-यज'—जनवरी के अंक में प्रस्तुत की गयी है। स्थानीय परिस्थितिक के अनुसार, या विभिन्न बौद्धिक स्तर के लोगों को दृष्टि से संशोधन हो सकते हैं, लेकिन प्रामस्वरूप के मूल तरीकों की बहना, और विकास की दिशा, हर एक के सामने स्पष्ट होनी चाहिए।

नये क्षितिज पर नयी लाली

निरुत्तम और बंगला देश के दो ऐसे उदाहरण हैं जो सिद्ध करते हैं कि अगर बड़ी हिंसा और लोकप्रति में मुकामिला हो तो विजय लोकप्रति की ही होगी। अगर पहले की तरह मात्र भी बड़ी हिंसा का जीवन निमित्त होता तो विजय निरुत्तम में और पहिया बनना देश में विनयी हो गये होते। सैनिक-प्रति में क्या तुलना थी विजयकंध की अमेरिका से, और मुक्तिवादी की पहिया को फोड़ो से? फिर भी विप्लवकाम और मुक्तिवादी ने अपनी गिहली जनता के साथ मिलकर जिस 'सैनिक प्रति' का परिचय दिया है वह इस युग का चमकर है, और मात्र हिंसा की प्रति से नहीं बड़ी है।

लोकप्रति सिद्ध लोक-मत नहीं है। यह स्वयं प्रत्यक्ष, प्रचण्ड,

प्रति है। वह आगे प्रवृत्त और प्रति प्रति प्रति प्रति के लहरे बड़ी हिंसा के सामने पुटने टैन्ने से धनकार कर सकती है। छोटे देश की संगठित लोकप्रति माने ये लड़ी नयी हिंसा-प्रति के सामने चुनौती बनकर प्रस्तुत हुई है। यह एक ऐसे वास्तविकता है जो आगे के युग में राजनैतिक और सामाजिक जीवन को नया मोड़ देगी।

अगर लोकप्रति इस तरह पूरे समाज के पैराने पर साठित हो सकती है तो उनके विनाश के लिए तत्काल एक बड़ा बड़ा खेन खूब हुआ है। वह है देश का भीतरी जीवन, जो प्रतिक के हाथों में पड़ा है। लोकप्रति उसे प्रति के हाथों से निकाल कर आगे हाथों में ले सकती है। मुनिष का स्थान सांस्कृतिक-सैनिक मुक्ति से बनने हैं। मुनिष अनावश्यक है। कोई कारण नहीं कि हर गाँव, नगर, स्कूल और बालबाला अपनी भीतरी प्रति अपने मन पर कायम न रख सकें। मुनिष स्वयं प्रवृत्त और अनावश्यक का एक बड़ा कारण है।

जो देश अपना सामान्य जीवन मुनिष के बिना चला लेते का सचन प्रयोग कर लेगा वह सैनिक-प्रति के बिना अपनी प्रतिस्था का प्रयोग भी कर सकेगा। उसके हस्तप्रदा गाँव (मुनिषटल एंवकन) से नया अन्तर्देशीय जीवन प्रकट होगा।

निरुत्तम ने अमेरिकी कांग्रेस के सामने कहा है कि बड़ी सैनिक तैयारी प्रति को शक्य नहीं, उगकी संरक्षित है। कैसे? निरुत्तम के मन में अमेरिका की प्रमुता है। लेकिन हम यह देख रहे हैं कि बड़ी प्रतिनयी प्रतिनयी ही उगता सैनिक तैयारी करती जा रही हैं महामुक्ति से वे उतनी ही प्रति भयभीत होती जा रही हैं। प्रति-सन्तुनन का बाँटा उन्हें अलग चुन रहा है। उनका प्रवृत्त टूटना जा रहा है। इतना ही नहीं, बड़ी प्रतिनयी अन्तर्देशीय प्रति प्रतिनयी जा रही है। निरुत्तम में अमेरिकी और बंगला देश में प्रतिनयी कोशों की सैनिक-मुक्ति कीला नहीं चली गयी? युद्ध के नाम में सन्तुनन का परिचय देकर वे किस प्रति का संरक्षण करेंगी?

अमेरिका और चीन दाँत प्रोसर रह गये, लेकिन पहिया और पहियालाही को नहीं बचाने से। बंगला देश मुक्ति होकर रह। क्या इन पटना में कोई संकेत नहीं है? इन पटना में आनेवाली मुनिषा के लिए एक बड़ा संकेत ठाम हुआ है। वह यह है कि बत की मुनिषा लोकप्रति की है। इन संकेत की समझकर अगर छोटे देश अपनी भीतरी प्रवृत्त में मुनिष के मुक्ति हों, सैनिक-प्रति जीवन को छोटी इकाइयों में विकेंद्रित करें, राष्ट्रवाद का अहंकार छोड़कर क्षेत्रीय महत्त्व बनायें, अपनी छात्रा बाजार कायम करें, और बड़े देशों का भय और प्रत्याघरण छोड़ दें, तो कोई कारण नहीं कि उन्हें विप्लव का जीवन योजना पड़े। मुख्य प्रश्न है छोटे देशों के भीतरी प्रवृत्त और पड़ोसी के साथ युद्ध के अन्त का। छोटे देश बड़े देशों के हाथ अपनी आजादी नित्य रखकर न जायें। वे देख लें नये युग के नये प्रतिनयी नर लोकप्रति को नयी लाली कैन रही है।

आत्मनिर्भरता तथा गरीबी की समस्या

—तारकेरवर प्रसाद सिंह

एक वर्ष सघन चूना के समय सत्तापद परिवर्तन ने वह घोषणा की थी कि यह सत्ता में पुनः आने पर गरीबी दूर करने का प्रयत्न करेगी। चूना के बाद शीघ्र ही बयला देग को समस्या उभरकर सामने आयी। भारत पर युद्ध घोषा पना और भारत ने बयला देग को भुगत बनाने में सफलता पायी। इस युद्ध के दरम्यान समुद्र राष्ट्र अमेरिका ने भारत को आर्थिक सहायता देना बन्द कर दिया। यहूद ने पूँजीवाँ देग समुक्त राष्ट्र अमेरिका के विपक्ष में हैं। यह उर है कि वे भी भारत की आर्थिक सहायता की रकम में देती कर दें। इस कारण भारत सरकार यह कह रही है कि आर्थिक निर्भरता प्राप्त करना आवश्यक है। इस प्रकार अब भारत के लिए गरीबी दूर करना तथा आत्मनिर्भरता को प्रदान करना हो गये हैं।

पूँजी रहने को छूट है अतः यह एक पूँजी-वादी देग है। हाँ, यहाँ पर राज्य को पूँजी विरोधी पूँजी के अनुपात में विनियमित बढती जा रही है, पर बयला जहाँ को तहाँ है।

आज दुनिया के दूर देग तथा हर व्यवस्था में पूँजी को अधिक-से-अधिक महत्व दिया जा रहा है। उत्पादन के और साधन भीग माने जाते हैं। यही बात बनने देग में भी लागू होती है। अभी तक यहाँ यह समझा जाता रहा है कि देग में उत्पादन बढाने के लिए अधिक पूँजी की आवश्यकता है। देग में पूँजी का विभाजण पर्याप्त मात्रा में नहीं हो सकता। इस कारण विदेशी पूँजी प्राप्त करना आवश्यक है। विदेशी पूँजी प्राप्त होने पर विदेशी मजदूर तथा अन्य उपकरण खरीदने में आसानी होगी। अपना निर्माण इतना अधिक नहीं है कि उपरि उत्पादन बढाने के पर्याप्त सामानों का आयाज किया जा सके।

प्रायः आर्थिक और राजनीतिक सत्ता एक दूसरे के पुरक होते हैं। जिस व्यक्ति का वर्ग या देग के ह्रास में आर्थिक अधिकार होते हैं उसके अधिकार में राजनीतिक सत्ता भी होती है। सहायता देने वाले देग, विशेषकर बड़े देग विशेष-निर्भरता का राजनीतिक दबाव भी डालते हैं। बयला देग को सवला को लेकर यह बात स्पष्ट हो गयी है कि समुद्र राष्ट्र अमेरिका ने भारत पर दबाव डालने का प्रयत्न किया तथा आज भी उस दिशा में प्रयत्नशील है। यदि हम चाहते हैं कि भारत राजनीतिक दृष्टि से आत्मनिर्भर सत्ता-प्राप्त देग रहे तो आर्थिक-दृष्टिकोण से हमें आत्मनिर्भर होना पड़ेगा।

विदेशी सहायता
अभी तक भारतवर्ष को जो विदेशी सहायता मिली है उसमें बड़े कारणों से ही उसका ह्रास नहीं हुआ है जितना

उजनी वनराशि में सम्भव था। इसके बड़े कारण रहे हैं। (१) सहायता देनेवाले देग बयद की रकम के अन्धा ही मात्र वेचना चाहते हैं और मात्र का मन्माना मान्य नहीं करते हैं। उन्हें चाहिए था कि वे विदेशी मुद्रा उल्लेख करते और इस बात की छूट देते कि हम अपनी मुद्रियाँ से सस्ते बाजार के सामान खरीद सकें। (२) मूद की दर बहुत ऊँचा रखते हैं। यदि अन्तर-राष्ट्रीय होंड़ में मूद की दर कम रखते हैं तो अपना वस्तुओं की कीमत बढा देते हैं। (३) सहायता देनेवाले बंध डालते हैं। (४) सहायता देनेवाले देग बयद के खरीदी जाती हैं, सहायता प्राप्त करने वाले देग को अपने ही जमान में भंगते हैं। एक तो जमान की दरें ऊँची करके लेते हैं, दूसरे सहायता का रकम से या अर्जित विदेशी मुद्रा से सहायता प्राप्त करनेवाले देग का जहाज-भाड़ा देना पड़ता है। यदि बयले कम नुशान हो और उनमें सामनों का आयाज हो तो सहायता की रकम या अर्जित विदेशी मुद्रा बचे, बिना विराम की सामनों खरीदी जाय। (५) सहायता देनेवाले देग सहायता बंद समय यह भी गर्ज पना देते हैं कि सहायता लेनेवाले देग का सहायता देनेवाले देग से अनुप-अनुप मागत उपकरण पड़ेगा। ये अन्य सामान सहायता प्राप्त करनेवाले देग के विराम में सहायक नहीं होते हैं। (६) सहायता प्राप्त करनेवाले देग को सहायता देनेवाले देगों के बहुत से विशेषताओं को एक नियत बरतने के लिए करने पड़े। निम्न करने के लिए बर्ज तथा सहायता की गर्ज में ऊँची रकम देना के रूप में देनी पडती है। ये विशेषता इस रकम का बरा माग बनानी मातृभूमि को भंगते हैं। बहुत बार तो ऐसा होता है कि ऐसे विशेषता परमैत्र सहायता में भारत में पाये जाते हैं, और विदेशी विशेषताओं की आवश्यकता नहीं रहती। भारतीय विशेषता का बर नीति के होकर भी कम वेतन पाते हैं। एउने

पूँजी तथा उत्पादन
आज दुनिया में उत्पादन बढाना बन्द हो गया है। सभी देगों में उत्पादन के ह्रास ही ह्रास के रूप में या करके का में का दोनो रूप में अतिरिक्त हन पूँजी-पति या सरकार प्राप्त करती है। पूँजी-वादी देगों में पूँजीगत तथा सरकार और साम्यवादी देगों में सरकार यह अतिरिक्त हन प्राप्त करती है। यह अतिरिक्त हन का निग प्रकार से उपयोग किया जाय, इसका निर्णय कुछ मुद्दी पर लोगों के हाथों में होता है। पूँजीवादी देगों में निर्भर पूँजीगतियों, राजनीतिक पार्टी के ऊँचे अधिकारियों तथा ऊँचे सरकारी बर्जकारियों तक सीमित रहता है। सरकारी देगों में पूँजीवादि क अलावा और लोग भी विभाग में माग लेते हैं। साम्यवादी देगों में निजी पूँजी की आवश्यकता कमप्राप्त-गयी है। पर उन देगों में निर्भर को व्यवस्था बहुत ही केंद्रित है। पूँजी भारत में निजी समाधि तथा निजी

बढ़ती विपत्ता

१. योजना आयोग ने मान लिया है कि १९६७-६८ में वित्त की विपत्ता भी उत्पत्ती हो जाने वाली रहेगी। हमने पहले देखा है कि पिछले दशक में दिखावट का अधिना लाम धनियों को और कम लाग गरीबों को मिला है। सरकारी अधिकारों के अनुसार १९६८-६९, यानी चौथी पंच-वर्षीय योजना के प्रारम्भ में प्रति व्यक्ति उपभोगता-घर्ष ४८८.४८ था। १९६०-६१ से १९६७-६८ के साल वर्षों में देहाती लोगों में प्रति व्यक्ति उपभोगता-घर्ष ३८ प्रतिशत बढ़ा। दरमिय, उच्च-मध्यम और धनी वर्गों के, जो देहाती जनता के ४० प्रतिशत हैं, उपभोगता घर्ष में ४.४ प्रतिशत की वृद्धि हुई, जब कि सबसे गरीब ५ प्रतिशत का उपभोगता-घर्ष १.१ प्रतिशत घट गया। सबसे नीचे के ५ प्रतिशत से ऊपर के ५ प्रतिशत का घर्ष १.६ प्रतिशत बढ़ा, और उनके भी ऊपर के १० प्रतिशत का १.९ प्रतिशत। जैसे-जैसे हम ऊपर उठते जाते हैं वह वृद्धि भी अधिक होती जाती है, यहाँ तक कि उच्च-मध्यम-वर्गों के उपभोगता घर्ष में ४.६ प्रतिशत की वृद्धि हुई। समीपन के अनुसार यह स्थिति १९६०-६१ में भी रहती।

२. गहरों की स्थिति हमसे भी उदासा कराव रही। उनमें ऊपर के ४० प्रतिशत लोगों का उपभोग ४.८ प्रतिशत बढ़ा, जब कि सबसे नीचे के ४० प्रतिशत का घिर गया, यहाँ तक कि सबसे गरीब १० प्रतिशत का १.५ से २० प्रतिशत तक गिरा।

३. आना की जारी है कि १९६८-६९ में राष्ट्रीय स्तरों में प्रति व्यक्ति उपभोग ४४६.९८ था यह १९६०-६१ में ६४८.१८ हो जायगा, यानी ४१.१ प्रतिशत बढ़ेगा। गहरों लोगों में यह वृद्धि ६२१.० (१९६८-६९) से ८६६.७८ (१९६०-६१) हो जायगी, यानी ३९.४ प्रतिशत अधिक होगी। राष्ट्रीय और गहरों दोनों लोगों में अलग-अलग समुदायों

के लिए यह वृद्धि अलग-अलग होगी, सबसे लिए समान नहीं होगी।

देहात में ऊपर के ४० प्रतिशत का उपभोग ४७८ प्रतिशत बढ़ेगा, और गहरों के उसी वर्ग के ४० प्रतिशत लोगों का ५३० प्रतिशत बढ़ेगा। दूसरी ओर देहात के सबसे गरीब ५ प्रतिशत का उपभोग ९.५ प्रतिशत घटेगा, जब कि गहरों के सबसे गरीब ५ प्रतिशत का १३.५ प्रतिशत घटेगा। नीचे के ५ प्रतिशत के ऊपर के ४० प्रतिशत लोगों का देहात में १५.५ प्रतिशत से २६.२ प्रतिशत बढ़ेगा, जब कि गहरों में सिर्फ ५ प्रतिशत ही बढ़ेगा। इन अंशकों से स्पष्ट है कि १९६०-६१ में विपत्ता १९६८-६९ की अपेक्षा अधिक हो जायगी।

अगर हम वित्तुल नीचे के १० प्रतिशत को छोड़कर उनके ऊपर के १० प्रतिशत पर ध्यान दें तो देहात में उनमें प्रति व्यक्ति का उपभोग १९६०-६१ में सिर्फ २४४.०८ होगा, और गहरों में २५८.७८ (१९६८-६९) में गहरों के ऊपर के ५ प्रतिशत लोगों का उपभोग नीचे के १० प्रतिशत से ऊपर के दूसरे १० प्रतिशत के उपभोग का ९.१ गुना था, १९६०-६१ में यह बढ़कर १३.४ गुना हो जायगा।

४. योजना-आयोग मानता है कि १९६०-६१ के दशकों पर प्रति व्यक्ति उपभोग से हम २०८० प्रति माह उपभोग अनुमान है। देहात और गहरों में योद्धा अन्तर स्वाभाविक है। १९६८-६९ के मूल्यों पर देहात के लिए प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष बाजार ३२४४८० होंगी बाह्य, और गहरों के लिए ४८६८०१। अगर आर्थिक विपत्त योजना-आयोग की आशय के धनुषार ही तो भी १९६०-६१ में देहात में भी लोग नीचे से २०-२० प्रतिशत की संख्या में हैं उनकी प्रति व्यक्ति वार्षिक आय ३१७७ होगी, और ३०-४० प्रतिशत की संख्या के लोगों की ३८३.९१

एक प्रकार १९६०-६१ में देहात में सम-मग ३० प्रतिशत लोग ३२४.०० के न्यूनतम स्तर के नीचे रहेगी, जब कि १९६८-६९ में यह प्रतिशत ४० था।

गहरों में १९६८-६९ में ५० प्रतिशत लोग ४८६.८० के न्यूनतम स्तर के नीचे से १९६०-६१ में ५० की जगह ४० प्रतिशत लोग निम्नतम स्तर के नीचे रह जायेंगे।

अगर योजना के सभी तथ्य पूरे हो जायें तो १९६०-६१ में गरीबों की यही स्थिति रहेगी, किन्तु पिछले दस वर्षों का अनुभव बताता है कि जो सोचा गया वह पूरा नहीं हुआ। आगे खादों और भी अधिक चौड़ो होती दिखाई देती है। इसका अर्थ यह है कि गरीबों की स्थिति में सुधार नाम मात्र का ही हो सकेगा।

५. अगर पंचवर्षीय योजनाएँ अपना मध्यम पुरी करनी जायें तो १९६०-६१ में राष्ट्रीय उपभोग प्रति व्यक्ति १९६८-६९ के ४४६.६८ से बढ़कर ४९५.७८ हो जायगा। इसका अर्थ यह है कि पूरे १२ वर्षों में वृद्धि केवल ८.६ प्रतिशत होगी। गहरों में यह वृद्धि १९६८-६९ के ६२१.०० प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष से बढ़कर ६६४.४८ होगी, जो १२ वर्षों में ७.० प्रतिशत होगी। मध्यम और नीचे के लोगों की स्थिति में सुधार इसके भी कम होगा। देहात में नीचे के ५ प्रतिशत लोगों को छोड़कर (नीचे से ही) ४० प्रतिशत लोगों का उपभोग ३.५ से ५.८ प्रतिशत के बीच बढ़ेगा, जब कि गहरों में नीचे के ४० प्रतिशत लोगों का ३.७ से ६.६ प्रतिशत घट जायगा। इस प्रकार देहात में ३५ प्रतिशत से अधिक और गहरों में ५० प्रतिशत से कुछ ही कम लोग वरिष्ठतम न्यूनतम उपभोग से नीचे रह जायेंगे।

गहरो में तो १९६८-६९ की अपेक्षा १९६०-६१ में न्यूनतम स्तर से नीचे रहनेवालों की संख्या बढ़ जायगी। स्पष्ट है कि गरीबी बढ़ेगी। हर व्यक्ति को न्यूनतम आय की गारण्टी हो, यह फिर १९६०-६१ के बरत भी कम जायेगा, कहा नहीं जा सकता। —समसुन्दरी: रामसुन्दरी

जैसे हजार बाल की गुनाबी और सोपन के फनस्वरूप बेहोश जनता द्वारा पद्धति-परिवर्तन का विचार तथा पुनर्वास करना कोई आसान काम नहीं, जब कि मानवी विदेशी गुनामी को हटाने में सैन्टो महा-पुरुषों को हट्टी बनने की आवश्यकता हुई थी, जो प्रायः अविद्या-बाल से प्र-कृत मान्यता के अनुसार जलपाणकारी पद्धति को विनाशकारी समझकर, इसी बेहोश जनता द्वारा उनको पलटने का प्रयास निरस्त करने के लिए कितने हजार सफलित तथा समर्पित महापुरुषों को हट्टी बनाने होगी, इसकी कल्पना कर लीजिए । अत्यन्त आर जैसे तल्लु मिथो से मेरा विवेक है, बाव इस प्रकार की छिटपुटी भूमिगत पर सोचना छोड़ दें, और कान्ति की गहराई में बैठने का प्रयास करें ।

सत्याग्रह

आगे "सत्याग्रह" का भी प्रश्न उठता है, इसलिए सत्याग्रह को भी समझ लेना चाहिए । सत्याग्रह की प्रथम शक्ति यह है कि जिस तरह का आप आग्रह करना चाहते हैं, वह उस आपरा है । वास्तविक यह है कि सार्वजनिक धर्मों पर सम्राज का कोई अज्ञ अत्याचार नहीं है, इसलिए अत्याचार के विरोध में सार्वजनिक धर्मों पर सत्याग्रह नहीं हो सकता है । कान्ति के लिए सत्याग्रह कोई सामान्य टेक्नीक नहीं हो सकता, बल्कि उसका प्रयोग ही सकता है । सत्याग्रह का प्रयोग स्थानीय तथा स्थानिक भूमिगत धर्मों में, अल्प प्रत्यक्ष में कुछ विविध अत्याचार का प्रतिरोध सम्भव है । वह जो घोषणा जाता है, सत्याग्रह से समझ का विचार निरस्त सार्वजनिक धर्मों पर ही हो सकता है, भू-है । इसीलिए सत्याग्रह के अतिरिक्त सत्याग्रह पर बहुत जोर देते थे । उन्होंने राष्ट्रीय धर्मों पर जो प्रयोग किया था उसे उन्होंने "विभिन्न नागरिक-धर्मों" की संज्ञा दी थी । उन्होंने सत्याग्रह का उपयोग हमेशा स्थानीय तथा प्रयोगिक प्रश्न पर ही किया था, जैसे

क्या भारत को अणुबम बनाना उचित है ?

—स्व० डा० विक्रम साराभाई

दिनांक ३० दिसम्बर, १९७१ को देश के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक और अणुसंशोधन-सामग्री के अध्यक्ष डा० विक्रम साराभाई का अचानक हृदय गति रुक जाने से देहावत हो गया और इस प्रकार विज्ञान-जगत का एक जागृतमान्यतम मनुष्य संशोधन के लिए त्रिस्तुत हो गया । स्व० डा० विक्रम साराभाई वैज्ञानिक होने के साथ ही एक विचारक भी थे । यह लेख १ जून १९६६ को धर्म में एक पत्रकार-सम्मेलन में व्यक्तन किये गये उनके विचारों पर आधारित है । देश की वर्तमान परिस्थिति के सम्बन्ध में उनके ये विचार विचारोद्यक हैं जोकि आज अणुबम बनाने को भाग्य भारत-सरकार से को जा रही है ।

पत्रकार अणुबम के बारे में आगे क्या विचार है ?

डा० साराभाई : यदि मैं आगे के इस प्रश्न का उत्तर देती प्रत्यावना के साथ हूँ तो सीधा उत्तर नहीं, जो होना चाहिये । मेरा ध्यान है कि हम पहले अपने-आप से यह पूछें कि हमें अणुबम चाहिए किसलिए ? एक बात तो स्पष्ट है कि यह एक ऐसा लक्ष्य प्राप्ति करने का साधन-माध्यम है जो हमारा नहीं हो सकता । अणुबम ने हिरोशिमा तथा नागासाकी में जो भयंकर नृशंख विनाश उभारे सभी लोग भयभीत हो गये । मैं नहीं

चाहती-आशाग्रह । अगर कुछ प्रश्नों पर सत्याग्रह का स्थानिक प्रयोग हुआ भी था तो वह युद्ध विरोधी सत्ता के स्थान पर स्वदेशी सत्ता को स्थापना के युद्ध की प्रतिष्ठा में ही था । अगर कान्ति का अर्थ मूल्य परिसर है, सार्वजनिक-परिवर्तन है, और जोकि मूल्य को स्वीकृति तथा मान्यता सार्वजनिक होने है, इसलिए कान्ति सार्वजनिक-प्रक्रिया से ही सम्भव है, किसे प्रश्न का प्रतिकार-सम्भव पद्धति से नहीं ।

आज अत्याचार का निवारण करना चाहते हैं, मानव तथा सोपन-मुक्ति चाहते हैं, विनियम की भारत हटाया जायें । आनेको समझता चाहिए कि मानव की भाग्य सार्वजनिक है, विनियम की मानव सार्वजनिक है और अत्याचार तथा सोपन मानव तथा विनियम की भारत का परिणाम-मात्र है । अत्याचार के मूल्य मानव को आराधना तथा पूजा

समझता कि लोग ऐसी भयंकर चीज के साथ जीना पसन्द करेंगे । (कन्तु यह स्पष्ट है कि हम सबको अपनी सुरक्षा की चिन्ता होती है । पूरे लगवा है कि प्रत्येक मनुष्य को तथा राष्ट्र को अपनी सुरक्षा की चिन्ता करनी ही चाहिए । हमें यह देखना चाहिए कि किसी राष्ट्र की स्वतन्त्रता तथा उसकी सम्पत्ता का अतिक्रमण न हो । पर यहाँ मैं यह बात पर जोर देना चाहता हूँ कि जिस प्रकार हमारी सुरक्षा को बाहर के आक्रमण से संरक्षित है और जैसे उद्ये भीतर से भी हो सकता है । मुझे लगता है कि यदि हम देश को आर्थिक

करता रहा है, और सौभाग्यवत् व्यक्तित्व से लेकर 'सुदामा' पर बँठ कर भोजन सन्निवेश में भी विनियम की मान्यता नष्ट-नष्ट कर गयी हुई है । 'सुदामा' पर बैठे हुए भिखारियों के लिए, जहाँ पर वह बँठा है, वह स्थान उतने ही महान का है, जिन्ना विद्या के लिए उतरी सारी सम्पत्ति । उस भिखारी के स्थान पर अगर कोई दूसरा भिखारी बैठ जाये, तो उसी प्रकार की पीड़नारी हो जायेगी, जिस तरह किसी जमीन-मालिक की जमीन पर दूसरे व्यक्ति द्वारा इन बताने से ही जाती है । फिर, कौन किसके साथ "सत्याग्रह" करेगा ? यही कारण है, विनियम कहते हैं, सत्याग्रह में 'रेसिपिटेंट' (प्रतिहार) नहीं होगा, 'असिपिटेंट' (सहायक) होगा है, और आज हमारे किसी विन को बनाने की जरूरत नहीं है कि कान्ति सत्याग्रह से ही हो सकती है । (३० दिसम्बर, १९७१)

विनाश की प्रति कायम न रख सके तो बहुत ही गंभीर बटिनाटो का अनुभव करेंगे और भारत की एकात्मता होगी। इसलिए जब हम सुरक्षा की बात करते हैं तो हमें देश के बाहर तथा भीतर के शांतिमयों का विचार करना चाहिए। यह भी सोचना चाहिए कि हम देश के विनाश तथा संविान सुरक्षा के बीच कंचे समुलन रख सकते हैं, राष्ट्रीय विनाश तथा सुरक्षा के लिए हम नहीं एक विवेची सहायता पर निर्भर रह सकते हैं। यही कठिन सब प्राय हमारे सामने है। समस्या यह है कि देश के साधनरहित का उत्पादन तथा समाज-व्यवस्था के लिए प्रयोग करें या संविान-सुरक्षा के लिए।

जो लोग संविान-नीति से परिचित हैं वे यह जानते हैं कि कागज का पोर हमारी रक्षा नहीं कर सकता। इसलिए यह मतलब हुआ कि हम अपनी संविान-शक्ति के बारे में किसी को टप नहीं सकते। यदि हम यह चाहते हैं कि हम अपनी रक्षा अणुबम द्वारा कर सके जैसे कि रूस तथा अमेरिका कर सकते हैं, तथा अनु हमारे अरबों के कारण हम पर आक्रमण न करें, तो यह केवल एक बम-विस्फोट से नहीं होगा। इसके लिए सम्पूर्ण सुरक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए जिसमें प्रक्षेपास्त्र, दूर तक जानेवाले क्षेपणीय बलन होने चाहिए। इसके लिए रक्षा आवश्यक होगा। विशेष प्रकार के धातु तथा वैद्युत् सम्बन्धी (इलेक्ट्रॉनिक्स) उपयोग का विनाश करना होगा तथा औद्योगिक समाज को भी रखनी होगी। यह सब हम कैसे कर सकते हैं? ऐसी बात तो नहीं है कि वैज्ञानिक एक नमूना अपने सामने रख दें, और फिर तुरन्त ही हमें व्यापक सुरक्षा मिल जाय। उद्योग के लिए तो देश की सम्पूर्ण सम्पत्ति लक्ष्मी होगी और बहुत से धन की उद्भव होगी। इसलिए जब सोचते हैं कि हमें धन बनाना है तो उद्योग व्यवसाय प्रथम उचित नहीं है। इसका सम्बन्ध तो कठिन महत्वपूर्ण बातों से है। आज हमारे यह युद्ध धारते हैं कि जो धन कपड़े की

बया कोमन होगी? किन्तु जो धन कपड़ा धन तक नहीं बन सकता जब तक आपके पास उसके बनाने के लिए मरणा, मिन व्यवसाय कोई अन्य साधन न हो। उसी प्रकार यदि हम अपनी रक्षा अमेरिका तथा रूस की शक्ति परमाणु अस्त्रों से करना चाहते हैं तो उसके लिए रिटना व्यवस्था होगा, यह आप जानते ही हैं। ये अपना पैसा समुद्र में तो फेंक नहीं रहे हैं। उसे संविान-व्यवस्था पर ही खर्च कर रहे हैं। उनका अन्य सारा धनको में हो रहा है। मुझे लगता है कि हम बिलना धन लगा सकते हैं, यह सोचकर ही धन-पर विचार करें। मैं प्रधानमंत्री से पूर्ण-तया सहमत हूँ कि श्रेय बम-विस्फोट से हमारी सुरक्षा बढ़ नहीं सकती।

इसका मतलब किन्तु भागत सरकार अपना विचार बदल दे तो धन बनाने में हमें रिटना समय लगेगा ?

उत्तर यह तो सरकार धर्म विचना प्रयास करने की तैयार है इस पर निर्भर करता है। यदि मैं आपको एक मजान बनाने को कहता हूँ और आप उसे बनाने के लिए सब राजीब लगते हैं, तो आपका मजान पत्र विनो में तैयार हो सकता है, किन्तु यदि आप केवल एक ही राजगीर काम पर रखते हैं तो उद्योग व्यक्तिक दिन लक्ष्मी। यह तो हमारे राष्ट्रीय साधन स्रोत पर निर्भर करता है। रिटना प्रयास आन करना चाहते हैं, उसपर निर्भर करता है। इसी प्रश्न का दूसरा उत्तर यह है कि भारत के वैज्ञानिक तथा औद्योगिक संसार के उच्च कौटिक के वैज्ञानिकों में से हैं और यदि उन्हें पुष्पा तथा भौता दिया जाय तो वे सब कुछ कर लेंगे।

प्रश्न: प्रक्षेपास्त्र (मिसाइल) व्यवस्था स्थापित करने में रिटना समय लगेगा और बिलना व्यवसाय होगा ?

उत्तर: प्रक्षेपास्त्र (मिसाइल) व्यवस्था स्थापित करने के लिए? आज की परिस्थिति में हम ऐसा कर ही नहीं सकते। हमारे पास अभी औद्योगिक भौब नहीं है।

कृपया दृष्ट धन को अच्छी तरह समझ लीजिए। मैं नमूने के तौर पर प्रक्षेपास्त्र (मिसाइल)-व्यवस्था नहीं कहता। मैं अमेरिका-जैसी व्यवस्था को बात कह रहा हूँ। अपनी परटना को शीतल। इसके लिए पूर्व-शुचित करने की व्यवस्था होगी। एक उच्च कौटिक की औद्योगिक नींव भी आवश्यक है। मुझे लगता है हमें एक-एक कदम जाना होगा। और, हम एक-एक ही कदम जा सकते हैं। हमारे चाहते-ना-चाहते का हमें कोई प्रश्न ही नहीं। हमारी सुनिवादी व्यवस्था का विनाश करने के लिए हम विद्युत् (इलेक्ट्रॉनिक्स) सम्बन्धी तथा मिश्र धातु के उद्योगों को बढ़ाना होगा। यह हम सब करनी कर सकते जब तक हमारे पास सड़िया इति-व्यवस्था न हो। और, जब तक हमारा युवा राष्ट्रीय उत्पादन नहीं बढ़ना, जब तक हम कुछ भी कर नहीं सकते।

प्रश्न: क्या हम नमूने के तौर पर ऐसा कर सकते हैं ?

हां साराभाई नमूने के तौर पर हम व्यवसाय ही बना सकते हैं। पर मैं तो उसे बिलना ही कहूँगा।

प्रश्न: आप नमूने के पक्ष में नहीं हैं ?

हां साराभाई नमूने के पक्ष में नहीं हूँ। मैंने ऐसा नहीं कहा। किन्तु अब आप वैज्ञानिक निर्णय नहीं पूछ रहे हैं। यह राजनीतिक निर्णय पर आधारित है, यशोवि जैसा कि मैंने पहले ही कहा है भारत सरकार इसमें नहीं तक शक्ति लगाना चाहते हैं, इसलिए निर्भर करता है।

फिर उसी बात पर और देने के लिए मैं प्रश्न को दोहरा रहा हूँ। मैंने इसी परिस्थिति से आरम्भ किया था कि आपका प्रश्न भारत की सुरक्षा से सम्बन्ध रखता था। जो लोग भारत की सुरक्षा को रिटना करते हैं उनसे यह कहना चाहता हूँ कि उनको सुरक्षा देते बाहरी आक्रमण से बरनो है बंध ही बन्दर से भी बनती है। और हमें इन दोनों के बारे

में सोचना चाहिए। उनके लिए हमें अधिक विभाग तथा सैनिक तैयारी में समुन्नत करना होगा। यह सही समुन्नत दृष्टि निराकरण हो हमारी आरंभ की सबसे बड़ी समस्या है। एक अग्रणी के हमारी सुरक्षा नहीं हो सकती। यदि आप अमेरिका तथा हम की तरह सुरक्षा चाहते हैं तो उभरा मानव और हो होगा और उभरी चीज भी आप जानते हैं।

आप अमेरिका की सैन्य-सुस्था का क्या जानते हैं? यदि हम चीन के पास एक बड़े राष्ट्र के समान अपनी रक्षा-अवस्था चाहते हैं तो हमें अपने प्रतिवे की ही धारणा रखनी होगी। हमें भी अस्त्र रखने के लिए अपनी के मोचे परते रक्षा बनाने होंगे। और भी बहुत कुछ करना होगा।

प्रश्नकार : क्या आप चीन की धारणा करते की तैयार है?

डा० साराभाई : जहाँ तक मैं जानता हूँ उनके विद्युत् (रेडियोविश्व) सम्बन्धी उद्योग ने काफी प्रगति की है। और धार्मिक विज्ञान तथा ज्योतिषा की प्रगति इसी पर निर्भर करती है। दुनियाँ विचारक तथा निरन्धन बन बनते हैं। सन्निवेश बन धर्म की बन बनते हैं। आज ही मैं हमारी विद्युत्-सम्बन्धी समिति की रिपोर्ट ली है। इसके अनुसार यह उद्योग अभी प्राथमिक अवस्था में है। फिर भी मैं यह नहीं कहता कि इसके कारण हम कम नहीं बना सकते हैं। मैं तो केवल यह कहना चाहता हूँ कि हमें उच्च संशोधन प्रगति के साथ-साथ सैनिकी उद्योगों के साथ-साथ धार्मिक उद्योगों को हमारा साथ होगा। यदि उच्च स्तर का विद्युत्-सम्बन्धी उद्योग हो तो हमारा बहुत ही लाभ हो सकेगा। इसके लिए हमें सैनिकी-उद्योग बनाने में उत्तर देने हैं। उदा० उद्योग हमें अधिक लाभ उठाने में सहायक है, परन्तु मान्यता के साथ-साथ हमें बन सकते हैं। यह तो हुआ हमारा एक उद्योग द्वारा

होनेक्या हार का साधन, और प्रतिष्ठा में हम हमने अपनी सुरक्षा का प्रश्न भी हार कर सकते हैं। आप किसी उद्योग का निराकरण करना चाहें या नहीं, यह तो बाद की बात है, किन्तु यदि आप सुदृष्टमान हैं तो आप ऐसे उद्योग चुनें जिनसे आपकी समुत्पन्ना अधिकोप करने की प्रतिष्ठित मिल सके।

प्रश्नकार : क्या हम परमाणु बम बना सकते हैं?

डा० साराभाई : यह भी इसी बात पर निर्भर करता है कि हम इनमें तर्ही तक निरन्तर लगे रहते हैं। उनमें राजनीतिक स्थिति की आवश्यकता है औ-सांख्यिक स्थिति की भी। यदि आप परमाणु-सु-धा की बात सोच रहे हैं तो मैं आपका उत्तर ही बना दूँ कि हमें लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक है। और इसके लिए आपको ५००-६०० अरब डॉलर खर्च करने की तैयार होना चाहिए। लेकिन यह दुःखी बात है।

प्रश्नकार : परमाणु आन्दोलन के बारे में आपका क्या मतलब है?

डा० साराभाई : मैं सामूहिक सुरक्षा के पक्ष में हूँ। शान्ति के कार्यों करने के लिए हमें हर प्रकार के प्रयत्न करना चाहिए। यदि दुनियाँ यह समझा है कि किसी एक कार्य में सकारण बना ही सकता है तो मैं उसका समर्थन अवश्य करूँगा। मैं किसी भी कार्य की एकदम अचानक अथवा एकदम हारा नहीं देखता हूँ। किन्तु मैं उसके पक्ष में, समुन्नत में विश्वास करता हूँ। मेरा यह विश्वास है कि सामाजिक इच्छा के अभाव ही ही सबसे बड़ा कारण है। यदि विश्वास के रूप में सामाजिक भावना आरंभ होगी। मैं यह विश्वास द्वि-विभाजित से कहता हूँ, और यह धर्म नहीं है। यदि विश्वास के रूप में सामाजिक भावना आरंभ होगी। मैं यह विश्वास द्वि-विभाजित से कहता हूँ, और यह धर्म नहीं है। यदि विश्वास के रूप में सामाजिक भावना आरंभ होगी। मैं यह विश्वास द्वि-विभाजित से कहता हूँ, और यह धर्म नहीं है।

प्रश्नकार : यदि भारत बम बनाने का विचार कर ले तो क्या वह सुरक्षित ही बनती ज्योतिषा बनना बना नहीं सकता?

डा० साराभाई : हम उसे बनाने के लिए कितने क्षमता है, इसपर निर्भर करता है। यदि आप यह तय करें कि सभी विज्ञानियों को वैज्ञानिकों का एक गुट बनाकर उसे विद्युत्-सम्बन्धी उद्योग का निराकरण करने में लगा दें तो यह बहुत अच्छी बात होगी। किन्तु मैं यह मानता हूँ कि किसी भी उद्योग का निराकरण हमारे धार्मिक मान के लिए होना चाहिए। केवल बम बनाने के लिए नहीं। यदि हम सैनिक, विद्युत्, विद्युत्, विद्युत्, विद्युत् प्रसार के समुत्पन्ना प्राप्त कर सकें तो हमारी सैनिक स्थिति बहुत ही और हमारे देश का इतना ही बदन जायगा।

प्रश्नकार : परमाणु-उद्योग के बारे में आपका क्या मतलब है?

डा० साराभाई : यदि आप वर्षों में जा रहे हैं और आपके हाथ में धारणा है तो आप में आत्मविश्वास होगा। यदि आपका सकारण आपके लिए पर धारणा परक रहा है तो आपके आत्मविश्वास की मात्रा कुछ कम होगी क्योंकि ही सकारण है। जहाँ तक ही आपका सकारण धारणा के लिए पर धारणा परक रहा है तो सुरक्षा मान ही वह धारणा आपका लिए पर परकने की बनाना माने लिए ही ही बना होगा। उभरी प्रकार परमाणु-उद्योग का प्रश्न उठाना सके नहीं है। दूसरे विश्वास तथा प्रयोग का प्रश्न है। आपके लिए पर धारणा परकनेशक्ति का भाव नहीं तक विश्वास करने है, यही मुख्य प्रश्न है। और केवल कि मैं समझता हूँ यह विश्वास किसी विज्ञान स्थिति पर निर्भर नहीं करता, बल्कि उन राष्ट्र का आपकी सुरक्षा में बना धारणा है, एक पर धारणा है। मैं परमाणु-उद्योग के निर्माण नहीं हूँ। मैं तो केवल यही कहता हूँ

कर्नाटक में ग्रामदान : कुछ अनोखे अनुभव

विधोबाधी के आवाहन पर जिन दो विधायकों ने दलीला दिया था उनमें से एक हैं श्री सदाशिवराव भोसले। कर्नाटक में श्री सदाशिवराव भोसले के बारे में सर्वत्र सद्भावना दिखाई दी। महाजन-पराने में जन्म हुआ है पर वृत्ति में जरा भी महाजन की शक नहीं है। उनकी सेवा और त्याग के कारण ही दिनांक ९ से १७ जनवरी तक वेतनव्यय विधे में प्रावि-पुष्टि का जो अधिवेशन चला उसमें २८ ग्रामदान मिले। इनमें से २० गाँवों में ग्रामसभाएँ बनीं। कुल ६५ एकड़ भूमि बीसवें हिस्से के तौर पर मिली। वेतनव्यय विधे के इस क्षेत्र में भूमि की कीमत ५ हजार से लेकर १५-२० हजार रुपये एकड़ है। अतः छोटा-सा दिग्भेदात्ता जमीन का टुकड़ा छोड़ना भी किसान के लिए भारी था। जिसका प्राचीन प्रगतिशील हैं। अतः शब्दी फलत होती है। पर-माना में करीब २५-३० लोग पति टोलियों

में पूजे। पर १० एकड़ के ऊपर का मालिक चापट ही किसी को मिला हो। असाधारण व्यय से गाँव एकड़ तक के किसान पाये गये। अतः गाँवों में भूमि-हीनों की सवना बहुत कम है। वेतनव्यय से करीब १० मील की दूरी का यह ३१ गाँवों का क्षेत्र अधिवेशन के लिए चुना गया था। गहूर नाम में होने से काफी जन्तुलि दूर देहातो में पावी गयी। कुछ गाँवों में भ्रमण बाधनी चलती है। आरवय की बात है कि गहूर के पास होने हुए भी गाँवों में राखरीय बसवन्धी या गुट-बन्धी करीब-करीब नहीं के बराबर है। अतः गाँवों में भ्रमण कम हैं।

वेतनव्यय गहूर के कारखानों में गाँव-गाँव से काफी किसान मजदूरी के लिए जाते हैं। कलमगे हस्त-वाह्य भी बारी-बा छोटा-सा गाँव। पर करीब ५०० स्त्री, पुरुष और बच्चे वेतनव्यय गहूर में हर रोज काम करने के लिए जाते हैं। व से

यह धारणा फनी हुई है कि हमारे पड़ोसी हमसे आये बढ़ गये हैं। पर मैं यह मानता हूँ कि हमें ठोस प्रगति करनी चाहिए, ऐसी प्रगति जिससे सारे देश का कल्याण हो। कम-जैसी निरर्थक चीज हमें नहीं चाहिए। हमारी प्रगति सच्चाई पर आधारित होनी चाहिए, केवल दिखावे के लिए नहीं। यदि आप देश में अग्र-विश्वास की भावना चाहते हैं तो वह दिखावटी प्रकृति पर अधिक दिनों नहीं टिक सकती। विज्ञान तथा उद्योगविद्या केवल आगनिक क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि देश के विकास के लिए वही क्षेत्रों में उत्पत्ति कर सकते हैं।

हम पाहे भौतिक हों या नहीं, हमें इस कार्य में जुट जाना चाहिए। इस प्रकार हम गहूर के आरक्षण से तथा भीतरी उगावों से अपनी सुरक्षा कर सकते हैं। यही इस कहानी का मूल सार है। ●

१२ साल के छोटे-छोटे बच्चे भी रात-पाती का काम करते हैं। और रात में ३ बजे पैदल पर लौटते हैं। विवाह कृषि के अर्थ कोई भी छाया गाँवों में बचा नहीं है। गाँवों की दान-राशि के साथ-साथ गाँव का सम्पूर्ण दूध भी चाय के लिए गहूर में चला जाता है। अतः बच्चों के लिए गाँव में दूध, छाछ कुछ भी नहीं बचता। इस तरह से अग्र-व्यय के देहातो का जोषण करके गहूर दिन-दूनी-रान-धोनी गति से बढ़ता चला जा रहा है। गहूर नाम में होने से शिक्षण का प्रतिफल भी बाधनी उँवा है। हर देहात में १० से १५ तथय मिलते हैं जो या तो मेटिक पाय हैं और छापी पर बैठे हैं या कालेज में पढ़ रहे हैं।

काफी अनुभवों से परोक्ष लोगो ने हमें बताया है कि हम गोऽनाड में सवा न करें, बरोकि लोग बहुत शराब पीते हैं। वे छमा में आकर जयम गपावें। वहाँ के नौजवानों के लिए तो यह एक श्राव्यद्वय था। बडीयो (सदाशिवराव का गाँव) में से ६ तथय-शास्त्रिक था, जिनमें दो सङ्कल्प भी थी। अतो ही गाँव के नौजवानों को जहोने सगट्टि किया और जुट गये सभा की वेगारों में : नौजवान जो काम उठा लेते हैं मला यह काम बनी हुए बिना रह सकते हैं। गाँव की बहूँ, नौजवान, बच्चे, सब सभा में आये और बच्ची सभा हुई। दूसरे दिन ये सब अज्ञान जुट गये प्राप्ति के काम में और गाँव सङ्कल्प पानवान हुआ। इस विधे की युवा-राशि को सगट्टि करके योग्य मार्गदर्शन मिले तो देश का आयातवट बहुत बढ़े समय में हो सकता है। बिना मार्गदर्शन के आज युवक-वर्ग भटक रहा है। आज की शिक्षण-संस्थाओं में उनका मन नहीं लगता। परधाना में ये नवान शिक्षा विज्ञान से इस विषय में मुरावे चर्चा करते थे। १६ साल की उमर मिनटों में (सदाशिवराव की दलीलाती साइनी लक्ष्मी) काय की शिक्षा के विरुद्ध सपावत की और बानेन-

→ यदि आप सुरक्षा दूँ रहें हैं तो सम्भव की सुरक्षा की उत्साह करें। ऐसी सुरक्षा, जिससे आप रात में शान्तिपूर्वक सो सकें। जैसा कि मैं पहले ही यह बुझा हूँ जो लोग अत्युत्तम के पक्ष में शापट अद्युत्तित महानुस कर रहे हो। यदि हम कुछ ऐसी परिस्थितियाँ उदरान्त करें जिससे अमेरिका-जैसे राष्ट्र हमें भी अपनी आगनिक सुरक्षा का आरक्षण दे सके तो यह उपायोगी सिद्ध हो सकता है। फिर भी यह दूध बात पर निर्भर करता है कि कीन हमें सुरक्षा दे रहा है और कैसे दे रहा है।

परन्पर : हमारे आत्मविश्वास का क्या होगा ?

डा० साहस्रभाई : आत्मविश्वास का प्रश्न बहुत ही अन्ध है। मुझे लगता है कि प्रत्येक राष्ट्र की स्वाभिमाननी होना चाहिए और अपना सिर ऊँचा रखना चाहिए। मैं इसे बहुत जल्दी समझता हूँ। मैं यह भी जानता हूँ कि हमारे लोगों में

घोड़-रुत योग्य मिठा भी खोब से निकल पड़ी। वह भोग-भोग, भद्राकान मिठाओं से रोज नहीं खोबो है कि क्या इस मिठा से मेरा खोर देन का भना होगा ? मिठाया खादि उरके माथी राग के बार-बार-बार-बार के तह इयो की खवों करते थे। बड़े बेवैर थे।

महाराष्ट्र के जनपदों विने की पर-याना से महाराष्ट्र के हय ६ छापी यहाँ मन्द के लिए आये थे। यहाँ हमने पाया कि बीछाई हिम्मा भूमि वेने की बात सुनने ही विज्ञान के मन में खबडाहट पैदा होखी थी। यहाँ हमने बेछा बटून कम पाया। यहाँ ने बेहद हँह दिया। इतिहास के प्रजापति बनी के बाद, जो भी अन्ते-बुरे काम हुए हैं, उनके बारे में सन्देश ही सचता है, परन्तु उनके प्रजापति बनने के कारण देखकर भी विज्ञानों में बेहद आभुति आनी है, कुछ स्वामिमान उरमें जागुर हुआ है। उरमें प्रतीति समारोहों में यही समारोह में विज्ञानों की उपस्थिति से होती थी। यही-यही ही पुस्तकों से भी जगारा समारोह में बहने सभा से आती थी और बने ध्यान से सुनती थी।

कठोरी की धामसभा बनी और भूमि का बँटवारा ही रहा था। तिर पर पल्ला निने एक बहून आणी और हँहें सब भूमि मिलेगी, पूँछने सगो। धाम-दान दरबन-रय पर धामसभे सँग के धाम-बसिधो से दम्पसत लेने का काम बन रहा था। एक बहून ने दरवाने में से ही हँहें पुशारा, हँहें बेटने के लिए बहा और कहा कि हमारे पास इन पर भी जमीन नहीं है। भूमि का बँटवारा करते समय हमारा भी फाल रसना, वह जताने लगी। क्या बहून और क्या भूमिहीन धीरे-धीरे धारात्र उरने लगे हैं, सुनेब्राम पृथ्वी की माँग करने लगे हैं, यह सुनी का मान है।

पाँच के बड़े-बड़े जमीनदार, मोठरी-घाटा का बचने के विज्ञान के लिए मैलपाँच शहर में साकर बसे हैं। दो दिन उनसे भूमि माँगने का कार्यक्रम

रहा था। सरासिबदार के विज्ञानी साथ थे। उरन रखवण से वे बीमार थे। मना करते पर भी साथ चले। 'यह भविष्य काम है। मरद करनी ही चाहिए। योगार पड़े तो भी हँहें नहीं।' यह हद सुनके से साथ तह काम में जुटे रहे। त्रि-त्रि के पास गये खवने बीमारी हिम्मा भूमि देने की बात खबीरान की। कई जमीनदारी ने कहा—'कोन-सी भूमि देनी है, टिपनी देनी है, साथ ही तय करके घोषणा पर दीर्घ हुसारी और से।' विज्ञान विज्ञान या उनका मदा-सिबराय के गिलाकी के प्रति सुसाधिवराय दस बात का इमान रखने थे कि केवल रद जमीन न मिले, का खदे-बने सभी विज्ञानों से वे विचार की जमीन का भी बीमारी हिम्मा माँगते थे। त्रिद जमीनदारी को एक से अधिक शानदानी गाँवों में जमीन थी उनमें उर गाँव की जमीन का बीमारी हिम्मा मिठा। ऐसे भी बहादुर जनांदा किने बिन्दुने आनी ५० साग की त्रिदगी में जमीन तह आनी जमीन के दर्शन तह नहीं दिने थे। कई ऐसे थे जिन्हें यह पता नहीं था कि उनकी त्रिद गाँव में त्रिदगी और कँठी भूमि है। ऐसे ही हमारे यहाँ के थे बड़े विज्ञान।

इस विचार के प्रति लोगों में काठो जागृण पाया गया। अर इस पदवारा को कुछ अर में सीकपाका का स्वरूप प्राप्त हो गया था। एक गाँव के कुछ लोग बुन्दे गाँव में जाते थे हमारे साथ, और धामदान करने के लिए सगो की सभप्रती थे।

अरज की तरह ही यहाँ भी हुदुद में काफी दरसप होवे हैं। एक ही मरद में बही नहीं ११ भूले भी पाये गये। मनुष्य और जानवर का खेर यहाँ समारोह-ना है। त्रिद पर भी आदमी रहते हैं यहाँ मानवर भी रहे आने हैं। कँठी भीयन त्रिदगी होयी बह, साथ बरलता कर सकते हैं। दस बार सपन काम बरलता था अर. आन बूज कर कम गाँव निने गये थे। जो सदासिबराय सभा थी ठापुरदास बग की एक सभक

टोसी थी। जो खीर से हद खीर हद टोसी के साथ सभक करती थी और यही गाड़ी अरनी ही तो विज्ञानने में फीरत मरद देखी थी। जो सदासिबराय ने यरुद विदये १० से १५ सालो तक इन खीर में काम नहीं किया था, लोगों से सभक टूटा हुआ था, फिर भी उन्होंने पूरास में जो काम और सेवा इन खीर की की थी वह लोग भूने नहीं थे। जन-कार्याल उरवा बीरन होने से लोगों के वे यद्वापाय थे। अनेक जन-वायो का सग-ठिन प्रसिधार उन्होंने किया था, उसे लोग भूने नहीं थे। बलिह उनके जाने ही गाँव में आया कर मचार होजा था कि अब आ गया हुआ जाता। सेवा, रोग, निर-सप उरवा बीरन होने से लोगों का उन पर दूष-दूषा खरोदा है। अर उरवा-यहाँ वे पड़ोसो साथ फह होगा ही था। इस पदमाथा में अरुह-अरुह प्रा-उरकेन्द्र बनाने गये और धाम-शांति-सिंह भी।

आम्र से ही सुगमि मार्ग लपने साथी थी परगुराम के साथ आये थे। सुगमिनी के इतिहास से, आम्रनिबराय से और वार्धकुशलता से सब लोग बडे ही प्रभावित हुए। महाराष्ट्र के ७० गाँव के निरतरण काका सेपुगीकरवी की आये थे। वरुडक के करीब १० यद्वासात साथी थे।

समारोप के अन्तिम दिन के कार्यक्रम के लिए गाँव गाँव से करीब ५०० पुसप और २०० बहून आनी थी। इन गाँवों में सगो का कार्य सुचारु रूप से चलाने के लिए क्षेत्रीय धामसभारत समिति का गठन किया गया। लगभग ५ गाँवों में खीर खीर में सपन रूप से काम करने का ध्यान सनसप भी सँसिनेभी ने योगित किया। दैत में सर्वोप के काम की दुष्टि से जो खे निने सपन खीर हैं उनमें यह खीर काफी आये बह सभना है और बहून अरुह काम यहाँ ही करता है। एकाग्रता से खीर खीर में बेटने के सँसिनेभी के इस निर्णय से यह समारोह अधिक जनसमर हुई है।

साथियों के पत्रों से

[शामस्वराज्य के बायें में जुटे कार्यकर्ता साथियों से विनोबाजी को जो पत्र मिले थे उन पत्रों के कुछ चुने हुए अंग हम यहाँ दे रहे हैं। यह क्रम बराबर जारी रहे ऐसी कीर्ति है। सं०]

ग्रामदान-कार्य की कठिनाई

सर्वे सेवा सच के भोगल अधिवेशन से नये दिरे से काम शुरू होगा ऐसा मने माना था। विजय-मनन के दसलखा कार्य-कर्ता कुल भी कर नहीं पा रहे हैं ऐसा मह-सूस हो रहा है। गोपुरी, बर्धा में पूज्य घोटेट भाई के साथ मिलकर पत्राई करने के लिए मने अपने सच कार्यकर्ताओं को भेजा। कुछ ज्ञान और सूझ मिली। लेकिन पुष्टि-कार्य में जो पुष्ट पत्थर लगा है उसे फोड़ना आसान नहीं है। जिस गाँव में कार्य-कर्ताओं को सपासारा भिड़े रहने के लिए भेजा जाता था वहाँ से वे निराश होकर लौटते। गाँववाले अब जबाब देने लग गये हैं कि फिजहाल ग्रामजना नहीं बन सक्ती। तोप सुनना या चर्चा करना नहीं चाहते, टालते हैं। कुछ वारण भी मिल जाता है जैसे अगी धान कटाई और पुरना पल रहा है। बडेगाँव में जहाँ अच्छी एकता पौ यहाँ जावारी की जमीन के बँटवारे को लेकर दो बल बन गये हैं। उसी को पहिले सुनज्ञाने का काम मने उठाया है। यह निगटने के बाद ही ग्रामदान प्रतिज्ञा-पत्रों पर हस्ताक्षर शुरू करा सकूँगा। तिर-सोली गाँव में भी ग्राम-पचायत के चुनाव को लेकर एक साल से दलबन्दी हो गयी है। छयमें वे खासानी से कोई रास्ता नहीं निकल रहा है।

सपन दोष न्याय का तो विचार ही छोड़ दिया है। कुछ दूरे-गिने सम्पर्क और प्रभाव के गाँवों में प्रकृतज्ञ हो जाय तभी धार्यविश्वास जगेबा और काम श्यापक हो सकेगा।

सरकारी नौकरताही के झट्टाचार से इतने असतुष्ट और उबे हुए रहकर भी प्रामोण्य बनायें पत्रों पाँच वा कार्यभार हाथ में लेने की, शामस्वराज्य की बात समझती गहो ? शासन का पत्रा सत्के

दैनिक आर्थिक व्ययहार में बहुत व्यर्थ तक घुस गया है। उससे छुटकारा पाने की दृष्ट्या है, पर शक्ति और समर्थन के अभाव में वंशा पत्रा हुआ जीवन ही सावारी से पसन्द करना पड़ना है। स्वतन्त्र जन-शक्ति से ग्रामदान-पुष्टि की हृगारी बात हुआ में हो रही है। एकदम शासकीय आघार छोड़ देना नहीं चाहिए लेकिन कानूनी पुष्टि के लिए अधिकारियों के पास साचारी में धार-धार जाना भी जरूरत है। एतमें से रास्ता निकालना है।

—प्रभाकर बापट, भडारा जिला सर्वोदय म-ऊल सेवाश्रम, २ दिसम्बर, १९७१

खादी की नयी दिशा

खादी-पार्थ में नयी दिशा में सोचने का उपक्रम शुरू हुआ है। आपकी थी राधा-कृष्ण जवान तथा थी लेलेजी से हुई बातचीत के आधार पर सोचाल में भी चर्चा हुई, दिल्ली में भी। श्री वी० रामचन्द्रन् का मोठ भी विचारार्थ दिल्ली में प्रस्तुत हुआ। आन्तरिक जयप्रतापजी इस सभा में नहीं आ सके, लेकिन श्री डेवर भाई, श्री विचित्र भाई व श्री बग साहब तथा अन्य २०-२५ मित्र उपस्थित थे। इस सभा में विजली से कटाई-सुनाई करवाने पर चर्चा हुई। निर्णय यह रहा कि इस पर कोई कल्पित नहीं होनी चाहिए और यदि सरकार स्वीकार करती है कि विकेंद्रित अर्थ-व्यवस्था के अन्दर मरल-उत्पादन करना है व मिलों में मोटे वस्त्र वा उत्पादन बहुत कम है, यदि सरकार खादी-संरक्षकों से उब मोटे वस्त्र का उत्पादन करने के निर्र बदे, तो खादी-संस्थाओं को भी अपना पूरा योगदान देना है। साथ ही जहाँ-जहाँ ग्रामदानी गिनों में धाम-संबल हो जाय, वहाँ-वहाँ प्राप्यविवार देकर इसे लागू करना है। श्री डेवर भाई

परकार से इस विषय में बात करवें।

—सोमभाई, पादी आश्रम, पातोपत, करान, १०-१२-७१

ग्रामस्वराज्य के लिए लोकशिक्षण

जिला बुन्दवन्दहर वीर धावल्ली

आश्रम के दो स्थान उत्तर प्रदेश के दो कोनों पर है: एक उत्तर पश्चिम में हरियाणा-दिल्ली की सीमा से लगा हुआ है और दूसरा दक्षिण पूरव में नेपाल की सीमा से लगा है। दोनों जगह की परि-स्थिति के हिसाब से वहाँ के कानों की दिशा कुछ स्पष्ट हुई ऐसा लगता है। बुन्दवन्दहर जिले में ग्रामस्वराज्य के लिए आरक तोर-शिक्षण द्वारा ग्राम-संस्थाओं का संगठन करने की योजना है, तथा श्रीवास्ती में पहले से बनी रचनात्मक संस्था को ग्राम-संस्था में वितान करके ग्राम-संस्था के संगठन की पद्धति और प्रक्रिया की खोज करनी है। धावल्ली प्रयोगशाला है, बुलबुलवडर मोर्धा है।

मौखे पर काम के सहयोगी के रूप में एक युवक साथी श्री हरिद्वार भाई इत महीने साथ में थामे हैं। वे धामाधार, जनाधार आदि के प्रयोगों में प्रथम श्रेणी के कार्य-कर्ता रहे हैं। ये मित्र बुन्दवन्दहर के १४ ज्वाशों में घुसकर ग्रामस्वराज्य समितियों का संगठन करने का प्रयत्न कर रहे हैं। ग्रामस्वराज्य समितियों को समर्थन बनाने के लिए हर ज्वाश में किवारों की योजना बनायी है। इन किवारों में ग्रामस्वराज्य समिति के साथी अपने क्षेत्र की समस्याओं पर गहराई से चिन्ता करवें और उनके निराकरण के लिए बेकारों, भरीकी, अन्याय, सगडे, भ्रोपण और शराब आदि गण्डों से मुक्ति की योजना बनायेंगे। दिसम्बर माह में सम्पर्क वा कार्य जोरों से चले ऐसी योजना बनायी है।

धावल्ली में स्थायी साथियों को तैयार करने की दृष्टि से चुनाव कर लिया है। परिवार-विदायत के रूप में इनका शिक्षण हो ऐसी योजना बनायी है। इसका कर धीरे-धीरे विस्तृत होगा ऐसा सोचते हैं।

—नरेन्द्र, बुलबुलवडर (उ०प्र०)
१५-१२-७१

नशाबन्दो के लिए संशोधित कानून

एताहाबार उच्च न्यायालय द्वारा उ० प्र० सावकारी कानून की धारा २० (ए) को बर्षेध करार दिये जाने और उत्तराखण्ड उत्तराखण्ड में नशाबन्दी एताहात रिये जाने पर उत्तराखण्ड में नशाबन्द के प्रथम एताहात में शराब की दुकानों एतनी, उन पर डिस्ट्रिक्ट हुद्या। शराब सरकार ने मद्यनिषेध लागू करने के लिए २७ दिसम्बर '७१ को एक अध्यादेश निशाता जो ६ जनवरी '७२ को उ० प्र० विधानसभा में पारित किया गया। इस विधेयक की विशेषता यह थी कि यह सर्वप्रथम निते स्वीकार किया गया, परन्तु इसके पश्चात् भी पीढ़ी और टिहरी पञ्जाब में शराबबन्दी लागू करने के लिए आदेश मही हुये हैं। नये अधिनियम की मुख्य-मुख्य बातें इस प्रकार हैं—

१—उ० प्र० के अध्यादेश एक्ट १९१० में अधिनियम के अनुच्छेद ४० में राज्य की नीति के निर्देशक तत्वों के अनुसरण में मद्यनिषेध के प्रसार तथा प्रवर्द्धन की सुकर बनाते के लिए यह अधिनियम बधाना गया है।

२—सावकारी कानून की धारा २० (ए) तथा धारा २० ए और २० बी, जिन्हें हाइकोर्ट ने बर्षेध करार दिया था, निरस्त की जायें।

३—मद्य अधिनियम में मद्यनिषेध के सम्बन्ध में विशेष उपबन्ध शीर्षक एक नया अध्याय ६-क जोड़ा गया है, धर राज्य सरकार उ० प्र० या उसके किसी भाग में अध्याय बर्षेध के किसी मादक पदार्थ के आयात या निर्यात की निषिद्ध कर सकती है या किसी मादक पदार्थ के परिवहन की निषिद्ध कर सकती है।

४—मादक पदार्थ की निषिद्ध करने की शक्ति का प्रयोग राज्य में मद्यनिषेध के क्रमिक प्रसार करने की नीति के अनुसरण में किया जा सकता है और निम्न-

लिखित की शक्त में रहते हुए समकाल पर विभिन्न क्षेत्रों का ध्यान किया जा सकता है।

(क) शीर्ष-स्वान, विद्या-केन्द्र या शैक्षिक क्षेत्र के रूप में किसी क्षेत्र की नियोजना।

(ख) स्थानीय निवासियों की सामान्य आर्थिक स्थिति, जिसके अन्तर्गत उनके व्याहार, पुष्टि-रत्न और जीवन-स्तर भी है।

(ग) स्थानीय जनमत।

(घ) कोई अन्य सग्य तथ्य जो राज्य सरकार को राज में सांशुति में सावधान हो।

५—इस कानून के अन्तर्गत किसी क्षेत्र में मद्यनिषेध लागू करने पर साक्ष्य देवेवाना प्राधिकारी, ल एजेंस को, जहाँ तक उनका सम्बन्ध मद्यनिषेध क्षेत्र से है, जिना मोटिस तुरन्त निरस्त (रद्द) कर सकता है। यदि डेकेदार ने पहले से साक्ष्य फौस पेशगी जमा कर दी हो तो योग साक्ष्य फौस उसके ऊपर सरकार की बतया बन कर लौटा दी जायेगी। साक्ष्य-धारी सरकार से साक्ष्य १६ करने पर मुजाबना नहीं मांग सकता।

इस प्रकार इन शर्तों में कोई शर नहीं है कि माँव के अरत तक मीड़ शराब के डेरे चलते दिये जायें। अपराध रूप से इसका अर्थ अदता को तबाह करना और शराब के समर्थकों की शक्ति बढाकर सावकबन्दी के लिए जश्न समारोहों पैदा हुना होगा।—सुखरसान चतुर्गुण

नोआखाली में गांधीवादियों की हत्या

इन्दौर, १३ जनवरी। सर्वोच्च प्रेम सचिव के बतारता केन्द्र की यह मखेद जानकारी मिली है कि हाल ही में हुए भारत-राज-बुद्ध के दौरान बगला देस

रिचय नोआखाली आश्रम के श्री मदनमोहन चट्टोपाध्याय और श्री देवेन्द्रनारायण की बर्षेध चार क्षेत्रों द्वारा हुना कर दी गयी है। दोनो धरिष्ठ और निष्ठावान गांधीवादी खेबक सन् १९४६-४७ के दौरान दसों के समय महाराज गरी के शक्ति मिशन के साथी थे और उनके बाद से बर्षेध अरत तक अश्वनीय सुधीयों और धरयो का सामना करते हुए बटे रहे। २३ मार्च, १९७२ को पूर्व बगान में पारिस्ताली व्याकरणों द्वारा मृत्यु की एमकी बने के बादसुध भी इन लोगों ने अपने स्थान से हटने से इनकार कर दिया था। सावग सात हुने पूर्व अन्य नई प्राचीयो के साथ ही इन लोगों को भी मौत के घाट उतार दिया गया।

वधिय निशाही शायी को के एक अन्य सहयोगी श्री सतनामानन वा भी कुछ पना नहीं है। ये भाई भी शायी की मिशन के सदस्यों थे और जिन्होंने नोआखाली में ही रहकर अपना सेना-कार्य जारी रखा था।

त अंक में	
जंती उसकी जमोत	—महात्मा गांधी २९६
गांधी हमारे करोड, गया नेसुध, नये धरिष्ठ पर नयी साली	—सम्भाषकीय २९७
अश्वनिर्भरता तथा गरीबी की समस्ता—श्री तारनेसर प्रसाद बिहू २९९	भारत में गरीबी
अश्वरुतः रामभुजि २९१	सर्वोच्च की शक्ति निशरकी नहीं
—श्री धीरेन्द्र मन्मथदा २०१	नया भारत की अनुभव कतार उचित है ? —श्व० डा० रिमक साराभाई २०३
न्यायिक में शमदान - बुध बतिये अनुभव	—सुमन बग २०६
अन्य इतम्भ	साधियों के पत्रों से, आन्दोलन के समाचार

वर्ष : १९४६, सोमवार, १३ अक्टूबर, १९४६
 सर्व सेवा संघ, पत्रिका विभाग, अमृतसर
 राजघाट, बाराहली-
 कार : सर्वविधा * चीन :



सर्वोदय

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

सम्पादक
 रामभूति

सुदामा-रुद्रा

श्रीलक्ष्मण मल्लिकायगीश्वरप्रभुश्रीशिवशक्तिश्रीसुन्दरबाहव-सायनादिक



१९४६



१९७९

बंगला देश का पुनर्निर्माण : जन-अभिक्रम

बीसह दिन के पनपोर युद्ध में करोड़ों रुपये और लाखों व्यक्तिमों के श्रममोल जीवन के भूख पर बंगला देश आन्तर दुःख, फिर भी सारे शासक करोड़ जनता की मुक्ति के लिए यह कोई बहुत बड़ी कीमत नहीं बड़ी जा सकती। आज परिस्थिति यह है कि बंगला देश मुक्त है और वहाँ की जनता उन्मुक्त। एक ओर वे भोग खाते हैं, जिन्होंने बंगला देशवासियों पर शिमा डाले हैं, क्रूर-से-क्रूर अत्याचार, यौहो सपत्ते ही सब निचे। दूसरी ओर जनता सजी है, जिसने आजादी के लिए हर तरह के जुलम बर्बाद निचे, और बीच में सड़ी है मुक्तिदाता के रूप में भारतीय सेना, जिसका प्रयास यह है कि वरने से भावना से पालन जनता कही उन लोगों से पीछा न डाले जो आजादी में बाधाक ही नहीं बल्कि सुखियों के साथी रहे हैं। अब प्रश्न यह है कि बहिष्कार और अन्न जण्ट का मारा समाप्ति-वाचे सर्वोदर विचार-कार्य के योग, बंगला देश की जनता को प्रतिहिता से बचाने के लिए कोई मोर-निासध की प्रक्रिया चलायेंगे या नहीं? पादिरतारी सेना ने बंगला देश में जो दुःख निचे, अत्याकार निचे, हत्याएँ की, छूट-पाद की उन सबके आनन्दन के लिए वहाँ की सरकार ने एक बर्बाद-आयोग नियुक्त किया है। वह अपना रपट प्रस्तुत करेगी तभी यही स्थिति सात हो पायेगी।

आर्थिक पुनर्व्यवस्था के लिए भारत सरकार तथा बंगला देश के लोग सहित हैं। सम्भव है दुनिया के अन्य देश भी उसमें पराम्भ सहकार्य में। वह सब बातें ही होना ही, उचे करने के लिए सरकार है और वह करेगी। इसके साथ ही प्रश्न उठता है कि क्या गांधी विचार-धारा के माननेवाले लोग वहाँ के आर्थिक ढंकि का ऐसा स्वरूप सड़ा कर सकते हैं

प्रयास कर सकते हैं जिसकी मल्लभा गांधीजो ने की थी और वह भारत में साकार न हो सका ?

बंगला देश का संविधान बनाने की बात हो रही है। क्या यह वह अवसर नहीं है जब उन्हें यह सुभाव सर्वोदय की ओर से दिया जाय कि बंगला देश की सरकार में मुक्त शक्ति का अधिपत्य हो ?

सबसे बड़ी बात तो यह है कि धीरे-धीरे नवनिर्माण होगा, बीजों बनेंगी। उनके लिए धन और विशेषज्ञों की मदद भी बाहर से मिलेगी। पर एक बात जो छूट रही है, सम्भवतः प्रविष्ट में भी छूट जाय, जिगरी और प्यास दिया जाना आवश्यक है। यह है उन दूरे परिवारों एवं छोटे गले समाज को पुन सुसंगठित करने का काम। वर कौन करे ? देखें तो उन गारे बायो में स्थानीय जन-अभिक्रमिणी ही सक्षम होगी देश जनता ही सक्तिमाने बनेगा। लेकिन कि इन दिनों बार-बार यह महसूस किया जा रहा है कि पाकिस्तान की बमबोर बनानेवाली वहाँ की निरन्तर बनी रहनेवाली संनिनवाही ही है। जिस प्रकार हिंदी की देश की सक्ति वहाँ के संनिकों की भर्ती एवं सत्कारकी के यह भाव से ही नहीं, बल्कि उन देश की जनता की निरन्तर बढ़ती हुई समुद्रि से ही सम्भव हो सकती है। उम्मी प्रचार में यह भी कहना चाहना है कि कौन-सा देश जितना आगे बढ़ा है, इतना अन्वजान इस बात से नहीं लगाया जा सकता कि वहाँ की सरकार ने कितना काम किया, बल्कि इस बात से लगाया जाना चाहिए

कि उसके निर्माण में जन-अभिक्रम विद्यमान था या नहीं।

इसके बाद भी बंगला देश के लिए यह कहा जा सकता है कि उस देश के निर्माण के लिए दूर प्रचार की सहायता चाहिए। इसके लिए मैं अपने को विरत-नागरिक माननेवाले समस्त सर्वोदयी विचारकों के कहना चाहना है कि प्रतिहिता की जराता में धरक रहे बगाली बन्दुओं के हृदय की प्रीवला का सपारा करें। दूरी-दूरी उनकी अर्थ, व्यवस्था को समुचित दिशा देने के लिए उनके पर-पर की बसंताला बना दें उनको ऐसा एक संविधान बनाने में मदद दें, जिगरे वहाँ का प्रत्येक नागरिक यह महसूस करे कि अपने देश को संचालित करेबाबता वह स्वयं है।

उनकी सामाजिक और पारिवारिक सफलता ऐसे जिनमें खारकी भाईका तथा धर्मनिरपेक्षता की जो बनीवि सुश्रीम ने जवाबो वह सुझाने न पावे।

अन्त में मैं यह भी कहना चाहूँगा कि हमें नहीं भूना चाहिए कि पूर्व बंगाल २४ वर्षों तक जलवा रहा, उसी के पड़ोस में परिवर्तन बंगाल की भी चलाने की साक्षिण नरसत्तपरियों द्वारा चल रही है। इसी आला में से यदि शान्ति का स्वल्प निखारा जा सके तो वह दुनिया के लिए एक बहुत बड़ी देन होगी। देर होने से बैसा ही पावाराए हुए लोगों जैसे २४ वर्षों की आजादी के बाद अन्न फारन के कर्णोपारी को महसूस हो रहा है कि भारत पकिमों अन्नकरण के रक्षण पर यदि गांधी के रास्ते पर चला होता तो अधिक बरसात होता।

सारीधाम (मुंबैर) —कमलतादि
२०-१-७२

कुति या नगत्त-हरियाणा में १३ वर्षों के उनके कार्य का लेखा-जोखा

दिनांक	१९७१ में	विले १२ लाख में
साहित्य सेवा—२२७)६५	१९००.०५	१५,२००.५५
परमाणा—७५ मोन	१२२२ मील	१०,२९२ मील
प्रचार—४० गाँवों में	३५३ गाँवों में	४,००९ गाँवों में

स्वदेशी और स्वराज्य

इस समय देश को कुछ 'तगा' चाहिए, 'बड़ा' चाहिए। बलवान देश के दबा पर भारत को जनता भोट सरकार ने एक 'होकर जिस सरकार को स्वयंसेवक का अधिकार दिया है उसके देश में जीवन में एक नया निखार आया है। उज्जर आत्मविश्वास बढ़ा है। उसकी राष्ट्रीयता में पुनरात्मक परिवर्तन हुआ है। वह एक बड़ा काम कर चुका है, वह 'पढ़ना' है कि उसे और बड़े काम करने को मिले। जैसे अन्तका देश के मुक्ति-संग्राम में हर भारतीय राष्ट्र के साथ जुड़ गया था, उसी तरह वह जगुग है कि किसी भी राष्ट्रीय पुनरुत्थान में साथ जुड़े। उसे दिखाई दे कि वह राष्ट्र के साथ और राष्ट्र बनने का एक पक्ष रहा है। वह रहा है, वह इतिहास के दिने को बिठा रहा है। और इतिहास को वहीं कर बना उसे कर रहा है। भारत का आर्थिक निर्धनता बनना बढ़ा है।

राज्यपालिका का साथ भी जोड़े पर नये देश के सामने आया है। जो अब एक राष्ट्र की नीति नहीं बन गया वह अब जूनोनी बनकर आया है। इस राज्यापालिका का नीतिगत, सङ्गठित, कार्य न सवाये। राज्यापालिका में स्वदेशी और स्वराज्य का पैर है। दोनों का मिल हुआ बिना राज्यापालिका के नाम में कुछ आसाने सुभव रह जायेंगे। स्वदेशी राष्ट्र है, स्वराज्य विधि, दोनों को सिद्ध करना पड़ेगा।

स्वदेशी नीति सम्पूर्ण भारतीय जीवन का शोध, समीक्षण, और पुनर्विचार है। इसे ऐसी रीतियों चाहिए जो हमारी व्यवस्था, परिधि, और जीवन पर आधारित हो। हमारी व्यवस्था से जो बर्बाद और बलवर्धित दिखाई देती हैं वे बहुत कुछ इस कारण हैं कि हमने उनमें स्वदेशी को जान नहीं रखा। बिदेसी नुस्खा भी बची गयी, लेकिन प्रायः एक ही तरह पर उनकी को टोपी नहीं पहने हुए हैं। उग्राणे क्यों नहीं ?

भारतीयों की भाँति में देश विदेशी नुसा, उनके मन में नहीं माने गये, और वह नहीं दिया सोच ही रहा था कि देश में नहीं लगी भाँति ही थी। कहीं भी भाँति के साथ होने की भारतीय भाँति एक ही नहीं। वि-सी वे दिने को बढ़ावा था नहीं। राष्ट्र में एक ही को पुनरुत्थान करने, हर एक का बेल-उद्धार करने का साथ हुआ हो पाता। जिस जनता में अन्तःस्वराज्य राष्ट्र को बलवाना था हुआ देखा था वह जनता ही बना देता रही है, और वह के लिए भाँति एक बना देवेगी ? हर पुनरुत्थान में हर सरकार के पास, हमारे जीवन का क्या करना पड़े देश के साथ होगा। ऐसे समय जब अन्तःस्वराज्य और जीवन में जाने किस बलिष्ठ पर जनता हो रहे हैं, अब हुआ एतिया बने राष्ट्रीय की भाँति का नये दिने के दिखार होगा दिखाई देता है, अब

भारत के सामने बाहरी और भीखी समझाएँ दिने के अधिक प्रबलर जूनोनी बनकर लाने हो रही है, तो हमारे देश निजी-जुनी राष्ट्रीय सरकार बनाने को बाध क्यों नहीं कोचने ? वे जनता को निर्माण में क्यों नहीं शरीक करते ? वे भीरी देश के लिए जानी लडा को बाध करार समझायाकिरत को बाध क्यों नहीं कोचने ?

सोचन का वह एतयाका ताजक बिचने पर कुछ नेता ही हो, जनता कुछ नहीं, सब तक बलेगा, और क्यों बलेगा ? भारत राजको के हथ वोट की ताकत से सरकार बनाने के अर्थकार को बाधन रखता चाहते हैं। उसे किसी भी नीति पर नैताना नहीं चाहते लेकिन सब हम चाहते हैं सोचन कास्तिक हो, पुष्टि को कलिताना ही हो। वह होना स्वदेशी और स्वराज्य के। हर तीक, हर कहर, हर विचारण और हर दरमामने को स्वदेशी और स्वराज्य को एक नयी इकाई के रूप में उभरना चाहिए। यह हीकी स्वायत्तिका की सम्पूर्ण जीवन, जो राष्ट्रीय जीवन का नया निर्माण करती।

दस को स्वदेशी और स्वराज्य की भावमयका है। इन प्रयुक्तों पर भाँति के साथ से लेकर सब तक विज्ञान विज्ञान हुआ है। यह देश के सामने आया चाहिए। जिन और जूनोनी की लकड़े लक्षण पूर्वको स्वदेशी आन्दोलन के साथ है। यह स्वयंवर है कि वह बनने लगी दुर्बल सरकार और जनता के साथ प्राप्तुन बरे।

वित्ताने भगवान ?

साथ साथ में वित्ताने प्रस्ताव दे, बाई निजकर दले। भारत स्वराज्य-सकत को हुमेरा दे रहा है, लेकिन उनसे एक ही स्वराज्य को माना है। इन पूरा मनो को बर्बाद देवे-देवताओं की युक्ति पर चढ़ने हो। लेकिन एतय कुछ नहीं है वह एक तलक देश में समुचितता की तरह लगी है, साथ-साथ 'परमानी' को भी बाध का गयी है। और वित्ताने देते ही स्वराज्य प्राप्त पर स्वयं के गठारा होयो, और बढ़ती ही जा रही है। क्षति, घटित, गोरी, भाषाई, भाँति से कुछ बनने धीरे-धीरे पुनः 'स्वराज्य' के रूप प्राप्त होने का रहे हैं। स्वदेशी-विदेशी समग्र वे-वेदियों का जीवन में हुए का सहज, स्वराज्यनिधि में जनता स्वराज्य, और स्वदेशी का स्वराज्य, स्वयं के लिए बर्बाद को समुचितता के साथ से मुक्ति-सकन, स्वयं स्वदेश, स्वदेशिक स्वराज्य, स्वदेश और स्वराज्य के रूपों से होते हुए भारत को युक्ति विज्ञान को बलिष्ठ स्वराज्य और जनक स्वराज्य के लिए हमारे-बहुताओं में ही स्वराज्य की प्राप्त।

यह जनता है जन एक आधारभूतक देश है। वस्तु देवों के अन्तःस्वराज्य के उने हुए स्वराज्यनिधि और जनता के लिए एते भारत के पाव का रहे है। विन्तु ? स्वयं-नीति के लिए, विचारणको के लिए, बाई जनता का सब लपाने के लिए, और-

ए० वी० सी० त्रिकोण : सम्भावनाएँ

—देवेन्द्र कुमार गुप्ता

अफगानिस्तान, बरमा और सीलोन के त्रिकोण को विगोवाजी ने उनके प्रथम अक्षर के साधारण पर ए० वी० सी० त्रिकोण का नाम दिया है। भारतीय मूलक में यह सारा क्षेत्र आता है और इनमें परस्पर शोहरत का भाव होना आवश्यक है। इसलिए अफगानिस्तान, पाकिस्तान, भारत, बंगला देश, नेपाल, भूटान, तिब्बत, बरमा और चीन का के स्वतंत्र राष्ट्रों की चाहिए कि वे अपना एक महासंघ बनायें जिसमें अपनी-अपनी राष्ट्रीय स्वायत्तता की रक्षण रखते हुए वे परस्पर शोहरत से रहें। सारे सभार के नवने को आप देख जाइये तो आपकी इस प्रदेश जैसा कमजोर हिस्सा नहीं मिलेगा। इसमें दुनिया की ३५० करोड़ आबादी का पौषर्षा हिस्सा दास करता है (अफगानिस्तान १.७५ करोड़, यमना देश ७.५० करोड़, चीनका १.१५ करोड़, भारत १५ करोड़, नेपाल १ करोड़ और पाकिस्तान ५ करोड़)। चीन की कुल आबादी भी लगभग इतनी ही है (लगभग ७५ करोड़), परन्तु वह एक व्यवस्था के अंतर्गत है। यहाँ भी यदि सभी राष्ट्र मिलकर कोकित नहीं करेंगे तो दुनिया की दरिद्रता बरती की आस की हाव से आपे निरलने का दासता नहीं रहेगा। दुनिया के गरीब देशों की प्रति धरित औसत आयदनी १५०० १० प्रतिवर्ष कृती जाती है जबकि हम क्षेत्र की ५०० १० आती है। साधारण दुनिया के ऐसे लोग जो साल में १५ दिन या अधिक, एक

समय ही भोजन कर पाते हैं उनमें से चीन चौथाई इतनी क्षेत्र में बढ़ते हैं। इस परिस्थिति को सुधारने में सभी राष्ट्रों को मिलकर सोचना होगा।

इसके लिए पापी गरीब की भलाई के लिए बहुत जरूरी है कि इन राष्ट्रों में परस्पर एक-दूसरे से सतते में खर्च होने-वाला व्यय अधिकतर बंद किया जाय। किसी अमेरिकी अखबार ने भारत-पाक-युद्ध का एक नई नमूना बताया था। उनमें दो मरीज अखराल में लेटे हैं। उनकी कम-जोर बाहों में रख दिया जा रहा है कि वे जिंदा रह सकें, फिर भी वे दूसरे हाथ से एक-दूसरे पर तबकार का वार करने का प्रयास कर रहे हैं। यह स्थिति भयावह और दयनीय है। इसमें भी विश्व के मनुष्य राष्ट्र अपना ऊपर सौधा करने की सोचें और दो के सघर्ष में से अपना राजमें तक या आर्थिक लाभ लेने के मनुष्ये पायें तो अमानवीय कार्य ही माना जाना चाहिए। पिछले १५ दिनों की सङ्घर्ष में ही दोनो देशों ने डार्ड तीन तो करोड़ रुपये की क्षति उठायी। अपनी राष्ट्रीय जाय का बड़ा भाग दोनों ही देश युद्ध की तैयारी में लगाते हैं। पश्चिम जर्मनी और जापान की पिछले दो दशकों की आर्थिक तरक्की का बड़ा कारण उनका निःसस्त्रीकरण है। यहाँ इन क्षेत्र पर राष्ट्रों को पैसा नहीं लगाना पड़ा। इस भूखण्ड के इन गरीब राष्ट्रों के लिए भी यह सम्भव है कि वे अपना बहूत-सा अतिरिक्त व्यय कम कर लें। यदि उनका महासंघ

(कन्फेडरेशन), जो, आवश्यक ही तो एक सदुक्त सेना रखे और परस्पर के मत-विरोधों के लिए सेना के उपयोग का प्रश्न मदा के लिए समाप्त कर दे। सध-मुक्त जो विश्व-सतर्भ में ऐसा प्रयोग नहीं-न-ही होना ही चाहिए अन्वया विज्ञान का सहारक उपयोग जैसे-जैसे बढ़ता जायेगा राष्ट्रीय तनाव से युद्ध मानव जाति के जानलेवा साबित होते-ही जाते है।

ये सारे देश परस्पर साहितिक, ऐतिहासिक और भौगोलिक तनुओं से जुड़े हुए हैं और इनमें राजनीतिक रूप से मित्र बनने में कोई बाधनाई नहीं आती चाहिए। जो बाधनाई है उनको समाप्त करने का प्रयास करना होगा।

ए० वी० सी० के राष्ट्र :

१—अपनी अपनी स्वतंत्र राज्य-व्यवस्था के अंतर्गत कार्य करेंगे। अपने अंतरराज्य मामलों में कोई किसी का हस्तक्षेप स्वीकार नहीं करेगा।

२—वैश्विक नीति के सम्बन्ध में ये सारे राष्ट्र एकजुट होकर काम करेंगे। इनके महासंघ की समुच्चय नीति के आधार पर ही विश्व के अन्य राष्ट्रों के प्रति अपनी नीति तय करेंगे। अपना सघर्ष की आँतों में ये एक स्वयं-विश्वरथ दाई के रूप में ही दिखाई देंगे।

३—अन्तर्राष्ट्रीय स्तरांतर के सम्बन्ध में अपनी सामूहिक नीति रखेंगे जिससे परस्पर एक-दूसरे से स्पर्धा की सम्भावना न रहे और सहकार के आधार पर औद्योगिक राष्ट्रों के साथ व्यवहार में टिक गहें।

४—नागरिकों का परस्पर रिगो

→अपने की भुन जाने के लिए। मालूम नहीं दावे किचकी विजनी मूल मिदती होगी।

एक इनमान द्वारा इनसान से इतना ऊब गया है, एक पक्षीभी बरने पक्षीगी से इतना अलग हो गया है, कि वह अनजान मनुष्यन को पत्ते के लिए बेचन हो उठा है। तमान दुनिया में एक प्रकार की मानसिक-आध्यात्मिक रिक्तता (मैल-स्फिरिपुजन वेदुक्रम) है। साधारण दशों में से नहीं 'लेखि पुत्रि' (इरोटिक कीरम) एक हुई है, तो कही एक-के-आर दुवरे मनुष्यन का जन्म हो उदा

है; और कही हिंसा और मार-नाट का ही बीजराणा है। युद्ध भी दो, भारत के 'आध्यात्मिक' मान का आधार इस बात समक उठा है। मात्र के वाजार में अन्य चीजों की तरह 'अपात्म' भी विहाज मान हो गया है। यह है महिमा बाजार मनुष्य की।

हजारों वर्षों तक हयने एक ही मनुष्य का नाम सेना सोखा। साधारण अब रिक्तता के साधनों की तरह इनमान के मजदों की भी 'मनुष्यनो' से गावधान रहना पड़ेगा।

पाकिस्तान के २२ परिवार

भी देश में आने-जाने में रोक-टोक नहीं रहेगी। अर्थात् पासपोर्ट, वीसा के बगैर, जैसे आज नेपाल-भारत के बीच होता है, आवागमन सुलभ होगा। तथापि अमीन-जायदाद सारीदने तथा व्यापार करने के बारे में स्थानीय देश अपना नियम लागू कर सकेगा तथा करोंकी भी अलग-अलग रहेगी, जिसे एक देश की बर्माई बिना सरकार की आज्ञा के दूसरे देश में नहीं जा सकेगी।

५—पररपर शान्ति की संघियों से बंधे रहेंगे तथा बाह्य आक्रमण से सुरक्षा करना के लिए एक समुदाय सुरक्षा-व्यवस्था रखेंगे जिसका किसी भी स्थिति में व्यतंगत मामलों में उपयोग नहीं किया जायेगा (अच्छा तो होगा कि एकरका ये राष्ट्र निःशस्त्रीकरण को मान्य करें)।

६—पररपर किसी भी विवाद को हल करने का एकरा एक ट्रिब्यूनल होगा जिसका निर्णय मान्य करना अनिवार्य होगा।

सवाल यह है कि विद्वानों की अच्छी व्यवस्था क्यों न हो पर क्या उपरोक्त हवाई मद्दतों को बनाने के लिए कोई आधार भी है? नीचे के समाचार इस दिशा में अनुकूलता के लिए आशा बंधाते हैं—

बाबर : १४-१-७२ को बगला देश के प्रधानमंत्री भूदीव बहते हैं—

“उन्का देश नियसता, शान्ति-यविता, सहकारिता और मंत्री के आधार पर अपनी बंदेशिष्य नीति निर्धारित करेगा और पूर्व के स्वतंत्रतावादी की तरह रहना चाहेगा। उन्होंने एक पत्र-प्रतिनिधि के उत्तर में कहा कि यदि भूदो ठीक रास्ते पर रहेंगे तो भारत-पाक और बगला देश के सभ्य मतेभेरी को समाप्त करने का रास्ता दिखाया जा सकता है।”

सन्धन : १४-१-७२ अमेरिका, ईंग्लैंड की और से बगला देश समस्या के हल के रूप में मुद्राये दाने भारत पाक-बगला देश महासभ्य (बन्देदेशन) के विचार को अनुचितरतन के नेता सन्देश अज्ञानता का निवारण (राष्ट्रीय अवासीय) के नेता तथा पाकिस्तान राष्ट्रीय सभ्य

निश्चित रूप से तो यह नहीं कहा जा सकता कि उन लोगों ने अपने पास कितना धन इकट्ठा कर रखा है, परन्तु इतना तो कहा ही जा सकता है कि उनलोगों का पाकिस्तान की अर्थनीति पर गहरा असर है। इसीलिए पत्रकारों ने उन्हें ‘पाकिस्तान के बार्दिव परिवार’ नाम दिया है।

१९४७ के दंडवारे के समय से ही उन २२ परिवारों ने बड़े पैमाने पर ऐसे उद्योगों की स्थापना कर ली है जो वहाँ के लाखों व्यक्तियों को रोजगार देते हैं तथा जो स्टीन से लिपिस्टिक तक बर्दे प्रकार के हैं। मुद्र के पूर्व तक इन २२ परिवारों के पास पाकिस्तान के उद्योग का ६९ प्रतिशत, बैंक-बीमा का ८० प्रतिशत था तथा बड़े पैमाने पर देश की कृषि-व्यय अछी भूमि थी। ऐसी स्थिति में जब पूर्व पाकिस्तान से पश्चिम पाकिस्तान का सम्बन्ध टूट गया तो उनमें से कुछ की स्थिति कमजोर हो गयी, लेकिन यह कहा जाता है कि इनमें से अधिकांश ने अपनी पूर्वी बना रखी है।

के सदस्य) ने दोहराया है। बराची में उन्होंने कहा कि इन लोगों स्वतंत्र राष्ट्रों का बन्देदेशन बनाये बिना इनका उद्धार सम्भव नहीं है।”

नयी दिल्ली : १४-१-७२ “राष्ट्रपति भूदो ने पाकिस्तान उद्योगों के अपने दयान में कहा कि ‘इस मूलभूत के महासभ्य बनाने के सम्बन्ध में जो लोग मान करते हैं वे उनकी बंदिनी की नही समझ रहे हैं। महासभ्य बनाना आम्रान नाम नहीं है। हम भी भारत के एक अंग थे और यदि हम महासभ्य के सिद्धांत को बखूब करते हैं तो पहला मुक्त बिसय हम सम्बन्ध जोड़ सकते हैं वह भारत ही है। परन्तु उसमें बर्दे कठिनाईयें हैं।”

इस प्रकार विनोबाजी का जो विरोध का विचार है उसके सम्बन्ध में सम्भावनाएँ सोजी जा सकती हैं? ऐसा आवास

उन्होंने इनकी शैलत कंठे इकट्ठा की यह एक विकसनीय देश के अनियमित पूर्वोन्नाद की मिशाल है। इनमें से अधिकांश १९४७ में बलकत्ता और बर्माई से जाये और अपने साथ उनकी ही ज्ञान भी लाये। ये ऐसे समय आये जब पाकिस्तान में सत्ता अच्छी तरह सगठित नहीं हुई थी। धीरे-धीरे इन लोगों ने सम्पूर्ण पाकिस्तान की अर्थ-व्यवस्था पर प्रभुत्व जमा लिया। उन्होंने बीमा, बैंक आदि मूल उद्योगों की स्थापना अपनी पलियों, नजदीक के सम्बन्धियों तथा मित्रों के साथ की। यहाँ तक कि सैनिकों ने भी, जो सरकार का संचालन करते थे पूर्व पाकिस्तान का उपयोग एक उपनिवेश के रूप में किया, जहाँ वे सखी दर पर बच्चे मान की सखीद तथा मर्होी दर पर तैयार माल की बिक्री करते थे। इस तरह सारा साभ १० पाकिस्तान को बना जाता था।

उन लोगों में आदमजी और शाऊदजी का स्थान सर्वोपरि है। आदमजी के पास बैंकिंग, बीमा, बर्दे, जूट, और कापय कुल →

उपरोक्त सन्धनों से होता है। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है कि असासकीय स्तर पर इनके प्रदान किये जायें और सुविमाननों का विचार इस सम्बन्ध में प्राप्त करके एक दीय वातावरण बनाया जाए तथा प्रथमतः अपने देश में इसकी अनुकूलता पंक्ष को जानी चाहिए। दूसरे सम्बन्धित देशों के विद्वजनों के बीच इस सम्बन्ध की गोष्ठी या आयोजन करना चाहिए। शाब्द अफगानिस्तान इसके लिए योग्य स्थान सिद्ध होगा।

कीर्दी को नया विचार समय अवसर लेता है, परन्तु यदि उनमें सत्याज का बीज है तो उसे जड़ पकड़ने देर नहीं लगती। विरोध के बिचार में सत्याज है और उसके उस विचार के उगने के लिए योग्य भूमिका बन रही है। अनएव इस ओर प्रयास किया जाना चाहिए। ●

पश्चिमी दुनिया में गांधी

—प्रो० मुगत दासमुत्ता

मासवर्ष में एक समुदाय ऐसा है जो मानता है कि महात्मा गांधी का जन्म के विषय और कति तेज गति से परिवर्तित वैज्ञानिक युग में पीछे पड़ गये। जजः गांधी के नाम पर पीछे मुड़कर देखने की आवश्यकता नहीं है। आज के समाज में गांधी की कोई प्राथमिकता (प्रेमियंस) नहीं है। यह बात उम्र वर्ग में काफी सही है जब कि एकमुच समाज बदल जाय, समाज का दायुर्ग न्यून बरल जाय। परन्तु समाज का उदर्य नहीं हो, समझाई नहीं हो तो किसी दृष्टा का विचार पुराना बसे पड़ सकता है? गांधीजी एक इच्छा थे, जो अस्मिन् का दर्शन कर सकते थे, किया था। फिर भी उन्होंने अस्मिन् को बात बहुरर कोनी को बहुत में नहीं रखा। अर्थात् वर्तमान की सुख व आनन्दपूर्ण ज़िन्दगी साध्य बनाने की बात नहीं। और, वर्तमान को सुख व आनन्द से जीने साध्य बना देने में ही मनुष्य की दिष्टि है। जब तक यह दिष्टि प्राप्य नहीं हो जाती तब तक गांधी अवागमिन् बँधे पड़ सकते हैं?

दुनिया के अनेक मुद्रों में सुख व आनन्द को जो सीज का प्रयत्न मुक्त हुआ है उसमें लोग जाने-अनजाने वहाँ ही पड़ने रहे हैं जहाँ गांधी पड़ने व। वे लोग पले ही गांधी को नहीं जानते हैं, परन्तु वे वहाँ पड़नेसे वहाँ वे गांधी को पाने ही हैं।

गांधी विद्याशाखा के समुच्च निदेशक श्री मुगत दासमुत्ता ने यूरोप और अमेरिका में जो कुछ भी देखा है, उनके आधार पर उनका जो मत रखा है उसे हम यहाँ प्रयोक्तृता के रूप में 'मुगत दास' के पाठकों के लिए संक्षेप पत्राचार के रूप में प्रयोग के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं।

प्रश्न—आपको पश्चिमी समाज का काफी अनुभव है क्या? हम आपसे जानना चाहते हैं कि वहाँ महात्मा गांधी की विद्या क्या में देखा जाता है? उनके विषय परन्तु वे क्यों प्रभावित हैं या होते हैं?

उत्तर—१९९६ में मैं पहली बार अमेरिका गया। वहाँ पर गांधीजी के बारे में कोई सामान्य विचार पानना ही, ऐसा मुझे कुछ नकर नहीं था। कुछ लोग ऐसे जकर वे अतिरिक्त ही गांधीजी के विचार के प्रति जो तेज रीति सुनने में (विशेष आनन्द) के लोग आनन्दकारी (प्रेमियंस), बीर्य; परन्तु वे लोग अतीत-आलो-

—अभिप्राय ९४ करोड़ की जनता है। बाइबल की उल्लेख कर रही है। दुखी बेगी में अत्यन्त ही उन्नत अर्थव्यवस्था है। इन लोगों ने सुधार, सत्य, विचार-वीर्य आदि के क्षेत्रों में अत्यन्त अग्रगण्य रुझान बना कर रखा है। पश्चिमी दुर्गों के अग्रगण्य २० करोड़ जनता को पश्चिमी समाज के विदेशी-मुद्रा-मोने का दायुर्ग है।

मुगत-दास : सोवियत, ७३ करोड़, ७३

मुझे वहाँ की अग्रगण्य प्राण हुआ, मैंने पश्चिमी-विचार को स्पष्ट करने की कोशिश की। मैंने उन लोगों को बताया कि आनन्दवर्ष में अतीत-आलोचना का जो प्रभाव रहा है वह आन्तरिक द्वेष को दूर करने का रहा है न कि अन्त-अन्तर की द्वेष को। उनको मैंने समझाया कि आन्तरिक द्वेष और बाह्य द्वेष का क्या सम्बन्ध है। मुझे तो आन्तरिक द्वेष का एक सद्य (सिम्बल)-मय है। समाज को दूर कर देने के मूल समस्या को नहीं ही सही है। क्या मूल समस्या को ही दूर करने का प्रयास होना चाहिए और अतीत वह जो मुझे के रूप में दिया था प्रयत्न रूप दिखाई देता है वह दूर होना और अतीत मूल-आनन्द, प्रेमियंस, अन्त-अन्तरों द्वारा जो प्रेष्य होता है, उनका अन्त होना चाहिए। मैंने उनको बताया कि आप भी अपनी पेशे दृष्टि को दूर करने का प्रयास करने में सफल हो सका, विचारणा के क्षेत्रों की वास्तविक ही दृष्टि को अतीत में ही वहाँ मुक्त नहीं करती है।

जब १९९८ में मैं दुबारा अमेरिका गया तो मैंने जाना कि पश्चिम में परिवर्तन आ गया है। वे अपनी पेशे दृष्टि से अत्यन्त ही अतीत से विच्छेद करके अतीत से अलग होकर अतीत को अतीत में ही छोड़ने लगे हैं। उनके समाज-वीर्य को जो दृष्टि अन्त कर रही है वह पीछे दूर हो ग

इसके बाद मैं १९७० में अमेरिका गया। जब आप देखें कि लोग अतीत से अतीत को अलग कर रहे हैं। १९७० में मैंने देखा कि वहाँ के लोग आन्तरिक दायुर्ग (सिम्बल विचार) पर प्रभाव करने लगे हैं। और, इन प्रभाव में वे अतीत-आलोचना को अन्त कर रहे हैं। अतीत-आलोचना को अन्त करके अतीत को अतीत में ही छोड़ने लगे हैं। अतीत-आलोचना को अन्त करके अतीत को अतीत में ही छोड़ने लगे हैं। अतीत-आलोचना को अन्त करके अतीत को अतीत में ही छोड़ने लगे हैं।

—मुद्र संकेत के आधार

के द्वारा ही, होटल के बेपटा हो, वे दिशा से तग था गये हैं इसलिए बहिसा की वर्षा उनको हथिकर लगी।

प्राय-गांधीजी ने एक समाज-जीवन-रसोय प्रस्तुत किया है तथा सामाजिक परिवर्तन का एक नया माध्यम प्रकट किया है, उनके इस मान्यताओं का मान्यता परिवर्तन क्या है? क्या नहीं?

उत्तर—मैंने पश्चिम में जो कुछ भी देखा, समझा उस पर मुझे यह कहने में सरोबर नहीं है कि यहाँ के लोग गांधी के भावों को लेकर प्रायः बढ़ना चाहते हैं।

यह वह गांधी का भाव है—उन्होंने यहाँ से निष्पत्ति, पता नहीं। इतना अत्यंत मायूस होता है कि उनके अपने जीवन की वास्तविकता में से वह चीज निकल रही है।

याप 'पोर्स कलर्ड' को ही बात सीजिए। 'पोर्स कलर्ड' का मतलब यह है कि निर्धन काले के रंग को छोटा किया जाए। पॉर के युवा-आन्दोलन को माँग है कि आज की औद्योगिक पद्धति नहीं चाहिए, यह का प्रश्न (मशीन श्रमिन्धन) नहीं चाहिए। वे सत्यन सुच समान (नाल आन्दोलन-सोसायटी) को बात कहते हैं जिसे सर्वोप भी मानता है।

वे सोसायटिया को ही लिया जाए। बहुत बड़ा हथियार का ही लडा। उनके गांधी का नाम नहीं लिया, परन्तु काम नहीं हुआ जो गांधी करते थे। उन्होंने उसके लिए गांधी का साहित्य नहीं पढ़ा था।

तीसरा खेडर १९१६ में सुती मिले के वे मेसिजको में अदूर भी सुती करते थे। वे गांधी के बीच में काम करते थे। यहाँ के मजदूरों को मजदूरों कम की जाती थी। वे चाहते थे कि उनकी मजदूरी बढ़ानी चाहिए। इसके लिए उन्होंने मजदूरों के काम बन्द कर देने की बात कही। दूसरी जगह वे मजदूर लाकर अदूर पैदा करते थे काम जारी ही रहा तो उन्होंने 'अदूर मत खारो' आन्दोलन चलाया। दूरे देश से यह आन्दोलन पैदा। उन्हें मजता था,

एहकार प्राप्त हुआ।

जब मैं उनसे बिना तो उन्होंने ४० दिनों का अपना उपवास बनी-बनी ही समाप्त किया था जिसे उन्होंने अधिकांशों के श्रवणार के प्रतिकार में किया था। उनके पास भी देखा कि गांधीजी को एक छोटी तस्वीर रही हुई है। उनकी तिका-कन थी, उन्हें अधिक सपरों की पद्धति का कोई साहित्य नहीं प्राप्त है। उन्होंने ऐसे साहित्य की माँग की। वह भी गांधीजी को तरह-एकला चलो में विराम रखते हैं।

वेसिजो मितो में अटिया को एक बचेरी है जो क्रमिक परिवर्तन की घोषणा में है, जिसे गांधीजी भी चाहते थे। परन्तु इन लोगों के माप हमारा किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं आता, हम कुछ नहीं कर सकते। कुछ न कर सकने के भी कई कारण हैं। एक कारण तो यह है कि जिन मजदूरों की हम रथ-पना करना चाहते हैं वह हम नहीं कर सकते। इसके अभाव में हम केवल बग कर सकते थे, या मार्गदर्शन बना कर सकते थे? दूसरी बात यह थी कि हमने अपने यहाँ कोई बौद्धिक आधार (इन्टेले-जुअल वेज) नहीं बनाया जो गांधी के विचारों को उन लोगों तक पहुँचा सके।

जहाँ तक गांधीजी के जीवन-दर्शन का प्रश्न है, वह भी पश्चिमो समाज में दिखाई देता है। अमेरिका में लोग धारणी को ओर बढ़ रहे हैं। अण्ठी पोषाक का कार्मेटिक वा बहिष्कार करते हैं। साधारण जीवन-स्तर को ओर वे बढ़ रहे हैं, और ऐसा बड़े पैमाने पर हो रहा है। केरिन वे लोग गांधीजी को नहीं जानते।

प्रायः क्या आप यह मानते हैं कि गांधीजी के अनुयायियों ने गांधीवाद की ओर को बलपना का चिन प्रकृत किया है? सर्वोत्तम का विनाशकारी चिन नहीं प्रस्तुत होता?

उत्तर : पश्चिम में गांधी-विचार

को लोग नहीं, समझे, जाने, इसकी जिम्मेदारी हमारी है। परन्तु मुझे ऐसा नहीं लगता कि यहाँ गांधी के भावों के अनुकरण को कुछ भी हो रहा है। लख के साथ गांधी का नाम जोड़ा हो जान। गांधी-विचार को लोग नहीं, इसके अन्तर्गत मरद मिलेगा। इस भावना से ही उन तक गांधी-साहित्य को पहुँचाने का कार्य होना चाहिए। इसके लिए गांधी साहित्य का पुनर्विचार आवश्यक होगा।

यसो आपसे मैंने बताया कि जिन मजदूरों को हम जानते समाज में अधिष्ठित करना चाहते हैं उन्हें पढ़ने बाने यहाँ करने की चेष्टा करें, तो लोगों को पचना मार्गदर्शन प्राप्त होगा। यह आवश्यक है। परन्तु इसके साथ ही सर्वोप आन्दोलन को जागतिक बनाता होगा और, यह सब सम्भव होगा जब हमको यथां आधार प्राप्त होगा। हमारे यहाँ अन्दोलन का पथार्थ है शक्ति, परन्तु उनके यहाँ शक्ति पथार्थ आधार नहीं होगा। उनका पथार्थ कुछ दूसरा होगा। वे समझाओं के सन्दर्भ में सीखते। भारतमें मैं सर्वोप को सफलता प्राप्त हो वा असफलता दोनों ही स्थितियों में उन्हें सीखने को विनियोग।

भारतवर्ष में दार्शनिक (फिजॉन-डिजल) पत्र पर अत्यंत जोर दिया जाता है और यहाँ धर्मन काही स्पष्ट है। परन्तु पश्चिम में टीक इनके विपरीत है। वे लोग पद्धति (सेवज) पर ज्यादा जोर देते हैं। इस स्थिति में यहाँ उनके पद्धति को जा गांधी है और वे यहाँ से दूराने से मरते हैं।

एक बात और है जिगडी और सर्वोप को ध्यान देना चाहिए। सर्वोप आन्दोलन अपना जो चिन (इमेन) बंध करता है उसमें धन-उत्पन्न का आधिपत्य होता है, अरिज-मोड को तप्य जाती है। इसके कारण चिन लोगों का इन्टीगेन वैज्ञानिक है वे लोग दग और बाइबल नहीं हो पाते हैं। मन इसमें वैज्ञानिकता बाने इसकी शक्ति होती चाहिए।

प्रस्तुतकर्ता : रोचरगु

भारत में अमेरिकी कुचालें

अमेरिका भारत को आर्थिक शिकंशों में तो बाधता ही रहा है, उसने यहाँ के बुद्धिजीवियों और राजनीतिकों को भी पँसने की बम कीशिम नहीं की है। उसने हर क्षेत्र में अपने 'मजमाज' बनाने की कोशिश की है—यँजाब के बड़े विद्यालय, केरल के सरिकुलक केन्द्र, उत्तर-पूर्व के नगा-विद्रोही, और मध्य प्रदेश के शर्मंतवादी, सभी में उसने अपना जाल फैलाया है। अमेरिकी प्रेरणा और पंते से कई मोर्चों और सगठन बनते हैं। भारतीय उद्योगपतियों के द्वारा जिनके उद्योगों में कुछ बड़े उद्योग चलाये गये हैं, राजनीतिक और प्रशासनिक क्षेत्रों में 'बढ़ो' तक पहुँच प्राप्त की जाती है। 'पीस कोर' के नाम से भेदियों का जाल बिछाया जाता है।

हमारे विश्वविद्यालय अमेरिकी कुचाल के मूढ बन्धे हैं। 'रिसर्च' के नाम में लोगों को खरीदा जाता है, और उनके द्वारा अमेरिका के अदभुत विचारों का प्रचार होता है।

शिवने साल २५ मार्च को जब पार्लियामेण्टी सेना ने अपना देश में प्रहार शुरू किया उसके बाद पंजाब में अमेरिकी रिसर्च-संगठनों की सक्रिय अचानक बढ़ गयी। किसलिए? 'सिविलरिज' और एक विंगेट धार्मिक समुदाय के रूप में मिलने की समस्याओं के सम्बन्ध में तथ्य एकट्ठा करने के लिए। यह रिसर्च, एक तरीका था जिससे के गज की भारत से अलग करने का। यह एक नमूना है पार्लियामेण्ट-अमेरिका की भारत के विरुद्ध मिर्च-भूली कुचाल का।

किस तरह विश्व बैंक अमेरिका का बंसा ठेकिएर क्षेत्र में पूँजीवार को मजबूत करने के लिए दल्लेमाज होता है, इसका एक ताना उदाहरण है, जिसने साल विश्व बैंक ने पंजाब को लगभग ३० करोड़ रुपये का बर्ज दिया। यह पैसा ड्रैक्टर और दूसरे यंत्र मँगाने के लिए था। इन्ही तरह हरियाणा को भी ६

हजार ड्रैक्टर और दूसरे बड़े यंत्र खरीदने के लिए पैसा मिला। इस वंशे से मँगाने गये ड्रैक्टरों का मूल्य प्रति ड्रैक्टर ४० हजार रुपया था, जब कि देशी ड्रैक्टर २० हजार में मिलते हैं। विश्व बैंक ने शर्त रखी थी कि ड्रैक्टर उन्हीं किमानों में मिलने चाहिए जो आर्थिक दृष्टि से युक्त हो। और ड्रैक्टर परिवर्ती देशों से ही मँगाने जायेंगे।

पंजाब और हरियाणा के विश्व विद्यालयों के रिसर्च स्टावर ऊँची शिक्षा के लिए तथा बड़े शासक स्थावत ट्रेनिंग के लिए अमेरिका भेजे जाते हैं। ये लोग लौटकर इस देश में अमेरिकी संस्कृति, साहित्य और विज्ञान पर गोपिधर्मा करते रहते हैं।

विज्ञान के क्षेत्रीय सघनों में से एक चडीगड़ में है। अभी हाल तक ये संगठन एक 'अमेरिकी डाइरेक्टर' के सहायन में चलते थे। एक सघन के डाइरेक्टर की नियुक्ति की इरीहाल तो दिल्ली स्थित अमेरिकी हुतावास से लेनी पड़ी।

पिछले साल पंजाब में एक सगठन बना। उसका नाम था 'पंजाब फ्लैण्ड ऑन द यू० एस० ए०'। इस सगठन का उद्देश्य था : पंजाबी लोगों को अमरीकी जीवन-पद्धति अपनाने के लिए तैयार करना।

असम में भी अमेरिकी मूत्र सक्रिय रहे हैं। वहाँ एक 'बर्से यूनिवर्सिटी सिस' है। यह सगठन विश्वविद्यालयों के तेज विचारियों से सम्पर्क रखता है, और छात्र-सघनों में भी पुसंठ करता है।

इन्ही तरह मैदानीय में एम० आर० ए० है, जिसका प्रभाव नवियों और केनाओं पर भी है।

यह बात जाहिर हो चुकी है कि पूरे उत्तर पूर्वी अंचल में अमेरिकी भेदिया-संगठन (सी० आई० ए०) अनेक रूपों में सक्रिय रहा है। नगा-विद्रोहियों को उसके द्वारा अस्त्र-शस्त्र भी मिलते रहे हैं।

केरल दक्षिण भारत में ६० कम्पनियों हैं जो भारतीय-अमेरिकी उद्योग-

पतियों के सहयोग से चलती हैं। इनमें 'बर्ड का 'मनाननीय नमोद्यम' की रिपोर्टें में उल्लेख है। तमिलनाडु की डी० एम० के० सरकार ने अमेरिकी पूँजी का स्थापन करने में बड़ी तदारता दिखायी है, और अमेरिकी उद्योगपतियों को मुआफे और सत्क्षण हा हर सम्भव आसराशन दिया है।

केरल में भी अमेरिकी मूत्र नम सक्रिय नहीं है। नेचरवाणी एगोक्ला बालेज के ४६ अध्यापकों में से एक-थोसार्ड अमेरिका में प्रसिद्धित है। केरल विश्वविद्यालय के सभी विभागों के अध्यापक अमेरिका-देश्य हैं। इन लोगों को अथवा जगहें प्राप्त करने में अमेरिकी स्रोतों से बड़ी मदद मिलती है।

बंगाल के हिन्दी, उर्दू, बंगला अक्षरशास्त्र में युनाइटेड स्टेट्स एन्कमेंशन सर्विस द्वारा प्रचारित सामग्री बृद्ध छपती है।

अमेरिकी क्रियमें अपराध-वृत्ति फैलाने में बड़ा काम करती है। उनमें क्रूरता और हिंसा भरपूर रहती है जिसका दैत्य-बालों के मन पर गहरा अक्षर होता है। इसी तरह अमेरिका से एक-से-एक अमरीक पत्रिकाएँ आती हैं जिन्हें हमारे युवक-युवतियाँ चाब से पढ़ती हैं।

१९६४ में बंगाल के शिक्षित लोगों के बीच कुछ पुस्तिकाओं का प्रचार हुआ। ये पुस्तिकाएँ परिवर्ती बलिन में छपी हुई थीं। उनमें कुछ नक्शे छपे थे जिनमें 'पूर्वी भारत का सशुक्त राष्ट्र' दिखाया गया था। उसमें भी बंगाल, पूर्वी पाकिस्तान (अब बंगला देश), असम, मनीपुर, त्रिपुरा, मेरु, नगालैण्ड, अज़र, तिलिचम) द्वारा में 'समुच्चन बंगाल आन्दोलन' एक कराने की कोशिश अमेरिकी मूर्खों द्वारा की गयी थी, लेकिन वह चल नहीं सकी।

राजनीतिक क्षेत्र में अमेरिकी भेदिया-अति-दक्षिणार्पी और अति-जामयंभी, दोनों तरह के उद्योगों को बढ़ाने की कोशिश करते हैं।

राष्ट्र के जीवन का कोई पहलू नहीं जिसमें छुपे-छुपे की कोशिश नहीं होती। ●

सर्वोदय डाइजैस्ट

सर्व सेवा संघ

अंक २, फरवरी, '७७

ग्रामस्वराज-कोष

पुष्प विनोबाजी की ७५वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर देश भर में जो ग्रामस्वराज-कोष एका हुआ था उसमें प्रदेशवार जाँच रहे गीने प्रकाशित विद्ये जा रहे हैं। कोष का लक्ष्य १ करोड़ रुपये का था और यह वर्ष जनवरी तक सत्रह के जो अनुमान प्रदेशों से मिले थे, उनके अनुसार कुल सत्रह २० लाख से ऊपर हो जाने का आँकड़ा किया गया था। पर बाद में जो हिसाब मिले उनके अनुसार कुछ प्रदेशों का आँकड़ा सत्रह अनुमान से कम हुआ है। फिर भी यह सत्यों की बात है कि पू० विनोबाजी के ७५वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में सत्रहों तक कोष ७२ लाख रुपये से ऊपर पहुँच गया।

एक कोष का उपयोग विनोबाजी की समिति के अनुसार ग्रामस्वराज आन्दोलन के लिए हो रहा है। ग्रामस्वराज-कोष का यह आन्दोलन विश्वेश्वर २० वर्षों से चल रहा है। इस आन्दोलन के अतिरिक्त देशभर में करीब १३ लाख एकड़ जमीन पुराने

मालिकों के पास से निवृत्त कर ५ लाख करोड़ परिवारों से बँट चुकी है। वेदकाल से ऊपर शीलों में ग्रामस्वराज के संचय हुए सत्रहों देश में सामर्थ्यशून्य के लिए एक आशावर्षण बना है। अब ग्रामस्वराज के बाद का काम ही रहा है और तीन शीलों में ग्रामस्वराज बनी है, तथा काम कर रही है। पूरा समय देवोपनि संवहो कामकर्ता इस काम में मगने हैं तथा अर्थ हस्तों आर्थिक समर्थ दे रहे हैं।

इसने सत्रह आन्दोलन में समाजिक ही हर बरस विभिन्न प्रदेशों में विचारकर लक्ष्यो रूपमा संचय होता हुआ है, जो सत्रह-सत्रह जनता से सत्रह किया जाता रहा है। ग्रामस्वराज-कोष, देश भर में एक साथ चलना शुरू यह करनी का परम्परा प्रदान था। पुष्प विनोबाजी ने इसी कार्य पर इस सत्रह, की दृष्टान्त दी थी कि यह कोष स्वाधीनता के रूप में न रहे बल्कि आन्दोलन के लिए उसका संचय होता जाय। आन्दोलन के लिए जिस

परिमाण में संचय होता रहा है उसपर से ऐसा अनुमान था कि तीन-चार बरस में कोष समाप्त हो जायगा।

अत आँकड़ा १९७० से जब कोष का सत्रह शुरू हुआ, आन्दोलन का संचय जगह-जगह समर्थ से होता रहा है। हर प्रदेश में जो सत्रह हुआ है उसका एक प्रतिशत आन्दोलन के केन्द्रीय संचय के लिए संचय सत्रह को दिया गया है, दोष २० प्रतिशत प्रदेश में ही संचय हो रहा है। ग्रामस्वराज, विन्नी, कलकत्ता में हुए सत्रह के, जिनका ५० प्रतिशत केन्द्रीय कोष में दिया गया है।

एक सत्रह के अतिरिक्त समर्थ-समर्थ पर ग्रामस्वराज-कोष के उपयोग की आवश्यकता जायगी, सामग्री से प्रयुक्त साधनों की, देते रहने की योजना रहेगी, विच्छेद जनता यह सामर्थ्य होता रहे कि उनके राज का उपयोग किस प्रकार हो रहा है।

—विश्वराज शर्मा

श्रामस्वराज-कोष

प्रदेशवार संग्रह

ता० ३१-१२-७१

क्र० सं०	प्रदेश	कुल संप्रह
१.	आसाम	२,१०,०००.००
२.	बंगाल (कलकत्ता)	३,०५,३१२.५०
३.	बंगाल (अन्य)	१४,९१२.५०
४.	बिहार	४,००,०००.००
५.	उत्तर प्रदेश	४४८,६८७.३२
६.	हिमाचल प्रदेश	१५,००५.००
७.	कर्नाटक	३०२.५६
८.	पंजाब	५४,०००.००
९.	हरियाणा	६२,४६१.००
१०.	राजस्थान	४,२०,७१९.८४
११.	गुजरात	५,५०,०००.००
१२.	महाराष्ट्र	१२,००,०००.००
१३.	बम्बई शहर	९,५७,५००.००
१४.	अन्य प्रदेश	१,६०,०००.००
१५.	उड़ीसा	५२,०००.००
१६.	झारखण्ड	३,७९,५५७.५८
१७.	मैसूर	५,५८,३१०.००
१८.	केरल	४१,४१९.१५
१९.	तमिलनाडु	२,०२,४२१.४२
२०.	दिल्ली	१,४०,९५३.१५
२१.	गोवा	३४,५९८.७०
२२.	नागालैंड	१,२२,१३१.९६
२३.	केंद्रीय ग्रह	२६,४०९.२१

जोड़ - ७५,१९,७४०.१९

संविधान का २५वाँ संशोधन

एक प्रतिगामी कदम

साम्प्रतिक अधिकांश को सीमित या समाप्त करने की कोशिश करनेवाले २५वें संशोधन को चाहे जो भी विशेषण हों नागरिकों के भाषण एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, संगठन या सच बनाने की स्वतंत्रता, भारत के समस्त क्षेत्र में स्वतंत्रतापूर्वक विचरण करने तथा देश के किसी भाग में रहने और बसने की स्वतंत्रता के जो मौलिक अधिकार हैं, उन्हें किसी भी रूप में सख्त करने के प्रयास को मैं एक प्रतिगामी और अधिनायकवादी कदम मानता हूँ। समाज के कल्याण और द्वैत के नाम पर राज

द्वारा अधिकाधिक सत्ता का अधिग्रहण हमेशा प्रगतिशील तथा सामर्थ्यवादी कदम ही होता, यह धारणा नहीं है। इसके विरोध, यह बिलमूलक दशान्वयकवादी और प्रतिगामी कदम भी हो सकता है। अन्त्या, सोशलिज्म और अधिनायकत्व का भेद ही समाज हो जायेगा और एवं सत्तावादी व्यवस्था ही सर्वाधिक प्रगतिशील व्यवस्था बन जायेगी। सत्ता है प्रजातन्त्र और उनके सङ्घर्षी, संविधान के अन्तर्गतों द्वारा, जिनमें पंडित जवाहरलाल नेहरू भी शामिल हैं, मुख्यतः रूप से प्रतिष्ठित सोशलिज्म की

दृष्टियों को मिटाने पर तुल्य हुए हैं। केन्द्रीय विधिमन्त्री के वक्तव्य और उनके भी अधिक श्री मोहन कुमार मंगलम द्वारा इस विषय में प्रस्तुत विधेय के विचार, प्रति-क्रियाकारी हैं, और सोशलिज्म समाजवाद के बजाय अधिनायकवाद के संकेतक हैं। नागरिकों के मौलिक अधिकार २५वें संशोधन द्वारा राजकीय नीति के निदेशक सिद्धांतों के अधीन रिये जा रहे हैं, इस बात से लगता है कि विधिमन्त्री को गर्व का अनुभव होता है। यह तो गर्व के बदले सत्ता का विषय होना चाहिए कि भाषण, संगठन, तथा विचरण को मौलिक स्वतंत्रताएँ भी, समाजवादी नीति की आवश्यकताओं के बहाने, राज्य की स्वेच्छा-चाहिरता के अधीन की जा रही हैं। संसद में सत्कार द्वारा दिये गये इस मौलिक आश्वासन का कानून में कोई मूल्य नहीं है कि प्रस्तावित संशोधन से हमारे मौलिक अधिकार प्रभावित नहीं होंगे। अतः मैं प्रधानमन्त्री से तथा उनके सहयोगियों से अपील करता हूँ कि वे घोड़ा ठहरकर घोवों और सोशलिज्म के उन मौलिक आधारों की रीखनी में, जो सत्ता के अनुसार बदलते नहीं, बल्कि शाश्वत बने रहते हैं, इस प्रश्न पर पुनर्निर्धार करें।

प्रधानमन्त्री की सोचसमा में दो तिरुई बहूवच प्राप्त हैं, एक बात से उन पर यह विवेक सखित आता है कि वे जनता द्वारा दिये गये अधिकार का दुष्-प्रयोग न करें। उनकी तथा उनकी सरकार को इस प्रश्न पर भी पुनर्विचार करना चाहिए कि किस हद तक सर्वोच्च न्यायालय तथा उच्च न्यायालय, सोशलिज्म की आवश्यकताओं के अनुकूल, राजकीय नीति के निदेशक सिद्धांतों की क्रियान्वित करने की दृष्टि से बनाये गये कानूनों के वैधानिक औचित्य पर निर्णय देने के अधिकार से वंचित दिये जा सकते हैं। पटना, १ दिसम्बर ७१।

—जयप्रकाश नारायण

भोपाल में सर्व सेवा संघ का अधिवेशन

शुक्र २८, २९, ३०, ३१ अक्टूबर, '७१ को भोपाल में सर्वोच्च आन्दोलन में सक्रिय हो कर कार्य कर रहे कार्यकर्तियों का प्रथम ही अधिवेशन महात्मा जवाहरलाल नेहरू के साथ सम्पन्न हुआ। सर्व सेवा संघ द्वारा इस प्रकार का अधिवेशन सभ्य में दो बार बुलाया जाता है, और देश भर के कार्यकर्ता साथी एकत्र होकर पिछले काम की प्रगति का लेखा-जोखा और समीक्षा करते हैं और अपने के काम की योजना बनाते हैं। कामगोर पर यह अधिवेशन ३ दिनों का होता है, लेकिन इस साल चार दिनों का हुआ और इसमें करीब २ सौ कार्यकर्तियों ने भाग लिया। इस अधिवेशन में सर्वोच्च-आन्दोलन की भरपूर समीक्षा हुई और कार्यकर्तियों में बहुत आत्मविश्वास फैला। साथ ही अधिवेशन के मुद्दों पर आधुनिक आन्दोलन में इस प्रकार की समीक्षा और आत्मनिरीक्षण का बहुत महत्व होता है, क्योंकि इनसे आन्दोलन की नैतिक शक्ति पुष्ट होती है।

इस अधिवेशन में पाँच महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किये गये, किन्हें हम इस अधिवेशन के प्रतिक्रियत का तार—तार कह सकते हैं।

प्रामाण्यकारीय आन्दोलन। सम्बन्धित प्रजात में यह कहा गया है कि सारे देश में देश साल से भी अधिक धावदारों के सङ्घर्ष ही पुनः के बाद अब अपने बरतम के तौर पर उन संघर्षों को कार्यन्वित करने में लगना है। और यह बात सारी सविन संवेदक एकाग्रता एक साल के साथ समने पर ही पूरा हो सकेगा। अधिवेशन की ओर से देश भर के कार्यकर्तियों को इसमें जुट जाने का आह्वान किया गया।

प्रस्ताव में कहा गया कि हमें सब वर्ष तथा उनके साथ सम्पूर्ण रक्षक संघर्ष में सक्रिय जगते का साथ करना है। जन-महित के प्राप्ति के लिए दान, संयोजन तथा

भीके पर प्रतिवार, दान तीनों को सम्मिलित या समन्वित रूप से मान्यकरना है। इस बात पर प्रस्ताव में जोर दिया गया कि सहरसा और मुगहरी के राष्ट्रीय मोर्चे में मुख्य शक्ति लगायी जाए, लेकिन साथ-साथ अन्य प्रदेशों में भी प्रामाण्यकारीय स्थापना का आन्दोलन तीव्र बन-आन्दोलन बन सके।

देश की अर्थनीति पर अपना विचार व्यक्त करते हुए एक अन्य प्रस्ताव में सर्व सेवा संघ ने, आर्थिक दृष्टि से सार्वजनिक व्ययन करते हुए शासन द्वारा सार्वजनिक क्षेत्र में लिये गये उद्योगों का उचित विभाजन विचार हो, इस बात पर जोर दिया। उद्योगों में सर्वसत्ता का के-टीकरण सरकारी अधिकारियों के हाथों में हो रहा है और यमियों में अनाधिक बढ़ रही है। व्यवस्थापक और आर्थिक दोनों वर्गों में और जिम्मेदारी की भावना बढ़ रही है। यह स्थिति तुरन्त समाप्त करने के लिए आवश्यक परिवर्तन पर जोर दिया गया।

प्रस्ताव में इस बात पर भी विन्ता धरन की गयी कि सार्वणी उद्योगों के क्षेत्र में एक नि-शा का वातावरण बना है। निजी स्वार्थ के आगे जाद्वित के प्रति जराहीनता है। इस बात की मान्यकरना महत्त्व की गयी है कि सरकार द्वारा आर्थिक शक्ति का सौकरित में लगाने के लिए योग्य आवाहन करना जाना चाहिए, साथ ही व्यक्तिगत क्षेत्र में दृष्टी-विषय की भावना बनने, ऐसी परिस्थिति बनानी चाय। हमना साने की रिखा में योजनाओं की निरन्तरता का उन्नेत करते हुए लंके से विहाय की प्रक्रिया शुरू करने पर भी जोर दिया गया।

एक अन्य प्रस्ताव द्वारा अपना देश के मुक्ति-सर्पण का समर्थन करते हुए एक परिस्थानी सैनिक आनामारी की बर्तना को निन्द्य की गयी और बंगला देश के

मुक्ति-सैनिकों की बहादुरी और अत्यन्त साहस के लिए हार्दिक प्रशंसा व्यक्त की गयी। भारत तथा विश्व के सभी देशों से मुक्तिवाहियों को होर सम्पन्न मदद देने की शर्णीत करते हुए सर्व सेवा संघ ने आशा व्यक्त की कि शीघ्र ही बंगला देश मुक्त होगा।

अब जारी ही देश में आम चुनाव होने, इसलिए सार्वजनिक समाज-ध्वरणा में मतदान के महत्व की स्वीकार करते हुए, मतदाता-शिक्षण की आवश्यकता महत्त्व की गयी। मतदाना शिक्षण-विषयक प्रस्ताव में सगाठार सार्वजनिक मुद्दों के ह्रास और चुनाव में अर्थनिक आचरणों की बड़ी-तरी पर चिन्ता व्यक्त करते हुए सर्व सेवा संघ ने मतदाताओं से अपील की कि वे अपने मत की महत्ता एवं परिष्कार की पहचान और हर दम्मत में भय, बतरयोग, पतिनहनन, पाति व प्रलोभनों के प्रभाव से मुक्त रहें। साथ में सार्वजनिक दलों और नेताओं को चेतावनी दी कि अगर इस प्रकार की कार्यवाही की तकान बन नहीं दिया गया तो न सैन्य मार्तीय सौकरत एक मात्रक बनकर रह जायगा, बल्कि राष्ट्र का नैतिक स्वभाव भी नष्ट हो जायगा।

सर्व सेवा संघ ने भारत के सभी सार्वजनिक क्षेत्रों और सर्वोच्च कार्यकर्तियों से अपील की कि वे मतदाता-शिक्षण का काम की महत्ता समर्थ और अपनी जिम्मेदारी मानकर इस काम को उठा लें। कुछ प्रदेशों में महावक्त्री हजारे जाने पर मतजोय प्रवृत्त करते हुए एक प्रस्ताव में उन प्रदेशों की जनता से अपील की गयी कि इस प्रकार की कार्यवाही को रोन्ने के लिए वह आवश्यक और महत्त्वपूर्ण मदद उठाये।

भूदान-तहरीक
सर्व पाषिक
 साताना चंदा; धार बनये
 पत्रिका विभाग
 सर्व सेवा संघ, रामबाद, आतामली-१

आन्दोलन की गतिविधियाँ

महबूबनगर जिले में ४६ ग्रामदान, ५६४ एकड़ भूमि का कुल वितरण : आन्ध्र प्रदेश के महबूबनगर जिले में जड़बलगा प्रखण्ड में १५ से २४ नवम्बर '७१ तक आयोजित ग्रामदान-प्राप्ति एवं पुष्टि पदधात्राओं के परिणामस्वरूप १२ गाँवों में से ७७ गाँवों में ग्रामस्वराज का संदेश पहुँचाया गया, जिनमें से ४६ गाँव ग्रामदान घोषित हुए। इनमें से २३ गाँवों में से ४२ बाताओं से ७५९ एकड़ भूमि (यह उल्लेखनीय है कि इसमें से ४६७ एकड़ भूमि सरकारी बटारीदारों की है) मिली। प्रांत भूमि में से ५९४ एकड़ भूमि कुल वितरित कर दी गयी। ३९ गाँवों में ग्राम-आन्दोलन का गठन किया गया।

पदधात्राओं में आन्ध्र के ५० कार्यकर्ताओं के अलावा सर्व सेना सच के मधो श्री हाकुरदास बग, श्रीमती सुभन बग एवं महाराष्ट्र के अन्य तीन कार्यकर्ताओं ने भी भाग लिया।

मरीना (सहूरसा) में प्रखण्ड स्वराज्य-सभा का गठन : सर्व सेना सच के अध्यक्ष श्री एस० जगन्नाथन् १० नवम्बर को मरीना प्रखण्ड की यात्रा के सिलसिले में निर्मली पहुँचे। उनी दिन ३-३० बजे धारवाह में निर्मली में आयोजित एक कामसभा में उन्होंने भाग लिया। मरीना प्रखण्ड में बनी सभी ग्रामधात्राओं के प्रतिनिधियों के अलावा हजारी की सहाय में लोग बाजे-गाजे और सर्वोद्यम उद्घोषों के साथ उच्च वाद्ययंत्रों से सम्पन्न होकर आये थे।

दस गोक के पर प्रखण्ड-स्वराज्य-सभा का वातावरण गठन हो गया जिसके अध्यक्ष श्री नारायण पायल तथा मंत्री लक्ष्मीप्रसाद पायल बनाये गये हैं। शतव्य है कि इससे पहले वहाँ एक उच्च प्रखण्ड-स्वराज्य समिति का गठन भी हुआ था।

मरीना प्रखण्ड में कुल १० पंचायतें

हैं, जिनमें ३८ राजस्व गाँव तथा ७३ टोले हैं। राजस्व गाँवों तथा टोलों को मिलाकर अब तक कुल ९० ग्रामस्वराज्य-सभाएँ बनायी गयी हैं। वहाँ कुल ६,३४२ परिवारों में ३६,३१४ जनसंख्या है, जिनमें ५,३४८ परिवार (३,२२९ भूमिदान तथा २,३२३ भूमिहीन) और ३१,७५५ जन्मकाल ग्रामदान में शामिल हो चुकी है। अब तक ४९१ बाताओं द्वारा प्राण १=३ बीघा ७ कट्टा १० धूर जमीन ७४४ आदाताओं में बाँटी गयी है। तात्पर्य है कि यहाँ का ५४ बीघा १०० एकड़ के बराबर होता है। २९ ग्रामस्वराज्य-सभाओं में ग्रामनीय बना हो रहा है तथा पुरे प्रखण्ड में १,११८ आयत्त-संलग्न बने हैं।

महूरसा में अखिल भारतीय सेवकों की पदधात्रा गन ११ सितम्बर '७१ (विनोबा जयन्ती) से २ नवम्बर '७१ (गांधी जयन्ती) तक सहूरसा के ग्रामस्वराज्य-संस्थान में और गति लाने की दृष्टि से कुल २३ प्रखण्डों में से २१ प्रखण्डों में ग्रामस्वराज्य पदधात्राओं का आयोजन किया गया, जिनमें महाराष्ट्र, बम्बई, पंजाब, गुजरात, उत्तर प्रदेश, मैसूर, मध्य प्रदेश और बिहार के कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

यह महबूबनगर वात की जिं अर्थात् सहूरसा जिना बाढ़ के कारण जलमग्न था, अतः और असाधारण दृष्टि के कारण जिले में अज्ञान भी रिपयि थी, फिर भी जिले के लोगों ने इस कार्यक्रम में उत्साह से योगदान दिया और लोगों में अपनी समस्याओं की सामूहिक प्रति से हल करने के ग्रामस्वराज्य के मुखिया विचार के प्रति एक ग्राहक आकर्षण पैदा हुआ।

सोच-सोच के तट पर : सर्वोद्यम परिवार के सम्मानित दुर्ग और सुप्रसिद्ध सर्वोद्यम कान्तिदाजी श्री धीरेन्द्र भाई पिण्डे १ जून से सहूरसा में रहकर पुरे आयोजन का मार्गदर्शन कर रहे थे। इस सान

३ दिसम्बर '७१ से उन्होंने अपने जीवन के आखिरी क्षण तक सहूरसा के गाँवों में घूमते हुए लोक-कान्ति का अलख धारण का संकल्प लिया। इसे उन्होंने अपने जीवन के अन्त्य आश्रम में गंगा नदी के तट की जगह मोरनगा की मण्डपारा में विवरण की सजा दी है, और सहूरसा-मुंगार तक की लोकायात्रा चल रही है।

बिहार में भूमि-वितरण और कान्ती पुष्टि अब तक बिहार में कुल प्राण २१,१७,४९५ एकड़ भूमिदान की जमीन में से ४,१८,२५५ एकड़ जमीन २,५४,७९२ भूमिहीनों के बीच बाँटी गयी है। ३,९९-५०० एकड़ जमीन बाँटना बाकी है। शेष जमीन जोतने लायक नहीं है। ११,८१४ भूमिदान विहाली की समाप्तकम्ती हुई।

बिहार ग्रामदान कानून के मुताबिक ५१० गाँवों के ग्रामदान की पुष्टि हुई। ३०१ गाँवों में ग्रामसभाएँ बनी हैं। मुजहरी प्रखण्ड, महूरसा और पुनिया जिले में पुष्टि का काम एमानत से अभियान के रूप में चल रहा है।

इसके अलावा राज्य के विभिन्न जिलों में अब तक कुल २५०० काम-चलाऊ ग्रामसभाएँ गठित की गयी हैं, तथा २४४८ आदाताओं में ७७४ बीघा ७ कट्टा २ धूर तथा ३६१ एकड़ २८ दिसान्त जमीन, जो बीघा-कट्टा में प्राण हुई, वितरित की गयी है।

नगर स्वराज्य की दिशा में : बीहारे में जिले के गाँवों में ग्रामस्वराज्य का सपन काम विद्यते देह-दो बर्षों से चल रहा है। उसकी जानकारी सहूर के लोगों की देने के साथ-साथ सहूर में भी उनी प्रारंभ मुहना सभाओं के गठन के जरिये 'ग्रामस्वराज्य' के कार्यक्रम का मुहान्त लोगों के सामने रखा गया। बीहारे सहूर में करीब २०० 'ग्रामस्वराज्य' की कमी। ग्रामस्वराज्य की योजना छात्राकार विस्तारित की गयी तथा स्कूलों, बानियों, व्यापारियों, शोर्टी क्लब आदि विभिन्न वर्गों में कीटिंग तथा आयतनगर्मी की गयी। बीहारे सहूर में अल्पकालांतर

बना और अगर सरकार के काम को धाले बनाते के लिए एक समिति का निर्माण हुआ।

गुजरात में रामलालदास का सचन क्षेत्र : गुजरात के सर्वोच्च कार्यकर्ताओं ने इस साल प्रथम जिले में अपनी सामूहिक सक्रिय समाजक प्रामसंस्था का सचन काम करने की योजना बनायी है। इस कार्य में गिजली, विद्याविनोय का सहयोग प्राप्त करने के प्रयत्न शुरू हो गये हैं। १५ अगस्त, '७२ तक १००० प्रामसंस्थाएँ सघटित कर लेने की योजना बनी है।

आनेश्वर सत्याग्रह - समाजवादीकरण

निर्भय : आनेश्वर (गुजरात) के आदिवासी की जमीन को, जिस पर २२ परिवार अपनी २०० आदिमियों का जीवन निर्भर है, एक बड़े भूमिगत के बन्दे से छुड़ाने के लिए सन १८-१७-७० की भी हस्त-लक्ष्य कार्य पार्टी के मार्गदर्शन में सहायक से आदिवासियों ने जो सत्याग्रह शुरू किया था उसका कोई आशाजनक परिणाम नहीं आये पर, यानि सरकार द्वारा आदिवासियों की जमीन देने के लिए कोई सकारात्मक कार्य नहीं की जाने पर, दिस ११ मिश्रकर (विरोधा बयती) से २ अक्टूबर (पाथी जयन्ती) तक बन्दे पंचमते पर सत्याग्रह करने का उद्देश्य धरना दिया था। लेकिन इसके पूर्व ही सचने का-समाजवादीकरण निराशा हो गया।

सामूहिक सक्रिय के अतिरिक्त और पर और की जमीन के सचने का विचारना हो सकता है, यह बनना एक सघट उदाहरण है।

केन्द्रीय आचार्यसुम समिति की बैठक सन ११-१२ दिसम्बर '७१ की सचनियोग-सिद्धि, पञ्चरात में, केन्द्रीय आचार्यसुम समिति की हीलायी बैठक द्वारा विचार-विचारण के बुलावत की कोज प्रकाशकी की सचनियोग में सम्मिलित हुई। इन दो दिनों में हुई कार्यो बैठकों में विरोधाधी को मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। सहायक और

समानासाथ के प्रयत्नों से हुआ।

इन बैठकों में समिति ने आचार्यसुम की शिक्षा-नीति पर एक सुस्पष्ट चर्चा की जलिन हुआ। इसका अर्थ उक्त २०० की आचार्यसुम समिति द्वारा नियुक्त एक समिति ने तैयार किया था। विरोधाधी ने इस सचनियोग को अपना पूर्ण समर्थन दिया, और इन पर सजीव प्रतिक्रिया दी। इसके पूर्व आचार्यसुम के विद्यालय पर वर्षा हुई थी, और एक ठोस सघटन के लिए तैयार रहिये बने इन विद्यालय की भी आदिमियों का दिया गया।

उक्त विद्यालय के अन्दर आचार्यसुम की व्यापक और ठोस बुनियादी आधारों पर सघटित करने के लिए बोझा समिति का कार्यकाज ३ छात्र के लिए बढ़ाया गया। की विद्वत्ताय उर्द्धा, सर्व सेवा सचन के प्रयत्न और सभी की भी अपने सचन बनाना गया। समिति के सहायक की सहायक भी बालक ने समिति के व्यक्त पर अपना सजीवक बने रहना खोजार किया। यह खोजार अन्त की सभी दि ३ गात्र में आचार्यसुम का प्राथमिक कार्य से लेकर राष्ट्रीय कार्य तक विधिवत सघटन हो जायेगा।

उत्तराखण्ड में नगावारी आन्दोलन को सफलता की बर्ष पूर्व नगावारी आन्दोलन के सचनियोग उत्तराखण्ड के ५ सघटनों को सचने, म.ओ दिनों के सचन धारा में प्रदेस सरकार ने नगावारी की शैक्षणिक नीति, जिसे उच्च न्यायालय ने नगावारी को हटाने के लिए तय किया था, को सचने के आदेश दे दिये थे। पञ्चसकल उत्तराखण्ड के प्रदेस सर्वोच्च कार्यकर्ता की गु-वदलान बढ़ाया द्वारा उत्तराखण्ड की हुआ।

पञ्चसकल उत्तराखण्ड के राज्यालय हा.ओ.बी. भोगान पेट्टी ने सन २० दिसम्बर की एक सचनियोग जारी करके उत्तराखण्ड

प्रकारकी एचटी कायत २१ में आचार्यसुम सचनियोग करते उत्तराखण्ड के पीओ तथा दिव्यी सचनियोग दिनों में पुन नगावारी कायु कर दी है।

पञ्चसकल छात्रों में आदिवासियों, पञ्चसकल पाठो सचनियोग समिति के सभी भी सहायक और कार्यो से सघटन करके उन्हें सचन के सचन अल्पसंख्यक करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। जो अल्पसंख्यक नगावारी के बाधियों से बचाने की है कि वे गु-वदलान का गारा छोड़ दें। वर तक दिव्यी सचनियोग के बाधक पर यह जाना बोधी है कि बर्ष प्रयुक्त सभी निरिद्ध सचनियोग में आचार्यसुम करने।

समस्याएं हैं कि सन १९६० में जब कि २० आदिमियों ने शिक्षा के प्रयत्न आचार्यसुम किया था, सभी से बड़ा सचनियोग कार्य बना रहा है।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन

देस की सहायक और सेवा-सचनियोग के सचने। सन १९, १९, २० दिसम्बर '७१ की दिनों में था अन्तरराष्ट्रीय नगावारी के सचनियोग में एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन कायत दस के सचनियोग में विरत अन्तर्गत बांग्लादेश के सचनियोग के लिए आयोजित हुआ, जिसमें २८ देस के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन की सचनियोग पर एक सर्वसम्मति सचनियोग बनाया कि अन्तर्गत दस एक प्रयुक्तता सचनियोग राष्ट्र के लिए आचार्यसुम सभी सचने पूरी करना है। दुनिया के सभी दिव्यो के इस सम्मेलन में भागी की कि वे परिवर्तन पाकिस्तान की हट प्रसार की सामरिक और आर्थिक मदद देना बन्द करें और बयान देस का हर प्रकार की सहायता दें कि बन्दना देस की कार्यो सचने बचोड़ बनाया २० पाकिस्तान की हीलायतानाकारी के पुन से मुक्त हो सके।

सचनियोग है कि एक सम्मेलन के आयोजन के लिए वां तैयारी समिति गठित हुई थी, उनके अन्तर्गत भी भी अन्तरराष्ट्रीय नगावारी के।

सहरसा जिला ग्रामस्वराज्य अभियान

(दिसम्बर '७१ से फरवरी '७२ तक की कार्य-योजना)

ग्रामदान पुष्टि-कार्य के राष्ट्रीय प्रयोग क्षेत्र 'सहरसा' के २३ प्रखण्ड हैं। इनमें सहरसा जिले के २३, और पड़ोसी जिले पूर्णिया और दरभंगा के क्रमशः २५ और २३ प्रखण्ड शामिल माने गये हैं।

सहरसा जिले के विभिन्न-विभिन्न क्षेत्रों में ग्रामदान-पुष्टि का काम जिस तरह विकसित हुआ है, उसे ध्यान में रखते हुए ग्रामों के काम को तीन हिस्सों में बाँटकर घोषा गया है :

(१) अभियान क्षेत्र—मरौना प्रखण्ड।

(२) सघन कार्य-क्षेत्र—महिषी, चौसा, शोली और बिरौत प्रखण्ड।

(३) अर्धग्राम-क्षेत्र—क्षेत्र २० प्रखण्ड।

मरौना का अभियान क्षेत्र मरौना प्रखण्ड में पुष्टि-कार्य का पहला चरण करीब-करीब पूरा हुआ है। कुल १०४ गाँवों में से ९२ गाँवों में ग्रामसभाएँ बन चुकी हैं। अधिकांश गाँवों में बीघा-बँदूझ निकाला गया है और बँट रहा है। प्रखण्ड-स्तर पर प्रखण्ड ग्रामस्वराज्य समिति का गठन भी हो चुका है। एक तरह से यह प्रखण्ड हमारे सारे काम का सश्रम क्षेत्र या 'रियर हेण्ड' है। अगले तीन महीने में इस प्रखण्ड में भीचे विश्वे अनुसंधान काम करने का सोचा गया है :

१—ग्रामदान की कानूनी मान्यता दिलाने के लिए वाणजगत टीकार करके पेश करना।

२—व्याप्तसम्पन्न ग्रामसभाओं को सक्रिय करके उनके जरिये बीघा-बँदूझ का विवरण, प्रायःकोप की स्थिति, क्षणों का गाँव में ही निपटारा, मुद्राज विवरण में अनिश्चितता, धरदखती, बासयोग के पत्र, गाँव के अर्पाहित्रों और गरीबों के बारे में चिन्तन और मदद आदि प्रगम हाथ में लेना और इस प्रकार गाँव में लोक-सेवना और लोक-अभियोग जागृत करना तथा लोक-संगठन की प्रवृत्त बनाना।

३—प्रखण्ड की सभी ग्रामसभाओं के पर्याप्तकारियों के प्रशिक्षण का पहला दौर पूरा करना। इसके लिए प्रखण्ड की १०-१२ क्षेत्रों में बाँटकर दस-दस गाँवों के पर्याप्तकारियों के वेढ़ या दो दिन के शिविर बहुकूल केन्द्रों में आयोजित किये जायेंगे। फरवरी के अन्त तक प्रशिक्षण का यह पहला दौर समाप्त हो जायेगा। इसके बाद हर २-३ सप्ताह में एक-एक दिन के 'रिक्रिएटिव शिविरों' की व्यवस्था की जायेगी।

४—आर्थिक एवं तथा सद्योजन, अनु-कूल गाँवों से, जहाँ ग्रामसभाएँ सक्रिय हों अनुसंधान की दृष्टि से उद्योग, विकास-निर्माण आदि के काम की शुरुआत की जाय।

प्रखण्ड स्वराज्य सभा का वार्षिक सम्मेलन

झासा प्रखण्ड (जिला मुंगेर, बिहार) में छठे-बडे कुल गाँवों की संख्या १८० है। इनमें से १११ का ग्रामदान हो चुका है। १२६ गाँवों में ग्रामसभाएँ बनी हैं तथा ८९ गाँवों में बीघा-बँदूझ का वितरण हो चुका है। झासा का प्रखण्डदान ४ मार्च १९६८ को बिनाब, श्री को सार्वी-ग्राम, मुंगेर में समरित किया गया था। इस प्रखण्ड में गठित ग्रामसभाओं की प्रखण्ड-स्वराज्य-सभा का गत २० दिसम्बर १९७० को श्री जयप्रकाशजी द्वारा उद्-घाटन हुआ था। तब से प्रखण्ड-स्तर पर चलनेवाली योजनाएँ ग्रामसभाओं के माध्यम से ही लागू की जाती हैं। सभाओं के फैसले सर्वसम्पत्ति से होते हैं। प्रखण्ड-सभा बनने के बाद प्रखण्ड में दृष्टि और सिंचाई-विस्तार की योजनाएँ बड़े पैमाने पर क्रियान्वित की गयी हैं। ग्रामसभा गाँवों में सिंचाई और पेय जल के कुँद, शाहर (छोटे-छोटे बाँध) आदि का निर्माण सरकारी बजट-सरकारी स्वयंसेवी संस्थाओं के सहयोग से हुआ है। बिना साम-दान के चारों बिकी बेंड, शाहर व

सघन कार्य-क्षेत्र : मरौना के अलावा महिषी और चौसा प्रखण्ड में भी काम काफी आगे बढ़ा है। इन क्षेत्रों में ग्राम-सभाएँ बनाने का और बीघा-बँदूझ निकालने का काम चल रहा है। महिषी और चौसा के अलावा शोली में भी सघन काम चल रहा है।

अर्धग्राम-क्षेत्र : जिले के क्षेत्र २० प्रखण्डों में सभा-सम्मेलन, गोष्ठी, पर-यात्राओं आदि के जरिये स्थानीय जनप्रगम जाग्रत करने का सिलसिला जारी है। स्थानीय शक्ति के आधार पर इन प्रखण्डों में पहुँचा जाय तथा ग्रामस्वराज्य के बागों का काम हो, ऐसा प्रयत्न किया जा रहा है।

कुछ प्रदेशों के सर्वोच्च मण्डलों ने एक-एक प्रखण्ड में सघन काम करने के लिए अपने कार्यकर्ता सदस्यों को भेजने का निर्णय किया है। कुछ लोग बाहर काम कर भी रहे हैं।

बीज के जिरों भी ग्रामसभा गाँवों में डोले जा रहे हैं। प्रखण्ड में चलनेवाले सभी निर्माण-कार्य टेंपेरायों के माध्यम से न होकर ग्रामसभाओं के हाथ से होते हैं, जिनमें पूरे गाँव के बालिग मजदूरों या धर्मदान करते हैं।

इस प्रखण्ड स्वराज्य-सभा का पहला वार्षिक सम्मेलन गत २० दिसम्बर को झासा में हुआ। सम्मेलन में प्रायः सेने-पाले करीब ८० गाँवों के ३०० प्रति-निधियों ने प्रखण्ड में अभाव, अज्ञान व कल्याण दूर करने की दिशा में गत वर्ष किये गये कार्यों का मूल्यांकन करते हुए सन् '७२ की योजना पर विचार किया। प्रखण्ड-सभा ने फैसला किया है कि वह प्रति बालिग एक रुपया खर्च कर सन् '७२ तक पचास हजार रुपयों से प्रखण्ड-स्तर पर स्थानित करेगी। अभी तक इस कोष के लिए चार हजार रुपयों जमा हो चुके हैं। प्रखण्ड-स्थानितकेना के लिए पाँच तो ऐसे शक्ति सैनिकों का चयन आरम्भ हो गया है जो प्रखण्ड-सभा के निर्देश पर पूरे प्रखण्ड में बड़ी भी बाहर अपने बर्तव्य निभा सकें।

अहत्वपूर्ण नवीन प्रकाशन

लोकनीति

विनोद

गोरपन में लोकनीति ही चलनी चाहिए। राजनीति के दिन लद गये। हम रचना में विनोदाजी ने लोकनीति के प्रायः सभी पहलुओं पर प्रकाश डाला है। नवव्यंग्यहित संस्करण। मूल्य ४५५०।

प्रति विनोदा

श्री श्रीगणेशाय

लेखन सगरुप आनीस वषों के विनोदाजी के सान्निध्य-सम्पर्क में रहें हैं। विनोदा के अनेक जीवन-पहलुओं को खेचक ने मुद्रण तथा प्रकाश दिया है। जीवन, कृति, विचार और रचना के बारे में सर्वांगीण रचना।

मूल्य : ४५५०। पुस्तकालय : ४० दस।

मुस्लिमों का धर्म

इस्लामिवाद का गीत

इस पुस्तक में मुस्लिमों के धर्म के बारे में तुलनात्मक अध्ययन द्वारा परिचित-प्रकाश डाला गया है। इस्लाम धर्म की धर्म (धर्म) की समझने के लिए यह पुस्तक उपयोगी है। मूल्य : ४०-५५।

आँसों देखा हाल

आत्मज्ञान की विकास कथा

इसमें उन आत्मज्ञान की वीरों का विवरण है, जिन्हें देखकर लोगों ने कहा कि हाल लिखा है। मूल्य : ४० २-००।

अहिंसा का एकाकी पथिक

सोमेश पुरोहित

आधीन की हम अहिंसा का एकाकी पथिक बड़े सचते हैं। उनका जीवन अहिंसा और सत्य के प्रयोगों की पहली है। इस पुस्तक में देश के क्रांति के रूप में आधीन के जीवन की पटनाओं को रोचक ढंग से रखा है। मूल्य : ४० १-००।

माता कस्तूरबा

डा० बाबूराव जोशी

श्री रमेशचन्द्र धेंसा

इस छोटी-सी पुस्तिका में राष्ट्रमाता कस्तूरबा की जीवन सती दोनों तैला में विभिन्न पहलुओं से प्रस्तुत की है।

मूल्य : १-२५।

हृदय रोग

शरण प्रसाद

विषयनाम से ही स्पष्ट है। हृदय-रोगों की प्राथमिक चिकित्सा के बारे में यह पुस्तक, इनकी विधियों के साथ ही उपचारण की दिशे गये है। मूल्य : १-००।

स्त्री-शक्ति

विनोदा

स्त्री-शक्ति में अंधेरे का दमन करने वाली आधुनिकी तथा अध्यात्मनूतक कृति। अधिक महिला में शक्ति की प्रेरणा प्रदान करने के लिये। मूल्य : ४५५०।

डे डु डे विषय गांधी

भाग ७

महादेवगाँधी की आजीवन के अनेकों प्रकाशन की ७ की विवर।

मूल्य : १५-००

पुस्तकालय : २०-००

प्राणायाम

श्रीगणेशाय

स्वास्थ्य की बनाये रखने में प्राणायाम का अत्यन्त महत्व है। इस पुस्तक में प्राणायाम की सरल प्रक्रिया बतायी गयी है। अनेक चित्र भी हैं।

मूल्य : ४० १-००

क्रान्ति : प्रयोग और चिन्तन

श्रीगणेश मन्मथार

श्रीगणेशजी की यह कृति अन्त-क्रान्ति के विविध प्रयोगों का परलत दस्तावेज है। पत्रों के रूप में प्रयोगों और अनुभवों की यह कथा क्रान्ति की मूल प्रेरणा देती है। मूल्य : ४० १-००।

अन्य प्रकाशन

महोदय समाज की दिशा में

श्रीगणेशजी ४०-५०

आत्मबोध क्यों ?

४०-५०

आत्मबोध की ओर

४०-५०

विज्ञान में आधुनिकी और

४०-५०

आचार्य-भूषण ४०-५०

सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी--२

सर्व सेवा संघ द्वारा प्रकाशित

प्रधान कार्यालय : गोरपुरी, वार्धा, महाराष्ट्र

रूपोली की पंचवर्षीय योजना

अन्तिम व्यक्ति : विकास की कसौटी

धामस्वराज्य की दिशा में बढ़ने का दृढ़ संकल्प

१—मार्च १६, १७ जनवरी को

रूपोली (पुणे) में प्रखण्ड धामस्वराज्य-सभा के प्रतिनिधियों को एक गोष्ठी रूपोली की पंचवर्षीय योजना पर विचार करने के लिए हुई।

गोष्ठी की अध्यक्षता श्री सिद्धराजजी ने की। गोष्ठी के मुख्य अतिथि आचार्य रामभुजिनो ने उद्घाटन करते हुए कहा कि स्वराज्य की चार सोझियाँ हैं—(१) धार की स्वतंत्रता, (२) शोको की स्वायत्तता, (३) गाँव की स्वायत्तता, (४) गाँव की स्वायत्तता, (५) अर्थिक की स्वायत्तता। नवजात देश कथो हुएरी सोझी पर है और हृष्टाज माओलन तीवरी सोझी पर। दो अतिथि स्वराज्य के लोचि उतरने में भाग्य हैं—सरकार और वाकार। हमारी योजना का उद्देश्य है इन शक्तियों पर विचार पाना, सभी स्वराज्य अर्थिक व्यक्ति तक पहुँच सकेगी और उसे ईमान की रोटी और इच्छत की कल्पना मरसर होगी।

उसके बाद योजना पर विचार करने के लिए गोष्ठी चार भागों में बँट गयी।

२—पुणे दिन गोष्ठी में योजना पर विचार करने के पहले श्री सिद्धराजजी ने मुख्यतः पाँच बातें बतायी—

(१) योजना ऐसी बने जिससे साराज्य का पुनर्रचना विकास हो।

(२) योजना का प्रारम्भ गाँव से ही तथा मूल्य शक्ति भी गाँव ही हो।

(३) प्रखण्ड-स्तर पर चार काम

हों—(१) आधोवन श्री प्रेरणा, (२) दिशा-निर्देश, (३) धाम-न्यायिककारियों के प्रशिक्षण की व्यवस्था, (४) शिक्षित औरार-हेन्ड, एवं उपभोक्ता-मन्थार की स्थापना तथा आचार-विचार की व्यवस्था।

(५) योजना बच करधिवानी हो।

(६) योजना का मूल तत्त्व अर्थिक व्यक्ति और धर्म का विकास हो। गाँव

के साधन के आधार पर योजना बने। धानरोप को सक्रिय बनाया जाय। योजना की दृष्टि समग्र हो—नये बीजों, नयी साधो के प्रयोग में समय और सजु-जन बरता जाय। योजना किछ भीतिक विकास की नहीं, वैतिक तथा आध्यात्मिक विकास की भी बने।

योजना के प्रथम वर्ष की अवधि में उन्होंने तीन काम करने के लिए बताया—अतिथि परिवार की व्यवस्था, धामकोप की स्थापना, और सफाई से साद की योजना।

धाम की सामूहिक धर्मा में निम्न-लिखित निर्णय लिये गये—

१. शिक्षा और स्वास्थ्य

(क) लोक-शिक्षक द्वारा सर्वोप के अनुकूल मास का निर्माण।

(ख) सम्पूर्ण समान विद्यालय माना जाय। स्थापित विद्यालय लोक-शिक्षण के अंग हों।

(ग) धाम-स्तर पर धाम-नवज और आन्वितेना की स्थापना। आसारत-अभिव्यक्ति तथा प्रोत्साहना का प्रचार। सर्वोप विन तथा लोचिधक बनाना।

(घ) प्रखण्ड-स्तर पर उच्च विद्यालयों की १० प्रतिशत अनुदान प्रखण्ड-सभा द्वारा। आचार्यभुज, का संयोजन।

२. गो-संवर्धन

(क) प्रत्येक धामस्वराज्य-सभा की अपनी योजना।

(ख) गाँव का चापाकल।

(ग) नल्ल बीज।

(घ) भुज का समवनीकरण।

(ङ) प्रत्येक गाँव में रमिण सेट।

३. उद्योग

(क) धम-से-धम पूँजीयाने उद्योग की स्थापना।

(ख) कपती हुई आरारी की रोह-धान।

(ग) उद्योगों से रोजगार।

(घ) लघु उद्योगों की स्थापना—मदारी, मण, बनान, प्रयोपन इत्यादि।

(ङ) नक्षोयोग के लिए चरते तथा हई की आपुति की व्यवस्था।

(च) वेत-धानी उद्योग का विकास।

(ज) प्रखण्ड-स्तर पर एक प्रतिष्ठण-केन्द्र की स्थापना।

४. अर्थ-व्यवस्था

(क) १ मास के एक कोप की स्थापना हो। हिसा २५ प्रतिशत प्रखण्ड-स्वराज्य-सभा का, ७२ प्रतिशत धाम-स्वराज्य-सभा का रहे। पूरी पूँजी प्रखण्ड-स्वराज्य-सभा की रहे तथा साध दोनों को मिले।

(घ) धर्मियों के लिए धन-बैंक की स्थापना हो।

(ग) समान योग गाँव में धन-बन्धार की स्थापना करें।

१८ जनवरी को ३ बजे दिन में प्रखण्ड स्वराज्य-सभा का पूरा अधिवेशन शुरू हुआ। सम्मेलन के अध्यक्ष आचार्य श्री रामभुजिनो थे। मुख्य अतिथि पर से बोले हुए रागनाथ महोदय (विहार) ने कहा—“आजि के तीन मार्ग हैं—हिंसा, काटन, और सर्वोप। सर्वोप जनता के ज्यादा अनुकूल है लेकिन सरकार का भी कुछ फर्क होगा है शिरो पूरा करना है।”

उसके बाद सम्मेलन में सर्व-सम्मति से एक प्रस्ताव पारित किया गया। मुख्यतः इस प्रकार है—“अब तक योजना सरकार द्वारा बनानी जाती रही है तथा बाता से सर्वोप की बरदा रही है जबकि होता यह चाहिए कि योजना बनना बचाये और सर्वोप सरकार करे।... गाँव के सर्वाधीन विकास के लिए (प्रखण्ड की योजना के प्रतिनिधियों द्वारा) एक पंचवर्षीय योजना का मास्य वेतार किया गया है जिसमें योजना-मूल्य-परिचय के सम्बन्ध में सम्मति है।... रूपोली प्रखण्ड का द्वितीय प्रखण्ड”

धनी कितने धनी, गरीब कितने गरीब ।

१. यह साफ दिखाई देता है कि पंचवर्षीय योजनाओं का जिस तरह विचलन हो रहा उसके अनुसार १९८०-८१ में शहरी जनता के सबसे निचले १० प्रतिशत का जीवनस्तर ग्रामीण जनता के सबसे निचले १० प्रतिशत के जीवन-स्तर से अधिक नीचा होगा। जो शहरो की आधी जनता का यही हाल रहेगा जो उसी श्रेणी की देहाती जनता का, लेकिन शहर की परिस्थिति में उसका जीवन देहाती जनता की अपेक्षा अधिक बढ़ित होगा।

२. इस स्थिति के पीछे एक धारा है जो हमारे विकास का एक मुख्य पहलू है, और जिसकी ओर हमारा ध्यान जाना चाहिए। वह यह है कि गाँवों में जो भी विकास होता है वह उच्च-मध्यम वर्ग तथा धनी लोगों के हाथों में पड़ जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि देहात के निम्न-मध्यम-वर्गीय और गरीब लोगों को जो शिक्षा की सलाह में शहरो में जाना पड़ता है। वहाँ उन्हें गन्दी बस्तियों में और सड़कों के किनारे रहना पड़ता है, जब कि उनकी आँखों के सामने पागलाने महसूस दिखाई देते रहते हैं। सरकारी विधेयत पहले है कि राष्ट्रीय आय के विकास-नेट में वृद्धि होनी चाहिए। अगर वृद्धि सम्भव भी हो तो विधेयता की इस विधेय स्थिति में गुणार कैसे होगा ?

३. यह सही है कि जब आर्थिक विकास होता है तो उसका बुद्ध-मूर्धन रूप से सभी वर्गों को होता है, विधेय सबसे नीचे के १० प्रतिशत उन कर्ताओं

के जिन्हें योजना आयोग ने छोड़ ही दिया है। यह भी सही है कि विचलन का रेट राष्ट्र की दृष्टि से बढ़ता रहना चाहिए। लेकिन गरीबों के लिए न्यायपूर्ण वितरण का अधिक महत्त्व है, क्योंकि अगर न्यायपूर्ण वितरण के लिए स्पष्ट नीति और योजना नहीं होगी तो विकास का लाभ धनियों की ही भित्ता रहेगा।

ऐसी स्थिति में स्वभावात् गरीब पूर्वों 'धनी और अधिक मिलते धनी हो जायेंगे कि हमारी गरीबी दूर होना शुरू होगी ?' माना गया है कि ग्रामीण गरीब जो १९६०-६१ के मूल्यों पर प्रति व्यक्ति १८०.०० प्रति वर्ष मिलना चाहिए। १९६८-६९ के मूल्यों पर यह रकम ३२४.२० होगी है। प्रश्न है कि गरीबों को प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष १२४ रू० तक मिलेगा ? ये गरीब सबसे नीचे के १० प्रतिशत के अन्तर हैं।

१९६८-६९ में इस श्रेणी में प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष आय २१५.०० थी। इसमें ५० प्रतिशत वृद्धि हो जो ३२४.०० गुना हो। लेकिन केवल वृद्धि से क्या होगा जब कि उनका उचित वितरण न हो ?

गरीबों के २१५.०० से ३२४.०० की घोषणा पर पहुँचने का अर्थ यह होगा कि गाँवों पर जोखण्ड उपभोक्ता-स्तर १०५९.७ रू० हो जायगा, जबकि यह १९६८-६९ में सिर्फ ४५६६ रू० था। जब गाँव का जोखण्ड उपभोक्ता-स्तर १०५९.७ रू० होगा तो शहर का १४३३.४ रू० होगा। जीवन रचना तब होगा जब ग्रामीण समुदाय के ऊपरी भी समुदाय सहान, मनी-प्री कल्पना की तथा अन्य १० पर्याधिारियों भी चुने गये। कार्यालय का काम शुरू करने के लिए तब हुआ कि हर प्रतिनिधि धनी और से बच गया है। तोख राने जीवन क्या हो गये, और काम शुरू हो गया।

५० प्रतिशत लोगों का उपभोक्ता-स्तर २.२५ गुना और शहर के ऊपरी ५० प्रतिशत का २.७० गुना बढ़ चुका रहेगा।

४. ऐसी वृद्धि मिलने क्यों में होगी ? अगर राष्ट्र की आय में वृद्धि ६.२ प्रतिशत हो, और जनसंख्या में वृद्धि १.७ प्रतिशत हो तो प्रति व्यक्ति उपभोग ४.५ प्रतिशत बढ़ेगा। इस तरह १९६२-६३ में गाँव के (नीचे से) दूसरे १० प्रतिशत लोग ३२४.०० प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष (१९६८-६९ के मूल्यों पर) पावेंगे। इससे बड़ी आशा पंच-वर्षीय योजना नहीं करती।

लेकिन विकास का जो वास्तविक रेट है—धीर-धीर का अनुमान नहीं—उसके अनुसार उपभोग २.२ प्रतिशत प्रति वर्ष से अधिक नहीं बढ़ेगा, और तब ३२४.०० की सीमा नहीं २०१५ रू० में पहुँचती आ सकेगी। सगला है यह दूसरा ही विषय अधिक सही होगा।

५. योजना आयोग के कईको से मन्थना अधिक, वास्तविकता कम है। उसके अन्दरी हुई विधेयता, तथा गाँवों से लोगों के निवृत्त कर शहरो में जोड़िका के लिए जने जेठ सम्भार प्रश्नों पर ध्यान नहीं दिया है। योजना आयोग ने मान लिया है कि आगे भी विधेयता जतनी रहेगी जितनी अभी तक रही है। इसलिए उसको निम्ना छोड़कर केवल विकास-नेट (पीप रेट) की विन्ता करनी चाहिए।

लेकिन जो योजना एक न्यूनतम स्तर पर कार्यात्मक को देना चाहती है वह केवल विकास की दर से कैसे संतोष मान सकती है ? अगर न्यायपूर्ण रेटवारे पर ध्यान न दिया गया तो विकास का फल धनियों को जेठ कर लने का कमी मोटा ही नहीं मिलेगा। सब बड़ी हुई विधेयता रत्न अर्न्त-नीति की चूड़ों कोर शक्यो। अगर अभी से योजनाय न की गयी तो अब से १९८० तक यह धरंकर कम अभाव गति से चलता रहेगा।

—संस्कार सम्मेलन इस योजना को सर्व-सम्मति से स्वीकार करता है।”

१८ राष्ट्रीय को शासक शासकशासक-समा के प्रतिनिधियों ने प्रत्यक्षशासक-समा के पराधिारियों का चुनाव किया। प्रत्यक्षशासक-समा के लिए कार्यकाल ३० श्री शासकशासक ईशर, उदात्त—साता

—धनी

—प्रत्यक्षशासक : रामकृष्ण

बंगला देश के शरणार्थी और शहादा के आदिवासी

एक संव्याप्त दृष्टि

९ दिगम्बर की बंगाल से लौटा, और १ जनवरी, '७२ को हुने त्रिवा (महाराष्ट्र) के सहायतागुप्त में आया, और "आत्मबलापन समिति" कायम में ठहरा था। अनेक आदिवासियों वहाँ आकर अपनी बहिनाराजी बना रहे थे और मैं पुन रहता था। उसी समय हाफ से "आत्मबलापन माधुव" मराठी पत्रिका आयी। हमारे एक वर्षोंकी विषय में एक आदिवासी भाई से मुलाकात तो थी, उसका वर्णन उन्होंने उस पत्रिका में निम्नाद्वारा दिया था।

"मधुरे. देश में बाकी विपन्न हुआ- इस तरह की भाषा नेत्रा लोग बोलते हैं। क्या बार को जगत् कुछ फायदा नहीं मिलता ?"

आदिवासी विपन्न। साहज यह दो छात्राचार का लक्ष्य है और सन्दर में रहता है, वह क्यों हमको मिलेगा ? यह सनाद इन्द्र में जो समनता था, वह समन गया और मन में एक ही विचार भाग रहा, सब देश में जाऊँ, और यह सारी घटना मैं अपनी आँखों से देखूँ।

अखिर, ४ जनवरी को आमतारा रोम में पहुँचा। लोग हमारे इन्-विर्-एन-एन हुए और अपनी बहिनाराजी को पुनार रहे थे। मैं एक-एक की श्रुतिमें सुनार दुनो हो रहा था। बंगाल के निर्वासितों को देखते और उनके हान मुनने के बाद जो कुछ हुआ, वही मैं धार भी अनुभव कर रहा था और वेग ही हान यहाँ के आदिवासियों का है।

संपत्ता देश को बेचारी और शहादा की बेचारी

बंगाल में जो शरणार्थी आये थे, उन लोगों की भी बेचारी थी, जो कुछ-कुछ भी, वह अल्प प्रकार की थी, और यहाँ

की जो बेचारी हैं वह अल्प प्रकार की है। उनका समय, हाफ, रात छाती से, लेविन पेंट मरा हुआ था। वहाँ को जो बेचारी हैं, वह ऐसी है कि हमन भी छाती, हाफ-पाँच भी छाती और पेंट भी साखी। बंगला देश के शरणार्थियों को सन्दार ने सहायता की थी। उनके रहने के लिए अच्छी व्यवस्था की थी लेकिन सहादा का क्या हाल है ? रोम देखा है ?

मैंने जब यह देखा तब मेरे सामने वह १९५१ की तेषायाना की सम्पत्तियों के रक्त-रहित कालि की तस्वीरें आँखों के सामने आने लगीं। वहाँ के जमींदारों ने, माइकलमराणों ने हरिजनों के प्रति प्रेता का रीति रमा, जिस तरह से सरकारी नौकरों ने उनको देखा था, उसी तरह प्रायः यहाँ के जमींदार और माइकलमरा, जैसे के व्यवहार सरकारी नौकरों की कानने सहायते बनाकर, बंगला देश में पाकिस्तानी मिलिटरी का-सा व्यवहार करते हैं, जिस तरह के अशोभनीय व्यवहार वहाँ के बहनों के प्रति हुए उसी प्रकार के अमानवीय व्यवहार के आदिवासी के प्रति ही रहा है। यहाँ के जमींदार माइकलमरा और सरकारी नौकर, इन सबका एक नेत्र हुआ-वेला है। उन लोगों की धोर से सरीसों की सजाया जाना है। उनमें से एक-दो घटनाएँ पाठों के सामने विमान के वीर पर रहती हैं।

अशो-अमी की बात है, मरणांत मायक संघ में हिरापोरा फिल रहता है। उनके कुछ धान पढ़िने सरकार से कुछ खपना नहीं लिया था। उनसे वह पुरा पुजा दिया, और सारे पावलों उसके पास है। फिर भी सिधने हान उमरी जमीन पर बंसी साथी गयी और उठ-डीनदार की नोटिस आयी। यह मामला इन्फुनिस्ट नेजलों को मान्य हुई। वे

सारे कामकाज लेहर बरकरार के पास गये और उनके बिनाकर उस घेउ पर "रहे" लाये। जमीन का नैसाफ नहीं हुआ। जमीन बच गयी। लेकिन उसी घेउ का नैसाफ हुआ। १ एकड़ भूमि का, जिसमें अमी पजार की फसल हाड़ी है, (१,५०० २,००० रुपये की फसल वहाँ होगी) केवल ५,००० रुपये में नैसाफ हुई और एक जमीन-मालिक ने उसे मरीया। उप सिद्धान ने वही बाजार ख मेटून की थी। एग ताउ फकल अच्छी है, घत दित के सुन था। लेकिन जगरी सब बाजारों विपन्नता में विपन्न हुई, बेचारा हो रहा है। हुररी घटना पाकिस्तानी की है। पुनार है वहाँ के जमींदार हर सात सरीसों को अनाप बाँटते हैं। उसी तरह हम मान भी उन्होंने लोगों को दुग्धमा, अनाप बाँटा गया। तथा अपनी अपनी पजार लेना का रहे थे। धीरे-धीरे पोड़ी हो डूरी पर लहमापकर अनाप राव है। लोग वहाँ से का रहे थे। जमींदारों ने अनाप लेकर आनेवाले इन आदिवासियों को रोना और उन पर कुछ इन्वाम कापा कि वे लोक हमारे धान के कोठार मुनने लाये हैं। इन्होंने हमारे वीठार लूटे हैं, ऐसा कुछ इन्वाम उनपर लगाया और पुमिष में रिपोर्ट की। साथ ही वहाँ गोनी-वार भी हुआ जिसमें एक आदिवासी की मृत्यु हो गयी। इन आदिवासी-बचत आशमिलों को विपन्नार कर दिया गया और जेव में रखा गया। अमी जमागत पर छोड़ा है, ऐसा पुनार है।

सरकारी मादत से उन बेचारे शरणार्थ आदिवासियों की जमीन, सफ़ी फजल के हान नैसाफ हुईं। नैसाफ होते-सबसे जमीन का माइकल हाकिम नहीं था और सरदीदार भी बाहर पाँच का है। क्या जानून से यह सब है ? क्या बाहर पाँच का आदमी जमीन छोड़ सकता है ? क्या उन घेउ के मालिक के मेटाहिर रहने हुए जगरी जमीन का

विचार-शिक्षण : प्रेषण की पद्धति

— एक सराहनीय व अनुकरणीय प्रयास—

नीताम किया जा सकता है ? हाँ, कल्पना से यह सब होना चाहिए तो फिर सरकार का कानून क्या करता है ? इस अन्वय के प्रति शासकों ने क्या निर्णय लिया है ? क्या निर्णय लेंगे ? क्या वही शासकों ने जाकर उन भूखे आदिवासियों से मुलाकात की है, जो सप्ताह में २-३ दिन भूखे रहते हैं ? बन्दूक की गोली से और वह भी जमीन्दार की बंदूक की गोली से जिसकी मृत्यु हुई, क्या एकमात्र जल्द नहीं लगना चाहिए ? लेकिन पंखे के दल पर जहाँ इनसान अपनी इनसानियत देवता है, वहाँ कानून भी देवा जाता है और सरकार भी ।

जब आदमी भोजन के लिए बैठा है तो कुत्ता भी खपर पाय में बैठ जाय तो इनसान के दिल में कफ़ा जाग उठती है, और उसको वह जानती जानी में से एक रोटी दे देता है । लेकिन वही इनसान एक भूखे इनसान की भारी में से रोटी छीन लेता है ।

हम जानते हैं, बाग की अहिंसा-अविविक्तता भी बलवान है । प्रत्येक व्यक्ति अहिंसा से अलग हुआ है । अहिंसा पर कोई विश्वास नहीं करता । १९५१ में लेवगाना में हिंसा हुई । पूरा विनोवाकी वहाँ गये, और जमीन-मातियों से प्रेम से जमीन की माँ की ओर मिली भी । क्यों मिली ? हिंसा के प्रति जमीन मातियों का विरस्कार था, वह हिंसा नहीं चाहते थे । और, इसलिए कम्युनिस्टों को प्रेम से समझाने से उन्होंने भी अपने हृदयों को खोल दिया । क्या उनके मन में अहिंसा जाग उठी थी ? नहीं । कम्युनिस्ट वसा बहने लगे—“विनोवाकी ने प्रेम से, अहिंसा से हमारी क्रांति को रका दिया । लेकिन अहिंसावालों का काम यहाँ का तहाँ रका है । अभी हम नहीं रकेंगे । हमने बाकी राह देना ही है । अब हम हाथ में धारण लेंगे और इन अत्याचारियों को लखक करके रहेंगे । इन अहिंसावालों को लखक करेंगे ।” ऐसा बहने का मोताआज उनको—हिंसावादी लोगों को—फिर से मिल रहा है ।

आत्मनिंदा हीनता उत्पन्न करती है, आत्मनिंदा के अपनी आत्मार्थ दृष्ट होखी है । हम काम में लगे तापी विविध कार्यक्रम में प्रायः आत्मनिंदा या हीनता की खोज करते हैं । लोग नहीं सुनते हैं, तर्कों को धारणित करने का कोई कार्यक्रम नहीं है, समाज की चेतना हमसे नहीं जगती है आदि-आदि हमारे स्व-निर्मित भूत हैं जो हम पढ़ी हमारे साथ लगे रहते हैं । ऐसी मनः स्थिति में किये कार्य से कैसे फल की आशा करते हैं ?

आत्मनिंदा करके तो स्थिति बहुत कुछ स्पष्ट समझ में आती है । हम क्या करना चाहते हैं, कैसे करना चाहते हैं ये सभी विचारणीय मुद्दे हैं । और फिर यह कि हमारे हृदयों क्या हैं ? समान में प्रचलित रक्षा या विनय के सभी साधनों को हम अस्वीकृत करते हैं । यहाँ तक तो ठीक, पर इसके आगे ? हमारा हृदय—विचार-प्रेषण की क्षमता—निहायत अन्विभोजित और मोचरी है । अविश्रामों की आहत-सत्या जगतियों से आगे बढ़ेगी ? पुस्तकों की बिजो का भी यहाँ हाल है । बड़ी कुशलता से स्थापित की गयी जिस सामाजिक व्यवस्था का विरल्य हम प्रस्तुत करते हैं, वह अपने सही रूप में जनता के सामने आ नहीं पा रहा है । धार को सर्वोप यानी प्रायंता, पूजा और थोड़ा बरीक, हरिकत का नाम । यह प्रसिद्धि है हमारी ।

इस बात का अपनी सरकार और जनता दोनों की विचार करने की आवश्यकता है, नहीं तो यहाँ नरकवाट की ईश्वरता होगी । यहाँ का भूजा आदमी मन में सोचता है—“मैं भूजा रहकर मरनेवाला हूँ ही, फिर तुझे मरने के बदले कुछ करके हो क्यों न मरूँ ? हमें जल्द ही इस बात को ध्यान में लेना चाहिए । नहीं तो आगे खतरा निश्चित है ।

सर्वोप न्यायवादी हमारा हृदय करने के लिए कुछ प्रयास कर रहे हैं । गाँवों

आज सबसे बड़ा खतरा यह है कि विचार के क्रान्तिकारी तत्वों को फिर प्रचार जनता के सामने प्रस्तुत करें कि वह उसका अग्र केंद्रित कर ले ।

१९ जनवरी को मुम्बई-रिपब्लिकन गण्ड में अरण-आतिथेना ने एक चित्र-प्रदर्शनी आयोजित की । सहासा में चल रही धीरे-धीरे की सोच-जाग के साथ-साथ प्रदर्शनी के रूप में चलने के लिए चौबीस चित्रों की एक शृंखला तैयार की गयी है । इस पंखे प्रेक्षक मुक्त के साथ प्रदर्शनी शुरू हुई । बहुत कम प्रचार और एक हद तक अग्रवस्थित प्रदर्शनी में दर्शकों की उपस्थिति बहुत खतोपजनक रही । समय-समय पर प्राशिक्षण पत्रों का, जिन्हें हमने अब तक मुफ्त बाँटा था, एक प्रयोग के सेट बनाकर विक्रो के लिए रखा । चित्रों के साथ पत्र-पत्रकार दर्शकों को समझाने का काम भी हुआ और समय-समय पर विशेष उल्लेख दर्शकों से बातचीत भी हुई । कई युवकों ने अरण-आतिथेना के आणामी पत्र-पत्रकारों की प्रशंसा की और कई ने आणमा पत्रा आदि दिया ।

प्रदर्शनी के अंत में एक टेबुल पर प्रतिक्रिया लिखने के लिए कुछ पन्ने रख दिये गये थे । उनमें से कुछ प्रतिक्रियाएँ यहाँ उद्धृत की जा रही हैं—

“देस की वर्तमान परिस्थिति को देख-आतिथेना ने चित्र-रूप से प्रदर्शित किया है, यह सराहनीय है । मेरी आशा है कि सर्वे हो रहा है और जमीन-मातियों को भी समझाया जा रहा है । अभी यहाँ सर्वोप की कौन्सिलर मिसे, मोरेडर बरत-कोटावार, देवराय अयुदे, मवटर और स्थानीय कार्यकर्ता की अग्रवर्ति प्रस्तुत की, इनका भाई पवार, समरविह पांडी आदि लोग इस काम में जुटे हैं । जल्द ही इसका हृद होकर और सारे राव में काम-समा गठित होकर, गाँव में प्रेम-भाव का निर्माण हो । यहाँ भगवान से प्रार्थना है ।

—मोरेडर बरत-कोटावार

साधियों के पत्रों से

सहरसा में कार्य-संयोजन

सहरसा क्षेत्र में अब तक जहाँ विनावा नाम हुआ है उसके अनुसार आगे के तीन स्तर माने हैं। पहला मणिया प्रखण्ड, जहाँ काम काफी खास बढ़ चुका है। यह उस प्रयोग का अंतिम क्षेत्र था 'स्त्रीश्रम हेतु' है। इन पूरे प्रखण्ड में गहराई से योजनापूर्वक काम करना होगा।

दूसरे स्तर में महिला, बीवा, बरौली और विरोल, ये चार प्रखण्ड माने हैं। इन प्रखण्डों में भी काफी काम हुआ है। इनमें अनेक भी सघन काम करना होगा। तीसरे स्तर में क्षेत्र के दोष २० प्रखण्ड माने हैं। इन प्रखण्डों में काम की मुख्य दिशा व्यापक विचार-प्रचार और मोटो-सम्पर्क के द्वारा स्थानीय महिला को जागृत करने की रहेगी, ताकि वे स्वयं फिर काम

की यत्नी बनें। पूरे २५ प्रखण्डों में बाहर की छात्र से काम हो सके यह सम्भव नहीं है। कुछ जगहों से समर्थ कार्यकर्ताओं की नियुक्ति आने से इन प्रखण्डों में से एक-एक प्रखण्ड की विशेष-वारी से लें ऐसा सोचा है। लेकिन अभी तक जो विन सामने है उसके अनुसार अन्य प्रयोगों की शक्ति से अंतिम-ले-अंतिम तौर पर २-३ प्रखण्ड ही और विदे जा सकते हैं।

यह तो काम को सामान्य दिशा हुई। अनेक तीन महीनों के विद्युत् जो कार्यक्रम सोचा है वह इन पराज है—मणिया प्रखण्ड में बच्चें हुए यहाँ में दामनबाड़ी का निर्माण, अंतिम-ले-अंतिम बीजा-वृद्धा-विकास करना जो क शिशु, बालुको पुष्टि के लिए दामनबाड़ी तैयार करके पंग करना, दो-दो दिन शिशुओं के अतिरे प्रखण्ड के मत दामनबाड़ी के पर्यटनकारियों के

प्रतिपक्ष का प्राप्ति तथा इन यहाँ में जहाँ सम्भव हो वहाँ प्रामदबाड़ी के जरिये व्यापक विचार के कार्यों की शुरुआत। महिला, बीवा, बरौली और विरोल, इन चारों प्रखण्डों में प्रामदबाड़ी के निर्माण और बीजा-वृद्धा-विकास का काम पूरा करने के साथ-साथ प्रतिपक्ष अतिरे का काम भी यथासम्भव हाथ में लिया जाय।

तीसरे २० प्रखण्डों में इन पूरे क्षेत्र में वातावरण बनाने तथा स्थानीय शक्ति जागृत करने के लिए दो काम माने हैं। विद्युत् के क्षेत्र से २० जगहों तक के समय में क्षेत्र के करीब-करीब सभी प्रखण्डों में दो-दो दिन के सम्पर्क-शिविर लिये जायेंगे। इन शिविरों में प्रखण्ड के साम-साथ लोगों को एक जगह आमनित करके उनके साथ दो दिन के सहजीवन तथा विचार-विनिमय का कार्यक्रम सोचा है ताकि जगह के काम के लिए हर प्रखण्ड में कुछ लोग काम लायें। जहाँ-जहाँ ऐसी स्थानीय शक्ति उपलब्ध लाये वहाँ उनकी उपर्युक्त समर्थिता गठित करके उनके जरिये जगह का काम हा, ऐसी नीति की जाय।

आपक विचार-प्रचार की दृष्टि से दूसरा काम यह सोचा है कि विद्युत् के शिविरों पर जो बड़ा मेला सगरेबाना है उसमें सभाई, मुरला आदि चेराकारों के जरिये विद्युत् के क्षेत्र का यथासम्भव सम्पर्क विचार में मदद करने की कोशिश की जाय।

विद्युत् के क्षेत्र में प्रथम-प्रथम से सहजता के काम के जरिये में अब मुम्बई-बाड़ी की बात हुई तो अनेक हीन मुम्बई की थी। पहली तो यह कि जो कुछ काम हो रहा है उसकी बावली कार्यकर्ता में पूरे 'एकीकरण' रहे, यानी समीजन, प्रचार आदि काम मुम्बई-बाड़ी के ही। दूसरा जो उनका सामीज कार्यकर्ताओं, शक्तिविकों और दामनबाड़ी-पर्यटनकारियों आदि को प्रभावित करने पर था। तीसरा मुम्बई यह था कि जहाँ-जहाँ सम्भव हो उन यहाँ में व्यापक विचार पर ध्यान दिना

—कि इसी प्रकार के प्रयोगों का आयोजन कर, समाज में शक्ति लायी जा सारी है और उसी इन देग के लोगों का मुक्ति-करण हो सक्ता है। —जगदीश शर्मा, सिन्धुपुर, मुम्बई-बाड़ी।

"साम्प्रत में तम-साम-सिखा की प्रयोगों काय के लिए एक आरंभ का पद्य चलेगा है। इसे हम कार्य-कार में लें तो इसमें अनेक सन्देश मिले किसी राजनीतिक दल में नहीं मिल सक्ता है। इसे तो मार्क्स-प्रदर्शक कहा जाये तो सच नहीं होगा। भारत के हर नगर में हर महीने ऐसी प्रयोगों की आवश्यकता है।—२० के०वर्मा, बरौली शक्ति, मुम्बई-बाड़ी।"

वे कुछ उदाहरण है किन्हीं में उन पत्रों से आताम उतार दिया है। कुछ आनोबन्दी भी है, कुछ मुम्बई-बाड़ी हैं, पर नये दर्जों की यानी एक विचार-सोच दृष्टि का प्रमाण देते हैं। जिनकी की ऐसी सरल प्रकृति बहागी लाये, अत्यंत सरल प्रयोगों की कामे, तो जलवा के मनीसाल इस और आवासी से मोड़ जा सकते हैं।

इस आन्दोलन को नये तकत और नये उदाहरण की जरूरत है। इस दृष्टि से अनेक विचार प्रयोगों के माध्यम को सरल बनाना और विद्युत् के विचार-प्रचार बनाने की सखे बढ़ी आवश्यकता है।

—राजेश्वर शर्मा, मन्थन धरम, मुम्बई-बाड़ी।
 "इस प्रयोगों की देखने के बाद मैं विनोबा भावे के विचार से सहमत हो गया हूँ। —शक्ति-प्रचार विद्युत्, चरम-जमद, मुम्बई-बाड़ी।
 "प्रयोगों देखकर बहुत ही सज्ज लगा। अगर हमारे क्षेत्र में इसे ठीक रूप से प्रदर्शित किया जाय तो गांधीजी, विनोबा, और श्री जयप्रकाश जी इत्यादि की पूर्ण होगी। गति का विकास तो निश्चय ही होगा। —हेल्ड मुम्बई-बाड़ी

जाय। मैं यहाँ जाने से पहले जे० पी० से मिलकर आया। उन्हें सहूरसा के काम की योजना की जानकारी थी। उन्होंने २-३ बार यह उद्गार प्रकट किया कि अभी तो केवल मरोना के एक प्रखण्ड में कुछ उल्लेखनीय काम हुआ है। इस गति से काम होगा तो दूरे जिनके का काम निश्चय समय में होना। उनके मन में यह खतरा दिखी कि काम ज़रूरी होना चाहिए, पर ये यह भी महसूस करते हैं कि जब काम गहराई में जाने का है, ऊपर ही ऊपर करने से नहीं होगा।

मरोना में ग्राम-विकासकारियों के प्रशिक्षण का जो काम हाथ में लिया जा रहा है उसके निश्चित कार्यक्रम तैयार करने और मोक्ष प्रशिक्षक चुनने का सवाल है।

१४-१२-३१ —विजयराज कट्टा

उड़ीसा में ग्रामदान-कार्य

हम लोगों का नैतिक बंध धीरे-धीरे घट जाने का एक कारण यह है कि ग्राम-दान संकल्प, वितरण तथा पुष्टि-काम ठीक ढंग से नहीं हुए। यह सुचना गण दण्डान से मैं देते आ रहा हूँ।

दूसरी वजह है सारी के काम में अनिश्चितता। इस अनिश्चित कार्य के अभाव से एक कार्यक्रमों का गुणवत्ता होने के कारण सर्वोप के प्रति लोगों की आस्था कम होती जा रही है।

तीसरी वजह उड़ीसा के अनुभव पर से मिल रहा है। यह है—प्रकार से ग्रामदान की नींवों को किसी एक या कुछयोग। यह तीन प्रकार से हुआ : १—बाँवों के विविध लोगों से, २—कई मजदूरों से स्थानीय कार्यकर्ता तथा गाँव के दो-चार व्यक्ति। ३—सबसे ग़ैर की बात—भोलापुर के अन्तर्गतवासी लोग हैं—बाँवों के सेवा या नेतृत्व स्थानीय व्यक्तियों के द्वारा।

एक सारी घटनाओं में सहायता के प्रमाण की अपूर्णता हो रही। ऐसी दुर्घटनाओं की वजह से यात्रा करने के लिए ही काम का शोथो-निवारण बड़े पैदा

है। इसका व्यवसाय न हो तो सर्वोदय का काम बढ़ना सम्भव नहीं है।

उड़ीसा में बाँव, बाराग (बाँधी), अकाल एक-के-नीछे-एक हथिया लगा रहता है। मुख्यतया हमारी शक्ति इनके पीछे ही आश्रय होती रहती है। सिद्धे सात-आठ सालों से विलीक काम में हमने बित्तों का एक संग्रह किया है, साम-गुण्ड में उसे लगाये होने से हमारे आन्दोलन को समायोजन मिलता।

नवम्बर माह में बाराग (बाँधी) वाले इलाके में गैरे बाँव का नाम दिया। इस दिने के सर्वोदय मण्डल की १४-११-३१ की बैठक में तय हुआ है कि इस दिने के श्रावदान-काम को ठीक ढंग से चालू किया जाय। बाँव आगारों सारी को बन्द करने, स्थानीय सरपंचों को काम के हस्तांतरण के लिए प्रवर्तक सरपंचों से अनुरोध कर प्रस्ताव दिने गये हैं। भविष्य में लागू सारी की सारी से सुविधा और लाभ उठाने हैं—बस भोग बाँव डालने की बाँधित कर रहे हैं।

द्वि, योजनाय, सामोयोंग की अन्तर्गत मानकर एक स्वायत्तरी मोर सेवा केन्द्र को स्थापना की और काम लागे बड़े रहा है। यह केन्द्र वास्तविक, निरन्तर नानिहाय स्थापन कर है। भूमि की एक इंच एक है। केन्द्र का नाम 'निधन निराण' रखा गया है। इसकी देखभाल भी अन्तर्गतमाह कर रहे हैं।

—मन्मोहन पाठू सहायपुर।

६-१२-३१

सहकारी-सम्पाद

इस माह की 'सहकार सप्ताह' मन्मोहन, जिनमें डॉग की विविध सहकारी मन्त्रियों से छपरें हुआ। डॉग की सहकारी मन्त्रियों की संख्या करीब २० की होती है। उन सब मन्त्रियों के कार्यकर्ताओं में विनये का अन्तर्गत मुने प्राप्त हुआ। जैसे अन्तर्गत बाँधी में बड़ा 'एक कण्डा होना, निश्चय नहीं' तब एक सर्वोदय विचार-

धारा की ओर प्रयास न करें, बहो तब प्रगति नहीं होगी। सर्वोदय विचारधारा के विषय में प्रवृत्तियों एही रहने, वैसी नमक के विरा साने की कोई भी चीज। सहकारी मन्त्रियों सारी, परसा, बरन स्वायत्तमन्त्र जेही सर्वोदय प्रवृत्ति के विषय अलग ही रहेगी। डॉग में चार जगह साहजिक सम्पत्त विद्या विभाग की ओर से हुए। इन चारों सम्पत्तियों में ४१ प्राथमिक शाखाओं के २०००-२२०० आकर, २००० गाँवशाखाओं की ४५० शिक्षक-निर्देशिकाओं से विनये का अन्तर्गत प्राप्त हुआ। इन सम्पत्तियों में पू० बाँव की, पू० विनाशनी की बाँवें गैरे की। शाखाओं में सर्वोदय पान, बाराई, और साहित्य के बारे में बराबर करण चाहिए, उनके बारे में भी बातचीत होती रही।

इस माह में गैरे डॉग के ३१ गाँवों में ग्रामसभाओं का आयोजन किया।

इस माह में ३२४ भाइयों और ६२ बहनों ने, कुल भिन्नतर ३८६ कार्य-बहनों ने श्रावण से सुविधा पायी, सारी श्रावण से मुक्त होने का उन्होंने संकल्प लिया।

—पुत्र सार्द सावर, डॉग, ४-१२-३१

दो सहकार का परलौ

हमारे यहाँ एक सप्ताह में विनये से दो सहकार के कार्य पर प्रयोग किया है। शावण पर की जा विनये होती है उर्वरि यह उन परलौ का बताया है और उता बहना है कि ३-६ २० की शीर बाराई कर लेते हैं। इस प्रकार के अन्तर्गत के प्रयोग की बाबा ने अनुभव दे दी है।

—बी० सा० जिरौवर्गि आगरा, १७-१२-३१

गंवला देग का संघर्ष
 निराण—ग्रामसभासहकार 'निध'
 दूर ४० दिने
 मन्त्र संकल्प के सहायता, निर्मित
 पत्र १० १३, री० ३३०९
 सप्ताह गैर सहायकी

पुष्टि का राष्ट्रीय मोर्चा सहरसा

बिहार के सर्वोदय सेवकों का एक माह (१८ मार्च से १८ अप्रैल) का सामूहिक अभियान राज्य की सभी रचनात्मक संस्थाओं तथा सर्वोदय संगठनों के सेवकों तथा पदाधिकारियों से

समय देने की अपील

बिहार सर्वोदय सच के निर्णयानुसार बिहार राज्य उत्तरी प्रान्तप्रदेश समिति के दस सदस्यों को दोली विगत १३ के २१ दिशम्बर तक इन्द्रविद्या मन्दिर, पटना में पूज्य बाबा की समिति में रही। इस अवधि में बिहार के सर्वोदय आन्दोलन की समिति के सम्बन्ध में बाबा से विस्तृत चर्चा हुई। चर्चाओं के दौरान आशीर्षन की शक्तिपूर्ण करने की कृति से उत्पन्न ने बिहार के सर्वोदय सेवकों को दो कार्यक्रम सुनाया।

(क) एक माह में राष्ट्रीय मोर्चा सहरसा की पुष्टि सम्पन्न करें। दो कार्यक्रमों को दोली तीन दिनों में एक मोर्चा की पुष्टि करने का प्रयास करें तो एक माह में एक दोली १० गाँव की पुष्टि सम्पन्न कर सकाई है। पुष्टि का राष्ट्रीय मोर्चा सहरसा जिमा में, पूर्णिया या हलीपी और दरभंगा का विरोध प्रस्ताव सम्मिलित कर, २१ प्रस्ताव होने हैं। हर प्रस्ताव में मोर्चा को गाँव यात्री को कुल २१०० गाँव होने। यदि

चूरे का सात

पानी बरह-बारह सात का एक सब मानते हैं। उम्र बच में से 'चूरे का सात' (दस बार बी टैट) है। यह सात बहुत बुरा माना जाता है—पला-परेन का, बेबरार और गहरी का। चूरे के हात में सड़कियाँ भारी नहीं कराना चाहती। योपनी है एक माल में किया पौन बेबरार और टपकाकर दिखेगा। लेकिन जोलापयो के बालों के लिए यह सात बहुत अच्छा माना जाता है।

पूरे ही चूरे के हात के पड़े पड़ीने में—सात सफरी में दुख होगा है—निपटन और बीजियों की मुरारदा हो रही है।

बिहार के १०० सर्वोदय सेवक उपर्युक्त रीति से एक माह का समय बहाँ दें तो सहरसा का पुष्टि-कार्य सम्पन्न हो सता है।

(ख) एक ही दिन सहरसा के सभी गाँवों में दूके की धोत पर सूचित्रण का धार्मिक समारोह आयोजित करें।

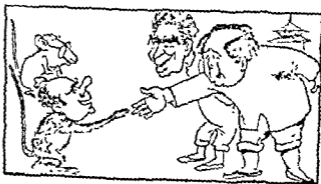
हम सबको के लिए दार्शनिक प्रवचन का बत है कि बिहार राजा लक्ष्मी प्राम-स्वराज्य समिति में विगत २०-२१ जनवरी को पटना बैठक में बहुत ही व्यापक एवं सौभाग्यपूर्ण भावना से उपर्युक्त दोनों कार्य-क्रमों की दृष्टि सम्पन्न करने का सर्व-सम्बन्ध निर्णय किया है। आगामी १८ मार्च के प्रसिद्ध सन्धानित दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय प्रयोग क्षेत्र के सभी गाँवों में सूचित्रण का धार्मिक समारोह सम्पन्न करना उप-दुसा है। साथ ही इसके पूर्व एक माह—१८ मार्च से १० मार्च तक सहरसा के पंचवीसों प्रखण्डों में पुष्टि-कार्य सम्पन्न करने के लिए सारे राज्य की कार्यकर्ता-सक्ति सहरसा से केन्द्रित करने का निश्चय किया गया है। बैठक में उपस्थित प्रायः हम सभी सदस्यों ने अपना एक माह का समय इस अभियान में लगाने का संकल्प लिया

है। साथ ही राज्य की सभी रचनात्मक संस्थाओं और सर्वोदयी संगठनों के सेवकों एवं पदाधिकारियों को, इस महत्त्वपूर्ण अभियान को सफल बनाने के लिए, एक माह का समय देने की हमारी दार्शनिक अपील है।

आशा है कि राज्य की सभी रचनात्मक संस्थाओं और सर्वोदयी संगठनों के सेवकों एवं पदाधिकारियों को, इस महत्त्वपूर्ण अभियान को सफल बनाने के लिए, एक माह का समय देने की हमारी दार्शनिक अपील है।

निवेदन

श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी, गीतापत्नी सा चारुती, रमानि चौधरी, मन्दी नरमण राय, चाई गोखरे, प्रभाष बहदुर सिंह, कबल नारायण साहू, केलाव विध, प्रबोधन सार्व, जयलोक ठाकुर, बडीकासयण सिंह, शिवशंकर पखार, निकलन सा, बजीर सा मलय, राजेंद्र मिश्र, हृष्यनाथयण चौधरी, विद्यासागर, महावीर सा, श्याम प्रसाद सिंह, नवनीलकोर सिंह, सर्व नारायण दास, कपिलदेव कुमार, तपेंबर, केलाव प्रहास साहू, बमिबर ठाकुर, दीनेश जट्ट, इन्द्रेश सिंह, जट्ट नारायण चौधरी,



आन्दोलन

समाचार

तरुण-शान्तिसेना शिविर सम्पन्न

जिला ग्रामदान समिति रोवा की तत्वावधान में २१ दिसम्बर ७१ को दी स्वयंसेवा सेना शान्तिसेना शिविर सफलापूर्वक सम्पन्न हुआ। शिविर में सम्भाग के ६ जिलों के— रोवा से २०, सीधी से ५, छतरपुर से ५, टीकमगढ़ से २, सहजोल से १ तथा अन्य २०—कुल ६८८ शिविरियों ने भाग लिया।

शिविर में रोवा सम्भाग के जिलों के आठ शिविरियों ने निता-स्वर पर भागीदारी की। वर्ष १९७२ के लिए अपने-अपने जिलों के लिए कार्यक्रम निर्धारित दिये।

जिला ग्रामदान ग्रामस्वराज्य समिति, टीकमगढ़

घनपौर वर्षों से भी मध्य प्रदेश गांधी स्मारक निधि के शान्तिदूत और जिला ग्रामदान ग्रामस्वराज्य समितियों के कार्यकर्ता प्रदेश गांधी स्मारक निधि के अध्यक्ष दादा धी वाणिनाथ बिन्दो ने शान्तिसेना मण्डल के संयोजक श्री पशुपुंज पाठक के कार्यदर्शन में सदैवगठ विज्ञापन छाप में पूर्ण मनोयोग से ग्रामदान-गुण्ड-अभियान में जुड़े रहे। इसी वर्षीय ग्रामस्वराज्य-स्थापना के मौके पर ही, राम बलदेवगढ़ में, सुन्दरगढ़ के महान स्वामी, तारकी, नर्मड, स्वतन्त्रा-संग्राम के शेर देवानी, टीकमगढ़ विभागी श्री बाबू तेम नारायणजी सर्रे का बलिदान हो गया और २४ गई कड़ने-मुने की उनकी ऐतिहासिक स्मृति।

ग्रामस्वराज्य शिविर

दिनांक १६-१-७२ को राधोहर (नोता) गाँव में नोता सहस्रील के अवधिष्ट गाँवों में ग्रामसमाजों की कानूनी पुष्टि के लिए शिविर किया गया। इस छत्रक में कानूनी पुष्टि का अभियान पहले से ही शुरू किया गया है। गठ से वर्षों से जिले में ग्रामदान से ग्रामस्वराज्य का काम चालू है। राजस्थान सरकार की ओर से ग्रामदान एक्ट तथा उसके नियम पारित होकर राजपत्रित हो चुके हैं। इसी आधार पर जिले के अवधिष्ट गाँवों में से २४ गाँवों में सहजोल कानूनी मान्यता के काम संपन्न से प्रारंभ का काम हाथ में लेने का नियम किया गया।

शिविर में उपस्थित लगभग ५०० की थी। शिविर जनप्रतिष्ठित था। गाँव के सरपंच श्री रामनालजी एव स्वामीय जनता का सक्रिय सहयोग प्रचलनीय था।
—आचार्य चन्द्र मोहित

'मानुदिवस'

बस्तुरवा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट की अध्यक्ष श्रीमती प्रेमलता वि० ठाकरसी ने देशवासियों और रचनात्मक संस्थाओं से २२ फरवरी को बस्तुरवा की स्मृति में 'मानुदिवस' मनाने की अपील की है।

मानुदिवस मनाने के लिए निम्न कार्यक्रम सुझाये हैं। समाज-जुगुप आदि प्राचीनित शर 'मानु' के गौरवमय पर भी प्रतिष्ठा जगानी आय। विश्ववाद एव सधमन-गोपियों में शान्ति और शील-रक्षा, बस्तुरवा-सेवा शरगामुनि भाताजी के श्याम और वन्दान का विवेचन; समाज में मनुष्यावता से चार्जद विभिष्ट समाज-केवियों के जीवन का परीक्षण; समाचार-पत्रों की लेखों के

माध्यम से 'मानुदिवस' के महत्त्व पर प्रकाश।

अपील में यह भी कहा गया है कि 'मा' प्रेम, धर्म, श्याम और शान्ति की प्रतिमा है। अनेक दश उन्नतम गौरव शिविर पर पहुँचने के लिए शिवियों की सहाय और भावनें जीवन की साधना करनी होगी। इस दिनांक पर स्कूल एव बालिकाओं के छात्र-छात्राओं की सहाय तथा उच्च विद्यालयों के जीवन की विशेष प्रेरणा दी जाय और उस दिन भाताएँ घर के रोजमर्रा के कार्य-कार में मुक्त की जायें।

हस अंक में

स्वदेशी और स्वराज्य	
शिविर सम्पन्न	—सम्भागीय २२२
ए० बी० सो० विरोध :	
समाचारार्थ	—श्री देवेन्द्र गुडा २२४
परिस्थिति के २२ परिवार	२२५
परिचयों दुनिया में गांधी	
	—श्री० सुगन दासगुडा २२६
भारत में अमेरिकी कुचक्रों	२२७
रपोली की पंचवर्षीय योजना	
	—श्री शशीश २२९
भारत में गरीबी	
	—श्री राममूर्ति २३०
शमला देव के शरणार्थी और सहारा के कारिदारों	
	—श्री मोरेश्वर बस्तुरवाभावा २३१
विचार-विमर्श : प्रेम की पद्धति	
	—श्री कुमार प्रसाद २३२
शान्ति के वर्णों से	२३३
पुष्टि का राष्ट्रीय मोर्चा	२३४
ग्रन्थ सूचक	
समाचार के नाम पर	
आन्दोलन के समाचार	
परिचिष्ट : सर्वोच्च आदेश	

वार्षिक छापक : १०० (संदेश कालज : १२५०, एक प्रति २५ पैसे), विदेश में २५०; या ३० शिल्पिण या ४ शालर।
क अंक का मूल्य २० पैसे। शीघ्र-प्रकाशक शूद्र द्वारा संचालित होने के लिये प्रकाशित १९६१ जनवरी, बाराणसी में मुद्रित

आपके पुत्र

राष्ट्रीय एकता व राजनीति

यंगला देव के उदय के रूप में लोकतंत्र और मानवता को एक ऐतिहासिक विजय-प्राप्त होने से हमारा आनन्दित होना स्वाभाविक है। इस सुविन-अभियान के समय भारतीय जनता में राष्ट्रीय एकात्मता और देश-प्रेम की अत्यन्त उत्कट भावना का दर्शन हुआ। किन्तु अब इस विजय को अपनी-अपनी राजनीतिक सूझी बनाने का प्रयास शुरू हो गया है। देश के लगभग आधे भाग में विधानसभाओं के चुनाव होने जा रहे हैं। लोकतंत्र में चुनाव लोक-सिद्धान्त के बाध होने चाहिए, किन्तु हमने जिस अन्तरमूलक सभापदी दलगत राजनीति को अपनाया है उसमें चुनाव जीतने के जोश में मानवीय एवं लोकतांत्रिक मूल्यों पर निर्भर प्रहार होता है। ऐसी स्थिति में देश के प्रत्येक विचारशील नागरिक को चिन्ता का विषय यह होना चाहिए कि सत्त-भंग में बनी राष्ट्रीय एकता को कैसे अक्षुण्ण रखा जाय।

बसन्त देव ने मिट्टर जिन्दा के द्विराष्ट्रीय सिद्धान्त को क्रम में गहरे रङ्गना दिया है, उससे धर्मनिरपेक्षता का आदर्श स्वीकार किया है। अब हम जकड़े नहीं रहे, हमारा दायित्व बढ़ गया है। चुनाव-अभियान में जब हम दलगत-दलगत के बीच भेद-भाव बढ़ाने में लगे रहेंगे तो साम्प्रदायिक विद्वेष भी बढ़ेगा ही, दूसरा हमारे नये पदों पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? क्या इससे धर्मनिरपेक्षता के प्रति उदकी नयी-नयी आस्था को घुंका नहीं जड़ेगा ? क्या लोकतंत्र के इस प्रचलित रूप में निहित इन खतरों को प्रतिबन्धि मानकर लोकतंत्र के प्रति उदकी उदग्रदृष्टि नहीं पड़ेगा ?

ऐसी स्थिति न आने पावे, इसके लिए भारत के प्रत्येक नागरिक को अपने आदर्शों को कमजोर करनेवालों से उतना

ही हतकें रहना होगा जितना सामान्य हम अपने आदर्शों के लिए हुए युद्धरत में अपने समूहों से रहे थे। साथ ही हमारे विचारशील नागरिकों को वर्तमान राष्ट्रीय दलगत राजनीति और केन्द्रित प्रातिनिधिक लोकतंत्र के स्थान पर एक नयी दल-मुक्त लोकनीति एवं विकेंद्रित योगदानात्मक लोकतंत्र के विकास की दिशा प्रयास करने का वैचारिक अभियान चलाना होगा।

विषय प्रतिद्वन्द्व विधान एम० एम० एम० के सदस्यों में "जनतंत्र का भविष्य राजनीतिक लोगों पर ही खीरकर नहीं रहा जा सकता जो आज राजनीति के क्षेत्रों से बाहर है, यह जिन्हें राजनीति से बाहर रहने की दृष्टि और हिम्मत प्राप्त है। व्यक्तिगत स्वतंत्रता से भैरित ऐसे नागरिकों की निष्ठा, लगन और साहस पर ही लोकतंत्र का भविष्य अवलम्बित है।"

—विजय भाई

प्रथम विहार ग्रामस्वराज्य-सम्मेलन

कपार हृष के साथ सूचित किया जा रहा है कि बिहार के ग्रामसभा की प्रथम सम्मेलन सिद्धमा (वैशाली) मुख्यकपुर में दिनांक २४ एच २५ फरवरी १९७२ को आयोजित किया गया है। इस सम्मेलन में बिहार के कौन्-कौने से डेढ़ हज़ार प्रतिनिधियों के भाग लेने की आशा है। उसी अवसर पर दिनांक २६ फरवरी '७२ को मुख्यकपुर जिला सर्वोदय सम्मेलन का भी आयोजन किया गया है। सम्मेलन में सर्वोच्च जयप्रकाश नारायण, दादा धर्म-धिकारी, बाबा कालेशकर, एम० जयप्रकाश, निर्मला बेरापाठेय, आचार्य रामभूति, वैजनाथ प्रसाद चौधरी आदि महान सर्वोदयी नेताओं को आमन्त्रित किया गया है।

सम्मेलन में उपस्थित प्रतिनिधिगण ग्रामस्वराज्य के व्यावहारिक पहलु पर चर्चा करेंगे तथा बिहार के ग्रामस्वराज्य आन्दोलन को जोरदार बनाने के कार्यक्रम पर भी विचार-विमर्श करेंगे। बिहार की सभी ग्रामसभाओं से अनुपरोध है कि वे जगता प्रतिनिधि सम्मेलन में भेजकर सम्मेलन को सफल बनायें।

आवश्यक सूचनाएँ

(१) सम्मेलन-स्थल सिद्धमा-वैशाली प्रखण्ड के पूर्वी छोर पर मुख्यकपुर हाजीपुर रोड (बाया मोला सातगज) पर स्थित राई है।

(२) सिद्धमा पहुँचने की सुविधाएँ : गौरील स्टेशन पर उतर कर सिद्धमा या टनटम से सिद्धमा जाया जा सकता है।

गौरील स्टेशन मुख्यकपुर-हाजीपुर रेल-लाइन पर है। गौरील स्टेशन से सिद्धमा की दूरी चार मील है। मुख्यकपुर, हाजीपुर रोड पर राज्य ट्रान्स्पोर्ट की बसें चलती हैं जिसे गौरील बस स्टैण्ड पर उतरकर सिद्धमा या टनटम से सिद्धमा जाया जा सकता है। बस स्टैण्ड से सिद्धमा दो मिन की दूरी पर है।

सम्मेलन के अवसर पर गौरील बस स्टैण्ड एवं गौरील स्टेशन पर स्वागत समिति की ओर से प्रतिनिधियों को सम्मेलन स्थल पर पहुँचाने की व्यवस्था रहेगी।

(३) सम्मेलन में प्रत्येक ग्रामसभा से अधिक-से-अधिक दो प्रतिनिधि भाग ले सकेंगे। भाग लेनेवाले प्रतिनिधियों की सूची ग्रामसभा की ओर से या उस क्षेत्र के जिला सर्वोदय मण्डल या जिला ग्राम-स्वराज्य-सम्मिति की ओर से रचागत समिति के दफ्तर में सम्मेलन की तिथि से पहले या जानी चाहिए। सम्मेलन में भाग लेनेवाले प्रतिनिधि के लिए भोजन तथा प्रतिनिधि-शुल्क जमा करना आवश्यक होगा।

(४) सम्मेलन में प्रतिनिधियों के लिए स्वागत समिति की ओर से नि:शुल्क वायान एवं मोदन की व्यवस्था की गयी है।

(५) फरवरी में जाड़ा रहेगा इस-लिए प्रतिनिधिगण ओढ़ना एवं बिछावन साथ लाना न भूलेंगे।

—दादा प्रसाद शर्मा
स्वागताध्यक्ष
स्वागत समिति

मार्च का अनुभव

ज्यों-ज्यों मार्च के चुनाव नजदीक आ रहे हैं अपने कुछ सचियों की ओर से, तथा युक्ति के सघन स्रोतों के कुछ नागरिक मित्रों की ओर से भी, यह प्रश्न पूछा जाने लगा है कि क्या इस चुनाव में भी 'सर्वोत्तम की ओर से' कुछ उम्मीदवार नहीं खड़े हिये जायेंगे ?

प्रश्न नया नहीं है, ओर हर चुनाव में पूछा जाया रहा है। इस प्रश्न में यह उदा है जो आज भी चुनाव-पद्धति से विनोदित बङ्गी आ रही है। भाव ही किसी को इसमें ऐसी शक भी दिल् सकती है कि सर्वोत्तम के शुभचिन्तक चाहते हैं कि उसे भी सत्ता की होड़ में शरीक होना चाहिए।

सर्वोत्तम के सारे विस्तृत में सर्वोत्तम के उम्मीदवार की कल्पना नहीं है। कल्पना है बल के उम्मीदवार के स्थान पर उनका के उम्मीदवार को। लेकिन यह धन उन भ्रमों में है जो विभाग में बिपके ही रहते हैं। विभाग से सत्ता निकलती नहीं।

युक्ति में सवे हुए साथी जातने हैं कि जमी कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जो इतना संगठित हो कि अपनी ओर से सर्वोत्तम उम्मीदवार खड़ा कर सके। जबर कोई क्षेत्र तैयार होता भी वो सोचने की बात होती कि क्या एक-दो क्षेत्रों में इस तरह का प्रयोग करना आभ्योत्तम की दृष्टि से उचित होगा ? इस प्रश्न पर भिन्न रायें ही सचती हैं। उदाहरण निर्माण का प्रश्न नहीं है।

शामस्वराज्य-समाजों की ओर से उम्मीदवार खड़ा करने या चुनाव जीतने का प्रश्न नहीं है, बरन् है चुनाव की पद्धति को सोच-विचार बनाये रखने का। जिस तरह राजनैतिक दलों के लिए चुनाव आवश्यक है उसी तरह सोच-विचार के प्रकट होने के लिए भी चुनाव-पद्धति का ध्यान रहना आवश्यक है। अतः चुनाव-पद्धति में सोच-विचार का प्रयोग बलिष्ठ होना; बलते घटते चुनाव-पद्धति सोच-विचार के विकास के लिए खतरा सिद्ध होगी। युद्ध चुनाव सोच-विचार का प्राण है। सोच-विचार से अलग सोच-विचार का अस्तित्व नहीं है।

अतः चुनावों के रूप में हमारी सोच-विचार के लिए गम्भीर सतर्कता पैदा हो चुका है। ऐसा बहनेवालों की सहाय काम नहीं है जो सोच-विचार को सुलभ-सुलभा प्रस्ताव, उदाहरण, सोच-विचार नहीं करते हैं। जमी दरमहा के हाल के चुनाव में इन तीन तमो का स्ति सोच-विचार इन्तेषाल तो विद्या ही, एक पोषा तम भी जोड़ दिया—जीवित्त। ये सब तम जमी जगह भयंकर तो है ही, लेकिन इनसे बड़कर भयंकर एक दुहरा तम है—सोच-विचार जिसमें बोटर भाव्य रहता है और बोट पड़ जाते हैं। एक बोटर लैकड़ों बोट ब्राह देता है। इन सबों के सामंजस्य प्रहार के सामने सोच-विचार जैसे टिकेगा और, इस तरह के सोच-विचार में सोच-विचार का काम तो बुर, क्या सोच-विचार भी सम्भव होगा ?

इसलिए सर्वोत्तम के लिए विचार-विचार बह विन्ता सबसे बड़ी है कि चुनाव की प्रक्रियाएँ अधिक-से अधिक शुद्ध बनी रहें। चुनाव ओर शुद्ध चुनाव सम्प, प्रगतिशील, समाज के लिए यों भी आवश्यक है।

तो, मार्च के चुनाव में हम अपनी सोच-विचार से क्या कर सकते हैं ?

युक्ति के सघन स्रोतों में हमारी सामस्वराज्य-समाजें हैं। कुछ क्षेत्रों में प्रत्यक्ष-समाज-समाजें भी बन चुकी हैं। उनके पदा-विहारी ओर कार्य-समिति के सतर्क अपने क्षेत्र में प्रभाव रखते हैं। चुनाव-जैसे महत्वपूर्ण अवसर पर उन्हें पूरे तीर पर सक्रिय होना चाहिए। जिस तरह ओर जिन् प्रयोजन के लिए उत्तरा गठन हुआ है उस दृष्टि से चुनाव के सम्बन्ध में उनके से कर्तव्य ही सचते हैं (१) चुनाव की भाँषी में सामस्वराज्य-समाज तथा प्रत्यक्ष-समाज-समाज की एकता को टूटने न देना, (२) उदाहरणपूर्वक यह देखना कि सोच-विचार हर मतदाना निरर होकर जिसे चाहे बोट दे सके, किसी को उठे से दरगाना न भाव, या वंशे से खरीद न भाव, (३) बोट-सतर्क न हो, (४) मतदान-नैत्र पर किसी प्रकार की व्याप्त न हो।

मार्च की एका सामस्वराज्य-समाज, तथा प्रत्यक्ष-समाज की सबसे पहली विन्ता होगी चाहिए। चुनाव के समय जिस तरह कमेडिग होगी है वह मजबूत पैदा करती है। ये मजबूत मार्च में स्थायी दुर्गमों के बरतण बनते हैं। दल के नाम में दोस्त-दुश्मन बनाना, ओर जाति के नाम में बोट प्राणना, विरोधी उम्मीदवार पर व्यक्तित्व प्रहार करना आदि ऐसी चीजें हैं जिनसे मार्च को बचाव की कोशिश करनी चाहिए। सामस्वराज्य-समाज अपनी बंठक करे ओर तम करे कि यह मजबूत वग से कमेडिग नहीं होने देती; यह ऐसा कोई काम नहीं होने देती जिससे मार्च की एका पर आंच भाये। मार्च की एका ओर चुनाव की शुद्धता की जिम्मेदारी में साम-साहित्येन का पूरा इन्तेषाल होना चाहिए।

इस सम्बन्ध में प्रत्यक्ष-समाज-समाज की भी विशेष जिम्मेदारी है। उसे चाहिए कि सामस्वराज्य-समाजों को बताने कि उन्हें बरा करना, और बरा नहीं करना, चाहिए। उसे अपनी ओर से पूर्ण क्षति निवारने चाहिए, सभारं करनी चाहिए। इसके अलावा उसे खरीद ओर से पूरे बरतण में सो-बार जगह सोच-विचार मजबूत करना चाहिए जहाँ विभिन्न उम्मीदवार एक साथ भायें ओर एक मज से अपने विचार जनता के सामने रखें। सचुन सोच-विचार के कार्यक्रम का लोकमान्य पर बहुराज्य प्रभाव होता है, उस ओर हमारा ध्यान विशेष रूप से जातना चाहिए।

चुनाव हूयें ऐसा अवसर देता है जब हम लोकनीति बनाम राजनीति का विचार जनता के सामने रख सकते हैं। हमें रखना भी चाहिए। सत्ता ओर संगठित के बरि में सचियों-सचियों से मोक्षमात्र्य जिस तरह बना हुआ है उसे बरतना लोकनीति का मुख्य काम है। इस दृष्टि से हर अवसर का हूयें नाम खोजना चाहिए। मार्च का चुनाव एक बड़ा अवसर है।

ग्रामदानो क्षेत्रों के लिए आर्थिक योजना

—सिद्धराज दंडे

तब जोकों की योजना रह जायगी।

(सं० १७ जनवरी को मंगया जिते के रत्नी प्रसन्न की ग्रामसमाधी के प्रति-निधियों की योजना-गोष्ठी में दिने गये अल्पशीघ्र भाषण के आधार पर। सं०)

मेरी निरचित राय है कि योजना की दृष्टि गहन होना चाहिए, प्रसन्न नहीं। प्रसन्न-स्तर पर भी काम हो लेकिन साधारण उत्पादन की योजना का प्रारम्भ गाँव से ही होना चाहिए। हम प्रसन्न की ही इकाई मानकर सारी योजना सोचेंगे [तो पुत्रता ही बौद्ध-वरीका चलेगा, हमारे साधोत्र में और सात्र के सरकारी आयो-जन में कोई गैरिक्त भेद नहीं होगा। हमारी सारी आदि का मूल औजार गाँव की ग्रामसभा है। ग्रामसभा, गाँव के सब लोगों की संगठित इकाई। हम चाहते हैं कि विकास में लोगों का सक्रिय हाथ हो। अगर प्रसन्न-स्तर पर हम कुछ आँकड़ें तैयार कर लेंगे तो यह कैसे होगा? यह तो प्रबलित योजनाओं से कोई भिन्न चीज नहीं होगी। इसलिए मैं इस बात पर जोर देना चाहता हूँ कि उत्पादन की योजना ग्रामसभा में बननी चाहिए। ग्रामसभा में गाँव के सब लोग बैठें और देखें कि वहाँ की क्या बान-धकता सर्वप्रथम है, अन्न की, वस्त्र की, या और किसी चीज की? ग्रामसभा में चर्चा करके अत्योदय के आधार पर योजना बनायेंगे तो अच्छा होगा। अगर आपकी चिन्ता गाँव के लोगों का सक्रिय सहयोग लेने की हो तो योजना की शुरू-वात गाँव से कीजिए।

प्रसन्न-स्तर पर भी कुछ काम करने होंगे। इस सम्बन्ध में मेरे नीचे लिखे सुझाव हैं :

(१) आयोजन की प्रेरणा प्रसन्न से है। यह प्रेरणा समा-सम्मेलन तथा भौतिकी आदि से ही जा सकती है। यह प्रसन्न-सभा का काम है।

(२) प्रसन्न-सभा को जो दूसरा काम करना चाहिए वह है दिना-दर्शन का,

अर्थात् इस बारे में मार्गदर्शन करने का कि आर्थिक विकास के मूल तत्त्व क्या होंगे। आर्थिक विकास के नाम पर बहुत-सी ऐसी बातें हो रही हैं जो तात्कालिक दृष्टि से भले ही लाभदायी हो, पर कुछ दायक भी हैं। उदाहरण के लिए सामाजिक खातों का उपयोग। विकास की दिशा के सम्बन्ध में कुछ बुनियादी बातें प्रसन्न-स्तर पर तय करनी चाहिए, क्योंकि गाँव-गाँव में इस काम के लिए आवश्यक पढ़े-लिखे बौद्धिक लोगों का सहयोग मिलना सम्भव नहीं होगा।

(३) तीसरा काम जो प्रसन्न-सभा को करना चाहिए वह है प्रशिक्षण का। सब और योजना आदि करने के तब समय-समय पर गाँव के योजनाओं को उद्योगों आदि के प्रशिक्षण की व्यवस्था प्रसन्न-सभा को करनी चाहिए।

(४) चौथा काम प्रसन्न-स्तर पर 'उत्प्रेरण' का होगा। गाँव-गाँव में खेती और उद्योगों के लिए तरह-तरह की मशीनें उपयोग में आयेंगी। इनके सम्बन्ध में कुछ तालिम के काम प्रसन्न-सभा को हाथ में लेने होंगे। गाँवों में उपयोग के लिए जो बाहर का माल आयात होता है, अगर प्रसन्न-स्तर पर उसके आयात का आयोजन किया जाय तो यह सामुदायी होगा। इस काम के लिए प्रसन्न-स्तर पर उपभोक्ता भण्डार खोला जा सकता है। इस प्रकार के वेदाकार प्रसन्न-स्तर पर करना चाहिए।

योजना के बारे में एक बात मुझे यह कहनी है कि हमें ५-५ साल की योजना की चिन्ता में नहीं पड़ना चाहिए। एक-एक वर्ष की योजना बनायेंगे तो अपना ध्यानहीनक और वास्तविक होगा, यही हमारी योजना की सहीकारी योजना की

योजना के बारे में दो-तीन बातें और हमारे सामने दृष्ट होनी चाहिए। हमारी सारी योजनाओं का केन्द्रबिन्दु अन्तिम ध्येयित होना चाहिए। गाँव की योजना का मापदण्ड होना चाहिए—गाँव का सबके मधीय स्थिति या परिवार। मात्रा में होने की तरह अत्योदय हमारी सारी योजना का आधार और उसकी पत्थरी होनी चाहिए। ग्रामसभा का पहला काम यह होना चाहिए कि गाँव में जो भूखें, नंगे हों उनके बारे में सोचें। उनकी सहायता उसका प्रथम कर्तव्य होना चाहिए। आर्थिक साधन गाँव में खड़े करने के लिए ग्रामसभा क्या कर सकती है, उसके बारे में भी सोचना चाहिए। ग्रामकोष इस सम्बन्ध में बहुत उपयोगी है। योजना का आरम्भ करने साधनों के आधार पर करना ठीक होगा, दलके बाहर बाहर के जो भिले वह पथ तकिया।

हमारी योजना हो वह समग्र दृष्टि से ही, केवल तात्कालिक काम के लिए नहीं। उदाहरण के लिए सुधरे बड़े जाने-वाले बीज और सांघनिक खाद। आज-कल सांघनिक खातों का और इन बीजों का बहुत प्रचार हो रहा है। हमें योजना बनाते समय उनके लाभ-हानि आदि सबको ध्यान में रखना चाहिए। गाँव में हम गाँव की खाद की काम में नहीं लाते बल्कि उसे बरबाद करते हैं। सजीव खाद गाँव में हो सकती है। हम बाहर से जाने से मुक्त हो सकते हैं। दूसरी के अनुभव से लाभ उठायेंगे तो अच्छा होगा।

आखिरी बात यह कि हमें केवल भौतिक विकास की बात नहीं सोचनी चाहिए। अगर भौतिक विकास का ही सबके चर्चेंगे तो नदीका बहुत सतरताक का पता है। उसका कुछ नमूना आज हम देख रहे हैं; अतः भौतिक के साथ नैतिक, आध्यात्मिक आदि सब बातें ध्यान में रखनी चाहिए, सभी यह सर्वोदय की योजना होनी।

सर्व की क्रान्ति सर्व के द्वारा होगी

—छीरेन्द्र मजूमदार

"लोक-जागृता द्वारा लोक-चेतना को बनाना" छीरेन्द्र का मन्त्रोक्त वाक्य है। और इसीलिए हम लोग ने वे लोक-जागृता को अवगत करते हैं। कहती हैं,—

"देखो ! लोक ही मेरा संस्था है। गण-सुख बनाने का ही उद्देश्य है, तो विभक्तता ही सर्वविध करके हूँ न ? तो मैं ही अपने उपाय ही परिष्कार करता हूँ—बेदे लिए लोक ही विभक्तता है। हृदय से धार निकलने लयगा है और जवरी यह भावना देखकर अनागत यद्वा मे माया मुक्त आता है। जिसने लोक है, जिसमें लोक के प्रति यह धर्म का भाव है, जो लोक के प्रति अपने संप्रदाय है ? अगर हम-लोगों से किसी प्रकार की गलती होती है, तो उनको भी ही शिक्षक के जो बंध होते हैं, उसका एक दृष्टि यह अवगत होता है। "सभी तो इस देश की यह हाव है।" काठ-आज मे कहेंगे. "अरे ! यह संघ शिवो तरह किता है, यही भयान की बड़ी बात है।" भवएव दादा की वाक्या है: "सही की तरह हड़तों लोग लोक-जागृता करे, हमारी लोग लोक-जागृता में जमें तथा सामग्र्युक्त व सामत्वराज्य के लिए सिद्धी वैधर करें।" माथी कहते थे भारत के सात लाख गाँवों में सात लाख भयंकर बायो-रवाँ बाहिए। दादा मुवाते हैं, पर उन्हें 'बायो-रवाँ' शब्द से अब परदेह है। वे देते भी सोचना हा ही प्रतीक मानते हैं, इसी-लिए इसके अपने जो प्रतीक देते हैं, यह है "शिवो शरीर"। परन्तु देवदत्त नहीं है कि देवे शिवदा कहीरु कभी हमारे प्रस कहतु करतु है। देखो ! काला आखिर-कार नीरुबाली की ही है, काजप जलो के माने सारा जोश वदनेवाला है, इसीलिए कालाके काली मोरकालों, जो इस काली-मान में लाला होना, तब काजप कर्म की।

प्रश्न : कालीय का आन्धिक कर्म क्या है ? —कालीय का दुखकर है।

दादा —"सर्व" भाते सब और 'उपय' भाते विद्या; सबका विद्याय संके होता ?

"सबको बराबर करना होगा।" —एक छात्र,

"तो क्या करोगे, सबको बराबर में सहा करके बराबर का राग देकर बराबर लेने ? तो क्या करोगे ? यह देखो (स्वयं के विधान की तरह इगार करके हुए) श्रेष्ठ में यह पण्डितो है न ? सब जगह पाए ह, वहाँ क्यों नहीं है ? क्योंकि उसे दुखना जाता है। अब वहाँ की बात जमाने के लिए, उन पण्डितों की मन्त्र काये के लिए, क्या करोगे ? दो राते हैं। या तो यादत कोई क्या की कि हम राते से कोई न चने, या काँडा बंध दो दोनोँ और। सादत बोधें क्या दो, और तीस बरत समस लें, तो पण्डितो बन्ध हो सकवो है न ? और काँडा क्या बोधे, तो क्या होगा ? दूसरी पण्डितो बन जायेगी, जसे बन्ध करोगे, तो तीसरी निकल जायेगी, तो तीसरी सारत बोधें लगाने के लिए बहता है। इसीके सबका विद्याय होगा।

"एक बात ठीक से समझ लो," 'सर्वोदय' का नहीं है 'सर्व' के द्वारा सर्वोदय। भवएव ही कोई दल या जगम मही समप्रता चाहिए। अब जगम-जगम गुट का दल नहीं रह करने। प्राचीन भारत में छोटे-छोटे, जगम-जगम गण-राज्य थे। निष्ठाविकों का, भागवों का, जाति-आदि। सब विद्याय वे दुनिया का प्रयोग बहुत छोटा कर दिया है। इसीलिए किनोरा समुद्र की, 'सर्व' की बात बरता है, गुट ही नहीं, इसीलिए हमारे नाम 'सर्व' है। हमारे लिए कोई सारी, कोई दल, मत, सिद्धि, धर्म नहीं। हमारे लिए सब आदमी है, और बराबर है।"

"क्रान्ति के लिए सबसे बड़ा अस्तर ही-जवरी है। क्रान्ति उनके लिए सिद्धि

स्वार्थ हो जाती है—भाज देस में किनोरा पादिनी है सभी क्रान्ति करनेवाली हैं, पर आपस में सहनी है। सेवा करना सभी चाहते हैं न ? फिर सब मिलकर क्यों नहीं करते सेवा ? इसीलिए किनोरा बहता है कि क्रान्ति को हमेशा क्रान्तिवारी से माने रहना होगा। और इसकी क्रान्ति लोक द्वारा होगी। अगर क्रान्तिवारी पाठों द्वारा क्रान्ति होगी, तो वह पाठों ही क्रान्ति पर हाथी, हो जायेगी। जैसा कि आन्तिक दुनिया में होना आगा है। कथ में क्रान्ति दुर्दे न ? जवरी भी बंधी, मर दुहा, पर क्रान्तिवारीको की जगत ने आन्तिक की तरह जो जगडा लोक को, तो भाज भी वहाँ के लोक कथपभावर रह जाते हैं ...।

"कल्प यह दिमाग में साध कर लेना होगा कि—'सामन्ताज' और 'सर्वोदय' सर्वोदयकारों द्वारा नहीं होगा, सर्व द्वारा होगा। अगर सर्वोदय-बालों द्वारा होना, तो वह सर्वोदय मार्ग सामन्ताज्य होगा। इसीलिए किनोरा सबको इस काम में जोनता है। भवियों की, अन्तरों के, पाठोंवालों की, क्योंकि पहले यह लोक है, उनके बाद ही और दुहा"। तो सब समस पने न सर्वोदय का साहित्यिक अर्थ ? (श्रेष्ठ, सिद्धिवाला)

जब लोक-जागृता चले गये, और दादा भावर बाकर कर्म में लेट गये, लेटे-लेटे हृदयोंकी से बड़ा 'देखो ! क्रान्ति के सबसे बड़े दुष्मन क्रान्तिवारी होते हैं, इस बात को तुम लोगों को भी ठीक से समझ लेना चाहिए। तुम लोगों का भी दिमाग इस ओर से साध नहीं है। यह किनोरा का बहुत विचार 'साहोदर-यत्न आदिवा' है, जो हमने इतिहास के अनुभवों से प्राप्त किया है।

"तो हमें क्या तरीका अपनाना चाहिए ?" किनोरा ने पूछा। "पहले, छीरे-छीरे शार्डकवाँ-सामगी। सभी लो तुम लोगों की नाम काना ही होगा। पर छीरे-छीरे उनके (भोक्त के) ऊपर पूरा भार नीरुकर तुम्हें निकल जाता होगा, या फिर काराधिक बरकर रहना होगा।

औद्योगीकरण की प्रगति का दुष्प्रभाव

—मनुभाई मेहता

[इस वर्ष स्ट्राइडोम में "बर्ड्स पोपुलन वॉरफेन्ट" होने जा रही है। 'पोपुलन' का मतलब है, हमारे वातावरण, हमारे जलस्रोत और हमारी हवा आदि पर औद्योगीकरण आदि के कारण होनेवाला दुष्प्रभाव। क्या यह दुष्प्रभाव मनुष्य-जाति के लिए भारी तनद उत्पन्न कर रहा है? श्री मनुभाई ने अपने लेख में इसकी भयकरता की चर्चा की है और प्रश्न उठाया है कि मनुष्य इसके बँसे अपने आपको बचायेगा।—सं०]

माना जाता है कि जब किसी आरामी को बँस्तर की बीमारी हो जाती है तो उसके दिन गिने जाने लगते हैं, उसका अरीर अस्तर से खोखला होने लगता है और अन्त में इस तरह खोखला बना अरीर मृत्यु की शरण लेता है। यह मान्यता एक बड़ी हद तक सच भी है और इसी कारण किसी विपन्न आर्थिकार की आर्थिकारि भाषा में 'कैन्सर' कहा जाता है।

हाल ही परिवर्तन के देशों में एक एक विचार में 'प्रगति' की भी बँस्तर की उपाधि दी गयी है। 'गन्द टाइम्स' के सम्पादक के नाम लिखे अपने एक पत्र में एक सुप्रसिद्ध प्रोफेसर ने अनुभव-विनय-पूर्वक कहा है कि प्रगति के रूप में प्रवृत्त होनेवाले इस बँस्तर का कोई उपाय किया जाना चाहिए। पत्र-लेखक की माँग है कि "रतीव दिस कैन्सर ऑव प्रोग्रेस" अर्थात् 'प्रगति के इस बँस्तर को

रोको'। इस पत्र के सिलसिले में सुप्रसिद्ध सरोजिन वैद्यकी मेन्सूहिन और क्लिफ टावनबी द्वारा लिखे गये पत्रों में इस अजीब नया समर्थन किया गया है। कान की भी बँसी बलिहारी है। उलने मनुष्य-जाति को इस बाध के लिए सावधान करना शुरू किया है कि प्रगति, निरसीम और निरनुच प्रगति, विदनी सतरमाक होती है।

मनुष्य के लिए आवश्यक ऊर्जा—विद्युत शक्ति—आदि के लिए ईंधन के रूप में जो कुछ जलाया जाता है, उससे वातावरण दूषित बनता है और फलस्वरूप मनुष्य-जाति के लिए प्रतिपक्ष एतद् बड़दा हो रहता है। मनुष्य ने यातायात के लिए पेट्रोल और डीजल जैसे ईंधन का उपयोग करनेवाले जो वाहन बनाये हैं, उन्हें दो आद के वैज्ञानिक बर्डे-के-बर्डे 'अपराधी' की धैणी में रखने लगे हैं। और, अमेरिका-जैसे देशों में तो अब इस

प्रकार के वाहनों से निश्चयेवाली जली हुई जहरीली हवाओं के निस्तार के लिए विशिष्ट व्यवस्था सोधी जाने लगी है। अब यह क्षेत्र तो बर्हा स्पष्ट हो ही चुकी है कि इस प्रकार के वाहनों की संख्या को निरनुच रीति से बढ़ने नहीं दिया जा सकता। अतएव 'प्रगति' देश में हर दो आरामी पीछे एक मोटर है। यह कह कर उस देश की प्रगति की जो प्रशंसा अब तक की जाती थी, उसे अब बन्द करना होगा और प्रगति के मूल्योंको पुरे बदलना होगा। वैद्यकी मेन्सूहिन तो बहते हैं कि अब हमें सूर्य की शक्ति पर ही निर्भर रहने की बसा सीखनी होगी; यद्यपि वैज्ञानिक जनकी इस बात से सहमत नहीं है। उन्हें तो अभी 'थर्मोन्यूक्लियर' की अर्थात् हाइड्रोजन बन की शक्ति की अपनी पुट्टी में लाना है। इसलिए इस विषय की अपनी सोच को वे सहज ही छोड़ना पसन्द नहीं करेंगे।

विलिय टावनबी ने तो एक बिलकुल नया सुझाव भी दिया है। जिस तरह आज फल हूलेते में एक दिन उपवास रहकर इस प्रकार बचे अन्न को भूषों तक पहुँचाने का आभ्योत्सव प्रसंगोपात्त बसाया जाता है, उसी तरह यदि कोई दूसरे में एक दिन मोटर व्यवसाय रेडियो-जैसे साधनों का उपयोग न करने का आभ्योत्सव शुरू करे, तो श्री टावनबी उनमें जुड़ने को तैयार हैं।

आज की परिस्थिति के दो मूलभूत प्रश्न हैं। अर्थात् तस्कृति जिसे ऊँचा जीवन-स्तर मानती है; उसे प्राप्य करने के लिए अधिक-से-अधिक साधनों का उत्पादन करना और उसको बढ़ाते रहना चाहिए अथवा जीवन का सत्य ही ऊपर उठे, इसके लिए कोई प्रयत्न किया जाय? मनुष्य-जाति इस प्रश्न का उत्तर जिस तरह देती है, उसी पर मनुष्य का भविष्य निर्भर करेगा।

'यूरेनियो' के अतिरिक्त डाइरेक्टर जनरल डॉर सादर प्रोफेसर आर्दकृतियों सुझावों द्वारा तो ने इस प्रश्न की चर्चा एक नयी ही दृष्टि से भी है। श्री टावनबी एक विश्वविद्यालय जीवन-विज्ञान-शास्त्री

→ तुम नहीं नहीं होगे, इसी कान्ति के होने में भी। "वीर दादा कावेरा से उठ बैठो हैं। फिर दुहराते हैं, "यह विनोबा का एतद्म नया विचार है। इसीलिए वह सर्व देवा सच की निर्माट करने की बात बहना है—"संघ समाप्त हो जाय, और सर्व सेवा रह जाय, यानी संघ सत्य हो जाय, और लोक रहे।

प्रश्न :— ग्रामस्वराज का भी तो कोई संघ होगा न ?

दादा :— व्यवस्था-सय माला के कोरे-जैसा होगा, और उस कोरे के दो सिरे होंगे—ग्रामस्वराज्य, तथा विश्व-स्वराज्य। माना के सभी पून अलग-

अलग होते हैं, पर माला बनाने के लिए एक डोरा चाहिए कि नहीं? उसी तरह समन्वय (को-आर्डिनेशन) के लिए एक व्यवस्था होगी, पर अद्वय होगी, जैसे माला में डोरा छिपा होता है।

समान विषय की तप के नीचे न रहे, तो उसका सही विकास होगा। अगर केन्द्र का शासन रहेगा, तो केन्द्र के बग-बोर होते ही समाज कमजोर हो जायगा, जैसा आज हो रहा है। अतएव तंत्र तो रहेगा, पर पतलन नहीं, स्वतंत्र रहेगा। 'स्व' हुआ प्रथम पुरुष और द्वितीय पुरुष; 'वत्' हुआ अन्य पुरुष। हरलिय स्वतंत्र हो लोक का सच, न कि परसच।

—प्रस्तुतकर्ता : देवेन्द्र

(राष्ट्रीयवादि) भी है। उनका कहना है कि पिछले ४०० वर्षों से मनुष्य-जाति इसी विचार से अपने सब काम चलाती आ रही है कि उसकी प्रगति की कोई सीमा है ही नहीं। लेकिन अब हमें पता चलने लगा है कि यह विचार गलत है। हमारी पृथ्वी निस्सीम नहीं है, सीमित है, अतएव इस पृथ्वी पर रहनेवाले हमारे जैसे लोगों की प्रगति भी सीमित ही रहेगी। हमारे सामने सीमित है, इसलिए हमें अपनी प्रगति की भी सीमा निश्चित कर लेनी चाहिए। हमने अपनी जनसंख्या को बढ़ाने की दिशा में जो प्रगति की है, उसके सामने सबसे पहले पूर्णविराम लगा कर देना चाहिए। प्रोफेसर कुन्टी ट्रान्सों को मालने है कि यदि हम दुनिया के हर आदमी को कुल-जीव से रहना हो, तो दुनिया की जनसंख्या ७० करोड़ से अधिक नहीं होनी चाहिए। आज दुनिया में इससे अधिक लोग रह रहे हैं। यदि लोगों की यह संख्या इसी तरह बढ़ती रही, तो क्या होगा, कहना कठिन है। प्रोफेसर ट्रान्सों ने इस बात की भी चेष्टा की है कि दुनिया के कुछ देशों में ही इस विचार से जो बुद्धिमानों की है, उसके अनुसार सारी दुनिया में ऐसी कोई महाभारी की संज्ञा है, जिसे समझाया किसी के बच का न रहे और जनसंख्या लोगों को जिनकी भी बची जाये।

प्रोफेसर थोमसहाइमर ने एक बगड़ कहा है कि जब विशाल न समुद्र की जगह सेते देखा, तो उसके साथ ही उसने जानी एक महाभारी के भी दर्शन किये। प्रोफेसर थोमसहाइमर ने जो केवल एक समुद्र की स्थल में रहकर यह बात कही थी, लेकिन बाद में बगड़-अगड़ और मानव-जीवन के अनेकानेक हीनों से विज्ञान के छोटे-बड़े पाग रिमाई पहले गये हैं। बिज कागज पर यह लेख छाया है, उस कागज का उदाहरण भी आकर नहीं, जो अपने कुछ हीनों के बाद, परा माना जाने लगेगा, बर्निक हागब के उदाहरण के बराबर हमारी इस दुनिया के जनसंख्या बढ़ती ही द्विज होने रहने है। यदि उन्हें द्विज होने से रोक्ना हो, तो या तो हमें

परिचय

शान्ति सेनाकी कार्यक्रम-गोष्ठी : कार्य-विवरण

अ०भा० शान्तिसेना मंडल के उच्चा-वधान में गत १२, १३, १४ जनवरी १९७२ को बाराणसी में शान्तिसेना के सभी अंगों की कार्यक्रम-गोष्ठी आयोजित हुई। इसी अवसरों की मयी थी कि सभी प्रयोगों की शान्तिसेना समितियों के संयोजक इस गोष्ठी में भाग लेंगे परन्तु प्रतिनिधित्व अनेका के अनुसर नहीं रहा। निम्नलिखित व्यक्तियों ने उपस्थित थे सर्वेयी डाक्टिका बरुमा, एम० एन० सुवाराव, विनय अवस्थी, रिनेश भूखर्जी, किशोर देशपांडे, सतोग भारतीय, हरनायागण भार्ग, विकास भार्ग, अशोक भार्गव, रामचन्द्र राठी, नचिकेता देसाई, गणपतिसाद अग्रवाल, अट्टर फातमी, अमरनाथभाई, अशोक बग, कुमार प्रसाद, रामबहादुर 'नम्र', उत्तरादेशाई, वा०ना० चित्तले, प्रतुषा नमाल, नारायण देसाई।

तीन दिनों तक शान्तिसेना के कार्यक्रम सम्बन्धी लगभग सभी पहलुओं पर जो बचर्चा हुई, उनका सार प्रस्तुत है

कैरक के प्रात्म ने विभिन्न प्रदेशों के आये हुए प्रतिनिधियों ने शान्तिसेना की परिचिद्धियों की जानकारी दी।

महाराष्ट्र

अशोक बग ने महाराष्ट्र-उप-शान्तिसेना की सट प्रस्तुत की। १९७१ के पूर्व प्रदेश में कुल ६ केंद्र थे। १९७१ में प्रदेश के १३ जिलों में २२ केंद्र बने

कागज का उदाहरण जलान सीमित कर देना होगा अथवा उदाहरण की कोई मयी पद्धति और विचारलनी होगी। विद्य-सहायण उपकरण ने जो एक बात की अधिष्ठात्री की है कि उद्योगों के लिए सर्व हीनेकांते मोटे पानी की माया हर एक बराबर बनी ही पानी का रही है। अतएव यह हो सक्ता है कि अपने पदार्थ बनी के अन्दरशरी दुनिया में मोटे पानी का अभाव ही देना हो चाय।

हैं, जिनमें ८ सक्रिय हैं और १७ प्रायमिक स्थिति में हैं। इस समय पूरा समय देने-वाले ६ उपकरण प्रदेश में काम कर रहे हैं। प्रदेश में करीब २२-३० स्थानीय, ५ जिला स्तरीय और १ प्रादेशिक-स्तरीय का विचार आयोजित किया गया।

प्रदेश में उप-शान्तिसेना द्वारा कई महत्वपूर्ण कार्यक्रम किये गये। जिनमें उल्लेखनीय है—शिक्षा में शान्ति आन्दोलन, उपचार के लिए २ पुस्तकों का प्रकाशन, नागपुर में रीजान्स्व सभासोह के अन्दर पर शिक्षा में शान्ति के लिए मीन प्रदर्शन। इनके अतिरिक्त बगला देना कारणाधी विचार में सहायताम्य साथी गये। उपररका के कामसहाय्य योचों पर भी एक बहुत मयी है।

इसके बाद शिक्षा में शान्ति के आयोजन की महाराष्ट्र की सट विचार देना-पडि ने प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि ८ अंगल को बर्नई में एक अनुष्ठ आयोजित किया गया। करीब २००, २२० व्यक्ति कुल में सम्मिलित हुए।

इसके अतिरिक्त कई विचारों का आयोजन किया गया, जिनमें जिला में शान्ति की चर्चा का प्रमुख विषय बनाया गया। इस कार्यक्रम के दौरान कई नये सदस्य बने तथा पंचिम महाराष्ट्र में उप-शान्तिसेना के केंद्रों में वृद्धि हुई। श्री गणपतिसाद अग्रवाल ने महाराष्ट्र के शान्ति-शान्तिसेना का विवरण देते हुए

श्रीरंजित प्रगति के लिए इसकी भारी कोषय मुकलत एव है या नहीं, क्या प्रकाश विचार हों गये करना चाहिए ?

अग्रवाल कीरुण्य ने गीत में "बानोनिम लीकअपसहयुद्ध" यह कर चर्चकरता का जो अग्रज दिया था, उस तरह की अन्दरता मनुष्य-जाति को चारों ओर से घेरने का रही है क्या ? ऊपर की सारी बातों के सम्पर्क में यह ध्यान लया होना ही है।

बताया कि प्रांतीय-स्तरीय पर एक समिति प्राम-शान्तिसेना का कार्यभार सम्भालती है। इस समिति की ओर से जिलों में शिविर चलाये जाते हैं। अब तक ६ शिविर हुए हैं। जिनमें चार अकोला में हुए। इन शिविरों की अवधि तीन दिन थी। जब वा अकोला में २५ व अजय जिलों में लगभग २५ केंद्रों की स्थापना हो चुकी है। परभणी में एक दिनवाले तीन शिविर चलाये गये, जिनसे केन्द्र की स्थापना में मदद मिली। अहमदाबाद सर्वो-द्यय मण्डल व जिना सर्वोद्यय मण्डल इस कार्य का आचार्य भार वहन करते हैं।

प्राम-शान्तिसेना के कुछ सदस्यों की प्रशिक्षण के लिए एहरटा भेजा गया है। जिना कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण का प्रबंध करने का विचार भी रिया गया।

बंगाल

बंगला देश से शरणार्थियों के जाने के कारण शरणार्थी शिविरों में काम हुआ। इन कामों में तरुण-शान्तिसेना भी सम्मिलित थी। ६ अगस्त को हिरोशिमा दिवस मनाया गया था। अक्तूबर से बंगला देश पर जन-जागरण के लिए जो पदयात्रा प्रारम्भ हुई उसमें कार्य करती रहे। यह रफ्त देते हुए दिनेश माई ने बताया कि प्रान्त में तरुण-शान्तिसेना का संगठन करने व अप्रैल, मई '७२ में प्रांतीय सम्मेलन करने की योजना है।

विहार

विहार प्रदेश तरुण-शान्तिसेना की गतिविधियों की जानकारी देते हुए कुमार प्रशाद ने बताया कि पटना, गया, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, भागलपुर, मुर्शिदाबाद, राँची में शिविरियाँ गठित की गयी हैं। मुजफ्फरी, वैशाली, सहरसा, पूर्णिया एवं गया में तरुण-शान्तिसेना ने उत्तरेखनीय मोक्षदाय प्रामस्वराज्य आन्दोलन में किया है, जिससे उसकी अपनी शक्ति मजबूत हुई है। अगले सहरसा में १५ शिविर संस्थाओं से सम्पर्क किया गया। ३०० छात्रों को सैनिक बनाये गये, १० प्रस्थानों में शान्तिसेना समितियों का भी गठन

हो गया है।

९ अगस्त को शिवा में क्रान्ति के लिए पटना और सहरसा में प्रदर्शन हुए। जून १९७२ में भागलपुर शिवि का गतिविधीय शिविर हुआ। इसी प्रकार सितम्बर में सहरसा में, अक्तूबर में गया में, और पूर्णिया में शिविर हुए। दिसम्बर १९७१ के अन्त में मुजफ्फरपुर के एक गाँव में काम के साथ दण्ड्यन (बर्क वम स्टडी) का आयोजन किया गया।

उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश की रफ्त देते हुए श्री विनय भाई ने बताया कि जुलाई में उन्होंने 'शिवा में क्रान्ति' के लिए पूर्व तैयारियाँ की। अगस्त में ७-८ जिलों में जन्मे कार्यक्रम आयोजित किये गये। राजधानी लखनऊ में आचर्यक प्रदर्शन किया गया। सहरा की छुट्टियों में एक प्रादेशिक सम्मेलन बरेली में आयोजित किया गया। भोपाल अधिवेशन के बाद मथुरा, आगरा में छात्रों से सम्पर्क किया गया। एक शिविर देवरिया में आयोजित किया गया। १७ जिलों में तरुण-शान्तिसेना के सरोचक हैं। १०-१२ छात्रिक केन्द्र हैं। ईवी क्षेत्र में आचार्यकुल व तरुण-शान्ति सेना का कार्य साथ-साथ चलता है। बगला देश के विरुद्ध विवेक जागरण पदयात्रियों के लिए एक माह तक कार्य किया।

राजस्थान

श्री मयबान बजाज और मधोक भागव ने राजस्थान का विवरण देते हुए बताया कि प्रतापगढ़ (विशोदगढ़) में एक केन्द्र चलता है। साठ-आठ सदस्य हैं, जो काम उन छात्रों को सुझाते हैं, करते रहते हैं, जैसे शरीर छात्रों को पुस्तक आदि की सहायता। शिवा में क्रान्ति के अवसर पर कुछ कार्यक्रम किया। हिरोशिमा दिवस पर रेगिस्तान आयोजित किया। अभी बगला देश के शरणार्थियों के लिए एनश्रित कर रहे थे।

जोधपुर में तरुण-शान्तिसेना के नाम से काम चलता है, मावुकजी के निर्देशन में। विद्यार्थियों पर भावुकजी का

अच्छा प्रभाव है। परन्तु कोई तरुण-शान्तिसेना कि औपचारिक सदस्य वहाँ नहीं है। उदयपुर में कुछ औपचारिक सदस्य हैं, परन्तु काम-काज नहीं होता। कलकता शिविर के बाद वहाँ सदस्य बने हैं।

गुजरात

मयबान बजाज ने बताया कि वहाँ सठत रूप से तरुण-शान्तिसेना का कार्य करनेवाला कोई व्यक्ति नहीं है। मदा बहुत शहूर में ही कार्य करती है। सदस्य भी बहुत अधिक नहीं हैं। वहाँ के कार्य-कर्ता छात्रों को सीधे भूदान-प्रामदान आन्दोलन में सीधे का प्रयास करते हैं, इसलिए छात्र अधिक टिकते नहीं हैं।

तरुण-शान्तिसेना के कुछ अन्य केन्द्र जहाँ श्री मुजशायरजी गये थे, की रफ्त देते हुए उन्होंने बताया कि विदर्भ में अच्छा वातावरण बन रहा है। गोरखपुर व देवरिया में कुछ प्राध्यापक अच्छी रुचि लेते हैं। चबलपट्टी में भी तरुणों के कुछ शिविर शिविर हुए हैं। देश में कुछ स्थानों पर विदेशी ध्यान देकर पाकेट्स बनाना चाहिए।

केरल में तरुण-शान्तिसेना का प्रथम प्रांतीय शिविर की योजना बन रही है।

शरणार्थी शिविर में काम

जानवारीगुड़ी के शरणार्थी शिविर में काम करते गये हुए तरुण-शान्तिसेनिकों में से उपस्थित निम्नो देगाये ने बताया कि वहाँ २० विद्यार्थी ने लगभग सवा महीने तक कार्य किया, जिनमें ७ विद्यार्थी लोक-भारती, एनोसय (गुजरात) से आये थे। मुख्य काम आचर्यकेम से प्राप्त सामग्री के विवरण व सफाई का था। साथ ही पुस्तकों का संगठन करने की ओर भी ध्यान दिया गया।

असम

श्री इरिका बरवा ने बताया कि शिवा में क्रान्ति की अच्छी प्रतिक्रिया हुई है। शरणार्थी शिविरों में दो स्थानों पर शान्तिसेनिक भेजे गये। शान्तिसेनिक के ६ शिविर करनेका विचार है। ●

तुल्य वितरण [इन्विटेडुल डिस्ट्रीब्यूशन]

वितरण उत्पादित सामग्री का या उत्पादन के साधनों का ?

१. इसमें कोई संदेह नहीं, जहाँ तक पृथिवी का प्रश्न है वहिलेन माता से पचा हुआ नहीं है। पहली बात यह है कि क्या एक आर्थिक विभाग को प्रति बहुत चीजों की है। दूसरे, जो भी विभाग हुआ है उसका फल मनी और उच्च-मध्यमवर्गीय लोगों को ही मिला है, विमान-उद्योग वगैरे के लोग और पण्डित बड़े रहे हैं। भारत विभाग की यहाँ प्रति यहो जो अपने दल कर्मों में भी बना हुआ। क्या देश के एक भागों के भी मूल्यवत्त का जो प्राप्त हो सकेगी ? इसलिए जसकर इन बातों को कि विभाग को प्रति देन को प्राप्त। साथ ही यह भी हो कि उन का तुल्य वितरण हो। इसके लिए दोष दोषकर्ता मतलब परदेनों, जो ही वितरण नहीं हो पाया।

२. अब तक हमने वितरण के प्रश्न पर उपरोक्त बातें या वैयक्तिक भाव (व्यक्तिगत भाव) को धृष्ट कि विचार किया है। हमें यह समझना चाहिए कि वैयक्तिक भाव को विपरीत की जड़ में उत्पादन के साधनों के विभाग की विभागात्ता है। इन विभागों को दूर करने का सम्मूहिक तरीका यह है कि उत्पादन के सभी साधनों को सरकार के हाथों में संग्रहित कर और एक उत्पादित सामग्री को वैयक्तिक धृष्ट के माध्यम वितरण किया जाए। भारत यह तरिका योजना है—भारत सरकार ने इसे छोड़ ही दिया है—जो दूसरा रास्ता नहीं है कि एक उत्पादन के साधनों का वितरण किया जाए।

३. भूमि भारत में उत्पादन का एक प्रमुख साधन है। ताँबों में वितरण की बातें के साथ भूमि वितरण नहीं, या बहुत छोटी है। जो भी ही भूमि लेकर उन्हें और उनके परिचार को दूर भाग नहीं मिलता। धेरी पर निर्भर करनेवाली साधनों के बहुत बड़े हिस्से की पृथिवी का इतिहासो कारण

एक तरह को बेरोजगारी या सर्व-बेरोजगारी है। दूसरा एक उपाय यह है कि जनसमूह भूमि का वितरण किया जाए ताकि भूमि पर अधिकारों को सभी भूमि पर काम कर सकें। इन सम्प्रदाय में तीन प्रश्न उत्पन्न हैं। एक, क्या हमारी भूमि है कि हर एक को प्राप्त भूमि मिल सके कि यह उन पर कर्माई करने के मूल्यवत्त उचित कर्माई कर रहे ? दो, क्या किसी स्वामित्व के कालों ऐसे उपाय पर कल्पन करना सम्भव है ? तीस, अगर भूमि का वितरण ही भी सके तो, क्या ऐसी वा-प्रतिपत्ति विचार हो सकेगा, या नहीं। ऐसा तो नहीं होगा कि सोती का पूरा विभाग ही मनुष्य पर प्राप्त ? भूमि के वृद्धोत्पन्न पर इन प्रश्नों के उत्तर में विचार करना चाहिए।

भूमि के वितरण उत्पादन के दूसरे साधन औद्योगिक क्षेत्र में हैं। जैसे-जैसे वाणिज्य का विकास होता है मनुष्य के धन की उत्पादकता बहुत जाती है। लेकिन दर्शकों के माध्यम से व्यक्ति को प्राप्त देने में पूर्णों को कष्ट होती है। पूर्णों के बिना उसको उत्पादन नहीं बढ़ सकता। इसलिए ऐसे व्यक्तियों में वितरण पूर्णों का है, जैसी विभाग की औद्योगिक धर्मियों में जोड़े ही धर्मियों को काम दिया जा सकता है। जो हमसना भूमि के बच होने के कारण पैदा होगी वहो पूर्णों के बच होने के कारण जो पैदा होगी है। लेकिन भूमि का पुनर्वितरण जो विद्यो तरह सम्भव भी है, औद्योगिक पूर्णों का वितरण कैसे सम्भव है ? किसी औद्योगिक धन में वितरण करना वही सोच करना कर सकते हैं, जसके उपाय ऐसे करते ?

एक कारण औद्योगिक क्षेत्र में इसके वितरण दूसरा कारण नहीं है कि देशों धर्मियों के मातापै यात्रा वितरण प्रति व्यक्ति धन पूर्णों को ताकि जोड़े पूर्णों में ज्यादा धर्मियों को प्राप्त निक सके।

ऐसी औद्योगिक धन-वितरण (लेबर इन्वेस्टिग टेरनाकोरी) ही होगी। इस तरह जोड़े पूर्णों के माता लोगों में वितरण की का सकते हैं। इन सम्प्रदाय में जो भूमि को लेकर, तीन भाग पैदा होते हैं। एक, या इन तरह की वाणिज्य के, जो धन-वितरण है, और जिसमें धन को उत्पादन का भी धन है, व्यक्ति को मूल्यवत्त उचित कर्माई हो सकते हैं ? दो, क्या किसी उद्योगों को प्रतिपत्ति का व्यक्तियों में एक तरह का उत्तर सम्भव है ? तीस, भारत औद्योगिक क्षेत्र में यह प्रकार की वाणिज्योत्पन्न वितरण उक्त नहीं प्राप्त हो पाया व्यक्ति हो सकेगी, या वह बंद पड़ पायेगी ?

४. अगर उत्पादन के साधनों का किसी व्यक्तिगत रहे तो उत्पादित सामग्री का वितरण कैसे होगा ? इन बातों देखने कि भूमि या दूसरे साधनों का वितरण कर देने से बेरोजगारी या पृथिवी का उत्पादन नहीं हम विचार या सकता। इसलिए एक कारण यह है कि भूमि को बच है और पूर्णों को, जिसके कारण एक लोगों के धन में लोगों को साधन नहीं दिये जा सकते। दूसरे, किसी स्वामित्व के होते हुए एक तरह साधनों का वितरण व्यावहारिक नहीं है। तीसरे, इसके कारण कुछ दिनों बाद प्रगति यह वह वाणियों। ऐसी स्थिति में यदि एक एक और उत्पादन-व्ययिजन तथा दूसरे कोर साधनों के वितरण, लोगों को मनीषा-कर्त्तव्य है जो जोड़ने स्थिति एक ही का वाणियों है यह यह है कि इन साधनों का किसी स्वामित्व स्थोकार करें, तथा उत्पादन के साधनों का मूल्यवत्त वितरण को स्वीकार करें। एक प्रमुख विचार का प्रश्न यही का है मनुष्य होगा कि उत्पादित सामग्री को इन धन, पूर्णों, और साधन (इन्वेस्टमेंट) के बीच वितरण करें।

साम्प्रदायिकों की यह भाँप कि वितरण का कारण क्या के कारण पर हो दूर नहीं दिया जा सकता। दूसरा जोड़े कारण

सबारी जरूरत पूरी करने भर को राष्ट्र का उत्पादन नहीं है। साथ ही वितरण ऐसा होना चाहिए कि अधिक उत्पादन के लिए प्रेरणा बनी रहे। इसलिए वितरण धम धा धूल उत्पादन में योगदान के आधार पर ही हो सकता है, जरूरत के आधार पर नहीं। उत्पादन हमेशा संयुक्त प्रुरथाप्य का परिणाम है, इसलिए यह तय करना कठिन है कि धम, धूमि और साहस में वितरण वितरण योगदान है। तात्त्विक दृष्टि से इसका निर्णय होना कठिन है, लेकिन व्यावहारिक दृष्टि से जिससे सोचा करने से प्रविव अधिक होती है वह अधिक प्रिस्ता प्राप्त कर लेता है। यह शक्ति शरीरों में कम होती है, इसलिए भ्रम के भय के कारण जो कुछ मिलता है उसे वे शोचकर कर लेते हैं।

इस परिदृश्य को सोचकर खेती में भी निमित्तम 'बिजेज देवट' प्राप्त विवेक है। यह औद्योगिक क्षेत्र की तबल है, और कुछ नहीं। समस्त जलोमों में यमिनों की 'होवा करने की शक्ति' अधिक है, खेती के क्षेत्र में नहीं है। वहाँ काम इतना कम हो रहा है न्यूनतम मजदूरी का कोई धर्म नहीं है। जबतक 'काम का अधिकार' (राष्ट्र द्वयकं), स्विकार यंत्रिया जाय, न्यूनतम उचित कमाई का कोई धर्म नहीं है। यह हो सकता है कि 'काम का अधिकार' मान लिया जाय जो सामने के निजी स्वामित्व और उनके उच्चान वितरण की समस्या हम हुई मानी जा सकती है। लेकिन समस्या यह है कि 'काम का अधिकार' कंठे स्वीकार हो। पहली कठिनाई यह है कि क्या सबके लिए काम है? काम ही भी तो इतने बड़े पैमाने पर उभरना समस्त कंठे होगा? तीसरे, अगर संतुष्ट भी हो जाय तो काम के लिए सबे कहीं से आधेना ?

अब मैं, वितरण के क्षेत्र में हीन किन्दु है जिन पर गोवि निम्नलिखित करने की जरूरत है। एक, भूमि का पुनर्वितरण, दो, अन्-नेत्रिष्ठ यंत्रिकी, तीन, काम का अधिकार। इन पर व्यापक विचार और सुलभ-वितरण के सम्बन्ध में विचार होना चाहिए। प्रस्तुतकर्ता: राममूर्ति

मैं और वह पाँचवें वर्ग से आठवें वर्ग तक स्कूल में साथ रहे। हमारी दोस्ती का रिश्ता इत पीछे कापी मजबूत हुआ। मिडिल बोर्ड की परीक्षा पास होने के बाद मेरा नाम गहर के हार्डवूड में लिखा दिया गया, और गाँव से मेरा धीरे-धीरे सम्बन्ध खतम होने लगा। उससे मेरी मुलाकात सायद ही कभी होती। शिक्षा खतम होने के बाद मैंने नौकरी कर ली। और, फिर एंसा हुआ कि पुराने साथियों की जगह नये दोस्तों ने ले ली। मेरी पोस्टिंग भी अपने जिले के गहर हुई। इसलिए बचपन से मिलनेवाले लोगों से मुलाकात का खिलखिला बाकी नहीं रह सका। उनमें से अक्षर की यादें भूल गयीं। अक्षर २५ वर्षों से अपने गहर में हैं। एक ही जिन्दगी के बट्टेप से साथी-सगी भी यहाँ मौजूद हैं। उनसे मिलकर बधा मजा खाता है, लेकिन वह एक व्यक्ति एक बार मिला भी तो खुला नहीं।

हम राह चलते अक्षर सड़क पर टकराते हैं। और मैंने हर बार बहकर उभार करने की गोरिण भी को है लेकिन वह अपनी गाड़ी की स्टैपरिया सम्भाले, हाफ कतराकर मुझसे निवृत्त जाता है। वह हमेशा इसी तरह गुजर गया है, जैसे मुझे देखा ही नहीं था मैं कोई इंसान ही नहीं, जिससे कभी उसकी जान-पहुँचान नहीं हो।

वह हमसे दूर-दूर क्यों रहता है ? मेरी चाहत का उसे अन्धा है। मेरी लगन का उसे एहसास है। फिर भी उसकी उदासीलता का भेद क्या है ?

मैं भेद को अच्छी तरह जानता हूँ। मेरी सबसे सहामुही है। मैं उसके दिल से वह बात जो खलत पर कर चुकी है कंठे निगानूँ, यह प्रश्न मेरे दिल में बराबर उठता है।

मेरी उसकी जान-पहुँचान नहीं थी।

२५ वर्षों में मेरा प्रवेस हुआ। अच्छी कुछ दिन ही बीते होंगे कि एक दिन टिफिन में नलास छाती हुआ। लड़के खेल-बूद और खाने में लगे हुए थे। उस समय तक मेरी जान-पहुँचान बड़ी नहीं थी। लखनऊ का एहसास था। मैं उनको से अनजान-अलग था। टिफिन की मोरियत खत्म करने के लिए मैंने भी हलवाई से नास्ते का सामान खरीदा और मुझे नलास से अच्छी नास्ते करने की कोई हुरती जगह नजर नहीं आयी, इसलिए जट्टे वेशे नलास में वापस आ गया और अपनी बेंच पर बैठा ही था कि कोहराप मच गया। इती बेंच के दूसरे सिरे पर वह बैठा नास्ते कर रहा था। खाने का सामान पर से लाना होगा। यह उसे सा रहा था। इत हासत में म्लेच्छ 'मिया' ने बेंच घू घिया और उसे दूध खप गयी। हणामा मुनकर हेडमास्टर साहब टैक-तेज कदमों से चलकर हमारे नलास में आ गये। डाँटकर पूछा, क्या बात है ? उसने हेडमास्टर साहब से मेरी शिकायत की कि 'मिया' ने उसके खाने का सामान गपट कर दिया है। हेडमास्टर साहब ने घुसनेवाली नजरो से मेरी सरफ देखा मैं घुप छड़ा था। मेरे पास पचास नहीं था। लेकिन वह बात को तह तक पहुँच गये। उन्होंने उसकी टोकार्द कर दी। हेडमास्टर साहब के हाथ की बेंच से उतथा शरीर लोह-बुझान ही गया।

एक परदा मे कुछ दिनों बाद से दोस्ती की शुरुआत हुई। उसके बाद पूरे तीन साल हम एक-दूसरे के साथ रहे और कभी भी किसी बात पर हमारे बीच अलबन नहीं हुई। वह हमारे पड़ोसी गाँव का रहनेवाला था। जालपायी राजबूत, मन्धे भले लोग है। लेकिन मावो हासत अच्छी नहीं है। उसकी पिछा मिडिल स्कूल के बाब जारी नहीं रह सकी थी। जवने मोटर ड्राइविंग सीस ली और उसे गहर को नयत्पानिका में नौकरी मिल गयी। ●

तरुण-शान्तिसेना प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर

छात्रना केन्द्र, राजघाट, वाराणसी में तरुण-शान्तिसेना प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर का उद्देश्य था शान्तिसेना के सदस्यों के लिए प्रशिक्षक चुनना तथा उन्हें प्राथमिक प्रशिक्षण देना।

उपरोक्त उद्देश्य को मद्देनजर रखते हुए छात्रवृत्त से विहार के चुने हुए दस छात्रियों के लिए दस शिविर का आयोजन हुआ। इन शिविर में शामिल होने के लिए अन्य प्रांतों की शान्तिसेना समितियों को भी निम्नित गया। इन सबको मिलाकर शिविर में विहार के ७ क्लियों के १२ शिविरार्थी लाये—अलग से २, और साथ प्रयोग से २, इन प्रकार कुल १६ शिविरार्थी लाये थे।

अभ्यासक्रम

शिविर के अभ्यासक्रम को तीन भागों में बाँटा गया था -

१. बौद्धिक
२. शिवालय
३. विद्येन बौद्धिक वर्गों में मुख्य रूप से निम्न विषयों पर व्याख्यान हुए - (१) सम्पूर्ण सर्वोदय विचार, (२) अहिंसा-मीमांसा, (३) अणु-विज्ञान, (४) शान्तिसेवा, (५) विश्व-शान्ति-आन्दोलन, (६) युवा-विप्लव, (७) साम्प्रदायिक सपत्न्या, (८) भाषा-पाठ-सपर्य, (९) राष्ट्रीयपक्षता, (१०) शिविर-संभारन, (११) हिंसा-विचार रचना।

क्रियात्मक - इनमें मुख्य रूप से निम्न चीजों की वास्तविकी की गयी - १. न्यायवाद का प्रथम मान, २. सीटियों का सङ्केत, ३. योगासन, ४. सेतुबन्ध, ५. सामूहिक गीत, ६. प्रत्यक्ष शिविर-संभारन, ७. शिविर - इनमें छात्रवृत्त से निम्न छात्रें उत्कृष्टतरीय हैं -

सामूहिक भाष्ययन - हिन्दू स्वयंसेवक संघ की स्थापना के लिए भूना गया था। एक दिन के अन्दर पर तीन घंटे का पत्र होना रहा।

सिरोपनिषद् का भाग 'सिरोपनिषद् का भाग' पाठ्यक्रम में पढ़ने नहीं था। बार में

इसको शामिल किया गया। प्रतिदिन तीन घंटे के इन वर्गों को भी नारायण भाई ने उपदेश-पद्धति को छोड़कर ब्रिज वर्ग-पद्धति से समझाया वह अधिक उपयोगी और ग्रहण करने के लिए सहायक रहा।

लेखनात्मक : पाठ्यक्रम में दिये गये अलग-अलग विषयों पर अपनी-अपनी ध्वि के अनुसार विषय चुनकर उन पर लेख लिखने को कहा गया। उन्हीं विषयों पर नवाय नोट भी तैयार कर नामावलि बना, यह विचार भी हुआ। यह क्रियात्मक दस शिविर के लिए नयी थी। इनसे लोगों में व्यञ्जन करने की प्रेरणा हुई। करीब-करीब करने लेख लिखे, नवाय-नोट तैयार किये।

शिविर-वर्षिका हस्तलिखित दो पत्रिकाएँ तैयार की गयी। इसमें मुख्य रूप से शिविरार्थियों के ही लेख रहे। इनके सम्पादन तथा सभा में भी सजिन "कुमुद" ने सहायनीय कार्य किया।

शिविरार्थियों द्वारा कर्ष यह शिविरार्थियों के लिए बहुत भार्यगं तथा दिनबस्ती का विषय रहा है। दिन-दिने थे, जमी के बाजार पर प्रत्येक दिन अलग-अलग शिविरार्थी वर्ग किया करते थे।

इनमें आज लोगों ने विभिन्न विषयों पर भाष्य किये। अन्त में सम्पादन के

छात्री-छात्रीदारों को

सर्वोदय-साहित्य पर आधी बूट

सर्वोदय साहित्य-प्रसार-योजना के अन्तर्गत छात्री-भारतों पर छात्री-छात्रीदारों को सर्वोदय साहित्य बांधे मूल्य पर उपलब्ध होता है।

अपनी रचि को पुस्तकें चुनकर अपने पुस्तकालय को समृद्ध बनाइये। सर्व सेवा साथ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी की ओर से प्रसारित।

बारण भारी लोगों को मोहा नहीं मिल पाया। क्या के बार १५-२० मिनट में चर्चा होनी थी, इससे शत्रुता को अपनी कमों को दूर करने का अवसर मिल जाता था।

रजत कार्यक्रम : एक दिन के अन्दर से तीन घंटे का रजत कार्य-क्रम रखा गया था। गाथा, चुम्कुपे, बहानी आदि ही मुख्य कार्यक्रम रहे। एक दिन सामूहिक रूप से एक एरासी नाटक "भरे हुए हम" रचने का।

शिविर सभासभ शिविर का सार कार्यक्रम शिविरार्थी ही बताते रहे। मुख्य रैली-बॉन से निकर दीप-गमन तक उन्हीं लोगों ने अपनी जिम्मेवारी भारी।

समूह जीवन में जापकी महयोग सुत्र देना गया। कुल लोगों की तीन टोळियों में बाँटा गया था। टोळियों को काम एक बार बाँटा गया, उनके बाद वे स्वयं क्षयना काम समझकर बिना किसी के इश्वरार किये, समय के अनुसार काम में लग जाते थे। भोजन परीक्षण आदि भी सुगम-रहित रूप से चला।

शिविर का उद्घाटन और समावर्तन इन दोनों कार्यक्रमों में प्रमो तक ही परम्परा को छोड़कर सीधे-बादे ईग से करने का विषय किया गया। उद्घाटन तथा समावर्तन श्री नारायण भाई ने किया।

दिनांक १-१-७२ और २६-१-७२ को सम्पन्न किया।

—नायनारायण

राजा और नवाब की विदाई

सन् बहतर के अंत के साथ भारत से सामंताशाही भी विदा हो गयी। नवाब, राजा और महाराजा बहलानेवाला समुदाय आम आदमी के दर्जे पर आ गया और भारतीय समाज की एक जबाबदार विपणता सतम हो गयी।

यह नवाब और राजा लोग ब्रिटिश साम्राज्य की देन थे। उनमें से कुछ अपने की बही उपादा पुराना बताते थे और उन्होंने यह मनसूबा भी रख था कि अंग्रेजी राज के जाने के बाद हम एत-मुल्तपार हो जायेंगे। एकाघ ने ही भारत के आन्दा होते वक्त थोटा हठ भी दिखाया कि हम किसी और की सत्ता नहीं मानेंगे। मगर कौन नहीं जानता कि यह सारी रियासतें अंग्रेजी शासकों के इशारे पर चलती थी और उसके सामने उनका कोई अस्तित्व ही नहीं था, सिर्फ उतना और उस हद तक जहाँ तक ब्रिटिश सम्राट की सुधी हो। इतिहास गवाह है कि नवाबों या राजाओं ने जरा छर उठना अंग्रेजों ने कुचल कर रख दिया और उस दर से बाकी सबके सब पुपथाप दब कर रहने लगे। इसलिए भारत के स्वयंन होने पर इनको अलग मानने का कोई सवाल नहीं उठता था। निजाम हैदराबाद ने कुछ तेवर दिखाये तो वहाँ केड दिन की पुलिस-नारबाई से उनके होश डिकाने आ गये। इस प्रकार सारी रियासतें देगुका अंग बन गयी और भारत का राजनैतिक नक्शा एक समान हो गया—निजाम धेय स्वर्गीय सरकार बल्लभ भाई पटेल की है। भारत को एक युव में बाघने के लिए पीढ़ी-दर-पीढ़ी उनकी कर्मी रहेगी।

मगर अमलावश नवाबों-राजाओं को कुछ अधिकार दिये गये :

(१) उनको हर साल भारतीय सजाने से कुछ पेंशन मिलना करेगी जिससे वे अपनी गुजर कर सकें।

(२) उनको नवाब, राजा या महा-राजा कहा जायेगा। और नाम के पहले "हिंदू हाईनेस" लिखा जायेगा।

(३) उनको बन्दूको से हलामी दी जायेगी और बिनकी एलामी दस बन्दूकों से ज्यादा हो, उनको कुछ और सुविधाएँ।

(४) उनको, उनके परिवारों को और उनके पशुओं को इतना व रक्षा मुक्त।

(५) उनकी कोठियों पर हथियार बन्द पहरेदार और अपनी रियासतों से बाहर जाने पर अग-रक्षा मिलेंगे।

(६) आर्म्स एक्ट (हथियार रखने की पाबन्दी) वाले कानून से उन्हें छूट थी।

(७) उनकी मोटरों और वाय गाड़ियों पर कोई टैक्स नहीं।

(८) उनकी मिलनेवाली पेंशन, भत्तो या अन्य चीजों पर कोई टैक्स नहीं। उनके मकानों या जायदाद पर नगर-पालिका का टैक्स नहीं।

(९) उनकी बर्गण्ड के अन्दर पर उनकी रियासतों में स्कूल, दफ्तर आदि बन्द रहते हैं।

(१०) विदेश से वे जो चाहे चीजें अपने कान के लिए मंगाने, कोई इयूटी या रोक नहीं।

(११) उनके जिलाफ अदायत से कोई मुकदमा नहीं चलाया जा सकता।

इन अधिकारों से स्पष्ट है कि राजा-नवाब लोग देश के नागरिक होते हुए भी एक विशिष्टता का भोग करते थे, जो भारतीय संविधान की आत्मा के विरुद्ध है। जब सब जन एक समान हैं, सबको एक ही वोट है—तो कुछ की शायद हक या सुविधाएँ क्यों मिलें ? उनको ही जाने-वाली पेंशन पर भी बड़ी आपत्ति थी।

२१ दिसम्बर १९७१ को २७म राजाओं-नवाबों की कुल मिलाकर हर साल चार करोड़ मकसों लाख रुपये दिये जाते थे। इनमें शिक्षर पर से निजाम हैदराबाद और महाराजा सैदुर आ भीच-बोस लाख से

ऊपर पाते थे और सबसे कम मिलता था सोलह रुपये महोना—बटोरिया के नवाब को। स्वराज्य से लेकर अब तक उन्हें एक अरब दो करोड़ रुपये पेंशन की रूप में दिये जा चुके हैं।

कोई ही राजा, कोई ही प्रजा, कोई नवाब, कोई मिश्रकमा—यह विपणता आधुनिक युग में सह्य नहीं की जा सकती। जनतंत्र में आज सबके साथ एक-सा व्यवहार होना चाहिए। यही कारण है कि कांग्रेस पार्टी ने (विधान के पहलेवाली कांग्रेस ने) अपने दस कार्यक्रम में राजाओं के अधिकार खत्म करने का भी एक कार्यक्रम रखा था। तदनुसार हंगरी यशवी प्रधानमंत्री ने उस दिशा में कदम बढ़ाया और १० मई १९७० को लोकसभा में उस सम्मन्ध में बिल पेश किया गया। वहाँ २२९ ने उसके पक्ष में वोट दिये, १५४ ने विपक्ष में। मगर राज्यसभा में इस बिल को अभीष्ट दो-विहाई बहुमत मिलने में एक से कुछ कम वोट की गमी रह गयी और बिल गिर गया। इस वास्ते नयी लोकसभा में संविधान (२६ वें संशोधन) बिल के रूप में पुनः लाया गया। २ दिसम्बर १९७१ को वहाँ यह वाद हो गया और ९ दिसम्बर को राज्य-सभा में। और २० दिसम्बर को इस विधेयक को राष्ट्रपति की स्वीकृति मिली।

अपने दस विधेयक द्वारा भारत सरकार ने महात्मा गांधी के पंचजन शान्ति पुराने स्वयं की सत्कार किया है। सन् १९१६ में जब महात्मा मानवीयनी ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की तो उसके उद्घाटन के लिए बापूजी की बुलावा जी सत्याग्रह द्वारा मोरारजी से विनय प्राप्त कर उन्हीं दिनों बहिष्क-अपीका से लौटे थे। उस वषा में भारत के अनेक राजा-महाराजा मौजूद थे जो सरह-सरह के हीरे-मोती पहने हुए थे। भारत की गरीबी मानो उल जवाहरलाल से और भी उभर लठी थी। बापूजी की आत्मा बिनस लठी और उन्होंने इन भासकों से कहा—'जाइये और अपने

शान्ति दिवस के समाचार

फानपुर में दिनकर

(३० जनवरी '७२ को सर्वोदय मण्डल, इनसानो विरादरो तथा गांधी शान्ति प्रतिष्ठान केन्द्र फानपुर द्वारा आयोजित प्रार्थना-सभा में हिंदी साहित्यकार श्री दिनकर के अवगत विचारों का सार)

“गांधी के दो रूप थे। एक उनका राष्ट्र-उद्धारक का, दूसरा विश्व-उद्धारक का। स्वार्थका हमारे राष्ट्र ने उनके पहले रूप को ही स्वीकार लिया और उन्हें राष्ट्रपिता मानकर उनके राष्ट्र-उद्धारक रूप की तो महिमा बड़ाई किन्तु उनके विश्व-उद्धारक रूप की भुला दिया।

अन्य महापुरुषों की भांति गांधीजी के बाव उनके अनुयायियों में भी नई मत चल पड़े। कुछ लोगों ने माना कि गांधी ने कहा था कि राज्य बनाओ, दूसरों ने माना कि उन्होंने कहा कि चरखा चलानो। दूसरे मतवालों में कुछ ऐसे दृष्टिकारी रहे जिन्होंने विनोबा द्वारा अम्बर चर्चों में बिजली के उपयोग को भी अनुचित माना। गांधीजी में बुद्धि की सर्वथा सम्पुष्टि अधिक थी। गांधीजी की विशेषता थी कि वे निर्णय पर पहले पहुँचते थे, दूसरों पर बाद में विचार करते थे। वे जिद्दी नहीं, समशीलभादी थे, अनेकान्तवादी थे।

गांधीजी का मूल्य राष्ट्र के हित पर बाहे कम रहा ही पर विश्व के हित पर गांधी का हाथ सिद्ध हो रहा है। जैसे-जैसे सुख बढ़ता जाता है परेशानियाँ भी बढ़ती जा रही हैं। टालस्टाय, थोरो, इतिवट और गांधी ने सभ्यता के सिद्ध पर से जानेबाने विज्ञान से उत्पन्न खतरे का जो आभास करपा था, उसे समझने में समय लगेगा। गांधी विज्ञान के विरोधी नहीं थे। उनका कहना था कि केवल यह था कि किसी भी रास्ते पर चलने में मान साधनों की बेमारीलता ही नहीं, लक्ष्य को भी दृष्टि में रखना होगा।

भारत-विभाजन के समय देश के कसड़े में जिंदा की जीव हुई और गांधी

हारे। किन्तु काव के पीछे असाइने में, बगला देश की मुक्ति और डिस्टाण्डर के सिद्धान्त की समाप्ति में, गांधीजी की विजय हुई। आगे बरबर जिंदा हारता जापगा, और गांधी जीतता जापगा। सर्वनाश की घड़ी में गांधी का ही तितारा पमकेगा।”

मथुरा

३० जनवरी राष्ट्रपिता गांधीजी की २४वीं पुण्यतिथि का कार्यक्रम यही-दिवस के रूप में मनाया गया। प्रातः ६ बजे से प्रभात केरी निकाली गयी, सफाई, सून-सज, प्रार्थना तथा ११ बजे दो मिनट मौन रखकर राष्ट्रीय को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गयी।

रोहतक (हरियाणा)

३०-१-७२ को जिला सर्वोदय मण्डल को एक बैठक हुई जिसमें १५ लोकसेवक उपस्थित थे।

नये वर्ष के लिए सभा ने सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारियों का चुनाव किया। अध्यक्ष—श्री विद्यासरगरो, मनो-बन्धनकाशकी, प्रचार मनो—श्री रविदत्त तूफानी। एवं सेवा उप प्रतिनिधि—स्वामी सुरदानन्दकी तथा कोषाध्यक्ष—श्री विद्या-सागरकी ही रहेगे।

सहायक प्रतिनिधि द्वारा इस अवसर पर २२.५० रुपये का सम्पत्तिदान मिला।

रतलाम

ग्रामदानी गाँव विरमावल वि० रतलाम में ग्रामस्वराज्य समिति के अध्यक्ष की तुलसी रामजी पटेल, की अध्यक्षता में गांधी-पुण्य-तिथि के दिन प्रार्थना-सभा का आयोजन किया गया जिसमें सामूहिक सर्वधर्म प्रार्थना तथा राष्ट्रपिता की मौन श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गयी।

जोधपुर

स्थानीय गांधी शान्ति प्रतिष्ठान केन्द्र के उद्घाटन में भाग बलिदान दिवस के अवसर पर शहूर के भीतर और शहूर

शान्ति-कूच का आयोजन किया गया, जिसमें कई राजनैतिक पार्टियों तथा छात्र-संगठनों के करीब तीन सौ लोग सम्मिलित हुए। शान्ति-यात्री बनने हाथों में तस्वीरें लिये थे, जब पर लोन्जॉन की सफलता के लिए शान्तिमय आन्दोलन, राष्ट्रीय एका के लिए जातीय व सां-सायिक सहयोग, स्थायी शान्ति के लिए योग्य व असमानता को समाप्त, विश्व-शान्ति व विश्व-बन्धुत्व आदि विचारों के समर्थन में सूचिनर्था अंकित थी। शान्ति-कूच के समापन पर सामूहिक सर्वधर्म प्रार्थना-सभा आयोजित की गयी।

दुर्ग

दुर्ग (म० प्र०) के सर्वोदय कार्य-कर्ताओं का विचारक २९-३० जनवरी '७२ को शहूर अन्तर्क के वैदरी ग्राम में सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें ४० कार्य-कर्ताओं के अलावा ४०० लोगों ने भी भाग लिया।

सम्मेलन के प्रथम दिन ग्राम-स्वराज्य की स्थापना के लिए ग्रामदान का विचार लोगों को समझाया गया तथा प्रार्थना के साथ अन्तिम कार्यवाही समाप्त हुई।

दि० ३० को पू० बापू की पुण्य-तिथि के दिन प्रातः शान्ति जुलूस, सामूहिक प्रार्थना, ग्राम-सफाई का कार्यक्रम हुआ। ११ बजे पू० गांधीजी की मौन प्रार्थना द्वारा श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गयी और जनता की सर्वोच्च मण्डल द्वारा पत्र रहे शान्ति के कार्यों की जानकारी दी गयी।

जमशेदपुर

गांधी शान्ति प्रतिष्ठान केन्द्र में सिंह-गुप्त जिला सर्वोदय मण्डल एवं गांधी शान्ति प्रतिष्ठान की ओर से मठ १० जनवरी को निर्माण दिवस के तिथिकिने में एक सभा आयोजित की गयी। श्री चौधरी की अध्यक्षता में एक ग्राम सभा हुई, जिसमें लोगों ने गांधीजी के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। इस अव-सर पर सून-सज तथा मौन प्रार्थना की गयी।

असम

तामुनपुर औचिकिन कामरान धुप ने कान्ति दिग्गज रगिना, और कुमारोदय ही मनाया। प्रभाव केरी और प्रार्थना के समय धूप-पत्र और कताई-प्रतिबोधिता का कार्यक्रम रखा गया।

बोलकुची, देवनकुची, मारमारा और बाहुकुमीना में पुराने जबर परखे तथा गये मास्त्र चरखे पर कताई-प्रतिबोधिता भी गयी। इनमें प्रथम और द्वितीय स्थान प्राप्त करनेवालों की अतिम प्रतिबोधिता रगिना महारत्ना गोत्री मण्डप में हुई।

प्रान्तज्ञान सभ के सम्पादन की देख-रेख केर ने अधिर कताई करनेवालों की प्रयास-रूप तथा अन्य पुस्तकार दिया।

अस में महारत्ना गोत्री की मूर्ति पर तुलनात्मक कल्पित की गयी और प्रार्थना के बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ।

दिल्ली

दिल्ली में ३० जनवरी को बाहु निकल दिवस धम्मापूर्वक मनाया गया। रात्रिवाट समाधि पर प्रातः सात सात बजे से १० बजे तक सर्वसम्मति प्रार्थना तथा गीता-पठन हुआ। प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गोत्री भी इस अवसर पर उपस्थित थीं। ११ बजे रात्रिपति श्री गिरि ने समाधि पर मालागंध दिया और गह्वरी की वज्र में दो गिराव का मोल रखा गया।

बाराहाट में बने एक शास्त्र-मार्ग का प्रायोगिक कार्यक्रम अहिंसा विद्यालय की ओर से किया गया। (चित्र पृष्ठ पर) शास्त्र-मार्ग में दिल्ली विद्यालय के छात्र-छात्राओं के साथ ही दिल्ली के वारंटिले व सुदु विदेशी विद्यार्थियों ने भी भाग लिया। शास्त्र-मार्ग पुरानी दिल्ली-विषय छात्रद्वारा से बराबर तय के विभिन्न भागों से होना हुआ कार्यक्रम पर्वका, जहाँ पर्वककर मान सेनेवाली ने सामूहिक रूप से एक प्रतिज्ञा सोझाया। प्रस्तुत विषय इसी प्रकार का है।

राजघाट अहिंसा विद्यालय का वार्षिकोत्सव

गोत्री कान्ति प्रतिष्ठान द्वारा संचालित अहिंसा विद्यालय का वार्षिकोत्सव २९ जनवरी १९७२ को एक छोटे समारोह में सम्पन्न हुआ। निम्नविधास्य और स्त्रियों के छात्रों तक गोत्री विचार पर्वकले व उन्हें देश की स्वतन्त्रक प्रवृत्तियों से जोड़कर, उनकी जिम्मेदारी का सही भाव करने के लिए (प्राथमिक शिक्षा गया यह अहिंसा विद्यालय इस एक वर्ष की अपा-वधि में पर्याप्त लोकप्रियता हासिल कर चुका है।

शास्त्रोत्सव में विद्याविद्यालय के विद्यार्थ, छात्र-छात्राओं व विभिन्न स्वतन्त्रक सरघामों के कार्यकर्ता उपस्थित थे। मुख्य अतिथि श्री को० एच० बोडारी ने अहिंसा विचार की वैज्ञानिक व्याख्या करते हुए स्पष्ट किया कि मानव इतिहास दरभजन प्रेम व सहयोग का इतिहास है। बीच-बीच में उल्लेखनीय तथा भी उल्लेखनीय वंदा हुए युद्ध इस मूलधार से बड़े हुए उदाहरण ही हैं। उन्होंने दिल्ली के छात्रों को बुझाना किया कि वे अपने स्वार्थों की गन्दी बलिदानों में बाल करना शुरू करें और इस तरह स्वतन्त्र के काम में अपना ध्यानकाल व्ययदान में।

उत्सव में छात्र-छात्राओं ने अहिंसा विद्यालय के जुड़ने के बाद अपने अनुभवों की बजाया। समझण धर्मो ने स्वीकार किया कि जिन समस्याओं के प्रति वे स्वयं की बिलगुन भी जिम्मेदार महसूस नहीं करते थे आज विद्यालय से जुड़ने के बाद उन्हीं समस्याओं के समाधान में सफल पाइने हैं।

अहिंसा विद्यालय ने एक एक वर्ष की अवधि में श्रेष्ठ सार्वजनिक विचार विचार के प्रस्तावों प्रस्तावों के साथ-साथ अहिंसा विद्यालयों के बीच एक सार्वजनिक विचार का भी आयोजन किया।

अहिंसा विद्यालय के निर्देशक श्री देवेन्द्र कुमार गुप्त ने विद्यालय के जुड़ने की सत्य करते हुए कहा कि प्रत्येक गोत्री की तरफ से ही ही रही बुनिया

में आज गोत्री विचार कर्तव्यपूर्ण है। गोत्री कान्ति प्रतिष्ठान के सभी श्री राधाहरण ने महानगरीय सम्प्रदाय के बीच ऐसे विद्यालय की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वतन्त्रक कार्य में सभी लोगों को इसकी तरफ पक्षीय समय में ध्यान देना चाहिए।

पंचेतीय संसल में डाक्टरों का दल

गोत्री कान्ति प्रतिष्ठान के संस्थापकान्ति में कान्ति स्वयंसेवी कार्य विभाग उत्तर प्रदेश के पंचेतीय क्षेत्र पुरोचर विनास छात्र में डाक्टरों का एक दल भेजनेवाला है।

उत्तराखण्ड जिले का यह पुरोचर विभाग छात्र समुदाय और दोष नदियों की कान्ति में स्थित है। उसके १९२ गोत्री में से १४२ गोत्री का प्रामाण्य ही पूरा है। बहुसंख्यक प्रभावाने इस क्षेत्र में योन रोगों का बाहुल्य है। तत्पश्चात् दो वर्ष पूर्व श्री जगप्रसाद तारावण ने उप क्षेत्र की जांच के बाद इस समस्या के प्रति सघन-सेवी संस्थाओं का ध्यान कान्ति किया था।

कनकलिन स्वयंसेवी कार्य विभाग की इस योजना के अनुसार दस वर्ष की सभी की छात्रों में डाक्टरों के १० छात्र व दो डाक्टरों का एक दल इस क्षेत्र में दस रोग से लड़ने का प्रयत्न करेगा। प्रस्ताव में प्रयुक्त होनेवाली दवाइयों की व्यवस्था अन्य समाजसेवी संस्थाओं की मदद से की जा रही है।

ग्रामसेवा मण्डल फोट

ग्रामसेवा मण्डल, कोट जिला बन्नाला (हरियाणा) ने निम्न प्रकार सहायता कार्य किया।

१—बगदा देह सरघामियों की सहायता के लिए १२ बगड़ व देवीदेह, मनकला जिले वने, मूल्य २१९ रुपये।

२—छात्र संस्थान के लिए सर्वेक्टर २१९ रुपये का।

३—भारत प्रयासों में मदद दिया गया ६६० रुपये।

इस प्रकार कुल ७७२.०० रुपये।

मुसहरी की पदयात्रा—(१)

—एक गाँव की ग्रामस्वराज्य-सभा ने पड़ोसी गाँव में काम लगाने पर उसे ५६ रुपये की सहायता दी।

—एक ग्रामस्वराज्य-सभा ने अपने गाँव में जूना बन्द कर दिया।

—एक छोटा गाँव समाजित होकर बाहरी दमन का मुकामिला कर रहा है।

—एक ग्रामस्वराज्य-सभा ने पिछले कुछ महीनों में तीन बार निष्क्रिय पदाधिकारियों को बर्खा।

—एक ग्रामस्वराज्य-सभा की नियमित बैठक हर पूर्णिमा को होती है। उनमें वह हाल से नव रूढ़िवादों की जागृती पचाँ से हुन कर डाला है।

—एक सभा ने बल्लभराज्य-सभा और उपनियोग-सभा की माँग की है।

—एक सभा ने शांति-नेत्र बनाया है।

—एक सभा में मानिकों और मजदूरों में विवाद था। श्रम अधिकारी के सामने दर्शाया गया। लेकिन दोनों ने मिलकर काम के घटे और मजदूरी तय कर ली।

—एक गाँव में विहायन हुई कि चीनर मिट्टी का तेल जोश-जोश नहीं दे रहा है। ग्रामस्वराज्य-सभा की बैठक हुई। सभा की बीरे से एक सार्ड छात्रावास और बाँटा गया ताकि पचा चल सके कि किसानों विजना तेल मिला। काठ का नयुवा निम्न प्रकार है :

गाई सं० ३६६

क्रियात्मक तेल

डीकर का नाम—कमोरा हाथ

ग्रामसभा मुख्या, मुखकरपुर

नाम * * * * *

प्राय * * * * * 'वी' * * * * *

सम्यक्

—एक ग्रामस्वराज्य-सभा वैरीक-पारो की चौकदार देने की योजना बनाया

चाहती है। सवाल बहुत टड़ा है। चीन नदी धा रही है कि यह बना करे, कंठे शुष्क करे ?

—पाचं में चुनाव है। मुसहरी की प्रखण्ड स्वराज्य-सभा की कार्य-समितिक ने चुनाव के लिए एक कार्य-योजना बनायी है जो छापरकर गाँव-गाँव की ग्रामस्वराज्य-सभाओं में भेजी जा रही है। स्वयं प्रखण्ड-स्वराज्य-सभा अपने क्षेत्र में समी उम्मीद-पारो की समुदाय मच के लिए सामयिक करेगी, जहाँ एक साथ आकर वे जनता को समझावेंगे कि विधानसभा में जाकर क्या करेंगे। गाँवों की ग्रामस्वराज्य-सभाएँ अपने-अपने क्षेत्र में ग्राम-शांतिसेना को मदद से यह देखेंगे कि लाग निडर होकर गवर्दान कर गहें। चुनाव की कम्बलिंग आदि में कोई ऐसा काम न हो जिससे गाँव की एकता टूटे और लोग जाति या रक्त के नाम पर एक-दूसरे के दुश्मन बन जायें।

वे कुछ उदाहरण हैं—कल्याण के सहकार के। कल्याण और महाराष्ट्र के साथ लगभग सूल गये हैं। उन्हें फिर खानना ग्रामदाता का पचना काम है। इस भूमिका के बन जाने के बाद दूसरे काम आठान ही जाते हैं।

लेकिन मानना ही सब कुछ नहीं है। समाज-परिवर्तन एक बलवान बंडिन और देवोदी भूमिका है। —रामभूति

अखिल भारत सर्वोदय सम्मेलन

यहाँ सेवा संघ के महासचिव श्री जगुबहागु बग ने सूचित किया है कि अखिल भारत सर्वोदय सम्मेलन आगामी २८ से ३० अप्रैल १९७२ को मुंबई (जिला-जालंधर), पंजाब में होगा। इसके पूर्व २२, २६, २७ जनवरी को सभी स्थान पर सर्व सेवा संघ का वार्षिक अधिवेशन भी आयोजित किया गया है।

जपप्रकाशजी का स्वास्थ्य

एक प्राण जागहारी के अनुसार श्री जपप्रकाशजी को कमजोरी बुर नहीं हो रही है। इ.प.इ.एन. स्कूल ऑफ ट्रापिकल मेडिसिन के चिकित्सकों ने उनकी रिपोर्ट देसी है। १४ फरवरी को वह हवाई अड्डाम से विस्फुन जांच के लिए-पटना से दिल्ली जा रहे हैं।

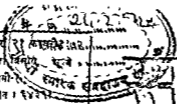
श्रीमती पूरवाई का देहांत

तां० २८-१२-७१ को कनकते में श्रीमती पूरवाई का देहांत हो गया। उमरी उम्र करीब तीस साल थी। पू० बापूजी के अविवाहपार उन्होंने गुजरात के जाकर निःस्पृह भाव से उड़ोला की सेवा की। इन सर्वोदय परिवार की शेर से उन्हें श्रद्धांजलि भविष्य करते हैं।

इस अंक में

राष्ट्रीय एतवा व राजनीति	
—श्री विजय भाई	२९८
गाँव का अनुभव	—छायादेवीय
शामदानी सेना के लिए आर्थिक	२९९
योजना	—श्री गिदुलाम उद्दा
सर्व की जाति सर्व के द्वारा हमारी	३००
—श्री धीरेन्द्र मजुमदार	२०१
सोशलिस्टिक की प्रगति का	
दुश्मनाय	—श्री मधुसूद मैद्गा
३०२	
भारतमेंना की कार्यक्रम-पीछी :	
कार्य-विवरण	३०३
भारत में गरीबो—	
—श्री रामभूति	३०४
जब वह मिनते नहीं।	
—श्री कथुम बगर	३०६
समय-मानिसेना प्रशासक प्रशिक्षण	
निर्दिष्ट	—श्री मरुनारायण
३०७	
जागरी के पन्ने से	
—श्री सुरेशनाथ भाई	३०८
राजस्थान में पुटि-नायों की	
योजना—श्री बडी प्रसाद स्वामी	३०९
भारतिय शिष्य के समाचार	३१०

वर्ष : १८, अंक : २१, सोमवार
 सर्व सेवा संघ, पब्लिशिंग
 राजघाट, बाराबंकी
 पार : सर्वसेवा • फोन : ६४२१



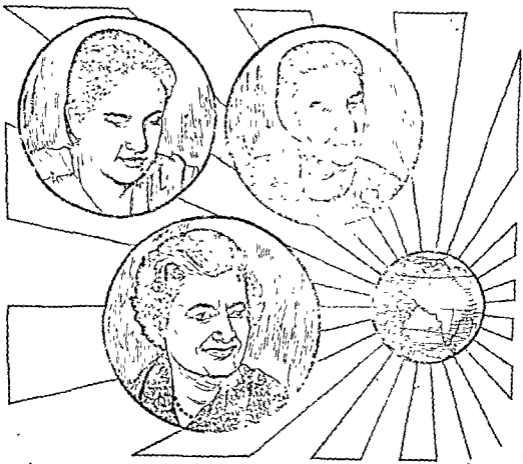
सर्वसेवा

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

संपादक
 सम्भूति

भूतनाथ-संघ

भूतनाथ-संघ का मुख पत्र • सर्वसेवा संघ का मुख पत्र • सर्वसेवा संघ का मुख पत्र



बापू के कदमों पर



माता कस्तूरबा

१९३० के सत्याग्रह के समय बापू की कराई नामक स्थल पर सरकार ने गिरफ्तार कर लिया, उसके बाद बा ने भरतक बापू वा नाम हाथ में ले लिया। वे गाँव-गाँव घूमने लगे। लेकिन काम के बोझ और बीड़पूर के कारण उनकी तबीयत बिगड़ गयी। इसलिए बा-श्री मर-हरि परीक्ष की पुत्री श्री वनमातावनहन के साथ मरीची आश्रम में शाराम करने के लिए चली गयी।

एक दिन सुबह ही प्राथना करने के बाद सब लोग नास्ता करने बैठे थे। इन्होंने देखा कि आकर तार दे गया। तार में लिखा था ?

“हमें भरतूरवा के साथ की जरूरत है।”

बा तार के भीतर के गहरे अर्थ को समझ गयी और नास्ता छोड़कर जल्दी-जल्दी जाने की तैयारी करने लगी।

तार कोरसर गाँव से आया था। वहाँ बिजानो की जमीन-महदूल न भरने की सलाह देनेवाली कुछ बहनों पर सरकार ने साठी पचायी थी। इनके शारे गाँव में हाहाकार मच गया था। अनेक बहनों कायम होकर अस्पताल में पड़ी थी। इन्हीं बहनों ने बा को तार करके दूताया था, ताकि बा गाँववालों को हिम्मत बंधा सके। बा की इस उठावकी को देखकर शरमासावहन घबरा उठी। बोसद जाने से बा की तबीयत ज्यादा बिगड़ जायगी, ऐसी चिन्ता के कारण उन्होंने बा से कहा : “बा, धाम यह क्या करती है ? आप में तागत है न? जाने की ? शरीर में रक्त की एक थेंद भी तो नहीं रही है। इसलिए न अमटनों ने आपकी शाराम लेने की सलाह दी है ? आपके अर्थ में बोसद जानी हैं। भगवान के नाम पर शार नहीं रहे।” किन्तु अम्बल और दूसरी जल्दी चोर्ने होने में रक्ते हुए बा ने कहा : “पुनित

की नाटिका बहोदुरी से योगिनीवाली बहनों के पास मुझे पहुँचना ही चाहिए। बापू होते तो इस समय वे बहनों के पास सजे होते। लेकिन वे तो शेत में बन्द हैं।” इतना कहकर बा बोसद की गाड़ी पकड़ने के लिए तेजी से स्टेजकी ओर चल पड़ी।

बोसद पहुँचकर बा ने अस्पताल में घाशन बहनों को हिम्मत बंधाई और प्रामत्तासियो से मिलकर गाँव पर छामे हुए हर और पदराहट की भी दूर किया। जवली नमजोर तबीयत की रसी-भर पराहा न करके वे सुबह से शाम तक सजे पाले काम करने लगी। इससे

प्रस्तुत अंक

इस अंक में हम कस्तूरबा की स्मरण कर रहे हैं। लेकिन उनके निमित्त से हम स्त्री-मुद्रप-सम्बन्धी की पूरी समस्या की ओर अपने पाठकों का ध्यान आकृष्ट करना चाहते हैं। यह समस्या मात्तिव-मजदूर की समस्या से कम जरूरी और जटिल नहीं है। हम चाहे या न चाहे परिवार में और समाज में, हममें से हर एक के जीवन में, यह समस्या सामने खड़ी है, और उसे छोड़कर अगे बढ़ना कठिन है। कस्तूरबा और गांधीजी ने अपने ढंग से अपने लिए यह समस्या हल कर ली थी। हम अपने लिए, और अपने समाज के लिए, कैसे हल करेंगे ? समस्या की प्रतीति हो जाय और दिमाग चलने लगे तो गंगाघाट की मूर-आत हो जायगी। इन्ही आशा में कुछ सामग्री यहाँ प्रस्तुत है।

उनकी तबीयत और बिगड़ गयी। नडिवाद से बाहर आये। उन्होंने शाराम करने पर खूब जोर दिया और बा को पेशाया। “बा, धाम हमारा पटना न मानेंगी तो आरटी तबीयत ज्यादा बिगड़ेगी और लज्जा परिणाम बुरा होगा।”

बादलों की बात सुनकर बा ने कहा : “लेकिन मुझे तो क्या बिलकुल नहीं लगता। मैं सिर्फ बापू के कदमों पर ही चल रही हूँ। बापू की अनुपस्थिति में मुझे काम करने का यह अवसर मिला है। शाराम करना तो मेरे लिए अत्यन्त है।”

बादल ने बेकारे मरार करते ? निराश होकर लौट गये। बा अपने काम में जुट गयी।

बापू की इच्छा ही बा की इच्छा

१९४२ की नवी अगस्त की बडे सत्रे ही अचानक बापू की गिरफ्तार करने के लिए पुलिस अधिारी का धमके। वे बापू को, महारे बार्ड की ओर मीरास्टन को पकड़ने के लिए आये थे। लेकिन उन्होंने कहा कि कस्तूरबा जाना चाहें तो वे भी गांधीजी के साथ आ सकती हैं।

बा की ओर देखकर बापू ने कहा : “यू न रह उनके दो पण। लेकिन मैं तो यही चाहता हूँ कि मेरे साथ चलने की बंधना नू बाहर रहकर मेरा काम कर।”

इतना कहना बा के लिए पर्याप्त था। उन्होंने बिना किसी बिबाध के बापू का काम करने का निश्चय कर लिया।

अन्याकारी

पुरुष और स्त्री : समता और साझेदारी

"यदि पुरुष मनुष्य है, तो स्त्रियाँ भी मनुष्य ही हैं।" यह वाक्य एक विशिष्टी महिला का है, जिसे एक मुसलिम रिजिजि समाजवादी ने बोले बर्षों को सुनी हुई उक्ति में गमल दिया है।

क्या सत्य बात है इन सीधे-सादे वाक्यों में ? साम्यवाद यही कि हममें आर्य के स्त्री-आन्दोलन की सम्पूर्ण प्रेरणा समाजी हुई है। स्त्री स्त्री होने के आर्य अरु अपनी हीनता स्वीकार करने की तैयार नहीं है। वह चुपचाप ही कि कब पुरुष मनुष्य है तो क्या स्त्री, मान स्त्री होने के कारण कम मनुष्य है ? कारणों की रचना के भेद को यह समझ में बाधक नहीं माननी।

जो स्त्रियाँ बहुत आर्य से थे आर्यें वह रही हैं ? क्या वे नहीं जानती कि वे पुरुषों से सम्बन्ध एक सच्चे जीवन को भूत जाने की वह रही हैं ? हजारों बर्षों में जो सम्पत्ता बनो है उसे अस्वीकार करने को कह रही हैं ? जिन मृत्यों और परम्पराओं की हमने पुस्तकों से विनाश में पग्या है उन्हें ही हमें नहीं खिलाया है कि पुरुष—पुरुष है और स्त्री—स्त्री। स्त्री पत्नी है, माँ है, देवी है, सब कुछ है, पर जमना सब कुछ पुरुष है। जीवन में स्त्री गृहस्थानिती भते ही हो, विद्युत् पुनः जीवन और स्त्री दोनों का स्थायी है।

भारत की स्त्रियों से देखने पर लगता है कि पश्चिम की दुनिया बसत गयी है, और बर्षों की स्त्री का स्वीकार उसके मनुष्य होने में बाधक नहीं है। उसे प्रेम भी छूट है; विवाह करने, न करने, और बर्षों की सोचने को छूट है, उसकी आत्मा बमार्द्ध है और उनका आना बोट है। सगला है कि यह पुत्र है, लेकिन क्या पुत्रपुत्र ?

भारत में बोट तो है, लेकिन बोट को उसे प्रतीति नहीं है। बाबूत में सवाक की छूट और रिजिजि की सम्पत्ति में रिजिजि है, किन्तु सवाक में मान्य नहीं है। और वे सब छूटें निरर्थक हो जाती हैं जब स्त्री देखती है कि न उसका अपने प्रेम पर अधिहार है, और न उसकी आत्मी स्वतंत्रता जो विवाह है। 'दान' में स्त्री की अपरिचित की वी आनेवाली सग्या और रीटी के लिए पति पर आश्रित पत्नी - स्त्री को कोई स्वतंत्र मत्ता ही सचती है ?

पुरुष भी ही भारत में स्त्री सत्यमयी और प्रजासयनी ही सचती है किन्तु पश्चिम के स्त्रियों देश में आर्य भी आना नहीं को आ सचती। दुनिया में इस वरत तौल स्त्री प्रजासयनी है, तौलें एंगिया में है। पश्चिम के पुरुषों को यह धरोरा नहीं है कि स्त्री देश की भी सम्पत्ता सचती है। स्त्री को जोयनता और मासर्भ के तौर में मंता दिमीन-दिमीन रूप में हर जगह मौजूद है—पैरिसीयरी देशों में सम्पत्तारी देशों के अतिरिक्त।

भारत ही नहीं, दुनिया के अनेक देशों में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में स्त्री ने अपनी योग्यता का परिचय दिया है, और पुरुष

ने उसे स्वीकार भी किया है, किन्तु सामान्य दृष्टि सग से यही रही है कि स्त्री पुरुष के तुल्य और सेवा के लिए है। उसे स्त्री और माँ बनता है, दूसरे में उसके अर्थर की सम्पत्तता है। 'विन्दुतेन' और 'रिचिन' उसके विशिष्ट शब्द हैं। पुरुष उसे खिलाता है, खाता है, अपने सुख और समाधान के लिए यह उनका 'स्वामी' है। स्त्री उसकी है, अपनी नहीं।

स्त्री उसकी नहीं, अपनी है—रखी की आर्य की दुनिया में स्त्री की और से मोग है।

स्त्री 'अपनी' है, यानी क्या है ? यह सपनों हीकर क्या सग्या पाहरी है ? क्या उसके पाद जीवन की कोई 'दिवादन' है जो पुरुषों की वी हुई रिजिजिजि से मिल हो और जियमें स्त्री अपनी हीकर भी सके ? अगर पुरुष की रिजिजिजि और उसके हाथ का पिताजी बना रहना ही स्त्री के जोबर की प्रेरणा है, और आगे भी यही प्रेरणा बनी रहनेवाली हो, तो स्त्री की सचता और स्वतंत्रता का अर्थ क्या होगा ? फिर उसके अर्थरिचिन का क्या स्वरूप होगा ?

विज्ञान के पद स्त्री की 'रिचिन' से मुक्त कर सकते हैं, इतिहास सचन उसे 'विन्दुतेन' से भी मुक्त कर सकते हैं, काम की योत्रार्थ उसे स्वतंत्र जोरिचिन दे सचती है, और बाबूत उसे सामरिक अधिहार दे सचता है, लेकिन उसे भोग की वस्तु बनी रहने की विस्था से हमारा कोन मुक्त कर सचता है ? आर्य स्त्री स्वयं अपने अर्थरिचिन को नहीं पहचानती है तो उसकी स्वायत्तता और उसके आर्य-निर्णय के अधिहार का आशय क्या होय ? यह पुरुष से मिल आना माय अपने हाथों में बंसे ले सकेगी ?

दुनिया की अनेक सचिनतों में स्त्री भी एक सचिनत है—बाधक प्रगत सचिनत। इसमें गदेह नहीं कि अर्थ-सचिनत को वरह स्त्री-सचिनत का भी अर्थरिचिन दान और स वण हुआ है। इसलिए उचित है कि जिय के वा स होनेवाले पुरुष-स्त्री के भेद का जग हो। लेकिन सामुहिक स्त्री का प्रतिहार स्त्री-पुरुष सगला का अर्थरिचिन समाधान नहीं है। दोनों के बीच महारग ही अरुत है—स्त्री का को सुखद ग हीधारी के लिए। भारत सचिनत की योत्रार्थ में पुनः भी स्त्री की और स्त्री का पुरुष को जगना है। उसके विचार, संविदा सम्पत्त, विवाह, सचिनत, सभी के लिए स्थान है। पारवरिक विवाह हो या सामुहिक मुक्त प्रेम, या पहले और कुछ हो, जिन प्रथाओं और पद्धतियों द्वारा स्त्री-पुरुष के एक दूसरे को आर्य सग देविकार दिया है, वे हीतो पड़ चुकी हैं। उनके स्थान पर नये विचार और नयी सम्पत्त का अरुत है। साझेदारी और पाररिचिनतता के सम्पर्क में सचिनत के प्रयोजनों का सग नया स्वरूप होगा, और जिय प्रसार जीवन में उनकी किडि होगी, इस अर्थरिचिन पर उन पुरुषों को विचार करना है जो पुरुष होने का धनुषार छोड़ चुके हैं, और उन सब विचारों को करता है जो स्त्री होने की हीनता छोड़ चुकी हैं। साझेदारी में वे समता सामुहिक बनती हैं, नहीं तो यह विरोध का सारा माय बनकर रह जाती है, विजायक नहीं ही जाती।

स्त्रियों की सर्वोच्चता स्वीकार की जाय

“एनी बीन है, इसका किसी ने विचार किया है ? वह साधारण देवी है। अर्थात् वह स्वयं की मूर्ति है। स्त्रियों में ऐसी अद्भुत शक्ति है कि अणुर के काम करने का निश्चय कर लें और उनके समान के करें, तो वे किसी पशु को भी हिला देने की ताकत रखती हैं। इतनी शक्ति उनमें भरी है। स्त्रियों पुरुषों की मुझ-मनासियां नहीं हैं, परन्तु उनकी अर्धांगिनियां, सहस्रमिथियां हैं। इसलिए पुरुषों को चाहिए कि वे स्त्रियों को अपनी मिम समझें। स्त्री को बदला बहकर हम उस देवी का अर्धमान करते हैं।”

“... हमारे पूर्वजों ने प्राथमिक विधि के साथ देवियों की सेवा और पूजा करने को जो प्रथा हमारे दैनिक जीवन में बालिक की है, उनके मूल में मही रहस्य सरा है कि स्त्रियों को समाज में ऊंचा स्थान दिया जाय। स्त्रियों का आत्मत्याग तो दल। अपने बावक को पाल-पोसकर बड़ा करने के लिए कोई स्त्री किसी मूर्खियत उपाती है। नैतिक सारुण में तो स्त्रियां पुरुषों से क्लेश प्रसार से आगे बढ़ जाती हैं। स्त्री बहिरा, धर्म, महत्कामना और धर्म की छाया मूर्ति है। *सेविना क्षात्र क्या मिति है ?* आन हो हम तुम्हें देवियों को हत्या करने हैं, ऐसी स्त्रियों की पात्र मूर्ति है। यह सब बीन से धर्मशासन से पिला है, यह भी कोई मुदी बताती ? नैतिक वाद खला कि जिस घर में, जिस समाज में और जिस देश में स्त्रियों का सम्मान नहीं होगा, वह घर, वह समाज और वह देश निश्चय रूप से मृत्यु का प्राया।”

“मकर में स्त्रियों की समाप्ति हो जाती है। इसलिए जिस नये अनुभव मिलने हो रहते हैं। यह दर्या है कि स्वराज्य की कुली स्त्रियों के पास है, परन्तु उन्हें जाया बीन बने ? अथवा स्त्रियां निरथक हैं, उन्हें बीन उद्योग बनाने ? माताएँ बचपन से ही अपने बालकों को विद्यादात्री हैं, उन्हें बीन रस ? बालकों को गहन और अल्प प्रसार के बचपन से बाद देती हैं, छोटी-छोटी बालिकाओं को बनाइ देती हैं, कालिदास मूर्ति का व्याह हो जाती है। स्त्रियों के गहन देवता से भी श्रान्त हो जाता है। उन्हें बीन समझते कि गहनो में को-रई नहीं, गोप्य ही हस्य में है ? ऐसी तो कई वालों में मिल सकता है। अगर उनका उदाय क्या ? उदाय को स्त्रियों में तो कोई श्रौतरी देवी उग्र सेवकाली निमन पद लगी हो।” (भाग कवी ११, पृ. १)

“स्त्री पुरुष की सहायिणी है। उसी प्राथमिक परिधि में पुरुष से बड़ी भी काम नहीं है। उसे पुरुष के हारण काम में हाथ बंटाये जा हत है और आजादी का रस उतना ही सहायक है, जिसका पुरुष को। अपने अंग में अपनी सहायिका उसी प्रकार समीप की ब्राह्मी चाहिए, जिस प्रकार पुरुष की लक्ष्मी के अंग में।”

“स्त्री और पुरुष का दरवा समान है, पर वे एक नहीं हैं। वे ऐसी अनुभव जोड़ी हैं, जिसमें प्रत्येक दूसरे का पूरक है। वे

एक दूसरे के लिए आशयक हैं—यहाँ तक कि एक के बिना दूसरे की हस्तों की कल्पना ही नहीं की जा सकती। इन लक्ष्यों से यह निष्कर्ष निकलता है कि जिस बात में दोनों में से एक का भी बरजा सकेगा, उससे दोनों की बराबर बरबादी होगी।”

“भेदा आदर्श यह है कि पुत्र पुत्र रहते हुए स्त्री बने और स्त्री स्त्री रहते हुए पुत्र बने। पुत्र के स्त्री बनने के अर्थ है कि वह स्त्री की मरणा व विवेक सीधे और स्त्री के पुत्र बनने का मतलब यह है कि वह अपनी भीतर छोड़कर हिमनवाली और बहदुर बन जाय।”

“स्त्रियों का उद्धार स्त्रियों ही कर सकती हैं। इसके लिए तपस्या की आवश्यकता है। यह बात सच है कि पुरुषों से स्त्रियों में ज्यादा तपस्या है मगर तपस्या शून्यपूर्ण होनी चाहिए। “स्त्री की कीर्ति को रखा करनेवाला नहीं है। यह शुरु ही अपनी रक्षा कर सकती है।”

“यह प्रश्न कई बार पूछा जाता है कि स्त्रियां अपने लीनर की रक्षा क्यों करें ? और स्त्रियों की यह भी सुझाया जाता है कि वे खबर रखें। अगर स्त्रियां खबर रखने लगेंगी, तो यह खबर उड़ी के विपक्ष काम आयेगा। खबर काम में गेने के लिए तो बहुत मर्यादा चाहिए। खबर इसकाय करने के लिए हमें हमारे सामाजिक जीवन बरगला चाहिए। जिस आदर्श ने सभी चीजें दखा हो, पूरा निष्ठा न हो, यह खबर देनेमान नहीं कर सकता। खबर काम में गेने के लिए निहार करना चाहिए, बिजने हो बराने बांटे चाहिए। स्त्रियों के लीनर में खबर कोने के लिए हृदय को इनका मर्यादा बनाया चाहिए।

इसलिए स्त्रियों को खबर देनेमान करना सिखाने के बजाय यह शिक्षा देना चाहिए कि पुत्रों को खबर है ? गुण पर धरा ही ईश्वर का हाथ है। अगर हम सबकुछ दिन से माते ही कि ईश्वर है, तो हमें खबर खबर रहे ? बीन ही कुछ मनुष्य गुण पर हस्य करने जाये, गुण नाममात्र लेना। यहाँ से कुछ मनुष्य को दग पुत्रार से ही प्राण जायेगे। अगर बहालिन लेना म भी हो तो क्या ? उग्र मनुष्य हमें मर विद्या चाहिए। बनना करने की पक्षा हो, तो हम आज तक उठते बीने मर मिटते हैं न ? और, खबर देना करने पर भी बच्चा मोद में मर जाय, तो माता का एन्डोप नर्या है कि मनुष्य विद्या हो सता बिना। प्राण देने की पूरी सैवनी समझ ही हस्यम धर्म है। विद्या ही कुछ मनुष्य हो, यदि हम मर बिने केविन उनके बरजाकार के मर न हो, तो फिर यह कुछ मनुष्य भी क्या कर सकता है ? समान तो यह है कि मरने की पूरी वैयर्थीयों केविन मनुष्य के कामने बीन की कुछ मनुष्य ही अपनी दुष्टता छोड़ देता है। प्राण मर्यादा से दोष्य लाभ होता है। या आदर्श मर्यादा बरजा है, उनका ही भला होता ही है, मकर किन्हे मरि मर्यादा बिना मरजा है, उजता भी उद्योग बना होगा है।”

—मर्यादा मर्ती

स्त्रियों का मिशन : शान्ति-रक्षा, शील-रक्षा

—विनोबा

ममी की जो समान-रचना है वह सर्वनाश की रचना है और उसे पुण्यो ने अपनी बुद्धि से बनायी है। पुरुष मात्र एक भय पर ही शारी रचना करते आये हैं, अथवा पर नहीं। समाज-व्यवस्था के लिए पुरुषों ने मर्यादा बनायी और स्वयं ही तोड़ भी जाती। धारी दुनिया को आप लपाना से जानते हैं। इसी कारण दो महापुरुष हो चुके हैं और अब तीसरे का भय छाया हुआ है। इस स्थिति को सुधारने के लिए स्त्रियों को आगे आना चाहिए और समाज के रक्षण और निर्भयता के अधिकार अपने हाथ में लेने चाहिए तभी सर्वोदय होगा। ऐसे सर्वोदय में स्त्रियों का स्थान होगा और वह पुण्यो के स्थान से अधिक होगा।

जब एक देश का संरक्षण सैन्य-शक्ति से होता है, अहिंसा से नहीं होता, तब एक पुण्यो का दर्जा जैसा हो रहनेवाला है। पुरुष उग्ररूढ़ होता है। स्त्रियों को धीरोर-रचना ऐसी होती है कि उन्हें गर्भ-धारण करना पड़ना है, इसलिए स्वभावतः उनके लिए हिंसा बर्जित है। अगर रक्षण का साधन हिंसा ही रहेगी तो पुण्य-पमान जीवन रहेगा ही। इसलिए मेरी मांग है कि समाज का संरक्षण अहिंसा-मार्ग से ही करने को शक्ति होनी चाहिए।

निर्भयता बन्दूक में नहीं

एक बयाना या जब यह माना गया था कि स्त्रियों का शीघ्र घर है। आज भी यह घर उनके हाथ में रहेगा ही। परन्तु इन दबकीस छातों के अन्दर पुण्यो ने दुनिया का इस तरह बन्दोबस्त किया है

कि मात्र दुनिया बिल्कुल हैरान, बेमर हो गयी है। स्त्री-पुण्य समानता के नाम पर ये लोग स्त्रियों के हाथ में भी बन्दूक देना चाहते हैं और स्त्रियों को पत्नों परी करना चाहते हैं, यत्राप इसकी कि स्त्रियों के हाथ में यह अदृश आये जिससे कि वे पुरुषों को ऐसे बरामों से पभाव कर सकें और अपने मानव की शक्ति जीवन में ला सकें। दुनिया में यह निर्भयता के स्थान से चलना है और स्त्रियाँ भी समझती हैं कि जायद हमारे हाथ में बन्दूक आ जाय तो हम निर्भय बरेंगी। लेकिन निर्भयता का बन्दूक के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है।

हजार पिता से एक माता श्रेष्ठ

स्त्रियों स्थान को श्रेष्ठता को बात में दर्जनी तो श्रेष्ठतर होगा। श्री पुण्य की बराबरी में है, इनसे ज्यादा अपमानजनक उक्ति दूसरी क्या हो सकती है। आज तो यथिचम में स्त्रियों की पत्नों भी होती हैं और स्त्रियों हाथ में बन्दूक लेकर बराबर भी जाती हैं। परन्तु ऐसे भ्रम में नहीं पडना चाहिए। मनु भी यह बात याद रखनी चाहिए कि एक हजार पिता से एक माता का श्रेष्ठ अधिक है। अभी तो पुण्यो ने स्त्रियों को अत्याचार का साम्य बना रखा है। मानव का स्वाभाव धर्मिभार में हुआ है। हिंसा और धर्मिभार का मुकाबला करने के लिए स्त्रियों को आगे आना चाहिए। मानव बलात्कार में होता है। इसलिए बह्मचर्य को शक्ति का विधान स्त्रियों को करना चाहिए। तभी मानव की गरिमा सिद्ध होगी और समाज को रखा होगी।

अगर मैं स्त्री होता, तो न जाने किजनी बयावत करता। मैं तो चाहता हूँ कि स्त्रियों को तरक से बयावत हो। लेकिन बयावत तो वह स्त्री करेगी, जो वैराग्य की मूर्ति होगी। वैराग्य-वृत्ति प्रबल होगी, तभी तो मानव भी गिड होगा। स्त्रियाँ स्वतन्त्रता चाहती हैं, तो उन्हें बाधना के बहाव में बहना नहीं चाहिए।

स्त्रियों का बयाना उंग : कल्याण

आज एक स्त्रियों को मानविकता काय में खीचने की कोशिश हुई है, लेकिन वह पुरुषों के उंग से काम करने की हुई, स्त्रियों के उंग से नहीं। उनसे कहा गया कि पुरान में आओ, सेना में आओ, राइट-लेफ्ट करो, सामने उडनेवाला परी दिखे तो उसे निशाना बनाकर अपनी कुशलता दिखाओ, जो मिनिस्ट्री सैन की पुशलता मानी जाती है। मैं सोचता हूँ कि पुण्यो के साथ स्त्रियों भी बन्दूक लाने का बयाना करें, हममें पुरुषों की बराबरी करें तथा इस तरह खुद को समान-पार्य में बराबर मानें तो यह कमी भी भरपूर नहीं हो सकती। इससे वे 'पुत्रपरा' ही होंगे, क्योंकि हिंसा के मार्ग में स्त्रियों के लिए पताको बाधाएं उपस्थित होंगी हैं, जो पुरुषों के लिए नहीं होंगी। हिंसा-मार्ग में पुण्य आगे जा सकते हैं। लेकिन अहिंसा-मार्ग में स्त्रियाँ पुरुषों की बराबरी कर सकती हैं और आगे भी जा सकती हैं। इसलिए यह जरूरी है स्त्रियों आगे आये और अपने बय से आगे आये। स्त्रियों का उंग है करणा का उंग।

अहिंसा स्त्री-शक्ति को जगाती है

गांधीजी की विवेकता यह थी कि उन्होंने स्त्री-शक्ति को बयावत। ये स्त्री-शक्ति को इसलिए बयावत के कि उनका कार्य अहिंसा का था। समाज में जब-जब छाया छाया दिया पर रहेगा तब-जब स्त्रियों का स्थान गीध रहेगा। एक गांधी-वाणी स्त्री-शक्ति की। परन्तु मेरी उगादा नहीं निरानी। अगर हमने यह साक्षा कि हिंसा-शक्ति से समाज का बयावत होना चाहिए तो उंग कार्य में पुण्यो का ही मुण्य स्थान रहेगा, स्त्रियों का शीघ्र स्थान रहेगा। अहिंसा में स्त्रियों का बह्म पयादा प्रयोग है। गांधीजी ने सारे सामा-किर क्षेत्र में अहिंसा की मान्य किया। इसीलिए वे स्त्री-शक्ति को बयावत है। इसी तरह बयावत में भी स्त्रियाँ बह्म काम कर सकती हैं। हमने बिना में रखा बह्मक दिशा। पुण्य बर्ष-रर्ष

घर के अन्दर नहीं जा सकता, बाहर ही रहता है। इसलिए उसका कुल विचार बाहर ही रह जाता है। परन्तु बर्दा पर बर्दो ने बहुत काम किया क्योंकि वे घर के अन्दर पहुँचती थी।

कदव्या का राज्य स्थापित करें

मैं चाहता हूँ कि भारत की स्त्रियों अपनी शक्ति का मान रखकर सामने आवें। इसके बाद स्त्रियों के हाथ में समाज का अंशुल जालेबाना है। इनके लिए स्त्रियों को तैयार होना पड़ेगा। (विश्व शांति-नाथ उदा लोगों को दुनिया बदल जायेगी और आज देश के और दुनिया के सामने जो मसले उपस्थित हैं उनसे मुक्ति होगी।) पुष्पो से यह सब होनेवाला नहीं है। उनका दिमाग ठिकाने पर नहीं है। उन्हें कुछ समझा नहीं है, समझा है तो नहीं कि सेना बनाओ। इस तरह इतिहास-रूप में जब कि पुष्पो की बुद्धि स्थिति हो गयी है उस समय अगर स्त्रियों का काम में आवती है और अपने देवी गुणों के साथ, समन्वयता के साथ, मातृ-शक्ति के साथ, सामने आवती है तो कल्याण का राज्य स्थापित कर सकता है।

शान्ति कायम करने के लिए मर मिटें

अब बहनों को बोझा बाहर निकालकर काम करना होगा। गाँव में झगडा होता है तो बाहर निकलकर कौन झगडा है? पुष्प। लेकिन अब बहनों में यह शक्ति और हिम्मत जगती चाहिए कि वही मुना कि समाज हो रहा है वहाँ फोरन पहुँच जायें और बीच में पड़कर बटें कि हम पुष्पे झगड़ने नहीं देंगे। झगडा मान लें बहनों पापन की हो कार्य ही भी उपकी पराकाष्ठ नहीं करनी है। मर-मिटने का मोहा भाव तो तैयार रहना होगा तभी बहनों अल्पकालीन प्रश्न का कर सकती है। यह सब हिम्मत से होगा।

शान्तिमेता में सत्य बहनों समर्थ

एक जमाना था "जब लूज नहीं मरती वह तो हाँसीवासी रातो थी।" कहा जाता था। लेकिन रक्षणन से तो

एथा बर्दा ही ब्रह्म सत्यो है। अगर शान्तिमेता में हर बहन काम कर सकती है। इतमें करना ही क्या है? शिकं शान्ति से रहना है। गुस्सा करना हो तो भी कुछ करना पड़ता है—आँख फाड़नी पड़ती है—लेकिन यहाँ कुछ करना ही नहीं है। शान्ति से सझा रहना है। सभी बहनों का उपयोग शान्तिमेता में ही सकता है। लफ्फर सजा करना हो तो बहनों का क्या उपयोग हो सकता है? उनके हृदय में दया-भाव होता है इसलिए वे सौचंगी ति देहमी से बच करने में हमारा क्या काम है? लेकिन शान्तिमेता में बहनों का उपयोग माद्यों से जरासा हो सकता है।

शामयशी बनें

हमारे समाज की रचना पढ़ने से ही ऐसी बनी है कि बाई और स्त्रियाँ और दाहिनी ओर पुष्प रहते थे, आज हमारे समाज की स्थिति उन्टी हो गयी है। स्त्रियाँ पिछड़ गयी हैं और पुष्प शयि बड़ गये हैं। सच बुद्धिसे तो अब स्त्रियों को समाज को अपने हाथ में लेना चाहिए। उन्हें सामयशी होना चाहिए, और समाज को बाँधे ले जाना चाहिए। **सर्वोदय-यात्र में श्री-शक्ति हाथे**

अब जब मेरे सामने यह प्रश्न आया कि अक्षिर समाज-शक्ति की जीव साकार बरेगा? तब मुझे यही मातृत्व पड़ा कि पुष्पो से दो इतम भावें बड़कर शिष्या ही यह काम करें। स्त्रियों को यह काम सिम त ह गीरा जार नहीं में सोच रहा था। मैं इनके लिए अद्विक शक्ति को सोच में था—समाज पर शक्तिरिचु भाजमन न होकर अहिंसा से ही सारा काम हो जाय, यही सोचना था। अहिंसा की शिस्तिल करना हो तो

स्त्रियों को ही अक्षर देना चाहिए, ऐसा लगना था। अक्षिर लोक-समिति दिखानेवाला सर्वोदय-यात्र मुझे लुझ पड़ा। तब श्रान्त में अया कि श्की-शक्ति शयमें लगानी जा सकती है। पुष्पो के दिमाग में तो राजनीति के पत्थर भरे हैं, उन्हें निकाले वगैर काम नहीं हो सकता। इसलिए स्त्रियों को ही इस काम में आते जाना चाहिए। उनके अतिरिक्त में राजनीति न होने के कारण उन समाज में कभी फूट नहीं पड़ सकती। उनमें धर्म-बुद्धि बनी हुई है। लोकमाग्य शिलक सदा बहा जाते थे कि हिन्दुस्तान में अगर विज्ञान धर्म को बनाये रखा है तो स्त्रियों ने ही। वे जो अच्छी बातें स्त्रियों में होने के कारण वे ही यह काम करने योग्य हैं। इसलिए अगर इस काम में उनकी शक्ति का ध्यान मिला तो बहुत बड़ी शक्ति हो सकती है।

अहल्या जागे

मातृत्व के शरीर में तमोगुण होने के कारण बीच-बीच में उसे चालना या प्रेरणा देना जरूरी हो जाता है। आज तमोगुण से पत्थर बनी हुई शक्ति अहल्याएँ समाज में पड़ी हैं। उन्हें एक बार प्रेरणाएँ दी जायें तो वे उत्काल उठकर काम में जुट जायेंगी। घड़ी को चौकोश घटें में एक बार काशी देनी पड़ती है। इसलिए बीच-बीच में उन्हें प्रेरणा देनी ही पड़ेगी। फिर भी स्त्रियों के हाथ में समाज सुरक्षित ही रहेगा। एक बार हाथ में लिया हुआ अच्छा काम वे छोड़ती ही नहीं। पुष्प अबका छोड़ देते हैं।

शान्ति की मूर्ति

यह सच है कि शान्ति की मूर्ति नहीं गरी जा सकती, पर मान लें कि उसे गड़वा ही है, तो बड़ स्त्री की मूर्ति ही हो

में देहात की स्त्री की शहर की स्त्रियों की तुलना में ज्यादा स्वतंत्र समझता हूँ। वे अपने दुष्पवृत्त पति के झूठ पर तमाचा मार देती हैं, ऐसा भी उदाहरण मैंने देखा है। पत्नी-लिली स्त्री का नहीं, निरक्षर का। पत्नी-लिली स्त्रियों को तो मैं अधिक दबी पाता हूँ। इसलिए नहीं कि वे पत्नी-लिली होयें हैं, बल्कि वे आरामतलब होयी हैं।

एकती है। काम, क्रोध, मद, अस्वस्व आदि विचार जैसे पुरखों में होते हैं, वैसे ही स्त्रियों में भी हो सकते हैं। ममता, प्रेम आदि गुण स्त्रियों में हैं और पुरखों में भी। इन बातों में कोई एक दूसरे से नीचा-ऊँचा हो, ऐसी बात नहीं। फिर भी शान्ति की मूर्ति स्त्री हो सकती है, क्योंकि वह मानुष्यत्व है। वह सारे समाज की सारिणी शक्ति है। जो सारिणी शक्ति होगी, वही शान्ति की मूर्ति हो सकती है।

श्रील मिटे तो देश मिटेगा

मैं चाहता हूँ कि सारे भारत की स्त्रियों को शान्ति-रक्षा और शील-रक्षा का काम करना चाहिए। इस समय भारत में अहिंसक-प्रथा का कितना आन्दोलन हो रहा है। प्रथा विरोध और प्रतिहार अस्वस्व नहीं करेगी, तो फिर परमेस्वर ही भारत को बचाये, यही कहने की नीबट मायेगी। शान्ति-रक्षकों की रक्षा यही स्वरभाव है। यज्ञ-तिलको लड़कियाँ यहाँ रातों पर चलती हैं तो लड़के उनके पीछे लगते हैं, यह क्या बान है ? यह जो शील-अज्ञ हो रहा है जिनमें गृहस्थाश्रम की प्रतिष्ठा ही गिर रही है, उग्रता विरोध करने के लिए कहने को सामने आना चाहिए। मरगिवाली को समझना चाहिए कि अन्त देग का आधार शील पर नहीं रहता, तो देग टिक नहीं सकता। ●

हैरातदाद से तीन लड़कियों को दिल्ली जाना है। फलतः बलाय में पाया कर रही हैं। आपस में बातचीत कर रही हैं। उनके प्रसंगों में एक प्रसंग का यहाँ देना प्रासंगिक मानुष होता है।

“जानती हो, प्रेमा एम० ए० है, पर एक्टर-फेन लड़के से विवाह कर रही है।”

“क्यों ?”

“भ्यागारी है, धूल बमाता है।”

“और इसका पूरा घातक है, मेरे सामने भी एक प्रसंग ऐसा आया था, सब लड़को से भाउ करने पर उनसे बढावा कि—“एम० ए० हूँ, पी० एम० डी० भी हूँ, यह सही है। लेकिन अब इसी स्तर के लड़के से सारी करने का मतलब है कि पर-तर्क चलने के लिए मुझे भी स्तूय को गौहरी करनी पड़ेगी, यथायुक्त बगियों की सुनायद करनी पड़ेगी। उससे बचना है भ्यागारी गति को ही स्वीकार करना।”

“बगियों की सुनायद ?”

“बरे हूँ, बगियों को सुनायद। स्तूयों को भीनेदिय बगिटी में और बोन होने हैं ? क्या पढ़ने-लिखने लोग होने हैं ?”

यह है आधुनिक परिस्थिति, आधुनिक विद्या, और आधुनिक मानव का स्वीय चित्त।

स्त्री-मुद्रण सहवीचन के लिए स्वीय है विवाह का आधार। उसके लिए सारी, सुद्धि, मन के अनुकूल्य से निरा, प्रायमि-बला है पैसे के अनुकूल्य की। दाम्पत्य की नीब मिश्रता यही, गौदेवाजी है। पति पत्नी के बीच भी छोरे की सुदियाद पर क्या प्रेम, विश्वास, और सम्पर्क की अज्ञा रखी जा सकती है ? भ्यागार का घोरा राजनीति में आया, विद्या में धाया, धर्म में धारा और भव विवाह के सामान्य से अविचार में भी आ गया।

होरेबाती के घोराहू पर सदा अविचार

किन्तु अविचार है। प्यार की भूल, सहयोग की सलाय और विश्वास की चाह उसे मे अग्री होने के साकार में। जाने-पहुचाने सब दरपादों को टा-सटावर निराय इतना के अन्तर एक एकलव्य अस्व होना है—“अनजाने पप पर मदकने का और दुर्निष्ठ-प्राप्त करने का।” भाव उतकी अंतरात्मा से आयाज आ रही है,—जितना बुद्ध परिचित है, वह शक्ति है, सीमित है और जो असीम है—मुद्रण है, यह अन-पहुचाना है। तो नयी राह, नयी दिशा, नयी शक्ति, और नयी चेतना के लिए अन्तर्जाती राह का राहो बनने की हिंसकत करनेबालता ही मानवीय मूल्य का सकेगा—प्रेम, विश्वास और सुदिय या सकेगा।

असीम के, सुदिय के अन्तर्मा पप पर चलने के लिए हमें अपने को हटा कराना होगा। फिर वह बोझ चाहे अत-बैधत का ही, चाहे ज्ञान के प्रहार का हो, चाहे मान-सम्मान का हो, और चाहे साम्प्रदायों, परम्पराओं का हो, सबसे मुक्त होकर ही सुदिय-पप पर प्रयाण सम्भव है।

पंजाब में ग्रामदान पुष्टि-अभियान

ग्राम जानकारी के अनुसार यह २२ से २६ जनवरी तक अमोहर (जिस—फिरोजपुर) पंजाब में आयोजित ग्रामदान अभियान-पुष्टि अभियान के अन्तर्गत कार्य-कर्ताओं की ९ दलितियों ने ४० गांवों में ग्रामस्वराज्य का सदेन पुरेनाया। पत्र-स्वरूप ७ गांव ग्रामदान सविपुत्र हुए और २१ एक्टर का मुदान भी किया एवं ४० गांवों में ग्रामसभाओं का गठन किया गया।

इस अभियान में पंजाब के स्थानीय कार्यकर्ताओं के अलावा दिल्ली के २ और बहुराज्य के ६ कार्यकर्ता भी शामिल थे।

स्त्री-शक्ति

लेखक : विनोबा

स्त्री-मुद्रण सम्प्रदायों के स्पर्दीकरण के लिए पढ़ें

सर्व सेवा संघ प्रकाशन, रामघाट, वाराणसी-१

स्त्री-पुरुष सम्बन्ध में स्त्री की भूमिका

—दादा धर्माधिकारी

स्त्री-स्त्री की मैत्री

स्त्री को स्त्री से मोह वा मय भवे ही न हो, परन्तु क्या स्त्री को स्त्री से प्रेम होना है? क्या एक स्त्री दूसरी स्त्री के शरीर को प्रिय और पवित्र मानती है? अक्सर यह देखा गया है कि हमारे यहाँ पारम्परिक से अश्विनाम विवाह अपने और अन्य रिश्तों के शरीर को भी अविभक्त मानती है। अपने शरीर की अपेक्षा से पुरुष के शरीर को श्रेष्ठ मानती है। स्त्री-स्त्री शरीर को निरुपेक्ष मानती है। परिणाम यह है कि रिश्तों में परस्पर मित्रता की भावना पुरुषों की अपेक्षा कम है। एक पुरुष अपने सारे परिवार को छोड़कर अपने मित्र के लिए जान दे देगा। बाइबिल में कहा है "इससे पचास सद्वचन एक कष्ट से दूसरे के लिए बरा ही मालती है कि वह सोच के लिए आती जान मुर्दान्त कर दे।" स्त्री अपने पति के प्राणों के लिए अपने प्राण न्योछावर कर देगी, पुत्र के लिए भी अपने प्राणों की उलमर्ग कर देगी। कभी-कभी पिता, भाई, बहन या बन्धा के लिए भी अपनी रक्ति दे देगी। परन्तु एक स्त्री अपने सारे परिवार को छोड़कर एक शखी के लिए अपने प्राणों की आहुति दे रही हो, ऐसी मित्रता परिहार्य है शायद ही परमा हो। इतिहास में हृष्ण और अर्जुन की दोस्ती प्रसिद्ध है। यही कारण है कि रिश्तों की सम्बन्धों में जान कम होती है। क्रुम्भ से बाहर निकल कर सम्बन्धों में से अपनी जान बाल नहीं पाती। सम्बन्धों में दास्ती बढ़ती चाहिए, उनमें आत्म से दूसरी दोस्ती होनी चाहिए कि वे एक दूसरे के लिए जान भी दे सकें। बाह, ईर्ष्या, भयानक पुरुषों में कम नहीं है। पुरुषों में एक स्त्री के लिए दूसरे की भावना है, फिर भी विरह्यर रक्षियार बहने है: "कीरत पाण्डर असा को निचो प्रोयो नाम।" राम-रावण का युद्ध होता के निमित्त हुआ। दोष सीता पर लगाना

गया। होमर ने अपने महाकाव्य इलियड में हेलेन नाम की एक सुन्दर युवती की ही युद्ध निमित्त बनाया है। एक पुरुष दूसरे पुरुष को मार टाकना है, फिर भी पुरुषों का अस्तर प्रसिद्ध नहीं है। मनुष्य-पत्नियों का या सधर्मियों का अस्तर प्रसिद्ध नहीं है, प्रसिद्ध तो है, 'सौमिया बाह'। हमें इन परम्पराओं की बदलाव चाहिए। रिश्तों में मरथ और मोहार्थ कायम करना चाहिए।

स्त्री-पुरुष मैत्री

हम यह चाहते हैं कि स्त्री-पुरुषों में मैत्री का सम्बन्ध स्थापित हो। शायद अरिचो बार सहाय में भावी ही ऐसा भवितु हुआ जिसने अपने विराटण जीवन में दोनों प्रकार के प्रयोग किये। उसने यह सिद्ध करने की कोशिश की कि स्त्री और पुरुष दोनों एक-दूसरे के साथ सत्य की पुरुष भूमिका पर रह सकते हैं। यदि सामाजिक क्षेत्र में इस तथ्य को स्वीकार करने से आज बचाने हैं तो स्त्री का मानवत्व गौण और हीन हो जाता है। अर्थात् भावी में नैतिक सम्बन्ध की बहुत माना। केवल प्राकृतिक सम्बन्ध तो पशुओं में होता है। स्त्री के मानवत्व की उपायता समाज में हो सकती है, उसका भगिनीत्व भी पवित्र अर्थात् सदा है, लेकिन मित्रता के सम्बन्ध इस दोनों की अपेक्षा नहीं अधिक शुद्ध मगलमय है। समाज में स्त्री-पुरुष सम्बन्ध में अस्वस्थता की भी भावना हमारे परम्परागत नीति-शास्त्र में प्रकृत माली की उपाय निराकरण करने का वैदिक साहस गयी ने बताया।

सद्वचन में एक दूसरे के साथ रहने की चाह है, केवल मन से दूसरे के निरुपेक्ष रहने में ही संतोष नहीं रहता। हम शरीर की निरुपेक्षता भी चाहते हैं। सपत्ति में जीवन का अन्तर्ग है और सुगन्ध भी। कभी-कभी तो पून विनते हैं उनमें से

हरेक की अपनी एक सुगन्ध होती है। उसी तरह जीवन में हमारे आसपास रहने वाले लोगों की भी एक गन्ध होती है। कभी वह अच्छी होती है कभी बुरी। लेकिन जहाँ सुगन्ध होती है, हम वहीं पसन्द करते हैं। इस सद्वचन में रिश्तों की एक विशेष सुगन्ध होती है। माता के साथ, बहन के साथ, पुत्री के साथ, पत्नी के साथ और मित्र के साथ, साधारण में स्त्री एक सुगन्ध फैलाती है। पुरुष के सम्बन्ध में एक सीख होता है, हमें पुरुषों को पुरुषों के साथ, रिश्तों के रिश्तों के साथ और दोस्तों को एक-दूसरे के साथ रहने की उपायता या गहरी दृष्टि रहती है।

शरीर विषय नहीं

कम्युनिज्मो का एक सूत्र है, जिसने विवाह होने, वह सब प्रेम के आधार पर हो होने चाहिए, उनमें दुखरा कुछ हेतु या उद्देश्य नहीं होता। आर्थिक या सहाय्य हेतु से विवाह-सम्बन्ध नहीं होने चाहिए। हमें इस विचार का स्वागत और स्वीकार करना चाहिए। परन्तु हमसे एक बरम आगे बढ़ना होगा। समाजवादी क्रान्ति-कारक दलना से अस्वय मानते हैं कि स्त्री का शरीर प्रसंग या विक्रम का विषय नहीं होना चाहिए। स्त्री-बैठ बेचो नहीं जानी चाहिए और न पुरुषों को नुमाने-लनचने के लिए सजायी जानी चाहिए। वे यह भी मानते हैं कि एक पुरुष का शरीर दूसरे पुरुष के लिए, और एक स्त्री का शरीर दूसरी स्त्री के लिए विषय नहीं होना चाहिए। परन्तु अब यह मानने की आवश्यकता है कि पुरुष स्त्री के शरीर को विना न माने। जब तक पुरुष स्त्री के शरीर को विषय मानेगा और स्त्री भी अपने शरीर को विषय मानेगी तब तक वह समाज भूमिका पर नहीं आ सकेगी। आज स्त्री अपने शरीर को अलग धन और पुरुष का विना मानती है। हमें पुरुष सुगन्ध, विज्ञान-धन, मशीनधन है, परन्तु स्त्री का-धन, शरीर-धन है। रूप से मनुष्य ही शरीर। शीशे की बात है

कि अपने रूपम मानने से अधिक अग्रम
मासीरकता और कोन-सी हो सकती है।

स्त्री की प्रतिनियता

...पुरुषों ने जब कहा कि स्त्री का शरीर
गर्भाधारण के लिए बना है, इसलिए बड़
स्वतन्त्रता की बात नहीं है। परन्तु अलग
में होता यह चाहिए था कि स्त्री मानव
को जन्म देनी है, इसलिए उसकी सभार
में अधिक प्रतिष्ठा होगी चाहिए। यह
उसका दाय नही, बुध है, यह मुष्टि नही,
विधेयता है। एक नये मानव को सभार
में लाने का और उसके परवरिश करने
का जिम्मा स्त्री लेती है। शायद ईश्वर
और प्रकृति इतना विश्वास पुरुष का नहीं
कर सकी, इसलिए उसने स्त्री को यह
दाय सौंपकर अपना विश्वास प्रकट किया।
इसीलिए शायद उसने पुरुष के शरीर
में इतना सत्व नहीं रहने दिया कि उसके
द्वय से मयमात मानव को पोषण मिले।

परन्तु जो होना चाहिए था, उसके
बिपरीत ही हुआ। मातृत्व के कारण
स्त्री की मानवता अजिब होने के बदले
योग मानो गयी। स्वाभाविकी स्त्रियों
पर इसकी भयानक प्रतिक्रिया हुई। उसने
कहा : ठीक है, अगर मातृत्व ही हमारी
परवशता का आधार है, तो हम मातृत्व
से इस्तीफा देने को तैयार हैं। तुमकी
अगर सत्ताएं की जरूरत नहीं है, तो
हम भी अपनी आरक्षता को तिलाजिब दे
देंगी। जो उत्पादन करता है, उसकी
तुम्हारे समाज में प्रतिष्ठा है।

...तुम कहते हो कि समाज में सत्ता
उत्पादकों की होगी। परन्तु जो नवीन
मानवीय प्राणी को जन्म देती है, एक
तरह से मौलिक उत्पादन करती है,
उसका अधिकार तुम्हें मजूर नहीं, वो
मह लो, मातृत्व से स्वाम्य-स्य दे दिया।

यह भयानक प्रतिक्रिया हुई। उत्पा-
दन और उत्पादन के क्षेत्र में स्त्रियों ने
पुरुषों की प्रतियोगिता शुरू कर दी।
शासीरक शक्ति के क्षेत्र में भी उसने
प्रतिस्पर्धा आरम्भ कर दी। जो-जो नाम
पुरुष कर सकता है, उसको स्त्री भी करने

सकी। आर्थिक क्षेत्र में उसके पुरुष को
बराबरी करना शुरू किया।

× × ×

पुरुष को नरको स्त्री नहीं बनना है,
और स्त्री को पुरुष की प्रतिनिधि नहीं
बनना है। यह कोई पुरुष की सेकंडेंड
पारी नहीं है। नरको पुरुष और नरको
स्त्रियों को नाशकों में होती हैं। स्त्री में
जब स्त्री के गुणों का विकास होता है,
एक पुरुष के समान से उसका व्यक्तित्व
सम्पन्न होता है। पुरुष में जब पुरुष के
गुणों का विकास होता है, तब स्त्री के
गुणों के समान से उसका व्यक्तित्व सम्पन्न
होता है। यह सबकुछ विभूति न तो
अर्द्धनारीश्वर है, और न अर्द्धनरेश्वर है।
यह सम्पूर्ण नारीनरेश्वर है।

× × ×

स्त्री का पराजय

एक पुरुष को दूसरे पुरुष से भय
होता है, एक स्त्री को दूसरी स्त्री से भय
होना है, परन्तु प्रत्येक स्त्री को प्रत्येक
पुरुष से जो भय होता है, वह स्त्री-जीवन
की अन्तरी व्यथि है। इसके उदाय दो
हैं। एक तो यह कि स्त्री अपनी मर्दा
के लिए जाने प्राण देने के लिए तैयार
रहे और दूसरी यह कि बलात्कार से
छात होने पर वह अपने को दुष्ट और
अच्छ न माने। पृथी परिस्थिति में जो
सम्मान होगी, वह भी धर्म की ही सत्ता
मानो जायगी, हारम की नहीं। इसके
कुसीनता का और रचन का अधिमान नष्ट
ही जायगा। समाज में खाते मानक और
वर्तिकाएँ कुसीन ही होगी। स्त्री के
उत्थान में मूल पराक्रम स्त्री का होगा।
समाज में किसी नये विचार का प्रादुर्भाव
होता है, तो उसका जनक कोई समूह या
संगठन नहीं होता, व्यक्ति ही होता है।
...आदर्शविष्ट पराक्रमी स्त्रियों की
आज आवश्यकता है। ...केवल अवि-
वाहित रह जाने से स्त्री में शक्ति नहीं
आती। उनमें सामन्तिरता आनी
चाहिए। ऐसी स्त्रियाँ कीन होंगी ? ये
होंगी, जो स्त्री-पुरुष भावना से ऊपर उठ
सकी हैं। इसका यह अर्थ नहीं कि वे

स्त्री भी नहीं होंगी और पुरुष भी नहीं
होंगी, तृतीय प्रकृति होंगी। बलि
दसका अर्थ यह है कि वे स्त्री और पुरुष
दोनों होंगी। जिन महापुरुषों ने स्त्री के
उत्थान का प्रयत्न किया, वे स्त्रियों को
भूमिका के साथ समस्त हो गये थे।
विभूद्ध मानवता की भूमिका पर आरुद्ध
हो गये थे। वे पुरुष भी थे और स्त्री
भी थे।

× × ×

जहाँ-तहाँ स्त्रियाँ समाज-सेवा
करती हैं, वहाँ हर क्षेत्र में उनका यह
प्रयत्न होता चाहिए कि स्त्रियों की परम्प-
रागत मानवता का अन्व हो। जो स्त्रियाँ
समाज-सेवा करती हैं, उनसे सेवा का
सुर्य उद्देश्य समाज-परिवर्तन होना
चाहिए। यहाँ समाज-परिवर्तन से मत-
सव है—स्त्रियों की भूमिका में अन्ति।
एक मूलभूत क्रान्ति का यह विद्वान् होता
कि मासिक पत्र-पत्रिकाएँ, विज्ञापन और
नयीरजन के कार्यक्रमों में कहीं भी स्त्री
का रूप और शरीर, प्रदर्शन का विषय
नहीं होगा।

मुसफरपुर

विषय शान्ति दिवस के उपलक्ष्य में
मुसफरपुर की लक्ष्मी-शांतिसेना की
ओर से २९ और ३० जनवरी को एक
कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

प्रथम दिन, राधन-शान्ति और हिला-
शान्ति के मुकाबिले नागरिक शान्ति के
उदय को नयी सामाजिक संरचना के लिए
आवश्यक तयकाते हुए २९ जनवरी को
एक अन्तर-रक्त वाद-विवाद प्रवि-
योगिता का आयोजन किया। विषय था
'नया वर्तमान लोकतांत्रिक पद्धति में
सरकार जनता का छोटी प्रतिनिधित्व
करती है?' बिन्दुने भी प्रतिबोधियों ने
भाग लिया उनमें सबसे बड़े टीन को
पुरस्कृत करने के साथ-साथ अन्य सभी
प्रतियोगियों को भी पुरस्कृत किया गया।

प्रकृत अतिथि आचार्य राममूर्तिजी
ये बिन्दुने विचारियों को वर्तमान को
दृष्टि में रख कर विचार करने की प्रेरणा
दी। ●

शारीरकता से प्रेम तक

—जेनेन्द्र कुमार

पुरुष में मारी-शरीर के प्रति आकर्षण है, तो मारी के पास शरीर ही वह पुँजी बनता है जिससे जीने की मुक्त-मुक्ति का साधन, उपकरण प्राप्त और एकत्र किये जा सकें। हमनिष्क शरीरों के साथ यह भी बाजार में प्रस्तुत है कि योनी तब ही और वह जाने शरीर और सुन्दरता का मूल्य पाये।

स्त्री की ओर से प्रेम का कोई औरतारा प्रतिवाद नहीं जा रहा है। बल्कि अपनी ओर शरीर की रचनायुक्तता के नाम पर वह स्पष्टता से प्रेम में सहयोगिता बनी दिखती है। इसकी विरहभंग्य बहूते भी अक्षरक होती है। यथोक्ति स्त्री प्रेम में स्वाद पा रही लगती है। स्त्री पुरुष के बीच के आकर्षण को विद्यमान की ओर से प्राण मानव-जन्तु की मैं सबसे बड़ी सम्पदा मानता है। मानव जाति ही क्यों बहिँ ? सच-राबर जगत में उस आकर्षण-कवित की ही महत्ता है। उस क्षण का हम चाहें तो बधिर सक्ते हैं, सवेद बाल सक्ते हैं, और चाहें तो उसी में से शब्द शोधय और शोभाय का निर्माण कर सकते हैं। मुझे नहीं लगता कि हम अपने सब ज्ञान-विज्ञान और विद्या-वृद्धि बिके के रहने उस क्षण का अनुभव कर पा रहे हैं। उसके साथ न्याय नहीं हो पा रहा है, उसका महा-अपमान ही हमसे हो रहा है। जिस भाविक बन्धु की हमने अपने चारों ओर रचना कर ली है वह स्वार्थ की निष्ठा में से उपजा है। निष्ठा में एक दूसरे का उपयोग है, उपयोग है, परस्पर की पूँजि और उन्नति नहीं है। इस मर-मरारी के परस्पर आकर्षण की ही पक्षी हिरण है जिसकी शक्तिपूर्ति हममें प्रकृति और प्रकृति के भागीदार के रूप में होती है। रोमन का बही पहना और अतिव्यर्थ आनन्द है। उभरे विहीन और विरल करने के स्वार्थ का बाध है हमने स्त्री-पुरुष की मान्यति पर माया के उभ

रुह का दिया है। जिस पर हम गर्व रखते हैं कि भावना से ऊपर उठकर हम वैज्ञानिक बनये हैं। दोनों की शारीर-रिक्तता को प्रकृत रूप में स्वीकार और अंगीकार का हमने एक दावा और प्रेम ही रच डाला है। ऐसे मनसाद तक जाने ही हम कृत हस्तता मानते हैं। यदि वा यह निरा औपचार्य है और चिन्मयता की संज्ञा में यह निरा संवेदनिक है। मैं समझता हूँ कि प्रेम आकर्षण का आधार निरर हमने भी अपनी शारीरकता और मानविकता का निर्माण किया है तो यह मानवीय सम्पदा के विनाम का निर्वर्णक ही है। उस सम्पदा और सम्पत्ति के विनाम की विनाम यही हो सकती है कि परिवार दुःख और प्रेम विरहसमीप ही है। प्रेम की इस निरन्तर विरहस-

स्त्री-पुरुष के मध्य (इस) शुद्ध प्रेम के संचरण की साधना क्षमता सिद्धि अक्षयप्राम्य जैसी लगती है। इसीलिए शुद्ध प्रेम के विपत्तानी-जन्तों ने अक्षय्य की कल्पना को परस्पर असम्भवता की सीमा तक खींच डाला। इसको मैं अपना ही मानता हूँ। एक दूसरे से बचकर किसी की मुक्ति नहीं है। वह बचना सम्भव भी नहीं है। बेंसी कोडिज इसलिये एक प्रकार की हठवादिता है। पुरुष पीछे के घम पर सभी अपने अधुरूप में मुक्ति नहीं पा सकता, न स्त्री अपने स्वीकृत में रम-बंध कर पुरुष को अपने लिए अनावश्यक बना सकती है।

शौचता के आधार पर परिवार अपने से न्यून स्वार्थ अपना बन्दूत न रह जायेगा, वरुँ उसका विस्तार निरन्तर विरहबन्धु की ओर होगा जायेगा। मैं मानता हूँ कि प्रेम के बन्धन काम को भौतिक मान लेने के कारण परिवार की उत्पत्ति स्वार्थ-सम्पत्तिमूलक बनी है और प्रकृत सामाजिकता के विनाम में अपने अज्ञानका का रूप ले लिया है। यदि प्रेम की भौतिकता को हम पहचान सके तो विवाह और परिवार की कृ-बन्धना और पदावृत्ति दृष्ट आयेगी और स्त्री-पुरुष के बीच जाता बर्तनाओं के कारण

को उन्मूलन का पृथकी दिखती है, वह भी अनाश्रय हो जायेगी। मुझे लगता है कि विकारों और बर्तनाओं का सीधा सम्बन्ध हमारी लक्ष्यसम्पदा की विपत्तता से है। और फिर उगता सम्बन्ध उस मात्र सस्था और व्यवस्था से हो जाता है जिसकी धार-लेकर वाग्यी मोट के अन्तर्गत जबरन परबेजिग पावर जा बैठती है। धारण प्रार के हल के लिए प्रेम मयुदे डाले की हो उसकी समाय कौल-युक्त के समेति फिर से प्रवि-पड़ान करके एकदम नया रूप देना होगा।

× × ×

प्रेम (जैसा पढ़ते कहा) विधोय और विरह में भी समान की सुधि कर लेता है। वह वस्तु और व्यक्ति-निर्भर न होने के कारण समस्या उत्पन्न नहीं करता है। बल्कि माना कामनिवो और ईर्ष्याओं के निमित्त से जो दुर्घटनाएँ हुआ करती हैं

उन सबका उपचार इस निर्विषयिग प्रेम में से सोचा और पाया जा सकता है। काम का समापन सबसे उपजा है। कामना में वस्तु अपना भक्ति को हृदय हृदयत करके हम अपनी अविहार में रम लेना चाहते हैं। काम इस प्रकार की मशीनता से मुक्त नहीं है। उनमें स्वनिर्मित होती ही है। प्रेम द्वारा उस काम की मशीनता में उदात्तता का प्रवेश होगा है। काम नहीं निरिद्ध नहीं होता है बल्कि उर्वर होना है। वह ही ध्यान में रचना चाहिए कि काम के क्षण से प्रेम सुखमयी बन

[दोन पृष्ठ कर १८]

स्त्री की माँग : आधुनिक दृष्टिकोण

स्त्री की फटिनाई

स्त्री को बोट का अधिभार है जो समता का प्रतीक है, लेकिन ओ स्त्री काधिक दृष्टि से पुरुष पर निर्भर है उसे बोट समता नहीं दिना सरता। ज्योड़ी उसे स्वतंत्र जीविता प्राप्त हो पाती है उसका दुनिया के साथ सीधा सम्बन्ध स्थापित हो जाता है और बोध में पुरुष की अक्षरत नहीं रह जाती।

लेकिन बोट और जीविता को मिलाकर भी स्त्री के लिए दुनिया दुनियाद से नहीं बदलेगी। दुनिया फिर भी पुरुषों की ही रहेगी, क्योंकि घर की सारी जिम्मेदारियाँ स्त्री के ही गम्भे रहेंगी, और उनमें पुरुष का सहयोग नहीं मिलेगा। स्वतंत्र बोट और स्वतंत्र जीविता होने पर भी उसका शोषण होता रहेगा। संमित नमाई के शोषण से बचने के लिए स्त्री को एक विशेषाधिकार प्राप्त समुदाय (मिनि-सेक्ट बास्ट) में शरीक होना पड़ता है, और उसका मुख्य है शरीर का समर्पण। समाज की रचना ऐसी है कि स्त्री होने हुए सुखी जीवन दिना के लिए उसे पुरुष को खुद करना ही पड़ता है। स्त्री को जीवन का सम्भं चाहिए जो उसे गरी मिलता। आज समाज में स्त्रीत्व की जो गरवता है उसे वह छोड़े कैसे? स्त्रीत्व के साथ लैंगिक मूल्य (सेक्सुअल वैल्यूज) जुड़े हुए हैं जो पुरुषों के समाज में जगते हैं। स्त्री को अपने हर काम में—पढ़ाई में भी—पुरुष का ध्यान रखना पड़ता है। पुरुष का ध्यान रखनेवाली कोई-न-कोई स्त्री मिल ही जाती है, लेकिन स्त्री को अपना और पुरुष का दोनों का ध्यान रखना पड़ता है। शूगरा स्त्री के व्यक्तित्व का अंग माना जाता है, पुरुष के लिए वह आवश्यक नहीं। शूगरा ने दोहरा सतीय है—अपना और पुरुष का। आज की स्त्री एक साथ पुरुष और स्त्री दोनों की तरह रहना चाहती है, और इस कोशिश में अपने लिए दोहरी पराजय पैदा कर लेती है। पुरुषों की स्त्री को

अधीनता चाहिए उसकी जोड़बता नहीं। अगर पुरुष 'गुलाम' स्त्री के लिए जितना प्रेम दिखाता है उतना ही 'समाज' स्त्री के लिए भी दिखावे से तो स्त्री की अनेक समस्याएँ ही हल हो जायँ। परम्परा ने स्त्री की अधीनता सिखायी है, आधुनिकता उसे स्वतंत्रता सिखा रही है। रिजनी अधीनता, जितनी स्वतंत्रता स्त्री इसी उधेन-दुन में पड़ो रही है।

स्त्री का एक दुःख ऐसा है जो उसकी स्वतंत्रता में बहुत अधिक बाधक है—मान्यत्व। आधुनिक साधनों से मान्यत्व आसानी से प्राप्त हो सकता है, किन्तु असीमित और स्वीकृति दोनों के अन्तर्गत का निर्णय पुरुष करता है, स्त्री नहीं।

स्त्री को स्वतंत्रता के विशुद्ध समाज का सम्पूर्ण वातावरण है। समाज को उसको योग्यता में शरीक नहीं होता। इस प्रभाव में वह अपना आत्म-विश्वास खो बैठती है। इसलिए वह पुरुष का सरक्षण प्राप्त करने के लिए विवश हो जाती है।

सुक्ति का दिग्ग

बाबदूद इन सीमाओं के स्त्री के लिए रास्ते सुनते जा रहे हैं। वह समझती जा रही है कि यह विद्वाने अधीन है; अधीन मना दी गयी है। यह प्रतीति सुनिव की दिगा से बहुत बड़ा बदम है। वास्तव में सुव स्त्री के उदय की परिस्थिति बन रही है।

अब हमें स्त्री को उसके शरीर के लिए नहीं, उसके व्यक्तित्व के लिए स्वीकार करना सीखना पड़ेगा। वरि लोग कहते यह सम्भव नहीं है। लेकिन यह भी सही है कि पुरुष ने स्त्री से सन्तुष्ट है, और न स्त्री पुरुष से। इस अतरोप का कारण पुरुष या स्त्री की शरीर-रचना में नहीं है। इसका कारण है पुरुष का अकार, और स्त्री को अधीनता। पुरुष समता को स्वीकार नहीं करता इसलिए स्त्री आक्रामक बन जाती है। वह पुरुष बनना

चाहती है। वह दुनिया को अपनी सकलता का प्रमाण देना चाहती है, और इसमें वह पुरुष का समर्थन भी प्राप्त करना चाहती है—फिर अथवा शरीर देकर। वह भागना पुराना जादू भी रखना चाहती है और नये अधिभार भी प्राप्त करना चाहती है।

पुरुष और स्त्री का झगड़ा चलता रहेगा जब तक दोनों एक दूसरे को समानता के स्तर पर स्वीकार नहीं करेंगे। यह होगा नहीं जब तक पारम्परिक नर्च में स्त्री के स्त्रीत्व को जगाने रखने की कोशिश होगी। आज तो स्थिति ऐसी है कि पुरुष ने स्त्री को और स्त्री ने पुरुष को जितार बना रखा है। दोनों अपने दुःखों के लिए दूसरे की दोषी रहना रहे हैं। अगर पुरुष स्त्री को सुव हो जाने से तो वह स्वयं जीवन की बहुत-सी मानसिक और दूसरी सुविधों से सुव हो जाय। घर और सड़क के प्रलोभनों में फँसकर उसका स्त्रोत्व कायम रखने की कोशिश न की जाय। पुरुष की ओर से यह बड़ा जाना कि स्त्री अधीन रहना ही चाहती है अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है।

वर्दी लोग कहते हैं कि पुरुष और स्त्री की अवमालना में ही समानता है। नया ऐसा है? ऐसा बहकर पुरुष अपनी प्रभुता और स्त्री अपनी बायराता को धिमाना चाहती है। पुरुष ने स्त्री को बहुत महिना पायी है। इससे वह पोखें में पड़ जाती है। वास्तविकता यह है कि पुरुष के लिए स्त्री 'खेल' है, जब कि स्त्री ने पुरुष को अपने जीवन का शीघ्र माना है। इसलिए दोनों ने इमानदारी के साथ सेन-सेन नहीं हो सका है। पुरुष ने जिसे पैस बढ़ा है उसमें भी स्थापित की भावना बहुत रही है।

लेकिन आज भी स्थिति के लिए किसी को दोषी ठहराने से बरा लाभ होगा? सदियो-नादियो में पुरुष अति-पुरुष बन गया है, और स्त्री अति-भो बन गयी है। इसमें यदि किसी का दोष है तो उस सम्पूर्ण परिस्थिति का जितमें व्यथित बना-दिगा है।

नारी का मुक्ति-आन्दोलन

—सुधी शैलजा जाधवायें

[सुधी शैलजाजी से नारी के मुक्ति-आन्दोलन सम्बन्धी कुछ प्रश्न पूछे गये थे, जिनका विस्तृत उत्तर निम्न प्रकार है। आप गांधी विद्या संस्थान, चाराणसी में शोध-कार्य करती हैं। सं०]

प्रश्न : पवित्रय में मुक्ति चाहनेवाली नारी जिन बन्धनों से मुक्त होना चाहती है ?

उत्तर : गन एतः सति के अन्तर् नारी-मुक्ति आन्दोलन के समर्थन में तीन विचारों का प्रतिपादन हुआ है जिन्होंने इंग्लैण्ड और अमेरिका में सतबन्ती भन्ना की है। जर्मन शीकर की "पर रिच्येन सुनेर" और हवा फ्रिय की "पैरीयलन एडिटोरल" ने इन आन्दोलन से सम्बन्धित बहूना-की उल्लेखपूर्ण वा विनिर्णय किया है और सुभाष भी लिखे हैं। तीसरी पुस्तक 'वैकमुजत पालिटिक्स' बेटी मिनेट द्वारा लिखी गयी है। मिनेट इस पुस्तक के प्रकाशन के बाद से इन आन्दोलन की माओ रहे हुए मानी जाती है। सिपन दो विषयों की 'री छेनेण्ड सेण' के अर्थ में यह पुस्तक लिखी गयी है। सिपन ने ओरलों के ही रहे शीरल का बहुत ही शुद्ध विवेचन किया है। वह कहती है कि इतिहास के विकास के हरेक चरण में शोषण होता आया है। अर्थात् यह शोषण इतना पूर्ण रहा कि स्त्री का स्वयं-व्यक्तित्व ही समाप्त हो गया और मात्र पुत्र की मजदूरी बड़ी औरत है, बड़ी उपाय अपनी रूप हो गया है। एक पीढ़ी (मैकिन्टो) के रूप

में 'सेकेण्ड सेण' ने ऐतिहासिक मुजमेंट (नारी-आन्दोलन) को बहुत बल दिया है। लेकिन उनमें बन्धुरक (ऑर्गेनैटिव) और क्रमिक विवेचन का अभाव है।

बेटी मिनेट के 'सेरमुजत पालिटिक्स' ने इन आन्दोलन को सैद्धांतिक आधार देने की चेष्टा की है, भले ही इनमें उनकी बहुत सफलता नहीं मिली हो। उन्होंने इन आन्दोलन की ऐतिहासिक परिवेश में विवेचन किया है और इतिहास की तीन सन्धियों (सेवजल) की व्याख्या प्रस्तुत की है। उनका कहना है कि सभाज की सभी बुनियादी समस्याएँ पुत्र द्वारा नारी के शोषण करने के माध्यम हैं। बेटी मिनेट का कहना है कि सभी समस्याओं के मूल में वीरु सत्तात्मक संघर्ष है। इस संघर्ष में शीरल मात्र शोष (सेवज) का प्रतीक हो गयी है। बेटी मिनेट औरत की बीमज और दर्जी (स्टेटस) का पुनर्मुत्पादन चाहती है, अर्थात् उसका कहना है कि लिंग (सेवज) के आधार पर जो दर्जा और बीमज परिभाषित है उसका त्याग हो।

यहो चरण में नारी-मुक्ति आन्दोलन का प्णान प्रतापिपार, यमान वेतन,

मातर्न ने कहा है - "मानकों का शोषा, रचनाविष, अतिबाधें सम्बन्ध बड़ी है जो पुत्र और स्त्री के बीच प्रकट होता है। उसी सम्बन्ध से पता चलता है कि मानव का आचरण दिग्गत मानवीय हुआ है।" एते और पुत्र में भेद है, लेकिन उन भेदों में ही उनकी आरम्भिक पारस्परिकता की कुंजी है।

(सिपन द विवो की 'री सेकेण्ड सेण' के आधार पर।)

नौदरी में समुचित स्थान हरगिरे तक ही शोभित था। दूसरे चरण में इन सबसे आगे उभरे कुछ बुनियादी परिवर्तन की माँग की है। शीरली की आर्थिक स्वतन्त्रता और बन्धों की सामूहिक देवदान का व्यवस्थापिकात्मक, परिवार की बुनियाद और आर्थिक आधार को बमजोर कर देना।

इस प्रकार कटी मिनेट समाज में 'शोष-क्रान्ति' की आवश्यकता महसूस करती है। विवाह का स्थान ऐतिहासिक रूप (वाण्टेरी अंगोमिएणल) ही जिनके नीतिज्ञान के रोहरे मायण्ड का अन्त ही जाय। बेटी मिनेट कहती हैं कि 'शोष इज स्टेटस कंट्रोलिंग रिड पॉलिटाकन इण्डी-केणन', अर्थात् कटी मिनेट ने समुच्च जर्मि के यहाँ एंग्लिश (बनस हिस्ट्री) को ईनिहास का चौकमिद्धान (संघ विपरीत जन्म हिस्ट्री) कहा है। उनका कहना है कि ओ मो के शोषण से अधिकतर मरानि का जन्म हुआ है और औरतों का शोषण ही मूल में है और तब तरह के अर्थात् शोषण के। यह कहती हैं कि पुत्रों द्वारा औरतों के शोषण के अन्त से ही सब तरह के शोषण का अन्त होगा। इस तरह मिनेट का कहना है कि जिस तरह जातियों के बीच का संघर्ष राजनैतिक है उन्हीं तरह औरत और मर्द के बीच के संघर्ष का आधार राजनैतिक है।

अर्थात् मेरे कहने का तात्पर्य है कि पवित्रय में बहूना से मुक्ति चाहनेवाली नारी कुछ ही समाज बात, बन्धों की देव-भाव के लिए 'डे केयर मेंटें' की स्थापना; बन्धों की समाज के लिए 'हुल्डेर देव' की बढोती, महिलाओं के जाने पर के नामों के लिए वेतन या 'लिंग' और 'मिनेट' के भेद का अन्त दस्तावेज से समुच्च हीनी लेकिन यह कुछ अप्रारम्भिक परिवर्तन भी चाहती है। परन्तु इन परिवर्तन का क्या फल हो, इनमें वह कुछ स्पष्ट नहीं लगती। शैलजाजी बेटी मिनेट, जर्मन शीरल अपने विचारों में मार्क्सवादी सोचती हैं। एकी की बुनियाद के लिए ईवीसारी धन्यता की स्वरूप

करना है—यह वे स्पष्ट नहीं करती।
 श्राव : कुछ बंधन ऐसे हैं जो प्रकृति-
 प्रवृत्त हैं उनके बारे में नहीं की नारी का
 माननी है ?

उत्तर : हमारे समाज ने औरतों की
 कुछ श्रमिकादी शारीरिक हीनता मान ली
 है। और इन तरह हमने औरतों की
 सामाजिक जीवन को निश्चित कर दिया
 है। इसलिए 'विमो निवर्तन' नामों का
 नारा है कि भिन्न होते हुए भी वे समान हैं।
 विविध वे यह नहीं माननी कि आर्य के
 जो मूल्य माने जाते हैं उनके पीछे केवल
 शरीर-रचना का फर्क ही है। आज का
 मूल्य तो पुण्य-भास्विन समाज का दिया हुआ
 है और शर्म और शो को हीन मान लिया
 गया है। जो काम पुरुष करते हैं वे तो
 औरतोंवाले होते हैं। प्रायः के शरीर-श्रीरोधी
 सिद्धान्त ने शरीर (बाह्यजन्म) के नाम
 पर औरतों का बहुत शोषण किया है।

बेटी मिले और शीघ्र दाम्पत्य
 कुछ और आगे बढ़ती है और बहती है कि
 नारी पुरुष से किसी प्रकार भी हीन सबका
 जिन न होकर विनयुक्त बराबर है।
 'औरतों में शर्म बन्ने की क्षमता प्रकृत
 होती है और यह प्रायः न होने पर उनमें
 बिहिन आती है' कहकर औरतों का जिन
 तरह शोषण हुआ है उसके विरोध में वे
 हैं। उनका बहना है कि दूरदारी प्रकृत
 के काम पर नहीं औरतों नारी के साथ
 ऐसी और मैनिंग-मैजा के काम बरती है
 और बच्चों को प्रकृत के सिद्धांत में छोड़
 देती है, उनमें किसी भी प्रकार की
 अग्रगण्य नहीं दी जाती।

एक प्रकार जना मानता है कि जिन
 के आधार पर जो जीवन और दर्जा का
 संबंध हुआ है वह तब ही।

श्राव : भारतीय सामूहिक परिवर्तन
 में आज स्त्री-पुरुष का क्या सम्बन्ध
 होगा चाहिए ? क्या सामाजिक परिवर्तन
 की दृष्टि से नये संस्थाओं को सम्मानना
 है या भारत में आने केवल कुछ नया
 अर्थ संघ बनना होगा ? यह दर्शन
 क्या ही सच है ?

उत्तर : भारतीय नारी विवाह के

विकल्प की खोज में है चाहे वह पश्चिम-
 की ही या हिन्दुत्वान की। यह ठीक
 है कि हिन्दुत्वान में बहुत ही आदा सम्म
 है। पर्याप्त बाहर से आधुनिक दोषदेवानी
 नारी अन्तर में अल्पक परम्परागत होती
 है। वह केवल दर्जा की ऊँचा उठानेवाले
 प्रतीक भर के लिए पोसाक में आधुनिक
 बन जाती है। वह पुरुषा शोचनी है।
 उद्यम नये सम्बन्धों, जिनका परम्परागत
 आधार नहीं है, की जीने का वैदिक बल
 नहीं है। विवाह पर ऐसी व्यवस्था है
 जिसमें एक लड़की को अपने घर से उखलकर
 दूसरे घर में आना पड़ता है। जना
 सामाजिक परिवर्तन बदल जाता है।
 इसलिए एक सम्बन्ध में बराबरी का दर्जा
 बंधों प्राप्त नहीं हो सच है। विवाह
 के आदि आधार खल हो रहे हैं, लेकिन
 इसके पीछे का शोषण समाप्त नहीं हो
 रहा है। बीई को सम्बन्धों और अपने
 पुरुषों वर्तमान संस्था का जो स्वीकार
 नहीं कर सकती। त्रिध सम्बन्ध में जीवन
 अपने को मनुष्य नहीं, मान औरत
 समझने को मजबूर होती है, जिन समाज
 में इनके दूसरे दर्जे का नालिका बना
 दिया गया है, और त्रिध सम्बन्ध में उद्यम
 सम्पूर्ण समाज हो जाता है, उन सम्बन्ध
 के विरुद्ध उनको लोभने में कोई बँगा
 भी शाला अभावमें, में जना पूर्ण सम्बन्ध
 बनती।

श्राव यह है कि दगा विचार क्या
 हो ? पुरुष-श्री का सम्बन्ध क्या हो ?
 मेरे विचार से नारी सम्बन्ध वह
 होगा जिसमें पुरुष-श्री नामों की तरह
 रहने, सम्बन्ध में पुरुष-श्री को स्नेह
 देने। एक तरह का सम्बन्ध मान्य होगा
 है। वह या तो दूत बना है या नारी को
 पति-श्री में परिवर्तन हो जाता है। एक
 तरह के सम्बन्ध को संघे रहकर काम
 बनना पड़ता है। स्त्री प्रकार के सम्बन्ध
 में मान औरत अती साम-सम्मान,
 जना स्वीकार काम रस गतनी है।
 लेकिन औरतों में पुरुषा की भूत दर्जा
 तोड़ है कि एक तरह के सम्बन्ध को
 विनाश बहुत दुर्लभ हो जाता है। जब

तक वधि में परिवर्तन नहीं होगा अर्थात्
 जब तक सामाजिक सुरक्षा नहीं प्राप्त
 होगी, इस तरह का सम्बन्ध समाज में
 मान्य नहीं होगा। जब तक स्त्री पुरुष के
 माध्यम से जीती है, अपने को वह कभी
 पूर्ण महसूस नहीं करेगी। अतः एक पुरुष-
 प्रधान समाज को छोड़ना होगा, पर
 समाज भी लगेगा ही।

पुत्री तो लगता है कि संघे नारी
 सब जगह एक-सी है। उसी परंपराएँ
 एक-सी हैं। वह जहाँ भी हो सम्बन्ध-मुक्ति
 पाती है; सम्बन्ध के एक अर्थ है,
 बिना ही माध्यम अर्थ है पर स्वतन्त्रता
 और हमलता की भूत एक ही है।
 भारतीय सामाजिक परिवर्तन इसके
 विरुद्ध अर्थ नहीं दे। यह भी वैदिक-
 सत्तात्मक समाज है और मूलतः परंपराएँ
 एक-सी ही हैं। ●

(कुछ २२२ का संघ)
 जाना है। प्रथम निष्काम और निरभेद
 हा जायेगा अतः उद्ये अन्तर्गत संघ से ही
 कोहने और अन्तर्गत स्थािति से लोक सेवा।
 मनुष्य को लोचकत को प्रेम ईश्वर की
 और उद्येता है वह निराम होना ही
 कि न होगा ही, अन्तर्गत निरंतर और
 निरभेद अन्तर्गत ही जाता है। प्रेम धार्मिक
 संघेद और सम्बन्ध नहीं होगा जिसमें
 परंपरा का स्वीकार और अन्तर्गत होगा
 जो उन अर्थ में जो स्वीकारता से
 दूरे का सम्बन्ध न होगा। एक परंपरा
 और अन्तर्गतता में मान काम की
 सिद्धांतों की रूप में तो भी अन्तर्गत
 नहीं होगी। ●

श्री गायकण्ठ अमेरिका में
 अमेरिका में एक शक्ति बहिरी के
 निष्काम पर शक्ति शक्ति से न के नहीं
 की गायकण्ठ को साह की अमेरिका-
 शासक पर आ रहे हैं। वही २१ परंपरी
 से २० अर्थ पर के अन्तर्गत शक्ति
 में स्थिति शक्ति पर अन्तर्गत शक्ति,
 अन्तर्गत शक्ति शक्ति पर अन्तर्गत शक्ति और
 शक्ति के अन्तर्गत शक्ति शक्ति से
 नहीं बनें। ●

राष्ट्र-संघ में नये महासचिव

नये साल के छान सत्रुत राष्ट्र-संघ में भी बड़ा परिवर्तन हुआ। पुराने महा-सचिव यूनाइटेड की जगह नये महासचिव डा० कुन्-बा-ह्वान्ग ने बर्मा का उत्तर-राजिबत ग्रहण किया। दुनिया में यह सबसे ज्यादा वेतनवाला और भारपर्क स्थान है—बाइस हजार डालर सालाना, या लगभग साठे अठ्ठीस हजार रुपये मासिक, जो सब दैत्यों से मुक्त है। महा-सचिव डाग हैमरलोन्ड की एक विमान-दुर्घटना में १९६१ में मृत्यु होने के बाद से यी यूनाइटेड एच एच को मुक्तोचित कर रहे थे। श्री यूनाइटेड बर्मावासी हैं और बोद्ध-मत के अनुयायी हैं। उन्होंने बड़े सौम्यता और सीधेप के अपने बर्तन्य का पालन किया। लेकिन राष्ट्र-संघ अगर प्रभाव-शाली नहीं बन सके और मन विमम्बर के भारत-पाक-संघर्ष को रोक नहीं सके (जिसकी क्षाम एव मार्च-अप्रैल से मुलम रही थी) तो इनके लिए यूनाइटेड नहीं, बल्कि राष्ट्र-संघ का संगठन और उनकी विभिन्न कार्य-शाला की सी-टहवाये शायी।

सत्रुत राष्ट्र-संघ की अनेक मुसीबतों में से एक है उसका बर्तदार होना। उसे संयन्-राष्ट्रों से १,७६७ लाख डालर विलता है जो वे दे नहीं रहे हैं। इनकी ४०० लाख डॉलर की चालू पूंजी खत्म हो चुकी है और यूनाइटेड के शब्दों में "एक घान के घाटे और टाल-अटोन के कारण राष्ट्र-संघ की सुन्दर दिखी तरह खब रही है।"

सत्रुत राष्ट्र-संघ के ११७ सदस्य हैं जो एचएच, और खरिबिहार प्रांत राष्ट्र हैं। उनकी अलग-अलग शासन-पद्धतियाँ हैं, अलग भाषाएँ और नगर हैं। फिर हर एक के अलग-अलग नरते हैं और अपने महान्य या सम्मान का खत हैं। इनके बड़े कुनरे को एक सूत्र में बाँट रखना कोई आसान काम नहीं है। यूनाइटेड

को भेज देना होगा कि सिधेरे एव घान में जो एक से-एक बरहर सरट आये, उनके कारण यह कुनया हूँ नहीं गया बल्कि बना रहा। अब नये महासचिव का काम है कि एम समय को परिश्रामों और प्राणवात रूप दें। उन्होंने कहा भी है कि दूरी बमबोर न समझा जाय और अपने दाखिरा में मैं लूब जलता हूँ। विश निष्ठा और टम्पयता से डा० बा-ह्वान्ग अपने काम पर लगे हैं उस पर हूब उनका अभिवादन करने हैं और उनकी सफलता की कामना करते हैं।

बंगला देश और ब्रिटेन

सिधेरे बारह-लेरहू महीनों में और बिलोकर एम घान-आठ हाने में इतिहास बिलनी देखी से थोडा है, उसकी बल्लर भी नहीं की जा सनी थी। सत्रुतपूर्व घन्ताओं का—पाकिस्तानी जहाजों द्वारा भारत की पश्चिमी सरहद पर अनेक हवाई बहूँ पर मोलबारी, भारत का बरारा जवाब, भारत सरकार द्वारा बगना देश की मान्यता देना, बगना देश में समाधान टक्कर और मोचिबन्दी, सत्रुत राष्ट्र मुलाका बरिपर में रूप द्वारा पीटो का सीन बर उपयोग, अमेरिकी बहानी ब्रेहे का बगान की साड़ी के लिए खब वदना, पाकिस्तानी सेना का बाया में हथियार उलता और लगभग नन्वे हज़ार सैबिरे द्वारा भारत सम्पर्ण, पश्चिमी घेन में भारत सरकार का मुद्ध-बन्दी हौलान, पाकिस्तान का उसे स्वीकार करना, अरबन ब्रिटिश छाँ का पाकिस्तान के राष्ट्रपति और मजिरी मी नाजक के पद से हटना, उनकी जगह पैरिस्टर मुट्टो द्वारा भाग-ग्रहण, सेल मुडीर की रिहाई उनका बाया पडुँवर बगना देश का प्रधानमंत्री एर स्वीकार करना, बगना देश की विभिन्न राष्ट्रों से मान्यता

मिलना, सादि की एँसा अतोका ताँगा लगा कि सर्भा हैरान रह गये। इतिहास तो रोज बना ही करता है, लेकिन यह इतिहास ऐसे आनदार ढंग से बना कि मूगिल भी बदन गया। इसका थैम जहाँ एक तरफ़ सेल मुडीरुँरुलत के तप और सफल की ओर उनकी मुसिबाहिनी को दुखा और मुचनी की है, वहाँ दूसरी तरफ़ भारत की सेना के जवानों और अफसरों की बहादुरी और रण-मुगलता की है और साथ ही भारत की यशस्वी प्रधानमंत्री मोमयी इन्दिरा गांधी के और निष्ठापूर्ण विवेकपूर्ण नेतृत्व की है।

यद्ये कारण है कि जिम ब्रिटेन की सरकार ने १९४७ में भारत-भूमि के दो टुकड़े कर पाकिस्तान बनाया था, उसी ब्रिटेन के विश्व मंत्री ने सुझाव, ४ फरवरी १९७२ को ब्रिटिश पार्लियामेंट में हौलान कर बगना देश की मान्यता प्रदान कर दी और "पूर्वी पाकिस्तान" की समायित के अध्याप पर मुहर लगा दी।

भारत देश के बँटवारे वा दु हर नाटक ब्रिटिश सरकार की तरफ से समलन किया था तत्कालीन वायसरॉय लार्ड माउन्टबैटन ने। सोमय से वे अभी जीवित हैं। (एक नाटक के अन्य चार पात्र—दो भारतवासी, पठित जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभ भाई पटेल, दो पाकिस्तानी, कायद नाजम मुहम्मद अली जिन्ना और नवाब-जाना गियासुन अली खाँ, परबोक गिषार चुके हैं।) उन्होंने गव १० जनवरी को सन्दन में कहा कि हुकुमद के स्थानान्तरण का काम मुने मुट्टे किया गया था। मैंने बहुत बाहा कि हिन्दुस्तान एक बना रहे और उसे सारे अधिवासर दे दूँ। लेकिन मुसलम लोग के मिस्टर किया नहीं माने। तब मेरे पात्र ही हो सके थे—हिन्दुस्तान एक बना रहे और ब्रिटिश हुकुम भी बरकार रहे या हिन्दुस्तान के दो टुकड़े कर दिये जायँ और ब्रिटिश हुकुम हट जाय। बहुत दुःख के साथ मुने हुसरा रास्ता अधिवासर करना पड़ा।

आन्दोलन के समाचार

अधोहर में ग्रामदान अभियान

फिरोज़पुर जिला के अधोहर ब्लाक में एक सप्त दिवसीय ग्रामदान अभियान चलाना गया। अधिव्याप्त प्रारम्भ करने के पूर्व डेड दिनों वा एक शिबिर चलाया गया जिसमें श्री टाकुरदास दग तथा श्रीमती सुमन दग ने भाग लिया।

शिबिर के बाद ४० कार्यकर्ताओं को एक टोलियों में बाँटकर क्षेत्र में काम करने के लिए भेजा गया। दस साहस तथा कुछ भयम लोग समय समय पर बार्दवर्तियों से सम्पर्क स्थापित कर कार्यकर्ताओं वा उत्साह बढ़ाते रहे।

अभियान की अवधि में कुल सात गाँवों के ग्रामदान हुए तथा कई गाँवों में ग्रामकोष की भी स्थापना की गयी। राजा-बानी गाँव के दो विद्यालय श्री रामचन्द्रजी शेर श्री रामनारायणजी ने १ बीघा २६ पन्नाल जमीन बीमर्वा हितों के रूप में दो भूमिहीनों को प्रदान किया।

शाहाबाद में ग्रामस्वराज्य-सभा का गठन

जिला शाहाबाद (जिहारा) प्रखण्ड छाधौरा से श्री विचौर सिंह विखते हैं कि

—मात्रे मालवर्षाटन ने धाने लक्ष्मर कहा कि "एकदा अष्टासीत मुझे हमेशा ही एहा और इत समय वो वह बहुत ही फ्यारा सता रहा है।"

इस प्रकार ब्रिटिश सरकार के प्रति-निधि ने अपने शासन की भूय स्वीकार कर ली। और, इसके पन्नेत्रे रोज बाद ब्रिटिश सरकार ने बंगला देश को मान्यता दे दी। सत पहले ही (२४ जनवरी) को मान्यता दे चुका है : अमेरिका की समत का कोई उदाहरण नहीं क्योंकि उसने जब चीन जैसे प्रजासत्तव को मान्यता देने के

फरवरी १९७२ के प्रथम सप्ताह में वेनाजिया, सट्टदार और बन्धा गाँवों में सर्वसम्मति से ग्रामस्वराज्य-सभा का गठन हुआ।

सुरेना में भूमि का वितरण

मध्य प्रदेश भूदान यज्ञ बोर्ड ने भूमि-वितरण कार्यक्रम के अन्तर्गत १५ जनवरी से ३१ जनवरी '७२ तक विजयपुर तहसील के ३१ गाँवों के १०६२ परिवारों में ६३५० बीघा भूदान-भूमि तथा पक्के पट्टों का वितरण किया।

मानव-अधिकार का संरक्षण

गांधी शान्ति प्रतिष्ठान द्वारा आधो-जिल बो दिवसीय सेमीनार में यह सिकाशिस की गयी है कि मुन्सेको के चार्टर के अनुसार एक ऐसा पैर-नरकारी जन-संगठन बनाया जाय जो एतवार में मानव-अधिकारों के संरक्षण के रूप में काम करे।

बंगला देश के अहिंसक आन्दोलन का अध्ययन

गांधी शान्ति प्रतिष्ठान की अध्यक्षता में शोध परिषद ने तय किया है कि १ से २२ मार्च १९७१ तक जो अहिंसक असहयोग आन्दोलन चला था उसका संविचार अध्ययन किया जाय।

पहले बीस बरस गुंवा दिने (उत्त चीन की विपके तट की उसने तट से प्रखान्त महासागर तथा से जोड़ता पला आया है) तो यगना देव के लिए जिनवा समय नियान दे घोड़ा है।

यमार्ग वेक ने डिटेन की मान्यता का विरोध स्थापन किया है और राष्ट्रसंघन (सामन्वेष्ट) में शामिल होने की भी दृष्टा प्रवृत्त की है। यह दिन भी दूर गयी, जम राते गनुनर राष्ट्र में भी उसे जमीन स्थापन मिलेगा।

—सुरेशराम

रीवाँ में शान्तिदिवस

रीवाँ में ३० जनवरी को विना सर्वोदय मण्डल और गांधी शान्ति प्रतिष्ठान के सहयोगान में बापू निर्वाण दिवस मनाया गया।

गुरुह ताडे ५ बने प्रभाव फेरी तथा दिन के १ बने एक मोन जुलुष का आयो-जन किया गया। जुलुष में ८० नागरिक शामिल थे। जुलुष वाव में चलकर एक सभा के रूप में विभजित हुआ।

भूल-सुधार

'भूदानयज्ञ' के तः २०, १५ फरवरी '७२ में मन्सादरीय वा गोर्ना 'मार्य के पुनः' पडे। भूत के लिए धमा करे। स०

इस अंक में

वा बापू के वरयो पर	३१४
पुण्य और स्त्री: समाज और शाहीरारी	—सन्नादरीय ३१५
स्त्रियो की सर्वोच्चता स्वीकार की जाय	—महात्मा गांधी ३१६
नारी की दासता	—श्रीमती महारेशी वर्मा ३१७
स्त्रियों का मिशन	
शान्ति-रक्षा, शोक-रक्षा—जिनवा	३१८
शोरेसारी	—गुपी कान्तिबाता ३२०
स्त्री पुरय सम्काय में स्त्री की भूमिवा	—श्री दादा समन्धितारी ३२१
शारीरलिता से प्रेम तः	—श्री वैनेत्र कुमार ३२२
स्त्री की माँग आधुनिक दृष्टिकोण	—सिमन द बिबो ३२४
नारी वा मुक्ति-आन्दोलन	—गुपी बीजा आचार्य ३२५
हावरी के पन्ने से—श्री सुरेशराम	३२७
शाघरण गृहिन्य	तीन प्रकाशनकी
श्रीमती भंडारनायक	श्रीलंका
श्रीमती गोन्डा मेयर	६४ (एन)
श्रीमती इन्दिरा गांधी	भारत

बायिक मुक्त : १० प० (सपेद बराम : १२ प०, एक प्रति २५ पैसे), विशेष में २५ प०; वा ३० किलिम वा ४ इन्चर।

क अंक वा मुक्त २० पैसे। श्रीरामदास गट्ट द्वारा तः सेवा संघ के लिये कर्नाटिण एंठे कनेट्ट प्रेष, वादागतो में कृति

वर्ष : १८, संक. २२, सोमवार, २० फरवरी, '७२

सर्व सेवा संघ, पत्रिका विभाग
राजपाट, बारागढ़ जिला
गार. सर्वसेवा • पिन. ५२३११

संपादक
समर्पण



आवाज

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

भद्रान-यज्ञ

भद्रान-यज्ञ अलकामोचनप्रधान, अहिंसक क्रांतिकारि, सत्यशक्ति, साप्ताहिक



गरीबी
हटाओ
- नई कांग्रेस

गरीबी
खत्म कर
कांग्रेस (संगठन)

गरीबी
मिटवाओ
- जन संघ

गरीबी
नष्ट
करो
भा. मा. पा. ०

गरीबी से
छुटकारा
पाओ
भा. मा. पा. ० (भा. ०)

आपने किस पार्टी की
गरीबी मिटाने का
तय किया है?



286

चाहिए लचीला दिमाग

संसार के देश बगला देश को घेरि-घेरि स्वीकारते जा रहे हैं और मान्यता दे रहे हैं। दूसरी ओर पाकिस्तान, उन सभी देशों से अपने राजनीतिक सम्बन्ध तोड़ रहा है जो बगला देश की मान्यता दे रहे हैं। ब्रिटेन और आस्ट्रेलिया की मान्यता ३१ जनवरी को मिली और पाकिस्तान ने राष्ट्रकुल से अपना २४ वर्ष पुराना सम्बन्ध तोड़ लिया। यह सब हो रहा है पर ध्यान देने की बात यह है कि राष्ट्रपति मुट्टे के ठेकर बड़ी समझदारी का आभास दे रहे हैं। सम्बन्ध तोड़ने की शरर्बाई, उस राजनीतिक साधारी का एक हिस्सा है, जो बंगला देश को पाकिस्तान की मान्यता मिलने से पहले करनी पड़ी है। पर मुट्टे साहब के सारे बकलव्य, प्रतिनिधार्थ उन्हें अपने पूर्ववर्ती शासियों से क्यादा कुशल गावित करती हैं। भारत माने की उल्लुखता रिताकर उन्हीने इस महादेश के लिए एक बड़े सम्भावना को जन्म दिया है।

भारत और बंगला देश के राजनीतिक नेता भी अब तक सह-बुद्ध का परिचय दे रहे हैं। एशिया की इस परिस्थिति से निरव राजनीति में दो देशों के चहूरे पर हवाई जड़ रही है—अमेरिका और चीन। निरसन की करामती पीरिय-यात्रा अब फोको-चीकी लग रही है और स्वयं अमेरिकी प्रेशो में उसके बारे में विरासा-जनक रिर्वाणियां आनी हैं। चैते निरसन की पीरिय-यात्रा एक राजनीतिक रोमांस ही है और परस्पर विरोधी राजनीतिक हितों के कारण निरसन, सामो, ताप-साथ चाय खादि पीने से जगना बुद्ध नहीं कर सकते।

मारिच-शक्ति या तोरगोवि का

पुस्तक-बद्ध। सोमवार, २० फरवरी, '७२

अब तक कोई प्रत्यक्ष उराहरण सामने नहीं आया, हमें विदेशीय राजनीति के विद्यत को ध्यान में राना चाहिए। यदि इन्दिरा-मजीव-मुट्टे का कोई विशुद्ध विकसित होता है तो विनोबा का अब स पून म्भावहारिण सिद्ध होगा। यदि लचीले दिमाग से आनेवाली परिस्थितियों पर इन तीनों देशों ने विचारों किया तो, विश्व-राजनीति के सत्ता-सन्तुलन का आधार,

संस्था और शक्ति के बरते सहयोग ही जायेगा। इन तीनों देशों के विषेय और सामान्य सामाजिक और राजनीतिक हित भी आसर्वाजनक रूप से समान हैं।

अतः यहिया सार के मा मुट्टे के पूर्व करतवों के लिए उम्मादित होकर पाकिस्तान की परसंवा छोड़कर हमें सहयोग को सम्माननाएँ पंदा करनी चाहिए।

१५-२-७२

—डुम

श्री जयप्रकाशजी का अवकाश : स्पष्टीकरण

सर्वोच्च नेता श्री जयप्रकाश नारायण ने, विभिन्न सदानारण्यों में प्रकाशित तथा भाषाश्रयाणी से प्रसारित इस भाष्यक सभाका नाम आज यहाँ स्पष्टीकरण दिया कि उन्होंने सार्वजनिक जीवन से अवकाश ग्रहण करने तथा अपने स्वास्थ-मुद्धार हेतु कम-से-कम एक वर्ष तक विश्राम करने का निश्चय किया है।

समाचारपत्रों को दिने गये एक अवतथ्य में जयप्रकाशजी ने यह स्पष्ट किया कि "सार्वजनिक जीवन से अवकाश लेने की मेरी कोई इच्छा अभी नहीं है। दुष्ठा तो नहीं है कि अब मेरे चिरित्तक अनुमति दें कि मैं अपने सामान्य काम-काज में लय जाऊँ।

जयप्रकाशजी ने अपने उस पुराने परिचय का, बिचे उन्होंने सत ११ अक्टूबर '७१ को अपनी जन्मतिथि के अवसर पर सभी मित्रों और सहयोगियों के भेजा था, उल्लेख करते हुए बताया कि मैंने अपनी अगली जन्मतिथि (११ अक्टूबर '७२) से पूरे एक वर्ष तक छुट्टी पर रहने का जो निश्चय किया था, उसका मेरी हान की बसस्थिता से कोई सम्बन्ध नहीं है, और न इस निश्चय के पीछे सार्वजनिक जीवन से सदा के लिए विदा लेने की कोई मशा है। यह जो अपनी अगामी जन्मतिथि से एक वर्ष तक सार्वजनिक कार्यों से अरपामी अवकाश या विश्राम लेने का निश्चय है। इस

अवकाश-काल में मैं किसी सार्वजनिक सभा में, किसी विचार-मण्डली में नहीं जाऊँगा, और न किसी सस्था की औपचारिक अथवा अनौपचारिक बैठकों में भाग लूँगा। अपने वहाँ कि "पूँज किसी सस्था से मैं अभी सम्बन्धित हूँ, उसके सम्बन्ध विच्छेद भी कर लूँगा। हाँ, यदि अन्त प्रेरणा हुई तो इस अवकाश-काल में कुछ निर्याण और उसे प्रकाशित भी करूँगा।

जयप्रकाशजी ने यह आश्वासन दिया कि अब कोई राष्ट्रीय महासचद की स्थिति पंदा होगी, जो मैं अपने उत निगंध को तोड़ने के लिए बाध्य हो सकता हूँ। परन्तु जब मुझे प्रतीत होगा कि महासचद की स्थिति है, तभी ऐसा करूँगा, न कि भारत सरकार द्वारा आपतकालीन स्थिति की घोषणा मात्र पर।

जयप्रकाशजी ने बताया कि मेरा यह अवकाश-काल ११ अक्टूबर '७२ को समाप्त होगा, जब मैं अपने सार्वजनिक काम पर लौट आऊँगा और उत्तरस्था अपने देश एवं विश्व की सेवा में पुनः लग जाऊँगा। परन्तु उन्होंने यह स्पष्ट किया कि "मेरी भावो कार्य-बद्धति वर्तमान पद्धति से मनुष्यः भिन्न होगी, शरीर आज के हय से अनावश्यक कर से लभ और शारीरिक एवं मानसिक शक्ति, दोनों का अल्पप होता है। पटना, १५ फरवरी, '७२ —सन्निवृत्तमन्थ

प्रश्न है लोकतंत्र का

पञ्चायत से लेकर पार्लियामेंट तक के हमारे जो चुनाव होते हैं उनके एक नदी अनेक दीप गिनाने जा सकते हैं। ऐसे लोगों की संख्या बंध नहीं है जो दाने के साथ यह कहते हैं कि अगर चुनाव पूरी तरह छोट होने पर तो वे स्वयं लोकतंत्र को सा चार्देंगे। उनका कहना गलत नहीं है। अगर प्रतिनिधियों की बजाए पर लोकतंत्र की बजाए निर्भर है, तो छोट तरीकों से अच्छे प्रतिनिधि कैसे चुने जा सकते हैं ?

जिस पद्धति में पचीस-तीस प्रतिशत वोटों पर सरकारें बनं चिन्ते, जिसमें वोटों का वोट देने के लिए उनकी संकीर्णताओं को उभाड़ने के बारे में जितने अनुचित तरीकों का इस्तेमाल हो, जो राजनीति को एक व्यवसाय और राजनैतिक गैंगों का एक विशिष्ट समुदाय बना दे, जिसमें चुनाव के बाद भी निष्ठा-निष्ठाओं और संघर्ष के सदस्यों को अनेक प्रकार के प्रलोभनों में डालकर अपने पक्ष में रखने की बौद्धिक बाजार जारी रहे, जिसमें सरकार के लोग प्रशासन को अपने-अपने गैर-सम्बन्धियों और अपने पक्ष के लिए प्रयोग करें, उस पद्धति में लोकतंत्र का संकलन ही आना अनियमित है। भारत का लोकतंत्र फिर भी नया है, और देश की प्रथमा और परम्परा से अधिक प्रतिनिधि के मत पर टिका हुआ है। चुनाव के अत्यन्त ध्वंसाकार भी बदलित करने की क्षमता हमारे लोकतंत्र में नहीं है।

वे लोग न होने फिर भी यह कहना बलित होगा कि लोकतंत्र की जो पद्धति हमने अपनायी है वह हमारे देश के लिए सही है। हमें यह धारणा नहीं होनी चाहिए कि हम पद्धति से राष्ट्र की एकता और जनता की नैतिक शक्ति का विकास होगा। यह भी मानना बलित है कि राजनीति और प्रशासन के मोड़ना उन के देश के विकास की चुनौती का सफलतापूर्वक मुहार्जना किया जा सकता है।

इस पद्धति में पेंडुलम को स्थिर करने की क्षमता नहीं है, इसके समन्वयन नहीं का संकलन। इसमें समान-निर्वहण की सम्भावना नहीं है। इसमें भी ही सरकारों का जनता-विषयता होगा रहेगा, और बिम्बन्त दोनों के नाम में निहित स्थायी का आकाशी तेल-तेल बनना रहेगा। लोक-सम्पत्तियों के नाम में सरकार का क्षय करने की बहना जान, लेकिन बन्धन की पूर्ण नीचे के आधी तक नहीं होगी।

इतना सब होने हुए भी हम इन लोकतंत्र की तानाशाही से बचना समझते हैं। इसके द्वारा व्यवस्थाओं से बड़ा एक गुण है, वह है बालिग मताधिकार। बालिग मताधिकार नागरिक के हाथ में एक कवच है जिससे वह निरतुल्य शासन से अपने अधिकारों की रक्षा करता है। यह ऐसा 'अस्त्र' है जिससे बगना देश को बलितव दिया, जिसके कारण उसे प्रविष्टार की शक्ति मिली, जिसे लेकर वह दुनिया के सामने खड़ा हो सके। बालिग मताधिकार में नागरिक की मान्यता है। इसमें हिंसा से मुक्त जन-बलित सम्भव है। बालिग मताधिकार को कारगर रखते हुए ही लोकतंत्र के 'लोक' को सुदृढ़ और विरहित किया जा सकता है। जिस दिन बालिग मताधिकार से सरकार का जनता-व्यवस्था बन्द हो जायगा उस दिन नागरिक की सत्ता समाप्त हो जायगी, और समाज में निरतुल्य तानाशाही का अंधेरा छा जायगा। इसलिए हम मानते हैं कि मुक्त और निष्ठा मतदान सोवर्जन का प्राण है, और हर स्थिति में उसकी रक्षा होनी चाहिए।

मुक्त और निष्ठा चुनाव के लोकतंत्र को जीवित रखना है। उसे जीवित रखते हुए उसकी शक्ति का विकास करना है। लोकतंत्र के सामने देश की रक्षा और जन-जन की आशाओं की जो बलित चुनौती है उसकी पूर्ण मात्र 'प्रतिनिधि' चुनाव नहीं की जा सकती। उनको पूर्ण जन बालिग नागरिकों की शक्ति से ही हो सकती है जिसके बीट पर सोवर्जन का उभारना सदा है। इसलिए लोकतंत्र की प्रतिनिधि 1% से आगे बढ़ना है। उसे प्रत्यक्ष लोकतंत्र का आधार दुनिया है। लोकतंत्र का बालिग सोवर्जन की क्षमता में है।

लोकतंत्र मात्र लोकतंत्र नहीं है। शक्ति का लोभ नियंत्रण में है। निर्णय नहीं होगा, कौन करता है, यह प्रश्न है। लोक-जीवन की सारी इकाइयों, बिम्बन्त गाँव, नगर, बारखाता और विभाजन पुरुष है, लोकतंत्र की इकाइयों बन सकती हैं। वे स्वयंसे और स्वायत्त ही सकती हैं। वे अपना भीतरी जीवन अपने नियंत्रण में चला सकती हैं, और बालिग मताधिकार का प्रत्यक्ष प्रयोग कर सकती हैं। सरकारों में इनके ही प्रतिनिधि जा सकते हैं। दस ऐसे स्वयंसे सरकारों इकाइयों का महासंघ बन सकता है और सरकार उन्हें जीवितकामी पूरक शक्ति।

ऐसा लोकतंत्र जो लोकतंत्र के आधार पर खड़ा हो विमान की चुनौती का मुहार्जन कर सकता है। उसी के द्वारा अठ में नागरिक की सत्ता भी बालिग रह सकती है। ऐसा ही लोकतंत्र इस बड़े प्रश्न को हल कर सकता है कि 25 करोड़ नागरिकों के महासंघ में हर नागरिक को मुक्त और बालिग कैसे प्राप्त हो सकती है, और वह निर्वहण लोकतंत्र से आधीतर कैसे हो सकता है। इसलिए हमारे सामने प्रश्न मात्र चुनाव का नहीं है, प्रश्न है लोकतंत्र और उसके बालिग का।

अमेरिकी और भारतीय समाज में हिंसा

—डा० विश्वबन्धु चटर्जी

समाज-विनाश के लम्बे इतिहास में हिंसा-मयिनी को बहुत बड़ी भूमिका रही है। महात्मा बुद्ध ने रा। हजार वर्ष पहले अहिंसा-विचार का समाज में प्रसार करके अहिंसा की आशावादी पीढ़ा का बीजारो बोध कराया तो पैदा कर दी किन्तु भी अहिंसा मयिनी के रूप में आत्मप अभिप्रेत न हो पायी। भारत-वर्ष की हजारों वर्षों की एक सांस्कृतिक परम्परा रही है और अहिंसा-मयिनी को देश ने स्वीकार किया है, किन्तु भी समाज-जीवन में वह चरित्रार्थ न हो पायी है। जब कभी भी हिंसा का मार्ग समाज-परिवर्तन के लिए अपनाया गया है तब समाज अक्षय्य आगे बढ़ा है, परन्तु जब समाज-जीवन के आन्तरिक मामलों में हिंसा होने लगती है तब समाज अपनी सभ्यता की ओर लखर होता है। आज दुनिया में हिंसा-अहिंसा का द्वन्द्व जारी है और आधुनिक हिंसा से निकलकर अहिंसक समाज की ओर बढ़ने के लिए छद्मपदा रहा है। पापी विद्या सन्धान, आराधना के प्रो-डा० विश्वबन्धु चटर्जी से हुई मुलाकात में इसी विषय पर विवेचन किया गया है।

प्रश्न : अमेरिकी समाज अपनी सभ्यता और सभ्यता है फिर भी वहाँ हिंसा बड़ रही है जब कि भारत में शरीरों के कारण ऐसा हो रहा है। इसके मनो-वैज्ञानिक कारण क्या हैं ?

उत्तर : ऐसा मैं नहीं मानता कि भारतवर्ष में शरीरों के कारण हिंसा बड़ रही है। हिंसा-के बढ़ने के विभिन्न कारण हैं। इनमें सबसे बड़ा कारण है—सामाजिक परिस्थिति। पहले हम अमेरिका को देखें। अमेरिकी समाज की सोझाई की बात को ही परम्परा है। उसको कोई परम्परागत बुनियाद नहीं प्राप्त हुई जैसे कि भारतवर्ष को प्राप्त है या एशिया के देशों को प्राप्त है। अमेरिकी समाज-

जीवन की माना खोब की, शोध की माना नहीं जा सकता है।

जब हम पहले कुछ मनोवैज्ञानिक तथ्यों को समझ लें तब उस समाज को समझने में आसानी होगी। मनुष्य हो या जानवर इनकी कुछ बुनियादी प्रेरणाएँ होती हैं जैसे आक्रामक (एग्रेसिव), विनयक (डिफ़ेंसिव), प्रतिद्वन्द्वी (कम्पीटीटिव), सहकारी (को-ऑपरेटिव), क्रियात्मक (क्रिएटिव), प्रेम (लव) आदि। इन प्रेरणाओं में जो मानने-पीढ़ने, लक्ष्य करने की प्रेरणाएँ हैं इनको क्रियात्मक दिशा दी जाती है और प्रेम करने, प्यार करने की प्रेरणा को विकसित किया जाता है। यह काम अमेरिका में शुरू ही नहीं हुआ। १७वीं शताब्दी में अमेरिकी समाज विक्रमोन्मुख हुआ और इसके हाथ विज्ञान की ऐसी शक्ति प्राप्त हुई कि यह समाज १९वीं शताब्दी में ही सभ्य हो गया। थोड़े समय से ही आधुनिकता से अधिक उत्पादन होने लगा, और सभ्य की बचत होने लगी। सब में ऐसा न हो सका। उसको अमेरिका से १०० साल ज्यादा लगे। इसका कारण यह था कि अमेरिका में तोय कम थे, उनमें खोज की, शोध की, बुद्धि की; वे अग्रगण्य (प्रायमियर) थे। परन्तु इनके सामने उपसादन बढ़ाने और उपभोग करने के विचारों कोई अन्य लक्ष्य नहीं था। उनके पास जो शक्ति थी, समय था, उनके इस्तेमाल का कोई अक्षर नहीं था। कोई शरीर नहीं ही सेवा किसकी करें, प्यार किसकी करें ? अतः अपनी शक्ति का व्यव विनय में हुआ।

आप देखें कि जिनके पूर्व जीवन में समाज रहा हो उनमें बाद में सभ्य हो जाने पर भी लम्बे-लम्बे जीवन के स्मरण मात्र से भय पैदा होता है। अतः वे सभ्य को यशस्वती से पढ़ते रहते हैं। अमेरिकी

समाज के बारे में वैसा ही हुआ। वे शरीर के जोर से जो समाजों में ही दुनिया में सबसे ज्यादा सभ्य हो गये।

उनके यहाँ अपने शोचों के लक्ष्य इस्तेमाल की विद्या नहीं दी गयी। उनमें सांस्कृतिक भूषणों के प्रति आदर नहीं, श्रद्धा नहीं, जीवन में कोई जेबा आदर्श नहीं, और न ही उनको इस जीवन में इन चीजों की विद्या दी जाती है। अगर उनको विद्या दी जाती हो, प्रोत्साहन दिया जाता हो, तो वह प्रतिद्वन्द्विता का, एक-दूसरे से आगे बढ़ जाने का, होए में विनय प्राप्त करने का। उनके यहाँ कहा जाता है, 'खोपड़ी से ही आगे बढ़ी राष्ट्रपति हो सकते हो'। इसके लिए जो भी करना आवश्यक हो वह सब कुछ किया जा सकता है। इसको सुन नहीं माना जाता। बल्कि कहीं से निकलकर आये तो कहा जाता है, 'पीटकर बासी तो प्यार करणा'। इस प्रकार उनकी संस्कृति आक्रामक है, व्यक्तिवादी है। उनके यहाँ पारिवारिक भावना का कोई अक्षर नहीं है, वैसा कि भारतवर्ष में है। १९-२४ साल के बच्चे की परिवार से अलग होकर स्वावसर्गी जीवन बिताने की विद्या दी जाती है। शिलाया बना है, 'इसरे पर निर्भर न रहे'। इन प्रकार के शिक्षण से उनमें व्यक्तिवादी दृष्टिकोण का प्रथम होता है और समूह-भावना, अनुदान-भावना का विकास नहीं होता, शरीर पीढ़ना ही नहीं पैदा होती। उनका सिद्धांत कि 'अभ्यास का बदला अभ्यास से तो' से उन्होंने एक व्यक्ति को ही समाप्त कर दिया।

जब उनके खेल को ही देला जाय। वे शरीर चलवाने लोचों को ही प्यार पसन्द करते हैं। उनके कोई खेल ऐसे नहीं है जिनमें सात्विय हो, नता हो, मुनिता-मिष्टता हो, शीर्ष्य हो। उनका 'बेसबॉल' इसका उदाहरण है। 'बेसबॉल' उनका प्रिय खेल है। उनके शोचों में भी प्रेम का स्थान नहीं है, बल्कि विनय पाने, चीनी, मालेवाले प्रथम ही अधिक मिलते

हैं। अपने महा प्रेमी या प्रेमिका निराग होने तो वे निराशा के गीत बसन्द करेगे, मायों, मित्रों, परन्तु वे निराशा में एक दूसरे को घुट कर बैठे हैं।

अमेरिकी सभ्यता में औरतों की भूमिका (रोल) को समझना चाहिए। वहाँ नारी में नारित्व से ज्यादा पौरव का स्थान है—उसमें इस बात का अहंकार है कि वह पुरुष से बिछी भी शर्म में कम नहीं है, परन्तु इसके चूरे परिणामी को उसे भूयता पड़ता है। स्त्री की जो कोमलता होती है, मुकुटापणा होती है, उनका उनके जीवन में अभाव रहता है। उनके यहाँ काम (सेम) का प्राधान्य है। स्त्रीवेन और देनभार्क में भी काम (सेम) का प्राधान्य है। परन्तु सबसे ज्यादा अमेरिकी समाज में है। काम (सेम) के मानन्द में जहाँ बापा मानी कि आत्मपण (एवेण) हुआ। सब इस वास्तविकता को नहीं की स्त्री समझने लगी है कि नारी की सुरक्षा उसके नारित्व में है न कि पुरुष के समानांतर सड़ने होने में। इसी में से हिन्दी आन्दोलन का जन्म हुआ है।

आपने देखा कि अमेरिका अतिरिक्त चरमवन्द करता है और उसके कारण यह समाज नहीं पहुँच गया। अब आप दूसरी ओर देखिए भारतवर्ष में—यहाँ कटोर-से-कटोर धम करने के बाद भी सवना नहीं प्राप्त होता जितने से धर्मिक की हृदयवादी भावधारकताओं की भी पूर्ण हो सके, यानी वेद पानने की चीज भी नहीं मिल पाती। फिर भी यहाँ क्या होता है? कम-से-कम में काम करना जेने की, बर्बाद करने की, आदमी कोशित करता है; क्योंकि सहन-मोक्षता की नहीं एक पाठशा रही है। अब सहनमोक्षता को समझा समझ हो पाती है, कोई चीज बर्बाद से बाहर हो जाती है सब कारणों देखा है कि कोई कुमल उपाय नहीं है और वह हिंस्र के पार्श्व को भागना है, अर्थात् एक सहज (हाउसेमिण्ड) हिंस्र को अन्तना है। जैसे किसी को सोचिए, परन्तु जो कम आक्रमण करने पर उपाय होती है? अब

उसको आक्रमण के शिवाय कोई दूसरा उपाय नहीं सोचना। इसका एक ताकत उदाहरण बगला देल का है। बगला देल में २५ मार्च तक शान्तिपथ मार्ग से आन्दोलन करने की कोशिश की गयी, परन्तु अन्त में मजबूर होकर उन्हें हिंस्र के पार्श्व की जानना पड़ा। हमारे यहाँ भी वैसा ही होता है। परिचय बगला का नरसालचार इसी परिस्थिति में से पैदा हुआ है। नरसालचारी नील मजदूर वर्ग के नहीं है बल्कि पड़े-लिछे, हृदयवाने लोग हैं। उन्होंने यह देल लिया कि शिवाय हिंस्र के अन्य कोई मार्ग है नहीं जिससे शरीरों दूर हो तथा एक नया जीवन-मार्ग स्थापित हो। और इसीलिए नरसाल प्रचलित समाज को निन्द्य दग से तोड़ने का ये प्रयास कर रहे हैं।

प्रश्न : क्या बार यह मानते कि अति समृद्धि या अति शरीरों में हिंस्र बर्गी हो अथवा शरीरों और अमीरों की विपयता में हिंस्र का होना अनिवार्य ही है?

उत्तर : अमेरिका का उदाहरण लीजिए—अमेरिका में समृद्धि है परन्तु समानता नहीं है। वहाँ कोई भूता नहीं रहता फिर भी उनके यहाँ सो-गुना विपयता तो है ही। अतः इन विपयता में हिंस्र होगी। लेकिन शरीरों में इससे बचाया हिंस्र होगी। विपयता बिगनी ज्यादा होगी हिंस्र उतनी ही ज्यादा होगी, और अनिवार्य रूप से होगी। कम से सामाजिक हिंस्र कम है, उसके भी कम चीज में है। इसका कारण यह है कि सब और चीज में विपयता कम है। बल्कि कम से २०-२२ गुना विपयता है, पर चीज में तो ४-५ गुना ही है। रूप और चीज में सामाजिक गुस्ता ज्यादा है। सबसे ज्यादा, अगर, नहीं विपयता है तो यह कारणवर्ष में है। यहाँ दो-की-सी-की गुना विपयता है। इन परिस्थिति को सामने रखकर सोचा जाय तो यह स्पष्ट दिखे ही होगा कि शरीरों के बा-प हिंस्र नहीं बढ़ रही है बल्कि बढ़ती विपयता के कारण ऐसा हो रहा है, जो होना अनि-

वार्य है। उसके बचा नहीं जा सकता।

प्रश्न : क्या अमेरिकी समाज में हिंस्र से मुक्त होने का कोई प्रयत्न प्रारम्भ हुआ है? जब कोई शक्ति या समाज हिंस्र से जर्जर हो चुकेगा उसमें शीघ्र अहिंस्रक समाज की ओर अग्रसर होने की कोई सम्भावना तोप रह जाती है?

उत्तर : हाँ, अब वे वास्तविकता को पहचानने लगे हैं। स्वयं स्वयं भू की उनकी जो भावना की वह मिट रही है। अमेरिकी समाज ने अभी यह मानने की श्रुत नहीं की कि वह सङ्घर्ष में आये है। यह विज्ञान में, समृद्धि में आने की आगे मानना रहा है, परन्तु अब इसे भी वह नहीं मानता। अब वहाँ के लोग महारार, प्रेम व शान्ति की बात समझ रहे हैं। दूसरे देश की जानने की जिज्ञासा बढ़ रही है। दूसरी जाति की सेवा करने की भावना पनप रही है। सामाजिक कौनसा बढ़ रही है। लोगों के प्रति अन्धारा को वे अन्धकार मानने लगे हैं। जब भी १९५७ में अमेरिका गया था उस समय कोरिया से वेटरन (युद्ध के शिपाही) लौटे थे। तब कोरिया-युद्ध की कोई अनुभूति नहीं मानना था, बल्कि एक काम भावना यह थी कि चीन व रूस को हार कर देना चाहिए। वे मानने से कि साम्यवाद की दुनिया से सम्मान कर देना उनका अहिंस्रक है, बर्तब्य है। परन्तु १० राज बाव बना हुआ? वे वास्तविकता को समझने लगे। उद्योग वहाँ युद्ध के पक्ष में भेजना रक्षण माना जाता था, लेकिन अब युद्ध के विनाश बलना रक्षण हो गया है। अब रूस से अमेरिका या अमेरिका से रूस में स्थानर आने-जाते हैं। अमेरिका चीन में हांग, कियुनाम में हारा, अभी बगला देल में भी उनकी हार ही हुई। अतः अब उसमें विपय का भाव सामाजिक है।

परन्तु अमेरिकी सरकार के प्रयत्नों को देखें और यहाँ से समझा जाय। सरकार पर बँटागत, जो जनता सीधे प्रतिष्ठान है, बरा प्रभाव है। और बँटागत (सीप पृष्ठ ३३८ पर)

जमीन का सवाल

१. हमारे देश में अधिराज लोगो की जीविका का आधार जमीन है, इस-लिए पहली पंचवर्षीय योजना के समय से ही यह बात बड़ी जाती रही है कि शीतल तणवी खाद, और इस तरह को जमीन निचले उरो भूमिहीन या कम भूमिवालो में बाँटा जाय। लेकिन अभी तक इस विषय में कुछ सात हुआ नहीं। फिर भी कई सुझाव हुए हैं, जैसे विधोक्तियों (स्पष्ट-सीटिफरीज) की समाप्ति, सगान का नियमन और बेरखती की रोक। संतो की उपज बढ़ाने की दृष्टि से भी कई योजनाएँ समय में लायी गयी हैं।

२. सो तो सरकार और प्रत्यक्ष खेती करनेवाले किसान (एकपुल कल्टिवेटर) के बीच विधोक्तियों अर्थोको के पहिले भी थे, लेकिन शुरू के अर्थोका शासको ने विधोक्तियों को हटाकर और सवलि कर दिया। १९वीं और १९वीं शताब्दियों में ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने जो खेज जीते उनमें सगान की बसुली के लिए विधोक्तियों को जल्द पड़ी, क्योंकि उस तबन भूमि का सगान सरकारी भाग का मुख्य स्रोत थी। इस कारण दो मुख्य व्यवस्थाओ का विकास किया गया। एक थी जमींदारी (या जमींदारी)। इसमें जमींदार के साथ सगान के लिए कम्पनी का ठीका हो जाता था। जमींदार खेती करनेवाले किसानों से सगान बसूल करके सरकार को देते थे। कहीं-कहीं जमींदारो के साथ इन्दोबन इथावी का और जहाँ-जहाँ एक निश्चित रकम देनी पड़ती थी, और कुछ क्षेत्रों में वह समय-समय पर बदलती रहती थी। दोनों व्यवस्थाओ में सरकार का सीधा सम्बन्ध 'खेती के किसानों' से न होकर इन 'सगान के निष्ठाओं' (सेन्सु पारसर्ग) से था। जो वास्तविक किसान थे उनके कोई अधिकार स्पष्ट नहीं दिने गये, और वे बालक्य के जमींदारो की दयत बन गये।

इस प्रकार की व्यवस्था मुख्य रूप से

साज के समय, ५० बगाल, बिहार, उ० प्र०, उड़ीसा तथा आन्ध्र प्रदेश और उत्तरप्रान्त के बड़े भाग में की गयी। इसी तरह की व्यवस्था मध्य प्रदेश तथा कुछ भारतीय विधातो जैसे देवरगढ, मध्य भारतीय रिवासों, तथा राजस्थान में भी थी। अलग-अलग क्षेत्रों में इन भूमि-व्यवस्थाओ के अलग-अलग नाम थे, और उनमें कुछ भेद भी थे, किन्तु मूलतः वे समान थीं।

दयत यानी वास्तविक किसान के स्पष्ट अधिकार न होने के कारण दो प्रश्न पैदा हुए—एक यह कि जमीन पर उनके अधिकार की अवधि क्या होगी, दो यह कि उन्हें जमींदार की सगान जितनी देनी पड़ेगी। इन प्रश्नों का कोई स्पष्ट उत्तर नहीं था। परिणाम यह हुआ कि बेरखती सामान्य हो गयी, सगान जितनी सी जा सके ली जाने लगी, और बेगार की प्रथा भी चल पड़ी। इन परिणामों को दूर करने के लिए समय-समय पर कानून भी बने जिनसे १९४० तक ऐसी स्थिति बन गयी कि जमींदार का दायें सगान बसूल करनेवाले का ही माना जाने लगा, जो सचमुच वे थे।

कानून कितान की रखा के लिए बने लेकिन उनका पूरा सरक्षण हुआ नहीं। ऐसा भी हुआ कि कई किसान स्वयं विधोक्तियों बन गये और अपनी जमीन सगान पर उठाने लगे। इन तरह जमींदारों के नीचे 'जमींदार' बन गये और अपने ऊपर के जमींदार को निश्चित रकम चुकाने लगे। परिणाम यह हुआ कि सरकार और नीचे के वास्तविक खेतिहर के बीच 'मात्तियों' की कई शृंखला बन गयी, जिनमें से हर एक का किसान की दो हुई सगान में हिस्सा होने लगा।

३. स्वाभाविक था कि इन स्वतंत्रता मिली तो सबसे पहिले ध्यान विधोक्तियों की प्रथा का अन्त करने की कोर गया।

१९४७ से १९५५ के बीच अधिकांश राज्यों में जमींदारी अन्त करने के कानून बन गये, और लगभग २ करोड़ किसानों का सीधे-सीधे सरकार के साथ सम्बन्ध हो गया। लेकिन कुछ राज्यों में विधोक्तियों रिस्ति-रिस्ति रूप में अब भी मौजूद हैं।

जमींदारी का अन्त अपने में कोई भूमि-वितरण का कार्यक्रम नहीं था। उसके अन्त ही हुआ कि सदियों से चले आये हुए सामन्तवादी ढाँचे को जोरदार धक्का लगा, और किसानों को कई प्रकार की कृषि और उत्पाद के सचत दी गयी। कई राज्यों ने यह भी तय किया कि पहिले के जमींदारो के पास अधिक-से-अधिक जितनी भूमि रहेगी, जितना फल यह हुआ कि सरकार के हाथ में काफी जमीन आ गयी। इस भूमि के अन्तर्गत सरकार के पास अपनी भूमि भी थी। दोनों भूमिहीनों में बाँटी गयी।

लेकिन जमीन का वितरण सतोष-जनक नहीं हुआ। जो भूमि दी गयी वह सब खेती के लिए ठीका नहीं थी। उसके लिए आवश्यक गुणधर्मों का प्रबन्ध नहीं किया गया। कई जगह भूमिहीनों की पहकारो समाप्तियां बनायी गयीं, लेकिन वे दो ही छोड़ दी गयीं, उनकी कठिनाय्याँ हल नहीं की गयीं। इसलिए यह कहना कठिन है कि जितने भूमिहीन नयी खेती से अपनी जीविका निकाल सके।

४. जमींदारी के अन्त के बाद जमींदारी के शेष उन्ही क्षेत्रों-जैसे ही गये जहाँ सरकार और किसान के बीच सीधा सम्बन्ध था, यानी दयतवादी प्रथा थी। लेकिन एक बहुत बड़ी कमी रह गयी। किसान (टेनेन्ट) के अन्तर्गत वे खेतिहर नहीं जोड़े गये जो बंदाई पर संतो करते थे जैसे ५० बगाल के बरगादार, उड़ीसा के भगवावाली, बिहार के बंदाईदार, असम के अधिदार, और उ० प्र० के धामीदार। ऐसे बंदाईदार कालक्रम में दयतवादी बनाने से भी दयत हो गये थे। वे सच कानून से बचते रह गये। पूरे देश में इस बड़े समुदाय की सगान और बेरखती

की सफलता जगें-बी-संगी रह गयी।

कानून का पढ़ना काम है इन 'विद्यार्थी' की मनमानी बेइमानी से बचना और उनकी सहाय विचार करना। १९४० के इन्फैंटेरी ट्रेनिंग ऐक्ट ने यह काम बहुत कुछ दिया है। लेकिन कुछ विचाररत जर्मनी की सीधे इसकी अतिरिक्त रही और बेंडोईसर की स्थिति इनकी कमजोर को कि मार्शल-बैंडोईसर के सम्बन्ध स्थायपूर्ण नहीं हो पाये। ऐसी स्थिति में सम्बन्ध में १९४६ में एक कानून बना जिसके अनुसार सामाजिक विज्ञान की ही मार्शल बना दिया गया, और 'ट्रेनिंग' का अन्त कर दिया गया। इस कानून पर अग्रिम करना यह कि कानून के मुद्दामें सख्त हो गया।

बई राज्यों में विज्ञान के संरक्षण के कानून बने, यद्यपि पूरे तौर पर मनोप-जना नहीं नहीं। बिहार में तो बेंडोईसर अरिष्ट ही रह गया क्योंकि उसके और मार्शल के बीच बेंडोई का समझौता जमाना का त्रिध पर कानून बना रह गया। उ० प्र० के कानून ने बीच के 'जर्मनी' की ही सम-विद्यार्थी बेंडोईसरी कायम रखी, और बेंडोईसर को अरिष्ट छोड़ दिया।

१०. बंगाल में बई कानून बने। १९३० के कानून से स्थिति यह है कि अगर मार्शल ऐसी के तर्कों में शक्ति नहीं होता है तो वह कुछ उन्नत के रू भाग का ही हदवार होता, लेकिन उभे बेंडोई-दार से भूमि लेने का अधिकार है बर्तन उसकी कुछ भूमि ७११ एफ० से अधिक न हो और बेंडोईसर (कमगार) के पास उसकी अपनी संतो के लिए २ एफ० भूमि रह जाय। केरल में भी मार्शल विद्यार्थी-हद ईवज (कॉन्ट्रोलिंग ट्रेनेट) की दो की गयी है, और मार्शल द्वारा भूमि प्राप्त लेने का अधिकार सीमित कर दिया गया है।

मोझ में (हैदराबाद को छोड़कर) १९५६ में एक कानून पास हुआ जिसके ईवज ट्रेनेट की तीन छान के लिए बेरतनी से रखा की गयी। यह अन्तिम समय-समय

विश्व मुद्रा-कोष और तीसरी दुनिया

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा-कोष (इन्टरनेशनल मीनेटरी फण्ड) में निश्चित पूँजीकारी देशों का प्रमुख है, जिनकी संख्यावाली तो एक चौथाई है, परन्तु कोटा का ३१४ भाग और पूरे बोट का दो-तिहाई उनके हाथों में है। यद्यपि यह एक विश्व-व्यापी और अराजनीति प्रथा है परन्तु बहुत सारे समाजवादी देश अपनी आर्थिक नीति के साथ इसकी सम्मति का नेत्र नहीं पाते। उन्होंने देखा है कि 'अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा-कोष' के लोगों ने धारण, एग्जोस्प्रेस, बांझन आदि देशों में क्या किया है।

बहुत कम लोग जानते हैं कि अ० मुद्रा-कोष का आर्थिक दृष्टि से कमजोर देशों पर क्या प्रभाव पड़ता है। मुद्रा-नीति की शारीरियों को समझनेवाले वों भी कम हैं, जयने राजनीतिक पद-पुत्रों को और ध्यान तो और भी कम आता है। अगर हम समस्त जगें कि दुनिया की पूँजीकारी शक्तियों में अ० मुद्रा-कोष का क्या रोल है तो हम जाय जायें कि सामाजिक शक्तियों का अधिक्य क्या है, और क्यों गीतरी दुनिया में मोहनत्र विद्यार्थी हो रहा है।

अ० मुद्रा-कोष संसार की सबसे शक्तिशाली अन्तर्राष्ट्रीय शक्तियाँ हैं— एक प्रकार की विश्व-संरक्षक हैं। जिन शक्तियों पर इसका नियंत्रण है और बर्तन एक उन्नत लेनेवाले शक्तियों के अन्तर्गत शक्तियों में हस्तगत की इस जो शक्ति प्राप्त हो गयी है उसकी शक्तियों के लोग केवल बलना कर सकते हैं।

पर बढ़ाती गयी है लेकिन स्थायी कानून नहीं बना है।

लक्षितवादा का भी बड़ी हाल है। १९५६ में एक अन्तिम कानून बना था जिसके ईवज की १ साज की सुरक्षा मिली। तब से इस कानून की शक्ति बढ़ती रही है, लेकिन स्थायी कानून अभी तक नहीं बना है।

शेडर और उद्देश्य में भी १९६५ में कानून पास हुए लेकिन मार्शलियों को जर्मनी

जिन्हें अमेरिकी सैन्य प्रविष्टिगत इसरी बनायी कर गया है। साम्राज्यवाद की शेष में दोनों परस्पर टुकट हैं। अ० मुद्रा-कोष के अनुशासन ने प्रायतः सीमित हस्त-दोर की आवश्यकता अन्तर्गत काम कर दी है। जिना हस्तगत के अ० मुद्रा-कोष के कारण बर्तन लेनेवाले देशों में विदेशी पूँजी के अनुकूल स्थिति बनो रट्टी है।

अ० मुद्रा-कोष एक सम्पूर्ण व्यवस्था का अंग है। यह मुद्रा-अन्तर्राष्ट्रीय महासभा है। इसने पास लगभग २३ लाख डॉलर की पूँजी है। इसका इरादा यह है कि किसी देश का कोई-विदेशी उद्योगवाला बर्तन विनोदा हो नहीं अगर वह अ० मुद्रा-कोष को 'सहाय' मानने से इनकार करता है। पूँजीकारी सरकारों को राज्यों में इसे ऐसी शक्ति दे रखी है।

अतिरिक्त विद्यार्थी-दलों पर इसे उनकी आर्थिक कमजोरी को विदेशी मुद्रा की शक्तियों के कारण अतिरिक्त प्राप्त है। विदेशी मुद्रा का अन्तर्गत रोलों को मन्तवादा विचार करने और उसके सम्बन्धित शक्तियों के साथ बर्तन बुझाने और इन शक्तियों को दूर करने के साधन हैं। परन्तु ये बर्तन इसी बर्तन पर दंत हैं कि बर्तन लेनेवाले देश बर्तनी हुई मुद्रा-शक्ति का बाह्य में रखने के लिए कोई विचार कार्यक्रम चलाते हैं या नहीं। अ० मुद्रा-कोष का दावा है कि बर्तनी हुई मुद्रा-शक्ति ही आयात-नियंत्रण के सम्बन्धित

कारण लेने का अधिकार है। उनकी ओर से हुजारों दलों में बड़ चुकी हैं। उनके नियंत्रण के बाद ही रीतियों के अपनी भूमि पर अधिकार के मन्त्र का नियंत्रण होगा।

इस विद्यार्थी से स्पष्ट है कि कुछ राज्यों को छोड़कर दोर में इस अन्तर्गत महत्वपूर्ण प्रभाव की उर्ध्वा हुई है। कारण एक ही है—राजनीति, जो मन्त्र रहने कायम नहीं उठाने देनी।

प्रस्तुतकर्ता: रामभूति

(कैलेंस और एसेन्स) की कठिनाइयों के लिए उत्तरदायी है। इसलिए वे ऐसे कार्य-क्रम कार्यान्वित करते हैं जिनमें तीन निम्न-लिखित तत्व हों :

१—बढ़ती हुई मुद्रा-स्फीति के विरुद्ध परेन्स नीति, जिसमें सरकारी खर्च और बैंकों से दिये जानेवाले ऋण में कमी भी शामिल है। इसके कारण सरकारों को लोक-कल्याण के कार्यों में कटौती करनी पड़ती है, बाधित मन्वी होती है, बेरोजगारी बढ़ती है।

२—आंतर की चुनना में तिथि के की नीमत में कमी, और विदेशी मुद्रा के खर्च पर प्रत्यक्ष नियंत्रण में कमी।

३—विदेशी पूँजी सगाने का प्रोत्साहन ऐसी नीति के द्वारा जिसमें हड़ताल विरोधी कानून और टैनस में छूट से लेकर मुद्रापाठ भेजने तक की वारन्टी दी जाय।

ब० मुद्रा-नीय का नहना है कि उसका उद्देश्य दूरगामी अभावों के अनुपलव की सिधरता है (साय टर्न बेनेन्स आर्द् पेमेण्ट स्टैबिलिटी), परन्तु उसका वास्तविक प्रभाव यह हुआ है कि वारम्भिक निपात में दूसरों पर निर्भरता बढ़ी है, जो कि अस्थिरता का वारम्भिक कारण है। अन्तर सरकार इन नीतियों को ब० मुद्रा-कोष के नहने पर कार्यान्वित करती है जो दूसरी अर्थ-व्यवस्था या परिस्थिति सुधरती नहीं है, बिकं वारम्भिक मुद्रा की कठिनाइयों में छोड़ी वर के लिए राहत मिल जाती है। यह राहत नये बन्नों की सफल से, या तुलने कर्मों की अभावों में बाँड़ी सुविधा या उद्योग के सार्वनी के कायत के रूप में मिलती है। १९६५ के सैनिक विद्रोह के बाद का एकोनोमिजा इस बाउ का उदाहरण है। विद्रोह के बाद नये बन्नों इतना बढ़ा मिला कि कुछ दिन बाद उसकी अभावों में उसे दिवालिया हो जाना पड़ेगा। सायद ये बन्नें एूर्द्ध की बाङ्ग में रजने में सहायक होंगे।

अन्तर सरकारें आर्द्. एम. एफ. की बाँटें मानने से इतना बर देती हैं जो इसे बन्नें प्राप्त करने में भागे कठिनाइयों का

सामना करना होगा और उडे पूँजीवादी सभार में कहीं कर्ज नहीं मिलेगा और उर देश की कठिनाइयों का कारण उसकी 'वोखलिस्ट' नीतियों को बताया जायेगा। इस तरह कर्ज लेनेवाले देश, अपने महाजन देशों से बंधे रहते हैं, और वे अपनी इच्छानुसार कोई भी नदम नहीं उठा सकते। लेकिन ये बन्नें ऐसे हैं जो कर्ज लेनेवाले को महाजन के साथ हनेशा बंधे रहते। इस स्थिति को 'कर्ज की अन्तर्राष्ट्रीय गुलामी' (इन्टरनेशनल डेट स्लेवरी) कहना सर्वथा उचित है। नीय के द्वारा लागू किये जानेवाले कार्य-क्रमों में वोगलिस्ट नीति का कोई अंश नहीं होता। कोष के नियमों और कार्यों के कारण परेन्स सरकार द्वारा नियमित उद्योग सत्य हो जाते हैं। विदेशी फर्मों को दाने बढ़ा लागू होता है। मानवीय दुष्टि से कोष के कार्यक्रम बड़े मर्दों पकते हैं। नीय का अनिर्वाह परिणाम यह होता है कि देश का विकास विदेशी पूँजी के मुक्त के साथ जुड़ जाता है। विदेशी पूँजी को मुद्रा का वाहिए और तुन के साथ पूँजी की अभावगी भी। उदाहरण के लिए, इण्डोनेशिया में बहुत सारे परेन्स उद्योग बन्द होने के लिए मजबूर कर दिये गये।

कोष के कार्यक्रमों का अन्तर होने-वाला दूसरा तत्व फिनोपोन है। आर्द्. एम. एफ. के कार्यक्रमों का किसी देश को आर्थिक स्थिति पर बड़ा प्रभाव पड़ता है यह अन्तराष्ट्रा के १९५०-६३ के प्रवाहित अध्ययन से देखा जा सकता है। इन कार्य-क्रमों के कारण इन ५ बनों में प्रति व्यक्ति उपभोग (परसॉनिटा कन्सुमेशन) में २० प्रतिशत कमी आयी। व्यापार और अदा-वगी का अनुपलव विपुल गया। सराब आर्थिक स्थिति और राजनीतिक अस्थिरता के कारण देश से पूँजी निकल गयी। बढ़ी हुई मर्हार्द पर बाङ्ग का पाया जा सगा। इन ५ बनों में अर्थिक: का सार्थ (कॉस्ट कोर रिजिंग) ४०० प्रतिशत बढ़ गया। स्थिती में ५ सार के बीच एंश

कमी नहीं हुआ था।

कोष के कार्यक्रम के बहुत से उत्तर एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। कोष के चार्टर में इसे इस बात का अधिभार नहीं दिया है कि यह कर्ज लेनेवाले देशों की आन्तरिक नीति पर नियन्त्रण रखे। एन्टोपेन का अधिभार बाद में मिला जब कि लैटिन अमेरिकन देशों ने फण्ड के बन्नें लेना शुरू किया और इसे इस तर्क के साथ छोड़ दिया गया कि अदावगी के अनुपलव की समस्याओं पर बन्नी हुई मर्हार्द के सामने बाङ्ग नहीं पाया जा सकता। अदावगी-पाटी (पेमेण्ट डीफिसिट्स) पर बाङ्ग पाने का दूसरा रास्ता भी है, जो समाजवादी देशों ने अपनाया है, अर्थात् विनिमय-नियंत्रण (एक्सचेंज कन्ट्रोल) लागू करना।

यह स्पष्ट है कि कोष आर्थिक और पर कामजोर देशों के सम्बन्ध में बड़ा राजनीतिक खेल अदा करता है। कोष उत्तर देशों में बढ़ी हुई मयावक राजनीति चलता है। सामाजिक क्रांति कुपल जाती है और सोवरेन नर जात है।

विदेशी मुद्रा के सबट के कारण १९५० में भारत की सरकार इतने लिए मजबूर हो गयी कि अन्तान अपने राष्ट्रीय और सामाजिक कल्याण की नीति को छोड़ दे ताकि विदेशी मुद्रा की राहत प्राप्त की जा सके। यही कहानी बहुत बार दुहराई गयी है। उदाय देशों में लोकतन्त्र को अयकपना से अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा-नीय का पणित सम्बन्ध है। क्रांति के सोवरेन का गवा १९६४ में सैनिक विद्रोह की घोट दिया। प्रतिक्रि के सोवरेन को दो बाँटों का सामना करना था। आर्थिक विकास के लिए अन्तः की नीय और विदेशी कर्मों का अभाव और आर्द्. एम. एफ. द्वारा एक प्रभावशाली सिधरता रखनेवाले कार्यक्रम की बाँट। एउसे निचटने के दो राउटे थे। एर यह कि सिधरता का प्रयास छोड़ दिया जाय की उपायारी राजनीति हूय की दिशा में या अर्थात् एउतरता कार्टवाई करके विदेशी कर्ज कायत देने से इतना बर-

तीर्थ-स्वरूप तात्प्रासाह्य सरवटे

—निर्मला देशपाण्डे

[सन २६ जनवरी, ७२ को इन्दौर नगर के बसोवृद्ध श्रीरामिय राजनीतिक नेता, साहित्यकार, शिक्षाशास्त्री एव समाजसेवक, मू० पू० संभवसरस्वत्य, वदयभूषण श्री सि० सी० सरवटे विषयक लेख मिले। उन्हें हार्दिक श्रेयस्सजलि। उनके बारे में यहाँ सर्वोद्योग सेविदा मुखो निम्नलिखित देशपाण्डे द्वारा लिखित सप्तरात्र प्रस्तुत है। स०]

जयराजगण के जन्म पक्ष की एकादशी और २६ जनवरी—सौराष्ट्रका तात्या के पवित्र तीर्थ की यह पवित्रतम धूमिल है। सत्यपूज, ह्य मेव रिन्ते एव। ऐसी पवित्र मानना का हृदये निवृत्त के समेत प्राप्त। ऐसी पवित्र मानना का हृदय शरण विना, माजीर्षाद विना।

युव युव बहाहू शान के गारे संभवतः। काशिकी (१०० तात्या की सबसे छोटी पुत्री) विभीषाकी के गण परी कीर में उनके पास से इवरी लाये। एक वदयभूषण सयोग। तब से तीर्थस्वरूप तात्या ने मुझे काशिकी की जयहू माना और सुदारण सांख्यिक की जो पृष्ठ को, सबसे मुझे स्वयं काशिकी सुविधुदित मिलती रहती। कारभन के कुछ छात्रों में से अनेक बार वदयभूषण मान्य से और हृद बार हृदये "पर कैंड गया मायी" वदयभूषण विदा था। आदर्श, सत्ये युग में शान और प्रेम का संयोग होता है, ईसाही जन्मे था। विद्वानों वदयभूषण से ने हृदये हृदये के मान्य थे। स्वाभाविक-वशात का जिन्यर इतिहास मान्ये खडा ही जया था। सविज्ञान परिषद के अनेक अनुभव

मुनये को मिलते थे। बापू जैसे महारणा से तेहर सामान्य कार्यरतोंमें तब के भगवत-दर्शन उन ही बरती थे ही जाने थे। और इली के साथ निरद आध्यात्मिक चर्चा होती थी। उनकी सगति एक पुत्रीय पर्व के समान अनुभव होती थी।

उनका जीवन का सत्र जन्मेगाया मन्दागिण। प्रकाश देना ही मान्ये उनका जीवन-प्राप्त था। दीर्घायु जीवन के अन्त काशिकीत आश्रित हुआ है परन्तु उनके बारे में तो यह बरदार किन्तु हुई। आश्रितगण की समुत्पत्ती की लक्ष्य बनने हुए, वदयभूषण के नये वदयभूषणों की आगे बढ़ाने के लिए वे बन देने गये थे।

भारतीय इतिहास की चरमगा का सार सभी में से सप्रभूति है। रामो नये-युगये का सफल नहीं रहना, बल्कि युगों के कर्त्तव्य पर बैठ कर तबे लोग हृद का दर्शन कर लेते हैं, और इतिहासक उत लाये गये हैं। एनी कारण समान सफल विरासतही बनना है। मायी पीड़ितो की, पिदारी पीड़ितो की बाजार मिलता है, जयदी १९३६० नहीं। काशिकी (पारिवर्तिक) तथा सामाजिक जीवन में

चहोंरे जो बरदाई प्रवर्द्धित विरा वदयभूषण होना ही जीवन विद्वाना सुवर्णय और काशिकीय वनेगा।

नीरवन्दक कायदा मान्ये काशिकीय की उगागा का काशिकीय प्रयोग। सर्वत्र भाग्यप दूँगा और जहाँ कहीं उनका दर्शन होये तो उनका सुवर्णय करने रहना उनका स्वभाव ही हो गया था। इतिहास उनके विचार में, प्रकृति में जीव बायी में निरक्षण भगवत ही दीर्घायुयक होयेते रहती थी। उनके मुँह से मेने कभी कुछ शब्द सुना नहीं।

वदयभूषण जीयें गरीर, कमजोर दृष्टि, लापरवाहक शीर्षाश्रितों ह्य सबके साथ उनही शानमान्यता संभवतः बन रही थी, जयदे कभी सत्र पडा नहीं। प्राचीन अर्थ की तरह वे अर्थिय समय एक क्षणभंग करती रहे। जयवदयभूषण की ऐसी छत्र-पटाहट कुछ बोड़े लोपो की भी गये, जो देश के उपायत की सुवर्णय होती।

वदयभूषण बर्से करनेवालो पर भी जीवन में कयोती के समय कयी बोड़े हृदये का प्रत्येक आग है। दुनिया की इतिहासका उदरदेश दैविको की मन्दा मरदा मन्दागी बने, तो सत्रत गदने गदने होता। तीर्थस्वरूप तात्या के जीवन की अनेकी उगागा लो गये है कि उनहीने काशिकीय का विद्वाना के साथ जयदे के लिए मुनी वे इनाजड हो गये दी, प्रोत्साहन दिना। काशिकीय ने विरा महे निरागा बर्से उन्हें सुवर्णय महत्सुल हुना, एनी म उगागे का आध्यात्मिकता का सारा सार है। इस निराते बर्से पर करनेवालों का जयदे विद्वाना कीदुक्त था। "युव जैती महर्षिवायं शन्य ०" यहू कर किन्ती ही बार उनको मान्ये प्राप्त ही जाती थी। उनके उन काशिकीय में से महर्षय से मन्वेवना काशीर्षाद मेरे लिए सत्ये सुवर्णयक बन्यु थी।

—विदा वार, कीर काशिकी में सने हुए दिनेको वंके वज्र कर विने जाते। वाद्य-पति कीर्णार्थ ने जब सत्र दिशा में वदयभूषण तात्या लो केतन ने सर्वोत्पत्ती की इवोर्षित के शकारक जयदे जीवन की और कयोती वदयभूषण कायी।

यह पदलि बर्से-वदयभूषण में की रोह-तायी कयी। १९९९ में इवोर्षावृत्ता के अर्थिय विद्वानों की वदयभूषणो की वंकेने के वदयभूषण बनता है। काम सेनेकी की वदयभूषण और दिव नैजयों की वदयभूषण ह्य काशिकी के रोहने के लिए वंकेन कयव

मनियार्ये समता गणा है। हमारे पक्षोको देश मीनका में को कुछ ही रहा है। और विश्व समह लीदवप दिनों-दिन सीग हो रहा है। उचकी नय भी विश्व-मुनी-जीय के सांघिक दबाव में छोड़े।

इसमें सर्वेह नहीं कि विरासतो का इवोर्षावृत्ता सामाजिक काशिकी और लीदवप की बमबोर बनने में हो रहा है। वदय काय लीदवो दुनिया का इतिहासक विद्वाना हो लो अन्त्याष्ट्रीय सुग-जीय की कयगा शककर नहीं मिलत जा सता।

—नेरिय वदय, विषाकी दिव्य, मिन०७६

वदयभूषण का साख्य है "युगाद इवोर्षावृत्ता पत्राजयम्"। तीर्थस्वरूप तात्या की यह साख्यक श्रेय हो इतिहासक उगागे बड़ा बनने की शक्ति परवर्द्धक उनके परिचारकको ही है, इवोर्षावृत्ता में यही प्राप्ती।

पर जिन लोगों का प्रभाव है वे आक्रामक मानव (हॉर भेस्टालीटी) के हैं । केनेडी के समय इसमें वनी आयी थी, लेकिन जानसन के आने के बाद इसमें पुनः वृद्धि हो गयी और आज निवृत्तन के समय यह चरम सीमा पर है । इसके प्रधान अभिनेता रिचिबर और काज़ू हैं । रिचिबर, हरमन वाज़, ग्लेन स्टाइडर, नौर, वोलरट्टर, मोर्गेन स्टन, वे लोग एक सिद्धांत को आगे बढ़ा रहे हैं जिसे 'न्यू-क्वियर डेटेंस्यु थियरी' कहते हैं, यानी बग़ुनम निराने की ऐसी व्यवस्था हो ताकि अगर कोई देश अमेरिका के आक्रमण करने के पहले अमेरिका पर आक्रमण कर दे और २-३ करोड़ लोग मार डिये जायें तो भी जवानों आक्रमण के लिए हमारे पास ऐसी क्षमता होप रहनी चाहिए जिससे हम उनके २-४ करोड़ लोगों को मार सकें और उनकी आक्रमण करने की क्षमता खत्म कर दें ताकि वह दुबारा आक्रमण करने की स्थिति में न रह जाय और अमेरिका की विषय हासिल हो । यह उनका तर्कशास्त्र (लॉजिक) है । नहने का मतलब यह कि उनके लिए दो-आर करौड़ लोगों का मरना-मारना कोई बड़ी बात नहीं है, जिनमें लैंगिक भी समाज बहुत ही कम होगी ।

चिन्ते उस वषों में उनके विरोध में एक समूह बना है जिसका कहना है कि उनका यह गणित गलत है । इन विरोधी लोगों के कुछ नाम ये हैं केनेथ बोर्निंग, जनासीस राफोर्गेट, विन्डिय राइट (अधो-अधी मरे हैं), फार्न टायल ; वे लोग शांतिपथ पद्धति से युद्ध का विरोध करते हैं और यह मानते हैं कि अहिंसा भी आसुय के समान या उससे भी अधिक प्रवित्रकारी उपाय है जिससे समस्या का समाधान किया जा सकता है । अब, यहाँ पर अहिंसक मूल्य की कुछ क्षमता आन होगी है । हम यह नहीं कहेंगे कि अहिंसक उपाय बल जायगा, परन्तु उस तरह काम उठा है ऐसा तो हम मान ही सकते हैं ।

प्रश्न : अमेरिकी-समाज को जिस स्थान पर जाकर ठिठक जाना पड़ा है और सोचने के लिए वह विषय हुआ है उस स्थिति में उसे भारतवर्ष से क्या सीखना चाहिए और भारतवर्ष को उससे क्या प्रबंध करना चाहिए ?

उत्तर : अमेरिका में लोग भारतवर्ष के बारे में जानने लगे हैं । जानने की जिज्ञासा उनके मन में पैदा हुई है, जो पहले नहीं थी । वे भारत की समृद्धि से प्रभावित होते हैं । भारतवर्ष के जो छात्र अमेरिका जाते हैं—उनके वे प्रभावित होने हैं जबकि वे यह देखते हैं कि विज्ञान जैसे विषयों में भारतीय छात्र तेज हैं । दोनों देशों के लोगों के परस्पर के सम्पर्क का मोह जितना ज्यादा आगेया आयाज-प्रदान उतना ही अधिक होगा । इसके उनमें जो अहंकार का पाव है वह समाप्त होगा और भारत की समृद्धि से वे सीखेंगे ।

आज भारत और अमेरिकी सरकारों के बीच जो तनाव पैदा हुआ है यह उत्तरागत है । दोनों देशों के नागरिकों के बीच तनाव नहीं है । बहुत ज्यादा दिनों तक दोनों देश सतत बँधे रहेंगे जबकि दोनों का विस्वास खोखल में है ? अमेरिकी जनता सरकार पर दबाव डाल सकती है, सरकार को बढप सकती है ताकि दोनों देशों का तनाव खत्म हो । भारत और पाकिस्तानी जनता के बीच भी तनाव उठना नहीं था, वह दूर बिया जा सकता था, परन्तु यहाँ की सरकार ने इसे कम करने के बजाय बढ़ाया ही । सरकारों की दृष्टि में बहुत बड़ी भूमिका होती है । अगर सरकारें बौध्दिक करें तो एक दिन के नागरिकों का अन्य देश के नागरिकों के बीच अहिंसा सम्बन्ध स्थापित हो सकता है ।

अमेरिकी समाज जटिलताओं में बहुत है । वह बहुत ही तेज गति से दौड़ लगा रहा है । उसके पास दलता अन्तर्गत नहीं है कि बर्ष में भी राजमिदान के साथ आ सके । बर्ष में मोटर से ही जाता है और मोटर से बिना उठते ही प्रार्थना करने

वापस हो जाता है । विज्ञान में पूर्ण उदात्त तरंगी है मत. जो काम मनुष्य को करना चाहिए वे तब मशीनों द्वारा होते हैं । इसके कारण कार्यों और कार्यों का सम्पर्क कम होता है । इसका नतीजा यह हुआ कि वहाँ के आदमी में कोमल भावनाओं का विकास नहीं हो पाया । परन्तु अन्य उनका अन्य देशों की ओर देखने का रस हुआ है । एक विद्रोह ही रहा है, प्रचलित समाज है । उनमें वे ऐ हिली आंदोलन तथा हरेकल्प आंदोलन का जन्म हुआ है । भला, प्रेम, करुणा, कायर, धृष्टा के प्रति उनमें वैतना पैदा हो रही है । भारतीय सपीय के प्रति उनमें रधि पैदा हुई है । अहिंसा को वे विवच्य मानने लगे हैं । आप देखिए—एन हरे कल्पनाओं को । इनको कोई पारे-पीटे भी तो वे अंधिधन नहीं होते ।

अब यह सवाल बहुत ही दिनचर्या है कि भारतवर्ष अमेरिका से क्या सीखे ? हम अपने देश को न हल बना सकते हैं, और न अमेरिका । हम बनायेंगे तो भारतवर्ष ही बनायेंगे । भारतवर्ष में हजारों वषों में कुछ मूल्यों को विरासित किया है । उन मूल्यों को छोड़ना नहीं चाहिए । हम अपने मूल्यों को छोड़कर उनके प्रतिष्ठिता-मूलक मूल्यों को मंगे तो वहाँ जायेंगे ! भारतवर्ष में आधुनिकता के कारण पारिवारिक भावना लुप्त होती जा रही है, जो एक अथिध भावना है । समुपन परिवार में सुरक्षा भी जो पारटी है वह स्थापित समाज में नहीं है ।

विज्ञान को स्वीकार करने का मतलब यह तो नहीं होना चाहिए कि हम अपनी परम्परागत उदात्त मूल्यों को भुन जायें । भला, अत्यायम, धर्म, दर्शन आदि में वहाँ हम पढ़ेंगे हैं उनमें हमारा एक महान अनुभव है । अगर हमने पीछा, बुनाज भी खोला तो हम बहुत बड़ी चीजें मने देंगे । चीन भी विज्ञान में प्रायः अपने मूल्यों को नहीं छोड़ता । चीनिक गम्भीर मान्य करने की जो तेज होख लगी है वह हमारे लिए उचित नहीं है । इनसे तो गणतन्त्रक समृद्धि का विकास होगा । 'उत्पादन करो,—

चुनाव और मेरी चिन्ता

काठिस्वार "भारत-भाष्य-विद्यालय पुस्तक" का महीना भा गया। सारे देश में किन्ती दौड़पूर चलती होगी। मनुष्यों को कीर मोटर जैसे वाहनों को एक साथ का भी आराम मिलता मुश्किल। चन्द लोगों के लिए तो यह महीना 'रिमान की बख्शी' का है। उन सबके रिमाण लेखो से बचते होंगे। उनके भी लघु लेखो पसन्दी होगी अक्षयारवाणों के मरिच्छक में। लेकिन मैं तो बसमजम में पड़ा हूँ। देश की स्थिति और देश को प्रगति के विषय में मैं हमेशा जाग्रत रहता हूँ। इसीलिए चिन्तित भी हूँ।

भारत देश के लोगों का ध्यान बिन बाजो पर है ? राजनीति में अदकमेक पयो का डेर लग गया है। उनके कन्दर-निगार बैदुरी सोचबानती चलती है। प्रजा के प्रतिनिधियों में मनमाना पदांतर करने का जग निराश्रित भुम्क हुआ है और चुनाव का 'जग' सखा होने पर 'सम्भार की तैयारि' चलती है। लोगों को, और उनके अक्षरारों को, दूसरा कुछ सूझा ही नहीं।

वहा जात्रा है कि चुनाव-जग के डारा मयदाराओं को और सपरन जनता

—घात करो, सपन करो उल्लादन करो' का एक निवसिना आरम्भ हो जायगा। ह्यारे यहाँ तो सारा और स्वापपय जीवन का विनाम हुआ है उसी का धोपन होना चाहिए। अमेरिका का कणामुकरण सपुद्धि तो जगतभर करा देगा, परन्तु जीवन के आन्तरिक सौत्र को गुना देगा। ह्यारे जीवन में आधुनिकन, आधुनिकन अन्तरभुयग की जो इशालना है बड़ आश्चर्यक है। सपवे विदुषा होना सतन सावित्र होयगा। अज. ह्यै विज्ञान और सपुद्धि के साथ ही आधुनिकन तरुओं के साथ दुई रं का निजलय विजना चाहिए। एक बाप पर और इमान देना चाहिए रिपके कारण सौमनिक देको

को बड़ी बीमारी राजनैतिक शिक्षा मिलती है। विदेव जैसे परिपक्व राजनैतिक बुद्धि के राष्ट्र में वह बात सही है। लेकिन हमारे यहाँ की जनता का प्रवा-जीवन हय जानते हैं। चन्द नेताओं के महत्व के कारण और लेखो के बावजूद, नहूना पदता है कि चुनाव के कारण जनता को शिक्षा नहीं नि-तु बुद्धिशा ही मिला रही है। जनता को 'शिक्षा' देने-बाने स्वयं उम्मीदवारों में परिपक्व राजनैतिक शिक्षा की माशा कितनी है ? और निरके पास परिपक्व बुद्धि और अनुभव है उनकी बातों की काज कीन सुन रहा है ? देश का आधुनिकत एद्ध-रुखने का और 'विशुद्ध हुआ गुणाने का' प्रयत्न नहीं ही कीत नही पकता। ऐसी हालत में उलाहू कीज रह विजना ही मन को घेर रही है।

स्वराज्य-प्राप्ति के दिनों में हम लोग आपस में मतभेद होते हुए भी मिलकर काम करते थे। अविनाशन गुप्तनी गुप्तवर स्वराज्य के हेतु सहायोग करने के लिए तैयार हो जाते थे। उसकी जगह आज हम क्या देलाते हैं ? किन्हीने सारी विदगी मिलकर काम किया, वे भी अन्त-अलग

की बुरे परिणाम गुणाने पद रहे हैं। कासखानों कीर मोटरों के युँबा से एद्ध हवा कीर कारखानों के लन्दे पानी से एद्ध धारी का मिलना बठिन हो रहा है और अब इसके विरोध में उन देगो में आवाज उठने लगी है। सड़कों पर दुर्ग-टमारों बड़ गयी है। अज. बड़ी ऐना न हो कि हय भी जमी खान पर पहुँच जायें। विज्ञानवासी अमेरिका में बहुत रेडियो से विज्ञान करते की भी एट्ट की गयी है। विज्ञान के डारा मनुष्य की जगभाग की और उन्मुग होने की शिक्षा मिलती है। का विज्ञानवासी से फारस-बर्न को बचाना चाहिए।

प्रस्तुतकर्ता : सौमन्य

—भाषा कातेलकर

होगर एक दुगरे का विरोध भी कर रहे है और चिन्ता भी कर रहे हैं। स्वराज्य पाने के प्रयत्न का सतपुग स्वराज्य मिलते ही सख्य हुआ। और अब 'सखा और सगति' के लोभ में अन्तर्देवह का सतपुग पानो स्थगित हो चुका है।

लोग मेरी मलाह पूछते हैं। मलाह देने से जब मैं इतकार करता हूँ तब लोग बहते हैं 'अबधा, सखाह न दीजिये। लेकिन आप स्वयं अपना मय किते देने एगना तो बड़िये। आप किस पक्ष को कयका रिक्त व्यक्तित्व को चाहते हैं ? मैं बहना हूँ गुने तो सबके सब पदा बच्छे लगते हैं। सबके साथ उम्मीदवार भेरे मन में बच्छे हैं। और सबको तो मैं मय दे नही सनता इसलिए किमी की भी कपना मत नही देने में ही मैं सबका मला देसता हूँ।

मैं तो इतना ही चाहता हूँ कि आरामो चुनाव के डारा रि-जन, (आदिम जाति) निरिजन लक्षका सुमित्रन और कसमन राष्ट्र के स्त्रीजन आदि उपे-वित्त काँरी उन्नति की मदद मिले। कीर जहाँ तक ही सके इन्हों को प्रोत्साहन दिया जाय। 'राजनैतिक और सांस्कृतिक परिवर्न के विनाम के अभाव में ह्यारी एवता कीर खलकना सनरे में साथी है', दस प्रधान बाप को सारा राष्ट्र बच्छं ताहू से समस ले और राजनैतिक जीवन को सपुद्धि के लिए सब लोग प्रयत्नवान बरें।

सौमन्य
चिन्ता
परिधि मया संकरण
सर्वं हेतु सव प्रयत्न
राजघाट, बारापको-1

चुनाव और हम

१. हमारी चिन्ता का विषय सौवर्तंत्र है न कि किसी पार्टी या उम्मीदवार की हार-जीत। इसलिए हम प्रयत्न करेंगे, जहाँ भी कर सकेंगे, कि चुनाव मुक्त और निष्पक्ष हों।

२. गुप्त के सचन क्षेत्रों में क्या हमारे केन्द्रों और सरबाओ के प्रभाव-क्षेत्रों में विशेष रूप से हम अपनी बात मतदाताओं के सामने प्रस्तुत करें।

३. गुप्त के सचन क्षेत्रों में ग्रामस्वराज्य-सभाएँ और प्रखण्ड-स्वराज्य-सभाएँ अपनी ग्राम-शान्तिसेना और तरण-शान्तिसेना के साथ विशेष रूप से सामने आयें। वे ये काम कर सकती हैं :

(क) मतदाताओं को पंच, पोस्टर, गोष्ठी, सभा द्वारा बतायें कि उनके वोट का क्या मूल्य है, सौवर्तंत्र को बनाये रखना क्यों उनका कर्तव्य है, और किसी भी उम्मीदवार को गुप्त मतदान का उनका अधिकार है। इसलिए वे वैसे के लोभ या छडे के भय से वोट न दें।

(ख) वे देखें कि उनके गांव या प्रखण्ड में किसी वोटर पर अनुचित दबाव न डाला जाय, और न तो बोगस वोट डलवाया जाय। मतदान में वच्यों का इस्तेमाल प्रचार या बोगस वोट के लिए न हो।

(ग) मतदान के अवसर पर शान्तिसेना के सैनिक मतदान केन्द्र पर रहे। वे गांव से दूरे हुए, बरे हुए वोटरो को वोट के लिए अपने साथ ला सकते हैं। हमारा काम है कि अनौचित के विरुद्ध आवाज उठावें और उसे रोकने का हर सम्भव अहिंसक उपाय करें।

(घ) समुचित मंच गठित हो जहाँ आकर सब उम्मीदवार एक साथ अपनी अपनी बात मतदाताओं को समझावें।

४. जहाँ ग्राम या प्रखण्ड-स्वराज्य-सभाएँ नहीं बनी हैं वहाँ तदर्थ समितिर्था बनायी जा सकती हैं और कालटिपर भर्तों विधे जा सकते हैं। जिन ग्रामीण क्षेत्रों में हमारा विकास का काम होता है और जहाँ गहरो या देहासों में हमारे शान्ति-केन्द्र या गांधी-शान्ति-प्रतिष्ठान के केन्द्र हैं उनमें यह पद्धति अपनायी जा सकती है।

५. कुछ क्षेत्र रक्षायी मतदाता-शिक्षण के लिए चुने जाने चाहिए।

६. जिन मिश्री को रचि हो वे अपने सीमित धेग में चुनाव का अध्ययन करें और एक समित्त विचरण 'सर्वोदय-मूदान-यत्न' में भेजें। अध्ययन के मुद्दे ये हो सकते हैं :

(क) प्रचार के प्रकार—वित्तित, मौखिक; मनाने, दबाने, तुमाने के उपाय।

(ख) वोट के दिन—
मतदान केन्द्र का दृश्य

सबारियों का इस्तेमाल, वोटरों को रोकना।

(ग) विद्याथियों, वच्यों का इस्तेमाल।

(घ) वोटरो को चुनाव में रचि।

(ङ) अन्य कोई उल्लेखनीय बात।

७. इस अवसर पर राजनीति बनाम सौकनीति की बात भी मतदाताओं को समझायी जा सकती है।

मुद्दों की कुछ समस्याएँ

मुद्दों की कुछ समस्याएँ ये हैं : (क)

परिवर्तनी पाकिस्तान में सौवर्तानिक राजनीति का न होना जिसके कारण किसी सुनिश्चयो मुद्दार के लिए आवश्यक सौवर्तमत बनाकर गठित होया; (ख) उनका अपना दल, (ग) पाकिस्तानी सेना। जब तक पाकिस्तान की राजनीति नहीं बदलती वहाँ कोई गहरे परिवर्तन नहीं हो सकेगे।

सैनिक गद्यो सौवर्तानिक राजनीति के विकास के रास्ते में गम्भीर अड्डुननें हैं। मुद्दों स्वयं अधिकारवादी ध्यवस्था (अध्यापितेरियन सिस्टम) के अघ्यास दने हुए हैं। उनके रचान पर उहे सौवर्तानिक: कथाया रचापित करनी है। वैसे व रेंगे ? क्या सविधाल वेंके अनेगा ? विभिन्न रायध कपने-अपने अधिचारी के वि भांग कर रहे हैं। उनको मानते हुए पाकिस्तान में जिन तरह का सप बन सकेगा ? इसके अलावा पाकिस्तान की जनता को अब तक अघ्यर्ष्य व शान्तन (प्रैडिक्शन्स सिस्टम), का हो अघ्याग हुआ है। क्या यह अपने मत की सौवर्तानिक पद्धति के अनुसर बना सकेगी ? मुद्दों का अपना स्वभाव की अघ्यास होने का है, न कि प्रघान-मकी होने का। और, पाकिस्तान में अघ्यदा कथाकर शान्तगाह रहा है।

दूसरा प्रश्न है सेना और सरकार के त्रिभल अधिचारीयो के बीच का सम्बन्ध। यह सही है कि मुद्दों ने कुछ सैनिक अधिचारीयो को मिलाकर कुछ को हटाया है। सैनिक सौवर्तानिक पद्धति में सौ पुणे सेना की अँक्यों में बन्द करना पडेगा। क्या मुद्दों के विच-पान केनं दुनहवन, एयर मार्शल रहीम रॉ, या केनं टिकार मॉ राजनीति को सीडर मान संशिन बनना स्वीकार करेंगे ? उनके राजनीति में बहने हुए सौवर्तानिकी बनेगा ?

तीसरी समस्या है पाकिस्तान की अघ्यपिठ सिमिति। अपना देश का अघ्यार हाप से निरल पुरा है। अब परिवर्तनी-

मुंसहरी की पद्याज्ञा-२

धामस्वराम्य-समाप्तः :
सक्रिय और निष्क्रिय

धामस्वराम्य-समाप्तों की कुल संख्या १०० से ऊपर है, लेकिन यह कहना बज्रि है कि सभी समाप्तें योग्य हैं। निष्क्रिय समाप्तों से सक्रिय समाप्तों की संख्या काफी कम है। सभी ऐसा होना अत्यव्यक्त नहीं है, किन्तु हमारी प्रक्रिया ऐसी होनी चाहिये कि सक्रिय समाप्तों की संख्या बढ़ती चले। यह प्रक्रिया सभी नहीं चल रही है। और, यदि समाप्तें सही अर्थ में सक्रिय हो तो भले ही उनकी संख्या छोटी में पचसीस हो, वित्ता भी मात्र नहीं है। हमें यह मानकर चलना चाहिये कि आगामी अन्दर की शक्ति से बनेरवाली समाप्तें सभी कुछ दिनों तक भी में २५ से अधिक नहीं होंगी।

आमर जो भी सक्रियता दिखायी देती है वह सुकर रूप से दो चीजों को लेकर है। एक है सोती-सिखाई आदि की सुक्रियाओं का आरम्भ और दूसरी है गाँव के अर्थों की रक्ष करने की शक्ति। मैं दोनों चीजें हमारे लिए महत्त्व की हैं क्योंकि हमारी शक्ति मूलतः अभिजातक है, इस-लिए पहले अन्ध, अज्ञान, और अत्याय

परिस्तरण की अपेक्षा को करने देनी पर बढ़ा होना होगा। इन चीजों में बिदेसी अत्याय का क्या रोग होगा? यह अत्याय दिन-दिन देशों के आनेनी? क्या बिदेसी अत्याय आर्थिक गुणों के मार्ग में बाधक नहीं होगी कि सब बातें यह है कि पर परिस्तरणों का मुकामिका बड़ी सरावर कर जाती है को छोड़े छोड़े चलना से शक्ति प्राप्त करती हो।

अम में परिस्तरण के सम्बन्ध में दो बातें हमने जानी हैं। या तो परिस्तरण सभी कुछ दिनों तक अत्यायन में होता, या प्रभु परिस्तरण में निराला भावे में उद्यम होती। लेकिन यह ऐसा सभी का उद्ये है जब यह इन मात्र

के हीनो मोकों पर एक साथ अभिमान बजाने की गुनाह हो नहीं, बरकर भी है। अर्थ है कि हम आगों का हम मया रखें और उनके लिए माध्यम बना लियार करें। जिस क्रम से, और जिस माध्यम द्वारा कार्य हो रहा है, इसका धामस्वराम्य को स्पष्ट-रचना की दृष्टि से बहुत अधिक महत्व है। अगर धामस्वराम्य का विश्व मन में हो और उसकी दिशा स्पष्ट हो तो सेवा या कल्याण के सामान्य कार्य भी शक्ति-कारी बनते जा सकते हैं। गाँवों से बीटने पर, लोगों की आगें गुनकर, उनको प्रतिविधि देकर, रिशों के मन में यह खवाल बना रह जा सकता है कि गाँव पीछे कम-से-कम दो-चार आदमियों के विनास से धामस्वराम्य का विश्व और अधिक स्पष्ट होना चाहिये था। कुछ लोगों के मन में इसका भी 'अभिमान' न हो तो नया नेतृत्व कैसे आयेगा? धामस्वराम्य को यादों का दर्जन कैसे लियार होगा?

को समाप्तें सभी हैं उनमें कई ऐसी हैं जिनके मनो सुकर हैं। विद्यार्थी भी हैं। उनमें उदाहर है, बरनाम है। लेकिन सभी उनको शक्ति के अरवज्ञान और 'बाधे-विचर' में पीला लेना जारी है। सभी

के विरुद्ध आर उगलना छोड़ दें, और देव-शक्ति को भी छोड़ने की बहें, और पूरी शक्ति योगरी शक्ति को सुधारने में लगवें।

भारत के दिन में यही है कि परिस्तरण शिवा ही, लोकशक्ति, शक्तिशाली और बिदेसी शक्तियों के दबाव से मुक्त हो। इसलिए हमें अपनी ओर से प्रभु और परिस्तरण की बरना को आसक्त कर देना चाहिये कि हम उनका मला पावें हैं। साथ ही हमें इस बात के लिए भी तैयार रहना पड़ेगा कि परिस्तरण हमारे लिए विश्व के अन्ध पर दा करवा रहेगा।

—ओ गिरिधर मुल्य,

'सोमवार', कलकरी '७२

इतना ही है कि वे गाँव के लिए 'बन्धा काम' कर रहे हैं। लेकिन यह भी कोई कम बात नहीं है कि वे गाँव—और गाँव में भी यही भी—हामने रखकर सोचने लगे हैं। यह यही योजना सुकर रूप से १५ छात्रों से ३५ छात्र तक के सुक्तों में दिखाई देती है। उन्हें ज्यादा शिवा-प्रशिक्षित करने और एक सुक्त में आने की जरूरत है। ऐसा आम-शान्तिसे के माध्यम से ही किया जा सकता है। बरदि सुक्त पक्षों में अरव-शान्तिसे के बने हुए हैं, फिर भी अरव-शान्तिसे और आम-शान्तिसे की दृष्टि से अभी बहुत कुछ करना जारी है।

सुक्तों के अलावा नये नेतृत्व के रूप में लोग हैं धामस्वराम्य-समाप्तों के परा-शिकारी—अध्यय, सभी, योग्यता, और शान्तिसे के ताकत। पराशिकारी और आम-शान्तिसे को निवारण नया नेतृत्व बनना है। यह देखकर सुनी हुई कि सुक्त सोनियार लोग नेतृत्वियों के आम धामस्वराम्य-समाप्तों के काम में विचरणी के रहे हैं। उनका आशीर्वाद मिल रहा है, यह बहुत है। सुक्त के आशीर्वाद और सुक्त के सुधारों के मिलने में धामस्वराम्य-समाप्तों की संख्या की सुनी है।

धामस्वराम्य-समाप्तों की शक्ति धाम-शक्तियों की शिवा प्राप्त करने में है। स्पष्ट है कि इस अरव में उनके आने पर बरदिआर हैं : (१) शान्तिसे के आरवों बनने, (२) बरदुर्गों का अन्धराण (३) सरकारी वचामों, (४) गाँव के लगव सभी बन्धन शक्तियों का शिवा-निष्ठा परकीण दल के मया। सादे-बिकर बरदों के शक्ति बरदि और सामान्य प्रमाद आदि बरदोशक्ति सम्पूर्ण को अरव हल करना पड़ेगा। लेकिन वे पर सर ऐसे हैं जिनकी अंता नहीं की जा सकती। शान्तिसे के आरवों बनने, शिवा से गाँव के सुक्तों लोगों को भी समेट लेते हैं, आरवों अर्थ से हल करने पड़ें। ऐसा कुछ समाप्तों से हुआ भी है। बरदुर्गों और शिवाओं का विनाश प्राप्त करना आरव नहीं—

है ! जववा विचाराव प्राप्त तमी हो सनेगा जब हम् भूमिहीनता, भजदूरी, बँटाईशरी, नम सुद पर गण आदि प्रश्नों पर रात्रीरसपुर्वक विचार सुरु करेगे, और ग्रामस्वराज्य-सभा की बैठकी में गरीबों की बटिनाश्यों की सुनसने की कीकृष करेगे ।

यह बात मागनी पड़ेगी कि ग्रामसभाओं का जितना ध्यान बीषा-नट्टा भूमि प्राप्त करने की धोर जाना चाहिए या जतना नहीं गया है, बरिक्त यह मानना पड़ेगा कि इस प्रश्न की जेदा हुई है । बावजूद इसके कि कुछ जमीन बीषा-नट्टा में प्राप्त हुई है और बँटी है, बावद हमारे सामीय सहयोगियों के मन से यह बात निरालती नहीं कि जमीन वोन देवा ? यह बात भी है कि कई ग्राम और प्रसज-सभाओं के मुख्य लोगों ने भी अभी तक अपना बीषा-नट्टा नहीं निकाला है, या निजालना चाहते नहीं हैं, इसलिये जाग-युता कर जमीन के प्रश्न की नहीं उठाके, और यह भी चाहते हैं कि दूसरे भी न उठाये । ऐसी स्थिति में अगर गाँव के गरीबों को तने कि उन बातों की विनसे उनका बीषा सम्बन्ध है, दावा जा रहा है तो कोई जाशबर्ष की बात नहीं है । ग्रामपचासों का प्रश्न देखा भी है, और किसी अर्थ में देखा नहीं भी है । यह नहीं है कि पचासती के कुछ मुखिया, पच-सरपच आदि नरो ग्राम-सभा की अपना प्रतिद्वंद्वी मानते तने है । वे सोचते हैं कि ग्रामस्वराज्य-सभाएँ मजदूरी हो जायेगी तो सता उनके हाथों से निकल कर जलता के हाथों में चली जायेगी । इसना ही नहीं, वे देखते हैं कि ग्रामस्वराज्य-सभा मानिसों और महाजनों के लिये, जो वे स्वयं होते हैं, एक नया संकल्प बन सरती है । दोनो दृष्टियों से कभी-नभी दुसरा भी होता है । उन्हें ग्रामस्वराज्य-सभा के प्रति सजा होती है, लेकिन हमें ऐसी स्थिति को सामान्य मानना चाहिए । हर समय में स्थिर स्थिती और पुनर्ने सवारी के बाल

परिपूर्ण की प्रक्रिया में ऐसी सजापटें आती हैं । यह समाज का 'नारमल रेजिजेंटें' है । हमें धीरे के साथ अपना काम करते जाना चाहिए । 'सर्व' से मय या अर्थन चाहे जितनी हो, उसके अवग रहने का साहज बहुत कम लोगों में होता है । पचासती के कुछ लोगों के विरोध से जन-जन को स्पष्ट करनेवाले किसी ब्यान्टीवत वा कुछ विगड़ने का सतारा नहीं है ।

यही बात राजनीतिक कार्यकर्ताओं के बारे में भी है । पहले वे सिद्धान्त का नाम लेकर ग्रामस्वराज्य को ब्यान्तहारिक बजाते हैं, फिर बानुन की दुहाई देते हैं, लेकिन जब देसते हैं कि काम गाँव का है और गाँव खुद ब्यागे बट रहा है तो वे गाँव के साथ हो जाते हैं । गाँव में रहने और गाँव का जीवन विचानेवाले कार्यकर्ता वा रख 'मैता-टाइम' कार्यकर्ताओं के दस से भिन्न होता है । स्थानीय 'मैताओं' को अपने प्रभाव और प्रभुत्व की अधिक विन्ता होती है, गाँव के काम की नम । लेकिन स्थिति ऐसी है कि गाँव के अधिशाम क्षेत्र स्थिति स्थिती-न-स्थिती राजनीतिक रूप से जुड़े हुए हैं । इसका उनके काम और विचार पर प्रभाव पड़ता है ।

दुसरा सवा ज्वाय है ? यह स्पष्ट है कि दलबन्दी और ग्रामस्वराज्य-सभा का मेल नहीं है । लेकिन बीई सभा, गाँव की ही या प्लाक की, अपनी सज-सज के लिये दल-मुक्ति को गाँव नहीं बना सरती । इसे हर एक की मुले दिस से रबीदार करना पड़ेगा । लेकिन यह यह जरूर कह सती है कि जलवा बोर्ड पचासिदारी ऐना न हो जिसने ग्रामदाल की जलें न पुरी की हो, तथा जो निगी दन का सजिय सरपच ही नवीकि बहु सकेके साथ जियमें दूसरे दन के लोग भी होये, निन्दज ब्यबहार नहीं कर सतना, लोगों को जलकी निपटसता में विचाराव नहीं होता । दूसरी बात यह बही जा सती है कि गाँव का काम सर्वसम्मति से होगा—

किसी विवेक स्थिति में सर्वानुमति से भी—इसलिये गाँव में दलबन्दी का काम नहीं है । अगर गाँव के लोग दलबन्दी से बलप रहेगे तो गाँव में रहनेवाली पाठियों के कार्यकर्ताओं की निपटा बरतेगी; उनमें भी दलनिपटा के स्थान पर ग्रामनिपटा आयेगी । नम-ले-नम इतना अवश्य होगा कि सक्रिय लोग अपनी 'राजनीति' की गाँव के बाहर रखेगे, और गाँव में ग्राम-स्वराज्य-सभा का निर्णय मानेंगे । हर हालत में ग्रामस्वराज्य के कार्यकर्ताओं और सहयोगियों को बार-बार गाँव की बात सामने रखनी होगी । उन्हें स्वयं इस बात का ध्यान रखना होगा कि वे किसी व्यक्ति, जाति या दल आदि के विरोधी न बनें । उनके ब्यापरण से गाँव का सतारवर्ष बदनगा । ग्रामस्वराज्य में जरूरत पड़ने पर अनौति और सज्जाय का प्रतिवार दिया जा सरवा है, लेकिन उसमें स्थानी रूप से विरोध या सपय की नीति ब्याप्ताने की सुसज्जाव नहीं है ।

मुसहरी में, तथा दूसरी जगहों में भी ग्रामस्वराज्य-सभाओं की निजिकसता के कई कारण हैं । प्रमाद, अनाम्या आदि सामान्य कारण हैं जो हरजगह हैं । उसके अवासा वे कारण भी हैं । (क) कार्यकर्ता का गाँव से सतन सगर्ति न रहना; (ख) ज्युवा धार्मिकों की निगी ब्योसा, मुस रूप से विकार-नमजदी, वा पुरान गंता, (ग) पचासती की सतन या निजिकसता में परोना; (घ) पचासिदारीयो वा ग्रामदाल के काम पर हज्जासर करने के बाद भी भीर-भीतर उसके कार्यनम में अर्थन, (ङ) पचासिदारीयो के मन में बीषा-नट्टा देने की तैयारी न होना, जिसके कारण वे नहीं चाहते कि ग्रामस्वराज्य-सभा सक्रिय हो, (च) सुसहमेदारी के बाल मुसहरी, (छ) राजनीति दलबन्दी के कारण सर्व-साम्य निर्णय और सैरुव का अभाव । (ज) गाँव की बरतना वा सुदेसने कार्य-बन का न होना ।

अब ग्रामस्वराज्य-सभाओं के जल

भू-मुक्ति-आन्दोलन

१८ सप्ताह सत्रास में विचार भूमि-
भूमि सम्भरण हुआ ।

सात हप्ताह से अधिक शारिकावियों
ने इस सम्मेलन में हिस्सा लिया । सभी
राजनैतिक दलों का सम्पर्क इस सम्मेलन
की विधा, यह दूसरी विदेशीय भाषी
भाषी है ।

एवं की शारिकावियों की हठकारी
दृष्टि कभीसे कमिश्नर बर्न ने देर-ना-तूरी
रुम से खाने बन्दे में कर रही है ।

जिने में संविदाद बनाने में अधिक
शारिकावियों होने के कारण वे क्यों से
बड़े जमीनदारी द्वारा शोषण व शोषित होने
के कारण उद्योगी अधिमत्या सब बात उठो
लिखाई देती है ।

सम्मेलन ने वास्तव में यह भी सुनिश्चित
रिखा है कि ११ सप्ताह '७० के बाद
जिन शारिकावियों को अपनी संपत्तियों के
बाध नहीं रही है, वह शारिकावियों को
लाभ दिलाने काहिए ।

आमारा में ग्रामदान पद्धति

२० प्र० सर्वोच्च महल के विपणन-
मुद्रक बलागो २ मार्च से ११ मार्च
'७२ के तब प्रकाश जिने में ग्रामदान-
बहालना नव भागोवन रिना करत है ।

इस प्रकाश ने यथा जेदे के लिए
उत्तं देता सब के संपन्नो को । अनुद-

याद दग, २० प्र० सर्वोच्च महल के
जन्मल हानोने दृष्टानन्द लगा २० प्र०
के प्रभुत्व सर्वोच्चो मेरा भी करिच भाई
ने २ मार्च से ११ मार्च तक के लिए
आपनी स्वीकृति प्रदान की है ।

**डा. सादर माधोसिंह आर्य-
समर्पण के लिए दरब**

चम्पलवाडी शक्ति शक्ति के एक
रहित मरण श्री हेमदेन बाबा ने एक
पेट में चम्पल क्षेत्र के दुर्भाग्यवान् शायी-
विद के एक रचित पत्र का जलित किया
है, जो इस प्रकार है ।

'हमपत्तियों ने अन्धकारात नारायणकी
की शक्ति पड़ी है । हमें सुखी दे हि
अन्धकारात नारायणकी ने यह नाम उलगा
है और हीनों प्रेमी की सखाती को
सहाय्युक्ति छोड़े प्रथम है ।

'हम, जो बसू का सभाज-विरोधी ताव
बड़े जानेराने भोग हैं, वे परिधिर्षण के
द्वारा के नारा बने हैं । हम की सभी
सहस्रिय मालिक के शोर बाग की
शक्तिपूर्वक जीवन जीवन पाठो है । देत की
हद भूलाना का अक्षर एक दर भी होता
है, लेकिन अन्धकार और अज्ञान की ओर
दे हमारे लिए सभी रातों बन्द होने के
कारण हम सब मरोग कर रहे जाते हैं ।

'अन्धकारात नारायणकी की शक्ति कर
में शोर भेरे शक्ति तथा बड़े शैव के लोग
कालजन्मन के लिए तैयार हैं ।

'हमें विश्वास है कि सभाज और
अन्धकार हृदयों का से नये दृष्ट के शोषण
और अन्धकार में शक्ति बनाने पकते तथा

सर्वांगी । अक्षर हीनर भी यह सम्भव है
कि ने उठो विना से सर्वान व नरे, इ-
निए अक्षरों के सत्य-भाव रिखा भी
कहो रहते काहिए ।

इस सम्पन्न में देव-व्यभिचार
(सीमाविहीन दुर्गति), और शक्ति-शक्ति
के विपणन (विपणन-व्यभिचार) का जलजित
बहुत है । अब दुर्गि के सभी सदन लोगों
की हद और दुर्गि सदन देना काहिए ।

—एन.एन.ए.

हम शक्तिों की सेवा जीवन जीने देने के
लिए अन्धकारात नारायणकी द्वारा बनाने
गये शक्तिदान में बुरा-बुरा सहायण करोगी ।'

यह सम्पन्नो है कि चम्पल पाठो
शोष में शक्ति बुरा बर्न से शारिकाविक
समुच्चो के भागलजन्मन के लिए हममें
कर रहे हैं । इस मुक्ति में उक्त के नवीन एव
राज्यपाल, मन्त्रसेवक और उच्चपदेवक हर-
बागो नव की सहयोग प्राप्त है । (सर्वेप्र)

ए.सी. रामोद्योग संघटक अन्धकारात

शारी शायोद्योग विद्यालय (आर) ।
शोषणो अन्धकार, शोषणो का ११ माह का
सारी शायोद्योग संपन्न अन्धकार बन का
प्रतिक्षण १ मार्च '७२ से शायोद्योग होने का
रहा है । शारिकावियों की चम्पल सहा-
यिच शोषणो छोड़े नृक का उगते सभ-
बस होने काहिए । खुने हुए शारिकावियों
को १०) शारिकाव शायोद्योग में बालेगी ।
शायोद्योग २० मार्च '७२ तक सहायक,
शारी शायोद्योग विद्यालय, शोषणो
अन्धकार शोषणो (शायोद्योग) के सान
पट्टेन बना काहिए ।

शायोद्योग प्रतिक्षण

शोषणो अन्धकार, शोषणो, शायोद्योग
का ११ शरीर शायोद्योग प्रतिक्षण अन्धकार
१ सर्वेप्र '७२ के एक ही रहा है । सर्व-
प्रतिक्षण शोषणो अन्धकार, शोषणो
शारिकावियों की शोषणो में एव ही का
शक्ति है । शारिकाव-कार २०) शारिकाव
शायोद्योग शोषणो । शायोद्योग शारिकावों की
जाने-बाने का शायोद्योग शोषणो रिखा
जायेगा । अन्धकार वन १२ मार्च '७२ तक
का बना काहिए ।

अन्धकारात
शारिकाव शायोद्योग
शोषणो, शायोद्योग

भूदान-तहरीक
उर्दू पाक्षिक
सातवाला पंखा : चार दरपे
रचित विचार
सबे सेवा कर, राजमन्त्र, शायोद्योग-१

सहरसा का अभियान : बाबा का सन्देश

४-सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष का

निर्वाचन

५-देश की परिस्थिति एवं प्राम-

स्वराज्य

६-मतदाता-शिक्षण

७-खोज-सेवकों की एवं सर्वोदय

मण्डलों की सक्रियता कैसे बढ़े ?

८-वस्त्र-याचिकाएँ एवं प्राम-

शासिकाएँ

९-सादी

१०-अध्यक्षकी अनुमतिसे अन्य विषय

संघ के आगामी अधिवेशन की

विषय-सूची तैयार की हुई है। -सर्वोदय

मण्डलों से प्रार्थना है कि वे प्राथमिक,

जिला एवं प्रदेश सर्वोदय मण्डलों की

बैठक बुलाकर इस पर चर्चा करें और

निर्णय लें। अन्य कोई विषय संघ-अधि-

वेश्य में लेना हो तो वे भी १० अप्रैल

तक सुझाने की इजाजत है।

मंजी, सर्व सेवा संघ

प्रामस्वराज्य समिति की एक बैठक में बिहार के कार्यकर्ताओं ने असाह-पूर्वक सर्व-सम्मति से निर्णय लिया है कि ता० १८ मार्च से १८ अप्रैल तक पूरे सहरसा जिले में सघन कार्य और ता० १८ अप्रैल को गाँव-गाँव में भूमि-वितरण गमारोह किया जाय। इसके लिए प्रदेश के कार्यकर्ताओं को तथा अन्य प्रदेशवालों को भी विमर्शित किया जा रहा है। ये ५०० कार्यकर्ता ता० १८ मार्च को सहरसा में एकत्र हों, वहाँ उनका दो दिन का शिविर हो। तथा फिर वे जिले के हर प्रखण्ड में महीने भर के लिए फैल जायें। किला शासकस्वराज्य अभियान समिति ने इस निर्णय का हार्दिक स्वागत किया। चर्चा के दौरान सुधी मुण्डीवा बहन ने कहा कि प्राथमिक समारोह की तरह मनाने की बात है तो इस समारोह के लिए जनता को थोड़ा आकर्षित होनी चाहिए। यह आदि के अनुष्ठान के लिए जनता की धम्मा होती है तो कितना बड़ा आयोजन सजा हो जाता है। ईश्वरप्राप्त वृत्ति के बिना जब परिवार या सत्या के आधार से गुलता का घेरा सजा किया जाता है, तो आयोजन को प्राथमिक स्वरूप नहीं प्राप्त होता। स्वयं व प्राथमिक की प्रेरणा मिलनी तीव्र होगी, उलना उठना तेज प्रकट होगा। इसलिए इस समारोह में

शामिल होनेवाले लोग एक माह के लिए स्वतः प्रेरणा से अपना समय देकर इस सघन-कार्य में शामिल हों, यह ज्यादा अच्छा होगा। करने इस दृष्टि को मान्य किया और तय किया कि इस कार्य को सफल करने के लिए सभी से योजना-पूर्वक तैयारी शुरू कर दी जाय। इसी तत्कालीन तय करने के लिए अध्यक्ष श्री राजेन्द्र मिश्र, मंत्री श्री महेश्वर नारायण, सुधी निर्मला बहन, सुधी सुशीला बहन, श्री विशालाक्षर भार्गव, श्री बुधमोहन शर्मा, श्री शृण्णराज मेहता, श्री सिद्धराज दत्ता, श्री कामेश्वर बहुगुणा तथा श्री तपस्वीर भार्गव की उपस्थिति बनायी गयी है।

सर्व सेवा संघ का अधिवेशन

सर्व सेवा संघ का छ.माहो अधिवेशन ता० २५ अप्रैल '७२ को रौंगहर के २ बजे से मरहोदर, जिला जयवंदर (पञ्जाब) में होगा। अधिवेशन ता० २५, २६, २७ एवं २८ को सवेरे १२ बजे जारी रहेगा। सब लोग-सेवकों की उपस्थिति प्राथमिक है।

इस अधिवेशन में निम्न विषय रहेंगे :

१-दिशगती की अह्मता-प्रति

२-पारलौी बैठक की कार्यवाही की

स्वीकृति

३-मंजी की रिपोर्ट (१३ अप्रैल ७२) से अप्रैल '७२)

इस अंक में

प्रश्न है तो चतुर्था

—साप्ताहिक १३१

अमेरिकी और भारतीय समाज

में हिता

—श्री डा० विश्वनाथ चटर्जी १३२

भारत में गरीबी-८

—प्रस्तुतकर्ता: श्री राममूर्ति १३४

विषय मुद्रा-नीय और तीवरी मुनिय

—श्री वैरिल पंवर १३५

तीर्थ-स्वल्प तात्या हाटव सरवटे

—सुधी निर्मला देशपाण्डे १३६

पुनाब और मेरी चिन्ता

—श्री वाशा राजेशकर १३९

भूटी की कुछ समस्याएँ

—श्री शशिार कुमार गुप्त १४०

मुसहरी की पदपादा-२

—श्री राममूर्ति १४१

अन्य स्तम्भ

आन्दोलन के समाचार

आदि के पत्र

मुस पूट का व्यंग्य विन

—'हृदयान एवमेव' से

वार्षिक मुद्रा : १० रु० (उपेद कागज : १२ रु०, एक प्रति २५ पैसे), बिसेस में २५ रु०; या ३० शिविव या ४ कागज ।

क संक का प्रथम २० पैसे। श्रीद्वयवत्त सट्ट द्वारा सर्व सेवा संघ के लिये प्रकाशित एवं मनेहूर प्रेस, आरामगो में मुद्रित



वर्ष - १८ अंक - २३, सोमवार, १ मार्च १९२२
 सर्व सेवा संघ पत्रिका विभाग,
 राजघाट, बाराबंकी-१
 गार ४ बरबंकी - बोन : १२१११
 संपादक
 रामभूषण

सर्व सेवा संघ

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

सर्व सेवा संघ

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

चुनाव का रंग

घोषणा अवकाश का हुआ इस चुनाव में रंग।
 मैनाओं का रंग तरह बरसा गया है रंग।
 बदल गया है रंग माल जगना घर छोड़ें।
 होकर के प्रति मन्न हाथ जगता से जोड़ें।
 बड़े मन्न बविराय घाट में देंगे घोषणा।
 भले रंग इस समय रहे जगता का शोषण।

जगता का कुछ इस तरह हो जायेगा हाल।
 पीत जायगा जब यहाँ इस चुनाव का काल।
 इस चुनाव का काल कि जब मैना आवेंगे।
 कर जोड़ें जगता को छोड़ जायेंगे।
 बड़े मन्न बविराय, कि तब वेडे क्या बनता।
 मैना घायें माल, मंगेते भूतो जगता



ग्रामस्वराज्य की पहली जिम्मेदारी : शिक्षा में क्रान्ति

विद्य कृष्णराज,

विद्योत्तर में मैंने लिखा था कि मेरी यात्रा अगर उन प्रत्यक्षों में हो, जहाँ पुष्टि-कार्य ना एक चरण पूरा हुआ है। मैं बहाना करता हूँ कि पुष्टि के बाद सृष्टि के लिए मार्ग खोजने का चिन्तन अभी से होना चाहिए। मेरी यात्रा मरीना प्रखण्ड में अगर रखते हों तो प्रत्यक्ष परिस्थिति के सम्पर्क में विचार करना आसान होगा।

पुष्टि का काम पूरा हुआ, तब समझना चाहिए जब ग्रामसभा अपने साथ कुछ काम करने लग जाय। कुल जमीन का चीपा-पट्टा बंट जाय तथा भूमिहीनों का नक्का हो जाय, जितने काम उदार मरीना प्रखण्ड में रहते हैं, वे भी समर्पण-पत्र भरकर उन-उन ग्रामसभाओं के सदस्य बन जायें, ब्रह्मलक्ष-मुक्ति हो जाय और कानूनी पुष्टि हो जाय। इतना काम अभी सपन रूप में बसाने की आवश्यक है।

उसके बाद पुष्टि के काम का मतलब है ग्रामस्वराज्य की स्थापना। इस विन्दु पर बड़ा प्रश्न यह है कि ग्रामस्वराज्य का कार्य और भूमिका क्या होगी? क्या पुष्टि के उपरोक्त काम पूरा होने के बाद प्रखण्ड बना रहेगा और सरकार के दूसरे-दूसरे विभाग के विभाग बने रहेंगे? अभी से सोचना होगा कि कौन-कौन विभाग सरकार-निरपेक्ष ग्रामस्वराज्य की जिम्मेदारी में आयेंगे? मैं चाहता हूँ कि ग्रामसभा के सदस्यों के साथ इन प्रश्नों की चर्चा बहलें।

मैं मानता हूँ कि ग्रामस्वराज्य की पहली जिम्मेदारी शिक्षा में क्रान्ति करने की है। १९२७ में जब कांग्रेस की भिदिङ्गी हुई थी तो गांधीजी ने देश के नेताओं को बताया भी था कि उनको सबसे पहला काम शिक्षा में क्रान्ति करना है, क्योंकि जब तक अनुप्य का निर्माण नहीं होता है सब एक राष्ट्र-निर्माण सम्भव नहीं है।

अभी मुसहरी प्रखण्ड में काफी सरया में ग्रामसभा के बने ही व्यवस्था यादू ने नयी शिक्षा की दिशा में प्रयोग करने को

बहा बर्षोंक के भी मानते है कि किसी प्रकार के स्वराज्य को अगर संगठित करना हो तो सबसे पहले वहीं शिक्षा की व्यवस्था करनी है। मुसहरी में ये प्रयोग सजीवता के ज्योतिर्माई कर रहे हैं। वे सरकारी स्कूलों के मुधार की दिशा में सोच रहे हैं। सुम लोगों को भी मरीना प्रखण्ड में शिक्षा का प्रकार क्या होगा, उस पर ध्यान देना चाहिए। मुसहरी के प्रयोग के अनुपप ये यहाँ का भी काम चलाना होगा ताकि तत्काल कुछ बदल हो सके। लेकिन साथ-साथ आगे बढ़कर और गहराई का प्रयोग भी हाथ में लेना चाहिए।

१९३७ में बापू ने स्कूलों शिक्षा में मुधार की बात की थी और उसी दिशा में मुसहरी एवं मरीना का प्रयोग होना चाहिए। मैं मानता हूँ कि ज्योतिर्माई के मार्गदर्शन में यह काम हो सकेगा। लेकिन १९४५ में गांधीजी ने जो समय नयी जालीम की बात कही थी, यह बहुत महत्व को है। उन्होंने कहा था कि शिक्षा की अवधि गर्भ से शुरू तक है। शिक्षा-शाला पूरा समाज है। उस समय हिन्दु-स्तानी जालीमों सप, रिपोर्ट छपाने के निवास और कुछ न कर सका। बापू के 'कैबिनेट मिशन' में फौज जाने के कारण जालीमों सप की उदवा मार्ग-दर्शन नहीं मिल सका।

१९२६ में आर्यभारतम् विनोबाजी के साथ विनिताबु में परयात्रा में रहे। उनके प्रेरणा संकर १९२७ में हिन्दुस्तानी जालीमों सप की रिक्तों की बैठक में उन्होंने समय नयी जालीम का प्रस्ताव स्वीकार कराया। उस प्रस्ताव को पेश करते समय नायकम्बी ने जो ब्यवस्था दिया था वह बहुत ही महत्व का था।

प्रस्ताव और नायकम्बी के ब्यवस्था को पढ़कर मुसहरी गढ़न ही उस्ताह हुआ था और मैंने उन्हें तुरंत सम्पर्क कर मुमान रखा था कि वे और आया दीदी

विशी घामदानी गांव में बैठकर रचना प्रयोग करें। मैंने भी इसमें पूरा सहयोग करने का वादा किया था। उसी उस्ताह में मैंने 'समय नयी जालीम' मुस्तक भी लिख डाली थी।

वे इसकी तैयारी कर रहे थे, इसी बीच जालीमों सप के विनोबाजीम के प्रश्न को लेकर उन लोगों के दिल कुछ टूट गये और एक प्रकार के नये नाम के लिए उस्ताह नहीं रह गया। फिर शिक्षाज्यम को लेकर उनके मन में निराशा रहनी और समय नयी जालीम का प्रश्न हमेशा के लिए पीछे पड़ गया।

फिर पिछले साल सहरसा के काम के निवसिते में मैंने समय नयी जालीम के प्रयोग के लिए ग्राम-गुरुकुल की योजना रखी थी। मैं मानता हूँ कि अब उस दिशा में कुछ काम करने का प्रयास करना चाहिए। मेरी यात्रा अभी अवधि में अगर कुछ निवस साथे ही उस्ताह होगा। इसके विश्वास ग्रामस्वराज्य टिकेगा नहीं। मैं मानता हूँ कि अहिंसक समाज-रचना के लिए गांधीजी ने जितनी परिकल्पनाएँ की हैं, उनमें समय नयी जालीम का विचार ध्येष्ट है। उन्होंने भी एक बार कहा था कि नयी जालीम उनकी सर्वध्येष्ट देन है।

भोपाल में मुसने पाठकर जो दण योजना के बारे में कहा था। उसने भी इसके लिए उस्ताह जाहिर किया था। क्या वह दण यात्रा में साथ रह सकता है? मैं तो दो दिन का पञ्जाब सनायत कर लगी बहूँगा। अगर वह साथ रहे तो लगातार चर्चा से कुछ योजना बन सकती है और जितने गाँव में इसकी सम्भावना भाव्य हो, उन गाँवों में मेरी यात्रा के बाद पाठकर गहराई से व्यवस्था करके कोई भाव निचालने का प्रयत्न कर सकता है। फिर यह सुद ही दो-दक हागी के साथ दण प्रयोग में लग सकता है।

भोपाल, सन्देश, सहरसा (बिहार) चोरेनुमाई १६-१-७२

मतदाता क्या करे ?

पुनः लड़नेवाले राजनीतिज्ञ हर चुनाव में नया घोषणा-पत्र क्यों निकालते हैं ? क्या वे यह चाहते हैं कि विद्यमान घोषणा-पत्रों को मानने रखकर मतदाता उनके काम को परतें और नये चुनाव में वोट दें ? या, यह कि पुरानी बातें मूल जायें और किन्हीं नये बातों से मुक्त होकर उन्हें सरकार में भेजें ? हों सफ़ता है वे यह चाहते हैं कि मतदाता घोषणा-पत्रों को देखें ही न, और सिर्फ़ कुछ सामान्य बातों से प्रभावित होकर वोट दें ।

दिखाई यह दे रहा है कि घोषणा-पत्र का महत्व सामान्य नीर पर न मतदाता के लिए रह गया है, और न उम्मीदवार के लिए । मातृम तही स्वयं राजी के लिए कुछ रह गया है या नहीं । लेकिन राजनीतिज्ञ का जो रवैया है, और चुनाव जीतने के लिए जो सारी कीर्तियों को खोजी है, उनमें घोषणा-पत्रों का क्या स्थान है, इसका पता ढूँढने से भी नहीं चलता । कभी कुछ दिन हुए दरभंगा में सप्तदश का चुनाव हुआ । दो मुख्य दलों में भिड़त थी । उनके दो बड़े उम्मीदवार थे । सप्तदशों की कमी नहीं थी । बायें और बायें का डेर था । वैसे भी बिठने लगे, गिनना मुश्किल था । चुनाव के बराबर मैं ने सारे काम बिचे गये, वे सारे दाँव सपाये गये, जितनी कातून में मगलही है । दसों चुनाव में नहीं, हर चुनाव में हर उम्मीदवार ने यही कहा है : 'हमारी पार्टी जीतेगी तो सबसे पहले मुझे सत्ता प्रशासन कायम करेगी ।' यह वादा हर एक ने हमेशा किया है । चुनाव में कुछ भी उठा न रखीसने लोग बाधा करते हैं कि जीतने पर शाह सुधार प्रशासन कायम करेंगे । दिखनी निश्चिन्त काम है यह किन्तु उम्मीदवार बग़र कहते रहे हैं । और मतदाता सुनते रहे हैं, और राजी देखते जा रहे हैं कि चुनाव और प्रशासन दोनों की क्या गति वे अपनी इच्छा से बना रहे हैं ।

दश बान चुनाव का चुनाव की हारमी है । हर जगह दो बायें मुभाई दे रही है । एक और वे कहा जा रहा है 'देसो, हय दिन्की बं ये तो हमने अपना देख को लड़ाई जीती । हम रागो में हो जायेंगे तो गरीबी की लड़ाई भी जीतेंगे ।' दूसरी ओर से कहा जा रहा है, 'बपना देख की लड़ाई सारी निकलर जायेंगी है । इसकी शाबाशी किमी एक को क्यों की जाय ? गरीबी की लड़ाई दिन्की में नहीं, पटना और समनज में लड़ो जायेंगी सिधे उनसे उगाय लम्बी तरह हम महे छाते हैं । हयें सरकार में येकर देखो ।'

भाषण के गरीब ने बारी-बारी सचको देना है । यह अपनी गरीबी को लम्बी तरह सपना है । अगर यह यही समझा था रहा है तो गरीबी के विनाश करने बरसों के होनासारी हम लड़ाई की निचे उगाय राशबाशियों में लड़ रहे हैं । गरीबी से लड़ने-पड़ने देष का शासन ही कोई दान बना हो को 'समाजवादी' न ही गल

हो । गरीब सोचता है कि गरीबी की लड़ाई का नाम क्यों न बदल दिया गया ? फिर सोचता है कि यह भी नये जमाने की एक नयी चीज होगी । इसके गुण का अभी उसे पता नहीं है । इतना यह जरूर देख रहा है कि गरीबी की लड़ाई ऐसी है किममें जीत तो समाजवाद की होगी है लेकिन हार गरीबी की नहीं होगी । किन्तो भी दल की सरकार हो एक के बाद दूसरे कातून बाने है । हर कातून के पास होते पर यही कहा जाय है कि यह समाजवाद की जीत है । इस तरह की जीत देस भर में समाजवाद की होनी जा रही है, लेकिन गरीबी गरीब को नहीं दोकती । अपना वेरोनगार का लक्षण हल नहीं होता । अपनी सेहत को कीमत नहीं बढ़ती । छोटे-बानों की पूँजी नहीं मिलती । नीचे के किसान के धन में ह्रासि कानि नहीं पहुँचती । यह अज्ञात में जाना है तो न्याय की, और विद्यालय में लड़के को भरती कातून है तो गिटा को, उसे विसा देकर ही खरीदना पटना है । फिर भी विसा न्याय मिलता है और विसा गिटा मिलती है ? यह देसना है कि नहीं बचता जगता ईशान, नहीं ग्लोनी उठको इशान, और नहीं मिलती उठको रोटी ।

ऐसे समाजवाद को मतदाता क्या समझे ? नेता के लिए समाज-वाद का कार्य है चुनाव में जीत । लेकिन मतदाता के लिए ? चुनाव के घोषणा-पत्रों में और नेताओं के भाषणों में समाजवाद ही समाज-वाद है, लेकिन मतदाता नीर उनके बायें और के जीवन में ? यह समाजवाद को कहीं दूँडे ? यह एक ऐसा छात्र है जो बरसात के जलन की तरह चुनाव में चारों ओर चमकते लगता है, लेकिन चुनाव खाम होते ही न जाने कहीं गायब हो जाता है ।

ऐसी स्थिति में यह मानना बरिज है कि चुनाव के घोषणा-पत्रों का कोई महत्व रह गया है—मतदाताओं के लिए या उम्मीदवारों के लिए । फिर क्या क्षास्वर्च कि मतदाता घोषणा-पत्रा को न देखकर दूसरी चीजों को देखें जो नहीं देखी चाहिये, और जैसे-जैसे वोट देकर अपनी जान दुखावे । और जब भी कई जगह ऐसा हो गया है कि मतदाता मतदान नहीं करता और मतदान ही जाता है । यह इनकी बिना क्यों करे ?

अगर चुनाव में से घोषणा-पत्र निराम जायें तो चुनाव की राजनीति में क्या बचता है ? किन्तु जीत और हार, सत्ता और अधिपार । इसके किसान और क्या ? फिर राजनीति में कोई चीज गुणात्मक नहीं रह जाती—न विचार, न विद्या, न सत्य । हर राजनीति एक क्षमशाप बन जाती है । बाट बिशाम का प्रतीक नहीं रह जाता, मात्र कायब का दुकाय रह जाता है । मतदाता मत भले ही देता रहे, किन्तु अपने मत को दस छोटे प्रकृया से जगह कर लेता है, वह भाग लेता है कि यह खेन कुछ क्षाम तरह के सोचो का है । ऐसी राजनीति में गति या बरिज नहीं रह जाती, यह कोई परिचर्यन नहीं था सचतो । यह स्थिति स्थानी का क्षासन बन जाती है । बरोसों लोग सबसे लड़ते रह जाते हैं । निश्चिन्त ऐसी राजनीति देस के जीवन की बमबोर—

कैरीअर बनाम मिशन

—भाका कालेजकर

(एक)

जब भारत में अंग्रेजों का राज था तब सरकारी नौकरी करना साम-
बाहक भले ही हो प्रतियक्षा की बात नहीं
थी। कोई आदमी कोई छात्रों की नौकरी करे
तो उसमें कोई शेष नहीं था लेकिन प्रति-
ष्ठा भी नहीं थी। प्रतिष्ठा ही केवल
बिदेनी राज का विरोध करके स्वराज्य-
प्राप्ति के लिए कुल-न-कुल करते रहने
की। सामान्य जनता बहुतेरी को कि
स्वराज्य-प्राप्ति के लिए त्याग करना,
जबता की निस्वार्थ सेवा करना, और
जान खतरों में डालना, यही थी राष्ट्र-
सेवा। बाकी की सब प्रवृत्तियाँ या तो
राष्ट्रद्रोही होती थी या हीनतापूर्ण।

स्वामिय होने के बाद सरकार ही
राष्ट्रीय बन गयी और स्वराज्य के अर्ध-
वर्ष के नेता सरकार को चलानेवाले सभी
प्राप्ति धन गये, तबसे सरकारी नौकरी भी
राष्ट्र-सेवा बन गयी है। प्रजा-सत्ता का
राज्य समाजवाद में माननेवाला है यानी
प्रजा-सेवा के अधि-से-अधिक काम
सरकार द्वारा करने की नीति मान्य हुई
है। ऐसी हालत में सरकार चलानेवाले
शेष राष्ट्र के नेता माने जाते हैं। सरकारी
नौकर राष्ट्र-सेवक हैं। तब स्वाभाविक
समान-सेवा करनेवाले लोगों की कोई
आपस्यता ही नहीं रहती। अन्त-सेवा के
सब-के-सब कान करने का आग्रह जब
सरकार रखती है तो हर एक क्षेत्र का
राष्ट्रीयकरण या तो सरकारीकरण पसन्द
होने लगा है, जब सच्चे राष्ट्र-सेवकों के
लिए सेवा का एक ही मार्ग रह जाता है,
वह है सरकारी नौकरी।

पुरानी राष्ट्रीय भावनाएँ और राष्ट्रीय
विचारों से अब सरकार मान्य हुई है, तब
कालेज व सुनिवृत्तियों बन गयीं। उन्हें
सरकारी प्राण्ट भी मिलने लगी। तब नहीं
के अन्त-प्राण्टों की बन कर रहा लेने का कोई
कारण न रहा। सरकारी प्राण्ट लेने पर
सरकारी नियम और नीति मान्य करनी
ही पड़ती है। स्वतंत्र प्रयोग करनेवाली
संस्थाएँ अब पहले के जैसी नहीं रही।
इसलिए स्वायत्त और बलिदान करने का कारण
रहा, न बानाकरण। राष्ट्रीय सरकार का
विरोध करनेवाले लोग विपन्न के नेता
बने। उनकी संस्थाएँ, जलती रहती हैं
लेकिन उनको कोई खास प्रतिष्ठा नहीं है।

ऐसी हालत में जो पीढ़ें भोग राष्ट्रीय
सरकार के प्रति आदर रखते हुए उसके
अभिप्राय रखते हैं और राष्ट्रीयों के स्वतन्त्र-
धन कार्यक्रम को स्वतन्त्र रूप से बनाते हैं
उनको जनता की तरफ से कभी मदद
मिलती है, कभी नाम मात्र मिलती
है। जनता बहुतेरी है कि "अगर आप
राष्ट्र-सेवा करते हैं तो सरकार से
आपको मदद मिलनी चाहिए अथवा
प्राप्ति के नाम जिनको जनता ने दत्त-
बाद करके अपने दिमि उस गांधी-न्याय-
विधि से आपको दंडे मिलने चाहिए।
अगर दोनों से नहीं मिलते अथवा दोनों से
आप नहीं लेते तो उनका कारण आप ही
जानें। हमें उसमें विलपरणी नहीं है।"
समाजिक आर्थिक जीवन में आदरदा एसा
ही सामुहिकपण रखनेवाला है। अर्थात् स्वतन्त्र
स्वातन्त्र का विरोध कोई नहीं करेगा।
लेकिन व्यक्तिगत सेवा के लिए कोई
समुहकृपा भी नहीं रहेगी।

एक दिन एक लड़की ने आकर मुझे
पूछा, "मैं किसी पालेज में पढ़ती थी
हैं और पी० एच० डी० भी तैयारी भी
करती हूँ। जगति मिलने के बाद क्या
करना चाहिए वो सभी तक मैंने सोचा
नहीं है। आपसे सहाय और दिगा-दर्शन
की कृपाया रखकर आया हूँ। आरको
माते देश की अनेक सहायों का परिचय
है। निर-निर्दिष्ट लोगों के द्वारा राष्ट्र की
योग सेवा ही सक्ती है ही भी आप जानते
हैं और आपके पास जाने का विरोध
कारण भी है।

जब औरों के पास जाने हैं तो उनकी
को श्रिय क्षेत्र है कही क्षेत्र में खीचने का
वे प्रयत्न करते हैं। वे लक्ष्य सचुद्धकर
नहीं होते, अपने-अपने क्षेत्र के क्षेत्र होते
हैं, उसी की मार्ग करते हैं। साथ हटकर
है। विद्यार्थी की योगता, उसके विरोध
पूर्ण, उसकी योगताएँ, उसकी अभिप्राय
यह सब देखकर आप समाह देते हैं और
राष्ट्रीय उत्थान के, सामाजिक उत्थान के,
सब धर्मों के बारे में आपको एक-सी
दिक्कत होती है। इसलिए आया रहती है
कि हमारी योगता, परिस्थिति और
अभिप्राय का स्वातन्त्र्य और जनता
की विरोध मान्यपन का दिक्कत उत्थान
भी बना सहाह देंगे।"

मैंने कहा कि बात सही है। मेरा
किसी एक ही क्षेत्र के प्रति पसंदा नहीं
है। लेकिन मैं बोड़े से परिचय वे या
एक-दो प्रतापताओं में किसी को योगता
या अभिप्राय तब नहीं कर पाया। विरोध
परिचय के बाद ही मैं विद्यार्थी को प्रहवान
खता हूँ। मेरी दूसरी बलिदान यह है
कि हाताकि मैं देश में सहाह-सहाह जाता

—बनाती है। उसके हाथ में देश का भविष्य सुरक्षित नहीं है।

देश के हर राज्य में एक ही दल का शासन हो तो नियरदा
रहेगी और देश बना नकेगा। ऐसा बहाना और मानना बहुतेरी
नौकरता का उदाहरण है; सरकारी को है ही। दूसरी और किसी
भी दल द्वारा प्रवृत्त पद्धति का कोई उपायमक विफल न

प्रस्तुत कर सक्ता एक ऐसी दुर्लभा है जो विद्वान् करती है कि
देश का जीवन कंठे बनता में यह गया है।

जो दुष्ट हो रहा है जब मजदूरी के नाम में। वेचारा
मजदूरता बना करे। यह जिस चीज का तितार है उसमें स्वयं
शरीर है।

हैं, अनेक लोगों से और सरपंचों से मेरा परिचय है, तो भी मैं थय दिन-ब-दिन और नम्बर होता जा रहा हूँ। जो आदमी तदर्थ है, जवना भी उसके प्रति तदारक होती है। इसलिए मेरी जानकारी थय पढ़ने से बहुत कम है। तो भी मैं कुछ-कुछ दिखा दर्शन कर सूना सही।

इतना कहने के बाद मैंने देस की बदली हुई परिस्थिति का थोड़ा-सा वर्णन किया जो इस लेख के पहले हिस्से में मैंने किया है और थय मैं कहूँ —

प्रायः भी राष्ट्र में काम करनेवाले लोगों के में दो विभाग करता हूँ। (१) अपने जीवन के लिए कोई एक विषय का (समाज-हित के किसी क्षेत्र में सेवा करने का) का जिम्होने लिया है। (२) और बड़े लोग जिनको कोई जगह क्षेत्र में काम करने के धन, प्रशिक्षण और तरक्की पाने की उम्मीद है जिनको मैं भारतीयों (कीरीमर) कहता हूँ।

थय इन दोनों में कीरीमरवालों को मैं अनलिपित मानता हूँ, न कम समाज-सेवक। समाज का इलाज करने-वाला क्षेत्र पराप्त करनेवाले धन के साक्षर लोग मेरे पास आते ही नहीं। जो आते हैं वे धन-प्रशिक्षण और तरक्की चाहते हैं सही, जिसे धन्य क्षेत्र का उनका भाव्य भी नहीं रहता, लेकिन समाज की जिम्मे-वेबा होती हो, भविष्य नहीं, ऐसे ही क्षेत्र है कीरीमर पर। ऐसे लोगों को मैं लगाह तो देता हूँ, से-वार क्षेत्रों की विचारिका भी करता हूँ, और करता हूँ थय इसका हूँ को ध्यान में रखकर अपना कीरीमर दूँ

सौभाग्य। क्षेत्र अपरा तथा पराप्त करने के बाद मेरी विचारिका की आवश्यकता ही तो वैसा विचारिका-नम में थिय भी हुआ बनेरि में तुम्हें कच्छी तरह से पढ़ना सखा हूँ। और विचार सोचने में तुम्हारे साथ का विचार नहीं करने। तुम्हारे जैसे को देना से सखा का और करना का भी लाभ है। दोनों इतिवृत्तों से सोचकर मैं विचारिका करता हूँ। इन्हें मेरे विचारिका-नम की भाँड़ी नीयत भी रहती है।

थय मेरे पास जो लोग विषय की दृष्टि से आते हैं उनसे मैं कहता हूँ कि थय त्यागपथ दीक्षित जीवन व्यतीत करना चाहते हैं उसको मेरे पास विषय बदर है। हरएक जिन्हे आदमी के लिए सोचने-धीने का, बनने-बिस्तार का, रहने का और कोई सखर का प्रबंध होगा ही चाहिए। बूले रहकर भगवान की भक्ति भी नहीं होगी। लेकिन थय उनका हक और सोचने-धुन का ध्यान साधना सेवा के लिए और समाज के उत्थान के लिए ही होगी। थानी दीक्षित जीवन को अधिक-से-अधिक स्वतंत्रता होगी चाहिए। आपको ऐसी ही सखा में काम करना चाहिए कि जहाँ पर सरकारी नियमों की जगह अधिक न हो, साम-दायिक, कृषिवादी, दक्षिणायनी पुराने नेताओं का राज्य न हो जपना परदेश के स्वतंत्र प्रायत में भी नये-नये प्रयोग करने की जाकारी और अनुसंधान बाखली से मिलनेवाली नहीं है। थानी, धरनी और मित्रमयी लोग ही ज्ञानिवादी प्रगतिवा-कमल में ला सकते हैं। थयर थय इस तरह के काम-धर्म्य करनेवाले विना-नरी हैं तो थयके योग्य वायुमण्डल में थिया सखता हूँ। सम्भव है कि थय थोड़े थयुधन के बाद जानी ही एक स्वतंत्र सखा और स्वतंत्र सेवा-क्षेत्र सखा करने और उसके लिए जायोगी धारियाँ भी थो दूँ से।

अधिकतर युवक और युवतियाँ कीरी-थयके क्षेत्र में जाकर ही सेवा कर सकेगी। उनकी प्रशिक्षण कम नहीं जपानी है। राष्ट्र का बहू-सा काम जपनी के द्वारा होगा। लेकिन प्रगति और ज्ञान के लिए तो दूरके ही जग के हिम्मतवा-कच्छरिण्य और धार्मिक-मिथिनी ही चाहिए।

थय ही सखा है कि मनुष्य प्रायः न कीरीमर के बजल से प्ररित ही, थाने जाकर जलमें विषम की भावना दूर होने जायेगी। ऐसी ही परिस्थिति का स्थान

करके विवायत के एक विधायनी ने कहा था :—

राष्ट्रीय जीवन के गित-गित क्षेत्रों में काम करनेवाले लोगों की प्रायदनी एक-सी नहीं होगी। क्षेत्रों में वकालत करनेवाले और उद्योग-दुनर तथा विचारक करनेवाले सबसे अधिक काम सकते हैं। इतना प्रबोधन थिया के क्षेत्र में हम नहीं दे सकते। परिधाय यह होता है कि प्रथम कोटि के विद्यालय और कामकुशल लोग थिया के क्षेत्र में आते ही नहीं। और इस क्षेत्र में थयर दोयम कोटि के लोग थय सवे तो राष्ट्र के लिए ऐसी स्थिति सखतना है।

इसका इलाज हमने दूँद निकाला है। हमारे थिया क्षेत्र में नीचरी दूँदने जो आते हैं उनको प्रारम्भ में कच्छी तगस्वाह देने का हमने लय किया है। इस तरह हीथियार-से-हीथियार लोगों को हम थिया के काम में लीज सकते हैं। एक दस थिया द्वारा सेवा करने का काम उच्छोने से थिया तो उस काम की प्रशिक्षण उनके ध्यान में बैठ जाती है। फिर थय कीरीमर में कच्छा तगस्वाह और सरकारी न थिली तो भी सवे छोड़ने का और क्षेत्र बदलने का जपना भी भी नहीं होता। थाने से कीरीमर दूँदने और रहु थये थियवरी बनकर। ऐंसा ही हर जगह थाना जाता है।

जो ही, इराज्य होने के बाद राष्ट्र-सेवा की, राष्ट्रीय प्रगति की और प्रायतक ज्ञानि की दृष्टि से गहराई से सोचने के दिन थय रहे हैं। कोई भी समाज ज्ञानिवादी विचारियों के थिया प्रायतन नहीं बन सखता। थय और हितचरुन की कच्छ से सके ऐंसा कोई जीवन-सख है नहीं। *

लाइब्रेरि
बिरोस
पःदुये नया सखरुध
सर्व सेवा सय प्रराशन
राजपद, भागवती-*

हरित क्रान्ति

१. भूमि-सुधार के सम्बन्ध में तीसरी पंचवर्षीय योजना में तिराया गया है : "भूमि-सुधार की ओर प्रशासन ने पर्याप्त ध्यान नहीं दिया है। नीचे के अधिकारियों ने कानून की उपाधी होने दी है। फासल पर काल के लिए, ग्रामीण जनता का सहयोग भी प्राप्त नहीं किया गया है।" यह सही है कि भूमि-सुधार के लिए ग्रामीणों का सहयोग खासतौर से नहीं मिल सका, क्योंकि गाँव में अधिकतर लोग भूमि के मालिक हैं—बड़े या छोटे। उनके मन में भूमि-स्वामित्व को जो वरदान है उसके भूमि के किसी नये कानून का भेद नहीं बैठता, क्योंकि उनका उनके हितों पर प्रभाव पड़ता है।

यह भी हुआ है कि सुधारों को लागू करने के लिए रेवेन्यू-विभाग को मजबूत करना चाहिए था जो नहीं किया गया। जमींदारी क्षेत्रों में तो रेवेन्यू-विभाग और भी ज्यादा कमजोर था बच रहा है। फिर भी अगर कोशिश की जाती तो कानून बिना ही लागू किये जा सकते थे। पहले साहू के मालिकों के सम्बन्ध में कुर्रवाई की जाती फिर गाँव के ऊपर भूमि रखनेवालों के सम्बन्ध में। इस तरह का कार्यक्रम बनाया जा सकता था, लेकिन नहीं बनाया गया।

यह बात भी ध्यान में रखनी है कि भूमि की दलील अधिक मजबूत है, मजबूत है, कि किसी नये कानून को लागू करने में बाधा है। बाँटनी भी सुधार निरर्थक है जब तक बेरजनी न रहे और लगान स्थिर न हो। भूमि का वाजार ऐसा है कि उसमें उसके मूल्य को मजबूत करना मजबूत बज्र है। इसलिए जमीन को उठाने (टेनेसी) की प्रथा को बुरे धोर पर समाप्त कर देना सबसे अच्छा है। कुर्रवाई के अनुभव से इस बिचार की पुष्टि होती है।

२. भूमि के स्वामित्व अथवा खेती की भूमि के निरक्षण का प्रश्न दूसरा है। टेनेसी में सुधार का इतना ही सफल है कि खेतियारों का जोतना-बोना है उसकी उपज में उसे अधिक हिस्सा मिले, तथा यह वेतन न दिया जाय ताकि उसके मन में अच्छी खेती करने की प्रेरणा बनी रहे। अगर खेतियारों को ही उपज का जोत की भूमि का स्वामी बना दिया जाय तो मालिकों की भूमि खपने-थपने में जाती है। लेकिन यह सम्बन्ध में दो स्थितियाँ पैदा होती हैं। एक ओर जब खेतियारों को ही स्वामित्व दे दिया जाता है तो पहले के मालिकों को मुआवजा देना पड़ता है। दूसरी ओर अगर मालिकों को विशेष स्थिति में किसी खेती के लिए जमीन प्राप्त करने की छूट दी जाय तो छोटे और नये खेतियारों को दे जाये हैं। 'टेनेसी' को ध्यान करने का सही सध है कि जो खेतियार है वही स्वामी हो।

टेनेसी पर रोक लगाने से भूमि-स्वामित्व की समस्यागत रूपता बहुत कुछ बटन जाती है। लेकिन साथ ही भूमि को बचाने रखने पर भी रोक लगनी चाहिए क्योंकि अक्सर टेनेसी कार्यक्रम के रूप में लिखा रहती है। लेकिन ऐसे विधो कानून पर अमल आसान नहीं है क्योंकि खेती की मजबूत अधिक है। ज्यों ही टेनेसी और कार्यक्रम को लागू से रोकने की कोशिश होती है वे फिर बटन कर दुबरे रूप में प्रकट हो जाते हैं। टेनेसी फार्म का नीकर बत यात्रा है, और बचकन का हानि प्रसार की खेती का हो जाता है।

३. तीसरी पंचवर्षीय योजना की अग्रिम में एक विशेष बात हुई। खेती की नयी सम्भावनाएँ देखकर खेती के मालिकों को रूढ़ खेती करने की सलाह हुई। भारतीय

खेती के इतिहास में चायप पड़ती बार यह सम्भव हुआ कि भूमि-स्वामी बननी खेती खूब करे, उत्पादन बढ़ाये और साथ ही मजदूरों का मजदूरी से भी बचे। इसका हमारे प्रशासकों और योजनाकारों पर यह अक्षर हुआ कि 'उत्पादन-वृद्धि पद्धत' की व्यापक नीति बन गयी, और निरक्षण का न्याय (डिस्ट्रीब्यूटिव जस्टिस) पीछे पड़ गया। अर न्याय का प्रश्न फिर सामने आया है।

४. विषमता और नयी तकनीक

हरित क्रान्ति के सन्दर्भ में लोग प्रकृत गुण रूप से उमरकर सामने आये हैं। एक, क्या खेती में तकनीकी प्रगति खेती की आमदनी के निरक्षण में विषमता बढ़ायेगी या घटायेगी? दो, क्या उसके कारण यह होगा कि खेती के लिए आज मिलनी न्यूनतम भूमि आवश्यक है उसके बच की आवश्यकता हो? तीन, क्या नयी तकनीक से खेती में रोजगार की सम्भावना बढ़ेगी ताकि भूमिहीन को भले ही भूमि न मिले किन्तु उसे खेती में पर्याप्त काम मिल जाय?

खेती की आमदनी में विषमता का मुख्य कारण है खेत की विषमता। ज्यादा खेती होगी और उमने खेती होगी तो आमदनी अधिक होगी ही। यह विषमता कंठे दूर होगी 'उत्पत्ती की प्रगति से इनका हुआ है कि सिंचाई हो तो उपज बहुत बढ़ जाती है। ग्रिनव और अतिविक्रम भूमि की उपज में बहुत फर्क पड़ गया है। पानी और खाद के मिल जाने से छोटी खेती में उपज खेती और धन का अनुपात अधिक सम्भव हुआ है। छोटी खेती में परिवार अपनी मेहनत से खेती कर सके हैं जब कि बड़ी खेतीवालों को मजदूर सहाय पड़ता है जिससे बाँटो खर्च होता है।

५. यह प्रश्न में कुछ बातें हैं जो बड़े महत्व की हैं। एक यह है कि विविध और अतिविक्रम खेती में बहुत अधिक अन्तर पड़ गया है। इस विषमता का समाधान के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है। →

अहिंसा की उत्पत्ति : बंगला देश की देन

—देवेन्द्र कुमार गुप्त

हम जितना मानते हैं, उसके प्रति हमारा नैतिक समर्थन भी है।

माथी-विचार युद्ध-विरोधी 'पंथिपिस्ट' से भोजा मिल है। अन्धकार के प्रतिहार में मानवताही नहीं की जा सकती है। यह प्रतिहार का स्वरूप जितना अधिक बन सकता है, उतना होना चाहिए पर उससे पूर्व नहीं। मोड़ा जा सकता। इसके तीन प्रकार हो सकते हैं

१—यदि मजबूत बनना जायेवाला हिम्मत से जतनी जान दकर भी अन्धकारों का मुकाबला करता है पर उसे हानि नहीं पहुँचाना तो वह पदावीर है और अहिंसा ही विजय लक्ष्य होगी, माँ ही उस स्थिति की हमारी समस्त आज राख नहीं है।

२—यह कटाघु की शक्ति शरण का प्रतिहार करने कोच जगो से बड़े बह जानते हुए भी कि शासकों के सामने वह कभी टिक नहीं सकता पर उनका अन्तरीय मानस प्रतिहार करना प्रयत्न है। यह अहिंसा का ही स्वरूप है, जतनी मानवदुति धार-रखा के लिए।

३—और आगे चलकर युद्ध का भी स्वरूप हो सकता है जितने दण्ड-बलि का जैसे मायाचार-धमन में राष्ट्र के अन्दर उदात्त होता है, वैते ही अन्तराष्ट्रीय क्षेत्र में उदात्त हो। यह भी हिंसा का नयन न मानकर दण्ड का माना जा सकता है।

कोचो ही स्थितिमें अन्धकार के प्रतिहार को ही और हिंसा से बिल्कुल है। इनमें से कौन-सी सीजो पर कोई इकाई बसतेगो यह उसके अन्तर-गटन पर निर्भर है। पर यदि उस शक्ति की दिशा शक्त की ओर है और उसमें अन्धकार अहिंसा की शक्त है तो अन्धकार ही वह हवासे लिए मान्य नयन होना चाहिए। यद्यपि अहिंसा का से हमारा सज्जन सहयोगी बनवाने, धर्म के अनुसार सम्पूर्ण अहिंसा की ओर होगा। यकला देग भी मुक्ति न दण्ड उन्मान की दुनमाया है, ऐसा लगता है।

युद्ध हुआ और सारा सात करोड़ की आबादी का दुनिया का आठवाँ भूक भागदार हो गया। युद्ध में कोई रक्त-नीच हथार लोगों की जानें नहीं और करोड़ों की समाप्ति लपट हो गयी। संशुद्धों बने-बनने पर उभर गये। सभल दिल में बराबर उठने हे कि बना इस प्रकार के युद्धों को बन्द करने का कोई रास्ता है या नहीं? कानिवादी होने के नाते युद्ध में तो हम सहयोगी नहीं हो सकते पर उचित, अनुचित कि निर्णय कर सकते हैं क्या? आध्यात्मिक युद्ध-विरोधी सुमिछावाते कानिवादी विद्यो की हानत में स्थिती भी युद्ध को उचित नहीं मानते। परन्तु वैसा कि पूर्व में इतिहास बना है प्रायः परिस्थिति में अन्धकार के प्रतिहार के लिए अन्धकार हिंसा का बना रास्ता ही सकता है, इस दृष्टि से बर विचार करते हैं जो जिन को इलाहों के बीच परलपर विरोध है उनको परिस्थिति देत-समसाहर ही हिंसा-अहिंसा का विवेचन समझ है। पर एक बात भी स्वीकार करके ही चलना होगा

—विचारों के साधन बनने ठी है समाज के सचं से, लेकिन उदरहा साम्य जितता है कुछ चोरे लोगों को। नयी तकनीक के कारण सेजी का उदात्तन उन लोगों के हृदय में बना गया है जिनके पास जितन भूमि है। देश उनको नाराज नहीं कर सकता।

नयी तकनीक के कारण लोग सेजी में भूनी खपाने लगे हैं। इसभाबत, भूनी खपानेवाला मरपुर मुनाफा बनाना चाहता है। मुनाफे की तुलन में वह सामन तो लगता ही है, अग्रिक-उत्पत्तिक भूमि को खाने बनने में काले की कोषिय करता है। हीनिय का इस प्रक्रिया पर सात अक्षर नहीं पड़ता, नयीक हीनिय की हीना के भीउर ही सेजी के फावों के विस्तार को बाधो मुंवाकर है। इस वद्वे जिनदुन

कोचो जेलों के समाज होने का रास्ता चुन गया है। और भी, पत और माधवो के धन में भूनी का सहह हो रहा है। नयी सेजी में मजदूरी की बरफत है, उन पर सचं होगा है, और धनवस्था की समस्यार्यो की सजी होगी है। मजदूरों की समस्यार्यो से बनने के लिए बड़े सेतिहर शिक्षान आगे सगोको ना खनेमान करूँगे। नयी तकनीक में बड़े फार्म और सगोको-करण अनिवार्य-ये हैं। उनमें विपयना की भूमिका पनपी है। इतना ही नहीं, भूमि के दिन्वो रसा-निरत के बाकि में सेजी का विज्ञान भू-की-बारी बग वा ही समझ है। इससे जलारन बरफ बढ़ेगा, लेकिन उदात्तन के साधन चोरे हृदयों में केडिन होवे सते जानते। प्रस्तुनकर्ता : राममूर्ति

प्रत्यक्ष अहिंसक कार्रवाई के आयाम

—डा० विश्वबन्धु चटर्जी

भांजीजी के समय में सत्याग्रह का क्षेत्र कुछ बार्नों तक ही सीमित था। इसका सबसे महत्वपूर्ण प्रयोग किसी वैदिक उद्देश्य के लिए अहिंसक मार्ग से जनता के प्रतिष्कार को व्यक्त करना था। विदेशी गुणामों के प्रति इसके द्वारा भारतीयों में जागरण आया, और यह हृद प्रकाश की हिंसा को सत्य करने का माध्यम बना। इससे सत्याग्रह का महत्त्व केवल भारत के लिए नहीं बल्कि दूसरे देशों के लिए भी बढ़ गया।

स्वतंत्रता के बाद देश में सत्याग्रह के क्षेत्र में काफी विचार हुआ है। बहुत धारे लोगों के मूढ़ अपनी शिष्टाचारिता का हथकण्डा सत्याग्रह द्वारा प्राप्त करते हैं। बहुत धारे प्रकाश के प्रतिष्कारात्मक प्रदर्शन, बवाल डालने की तकनीक, प्रत्यक्षीकरण, इत्यादि जब तक अपने अन्दर अहिंसक के कुछ धार रखते हैं वे सत्याग्रह कहलायेंगे। सबसे अधिक प्रशंसा कार्रवाई 'पेटाल' के भी बारे में यह दावा किया जाता है कि यह सत्याग्रह के अन्वय है।

यह प्रश्न बार-बार उठाना जाता है कि एक लोकसाध्यक ढांचे में सत्याग्रह का क्या स्थान है? एक लोकतान्त्रिक एतरीय प्रणाली में, सबकी अपनी विचार-धारा रखने के लिए सबैसाधक धारीके प्राप्त हैं। ऐसी परिस्थिति में सत्याग्रह का क्या गुण हो सकता है, क्योंकि सत्याग्रह का कोई कानूनी आधार ही नहीं है। एक प्रकार सभा इस बात का सत्य सत्य रहता है कि सत्याग्रह को विचार भी अहिंसक रखने की सीमा ही था, परन्तु भाषा के विरुद्ध वह किसी भी कारण से हिंसक रूप धारण कर सकता है। इसलिए इस बात की बड़ी आवश्यकता है कि सत्याग्रह पर पुनः विचार किया जाय। यह विचार सांस्कृतिक आधार पर भी हो।

समिलता के मसुदा के विचार-

पट्टी में सर्वोद्योग कार्यकर्तियों ने एक साहित्यिक सत्याग्रह किया था। यह गांधीवालों के साथ मिलकर किया गया था। सत्याग्रह का उद्देश्य था गांधी के भूमिहीनों में मन्दिर की जमीन का दान और पेटेखाप। यह जमीन एक सम्पन्न व्यक्ति को पट्टा (सीध) पर दी जाती थी, जबकि एक भी कामगार के अनुसार यह जमीन भूमिहीनों को मिलनी चाहिए थी। श्री माधेश्वर प्रसाद, जिन्होंने इस सत्याग्रह का अध्ययन किया, लिखते हैं कि 'सर्वोद्योग कार्यकर्तियों ने भूमिहीनों के इस प्रश्न को धिया, और प्रत्यक्षीकरण, वाता, अनुसंधान के सभी गांधीवासी तरीकों का प्रयोग किया। परन्तु सरकार सुनी नहीं और उन्हें प्रत्यक्ष अहिंसक कार्रवाई का सहारा देना पड़ा। उन्हें ऐसा इतिहास करना पड़ा कि यह सत्य हो गया कि सरकार या पट्टा देनेवाले उनकी मांग को स्वीकार करने के लिए तैयार न थे।' विचारपट्टी में सत्याग्रहियों को सीमित सफलता प्राप्त हुई। भूमिहीनों को कुछ जमीन प्रत्यक्ष पट्टी के तौर पर दे दी गयी। दूसरा उदाहरण प्रथम का है। कर्णा अंगर कटा १२००० एकर का सरकारी चारागाह है। यह प्रथम में कामगार क्लिब के उत्तर में भूदान की सीमा पर है। पूर्व बंगाल के मरणा-धियों और दूसरे लोगों ने इस जमीन पर बन्ना कर रखा है, और उसे कृषि-धियों के प्रयोग में सत्ते है। सरकार उन्हें मार-मार निकालती रही और वे भाकर जमते रहे। परन्तु १९९७-९८ में सत्य मुदा-विता किया गया। यह गांधीवादी पद्धति से हुआ। बहुत सत्य के बाद, जो हिंसा का रूप भी धारण कर सकता था, निरास-बाहुर करने का काम रखा और, सरकार को यह मानना पड़ा कि उस जगह पर जिन लोगों ने जमीन पर बन्ना कर रखा है, उन्हें बसा दिया जाय।

स्वतंत्रता के बाद के सत्याग्रहों का सुनिश्चिती सबक यह है कि धीरे-धीरे सबनेवाले

सरकारी धन को सत्याग्रह के माध्यम से देनी और गति को आर। परन्तु यह कुछ सुनिश्चिती सिद्धांतों के आधार पर हो। इस में से एक पूर्व अहिंसा है, दूसरा समसिद्धि के दरवाजे को खुला रखना है, उस समय तक जब तक कि सुनिश्चिती मूल्यों के लिए सत्याग्रह को जा रही है, उनका विरोध न होता हो। तीसरा है कि सत्याग्रह करनीवागों का उचित प्रति-क्षण हो ताकि वे प्रत्यक्ष अहिंसक कार-बाद्यों में निगुण हो सकें।

एक सामाजिक वैज्ञानिक जेने हार्प ने अहिंसा की विरमों का उल्लेख किया है। उनके अनुसार अहिंसा ९ प्रकार की होती है।

- १—अ-निष्कार (नान रेसिस्टेंस)
- २—वास्तविक भेज (एनपुअल रिज-सिलिएशन)
- ३—वैदिक प्रतिष्कार (मोरल रेसि-स्टेंस)
- ४—निष्कृत अहिंसा (नैतिकिड गान बायवेंस)
- ५—'पैगिब' प्रतिष्कार (पैगिब रेसि-स्टेंस)
- ६—साहित्यपूर्ण प्रतिष्कार (रीहड्डर रेसिस्टेंस)
- ७—अहिंसक प्रत्यक्ष कार्रवाई (नान-वायलेट रिरेट एंजेशन)
- ८—सत्याग्रह
- ९—अहिंसक क्रान्ति (नानवायलेट रिरीक्युशन)

ये विरमों बदली रहती हैं। ये विरोध धारे निरन्तरितित सामों में बदली जाती हैं।

- १—अन्ये और सम्राज के प्रति रवेवा,
- २—दुसरी के प्रति रवेवा, ३—दुसरे और अहिंसा के प्रति रवेवा, ४—दुसरे के प्रति रवेवा, ५—दुष्टियों का वापसीगत होना, ६—सामाजिक परिवर्तन की पद्धति।

ये कुछ उदाहरण हैं जिनके साथ सन्धियों से जमीन-धारी लोगों का विरोध किया जा सकता है। यह धारणा की जाती है कि भारत के सीद्ध संसार में अहिंसा का मूल्य इन लोगों से सिद्ध होगा। ●

कटुता कैसे मिटे ?

(डा० फरीदो का वक्तव्य)

बंगला देश एक स्वतंत्र राज्य की दृष्टिगत से जन्मी ही सत्तार के राष्ट्रों में अपनी जायज जगह प्राप्त कर लेगा। यह इतिहास के लेखकों का काम है कि वे बतायें कि इस नये राष्ट्र के जन्म में भारत का भित्तिवा हिस्सा रहा है और बंगला देश की स्वाधीन चेतना का भित्तिवा रहा। कुछ महीने पहले तक कोई भी उन परिस्थितियों की भविष्यवाणी नहीं कर सकता था जिनके परिणाम-स्वरूप बंगला देश का जन्म हुआ। अब यह सब इतिहास है।

मूँ भी एक वास्तविकता है, जिसको पाकिस्तान के राष्ट्रपति ज़ुल्फ़िकार अली भुट्टो ने भी स्वीकार किया है, कि भारत ने १४ दिनों के अन्दर पाकिस्तान को एक पक्षी निकाल दिया। जीत की इस घड़ में सब हम लोगों को उत्तरदा देखनी चाहिए और कटुता के इस अन्तम को समाप्त करना चाहिए।

जिस सम्बन्धित और अन्ती गद्दति से भारत ने बंगला देश के लाखों सरपा-वियों को समस्या को मुलताया है, उसे सत्तार के शरणागियों के बसाने से सम्बन्धित इतिहास में एक महत्त्व का

स्थान दिया जायेगा।

अब समय आ गया है कि पूरी प्रचलित परिस्थिति का गूढाकन किया जाय और उसी के अनुसार भविष्य का कार्यक्रम बनाया जाय।

गलत प्रचार रोका जाय

सबसे पहले मैं दस बात पर जोर देना-चाहता हूँ कि भारत, पाकिस्तान और बंगला देश को अब शान्ति और भित्तिवा के साथ रहना चाहिए। तीनों देशों की जय-ध्वजवा की विद्युत् दिनों बहा प्रकाश पहुँचा है और शान्ति की स्थापना में त्रितीनी देर होगी, उन्हें पुन-उठ खड़ा होना उतना कठिन होगा। इसलिए सबसे पहले काम यह होना चाहिए कि बैसे सभी प्रकार के जय-ध्वजवा उनके बीच दूरी बढी है।

जो भारतीय भाग्यवाणी की मुता करता है और पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ा करता है, वह महत्त्व करता है कि पाकिस्तान की दुर्घटना का इन्तजाम इन्तजाम पर लगाया जा रहा है, पाकिस्तान की शक्ति-वाही पर नहीं। ऐसा लगता है कि भारतीय सूचना की सत्तार, सारे सत्तार के मुलतायानो के विरुद्ध, जिनमें भारत

के भी मुलतमान शामिल हैं, एक शक्तिवा चला रही हैं और उनकी शक्तिवा भावनाओं को खोद पहुँचा रही हैं। भारतीय समाचार-पत्र केवल सूचनाएँ देने के बने, सूचना में समाचारवाता वा दृष्टि-कोण केकर उसे साम्प्रदायिक रंग दे देते हैं। युद्ध के दौरान तोड़-फोड़ की सूचनाएँ देने का कुछ अर्थ हो सकता है, परन्तु अब भारत-सम्बन्ध के दो महीने बाद उनका कोई अर्थ नहीं रह जाता। हाँ, इनसे कटुता बढती है और गुहार में देर होती है। मैं सम्बन्धित पत्राधिकारियों से अनु-रोध करूँगा कि वे इस सम्बन्ध में कुछ करें।

दूसरे यह कि हमारे नेताओं का बर-बर यह कहना कि बंगला देश के बनों से दो राष्ट्र का सिद्धान्तगत गलत सिद्ध हुआ है वेतुकी-सी बात है। शरित ही ने बिना के दो राष्ट्र के सिद्धान्त को माना था। मैंने सारा यह माना है कि हिन्दुस्तान एक अनु-राष्ट्रीय देश है और मुझे यह बताने प्रसन्नता ही रही है कि देश दूरे धीरे-धीरे स्वीकार कर रहा है। यह एक असाध्य-पत्र है कि सभी मुलतमान न एक राष्ट्र के हैं और न हो सकते हैं। वे सत्तार के बहुत सारे शिष्टों में रहते हैं और जहाँ वे रहते हैं वह भाग उद्य देश का ही होता है।

बंगला देश में हमारी जो जीव हुई है, उसका दो राष्ट्र के सिद्धान्त, सम्-निर्देशवाता या मोरालज से कोई सम्बन्ध नहीं है।

शान्तिबहा यह है कि पूर्वी पाकि-स्तान का पश्चिमी पाकिस्तान (सिन्धी और मान) द्वारा अधिक शोषण हो रहा था, इसके साथ ही शालामाशाह का प्रत्य शक्तिवा भावन वा और एक अन्तमर्थ, अशोषण और अन्तम स्वाधीन मोकरमाही की त्रितीने श्री मुजीबुर्रहमान को स्वतंत्रता-शुभाह के विप शक्तिवा बन दिया और भारत को एक मुनहूरा अन्तम प्राप्त हुआ कि शोषितों की पश्चिमी पाकिस्तान से अलग होने में सहामता की

→ कि गांधी जीते हुए युग का नहीं, बल्कि भावनावा युग का मानव है। इकालात्री के सम्बन्धन में प्राप्त सम्भ, निरंतर गांधी की भावचरणा बना रहे है। अन्तिवजित विकासशाली इस औद्योगिक सम्भता का अंत अन्त है। इसलिए नयी राह खूँकी होगी। यह राह होगी विकेंद्रित अर्थ-सम्बन्धवा तथा राष्ट्रभ्रमणवा की। 'उत्तरादन के लिए उत्तरादन' नहीं, मानव के लिए उत्तरादन, जिनका दुसरा नाम है स्वदेशी, स्वाशक्तिवा, स्वावलम्बन। बहुत प्रसन्नता की बात है कि प्रयागवनी दरिदारी ने स्वदेशी और स्वाशक्तिवा का भारत दुनन्ध किया है। कमी-कमी सभट

की सरदान बन जाता है। विदेशी सहा-यता वा आधार खूँका हमारे लिए अभिगाप नहीं परन् सरदान बन जायेगा, अन्त हम सुझ-बुझ से काम लेंगे। परि-स्थिति के कारण पंदा हुई इस मानववा पर हम सहृदयों से बिन्द कर, नये प्रयोग करवा प्राप्त कर देंगे जो इकाला-विस्दस द्वारा प्रस्तुत समस्या का उत्तर पंज कर सकेंगे। साम्प्रदाय सम्भोदन द्नी दिशा में एक नम् प्रयाग है। क्या गांधी वा भारत, पत्तन की ओर जानेवाणी इस औद्योगिक सम्भता का कोई दुसरा पर्याय (अन्तरनिर्दिन) प्रस्तुत नहीं करेगा ?

अज्ञात भाषा के प्रदेश में दस दिन

[सब सेबा बंग के संशो प्रो० ठाकुरदास बंग और धीमती सुमन बंग ने आग्रह में पदयात्रा की थी। उस पदयात्रा के अनुभवों और अनुभूतियों की जोड़कर कीर्तनी सुमन बंग ने एक श्रेण्यावासी चित्र तैयार कर दिया है। इसका एक अंश २० विमम्बर '७१ के अंक में प्रकाशित हुआ था। उसका दूसरा और अन्तिम अंश हम इस अंक में प्रकाशित कर रहे हैं।—सं०]

श्री मोहन भाई देहूई इस साल लोह-समा के लिए चले थे। हम बीच से जा रहे थे, वे सड़क पर दिखाई पड़े। सुरभित्ती ने फोलेन जीप रोकर उन्हें बँटाया और वापस की। बहुत बड़े जमींदार हैं वे। पीप मिनाट उन्हें समझाने के बाद उन्होंने ७० एकड़ भूमि दान में लिख दी। वहीं जाने की जल्दी थी अतः शमा मोगी और अपने गाँव जाने का निमन्त्रण दिया। एच मुद्द और जमीन देने का साक्ष्यवाक्य देकर चल दिये। एक चमत्कार-सा समा हमें।

अज्ञात की भीषण छाया इस क्षेत्र पर फैली हुई है, पर पदयात्रा में एक भी टोली को भूखे रहना नहीं पड़ा। सबको भोजन मिलता। यह प्रेम और सहायुर्भूमि का ही सूचक था। यहाँ के भुजलभाजों की देहाती आदमी दुर्लभ बहता है और उन्हें बौ सुर्ती। 'भुज उहाँ जाते हो क्या?' इसका जवाब बच्चे देते थे—'भाबो तुर्ती राहू'। महाराष्ट्र और बंगाल के यह क्षेत्र समा होने से बकी लोग हूरी-पूरी मराठी और बलाह जाते हैं। पाठशाला में हिन्दी और अंग्रेजी अधिवासी हैं। मनः विद्याओं बहुमाये हैं। अनायास वे लेनगू, अंग्रेजी, हिन्दी, बलाह, मराठी आदि भाषाएँ सीख लेते हैं। बचपन में बोल-बाल में इनकी भाषाएँ सीधने का काम बोल-बोल में ही जाता है, कुछ भी मेहनत उन्हें नहीं करनी पड़ती। इसलिए मुझे लगा कि भागलपुर आण्ड-रचना करने से अनायास भित्तीवाले इस नाम से हम बचित होते हैं और सुबुचित भी।

श्री स्वर्णदारा के यहाँ हम खाया खाते गये। एक जमाने में गाँव के बड़े जमींदार थे वे। चार हजार एकड़ भूमि थी। गाँव के पटवारी जो थे ही।

यहाँ एक विशेष बात देखने की मिली कि पटवारी का अधिकार बिरासत में मिलता है और इसलिए जलती बसती नहीं होती। ज्यादातर पटवारी बड़े-बड़े जमींदार हैं। आज श्री स्वर्णदारा के पास ४० एकड़ भूमि है। दो सड़के हैं। पहले २००-४०० एकड़ जमीन थी सब एक बार २० एकड़ और बाद में फिर से १५ एकड़, दस तरह अभी उस कुल २५ एकड़ भूदान में वे दे चुके थे। सामदल की बात बली तो हमने उनके फिर (बीघरी बार) २० बीं हिरवा भूमि मोगी। उन्होंने बिना आग्रह के यह बात मान ली। वे पना-बिना समाधार भावनी हैं। पर मैं दो प्रेरणुएत लक्ष्मण हैं। क्यों बार-बार जमीन दान में देते हैं। मेरी समझ में न आया। कारण जानने की जगुसलक्षण गिने उन्हें और उनके दोनों सड़कों को खाना और पूछ ही निचा— 'आज हमारे बाले पर बारबार क्यों भूमि दान में देते हैं?' जवाब पिना— 'आप अपने लिए बंधू ही भूमि माँवते हैं। हमारे गाँव के गरीबों के लिए बालेते हैं। गरीब की मदद करना हमारा धर्म है। दान माँवते पर रिभी को ना नहीं बहना यह हमारी संस्कृति है।' फिर बीघार पर टोकेमगनाल बरबटोपर के बिच की दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम करते हुए बहते गये— 'आदमी क्या छाप वे जाता है वार या पुणर ? दान देने के पुणर निचना है आत्मा की भाँति निचना है।' मैंने उन नोबतान तिजिज लक्ष्मणों से पूछा, 'आज इनके लिए क्यों रात्री हो गये?' पीरल जवाब मिला। 'जमाने की भाँति है।' हमारी सार्थि की गृह्यार्थ स्वर्णदारा के क्षेत्रने से पना बली और भाव के दूध का बिचार नोबतानों से।

एक दिन मैं जयह-जयह पाना नि

बड़े-बड़े जमींदार गहरों में रहते हैं और देहात में उनके आधीमान मकान खावी पड़े हैं। यहाँ के टैनेंती एक्ट और सीलिंग के बावजूद के कारण जमींदार परेशान हैं। बावजूद वे बलने का बहुत प्रयत्न किया, पर अब देख रहे हैं कि रोज-रोज भूमि सम्बन्धी नये-नये प्रगतिशील कानून बनते जा रहे हैं और उनके बचना बठिन है। यह भी एक कारण है कि कुछ लोगो ने हमें दान दिया। मतलब, परिस्थिति अनुकूल हो और सामान्यतया तैयार किया जाय तो बाकी प्रभाव पड़ सकता है।

इस पदयात्रा में प्रसंग के कुल ९२ गाँवों में से ७७ गाँवों में बाँटवती पड़ें। उनमें से ४६ गाँव सामान्यतः हुए, २१ गाँवों में सामान्यतः बनी, २३ गाँवों में कुल ७८९ एकड़ (२६७ एकड़ प्रोटेक्टेड टैनेंती जमीन और १२२ एकड़ स्वाधिक एच बच्चे की भूमि) भूमि ४२ सामानों से दान में मिली। एचमें से ५९४ एकड़ भूमि (४२१ एकड़ टैनेंती पीप और १६३ एकड़ स्वाधिक व बच्चे की भूमि) का दान गाँवों में बँटवारा भी हो गया। १९ गाँवों में ग्राम-साहित्यना का संगठन हुआ। विद्यो भी गाँव में सामदल के विचार को दा भूमि-विचारण के काम में विशेष फलभूति माननी होगी। एच ब्रिते में पू० विनोदराजी की संतुष्टता पदयात्रा में पचास हजार एकड़भूमि भूदान में मिली थी। पर सामान्यतः का काम यहाँ कुछ भी नहीं हुआ था। अब देखें विचार का भी यहाँ हादिर एकाण्ट हुआ। बड़े-बड़े जमींदार अपना मुद का दान देकर सोरो के पास हमें वे जाते थे और भूमि माँवते थे। एक गाँव के दुगरे गाँव छाप वे आते थे। अठिठ दिन-बन्दी से यहाँ काम बिजा जाय तो दस आठोवन को जन-साधोवन बनने की सम्भावनाएँ यहाँ हैं। कुछ दाता जो इतने प्रभावित और उगाहिन हो जाते थे कि बहते थे—'सामदल-नर पर हमना-दर बिये, भूमि दी, अब हम आपके बाँट-बटों बन गये हैं। बरिने, आप आपके गाँव बचते हैं।' सभा में उत्तरिचि, दिन

पर हमारे साथ युवा, हम में सबसे
 देना, इस एक बात के सिद्ध होता है कि
 सर्वोप के भाव बनाए की हिन्दी भाषा
 है। भारतीय भाषा में राष्ट्रीय भाषा का
 सर्वोप प्रस्ताव दे देना। अब उपर्युक्त प्र-
 निहास हम। और इस विचार के प्रति
 यह ध्यात्य हुई है। अब हमारी बहोती
 को देना है। देते मिलते यह हम उपादे
 है। इस पर हम देना की बरीद करना
 का प्रतिपद प्रमाणिक है।

राजनीतिक दृष्टि से भारत में एक
 खास अनुभूति है कि वहाँ १-५ वर्षों
 सर्वोप के विचार को मानने से, बहुत
 रहते हैं। इस विधि ठीक से समझना
 हुआ तो जनता को सारा दोली की
 बाकी ठीक रहे होते ही भाषा राष्ट्रीय भाषा
 के साथी बन सकता है।

यहाँ की भाषा एक बड़ी सफलता
 कीमती से सीखि है। केवल मुझ ही पर
 सिद्धि सारा का सुनिश्चय प्रदान दर्शन
 इस परमात्मा में ही होता। हर चीज ही
 सोचने सारा सुखी देना ही के भाग्य
 पर देखने में आती है। जब मैं पहुँचे
 ही देखने सब के से है। क्या सुख,
 क्या विचार, क्या सुख, क्या मोक्ष,
 सब सारा सीखे है, रोम पी है। बहुत
 विचार सारा पीछे है क्या मुझ पर, पर
 वहाँ ही से हमें को पीने देना। की मुझ,
 'बैठ में आने के लिए कुछ तरी, फिर भी
 सारा की पीने ही और सारा सब
 पैदा करवाए करने हो ?'

'क्या ! हम आने के भाग्य है।
 पर सारा भाग्य सारा हमारे देना में वही
 आने देते हो ? सारा विचार पर हमने
 यह नहीं जाना है। भाग्य देते हमने
 नीति। फिर हम नहीं पिछे।'
 क्या विचार जिन। मैं क्या प्रमाण देते ?
 क्या उन्हें बहती—'जिन। मुझसे विचार
 प्रमाणों कीमती, मुझसे कर्मों को प्रमाण
 के लिए सारा की पैदा साहित्य, एकी-
 त्व मुझसे सब यह सब (१) देना या
 रहा है।' क्या मैं यह बहती कि 'मुझसे
 सब का दर्द करती का दुःख मुझसे के
 लिए यह क्या मुझे विचारों का रही है ?'

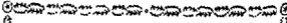
क्या परिणाम विचार सारा है देना ?
 विचार, वैकीर्ण, भावना प्रदान को देना-
 पर जो दुःख हुआ सारा वही सारा में
 नहीं विचार सारा।

पर सारा की इस परमात्मा का
 प्रमाण देना। सारा का मुझ से। सारा
 हुई चीज वही का विचार मुझा कहे
 का रहा था। जन्मा कर्म का
 उनके वेदों से, हर सारा में। सारा
 देना ही सारा में। सारा देना या सारा-
 सारा, सारा सारा सारा के सारा-
 सारा की हर-हर से सारा में। सारा
 सारा-सारा सारा की सारा देना, सारा
 सारा की सारा सारा से सारा करना,
 सारा सारा में सारा सारा की सारा
 देना सारा सारा है। एक सारा सारा-
 सारा सारा सारा में सारा सारा
 सारा सारा सारा सारा है। सारा की
 सारा-सारा से सारा सारा सारा के
 सारा में एक सारा सारा सारा के
 सारा सारा सारा सारा सारा सारा

सारा सारा है और सारा में सारा
 है। सारा सारा की सारा सारा सारा
 सारा सारा सारा सारा के सारा
 सारा सारा सारा सारा सारा सारा
 सारा सारा सारा सारा सारा सारा

सारा सारा सारा सारा है। सारा
 सारा सारा सारा सारा सारा सारा
 सारा सारा सारा सारा सारा सारा
 सारा सारा सारा सारा सारा सारा
 सारा सारा सारा सारा सारा सारा
 सारा सारा सारा सारा सारा सारा
 सारा सारा सारा सारा सारा सारा
 सारा सारा सारा सारा सारा सारा
 सारा सारा सारा सारा सारा सारा
 सारा सारा सारा सारा सारा सारा

सारा सारा सारा सारा की सारा
 सारा सारा सारा सारा सारा सारा
 सारा सारा सारा सारा सारा सारा
 सारा सारा सारा सारा सारा सारा
 सारा सारा सारा सारा सारा सारा
 सारा सारा सारा सारा सारा सारा
 सारा सारा सारा सारा सारा सारा
 सारा सारा सारा सारा सारा सारा
 सारा सारा सारा सारा सारा सारा



राष्ट्रीय-सहित्य के

सर्वोप-साहित्य पर आधी दृष्टि

सर्वोप साहित्य-प्रचार-सोचना के सर्वोप राष्ट्रीय-सहित्य पर
 राष्ट्रीय-सहित्य-प्रचार-सोचना के सर्वोप साहित्य आधी दृष्टि पर उपर्युक्त
 होता है।

अपनी रुचि की पुस्तक चुनकर अपने पुस्तकालय को
 समृद्ध बनायें।

सर्वोप सच प्रकाशन, राजगढ़, पारासकी की आर के प्रकाशित।

आत्म-निर्भरता—मंत्र या केवल नारा ?

सन् १९३१ के नवम्बर में जब आचार्य विनोबाजी मोक्षदा-श्रमोद्योग (प्लानिंग कमिशन) से मिले थे तो उन्होंने आत्म-निर्भरता की व्याख्यान पर बल दिया था, विशेष कर अनाज की। लेकिन उस समय दिल्ली के नवभारताने में स्वाभाविक की तूनी की आवाज भी न सुनायी ? उन्हीं दिनों उड़ानी गयी कि जब दुनिया अपना ही तरफ जा रही है, यह क्या अनुचित विभाग से सोचता और स्वायत्त-सम्बन्ध की बात कहता है; दुनिया एक है, हम क्यों न सोचा बाहर के भ्रष्टक अवान्धन का आवाज करें ? विदेशों की वस्तु की कल्पना बहानी से क्या चल गया कि कौन सही था—विनोबा या प्लानिंग मनीषण। और, वेद गाये दुःखत आये।

मगर हमें यह देख कर बड़ा दुःख है कि आत्म-निर्भरता एक नारा बन कर रह गया है और उसे एक मंत्र के तौर पर नहीं अपनाया जा रहा है। उपर प्रधानमन्त्री के एक वाक्य के मनमानी अर्थ लगाये जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि "पक्षि हमको विनोबाजी ऐसी मंथोर्ण सहायता से हम दलदल नहीं करेगे विशेष हम अपनी अर्थनीति के सङ्कल्पों को ही सबल बना सकें, हम अपने आर्थिक कार्यक्रमों का नया मसला ऐसा बनायेंगे जो कि भारत के भौतिक व औद्योगिक माधनों का समर्थन इस तरह करेंगे कि बिना विदेशी सहायता के काम चला सके।" इसके दोनो मतलब लगाये जा सकते हैं—यह कि सहायता न लेकर आत्म-निर्भरता का रास्ता पकड़ना चाहिए और यह भी कि बाहर से जो मदद करे उसको स्वयंसेवक के साथ स्वीकार कर लेने में शक्य नहीं होना चाहिए।

हमारे सहायकारणी मित्रों को प्रधानमन्त्री के इन वचन से पूरा सहारा मिल गया है। जहाँ से वे यह भी दर्शन देते हैं कि भारत को आज विदेशों का कर्ज चुकाने के लिए हर छान समझ साइ

नार को करोड़ रुपये की जरूरत है। इसके लिए भी बाहर की मदद जरूरी बतायी जाती है कि उनका साइड है कि बाहर से सहायता का मानी मात्र का माना एक जायेगा तो देश के अन्दर उत्पादन में बाधा पड़ेगी और परिणामस्वरूप हमारे आयात पर अक्षर पड़ेगा और हम दुनिया के बाजार में टिक नहीं सकेंगे।

अब क्या कहा जाय इस तर्क को। जिन देश में अस्सी फीसदी लोग एक रुपये रोज से कम पर गुजर करते हो, सप्ट है कि बाहरी मदद से उठे कोई काम नहीं होगा। काम होता है सेप कीम प्रतिशत की, या उसमें भी उपर के पाँच या सात प्रतिशत को जो सरा, व्यापार या शौकरी में हैं और बैभव व विवाह की सारी सामग्री जिनके पास है। इनके पास अन्नार व प्रचार के अन्य सामन हैं। इनके पास कोट भी है जिनको बदौलत वे सत्कार पर भी अपना अक्षर रखते हैं। सेना, के अधिष्ठाता उच्चाधिकारी भी इन्हीं समुदाय से आते हैं। लेकिन इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि हमारे वे श्रीमान् भारत के दाखिल या योग्य करने में नहीं पकते। कर्ज स्वराज्य के बाद देश में विपत्तया दुःखी परदा लोप न हो जाती। क्या खेती के क्षेत्र में और क्या उद्योग में, दोनों में ही अवमाननाएँ बढ़ी हैं। विशेष दयनीय स्थिति है भूमिहीन परिवारों की जिनका सहाय ही करोड़ों के लक्षण हैं और जो इन मास कृषि लाभमूल के आधार हैं। विदेशी मदद से उनको कोई फायदा नहीं पहुँचा है, उन्हें दुःखान ही हुआ है।

अगर अब भी इन भूमिहीन कल्पों को उठेता ही गयी और मुमिमुधार में उनके हाथ मनमानी किया गया तो देश की आर्थिक स्थिति बड़ी भारी बिगड़ान रूप ले लेगी। समय का गया है अपनी और ध्यान देने का और उनकी दया को गुवायने का। इसके लिए विदेशी

सहायता की कदापि आवश्यकता नहीं है और उसे लेना बन्द करना जरूरी है।

स्वराज्य में जमीनों का हिन सघना रहा और गरीबों के हाथ लपारखाही बरती गयी। दूररे भव्यों में अन्धोन्ध की तरह ध्यान नहीं दिया गया और श्रीमान्दय का नितिला चला। विदेशी मदद ने इसमें और चार चाँद लगा दिये और धोमधो के ऐंजेण्ड बड़ते चले गये। अब यह प्रक्रिया बन्द होनी चाहिए और अन्धोन्ध में लगना चाहिए। वह तभी होगा जब मुद्द-स्तर पर अपनी हाथ हम अपनी क्षमि केन्द्रित करेंगे और बाहर की मदद के भुलावे में नहीं पड़ेंगे।

हाल ही में विश्व बैंक के अध्यक्ष भारत आये थे। उनके आये जो माचना की गयी, उससे हमें बहुत तस्वीरक पहुँची। इन्हीं तरह हम अपना और अन्य राष्ट्यों के आये फिर से हथ पीताने लय गये हैं। यह सब बहुत पतल है और बन्द हो जाना चाहिए। भारत की गुस्ता और विकास, दोनों की माँग है कि देश आत्म-निर्भर हो और विदेशी सहायता लेना बन्द कर दे। आत्म-निर्भरता एक नारा मात्र नहीं हमारे जन जीवन का पता मंत्र बन जाना चाहिए। —सुरेशचन्द्र

ग्रामदान प्राप्ति पुष्टि अभियान

दम्पोर, १२ फरवरी। प्रायः जल-बारी के अनुसार उद्भूत जिन ही दराना तस्वीर में १ से १० फरवरी तक ग्रामदान प्राप्ति-पुष्टि-अभियान के अन्तर्गत गांधी-विधि एवं जिवा ग्रामदान-पाम-स्वराज्य समितियों के २५ प्रतिनिधियों ने १० दैनिकों में विभाजित होकर ३० गाँवों में ग्रामदान का सर्वेक्षण पहुँचाया।

१ व २ फरवरी की सर्वेक्षण समिति के सभी प्रो० टाकुरदास वग के मार्ग-दर्शन में क्षेत्र के ग्रामपंचायत समितियों एवं पटवारियों का प्रतिनिधित्व किया गया।

अभियान का आगोजन क्षेत्रीय मण्डल श्री रामचन्द्र भार्गव के नेतृत्व में उद्भूत जिवा ग्रामदान-पामस्वराज्य समिति जिवा एवं प्रदेश सर्वोदय मण्डल के समुदाय दरदासदास में किया गया था।

आन्दोलन के समाचार

तांबेदप पक्ष में पदचारा एवं मेसा सुरमोस

१२ फरवरी को रामप्रिया बहुलता गांधी के आन्दोलन के उपलक्ष में बहुलता के पास पदचारा में एक दिन का सर्वोदय मेसा हाजिर हुआ। इस वर्ष यह वर्षोत्सव मेसा होने के, मेसे को रत्ना वस्त्रों की सजावटी मयी। गुजरत के प्रसिद्ध बनि एक मेसाथे थी विभवन्वयन मारी यह उपरिपक्ष के खोर गांधीयो के जीवन से उनके द्वारा सुन्दरि गये सस्वराण शानन्वयण एर प्रेरक रहे।

प्रतिन सर्व बहुलता विधि २० जनवरी के पदचारा विधानती है। इस वर्ष यह पदचारा कार्यक्रम-वचन से आरम्भ हुए और कार्य में २० से भी अधिक लोगों में हजोरीय, सामाजिक एव दर्शन्य सुन्दरी के सार्व में सहभागिता के बर्तनी के सम्बन्ध में विचार-व्यक्त का कार्य किया गया। विद्या में बहुलता का निरि के लिए आचार्य बुध की सहायता का विचार भी विचार-व्यक्त के सार्व रता गया।

—राजपौत्रात्मक

अध्ययनसमिति

१२ फरवरी को श्री अरुणदास नारायण की प्रमुखि अध्यक्षतापर में सपोसला हजोरीय मेसा सम्पन्न हुआ। विद्येय दलों को अरोस १५ करे मेसे को बहु विरोधना को वि विवका मानोवद विद्या हजोरीय सञ्चयने किया और मेसा सम्बन्धे धार का अधिकार साह किया को जराय से बहूय किया का।

विद्येय अरुणदास पर लक्ष्मण-आविष्टेना का एर विद्विषयवि विविध को आयोजित किया गया।

कान साहाय्य कार्यक्रम—पुष्पावलि, पत्रास सदान एव आयुष्य—भी हुए। बतियों को पुस्तकान दिया गया।

आवाज

बापू विधान दिवस २० जनवरी ७२ को सभी स्मारक यमुना पक्षो-पार बापय में भाग-लक्ष्मण-आयोचन के मिश्रण के लिए एक दिन का विविध रता गया जिसमें ४० भाग-विहीनों ने भाग लिया।

विधि में सुन्दर एव से स्वामी बाल-लक्ष्मण, डा० रमणविधि पटनायक, श्री प्रमथ मारी का भाग-व्ययन लिया।

नवर सहायक की दृष्टि से काम करने के लिए बाहू के विभिन्न १४ लोगों में काम करने के लिए समियों ने विभिन्नोरी उपायो।

सेठबाड़ा

दिनांक २० जनवरी को बापू-पुर विधि के सार्व पर विद्या सरोव्य मण्य, सेठबाड़ा की तरफ से श्री राजकी विह की अध्यक्षता से एक सभा कर आयोजन किया गया।

इसके में भाग कार्यक्रमों के अनुसार २० ६० का सहाय्य विद्या एव तीन 'पुस्तकालय', एक 'मञ्च ठहरीक', एक नवीतानीय, के बाहूक बनाये गये। २२२ पुस्तक 'सुराल एव' के लको की विक्रो को गयी। —विभागाध्यक्ष छात्रो

बाँसबाड़ा

विद्या सरोव्य सञ्चय, परतपुर द्वारा दिनांक २० जनवरी से १२ फरवरी तक एक पदचारा का आयोजन किया गया।

विद्येय में सार्वभार्य हजोरीय विवक संघ, अल्पुष, पचायत समिति, धारेल एवं पचायत समिति, पदुम के सार्वियों ने भाग लिया।

पदचारा के दसरात २० कार्यो में विचार-व्यक्त का काम हुआ। २५.७३ कामे की सहाय्य-विद्येय हुई। एक सार्व-दानी मोष से एक सभा की सोचना-व्यक्त से सञ्चय १५५ कामे एवं २२० पुन की दृष्टिर्ता सार-व्यक्त कार्यन किया।

उदयपुर

उदयपुर सार्वि विद्या केन्द्र का विचार विधि दिनांक १२ व १३ फरवरी को

विद्येयमय हजोरीयो सदास, सार्विधि के देहोको सहाय्यि एरियेय में सम्पन्न हुआ। विद्येय के सार्वि केन्द्र को इयमे आयोजित थे। उपरिपक्षि १० की को नियम २ उदयपुर के बाहू के थे।

विधि का उद्देश्य था—केन्द्रो को बंदि पतिषीय विद्या आय व बंदि उपर्य विचार किया जाय।

मिर्जापुर

दिनांक २० जनवरी से १५ फरवरी तक सरोव्य, बहुला पर सार्वि-विद्येय मयाका गया। बैठक में लोच्येय, सार्वि-संविद्य, सर्वोदय-विद्येय बनयो सहाय्य विद्येय की दृष्टि से विद्येय को चारी ठहरीय का कार्यक्रम बना। याना कार्यक्रम में पुन सञ्चय लक्ष्मण एव सार्वि-विद्येय अध्यक्ष, विद्या सरोव्य मण्य तथा पौहृविद्येय विद्येय, मयी ने सञ्चय दिया। इसके अलावा पुनो संय सार्वि-विद्येय सञ्चय को सरोव्य सरोव्यपुर से हुई तथा उन सब से सार्वि-विद्येय सरोव्य का सरोव्य-पारक किया। तथा का सरोव्य यह सहाय्य वि सरोव्य विचार की सञ्चय होने हुए की उपर्य विचार-सरोव्य सरोव्यके सञ्चय सरोव्य सरोव्य करिये हेतु सञ्चय-धम की सार्वभार्य है तथा विद्येय को सञ्चय सार्वि में सरोव्यके सरोव्यके हेतु उपर्य की सरोव्य-विद्येय सञ्चय सरोव्य में सरोव्य की सार्वभार्य है।

भूमिहीनों को भूमि

हजोरी, १२ फरवरी। सार्वभार्य विद्येय है कि सार्वभार्य सार्वभार्य को हीं द्वारा आयोजित सार्वभार्य सार्वभार्य के सार्वभार्य के सार्वभार्य १३ जनवरी से ३६ जनवरी, '७२ तक सार्वभार्य के सार्वभार्य-विद्येयों द्वारा सरोव्य विद्येय की विद्येय सरोव्यके के २१ सरोव्य के १०६५ सरोव्यो को ६२६० सरोव्य सार्वभार्य-विद्येय का सार्वभार्य विद्येय गया तथा सरोव्यके सरोव्ये का सार्वभार्य विद्येय हुआ। सार्वभार्यो में ६१२ सार्वभार्य, २१० सार्वभार्यो एव २२९ सार्वभार्य सार्वभार्य सार्वभार्य है।

ग्रामदानोत्तर पुष्टि-कार्य

श्री वेदगण प्रसार चौधरी के भाग्य-दर्शन में दूषियम मिले के शौली प्रखण्ड में ग्रामदानोत्तर पुष्टि-कार्य का सचद-कमिशन चलाया जा रहा है। जानकारी मिली है कि १४ सूचीय कार्यक्रम के आधार पर शौली प्रखण्ड के ६९ ग्राम-सभाई क्षेत्रों में भूदानयोगी कार्यकर्ता-दोसियों को आतांतीत सफलता मिली है।

उपलब्धियों

१—प्रखण्ड स्वराज्य सभा के चुनाव के लिए विभिन्न ग्रामसभाओं से ९८ प्रति-निधियों का चुनाव सम्पन्न कराया गया।

२—देवजल के लिए १९९ स्तंभ का निरीक्षण तथा दृग्बलेत की स्वीकृति प्रदान की गयी।

३—हुन २३६ शान्ति सेतियों में से ७७ को प्रकृतिक्षण दिया गया।

४—टीकापट्टी गांव में पांच शताब्दी से प्राप्त ३१५ एकड़ भूमि ७ आदातारों में समभारोह विवरित की गयी।

५—२२ ग्रामसभाओं में १६६०*७८ रुपये जमा हैं। शेष ७७ ग्रामसभाओं ने रकौ-फतल से अमा करके का निष्पन्न जाहिर किया है।

६—वागेश्वरि में कुल ६९ ग्राम-सभाओं में ४२ भूदान योग, ३१ गाँव की आवाज, १० मैत्री, २ प्रामोस्य कुल ८८ ग्राहक बनाये गये।

७—तादी तथा माहिल्य-बिक्री : टोलो को माताबधि में ५२४*४३ रुपये की खादी तथा २४०*८२ रुपये का सर्वो-दय साहित्य बिका।

माहृदियस

भादा बसुरवा गांधी की २९वीं।
मुष्यविधि राजमवन में २२ फरवरी को

सार्थकाल ५ बजे धीमती लक्ष्मी कान्दमबा रेड्डी (उत्तर प्रदेश के रामप्रसाद की धर्मपत्नी) की अल्पकालीन 'माहृदियस' के रूप में मनायी गयी। कार्यक्रम का आयोजन गांधी शान्ति प्रतिष्ठान और गांधी जन्म शताब्दी महिला समिति के संयुक्त तत्वावधान में किया गया।

डा० कचनलता मन्वरबल ने प्रस्ताव-जति कथित करते हुए कहा कि माँ के जीवन की सार्थकता माँ बनने में नहीं, माँ का दिल रखने में है। आपने दा के जीवन को मातृत्व का सर्वोत्कृष्ट आदर्श बनाने हुए कहा कि अब वह समय आ गया है जब कि पुरुष का महत्कार और स्त्री की शक्तिता मिटनी चाहिए।

इस समारोह में श्रीमती चन्द्रा गोदव, श्रीमती मालती कुमार, श्रीमती पंवार तथा श्री रामप्रवेश शास्त्री ने भी "महिलाओं की आर्थिक स्थिति और हस्तारवा" विषय पर विचार व्यक्त किया।

नेफा में शान्ति-दिवस

गव दिनांक ३० जनवरी को लोदा शान्ति केन्द्र में "शान्ति दिवस" मनाया गया। शान्ति दिवस के लिए सरकारी-दे-सरकारी आत्मियों से आर्थिक सहायता प्राप्त हुई। अल्प कार्यक्रमों में छापाई, शारीरिक श्रम, मोन प्रायंता, शान्ति सभा सादि का आयोजन किया गया था।

भूदान किसान सम्मेलन

दरभंगा जिला सर्वोदय मण्डल के तत्वावधान में प्रखण्ड मधेपुर तथा अण्डराटाडो के ग्राम रत्नगो में, तस्त्रिंशो प्रखण्ड के ग्राम छात्रेडीह में भूदान-विज्ञान वा सम्मेलन क्रमः १, ७, ८ एवं ९ फरवरी को विभिन्न सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में हजारों भूदान-विज्ञान उपस्थित हुए।

विहार भूदान वग समिती के मंत्री श्री श्याम प्रकाश सिंह ने भूदान-विज्ञानो को समोहित करते हुए आभवागत किया कि उनकी हर समस्याओं का निदान किया जायगा। वेदकाली निवारणार्थ भूदान विज्ञानो को सम्मिलित अद्विष्टक शक्ति का प्रयोग करने हेतु उनका साह्य किया।

भूल-सुधार

'भूदानयज्ञ' १४ फरवरी ७२ के अंक में पृष्ठ ३०९, ३१० में तीन अशुद्धि २ की पक्षी पत्रि में पौष्ठक में पाठ के स्थान पर जाटव होता पाहिए। स०

इस अंक में

ग्रामस्वराज्य की पहली जिम्मेदारी : विद्या में ज्ञानि १

श्री धीरेन्द्र मजूमदार १४६

मनदाता बनाकर ?—समादरीय १४७

कैरीअर बनान विमान १

—श्री बाणा कलितकर १४८

भारत में स्त्रीश्री—९

—प्रस्तुतकर्ता : श्री रामगुण १२०

अधिया की उद्गमन : अंगला देव की देन —श्री देवेन्द्र कुमार गुप्त १२१

प्रारंभ अद्विष्टक कार्रवाई के आगम —श्री विरबन्धु चटर्जी १२२

सकल विज्ञान का, जवान गांधी का —शुची निर्मला देवगुप्ते १२३

बहुता बंशे मिटे ?

—डा० फरीदी १२४

अज्ञान भाषा के प्रवेश में पक्ष विन —श्रीमती सुमन बग १२६

आत्मनिर्भरता : मज दा केवल नारा ? —श्री गुरेश्याम १२८

अन्य स्तम्भ

वाग्दोशन के समाचार

वर्ष : १८, अंक : २४, सोमवार, १३ मार्च, '७२
 सर्व सेवा संघ, पवित्रा विभाग,
 राजघाट, बाराकाली-१
 कार : एच०६०४ + दोन : ६४१९१

सुपादक
रामभुक्ति

सर्वोत्तम

सर्व सेवा संघ



भक्ति-रत्न

पल्लव-संस्कृत-विद्यापीठ-प्रकाशित-हस्तकथा-जि-का-सं-नि-भा-जि-सा-प्रा-हिक



आपके पुत्र

उड़ीसा में ग्रामदान-कार्य

महाशय,

सालोह ७ फरवरी '७२ के 'भूदान-पत्र' में 'उड़ीसा में ग्रामदान-कार्य' शीर्षक एक लेख पढ़ने की निष्ठा, निष्ठा स्तुतीकरण और प्रतिवाद बहुत अच्छी है।

१९२५ के अन्त तक उड़ीसा में ८०० ग्रामदान हुआ था। स्वामश्रिक दण से यह संख्या १९९२ तक दुगुनी हो गयी। यह सुलभ-ग्रामदान का विचार आया और १९६३ में विनीवासी की दूसरी उत्तर-नामा में फिर से नया जोश दिखाई पड़ा। सुदान-आन्दोलन के पहले के ग्रामदानों की संख्या लगभग चार हजार थी। लेकिन तृकल-आन्दोलन में १९६५ से १९६९ तक यह संख्या १२००० हो गयी। यह संख्या उड़ीसा के कुल गाँव की एक चौथाई है। इस प्रान्त में कुल ३५६ प्रखण्डों में से ७६ ब्लाक प्रखण्डान में और १३ जिलों में से २ जिला जिला-पाल हो गया है। यह सारा सवर्णित ग्रामदान है। इसमें से जब तक ३२६५ गाँवों की जमीन बँट चुकी है और ९३१ ग्रामदानों गाँवों को सरकारी भाग्यता मिल चुकी है। इतने बड़े पैमाने पर इस आन्दोलन के परिवर्तन के मद्दे के बाद जिस समुदाय ने हमारे विचार और कार्यक्रम को धरदा से लाने हाथ में लिया उसको हर कदम पर रोचना, निषेधन करना, न हमारा काम है और न हम कर सकते हैं। उनके पास नया-नया विचार पहुँचाना, उनकी आर्थिक सहायता पहुँचाना ग्रामस्वराज्य के पथ पर चलने के लिए उनकी सहायता देना यह हमारा काम था, आज भी है। ३८ प्रखण्डों में ग्रामदान-सम रजिस्टर्ड हुआ है। वे सारे सभ धरने-बनने क्षेत्र में निर्माण के काम में लगे हैं।

इन सारे संघों की सारी मण्डल, ग्रामस्व-राज्य सभ वगैरह सत्पाएँ खादी ग्रामोद्योग के काम में अपनी सहायता दे रही हैं। ये १२००० गाँवों में अपने आन्दोलन, और कार्यक्रम प्रचारित करने के लिए प्रचार पत्र, फोल्डर खासकर "सर्वोद्योग" पत्रिका के जरिये कोशिश चल रही है।

इन ग्रामदानों गाँवों के लिए सर्व सेवा संघ के जरिये "वार छान वाष्प" वगैरह सत्पा से १९५८ तक कुछ रकम की सहायता मिली थी। १९२९ से उड़ीसा राज्य सरकार भूदान समिति के जरिये आर्थिक सहायता लगातार देती आयी है, यद्यपि इस रकम का परिमाण ४-२ सात से साताना घटता आया है। अबतक कुल ३० लाख की रकम भूदान तथा ग्रामदानों गाँव के लोगों को मिल चुकी है। कहीं भूमि-मुद्रण, कहीं खाद और बीज का समूह, कहीं बैल जोड़ी के लिए, और अन्य न कुर्सी, बंध, नहर के लिए भी दसका उपयोग हुआ है। ग्रामदानों सभ की ही हम जनता दसक मानते हैं। जैसे ही ग्रामसभा इनमें से अधिकतर गाँव में बन चुकी है।

इन सारे कामों को नगर में रखते हुए कहीं कुछ भी कमी नहीं है, यह कहना ठीक नहीं होगा, लेकिन जो कुछ हुआ है, और हो रहा है, उसमें हमारे प्रान्त में यहाँ के जनजाघारण में एक नयी आशा, शक्ति आशुत हुई है, इसमें कोई शक नहीं है। ऐसी स्थिति में इस आन्दोलन को निन्दित करने से नया लाभ होगा? कहीं किसी गाँव में अगर कुछ कमी है तो उसको कंठे रोकना जाय और कहीं दसका कुछ प्रतिवार हुआ हो तो दसका समुदाय देने से आन्दोलन और हमारे काम को गति मिल सकती है। हमारी राज्य सरकार की ओर से १९६९ में हम आन्दोलन को निन्दित करने के लिए एक प्रयास हुआ था। परन्तु कुछ ही दिन के बाद उन्हें वास्तविक स्थिति का पता चला, जिसके फलस्वरूप उन्होंने जो आर्थिक सहायता देना बन्द कर दिया था, वह देना फिर से मगूर किया तथा सरकार

की ओर से जो जीव कर्मिटी बनी थी उसकी विचारिता से ग्रामदान कानून पान हो गया है। कोरापुट के ग्रामदानों गाँव में सरकारी रकम के दुुरुपयोग के बारे में उदा समय बाकी बर्बा हो चुकी है। आज तो कोरापुट की पटांगी, नवरंगपुर, रायगड, मारवाणशारागा वगैरह अंचल में जो रचनात्मक काम चल रहा है, कृषि, गोपालन, खादी, ग्रामोद्योग आदि काम को वहाँ की ग्रामीण जनता जिस प्रकार चला रही है, इनका उदाहरण मिलना मुश्किल है। वहाँ की जनसक्ति उठ उठी हो गयी है, अब साहूकार या सत्कार कोई भी उसे नहीं दवा सकता। उस क्षेत्र में स्वामी अकाल, सुबमरी का विष १९२०-२१ में जिसने देखा था, उसके लिए आज का कोरापुट खोज-सा लगता।

इसलिए इस प्रकार दोष लाने की कोशिश करने या अपरिपक्व मन्त्रों से नलन-फहरी पैदा करने का समय नहीं रहा है।

अगर हम अपने को इस आन्दोलन के सेवक मानते हैं तो कहीं कुछ कमी दोष पड़े तो यहाँ पहुँच कर उनका सुधार करना हमारा कर्तव्य है। अगर अबतक हम यहाँ सोचते हैं कि यह आन्दोलन हमारे हाथ की मजदुरानी है तो ठीक नहीं होगा। यह आन्दोलन किस उपाय से अन्द-से-अन्द जनता की रक्त स्फूर्ति कार्यक्रम बनेगा, यही हमारी कोशिश होनी चाहिए।

—विनोद मधुवी

प्राकृतिक चिकित्सा सम्मेलन

बागाना १९ व २० मार्च को धारपुर में मध्यप्रदेश गांधी स्मारक निधि के सत्सावधान में प्रादेशिक प्राकृतिक चिकित्सा सम्मेलन थी विदेशदुप्यार गुप्त की अध्यक्षता में आयोजित किया गया है। सम्मेलन में प्रान्त के प्राकृतिक चिकित्सक एवं प्राकृतिक वा उपचार प्रयोग्य भाग लेंगे। सम्मेलन १९ मार्च को धारपुर में अपराह्न ३ बजे से गांधी स्मारक भवन में होगा।

रीय मर में खुद रखकर बोवते हैं, इसलिए उल्लाह के साथ किसी निर्णय की स्वीकार भी नहीं करते ।

मह-विश्वास और सामूहिक निर्णय भी शिक्षण का विषय है । लेकिन अकेले शिक्षण से भी काम नहीं चलेगा ; समाज का वातावरण बदलना चाहिए । धार्मिक बदलने का अर्थ है कि लोगों के रोत्रमर्ग के जीवन में आधुनिक सम्बन्ध बदलने चाहिए । यही सम्पन्न और उनके स्वामित्व का प्रश्न का अर्थ है । मनुष्य जिन सम्पत्तियों के बीच रहकर अपनी जीविका मनाता है उनका उसके सोचने पर गहरा असर होता है इसलिए बीविदा का सत्यं बदलना जरूरी है ।

लेकिन परिवर्तन के लिए बड़े बदला सम्भव नहीं है । जो ध्यवित इन बातों को समझते हैं उन्हें जॉन्सिंग उठाकर भी मये दोर-तरीके लोगों के सामने रखने पड़ेंगे । छतरी पर परिवर्तन हो इसके लिये जरूरी है कि लोग पहले परिवर्तन को दिमाग से स्वीकार करें । यह स्वीकृति शिक्षण से हीमि है ।

अन्यादकीय

खुलकर चर्चा, मिलकर निर्णय

हम दल-पंच कीम मिलकर बैठते हैं, चर्चा करते हैं और किसी निर्णय पर पहुँचने की कोशिश करते हैं । मानता यह रहती है कि जो निर्णय सबसे राय से होगा उसे सब माना मानेंगे, और उस पर अमल करने में सबसे उल्लाह होगा । कोई यह नहीं सोचता कि उसके ऊपर कोई बात बोली जा रही है ।

आजकल हमारा समाज पिता, पति, मातृक पुत्र और शासक के आदेश पर, चलता आता है । पिता से पुत्र पर, पति से पत्नी पर, मातृक से मरदूर पर, पुत्र से पिछे पर, शासक से जनता पर हुकूमत की है । ऐसे समाज में हमारे साकार विकसित हुए हैं । हमें यही अन्तना समझा है कि निर्णय का बीज हमारे मिर न रहे, लेकिन सबी हवासी ही चले । सब अपना बदन रखा है । सोरख में हम रोज समझना और सामूहिक निर्णय की बातें सुनते हैं । लेकिन सदियों के सफार के कारण हमारे मन में तरह-तरह की गंठें बनी हुई हैं जो दिल और दिमाग को समय के साथ चलने नहीं देती ।

हमारी बात हमारे माल बनी नहीं लेते ? जो हमसे उबर में का पद में छोटे हैं वे क्यों हमसे अज्ञान लफाते हैं ? यह पता-लिखा नहीं है क्या राय देना ? आगर हमारे सोचने-समझने का यह अंग रहता है । हम इन बातों के हैं, हमारा यह पर है, हम विधायक हैं, जँकी आति के हैं, आदि बातें हर अक्षर दिमाग में घुसे रहती हैं । तजीबा यह होता है कि बार-बार लोग खुपकर, भावने-भावने बैठकर, कोई चर्चा नहीं कर पाते, और जब किसी के सवाल से कोई निर्णय हो जाता है तो मार को मुनमुनवते रहते हैं । न सुनकर बात होती है, न सुनकर काम होता है उल्टे मन में निविदाद बनी रहती है ।

आगर-आगर-सवालों और प्रश्न-आगर-समाजों की बैठकों में भी यही होता है । सुनकर सबी बहूय कम होती है ।

पुलिस पहरे पर

हमारे देश में जो अनेक दुख मन में अंध और शोष पैदा करते हैं उनमें से एक मुश्क दुख है सरकार के विचारों पुलिस के विचारों का सड़ा रहना, लिके दुगलिक कि कोई 'मिनिस्टर साहब' या 'गवर्नर साहब' उभर से मुश्क-रहाते हैं । इन विचारों के दल तरह सबे रहने का मिनिस्टर साहब की सुरक्षा से कोई सम्बन्ध नहीं है । अगर सम्भव है तो इत नीज से कि सत्ता का रोम और दबका जाहिर हो और यह दिखाई दे कि मिनिस्टर साहब बेचक की जितनी ऊँची सीढ़ी पर है ।

मिनिस्टरों की पीठ पर खानी सत्ता का बोझ सारनेवाले ये जिनके मिनिस्टर है वे सब सभाजगती है । सभाजगतर हर एक का माना अन्ध है, लेकिन साम-अन्ध के पार्श्व में सब सद्भव और सवाल है । पार्टी कोई हों, मिनिस्टर यही चाहता है कि अपनी मोटर विचारों की बतार के बीच से गुजरे, जब वह पहुँचे तो विचारों-विचार का बोझने के लिए मोड़-दोड़ हो, कपार-कपान 'अदेलन' में मिलें, और सोन-बाव सुखिया सत्प-डीकेदार पीछे-पीछे चलें । पहिने के सामन्तकारी राजाओं की तरह इन राजनीतिक सामन्तकारियों की एक जालि ही अलग बन गयी है । उनके पीछे अलग-अलग हैं लेकिन हैं सब घोड़कार ।

पुलिस जनता के टँब पर पत्नी है । मुबार में कानून के बाजार पर कालि और व्यवस्था हाथम रखना उसका पहना काम है । उस काम से हटकर पुलिस की सामन्त में सड़क पर सड़ा करना एक अपराध है जिसे ऐसे लोग कर रहे हैं जिनके हाथों में जनता में खनना बोट और गोट सोनो देकर सत्ता सोनो है । ऐसे आगराजियों का यह अपराध और भी अमान्य अमान्य है । ●

लोक-शिक्षण : आधार, प्रक्रिया और कार्यक्रम

प्रिय कृष्णराव,

गुन्हादा ५ ता० का पत्र मिला। तुमने पहले अध्यापक से मेरे अनुभव के बारे में पूछा है। वैश्व लोचनगंगा-याना में अनेक अनुभव बलि हैं। इसका शिक्षा मंत्र विच्छेद पत्र में किया है। कच्ची स्थापना, कच्ची उपस्था और कच्ची विरोध भी रहा। लेकिन मुझ मिलाकर मेरा अनुभव अच्छा ही रहा। मुख्य बात यह है कि तुम लोगों को ऐसा सोचना नहीं चाहिए कि जन-अभिक्रम के लिए संघर्ष आवश्यक हो गया है। अभी बहुत बड़ी मजिद तय करना है।

मैंने कहा था कि १९७१ में हमने प्रदर्शन (डिमान्दूशन) का काम किया क्योंकि हमने अपने कार्यकर्ता के सहारे यह सम्भावना प्रकट कर दी कि जनता सम्प्रति-भावित से यह स्वीकार कर सकती है कि उसे सामस्वराज्य चाहिए, और उसके लिए साम्प्रति-भावित को जो मार्ग है उसका पालन से कर सकते हैं। इसका प्रदर्शन मरीजा में काफी हद तक और महिनी एवं बीमा में कुछ हद तक हमने कर लिया है। अब हमें जन-अभिक्रम को समीक्षित (मोडिफाइड) करना है। जब हम कहते हैं कि हमको जनता को उपो-चित करना है तो इसका अर्थ हमें अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए कि आज समाज की मरकस्थिति क्या है? हमारी बरतो से समाज ने यह माना नहीं है कि उसकी समस्या के समाधान की जिम्मेदारी उसकी ही है, और न अब तक के समाज-शास्त्रियों ने यह बात उन्हें समझाई है। जनता को हमारा बरतो से इसी मान्यता का अभ्यास रहा है कि उसके लिए सोचने-बाले कोई राजा, कोई पुत्र, कोई पुरोहित या कोई नेता हैं। वे जो सोचेंगे उसके अनुसार अभ्यन करनेवाले कोई राज्य-स्था, सेवा-स्था, बन्धावस्था या धर्म-स्था है। यानी कोई काम जनता के प्रथम पुरष और द्वितीय पुरष के बीच में नहीं करना है। वह किसी

द्वितीय पुरष द्वारा ही सम्पन्न होता। इसी मन-स्थिति को विनोबाजी 'देहम' कहते हैं।

जन-सहकार की चेतना नहीं

प्राचीनकाल से ऐसा माना गया कि यह जिम्मेदारी सरसामो की ही है। आधु-निक काल में जबसे लोकतंत्र तथा कल्याण-कारी राजस्ववाद का विचार विकसित हुआ है तबसे राजकीय तथा दूसरी सस्थाओं की ओर से यह मांगाना होता रहा है कि संस्थाओं के काम में जन-सहकार हो। जन-सहकार का यह विचार कई देशों में कुछ सफल भी हुआ है। यद्यपि इस देश में उसकी कोई चेतना का विकास नहीं हुआ है। इस चेतना का विकास न होने का एक महत्वपूर्ण कारण है। इण्डो-पौरुह देशों में जिस समय लोकतंत्र का विचार फैल रहा था और लोग राजतंत्र से मुक्ति का सपना कर रहे थे, उन समय हमारे देश में सामन्तवादी राजतंत्र प्रचलित था। परिवर्तन के लोचन की हवा इस देश में पहुँचने से पहले ही मुक्त विदेशी राज्य का गुलाब बनाया गया। यद्यपि पठान और मुगलों के राज में लोकतंत्र नहीं था तब भी उन विदेशियों के इन देश में वस कर रह जाने के कारण महा की राजनीतिक पद्धति का स्वरूप बही रहा जो प्राचीनकाल में था। अर्थात् प्राचीनकाल में जैसे मूक-जनता यानी आमवासी उसी प्रकार स्वतंत्र से जैसे प्राचीनकाल में राजतंत्र था।

लेकिन अंग्रेजी राज के गुलाबी के दिनों में अंग्रेजों का अन्तिम मरण हुइगुन करना नहीं था, मुक्त का शोधन करना था। इसीलिए उन्होंने सामीन स्वतंत्रता को लोकतंत्र गाँव की भी केन्द्रीय राज्य में समा लिया, और बन्धावस्था राजस्ववाद के नाम से जनता की अपनी समस्याओं के लिए बिलुप्त तथा अभिक्रम से अन्तर से मुक्त कर दिया; क्योंकि ऐसा किये बिना पूरे समाज का शोधन सम्भव नहीं था। अर्थात्

जैसे विनोबा कहते हैं कि पठान और मुगलों के राज में देश गुलाम और गाँव आजाद था, अंग्रेजी राज में देश के साथ गाँव भी गुलाम हो गया। गुलाम का स्वर्ण समाज के लिए न सोचना ही होता है। इस प्रक्रिया से जनता और अधिक बेहोश हो गयी।

इस प्रकार अंग्रेजी राज में पूरी जनता का शोधन दिन-ब-दिन पराहाय्य पर पहुँचता गया और इन कारण देश में आन्दोलन का आन्दोलन हुआ। लेकिन जिस तरह यूरोप के आन्दोलन की प्रेरणा लोक-तंत्र था, इस देश में वह नहीं था। यहाँ के आन्दोलन की प्रेरणा गुलामो-मुक्ति की थी।

यद्यपि हमारे देश के नेता परिवर्तन के लोकतांत्रिक विचार से प्रभावित थे फिर भी आन्दोलन के लिए उन्हें गुलामो-मुक्ति की ही दिशा में लोक-विदाय करना पड़ा। लोकतंत्र के विचार को समझने का अवसर उस समय नहीं था। देश के आजाद होने पर नेताओं के विचार के अनुसार इस देश में लोकतंत्र की स्थापना तो हो गयी लेकिन लोकतांत्रिक विचार के विनाश के अभाव में लोकतंत्र का लोक भावों की पुगती प्रवा भी हैडिपट के रूप में ही देखा रहा।

लोक-शिक्षण के तीन चरण

अतएव इस देश का लोक-शास्त्र लोकतांत्रिक समाज के लोक-वेदा सहारा की भूमिका तब भी नहीं पहुँच सका। ऐसे परिस्थिति में तुम लोग अपने आन्दो-लन से लोक-सहकार की भूमिका से बाले बढ़कर समाज की लोक की क्रिमेदारी, लोक का अभिक्रम तथा लोक-अभिक्रम के सहारे समाज का भावनात्मक पलटा रहे ऐसा चाहते हो। आज मूक-पुत्रों से सोचना होगा कि हमें अपने आन्दोलन के लक्ष्य की भूमिका में किनसे सौभाग्य प्राप्त करनी है? यानी आज जो 'देहम' की विश्वभारी भावना है उसमें भी लोक-सहकार की बीबी भावना का विकास हुआ है, पहले उस भूमिका पर जनता की

साता है। अपनी यात्रा में जहाँ तक विदेशों पर प्रलय का शयान है वहाँ पर कई गाँवों में घिरे देखा कि इन स्थानों का कुछ एहसास हो रहा है।

युक्त आचार होने के बाद हम अपना भी वहाँ तक पहुँचना है इसे समझना चाहिए। मीने प्रती बड़ा है, देग आचार होने पर हमारे नेत्रों में मोनोमिडि कविधान बनाया है, जो जमाने के साथ चलने का सही निर्णय था, लेकिन दुर्भाग्य से देश के नेताओं ने कविधान को मोनो-तन का बनाया लेकिन उसके लिए मोनो-गिणत का कोई कार्यक्रम नहीं रखा। गांधीजी ने स्वराज्य के समझ के लिए रचनात्मक कार्यक्रम को जो सुनो दो सो उसमें मरणात्मा विषय एक महत्वपूर्ण मुद्दा था। लेकिन देश के नेताओं ने त्रिभु प्रचार दूने के अन्तर्गत कार्यक्रमों को छोड़ दिया जो प्रचार मन्त्रालय-विषय को भी अपनी कृति में सम्मिलित नहीं किया, और न जन-प्रतिष्ठ का कोई अन्तर्गत दिया। शास्त्रिक विधान-सोमना के लिए भी सम्पूर्ण-निर्माण कर उसी के द्वारा उनका विकास हो सकता था। तब विना प्रचार की विशिष्टता बनायी गयी। फलस्वरूप सरकारी विभाग द्वारा ही सब काम होना अनर्था में देखा ही माना। हम को रचनात्मक कार्यकर्ता हैं, जो गांधीजी के विचार को माननेवाले हैं, वे भी गांधीजी द्वारा जन-जन में चलने के माध्य के बाद ही अपनी सरकारी भी प्रचारकारियों के अन्तर्गत ही रचनात्मक कार्यक्रम करने रहे हैं। उनका ही नहीं, भारतीयों के पहले जो कार्यकर्ता सरकारी बनाया है काज मन्त्रालय के अन्तर्गत ही वे भी सरकारी बनना शुरू करने लगे। अतः अपने कर्मों को कुछ दोगी विधेयता बनाए पर भी उनमें ही हमने पहले कुछ कर लिया। सु-कार्य तथा शान्त्योग्य आन्दोलन को भी तब-अन्तर्गत ही करे जाया। अन्तर्गत होने का-कार्य-कृति के विधेयता के अन्तर्गत ही

विचार को स्वीकार किया और सर्व-सम्पत्ति के उस पर अमल करने का निर्णय भी किया। फिर भी हमने उग दिया में प्रयास ही नहीं किया। प्रयास करने के अन्तर्गत हुए दोषों का भी नहीं है। अन्तर्गत हमने प्रयास ही नहीं किया। जब हम ही मानने हैं कि तब और साथ-साथ के ही काम चल सकता है तब हम अपने अन्तर्गत कर लें कि साधारण जनता स्वयं-सोचक-निर्णय पर विश्वास को। फलस्वरूप हमारी विचार-संरचना के बाद ही उनको मान्यता प्राप्त नहीं है कि अन्तर्गत का विचार तथा प्रामाण्य-संरचना को जोड़ना सही है, वास्तविक है तथा उदात्त भी है, लेकिन दूसरी कार्य-निर्णय (संविधान-संरचना) का काम है। हमारा लक्ष्य कुछ बनना नहीं है।

२०० स्वशासन कार्यकर्ताओं इस अभियान में साथ में तो काम-ने काम काई हूना नागरिक स्वशासन हमने सामिल हों। शासक के १५ मार्च तक का समय काफी है जिससे हम वास्तव में सहयोगी कृति का 'मन्त्रालय-संरचना' हो सके। अपना होने पर हमें सहयोग कृति को विधेयता कृति में परिचित करने का प्रयास करना होगा। दूसरे लिए अन्तर्गत होगा कि कुछ लोग, जो मध्य कार्यकर्ता हों, एक अन्तर्गत प्रकल्प का विधान को और सही में न होना उम्मीद हुई सहयोग-कृति का विधेयता को काम हो इनके लिए प्रेरणा प्रयोग तथा मार्गदर्शन का काम करो। मैं मानता हूँ कि अगर हम तरह के हमारा काम चलेगा तो जन-अभियान का 'मन्त्रालय-संरचना' का अन्तर्गत तब हमने लगेगा, यह साधारण और मार्गदर्शन का काम करना उन्हीं प्रयोगों में नहीं करना है कि उन्हीं हमने अपने साथ नहीं माना है, अन्तर्गत ही, अन्तर्गत और चीना में भी उन्हीं प्रयोगों का जन्म बढाना है।

प्रामाण्य-संरचनाओं के पहले चरण के कार्य रीति

मिने विधेय पत्र (भूदान पत्र का २) में किया था कि मेरा आने का कार्यक्रम उन्हीं लोगों में गया जाय जहाँ कुछ का प्रयोग करना हुआ है। मिने दलीलिय में चरण चारों हैं कि अपनी तरफ हमने उदात्त-कृति के बाद के कार्य-क्रम पर विचार किया ही नहीं किया है। हमारे विभाग में कृति के बाद कृति का कार्य यह है कि हमें अपनी कर्मोन्तर्गत या दूने विभाग के काम को प्रामाण्य-संरचना-कृति के हाथ में लीये हैं। इस अन्तर्गत में मैं तुम लोगों में बहुत आहवा है कि प्रामाण्य-संरचना को नहीं परिधि-कृति में प्रयोग करने का उपाय नहीं करना। उनके लिए हमने 'विधेयता' विचारित करने ही नहीं किया प्रचार के विचार का एक मुद्दा बनना यह है कि प्रामाण्य-संरचना को परिधि-कृति में प्रयोग करने की रीति के विचार ही से प्रयोग-संरचना को जन्म देना है।

सहयोग में देश मान अपने काम करने हमने हमने ही निर्णय-निर्माणों है कि काफी अन्तर्गत गठना के लोगों को यह एहसास हुआ है कि इन राज में उनका भी अन्तर्गत हुआ चाहिए। मैं मानते हैं कि यह काम सर्वोत्तर विभाग का ही और विभाग के लोग आये तो हमको कुछ सहयोग करना है, उनका रूप। यह वास्तविक रूप लोगों में प्रयास में दूसरों के कार्य ही, मीने अन्तर्गत सहयोग करनेवालों के काम लिये हैं और उनकी सरदा समझ १० है। उन सहयोग का कार्य यह नहीं है कि उन्हीं विभाग के कार्यकर्ता कृति लिये ही उन्हें कुछ करना है।

सर्वोन्तर्गत की प्रक्रिया

अन्तर्गत सर्वोन्तर्गत (मन्त्रालय-संरचना) के प्रयोग चरण में होने तक सहयोग-कृति को बढाना है। विधेयता पर सन्तर्गत के सहयोगी कार्य-क्रम भी बना कर रहे हैं यह हम सहयोग कृति को बढाने में एक ठोस कार्यक्रम होगा। हम लोगों को यह कोशिस करनी चाहिए कि इन अन्तर्गत में अन्तर्गत-कृति रचनात्मक कोशिस करें। अन्तर्गत १९ अन्तर्गत ही कि

कृति के विधेयता के अन्तर्गत ही

प्रखण्ड-ग्रामस्वराज्य-समिति की वही दुर्दशा होगी जो पिछले दिनों ग्रामोद्योग-सहकार-समिति की हुई है। तपस्वियों की उपस्थिति भंग करने का सबसे प्रभावशाली साधन द्रष्टुरी की अपहरण ही होगी है। फिर ग्रामसभा तथा प्रखण्डसभा के सदस्यों की उपस्था का शुभारम्भ तो अभी हुआ हो गयी है। अभी से द्रष्टुरी की सम्बन्धों को हटाने का विचार उत्तरनाक है। अतएव जिस गाँव में वस्त्र-स्वायत्तसम्भन का संरक्षण हो वहाँ सीधे सहायता की जाय, यही दृष्ट होगा। इस सहायता में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि ऐसे सहायता पैसे की मजूरी में न होकर सर्विस देने के रूप में हो। फिर जब ग्रामसभा की अवस्था के अभाव में ग्रामसभा के सार्वजनिक कर्षण सम्हालने का विकल्प उद्घोषित हो तो धीरे-धीरे सरकारी प्रयत्न मदद मिले। ग्रामसभा को ऐसे विचारों की प्रेरणा देनी चाहिए। स्थानीय सरकारी-सहायता भी प्राप्त करना सीधे से, हमारे या प्रखण्ड-सभा के माध्यम नहीं। दूसरी बात यह है कि पहले खेती पर ध्यान देना चाहिए उसके बाद उद्योग पर।

शिक्षण

दूसरा कार्यक्रम शिक्षण का होना चाहिए। प्रखण्डसभा तथा ग्रामसभा के सदस्यों को पुढ़ता चाहिए कि क्या वे ग्रामस्वराज्य में हिन्द स्वराज्य के नेताओं की मजदूरी करेंगे? हिन्द-स्वराज्य के नेताओं ने आन्दोलन-मार्ग में भी अर्थों द्वारा प्रतिपत्तिन युवाओं-युवक शिक्षा-पद्धति को ही अपना लिया। क्या ग्राम-स्वराज्य भी उन्हीं पद्धति को अपनायेगा या ग्रामीण-स्वराज्य को परिष्कृत करने के उद्देश्य से अपनी शिक्षा-नीति निर्धारित करेगा? गांधीजी ने ग्रामोद्योग-स्वराज्य को ही स्वराज्य माना था और उसे परिष्कृत करने के लिए सच नहीं जानना ही पूरी कल्पना बचायी थी। जानना ही इस अवस्थाका ही पूर्ति में विद्योद्योगी ने ग्राम-विकासविद्यालय की बात कही है

जिसे मैंने 'ग्रामपुस्तक' की संज्ञा दी है। भविष्य में मैं मुख्य रूप से अपनी भाषा के दरम्यान दूरी का छोर खोजने का प्रयास करना चाहता हूँ। इसके लिए मैं स्वतन्त्र विस्तार में न सककर ग्रामवासियों को ही विस्तार में सहायता चाहता हूँ ताकि उनके विस्तार के माध्यम से ही मेरा विस्तार चल सके। इसके बिना ग्रामस्वराज्य की कल्पना साकार नहीं होगी।

शासन-मुक्ति

पुष्टि के बाद तीसरा कार्यक्रम शासन-मुक्ति का मार्ग खोजने की प्रक्रिया होगी। अब तक मैंने श्रितता सोचा है उतमें सामुदायिक-विशेष-व्यापक के विपटन का उत्तरा निरापना पहला काम होगा। इसकी मीग अगर हम जन-मानस में पैदा कर लें तो शासन की षट्पल पर एक निश्चित चोट पहुँचा सके। अशासित-मुक्ति तथा विकासतन्त्र-मुक्ति के छोर से सदरदा-मुक्त गाँव के लक्ष्य को और बढ़ा जा सकता है ऐसा मैं मानता हूँ। मेरी भाषा में ग्रामसभा के सदस्यों से इस प्रकृत पर चर्चा करने का विचार है।

ग्राम-शान्तिरोज

चौथा मार्ग जो मैं दुईना षट्पल दूँ वह ग्राम-शान्तिरोज का स्थायी कानन बना होगा उसके लिए है। अब तक हमने जो काम किया है वह शान्तिरोज का शर-तयार भाग है। मैं मानता हूँ कि शान्तिरोज का मुख्य काम अशासित-मुक्ति को सफल बनाने का होगा चाहिए। इस स्थायी काम के साथ-साथ प्रथमवर्ष जो सामाजिक काम सामने आयेगा वह शान्तिरोज का रहे। इसका मतलब यह नहीं है कि शान्तिरोज समाधान-समिति का काम रहे। वह काम जो ग्रामस्वराज्य-सभा का ही है। शान्तिरोज का काम हीय ग्रामसभा के सदस्यों को अज्ञान में जाने से रोकने का प्रयास। मैं शान्तिरोज की अपनी कान्ति के लिए सबसे अधिक प्रभावशाली साधन मानता हूँ, लेकिन अभी तक हमारा ध्यान उस दिशा में नहीं गया है, क्योंकि अभी तक हमने ग्रामीण समाज

के अन्तर्गत एक पहुँचकर इस काम को किया नहीं है। अब तक हमने ऊपर-ऊपर के काम को ही शर-तयार मान करने का प्रयास किया है। लेकिन ग्रामस्वराज्य के लक्ष्य में हमको बहुत जगता गहराई में सोचना तथा अभ्यास करना होगा।

अन्तर्व्यवहृत

हमें पाँचवीं खोज आचार्यकुल के लिए करनी है। अब तक हमने इस काम के लिए भी शर-तयार ही किया है और इसके लिए शिक्षा-विभाग के सहारे स्कूलों के शिक्षकों से परिचय माग किया है। इस परिचय का छोर पकड़कर शिक्षकों से तथा दूसरे शिक्षा-सेवी कार्यकर्तों से आचार्यकुल के ऐसे सदस्य ढूँढ़ने होंगे जो अपनी जिम्मेदारी तथा अधिकार से अपने कुल को जाने बढ़ायें। ऐसे शिक्षकों द्वारा शान्ति-शठहाला का सफल होना चाहिए। इसकी दिशा और योजना क्या होगी? पुष्टि-काल के लिए अभी से इसकी योजना आवश्यक है।

मौजवा प्रखण्ड में मेरी यात्रा का कार्यक्रम निम्नलिखित हो सके तो अच्छा होगा :

१—मौजवा के अन्तर्गत मुहह शिष्टी काली एक पड़ाव के दूसरे पड़ाव की विलत वहाँ उनका ही मेरे स्वास्थ्य के लिए सुविधाजनक होगा। पूरा लगने से मेरे विर में दर्द ही जाना है उसका ध्यान रखना चाहिए।

२—पड़ाव पर पहुँचकर पहले ही दिन शाम को तीन घंटे आग्रसभा का आयोजन किया जाय। पहले ही दिन पूरा विचार मुक्त के बाद ही रात को और मुहह गाँव के लोग मुहह छोरेशार चर्चा कर सके। दूसरे दिन मुहह शान्तिरोज के संविर्षों का एक वर्ष (साल) किया जाय और शाम को ग्रामसभा के सदस्यों के साथ कार्यक्रमों पर गोष्ठी रखी जाय। अगर सम्भव हो तो शिष्टी तीन घंटे रखी जा सकती है। पहले दिन रात को, दूसरे दिन दोपहर के बाद और रात को १—

बंगला देश के गैर-बंगाली क्या करें ?

—प्रहलद फातमी

बंगला देश के दो खबरों मिल रही हैं, उनमें वहाँ की गैर-बंगाली भाषाधीन की परेशानी का क्या लगना है। आज वहाँ उनका सहारा केवल भारतीय सेना है और वे यह सोच-सोचकर परेशान होने हैं कि हिन्दुस्तानी सेना के बारम्बार आने के बाद मानुष नहीं उनका क्या सम्भाल होगा। देशी और विदेशी जर्मियों से इस बात का पता लगता है कि वे लोग दोबारा हिन्दुस्तान वापस आना चाहते हैं। इतिहास के दम दर्शनका मजाक पर दिन क्लृप्त के अन्धूरो रहना है। पच्चीस साल पहले जुद्ध के हथौथे अलग और लड़ने की हार हुई थी। उसके बाद हिन्दुस्तान में मुसलमानों की मस्जिदों की राख हुई, गाँव उग्रहे, परिवार टूटे, रिश्ते में दाग और दिमागों में दरारें पड़ीं। हमारे रिश्तेदार, हमारे मनो-सम्पत्तियों, हमें आर्थिक के बीच मरने के लिए छोड़कर अत्याह की मस्जिदों की तरफ चल पड़े—यह मस्जिद के साथ कि आने मन्व की शरती पर वे मुग की नींद छोड़ेंगे, और लंब लंबे नाँवों की बजायेंगे। लेकिन २४ वर्षों में ही सुनी का वह सेव काँटों के चिरगिर में बदल गया। उनकी वह दुनिया ही बदल गयी और अब उन के अपनी गर्दन उँची करके हम पर नजर डालने हैं जो देखते हैं कि वहाँ के

मुसलमान आर्थिकों के बीच केवल क्रिन्दा-ईं नहीं है, कनि उनको सहा भी नहीं है। वे उन मुसलमानों से अच्छे हैं जो भारतीयों बनकर पाकिस्तान गये थे और २४ साल बीत जाने के बाद आज भी शरणार्थी ही हैं। उन के गर्दन टुटारकर अत्याह की बन्नी में अपने भागने देखते हैं तो हिन्दुस्तान को हिन्दू पौत्र को अपना सकेला खरक पाते हैं।

एक हिन्दुस्तानी की हैसियत से इस बात पर दिल बलियाँ उद्वलता है। परन्तु दुबरी और, बंगला देश के विद्वानों की वर्तमान मनोरथा का जागना लेते हैं तो यह महामुस करके दिल बैठता है कि उन्होंने अनुभव से कोई मजक नहीं मोसा। मानसिक दृष्टि से वे आज भी उन्नी स्थान पर हैं जहाँ वे पच्चीस साल पहले थे। आखिर क्या बात है कि बंगला देश के प्रधानमन्त्री के विचारों विमाने के बावजूद भी कि बैरपूर गैर-बंगाली नागरिकों को जल, मान और दृष्टत की सिफारिश की जायेगी और बावजूद कि पू० एन० ओ० के प्रतिनिधि ने झांजा की गैर-बंगाली भाषाधीनता इलाकों का अकेले छोड़ा करने के बाद इस बात का समर्थन किया है कि उन लोगों को जल की कोई बसा छाउप नहीं है। फिर भी वहाँ के गैर-बंगाली सत्ता

महामुस करते हैं और उनका विस्थापन केवल सेना पर है। यह उचै मनोवृत्ति की देन है जिनके दृष्टे हिन्दुस्तान छोड़ देने का रास्ता दिखाया था।

सवाल यह है कि अगर तावत उनका है या सेना ? दुर्भाग्य से बहुत से लोग सेना की शक्ति को ही अपनी शक्ति मानते हैं। लोकनमन्यत्र लोक विजयता भी पूरा बना है, बिना के सीलेने की मादशपरता अत्यन्तकी की है। लेकिन सर तीव्र और उनके बाद सर एफ्हाल की शाहुराना रापना के बन्नी पर उजान करनेवाले नेतुर ने, बिहार तिमसिया जिला माहब से शुरू होकर मोरूदी छाक तक पहुँचता है, मुस्लिम अण्डस्यक को जोने की इस बना से बचिन पछा। भारत में जिना छाहूब की आशरे आमम माननेवालों का भरोसा अश्रेज आमम और उमसी सेना पर था। जब अश्रेजों का पान हुआ तो उन मुसलमानों का वह महान टूट गया और उन्होंने पाकिस्तान आकर अपना दाग पतिसी पाकिस्तान की सत्ता और पजारो सेना को चीर दिया। आज बंगला देश का विद्वानो दरवा है। किससे दरवा है ? किससे सहायता है ? बंगाली से क्यों अलग है ? इसलिए कि २४ साल माप रहने के बाद भी यह बगालियों से, जो उस देश के बायो और बहुमदरार हैं, पुन-मिल नहीं पाया। उनमें अपनी शक्ति सेना से बने ली। यह सेना अब वहाँ रही नहीं तो एक दुबरी विदेशी सेना में वह सुरक्षा महामुस करणा है। उनका विश्वास केवल सेना पर है—वह सेना बिदेन की हो, पाकिस्तान की हो, या हिन्दुस्तान की हो। बहुहाल सेना होनी चाहिए। सेना से बने रिश्ते दुबरी शक्ति पर, जलता की शक्ति पर, एकीकरण बननी नहीं।

बलासत्तकी के लीने की कच हिन्दुस्तान में पाकिनी और हदर में पुरदियों से पीयनी चाहिए। अण्डस्यक होकर अपनी शिंताओं को ही, बहुपणक के साथ

→ १—पहाल पर मेरा उद्धार दो दिन का होना चाहिए, लेकिन समयसमा की मांग पर यह अवधि बढ़ायी जा सकती है।
४—दो या चमसे अधिक दिन रहने की अवधि में पूरे समय शांतिसेना के सिविल सहाये कार्य सिद्धके लिए एक कार्य-कण बना ली तो अच्छा होगा। मेरे साथ एक कार्यकर्ता, जो सिविल खला ठके, होना चाहिए। हमारे साथी और उसी क्षेत्र के शांतिसेना-नायक एक दिन पहले पहाल पर आकर मेरी व्यवस्था तथा

शांतिसेना शिबिरागमियों का समर्थन करें। मैं जिस दिन सगले पहाल पर पहुँचूंगा उसी दिन सबेरे सिविल पर कार्यक्रम शुरू किया जाय, जिसमें प्रभावशेरी और दूसरे कार्यक्रम रहें। शांतिसेना के सिविलार्थी मुखह प्रभावशेरी के साथ साथ की सभा का एलाह करते कार्य तो अच्छा होगा।
११-२-७५
सन्देश, मुम्बई,
पहाल : सिद्धेश्वर
सहायक (सिविल)

और प्रतिष्ठित जीवन बिडाने की बला उन्हेंने सहर के समने पेश की है। बंगला देश के बैर-बंगाली लोगों के लिए हिन्दुत्वान के विभिन्न मुस्लिम कोनों से अब तक भी प्रस्ताव जाये हैं उनमें से मुख्य प्रस्ताव हैं। एक प्रस्ताव है कि उन लोगों को हिन्दुत्वान बायस ले से। दिन से हमारा भी यही चाहना है कि इन सब लोगों को हिन्दुत्वान में, जो उनका अलग पत्र था, बायस बुला लिया जाय। हर्ष यह भी मान्य है कि वे लोग यहाँ आने के बाद राज्य के अपने बड़े वफादार होंगे कि उनकी वफादारी की भिक्षान की जायेगी। लेकिन राज्यों के बायोराज में दिन से नही विभाग से काम लेना पड़ता है और विभाग यह कहता है कि हिन्दुत्वान ऐसा नही कर सकेगा। क्योंकि उनका यह कदम देश मुजीबुर्रहमान पर बधिरास्य होगा। दूसरे बघलिए कि उनके जाने के बाद हिन्दुत्वान में कई तरह की गैर-बंगाली वंदा हो जायेगी। यह तो हो सकता है और सायद होगा भी कि बंगला देश के बैर-बंगालियों की बडिनाइयों को दूर करने की कोशिश से सम्भव रहनेवाले कुछ दोस्ताना सलाह हिन्दुत्वान की सरकार और बंगला देश की सरकार को दें।

दूसरा प्रस्ताव यह है कि इन लोगों को पाकिस्तान भेज दिया जाय। दोष इसके लिए तैयार हैं। बंगला देश बहुत खुश होगा, अगर उनकी अच्छी बिहारियों से पाठ हो जाये। लेकिन इस प्रस्ताव में स्वयं बैर-बंगालियों के लिए बड़े खतरा है। सरये पहले उनको अपने आप अधिकता का एतान करना पड़ेगा। अगर उन्हेंने अपने को बाकिरतानी नागरिक घोषित किया और पाकिस्तान ले उन्हें मजबूत करने से इनकार कर दिया तो उनका जीवन बँदा हो भयानक हो जायेगा जँदा भयानक जीवन केनया में बघनेवाले उन हिन्दु-राजियों और पाकिस्तानियों का वन गया, किन्तुने केनया की नागरिकता व स्वीकार करके विदेन का नागरिक बनना पसन्द किया था। जिस तरह पाकिस्तान से

रोज मुजीब ने यह माँग की है कि वह पाकिस्तान में रहनेवाले बंगला देश के चार लाख नागरिकों को उनके पत्रन बायस कर दे, उस तरह की कोई माँग भुट्टा साहब ने अभी तक बंगला देश की सरकार से नहीं की है। और बडिनाइयो के बननावा भुट्टो साहब के लिए एक बडिनाई यह भी है कि बंगला देश को एक स्वतंत्र देग स्वीकार किये बिना वे अपने नागरिकों को बायस की माँग नहीं कर सकते। रोख मुजीब यह स्वीकार करते हैं कि पाकिस्तान एक स्वतंत्र राज्य है। इसलिए उन्होंने वहाँ की सरकार से अपने नागरिक बायस कर देने की माँग की है। भुट्टो साहब की परिशिष्टात रोख से बिन है। यह माँग भी बंगला देश को पूर्व पाकिस्तान समझने है।

बंगला देश के बैर-बंगाली मुसलमानों के पाकिस्तान चले जाने का कोई रास्ता निकल भी लाया तो पाकिस्तान में कराची के बननावा कोई और ऐसा स्थान नहीं है जहाँ वे जा सकें। और कराची में अभी से यह खोर है कि शिन्ध को 'महाबिस्त्रान' (शरणार्थियों का गढ़) नहीं बनने देंगे। बंगला देश के बन जाने के बाद पाकिस्तान की आमदनी घट गयी है, जिसके परिणाम में वहाँ यहाँवादी आसमान की छू रही है और गैर-बंगाली बढ रही है। ऐसे पाकिस्तान में इन नये शरणार्थियों का जीवन बच-साध्य बन जायेगा।

वास्तव में बंगला देश की स्वतंत्रता, फुद्ध में पाकिस्तान की हार, और भारत की जीत, के बाद ये तीनों पड़ोसी देशों को जिन समस्याओं का सामना करना है जिनमें बंगला देश के बैर-बंगाली मुसलमानों का प्रश्न भी शामिल है उनका सबसे अच्छा हल है कि वे तीनों देश एक साथ बनाकर अपनी समस्याओं को सहयोग से हल करें। इस रास्ते में अभी पाकिस्तान रनबट है। लेकिन हर्ष विश्वास है कि जल्दी या देर, यह बनाने पाकिस्तान से पोर पबकूना और वहाँ की सरकार इस दिशा में सोचेंगी।

बंगला देश और पाकिस्तान की परिस्थिति के तुलनात्मक अध्ययन के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि पाकिस्तान जाने के बजाय बंगला देश में ही रहकर परिस्थिति को अपने अनुकूल बनाना 'बिहारी' मुसलमानों के लिए अधिक अच्छा होगा। उनके विपक्ष मात्र वहाँ को बलायतण है, उसका हमें एहसास है। हम यह भी जानते हैं कि उन्हें हर स्तर पर बडिनाइयो का सामना करना होगा। परन्तु इसके बावजूद हम समझते हैं कि उन्हें बंगला देश में ही रहकर परिस्थिति को अच्छा बनाने की कोशिश करनी चाहिए। काम बडिन जरूर है लेकिन अमम्भव नहीं। समय के साथ परिस्थिति बदलेगी, आम की परिस्थिति सजा नहीं रहेगी, परिस्थिति जरूर अच्छी होगी।
बाराणसी, १ फरवरी '७२

बंगबन्धु मुजीब को गांधी-साहित्य भेंट

कलकत्ता स्थित गांधी ज्ञानिष्ठ प्रतिष्ठान के अध्यक्ष श्री शिवीशरथ चौधरी ने रोस मुजीबुर्रहमान को गांधी-साहित्य के एक समूह का बंगला अनुवाद भेंट किया है। बंगबन्धु ने दृष्टा व्यक्त की है कि उनके निजी पुस्तकालय में इस समूह की छ. बिल्को के अनिश्चित सम्पूर्ण गांधी-साहित्य होना चाहिए।

बंगबन्धु ने सर्वोदय नेत्रा श्री व्यमनाथ नारायण को शीघ्र ही डाक आमंत्रित करने की दृष्टा व्यक्त की है।

सर्वोदय सम्मेलन की तारीखों में परिवर्तन

अप्रैल माह में पत्राक के जार्वधर जिने में होने का चट्टे २० वें अखिन भारतीय सर्वोदय सम्मेलन की तारीखों में परिवर्तन हुआ है और सम्मेलन १९, २०, २१ मई की उन्नी स्थान पर होगा। इसके पहले अधिवेशन भी होगा।

कटुता सही दृष्टिकोण से दूर होगी

—भगवान बनारस

[६ मार्च के 'भूदान पत्र' में ३० फरवरी का एक अध्याय हमने इसविषय प्रकाशित किया कि पाठकों की कुछ मित्र दृष्टिकोणों की भी जानकारी हो। उसकी प्रतिक्रिया में यह एक दूसरा दृष्टिकोण हम प्रकाशित कर रहे हैं। अन्य पाठक भी, हमने कोई निम्न विचार ही भी लिखकर भेजने की कृपा करें। ३०]

भारत-भारत युद्ध के बाद बटुना मिशन पर डाक्टर फरीदी साहब ने एक वाक्य ('रेडियन्स' ६ फरवरी १९७२ — 'भूदान-पत्र' ६ मार्च १९७१) लिखा है उसकी चर्चा बनारस पर नहीं मद्रिये से और करने को आग्रह की दूरी साफ-साफ दिखाई देगी। बटुना एजेंसी का बनारस, दूसरों पर हस्तक्षेप लगाने या मतलब बाँटने से दूर नहीं होगी। मगर परिस्थिति का सही मापना लेने, साफ-साफ उभराने से बाहर करने तथा जोड़ने के कार्य करने से होगी।

भारत ने 'चीन के समय एजेंसी' का मुद्दा-विवाद करके बहुत बड़ा कदम उठाया है। पाकिस्तान की तरफ से भारत पर कई आक्रमण हुए हैं। फिर भी भारत के किसी समय में या पाकिस्तान को नैन-नादूर करने का हतारतक नहीं किया। भारतवासियों ने या अफगानों में तथा वेताओं में वरत पाकिस्तान के कौनों टोपे की बात की है और वृत्त का तारा हस्तक्षेप कौनी टोपे वर ही लगाया है, न कि हस्तक्षेप वर। भारत ने कभी भी किसी देश के सुख-समयों के विषय में कोई बात नहीं कही है, मगर दूर समय मरवीं वर समय-विधा है। मरवीं देशों, कर्ण-विधा, अष्ट-विधा आदि अनेक देशों से हमारा अन्तःसम्बन्ध है। सुख-समयों की कर्ण-विधा में भारत सरकार के प्रतिनिधि भी जाते रहते हैं। युद्ध के समय तोहफे की भी कर्ण-विधा होगी है और विनये होगी है उनका नाम लेकर कहे जाया है। मगर जब से युद्ध बन्द हुआ है तब से तोहफे के सम्बन्ध नहीं का रहे हैं। मगर समय

में नहीं आता कि डाक्टर साहब कौसे मानते हैं कि कभी भी तोहफे की बातें नहीं का रही है। डाक्टर साहब युद्ध के समय या तनाव बन्द रहा था तब, अर्थात्-अवस्था बिरुद्ध, सुख-समय होने की कुछ भी विचार न की। मगर जब शान्ति-मेरी की बातें वगी है और अर्थात् अवस्था की दुहरा दे रहे हैं।

डाक्टर साहब मानते हैं कि बंगला देश के विषय से दो राष्ट्र का सिद्ध-सत् नहीं दूटा है, उलटा धर्म-निरपेक्षता तथा लोकतन्त्र के कुछ मूल्य नही है। उनकी मान्यता है कि भारत एक बहु-राष्ट्रीय देश है। वर भी बहु संरचना है। बंगला देश में हमारी नीति नहीं हुई है। मुक्ति-योद्धा और हमारी मिनी-मुक्ति नीति हुई है और इस नीति से पड़ने ही हमने अपना देश को मान्यता दे को भी। जब भारत के नेता तथा बंगला देश के नेता बात-बात कर रहे हैं कि हमारे समय एक है, बंगला देश की सरकार ने अपने देश को शान्ति-रूढ़ि बिरुद्ध किया, मगर नीति-धर्म, धर्म-निरपेक्षता तथा समाजवाद को बन्द दिया। एक मुक्ति बहु-समय देश के योग्यता की किहमारा राज-धर्म-निरपेक्ष होगा, यह एक बटुना बड़ी नीति है। भारत का बँटवारा, धर्मों की बँटवारी, विधा के साथ सुख-समय की विर और विरुद्ध की जन्दी-बन्दी के कारण हुआ था। यदि डाक्टर साहब को अपने कर्ण-विधा के खाने साधार होने की प्रकल्पना रही है तो वह धर्म में है। योरा कर्ण-रूढ़ि ऐसे विचार करने से बटुना बन्द न होगी मगर और बँटवारी।

बंगला देश के धर्म-निरपेक्षों के दुःख

को नजर-अन्दाज करने का हस्तक्षेप डाक्टर साहब लगते हैं। यह साफ-साफ है कि बंगला देश के विरुद्धी सुख-समय भारत के नागरिक नहीं हैं जो हम उनकी भारतीय जैसी फिर कर दें या उन्हें यहाँ बाराएँ। जिस तरह अन्य भारतीय लोग विभिन्न देशों में गये हैं उन्ही तरह वे लोग नहीं गये हैं। वे अपने लिए अपना देश पाकिस्तान की भाँति करने, हमसे बँटवारा करके गये हैं और उन्हीने जो वहाँ मान्य-दायिक कार्य किये हैं उन सबको अपर नजर में रखें तो उनको वापस बुलाने का प्रयत्न ही नहीं उठता। मगर मान्यता के जाने हम बंगला देश की सरकार को उनके रक्षण के बारे में बह संकट है। सुर-रक्षण मुक्ति ने भी उनके रक्षण की बात कही है। यदि इन धर्म-निरपेक्षों का विरुद्धी धर्म-निरपेक्ष मान्यता की बात करें तो यहाँ से मूल-सुख-समय का प्रतिनिधि-कर्म-धर्म, या मुक्ति-धर्म-निरपेक्षता का बँटवारा? हमारे विरुद्ध-बंगाली, मुक्ति और मुक्ति-धर्म-निरपेक्षता है? मगर यह दृष्टिकोण ही तो उस देश के सुख-समयों का अन्तःसम्बन्ध के सुख-समयों से बना सम्बन्ध है? हमें ऐसे साम्यवादी नर्तक से विरुद्धी भी प्रतिनिधि मन्त्र की भाँति का सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। मुक्ति से मिलने का तो बोर्ड-समय ही नहीं है। मगर बंगला देश की जिस तरह हमने सह-सु-सुख और समय-विधा है उनका मूल में रखकर यहाँ से धर्म-निरपेक्षता के विचार मानने-बारी वर प्रतिनिधि-मन्त्र बंगला देश की जनता तथा सरकार से मिलने और समय-विधा के लिए भेजा जा सकता है।

महासमय की बात इस उपा-महासमय के तीन राज्यों में नहीं हीन देशों की हीनी चाहिए। और उलटा आग्रह माया-समय, बंगाल का माया से नहीं हो सकता। जब तर एक दूसरे के प्रति विरुद्ध, सह-सु-सुख नहीं बनें तब तक ऐसा कदम उठाने का कारण किसी भी देश को सरकार-बंगला को नहीं होगा। पाकि-

ग्रामदान के वाद क्या हो रहा है ?

—सिद्धराज ठड्डा

हम ५-६ लोग उस दिन सहरवा जिले के सुदूर गाँव में ग्रामोपकारियों तथा सहयोगियों के मित्रिक के लिए जा रहे थे। कोसी नदी की पार-पार धाराओं को पार करते हुए रेखवे स्टेशन से १० मील पैदल जाता था। इस जिले के प्रमुख सर्वोदय-सेवक महेन्द्रमर्दि ने रास्ता बताया तथा हमारा सामान उठाकर साथ चलने के लिए चार साथियों को स्टेशन पर भेज दिया था। स्टेशन और वध्वे से कुछ दूर निकल जाने पर मैंने अपने साथ चल रहे गौबन्दल से सहज बातचीत शुरू की। एक कन्धे से अपनी खुद की पोटी भी ओर हूँकरे से मेरा बैग लटकाने हुए वह साथ चल रहा था। कोई २०-२२ वर्ष की उम्र होगी। हम मित्रिक के लिए पहुँच जा रहे थे उसके पहिले में ही ग्रामदान की बातें दानापुर का रहनेवाला वह मर्दि था। मैंने जब उसका परिचय पूछा तो सद्गता से उसने कहा, "मैं गाँव का शिक्षामंत्री हूँ।" इस जवाब में न तो बनावट भी न अहंकार की झु, बसु-स्तिविक का परिचय-मात्र था। रास्ते में करीब पन्धे-डेढ़-पन्धे में उस मर्दि से दानापुर के बारे में तरह-तरह की जानकारी और सवाल पूछता रहा। और मुझे आश्चर्य हुआ कि इस बीच एक बार भी वह नौजवान न छो कभी जवाब के लिए

ठिकता न ऐसा कोई जवाब दिया जो विद्युत् की बातों से प्रभावित हो। मैं अपने अनुभव से यह समझा हूँ कि दानापुर गाँव के इस शिक्षामंत्री, जगदीश की तुलना हमारे बहुत से राष्ठीयों के शिक्षामंत्री अपने विषय और कार्यक्षेत्र के बारे में न तो उलने जानकार होते हैं, न इतने आत्मनिश्चय और समझ-बूझ से जवाब दे सकेनाले, बालाघा या होमिगार भले ही वे ज्यादा हो। ऐसी नयी पीढ़ी अगर गाँव-गाँव में खड़ी हो तो यह भरोसा होता है कि हमारे देश का भविष्य उज्ज्वल है और जनता सुरक्षित।

दानापुर की जो जानकारी मुझे जगदीश से मिली वह भी नहीं एक और हमारे देश के हजारों-नासों गाँवों की कल्पना नहीं की जा सकती है वहाँ दूसरी ओर उनके भविष्य के लिए क्षाया की किरण भी। दानापुर में १२ परिवार हैं। गाँव की कुल करीब ४०० बीघा भूमि में से सिर्फ १०० बीघा या एक चौपाई, गाँव के इन परिवारों के पास है, शेष तीन चौपाई जमीन बाहर के केवल चार 'दातवारा'—अनुसूचित भूमिवालों (एन्ग्लो लेग्नटार्यस)—के पास है, एक के पास १०० बीघा, दूसरे के पास २५, तीसरे के पास ७५ और चौथे के पास ३५ बीघा। ये १२ परिवार पहले सभी भूमि-

जायें, परस्पर विश्वास बढ़ना आया, हम एक दूसरे के मित्रिक भाते जायें। डाक्टर टाडम ए० बी० सी० ट्रेनल के कुछ देशों के कामन मार्केट की बात करते हैं। मगर हम तो हमसे भी भागे बकुर दल देशों के महादल की बात करने हैं।

बटम एनकरकी प्रभाव करने से दूर नहीं होगी, मगर दोनों तरह से परस्पर सच्चाई, वैसी और विश्वास से जगें लकी दूर होगी। ●

होना ये, आज सब भूमिवाला है। गाँव में कोई भूमिहीन नहीं है। ५ बीघा से ज्यादा जमीन किसी परिवार के पास नहीं है, कम-से-कम चार कट्ठा है। यह कमी-बेनी भी इसलिए है कि आज से पन्द्रह-सोहद बरन पहले यह एक छोटी बीघा जमीन जब धूरान में मिली थी उन दिनों कोसी की बाढ़ से यह इलाका जलत था, जमीन भेनेवाले लोग नहीं थे। जो दस-बारह परिवार भूमिहीनों के थे जहाँ में वह जमीन खेत दी गयी। लेकिन यह भी एक बात की बात है कि बाद में जब और परिवार यहाँ बसने के लिए भाये तो सबसे बैठकर फिर से जमीन का बँटवारा कर लिया। पहले जिन्हें ज्यादा मिली थी वह उन्होंने खुशी से छोड़ दी। उसके बाद जब इस गाँव का ग्रामदान हुआ तो फिर सोचो मे बीघा-कट्ठा निकला तथा कुछ और परिवारों को वह जमीन दी गयी। मैंने जगदीश से पूछा कि इस तरह और भी परिवार भाते जायेंगे तो भाये क्या होगा ? इन भाई ने एक क्षण रुके बिना जवाब दिया कि नहीं, अतः गये परिवार ग्रामदान की इजाजत से ही बच सकते हैं।

गाँव के लोग ग्रामदानों की जमीन बँटाई पर लेते हैं। पैदावार का भाया भाग मासिक से जाता है जबकि मासिक के लिए एर-विहार का मानन करकों से बना हुआ है। जब ग्रामदानों से बँटाई का अपना हिस्सा घटाने की बात हुई तो गुरल उल्टेने कहा कि आप लोग जमीन छोड़ दीजिये, दूसरे लेनेवाले हैं। तथा से या मानन से सब कुछ कर देने की बात विचनी घोपी है, यह वाहिर है। मन्धूरों की सपतिन करके ग्रामदानों की मन्धूर करने की बात भी देहात के संघर्ष में प्रचलित है, क्योंकि सब-गाँव में विपरे हुए मन्धूरों में भागप में ही बँटाई के लिए हीड़ मना देना और उनमें पूट जानना सामान है। इस प्रश्न का उत्तर देल गयी है कि गाँव की ग्रामदान में दूसरी सुन्दर चर्चा ही और दोनों जगों

→ ग्रामदान में सभी जो घटनाएँ हो रही हैं उससे भी दूरी दिन-ज-दिन बढ़नी जा रही है। फिर भी हमसे पहला कदम उठाना होगा मन्धूर न करने की सपतिन करने का, जिसका प्रस्ताव मर्दि वर्ष पहले भारत के उत्तराखण्ड प्रधामन्त्री की जवाहरलाल नेहरू ने रखा था और अब भी प्रधामन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने इस प्रस्ताव की दोहराया है। यदि ऐसी सपतिन हो जायें है तो उसके बाद जेठे-जेठे सम्भव सुधारों

की सहायता से पैमाना हो, चाहे वह माया-
भासा हो, दो-तिहाई, एक-तिहाई हो या
तीन-चौथाई, एक-चौथाई ।

दानपुर में धामकीय भी चार बरस
से चल रहा है । एम सिनेमिसे में भी
गोबराउ ने बहुत सफलकारी से काम
लिया है । मुक में सब लोग प्राण-
कीय निष्कल्पने पर रबी नहीं हुए तो जो
वेदार के उन्ही से मुञ्जाल कर दी गयी ।
जगदीश ने बताया कि आज गांव के सब
परिवार धामकीय में अपना हिस्सा दे
रहे हैं । जमी धामकीय में तोल साल में
१०८ मन अन्न व १००० २० इन्हडा
हुआ है, अथवा भी मजदूरी का मिला
है मित्रका उपयोग सामूहिक बांधों में
लिया गया है । धामकीय में से लीनों
की खाने के लिए अन्न दिया जाता है ।
बहु साठ पसेरी का नौ पसेरी यात्री मन
पीछे पांच सेर बारस प्यारा लिया जाता
है । जयश्रीम धर्म ने बताया कि धामकीय
से दिया गया मन अथवा वापस लौटा
दिया जाता है ।

दानपुर को धामकीय नियमित मिलनी
है या नहीं और कभी संसम्भति न हो
तो क्या किया जाता है—यह पूछने पर
जयश्रीम धर्म ने बताया कि धाम की
मोटिंग हर महीने नियमित होती है और
बीच में पन्द्रह दिन पर 'कॉन्वेंट' की
मोटिंग । कॉन्वेंट या कार्य-समितिके ११
सदस्य हैं जिनमें विभाग बंटे हुए हैं । एक
बार धामकीय में मजदूरों की ओर से
धामकीय में क्या दिया जाय इस विषय
पर मजदूरों की सहमति नहीं हुई तो
धामकीय ने उस विषय को अपनी मोटिंग
के लिए स्थगित कर दिया और सब बीच
मजदूरों से क्या करके संसम्भत मुआव
देवार कर लिया जो अपनी मोटिंग में
सबको एक रुप से स्वीकृत हुआ । बिना
किसी सरकारी मदद के लोगों ने अपनी
सैन्ट्रल मेडिया से सड़के बनारी है,
(हमारे हीरि मिलों के सिविल के शोरस
ही हमारे देखने-देखने सामूहिक भ्रमदार
[१२ १२ १०९ १२]

साथी के पत्रे

हत्या की कीमत

पिछले साल बरस से अमेरिका ने
वियतनाम में तबाही मचा रखी है । रात-
दिन बहो बोने बरस रहे हैं और वेगुवाह
लोग मारे जा रहे हैं । अमेरिका के प्रसिद्ध
असवार "वाशिंगटन पोस्ट" ने बताया
है कि एक वियतनामी की मारने का खर्च
रस हजार डॉलर (७१ हजार रुपये)
देना है ।

वहाँ का एक दूसरा लोकप्रिय असवार
है "न्यूयार्क टाइम्स" उदका कहना है—

दूसरे महायुद्ध में अमेरिका ने कुल
वियतनाम २० लाख टन बम बरसाये ।

कौरिया की सड़कें में अमेरिका ने
सब ताप टन बम बरसाये ।

सर्वेन प्रशोकीन की लड़ाई में अमे-
रिका अब तक बारह लाख टन बम बरसा
चुका है ।

इसके साथ अमेरिकी धन-सेना
और जल-सेना द्वारा खर्च की गयी काल
की भी कायित कर दें, तो कुल ताप
तेरह लाख टन तक पहुँच जाती है ।

उसमें में हिस्सा यह है कि १९७०
७१ में ८,००० लाख डॉलर मजदूरों में
खर्च किये गये । और १९७१-७२ में
१५,९६० लाख डॉलर खर्च का अन्त
लिया जाता है । सारी के लिए इसमें और
भी बूझें करने का बजट राष्ट्रपति
वियतनाम में अपनी बाँटें के कामों पैस कर
दिया है ।

अमेरिकी सरकारों को के अनुसार,
अमेरिकी सरकार ने प्रशोकीन के युद्ध पर
१९६१ में १००० लाख डॉलर खर्च किये,
१९६६ में यह उपादा साठ शून्य हो गयी—
९०,००० लाख डॉलर । और उसके बाद
१९९७ से १९७९ तक, चार साल में
५,८१,००० लाख डॉलर खर्च किये गये ।

एक अमेरिकी रिपोर्ट में बताया गया है
कि अमेरिका अब तक वियतनाम में
तबाही पर बीस हजार करोड़ डॉलर
खर्च कर चुका है । हमारे विवेक में यह
देख लाख करोड़ रुपये ।

अमेरिका ने जो यह पैसा हत्या-कामों
में लगाया है उसके साथी दुनिया को एक
मान तक मारे हैं वियतनाम जा सकता था ।
प्रकृति एक दिन अमेरिका से हत्या की
इस भयानक बीमारी की वसूली
करेगी ।

कन्वोकेशन स्वतः

बीच सात हुए जब प्रधानमंत्री
पीपीवी इन्दिरा गांधी कङको विधायकालय
के उपाध्यक्षों के साथी वीरान्त मायण देने
सङ्गे हुन ली कावाच मारी—'हमें मायण
नहीं, लोकरी बाहिर', और सब उठकर
चले गये ।

हमासाबार विधायकालय में पांच साल
से कन्वोकेशन नहीं हुआ । वहाँ के छात्र-
छात्राओं की पता ही नहीं कि कन्वोकेशन
किस दिनांक का नाम है । अन्य विश्व-
विज्ञानों में भी छात्रान्त समारोह की
गति-विधि बड़ी जगजाहल रहनी है ।
उनका पुनराव वैभव खाम हो गया ।

कन्वोकेशन पर उदक माय हो
जाते थे । इसके लिए छात्रों को योग देना
गलत होगा, यह बहुत कुछ निर्भर करता
है उप-पुनरति की कार्य-पुनरता पर ।

जो भी हो, केवल विश्वविद्यालय में
निर्णय किया कि आने से कन्वोकेशन नहीं
हो नहीं । इन्दिरा गांधी से भेक भी जाया
नहीं । न रहेगा बाँध न बनेगी बाँधुरी ।
छात्र अन्य विश्वविद्यालय भी केवल की
नकल नहीं जैसे केवल छात्रों ने जब
माटरी कुछ की तो बाद में और छात्रों
भी देखा-देखा करने लगी । सो मानता
होगा कि वु १९७१ के साथ कन्वोकेशन
का जमाना भी सत्य हुआ ।

—राहु

उड़ीसा-सर्वोदय सम्मेलन : कार्यक्रम, संयोजन

उड़ीसा का प्रांतीय सर्वोदय सम्मेलन ११, १२, १३ और १४ फरवरी ७२ को सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन से सर्वोदय विचार प्रवाह प्राप्त हुआ और आगे के कार्य की योजना बनायी गयी।

प्रस्ताव

“उड़ीसा में पिछला प्रांतीय सर्वोदय सम्मेलन १९६९ में हुआ था। इन वर्षों में अपने देश की परिवर्तन हुए हैं। इस बीच लोकतन्त्र तथा विधानसभा के चुनाव हुए हैं। स्वयंसेवा में कुछ प्रगतिशील परिवर्तन हुए हैं। अपने पड़ोसी बंगला देश में स्वतंत्रता का आन्दोलन प्रशस्ती हुआ है। उस लड़ाई में भारत की भूमिका ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर में अपने देश के सम्मान को जँगा चढ़ाया है तथा देश के अन्दर एतना बड़ाका है, और उपनिवेशवाद के विनाशक मानस बनने के साथ-साथ दूसरी ओर समाजवाद ने आत्मविश्वास जापत किया है। देश में एक तरह का आशावाद या सम्भवतः का विचार लोगों में सम्पूर्ण प्राप्त कर रहा है।

“इस परिदृष्टि की ध्यान में रखते हुए यह सम्मेलन मानता है कि बुनियादी सामाजिक क्रांति जनता की समर्थित शक्ति से ही सम्भव होगी, सरकारी प्रयत्न इसमें मददगार हो सकता है पर जनता स्थान नहीं ले सकती। इसलिए इस दृष्टि हुई परिदृष्टि में सर्वोदय आन्दोलन की अधिक क्रान्तिशीली अवधि की आवश्यकता है और, विद्यमान परम्परा से उठे आगे बढ़ने के लिए अधिक प्रेरणा मिल रही है। सर्वोदय के संगठन की ओर से सामर्थ्यवान् आन्दोलन के जरिये जनता में सहजता, एतना तथा संगठन की जो बढावा मिला है उसीके परिणाम के देश में सर्वोदय तथा शौर्यपूर्ण समाज की स्थापना प्राप्तियों शौर्यपूर्ण रूप से करने का मार्ग प्रकटन हुआ है। आज की स्थिति में इस कतिपय आन्दोलन की अधिक मजबूत बनाने के लिए यह आवश्यक है कि हम गरीब जनता की समस्याओं से अपना सम्बन्ध जोड़ें। रखते

अंगी बनकर व्यवहृत तथा शोषित जनता ही इस आन्दोलन का नेतृत्व कर सकेगी।

“भारत के दो राज्यों में राज्यदान हुआ है तथा हमारे प्रांत के करोड़ एक पोषाई गाँव शासन में आवे हैं। पर उन गाँवों की जनता ने अब तक इस आशयजनक का नेतृत्व करने की ताकत प्राप्त नहीं की है। उन गाँवों में अब तक जनशक्ति जागृत नहीं हुई है। यह आन्दोलन तभी सफल होगा जब इन गाँवों की जनता अपने गाँवों में सर्वोदय परिवर्तन ला सकेगी और इन तरह सामर्थ्यवान् की नींव डाल सकेगी।

“उड़ीसा में हमने राज्यदान का सफल किया था। वह अब तक पूरा नहीं हुआ है। हाजीतन मानता है कि नीचे निम्ने कार्यक्रम को अपर हम निष्ठा के साथ कार्यान्वित करेंगे तो राज्यदान के सफल को पूरा करने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ सकेंगे।

“यह सम्मेलन महत्त्व करता है कि भारत की जनता की आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक सुरिष्ट के लिए यह आन्दोलन विश्वव्यापी मानव-मुक्ति आन्दोलन का एक हिस्सा है। इन क्षेत्र को मानवीयता से सारे क्षेत्र तथा सम्बन्ध इस आन्दोलन की सफलता के लिए अपनी लड़ाई सतत जारी रखेंगे। उड़ीसा की जनता से यह सम्मेलन प्रार्थना करता है कि देश के इस महत्त्वपूर्ण भाई में हार्दिक सहभागिता तथा सहानुभूति दूसरों से तथा इसे अपना मानकर इसे जन-आन्दोलन बना दें।”

कार्यक्रम

आन्दोलन की सफलता सर्वोदय जनता, साहित्य-प्रचार, शिविर-प्रवचना

तथा संगठन पर निर्भर है। कार्यकर्ताओं की जमात बढ़ाने के लिए नीचे निम्ने कार्यक्रम हाथ में लिये जायें। पवि सार में हृद प्रसन्नजन संघ से कम-से-कम पचास-पचास प्रतिदिन कार्यकर्ता तैयार करने का ध्येय रखा जाय। इनमें से दस अल्पत दवें के तथा पालीय सामाज्य कोटि की योजना रखनेवाले हैं।

शामनेवा तथा क्रांतिकारी कार्यकर्ता, इन दो प्रकार के कार्यकर्ताओं के लिए तालीम की व्यवस्था करनी होगी। बिना प्रशिक्षण के आने क्षेत्र में काम करेंगे। लक्ष्मीकी तथा व्यावहारिक दोनों प्रकार की तालीम दी जायेगी। धैर्य, गोपालन, छापी प्रामोदोजन, सामर्थ्य तथा सामर्थ्य की व्यवस्था, शौर्य-सहाय, साधरता, इस प्रकार की व्यावहारिक तालीम होगी।

- १—सर्वोदय आन्दोलन के सम्बन्ध में बर्तनीयों का इतिहास,
- २—समाजवादान, अर्थशास्त्र, शौर्यकी,
- ३—आस्था, शिविर-प्रचालन,
- ४—शास्त्रिकता की तालीम,
- ५—प्रशिक्षण, सामर्थ्य, जुलुष आदि का प्रचालन।

ये कार्यकर्ता की तालीम के लक्ष्यकर्म होगी। पहले साल १२० कार्यकर्ताओं की तालीम देने का लक्ष्य रखा जाय। तालीम की अवधि ६ माह से एक साल तक की होगी। इसके लिए दो मुख्य स्थान गोपाल-बाड़ी तथा मरठिगाय होगी।

साहित्य : अपनी पत्रिका हरेक प्राग्-दानी भाई में पहुँचे यह ध्येय रखा जाय। हर साल १२०० भावों में साहस बनाये जायें।

संगठन : प्रथम-साल क्षेत्रों में कार्य-कर्ता-सङ्घ के साथ-साथ प्राथमिक गाँवोदय संगठन भी स्थापित लिये जायें। सर्वोदय संगठनों की क्रान्तिकारी संयोजन-सफलता सम्माने। प्रांतीय कार्यलय की अधिक कार्यसम किया जाय।

सरकार के साथ सम्बन्ध

सर्वोपर्य आन्दोलन उत्पन्नी करने का आधार पर छोड़े रहकर सरकार के अन्तर्गत नव्यों के साथ सहकार करेगा तथा अन्तर्गत विरोधी कार्यों का विरोध करेगा।

ग्रामदान-प्राप्ति - ग्रामदान-प्राप्ति करके उद्योग मुरम्त जमीन का बँटवारा करने का नया प्रयत्न अग्र-ग्रहण रूप में होगा तथा सफल होगा है। यह प्रयत्न करने प्राप्ति में सबसे काम के लिए मूने गये लोगों में तथा अनुसूचित परिधिपरिधिने दूसरे क्षेत्रों में चलाया जाय।

अर्थ-संग्रह

ग्रामदानी गाँवों को इस आन्दोलन का मुख्य आधार मानकर यह प्रयत्न हो कि हर गाँव से माहवार १५ रुपया आन्दोलन के लिए मिले। पाँच साल के अन्दर इस प्रकार का संगठन सड़ा दिया जाय। इस साल १२०० गाँवों से इस प्रकार की वसूली शुरू की जाय। शहरोँ से, विद्यापीठों, मजदूरोँ, तथा ग्राम जनता से अर्थ-संग्रह का प्रयत्न आज वैसा चलता रहे।

ग्रामदानी गाँवों का विकास

ग्राम में तीन प्रकार के ग्रामदान है १—सर्वांगित ग्रामदान, २—वितरित ग्रामदान, ३—माध्यता-प्राप्त ग्रामदान। विरहित ग्रामदान तथा माध्यता-प्राप्त गाँवों के लिए नीचे निम्ने अनुसार पाँच साल के संगठन का कार्यक्रम लिखा जाय—

- १—ग्रामसभाओं की सक्रिय बनाना।
- २—ग्राम-मानसियता सड़ा करना।
- ३—गाँव के सगड़े गाँव में निपटारे जायें।
- ४—गाँव के शोरम का अन्त करना।
- ५—भूमिहीन प्राप्त जमीन से वेससात न हो ऐसी परिधिपरिधि रीसा करना।
- ६—ग्रामश्रीय की अन्वयित व मजदूर बनाना।
- ७—गाँव में सरकारी जमीन हो तो

ग्रामस्वराज्य सम्मेलन के लिए श्री जयप्रकाशजी का सन्देश

आगामी २४-२५ फरवरी की प्रथम बिहार ग्रामस्वराज्य सम्मेलन का आह्वान मिथुमा (बैतानी) में हो रहा है और उद्योग बिहार के कोने-कोने से ग्राम-सभाओं के प्रतिनिधि भाग लेनेवाले हैं, यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई। मुझे खेद है कि मैं अपनी अस्वस्थता के कारण इस सुखसंसार पर उपस्थित नहीं हो सकूँगा।

जाने कब का यह पहला सम्मेलन है जिसमें गाँवों के लोग स्वयं अपनी समस्याओं पर चर्चा करेंगे और उसका हल ढूँढ़ेंगे। अभी तक गाँव के ग्राम का निर्माण दिल्ली और पटना में होता रहा है। यह सम्मेलन गाँव के अधिकतम से गाँव के सवालों को हल करने की दिशा में एक नया बंदम और ग्रामस्वराज्य के निर्माण की ओर, एक नयी शुरुआत है। दुनिया के सबसे प्राचीन न्यायन की भूमि वैशाखी के अन्त में एक ऐसे सम्मेलन का आयोजन ऐतिहासिक संयोग है। हमारे देश में अभी जो लोकतन्त्र प्रचलित है, वह अचटे निराश्रित के सवाल है। उसको पकट कर चौड़े आधार पर उसे

उसे भूमिहीनों में बँटाना या ग्रामश्रीय के लिए उसकी सामूहिक लंरी करना।

८—गाँव में सामूहिक ग्रामदान का निर्गमित कार्यक्रम चलाना।

९—न्यायिकों तथा सहायता का प्रचार संकलन करना।

१०—अनुसूचित की दृष्टि से योजना बनाना।

११—सारी ग्रामोद्योग तथा क्षेत्रीय पदस्थान का विकास करना।

सर्वांगित ग्रामदान में पहले मुष्टि का काम पूरा करके फिर ऊपर निम्ने अनुसार कार्यक्रम निर्णय जायः

—अनुसूचित शोधको

प्रतिष्ठित करने की दिशा में एक विनम्र प्रयास इस सम्मेलन के द्वारा हो रहा है।

इस सम्मेलन की सफलता की बगोटी मह होगी कि जिन ग्रामसभाओं के प्रतिनिधि यहाँ इकट्ठे हो रहे हैं, वे सक्रिय बनें और अपने गाँव की समस्याओं को हल करने के लिए कुछ ठोस कदम उठावें। किसान के लिए,—गाँव के मजदूरों के लिए समुचित मजदूरी की व्यवस्था, विशेषाधिकार प्राप्त अन्वित की सामग्री का पूर्वा प्रियाता, भूमिहीनों के लिए बीया-बँटवा भूमि का वितरण, गाँव के सामूहिक विकास के लिए ग्रामश्रीय का गठन तथा गाँव के बच्चों के लिए प्राथमिक शिक्षा का प्रबंध, यह पक्वित कार्यक्रम है जिसकी पूर्ति करना हर ग्रामसभा का प्राथमिक कर्तव्य होगा चाहिए।

यह आर्हण है कि ग्रामस्वराज्य का संघानन गाँव की दृष्टि से ही होगा। जब तक बाहर के कार्यकर्ताओं की अन्व-रक्षता नही रहेगी, जब तक ग्रामसभाएँ ग्रामस्वराज्य की अन्वियाद नहीं बन सकेंगी; अन्विए गाँव में गाँव के नेतृत्व का विकास हो, यह ग्रामसभाओं की सफलता की एक महत्वपूर्ण बगोटी है।

यह सम्मेलन एक ऐसे अवसर पर हो रहा है जब विग्रामसभा का चुनाव सामने है। मोठुरा बनीय लोकतन्त्र और उद्योग आह्वानित चुनाव गाँव की एकरता का सबसे बड़ा शत्रु है। इस चुनाव के पुरानिने गाँव की एक रक्षने का दायित्व ग्रामसभा का है। मुझे माता और निश्चाय है कि ग्रामसभाएँ इस चुनौती के पुरानिने सही रहकर ग्रामस्वराज्य का साज्य सुकन्त करने में तत्पर होंगी।

इस जग्यो के साथ मैं सम्मेलन के अवसर पर एकर हो रहे ग्राम-प्रतिनिधियों का अन्वितन्दन करता हूँ और उन्हें अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ भेजता हूँ।

जय हिन्द ! जय जगत ! ! ●

बिहार ग्रामस्वराज्य सम्मेलन

२४, २५ फरवरी को मुजफ्फरपुर जिले के वैशाली प्रखण्ड के निहमा गांव में बिहार राज्य का प्रथम ग्रामस्वराज्य सम्मेलन उद्घाटन हुआ। ग्रामस्वराज्य-समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों की एक बैठक आयोजन में हुई थी जिसमें चर्चा करके निम्न हुआ था कि राज्य-स्तर का एक सम्मेलन किया जाना चाहिए जिसमें राज्य भर की ग्रामस्वराज्य-समाजों के प्रतिनिधि भाग लें। इन सम्मेलन के आयोजन को क्रिमेयारी स्वेच्छा से वैशाली प्रखण्ड के लोगों ने लगे लगे देवारी करायी थी। उही निश्चयानुसार यह सम्मेलन एक ग्रामवासी गांव में ही रखा गया जहाँ ग्रामस्था बनी हुई है। वैशाली की भूमि मण्डप की भूमि रही है, इसलिए यह ठीक भी था कि ग्रामस्वराज्य का प्रथम सम्मेलन यहाँ ही हो। बीच में मण्डप की परम्परा जो गूल भूरी थी उसी पुन. जीवन करने का एक प्रस्तावनाम मुद्रण हुआ इस सम्मेलन के आयोजन से।

अब तक कार्यकर्ताओं के विचार होते रहे हैं, सीटिंग हीनी है, सम्मेलन होते हैं। उनमें कार्यकर्ता ग्रामस्वराज्य के

लिए तन्त्र करते हैं, कार्यक्रम बनाते हैं और चर्चा करते हैं कि यह ग्राम-स्वराज्य का आन्दोलन उनके द्वारा चलना चाहिए जिसकी दसवीं आवश्यकता है यानी जनता के द्वारा चले। और फिर-फिर विचार-सम्मेलन में यह बात दोहरायी जाती है। परन्तु इस सम्मेलन में यह बात नहीं दोहरायी गयी। यह सम्मेलन उनका ही था जिनकी ग्राम-स्वराज्य की आवश्यकता है। कोसिदा की गयी थी कि यह सम्मेलन उनका ही रहे और वे ही कार्य में ज्यादा-से-ज्यादा चर्चा करें—अपनी समस्याओं के हल ढूँँ। हालाँकि इस सम्मेलन में कार्यकर्ताओं की संख्या ७६ थी जो प्रदेश के ११ जिलों से आये थे एवं विशेष प्रति-निधि का बिस्वा लगाये हुए थे। सम्मेलन की व्यक्तता भी कोई प्रायोग नहीं कर रहा था किन्तु अ.धार्म राममुनिजी कर रहे थे और उद्घाटन भी किया सर्व सेवा सब के अन्वेषण थी ए० जगन्नाथन् ने। दत्ता धर्मधाराजी ने मुख्य अतिथि के नाते सम्मेलन का उद्घोषण किया जो सर्वथा उचित भी था क्योंकि दत्ता की मुनिता कार्यकर्ता की गयी

नागरिक की ही है। मंच पर एक ही प्रायोग प्रतिनिधि नहीं था, शायद संयोजनकर्ताओं के स्थान में यह बात बतायी गयी। हाँ, दत्ता जरूर था कि कार्यकर्ता की मुख्य भूमिका थोड़ा ही थी, और उन्होंने उदात्तापूर्वक चर्चा करते वक्त मोठा प्रायोग प्रतिनिधियों को दिया।

अनेक लोग यह जानने के लिए उत्सुक जान पड़े कि प्रतिनिधियों की संख्या कितनी है। ज्यादा प्रतिनिधियों के आने की अपेक्षा अल्पव थी, परन्तु ७ दिनों से ७५ प्रतिनिधि आये। एक दिन ने कहा कि कार्यकर्ता ही ज्यादा जरूर आते हैं वो दूसरे ने कहा कि यह ही नहीं कहा जायेगा कि सर्वोद्य के सम्मेलनों में नये चेहरे नहीं दिखाई पड़ते। वे जो ७५ लोग गाँवों से आये वे तो नये ही हैं। उनमें से तो अनेक ऐसे हैं जिन्होंने प्रखण्ड के आगे अपना बदन ही नहीं रखा है।

श्री जगन्नाथन्जी ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि गाँवों में एकता के लिए जातिवाद और पार्टीबाजी को समाप्त करना आवश्यक है। भूमि के प्रश्न की चर्चा करते हुए आयेने कहा कि सर्वोद्य के कार्यकर्ताओं के पास जो भी सोझी-बटुन अभीत है उसे वे छोड़ने के लिए



अंधार—बायें से दायें दत्ता धर्मधाराजी, श्री स्वराज्यराज साहू, श्री कृष्णमूर्ति, श्री ब्रजराज शर्मा, —आगे के दिशा में दूर थीना ।

तीव्रता नहीं है जबकि वे छोटी नहीं करते। अगर वे छोटी नहीं करते तो जमीन रखने का उपाय एक नहीं है। ग्राम-राज्य-समाजों के प्रतिनिधियों में जाने बहुत कि ग्रामस्वराज का ध्येय तो बहुत जैसा है लेकिन एगो की दैनन्दिन समस्याओं के हल का प्रयास करना चाहिए। इस सम्मेलन से उन्होंने यह अंदाजा भी कि यह सम्मेलन ग्रामस्वराज का धाराई देने का प्रयास करेगा।

यहां से जाने उद्घोषित भाषण में प्रजासत्ताज के मूल्यों का विस्तार से विवेक दिया। उन्होंने बताया कि उन मूल्यों की स्थापना के लिए ग्रामस्वराज-समाजों की सेवा करना चाहिए। उन्होंने काने दोष दिन के भाषण में भी ग्रामस्वराज-समाज के बावों की विमर्च चर्चा की। (बावों के भाषण लगभग एक से घंटे)।

प्रतिनिधियों ने ५ मोझियों में बंदर ग्रामदात-मुक्ति, -विभास, शम्भरराज-समाज के बावों, शौरजीवि और सुनास पर चर्चा की। चर्चा में प्रतिनिधि सुनास विन्, भोज नहीं। सम्मेलन का जो भागवण या उद्यम उन्होंने मधुपुर किया कि ग्रामस्वराज इनकी भावनावाज है और उनके लिए उन्हें बिन्ना करनी है, विचार करना है। और, यहो एहसास हम सम्मेलन की बड़ी उपलब्धि मानती नहीं चाहिए कि कोई प्रस्ताव और कार्यक्रम।

ग्रामस्वराज के अनेक पक्षुओं पर चर्चा हुई परन्तु इस सम्मेलन में ग्रामस्वराज-समाजों में विचारों की भूमिका पर भी बोरदार चर्चा हुई और यहां तक लोगों ने चर्चा की कि ग्रामस्वराज-समाजों में किसको का प्रतिनिधित्व होना ही चाहिए।

इस सम्मेलन की उपस्थिति अगर एक बार में नहीं हो तो नहीं बहने कि इससे जहाँ सामाजिक प्रतिनिधियों ने बहुत कुछ सीखा और भासा तथा जगह जगह किया बहा छोटे बड़े कार्यक्रमों को संपन्न हुए। और, प्रत्येक तथा कार्यक्रम के समाप्ता के एक घण्टा के भी जो उनके आगे के पद का वायदे होना।

—दुपारी चरदा

आन्दोलन के समाचार

संस्थाओं के कार्यकर्ता सहरसा जाये

१८ मार्च से १८ अप्रैल तक विहार के सहरसा जिले में चलनेवाले सत्यन जयिणन के सत्रमें में गांधी स्मारक निधि के मंत्री श्री देवेन्द्र कुमार गुप्त ने निधि की राज्य शाखाओं और उनके सम्बद्ध जन-रचनात्मक संस्थाओं के कार्यकर्ताओं का ध्याशन करते हुए कहा है कि वे अपने निधि के कार्यों से सम्मेलन एवं माह के लिए पुनः होकर सहरसा सत्यन जयिणन में शामिल हों। इन कार्यक्रमों को के नाम निधि में एक पद में भी मुक्त नै कहा है कि स्वतन्त्र कार्य के विचार की राष्ट्रीय समतावा सहरसा है, जवरी उपलब्धा ही देश भी रचनात्मक संस्थाओं की स्थापना होगी।

सागर में मातृदिवस

२२ फरवरी मातृ-दिवस पर नगर के बुने हुए शांतिगो के एक अन्तरंग पुन द्वारा सर्वोदय समाज के निषण को विद्या में मन्वदुर् मीन शान्तेशाले रचनात्मक बावों के रूप में और पुन माता कानूना, गांधीजी की पुन स्मृति में सागर (मं० प्र०) में एक सर्वोदय बाव विद्युत (बाव सहरसा-वेन्ड) को स्थापना कर मन्वदुर् विद्या गया। स्थान के लिए विद्या ग्रामदान-ग्राम-स्वराज समिति नगर में एक जगह पर मूल का प्लाट प्राप्त करने का प्रयत्न कर रही है, जहाँ सर्वोदय की मूर्त प्रकृति की को स्थापना देनेवाला एक वेन्ड बनाना जानना।

जिस जगह मन्वदुर् विद्या समिति के स्थापना में ३० जनवरी साहित्य-दिवस और १२ फरवरी मातृ-दिवस के आयोजन भी यथा-संभव किये गये। २६ जनवरी मंगल दिवस पर ग्राम-स्वराज का संस्था प्रकाशित कर जिले के प्रायः सभी गाँवों का ग्राम-बावनों के माध्यम से प्रसारित किया गया।

मातृदिवस

उदयपुर, दि० २२ फरवरी १९७२ को मातृदिवस पुण्य-निधि के अन्तरंग पर मोरहेकोही वेन्ड में उदयपुर (राजस्थान) जिलासर्वोदय मन्वदुर् का स्थापना प्रकृतिगत विद्या गया। जिला मन्वदुर् एक सर्वोदय सत्यन के लिए प्रतिनिधि के रूप में श्री सोमराज दशास्त्र को तथा सत्यन सेवा सत्यन के प्रतिनिधि के रूप में श्री मन्वदुर् जिला को चुना गया।

श्री सत्यन जिला कार्य में 'देवदत्त जन' मन्वदुर् प्रकृति विद्या। श्री मन्वदुर् जिला मन्वदुर् दशास्त्र ने मातृदिवस कार्यक्रम के सत्र पर प्रकाश डाला।

विहार सरकार द्वारा पृथिया जिला बंटवाईदारी विचार समझौता समिति का गठन

सर्वोदय कोशिकों के अग्रणी पृथिया जिले में ३५ हजार टाइटिलमूट के मन्वदुर् विचार में कोशिकों में सम्मिलित है। वे मन्वदुर् मन्वदुर् विचारों को एक राजस्व प्रकाशितियों के लिए एक परेशानी और सर्वोदय मन्वदुर्, श्री। जरा राजस्व-व्यय में मन्वदुर् कोशिकों और पर उन समिति का गठन किया। समिति के अध्यक्ष सर्वोदय नेता श्री वेन्डराज प्रसाद चौकी मन्वदुर् विचारों में हैं। सागरी सहरसा और सहरसा से मन्वदुर् जा और सहरसा जिले मन्वदुर् को मान-हीना।

मुद्रौना ग्रामस्वराज समिति

मुद्रौना प्रकृति नेमान विद्या पर दशास्त्र-विद्या-मन्वदुर् जिले को पर प्रकाशित है। मुद्रौना में प्रकृति-ग्राम-स्वराज समिति का गठन ही चुना है। २९ ग्रामस्वराज बन चुकी है। तीन पक्षियों में मुक्ति का भी नाम हो चुका है। १९ ग्रामस्वराजों में कोशिकों के मन्वदुर् साहित्यिक के रूप में नाम कर रहे हैं। ग्रामस्वराज में गाँव-गाँव की दरार बहा है तथा हर गाँवों में के विचारों में तथा निरीह सत्यन एक गाँवों को सहरसा पहुँचाने का काम करते हैं। बीज-मन्वदुर्-

अभियान मार्च ७२ के बाद चालू होनेवाला है। भूदान की जमीन करीब १२० एकड़ विस्तृत हो चुकी है। बिना जमीनवालों की ब्लॉक के माध्यम से चर्चा मिल गया है।

सभी उम्मीदवारों का एक मंच से भाषण

अन्वेष (राजधान) जिला सर्वोदय मण्डल द्वारा सावर में आयोजित एक सर्वदलीय मंच का आयोजन दिनांक २९-१-७२ को किया गया।

शमभन्ध से क्षेत्र के विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के उम्मीदवारों ने अपना-अपना विचार व्यक्त किया।

सर्वोदय पंच पदयात्रा

बुर्गुला, मथुरा में सर्वोदय पंच के अवसर पर आयोजित एक पदयात्रा में अल्प कार्यकर्ता के अलावा ४०० ६० की साहित्य-विज्ञान दुर्द, ७७ 'भूदानयत्र' तथा ४ 'गाँव की आशा' के प्रारूढ़ बनाये गये। पदयात्रा के दरम्यान १९७-गाँवों के

तथा आचार्यकुल के सम्बन्ध में लिखत-संस्थाओं से चर्चा की गयी।

सर्वोदय भेला

जिला सहायक मण्डल, हरद्वार में १२ फरवरी को एक सर्वोदय भेला का आयोजन किया गया। क्षेत्र से आये बहुत-से सचिवों ने वापु की श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

राँची जिला सर्वोदय मण्डल का पुनर्गठन

१५ फरवरी को राँची (बिहार) में श्री ध्वजायत्तार साहू की अध्यक्षता में जिले में कार्य कर रहे सर्वोदय सचिवों की एक सभा की गयी। श्री कृष्णानन्द गिरि की संवेगमयि से जिले का सर्वोदय नियुक्त किया गया।

ध्यान-शिविर

तारीख २७-३-७२ से २-४-७२ तक श्री सत्यनारायण गोयन्दकाजी 'सेवा-श्राम' में ध्यान-शिविर लेंगे। जिन-जिन भाई-बहनों को शिविर में भाग लेने की

इच्छा हो, वे इलाकर सत्यके स्थापित करें।

मश्री, महारोगी सेवा समिति दत्तेपुर, मुण्डगाम, पी० नानवाड़ी जि० वर्धा, महाराष्ट्र

पुष्टि-अभियान-पदयात्रा

३० जनवरी को गाँधी आरम्भ (जगन्पुर, छहरा, बिहार) पर उपन पुष्टि-अभियान-पदयात्रा का शुभारम्भ बिहार भूदान-यज्ञ समिती के मंत्री श्री राममन्मथ सिंह ने किया। ७ पदयात्रियों के १६ पड़ावों पर पुष्टि-अभियान की सभार् हुईं।

[पृष्ठ ३७० का लेख]

से गाँव के एक टोले से दूसरे की चोकने के लिए करीब एक फनॉनसम्बी, छ फीट लंबी और १२ फीट चौड़ी सड़क अस्तित्व में आ गयी। लोगों ने अपनी जमीन में से दूसरों को हिसा देकर गाँव में बसाया और भूमिहीनता मिटायी। जगदीश ने बताया कि दानपुर गाँव के लोगों में भी बर्द बानों में मतभेद होता रहता है, पर ने लोग आपस में चर्चा करके ऐसे सब मतभेदों का हन् निहत्तल लेंते हैं।

शामदान के बाद पिछले तीन-चार बरसों में दानपुर में जो कुछ हुआ है उसे ऊपर-ऊपर से देखा जाय तो उसमें कोई असाधारण बात साम्य नहीं पायुन होनी। विकास के नाम पर आजादी

के बाद इन २५ बरसों में बरबरी सपा देग के गाँवों में छर्च हुआ है, और कुछ स्कूल के काम भी हुए हैं, लेकिन देखने की दृष्टि अगर विस्तृत न हो गयी हो तो देश के उन लाखों गाँवों और दानपुर जैसे गाँवों का अन्तर स्पष्ट मानुन हो सकता है।

शामदान के बाद क्या हो सकता है उसका एक मनुन दानपुर है और दानपुर अकेला नहीं है। शामदान के बिचार को अपनाना देश में विन्न-मिन्न अलग-अलग गाँवों में इस तरह एक नया जीवन आरम्भ हुआ है और वह भी बिना मानुन के बनाव से या बच्चे के मन से नहीं, बल्कि लोगों की अपनी मुद की प्रेरणा और इच्छा से।

इस अंक में

पुनरु चर्चा, मिनकर निर्णय	
पुस्तिक पत्र पर	—आचार्यजी ३६१
लोक-शिक्षण आधार, प्रक्रिया और कार्यक्रम	—श्री धीरेश मजुमदार ३६४
बगना देग के नेर-बगलों क्या करें ?	
	—श्री अहम फानवी ३६७
कटुता सहो दृष्टिकोण से दूर होगी	
	—श्री भगवान बनान ३६९
प्रायदान के बाद क्या हो रहा है ?	
	—श्री सिद्धराज ठड्डा ३७०
उठो! सर्वोदय लम्बे वन : बर्दभन्ध,	
अधोबन्ध—श्री सरोजल चौधरी	३७२
श्री जयप्रकाशजी का अन्वेष—	३७३
बिहार प्रामस्वराय सम्मेलन	
	—कुमारी वरना ३७४
अग्रय संतम्भ	
बारे पन्, दावरी के पन्ने,	
आन्दोलन के समाचार	

वार्षिक मुल्क : १० रु० (सफेद कागज : १२ रु०, एक प्रति २५ पैसे), विदेश में २५ रु०; या ३० तिलिप या ४ कालर। एक अंक का मूल्य २० पैसे। श्रीकृष्णवदत ऋट्ट द्वारा सत्य सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं सन्तोहर प्रेस, आरापत्तो में मुद्रित

सर्वोच्च

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

भद्रान्तरा

भद्रान्तरा-यज्ञ मूलक सामाजिक प्रथम अहिंसाक प्रायित्वात् अहिंसाका अहिंसाका अहिंसाका

मत्तदाता !

माई,
समय है, मैं बहुत ही बड़ा हूँ
मैं मत्तदाता हूँ !
यह सुभावना मौसम
घोट गिरने तक झुंभे झुंभारक है
फिर बरस अबल जायेगी ।
यह जो रौनक है, धमी मेरी है
फिर अपने पाँच बरस के लिए
खटिया खड़ी हो जायेगी ।
वे होंगे नेता, मैं रहुँगा जनता
वे होंगे शासक, मैं रहुँगा धोषित
उनके लिए सस्ता सासन
मेरे लिए महँगा रासन
मैं तो फटेहाल हूँ, फिर भी नया है
शर सो उनका है, रंग बिरंगी टोपियाँ है
'राजनीति' है, कोई मजराक नहीं
कुछ तिरछो, कुछ तिरछट मोटियाँ हैं !
सेन हो जायेगा सतम पुनान ब।
उठ जायेगा बाजार
नागरिक के भाव का ।

दरबत्तल, बड़ा होकर भी मैं
छोटा रह जाया हूँ ।
खटा होकर भी खोटा रह जाया हूँ ।
नियोजित होकर भी
खटा हूँ बटिया
मेरे लिए तो बाटें हो बाटें हो
बटिया-से-बटिया !

मैं नहीं समझ पाता,
यह किस अनन्तन है ?
यहाँ जन से बड़ा जन है
नेताओं के पास जाने कीन छा संन है ।
कि वे होते हैं महाजन
हम रहते हैं केवल, जन ।
वे काले हैं, मटरगस्ती
हमारी क्या हस्ती ?
बस, करो हरि-मन्त्र
मेरे मन, मेरे जन, मेरे जन-गण-मन !

जन-प्रतिनिधि
जन से बड़ा नहीं होगा ।
होना वह जन-सेवन,
जन जो साधिया
जन जो पहिलेवा
जन जो बोलेगा
उससे अधिक नहीं पायेगा वह
जन को समृद्धि के लिए
जो स्वयं होगा रिक्त
जन की पीड़ा से, बरपा से विवज
तो जन होगा बड़ा
और जनानेस पाकर, वह होगा खड़ा
तो मैं होऊँगा सपु
वह होगा सपुत्रर
वह होगा महत्
मैं होऊँगा महत्तर !

— प्रभु

एक

रोजगार सबसे पहिले

कुलमान है कि १९२० में १० लाख
बेरोजगार थे । १९७० में उनकी संख्या
१ करोड़ ४० लाख हो गयी । अपने
दस बरों में ९ करोड़ नये लोग रोजगार
के बाजार में आ जायेंगे । उनका जन्म हो
चुका है, वे तैयार हो रहे हैं । इनके
मुकाबिले अपने दस बरों में लगभग पाँचे

तीन करोड़ मजदूरों से अधिक नहीं बढ़ेंगे
या काम से हटेंगे । इसलिए १९८० तक
लगभग ६ करोड़ ३० लाख नये व्यक्ति
तैयार हो चुके रहेंगे, जबकि उस वक़्त
तक ४ करोड़ से अधिक के लिए रोजगार
की गुंजायश नहीं निकलेगी । इस प्रकार
१९८० से १ करोड़ ७० लाख लोग

बेरोजगार रहेंगे, यानी कुल धनिकों का
१४ प्रतिशत । इसका यह अर्थ है कि
जाने के दस बरों में ६ हजार बेरोजगार
प्रतिदिन जुड़ते जायेंगे । बितनी भयकर
है यह चल्पना भी ?

जो आधुनी बेरोजगार है और जिसकी
जोबिया का कोई साधन नहीं है, अपना
काम में तो है लेकिन गुजर भर के लिए
भी कमा नहीं पाता उसे ऐसे समान के
लिए नया सहाय्यता होगी जो उसकी
तबक में दूतवा अन्वामी, प्रष्ट, और दो-
भुँदी है । बेरोजगारी हो, अर्द्ध-बेरोजगारी
हो, या ऐसा रोजगार, जिससे पूरी
'कमाई' न हो, वे सब भिन्नकर हमारे देश
को दुनियादों को तोड़ रहे हैं । समाज
तेजी के साथ महासंघट की ओर बढ़
रहा है । इसलिए ऐसे समय किसी भी
या कार्यक्रम के छोड़ो होंगे की एक ही
बसोटी है—उससे रोजगार बढ़ेगा या
नहीं । अगर बढ़ेगा तो उसे स्वीकार
करना चाहिए, यदि नहीं तो आलोचन ।

— श्री० के० नेहरू, 'क्राइम फ़ास्ट' से

दो ग्रैजुएट बेरोजगार

कला के ग्रैजुएटों में बेरोजगारी
सबसे अधिक है । उनमें भी टिचनों की
पुरप ग्रैजुएटों से अधिक । ज्यादातर बर्न
डिबिजनवाले बेरोजगार हैं । जिन्हें रोज-
गार मिला भी है उनमें भी ऐसे कम हैं
जिनके ट्रेनिंग या सचि के अनुभव काम
मिला हों । एक सर्वेक्षण करने पर मासुब
हुया कि ४१-९१ प्रतिशत बर्नबर्न के ग्रैजुएट
बर्नबर्न थे ।

सरकार एक ग्रैजुएट पर लगभग
२७००.०० रु० खर्च करती है । सरकार
के खर्च की छोड़कर माता-पिता का
बहुत अधिक खर्च होगा ।

बेरोजगारी का मुख्य कारण है कि
हमारी विभाजन-नीति दोषपूर्ण है । तिसा
स्वयं हमनी निरन्तरी है कि ग्रैजुएटों की
बाप सासक बनायी नहीं । तिसा और
विनाश के समन्वय में ही बेरोजगारी
का उन्मट है ।

दिसम्बर '७१

— 'सारी-शामोसंग'

सात दिन !

'सात दिन, जिन्होंने दुनिया बदल दी' . इन मन्थों में राष्ट्र-पति विभवत ने अपनी चीन-यात्रा पर सर्व प्रकट किया है ।

बराबर पहिले १९७० की स्मृति क्रांति पर एक लेखक ने एक किताब लिखी । उसने क्रांति के कुछ दस दिन की घटनाओं का वर्णन किया, और पुस्तक का नाम रखा - 'दस दिन, जिन्होंने दुनिया को हिला दिया ।'

रूस की क्रांति ने दुनिया को जितनी गहराई से हिलाया, यह दुनिया ने पिछले ५४ वर्षों में अच्छी तरह देख लिया है । इस की क्रांति न हुई होती तो साम्यवाद बीसवीं शताब्दी की इतनी जबरदस्त शक्ति न बना होता । न होता आज का रूस, और न होता माओ का चीन । १९४९ से आज तक अमेरिकी सरकार ने जिस चीन की उपेक्षा की, जिसे स्वतन्त्र दुनिया का शत्रु बताया, जिसे कुछ दिन पहिले तक हथुर्बक छपूत-पाण्डु-छंभ से भक्षण रखा, उसी चीन के मित्रता की पीठी बरत करके निरक्षण मूढ़ चीन गये । चीन की यात्रा कर निरक्षण ने साम्यवाद की साठविकठा स्वीकार की । निरक्षण की बुनाइत चीन ने भी अमेरिका की साठविकठा स्वीकार की । यह एक नया प्रयोग है, मनुष्यों के बीच सम्पत्ती का सह-वितरण था । हो गया है इसकी प्रेरणा एक और इस मय में हो कि हमारे विश्व साम्यवादी चीन और रूस बड़ी बल न जायें, क्योंकि दुनिया के अमेरिका-रूस-चीन के त्रिभुज में जो भूराई साम्यवादी है । दूसरी ओर यह मय हो सकता है कि रूस और अमेरिका मिल जायें और हमें अदला न छोड़ें, क्योंकि सह-अस्तित्व पहिले उम्मीदों ने धूक दिया था । इसी के कारण चीन इस को 'सन्तोषनवादी' बहुराज्य स्थापित करता रहा है । निरक्षण पर भी मैं रूस भी जायेंगे । बेकार है यह कहना कि निरक्षण स्थापित हो यात्रा पर चीन गये ने । अगर उन्हें क्रांति की निगा होगे तो उसका प्रमाण विप्लवान और बगला देश में, मिला होता । वह मये से निर की कपात में—अपने देश के किसी सम्पन्न शत्रु के (क्षमा) ।

३३ परिवर्तन जिये है निरक्षण-माओ-विभवत के इन सात दिनों ने ? क्या एक परिवर्तन यह है कि मउवार (बाइ डिप्लोमी) के कायाद पर अब अगरे बुद्धिवाद और साम्यवाद शत्रु नहीं रहेंगे ? क्या दुनिया में मउवारों के सह-अस्तित्व का अभाव सम्भव शक होगा ? हाँ, क्या ऐसा होगा कि अमेरिका और चीन बीच की दीवारों को टूटकर एक-दूसरे से मिलेंगे, रिगलोन और टैबुल-टेनित

छेलेगे, और सुशी-सुशी व्यापार का सैन्यन करेगे, और जंग जो चाहेगा तो एक-दूसरे को मारती भी दे लेंगे ? वास्तव, यह सैन्य-मित्रताप विवर्तित हो रहा है ? क्या इसलिए हो रहा है कि बुद्धिवाद अब उपनिवेशवादी नहीं रहेगा, साम्यवाद विभववादी होना छोड़ देगा, और दोनों राष्ट्रवादी बन जायेंगे और पुनर्जी केवल छोड़कर नये बंग से शक्ति-अनुत्पन्न का खेन खेयेंगे और दुनिया की अपने-अपने प्रभाव-क्षेत्रों में बाँट लेंगे ? क्या अमेरिका चाहता है कि चीन रूस के विरुद्ध एशिया में अमेरिका को बहाल कर दे और अमेरिका चीन को विश्व-मय पर बर्दाश कर रहा है ? अमेरिका एशिया का मीरत भारत और बगला देश को मिलाकर रूस के लिए चुना नहीं छोड़ना चाहता ।

हिन्द-महासागर बड़ी नाविक शक्तियों का क्रीडा-क्षेत्र बनता जायगा । विप्लवान में अमेरिकी सहार-नीला चलती रहेगी । अमेरिका पाकिस्तान को बल-बलन देता रहेगा । चीन कर्मी-रियों के सात-निर्णय का नाश बुलन्द करता रहेगा और बंगला-देश को तदार नहता रहेगा । अमेरिका और चीन दोनों कोई-न-कोई बहाना लेकर दक्षिण एशिया में चुनौत करके रहेंगे । दोनों दक्षिणी और दक्षिण-पूर्वी एशिया में भाग्य-निर्णायक बने रहना चाहते हैं । यह कितनी मजे की बात है कि अमेरिका और चीन में हर चीज पर मतभेद है विश्वास बगला देश और कम्पोजर के । यह फलश्रुति है इन सात दिनों की । अमेरिका और चीन का सारा व्यापार अगर निरक्षण-माओ-विभवत के बाद भी उठी तरह चलता रहेगा जिस तरह पहिले चलता था तो वह परिवर्तन कौन-सा है जिसका धेय निरक्षण लेना चाहते हैं ? क्या यही परिवर्तन होगा कि लैवान किसी दिन चीन के पेट में बना जायगा, तथा कितियर और उन-जैसे कुछ अमेरिकियों का चीन जाता-जाता शक ही जायगा ? अगर इतना हो परिवर्तन होगा तो दुनिया अपनी वास्तव देखेगी कि अमेरिका और चीन दोनों धोर समावादी हैं, और वे अब क्या करेंगे इसका कोई धरोचा नहीं । क्या विप्लवान और पाकिस्तान में युद्ध की आकार अमेरिका चीन का सामन परककर एशिया में बना रहना चाहता है ? और, चीन कर्मी-रियों दोस्ती की मात्र से दुनिया को बनाना चाहता है कि वह अब भी उठाये हुए लोगों के मुक्ति-सहायों का सम्पर्क है ? कौन इतनी स्वर्गपदी आर्षों पर विश्वास करेगा ?

न रूस के चोकरन साल पहिले के दस दिन और न अमेरिका-चीन के ये सात दिन । उन दस दिनों में क्रांति का नाम लेने-याते एक नूतन सत्तावाद की अन्य दिया, अब ये सात दिन क्रांति के नाम में एक नये प्रकार के अन्तर्देशीय सहायों सत्तावाद को जन्म दे रहे हैं । सोवियत अरु बदलेनी सेनिन शारा बड़ी रहेगी । जब तक दुनिया सत्तावादीयों के हाथ में रहेगी बड़ी होना रहेगा जो मात्र हो रहा है । राष्ट्रवादी शक्तिओं के सम्पुन-अवतुलन का खेन होना रहेगा ।

लेकिन बड़ी एक ओर यह नाटक रखा जा रहा है, यही

पूँसरी और कहीं-कहीं प्रवासों की रैलाएँ भी प्रकट हो रही हैं। बंगला देश के प्रश्न पर दुनिया की अनजान जनता अपनी ही सरकारों से अपराज नजर आये। यह कौतुक था। किसी देश की सेवा अपनी ही अनजान के लिए कितना बड़ा खतरा बन सकती है इसका अन्तिम प्रमाण पाकिस्तान ने दे दिया। मोरुवण होशियार हो जाय। एक बड़ा देश अपने को किस तरह धर्म-युद्ध में झोंक सकता है यह साहस भारत ने कर दिखाया। बिबकुल नयी बात थी। इतिहास अनजान की ओर मुड़ रहा है। मनुष्य मनुष्यो का महत्त्व समझ रहा है। नयी दुनिया—एक दुनिया—गर्भ में आ चुकी है। लेकिन जन्म उधका उस दिन होगा जिस दिन अनजान शक्ति-शक्ति की गुलामी छोड़कर अपनी नैतिक शक्ति के भरोसे सामने आयेगी। काम यह अतीत और भविष्य के बीच के घुलने-पन में पड़ी हुई है।

बही-बही कुछ नया होना शुरू भी हो गया है। दक्षिण एशिया में भारत-बंगला देश नयी प्रेरणाओं से प्रभावित हो रहे हैं। उदर परिवर्धनी यूरोप में एकाकी के नये प्रयत्न चल रहे हैं। अब यह मानने का कोई कारण नहीं है कि दुनिया को बदलने की शक्ति अमेरिका, रूस, या चीन में रहे गयी है। निश्चय के चीनी सोदे का सरोवरदार कोन है ?

कैम्बर कर लो !

'इस बार हाइ' या जीतू अब आगे से चुनाव में नहीं लड़ा होजैगा।'

ये शब्द हैं एक नेता के जो अपने दल के विना-अवस्था हैं, और इस बार विधानसभा के लिए उम्मीदवार थे। कोई भी चुनाव हो, यह लड़ने से छोड़ते नहीं, और मो भी हार नमन लड़ने के 'भूख' में रहते हैं। यह मानते ही हैं कि राजनीति में गांधी और लड़ाई के विचार दूसरा है क्या। इसलिए उध दिन जब मैंने उनके मुँह से यह बात सुनी तो आश्चर्य हुआ। पहलवान की बधाई से वैराग्य।

मैंने पूछा, "ऐसा क्यों कह रहे हैं ? चुनाव तो आप लोगों का मोहन है। क्या भोजन छोड़ दीजिएगा ?"

वह बोले, "चुनाव ही सब तो लड़ा जाय। चुनाव कहाँ है ?"

"क्यों क्या बात है ?" मैंने पूछा।

"आप ही पूछिए, पुरुष से सब चुप पर कितने बोटर आये हैं। इस वक्त भी देखिए सभासा है। लेकिन बोट लगभग सब पड़ चुके हैं।"

"क्यों, ऐसा कैसे हुआ ?"

"बिबकुल आठवां बात है। इस आठवीं गांधी, गन्धिया, लेकर आ गये, बैनर चेंबर से लिये, सबके बोट बाल दिये। किस्सा संतम। यही है मतदान। क्या करेगा कोई नन्वेसित करके जब बोटर बोट डालने ही नहीं पायेंगे ?"

अंतर्दावायिहीन मतदान का लोकार्पण के इतिहास में यह

अभिनव प्रयोग है। पिछले चुनाव में 'बूथ कैम्बर' करने की प्रवृत्ति को लगभग शुरूआत थी। क्याल था कि इस बार शायद कुछ सुधार हो। हमने बंगला देश में धर्म की लड़ाई लड़ी थी, इसलिए उम्मीद होती थी कि उसका हम धर्मो पर भी कुछ बसर पड़ेगा। लेकिन नहीं। हातत -कन-धे-नम विहार में—इस बार पिछले चुनाव से ज्यादा खराब रही। जिसका कोई सांख्यिक जीवन नहीं, वह भी कुछ पूर्ण पर कब्जा कर चुनाव जीत जाने की उम्मीद में लड़ा हो गया। एक-एक क्षेत्र में सैकड़ों वेंचरर गुण्डे जो अरन-अरथ से लंस होकर सत्ता को सट्टेवाजी कर रहे हैं, बाहर से बुलाये गये। किस लिए ? किस इस्तिफ़ा कि बोटर को बूथ पर जाने ही मत दी। यह काम जबरदस्त लोगों ने उगादा जमकर किया है—एसे लोगों ने जो गिनितर रह चुके हैं, या जो बीजने पर गिनितर हो सकते हैं, और जो चुनाव के लिए पैठा घुटा सकते हैं, गुण्डे बुला सकते हैं, जो सत्ता के लिए सब कुछ कर सकते हैं। गुण्डे बूथ कैम्बर करें, नेता सरकार कैम्बर करें, व्यापारी बाजार कैम्बर करें, और सिर्फ ७५ उपयोगपति देश के सारे जयोगो को कैम्बर कर लें। सोचे अनजान कि उसके लिए कैम्बर करने की क्या बचोगा ? चिन्ता यही है कि अधिकांश लोग सोचते नहीं, और जो सोचते हैं वे अज्ञान्य हैं।

प्रिनाधिक्य अक्षर, दलो के एजेण्ट, हृषियारबन्ध सिपाही, गणत सगानेवाले अधिकारी, सब सङ्घ-सङ्घ उमासा देखते रहते हैं। कोई कुछ सोचता नहीं। किसी को क्या पड़ी है कि बोले ? बोटर को क्या पड़ी है, कोई जीते। अक्षर को किस इतनी चिन्ता है कि सब नाम 'शान्तिपूर्वक' हो जाय। वह शान्ति का पुजारी है, शुद्धता का संरक्षक नहीं। नेता इतना ही सोचता है कि उसे जीता है। यह सोचतण के पचड़े में गड़ी पड़ता, उसे सरकार बनानी है, अनजान की 'सेवा' करनी है, देश की शक्तिशाली बनाना है। वह जल्दी में है, इसलिए कुछ सोच नहीं सकता। ऐसा प्राणो है वह। देखते ही बनता है कि जिस आसानी से वह अपने दर-दर ठीकेवालों को, मोटरवालों को, कण्डेवालों को इकट्ठा कर लेता है। इतने समर्पित भवत जिस दूसरे को मिलते होगे ? शिक्षक और विद्यार्थी भी खरीब विधे जाते हैं।

जिस प्रक्रिया से देश की सबसे बड़ी संगठित शक्ति, सरकार, बनती है इसका वास्तविकता चुनाव ही है। बेकार है यह शिक्षावत करना कि चुनावों में जातिवाद होता है। जब सोवियत दनवाद के हाथों में रहेगा, राजनीति सत्ताकारियों के हाथों में रहेगी, तो चुनाव किस तरह के हाथों में रहेंगे ? चुनाव के रूपकण्डे में सब दल समान हैं, दुप की दृष्टि से कोई भिन्न नहीं है।

सिद्धि की शक्ति से भारत ने बंगला देश में पाकिस्तान का मुद्राविना किया, और विजय पायी। प्रयागमत्री बहती है—हृष पर अमेरिका और चीन को बुद्धि है। उनका मुद्राविना करने के लिए समता को शक्ति चाहिए। कैंड विवेको यह शक्ति ? इहाँ चुनावों से ? और जिस अनजान की ? इहाँ मुद्रोत्तर लोगों की ? प्रयागमत्री चाहती है कि गरीबों से सड़ने के लिए—

बंगला देश के वाद : कुछ प्रश्न

नये प्रश्न

बंगला देश ने दुनिया के सामने कुछ नये प्रश्न प्रस्तुत कर दिये हैं। हम समझते थे कि 'सैन्ट्रलिया' लोकतन्त्र और प्रभु-सत्ता (सोवियेट) के अर्थ हमेशा के लिए तय हो गये हैं, लेकिन बंगला देश की घटनाओं से अब हम प्रकृतित पश्चिमादि एतदन्तरे की विवक्ष हो रहे हैं।

बंगला देश में जो कुछ हुआ है उसके भारत और दुनिया, दोनों बहुत कुछ सीख सकते हैं। दुनिया के लिए पढ़ना प्रश्न तय करने का है कि राष्ट्रीय प्रभुसत्ता (नेशनल सावरेण्टी) पर कोई अधिकार रहेगा या नहीं—निश्चय के जनमत का या मानवता का? क्या अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्ध हमेशा सार्वभौम के ही बीच रहेगे, जनता-जनता के बीच नहीं होंगे? क्या एक देश और उस देश की सरकार एक ही है? क्या सरकार और जनता के बीच यही सम्बन्ध रहेगा कि जनता को सरकार की आज माननी ही है?

बंगला देश की घटनाओं ने मिट्टी बर दिया है कि लोकतांत्रिक देशों में भी जनता का अग्रणी ही सरकारी पर विजयता कम बतार है। अगर ऐसा न होता तो जन्मे जनमत के प्रभाव में सरकारें बंगला देश को कब भी सम्पत्ता दे चुकी होती, और वह नृपण आयाचार का विचार होने-से बच जाता। लेकिन सारे जनमत की

—यूरे देश में एक तरह की सरकारें हैं—उनके रथ की जो दिन्नी के बरग में बंदम विस्तारर चल सकें। इन बाहे जो हो, लेकिन 'सूच संचर' से युवाव जीवनेगने सत्ताधारी कभी 'गरीबी हटाओ' अभियान में जाने सकें, क्या यह आशा की जा सकती है? अन्त मजदान के उभरनेवाला नृपण भी अन्त होता है—दमन और जोरधर का प्य.सा, या कित्तुसुस निरगमा। अगर विनाया उसके तो वह भी मजदान-विहीन मजदान की तरह एक हुप्रा नया प्रयोग होगा। सोचना चाहिए कि कौन प्रश्न में है—प्रधानमन्त्री या जनता? या, दोनों?

—सब कुछ होते हुए भी यह देखने में आता है कि सामान्य नागरिक और मजदारा दुस्तल है। उसे संप्रसारण, सचक्षता है।

—प्रो० सुगत दासगुप्त

अवहेलना कर हर सरकार राष्ट्रीय प्रभुसत्ता की सुहाई देती लड़ी तमया देखनी रही। इतना ही नहीं जब पाकिस्तान का भारत पर आक्रमण हुआ और भारत बंगला देश की मुक्ति के लिए आगे बढ़ा तो दुनिया की ७५ 'सरकारों' ने भारत की निन्दा की।

इस प्रकार बंगला देश ने दुनिया के सामने यह नया प्रश्न पैदा कर दिया है कि राष्ट्रीय प्रभुसत्ता का अर्थ क्या है, किसी देश में नागरिक को अपनी सरकार से किनार रखने का नहीं ता अधिकार है, और सामान्यतः सरकार और नागरिक में क्या सम्बन्ध रहना चाहिए, विशेष रूप से लोकतन्त्र में। एक के अलावा ऐसा का प्रश्न है। सेना का क्या रोल माना जाना चाहिए, और उसका विचार कण्ठो जनता और उनके प्रतिनिधियों को कुचल कर सारी सत्ता अपने हाथ में कर ली है और दुनिया की सारी सरकारें देखनी रह गयी है। हर देश की जनता और सरकार अपनी ही सेना की इत्ता पर है। सेना के हाथ में कितने तब अस्त्र-शस्त्र वा रहे हैं, और नागरिक समुत्तः अक्षय्य होता जा रहा है। एंशी विधित में किसी देश के लोकतन्त्र के लिए सबसे बड़ा खतरा उसकी अपनी सेना ही बन गयी है। इसका एक उपाय यह बताया गया

उसे बनाए, मानना है। लेकिन उसे बहुकाय, तो बरक की जाना है। बहुकालेवाले अक्षिण हैं। विन्दे उसने वृद्धि में, क्षम में, प्रथम में, लकिन और अक्षिण में, पृथ्व और प्रभाव में, अपने से बड़ा माना या वे सब बहुकालेवाले ही गये हैं। इनसे बचने का उपाय यह एक उपाय है। यह करने को जनग कर लेता है। इस मनो-वैतानिक कश्च का सम्बन्ध भारत के नागरिक ने सदियों-सदियों में किया है। कागज निकरर बैठ के अक्षिण चाहे हो बतये जायें मतदान का दिन मजदान में नहीं है। मजदान में 'मत' पहले वे बम रह गया था फिर भी 'दान' होता था, धन 'दाज' भी न रह जात तो 'दान' क्या होगा? मजदारा-विहीन मजदान का प्रयोग सोशल्वन की हत्या का प्रयोग होगा।

है कि स्थायी सेना पदायी जाय और हर नागरिक को सैनिक मिला। दी जाय ताकि नागरिक-शक्ति सैनिक-शक्ति के युक्तिते में बमबोर ? पड़े। लेकिन क्या यह समाधान सही और पर्याप्त है ?

ये ऐसे प्रश्न हैं जिनका उत्तर दुनिया को देना ही है। भारत के लिए

बंगला देश ने भारत के लिए भी प्रश्न प्रस्तुत किये हैं उनमें पहला है धर्म-निरपेक्षता का। हमें सोचना है कि धर्म-निरपेक्षता का सही अर्थ क्या है और राजनीति में उस पर समल कैसे होगा। दूसरा प्रश्न है कि देश का आर्थिक विकास कैसे हो, और प्रकृतित विराड-शक्ति में क्या गुधार किने जायें कि वह भारत जैसे देश के, जिसमें बड़े 'संस्कृतियां' हैं, समुत्तः हो सके।

—बंगला देश में धर्मनिरपेक्षता की तो सक्ति प्रकट हुई बैठी भारत में जन्मो तक लड़ी प्रकट हो सकी है। बंगला देश की धर्मनिरपेक्षता में तीन मुख्य तत्व रहे हैं—सांस्कृतिक, राजनैतिक, और आर्थिक, जो साथ-साथ काम करते रहे हैं। सांस्कृतिक पक्ष में राजाराम मोहन राय के तैकर खीन्डनाप और उष एन बसन्त छाया काम करती रही हैं। बंगला देश में सांस्कृतिक आचरण ने जन-जन को एगर्ण किया, भारत में वह कुछ ही लोगों तक पहुँच कर रह गया। वहाँ के युवक धार्मिक बटुड़ा से बच सके। वहाँ जागरण का सुभ मानवीय प्रभाव महलों तक

बंगला देश के बाद भारत और पूरे उप-महाद्वीप के राजनीतिक सुसंरचना की प्रकृत है। सबसे पहिले सविधान का प्रश्न है। स्वतंत्रता के लिए आवश्यक है कि नागरिकों का, निर्णय की प्रक्रिया (डिस्ट्रिक्ट-बोर्डिंग) पर विचार लिखना हो। निर्णय की प्रक्रिया में हर तादात्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से, चाहे वह हिन्दु भी छोटी हो, मोटा स्थान होना चाहिए ताकि जो भी निर्णय हो वह कुछ लोगों का न होकर सबका हो।

भारत में बराबर यह भाग हो रही है कि राज्यों की सही व्यवस्था दिने जायें। लेकिन राष्ट्रीय नेताओं के हाथ से अधिकांश निरालस राज्यों के नेताओं के हाथों में चले जायें तो इनसे वे ही विदेशीकरण नहीं हो जाता। जकरात ऐसी व्यवस्था की है जिसमें रिपब्लिकन नीति के समुदायों तक पहुंचे। रिपब्लिकन व्यवस्था में अधिक-से-अधिक अधिकार नीति को ईशान्य में होने दें, और ऊपर की हर एकाई कनि (मेम्बर) आगे की नीति को ईशान्य में प्रकृत करती है। ऐसी व्यवस्था में देश का हर भाग, हर समुदाय, निर्णय की व्यवस्था प्रक्रिया में शरीक हो जाता है।

सुसंरचना में जो नये रास्ते बने हैं उनसे क्या अन्तर्गत है कि हमारी राजनीतिक व्यवस्था में इस प्रकार के सुधार की आवश्यकता है। लेकिन सुधार करने के लिए भाव और व्यंग्योपन की प्रतीक्षा नहीं होती चाहिए। आवश्यक सुधार करने से कर दिने जायें ताकि नाहक खोप न पैदा हो।

देश में समय-समय पर सुधार सुलाये गये हैं उनमें से कुछ ये हैं :

(1) राज्य नये विधे से बनाये जायें। वे छोटे हो। सध्या लगभग ५५ तक हो सकती है। (2) एक भाषा-भाषी लोग एक से अधिक राज्यों में रहें। (3) सधर के दो सदन हों। राज्यसभा में हर राज्य के बराबर कोट हों। (4) गाँव, ज्वाक और विधान-सदर पर की प्रशासन की

सोडिया हो। (5) अन्तरराज्य-कोषित प्रभावों जायें।

इस तरह सबका की पंच सोडिया हो जायेंगे—गाँव, ज्वाक, जिला, राज्य और केन्द्र। इन पाँचों की सामने रखकर प्रशासन के विषय (सबसेबड़) पर दिने जायें। विषयों की दो सूचियाँ हो। एक सुनो के विषयों के सम्बन्ध में निर्णय साधारण बहुमत से दिने जा सकें, और दूसरी सूची ऐसे विषयों की हो जिनके सम्बन्ध में निर्णय 'बन्धे-बन्ध' से हो। राष्ट्रपापा, अन्तःसकलकों और विभिन्न जातियों के हित आदि विषय, दूसरी सूची के सापक हैं।

इस समयदु निया में हर जगह विभिन्न सांस्कृतिक समुदायों की और से स्वायत्तता तथा राजनीतिक-आर्थिक आधिकारों की माँग हो रही है। गाँव, कान्छाना, विश्वविद्यालय आदि हर जगह लोग निर्णय में शरीक होने के लिए अधीर हो रहे हैं। कोई कनना नहीं चाहते। इस नयी योजना को राजनीतिक व्यवस्था में पूर्ण करना चाहिए। इन दिशा में हम बिनाई दिशा-यों से विरकोट होने।

उप-महाद्वीप

प्रश्न है पूरे उप-महाद्वीप का क्या स्वरूप होगा? सुबोध में 'तीनों की सन्धि' की बात बड़ी है। भूटो में भी महात्म की बात बड़ी है। जवाहरलाल, जयप्रकाश और राममनोहर सोडिया में बहुत पहिले से इसको बचाना की था।

जाहिए है कि ऐसी व्यवस्था बनाने

के कुछ समय लगेंगे। तीनों देशों को तैयार होना होगा कि वे अपने भेद-भाव दूर कर दें और आपस में ऐसी व्यवस्था बनायें कि बाहरी 'महासन्धि' भारतीय उप-महाद्वीप में पैर न जमा सकें। ऐसा हो जाय तो तेना पर खर्च बहुत घट जायगा। इतना ही बात ही जागे यह कोषित करनी होगी कि हिन्द महासागर समुदायित से मुक्त होप घोषित किया जाय।

त्रिभू आर्थिक और राजनीतिक रचना को यहाँ चर्चा की गयी है वह बहुत अज्ञानी से भारत में की जा सकती है। वह हमारी राष्ट्रीय प्रतिभा के अनुपम है। अगर भारत आपी बड़े से बगना देश और पाकिस्तान भी उन रचना को स्वीकार कर सकते हैं। भारत को अपने बाहर दिखाना है कि विभिन्न जन की सन्धि में अलग सामान्यजन की सन्धि से भी एक नयी रचना की जा सकती है। यह प्रयोग नया होगा, लेकिन रास्ता दिखाने वाला होगा।

भारत-पाकिस्तान-बंगला देश मिलकर 'विश्वाम का विभुज' बना सकते हैं। दुनिया में अमेरिका-रुड-चीन से आठक का विभुज बना रहा है। एक बार बन गया तो समय पाकर निरबाध का विभुज बना होगा। विलोका ने ए० बी० सी० कहा है। उनके बचाना में अफगानिस्तान, बर्मा, सीरिया का विभुज है। त्रिभू दिन जू विभुज बननेग उस दिन दिना की जगह सन्धि की एक नयी रचना का उदय होगा।

छादी-खरीददारों की
सर्वोदय-साहित्य पर आधी छूट

सर्वोदय साहित्य-प्रसार-योजना के अन्तर्गत छादी-भंडारों पर छादी-खरीदनेवालों की सर्वोदय साहित्य आधी मूल्य पर उपलब्ध होगा है।

अपनी रुचि की पुस्तकें चुनकर अपने पुस्तकालय को समृद्ध बनायें।

सर्वे सेवका सध प्रकाशन, राजघाट, धारावासी की और से प्रसारित

श्रीमन्मुरुकुल : आचार्यकुल का भावी कार्यक्रम

—धीरेन्द्र मजूमदार

प्रामस्वराज्य के राष्ट्रीय मोर्चे के दो प्रखण्डों, स्वीजी (पूणिया) और भरौना (सहरा), में मुद्रित का प्रथम धरण पूरा हो गया है। अर्थात् इन प्रखण्डों की जनता में विचार का इतना उद्बोधन हो गया है कि वह अब प्रामस्वराज्य की सृष्टि की बात सोच सके। अतः यह आवश्यक है कि अब प्रामस्वराज्य की सृष्टि की योजना बनाकर उसके लिए आवश्यक पूर्ण तैयारी करना आवश्यक कर दें। यह बात हमें स्पष्ट रूप से समझ लेनी होगी कि आरम्भ से ही प्रामधरा के माणस में आर्थिक विकास की बात प्राथमिकता लिये हुए है। अतः यह आवश्यक है कि इस सवाल पर सर्वोद्यम कार्य-कर्ताओं, प्रामधरा के लोगों और आचार्यकुल के उद्यमों का विभाग तथा दृष्टि स्पष्ट होनी चाहिए। हम जाना करते हैं कि ये सब लोग विकास के सवाल पर प्रफुल्लित राष्ट्रीय नेतृत्व की अवस्था नहीं दुहराएंगे।

सन् १९२७ में अंग्रेजी राज के अन्तर्गत ही पहली कांग्रेसी सरकार ने जो कमी से गोष्ठी की है इस बात पर जोर देना आरम्भ कर दिया था कि आजाद भारत में गुलाम भारत की शिक्षा-व्यवस्था के बदले स्वराज्यी भारत की शोध शिक्षा की स्थापना करनी चाहिए। उसके लिए उन्होंने शिक्षा में क्रांति ला, नयी छात्रों का विशाल विशाल उनके विचार में किन्हीं राष्ट्र का भौतिक विकास उसके नागरिक विकास के बिना सम्भव नहीं है। इसलिए वे राष्ट्र की शिक्षा को राष्ट्र के भौतिक विकास का कारण बनाना चाहते थे। वे कहते थे कि राष्ट्र या गाँव का विकास कोई अलग प्रवृत्ति नहीं है बल्कि वह शिक्षा का परिणाम है। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उन्होंने आवश्यक सामग्री के उत्पादन, सामाजिक तथा प्राकृतिक परिवेश के माध्यम से

शिक्षा-व्यवस्था को विकसित करने की बात कही। किन्तु यह हमारे देश का दुर्भाग्य था कि आजादी के उत्कल बाद ही गाँधीजी की मृत्यु हो गयी और उनके बाद राष्ट्र के नेताओं ने उनकी बात को एकदम छोड़कर अंग्रेजी शिक्षा-व्यवस्था को ज्यो-ना-स्वी देश में रहने दिया। इस व्यवस्था में राष्ट्र का विकास और शिक्षा अलग-अलग पथ गये हैं और अब विकास तथा शिक्षा की पुरानी अंग्रेजी व्यवस्था पर चलते चलते अल्पकाल होने पर हमारे शासक कभी-कभी कहते सुने जाते हैं कि हमने गाँधीजी की बात न मानकर गलती की है। स्वयं श्री जवाहरलालजी ने यह बात अनेक बार कही थी। इस हालत में आज जब गाँव-गाँव में प्रामस्वराज्य यानी ग्राम-गणतन्त्रों की स्थापना का सपना सामान्य होने के लक्षण दिखाई देने लगे हैं तब प्रामस्वराज्य के नेतृत्व को सोचना होगा कि वह राष्ट्रीय नेतृत्व के इस दुर्भाग्यपूर्ण अनुभव से लाभ उठावेगा या फिर से यही गलती करेगा जिसके कारण आज हमारा राष्ट्र पड़ना रहा है।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि प्रामस्वराज्य के नेताओं को देश के पुराने अनुभव से लाभ उठाकर गाँधीजी के मुताबे मार्ग से ग्राम-विकास का मार्ग योजना होगा। सभी वास्तविक प्रामस्वराज्य और विकास हो सकेगा। १९२७ में गाँधीजी ने पाठ-हालतों में उद्योग-परिवेश-व्यवस्था में सामाजिक और प्राकृतिक परिवेश वास्तविक करने की योजना पेश की थी। इस प्रकार से उन्होंने शिक्षा को सृजन की चतुर्दशीवारी से बाहर विद्यालय की ओर संकेत दिया था। किन्तु जब १९४४ में जैसे ही पूर्ण स्वराज्य की सम्भावना प्रकट होने लगी तभी उन्होंने छविवादी शिक्षा के चतुर्दशी से कहा था, 'मैं अब आप को छोड़ें समुद्र से महासागर में से जाना चाहता हूँ। अब जानी की अर्थि गर्भ

से लेकर मृत्युवन्त होगी और सारा समाज ही उनकी शय्या बनेगा।'

अतः अब प्रामधरा की ओर आचार्यकुल के लोगों की मितकर सोचना होगा कि उन्हें अपनी अत्यन्त शिक्षणाला और पद्धति को नया रूप देकर गाँव के समस्त कार्यक्रम को शिक्षा का माध्यम बनाना होगा। इन सबका एक निश्चित कार्यक्रम विशिष्ट करना होगा। हमसे स्पष्ट है कि तब नयी शिक्षा ही नीचे दर्जे से आरम्भ करना होगा अर्थात् गाँव की नयी छात्रों के लिए पहले मिडिल स्कूलों का संयोजन करना व्यावहारिक होगा। चूँकि यह शिक्षा का कोई पूर्ण निरिच्छित और निश्चित रूप अभी नहीं है अतः इसे एक दिशा-निर्देश के रूप में मानकर चलना होगा। अभी हमें यह मानकर चलना होगा कि सभी गाँव के सारे कार्यक्रम को ही शिक्षा के समवाय के रूप में अभिमत में नहीं ला सकते हैं। इसलिए आरम्भ में अथवा गाँव के सामाजिक और आर्थिक कार्यक्रम के अन्तर्गत के साथ-साथ कुछ रिवाजी शिक्षण भी देना होगा और उच्चतर-समवाय-पद्धति की प्रणाली विकसित करनी होगी। आज इस काम का एक अच्छा प्रयोग मध्य प्रदेश में हमारे विद्यार्थी मण्डल की पाठनकर कई सालों से कर रहे हैं। यह उनको एषान्त साधना का फल है और मैं मानता हूँ कि हम जिस शिक्षा का जन्म होने देना चाहते हैं की पाठनकरकी के यहाँ उसका बाकी लक्षण कर विरहित हुआ है। मेरी राय में सहरा मोर्चे की शिक्षण-योजना तथा उसके माध्यम से विकास-योजना का कार्यक्रम भाई श्री पाठनकरकी की छात्रा के पक्ष में अच्छा होगा।

गाँधीजी की समय नयी छात्रों की योजना को साकार रूप देने के लिए हमें दो तरह के प्रयोग करने चाहिए :

१—एक तो प्रचलित विद्यालयों में से कुछ को, जहाँ उसके लिए शिक्षा की अनुसूचना हो, इस नयी योजना में परिवर्तन करना होगा।

२—दुसरे कुछ मामलों-मेंमें में
 उत्पत्ति की सहायता तथा सहायता के
 बिना इस सभी योजना के अनुसार कुछ
 नये प्रयोग-केन्द्र कायम किये जायें गये।
 पर छात्रों की प्रयोग-पत्र सफलतापूर्वक
 तथा या प्रयोग-सहायता-सहा की ओर से
 दिये जायें और उनमें से जो उत्तम प्रकार की
 प्रवृत्ति से प्रतीता देना चाहें उन्हें इस
 मंडल विद्यालय के शिक्षक सहायता करें।

इन प्रयोग-केन्द्रों में नये बात मुक्त
 हो कि विद्यालय की शिक्षक छात्रों का-
 उत्पत्ति की ही शिक्षा के रूप में कार्य
 करें। इस क्षेत्र के माध्यम से प्राप्त-विद्यार्थी
 को सभी प्रकार शिक्षण-कार्य भी हो। नई
 के कामकाजी विद्यालय, मजदूर तथा अन्य
 लोग पहले प्राप्त होयें जो शिक्षकों की
 कार्य छात्रों के साथ मिलकर करना और
 यहाँ का काम करेंगे। क्षेत्र के अन्य के
 लिए समुची क्रिये-सारी कामकाजी की हो।
 भाई पाठन-केंद्रों में इतनी व्यावहारिक
 योग्यता बनायी है।

सब यह कार्य-समय है कि इस तरह
 के योग्य प्रयोगों के लिए कुछ कार्य-केंद्रों
 की ओर वर्तमान में शिक्षा का कार्य कर रहे
 शिक्षकों को एक योग्य कुछ दिन तक
 की पाठन-केंद्रों के साथ रहकर अध्ययन
 करें। कार्य-केंद्रों को भूकिक बनाया जाय
 जीवन इस कार्य में लगाना होगा जब
 उत्तम प्रतिफल प्रापिक समय का होगा और
 जो शिक्षक अपने विद्यालय में कार्यरत कुछ
 इन तरह का सुधार करना चाहते उत्पत्ति
 शिक्षण कुछ रूप समय का हो सकता है।
 इस क्षेत्र में ही कि कार्य-केंद्रों में से कुछ
 को अपने केंद्रों पर डेटकर कार्य-प्रयोग में
 लायें रहें और कुछ नये हुए-नये विद्यालयों
 में शिक्षक शिक्षा करने विद्यालयों में
 इन सभी शिक्षा के समूह सुधार करने के
 विचार के पाठन-केंद्रों के यहाँ के शिक्षण
 केन्द्र कायें, जाकर सब विद्यालयों का
 कार्य-केंद्रों में। इन योग्य प्रकार के
 कार्य-केंद्रों समयावधि प्राप्त में कार्य-केंद्र
 को करते हैं। क्षेत्र-समय-केंद्रों के हीन का
 एक स्थायक होना कार्य-केंद्र होना अन्यथा

ग्रामस्वराज्य में शिक्षा

—श्री गणेश्वर पाठन-केंद्र

१—वर्तमान शिक्षा-प्रवृत्ति बहुत ही
 प्राण, भावपूर्ण और समतापूर्ण है।
 भारत में शिक्षा-नीति के लिए ही सब गहरी
 है जिसके परिणामस्वरूप देश में नेताओं
 की भावना स्वयंसा धारण बन कर राष्ट्र
 के लक्ष्यो लक्ष्यो है।

२—शिक्षा से राष्ट्रीय समस्यार्थी बन
 होने चाहिए और मानव-जीवन सुखी,
 समृद्ध और तेजस्वी बनना चाहिए।
 योग्य-सुख, शान्त-सुख कथितक समाज
 के लिए प्रयत्न यहाँ में जहाँ के लिए मनुष्य
 तक की शिक्षण-योग्यता आवश्यक है।
 ऐसी शिक्षा की बनना यहाँ-की ने देश के
 लिए ही की। इसमें समूह प्राण ही
 विद्यालय बनाया है। शिक्षा स्वाभाविक
 और सामान-सुख ही, अध्ययन और
 शिक्षण से भरी हो। बिनाका देश साम-
 विद्य-विद्यालय नहीं है, जो शीघ्र भाई
 रहे शांति-सुख नहीं है।

३—शास्त्र विन गौरी ही सुनि
 ही चुकी ही, सामान्य कर्म ही सभी हो
 तथा यह अनुभव कराती हो कि नये देश
 और नये समाज के लिए नयी शिक्षा
 आवश्यक है, यहाँ सामान्य का ऐसा
 प्राण हीका चाहिए और एक शिक्षा-
 कर्मि का यत्न होना चाहिए जिसमें

प्रवृत्ति व प्रभावी सदस्यों के साथ प्रयोग
 और सामुहिक प्रतिनिधि रहे। यही
 और शिक्षा-नीति बनायें और उसने
 भावना पर प्रत्यक्ष की रूपरेखा
 तय करें।

४—शास्त्रायण की तीव्रता
 सब सुनि, शास्त्र-सुनि, समाज-सुनि, प्राण-
 और स्वाभाविक, साम-सुनि और वनोत्प
 तथा प्राण-सुनि को प्राप्त बनाने के साथ
 आवश्यक है। इन छोटे कार्य-केंद्रों में शिक्षण,
 प्राप्त और शक्ति के सामर्थ्य, सभी प्राण
 में। क्षेत्र के सामर्थ्य-सुनि और साम-सुनि
 सुनि के साथ ही समर्थ व्यवस्था ही प्राप्त है।

५—सुनि-सुनि प्रेष, वाक्य,
 उत्पत्ति, शीघ्रता का साक्षात्कार करने और
 शरीर-सुनि के प्रति प्रमाण प्रवृत्ति वैसा ही
 प्रेषके लिए प्राण के निरंतरता और
 प्रतिष्ठित लोगों की कुछ शरीर-सुनि का
 प्राण बनना होगा। सब के सभी इस
 प्रकार के प्राणों में प्राण गते।

यह समझ ३ यथा प्राण और
 ३ यथा प्राण का समझ माने ही प्राण,
 प्राण के प्राण और प्राण-सुनि को के
 प्राण का समर्थ-सुनि प्राण जीव होगा।
 प्रवृत्ति शिक्षा ही-विद्यालय का स्वागत
 ही ही प्राप्त होगा। विद्यालय की योग्यी—

के प्राण के कुछ प्राण नहीं का सर्वने।
 इस तरहकी प्राण पर इन नये
 प्रयोग में प्राप्त सुखों का कार्य-केंद्र
 है। शिक्षा-विद्यालय प्राणें कुछ प्राणों
 को इसके लिए तैयार करे जो सम-सुनि-सुनि
 एक प्राण का इन तरह का अभिप्राय केने
 को तैयार हो और जो फिर अपने विद्यालय
 को एक प्रकार पर कुछ सुधारना चाहते
 हैं। सामर्थ्य-सुनि के सदस्यों की इसके
 लिए करने सामर्थ्य-सुनि। इन प्रकार के
 प्रतिफल के लिए प्रवृत्ति माने के लिए
 शिक्षकों की विभागीय सुनि-सुनि हो। सभी
 उन्हें यहाँ विद्यालय पर पर (कोने

शरीर-सुनि) यथा प्राण और सुनि प्रतिष्ठित
 प्राण के लिए शरीर-सुनि प्राणें तथा
 प्राण-सुनि का प्राण-सुनि और शरीर-सुनि
 और के लिए प्राण। प्राण को प्राण
 माने पर इन विद्यालयों में एक प्राण
 विद्यालय बनाने में इन समर्थ-सुनि-सुनि
 सुनि और सहायता उन्हें ही प्राप्त।
 सामर्थ्य-सुनि और शिक्षा-विद्यालय विद्यालय
 समर्थ-सुनि पर इन प्रयोगों की समर्थता
 करते रहे और समर्थ-सुनि-सुनि प्राणें
 रू। विद्यालय यह प्राण तथा प्राण कि
 पहले शिक्षकों तथा विद्यालयों के प्राण में
 समर्थ-सुनि सुनि-सुनि वैसा ही हो। ४

नयी खेती में नया पूँजीवाद

यह सही है कि अगर छोटे किसान के हाथ पानी आ जाय तो वह अपनी स्थिति काफी सुधार सकता है। ३-४ एकड़ भूमि के किसान के लिए किफाई एक बूँद का सवाल है, वसतत जलभी भूमि बरदा हो। भूमि और पानी के साप-साप पूँजी का भी तवाब है। नयी खेती खली सभाली है कि सखे जल के बिना कोई छोटा किसान खावे नहीं बड़ सकता।

हमारे देश में अधिदास किसान कर्तापिक जोखवाले है। उनके लिए क्यण क्या करेगा, और नया बिज्ञान क्या करेगा? बोधो पचवर्षीय योजना के माना है कि कर्तापिक जोखवाले किसान बस्तुतः भूमिहीनो की कीटि में है। यह प्य है कि अगर हमारी खेती का विकास पूँजीवादी ढंग से ही होना पया, जैसा जान ही रहा है, तो कुछ ही दिनों में ये भूमिहीनो की धेणी के किसान भूमि का बतना छोटा टुकड़ा भी खो देंगे और पुँजीतः भूमिहीन हो जायेंगे।

नयी खेती सखन खेती है। उसमें भूमि और मनुष्य-शक्ति दोनों का सखन इस्तेमाल होता है। साथ ही यह भी

होता है कि जामे मुँबों का इस्तेमाल कमश बढता जाता है और मनुष्य-शक्ति का इस्तेमाल घटता जाता है। अब तक का अनुभव, दूसरे देशों में और इन देश में भी यही है कि बस्त में खेती में तकनीकी बिज्ञान के कारण रोशनगर घटेगा, बढेगा नहीं। परिवार का काम बढेगा, जिन मजदूरों का काम मिलेगा उनको मजदूरी भी बढेगी, लेकिन खेती में काम न पाने-वालों की सख्या भी बढेगी। यह अनि-वार्य परिणाम है भूमि के निजी स्वामित्व के साथ चलनेवाली पूँजीवादी खेती का। इसलिए हमें समझ लेनी चाहिए कि एक ओर हम सामन्तवादी ढाँचे को छोड़कर बिपयता की मिटाना चाहते हैं तो दूसरी ओर पूँजीवादी शक्तियों को दूर देकर नयी बिपयता पंदा कर रहे हैं। यही यह प्रश्न पंदा होता है कि क्या भूमि पर सोलिंग लगानी चाहिए और सोलिंग के ऊपर की भूमि भूमिहीनो और छोटे किसानों में बाँट देनी चाहिए?

सोलिंग की माँग के दो मुख्य कारण हैं। एक तो हमारे खेतिहर देश में भूमि पर दबाव यो ही बहुत है, दूसरे यो

पानी, साइड-उत्पाद, मजान, मार्ग-निर्माण आदि के साप-साप और उसके माध्यम से साया, शक्ति, बिज्ञान आदि का गहरा और ब्यापक दोनो प्रकार का ज्ञान बालक को दिया जा सकेगा। यह अत्यन्त सरल और ब्यावहारिक है। मानव-जीवन के विकास और उन्नति की सभी प्रवृत्तियाँ शिक्षाक्रम में बानी चाहिए। गांधीजी ने कहा था कि सभी शिक्षा राष्ट्र की सभी समस्याओं का समाधान और संकटों का मुखाबिला करना सिखाती है।

जापान प्रामसभाओ के साथ आचार्य-कुल और शान्तिसेना मिलकर बाँध-गाँव में ऐसे प्राम-विश्वविद्यालय बन्दा प्राम-मुण्डुलो को सुनियारें डाले, इसका यही उपयुक्त बवसर है। ●

भूमि है उसका बितरण बहुत अतमान है। १९९०-९१ में स्थिति यह थी कि देश में लगभग ३६ प्र० श० घामोनों के पास या तो जलनी खेती बिलकुल नहीं थी या ३ एकड़ से कम की खेती थी। ५८ प्र० श० परिवार भूमिहीन और २५ एकड़ से कम जमीनवाले थे। इन ५८ प्र० श० परिवारों के पास देश की खेती की भूमि का मान ७ प्र० श० था। दूसरी ओर लगभग २ प्र० श० परिवारों के पास ३० एकड़ से अधिक भूमि थी, जो कुल भूमि का २३ प्र० श० था।

यह पूरे देश का चित्र है। अलग-अलग राज्यों का चित्र तमान नहीं है। १९९०-९१ में केरल में ५५ प्र० श० श्रायोग परिवार भूमिहीन थे या उनके पास बाधा एकड़ से कम भूमि थी। ८५ प्र० श० परिवार भूमिहीन और २५ एकड़ से नीचे थे। उनके पास टोटल भूमि का ३१ प्र० श० भूमि थी। दूसरी ओर ०७२ प्र० श० (१ प्र० श० भी नहीं) परिवारों के पास १५ एकड़ या इससे अधिक भूमि थी, जो कुल भूमि का १५ प्र० श० थी। केवल १ प्र० श० परिवारों के पास १२५ एकड़ या अधिक भूमि थी। जो उनके पास टोटल भूमि का १८ प्र० श० भूमि थी। लगभग यही हाल तमिलनाडु का भी था।

पंजाब-हरियाणा की यह स्थिति थी। ५५ प्र० श० से अधिक श्रायोग परिवार भूमिहीन और ३ एकड़ से कम भूमिवाले थे। ५७ प्र० श० लोग भूमिहीन या २३ एकड़ की सीमा के नीचे थे, लेकिन उनके पास कुल भूमि का केवल दोनो तीर प्र० श० ही था। केवल ४ प्र० श० परिवारों के पास २५ एकड़ या उससे अधिक भूमि थी। उनके पास कुल भूमि का २७ प्र० श० भूमि थी।

बिहार में कुल लगभग ८५ लाख खेतिहर परिवार हैं जिनमें लगभग २२ लाख की घणनो कोई खेती नहीं है। १५ लाख ३ एकड़ से नीचे है। ११ लाख एक एकड़ से नीचे है, और २० लाख २३ एकड़ से नीचे। १५ एकड़ से ऊपर

→ जमीन जो जहाँ प्रायोगिक खेती होगी। बाकी सामान्यतः सभी किसानों के खेतों में वैज्ञानिक खेती बालव-बालवशर्त करेगी। शिक्षा इन कामों में सगुना होगे और बाले काम के द्वारा अधिक सिखायेंगे। ये शासकीय लोगों का भी अधिक सहयोग प्राप्त करेगा। साधन, ओजार आदि सामकॉप और अन्य शक्तियों से प्राप्त करने होंगे।

बच्चे जो बिपन खेते और जो जो कार्य न करें वे सुरक्षित घर-गाँव में रोशनगा के बवबदार में गायेंगे। इस प्रकार से एक नये समाज की नींव डाली जायेंगी। इससे आगा की जाती है कि पुराने समाज में भी नये मूल्या बाधित होंगे।

खेती, गोशालन, बगार्ड-बगार्ड, वेन-

केट साय तक पहुँच गयी है और वहाँ के एक हजार सैजुएटों में आदर्शवादी युवक दो-चार भी नहीं निकलेंगे। पर धीरे-धीरे निराशा नहीं, वे अपना काम करते ही जाते हैं।

उन्होंने एक वैचारिक विरासत का समर्थन किया है, जहाँ सहचिन्तन, सह-अभ्ययन तथा सहशिक्षण से कार्यकर्ता विचार-परिवर्तन करते रहे। सर्व सेवा सभ ने कुछ प्रयोग इस दिशा में किये भी थे, जिनके प्रकाशित विवरण बड़े प्रेरक तथा उत्साहजनक सिद्ध हुए। धीरे-धीरे का यह ग्रंथ भी सर्व सेवा सभ ने ही छापा है। हर देश की स्थिति भिन्न है और यकीन धीरे-धीरे विज्ञान वैज्ञानिक फारमूला—या त्रिखंड मूल्य का निर्माण निश्चि दृष्टि से मुक्त नहीं किया जा सकता। फिर भी हमें दुसरे देशों की अनुभूतियों को जान लेने की जरूरत है। उदाहरण के लिए प्रत्येक सुवादी कार्यकर्ता को अमेरिका के महान् कार्यकर्ता विलियम सायड गैरीसन के जीवन तथा कार्य की जानकारी होनी ही चाहिए। गैरीसन ने सन् 1830 में मानी बापू के जन्म के भी 31 वर्ष पहले नॉन रेसिड-एण्ट (अहिंसात्मक प्रतिरोध) नामक पत्र लिखा था। कार्यकर्ता रूप से अहिंसा का प्रयोग आधुनिक युग में सायड सर्व प्रथम उन्होंने किया था। दासदाय ने भी उनके अपनी धन्द्वान्त्रिण अतिव को ही। दासदाय ने इस बात पर आश्चर्य प्रकट किया था कि उनके पचास वर्ष पहले गैरीसन ने अहिंसा का समर्थन किया था और बापू भी उनके प्रसंग में। मि० नीलकंठ द्वारा प्रकट पार क्रिस्टों की गैरीसन-जीवनी उनके पास थी और उन्होंने वे क्रिस्टों मुझे सिखायी भी थी।

अहिंसात्मक प्रतिरोध के जो-जो भी प्रयोग विदेशों में हो रहे हों या हुए हों उनका धोरा हमारे पास होना ही चाहिए। यह भी सम्भव है कि जिन कार्यकों हम लोग यहाँ सफलतापूर्वक कर रहे हैं, हमारे विदेशी भाई उन्हीं पर

दिसाएँ। स्व० सुई फिंजर ने इस ओर अपने एक लेख में इशारा किया था। महारमाश्री तथा कृषियों को उत्तम करने का ठीका केवल भारत में ही नहीं से रखा है।

अमेरिका में बोरसोधी नामक एक चिन्तक ने विकेन्द्रीकरण पर जो महत्वपूर्ण अनुसंधान किये हैं उनकी जानकारी हिन्दी भाषा-माधियों में बहुत कम लोगों को होगी। गुजरात के वर्तमान राजस्थान श्री श्रीमन्माराधमजी ने हमें 23 वर्ष पूर्व बोरसोधी के प्रयोग के नाम तथा पते भेजे थे और श्री रविशंकर रायल (गुजराती नलनगर) ने हमें बतलाया था कि बोरसोधी ने कुछ दिन पहले विरयविद्यालय में नाम भी किया था और उनका एक ग्रन्थ भी वहाँ से प्रकाशित हुआ था।

प्रान्ति : प्रयोग और चिन्तन

लेखक—धीरे-धीरे सन्तुष्ट
प्रकाशक, सर्व सेवा सभ प्रकाशन,
राजघाट, बाराणसी-1
मूल्य एह रुपये।

आचार्य विनोबाजी की यह सिद्धांत सभ है कि हमारे कार्यकर्ता स्वाध्याय की ओर विशेष ध्यान नहीं देते। प्राचाय विनोबाजी तथा श्री धीरे-धीरे के प्रयोगों को मजकूर में नहीं उड़ाया जा सकता। हमारे देश में शस्त्री आलोचना (चीर क्रिटिसिज्म) की एक बड़ादाय पड़ गयी है। पर इसके मानी ये नहीं हैं कि हम लोग शस्त्री और ईमानदारी के ही हैं आलोचना को जिनाञ्जलि दे दें।

एक अन्य को कभी हमने यह-उक्त ही पढ़ा है और फिनहल अपने आरम्भिक विचार ही हम दे सकते हैं।

हमारा यह कानन है कि धीरे-धीरे सुनो को दुना सकते हैं कि उनके टूट जाने का खतरा रहता है। सब, विधि तथा संकलन से सर्वथा सुचित निम्नका पूर्ण सदावारी के समान एक सदन ही रह सकता है, जिसकी मान्य सम्भव नहीं।

हमें यह कक है कि अपने साथी कार्यकर्ताओं को धीरे-धीरे जरूरत से ज्यादा उम्मीद रखते हैं। कार्यकर्ता आधिर हाइ-मोस के जीव है और उनकी कुछ आवश्यकताएँ भी हैं जिनकी पूर्ति होनी ही चाहिए।

एक बात हम न भूलें। स्त में दु व 'गुण' (जन्मा की ओर) नामक जो आन्दोलन हुआ था उसकी परिणति पूर्णो ज्ञानि में हुई। यदि अहिंसात्मक प्रयोग करनेवाले युवक नाकामयाब हुए तो वे हिंसा का आशय लेने को मजबूर हो जायेंगे, पर इनकी भिन्नेवारी धीरे-धीरे तथा उनके साथी समियों पर न होकर जनता तथा सरकारों पर ही होगी।

वर्तमान अनाचारों तथा प्रत्याचारों की देखकर अनेक स्थिति इस तर्जने पर पहुँच चुके हैं कि साम्यवाद से ही उनका निराकरण हो सकता है। मैं भी ईमानदारी के साथ यह स्वीकार कर लेता बाह्या हूँ कि मैं भी दो वर्ष पहले इसी परिणाम पर पहुँचा था। हिंसा-अहिंसा, केन्द्रीकरण और विदेशीकरण के एक वाद-विवादायें युग कभी का बोन चुका है पर प्रयोगों का युग निरन्तर चलता ही रहेगा। इस दृष्टि से अन्त्ये धीरे-धीरे का प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

गुणगिद्ध फिन एक्टर श्री सुचीदास बरूर ने सन् 1952 में हमें एक कविता सुनायी थी : "मेरी जिन्गी एक मुक्त-चित्त मकर है जो मजिन वी पहुँच को मजिन बनायी।" श्री धीरे-धीरे भी उसी प्रकार के निरन्तर साथी हैं और देश के अराजकत्व वि-कर्ता में उनकी योग्यता बाधो लेवी है।

पढ़ें
गाँव की आवाज
(हिन्दी पाठिका)
सम्पादक : राममूर्ति
उई वेरा धन, त्रिभुवन-विभाग
राजघाट, बाराणसी-1

दृष्ट-निर्गतन चौमोपर हाँसि, पीस
दिनेर युक्तिन की ओर से लगानी गयी ।

एक द्वाँरी हो । दुबली बाल यह है कि
विषयी धृष्ट हो उठे उठन में भाग के
कनाया स्वामिण के आचार पर एव
रमण (कोटराणि विविधेषु) मिले ।
चोत्राण-भाषीन ने भागवर चली भागा
रली है कि 'छुट्वाणी श्रावणी म्बवावा'
की वृद्धि का विभाव होता; जिसके अन्त-
रगत भूमिहीन संवत्सरे की ह्रासा सुवर्णी
और ८५३ ज्योति चोत्राण मिलेगा ।
सैविन इस दिशा में भाग वर कोई भाग
नही हुआ है । यह भी स्पष्ट नहीं होता
कि इस 'छुट्वाणी श्रावणी म्बवावा' और
सामूहिक लोग में ईश्वर और विभाव
कतार है । देखते में दीर्घों में बहुत संभावना
है । कुछ भी हो लोक के लिए आश्रीण के
धामने इतने मिल दुबली कोई बोधना गयी
रही है । उनसे लगाइ की है कि यह बोधना
उसी लोक में साधु की वाप जिसमें बच-
के-कम २५३ सु-स्वाधी या उनके विभाव
(ईश्वर) हीनार हो । बहनें उनके भाग
गाम में जोड की धूम का भागा हो ।
आश्रीण ने इस द्वाँर का वस्तु बनाने की
भी संभावना को है । वर वर एला न ही
खर वर के लिए आश्रीण को संभावना है कि
सर्व को शोधी के को भाग विने जार्न ।
एव दिनों शिवायमें पाथी को, और दुबली
रविशरमें सेविटर द्वाँरारी भविष्यी की ।
एक निश्रीण सीमा के जार की जीव का
का 'विशरमें जार्न' का ही और जो जोरें
निश्रीण सीमा के लोके ही । उनही वेकर
'श्रीश्रीश्रीक जार्न' संवर्ण विने जार्न ।
आश्रीण की वृष्टि में शोधी के सप्तम उद्योग
के ल में संवर्णित जाने का इतने बहुत
कुत्राण ज्ञान गयी है ।

मनु चोत्राण है जिसे आश्रीण ने शोधी
के मुनोर्णन के लिए देन के लार्नी ज्ञान
दिए है । सैविन देन दिना में बनी तप
एक वरव भी गयी ज्ञान है ।

वस्तुश्रीणी - सप्तश्रीणि

श्रेष्ठ विद्वेन प्रोफ़ेस का वक्तव्य

बहुत सारे अर्थोत्कत विवाही विषय-
भाव के युद्ध के बाद इस संघर्ष पर पड़ते
हैं कि वे सब युद्ध में भाग नहीं ले सकते ।
इसमें से कुछ ने सेना छोड़ने का निश्चय
किया है और इनके कारण उलाना होने-
वाली वृद्धिओं को रोक करेगी । इसमें
से कुछ पनाइ मिले रिटन का गये है । ऐसा
विषय सेने के विधिगत कारण हो सकते
हैं, परन्तु युद्ध के स्वभाव पर दुष्, अन्धा-
गुण्य हल्यार्ण, विषयवादी जीवन और
संज्ञाति को झट्ट करते हैं अर्थोत्की
सेना का ह्रास और विषयवादी में अर्थोत्की
कार्यवाई के राजनीतिक संघर्ष में अर्थोत्की
हल्यार्ण युद्ध कारण है ।

अब सवहार दिया गया तो ये लोग
शिक्षा-समाज में एक कल्पना और साम-
दायक रीत बना कर छाँगे । परन्तु रिटन
में उन्हें यह सवहार नहीं दिया गया ।
गठो छवि के विविधित फोर्सेन एवट
के आश्रीण युद्ध शीतल भागनेवालों
की शिष्टि पुनिक विभावण करने उनके
समर्थितों सेना के हवाने कर छापी है ।

रिटन के संवृण का कथन है कि
उन्हे पदु कारण देने से इतर न दिया
जाए । इतरण में उष देन ने बहुत सारे
शोधी को मरण दिया है । इसे मानी
वस्तुगत कारण रखी चाहिए । रमणिए
हम सवहार ने पदु मनीत करते हैं कि
युद्ध के इतर सवोर्षी की मरण की बाद
सर्वि के सार्वभौम शोधी से सब ठकें ।
आर्थोत्की का रिटन के विविधित रिटन
काण और विविधित क रीक एवट में युद्ध
शोधीन दिना बाव ।

अन्त के सैदेरेक रिटोर्षेक इतर
के इतरनी होने में २२ जनवरी के ९
कारनी वरक जार्नीकी हुई । जार्नीकी का
दिना का 'सविर्णन की भाषाओं' । यह
जार्नीकी बालर पापरी एवणन युव,
इतिहास एवणन, शैव जार्न जार्न,

प्रान्त

दा शांतिवादी विषय के २२ मोन
दूर शोष्ट बर्षन की अर्थोत्कीन के इतरवाट
में युव गये । यह इतरवाट मनी बन
रहा है । वहाँ पर अब युद्ध में भाग
गुठ हुआ गो ये लोग सवहार और शारीणर
बनकर सवहार गये गये । उनके पास उं-
रिण टैर और कौजरा था । ये पदुने सारि-
विणन कम में बने फिर बन्धुकर दान में वहाँ
उन्हे ही एव बड़ा भागा बहुत दिया,
जिन पर विभाव या 'हृषणार देने न
जाये, सपुश्रिय के ज्ञानवाटन न बनाये
जायें ।'

युद्ध देर बाद ये वहाँ अर्थिण वि-
भावर कर विने गये ।

उत्तरी आश्रीण

उत्तरी आश्रीण में विविध शिष्टि
के बीच जार्न शिष्टि का भाग जारी है ।
२९ जनवरी को १२ लोगों ने वेरकारर से
सिद्धि के लोचन पकी कठिने का काम दिया ।
जिन सिद्धि में उंके हुई जार्न के सविट
उत्तरी आश्रीण में वृत्तमानी छाठी है ।
अर्थोत्की शिष्टि महाश्री की सेना का
भाग रहना नहीं चाहते थे । जिन सिद्धि
में सिद्धि कौटी मनी उनके कार्यर काते
भी हुई । जिन सिद्धि के इतने सैड की,
उनमें से एक वर का सन्नेन से पुडी तरह
सवहार था । काश्मीर के शीर शिष्टि
सपुश्रिय और देनी के सपुश्रिय में सपु-
श्रिय काँ रही गयी । इतरनी शार्वभौम
की भावोत्कना भी हुई, परन्तु अर्थिणर
शोधी की सपुश्रिय इतरने सार को ।
सापुश्रिय-श्रावण शिष्टिर्षिण के सवि शोधी
की विभावना ही रही थी । शारी वरका
जप होने के कारण हम देनर उत्तरी
आश्रीण के १-२० इतर शोधी
वरक युद्ध ठकें ।

—'वस्तु' जार्न - जार्न,
सुन्दरेश, कर्णको ४, '३२ से

आन्दोलन के समाचार

शाहा प्रसन्न-स्वराज्य-सभा की बैठक

४ मार्च की सातानमें शाहा प्रसन्न-स्वराज्य-सभा की त्रैमासिक बैठक हुई। सभा में चुनाव, फरव-रहस्यी, आपत्त-सञ्चालन और संगठन को मजबूत बनाने पर विचार किया गया, तथा यह भी तय किया गया कि १४ मई के अख्त-यास एक प्रामस्वराज्य सम्मेलन किया जाय।

रोहतक में प्रामस्वराज्य सम्मेलन

२७ फरवरी को रोहतक जिला (पंजाब) में कातफरी प्राय में एक प्राम-स्वराज्य सम्मेलन किया गया। इसकी पूरी व्यवस्था प्रामसवी प्रामसभा के हाथों में थी। सम्मेलन में यह खरक्य किया गया कि कयरी तहसील के सभी गाँवों में प्रामसभा का गठन किया जायगा।

विरोध में पुष्टि-कार्य

विरोध, दरभंगा (बिहार) से थी देवानन्द मिश्र लिखते हैं कि विरोध प्रकटन में २२ प्रामसभाएँ बन चुकी हैं। २६ गाँव के प्रामन पुष्टि हेतु दाखिल हो गये हैं। तीन गाँवों का गठन हो चुका है एवं प्रवण-शरमस्वराज्य समिति का भी गठन हो चुका है।

समस्तीपुर में पुष्टि-कार्य

समस्तीपुर अनुमण्डलीय प्रामस्वराज्य समिति, वैनी, दरभंगा से थी कयरी का बालन लिखते हैं कि पूरे अनुमण्डल में ६९ गाँवों की पुष्टि का तबत हो चुका है। उत्तम से इसकी गाँवों में समस्ती प्रामसभा बन चुकी है। १२ गाँवों में २४ बीघा १२ इन्च २ घुट समीत का विवरण हो चुका है। यहाँ तक रहे भारतक दैम्य में भारतक प्राम में मिली जमीन का दावा योजा जा चुका है।

२,१०२-२५ रुपये की साहित्य-बिक्री हुई। १० प्रवणों में तहण-साहित्येना का सिविर किया गया।

पुणिया-पदयात्रा

३० जनवरी ७२ को पुणिया जिले में एक पदयात्रा हुई जो बलिया गाँव से प्रारम्भ होकर कुरसेना में समाप्त हुई। पदयात्रा की अवधि में दो नये प्रामसभाओं का गठन हुआ। १९ एकड़ जमीन भूमि-हीनो में वितरित की गयी। भूदान-पत्र के ३ और गाँव की अनाय के ५ प्राहक बनाये गये और ५० गुन्ने सूत सुवाञ्चवि में प्राप्त हुई।

तेरहवाँ अखिल भारत तहण-शान्ति-सेना शिविर तथा तृतीय सम्मेलन

तहण-शान्तिसेना का तेरहवाँ अखिल भारतीय शिविर बीधमवालीन छुट्टियों में १६ मई से २७ मई तक मैसूर राज में कन्दोली नामक स्थान पर आयोजित किया गया है। उची स्थान वर दिनांक २८, २९ और ३० मई को तहण-शान्तिसेना का तृतीय राष्ट्रीय सम्मेलन भी सम्पन्न होगा।

शिविर के लिए आयेर-वच धन गये हैं, जो निम्न पते पर माँग करते हैं दण्डक लोगो को भेजे जायेंगे। आयेर-वच भरकर कार्यालय में भेजने की अनिवार्य तिवि है ३० मार्च १९७२। अधिक जान-पारी के लिए सम्पर्क करें :

शचानन्द, ब०भा० तहण-शान्तिसेना शिविर राजघाट, बाराणसी-१ (उत्तर प्रदेश)

थी जयप्रकाशजी का स्वास्थ्य

प्राप्त जानकारी के अनुसार जो दक-प्रकाशजी के स्वास्थ्य की जान कानों के बाद दिल्ली के दण्डियन रद्व और ट्रान्जिल मेडिसिन के विरिस्तरी ने बताया है कि अर कोई विपत्त की बात नहीं है, और वे अपने कार्य में लग रहते हैं। श्री जयप्रकाशजी रवण अनुभव करने लगे हैं और तेरी के साथ एक घण्टा टहरते भी हैं।

घर्य : १८ अंक : २२
सोमवार, २० मार्च, १९७२
सबसे सेवा संघ, पत्रिका-विभागा
राजघाट, बाराणसी-१
पार : सर्वदेवा फोन : ९५२९१

समाचारक रामसूचि

★

इस अंक में

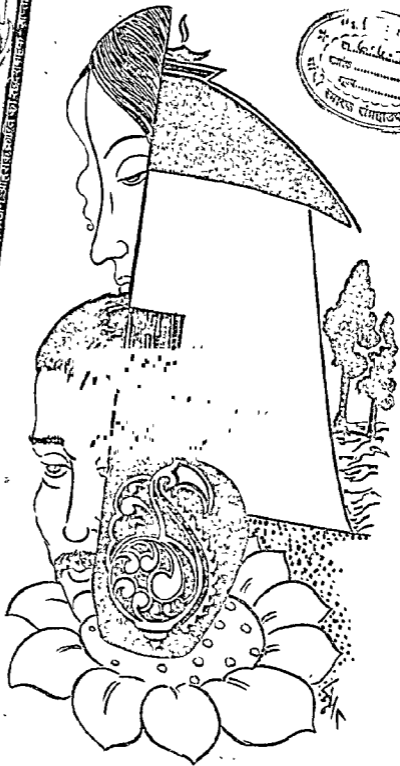
सदयाता।	
—थी प्रनु	३७८
मान दिन	३७९
बैल्यर कर लो।	
—सम्पादकीय	३८०
समता देश के बाद : कुछ प्रश्न	
—थी सुमत दासपुत्र	३८१
प्राम-मुक्तुल : आगानेहुम का भावी कार्यक्रम	
—थी धीरेन्द्र मङ्गलर	३८४
प्रामस्वराज्य में शिवा	
—थी यंगायर पाटनकर	३८५
भारत में गरीबी—१०	
—प्रस्तुतकर्ता : थी रामभुति	३८६
विहार प्रामस्वराज्य सम्मेलन :	
कुछ तिवर्य	३८७
व्यर्थे घरीश्र भाई के कवीन प्रयोग	
—थी बनारसीदास बहुबेदी	३८९
— अन्य रत्तम	
शान्ति-समाचार	
आन्दोलन के समाचार	

समाधि

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

समाधि

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र



वर्ष : १८, अंक : २६; २७ मार्च, १९७२

वाराणसी नगर सर्वोदय-मण्डल के कार्य

(फरवरी १९७१ से जनवरी १९७२)

२० फरवरी १९७१ को सर्वोदय विचारक आचार्य राममूर्ति की अध्यक्षता में वाराणसी नगर के लोकसेवकों की एक बैठक गांधी शांति प्रतिष्ठान के कार्यालय में रखी गयी थी और सर्वसम्मति से श्री श्यामबहादुर 'नम्र' की अध्यक्षता में नगर-सर्वोदय-मण्डल का गठन हुआ था। नगर में कुल ७३ लोकसेवकों ने लोकसेवक निष्ठा-पत्र भरा था।

मत्तदाता-शिक्षण

नगर-सर्वोदय-मण्डल ने वाराणसी मत्तदाता-शिक्षण का संचालन प्रयास किया। २३ फरवरी '७१ को टाउनहॉल में एक सर्व-स्वीय-संच का आयोजन हुआ जिसमें ५ उम्मीदवारों ने अपनी पुनान-नीतियों का स्पष्टीकरण किया।

मत्तदाता-शिक्षण सम्बन्धी ३४ हजार पत्रों द्वारा पूरे शहर में वितरित किये गये। ६ दिन नगर में देवर और प्लेबार्डों के साथ मौन जुलूस निकाले गये।

स्वायत्ताधिक सद्भाव

नगर में होली और मुहूर्त के समय साम्प्रदायिक तनाव के अन्तर्गत ५२ दोनों सम्प्रदायों के बीच सद्भावना का वातावरण बनाने का कार्य मण्डल ने किया।

बंगला देश के मुक्ति-संगर्ष में सहयोग

बंगला देश के स्वायत्तता-संग्राम के समर्थन में २० मार्च '७१ को बैनियाबाग के मैदान में सर्वोच्च विचारक आचार्य राममूर्ति की अध्यक्षता में एक सर्वस्वीय आयोजन में एक प्रस्ताव में बंगला देश में मरसुद्दार बन्द करने तथा बंगला देश को मान्यता देने की माँग की गयी थी। बंगला देश के पक्ष में जन-भावना जगात करने तथा उसके लक्ष्यों की सही जानकारी जन-जन तक पहुँचाने की दृष्टि से नगर-सर्वोदय-मण्डल के अध्यक्ष श्री श्यामबहादुर 'नम्र' द्वारा तैयार एक लघु पुस्तिका 'बंगला देश का संघर्ष' का प्रकाशन मण्डल

की ओर से किया गया। पुस्तक तथा सह-यत्ना कोष बिल्ले की बिक्री से १,३२२.२२ रु० प्राप्त हुए और इसमें से १०९२.२२ रु० बंगला देश की मदद के लिए सर्व सेवा संघ को बंगला देश सहायता समिति के कार्य-हेतु ४० भा० प्रतिसेना मण्डल को दिया गया। उत्तर प्रदेश नागरिक परिषद ने इस पुस्तिका के ३ हजार प्रतियाँ जूँ भाषा में प्रकाशित की तथा हिन्दी संस्करण की दस-दस प्रतियाँ प्रत्येक जिले में जितायीशो के पाठ भिजवायीं। भारत में नगर की बंगला देश-सहायता-समिति ने भी इसका गवींशित-संस्करण प्रकाशित किया।

बंगला देश के जनतापियों के लिए वस्त्र-सग्रह करने की बात तय की गयी। वस्त्र-सग्रह के कार्य के लिए नागरिकों की एक समिति बंगला देश-सहायता-समिति के नाम से श्री रोहित मेहता की अध्यक्षता में बनी। श्री बशीर खानासब समिति यही मनोनीत किये गये। इस समिति ने लगभग १५,००० रु० मूल्य के वस्त्र व वस्तु आदि एकत्रित किये।

अखिल भारत शान्तिसेना मण्डल के तत्वावधान में आयोजित बंगला देश विलोपित विधेय-विधेय आचरण परवाना टोली के स्वागत के लिए मण्डल ने नगर-बंगला देश-सहायता-समिति के साथ एक स्वागत समिति वाराणसी के सभी राजनैतिक, सामाजिक और शैक्षणिक प्रतिष्ठानों के सहयोग से बनायी थी।

१३ दिसम्बर को पद्मनाभ टोली का सायना केन्द्र, रायबाट में स्वागत हुआ और २ बजे टाउनहॉल के मैदान में विराट सभा आयोजित की गयी।

राष्ट्रीय मोर्चा सदस्यता

सर्व सेवा संघ की माँग तथा विलोपित के निर्दोष के अनुसार श्री अल्ल-भाई जय सोन में अपना सम्पूर्ण समय देकर काम कर रहे हैं। नगर सर्वोदय

मण्डल ने श्री अल्ल-भाई को १० रु० मासिक निर्वाह-व्यय के रूप में देने का निर्णय किया है।

वेहड़ा काण्ड

वेहड़ा में हरिजनो पर हुए अत्याचारों की खबर पाकर मण्डल के अध्यक्ष श्री श्यामबहादुर 'नम्र' और मंत्री श्री मोहनलाल शास्त्री (अध्यक्ष, जिला हरिजन सेवक सघ) ने उत्तर प्रदेश हरिजन सेवक सघ के मंत्री श्री पालीवाल के साथ घटना स्थल पर जाकर स्थिति का निरीक्षण किया और लगभग ५,०० रु० के वस्त्र इकट्ठे करके जिला हरिजन सेवक सघ के तत्वावधान में वीक्षित हरिजनों में बाँटे गये।

नगर सर्वोदय मण्डल के तत्वावधान में सभी गांधीवादी सभाओं के सहयोग से ३० जनवरी को शांति-दिनस के मौके पर बंनियाबाग के मैदान में गांधी चबूतरे के पास एक प्राथम-सभा का आयोजन हुआ, जिसमें नागरिकों ने अपनी श्रद्धा-ञ्जलि अर्पित की।

१२ फरवरी को रचनात्मक संग्रामों के सहयोग से एक सभा का आयोजन किया गया जिसमें श्री बी० पी० खोदराला, निर्मला देशपाण्डे और श्री राममूर्तिजी विशेष रूप से शामिल हुए।

— संजी

आवश्यक सूचना

आयदान-गुफ्टि का पूरे देश में जहाँ भी काम हो रहा हो उसी जनताजी उस क्षेत्र से सम्बन्धित स्थिति १० अर्थात् एक ४० भा० श्यामबहादुर समिति, सर्व सेवा संघ, रायबाट, वाराणसी-१ के पत्र से भेजने की कृपा करें। सम्भवतः अन्तर्गत पर इस समिति की ओर से एक रिपोर्ट तैयार करने है, जिसे लिए गुफ्टि-कार्य की जानकारी अनिवार्य है। गुफ्टि-कार्य में क्या हो रहा है, किना काम हुआ, क्या दिनांक आ रही है, और करना कुछ सुझाव, विचार।

— राममूर्ति

समाज-सैवक का भूमिका

—विनोबा

दुर्जन कौन : सज्जन कौन ?

प्रश्न : ग्रामसभा गाँव की जमीन का संरक्षण करेगी और इस प्रकार गाँव सुरक्षित रहेगा, हमारा यह कहना गौन-वाल समझ सकते हैं और मात भी लेते हैं, लेकिन ग्रामीणों की शोषण करनेवाली संस्थाओं के साथ सड़ने में हम ग्रामीणों के सहयोग नहीं बनते, उनकी यह शिक्षा-यत्न रहती है।

उत्तर : शोषण करनेवाली संस्थाएँ यानी कौन-सी संस्थाएँ ?

प्रश्न : व्यापारी, सरदार, राज-नीतिक पक्ष, सेवा-संस्थाएँ।

उत्तर : व्यापारियों के साथ सड़ने से कोई लाभ होगा नहीं। क्योंकि व्यापारी बर्जा बरैरह देते हैं, सरदार से वह मिलना सम्भव नहीं, इसलिए व्यापारियों से सड़ने से कोई लाभ होनेवाला नहीं है। व्यापारियों से सहयोग करना चाहिए। आप समझते हैं कि व्यापारी सुदरे हैं। लेकिन सुदरे लोग सभी जगहों पर होते हैं, सर्वोप में भी हो सकते हैं। सज्जन लोग जैसे और जगहों पर होते हैं, वेसे व्यापारियों में भी होते हैं। अगर हम प्रतिशत विनाश कि कुछ व्यापारी विनाश हैं और उनमें विनाश प्रतिशत सज्जन हैं, बाक़र, सरदारी नोकर कुछ रिक्त हैं और उनमें सज्जन विनाश; सामान्य जनता कुछ रिक्त हैं और उनमें विनाश प्रतिशत सज्जन हैं, वो पता चलेगा कि जितने प्रमाण में सज्जन और जगहों पर हैं, उतनेसे कम व्यापारियों में नहीं हैं। सामान्यतया माना जाता है कि सरदारी नोकर यानी भूत सेनेवाले; लेकिन भूत सेनेवाले भी उतने ही गुणहारा है। इसलिए भूत सेनेवालों के विरोध में सड़ें रहेंगे, वो भूत सेनेवाले भी खतम हो

जायेंगे। हर राष्ट्रीय पक्ष में सज्जन होते हैं। सज्जन सर्वत्र हैं, और किसी भी सज्जन का सहकार हम लेते हैं। अगर कोई दुर्जन माना जाय है, लेकिन हमारे विचार की मानना है, तो उसका भी सहकार हम-लेते। शराब पीता है, लेकिन भ्रूतन देना है, वो हान भ्रूतन लेंगे। किसी भी मनुष्य पर दुर्जन का लेखन (कार्क) हम चिपकायेंगे नहीं। कार्य-कर्ताओं की उत्पत्ती को आत्महत्या के लिए होती है। कोई भी कार्यकर्ता अपनी उत्पत्ता छुट्टी करे और आत्महत्या कर ले, वे टिकनेवाली नहीं हैं।

प्रश्न : हम कार्यकर्ताओं को आस्था प्रामोद्य जनता को आधार देनेवाला है यह जमीनी सिद्ध नहीं होता। इसलिए हमारा महत्त्व से समझते हैं, उन्हें वह अंधता भी है, लेकिन उतसे उनकी मायूसी नहीं आती।

उत्तर : कार्यकर्ताओं में दोष हों, तो उसका निराकरण होता चाहिए। अपने दोष कायम रखते हुए हमारे विचार का प्रचार हो, ऐसा हम मानेंगे तो वह गन्ध नहीं। इसलिए प्रथम अपनी चित्तशुद्धि करेंगे, उसी विचार का प्रचार होगा। हम किसके विरोधी ?

प्रश्न : हमारे आन्दोलन की यह कहती है का समय है, क्योंकि स्वतंत्रता का पानिपा-नेटरी (संघदीय) आधार अब टिकनेवाला नहीं है। ग्रामसभा का आधार ही संघ-संन को धारण। इसलिए किसी भी संघदीय कार्यक्रम में आस्था न रखते हुए ग्रामसभा का आधार ही हमें प्रस्तुत करना चाहिए। इसलिए हम संघदीय पद्धति के विरोध में हैं, जनता को इसका भान हमें करना होगा।

उत्तर : राजनीतिक कार्यक्रमों में हमारी आस्था नहीं, लेकिन हम उसका विरोध नहीं करते हैं। हम चाहते करते हैं कि जो राजनीतिक पक्षों के धारण हैं, उनमें मै-मै गुण होने चाहिए। यह

धनसने की बात है। हमारी जो शक्ति है, यह शक्ति है और उतको हमने तीव्रता शक्ति नाम दिया है जो दिशा-शक्ति के विरोधी लेकिन दण्ड-शक्ति से भिन्न है। दण्ड-शक्ति के विरोधी नहीं, क्योंकि दण्ड-शक्ति मनुष्य के विनाश का एक बहुत बड़ा बरदम है। दण्ड-शक्ति में, जो ससद में होती है, एक बहुत बड़ा गुण है और उत गुण के कारण हम उतके विरोधी नहीं हैं; हम उतसे भिन्न, अलग हैं क्योंकि हम एकांत (साथे) हैं। कौन-सा गुण है वह ? वह मानवी है कि हर मनुष्य सज्जन है, किसी पर चोरी या बल का आशय लगाया जाय, तो जिसने आशय लगाया, उत पर सज्जत पंश करने की जिम्मेदारी है, जिस पर आशय लगाया गया है उत पर नहीं। (गो कॉन नोटिस के केशव को छोड़ दें।) क्योंकि कानून में मान दिया है कि सब सज्जन हैं, किसी की दुर्जनता किसी को सिद्ध करनी है, सो करे। कुछ कानून मनुष्यमूर्ति में मिलते हैं, कुछ बाह्य-मिल—औरक टेस्टामेंट में मिलते हैं। दोनों के साथ आज के कानून की तुलना करेंगे तो ध्यान में आयेगा कि आज का कानून बहुत एकांत है। इसलिए हम दण्ड-शक्ति के विरोधी नहीं, लेकिन उतसे एकांत हैं। इसलिए उतसे भिन्न हैं।

प्रश्न : ग्रामसभा का ग्रामदाण से संघदीय पद्धति के बारे में ही हमारी आस्था प्रकट होती है, तो मैं समझता हूँ कि हमारे आन्दोलन को कुछ भी निष्पत्ति निकलेगी नहीं। मेरी यह पक्षी धारणा बन गयी है।

उत्तर : मैंने अभी जो कुछ कहा वह ध्यान में लेना चाहिए कि संघदीय पद्धति जयों से श्रेष्ठ है और वह हमारे अर्थ-संघदीय है। ऐसी स्थिति में उतका विरोध करना यानी गन्धरीक है, उतको दूर करने जैसा ही होगा। हम पानिपायेदारी पद्धति के विरोधी नहीं, हम फासिज्म के विरोधी हैं, हम बन्धु-

(गो पृष्ठ ५०० पर)

मानव-विकास और क्रान्ति का अहिंसक स्वरूप

—डा० रोलनसिंह जोषारी

(विरविद्यालय अनुदान आयोग के सम्पन्न, देश के प्रसिद्ध वैज्ञानिक, किसानिद और पत्नी श्री डा० रोलनसिंह जोषारी द्वारा विरसो के राजस्थान आदिम विद्यालय के वार्षिक सम्मेलन के अवसर पर विद्यार्थियों के बीच दिये गये भाषण के आधार पर — सं०)

मानव का इतिहास अहिंसक का इतिहास है। भारत का इतिहास भी प्रेम, मानक, व्यवहार, शरीर आदि को मानता है जिन्होंने अहिंसा को बढ़ावा दिया। सच्चा इतिहास—मानव-विकास—अहिंसा से ही सम्भव है। जिसका ही 'दशो-गुणन' की दृष्टि से यह सोचें हैं कि तबसे, जिससे मानव मलिनक बना, उसके 'दण्डन-लोक' का विनाश २० लाख वर्ष पहले हुआ था और भूमि मनुष्य का अस्तित्व बिना सहरार के सम्भव नहीं था। इसलिए सहरार के कारण ही मलिनक का विनाश हुआ। इस मलिनक-मलिन के पीछे नै ही आगे चलकर हिंसा की ही प्राकृतिक विना—यह दूसरी बात है।

मानव में जो हिंसा सोचनी है उसमें मनुष्य मनुष्य की भी मार सकता है। यह दूसरे किसी प्राणिम में नहीं देखता। भ्रैविया भ्रैविये पर हमला करेगा पर मानने की क्षमता मानने पर उसकी आन्तरिक सांकेतिक प्रकृति (यसु मलिनक के अन्तर्गत से पनर बनकर है कि उसमें एक प्राकृतिक व्यवरोधक होता है) अहिंसा का अन्तर्गत करने लगती है और हृदयका बन्द ही जाता है। स्वयम्, आत्मनिष्ठता उसी आनन्दों में है। निन्दु केकत बूढ़े और मनुष्य जाति में यह नहीं दिखाई देती। मन्दाकिरक ऊपरी दबाव के अन्दर प्रमाणित जातियों में बहोर दिया नहीं समझी। हायद मनुष्य में भी यह प्राकृतिक व्यवरोधक सकल रहा होगा, निन्दु ह्य मनुष्यों से विद्यमान स्वा-भारिक अनुभूति सब बड़े सहरार अरवों के कारण समाप्त हो गयी है। ये अरव, शीतपानी होने के कारण मारने और

मारनेवालों के बीच बड़ा फासला बगटी बना देते हैं जिससे आन्तरिक स्वाभाविक (बुद्ध) अवरोध को मोका ही नहीं मिल पाता।

इसलिए सब सावधान्यका इस बात की पंदा हुई है कि जिस अनुभव में सहरार अरवों की मति और दूरी से मार की शक्ति बढ़ी है उसी अनुभव में मानव मानस पर स्नेह श्रोत परम्पर सह-अनुभूति के कारण को भी विनियम विना जाय जिससे मार्ग शक्ति को रोक पंदा हो सके अन्वया मानव अपने को ही समाप्त कर लेगा। यही मान की सबसे बड़ी चुनौती है।

यदि किसी विचार को अमल का मोटा नहीं दिया जाऊ तो वह कृत्रिम बनकर रह जाऊ है। इसी तरह अहिंसा का विचार भी 'पोषी का बँगन' ज रह जाय इसके लिए जाय के मोत्रान की सहियम-अहिंसक का प्रत्यक्ष अनुभव से-आने कार्यकम मिलने चाहिये, तभी उस शक्ति का विकास उभरें होगा। मयी पीढ़ी के दिल में डेक की छेक की उपन्ना है, पर उसे जालकापी नहीं है कि हमने देश में दुर्गी और शक्ति की क्षमता धन है। भारत में, शक्ति में २० पीढ़ी का बगटी प्रिय हस्त में है उसके बारे में अहम-वाले भी बहुत कम जानकारी है। अतः ही राष्ट्रीय भारत और सहरार जीवन के बीच साईं बगटी का रही है। एक शक्ति अन्तर भाषणों सहराराले और शक्ति के अन्तर्विज्ञान में भी अन्तर आयेगा। शक्तिवाला आनन्द-सामने सबके साथ रहता है। उसमें परस्परविज्ञता का मोत्रा शक्ति ही से व्यवहार, ये किशक का

परदा नहीं रहना, सहरार जीवन में आदमी अपने दिल की बात दूसरे से पहले मिश्रता है। इस मिश्रक को मिश्रक कर सहरार के अन्तर्गत को मानना को बार में सन्ने का मोका है, यह बहरी है। शक्ति और सहरार के बीच की साईं भी इती से कम होगी।

इसके विन्दु सहरार के मोत्रवालों की पहले तो माने ही सहरार में शक्ति बलियों में जाने लीर काम करने का मोत्रा देना चाहिये। लोगों के जीवन-सम्पन्न में से आर्य, अरबों से निन्दु लकनेदाने सन्नाक के साथ दिल जोड़ें सँ—अपनी बात बहें, उनको सुनें यही—एक बड़ा काम है। जहाँ दुल है, बीमारी है, अज्ञान है, उसको समझना और उनके प्रति सहानुभूति एवं सेवा का भाव प्रकट करना यही, माने में बहुत बड़ा कर्म है। एक अन्ता विद्यार्थी शायद जाय पायेगा, पर दो-तीन माय निम्नकर सब-पन्ना घाटी के सम्पन्न का बम बना सकते हैं। इससे उनके अपने अनुभव और अनुभूति के क्षेत्र में भी सर्वगत होगा और समाज में उपेक्षा घटक की भी क्षमता और स्नेह प्राप्त होगा तथा कुल मिश्रकर अहिंसा का बरना का वातावरण बनने में सहायता मिलेगी। युवक यदि इस काम में लगे ही उनके हृदय को विकसित होने का मोत्रा मिलेगा। वे बिन परिवारों के साथ सेवा रखेंगे उनके दुल-गुल में आनीदार बने, पठन काही है। इसी में से समाज के परिवर्तन के बीच भी निकलेंगे।

शक्ति के को आन्तर्गतों को उन्ना क्या की पाती है? एक राजका क्रान्ति का नामो में दिया है—गुप्तता युद्ध बर, जिसको अन्तर्गत अन्त विनियमन-का छोटा देक भी सहरार की सबसे बड़ी तावक अन्तर्गत के साथ टकर से रहा है, दूसरा राजका शक्ति का है शक्ति का। भारत में यह दूसरा राजका पन्ना बिया है। हृदय पर दर्द है शक्ति है ही एकमात्र शक्ति मानव सहरार सामने है जिन्होंने बड़ा कि है मनुष्य, यदि मुझे दूसरा जन्म देना

हो ही मुझे सबसे गरीब और समाज में
 गॉर्लिंग-नीड्रिच के परिवार में भेजना
 जिससे मुझे उसकी सेवा वा सुबकर प्राथ
 हो सके और मैं उनके आसूँ पीछे चलाऊँ।
 यह महामत्ता और नहीं हमने नहीं देवी।
 यह दुख से दूर भागने की कोशिश में
 नहीं रहे। भोस की भी राग उन्होंने
 इसीलिए नहीं की। दुःख को दूर करने का
 बड़ा ठे बड़ा व्यवहार उन्होंने गाँगा क्योंकि
 इसी में उनकी महान् ईश्वरीय कृति के
 दर्शन होते थे। अहिंसा की कृति इसी में
 थे उन्हें मिली। स्वभाव से, गरीब के सन
 और मन से एकाकार होने में उन्हें आत्मिक
 आनन्द की अनुभूति होती थी। इसमें
 कोई विज्ञान वा दुःख-सहन की बात
 उनमें ही थी नहीं। चर्चिल ने जब उनके
 बारे में पत्राचार किया कि यह नंगा पत्नी
 एक लेंगेटी लगाये बंसे विश्व को सबसे बड़े
 साहसाह से मिलने जा सकता है तो
 गाँधीजी ने क्याच में बड़ा कि इस राटी
 पोशाक के अलावा और कोई भी पपड़ा
 भेरे ऊपर धेनुका बीलेगा क्योंकि मैं अपने
 देश के गरीबों का प्रतिनिधि होने का
 दिवा थावा करता हूँ। उनको इस
 हादमी की सच्चाई के आगे साहसाह की
 शान-कृति करी जाती थी, यह हमने
 अपनी आँखों से देखा।

लेकिन उसी क्रान्तिकारी महापुरुष के
 नाम पर बाद में लोगों ने एक परदा-सा
 डाल दिया है। एक निरूप स्वरूप
 का गाँधी हमारे सामने रसा किया
 जाता है। पीछा कुछ है। इसलिए हमें
 दूसरों के बगाने पर नहीं, खुद झुँझकर
 गाँधी को पहचानना होगा। गरीबी की
 गाँधीजी की फिर से खोज करनी होगी,
 उनके अपने विचारों और आचारों को
 समझकर, पहचानकर। यह कहते थे कि
 मैं बादरान्हीं से उरता नहीं, पर एक पीढ़ी
 पर पौर पड़ जाय तो काँग आण हूँ।
 यह बीरता और कृपा का समन्वय जिस
 गाँधी में था उसकी खोज मोक्षदान जब
 करेंगे तब मानव विकास के क्रम में वे
 सही दिशा में योगदान दे सके। ●

पुस्तक-सूचक : श्रीमदार, २७ मार्च, '७३

सीलिंग का सवाल

१. जोस बरस पहले पहली पंचवर्षीय
 योजना में सीलिंग वा सिद्धान्त मान्य
 हुआ था। लेकिन इसलिए नहीं कि भूमि-
 हीनो को भूमि मिजनी चाहिए कृति इस-
 लिए कि सिद्धान्ततः किसी व्यक्ति के पास
 एक सीमा से अधिक भूमि नहीं रहनी
 चाहिए।

दूसरी पंचवर्षीय योजना में विपमता
 की ओर ध्यान दिया गया, और बड़ा
 गया कि विपमता आर्थिक विकास में बाधक
 होती है, इसलिए भूमि के मामले में विप-
 मता को घटाना चाहिए। विपमता का
 घटना प्रयोग क्षेत्रों में सहकारी कर्षणीति
 के विकास के लिए आवश्यक है।

तीसरी पंचवर्षीय योजना में यही
 बात दोहरायी गयी और भूमि में विपमता
 घटाने पर जोर दिया गया, यद्यपि दूसरी
 योजना की तरह तीसरी में भी बड़ा गया
 कि सीलिंग से भूमिहीनो के लिए कोई
 साध बगौन नहीं निरसनेवाली है।

यह स्पष्ट है कि सीलिंग के प्रश्न पर
 योजना आयोग के विभाग में न दुहता थी
 और न प्रयोजन ही स्पष्ट था। इसलिए
 कोई आश्चर्य नहीं कि सरकारों ने भी
 सीलिंग के बानुनो को कभी दुनवपुर्वक
 नहीं लागू किया। भूमिवागो ने भी कभी
 सीलिंग का बटकर विरोध नहीं किया।
 वे जानते थे कि बगणन से बँसे बचा
 जाता है।

२. सबसे पहिले जम्मु-बखीर
 राज्य में सीलिंग वा कानून बना—
 १९५८ में। २२.७५ एकर की सीलिंग
 लागयी गयी और दुनवपुर्वक लागू की
 गयी।

आंध्र में १९६१ में सीलिंग बानुन
 पास हुआ। भूमि की निरम के अनुसार
 भूमिवागो को २७ से ३२४ एकर भूमि
 रखने की छूट दी गयी। ५ सदस्यों से
 अधिक के परिवार में प्रति कतिरिक्त
 व्यक्ति ६ से २७ एकर कतिरिक्त भूमि
 रह सकती थी। यह बानुन १९६४ में

लागू हुआ, लेकिन लागू होने के बाद ६
 वर्षों में बान १९१ एकर भूमि निगाली
 जा सकी।

तमिलनाडु में १९६१ में भूमि-सुधार
 कानून पास हुआ। सीलिंग ३० स्टैण्डर्ड
 एकर (सामान्य एकर २४ से १२०) रखी
 गयी। ५ से अधिक के परिवार के लिए
 अधिकतम सीमा ६० स्टैण्डर्ड एकर की
 थी। इसके अलावा पत्नी के लिए १०
 एकर 'रबी-प्लन' के रूप में छूट दी गयी।

बिहार में १९६१ के सीलिंग एक्ट
 के अनुसार सीलिंग की सीमा भूमि की
 निरम और परिवारों में सदस्यों की
 संख्या के अनुसार २० से ६० एकर के
 बीच रखी गयी। लेकिन उत्तराखण्डियों
 को भूमि हस्तांतरित करने की दृष्टी छूट
 रखी गयी कि आजातक एक एकर भी
 बगौन नहीं निकल सकी है। कुल ४८
 हजार सामान्य और २१ हजार विशेष
 कोटिमें दी गयी हैं। १० हजार प्राय
 ब्योरे रसेल जा रहे हैं, किन्तु भूमि हास
 नहीं आती।

राजस्थान के १९६० के कानून ने
 सीलिंग २२ से ३३६ एकर के बीच रखी,
 लेकिन यदि परिवार में ५ से अधिक व्यक्ति
 हों तो यह सीमा दूनी हो जायगी। १९६९
 में एक सशोधन द्वारा पुन, पुनी या किरी
 रोहिहर के पद में बिये गये हस्तांतरण
 कानूनी करार दे दिने गये जिसका परि-
 षाम यह हुआ कि एक एकर भी भूमि
 नहीं निकल सकी।

मध्य प्रदेश में १९६२ के कानून के
 अनुसार २५ से ७५ एकर तक की सीलिंग
 रखी गयी। सीलिंग व्यक्ति के लिए थी,
 परिवार के लिए नहीं। बगी लक कुन
 १३ हजार एकर भूमि बाँटी गयी है।

उत्तर प्रदेश में १९६० के कानून के
 अनुसार सीलिंग ४० से ८० एकर तक है,
 लेकिन अगर परिवार में ५ से अधिक
 व्यक्ति हैं तो प्रति व्यक्ति ८ एकर की
 छूट है। अब तक लगभग २ लाख एकर

भूमि प्राप्त हुई है।

महाराष्ट्र में १९६१ के वायुन में १८ से १२५ एकड़ तक की सीलिंग है। ५ से अधिक के परिवार के लिए पहले दुगुनी सीमा है। यहाँ सीलिंग व्यक्ति के लिए है परिवार के लिए नहीं। अब तक १ लाख २३ हजार एकड़ भूमि प्राप्त हुई है।

गुजरात में १९ से १३२ एकड़ की सीलिंग परिवार के लिए है जिसमें पति, पत्नी और नाबालिग बच्चे शामिल हैं। अभी तक २५ हजार का विवरण हुआ है।

मैसूर में सीलिंग २० से २१६ एकड़ तक है। ५ से अधिक के परिवार के लिए दूनी सीमा है।

उड़ीसा में वायुन १९६२ में बना, जिसमें प्रति व्यक्ति के लिए सीलिंग २० से ५० एकड़ है, लेकिन वायुन अभी तक लागू नहीं किया जा सका है।

कोची (पंचमती) योजना के समय निर्धारित यह भी, चेता कि आयोग ने माना है, कि सीलिंग के वायुन हर राज्य में मोड़ू है लेकिन उन पर जनता मनोरंजनरुप वगैरे नहीं हुआ है। देश-भर में निर्णय लगभग १५ लाख हेक्टर पर सरकार का बजटों हो चका है। जाम प्रदेश में सरकार प्रस्तावित बजट नहीं कर पा रही है क्योंकि मुद्रास्वयं देने के लिए उसके पास पैसा नहीं है। बंगाल और गुजरात में मुद्रास्वयं के कारण काम रफा हुआ है। जो भूमि सरकार के हाथ आती भी है उसके विवरण में हलारता नहीं है। कुल मिलाकर २ लाख हेक्टर से अधिक भूमि का विवरण नहीं हो सका है। जिसने किसी सीलिंग के सम्बन्ध में कुछ तैकी रिपोर्टें गयी है। केरल और तमिलनाडु में सीलिंग पदापी भी गयी है। केरल में प्रति व्यक्ति १ से ७५ एकड़ की गयी है, २ से ५ तक के परिवार के लिए १२ से १५ एकड़; ७ से अधिक के परिवार के लिए १५ से २० एकड़, ४४वाँ के लिए १२ से १५ एकड़। तमिलनाडु में सीलिंग १० से १५ हेक्टर तक (सामान्य १२ से १० एकड़

तक) प्रति परिवार कर दो गयी है।

३. सीलिंग घटाने से किसानों भूमि निष्कलेगी ?

देश में जनसंख्या का वितरण ऐसा है कि भिन्न-भिन्न राज्यों में प्रति प्राचीण परिवार भूमि में बहुत अधिक विषमता है। जनसंख्या के घनत्व की दृष्टि से कुछ राज्यों की श्रेणियों में रक्त का साथ है। पश्चिमी क्षेत्रों में से राज्य हैं—केरल, तमिलनाडु, असम, प० बंगाल, बिहार, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, और केन्द्र-प्रशासित राज्य। दूसरी श्रेणी में वे हैं—आन्ध्र प्रदेश, मद्रास, गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान।

प्रश्न यह है कि प्रति प्राचीण परिवार की कितनी भूमि मिलनी चाहिए ? एक मुद्दा यह है कि केरल, तमिलनाडु, असम और प० बंगाल में प्रति परिवार माया एकड़ भूमि होनी चाहिए। इतनी भूमि अधिक नहीं है, लेकिन इन क्षेत्रों में ५० से ५५ प्रतिशत परिवार भूमिहीन हैं, या ३ एकड़ से भी कम भूमि रखते हैं। अगर प्रति परिवार ३ एकड़ भूमि भी देनी हो तो केरल और असम में ७५ एकड़ की सीलिंग लगानी होगी, तथा तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल में १० एकड़ की। इस दृष्टि से सभी इन राज्यों में जो सीलिंग लागू की गयी है वह भी जैसी है।

बिहार, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश और पञ्जाब में प्रति परिवार १ एकड़ मिलना चाहिए। उसके अधिक सम्भव नहीं दिखई देता। उ० राज्यों से ३५ से ४० प्रतिशत

भूमिहीन है। १ एकड़ देने के लिए जो विचार में सीलिंग १२५ एकड़ की, उड़ीसा और उत्तर प्रदेश में १५ एकड़ की और पञ्जाब में २५ एकड़ की लगानी होगी। इतना होने पर भी इन राज्यों में ५५ से ५० प्रतिशत परिवारों की १ एकड़ से अधिक भूमि नहीं मिलेगी।

सिद्धांत यह है कि भूमिहीनों को भूमि देने के बाद छोटे सीलिंगों को लागू कर जोत के लिए भूमि बिलकुल नहीं बचती। मन्दीरा यह होगा कि जो बड़े ब्यापारिक हैं वे जैसी-की-तैसी रह जायेंगे। भूमिहीनों को भी गयी जोतें, और छोटे सीलिंगों को पहले से मोड़कर जोते, जोतों को मिलाकर ब्यापारिक जोतों की देग में भरमार हो जायगी। यह गणना भी १९६०-६१ के आधार पर की गयी है। अब वे जनसंख्या बढ़े है, और जोतों में बँटवारे भी हुए होंगे। कुल मिलाकर १९७०-७१ में दिवसों और बिकड़े होंगे।

कुल लोगों का मुद्दा है कि भूमिहीन और अल्पतः छोटे सीलिंगों को छोड़ देना चाहिए, और भूमि उन्हीं को देनी चाहिए जिसकी जोत, जोड़ी भूमि और दे देने से, ब्यापारिक हो जायगी। अगर ऐसा करना हो तो सीलिंग के साथ-साथ पञ्जीरिंग की कल्पना भी करनी पड़ेगी। लेकिन अब हम पञ्जीरिंग का हितान लागते हैं जो पाते हैं कि ५० से ७५ प्रतिशत प्राचीण परिवारों के पास बिलकुल भूमि नहीं है, या इतनी पञ्जीरिंग से कम है।

—प्रस्तुतकर्ता राममणि

सादी-खरीददारों को

सर्वोदय-साहित्य पर आधी छूट

सर्वोदय साहित्य-प्रसार-योजना के जनमगत सादी-पंखारों पर सादी-खरीदनेवालों को सर्वोदय साहित्य आधे मूल्य पर उपलब्ध होगा है।

अपनी रुचि की पुस्तकें चुनकर अपने पुस्तकालय को संपृक्त बनायें।

सर्वे सेवा सच मकरान, रजयण्ट, धारापत्ती-१

निजम (साम्यवाद) के विरोधी हैं । वे सारे हमारे विरोधी हैं, लेकिन पातिया-भेगरी पद्धति हमारे नजदीक है, क्योंकि वह लोगों ने बनायी है। नजदीकवालों का विरोध नहीं करना चाहिए, उमसे तो जो हमारे नजदीक है, वही दूर हो जायगा। नजदीकवालों का विरोध तो तत्काली करते हैं। तत्काल में क्या होता है ? जो प्यादा-से-प्यादा नजदीक हैं, उनका प्यादा-से-प्यादा खण्डन किया जाता है, दूरवालों का इतना नहीं। शाकराचार्य ने नास्तिकों का इतना खण्डन नहीं किया, लेकिन नजदीक जो वे सांख्य चरित्र उनका खण्डन किया। क्योंकि जो नजदीक होता है, उसके बीर अपने विचार में एकाग्र रखा का ही फल होता है, तो चित्त में भ्रम होने की सम्भावना होती है, इसलिए तत्काल के क्षेत्र में जो नजदीक होता है, उसका प्रथम खण्डन करना पड़ता है। जहाँ बहुत प्यादा विरोध होता है, वहाँ तो विचारों में फरक स्पष्ट हो जाता है। इसलिए शाकराचार्य ने नजदीकवालों का प्यादा-से-प्यादा खण्डन किया। लेकिन सामाजिक कार्य में उलटा है। वहाँ नजदीकवालों का विरोध करेंगे, तो हम उनको दूर करेंगे। ज्ञानदेव, तुकाराम या दूसरे सख्त सामान्यतया किसी का विरोध नहीं करते। तुकाराम कहते हैं, जेजे बोला, तेते सखे या बिटठण। बिटठन ईत है या सईत है, बिणन में भय द्रुमा है या बिणन से अलग है, निर्गुण है या सगुण है, दण्ड देनेवाला है या दण्ड न देनेवाला है, कुछ भी कहो, जो भी कहो, वह सब भावना को रोमा देता है। ये सव्वो का ठरीका वा। यानी किसी से हमारा विरोध नहीं यह युक्ति समाज-सेवक की होगी चाहिए। यह फरक है तत्काली और सामाज-सेवक में। धार तय करें कि आप कौन हैं, तत्काली या समाज-सेवक। [३९-२-५२ को हुए थी काश्चित् अन्त-वार के उप प्रयोगार]

तीसरी गोष्ठी

जुनाब

१-राजनीति :

दलगत राजनीति की गाँव के जीवन में कोई उपयोगिता नहीं है। लेकिन जब तक दल रहेगे उनके आदमों नावों में भी रहेंगे। किन्तु जब राजनीतिक दल का कोई आदमी सर्वसम्मति से ग्रामस्वराज्य-सभा का सदस्य चुन लिया जायगा तो निश्चित है कि वह दल की अनेका गाँव से अधिक प्रभावित होगा। गाँव में काम करने के लिए उसे दल की धुनाना ही पड़ेगा।

२-(क) गाँव की एकता। ग्रामस्वराज्यसभा का यह कर्तव्य है कि वह धुनाव के कारण गाँव की एकता न टूटने दे। यह राजनीतिक दलों से बाह्य करे कि वे झरुद्धा आहार गाँववालों को अपनी बात समझावें, अन्दर-अन्दर मतभेद न पैदा करें। इस दृष्टि से लोकमच बहुत उपयोगी होगा।

(ख) ग्रामस्वराज्यसभा धर्म-सम्मति से किसी एक योग्य उम्मीदवार का समर्थन भी कर सकती है।

३-मतदाता : मतदान दृष्ट और निष्ठा हो इसकी बिन्सा हर ग्रामस्वराज्यसभा की रखनी होगी। सभा भरे हुए या बाहर रहनेवाले वोटरों की सूची तैयार करें और पहले से प्रेजार्डिंग बरकर की दे दे। उमा बोगस वोट को रोके और देखें कि किसी वोटर को बराकर, धमकाकर, या लातच देकर वोट देने या न देने के लिए विवश न किया जाय।

४-लोक-उम्मीदवार :

आगे के चुनावों में लोक-उम्मीदवार की छहूँ किये जायें।

५-स्वायत्ता का अन्वयत : इसके लिए सरकार पर दबाव डाला जाय कि जो ग्रामस्वराज्य-सभा गहौने में एक बार मायसभा, दो बार कार्य-समिति की बैठक करती हो, जिसमें नियमित ग्राम-कीप दरदा होना हो, सभी नियम सच-

सम्मत होते हों उस सभा को राज्य, प्रशासन, विकास तथा न्याय सम्बन्धी उचित अधिकार दिये जायें।

चौथी गोष्ठी

ग्रामस्वराज्य आन्दोलन

१. आन्दोलन को गति देने की दृष्टि से ये काम उठाये जायें -

(क) हर जिले में ग्रामस्वराज्य-समिति गठित की जाय।

(ख) राज्य में जो ग्रामस्वराज्य समिति गठिता हो। साथ ही वैचारिक भूमिका की पुष्टि की दृष्टि से राज्य-सर्वोदय-मण्डल भी रहना चाहिए।

(ग) प्रखण्ड-स्वराज्य-सभा के गठन के बार प्रखण्ड में ग्रामस्वराज्य के सारे कार्य उन्ही के द्वारा होने चाहिए। अगर पहिले से वहाँ कोई रचनात्मक सत्याकाम करती हो तो उसे अपना काम प्रखण्ड-स्वराज्य-सभा की सौा देना चाहिए।

(घ) प्रखण्ड-स्वराज्य-सभा के गठन में निर्धारित पद्धति का ध्यान रखना अनिवार्य है। जो काम किया जाय पक्का किया जाय; कच्चा काम उचित नहीं है। प्रखण्ड-स्वराज्य-सभा तथा उसकी कार्य-समिति की बैठकों में ऐसे सव्वों, शिवाकों, महिलाओं या उवनीकी जानकारों को आमन्त्रित करना चाहिए जिनका परामर्श उपयोगी हो।

२. कार्य :

प्रखण्ड-स्वराज्य-सभा के काम के लिए ग्रामस्वराज्य-सभाएँ अपने कीप से १ प्रतिगत में ताकि वह अपनी जिम्मेदारी निभा सके।

३. सीतसेवक :

गाँव तथा प्रखण्ड स्तर पर ऐसे लोगों का रहना आवश्यक है जो किसी प्रकार के घर से अलग रहकर काम कर सकें। जगह-जगह ऐसे लोक-सेवकों की इत्तारदी बननी चाहिए।

४. शिष्य-प्रशिक्षण :

(क) समारों के पदाधिकारियों तथा सामन्वित्सेना के सदस्यों के शिष्य-

—सैत्री से सामार

प्रशिक्षण की उत्तम आवश्यकता है। इसके लिए हर स्तर पर शिक्षित आयोजित किये जायें।

(ख) ग्राम-कर्मियों को साल में एक महीना आध्यात्मिक चिन्तन-मनन में लगाना चाहिए।

पंचवीं गोष्ठी

विकास और शोषण-मुक्ति

१. आरम्भ

बीच-बन्दूक के बिन्दुएँ, ग्रामकोष की दुष्खाल और ग्रामस्वराज्य-उपाय का गठन हो जाने पर विकास का काम शुरू हो जाना चाहिए।

२. विद्या :

समता और सम्मानपूर्ण आरम्भ-निर्भरता के लिए व्यक्ति, परिवार और गाँव सहकारी पुष्पायुक्त करें। जिसका देश हो कि हमारी संस्कृति का उत्तर प्रकट हो।

३. गाँव

(क) गाँव की सम्पूर्ण मनुष्य-शक्ति, मनु-शक्ति तथा अन्य साधनों का समन्वित उपयोग।

(ख) भूमि की चक्रवर्ती।

(ग) नसावन्दी।

४. शोषण-मुक्ति :

(क) सबको 'वास' की भूमि हो।

(ख) खेती के लिए बीचा-बन्दूक, सरकारी भूमि, तथा सीलिंग से विकसी भूमि का विनयन हो।

(ग) बँटाईदार को कानून के अनुसार हिस्सा प्राप्त हो।

(घ) मजदूर को म्वायमंगल मजदूरी मिले।

(ङ) कर्ज के लिए ग्रामकोष का संग्रह हो।

(च) सूद की उचित दर के लिए ग्रामस्वराज्य-समाज और महाशत्रुओं के बीच समझौता हो।

(छ) गाँव में 'गाँव का भण्डार' हो। इसके द्वारा ऋण-निर्मुक्त, आयतन-निर्मुक्त आदि किया जाय। इसी तरह पञ्चकार, प्रवण्ड, जिता एव रामस्वराज्य पर भी भण्डारों और दूरानों का संगठन हो।

(ज) ग्रामोद्योगों और बड़े उद्योगों के उत्तरासन-सैन्य अलग-अलग हों।

५. सभ्यता :

(क) विहास की वर्तमान पद्धति से साधनवर्तियों की ही लाभ-हृष्या है। उसे छोड़कर स्वाश्रयी नियोजन की पद्धति अग्रणी होगी। हर परिवार को पूरा रोजगार मिले, यह व्यवस्था करनी होगी। इस दृष्टि से तकनीक और पूँजी मिलनी चाहिए। विकास की सारी योजना में पहना स्थान गरीब का होना चाहिए।

(ख) उन्नत यंत्रों का स्वामित्व ग्राम-स्वराज्य-समाज प्रवण्डस्वराज्य-समाज आदि का होना चाहिए। सरकार को ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि गाँव-गाँव को ये उन्नत साधन मिल सकें।

(ग) विकास-योजना में क्षेत्रीय विप-मत्ता को नूर करने का भी प्रयत्न हो।

(घ) वस्त्र के लिए खादी का विकास हो। इसके लिए भिन्न-वस्त्र पर अकृष्य लगाया होगा। अतिरिक्त टैक्स लगाने की भी जरूरत हो सकती है। उन्नत चर्खे के लिए सरकार को पूँजी देनी चाहिए।

(ङ) गाँव की विकास की दुर्घटना भना जाय। कोशिश हो कि हर परिवार की आर्थिक स्थिति घाटे से निकलकर बचत की हो जाय। इसके लिए सरकार के क्षेत्र बढ़ाने होंगे।

६. पूँजी-निर्माण :

(क) ग्रामकोष में मनरेला जमा हो।

(ख) बेरोजगारों को काम देकर उनकी मजदूरी का एक अन्न ग्रामकोष में रखा जाय।

(ग) शोष-बोली-बोली बचत करें।

(घ) सबों द्वारा धर्मशक्ति की स्थूल पूँजी-निर्माण-जैसे कुँआ, बाहुर, तालाब आदि में लगाया जाय।

(ङ) महाशत्रुओं से उचित मूद पर कर्ज लिया जाय। इसी तरह सरकार, बैंक आदि से भी कर्ज लिया जाय। भ्रम से पूँजी बढ़ानी जाय और नकद पूँजी भी इकट्ठी की जाय।

७. शिक्षा :

(क) गाँव-स्वायत्तमन्त्र के लिए उत्तरादकनालीम की दिशा में पहल करें।

(ख) गाँव में तदर्थों के लिए 'पण्डे' घर का विद्यालय चलाया जाय।

(ग) ग्रामस्वराज्य के सम्बन्ध में विकास के लिए ग्रामस्वराज्य-समाजों का प्रशिक्षण हो। इन दृष्टि से शिक्षित किये जायें।

८. सरकार

हम अपने ऊपर भरोसा करें, सहायता सरकार से भी लें। जैसे-जैसे ग्रामस्वराज्य-समाज सक्रिय होती जायेंगी पंचायतों के काम घटते जायेंगे।

जपनी क्षेत्रों में समाएँ जगलो की रक्षा की भी जिम्मेदारी ले सकती हैं।

दुसरी तरह कर्मचारी और पटवारी आदि की उजाड़तियों का प्रतिकार करना होगा।

ग्राममता को दायन रायनीति और जातिवाद से भी अपने गाँव की रक्षा करनी होगी नहीं तो गाँव संगठित होकर अपनी समस्याओं को नहीं सुझना सकेगा।

९. विकास के संकेतन :

(क) ग्रामस्वराज्य-समाजों और प्रवण्डस्वराज्य-समाजों का सय-ठन आवश्यक है। उनके अन्त-गंत विभिन्न समितियाँ बनायी जा सकती हैं, जैसे पूँजी-निर्माण, इपि, उद्योग, शोषण-मुक्ति, स्वास्थ्य, शिक्षा, नसा-बन्दी, म्वाय आदि के लिए।

(ख) ग्रामस्वराज्य की दृष्टि से खादी-ग्रामोद्योग की संस्थाओं का प्रवण्ड-स्तर पर फौरन विकेन्द्रीकरण होना चाहिए।

(ग) ग्रामदानी गाँवों के आर्थिक एव तकनीकी विकास के लिए 'ग्रामस्वराज्य-विकास - नियम' जैसी संस्था का संगठन किया जाय।

अहिंसक क्रान्ति के मोर्चे से

परम पूज्य दादा,

सादर प्रणाम ! महिदी (सहरसा, बिहार) गाँव में प्रथम प्रयास ग्रामसभा की सक्रिय बनाने का रहा। रामपाला पर सत्याग्रह के ज़रिये जो लोग नज़दीक आते गये, उनके माध्यम से ग्रामसभा का काम चला। ग्रामसभा के ज़रिये बीघा-बट्टा के हिंसाघात के प्रमाणों का विवरण देखा।

मैं भूमिहीनों के टोले में प्रभु, सम्पन्न करते हुए उनको ग्रामसभा के साथ जोड़ने के प्रयत्न में लगती थी।

दल गरीबों के बीच सहजभाव से पूछा की बीघा-बट्टा रहते की स्थिति। छाया पड़ाने के लिए इंधन जल से छिपाकर खाना, मिट्टी के बर्तन में खाना पकाना, सूती वस्त्रों में छाया डालना, घुने या भिगोये घड़े, वसुधैव कुटुम्बकम् की दान, और गृह के आघार से शरीर-निर्वाह करना, अन्न का अभाव हुआ। मैंने और लक्ष्मी ने मिलकर मजदूरी से अन्न प्राप्त करने का प्रयास किया, लेकिन मजदूरी का काम जो आसानी से मिलता नहीं था, उसे लोग ही प्रेम से हमारे लिए अन्न जटा देते थे।

शोषण हमारे सुखी रहती थी। जितना भी प्रयत्न करे, हमारे शरीर के लिए उनको भांषा कुछ अधिक बरत, कुछ अधिक सामान लिखने-पढ़ने का रहता ही है। लेकिन अभी तक कोई छोटी चीज भी चोरी नहीं गयी थी। हमारी शोषण को बीजों की हिंसाघात से लोग अपनी जिम्मेदारी मानते थे। मैं विरहित थी। लेकिन एक दिन लक्ष्मी की गरम शाल, जो शोषण में रसी पर लटकी थी, दिखाई नहीं दी। सबर गाँव में फँस गयी। हम दोनों ने अपने सामान की गिनती की, परिश्रम कम करने की गुञ्जाइश उसमें भी नहीं। साक्षात्-सी तो हमारी शोषण में विशेष क्रोध रहता नहीं था, बड़ी से कुछ विशेष आवाज तो प्रयास-रूप में बच्चों को बत देते थे। पहलने के कपड़े हमारे पास

अव्यक्त भावनाएं जहर के गिने हुए थे। वे लोग जिन मने-फटे बिचड़े से कियो प्रकार तन डकते थे, ठाड़ी के दिनों में जो कपड़े महसूस करते थे, उनके लिए हमारे सुखी कपड़े भी आरक्षण का विषय था। टोले के लोग चोरी करने की संका हमारी घरवालों की और उसकी लड़की पर भी करते थे। मुझे दुःख होता था कि इन लोगों को बलक लग रहा है। इच्छाशक्ति की सहाह की कि उन टोले से निवारण हटाने से ही उससे स्व-तन्त्र समाज के लिए दिशा मिलेगी। मैं जाने लगी तो कुछ महिलाएँ आकर बड़ी गम्भीर मुद्रा में बहने लगी, "दीदी को शांत बल मन, अब कर जाई छितिन।" बात मेरे दिल को स्पर्श कर गयी। जिस घर में रही, उसके प्रति कुछ दूरीभाव निर्माण कर जा रही हूँ ऐसा लगा और एक प्रेरणा आयी कि जो दिन पहले कारी से दौरीना नाम की नमन बहन की तरफ से एक खादी की साड़ी आयी है व आठवण भी सोशलिज्म बहन का भेजा हुआ रखा है। वह कपड़ा अपनी घरवालों को देने का विचार था। उसे मैंने स्वीकार कर लाने को कहा। वह आयी, विष्णु-सहस्रनाम के पाठ का समय हो गया था। पाठ के बाद वह कपड़ा उसे पहनाया। बच्चों के-से चाव से उसने वह पहना। प्रसन्न हुई। उसके हाथ से सर्वोदय-पात्र रखता कर लक्ष्मी के हाथ से मुट्ठी पर अन्न डलवाया।

महिदी जेठ-जठिल गाँव में बड़े भूमिवालों से ग्रामसभा प्राप्त करना भी बड़ा प्रयत्न था। लेकिन भविष्य की भूमिगत से सहज सयोग जुटा रहा। १ ता० को ग्रामसमितिकी बैठक राजाबाद की उपस्थिति में हुई, दुबारा १६ ता० को ग्रामसमितिकी बैठक में गाँव के धनी-माली मुख्य लोग एकत्रित हुए थे। ग्राम-कोप इकट्ठा होने के लिए सर्वसम्मति से प्रस्ताव हुआ। मन में डेर के हिसाब से ग्रामकोप देने के लिए उत्प्रेरित लोगों

ने योग्यता की। वसुधैवकी के दिन रामपाला पर सुबह की प्रार्थना के बाद एक छोटे-से जुलूम में पनम्मा के भजन-कीर्तन के साथ बीघाघात के घर अन्न पहूँचाया गया। सब लोग अन्न-बननी टोकरीवाँ सिर पर डोकर बीघाघात के यहाँ भजन-कीर्तन के साथ पहुँचे। हृदय-नारायण में लक्ष्य लिया है, रोज रजिस्टर रेल लेते का। जिस दिन किसी का ग्राम-कोप जमा होता है, उसी दिन भोजन करते हैं, नहीं तो उपवास। जय तक २० मन के करीब अन्न इकट्ठा हो चुका है।

लक्ष्मी ने २०० सर्वोदय-पात्र रख-पाये थे, वे चालू रखने के लिए य नये सर्वोदय-पात्र रखवाने के लिए एक-एक नवमुक्त पत्रों से १५-२० घण्टों की जिम्मेदारी ले रहा है। लक्ष्मी-समस्या पर-पर की महिलाओं से सम्पर्क सत्याग्रह के माध्यम से कर रही हैं। ऐसी ही भव-मण्डली इकट्ठी होने से महिदी में हमारे निवास में आश्रम का रूप ले लिया है।

श्री नीलकण्ठ स्वामी (बनाटक) अपने प्रसन्न के काम में साधकपूर्वक लगे रहे। महिदी के काम में भी भावश्यकता-नुसार मदद पहुँचाते रहे। लेकिन वाकी खट्टों में कार्यकर्ता नियुक्त हो नहीं पाये, जो हुए भी वे साधक से रहे नहीं। श्री नारायण भाई (बनाटक के सेवक) के क्षेत्र में समर्थन एवं गाँवों में ग्राम-समितियों का गठन हो गया है। वे ९ ता० को अपनी व्यवधि पूरी होने पर बनाटक आस गये। इस क्षेत्र की जिम्मे-दारी अब म० प्र० के पुत्रारी राजकी को ही है।

स्वाधीन के क्षेत्र में तीन पत्राचारों में २० पत्र हैं। सब गाँवों में ग्रामसमितियों का पाठ हो गया। उनके ज़रिये सम्पर्क-पत्र भी लक्षण भरा लिये गये, बड़ी-बड़ी ग्रामसभा भी शुरू हुआ है। सम्पर्क-पत्रों के दौरान तथा श्री इच्छाराजभाई स्वामीजी के क्षेत्र के साक्षात् गाँव में निम्न-

आस्ट्रेलिया के मूल निवासियों में जागृति

प्रधान मन्त्री गार्डनर के दक्षिण में और अपने भारतीय महासागर के पूर्व की ओर आस्ट्रेलिया नामक महाद्वीप है जिसमें आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड दो देश शामिल हैं। इनमें आस्ट्रेलिया बड़ा है और उसकी आबादी लगभग सवा करोड़ है। यहाँ ध्वान्तगर्भ गोरों लोग हैं जो इतनी-इतना मू रोग के अल्प भागों के जाकर वहाँ बस गये हैं।

सन् १७७१ में एक अमेरिकन, बंस्टन कुछ नए इस देश का पता चलाना और तब से गोरों ने यहाँ बसना शुरू कर दिया। यहाँ के मूल निवासियों को सलावे, दबाने, मार डालने का भाव गोरों ने अपनाया जिससे वे अन्दर अगले गोरों को रान हलारों में आकर रहने लगे। इनकी सहायता लगभग डेढ़ लाख है। यह व्यापारक काले रंग के होते हैं और नीग्रो-जैसी आकृति होती है। बड़ा ज्ञाता है कि लगभग पच्चीस हजार वर्ष पहले, इनके पुत्रले अतिगो-पूर्वों अशिया से मुख्य के रास्ते से यहाँ पहुँचे। बाद में जब बर्ह-युग थापा तो इन भूखण्ड का बहुल-सा हिस्सा पानी में आ गया और आस्ट्रेलिया एशिया से अलग हो गया।

एयर कुछ अर्थ से इन मूल निवासियों में राजनीतिक जागृति पैदा हुई है। अतनुवर के सहोने में इनका एक जुगुप जिससे नामक नपरी में निवृत्ता। उनमें ही लोग थे जिनमें सतर बाने थे।

उनकी भांग थी कि हमारी जमीनें हमको मांग लो। आस्ट्रेलिया के गोरों बहा करते हैं कि मूल निवासी आस्ट्रेलिया की जमीन हैं, लेकिन अबीन उनको नहीं है। इतरण मूल निवासियों का हट होना स्वाभाविक है और उन्होंने 'लेक पैन्थर पार्टी' (बाकी चौथा पार्टी) बनायी है जिसके साथ मैठा है। उनका प्रमुख है एक २५ वर्षीय युवक, ईनिस् बाजर।

हान ही में इन मूल-निवासियों ने एक ऐलान किया कि हमारी माँग पूरी करो नहीं तो हमने एक 'मूल-मूची' बनायी है और उस पर रिज-रिज के नाम हैं उनको खत्म कर देंगे। इन नामों में दो हैं—धी पीटर हाउसन को आस्ट्रेलिया सरकार के बंधों हैं और मूल-निवासियों का विभाग रखते हैं, और धी नेविल ब्लैर जो आस्ट्रेलियन पार्लियामेंट के प्रथम मूल-निवासी सदस्य हैं। लेकिन व्यवहार से वह गोरों के रंग में रंग गये हैं और अपने मानव में बहुत अग्रिम हो चुके हैं।

आस्ट्रेलिया में कानो हाकिम छोरे-छोरे और पक्क रहें हैं। उसकी मांग बराबर के टुक और समानता की है। सिडनी, मेलबोर्न, ब्रिस्बेन और एडिलेड जैसे बड़े नगरों में वे अपने प्रदर्शन कर चुके हैं और अपने आन्दोलन को गतिमान हो दे रहे हैं।

आस्ट्रेलिया में तो इनको उगज्ज जमीन है कि जपान और भारत से भी

के लिए सहयोग में अलसभार्ड (उ० प्र०) अरुण विजयजी (बंगाल), प्रवीर उपाध्याय (म० प्र०) रहे। इन सभ के अति अर्थ सभों में भी स्वाभाविकी की तरह कोई सात्व्य से नाम करनेवाला होगा तो अग्रणी प्रसन्न का सुष्टि-कार्य प्राय समान्य होता।

मद्रिणी, ३०-१-७२
'मिनी' से छापावर

आपकी
सुगोषा

जाकर लोग करोड़ों की सहायता में वहाँ बस सकते हैं। ऐसी सहायता में वहाँ के मूल-निवासियों को उनके अधिकारों से बचित रखना गोभावनक नहीं है। आस्ट्रेलिया सरकार का बतौर है कि उनकी भाँगों को स्वीकार करे और उन्हें पूजने-पूजने का पूरा मौका दे। भारत सरकार की भी चाहिए कि राष्ट्र-मण्डल (बर्मन देय) की बैठक में इस सवाल को उठाने और आस्ट्रेलिया से अलिप्त करे कि न्याय की भावना को दुहराना नहीं है।

अमेरिका में शराब से हानि

समृद्ध राष्ट्र अमेरिका की सरकार ने हानि में एक रिपोर्ट प्रकाशित की है जिसमें बताया है कि शराब से वहाँ बड़े जनरल हानि हो रही है। यहाँ के लगभग एक करोड़ लोगों पर उसका मयातक अक्षर है और हर साल पन्द्रह सौ करोड़ डॉलर (लगभग प्यारह हजार करोड़ रुपये) इसमें नष्ट हो जाते हैं।

रिपोर्ट का कहना है कि यह "सब से ज्यादा दुःखान्त, निर्धनकारी और सहोणी बीमारी" है जिससे राष्ट्र को मुकसान पहुँच रहा है। परीश या प्रत्यक्ष रूप से करोड़ों लोगों में मरी, औरतों और बच्चों के जीवन को यह विनाश रही है। अमेरिका की अन्तर्देशी सयसन बरिग करोड़ है जिनमें सग करोड़ शराब पीनेवाले हैं। अगर बच्चों को छोड़ दें तो दसवा अर्ध यह निकलता है कि बालिग उमर के सभी लोग और बच-बे-नम सारे सुपुत्र हो जरूर ही इसका शोष करते हैं। इनमें भी ९६ लाख ऐसे हैं जो शराब के प्रथम मरीज हो गये हैं। शराब के मरने की बरह से हर साल २०००० मरते मीटर-सुपुत्राओं से हो जाते हैं।

अमेरिका में शराब की इस बजनी हुई विनाश-नीला से भारत सरकार और प्रादेशिक सरकारों को भी तरह लेना चाहिए।

पाठक-लेखक-प्रकाशक

विभिन्न राष्ट्रों के बीच सद्भावना बढ़ाने के अर्थ में उद्देश्य के अनुसार 'गुनेरने' (सद्वक्ता राष्ट्र तथा शोधात्मक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन) ने १९७२ के वर्ष को 'अन्तरराष्ट्रीय पुस्तक-वर्ष' के रूप में मनाने का निश्चय लिया है। इस प्रयोजन से अपने सदस्य राष्ट्रों से अपील की कि वे उपयुक्त मार्गक्रमों के साथ यह वर्ष मनावें, ताकि ऐसा वातावरण बन सके कि पश्चिम-ए-उत्तराधुनिकता के सौंदर्य, बढ़ने, निराने, अनुचित करने और प्रदर्शित करने में लोगों की दिलचस्पी बढ़े। पुस्तकों की अपनी विशाल दुनिया है, जो आज के इस विभट्टे विश्व में हर तरह से समृद्ध, सहृदयता और रसीली विचार प्रवाह है।

'अन्तरराष्ट्रीय पुस्तक-वर्ष' के निदर्शित में नयी दिशानि में आयोजित 'विश्व-पुस्तक-मेला' अन्तरराष्ट्रीय महत्त्व का एक डिगम का पहला बड़ा आयोजन है। शिक्षा एवं समाज-न्यायालय मंत्रालय के सहायक सचिव 'निखलत नुक दुस्त' (भारत) के 'केन्द्रीय सौध' पब्लिशर्स एवं बुक-डिपार्टमेंट अंतर्गतियों के सहयोग से इस पुस्तक-मेले का आयोजन किया है।

आज सत्तार में पढ़ने की सामग्री की बहुत जरूरत है। विश्व की आबादी के बहुत सारे हिस्से के लिए यह कहा जा सकता है कि यह पुस्तकों के अभाव में पीड़ित है। एक और तीव्र दुःखों के निवारण और उत्साहन में हुई दशकोंकी शक्ति से यह सम्भव हो गया है कि करोड़ों वर्षों में अज्ञेय किस्म की अधिकांशिक पुस्तकें बाजार में लायी या उन्हें और दूसरी और विकसनीय देश पुस्तकों की कमी से परेशान हैं, शिक्षा के अवसर बढ़ने के साथ-साथ यह वर्षों और तीव्र होती जा रही है।

प्रश्न है कि पुस्तकों का प्रकाशन की रूप धरने-पूने, परन्तु अन्तर्गत और उपयोगी पुस्तकें पाठकों तक कैसे पहुँचायी जायें? सबसे अधिक विस्तृत देशों में भी, जो लोग पढ़ना जानते हैं, उनका बहुत बड़ा हिस्सा अभी पुस्तकें नहीं पढ़ता या बहुत ही कम पढ़ता है।

मीदरलैण्ड में, जहाँ पढ़ाई बड़ी व्यापक है, १९६० में एक सर्वेक्षण किया गया था। उसके पता चलता कि जिन व्यक्तियों से भेंट की गयी, उनमें से ४० प्रतिशत ने यह कहा कि 'हमें पढ़ना अच्छा नहीं लगता'। प्रत्यक्ष में ४०० व्यक्तियों से भेंट की गयी, उनमें से १६० ने पढ़नेवाले थे। उनमें से ३१ ने तो यह कहा कि हमें पढ़ने में कमी भी दिलचस्पी नहीं थी, पर १२९ ने यह कहा कि हमारी पढ़ने की आवश्यकता छूट गयी है। यह ऐसी समस्या है कि जो बचक जीवन में ही पैदा होती है—छात्र ही से युवा वर्षों में—पढ़ने से इनकी पढ़ाई भूल जाने की सबसे अधिक सम्भावना है।

स्कूली-विद्या जितनी कम मिलती होती है, उतनी ही जल्दी यह सम्भावना छूटता है। सभी जगह विद्यार्थी प्रायः सबसे परिश्रम पाठक होते हैं। पर इसका यह अर्थ नहीं कि एक बार उनको पढ़ाई पूरी हो जाने पर भी अन्त में उनके अ-पठक हो जाने का कोई खतरा नहीं। ऐसे संकेत भी मिलते हैं कि उच्चपदस्थ लोग, जो विश्वविद्यालयों के रसायन भी हैं, मध्यम वर्ग के वसतिगृहों से कम पढ़ते हैं।

सर्वेक्षणों में जिन व्यक्तियों से भेंट की गयी, वे आमतौर से स्वीकार करते हैं कि पढ़ना 'अच्छी बात' है। पढ़ने से 'लाभ' है, पढ़ना 'बुरा' है, पर वे अपने-

आपकी इस आधार पर अंधाधुन मानते हैं, कभी वे अपने को शोधी भी कहते हैं—'कि हमारे पास समय नहीं, हमें दूसरे काम करने होते हैं, या हम दूसरे कामों को महत्त्व देते हैं। आज यह बात बहुत दुःखकर से ही बहता है कि पढ़ना 'ओरलों के लिए ठीक' है। पर जब भी यह भावना बड़ी व्यापक है कि पढ़ना 'दूसरे लोगों के लिए अच्छा' है, और दूसरे व्यञ्जना यह होती है कि छात्र ही से उन लोगों के लिए यह अच्छा है जिनके पास कोई और दायरे अच्छा काम करने के लिए नहीं है।

यहाँ हमने पाठकों की कुछ कठिनाइयाँ बता दी हैं। अब हम लेखकों की कठिनाइयों को समझें।

महादेवी घमा साहित्यिक दृष्टिकोण से है। यह मानती है कि 'प्रकाशक ही लेखक का उपयोग रेखम के शीर्षों को तरह करना चाहता है। नस, रेखम निकाल ही और उस शीर्षों को मार डालो; वह व्यापार करता ही है कि वह छलने के लिए या अपने के लिए।' '.....' यह जो आनन्दक प्रकाशकों का अनुकरण-यन है इसमें तो लेखक बिक जाता है। लेखक को इसके खिलाफ आवाज उठानी चाहिए।

सुमित्रानन्दन पन्त का कहना है कि 'बड़ी ही सरल स्थिति है भाई। मैं प्रकाशक होता तो क्या करता कुछ कह नहीं सकता। लेकिन जैसे देखो तो इसके बढ़कर व्यापक कुछ ही नहीं सकता कि बेचारे गरीब अन्धकार लेखक की मरम्मी का प्रयास इस तरह साम उठाये।' '.....' प्रकाशक तरह-तरह के संकलन करा लेता है और उसके पैर-माथी लाभ उठाने की योजना करता है। फिर हाथ उठाता है और उसके गानगीत ताल बढ़ता है। '.....' लेखक और प्रकाशक के मधे रिश्ते बनने चाहिए जिसका मूल आधार सदासत्यता हो।'

अनेक कुमार मानते हैं कि 'लेखक के साथ एक त्रासक-वृत्ति उभरी रहती है।

बहु भाग-वृत्ति से नहीं चल सकता। साम की वृत्ति व्यापारी के पास रहे, वही ठीक। लेखक को तो साम की बात सोचनी भी नहीं चाहिए। लेखक को घोषा खाने के लिए तैयार रहना चाहिए। '.....' लोगमउ के जरिये लेखक वहाँ पहुँच जाय जहाँ सब लोग उसके बारे में ठीक से जाने-समझे।'।

अब जरा प्रकाशक को समझिए।

दिनेशचन्द्र नये उभरते प्रकाशक हैं।

उनके अनुसार 'एकाएक पैसे और यात्रा की लागत तमाम तरह के गलत काम करवा रही है। लेखक और प्रकाशक के बीच जो भी समझौता होता है उसे पवित्र मानकर उसका यदि पालन किया जाय तो शसद ही किस बात की?'

एक लेखक को प्रतिष्ठित करने में प्रकाशक को कितनी भाग-दौड़ या आर्थिक शसदें उठानी पड़ती हैं, उसकी कितना सजवाने में कितना खर्च आता है, या कितनी बेइज्जती सहनी पड़ती है, इसका कोई भी अनुमान सपाटे बिना लेखक अपनी पुस्तक उठाकर घट से दूसरे को सौंप देना चाहता है और यदि वह पर प्रकाशक कुछ नगुनब करे तो वही बुरा बनता है। एक ही पुस्तक से सम्मानित नाट्यकार तीन विचारों बनाते हैं और उसे तेरह षण्ठ संकलन में देते हैं।'-

अब ये कुछ ऐसी कठिनायियाँ हैं जिनका सामना इस पुस्तक वर्ष में करना चाहिए। लेखक अच्छी पुस्तक तैयार करे, प्रकाशक उसको सुन्दर रूप दे और वह पुस्तक पाठक तक पहुँचा देने की व्यवस्था करे। आज तो कोई बड़ा लेखक है, उसका खूब नाम है तो उसकी पुस्तकों की कीमत भी नाम के अनुसार ही बढ़ा दो जाती है और फिर सामान्य पाठक को पुस्तक खरीदना भी बाह्यता, नहीं खरीद पाता। जब १९ मार्च को दिल्ली में राष्ट्रपति श्री बी० बी० गिरी ने १० दिवसीय विश्व पुस्तक-मेले का उद्घाटन किया तो उन्होंने यह बात बही कि श्रेष्ठ पुस्तकें कम कीमत पर पाठकों को उपलब्ध

हो सकें इसका उपाय किया जाना चाहिए।

भारत जैसे देश में पहला काम तो यह करना होगा कि लोगों में पढ़ने की आदत पैदा हो और, यह आदत तब पैदा होगी जब लोगों में नयी चीज सोलने, जानने की जिज्ञासा बढ़ेगी। जो सामाजिक कार्यकर्ता समाज में काम करते हैं उनका समर्थन जनता से है। वे जनता में पढ़ने की रीति पैदा करें और

उन तक उनके लागत पुस्तकों और पत्रिकाओं को पहुँचाने का वे प्रयत्न करें। दूसरा काम यह करना होगा कि जीवन की वास्तविकता से साहित्य को दूर न किया जाय, बल्कि उसके नजदीक लाया जाय। आज इसका ताल-मेल बँटता नजर नहीं आ रहा है। आता है इस वर्ष पाठक, प्रकाशक और लेखक जिनहन करेंगे और सभी एक-दूसरे के लिए सहायक बनने का प्रयत्न करेंगे।

नये प्रकाशन

रूपि विनोबा

लेखक—श्री श्रीमन्नारायण

श्री श्रीमन्नारायणजी पिछले चालीस वर्षों से पूरब विनोबाजी के सम्पर्क में रहे हैं। अनेक प्रवृत्तियों में उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करते रहे हैं। नेहरूजी तथा विनोबाजी का जब जब मिलन हुआ है, तब श्रीमन्जी ही साथ रहे हैं। ऐसे अनेक, बल्कि शतश प्रसंगों, विचारों की प्रसंगी इसमें मिलती है, जो अल्प मिलना कठिन है।

नयामिषाद्य मुखपृष्ठ, अनेक चित्र, बहिया छपाई।

मूल्य : साधारण संस्करण ६० ७-००

पुस्तकालय ,, ६० १२-००

गांधी : जैसा देखा-समझा

लेखक विनोबा

गांधीजी के विषय में विनोबाजी के विचारों की यह पुस्तक आबाल, बुद्ध सबके लिए उपयोगी और प्रेरक है। पढ़ने से टाएण बढ़ा कर दिया गया है और स्वयं विनोबाजी ने इसे देखकर अपनी स्वीकृति प्रदान की है।

मूल्य . ६० ३-००

नीति-निर्द्धार

एक अज्ञात व्यक्ति को पारन और प्रेरक रचना, जिसमें जीवन को उँचा उठाने, संभवय जीवन जीने के तरीके सूच हैं। एक-एक शब्द निर्द्धार के अल की तरह पीतल, स्वच्छ और सुगन्ध भरा हुआ।

मूल्य ६ ६० २-००

सर्वे सेवा संघ प्रकाशन

राजगण्ड, वाराणसी-१

तबों ठण्डा नहीं होने देंगे

'हमारे गांव के प्रधानजी ने एक लाख रुपये का भूदान बताया है। यह भूदान भूदानियों के लिये बना है। बिना भूदानों का लूट भूदानों भी आरंभ होना नहीं बन सकता।' गुणगण्ड का छोटा-सा किसान प्रयत्न बोध रहा था, 'भूदानों का भूदान विचार बहुत अच्छा लगा। मेरे पास एकड़ भूदान (२५ बोधा) पानी है, उससे मेरा भी जो काम नहीं चलता। मैं भूदान भी हो गया हूँ। आप मेरी यह संपूर्ण भूमि लिये लीजिए और लीजिए गरीबों का भूदान-भूदानों को दे लीजिए, देवीराम चमार यह रहा था। भूदानों जिन्हें भूदानों मन्त्री है उनके भूदान से ऐसी-ऐसी भूदानों को और भूदानों की भूदानों को भूदानों हैं कि भूदानों का भूदान किया जाय !

उत्तर प्रदेश के आगरा जिले के जगनैर प्रखण्ड में ता० ३ से ११ मार्च तक पुष्टि-अभियान चला। १९९७ में जगनैर का प्रखण्डदात हुआ था। उसके बाद वहाँ कोई कार्यकर्ता नहीं जा पाया। पुष्टि का कोई अनुभव न होने से पूर्व-सैन्यारी भी नहीं हो पायी थी। उत्तर प्रदेश के सारे प्रमुख कार्यकर्ता इस अभियान में आये, पुष्टि का अनुभव लें और अपने-अपने क्षेत्रों में इसी तरह का अभियान चलायें, ऐसी योजना बनी और प्रयत्न भी हुआ था। पर उत्तर प्रदेश सर्वोच्च मण्डल के अध्यक्ष स्वामी कृष्णानन्दजी के प्रयत्न के बावजूद भी पुष्टि के १०-१५ कार्यकर्ता उत्तर प्रदेश के २७ जिलों से आये थे।

सर्वे सेवा राण के अध्यक्ष दो दिन के लिए आये थे, परन्तु स्वास्थ्य कारणों से जाने से वे प्रम नहीं सके। गांधी स्मारक-निधि के मंत्री श्री देवेन्द्रभाई अन्त के चार दिन के लिए आये थे। गुजरात सर्वोच्च मण्डल के मंत्री दान्तिभाई साहू, आन्ध्र प्रदेश-सर्वोच्च मण्डल के मंत्री श्री चारी और उनके दो साथी, पंजाब से श्री यश-पाल सिंहल, डा.कुन्दराय बंग आदि बाहर

से आये थे। कुल ३०-३५ कार्यकर्ता ६ टोलियों में २७ गांवों में प्रम। इस अभियान की फलश्रुति निम्न प्रकार रही :

प्राप्त भूमि—४८ एकड़, वितरित भूमि ४६ एकड़, बाता ४१, बाताता ३४, ग्रामसभा ८, ग्राम शान्ति, सेवा-केन्द्र ७। यहाँ की भूमि मध्यम दर्जे की है। हर गांव में ऊजुर, काहन, जिनिये आदि जातिधियों में भूदान में बहुत सफल होने से ग्रामसभा का भूदान बहुत बज्जिन काम था। गांवों में बड़े-बड़े जमींदार गरीबों को बहुत तंग करते हैं। छोटी-सी बात पर भी उनका खून कर देते हैं। शासन, पुलिस में इनकी पकती है। अतः एक नही अनेक लूट करते पर भी सरकार इनका बाल बाला नहीं कर सकती। अतः एक बल पर समाज में इनका स्थान भी जैसा-कानैसा बना रहता है। पूर्व प्रजा इन्हे ही अपना प्रतिनिधि चुनने है, पदाधिकारी बनाये है। इस क्षेत्र में चरकी तथा मकान में सवने-बाने पधर की सवने हैं। अतः बेकारी की समस्या नहीं है पर शोषण बहुत होता है।

रिश्तों की हलगत गुलाबो से बदतर है। जहाँ देलकर विश्वास नहीं होता कि हम २०वीं सदी में हैं। पुष्टि तथा अज्ञान ने जयकर उनपर बन्ना किया हुआ है। लोग बहुत रूढ़िवादी हैं। इनकी अष्टी धारें तो हमसे अब तक रिती ने नहीं कही—'आज हमारे गांव से जाइये नहीं।' रिश्तों की सभा के बाद बहनें बहती और पकड़कर आग्रह से, प्यार से, बैठने के लिए मजबूर करती थी।

अभियान के बाद आगे का काम चसाने के लिए स्थानीय उत्साही लोगों की 'जगनैर प्रखण्ड ग्रामस्वराज्य समिति' बनायी गयी और पूरा समय देनेवाले एक कार्यकर्ता की इस काम के लिए नियुक्ति भी की गयी। इस अभियान के कारण भूदान के जवानों की तरह अनुभव हुआ बनी। तथा हुआ तथा ठण्डा न हो अतः जगनैर प्रखण्ड से सभी हुए

आन्दोलन के समाचार

मतदाता-शिक्षण

जमशेदपुर

जमशेदपुर, १० मार्च। सिंहभूम जिला सर्वोच्च मण्डल द्वारा विद्युत् विद्युत् विधानसभा के आम चुनाव के अवसर पर मतदाता-शिक्षण का कार्य हुआ। मण्डल के मंत्री श्री अग्रिक गरी, श्री कृष्णायजी, श्री श्री अजुलमानन्द साहू ने पूरा-पूराकर नगर एवं नगर के आस-पास के देहाती क्षेत्रों में सम्पन्न किया। मतदान के अवसर पर पोलिंग दलों पर पूरा-पूराकर शांति बनाये रखने तथा भोगस बोट न पड़े, इसकी निगरानी की गयी।

यहाँ दो दिनों का चुनाव सितकृत शांतिमय ढंग से सम्पन्न हुआ।

बालाघाट

जिला सर्वोच्च मण्डल बातापाट (म० प्र०) के अध्यक्ष ने सूचित किया है कि लीजो निर्विवाद क्षेत्र में ग्राम भूदान तथा नारायणजी निर्विवाद-क्षेत्र के ग्राम-भूदान फार्म में संपन्न काम का आयोजन किया गया।

दोनों संयुक्त मंच के आयोजन में कांग्रेस पार्टी के उम्मीदवार नहीं आये, जबकि स्वतंत्र व बिरोधी बलों के उम्मीदवारों ने भाग लेकर अपने-अपने कार्यक्रमों की जानकारी लोगों के सामने रखी। कार्यकर्ता उम्मीदवारों की अनुपस्थिति के कारण लोगों को आश्चर्य हुआ।

बालाघाट प्रखण्ड में ता० ३० अर्धत से ९ मई तक पुष्टि-अभियान लेने का निर्णय हुआ। इस तरह जय-शे-बन्दर आगरा जिले की पुष्टि करने का प्रयत्न जिला सर्वोच्च मण्डल करेगा। जगनैर के स्थानीय कार्यकर्ताओं ने व्यापकता दिया कि वे यहाँ का बचा हुआ पुष्टि का काम पूरा करेंगे और इस प्रकार तबों ठण्डा नहीं होने देंगे।

—सुपन बंग

हिमाचल

हिमाचल में सर्वोद्योग-विचार बायी दिशि से प्रकाशित होना प्रारंभ रहा है, इसमें भी वर्ष '६८ से, जब से गांधी अध्यक्ष केन्द्र हिस्से के संस्थापक में नियमित रूप से रविवाचक समाचारों का आयोजन शुरू हुआ है, सर्वोद्योग विचार का प्रवेश नगर के हृदयस्थली वहाँ में हुआ। तीन वर्ष के इस नियमित कार्यक्रम का यह परिणाम हुआ कि नगर के जागरूक नागरिकों के दिल में सर्वोद्योग विचार के प्रति आकर्षण और चिन्तन के पथप्रज्ञा इस विचार के प्रति सज्जता के साथ सहयोगी बनने की भावना पैदा हुई।

नगर के जागरूक नागरिकों ने यहाँ बोर्डर्स कॉलेज की स्थापना की है। बोर्डर्स कॉलेज की ओर से मर्यादा उद्योगिकारों तथा मजदूरताओं के लिए तय की गयी है। अन्तर्गत-विभाग की दृष्टि से पहली बार हिमाचल नगर में एक मोल जुलु ६ मार्च को निराला गया।

हिमाचल जिला सर्वोद्योग मण्डल (हिमाचल) के शासकपाल में १ मार्च को एनवायरा, ४ मार्च को सोपान, तथा ८ मार्च को सज्जता में सर्वोद्योग के पुनः-अभियान को लेकर सार्वजनिक सभाओं का आयोजन किया गया, जिनमें सर्वोद्योग दाना सपेनीयता, अन्तर्गत तथा, हस्तगत छात्र तथा हस्तगत ने अपने विचार दिये। इसके साथ ही उद्योगिकारों तथा मजदूरताओं को सेवा में प्रकाशित मर्यादा एवं सर्वाधिकों के लिए विभाग का कार्य विवेक में प्रकाशित हुआ।

लोकप्रिय दल महाराष्ट्र में

अजित भारत महिला लोचनारी दल कागधी २९ मार्च को मुंबई प्रदेश की मन्त्री याता सहायक हर माधोय मायक गरी से महाराष्ट्र में प्रवेश करेगा। एक आनवादी के अनुसार महाराष्ट्र सर्वोद्योग मण्डल द्वारा लोकप्रिय दल के शासक एवं याता के वहाँ पर ही व्यवस्था की लोचनी प्रारंभ कर दी गयी है।

आवाय विनोदा भावे की प्रेरणा से भारत में स्त्री-सज्जतागण के उद्देश्य से लक्षण बाद वर्ष पूर्व नन्दुरना याक (हरी) से उरत महिला लोक-याता का शुभारम्भ हुआ था।

मध्यप्रदेश में

१, ६०, ४७१ एकड़ भूदान-भूमि ५२, २२९ भूमिहीनों में वितरित

कोणाल, ११ मार्च: मध्यप्रदेश भूदान-यज्ञ-बोर्ड द्वारा प्रदेश में भूदान-आन्दोलन के अन्तर्गत प्राय ४०९,९५७ एकड़ भूमि में से अब तक १,९०,४०१ एकड़ भूमि ५२ में से ४० जिलों के ५२, २२९ भूमिहीन परिवारों में वितरित की जा चुकी है। सर्वाधिक भूदान-भूमि ४१, २८८ एकड़ १०,१९३ भूमिहीनों में भूदान जिले में वितरित हुई है। सीहोर, रायसेन और बलर ऐसे जिले हैं जहाँ अब तक कोई भूदान-भूमि वितरित नहीं हो सकी है।

अन्तर-प्रदेशीय तरुण-शान्ति-सेना-शिविर-मृत्सला

महाराष्ट्र की तरुण-शान्तिसेना ने इस वर्ष प्रोत्साहित अवकाश में नव-युवकों के लिए अन्तर-प्रदेशीय तरुण-शान्तिसेना शिविर-गुहना का अभियान आयोजन किया है। ये शिविर नागपुर में ४ से ११ मई, महारा (पुनिया) में ४ से ११ जून, तथा बीकानेर में १९ से २२ जून, १९७२ की होने। इन शिविरों में मुम्बई महाराष्ट्र, मैसूर, मद्रास, मध्य-प्रदेश और गुजरात के नवयुवक-युवतियाँ भाग लेंगी। ये युवक दंडा की सामूहिक सपहारों के निराकरण में युवकों के योगदान के अभाव १९७२ में मनाये जानेवाले तरुणराज के दीपमहोत्सव की योजना पर भी विचार करेंगे। विदेश वाचनारी एवं सभ्य के लिए सर्वोद्योग तरुण-शान्तिसेना-शिविर, पी० पी० (बर्ली) महाराष्ट्र को निष्ठा का सपहार है।

संयोजक-मण्डल का गठन

बटक, ११ मार्च: उत्तर प्रदेश सर्वोद्योग मण्डल ने कार्यकारिणी के रूप में एक सर्वोद्योग-मण्डल का गठन किया है। मण्डल में अध्यक्ष और मन्त्री बोर्ड नहीं है। समूचे उत्तर को चार क्षेत्रों में विभाजित किया गया है और प्रत्येक क्षेत्र की जिम्मेदारी क्रमशः श्री कृष्णासिंह, नरहरि स्वाइन, और प्रमानकुमार मोहंती को सौंपा गया है। श्री विनोद मोहंती कार्यलय संयोजक मन्त्रीनीय हुए हैं।

पदयात्रा

साला जिला (विहार) के जनाल-पुर प्रखण्ड से श्री दिनेशचन्द्रजी ने पदयात्रा भेजा है कि जनालपुर की १८ पचासों में १२५ मील की पदयात्रा के दरम्यान ३३ पहाड़ों पर सार्वजनिक सभाएँ हुईं। इस प्रखण्ड में धामदान-मुक्ति-कार्य की शीघ्रता की जा रही है।

कुलिया भगत

हरियाणा से पुनिया भगत निरले हैं—मैने ४ मई १९५९ में जब तक १८२७३ मील की पैदल यात्रा की और १४२८० रु० ४४ पैसे का साहित्य दिया है। ४८०९ गाँवों और स्कूलों में सर्वोद्योग का अन्वेषण पहुँचाना है।

यह सब काम भावा के आतीवार ने ही हुआ है, मेरे अन्दर कोई ऐसी ताकत नहीं थी। अब मैं मुम्बई चकरा, जो कि पत्राज में सबसे पहला नगर-दान या बड़ा कंपनी शिविर और शिविर सगाईगा।

मुंगेर

राष्ट्रियता महाराणा गांधी की पुनः-शिवि की स्मृति में बिना सर्वोद्योग मण्डल, मुंगेर तथा अजित भारतीय तरुण-शान्तिसेना, मुंगेर के समूहक शासकपाल से शान्ति दिवस मनाया गया। प्रशासकरी, सामूहिक सभाएँ, सामूहिक सभाएँ तथा सर्वोद्योग कार्यक्रम के साथ परमपूज्य बापू की धम्म-अभियान शिविर की गयी।

शान्ति-समाचार

अमेरिका

विद्यमान युद्ध और अमेरिकी शान्ति आन्दोलन के सम्बन्ध में ईंग्लैण्ड और अमेरिका में बहुत सारी रिपोर्टें छपी हैं।

२१ जनवरी को लन्दन के गाब्रियल ने, फाबर दक्षिण बेरीमान और दूसरे ७ लोगों पर जो राष्ट्रपति के सलाहकार डा० हेनरी मिशिनर को अपहरण करने और वाशिंगटन की सरकारी इमारत को यहीं पहुँचाने की आवश्यकता लागू करने के विचारों में मुकदमा चलाया जा रहा है, उस पर बड़ी आलोचना की। गाब्रियल ने निम्ना है कि 'राष्ट्रपति निम्न अमेरिजन शान्ति-आन्दोलन को सामोला करने में सफल हो गये हैं।

२५ जनवरी को 'लन्डन टाइम्स' ने- यह सूचना दी कि फाबर दक्षिण बेरीमान ने अपने समर्थकों को सम्बोधित किया है, जिसमें लिखा है कि 'हमारे लिए चिन्तित होने के बख्ते, हमारे मुकदमें से आन्दोलन को नया जीवन मिलना चाहिए।'

राष्ट्रपति निम्न को डर है कि शान्ति-आन्दोलन अमेरिका के भीतर और बाहर फिर बोलित हो उठेगा। यह सूचना पेरिस के इन्टरनेशनल हेराल्ड 'ट्रिब्यून' से मिली है। २६ के 'ट्रिब्यून' ने यह पता दिया कि अमेरिकी सरकार ने फ्रांसीसी सरकार से यह अनुरोध किया कि नर्वेजीय में ११ से १३ फरवरी तक युद्ध के विरोध में एक एम्बेस्सी बैठकवाली है, उस पर रोक लगायी जाय। फ्रांसीसी सरकार ने यह स्वीकार नहीं किया।

अमेरिका में एक कमिटी बनी है। यह कमिटी स्वयं रिटायर होनेवाले 'चार वेटरन' की, जो अपने पर नाश चलाया चाहते हैं, सहायता करती। इस कमिटी का नाम 'सेफ रिटर्न' है।

उत्तरी आयरलैण्ड में अत्याचार के विरुद्ध अमेरिका में प्रदर्शन

२४५० कार० आई के समर्थन से अमेरिका में बार रेडिक्लरली चींग ने कैंपो-लिक पीप कैंग्रेसिप की सहायता में, २६ जनवरी को न्यूयार्क सिटी के बी० ब्लो० ए० सी० कार्यालय में डिवेस्टिंग की। कार्यक्रम में फ्लेकार्ड्स लगे हुए थे जिन पर लिखा था, 'उत्तरी आयरलैण्ड से ब्रिटिश सेना निकालो', 'उत्तरी आयरलैण्ड में अत्याचार और रक्तपात खत्म हो' इत्यादि।

यूरोपियन फ्रांस में

स्विटजरलैण्ड में यात्रा उत्साहपूर्ण रही। यहाँ बने पालिगामेण्ट के सामने प्रदर्शन का कार्यक्रम रहा। करीब १०० फाई-बहाने ने इसमें भाग लिया। ३२ कि० मी० की दूरीया में ३५-४० फाई-बहाने शामिल हुए। स्विज में चुनाव, जिसेवा, बर्न, बियल, थोर एरिच में हुए- बँटके हुए। चुनाव और बिप्ल में टी० मी० इन्टरन्यू तथा जनत सहयोग में प्रेश का-केले हुई। माल व। राबेन्सम अपने डेप का रहा। यहाँ वीस हुए सभ्य गठी है, जिन स्थानीय सहयोग जन्मा मिला। फ्रांस के पहले बड़ा बन्धनसुग, जहाँ यूरोपियन कौन्सिल का मुख्य दफ्तर है, जहाँ कामसभा का कार्यक्रम रहा और कौन्सिल के अध्यक्ष ने बर्न के लिए कामकित किया। ६ फाई-बहाने यात्रा के लिए वहाँ से वेरिज लगे की, ५०० विस्फोटक से अधिक मात्रा में पैकेज लाए रहे। फ्रांस में ५ कार टेलीविजन इन्टरन्यू और दो बार रेडियो इन्टरन्यू तथा प्रेस-कामों से इन्टरन्यू हुआ। बाकी कच्छी रही।

—रामसहाय युरोपियन

पर-पत्र-पत्र का पता :

सर्वे सेवा सच, पत्रिका विभाग
राजघाट, धारापानी-१

तार : सर्वसेवा फोन : ६४२९९

संघाटक

रामसूक्ति

★

इस अंक में

एक पंर :	—समाचारकी	३९५
समाचार-लेखक की सूचिका	—विनोदा	३९६
मानव-विकास और शान्ति का	अधिकतम रूप	
—डा० भी दीक्षितसिंह घोषारी		३९७
भारत में गरीबी-११	—प्रभुतदती : श्री रामसूक्ति	३९८
बिहार प्रामाथराज्य सम्मेलन :	कुछ निष्कर्ष-२	४००
अधिक शान्ति के मोर्चे से	—सुधी सुधीवा	४०२
टायरी के पत्ते-श्री राहु		४०२
पाठन-लेखक-प्रकाशक		४०४
सवा टका नहीं होने देना	—श्रीमती सुमन शंभ	४०६
अन्य स्तम्भ		
आन्दोलन के समाचार	शान्ति-समाचार	

वार्षिक मुद्रक : १० रु० (संघेद कागज : ११ रु०, एक प्रति २२ पैसे), जिसेवा में २२ रु०; धा ३० तालिम मा ४ बासर। एक अंक का मूल्य २० पैसे। श्रीहनुमन्स मठ द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं यमुनहर प्रेश, धारापानी में मुद्रित

मेरे तालों की समाधि पर

—बेगम सूफिया कमाल

कट गयी पूस की रात शीत-ज्वर

घर रही ओस, मेरे तालों की समाधि पर ।

माँसों की बाँसों, बहनों की बाँसों, बहुनों की बाँसों के तारे
बननी घरती के लिए प्राण उन्हीने वारे,

नौ मास बट गये—तापे दूत से खिची माटी इस देश की
उर्वर हो, आमी है ते

मौसमी पूस, गध धान की, मीठी गुणहली पूस बागला देश में
मेरे बच्चे उठो मानेब से
सो गये हैं, अट्टा पककर । शीत, तोड़ंगी नहीं मीद उनकी

इसी माटी को चूसकर

चूना तुम्हें जो मेरे दुलारो ।

घास पर फिराते से हाथ

लगता है मानो अन्धकार

हाथ को पकड़कर तुमनीय कर रहे हो बात ।

मुस्कुराते हुए-ये हजार-हजार मुख -

“स्वाधीन किया है बागला देश को, हो नहीं रहा है माँ तुम्हें गर्वित मुख ?”

जो सिंह रूपानो । जो रे प्यारो । बागला माँ का आसन

किया तुम्हीं ने बात विश्व में अपना स्थापन

हृदय रगत मानिक से सज्जित कर लाल-लाल ।

युग युगान्त तक महाकाव्य

सद्दा-सद्दा देवेगा सादर, महाविषय का यह विश्वय—

मेरे तालो । तुम मृत्यु-नय ।

रचनाकाल : १७-१२-७१

—अनुवादक विष्णुकान्त शारदा

[बागला देश की प्रख्यात कवयित्री बेगम सूफिया कमाल की एक रचना, जो पाकिस्तानी मौजों के आत्मसमर्पण के एक दिन बाद लिखी गयी थी । यह इसे ‘धर्मयुग’ से सामार उद्युत कर रहे हैं ।]



दण्ड : १८, अंक : २७: ३

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

सर्वोदय

मिडिल-स्त्री मूलक आर्यावर्तीय प्रधान आदि-सक समाजित राजा अन्धकार-सो-सामाजिक-सो-सामाजिक

आपके पुत्र

‘कटुता कैसे मिटे ?’

डा० फरीदी के वक्तव्य की समीक्षा

‘मुदान-यत्र’ के ६ मार्च १९७२ के अंक में इस्लामी विरादरी (मुस्लिम मजलिस) के संस्थापक व नेता डाक्टर फरीदी का ‘रेडिप्लं’ अवधार से उपद्रव किया हुआ वक्तव्य छपा है।

इससे पहिले अखबारों में मुस्लिम मजलिस का वह प्रस्ताव भी छपा था जिसमें यह माँग की गयी थी कि मुसलमान विपक्ष कानून केवल बढ़ी लोग बनायें जिन्हें शरीयत आदि का ज्ञान हो। उनकी ये बातें उच्च न्यायाधीशों को दिसानी हैं जिनके द्वारा मुसलमानों में अलगाव का प्रचार करके उन्हें अन्य देशवासियों के साथ तुल-मिल कर रहने से रोका जाय।

हमारा दुःख विषय यह है कि कटुता में कटौत करने व फीजानेवाले कार्यों में यह एक प्रमुख कारण है।

डाक्टर फरीदी का कहना है कि ‘मह इतिहास के लेखकों का काम है कि वे बतायें कि इस नये राष्ट्र के जन्म में भारत का किताब हिस्सा क्या है और काला देश की स्थानीय जनता का किताब क्या है।’ आहिर है कि इतिहासकारों के नाम से डाक्टर फरीदी का इरादा यह है कि बांग्ला देश की आजादी, जहाँ के रहनेवालों की स्वतंत्रता की भूख, उनकी अदोबहूद व अर्धीय स्वाय एव वसिवात का फल नहीं है बल्कि भारत की विविधता की जालसाजी का परिणाम है।

संयुक्तियों के अतीत स्वाय व स्वतंत्रता को नजरअन्दाज करके स्वतंत्रता के लिए अदोबहूद करनेवाले भारत की स्वतंत्रता-संग्राम में बांगला देशवासियों की मदद की भारत की विविधता संग्रामा जितकुल बनत है।

डाक्टर साहब ने भी भुट्टो के हवाले से यह स्वीकार करते हुए कि भारत ने पाकिस्तान को जिसके दो है भारत से यह अपील की है कि वह पाकिस्तान के प्रति उदारता दिखाये।

हम नहीं मालूम कि डाक्टर साहब का इरादा किस बात में उदारता दिखाने की तरफ है, किन्तु भुट्टो सहज से उदारता की माँग इस माते में की है कि भारत सुरक्षित बिना शर्त पुनर्बन्धियों को छोड़ दे। इच्छा का तकादा तो यह है कि पाकिस्तान व उसके हमदर्दों की ओर से यह माँग तब की जाये जब पाकिस्तान शैतान हथियार व फौज के बल से जीते हुए कश्मीर के इलाके को खाली करके भारत से न लड़ने की सधि पर हस्ताक्षर करने को प्रारतुत हो जाये।

जो भी हो, यह तो मूर्खता की परा-काष्ठ होगी कि पाकिस्तान से हमेशा सद्भाव की बात करे, सद्भाव की ठेगारी के लिए बिदेयों से हथियार प्राप्त करने की कोशिश में लगा रहे और भारत उदारता दिखाते हुए अपने विपक्ष लड़ने के लिए एक लाख युद्धबन्धियों को बिना शर्त छोड़ दे।

किन्तु यदि उनका अभिप्राय यह है कि विभिन्न धर्मजातों के भारत में बचने के कारण भारत बहुराष्ट्रीय देश है तो क्या हम यह समझें कि डाक्टर साहब को राय में हिन्दू सम्प्रदायवादी सही बहते हैं कि यहाँ के मुसलमानों की राष्ट्रीयता भारतीय नहीं है ? आहिर है कि ये दोनों विचार-धाराएँ वास्तव में एक ही विचार-धारा के दो रूप हैं। सही बात यह है कि राष्ट्रीयता धर्म के आधार पर नहीं बनती।

बांगला देशवासियों तथा उनके मददगार भारतीयों की द्विराष्ट्रीय सिद्धान्त के विपक्ष धर्म-निरपेक्षता के सिद्धान्त ने ही सहयोग व मित्रता के सूत्र में बाधा और देख के लड़नेवालों में यह अस्मिन् व सहयोग प्रदान किया, जिससे बांगला देशवासियों का देश-प्रेम व कुसीली स्वतंत्र बांगला देश के रूप में इतनी सुगमता

व जीप्राता से यफ्त हुई। भारत, बांगला देश व पाकिस्तान का महासंघ—

एक प्रस्तावित महासंघ में डाक्टर फरीदी कश्मीर को भी शामिल करना चाहते हैं। न जाने जिस युक्ति के आधार पर डाक्टर साहब ने भारतीय प्राय वश्मीर को महासंघ में शामिल होने की बात कही। कश्मीर के दो-तिहाई से अधिक जनसंख्या के चुनाव में इस ऐलानिमा नारे पर चुने गये हैं कि वे भारत के साथ रहना चाहते हैं। किन्तु पश्चिमिस्तान, बलुचिस्तान आदि के महासंघ में शामिल करने की बात नहीं कही, जहाँ के चुने हुए सदस्य ऐलानिमा स्वायत्तता की माँग कर रहे हैं।

कहना न होगा कि इस तरह पाकिस्तान के मुँह में सुर मिलाकर बोलने से न कोई समस्या सुलभ होगी न नहुता पड़ेगी। बल्कि इन्हीं राज्यों के महासंघ पाकिस्तान ने भारत पर हीन सद्भाव घोषी है।

आहिर है कि डाक्टर फरीदी का विस्लेषण गलत है और उनके सुझावों को मानने से नहुता पटनी तो दूर रही, जट्टी बड़ेगी।

अन्त में हम डाक्टर फरीदी और उन जैसे विचारवालों से एक प्रार्थना करना चाहेंगे। उन्होंने भारतीय मुसलमानों का काफ़ी मुकाम कर दिया। अब यह उनपर रहम करें, उन्हें अलगाव का पाठ पढ़ाना बन्द करें जिसमें कि वे अन्य भारतीयों के साथ भारत-भूमि की मृत्ति में अधिकारपूर्ण तरीके पर खेले। इस प्रकार तरबरी के रास्ते पर अखबर होकर अपनी रक्षा या समृद्धि के लिए किसी सरकार के प्रदूषण न रहें बल्कि स्वेच्छा से भारतीय गणराज्य के बर्तमानों का पालन करें और अधिराज्य पूर्ण तरीके पर अन्य भारतीयों के साथ मिलकर भारतीय सुविधाओं का उपयोग करें और इस प्रकार भारत की हिन्दू-मुस्लिम बट्टा को निभूय करने में योग दें।

मुसादाबाद (२० प्र०) —जीबारा

मिट्टी का तेल

रस्ते पर गाड़ी पहुँची, सरो हुईं। बसबादलावा धोर-धोर से चिल्लाते सारा 'मिट्टी का तेल मँहवा हो गया'। सिक्की के पास बैठा एक अंधेड़ शमीण गाजर खा रहा था। बोला, 'बहने क्या देते तो गाजर का पँधा तेल के लिए बचा लेता। गाजर बिना ही खन भी जायगा, लेकिन राग की धर में एक डिबरी बिना कैसे चलेगा ?'

घर-गृहस्थी के सामान्य लोग बजट की धारीयियों की नहीं समझते। वे एक ही भाषा समझते हैं—जैब। हर चीज की चीनने की उनके पास एक ही तराजू हाँकी है—अपनी जेब। यही नहीं, समाज दुनिया में यही हल है। विदेशों में भी भूहूणियाँ देश के बजट को अपनी पाय और पीनी की ही नजर से देखती हैं। घर का खर्च न बढ़े तो बजट अच्छा, अगर बढ़ जाय तो बजट बुरा, बजट बनानेवाली सरकार बुरी, सरकार जिस पार्टी की है वह पार्टी बुरी।

विदेशों का कहना है कि इस मान विज्ञानी के लिए बजट बनाने का काम बेहद मुश्किल था। बर्गिना देश के सरगावों, बापना देश की लकाने, बर्गिना देश की सहायता, देना का बड़का हुका खर्च, पंचमपौय योजना, गवे राज्य, भारी-भरकम सरकार, धारीकी हटाको के विरोध नाइकम यदि सभी खर्च एक साथ था गवे। कामचनी बढ़ी नहीं, खर्च बेतहाशा बढ़ गया। धाटे का बजट बनाना पढ़ा जिते पूरा करने के लिए कर्ज लेना पड़या। विदेशी मदद माँगनी पड़ेगी, नोटें छापनी होगी। दूसरा उपाय क्या है ?

बजट और बजट, वे ही अबरदल भविष्यी सरकार के हाथ में होती हैं। बजट सामने से चार करती हैं, लेकिन बजट की शक्ति आदर-अदर काम करती है। देश एक धारी है जिसकी रग-रग में पूत पहुँचाने का काम बजट करता है। सुरक्षा, भोजन, शान, शिवा, स्वास्थ्य, कोई भीच ऐसी नहीं है जो बजट के प्रभाव से बाहर हो; यहाँ तक कि बजट में सरकार बिना धोर टैक्स की जो नीति अपनाती है उससे देश का भविष्य

तो स्थिर होता ही है, जनता का धरिण भी बनता-बिगड़ता है। कोटा, परमिट, मध्योप, सारसेन्व, धारि के वैदिक परिणामों की छान-बीन की जाय तो पता चलेगा कि सरकारी रीति-नीति ने बाजार धोर समाज के वैदिक मू्यों को बहाने-बहाने तक पहुँचा दिया है। यह कौन नहीं जानता कि धोरबाजार उतना ही अबरदल हो गया है जितना धुता बाजार है? एक धोर सरकार माने अधिधार बढ़ती है जो दूसरी धोर भोग उससे बचने के उपाय निकालते हैं। जानू बनानेवाले विरोध, धोर उनसे बचने के उपाय निकालनेवाले 'विरोध'।

बड़े जानकार लोगों ने सरकार की पीठ टोंपी है कि दुदनी बहिनार्यों के होने हुए भी उनसे अपनी योजना पर होनेवाला खर्च नहीं पटाया है। सरकार के विभाव धोर सरकार की योजना, दुनमें से विधी का खर्च पटा यही है, बड़ा है। बनना जरूरी था या नहीं, धरपर मतभेद ही सजा है, लेकिन क्या दूसर भी मतभेद है कि धारीकी मिट्टी चाहिए, बिनाधुता पट्टी चाहिए धोर हर मार्गिक को ईमान की रोटी धोर धुतन की बिन्दुगे बिन्दुगी चाहिए? लेकिन ये नाम ही नहीं पाते। न हो पाने का सबसे बड़ा कारण यह है कि सरकार स्वयं जिन निहित स्वायों को बनाते हैं, या जिन्हें वह धूर नहीं कर पाती, वे सरकार धोर समाज दोनों पर हलसे रहते हैं। जिस राखनीति से सरकार का जन्म होता है वह बहुत बड़े अंश में धोरबाजारी के पंघे से पतनी है।

सरकार बलाग चाहती है, न्याय चाहती है, लेकिन उही सरकार से निहित स्वायों को धोरण धोर संरक्षण भी मिलता है। जितना बड़ा विरोधभास है यह। सामान्य मनुय के लिए भगवान माया, सरकार माया, बाजार माया। दस माया के बीच रहकर यह सोचे कि कितना गाजर लायेगा और कितना मिट्टी का तेल जतायेगा। •

लोकनीति

विनोदा

पद्धिये नया संस्करण

सर्वे सेवा संघ प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी-१

अभ्यक्त ईश्वर को नमस्कार

—विनोद

सुशीला नैयर : बाबा, सब देवों को जिन्या गया नमस्कार केवल को पहुँचता है, तो क्या हम अत्यन्त ईश्वर को मानते हैं ? यदि वह अत्यन्त है, तो नमस्कार किये करते हैं ? यदि हम भी वही हैं तो क्या हम अपने आपको नमस्कार करते हैं ?

बाबा : आपही माने, आप ही बनाये, आप ही माने,

कहत नामदेव पू मेरा छक्कुर !

सब वही करता है और फिर भी नामदेव कहता है 'तू मेरा छक्कुर ?' जैसे समुद्र में तरंग उठती है, गिरती है जैसे परमात्मा में हम सब तरंग हैं। बाबा उठा, ६० साल तक ऊपर उठा—वह तरंग ऊपर उठी और फिर नीचे गिर गयी। दूसरा कोई १०० साल तक ऊपर उठा और नीचे गिरा। कोई संकल्प छोटा, कोई बड़ा। सब उठ कर नीचे गिरते हैं, एक ही समुद्र में। जहाँ में (समुद्र में) यह भजन, कीर्तन, प्रार्थना करते हैं। नमस्कार करते हैं। हम क्या करते हैं ? हम अपने को ही खिलते हैं और फिर हम ही डाक्टर के पास जाते हैं और हम ही कहते हैं कि हम बीमार हैं। डाक्टर जितना हमारी बीमारी से अलग है, उतने ही हम को उठ बीमारी से अलग है। जैसे चरले से हम अलग हैं—जो दुखते कपने हम ही भिजते हैं। और है सब हम ही हय।

सुशीला नैयर : तो नमस्कार किये करते हैं ?

बाबा : एतनाय महाराज में उरमा ही है—'उबने हातीन पदापी'। जाये हाती देता कौण देता कौण देता। तैसी एकारमता धर्मगुर्वा'। हमने आपको दिया तो क्या ? एक हमने दूसरे हाथ को दिया।

सुशीला नैयर : लेकिन उसमें एक तरफ आप जैसे अध्यात्म के पर्वत, दूसरी तरफ हमारे जैसे मामूली लोग, फर्क तो है। देनेवाले आप, लेनेवाले हम।

बाबा : (हँसते हुए) हमने जो दिया वह अगर आपने लिया तो आप हमारे जैसे हो गये। लेनेवाला बैसा हो जाता है।

सुशीला नैयर : दुखी जल्दी क्यों होता है ?

बाबा : जानी को जो हासिल होता है वह थकानाये को भी हासिल होता है। उसके लिए नामदेव महाराज ने उपमा दी। एक ब्राह्मी पठारपुर जा रहा था। उसके पीछे-पीछे एक बध्ना भी चलने लगा। तो अखबारों के साथ बध्ना भी पठारपुर पहुँच गया।

'गरीबी हटाओ' के लिए क्या करें ?

सुशीला नैयर : देहली में ८-९ अरबों को गोष्ठी हो रही है, "गरीबी हटाओ" रत विषय पर। आपका क्या विचार है ?

बाबा : गरीबी हटाने के लिए नम्बर एक चाहिए ब्रह्मचर्य; नम्बर दो, धर्मनिष्ठा; नम्बर तीन, दानम्; नम्बर चार, मिठाई में सुधार। सब लोग निश्चय करें—बूँटें भी—कि कब-से-कब एक बध्ना धर्म किये बिना साना नहीं। सफाई का काम करें, शान्ति लयाने का। ऐसा होगा तो भारत में एकदम फरक पड़ेगा। इसका नाम है धर्मनिष्ठा। ब्रह्मचर्य के बिना चलेगा नहीं। बिहार में हमने मृत-आन्दोलन बलाया। १ लाख एरर बनीन बँटी। आधा-आधा एरर प्रति व्यक्ति। उनकी आवासी १० साल में बंद आयेगी। तो यह अनौन रूप पड़ेगी। इसलिए ब्रह्मचर्य आवश्यक है। फिर धर्मनिष्ठा ही।

बगीर धर्म नहीं करेंगे तो गरीबों को ही धर्म करना पड़ेगा। तो वे धर्म खालते हैं। बगीर अगर धर्म करेंगे तो उनको बुद्धि भी धर्म के साथ आयेगी। तो अच्छा होगा। जिस दिन साया उस दिन दान देना चाहिए। जैसे भोगधाया सतत चलती है, वैसे दानधारा सतत चलनी चाहिए।

बंगाल की यात्रा में एक दिन रास्ते में देखा, कुछ मजदूर काम कर रहे हैं। तो मैंने भी यात्रा रोककर उनके साथ कुछ देर काम किया। एक मजदूर ने अपने सड़की को मेरे सामने खड़ा किया और कहा, "अपना पेट काटकर मैंने इसे खिलाया, जानीम दी; लेकिन इसे नोकरी नहीं मिली। यही काम उसे करना पड़ता है। तालीम मिली तो क्या काम हुआ ? तालीम, नोकरी सब चाहते हैं, यह नहीं मिल सकती। उस वाले तरीर-परिधम को निष्ठा आवश्यक है। सकेत के तीर पर हर व्यक्ति धर्म करे। बीच के जमाने में जो तप हो गये, उन्होंने तरीर-परिधम किया। कोई सतत तरीर-परिधम के बिना नहीं रहा। कबोर बुलाया था, गोरा कुम्हार मटके बनाता था। मानवने दवाई था।

बकीत, डाक्टर, सब के लिए यह लागू है। धर्मोऽय सार्वबालिकः। यह धर्म सब वर्गों को लागू है। धर्मनिष्ठा एक धर्म है। विज्ञान खेती करता है, लेकिन उसे भी कर्तुणा कि तुम एक बध्ना सफाई करो। जैसे गांधीजी ने सबको चरला बालने के लिए कहा था—वैसा ही यह तरीर-परिधम का कार्य भी है।

(सुशीला नैयर तथा सुधी धर्मि-नासा दीदी की विनोदवाणी से हुई चर्चा)

सूक्ष्म प्रवेश की फलश्रुति

धीमन्वी : आप के सूक्ष्म प्रवेश की फलश्रुति क्या ?

बाबा : 'फलश्रुति यही है कि दिन-ब-दिन बाबा का वासव बढ़ रहा है। जैसे बाबा पहले से आसली ही है। लोग कहते हैं कि बाबा ब्रह्मचारी है।

सैनिक के कारण नहीं जानते हैं। कारण यही है कि बाबा आनंदी हैं। कुछ कोसने के लिए पदबंध करना पड़ता है। बिचो को पीटना हो तो हाथ उठाना पड़ता है। आनंदी होना बितना सरल है, कुछ भी नहीं करना।

प्रश्नान्तो : देश की वर्तमान स्थिति के बारे में आप क्या सोचते हैं ?

बाबा : अभी तो हमने इस विषय पर विचार करना बन्द किया है। यह सोच दिया है भगवान पर। सैनिक एतना है कि सरकार पढ़ना बन्द नहीं किया, इसलिए वहाँ-वहाँ क्या-क्या चला है, उसकी बोझी जानकारी नहीं है। मुख्य तबाल है सोश-सैनिक बनाने का। बहालत प्रसिद्ध है, "डेट गवर्नमेंट एन टू ब्रेस्ट द्विन गवर्नमेंट ए लीस्ट" (बहु सरकार उत्तम, जो कम-से-कम हूँदत चलानी है।) १२-२-७२

आन्दोलन का भविष्य

रामचन्द्र राठी . आपने कई बार जाहिर किया है कि विनोबा अब नहीं है। उसके बाद आन्दोलन भी स्थिति क्या होगी, यह आप देखना चाहते हैं। दो-बाईं वालों के साथ अपने को करीब-करीब लग स्थिति में रख भी रहे हैं। इन दिनों के साथ के मुख्य दर्शन के आन्दोलन का भविष्य आपकी कैसा प्रतीत होता है ?

बाबा : "आन्दोलन का भविष्य अपर्यत उग्ररक्त है। इसलिए नहीं कि एक बाँधकता दुःखान है, और निरंतर है—उनमें तो जो गुण हो सकते हैं, वे हैं और शीघ्र भी जो हो सकते हैं वे हैं—इसका भविष्य इसलिए उग्ररक्त है कि भारत को इसके बिना पार नहीं है। भारत को इसी अपर्यत जरूरत है। 'एतिए हमारै हाथ से यह काम नहीं होगा तो दुपारों के हाथ से होगा, सैनिक होगा जरूर।'"

व्यक्तिगत चर्चा, परमार, पार्थ

ग्रामस्वराज्य में मनुष्य की प्रतिष्ठा हो

—दादा धर्माधिकारी

[प्रथम विहार ग्रामस्वराज्य सम्मेलन में दादा धर्माधिकारी के सम्मेलन के दूसरे दिन सम्मेलन को चर्चा सुनने के बाद ३५-२-७२ को भी भाषण किया था उसे हम यहाँ दे रहे हैं। दादा ने इस भाषण में ग्रामस्वराज्य का पंचगोल बताया है जिसे एक-एक ग्रामस्वराज्य सभा में लागू करना चाहिए और ग्रामस्वराज्य सभाओं को बैठक में इस पर चर्चा करने चाहिए, चिन्तन करना चाहिए। १०]

जोर नियम पर नहीं, मनुष्य पर

मेरा निवेदन आपके यह है कि हमेशा तबका काम नहीं देगा। जिसे 'ब्लू प्रिन्ट' कहते हैं यह सारी योजना पूरी बना लो जाय तो होना यह है कि योजना एक तरफ रह जाती है और जीवन दूसरी तरफ चला जाता है। पहले तय कर लीजिए कि हमको पहुँचना कहां है। कौन को इतनी साबित होनी चाहिए कि वह सिविल को चोरकर भी देस सके, और बंदों में जिनकी ताबड़ हो उतना हम चलें। उन तरफ को हम चलेंगे जिस तरफ को हम जाना है। वही ऐसा न हो कि सिविल के नियम व्यादा कटे हो जायें। ग्रामसभा में उठना नियम नहीं माना जाना चाहिए बितना ईतर। ग्रामसभा एक मत से कोई गलत निर्णय करे, और वह निर्णय अगर जीवन के खिलाफ है, यदि उसमें जीवन का विषाद नहीं होता है—जीवन के विषाद से मतलब है मनुष्य का मनुष्य के साथ रहना—इस सान को कोई ग्रामसभा सर्वसम्मति से भी तोड़ती है, तो वह सभा की सर्वसत्ता बहलती है, वह हुसमाशाही बहलती है। राजनैतिक पार्टी भी भी कोई व्यक्ति सर्वसम्मति से चुन लिया जाना है तो वह है पंचाधिकारी। यह आप निर्णय कीजिए, आपका यह भविष्यकार है। सैनिक सर्वसम्मति से कोई ऐसा व्यक्ति चुन लिया जायता है जो अग्रगण्यता की मानता है, फिर क्या होगा ? इसे आगे सोचना है। सर्वसम्मति से कोई ऐसा व्यक्ति चुन लिया जायता है जो अपनी स्त्री को पीटा है, तो फिर क्या ? मनुष्य और मनुष्य के सम्बन्ध में

जहाँ पर बाधा पहुँचती है, उदाहरत पहुँचती है वहाँ ग्रामसभा को निवेक करना होगा।

आप ग्रामसभा में सैनिकों की उपस्थिति पाँच प्रतिशत रखें, एक प्रतिशत रखें, या शून्य प्रतिशत रखें, यह आपके परिस्थिति पर निर्भर है। सैनिक गाँव में स्त्री की उतनी ही उग्ररक्त है जितनी पुण्य की है। यह तो सत्य आरंभ करना होगा, यह मानना होगा कि स्त्री की भूमिका गौण नहीं होगी। गाँव में स्त्री पदों में नहीं रहेगी। गाँव में स्त्री बिचो प्रथा से अगर अग्रमानित होती है तो ऐसी प्रथा गाँव में नहीं चलनी चाहिए। ऐसे सरकारी या और प्रथाओं का अन्त होना चाहिए। एक गाँव में भी गया था। एक आरम्भ पर चोटे के अन्तर्गत कर आरंभ लगाया गया था। ग्रामसभा ने यह तय किया कि जूते में पागो डालकर उसको पिलाया जाय। यह एण्ड देना नहीं हुआ, यह तो मनुष्य का अपमान हुआ। अग्ररत्नी को आग दहिये कर सकते हैं, अग्रमानित नहीं कर सकते। यह आपकी सोचना होगा। ये कुछ मजबूत हैं चारित्र्य की, जितमें मनुष्य मनुष्य के साथ रह सकता है।

इस सर्वसम्मति पर आप सोचिए। आपके सभाओं में जोर नियम पर नहीं, मनुष्य पर होगा। मनुष्य मुख्य होगा, नियम गौण। और कौन-सा मनुष्य ? जो अन्तिम है, जो अखिरी है। जयवा पञ्च-पात्र हमारे मन में होना चाहिए। अखिरी मनुष्य का पंचपात्री भगवान है, वह तीन-कण्ड है। अखिरी मनुष्य का पंचपात्री कोई पंचपात्र नहीं। इस सर्वसम्मति को हमने

दान लिया। बहुत शासन की बरामदों पर थाये। श्रेणी पुरुष की बरामदों पर थाये और आज की दृष्टि है, दीन है परिवर्तित है वह जो सबसे धनवान है उसको बरामदों पर लाये। शाहर हुजारा तकके लिए है, प्रेम सबसे लिए है, लेकिन पदापात उसके लिए है जो आज तक कल्याण रहता रहा है। इसके हमको हिचबना नहीं चाहिए।

आन्दोलन जड़ क्यों नहीं पकड़ता ?

दुसरे आचार्यजी (रामजी जी)

बहुते से कि करें क्या ? रिश तरह हो ? यह आन्दोलन जड़ पकड़ क्यों नहीं रहा है ? यह जड़ इसलिए नहीं पकड़ रहा है कि यह कहता है कि मनुष्य मात्र हमारे लिए समान है। मनुष्य मात्र हमारे लिए समान है, यह जितना सही है उतना ही यह भी होना चाहिए कि इन मनुष्यों में जो अब तक मनुष्य नहीं बन पाया है उसके लिए पदापात हो। मनुष्यों के समाज में उसे वही स्थान हो नहीं।

सर्वस्वमत्ति में विवेक

सर्वस्वमत्ति का अर्थ सध्या का दबाव नहीं मत का दबाव। मत और संख्या में फर्क है। मत होता है हृदय में, बुद्धि और दिमाग में, संख्या होती है हाथ में। सर्वस्वमत्ति का मतलब यह नहीं है कि मुद्दी-भर आदमियों को बीटो का अधिका-र दिया जाय। एक आदमी विगाड़ सकता है किसी कारण से और कोई कारण मझे तो संस्कारवश। अगर प्राम-ध्या में बैरकर कोई कहे कि क्यूँ तो मन्दिरों में आने देंगे तो नरक में जायेंगे। तो क्या आप उसको बीटो का अधिकार देते ? सारा का सारा शव एक मत कह रहा है और एक आदमी नहीं कह रहा है। एकको सोचना होगा। इसमें से रास्ता खोजेंगे। रागा बग-बगवा नहीं है किशो, आज ऐसे विभाजन में, ऐसे जगल में कदम रख रहे हैं जहाँ पगबिड्या नहीं है।

नया इतिहास कौन बनायेगा ?

: आज तक इतिहास बनाया किसी

राजा ने, किसी योर गुण ने, किसी सेना ने, किसी अवतार ने, किसी सन्त ने, किसी महात्मा ने, लेकिन अब इतिहास बनायेगा कौन ? जिसके हाथ में कुदाली है, कुम्हाड़ी है, वह इतिहास बनायेगा। अब तलवार से इतिहास नहीं लिखा जायेगा। वह इतिहास बनाने का योरन जिसे है उसके लिए कोई रास्ता नहीं है। नया रास्ता आपकी बनाना होगा। इसलिए मैंने आपसे कहा कि आपके सामने जो सिविल है, शिक्षा है उसमें आप रास्ता बनायें। रास्ता बनाने की जितनी ताकत आपमें होगी, आपके बदनो में जितनी ताकत होगी उतना आप आगे चलते जायेंगे।

ग्रामस्थानिय पर पंचमील

आप रोजिये न, जितने क्रांतिकारी हुए हैं जिन्होंने नवरो बनाये ? नासल ने तो बीई लक्ष्मी बनाया नहीं। लेकिन ने बनाया, माथो ने बनाया, टोरो ने बनाया। नवरा एक बना, जीवन दूसरी तरफ गया। इतना ही हमको देखना है कि इनसान इनसान के नरवीक आये। आज इनसान इनसान के नरवीक नहीं है। इसके अभाव में ग्रामस्थानों में इसका एक पक्षीत होगा, मैंने इसे दसवा पक्षीत कहा है। पहली चीज, ईमान होना चाहिए—प्रायश्चित्त। ईमान का मतलब, आपके बारे में लोग यह कह सकते हैं कि आप बेवकूफ हैं लेकिन लोग यह कभी नहीं कहेंगे कि आप बेईमान हैं। किसी ने कहा था न कि अगर हम अपनी सारी शर्तें पूरी करेंगे तो उनमें से एक नैतिक दबाव पैदा होगा। लेकिन नैतिक दबाव पैदा करने के लिए शर्तें पूरी करने से कोई दबाव पैदा नहीं होगा। जो आप करते हैं, वह दबाव पैदा करने के लिए नहीं। अपनी परछाई के तिर पर जो पैर रखना चाहता है, छाया आगे-आगे जाती है, वह पीछे-पीछे जाता है। जो मुँह फेर लेता है, परछाई उसका पीछा करती है। प्रभाव के पीछे जो दौड़ेगा, परछाई भी तरह प्रभाव आगे-आगे भायेगा, प्रभाव की तरह से जो मुँह

फेर लेगा, प्रभाव उसके पीछे-पीछे आयेगा। तो चािरिय अगर दबाव के लिए है, दबाव रह जाता है, उसमें से चािरिय निबन जाता है, उसमें किसी प्रकार की सारिवक्ता नहीं रहती। इसलिए दबाव होता है तो ईमान का।

आपकी ग्रामस्था में पहली चीज यह हो कि आपकी ग्रामस्था में जितने मेहनत करनेवाले हैं वे सबके-सब अपना काम ईमान से करें—कम-से-कम ग्रामस्था के पदाधिकारी और सदस्य। आज तो उस्ता है न ? सादगी जितने ऊंचे पद पर होगा, वह उजता बन काम करेगा, वह आराम उतना ही उगादा करेगा। आज ऐसा है न ? अब इसको उलटना है। जो जितने ऊंचे पद पर होगा वह उतने आराम कम करेगा, काम ज्यादा करेगा, दाम बिकतुल नहीं लेगा। यह श्वकट प्रयास हो गया। इसके अनुसरत को बरत देना होगा। इस अनुसरत को कौन बदलेगा ? एक बार मजदूरों से मैंने कहा था कि आपका यूनियन तब तक सफल नहीं होगा, जब तक यूनियन यह नहीं कर सके कि जो मजदूर अपना काम ईमान से नहीं करता है, उसको यह हटा दे। जितनी मजदूर के यूनियन में यह ताकत नहीं है। आपका पदाधिकारी पाहो पार्टी का हो, या न हो, लेकिन उसमें ईमान होना चाहिए। अगर वह पार्टी का है और ईमानदार है तो वह बहू पार्टी की बात नहीं लायेगा। उस मर्थादा का धामन करेगा। अगर ईमान नहीं है तो प्रकट रूप से नहीं, गुप्त रूप से, अन्दर-अन्दर पार्टी का पक्षीत आपकी सभा में बिदे बिना नहीं रहेगा। इसे हकरो सम्भला है। क्या इसका भी निबन बनाया जा सकता है ? दसवा कोई शास्त्र बनाया जा सकता है ? हम से जो जीवन में से अपने आप वहाँ तक पहुँचेंगे।

दूसरी चीज कनुमासन-वहित संयम। कायू कनुमासन का नहीं, संयम का। नियम से नहीं संयम से हम अपने

आपको काम में करेंगे। आप रामस्वराज्य की बात कर रहे हैं न। तो राज्य की भी हुकूमत नहीं, ग्राम की भी हुकूमत नहीं, ग्राम का स्वयंशासन। जो सदस्य हैं वे भी स्वयंशासित होंगे। आप यह न समझिये कि मैं यह अध्यात्म की, नीति की या कोई जैसी बात कर रहा हूँ, बल्कि कोई सगठन इसके बिना चल नहीं सकता। तो अपने आप पर जबरन करने की ताकत होनी चाहिए। एक सदस्य में यह अनुशासन है, यह संयम है।

तोसारा निर्वेकता। आप अवश्ययोग करिये, मीठा बाने पर और कोई कड़ा कदम उठाना हो तो उठाइये, लेकिन आपका जो प्रतिपत्नी है, उसके मन में एक बात होनी चाहिए। यह आदमी सब कुछ कर सकता है, डरा नहीं सकता। यह निर्वेकता है। जहाँ वीरता होती है वहाँ निर्वेकता होती है। महाराष्ट्र में बहुत बड़ा एक समाचार पत्र चलता है। बहुत दिन हुए, उसने तिनक और गांधी की तुलना की। उसने कहा, प्रतिपत्नी तिनक से डरता है, गांधी से डरता नहीं है। कल वायसराय पर अगर मुनीबंन वा आप, तो वह गांधी की गोद में सिर रखकर बैठके सो सकता है। इसलिए गांधी तिनक से बड़ा देश-भक्त है। अब यह तिनक का वर्णन उनके भक्त वा दिया हुआ है, लेकिन इसमें तिनक की निन्दा भी। वायसराय यह जानता था कि यह आदमी जान की बाजी लगाकर भी वायसराय के नाते मुझे यहाँ नहीं रहने देगा। लेकिन यह भी जानना था कि उसकी गोद में सिर रखकर भी जाऊँगा तो पहले उसकी पान जायेगी, बाद में मेरी जान जायेगी। यह प्रतिपत्नी में विश्वास है। प्रतिपत्नी के मन में हमारी सम्झाई का विश्वास होना चाहिए।

आपके काम में जितनी पोल होगी, उतना शोषण भी होगा। तो, दोस्ती, ऐसी समझों में जहाँ आप बँटते हैं, बड़ा-बड़ाकर हो जाता है तो अपनी बर्तियों को बड़ा-बड़ाकर कहिए, जो आप-

नहीं कर पाये उसकी बड़ा-बड़ाकर और बड़ा-बड़ाकर उसको नहीं कहिए, जो आप थोड़ा कर पाये है। बाहर की समझों में कोई कहता है कि यह ग्लास आधा साती है वो आप कहिए आधा भरा है। यह आप बाहर की समझों में कह सकते हैं, उसमें भी शूट नहीं। इसमें से निर्वेकता पैदा होती है, और इस निर्वेकता में से प्रतिपत्नी की शक्ति जायेगी।

चौथी चीज, निराकरण। हम गाँव में आतंक नहीं पैदा होने देंगे। ग्रामसभा का आतंक नहीं, ग्रामसभा का आतंक, लेहारा। अगर ग्राम की जनता आतंकित हो जायेगी, तो आतंकित जनता कोई काम नहीं करेगी। अगर यह डर जायेगी तो जिसे हम दहशत कहते हैं, इसमें से शक्ति नहीं पैदा होगी। और इसलिए हजार लोग डर जायें, ये नक्सलवादी शक्ति नहीं कर सकते। ये डरा सकते हैं, बदल नहीं सकते। जो डर जाता है, वह कभी बदलता नहीं। वह बदल ही नहीं सकता। उसमें बदलने की शक्ति ही नहीं रह जाती। वह डरा ही रह जाता है इसलिए गाँव में हमारा आतंक नहीं।

और, पाँचवी चीज या स्मरितता। पारस्परिकता से मतलब एक-दूसरे का भरोसा। महाराष्ट्र में वेनगाँव में एक परिषद हुई। उसमें साठी चल गयी आपस में। शूट का बाजार गर्म हो गया। गांधीजी ने कहा कि तुम अहिंसा की बात करते हो और यह शूट का प्रहार कर रहे हो। तो उन्होंने जवाब दिया कि हमारा शस्त्र और अहिंसा तो अग्नि के लिए है, एक दूसरे के लिए नहीं। एक दूसरे के लिए तो हम शूट और भूसें का प्रयोग कर सकते हैं। इसलिए इसे मैं कह रहा हूँ कि ग्रामसभा के सदस्यों का एक दूसरे पर भरोसा होना चाहिए। परस्पर प्रामाण्य। ग्रामसभा का सदस्य प्रामाण्य कर सकता है, लेकिन प्रताड़ना नहीं। प्रामाण्य से मतलब मतली, प्रताड़ना से मतलब धोखाधड़ी। तो यह चीज ग्राम-

ग्रामवाद नहीं, विरवनिष्ठा

इसके बाद विरवनिष्ठा। अब केवल जय जगत से काम नहीं चलेगा। विरवनिष्ठा, मानव-निष्ठा। इसका मतलब यह कि यह प्रकृति, वि सर्ग इसके साथ हमारा सम्बन्ध क्या होगा? हाथी, घोड़ा, बैल मनुष्य के जीवन में शामिल हो गये हैं लेकिन दूसरे भी जगती जातवर, सूटिक और दूसरे भी मनुष्य समुदाय, इनके साथ हमारा क्या क्या होगा? सूटिक के साथ सहयोग का होगा, दूसरे प्राणियों के साथ मित्रता का। मनुष्य संतानियों की तरह से चल बढेगा तो इसका संयोजन पर बहुत गहरा परिणाम होगा।

ग्रामस्वराज्य का मतलब ग्रामवाद नहीं है, बाहर का गाँव भी हमारा ही है। पड़ोस का गाँव जगत की सगुण मूर्ति है जैसे पड़ोस का देश विश्व की सगुण मूर्ति है। उसी तरह पड़ोस के जितने गाँव होंगे, वे सब हमारे लिए जगत के सगुणरूप हैं। जय जगत का दर्शन कहाँ करेंगे? उन पड़ोस के गाँवों में करेंगे। तो गाँव में जो पारस्परिकता है इनका विश्वास अगर आपने नहीं किया तो जय जगत केवल मंत्र रह जायेगा और केवल ग्रामस्वराज्य हमारे पास रह जायेगा। और ग्रामस्वराज्य में जो पैदा होगे वे बीने होंगे। गाँव के नाप के अगर बीने आदमी पैदा होंगे तो यह सारा भारतवर्ष बीनों का बन जायेगा। यह शूट शूटवाद है। यह ग्रामवाद नहीं बनाता चाहिए। और यह सब नहीं आयेगा जब यह मानेंगे कि सामुदायिक आतंकियत भी नहीं, राज्य-स्वामित्व भी नहीं, लोक-स्वामित्व। और लोक अस्पष्ट है। लोक की कोई सीमा नहीं है, वह ईश्वर के समान व्यापक है। जनता स्वामित्व अगर हम मान लेते हैं तो एक नया सामुदायिक सम्पत्तिवाद लोगों में नहीं जायेगी।

मानवता की विजय-यात्रा

—प्रो० विश्वबन्धु घटनाओं

घोरे दिनों के कठिन सर्पों के बाद बांग्ला देश स्वतंत्र हुआ है। मगर ऐसा होने के पूर्व लगभग २० लाख निरिह व्यक्तिओं की, जिसमें बच्चे, बूढ़े, जवान, स्त्रियाँ तक शामिल हैं, जिनका मुख्य कारण यह था कि उन्होंने बांग्ला देश अधुन्य का समर्थन किया था, की हत्या की गयी। ऐसा क्रूर हत्याकाण्ड इतिहास में कभी नहीं हुआ था। अपनी जल बचाने के लिए १ करोड़ व्यक्ति घर और जगहवादी छोड़कर भारतीयों के रूप में पड़ोसी देशों में जा रहे।

इसी तरह की दूसरी घटना विपत्त-मान में पडी। करोड़ों टन के अत्यधिक मात्रा समसाधने मम एवं सत्वों का उपयोग विपत्तमान की सहायता के लिए किया गया, जिसके परिणाम स्वरूप देश का अधिकांश भाग खोना ही गया और अपने देशवासियों तक नहीं पर बाख का एक दिन का एक के जगते की सम्भावना नहीं रही।

भारते की यह प्रकृति क्षमियों विपत्त-मानों सरकार के सहायक अमेरिकी संसिकों का निर्यात का कार्यक्रम बन गया है। उदाहरणार्थ मादार्ड हत्या-काण्ड, जहाँ पर संसिकों और बच्चे, बूढ़े, जवान शामिलों की हत्या एक संत के रूप में की गयी। अब हररात सैले और अरीना बरालत द्वारा लोगी पाये गये सब निरवध ने उसे मुक्त कर दिया। कुछ वर्षों में माईनार्ड जैसी अनेक घटनाएँ घटती रही हैं, जो अनाशिव ही हैं।

बच्चे हथियार, साधन, संपत्ति के समर्थ और अघटन सैन्य स्रोतों के माधुन्य आत्मक अमेरिकी सेना की विपत्तमान में धर्मनिरपेक्ष हार खाली पड़ी है। वे न किन्हीं उच्च विपत्तमानों सरकार, जिसे उसकी जनता का पूरा समर्थन प्राप्त है, की सहाय की भावना की पुनर्प्रेष में ही अघटन रहे,

बल्कि सैनिक, सैन्य साधन और धार्मिक दृष्टि से भी अमेरिकियों की काष्ठी नृकृपान उद्वेगना पड़ी। वे जानते हैं कि वे किसी तरह विपत्तमान में जीत नहीं सकते। इसलिए अपनी सेना को विपत्तमान से बाख से रहे हैं, परन्तु पूर्वत पीठे हटने से पहले वे निर्दयता करने पर उत्तारू हैं। इसी तरह निर्दयतापूर्ण अत्याचार की एक घटना समर्थन के ठीक पूर्व बांग्ला देश में भी दिखाई पड़ी। एक सैनिकों ने अत्यधिक ५५ से बांग्ला देश के घुने हुए २५० बुद्धिजीवियों की हत्या कर डाली।

बर्तमान दशक में इस तरह की घटनाएँ प्रायः आतासाही द्वारा कराया जाता सामान्य बात हो गयी है। मानवता के विरुद्ध निर्दयतापूर्ण अत्याचारों पर विचार करते हुए कोई भी व्यक्ति अपने मन पर अवरदस्त आघात का अनुभव करता है।

लेकिन परिस्थिति इतनी निराशापूर्ण नहीं है जैसा कि देखने में आता है। भौतिकवादी विचार का हृदयहीन तरफ और मनुष्यों की स्वतंत्रता करने के लिए मानवता की भावना को न रोधी जा सनेवाली भाषा के विरुद्ध सभ-सभ देखने की मित जाते हैं।

उदाहरणार्थ बांग्ला देश की लें। वहाँ पर ६ अविभक्तियों घटनाएँ घटीं, जिन्होंने अपने विरोधियों को अभिभूत कर दिया तथा राजनीतिक परिवेशकों को गतत क्षतिग्रस्त कर दिया, और और निराशा-बन्धियों और लिडरलेसियों को भी सनसत कर डाला।

(ख) बंगबन्धु का सभ्यता सन्त-बांग्ला देश में लौटता।

(ग) साहित्यिकी सेना ने नो सहीने की अर्थ में प्रतिदिन १०,००० व्यक्ति की हत्या की थी। यह सम्भव भी था, क्योंकि दवाकार, अलबद्ध, और पाठ सेना के सहायक शामिल समितियों ने सेना

की सनसत सहायता की। राजनीतिकों का अनुमान था कि बांग्ला देश में आयेगे तो प्रायः उसी तरह की घटनाएँ पड़ेंगी जैसा कि बुद्ध के अन्तर्गत घटी, परन्तु शांतिप्रिय, सुतच्छुत बांग्ला जनता ने वैसा नहीं किया।

(द) एक करोड़ के लगभग बांग्ला देश से भागे शरणार्थी शरण की शोध में भारत आये और पीछे बर्बाद गये। कुछ विरोधियों का कथन था कि वे शरणार्थी हनेशा के लिए भारत में आये हैं और वे कभी भी वापस देख सोंट नहीं सकेंगे।

(ई) बंगुर-से लोग मुन्नीब नगर में गठित बांग्ला देश की अन्तरिम सरकार की सिन्धी सहायते से लेटिन वे सिन्धीपनी जहाँ की सहाय रह गयी जब मुक्तिवाहियों सफल हो गयी। यह माना जाता कि मुक्तिवाहियों बलना की चीज है, यह उन समय सन्त साहित हो गया जब मुक्तिवाहियों के जवाबों ने रोख मुन्नीब के बरलों पर अपने सभ्य सम्पत्ति दिये। युवक युवतियों लड़के लड़कियों ने माधुसूय की मुक्ति के लिए सभ्य-अघटन किया था, पर जानते हुए कि वे सब आने से श्रेष्ठ दुश्मनों का सामना कर रहे थे। लेकिन एक चीज मुक्तिवाहियों के पास थी जो इन पाठ सेनाओं के पास नहीं थी। वह थी देशभक्ति, जिसने वहाँ के लोगों को अपना आत्म-सन्तान करने तक के लिए प्रेरित किया था। यह एक सभ्य था जो मुक्तिवाहियों की सफलता में सहायक सिद्ध हुई।

(उ) कुछ राजनीतिक परिवेशकों पर सहायता का कि करने दुश्मनों को भगाने के बाद मुक्तिवाहियों, जो प्रति-सिद्ध हैं, जहाँ से सुतच्छुत, हैं, कभी अपनी सुविधाओं को नहीं छोड़ना चाहते। वे सभी बांग्ला देश छात्र-पत्रकारों की जन सहायते हैं। लेकिन परिवेशकों की वे बातें भी गतत सिद्ध हुईं जब रोख मुन्नीब के समस्त मुक्तिवाहियों ने सभ्य-समर्थन किया।

(क) परिवेशक बांग्ला देश में अन्त-सोन सैनिकों की उपस्थिति से निरन्तर

मौलाना भासानी से एक मुलाकात

[श्री इमरुद्दीन भारती ने टाका के एक अस्पताल में मौलाना भासानी से मुलाकात की थी। हम यहाँ उस मुलाकात का एक अंश प्रस्तुत कर रहे हैं। सं०]

“..... हिन्दू-मुसलमान की लड़ाई केवल की बात है, ईवी की बात है। अतर्ही लड़ाई तो गरीबी के साथ है। पार्थीवण के पहले बंगाल में ३०-४० आश्रमियों का अवास्थ परिवार होता था, सबकी, मछली, दूध सब घर का। अब दस आश्रमियों में एक मछली खरीद पाता है।

“... हमने पाठ एन लार्ड से भी कहा था कि पहले एशिया-अफ्रीका में इतनेहारे होने दो, लेकिन उनकी फारेन पालिसी हमारे समझ में नहीं आयी। यह कहना है उसकी आर्थिकपक्ष पालिसी अर्थरेस्ट (अर्थवाचार फोडित) कोभी के साथ है, लेकिन बांग्ला देश में उनसे बरदाचार्य का साथ दिया। ११ मार्च '७१ को मेरे साथ चीनियों के आरबी ने बात की। नहने सग 'मुनीब सोचविष्ट नही, आप उकका साथ क्यों सेते हैं' वो मैने कहा, 'तो क्या पाकिस्तानी का साथ दूँ ? यहूदा सों का साथ दूँ ? १४ साल पहले हमने रिपोर्ट दिया उसे पाकिस्तान ने मजूर नही किया। वे लोग बहते थे कि मोलाना भासानी हिन्दुस्तान का एनेष्ट है, यह 'मै' तो नेहूका का दल है। इस्कन्दर नज्ज साहब ने घनकाया कि भासानी अयर यूरोप अमरीका की ओर से भी आयेगा वो हम गोलो चलायेंगे। ठीक, हमने कहा, हम हिन्दुस्तान जाते हैं। चले गये। फिर इस्कन्दर मिर्जा ने आरबी भेजा। हम लोटे गये, १९५० में हमने अरबानी लीग कायम की। उसके २१ सूत्र

थे। लेकिन २१ सूत्र से मुनीब के ६ सूत्र बेहतर थे, लेकिन वो भी काफ़ी नही। पूर्ण स्वाधीनता ही मान समाधान तो हुआ फिर।

“... (पर) विपत्ती आरबी ही कोई चीज नही होती, आर्थिक और समाजी स्वाधीनता से ही विपत्ती आरबी की कामयाबी है। समझ बहुत जरूरी है। और हमारा पूर्वी बंगाल का मानुष तो बहुत गरीब है। उसके परिवार का परिवेश वो ऐसा है कि उठकी नमक तक नहीं मिलता। सूखा भाद, सूखा माछ खाये तो नमक नही। अब यह गरीबी को दूर करना है। भारत भी गरीब है, सारा एशिया, अफ्रीका गरीब है।

“और हमारा वो अब विचार यह है कि भारत, बांग्ला देश, चीन, पाकिस्तान सब में मान-सुखेसन पैक होना चाहिए। अब सब लोग गरीबी से मुद्ध करे। समझ एशिया अफ्रीका को लेकर जाति सब बनाना चाहिए। भाई, हम एशिया-अफ्रीका का मानुष गरीब हैं। हमारा यूरोप अमेरिका से बना मतलब। अरे भाई, यह वो घनी देश है। उनके पास हमारा श्रित कहाँ ? तुमने बंगला की उक्ति मुझा है—मंदेर रोकाये दूध की पाका खाये ? (घराब की हूकान में दूध कंठे पा...सते हैं।)।

“हमारे पास तो सब के भी लोग आकर मिलते हैं। हमने उनसे कहा कि

भाई, अब तुम भी घनी हो, तुम्हारा हमसे क्या मेल होगा। तुम्हारा मानुष चन्द पर जाता है। हमारा मानुष कीचड़-बांदों में नाब सेता है। सच्ची बात यह है कि अमेरिका हो कि यूरोप ही, कि रूस हो, सब एशिया-अफ्रीका का मास्टे का सोपी है। लेकिन एशिया-अफ्रीका को चाहिए कि आपस में सहयोग करे, ताकि एशिया-अफ्रीका का पैसा एशिया-अफ्रीका में रहे। अब देखो, कौसा पागल या पाकिस्तान; सोलैण्ड से कोयला मंगाना था जब कि यहाँ हिन्दुस्तान में कोयला था। क्यों भाई, हिन्दुस्तान से कोयला क्यों नहीं लेता ?

“अब भारत-बांग्ला मैनी तो खुलौई चलेगा। बराबर चलना चाहिए। हमारा तो विचार है कि एक-दो साल में चीन भी भारत से मैनी कर लेगा। भारत से मैनी में ही बांग्ला देश का साम है, भारत का भी साम है। अब देखो, भारत में कितना पतड़ आता है बांग्ला देश के सहयोग से आरका फलड कटौल ठीक रहेगा। जो नदी भारत में बहती है, उसका मुहाना बांग्ला देश में है। अब हमारी यमुना नदी जो अरम में बहसुना है, वो बंद सौ साल पहले ४० फीट ३ इंच गहरी थी। अब घूलामाटी जम-जम कर उठकी गहराई ३ फीट—कहीं-कहीं घाई फीट रह गयी है, तो फिर सब पानी उत्तर में फलड करता है। यहाँ सब मिट्टी आऊ हो जाले, नदी गहरी हो जाये तो उधर पानी रके नही।

“लेकिन अमेरिका लड़ाई करता है। ६५ का पाठ-भारत-मुद्ध भी अमेरिका ने ही लड़ा था। हम १९५७ में नेहूकी के मेहमान थे। हमने सब भी कहा था कि पाक-अमेरिका ट्रीटी को हम करते दम तक नही पालेंगे, बगदाद पैक, छोटी, रोप्टो रिचि को नही। बियतनाम पर बमबारी के समय भारत न इतर था न उधर, तब हमने भारत का भी प्रमुट बायोचना की थी। —घ० भा०

(‘घमंयुत’ से साधर)

—ये। परन्तु उनकी यह विन्ता दूर हो गयी जब भारतीय फौड बांग्ला देश से वापस हो गयी।

कितनाल सयंवेदकों की जमाउ कुछ यमुनी को तीवार करने में व्यस्त है। बांग्ला देश में बिहारियों की अयुवसा, बांग्ला देश के मद्रिबी की जिलासमियता, बांग्ला देश में अल्पसंख्यक हिन्दुओं की

अयुवसा, मुनीब मजिगहल से हिन्दू मजिबे की अयुवस्थिति (एक को छोड़ कर) आदि, लेकिन इससे बांग्ला देश और भारत की परेगानी का अदु-पल नही करना चाहिए। नो गहरी के अन्वकार के बाइ अरवाचार, कोपम और कृतार्पुर्ण अ्यवहार के बावजूद मनुद ने अरानी विजय-यात्रा की शुरुआत की है। ●

‘धार्मिक रचनात्मक’

—कथूम प्रसार

अभी कुछ दिनों की बात है अपने देश में भारतीयकरण का आन्दोलन चलता गया था। वैश्व यह विचार बहुत प्राथमिक स्तर का रहा था। परन्तु इस विचार के पीछे जो तथ्य था उसमें बड़ी बदनीयती थी। यही कारण है कि देशभर के लोगों ने इस विचार की बड़ी निन्दा की और यह आन्दोलन टपकर रह गया।

अंग्रेजी साम्राज्य ने अपने शासन कायम में हिन्दू-मुस्लिम जातों को खूब-खूब दबा दी। हिन्दुत्व की बात करनेवाले अंग्रेजों के हाथों में सदा पलते-पूजते रहे। इसी तरह मुसलमानों का स्वयं देशनेवाले दिल्ली के सात किले पर कब्जा-हेलाकी-नरकम (मुगलमनों का शासन) का अंग्रेजों के आलोचकों से देखते रहे। हिन्दी और उर्दू का हाफ़ा अंग्रेजों ने छद्म किया। इसी तरह ही और भी बार्त, हिन्दी और मुसलमानों के अन्दर छद्मता की बाण भड़काने के लिए अंग्रेजों ने शक कराया। अंग्रेजों की पत्रिका में हिन्दुस्तान की गुलाम बनाने रखने के लिए यह छव काफ़द थे, जिनका इस्तेमाल अंग्रेज बड़ी हीसियारी से करते रहे।

हिन्दू महासभा और मुस्लिम लीग हिन्दुस्तान में अंग्रेजी राज्य में अपनी भलाई देखते थे। यही कारण था कि देश के अन्दर स्वतन्त्रता के आन्दोलन की वे पाटियाँ बरिध करती रहीं और इसे दबाने में उन्होंने हमेशा अंग्रेजों का हाथ बढ़ाया। यह बात भी देखने में आती थी कि रायबहादुर और खानबहादुर सामाजिक मामलों में एक-दूसरे के घट के प्यासे रहे और अन्तर पाने पर एक-दूसरे का घट बहाना भूजते नहीं थे। लेकिन यही रायबहादुर और खानबहादुर अंग्रेजों की गुलामी में गहरे घायल बने रहे। अधिवाचित भारत में हिन्दू और मुसलमानों में यह पारस्परिक शून्य बहूत ही साफ नजर आता है।

अधिवाचित हिन्दुस्तान में हिन्दू और मुसलमान बराबर यही कहते गुने गये कि अंग्रेज ‘सहायो और शासन करो’ की नीति पर चपला है। यह बात बिलकुल सही थी। यह बात खानकर भी हम हिन्दुस्तानी अंग्रेजों के फरेब में रहे। यहाँ तक कि देश के दो टुकड़े हो गये। अन्ततः भारत और पाकिस्तान त्रिन्दावाद के तारे रंग लाकर रहे।

अंग्रेज अपना बोरिया-विस्तर-समेत कर सात समुन्दर पार चला गया। फिर भी हमारे आँसुओं शयदें छत्र नहीं हुए। धर्म के नाम पर आये दिन दंगे हो रहे हैं। जाट-पाठ रंग और नस्ल की लड़ाई अब भी जारी है। भाषा और धर्म का झगड़ा पहले से ज्यादा तेज हो गया है। स्वतन्त्रता मिलने के बाद देश के विभिन्न स्थानों पर भयकर दंगे हुए। गोपीबंदी की महादत्त ने पूरे देश को सिस्सोड दिया था। मोझे देर के लिए इस हालत में एक बार टहराव आया था। लेकिन वह नायम नहीं रह सका। ऐसी उम्मीद थी कि नवोन्मत्त अपने पुरखों की गलत बातों को नहीं अपनायेंगे। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। अब हमें कौन सहा रहा है और क्या हम उन्हें जानते हैं? यह बात १९४९ की है। गया से पटना जानेवाली एंड्रेस्वर गाड़ी की घटना से पहले गया स्टेशन से खाना हुई। कबती-धमती रेलगाड़ी तरेगना स्टेशन पर पहुँची। वहाँ बीच-पन्चोच आशियाँ की भीड़ से निकल कर एक छोड़ उन्न का आदमी ‘छेरेण्ड वनाम’ के दिग्धों से सडार हुआ। उसके साथ एक ११-१२ साल का सड़का भी था। बाली लीग प्लेटफार्म पर ही रह गये। गाड़ी स्टेशन से खाना हुई। अंग्रेज उन्नवाने बादना ने फ्रिडे में बंटे हुए लोगों की ओर देखा और अपनी उरफ दिखी बा भी ध्यान नहीं पाकर वह पुन-बार एक सीट पर बैठ गया। लेकिन उसकी सरोवत मान्य बैठनेवाली नहीं

मालूम होती थी। दूसरे ही क्षण उमने बात शुरू करने के लिए उन्न ब्रबपर खोज किया। उन्नने अपने बगन में बंटे हुए लड़के की दुःख दिया। “सिद्धकी बन्द कर दो, ठठी हवा आ रही है।”

लड़के ने मुस्लम बहाना—“पिताजी फिर वापसे उर्दू शब्द का प्रयोग किया” और यह बहते हुए उन्नने सिद्धकी बन्द कर दो।

अधेड़ उन्न का आदमी बोला— “सामा करना मेरे पुत्र, सामा करना, पीतल बापु आ रहो है। मुसले भूल हो गयी।”

यह कहते हुए उन्नने डिब्बे में बैठे हुए लोगों की ओर देखा और फिर बहाना—“देखा, मेरा पुत्र मेरी भूल पर दोषता है।” लेकिन इसका यह तोर भी निशाने पर नहीं पैठा। किसी ने भी उन्न पर ध्यान नहीं दिया।

यह कुत्ता शुभ हो हुआ था कि अगला स्टेशन आ गया और दो टिकट बेकर एक ही साथ डिब्बे में आ गये। दिन्ना छोटा था और उसमें सिर्फ ६-७ आदमी थे। उन्होंने हर एक के टिकट की जाँच की और उभटे बरों निकलना ही चाहते थे कि अंग्रेज उन्नवाला आदमी बडबड़ाया—“दं केवल देसकर बडा भडका हूँ कि आर्य-रवत विल-विल के शरीर में है।”

यह बात सुनते ही दोनों टिकट बेकरों के बड़ते हुए कदम टक गये और वे डिब्बे में ही रह गये। ट्रेन चल पड़ी। उन दोनों ने उन्न अंग्रेज उन्नवाने आदमी को ‘महापात्र’ बहाना और उन्नने पूछा कि उन दोनों के बारे में उनकी क्या राय है। महापात्र का धीर इस बार टिकट निशाने पर बैठ गया। वह भला कंठ पूजते। उन्होंने दोनों टिकट बेकरों की मुग कर दिया कि उन दोनों के शरीर में शूद आर्य-रवत बीड़ रहा है। दोनों में से एक तो साफ आदिवासी मालूम होता था।

इस छोड़ उन्नवाले आदमी को उन्नी दिशावाली सीट पर पैठा मैं यह तुमाशा (सिप पृष्ठ २९३ पर)

जहाह का इस्लामी सम्मेलन

मार्च के पहले हफ्ते में सजदी अरब के प्रतिष्ठित नगर जद्दाह में इस्लामी हुक्ूमतों के विदेशवासियों का चौथरा सम्मेलन हुआ। इसमें ३१ देशों से १५१ प्रतिनिधियों ने भाग लिया और छह में अगुवा सस्था, १२ पाकिस्तान से आनेवालों की थी। आरम्भ ही कि भारत और बांग्ला देश को कोई निमंत्रण नहीं दिया गया था यद्यपि "बांग्ला देश की समस्या हल करने का प्रश्न" विरोध रूप से इसके आगेने था।

इस सम्मेलन में सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पारित किया गया जिसमें "पाकिस्तान को एकात्मता, स्वाधीनता, प्रभुत्व को पूर्ण समर्थन" दिया गया और यह भी तय पाया कि छह देशों का एक प्रतिनिधि-मण्डल इस्लामाबाद और ढाका, दोनो जगह जाये और पाकिस्तान के राष्ट्रपति भूटो और बांग्ला देश के प्रधानमंत्री शेख मुजीब की मुताबत कराने की कोशिश करे। दूसरीविधय ने सुझाव दिया कि यह मण्डल भारत से भी सम्पर्क स्थापित करे। तैरिन मिश्र के एक प्रतिनिधि से इस पर आशा की और कहा कि ऐसा करने पर "पाकिस्तान की आवाज" की नोट पहुँचेगी। कौरी हुई-मुई है पाकिस्तान की आवाज और क्या अजीब है उसके बारे में मिश्र की कल्पना कि मयी दिल्ली की छत से ही वह बुझला जायेगी। इसके भी प्यया ताज्जुब की बात यह है कि बांग्ला देश में जब पारिस्ताव के जल्लाद विपार्थियों ने लाखों लोगों को मार के घाट उतार दिया तो इस्लामी देशों को जरा भी फिर नहीं रँवा हुई, और अब उन्हें पाकिस्तान की एक्ठा बचाने का स्वाल सता रहा है। और येत मुजीब या बांग्ला देश के किसी भी प्रतिनिधि को अपने भरोसे में लिये जिना दासला देश पर पँसला कर देने की उनकी कोशिश उनकी सिदासी मासूमियत का सबूत है। इस देशीयवन के छः मेम्बरों

में से पाँच ऐसे देशों के हैं जिन्होंने बांग्ला देश को मान्यता तक नहीं दी है। ताजो खबर है कि बांग्ला देश ने एजान कर दिया है कि जो देश हम को नहीं मानते हैं उनके दूताइयों को हम दास नहीं जाने देंगे। बांग्ला देश सरकार के इ निर्णय से कौन अनहमत होया ?

भार और सदात इस कॉन्सेट के सामने पेश हुए—इसराइल के सिनाफ दरब राज्से और ख्रिस्तीयों के मुस्लिमों को मरद देना, एक इस्लामी चार्टर (राज-गण) तैयार करना, एक इस्लामी समाचार एजेंसी चालू करना। इनमें से पहले के बारे में खूब बर्बा हुई और जहरी प्रस्ताव भी पास हो गया। उसमें कुछ कठिनाई नहीं थी क्योंकि इसराइल की विचाराने और अमेरिका को चेतावनी देने के अगारा उसमें अगुवा कुल काला नहीं था। इसी तरह समाचार एजेंसी खोलने पर भी तब राभी हो गये।

तैरिन दो मसलों पर माझी लटक गयी—चार्टर और बैंक। चार्टर की बहस के दोरान कुछ देशों ने विरोध में मत दिया और आवाह किया कि उनको राय नो बर्न किया जाय। बैंक के बारे में कोई साफ टार्वर सामने न होतै से उसे एक नमिटी को मुमुई कर दिया।

इस्लामी चार्टर बने या न बने और बैंक खुले या न खुले, हमें कुछ उनके पीछे जो नजरिया है उस पर है। जान वर विजाल सारे सवार को एक कुनरे का रूप वे रहा है यहाँ इस्लाम, ईसाई, हिंदू, बौद्ध आदि के बठपरे खड़े करना जमाने के प्रब्राह के सिनाफ जाना है और प्वादती भी है। इनमें साम्यवादीयता की जो खिलिफ रूप है वह बहुत घातक सिद्ध होगी और विरोधकर इस्लाम के प्था-बहित भवनों के लिए, खपेधि यह भेद-भाव गैट-इस्लामी है। कुरात में पंग-

वर सहृद खुद फरमाते हैं कि सिरज-हार "रब-अन-आयमीन" है व कि "रब-अन-मुस्लिमोन !" इस्लामी देशों का या इस्लाम के पैरोकारों का कौन ऐसा एक्ताल है जो सभी देशों या अन्य धर्मधिनन्वियों से सम्बन्धित न हो ? और कौन ऐसा हित है जो केवल मुस्लिम जन्युओं के अदुल्ल है और दूसरों के प्रति-भूत हो ? इस्लामी कॉन्सेटन का सारा इतिहास घनाघिटा और विवेकमूयता का चोड़क है। बाब जहरत इस्लामी कॉन्सेटन, मजल्लो या जनापव की नहीं बल्कि आत्ममी विरादरी और इनसानो भाईचारे की है।

नये चुनाव की चुनौती

इस विधानसभाओं के चुनाव में जनरल सफलता के बाद कठिमे पर यह जिम्मेदारी का जारो है कि यह जनता के अरमानों को पूरा करे और उनके उनमें जो बारे रिने हैं उन्हें अख्डी तरह निभाये। इनमें सबसे प्रमुख है तरीबी मिडाना। परन्तु हमें धर है कि शासन की जो खूफियत प्रजाती है और उसका जो परम्परागत विनय है उसके रहते न तरीबी मिटेगी, न समाजवाद आयेगा। हान ही में तीन त्रिथिफ कमणियों को देश में उलासन करने के लिए जो खूफि-धार्दै प्रदान की गयी हैं उनको देखकर यह शंका और भी बढ़ जाती है। फिर भी हमारी सिधारिया है कि निम्न तीन कदम उठये जायें तो अपने यत्नय की ओर देश तेजी से प्रगति कर सकेगा। वे ये हैं :

(क) जमीन की बरीद-बिक्री एकादम बन्द करा दो जाय और जित गाँव में जो जमीन है उसका उपयोग वहाँ की ग्राम-पुजा के निर्णय के अनुसार वहाँ के निवासी करें।

(ख) जो बर्गों का नोट सामान्य पोलित कर दिशा जाय।

(ग) कोई भी कम्मरा या प्काद शता-मुपुक्ति न रहने दिया जाय और बिजनी के मामलों पदे से सज्जीव किया जाय।

—हाऊ

पुष्टि-अभियान

एक महीने के अभियान के लिए सहरसा समेत बिहार के विभिन्न जिलों और देश के अन्य प्रदेशों से आये हुये कार्यकर्ताओं तथा ग्रामनवा-परा-धिकारियों का प्राथमिक शिविर ता० १५-१९ मार्च को सहरसा जिला स्कूल के प्राण में श्री वंशनाथ प्रसाद चौधरी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में सहरसा जिला ग्रामस्वराज्य समिपान समिति के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र विभ ने भारत अभियानों का स्वागत किया।

शिविर में उपस्थित लोगों को अभि-यान की पुष्टिमूर्ति, उद्देश्य, कार्यक्रम और योजना की विस्तृत जानकारी दी गयी। दोनों जिलों की काम से सम्बन्धित फार्म, प्रचार-साहित्य तथा बिस्को के लिए पुस्तकों के सेट आदि सामग्री ता० १९ को रात तक वितरित कर दी गयी और ता० ३० को सबेरे तक अधिकांश टोलियाँ अपने-अपने प्रखण्ड के लिए स्थानीय प्रमा-रियों के साथ रखना हो गयी।

३१ से अधिक कार्यकर्ता अभियान में लगे हैं। इनमें से ११३ देश के अन्य प्रदेशों से आये हैं और करीब २५० बिहार से। बिहार में करीब एक ही व्यक्ति सहरसा जिले के है जिन्होंने अपने-अपने प्रखण्डों में पूरा महीना भर इस काम में लगाये का श्रावण किया है। अभियान में लगे हुए शायियों की प्रदेशवार संख्या इस प्रकार है :-

प्रदेश	संख्या
१—आंध्रप्रदेश	१
२—५० बंगाल	२
३—दिल्ली	२
४—हरियाणा	१
५—राजस्थान	४
६—गुजरात	१२
७—मध्य प्रदेश	१५
८—उत्तर प्रदेश	१७

१—बिहार (सम्बद्ध १५ रहित)

१०—सम्बद्ध सहर	७
११—सैयदपुर	२
१२—बिहार कुल	२५०
	३६३

बिहार के शायियों में सहरसा के अनावा मुख्य रूप से पूर्णिया, दरभंगा, पटना, मुंगेर, सतालपरगना, मुनकरपुर और गया के हैं, वेप जिलों से एक-एक, दो-दो आये हैं। वहीं बिहार के कुल १७ जिलों में से कम-अधिक १४ जिलों के लोग अभियान में लगे हैं। बिहार छोटी सामो-योग संघ, बिहार युवायन यत समिती तथा कई जिलों की विभिन्न संस्थाओं ने भी अपनी ओर से कार्यकर्ता भेजे हैं।

सहरसा जिले के २३ प्रखण्ड, पड़ोस के पूर्णिया के २ और दरभंगा के एक, इस तरह कुल २६ प्रखण्डों की ५२० पंचायतों

अहिंसा की शक्ति कैसे पनपेगी

● अहिंसा का अर्थ ही अनुशासन है, स्वयं प्रेरणा से अनुशासन। हिंसा में अनुशासन सादा जाता है।

● अहिंसा दुःख का नहीं सक्ती, विचार समझा सक्ती है और शान्तचित्त की उजकी मानने या न मानने की पूरी आजादी देती है।

● जब तक अहिंसा सिखी एक विन्दु पर बहुविध दिशा में, लेकिन एक हृदय से सम्मिलित शक्ति लगाने की शक्ति नहीं दिखाती, जब तक बहु पन नहीं सक्ती।

● स्वेच्छा भी हो और आजा-पासन भी, ऐसा कठिन काम ही संकल्पपूर्वक करना है। "यथैकथि तथा कुक्"।

—बिजोबा

में काम शुरू हुआ है। हर तीन पंचायतों के चौड़े दो कार्यकर्ताओं की एक टोली काम कर रही है। एक टोली के क्षेत्र में करीब १० से १५ छोटे-बड़े गाँव पड़ते हैं। ता० १५ अगस्त तक के एक माह में ये टोलियाँ अपने क्षेत्र के सब गाँवों में पदयात्रा करेंगी। हर प्रखण्ड में एक स्थानीय और एक बाहर के जनक सहायक, इस प्रकार दो लोगों की एक टोली सत्त्व रूपकर गाँवों में काम कर रही टोलियों की मदद करती रहेगी। इसके अनावा २६ प्रखण्डों के पुरे अभियान-क्षेत्र को ५ क्षेत्रों में बाँटा गया है जिनमें क्षेत्रीय टोलियाँ सारे काम का समन्वय करेंगी तथा चालना देती रहेंगी।

अभियान की अवधि में गाँव-गाँव में भूमिहीनों के लिए जमीन प्राप्त करके उसका विवरण कराना, ग्रामसभाएँ गठित करना, ग्रामकोष शुरू कराना, गाँव अदालत-मुक्त हों इसकी कोशिश करना आदि काम किये जायेंगे और १५ अगस्त के दिन हर गाँव में ग्रामस्वराज्य का संकल्प लिया जायगा और जमीन का बँटवारा होगा।

१८ अगस्त का कार्यक्रम

- सबसे दू बजे से दिन के दो बजे तक
- (१) सबेरे गाँव में प्रयातकेरी।
 - (२) सफाई तथा श्रम-यज्ञ। -
 - (३) पीसा, रामायण, कुतान, आई-विण आदि के पाठ।
 - (४) निम्न-निम्न व्यक्तियों के भजन, कीर्तन आदि।

दिन के दो बजे से शाम ५ बजे में :
सब बच्चों की प्रार्थना, गाँव के काम की जानकारी।

श्रीमान-दत्ता विवरण, ग्रामकोष में धान।

भाषण और सामूहिक संकल्प, प्रयात विवरण।

—सुपेन्द्र
(सहरसा, अभियान समिति)

चम्पलघाटी शान्ति-मिशन के

कार्य में गति

नयी दिल्ली १८ मार्च। मध्य प्रदेश सरकार के यहूदोगी और जवाहर-लक्ष्मण २३वें से चम्पलघाटी शांति-मिशन के कार्य में गति आयी है और सम्भावना है कि अग्रेज के मध्य तक सम्पर्क के लिए तैयार भागियों की संख्या डेढ़ से एक पहुंच जायेगी।

चार वर्षों के लगभग से यानी पहले ही श्री जयप्रकाश आराधन को आत्म-समर्पण की सूचना दे चुके हैं। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री प्रकाशचन्द्र सेठी हाल में ही यहाँ श्री जयप्रकाश आराधन से मिले। पता चला है कि वार्ता बहुत उत्साहपूर्ण रही। मध्य प्रदेश, उत्तर-प्रदेश और राजस्थान के शुद्धमंत्रियों और पुलिस महासिरीक्षकों को एक बैठक इस सन्तान पर विशेष रूप से चर्चा करने के लिए अग्रेज के पहले सप्ताह में केन्द्रीय गृह-मन्त्रालय के तत्वावधान में होगी।

चम्पलघाटी शान्ति-मिशन में अपना कैम्प स्थापित निवन्दास, घाना पराग्वुड जिला पुरना में होगा है। सर्वथी महावीर सिंह, हेमदेव शर्मा, जदुहीतदार सिंह और पण्डित सोरमन भागियों से सम्पर्क कर रहे हैं।

मंत्रियों, अधिकारियों के साथ रचनात्मक कार्यकर्ताओं की बैठक

इन्दौर, २४ मार्च। आज हुआ है कि केन्द्रीय गांधी-निधि भारत सरकार के मंत्रियों और अधिकारियों के साथ प्रांतीय निधियों और प्रमुख रचनात्मक संस्थाओं के परामर्शकारियों की एक बैठक मध्य में

में आयोजित कर रही है।

बैठक का उद्देश्य सरकार के सौकर-वस्थापककारी कार्यक्रमों और गांधी निधि के अग्रेज रचनात्मक कार्यक्रमों में प्रत्यक्ष करना और एक दूसरे का दृष्टिकोण समझना है।

उत्तर प्रदेश मध्य-निषेध सम्मेलन

उत्तर प्रदेश मध्य-निषेध सम्मेलन ८ और ९ अप्रैल को हुला निरिबन था। लेकिन प्रतिनिधियों की सुविधा की दृष्टि से इसे बढ़ाकर ११, १२ अप्रैल १९७२ रखा गया है।

प्रतिनिधियों से अनुरोध है कि ११ अप्रैल की दोगहर तक वे अवश्य ही लखनऊ पहुंच जायें। पूर्ण जानकारी के के अभाव में निरिबन ही एक सप्ती मध्य-निषेध के शुभचिन्तकों तथा कार्यकर्ताओं से सम्पर्क नहीं कर पा रहे हैं। इस लिए कृपापूर्वक आप यह कष्ट भी उठावें कि अपने जनपद के ऐसे सभी लोगों को सम्मेलन में पधारने के लिए हमारे और से तथा अपनी ओर से आमंत्रित करें।

सम्भव है ११, १२ अप्रैल के अनि-रिबत घावों कार्यक्रम की दृष्टि से कुछ लोगों को ११ तारीख की भी रुकना पड़े।

स्वागत समिति,

उत्तर प्रदेश न्यायव्ययी सम्मेलन

सम्पर्क स्थापित करने का पता :

गांधी शान्ति प्रतिष्ठान केन्द्र

१४५ कैप्ट रोड, लखनऊ

फोन नं० २२४१७

तार :—सत्याग्रह

शिविर प्रतिषेदन, भोपाल

भारतीय नगर भोपाल से श्री कैलाश श्रीवास्तव ने सुनिष्ठ किया है कि म० प्र० गांधी स्मारक निधि एवं मध्य प्रदेश सर्वोदय मण्डल के समुन्नत तत्वावधान में १९ फरवरी से २२ फरवरी '७२ तक दिवजंन आश्रम इन्दौर में श्री अनुसुंद पाठक के संयोजकत्व में भोपाल तरफ-

शांतिसेना शिविर का आयोजन किया गया। इस ११ दिवसीय शिविर का सम्बन्ध बहुत ही अत्यन्त ही एवं प्रभाव-बोरादाक रहा।

तरुण-शान्तिसेना शिविर, उदयपुर

दिनांक ११, १२ मार्च को उदयपुर से ७ मील दूर मदार ग्राम में दो दिवसीय एक शिविर श्री दीनदयाल दहोतर के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। शिविर का उद्देश्य तरुणों की सार्वजनिक समस्याओं पर विचार करना था।

अखिल भारत सर्वोदय सम्मेलन

प्रायः सूचना के अनुसार अखिल भारत सर्वोदय सम्मेलन नकोदर, जिला आलघर (पंजाब) में दिनांक १९ मई से २१ मई तक निरिबन हुआ है। इसके पूर्व दिनांक १६, १७, १८ मई को सर्व सेवा सङ्घ का छमाही अधिवेशन भी होगा।

सच-अधिवेशन में चर्चा के विषय निम्न होंगे—

दिवंगतों को श्रद्धाञ्जलि, पिछली बैठक की कार्यवाही की दृष्टिकोण, नती की रिपोर्ट (१२ अक्टूबर '७१ से अप्रैल '७२ तक), सर्व सेवा सच के सम्पदा का निर्वाचन, देश की परिस्थिति एवं आत्म-स्वराज्य-मतवाता-विदास, सौम-सेदकों की एव सर्वोदय मण्डलों की सक्रियता करने वाले ? तरुण-शान्तिसेना एवं साम-शांतिसेना, खादी, अम्पदा की अनुभव से अन्य विषय।

नकोदर पहुंचने के लिए दिल्ली, पानीपत, करनाल की ओर से आनेवाले यात्रियों की सुविधाया से ट्रेन बदलनी पड़ेगी। सुविधाया से चलनेवाली गाड़ी जो कोटियासास जाती है, रास्ते में नकोदर जंक्शन रूकना आता है। सुविधाया से चार ट्रेनें चलती हैं। सुविधाया से सब की भी अच्छी सुविधा है। कुछ सप्ते हफ्तों की वर्ष भी इन रास्ते से गुजरती है।

तरुण-शान्तिसेना शिविर

बनिया जिला आचार्यकुल के उत्तरावधान में आयोजित वारिसपुर इन्टर कॉलेज के छात्रों का शिविर गन २७ फरवरी को संपन्न हुआ। शिविर का आयोजन विद्यार्थियों से तरुण-शान्तिसेना का परिचय कराने, उनमें आत्मसु-क्षामन एवं जिज्ञासा जागृत करने तथा सामूहिक जीवन की छाँटी देने के उद्देश्य से स्थानीय आचार्यकुल की सहायता से लोकप्रार पर किया गया। शिविर-मध्य स्थानीय जनता, विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने सहूल किया।

शिविर का उद्घाटन २६ फरवरी को प्रातः सन्त साहित्य के समस्त को परशुराम वसुदेवी ने किया।

अ० भा० शान्तिसेना मण्डल के प्रशिक्षक सत्यनारायण भाई के संचालन में शिविर दो दिनों तक सौ-साह चला। शिविर का समावर्तन जिला सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष श्री पंचदेव तिवारी ने किया।

बनिया (उ० प्र०) — शिवकुमार

बस्ती आचार्यकुल सम्मेलन

६-७ मार्च को बस्ती में आचार्य-कुल का जो सम्मेलन हुआ वह उत्तर-प्रदेश में अपने ढंग का निराला था। पहली बार प्रारम्भिक और अनिश्चित हाई स्कूल के अध्यापकों ने गोष्ठी में एकत्र होकर आचार्यकुल पर चर्चा की और अपनी सहायकों में आचार्यकुल की स्थापना का निश्चय किया। इसके पहले उत्तर प्रदेश में प्रारम्भिक स्तरों में आचार्यकुल की स्थापना नहीं हुई थी। बस्ती के इस सम्मेलन के साथ उत्तर प्रदेश के आचार्य-कुल आन्दोलन में एक नया अध्याय खुला है।

सम्मेलन का उद्घाटन केन्द्रीय आचार्यकुल के सचिवक श्री बशीर अन्वित और समापन गांधी शान्ति

प्रतिष्ठान, दिल्ली के श्री एस० एन० मुखारख ने किया। इन गोष्ठी के संयोजन का पुरा प्रयत्न - उत्तर-विद्यालय निरीक्षण श्री जंगवहादुर सिंह ने किया था। गोष्ठी को गौरवपुर विश्वविद्यालय के कुलपति श्री राम विद्यामन सिंह का आजीवदा भी प्राप्त हुआ।

— रामचन्द्र सिंह

ग्रामदान प्राप्ति-पुष्टि-पदयात्रा

उड़ीसा की पदयात्राएँ ७०-१५ से २२ तक टेंडागाल जिले के गोंदिया प्रखण्ड में ग्रामदान प्राप्ति-पुष्टि-पदयात्राएँ हुईं। २७ गाँवों में ग्रामस्वराज्य समझाने-वाली सभाएँ की गयीं जिनमें से ४५ गाँव पूर्णरूप से (एक २९ अपूर्ण) संकल्पित ग्रामदान हुए। ३० गाँवों में ग्रामसभाएँ बनीं। १९७ शालाओं से ग्रामदान में विनरण योग्य १११ एकड़ जमीन मिली और इनमें से १८७ आराठानों को ८९ एकड़ जमीन विवरित की गयी। ३० गाँवों में ग्राम-शान्तिसेना बनीं। आने का काम चालू रखने के लिए प्रखण्ड ग्राम-स्वराज्य समिति बनायी गयी। इस यात्रा में सम्मिलित होने के लिए वागमर से श्री गुरुजी शर्मा, पत्राच से श्री यशपाल मिशन, एवं महाराष्ट्र से श्री ठाकुरदास बघ, श्री नन्दलाल कावरा, श्री आचार्य, एवं श्रीमती सुमन बग ने उड़ीसा प्रदेश के ५० कार्यकर्ता सहित हिल्ला लिया।

खादी-प्रशिक्षण विद्यालय

राजस्थान खादी प्रोन्नयन विद्यालय, गिबदागपुरा में १ मई १९७२ से जूनी-खादी-प्रशिक्षण अध्यास क्रम का प्रथम सत्र प्रारम्भ हो रहा है। सत्र की अवधि ११ माह की रखी गयी है। उक्त पाठ्यक्रमान्तर्गत विभिन्न विस्तरों की उम्र से विभिन्न प्रकार के चरखों व करघों पर विभिन्न बको के सूत की बटाई, बुनाई, ऊत के आकार तथा सारसम्बन्धी प्राथमिक विषयों की जलकारी के अतिरिक्त खादी केन्द्रों की व्यवस्था, सग-

ठन, हिमायन-किताब, खादी तथा सर्वोदय आन्दोलन एवं उनका अर्थशास्त्र तथा देश की विशाल योजनाओं सम्बन्धी मैक्रो-मैक्रो-विकल्पों के विधान की व्यवस्था है।

प्रशिक्षार्थियों की शैक्षणिक योग्यता मैट्रिक या उसके समकक्ष अपेक्षित है। प्रशिक्षण काल में ६० से ८० मानिक छात्र-धृति दी जायेगी तथा विद्यालय जाने व वापस करने से पहले का मार्ग-व्यय विद्यार्थियों के निजमानुसार देने का प्रावधान है। सहायकों से निवेदन है कि वे एक मई '७२ से प्रारम्भ होने वाले उनी खादी प्रशिक्षण अध्यास क्रम में कार्यकर्ता भेजवायें।

— शीतलामण्डल सिंह
आचार्य

(पृष्ठ ४१९ का योग)

बड़ी दिनचरसी से देख रहा था और स्वाभाविक तौर पर मैं यह पना चाना चाहता था कि यह महाराज कौन है। मुझे यह अन्दाजा ही गया था कि वे दोनों टिकट बेकर उनकी अवतलित जानते हैं। उनमें से एक थे, जो सर शुभाये लड़ा था, मैंने पूजा वो उजने शुकर अपना मुँह मेरे कान के पास लाकर, बहुत धीरे से कहा—'धातक रचनात्मक है।'

यह उत्तर सुनकर मैं नहीं समझ पाया लेकिन उत्तर की सारणी नीर उजनी मासूक्षित मे मुने और प्रसन्न पूजने की इनामत नहीं दी।

गाड़ी चल रही थी। पटना जवान करीब आ चुका था और मेरा दिमाग मगिन से बहुत दूर स्थितिक के पार जाँकने में व्यस्त हो गया था। ●

पढ़ें

गाँव की आवाज
(हिन्दी पालिक)

सम्पादक : राममूर्ति
वार्तिक शुकर . ४ करदे
सर्व सैना संघ, पत्रिका-विभाग
राजघाट, धाराणसी-१

गाँव-गाँव में ग्रामस्वराज्य का सन्देश पहुँचाने का निश्चय

मध्य प्रदेश सर्वोदय सम्मेलन का निर्णय

गत १४-१५-१६ मार्च को सिवनी में गांधीजी की अंजलि दिव्या सुधी सरला महल की अध्यक्षता में सम्पन्न १२वें मध्य प्रदेश सर्वोदय सम्मेलन में गांधी शताब्दी के दौरान ग्रामस्वराज्य के स्वर्ण में "मध्य प्रदेश-दान" के संकल्प को दुहराते हुए दस वर्ष स्वतंत्रता की रजत-जयन्ती के निमित्त प्रदेश के खण्डम ६७,००० गाँवों में ग्रामस्वराज्य का सन्देश पहुँचाने का निश्चय किया गया है। इसके लिए राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक स्तर पर कार्यक्रम बनाने एवं संभालने के लिए समितियों के गठन का भी सुझाव दिया गया है।

सम्मेलन द्वारा सर्वसम्मति से तत्काल एवं प्रचारित निवेदन में देश और प्रदेश की राजनीतिक स्थिति पर विचार करते हुए प्रदेश में ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य के अपने संकल्पित काम को "प्रदेशदान" के तन्त्र में प्रतिष्ठान करने के लिए जिलों के गाँवों में व्यापक चोर-सम्पर्क, ग्राम लोगों में ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य के लिए अनुकूल भावना जगाने की दृष्टि से पदयात्राओं, चित्रों, मोटियों, प्रतियाँ और सम्मेलनों के माध्यम से सतत प्रचार-प्रसार करने की आवश्यकता पर निर्णय दिया है। इसके अलावा ग्रामदानी जिलों में दृष्टि-केन्द्र सदा करने, योजनापूर्वक मुरान-भूमि भूमिहीनों में विस्तार करने एवं आन्ध्रदेश के माध्यम से ग्राम-समाज में ग्रामस्वराज्य के विविध कार्यक्रमों के लिए आर्थिक अभियुक्तता और अनुकूलता के लिए यत्न करने का कार्यक्रम प्रस्तावित है। शिक्षा में क्रांति, सामाजिक सुधार और मध-निवेद को दृष्टि से ग्रामदानी क्षेत्रों में चोर-सिद्धांत का काम सतत चले और

इन कामों के बारे में भावना की नीति और दृष्टि बदलने का सुझाव है।

मध्य प्रदेश की समस्त रचनात्मक संस्थाओं के मिले-जुले प्रयत्नों और सामूहिक धुरणों से उन्नत चारे काम एक निश्चित अवधि में जन-शक्ति द्वारा जोर पकड़ सके, इसके लिए समन्वय और सहयोग के लिए आह्वान किया गया है।

नयी कार्यकारिणी

उन्नत सम्मेलन के अवसर पर प्रदेश सर्वोदय मण्डल की नयी कार्यकारिणी का गठन श्री कानिनाथ बिशेदी की अध्यक्षता में हुआ। इन्द्रपाल मिश्र, रीमा (मन्त्री) तथा श्रीमती सरस्वती दुबे, रायपुर और सत्यनारायण शर्मा, सिवनी (सहमन्त्री) हैं।

प्राकृतिक चिकित्सा-सम्मेलन

इन्दौर, २४ मार्च। मध्य प्रदेश गांधी स्मारक निधि के तत्वावधान में गत १९-२० मार्च को गांधी भवन, छतरपुर में आयोजित प्रादेशिक प्राकृतिक चिकित्सा सम्मेलन सम्पन्न हो गया। सम्मेलन को अध्यक्षता केन्द्रीय गांधी स्मारक निधि के मंत्री श्री देवेन्द्र कुमार मुल ने की और उद्घाटन केन्द्रीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद के उपाध्यक्ष श्री प्रभाकर ने किया। इस सम्मेलन में प्रदेश के विभिन्न जिलों में वैचारिक २४ से अधिक चिकित्सकों एवं प्राकृतिक उपचार प्रेमियों ने भाग लिया।

सम्मेलन ने सर्वसम्मति से पारित एक प्रस्ताव द्वारा राज्य सरकार को प्राकृतिक चिकित्सा के पट्टित को मायदा देने और उछे मध्य प्रदेश आधुनिक, यूनानी और प्राकृतिक चिकित्सा बोर्ड में शामिल करने के लिए धन्यवाद दिया।

पत्र-संपादन का पता :

सर्व सेवा संघ, पत्रिका-विभाग
राजघाट, धारागती-१

द्वार : सर्वसेवा फोन : ६५३९१

सम्पादक
राममूर्ति



इस अंक में

- मिट्टी का तेल, —सम्पादकीय ४११
- अभ्युक्त ईश्वर की नमस्कार —विनोबा ४१२
- ग्रामस्वराज्य में मध्यम की प्रतिष्ठा हो —श्री दादा धर्माधिकारी ४१३
- महावीर की वैद्विहा —श्री यशपाल जैन ४१६
- यावत्ता की भिन्न-भावा —श्री विश्वबन्धु चटर्जी ४१७
- सौताना शासनी से एक मुलाकात—श्री श्री ० ना० ४१८
- 'धार्मिक रचनात्मक' —श्री शरद अग्र ४१९
- जायरी के पत्ते —श्री दादा ४२०

अन्य रत्नाम्भ

आपके पत्र, आन्दोलन के समाचार

वार्षिक मुद्रक : १० रु० (शेडर कागज : १२ रु०, एक प्रति २५ पैसे), विदेश में २४ रु०; या ३० किलोग्राम या ४ बालर।
एक अंक का मूल्य २० पैसे। बीहड़करत मद्रु द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं मनोहर श्रेष्ठ, धारागती में मुद्रित

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

“ममि मयन” संघ : १८, अंक : २८;
२६ अप्रैल, १९७२
प्रा.सं. संघ संघदाख्य

सर्व-सेवा-संघ
संघ-संघदाख्य



१५

सोखोदेवरा सर्वोदय आश्रम के कुछ कार्य

'श्रीराम चौर हंगर बन्धन सोसाइटी' की वार्षिक सहायता से साम-निर्माण मण्डल सर्वोदय आश्रम, सोखोदेवरा द्वारा कृषक प्रशिक्षण-योजना का संचालन गत वर्ष १९७१ से कर रहा है।

कृषि प्रशिक्षण योजना के अन्तर्गत नवादा कृषकमण्डल के चार प्रखण्डों (नवादा, अरबपुर, गोविन्दपुर और पकरीवरवा) के २१ गाँवों के किसान प्रशिक्षण में सम्मिलित किये गये हैं। इन प्रखण्डों के अतिरिक्त कौशाकोल प्रखण्ड में स्थित धाधन के पाँच किसानों को भी सम्मिलित किया गया है। उन्नत बीज, खाद और पोशा-संरक्षक दवाओं के अतिरिक्त प्रशिक्षार्थी किसानों को कृषि की नवीनतम जानकारी प्रदान कर उन्हीं के खेतों में धान, गेहूँ और सब्जी की उन्नत बंश से खेती करने का प्रत्यक्षण कराया गया जिसमें उन्हें उपाय विधानों की अपनी झालों से देखकर बड़े विश्वास हो कि आधुनिक कृषि की जानकारी प्राप्त कर निश्चय ही उत्पादन में तीव्रता से वृद्धि लायी जा सकती है। प्रत्यक्षण एवं प्रशिक्षण का प्रभाव इसी तथ्य से जाना जा सकता है कि जहाँ किसान धान की उपज सुदूर तक से १० मन लेते थे वहाँ उनकी उपज ३० मन आसानी से हुई। गेहूँ और सब्जियों के प्रत्यक्षण का प्रभाव भी किसानों पर अच्छा रहा है।

कृषि की नवीनतम जानकारी का प्रसार किसानों में अभावक रूप से हो, इसके लिए प्रशिक्षण-योजना के अन्तर्गत अन्य कार्यक्रम भी रखे गये। २९, ३० और ३१ जनवरी १९७२ को नवादा में आयोजित किसान भेले में किसानों की कृषि-प्रगति की झाली एवं कृषि के आधुनिक यंत्रों के प्रदर्शन को देखने का अवसर मिला। भेले में राक-सूखी-प्रतिनोषिता भी रखी गयी जिसमें किसानों ने बड़ी दिनचरणी से भाग लिया। प्रतिनोषिता

में विजयी किसानों को पारितोषिक भी दिये गये।

शिक्षा में प्रवास का महत्त्व समझने हुए प्रशिक्षार्थी किसानों के लिए एक सशिक्ष अस्पष्ट प्रवास की भी व्यवस्था की गयी। राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय द्वारा दोनरी में आयोजित किसान मेला तथा पटना स्थित कृषि अनुसंधान केन्द्र एवं पोशा-संरक्षण-केन्द्र के अग्रगण्य ९ कृषकों को कृषि-सम्बन्धी बहुत-सी बातों की जावकारी प्राप्त करने का सुव्यवहार मिला।

प्रशिक्षार्थी ग्रुपों तथा उनके प्रत्यक्षण द्वारा प्रभावित अन्य किसानों में उन्नत ढंग से खेती करने की अभिधि उत्पन्न कराई गयी है। उन्हीं अग्रगण्य में मिलाकर आधुनिक खेती के प्रकार के लिए यंत्रों मण्डलों का भी निर्माण किया है जहाँ से खेती की विभिन्न समस्याओं पर चर्चा करते हैं और उनके समाधान के लिए उन्नत बीज, खाद, दवा के अतिरिक्त कृषि यंत्रों के उपयोग की सुविधा प्राप्त करने की भी माँग करते हैं। कृषि-प्रशिक्षण-कार्यक्रम का प्रभाव शून्य के किसानों पर बड़ा उत्साहजनक है।

प्रशिक्षण एवं निर्माण-कार्य

'अविशेष' नामक इन्फेण्ड की एक संस्था प्राय निर्माण मण्डल को कौशाकोल प्रखण्ड के खरीब किन्तु प्रगतिशील किसानों को वार्षिक तथा सामाजिक दशा सुधारने एवं सशक्ति रूप से उन्हें काम करने में वार्षिक मदद कर रही है। इस मदद में किसानों ने जो कार्य २४ विभिन्न गाँवों में किये हैं उनसे कृप-आहर, शौच-निर्माण, सामूहिक खेती आदि उल्लेखनीय हैं।

सोखोदेवरा आश्रम में कृषि-प्रशिक्षण-कार्यक्रम द्वारा गतियों के किसानों में पचत करते एवं नई बाधों की प्रवृत्ति भी हो रही है।

सतु सिन्दार के लिए नालियाँ

आज जब कृषक मूल्य द्वारा पानी से नैम होता आ रहा है वहाँ उसके समझ समझा है कि उन्नत पानी का पूर्ण उपयोग कैसे हो। क्योंकि कच्चे पानी से पानी से जाने में पानी जमीन में सोखने, वाष्पीकरण आदि के द्वारा लगभग लगभग भाग बरबाद हो जाता है। इसे रोकने के लिए मिट्टी से निर्मित नालियाँ बरदान के रूप में सामने आयी हैं। आज सारे भारत में इनका उपयोग सतु सिन्दार में किया जा रहा है। सर्वोदय आश्रम, सोखोदेवरा द्वारा अभी तक कौशाकोल अक्षत में ३१ हजार फुट से भी अधिक मिट्टी की नालियाँ बनायी जा चुकी हैं। इनसे २१५ एकड़ भूमि की सिन्दार की जाती है तथा इनके प्रयोग से लगभग १० एकड़ कृषि-योग्य भूमि बचायी गयी है।

पुष्टि-कार्य

गया विलान्तर्गत कौशाकोल प्रखण्ड में अब तक १२ गाँवों में प्रायदान-पुष्टि-कार्य सम्पन्न किया जा चुका है।

उपरोक्त १२ गाँवों में से ११ गाँवों की पुष्टि-सम्बन्धी समाचार विहार मण्डल के साधारण अक्ष ६० पटना ६५४ दिनांक ७ दिसम्बर १९७१ में प्रकाशित हो चुका है।

शिक्षा में अभिनव प्रयोग

शारीर पुनर्निर्माण के अन्तर्भ में जीवनोपयोगी शिक्षा के माध्यम से परि-वर्तन लाते के लिए कार्यक्रम तैयार किया जा रहा है।

स्वामी प्रामोद्योय विद्यालय

सोखोदेवरा आश्रम स्थित स्वामी प्रामोद्योय विद्यालय में गत २० दिसम्बर से १९ अक्षिपित परतु अनुपवी प्राय-सहायको का पाँच माटु का तथा गत २० जनवरी से २६ स्वामी प्रामोद्योय सगठनों का ग्यारह माह का अक्षान्त-क्रम चल रहा है।

(घेष पृष्ठ ४३ = ५५)

काली सारी नगरी !

हिन्दू मानते हैं कि जो बाहरी दुनिया अर्थों से पिछाई देती है वह माया है; यथार्थ वह है जो दिखाई नहीं देता। इस अर्थ में हमारा सृता बाजार माया है; यथार्थ है बाता बाजार जो गुप्त है। सरकार द्वारा नियुक्त बांधू समिति ने अनुमान लगाया है कि बाते बाजार में लगभग ७० अरब रुपया है। इस ७० अरब की ही वह शक्ति है जिसे लेकर बाजार सरकार के मुनाबने तककर छोड़ा है। इसी से बड़े मुन्षों को अपनी मुट्ठी में रखता है, सरकार के शक्तियों की परवाह नहीं करता, ईश्वर नहीं देता और जो चाहता है वही करता है। सोने तथा अन्य चीजों को सरकारी में यह काला बाजार सब तो फायदा उठाता ही है, इसके अन्वया न जाने कितनी पूंजी बिना भेज देता है। एक ओर देश दूसरे देशों से पूंजी आगता है, दूसरी ओर काला बाजार पूंजी बाहर भेजता है।

ऐसा नहीं है कि सरकार को बाते बाजार का पता नहीं है। पता है, लेकिन वह कुछ कर नहीं पा रही है। बड़ा अफस है कि अधिकांश काला सया दस और पांच रुपये के नोटों में है। इन नोटों को सरकार क्या करे ? बड़े नोट बाजार से उठा दिये जा सकते हैं, लेकिन ये छोटे नोट कैसे उठाये जायें ? उपाय हमारे भी हैं, लेकिन सरकार उन्हें कर नहीं पाती। कारण यह है कि उपर से देखने पर सरकार और बाजार दो क्राम, कभी-कभी परस्पर विरोधी, शक्तियाँ दिखाई देती हैं, और लगता है कि सरकार जब चाहे बाजार पर हावी हो सकती है, लेकिन सचवाई दूसरी है। बाजार के हाथ में ऐसी शक्ति है जो सरकार के किये में सुरंग बना देती है। 'काली' नोट जैसे दूसरा मान शरीरही है, उसी तरह सरकार के छोटे-बड़े अधिकारियों को भी शरीरही है। कितने हैं जो इस तरह बिकने की तैयार न हों ?

अधिकारियों को ही नहीं, सब तो काला बाजार पूरी राजनीति को मुट्ठी में करता जा रहा है। जो पैसा मान तो मनचाही शरीर-बिको करता है, और सरकारी का सारा शरीरबार बनाता है, वही चुनाव में हार-बीत का संस्था करता है। इतना बेशुमार सया नहीं से जाता है जो चुनाव में पानी की तरह बहता है ? एक-एक चुनाव-क्षेत्र में दर्जनों मोटरों और जोंपों की बाँझी हैं ? किस पैसे से लोगों का पैदल बन्द किया जाता है ?

राजनीति में दलों-विदेही दोनों जगह का काला पैसा घुसा हुआ है। पसोने की बसाई से राजनीति नहीं चलती, और म पसोने की बसाईबाले के लिए राजनीति में जगह होती है।

बाता बन्दार और काली राजनीति : इन दोनों में किसने पिछको पहिले जाता किदा ? उतापारी के हाथ में कोटा-अभित-

लाइसेंस है, व्यापारी के हाथ में पैसो है। दोनों का लेन-देन दूसरे मशयुद्ध के समय बड़े पैमाने पर शुरू हुआ जब कम्युनिज लगामे गये। उद्य बचत को गठबन्धन हुआ यह मजबूत होता गया; बड़ो-बड़ो बाज उचने पूरी सरकार की ओर पूरे सयात्र को अपनी मुट्ठी में कर लिया है। लगता है जैसे सारी नगरी नानी हो गयी हो !

राजधानियों में जो हो रहा है वह तो ही रहा है, गाँव में भी हम वहाँ बाईं चित्र की तीनों भुजाएँ देन सकते हैं। उतापारी, व्यापारी, अधिकांश—दुसरी सम्मिलित शक्ति से काला बाजार चल रहा है, और इन्हीं से राजनीति चल रही है। नृनिष्ठा की शैलिये ये तोड़ चुके हैं, मनुष्य के मन से शयवाय का मय निष्कन चुरा है, प्रकाशन को शिकं डोबा छोड़ा है। सब में तीनों इस पदुपन में तरो हुए हैं कि लोकलन में संस्था की जो शक्ति है वह भी टूट जाय। मतदान-केंद्र पर जबरदस्ती बन्ना करना उची दिशा में एक सपष्टित प्रयत्न है।

माया के पदों के फटे बिना मुचित नहीं। लेकिन माया का पदों फटेगा कैसे ? क्षान के सिवाय दूसरी कोई शक्ति नहीं जिससे मनुष्य माया पर पार पा सके। इसीलिए कानियाँ पहिले दिमाग में शुरू होती हैं जो प्रखलित व्यवस्था को माया को परत लेती हैं। हमारे दिमाग में यह परत अभी पूरी नहीं हुई है। हमारे मन से माया निकली नहीं है। इसीलिए हम काले बाजार और काली राजनीति के बाते बारनामे देखते हुए भी अशह्याय बने बैठे हुए हैं। लेकिन शूर्वेण दिमाग और बड़ोने क्षम ।

धोती : तरे कितने काम ?

धोती कितने काम आती है ? धोती पहनने के काम आती है, यह सबको मालूम है, लेकिन उत दिन उम पुत्रक से इनका एक नया काम मालूम हुआ।

काम को अंधरा ही चुका पा। वह आया और चुनके से दरवाने पर खड़ा हो गया। मैंने पूछा, 'कहो, कुछ कहना है ?' बोला, 'बहुत बहून कुछ है, साग सुनो ? मैं उन्हीं मानिक का पहरेदार हूँ जो आज की सभा के सभापति थे।' मैंने फिर कहा, 'गंभीर क्या कहना है ?' कहने लगा, 'देसिए, मैं जाना हूँ, काम बिने तो अच्छी तरह कर सकता हूँ। पर मैं मात आत्मी भेरे आसने हूँ। भेरे पास दो घोषियाँ थीं। इस दिन हुए मेरी बहून सघुपाल का रही थी। एक घोठी बेचकर मैंने जाते समय अपनी बहून को तीन रुपये दिये। अब यही एक घोठी बची हुई है। इसी को पहन कर खड़ा हूँ। आधे शिरे को निभोड़-कर गुला सेता हूँ; फिर उसे सपेटकर ओगे शिरे को गुलाठा हूँ। रान को आधी से साज डके रहता हूँ, बाकी को बादर की तरह झोड़ लेता हूँ। कभी-कभी बड़े बचने को मोद से रिफान-कर उसे भी झोड़ा लेता हूँ। सोचता हूँ इस तरह यह घोठी कितने दिन चलेगी, और जब चलेगी, तो क्या करेगा ? तभी के लिए पैसा नहीं से मारना ?'

सहरसा-मोर्चा गणराज्यों की स्थापना का प्रयास है

• धीरेन्द्र नजूमदार

[१९ मार्च '७२ को सहरसा में सामस्वराज्य-अभियान के प्रारम्भिक दिवस में दिये गये भाषण से । सं०]

घाटके दर्शन से मुझे दोहरी खुशी है। पहली खुशी इस बात की है कि मैं मोक्ष-पथा का दर्शन करके आ रहा हूँ और यहाँ लोह-समुद्र का दर्शन कर रहा हूँ। सारे देश के लोग यहाँ एक साथ मिलते हैं। दूतरी दुसरी इस बात की है कि गांधी-युग में यह पहला अवसर आया है जब हिन्दुस्तान के इतने गांधीजन गाँवों में जाकर काम करने के लिए इच्छा व्यक्त हो। सम्मेलन, अभियोग आदि अनुष्ठानों में लोग इच्छा करते हैं, लेकिन जब से मैं इसमें शामिल हुआ हूँ तब से, पिछले दशकयन्त्र साके से, यह कभी नहीं देखा कि गाँवों में जाकर काम करने के लिए इतने गांधीजन एक जगह एक साथ जुटे हों। इसलिए मैं इस अभियान को बहुत महत्वपूर्ण मानता हूँ।

जो प्रयास हम कर रहे हैं वह परोक्ष कर्तई नहीं है। लेकिन महत्व इस बात का है कि साथ साथ गाँवों में साथ साथ गणराज्यों का गांधीजी का जो सपना था उसके लिए हम साथ मिलकर कोशिश कर रहे हैं।

ग्रामस्वराज्य की प्रान्ति के आधार

मैंने कोषाल में कहा था कि 'सहरसा या निराशा'। क्यों कहा था? आज उस बात को मैं मुख्य साक्ष्य मानता हूँ। मेरा मानना है कि सहरसा में गांधी जीवित या मरेगा। गांधी-भवन इसको मोट कर लें। मैं मानता हूँ कि सारी दुनिया गांधी को पूजती है। लेकिन यह गांधी की निम्न बात की पूजा करती है? गांधी धीरे

पुरुष था, गांधी महापुरुष था, गांधी युग-पुरुष था। भारत के बाहर की सारी दुनिया धीरे पुरुष गांधी को पूजा करती है। भारत के लोग महापुरुष गांधी को पूजा करते हैं। लेकिन युगपुरुष गांधी की पूजा ध्यान कोई नहीं करता है।

बीरपुरुष जहाँ नहीं कुछ देखेगा, अन्वय देखेगा, श्रव्याचार देखेगा, शीघ्र देखागा, वन देखेगा, उनका उदक सुनायेगा करेगा। गांधी यह करता था। लेकिन क्या गांधी से पहले बीरपुरुषों का जन्म नहीं हुआ था? क्या आज भी ऐसे लोग नहीं हैं दुनिया में? गांधी ने इतना ही न कहा था कि भाई, बन्दूक लेकर मुनाबला नहीं करना है, शान्तिमय प्रतिरोध करना है। जित युग में तुनिवा नि सन्तोषकर को बात कर रही है, उस युग में अगर गांधी ने नि ज्ञान प्रतिरोध की बात बतायी तो यह तीन-ती बड़ी बात की? तो केवल शान्तिमय प्रतिरोध के सहारे गांधी जिन्दा नहीं रह सकता।

हमारे देश के लोग महापुरुष गांधी को पूजा करते हैं। गांधी-मताब्दी में जो भाषण हुए, उन्हें मैं पढ़ना था, सुनना था—गांधी को ज़िन्दगी की सेवा करना था, गांधी की बचनी और करनी एक-ही थी, गांधी बच्चों को प्यार करना था, गांधी ऐसा करता था, वैसा करता था, ऐसा आदर्श पुरुष था—भाई, हर महापुरुष ऐसा करता था। इसमें गांधी की कोई विशेषता नहीं रही। महापुरुषों की

छोड़िये, बहाने से पहलव भी ऐसा करते हैं। लेकिन भारत गांधी की इसी चीज के लिए पूजा है।

लेकिन गांधी युग-पुरुष है। सनातन मानस से, इतिहास की प्रामाणिक व्यवस्था से समाज भय के ज़रिये चलता था रहा है। मनुष्य ठीक रास्ते पर रहा है मरण के भय से, समाज और पृथीराज के भय से। पृथीराज समाज की अनुचित रखेगा यह सर्वमान्य विचार रहा है। दूर विचार की मान्यता इसको रही है। गांधी पहला आदर्श था जिसने कहा, सर्वत्र भय-दर्शनम्। भय का स्थान समाज में नहीं रहेगा अपितु अतिक्रम समाज रहेगा।

विनोदा ने सहरसा का उद्घोष गांधी के इसी विचार को लेकर किया है। इसीलिए मैंने कहा कि यहाँ गांधी मरेगा या जीवितगा। सरकार मुक्त गाँव और बाजार-मुक्त जनता यह उलटा नारा है। हमारे बहुत-से नौकराज बहने हैं कि विनोदा सदाग्रह नहीं करता है। उसकी धूर्त-रचना में यह मुक्ति है। आगे सरफ अन्वय हो रहा है। अन्वय का प्रतिरोध क्या चीज है? श्रद्धाचार का प्रतिरोध क्या चीज है, शीघ्र और दमन का प्रतिरोध क्या चीज है? यह मानसना चाहिए। वनाच से, दमन से समाज चले, सरकार और बाजार की रूढ़ी में समाज रहे, समाज की चानक-पणित भय रहे और उसके परिणामस्वरूप जगह-जगह अन्वय होगा रहे, भोग्य होगा रहे, दमन होगा रहे, और उसका मुनाबला किया जाय। तो परिणाम क्या होगा? किसी ने किसी की जमीन छीन ली है, किसी ने किसी को धोखा दिया है और हम सबने जो गये अन्वय का प्रतिरोध करने के लिए। अब प्रश्न उठता है कि समाज का जो

→ बहते-बहते उस २६-२७ साल के मुबक का मया रेष गया। ग्लानि और शोक का पुतला बना यह पौड़ी देर निरन्तर खड़ा रहा। उसे और क्या कहना था, और मुझे क्या सुनना था? अगर कान ही हो दूख भी अत्यन्त बढ़ानिया बिना कहे सुनी या सकनी है।

मैंने यह तो देखा था कि पीली पट्टी जानो है, कौड़ी जाती है, बिछा भी ली पारी है, लेकिन यह नहीं सुना था कि बहने की बिनाई में बेचो भी जाती है। बेचनी पीली से निरपे मने-नये काम से होती है।

कोचा है, चालक-कवच है, वंश है, वह अगर बही है, जो आर तक रहा, तो क्या होगा? हम जगह-जगह प्रतिरोध करते रहेंगे और ऐसा ही समाज बनना आवश्यकता रहेगा। अधिकार को यह आवश्यकता नहीं होनेवाली है।

अब यह मोटी बात समझ लें कि यहाँ आप शासन-मुक्त समाज का प्रयोग करने निकले हैं। सम्पत्ति को समाज की बात-कवच के रूप में परिष्कृत करने निकले हैं। दाँव को बाजार से बाहर निकालने के लिए निकले हैं। सारी दुनिया में यह सिद्धांत सर्वमान्य है कि सर्व-जीवि बाजार के नियमों से बचेगी और सामाजिक व्यवस्था सरकार के बाज़र से बचेगी। इसको आप बन्दना चाहते हैं। इसीको कान्ति कहते हैं। बाज़र कान्ति की बात तो बहुत होना है। उस-बाज़र कान्ति की बात तो बहुत कान्ति है। वह बड़ बाय तो वह हरि कान्ति है और बल बंद बिच रोड बड़ बाय तो वह अनेक (ग्याम) कान्ति हो जायेगी। गांधी की कहिया 'अहिंसा परमे धर्म' की कहिया नहीं है। समाज अहिंसा से बने यह गांधी की कहिया है। दुनिया में बाज़र एक इनको किसी ने नहीं स्वीकार किया है। गांधी के बड़े-बड़े कार्यवाही भी नहीं स्वीकार किया है। उल्टे लिहाज़ से कि रिनेटा सरकार में क्यों नहीं जाता है।

कान्ति का अर्थ : मान्यता-परिवर्तन को गांधी की कान्ति है वह क्या है? एक जमाना था जब सामाजिक न्याय सर्वमान्य को नहीं थी। गुनाह रचना, प्राथिक लोगों के लिए भी कोई हकी बाण नहीं थी। मरदा की जानेबाने जन्म-जन्मदे प्राथिक आरम्भ भी बड़े साम-हकरी काठे ही बड़े मरदा की बाटने हैं, जाने हैं। उसे वे रिना नहीं मानने। उनके लिए वह सामान्य निरपेक्ष है। उन्के ही एक जमाना था, जब गुनाह रचना, मरदा को दूरी होने दराये रचना, समाज में सामान्य बाज़र थी। जिन्हें सोम सर्व-मुक्त करने के, महामुक्त करने के,

वे भी ऐसा करते थे। उनको यह बस-रता नहीं था। उस समय यदि किसी ने सामाजिक न्याय का नारा उठाया, उसका बान्दोलन चलाया तो मैं उसे कान्ति कहूँगा। बाज़र के समाज में सामा-जिक न्याय सामान्य मान्यता हो गयी है। तोषण नहीं करना चाहिए, दमन नहीं करना चाहिए, धोरी करना पाए है, यह सब मानते हैं। ऐसी हालत में समाज का प्रतिहार कोई मान्यता-परिवर्तन का काम नहीं है। जिसके बारे में यदि आप धाराय नहीं हैं, उसके बारे में यदि आप धाराय उठाते हैं, तो आप कान्ति करते हैं। लेकिन वो बात समाज में मान्य होने पर भी जहाँ-जहाँ उसपर अयन नहीं हो रहा है, उसे कान्ति कोई कान्ति नहीं है।

बाज़र धारे निच की मान्यता है कि समाज चलेगा सरकार के जरिये और जन-जीवन या प्राथिक जीवन चलेगा बाज़र के जरिये। बाज़र का तोषण और सरकार का दमन यह अन्तरी बाज़र में होने पर भी अनिवार्य हुआई है। यह ज़रूरी है, उसके बिना चलेगा नहीं। यह मान्यता केवल ह्यारे देस में नहीं धारी दुनिया में है। इसलिए तोषण और दमन के प्रतिहार के लिए, सारी दुनिया में प्रतिदिन एक लाख हत्याग्रह होते रहें, तो भी गांधी नहीं बोलिया, यह मैं आपसे कहना चाहूँगा हूँ। लेकिन दुनिया के छोटे-छोटे कोने में भी जन-जीवन को सरकार और बाज़र से मुक्त होने की सम्भावना भी यदि प्रकट हो जाए तो गांधी जिन्दा रहेगा, कान्ति होगी। यह हमारी बात में बहना चाहता था।

कान्ति का आधार : मान्य-मुक्ति और लक्ष्यवा
यहाँ कुछ सर्वोप-मरणों के देसक माने हैं, कुछ रचनात्मक संस्थाओं के देसक माने हैं, कुछ रचना संशोधन-केसक भी माने हैं और सब जगह से बाये हैं, यह बड़ी गुणी की बात है। राजनीतिक रचन बना के बान्दोलन के अर्थ में भी गांधी ने एक चीज बही थी। उन्होंने

कहा था कि यह बान्दोलन आत्म-मुक्ति का बान्दोलन है और उसका मार्ग बताया था—उपस्था। आत्मोप-जब गांधी में जायेंगे, तब गांधीवालों के सामने आप बना पंच करना चाहते हैं, को-ली प्रतिमा पंच करना चाहते हैं, यह आपकी सोचना है। लोग आपकी ओर जिस दृष्टि से देखेंगे तो ये भूमि-मयस्था को हल करने के लिए आये हैं, बीबा-बूटा बोलने के लिए आये हैं, या जन-जीवन को हिलाने के लिए आये हैं? रिपुलिय आये हैं? अगर गांधी की बचता है मारपी, तो कान्ति आत्म-मुक्ति के जरिये, आत्म-बन्ध के जरिये करना होगा। मुने कोई दिनचरवी नहीं है इस बात में कि आप बिना बीबा-बूटा बोलेंगे। अगर आप एक महीने की बली कृति से, अपने दुश्कोण से, अपने रा-उप से, जन-जीवन में यह बिनाप पैदा कर सके कि यह गांधी का बान्दोलन है, आत्म-मुक्ति और आत्म-बन्ध का बान्दोलन है, तो आा जिन्दा पणह करके तोड़ने, यह मैं आपसे कहना हूँ।

रचनात्मक कार्यकर्ता पॉल चर्च का समय दें
कोभी बात में आपकी ओर मारके मार्कंड देसवर के रचनात्मक संस्थाओं को सर्वोदय मण्डलों की बगलना चाहना हूँ कि देशभर में जा काम चल रहा है, यह बात भर के लिए अगर बन्द कर दिया जाय और सब सहाय में आ जायें, तो एक राष्ट्र, एक बावबर भी नहीं बिपन्ना। रचनात्मक संस्थाएँ बनी कर बना रही हैं? यहाँ एक-को पालो बना रही हैं, बही दो-चार हजार बरखा बना रही हैं, बही ननी-तानीम-गाला बना रही हैं और ऐसा ही कुछ और कर रही हैं। सारे देस के सर्वोदय कार्यवाही को, उनके जो रचनात्मक काम कर रहे हैं, उनसे मैं बहना चाहता हूँ कि एक ही जिने में अगर गांधी का सामन्तराज्य हो जाय तो हिन्दुस्तान भर में कुछ रचनात्मक प्रवृत्त बिन्नी बनती है उसके देस गुना बलि-क-

बुलन्द-बन :

दैवी संस्कृति में अपरिग्रह

● काका कालेलकर

आश्रम के ग्यारह प्रती में अपरिग्रह का स्थान सर्वोपरि है। हम देखते हैं कि इसका पालन करना आसान नहीं है। महर्षि पतञ्जलि के योग-सूत्र में अष्टांग योग का प्रारम्भ ही योग-नियमों से होता है। उसमें अपरिग्रह आता है। बाद के लोगों ने पाँच यमों के दस धम बना दिये, लेकिन अपरिग्रह का नाम हटा दिया। उसकी जगह कहीं-कहीं आता है 'अकल्कता,' सत्य, अहिंसा, दया, अस्तेय। ये सब चाहे जितने कठिन हों, इन्हें निश्चय रहा। सो उनका पालन अशक्य नहीं।

लेकिन 'परिग्रह' एक ऐसी बला है कि उससे छटना आसान नहीं है। गायत्री कहते थे—हमारा शरीर भी एक तरह का परिग्रह ही है। जितनी भी बलाएँ चिपकती हैं, सब की हम परिग्रह कह सकते हैं। संस्कृत में परिग्रह का एक अर्थ है बन्ध। साकुन्तल में राजा दुष्यन्त आश्रम-नन्दा शकुन्तला की छवियों को आभ्यासन विधाते कहता है, 'मैं राजा हूँ। मेरे अन्तःपुर में परिग्रह बहुत है। लेकिन मेरे मुल भी प्रतिष्ठा दो ही परिग्रह पर अवलम्बित रहेगी। एक है

यह समुद्र-वलन-विता पृथ्वी, और दूसरी होगी तुम्हारी यह सखी।'

परिग्रह चोरी है

आज की दुनिया को हम देखें और उसके मानव भी लगयें, तो हम समझ सकते हैं कि सारी दुनिया अपना परिग्रह बढ़ाने की ही कोशिश में है। धन-सम्पत्ति, साधन-सम्पत्ति सब कुछ परिग्रह ही है। जिस राष्ट्र के पास परिग्रह ज्यादा है वही राष्ट्र दुनिया में श्रेष्ठ गिना जाता है। समाज में जिसके पास साधन-सम्पत्ति अधिक है वही, समाज का नेता या श्रेष्ठ बनता है। मनुष्य की शीर समाज की जीवन-सिद्ध और उनका सामर्थ्य परिग्रह की विशालता के ऊपर ही अवलम्बित है। ऐसे परिग्रह को अर्थों में 'रिसोर्स' कहते हैं। तो अपरिग्रह का अर्थ क्या है ? (जिन लोगों ने पाँच, छ या दस यमों में अपरिग्रह को जगह अवसरता को स्थान दिया, उन्होंने देखा होगा कि परिग्रह तो बाधक नहीं है। किसी चीज के हम 'मालिक' हैं, ऐसे भाव के कारण ही हम अन्न या कमजोरी में आ जाते हैं। 'अकल्कता का अर्थ होगा 'ईमानदारी', उसमें सब कुछ आ जाता है।)

समाज में जब हम अव्यभिचय धन अपना बढाकर रखते हैं, तब हम समाज का ग्रीह करते हैं; और अपनी आत्मोन्नति भी खतरे में डालते हैं। कुदरत ने जो भी चीजें बनायी हैं, सबके लिए हैं। हवा के बिना हम जी नहीं सकते। अत्यन्त जरूरी वस्तुओं में प्रथम स्थान हवा को ही देना पड़ेगा। पानी का पानी और खाने का अन्न हवा के बाद आता है। इस हवा का मालिक कौन है ? नदी का पानी भी सबका है। इस पर मालिकी हक किसी का भी नहीं। जित्त किसी को पानी पीना है, नदी के पास जाकर पी सकता है। नदी के बिनादे अगर आप जी सेंती है तो चाहे जितना पानी आप नदी से माँग सकते हैं, लेकिन आप नदी के मालिक नहीं हैं।

गांधीजी ने जब अपरिग्रह को आश्रम के प्रथम में स्थान दिया तब हमें समझाया, 'हम किसी भी चीज के मालिक नहीं हैं। मालिक समाज है। समाज की अनुमति से ही हम चीजों का उपयोग कर सकते हैं।'

'भी लोग मुझे दान देते हैं उसका मैं मालिक नहीं बनता। मैं तो केवल ट्रस्टी बनता हूँ। दान लोग देते हैं मुझे; लेकिन देता हूँ मैं आश्रम के नाम से। हमारा आश्रम समाज का ही प्रतिनिधि है।'

'रिश्ती भी सम्पत्ति के या साधनों के हम मालिक न बन सेंटे, तो अपरिग्रह सब का पालन हुआ। समाज के लिए, समाज की सेवा के लिए, सारी दिशि है। हम उसके बेबस ट्रस्टी (निधि) हैं। इतना समझने से हमारे अपरिग्रह-व्रत का पालन हुआ।'

इसके बाद आता है 'अस्तेय व्रत' समाज ने जो धन हमें ट्रस्टी के तौर पर दिया उसमें से अपनी आवश्यकता के लिए हम अन्न-वस्त्र आदि ले सकते हैं। लेकिन अगर हम हठ से ज्यादा लें तो वह सामाजिक धन की चोरी हुई। उससे बरते-व्रत का भंग हुआ, ऐसा समझना चाहिए।

→ रचनात्मक प्रवृत्ति एक त्रिले में सखी ही जायेगी। आप करके देखिये। आप अत्यन्त ध्रम में पड़े हुए हैं कि हम गांधी की सेवा कर रहे हैं। इसलिए मैंने देश-भर के कार्यकर्ताओं से पाँच साल की माँग की थी। अन्य कार्य पाँच साल के लिए यदि बन्द हो जायें तो बालभर का हट्ट नहीं होगा। अगर वह सफल हो जाय तो फिर देखेंगे। कोई नहीं मानता था कि हरना-गढ़ में भी कुछ खरिद है। शिष्ट दिन बारबोली का सत्याग्रह सकल हुआ उस दिन सारे देश में आग लग गयी। नवसत्र-बाढ़ो में उनलोगों के सब प्रमुख नेता बड़े

रहे तेरह-तेरह, चौदह-चौदह साल। जिस दिन वह प्रयोग कुछ सफल हुआ, सारे देश में आग लग गयी। अन्तिम ऐसे, 'बाई दो ये' नहीं होनी। सर्वोदय-समाज का यह 'साइब विभिन्न' ही गया है। हरेक के पास कुछ-न-कुछ है जो उसका 'भेन बिजिनेस' है। वही, एक महीना इन वाम में भी दो दो, यह मनोवृत्ति है। सारे सर्वोदय-समाज के लिए सहृदयता का राष्ट्रीय मोर्चा सर्व सेवा संघ का नाम है।

आज है आत्मोन्नत, जो यहाँ अर्थपान के लिए आये हैं, अपना पाँच साल यहाँ के कार्य के लिए देंगे। ●

परिग्रह में मनुष्य कहाँ पहुँचा ?

अब सवाल उठता है कि बुद्धत्व की सारी चीजें समस्त जगत् की हैं। मनुष्य-समाज क्यों माने कि वे केवल मनुष्य की ही हैं ? जहाँ जगत् में पत्तों के पेड़ हैं वहाँ फल खाने का अधिकार सबसे पहले पदायों को है, उसके बाद मनुष्यों को। लेकिन मनुष्य ने माना कि वो भी चीजें एक उन्नतजाति अपने हाथ में ले सकते हैं वे सब हमारी हुई; पशु-पक्षी, मछलियाँ, कीड़े-मकड़ों आदि प्राणियों को, और जीवों को, इस मूर्ति पर कोई अधिकार है नहीं। जहाँ मनुष्य नहीं पहुँचा वहाँ तक ही वे सब प्रभु की बुद्धत्व के नियम के अनुसार भी सहे हैं।

'जबरदस्ती का राज' और 'अधिकार का सिद्धान्त' सिद्ध, आप और हमों में घोड़ा कुछ पाया जात है। एक जंगल में दो या अधिक टोकर या बाघ रह नहीं सकते। यह जंगल मेरा है, एक बाघ को लेकर उनमें सांगड़ा हो ही जाता है। हाथी अपने जंगल पर अपना अधिकार मानते हैं या नहीं सो हम नहीं जानते, किन्तु कहते हैं कि एक-एक हाथी का अपनी-अपनी अनेक हृषिकियों पर अधिकार चलता है। एक हाथी अगर माया गया अथवा परास्त हुआ तो दूसरा हाथी हारे हुए भी हृषिकियों का स्वामी बन जाता है। वे सब परिग्रह करने के लिए ही मानो पैदा हुए हैं। अधिकार का अन्तिम आधार शारीरिक बल ही माना जाता है।

सारे यूरोप की सब गोरी जातियों का एक तरह से एकता बना। उन्होंने यूरोप की भूमि और वहाँ की पारिव्यक्तियों को अपना परिग्रह माना। औरों को वहाँ खाने नहीं दिया। भूमि पर अधिकार पाने के बाद उन्होंने सोचा कि हमारे हृदय पर एक ही धर्म का अधिकार बने सब को हमारा बन विजयी होगा। इसलिए उन्होंने सारे यूरोप के लिए ईसाई धर्म पण्डित किया और दक्षिण यूरोप में लैटिन धर्म की एक इस्लाम की ओरों से हुए

दिया। हम जानते नहीं कि हमारे धर्म हमारे परिग्रह है या हम उन धर्म के परिग्रह हैं ? लेकिन इस बात हम भौतिक चीजों को ही और भौतिक मानि को ही परिग्रह के रूप में सोच रहे हैं।

अब अगर सारा यूरोप-पण्डित गोरीयों का परिग्रह बन गया तो सारा अफ्रीका-पण्डित वहाँ के बाले लोगों का परिग्रह मानना चाहिए। लेकिन अफ्रीकी की अनात्म्य जातियों में अफ्रीका-ध्यायी एकता नहीं थी। वे अपनी-अपनी भूमि के टुकड़े को भी अपना परिग्रह मानने को सीखे नहीं थे। इसलिए गोरीयों ने वहाँ जाकर धीरे-धीरे अपनी शक्ति, अपनी संस्कृति का परिचय कराया। और सिद्ध किया कि उनके शरीर में बल है, दिमाग में समझ करने की बुद्धि है उनके लिए परिग्रह एक बड़ी शक्ति है।

आज अमेरिका के पास विन्नीबं भूमि है। भूमि के पेट में खनिज द्रव्य हैं नदियों के प्रवाह में समर्थ है। यह सारा वहाँ जाकर बसे हुए गोरीयों के लिए बड़ा ही कीमती परिग्रह साबित हुआ। अमेरिका के अन्तर्गत वजनी देश दक्षिण लोको को वहाँ की भूमि को अपना परिग्रह बनाने का काम नहीं पड़ा। दामों उन्होंने बरा पाया ?

अब हम 'संसार-मूलक समाज विज्ञान' की बात सोचते हैं और आरि-ग्रहण की उपयोगिता अपना आवश्यकता पर विचार करते हैं तब किसी भी निर्णय पर नहीं आ सकते।

दो संस्कृतियों

दुनिया में दो संस्कृतियाँ हैं। देवी और आसुरी। (गोता ने 'संस्कृति' को ही 'सम्पत्' कहा है। यह मन्द आरिग्रहण को वहाँ तक पण्डित होगा ? किसी ने धर्मों तक सोचा नहीं है।) देवी और आसुरी संस्कृतियों में कीन-सी भेद है, यह सवाल पुछने के पहले कीन-सी जीने के लिए समर्थ है, यह सवाल पुछना होगा। और 'देव-आसुर संसार में 'देव' को ही अन्तिम विजय है।' यह मन्त्र अन्तर्गत के द्वारा सिद्ध करना होगा।

जागतिक-संस्कृति के सामने सबसे बड़ा सवाल यही है कि दो में से कीन-सी विजयी हो सकती है ? परिग्रही या आरिग्रही ? इस विराट् सवाल को पूरे लोहर पर समझकर देखे हुए करने की हिम्मत समस्त मानवजाति में एक ही व्यक्ति ने दिखायी, वह थे महात्मा गांधी, 'सत्य और अहिंसा के बन पर, सत्याग्रह के रास्ते, देवी संस्कृति विजयी हो सकती है।' यह उनका सिद्धांत इतिहास के फल पर सिद्ध करने का प्रयोग उन्होंने प्रथम छोटे पैमाने पर अफ्रीका में और बाद में भारत में करके दिखाया और मानव जाति के सर्व-हृदय में आका उरारत की, कि 'सत्याग्रह के रास्ते देवी-संस्कृति विजयी होकर अपना श्रेष्ठत सिद्ध करेगी'।

इसीलिए मैं कहता हूँ कि पूर्ण अहिंसा पर विरासत रखकर उभरें रहा हुआ शांति-प्रेम प्रकट करनेवाले गांधी ही भगवान महावीर स्वामी के एकमात्र उत्तराधिकारी हैं। (स्वयं निहाल होकर, भारतीय युद्ध में शरीक होनेवाले भगवान श्रीरुण के भी उत्तराधिकारी गांधीजी को ही समझना चाहिए।)

आज एक आरिग्रहण का विवेकन अविगत भोग की दृष्टि से ही किया गया है। अब तो हमारी सारी भूमिका ही बन गयी है। 'हम सत्य मानव-जाति को बनने साथ एकत्र मानने आ रहे हैं। सुनि अविगत नहीं किन्तु सामुदायिक सुनि का आदर्श हीरकार कर हमने मुझ बनाया है 'सुनि मानो सर्वसुनि'।

अविगत सुनि के उदाहरणों ने आरिग्रहण-पण्डित आसुर परिग्रह समाज के हाथ में लीन दिया और अपने को टाटों पानी 'निधि' बना दिया। उनका रास्ता मानव का। अब जब हम समस्त मानवजाति को धीरे-धीरे क्रमशः एक-हृदय, एक-शांति, एक-समाज, बनाने का आदर्श मान्य करते हैं तो क्या हम सारे समाज को, समस्त मानव- [दो पृष्ठ २१० पर]

विश्वधारा और भारत

● रामनन्द मिश्र

प्रत्येक जीवन की एक जीवन-धारा होती है। टेढ़े-मेढ़े, जटिल सीधे, आयसंभाल घटना-क्रमों से घुनरता हुआ जीवन, जीवन की घुनर धारा के अन्तर्गत रहने की चेष्टा करता है। यही तरह प्रत्येक देश की अपनी जीवन-धारा होती है, जिसे हम इतिहास कहते हैं। राक्षसों और मन्त्रियों का आना-जाना, युद्ध तथा लक्ष्मियों और विदेश घटनाएँ स्वयम् में बहुत महत्व नहीं रखती। इनका महत्व है मूल्य जीवन-धारा के अनुसृत या प्रतिकूल होने में। अनादिकाल से भारत की जीवन-धारा के दो ही प्रधान बिन्दु रहे हैं—जीवन का आध्यात्मिक आधार और इन महान देश की एकता।

भारतमाता ने प्रत्येक युग में अपने मुमुक्षुओं के आध्यात्मिक जीवन की स्थापना और इस महान देश की एकता की वापसी की है। बुद्धदेव, जगन्नाथ, स्कन्द-शुभ, हनुमान, अकबर, शाही, समस्त भारत ने इन्हीं दो प्रधान लक्ष्य-भूमियों को कामना की थी। स्कन्दयुग को आज भारत का इतिहास भूत भया है लेकिन इतिहास-विद्वेद हुए यासाराओं से स्पष्ट प्रतीत होता है कि उस समय के भारत ने जितनी आभा-शरीर आँसों से स्कन्दयुग को देखा था। लोहित नदी के किनारे, देश के महान युद्ध में, इन युद्ध-समयों के विश्व महान वीरों का परिचय दिया था, एक निराविषय ने उनकी अविष्ट यादगार रख छोड़ी है।

इस महान देश की एकता के सूत्र में हीना बराबर ही अलायन साधन रहा है, फिर भी इस महान आशा की दीप-शिखा कभी बुझी नहीं। भाषा, धर्म और राजनीति के तान पर देश बार-बार टूटा है और बार-बार महायुद्धों ने इसे एकता के सूत्र में बाँधा है।

सामान्य संस्कृति और भाषा का निर्माण हो

भाषा की विभिन्नताओं के बीच, इन देश के महायुद्धों ने एक सामान्य भाषा के निर्माण की चेष्टा की है। प्राचीन काल में आचार्यों ने शास्त्रों और संस्कृत भाषा के द्वारा देश-जगती सामान्य संस्कृति की आधार-शिला रखी थी। युगस बरसाहों के अन्तरे में पौरो धारणियों की आवरणकला ने हिन्दी-उर्दू को जन्म दिया। आज नये तारे से, सारे देश को एक सामान्य भाषा और एक सामान्य संस्कृति का निर्माण करना है।

एसी तरह विभिन्न धर्मों का प्रत्येक भी आज देश में जटिल हो रहा है। संकड़ों सम्प्रदाय देश में बन गये हैं और इन विभिन्नताओं के बीच महान सुसंस्कृत संस्कृत तथा प्रेमपूर्ण जीवन-मानव सम्बन्ध हो उठा है। इन विभिन्नताओं के कठोर कणों के बीच मानव-जीवन-धारा सुस्थित हो रही है। क्या इन सबको मिटाकर धर्म-निरपेक्षता (सेकुलर) समाज बनाना छोड़, और कोई रास्ता भारत के सामने नहीं रह गया? इस देश के आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनीतिक और सामाजिक नेताओं के सामने सुप का यह महान खेल (चुनौती) है। इसका उत्तर देना ही इस युग के नेत्रन का महान खेल है। सब धर्मों को मिटाकर धर्म-निरपेक्षता के आधार पर क्या स्वल्प समाज का निर्माण सम्भव है?

इस सम्बन्ध में इस दृष्टिकोण को भी याद रखना होगा कि यह प्रश्न सारे विश्व का है। सारे विश्व को धर्म की आवश्यकता है; धर्म है—“सम्प्रदाय-विहीन मानव-धर्म (रैजिजन ऑफ मैन) क्या विश्व को दिया जा सकता है?” इस दृष्टि से देखें, ठो निम्नरे द्वारा क्यों हैं, भारत ने विश्व के सारे धर्मों का

अन्ततः निवृत्त से परिचय प्राप्त किया है। बुद्ध धर्म जन्मा, फला, फुला इसी देश में; इस्लाम भारत के गाँव-गाँव में फैल गया, क्रिश्चियन धर्म के साथ हमारा निरुद्ध का परिचय हुआ; जैन, पारसी, सिख, सभी हमारे देश में फल-फूल रहे हैं। आज इनके चलते भयंकर उलझने भी पैदा हो गयी हैं। सामान्य दृष्टि से देखने से भारत का, इसनी तरह के सम्प्रदायों का म्युजियम बन जाना, एक अभिवादन-सा लगता है। क्या इसे हम बरदान में बरज सकते हैं? भारत के युव-लक्ष्य का यह महान कार्य होगा।

इस अभिवादन-सी दीपनेवाली परि-स्थिति के नीचे एक महान अन्तर्धारा बह रही है। जिस भाष्य-विधाता ने संस्कृत के रग-विरगों सम्प्रदायों की सृष्टि कर विद्वाने पाँच-छी वषों से भारत के महान संस्कृत, अरमान, गुलाबी, गोपण और रोड़न में रखा है, उस निपट का, इसके नीचे एक तरह की दृष्टि है। सपना है भाष्य-विधाता ने भारत को मास्टर, पीटर, मातना देकर, विश्व-धर्म की आधार-शिला होने के लिए उसे तैयार किया है। इस युग का देवता केवल हिन्दुओं का, या मुसलमानों का, या ईसाईयों का ही देवता बनकर नहीं रह सकता, वह होगा “जगन्नाथ (सारे धर्मों की युवनेस)” और बराबर होगी मानव धर्म की, जिसके आधार-स्तम्भ होंगे—आध्यात्म, प्रेम, कष्टना और विज्ञान। यही विश्व के विभिन्न सम्प्रदायों का मोक्षिक लक्ष्य समायोजन है। वर्तमान परिस्थिति से परतकर हम अपने के इस महान गौरवमय स्वान को सुप न जायें। आज जरूरत है ऐसी धार्मिकता की, जो सारे सम्प्रदायों की एक सुत्र में बाँधे। जैसे राष्ट्रीय सर्व-मोक्षिता (लायनेटी) का युग समाप्त हो गया, जैसे ही, आध्यात्मिक धार्मिकोपिषता का युग भी समाप्त की और जा रहा है। एक सुगन्धित पावन में जैसे विभिन्न तरह के फूलों का स्थान है, जैसे ही मानव धर्म में विभिन्न

प्रकार की उगासनाओं और पद्धतियों का स्थान है।

आवश्यकता है विश्वराज्य की

इसी तरह राजनीतिक क्षेत्र में एक सच्चे विश्व-राज्य की आवश्यकता पैदा हो गयी है। विभिन्न तरह के सामाजिक प्रयोगों से भी मानव-जाति छत्रपशली रही है। अब समय आ गया है कि पिछले प्रयोगों के आधार पर, कुछ सामान्य दशाओं को हम देखें और उन्हें खुशी से स्वीकार करें। इस दृष्टि से मात्र ऐसी दो ही दशाएँ हैं, जिनके ऊपर सारे विश्व को इकट्ठा किया जा सकता है— सामूहिक जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता। समय रहते, यदि विश्व के कर्णधारों ने इन्हें स्वीकार नहीं किया तो रक्त की धारा से विश्व व्यापित होगा और सामूहिक सम्पत्ता का बड़ा अंश ध्वस्त होकर विलस जायगा।

यहाँ यह याद रहे कि सामूहिक जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता में एक तरह का विरोधाभास है—विरोध नहीं, विरोध का आभास-भाव है। लेकिन यह भी सत्य है कि विरोधाभास अनारिक्तकाल से पुरंदमनीय रहा है और रहेगा। सामूहिक जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के विरोधाभास को अभ्यास और प्रेम ही मिटा सकते हैं। इन दोनों के महान सम्मेलन का परोरोहित्य, सामाजिक जीवन में ब्रह्म-भाव की स्थापना को छोड़कर, और किसी उपाय से सम्भव नहीं है।

सामूहिक जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की आवश्यकता और सच्चे धर्म की प्रेरणा को रूस, अमेरिका, चीन, जापान, भारत, अरबदेश, समय रहते स्वीकार कर लें, तो आज भी विश्व के पथ से विश्व को बापस मोड़ा जा सकता है। क्या विश्व के कर्णधार इस महोत्सव घुनीनी को स्वीकार करेंगे ?

उपर्युक्त विश्व-व्यापी मानवीय दृष्टिकोण को सामने रखकर ही हम भारत की स्वयंसाओं का स्वल्प निराकरण निकाल सकते हैं। अमी की कुछ बंगदेश

में हुआ, उसे पाकिस्तान का विपटन कहना, इतिहास का निरादर करना है। हमने शुरू में ही कहा है कि इतिहास की धारा अपने प्रवाह-अम को छोड़कर डेढ़ी-पेढ़ी, उखी-पुखी भी चलती है। मग़ा की धारा उत्तर से दक्षिण-पूर्व की ओर आती हुई बीच-बीच में उत्तर और पश्चिम को भी बह लेती है। इसी तरह एक दिन देग और बिरेश के दासमग नेत्राओं ने स्वाधीन होकर, अपना चक्राकर भारतवर्ष को टुकड़ों में बाँट दिया था। हजारों नवी, धर्मो-भावनाएँ और सङ्कटित विषय-वर्षेण को एकता के मूल में बंधे हुए हैं, उसे राजनीतिक नेत्राओं ने स्वाधीन होकर, दो टुकड़ों में तोड़ दिया था।

हे और विल, पुण्य—तीर्थ, जागो रे धीरे—

एइ भारतेर महा—मानवेर सागर—तीरे ।

हेयाय दीङये दू बाहू माङये ननि नर—देवचारे,
उदार छडे परमानन्दे बन्द्य करि तारे ॥

ध्यान—गम्भीर एइ मे मूएर, नवी—अपमाता—धुन प्रान्तर,
हेयाय निरव हेरो पवित्र चरितारे,

एइ भारतेर महा—मानवेर सागर—तीरे ॥

केहू नाहिं जाने फार भाहाने नत मानुएर धारा
धुवाँर सोते एल कोया होते—सपुत्रे होलो हारा ।

हेयाय आर्य, हेया अवार्थ, हेयाय ब्रविष्य, चीन—
शक—हूण—दन, पाटान—मोगल, एक देहे होखो कीन ।

पश्चिमे आजि सुलिया छे द्वार, सेया होते सखे जाने उपहार,
दिने वार निने मिनारबे मिनिये याने नर फिरे,
एइ भारतेर महा—मानवेर सागर, तीरे ॥

सेइ हो मानले हेरो आजि पडने दुखेर रनाशिला,
हबे ता सहिते ममें दहिते आबे से आगे निषा

ए दुखवहन करो मोर मन, सोनो रे एकरे दाक् ।

यत लात्र—मय करो करो जय, अमान भूरे याक् ।

दु खमहे अया होये अवसान अम तनिबे की विहाय प्राण ।

पोहाय रजनी, जागिडे जननी विगुल नीबे,
एइ भारतेर महा—मानवेर सागर—तीरे ।

सूखे हे आर्य, ऐसो अवार्थ, हिन्दू—मुसलमान ।

ऐसो ऐसो आज तुमि इराज, ऐसी ऐसी सुटान ।

ऐसो शाहान, सुवि करि, मन धरो हात सवाकर,
ऐसो हे पवित्र, होक् अननीत सब अमान—भार ।

भार अभियेके ऐसो ऐसो हवरा,

मगल घट हय निये मरा,

सवार परसे पवित्र—करा तीर्थ—तीरे ।

आजि भारतेर महा—मानवेर सागर—तीरे ।

भूगोल और मानवता के साथ एक महान अन्वेषण की सृष्टि हुई। चौबीस वर्षों के बाद, भूगोल और मानवता ने, इस जल्ले प्रवाह को अब फिर सीधा कर दिया है। प्रश्न है आगे क्या ?

पाकिस्तान, भारत, बांगला देश का महासंघ

इस महान मुकाम के निवासियों की विश्व के इस सन्दर्भ में यदि अपनी जिम्मे-दारियाँ पूरी करनी हैं और उजबल भविष्य का निर्माण करना है, तो उनके सामने एक ही दास्ता है—नये सिरे से एकता की खोरी में फिर से सबको बाँधना, जिसका मान विश्वकर्म खीन्त्रताय पहले ही कर गये हैं।

प्रबन्धन तथा और कार्यों की ही एकरता की नहीं, बल्कि इलाक़ और पंचनदों की एकरता की भी जरूरत आ गयी है। फिर से मेगाल, बर्मा, संघा और अफ़गानिस्तान को एकरता की डोरी से, भारत-भूयुद्ध के साथ बंधना होगा। किन्तु आज की हालत में यह बन्धन मीरा की भाषा में बन्धे प्रागे वा ही हो सकता है। याद रहे, सोह्रे की अंजीरी की बंधा नन्धे प्रागे का बन्धन अधिक स्वाधी होता है। इसीलिए मीरा ने प्रेम के बन्धन को बन्धे प्रागे का बन्धन कहा है। सोह्रे की अंजीरी के बन्धन को रक्षा की जिम्मेदारी लोहे की अंजीरी पर ही रहती है। दोनों पक्षों में उसे तोड़ने की बलवन्धन रहती है। अंजीरी में जबतक ताकत रहेगी बन्धन रहेगा, अन्यथा टूटकर बिखर जायगा। दूसरी ओर नन्धे प्रागे अपना जोर नहीं रखता, उसके निर्वहण की जिम्मेदारी दोनों पक्षों की सहज सहजकीलता और आपसी स्नेह पर निर्भर करती है। इसीलिए बस्तुतः यह बन्धन ही नहीं है, और उची कारण नन्धे प्रागे का बन्धन उगादा रपायी होता है।

परन्तु इस दिशा का व्यावहारिक प्रयत्न मध्य, जिसे इन आनेवाले सहोषों में पूरा करना है, यह है भारत, पाकिस्तान और बग़देश का सघ (कॉन्फ़ेडरेशन)। यही एक रास्ता है जिससे पाकिस्तान, भारतवर्ष और बग़देश, बिम्ब में अपना सर ऊँचा कर खड़े रह सकेंगे और अन्तरराष्ट्रीय मध्यमों का विकास होने से अपने को बचा सकेंगे। अन्यथा चीन, रूस और अमेरिका के पक्षों से यह महान् मूल्यदा जनता रक्षा और पौष्टिक मानवता की कराहो से नहीं का मानव-मात्र, पता नहीं, किन्तु बिनो लक उद्धमिल और अज्ञान बना रहेगा।

नम्र निवेदन

मेरी धीन पुनार शब्द इस भूखण्ड के कर्णधारों के पास नहीं पहुँचे। इसलिए

भारत में परम्परागत ग्राम-अध्वर्या का जो स्वरूप सामने है उस पर से कुछ कालों तक तोर पर दिखाई पड़ती है। गाँव में जीवन का जो दग है उसमें सामन्तवादी मानस का आवास सहज ही दिखाई देता है। गाँव का आर्थिक जीवन जिस गति एवं जिस रूप में चलता है वह वैज्ञानिक, आर्थिक विकास की परम्परा से काफी दूर है। कृषि-उद्योग इत बेध की अधिकांश प्राचीन आवादी कृषि पर निर्भर रहती रही है। उनका यह विश्वास रहा है कि कृषि ही जीविका का सर्व-प्रमुख धन्धा है। कृषि के अतिरिक्त जीविका के अन्य जो साधन विस्तृत हुए थे भी कृषि के इर्द-गिर्द घूमते रहे। कालान्तर में तो कृषि के सहायक धन्धे भी कतिपय कारणों से समाप्त होने लगे। पर कृषि के प्रति अविमोह कायम रहा। यह मोह स्वामाजिक भी था—बैधे कृषि जीवन का आधार है भी। परन्तु प्राचीन जीवन की बरतती परिस्थितियाँ एवं अद्यतन आर्थिक विकास की दौड़ में जीविका के अन्य स्रोतों को तलाश अनिवार्य हो गयी है। भारतीय नियोजन ने अपने दग से धर स्रोतों को तलाश की, परन्तु उसका काम भारतीय गाँवों को न मिल सता, प्राचीन जीविका के स्रोतों का विकास न हो सका। हाँ, एक सीमित ग्राम-समुदाय के पास पंसा आया, उत्पादन भी बढ़ा, परन्तु सामान्य गाँव की स्थिति आज भी दयनीय है।

काल में पूंज्य विनोबा भावे, सान बन्दुत कपकार छाँ, जयप्रकाश नारायण, देव अणुलता, श्रीमती दरिद्रा माँधी, बंगबन्धु देव भुञ्जीरुहमान और पाकिस्तान के राष्ट्रपति जुल्फिकार अली भुट्टो से नम्र निवेदन है कि इस दिशा में वे जो भी उचित समर्थन, सौझाविशीय्य करें। ●

गरीबी का विषय यदि किया जाय तो अविश्वसनीय तथ्य सामने आते हैं। आज भी भारत के गाँव इतने गरीब हैं जिस पर भारत के व्यर्थशास्त्री विश्वास नहीं करते हैं। यहाँ हम इनका ही नहना चाहेंगे कि आज भी गाँव का बहुत बड़ा समुदाय एक दिन में उतने पैसे में जीविका चलता है जितने में हम सामान्य दूकान में एक चाय की मुक्की ले लेते हैं। बिन भर की कमाई से रुपये में परिवार के छोटे-बड़े ७-८ सदस्यों का पेट भरनेवाले परिवार जहाँ चाहें वहाँ मिल सकते हैं। किन्तु आज हम वहाँ गरीबी का विषय नहीं करेंगे। 'भूदान-यज्ञ' के पाठक 'भारत में गरीबी' लेख-माला से इस बारे में विस्तृत जानकारी ले सकते हैं।

अर्थशास्त्री का चौखटा : गरीबी के चेहरे

गाँव के ऊपर के गिने-चुने लोगों को छोड़ दें तो प्रायः सबकी आर्थिक स्थिति ऐसी रहती है जिसमें बचत करना कठिन होता है। फिर शारी बचत, जिसे आर्थिक विकास के लिए पूँजी-निर्माण की सजा दी जाय, नहीं होती है। अद्यतन आर्थिक विकास की जो रूप-रेखा अर्थशास्त्री प्रस्तुत करते हैं उसमें तो यादव ही मोहो प्राचीन परिवार पिट हो सके। सामान्य किसान तो हम श्रेणी में नहीं ही आता है। सरकारी नियोजन के गाँव के अन्धवर्षों की कृषि-विकास के लिए पूँजी मुहैया किया है और इस बाँटने इसका काम की उठाया है, सरकारी अर्बन्डों के अनुवाद उत्पादन बढ़ा है, यामों को के पास पूँजी मानी है। एक हर तरु इते पढ़ो माना जा सकता है। पर जो पूँजी उनके पास आयी है उसका विनियोग जिस रूप में होता है यह भी विश्वसनीय है। बिनोबा आय मुड़ी है उनका विनियोग का रोज भी विलुप्त हुआ

है। जिनकी आय बढ़ी है उनकी पूँजी मोटे तौर पर इन मरीं में विनियोजित की जाती है :

(१) शादी एवं अन्य सामाजिक कार्यों में, (२) भवन निर्माण तथा अन्य सुविधाएँ, (३) मुफ्तमेवाजो, (४) राजनीतिक गुरु-बन्दी, (५) आर्थिक विचार, और (६) शिक्षा।

उच्च मरदो से इन बात की पुष्टि होती है कि आय का बड़ा भाग सामाजिक कार्यों में व्यय किया जाता है। आर्थिक विकास का स्थान क्रमशः परिवर्तित है। बिहार में क्षेत्र-प्रवासे प्रामाण आर्थिक जीवन को खोसता बनाने में काफी मदद की है। स्थिति यह है :

(क) गाँव के एक सामान्य वर्ग की आय बढ़ी है तथा उसमें पूँजी-निर्माण की क्षमता आयी है।

(ख) परन्तु उनका विनियोग का जो ढंग है उनमें उत्पादक कार्यों में विनियोग बहुत कम हो पाता है।

(ग) आय की जो सामाजिक आर्थिक-व्यवस्था है उसमें गिने-बुने लोगों का ही आर्थिक विकास हो पाता है। दोष सघु-दाय अपनी पुरानी स्थिति से ही रह जाता है।

(घ) यदि सामान्य वर्ग की आय बढ़नी भी है तो वह समाज की कड़ी परम्पराओं के घेरे से बचन नहीं हो पाता है और उसके बचन अनुपादक कार्यों में खर्च हो जाती है।

(च) सामान्य शिक्षा, मनहूर, धरोरु, धर्म से लगे लोग, लोकरोबाले, इस स्थिति में नहीं है कि बचत कर सकें। उनके पास पूँजी इतनी कम है कि कोई भी गण्टा बनाने में असमर्थ है। यदि कोई इस और प्रयास भी करता है तो मात्र की प्रतियोगिता में टिक नहीं पाता है। स्थिति यह हो जाती है कि या तो धून पूँजी भी समाप्त होने लगती है या उजवा ही जमा पाता है जिससे दोनों बचत पैट में कुछ जान सके। इस स्थिति से वैज्ञानिक आर्थिक विनियोजन की बात

बैतानी हो जाती है।

इस स्थिति में गाँव के आर्थिक विकास को रूखा देनी है। हमारे एक प्रमुख राष्ट्र-निर्माता ने गाँवों को पूर का डेर कहा था और उन्होंने यह भी बताना जो भी कि हम भारत के गाँवों को पूरलक्ष के गाँव बनायेंगे। पर वे भारत के गाँव को इस्लैण्ड के गाँव नहीं बना सके, यहाँ तक कि गाँव से पूर के डेर भी न हटा सके और न ही उन पूर के डेर को बन्धोस्ट बनाकर उपयोगी हो बना सके। राजनीतिक स्वार्थ पर आधारित 'भरीकी हटाओ' के भारे से यदि कोई गरीबी हटाने की बतलना कया हो तो यह उतरी भूज होगी।

गाँव में पूँजी का प्रश्न

प्रश्न यह उठता है कि आखिर इस समस्या का क्या समाधान है ? गाँव की गिरी आर्थिक स्थिति तथा प-म्परागत सामाजिक कुरीतियाँ एक वास्तविकता हैं। इस वास्तविकता को नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता है। गाँव के आर्थिक विकास के लिए पूँजी-निर्माण के ऐसे स्रोत विकसित करने होंगे जिनका उपयोग उत्पादन-कार्यों में किया जा सके। जैदा कि हमने ऊपर कहा कि गाँव के लोग एकान्ती स्तर पर पूँजी-निर्माण करने की जतनी समझ नहीं रखते हैं जिससे कोई गण्टा चल सके या जिस धाधे में है उनकी आधुनिक रूप दिया जा सके। पूँजी-निर्माण के उनके स्रोत भी काफी सीमित हैं। मात्र जो आर्थिक स्थिति है उसे देखते हुए गाँव के लोगों के पास नगद पूँजी कम है श्रम अधिक। हम मान सकते हैं कि उनके पास दो स्रोत हैं। (१) बचत से उत्पन्न नगद पूँजी (२) अपनी व्यय-शक्ति। आवश्यकता इस बात की है कि इन दोनों स्रोतों का उपयोग प्रामत्सुर पर किया जाय। एकान्ती स्तर पर श्रम-निर्माण का उपयोग सम्भव नहीं। कारण श्रम का उपयोग तभी हो सकता है जब पैट में कुछ जाय। अपना यदि प्रामत्सुर पर इतनी पूँजी जमा हो कि श्रमिक को उसके

श्रम के बदले आवश्यक भोज्य पदार्थ दिया जा सके। और, तभी श्रम के रूप में पदार्थ पूँजी प्राप्त हो सकती है। अब तक हम गाँव की श्रम-निर्माण के उपयोग की व्यवस्थित योजना नहीं बना सके हैं।

ग्रामदानों गाँव में ग्रामसेवक

ग्रामदान में ग्रामसेवक की योजना है। प्राकरीय में नगद (पैसा और अन्य) पूँजी के साथ-साथ श्रम को भी जोड़ना चाहिए। जहाँ ग्रामदान का समय कार्य चल रहा है वहाँ ग्रामसेवक भी जमा हो रहा है। कुछ गाँवों में श्रम का हियान भी रखा है। आवश्यकता यह है कि ग्रामसेवक में जो भी नगद पूँजी जमा हो उसके विनियोग का प्रामत्सुरीय योजना बने और उसे रिभी-न-निर्णय प्रकार श्रम के साथ जोड़ा जाय। ग्रामसेवक के विनियोग के सम्बन्ध में यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि उसका विनियोग उत्पादन-कार्यों में हो। अब तक ग्रामसेवक की रकम मुस्कत-इन मरीं में व्यय होती रही है (१) गहरतमन्द को खाने के लिए कर्जें या सह्यायता, (२) श्रम-कार्यों के लिए सह्यायता, (३) ग्राममन्ग-स्टेशनर, (४) स्कूल सड़क का निर्माण और (५) दवा एवं अन्य प्रकार की मदद। स्थिति यह है कि जिन ग्रामसेवकों में जैग नेतृत्व है वहाँ का ग्रामसेवक उनी रूप में विनियोजित किया जाता है। अबी यह स्थिति नहीं आयी है जिनमें ग्राम-स्तर पर श्रम एवं ग्रामसेवक की पूँजी का उपयोग किया जा सके।

विद्वान् अर्थशास्त्री यह समझते हैं कि गाँव भूदान-यग है, उसके पास बचत की क्षमता नहीं है। अपना गरीब गाँव के लोग पूँजी-निर्माण को सम्भव नहीं रखते हैं। फिर यदि वे कुछ बचत कर भी लें तो उससे क्या होगा ? अपनी रकम से आधुनिक आर्थिक विकास की बतलना तक नहीं की जा सकती है। परन्तु यह उनकी भूज है। गाँव की स्थिति यह है कि नूद-नूद से पावर भरता है। हम यहाँ [लेख पृष्ठ ३३८ पर]

श्रम प्रधान : टेकनालॉजी

१. गाँव के दस्तावरी को गतिशील के विकास में समाप्त कर दिया। ये बेकार हो गये। उन्हें दूसरा कोई रोजगार नहीं मिल सका। उनकी बेरोजगारी के लिए आधुनिक उद्योगों की जिम्मेदार मानकर तीन प्रकार के उपाय सुझाये जाते हैं; (क) पारम्परिक उद्योग में बिजना रोजगार बना है उसे आधुनिक उद्योग के आक्रमण से बचाना; (ख) आधुनिक उद्योग बिजना बढ़ चुका है उसे उसके बागे न बढ़ने देना, तथा भविष्य के विस्तार को पारम्परिक उद्योग के लिए सुरक्षित रखना; (ग) पारम्परिक उद्योग का विस्तार करना और रोजगार बढ़ाना, मते ही उत्पादन आज के ही स्तर पर बना रहे।

२. गाँव के उद्योग और छोटे उद्योग इन दोनों में गैर है। पारम्परिक तकनीक की हस्तेमाल करनेवाला उद्योग गाँव का कहा जाता है। इसकी तकनीक आधुनिक उद्योग की तुलना में बहुत क्षमिक धम-प्रधान है; साथ ही उनमें पूँजी भी कम लगती है। यही कारण है कि ग्रामीणों में प्रति उत्पादक उत्पादन कम होता है। और इसी कारण उनमें क्षमिक लोगों के काम करने की गुंजाइश रहती है। लेकिन यह बहना हमेशा सही नहीं है कि उत्पादन की प्रति इकाई (यूनिट ऑफ आउटपुट) ग्रामीणों में आधुनिक उद्योग की अपेक्षा पूँजी कम लगती है। पूँजी कम नहीं लगती, धम अधिक लगता है। हाँ, पूँजी प्रति व्यक्ति कम लगती है।

दूसरी श्रेणी है 'आधुनिक छोटे उद्योगों' की। ऐसा उद्योग आधुनिक होने हुए भी आकार में छोटा होता है। यंत्रिकी में आधुनिक छोटा उद्योग बड़े उद्योग से मिलता-जुलता है, और दोनों साथ-साथ चल सकते हैं। इस तरह के

छोटे उद्योग में बड़े उद्योग के मनुष्यवले रोजगार देने की क्षमता अधिक नहीं होती। इसकी विशेषता यह है कि इनमें मनुष्यवरी के लिए रोजगार (वेज इम्प्लाय-मेन्ट) के लिए जो कम फिग्यु बचने-प्राप्त रोजगार (सेल्फ-इम्प्लायमेन्ट) की गुंजाइश अधिक है। छोटे आधुनिक उद्योगों के आधार पर उद्योगों का विकेंद्रित होना भी विकसित किया जा सकता है। यह उनके पक्ष में बहुत बड़ी बात है।

३. रोजगार की दृष्टि से ग्रामीणों का प्रश्न मुख्य है। ग्रामीणों भी दो प्रकार के हैं—एक उद्योग से हैं, जिनमें सामान्य उद्योगों के सामान बनते हैं और दूसरे वे हैं जिनमें प्रतिभों की विशिष्ट दक्षि की चीजें बनती हैं। इनमें कारीगर की बला उच्चतम होती है। ऐसी कला अतुनिक उद्योगों की प्रतिद्वन्द्वता में भी नहीं मरती। हाँ, गरीब विकारशील देशों में उनकी माँग कम होती है। ज्यादातर कला की ये चीजें निर्यात पर जीवित रहती हैं।

प्रश्न ऐसे ग्रामीणों का है जो सामान्य उद्योगों के सामान बनाते हैं, ज्यादा रोजगार देने की क्षमता रखते हैं, और उन्हें ही आधुनिक उद्योगों की ज्यादा शोर्ट भी सहनी पड़ती है।

४. पहली पंचवर्षीय योजना में रोजगार की दृष्टि से ग्रामीणों का महत्व स्वीकार किया था। योजना ने कहा था कि ग्रामीणों के स्थानीय बच्चे माल का पक्का माल स्थानीय बाजार के लिए सीधे-सादे औजारों से तैयार करते हैं। उनका विज्ञान स्थानीय गाँव और आपसी बिन-मय (स्वयुत्पन्न एक्चेंज) के ही आधार पर हो सकता है, जैसा कि उस समय होता था, जब गाँव स्वयन्तन्त्री थे, और उनका काम पररंपरावतम्भन से चलता था।

ग्रामीणों की बढ़ावा देने की दृष्टि से उन्हें आधुनिक उद्योगों के साथ

केर समान-उत्पादन कार्यक्रम (बामन प्रोडक्शन प्रोग्राम) की बात बही जाती है। इस सम्बन्ध में ये सुझाव दिये जाते हैं : (क) दोनों के क्षेत्र चलन और सुरक्षित कर दिये जायें; (ख) बड़े उद्योगों का विस्तार न किया जाय; (ग) बड़े उद्योगों पर 'सेल' लगाया जाय; (घ) बच्चे माल देने की क्षमता की जाय; (ङ) रिक्त, ट्रेनिंग आदि की योजना हो।

इन बातों को ध्यान में रखकर स्वतन्त्रता के बाद कई कदम उठाये गये। १९५० में कपड़े की कुछ फिस्मे हाथ-करपे उद्योगों के लिए सुरक्षात की गयी। १९५२ में मिलों से कहा गया कि कुछ फिस्मे में पिछले साल के उत्पादन के ६०% से अधिक न बनायें। मिल के कपड़े पर 'रोय' लगाया गया और उक्तमें से सारी और करपा उद्योगों को मदद की गयी।

ग्रामीण पंचम-उद्योगों के सरसाय क लिए मिल चमका उद्योगों के विस्तार पर रोक लगायी गयी। इसी तरह घाटी और छाल कुटाई के पुराने, असम बंधों को बदलने की योजना बनायी गयी। पुराने उद्योगों की सहायता दी गयी और कुछ नये उद्योग जैसे हाथ-लापन, अखाद्य तेल का साइड, दिवाखानाई, भाँदि शुरू कराये गये।

दूसरी पंचवर्षीय योजना में ग्रामीणों की उम्मीद लघु-स्तर स्थान दिया गया। यह कहा गया कि सामान्य उद्योगों के सामान उत्पादन-ज्यादा घरेलू और हाथ के उद्योगों के लिए छेड़ें पाई और उनके द्वारा उत्पादन शुरू बढ़ाया जाय। ऐसा करने से बड़े उद्योगों के लिए पूँजी बचेगी और मुद्रा स्थिति भी नही होगी। साथ ही उनमें ज्यादा लोगों को रोजगार की मिलेगा। इन उद्योगों की सिद्धि के लिए घरेलू उद्योगों की मिल-उद्योगों की प्रति-योगिता से बचाया जाय।

इन नीति के अनुसार सरकार ने १९२६-५७ में सारी और ग्रामीणों की योजना की रचना की। ●

ग्रामस्वायत्त के मोर्चे से

[सहरसा जिले के ग्रामस्वराज्य समिति का ये देना भर के कार्यक्रमों जुड़े हुए हैं। 'ग्राम-पत्र' के सम्पादक आचार्य रामभद्राजी भी एक प्रसिद्ध के पुष्टि कार्य में शरीक हैं। मोर्चे पर से घेला गया उनको डायरी पाठकों के लिए प्रस्तुत है।]

२४ मार्च

यज्ञ त्रिभुज !

जहाँ आसपड़ एक त्रिभुज का दर्शन होता है। वहाँ मानिक, बड़ा श्यामरी, बड़ा नेत्रा ये हैं त्रिभुज की तीन भुजाएँ। मानिक, श्यामरी और नेत्रा, तीनों महा-जनी करने हैं। बड़ा मानिक पंचायत का मुखिया है; बड़ी ब्याक पंचायत समिति का प्रमुख और त्रिना पंचायत समिति का अध्यक्ष भी है। बड़ी एम० एन० एम० और एम० पी० भी है। गस्ता की हर छोड़ी पर बड़ी हैं, और बड़ी 'गैरीबी हत्याओं' का नारा भी लगाती है। ये सब बड़े मानिक नड़े नेत्राओं से जुड़े हुए हैं। नेत्रा के पीछे-पीछे व्यापारी चण्डा हैं—कोटा, परमिट, साइकेस के लिए।

हर जगह बनना त्रिभुज की भुजाओं में जरूरी हुई है। इनकी जरूरत न बरत है कि उनकी सख बरत है। मारिनी, रात्रनीति, और व्यवसाय के टव गठनगत के टूटे बिना समाज के विरास की बरा दिया निकलेगी ? मुखित कैसे मिलेगी ?

२५ मार्च

समा में लगवण ५ भी लोग बैठे हुए

हैं। मैं कहता हूँ "जिनके पास दो बच्चे या उनके कम जमीन है वे हाथ उठावे।" कुछ शक के लिए सत्याग। तीन हाथ उठाये को न उठाये। धीरे-धीरे हाथ उठने लगे। सम्भावितों कहते हैं 'बरा हाथ उठाने हैं, ऐसे लोग १० फीसदी होंगे।' सचमुच, लगभग पचास को छोड़कर बाकी सबके हाथ उठ गये।

एक भूमिहीनता की कल्पना बिना देखे किसी को नहीं हो सकती। वहाँ इनकी सख्या में भूमिहीन और बड़ा श्यामरी बीषा-बट्टा, और बड़ा भी रितनी भूमिाल से मिल रहा है, और मितता भी है तो जितने लोगों से ?

२६ मार्च

'मिरा जना कौन उठायेगा ?'

बहुत बड़े मानिक हैं। बड़े तो बागे भूमि है, लाखों रुपये की महाजरी खतवी है जो एक सान में एक मन का दो मन और फिर उठी दो मन का तीन मन बना देनी है। कहते हैं 'यह बेतासप कि अगर मैं अपने मजदूर को जमीन दे दूँ तो मेरा पूरा मन उठावेगा ?'

यह है सामन्तवार-भूजीवाद, जो मानता ही नहीं कि गरीब भी आधमी होगा है। यह नयुना है 'उन चरित्र का जो सामन्त-वारी-भूजीवादी समाज-व्यवस्था में निरमित होता है। ऐसे सज्जन को कैसे समझाया जाय ?

२७ मार्च

'सुन्दर जमीन जेतनी पड़ेगी'

बैरगाड़ी में हम लोगों का सायान लदा हुआ है। हम लोग लोगों की एक बोरा नहर के किनारे-किनारे अपने पक्का पर जा रहे हैं। रासल में गाड़ीवान बहवा है "होसिम (मजदूर अपने मानिक को इसी नाम से पुकारता है), मैं अपने मानिक को जमाता बंटाई पर खोलता था। जमान बचने नहीं थी, उनका बम हानी थी। इस सान में बड़ा कि अच्छी जमीन खीत्रिए, नहीं तो मैं दूसरे मानिक को जमीन खोदूंगा। उनको यह बात चुकी लगी। परमा शाम का मेरे घर आये, और मेरे दालों के सौल से गये। इनकी देखे गये 'दखन है तुम मेरी जमीन कैसे नहीं खोतते !'

इस संघ में शारी जमीन मुट्टी भर मानिकों के हाथ में है। हर गांव में दो को-वार को बीने के मानिक हैं। बाकी सब मजदूर है, या मजदूरी के साथ-साथ गाड़ी जमीन मानिकों से लेकर बंटाई पर खोतते हैं। अपना बीज, खाद, पानी सब लगाने हैं, और फलन होने पर छाया छात्रा मानिक को दे देते हैं। इसके ऊपर मानिक मन में दाईं तर ओर ले लेता है—तोहरों का खर्च ! खेती की यह विवशण पद्धति है जिसमें भू-स्वामी को अपना एक पैसा नहीं लगाना पड़ता। मेहनत, पूँजी सब बंटाईदार की होती है। मानिक को मुनाफा-ही-मुनाफा होता है। हकीमत तो यह चाहना है कि अधिक-से-अधिक लोग भूमिहीन बने रहे ताकि उठे मजदूर और बंटाईदार मिलने रहे। ऐसी स्थिति में मैंने बड़े-को मजदूरी और कैसे मिलेगी भूमिहीनता, और मानिक क्यों चलेने देगा प्रायवसा ?

[पृष्ठ ४३१ का योग]

जाति को क्षीरपद प्रत को दीला दे सखते हैं ? निरुत्थर में ? सो भी सोचना चाहिए। भौतिक प्रगति का आदर्श छोड़ें इसके लिए हमें बाहर खड़े बगल में सर्वमान्य हुआ भौतिक प्रगति का आदर्श छोड़ देना पड़ेगा। और इसी-संस्कृति के अनुसार कितना परिपक्ष जरूरी है सो भी तय करना पड़ेगा। और उस सारी

नयी सामाज-व्यवस्था के स्वरूप को सोच-कर वह आदर्श समाज के सामने रखना होगा। क्षतिग्रस्त मोक्ष को सधना आमान भी। सर्व-भुने का साधना निश्चल होगी, अत्यन्त सार्विक होगी। 'साधनवाद' से बड़ी अधिक तेजस्वी होगी। उसका चिन्तन और आवाहन करने के दिन आये हैं। ●

(पृष्ठ ४२५ का लेख)

ज्यादा आंकड़ा नहीं प्रस्तुत करना चाहेंगे। भारत के विद्यार्थियों में ग्रामरोग का प्रारम्भ करना कल्पने क्षम है एक समस्या है, पर कुछ धर्मों में इसकी गुरुत्वात् हुई है। मुंबई जिले में छात्रा प्रखण्ड के ८९ गाँवों में विद्यार्थी क्षेत्र-व्यो यहाँ से ग्रामरोग का प्रारम्भ किया है। इस जगत् अबधि में उन गाँवों ने कुल २२०००) २० बी एकम जमा कर ली है तथा ४०००) २० प्रखण्ड-रोग में जमा किया है। करोड़ों की योजना में यह एकम नाम मान की लग सकती है, पर करोड़ों की यह योजना दिन अंश में गीन एक पहुँच पावी है इसका भी ध्यान हमें रखना चाहिये। प्रखण्ड कार्यालय से गाँव की दिवना मिल पाता है। इस सन्दर्भ में ग्राम-रोग की यह एकम एक बड़ी उपलब्धि है। इस एकम का उपयोग राष्ट्रीय धर्म-शास्त्र के साथ नियोजित दण से किया जा सकता है। गाँव के मूले-नये लोग यदि इसी एकम जमा करते हैं और अपनी धर्म शक्ति प्रस्तुत करते हैं तो आर्थिक विद्या को एक नयी दिशा मिल सकती है।

जल में से इसका ही बहना चाहिये कि ग्रामरोग का प्रारम्भ एक जुन लक्षण है। इसे अर्थशास्त्र या आशावादीक बह-कट छोड़ा नहीं जा सकता है। आ-रक्षणता है, इसके नियोजन एवं मार्गदर्शन की, ताकि इसे बड़ी दिशा मिल सके।

(पृष्ठ ४२९ का लेख)

भूदान-भूमि की संरक्षणी
 यह दो माह से बीजशास्त्री प्रखण्ड में नई का काम सरकार की ओर से चल रहा है। कुछ दिवस स्थायी भूमिपूर्व जमीनारो के कारिन्दों से भूदान से पूर्व की विधि में राज्य सरकार या भूदान भूमि की पट्टा कागज के बन पर भूदान-भूमि से भूदान विधानों की बलिप करना चाहते हैं। भूदान विधानों की संरक्षणी से बनाने के लिए आर्य के मार्गदर्शक सचिव हैं।

(मोकोदेबरा आर्य के कुनेदिन से)

नयी पुस्तकें

नलदपेशर की प्राकृतिक चिकित्सा

लेखक—धर्मचन्द सरावगी

प्राकृतिक चिकित्सा के प्रेमी, प्रयोगकर्ता तथा अनेक पुस्तकों के रचयिता श्री धर्मचन्दनी ने इस पुस्तक में नलदपेशर या रक्तनाप का विषय विवेकन किया है। नलदपेशर का रोग फेफन में भी गुमार होतो लया है। लेखक ने बताया है कि यह रोग नहीं, बल्कि किसी दूसरे रोग का लक्षण है।

मूल्य : २० १-५०

चर्मरोगों की प्राकृतिक चिकित्सा

लेखक—धर्मचन्द सरावगी

इस पुस्तक में चर्मरोगों की प्राकृतिक चिकित्सा के उपाय बताये गये हैं। चर्मरोग अनेक प्रकार के होते हैं। तन्द-उत्तर की दवाओं, मन्तहर्मों, गीतियों में अक्षर घन सन् करके हृम प्राय निय ही पाते रहते हैं और दवाओं के दुगाम बन जाते हैं।

मूल्य २० १-५०

विगलिया

बहुपचित तथा बहुवर्णित दण उपयोग का नया उदाहरण प्रकटित हो रहा है। इस लक्षण में बिल लिलिया ने आर्यक सशोध्यन सन्सादन काके उसे लागी से भर दिया है।

विनोदा के विचारों को हृदयक करने की दृष्टि से एक तरंग कृति।

मूल्य २० १-००

माटी की माँग

(प्रेम में)

यह आशय है कि भूदान में विनोदा की गोली ने नहीं, पहाड़-पगन से दिने, उन्हें दण दिया। यह एक आत्मनिर्भरता भी है, लेकिन अलिखित! सच्चाई जगते के निरु बिगी एक अण की आशात बनाना अनुचित है।

तो भी, क्या नहीं, पहाड़, रंगप के दान की कोई बहना नहीं है? इस पुस्तिका की पढ़कर आर्यक आर गुन ही बह गच्छे कि इतमान की द्विरमय कीट विज्ञान की तर्जनी के सेन से दण दान का महान बह जाना है। आर्य कर विरोधी बनें दिने दिना।

मने सेरा मंय प्रकाशन,

बाजपाट, बागावली—१

दो सौ से भी अधिक डाकू आत्म-समर्पण के लिए तैयार

नयी दिल्ली ३० मार्च । चम्बल घाटी शान्ति-मिशन के प्रमुख कार्यकर्ताजो ने श्री जयप्रकाश नारायण को सूचित किया है कि वे सभ्य डाकू-दलों से सम्पर्क कर उन्हें आत्म-समर्पण के लिए तैयार कर चुके हैं ।

माधो सिंह, कल्याण सिंह, जगजीत सिंह व हरविनाश के दलों के अनाया जो पहिले से ही आत्म-समर्पण के लिए तैयार हो चुके थे, अब पाँच अन्य दलों ने भी श्री जयप्रकाश नारायण के सामने हथियार डालकर अपने को कानून के सामने उपस्थित करने का फैसला ले लिया है । ये नये दल मोहर सिंह, सकर सिंह, कानो चरण, पंचम सिंह व दिनक सिंह के हैं । इनमें मोहर सिंह का दल सबसे बड़ा है तथा स्वयं मोहर सिंह पर दो लाख रु० का दायम है ।

घस्युराज मानसिंह के लड़के लहमोलन-दार सिंह व पंडित लोहमन जो कभी लुका नाम से जाने जाते थे, अन्य भूत-पूर्व डाकूजो, जिनमें तेजसिंह व दारेलाल प्रमुख हैं, के सहयोग से बीहड़ और जयल के विभिन्न डाकू-दलों से सम्पर्क करने में सफल हैं । इन काम में श्री महा-वीर सिंह व श्री हेमदेव शर्मा उनका नेतृत्व कर रहे हैं । इन दोनों कार्यकर्ताओं ने आश से १२ बरस पहले भी बिरोध के साथ इसी नाम को किया था ।

श्री जयप्रकाश नारायण को भेजे गये एक पत्र में भूतपूर्व डाकूमो ने अपने पिछले जीवन के अनुभव के आधार पर यह लिखा है कि डाकू बनना जिनसा सामान होता है उससा ही मुक्ति है उस धन्दे को छोड़ पाना । जिन्होंने जयल व बीहड़ में बसो गुबार दिये हैं उन्हें यह बिसकुल विश्वास नहीं होता कि वे फिर कभी

आम लोगो की तरह शान्तिपूर्वक जीवन बिता सकेंगे । डाकूमो की सेना या पुलिस से डर नहीं लगता, मोच का उन्हें क्या मय, वह तो उनके सामने हर दाग रहती ही है । हम उन्हें यह विश्वास दिलाने में सके हैं कि यदि वे आत्म-समर्पण कर दें तो वे भी अपने पारों का प्रायश्चित्त करने के बाद स्वतंत्र जीवन बिना सकेंगे । आत्म-समर्पण के लिए विभिन्न डाकू-दलों से सम्पर्क कर समझाने-बुझाने का काम प्रगति पर है ।

लेकिन इसके लिए अभी कुछ और बचन लगेगा । इस सम्झा की मुलखाने के लिए समान सैकड़ों बलों से ताकत का इस्तेमाल कर चुका है लेकिन उनमें सफलता नहीं मिली है । क्या हम इस नये तरीके की कुछ और समय नहीं दे सकते ?

चम्बल घाटी शान्ति-मिशन ने भी श्री जयप्रकाश नारायण से प्रार्थना की है कि वे मिशन की ओर से दोनों सरकारों को विशेषकर मध्य-प्रदेश सरकार व श्री सेठी को धन्यवाद ज्ञापित करें । मिशन की विश्वास है कि यदि इसे इसी तरह कुछ और समय तक सरकारों का रचनात्मक सहयोग मिलता रहा तो वे भी जयप्रकाश नारायण के सामने चम्बल घाटी के सभी प्रमुख डाकू-दलों का समर्पण करवाने में सफल हो सकेंगे । श्री जय-प्रकाशजी ११ अप्रैल को कालिपर पहुँच रहे हैं । वे यहाँ पाँच दिन तक रहेंगे ।

राधोपुर (सहरसा)

सहरसा जिले के राधोपुर प्रखण्ड में २२ मार्च से ३० मार्च तक पदयात्रा की गयी । इस पदयात्रा में आचार्य राममूर्ति-जो भी शामिल थे । पदयात्रा निम्नराही बाजार से प्राक्स होकर गणपतगञ्ज में समाप्त हुई । कुल दस पत्राव हुए । प्रतिदिन की समा में उपस्थिति १०० से लेकर ५०० तक रही ।

२२ मार्च को रामबिहनपुर की समा में टीन भूमिदानों ने नोपा-कटा देने की घोषणा की, तथा ११० भूमिहीनों से भविष्यत समर्पण-पत्र भर-

वाये गये । फटाइन पट्टा पर शिक्षकों और व्यापारियों की एक समा हुई, जिसमें सबसे इस काम में सहयोग देने की घोषणा की । गणपतगञ्ज पट्टा पर भूदान किसानो की समा का आयोजन किया गया जिसमें उन लोगो के संगठन की बात लोची गयी । प्रायः हर पट्टा पर शिक्षकों व व्यापारियों की भी गोष्ठी होती रही । १६ अप्रैल को प्रखण्डभर के शिक्षकों व व्यापारियों की एक गोष्ठी आयोजित करने का सोचा गया है ।

इस अवधि में ६३५० रु० की साहित्य-बिक्री हुई ।

आगे आठ टोनिर्वा प्रखण्ड भर में घूमकर काम करती रहेगी । शिक्षकों से सहयोग प्राप्त करने के लिए श्री इन्द्र-लालजी (म० प्र० सर्वोदय मण्डल के मंत्री) इस क्षेत्र के स्कूल इन्स्पेक्टर के माध्यम से करेंगे । १९ अप्रैल को भूमिहीनों और भूमिदानों की एक विशाल रैली का आयोजन प्रखण्ड-स्तरी पर सिमापही में करने का सोचा गया है ।

साधियों के पत्रों से

मधेपुरा

दरभंगा जिलातर्गत मधेपुरा प्रखण्ड का मैं एक सर्वोच्च कार्यकर्ता हूँ । पिछले १५ वर्षों से आपके आन्दोलन में सातत्य-पूर्वक काम करता आ रहा हूँ । इस प्रखण्ड में अभी तक १३५ ग्रामसभाएँ बनी हैं जिनमें ३ गावों का गणत हो चुका है । लगभग २५ गावों का कागज बन्धी तैयार कर बन्दरवेशन के लिए मजबूती भेजा गया है । बीघा-कटा में अभी तक २५ बीघा १९ कट्टा १५ धूर जमीन बाँटी गयी है । ९ गावों में ग्रामकोष दफ्तार हुआ है । अन्य गावों में प्रयास ही रहा है । १९२ भूदान किसानो को अपने प्रमाण-पत्र के मुनाबिक कंसा दिलायी गयी, एव प्रखण्ड के अन्य गावों की बैलखनी-समस्या के समाधान के लिए प्रयास किया जा रहा है ।

१९-१-७२

—इसमाइल मनसूरी

फुर्सण्डा

फुर्सण्डा मयुरा से थी रामगण भाई बादा के नाम पत्र लिखते हैं कि २० फरवरी में २६ फरवरी तक डा० दया निधि पटनामरा के साथ चिरोहाबाद एव आगरा के उनके दफ्तरो में अपने मिलान की दृष्टि से रहे सर्वोदयवादी तरीकों के लिए उनके द्वारा अच्छा अनिरीधी वातावरण बन जाना है, ऐसा गुणे अनुभव जाना। २० ता० को जपनेर रात में सो० बग साह्य की परधाना की पूर्व सेवारी में गया। १ मार्च में ११ मार्च तक परधाना में रहा। परधाना से सर्वोदयो गंगा मनोयम ऊँचा हुआ, कुछ नये कार्यक्रम मिले। रणजीव महोदयों मिलने पर बीसवीं दिना प्रयोग भी मान हुई। १२ मार्च की थी गिरि भाई के कारावन्दी कार्यक्रम में अन्तिम दिन पहुँचा।

वहाँ से छोड़ते ही अपने जिने में प्रयत्न अन्त प्रेरणा से कारावन्दी के कार्य में लग गया हूँ। सुदृग्म की जानकारी मंत्री, एम० एन० ए० 'ब' एवं जिलाधीश की अर्भव १९७२ से प्रथम पदम के तौर पर मयुरा दिने के तीर्थ स्थानों से ठीके समाप्त करने का साधन दे दिया है। २१ दिनों में ४८२३ पैसे की साहित्य-पत्रिका हुई, २ नयी सजीम, ३ गाँव की आवाज, १ भुवनयम, १ वरुणमन के साह्य बने। सर्वोदय आश्रम सादाबाद द्वारा १५ रु० भी साहित्य-पत्रिका पूर्व ४ भुवन यम के प्राहक बनाने मने।

गोण्डा

दिनांक २०-२-७२ की जिला सर्वोदय मण्डल की कार्यकारिणी ने अपनी बैठक में सर्वोदयमिति से निरन्तरण किया कि अपने सर्वोदय परिषद में जब अपनी भाषों के साथ जाति व वर्ग-भेद-मूलक चर्चों का प्रयोग नहीं करेंगे। — रामलापभाई

पुस्तक-परिचय

सरहदी गांधी

सता साहिर द्वारा प्रकाशित 'सरहदी गांधी' पुस्तक दान अत्युत्तम रचनाकारों की जीवनी पर पूरा प्रकाश डालती है। देश की आजाद करने में सपर्यंत सरहदी गांधी आजादी के बाद भी सपर्यंत ही बर रहे हैं।

इन पुस्तक के लेखक श्री प्यारेलाल की सभी हुई सेवानी से यह पुस्तक काफी खिन्नर बन पायी है। पढ़ने के लिए एक बार पुस्तक पठायेंगे तो बिना पूरा समाधा विवे लोडने की इच्छा नहीं होगी।

गांधी की अन्तिम जेल यात्रा

दूसरी पुस्तक है सादा साहिर मण्डल प्रकाशन की 'गांधी की अन्तिम जेल यात्रा'। लेखक हैं— श्री राजेन्द्र मायुर। यह एक नवीन लेखक हैं। लेखन शैली अच्छी है। शब्द चयन नहीं, संरत है— पढ़ने में सुख।

लेखक आपकी सुहृद्मद साह्य तथा इत्सा के इतिहास का सरहदी निगाह से दर्शन कराता हुआ आपकी अर्बेजी साहन के भाव के मनःस्थिति का दर्शन कराता है। इसमें आपकी गांधी की जीवन का गांधिक चिन्तन दर्शन होगा। जहाँ गांधीजी बहते हैं : 'मुझे विश्वास था कि एक बार भी महादेव मेरी ओर देख लेगा तो उठकर खड़ा हो जायेगा। एक बार आँसु गुनी भी तो वह पथराई की ओर देख नहीं रही थी।' —

इसमें डा० गुणोभा नेबर के आधा सा महल के सम्मरण, दृष्टिद्वयन एकसाथ के उद्घरण एवं डा० सुदयोपम चण्डारी की भेद भादि की खेक रचनों पर आयी है।

पत्र-संपादन का पता :

सब सेबा साघ, पत्रिका विभाग
रामघाट बाराणसी-१
सार सर्वसेवा फोन : २५३९१

संपादक

राममूर्ति

✻

इस अंक में

सोसोरेवरा उन्देश आधम के बुद्ध नाम	४२६
वानी सारी नगरी। धोती 'तेरे रिपने काम ?	
— सम्भारकीय	४२७
सहस्रा-मोर्षा गणराज्यों की स्थापना का प्रयास है	
— श्री धीरेन्द्र मद्रमदार	४२८
देवी सरहदी में अपरिग्रह	
— श्री पात्रा बाबलकर	४३०
विश्वपारा और भारत	
— श्री रामग्वल मिश्र	४३२
आर्थिक परिस्थिति और मान में पूर्ण निर्माण	
— डा० धर्म प्रसाद	४३४
भारत में परीची— १२	
— श्री राममूर्ति	४३६
सहस्रा के बीच से	
— श्री राममूर्ति	४३७
अन्य इतम्भ	
आधीयन के समाचार, साधियों के पनी से, पुस्तक परिचय, पुत्र पुत्र - उत्पन्न बड़ा, समृद्धि हुई, धर्मिक की बना मिला ?	

आजादिका

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

भारत-रक्षा

भारत-रक्षा के लिए सर्वोत्तम विधियों का प्रयोग करना चाहिए।



सोमनाथ में घने हुए प्रतिनिधियों ने राज्य सरकार बना ली है और विपक्ष में अपना गन्धर्व बिस्तर कर दिया है।

दल-मुक्त चुनाव : एक अनुभव

पूज्य वाचा ।

विधानसभाओं के चुनाव के दौरान मैंने खाइम्बरहीन और दल-मुक्त लोकतन्त्र की बात खास प्रवेश में बहो थी और इसी आधार पर उम्मीदवारों से निम्न-लिखित बातों की अपेक्षा रखी थी ।

१—भाष्यीय संविधान को धारा ४०-४१ पर जिसमें स्वायत्तशासी इकाई के आधार पर प्रामाण्यताओं के संगठन तथा उसके अधिकारों के बारे में कड़ा दबा है, जोर देना ।

२—लोकतन्त्र की दलीय पद्धति की परम्परा से सम्बन्ध-विच्छेद और सच्चा जन-प्रतिनिधि के बारे में विचार ।

३—वैतनमान और भत्ता राष्ट्रीय आय के प्रति स्थिति औसत आय से अधिक न हो (फिलहाल ₹५० व० वेतन, और ₹० व० प्रतिदिन भत्ता)

४—केवल दलना ही न हो कि वे उपर्युक्त सिद्धान्तों को व्यवहार में लायें बल्कि दूसरों के मनवाने के लिए सत्याग्रह भी करें ।

हमसीय खाइम्बरहीन दल-मुक्त लोकतन्त्र के लिए एक जन-आन्दोलन की बात सोच रहे हैं । यदि जनता इसमें लगे हो उसका इससे निराशा होगा और वह मतदाता मण्डल बनावेगी तथा गाँवों में पुष्टि-कार्य का संयोजन करेगी । रास्ते भिन्न हैं मगर लक्ष्य एक ही है । इस योजना को घोषणा करते पर ८ उम्मीद-वारों ने (सबसम् सहित) अपने आपकी हक के लिए तैयार बताया ।

सबसम् ने चुनाव-प्रचार के लिए निम्नलिखित पद्धति निश्चित की थी ।

कुडप्पा जिले में दो, गुट्टूर जिले में तीन, कृष्णा जिले में एक और नागपुर जिले में दो, कुल आठ ।

१—चुनाव में ७५० रुपये (२५० रुपये आमतौर सहित) से अधिक खर्च न हो ।

२—आठों प्रत्यायियों के चुनाव-विन्द एक न रहे । सामान्यतः चुनाव-विन्द से अलग-अलग की भावना परिचित होती है और किसी भी तरह जीत जाने की सम्पन्न आशा होती है ।

३—एक दूसरे प्रत्यायी को आलोचना न की जाय बल्कि खाइम्बरहीन दल-मुक्त लोकतन्त्र (आ० द० लो०) तथा चुनाव के बाद होनेवाले सत्याग्रह के बारे में समझाया जाय ।

४—चुनावों में चुनाव-एजेण्ट न हों । सरकार का नर्तक्य है कि वह स्वतन्त्र और शुद्ध चुनाव करावे ।

५—चुनाव में जनता से ७५० रुपये प्राप्त किये जायें । किसी भी व्यक्ति से १० रुपये से अधिक न लिया जाय तथा किसी पैसे इस्तेमाल न किया जाय ।

६—पदवाचा, सार्दीबल या बल यात्रा द्वारा प्रचार होना चाहिए, मोटर, कार का उपयोग न किया जाय ।

७—चुनाव-क्षेत्र में सर्वदलीय मंच का आयोजन हो ।

८—प्रत्याशी वोट के लिए निवेदन न करें । जनता को लोकतन्त्र के विचार को समझने तथा समझाने का मौका दें ।

इन तीन सप्ताहों में मैंने चुनाव-प्रचार की जिम्मेवारी अपने ऊपर ली । मैं केवल चार क्षेत्रों में पूर सकता । उन बाठों प्रत्यायियों से वे विभिन्न एक प्रत्याशी

पढ़ें
अहिंसक क्रान्ति
की प्रक्रिया
लेखक : दादा धर्माधिकारी
प्रकाशक
सर्वे सेवा मंच-प्रकाशन
राजपाट, चारणवी-१

नालगोवा क्षेत्र के जोता । उसका अपने क्षेत्र में काफ़ी प्रभाव है ।

समाचार पत्रों ने इसे दल-मुक्त प्रत्याशी नाम दिया है ।

जहाँ स्वतन्त्र प्रत्यायियों ने चुनाव में राजनीतिक पार्टियों का सहयोग किया वहाँ वृत्त उम्मीदवारों ने वही पद्धति का विरोध किया ।

विजयवाड़ा में जूनियर कैम्बर द्वारा एक सर्वदलीय मंच का आयोजन किया गया । १४ में से ६ प्रत्यायियों ने इसमें भाग लिया ।

मेरा यह अनुभव रहा कि मतदाता-प्रतिष्ठा का कार्य कभी अक्षरवासी रहा । १९७१ के संसदीय चुनाव की अपेक्षा इस बार हम लोग अधिक व्यापक प्रचार कर सके । उस बार विभिन्न वैचारिक घोषणा न करके नष्टों के तौर पर प्रत्यायियों को भी झुड़ा किया गया ।

सबसम् की छोड़कर बाकी शाश्वत प्रत्याशी उद्वेगिणी नहीं थे । अगर सर्वोदय कार्यकर्ता सहयोग करते तो हमलोग आसानी से अधिक सफलता प्राप्त कर सकते थे ।

मैं आप से अनुरोध करता हूँ कि कृपा आ० द० लो० को सर्वोदय का एक अंग मानने के प्रस्ताव पर विचार करें । मैंने अपना अनुभव आप के सामने रखा है जिसे इस चुनाव-काल में प्राप्त किया है । इसे अधिक कार्यक्षम बनाने के लिए अगर इसमें कुछ और जोड़ सकते हैं अपना सुधार सकते हैं ।

ग्रामदान-पुष्टि और दल-मुक्ति दोनों एक दूसरे के सम्बन्ध में प्रतिष्ठा नहीं । आरथी परिष्ठा ऐसे आरथियों को न दान में आने के लिए प्रेरित करेगी जो दल से अनुभवों के लाभ उठाना चाहेंगे । मैं विनया करता हूँ कि मैंने भूदान में एक नया आयाम जोड़ा है और पुष्टि के तिलसिने में इसे विरहित किया है तथा आ० द० लो० दलों दिशा में एक प्रयास है ।

—दोरा
२४-३-७२ (विनयावी की निष्ठा पत्र)

शिक्षा का लक्ष्य : अध्यात्म और विज्ञान का समन्वय

● रामानन्द मिश्र

देश का यह दुर्भाग्य है कि आज तरह तरह के आर्थिक और राजनैतिक कार्यक्रमों की जर्ना तो चल रही हैं परन्तु देश के बुजारों की स्वस्थ शिक्षा देने की ओर राजनैतिक नेताओं का ध्यान नहीं है। समाज का वातावरण, राजनैतिक नेताओं द्वारा अपनी स्वयं-सृष्टि के लिए शिक्षा-संस्थाओं का उपयोग और शिक्षक तथा शिक्षा-अधिकारियों की कुशियों ने इस देश की शिक्षा-संस्थाओं को भयंकर दुर्बलता में पहुँचा दिया है। शिक्षा-संस्थाओं की बचकी में पीठकर जिस तरह के मोक्षदान लेवारा हो रहे हैं, उनसे किसी तरह के स्वयं समाज के निर्माण की आशा नहीं की जा सकती है। एक अमेरिकन विद्वानों से यह प्रश्न पूछा गया कि इतनी साधन-सम्पन्नता होते हुए भी अमेरिका के मोक्षवातों की मनोभावना विशुद्धित क्यों है? तब उस युवक ने अत्यन्त धार्मिक उत्तर दिया—“विज्ञान ने हमें अज्ञान पर उड़ना और अज्ञान को छुना तो सिखाया, पर हमने रहना और जीना नहीं सिखाया।” मुझ बात तो यह है कि “मनुष्य बनाना” शिक्षा-संस्थाओं का सबसे प्रधान ध्येय होना चाहिए, इसका कोई विन्दु शिक्षा-संस्थाओं में रहा नहीं। उदाहरण-स्वरूप, दो प्रश्न में शिक्षा-प्रेमियों के सामने विचारार्थ रखना चाहता हूँ।

१—मानव-जाति पर जो संकट है, उसके मूल में सबसे बड़ी कठिनाई आज क्या है?

इस प्रश्न पर विचार करते तो स्पष्ट रूप से हममें जायेगा कि व्यक्तिवादी भावनाओं का सीमा-विहीन आचरण समाज-निर्माणियों के घमो प्रयत्नों को विकल कर रहा है। मानव के अन्तर में रहनेवाली पशुता उद्गम वेध के जग पड़ी है, भोग-निष्ठा की सृष्टि के लिए जो कुछ साध है, सुन्दर है, कल्याणकारी है, उन

सबको अपने पंरो के नीचे रोंदकर वह शक्ति मुझ-भोग की सृष्टि चाहती है। दूसरों को पीछे छोड़कर या उन्हें आवात पहुँचाकर भी हर व्यक्ति आगे बढ़ना चाहता है। इस तरह की अनैतिक प्रति-स्पर्द्धा में जो शामिल नहीं हो सक्ता, उसे जीवन की साधारण आवश्यकताओं से भी वंचित रहना पड़ता है। परिणाम-स्वरूप समाज में यह मान्यता दृढ़ हो गयी है कि आदमों की जर्ना व्याख्यान वगैरह के लिए अच्छी है, परन्तु व्यवहार में येन केन प्रकारेण सफलता प्राप्त करनी ही चाहिए, अपना जैते भी बने घन-समृद्ध और प्रतिष्ठा प्राप्त करनी चाहिए। ऐसी भावनाओं के मूल में है मानस के साथ लगा हुआ “विशेष ध्यानित्व” का भाषाण। इस “मैं” के स्थान पर “हम” का जन्म नहीं हुआ, तो सामाजिक जीवन नष्टित और निरर्थक हो जायेगा। इसकी स्थापना तभी सम्भव है, जब निरुद्धान्त, व्यवहार और अनुसृष्टि, तीनों स्तर पर व्यक्तिगत चेतना का सामूहिक चेतना से सामन्त-योजना जाय। इसी को आध्यात्मिक परिभाषा में जीवनभाव के स्थापन पर बद्धभाव की स्थापना कहते हैं।

२—शिक्षक वर्ग विद्यार्थियों में शिक्षा-कार्य के प्रति श्रद्धा और प्रेम क्यों पैदा नहीं कर पाता है?

शिक्षा प्रदान करने का काम करना महान और पवित्र है कि किसी भी स्वरूप समाज में उसके लिए सद्गुण आनन्द रहना चाहिए। परन्तु आज किसी विद्यार्थी से यह पूछिए कि वह आये चल-कर क्या होता चहता है, तो वह बहेगा, —डाक्टर, इंजीनियर, मिनिस्टर, या व्यवसायी। साधन ही कोई विद्यार्थी चुनी से किसी स्तुत का सम्पादन होना चाहेगा। हाँ होता क्यों चाहेगा? उसकी मरीचों की सेवा करने में रवि नहीं है, उसको पवि मरीचों के पास से क्या एंटेने में है।

इंजीनियर का दिल का शोक अच्छे पुत्र, मकान या नहर बनाने में नहीं है, बल्कि अपना कमाने में है। ऐसा क्यों हो रहा है? स्पष्ट है, व्यक्ति की भावना समाज-व्यवस्था के साथ जुड़ी हुई नहीं है। इस मनोरंका की लिए हम नहीं बदल पाये, तो किसी तरह से स्वयं समाज का निर्माण सम्भव हो जायेगा। बफसोस है कि आज भारतवर्ष के तेरा धर्मनिरपेक्षता जैसे अयोग्यनीय सन्धि के प्रयोग पर तुले हुए हैं। धर्म सृष्टि के साथ चहक रूप से जुड़ा हुआ है। आग का धर्म है गरमी देना। त्रिय दिन आग अपने धर्म को छोड़ देगी, उस दिन सृष्टि का ध्वंस हो जायेगा। पृथ्वी का धर्म है अपनी चुटी पर नाचते हुए, सूर्य की परिष्का करना। हममें मिल नाथ का अन्तर पड़ा, तो पृथ्वी का सर्वनाश हो जायेगा। मनुष्य का धर्म है प्रेम और श्रम करना। जिस दिन मानव-जाति से प्रेम का भाव मिट जायेगा और श्रम से अर्थिक पैदा हो जायेगा, उन दिन मानव-जाति जीवित नहीं रह सकेगी।

दुर्भाग्यवत धार्मिक सम्प्रदायों का व्यवहार अपना अनैतिक हो रहा है कि मानव समाज का मन सहज ही उनके विपुल हो रहा है। छूरा भोक्ता, पर की आग लगाना, स्त्रियों और बच्चों पर अत्याचार करना, ऐसे जघन्य अचरार भी धर्म के नाम पर किये जा रहे हैं। दूसरी ओर दबे हुए युवकों की साहसिकता उन्हें छूरा भोक्ता, बम फोड़ना, धरो को आग लगाना, गींती जैसे महापुरुष के विष जलाना आदि विचित्र नायों की ओर से का रही है। फिर भी यह याद रखना चाहिए कि जीवन में धार्मिकता की निराला आवश्यकता है। धार्मिकता का कार्य है, एक ओर प्रकृति और समाज के नियमों को स्वीकार कर सासारिक जीवन को पर्याप्त भाव से चलाना, दूसरी ओर व्यभिचय चेतना का विरह-चेतना से सम्बन्ध जोड़ना—प्रपत्ति विज्ञान और अत्यात्म का सच्चा चिन्तन मानव जीवन में लाता। यह महान कार्य विद्या (संनिय) द्वारा ही सम्भव है।

जय जगत से छोटा विचार पुराना पड़ा

• विनोबा

भातुस्थान

आज समझ नहीं सकते कि पञ्जाब पर मेरा विचार प्यार है। आज पञ्जाब सं रहते हैं, इसलिए आपका प्यार उस कोटि का नहीं है, जिग कोटि का मेरा प्यार है, क्योंकि आर्यो सगोत्र-भक्ति नकली है, मेरी विनोबा भक्ति चलीती है। सगोत्र सं विनोबा प्यार होता है, उससे पञ्जाब प्यार विनोय में होता है। जो लष्का मां से बिटुड़ा है, मां उसकी जवादा फिर करता है, भविष्यत मां से जुड़े हुए लष्के के। मैं पंजाब से दूर था, लेकिन कई बरस पहले मैंने तबसे मैं आर्य और सत्त्वज के संगम स्थान की शैल लिया था, जिसका चिक्र कायेद के एक मूल्य में आता है, जो दस हजार साल पहले का है। विस्वाधियर कास्तीयो को लेकर नदी पार कल्ला थाहते हैं। नदी में बाढ़ आयी है, इसलिए विस्वाधियर नदी से प्रायंता करते हैं, हे मेरी मां, मैं मेरे लिए एक जा और मुझे रास्ता दे। फिर नदी जबाब देती है, जैसे मां बच्चे के लिए शुक जाती है, या जैसे कल्या पिवा की सेवा के लिए शुक जाती है, जैसे मैं मेरे लिए शुक जाती हूँ।

नि ते तसै पीधानेव योवा

मघधिव कल्या कश्चरै ते

यो कहकर नदी शुक गयो और विस्वाधियर नदी पार करके नये नये।

जब से मैंने यह सूत्र पढ़ा, तब से मेरे मन में बात आयी कि इतना पुराना स्थान दिव्यस्थान में दूसरा कोई नहीं हो सकता। काशी और कुश्नेष भी पुराने स्थान हैं लेकिन उनका चिक्र उपनिषदों में आता है, वेदों में नहीं। पंजाब में इस स्थान का चिक्र वेदों में आता है। इसलिए पञ्जाब को मैंने मातृस्थान माना है। मेरा इस मातृस्थान पर कितना प्यार है, इसका

कईयो को पता नहीं। बचपन से मेरा इसके साथ सम्बन्ध है, क्योंकि मेरा वेद का सम्बन्धन बचपन से सतत चलता आया है।

कृष्णन्तरे विश्वमार्याम्

आयेव का प्रविष्ट बचन है, कृष्णयो विश्वमार्याम्। इसका अर्थ होता है। एक अर्थ तो यह होता है कि विश्व को हम आर्य बनायें, अपनी संस्कृति को पूरे विश्व का प्रतिनिधि बनाने और दुनिया भर के अच्छे विचार हम अपनी संस्कृति में, सभ्यता में ले लें। दूसरा अर्थ यह होता है कि हमारी सभ्यता के अच्छे विचार दुनिया को दें। इन विनो विज्ञान पत्र बड़ा है, देश-देश के बीच बीजारें नहीं रह सकती हैं, विचार धर से उधर, और उधर से इधर जाने-जाने में रजामट नहीं हो सकती। इसलिए भारत के बाहर के विचार भारत में लाकर भारत को विश्वमय बनाना चाहिए। जहाँ तरह वहाँ के अच्छे विचार विश्व में फैलकर विश्व को भागतमय बना दें। इसका अर्थ यह भी है कि बाहर के पूरे विचार वहाँ आने दें और वहाँ के पूरे विचार बाहर न जाने दें।

यह ध्येयै

सभी मादित मूरर किम की पत्नी ने बाबा को बात मना। उसकी बाबा को दाद बयो जानी? क्योंकि वे जानती हैं कि यह शक्त जो बात कहता है, वह दुनिया को बचाने वाला है। हमारी कोई मुनेगा नहीं तो हमारा नुकसान नहीं। हम दुनिया का कार्य करके बने गये ऐसा होता। दूसरी बात हमारी नहीं सुनते हैं तो हम उस योगी में आ जाते हैं, जिस अंगी में भगवान ब्याव आते हैं। उन्होंने महाभारत के अन्त में लिखा है :

उपबैवाहूः विरोधि एषः
न च हचिचत् शृंगीति मे

मैं हाथ उठा-उठा कर चित्ला रहा है, लेकिन कोई मेरी सुनता नहीं। गांधीजी का भी आचार नहीं हुआ। प्यारिनाल ने 'सास्य पेन' में इसका अच्छा वर्णन किया है। इसलिए हमारे कोई मुनेगा नहीं, तो उम्में हमारा कोई नुकसान नहीं।

पञ्चास साल के बाद

दुप चीनते हो, पञ्चास साल के बाद क्या होगा? मुझे को यह स्थान नहीं है कि पञ्चास साल के बाद तो आपकी मगत पर पहुँचना और वहाँ के प्राणी नहीं जायेंगे। उनसे हमारा मुकाबला होगा। भगवान की सृष्टि अनन्त है, तो इन्द्रियाँ भी सीमित नहीं हो सकती। हम पंच दशप्रयत्न विहें। मगत पर छ दशप्रयत्न प्राणी भी हो सकते हैं। किसी ने कहा मगतवाले हमको सन्देश नहीं मही भेजते? हम चींटियों को वहाँ सन्देश देते हैं? हमारा सन्देश पीटी नहीं समझेगी। जैसे मगतवाले का सन्देश पृथ्वीवाले नहीं समझे। छठी दशप्रयत्न का हमें ध्यान है नहीं। शीलमें यह है कि विज्ञान का वेग बसा है इसलिए विज्ञान के सामने राजनीति की कुछ नहीं चलेगी। इसके आगे 'जय जगत' ही टिकेगा। वेद में कहा है विश्व-मातृम्। उस जगते से सधियो के विजन (दर्शन) में यह बात थी। सत्कृत में मनुष्येन शृंगकम्प कहते हैं। इसमें जो 'क' है वह महत्त्व का है। मगत कंगरह अहो के साथ सम्बन्ध आने के बाद बहुत छोटी हो हो जायेंगी। इसलिए पञ्चास साल के बाद तो बाबा की ही पत्नी, इसमें कोई संक नहीं।

चार घाटों

बापका रंग ने पत्ताल रिचा है कि हम पार बाटें मायेंगे। नेशनलिज्म (राष्ट्रवाद), डेमोक्रेसी (सोशलिज्म) सोशलिज्म (समाजवाद), ऐम्पूजलिज्म (समानरूपता)। जब इनके आगे छोटे राष्ट्र की दृष्टि से टोपने से चलने वाला है नहीं। १९-१९ साल पहले मैंने कहा था, सत ९० ची० सो० की ए टुपल

-- (मान से कि ए० भी० भी० एक क्रिषीय

है)। अद्ययानिस्ताव, जर्म, और सिलोन, इन तीनों के बीच के द्वारों को एक करी, गृहार्थप बनाओ, एवं शक्ति बनेगी। इस दिशा में प्रयत्न भागे बढ़ने चाहिए। देशतन्त्रिय से बिछी को पापदा नहीं। व्यापक धोचिने, तो सबको लाभ होगा। बाकी चीन मुद्रों के बारे में हम धर्म करते हैं। सम्राट में कोई भी धर्म नहीं बनेगा, तो हम महाधर्म साविन होंगे, इसलिये सेक्युलरिज्म मानते सर्व-धर्म-समावयव, ऐसा धर्म करना होगा। मोक्षत्र 'ऊपर से नीचेवाना नहीं', नीचे से ऊपर विचलित होनेवाला चाहिए। और समाजवाद यानी क्या? स्टेट कैपिटलिज्म (राज्य का पूँजीपतन) नहीं। समाजवाद यानी १०० प्रतिशत प्राइवेट सेक्टर (निजी विभाग) + १०० प्रतिशत पब्लिक सेक्टर (सरकारी विभाग) = १००। लेकिन यह गणित लोगों के ध्यान में आता नहीं। इसका क्या मतलब है? मतलब यह है कि प्राइवेट सेक्टर ही पब्लिक सेक्टर होगा। सारे व्यापारी पब्लिक सेक्टर के हित में काम करेंगे और दोनों सेक्टरों को विचलित करेंगे।

संगठन और अनुशासन

बहिया में होता यह चाहिए कि हर एक को पूरी आजादी है, फिर भी सबके सब अपनी दृष्टि से सब नियमों का पालन करते हैं। मिलिटरी में तो नियमों का पालन मात्रको होता है। सोवियतों (रूसियों) में तीन नियम होते हैं—पेरिट्री (बहावर्ष), माल्खरी पावटी (ऐच्छिक धारित्र) और ओबीडिएन्स (अज्ञातासन), पहले दो नियम तो मुझे मंजूर हैं, लेकिन तीसरे 'ओबीडिएन्स' के बदले फुल फ्रीडम (पूर्ण मुक्तता) होना चाहिए। अर्थात् है नियम के उत्तम पालन की, लेकिन हमारी तरफ से पूर्ण मुक्तता होनी चाहिए। पूर्ण स्वतंत्रता होते हुए भी सहजता से नियम पालन हो। बहावर्ष काये कि छुटाने-छुटाने नियम हैं और उनका पालन दृष्ट-उत्कर्ष हो, हम निजी प्रकार की डिस्प्लिनरी एक्शन (अनुशासन [दोप पृष्ठ ४१२ पर] →

अमेरिकी युवकों की खोज

• नारायण देसाई

सभ्यता के रंजक पर अमेरिका का प्रवेश अभी हाल ही में हुआ है। वह नयी दुनिया है। इसीलिए सभ्यता की छद्मदोष में सभ्यता छोड़ा अवसर आने रहता है। बीसवीं शताब्दी का कोई एक प्रधान लक्षण हो तो यह है दक्षिण परिवर्तन। अमेरिका का भी यही प्रधान लक्षण है।

अमेरिका में आनेकाले लोग सहरों की तरह आते गये। उनमें पराक्रम करने का उत्साह था, तपे-नये रीतों की दिग्बिजय करने की उमंग थी, जिसे बाधा माना उसे नष्ट करने की क्रूरता थी। पुरानी विचारों से बड़ी हुई इन सहरों में छोटे-छोटे सारे अमेरिका की बग से कर लिया। भौगोलिक सीमाएँ उपवास हुईं तो और सीमाएँ नीतियाँ गुप्त किया—आधिपत सीमाएँ, वैज्ञानिक सीमाएँ, राजनैतिक सीमाएँ। 'मध्योपस' नाम अमेरिका को बड़ी क्षमता से इतनीमान करते हैं और कण्टीयस पर रहना सर्व का विषय मानते हैं।

आज के युव की विज्ञान की दीक्ष का अंतर नहीं सबसे अधिक हुआ है, तो यह अमेरिका ही में। विज्ञान नियम नयी परिधिचित वेदा करता है और उस परिधिचित का मुकाबला करने का प्रयास करता है अमेरिका नारानी। इस मुकाबले में जिसने अपनी बाज की बाजी मगा दी है वह है अमेरिकन संरक्षण। जैसे तो देश ही संरक्षण है। उस संरक्षण देश के संरक्षण भोग आज के संशोत्तर ज्ञान के लब्धदर्शन का अभिवादन करने के लिए उत्सुक है।

मैं कुछ छ सप्ताह अमेरिका में रहा। प्राय एक महीना मैं लोगों के बीच ही हैवरधर्म करते मैं रहा। बाकी तो सप्ताह कक्षां बहोँ गया अकसर सहरों के विचार रहा। बहोँ के संरक्षणों की को छाया भेरे पार पर पड़ी उसका कुछ अवलोकन कर चुं।

अमेरिकी संरक्षण

दुनिया के हर देश की तरह यहाँ भी संरक्षणों में दो भेद तो हैं ही: 'देविटव एव' और 'इनेविटव मेनी'—अर्थत कुछ और अनर्थों अधिक। लेकिन मुझे अन्तर विनये-जुनने का मोबा मिला 'देविटव एव' के साथ, इसीलिए जो छात्र पढ़ी है वह भी उन्हीं के विषय में अधिक गहरी है। हाँ, यह भी साथ ही साथ बहना होगा कि बहोँ एव भी और देशों की युवाता में अधिक ही हैं।

सबसे पहली छात्र पढ़ती है उनके बराबरी के साथ की। आस में बराबरी, सितासों से बराबरी, बड़े बड़ों से बराबरी, अपरिचितों से बराबरी। इस बराबरी में अविनय नहीं मान्य होता। बहोँ-बहोँ प्रतिज्ञ है, बड़ी साधनवादी है, लेकिन प्रकृत बराबरी है। हरेक से 'हार्ड' बहकर अभिवादन में वह प्रकट होती है। मन्थापनों के साथ की बड़ों में वह प्रकट होती है। एनी-युवकों के संरक्षणों में वह प्रकट होती है। हाँ, इस बराबरी के सम्बन्ध के बावजूद भी यहाँ एक अन्तरभाव होइ भी बनती है। समय के लिताठ होइ, एक दूसरे को पीछे रखकर खुद मध्योपस पर रहने की होइ। अमेरिकी जीवन की यह एक साधारणता ही पानी जापगी कि बहोँ बराबरी और होइ के दो प्रवाह साथ-साथ बहते हैं।

दूसरी छात्र पढ़ती है विज्ञाना की। संरक्षणों में तरह-तरह के विषय जानने की उत्सुकता होती है, उस उत्सुकता को पूरा करने के लिए काफी परिश्रम करते की भी सीमारी होती है। यह विज्ञाना बाणवत् विज्ञाना से अलग होती है और पहले शोध तक पहुँच जाती है। और इसीलिए कभी-कभी तो वे भोग इतनी जानकारी रखते हैं, विनयी

कि उस विषय के विशेषज्ञ लोगों के पास मुश्किल से हो।

तीसरी छात्र पढ़ती है भगवत की कृति की। ये लोग पुराना बदलना चाहते हैं, नया माना चाहते हैं। क्या बदलना चाहते हैं, यह वो [वे खुद जानते हैं; लेकिन भगवत वे यह नहीं जानते कि वे क्या माना चाहते हैं। भगवत करने के उनके तरीके भी अन्धबोधी हो रहे हैं। अक्सर उन तरीकों में भी पुराने मूल्यों को स्वीकार न करने का आग्रह रहता है, लेकिन नये मूल्यों की स्थापना का उत्साह आग्रह नहीं रहता।

और, एक छात्र यह पढ़ती है कि वे किसी 'सोच' में खगे हैं। उसे आध्यात्मिक जीवन का रहस्य कहिये, उसका अर्थ, उद्देश्य या दिशा कहिये—लेकिन वे कुछ सोचना चाहते हैं। इस सोच के लिए वे अपने जीवन में परिवर्तन करने के लिए भी तैयार हो जाते हैं।

केम्पटी पटर करीब १०-१५ साल की होगी। लेकिन, बड़े-बुढ़ों, उसके समानता से मिलती है। बड़ी सहजता से लोगों से लिपट जाती है। लेकिन काम करने में घुल कर पबकी है। और जब वह किसी विषय को पकड़ती है तो उसके बारे में सारी जानकारी भिरे बिना नहीं रहती। जीवन दूसरों के लिए कैसे उपयोगी हो, यह उसका मूल प्रश्न है। इसके लिए वह तरह-तरह के काम सामग्री देखती है। जब तक उसे पूरा समाधान नहीं होगा तब तक सायद इसी प्रकार वह आनमानी हो रहेगी।

टोपकोट्ट हाम से काम करना सीखना चाहता है। सोड़े ही दिनों में उसने मुझे चलाता सीख लिया है। उसे अलग-अलग लोगों के पास जाकर उनसे जीवन सम्बन्धी प्रश्नों को उपस्थान में भी दिनचर्या है। वह है तो परिचयी किनारे का छात्र, लेकिन कुछ दिनों के लिए पूर्ण किनारे आया है और यहाँ की तरह-तरह की शान्ति-प्रभुत्वों में शामिल हो आया है। चिह्ने पर हमेशा श्रम है। कोई

बादमी प्रचलित मासूम नहीं होता उसको।

वह लड़का जिसका मैं नाम भी नहीं पूछ पाया अभी हाईस्कूल पूरा करके आया है। कालिन्-विद्या लेने का इरादा तो अच्छा है, लेकिन भा-बाप के पैसे से नहीं। मेठ में जान करके पैसे बसा लाया, फिर कालिन् जायगा। एक दिन मांसे के समय मेरे पास बंटा था। युद्ध विरोधी आन्तरिक सम्मेलन में विकासयोग देना के सम्बन्ध में हमारा जो प्रस्ताव था उसी के बारे में गहराई से चर्चा करता रहा। हिंसाओं की भगवत

आत्मसाक्षा का हिप्पी मुहल्ला, यानी वह मुहल्ला जिसमें कई हिप्पी रहते हैं, जहाँ जगता 'सम्प' लोग नापसन्द करते हैं। हाँ, कुछ सम्प लोग मौज देखने के लिए वहाँ अकर आ घूमते हैं। हिंसाओं को मदद करनेवाले एक दूकानदार की दूकान में किसी सभ्यता के सरसकटे बम विस्फोट कर दिया था। दूकान जल गयी थी। हिप्पी लोग एक राधा कर रहे थे, आगे के बारे में विचार करने के लिए। उनके चिह्ने पर ड्रग था, क्रोध नहीं। लेकिन जीवन तो वे इसी प्रकार का जीयेंगे। मिर्ची-बीबी और एक बच्चा मोद में है। बच्चे को सम्हालने का अनुभव नहीं है सायद, इस परिहार को। लेकिन उसकी परवाह नहीं। बच्चा परिस्थिति से सीखेगा। अपनी खीरी पर अपना पूरा सामान तथा बच्चे को डीकर स्थान-परिवर्तन कर रहे थे। हिप्पी लोग अपनी गैरकानूनी पत्रिका पसन्दते हैं। सबको के बीच सड़े रहकर जाने जानेवाले लोगों को वे पत्रिका की प्रतिवाँ बेचते हैं। 'बर्ड' नाम की इस पत्रिका को सायकल १६००० प्रतिवाँ हाथोंहाथ बिकती है। किसी भी कालिन् की हस्तलिखित पत्रिका-लेखे उसके रूप-रस है। इन प्रतिवाँ में कनेय फ़ारर देने सायकल मुझे तो कुछ दीखता नहीं है; इसके कहीं खीक मन्ने पत्रिकाएँ तो अमेरिका के शाय 'स्टाट' में बिकती हैं। हिंसाओं पर एक आक्षेप है कि वे गौमा, परत या उसी प्रकार के

सायकल ड्रग सेवन करने के लिए ही हिप्पी बनते हैं। लेकिन यह कहना इतना ही सय है जितना यह कहना कि लोग भांग का सेवन करने के लिए ही विश्वनाथकी कुी नगरी काशो में जाते हैं। हाँ, यह सही है कि कई हिप्पी लोग जीवन के उद्देश्य को ढूँढ़ने का शार्टकट खोजने के लिए, या नया अनुभव लेने के लिए शोक से किसी-न-किसी रसायन का सेवन करते हैं। किन्तु इस प्रकार के 'ड्रग' तो हजारों ऐसे लोग भी लेते हैं जो हर हालत में हिप्पी नहीं हैं। मेखाना के सेवन का प्रतिबन्ध हो जाने के कारण अधिक सखत-नाक द्रव्यों का उपयोग शुरू हुआ है, ऐसा भी मैंने सुना। यह भी सही है कि कुछ लोग तो इस प्रकार का सेवन करने के लिए हिप्पी बन जाते हैं, उससे भी अधिक सही है कि कुछ द्रव्यों के व्यापार के लिए हिंसाओं का आचल शोड़ लेते हैं। इनके पैसे लट लेने के लिए भी कई बार अमेरिकन सम्प समाज के लोग दूधे मारते-पीटते या हत्या कर देते हैं। लेकिन मूल में हिप्पी सम्प्रदाय एक हिस्सा की भगवत है—भौतदा समाज के खिलाफ भगवत। इसीसे उनको वैश्वभूता ऐसी बनी है। इनमें से कुछ लोगों ने वो अपनी सम्पत्ति समाज के लिए समर्पित कर रखी है। कुछ नये अनुभवों की खोज में देश-विदेश भटकते हैं। यह सही है कि इनमें से बहुत कम को अपना उद्देश्य मासूम हो सकता है। लेकिन वे ईमानदारी से इस बात को स्वीकार भी तो करते हैं। हममें से जितने लोगों को अपना उद्देश्य मासूम है, और हममें से जितने लोग अपनी उद्देश्य-पूराया को ईमानदारी से बचन करते हैं?

समाज के पावू मूण्डो का विरोध करने का एक प्रतीक जिस प्रकार बाल बढ़ाना या उन्हे अस्थायित रखना है, उसी प्रकार समाज-व्यवस्था के सामान्य नियमों को न मानना दूसरा प्रतीक है। मैंने ऐसी उमारा देखी है, जिनमें कोई कर्मका न हो, जिनमें बँटनेवालों से अतिक

परमाणु-आयुध और मानवीय संकट

• सत्योय भारतीय

लोग लेटे हुए हो, त्रिज्वे पुरा और ल्पनी बनता के साथे एन-डूबरे की गोर में बँटे हों या एन-डूबरे को बूम रहे हों, त्रिज्वे कोई प्रस्ताव न होना ही, जिसमें भाषा न के साथ-साथ छाता-पीता और पूँचना पतला हो। लेकिन यह स्वीकार करना होगा कि इन अस्त्र-प्रतापीय समाजों में चर्चाई अच्छी ही बन रही थी।

स्त्री-पुरुष सम्बन्ध

हमारा एक विश्व रास पलेनेयन वर्तमान समाज के इतना ऊँच गया कि उसने जितना सम्भव हो सकेगा उसे छोड़ते जाने का निर्णय किया। इसलिए एडवर्ड पर मोटर चलाई हुए यातायात के नियमों का उतपत्ता करने उसने अपना समुदाय धरा शुरू किया। धा महिने तक उसका यह पापलपन टिका। उसमें न जाने कितनी बार जेल हो जाया, न जाने कितनी बार जुर्माना भरा। पर जब यह इस व्यवस्था के बाहर निकल जाया है, और अमेरिका के विभिन्न समाजों के सम्बन्ध सुधारने के लिए शिक्षा के प्रयोग कर रहा है।

आमजोर पर नये धारणाये लोगों को, अमेरिका में स्त्री-पुरुष सम्बन्धों में एन पीपी में जो अन्तर आया है, वह समझा न नहीं आयेगा। जो सुधारवादी नहीं हैं वे भी अपनी सङ्घिनार् यदि १५-१५ साल की उम्र में लड़कों के साथ डेटिंग नहीं करती तो बित्त ही करते हैं। वे लड़कियों को शादी से पूर्व गर्भावस्था से बचाने के लिए विरोधराम्य से ही उन्हें गर्भनिरोधक गोलीयाँ देने समते हैं। सुधारक नयी पीढ़ी को कुछ भी करती ही, दिखाकर नहीं जाती, सुन्वयवृत्ता करती है। इसमें जो मना प्रचार के प्रयोग आते हैं। नै इन प्रयोगों की बहुत मजदूरी के नहीं देस पाया। लेकिन लोगों के उनके बारे में कभी चर्चा बचाने की। परिवर्ती विचारों पर एक बगद नहीं सामूहिक जीवन का प्रयोग बनता है। उन समुदाय में सब पुराने सभी विचारों के और लकी (देव पूछ ५११ पर)

मौत का सबसे बड़ा शोकार आज के विश्व में सुकुच राज्य अमेरिका है। दुनिया में शादत ही कोई जग्या इतना बसा और साधारणक हो जितना सत्तायन वेचना। दूसरे विश्व-युद्ध के बाद अमेरिका लगभग २० लाख सारघलें, १ लाख सव-मशीनगत, एक लाख लड़ाकू एव कमवर्षक हवाई यन्त्र, २० हजार टैंक, ३० हजार विमानों तथा २३०० पनडुबियाँ बँच चुका है।

एक और अमेरिका शासक बँचकर या शासक बनाकर अपने आपकी सम्भावित साम्रज्य की आसना के लिए भारतक शैपार करते जा रहे हैं। जनवरी १९७१ में राष्ट्रपति निषेधन द्वारा अमेरिकी लिनेट के सम्मुख प्रमुख सुरक्षा-सम्बन्धी व्यय ७७.१ अरब डालर (५६१२५ करोड़ रुपये) के बराबर था। कुछ वर्षों में यह १०० अरब डालर हो जाय तो कोई आश्चर्य नहीं होगा। शास्त्री की बड़की जा रही साया के भी अधिक साउरनाक उनकी सन्ने की साम्जा में अन्तर्मुख गृह होते चले जाना है।

जीवन समानता करना, मर्दाना हो होता जा रहा है, किन्तु उन्नी बगुनाय में आशान भी बनवा जा रहा है। युद्ध तो हमेशा हुए हैं। मानव इतिहास ही युद्धों का इतिहास है। बर्बरता के कभी न टूटनेवाले शिर्मम किलखिलों की कूर बहाती है। लेकिन पुराने युद्धों में एक वैदिक आग्ने-आग्ने की लड़ाई में एक बार में एक से अधिक आग्नी की नहीं मार सकता था। फिर लोगों का बनाना आया जो एक साथ कौनों लोगों को सम-मौत लेने लगी। और हमारा युग हाइड्रोजन बम, जड़पीनी गैस तथा उष्ण-बलिक और वैदिक युद्ध के नवीनयन तरीकों की प्रचर है रहा है। आर कैवक

एक अर्थात का निर्णय भरे-भूरे शहरों को मुमिषार कर सकता है। एक ऐसी श्रुतता आरम्भ कर सकता है जो सुदि से जीवन का सामोनिधान मिश्र छाती है। मारने की साम्जा में भी "बलि की व्यवस्था" का बूकी है। एक और अमेरिका अपने परमाणु-आयुधों से एक दूसरे को कई सार नष्ट कर सकते हैं। मिसाइल, एण्टीमिसाइल, एण्टी एण्टी मिसाइल, एण्टी एण्टी एण्टी मिसाइल, मौत का विविध बनने और विनाश का कुर्मन करने में एक दूसरे से बहुरङ्कक कपात रिशाने के लिए ईशार की ना रही है।

एक अनुमान के अनुसार १९७२ का अमेरिका के वर्तमान ५६०० आर्थिक प्रहार कर सकनेवाले युद्धों की संख्या ११००० हो जायेगी। एक के पाठ ऐसे २००० केन्द्र हैं। लेकिन सक्का की ब्रमाण गुणवत्तक संख्या दोनों देशों के बीच हीइ बरकरार रखे हुए है।

प्रकार परमाणु युद्ध हुआ

परमाणु युद्ध क्या कभी होगा ? और यदि युधिपति ने मानवता से पूरा बदला लेने की धम की तब उसके फलस्वरूप होनेवाले विनाश का कुछ अनुमान भी लगाया जा सकता है। विनाश का परि-पाप सम्पूर्ण रोगदे मत्ते कर देता है। अमेरिका के रक्षा-विभाग द्वारा सामने गये एक अनुमान के अनुसार यदि अमेरिका के ३० बड़े शहरों पर हाइड्रोजन बमों या अन्य परमाणु आयुधों से प्रहार किया गया तो लगभग ५ करोड़ ६० लाख लोग कुल जनसंख्या का ५२ प्रतिशत, मुख्य कर जायेंगे। अमेरिका की कुल औद्योगिक सम्पत्ता का लगभग २२ प्रतिशत एवम् नष्ट हो जायेगा। अगर एक पर एसी तरह प्रहार किया गया तो ५ करोड़ ६० लाख लोग, कुल जनसंख्या का २० प्रतिशत, मुख्य प्राण खो देंगे और उर्वरी

औद्योगिक दामता का ४० प्रतिशत नष्ट हो जायगा।

यदि इस युद्ध में विश्व के कई अन्य देश भी सम्मिलित हुए, जैसा कि अवश्यभावही है, तो क्या होगा? अगर युद्ध एशिया या अन्य कहीं आबादीवाली जगहों पर छिड़ा तो विनाश बड़ा! आकर हम क्या? वर्तमान में परमाणु-शक्ति-सम्पन्न राष्ट्रों के पास जितनी मात्रा में है उससे दस गुणा पर अधिकता और जीवन को थोड़ा बर नष्ट किया जा सकता है। लेकिन परमाणु शक्तियों का प्रणाल बदलते चले जाने का प्राणतप बरकरार है। मनोवैज्ञानिक प्रय महाशक्तियों की वेन नहीं लेने दे रहा है। सब कल्पनी क्षमता के बारे में अनिश्चित से निर्दिष्ट देते हैं। गुणात्मक दृष्टि से रूप द्वारा परमाणु शक्ति में की गयी वृद्धि अमेरिका को धारण जा रही है।

जब बयुदा का संकट अपने चरमोत्कर्ष पर था तब राष्ट्रपति कैंनेडी ने घोषित संघ को अखिल भोजवनी देते हुए कहा—“बयुदा से निकल जाओ, बचना”। उस का सच मान का हस नहीं था। इसविषय कुछ मध्यमोप अवश्य हो गया। लेकिन सभी एक कहीं राजनयिक यह कहते सुना गया था—“यह अखिल अक्षर होना अब दुस अमेरिका हमारे साथ ऐसा कर सकीये।” और आज रूप के रास्तागार में २५ मैगाटन क्षमतावाली ३०० एच० एच० १ मित्राहर्षे मौदुर है जो अमेरिका ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व पर प्रहार कर सकती है। इस भीत को हीड़ को दम्भ की कोई नहीं-की जिनकारी भी वास्तविकता में परिणत कर सकती है और मानवता का सबसे बड़ा अक्षिब मनुष्य टारता ही हो सकता है।

सगला है मारने की क्षमता में अक्षि भी पराजित नहीं है। विश्व को ५० बार नष्ट करवा भी बध है। सभी तो विश्व के अधिकार राष्ट्र अपने शस्त्रागारों में मले-मले हथियार जमा करते जा रहे हैं। इस विश्व के ३ अरब ९० करोड़ लोगों में

से प्रत्येक के लिए लगभग १० टन विस्फोटक मौत की क्षमता बनकर प्रतीक्षा कर रहे हैं। परमाणु हथियारों का परिमाण ५०,००० मैगाटन से भी अधिक जा पहुँचा है। इस विस्फोटक दामता से हर स्त्री-पुरुष एवं बच्चे को एक नहीं चोड़ बर मारा जा सकता है। एक वैज्ञानिक डा० पालिग का तो यह अनुमान है कि परमाणु शक्तियों के वर्तमान स्तर से प्रत्येक व्यक्ति को १५० बार मारा जा सकता है। लेकिन मारने की इस गति का अर्थ क्या है? क्या किसी को एक बार से अधिक भी मारा जा सकता है?

प्यु में लगे राष्ट्र पाँच परमाणु-शक्ति-सम्पन्न राष्ट्रों के अलावा साठ अन्य राष्ट्र—कनाडा, भारत, इराक, जापान, स्पेन, सिचवान, लैण्ड, तथा ५० जर्मनी बहुत ही कम समय में परमाणु शक्तियुक्त होकर चले हैं। भारत के लिए भी के परमाणु-शक्ति-सम्पन्न राष्ट्र बन जाने तथा पाकिस्तान द्वारा अखिल करने की सम्भावनाओं के कारण परमाणु हथियार तैयार करना अनिवार्य बन गया है। शान्तिवादी शक्तियाँ अब तक इस मार्ग का मुकाबला करती कहा नहीं जा सकता। वर्तमान सरकारों नीति को देश की सुरक्षा की दृष्टि से कुछ ही समय में बदलना होगा। क्योंकि लाठी से बन्दूकबाजे का मुकाबला नहीं किया जा सकता। या तो विश्व के सभी परमाणु-शक्ति-सम्पन्न राष्ट्रों को अपने-अपने शक्तियों को नष्ट करने या उनका शान्ति-कामनी उपयोग करने का कोई मार्ग ढूँढ निकालने के लिए एकमत होना चाहिये, अन्यथा अपनी पराजय-परमया मजबूत करने के उद्देश्य से परमाणु-शक्ति-सम्पन्न बननेवाले राष्ट्रों की संख्या बढ़ना अवश्य-भावी है। १९५० तक आज के शक्तियुक्त हीन राष्ट्रों के पास इतना प्लूटोनियम उपलब्ध होने लगेगा कि वे प्रति खन्दाह १०० अणुबल बनाने की शक्ति में पहुँच पावेंगे।

शुक्ति का विनाश करने पर आसारा

इस पीढ़ी के कुछ विरिक्त लोगों के लिए परमाणु हथियार तो कई तरीकों में से केवल एक है। अगर एक जीवित तख मोदुलिन को सदुर तथा नदियों में मिले दिवा जाय तो सारी मानवता केवल ६ घण्टों में नष्ट हो सकती है। अगर जहाँसे खायनों का विहकाव करने के लिए केवल १० वायुयानों का प्रयोग किया जाय तो अमेरिका की कुल आबादी का ३० प्रति-शत को नष्ट किया जा सकता है।

विनाश के विभिन्न उपकरणों से दबा हुआ विश्व कराह रहा है। मानवता आज जितनी अवस्था और निर्यात है उतनी कमी न थी। कौन कह सकता है, भीत का यह जालाबुझी कब और कहाँ फट पड़े और हजारों-लाखों वर्षों से सभार-संबारी और तराबी गयी मानव सम्पत्ता पनक गिरते अतीत का कल्पना बरकर रह जाय।

यदि विश्व को परमाणु युद्ध के सर्व-भार से बचाना है तो शीघ्र ही कुछ करने की आवश्यकता है। मन्थव्य राजनीतिक विज्ञान के आजाकारी धरम पर उभार होकर अमन और सुरक्षावादी को उसकी टारों तले रोड रहे हैं। इसका एक एक कोई निदान नहीं है, अब तक सभी परमाणु-शक्ति-सम्पन्न राष्ट्र उद्देश्य से प्रेरित होकर शक्तियों को नष्ट करने का निष्ठापूर्वक वचन न ले सें। लेकिन उद्देश्य वा यह नो मन टेल कमी उठ पायेगा और प्रगति एवं शान्ति की राधा कमी मुक्त नृत्य कर पायेगी, इतमें न केवल अर्थ है अखिल अविशवास ही ही घुरी सम्भारता है।

पढ़ें
गाँव की आवाज
(हिन्दी पाठिक)
सम्पादक : राममूर्ति
व्यक्ति मूलक : ५ रुपये
सर्व सेवा संघ, पत्रिका-विभाग
राजघाट, बाराणसी-१

हूए वगैरे रहेगा नहीं। दारिद्र्यपरत लोग यदि चीन के आश्चर्य-जहा में आ जायेंगे तो दोष इन जनमानस गढ़वालों का मानना चाहिए या सरकारी मद्रुत्तकों दृष्टि का ?

इसलिए सबसे पहले शराब का बी-जान से विरोध करने और कानून के लिए धर्या बह करने के लिए सर्वोदय के लोग १९६७ से उत्तराखण्ड में दसम-अवग जगहों पर धारो बढ़ने लगे। रित्रयो और विचारियों की मदद से उन्होंने कई जगहों को शराब की दूकानें बन्द करायीं। १९७० में बड़े पैमाने पर दिहरी और आसपास के ग्रहों में मोर्चा, सर्याग्रह आदि के जरिये, काराग्रह में सजा सुगतकर सात जिलों में से पाँच जिलों में शराबबन्दी लागू करवायी। रित्रयो में नया आचरण आया। तरुनों में उत्साह जाया। सामान्य लोग एक होकर, शान्तिपूर्ण रीति से सरकार का उस सही राह पर आ सचते हैं इसका एक नया विश्वास लोपो में आया। दुर्घटनाओं की संख्या घट गयी। शरीर मनुष्यों के पास कुछ वैसे जमा होने लगे। लेकिन यह भी मान लेना होगा कि दिहरी जैसे ग्रहर में टिप्पर-निजवर और आधुनिक दवा के नाम पर 'सुरा' बड़े दामों पर बेची जाने लगी। ग्रहर के लोग शराबबन्दी की विपदाता अपने प्ररासो से साक्षित करने लगे और देहाओं में कुछ नै बच्ची-बराप का शामोयोग भी शुरू किया। इन आघातों का बर्ष बढ़ानेवाला फेडरला इनाहाबाद हाईकोर्ट ने १९७१ के शुरू में विदा और शराबबन्दी कानून को अवैध घोषित कर दिया। यह कानून मानव के मूलभूत अधिकारो पर आक्रमण घोषित हुआ।

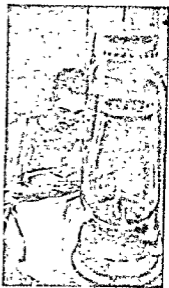
श्री सुन्दरसात बहुगुणा ने सौर-जागृति और निर्भयता के आनाहन के लिए अनिश्चित काल तक उपवास का निर्णय लिया। उनके दिल की वेदना और प्रार्थना उपवास के रूप में प्रकट हुई। ८ नवम्बर '७१ को दिहरी के मोटर अट्ठे के अनदीरु शराब की दूकान के सामने एक कोने में यह आचरण-यत शुरू हुआ और पहाड़-में जागृति की सहर दौड़ गयी।

सुभाष-पत्र। सोमवार, १७ अप्रैल, '७२

सैकड़ों स्त्री-पुरुष दिहरी के आस-पास से, उत्तर वाली से, पमोती की तरफ से आर्यों में दिहरी आने लगे। 'पहाड़ के लोगों दिहरी चलो'—यह उनका नारा था। धर्म उत्साह संभार करने लगा। १४ दिनों के उपवास के बाद सुन्दरसातजी ने नोक, गहद और पानी लिया।

अब मोक-जागृति का काम ज्योरों से चलाना होगा। इसके बारे में दो मत जो हो ही नहीं सकते। कानून की यथास्वता के बारे में सचप होने के कारण और उपवास के प्रयोजन के बारे में सचक रहने के कारण मैंने सुन्दरसातजी की इनके बारे में पूजा था। उनका जकार धक्को रोपने के लिए मजबूर करेगा। 'शराब केवल कानून से बन्द नहीं होगी यह सही है। शिक्षण के माध्यम से ही शराब की प्रविष्ट जन-जीवन में से हटती चली जायेगी। लोगों की निर्भयता का उदाहरण देखने को मिले, चीनरसा में सर्याग्रह का यानी रिम्भेदारों ने और शान्ति से विरोध करने का—महान लोगो के मन में पड़े इसलिए आन्दोलन का और उपवास का मार्ग बचाने की प्रेरणा हुई। यहाँ जो यथा मिला उससे बाकी प्रान्तों में भी समार-सेवकों को बल मिलेगा, यह उम्मीद है। तमिलनाडु और महाराष्ट्र में यह हो सकता है। स्त्री-जागृति का कार्य तो बहुत अनायास ही हो सका। प्राग्दाल-शामरवारज्य के आन्दोलन को इस यण से काको मदद मिलेगी, यह जाहिर है।

“जनता के बन्धाण के लिए ग्यावोचित मार्गें सहिसरु आन्दोलनो की मार्कंड अब तक आजादी के बाद चायद ही पेश की गयी। काचार्य विनोबा के आन्दोलन का शपवाद छोड़ दें तो किसी राजनीतिक दल ने यह हिम्मत की नहीं। सब तरफ हिंसा का आधार लेकर, जन-जीवन को आन्दोलित करके ही सरकार का ध्यान आयाय की तरफ खीना जाता है। अब पहाड़ों में चीन स्थित होने लगे हैं। जंगल के जड़ी-बूटियों के ठेकेदार जनता की प्राणिक भावना का साम उठानेवाले, उनको उगनेवाले शोषक, अब अग्रिय होने लगे हैं।



श्री सुन्दरसात बहुगुणा : उपवास काल में शिवालय

स्वतंत्र राज्य की माँग, सुनिश्चित की माँग आन शिक्षितों में जड़ पड़ने लगी है। इन ग्यावपूर्ण भागों का हल आगत के क्षयों में, हिंसक आन्दोलनों में बदल न जाय इनके लिए कीन-सा राजनीतिक दल या सामाजिक संस्था प्रयत्नशील है ? पहाड़ों में तरुण नवसातवादी वृत्ति के शिचार होने लगे तो आचर्य कीन सा ? इन सबके सामने सहिसरु, शानिशाकी लेकिन शान्तिपूर्ण तरीका, पेश करना आवश्यक था। इसलिए यह आन्दोलन और उपवास शुरू करना पड़ा। जाय की बाजी लगाकर इस आन्दोलन की शान्तिमय रखा गया। शिवालय की शान्ति और तुपस्या, परम्परा तथा सरहृति, इनके योग्य पहाड़ पर आन्दोलन हो इसलिए यह प्रमाण था।

उत्तराखण्ड के लिए ही नहीं, सारे भारत के लिए ही सुन्दरसातजी के निचार और शक्ति महत्त्वपूर्ण हैं। अब विचारकों को, समाज-सेवको को, वे उद्बोधनकारक साक्षित होने। सर्वोदय के लोग अपनी तरफ से जन-जागृति और शिक्षण का कार्य साम-स्वराज्य और स्वातन्त्र्य की दिशाओं में करते रहेंगे, लेकिन उनकी मदद सारे विचारक और नेता भी करेंगे-तो एक नयी राह खुल जायेगी। ●

ग्रामस्वराज्य के मोर्चे से

३० मार्च

गिधारी से क्या हुई ? जो उत्पत्ति से उनमें से एक के गांव का कुछ दिन हुए साम्राज्य हुआ। वह जगह ही और साम-विचार के साथ जोल रहे थे। अन्य लोगों के मुँह से यही निकल रहा था : 'क्या होगा, कैसे होगा ?'

कोई आरम्भी प्रवृत्ति प्रवाह से बनन रहकर अपनी निष्ठाओं में चित्तवा अर्थात् रह सकता है। इसका एक नमूना आज देखने को मिलता है। कितने दिना हैं जो अपने अनेकानुभव प्रतिभार लड़के को छोड़ देने की उम्माह देंगे। सिद्ध एतन्निष्ठा कि उनके अन्दर उसके कर्मा भाविते से, और उसके मान्यन उनमें घुस देने की छुट आये से ? लेकिन ईमानदारी के लिए भी कुछ आर्थिक आधार तो चाहिए। कितने घंट का भी ठिकाना न हो, वह ईमानदारी बेईमानी के बीच की रेखा कैसे पहचानेगा ?

३१ मार्च

बड़े मानिक हजारी समाजों में क्यों नहीं आते ? चायद उनके मत में यह भय रहता है कि साम्राज्य की समा में जायेंगे तो प्रथम देनी पड़ने। जो मानिक सरकार को नहीं में घुस तोकरकर लड़कों कीने भूमि का मानिक बना हुआ है वह साम्राज्य शास से दरना है। मन्दक से नहीं अर्थिक विचार का भय होगा है। एक बड़े मानिक ने मुझे साठ साठ कहा : 'जो साम्राज्य का नाम देने है तो देने पर लगी बन जानी है।' यह हासन लव है। जब हुए मुझे पर कां-कर्ता कीने में करण, दान की इच्छा रहते एव रह है। 'कीने में करण, मानिक है इच्छा' की आशय जब लगी कण से एक साथ निकले तो लव बना हुए

होगा ? जब समय आ गया है कि 'मौज हो इच्छा' का प्रयोग किया जान।

२ अप्रैल

वो मुलिया समा में साथ बैठे थे। समा समाज होने पर, जो युक्त था, यह तरह-तरह के समा प्रकट करता रहा। जो युक्त था वह कह रहा था 'यह नाम तो होता ही चाहिए।' युक्त सत्ता की सीधियों पर बहने की सामाजिक है, युक्त ने दुनिया देली है, और वह सामाजिकता को समझता है।

२ अप्रैल

यह बैरज की 'कामोनी' है। सर-कारी बर्गकारी तो रहे ही हैं, बहुत-से लोग दूसरे जिनों से आकर बस गये हैं, दूसरे राजों के भी कुछ लोग हैं। वहाँ नहीं नहर, बाँध, या बैरज से नती कमीन निरामनी है वहाँ जगह-जगह से भाये हुए लोगों के छोड़ तरह के अनिश्चय बस गये हैं। जिनके हाथ कितनी जमीन लगी, सरदीकर या लाठी के बन पर, उनसे उनकी जमीन पर कब्जा कर रखा है। येजी, आसार, मुरलीरी, यही कन्ना इन जगहों में बनजा है। बाहर से भाये हुए लोगों को रबानीय भीतन में बहुत कम बर्ग होगी है; उनकी मुक्त बिन्ना यह रहती है कि कमाकर कितना कमा पर पर भेजा जाय। इतन्निष्ठा से बच्चों के लिए लड़क की बर्ग करने है, लडाई, रोमनी, साँच और मुन्धरणा के निर्णय प्रकट करने है, लेकिन साम्राज्य-साबरकार की बर्ग उन्हें नहीं लगी।

३ अप्रैल

'काम' वाली 'देवदेवी' लैगना-दिग्ग्य। कमीन का मानिक रहता नहीं है और लगी नहीं जाता है। एक तरह की कामक लेगी कितनी अर्थिक है, और

एक-एक मानिक के पास कितनी-कितनी जमीन है, इसका जवाब नहीं आते से चलता है। कामकाश की अपनी खेती से मजदूर रहता है, उध गाँव से उसे मजदूर कम रहना है किन्तुमें उसकी खेती होती है, लेकिन उसे यह भय तो रहता ही है कि अनाद ले जाते समय हज़ार मजदूरों की निगाहें उसे देखती हैं। कामकाश पर कामकाशों का आकर्षण साम्राज्य या भीया-बट्टा की ओर नहीं है। लेकिन 'कामक' यहाँ की भूमि व्यवस्था की एक दुष्ट चीज है।

४ अप्रैल

साथियों के प्रयास से गाँव का बरतों पुराना समाज था हुआ। जो बस एक दूसरे के दुःख में से वे आन मिले, साथ जाना साथ, बर्तों से भाँव बहाये। लव हुआ कि सब मिनकर भीया-बट्टा निकालेंगे, बँटेंगे, गाँव में साम्राज्य की व्यवस्था लागू करेंगे। नाम की समा हुई। मुलियाजी समाजित से। मेरा भावण हुआ। लेकिन भूमि विवरण एक बार, दो बार, तीन बार बट्टा गया। क्यों कोई सामने आये ? कितनी एक अर्थिक से भी जाने कोले-बट्टे की योग्या नहीं की। से मुक्त की भागी नहीं बट्टे जो बट्टे से, 'हम यह कर रहे, हम यह कर रहे।' क्या करते बेचारे, बट्टे-बट्टे से जान एँट दिया होगा। समाज भी गाँव के बट्टे लोगों के बीच था। सबका लव हुआ तो वे बरबारी से बने, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं होगा कि उन्हें भूमिदानी के प्रति एन बदन देना चाहिए और उनके लिए भीया-बट्टा भूमि निरामनी चाहिए। मानिक साम्राज्य में लड़के या मेव से रहे, लेकिन भूमिदानी को तो भूमिदानी ही रहना चाहिए; यह उनका दर्शन है। इसी दर्शन से लगी बरती है, कैसे बरते यह दर्शन ?

४ अप्रैल

दरबारे पर हापी है, जोन है, दुँधर है, कपरे में बाप और दिल की बर्गों कितनी हुई है, और उनपर कोका-कट रखा हुआ है। लड़का कानेक से-

पुराण-कथ। कोयार, १७ अप्रैल,

चम्बल की घाटी : समस्या के मूलभूत कारण

६ प्रो० गुरशरण

क्षेत्र की स्थिति

चम्बल नदी विन्ध्याचल की गूंडलाओं से बहकर उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में यमुना नदी में आकर मिलती है। इसका पानी सोती की तरह वाष्प होने के साथ-साथ बैसा हो पना भी है। ६० से ९० हाथ तक नीचे गहराई पर यहाँ के कुँओं में पानी पाया जाता है जो सनिन पदार्थ युक्त होते से बलवर्द्धक हैं। इसके पानी से किसानों की खाद हूबार से अधिक बर्ण-शीत भूमि को बाढकर बेहूत्र में परिवर्तित कर दिया है जो ऊबड़-खाबड़ ऊँचे टीले जैसे दिखते हैं वेसे ही जमीन के नीचे भी बड़े फुट तक है। यह जमीन सजात कटवी हो जा रही है और इति घोष भूमि को निरन्तर बेहूत्र बनाती जा रही है। यह नदी उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान, तीन राज्यों की सीमा को छूती हुई बहती है जिसके फलस्वरूप मधुवा, मेनपुरी, एटा, वागदा, इटावा, हबीरपुर, ऊरद, ताँसी, सतलपुर उत्तर प्रदेश में और पिन्ड, घुरना, खालिपर, रतिया, सिचपुरी, गुवा, छतरपुर, डीबमगढ़

मध्य प्रदेश में तथा धौलपुर (भरतपुर) तवाँई माधोपुर आदि जिले राजस्थान में इस समस्या से पीड़ित है। इन सब जिलों की जनसंख्या लगभग बराबर करीब मानी जाती है। वातावात और वायुमणन के साधनों का नितान्त अभाव है। मरियों पर पुन नहीं, छड़कें नहीं, आठ-आठ मोल तक बच्चों के पढ़ने के लिए प्राइमरी स्कूल तक नहीं। उद्योग-धर्मों का नितान्त अभाव। बड़े-सा छोटे-कोई उद्योग इस क्षेत्र में नहीं हैं। बस दो ही मुख्य काम हैं—डेना में भर्ती होना या फिर बेहूत्र बांग में जाकर बागी हो जाना। शीत भूमि प्रति व्यक्ति ५ बिन्हा भी नहीं बाकी और जनसंख्या अन्य क्षेत्रों को गुजना में बहोँ अधिक तीव्र गति से बढ़ रही है। चम्बल का उदीय क्षेत्र जिस तरह बेहूत्रों का है उसी तरह सतलपुर, चमोली, सिचपुरी, खोपुर आदि का ब्याबान पहाड़ी प्रंगल बाग बहलता है। मीलो तक डूँड ही डूँड, पानी का कही छिनना नहीं। खैर, बँरिया, रेभडा, होम्स, हिंकीर आदि के छोटे-छोटे बेंड़ पाये जाते हैं।

→ बढ़ता है। लेकिन घर के माथिक, जो बाँव के मुसिया हैं: 'बहने सगे, मैं तो मुहिमीन हूँ, मैं क्या दे सकता हूँ?' निरसन है यह मुहिमीनवा जिसमें इतना वैभव है। मैंने पूछा: 'क्या बाग सचमुच भूमिहीन है?' बोले: 'भेरे पास सिर्फ दस बीघा है। लकड़े के पास, उधकी भाँ, बहन खादि सबके पास अपनी-अपनी अलग जमीन है। वे ही उधके माथिक हैं।

यह अंधारा सोनिया के नये मानून से बचने के लिए की गयी है। निरसन बड़िया भूमि-विस्तारण किया गया है! सरकार काय बाव, मानिक पाठ पाठ। अरद कीई माथिक बीघा-कट्टा देने के लिए राजी भी होता है तो बहता है:

'भेरे बिन्हे जिलनी जमीन है उसका बीघा-कट्टा ले सीबिधे।' परिवार में भूमि है वे सो बीघा और बीघा-कट्टा मिल रहा है १० बीघे पर। कैसे समस्याय जाम लकड़े को, उसको बहन और उसरी नाँ को? ये सब ज्ञानदान भी पहुँच के बाहर हो गये हैं।

जानून न सुब जमीन निकाल पा रहा है और न ज्ञानदान की निकालने दे रहा है। इस तमी परिस्थिति में हमें तये रंग से सोचना पड़ेगा। भूमि के प्रश्न पर हमें अपना स्टैंड स्प कर लेना चाहिए। 'शरीबी हटाओ' के लिए बनाया जाने-वाला कानून बड़े माथिकों का संरक्षक बन गया है।

—राजमूँति

यह भूमि कंकरोसी तथा पथरीली होने से कृषि योग्य नहीं है। कहीं-कहीं पोड़ी-पोड़ी जमीन साफ करके सोय लेती की व्यवस्था करते भी है तो उध फसल की जंगभी जानवर नहीं बचने देते। पत्थरों की बाढ़ नतानी पड़नी है जिसे दस क्षेत्र में कोटरा बड़ा जाता है। हाँ, एक बात अवश्य है कि घर में पाँदे खाते बा न हो पर बन्दूक जरूर पायी जाती है। कुछ के बकापश खादेयन्ध भी हों खीर सेव फौजी सम्बन्धियों द्वारा प्रवृत्त है या फिर पदा नहीं कहाँ से प्राण कर से गयी है। डेड हूबार रुपये की बन्दूक खरीदने की इच्छ क्षेत्र में शोक है पर ततनी कीमत के पर खरीदकर लेती करी या दूध-मी का व्यवसाय करने में अर्पेसाहूत कम हाथ है।

क्षेत्र के लोग

यहाँ के लोगों पर क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति का पूरा अरर पाया जाता है। उनकी मनोईल कठोर और हर समय मुँह पर हाव बना रहता है। विकल्प प्रकार का जालिवाद प्रचलित है। ऊँची जातियों के सोय लेती करने में अपनी सोहीन अनुभव करते हैं। अररल टाड की पूतक में नहीं के सोनों का बर्णन है कि यह क्षेत्र एक खोर ती उरकालीन मुस्लिम शासकों की सीमा से बना हुआ उनकी चिन्ता का कारण रहा और बाद में ब्रिटिश इन्धिया से बना होने के कारण उत्पत्ती लोगों के छिन्ने का स्थान बना रहा। इनकी प्राभाणिक रूप से पिन्डारियों, लुटेरों और ठगों की अंधी में नहीं रहा बा सतता, पर इतना अवश्य है कि अन्-राय करके इस क्षेत्र में दिने रहने की बहुत मुविद्याएँ हैं। इस क्षेत्र में आठ बी गड्डे (छोटे बिनै) और उनके निबट गड्डे हुई सोरें पायी जाती हैं। अथी भी बड़े-बड़े मोले बड़े हुए हैं। गुजर, परवार, सुन्दे, आठ और राजपूत प्रमुध सबाह् जालियों के रूप में आरस में सड़-सड़कर राज्य बनाते-बिगाड़ते रहे। पाँव गीव की बीराव पर बाह्या-ऊदल के भीत पाये जाते रहे —

वहें लखेया महुने बारे
छाक छाक बाजे तनवार

जिस तरह काम में हुँड की जड़ें गहरी हैं उन्ही तरह यहाँ के निवासियों के मन में वैर-विरोध की भावनाएँ पीढ़ी दर पीढ़ी तक चलती ही रहती हैं। बीरता का बाहुल्य अज्ञान के कारण क्रूरता में परि-वर्तित हो रहा है। यदि इनकी बीमता का सद्युपयोग किया जा सके तो ऐसे बहादुर अन्धम मिलना दुर्लभ है। इनके मन में बदला लेने की भावना इनकी क्रूर बनाये हुए है। कहा करते हैं—

जाके बैरी मुल से जीवे
ताके जीवन को धिक्कार

यहाँ के लोगों में सखी प्रचार की जातियों के लोग पाये जाते हैं और वर्तमान समय में हर जगह के डाकू भी हैं, क्योंकि जिस जाति में नहीं वे सखी शाल घटने न पाये इसलिए उन छोटी-छोटी नीच माने जाने वाली जातियों में भी आज डाकू हैं। एक विनोदना अक्षय है कि एक गाँव में विछों एक जाति के लोग अधिक रहते हैं और वे अक्षयशक्त दूसरी जाति के लोगों को अपने जूने के तले दबाकर रखना चाहते हैं—

सवाई माधोपुर व करोनी में धाकरे, परिहार और जाधव, बागटा के बाहू लीन में सदीरिया व राठीर, भरतपुर धीरपुर में जाट व गुजर, बूँदी कोटा में बुन्देला व धाकरे, मुराना तवरपार में सिहरवार, गुर्जर, तोमर जाधव, मिष्ट भदावर में कुगवाहा और भदोरीया, इलाहा मेरपुरी में खोहान, सदीरिया व राठीर, रतिया में बुन्देला; शालियर में गुर्जर, अहीर।

उपरोक्त जातियाँ हकूमत करना अपना जन्मदिष्ट अधिकार मानती हैं, पर स्वतंत्रोत्पन्न भारत में स्थिति बदली है और बनिया, खमार, कोली, फाडी, घोरी, घानूक, छटीक, राइरिया आदि सभी अन्य जातियों में भी अधिकार-भावना दिनोंदिन बढ़ी है। चुगलों के समय यह दूर उभरकर स्पष्ट हो उठता है। विधेयकर वाद्यों की टक्कर रहती है।

डाकू क्यों बनते हैं?

डाकू बनने के प्रधान कारण हैं कृषि-भूमि तथा उद्योगों का अभाव, दूसरे यहाँ के वैदिक और जांग में सिद्धां की मुनिवा; तीसरे पचास हजार बहूनों का होना। मामूली-सी बात पर भी बहूनों तन जानी हैं। एक मरा तो दूगटा बांगो बन जाता है, सौधे विशिष्ट पुलित के हर समय पड़े रहने से पाय और अलक का बाना-करण, पाँचवे जाति-भेदरथा, छठे राजनैतिक दमनक घोपन व पार्टीशन्दी, सातवें भाये दिन जमीन के क्षयरे, आठवें पुलित को उरतीकन, नवें विद्या का अभाव, दसवें यातायात और आवागमन के साधनों का न होना; ग्यारहवें घोर-घोरे डाकूगोरी का एक सुगण्डित ज्योत्सयिक रूप से लेना, त्रिंके सभ्य अनेक सफेदयोगी लोगों के स्वर्ण लुटे रहत हैं। ऐसे कुछ कारण हैं जिन्होंने इस समस्या को जटिल से जटिलतर बना दिया है। समय रहने इका सही निदान नहीं दुशा तो इसके जटिलतर होते जाने की सम्भावनाएँ बड़ी ही जा रही हैं। सभी दृष्टियों से इसकी जड़ें खोरी जायें और परस्पर प्रेम, निर्भयता और निर्वेला का वातावरण बने। यहाँ के वैदिकों के बीच के नातों की रोककर जगह-जगह बाँध बाँध जाने के कारण यह कृषि की बर्धोग

भूमि कृषि योग्य बनकर इन क्षेत्र के लिए बरदान सिद्ध हो सकती है। कृषि के साथ-साथ कृषि से सम्बन्धित तथा अन्य उद्योगों की व्यवस्था भी यहाँ की बढ़ती हुई जनसंख्या को देखते हुए अत्यन्त आवश्यक है जिससे यह नरक स्वर्ग में बदल सकता है। प्रसिद्ध विचारक गारफील्ड का कथन है—“सखार की कोई भी चीज सभी बदलती है जब कोई बदलने वाला हो।”

डाकुओं का आत्मसमर्पण

विनोबाजी को पहले पत्र लिखा था तहसीलदार सिंह ने मैत्री सेनानु जेत से कि फाँसी लगने के पहले आपके दर्शन करना चाहता हूँ। विनोबाजी की यात्रा उन दिनों कम्बोरा में चल रही थी। वे यात्रा छोड़कर थो आ गयीं सके थे। उन्होंने भेडा या मेजर बनरत यदुनाथ जिह को जो चम्बल क्षेत्र के ही मुख निवासी थे और तत्कालीन राष्ट्रति के सैनिक सचिव थे। उनके प्रयासों से तहसीलदार सिंह की फाँसी की सजा वाक्य्य करवाना संभव गयी। दसपुराज मानसिंह ने अपने इस आशिरी बेटे को बचाने के लिए नया कुछ नहीं किया? गवाहों को नैस्तनासुर कर दिया। सर्वोन्न न्यायालय तक मुकदमा लड़ा। पानी की तरह रसा बहाया और इन दुन में एक



तहसीलदार सिंह (बायें) और लोकरमन : बहू-समस्या पर चर्चा करते हुए

धान के भीतर ही पुलिस घुसने के विचार हुए। बरत से नहीं बरिफ मान-सौम्य बरणा के प्रभाव से १२ फरवरी, '७२ की तहसीलदार सिंह को बरेली जेल से आजीवन कारावास की सजा पूरी होने पर मुक्त कर दिया गया।

तहसीलदार सिंह और तोरमन उनके पुत्रा सहपाठी थे एव गहरे दोस्त थे। यह दोनो ही सोवमन की समाधि गेव में से गयी थी जसकि घटके काका को पुलिस के विनाहियो ने नदी में डुबी-डुबी कर मार दिया था। लोकमन पर तहसीलदार सिंह का बहुत बरत था और अब रूना के मारे जाने पर सोवमन ही गेव-सोटर था। अतः तहसीलदारसिंह की चिट्ठी और बैनर जनरल बसुनाप-सिंह के सहज सम्पर्क से १९ मार्च, १९९० को विनोबाजी की पद-धारा के कक्षीय पढ़ान पर लोचमन ने अपने हाथियो सहित आत्म-समर्पण कर दिया।

सोवमन तथा उनके हाथियो पर मुकदमे चले और सभी अपनी सजाएँ काट कर अब सम्प मापरिक वी जीवन बिताते लगे थे। माधोसिंह के मन में भी आत्म-समर्पण का विचार आया और उन्हे समाचारपत्रों के माध्यम से पहले तो आत्म से खरील की कि उन्हे क्षमादान देकर पारिस्तान की सीमा पर हो रहे हदुद में भेज दिया जाय। पर वह सब एक अन्धकार माना जाता रह्य। उन्हे विनोबाजी की पत्र लिखा। कुछ उत्तर न पाकर अपने दो व्यक्तिवों को परधाम आषय, धवनार, जिला वर्धा (महाराष्ट्र) भेजा, जहाँ आत्मत विनोबाजी रहकर जानो मुदम साधना कर रहे हैं। विनोबाजी ने अपनी अक्षमर्षता छोड़े हुए कहा कि श्री जयप्रकाश नारायण से बात करो। उन दिनों वे बहो थे। अतः माधो-सिंह के दोनो हुनो ने श्री जयप्रकाश नारायण के समक्ष अपनी प्रार्थना रखी। उनका स्पष्ट उत्तर था कि आप लोग विनोबाजी से मिलने जाये हो, मुझे बात कली हो तो सीतोदेवरा

जिला गया (बिहार) में आओ। उनका सोचना था कि यदि कुछ सय होगा तो देखा जायगा।

ये दोनो दूज एक दिन सीतोदेवरा भी पहुँच गये। तब श्री जयप्रकाश नारायणजी द्रकिन हो उठे और उन्होंने उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान के मुख्य मन्त्रियो से वार्ता करने का बचन दिया। तीनों मुख्यमन्त्रियो को पत्र लिखे गये। श्री कमलावति त्रिपाठी मुख्यमन्त्री उत्तर-प्रदेश ने बहुत दरसाह दिखाया और हर तरह की मदद करने का पूरा पूरा आश्वासन दिया।

सब सेवा सय के भोगल साधिवेशन के समय तम हुआ कि कुछ कार्यकर्ता डाकुनो से सम्पर्क का काम उठाये। श्री महावीर सिंह, श्री हेमदेव शर्मा और श्री चरन सिंह और श्री राममोहन दीक्षित को यह जिम्मेदारी सौरी गयी। राजस्थान के मुख्यमंत्री को पत्र लिखा गया। श्री जयप्रकाश नारायण ने चम्बल घाटी के समस्त नागियो के नाम एक खोज प्रसारित की।

दिल्ली में बर्बाई हुई। श्री इण्णथर पत राजर-गृहमन्त्री ने बहुत दिलचस्पी प्रकट की। गृहमन्त्रि श्री सोवियन्ड नारायण को अनुमति रही। २ अप्रैल, '७२ को दिल्ली में सीतो मुख्यमन्त्रियों की अन्तिम बर्बाई के लिए आमन्त्रित किया गया। इसमें मध्य प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री प्रतापचन्द्र सेठी, राजस्थान के मुख्य-मन्त्री श्री बरनसजला श्री और उत्तर प्रदेश के प्रतिनिधि के रूप में उप-गृहमन्त्री श्री रामचन्द्र द्विवेदी ने भाग लिया और बर्बाई अनुसूच रही।

सर्वोच्च कार्यकर्ताओ को मध्य प्रदेश इन्पुनरुत्थर जनरल पुलिस के हस्ताक्षरो के परिषय पत्र दिये गये और उन्होंने भू-पूरी बागी लोकमन, तहसीलदार सिंह, तेजसिंह और डरेलाल को साथ लेकर चम्बल के बेहद-बेहद में फँसे गिरीहो से सम्पर्क किया। उनके रिश्तेदारों से उन पर जोर बनवाया और सम्भावना धीरे-

धीरे बढ़नी ही गयी। ऐसा लगने लगा कि १२ घात के एक युग के बाद फिर प्रकाश की किरण पृथवेवाली है।

सम्पर्क का काम बहुत चटिल था। डाकुनो को खबर भेजने के बाद जब वे सुनाये सभी उनसे शुरू शुरू में मिला जा सकता था। सबसे बड़ा सबाल विरवास उत्पन्न करने का था। धीरे-धीरे विरवास बढ़ता गया। एसासिंह सोवमन का डाकु-जीवन का शिष्य रहा था। यह मोहर सिंह को तैयार करने में मायम बना। मोहरसिंह अकेले का गेव तीन दुर्घटियों में विभक्त है। सभी स्वतंत्र रूप से काम करती हैं और नाम मोहर सिंह का लेती हैं। इनकी सजा १०० से अधिक है। मोहर सिंह का तैयार हो जाना अविद्यान की एक बड़ी उपजता रही जा सकती है। अब वाठ बढ़े बढ़े रतों के लगभग १५० डाकुनो के आत्म-समर्पण की सम्भावना है।

आत्म-समर्पणकर्ताओ का कहना है कि उन्हे फँसो न बी जाय। यदि न्यायालय से फँसो की सजा सुनायी जाय तो सन्-पति उन्हे तहसीलदार सिंह की तरह बदला हुआ जीवन जीने की सल्लिपव प्रदान करें। इनके मुकदमें एक जगह चले। इनके आत्म-समर्पण के बाद इनके परिवारवालों को न सजाया जाय।

उनको अपने जीवन की तरह बदलने के ऐसे अन्तर पर समाज की ओर से भी समादान जरूरी है। जन-जन के सामू-हित समादान से ही वह नया रास्ता बनाये बढ़ सकता है।

× × ×

चम्बल घाटी शांति मिशन के स्वा-नियर कॅम्प की सूचना के अनुसार पन्ना डैम के जोरा स्थित सिचाई शरक बंगला में डाकु श्री मोहर सिंह ने अपने ५० साथियों के साथ तथा डाकु श्री माधो सिंह ने अपने २० साथियों के साथ श्री जयप्रकाश नारायण के समक्ष आत्म-समर्पण की घोषणा की है। ●

जीवन का यथार्थ

राजनैतिक दृष्टि से दुनिया के नरों पर तेजी से बदल हो रहे हैं। अमेरिका का राष्ट्रपति बीन आकर बरतो मुसाली बॉट सोलता है, रूस का परराष्ट्रमंत्री आगान आकर भावभीन बनता है, प्रान्त का प्रशासन भी रिटर्न आकर व्यापारिक मूक बोलता है, पाकिस्तान का राष्ट्रपति रूस आकर शुभो मुचलाने की बोधित करता है, आर्यन का राजा अमेरिका आकर विवाह दिवाने की बोधित करता है, रोडिया का दौरा बर इतिहास बनीमान सम्यक वास बनता है, बिने के राष्ट्रपति को हटाने का प्रयास विफल होता है, मारि-आरि। मेरिन के सारी घटनाएँ काम आरधी की पुत्री ठर गयी। बर्षिक बुनियादी रूप से ये राजनैतिक प्रभावितों जन-साधारण के जीवन से दूर रहा करती है।

दुसरी भागिन हमें आगना बिने के चलनेर म्नाक के बरार्द गाँव में बिनी। आगना के मुसलिम बचोन, भी मोतान नारारण सिरोमिया और तबे देना एव के आगनान बनी भी ठारुदरान बर के साथ बर बहो साथ को पढ़के। पता क्या कि लम्बार्ग दो दिन बाहर रहकर बाहर लीकर पहर ही जाने है। लम्ब बरानी तो बह बिने के बने। लम्बन दीग माल का एक जगहही पुनक। बर बाहर ने आगनान की लर्न बरानी और बोलके दिने की साथ की।

"मुसलारे बाल बिलनी बनीने है ?"
बकीक हाहूँ ने पुन।

"२३ बीन।"

"तो मला बीन आर बीनो—"
बंन म्नाहूँ ने बहो।

"को कहियेना बने।"

"देखने और लान ही बिनी मुँन-
हूँन दागा की बराने निने बह बँडे
बिने ठरके बह बने हावाय मे।"

बंन म्नाहूँ की बह बाग मुनकर दागा

बनीनसाद ने बहो—
"तो सवा बीन
बना ट, दो बीन १० बिने का हमार
एक पुन 'प्यार' है बह से लीनिये।"

बहून मुनर, यह तो दबो हिरवा
हो गया, बहून जन्मसाद आरका। और
दबे बिने ?

"बीन का ही एक मुसिहीन परिवार
है, वह आरधी तो बर गया है, उस की
बिप्राय पली ब छोटे छोटे बच्चे है, ऊह
देना ठीक रहेगा।"

"हमें बहुर है—बनीन सिरो-
मुनिनी ने बहो।" बनीन बँडे गयी।

सारी राजनीति एक ठरक और बह
बातबिबता दुवरी ठरक। यही है जीवन
का यथार्थ। —राहूँ

(१७४४ का दीप)

बन) गयी गये। गीनह आना पानन
बिया तो सोनह आना लम्बना बिने।
और बाहूँ आना पानन बिया तो बाहूँ
आना लम्बना बिने। बिने ने पुन
पानन बिया, तो बह बिनेना पानी
आंठी। गहो बिना, तो उने आगनान
गहो बिना बनेना। हलमें बिनाय के लिए
मुनतना रहनी है और एंजियर होने से
हार्दिक पानन भी होगा है। बकीक छूट
है। लम्बनी हो तो बिनाय के लिए बोधा
गही रहेगा। मीठीबी का बाव लोप
बहुत बडा बहो है कि 'मो-लेनारेलन
एव व डेर ऑर माल-मालेन (संगन
कहिया की कमीठी है)। मैंने बहना
बने यह बिना है कि कहिया व लम्बी
गही होगी है, हलन्ति उने बरबनी
कहियेना बनेन (मारवी मजल) होठी
गही, फिर भी बिनेको का पुन पानन
होगा है। केना में १०० से १० सैन्डि
आने बने और १० पीदे हटे तो उन्ही
बन को बनेनी और भागिनना में १००
से १० सैन्डि आने बने तो उन्हा
बौरक बनना होगा, मेरिन को बने हटे
है, उन्ही बिना गही की बनेनी। बनी ?

बकीक छूट है। यह है 'डेर ऑर माल-
मालेन।' (पत्राय के बाइ-बाइको के
साथ ही बनी)

(१७४४ का दीप)

बिनाय सभी पुनरी की। बिनाय हलके
बोदे यह है कि रबी बोई समति गही
है। बह उदनापरिक है। उय पर बिनाय-
बनबना के द्वारा स्वामिन का बोधा बनी
लाना जाय ? बिने बिने ने मुने यह
बनाया बह हलन बनीन लम्बना था। मैंने
उने पुन "तुम हल प्रसार के समुह-
बीन में रहना पहर बरोगे ?" उने
बहो "बिनायन तो मुने हलमें बोई
एवर्द गही लगी, लेरिन में बाहर उने
रह गही पालेगा।"

"बनी ?"

"मुने बर है कि मेरी पत्नी हमार
के पास सोरी है हल बाउ के बिनाय के
मेरे मन में बाको दिवाया बा बनेगी।"

मुन बौरक का बिनाय एक प्रकार
से मुन आगार बिनाय ही प्रतिभा-
बारी और हिना पंदा करेबाना है, इग
बौरक का माल भी बर उने बनीको
बनना हो रहा है।

मैं सोचता था, हमार इतिहास में
हल प्रसार के समुह बना बिनकुन गही
है ? हमार यहाँ क्या समति गही है ?
हमार यहाँ क्या बोधार् और लम्बनाही
गही है ? हाँ, बाउ के बाल में हलने उने
कमी बन्धाय के नाय थे, कभी नीन के
नाय थे डिगने का प्रभाव बिना। बनी
हलके कुरक लम्बनकर बरिब रथ से बिनेने
का प्रयास बिना। मेरिन बना हमार
बनी के अनुबन के बाउ हमार लम्बन ने
भी मेरिन के समन्ध में आने प्रभी का
हल दुँक बिना है ? बनी बोनी ही एवाय
रबी पुन के हलन समन्धी के प्रन को
हल गही बर पाये है। एक और बहो
बनन है, बहो बिनेनी भी है, दुवरी
और हलन लम्बनी के नाय से बिनेनाय
बिनाय-बार है। बन्धन बरिड की बाउर
हलबाउर, बिनेकर, एने बाउर ही
बीनेने की बना हलिन है ?

तोसरा अ० भा० तरुण-शान्तिसेना सम्मेलन

क्या आपकी वर्तमान समान-व्यवस्था के संतोष है? क्या शिक्षा-पद्धति का वर्तमान ढर्रा आपको मंजूर है? क्या भारत की वर्तमान आर्थिक परिस्थिति सतोषप्रद लगती है? अगर-आप संतोष का उत्तर नकारात्मक देते हैं—

क्या आप इन्हें परिवर्तित करने की ठीक चाह रखते हैं?

क्या आप अपने दोषों को दूर नहीं करके ही सुखी दे सकते हैं?

अगर इन दोनों प्रश्नों का जवाब हाँ में मिलता है तो आपकी आप ही जैसे जोड़ते नवजवानों का हस्ताक्षर है, २५, २६ और ३० मई को बेलगाँव के अपने सम्मेलन में। अबतक तुम की विधायक रास्ते की उलासा है। चर्चा होगी, बहस होगी, विचारों का आदान-प्रदान होगा। शायद मिल जायें हमें कोई राह, जिस पर सब सचेंगे हम आप नदम मिलाते हुए। अज्ञित की तुम में शायद दीवानों की आपस का साथ मिल जायें। सम्मेलन का दृष्टाष्टान और अन्तर्गत भी हमलभर के तर्कों द्वारा होगी, महान् आतिथ्यकारी दृष्टा वादा समीक्षिकारी और महान् समाजकारी चित्त श्री अण्णु पटवर्धन भी सम्मेलन को सम्बोधित करेंगे।

चर्चा से कुछ विधायक निष्कर्ष निकल सके हूँ दृष्टि से विषय भी रखा गया है। हमने अपनी भावों के दूर २४ सालों में राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक क्षेत्र में क्या छोड़ा क्या पाया, और क्या करें?

प्रश्नोत्तर शुक्र २ रूपये

जिसे आप सतीभाईर, डाक टिकट के जरिये तरुण-शान्तिसेना, राजघाट, वाराणसी—१ उत्तर प्रदेश के पते पर

भेजकर अनुमति-पत्र और रेलवे-कार्डेशन प्राप्त कर सकते हैं।

निवास
निवास की व्यवस्था हम निःशुल्क करेंगे।

भोजन
२५, २६, ३० मई के भोजन के लिए आपकी केवल १० रुपये देने होंगे, सम्मेलन स्थान के पास ही देखने लायक जगह है—गोवा, जोर फाल्गु आदि।

—अशोक च.पंथ

विनोबाजी की सलाह

नेपाल के सर्वोच्च प्रेमी, यहाँ से रचनात्मक कार्य में लगे हुए प्रभूत समाज-सेवी नवीनूद श्री तुलसी मेहेरजी को बातचीत में श्री विनोबाजी ने सलाह दिया है कि उनको (श्री तुलसी मेहेरजी को) उत्तर के ७२ साल पूरे हो रहे हैं। इसलिए उनकी जिम्मेदारों के सब बानों से सुविध पाकर २ अक्टूबर १९७२ के दिन, जो भागीरथी का जन्म दिन है, सेनाध्यक्ष आश्रम में निवासी बनाया है। साथ हुआ है कि श्री तुलसी मेहेरजी ने यह सदेश मान्य किया है।

—पूर्णचन्द्र ई.न

डाकुओं का आत्म-समर्पण

ग्वालियर, ५ अक्टूबर १९७२।
चम्बल घाटी गार्जिस मिशन के ग्वालियर स्थित कैम्प कार्यालय में सूचित किया है कि डाकू भास्कर सिंह गैंग ने सभी अग्रहृत व्यक्तिओं को बिना कोई धन लिए छोड़ दिया और यह आत्म-समर्पण के लिए अपनी पूर्ण तैयारी कर चुका है।

आत्म-समर्पण का स्थान पश्चिम बंगाल के बंगाल और सिंगल सिवाई डाक बंगला है।

पत्र-व्यवहार का पता :

सर्वे सेवा संघ, पत्रिका-विभाग
राजघाट, वाराणसी—१
वार . सर्वसेवा फोन : ६४३९१

सम्पादक
रामभूति

इस अंक में

- दल-पुस्तक सुनाव : एक अनुभव — प्रो० गोरा ४४२
- शिक्षा का लक्ष्य - अन्वयान और चिन्तन का अन्वय — श्री रामनन्दन मिश्र ४४३
- नव जगत के छोटा विचार पुराना पड़ना — विनोबा ४४४
- अमेरिकी युवकों की सोच — श्री नारायण देसाई ४४५
- परमाणु आश्रम और मानवीय संवत — श्री जगदीश भारतीय ४४७
- हरान्न मद्दबाल की समस्याएँ : चर्चा, चर्चछटा और चींगटा — सुधी इंदु टिकैकर ४४९
- ग्रामसंदाय के मोर्चे से — श्री रामभूति ४५१
- चम्बल की घाटी : समस्या के सूत्रभूत कारण — श्री गुरदरश ४५२
- अन्वय अन्वय — अन्वय अन्वय
- दाइरी के पत्ने, आन्दोलन के समाचार

वार्षिक मुद्रक : १० रु० (सप्टेड अग्रण : १२ रु०, एक प्रति २२ पैसे), विदेश में २२ रु०; या ३० टिकिट या ४ आतर। एक अंक का मूल्य २० पैसे। श्रीहरणरत्न चट्ट द्वारा सर्वे सेवा संघ के लिए अकादमि एवं मनोहर प्रेस, वाराणसी में मुद्रित।

आजादी



सर्व सेना संघ का मुख पत्र

आजादी-यज्ञ

भारत में मुक्तकर्मियों की आजादी के लिए एक आजादी का आन्दोलन है।



आजादी मरने के लिए तैयार है। सोवियत उसे रोक रहे हैं।

ग्रामस्वराज्य के मोर्चे से

६ अप्रैल

फोई बी० डी० ओ० अगर चाहे तो सचमुच 'ग्राम देवलपमेंट अथॉरिटी' हो सकता है, उसका उदाहरण आज दैलन की मिता। दिन-रात एक ही बात का चिन्तन, और उसीकी रट—हमारे अर्थक के गाँव-गाँव में यमीन कैसे बँटेगी। बी० डी० ओ० और स्कूलों के एम्प्लॉयमेंट में मिलकर सुविधाओं और शिक्षकों की पूरी शक्ति इस काम में लगा रखी है। नई भूमिदानों को भी प्रेरित किया है। कुछ मिलाकर अच्छा माता-पिता बनाया है। एक समाजवादी सुविधा में अपने गाँव का धामदान करा लिया है।

७ अप्रैल

बड़े लोगों का गाँव; बड़े भूमिदान, बड़े राजनैतिक नेता, सरकार के मिनिस्टर, सरकारी छीकेदार, बिल्डर, मालिक बिल्डिंगों और एवाचर, बिजली, टेलिफोन सुविधा-भोजी, पिच-रोड, ट्रेक्टर, ट्रक, जीप, मोटर, और गाँवियों के अलग-अलग नाम—ये सब चीजें इकट्ठा देखनी हों तो यहाँ देखिये। दो गाँवियों के नाम मैंने देखे, बाबा-भायें, हरिजन-भायें। पुराना बर्बाद, मध्यम का सामन्तवाद, बाहुनिक पूँजीवाद, और अन्-टु-अट सरकार-वाद—सबका समन्वय ! ये सब शक्तियाँ मिलकर परिवर्तन को लायिगी के सामने दोबारा बनकर खड़ी हैं। उनके कब्जे में भूमि है, आधार है, स्कूल, कोषाध्यक्ष-पंचायत है, पुलिस और न्यायालय है, कानून है, मिनिस्ट्री है, और सब रूप कंवर द्वारा सौजन्य है। सोचना चाहिए कि हमारी क्रांति किस रास्ते से किनके समर्थन और पराजित के, आगे बढ़ेगी। क्या केवल विचार-प्रचार काफ़ी होगा ? विचार एक चीज है, और सामाजिक

शक्ति के रूप में विचार बिल्कुल इतरी। हम अपने विचार को सामाजिक शक्ति अभी तक नहीं बना सके हैं।

८ अप्रैल

बड़ा जाना है कि भूमिदान को मोह है इसलिए वह स्वाभिमानी नहीं छोड़ता, बीषा-नददा नहीं देता। भूमिदान को भूमि का, धनवान को धन का, सत्ता-पाल को सत्ता का, बलवान को बल का, विद्वान को विद्या का, साधक को अपनी साधना का, और सेवावाले को अपनी सेवा का—शिक्षण अपनी चीज का मोह नहीं है ? जिस चीज के बल पर समाज में उसका स्थान है, सुलभ-भूमिदान है, प्रविष्टा है, उसका उसे मोह है, और उसे वह नहीं छोड़ना चाहता। अगर किसी को अपनी चीज का मोह नहीं है तो मजदूर को अपनी मेहनत का। उसे छोड़ने को वह हृदय सेवार है क्योंकि उससे उसे मिलना क्या है ? मोह यों ही नहीं है, इसका जबरदस्त आर्थिक-सामाजिक आधार है।

दो ही, तीन ही, चार ही, पाँच ही बोधे भूमि रखनेवाला भूमिदान सुद घेती नहीं करता; या, करता है तो छोड़े हिस्से पर, बाकी पर बँटाई करता है और बँटाईदार से छापी उनज में लेता है। मजदूर का बँटाईदार मालिक की जमान पर मजदूरी या बँटाई करता है, उससे कर्ज में अन्न लेकर कमाई को कमी पूरी करता है, और जो कुछ बचाता है उसी मालिक को चुपचा और जिम्मा वापस कर देता है। इसलिए भूमि से कमाई का सारा साम मालिक का होता है। यह विचार की भूमि-व्यवस्था है, और इसीके आधार पर यहाँ लेटी की पद्धति विकसित हुई है। लघु घण्टे का जोखिम है ही नहीं, क्योंकि इन्वैलन्ट

(सामत) एक कौड़ी का नहीं है, हर तरह से फायदा ही फायदा है। ऐसी व्यवस्था को भूमिदान क्यों बदले ? जो भूमि उसे खतना लाभ देती है, इनने बँटाईदारों और मजदूरों को सेवा देती है, सत्ता और सम्पत्ति के दरवाजे सोलती है, उसे वह क्यों छोड़े ?

इस क्षेत्र के गाँवों में ५० से ९५ प्रतिशत तक भूमिहीन (मजदूर और बँटाईदार) हैं। वे हमारे आन्दोलन की मुख्य धारा से अलग हैं। हमने उन्हें अपने जोड़ने की कोशिश कब की ? उदाहरण मले ही हूँ 'बदो' से मिल जाय, लेकिन क्या क्रांति को शक्ति भी हमें यहाँ से ही मिलेगी ? शक्ति के इस घुटे हुए स्रोत को हम कब पहुँचाने ?

९ अप्रैल

बड़े भूमिदान के लघुके, एक शिक्षक, और मठ के एक महँव टोली बनाकर बीषा-नददा के लिए घुम रहे हैं। कार्यकर्ता अच्छा हो तो अनुभूत व्यवहारों को हँड निहालता है। फिर भी भूमिदान सुकर बहुत कम सामने आते हैं। सुकरों की भावना क्यों नहीं उभड़ती ? ये 'पेटिस-की' से इस वृत्ति तराह क्यों चिपके रहते हैं ? कारण साफ है। भूमि और खेती की जो प्रचलित व्यवस्था है उसमें निवम्ना बना रहता और दूसरों की नपवाई खाने रहता, फायदे का सोता है। व्यवस्था बदलने पर सुकर को पराजित करना पड़ेगा। 'एयरग्राउन' में घाटे का 'रिस्क' रहता हो ही। तो वह जोखिम क्यों उठावे ? विचार की मोड़दा भूमि-व्यवस्था में जो नार्नलासिस के १७९३ के इस्तरारी बन्दोबस्त से शुरू हुई थी ऐसी तरह का शक्ति विकसित किया है। और, लघुकी जमाने की शिखा में, जो आज तक चानू है, इस निरन्तर-पन पर सोल्टिव और सम्पदा का रंज चढ़ा दिया है। ये बेचारे युवक दया के पात्र हैं। वे नहीं सोचते—उन्हे बचाता भी कौन है ?—कि जिस मिता के पास है ही बीने जमीन है उसके धाड़ लड़कों में प्रति (शेष पृष्ठ ४९८ पर)

अभिव्यक्ति

गाँव का नया पूँजीवाद

अपर प्राचीन वर्णोत्तर, मध्यकालीन सामन्तवाद, बाहुनिक पाषाणवाद, आन-डू-डेट सत्तावादात् और सामाजिक क्रांति-वाद को एक साथ देखा हो तो देश के कुछ भागों में, और बिहार में भी, उसका विकसित रूप देखा जा सकता है। भूमि का मालिक है; उसके पास ४-५ ही बीघे भूमि है, पूरे गाँव में सोड़ियों के बीच में उसका प्रकटा वसक भोजपुरी शहर का मजान है, दरवाजे पर हाथी है, टूट्ट है, पोर है, पुर के बने एक लकड़े मोड़ने में गाँव के जय-मोदक और शारदरी लकून के गिताक पढ़ने हैं बर्निक भांगिक भाषण-पाठक का सुविधा भी है, वह हाँसलून की प्रवक्त-व्यक्ति का मनो है इतलियु ग्राम की हेडमास्टर सार्व और पुत्र गिताक भी बरवाने पर दिखाई देते हैं, पुत्रिहित मन्दिर में गुरुद्व की पुत्रा के बाद सबसे पहिले 'मालिक' को तिनक लगा जाने है, पुत्रिक का गिराही हउते में एक बार सनाओ बना बाजा है और पाला था बाजा है; बराक के बराबर उतरा माना-जाना है, उनके अधिकांश योयों में बँदाई के खेती होती है जिसमें उन्हें एकपेस को पूँजी नहीं लपानी पड़ती लेकिन बँदाईदार बण्डी फवन बोटकर दे जाता है। छिटी इधिनए कि सोउ उनका है, बँदाईदार को यह जव बाहे बैलख कर सउते है, बर्निक उसके पास कोई सपुन नहीं है जिसके बन पर वह अनाज से ग्याप पा लके, और हाथिक भी तो ब्राह्मिक मालिक ही होता है। मालिक को अपनी खेती टूँडर से होनी है, सारदरी नहर उसके खेती से होकर गुजरती है बर्निक यह सत्कार की 'हलिल कान्ति' का भाषण माना गया है, उसके मजदूर उसकी भूमि पर बने हुए बर्न-गुणाम है, जनकी मजदुरी का मनीन को बाजी उतर है और अनाज नहीं है, मजदुरी बण इतनी मिलती है कि वे जिली वहुत-विना रहे और नाम करने को विवक रहे, वे बराबर मालिक से बने में अन्ज तेकर सेट पावते हैं, और मजदुरो का बँदाई है होने-सारी पूरी बर्नारी मूद-दर-मूद के साथ मालिक को लोयते रहते हैं, जूठ कनी यह लोयते का बीरान नहीं मिलता कि उतरीने मुस कमाना है और उनके घर में ४-५ हाथे जवा है जिन्हें वे या उनके बन्ने बसनी लुरी से सवै कर सकते हैं।

धार्मिक केवल भूमि का मालिक नहीं है, वह भी है, बाजार के व्यापारियों से उसका सम्बन्ध है, बँक से देन है। खेती के ब्याह में वह पचोस हजार तिलक में देता है; खेती को मेडिकल बालेस्र में पड़ाता है, घर में उगरी स्त्री को खेता के लिए दाखल है, नौकर है, लेकिन उसकी दुनिया लोगन के बाहर नहीं है, पति की वासना-लूति और बच्चों के विवाह उनके कमी दूसरा कोई जीवन जाना ही नहीं। मालिक को खेती के एम० एल० ए० से पालित मिलता है, बच्चों विवाह में 'धनाजवादी' है, बुनाम में यह बन्ने नेता भिन को हर तरह की उहाउता करता है, पैसा देता है, प्रवार करता है, प्रोर कोट के दिन गुण्डगिरी में निगुण उनके 'वहनवान' लाडियो लेकर मुकह से रूप पर बैठ जाते हैं खाँक सेमरोये के मयदावाओं के बाराण समानवाद के लिए कोई खनरा न पैदा होने पाये और सोकलन भी निरसतों और गरीबों से गुण्डित रह। मालिक का भिन भी अकलत नहीं होगा, वह उसका एहसास ठीके दिनवाकर, कानून के खोदाखाने बराबर और पटना में विनिहरोलक पहुँच करार पुराता है। मालिक और नेता को मिलता नहीं होती है। खेती के भेन से सता और सन्तल को खीरिया बन्ती है जिनपर चक्कर खोतों कर पाईवने हैं। एसा लपटा है जैसे सरकार मालिकों की है, उनके द्वारा बन्ती है, उनके लिए चलती है।

सरदार, समान, और इन भू-स्वामियों के इन भेन को क्या रहें ? पूँजीवाद ? बाहुनिक पूँजी गित तो बड़ा उपमसीन होता है। लेकिन वे 'पूँजीवाद' तो न उपमसीन है, और न प्रगतिशील। वे सामन्तवादी संरक्षकों, पूँजीवादी भागपाओ और समानवादी गरीबों के विनयण मिषण है। विज्ञान और मोहनन के युग में वे बिचिन लगते हैं, लेकिन हाथी ही हर चीज पर। वे प्रतीक है एक ढाँचे के जो जबरं तो ही पुरा है लेकिन अबो टूट नहीं रहा है। हमारी राजनीति और निजामे राज्दानी ने उसे नये खोपन का समय दान दिया है, और सरदार को विराट-वीरजाओं ने भापुर पोतण।

यह निश्चित है कि यह बीना सकेने बाहुन की कतिन से नहीं टूटेगा, पड़नी बाहुन की कतिन आरंभक होगी। दिहा सुपनी बाँचे को तोड़ तो सजती है, लेकिन यह आज सम्भव भी नहीं है, और उसको सखते बने बन्ती ही यह है कि वह मोदिय बनकर जाती है और मोहन बनकर रह जाती है। उसे जब नया निहार नहीं मिलता तो सिपारी को ही सा जाती है।

यह सामन्तवादी सामीन पूँजीवाद सोर-कतिन के अधिजन और बाहुन के सन्तर्न से टूटेगा। नरी भूमि-मन्तवा के मल पर मोहन-कतिन और सरदार-कतिन का भेन पँदिलिनी को माल है। लेकिन यह भेन कब, कैसे छे, यह प्रान है।

मूदावचन : सोमवार, २४ अगस्त

मनुष्य अपने आपको खोजे

● वादा धर्माधिकारी

कुछ दिन पहले एक विषय में पूछा कि तुम बैचैन क्यों हो ? तब कहें मुझे ऐसा मालूम होता है कि भगवान सो गया है और इनसान खो गया है, इसलिए मैं व्यथित हूँ। 'कौन सो गया है ?' 'तो मैं ही सो गया हूँ।' 'अपने को क्यों खोजते नहीं ?' 'शोध खो गयी है।' 'क्यों ही खरने है। इसलिए अपने को खोज नहीं पाता।' 'कभी मासुं का, कभी हाँपी का, तो कभी और किसी महान व्यक्ति का, खरना उधार लिया, खरनो का आधार मर्म है। शोध को कोई साबित नहीं रहने देता। साबित बाँध से सम्पत्ता को देखने की आवश्यकता है, उसके विषय में पहले से अपनी भूमिका और मनुष्य बनाकर नहीं। मनुष्य भी हो गया है तो पहले मनुष्य को अपने में ही खोजना होना—'सेल्फ डिस्कवरी', अपने आपको खोज। जब मनुष्य के लिए इस क्षण की अनिर्वाय आवश्यकता हो गयी है। मनुष्य अगर आज यह नहीं करेगा तो उसके सामने एक बड़ा प्राथमिक प्रश्न है—अस्तित्व का प्रश्न।

दृष्टि की दृष्टि

हम वागना देस को सर्वोत्तम की दृष्टि से नहीं सोचेंगे। विज्ञान, दृष्टि पर सन्तुष्टि होती है। जब दृष्टि दृष्टि नहीं रहती है। अगर सर्वोत्तम की दृष्टि है तो सर्वोत्तम ही है, फिर दृष्टि नहीं। विशेषण अधिक महत्व का होता है। हमारे पास दृष्टि हो, सर्वोत्तम नहीं। और, मैं कहना हूँ कि इस सारी समस्या को तरफ नजर आप सर्वोत्तम की भूमिका से देखेंगे तो आत्म-स्तानि होगी। अपने विषय में सुलझना की भावना पैदा होगी, क्योंकि साथ जो दृष्टि देना में अहिंसा के जोर अहिंसक प्रतिकार के होकर सामने आते हैं, उस अहिंसा का तो कोई परस्पर जाने सीजिने उद्वेग कोई ऐसा प्रयोग को अपने आगने हस्तोप

दे सके वह दिखाई नहीं देता। इसलिए मैं कहना हूँ कि विरा की तरफ आप जरूर देखें, विषय के सम्बन्ध में अवश्य देखें, लेकिन अपने सम्बन्ध में, भावना के सम्बन्ध में, विचार करें। अपने साथ अगर रह सकता हूँ, अपने को प्यार अगर कर सकता हूँ तो मेरे सामने समस्या का रूप कुछ भलप होता है। मैं स्वार्थी हूँ, वहम-घारी हूँ, देहात्मघारी तो हूँ ही लेकिन अपने को प्यार नहीं कर सकता। एक बात है कि जो अपने को प्यार कर सकता है उसका कोई प्रतिस्पर्द्धी, प्रतिनशी नहीं। इस सारी समस्या को समझने की कोशिश करें।

हमकी अहिंसा से क्याना मानव-मुक्ति प्रिय है। लेकिन क्या अहिंसा और मानव-वीर्य-मुक्ति दो परस्पर विरोधी प्रमेय हैं ? पुराने दार्शनिकों ने, आध्यात्मिक पुरुषों ने यह संध्या किया है। अहिंसा विरोध सत्य के सरक्षण के लिए, अहिंसा को बाँध। पहले तो सिद्धान्त मान लिये, सद्गुण मान लिये, सहनीय सत्य मान लिये और फिर उनको एक दूसरे के मुकाबले में खड़े किये। अगर सद्गुणों में मुकाबला है तो ये सद्गुण नहीं, अगर सिद्धान्त में स्पर्द्धा है तो यह सिद्धान्त नहीं। मेरा निवेदन यह है कि हमारे लिए मनुष्य सिद्ध है और इस दुर्घटना में मनुष्य ने मनुष्य का सहार किया। इस दुर्घटना में मनुष्य ने मनुष्य पर अव्यवहार किया। जब इसे आप गायी की भूमिका से, भारत-वाकिस्तान की भूमिका से न सोचें, 'सोलव विलेज' की दृष्टि से भी न सोचें। विरा एक पाग हो गया लेकिन क्या मनुष्य के सम्बन्ध में कोई गुणत्मक परिवर्तन हुआ है ? मनुष्य और मनुष्य के सम्बन्ध में निर्याधिक सम्बन्ध का नाम ही जीवन है। मैं जिस भूमिना से जीवन जीता हूँ

दुःखे निरु बस इतना मर्यादित प्रयत्नमें प्रत्ययजन्य है। क्या हम द्रव मुकाम तक पहुँच सके हैं कि किसी भी कारण के लिए मनुष्य मनुष्य की हत्या नहीं करेगा ? अहिंसा के सिद्धान्त को मैं नहीं मानता। मैं इतना ही जानता हूँ कि मनुष्य मनुष्य के साथ नहीं रह सकता तो मनुष्य जो नहीं सकता है। सम्बन्ध ही मनुष्य में जीवन का प्रकट सत्य है। सत्य प्रत्यथ जीवन में सम्बन्ध के रूप में साकार होता है। इसलिए कोई अविष्कार जीवन का नहीं है जिसे साथ आध्यात्मिक मानवीय जीवन कहे। जो हमारे लिए आज अपने भीतर यह सोचने का मोहा है कि क्या हममें यह प्रत्यय-जन्य निष्ठा है ? मेरा मतलब यह है कि वह प्रत्ययजन्य हो, केवल दार्शनिक नहीं। बौद्धिक निष्ठा में शक्ति है, अपार सामर्थ्य है, बौद्धिक निष्ठा मनुष्य की विनयशील और नम्र बनाती है, अनाग्रही बनाती है, लेकिन अगर यह प्रत्यय की चरतु हूँ कि मनुष्य का पारस्परिक सम्बन्ध ही उसके सत्य का आविष्कार है, प्रत्यथ जीवन में, तो उसके कम-से-कम संकल्प हो अनुगत होना ही चाहिए।

अहिंसा का आभोग

दुनिया में प्रतिहिंसा की प्रतिष्ठा है। प्रतिहिंसा की पाल है। केवल उन लोगों के मन में नहीं जो धरम और दृष्टि की जीवन का अनिर्वाय अब मानते हैं धर्म उनके मन में जो अहिंसा को मानते हैं। उन्होंने अपने-आपको अहिंसा को सम्प्रेषित किया है, लेकिन किस रूप में ? आक्रोश कार्य रूप में। अहिंसा भी आक्रोश है। आक्रोश इसलिए कि विल में आक्रोश है और जब अपने मारपी सिद्धान्त को पूरी तरह समर्पित किया है तो उसमें दो चीजें रहती हैं। एक अणु-भेरपा, जिसे वह मन्ती से मगव-भेरपा कहता है। यह मगव-भेरपा दोनों को होती है—अहिंसा और अहिंसा, दोनों को। आनामि सम्पूर्ण मक्ष में प्रवृत्ति: आनामि सम्पूर्ण मक्ष में प्रवृत्ति: केवल देवद हृदिस्थितेन यथा। निरुत्तरोत्तिम

तथा करीब। यह दुर्घटना भी बड़ेगा और मुश्किल, धर्मराज भी बड़ेगा। लेकिन जो आरपी सही बात बताना है, वह बड़ेगा, मेरा यह उद्घरण सत्य ही मेरी अन्तरात्मा है। यहाँ मेरी विवेक-बुद्धि है। वही-वही अन्तरात्मा बाप बनना देखी है। वही हमारे साथ ऐसा हो रही हो रहा है? केवल एतना कहने से काम नहीं चलेगा कि हम अक्षय्य हुए। अक्षय्यता में काम नहीं। अक्षय्यता में शान और बड़ा और भी हो सकता है। मैं यह आत्म-सन्तोष के लिए नहीं कहता। इसलिए कि अक्षय्यता और अक्षय्यता का विचार छोड़ें। एपमें आनी भूमिका का विचार मुक्त है।

अहिंसक को मनोभूमिका

नेहरूजी-बाबा और रजिवा, पीनेन्द्र और रजिवा, बांगला देश और पश्चिमजान इन दोनों में से एक को हिसा को हिसा में सत्य-नीय नहीं, साम्य व्यवस्था माना है। रजिवा ने भी माना था, हमने भी माना। शायद यहाँ तक हम अपने आशयों और लोगों को समझा सकते हैं। लेकिन मैं अपने से इसके आगे भी एक बात पुछता हूँ। रजिवा अक्रोश में यहाँ की बगनी पर से रजिवा की सी-बकर उगारा क्या। अक्षय्यता के दिग्दर्शक से उनका सामान पेंडा गया, अक्षय्यता उतारा गया। पीनेन्द्र के लिए बलना भीजिये कि रजिवा उन बात इनकी कथित रसता कि मोरे आरपी को सी-बकर दो समझे बना देना, मोरे को सामान के हाथ गिरा देना जो आपने और हमने सातवाँ बरागी होनी? इसका शेष एक ही है। यहाँ के प्रभावना (निष्पत्त) में निहाई कि मुक्त का आरम्भ मनुष्य के मन में होता है और वहाँ से उभरा आरम्भ करना पड़ता। नये परिचयों की अब यहाँ का यही है। जो हमने पहले मानते कह रहा था कि अपने को लोको। आरम्भ हम सब पर अक्षय्यता प्रभावना से आपने बड़ छाता हूँ कि रजिवा ऐसा करता हो मेरे सब में उभरी बड़ी बड़ होनी। एक मार्ग का मान विचार, विचारों पर हाथ

उठाया। यह भावना है दलित मानव की। आरम्भ सारे के सारे सामयिक इनके पीछे है। इसके ऊपर उठने के लिए क्या करता होगा? यह सोचने की आवश्यकता है। यह प्रतिक्रिया है। प्रतिक्रिया हमेशा प्रतिक्रिया होती है। उनमें से सभी प्रतिक्रिया नहीं होती। लेकिन यह प्रतिक्रिया है। यह प्रतिक्रिया क्यों है? मनुष्य के मन में आरम्भ का भाव है। जाने मनुष्य के मन में मोरे आरपी के धरन का भाव है, अविचारित देश के नागरिक के चित्त में अक्षय्यता का भाव है। मुझसे किनोबानी ने कहा, 'यह महार है हिंसा नहीं।' तो मैंने कहा, 'दामा को जिये यह शब्द-धन है।' यह सटार भी नहीं है, हिंसा भी नहीं है। यह सगठित धारक है और सगठित आरम्भ का मूला-बना गया क्रान्तिकारी हिंसा से हो सकता है? यह धारक की जागरण समझा है।

आरम्भ मनुष्य-मनुष्य से आरम्भित है। सबसे बड़ा प्रभाव यह है कि निरन्तर नये-नये आशयों की सोच मनुष्यों का मानने के लिए हो रही है। धरन के भाव में से आरम्भ की आरम्भिता उररभ होनी है और आरम्भ हमारा देना शरणागती बना है। १९०५ में जागान ने कृत को हराया। एक सैन्य की सटार सारे एगिया से दोड़ गयी। क्यों? यूरोप के एक मोरे सटार को एगिया के एक सैनिक, वीले सटार ने हरा दिया, परास्त कर दिया। अब भाव अपने तरफ देखिये। १९१२ में आरपी को मनोभूमित को और आरम्भ आरपी को मनोभूमित से उन्की तुलना करे। १९१२ में आरपी को मन में सामने से हटना पड़ा। सारे देश में मनुष्यो छा गयी। आरम्भ अपने बड़ी भारी सैन्य को हरा दिया, परास्त किया। अब मनुष्यो की सटार नहीं है। मैं मानता हूँ कि आप जो यहाँ बँडे हैं उनके मत में बिचार का उन्माद नहीं लेकिन उन्माद आरम्भ अवश्य है। '१२ और ७१-७२ की घटना में अन्तर है। उनको हमारे आने कीतर समझने की आवश्यकता है। इसलिए एक से ही विवेक विचार कि हम सारी घटना को जागरण परिचयित के सम्बन्ध में नहीं, मानवीय

परिचयित के सम्बन्ध में सोचें। मानवीय परिचयित यानी अन्तरात्मात्म्य सम्बन्ध नहीं, मनुष्य और मनुष्य के सम्बन्ध की दृष्टि से सोचें।

अहिंसा का उद्देश्य और नही

मेहरदानी बीजिये और रज जमान को अहिंसा का उद्देश्य मनुष्य-समिति—आने आरपी को नहीं और एग जमान को भी नहीं। अहिंसा बिना दिन उद्देश्यारो के हाथ में चली जायेगी, उग दिन मरणात्म्य हो जायगा। क्या अहिंसा और मानवता का कोई उद्देश्यारो हो सकता है? उन्का कोई सगठन, सगठनार हो सकता है? हमारा सबसे बड़ा दोष रहा है कि अगर दुनिया में शांता बना लो है कि हिंसा होती है तो सारे अर्थात् बिना हर्ष ही हो।

रजिवा की भूमिका

दुनिया में मानवता की तरफ रुतब बनाने के सारे प्रयास इसलिए सुरू रहे कि उनमें रजिवा की भूमिका गौण रही और जहाँ-जहाँ गौण नहीं रही, प्रयास नहीं बड़ा रजिवा ने गुण का अनुकरण किया। रजिवा की भूमिका गौण है इसलिए सबसे बड़ा सटार है। एग बांगला देश की समस्या के सामना-आप हमारे देश में एक बराबर निर्गमित आये। उनमें रजिवा हमारा सितनी की की परावर्ती थी। मनुष्य और मनुष्य के सम्बन्ध में रजिवा एक समझा है। अक्षय्य सारा और सगठित के लिए मुक्त हुए तो रजिवा के लिए भी मुक्त हुए। इसका साराण एक समझा है। यह भी एक परम्परा है। दूसरा क्रान्तिके मनुष्य के आरपी को मनुष्य-सगठित विचार करना होता। दगा और मुक्त की परिचयित में रजिवा नानुस हमारा बन गयी है। १७७१ की अक्षय्यता की क्रान्तिके, १९४९ की आरपी को क्रान्तिके और उनके बाद की बनुना, रजिवा-सगठित की क्रान्तिके सगठित-क्रान्तिकारी क्रान्तिके अक्षय्यता रह गयी। मैंने आरम्भित हमारा के मुक्त आरम्भित परम्परा को समझने से रजिवा है उनका मुक्त उन्माद किया है।

(बीबीसी में आरम्भित-क्रान्तिके के समझ दिने नये भाग्य से—आरपी '७२)

ग्रामस्वराज्य के बीज की सुरक्षा हो

● रामनन्दन मिश्र

[साधना मेग्न, बाराणसी में अभी हाल में ही श्री रामनन्दन मिश्रजी बायें थे । उन्होंने यहाँ के कार्यकर्ताओं के समक्ष अपना विस्तृत और चिन्ता व्यक्त की । यहाँ हम उनके भाषण का यह अंश प्रस्तुत कर रहे हैं जिसमें उन्होंने ग्रामस्वराज्य के कार्य में लगे लोगों के लिए कहा है । आशा है, कार्यकर्ता इस दृष्टि से चिन्तन करेंगे । स०]

हमारा अगला कदम

ग्रामस्वराज्य की सारी योजना इस बात पर आधारित है कि गाँव के लोग सामूहिक रूप से सोचें कि उनके गाँव का भला कैसे होगा । और यह जो सामूहिक चेतना जागृत होगी उसमें गाँव में रहित पंदा होगी और उससे एक नया नेतृत्व का निर्माण होगा । इसके लिए आवश्यक है कि हर आदमी सोचे कि अपने गाँव को कैसे बनाना है ? और, सोचने का आधार ग्रामस्वराज्य की योजना है । लेकिन आज की आशंका ये बह रही है व्यक्तिवाद । हर व्यक्ति सोचना चाहता है कि मेरा भला कैसे होगा, चाहे गाँव का भला आगे हो, पीछे हो, कोई हज़र नहीं । समाज के अन्दर व्यक्तिगत महत्त्व इतना ज्यादा आ गया है कि समूह की देखना ही नहीं चाहता । व्यक्तिवाद की दम जाग में सामूहिक चेतना का आधार शून्य रहा है । और जब सामूहिक चेतना का आधार नहीं है तो ग्रामस्वराज्य उसमें से नहीं निकलेगा । आज यही मुख्य कारण है इसीलिए मैं कहता हूँ कि वयन-कान्तिसेना का गढ़ी काम होना चाहिए कि वह गाँव-गाँव में सांस्कृतिक आन्दोलन लगाये । इसके लिए अगर सांस्कृतिक आन्दोलन नहीं पंदा की जाय तो फिर आधार नहीं बनता ।

आपके ग्रामदान के धीरे-धीरे मुक्त हैं । ये धीरे-धीरे मुझे असील नहीं करते । क्योंकि कार्यकर्ता से कुछ होगा नहीं दीखता । क्योंकि मैं जानता हूँ कि व्यक्तिवाद को जो आप जन रही है उसमें समूहवाद की चेतना मूल्य होनेवाली है । लेकिन अब यह दूसरा प्रश्न होता है कि उस काम को करना चाहिए कि नहीं ?

मैंने यह कहा कि यह बात आप करते ही आये । क्यों ? मैं यह बात क्यों कहता हूँ ? इसलिए कि यह भी मैं देख रहा हूँ कि व्यक्तिवाद की चेतना इस प्रवृत्त जवाना के साथ विषय में जन रही है, इसकी जवाना इतनी तीव्र है कि वह जन-कर समाज को रास्त कर देगी और समाज को ध्वंस के दरवाजे पर पहुँचा देगी । यह जो तीव्र आग व्यक्तिवाद की जाती है इसमें कोई समाज नहीं बन सकता— न साम्यवाद बन सकता है, न पंचायतवाद बन सकता है, न गांधीवाद बन सकता है । कोई भी रास्ता नहीं बन सकता । क्योंकि समाजवाद का आधार ही इस बात पर है कि जहाँ व्यक्तिवाद हो वहाँ समाजवाद के लिए जगह नहीं ।

समाज एक सर्वनाम के दरवाजे पर खड़ा हो गया है । चाहे उस समय दसवा होय हो, जिस समय सारी दुनिया सर्व-नाम में खड़ी का रही हो, जिस के अस्तित्व पर पर रखनी हुई काशी ने नीम निशान्ती है । चाहे उसका भाव यही है कि हाथ हमने क्या किया । ए००० एक जब उसको हीरा जाता है, तो देखती है कि बने मैंने तो अपने पंरों से जो सत्य, शिव, मुन्दर पा, उनको रोद दिया । मैं शिव की छाती पर सड़ी हूँ । जब होगा बाग को देखती है कि क्या हुआ ? वह जिह्वा निशान्ती मेरी है; हाथ, यह क्या हुआ । और, तब यात्रा-विन्दु जाता है । और यह जो समय है दूर नहीं है । आज तो नहीं केरिन दश दिशा की तरफ इतिहास की धारा जा रही है । लेकिन उस विन्दु पर पहुँचने के पहले समय है

कि बड़े पैमाने पर पिताश का चित्र हम लोगों के सामने आये । पूरा तो नाम नहीं होगा, बाकी कुछ रहेगा ही । आज नेवाओ की हीरा नहीं है, विषय को सर्वनाम के द्वार पर ले जायेंगे ही । बिना पहुँचने लोटने की कोई आशा नहीं है । और लोटने के पहले विषय का काफी दृढ़ हिस्सा साम हो जायेगा । यह दिन भी बहुत दूर नहीं दीखता । मुझे सपना रहा है कि जब जनकर एक बार फिर निर्माण होगा । यह प्रश्न है कि जो आग बल पड़ी है वह जना को देवी केरिन इसमें क्या बीज भी जनकर राख हो जायेगा ? क्या बीज भी नहीं बचेगा ? अगर बीज की भी क्या पाये तो जब समाज की हवा उठती दिशा में जायेंगे तो इन बीजों को बाधक करके फिर नयी बीजों पतन जायेंगे । अब जिसको आप करने के लिए उत्पन्ना रहे हैं, वह भी सारे बिहार और शिष्टांगन को छोड़कर सदृश्या में, उनके लिए जगह-जगह गीजवान खुर ही सड़े हो जायेंगे और ग्रामस्वराज्य हो जायगा । अगर दश आदमी भी बिहार में जन जायेंगे तो उनके इशारे पर ग्रामस्वराज्य होगा । लेकिन आज कुछ नहीं हो सकता । आज इतना ही प्रश्न है कि क्या इन बीजों की भी नन्द होने से क्या सोंगे ? और आज को सदृश्या में काम करते हैं उसका महत्त्व नहीं है कि इस सीधन जवाना के बीच सड़े होकर, अपने जीवन की बाबी लगाकर, उस दीपगिता को धीमी गति से भी जसाये रखने की कोशिश है । इससे अधिक की आशा हम आज नहीं करते ।

काम में ही आनन्द पर अनुभूति

मैं इसको अच्छी बीज मानता हूँ । मुझे इसके लिए दिल में कोई दुख नहीं है । मुझे अफसोस यही है कि जो इसमें काम करनेवाले हैं उनके दिलों में मान्ति क्यों नहीं ? हाथ ही जबदशाधरी मुन्दर-खुर में बीजवा पड़े थे । मैं और मेरी रानी, दोनों मिलते गये । मैंने देखा, वे बहुत उदास हैं । मैंने कहा कि तुम तो देखने आये हैं, लेकिन हमें किसी बात की

बिन्दा नहीं लगती। तो प्रमा (धोमती प्रमावतीजी) ने मुझे बताया कि वे० पी० ११ अक्टूबर से रिटायर कर रहे हैं। लेकिन मुझे थारह-बाह्र कुछ समय में नहीं सांग। अगर बिन्दा है और सप्तर कहा है तो १ जनवरी से ही चले जाओ, छोड़ो। हमने कहा 'देखिए जयप्रकाशजी यह ११ अक्टूबर से कुछ नहीं होगा। प्रमा है कि आगे के हृदय में शक्ति बरों नहीं है ? मन में आनन्द क्यों नहीं है ? इस बात का आशयस्य मुझे है। हमने उनसे कहा कि देखिए हर आदमी के मन में इच्छा रहती है कि जीवन में कुछ बटो। आगे हमें इस जीवन को मानव-मानव की सेवा में लगा दिया है। आगे हमने जीवन को, शरीर को, प्राण को, सहा-महात्मा मानव-सेवा में लगा दिया है। आगे निरवश किया कि जीवन को समाज की सेवा में लगाया है, और आगे उते समाज की सेवा में लगा दिया। अब उमरा आनन्द क्यों नहीं ? उनही वलन में कुछ लोग बैठे थे वृद्ध सटकाए हुए। मैंने कहा कि ये बारी तरफ जो लोग बैठे हैं सब मुझे सटकाए, यह क्यों ? अरुना भी मुझे धराय होता है, भाग्य भी मुझे साराय करने हैं। 'सादी-सापोलीय सब नहीं चलना।' क्या जानू पाउ है। आगरी विराम नहीं है, हमको छोड़ दो, बस बताओ, और विराम है तो आनन्द से रहे। अब दम बाध को कर रहे हो तो विराम और आनन्द के साथ करो। अगर आनन्द नहीं बिन्दा तो छोड़ दो। कोई बहककर रता है ? मुझे बस सटकाये रहते हो ? हमने कहा कि जब आग बगेरिदा से आगे वे और मैं जानेर छोड़कर आया था और हम दोनों आशारी की सहाई में उतर पड़े थे। उम बस को बस आया की कि देग आनन्द होगा—आनी विरयो में ? आग उम लिप ही आर कीरिबे, उम समय हम लोगों की उमरिद नहीं की कि हमको आशारी देग पावेगे। यह सब तो कभी कल्पना में भी नहीं था कि एवेरबनी के मेरकर बने, पाविनागेण्ड के मेरकर बनेगे। हमको भी कल्पना थी कि हमको

रामें आन देनेवाले हैं। हमने कहा, 'जयप्रकाशजी मुझे बता-ए कि उम समय कितना आनन्द था। जिस मस्ती में मुमते थे ?' तो जयप्रकाशजी ने कहा, 'हाँजी, यह ठीक कहते ही।' मैंने कहा, 'आज क्या कारण है ? आगे तो पूरे जीवन का बलिदान कर दिया, कोई चीज बाकी नहीं रही, फिर आनन्द क्यों नहीं ? और यह आनन्द जब तक स्थित (रेटोर) नहीं होगा, कितना भी आगम कीरिये, कुछ हीनवाना नहीं।' कभी कहते हैं बग देग का क्या ही रहा है ? कभी कहते हैं कुछ निगड़ रहा है। आप इसको साथ कीरिये। उन्होंने कहा, 'सुधारण मजब है बाध में आनन्द।' मैंने कहा—'हाँ काम में ही यह आनन्द। क्यों तो दिया ? जब तक आनन्द का अनुभव नहीं होगा काम ठीक भी नहीं होगा।' नये समाज के निर्माण के आघार राजनैतिक पार्टियों के पास तो आघार नहीं रह गया है। यह समाज हो चुका। धार्मिक सस्थाओं के पास कुछ रहा नहीं। इनसे मुझे आशा थी नहीं। दिल में ऐसी आशा थी कि आग के पास से कुछ निकले, लेकिन मैं पूरे तीर पर आग की हालत से सन्तुष्ट नहीं हूँ, क्योंकि मुझे लगता है कि आग में भी लोग धीरे-धीरे विश्वास खोने लगे हैं। लेकिन फिर भी मुझे लगता है कि अगर बिहार में ५० भी निरवम रहे तो मैं सन्तुष्ट कि उनके हाथों से कुछ होगा। क्योंकि आग बर्द खोने में जता गये हैं। आग को जितें तोन 'आरथ' बजा हुआ। मलेरु कोन के गीन किन्तु होते हैं (१) स्थित (२) समाज (३) मजबान। (१) स्थित का अपने जीवन की आवश्यकता होती है, उसको कोई बाध नहीं लगता। और मैं कोई साधु भी नहीं हूँ। मेरी इच्छा है, बच्चे भी हैं—दरलिय मैं जानता हूँ कि स्थित के जीवन की जो आवश्यकता है वह तो है ही उसकी आवश्यकता की पूर्ति के लिए कुछ करना भी पड़ता है। प्रम

द्वाना ही उठना है कि स्थितगत जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति में ही जीवन को मिटा देंगे या और भी कुछ खोचेंगे ? मुझे अफसोस है कि कप-के-राम सादी-सापोलीय सब जैसी सस्थाओं में, जो सर्वोदयवादी कहलाने हैं अधिभार स्थित-गत प्रश्नों में उलझ गये हैं। धर्म-अधर्म दोनों की सोचा को धारकर वे स्थितगत प्रश्नों को मुसमाना पाहते हैं। सोचा को छोड़कर आगे बढ़ गये हैं। अर्थात् स्थितगत प्रश्नों में इतना अधिक उलझ गये हैं कि वही सब कुछ हो गया है। याद रखिये कि स्थितगत प्रश्न का महत्त्व बहुत बड़ा है लेकिन वही सब कुछ नहीं है। जिस दिन स्थितगत प्रश्न ही सब कुछ हो जायगा उस दिन समुद्र पणु हो जायगा और उस पणु से और काम तो दिया जा सकता है, सर्वोदय-समाज बनाने का काम नहीं किया जा सकता।

(२) दूसरा मुद्दा आता है समाज। जिस समाज में आर रहते हैं उनके लिए भी कुछ करना। आर दम जाना दीरिय स्थितगत प्रश्नों को, आर ही आना समाज को द दीरिय लेकिन कुछ योधा-या दीरिये। जिसका पन्ध्र आना स्थितगत प्रश्नों में आता है उसकी कृपा कि १ पैदा भी समाज को दो। स्थित स्थितगत प्रश्नों में ही न उतरा। पर इसके को काम नहीं बनेगा।

(३) आरको र्थसदा मुद्दा भी पकड़ना पड़ेगा, अगर आग सर्वोदय-समाज बनाना पाहते हैं। और, वह है अध्यात्म। तीनों का समुचित सम-बन्ध। इन तीनों का समन्वय होना चाहिये और यह समन्वय समुचित होना चाहिये। हम आरको नीचे से आर से गये—स्थितगत, सामाजिक और आध्यात्मिक। अब आर से नीचे आगे जैसा कि गांधीजी ने कहा है : 'मेरे जीवन का ही पुरुष सत्य है भगवान का नाम। उन्होंने कहा कि मेरा सत्य सत्य है भगवान को जाना और भगवान को जाने के लिए आशारी की सहाई लड़ना एवं भगवान के पाने के (येन पृष्ठ ४६० पर)

दृष्टिकोणों का दृष्टिकोण

● कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

दिल्ली गया था। यहाँ दिल्ली में एक विशाल प्रदर्शनी हो रही थी। मैं भी उधे देखने गया, तो ख़ासरी मिली लॉग। लॉगवाला एक पुराना खाल-बाकी बादमी था—दिल्ली के ईट-ईंट से परिचित। मुझे रास्ते की चीखों का हल-चल बताता लॉग होकर रहा था।

बातों बातों में बोला "बाबूरी मस्जिद का मज़ा हद बम्बलट मोटरों, मोटर-रिक्शाओं और बसों ने खो दिया। साध खर्चाईयों पर फूलों का मज़ा लॉगों में है कि छीरे-छीरे चले जा रहे हैं, यह देखा—यह देखा। पर पढ़ेंगे तो लॉग कि दुनिया देल जाये। अब मोटर में क्या है? या रहे हैं बोड़े हुए कि लैरे माफ में बड़े या रहे हो, न सिरी विविध भी छापी-परी दिखाई दे, न हाउसगोर्जों के नाम पड़ें जायें। अब भला कोई घूले इनसे कि करे भाई सिर के लिए निकले हो तो सिर को तरह बंद करो, कुछ टुपत ली। यह गया कि या रहे हो मुझके-मुझके, जैसे भाई से पले।

लॉगवाले की भाषा तो लच्छेदार की ही, नही का डग भी रलीला था। लोभा—"यह बादमी तो विषय की ख़ासरी-नारियर में भावत की प्रतिनिधि हीने लायक है।"

प्रदर्शनी देखकर लॉग को मिली टनवी। घरदारकी दुआवर ही भाई स्वयं भावित भी थे—पुछने लापरामी मोटर-बाचे। मन में थापा, हलकी राय भी आबूय की जाय। वारा पुसाकर कहा— "बाते उनय लो घरदारकी हथ लॉगों में गने से—टनवी कोई मिने ही रहे।"

अब बात बन पड़ी और घरदारकी दिष्ट चीखे पर आये वह यह था— "बाबूरी, यो कैठ जाओ बाते लॉगों में और बाहे दोषी में, पर भाड़ी ख़ासरी लो मोटर हो है। आती जाये या नू चले और बाहे

बायत लो बार अपनी ऐसी-लैसी क्षा लें, उस बैठे जा रहे है, जैसे माँ की पीर हो कि न एकक, न दलक। चले जाओ बैठे हुए, जैसे छात्रव का द्वाङ्ग फल हो उड़ा या रहा हो। यह बात और किस ख़ासरी में मिल सकती है बाबूरी?"

मिने खोला : लॉगवाले की बात सुनी थी, मोटरवाले की भी सुन ली। लोपो की बहुत आम्ने-आम्ने हमारी पातिलामेथ में हो, लो बहुत से मनसुटङ्ग सत्य सोचक देलें, पर प्रश्न तो यह है कि लोपो की भाषा पर नम्बर देने के लिए निपायक मुझे क्या दिया जाये तो मैं क्रिडे प्रयत्न और मिले दिडीय नहूँगा ?

दिल्ली से घर आते समय रेल में एक मने दाबी का साथ रहा। भावो-बातो में लॉग-मोटर का यह दृष्टिकोण भेद उन्हें सुनाया तो लूर हँसि और बोले "दृष्टिकोण के सम्बन्ध में एक सम्मरण मेला भी है। रिस्ती से सम्बन्धना जाते समय बिछनी धार फेंसैकर गाड़ी में देठना वहा लो बहुत सावरा कि एक लो कुछ मील के लकर के ५-६ घण्टे लॉग गये पर सम्मरण से मैं लकने बाँध गया लो मुना कि एक बुकिमा हूरी दुडिया से कह रही थी—

"अवनी वार नहूँ—रेल से भेते यह मया जुलम देखा कि मेन गाड़ी में बैठने की टेम लो कम मिलता है पर क्रियाया देना पड़ना है ज्यादा।" पुनकर मुझे हँसि लोभी कि बुकिमा पर मणित एकदम ठीक है कि "बिलती डेर मेठाओ, लजना पेशा लो, यह था कि चंशते ही पेंसैकर से कम समय और क्रियाया लेते हो अधिक।"

खोला : "दृष्टिकोण लकों की रचना में बिलना चतुर होय है ?"

धेरे लगर में पहले बहुत लॉगों से पर बिभाजन के बार सांक्षित लून रिस्ती लो देस और बंदा कि लॉगों जेगलियो पर बिने रह गये। एउ दिन नहर से लीजते

हूए देर हो पकी लो लॉगों में बैठ गया। लविनाला बला पुराना दोस्त, बायें वल निकली—"कहो भैया, कैली मुजर रही है ? अब लो मुक्त भाजार है—हदने की तरह कोई पुलिस-मुलिववाला लो लॉग नही करता ?"

"बाबू—पुलिस लुमिलवाला लो कोई लॉग नही करता, यह शारीभासी लो बँडे है, लो पूरे पेंसै देते है, पर बाबूरी एर रिस्ती ने बाबादी का मजा बिनाइ दिया।"

"रिस्तीवालों ने बाबादी का मजा बिनाइ दिया ? क्या मजलत तुम्हारी बात का ?" आश्चर्य से मिने पूछा लो बोला यह—"बवाहरसाब ने अरबों की लो हिन्दुस्तान से भपा दिया पर मे रिस्ती लजसे लही भगाने गये।"

"हाँ, रिस्ती लो लॉगों को बहुत मुकलत हुआ है भैया।" मिने लठे हथपदी लो लो ललदकर बोला, "मा बाबूरी यह बात नही है, बात यह है कि ये रिस्ती बहुत मनसुट है।"

"कैसे ?"

"बाबूरी, लॉगों में थोड़ा मुकता है, लविनाला है, भासलवा है, ललललवाला है, मुहर-बदई है, मातिया मलनेवाला है और इनके लोली-बन्धे हैं, कोई लो कमाई से इन धनक लाला है, ललको रोटी मिलती है—रिस्ती से यह बात कहा है ?"

पर लल गया था, मैं ललर गया, बात लही रूढ़ गयी, पर रिस्ती के सम्बन्ध में लॉगों का दृष्टिकोण मुझे मिल चुका था। लोन्-लार दिल बार में फिर लहर गया लो रिस्ती में था। मुझे लॉगवाले की बाड याद आयी लो लोला लॉगों के सम्बन्ध में रिस्तीबाये की राय मालूम हो लो लखीर पुरी हो जाय।

नहा—"मुना है भैया कहर में फिर लॉगों की लाराय बनेभाती है ?" बोला— "बाबूरी, घरदार मानिक है, बाहे जो करे, पर लकल लो बाड लो यह है कि लिने लॉगों है ऊहूँ लो कम बर दिया जाय।"

“क्यों बैरा ?”

“बाबूजी, तांगा नरक की जड़ है। आप अपने घर के बाहर का फर्श जीभ से चाटकर शीशे-सा चमका दो पर दस मिनट भी साफ नहीं रह सकता। तांगा बाहर खड़ा हुआ कि घोड़े ने पेशाब किया। अब उसके पांव तो बदक के मारे अपने शिमशिले पर भी नहीं बैठ सकते।”

जरा चुप रहकर वह बोला—“बाबूजी, तंगी का नरक इन भगियों के पुछो। सुबह ही सुबह बेचारे सड़क साफ करते हैं। कमर टूट जाती है—और हाथ एँठ जाते हैं, पर वे श्राद्ध लगाकर सोपे भी नहीं हो पाते कि तंगी का घोड़ा फुरक-फुरक लीद करता चला जाता है और सारी सड़क ऐसी हो जाती है जैसे कोड़ी के हाथ-पीर। अब बनाओ तांगा नरक की जड़ है या नहीं ?”

मुनकर बोवा—“तांगेवाला हार्डकोट तक पहुँचा, तो रिपनेवाला सुरीयकोट तक और दोनों दूतने बड़े बचील है कि संवहों एल० एल० बी० सड़े उनका मुँह टाछा करे।”

हँसी भावी, ठी चिन्तन की बेल में कॉपल भी फूटी। आसिर क्या बात हुई यह ? बात हुई दृष्टिकोण की। हम जीवन में बहुत कुछ देखते हैं पर देखने का ही कोई विशेष महत्व नहीं है। बम्बई में मैं बँटकर हृष दिलो से बम्बई जाते हैं तो राते में क्या नहीं देखते, पर क्या देखते हैं ? देखने का महत्व तब है जब देखते समय हमारी सोचफूरी पर जड़ी-पगडरी दो आँसों के साथ दिल की मुद्रों में छिपी ज्ञान की छाँट भी खुली हो। पर इससे भी बड़ा महत्व है दृष्टिकोण का—“ऐंगिल बाँव दिखाने” का, इसका कि बिचने किछ भीज को बिस नजर से देखा।

दिल्ली का तांगेवाला और टैबलो-वाला, रेल में मिले बन्धु के गाँव की बुद्धिया, मेरे नगर का तांगेवाला और यह विचारा मास्टर—सब अपनी-अपनी

जगह सड़े ठारमहन की तस्वीर खोज रहे हैं। सबकी तस्वीर अलग है, हालाँकि ठारमहन एक है। क्यों ? क्योंकि सबका दृष्टिकोण एक नहीं।

ससार में दृष्टिकोण के भेद से मत-भेद जन्म लेता है, मतभेद की महत्व देने से मतभेद बन जाता है। तब उपजता है क्रोध, तब उपजती है हिंसा, तब उम-हड़ी है प्रतिहिंसा और टन जाते हैं मुद्दे—विवादा के खेल।

फिर उपाय क्या है ? क्या यह कि सबको एक ही जगह खड़ा कर दिया जाये कि सब एक ही जगह से तस्वीर उतारें, सबकी तस्वीर एक ही हो, मतभेद की सम्भावना ही समाप्त हो जाय ?

हाँ, यही उपाय है, पर प्रश्न है कि इस उपाय का उपाय क्या है ? सबको एक ही जगह कैसे खड़ा किया जाय ? सबका दृष्टिकोण एक ही कैसे बनाया जाय ?

एक उपाय है अलग वा, एक उपाय है विचार का। अलग है राजनीति का साधन, विचार है धर्म का साधन, पर क्या दोनों में से किसी एक को सफलता मिल सकती है ? अतीत और वर्तमान में हिरोप्यनकिपु और बस एव हिडनर तथा स्टाइन राजनीति के भद्रतून थे, जो अतीत और वर्तमान में वे धर्म के अग्रदूत, जिन्होंने ईसा की शूनी पर टागा, बूनी को जिन्दा ज्वाया, दयानन्द की बाँव पिवाया और गांधी के सीने में गोलिएँ मारी, पर क्या उन्हें सफलता मिली ?

दिहास साधी हैं दोनों अचल रहे और विज्ञान सासी हैं दोनों सदा अचलन रहेंगे। क्यों ? क्योंकि प्रकृति त्रिगुणात्मयी है, उसका स्वभाव है विविधता। हर आवसी का चेहरा अलग है, भावात्र अलग है, रचि अलग है। इस स्थिति में सब के दृष्टिकोण को एकठा कैसे सम्भव है ? फिर विज्ञान और कला का विरुध्दायी विकास इस अनेकता के कारण ही तो हुआ है। अनेकता न हो, तो यह संसार कहीं रहे ?

दस जान का क्या अर्थ ? क्या यह कि

दृष्टिकोण की विद्विगता सदा रहेगी और उससे मतभेद, मनभेद, क्रोध, हिंसा, प्रतिहिंसा और युद्ध होते रहेंगे ? यदि हाँ तो क्या विश्वशांति की बिर भावना एक बनाली पुलाव हो है ?

यह क्या बात हुई ? और क्या बड़ा ह्य बात ने ? यह बात हुई दृष्टिकोण की और अपने हम प्रश्न का उत्तर दिना कि दृष्टिकोण की विविधता सदा रहेगी और यह असम्भव है कि सबका दृष्टिकोण एक हो। इस स्थिति में सम्भव यह है कि हम अपने दृष्टिकोण से देखें, उससे बनी राय को पूरा महत्व दें, पर दूसरों के दृष्टिकोण की उपेक्षा न करें। और उनपर अपनी राय न लायें।

दूसरे की राय सुनकर भी सम्भव है मुझे मेरी राय ही ठीक जंचे और मैं उस पर दृढ़ रहूँ, पर तब भी मैं यह क्यों न मानूँ कि दूसरे के लिए उसकी राय भी उतना ही ठीक है।

फिर यह भी तो सम्भव है कि स्थान और परिस्थिति के भेद से अपनी-अपनी जगह दोनों ही बातें ठीक हों। मैं अपने पिता का पुत्र हूँ यह ठीक ही है, पर मैं सुन ही तो नहीं हूँ, अपने पुत्र का पिता भी तो हूँ। रहस्यन मेरे पाप अपनी परेशानी में आया, मैंने उसे १० रुपये दिये। सबसे बहता है। उनका हाथ बड़ा मुलायम है, पर जपनीवाल आया तो मुझे परिस्थितिवच इनकार करना पडा। सबसे बहता है— उनका हाथ बड़ा सघन है। अब कीय रतन है और कौन सही ?

तो हम अपनी राय पर दृढ़ रहे, पर दूसरे की राय पर अपनी राय न चढ़ावें, उसे नगण्य न मानें। इससे मतभेद के जाने एक दोषार लिख जाती है और मतभेद, क्रोध, हिंसा, प्रतिहिंसा एव युद्ध नहीं हो पाते। यह भी एक दृष्टिकोण ही है, पर यह सम्भव का अनेकान्यवादी दृष्टिकोण है—दृष्टिकोणों का दृष्टिकोण, भारत के ज्ञानकोष को भगवान महावीर का प्रयोगार।

—दि० नि० दि० सेवा, इन्दौर

डाकुओं का आत्म-समर्पण : एक अवलोकन

● नारायण देसाई

मुझे ११ अप्रैल से १६ अप्रैल तक श्री जयप्रकाशजी के साथ सम्बन्ध घाटी क्षेत्र में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और मैं बागियों के आत्म-समर्पण का साक्षी बन सका। बागियों के आत्म-समर्पण की बात बताने के पहले मैं चाहूँगा कि १९६० में विनोबाजी के समय डाकुओं के हुए आत्म-समर्पण और इस बार के आत्म-समर्पण की एक तुलनात्मक समीक्षा कर लूँ।

१. १९६० में २० डाकुओं ने आत्म-समर्पण किया था जब कि इस बार १६३ ने किया।

२. उस घटना के पीछे आध्यात्मिक प्रेरणा काम कर रही थी जबकि इस बार सामाजिक, राजनैतिक और नैतिक प्रेरणा काम कर रही थी।

३. वह घटना अनियोजित थी। इस बार का पूरा समर्पण पूरी तरह से नियोजित था। सर्वोदय कार्यकर्ता श्री महावीर सिंह और श्री हेमचंद्र शर्मा ने सहनोसदार सिंह और पंडित सोहनन के साथ बागियों से सम्पर्क स्थापित किया और स्वयं जै० पी० केन्द्रीय गृह-मन्त्रालय, तथा सम्बन्धित मुख्यमंत्रियों से बातचीत व पत्र-व्यवहार किया और प्रधानमंत्री से भी मिले।

४. १९६० में डाकुओं के आत्म-समर्पण के समय पुलिस का हुआ विरोध था जबकि इस बार सरकार व पुलिस का समर्थन प्राप्त था।

५. उस समय डाकुओं से सम्पर्क करना बहुत काम था। इस बार का काम आसान हो गया था। दो सफेद रंग की जूतें, जिनपर 'बम्बल घाटी बागिज मिशन' लिखा हुआ था, सम्पर्क के लिए थीं। इस क्षेत्र से कोई भी वही जा सकता था और डाकुओं से बात कर सकता था।

आधुनिक विधि से समर्पण के पहले अपनी

५ अर्थें रखी थी। मुख्य शर्त थी कि किसी को फाँसी न दी जाए। जयप्रकाशजी इसे मानते थे कि जब समर्पण करेंगे तो उन्हें फाँसी क्यों देनी चाहिए? इस सम्बन्ध में गृह-मन्त्रालय से वार्तापत्र हुई है कि किसी भी आत्म-समर्पणकारी डाकू को फाँसी नहीं दी जाए। दूसरी शर्त यह थी कि तीनों राज्यों—राजस्थान, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश—के सखुवन न्यायालय की व्यवस्था हो। तीसरी शर्त थी कि ६ महीने में सभी कैद पेश कर दिये जायें और दो-तीन साल में मुकदमे का फैसला हो जाय। चौथी शर्त थी, जेल में उनके साथ अच्छा व्यवहार किया जाय। पाँचवी शर्त थी कि उन्हें वैदिक न पहनना जायें। सरकार ने भी जरूरी और से कुछ शर्तें रखी थी—इन डाकुओं को बहुत बड़ा 'हीरो' नहीं बनना चाहिए। उन लोगों को माना नहीं पहनानी चाहिए। उनकी आपसमा नहीं की जानी चाहिए तथा उनकी प्रशंसा नहीं करनी चाहिए। फीटो नहीं लिये जाने चाहिए। इस विषय पर सौचताओं पर रही थी। जयप्रकाशजी को ये सारी बातें पसन्द नहीं थी। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री भी दो-तीन शर्तें चाहते थे कि समर्पण की रसम रितियों बन्द करने में हो। श्री जयप्रकाशजी ने इसे हकीकार नहीं किया। फिर सरकार ने कहा कि आसमा हो मगर पगारा डैम नर हो, बीस में न हो। उनको भय था कि जोरा से ज्यादा लोग जा जायेंगे। मगर जबकी यह बात थी कबू नहीं हुई और जोरा में ही सभा करने की बात बाकी बाद-विवाद के बाद तय हो पायी।

पहले दिन समर्पण-समारोह में श्री सेठी भी उपस्थित हुए। उन्हें समर्पण का कार्यक्रम इतना अच्छा लगा कि दूसरे दिन के समारोह में वह अपनी फाँसी के साथ उपस्थित हुए और बाद में तो

भी सेठी ने प्रेस-वार्ता भी की। फीटो देने की इजाजत नहीं थी, पर शुरू से बाहिर तक फीटो लिये गये। टेपेकरों भी हुए। अनेक बागियों की मुलाकातों भी पत्रकारों ने की।

जो कुछ भी हुआ, उसमें जयप्रकाशजी की भावना यही थी कि इसमें मेरा श्रेय कुछ भी नहीं है। यह सब ईश्वर की कृपा है और मैं अपने आत्मी इसके योग्य बिल्कुल नहीं पाता हूँ। इस भावना की वह अपने अशाक्तमान में बराबर दुहराते रहे।

मोहर सिंह सबसे बड़ा डाकू माना जाता है। सबसे पहले वह पगारा डैम पर जै० पी० से मिलने आया। अनेक सरकारी पक्ष के लोग मोहर सिंह के आत्म-समर्पण करने में सन्देह प्रकट कर रहे थे। स्वयं श्री सेठी को भी विश्वास नहीं हो पा रहा था। परन्तु जब अपने शस्त्र रख दिया और आत्म-समर्पण कर दिया तो बहुत करने के गिवाज हुए। कुछ बचा ही क्या? मोहर सिंह काफी लम्बा-चौड़ा झोलडोल का, बड़ी बड़ी मुठ्ठीवाला मारपी, लवसुव डाकुओं के बारे में जैसा सुना जाता है। जब वह प्रस्ताव उपस्थित हुआ तो उसके खिन्ना लम्बा डाकुओं में केवल एक ही था। मोहर सिंह पर १७९ हज़ार के कैश है और भी बहुत प्रकार के साधन उपपर लगाये गये हैं। वह देखने में बिल्कुल मान-स्वभाव नर लगा। निराना-पड़ना बिलकुल नहीं और बोलता भी बहुत ही कम था। वह जाकर जयप्रकाशजी के सामने बैठ गया। जयप्रकाशजी ने उसके कड़ा कि 'फाँसी नहीं देने की बात मैंने मान ली है और मुझे इस सरकार से छात्राचार भी निर नया है। मेरे लिये पगारा डैम से किसी एक की भी फाँसी मिली तो आसमें से एक की जान मेरी जान के बराबर होगी और मैं अन्तन करके मरूँगा, मगर मैं फाँसी को बर्बाद नहीं करूँगा, जयप्रकाशजी की इस बात से हूँ मैं सख्त रह गये। मोहर सिंह पर



श्री माधो सिंह के पी० पी० द्वारा की गयी अंगुली को पढ़ते हुए

रस का नाम बिजली का नाम अंतर हुआ। यह बीच पर से उगले हुए, चिल्लाते हुए कहा कि बाबूजी (पी० पी०) ने कहा है कि उनकी जान मेरी जान के बराबर है... हृषीकेश जान उनकी जान के बराबर है... नाचता-नाचता डैम के नीचे, अहाँ कह रहा था, खला गया। वहाँ पर खड़े कहा कि बाबूजी ने कह दिया है कि हृषीकेश जान उनकी जान के बराबर है। अब क्या रहा? फिर तो जो पी० पी० बख्तर-बखता जाता या और गुदरा या कि भाग बना करके तो उधारा एक ही उधर था, बाबूजी (अनन्याबाबी) जो कहे थे कहे। बाहर बाबूजी नहीं बनाये तो गरी कहेगा।

मोहर सिंह और माधो सिंह का अतिशय एक दूसरे से बरखी मिला है। माधो सिंह बरा बरखता, मोचने-खाल, समझनेवाला और हर खाली के हर दर से बात करती-रता।

मोहर सिंह समर्पण के लिए ९ सारील से ही बाहर भेजा था। उनके

बाईं भूदरा, बयो भाई, खला पड़ने के बाईं जा रहे? तो कहना कि सबसे पहले मेरा समर्पण होगा। माधो सिंह ने एक महीना पहले ही यह खाया कि खले पहले समर्पण मोहर सिंह का ही होगा, भेरा नहीं। यह बातता या कि मोहर सिंह बड़ा है और उसीकी पहला अखर मिलता परीदए।

१३ सारील की रात को सलम सिंह भाया। सलम सिंह और मोहर सिंह ने पगड़ी बरकी पी और हर सवार दोनों में भाई से भी ख्याल दोलती थी। सलम सिंह ने कहा कि तुम पहले समर्पण बँधे करीये? दोनो हाथ में हाथ बिलाकर समर्पण करिये। यह बात मोहर सिंह ने धान सो। पर सलम सिंह ने कहा कि बाहर मैं तो समर्पण करने भाया नहीं, केवल पी० पी० से बाध करके भाया हूँ। मुझे तो करने दिखेगाओं के मिलना बाकी ही है। इसलिए तुम बल समर्पण धन करो। तब यह एक बँध खल गया। अब क्या ही? समर्पण पहले करता, यह भी बल ही करता है। एक बाया माधो।

सलम सिंह को उसके सम्पत्तियों के मिलाने के लिए सारील जा कर अखरया हुई और वह सलम से करके १४ सारील को हाथिर हो गया। दोनो ने एक दूसरे का हाथ पकड़कर आत्म-समर्पण दिया।

एक पटरा हुई। उनदोगो के भागती बैर भी है और वह दैर सरकार से सुगियार देकर बरि-बाद पंजा दिया है। बैके कोनो के भी ये लोग मिले। बाहर में दूधोने मंगि की कि इनके दुमको ने उन में सुचारता का गयी था। व म म इनके प्राणी भूनों के लिए खाया मंग लेने। अमर माधो देते तो सनया हन हा जायेगी। इन, मोम बाबूने १० कि अमर उनकी यह दुमको नदो निदो दो के मोग उनके रि-कार को खेगाव करेगे।

समर्पण के बाद मंगि सारि-सकिरो को जेल में भेजा गया और एन-एन ने मिलकर बरि-सदर मोधो की सुनो बनायी। यह सुनो अमर-सको को द रो गरी है।

श्री महावीर सिंह माधो सिंह के सम्पत्ती है और सपनीय कोनो बोवते है, इतिहास वादुको को सपनीय वे वासानी होली है—साथ ती-के मोहर सिंह को। एक उपाहर था— बाबूजी की सुनो कोनोमा यहन को इच्छा थी की बागियो की राखी बागो जय। पी० पी० की सुन की मुक्ति बिली की उधरो राखी बनायी गरी। अब यह सनया पंदा हुई कि सलम बागियो की राखी करी जायेगी तो उनके पास जो कुछ भी है यह सब दुदा देंगे। सो-सो का मोर देवा उनका रिवाज था। मोहर सिंह को कोई राखी बाईं और यह भी राखी से बन दे, यह उसकी गाल के लिनाक था। श्री महा-वीर भाई ने सनयाक विधाना की उवे सनयाक कि 'पहु राखी मओ बांध ना रही है, परिहार में बागियन करते के लिए। उतने कहा, 'ठीक बात है।' तो भागे परिहार में सलमे बड़ा बाध है।' 'बाधो।' 'बाधो' ने कहा है कि हृषीकेश बाबूजी को हृषीकेश तखियां पखो बाईंको और पखियार की मोर के साइकी बागिओ

की एक-एक बराबारी में। आप लड़कों को कुछ नहीं बोलना है।' मोहर सिंह ने कहा, 'बाबूजी ने कहा है तो ठीक है।' इनका समझाने में दो घण्टे लगे।

गमर्षण के चार समारोह हुए। पहला समारोह पचास रूम पर हुआ। इस समारोह को जे० पी० ने ज्यादा महत्त्व दिया। इसमें शरभ-समर्पण तो नहीं हुआ, लेकिन प्रभासोत्री ने तितार लगाया और जे०पी० स्वयं एक एक करके गवें मिले। बागियों ने जूने उतार-उतारकर दोनों के पैर धुये। इससे खोप सुदृग् हो गये।

जोरा में दूसरा समारोह हुआ। जोरा एक बड़ा गाँव है। वहाँ सुव्वारावर्जों का वाशम है। काफी जैबा मध बना था। शोमियावा लया था। काफी बड़ा पेशा बनाया गया था ताकि दूर-दूर से लोग देख सकें। श्री जयप्रसादजी ने कहा कि सारा समर्पण गाँवों और बिनोबा के विम के सामने हो, और यही हुआ।

श्री सेठी इस समारोह में भागे थे। वह खुद ही गाँवों सिंह से मिले। मायो सिंह ने उनसे हाथ मिलाया और बोला, 'शाहब, अगर आप का सहयोग न मिलता तो यह वाशम होता।' सेठी ने कहा कि 'नहीं, नहीं, यह सब बापके ही सहयोग से हो पाया है।' उसने सेठी से कहा कि अगर आप एक महोला और समन से बीजिए तो सभी का समर्पण हो जायगा। श्री सेठी ने कहा, 'एक महोला तो नहीं, लेकिन १५ दिन का समय देंगे।'

समर्पण के दूसरे दौर में हुआ यह कि समर्पण का समय ना लीन बजे, बागियों के आने में देर हुई। पुनिय के लोगों ने कहा कि बाबू शिवा कि शाहब। समर्पण—सर्पण होगा नहीं, सर्वोदयवाले बड़े भोले लोग हैं, इनको सब अच्छा ही अच्छा दीसता है। दन यावतल को दो मिनट भी नहीं हुए कि वे खोम ला गये। अर्धों के देर हो गये। कई प्रकार की वस्तु—साइट मशीनगन, स्टेशनन, टेलिस्कोपिक राइफल

आदि। शस्त्र बहुत ही कीमती हैं।
दो समारोह पुने तीर पर हुए। पर इसके बाद कुछ लोग भागे और कहते लगे, 'हम तो समर्पण करने आये है।' फिर जे० पी० जहाँ ठहरे थे वहाँ ही समारोह हुआ और समर्पण हुआ। लोगों का कहना था कि एक आदमी नहीं थाया। अगर वह नहीं थायेगा तो यही पड़वड़ करेगा, परन्तु वह भी अंतिम दिन स्वाधियार में थाया—नाशुसिंह। उसने कहा, 'मैं भी पहुँच गया।' रिधी ने कहा, 'आपकी तो लम्बी दाड़ी थी।' उसने कहा, 'वया था वह जाने दीजिए, आज जो है वह आपके सामने है।'

अब 'सम्पन्न घाटी प्राप्ति मिशन' वहाँ काम करेगा, जिनकी अल्पसत्ता जयप्रकाशजी ने स्वीकार की है और देवेन्द्र भाई तथा स्वामी कृष्णाशरणी उपाध्याय बने हैं। श्री महाश्वीर सिंह और हेमदेव शर्मा मधो हैं। अनेक उपाधिमितियों को यहाँ हैं।

एक घात और, सुन्देलसण के शकुओ ने भी इस तरह की तैयारी बनायी है। उनलोगों की सीमा है कि अगर वहभीलदार सिंह बायें तो वे भी आरन-समर्पण करेंगे।

(पृष्ठ ५५८ का लेख)

सड़का सेठीस बोधा रह जायगी; दोनों में जोर कम हो जायगी। उस वक्त वे अपने इस करिन को लेकर दुनिया में कैसे खड़े होंगे ?
१० अप्रैल

बिराहों की सभा हुई। जब बीधे-कट्टे की बात बड़ी गयी तो एक पंडितजी उठकर सङ्गे हुए, और बोले, 'बीधे-कट्टे की बात बड़े लोगों से बहनी चाहिए।' मैंने कहा; 'यह धर्मोपलन बड़े लोगों के पीछे दोइने का नहीं है। यह छोटी की बड़ा मानता है। उनकी आँसू चमक उठी। उन्होंने कहा, 'मेरे पास कुछ दस बन्दे भूमि है। उसमें से १५ बन्दे का दान स्वीकार किया जाय।' ●

(पृष्ठ ५६३ का लेख)

विए लड़ाई लड़ते हुए दोनों शाम के खाने का भी इंतजाम करेगा। मगवान को पाना है उसके लिए खाजादी की लड़ाई लड़नी है और इसके साथ-साथ व्यक्तिगत जीवन का भी प्रबंध करना है। विश्व में गाँव ही एकमात्र व्यक्ति से जिन्दगी है कि भगवान को पाने के लिए आजादी की लड़ाई लड़ना है। उन्होंने यह भी कहा— 'अगर मुझे निश्चय हो जाय कि आजादी की लड़ाई लड़ने से भयानक नहीं मिले तो मैं आजादी की लड़ाई छोड़ दूँगा, पर भगवान को नहीं छोड़ूँगा।' यह दृष्टिकोण आराम समाप्त हो गया, और पूरा दृष्टिकोण हो गया समाज का परिवर्तन। यह एक बहुत भयानक चीज आपके समाज में हो गयी। यह पनारतार लोगों की है। अगर अशांति का आधार नहीं रहा तो सर्वोदय-समाज पड़ा नहीं रह सकेगा। यह भी मैं आपके स्पष्ट यह देता हूँ।
जब यह तीनों धारा बन जायगी भगवान, समाज और व्यक्ति—सब एक सन्तुलित जीवन का आरम्भ होगा। आप इनमें से किसी के भी प्रतिघत दीजियेगा यह आप दीजिये। आप व्यक्तिगत जीवन को राट प्रतिघत भी वे दीजिये, समाज-सेवा को भी प्रतिघत दीजिये और भगवान को १० प्रतिघत दीजिये, जो भी दीजिये। अगर अत्याचार का आधार नहीं बनेगा तो बीज रूप से टिके रहने की शक्ति नहीं रह पायेगी। अगर अपने काम के द्वारा अपने अन्तर्भूत में आज उनको स्थापित कर सके तो ठीक। अगर ऐसा नहीं कर सके तो जो आग जल पड़ी है उसमें इनके बहुरूपे टूटने भी खल जायेंगे। क्या तबसे तो ठीक। यह आखिरी पैदावा आशा करना है। क्योंकि जब भी समय है, १९७२ के बाद सम्भव नहीं। यह सब की आँकड़े सामने दिखाई पड़ रहे हैं। उसका कोई मूहप नहीं है। हमारी तो यही तकलफ है कि आज के भीतर ऊनी मजदूरी जो अने पर भीज बचा रह जाय। तब सर्वोदय-समाज बचा रह जायगा। ●

अमेरिका वीएतनाम में कसौटी पर

ऐसा लगता है कि अमेरिका ने वीएतनाम में जिाना वन और पैसे दिये, उसके परिस्थिति में कोई अन्तर नहीं थाया। वीएतनाम के युद्ध का जो लोग ('युद्ध भोक' के अनुयायी) देखते रहे हैं, उनका कहना है कि पिछले सप्ताह की यह सड़ाई बंधी ही। मरकर भी जैदी १९६९ की थी। युद्ध के तरीके में कोई अन्तर नहीं था। यह युद्ध डिवीय विरायुद्ध की तरह का था, जिसमें हम के अने दूर तक मार करनेवाले हथियार प्रयोग में लाये गये। उत्तरी प्रायों को मूक्य में छोड़कर कम्युनिस्ट ने सैमान से बहुत नजदीक एक डूबरा मोर्चा खोल दिया। इस युद्ध से बरहवास होकर दक्षिण वीएतनाम के राष्ट्रिय विपू ने अरानों सारी बचो हुई सेना को, यहाँ तक कि राष्ट्रिय के महल की हिंसा करेनाले दस्ते को भी, युद्ध में खीक दिया।

कम्युनिस्टों के इस युद्ध का मुकाबला करने के लिए निषसन ने बायुधानों और पानी के पहाड़ों के बड़े-बड़े दस्ते वीएतनाम की सहायता के लिए भेदे। इन दस्तों में को—X२ बमबर्षक अज्ञान और ५ एयर क्राफ्ट कैरियर भी है। अमेरिका की इस सहायता ने वीएतनाम का खोसनापन हासित कर दिया और यह अकट कर दिया कि अमेरिका किस महुरे हूँ तक वीएतनाम में उभरना हुआ था। इन घटनाओं की पूष्णूमि में निषसन का यह माना कि वीएतनाम १९७२ में एक स्वयसा नही रहेगा, बिलकुल खोखला मानलु होता है।

राष्ट्रपति निषसन जब सनसुद्धते वीएतनाम की रिस्ते से बचाने की कोशिस कर रहे थे, तो उन्हें अमेरिका में दूसरी सप्तत्या का सामना करना था, अर्थात् उन मनोविज्ञान का, जो १९६८ में यहाँ पर फँसो हुई थी। राष्ट्रपति निषसन इनकी

ठंडा करने की कोशिस करते रहे।

इन्से इनकार नहीं किया जा सकता कि एशोकीन की परिस्थिति गम्भीर थी, और बात वीएतनाम की सीमा से आगे जा चुकी थी। कभी हथियारों द्वारा प्राप्त की हुई रण जीत के बाद क्या निषसन मासको के हिसर सम्मेलन में राजनैतिक वीर पर भांगे बड़ सकेंगे ?

यद्यपि अमेरिकी प्रबन्ध ने यह दावा किया है कि वे कम्युनिस्ट आक्रमण को प्रतीक्षा कर रहे थे और उसके लिए तैयार थे, परन्तु यह सही है कि अमेरिकी अज्ञानक पकड़े गये, यद्यपि पिछले कुछ महीनों में उत्तरी वीएतनाम के दक्षिणी भाग में दो हवाई बड्डे बनाये गये। अमेरिकी वायुवी विभाग ने यह भी बड़ा रिवा था कि तय साम (सऊँठ टू एयर मिशरान) फिट किये गये थे और दर्जनों भारी मशीन की ५०० एम० जे० में लगारी गयी थी। हनोई की प्रसिद्ध पत्रिका में एक निबन्ध भी स्या था जिसमें यह कहा गया था कि अमेरिका वीर विपू सत्कार को निकालने के लिए बड़े पंमाने पर युद्ध छेड़ना चाहिए। फिर एक सैनिक प्रतिनिधि मण्डल, दिनमें युद्ध के बड़े क्रियेज भी थे, आक्रमण शुरू होने के चार दिन पहले आया था। फिर भी पेंटागन और अमेरिकी सैनिक कमांडरों ने हर चीज के बारे में गलत अन्वय लगाया—सयप का, कम्युनिस्ट आक्रमण की हासित का, और दक्षिण वीएतनाम की अपनी सीमानों को बचाने का।

कम्युनिस्ट आक्रमण बन्दकर था। पहले कुछ दिनों तक तो अमेरिकी अज्ञान कार्टवाई न कर सके क्योंकि वीएतन उनके निकट था, परन्तु उसके बाद युद्ध की निषसन ने अमेरिकी स्थल सेना को युद्ध में खीकने से इवकार कर दिया। एक अमेरिकी पदाधिकारी ने कहा कि

अमेरिकी स्थल सेना का प्रत्यक्ष नहीं उठना। 'बूँक राष्ट्रपति निषसन तब कर चुके थे कि स्थल युद्ध को पूरे तीर से वीएतनामियों के हवाले कर देंगे, इतिहास विद्गु सप्ताह भी उन्होंने वीएतनाम में अमेरिकी सेना की उषय में कटौती की। जब शरल उठा तो अमेरिकी पायलटों ने कम्युनिस्ट टिपानों पर भारी बमबारी की—विनाश में ५०० शर तक। इन्होंने ६०० एम० जे० के उत्तर और दक्षिण दोनों ओर बमबारी की, सायकर उत्तरी वीएतनाम पर जबरदस्त बमबारी हुई। उत्तरी वीएतनाम के अन्धो हवाई सुरसा-युद्धि के कारण अमेरिकनों को भारी क्षति हुई। उत्तरी वीएतनाम में दो हवाई अज्ञान और छः हेलीकोप्टर मार गिराये गये तथा २३ अमेरिकी अब तक नही निन सके हैं।

जब अमेरिकी वायु सेना की पूरी क्षति उत्तर में लगा रहे थे तो कम्युनिस्टों ने दक्षिण में युद्ध बड़ाया। यह हनोई की रणनीति की सबसे बड़ी विरो-पदा है जिसे जबरल गदाय ने अमेरिकनों की निकाल बाहर करने के लिए बनाया था। फिर उसी सप्ताह में उन्होंने दूबरा बड़ा आक्रमण सैमान के मजदूक के प्राय विन्हाग पर किया। कम्युनिस्टों को तरह से रूट १३, जो दक्षिण वीएतनाम की राजधानी भी थीर जाता है, पर छा गये। दसवें उन्होंने डोरी का प्रयोग किया और मशीनबनों से गोशिया बरसायीं। अचकर युद्ध के बाद उन्होंने माकिन्हु पर कब्जा कर लिया। फिर राष्ट्रीय राजधानी एतलाक पर कब्जा कर लिया। कम्युनिस्टों का आक्रमण यही तक सीमित नहीं रहा। मोकाय केटा में दर्जनों आक्रमण वाहरी और सैनिक अड्डों पर किये गये, जिनमें सोसुन्नक और वीएतनाम को शामिल है। १०५ अज्ञानों में, जहाँ उत्तर वीएतनामियों ने कपडो तैयारी कर रखी है, अकन्डी पर सतरा बड़े लगा।

पिछले सप्ताह बाकिण्डन में यह बात बल रही थी कि आक्रमण के लिए उत्तरी

बीएननामियो ने यह समय क्यों चुना ? एक दृष्टिकोण यह है कि कम्युनिस्टों ने यह तय किया था कि जब अमेरिकी स्वतंत्र सेना बहुत कम संख्या में रह जाये तो बड़े पैमाने पर युद्ध किया जाय। इस संघर्ष के अनुसार उत्तरी बीएननामियो ने अपनी पूरी शक्ति से आक्रमण किया। दूसरा दृष्टिकोण यह है कि हनोई के फैसले से ज्यादा खूब और चीन के सहयोग का परिणाम था, जो निरन्तर से घोष्य करना चाहते थे।

जित तरह बीएननामियों के समय का चुनाव बाद-विवाद का विषय बना हुआ है उसी तरह उनके उद्देश्य के बारे में बहुत सारी बातें कही जाती हैं। उनके कुछ उद्देश्य तो स्पष्ट हैं, जैसे एक, कुछ प्रांतों पर कब्जा करना, यह दिखाने के लिए कि वैश्विक गठबंधनों के हाथ में है। दो, दक्षिण बीएननाम के लोगों को हिंस्रता तोड़ देना, यह दिखाकर कि संग्राम की रास्ता उनको बना नहीं सकती। तीन, इस भ्रम को घायल करना कि निरन्तर की बीएननामीकरण की नीति का प्रभाव पड़ रहा है। विशेष तौर से हू को पुरानी राजधानी पर कब्जा करने के लिए अमेरिकियों को नये कम्युनिस्ट आक्रमण का रास्ता है।

अमेरिका के सेक्रेटरी ऑफ स्टेट, जार्ज डब्ल्यू बाल का कहना है कि कुछ मुख्य तमगो पर कम्युनिस्ट कब्जे का युद्ध गहरा अर्थ है। "मे समझता हूँ कि अगर वह कुजांग डू हो पर कब्जा कर लेते हैं तो वहाँ के जल्दी ही एक प्रावित्र-भय उत्पन्न नायक कर देंगे, जिसे बहुत सारे देश जल्दी ही स्वीकार कर लेंगे।" कुछ अमेरिकियों का मान्य यह है कि एक दो महीने पर कब्जा करके वे वाणिज्य-वार्ता आरम्भ करेंगे और उसकी कोशिश होगी कि वे वाणिज्य और संग्राम से-अधिक-से अधिक छूट और रियायत मिल सके। उनका उद्देश्य कम्युनिस्टिक प्रसार रोककर सोवियती करना है।

हनोई का दूसरा उद्देश्य है दक्षिण बीएननाम के नेताओं को डराना और विभू को विरामा। परन्तु ऐसा नहीं हुआ। खतर बहुत दिनों तक यह स्थिति बना रही जो राष्ट्रपति विणु अपने को विभिन्न परिस्थिति में पायेंगे।

राष्ट्रपति निरन्तर की भी कुछ ऐसी ही स्थिति है। अभी अमेरिका में कोई खास प्रतिक्रिया इसलिए नहीं हुई है कि बहुत से अमेरिकन गारे नहीं गये हैं। परन्तु निरन्तर अन्धो तरह जानते हैं कि दक्षिण बीएननाम किसी भी समय हनोई के दबाव के तले कुल्लत पड़ता है और जब ऐसा होने लगेगा तो निरन्तर के सामने कुछ ही विकल्प बाकी रह जायेंगे और उनमें से कोई आश्रय के योग्य नहीं है—

१—अमेरिकी स्वतंत्र सेना का प्रयोग ऐसा करना राष्ट्रपति निरन्तर के लिए राजनीतिक कारगरहया होगी। अमेरिकी सिनेटरी ने यह कहा है कि वे इसका बड़ा विरोध करेंगे और अमेरिकी अडवला की ओर से उत्तर में यह भी कहा गया है कि राष्ट्रपति निरन्तर कभी भी अमेरिकी सैनिकों की बीएननाम नहीं भेजेंगे।

२—वेरिज में वाणिज्य-वार्ता आरम्भ करना : ऐसा करना इस बात को स्वीकार करना होगा कि कम्युनिस्टों का आक्रमण सफल रहा है। और ऐसी वार्ता में हनोई की चीन के कारण अमेरिकी कम-जोर पड़ेंगे। सुझाव अभी संश्लित सेवक ने कहा है कि अब एक वाणिज्य-वार्ता की पहल हनोई नहीं करण, अमेरिका वार्ता शुरू नहीं करेगा।

३—बमबारी जारी रखना : अमेरिकी कब्रिया ने इस और प्रणाल किया है कि उस समय वह उत्तरी बीएननाम पर बमबारी की जाती रहेगी जब तक कम्युनिस्ट केना दक्षिण बीएननाम पर आक्रमण जारी रखती है। परन्तु इस नीति में कुछ खतर है। बमबारी से सन्मया हल नहीं होगी। सिनेटर मैन्सफील्ड ने कहा है कि इस तरह हम अविश्व-



से-अधिक वायुमानों को बरबाद करेंगे, अमेरिकियों को सैरी बगबायेंगे और वार्ता नहीं हो सकेगी। हवाई युद्ध के सभी दोषों के बावजूद वही एक रास्ता है जिस पर निरन्तर टटे रहेंगे, क्योंकि उनके सामने कोई दूसरा रास्ता नहीं है। यह चीन मान पहले यह बहूतर राष्ट्रपति बने थे कि उनके पास एक ऐसी योजना है जिसके द्वारा अमेरिकी दक्षिण पूर्व एशिया के युद्ध से मुक्ति प्राप्त कर सकेंगे, और ऐसा करने में उनकी सितिया पर अंध आशयों और न उनके विज उनसे अलग होगी। अमेरिकी सेना की संख्या कम करने में उन्हें कभी सफलता प्राप्त हुई है। उन्हें दक्षिणी बीएननाम की सेना में विस्थाप की है। साथ ही साथ बीएननामीकरण के कार्यक्रम पर भी उन्हें प्रलोभा है। विष्टे कथाहू मह बाउ एण्ड ही नहीं कि कम्युनिस्ट बीएननामीकरण की नीति को र्थीय रहे हैं और इस प्रकार से थी निरन्तर की जीव हो रही है।

गोकुल माई भट्ट की सरकार से अपील

१९६० में नशाबन्दी के लिए राज-स्वान में सरकार के विरुद्ध बड़े पैमाने पर सर्वोदय कार्यकर्ताओं, ने आन्दोलन किया। इसके प्रभावित होकर सरकार ने घोषणा की थी कि सरकार द्वारा १ अप्रैल १९७२ को नशाबन्दी की घोषणा कर दी जायगी। परन्तु समय आने पर सरकार अपने वाक्य से मुकर गयी।

इससे वहाँ के कार्यकर्ताओं में बड़े बेचैनी फैली। संस्थाओं में सरकार की नीति की आलोचना-प्रस्तावोत्पन्न हुई। बात यहाँ तक पहुँच गयी कि कई नार्ड-बतावियों ने आभारण अनशन की बात कही।

श्री गोकुल माई के मन में जो आग जल रही थी वह अग्रहणीय थी। उन्होंने कार्यकर्ताओं को सम्बोधन देते हुए कहा कि अगर मैं नहीं तक सरकार नशाबन्दी के बारे में कोई निर्णायक कदम नहीं उठाये तो वे अपना आभारण अनशन प्रारम्भ कर देंगे।

सर्वोदय मण्डल दिल्ली प्रदेश : वार्षिक रिपोर्ट

पदव्याप्त

दिल्ली नगर तथा उसके आसपास १४ स्थानों में सर्वोदय मण्डल दिल्ली प्रदेश के तत्कालीन प्रभु २० दिनों की एक पदव्याप्त का आयोजन किया, जिसमें १५ कार्यकर्ताओं तथा ५ कार्यकर्ताओं से सम्पर्क स्थापित किया गया। पदव्याप्त के दौरान १० वार्षिक वार्ता, ७ वार्षिक वार्ताओं के सम्पर्क, १२ युवक गोष्ठियों के द्वारा विचार-प्रचार का काम किया गया।

इस वार्ता में १० भोक्त, डेक, एवं १० सर्वोदय मित्र बने। ७५० रुपये की

साहित्य-बिक्री हुई और ५००० हजार रुपये सामाजिक कार्य में जमा हुए।

सुनाच

सम्भावित तथा नगरनिगम के चुनाव के वक्त सर्वोदय कार्यकर्ताओं ने कई जगह सर्वोदयीय मंच का आयोजन किया, तथा मतदान केन्द्रों पर शक्ति काय की रोहने के लिए कार्यकर्ताओं की द्यूटी बाँटी गयी।

आचार्यकुल

नगर के विभिन्न कानिनों में १२ गोष्ठियाँ की गयीं। विश्वविद्यालय में आचार्यकुल का सम्मेलन किया गया एवं आचार्यकुल समिति का गठन हुआ। १० विद्यार्थी संघों के ५१ सदस्य बने। तरुण-शान्तिसेना

विद्यार्थ-संस्थाओं में तरुण-शान्तिसेना के प्रचार के लिए १९ संघों का आयोजन किया गया। तरुण-शान्तिसेना का गठन एवं तरुण-शान्तिसेना समिति की भी बैठकें भी हुई।

प्रामदान-अभियान

दिल्ली प्रदेश सर्वोदय मण्डल के दो लोक सेवकों ने पत्राव के बखोहर मारु में होनेवाले प्रामदान-अभियान में भाग लिया। —बखल व्यास

आदिवासियों की समस्या के अध्ययन हेतु समिति का गठन

पिछले ६ महीने से छत्ते जिले के आदिवासी लोगों की श्रमिकों का गलत तरीके से हस्तारण, उनके ऊपर लगे हुए बर्ज के बोझ, बेकारी और मजूदरी की दर में कमी, आदि प्रश्नों को लेकर आन्दोलन चल रहा है। मतदान के अवसर पर मजदूरों में भी कितने ऐसे बहिष्कार के पत्र इस क्षेत्र में भाले गये हैं। सर्वोदयीय मंच के अवसर पर उनके द्वारा इस प्रश्न के समाधान की आवश्यकता और उचित तरीके से हल दूँ दे निकालने के लिए सरकार व समाज के अन्य लोगों के समन इस संस्था को सारे का प्रयास किया गया।

इस समस्या का अध्ययन कर उनके सम्बन्ध में जो कुछ भी जानकारी प्राप्त हो, और जो उचित हो वह सरकार व समाज के विरुद्ध लोगों के सम्मुख रखी जाय तथा उनके समाधान के पक्ष में उनके ध्यान में लाये जायें। इस दृष्टि से महा राष्ट्र सर्वोदय मण्डल ने निम्न व्यक्तियों को एक समिति बनायी है जो इस सम्बन्ध में उनकी समस्या का अध्ययन कर अपनी रिपोर्ट दैश करेगी।

- (१) श्री एम० एम० जोशी (पुना)
- (२) श्री रा० कृ० परटील (नागपुर)
- (३) श्री नारायण साहेब देवरे (छत्ते)
- (४) श्री बा० न० रावहल (२) श्री गोविंदराव शिंदे (स्लागिरी)
- (५) श्री गोविंदराव शिंदे इस समिति के अध्यक्ष रहेंगे।

—बहंत बोधरकर

तरुण-शान्तिसेना शिविर की विधिमें परिवर्तन

भारतीय तरुण-शान्तिसेना महाराष्ट्र की ओर से आयोजित प्रोग्रामातीन शिविर व आभेदन पत्र स्वीकार करने की तारीखों में परिवर्तन किया गया है। अब शिविर निम्न तारीखों में होगा।

- (१) नागपुर शिविर, ४ मई से १२ मई '७२
 - (२) कोल्हापुर शिविर १ जून से ७ जून '७२
 - (३) बहावा शिविर २१० जून से १९ जून '७२
- नागपुर में होनेवाले शिविर के लिए आवेदन पत्र देने की अन्तिम तिथि समाप्त हो चुकी है।

कोल्हापुर व बहावा शिविर हेतु २५ अप्रैल तक आवेदन पत्र स्वीकार जिये जायेंगे। शिविर के कार्यक्रम आदि पहले की भाँति ही रहेंगे।

अधिक जानकारी के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें :

पता — बोधरकर, तरुण-शान्तिसेना, गोरुरी, वर्धा (महाराष्ट्र)

पूरे उत्तर प्रदेश में नशाबन्दी लागू की जाय

लखनऊ, १३-४-७२। उत्तर प्रदेश मद्य-विषय परिषद का द्विदिवसीय सम्मेलन कल समाप्त हुआ। सम्मेलन की अध्यक्षता श्री क्षेम कुमार शर्मा ने की और उद्घाटन डा० मुणोत्ता नैयर ने।

प्रदेश के विभिन्न जिलों से आये हुये प्रतिनिधियों ने मुख्य रूप से उत्तराखण्ड में पूर्ण नशाबन्दी, श्वेत शराब पर पूर्ण निषेध, तीर्थ श्रमणों में शराबबन्दी, सोहसंभ में मद्य-निषेध, महिलाओं का योगदान, नशाबन्दी में कानून की स्थिति आदि विषयों पर शुद्ध चर्चा की गयी। सम्मेलन ने सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पारित कर उत्तर प्रदेश सरकार के पास भेजा है। प्रस्ताव के कुछ मुख्य मुद्दे निम्न प्रकार हैं।

“यह सम्मेलन सरकार से विवेक आग्रह करता है कि नशाबन्दी को तुरन्त लागू करके जब तक पूर्ण नशाबन्दी कार्यान्वित नहीं हो जाती जब तक उत्तराखण्ड तथा बिस्फी का काम स्वयं सरकार करे।

“अथवा टिहरी और गढ़वाल में सरकार ने पूर्ण नशाबन्दी घोषित की है लेकिन इस कानून के पारित होने के बाद भी इन जिलों में विदेशी शराब की दुकानें खोली गयी हैं। यह सम्मेलन इसके ऊपर धेद प्रवृत्त करता है और सरकार से अनुरोध करता है कि विदेशी शराब की दुकानों को बन्द करे।

“यह सम्मेलन नशाबन्दी लागू करने में पूर्ण रूप से प्रदेश में सम्यक लागू करने का बोधदायक संकेत से निवेदन करता है। अतः तत्काल क्रमिक मण्डलों और शीर्ष स्थानों पर पूर्ण नशाबन्दी लागू की जाय।

“उत्तराखण्ड के अति पश्चिमी जिलों में नशाबन्दी को जल्द ही पूर्ण नशाबन्दी

के लिए यह सम्मेलन निवेदन करता है और निर्मासित मद्य उद्योगों की सरकार से विचारित करता है :

१—उन जिलों में ऐसे उत्पादक-कारि भेजे जायें जिनका पूर्ण नशाबन्दी से निष्वास हो तथा अपने अन्वितगत जीवन में जनजीवन को प्रभावित कर सकें।

२—एक जिलों में न केवल शराब की दुकानें बन्द की जायें बल्कि पूर्ण मद्य-निषेध लागू हो।

३—विश्वसनीय के सर्टिफिकेट पर ६० वर्ष से ऊपर की आयुवाले एवं अक्षर-बन्दी को ही पीने के लिए परमिट दिये जायें और परमिटवालों की सरकारी स्टोर से ही शराब दिलायी जाय।

“सरकार सभी जिलों में व्यापक क्षेत्र विभाग-नायों की दृष्टि से नशाबन्दी सौकर-कार्य-शेखों की स्थापना करे और सरकारी मद्य-निषेध समितियों के द्वारा इसे सम्पन्न करे।

यह सम्मेलन सरकार से अनुरोध करता है कि नशाबन्दी के विभाजन पर अतिरिक्त प्रविष्टि समाप्ति और मद्य-निषेध के साथ-साथ शराब की मोह-विषय के लिए प्रचार जैसी विनंगति की स्थापना करे।

जिला सुन्दर नहर के जिलों में १ जनवरी, १९७२ से नशाबन्दी के लिए नशाबन्दीय मुक्त किया है। यह सम्मेलन उत्तराखण्ड समर्थन करता है।

जिला मधुरा, जो कि एक तीर्थ-स्थल है वहाँ के मद्य शराबबन्दी आन्दोलन मुक्त करने का रहे हैं—उनका भी यह सम्मेलन समर्थन करता है।

—अतिरिक्त शराबी

पत्र-व्यवहार का पता :

सर्व सेवा सघ, पत्रिका-विभाग
रामपुरा, बाराणसी-१
घार : सर्वसेवा फोन : ९४२१९

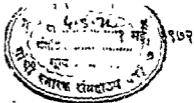
सम्पादक

राममूर्ति



इस अंक में

प्रामादराज के बारे में	
—श्री राममूर्ति	४५५
गंध का नया सूत्रीय	
—सम्पादकीय	४५९
मनुष्य अपने भावों को	
—श्री दादा धर्माधिकारी	४६०
प्रामादराज के बीच की	
गुरदा हो	
—श्री रामनन्द मिश्र	४६२
दृष्टिकोणों का दृष्टिकोण	
—श्री श्यामशासत्र मिश्र	
‘प्रमाद’	४६४
बापुजी का आर्यसमर्पण: एक	
समर्पण	
—श्री नारायण शर्मा	४६६
अनेकिया कोपेनाम में	
कथोरी पर	४६९
अन्य कन्डम	
वाचोपन के समाचार	



सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

आत्म-समर्पण

आत्म-समर्पण का अर्थ है कि जो भी हमारे

वागियों का आत्म-समर्पण : जयप्रकाश जी के उद्गार

इस समय एक अद्भुत घटना हुई है जिससे मेरा दिल-मग्न हुआ है, कुछ भी छुटकारा ही नहीं है, फिर भी दो शब्द इस मौके पर आपसे कहना आवश्यक लगता है।

मे अपनी छोटी बच्ची से मिलना रहा है कि यह दानो बड़ी प्यारा नैने पट रही है ? इ महीने पहले पटना में माधो मिह मृत्यु से मिले थे। उन्होंने कहा कि इस काम को आप उठाएँ तो दम-बौल-भलाग की बात नहीं मभी वागियों का आत्म-समर्पण हो जायेगा और शत्रुत्व घटी का यह अभिप्राय बराबर के लिए समाप्त हो जायेगा। मूरी विश्वास नहीं जय रहा था, पर उन्होंने आपसे कहा और विनोबाजी की की इच्छा थी, इसलिए एक काम के लिए मैं राजी हो गया।

इस काम से प्रथम मैं सरकार के लोगों से बातें की तो बिनी की सेरी बातों पर विचारण नहीं हुआ, पर आज वह सब हुआ। जो कुछ भी हुआ वह ईश्वर की अर्पणा है। हमारे वागियों, अर्थात् कोरमन और उद्दीपितों के लिए मैं आपसे परिचय किया। आप लोगों के हृदय के मेरे बदन, मासुम मही। कोई भी दलघान दिल से न बच होगा है और न अर्पणा होता है। सबमें धरमार्थ और बुवाई होगी ही है। जो मन्व है उसके अन्तर भी दुर्पद का अव-धोय मन्वा रहेगा है। इस तरह सब में परमात्मा है, ईश्वर है, यह श्रुतवक से सिद्ध है। जैसा वाचा ने कहा है कि हमारे कामों काई शक्त पट्टी पर बने गये है, दानों के कोई

शक्त नहीं है, इनकी पट्टी ही शक्त है। इसको बरम देना है। जब मदल देने का सामर्थ्य विमय है ? भगवान में है, ईश्वर में है। वह वागों के और हमारे हृदय में बैठा हुआ है। हमारे जैसे लोग, हमारे मित्र लोग तो निमित्त मात्र हैं—जैसे भगवान कृष्ण ने अर्जुन से कहा था—तू निमित्त मात्र है। ये सब तो भर चुके हैं। पैरी ही हम सब निमित्त मात्र हैं लेकिन काम तो बहो कर रहा है। अगर यह परमात्मा की इच्छा है तो मैं समझता हूँ कि इन सारे इनके का कल्याण होनेवाला है। शायद एक नया इतिहास बननेवाला है और आप सब इतिहास बनानेवाले हैं।

.. मे आपके समरा बचनबद्ध हूँ कि जो भी हमारी शक्ति है, हमारे मित्रों की शक्ति है, वह सब आपकी सेवा में है। आपने हमारे सामने आत्म-समर्पण किया है। मैंने वागी नेताओं से बातें की, मुझे ऐसा लगा कि वे विचलित सरल हैं, बालक के समान हैं।

अब हमारे बच्चों पर एक मोक्ष पड़ गया है, आपके आत्म-समर्पण का। हम तो दबे का रहे हैं। उसको हम उठा सकेंगे या नहीं ? हम क्या उठावेंगे ? भगवान की मदद होगी, और वह मदद करेगा। अगर वह चाहेगा है कि वह ही और उसने हमें निमित्त बनाया है तो हम सब लोगों को वह शक्ति देगा।

युद्ध से उत्पन्न मानवीय समस्या

एग्नाटक जी ।

वाइमेर सेक्टर से निरुध्द का जो इलाका हमारी चीजों में जीता है उसके करीब एक लाख लोगों की समस्या हमारे देश के सामने है। ये लोग आज बिलकुल दुविधा का जीवन बसर कर रहे हैं। उनका जीवन अस्त-व्यस्त हो रहा है या हो गया है। इस पर सरकार का जवाब मैं कुछ भी ध्यान नहीं दिया तो हमारा देश मानवीय मूल्योंवाला नहीं रहना सकेगा। इन एक लाख लोगों की सुरक्षा, खेती, स्वास्थ्य, रोजगार, जीवन तथा निवास की बहुत बड़ी समस्या है। इस इसके से मुश्किलान तो पाकिस्तान बने गये या भगाने गये, अगर हिन्दू जिनमें अधिकतर अनुभूतित जातिवर्ग के लोग—राजपूत, गाढ़ेवरी, ब्राह्मण हैं, वे यह गये हैं तथा वाइमेर जिले में चले आये हैं। अपने इलाके में जो लोग बने आये हैं कम-से-कम उनकी संख्या ५० हजार होगी। ये लोग अतिस्तर रेती के टीलों पर मासुली बहारा बनाकर रह रहे हैं। मास कुच ही लोग जो अनुभूतित जातिवर्ग के नहीं हैं वे सहर्षों में रहने हैं। इन सबों का जीवन अनिश्चित है। इनमें अधिस्तर लोग के पास धन नहीं है, जो बैंक-बैंडे जीवन की अकलत पूरी कर सके। न अन्तर् तोहरी मित्रता है और न बच्चों को पढ़ाने के लिए स्कूलों में रातिसा मिलता है, न गिर छिपाने के लिए छपर है। उनपर कुछ सामान दखर है वो कुछ उखर। सरकारी सहायता तो कभी एक आरम्भ ही नहीं हुई है। अगर वह होगी भी तो सरकारी के पास इतनी मर्यादनी नहीं है।

यह सहायता चली खी यह भी कच तक चलेगी ?

हमारे देश की जनता ने बिलनी अधिक सहानुभूति बांगला देश के शरणार्थियों के प्रति दिखायी अपनी हो कम सहानुभूति इन जीते हुए इलाके के लोगों के साथ है। पहले तो सरकार ने इन लोगों को आने दिया और अपने जैसा बना। अगर भव बड़ा जाता है कि ये लोग विदेशी हैं और अपने इलाके में बापस चले जायें। ये विदेशी कौन हैं ? ये जग से पीड़ित और देश के बंटवारे के शिकार, हमारे ही देश का जनता है। सरकार ने पाकिस्तान से आनेवाले हिन्दुओं को १९७१ तक जो सहूलियतें तथा मान्यताएँ दी हैं वे इनके लिए बन्द हैं। इन लोगों ने पाकिस्तान में अन्तर्गतवाता, अगुसिउत, बट्ठभरा जीवन सहा है। १९६९ में युद्ध के बाद जो लोग यहाँ से यहाँ चले गये उनमें इनकी जमीन, पकान, छानि पर जबरदस्ती सम्भे का जो अन्वहार हुआ है या कभी पाकिस्तान के सरहदी इलाके से जो घमासान आ रहे हैं, तथा बांगला देश में पाकिस्तानी फौज ने जो कुछ किया वसके उन्हें पाकिस्तान में अपने जीवन का अतिराम खतरे में सीपता है। ये लोग हर हानत में बापस जाना नहीं चाहते। क्योंकि ये जानते हैं कि एक दिन यह अपना पाकिस्तान को दे दिया जानया, उसलिए ये लोग यहाँ रहकर नार्थिक अधिस्तरों की माँग कर रहे हैं। इससे उन्हें इस देश में सब सहूलियतें मिल जायेंगी।

ये लोग बहादुर और स्वाभिमानी हैं। हमारी चीज इनको मदद के बिना

रिखी भी हासिल में गिरा का एतना बड़ा इलाका अपने कब्जे में नहीं कर सकती थी। इनकी निष्ठा तथा देव-भक्ति दिखी भी तरह हमसे कम नहीं है। ऐसे बहादुर लोग हमारी सीमा पर रहेंगे तो हमारे राष्ट्र को सीमाएँ सुरक्षित रहेंगी। ये लोग मानते हैं कि स्थानीय, अतिरगत, राबनीतिक और साम्प्रदायिक दृष्टि से तथा सरकार की दुलभुन नीति की वजह से इन्हें नार्थिक अधिस्तर नहीं दिया जाता। ऐसे बहादुर लोग जिनमें युद्ध के समय हमसे कन्धे-कन्धों नितावर मदद की, उनके जीवन में एकट देना करना या विलबाइ करना हमारी मान में नहीं होगी। यदि इस समस्या पर हमारी सरकार तथा देश ने ध्यान नहीं दिया तो इन बोहरी नीतिवाले पट्टनमें तथा इन लोगों की तरफ से अगर आन्त-सन बला, त्रिस्त्री तैयारियाँ चल रही हैं, तो समस्या गम्भीर हो जायगी।

इस जीते हुए इलाके में बचे लोगों के भी जीवन की बहुत समस्याएँ हैं। पाकिस्तानी फौज हठी पर छारा रिनाई चल गया, जिससे जमीन आदि की कुछ पानकारी नहीं मिल रही है। इससे बड़ी दिवतों आ रही हैं। यहाँ की लोगों के स्वास्थ्य, खेती, मजदूरी, तोहरी, कसखी आदि की बहुत बड़ी दिवतों हैं, इस पर भी ध्यान देना चाहिए।

इस इलाके के लोगों को भारत में बसना होगा, या जीते हुए इलाके को अपने सीमा-विशेषों के अन्तर निवासा होगा। जीते हुए इलाके को अपने में निवासा हर हाजत में सम्भव नहीं है। बांगला देश में रिदा गया तरनहूर बड़ी एक हथ भूने गयी है। इसलिए इन लोगों को जबरदस्ती बापस पाकिस्तान भेजना उचित नहीं है। क्योंकि यह देश के दिने गये बंटवारे से सम्बन्धित युद्ध से उत्पन्न एक मानवीय समस्या है। इसलिए हम देश की रिखी अन्य समस्या पर बिना ध्यान देते हैं उनका ध्यान हमें इस समस्या पर भी देना होगा। —मनमोहन बजाज

पन्द्रह शताब्दियाँ

बाब अबरार की ही लेकिन सही है कि एक गौर पन्द्रह शताब्दियों का जीवन एक माय की सजा है। और, ऐसे गौर की है जितना ध्यान का जीवन देखकर कहा जा सकता है कि इनके लिए सजा-जिर्जा जैसे चीतों ही नहीं। वे पन्द्रह सो वर्ष पहिले जहाँ वे वही आरंभ की है। दोनों तरह के गौर हर राज्य, हर जिले, मैं मोड़र हैं।

उपार विहार का एक गाँव है। कई दुष्टियों से बहुत साम गाँव है। इन गाँव में पन्द्रह शताब्दियों के बीच हुए विकास के बिन्दु साफ-साफ देखे जा सकते हैं। प्राचीन वर्षवाद देखना ही तो गाँव के दो रास्तों पर टगो थैटें देख खीरिए जितपर लिखा हुआ है : 'शरण टोना मार्ग' 'हरजन टोना मार्ग'। मध्ययुग का सामन्तवाद देखना ही तो देखिए गाँवों को जिनके पास सैन्यो कीये मूमि है और देखिए उनके मजदूरों, नौकरों, दासों और बँडारियों को जो अपने स्वामियों की सेवा में बाध भी बर्द्ध-गुनामों को जिन्दगी बिता रहे हैं। इस मध्ययुगीन सामन्तवाद के बीच पर आगे आनुवंशिक पूर्वोदात्त का देख लीरिए। एक दर्जन दुने, लार्थों की पुँजी, उनके हीरेताना कारोबार, तथा पूर कीर गुनाफे से मजदूरानों टोना। यह औद्योगिक पूर्वोदात्त नहीं है जो उदारता ब्रह्मांड है, बल्कि विपुल पुँजी का विराट है जो योग्य करता है और बँडे बँडे पर की बमार्द से भर देता है। इनके बाद देखिए बरातपत्र के बाद का, समतापीत सरकारदार को 'कल्याण-वाद, के रूप में प्रकट हुआ है। पुनिए की बोधी, देशीकोन, सहकारी समिति, आगजान, परिवार नियोजन केन्द्र, राष्ट्रीय परिवार नियंत्रण का साध-बीज-भोदाय प्रादि उर सरकारों के प्रयास हे जो वेध की प्रतिष्ठा, पूर्वुष और प्रजाय से प्रान्त हुए है। गाँव के कई लोगों ने सरकार में जैसे स्थान प्राप्त कर लिये हैं। कोई एक-एक ५० है, कोई राय सरकार का निमित्तर है, तो कोई किसी सरकार का निमित्तर है। वे सब बान्-डेटे समानवाद के प्रतिनिधि हैं योंकि सब ने बर्धिकार के बिने में समानता का ही नारा मगाकर प्रवेश दिया है। इनका व्यवसाय इन बात का प्रयास है कि इन को जमाने में अचीर की परीर की किन्ती जितना है, और वैभव रिश तरह स्थान का प्रतीक बन गया है। यह हमारे देश की राजनीति का कीर्णक है कि अपने हमारे अचीरों को समानकारी बना दिया। जितना बड़ा हुए-नियंत्रित हुआ है। अब किश दल का जीवन है जो समानकारी में ही ?

अब किसी सामाजिक प्रतिस्पर्धकार को भारतीय गाँवों का पिछले डेढ़ हजार वर्षों का इतिहास लिखना ही तो वर्षवाद के लेकर समाजवाद तक उठे इस गाँव में एक सीधी रेखा दिखायी देगी जिसके सहारे वह एक के बाद दूसरे कठान्दी को कासती से चिन्नित कर सकता है। उता और समन्त का ऐसा समय उठे और कहाँ मिलेगा ? इन समय पर समाज की सींग धारा अब नहीं रह गयी है, वह बज को चुप हो चुकी है। लेकिन पन्डे उतरा नाम लेते हैं, और जिवेगो का महात्म्य बताकर यथमानों से दसिगा लेते हैं। उता, समन्त, और समाजवाद की जिवेगो पर अजता यद्वापूर्वक अपने कोठों की मँट चनायी जा रही है।

हम कहते हैं कि हमें इन गाँवों को बदलना है। नँडे ? महात्म्यवादी सहारे से बदलना चाहता है। साम्यवादी प्रहार करता है। सरकार अपने समाजवाद का सहारा लेती है। अर्थशास्त्र का रास्ता सत्यापन का है—सही विचार का उदाहरण, बुराई से बचकर, अनीति का प्रतिहार। सत्यापन की इतनी सम्पूर्ण क्षमिता की ही हो सकती है, बिना संघा, दल का सरकार क्षमिता जतना की ही हो सकती है, बिना संघा, दल का सरकार नहीं। अजता की समन्त घमिन्त के विवाय दूसरी कोई क्षमिता नहीं है जो पन्द्रह शताब्दियों को एक साथ मिटाकर नयी शताब्दी का आरम्भ कर सके। यह क्षमिता क्या क्षमिणी, कौसे जालेगी ?

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

... आपसे भी हमारी कुछ अपेक्षा है, आशा और उम्मीद है इनीलियर मीने आपको अपने परिवार में दाखिल किया है। इस परिवार के सबसे सुगुन विनोयाजी हैं। इस पद पर विठाय है—परिवार के शुक्रिया के आसन पर। उस हेमिथत से मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि आपने जो प्रतिज्ञा की है उसकी आप भूलेंगे नहीं। जिस अपने को आज आपने पढ़ा है उसे छोड़ेंगे नहीं। आप जेल में पढ़ना-लिखना सीरिये। जो पढ़ना-लिखा मिले उससे आप मदद लें। जहाँ भी आप रहें मजत करें, कीर्तन करें, प्रार्थना करें। जेल के नियमों के मातहत सोने के पहले कीर्तन कर लिया करें। उससे हृदय के ऊपर असर होता है। आपका जेल में रहना विकास हो सके कि जब आप जेल से बाहर आएँ तब समाज की सेवा कर सकें।

मैं समझता हूँ कि दुनिया के इतिहास में इस प्रकार का कोई उदाहरण नहीं है। अगर सरकारवालों ने हमारी बात सुनी और मीन किया, तो बँडे-बँडे नेता लोग तो आ ही गये धारी लोग अपने-आप ही आ जायेंगे।

(१४ अप्रैल को पगारा टैम पर हाकुओं के आन-समर्पण के पहले श्री जयप्रकाश नारायण ट्राय दिने गये भाषण से)

गुलाम-युद्ध । सोमवार, १ मई, १९५३

आर्थिक और सामाजिक भेदों को मिटाने

■ काका कालेलकर

देश का धन बढ़ा वो उसका साथ
 देश के सब लोगों को समोवेश मिलेगा
 ही। अच्छे रास्ते हुए, संक्रामक रोग बच
 हुए, हर जगह स्वच्छ पानी पुरा-मूला
 मिनरने लगा वो ऐसा साथ पदापात्र रहित
 सबको मिलता है। यह मिनता ही
 चाहिए। लेकिन इतने घर से आज के
 समाज को खाली नहीं होता, न होना
 चाहिए। आज का युग बढ़ता है कि देश
 की सभ्यता का साथ सबको एव-सा
 मिलना चाहिए। एक-सा मिनने यह तो
 आसानी है ही लेकिन यह आसान नहीं है।
 इसलिए आज की दुनिया बढ़ती है कि
 पानी और मरीच की आसानी से एक से
 बीस के अनुपात से अधिक पढ़ें नहीं होना
 चाहिए। पानी अगर किसी मरीच मजदूर
 को दित ना एक दरवा सतक्याइ या
 मजदूरी मिलती है वो बड़े-बड़े प्रजीदारों
 को, बल-बाराधनों के मालिकों को,
 प्रोफेसर्स को, विद्यालय के विद्यार्थियों को
 और स्वराज्य सरकार के मिनिरटर्स को
 तो कुछ मिलाकर दैनिक २-० रुपये से
 अधिक तकियाह नहीं मिलनी चाहिए।
 इसके उल्टा अगर राष्ट्रपति को महोदय के
 बीस हजार रुपये मिनते हो वो सामुची
 मजदूर को महीने के एक हजार रुपये
 मिनते चाहिए। यह ही सच मरीचो
 हटाने का और समाजता स्थापित करने
 का द्वात्र। आजकल मजदूरों की आस-
 दानी बढ़ाने की ओर उद्योगपतियों की
 आसदानी पदाने की बातें चलन होती हैं।
 लेकिन राष्ट्रपति अथवा राज्यपाल हमारे
 सोच-विचार मिनिरटर्स की कलक्यात
 मजदूरों की मजदूरी से बीस गुने से अधिक
 न हो, इसका आन्दोलन नहीं भी हमको
 देना ना गुना नहीं है। "मैं तो अपनी
 आसदानी अधिक की बच नहीं करूँगा,
 ऐसा बड़े-बड़ों की मरीच-मन्त्रि विन्नी
 के धन से अगर उल्लन नहीं कर सकेंगे।"

"मरीचों को और मजदूरों को आज
 जो मिनता है उससे गोड़ा अधिक मिनने,
 सबको सार्वत्रिक मिनता मिनने और कोई
 भी बेकार न रहे" यह आदर्श अच्छा है।
 लेकिन इसके किसी को खलिय नहीं
 मिलेगा। मरीच लोग, अनाइ लोग,
 साधार और दुर्देवी लोग सब हुए रहते
 हैं। उनमें स्वाभिमान नहीं रहता। मिनता
 माँगने की शीतल उन पर आती है। इस
 विचार को दूर करना चाहिए। समाज
 के से स्थापित नहीं, किन्तु समाज के से
 पटक हैं, राज्य पसाने का अधिहार उनका
 है। कोई उनको बढ़ाना नहीं उचता,
 मरीच नहीं उचता, एतल स्वाभिमान और
 उनका पालियनन उनसे का जाय, इसके
 लिए जरूरी सामाजिक प्रविष्टा भी
 उनको मिलनी चाहिए। यह सब सब हो
 सता है जब राष्ट्र का पालियन ऊँचा
 होता है और राष्ट्र के देश छादनी से
 रहने के आनी होते हैं। निचले लोगों की
 आसदानी और प्रविष्टा बड़े और ऊपर
 के लोगों की आसदानी और प्रविष्टा बच
 ही जाय, ये बकोशेय धनपतियों का और
 छादनी से यह सब राष्ट्र की उन्नति होगी।

मरीच और छोटी लोगों के बीच का
 अन्धिय अन्तर बच हो, एतल प्रत्येक दोनो
 विदे से होते ही चाहिए। लेकिन इसके लिए
 अदलत जरूरी है—सामाजिक मन्त्रि। कोई
 भी मन्त्रि दुष्टरी जाति से बच का पनाइ
 प्रविष्टिय न माने जाय। एक प्रमदमात्र
 दुष्टरी प्रमदमात्र से श्रेष्ठ होने का दावा
 न करे। राज्यपती, मंत्री और अदर
 सामान्य मालिकों से अदने को श्रेष्ठ न
 माने, और मन्त्रियों लोगों की गुलाबद
 करने का (कोई और दरमनन कोरी
 ना) रिवाज समाज में निव माना जाय,
 लकी जाकर देश में मन्त्रि का, प्रमदमा
 का और मन्त्रियान का वादुपमन
 स्थापित होना। छोटे-बड़े मरवाही बनें।

पारी लोग राज्यपती मिनिरटर्स की दुबलन
 बढाने की हद तरह की कोषित करते
 रहते हैं। इसमें उनकी ही दृष्टियां रहनी
 हैं। (१) मिनिरटर्स को युत करना,
 जिससे वे "सरकारी मीचों को बर्तक्य-
 विष्टा और कुशलता अच्छी है या नहीं
 इसकी चौरी न करें। और (२) अनाइ
 पर भी प्रभाव पहने के जेता बाबन रहे।

युत के साथ बढ़ना बढ़ता है कि
 हमारा छात्र समाज उच-नीच के भेद-
 भाव का दलना जारी बच गया है कि जिस
 तरह घर के दुबुनों की ओर बूढ़ों की
 (परपरातर्ण आदि के) पूजा होती है
 वैसी ही पूजा की जायेता (१) प्रमदस्था
 के आचार्य (२) राज्यसंस्था के अमनदार
 और पनी तथा (३) बल-बाराधनों के
 मन्त्रियान और मानिक करते ही रहते
 हैं। यह रिवाज हमारी संस्कृति का एक
 अंग ही हो गया है। इसके पीछे सब
 तरह की अमान्यताएँ (उच-नीच-मानना)
 दित जाती है और मन्त्रियान का आदर्श
 बीया हो जाय है।

बड़ों को आदर दिवाने के लिए हाथ
 जुड़े, विद जरा-सा हुए जाय, एही तक
 का रीय है। किन्तु अपनी मन्त्रा और
 गु-गुता का प्रदर्शन बाने के लिए बमर
 को दलना और अमान्यता करना, या
 अमान्य पर साक्षात् मन्त्रियान करना, यह
 छात्र प्रसार पाई मिनता गुलाता, मन्त्र-
 माय और प्रमदमात्र बने न हो, इस
 विचार को स्थापित करना और तोड़ ही
 देना चाहिए। एक युग के लिए ये रिवाज
 पितृपुत्र भाव से नहीं है। बालक को देना
 बढ़ना, उनका पालनपन करना, उन्हें
 युत देकर उगे दलना बढ़ना, यह छात्र
 विचार छात्र के छात्र को विद्युपुत्र
 अमान्य होना चाहिए। बचों में बड़ों के
 प्रति आदर दिवाने की संस्कारिता और
 मन्त्रता होती ही चाहिए। लेकिन उनमें
 किन्तु बमर गुलाता, अमान्य विद बड़ों के
 पनी पर उन्नता अदर अदरों की रिवाज
 ऊँचे मरी मिनते चाहिए। ●

सहासा अभियान : विभिन्न दृष्टिकोण

सहस्राब्दी आन्दोलन के अन्तर्गत जो समाज करके वास्तु होने हुए अनेक लोग चारणलक्षों में बढ़ने से, उनमें से ५ लोगों से इनके अन्तर्गत की फलपुत्रि तथा उनके दृष्टिकोण जानने की दृष्टि से बावकील की। हमें उनके जो कुछ भी जानकारी प्राप्त हुई वह फलपुत्रि के सामने हम प्रस्तुत कर रहे हैं। हममें क्या देखेंगे कि कोई व्यक्ति जलवायवी आधारी नहीं मिलेगी, परन्तु एक चित्र जो ध्यान में ला ही जायेगा।

1—एक महीने के अभियान में लगभग १२०० बीघा भूमि बँटी।

2—बिहार सर्वोच्च न्याय के ४ ध्वजियों की एक समिति गठित की है जो सामाजिक समिति के समिधान, पुनर्गठन, वसाहिकारियों के पुनर्गठन आदि के सम्बन्ध में निर्णय लेगी। समिति के प्रमुख मंत्री की विद्यालयाध्यक्षों ने तब-मुजुर होकर सेवा करने का निर्णय लिया। समिति के अध्यक्ष—कर्मवीर वैद्यनाथ राय, योगेश्वर राय, धनराज राय, और विद्यालयाध्यक्ष।

धीमधी सुख बच : मैं पूरे अभियान की जानकारी नहीं दे सकूँगी। एक वर्षाण (गामपुर) के दो गाँवों में काम किया। इन गाँवों में भूदान की जमीन पूरा मिली हुई है, परन्तु बँटी नहीं है। २० वर्ष पूर्व इन में प्रायः सभी जगह नहीं बँटी इसलिए लोगों को विचारण की कि भूदान की जमीन बँटी नहीं मिली, विद्यालयाध्यक्षों के आन्दोलन पर हुआ हुआ। मैंने जिन दो गाँवों में काम किया उनमें ४० बागाँवों से प्रायः बीघा-बद्धा की १२ बीघे जमीन १२ बागाँवों में बँटी लगी। पूरे प्रखण्ड में १४० बीघे जमीन बँटी। २०० बीघे, १००० बीघे जमीन, उपनेरने लोगों के कहा कि भूदान की जमीन प्राप्त लोगों ने तो भी मिलित उनका बँटवारा करने की अतिशय आशा की नहीं है। काय लोग

भूदान की जमीन बँटिए। १००० बीघे-जाने तो १९ बीघे जमीन बँटी दी।

समाजों में बहुत नहीं जाती। मजदूर लोग समाजों में जग्राहक बने हैं। एक मजदूर ने कहा, "आप जा रही हैं, हमें जमीन तो मिली नहीं।" एक बहन ने तो कहा, 'बहनजी। हमें तो सरास जमीन मिली है, हम उनमें बँटेंगे खेती करेंगे? अच्छी जमीन दिना दीजिए न।" और बहुरार रोने लगी।

मैंने देश के अन्य भागों में भी देखा है, उस अनुभव के आधार पर कहूँगी कि यहाँ भी जनता धन्दगी है, अन्य जगहों की तरह नटोरणा हमें नहीं है। और साथ ही इसमें भवन विधानों की शक्ति ग्यारा है। भूमि तो एक ही बात ऐसी नहीं मिला जो करने भूदान के सफल से मुक्त राय। पुराने सफल पर टिके रहना, जग्राहक पालन करना, एक निलक्षण बात है। पहले यह बात समझ में नहीं आती थी कि सहस्राब्दी पर देना और क्यों देना चाहिए, अगर यहाँ के लोगों से ये भी मानवीय गुण हैं उनके कारण लगता है कि सहस्राब्दी का पुनर्गठन हो रहा है, और यहाँ के काम को पूरा करना चाहिए। धी धीरे प्राईने तो अपनी बात सुनारी कि देश के अच्छे समर्थ लोगों की यहाँ ३ वर्ष का समय देना चाहिए।

इस क्षेत्र में अग्रक विद्यमान है। गाँवों में ७४ प्रतिशत मजदूर और २५ प्रतिशत मजदूर हैं। योगेश्वर से जग्राहक है और देवारी भी लूक है।

जो आन्दोलन बँट : उत्तर बिहार की जनता सरल हृदय की है। सानो का सूर्य भाग्य प्रकार हुआ है। विनोदों के लिए लोगों के मन में धन्दा है। धर्म और मज्जा के बारे में भी धन्दा है। इस बन्दू से अन्य भागों के बनिबत यहाँ काम करना बच नहीं है। जमीन के

विषय मन में बोध तो है, परन्तु अन्य भागों की सुचना में कम।

पहले कार्यकर्ता कम हैं—महिला के बराबर ही कह सकते हैं। परन्तु इस अन्तर्गत ये वह सम्भवता प्रकट हुई कि जनता में ये कार्यकर्ता मिल सकते हैं। इसमें समय लगेगा, उनके प्रशिक्षण का प्रयत्न करना होगा।

यहाँ सहस्राब्दी में क्या शेर्य है, उसको ठगना नहीं होने देना चाहिए। कुछ समय क्षेत्र लिये जायें और जिनके के योग प्राप्त हैं वहाँ आन्दोलन बनाने का प्रयत्न हो। जमीन के नये प्रकट खड़े हुए हैं। सहस्राब्दी के प्रयास में और हमारी प्रकिया में क्या लाभ होगा? सम्भवतः हम 'सम अन्वितेयन' में भूमि के खदान पर चर्चा करेंगे।

धी धी ३०० पाटनकर : काम की दृष्टि बदलती चाहिए। काली अच्छी लैवारी भी मिलित एथानिक लोगों के कारण और सर्वोत्तम में जमीने के कारण धार जितना काम हुआ उसके ५ गुना जग्राहक निर्णयित निरन्तर सारती थी। इस अभियान का जो अन्तर्गत विद्यालय नबद आया वह यह कि सो-सहित का यहाँ-यहाँ दर्शन होने लगा है। मैं तो, धुरकी-धुरक प्रखण्ड में था। यहाँ ३ गाँवियों का अच्छा सहकार प्राप्त हुआ—दुधिया, अम्नाक, नवपुर, विद्यालय और दाहल से गाँवों शक्तिवादी सारती हैं कि साम-स्वराज्य अच्छी चीज है और इसके लिए प्रयास करना चाहिए।

मैं तो गाँव को गिरा की दृष्टि से भी शीघ्रता रहा। मैंने देखा कि विद्यालय और अन्य विद्यालय लोग काम की प्रचलित विद्या की व केवल निरर्थक मानते हैं, बल्कि हानिकारक भी मानते हैं। सब यही गिरा शुरू करने को उल्लूक है। अगर तथ्य-मान्यताओं और आचार्य-गुरु को मान्यताओं की स्थापना में सारा सही तो न केवल सुदृष्ट का काम माना होगा, बल्कि प्रसन्न-समाज में नयी विद्या—आन्दोलन की

विद्या की शुरुआत हो सकेगी। जाहिर है कि छोटी विद्या के बिना सामन्तराज का काम नहीं हो सकता।

उत्थियों के मानव सम्राट बुलायी और भूतनाथी की शारदा के जन्मदा रहा है। अतः अभी तो उसमें सामन्तराज की प्रबन्ध आजादी का पैदा करना होगा, उसको जगाना होगा। जगह-जगह लोग धारण गाँव की माँग करते हैं ताकि वे मैरिज और उत्साहित हो सकें। यह माँग उचित भले ही न हो फिर भी धारणक लगती है। इसलिए नमून यवाने का प्रबल शुरू होगा चाहे, भले ही हम यह न करें, पर गाँव के लोग तो कर ही करते हैं।

आगे में थाना पूरा समय तो सह-रवा में नही दूँगा लेकिन करनगाव (वैजल) के विद्यालयों के साथ गद-रसा के कार्य का अनुकूल राशने का प्रयास करना करना।

श्री० गोरा : सहायता का कार्य प्रबन्ध ढंग से ही रहा है। मैं उसकी प्रशंसा करता हूँ। जो कुछ भी नहीं हो रहा है उसमें धरते करने की आवश्यकता मैं महसूस नहीं करता, लेकिन मैं एक चीज उल्लेख करना चाहता हूँ। उसमें राज-नीति को जोड़ा जाना। जब मैं राजनीति करता हूँ तो मेरा मतलब हमेशा राज-नीति से नहीं है। सरकार अच्छी हो, काम-गुण बने, हमको हम कोटिगत करें। यह हमारा काम है कि जब हम सरकार का इस्तेमाल करते हैं, सरकार को आत्म-प्रबल मानते हैं, तो हमारा बर्तन्य है कि वह सरकार अच्छी बने।

श्री गीरेन्द्र शर्मा जी हम का तो मैं सहमत हूँ कि सामन्तराज हमारा लक्ष्य नहीं है, लक्ष्य तो सामन्तराज की स्थापना है। सुविचारण तो प्राथमिक चीज है।

शुकी निर्मला देवनाथे : विचारण लोगों से लोको को विभिन्न अनुभव करते हैं—यह स्वाभाविक है, परन्तु सामन्तराज पर कार्यकर्ताओं का क्या करना या जगह

बढ़ा है, उनमें विचारण जगह है। अभिमान के अन्तिम ४-५ दिनों में तो काम काफी अच्छी गति से होने लगा था और कुछ लोग चाहते थे कि अभिमान को छोड़ो श्रद्धा बढ़ा दी जाय। २५-२० सादी नहीं के काम के लिए अभी तक गये हैं। आगे काम का क्या स्वरूप हो इसके लिए हम कुछ लोग परवहार में धारा के साथ बैठकर चर्चा करते निरवय करने।

हम अभिमान में हमने माना था कि १००० बीघे से ५००० बीघे तक जमीन बँटेगी। १२०० बीघा जमीन बँट रही। इसमें प्रश्न की सुविधा भी शामिल है। हम यह मानते हैं कि यदि पूर्व विचारों अच्छी हुई होती तो २ से ५ गुना अधिक परिणाम उत्पन्न होता। चुनाव के कारण भी बाधा आये। क्विज की कमी नहीं थी, लेकिन मानना चाहिए कि पार्टी अच्छी क्विज हममें सभी को। विचार के बाहर के प्रश्नों से काफी अच्छे लोग आये थे। सहायता की ओर लोकोतिक विचारित है जहाँ आवश्यकता की बहुत अनु-विद्या है। धाने पाग बाहर के नाम पर एक चीज थी, जिसे अभिमान के लिए महाराष्ट्र लोकोत्मक बनाने की है।

१८ अक्टूबर की १२० गाँवों में हमारा टूर। कई लोगों से मेरे इच्छे विवरण नहीं प्राप्त हो सका था। 'राजनीति' के लिए तीन व्यक्तियों को एक समिति बनाई जिसका काम है—बैठी हुई कमीशन पर चर्चा दिनांक। अभी तक तो साग काम एक प्रकार से केन्द्रित रूप से होना रहा है लेकिन अब काम को विस्तारित करने की योजना बन रही है। सभी प्रसक्तों में सर्व प्रसक्त समितियाँ बनाई हैं और इन्हीं समितियों के माध्यम से कार्य के कार्य हो रहे। इन समितियों से काफी नवरुपक आये हैं।

कहिलो प्रसक्त में ४७ बीघे जमीन बँटी, परन्तु क्विज की गती कि सभी गाँवों में कमीशन बँटे। सभी गाँवों में अनु-न-मुद्रा काम प्रचार हुआ। एक प्रकार की उत्पन्न समिति बनो है वह काफी

अच्छी है। इस समिति ने प्रसक्त के बचे हुए गाँवों में पुष्टि-कार्य पूरा करने का निश्चय किया है। हम यह चरने हैं कि यहिलो प्रसक्त का प्रयोग चला पूरा हुआ। इस प्रसक्त में व्यापारिक व्यवस्था भी हुआ है। कई लोगों ने राजनीति-पार्टी से अलग होने का विचार किया है।

जिन प्रसक्तों में बराबर काम होना रहा है, उनमें तो अभिमान के दौरान काम हुआ ही, परन्तु उन प्रसक्तों में भी अच्छा काम हुआ जहाँ दली अभिमान में नये सिरे से काम आरम्भ हुआ। जैसे सभी प्रसक्तों में आचार्य-मुद्रा और सारण-सामन्तराज की एक-एक इकाई को बना ही थी।

जिनके के विचारों में योजना बनायी है कि वे विद्यालयों में काम करेंगे, गाँवों में क्या करेंगे और जिन में काम करेंगे।

एक अभिमान के विचारितों में जो नये सुझाव आये, उन्होंने बहुत अच्छा काम किया। कुछ जगहों में परिणाम भी काफी और लोको भी प्रचलन अच्छा काम किया। सहायता सहाय में भी हमारा का अच्छा काम हुआ।

हम अभिमान का एक यज्ञ सामन्तराज भारतीयों के विचारों की दृष्टि से हुआ है।

श्री कृष्णराज शेट्या : २६ अक्टूबर को आचार्य-मुद्रा की एक बैठक सहायता में हुई। निम्ना, हमारा और जोरन में क्विज की दृष्टि से आचार्य-मुद्रा में सभी लिए सर्वोत्तम में एक आचार्य-मुद्रा लक्ष्य विद्या विभाग से प्राप्त करेंगे। विद्या में क्विज की दृष्टि से भी सर्वोत्तम नये आये हैं। (१) विद्या क्विज-कार्यकर्ताओं में १५ युवा की साहायता प्रचारित है। (२) जिनमें अनु-न-मुद्रा न आयेगा, उन्हें या प्रो-५ भी आये हैं। (३) आगे आगे विद्यालय को आचार्य विद्यालय बनाने की कोशिश करेंगे। विचारों में एक प्रकार के प्रयोग करने का निश्चय किया है। (४) हमारा क्विज की दृष्टि से तीन प्रसक्तों में जिनमें कार्य करते हैं। विचारों में आना निश्चय बनाया। ये तीन प्रसक्त हैं—(१) क्विज (२) सहायता (३)

महिषी। वृत्त में संयोजन की दृष्टि से गिनाई का ३-४ दिन का एक त्रिविध होगा।

जिना अधिमान त्रिविध में निरवयव किया है : (१) अधिमान के त्रिविधयण, उत्तरायण और सम्भासनाकी की दृष्टि से एक रिपोर्ट सेक्टर की त्रार को सर्वोदय-सम्मेलन के पहले प्रकाशन हो।

फॉनोड्रा की दृष्टि से निम्न प्रकार से सोचा गया : (१) बंटी यमीन पर कच्चा, कम्प्लेक्स और प्रमाण-पत्र देना। उसके लिए तीन ध्वनिवी की एक ध्वनि बनी है। (२) अधिमान के विनियमों में जो नये ध्वनि नियम हैं उनसे सम्पर्क साधना और उनके सेतु तथा पत्र के विचार का प्रयास करना। (३) अर्धा-अर्धा सवय सेन की सम्भासना प्रकट हुई है उनका आधार मानकर प्रकट के रूप का संयोजन करना। १३-१४ प्रसम्भो में इनकी सम्भासना प्रकट हुई है। सागर संयोजन त्रिविधियन दिना में जाने का होना—स्थिति और धर्म दोनों दृष्टियों से। धर्म ध्वनिवी की एक टोली विने मर वृद्धर समर्प और संयोजन का काम करेगी। (४) अधिमान में जो साधारण बना है वह टोली न बने, और वह बना रहे दुर्गा प्रयास किया जायेगा।

यह ही काम की दृष्टि से जो कुछ भी सोचे और पर सोचा गया है वह मेरे बचाना। मेरा जो अनुभव आता उसे भी योर् में मैं बता दूँ। (१) तर्ह में काम करने हुए ध्वनिवी की ध्वनि साधना कठोरी पर करने का प्रयत्न शान्त हुआ—विशेष त्रिविध उत्तरायण है, उत्तरायण है और सम्भासना है। (२) जना में सर्वोदय को विचारणी करे। यह ही नहीं बल्कि का सवना कि समुद्र प्रमाण हमारे साथ है या समुद्र प्रमाण हमारे साथ नहीं है, परन्तु हमें बचाव के से भोग आने हैं और सदा-नया उत्तरा ऋषो हट्टरेण प्रान्त हुआ है। शालीको व गालीको की ध्वनिवा का धर्म दर्शन हुआ। काफी

(१३ पृष्ठ १०६ पर)

मुल्लापेठे

भारत के मुसलमान और राष्ट्रीयता

• प्रो० लखन कमाल

भारतवर्ष में हिन्दु और मुसलमान दोनों संस्कृति योर् से साथ-साथ रहते आये हैं। इनमें आर्य व अरब की गहराई भी होगी रही है। दोनों आने अतिरव भी रसा करने की कोशिश करते रहे हैं। बाबर इनके सम्पर्क होतो रही है और इसीलिए, भारत से भयकर साम्प्रदायिक द्वेष में से देश को गुलाम बना। इनका ही नहीं बल्कि गांधी जैसे ध्वनिवी की रसी साथ में समाप्त होना पड़ा। परन्तु एक ऐसा क्षण आया जब मुसलमानों ने यह महसूस किया कि वे हिन्दुओं के साथ सम्मानपूर्वक नहीं रह सकते या हिन्दू-बहुल समाज में वे समाप्त हो जायेंगे, तो उनसे अलग एक ध्वनिवा राष्ट्र की मांग की। और उसको प्राप्त करने में उन्हें सफलता भी प्राप्त हुई। परन्तु एक से दो हुए दो राष्ट्रों में कभी शान्ति नहीं हुई। बल्कि दोनों देशों में साम्प्रदायिकता की भासना प्रारंभ हुआ। साम्प्रदायिक भासने के अन्तर्गत संघर्षवाद ने चोर परकः। प० पार्किस्टान एवं पूर्वी पाकिस्तान साथ न रह सके।

जागतिक दंग के अन्तर्गत में आने के बाद भारतवर्ष में साम्प्रदायिकता ने कुछ नया रूप अविनवार किया। यह प्रान्त योर् से उठा कि भारत में रहनेवाले मुसलमान कभी भी भारत के होकर नहीं रहे, उनमें भारतीयता नहीं है, राष्ट्रीयता का अभाव है। नौन निश्चय करे कि नौन भारतीय है और नौन अर्ध-भारतीय है? क्या यह बचान है उत्तरी? किसे एक ही रूप अर्ध-भारतीय घोषित करे? प्रो० लखन कमाल नेगी जिना सफलता में समासभासक का घोषणा करने वाले हैं। उनका इन विषय पर जगदी अग्रणी है और उनकी आलो एक दृष्टि की है। हमने उनसे कुछ प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किये हैं जिन्हें हम यहाँ संक्षेप कर रहे हैं।

प्रश्न भारत के मुसलमान में राष्ट्रीयता का अभाव है; यह बात में कोई संशय है या नहीं ही यह बात सही जानी है? मुसलमान राष्ट्रीय जीवन से अलग बड़ा हुआ क्यों सीखा है?

उत्तर अरबों के प्रान्त का उत्तर देने से पहले मुझे यह बताना आवश्यक है कि राष्ट्रीयता क्या क्या चीज? राष्ट्रीयता अनेक भाग में चीजें अलग अलग पड़ी है। यह परस्पर सम्पर्क लक्ष्य है। राष्ट्रीयता मुख्यतः हमेशा से बहुमूल्य लोगों की संस्कृति, इतिहास, धर्म और दर्शन से प्रभावित होती रहती है, चाहे किसी देश का उत्तर-हेरण में। आधुनिक युग में कि अल्प-संख्याओं का राष्ट्रीयता पर कम अंक पड़ता है। ईरान में किया मत के आन्दोलन जगदी है और सुन्नी मतवाले अल्प-संख्या। इन वर्गों की राष्ट्रीयता किया से प्रभावित है। तुर्की आने से धर्म-निरपेक्ष राज्य बहना है परन्तु वर्गों की राष्ट्रीयता अभाव से अविश्र प्रभावित है। सभी तरह आगत में ही हिन्दू बहुसंख्यक है। यहाँ की राष्ट्रीयता पर हिन्दुओं का अधिक प्रभाव है। यहाँ की राष्ट्रियता पर हिन्दुओं के दृष्टिकोण का अभाव है, संस्कृति का अभाव है, एक सामाजिक विषयों का अभाव है। अरब यहाँ पर एक मूल प्रान्त भी उठता है। यह यह है कि राष्ट्रीयता की मुख्यतया आन्तरिक विषयों नहीं। राष्ट्रीय मुख्यतया अन्तर हिन्दु मत से प्रभावित है तो अलग हुआ कि इस मत के पीछे विषयों धर्म, संस्कृति और इतिहास का प्रभाव ऐसा है जिस पर हिन्दु धर्म की छाप पड़ी हो। यहाँ पर यह बात भी बतानी है कि बहुसंख्यक हिन्दु है परा राष्ट्रीय धारण के होकर योर् में भी प्रभावित है। अन्तः-राष्ट्रीय-निरपेक्षता और दूसरे धर्म-निरपेक्षता-निरपेक्षता-प्रधान का प्रभाव भी है।

मेंही पर हमें यह जानना चाहिए कि अल्पसंख्यक का रोल क्या होगा ? एक तो यह है कि बहुसंख्यक की धारा में वह शामिल हो जाय। दूसरा यह है कि वह एक रचनात्मक रोल धरवा करे जो राष्ट्रीयता की मूल धारा है। वह राजनीति, सांस्कृतिकता और दूसरे अन्य विचारों के आदान-प्रदान का एक परिणाम हो। इसके लिए बहुसंख्यकों की उत्तरदाता और अल्पसंख्यकों के विचारों को सहार चलने की गुंजाइश पैदा करने की जरूरत है। अगर यह नहीं होगा तो राष्ट्रीय जीवन में मूल धारा बह होगी जो केवल बहुसंख्यक की होगी। इस प्रकार के बहुसंख्यक का सिद्धान्त मिश्रण (मैजोरिटी इन्फ्लुएन्स) उत्पन्न उद्देश्य हो जाता है और यही से संस्कृति, दर्शन और राजनीति में विचित्र गड़बड़ होने लगता है। अल्पसंख्यक अपना दायरा बनाते लगते हैं और उनके 'आइडेंटिटी सिम्बल' के प्रति उनका मोह बढ़ जाता है। इस तरह राष्ट्रीय जीवन में केवल धार्मिक स्तर पर ही नहीं, बल्कि धार्मिक दृष्टि से पर भी एक अलग-अलग पैदा हो जाता है जो धर्म-निरपेक्ष अल्पसंख्यक को है और यही से राष्ट्रीयता में दरार पड़ने लगती है। यह सामाजिक और राजनैतिक प्रक्रिया में ऐसे बनेक दायरे बनने लगते हैं और राष्ट्रीयता में दरार पड़ने लगती है।

इस चर्च में एक बात और विचारणीय है—राष्ट्रीय जीवन जिस प्ररी पर चलकर काटता है, उसके चलकर में बहुसंख्यकों के अनेक प्रकार के रंग और विचार आते-जाते रहते हैं और उसमें उनकी साम्राज्यता के सपने की मुजादत भी उठनी ही बर्बाद होगी है। अगर अल्पसंख्यकों के रंग और विचार जब उस चलकर पर आते हैं तो वे बेमैत्र दोखते हैं और उनकी साम्राज्यता जन्म पकड़ में आ जाती है और दूर से भी दोख पड़ती है।

स्वतंत्र और समान चाहे किसी भी धर्म का हो उसकी विशेषता यह है कि वह

अपने पूर्वजों के इतिहास, धर्म और संस्कृति का प्रसार करना चाहता है। उसे तापता है कि हम जहाँ हैं, जिस धर्म को मानते हैं, वह सबसे अच्छा है। अतः उसका संरक्षण करना वह अपना सर्वप्रथम मानता है। इसके लिए वह अपने सर्वस्व को भी बलि देने को तैयार हो जाता है। किसी भी देश में अल्पसंख्यक अपने पूर्वजों के सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षा करना चाहता है। बहुसंख्यक ऐसा करने देने में बाधा डालता रहता है अपना अल्पसंख्यक को प्रतार डर बना रहता है। बहुसंख्यक कहता है कि तुम जहाँ हो, जिस देश में रह रहे हो, यहाँ की राष्ट्रीयता को मानने क्यों नहीं ? ऐसे देशों में जहाँ हिन्दू अल्पसंख्यक में हैं वे भी इसी कारण राष्ट्रीय जीवन की मूल धारा से बटे दीसते हैं।

यही अल्पसंख्यक अब बहुसंख्यक बन जाता है तो जिस देश में वह रहता है उसकी सांस्कृतिक प्राचीनता धरोहरों को अपना बहने लगता है। नसर मिस की परम्पराओं को, नील घाटी की सम्पत्ता को, अपना मानता है। मुसलमानों हिन्दुओं के प्राचीन सांस्कृतिक धरोहरों, पौराणिक गाथाओं को राष्ट्रीय जीवन का अंग मानता है। पाकिस्तानी मोहनजोदड़ों और हड़प्पा को अपना मान लेने की आवश्यकता को पता-ले-पता महसूस करता है, इस तरह हम देखते हैं कि राष्ट्रीयता की मूल धारा हमेशा बहुसंख्यक से प्रभावित होती है।

यह तो विवेचन था एक अंग हुआ। दूसरा अंग यह है कि बहुसंख्यकों के मन में एक भ्रम रहता है कि अल्पसंख्यक कुछ करते नहीं। वे सब कुछ करते हैं, अपने सर्वस्व को बलि भी देते हैं, लेकिन उसकी एक मर्यादा है। अगर आप प्रसिद्धा देखेंगे तो हिन्दुत्व में हिन्दुओं की अनेकता मुस्लिम को कम राष्ट्रीय नहीं रहे है। अगर हिन्दुओं की राष्ट्रीय भावना में बर्बादारी है तो मुस्लिमों में भी बर्बादी है। दोनों के चिन्तन में धर्म और धर्म की भावना का विकास हुआ है। दोनों में

साम्प्रदायिक भावनाएँ विकसित हुई हैं।

मुस्लिमों के राष्ट्रीय जीवन की मूल धारा से बटा होने का एक कारण और भी है—यह है अर्थों की राजनीति। हम देखते हैं कि स्वतंत्रता-संग्राम के दिनों में एक दशाब्दी में हिन्दू और मुसलमान अलग-अलग पीछे हैं तो दूसरे दशाब्दी में दोनों जुड़े दोखते हैं। १९०१ में लार्ड कर्जन ने बंगाल का बँटवारा किया। यह कहकर कि हमें मुस्लिमों का हित है। उस समय हिन्दू-मुस्लिम हित की दृष्टि से दोनों अलग थे, १९०६ में मुस्लिम प्रतिनिधि मण्डल अलग चुनाव के लिए विमता में लार्ड मिन्टो से मिला। १९०६ में ही दाका में मुस्लिम लीग की स्थापना हुई। १९१०-११ में दोनों में उभाव हुआ। १९११ में दिल्ली में दरबार हुआ और उसी दरबार में १९०५ में बंगाल का बँटवारा समाप्त किया गया। १९१२-१३ में दोनों को एक दूसरे के नजदीक लाने की कोशिश हुई। १९१४ में मुस्लिम लीग ने 'लोकल सेल्फ गवर्नमेन्ट' की मांग की। १९१६ में दोनों का सम्बन्ध और मुस्लिम लीग का सम्बन्ध एक साथ हुआ, लखनऊ पैक्ट उसी का एक परिणाम था। १९१८ में सिन्धुत हुआ, सिन्धुत की राजनीति में दोनों साथ थे। बाद में बंगाल पर अछूता बना। गांधीजी ने दोनों धाराओं को मिलाया। १९२०-२१ में अल्पसंख्यक आन्दोलन में दोनों साथ थे। तुराँ में बंगाल आन्दोलन में सिन्धुत की सहायता से समाप्त कर दिया। उसके बाद १९२४ में लखनऊ सम्झौता की दुहराने की माँग की गयी। १९४० में एक अलग राष्ट्र का प्रस्ताव सामने आया। १९४७ में अलग हो गये। मीने यह एक इतिहास आते-जाते सन्ताने से बँटवारा—जिसे लीग ने बँटवारा चाहा है—यह इस इतिहासिक चर्च में बँटवारा स्पष्ट हो सके।

विचारन के बाद अल्पसंख्यकों के मन में सुरक्षा की चिन्ता पर कर गयी। उन्हें किफ है कि नहीं उनकी संस्कृति

पट्ट म हो जाय, क्योंकि वे जानते हैं कि हम अल्पसंख्यकों की ही तरह बहुसंख्यकों की भी अपने विचार, दर्शन, धर्म और सभ्यता प्रिय हैं। बहुसंख्यकों के प्रिय तरह और अल्पसंख्यकों के प्रिय तरह में अगर भ्रतिता का झगडा हुआ तो उसमें अल्पसंख्यकों का प्रिय तरह योग हो जायेगा। इसलिए उनके सामने पढ़ना प्रत्यक्ष अपने सार्वजनिक अस्तित्व की रक्षा का हो जाता है और सब आज उन्हें राष्ट्रीय जीवन से कटे हुए देखते हैं।

प्रत्यक्ष : मुसलमान अपनी सुधारा राजनीति में खोजना है और समाज से कटा हुआ है। राजनीति सुधारा स्वाधीन सुरदा की गारण्टी जैसे प्रत्यक्ष करनेगी।

उत्तर : केना मुसलमान ही राजनीति में सुरक्षा की सवाय करता है ऐसी बात नहीं है। हिन्दू और मुसलमान दोनों का विवाह सरकार और राजनीति में है। बहुसंख्यक हिन्दू जनता और सुधार तथा अन्य प्रकार के सामाजिक कार्य करने का साधन राजनीति और सरकार को बनते जाये है। सार्वजनिक को छोड़कर विद्वानों राजनीतिक परामर्श, धार्मिक और सामाजिक धारणाएँ हैं प्रियता समाज में विस्थापित है और सरकार में विस्थापित नहीं रहते ? तो फिर मुसलमानों से यह अपेक्षा कैसे करते हैं कि वे सरकार में विस्थापित न करें, सरकार से अपेक्षा न करें ? जब बहुसंख्यक उसकी सुरक्षा की गारण्टी नहीं दे सकते तो बहुसंख्यक में जानी सुरक्षा दूसरे का ही।

प्रश्न से लेकर 1943 तक सत्ता की ही बड़ाई मन्त्री मन्त्री है, मुस्लिम लोग भी सत्ता के लिए ही लगे, फिर हम यह कैसे मानते कि कोई सत्ता से अलग रहे ? जैसे आप देखते, अंगरेजों के बाद मुस्लिम सम्प्रदायवादी की सरकार नहीं है, मन्त्री ही के चुने नहीं गये। मुझे भी ऐसा लगता है कि हम तरह के प्रयोगों का कोई योग्य आधार नहीं होगा, कि एक धारणा बना ली जाती है और उसी धारणा को टप मान लिया जाता है। धारणा एक होती है और टप चुकती ही बात रहती

है। मुझे ऐसा लगता है कि अल्पसंख्यकों के बारे में भी कुछ ऐसी ही धारणाएं बना कर रही हैं।

प्रश्न : क्या कारण है कि भारत में अल्पसंख्यकजनितों के साथ साम्प्रदायिक तनाव नहीं होता, परन्तु हिन्दू-मुसलमान आपस में भिड़ते रहते हैं ? बांग्ला देश की आजादी के बाद साम्प्रदायिक तनाव के स्थायी या अस्थायी कारणों में कोई फर्क आया है ?

उत्तर : आप जिन अल्पसंख्यकजनितों की बात कर रहे हैं वो चाहे जितने आपस में मतभेद पारसी और ईसाई से है। ये लोग मिलते हैं ? मुस्लिम से ? प्रतिक्रिया ? परन्तु मुसलमान तो दूसरे स्थान पर आता है न ! ईसाईय सत्ता की सहाई अंतर प्रतिक्रिया के साथ है तो वह मुसलमानों से ही। और, वे मुसलमान तो सभी मानक भी रहे चुके हैं। इसलिए भी सत्ता का मोह हममें व्याप्त हो करता है।

प्रश्निक के मन में सत्ता संपर्क की प्रतिक्रिया हर युग में किसी न-किसी रूप में समाज में उपस्थित रहती है। जहाँ अल्प-

संख्यक और बहुसंख्यक का तनाव नहीं है, और साम्प्रदायिकता की भावना नहीं है वहाँ पर अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक है। बांग्ला देश के मामले में भी वही हुआ, जो बंगलादेश और मोरिया में हुआ था। मुसलमान सत्ता की मूल्य के मोड़े ही जिनो के बाद हज़रत अली पपीका हुए वो सार्वभौमिक अल्पसंख्यक। मुझे ऐसा लगता है कि वो दलितहृदय बंगलादेश की हज़रत के पीछे या उसी प्रकार भी दलितों में उठकर हुआ और बहुत तरह से दोनों की हार्दिक समानता देखती है। अल्पसंख्यक के मन के अन्दर के संपर्क की प्रतिक्रिया किसी न-किसी रूप में प्रकट होगी ही—चाहे अल्पसंख्यक के रूप में, चाहे बहुसंख्यक के रूप में या पारसी अल्पसंख्यक के रूप में।

बांग्ला देश को मुस्लिम के तनाव से कुछ जन्मी जायी है परन्तु सभी के पत्नी का वही समाजपूर्ण मन स्थिति एक दिन में समाप्त होगी नहीं, धीरे-धीरे समाप्त होगी है। वह साम्प्रदायिकता के बम होने की भी प्रतिक्रिया है और अल्पसंख्यक भी। वह एक साम्प्रदायिक प्रतिक्रिया है।

नये प्रकाशन

शुद्धि विनोबा

लेखक—श्री धीमन्नारायण

विनोबाजी के अचिन्तन और बुनियाद पर सांगीत पर अन्तरंग विवेचन। विगत ४० वर्षों से लेखक विनोबाजी के निरन्तर सम्पर्क में रहे हैं। एक संप्रदायिक रचना। मूल्य ६० ७.००

नीति विज्ञान

—अज्ञात कवि

जीवन-शैली विचारों की बहना।

मूल्य . ६० २.००

धम्मपद : (नवसंहिता)

सम्पादक

विनोबा

धम्मपद का विनोबाजी ने अने विद्वे से वर्गीकरण करके उसे वर्णित बना कर दे दिया है। हिन्दी अनुवाद सहित। महत्त्वपूर्ण प्रकाशन।

मूल्य : ६० ४.००

कवि शैल संघ प्रकाशन
राजपाट, बाराणसी-१

डाकुओं के गिरोह में सात दिन

• गोपालवत्त भट्ट

२ अप्रैल की दोपहर को अचानक श्री कानिनाथ दिवेदी चम्बल घाटी शान्ति मिशन का सन्देश लेकर आये—
 “श्री जयप्रकाश नारायण के समग्र मूर्तना में १२ अप्रैल से १६ अप्रैल तक चम्बल घाटी के वस्तु आत्म-समर्पण करने। अतः डाकुओं से सम्पर्क करने तथा उन्हें आत्म-समर्पण के लिए तैयार करने के लिए आपकी आवश्यकता है।”
 वस्तु, ३ अप्रैल को एक दूरी, एक चादर, एक जोड़ बस्त्र तथा बाँध की एक टोकरी लेकर चल पड़ा मूर्तना को। ४ अप्रैल की दोपहर में गांधी सेवा आश्रम, जोरा पहुँचा। वहाँ जाकर मानस हुआ कि कामचलाओं को दो टोकियाँ दस्युराज, मोहर सिंह तथा माधो सिंह के गिरोहों की तरफ जा चुकी हैं। मुझे डाकू माखन सिंह के गिरोह में जाने को कहा गया। मेरे साथ रायपुर के श्री धुंवेजी तथा कानपुर के एक वकील श्री चौहान भी चलने को तैयार हो गये। हमारे साथ गाँव का एक धार्डी तथा एक जोर कर दी गयी। कुछ लोगों ने कहा, “माखन सिंह बड़ा बटोर और निर्दयी है, विशेष पढ़ा-लिखा नहीं है, कुछ भी समझाओ, समझता नहीं है, गोभी से ही भोजन करता है।” थोड़ा भय भी लगा। फिर सोचा, एक भले काम के लिए जा रहा हूँ, ऐसी-वैसी कुछ बात हो भी जायेगी तो भी खतोय ही होगा। तुमशीरासजी की यह थोपाई याद हो आयी “परहित साभि उज्ज्वल है बेदी, सटा संतपशमहि ठेही” और श्रीर सुद्ध पर चौड़े सगी।

जहाँ हमें पहुँचना था, वह स्थान जोरा से पश्चिम की तरफ ३६ मील है। मूर्तना का यह परिवर्ती छोर राजस्थान के भरभुट और सवाई माधोपुर जिले से लगा है। सखनगढ़ नामक कस्बे तक चापर की सड़क है वहाँ से एक ८ मील

थोड़ा पहाड़ है जिसको चौरती हुई बन्धी सड़क जाती है। पहाड़ी पर झाड़ियाँ और छोटे-छोटे वृक्ष थे। पूरा पहाड़ सजाटे में ढूँसा हुआ था, जगहों जीप पहाड़ों के दूसरी छोर पर पहुँची तो नीचे बामशीली की मुख्य घाटी दिखाई दी। जीप रोकर थोड़ी देर हम उस घाटी के सौन्दर्य को आँखों से पीते रहे। नीचे उतरकर जीप मुख्य सड़क छोड़कर बेलगाड़ी के रास्ते पर मुड़ी। रास्ता बड़ा खराब था, झुंझुंवर बड़ी सावधानी से चले कर रहा था, फिर भी एक जगह पर जीप उलटने-जलने लगी। यहाँ पर एक छोटा-सा गाँव है जिठार। इसी गाँव के तिनारे जगल में डाकू माखन सिंह का गिरोह हमारा इन्तजार कर रहा था। वहाँ एक छोटा-सा गुंजा था, दो-तीन मीम के वृक्ष थे। उन वृक्षों के नीचे पञ्चोम डाकुओं का यह गिरोह सावधान होकर आराम कर रहा था। जीप की धरधरहट सुनकर आये उदित बन्दूकें उठा-उठाकर सजे हो गये। मैंने झुंझुंवर से बहकर जीव हकनाई और नीचे उतर पड़ा, तथा उदितों को इशारा किया—एक सड़क शीड़कर हमारी तरफ आया, फिर हमारे समाचार लेकर वापस गिरोह में गया। वहाँ से हमें आने का इशारा किया और हमारी जीप धुंए के पास जा खड़ी हुई। जीप से उतरते ही हमने सबको राम-राम की। बन्दूकें पकड़े गये में कारतूनी का पट्टा पहने उठाने चहरो पर कसरी मूँछें और खनाम आँखों से सान्ति बटोरवा कोर बुदियता, दाग भर के लिए शरीर सिद्धर उठा। मन ही मन भगवान का स्मरण करते हम आगे बढ़े। तीन-चार लोगों से हाथ मिनवाया, गिरोह के सरदार (मुखिया) ने आकर हाथ मिनवाया और हमें बँडने को हवा भरी मारी दी। ४० वर्षीय यह वस्तु नेता

माखन सिंह, सारे छ फीट ऊँचा-गड्ढा जवान है। रोबदार चेहरे पर लम्बी, ऐंठी हुई घनी मूँछें, सानी भरी आँखों में क्रूरता और अविश्वास (उन वक्त पुलिस बहुरर कीन्ती सानी ड्रैस, हाथ में स्वचातिल राक्षण। ऊँगलियों में सोने के छल्ले, हाथों में सोने की घड़ी और गले में सोने की ७ लकीरी वाली माला।

बँडने ही अपने बधाय भरी बाणी में कहा : “बघो नेताजी मरवाने आये हो मुने, घोषा देकर मरदाओगे, तुम्हारे बडे नेता परमों कह गये मै कि बज यहूँ पुलिस नही आयेगी, किन्तु दो दिन पहले गाँव के ८ लोगों को पुलिस पकड़कर ले गयी है।” बात यह थी कि चम्बल घाटी शान्ति मिशन ने भोपाल और खानिबर के पुलिस अधिकारियों से बहुरर इत आन्वस्त सेवों को १५ अप्रैल तक शान्ति क्षेत्र घोषित करवा दिया था, ताकि डाकुओं से हम सम्पर्क कर सकें, इसकी खबर डाकुओं को भी दी गयी थी। इसके बावजूद जब पुलिस ने कार्यवाही की तो माखन सिंह को अविश्वास हो गया। मैंने उससे कहा कि सायद धानेवालों को हमारे आने की सूचना नहीं मिली होगी। हम उन लोगों को धाने से छुड़ा लायेंगे, हम पर विश्वास करो प्यारे भाई। हाथ तो तुम्हें बचाने आये हैं। तुम्हारे पास बन्दूकें हैं, सारा इलाका तुम्हारे नाम से बरधराता है, किन्तु हम दिना कर के, दिना हाथियार के केवल मुहवत से भरा हृदय लेकर तुम्हारे पास सने-सम्बन्धों की उरह आये हैं, क्या यह सब तुम्हारे विश्वास के लिए पर्याप्त नहीं है? और वह डाकू सरदार मुझका पड़ा, और बोना “आप कहाँ रहेंगे?” मैंने कहा, “हम तो तुम्हारे मेहमान हैं जहाँ रखो वहाँ रह लेंगे।” उसने कहा, “गाँव में चलो।” वय हमारे साथ डाकुओं का पूरा दन निहार गाँव में जा पहुँचा। एक जगह दो छोटे-छोटे मकान थे नीम की घनी छाया थी, वहाँ टेरा डाल दिया। चात्पाद्यों की कतारें गाँववालों ने खड़ी कर दी। राय की मैंने देखा २४ डाकुओं

ने लगभग ८ घुंटे जवा रते हैं। थापन सिंह ने बताया कि जलज-जलज जाति के लोग हैं, इसलिए जलज-जलज खाना बनाते हैं। कदम-से-कदम और बन्धो-से-बन्धो मिठाकार मूल से जूझनेवाले डाकू भी जात-पैत की पादवी को नहीं पाद सके। इसी सगता है कि जात-पैत के जाने-जाने से दुहा गया समाजवादी यह कपड़ा खाना के लिए बचन बन जायगा।

दूसरे दिन कबीर साहब को मैंने राम-पुर पुलिस चौकी भेजा। वे उन लोगों को छुड़ा लाये। यश, फिर डाकू सरकार को हम पर पूरा विश्वास हो गया। यह अपनी ग्वालियरी बोलों में हमसे दिन भर बात करता रहा। भी जे० पी० के बारे में, अपने बन्धों के बारे में, प्रश्न करता रहा। हम लोग उसके प्रश्नों का समाधान करते रहे। उसके साथ नहाने जाने, खाना खाने, गाना गाते और एक ही दिन में खबर खान की तरह चारों ओर फेल गयी कि माखन सिंह का गिरौह गिटार में डेरा डाले पड़ा है तथा उसने शास्त्र-समर्पण की तैयारी कर ली है। फिर गया था डाकूओं को देखने लोग आने लगे छुपके छुपके। वहाँ से घबराती जन-जीवन निर्मम होकर सामान्य हो गया। लोगों ने पैर की छत खी। धनेक भावुक लोग तो बाहर हमारे पाँव छूले और कहते, "आप ने हमारा उद्धार कर दिया।" एक दिन एक मित्रिय स्थल के बच्चे डाकू गिरौह को देखने लाये। माखन सिंह ने उनसे पूछा : "बच्चों लाये हो ?" बच्चों ने कहा, "लापको देखने लाये हैं।" दस्यु नायक ने कहा, "मैं तो १८ वर्षों के तुम्हें पकड़ने के लिए दूँ दे रहा था, तब ही तुम मुझे मिले नहीं, और वह जोर से हँस पड़ा" अपने बीस वर्षों के बन्धों को मिठाई खाने को दिया।

माखन सिंह ने जिन बन्धों को पकड़ रखा था उन्हें बिना पैसा लिये छोड़ दिया। हथियार खीनने की पूरे तैयारी कर ली। अपने क्षम-विशवास पैदा

हुआ, अपने पापों के लिए पछावा पैदा हुआ। एक बार मैंने उससे पूछा, "क्यों डाकुर ! कहर गये तितने रिग हो गये हैं ?" वह बोला, "हो गये हैं १८ वर्ष। "हमहि तो विश्रिया से उर लामे" (मुझे तो बिजली से डर लगता है) मैंने कहा, "पर जब तो जेल में बिजली के पास हो जाता है।" फिर उसने कहा, "अब कोउ डरना है, वही ही खार सँगे खबहि जीप में बँडकर घुरैना तक चला पसुं।" हम लोगों ने डाकूओं के परिवारों को भी वही दवा खिना था। माखन सिंह ने मुझे बताया कि हम अपने डाकू-जीवन में पहली बार अपने परिवारों से इतनी धात्रदी से मिल रहे हैं, और पहली बार जिन से बँधों में घूम रहे हैं। माखन सिंह की पत्नी से मैंने पूछा "अभी तो ये पूरा पैसा लागे हैं, अब वी मरीकी का जीवन पार होगा।" उसने हाथ जोड़ कर कहा, "मैं भूली रह चुकी, पूरा की मात्रा पहनकर रह चुकी, बस ये धर ला जायें।" माखन सिंह की ९ वर्ष की लड़की ने कहा "कछू दुरान-उकान या मजुरी-खेती कर लेगी धरें ला जाओ।" एक दिन माखन सिंह से मैंने पूछा "तुम तो बहादुरी का जीवन जी रहे हो। अब तो छुटने के बाद किसान और मजदूरों की तरह जीना होगा।" उसने कहा, "बहादुरी नहीं वह तो कायरो का जीवन है। हम जलज-जलज भागते फिरते हैं। कभी-कभी तो पत्नी हुई रोपिनी छोड़कर भागना पड़ता है। हाँ, बागला देश या बहारी में लड़के हुए मारा जाता तो बहादुरी होती।" एक डाकू में भी इतना राष्ट्रप्रेम देखकर मेरा हृदय पद-पद हो गया। मन ही मन मैंने कहा, "ऐ भारत जननी। एक गिरे-से-गिरे शास्त्री के मन में तेरे लिए इतना खार और आदर है तुझे कोई दुखान नहीं बना सजा है।" ये लोग डाकू क्यों बने ?

(१) माखन सिंह जोरा के पास एक गाँव का रहनेवाला है। उस गाँव के कतारों ने उनके पानी पीने का खलास कर दिया। इनके बड़े भाई देवी सिंह पर

गोरो भी खनायो। मुझे मैं शास्त्र दोनो भाशरी ने छाठी से दो गोनों की मार डाला और दस्युख खान सिंह के गिरौह में शामिल हो गये। देवी सिंह पुलिस के हाथो मारा गया। लापन के मारे जाने पर स्वतंत्र गिरौह बनाकर काम करने लगा। इन लोगों को डाकू बने १८ वर्ष हो गये हैं।

(२) देवी गिरौह में बूटा नाम का १६ वर्ष का डिगोर भी डाकू था, उसकी जमीन गाँव के एक शास्त्री ने दब ली और मारने भी छाया। बहोँ से न्याय नहीं मिला। अन्त में बदले की भावना लेकर वह डाकू बन गया।

(३) सरदार विष्णुमर सिंह ने बनगाहि गाँव-वाप पाकिस्तान में भागे गये। वषल एक सन्यासी के साथ प्युने में खोता। सन्यासी की मृत्यु के बाद, किसी की मनेगी बरगि, हल खोता, मगर लोगों ने त लो मार बँट खाना दिया और न मजुरी हुई थी। बाद में ग्वालियर में खरोटी की मशीन पर काम किया। ७०० रुपये ममाकर अपनी कोठी में रखा था कि एक दिन खोरो ने कोठरी तोड़कर रुपये चुरा लिये। तब लगा कि ईमान और पत्नीने की बोई वर ससार में लड़ी है। इसलिए यह राम्ला पकड़ा।

(४) जयन रावत ने बताया कि ससार में उधरा कोई नहीं है और वह रो पड़ा। जेल से छूटकर कहाँ जाऊँगा ?

(५) एक दो लोग ऐसे भी थे, जो मरीची के कारण डाकू बने और कुछ पुलिस की जवादी के कारण भी। पुत्रा खोरी नाम का शिमानेश्वर खोरी भी इसी दल में था। एक रमानाय नामक खोरी ने शास्त्र के गरी ने हमारी उरक भी बहूक दाग ली थी, किन्तु दूसरे खोरी ने राद-पन खीन ली। दूसरे दिन उसने माची मारी।

मैं १० खरैल तक रथ गिरौह में रहा। १४ खरैल को माखन सिंह ने अपने साथीयों सहित खी जयश्याम माराधन के खरों में हथियार खी दिया।

ग्रामस्वराज्य के मोर्चे से

११ अग्रैल

पढ़ते ही कहा गया कि अंग्रेज होते-होते गाँव में विकास कर ही जाते हैं, इसलिए क्या उसके पहिने कर ही था। प्रश्न पर माधुम हुआ कि क्या फिर पहिने गाँव में आना पड़ा था। एक घन्टी बैठ लूट लिया गया। तब से आज तक क्या हुआ है।

समाज-बन्दी-बन्दी कर भी गयी। क्या के बाद एक तरीक मजदूर लाया और कहने लगा : 'मैंने बाँध-भूषण इच्छा कर लिया है, लेकिन घर नहीं बना पा रहा हूँ।' मैंने पूछा : 'क्यों?' बोला : 'साक्षिक कहते हैं कि जाओ, दूसरी प्रकृति रहे। यहाँ घर नहीं बनाने देंगे।' मैंने फिर पूछा : 'उठ जगह बितने दिन से रहते हो?' उत्तर कहा : 'साक्षिक सम्भोग ब्यापक मान ले।'।

८ घण्टे के बाद मेथार भूमिहीन समाज जा रहा है। जिसके छात्रों लयी और गयी लेकिन उसे एक छोड़ते तक के लिए भूमि का एक टुकड़ा न मिला। गाँव की भवम्मा में न धरती की सुरक्षा है, न तरीक का धारण, फिर भी उसे कदमों की निगा में कदम नहीं उठता। परिचित कृषि कार्यरत कर्षाई से कष्टी होती है।

१२ अग्रैल

गाँव में विद्यापीठ की एक बड़ी संख्या है। बच्चों के हाथ पर-पर से उनका संपर्क रहता है। लेकिन कठिनाई यह है कि गाँव के बच्चों का स्थिति नहीं रह गया है विद्यापीठ की संघ पर उनके को जाने घर से आते-जाते हैं। जो विद्यापीठ सार्वजनिक के दरवाजे पर उठते हैं, उसके बच्चों की पढ़ाई है, और उसके यहाँ अपना लाते हैं वे दोस्त के विचार ही माने हैं। ऐसे विचार का

भावधारणा से इस तरह बंधे रहते हैं कि जाने निर्णय से वे कुछ कर नहीं पाते। उनके मन में हृदयवत् साक्षिक की मर्जी का भाव बना रहता है। फिर भी हर आश में कुछ ऐसे सामीप्य विचार होते ही हैं जो भावनामोल होते हैं, और क्या-क्या में खिल रहते हैं।

१३ अग्रैल

एक सामाज्य सञ्चन ने इस बात पर बड़ी नाराजगी प्रकट की कि युवराज, महाराज, मध्य प्रदेश आदि के बाहरी शायकता विहार में जाकर क्यों काम कर रहे हैं? क्या उनके राज्य में काम पूरा हो गया है। मैंने बहुत समझाया लेकिन वह नहीं सोहंराने रहे कि बिट्टाखालों को इच्छा अक्षर कर नयी क्या पहिने उन्हें ही रिवाजी जारी है।

लेकिन इसके पीछे बात दूसरी है। जमाने के प्रश्न पर भूमिहीन धूर्त-धूर्त बैसा हो गया है। वह चाहता नहीं कि इस मजान को उदाया जाय। इसकी सारी जिम्मेदारी सरकार पर है। उसने पचीस सपों से केवल संज्ञान प्रदान की कोशिश की है। अगर धूर्त दोष-विचार कर गयी की कोई सम्पूर्ण व्यवस्था प्रस्तुत की गयी होती तो अब तक लोगों ने उम्में क्षयता स्थान बना लिया होता, लेकिन वह नहीं हुआ। उसके स्थान पर आज एक, कत हुआ, कत बना रहा शिवसे के कोई भी प्रयत्न का लक्ष्य नहीं हुआ। कतल निरुत्साह साक्षिक हुआ, और सुधार नाहक बनना शुरू हुआ। अब स्पष्ट है कि मजदूर, मेटाईदार, साक्षिक जिनों को सामने रखकर धूमि की सम्पूर्ण व्यवस्था साँची जाय, और सभी भूमि-व्यवस्था के आधार पर ही सभी साम-व्यवस्था प्रस्तुत की जाय। जब तक धूमि की

व्यवस्था नहीं बदलेगी तब तक गाँव की व्यवस्था कहे बदलेगी ?

१४ अग्रैल

रास्ते में देखा जाय के एक बाग में लगभग सभी पेड़ गूढ़ रहे हैं। कुछ ही हुआ कि क्यों ऐसा हो रहा है। पढ़ान पर पहुँचकर पूछा तो लोगों ने बताया कि कोड़ी के पानी के कारण। पचाई हुई तो लोगों ने कोड़ी की नदुओं के कारण होनेवाले ये नुकसान लिखाये : नीचे की जमीन में दलहन, धान में काण्ड, पशुओं और पक्षियों का हान, भूमिहीन और अत्याचार। अतिथि चीन को छोड़ भी दें, तो बाकी कोड़ी का सीधा सम्बन्ध कोड़ी के पानी से है। सुपरन यह है कि हमारी सभी योजनाएँ अपनी छात्रों होती हैं कि कोई सोचता नहीं, पर प्रयोग करके देखता नहीं कि जिस चीज का किम-रिच चीजों पर क्या अक्षर होगा। विचारवानों को रज पड़ी है कि वे लती के बारे में या लोगों को रखत होने से बचावे के लिए 'कुंभ' के बारे में मोर्चे? यहाँ तरह कोई यह कभी नहीं सोचता कि जिस विकास-योजना का स्थान के स्थापन और सम्बन्धी आदि पर क्या प्रभाव पड़ेगा और उसके बाद सम्पूर्ण वैसा होंगी एवं पहिने से उनका क्या सम्भावना केंद्रवा बाटिए। (सारा काम कल्याण्य हीना है।)

१५ अग्रैल

एक धर्म-धर्म में लक्ष, धनवान, धूर्त सम्जन ने आज बहुत सिर खाने की कोशिश की, लेकिन मैंने केवल सिर टिकाकर और उनकी कोई बात कहने की कोशिश न कर जव बचायी। वह बरबर यही सचाने की कोशिश करते रहे कि प्रयोग कर्म-धर्म से गरीब हैं, और लयीर अपने कर्म-धर्म से अमीर हैं। समता की बात करना ईश्वर के विधान में अक्षय्य हृद्यजोर है। यानी बात को प्रकट करने के लिए वह बार-बार वेद, बाइबल एवं भाषण का नाम लेते थे, और हर बात की महाद्वय मानते थे।

ऐसे लोगों से तर्क नहीं किया जा सकता, क्योंकि उनकी दृष्टि में धर्म बुद्धि से समझने की चीज ही ही नहीं। मजरेदार बात तो यह है कि गरीब के प्रश्न पर धर्मशास्त्राचार धर्मशास्त्र दोनों एक ही जाते हैं, धर्म और समाज की भासा एक ही जाती है।

१६ अग्रिम

आज एक बूढ़े, दाचान, भूमिहीन और एक प्रौढ़ भूमिवापन में मजरेदार सम्वाद हुआ। हम लोग भूमिवापन सत्रजन को समझा रहे थे कि पहिले की मूदान की भूमि दूर के गाँव में है, वह उस गाँव के भूमिहीनों में बँटेगी, जब वह सोड़ी भूमि अपने गाँव में भी दें। हमलोगों की बात सुनकर भूमिहीन बोला : "हाँ, मालिक, यही दीजिए। उसकी दूर जमीन में हमलोगों को क्या मिलेगा ?" मालिक ने उत्तर दिया : "नहीं, जमीन लेगी हो तो वही लो और पाहो तो वही बाहर बग जाओ। जब मैं यहाँ जमीन नहीं दूँगा।" इस पर भूमिहीन ने कहा : "जिस गाँव में हमलोग पैदा हुए, जहाँ जनम-कर्म हुआ, जहाँ किस्मती भर क्षाण का जूता उतराया, वहाँ से आप इस बुझाये में जाने को कह रहे हैं। भूमि चाहे सब दीजिए लेकिन इस समाज से मत निकालिए।"

भूमिवापन प्रायः नहीं चाहते कि उनके गाँव के मजदूरों को भूमि मिले। मजदूर को विवशता ही मालिक का दुष्म है। मालिक भूमि और मजदूर की मेहनत, दोनों पर आधिपत्य रखना चाहते हैं। मैं देखना हूँ कि मालिकों के मन में मजदूरों के लिए जितना अविश्वास है उतना अविश्वास मजदूरों के मन में मालिकों के लिए नहीं है। मालिक छोड़ी भी सज्जामना दिखाते तो मजदूर उनके साथ रहेगे।

१७ अग्रिम

सरकार ने भूमिहीनों को 'बास' की जमीन का पर्वा दिया है जिसके अनुषार उन्हें कच्चा-पौ बरडा

वह जमीन दी गयी है जिस पर उनकी सोपड़ी खड़ी है। कई गाँवों में वह सुनने को मिला कि मालिकों ने इन पर्चों को ले लिया है—नहीं धमकाकर, नहीं देखने के बहाने, नहीं खपा-पौ खपा देकर। गाँव में गरीब इतना अचर्यमित है कि समाज में नहीं आता उसे न्याय कैसे दिलाया जाय। इस पर भी यह देखकर आश्चर्य होता है कि ऊँची जाति का गरीब अपनी जाति के बड़े मानिक की ओर से गोची जाति के गरीबों के विपक्ष बहण करता है। बीघे-दो बीघेवाला सो-दो सो बीघेवाला का विपारी बना हुआ है।

१८ अग्रिम

मुझे सहसा अपने कानों पर विस्वास नहीं हुआ जब मैंने आज एक गाँव के भूमि-वितरण-समारोह में मुखिया की खड़ेकर भूमिहीनों से यह कहते सुना "तुम लोग चाहते हो कि सबकी भूमि मिले। हम भी चाहते हैं कि हमारे गाँव में कोई भूमिहीन न रहे जाय। लेकिन जब हम लोगों के भागने से भूमि नहीं मिलेगी। तुम्हें उठना होगा। हम भागे चलेंगे तुम पीछे-पीछे चलने को तैयार हो जाओ।" वहाँ बैठे हुए वो शिखरों ने इसका समर्थन किया। मजदूरों ने कहा, "आप रहेगे तो हम तैयार हूँ।"

एक दूसरे गाँव में ४ सौ बोने भूमि रखनेवाले मुखियाओं ने प्रमाण-पत्र बँट जाने के बाद भूमिहीनों को सम्बोधित करते हुए कहा, "तुम्हें मालिकों से प्रेमपूर्वक, कर जोड़कर, भूमि मांगनी होगी।"

सबकुल सब माँगनेवाले बरलने चाहिए, बड़ने चाहिए। मुदती भर माँगने-बाँटने कितनी भूमि माँगने और कब तक ?

(पृष्ठ ४७८ का टोप)

सच्चा में ये भविष्य में शामिल हुए। कल्याणशील और जिले में अपना अक्षर रखनेवाले सपथ ४० लोग मिले। जिनका आध्यात्मिक के आन्दोलन में सक्रिय सहयोग प्राप्त होगा। प्रधान की

जमीन नहीं बँटी यह जो अविश्वास लोगों के मन में जम चुका था वह इस अभियान में समाप्त हुआ, क्योंकि लोगों ने देखा कि 'हाँ, जमीन बँट सकती है और हीन बँट सकती है।

साहित्य-विक्री का प्रयास हुआ।

मधुपुरा, मुरलीपन, विवेक, छातापुर और सलसुवा प्रकाशों में हर वनगत ने २५-२६ रु० का साहित्य सेट दिया है। भी अगर कल्पप्रकाशों में भी कोशिल हुई होतो तो उनमें भी साहित्य की विक्री होती। पत्रिकाओं के भी शाहक बनाये गये हैं।

अन्त में, मैं तो यही बहूना कि मैं तो जायावारी हूँ, और जल्द पढ़ने की देखना पसन्द करता हूँ। ●

(पृष्ठ ४८२ का टोप)

दिने १३, १४ वदि जा सके। कमीशन की ओर से कारण यह बजाया गया कि अक्षर के नये माडल की खोज हो रही है।

७—जून १९६६ में सरकार ने खादी-शामोदोगी की जाँच के लिए एक कमिटी नियुक्त की। कमिटी ने राय दी कि खादी शामोदोगी के पूरे प्रश्न पर नये विदे से ध्यान होना चाहिए। उसने तीन मुख्य मुद्दे रखे : (१) यश में इतना सुधार हो कि उद्योग आर्थिक हो सके, जिसका अर्थ यह हो कि कारीगर की कम-से-कम जतनी बर्गाई हो जितनी क्षेत्र में उसी स्तर के अन्य कारीगरों की होती है; (२) याँचिक सुधार के कारण पुराने कारीगर बेरोजगार न होने पायें, (३) पुराने यशों से बाध करनेवालों को बाहरी सहायता देकर प्रोत्साहित न किया जाय। छात्री के सम्बन्ध में कमिटी की राय थी कि खादी-उत्पादन इस तरह संगठित किया जाय कि भविष्य में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सम्बिधी कम-से-कम रहे जाय। पुरानी खादी में मले ही पुरानी सम्बिधी रहने दी जाय, लेकिन 'यु माडल चले' की खादी उत्पादक हो जिनमें प्रायः और सम्बिधी न्यूनतम हो। ●

ठेंकानाल (उड़ीसा) में पुष्टि कार्य-विवरण

उत्कल प्रदेश सर्वोदय मण्डल के संयोजक श्री विनोद मधुषी के सुचना-नुसार हान ही में एक श्यापक और सचन कामदान पुष्टि समिपान बनाया गया था।

इस समिपान में उत्कल प्रदेश के ५२ कार्यकर्ता तथा अन्य प्रदेशों के ५ कार्यकर्ता थे। इन लोगों ने १५ गांवों से सम्पर्क स्थापित किया। इसमें से ६० गांवों का कामदान हो चुका है तथा २६ गांवों में कामदान का आंशिक काम हुआ है। २२ गांवों में कामसपा का गठन हो चुका है। १८६ दाजानों द्वारा १०३ एकड़ जमीन प्राप्त हुई, जो १७९ भूमिहीनों में बांटी गयी, ११ शान्ति सैनिक बने, २० शान्ति केन्द्रों की स्थापना हुई है, ४० क० की साहित्य-बिक्री हुई तथा सर्वोदय पत्रिका के पांच पाठक बने हैं।

इसी श्रेणी में गौरिया प्रखण्ड ग्राम-स्वराज्य समिति का गठन भी हो गया है। समिति ने चार सर्वोदयों का चुनाव किया है तथा कार्यसमिति के ११ सदस्य भी चुने गये हैं। चारों सर्वोदयों के नाम हैं:— (१) श्री रजानन्द बेहरा (२) राजानन्द कामन (३) मोघर छाट्ट (४) बेहरा चण्ड प्रयाग।

शारावन्दी के जन-आगरण का कार्यक्रम

बनपुर बिना सर्वोदय मण्डल ने रामन्यास में पूर्ण सारावन्दी के लिए जन-आगरण हेतु नगर में प्रभावकारियों का निर्वाहना प्रारम्भ कर दिया है। १८ भर्षन की विमोचन निवास से जो प्रभाव-कारियों, निरुद्धि वरु विरोधिता आचार, 'श्रीराम रास', शीरामकी का रासना, हरिनन्दों का रासना, श्रीरामों का रासना, श्रीरामकी भोक्तियों का रासना, श्रीरामकी

के नैरो का रासना होनी हुई श्रीरामकी आचार प्रथकर श्रीराम पर समाप्त हुई।

स्वयंसेवकों के द्वारा में स्नेहासुत से, त्रिनगर शारावन्दी सम्बन्धी वाच्य विषय हुए थे और लोग श्रीराम-श्रीराम से नारे लगाते हुए लोगों का स्थान राज्य सरकार के सचन भय की ओर आकर्षित कर रहे थे। प्रत्येक श्रीराम पर प्रभावकारियों की श्रीरामों का शान्ति के प्राथमिक भी नैरीराम गंगा में प्रभावकारियों के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए राज्य सरकार के सचन भय के कारण प्रान्त के कृष्ण सर्वोदयी नेता श्री गीतुल-श्रीराम मधुषी, जिन्हें अपने आचरण सचन की घोषणा करनी पड़ी है, उसकी जानकारी दी तथा लोगों से एक आन्दोलन में पूरा सहयोग देने की अपील की है।

जब प्रभावकारियों के श्रीराम की श्रीरामों तो वहाँ स्थानीय लोगों ने उनके नाम की पुस्तक को हटवाने की व सारावन्दी आन्दोलन में अपना पूरा सहयोग देने की इच्छा व्यक्त की। प्रभावकारियों १९ जर्षन की चाकड़ो विरोधकारों में हैं।

फर्रुखाबाद की वार्षिक रिपोर्ट

अप्रैल '७१ में बिना सर्वोदय मण्डल का गठन हुआ। काम गणेशपुर सरकारी शारावन्दी को शारावन्दी समिति में बदल दिया गया और उसी के द्वारा शारावन्दी का काम किया जाता है, जैसे घरों में घर पट रने गये, स्त्रीट लाइट मगायी गयी, बन्धा जूनिपर हार्डि हकूल की स्थापना की गयी और उदकी ईमारत का निर्माण किया गया। गांव के तीन सगड़ों का फैलावा गांव में ही कर दिया गया।

आपदा बिना सर्वोदय मण्डल फर्रुखाबाद ने अपने गांव गणेशपुर में जमीन जमीन का समर्पण दिना विवरण कर दिया। गांव के अन्य लोग भी इसके लिए तैयार हैं। कार्यकर्ताओं के सचन सम्पर्क के कारण शारावन्दी में अनुकूल हवा बनी है।

१९०, शान्तिसेनिक ३०, लोचयेवक सपा ८ सर्वोदय मित्र बने हैं। नगरों और गांवों में शान्तिसेनिकों का आगोजन किया जा रहा है। १२४ क० की साहित्य-बिक्री हुई तथा ३३ सर्वोदय-पत्रिकाओं के पाठक बने हैं।

इस बिने में उत्तर प्रदेश के सर्वोदय मण्डल के आगदा श्री स्वामी कृष्णानन्द तथा हरि प्रसाद बेग ने एक सन्देश एक पुष्टि-समिपान में दीया किया।

फर्रुखाबाद नगर स्वराज्य समिति ने निम्नलिखित कार्य किया है—८ कृष्णों में समितियों का निर्माण, १२ आचार्यकुल के सदस्य, ६० सचन-शान्तिसेनिक, ८ सर्वोदय मित्र बनाये तथा १ शिविर और २० शान्तिसेनिक हैं।

—श्रीराम सिंह शारावन्दी

पुरोला विकास क्षेत्र में कामदान पुष्टि-कार्य

माह सितम्बर १९७१ तर इस प्रखण्ड के कुल १६० गांवों में से १५१ गांवों में कामदान-पुष्टि का प्रारम्भिक कार्य पूरा हुआ था।

इस १५१ गांवों में कामदान नगर सभाएं शारावन्दी ने सर्वसम्मति से बनायी हैं। शारावन्दी स्थापित करके उनकी सहायता की है। भूमिहीनों के लिए भूमि दी है। इसमें ३ एकड़ जमीन मिली है जो भूमिहीनों से उपजाव शोटी गयी है। प्रदेश शारावन्दी-समा ने जमीन की शारावन्दी समिपान के स्थान पर शारावन्दी समाज की सापुष्टि समिपान की घोषणा की।

शारावन्दी सचन उत्तर प्रदेश में न बना टूला होने के कारण जमीन पुष्टि-कार्य की सहायरी स्तर पर भागे की शारावन्दी नहीं हो पा रही है।

माह फरवरी से हमने शारावन्दी-समाजों को अपनी शारावन्दी व साहित्य विवरण रखने के लिए सहायरी देना प्रारम्भ किया है। ४६ शारावन्दी-समाजों को बैठकों की शारावन्दी स्थापना की। सावन्दी शारावन्दी का प्रचार भी हुआ।

धातवीत

अधूरा वादा...

जब मोहन लगता है किसी से कुछ प्रश्न-पूछकर उसे कुरेदने की कोशिश करता है। वेदो लोग समय और सम्पत्तता (या पेट के लिए!) की जासबासी में चलते कुरेदे या धुके हैं कि बहुत कुछ कहने को नहीं देहता।

मुख्यतः इस क्रम से प्रश्न पूछता हूँ: नाम, नाम, किसी राजनैतिक दल से विशेष लगपु है? गांधी, विनोबा, जयप्रकाश, सर्वोप्य का नाम सुना है? गांधी के विषय में कुछ कहेंगे? सर्वोप्य आन्दोलन के विषय में आपकी क्या राय है?

पक्षिपि सिके 'जबकी' गलत-गलती मालें सुनते जाना और लिखते जाना अपने आप में सावा मन्त्रि कार्य है, पर धातवीत के क्रम को बहुत में बदलना गनत होगा।

दलना ही भर रेखांकन हो सके इस धातवीत से कि हम और हमारा आन्दोलन जन-मानस के अंतर्गम्य का वा जिज्ञासा का विषय नहीं तक बना तो काफी होगा। किशोर नारकर (टेलिफोन ऑपरेटर)

'जलपं में विशेष रुचि है। कलता है कि उसकी नीतियों से ही देश का क्यापण होगा।'

'कौन-सी नीति से आपकी ऐसा लगता है?'—मैंने पूछा।

'भारतीयकरण! मुसलमान छाते हैं गहूँ का और सोचते हैं दूधरे का। सबका भारतीयकरण जरूरी है।' वे उत्साहित होकर बोलते हैं।

'सबका, अर्थात् सब मुसलमानों का?' मैं नीच में पूछ बैठा हूँ।

'हां साहब, सब मुसलमानों का।'—फिर वे अपने अनाप से ही अकभवा जाते हैं और सफाई पेश करने लगते हैं।

गांधी, विनोबा, जयप्रकाश तथा सर्वोप्य पार्टी नाम कुरेदनी ने शुरू रखे थे। सर्वोप्य के विषय में कुछ सास जानते नहीं। जतः राय नहीं बलायी। गांधीजी के विषय में बोले: 'जब तक गांधीजी से सब तक उनकी नीतियाँ अच्छी थी। पर सब जमाना बदल गया है। कोई किसी की नहीं सोचता। जतः गांधीजी के रास्ते से भी कुछ नहीं होगा।' फिर स्वयं ही बोले, 'परि लोग उनके रास्ते पर चलें तो सबका बला अकट होगा। पर उनके रास्ते पर कोई चलना ही नहीं। गांधीजी की

बांसेस पार्टी को देखो। 'राममतिप' करवाता है, दाक वा व्यापार करता है, दुनाव में योगस बोडिय करवाता है और दुनिमा को बहुत है कि गांधीजी के रास्ते पर चलो।'

'गांधीजी यह साप्य करने को बहने से क्या?' मैंने पूछा।

'नहीं।' तबक से उत्तर मिला।

'फिर क्या इस कांसेस की गांधी की बांसेस क्यों बहने है?' मैं हेनकर पूछता हूँ।

वे कुछ क्षण मेरा चेहरा देखते हैं, फिर हँस पडते हैं, 'साप्य जायक बहते ही।'

मे अपनी कांरी बन्द कर देता हूँ और राजनैतिक दल, भारतीयकरण, गांधीजी, बदलता हुआ जमाना, सब पर विस्तार से धांसे करता हूँ। छीन पुछों पर देखाबित बनाते हैं मैंने उनके आइचोत के दौरान। बीच-बीच में था रहे टेलीफोन के दाबतूद से उन रेखाचित्रों से बड़े प्रवाकित मातृप हूँ।

'हमने ऐसा कोई किताब को, हम फुँरी' वे अपनी महाराष्ट्रीयन हिन्दी में बोलते हैं और मैं देने का भासा कर चल देता हूँ। बादा अतृप है; बूकि मेरे रास पुस्तकें नहीं हैं। — पुन्यर प्रशांत

पत्र-व्यवहार का पता :

सर्वे सेया संघ, पत्रिका-विभाग
राजघाट, धाराणवी-१
तार : सर्वसेवा फोन : १४२११

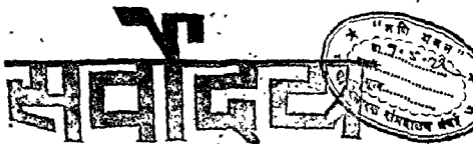
सम्पादक

राममूर्ति

इस अंक में

- पत्रक शताब्दिपत्र
- सम्पादकीय ४७४
- आजिय और मागाजिक घेरों को मिटावें
- श्री कासा बलितकर ४७६
- छहरना अभिमान : विमित्र दृष्टिकोण ४७७
- भारत के मुसलमान और राष्ट्रीयता
- श्री० जलत बमान ४७९
- भारत में गरीबी—१३
- श्री राममूर्ति ४८२
- दाकुओं के गिरोह में शान दिन
- श्री भोगालबल मरुट ४८३
- शमसुदराज के मोचें से
- श्री राममूर्ति ४८३
- अन्य वनस्पति
- आन्दोलन के सयावार, धागे के पत्र

वारिक मुद्रक : १० १० (सक्रेड कागज : १२ व०, एक प्रति २२ पैसे), विदेश में २२ व०; भा ३० तिमिय मा ४ हावर । एक अंक का मूल्य २० पैसे । बोधकमरता कट्ट द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं अनोकर प्रेष, धाराणवी में मुद्रिय



सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

भ्रष्टान-थर

भ्रष्टान-थर नृलक सामोद्योग प्रधलनसिक्त प्रवृत्ति का नरुदय माहस्य हैसामन्ताहस्य

विमोचनी का संदेश

अभी हमने शोक-संतोष का क्षण गुप्त किया है। शोक इसलिए कि यह सब एक अन्वेष, मालूम नहीं। इसलिए हम भावियों के मिलने का नहीं सोचते। दूसरी बात वे सब पत्र सबके होंगे तो बनने वाली पुस्तक 'गीता-प्रवचन' ही जाय। अपनी कीमत दो-बाईं करने होंगी। उसके लिए करीब पाँच छोटे छोटे खर्चे होंगे, उतना करना। तद्गीताकार विदु भी नहीं माने-बाने हैं। चापद इस सम्पन्न के बाद बानेने।

मेरा हवास है, बागी जीवन-परिचय बनना चाहते हैं। विद्वान् बागु सोचने की सतार है। बागीक की सतार होती तो उनको छोड़ देती। बुद्ध के समय भद्रनिवास ने सम्पन्न किया था, तो उसे सदा नहीं हुई थी। सब दन पर किछ करने, सदा की होती। हम समीप करते हैं कि मोड की सदा नहीं होती। अगर कानून होगी तो भी उपरान्त धमा करेगे। उनमें (शक्तिवों में) सतारनाथ तो है ही। पहले विद्वाने सम्पन्न किया के लेनी बनेरह करते हैं, मोड़ी सदा की करते हैं तो इनको भी मोड़ी बनीन विनास करते हैं।

बागी माधोसिंह द्वारा पारवादाप

बीर (मरीना) में १६ मार्च की बागीकी की प्रतिया के सामने करने शान सम्पन्न करने के पूर्व बागी नेता माधोसिंह ने उपस्थित जन-समुदाय से अपने द्वारा की गयी गतिवियों के लिए क्षमा-याचना करते हुए कहा। "मादयो और बहूतो, यह मेरा बहुत बड़ा भाग्य है कि बाग बाग लोगों के बीच मुझे अपनी गतवी की माठी भागने का धोरा मिला है।

पन्धन पाटी के हुए निभायी, जिसके नाम के बुनिया को तुल्य हो रहा था बाग बनने आरंभो समय की सेवा के लिए सम्पन्न करने हैं। बाग विमोच और बागु उपरकासको के बागीकीर से हम, अपनी लवी विद्वानो गुप्त कर रहे हैं। हमसे बहुत-सी गतिवियाँ हुई हैं, उनके लिए हमें फिर से पश्चात्ताप है। हमारी बहू से जिन्हें भी बुद्ध, उपस्थित हुई है उनसे हम मादो माने हैं। भागवान के हमारी यदो विनयी है कि वह हवे लकी राह पर बनने की ताग-दे और इस बीरन में समाज के सारक बनने।

एक निर्भीक व्यक्तित्व : श्री कमलनयन वजाज

● जमनालाल जैन

श्री कमलनयन वजाज जब इस दुनिया में नहीं रहे। उनका देहांत अपने पर और लोग से दूर, ऐसी जगह में हुआ जिसकी बरपाय तक नहीं थी। प्रभावान की अथवा नियति की लीला अद्भुत अपार है। राजभवन की विशालता और सर्वसाधन सुसज्जता में भी आधमी जितना एकाकी, निरीह और बेबख हो जाता है। आधमी सोचता है, चाहता है, और उप-भूयार सारे साधन जुटाता है कि ऐसा कर लूंगा वो ऐसा हो जायगा। लेकिन सब ठाठ पढ़ा रह जाता है और बनगारा हाट छोड़कर चल देता है। शरीर के भीतर की आत्मा एक प्रकार से परदेसी ही होती है। यह सांस-सवैया कुछ नहीं देखती और अपने पथ पर चल देती है। श्री कमलनयन वजाज के साथ भी नियति ने यही खेल खेला। न बम्बई, न कर्णा, न परिवार, न पुत्र, न माता, न किसी से कुछ कहना-सुनना, न मन की बात बह सकना और महामतावाद के राजभवन में, धोते-धोते बम्बे में पुणवाप विर निद्रा में लीन हो जाना—आह, आधमी की जितनी बेबखी है। लेकिन ऐसी भोग बड़े भाव्याभावियों को ही मिलती है जो पुणवाप किसी से सेवा लिए बगैर, शरीर की व्यापार बिना लेते साथ साथ में कूप कर जाते हैं।

कमलनयनजी वजाज परिवार के प्रमुख और दरिष्ठ व्यक्ति थे। सेठ जमनालालजी बनारस के अष्ट पुत्र थे। जमनालालजी के पुत्र होने के नाते कमलनयनजी को बापू और विनोबाजी का सान्निध्य सहज ही मिला। उनके पास खिलने का साम मिला और राष्ट्र की सेवा करने का शक्त मिला। यह सब कुछ होते हुए भी कमलनयनजी का निराशा था। इन व्यक्तिगत की पहचान या प्रमुखता के लिए किसी

विरोध या हमला छोड़ने की आवश्यकता नहीं है।

श्री कमलनयनजी बचपन से रूपरुद्र स्वभाव के रहे हैं। जो बात उनको गंभीर जैवती थी, वह करते नहीं थे और स्पष्ट बह देते थे। इस स्वभाव के कारण जमनालालजी एक प्रकार से चिन्तित रहते थे और सायद मान लिया था कि यह सड़का बैसा नहीं है जैसा मैं चाहता हूँ। फिर भी जमनालालजी ने



श्री कमलनयन वजाज

सदैव कमलनयनजी के व्यक्तिगत का कभी क्षमण नहीं होने दिया और मनोबल बढ़ाने का ही प्रयत्न रखा। कमलनयनजी ने तब लिखा है कि 'मेरा स्वभाव बचपन से ही निरुत्सा और सत्यवादिता, यहाँ तक कि अत्यन्त ही सत्यवादी हो रहा है।' व्यक्तिगत जैसा और जितना होते हुए भी सुन्दर निराशा, किसी के दबाव या प्रभाव में न झुकना, स्वतंत्र रहा है।

स्वतंत्र व्यक्तिगत की यह विशेषता होती है कि वह अपने द्वारा बनायी लीक पर ही विश्विष्ट होता है। वह बनो-बनायी चीक पर नहीं चलता। कुछ लोग

अपने आदर्शों और सिद्धांतों के दबाव से अभिभूत होकर चाहते हैं कि उनकी सत्यान का जीवन-द्वैधा ऐसा-वैसा को। बोलने-चालने, उठने-बैठने, खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने आदि सब क्रियाओं में एक बने-बनाये या अपनी कल्पना के आदर्श का नक्शा खींच लेते हैं और समझते हैं कि सब यही जीवन-विचार का पथ है। ऐसे लोगों की सत्यान ऊपर से भले ही साधु स्वभाव की लगे, लेकिन अन्ततः वह बरपोक, अहंतावादी और प्रतिक्रियावादी ही साबित होती है। यह चौभाग्य की बात रही कि कमलनयनजी के स्वभाव को अमरु एक ढाँचे में बालने का प्रयास किसी ने भी नहीं किया—उनको स्वतंत्र विकास का ही अवसर दिया गया। जमनालालजी, बापू और विनोबाजी तीनों मनुष्य-स्वभाव के पारखी थे। कमलनयनजी के व्यक्तिगत को इन गुरु-जनों ने समझाया ही।

कमलनयनजी धनी बाप के बेटे तो थे ही, पर सायद यह बहूता ठीक नहीं होगा, क्योंकि धन तो उन्होंने अपने पुरुषार्थ के बहुत अधिक पैदा किया और उनका स्थान देश के प्रमुख उद्योगियों में माना जाता है। अन्त में कहना यह चाहिए कि कमलनयनजी उय बाप के बेटे थे जो धारणों और शरीरी को पश्य करते थे और सेवा ही जिनका प्रत था। उन्होंने अपने बेटे को उँचे-उँचे बालिब की सिखाया न किनाकर विनोबा जैसा सत्य के सान्निध्य में भेजा यहाँ इस भावी धनी को आधम-प्रांशु में सब तरह के छोटे-बड़े काम करने पड़ते थे और वह भी लुची से करता था। इन सबका अन्त का ही और द्यो ने कमलनयनजी को शूटे महंगार का मय से दूर रखा।

माथीभी की रचनात्मक प्रवृत्तियों से तथा माथी-नरवर्ती सर्वोच्च आन्दोलन से, वजाज-परिवार का आरम्भ से ही निरुत्सा का सम्बन्ध रहा है। कमलनयनजी को (पृष्ठ १०१ पर)

सौलिंग-भूमि-गाँव

सौलिंग लगाना आसान है लेकिन लागू करना मुश्किल है। भूमिगत ही नहीं, मालिकों, नेताओं और हाकिमों का जो विभाग है उसे देखते हुए सफल अग्रिम सफल है। सरकारें चाहे अपने को कितनी लोकप्रिय और समाजवादी समझें, समाज की शक्ति उनके साथ नहीं है। इस कमजोरी के कारण वे छुट्टी उतगी दूर नहीं जा सकतीं, और समाज की अपने साथ नहीं ले जा सकतीं, जहाँ पहुँचना भूमि की नयी व्यवस्था के लिए आवश्यक है। कौन सरकार है जो सौलिंग लगाने के साथ-साथ जनोन्नति भी लगा सके? कहाँ है वह सरकार जो सौलिंग का मानव बनाने के साथ-साथ उद्योगिकार के बलून में भी इतना बुनियादी संसाधन कर दे कि सरकार और भूमिगत न 'सू डबल-डाल इन पाठ-नाउ' का खेल समाप्त हो जाय और भूमिगतों के लिए काम का जगह घटता पर भी कुछ भूमि निरुण जाये? विहार में भूमिगतों के बागस जन्मोवसत का राकने के लिए सरकार आज तक क्या कर सकी है? या कितना दुःखद घ घेते करता है और हर एक जानता है कि उसके घर से ४-५ बीघे की उपज जाता है वह कहाँ है : 'मै लगनम भूमिगत हूँ।' कानून जिस बागस का सच मानता है वह उस बागस क जल पर कानून की आख में धून मारता रहता है। भूमि का मालिक अब, इसके भूमि या मालिक नहीं रह गया है, वह भूमि और बाट का भा मालिक हो गया है। उसके मुकाबले सरकार बेरस है, या या 'समाज' कि उसमें और नेताओं में ऐसी मिनीममल है कि नाच से ऊपर तक पूरा सरकारी सन उबरक हाथों का खिन्नी बन गया है।

यद्यपि हान में भूमिगतों का निम्नस्तर ने सुचरितिया की बैठक में जा नाई पेश किया उसमें कहा गया कि सौलिंग लगाना 'भूमिगत मजदूरों की आर्थिक और सामाजिक हैलिवन का ऊँचा उठाने के लिए जरूरी है।' ठीक है, जरूरी है, लेकिन सौलिंग से कितना भूमि निकालकर सरकार कितने भूमिगतों को देना चाहता है? आंकड़े बताते हैं कि अगर भूमिगतों को १/२ एकड़ से कम भूमिवाले परिवारों का आधा से एक एकड़ तक भूमि देना हो तो केवल में ७.५ एकड़, तमिनगाड़ और बंगाल में १० एकड़, विहार में १२.५ एकड़ और उत्तर प्रदेश में १५ एकड़ की

सौलिंग लगानी पड़ेगी। क्या सरकार इसके लिए तैयार है? क्या उसने गणतंत्र को बुनियादी परिवर्तन के लिए तैयार किया है? सरकार को १५ एकड़ की सीमा आश्रितों के कारण भाव ३६ एकड़ तक पहुँच जायगी, तब भूमिगतों के लिए कितनी भूमि निकलेगी? और, जो भूमि निकलेगी भी वह रदी होगी और जहाँ-तहाँ छेदी हुई होगी। उसे लेकर भूमिगत कब तक हाथ मारेंगे?

कुछ भी हो, सौलिंग जरूरी है। अगर देश में भूमिगत न होते फिर भी वह जरूरी होता कि सौलिंग लगानी जाय क्योंकि उद्योग का यह बुनियादी साधन जिसे एक परिवार के पास कितना रहेगा वह तो तय होना ही चाहिए। लेकिन आज की स्थिति में यह मान लेना कि सौलिंग से देश के अधिकांश भाग में भूमिगत और सभ्य भूमिगत जनता का सत्ता हल हो जायगा गलत है। भूमि को सौलिंग हो, जनोन्नति हो, चकबन्दी हो और अब जाने इसके व हों, कामचदारी (एवसेष्टी जमादारी) समाप्त हो; पानी हो, पूँजी हो, महाजन और व्यापारी को गुलामी न हो, सहकार का वातावरण हो; खरीद-बिक्री पर अकुण हो, गाँव आनी पुरी भूमि के आधार पर योजना बनाने की स्थिति में हो, बेरखनी न हो, नयी खेती में न्यूनतम मजदूरी तय हो और वातावरण में खेती के अनुकूल भाव हो; गाँव का विकास खेतों-औद्योगिक (ऐसी इन्डियन) हो जिससे विश्व अनुभवित हो। अतः में, कठोर सतति-नियमन हो। इतना सब हो तब कहाँ गाँव का सत्ता हल होने के रास्ते पर जायगा।

प्रश्न मात्र सौलिंग का नहीं है, भूमि और खेती की नयी व्यवस्था का है। इसके भी आगे जरूर प्रश्न नयी भूमि-व्यवस्था के आसार पर नयी प्राय-व्यवस्था का है क्योंकि जब तक गाँव में आसो सम्भव नहीं बदलेंगे तब तक कानून की सूई लेकर द्विज हाथों से पैबन्द लगाने की कोशिश करने से काम नहीं चलेगा।

गाँव के प्रश्नों का उत्तर स्वदेशी, स्वाधय, और स्वायत्तता की नयी में है। देश का वातावरण इसके अनुकूल है। सर्वोच्च आन्दोलन ने कई भागों में परिवर्तन के निम्न भाग-मानस तैयार किया है। अब बसत इस बात की है कि दानों की सम्मिलित शक्ति से भूमि के प्रश्न को एक देश-व्यापी अद्विजक जन-आन्दोलन का कर दिया जाय, तथा नयी भूमि-व्यवस्था के आधार पर नयी प्राय-व्यवस्था की सम्पूर्ण योजना प्रस्तुत की जाय।

स्वदेशी, स्वाधय और स्वायत्तता की मिलाकर प्राय-व्यवस्था बनवा है। स्वदेशी और स्वाधय स्वायत्तता के विना सम्भव नहीं है। जो सरकार गाँव के लिए स्वदेशी और स्वाधय की बात कहती है वह प्राय-व्यवस्था से कब तक अलग रहेगी? और, अगर पट्टनवी भाव हो तो प्राय-व्यवस्था से परदेख क्या? प्रश्न स्पष्ट है: उठता स्पष्ट उत्तर देना कर लेने का साहस चाहिए।

क्रान्ति के लिए एकाग्रता चाहिए, निष्ठा चाहिए और...

• धीरेन्द्र मजूमदार

सभी महारथी एक महीने का शत्रुत्व करके यहाँ आये हैं। अभी विपत्ति लोग मिले उसके भी बात की ही एक बात मुझे दिखाई दी कि हमारे कार्य-कर्ताओं में अलग-विरासत बढ़ा है। इसे मैं बड़ी निश्चित धारणा हूँ।

क्रान्ति यानी क्या ?

पहले तो हमको साफ-साफ समझ लेना चाहिए कि हम क्रान्ति की बात करते हैं— क्रान्ति वा मतलब है प्रचलित मूल्यों और धारणाओं को बदलने की बात। हमारा मकसद साम्यवाद है। सरकार द्वारा समाज चलेगा और बाजार द्वारा बाधक बनना चलेगा, इस विचार को आप बदलना चाहते हैं। आप कहते हैं कि सरकार और बाजार के मातहत जन-जीवन नहीं रहेगा और समाज के साथ जन-जीवन जुड़ेगा। सरकारवाद और राज्यवाद को आप समाप्त करना चाहते हैं, पुँजीवाद को समाप्त करना चाहते हैं, और समाजवाद कायम करना चाहते हैं। निरन्तर जीवन समाज के आधार पर और नैमित्तिक जीवन सरकार के आधार पर यह जी तरीका चलना या, निरन्तर जीवन अपने स्वायत्तजन के आधार पर और नैमित्तिक जीवन बाजार के आधार पर चलना या, उसके बदले सरकार और बाजार ने विचार जन-जीवन से समाज की प्रवृत्ति करने की अपेक्षित कर लिया है, उसे आप उलटाना चाहते हैं। यह अपने आपमें बहुत बड़का काम है, क्योंकि मान्य विचारों को आप बदलना चाहते हैं। बाजारका उद्देश्य क्या है ? समाज को हन करना ही होगा उद्देश्य है। पहली बात यह है कि आप उद्देश्य को गंभीरता से विचारें। दुर्दैव के अत्याचारों से मुक्ति के आधार पर संगठन हुआ, तो संगठन की क्रान्ति की बना देना हुई यह आपने देखा। प्रायस्वराज्य की क्रान्ति के लिए

आप यदि भूमि-समस्या के आधार पर गरीबों को संगठित करेंगे तो बड़ी दुर्दशा होगी जो भाग्य धोर रूप की क्रान्ति की हुई है। भिन्न उद्देश्य पर जन-संगठन करने में जो खतरा है उसका आप इतिहास से सबक लीजिए। यह मैं आपको कह देना चाहता हूँ। गरीबों का संगठन आप कीजिये। मैं भी गरीबों से कहता हूँ कि आपकी उल्टा होगा; लेकिन जनता संगठन आप प्रायस्वराज्य को लेकर कीजिए, भूमि-प्राप्ति को लेकर नहीं।

मैंने कहा था कि और गांधी और क्रान्तिकारी गांधी में फरक है। क्रान्ति के प्रतिहार का विचार एक मान्य विचार था, उसके एक नयी प्रवृत्ति गांधी ने बढ़ायी। उसकी सम्भावना प्रकट करने की बात भी गांधी सुद कर गया। समाज में यह बात उर्वेगायत हुई। मार्गिन पूरत क्रान्ति जैसे लोग भी उस सम्भावना को प्रकट करते रहे हैं। गांधी ने यह सम्भावना प्रकट करने की बात विनोबा पर नहीं छोड़ी है। लेकिन सात लाख गणराज्यों की स्वायत्ता, अल्पक समाज में राज्य-सत्ता का लोग, करने द्वारा जीवन से बाजार को दूर हटाना, इसकी सम्भावना को गांधी अपने जीवन में प्रकट नहीं कर सके। इसके प्रकटीकरण की जिम्मेदारी विनोबा और आप लोगों ने उठायी है। इसलिए मैंने कहा था कि 'सहारा में गांधी अधिष्ठा या मरेगा। एक माई ने मुझसे कहा, गांधी कभी मर सकता है ?' जिन्को । गांधी मर नहीं सकता इस विश्वास को कभी मुझमें नहीं है। गांधी मर गये शक्य लेकिन हन सकता है, शान्तिपूर्ण परिस्थिति माने पर वह उठ सकता है यह हमारा विश्वास है। उधे क्रान्तिकारी गांधी की विनोबा का काम करने उठाना है विनोबा के नेतृत्व में। जिसे आरपी

विनोबा है वह आपके कंधे पर बैठा हुआ है। जो काम आर कर रहे हैं, उसमें आप सफल नहीं हुए तो वह हथकेवाला ही है।

व्यूह-रचना का आधार : वैयक्तिक नेतृत्व का विसर्जन और जन-नेतृत्व का विकास
दुसरी बात है हमारी व्यूह-रचना के सम्बन्ध में। मैंने एक बात यही की कि जब तक अन्त-संघार का काम हुआ, रही बात अर्थ-संघार की। आज के इस समाज में अर्थ-संघार का काम हुआ। विचार केवल प्रचार से आगे नहीं बढ़ता, शिक्षण से आगे नहीं बढ़ता उसके लिए टोप और स्पर्श कार्यक्रम चाहिए। प्रायः मैं दार्मिणों से कहता हूँ कि तुम लोगों ने क्या धर्म बताया है 'एडवेंचरिज्म' (आत्मनिश्चयवाद)। आप लोगों का आत्म-निश्चय चलाता है, इतना कर तो, आपने देखा जायेगा। सहारा में हवा बनाने की बात सब लोग करते हैं। यह बात विचार-संघार से बनती है, विचार-शिक्षण से नहीं। विचार शिक्षण के लिए, यह भी पत्र पढ़ा है, उनसे से काम नहीं लियेगा। हम सुना करते थे कि विनोबा की बारात पारंगी है यह विनोबा की बारात है। कभी-कभी यह टोक भी सपनी है। गांधी की बारात होगी है, तो उधे लोग मिलते हैं, यहाँ सब टोक है। यह सब ही हुआ जीवन हमेशा यह मान्य रहा है कि राज्य-सत्ता द्वारा समाज चलेगा। जनता को हमेशा यही सिखाया गया है। आज भी एक माई ने कहा कि सर्वोपर के नेता अब भी आये, सब हमारा यह सर्वोपर ही आता है, कि उनसे सहयोग करें। क्रान्ति-मुक्तियों ने और हमने जनता को हमेशा यही सर्वोपर सिखाया कि शासन सहकार होना चाहिए, आपकी रिश्ते (प्रतिक्रिया) हीनी चाहिए। शासकीय व्यवस्था में-शासकीय संस्था को जनता की सक्रिय रिश्ते (प्रतिक्रिया) जिन्को तो हन नहीं है कि समाज केवल हुआ। जनता से अलगा की जाती है, सहकारी संस्था भी। लेकिन हन चाहते हैं कि जिम्मेदारी

है? अंग्रेजों का शासन समाप्त होना चाहिए वह मान्य विचार वा गांधी के यमाने में। अहिंसा की शक्ति को प्रतिष्ठित किया गांधी ने। गांधी ने उस समय रामराज्य का मार्ग लगाया होता तो किन्तु देशवासी उनके साथ होते? बिना मोक्ष रामराज्य की स्थापना के लिए तैयार होते? शासन-संस्था का अंत करने के लिए कितने संघर्ष निकलते? लेकिन अंग्रेजी राज्य का अंत करने के लिए निश्चय। एक प्रत्यक्षीकरण हुआ, एक मार्गदर्शन हुआ। साम्राज्यवाद का मुकाबला किया—जिनकी एक सार्वजनिक आकांक्षा थी। सार्वजनिक आकांक्षा के धोर को बढ़ाकर उन्होंने एक नयी सामाजिक शक्ति प्रस्तुत की। आज यह बात मान्य है कि भूमि-समस्या का हल करने की आकांक्षा सार्वजनिक है। मजदूर, बँडारदार, मानिक सभी चाहते हैं कि इस समस्या का हल हो। इस धोर को पकड़कर हम अहिंसा का अंगना इतिहास लिखना चाहते हैं। मैं इतना जरूर कहना चाहता हूँ कि आज देश भूमि-समस्या को अहिंसा के द्वारा हल नहीं करता है तो यह देश कानून के हाथ में या कल के हाथ में चला जाया। कानून का पालन होता है सर्वोधिकारवाद, और कल का अर्थ क्या होता है मान्य नहीं। कानून और कल के इस देश को धुंधल रखना ही, जो कल्याण की पद्धति से, सर्वोदय की पद्धति से, भूमि-समस्या का समाधान सर्वोदय आन्दोलन के द्वारा इस देश के समाज प्रस्तुत होना चाहिए। समस्या हल करने और आगे के लिए दृष्टिकोण नहीं करती रहेगी। बच्चे जवान हो गये, जवान बूढ़े हो गये, बूढ़े मृतिक करीब पहुँच गये। हम इसके आगे भी प्रतीक्षा कर सकते हैं। हम अपनी आर्थिक साधना कर सकते हैं। हजार वर्षों का कार्यक्रम बना सकते हैं। वह अधिकांश इतिहास ने हमको दिया है, लेकिन हमसे यह अधिकार नहीं देती। इसकीस वसी तक हमने अपने आन्दोलन की

(दोप अन्तिम पृष्ठ पर)

भारतीय शक्तिप्राप्त के राज्य नीति निर्देशक सिद्धान्त में इसका स्पष्ट उल्लेख है कि राज्य राष्ट्र के भौतिक साधनों के वितरण का प्रयास सामान्य हित में करेगा। सामान्य हित के लिए आर्थिक सत्ता के केन्द्रीकरण को रोकने का प्रयास होगा। इसी लक्ष्य की दृष्टि में रखकर दिसम्बर १९५४ में सरकार ने समाजवादी समाज की रचना की घोषणा की और निजी सत्ता के स्थान पर सार्वजनिक सत्ता को महत्ता प्रदान की। सन् १९५६ में औद्योगिक नीति के प्रस्ताव में भी धन के वितरण में समानता धारण का उल्लेख किया गया। विभिन्न क्षेत्रों में आर्थिक शक्ति का केन्द्रीकरण कुछ विशिष्ट सीधों के हाथों में है। इस पालक प्रवृत्ति को रोकने के लिए न केवल घोषणा हुई बल्कि उसके नियंत्रण के लिए कदम उठाये गये। सपु और सार्वजनिक उद्योगों की स्थापना के साथ प्रगतिशील कर-प्रणाली का प्राविधान हुआ। लेकिन कालचक्र, वास्तव्य, श्रमधर्म व्यापार और कालावन की प्रवृत्ति ने केन्द्रीकरण को और अधिक प्रबल बनाया। महात्मा-नवीश शक्ति और एकाधिकार आयोग, दोनों के प्रतिवेदन में आर्थिक शक्ति का केन्द्रीकरण और असमानता परिलक्षित हुई है।

आर्थिक केन्द्रीकरण और असमानता को सार्वजनिक अधिकारी हुई है कि घोषण १० प्रतिशत शहरी परिवारों की आय ४.२४ प्रतिशत और सबसे निम्न श्रेणी के यह प्रतिशत परिवारों की सम्पूर्ण आय केवल १.३ प्रतिशत है। उत्तरी क्षेत्र में गरीबों से नीचे के स्तर की संख्या में लगातार वृद्धि हुई है। यह सन् १९५३-५४ में ६९.९६ प्रतिशत की और १९५६-५७ और १९६१-६२ में क्रमशः बढ़कर ७०.१४ और ७०.८९

प्रतिशत हो गये। यह शहरी आय की असमानता में वृद्धि की प्रमाणित करता है।

आय के वितरण में ग्रामीण क्षेत्र में शहरी क्षेत्र की अपेक्षा कम असमानता है। ग्रामीण क्षेत्र में कुल ७९ प्रतिशत और नगर में २१ प्रतिशत परिवार हैं। फिर भी ग्रामीण क्षेत्र के कुल परिवारों के पास कुल व्यक्तिगत आय का ७१ प्रतिशत तक ही सीमित है, जबकि नगर क्षेत्र का २९ प्रतिशत वश है।

शहरी क्षेत्र में 'उच्च आय' वर्ग के ११ प्रतिशत शहरी परिवारों के पास कुल व्यक्तिगत आय ३९ प्रतिशत है जबकि ग्रामीण क्षेत्र में 'उच्च आय' वर्ग में केवल तीन प्रतिशत परिवार आते हैं और इन परिवारों के पास २२ प्रतिशत व्यक्तिगत आय इस क्षेत्र की है। शहरी क्षेत्र में न केवल 'उच्च आय' वर्ग के अधिक परिवार हैं, बल्कि ग्रामीण क्षेत्र की अपेक्षा शहरी क्षेत्र में 'उच्च आय' और 'निम्न आय' श्रेणी वर्गों के परिवारों की प्रति परिवार औसत आय अधिक है।

इस बढ़ती हुई असमानता को दूर करने के लिए शहरी सम्पत्ति के सीमांकन का प्रश्न एक सर्वमान्य सिद्धान्त बन चुका है, जिसे न केवल आम जनता और सभी राजनीतिक पक्षों का समर्थन प्राप्त है, बल्कि देश के मान्य अर्थ एवं समाजशास्त्री विद्वानों ने असमानता दूर करने के लिए शहरी सम्पत्ति के सीमांकन के प्रश्न को अनिवार्य एवं आवश्यक कदम माना है। इस सम्बन्ध में शहरी आय की असमानता को कम करने के लिए आवश्यक प्राविधान है, किन्तु उन सभी सम्बन्धों का प्रयास सभी तक लागू रहा है। इस प्रकार देश में बढ़ती हुई असमानता के भयकर परिणाम को अल्पकाल में दूर शहरी सम्पत्ति की अधिकतम सीमा का

प्रान्त भी उपर कर सामने आया, जो सर्वमान्य हो गया। इस निबन्ध में नगर की सम्पत्ति क्या है? उसकी सीमा क्या हो उसका उपयोग किस प्रकार किया जाय? इनका प्रभार अन्य क्षेत्रों पर क्या पड़ता है? आदि विषयों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

नगरों में विभिन्न प्रकार की जल और अन्न सम्पत्ति के अतिरिक्त छोटे-बड़े उद्योग-धंधे, व्यापारिक फार्म, घमंडा सम्पत्तियाँ और स्थान आदि पाये जाते हैं, जो निजी और सार्वजनिक दोनों प्रकार के होते हैं। यह भी समझ है कि किसी-दिसी अतिरिक्त या परिवार के पास एक से अधिक विभिन्न प्रकार की सम्पत्तियाँ हों। इन सभी प्रकार की सम्पत्तियों का समावेश सम्पत्ति सीमा के अन्तर्गत करना है।

भूमि प्रायः अधिकांश नगरों में बाहर के अन्दर या बाहर की नगरेपानिका क्षेत्र के अन्तर्गत आती है, बहुतेकी परती भूमि, विशेष आवासीय भवन के अतिरिक्त नागरिकों के बसयाग के लिए तथा अन्य आवश्यक सुविधाओं के लिए भी भवन आदि का निर्माण ही सकता है, कुछ हाथों में केन्द्रित है। इनके अतिरिक्त कुछ गरीब परिवारों के पास भी एक-दो निरवा जमीन होती है, लेकिन धनाभाव के कारण उक्त भूमि का विकास करने में वे करने की सर्वथा असमर्थ पाते हैं। यह जो हुई स्यात् दीक्षनेवाणी प्रवीण, जो विकास के अभाव में उपेक्षित परी हुई है। लेकिन इनके अतिरिक्त विभिन्न भूमि कुछ विशिष्ट लोगों के बड़े-बड़े भवनों या रात्रमहलों के साथ सजाय है। ऐसी भूमि का उपयोग यद्यपि बाग के रूप में होता है, लेकिन तिन देश में साखी-करोड़ों लोग आवासहीन हों, वहाँ इन बागों का इतना रूप में प्रयोग करना कहीं एक समाजवाद के अनुष्ठा और शक्तिहीन है। इस प्रकार नगर क्षेत्र में तीन प्रकार की भूमि उपलब्ध है। इनमें कुछ भूमि विकसित क्षेत्र में है, तो कुछ भूमि अतिक-

सित क्षेत्र में। अतिकसित क्षेत्र की भूमि नीची-ऊँची होने के साथ साथ पानी और मत्स्यियों से ढँकी रहती है और इस प्रकार की भूमि का वर्तमान उपयोग लगभग-भा है। इस प्रकार नगर की भूमि-आवस्था को लेकर इसे दो हिस्सों में विभाजित किया जा सकता है। वह छोटी भूमि, जो गरीबों के पास है और बड़ी परती या बाग की भूमि, जो बड़े पूँजीपतियों या सामन्तों के हाथों में है। ये व्यापारी या सामन्त इस प्रकार की भूमि से नाजायज फायदा उठाना चाहते हैं या सामन्ती-प्रथा के प्रतीकस्वरूप अपने पास बनाये रखना चाहते हैं।

भवन : आवादी के बाढ़ नये और पुराने नगरों में एक एक ही अद्वय-सिक्तियों के स्वरूप के बड़े-बड़े भवन बड़े हो रहे हैं जो दूसरी तरह गन्दी बस्तियों, धुंधी-सौंझियों का भी विस्तार उसी गति से हो रहा है। नगरों में गरीब बस्ती बढ़ने के साथ-साथ इनकी दशा भी सोचनीय अवस्था में पहुँच गयी है। बास बड़े-बड़े व्यापारिक एवं औद्योगिक महानगरों में ही नहीं, बल्कि छोटे-छोटे नगरों में भी एय समस्या ने विकरान स्वरूप धारण कर लिया है और आवासहीन इनसान एकड़ की परतियों पर सोने के लिए मजबूर हो गया है। आवास चुनरी हुई बड़ी-बड़ी दमालों के निरव लक्ष्मी होने से लगता ही नहीं कि देश का कोई नागरिक आवासहीन है और यह भी कोई समस्या है, लेकिन इस ब्यापारीय के पीछे कुछ मुद्दों पर लोगों का तात्काल्य स्थापित है। बाकी इनसान तो आवास के लिए टोकें ही या रहा है। अगर नगर के आवासीय गृह कुछ वैभवशाली हाथों में केन्द्रित हैं, तो कुछ ऐसे गरीबों के हाथों में ही जो रोमी के अभाव में किरानेदार नागरिकों के साथ अपनी मुसीबत का दिन काट रहे हैं। कुछ नये और पुराने आवासगृहों में महान-मानिक स्वरूप रहता है। आवासीय महलों में कुछ ऐसे भी हैं जो कई खण्डों में

विभक्त होते हैं और ऐसे महलों में कई परिवार अलग-अलग रहते हैं या रह सकते हैं। कुछ ऐसे भी आवासीय भवन हैं, जिनमें शुद्ध रूप से किरानेदार ही रहते हैं।

व्यापारिक फर्म नगरों में आये दिन निजी एवं सार्वजनिक व्यापारिक फर्मों की स्थापना हो रही है, लेकिन बिछने कुछ वर्षों में एकाधिकारी फर्मों—टाटा, बनलर, बिरला, मफतजाल, सेम्प्री, सी० सी० एच०, तिहुडगिर्मा, विन्धिया, आदि के पब्लिक परिवारों को हरक से पूरे देश में उप-नगरों से लेकर महानगरों तक के प्रमुख बाजारों में जाल बिछ गया है। ये परिवार तथा उनके समुदाय उत्पादन से लेकर कुटकर वितरण तक की सारी प्रक्रियाओं में संलग्न हो गये हैं। ऐसी एकाधिकारी फर्मों के अतिरिक्त भी अन्य प्रकार की फर्में प्रायः सभी नगरों में फैली हैं। इन बड़ी फर्मों में मानिक स्वयं व्यवस्थापक अथवा प्रबन्ध-मण्डल का निर्देश होता है और इन फर्मों को फर्म-कारियों के माध्यम से चलाया जाता है। इन फर्मों के अतिरिक्त छोटी-छोटी फर्में भी होती हैं, जिन्हें परिवार के लोग स्वयं मिलकर चलाते हैं। इस प्रकार से फर्म तीन प्रकार की हैं एकाधिकारी, बड़ी और छोटी।

उद्योग : सभी नगरों में प्रायः छोटे-बड़े विभिन्न प्रकार के उद्योग बड़े हैं। ये उद्योग, बड़े, मध्यम और छोटे आकार के हैं। कुछ उद्योग आरक्षण-निगम से बने हैं, तो कुछ आरक्षण निगम की परिधि से बाहर हैं। इसलिए इस प्रकार के आरक्षित कुछ राष्ट्र पाने के अधिकांश जो होते हैं, अतिरिक्तता बढ़ने के भी दरदार हो जाते हैं।

व्यापारिक फर्मों और इन उद्योगों से जो जोरी होती है, यह तो सर्वविदित है, लेकिन इन संस्थाओं की चलाने के लिए कुछ फर्म-कारों को रत्न बाते हैं। इनके साथ मानिक का व्यवहार समाप्तिकतापूर्व और आनासादी से करा होता है। इनका

में केवल घोषणा होता है, बल्कि वे तो उनकी सेवाओं में हिमयता है और न केवल स्तरीकरण, महंगाई-मरते से तो वे लोग बिलकुल मुक्त हो हैं। बग़ोतरी वेतन भी मालिक की मर्जी पर निर्भर करता है। न केवल उनकी सेवाओं के साथ मानमानी की जाती है, बल्कि वेतन, कार्य के घण्टे सभी में मालिक की मनमानी चलती है।

धर्मदा संस्थाएँ : नगरों में कई प्रकार की धर्मदा संस्थाएँ होती हैं। एक यह जो किसी खास मजहब या सम्प्रदाय के हित-साधन के लिए स्थापित है, दूसरे जिनो एक सार्वजनिक पर्यटन और हित-साधन के लिए। इस प्रकार की संधिकर संस्थाएँ सदस्यहीन होकर कुछ निहित स्वार्थों की पूर्ति करने में कार्यरत हैं। इन धर्मदा संस्थाओं में वे कुछ एक के पास अमुक्त सम्पत्ति होती है और बही-कड़ी तो इन धर्मदा संस्थाओं के पास अव्यक्त सम्पत्ति के रूप में बढ़त से बाबासी भवन भी होते हैं और भूमि भी होती है।

कृषि शोष : आजादी के बाद एक तरफ तो नवीन नगरों की बसाया गया और दूसरी तरफ पुराने नगरों का विस्तार भी हुआ। नवीन नगरों की स्थापना तथा क्षेत्र-वृद्धि, शोषो प्रकार से विकसित आर्थिक क्षेत्र भी नगर के अन्तर्गत सम्मिलित कर दिये गये हैं, लेकिन इस प्रकार के कृषि-शोष, जो नगर की सीमा में है, ध्यान नोतवाने हैं।

काला धन : नगरों में ही प्रायः नई-नई क्लबहाउस पाये जाते हैं और इनमें करापसंघन की प्रवृत्ति इस हद तक पनपी है कि इन लोगों के पास काला धन के रूप में अवार सम्पत्ति हो गयी है। ऐसे काले धन का प्रयोग लक्कर व्यापार से लेकर बड़े-बड़े औद्योगिक प्रतिष्ठानों एवं भवनों के निर्माण में होने लगा है। इस धन से न केवल सचयवर्ती प्रभावित हैं, बल्कि देश की पूरी अर्थ-व्यवस्था प्रभावित है और इसके द्वारा उनका बाजार पर तो नियंत्रण होता ही है, अष्टाचार (द्विप पृष्ठ ५०-५२ पर)

[प्रस्तुत लेख में लेखक ने आर. बी. वर्तमान समस्याओं के सर्वप्रथम में तत्सोप-जगत की सक्रिय बनाने की सलाह दी है। उन्होंने कुछ लोग कार्यक्रम भी सुझाये हैं। आर. सर्वोदय आन्दोलन के एक कार्यकर्ता हैं अतः आपकी इच्छा है कि इस पर कार्यकर्ता सभी संप-अभियोग में पर्वी करें। स०]

शोषता देश के बनने से मुसलमानों के मानस में एक बड़ा परिवर्तन आया है। वे वास्तविकता के करीब आये हैं और यह महसूस करने लगे हैं कि उनके नेताओं ने उन्हें पिछले २५ साल में कभी भी नहीं धरता नही दिखाया।

मुसलमान आधतौर से यह कहते हुए घुंटे जाते हैं कि 'धर्म के नशे में जीवन के वास्तविक और धर्मवादी तत्वों से अल्लि बन नही की जा सकती।' 'इस्लामी भाईचारा' केवल खोखला नारा है। यह एक कल्पना है। रोजमर्रा की जिन्दगी में इशका अनुभव नहीं होता।

'इस्लामी भाईचारा' अगर होता तो बागला देश में आज जो गैर-बंगालियों की दुर्दशा हो रही है वह नहीं होती और बंगालियों के साथ भी जो कुछ पाकिस्तानियों ने किया वह नहीं होता। पाकिस्तान के बनने से बिहार, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, बर्षादि उत्तरी भारत के मुसलमान तबाह हो गये, और वे कड़ी के नही रहे। आज उन्हें भाषा वा पाकिस्तान में कोई भविष्य नहीं है और भारत में भी उसका कोई स्थान नहीं है परन्तु पाकिस्तान में उसके लिए केवल नफरत ही नफरत है। ईरक अहमद फेर और हूडीज आर्थिचरी जैसे उन्हें के शायर भी पचायी भाषा का हाण्डा उठाने हुए हैं। सिन्ध के लोग यह हंगामा कर रहे हैं कि सिन्ध की भाषा केवल सिन्धी ही। वे उन्हें को करभी से भी देश-विकासा देना चाहते हैं। यह बड़ी लच्छोसजवक बात है। पाकिस्तान में उन्हें संस्कृति पनप नहीं सकेगी। भारत में हम अल्पसंख्यक हैं—एक बड़े आर्थिक अल्पसंख्यक। पाकिस्तान में भी हम अल्पसंख्यक हैं—

एक छोटे सांस्कृतिक अल्पसंख्यक। अगर भारत में साम्प्रदायिक दगे बन हो जायें तो यहाँ के मुसलमान करानी और बागला देश के बिहारी मुसलमानों से ज्यादा अच्छे रहे रहेंगे। 'बहुदलुन मुस्ले-मीन, के नाम पर समानता और भाईचारा का रूप केवल परिवर्तनों में ही देखा जा सकता है, वास्तविक जीवन में नहीं।

पाकिस्तान के प्रति उनके दिल में एक विषम भाव पाया जाता है। एक मुस्लिम राष्ट्र के नाते उनका उसके एक भावनात्मक सम्बन्ध तो दिखाई पड़ता है परन्तु उदा देह से उन लोगों को नफरत भी कोई कम नहीं है क्योंकि बांगलादेश के गैर-बंगालियों के लिए पाकिस्तान में कोई स्थान नहीं है और वे तोष उन्हें स्वीकार करने के लिए भी तैयार नहीं हैं। सिन्ध के मूल निवासी गैर-सिन्धी मुसलमानों (जो बर्षादि बिहार व उत्तर प्रदेश के हैं) के विरुद्ध वातावरण बनाये हुए हैं और शायद उनका वही हृथ होनेवाला है जो बांगला देश में गैर-बंगालियों का हो रहा है।

सभी मुसलमान इन सीली बातें विचाराने को महसूस करते हैं और इस और मुस्लिम दलों का धन भी व्ययवित्त हुआ है। वे इस बात की पूरी कीविल कर रहे हैं कि मुसलमानों का स्थान दूसरी ओर जीड़ा जाय, उनका धनाने गुरुर बना रहे, मुसलमान अल्पकार को और बरुडे रहे, और मुस्लिम धन उनके नाम पर सोदेराजी करते रहें।

कम्प्यूटिस्टों को यह कोविष है कि वे मुसलमानों में लोकप्रिय बन सकें और मुसलमानों की नजर में वे उनके हजरत बनने की कोशिश में हैं। जनसभ में एक

दूसरी ही भीति लगानी है। यह ऐसी बातों को हवा देने की कोशिश करता है जो करीब-करीब सम्भव है। जैसे यह कहना कि बांगला देश के २५ लाख विहारियों मुसलमानों को हिन्दुस्तान बना दिया जाय और उन्हें यहाँ की नागरिकता प्रदान की जाय। पिछले चुनाव में साम्प्रदायिक मुसलमानों के साथ मिलकर जनसभ ने यह नारा लगाया और इसके कई स्थानों में फायदा भी हुआ। दूसरी ओर जनसभ की यह भी कोशिश है कि मुस्लिम लोग और अजायबे इत्यादी जैसे साम्प्रदायिक दलों के सम्पर्क में आया जाय और गठबन्धन कायम रियाज जाय। अगर जनसभ की बात कामयाब रहती है तो मुसलमान राष्ट्रीय जीवन की मुख्य धारा में जाने के बन्धे और दूर चले जायेंगे और, हिन्दुस्तान का समग्र जनसभ और मुस्लिम लोग के प्रभाव-क्षेत्र में बँट जायगा।

यह समय बहुत महत्वपूर्ण है। बहुत दिनों के बाद एक अवसर आया है कि हिन्दू और मुसलमान आपस में घुल-मिल सकें और हिन्दुस्तान में एक धर्म-निरपेक्ष समाज बना सकें। मुसलमान अपने अनुभव की रोशनी में कुछ सीख रहे हैं। अगर हम उन्हें यह समझा पायेंगे कि भारत के राष्ट्रीय जीवन में बिना हिंसा विरोध और मुख्य धारा में आये बिना मुसलमान अपनी वास्तविक समस्याओं को हल नहीं कर सकते। मुस्लिम अजायबों उन्हें अजायब की ओर ले जा रही है। साम्प्रदायिक राजनीति का अन्तारा सर चूना है और धर्म-निरपेक्ष राजनीति में ही मुसलमानों का भला है। जनसभ ने बिहार के चुनाव में जो रोम बना किया वह मुसलमानों के लिए दुःखदायक है, उन्हें सज्जं रहना चाहिए, उसके उत्तरी परिधिनि विगड़ेंगी, बनेगी नहीं। मुसलमानों की अधिपति समस्याएँ देना ही समस्याएँ हैं और उसके अतिरिक्त जो अजायब और वास्तविक हैं उनका प्रवृत्त और-मूर्तिमत्ता को भी है। मुस्लिम अजायबों के अन्तारा भी बहुत घरे लोगों को मुसलमानों से सहानुभूति

है और वह उनको समस्याओं को हल करने के लिए विवशित है, परन्तु तापी एक हाथ से तो नहीं धरती। अच्छा है कि मुसलमान अपने अधिपति को समझते हैं परन्तु यह भी आश्चर्य है कि वे अपने वर्तमानों को भी समझें। भारत के विकास में मुसलमानों का जो स्थिति दूसरे शब्दों में योगदान रहा है उसके अतिरिक्त भारत के मुसलमानों को भी बहुत कुछ करना है। मुसलमानों के लिए यह अच्छा है कि वे राजनीतिक दलों के मुँह छानने और राजसत्ता की सुगन्धित करने के बन्दे भारत के आय नागरिकों के दिनों में अज्ञो जगह बनायें। भारत एक अधिपति और धर्म-निरपेक्ष देश है। इसे ऐसा ही रहना है। यहाँ नयी परिस्थितियों और नयी सम्भावनाएँ उजान हो रही हैं। ऐसे समय में मुसलमानों का रोम बना होना चाहिए, मुसलमानों के लिए यह एक विकार करने का विषय है। मुसलमानों का रोल जिला वास्तविक, समझारी पर आधारित, और गतिशील होगा, मुसलमानों के लिए उनका ही प्रतिष्ठित स्थान भारत के समाज में बनेगा। इस तरह भारत में एक सांस्कृतिक क्रांति होगी जिसमें इस्लाम या ईशान्द नभ का प्रभाव भी उनका ही होगा जिसका कि हिन्दू प्रभाव।

ऐसे समय में गांधीवादियों और हम सर्वोपर्य में विमर्श रखनेवालों का भी कुछ कर्तव्य हो जाता है, बरना अगर मुस्लिम अजायबों मुसलमानों को यही समझाती रही कि मुसलमान भारत में अनुपस्थित हैं, उनके परम्परागत मूल्यों, रीति-रिवाजों की सञ्चय है इसलिए उनकी संस्कृति और उनका अस्तित्व कायम नहीं रह सकेगा तो राष्ट्रीय हित को दृष्टि से अच्छा नहीं होगा। राजनीतिक दल त्रिभुज प्रकार से उन्हें २५ वर्षों से गुमटाइ करके चले आये हैं और आगे भी करते रहे तो साम्प्रदायिक समस्या का हल नहीं निकल सकेगा। मुसलमानों में हूँ कुछ काय करना चाहिए। क्या

काम किया जाय यह एक गम्भीर विषय है और इस पर सोचने की जरूरत है। इसलिए भारतीय स्तर पर गांधी-वादी मन्थो और सर्वोपर्य विचार में विमर्श रखनेवालों की एक तीव्र-निर्धारण समिति बनायी जाय। इस समिति के सदस्यों के लिए यह जरूरी है कि वे मुस्लिम मानव को समझते हों, उनकी समस्याओं से परिचित हों, उनके बीच हर प्राण में क्या चल रहा है यह जानते हों, और उन्हें मुसलमानों के बीच काम करने का कुछ प्रयत्न अनुभव भी हो। इस समिति की अनिवार्य तीर से हर महीने एक बैठक हो और वह अपने अनुभव की रोशनी में अपनी योजना बनाये तथा उसका होनेवाली समस्याओं को साबने रखते हुए मुसलमानों में काम करने की शूद्ध-रचना (हैटल) तैयार करे।

बड़े काम शुरू करने के लिए निम्न-लिखित कदम उठाये जा सकते हैं

१—मुसलमानों के बीच अज्ञान नाकर उनके सम्पर्क किया जाय और सम्पर्क के लिए मुस्लिम अजायबों का युद्ध न लारा जाय।

२—उनकी समस्याओं का अध्ययन किया जाय। जो वास्तविक हैं उनका समर्थन किया जाय और जो अनुचित हों उनका विरोध किया जाय। इस सिनसिले में एक बात स्थान रखने की है कि हमारा विरोध तीर न हो और अधिक अच्छा होगा कि हम उन मुसलमानों का समर्थन करें जो प्राविशाल मूल्यों की मुसलमानों में बना चाहते हैं। (मुस्लिम पर्सनल लॉ के विषय पर मुसलमानों के बीच राष्ट्रीय स्तर पर एक माद-विचार चल रहा है। हर नगर के मुसलमान दो गुटों में बँटे हुए हैं। एक मुस्लिम पर्सनल लॉ के समर्थन में है दूसरा यह कहता है कि उनमें परिवर्तन लारा जाय। जो लोग परिवर्तन को आग्र करते हैं वे धर्मजोर हैं। हश्य है कि ऐसे लोगों की हूँ मदद करनी है और उन्हें नैतिक समर्थन देना है।)

१—उत्तरी भारत के समय हर शहर में प्रत्यमानों के दो-तीन मंदरों, स्तूप और कम-से-कम एक कालेज है। इनमें आतिथेता का 'सिवा' बनाया जाय और उनके सम्मानों में वाष्पायुज का परिचय दिया जाय। (गांधीवादी विचार धारा, सर्वोदय और दलान में दो-पाठ मुख्य परस्पर एक है—(क) अहिंसा (ख) आर्थिक न्याय (ग) सामाजिक समानता (घ) अन्तर्राष्ट्रीय भाईपारा। इसलिए आभा है कि मुसलमान इस विचार को अपनाएँगे।)

४—भारत में जो दते होते हैं उनकी रिपोर्ट तथा आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से विशेषण एषावा-कर मुसलमानों के बीच बाँटा जाय। ५—'प्रदलन सहरीक' में प्रसिद्ध सम्बन्धित समरवाशो पर बिजने सम्पाद-कीय अब एक लिखे जा चुके हैं उन्हें एक पुस्तक को मान्य दी जाय और उन्हें भी मुसलमानों से बँटवाया जाय।

६—संसार के दूसरे देशों में, जहाँ अल्पसंख्यकों की समस्याएँ हैं जैसे—कनाडा, साइप्रस, अमेरिका, इराक, सूडान, चीन, और रूस—उनका दस विषय पर अध्ययन करके सर्वोदय कार्य-कलाओं में बँटवाया जाय, ताकि वे सीधे दस विषय पर अपने यहाँ वैज्ञानिक दृष्टि-कोण से काम कर सकें।

७—गांधी शांति प्रतिष्ठान केन्द्रों और सर्वोदय मण्डलों द्वारा हर नगर में मुसलमानों की वर्तमान समस्याओं पर जोखी की जाय और उनका निष्कर्ष लोगों में वितरित किया जाय।

८—मुसलमान मुहल्लों में गांधी केन्द्र खोले जाय और वहाँ स्वाध्याय-केन्द्र चलाया जाय।

९—नबरो में मुसलमानों के मुहल्लों में सामाजिक कार्यों के प्रीमियर बनाने को कोशिश की जाय।

१०—सर्वोदय कार्यकर्ता जहाँ कहीं भी मायब दें वहाँ अल्पसंख्यकों की समस्याओं पर सर्वोदय का विचार जरूर दस्त करे।

मुसल-पत्र । सोमवार, ८ मई, '७२

तामिलनाडु के पत्र

तामिलनाडु की यात्रा से

मैं तंजावूर से एक दिन के लिए मद्रुरं गया। सोचा था कि तंज के अग्रपक्ष की बगलनापनूनी से भेंट होगी, मगर वह दोरे पर थे। वहाँ सबसे पहिले पुल्लनात थी दी० एम्० खोकनापनू से हुई। पहिले चौदह-पन्द्रह बरसों से वे उत्साहपूर्वक आन्दोलन में लगे हैं। आज-कल खोकनापनूजी दो काम पर विशेष ध्यान दे रहे हैं—रामनाड जिले के सेवापुरनाथ में जो सत्तर एकड़ ना है और मद्रुरं जिले में अण्णाट्टी, जो उँठीय एकड़ का है। इनके अलावा दूसरा काम सर्वोदय साहित्य की विशेष भी उनके जिम्मे है। एक बूक स्टॉल नबर में है और दूसरा मद्रुरं स्टेशन पर। वहाँ लगभग बीस हजार रुपये महीने की साहित्य-बिक्री हो जाती है।

तामिलनाडु सर्वोदय मण्डल के प्राल-वाल मन्त्री थी के० एम्० नटराजन्नी सेरे से उच्च दिन घाम को मद्रुरं सोटे। वह तमिल के अच्छे लेखक और वक्ता हैं, सेनिन आन्दोलन के काम में अग्रत रहने के कारण लिखने-पढ़ने की फुरसत नहीं मिलती। तमिलनाडु का राजरबल तो हो चुका है अब रामस्वराज्य की स्थापना छोड़े छो, यही उनकी चिन्ता और कोशिश है।

तामिलनाडु का सबसे प्रमुख गांधी संग्रहालय मद्रुरं में है। उसका स्थापन अरेख गांधी निधि करती है। उसके अग्रत हैं श्री के० अरणाचलपनूनी, जिन्हींने सर्वो-दय के लिए ज्ञाना जीवन समर्पित कर दिया है और देश के हरे-गिरे रचनात्मक सेवकों में से एक हैं। पहले वे ही निधि के मंत्री थे लेकिन अब यह दायित्व उन्होंने एक तरण कार्यकर्ता श्री एम्० विजयनायन् पर सीसा है। वे तीन साल से यह काम मुसलमानापूर्वक कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि तमिल भाषा में बापू की रचनाओं-भाषणों के सीख सह्य निधि

ने प्रकाशित किये हैं, सबकुछ इंग्लिश है। एक पुस्तक है—गांधी और तमिलनाडु, जिलमें बापू के तमिल भाषण-भाषी सार्वभौमों से सम्पर्क की पूरी बहानी है। इसका श्रीमंगल दक्षिणी खोजीय से होता है, जैसा 'आल-रथा' में बापू ने उल्लेख किया है। एक अनुसृत प्रकाशन बहानियों का है—वे नकारों, जिन्का मुद्राण व प्रेरणा का सीन गांधी विचार है। यह पुस्तक पढ़ बिकी है।

मद्रुरं में गांधी परिवार के सबसे प्रमुख हैं श्री एम्० एम्० आर० सुब्रह्मण्यम् को 'अरणा' के प्यार से नाम से पुकारे जाते हैं। पन्द्रह-बीसह वर्ष बाद उनके निधनकर बहुत आनन्द हुआ। अवस्था ६५ वर्ष की है। तरीर भी भोद्धा सीण है, सेनिन उल्हाड व जिन्का में तरणों की बात करनेवाले। तमिलनाडु गांधी निधि के सर्वोदय अग्रत वही थे और आज भी कपेणों से सर्वाएँ पलाते हैं। सोटे दिन हुए एक भाषण सत्तान उनकी पुत्री का देहांत हो गया जिससे उनको बहुत आघात पहुँचा। एयर हाम में उनके बड़े भाई भी मरर गये जिससे उचोण व व्यापार देखने मर खोड भी उचरर वा पढ़। सेदिन सर्वोदय आन्दोलन कीर उसकी धारी प्रवृत्तियों को उनका उपाह-मत्तविष और सहायता मिलती रहती है।

पूछते पर उन्होंने बताया कि पहले एक पिन्कर सताती रहती है। वह तमिल-नाडु के लिए ही नहीं, सारे देश के लिए है कि गांधी-विचार और कयो गठी पकना और आन्दोलन का प्रत्यक्ष अग्रर राजनीति आदि पर कर्वाँ नहीं पढ़ता ? मैंने कहा कि बिहुरा या सहस्रवा में कुछ काम ही जाय तो एक नक्शा आभने कानिया और इसके बाद अग्रर ही खरेपा, सेनिन उनकी सोचा कयी रही।

तंजावूर से सीटते हुए एक दिन मद्रुरं

रता। वापसी के रिजर्वेशन टिकट की व्यवस्था नगर के पुराने सेवक श्री पंढरामजी ने कर दी। वह कई बार अना की देखने त श्राद्ध आये थे। बड़े सरल हृदय और सेवारतन व्यक्तित्व हैं। सन् १९४८ से लेकर १९५१ तक मद्रास नगर की सर्वोदय प्रयुक्तियों में भाग लेते थे। उसके बाद उदास हो गये। मैंने पूछा, 'बयो?' तो कुञ्ज न बोले। फिर कहा: 'बड़ मैंने देखा कि अन्य पाठियों की तरह नेतागिरी अपने समुदाय में भी है तो फिर दूर रहता ही अच्छा समझा। हाँ, त्रिनेशे व्यक्तित्वगत सम्पत्ति है, उनसे है।'

सर्वोदय-आन्दोलन की दृष्टि से मद्रास नगर में इन दिनों एक अद्भुत काम हो रहा है—सर्वोदय-यात्र का। इसका सञ्चालन श्री एम्. आर. सुब्रह्मण्यम्बरु कर रहे हैं जो बहिष्ता के तरोल्लिख संसिद्ध हैं। पाठिकों के रहनेवाले बनिवाहिट्टि, स्वराज्य-आन्दोलन के विप्राही, बहु तन-मन से सर्वोदय में लगे हैं। हाल में ही मद्य-निषेध हेतु उन्होंने मद्रास से कन्या-कुमारी तक पदयात्रा की। आज भी त्रिने-त्रिले में पदयात्राएँ चल रही हैं।

हाँ, मद्रास नगर में इस समय लगभग दस हजार घरों से सर्वोदय-यात्र चल रहे हैं। इस सहूलें इस काम में निष्ठापूर्वक लगे हैं। उनसे मिल कर बड़ा आनन्द हुआ। डी० एम्. के० की नगरी में उनका साजसज्जबूबक लगे रहना बहुत सराहनीय है। अक्सर घरों की माताएँ उनसे यही पूछती हैं—'सर्वोदय का विचार इतना अच्छा है लेकिन धारका यह काम फेनता क्यों नहीं? देश को बिगड़ी दवा क्यों धार नहीं सुधारेंगे तो और कौन क्यों से आवेगा?'।

गाँवो शान्ति प्रतिष्ठान का एक अच्छा केन्द्र मद्रास नगर में चलता है। संघाण्ड ही श्री ए० बन्द्योपाध्याय। इन दिनों वैसीस सहस्रो का वन दौर बना रहे हैं। वे सब मैट्रिक पास हैं और उनमें कुछ तो कानेय के विद्यार्थी भी हैं। एक दिन मैं भी शरीक हुआ। देश की गति-

विधि पर उनसे पचाँ की और फिर पूछा, 'देश की सब लड़कियाँ आपसी तरह क्यों नहीं पत्र पाठी?' 'उनकी खाना ही नखीब नहीं होता।'

'खाना कहीं से मिलता है?'
'खेत से!'
'खेत किसके पास है?'
'बन्द सम्पन्न लोगों के पास, जो अपने वो मासिक बहने हैं।'
'लेकिन मासिक है कौन?'
'ईश्वर।'

'तो खेतों का क्या करना चाहिए?'
'भुक्त बाँट देना चाहिए। जमीन मुक्त हो।'
'और बाज़र के मासिकों के पास जो पट्टे हैं उनका क्या हो?'
'वे पट्टे उन्हें भुगी से जला देना चाहिए।'
इन बातिकाओं के मुख से युग की इस भाँग को सुनकर बौन पदपद नहीं होगा।

—बाबू

नये प्रकाशन

चर्मरोगों की प्राकृतिक चिकित्सा

—धर्मचन्द्र सरावगी

चाम की चारद से लिपटी देह में न जाने कितने रोग हैं। चाम को मुन्दर, बाकपंक और स्वस्थ बनाये रखना हर मनुष्य का धर्म है।

मूल्य : ६० १.५०

म्लहमेश्वर की प्राकृतिक चिकित्सा

—धर्मचन्द्र सरावगी

विषय नाम से स्पष्ट है।

मूल्य . ६० १.५०

नीचे लिखी पुस्तकें शीघ्र ही प्रकाशित हो रही हैं

- १—धम्मपद : अष्टाशी वन्दुवाद सहित
- २—भेरी घोष वा धम्मघोष ? पु० य० देशपाण्डे : सम्राट अशोक के अन्तरग जीवन की कहानी
- ३—पद्म-वीथ—बालकवीर भावे; अष्टात्मप्रेरक पत्रों का सञ्चालन।
- ४—वक्त्र-विद्रोह—प्रो० सुरेश पांडरीपाण्डे
- ५—क्वेन्ट फोर्ट ए न्यू सोलाइटी—प्रो० सुरेश पांडरीपाण्डे
- ६—कुमारव्या—जीवनी और विचार. जवाहरलाल नेहरू
- ७—पाटी की भाँग—रामचन्द्र राही
- ८—कान्ति का समय चलान—इन्दु टिकैकर
- ९—सामुदायिक समाज का स्वरूप - एक चिन्तन—अप्रकाश नारायण
- १०—गाँवो-वीथ—बालकवीर भावे

गाँवो के जीवन प्रेरक विचारों का सञ्चालन

सर्व संघा संघ प्रकाशन
राजघाट, धाराणसी-२

सहरसा जिला ग्रामस्वराज्य अभियान

दि० १८ मार्च से १८ अप्रैल १९७२

उपलब्धियाँ—एक

प्रखण्ड	सम्पत्ति	आमसभा	१८ अप्रैल	आमसभा	साहित्य	कार्यकर्ता
	धाम-राख्या		समागोह	गण	प्रकार	संख्या
१. बहुरा	७४	१५	१	२	४२-००	११
२. गौहटा	२०	२०	४	२	६५-००	५
३. बहियी	१००	६०	६	५	२७-२५	१५
४. सोरवाजार (पूर्व)	६५	५१	१२	७	४०-००	९
(पश्चिम)	१३०	३०	४५	४५	३९-००	९
५. सोनबरसा	३१	१३	८	७	४५-२०	६
६. सिमरी महिलापुर	४६	५	२	३	१२५-५०	११
७. सानपुरी	१२२	४०	११	२५	२७९-२३	१०
८. सुपौल	५३	४४	२२	८	७८-२५	१०
९. सीपरा	६५	६५	—	१९	५५-००	८
१०. निमंली	५८	५४	३८	२०	५१-७५	६
११. त्रिवेणीगंज	२०	१२	—	६	४७-५०	९
१२. किसानपुर	११३	९०	४३	२५	१२०-६५	१०
१३. मरौना	८३	५०	४२	—	३७-५०	५
१४. बसंतपुर	५७	५२	—	१२	३४-२५	१२
१५. रामपुर	६१	५९	१७	७५	११९-७३	१४
१६. छावापुर	६१	७५	१५	२२	१७४-१५	१२
१७. भोपुरा	६९	३९	५	१	६८३-५०	१४
१८. मुरलीगंज	६०	१०	४	—	६०-२५	१२
१९. कुमारखण्ड	५१	५१	—	२	१६८-५९	६
२०. लहरेखर	१००	७०	३०	—	२००-००	१६
२१. किशनगंज	८१	६८	१९	१४	३५१-००	१२
२२. ज्ञानमनगर	३१	१४	—	३	१०१-७०	८
२३. चौडा	१८	६	१५	३	४५-२०	१०
२४. हरीली (पूर्णिया)	४८	२६	२९	५	५६-०१	१२
२५. बिरीन (हरधारा)	३०	२१	२	१	१५-२५	६
२६. मनालीपुर (पूर्णिया)	२५	१०	५	७	६२-५०	१२
	१६६०	११००	३८३	२५०	३१४६-२८	२७३

उपलब्धियाँ-दो

प्रखण्ड	विवरण ग्राम सवैया	पुरानी भूदात को		नयी प्राप्त विवरण भूमि	दाता अविदग्धित	बादाता सकशा सररा
		अमीन बंटी	बी० क०			
		बी०क०घू०	बी० क० घू०			
१. बहुरा	१२	६३-१४-११	—	—	१२५	१८४
२. मोरहा	६	४८-१३-०६	११-१०-००	९-५-१८	१८४	२२४
३. महिनी	१८	—	४१-१३-१०	—	१४८	२३०
४. धौर बाजार (पूर्व)	१५	२-०६-००	२९-११-१५	५१-००-००	२९	१४४
(पश्चिम)	७	—	२६-१०-००	—	३३	७१
५. सोनबरसा	१	१-१९-००	२२-०१-१५	—	२७	६६
६. तिमरो बलिनजारपुर	४	—	१४-०५-००	८-०८-००	११	४०
७. सनभुवा	६	—	४४-००-०३ $\frac{३}{४}$	२-००-००	४५	८५
८. सुरीन	२२	१०-११-०१	१४-१५-२ $\frac{३}{४}$	२-१०-००	५७	९५
९. पीररा	१	४-१०-१२	—	—	४	१०
१०. निर्मली	७	—	१६-१८-००	२६-०८-१७	४१	२१
११. त्रिवेणीगन	७	६९-१७- $\frac{३}{४}$	—	३४-००-००	८२	१६१
१२. गिहानपुर	१०	—	५०-०५-१८ $\frac{३}{४}$	२२-१९-१३	१६४	१२९
१३. बरोला	—	—	—	—	—	—
१४. राधोपुर	१५	४१-१८-१८	४०-१५-१६ $\frac{३}{४}$	५-००-३ $\frac{३}{४}$	८६	११२
१५. बघलपुर	५	—	१३-०८-००	२५-१४-००	१७	२२
१६. धावपुर	२५	८२-१०-०६	१३४-१८-१८ $\frac{३}{४}$	१२४-१०-१३ $\frac{३}{४}$	२५२	३६०
१७. मधेपुरा	२५	१८-००-१४	४७-०३-११ $\frac{३}{४}$	१८-०८-००	१०४	२१९
१८. धरनीगन	१२	—	१४१-७-६ $\frac{३}{४}$	—	१८७	२८७
१९. दुधारखण्ड	२	—	१८-१७-१०	—	४०	५१
२०. मिहोवर	१७	१००-००-००	२५-००-००	४८-००-००	७७	१२०
२१. सिधनसैक	१९	६-१५-१५	७६-१८-१९	४३-००-००	१५३	१८५
२२. धानधनगर	१९	०-०२-२०	१६-०५-१५	४-००-००	१८	५१
२३. खोसा	५	४२-९-०५	२-१०-०२	३-००-००	२५	१२२
२४. खोनी (मुंगिया)	९	—	१४-१०-००	२१-०९-००	३७	३८
२५. खोनी (दरमया)	११	४१-१९-११	२८-१७-१४	—	६२	१९९
२६. मन्थानीपुर (मुंगिया)	४	—	८०-७-००	—	१८	२०
	२७५	५४०-०१-१९ $\frac{३}{४}$	८५१-११-१७ $\frac{३}{४}$	४४९-१४-५	२०३७	३२५६

कुल विदग्धित भूमि १३८३१-१७

ग्रामस्वराज्य के मोर्चे से

१२ अप्रैल

बनाक की हर पंचायत के लोग धार्ये हैं। भूमिहीन के लिए सर्वोदय, धर्मदान, ग्रामस्वराज्य, विनोबा, सबका एक ही धर्म है-भूमि। कोई भी नारा लगाए, कोई भी बात कहे, वह भूमि के सिवाय दूसरा कुछ नहीं समझता। जिस आदमी की शक्ति भी अपनी जमीन पर न हो, वह समझता है कि भूमि का ही दूसरा नाम भगवान है।

तो तीन हजार से अधिक की सभा में मौजूद कुछ साक्षिक हैं जिन्होंने भूमि का दाव दिया है, कुछ भूमिहीन हैं जिन्हें दाव की भूमि मिली है और कुछ भूमिहीन हैं जो भूमि चाहते हैं। बाता-बाता-जानता की यह सभा है। मैं पूछता हूँ: "जिन लोगों के पास भूमि बिलकुल नहीं है, या दो कदवा के कम है, वे हाथ उठाओ।" कितना मित्र जाय, हाथ ही हाथ उठ गये हैं। यही हाल गाँवों में भी है। दने-दिने लोग भूमिवादी हैं, बाकी सब भूमिहीन हैं जो मजदूरी करते हैं। मजदूरी और बँटारें दोनों करते हैं, या सिर्फ बँटारें करते हैं।

ऐसे लोगों के लिए भूमि ही सबसे बड़ी वास्तविकता है, चढ़े-चढ़े-बढ़े भूमिवादी के लिए भी भूमि ही सबसे बड़ी वास्तविकता है। इसलिए गाँवों के हृदय में भूमि का ही छोर पकड़कर प्रवेश किया जा सकता है, दूसरा कोई छोर पकड़कर नहीं। दूसरा छोर है भी नहीं। सबसे पहिले यह होना चाहिए कि गाँव में सबकी भूमि हो। इसके बाद ही यह ही सकता है कि गाँव की भूमि गाँव की हो। पहिले भूदान, तब धर्मदान, दोनों को निताकर ग्रामस्वराज्य की शुरुआत। धर्मदान के बीधा-बद्ध थे भूमिहीन

विनोदी बाहिए।

बाद की सभा में प्रसन्न हसर की एक वार में समिति बनो जो प्रसन्न घर में बाते ग्रामस्वराज्य का काम करेगी। हर पंचायत से पाँच-पाँच लोगों ने नाम दिये। कुल १२० नाम लिखे गये। ये लोग अपनी-अपनी पंचायत में और लोगों को निताकर उदर्य पचाका समिती बनायेंगे। हर पंचायत समिती की बैठक गृणिमा को हुआ करेगी। गृणिमा के ५ दिन बाद पंचमी को उदर्य बनाक समिती की बैठक होगी जिसमें कुछ पचायत समितियों के संदीनक भी शरीक होंगे। ये सब सामान्य पीने दो मो लोग बनाक में ग्रामस्वराज्य का काम करेंगे। सभी ग्रामस्वराज्य की तीन बातों पर सबसे अधिक ध्यान देना है। हर गाँव में स्वरज्य, हर भूमिहीन को भूमि, हर नागरिक को बोट। 'बुध पैचारिस' के कारण शरीक के लिए बोट का महत्व भूमि से कम नहीं है। भूमि न होने से जीविका जाती है, लेकिन यदि बोट न देने दिया जाय तब तो ध्यावहारिक नागरिकता ही समारा हो जाती है।

२० अप्रैल

सहरसा में सब कार्यकर्ता दफ्तरा हुए हैं। एक महीने का अभियान समाप्त हो गया। जिते पर में १२०० बीघे जमीन बँटी। साधियों में उखाह है। मध्य प्रदेश के साधियों ने राधापुर बनाक में जगो काम करने का निर्णय किया है। गुनराज के साधियों ने विदेसवर बनाक लिया है।

सहरसा प्रादेशीन का मोर्चा बन गया है। ऐसी स्थिति बननी चाहिए कि हर राज्य में एक मोर्चा बने, लेकिन

(पेज पूछ अन्तम पर)

'नासका नाम ?'

'नोरन कोस !'

'आप क्या करते है ?'

'ओ ?' की नासक अनलिस्ट हूँ !'

'निजी राजनीतिक दल-विरोध में भारतीय सक्षिक पक्ष है ?' 'राजनीति में तो है। पर निजी दल-विरोध में नहीं।...'

'ओ हाँ, गांधी, विनोबा, जयप्रकाश और सर्वोदय पार्टी नाम सुने है ?'

'सर्वोदय के विषय में आप कुछ कहेंगे ?'

'सर्वोदय की किशोरकी शैलिनी

शोक है। रिक्तिय गूला अच्छी है। पर

अवर्गवार दस्ता है कि मुरु से शक्त एक

सम्मानदायिक हो जाता है।... 'जैसे साम्य-

वादी विभागाध्यक्ष है न कि सच्चाई से

पूरी-पूरी समान में सतर जाये तो शर्म

की तपू अच्छी शीज है, पर शयहार

में देता हो नहीं पाता है। सर्वोदय

व्यावहारिक दृष्टि से दगते भी अहित

अव्यावहारिक है।'

मैं ध्यावहारिकता के विषय में कुछ

कहना चाहता हूँ, तो वे बीच में ही बात

कट देते है।

'दोष्ये, कुछ नतीजे बनग पॉज-

टिव निकले है पर एके एकेसे नहीं मान

सबते। बड़े लोग में यह प्रतिकेचन है

ही गही।... 'समार के उमीग की भी

नहीं है।'

क्या जाने इसकी सफरता-अव-

कता की जानकारी के लिए कुछ

विशेष प्रयास किया है ? इसके दर्शन

की कोई सुझावें पढ़ें है ?

'जी नहीं, कोई कितान बैरह या

विशेष अध्ययन मीने नहीं किया। म्यून

पेपरों से सामान्य जानकारी पायी है।

वर्षांतर दलने दिनों से चल रही है, क्या

एकता पायी है ?'

'गांधी की भाग एक सामाजिक

क्रान्तिकारी की दृष्टि से बना पाते है ?

के कुछ दाय चुप रहते हैं। फिर बोलते हैं :

‘देखिए, मैं न तो उन्हें महात्मा मानता हूँ और न गांधीजी कहना चाहता हूँ। न ‘महात्मा’ और न ‘जी’। एक व्यावहारिक राजनीतिज्ञ भर ये वे—लेशमात्र भी विशेषता नहीं थी।’ ऐतिहासिक शक्तियों के प्रवाह से उनकी सफलता सिद्ध हुई है। -

‘बाबू कोई ऐसा भी महान् व्यक्ति है जिसने बिना ऐतिहासिक शक्तियों की सहायता के सफलता प्राप्त की हो?’

‘लेकिन।’ वेते महात्मा तो परिस्थितियों की मिलनी है सबों की। पर लेकिन सशुभ महान् था। उसने जो बहा करके दिखाया। ‘‘गांधी दिखावटी महात्मा थे। अपना महारत्नापना बनाये रखने का ढोंग करते थे। हार्दियरा, निपुरी कांति में शुभावन्त बोध के साथ जो हुवा वह गांधी, की नीचता थी? कोई शय्या व्यक्ति बैठा करेगा? एक अशुभदायी राजनीतिज्ञ थे गांधी, अधिका-धिक दस वर्षों तक बिचकी दृष्टि या सफ़ी हो। आज गांधी के रास्ते पर चलकर दस देश की नया हालत हुई है? विनेत्र एकतामी जो भी गांधी की, शहन वगैरह बनाना, धारी, सब धर्मोत्तों की भोज हो गयी।’

‘शुक्ति गांधी के कायेदे पर चली?’ ‘‘ मैंने बीच में ही पूछ लिया। ‘‘बी हूँ।’ पढ़नी बार बोझा सक्षित उत्तर देकर वे चुप हुये।

‘बाबू आज की परिस्थिति में आप किसी परिवर्तन की अपेक्षा करते हैं?’

‘जबकि। हर बाबूमी की शुभहामी हो ऐसा परिवर्तन हो होना ही चाहिए। पर मैं इसके लिए सज्ज पर तारे लगाने नहीं निगम सकता।’

‘आप जिस परिवर्तन की अपेक्षा करते हैं, इस संदर्भ में आपकी भूमिका क्या होगी?’

‘मैंने कहा न। मैं सड़कों पर नहीं निकल सकता। मैं क्रांतिकारी नहीं हूँ।’ ‘‘छिन्नी इतने का हटान कर

इसका प्रयाग करता हूँ।’

बातचीत के कई अंश मैंने छोड़ दिये हैं। चूँकि के मुझे बहुत ज्यादा व्यर्थ लगे। इनमें से कई धारणा ही जल दृष्टिकोण का परिणाम है जिनमें दृष्टि छोटी और कोण बहुत बड़े हो गये हैं। पर आन्दोलन के प्रति जो शक गए हैं वे सामान्यतः सबों के मन में में पा रहा है जहाँ हमने प्रामत्वाग्य की रण-स्पती बनायी है, वहाँ इसका उत्तर देना ही होगा।

- कु० प्र०

(पृष्ठ ४९० का लेख)

सर्वोदय-प्रवृत्तियों में बराबर दिलचस्पी लेते रहे हैं। सर्वोदय-आन्दोलन में लगे हजारों व्यक्ति की मले ही यह अपेक्षा और भावना रही हो कि कमलनयनजी चाहे तो बहुत सारी मदद कर सकते हैं और बाबा की बात वे सभी टालेंगे नहीं। लेकिन भूले नहीं समझा कि बाबा ने कभी शत पर किसी प्रकार का दबाव डाला हो और कमलनयनजी ने भी विनोबा-भक्ति में बांध बांध करके आन्दोलन की मदद की हो। उन्होंने बड़ी किया जो उनके बिके न कहा।

घन-सम्पदा से प्राप्त होनेवाली सुख-सुविधाओं को कमलनयनजी ने जानबूझकर हाटक नहीं दिया था। लेकिन स्वभाव उनका ऐसा था कि वे घन-सम्पदा के पार को लेकर दूरे नहीं रह सकते थे— अपने सहज सुख और आनन्द को छोड़ नहीं सकते थे और यही उनके जीवन की सबसे बड़ी विशेषता है। वे बराबर समझते रहे हैं कि घन व्यक्ति के लिए है, व्यक्ति घन के लिए नहीं है।

बापू की जयताताजी के जाने का दुःख उजाना पड़ा था और विनोबाजी के सामने ही उनका एक मस्त, अममस्त, अलम्बु शिष्य उड़ा गया। ऐसे अवसर पर उस बुद्धा भी को कंठे सान्त्वना दी जाय जिसका सौभाग्य-विभूत होय बर्ष पढ़ने पुँज गया और अब देता भी छिन गया। मान् कि वह देता वाउ बर्ष का था और इतने धाने

धन में धनिक सफनताएँ प्राप्त की हैं, येते-वेतियो से भरापुरा परिवार है, भार्द-बन्ध हैं, लेकिन माँ की गौर तो माँ की गौर ही होती है। बड़े-से-बड़ा देता भी माँ की गौर में सिर रखकर आराम-आनन्द पाता है और माँ की आँखें भी उसे देख-कर असीम सुख का अनुभव करती हैं।

सर्वोदय के प्रति निष्ठावान एक ऐसा समर्थ सम्पन्न व्यक्ति हमारे बीच से उठ गया है जिसने जीवन के मूल्य को समझा था और देश की आत्मा को समझा था। इसके उठ जाने से सर्वोदय-आन्दोलन एक प्रकार से समर्थ महारे से वंचित हो गया है। लेकिन इसी स्थिति में से, सम्भव है कोई तेजस्विता प्रकट हो।

दिवंगत आत्मा को शान्ति प्राप्त हो, यही हम सबकी प्रार्थना है। ●

(पृष्ठ ४९६ का लेख)

को भी प्रथम भित्ता है। तगर में बड़ो-बडो अट्टालिकाएँ उड़ी घन से निमित्त होती हैं।

अन्य इसके अन्तर्गत बाधूपण, अशोभा, बध और जमा आदि कई प्रकार की सम्पत्ति आती है। इसमें से भाधूपण ही एक ऐसी सम्पत्ति है, जिसका शत-प्रतिशत पात्र लगा पाना सम्भव नहीं है। यद्यपि कुछ बड़े परिवारों का अधिकांश भाधूपण वैवसाँकर में रहता है।

उप्युक्त प्रकार की सम्पत्तियों का अलग-अलग स्वरूप है और उसका अलग-अलग माप भी है, लेकिन ये सारी सम्पत्तिर्षा मिततर देश में वसाही, धप्टा-चार की प्रथम देनी है। जिन धर्मों का उपयोग देश के उत्थारन को बढ़ाने में होता चाहिए उसका उपयोग बड़ो-बडो अट्टालिकाओं को सजा करने, अशुभकर्म को प्रथम देने, शुधि-दीप के उत्थारनों के मूल्यों को निरचित करने और अर्थ ध्यागर को बढ़ाने में प्रयुक्त होता है। इस सम्पत्ति की गतिशीलता बढ़ाने तथा उसके समुचित उपयोग के लिए कुछ सुधार हैं। (देख बगने अंक में पढ़ें)

आन्दोलन के समाचार

महामंत्री की सरकार से अपील

निचली शरणा के कारण दिल्ली में हुई भीड़ों से उत्पन्न स्थिति और जनता की प्रतिक्रिया को दृष्टि में रखते हुए अखिल भारतीय गणतन्त्री परिषद के महामंत्री श्री कृष्णनारायण ने एक बखलाव्य द्वारा सरकार से अनुरोध किया है कि इस तरह की घटनाओं को रोकने का उपाय गणतन्त्री-नीति का दृढ़तापूर्वक पालन और निर्मित अल्कोहल के बितरण एवं विक्री पर प्रभावशाली नियमन है। परन्तु जब तक सारे देश में पूर्ण गणतन्त्री लागू करने के सम्बन्ध में किसी समयबद्ध कार्यक्रम का कार्यान्वयन होता तब तक सरकार शरणा के सम्पूर्ण ब्यापार का राष्ट्रीयकरण करे तथा शरणा के निर्माण, विक्री और आयात को अपने हाथों में ले ताकि इन प्रकार की घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो।

७० प्र० सर्वोदय मण्डल

उत्तर प्रदेश सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष स्वामी कृष्णानन्दजी ने गांधी

(पृष्ठ ५०२ का लेख)

सहरसा हर राज्य का-भीर्वां हो। बंग साहब ने ठीक कहा कि सहरसा सबका भीर्वां है।

सहरसा का नाम भीर्वां पले गये। कुछ पुरे हुए साँपे भांगे के काम के बारे में विरोधवादी से पर्चा करने परमार जा रहे हैं। बिहार के 'सर्वोदय संघ' के अध्यक्षों की एक समिति चुनी गयी है जो राज्य स्तर की सामन्तवादी प्रतिनिधित्व से सिरे से गठित कर दे। इसकी बड़ी जरूरत थी। कोई एक ऐसा मध्य नहीं रह गया था जहाँ सहरसा के साथ-साथ पूरे बिहार को सामने रखकर सोच आ सके।
—राममूर्ति

शान्ति प्रतिष्ठान केन्द्र आगरा के संचालक श्री कृष्णचन्द्र राहाय को ७० प्र० सर्वोदय मण्डल का कार्यनाहक मंत्री नियुक्त किया है। यह पर श्री महावीर भाई के त्याग-पत्र दे देने के कारण रिक्त हुआ था। श्री महावीर भाई ने सम्भवशायी शान्ति मिशन के सभी नियुक्त होने पर इस पद से त्यागपत्र दिया है।

ग्रामस्वराज्य-प्रमियान

शाहाबाद से श्री किछोरी रामजी लिखते हैं कि अब तक १६ गाँवों में ग्राम-सभा का गठन हो गया है। धीरे-धीरे सभी गाँवों में ग्रामकीय जमा किया जा रहा है। हर ग्रामसभा की नियमित मासिक बैठकें हुआ करती हैं। ग्रामसभा के लोग अपनी बैठकों में सामूहिक निर्णय सर्वसम्मति से लिया करते हैं।

भूल-सुधार

'भूदान-यज्ञ' के अंक ३० दिनांक २५ अप्रैल '७२ के पृष्ठ ५१७ पर नरतम पीन, पैरा तीन की पहली पंक्ति में उल्लेख आया है—'श्री महावीर सिंह साधो सिंह के सम्बन्धी है' ऐसी बात गद्दी है। श्री महावीर सिंह का माधो सिंह से पहला परिचय शब्दद्वारा में पटना में हुआ। ७०

(पृष्ठ ५१५ का लेख)

मूर्खों के सम्बन्ध में प्रस्तुत किया। ग्राम-दान एक मूल्य, ग्रामस्वराज्य एक मूल्य, स्वायत्त-विकास एक मूल्य, और श्री मूर्खों के सम्बन्ध में प्रस्तुत किया। अब समय आया है कि हमस्या सर्वमान्य हुई है और समाज पुकार रहा है। हम हमस्या - समाधान हमें सर्वोदय की पद्धति से मिलना चाहिए। ध्यान यह बत है कि इस समय का समाधान प्रस्तुत करने के लिए हम विचार करें।

(२०-४-७२ को ग्रामस्वराज्य अधिवान की समाप्ति पर आचार्य राममूर्ति द्वारा दिने गये भाषण से)।

पत्र-व्यवहार का पता :

सर्वे सेवा संघ, पत्रिका-विभाग

रानघाट, बाराणसी-३

जार / सर्वसेवा फोन : ६५२९१

सम्पादक

राममूर्ति

इस अंक में

- एक निर्भीक व्यक्तिपरत :
- श्री कवलचयन ब्रह्मन
- श्री ब्रह्मसातल जैन ५१०
- श्रीलिंग-भूमि-नाद—सम्पादकीय ५११
- शान्ति के लिए एनापला चाहिए,
- निष्ठा चाहिए और...
- श्री धीरेन्द्र मजूमदार ५१२
- सहरी उत्पत्ति की तीना
- श्री श्रीशंकर दुबे ५१५
- सर्वमान बुधिसय मानस और
- हमारा वर्तव्य
- श्री सुरेश्वर ब्रह्मन ५१६
- सहरसा जिला ग्रामस्वराज्य
- अधिवान: उत्पत्तिपरत ५००
- ग्रामस्वराज्य के मोर्चे से
- श्री राममूर्ति ५०२
- अन्य रत्नभे
- दापरी के पाने, वाचनी, आन्दोलन के समाचार

सहरसा-अभियान : कुछ सुझाव

[सहरसा] ग्रामस्वराज्य-अभियान में पृष्ठे लोगों के अनेक अनुभव आते हैं। हमने पिछले खंडों में कुछ बरिष्ठ छात्रों के अनुभव और चिन्तन दिये थे। यहाँ एक कार्यकर्ता सायी का अनुभव, उसके सुझावों के साथ पेश कर रहे हैं। अन्य सायी भी अपने अनुभव भेजेंगे ऐसी आशा है। सं०]

१८ मार्च से १८ अप्रैल, १९७२ तक सहरसा जिले के ग्रामस्वराज्य महा-यज्ञ में सक्रिय सहयोगी के दौरान जो अनुभव प्राप्त हुए हैं उन्हें मैं यहाँ विवक्षता के साथ व्यक्त करता हूँ।

पहला अनुभव यह हुआ कि हमारा जनाधारित रहना मैथिली कहानत 'विकट पाहुन' के रूप में सिद्ध हुआ, क्योंकि सौर्वेद्य सम्प्रदाय जल, जिनसे हम सर्व-प्रथम सम्पर्क करते थे, मजदूरी की हालत में हमारे भोजनारिकी व्यवस्था करते, और अन्तजन्म जिनसे हमारा कोई सम्पर्क नहीं होता, चाहते पर भी हमारी व्यवस्था नहीं कर सकते थे। इसलिए मुझे गाँधीजी की यह कल्पना बहोत आसिक उचित और व्यावहारिक लगती है कि एक चोकर-सेपक एक ग्राम या ग्राम-समूह में कुछ काल तक समग्र काम-सेवा करे और ग्रामीण जनता से एकजम होने की साधना करे।

दूसरा, वर्तमान अभियान की तरह पहले भी ऐसे अभियान चलाने गये हैं जिनमें स्थानीय इकाईयें या प्रांतीय कार्य-कर्ताओं से विद्युत्-बीजने अन्य प्रांतीय कार्यकर्ता पावित हुए, परन्तु ऊपर से निर्धारित लक्ष्य को जल्दी-से-जल्दी प्राप्त करने के मोह के कारण इनमें न केवल सञ्चालक उपस्थिति का कार्यपण रहा, बल्कि योद्धी-बहुत गुणात्मक उपलब्धि की सुदृशित रहता और 'कोजो क्या' करना निरालत आवश्यक माला गया। उदाहरणार्थ, उचितानुचित, भूतकल्पों; विशेषकर दरभंगा महाराज के दान के प्रति हमारी बेवसी के फलस्वरूप कई कानूनी वेंचीशगियाँ उत्पन्न हो गयीं हैं जो हमारे दस अभियान में विकट बाधाएँ सिद्ध हुईं। अधिकांश भूतकल्पों को यह

पहले का अवसर मिला—“पहले उत भूमि की सी व्यवस्था कर सीजिए जो इतनी सारी दान में आप ले चुके हैं।” भले ही हमें टाकने के लिए यह तर्क उपस्थित किया जा रहा है, परन्तु इत बड़ लक्ष्य से कौन इनकार कर सकता है? हम लोगों ने जब कभी व्यवस्थापकों से पुराने सरकारी की सूची माँगी तो कहा गया, “आप यह मानकर बसिए कि मानो पहले कुछ क्या हुआ हो गयी। नयी रजिस्ट्रेशन के लिए कीजिये।” इसके पुराने कार्यकर्ताओं का हर नये अभियान में विस्वास घुसता जा रहा है। वर्तमान अभियान में इतनी बड़ी लक्ष्य में विरोध-कर स्वाभाविक पुराने कार्यकर्ताओं का ‘रजिस्ट्रेशन’ बनना पदा गयी सिद्ध नहीं करता?

तीसरा, मैंने यह पाया कि कभी तक भूदान-ग्रामदान की तकनीक में भूमिहीन जनता मात्र परमुखापेसी बनी रही है। इत कारण समझन (अलग से नहीं, ग्राम-समा के अन्तर्गत ही) का यह नैतिक पीठ-पल संसार नहीं हुआ जो उनको समझाओं के समाधान के प्रयास द्वारा ही संतुष्ट किया जा सकता है। बँटाई, बाधपोत तथा अन्यथाय समझाओं के प्रति हम उदासीन रहे हैं। बँटाई का कानूनी अनुपात मात्र ३० : १० है। पर मास्टर में गैर-कानूनी अनुपात २० : २० है। इतना ही नहीं, अगर मान लिया जाय कि एक बीघा में १० मन कानून हुआ तो बँटाई-वार के हिस्से विवादी, छतिहान, निरक्षरी तथा बीज के लिए अन्न का तीन डेढ़, विचार्य आदि का सचें निकाल कर कुल १ मन १८ घेर भवान उसकी पाठ बन जाता है। बई बार तो उसके पाठ एक

दागा भी नहीं बचता, उल्टा अन्न धोप दिया जाता है। ऐसे अन्यायो के विरुद्ध अहिंसक प्रविरोध द्वारा हमने कभी तक ग्रामीण जनता के ८०-९० प्रतिशत भूमि-हीनों तथा छोटे किसानों का विस्वास जीतने की चेष्टा नहीं की, जबकि हम जाते हैं कि यही लोग ग्रामस्वराज्य स्वायत्तता की रोड़ को हड़को है। मुझे लगता है कि अब हमारा नारा होना चाहिए—सर्वे भूमि गोपात की, या फिर है हकबाहा की।

चौरे, प्राय सभी युवक हमें चेतावनी देते हुए सुनायी दे रहे हैं—“आपके सन्देश से भू-राजिग कभी नहीं जायेगी। वह तो रजत-रजित होगी, या फिर प्रगतिशील अन्धिरा के ‘सीसिंग’ द्वारा सम्भन होगी।” सारे सर्वोदय सम्राज को यह चुनौती है।

पाँच, मुझे यह देखकर बहुत दुःख हुआ कि हमारे सम्पूर्ण ग्रामदान स्वायत्तता में ग्रामस्वराज्यत्मक के विभिन्न कोई भी रचनात्मक कार्य दिखायी नहीं दिया। सरखा वो सिरे से गायन है। मेरा दुःख दिखना है कि ग्रामस्वराज्य के लिए स्वभावो भावना उत्तनी ही अनिवार्य है जितनी कि हिन्द स्वराज्य के लिए स्वदेशी भावना की।

पाँचवें, मैंने देखा कि हम गाँव में मालक्रियत-विस्मयन की बात करते हैं, परन्तु केन्द्रीय सरकार में मालक्रियत के केन्द्रीकरण के प्रति हम निरालत उदासीन हैं। जितना अन्तर्विरोध है?

मुझे लग रहा है कि केन्द्रीय सरकारों व्यवस्था के संतुष्टि घोषण की हिसा के प्रति हमारी उदासीनता के परिणाम-स्वरूप ही सर्वोदय सम्राज आज राजनीति-निरपेक्ष व्यवहार कर रहा है। नवीने के पीठ पर ग्रामस्वराजी विहार में ‘दुध बण्डोस’ का अन्धकार पवनेने दिया गया और हम राष्ट्र-जीक की मुद्रन प्रारंभ के मात्र अलग-अलग पढ़ गये हैं।

संक्षेप में, मुझे तीव्रता से यह अनुभूति हो रही है कि ग्रामस्वराज्य को (दोष पृष्ठ २११ पर)

इन इस्कीम वर्गों में] हमने ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य आन्दोलन द्वारा स्वतंत्र भारत के विकास में शोषण तथा हिंसा से मुक्ति के नये आध्यात्म जोड़ने की कोशिश की। गांधी ने हमें स्वराज दिया था। उसे हमने ग्रामस्वराज्य में विकसित किया जोर गांधी-विचार का वह स्वरूप प्रस्तुत किया जिसे देश ने अब तक जाना नहीं था, पहचाना नहीं था।

गांधी ने प्रतिवार की शक्ति विकसित की थी। हमने विचार की शक्ति का प्रयोग किया। हमने माना कि हृदय-परिवर्तन की प्रक्रिया में मनुष्य को सही विचार का उपहार मिल जाय तो वह बदल सकता है; बुराई के साथ जिस असहकार और अनीति के प्रतिकार का प्रयोग गांधी ने इतने बड़े पैमाने पर किया था, वह लोकतंत्र की भूमिका में उस तरह आवश्यक नहीं है। वास्तव में उसकी आवश्यकता न हो, इसी में सौम्य, सौम्यतर अहिंसा की श्रेष्ठता है।

हृदय-परिवर्तन की इस नयी पद्धति और प्रक्रिया का प्रयोग हमने २१ वर्षों तक किया है। सद्-विचार का उपहार स्वयं विनोबा ने हजारों हजार गांधीयों में पैदल जाकर दिया है। उनके अनेक साधियों-सिंहानियों ने दिया है। लोक-निष्पन्न का ऐसा विनयन अप्रत्याशित क्या पहिले कभी किसी ने किया होगा? इसमें सन्देह नहीं कि भारतीय मानस को हमारे आन्दोलन के कारण विचार की नयी धारा और सामाजिक क्रान्ति की नयी भूमिका मिली है।

लेकिन एक बात है। इस्कीम वर्गों के बाद आज भी हम दुःखता के साथ यह नहीं कह सकते कि समाज-परिवर्तन की कुंजी हमारे हाथ आ गयी है। जिस लोक-शक्ति को हम परिवर्तन की कुंजी मानते आये हैं वह अभी भी दिखायी नहीं दे रही है। हमारा उपाय 'लोक' हमारी क्रियाओं की सुदृढ़ता के साथ देखता है, सहानुभूति प्रकट करता है, लेकिन करीब नहीं आता; अनग सड़ा रहता है। लोक की, लोक के लिए, लोक द्वारा, क्रान्ति अभी वास्तविक नहीं हो पा रही है। वास्तविक कैसे होगा जब 'लोक' ही अलग है?

गांधी ने स्वराज्य का नमक दूँड लिया था। कहीं ऐसा तो नहीं है कि हमारे हाथ ग्रामस्वराज्य का नमक ही अभी तक नहीं सपा है? हाथर।

तो, क्या इस बात की जरूरत नहीं है कि इस बार पंचाव में हम अपने आन्दोलन के पूरे इस्कीम वर्गों पर गहराई से नजर डालें; यों ही मिलकर, कुछ रहकर, कुछ सुनकर, न उठ जायें? हमें देखना है कि बीते इस्कीम वर्गों में हमने अहिंसा की कितनी शक्ति विकसित की है? प्रतिहार की शक्ति जयमें है यह गांधी ने सिद्ध कर दिया था, लेकिन क्या हम यह सिद्ध कर सके हैं कि जयमें समाज-परिवर्तन की शक्ति भी है?

पंचाव विराहियों का देस है। विराही बात का घात नहीं पकटा। ❀

भूदान से ग्रामस्वराज्य : इस्कीम वर्ग

इस्कीम वर्ग कम नहीं होते। और, इस जमाने के इस्कीम वर्गों में दुनिया की बात जाने भी दें तो केवल भारत में पिछले इस्कीम वर्गों में जो परिवर्तन हुए हैं वे मध्य युग की कई शताब्दियों में नहीं हुए। भले ही हमारे शर्पों का भारत बली प्रार हो, किन्तु इस लम्बी अवधि में भारत बदला नहीं है, यह हम नहीं कह सकते। हमारा बालिग मताधिकार बालिग हो गया, लेकिन साथ ही यह भी सिद्ध हो गया कि बालिग मताधिकार शोषण के लिए काफी नहीं है। बांग्ला देश ने तो यह भी सिद्ध कर दिया कि देश की स्वतंत्रता और जनता की स्वतंत्रता एक नहीं है। स्वतंत्रता और लोकतंत्र की रूपना में जनता की स्वतंत्रता और बालिग मताधिकार से आगे बढ़े हुए लोकतंत्र के नये तत्व इन्होंने इस्कीम वर्गों में जुड़े हैं। इस्कीम इस्कीम वर्गों में दुनिया ने यह भी देखा है कि आज की दुनिया का सबसे 'सम्प' और समृद्ध देश किसना अथवायी और अत्याचारी ही सकता है, और जब दुनिया की शरकरों शक्ति-शक्तुलन को ही जाना धर्म माननी है। तो भारत बावजूद सारी अतुर्गताओं और अमानों के विशुद्ध धर्म-युद्ध सड़ सकता है, और विजय पा सकता है 'दो पान्दो' के उस जहरीले सिद्धांत पर जिनमे भारत की स्वतंत्रता को शक्तिन किया था। भारत में इन इस्कीम वर्गों में आन्दोलनों की अवरस्त क्रान्ति हुई है; आस्थाएँ भी बदनी हैं। पूर्वोवादी-सामन्तवादी भारत ने दिखा दिया कि वह समाजवाद से विमुख नहीं है। हजारों गांधीयों ने यह भी बना दिया कि वे स्वाभिर-विसर्जन को भी स्वीकार कर सकते हैं। हमारा किसान हमेशा से दक्षिणासुक्त रहा जाता था किन्तु 'हरित क्रान्ति' ने इतना तो सिद्ध कर ही दिया कि सुख और समृद्धि देनेवाले विज्ञान के ऐसे कोई साधन या उपाय नहीं हैं जो उसे अस्वीकार हो। यह जमाने के साथ चलने को तैयार है। अकर, मनुष्य होने के नाते यह सुख, सुविधा और सुरक्षा चाहता है। सदियों-सदियों से भारत के सामान्य जन ने एक सद्-हृदि (कामन सेन्स)—विशिष्ट जन की दृष्टि हृदि नहीं—विकसित की है जो भारत की सबसे बड़ी पूंजी है।

प्रश्न : अच्छा जीवन कैसे कहते हैं ? अच्छा जीवन जीने के लिए कौन सा दर्शन सहायक होगा ? हमारे ढंग अच्छे और सम्पूर्ण मानव हों इसलिए किताब किन आदर्शों को कार्यान्वित करें ?

उत्तर : आपके प्रश्न का उत्तर तीन शब्दों में देता हूँ। समाज की बुनियाद और शिक्षा की बुनियाद दोनों सत्य, प्रेम और कृपा के आधार पर होनी चाहिए। कृपा वाः मतलब दुखियों को मदद करना, उनके दुख से सुखी होना। प्रेम का मतलब, दूसरों के सुख से सुखी होना। सत्य, यानी जो चीज जिस बरन हमें जेही सुखती है उस समय उणी तरह प्रकट करना। अपना विचार धर बदला तो बदलने के लिए तैयार रहना।

प्रश्न : बहुत से भारतीयों का जीवन विपत्ति पर आधारित रहता है। जीवन में जो भी अच्छी-दूरी घाटें आती हैं, उनका भी अर्थ इतने तरह जासूसी से लगा लेते हैं; यही स्थिति क्या होनी चाहिए ?

उत्तर : जीवन में पहले से तप कोई चीज नहीं, सिवाय कि ध्यानही आदु-मर्यादा। यह निश्चित है कि जिस पूर्वजन्म के कारण हमने जन्म लिया है, उसकी सघनति निश्चित समय पर होगी। प्रारम्भ-स्थापक को कहते हैं। किताब जीना यह अपने हाथ में नहीं है, लेकिन कैसा जीना यह अपने हाथ में है। आयु में बुद्धि करना भी समय है, अविशयत नहीं, सामाजिक। समाज की आयु बढ़ाओ या घटाओ है, अविशयत नहीं, इतना निश्चित है। बारी वा मनुष्य-जीवन में कुछ भी निश्चित है, ऐसा धर्मशास्त्रकारों ने माना नहीं।

प्रश्न : राजनीतिज्ञों में मनुष्य और संसक्ति विन-प्रतिविन क्या होती या नहीं है, कई प्रचारों में विरहित देत और

पारत में जो अन्तर पड़ गया है वह १९५० से बहुत हो गया है। क्या यह जल्दी निरस्त जानेवाली एक दशावात है ?

उत्तर : राजनीति में जो काम करते हैं वे बदलाव हैं, ऐसा मेरा अनुभव नहीं है। वे बहुत अच्छे लोग हैं। दुखियों के लिए दवाभाव रलनेवाले हैं, शुद्ध जीवन जीनेवाले भी हैं। उनके बीच कुछ धराब लोभ भी हैं। लेकिन दुनिया में ऐसी कोई जमात नहीं, न ध्यापरारिजों की, न राजनीति की, न धर्मोदय की, जिसमें धराब लोभ नहीं है। लेकिन कुछ मिलाकर देखा जाय तो हिन्दुस्तान में जो राज-नीतिज्ञ काम करते हैं वे अच्छे हैं, ऐसे मुझ पर धार है।

मुख्य शकती यह है कि जो सेवा होती है वह केवल सत्ता के जरिये होती है, ऐसा उनका विश्वास हो गया है। यह मतलब है। एके कारण उनकी कतिन नीचे के लोगों के पाठ नहीं पहुँच सकते। मोक्ष-हृदय से उनका सम्बन्ध नहीं होता सत्ता के जरिये सेवा होती है, यह मैं भी मानता हूँ। लेकिन सत्ता के द्वारा ही सेवा होती है यह मैं नहीं मानता— जो कुछ सेवा है—लोगों को खरने पाँव पर रखे करने की यह सत्ता के द्वारा नहीं होती।

प्रश्न : ईसाई जगत में एक प्रतिष्ठित लोग को अर्थ में नहीं जते हैं। कबोकि विरमापरों के जो लोग हैं वे नहीं उन्नी-घरी लरी के दाये किता करते हैं, किन्ते ईसाई लोग ऊँच गये हैं। मात्र के बोस्ट्रिक बर्न को तथा विज्ञान-युग के लोगों को अर्थ ऐसा कोई भी धर्म उपरा का और मात्रा न दिये जाने के कारण यह धारा हुआ है। क्या मात्र में भी यही स्थिति होगी ?

उत्तर : हिन्दू धर्म विद्यो विरमापर पर, पिन्नी मन्दिर, मरिचक, संस्था, मठ,

आधम या सम्प्रदाय पर निर्भर नहीं है। ईसाई तथा इस्लाम बनेरह धर्म अर्थी जवान हैं, जबकि वैदिक विचारों की परम्परा दस हजार साल की है। संकुचित श्रद्धा में, संस्था में जकटे रहने से क्या मुक्तमान होता है वह हिन्दू धर्म जानता है, वह सर्वसम्पदाय-मुक्त है।

प्रश्न क्या या ज्यादा मात्रा में अन्तरसम्पद लोभ जहाँ भी हो—सम्पत्त राष्ट्र में भी वे नहीं एक सामाजिक संस्था बन जाते हैं और धरलता से अन्ती प्रवृत्ति होने में रोड़े बनते हैं। भारत में तो बड़े-बड़े अन्तरसम्पद घुटों की, नीति के वीर पर ही अन्त-अन्त रोगों में सम्मान कर रखा जाता है। राष्ट्रीय जीवन की मुख्य धारा में उन्हें प्रविष्ट कराने का कोई प्रयत्न नहीं होता। क्या हम सही रास्ते पर हैं ?

उत्तर कठिन दुखित है कि हिन्दु-रडान एक सम्पदाय देत है। १५ करोड़ लोग और १५-१५ भाषाएँ। यूरोप में एक-एक भाषा का एक-एक देग है। एक देग से दूसरे देग जाने के लिए पालगोट, बीबा की जरूरत होती है। मात्र वे बाबन मार्केट बनाने की कोशिश कर रहे हैं। हमारा एक बड़ा कुन्दा है। बने कुन्दा की समावाएँ भी अन्तर होती हैं। इसलिए सब जमाती की एक ही राष्ट्रीय प्रवाह में ले जाना बोका कठिन होता है। परन्तु एक ही आकम्पनता नि संभव है। अन्तर सब लोग प्रयत्न करेंगे तो होगा, कबोकि भारतीय संस्कृति एक के अन्तर्गत है। ('शैरी' से सामार) भी मरहोका, (दिभाचल प्रेस) के साथ २२-१-७२ ।

भूदान-सद्वरीक
उर्द पाक्षिक
मानमाना संस्था : धार १५५
पत्रिका विभाग
सर्वे सेवा संघ, राजवाट, बालमती-१

भूमि का वँटवारा

• सुरेशराम

समय का गया है कि अपने इस अन्नदाता किसान की ध्वजा को हम समझें और उसको दूर करने की सच्ची कोशिश करें। देश की आवादी का एक हिस्सा शहरों में रहता है और चार हिस्सा देशियों में। अस्वी प्रतिष्ठत लोग खेती करते हैं या उस पर आधारित हैं। लेकिन पाँच में रहनेवाले लगभग सवा आठ करोड़ परिवारों में लगभग सवा करोड़ के पास एक एकड़ से ज्यादा भूमि है और बाकी आठ करोड़ में से एक करोड़ के पास पाँच से दस एकड़ तक भूमि है। बड़े करोड़ एक एकड़ से ज्यादा और पाँच एकड़ से कम भूमि रखते हैं। दो करोड़ एक एकड़ से कमवाते हैं, और बाँड़े करोड़ एक एकड़ से कमवाते हैं। आहिर है कि आधे से ज्यादा क्रायडरों के पास या तो जमीन है ही नहीं या है तो एक एकड़ से कम है। इनका काम दूसरों के खेतों में मेहनत-मजदूरी करके किसी तरह मुजर चलाना है। भर पेट भोजन नाम की चीज इन्होंने पीढ़ी दर पीढ़ी से नहीं आनी।

पढ़ती हुई विपमता

स्वराज्य के बाद जो नियोजन बना उससे ज्यादातर कमाई बड़े किसानों की ही हुई। इसका स्पष्ट दलान नीचे की तालिका से मिलता है :

कृषि आय में वृद्धि : औसत प्रति परिवार (रुपयों में)

क्रम	कीन	मोबला	दूसरी	तीसरी	१९६९-७०	१९६७-६८	प्रतिशत
१—छोटे किसान (पाँच एकड़ से कम)	५१६	४४०	४१०	३४४	६८४	११५	
२—मध्यम किसान (पाँच से दस एकड़)	१२९२	११०३	११२६	११९४	१७१३	३२६	
३—बड़े किसान (दस से पचास एकड़)	२१२९	३१३३	४२४१	५४६०	६७११	२१०२	
४—भीषान कालवार (पचास एकड़ से ऊपर)	७१७६	१०४८३	१४६१९	१८२२०	२२७३८	२१६९	

इसके पता चलता है कि जहाँ छोटे किसान की आमदनी में ३१% प्रतिशत वृद्धि हुई वहीं भीषानों की आमदनी सातगुनी, २१६% प्रतिशत बढ़ गयी। परिणामस्वरूप देहातों में विपमता ने उग्र रूप लिया है और गरीब व अमीर के बीच की खाई और भी ज्यादा चौड़ी हो गयी है।

भूमिहीन और अल्प भूमिवाज अपने पैरों पर खड़े होने के बजाय बाजार के और भी आश्रित हो गये हैं। खेती में अग्रणी आंध्र और महाराष्ट्र प्रदेशों के अन्दर स्थित इस प्रकार है :

क्रम	वर्ग	आंध्र प्रदेश में	महाराष्ट्र में
	तीस दिन में प्रति व्यक्ति खर्च बनाम (रि.)	बाजार से लेना	बाजार पर प्रति व्यक्ति खर्च बनाम (रि.)
१—बड़े कालवार	१९.०	६.९	३४.७
२—अल्प भूमिवाज	१८.७	११.८	६३.१
३—भूमिहीन	१८.०	१७.९	९९.४

जब हमारे लाखों-करोड़ों किसान भारी-बहन अपने पेट के दाने-दाने के लिए बाजार पर ९९.४ या ९७.६ प्रतिशत आश्रित रहेंगे और उच्च बनाम के दाम बढ़ेंगे तो उनकी तबाही का अन्दाजा

महान चेतानी

इसलिए देश की सुरक्षा और बिकाश, दोनों की भाँति है, कि किसान को, गये-बीते, पीड़ित-शोषित, भूमिहीन किसान को ऊपर उठाया जाय और भूमि-मुधार निष्ठापूर्वक और अतिव्यक्त किये जायें। गुनवती योजनाओं द्वारा किसान को लागे के लिए बाधवासन देने से कोई लाभ नहीं। उद्धार में उद्यारी नहीं बन सकती, उद्धार नवर द और अभी होना चाहिए। सुमसिद्ध अर्थशास्त्री प्रोफेसर गुप्तर मिडल ने चेतानीयुक्त भाषणों में कहा है— 'भूमि-मुधारों पर फिर से विचार किया जाना चाहिए और सम्भारतापूर्वक उसको अमल में लाया चाहिए। मध्य और भूमि के बीच का सम्बन्ध बदलने के-

सगाया जा सकता है।

सुरी की बात है कि विद्युत पाँच वर्षों में देश में अनाज की पैदावार बढ़ी है और भारत स्वायत्तम्बी हुआ है। जिसे कहते हैं "हरित क्रांति" यह सम्भव हुई है। मगर जिस कीमत पर ? उस क्रांति का लाभ कौन उठा रहे है ? कोड़े से बड़े धीमान कालवार जो जमीन और अर्थ साधनों से मानीमान हैं। एक तरफ 'हरित क्रांति' हो रही है तो दूसरी तरफ भूमि का सबत भयकर रूप ले रहा है। जो खुद मेहनत करते हैं उनके पास जमीन नहीं और बिनके पास जमीन है वे मेहनत करना मरते-मान समझते हैं। इस सबका नतीजा यह है कि करोड़ों भूमिहीनों और भूमिवाज किसानों की दशा बिगड़ती जा रही है और भारत देश कृषि भवन की दुनियाद कमजोर पड़ रही है।

खादी का अन्तर्द्वन्द्व

१. दिसम्बर १९६८ में खादी पत्र-पत्रिका ने नये माडल के चरघे से कृत-उत्पादन की लागत की जांच के लिए एक समिती बैठायी। समिती ने १२ तपुए के चरघे में दुलाई के पहले की प्रक्रियाओं तथा करघे में कई गुधार गुथाये और कुछ प्रक्रियाओं में विनयी सगने की बात कही। सुधारों का लक्ष्य यह था कि खादी की कीमत घटवी जाय। लेकिन कई कठिनाईयाँ पैदा हो गयीं। एक तो यह कि पारम्परिक खादी का मूल्य ८० पैसा प्रति वर्गमीटर दुलाई-समिती देकर ४.०४ ८० से घटकर ०.२४ ४० पानी पड़ी। फिर भी रटाक जमा होता गया जिसके कारण उत्पादन घटला पड़ा। नये माडल चरघे की खादी का मूल्य पारम्परिक खादी के मूल्य से सिर्फ ५ प्रतिशत कम रहा। यह क्षतिरहित बात था कि नयी खादी की बिजली का प्रश्न भी बना ही रहा, और यह स्पष्ट हो गया कि यह भी समिती के बिना नहीं निकल सकेगी। इसलिए समीक्षण ने मांग किया कि नयी खादी की भी प्रति वर्ग मीटर

४० नये पैसे की समिती देनी चाहिए।

लेकिन दूसरा प्रश्न यह पैदा हुआ कि पारम्परिक और नयी खादी की प्रति-योगिता में पारम्परिक खादी को क्षति पहुँचेगी। इसने पर भी यह दिखायी देने लगा कि पुरानी खादी भले ही समाप्त हो जाय लेकिन खादी की टोपल बिची बढ़ेगी नहीं, और खादी में रोजगार तेजी के साथ घट जायगा। पारम्परिक चरघे में लगी हुई कठिनायियों में से लगभग ८०-९० प्रतिशत बेकार हो जायेंगी। इसी तरह बुलकरी में से लगभग २५ से ४० प्रतिशत ही रोजगार में रह जायेंगे, बाकी बेरोजगार हो जायेंगे। 'न्यू माडल चरघा विशेष समिती' को इन सब परिणामों की जानकारी थी, और उसने चेतावनी भी दी थी। बिना समिती के नयी खाद्य खादी भी, जो स्पष्ट है कि पुरानी कठिनायियों की रक्षा और नये चरघे-करघे का यांत्रिक विकास साथ-साथ सम्भव नहीं है। इस दृष्टि से खादी के सामने भी बड़े प्रश्न हैं जो बिनासहील अर्थनीति के दूसरे दोनों में पैदा हो गयी हैं।

→ लिए ठोस नीतियों का धोकेस होना जरूरी है ताकि मनुष्य को ज्यादा लाभ करने और प्रभावशाली ढंग से काम करने के लिए सम्भावनाएँ और उपाह विधा हों। बिना भूमि-सुधार के "हरित क्रांति" से ग्रामीण क्षेत्र में विपत्तियाँ ज्यादा बढ़ ही सकती हैं।"

भूमि-सुधार के लिए प्रदेशों में कुछ फ़न्दन जरूर उठाये गये हैं, मगर उनका कमीश्ट परिणाम नहीं निकला। जमींदारी नयी और पारंपरिक का पनी। सहकारी क्षेत्रों के नाम पर बड़े किसानों द्वारा सहकारी एके हो गयी कुल मिलाकर गरीबों का शोषण और दमन। पौड़े से सीमान्त बाण्डजारी की छोड़कर सला भूमिदानों और भूमिहीनों को मुझे मन पटने के बजाय बढ़ ही रही है।

२. पिछले कुछ वर्षों में खादी कमो-काम पुरानी खादी और नयी खादी, तथा

पुराने चरघे-अन्व-न्यू माडल, के अन्त-द्वन्द्व का विकास रहा है। पुरानी तकनीक और उसके मिलनेवाले रोजगार को बचाने रखते हुए नयी तकनीक को थोड़ा-थोड़ा स्वीकार करना व्यावहारिक नहीं है। नयी तकनीक का एक तर्क है; उसके अनुसार अगर हम एक तकनीक को स्वीकार करेंगे तो उसके तर्कों को भी स्वीकार करना पड़ेगा। इस सन्दर्भ में 'अन्वित तकनीक' (इन्टरमीडियट टेक-नालॉजी) का प्रश्न पैदा हुआ है। इस विचार में ध्यान यह है कि तकनीक भी-भले बड़े और रोजगार भी। इन दोनों चीजों का मेल मिलना जरूर।

टेकनालॉजी के विकास में धन की उत्पादनशीलता (प्रोडक्टिविटी ऑफ़ निवर्) भी बढ़नी चाहिए, यह अनिवार्य उल्ल है। उसे छोड़कर हम आर्थिक विकास की कल्पना नहीं कर सकते। इसलिए टेक-नालॉजी धन की अर्थिचालक उत्पादन-शील बनाने की दिशा में बढ़ेगी।

हमारे देश में ऐसे लोगों की संख्या अत्यधिक है जिनके पास 'सूची' कोर उत्पादन के साधन नहीं हैं। यह स्थिति हमारी परीची की अक्षम है। इसलिए मुक्त समरथा यह है कि क्या ये साधनहीन लोग उत्पादक बनाने या रहते हैं ताकि वे राष्ट्र की शक्ति बढ़ावें और उनके एक भाग के अधिकारी बनें ?

काम और दाम का अधिकार

जिन्नी स्वामित्व (साइवेट ऑनरशिप) के प्रवर्तन तक तो काम रखते हुए रोजगार और धन्ये के दो ही रास्ते हैं : (क) उत्पादन के साधनों का न्यायपूर्ण बँटवारा हो; (ख) साधनों का नहीं, उनसे होनेवाली कमाई का न्यायपूर्ण बँटवारा हो। अगर पहला रास्ता मान्य हो तो सेती की भूमि उन सभी लोगों में बाँटी होगी जो उत्तरर आश्रित हैं। दूसरे ऐसी तकनीक (टेकनालॉजी) अन्वयनी होगी जो नयी ही और साथ-साथ रोजगार को बढ़ा सके। हमारे देश में भूमि के विवरण

की सर्वाधिकारी पचवर्षीय योजना से है, लेकिन उसरी क्या धीमाएँ हैं इसे हय पहले देख चुके हैं। भूमि के बँटवारे के साथ सेती की पद्धति का प्रश्न भी जुड़ा हुआ है। सेती की पद्धति ऐसी होगी ही चाहिए जो किसान के विवेकपूर्ण उत्तेजन को सम्भव बना सके। एक बात हम पहची ही पचवर्षीय योजना से पहले आयें हैं कि तकनीक उपयुक्त होगी चाहिए ताकि हमारे पारम्परिक उद्योग बने रहें; तकनीक ऐसी न हो जो उन उद्योगों को समाप्त कर दे। सभी तकनीक को अनुभव

है, उसमें यह शक्य नहीं हुआ है। हम अपने पारम्परिक घरेलू और ग्रामीण उद्योगों को बढ़ावा नहीं दे सके हैं। बढ़ती हुई टेक्नालॉजी उन्हें समाप्त करती चली जा रही है। ऐसी हानत में हमारे सामने दूसरा ही विकल्प रह जाता है कि उत्पादन के साधनों के वितरण का अग्रह न रखा जाय, बल्कि उन साधनों से होनेवाली नमाई के उचित वितरण पर जोर दिया जाय। इसका यह अर्थ है कि जिनके पास साधन नहीं हैं और जो मजदूरी पर निर्भर करते हैं उन्हें निर्धारित मूलनम मजदूरी पर रोजगार की गारण्टी दी जाय।

तीसरी पंचवर्षीय योजना में यह बात साफ साफ नहीं गयी थी कि जो भी काम करना चाहेगा उसे उचित काम मिलेगा (गैन्टुल इम्प्लायमेण्ट गॉरंटेजरी बनूँ ही चलाय चली)। इसके लिए बड़े पैमाने पर 'रूरल वर्क्स' की कल्पना की गयी, और अगिकों की सहकारी समितियों की बात कही गयी। ऐसा तथा जैसे योजनाकारों के मन में कोई देता ध्यारी विकास-सेवा बनाने की बात थी। दूसरी योजना में अधिक चर्चा पारम्परिक उद्योगों में 'सेल्ट-इम्प्लायमेण्ट' की थी, जब कि तीसरी योजना में 'क्षेत्र इम्प्लायमेण्ट' की हुई। इस दृष्टि से गुरुत्त ३४ पाइलट प्रोजेक्ट शुरू किये गये और कहा गया कि तीसरी पंचवर्षीय योजना के अन्तिम वर्ष में २५ लाख लोगों को रूरल वर्क्स में लाया जा सकेगा। इसके लिए ३६ अरब रुपये भी रखा गया। लेकिन कुछ ऐसा हुआ कि सिर्फ १९ करोड़ रुपये खर्च किये जा सके। तीसरी योजना के अन्तिम वर्ष में सिर्फ ८ करोड़ खर्च हुआ, और ४ लाख लोगों को लाभ में १०० दिन के हितकार से काम मिला।

चौथी पंचवर्षीय योजना में इस काम के लिए २५ करोड़ रुपये रखा गया, और गीति यही रही कि अधि-से-अधिक गाँवों में निर्माण की छोटी-छोटी योजनाएँ ली जायँ। इस तरह की एक बड़ी योजना महाराष्ट्र सरकार ने १९६९ में 'राइलट

इम्प्लायमेण्ट गारण्टी स्कीम' के नाम से ५ करोड़ में शुरू की। मरुप यह था कि खेतियर मजदूरों को, जब उन्हें खेती में काम न हो, 'रूरल वर्क्स' और कवाई में काम दिया जाय, तथा ग्रामपंचारतों काम की योजना बनाने और उसे लागू करने में आगे रहें। इसी तरह की योजना गुजरात में 'राइलट टु वर्क ररूम' के नाम से बनी है।

चौथी पंचवर्षीय योजना में देश के विभिन्न भागों में ४० प्रोजेक्ट लेने की बात थी जिनमें अत्यन्त छोटे किसानों, जो वस्तुतः भूमिहीनों की कोटि में हैं, मजदूरों, भूमिहीनों, ग्रामीण दलकारों की धन्या और रोजगार देने की योजना थी। लेकिन पूरी योजना बाजार-आधारित थी ताकि भुर्रापान्त वीर डेवरी जैसे धन्दे भी चल सकें तथा मार्केटिंग और प्रशोधन उद्योगों को बढ़ावा मिल सके, विशेष रूप

से ऐसे उद्योगों को जो सहकारी समितियों द्वारा चलाये जा सकें। यह मानना कठिन है कि कहीं तक बाजार को सामने रखकर रोजगार दिया जा सकता है, लेकिन इसे छोड़ भी दें तो चौथी पंचवर्षीय योजना में ऐसी कोई बात नहीं है जिससे यह मान्य हो कि सरकार ऐसे हर आदमी को काम देने के लिए तैयार है जो काम करना चाहे। रूरल डेवलपमेण्ट की प्रवृत्तियों से जितना काम बितने लोगों को मिल सकेगा, मिलेगा। लेकिन चौथी पंचवर्षीय योजना में रोजगार के लिए कोई विशेष कार्यक्रम चलाने की बरतत छोड़ दी गयी है। सिर्फ देश के विकास-कार्य की देखी के साथ आगे बढ़ाना काफी है, ऐसा माना गया है। साथ ही यह भी मान लिया गया है कि देश में कितनी बेरोजगारी और अर्ध-बेरोजगारी है यह जान सकता भी कठिन है। —राममूर्ति

(पृष्ठ ५०६ का शेष)

स्थापना भू-स्वामियों से बोधा में कट्टा गाँवों मात्र से नहीं हो सकेगी, बल्कि ग्रामसभा के नेतृत्व में केन्द्रीय-राज्यीय सरकारी व्यवस्था में बाहरी शोषण तथा गाँव के अन्दर भूस्वामियों के शोषण के विषय अन्तिम हथियार असहयोग तथा उत्पादक का शामिल है) द्राग ही सम्भव हो सकती है। इसी प्रणाली द्वारा मनुष्ये ग्राम की एवता भी कायम की जा सकती है जिसे सरकारी पञ्चायत ने अरतग्यस्त कर रखा है।

मुझे यह फरवरी के महीने में सिन्धुवर, मरीठा तथा महिषी प्रखण्डों में अपनी यात्रा और वर्तमान अभिधान के दौरान यह विस्वास ही बना है कि बाहरी कार्जकर्ताओं द्वारा बोधा-कट्टा दान के आधार (७५ प्रतिशत परिवार तथा ५० प्रतिशत भूमि-दान) पर कानूनी ग्रामसभा के निर्माण में उदियाँ लय आँवों की और फिर भी ग्रामस्वराज्य की स्थापना एक सुझाना सपना ही बना रहेगा। सीमान्त गाँधी बादगाह साँ ग्राम-

दान के बारे में बैसा ही उद्गार व्यक्त कर चुके हैं। कानूनी ग्रामसभा का वही दृश्य होगा जो कानूनी पंचायतीराज का हो रहा है। हम सभी जानते ही हैं कि विहार के भूगुर्न भूगुप मशो थी विनोदा नन्द झा द्वारा बोधा-कट्टा को कानूनी रूप देने का बशा परिणाम निकला। वही नतीजा कानूनी ग्रामसभा से निकलेगा। हमें कानूनी बरकर में नहीं पड़ना चाहिए, बल्कि सर्वसम्भव ग्रामसभा द्वारा प्राचीण जनता का अभिक्रम जयाना होना। वही ग्रामसभा चाहे तो बोधा में कट्टा निकाले, ४ बोधे में एक कट्टा निकाले, या फिर किसी अन्य ढग से ग्राम की शोषण शोषण करे। हमें अपनी कोर से ग्रामसभा पर कोई शर्त बोधनी नहीं चाहिए। अभी तक हम ग्रामसभियों पर अपनी शर्तें ही पोने आये हैं जिसके परिणामस्वरूप प्राचीण जनता विशेषकर 'अन्तजन' का अभिक्रम नहीं आया। अब हमें धर्मन्ययति से ग्रामसभा के निर्माण में प्राचीण जनता की सहयोग करनी चाहिए। ऐसी ग्राम-सभा ही ग्रामस्वराज्य का निर्माण कर सकती है। —अणतराम साहूनी

शहरी सम्पत्ति की सीमा : २

● गौरीयांकर बुधे

१—सर्वप्रथम, नगर में पायी जाने वाली समस्त प्रकार की भूमि में से केवल गरीबों की भूमि को छोड़कर सामान्य और व्यावसायिक जैसे निहित स्वायत्तान्तों के हाथ से विद्यालय, जनहित में सुलभ निर्मित कर देना है। उनके हाथों से ऐसी भूमि निचालने समय यह अवसर ध्यान देना है कि यदि वे आवासहीन हैं तो उनके आवाससमूह के लिए परिवार के सदस्यों के मुआवज़े समय २ से २३ बिल्वा तक की जमीन की एक निश्चित इकाई छोड़ देनी है। बाकी भूमि को ऐसे आवासहीन गरीब वर्ग में वितरित करना है, जो आकर देने की सीमा से बाहर है। इस प्रायश्चित्त के आधार पर भूमि-विनयण से एक निश्चित अवधि में आवासहीन के लिए आवास के एक समूह तक पहुँचा जा सकता है।

२—परिवार को इकाई मानकर उसकी आवश्यकतानुसार आवास के अतिरिक्त सभी प्रकार के आवश्यकताओं को उसमें निवास करनेवाले नागरिकों की लभित भूआवना देने का प्राविधान करते समय यह भी विधान हो कि उसमें जो नागरिक गरीब किशोरावस्था हैं, उसे भवान आर्वादि करने में प्रायश्चित्त की ज.य। वितरण के समय यह भी ध्यान रखना है कि उन स्वयं के पास नगर में कोई अपनी भूमि या भवन न हो। इस प्रकार के प्राविधान से आवास-समस्या का एक हवाई हत निकल सके की सम्भावना प्रकट होती है।

३—प्राय. सभी बड़े नगरों में कुछ एकाधिकारी परिवारों के व्यावसायिक कर्म और उद्योग होते हैं। इस प्रकार के कर्मों और उद्योगों के लिए एक राष्ट्रीय नीति धरनानी होगी तथा ऐसे घरानों का राष्ट्रीयकरण करके सामाजिकरण कर देना है। लेकिन इस प्रकार के

घरानों की कार्यशील पूँजी वीन सात से पाँच लाख के बीच में है तो उनका केवल सामाजिककरण करना है और उसके अधिकियों को उच्च कर्म या उद्योग का बंधा-धारी बना देना है। यदि कर्म या उद्योग वीन सात से कम का हो और यदि उसमें अधिक कार्यरत हो तो ऐसे अधिकियों की नियुक्ति, वेतन-स्तर, कार्यवधि, मर्हगाई पता, भविष्य-निधि, बीमा-और अवकाश की व्यवस्था के अतिरिक्त अन्य प्रकार की आवश्यक एवं कल्याणकारी सुविधाओं का प्राविधान कर, सुलभ लागू करने का विचल्य हो। उनके कार्य के मध्ये, जो कर्म सुलभ से लेकर बन्द होने तक है, उसे कम कर अन्य सेवाओं के बराबर दिया जाय ता उनके अतिरिक्त कार्य-मध्ये के बदले, अतिरिक्त पता दिया जाय। कर्मचारियों की सेवा-युक्तिवा हो, जिसमें उनकी सेवाओं का स्पष्ट उल्लेख हो। उनका वेतन-स्तर मर्हगाई-स्तर की ध्यान में रखकर निश्चित किया जाय तथा मर्हगाई घटने के साथ-साथ मूल्य-सूचकांक के अनुसार उनके मर्हगाई भले में वृद्धि का नियमित प्राविधान हो।

४—घराना संस्थाओं के लिए भवन और भूमि की एक निश्चित इकाई उसके कार्य-क्षेत्र और प्रकृति की देखते हुए, उनके दैनिक उपयोग के लिए जो आवश्यक हो, को छोड़कर अन्य को हस्तांतरित कर देना है। नगर में कुछ निजी न्यास भी होते हैं, जिन पर न्यासी का अधिकार होता है और यह भी समर्थ है कि यदि न्यास के पास अधिक भवन है तो न्यासी के अतिरिक्त उन भवनों पर दूसरे लोगों का अधिकार होगा है जो उसमें रहते हैं, लेकिन न्यासी ही शारी सम्पत्ति की देख-भाल करता है। इस प्रकार के न्यास, जिसके अन्तर्गत कई भवन होते हैं, न्यासी जिस भवन में

स्थान रहता है, उसको छोड़कर, बाकी अन्य भवनों को जो उसमें रहते हैं, को हस्तांतरित करने का प्राविधान करना है। यदि इस प्रकार के न्यास का कोई सामाजिक महत्त्व न हो तो न्यासी को राय से न्यास को खपान करने का प्राविधान होना आवश्यक है।

५—नगर क्षेत्र के अन्तर्गत अनेकाने अन्य कृषि-भोतों को उन्ही के हाथों में तब तक बने रहने देना है, जब तक भूमि कृषि-कार्यों में प्रयुक्त हो रही हो। लेकिन पर्वोही उसका उपयोग अन्य कामों में होना प्रारम्भ हो जाय, तबही उसे अपने हाथ में ले लेना है।

६—पड़ोसी देश लंका में काला धन निचालने के लिए एक सफल प्रयोग हुआ है। इसी प्रकार का प्रयोग अपने देश में भी करने का बाहर लाने के लिए हो। तभी हम अपनी धर्म-ध्वरसा को सुदृढ़ कर, बाजार के स्थिर और अनेक न्यायों को नियमित कर सकते हैं। इस पर नियन्त्रण हो जाते से कुछ हद तक सम्पत्ति के केन्द्रिकरण की समाप्त करने में भी सहायता मिल सकती है और राष्ट्र के उत्थान के लिए बहुत समर्थ की सम्भावना भी प्रकट हो सकती है।

७—वापुसों का एक निश्चित सीमांत करके अतिरिक्त पर टैक्स का प्राविधान कर दिया जाय। वापुसों के अतिरिक्त अन्य समदा का पता बासानी से लगाया जा सकता है और इस प्रकार की शारी सम्पत्ति का उपयोग करने से ही देश की समदा को बढ़ाया जा सकता है।

शहरी सम्पत्ति से देश की पुरी अर्थ-व्यवस्था को प्रभावित है ही, लेकिन इसका प्रत्यक्ष प्रभाव कृषि-व्यवस्था पर भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। धीरे धीरे सूचकांक को देखने से जाय होता है कि सन् १९६७-६८ में खाद्यान्नों का भारी-सम्बन्ध अर्थात् २२.४ रहा और उसके बाद कम। भारी-सम्पत्ति ही गया। लेकिन औद्योगिक उद्योगों का भारी-सम्बन्ध

बढ़ता हुआ पाया गया है। जबकि कृषि-क्षेत्र में दिन-प्रतिदिन निरर्थक (दम्पट) का महत्व बढ़ता ही जा रहा है और उस पर होनेवाले व्यय की घनराशि में भी बराबर वृद्धि हो रही है फिर भी उत्पादन-भूमियों में गिरावट आ रही है। इस क्षेत्र में जनवरी १९७० से दिसम्बर १९७० के मूल्य-सूचकांक से प्रकट होता है कि खाद्यान्नों के मूल्य-सूचकांक में भारी उच्चयन हुआ है और विभिन्न खाद्यान्नों के उत्पादन-अवधि में मूल्य गिर गया है और उत्पादन के पूर्व के माहों में उसका मूल्य बहुत ऊँचा हो गया है।^१ इस उच्चयन से उत्पादक किसान तो उनके पूरे लाभ से वंचित होते हैं, उपभोक्ता भी प्रभावित होता है और इन सभी उच्चयन के पीछे शहरी सभ्यता का हाथ है, जो व्यसंत्तय को प्रयत्न देती है और किसानों को उसके लाभ से विमुक्त करती है।

नगर में रहनेवाले नागरिकों में से अधिकांश ऐसे भी पाये जायेंगे जिनके पास एक से अधिक प्रकार की सभ्यता है। ऐसी अवस्था में, ऐसे परिवारों की सभी सभ्यताओं का मूल्यांकन कर परिवार को इकाई मानकर सभी प्रकार की सभ्यता की सीमा नियत करने का प्राविधान करना होगा, सभी इसमें एकरूपता आ सकती है और समानता स्थापित हो सकती है। यह भी प्रश्न उठ सकता है कि बड़े और छोटे शहरी सभ्यता की सीमा का सम्बन्ध क्या हो ? ऐसी दशा में कानून में उस प्रकार के लोग का प्राविधान हो।

शहरी सभ्यता की सीमा क्या हो ? यह विवाद का विषय है और हो भी सकता है। यद्यपि अद्यतनता का स्थायी हन मानवस्य सभ्यता के अधिकार के सम्मूलन में निहित है, लेकिन वर्तमान परिस्थिति में तो अन्याय ही इसके लिए तैयार है और न आश की संस्था ही। इसीलिए इनके सीमांकन का प्रश्न उठता है। लेकिन शहरी सभ्यता के सीमांकन कानून का प्राविधान होने पर भी नोहर-घाटी के विनहर अनेकों बचाव के उपायों

को भी इन्हारेवारी शुल्क हो जायेगी और सीमांकन की पवित्रता को समाप्त कर देगी। उसका अन्तिम और पूर्ण एक मात्र उपाय यही है कि सविधान से मानव-कृत सभ्यता के अधिकार को सम-पन कर रहन-सहन के स्तर का एक निम्नतम आधार बनाकर, कार्य की अनिवार्यता का प्राविधान सविधान में कर दिया जाय। इस प्रकार सभ्यता के रहते जितनी भी बुराईयाँ हैं, सब एकबारगी समाप्त हो जायेगी। आखिर सभ्यता के अधिकार से तात्पर्य तो यही है कि वर्तमान और भविष्य की सुविधाओं की गारण्टी। यदि राज्य की तरफ से इस तरह की गारण्टी मिन जाय तो लोग सभ्यता ही रखना क्यों पसन्द करेंगे ?

जोत-भूमि-सीमा के नवीनतम विधानों को लें, जो पश्चिमी बंगाल और केरल के लिए बना है, तो लगता है कि भूमि की जोत-सीमा जो निश्चित की गयी है, उसका मूल्य जिनो भी हालत में दो लाख रुपये से अधिक नहीं है। ऐसी दशा में शहरी सभ्यता की सीमा भी किसी भी हालत में उससे अधिक नहीं हो सकती और न अधिक होने का कोई औचित्य ही है। उन सीमा के सम्बन्ध में विद्युत् सड़क के अधिवेशन में चर्चा हुई थी, जिसमें सभ्यता की सीमा तीन लाख से पाँच लाख के बीच में उभरकर प्रकट हुई थी, लेकिन उस समय के परिस्थिति में और वर्तमान परिस्थिति में बहुत अन्तर आ गया है तथा इन बचने हुए परिस्थिति में सभी शहरी सभ्यता जो एक परिवार के पास है, किसी भी हालत में दो लाख से अधिक रखने का औचित्य नहीं है। इस सीमा द्वारा ग्रामीण एवं शहरी दोनों समान में समानता और एकरूपता कायम की जा सकती है।

यूरे देश में यदि सभी प्रकार की सभ्यताओं का सीमांकन निश्चित कर, उसके लिए कानून का आवश्यक प्राविधान कर, अतिरिक्त सभ्यता की अधिकार में कर लिया जाता है, तब न एक वर्ग की भूमि दूसरे वर्ग की प्रभावित कर

पावेगी और न एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में विनियोजित और नियंत्रित करने का भय रहेगा। क्योंकि ऐसी दशा में जो भूमि क्षेत्र में होगी, उसका उद्देश्य अधिक लाभ कमाने का न होकर स्वस्थ समाज के निर्माण का होगा। सीमा बांधने के बाद अतिरिक्त सभ्यता देश की अर्थ-व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में लगेगी, न कि उसको विवर्धित कर दिया जायेगा। यह ठीक है कि कुछ सभ्यता का स्वभाव ऐसा है जिसके व्यापक उपयोग के लिए तुरन्त विनियम करना आवश्यक होगा, लेकिन कुछ ऐसी भी सभ्यता है, जिसका उपयोग राष्ट्रीय उत्पादन के बढ़ाने में किया जा सकता है।

कुछ लोगों की धारणा है कि शहरी सभ्यता के सीमांकन से न केवल लोगों का जीवन-स्तर निम्न होगा, बल्कि विदेशों की तुलना में वहाँ का जीवन-स्तर बहुत गिर जायेगा। लेकिन यह ध्रम माय है। अतिरिक्त सभ्यता को लेने से न तो जीवन-स्तर निम्न होगा और न विदेशों की तुलना में निम्न-स्तर। नैतिक स्तर तो बहुत ही निम्न है, क्योंकि ऐसे लोग अर्थ-धार्मिक और अनैतिक धर्मों से ही अपनी सभ्यता को बनाने के लिए चल पड़े हैं, उसके बन्द हो जाने की पूरी सम्भावना प्रकट होती है। उससे न केवल उनका भला होगा, बल्कि पूरे समाज का भला होगा और अर्थ-धार्मिक एवं अनैतिक धर्मों को बनाने के लिए जो राज्य की तरफ से प्रयत्न चल रहे हैं, उसमें सर्व होनेवाली घनराशि को देश के अन्य कार्यों में लगाया जा सकता है तथा जो सभ्यता मिलेगी उससे पूरे देश का स्तर बढ़ेगा और जब पूरे देश का स्तर ऊँचा उठेगा तो उनका भी स्तर ऊँचा होगा। सीमांकन के बाद देश को एक पुष्टसुख अतिरिक्त भूमि आर्थिक विकास के लिए उपलब्ध हो जायेगी और इस भूमि के बिना अव्यक्त विवाद की करना सम्भव न होगा।

(समाप्त)

^१ रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया बुलेटिन, १९७१ जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रैल, मई, जून, सित्त १९७१, २१९, ५०३, १२५, ७५१ और १५४।

विश्व-नागरिक : सरला वहन

[सर्वोदय समाज सम्मेलन का उद्घाटन सुधी सरला वहन करेंगी, इस अवसर पर उनका जीवन-परिचय हम यहाँ दे रहे हैं। म०]

'मह माता विश्व हमारा परिवार है', एक विचार से सत्तार के महापुरुषों की हमेशा ये प्रेरणा थी है। किन्तु इसे अपने जीवन से निरखे मनुष्य ही उदार पति हैं। सर्वोदय सरला बहुत जगह से एक हैं। अत्यंत मर्यादा-शून्य, जाति आदि का हमारे जीवन में जब तक धरत रहेगा तब तक हम विश्व परिवार की बात केवल कह सकते हैं, उत्तर अमल नहीं कर सकते। ऐसा करने के लिए अत्यंत लंबे साहस और तप की आवश्यकता होती है। सरला बहुत का जन्म ५ अप्रैल १९०० की शुरुआत में हुआ था। उनके पिता जन्म से स्वतंत्र थे, किन्तु वे इंग्लैंड में रहते थे और जब १९१४ का प्रथम विश्वयुद्ध खड़ा तो तब तक के पवित्र मित्र और रिश्तेदार जर्मनी और ब्रिटेन केवल आतंकीय घोषणाओं के कारण राठो-राठ चुनन बन गये। सरला बहुत के पिताजी को केवल अर्ध-पूर्वजों से बँधा होने के कारणों में निराश्रय कर विदा गया और परिवार के अन्य लोगों को समाज की उपायों और निराश्रय का विचार होना पड़ा। ऐसी ही घटनाएँ आज भी सत्तार में होती रहती हैं, किन्तु क्या यह सम्भव है? ऐसा क्यों होना चाहिए? मनुष्य एक प्रकार से शासकों के हाथ की बटुतवाँ है कि वे उसे अब चाहें मित्र या शत्रु बना दें? ये विचार सरला बहुत के मन की उनके बचपन के दिनों से, जब उनकी माता १३ साल की थी, उद्बलित किने रहते थे। और यह संयोग ही था कि गांधीजी की इन्हीं विचारों के कारण शासकों का कोपमान बनना पड़ा था। उनका नाम सुदूर दक्षिण तक भी पहुँच चुका था और सरला बहुत के मन में उनसे मिलने और उनके साथ काम करने

की बात सहज ही पैदा हुई थी।

वे ३२ साल की उम्र में मृत १९३२ में भारत चली आयीं। तब से भारत ही उनका घर है और उन्होंने भारत की जो सेवा की है वह भारत में जन्मे उत्तम-उत्तम देशप्रेमियों के लिए भी दुर्लभ है। सरला बहुत की सगति से भारत का जीवन समृद्ध और सम्म हुआ है और अलग में सत्तार ने भारती समाज को बनाये-बाँधे लोगों में से, जिन्होंने भारत की असीम प्रयोग-भूमि बनाया, सरला बहुत उनमें से एक हैं और इसके भारत का कीर्ण बना है। आज सरला बहुत हमारे सर्वोदय परिवार के लिए 'मा' के समान हैं जिन्हें कायस्थ हमारा यह परिवार निरन्तर ही सम्मन हुआ है।

सरला बहुत सुलभ शिक्षिका हैं और भारत में आकर उदयपुर में उन्होंने एक शिक्षिका के रूप में ही काम आरम्भ किया। किन्तु उन्हें शीघ्र ही अनुभव ही गया कि शिक्षक के विद्या की वे कल्पना करती हैं उसके लिए उन्हें स्वयं ही काम करना होगा। इस बीच वे गांधीजी से मिल तो नहीं सकी किन्तु उनकी प्रतिबिम्बित की और की अत्यंत विकट से टैलने समझने लगी और अन्त में मृत १९३५ में वे सेनावास जा गयीं। वहाँ से गांधीजी द्वारा स्थापित 'महिला आयोग' के काम के साथ जुड़ गयीं और मृत १९३७ में, जब गांधीजी ने तभी तालीम का विचार और योजना देना की थी, तब से वे आयोगाध्यक्ष दम्पती के साथ उस काम में लग गयीं। यह उनके अनुकूल नाम का और १९४१ तक, जब कि स्वतंत्रता आन्दोलन की अति-व्यवस्थाओं ने गांधीजी समेत सभी कार्य-वर्तनी की एक भार पुनः ब्रिटिश सरकार



सुधी सरला वहन

के साथ सीधे आयोग-वाचने की रिपोर्ट में नहीं उल्लेख दिया, वे इसी नाम में लगी रही। मृत १९४१ में वे आचार्य कृष्णदाजी के आग्रह पर, जो गांधी-आयनों के माध्यम से काम कर रहे थे, वे पत्तोटा (सर्वोदय) का गयीं। वहाँ भी वे शीघ्र ही स्वतंत्रता-संग्राम में मूढ गयीं। मृत १९४२ में वे बरमोहा की सबसे उत्तमोक्त व्यक्ति के नाते ब्रिटिश जेल भेजी गयीं। उनका अग्रपक्ष यह था कि वे स्वतंत्रता के लिए सड़नेवाले लोगों और उनके परिवारों की सहायता करती थीं। इस को मृत १९४६ में उन्होंने 'बोसानी' में, जहाँ गांधीजी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'अनासक्तियोग' की मूल्यांकित की थी, महिलाओं की शिक्षा और सुधार के लिए 'सदानी आग्रह' की रचनाओं की और लगभग २२ साल तक मध्य हिमाचल क्षेत्र में क्रांति और रचनात्मक कार्य की छात्रा प्रतियोगी के रूप में काम किया गयीं। श्री धीरेन्द्र भार्द के सहरी में भारत के प्राचीन श्रद्धि तप के लिए हिमाचल प्रांत से किन्तु सरला बहुत का यह तप मनुष्य-जाति के लिए था।

आज मध्य हिमाचल क्षेत्र में सर्वोदय विचार और कार्य के नाम से जो कुछ भी है उसके पीछे किसी न किसी रूप में

सरला बहुत की प्रेरणा रही है। उनकी संकड़ों सिपाएँ आज पड़ाक के गाँव-गाँव में फैली हैं और समाज-सेवा का अच्छा काम कर रही हैं। स्त्री-जागरण का जितना महत्वपूर्ण काम सरला बहुत ने किया है उसका उही आकलन अभी आने-वाले सालों में ही होगा और जोग उस अद्भुत करके कि 'उनके बारण ही पहाड़ी क्षेत्रों में कौटा अद्भुत काम हो सारा है। सेती, पशु-भक्षण और जपल के सभी कामों में वे अपनी छात्राओं के साथ काम करती थीं एव अपनी पीठ पर अपना विस्तर और अन्य छोटा-मोटा सामान लेकर पहाड़ पर के गाँव-गाँव में वे घूमती हैं। पिछले समयों में पहाड़ों में धारावन्दी के आन्दोलन में महिलाओं की भारी समस्या ही काम कर रही थी। उन्होंने अपनी छात्राओं को और उनके माध्यम से समाज को सेवा, उप, निर्माँकता, पवित्रता और बलवर्ष का जो पाठ सिखाया है वह अपने आपमें देजोड़ है।

जब विनोबा का भूदान-ग्रामदान आन्दोलन शुरू हुआ तो सरला बहुत अपने कमबोर स्वास्थ्य के नावजूद जसमें लग गयी और उनके ही कारण से वहाँ पर ग्रामस्वराज्य का काम आरम्भ हो सका है। आज भी वे देश के अनेक भागों में घूम-घूमकर ग्रामस्वराज्य की अलख जगा रही हैं और अपनी ७२ छान की उम्र में भी उनका वही बटोर तप थाजू है। मुझे सरला बहुत के साथ सातो तक निकट से काम करते का अवसर रहा है और मैं उनके इस बटोर तप का साक्षी हूँ। मुझे उनका एक बार का वह कथन बार-बार रमरण हो जाता है जब हम दोनों सन् १९५२ में देवप्रयाग से लगभग ६ मील ऊँचाई पर 'महड़' नामक गाँव में भूदान यात्रा पर जा रहे थे, सयोग से उस दिन प्रातःकाल का वाता वाही मिठा था और वे गधियों के दिन थे। दिन के लगभग ११ बजे को ढकी घूर, प्याल और पान के कारण हमनोग एक पेंड की छाया में मुँहलाने के लिए बँठ गये। गोड़ी देर में सरला बहुत बोनी; 'कामेश्वर

भाई, इस देश का उद्धार कैसे होगा?' मेरे प्रश्न करने पर फिर बोली—'मेरी उम्र के कर्तव्य की यही आज इतना कष्ट उठाना पड़ रहा है और इस देश का नौजवान बचा कर रहा है? क्या मेरी उम्र अब इस तरह का बन्ध उठाने लायक है?' उस समय उनकी उम्र ५५-५६ साल की थी और आज तो वे ७२ साल की उम्र में भी उसी तरह के बन्ध उठा रही हैं, उनका वह तप ही आज भी जारी है। किसी व्यक्तिगत साधना या प्राप्ति के लिए नहीं, बल्कि मनुष्य के सत्कार के लिए, समाज के सुधार के लिए। सरला बहुत की वह ध्यानात्मक आज भी कालों में पूँजनी है और मन में रह रहकर सवान उठता है कि सन्मय हमारे देश का नौजवान वहाँ है? वह तो लगता है 'बोरिष्म' में फँग गया है और बिना रास्ता चले ही मजिल पर पहुँच जाना चाहता है। क्या इससे बड़ा शकट किसी देश पर सा सकता है?

सरला बहुत प्रचार से हमेशा दूर रही हैं और धरल में उन्हें अपने बारे में किसी तरह की प्रशंसात्मक चर्चा पसन्द नहीं है। उन्होंने स्वयं कहा है, 'आज कल हर एक भारतीय समाजता है कि दुनिया का सुधारने का वही काम महत्त्वपूर्ण है जो वह कर रहा है। वह मानता है कि उसके बड़े पर चलने से ही समाजों में गुलदस्त सकती हैं, अन्यथा नहीं। लेकिन यह भी मैं देख रही हूँ कि इन मनोवृत्ति के कारण अहंताओं का सपर्य बढ़ रहा है और सूजन-गठित मण्ट हो रही है, बल्कि क्रिया-कराया सब नष्ट हो रहा है।' इस प्रकार वे जानदूस कर मौन साधना में रह रही हैं। किन्तु समाज को इस प्रकाश से लाभ लेना चाहिए। यह संशोधन की बात है कि नकार में होनेवाले सर्वोच्च सम्मेलन का उद्घाटन सरला बहुत करेगी। अतः यह स्वाभाविक ही है कि इस वक्त हम सरला बहुत के गुणों का स्मरण करें।

—कामेश्वर प्रसाद बहुगुणा

नये प्रकाशन

ब्लडपेशर की प्राकृतिक चिकित्सा

—धर्मचन्द सरावगी

विषय नाम से स्पष्ट है।

मूल्य - रु० १.५०

धर्मरोगों की प्राकृतिक चिकित्सा

—धर्मचन्द सरावगी

धाम की चादर से लिपटी देह में न जाने कितने रोग हैं। धाम को सुन्दर, आकर्षक और स्वस्थ बनाये रखना हर मनुष्य का धर्म है।

मूल्य : रु० १.२०

नये संस्करण प्रकाशित

गांधी : जैसा देखा समझा विनोबा ने

नये संस्करण बड़े दाय में सशोधित रूप में प्रकाशित। विनोबाजी की सूचनाओं के अनुसार संशोधित।

मूल्य : रु० २.००

सर्व सेवा संघ प्रकाशन

राजघाट धारागल्ली-१



जनता से ठगी

जो हां. . . फुटकर परीच में . . . इनसे—आप
 खादमी से—हर साल 160 करोड़ २० टग लिये
 जाते हैं। माप तोल के बाटों या मापने तोलने
 में। प्रतिशत की भी गड़बड़ होने पर
 जनता से इतनी बड़ी रकम ठग ली जाती है।
 आप इसे रोक सकते हैं। सामान खरीदते समय
 इस बात का ध्यान रखिये कि माप तोल

सरकारी मुहर लगे माप तोल के पैमानों में ली
 जाती है।

अगर आप कोई हेरा-फेरी पाते हें तो उसको
 शिकायत अपने क्षेत्र के माप तोल
 इन्स्पेक्टर से कीजिये।

माप तोल के मीटरों पैमाने
 आपकी रक्षा करते हें

बुलन्दशहर में शराबबन्दी का प्रयास

बुलन्दशहर जिले में जन-जागृति और लोक-अभिक्रम आगने की दृष्टि से शराबबन्दी आन्दोलन को माध्यम माना है। इस समस्या पर सब पार्टी तथा सभी धार्मिक और सामाजिक संगठन एकमत हैं।

नवम्बर १९७१ से मार्च १९७२ तक जिले में सयन व्यापक जन-सम्पर्क करके जन-संगठन किया गया। १ अप्रैल १९७२ से शराब के ठीकों, दुकानों के सामने सत्याग्रह की घोषणा की गयी। १ अप्रैल को शराब की ६ दुकानों पर धरना दिया गया। गुलाबटी में हवन-कीर्तन और नयाज के वातावरण में नगर के प्रमुख व्यक्तियों ने शराब पीनेवालों की सम-क्षाया तथा उनको पीने से रोका। भवनबहादुरनगर में शराबबन्दी के लिए १ अप्रैल को बाजार तथा अन्य कामों की पूरी हड़ताल रखकर शराब की दुकानों के सामने हवन, भजन व ब्राम्हसभा के शुभ वातावरण से धरना दिया गया। स्थाना में शराब की दुकान के सामने 'पिकेटिंग' किया गया। बुलन्दशहर में शराब के ठीके पर पीनेवालों की रोका गया तो ठीकेदारों ने सत्याग्रहियों के साथ सफाया किया जिससे वातावरण काफी गरम हो गया और पुलिस घटना-स्थल पर आ गयी। सिन्धुपुर में कीर्तन,

प्रार्थना और जुलूम के साथ दूकान के सामने धरना दिया गया। शराबी गुण्डों ने कुछ अपद्रव किये। लेकिन स्थानीय व्यक्तियों के सामने उनकी कुछ भी न चली।

२ अप्रैल से सिन्धुपुर तथा बुलन्द-शहर में शराबबन्दी सत्याग्रह बराबर चालू है। सभी धर्मों और राजनीतिक पार्टियों के प्रतिनिधियों को लेकर एक समिति बनी है जिसके अध्यक्ष महाशय भावलाल तथा मंत्री डा० हरिद्वार पाण्डेय हैं। शहर में तीन शराब की दुकानें हैं। इस समय छायाभार-पद्धति से तीनों दुकानों पर पिकेटिंग चल रही है। कब, किस समय, कहाँ, किसकी देर के लिए सत्याग्रही पहुँच जायेंगे यह पहले से किसी को पता नहीं रहता है। अतः शराब के ठीकेदारों को बिक्रो मीर-बानूनी दग से जितनी होनी थी वह एकदम एक गयी है।

शराब पीनेवालों की संख्या भी घट रही है और न पीने का सङ्कल्प लोग तेजी से ले रहे हैं। शहर से स्वयं प्रेरणा लेकर नोजवान तथा महिलाओं का जाना शुरू हो रहा है। सरकारी कर्मचारियों को भी सोचना पड़ रहा है।

इस बीच शराब के ठीकेदारों ने सत्याग्रहियों को शक्ति परेशान किया। बाहर

से किराये के गुण्डे बुलाकर गाली-गलौज तो साधारण बात थी। उन्होंने तीन बार सत्याग्रहियों के साथ मार-पीट भी कर डाली। ऐसे अवसरों पर ए० पी० तथा सिटी मजिस्ट्रेट बारि ने गुण्डों के खिलाफ काफी बड़ी कार्रवाई की है। शहर के नागरिकों की कई धंठकें हुई हैं। शराब-बन्दी सत्याग्रह के पक्ष में शहर के नागरिकों ने १६ अप्रैल को एक जुलूम भी निकाला। मुहल्लों में प्रभातफेरियाँ, गोष्ठियाँ बराबर हो रही हैं।

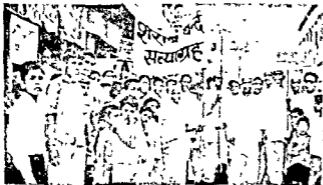
हर संगठन ने अपने कार्यकर्त्तों को लेकर शराब की दुकानों पर सत्याग्रह का कार्य शुरू किया है। दुकानों के खिलाफ सत्रे होने की हिम्मत जनता में बढ़ रही है। नये-नये युवक सामने आ रहे हैं।

बस २५ वर्षत की शराब के सरकारी गोदाम के सामने (बकीब, व्यापारी, शिक्षक, नागरिक तथा सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक संगठनों के व्यक्तियों ने) शराब के खिलाफ प्रदर्शन करने का वचन दिया है।

इस प्रकार धीरे-धीरे दुश्तापूर्वक नागरिक बुराईयों के खिलाफ तथा अत्याचारों की स्थापना करने के लिए आगे आ रहे हैं।

शराबबन्दी का यह आन्दोलन मुख्य रूप से नागरिक-व्यक्ति को छाड़ा करने का है। मजदूरों के रहते हुए भी एतन्त से समाज-हित की दृष्टि से सोचने और करने की परेड चल रही है, ऐसा हम मानते हैं।

आज के युग की सबसे बड़ी समस्या मतभेदों की नहीं, मन्थेदों की है। हमारे धारे कार्यकर्त्तों का सङ्घ-बिन्दु सामाजिक मन-निर्माण करने का है। सामाजिक मन-निर्माण करने के लिए दुकानों से सड़ने की परेड स्थानीय परिस्थितियों के हिसाब से सडन होते रहने से सामाजिक मन बनेगा तथा व्यक्तियों का मनोबल ऊँचा उठेगा। ऊँचे मनोबलवाला व्यक्ति सभी समस्याओं के सामने दुश्ता से सङ्घा रहकर जनता हल निकाल ही लेगा। अतः हमारा हर कदम :



बुलन्दशहर : शराबबन्दी का जुलूम

उत्तर प्रदेश में तरुण-शान्तिसेना के छः माह

अगस्त में 'शिक्षण में क्रांति अभियान' के सफल सम्पन्न होने के बाद सितम्बर में प्रादेशिक तरुण-शान्तिसेना विधिवर एवं सम्भारण के आयोजन में हमारी शक्ति लगी। सम्भारण में प्रादेशिक तरुण-शान्तिसेना की एक तटस्थ समिति गठित की गयी। श्री विनयभाई इसके अध्यक्ष तथा संतोष भास्तीय संयोजक बनाने लगे। बिहार और बांगला देश के कार्यक्रमों में लग जाने के कारण संतोष भारतीय प्रदेश के समूह में समय नहीं दे सके। हमारे हमारे पुराने समय देवदास तल्लु और सुरेश कुमार ने भी बांगला देश के विस्थापित विधियों में बड़ी लगन और निष्ठा से काम किया। विनय भाई ने श्री शिव सहाय मिश्र और श्री देवप्रिय के सहयोग से प्रदेश के जातीयता का संचालन करते हुए प्रदेश के तरुण-शान्तिसेनाओं से सम्पर्क रखा और अनेक जिलों में प्रवास कार्यक्रम के द्वारा नये केन्द्रों की स्थापना करने तथा पुराने केन्द्रों से सम्पर्क करके उन्हें सक्रिय बनाने का प्रयास किया। परिणामी जिले के एक दोरे में उन्हें श्री अमरनाथ भाई का भी साथ मिला। पूर्वी क्षेत्र में आचार्यकुल के श्री रामचन्द्र सिंह का सहयोग उत्कृष्टसमीप है।

इस समय प्रदेश के २७ जिलों में कुल ३६२ सदस्य हैं, १७ जिलों में संयोजकों का मनोनयन या सर्वसम्मति विधिपर्यन्त हो चुका है। अधिकांश सदस्य छात्र और छात्राएँ अधिकतर केन्द्र शिक्षण-नायकों में हैं, देवरिया, कानपुर, फर्रुखाबाद, बलौचपुर, आगरा, इलाहाबाद, बलिया और मथुरा आदि जिले विशेष सक्रिय रहे।

प्रदेश के तरुण-शान्तिसेनाओं ने बांगला देश के सम्पर्क और सहजता में विशेष कवि और सक्रियता का परिचय दिया। प्रदेश में बांगला देश के तरुणों की विचार-विवेक जागरण यात्रा का संयोजक प्रशिक्षक संयोजक मण्डल के द्वारा डॉ. प्र० लक्ष्मण-शान्तिसेना के सक्रिय सहयोग से किया गया, बाघापट्टी, इलाहाबाद और कानपुर के तरुणों ने यात्रा कार्यक्रम के प्रचार और संयोजन में उत्साहपूर्वक योग दिया। अनेक स्थानों पर तरुणों ने बांगला देश की सहायतापत्रे धरने व वस्त्र का समर्थन किया। धर्म समाज विधियों, मजदूरों की तरुण-शान्तिसेना ने ३ हजार वस्त्र-समर्थन करके उन्हें विस्थापित विधियों में पहुँचाने में बड़े उत्साह का परिचय दिया। अनेक केन्द्रों ने नागरिक सुरक्षा और शान्ति तथा धुड़ारना कायम करने के कार्यक्रमों में भाग लिया।

सहायनापूर्वक बनाये रखने में सहायनीय योग दिया। कानपुर के तरुण शान्तिसेनाओं ने गंगा क्षेत्र में विचार-विचार लगाकर तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन कर अपनी सक्रियता का परिचय दिया और कानपुर में अग्रणीय विधियों को विराटकरण की दिशा में भी उत्पन्न प्रारम्भ रहे।

— विनय भाई

नगर स्वराज्य समिति का गठन

नारायणी नगर सर्वोदय मण्डल के उत्साहवादी में नगर स्वराज्य के लिए गठित गृहस्थ-समितियों के संयोजकों की एक बैठक सर्वोदय मण्डल के कार्यालय में दिनांक ६ मई को छात्रों के बीच बने छात्रों की विचारणाएँ नगर स्वराज्य समिति बनाने के लिए मण्डल के अध्यक्ष श्री श्याम बहादुर 'नम्र' की अध्यक्षता में हुई। प्रारम्भ में मण्डल के मन्त्री श्री मोहनलाल शर्मा ने उत्तर प्रदेश सर्वोदय मण्डल के निर्देशानुसार नगर स्वराज्य के लिए गठित गृहस्थ-समितियों का विवरण मुद्रणा सचिवालय के संयोजकों ने यह निश्चय किया कि निम्नलिखित काम करने के लिए श्री० राधेश्याम शर्मा की अध्यक्षता में नगर स्वराज्य की एक तटस्थ समिति बना ली जाय।

- (१) गठित गृहस्थ-समितियों के कार्य को व्यवस्थित करना।
- (२) नयी मुद्रणा समितियों बनाना।
- (३) नगर स्वराज्य समिति का विधान तैयार करना।

इस समिति में नगर सर्वोदय मण्डल के पदाधिकारियों का मिलाकर सर्वोदय काशीनाथ सिंह, एम० के० देववर, योगेश सिंह, नरेश, प्रेमचन्द पण्डा, गौर गोपाल ब्रह्मण, राजेश्वर, डाक्टर दिग्विजय शर्मा, रोहित मेहता, यशोवर्धन श्रीवास्तव और काशीनाथ की संरक्षक मनोनयन किया गया।

— मोहनलाल शर्मा

- १— शान्ति के मनोबल को ऊँचा उठावेगा।
- २— अतर्क्यों की साम्राज्य कमजोरी से उत्तर उठकर सामाजिक मत का निर्माण करेगा।
- ३— अन्धधर्म की स्थापना के साथ-साथ धुराधर्म का उन्मूलन करेगा।
- ४— सुदार्ढ के विनाश तथा अन्धधर्म की स्थापना के लिए सीधे कार्रवाई का कदम होगा।
- ५— उत्साहपूर्वक की सतत चलनेवाली नीति की स्थापना करेगा। — नरेश

नशाबन्दी समिति के शिष्ट मण्डल की प्रधानमंत्री से भेंट

ज० भा० नशाबन्दी समिति के शिष्ट मण्डल ने दिल्ली में प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से भेंट कर उनके राजस्थान में नशाबन्दी विधे जाने की मांग की है। शिष्ट मण्डल ने प्रधानमंत्री को पिछले आन्दोलन के फलस्वरूप राज्य सरकार द्वारा अप्रैल '७२ से मद्य-निषेध करने के वायदे से खबगत कराया। प्रधानमंत्री ने उचित कार्रवाई का विश्वास दिलाया है।

शिष्ट मण्डल में सहज सदस्य डा० बीवराज मेहता, डा० सुशीला नायर, ब्रिटिस टैकनिक तथा गोलुलभाई खादि थे। नशाबन्दी समिति के प्रतिनिधि ने राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री बरकतुल्ला खां से भी भेंट की और उनके राजस्थान सरकार की मद्य-नीति पर पुनर्विचार की मांग की। मुख्यमंत्री ने इस सिफारिश में सर्वोच्च नेता श्री जयप्रकाश नारायण से भी विचार-विमर्श किया।

ज० भा० शांतिसेवा मण्डल ने ग्राम-स्वराज्य सप्ताह का कार्यक्रम मनाने की योजना बनायी थी। निर्धियां अपनी अनुपलब्धता के अनुसार तय करने के लिए कहा गया था। उस कार्यक्रम के अनुसार मैसूर प्रदेश के बेसगांव जिले में तथा महाराष्ट्र के पञ्चपुर-बीर परभणी जिले में सप्ताह मनाये गये। अनुभव उत्साह-बद्ध रहा।

१—यह कार्यक्रम मुख्यतः स्थानीय कार्यकर्ताओं के बल पर अमल में आया।

२—गांव-गांव में ग्रामशांतिसेवा लक्ष्य हुई। छोटे-छोटे स्थानीय कार्यकर्ता सक्रिय हुए।

३—प्राथम्यता बनाना, ग्रामकोष जमा करना आदि कामों को प्रति मिली। इस तरह से ग्रामदान-मुक्ति के कार्य में बल मिल रहा है।

४—एक दिन के शिविरों का सिल-

सिला गांवों में अग्राह्य चलाने का कार्यक्रम रहा।

कुल मिलाकर सप्ताह मनाने के कार्यक्रम से कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ा है। मैसूर प्रदेश में शांतिसेवा सफटन प्रदेश स्तर पर खड़ा होने की सम्भावना बड़ी है। सामूहिक पदयात्रा के तन्त्र को विकल्प देने की सम्भावना इस कार्यक्रम में तजर था रही है। महाराष्ट्र में अधिक जिलों ने इस कार्यक्रम को उठाने का कार्यक्रम बनाया है। मैसूर प्रदेश सभी बेलगांव जिले तक ही इस प्रयोग को चलाना चाहता है। देश के अन्य प्रदेशों में भी इस प्रयोग को चलाने की बात शोकी जा रही है।

रतलाम में मित्र-मिलन

रतलाम (मध्य प्रदेश) से श्री मानव मुनि लिखते हैं कि रतलाम सर्व सेवा सभ के तत्वावधान में जिले के रचनात्मक कार्यकर्ताओं के मित्र-मिलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता श्री चन्दन सिंह भरतिया ने की तथा श्री बनवारी लाल चौधरी सम्मेलन के प्रमुख अतिथि रहे। सम्मेलन में तीन सौ कार्यकर्ता उपस्थित थे। इसके अन्दाज ग्रामदानी गांवों के १०० भाई-बहन भी सम्मिलित थे।

इस अवसर पर ग्रामदानी सवि रूपसे छात्रों के लोगों ने प्रतिज्ञा की कि यहाँ का प्रत्येक परिवार एक-एक आदिवासी परिवारों की गोद लेगा तथा उसकी आर्थिक और सामाजिक उन्नति के लिए हर सम्भव प्रयत्न करेगा।

मध्य प्रदेश में भूमि-वितरण

मध्य प्रदेश भूदान-यज्ञ बोर्ड के मंत्री की सूचना के अनुसार मध्य प्रदेश के कुल ५३ जिलों में मार्च '७२ तक १,६३,००० हेक्टेयर एकड़ भूमि ३३-५१ परिवारों में विवितरित की जा चुकी है।

जनवरी '७२ से मार्च '७२ तक २९,११५-०० एकड़ भूमि का वितरण ८१९ परिवारों में किया गया है। जिसमें से १७४ हरिजन परिवारों की २८१ एकड़, १९७ आदिवासी परिवारों की ९४५

एकड़, ४०३ वर्ग परिवारों की १२१८ एकड़, तथा ४५ विद्युद्गी जाति के परिवारों की १७१ एकड़ जमीन दी गयी है।

लोकसेवक के अनुमन

हमने दिनांक २०-५-७२ से ग्रामस्वराज्य समिति महापक्ष अधिवासी कार्यक्रम सौर प्रलाड (पश्चिम) के १४ पंचायतों में संचालित किया। निरक्षरों के कार्यक्रम बढ़ा विनियम था। उनके कार्यक्रम हेतु ११ पंचायतों में ग्रामस्तरीय तथा पंचायतस्तरीय समिति का गठन करने के साथ-साथ १८ अन्न के कार्यक्रम आयोजन का सयोजन का सफल कराया। इन क्षेत्र में लोगों को छाड़ा करने के द्वारा सभी कार्यक्रम चलाये जायें, इसका प्रयत्न रहा। पुनः जाकर काम करने में सुविधा हो गयी मेरी दृष्टि रही। इन अवधि में काम करते वकत कुछ अनुभव हुए उसका विवरण नीचे दे रहा हूँ।

(१) ग्रामस्वराज्य के विचार को हर गांवों में समर्थन मिला। विचार मतिष्क को छू गया है ऐसा तथा। हृदय में बैठे और हाथ द्वारा प्रकट हो यह करना हमारा काम है। यह काम तैयारी का है, निरन्तर करते रहने का है, विचार-शिक्षण का है। मैं मानता हूँ कि आज जहाँ हम पहुँचे हैं घर-घर सर्वेय पहुँचाया है। लेकिन यह अपर तैयारी तैयारी तक ही रहो तो ३० दिनों की निरन्तर रोज़-पूर, हवा आदि की फिक छोड़कर काम करनेवाले को चोट पहुँचना स्वाभाविक है।

—उदित नारायण

अकोड़ी के लोगों की भीष्म प्रविज्ञा

श्री विनोद नगर पाण्डेय, मंत्री ग्रामस्वराज्य समिति अकोड़ी मिरजापुर से लिखते हैं कि ३० अक्टूबर, '७२ सर्वोच्च ग्राम स्वराज्य समिति अकोड़ी को कार्य-कारिणी ने अपनी बैठक में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया है कि अपने सर्वोच्च परिचालन में वह अपने नामों के साथ जाति व वर्णभेदसूचक शब्दों का व्यवहार नहीं करेगा।

आचार्य राममूर्तिजी



सर्वादिप

समाज

सम्मेलन

के

मनानोत

अध्यक्ष

१—जन्म : २२ जनवरी १९१३

२—बिद्यालय : बाराणसी, बलाहावाड, लखनऊ

३—सरकारी नौकरी : सिवा विभाग १३ साल

४—१० मई १९५४ से मुख्य सीरिल मॉई के साथ थप भारती, सादी-धान में।

५—१९३७ में पदवाना

तब से धामदान-धामहराय धामोलन में कार्य

आवश्यक सूचना

लखित भारतीय सर्वादिप सम्मेलन होने के कारण दिनांक २२ मई '७२ का अंक प्रकाशित न होकर दिनांक २९ मई का अंक प्रकाशित होगा।—धं०

पत्र-संयोजक का पता :

सर्वे सेवा संघ, पत्रिका-विभाग

राजघाट धाराणसी-३

सार : सर्वसेवा फोन : ६४३९१

सम्पादक

राममूर्ति

इस अंक में

राजघाट अधिमान : कुल सुरास ५०९

भूदान से धामहराजदः

एन सीत वर्ण—सम्पादकीय ५०७

प्रसोतिर

—विनोबा ५०८

धूमि का बेटवार

—श्री सुरेशराय ५०९

भारत में गरीबी—१४

—श्री राममूर्ति ५१०

गहरी सम्पत्ति की सीमा

—श्री श्रीरामचन्द्र दुबे ५१२

विनय नागरिक : सरला बहन

—श्री कामेश्वर प्र० बट्टगुला ५१४

सुनन्दस्यहृर में अरुण बन्दी

का प्रयास—श्री नरेन्द्र ५१७

उत्तर प्रदेश में सरण-मानिषेण

के ६ माह—श्री विनय भारी ५१८

अन्य वस्तुओं

धारदीनन के समाचार

वारिक मुद्रक : १० १० (सफेद कागज : १२ व०, एक प्रति २५ पैसे), विदेश में २५ व०; या ३० तालिम या ४ कालर।
पूछ अंक का मूल्य २० पैसे। मोहुरकरत गट्ट द्वारा सर्वे सेवा संघ के लिए प्रकाशित एच मनोहर प्रेस, बाराणसी में मुद्रित

आजादिय

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

प्रति मय
०.७.६.७२
प्रास
संस्थापक

भारत-राष्ट्र

भारत-राष्ट्र के लिए एक नया संकल्प

उपवास नहीं, प्रायश्चित्त

● गोकुल भार्गव

मैंने संकल्प लिया था कि ८ मई के शराबबन्दी कराने के लिए आमरण अनशन करूँगा, लेकिन श्री अय्यंगर का नारायण ने इस पर विशेष धन्यवाद के लिए एक हास्ती भी रोक लगा दी। आन्दोलन के एक दिन का संकल्प होने के होते हुए अपने उस नेता का आदेश तो मानना ही था और यह तो कुछ समय के लिए ही है और मैंने सोचा कि मन्त्रणा में बाधा न पड़े, बस इतना ही उद्देश्य था, इसलिए एक हास्ती के लिए मैंने अपना संकल्प मुक्तवीर कर दिया।

राज्य में शराबबन्दी के बारे में सन् १९६६ से बार्द शुरू किया गया था और उस समय यह सरकारी नीति निर्धारित की गयी थी कि सन् १९७२ की पहली अप्रैल से सारे राज्य में शराबबन्दी लागू हो जायेगी। मुझे उस समय मंत्रिमण्डल के आधिकारियों ने, तुकाड़ियाजी ने, विपक्ष दितामा था। पर २४ मार्च को कुछ लोगों के सहने से, आर्थिक कारणों को लेकर शराबबन्दी सरकार पक्षी अर्थल से शराबबन्दी के लिए दिने गये वचन से मुक्त कर दी है। आर्थिक बर्हिनाई तो उस समय भी जो अब शराबबन्दी के लिए एलाज किया था, अब कोई नया आर्थिक संकट तो था नहीं गया है।

शराबबन्दी में बाधाओं कम हैं, लेकिन हमारे सामने एक प्रश्नीय प्रश्नी है। क्या करना है ? रोक दिया है, तो ठीक है—

ऐसे हम माननेवाले नहीं हैं। गाँवों से आवाज आ रही है कि आपने जो रोक लगायी है, वचन रोक दिया है, हम उसका विरोध और करते हैं। संवामर्त भी ऐसा कर रही है। विधानसभा में भी हलचल है।

उन लोगों ने यह प्रण किया है—“शराब बन्द करायेगे, चाहे मर मिट जायें। सब परिवर्णन में लोच-मानस बनाने का कार्य चल रहा है। जहाँ-जहाँ शराब की दुकानें होंगी विक्रेता करी—यह आवाज सुनने ही रही है गाँवों में। इसमें भयबल प्रदर्श करेगा, कोई संका नहीं है। मेरे लिए तो यह एक प्रायश्चित्त है, किसी तरह का आन्दोलन नहीं।

मेरे संकल्प के पीछे भूत-हड़ताल या अनशन का उद्देश्य नहीं है। मेरे चले जाने के बाद इसे और कोई न करे। शराबबन्दी के द्वारा लोच-मानस हमको बदलना है। इसलिए आमरण एक कुनियारी बात है, फिर भी इस प्रश्नीय का समाधान करने के लिए इसे भी रोकना होगा। माघर्द बनकर नहीं रहना चाहता, अपर राम नहीं कर पाया तो कुनिया से बने जाता है।

[नयी दिल्ली राजभंड में ११ मई से १३ मई तक हुए गाँधी एकाग्रता संस्था सम्मेलन के पहले दिन श्री गोकुल भार्गव वृत्त द्वारा दिये गये भाषण से ।]

ग्रामदान ग्रामस्वराज्य आन्दोलन का नया मोड़

संघ अधिवेशन का प्रस्ताव

हमारा आन्दोलन जब आन्दोलन कहे जाने, यह भिन्ना सदा से रही है। किन्तु अब हम आन्दोलन के विकास-क्रम में ऐसे विन्दु पर पहुँच गये हैं जहाँ प्राप्ति और पुष्टि दोनों में, प्रगति के लिए केवल कार्य-कर्ता-शक्ति निदान स्वयंसेवक सिद्ध हो रही है। हमने माना है कि लोक-शक्ति से ही इस आन्दोलन को वह जीवनी-शक्ति मिल सकती है जिसके बिना हमारे प्राप्ति-कार्य सघनों की सिद्धि सम्भव नहीं है। आन्दोलन के इस संकट को महसूस करते हुए सर्व सेवा संघ ने अपने मकसद के अधिवेशन में इस प्रश्न पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया और वह इस नतीजे पर पहुँचा कि देश भर में आन्दोलन में अनेक हुए सभी छात्रियों का स्थान रखनी और उत्कृष्ट आना चाहिए और इसे हल करने के लिए अलग-अलग क्षेत्रों में परिस्थिति के अनुसार लोक-शक्ति संगठित करने के प्रयोग करने चाहिए।

ग्रामदान-मुष्टि के कार्य में गाँव की भूमिहीनता विधानों का एक मुख्य प्रश्न है। सामाजिक उपाय के रूप में हमने बीया-खटख की बात कही है, किन्तु हमारा प्रयत्न होना चाहिए कि गाँव की कुल भूमि का बम-के-कम बीघाएँ भाग भूमि-हीनों के हाथ में आये। इसके अलावा गाँव में भूमि के जो बाहर के यानिक (एन्गेण्टी सेक्टर) हैं उनकी भूमि भी ग्रामदान की बातों के अनुसार धामसमा के प्राथम्य से, गाँववासियों के उपयोग के लिए उपलब्ध हो।

प्राप्ति तथा पुष्टि की सम्पूर्ण प्रक्रिया में धर्मिक-वै-शक्ति सबसे में स्थानीय जनता का अधिष्ठान और पुरस्कार अगाने की दृष्टि से यह जरूरी है कि अगाने मानने में भूमिदान-भूमिहीन सभी शरीक हों। वे पहले स्वयं दाता बनें, और दाता बनकर दूसरों को दान के लिए सामूहिक तौर पर प्रेरित और प्रभावित करें। यह

निश्चित है कि बड़ी संख्या में भूमिदान-भूमिहीन दाताओं के इच्छा अनेक बड़ों का बड़ा प्रभाव होगा, साम्य ही, सामान्य जनता निर्णय होगी, और उसका मनोबल भी ऊँचा रहेगा। ध्यायक दातावरण बनाने में लोक पदमाचारों पहले उपयोगी सिद्ध हुई है वे अब भी प्रभावकारी सिद्ध हो सकती हैं। इसलिए प्राप्ति और पुष्टि के विभिन्न क्षेत्रों में लोक-पदमाचारों सक्रिय होनी चाहिए।

लोक-शक्ति के संगठन में एक बात का ध्यान देनेवाला रहना है। वह है अहिंसा। हम मानते हैं कि अहिंसा की शक्ति ही समाज की वास्तविक शक्ति है। हमें अहिंसा की शक्ति का विकास और उसकी मर्यादों का पालन करते हुए आगे बढ़ना है। इसलिए स्वभावतः हम ऐसे लोगों काय नहीं कर सकते, जोई बात नहीं कह सकते, यहाँ तक कि कोई मारपीत भी नहीं लगा सकते, जिससे शाहूक संगठन अथवा अन्य कोई उपाय या दुःख पैदा हो। अहिंसा के

लिए प्रेम और परस्पर विश्वास का वातावरण आवश्यक है। उदाहरण के लिए हम यह कह सकते हैं कि भूमिहीनतावादी सभी भूमिहीनों के समझ ऐसे मोर्चों, चारों ओर भवन-हीनता आदि के साथ प्रयुक्त हो सकता है जिन्हें शक्तियों के हथियारों के स्थान पर मानवीय सामूहिक का उपयुक्त हो।

विचार-शक्ति और हृदय-परिवर्तन हमारे आन्दोलन का ध्येय रहा है। उसे हमें कायम रखना है। पिछले अनेक वर्षों में हमने सचिविचार का उपहार जन-जन तक पहुँचाने की कोशिश की है और इसके शुभ परिणाम भी हुए हैं। बसहकार और शक्ति का भी अहिंसक प्रक्रिया के माध्यम से। परिस्थिति की माँग होने पर अहिंसा की प्रक्रियाओं के अन्तर्गत उपाय प्रयोग अतिव्याप्य भी हो सकता है। हमें हर संस्थान में अपनी बुद्धि से सही कदम का निर्णय करना पड़ेगा।

सर्व सेवा संघ अगाने करता है कि ग्रामदान कार्यक्रम आन्दोलन में लगे हुए सभी साथी इस प्रस्ताव को भूमिहीन में, अपने-अपने क्षेत्र में आन्दोलन की शक्ति-शाली बनाने के प्रयत्न और प्रयोग में अतिव्याप्य लगे जायेंगे।

श्री गोकुल भाई भट्ट का आमरण अनशन

प्रादेशिक सर्वोच्च मण्डल राजस्थान समग्र देश संघ के कार्यालय किशोर विहार में सामूहिक प्राप्ति और मनन कार्य के पवित्र वातावरण में ७५ वर्षीय सर्वोच्च नेता श्री गोकुलभाई भट्ट ने राजस्थान के लिए अपना आमरण अनशन १६ मई को जयपुर में प्रारंभ करने से प्रारम्भ किया। इस अवसर पर काको संस्था में सर्वोच्च कार्यकर्ता तथा राजस्थान प्रेमी पार्टी-महान् उपस्थित थे।

प्राप्ति समाज की सम्नोहित करते हुए श्री भट्ट ने कहा कि गांधी शास्त्री काय में राजस्थान नहीं हो सकी लेकिन यह सर्व शास्त्री की रजत उपलब्धि है, अतः हमें गांधीजी का कार्य लेने के साथ उनके कार्य की भी प्रति देनी होगी। अतः

विशेष का कार्य-क्रम समाजवादी तथा 'शरीर ही हटाओ' का अभियान है। भापने शराब को सब हटाओ की जड़ बलाया।

इस अवसर पर राजस्थान विश्व संघ के अध्यक्ष श्री विजय सिंह सेखावा ने राजस्थान आन्दोलन में विश्वक समाज के सहयोग का विकास विलाया। श्री बलराम सिंह ने कहा कि गोकुलभाई का संस्था कार्यकर्ताओं की जड़ता को दूर करेगा।

× × ×

अनशन समाप्त

ग्रामदान समाज के अनुसार श्री गोकुल भाई ने २७ मई को अपना अनशन समाप्त किया।

पुराने अध्यक्ष, नये अध्यक्ष

एक अध्यक्ष की विदाई और दूसरे का स्वागत। विरपति में श्री जगन्नाथन्त्री ने बड़े मनाव के बाद अध्यक्ष होना स्वीकार किया था; उतने ही मनाव के बाद इस बार श्री सिद्धराजजी ने स्वीकार किया। यह हमारी पद्धति की खूबी है कि इसमें कोई किसी पद के लिए उम्मीदवार नहीं होता, मनाव करके ही किसी साथी को किसी पद के लिए राजी करना पड़ता है। इस कारण चुनाव में से प्रतिद्वन्द्विता निरस जाती है, और वातावरण में मित्रता बनी रहती है।

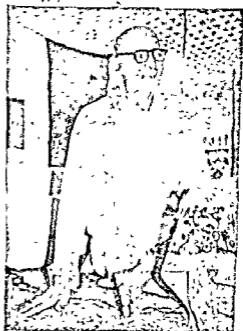
जब भाई जगन्नाथन्त्री तीन साल पहिले सच के अध्यक्ष हुए थे तो वह मोर्चे के सिपाही थे। अध्यक्षता के तीन वर्षों में भी वह सिपाही ही बने रहे। अध्यक्षता भी करते रहे, साप-साप तंबोर की लड़ाई भी लड़ते रहे। कार्य छोड़कर कार्यालय में बैठना उन्हें कभी पसन्द नहीं आया। स्वभाव से वह कागज के आदमी नहीं, फुटाल के आदमी हैं। उन्हें गरीबों के बीच काफ़ी करना पसन्द आता है। यह सिपाहीगिरी अपने समय में उन्होंने और मंत्री भाई बगसाहब ने मिलकर अच्छी तरह कामयाबी की।

श्री बड़दानी ने नयी अध्यक्षता के साथ सहरवा जोड़ा है। उनके लिए यह नही कहा जा सकता कि वह कागज के आदमी नहीं हैं। कागज के काम में वह निपुण हैं, लेकिन उनकी क्रान्ति-निष्ठा उन्हें क्षेत्र से कभी अलग नहीं होने देती।

हमारे मंत्री भाई श्री बगसाहब जैसे पहले अध्यक्ष के विरासतगान में उसी तरह नये अध्यक्ष के भी हैं।

जाने अध्यक्ष चुने जाने के मोड़ो ही डेर बाद श्री बड़दानी ने घोषणा की कि श्री बगसाहब मंत्री बने रहेंगे। बगसाहब दूसरी बार मंत्री नहीं होना चाहते थे। उनकी इच्छा थी कि कार्यालय से दूर होकर पुरा समय क्षेत्र के ही काम में लगायें। इसलिए बड़दानी ने जल्दी की और बगसाहब को अलग होने से रोक लिया। बगसाहब सन्धे वर्षों में पुराने और नये अध्यक्षों के बीच की कड़ी हैं।

हमें सेवा सच में यह परिचायी 'पुष्ट हो गयी है कि प्रत्यक्ष कार्य से अलग मात्र पद का महत्त्व नहीं है। क्षेत्र के प्रत्यक्ष कार्य और कार्यालय की व्यवस्था के बीच में ही हमारी सफलता है। कुछ दसों तरह की बात का ध्यान रखकर नकोदर में प्रबन्ध समिति ने तय किया कि उसका हर सदस्य एक खास क्षेत्र में ध्यानोपन के पूरे कार्यक्रम के लिए जिम्मेदार हो। वह उस क्षेत्र और प्रबन्ध समिति के बीच कड़ी का काम करे। प्रबन्ध समिति के अवरजित क्रान्ति की जिम्मेदारी है उसकी दृष्टि से यह



श्री सिद्धराज बड़दानी

नये अध्यक्ष को मान्यार्पण और दो शब्द

प्रबन्ध समिति की बैठक में किसी ने कहा था कि गरीबी और फकीरी जब सामने-सामने होती है तो गरीबी ज्यादा खतराती है। क्या इसका कोई रास्ता है? नीतियों ने एक रास्ता निकाला है नाम दिया है—आसकेरुड। आसकेरुड यानी वह सद्गता, वह सादगी जिसमें आभा हो, भाविक हो। वह विधेयता श्री सिद्धराज भाई में है।

आप लोगों की तरफ से मैं इसका स्वागत करता हूँ और प्रतीक रूप में यह माला उनकी अर्पण करता हूँ।

—दादा धर्मधिकारी

सावधान्य है कि क्रान्ति के क्षेत्रों से उसका प्रोबन्ध सम्बन्ध हो।

क्रान्ति के हित में सर्वे सेवा सच को अपनी स्वतंत्र अखिल भारतीय कार्यकर्ता-सहित तैयार करनी चाहिए। उसके पास पचीस 'मिणाही' ऐसे होने चाहिए जो देश भर में कभी किसी भी मोर्चे पर सच सके। इसी तरह कार्यकर्ता-सहित राज्य, जिले, प्रखण्ड और उसके क्षेत्रों के स्तर तक संगठित करने की जरूरत है। इसके बिना सच आन्दोलन को साम्य पर्याप्त प्रत्यक्ष नैतृत्व नहीं दे सकेगा।

हम हृदय से पुराने अध्यक्ष के, उनकी सेवा के लिए वृत्त हैं। हम हृदय से नये अध्यक्ष के साथ हैं और उन्हें अपने सहयोग का आवाहन देते हैं। पर सेवा का एक अवसर है, हम उस अवसर की पूरी सफलता चाहते हैं। ●

समग्र मनुष्य के निर्माण से ही अहिंसक समाज-रचना सम्भव

२० वें सर्वोदय सम्मेलन में सुश्री सरला बहन का उद्घाटन भाषण

मित्री,

जमाना स्थावर नहीं, जंगम और कतिशील है, इसलिए मैं जो आज (६ मई) को लिख रही हूँ, १९ मई को ठीक वही बात कहूँगी—ऐसा दावा नहीं कर सकती—लेकिन मित्रों के सन्तोष के लिए जो कुछ अभी मन में है, लिख रही हूँ।

मैं जो कुछ कहूँगी, शिक्षिका की भूमिका से ही कहूँगी। आप मुझे किसी उच्चस्तरीय वैसीदा राजशासन या अर्ध-शासन की बात सुनने की उम्मीद न करें। मेरा लोचन अभी तक गांधीजी के सोचने की दिशा में चल रहा है।

सर्वोदय समाज घालिग हुआ

इस नये हमारा सर्वोदय समाज इसका सर्वोदय सम्मेलन में प्रवेश कर रहा है यानी अब हमारा उपायन भाग्यवाक्य को पार करके बालिग मानने लायक हो रहा है। इस दृष्टि से यह सम्मेलन महत्वपूर्ण है और हमें गहराई से आत्म-परीक्षण करने की चुनौती दे रहा है। यह सबके लिए एक चुनौती है कि हम नहीं तक तब समस्याओं पर गम्भीरता से विचार करते हैं। मेरी नया राय में, कुछ बातों में हम अभी तक कुछ हल्के दृष्टिकोण से देखते रहे हैं। हमें मानना पड़ेगा कि अभी तक हम आम समाज में बहुत गहराई से नहीं जा पाये हैं। [जिन मायदात्यों और शक्तिगो को हम समाज में देवता चाहते हैं, क्या वे खुद हममें हैं? क्या गांधीजी के संरत जीवन और उच्च विचार को बाल्यताएँ अब तक हममें कायम हैं? या क्या हम समाज के वर्तमान मूल्यों के साथ कुछ समझौता करने लगे हैं? गांधीजी के अविष्कारी मूल्य समाज के सामने स्पष्ट दिखाई देने पर भी उनकी व्यासक प्रेम-भावना को यत्रह से एक अत्यन्त प्रश्न को हल करने के लिए

समाज उन मूल्यों को और बढ़ने की कोशिश करता था, उन मूल्यों का आधर करता था। यदि हम उद्यत प्रश्न उठा नहीं पाते और समाज से हम अलग नहीं हैं—यह दिखाने के लिए हम अविष्कारी मूल्यों में दिनाई करेंगे, तो हम समाज में घुल तो सकेंगे, लेकिन हम अपने अविष्कार को सोचेंगे और अविष्कार की ओर नहीं बढ़ पायेंगे, ऐसा मेरा नया निवेदन है। कभी-कभी मुझे लगता है कि दक्षिण-पूर माने जाने के बर से हम हीनाता की ग्रन्थ से अपना अविष्कार (नस्टी फिक्शन) अविष्कार करने की कोशिश तो नहीं करते हैं? समझौते से सुधार भले ही हो, लेकिन अविष्कार नहीं हो सकता है।

अहिंसक समाज-रचना की दृष्टि में सर्वशक्ति एक मूल्य सिद्धांत है। शासकशासन की संरचना में भी यह एक सम्भव है। लेकिन बहुत अनुभव होता है कि अभी तक अपने समाज में हम बहुत दूर तक उठ और नहीं बढ़ पाये हैं। राय को टोडोने (टैडिंग दा फीलिग) के बदले, नम्रता के बदले उग्रता का प्रदर्शन होगा है। क्या यह पद-नोपुता तथा दन-भावना वा प्रतीक नहीं है? क्या कभी-कभी ऐसा अनुभव नहीं होता कि तत्सम्मति की खोज में अलग-अलग की तानाशाही हो जाती है? सर्वशक्ति अवश्य ही अहिंसक की ओर एक बंदम हो सकता है। हमसे यदि सही अहिंसक-शक्ति प्रवृत्त हो पाती तो यह अवश्य हमारे समाज के विनाश में एक बड़ा बंदम आने हो सकता है। लेकिन यह प्रक्रिया वैसी ही और बहिन भी सिद्ध हो सकती है।

हमारी भारतीय संस्कृति में बारह वर्षों का एक युग माना जाता है। उसमें मनुष्य के शरीर के हर एक कोष का नवीनीकरण होता है। हमारे सर्वोदय

समाज ने लगभग दो ऐसे युग पार किये हैं। क्या हमें अनुभव होता है कि उचित संस्था में जवानों को आगे बढ़ कर नयी जिम्मेदारियों से उठाने का मौका मिल रहा है? या क्या हम पुरो पर द्रुत पुराने विरपरिणित नेहरी की पुनरुत्पत्ति ही देखते हैं? हम कहीं तक जवानों के योग और बुद्धियों के होश वा मेल साथ पा रहे हैं? यह मैं अज्ञोचना के तोर पर नहीं बलि प्रश्न के तोर पर सोच रही हूँ। कभी-कभी ऐसा अनुभव होता है कि भले ही हम वैरहाजिर जागीरदारों (एम्प्लॉयड्स) को सत्या करना चाहते हैं—लेकिन हम वैरहाजिर अवस्थावाद की ही आगे बढ़ा रहे हैं। उसमें केन्द्रीकरण का भी आभाव होता है। यदि हमारा समाज अब समाता होने जा रहा है तो ये सब ऐसे प्रश्न हैं, जिन पर गम्भीरता से सोचने की आवश्यकता महसूस होती है।

सुद्धिवाद का सुपरिणाम

आज हम दुनिया के सोचने का तरीका तेजी से सुद्धिवाद की ओर बढ़ रहा है। उसका नतीजा दुनीकरण (कॉन्सेन्ट्रेशन) और मायुगी (मैजोरेशन) हो रहा है। जीवन में समथता नहीं रही, मनुष्य का विभाग तेज हो रहा है। हृदय की भावनाएँ घुबल हो रही हैं। मनुष्य सुद्धिवादियों की योक्तानामों में फिट होने के लिए एक पुर्न मान रह गया है। इतनाएँ अस्तोष और अस्त-होणे के रूप में शारी दुनिया में मानसिक अनुपन बहुत तेजी से फैल रहा है। हिंसक दुनिया में यह दुनीकरण अविष्कार स्तर से नेकर राष्ट्रीय स्तर तक, एक बड़े हद तक, सब मानवीय मनुष्यत्वों का नश्वण है। अहिंसक समाज-रचना में सबसे बड़ी आवश्यकता समग्र मनुष्य के निर्माण की और बनना है और यह विवेकित समाज में ही सम्भव हो सकता है।

दुनिया के मामले मुख्य समस्या घरीबी और अमीरी की है। यह घरीबी सिर्फ भौतिक ही नहीं मानसिक भी है। यह भी समग्रता का सवाल है। इनके साथ केंद्रीकरण और विकेंद्रीकरण का भी सवाल है। ये भी सब शिक्षा की ही समस्याएँ हैं। दिन-पर-दिन यह अनुभव बढ़ रहा है कि शिक्षण सरकार के नियंत्रण से स्वतंत्र रहना चाहिए। सरकार एक यंत्र बन जाती है। यंत्र से समय मानव का निर्माण नहीं हो सकता है। अहिंसक समाज-रचना के लिए समयमानव की आवश्यकता है।

अहिंसा की उपलब्धियाँ

अहिंसा को दिशा भी और बढ़ने के दो-तीन उदाहरण हम वर्य मिले हैं। वेगता देश की स्वतंत्रता के सर्पण से साबित हुआ है कि अब लोग सच्चाई के लिए, धार्मी अपनी स्वतंत्रता के लिए मरमिटने को तैयार रहने हैं, वे हर कीमत चुकाने को तैयार रहते हैं। तब अन्त में क्रूर-से क्रूर सशस्त्र अहिंसकों को श्रवना ही पड़ता है। उस अद्भुत महानगति की वजह से, अन्त में हिंसा के उपयोग से ही विजय हो पायी थी। लेकिन यह सारी अमानवीय घटना साबित करती है कि सरकार से नियमित शिक्षा, विशेषकर अब वह धर्मांधता से जुड़ी रहती है, किन्तु क्षणप्रसक्त होती है।

उत्तराखण्ड के नशावन्दी आन्दोलन से एक बार और सगठित श्मी-शक्ति का प्रभाव प्रकट हुआ। जब उच्चन्यायालय ने सरकार को डुबारा सरान की दूकानें छोड़ने पर मजबूर किया, तो जनता के सक्रिय धार्मिक आन्दोलन पर राज्यपाल को बाजूस बदलने के लिए अघाटिक निकलना पड़ा और बाद में विधान-सभा को सर्वसम्मति से राज्यपाल के अघाटिक को हानुन के रूप में मान्य करना पड़ा। जिस रोज सुन्दरताजी का उपवास छूटा, उसी रोज को विशाल शान्तिमय-जन प्रदर्शन को देखकर

श्री सुरेशराम भार्दने ने कहा, सारे भारत में कोई सर्वोदय नेता (मैं उनके शन्दार्थ का उपयोग कर रही हूँ, मेरे विचार में ये दो शब्द परस्पर विरोधी होने हैं) ज्ञानी विगत सभा नहीं बुला सकता है। यह 'नेता' की बात नहीं थी, बल्कि एक अत्यन्त सांस्कृतिक प्रश्न को ह्राप में लेने का परिणाम था। सांस्कृतिक और नैतिक प्रश्नों पर जन-शक्ति में स्त्री-शक्ति भी अपने-आप प्रकट होती है।

चम्बल का धमत्कार

दीसरा गवान चम्बल घाटी का है। मैं इस समस्या की और आपका ध्यान आकर्षित करने में काफी समय इसलिए देना चाहती हूँ क्योंकि कई प्रकार से उसमें अहिंसा की शक्ति प्रकट होती है। इस वर्ष हमारा समाज आगि हो रहा है। और इस वर्ष एक अहिंसक कार्यक्रम परिपक्वता की ओर बढ़ रहा है। मैं इस बात को एक महत्त्वपूर्ण सयोग मानती हूँ। यदि हम उसे पूरी तरह समझेंगे तो भविष्य के काम के लिए एक व्यापक मार्ग के खुलने की सम्भावना दिखती है। इसलिए मैं इसमें ज्यादा समय लेने के लिए आपसे क्षमा नहीं माँगती।

दाईं ती से ज्यादा अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित हानुओं के वाल्य-समर्पण की घटना ने भारत को ही गयी, बल्कि दुनिया को भी शक्कर दिया है। सायद दुनिया के इतिहास में यह प्रथम बार एक ऐसी घटना घटी है। समस्याओं के अहिंसक हल के लिए इस घटना का क्षता महत्त्व है, जितनी कि अहिंसा के मार्ग से, बरखे के द्वारा भारत की स्वतंत्रता पाने का था। इससे एक नये युग के जन्म की सम्भावना प्रकट होती है। चम्बल घाटी के इलाके में भी सर्वोदय को मिली लोकप्रियता साबित करती है कि अब हम एक असाध्य प्रश्न ठग पाते हैं तो सापत में अपना हृदय काय और सिद्धांत की आवश्यकता समझकर हमारा समर्पण करती है।

इस घटना को परिपक्व होने में एक

पूरा युग, बारह वर्ष कीत गये हैं। जिस प्रकार जब हम दूध में दही डालते हैं तो सारे दूध को दही बनाने में कीटाणु घोरि-घोरि फैलते हैं और बढ़ते हैं, तथा अन्त में सारा दूध दही बन जाता है—इस अहिंसक प्रक्रिया में भी ऐसा ही हुआ। इन घटना का एक बड़ा महत्व यह रहा कि समस्या को हल करने की प्रेरणा खुद बागियों से ही मिली है। मुख्य काम भी उन्होंने ही किया है। हमारे बागियों का कार्य पूर्ण साबित हुआ है। यह काम सेवक का ही रहा, प्रणता का नहीं।

१०० वर्ष पुरानी समस्या

चम्बल घाटी में बागियों की समस्या कोई नयी नहीं है—यह कम-से-नम १०० साल पुरानी है। इस घाटी के मुख्य लोग राजस्थान के ही तेजस्वी राजपूत हैं। जगने नम्रता और प्रेमभाव के साथ, अन्याय सहन न कर सकने की वृत्ति है और छोड़े जाने पर उनका मिशाज बड़ा तेज ही जाता है। वहाँ के छोटे-मोटे महाराजों के युद्धों में ये भाड़े के सिपाही के तौर पर नहीं, अन्याय का विरोध करने की वृत्ति से भाग लेते थे। बौद्धों की वजह से छापामार युद्ध (गुरिन्ला युद्ध) बहुत आपदा का और छापामार युद्ध की परिणति कहीं भी होने में कोई देर तो नहीं लगती है। दमन और पुलिस के द्वारा, न मुगल शासन और न ब्रिटिश शासन उस समस्या का हल कर पाया था। स्वराज्य के बाद सख्त पुलिस के द्वारा उसका दमन करने का प्रयास हुआ लेकिन व्यापक भ्रष्टाचार की वजह से सुघरले के बदले यह परिस्थिति तेजी से बिगड़नी बनी पयी। न बागियों में, न पुलिस में, न जनता में, मानवीय जीवन की कोई कीमत रह गयी है। इस इलाके में एक कहावत है, "जाके बैरी तुल से तोषें, ताके जीवन को धिक्कार।" साधारण मनुष्य जिस प्रकार एक मक्की को या मच्छर को मारता है, अपने दुश्मन को मारने में इधर के लोगों को दृष्टि अपना मानि नहीं होती है।

एक बागी पार्टी ने कहा—“जब सेठ और पुलिस का विवाद होता है, तब उसकी सन्तान मरूट होती है।” यह बात एकदम सही लगती है। समस्या की जड़ उसी में है ही, लेकिन बाद में परिस्थित को दमन रखने में पुलिस और बागियों का भी विवाद होता है। समस्या के दमन के लिए इस समय तीन जिलों में (स्वाधिनगर, झरना और भादर) ३५,००० पुलिस तैनात है और अपने दुरमनो से अपना संरक्षण करने की दृष्टि से एक लाख बन्दूकों के साइकेस जनता में फेंके हुए हैं। इनके फलस्वरूप चारों ओर दमन और आतंक का वातावरण पैदा है। यनिया-नर्ग-और बड़ी जमीनों के मालिक गरीबों पर हर प्रकार का अत्याचार करते पुलिस और अदालत से संरक्षण पाते हैं। अशुभहास होकर गरीब बन्दूक से अपने बेरी का संभला करते जवन भाग जाता है। झरती और, जो ताकतवर बर्ग है पुलिस के द्वारा वह अपने बेरी पर झूठा आरोप लगाकर, उसे भी पुलिस के डर से फरार होने पर भयबूट करता है। फिर अपने अतिरिक्त को वायम रखने के लिए बागी लोग खुद ऊपर से बीच के रस्ता तक पुलिस से बिलकर अपने लिए आधुनिक यन्त्रों की व्यवस्था करते हैं और अपने बचाव की व्यवस्था करते हैं। इस प्रकार में रहते हैं—पुलिस अधिचारियों के कुछ स्वार्थी की शीमत अब हवारों का नहीं बालों का सौदा चल रहा है और कुछ ऐसे भी अधिचारी हैं जो इस प्रकार बौस बर्ग तक एक ही स्थान पर टैनात रह पाते हैं।

गौरीजी धनिकों का घन माँगकर राष्ट्रीय बर्गों में उसका उपयोग करते थे। बागी धनिकों का घन भूटकर अपना फायदा ही जरूर करते हैं लेकिन गरीबों की बाकी सेवा भी करते हैं। इसलिए ये लोकप्रिय हैं। जनता उन्हें पुलिस से हवार-गुना अन्ध मानती है। इसलिए यह समस्या समाधान बड़नी रही और प्यारा-हे-प्यारा संवरनाक होनी पड़ी है।

विनोबा का आह्वान

मादरिह इस युग के डाकुओं के सब से बड़े और लोकप्रिय मुखिया रहे हैं। अत्याचार और अत्याचार से विस्तृत लाचार होकर, जब उन्हें और कोई मार्ग सामने न बीछा, तब एक-दो जेल-यात्रा के अन्त में वे बागी बने। वे सरकार के लिए सबसे खूसाक ब जनता में न्यायाधीश और गरीबों के सेवर की तरह पंच आने थे। उनके साथ उनके एक पुत्र की मृत्यु हुई और दूसरा पुत्र तहसीलदार सिंह, पायल होकर गिरफ्तार हुआ। उन्हें मोत की समा मिली (जो बाद की आशोकन कारावास में परिणत हुई) जेल की तहदीर से उन्होंने विनोबाजी का आह्वान किया कि हिंसा के द्वारा इस समस्या का हल हो नहीं सकता है। उसका हल करना आन्-शुभ है। बाबा अपने ही बग से इस समस्या को उठाये। किस प्रकार चम्बल-निवासी स्वर्गीय मेजर जनरल मुनुनाथ सिंहजी ने विनोबाजी के सहारे से वह नाम उठाया था और किस प्रकार विनोबाजी की एक माह की पदयात्रा के दरम्यान लोरमन के नेतृत्व में मादरिह के गिटोह के बीस बचे हुए बागियों ने आन्-सर्जन किया, यह इतिहास किसी सर्वोदय के कार्यकर्ता से छिपा हुआ नहीं है। लेकिन शायद हम लोग समझ सकते हैं कि उस काम में बिलने साहस और सहनशक्ति का प्रदर्शन हुआ था। एक तरह से साहस पुलिस दूरी तरफ संरक्षण बागी—दोनों को इस प्रथा को दमन रखने में आनन्द दिनचरसी थी। उनके बीच में, बभी सार्किप पर, कभी पैशन, मई, जून की गर्मी में उन भाग्यकर बीहड़ों में घूमते हुए जनरल साहब के साथ सुट्टी भर, प्यारिकर्ता, जिनके साहस मार्ग तट, पैम और बरपा थे। बाबा का मातुलन था कि मुझे ऐसे कार्यकर्ता चाहिए जिन्हें आत्मा को सम-रला और शरीर की संकटपुत्रा का संकट मान हो और जिनमें बागियों पर प्रेम करने हुए, उनको परित्यो बा स्पष्ट लखन करने की हिम्मत हो। ये गौरी से लोग जिन-सत निर पर कण्ड बाँधकर

घूमते रहे, उन बाबा के प्रेम और अधिया के सन्देश से बागी प्रभावित हो सके। लेकिन उस अर्थ परिरथम से जनरल साहब को अपने प्राणों का बलिदान देना पड़ा। सरकार से भी अपेक्षित सहाय्युक्ति और सहयोग नहीं मिल पाया था।

समर्पण के बाद

समर्पण के बाद जेल में बागियों का मनोबल कायम रखा, परन्तु की व्यवस्था तथा परिचारी की सार-सम्भाल का कार्य बराबर चलता रहा। बच्चों के शिक्षण के लिए एक छात्रावास की स्थापना हुई। दुरमनो के साथ समझौता करने का कार्यक्रम भी चला। कुछ लोग जस्टी झूट श्ये। कुछ को सन्धी सजाएँ हुई, लेकिन धीरे-धीरे सब पर आये। जिनके घर में खंती थी, उन्हें अपने खेतों को आचार करने के साथ-साथ वातावरण बनाने के लिए साधन मिले। जिनके पास खेती नहीं थी, उन्हें भूदान की जमीन पर बसाया गया था। इस सारे काम में 'बार डॉन काप्ट' तरफा से भी काफी मदद मिली थी। अब उन अपने पत्नी की बर्माई का अन्त साने लगे हैं और एक साधारण अन्धे माणविक का जीवन बिता रहे हैं। लेकिन ये पुराने बागी जिन्हें अन्ध नागरिक की मुक्ति में रहने से अनुत्पन्न नहीं हैं। ये चाहते हैं कि पन्थत पार्टी से बागियों का बलिदान और यह आतंक का वातावरण हमेशा के लिए दूर हो और सब बागियों को जीवन-परिवर्तन का वह मोरा मिले, जो उन्हें दिया है। सात्कालिक सरकार की उदा-सिद्धता की वजह से १९६० ई० में तिर्क एक छोटा काम हो पाया था, लेकिन वह जमान के रूप में काम करता रहा। बीच-बीच में म० प्र० सर्वोदय मण्डल ने भी कामदान-अभियानो पर उद्योजन किया। धीरे-धीरे सारे बागियों के समाज में जीवन-परिवर्तन को आशाया जगने लगी। विद्येपर पण्डित लीकमन (मुसना) का नया संकट का इन्कर देतकर साथ उमान संरथन प्रभावित हुआ।

(आपने बर्ग में समाया)

सावधानीपूर्ण कुछ चेतावनियाँ

दादा धर्माधिकारी का संघ अधिवेशन का समापन भाषण

आप लोगों को बधाई देना चाहता हूँ कि मैं बिनासय यहाँ आया था, कुछ सुनने, कुछ सीखने, उसमें मुझे बहुत लाभ हुआ। बहुत विभेदारी के साथ, बहुत व्यक्तित्व भाषण यहाँ पर हुए, और उनमें से मुझे बहुत कुछ सीखने के लिए मिला। यह नरेश भाई बहुत व्यक्तित्व भाषण करता है और अपनी बात कहता है। जो अपनी बात कहता है उसका महत्व है और जो छद्म बात कहता है उसका उतना महत्व समा में नहीं होता। यह बाबूराव धन्दावार है, इसे मैंने नॉन कन्फरमिस्ट कहा। जो कन्फरमिस्ट है वह विचार नहीं करता। दूसरों के विचार के अनुसार विचार करता है; उसका अपना कुछ कहना नहीं होता है। अगर इन लोगों की बिरादरी बड़े-तौ इसमें से विचार का विनिमय होगा। एक विचार और बिना विचार दोनों आयेगे। इसमें से विचार की प्रगति होगी, विकास होगा। उन लोगों को मैं बधाई देता हूँ।

मेरा नाम पूज्य दादा, जयप्रकाश बाबू, धीरेन्द्रा, शकररावजी के साथ लिया गया। मित्रों! मैं यह विनय के कारण नहीं कह रहा हूँ, इन लोगों के पत्रों के पास बैठने की भी मेरी योग्यता नहीं है। फिर भी यहाँ आकर मैं इसलिए बात करता हूँ कि साथ मुझे 'दनेन्द्र कें' या 'शम्भुपुर' समझिये। जो देखना हूँ वह कहना चाहिए, जो करता हूँ वह नहीं। आँसू देखती हैं, हाथ करता है। आँसू जितना देखती है उतना ही देखना चाहिए। जितना देखती है उतने मनुष्य होगा कुछ कम करेगा। जितना करता है उतना ही देखना ही गढ़ने में मिलेगा। यह मैं इतिहासियों के कह देना चाहता हूँ। इतिहास ही एक बार है और कम आने में जड़ है। यह मनुष्य को जड़ बनाता है। कम से अनुभव होता है, जान

का विकास कभी नहीं होता, अगर तक नहीं हुआ। सभी जीव का आदमी हूँ, मोलता रहता हूँ, मोलता रहा तो मोलता ही रहूँगा। इसलिए मोझे में अगर लोगों के सामने एक-एक चीज रखते-आता हूँ।

यादा का नेतृत्व

मैंने यह कहा था और दुबारा कहूँ कि सामुदायिक सगठित पुराण के लिए नेतृत्व की आवश्यकता होती है। और इस नेतृत्व के लिए मैं जिनोबा को सबसे अधिक उपयुक्त इसलिए मानता हूँ कि नहीं पर नेतृत्व है लेकिन हुकूमत नहीं है। बंग ने एक बार कहा था कालड़ी में या कहीं पदयाया में कि हमारा नेतृत्व प्रसन्न हुआ है। बाबा ने जबाब दिया—यह तो सब आनन्द की बात है कि मेरी अक्षरता आप लोगों की सफलता होनी चाहिए। यह आकाशा एक नेता की है। मैं समझता हूँ कि इतिहास में ऐसा नेता अतिथी है। आपकी या मेरी यही गिरावट है न कि यह नेतृत्व नहीं दे रहा है? इसमें हमको आनन्द मानना चाहिए। लेकिन फिर भी अब मैं कहता हूँ कि आवश्यकता है, तो इसलिए कि यह एक 'कनेक्टिव जॉयनाइजेशन' है। प्रथम कार्ट-वाइ की बात आधुनिको ने की। मैं समझता हूँ कि गोबुल भाई अट्ट ने अन्याय एक अवसर उपस्थित कर दिया है। हमारा मुख्य आन्दोलन तो भूमि का आन्दोलन है। हमारी मुख्य समस्या भूमि की समस्या है और मुझे पूरा विश्वास है कि भूमि की समस्या से हमारे देश की जनता और किसानों को जितना बरसाह दिया जा सकता है उतना किसी अन्य समस्या से नहीं। भूमि की समस्या हमारी मुख्य समस्या है एक चीज। दूसरी चीज, जब सक्षर में कहीं भी कोई अन्ति मरत या हिंसा से नहीं हो सकती है। यह भी एक वैज्ञानिक सत्य है। यह सिद्धांत नहीं है।

मैंने भोगान में भी कहा था कि अहिंसा सिद्धान्त नहीं, बल्कि युग की व्यावहारिक आवश्यकता है। इसलिए अहिंसा को सिद्धान्त, देवता वगैरह कुछ नहीं मानें। ये दो चीजें हैं। चीमरी चीज, कि हमें समाज की दुनियाँ बदलनी हैं। दुनियाँ बदलने से मेरा मतलब है कि मनुष्य और मनुष्य के बीच आज जो सम्बन्ध है वे सम्बन्ध आनेवाले जमाने में नहीं रहने चाहिए, हरगिज नहीं रहने चाहिए। मालिक-श्रमिक नहीं, अधीन-नारीक नहीं, पण्डित-भूतस नहीं, ब्राह्मण-भैगी नहीं।

शराशयन्दी सत्याग्रह

जयपुर में एक सरकार के साथ हमारी भेंट हो रही है। भाषण होता है कि यह मुठभेड़ है। भाषा है कि बाद में इसमें से हमारा अतिरिक्त होगा, मुठभेड़ नहीं। यह भारत-भेंट साबित हो। लेकिन भारत-भेंट के लिए पहले आवश्यक यह है कि हमारे हृदय में प्रेम की शक्ति हो, मनोबल हो। इसमें हम अपनी विवशता न मानें। और तो और राम का भाई लक्ष्मण भी भारत को देखकर भयभीत हो गया था और चतुरगिनी सेना लेकर राम से लड़ाई लड़ने आया था। लेकिन भेंट होते ही युद्ध नहीं हुआ। भारत-भेंट हो गयी। यह तो पहले ही सकता है कि दोनों पक्ष एक दूसरे से सनक रहे, भयभीत रहे, लेकिन अन्त में भारत-भेंट होकर रहेगी यही हमारा हल होना चाहिए, हमारी मता होनी चाहिए। ध्याचार्थकुल

ध्याचार्थकुल की धरती में यहाँ कहा गया कि उनको अपने विचार का प्रचार नवयुवकों में करना चाहिए, शिक्षकों में करना चाहिए। मैं आपसे हाथ जोड़कर कहने आया हूँ कि माफ कीजिए अपने विचार का प्रचार मत कीजिए। अपने विचार का प्रचार आमुदी प्रचार है। आप विचार-शक्ति का विकास कीजिए। उनको विचार करने के लिए प्रेरित कीजिए। अगर आप ऐसा नहीं करेंगे तो दुनिया में किसी भी युग में कभी कोई दुनिया को आगे नहीं ले जायगा। हमको

जाने विचार का प्रचार नहीं ही करना है और अपने विचार का प्रचार नहीं करना है जो गंधी और विनोबा के विचार का प्रचार तो बिलकुल ही नहीं करना है, न राम का करना है, न कृष्ण का ही करना है, न भगवद्गीता का करना है, न वेदों का करना है, न यादवित का करना है।

ग्रामस्वराज्य

ग्रामस्वराज्य में रहना सब मुझे के बाद भी मैं कहना चाहता हूँ कि हम पुरुषार्थ गाँव का चाहते हैं अन्ततः नहीं। हमारे पुरुषार्थ के कान्ति नहीं होगी। कान्ति होगी गाँव के पुरुषार्थ से, प्रेरणा हमारी होगी, सहयोग हमारा होगा और रहना सहयोग कि हम नहीं दिखाई भी न पड़े। रहना श्रमयुक्त हो जायें, ऐसा सहयोग हमारा होगा। हमारा से मतलब भाषका कह रहा है, अपने को नहीं गिन रहा हूँ क्योंकि अपने को तो समर्पण में बाँधा नहीं है। जाना जहाँ-जहाँ है। लेकिन जो कान्ति करना चाहते हैं उनको मेरा कहना है कि कान्ति में पुरुषार्थ जनका होगा चाहिए जिनको कान्ति भी आवश्यकता है। अपने पुरुषार्थ की कान्ति उधार की कान्ति होगी। उसमें से कभी जनक पुरुषार्थ जगता नहीं। आगको अगर ध्यान, संनम, वैराग्य की समन्ता है तो अपनी आत्मोन्नति के लिए करें उनके उदाहार के लिए नहीं।

नागरी लियि

नागरी लियि का बहुत बड़ा महत्त्व है, लेकिन अब मैं इसे बहुत आगे बढ़ाऊँगा नहीं। आगका ध्यान एक ही बात की तरफ विचारना चाहता हूँ कि भाषा और विद्याद्वय दो अलग-अलग चीजें हैं। यहाँ विद्या है अखिल भारतीय सम्मेलन नागरी लियि में। यह दूरमुखी में लिखा होता तो यहाँ जितने पंचायत के बाहर के लोग बैठे हैं सब के सब निरक्षर हो जाते। लिखा है अखिल भारतीय सर्वोदय सम्मेलन। चाहे दूरमुखी में लिखिए, चाहे उर्दू में लिखिए, चाहे उर्दू, कन्नड़ में लिखिए, शब्द ही नहीं रहे—अखिल

भारतीय सर्वोदय सम्मेलन। अखिल भारतीय है तो अखिल भारतीय लिखना चाहे यथि यथैरह में घोड़ा बदल जाय, वह अलग बात है। अब हम यहाँ तक नीचे उतर आये हैं कि हमारी लियि का भी ह्रासना चलने लगा है, भाषा की बात तो छोड़ दीजिए। जो भाषा से लेकर लियि के शब्द पर ला गये हैं वे किस संस्कृति का विकास करेंगे? वहाँ भारतीय संस्कृति का विकास हो सकेगा क्या?

संगठन

आज की संस्थाएँ युव की आवश्यकता की पूर्ति करनेवाली नहीं हैं। एत युव धर्म-धार्मिक जमाने की छाँटी दिखाई देती है। इन संस्थाओं को अहिंसा का विरोधी कहा जा सकता है। विरोध उरकार का नहीं समाज का। समाज में जो आर्य संस्थाएँ हैं उनके विचार प्रकार की संस्थाएँ आनेवाले समाज की कुछ छाँटी दिखा देनेवाली हैं। एक कान्ति प्रतिकार की, जो समाज के सुनिवादी को उखाड़ती है। दूसरी कान्ति नये समाज की सुनिवादी बनाने की, जो समाज होगा उरकी सुनिवादी बनानेवाली संस्थाओं की बड़ा ध्यान होगी उरकी कुछ छाँटी हम देख सकते हैं जो संस्थाओं को देखें। दूसरी चीज, संस्थाएँ पुरत नहीं होती, लेकिन कामज की चीज होती हैं। अन्ततः महोदय मुझे समाज करें। संस्था जब वृत्त होती है तो कान्ति योग होती है, संस्थाएँ वृत्त होती हैं और रिश्तेदारी होती होती है; विहित होती पत्नी जाती है। संस्था में रिश्तेदारी का विकास होना चाहिए। मानव-निष्ठा उरका मूल्य ही होना चाहिए। संविधान-निष्ठा नहीं, निष्ठा-निष्ठा नहीं और विधि-निष्ठा नहीं। संविधान रहे लेकिन और संविधान पर नहीं, मनुष्य पर।

शासनसुक्ति

शासनसुक्ति अलग चीज है और अराजकता एक विनियुक्त अलग चीज। शासनसुक्ति में नागरिक-नागरिक के बीच में किसी तीसरी शक्ति की आवश्यकता नहीं होती। दो नागरिकों के बीच में तीसरी शक्ति की आवश्यकता न हो उसे शासनसुक्ति कहते हैं। दो नागरिकों के बीच में मानव की अस्मिता नहीं, शासन की अस्मिता नहीं, अस्मिता नाम है शासनसुक्ति। इस शासनसुक्ति की तरफ हम अपना हाथ बढ़ा देना चाहिए। इसके लिए आवश्यकता होगी पारस्परिकता, निर्भरता और अनुशासन की। समाज में हमारा धर्म कोई नहीं। तीसरी चीज, जो अनुशासन होगा वह प्रेम के आधार पर होगा। अगर किसी का घेरा बीमार पड़ जाय तो हलक के नीचे निवाला भी नहीं उतरना। हलक के नीचे निवाला भी नहीं उतरना है इसमें जो अनुशासन जाता है वह है प्रेम-प्रेरित अनुशासन। एतका विचार होना चाहिए।

निःशस्त्रीकरण या शस्त्र-सत्यास

बांगला देश के बारे में राधाकृष्णजी ने सुनाया कि उनके बाहर के देशों के लोग बर्द उखाड़ कर रहे हैं। इसमें आरको संलग्न कर लेना चाहिए। बरमौर के प्रान्त पर गांधी ने जो बड़ा ना उर पर भी यही सवाल उठा था। १९६२ में सर्व सेवा युव के अन्ततः और विनोबा ने जो बड़ा ना उर पर यही सवाल उठा। बांगला देश के वरत भी यही सवाल उठा। निःशस्त्रीकरण और शासनसुक्ति दो अलग-अलग चीजें हैं। निःशस्त्रीकरण एक परिपरिपरि है। अरन-सत्यास एक दुर्दृष्टिगत है, मन की एक सुनिष्ठा है। निःशस्त्रीकरण आवश्यक है लेकिन निःशस्त्रीकरण-नैते अरन-सत्यास आवश्यक नहीं। वही ऐसा न हो कि निःशस्त्रीकरण का नतीजा अरबों राब के बाद भारत में जो दुहा या वही अहिंसा के साथ भी हो। मैं सुझाता हूँ कि अहिंसा हमारे लिए सब सिद्धान्त नहीं रहे नहीं है। इसलिए अहिंसा के सिद्धान्त की अनेका और-शक्ति का मूल्य अतिरिक्त है। मैं आरको निःशस्त्र दिनांक हूँ कि मनुष्य में शीर-शक्ति जिनकी बजती है, शीर जनता का

होता है। यह सत्य है। बीर-वृत्ति का। बीर-वृत्ति का जितना अधिक विकास होगा बीर-वृत्ति उतनी ही कम होगी। जितनी बीर-वृत्ति कम होगी हिंसा उतनी ही कम होगी। हिंसा अगर कम होगी तो शास्त्र-सम्यास होगा। शास्त्र-सम्यास की आवश्यकता है, निःशास्त्रीकरण की नहीं। इसका निर्णय हमको कर लेना होगा। दुनिया भर में आकांक्षा है कि निःशास्त्रीकरण होना चाहिए। बीर, नित्य नये-नये शास्त्रों की जो खोज हो रही है उसमें बीर-वृत्ति का विकास नहीं हो रहा है। शास्त्रों से आतंक छा गया है, शास्त्रों के कारण दुनिया भर के लोगों में कम छा गया है। इसमें से कमी भी अहिंसा नहीं निकलेगी, बीर-वृत्ति का विकास नहीं हो सकता। लेकिन यह तो मैंने विवक्षेण कर दिया है। निर्णय तो आपको करना है। क्रान्ति का एजेण्ड

हमारा अक्षर नहीं होता, इसलिए अपने साधनों को छोड़ते चलो। जिन साधनों से अक्षर होता है उनको पकड़ो। जब तो तुम हारने ही वाले हो, उनके माहिर तो वहाँ बैठे हुए ही हो। वे तो तुमसे पहले अच्छे सिद्धांत हैं। उनके समतल तुम नहीं टूट सकते। तुम अपना अक्षर चाहते हो कि समाज परिवर्तन चाहते हो? समाज-परिवर्तन किन साधनों से चाहते हो? मतोके को देखकर सगत है कि परिवर्तन अहिंसक साधनों से ही होगा। किसी दूसरे साधन से समाज-परिवर्तन असम्भव है।

मित्रो! क्रान्ति में से प्रतिरक्षाक हटा दीजिए। क्रान्ति का एजेण्ड मानसिक होना चाहिए नहीं, पार्टी-नहीं, सेना नहीं, सर्वोदय-वालों की भाँतिसेना भी नहीं। मानसिक क्रान्ति करना नहीं चाहता है तो उसको प्रणाम कीजिए और उससे बहिए कि हम भी स्वतंत्रता और आप भी स्वतंत्रता।

संघर्ष का अर्थ क्या है?

जब एक प्रश्न उठता है कि निर्बल होकर भी संघर्ष हो सकता है क्या? यह धर्म-युद्ध का सत्य है। धर्मयुद्ध में बंद नहीं

रहना संघर्ष होता है। जब निर्बलता होती तब धर्मयुद्ध होता है। जितना आपका प्रतिकार, संघर्ष, क्रान्तिकारी होना उतना यह निर्बल होगा। अब धर्म-संघर्ष की बात कहने की जरूरत क्या है? मित्रों मैं कह रहा था न कि धर्म है ही नहीं और भूले ऐसा धर्मगिरि बतलाइये जो कहता हो कि सेना के साथ में, ऊपर के साथ में, धर्म है, जिसकी बहनाया धर्मों ने की थी? वे तो सारे छोटे मानसिक हैं। मैं हलना ही कह रहा था कि धर्म संघर्ष को हीना मत बनाइये, दूसरे पक्ष-इये नहीं। हमने इसको हमेशा हीना बनाया है। हकीमत में कुछ है ही नहीं। यह सारा वा सारा लेत में आरामो का धाँपा सजा करने की तरह है। हिंसावाज से जो करता है वह अहिंसक होगा क्या? धर्म-संघर्ष से जो चरता है वह संघर्ष करेगा? धर्म है ही नहीं, अचोरी और गरीबी है। अचोरी और गरीबी को हटाना चाहते हैं हममें जो संघर्ष आयेगा वह संघर्ष हमारा नहीं, सबका होगा। क्रान्ति का संघर्ष होगा, आवश्यक संघर्ष होगा। अब उसमें से यह हो सकता है कि कुछ लोग हरे। हम किसी को डराना भी नहीं चाहते हैं और किसी को नाराज भी नहीं करना चाहते हैं। नाराजगी भी टालना चाहते हैं और डर भी टालना चाहते हैं। जो डर हुआ है, काँप रहा है, उसको हिम्मत दिलाने की जरूरत है। उसको हिम्मत दिलाने से अगर वह समझता है कि उसको डरा रहे हैं तो स्वभाव ही मानिक है। हम क्या कर सकते हैं? लेकिन एक बात पूरी तरह समझ लीजिए डर से, दहशत से, लोच से, आतंक से, दुनिया में कोई क्रान्ति नहीं हुई है न आज हो सकती है। हम दहशत या आतंक सेनाना नहीं चाहते हैं। निरापक हमारी नीति का, मोरना का एक अधिमात्र अंग है। हम सबको निर्भय बनाना चाहते हैं, लेकिन गरीब निर्भय बने इच्छिते अगर वह डर जाये तो बहने कि पूरे इसलिए डर रहा है कि तेरे पास अमीरी है, तू धनवान है।

जिनके पास धन है वह अपने बेटे से भी डरता है, जिसके पास राज्य है वह अपने बेटे को भी कंठ में रख देता है तो हम क्या बहें कि बेटेपन से भी हस्तोका दे दे। इन मामिलों में से विरोध पैदा होते हैं। हमारे पास उनका उपाय नहीं है।

हमको सबसे बड़ी फिक्र इसकी है कि हमारा प्रभाव नहीं हो रहा है। एक बन्दर ने एक बीज लगा दिया था। रोज कुरेद-कुरेद कर देखता था कि कितना अक्षुरित हुआ? उससे किसी ने कहा था कि तीन माह में पकड़ जायगा। रोज कुरेद कर देखता था तो बीज का बीज ही रह जाता। हम तो बराबर प्रभाव देखते रहते हैं। मैं अपने बारे में सोचना हूँ कि इतने लोग मेरा भाषण सुनने आये हुए हैं, तो जब मैं मर जाऊँगा और मेरी समान-यात्रा चली होगी तो अरपी पर से उच्च-उच्च कर देखेंगे कि मेरी समान-यात्रा में कितने लोग शामिल हैं। यह भयानक सोचिएना है। अगर आपको कुछ भी विरक्ति है तो इस लोकेणा को सबसे पहले छोड़िये। यह मैं क्यों कह रहा हूँ? इसलिए कह रहा हूँ कि पिछले पन्धस बरसों में २५ ही उपजाय और २५ ही सत्याग्रह हुए हैं। क्या जनता बहादुर हुई है? लोग हमसे कहते हैं किनोबा और अवप्रकाश ने सत्याग्रह नहीं किया इसलिए ऐसा हो रहा है। मैं किनोबा अवप्रकाश के बारे में कुछ कह नहीं सकता हूँ लेकिन आप लोगों से कहता हूँ कि आप लोग कोई चीजमार लो नहीं है। कहीं ऐसा न हो कि २५ ही सत्याग्रही जैसे पट्टे बोल गये जैसे आप भी पट्टे बोल जायें। हूब माद रहिये 'दीर्घ सोने हूँ पाप' फिर, इस देश में सत्याग्रह के लिए कोई जगह नहीं रहेगी। गैरजुल भाई का घोका था गया है तो 'रिहसल' (अभ्यास) कर लीजिए।

साधन-शुद्धि

साधन-शुद्धि में एक बात आप लोगों की सेवा में निवेदिष्ट कर देना चाहता हूँ। हम अपने आर्थिकों में क्या सधाज की वर्तमान प्रविष्टियों को सोच कर रहे हैं? यह (पंच पुष्प २३५ पर)

डेढ़ माह की परीक्षा में पास होना ही है

• विनोय

हमने राजगीर सम्मेलन के बाद बिहार छोड़ा। उसे अब बाई साल हो गये। बाई साल की अवधि इस विज्ञान के जमाने में छोटी नहीं मानी जायेगी। पहले हम बिहार में घूमते थे तो कुछ काम हुआ, लेकिन बाद में लोग धीमे पड़ गये। फिर, जब वे लोग महीं गये थे (१९६४ ई० गोपुरी, सर्व सेवा संघ-अधि-वेशन), तब हमने कहा कि 'तूफान करो तो बाबा बिहार का खजाना है।' अब बाबा खुद 'आफर' कर आने का जोर हम उसे कहें कि 'ना भाई, हम तो नहीं कर सकते; यह मुश्किल मामला था। फिर, मेरा ख्याल है, जयप्रकाशी यशरह लोगों ने बैठकर तय किया और ही' कहा। फिर हम वहाँ गये, चार साल वहाँ गये। चार साल में धारे बिहार में बिलगुल मंचन हो गया, और जाहिर हो गया कि बिहार प्रांत पूरा वा पूरा धामदान में शामिल है।

राजगीर में हमारा आखिरी स्वा-स्थान हुआ था। उसमें हमने कहा कि अब तक "तूफान" हुआ, अब "शक्ति तूफान" करो। तो एक भाई ने कहा कि हम बहुत थके हुए हैं, हमें पन्द्रह दिन की छुट्टी दी जाये। सम्मेलन का समारोह हुआ, यह समेचना था। तो हमने पंद्रह दिन की छुट्टी मन्सूर की। और फिर हम द्धार आ गये। उसके बाद अनेक घटनाएँ हुईं। लेकिन बिहार ठण्डा पड़ना गया।

फिर हमने कहा, सारा बिहार छोड़िये, एक जिला बनाएँ। दक्षिण बिहार का जिला लेने में कोई तार नहीं, बस बहुत सारा सदिवासी एरिया है। उत्तर बिहार का जिला सेना चाहिए। उसमें भी सह-रक्षा सबसे छोटा जिला है। उसकी सीमा नेशन से लगी है। एहरेखा निभा-जाये और उसमें अपनी टोरी। प्राणत समाप्ती जाये। कई महीने लगातार

प्राणत लगी और आखिर अभी महीना-डेढ़-महीना जोर लगा कर कुछ काम हुआ। उसमें हिन्दुस्तान के दूसरे प्रांतों के भी सो-सवा-सी लोग गये, बाकी बिहार के थे।

जब हमने कहा था कि "शक्ति तूफान" करो, तो उसके साथ-साथ एक बात और नहीं थी, यह कि तुम लोगों में जो मजबूत होंगे, वे धारे एक साथ जेब में रखो और एक साल में काम पूरा करो। काम पूरा करने के बाद सोचा जायेगा। बैठनाथ बाबू ने कहा कि हम तो जेब में भी रखेंगे नहीं, रखेंगे ही नहीं, हमने तो छोड़ ही दिये। और वे यथाशक्ति यथाशक्ति काम में लगे हैं। महाभारत में एक वाचक है—जिसी ने मूठ से कहा कि यह वाचक पालियामेंट के दीवान पर लिखा है—"महा सभा में यश सन्धि युद्ध।" "यह सभा नहीं, जिसमें युद्ध नहीं। और अपनी भी अग्र उभा हुई, तो क्या हालत होती है, यह बिहार की पृष्ठो। अगर यह भी होता कि युद्धों के लिए आरत नहीं, पर-वाह गही, लेकिन जवान आरत-आरत में मिलकर काम करते हैं, तो भी बाप अलग होती। लेकिन यह भी नहीं हुआ।

महाभारत में प्रसंग है। एक दया, दिन भर के युद्ध के बाद शाम को वर्षा बनी। सुविष्टिर, अर्जुन, भीम, द्रुप, मक डैरे थे। सुविष्टिर बोले—"अरे अर्जुन, तू हारना चवान, वेरे पाण्डव की दानी बोलि, किस काम का यह?" तो अर्जुन एकदम उसे मारने उठा। द्रुप ने उधरा हुए पड़ना और उधरी रोकर कहा—"तुम बड़े मूर्ख रीतने हो, "न युद्ध। लेकिन" अर्जुन—"तुमने युद्ध को सेवा नहीं की है। अर्जुन की प्रतिज्ञा थी कि जो पाण्डव की निदा करेगा, उसे मारूँगा। द्रुप ने उसे समझाया कि सुवि-ष्टिर ने पाण्डव की निदा की, यह तो युद्ध के पुस्तक को जगाने के लिए, दू

करने के लिए नहीं। इतनी भी अलग पू नहीं रखता, कारण तूने युद्धों को सेवा नहीं की।

महाभारत में यश-अन है। भीष्म जवान दे रहे हैं, पशू तूफान है—कर्म शान्त; उसका उत्तर दिया भीष्म ने—"सजान युद्धोपेवित।"—युद्धों को सेवा करने से ज्ञान प्राप्त होता है। युद्ध की सेवा को और उनके साथी-बाद को ज्ञाना महत्व दिया। उसमें मुझे लगता है, एक साल गया। अब एहरेखा में जोर लगाया तो कुछ काम हुआ। मैं खुले दिल से बात एह लिए कह सकता हूँ आप लोगों से, क्योंकि मेरा आप लोगों से हार्दिक सम्बन्ध है। हिन्दु-स्तान के सब प्रांतों में मिलकर एक दुवार लोग ऐसे हैं, जिनका बाबा के साथ हार्दिक सम्बन्ध है, और जिनसे बाबा खुले दिल से बात कर सकता है, इस वास्ते हृदय को घुमे तो भी बाबा बोल देता है।

ये लोग सहरसा में महीना-डेढ़-महीना तक जोर लगाकर आये। वहाँ जितनी शक्ति लगी, उस दिशा के काम अन्तर् ही हुआ, कहना होगा। उसके लिए मैंने उनका अतिमन्दत भी बिचा। दो दिन वहाँ बचा। अभी। हमने दूखे कहा, दुवार निर्णय करो, एहरेखा में पच सफ काम पूरा करोये? इन लोगों ने निर्णय किया कि एह साल के अन्त तक काम पूरा करेंगे। तय किया कि छ माह में २२ प्रखंड पूरे करेंगे—पूरा जिला। तो मैंने गुमावा कि प्रथम बार प्रखण्ड सेवार १४ माह से छत बनन तक डेढ़ माह में वहाँ का काम पूरा करो। उसमें एहरेखा होनी चाहिए। जिन्को प्रचार की कोई शक्ति काम की नहीं। सब लिखित पत्रक सेवार होना चाहिए। स्वच्छ, निर्मल काम हो। उसमें जित तरह अभी तक 'बंगलिन' हुआ, बंसा नहीं चलेगा। यह बार प्रखण्ड हो गये तो मान सकते हैं, एह तरह बारी २० प्रखण्ड भी हो सकते हैं।

अगर डेढ़ महीने में ये बार प्रखण्ड नहीं दूर, तो बाबा बिहार पर थड़ा रखेगा नहीं और समझेगा कि बिहार भगवान की धर्मार्थ। आखिर बात पूरा

होता है। बागोला । 'बागोलाय तोष-
 वाप्यव्यवद्' 'मै बाग है, बागवण और
 घोषों में बाग के लिए प्रयुक्त हुआ है।
 वो बाग वर्ण, 'हे भगवान वर पुत्र
 यानी मीना बचो, वो बचती है। इस
 दण्डे बगला राक्ष देखते नहीं। यह बिहार
 गुने समर्पण है। वो इस देश मन्त्री से
 बार प्रशास पूरे बागोले, वो बाग बिहार
 पर विजय करेगा। बाग ऐसी है कि
 बाग विजय है विजयान स्वर्गा बागोला
 है हुमेला। परन्तु अनेक कम्पु की एक
 हट होती है। उन्से प्रशास विजयान
 रकने में मन्त्र नहीं। इस बागले भगवान
 पर ही देना मन्त्र अक्षय है।

द्विगुणन में छ हमार प्रयोग है।

छारे प्रयोगों में काम करता है। कभी छह
 छेका संघ के कुछ लोगों को बैठक हुई थी।
 उनके भी पूजा कि बिजने प्रयोगों में छह
 छेका संघ का स्थान होगा। तीन हमार
 में है। वो पत्रा क्या कि तीन हमार में
 भी नहीं है। उन लोगों ने कभी सब किया
 कि एक हमार प्रयोगों में जाती बागिना
 बनाये। सर्वोप गन्धेन में प्रकाश
 मन्त्रकार संस्कार करते।

मात्र पूरे भारत से बाग को कुछ ही
 पत्र ही पर माते है। उनमें साठ नाम
 हुआ हो ऐंठा सीमा नहीं। यह सभा
 हुई, यह सभा हुई, फराने का अन्वयान
 हुआ, प्रवाद होता है। इत्यदि प्र
 वान सर्वोप के विनो सेवक है, भारत
 में, उनको एक हमार एक दिन से नाम
 करना चाहिए।

पुनित यह है कि इस अनेक नामों
 में निरुपार है—नमर एक, अनेक शरीर
 का भारोप। मोमार पत्रे रहते हैं,
 भारोप सम्भालना एक नाम है। नमर
 दो, वर का नाम। नमर तीन, अन्वयान
 के लोगों को माते। सामाजिक लोगों सुदृढ
 की माते और कुछ शरीर की माते। और
 फिर हम सब करते हैं कि अनेक निरुपार
 एक हय बाग पूरा करते। एक माते ने
 हमसे कहा कि नमरान को यानी
 सैहज विचारके फिर एक शरीर को बाग
 पर हमार है। वो भी उन्में जोष दिया—

“बागें बिन्दा रहे”। बागैर हमारी
 कीरी भगवान के हाथ में है, और बाग
 करने जाते हैं। “जो बाग वरें वो मात्र
 वरें, जो मात्र वरें वो अर वर से” ऐसी
 शीमता होगी, तो हम केवल निमित्त
 बाग होने और भगवान बाग करायेगा।
 हम अनेको निमित्त से वो बाग करने नहीं,
 सब भगवान ही करता है। भक्ति भगवान
 की रिते औरार करायेगा। जो पूर्वना
 निरुपार होगा, शरीर बिना भगवान वर
 छोड़ देगा। मेरा कुछ भी नहीं—“न मय”।
 भगवान भगवान ने निन्दा है, वो मन्त्रों
 में ही और तीन मन्त्रों में माते है—भगवान

पूजा है। और फिर वर है—“मय” यानी
 क्यु “न मय” यानी मीना। “न मय”—
 “मेरा कुछ भी नहीं”। मय शरीरम्
 मय सुदृढम्, मय भगवान—पूजा कुछ
 भी नहीं। इस बागले हमारी परीक्षा १४
 मरें से शुरू होगी और मृत के अन्त एक
 वय परीक्षा में पास होगा ही है। भगवान
 की बड़ी हवा होती अगर पूर्ण निरुपार
 होकर “न मय” बहुकर बाग में लगे।

(छहला के शांतिपत्र के बीच विनो-
 बागोलाय २९-४-७२ की बह विद्या
 मन्दिर, पत्रकार में निना पत्रा मन्त्र)

सर्वे सेवा संघ को नया प्रपन्थ समिति के सदस्य

१. श्री विदुराज बरडा (भगवान)
२. श्री टाकुरदास बंग (मधुवर्मी)
३. श्री जयप्रकाश तारावण
४. ,, जयप्रकाश
५. भाबाल रामभूति
६. श्री मनेश दूरे
७. ,, बालि माई साह
८. ,, भगवान विनाय
९. ,, सुदर्शन शर्मा
१०. ,, देवाश प्रसाद शर्मा
११. ,, बाकायप बैवाई
१२. ,, निर्मला देवराणे
१३. ,, भद्रनाथभय
१४. ,, मनमोहन शीमरी
१५. ,, सरासिबराज मोथने
१६. ,, गोविन्दराज देवराणे
१७. ,, देवेंद्र कुमार गुप्त
१८. ,, रामाशरण
१९. ,, डा.डी सुन्दरानी
२०. ,, सोमसाई
२१. ,, बहद फाल्गी
२२. ,, शो मठार एकरी
२३. ,, कल्याण महापाल
२४. ,, श्री० रामचन्द्र-नीतिपत्र इस्ती

७. श्री कृष्ण राव मेठडा
८. श्री रामराज पाटील
९. श्री० कानिनि पटवण
१०. श्री जीवन्मयान
११. ,, राधाश्या बजाज
१२. श्री रीशीवर घोषाकर
१३. ,, गोपूज माई भट्ट
१४. ,, बालम कुमार टण्ड
१५. ,, उवापर सिंह बिलया
१६. ,, सिद्धिदाय चौधरी
१७. ,, वैशनाथ प्रसाद चौधरी
१८. ,, सुप्रकाश जैन
१९. ,, सुन्दरनाथ बहुगुणा
२०. ,, महावीर सिंह
२१. ,, गणपतिदास भयनाथ
२२. ,, श्रीराम मजुवदार
२३. ,, विगुरारिचरण
२४. ,, दास चमोपिचारी
२५. ,, भोगीनाथन मयद
२६. ,, भोजम्बरानी
२७. ,, सीमन्त बाकनी
२८. ,, पूनीसाई शेर
२९. ,, गौरा देवी
३०. ,, डा० पारुड
३१. ,, श्यामी कुमारान
३२. ,, मेमसाई
३३. ,, केशव शोमटकर
३४. ,, कल्याण प्रकाश
३५. ,, श्री० रामचन्द्र
३६. ,, करिण साई

शरीर, १९-४-७२



योगियों के समक्ष मोहनल
कैला रहा मागी जीवन ?



सर्व



मुथी सरलावहन
(उद्घाटन)

← श्री विद्वरान उद्गा एव ठाकुरदास वग ।
अध्यक्ष-मंत्री : चित्तन





← मण्डा में श्रोतायण



श्री एस० जगन्नाथन्
बलविदा के क्षण

सम्मेलन

ह्यों



दादा धर्मप्रियकारी
(समापन)



श्री का दर्शन



याचार्थ रामनृति (बन्धुप्रीय पावन)

भोपाल से नकोदर : एक सिंहावलोकन

भोपाल संघ अधिवेशन के ६ माह के बाद हम भोग नकोदर में मिल रहे हैं। इस बीच देश और दुनिया में कई घटनाएँ पठी हैं। बांग्ला देश स्वतंत्र हुआ और भारत ने एकतरफा युद्ध विराम कर अपनी नयी प्रविष्टि कायम की। इसी अरधे में देश में सर्वोदय आन्दोलन आगे बढ़ता चला गया। कई विधियों में प्रगति अवस्था-कृत होयी रही। कई विधियों में बमलार-घो लगनेवाली प्रगति हुई। इन इन घटनाओं का यहाँ दक्षिण ब्यौरा प्रां-तिक होगा।

ग्रामदान

इस अवधि में ग्रामदान-युक्ति ही आन्दोलन को मुख्य धारा रही। सारे सर्वोदय-जगत की जालें सहस्त्रा की ओर लगी रही। यहाँ सिधले के ६ साल से चन्द सायी जन-जागृति की जनवत कोशिश कर रहे थे। इन कोशिशों के परिणाम-स्वरूप मार्च १८ से अगस्त १८ तक के एक मास की अवधि में युक्ति की गति-विधियों ने उच्चाक प्रस्थापित किया। भारत भर के तीन सौ से अधिक कार्य-कर्ताओं ने इस एक मास की अवधि में जिते भर में परमाणुओं की। फलस्वरूप एक हजार एकड़ से अधिक जमीन का बंटवारा १८ अगस्त को ही छत्र। अस्वा-स्थ के-कारण अवप्रकाशनी की मनु-पस्थिति के बावजूद मुहूर्तों में काम आगे बढ़ रहा है। भूमिगत जिते में इरीला के बाद अब भवानोपुर प्रखण्ड में युक्ति का काम जारी है। सुदूर दमिलवाड़ के संभार-रूप जिते में काम आगे बढ़ा है। अस्वा-स्थता में माननेवालों का यहाँ वापस होने के कारण एवं मठ-मन्त्रियों के गत बड़ी छानाद में भूमि रहने के कारण यहाँ का युक्ति-कार्य कठिन हो गया है, लेकिन कार्य-कर्ता नैदान में बटे हुए हैं। ये कठिनताएँ जैसे एक चुनौती हैं जैसे ही एक चुनवत

भी है। बीकानेर में तवा ठठा पड़ गया है। आगरा जिते ही जगनेर प्रखण्ड में मार्च महीने में एक सप्ताह की युक्ति-पदयात्राएँ हुईं। इससे कार्यकर्ताओं में उत्साह का संचार हुआ और एक सप्ताह में उनके प्रयत्नों से ८ गाँवों में ग्रामदानएँ बनी, छाप-छाप ग्रामदानों गाँवों में ४० दाताओं से ७८ एकड़ जमीन वितरण के लिए मिली, जिनमें से ४६ एकड़ जमीन बाँटी भी गयी।

ग्रामदान के समिपान में इन ६ महीनों में की गयी पदयात्राओं ने एक नया आयाम जोड़ा है। इन पदयात्राओं में ग्रामदान-प्राप्ति एवं युक्ति की प्रक्रि-याओं की एवं कार्यकर्ताओं की समन्वित किया गया। इन नये दरवाजे को खोलने का येव आग्र प्रवेश के महदूशनगर जिते के जड़करवा प्रखण्ड को देना होगा। यहाँ नवम्बर में श्री सुर्यम शर्मा के मार्गदर्शन में एक सप्ताह की पदयात्राएँ जमी। यह प्रायन्तिक प्रवाह अरंभ से अधिक सफल रहा। फिर भी भारत के ६ प्रांतों में ऐसी एक सप्ताह की पद-यात्राएँ संकठित की गयी। इन पद-यात्राओं की निष्पत्ति भीषे की छालिका में दर्शायी गयी है।

इन आँकड़ों से सिद्ध होता है कि कमीशेष पक्ष सब प्रेरणा में मिला एवं प्राप्ति-युक्ति एव साथ की जा सकती है यह सिद्ध हुआ। कडोली क्षेत्र में तारी अन्धी, मयम एवं सामान्य और हर प्रकार की ५ प्रवित्त जमीन दाता से प्राप्त करने में सफलता मिली। कोल्हापुर में कई गाँवों में लोक-पदयात्रा का स्वरूप प्रबट हुआ। ऐसे नये-नये पुल इस बगिचे में खिलते गये। देश के कई कार्यकर्ताओं ने विभिन्न प्रांतों में जाकर ये पदयात्राएँ चलायी। इसलिये राष्ट्रीय एकात्मता सहज में ही लगी।

बागियों का आत्म-समर्पण

बागियों के जल में एवं मर्दे के आराम में एक पयत्कार हुआ और २७० चम्बल के बागियों ने स्वेच्छ से महात्मा गांधी की मूर्ति के समुप्य आत्म-समर्पण किया। दुनिया अन्वमे में पड़ गयी। अन्वमे जयमकाशभी अस्तस्थ होने हुए भी इस कार्य को अग्रिम देते रहे एवं उनके मार्ग-दर्शन में चम्बल घाटी गान्ति समिति के कार्यकर्ताओं ने परदे के पीछे रहकर जनवत कार्य किया। इन बागियों के पराक्रम से सर्वोदय का नाम आज गणत को स्वर्ण कर रहा है। इन बागियों की किन शान्ती में प्रशंसा की जाय।

शारायचम्दी

शारायचम्दी के बारे में भी क्या मद्रास, क्या उत्तराखण्ड, क्या गुजम्यरहर

प्रदेश	प्रखण्ड	अवधि	संकलित ग्रामदान	गाँवों में ग्रामदान संकठित	दाता संख्या	भूमिदानों की संख्या के लिए मिली जमीन (एकड़)	वितरित जमीन (एकड़)
आन्ध्र	जड़करवा	न. ७१	४६	३३	७७	९०९	९६४
आन्ध्र	विजयपुर	दिव. ७१	४४	४४	—	४०	१४०
महाराष्ट्र	बागनेर	" "	१९	११	—	४७	—
कर्नाटक	कडोली	न. ७२	२४	२०	—	६४	२
पंजाब	बरीहट	" "	७	४	—	२१	२
मध्य प्रदेश	तरना	फ. ७१	६	७	—	३०	—
उड़ीसा	गोंदिया	अ. ७१	१०	१०	१९७	१११	८१
अन्ध्र	कान्हापुर	अ. ७१	२७	२३	१००	३३१	२३३

या गया राजस्थान, सभी जगह जन-आन्दोलन की चिंगारियाँ प्रकट हुई हैं। नोभ के वश होकर तमिलनाडु एव महाराष्ट्र की सरकार ने शारदाबन्दी को छोड़ दिया। तमिलनाडु के सांसदों ने जगह-जगह इसके विरुद्ध पिकेटिंग किया एवं जुलुस निकाला। श्री एस० आर० मुकुन्दमण्यम् ने कई महीनों की जन-जागरण-पदयात्रा निकाली। श्री आर० टी० पी० सुब्रमण्यम् ने उपवास किया। उत्तराखण्ड में श्री सुन्दरलाल बहुगुणा के नेतृत्व में ग्रामीणों ने, जिनमें महिलाओं का प्रधान्य था—पिकेटिंग किया एवं कारावास का वरण किया। श्री बहुगुणा ने कई दिनों तक उपवास किया। बाद में इस प्रश्न का समाधानजनक हल निकला। गुजरातहृदय में पिकेटिंग चल रहा है। श्रीमती सचकी अर्द्ध रात्रस्थान की ओर लगी हुई है। वहाँ की सरकार ने शारदाबन्दी की घोषित नीति का भंग कर आवासियों को रद्दी की टोकरी में फेंक दिया है। इसके परिणामस्वरूप रात्रस्थान के बयोबुद्ध तपस्वी नेता श्री गोकुल भार्द्वाज १६ मई से अनिश्चित काल तक का उपवास प्रारम्भ कर दिया है।

मनदाता-शिक्षण

इस वर्ष, पिछले वर्ष से कुछ कम ही बच्चों ने ही, मन्दाता-शिक्षण का काम चुनार्यों के दिनों में चला। गुजरात, असम एवं दिल्ली में यह कार्यक्रम विशेष रूप से उत्तेजनीय रहा। असम में नागरिकों की मन्दाता परिवार सर्वोद्यम मण्डल ने बनायी एवं उसने यह काम दिया। असम के कई शहरों में नागरिकों ने इस कार्य में अभिन्धम दिखाया।

बांग्ला देश

बांग्ला देश के शरणागियों की सेवा कागिधेया के मार्गदर्शन में की गयी एवं बंगला से दिल्ली तक पदयात्रा बांग्ला देश के युवकों ने शान्तिसेवा के मातहत की। अब स्वतन्त्र बांग्ला देश की परि-रिपति का अध्ययन करने के लिए श्री नारायण देसाई के नेतृत्व में एक अध्ययन दल गयी गया।

दंगाराग्राम

केरल में तेल्लीचेरी एवं पीन्नर के दलों के बाद शान्ति एवं सद्भाव स्थापन करने का कष्टा काम हुआ है।

आचार्यकुल

आचार्यकुल छोड़े-छोड़े विस्तृत हो रहा है और दक्षिण में इसे फैलाने का विशेष आयोजन किया जा रहा है।

लोकसंगीत-यात्रा

लोकसंगीत के किनारे सहरसा में सर्वोद्यम जगत के श्रीधराराचर्य श्री छोरेन्द्र मनुमदार की यात्रा चल रही है।

आदिवासी

आदिवासियों पर चल रहे अत्याचारों एवं शोषण के खिलाफ आदिवासियों को महाराष्ट्र सर्वोद्यम मण्डल के मार्ग-दर्शन में श्री गोकिन्दाबाब तिडे संगठित कर रहे हैं, और इसने बड़ी सफलता भी मिली है।

लोकयात्रा

बहनों की लोकपदयात्रा गुजरात भर पूर्ण एव उससे अपूर्ण जन-जागरण हुआ। अब यह पदयात्रा महाराष्ट्र में चल रही है।

गोवा में सर्वोद्यम मण्डल

गोवा में प्रथम बार सर्वोद्यम मण्डल का गठन हुआ है।

चर्चा के प्रमुख प्रश्न

प्रधानमंत्री के नेतृत्व में सोशलि-कानूनो के द्वारा भूमिसुधार का प्रश्न इस समय प्रमुख प्रश्न बन रहा है। धान-दान-धामसर्वारण्य का जलता का आन्दोलन एवं भूमिसुधार के शासकीय प्रयत्न, इन दोनों का सम्बन्ध बना हो यह प्रश्न नको-दरखिबेक्षण के संसुभ एक प्रमुख प्रश्न है।

अगले तीन वर्षों के लिए जो छापी सर्व सेवा सभ के पदाधिकारी बनने जूद्धे हमारा सहयोग ली रहेगा ही। हमारा कार्यकाल पूरा हुआ। सबसे जो सहयोग दिया इसलिये सबको प्रणाम।

गोपुरी
१९-१-७२

ठाकुरदास भव
मंत्री

(पृष्ठ १२९ का लेख)

कारण है जिसके कारण हमारा 'सर्व' नहीं हो रहा है। गांधी विधि में जो देवेन्द्र भाई गिड़मिड़वा फिरता है—अरे सरकारवालों हमसे कुछ बातचीत करो! हमसे कुछ बातचीत करो। बापको मायता के लिए दर-दर भटकना पड़े; कमी लोचा है आपने इसका कारण क्या है? इसका एक ही कारण है मिथो। समाज में जो वर्तमान प्रतिष्ठाएँ हैं उनका सहयोग आप चाहते हैं। उनका आश्रय खोजने की हमारी भूमिका समाप्त हो जानी चाहिए। राज्यसत्ता, जन्मसत्ता, शास्त्रसत्ता, ये तीन समाज की प्रतिष्ठित सत्ताएँ हैं। इन सत्ताओं के बाधित बनकर क्रांति करनी है तो क्रांति इन सत्ताओं के पेट में चली जायगी।

आत्म-परीक्षण अवर करना है तो आत्म-परीक्षण इस विषय में कौनसे कि हमने साधन-मुक्ति कहाँ तक मानी है। साधन-मुक्ति का आचरण हमने कहाँ तक किया है। जहाँ तक हमने भाषण सुने, भाषणों में प्रचण्ड भाँधी थी और सुर्वदेव की तरह अधिक गर्वी थी। कहा या न अमरनाथ ने कि यह तथ्य भी जननशील पदार्थ है। यह आत्मादायी पदार्थ होगा तो होगा लेकिन यहाँ तो बड़ा शीतलदायी पदार्थ है। राधाकृष्ण को पुष्ठा या अमेरिका के लोगों ने—कि नीजवान हमारे आन्दोलन में क्यों नहीं जाते? मुझे पता नहीं यहाँ किन्तु बूढ़े बैठे हुए हैं। या कितने प्रौढ़ बैठे हुए हैं। मुझे फिर भी यहाँ काले बाल जगदाद रिखायी दे रहे हैं। इनकी कोई गिनती नहीं है। नवयुवक इससे क्यों नहीं आते तो इसका उत्तर है। ऊँ इच्छा देना के युवकों को जीविका की कोश है और अमेरिका के युवकों को जीवन की खोज है। यह बुनियादी बात आपसे कह रहा हूँ इससे अधिक इसमें और कुछ नहीं कहूँगा।

नकोदर,
१९-१-७२

मृदान-पत्र। सोमवार, २९

संप्र अधिवेशन के निवेदन

सरकार का सीलिंग कानून और सर्वोदय की भूमिका

भूमिहीन खेतिहर मजदूरों को भूमि मिले, भूमि को विपणनता कम हो, ऐसी माँग क्यों से देश में होती रही है। भूमि-सुधार सम्बन्धी कई कानून भी बने किन्तु करोड़ों लोगों को अब तक न्याय नहीं मिल पाया। कानून में छामो के कारण भूमिवाहो ने इस कानून से बचने के मूलतः उपाय ढूँढ़ निकाले, इस कारण भूमिहीनो को कानून द्वारा भूमि नहीं मिल सकी।

यद्यपि राजनीतिक दलों एवं सरकार द्वारा समय-समय पर भूमिहीनों को भूमि देने-दिलाने की घोषणाएँ होती रही, किन्तु फिर भी वे सोग धँसित रहे।

सर्वोदय आन्दोलन ने पूरव निजोराजी के मार्गदर्शन में वर्षों से भूमिहीनों को भूमि दिवाने तथा समाज में भूमिहीनों एवं भूमिवाहो के बीच सम्बन्ध सुधारने के प्रयत्न किये हैं। देश भर में भूमि-वितरण के लिए विचार-प्रसार द्वारा जनमत तैयार करने की कोशिश की है। इस तरह भूदान-ग्रामदान आन्दोलन ने लाखों एकड़ जमीन का वितरण भूमिहीन खेतिहर मजदूरों में किया है। ग्रामदान के माध्यम से ग्राम-समाज में सहयोग की भावना बढ़ाने का काम चल रहा है।

अब केन्द्रीय सरकार के प्रयास से राणय सरकारों द्वारा भूमि-हदबन्दी कानूनो में सुधार कर सीमा को घटाने की चर्चा चल रही है। कई राणयो में इस आशय का विचार भी पैदा हो चुका है। सर्व सेवा रूप इस कदम का स्वागत करता है तथा ऐसे प्रयत्नों को सफल बनाने में सहयोग देना अपना दायित्व मानता है।

जन-जागृति एवं जन-सहयोग के अभाव में ऐसे कानूनो का उद्देश्य विफल हुआ है, यह पिछले वर्षों का अनुभव बताया है। केवल शासन के तब से यह काम नहीं हो सकेगा। इस काम के लिए

जन-सहयोग जति आवश्यक है। सक्रिय जन-सहयोग प्राप्त करने के लिए सब राजनीतिक दलों और समाज-सेवी संगठनों को प्रयत्न करना होगा।

भूमि-हदबन्दी कानून को ठीक ढंग से लागू करने के लिए सर्वेक्षणी समिति बनानी चाहिए और गाँव-गाँव में आम सभा में इस कानून द्वारा जितनी भूमि निकलनी चाहिए उसकी घोषणा करनी चाहिए और प्राप्त जमीन को बाँटने में भूमिहीन खेतिहर मजदूर को प्राथमिकता दी जाय।

पिछले वर्षों में भूमि-हदबन्दी कानून से बचने के लिए भूमि का बेनामी हस्तांतरण किया गया है। ऐसे बेनामी हस्तांतरण को कानून में नगामय घोषित किया जाना चाहिए।

भूमि-हदबन्दी कानून में जो भूमि की छूट देने के अन्वयार्द रसे जाते हैं, वह कम-से-कम ही। लेकिन यदि कोई भूमिवाह भूदान देकर भूमिहीन खेतिहर मजदूर को जमीन देना चाहे तो ऐसी छूट कानून में रखी जाय। इससे सरकार मुश्रावजा देने से बचेगी और गाँव में परस्पर-सम्बन्ध सुधारने में सहायता मिलेगी।

सर्वोदय आन्दोलन यह भी मानता है कि ऐसे कानून भूमि की विपणनता मिटाने तथा सहयोगी समाज बनाने में बहुत मददगार नहीं हो सकते। इसके लिए अन्तिम हल ग्रामस्वराज्य ही है, क्योंकि उसमें गाँव का कारोबार ग्रामीण लोग ही चलायेंगे।

राजस्थान में शराबबन्दी

गांधी शताब्दी वर्ष १९६०-६१ में राजस्थान में श्री गोकुल भाई भट्ट के नेतृत्व में शराबबन्दी के लिए विज्ञान जन-आन्दोलन चला और सत्याग्रह भी हुए। उस आन्दोलन तथा सत्याग्रह के फलस्वरूप राजस्थान सरकार ने जनमत का आदर करके आर्थिक, नैतिक और सामाजिक सब पहलुओं पर विचार करते हुए कर्त्तक रूप से पूरे राजस्थान में १ अगस्त १९७२ तक पूर्ण शराबबन्दी लागू करने की घोषणा की। इसके अनुसार शराबबन्दी का क्रियक कार्यक्रम भी कुछ समय चला और ९ जिले तथा १ प्रखण्डों में शराबबन्दी की गयी।

अब कि यह वाधा की जा रही थी कि १ अगस्त १९७२ की पूरे राजस्थान में पूर्ण शराबबन्दी के एगल कर राज्य सरकार अपने पचन का भावन करेगी, इसके सर्वथा विपरीत आर्थिक बाँटे की पुरानी दलील देकर शराबबन्दी लागू होने की अवधि के अन्त दिन पहुँचे, राजस्थान सरकार ने धारा-७७७ के अन्वयेकन में इस कार्यक्रम को स्थगित कर देने की

अप्रत्याशित घोषणा की।

किन्ती भी राज्य सरकार के लिए अपने घोषित नीति और कार्यक्रम को, साखती से शराबबन्दी जैसे उपाय हित से सम्बन्धित पायदे को, पुरान करवा जनता के साथ विश्वासघात ही कह-सायेगा। स्वाभाविक ही शराबबन्दी सत्याग्रह के नेता श्री गोकुल भाई भट्ट ने इसे सरकार का पचन मय माना और उसके प्रायश्चित स्वरूप आभरण अन्ततः का अपना संकल्प बाहिर किया है। राजस्थान समय सेवा संघ और वहाँ की नशा-बन्दी समिति ने श्री गोकुल भाई के सकल्प का स्वागत किया और सरकार को इस नीति का पक्का विरोध करते हुए उसके परिमार्जन के लिए अहितक आन्दोलन चलाते का निर्णय लिया है।

यह उम्मेदवनीय है कि शराबबन्दी के महत्त्व और राजस्थान सरकार के घोषित नीति पर कायम न रहने के कारण श्री गोकुल भाई जैसे शोष्य व्यक्तित्व के जीवन की बाजी लया देने के निर्णय को देखते हुए सर्वोदय नेता श्री जयप्रकाश

नारायण जी ने राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री बरकतउल्लाखा द्वारा सम्पर्क किये जाने पर इस मामले में हस्तक्षेप किया। श्री जयप्रकाश नारायणजी और अखिल भारतीय नवोदयी परिषद की अध्यक्षता डा० सुशीला नायर ने इन सभी प्रश्नों को लेकर केन्द्र और राज्य के मंत्रियों से बातचीत की। श्री जयप्रकाश नारायणजी के निर्देश पर श्री गोकुल भाई की एक सप्ताह के लिए अपना अन्तर्गत स्थापित करना पड़ा। किन्तु राजस्थान राज्य के इस प्रश्न के हन अर्थात् अपने वचन की पूर्ति और शरारतवादी की घोषित नीति को कार्यान्वित करने का कोई रास्ता नहीं निकला। परिणामतः श्री गोकुल भाई को १६ मई से आमरण अनशन आरम्भ करना पड़ा है और पूरे राजस्थान में सरकार की इस नीति के अहिंसक विरोध की कार्रवाई करती पड़ रही है।

सर्व सेवा संघ समय-समय पर आह्वान करता रहा है कि सारे देश में शरारतवादी सांगू किया जाना न सिर्फ संविधान के मर्यादित सम्बन्धी निर्देशन के पालन के लिए उचित और आवश्यक है, बल्कि राष्ट्र एवं समाज के नैतिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक सब तरह के हित, विकास और प्रगति की दृष्टि से भी यह कदम अनिवार्य अमल में लाये जाने योग्य है। स्पष्ट ही संविधान के निर्देशक तत्वों के कार्यान्वयन की क्रियेयारी केन्द्रीय सरकार की भी है और शरारतवादी देश में लागू होने में देर होती है जो वह अपने दायित्व से मुक्त नहीं सकती।

सर्व सेवा संघ मानता है कि शरारतवादी के मसले पर राजस्थान में जो स्थिति बनी है और इसके कारण श्री गोकुल भाई तथा वहाँ के सर्वोदय सेवकों एवं जनता को अनशन व आन्दोलन का जो कदम पड़ना पड़ा है वह समाज की जेसा करनेवाली सरकारों की मर्यादों नीति को आह्वान करता है और लोक-सर्विज द्वारा उसको सुधारने के अहिंसक प्रयासों का प्रतीक है।

प्रदेशिक विवरण

प० बंगाल

धामदान पु० विनोबाजी की सलाह के अनुसार बंगाल सर्वोदय मण्डल ने बांग्लुजा जिले में धामदान-अभियान चलाने का उद्योग किया था। उसके अनुसार श्री चारुचन्द्र भण्डारी के मार्गदर्शन में गगानल घाट प्रखण्ड में फरवरी १९७२ से कार्य शुरू किया गया है। इस काम में १४ कार्यकर्ता भाग ले रहे हैं। इसके अलावा बंगाल के उत्तरी तीन जिलों में और २४ परगना में धामदान का कार्य किया जा रहा है।

सहरसा जिले के पुष्टि-अभियान में बंगाल से तीन कार्यकर्ता भेजे गये हैं, जो वहाँ कार्य कर रहे हैं।

शान्तिसेना तथा आचार्यकुल

शान्तिसेना तथा आचार्यकुल के गठन का कार्य बंगाल में शुरू करने की दृष्टि से इन दोनों कार्यों के लिए समितियाँ गठित हुई हैं। शान्तिसेना का कार्य श्री सौरेन्द्रकुमार बसु के सयोजकत्व में तथा आचार्यकुल का कार्य श्री ईश्वरचन्द्र समाजिक के सयोजकत्व में शुरू हुआ है।

छादो-कार्य बंगाल में छादो-कार्य के उचित मार्गदर्शन के लिए श्री नगेन्द्रनाथ

शैन की अध्यक्षता में एक छादो समिति नियुक्त की गयी। इस समिति ने छादो-संस्थाओं की समस्याओं के समाधान के लिए स्टेट छादो बोर्ड तथा छादो कमिशन से सम्पर्क करना शुरू किया है।

अन्य कार्य - श्री वासुचन्द्र भण्डारी के मार्गदर्शन में सर्वोदय कार्यकर्ताओं की एक टोली ने साल्ट लेक बांगला देश शरणाधी शिविर में जुलाई '७१ से फरवरी '७२ तक सफाई का काम किया। बांगला देश के युवकों को गांधीवादी विचारों से परिचित कराने के लिए गांधीजी के लेखों का एक संग्रह 'विद्रोही आत्मान' नाम से प्रकाशित किया गया। इसी तरह की और दो पुस्तकें भी शीघ्र प्रकाशित की जायेंगी।

धाम चुनाव के समय कलकत्ता में मतदाताओं के मार्गदर्शन के लिए एक धाम आयोजित की गयी, जिसमें कई अरक्ष गणमान्य सज्जन उपस्थित थे। शिक्षा और दूरदर्शन प्रचार न करने के लिए सब राजनैतिक पक्षों को लक्ष्य कर एक पत्रक वितरित किया गया।

सर्वोदय-साहित्य के अन्वय के लिए एक समिति का गठन, कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के लिए शिविर का आयोजन आदि कुछ अन्य कार्य भी किये जा रहे हैं।

इस पृष्ठ मूल में सर्व सेवा संघ श्री गोकुल भाई के पवित्र सन्तान और राजस्थान सर्वोदय सगठन तथा शरारतवादी समिति द्वारा लिये गये निर्णय का पूर्ण समर्थन करती है और प्रकृत समिति को इस अर्थ में भी आवश्यक कार्रवाई करने का निर्देश देता है। सभ को विश्वास है कि शरारतवादी के इस अहिंसक आन्दोलन का देश में सब और पूर्ण समर्थन व सक्रिय सहयोग मिलेगा। सर्व सेवा संघ अपनी भी आशा करता है कि राजस्थान सरकार की सहृदयता जागृत होगी और वह शरारतवादी के अपने बचन को अतिशय कार्यान्वित

करने के लिए आवश्यक कार्रवाई करेगी। अखिल भारत नवोदयी परिषद ने २१ मई को नवोदयी के लिए देश भर में साप्ताहिक अनुष्ठान, मोन प्राथम्य और उपवास का कार्यक्रम आयोजित करने का आवाहन किया है। सभ इस निर्णय का पुरा-पुरा समर्थन करता है। आशा है इससे साथ ही देश भर के समाचार-पत्रों में शरारत के विज्ञापनों पर भी रोक लगाने के लिए वातावरण बनाने की आवश्यकता है। इसके लिए जगह-जगह शरारत पीने के विपक्षी समितियों का आयोजन करना चाहिए।

मुम्बरी, सबसे घरे प्रवेदे-घनेरे भजन मुनते है। एक साउवरीकर प्रातः ६ बजे से ही धरित समीत मुञ्जालि करते लगता है :

आया हूँ दरवार तुम्हारे।
 बहुत जनन का भूला-भटका,
 लगवाते प्रभु चरण सहारे।
 धन नहीं माँगू, माँगू न सता,
 नहीं माँगू विषयन की ममता,
 हे प्रभु प्रेम की दृष्टि निहारो।
 आया हूँ दरवार तुम्हारे।

स्नान आदि से निवृत्त हुए कि १० बजे से मूल शुरू हो जाता है जिसमें हालिजी बरूरी नहीं है लेकिन जब दादा धर्माधिकारी का प्रवचन २७, २८, २९ और ३० अप्रैल को, ४ दिन चला तो एक भी बागी अपनी धैरक में बैठा नहीं रहा। दादा की बागी का जादुई प्रभाव देखते ही बनता था। दादा ने लोक-प्रचलित किस्से बहानियों को इस रंग से कहा कि अनेकों को जहाँ भर धार्मिक-साधवादी हरिश्चन्द्र की बधा में शोम के घर काम करते समय रोहितावन या बहूया कि मेरी चिन्ता न करें, हरिश्चन्द्र का बटोर धम करता और वचन की लाज रखने के लिए हँसते-हँसते कुछ दोषना धारि का वर्णन उनके मन पर बड़ा अक्षरकारक रहा। दोषचिन्ती और सवाई दोषचिन्ती जो किसी मैदान को देखकर लड़ पड़े कि बागीचा लगे या खेती हो, पर अभीन है किसकी? यह सोचा ही नहीं,। ऐसे घुट-कुलों पर सब पृथ हूँ और उन्हे लगा कि सचमुच यह घरती कितो की मही है, मल्ले पर किसी के साथ नहीं जाती। सब वही घुट जाती है।

श्री जयप्रकाशजी जेल में उनलों से मिलने १७ अप्रैल और ३० अप्रैल '७२ को, दो बार गये। उनसे मिलने मानसे उनके चेहरे प्रसन्न थे। मालापुर होकर बागी बल्साण पण्डित ने आभार प्रकट करते हुए भजन गाया :

“मैंने अपने को सौं दिया
 सरकार तुम्हारे हाथों में।”
 जयप्रकाशजी ने परिवार की रखा

का पूरा-पूरा आशवासन दिया। उनको बहुत आसंका है कि वही लोग उनके गुनाहों का बदला उनके स्वप्नों से न लें। इसलिए पहली चिन्ता उनकी यही है। पहले ही किसी को मार दिया, फिर आप क्या कर लेंगे—‘का सर्पा जब कृपि मुलानो’ शान्ति मिशन की जेल-सम्पर्क समिति दम और विरोध साधयानी बरत रही है। उनके परिचारकों से मिलने पर मानव स्वभाव के विविध पर उदाहर होते हैं। बागी रूपसिंह का भाई सुबेदार सिंह पहले सगा? २ रुपये रोज की मजदूरी करता हूँ और भावज व बच्चों की देखभाल मैं खाता हूँ।” उसने शायी इसीलिए नहीं की कि फिर वह दायित्व ठीक से नहीं निभा पाता।

जेल में करते क्या हैं ?

हफ्तको बेड़ी कुछ नहीं पड़ी है। मुश्किल से रहते हैं। विश्वना-गुणा खीसके के खानावा उतरा मन लगा रहे इस हेतु थी कागिनाथ त्रिवेदी के नेतृत्व में भजन संगीत का जो कार्यक्रम चलता है उसमें उनका खूब मन लगता है। श्री गोशाल भट्ट की सखी जब बजती है तो उनके हृदयों के तार झनझना उठते हैं। वे भी सुहराते हैं—

बोधियारा मेरे क-तर का
 प्रभु दूर करो हे दूर करो
 तन हो उजला, मन हो उजला
 प्रभु जीवन उजला करो करो
 तन में मन व और जीवन में
 प्रभु चेतन बन-नद भरो भरो।

जेल में एक छोटा सा सुस्वस्व है, जिनमें हिन्दी के दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्र निर्गमन आते हैं। एक अर्धजी का भी दैनिक याता है। साप्ताहिक हिन्दुस्तान उन्हे विशेष प्रिय है। उनके गड बरों के लेखों का उनके बीच कई बार साधन हुआ है। उसमें प्रकाशित विन देखकर खुश होते हैं। माघोद्विजो अपने मास्टरजी बहानते थे। वे तो उन्माध लिखने की वर्षा कर रहे हैं। उनसे जब उनके दायाद जेल में मिलने आये तो कहा कि पहला सप्प जंगल का तुम लिखो और

जेल के भीतर का स्वयं लिखेंगे। उनके जीवन में कुछ श्रौंग्यामिकता ही थी। दो-दो पदिक्यो और घाट बच्चों के होते हुए भी उन्हें अपना तन और मन दोनों जवान लगता है और हर समय कुछ नया ही घोचते रहते हैं।

जेल अधीक्षक हैं श्री दण्डविह। जेल में बखाना बन गया है। रोज कुचरी होती है, कभी-कभी कड्डो भी जमती है। फुटबॉल और बातीबाँव की भी शुरूआत हुई है। २७० बागियों का सहजीवन अपने में एक दिवसस व्ययन का विषय है। अभी उनके मुकदमें शुरू नहीं हुए हैं। पर सब जानते हैं कि सजाएँ होंगी। मुकदमों की उन्हे चिन्ता तो है पर कोई बेवनी नहीं है। पहले ही यह सरकार का काम है, वह करेगी। इनके मुद्दमों के लिए शान्ति मिशन की ओर से एक मंत्री समिति सात बहिलो को मन गयी है जिसके अध्यक्ष श्री जे० एच० आनन्द और मन्त्री श्रीभायू-लाल भागव काम देख रहे हैं। इनके तथा इनके द्वारा पीडित परिवारों के दुर्न-दाँत का काम श्री एच० एन० गुब्बाराव देख रहे हैं, जिनका प्रयत्न है कि इनके परिवारों को इनके दुःखमों से बचाया जाय। उन्में हुए मकानों को रहने साधक तथा खेती की खेती करने साधक बनाया जाय। एषमें शुरू-शुरू में कुछ साधनों की मदद करनी पड़े तो भी चाय। क्षेत्रीय और जिला स्तर की शान्ति समितियाँ बनाई जाय जिससे जाने होने या हो सजने वाली अशान्ति का खमन हो।

पुर्नस्कार भी दृष्टि से श्रेष्ठ सर्वो-दय कार्यवर्ती जेल में लगन जाते हैं इसको व्यवस्था हुई है। इनके जीवन में धीरे-धीरे फर्क आ रहा है। इनसे बात करते समय बड़े मजे की बातें होती हैं। कोई तो अपनी बहानो सचपन से शुरू करता है और तब कुछ वह उताना पाहाता है क्योंकि उसका पल आज तक रिती ने हमदर्दी से गुना नहीं। इसलिए

(रोप वृत्त २४२ पर)

गांधी रचनात्मक संस्था सम्मेलन का निवेदन

देश में गांधी विचार के अनुसार कार्य करनेवाली रचनात्मक संस्थाओं का सम्मेलन ११, १२ तथा १३ मई '७२ को रात्रपाठ, नयी दिल्ली में हुआ। इस सम्मेलन ने राष्ट्र की कुछ मुख्य समस्याओं के बारे में विचार-विमर्श किया। सम्मेलन में बुनियादी प्रश्नों पर निम्नलिखित ध्यान राय रही।

राजनैतिक क्षेत्र

इस समय गाँव-गाँव में समता और संपन्नता की आकांक्षा तथा आत्म-विश्वास की व्यापक भावना पैदा हुई है। शासन, भूमि तथा अन्य सम्पत्ति पर सीमा लगाने की कानून बना रहा है। ये बहम उपयोगी हैं, किन्तु आवश्यकता इस बात की है कि गाँवों का विकास और समान स्वदेशी, स्वाभिमता और स्वायत्तता के आधार पर किया जाय। इसके लिए सच्चा का ऐसा विकेन्द्रीकरण आवश्यक है जिसमें आम अर्थित की क्षमिक्रमबोधिता अपनी लोक-नित्त का आग्रह हो और उसे यह उत्तरीतर प्रतीत हो कि इस रात्रांन को पलाने में वह हिस्सेदार है। ऐसी सपछिन, स्वाभयी और स्वायत्त द्कारणों को देश की औत्सात्मिक व्यवस्था में सम्बुधन स्थान दिया जाय, क्योंकि मात्र के औरकारिक, पाश्चात्य धन के

लोकतंत्र के जो दोष प्रकट हुए हैं तथा विश्व तरह पैसा, षण्डा और झूठा प्रचार सही लोकतंत्र के प्रकट होते में बाधा पैदा कर रहा है, उसे देखने हुए यह आवश्यक है कि भारतीय परम्परा ने लोक-जीवन के जो शुभ तत्त्व विकसित किये हैं उनको खोज की जाय तथा लोकतंत्र की मूलिका में रात्रनीति के स्थान पर लोकनीति की उपयुक्तता पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाय।

आर्थिक क्षेत्र

आर्थिक क्षेत्र में समाज की कमजोर से कमजोर कट्टी को मजबूत बनाने तथा 'गरीबी हटाओ' के नारे को सार्थक करने के लिए यह आवश्यक है कि -

(क) हर गाँव में वेतार को दाय देने की जिम्मेदारी ग्राम-संगठन की मानी जाय और उसके लिए सारी और प्रामो-सोयों की ध्यानक किया जाय तथा इसके अतिरिक्त और भी काम दिवाने के साधन जुटाये जायें।

(ख) औद्योगीकरण की नीति में उन्नत कृषि तथा कृषि आधारित उद्योगों की व्यवस्था की जाय। ऐसे गाँवों में विकास की और विशेष ध्यान दिया जाय जहाँ विद्युत् भी उन्नत साधन नहीं पहुँचे हैं।

(ग) छोटे-बड़े और मध्यम आदि

विभिन्न स्तर के उद्योगों में परस्पर स्पर्धा होने से कमजोर स्तर को नुकसान पहुँचता है इसलिए उत्पादन के क्षेत्रों का विभाजन करने छोटे उद्योगों को सुरक्षित किया जाय।

(घ) उद्योगों के लिए ऐसे स्वस्थ को विकसित करना भी आवश्यक है जो हमारे देश की परिस्थिति के अनुष्ण मध्यम तकनीक (इन्टरमिडिएट टेक्नोलॉजी) के हों।

(ङ) 'गरीबी हटाओ' के लिए आवश्यक है कि गरीबों की गाँवों कमाई छीनेवाने, शराब आदि मादक पदार्थों के सेवन को समाप्त करने के लिए नशा-बन्दो की नीतियों को बढ़ावा दिया जाय।

सामाजिक क्षेत्र

सामाजिक क्षेत्र में समानता की भूल यानी मानवमान समान है को धारणा दिन ब दिन बढ़ रही है और अब अब हम देश की स्वतंत्रता की रजत-अयल्यी मना रहे हैं, यह आवश्यक है कि देश में सामाजिक विषमता से पीड़ित हरिजन, आदिवासी तथा अन्य अरा-सक्यों के साथ होनेवाले दुष्पर और अन्धकार का अन्त किया जाय। समाज में यह प्रतीति जगायी जाय कि वह स्थियों के साथ कुछ तरह दमन और अनीति का अन्तहार कर रहा है। इस दृष्टि से लोक-गिसण का कार्य जोरो से करने की जरूरत है। साथ ही यह भी जरूरी है



सम्मेलन का एक दृश्य : श्री बेवेज कुमार गुप्त सम्मेलन का उद्देश्य समझा रहे हैं।

कि शासकीय नीति-रीति में इन तत्त्वों के लिए समानता की स्थिति मान्य की जाय।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के सम्बन्ध में :

(क) देश में स्वच्छता के आन्दोलन को बढ़ाने के माध्यम-कार्यों में लगे भाई-बहनों को इस व्यापकीय कार्य में प्रोत्साहित किया जाय, तथा उन्हें सम्मानपूर्ण प्रमार्ग के द्वारा साधन दिये जायें।

(ख) गरीब से गरीब को स्वास्थ्य मिले इसके लिए कुदरती उपचार और दूसरे स्थानीय साधनोन्मुखी ऐसी ऐसी पद्धतियों को प्रोत्साहित दिया जाय जो उन्हें उपचार के मामले में अधिकाधिक स्वावलम्बी बना सकते हैं।

(ग) दुष्प्रयोग की समस्या की मुहाने का विशेष प्रयास किया जाय।

शिक्षा

शिक्षा के सम्बन्ध में नयी तानवीम के सिद्धान्त को उत्तरोत्तर लागू किये बिना नयी गीर्दी को समाजोपयोगी बना उद्योग-शील बनाना सम्भव नहीं होगा। इसके लिए :

(क) विश्वविद्यालय में, शिक्षा में नयी तानवीम की दृष्टि दी जा सके तो नीचे के स्तर पर शिक्षा के क्षेत्र में काम करना ध्यातन होगा।

(ख) नीतिगतों के देने में योग्यता को परख डियो को आधार मानकर ही चलती रहेगी तो नयी शिक्षा-पद्धतियों का विकास न हो सकेगा। अतएव लोक-तियों के साथ डियो न जोड़ी जाय।

(ग) तरुण-शान्तिसेना और व्यापार-कुल जैसे कार्यक्रम, जो क्रमशः विद्याधियों और शिक्षकों में सामाजिक चेतना पैदा करते हैं, को बढ़ावा दिया जाय।

(घ) हर विद्यालय अपनी आन्तरिक व्यवस्था में स्वास्थ्य हो।

(ङ) ऐतिहासिक प्रयोगों की प्रोत्साहन मिले।

उपरोक्त बातों के बारे में रचनात्मक सत्यापनों के प्रतिनिधियों के इस सम्मेलन का विरासत है कि मान्यारी के इन २२

बयों में समाज में चेतना उत्पन्न करने के लिए तथा गांधी-कार्य के विभिन्न पहलुओं पर जो काम हुए हैं वे इसमें सहायक हुए हैं। ये सारे कार्य एक समग्र शान्तिपूर्ण कान्ति के माध्यम हैं, जिसका केन्द्रबिन्दु शत्रु, प्रेम, कल्याणमूलक प्रायस्कारान्त वा वाद्यों है। सम्मेलन यह भी महसूस करता है कि इन काम के लिए एक मोर संघर्षों में आरम्भ समन्वय हो तथा स-य-साथ साठन और उनके बीच सम्वाद और विचार-विनिर्णय का क्रम जारी किया जाय। इस बारे में सम्मेलन के प्रतिनिधि मण्डल की प्रधानमन्त्री के हार्दिक बालनीय वे एक आगा-पारपी कदम बना है।

सम्मेलन इस निष्पत्ति पर पहुँचा है कि हमारी राष्ट्रीय समस्याओं की वास्तविक कुडी लोक-शक्ति है ऐसी लोक-शक्ति जो हत्या की वञ्चनना के लिए उद्यत तथा आवश्यकतानुसार अनीति के प्रति-कार के लिए तैयार हो। संरक्षित लोक-शक्ति, सरकार तथा सरकारों के सम्मिलित प्रयास से समस्याओं का समाधान निश्चित है।

यह सम्मेलन साधा करता है कि उपरोक्त मुद्दों पर अमल करने के साधन ढूँढे जायेंगे। राक्षस, नयी दिल्ली, दिनांक . २३ मई, १९७२

(पृष्ठ ५४० का पृष्ठ)

मुनेबाता मिल गया तो सब मुना डालना चाहते हैं बिना इन बात का ध्यान किये कि दूसरे के पास कितना समय है। उनके पास तो समय ही समय है इसलिए उन्हें बात खत्म करने की जल्दी नहीं होती। कुछ बड़ी मद्दुहार के बाद सोचते हैं और वह भी नशा-मुना। कुछ तो हाथ ही नहीं धरने देते—“बीत गयी ही बात गयी” कह कर एक उत्तर में सारे प्रश्न पिटा देने हैं।

इनके मन में चल रहे ड्रग के परिचय के लिए मुझे तयार था रहा है कि एक ने जल्दी दुरमनों की लुची बलापी और दूसरे ही दिन वह दिया कि मैं ही पक-

तिसा है, गीता प्रवचन बाँचते समय लगी, अब तो कोई दुरमन ही नहीं रहा। उस लुची को फाड़ पीलिए। उनके हाथ-हाथ में पकनेवाँ लिखते समय मेरा मन भी था उठना है। ‘भगवान तेरी लोला अन्नर निराती है।’ श्री जयप्रकाश नारायण जैसे आतिथ्यारी ने हृद मायप में इसे भगवान की महिमा कह कर स्वयं की निमित्त बताया और केन्द्रीय शासन, विशेषकर प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी के सहयोग और मध्य प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री प्रकाश कर्द सेठों के सहकार के प्रति धर्मवाद किया। इसलिए वह सकते हैं कि पाली और मोली से सम्पाद न होरेवाले नासूर का वह कल्याणमूलक एक ध्यातनहारिक रास्ता है। इसपर इस क्षेत्र में और देश में मिली-जुली प्रतिक्रियाएँ हुई हैं। इतना निश्चित कहा जा सकता है कि अब भारी पर्याप्त सावधानी और दूरदृष्टिता से काम किया गया जो चम्पल पाटी का यह अविद्याय बदलान में बदल सकता है। बहुते हैं कि आया वह पाव है या कर्मा पर भी उपती है जबकि ये तो जीते-जागते पाटी के पुतले हैं। ये जरूर बदलते हीर बह भी अपने अन्तर में छिपी सुन्दर के प्रयास से। गौरवान् तुलसीदास बहुत पहले कह गये हैं “सुमति सुमति सब घर के माही।” ●

महबूबनगर में पदयात्रा

राज्य में महबूबनगर जिले में कोता-पुर प्रखण्ड में ता० २० अक्टू से ४ मई तक १० टाँवियों में २५ कार्यकर्ताओं की पदयात्रा की। १४ गाँवों में धामन्वटांग का प्रचार हुआ, जिनमें से २७ गाँव संरक्षित प्रायदान हुए। इनमें से १३ गाँवों में धामन्वटांग की स्थापना हुई। बितरण के लिए ही दानाओं से ३३१ एकड़ जमीन मिली और इनमें से १४ गाँवों में ५७ भूमिहीनों को २३३ एकड़ जमीन बँट दी गयी। ३४ गाँवों में धामन्वटांग स्थापना बनायी गयी। ८० एकड़ भूदान को मुनारी भूमि का भी मुनारितरण हुआ। ●

संघ अधिवेशन के चार दिन

सर्व, सेवा संघ का अधिवेशन १६ मई को तीसरे पहर आरम्भ हुआ। संघ के अध्यक्ष श्री एच० जगन्नाथन् ने कार्यवाही की शुरुआत की। प्राथम में दिवसगत कार्यकर्ता सचिपों के प्रति दो मिनेट मोन रखकर शोक व्यक्त किया गया। फिर स्वागत समिति के अध्यक्ष सरदार बरबारा सिंह ने अधिवेशन में आये हुए प्रतिनिधियों का स्वागत किया। पिछले संघ अधिवेशन की कार्यवाही की मुद्रि के बाद सच के नये अध्यक्ष के चुनाव का विषय अध्यक्ष ने पेश किया। चुनाव-कार्य की योजनाय प्रसार चौधरी के सभापतित्व में संचालित हुआ। सच के अध्यक्ष श्री जगन्नाथन् ने अपने पद से मुक्त होने का इच्छाकार संघ के नीचे उतर कर दिया। नये अध्यक्ष के लिए सभापति ने लिखित भाषा मागे। १४ नाम प्रस्तावित हुए। एक नाम ही एक भाषित ने अपना ही दिया था। अन्तः सर्वो भी शीरेट मन्थन, एच० जगन्नाथन्, सिद्धाराज डड्डा, थापायं रामभुति, कपिल भाई, ठाकुरदास बग, हुसैन बग, कान्ता बहन, हरविनायक बहन, सोमभाई, नरेन्द्र भाई, रामाजी इच्छानन्द, सरसा बहन, १३ नामों में से कितो एक नाम पर एक राय होने की बात थी। जिन लोगों ने नाम प्रस्तावित किये थे उनको सभापति ने संघ पर पूनाया और उनसे निवेदन किया कि वे लोग सच में राय करके कितो एक नाम की सर्वसम्मति से चुन दें। जब १०-११ मिनेट तक कोई फैसला नहीं हो पाया तो अध्यक्ष के लिए प्रस्तावित अध्यक्षों की भी इस चर्चा में शामिल होने का निवेदन सभापति ने किया और फिर भी जब कोई निर्णय नहीं हो पाया तो प्रस्तावकों ने प्रस्तावितों के ऊपर निर्णय छोड़ कर संघ से चले गये। सायन १३-२० मिनेट के बाद सभापति ने सभा को बताया कि श्री सिद्धाराज डड्डा के नाम पर सब रायों हुए हैं। सभा ने प्रस्ताव के साथ

इस प्रस्ताव का स्वागत किया। इस चुनाव की प्रक्रिया से कितो को जिवापाल नहीं, कोई विरोध नहीं, सबको समाधान।

श्री सिद्धाराज डड्डा ने सहयोग की मांग करते हुए सब सचिपों के प्रति आभार प्रकट किया और अखण्ड प्रहण किया।

दादा घर्माधिकारी ने श्री जगन्नाथन् के प्रति पिछले तीन वर्षों तक के कार्यों के लिए आभार प्रकट करते हुए उनको सल की माला पहनायी और उन्हें विदाई दी। इसके बाद नये अध्यक्ष का वादा ने पत्रिचय देते हुए सल की माला पहनाकर स्वागत किया।

श्री ठाकुरदास बग को अध्यक्ष ने पुनः महासचिपि नियुक्त किया। उन्हें पिछले तीन वर्षों का अनुभव है इसलिए आशा है कि दोनों मिलकर आन्दोलन को सही दिशा में ले जा सकेंगे।

राजस्थान में शारदाबन्दी सत्याग्रह श्री मोकुल भार्गव का अगुआ कर राजस्थान सरकार के हक को ध्यान में रखते हुए पहले इसी विषय पर चर्चा आरम्भ हुई। चर्चा के बाद इस विषय पर एक निवेदन भी पास हुआ। (इसमें पृष्ठ २३६ पर) सर्वसम्मति से निष्कर्ष हुआ कि अपपुर के इस सत्याग्रह को सहायता के साथ ही दूसरा राष्ट्रीय घोषणा माना जाय। १६ मई से श्री मोकुल भाई का प्रवेश निष्पत्त अन्ततः जयपुर में आरम्भ हुआ। उनके इन अन्ततः के समर्थन और सहानुभूति में लगभग ५०० लोगवेदकों ने १७ मई को २४ घण्टे का उपवास रखा।

एक छोटी-सी खादी धारोयोग प्रदर्शनी भी सम्मेलन के स्थान पर सचिपों की बिसला उद्घाटन थी विचित्रभाषण सचिपों की अध्यक्षता में राज के मुख्यमंत्री की शान्ति जैतसिंह ने किया।

१७ मई को दूसरी बैठक आरम्भ हुई जिसमें आचार्यकुण्ड का विषय लिया

गया। केन्द्रीय आचार्यकुण्ड समिति के सम्बोधक श्री वलीधरजी ने पूरे देश में आचार्यकुण्ड की प्रगति का हवाला देते हुए इस विषय को प्रस्तुत किया। कई लोगों ने इस चर्चा में भाग लिया।

इसके बाद साहित्य-प्रकाशन पर चर्चा हुई। श्री राधाकृष्ण बजाज ने इस विषय को प्रस्तुत किया।

शारदाबन्दी पर चर्चा आरम्भ हुई। सुधोरे डा० सुधीला नायर तथा सरला बहन ने अपना विचार रखा। श्री अक्षयकुमार कशन थोर श्री पूर्णचन्द्र जैन ने भी इस चर्चा में भाग लिया।

तीसरी बैठक में भी शारदाबन्दी पर चर्चा हुई। इसके पश्चात् खादी-धारोयोग का विषय लिया गया। श्री वी० रामचन्द्र ने विषय पेश किया और फिर चर्चा हुई। आभारों पर लगभग इन सभी विषयों की चर्चाओं में यह स्पष्ट शक्तता रहा कि चर्चा करते समय विषय का ध्यान नहीं रहा है। यही कारण है कि दिवस की चर्चा बहुत ही नीरस और धरनाभावली प्रतीत हुई। यकता की इस बात का ध्यान नहीं रहता कि सुबनेवाले उठती बात में सच रखते हैं अपना नहीं, यह मोतता बना जाता है, यहाँ तक कि अध्यक्ष की पट्टी बन जाने पर भी अध्यक्ष के साथ नीच-मोच करके खुद और बोल लेने का आग्रह करता है। खादीधारोयोग की चर्चा में तो जिन सम्मार्जों को वी० रामचन्द्रजी ने पेश किया उस पर किसी ने भी चर्चा नहीं की मानी वे समस्तार्जों उनकी हैं और वे ही हल करने।

तीसरे दिन रामदान-धामस्वराज्य की चर्चा का आरम्भ हुआ। ठाकुरदास बग ने रामदान-धामस्वराज्य की दिशा को स्पष्ट करते हुए सहायता के राष्ट्रीय घोषणा पर जुटने की अचीन भी की। इसके बाद आचार्य रामभुति ने लोक-नाभित विस्तार करने की नयी प्रक्रिया का विस्तार करते हुए एक प्रस्ताव अधिवेशन के सम्मारे रखा, जिसे सर्वो केरा संघ की प्रवक्त समिति ने सर्वसम्मति से स्वीकृत किया था। सच

अधिवेशन ने इस प्रस्ताव को बिना किसी संशोधन के सर्वसम्मति से मंजूर कर लिया। (देखें पृष्ठ ५२२ पर)।

इस विषय की चर्चा में जगदा लोपों ने भाग लिया। सचयण स्वयं स्वर एक ही था। सबसे प्रस्ताव के समर्थन में, प्रस्ताव के शायदीकरण में ही दो-चार बातें कही। लोको ने यह महसूस किया कि हमें जितना कारना चाहिए या उतना हमने किया नहीं। ध्यान की चर्चा से लगा कि अब आन्दोलन में लोक-सचिव को पदाय-से-ज्यादा शारीक करने की प्रक्रिया शुरू होगी और ग्रामस्वराज्य का आन्दोलन तेजस्वी बनेगा। परन्तु यह इस बात पर निर्भर करता है कि आगे पूरे देश में या सहरसा में भी आन्दोलन की क्या गूह-रचना की जाती है।

इस विषय के बाद 'धूमिहदकन्दी' (लोकशहीनिंग) का एक प्रस्ताव रखा गया। (देखें पृष्ठ ५३६ पर) इस प्रस्ताव की भी सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया।

राम की श्री राधाकृष्ण बहाज ने लोकसेवक सचिवालय में कुछ सुधार प्रस्तुत किया जिसे सच की प्रकथ्य समिति ने स्वीकार किया था, परन्तु काफी देर तक चर्चा के बाद भी ये सुधार कई कारणों से स्वीकृत नहीं हो सके। जब सभकन, सचिवालय का प्रश्न उठता है तो उनमें कई बदलने लगे ही जाती हैं।

चौथे दिन १९ मई को आन्तिमेना का विचार रखा गया। श्री नारायण भाई ने आन्तिमेना मण्डल द्वारा दिये गये कार्यों के सम्बन्ध में आन्तिमेना-के नये आचार्य की वंश किया। चर्चा के लिए उन्होंने कुछ प्रश्न भी प्रस्तुत किये।

भाषणा देश, बाकुओ का सारन-सचयन आन्तिमेना के अन्य कार्य, सथातरन-आन्तिमेना के सभकन पर चर्चा हुई। श्री राधा-कृष्ण जो ने विषय के कुछ आन्दोलन के

उपयन् में, भारतीय युवा-आन्दोलन को समझाने की कोशिश की। परन्तु इस विषय पर सम्प्रदायों की पृष्ठभूमि में चर्चा नहीं हुई और अन्त में श्री नारायण भाई की कहना पड़ा कि सब अन्तवाद की भावना से बोलें, नहीं या प्रश्नों के उत्तर की आवश्यकता किसी ने महसूस नहीं की।

श्री श्री जयप्रकाश नारायणजी द्वारा आन्तिमेना मण्डल के अध्यक्ष, नहीं रहेगी इसलिए अध्यक्ष-पद की ही हटा दिया गया। श्री श्री नारायण देसाई के सचो-नवरत में मण्डल का नया गठन हुआ।

इसके बाद सच अध्यक्ष श्री विद्वाराज बड़वा ने सच के नये सदस्यों के नामों की घोषणा की और अपना अध्यापक भाषण भी किया। (पढ़ें आगेले अंक में)

अन्त में दादा ने अधिवेशन की समाप्ति पर समापन भाषण किया। (पूरा भाषण पढ़ें पृष्ठ ५२७ पर) —क० कु०

राजस्थान प्रादेशिक सर्वोदय सम्मेलन सम्पन्न

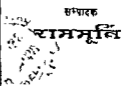
जयपुर ७ मई। दो दिवसीय सर्वोदय सम्मेलन यहाँ राजस्थान छापी प्रांतीयोंग सस्था सच के प्रायण में समाप्त हुआ।

सम्मेलन का समारोह करते हुए श्री गोकुलभाई ने कहा कि आज हमारे सामने चुनौती उपस्थित है। आपने कहा कि राजस्थान में नारायणजी आन्दोलन की सफलता से देश के अन्य प्रदेशों को भी प्रेरणा मिलेगी।

एक जनघर पर डा० सुषोभा तायर ने गांधी के देश में नेतिवता पर आस्थापर जीवन-मृत्यो पर जोर दिया।

सम्मेलन ने अन्त में प्रदेश की सम्पूर्ण जनता को इसमें एक तरह के सहयोग के लिए आह्वान किया है।

धन-व्ययहार का पता :
सर्व सेवा संघ, पत्रिका-विभाग
राजघाट, वाराणसी-१
सार : सर्वसेवा फोन : ६४२११



★

इस अंक में

पुराने अध्यक्ष, नये अध्यक्ष	—सम्पादकीय	५२३	
राज्य मनुष्य-के निर्माण से ही	अक्षित समाज-रचना उम्भन	गुणी सरला बहन—	५२४
राज्याकीर्ण कुल विद्याविर्वा	—श्री दादा धर्मसिंहजी	५२७	
शेड माह की परीक्षा में पाठ	होना ही है	—विनीता	५३०
आत्म-समर्पणकारी सचिवों	का क्या हुआ ?	—श्री० श्री गुरतरण	५३९
गांधी रचनात्मक संघा	सम्मेलन	—	५४१
संघ अधिवेशन के चार दिन	—क० कु०	५४३	
अन्य स्तम्भ			
संघ अधिवेशन का प्रस्ताव, सम्मेलन	की शर्तियाँ, मंत्री का निवेदन, सच	के निवेदन	

वारिक शुक्र : १० रु० (सफेद कागज : १२ रु०, एक प्रति २५ पैसे), विदेश में २५ रु० या इ० (शक्तिंग वा ४ अक्षर)। एक प्रक का मूल्य ३० पैसे। अधोप्यवर्त चट्ट द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं मनोहर प्रेस, वाराणसी में मुद्रित

सर्वोदय

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

भूदान-यज्ञ

कम्बल के धेन को घुसू के
 खाने से कौन बचा सकता था ?
 सर्वोदय विचारधारा-कोर दृष्टिकोण
 ने भयना धार किया : जहाँ कानून
 पुलिस न पहुँच पाये वहाँ सर्वोदय
 के मोर्चा-बाहे सार्वजनिक पहुँचे :
 इसका प्रवेश कौनों के सवाँ और
 दिनों में हुआ : डरोजो को बहा
 धारचर्चा हुआ कि कोई उनके पास
 रिता मन्त्र कैसे लाया । वे यह
 देगार बल प्रभावित हुए कि कोई
 उन्हें मरवाना चाहता है और उनके
 इलाक़ा भी ब्यस्तार करना चाहता है ।
 और मन्त्रे बंदी कोत ही इस
 विचारक से था कि एक कनेड भी
 एक सामान्य कारगरिक की तरह
 गति-मन्त्र ही बनता है । दलों के
 सामने यह नवी कृती ही थी जिसका
 एते उन्हें बंदी सामना गरी हुआ
 था । कौनों का उत्तर भी क्लेशवा
 था । उन्होंने काम-मन्त्रों का
 निर्माण कर बिना यह निर्माण सेवका
 में तबे कम गेरे के अतिरिक्त और
 हुए भी न था ।



उत्तर में कनेड मन्त्रों के उत्तर यह कती हुआ
 भी ब्यस्तारकों का ब्यस्तारण

हमारा नारायण

नेहरू ने भारत की खोज की और गांधी ने भारत के अन्तितम व्यक्ति की, जिसे उन्होंने 'परिवर्तनारायण' कहा। १ जनवरी १९५१ को देश में जिस पंचवर्षीय योजना की शुरुआत हुई वह भारत के अन्तितम व्यक्ति की नहीं थी। गांधी ने कहा था कि भारत का विकास अन्तितम व्यक्ति से शुरू हो, यही उसका मापदण्ड हो, वही उसका साम्य और साधन बने। नेहरू ने सोचा कि अगर देश की दोस्त दोस्त बढ़ेंगे तो उनकर कुछ-न-कुछ दोस्त अन्तितम व्यक्ति के पास भी पहुँचेंगे।

दूसमें कोई शक नहीं कि जिन्हें कई वर्षों में देश की कुल दोस्त बढ़ी है, इसलिए गणित के हिसाब से भोखत आमदनी भी बढ़ी है। लेकिन अन्तितम व्यक्ति के पास जितनी पहुँची है? क्या कोई ऐसी बात हुई है जिससे उसे आशा हुई हो कि उसका भी भाग बढ़ल सकता है?

राज की रचना में शासन-युक्त और जीविका के साधन, दोनो विशिष्ट व्यक्ति के हाथों में है। अब यह विशिष्ट व्यक्ति सामान्य व्यक्ति (कामन मैन) की भाषा बोलने लगा है। उसके गरीबी हटाओ के नारे में संकेत 'कामन मैन' का है, न कि अन्तितम व्यक्ति (साहस मैन) का। सामान्य व्यक्ति यह है जिसके पास कुछ-न-कुछ साधन हैं। उसका जीवन कठिन है, उसे भूल से हनेसा मुक्ति नहीं है, वह महान्न के बर्तन लेकर ही गुजर करता है और सामान के रस-परिचायन घूरा करता है। लेकिन वह अनाथ और अक्षय नहीं है। इसके विपरीत अन्तितम व्यक्ति यह है जो निराधार है। उसके पास एक ही साधन है—उसकी, उसकी पत्नी और बच्चों की मेहनत जिसे वह बाजार में सरीसर्पार के भाव से बेचता है, और बेचकर अपना वोट पाता है। भूमिहीन मजदूर, बेटाई-घर, भूमि के दो-चार डबड़े रखनेवाला छोटा खेतियार, परदेस दस्तकार आदि इसी कोटि में आते हैं। आदिवासी भूमिहीन भी नहीं है, किन्तु महान्नने ने उसे अन्तितमहीन कर रखा है। वे उसके लोच का पूरा अन्न बर्तन में से लेते हैं। कई लोग रिचियों को भी अन्तितम व्यक्ति की ही कोटि में गिनते हैं। कई दृष्टियों से वे उस कोटि में हैं भी।

जो अन्तितम व्यक्ति हैं वे तो में चालीस से कम नहीं है। बिहार के कई जिलों में दसका प्रतिशत ६० से ८० या दसवें भी अधिक है। कई गाँव ऐसे हैं जिनमें भूमिहीन ९०-९५ प्रतिशत तक हैं। इतनीस वर्षों में देश में, हमारी सरकार और उसकी पंचवर्षीय योजना ने, अपने दूतने नागरिकों के लिए क्या किया है?

दस बरस भूमि पर संश्लिप्त लगान को हटा है। अगर सही शीलिय लग जाय; और जमीन मिलल भी आये—जो सम्भव नहीं भी दिखाई देता तो जिसे मिलेगी? छोटे खेतियार को जिसके पास कुछ बोड़ी भूमि है, या पूरे भूमिहीन को? अर्थशास्त्री कहेंगे कि भूमिहीन को बोधी भूमि देने से अनागिक जोंन बढेंगे, गोवा पहले से जितनी जोंन हैं वे सब आधिक हैं।

वाहे बोधी शीलिय लगानो जाय हर भूमिहीन को भूमि नहीं मिल सकती, यह हर एक जानता है। सरकार कहती है कि ऐसे लोगों को भूमि-मुधार, मड़क, मरान बनाने, और गंद लगाने आदि का काम दिया जा सकता है, जिससे मजदूरी मिल सकती है। अच्छा है इस तरह भी कुछ राहत मिले, लेकिन राहत फिर भी राहत है! राहत ईमान की रोटी और इज्जत की दिव्यो का उपाय नहीं है। शीलिय गांधीजी ने गृह और सामोयोगों की बात कही थी। वह घर-घर का औद्योगीकरण चाहते थे। गृह-वर्धिता के लिए जमीन का टुकड़ा हो, घर और गाँव में उद्योग के साधन हों, तो कोई आदमी मजदूरी करने के लिए बिना नहीं होगा। सब छोटी खेतियारों के घर-घर सहकार से होगी, मजदूरों के शोषण से नहीं। बिजली की बंदीलन उद्योगों की व्यापक योजना गाँव-गाँव में लागू की जा सकती है, लेकिन सरकार को ऐसी योजना पसन्द नहीं है। वह यह नहीं सोचती कि अगर उद्योग न हो तो घर-घर में साधन कैसे पहुँचेंगे? सरकार मजदूरों के लिए मजदूरी से ज्यादा कुछ सोच नहीं पाती। वह यह नहीं सोच पाती कि अगर भूमिहीनों की संख्या बढ़ेगी तो मजदूर अधिक होते जायेंगे, और मजदूरी कम होवी जायगी। बिहार के बोधी-नहर-शोच में हरित-क्रान्ति के होते हुए भी मजदूरी घट रही है।

हम भूमि, शिक्षा, प्रशासन, और न्याय में से किसी एक की भी व्यवस्था बढ़ से नहीं बसतना चाहते। सामान परिवर्तन की बात न सरकार करती है न कोई राजनीतिक दल। हम ऐसी योजनाएं बना रहे हैं जिनसे समाज के साधन और विकास के अवसर चाहे हाथों में केन्द्रित होते जाते जा रहे हैं। राज के बढ़े मातृक ने दान्त की आँस में दूत शोचकर जमीन का बँटवारा कर रखा है। दान्त में उसके पास धन बोधा जमीन (भूमि) है, लेकिन ४-५ घी बोने भूमि का अन्न उसके घर में आता है। उसके दर्नो मजदूर और बेटाईघर है। वह उन्हें अपने ऊपर आधित रखकर दूतकी मेहनत से मुनाफ़ा बमाला है। वह अमीन के छहारे मजदूर से मुक्त हो जाने को तैयार है, किन्तु वह एक बात के लिए तैयार नहीं है कि मजदूर की हैमिगत बरणे।

यह बढ़ा भूमि का मातृक (चहर का रोठ) बनाए से नहीं

हस्ता, बल्य से गहरी करता। शक्ति और सत्ता के स्रोतों को अपनी मुद्रों में बँधे रखा जाता है, यह रहस्य उसने जान लिया है। वह पचावत्त वा मुखिया होगा है, एम० एल० ए० होगा है, एम० पी० होना है, स्कूल फर्मिटी का मेम्बर तथा कोऑपरेटिव और बैंक का डायरेक्टर होगा है, पुलिस से दोस्ती रखता है, और अगर किसी ने जरा भी सिर उठाया तो उसे मुफ्त में फँसा देता है। वह अपनी पार्टी का भोजन बना है, राजनीति के कर्मियों तक अपनी पहुँच है। अधिकांशियों पर उमका दबदबा है, चुनाव में वह वैसे और इन्टे का पूरा इस्तेमाल करता है, और जब चाहता है 'दूध' भी 'केचर' कर लेता है। शक्ति को अपने हाथों में बनाये रखने के लिए वह कुछ भी करने को उत्साह हो गया है।

हम अन्तिम व्यक्ति के पास जाँचिका का अन्त साधन न हो, जो बोट सुरंगों की बूपा से ही दे सकता हो, जो जिंदा से बलि हो और जो समाज में तिरस्कृत और अप्रतिष्ठित हो, जिसे शराब पीनाकर सरकार करोड़ों की वाप करनी हो, उस समाज अन्तिम व्यक्ति की नागरिकता का क्या मूल्य है ?

शास्त्र का 'लोकतन्त्र' है तो अतिष्ठ व्यक्ति के हाथों में, लेकिन गये सग रहे हैं सामान्य व्यक्ति के। अन्तिम व्यक्ति की वाज करता विरोधको की दृष्टि में अन्त्यावहारिक और नेताओं की दृष्टि में 'पागलपन' है। लेकिन क्रांति की दृष्टि में ? शारीरी ने अन्तिम व्यक्ति को 'दरिद्रनारायण' कहा था। दूसरे कुछ भी बड़े लेकिन कोई क्रांतिकारी अपने नारायण को बँधे छोड़ेंगे ? हमारा नारायण बड़ी अन्तिम व्यक्ति है।

बागी नहीं लेकिन घमावत चाहिए

पत्रक के सर्वोपर्य सम्मेलन में किसी ने बागी भी लोभन से पूछा - "आप दादा क्यों डालने थे ?" उन्होंने कहा - "हम दादा डालने ही नहीं थे, हम तो धनियाँ से कहते थे कि अपने घूँस की नमाई कर एक हिंसा हल दे दो, तुम्हारा भी काम चलता रहे, और हमारा भी सच निरक्षता रहे। हम डाकू नहीं थे, बागी थे।"

चमत्क घाटी के जिन लगभग चार सौ 'बागियों' ने आत्म-समर्पण किया है वे अपने को चोर या डाकू नहीं मानते थे। वहाँ की चन्ना की जट बाली ही माननी थी, चोर डाकू-या हत्याकार नहीं। ऐसा नहीं है कि कानून के अनुसार उन्होंने डाके नहीं बने, या हथियार नहीं थे, फिर भी धानी और दूसरों की नजर में वे बागी ही थे, अपराधी नहीं। इसका कारण यह था कि जिस मूल प्रेरणा के प्रभाव में उन्होंने घर और समाज से निकलकर घाटियों और जंगलों को शरण ली थी वह क्षोभ की थी, बदला लेने की थी—उन लोगों से बदला लेने की जिन्होंने उनके साथ प्यारनी की थी और उन्हें दाना परेशान किया था कि वे धन के साथ रह नहीं सके। वे समाज की अन्याय और पुलिस के दमन के विरुद्ध बगावत करके निरत गये थे। और जब एक बार वे जंगल में

पहुँच गये, और पुलिस ने उनकी जिंदा या मुरदा विरफाती पर दनाम बोध दिया तो वे पक्के हो गये, और अपने अस्मित्व को कायम रखने तथा जुबन का बदला लेने के लिए उन्हें जो कुछ करना पड़ा उन्होंने निडर होकर किया। इन बागियों के जीवन की बाल्यविकृता अब देश के सामने आ रही है, और लोग समझ रहे हैं कि किस तरह मनुष्य अन्याय और दमन का शिकार होकर सामान्य जीवन छोड़ने और 'अपराधी' का जीवन स्वीकार करने पर विवक्त हो जाता है। इस विषयता की जिम्मेदारी किस पर है ? स्वयं मनुष्य पर या समाज और सरकार पर ?

श्री मोहनम से दूसरा प्रश्न पूछा गया - "आपकी हथियार कहाँ से मिलने थे ?" उन्होंने उत्तर दिया : "जिनके पास हथियार होते हैं वे ही हथियार देते थे।" हथियार पुलिस से मिलते थे, खेना के कारखानों और तस्कृत ध्वारियों से मिलते थे। तभी तो इन बागियों के घाटे मजदगार पुलिस के अधिकारी, धारारी, नेता और धनी लोग जिनकी बागियों से सौंठ-सौंठ थी—आत्म-समर्पण से नाराज हैं और शांति के काम में तरह-तरह की बाधाएँ डाल रहे हैं।

कुछ लोग यह सोचते हैं कि वे बागी पुलिस को कार्रवायों से घबहा गये थे, या लूटपाट कर उन्होंने इतनी दोनत एकदुहा कर ली थी कि पैर भर गया था, इसलिए आत्म-समर्पण कर दिया, उनका शब्द रूप से हृदय-निरवर्तन नहीं हुआ। बात यह है कि उनका हृदय मनुष्य का ही था, अपराधी का था ही नहीं। अपराधी उन्हें बनाया गया, माना गया था। जब विनोबा और जयप्रकाश जैसे लोगों ने उन्हें फिर मनुष्य मानने का साहस दिखाया, तो उनकी गयो हुई मनुष्यता वापस आ गयी। वे ऊँची मनुष्यता के दर्जा से ऊँचे उठ गये, और अपने क्षोभ गया बदले की भावना को भुन गये। परिस्थिति को उल्टेबाओं से मुक्त होकर वे फिर सहज सामान्य-मनुष्य बन गये और हृदय-बंधन की प्रकृति से गुजर कर सहज सामान्य मनुष्यों के उभरी समाज में लौट आये जिससे उनका हृदय बँधा हुआ था, लेकिन जिससे किसी तात्कालिक परिस्थिति ने उन्हें काट कर अबा कर दिया था। मनुष्य के छहट हृदय को वापस लाना हृदय-निरवर्तन नहीं तो और क्या है ? एकबार हम अपने हृदय का मूल निशान भर दूसरे मनुष्य को मनुष्य मानने का साहस करें तो मनुष्यता का डार लुन जाता है। लेकिन कठिनाई यह है कि हम अपने और दूसरे मनुष्य के बीच दुराव और अविश्वास को तरह-तरह की धोबालें छड़ी कर लेते हैं, और एक-दूसरे से अलग हो जाते हैं। मनुष्य मनुष्य है, को 'अपराधी' है—नहीं भी मनुष्य है, यह सीख माथीजी ने हमें दी। विनोबा और जयप्रकाश से अहिंसा के इस शोचल एपण को पाकर बागियों का विश्वास क्या और उन्होंने अपनी मनुष्यता पहचानी। संदिन हर्ष चिन्ता नहीं होता। हिंसा से परत हत्याका मातस अहिंसा को सामान्य किया जो भी समझ नहीं पाता और नाहक बनाया से अपने को संकुचित कर लेता है।

किसान और जमीन के मसले पर ध्यान दीजिए

दादा धर्माधिकारी का सर्वोदय सम्मेलन में समापन भाषण

पत्तों से मैं बहुत ध्यान से सारे भाषण सुनना रहा हूँ। एक बात, एक उदाहरण मेरे मन में लगातार उठना रहा है कि यहाँ जो शायद उसने यही कहा कि यह क्यों नहीं करते, यह करो, यह क्यों नहीं करते, यह करो, यह क्यों नहीं करते, यह करो, तो कुछ ऐसा मानस हुआ कि यह कहाँ से की जमात काम की लोभ में माला में बँधी हुई है। जो कोई आता है वह अपना मुँह उसने बजाता है। तो यह किसान भी है और मरीज भी है, ऐसा कुछ स्थान हुआ।

मैं सोचने लगा कि क्रांति के बागी विनोबा के ही पास क्यों मान्ये? क्या इस देश में शायद्यों की कमी है? क्या इस देश में आध्यात्मिक सुरण है ही नहीं? विनोबा से कही पृथिवी हुए कही बड़े आध्यात्मिक सुरण हैं। फिर भी यहाँ जितने लोग मान्ये, वे इन देशर, निरक्षरों से ही कहते रहे कि यह क्यों नहीं करते हो, वह क्यों नहीं करते हो। पर वे साध-साध

यह भी कहते रहे कि तुम्हारा कोई अक्षर नहीं, तुम निरक्षर हो, तुम्हारा कोई दर्शन नहीं। तो भाई, मान्ये क्यों ही और कहते क्यों ही? निरक्षरों को कहने से कोई फायदा? यह क्या आप मुझे से बात कर रहे थे? यहाँ से बागी विनोबा के ही पास मान्ये और गाँव की बचानेवालों से लेकर शास्त्र-बन्धीवालों तक सभी लोगों ने आप से कहा कि आप यह नहीं करते हैं, यह आप का गुनाह है, यह आप का कमूर है, यह आपकी कमी है।

इसकी वजह एक ही है कि जो इन जाकुओं की तलवारों के पीछे ताकत है, वह ताकत जिस अक्षर से जाती है, उस अक्षर के उपमानेवालों की तरफ विनोबा ने तबज्जु दी (ध्यान दिया)। जिसके हाथ में शंखार है और लज्जत उपजाने के बीजार है, वह सबसे निचला खेतिज हलियादों इनसान है। उसके वरुँ न इन मान्यियों की वन्दूक में दम होना, न पुतिस की सगीन में दम होना, और न यह सज्ज और न तलवार तथा विनोबावाले

मान्ये पाते। वह विनोबा है मान्यदिक जीवन की, जिसकी तरफ हमारा ध्यान विनोबा ने दिनाया और इसलिए सबका ध्यान विनोबा की तरफ गया।

इसलिए आप लोगों की सेवा में एक ही दरसात है कि वह जो हमारा मन पश्य है, जो मध्य-प्रसाह है, इनसान और जमीन के ताल्लुकातों को बदलने का, इनसान और इनसान के ताल्लुकातों को बदलने का, उसकी तरफ से अपना ध्यान जरा भी न हटने दीजिए। इन निरक्षर ना मज्जा और जमीन का गलना, इनकी ओर से ध्यान न हटने दीजिए।

दो मोर्चों तो यो ही बायम हो गये हैं। एक जयपुर का है और दूसरा यह अक्षर पाटी का। एहसास का पश्ये से है ही। अक्षर भाष साहने है कि आपकी समन न विनोबा और अक्षर भाष साहने है कि आपकी कुछ भाव रहे और कुछ अक्षर रहे, तो मेह-मान्यो कीजिए और एह देश में जया मोर्च सृष्टे न शोके। इतनी ही प्रायना है।

सबको प्रणयार, सबको नमस्कार।
नकोदर (पंजाब)
२२ मई १९७२

→ इस मामले में भारत की एक बिधिषता है। शुरु से आर तक देश के हर भाग में ऐसे सज्ज और सुधारक हुए हैं जिन्होंने शोच-मानस में अहिंसा के संस्कार का प्रवेक कराया है। यह कम कौतुक की बात नहीं है कि आर से कई हजार वर्ष पहले महावीर और बुद्ध ने अहिंसा को जीवन का बुनियादी मूय पोषित किया। और अजोक ने तो सम्राट होने हुए भी शेरि, पोष की जगह धर्म पोष किया। महावीर, बुद्ध और अजोक सभी शक्ति थे, और शक्त ही उनका शक्ति-धर्म था। उन्होंने उँवो मानवता के समस शक्त का परिस्वयण किया, समान से मिला हुआ अपना शक्ति-धर्म छोड़ा। गांधीजी भारतीय लोक-हृदय की एह अक्षर-शक्त को पहचानते थे, इसीलिए भारत के हृदय ने गांधी को श्वीकार किया। या शायद अक्षरता देश में भारत के धर्म-बुद्ध के पीछे उसको एह परम्परा का भी अक्षर-वस्त प्रमाण था।

का प्रमाण है। वह प्रमाण है इस बात का कि मनुष्य की मूलभूत मनुष्यता जगदी जा सकती है। इससे आगे बढ़कर वह इस बात की चेतावनी भी है कि हमारी सामाजिक या अन्य समस्याएँ प्रशासन और राजनीति के सतही न्यायो से नहीं हल हो सकती, अगर वे हल होंगी तो उन उपायों से जिनमें सामान्य मनुष्यों के सामान्य दुष्ण पर भरोसा होना। भारत के हृदय को अहिंसा छु सकती है। अहिंसा से ही उसकी अक्षरता जय सकती है। अहिंसा शक्त को शक्ति नहीं है, सामान की शक्ति है, मान्यिक का धर्म है।

हमें पुनी है कि हमारे कुछ बायो भाई अपने बाँके के एह अक्षर-मान्य को समजते हैं। वे मानते हैं कि अब वे 'बागी' तो नहीं रहे, किन्तु उनकी अक्षरता कायम रहनी चाहिए—अक्षरता उन अक्षरता से जो मनुष्य को मनुष्यता से गिराती है। हमें शयोना है कि हमारे भाई अहिंसा के शिवाही बनेंगे, और अपनी शक्ति अहिंसा की शक्तिदारी शक्ति संशक्ति करने में लगेगे। ●

मान्यियों का प्रायस्चिन और शक्त-स्वयण दक्षतानि की विस्तारता

हृदय-परिवर्तन का चमत्कार

राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के हृदयों में पुनर्जागृता सामाजिक परिवर्तन का काम करनेवालों पर नजर नहीं जाती। अन्तर्राष्ट्रीय पर विद्यार्थी आनेवालों सुरंगों, गणों पर बरपाये जानेवाले कम नष्ट होनेवाली सड़कें, सबाह होनेवाले पुन, पहिलार्यों की एजन्ड से खेल और बच्चों का खल-खलारा संहार को मुख्य मुचलाए बनती है। ऐसे ही, बड़ी धरितियों के दूज जब पोरिण या माग्नी में मिलते हैं तो सारे संसार को जलें उन पर लगी होती हैं, यद्यपि उनकी जेमें में अणुबम और आई० बी० एम० होते हैं। लेकिन जब माग्नि सुदर किम द्वारा मनुष्यों के सगठन की कोशिश होती है और मानव अधिहार के लिए सफल होता है, या जब जलप्रकाश मर्यापण की तरह का सर्वोपय नार्णवता बनने सापिचों की टीम चम्बल घाटी में भेजना है ताकि वे बर्तों की हिंसा और घूट के रास्ते से हटा सकें तो उस पर किसी का ध्यान नहीं जाता। इसार की नीद उस समय टूटती है जब किन को बोली मार दी जाती है या जब बर्तों संकटों को सहवा में सार छोड़कर अपने-आप को कानून के हवाले कर देते हैं। परन्तु यह नीद देर तक टूटी नहीं रहती कुछ ही दिनों बाद एहबार फिर सामाजिक क्रांति-कारियों का मोन-सत्ता की राजनीति में दूज जाता है।

वे लोग जो घटना को खुले दिन व विभाग से देखते हैं उन्हें यह भाव्य करने में ब्रा भी संकोच नहीं होता कि माघ प्रदेश में जो कुछ हुआ है वह एक चमत्कार से कम नहीं है। कम-से-कम गिन्ने बीच क्यों से माघ प्रदेश की पुनिस उत्तर प्रदेश और पंजाब की पुनिस को मध्य से चम्बल घाटी में बर्तों की उनके पार्श्व से निकलने की कोशिश कर रही थी। वे बर्तों केवल सरकार का विशेष करने से ही सकल नहीं रहे थे बल्कि उन्होंने अपनी कार्रवायों का

क्षेत्र और अपनी क्षमता भी बढ़ा ली थी। सोमाय की बात है कि उन्होंने अपना कोई राजनीतिक संघा नहीं बनाया था और न ही अपना कोई पोषण-नत्र प्रकाशित किया था।

अगर उनके कुछ दिमागवालों ने ऐसा सोचा होता तो ठीक भारत के हृदय में एक बहुत बड़ी राजनीतिक चुनौती पैदा हो गयी होती। हमारे कुछ पड़ोसी देश जो क्रांति के निर्वाण के लिए सदा इच्छुक रहते हैं उन्हें मुक्ति सेना को उगाधि भी दे सकते थे। उन बर्तों में मोरिन्सा सेना की सभी विशेषताएँ भी दूज थी—यैवे साहसी नेतृत्व, स्वाधीय वीरों से सहा। सभके, क्षेत्र की जानकारी, शस्त्र और गोले-संस्तर का न खतम होनेवाला भण्डार इत्यादि।

ऐसा मान्य होता था कि सरकारी कोशिश से बर्तों का सत्रा कम नहीं होगा, यद्यपि वे समय-समय पर दबा बरकर दिये जाते थे। इस प्रकार राज्य सरकार को साकारी और उसकी परिस्थिति स्पष्ट थी। बर्तों की परिस्थिति भी विचित्र हो गयी थी। उनके सामने इस अवागमिक पेशे से भाग निरचने का कोई रास्ता नहीं रह गया था, बाहे निकल भागने की उनकी क्षमता ही इच्छा क्यों न हो। पिछले १५ सालों में, एक मोर भय और रक्षता, दूसरी ओर बदला और रोछा करने की भावना का न कलत होनेवाला मिलदिलत चम्बल घाटी की बहानी है, जब कि देश के हमारे भागों में विचार के काम हो रहे थे।

चम्बल के क्षेत्र को मरुद के सर्तों से बोन बचा सकता था? सर्वोपय विचार-धारा और दृष्टिकोण ने अपना काम किया। जहाँ सारण पुनिस न पहुँच सकी, वहाँ सर्वोपय के सीने-सादे कार्य-कर्ता पहुँचे। उनका प्रवेश बर्तों के गर्तों और दिनों में हुआ। बर्तों को बढ़ा क्षमता हुआ कि कोई उनके पास बिना सारन रँते आया। और भी वे यह

देखकर प्रमगिन हुए कि कोई उन्हें समझना चाहता है और उनके इनसारी व्यवहार करना चाहता है। और सबसे बड़ी बात तो इस विचारण में थी कि एक बर्त भी एक सामाज्य नागरिक की तरह शांतिमय हो सकता है। बर्तों के सामने यह नयी चुनौती थी जिनका पहले उन्हें कभी सामना नहीं हुआ था। बर्तों का उत्तर भी बनोसा था। उन्होंने सात्म-ममरण का निर्णय कर लिया। यह निर्णय स्वेच्छा से नये जन्म लेने के आर्तिव्य और कुछ भी न था।

आमगौर पर यह बात कही जाती है कि ऐसी घटना केवल भारत में ही हो सकती है। परन्तु मोरे ही से लोग आगे बढ़कर यह जानना चाहते थे कि यह क्यों हुआ? उत्तर एक ही था कि कभी हम लोगों के बीच एक ऐसा आदमी था जिसे ससार बायीं के नाम से जानता था। उसने सामाजिक परिवर्तन को अहिंसा और हृदय-परिवर्तन की भाषा में सोचा, प्रस्तुत किया। चायद उसी में निवृत्त यह हिमजत थी कि परम्परागत पद्धतियों से अलग सोच सके, कुछ कर सके, जब कि हम दूसरे लोग मानव-वारी, समाजवादी, लोकसर्वतवादी परिचय के बताये हुए सचको बोहरा रहे थे। गांधी ने अपने आप पर सोचने का उत्तरदायित्व लिया। उन्होंने अपने दुश्मनों को किसी वर्ग का प्रतिनिधि नहीं माना, उन्हें बुनियादी तीर पर झतान माना। अवाज उनके पास कोई बना बनाया उत्तर न था। परन्तु एक विशेष परिस्थिति में उनकी भी प्रतिक्रिया होती थी उनमें वे बुनियादी मानवीय मूल्यों को अधिक-से अधिक ध्यान में रखते थे। आर्य आक्रमण और वर्तविक राजनीति के युग में यह आदरर जितनी सुकी होती है कि गांधीवारी परम्परा अब तक हमारे बीच बोलिच है—म्मुयिम के किन्ही कलम के रूप में नहीं, बल्कि ऐसी क्षमि के रूप में जो पापर-से-पापर जैसे दिनों में भी परिवर्तन ला सकती है।

—अनता, अयेजी का सम्पादकीय

नयी शिक्षा में आमूल परिवर्तन की माँग

अ० भा० नयी तालीम सम्मेलन का निवेदन

[साधारण, गुजरात में मुसलमानों के राजस्वबल और नयी तालीम समिति के अध्यक्ष श्री भोमनरायण की अध्यक्षता में ३-४ जून को प्रवृत्त भारत नयी तालीम सम्मेलन सम्पन्न हुआ । सम्मेलन का निवेदन हम यहाँ दे रहे हैं । सं०]

साधारण (गुजरात) में ३-४ जून '७२ को आयोजित अ० भा० नयी तालीम सम्मेलन में भारतीय विचार-विमर्श के बाद तीव्रतापूर्वक यह अनुभव किया कि भारत की स्वतन्त्रता की रक्षण-जयन्ती वर्ष की शिक्षा में आमूल क्रांति का वर्ष मानकर सारे देश में पूर्ण-प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालय तक की सभी शिक्षा-प्रणाली को इस तरह बदला जाय जिससे देश के सोश-जीवन में शिक्षा अपने वास्तविक रूप में विकसित और प्रगतिष्ठ हो सके तथा उसमें द्विविधारी शिक्षा के समस्त सर्वमान्य तत्वों का भलो-सिद्धि समावेश किया जा सके । शिक्षा का समाजवादी लोकात्मिक राष्ट्रीय जीवन की आवश्यकताओं और आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने के लिए उस परिवर्तन अनिवार्य है । इस समय देश में पूर्ण-प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालय तक की शिक्षा का जो रूप प्रचलित है उसमें राष्ट्रीय शिक्षा के उन तत्वों का भारी अभाव है, जो शिक्षकों और विद्यार्थियों के चरित्र और जीवन को सही दिशा और दृष्टि देने हैं ।

इस सम्मेलन की यह निश्चय राय है कि देश में पूर्ण प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालय तक की सभी शिक्षा-प्रणालियों में द्विविधारी शिक्षा के बीच विशेष रूप में सुधार लाने का समावेश आवश्यक है कि याथा: (१) शिक्षा का माध्यम क्रांति से अलग तब काल की अपनी मनुष्यवादी अथवा धार्मिक भाषा हो, (२) शिक्षा विज्ञान-विधि-समाज-सामाजिक-सामाजिक-सामाजिक के माध्यम से ही जाय, (३) शिक्षा के द्वारा मानविकों में सर्वप्रथम समता की भावना की विव-

सित और पुष्ट किया जाय, (४) शिक्षा को समाज-निर्माण और समाज-सेवा की प्रवृत्तियों के साथ जोड़ा जाय । सम्मेलन का मत यह दृढ़ विश्वास है कि शिक्षा के क्षेत्र में सहरी और देशी शिक्षा के बीच कोई भेद न रखा जाय । मूलभूत तत्वों का व्यापक सर्वत्र समान रूप से रहे । उदात्त-उद्योगों के प्रसार में भारतीयता के अनुसार गाँवों या सहरी में जो अन्तर रहना पड़े हो, रखा जाय । शिक्षा के क्षेत्र में ऐसी किन्हीं व्यवस्था को प्रथम न किया जाय जिससे समाज में वर्ग-भेद और भ्रष्ट-भेद को प्रोत्साहन मिले । देश में शिक्षा की समाज-निर प्रणालियों का चलाना जाय और सोश-शिक्षा की एक ही सामान्य विचार-प्रणाली का सर्वत्र प्रतिपादित हो के अपनाया जाय ।

यह सम्मेलन भारत-मानव से और प्राणी की तरदारों से अनुरोध करता है कि वे अपने यहाँ द्विविधारी शिक्षा को अपने मूल्य-रूप में विकसित करने का जोड़ा उद्योग और ऐसा कोई प्रणाली बनाने में सहरी में विशेष द्विविधारी शिक्षा के क्षेत्र में हुई प्रगति में बाधा पहुँचे ।

सम्मेलन चाहता है कि शिक्षा के प्रसारण पर शिक्षा का माध्यम मान्य भाषा ही हो । प्राचीन काल में या उसके बाद एक और वैदिक काल गिलगि जाय और जाने की पढ़ाई में विद्या-निर के अनुसार देश-विदेश की किसी भी एक भाषा का शिक्षा की प्रवृत्त व्यवस्था सर्वत्र की जाय । सम्मेलन यह भी चाहता है कि भारतीय संस्थाओं के लिए जो परीक्षाएँ ली जाती हैं, वे सब मनुष्यवादी में ही की जाय और जो लोग इस प्रकार राष्ट्रीय सेवा के लिए जुने

जायें, उनको एक निश्चय यद्यपि नै द्विविधारी अथवा अग्र-शिक्षा की समुचित व्यवस्था की जाय ।

सम्मेलन का यह दृढ़ विश्वास है कि शिक्षा के क्षेत्र में प्रमाण-पत्र का नोटरी से सम्बन्ध-विच्छेद होना ही चाहिए । नोटरी या रोजगार देनेवाला अपनी परीक्षा स्वयं से और इस परीक्षा में बैठने के लिए किसी दूसरी परीक्षा के प्रमाण-पत्र को आवश्यकता न हो । इस प्रकार के सम्बन्ध-विच्छेद से वे बहुत से भ्रष्टाचार दूर हो सकेंगे, जो आश्चर्य सामान्य ही रहे हैं । सम्मेलन चाहता है कि केवल क्रांति परीक्षाओं के स्थान पर छात्रों के ज्ञानों का मातृ-मूल्यांकन हो और प्रत्येक स्तर की शिक्षा समाप्त करने के बाद जो प्रमाण-पत्र दिये जायें वे वर्ग-निरासक हो और उनमें उत्तम-प्रवृत्तियों का अभाव नया या उत्प्रेषण न किया जाय ।

सम्मेलन यह आवश्यक समझता है कि दलील अथवा व्याख्यान की पढ़ाई के बाद निरिच्छाओं के शिक्षण की ऐसी व्यवस्था की जाय, जिससे लाभ निरिच्छाओं को प्रोत्साहित करे और उनके चरित्र-विकास में पूर्ण-विकास की दिशा में लगे रहें ।

सम्मेलन को अपनी यह समझना है कि इस देश में शिक्षा का विकास नही हो पाया । राष्ट्रीय शिक्षा के मूलभूत सिद्धांतों को विचार कर लेने के बाद शिक्षा की व्यवस्था और संसाधन के बारे में मूल मानव के हाम से निरालाकर राष्ट्रीय और प्राणीय स्तर पर सभी स्तरों पर शिक्षा-विचारों के हामों में लगे जाने चाहिए, जिससे शिक्षा के क्षेत्र में सरकारी अथवा अर्ध-सरकारी नियंत्रण कम-से-कम रह जाय । इन प्रवृत्तियों में शिक्षा-विद्युत् के जहाँ द्विविधारी शिक्षा की व्यवस्थाओं पर विचार किया हो और शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षा का माध्यम मनुष्यवादी हो । वे मनुष्यवादी नियंत्रण कर के समाज-सामाजिक और मनुष्यवादी हो ही चाहिए ।

(दैनिक पृष्ठ ५०३ पर)

क्रान्ति के अग्रिम मोर्चे पर एकजुट होकर लगने की अपील—हिन्दू स्वराज्य को ग्रामस्वराज्य में विकसित करने का संकल्प

२० वें सर्वोदय समाज सम्मेलन का निवेदन

मुद्दानक देव की घरटी पत्राव में आयोजित यह सर्वोदय सम्मेलन चम्बल घाटी के बागियों के अन्तम-सम्पर्ग को अहिंसा और प्रेम की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मानता है। इस चम्बलघाटी के लिए श्री जयप्रकाश नारायण और शान्ति-मिशन के समस्त वार्धनता-सामियों का हम हार्दिक अभिनन्दन करते हैं। इस घटना की पृष्ठ-भूमि में हम सरकार से अपील करते हैं कि दण्ड-व्यवस्था में आमूल परिवर्तन किया जाय और गांधी के इस देश से फासी को सजा सदा के लिए समाप्त कर दी जाय।

यह सम्मेलन उत्तराखण्ड में नशाबन्दी के लिए विद्यमान सफल सत्याग्रहों के लिए नई क्रांति-वर्धनताओं का अभिनन्दन करता है और उत्तर प्रदेश शासन का भी आभार मानता है। लेकिन हमें इस बात का हार्दिक दुःख है कि राजस्थान सरकार नशाबन्दी के लिए दिये गये वचन को भंग कर रही है। पंजी-रिफाई में राजस्थान के अन्तम सेवक धर्मदय धी को नुकसान है भट्ट की आभारण उपवास के लिए विवश होना पडा। यह सम्मेलन राजस्थान सरकार से अपील करता है कि यह अपना वचन निभाये और प्रदेश में नशाबन्दी घोषित करे। बाबा है, सरकार सुरन्त उचित कदम उठायेगी।

आज सारे विश्व में शान्ति और समता की चाह है लेकिन शोषण, दमन और हिंसा पर आधारित विश्व-समाज की यह बाधादा तब तक पूरी होना असम्भव है जब तक समाज की रचना और जीवन-मूल्यों में अपेक्षित परिवर्तन न हो। शासन-सामस्वराज्य द्वारा मानवीय सम्पत्ता और सहायता को सत्य और अहिंसा की बुनियाद पर पुनः प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया जा रहा है। इस दृष्टि से कल्याण, मुहहरी (बिहार) और तनजावूर

(तमिलनाडु) आदि में शासन-पुष्टि तथा विभिन्न प्रदेशों में शान्ति के प्राग्दान-प्राप्ति और पुष्टि के अभियानों का अपना विशेष महत्त्व है। आजा है इन प्रयोगों से लोग शान्ति प्रवृत्त होगी और देश में अहिंसक क्रान्ति के लिए एक जबरदस्त जन-आन्दोलन तैयार हो सकेगा। इसलिए हम देशभर के रचनात्मक वार्धनताओं और शान्तिपूर्ण परिवर्तन की आकांक्षा रखनेवाले नागरिकों से अपील करते हैं कि सर्वोदय आन्दोलन के इन अग्रिम-मोर्चों को सफल बनाने के लिए भरसक प्रयत्न करें।

आज हमारे देश में स्वतंत्र परिवर्तन के लिए वातावरण बना है। हमारी सरकार को सामाज्य मनुष्य की कितना है और उसके कल्याण के लिए भूमि और सम्पत्ति की हस्त-बन्दी के मान्य बनाये जा रहे हैं। ये सारे कदम स्वागत-योग्य हैं, लेकिन हमारी मुख्य चिन्ता इस देश का अन्तिम-व्यवस्था है। देश का यह अन्तिम-व्यवस्था हीन-और-पेदनाप्य है। इसलिए सारे देश के नियोजन, शिक्षा, और द्वि-औद्योगिक नीति की शिक्षा अन्तिम-व्यवस्था की जीवन-समस्या के तालाब समाधान की होना अनिवार्य है। 'अन्वेषण' की बुनियाद पर ही आर्थिक और सामाजिक नीतियाँ ठिक सन्ती हैं और सफल हो सन्ती हैं।

भारत की राष्ट्रीय एका यह! की सांस्कृतिक एका पर आधारित है। भारत में अनेक धर्म और सम्प्रदाय भाग्य हैं। ऐसे राष्ट्र को अन्तर्निहित हार्दिक एका के विकास के लिए यह आवश्यक प्रतीत होता है कि देश की सभी भाग्य एक ही लिंग में लिखी जायें। इसके लिए नागरी लिपि का उपयोग सर्वथा उपयुक्त है। यदि सारे देश के लोग सभी भाग्यो

के लिए नागरी लिपि को स्वीकार कर लें तो देश की सांस्कृतिक एका मजबूत होगी और इससे भाग्य प्रेम, सहिष्णुता और शान्ति का भी प्रसार होगा।

आज समाज में सत्य और अहिंसा के युगमूल मूल्यों में शोध करने की और लोक-जीवन में उन्हें प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता है। गांधी-प्रेरित रचनात्मक सत्याग्रहों की इन में बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। इनके लिए सस्थाओं के आशी समन्वय और निर्धारित समान सत्य की और एक साथ बढ़ने का प्रयत्न आवश्यक है। नैतिक शक्ति के पुनःस्थापन के लिए देश के समस्त रचनात्मक सेवकों और सत्याग्रहों की सहजितन, सहयोग और समन्वय प्रयत्न द्वारा सफल परिश्रम करना होगा। यह सम्मेलन समस्त रचनात्मक सत्याग्रहों से अपील करता है कि वे राष्ट्रीय आवश्यकता के अनुसार सम्मिलित कदम उठाते के लिए सज्जित रह सें बागें बड़ें।

विश्व राष्ट्रों के परिवार में भागता-देश एक नये सत्य के रूप में सम्मिलित हुआ है। इसका हम हार्दिक स्वागत करते हैं। भाग्य देश की आजादी विश्व में स्वतंत्रता के लिए महानतम बुनियात और मनी के लिए सर्वस्व न्योछावर करने की भावना के एक जलन प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठित में सदा अमर रहेगी।

यह वर्ष भारत की स्वतंत्रता की रजत-जयन्ती का वर्ष है। हम इस युष्प वर्ष में हिन्दू स्वराज्य को ग्रामस्वराज्य में विकसित करने का संकल्प करते हैं और अपने को विश्व में सत्य और अहिंसा पर आधारित 'सर्वोदय-समाज' की स्थापना के लिए समर्पित करते हैं।

नकोदर (पत्राव)
२१-५-७२

हुआ है। इस वषट भी पूरे देश का एक सत्य नहीं है? यहाँ बैठे हुए लोगों का भी कहना है? त्रिनेत्र दल है उतने सत्य हैं। हर राज्य, हर वर्ग, हर जाति का अपना सत्य है। आदिम सत्वों की भरमार है। सभी 'सत्वों' को जोड़ कर लिए तो एक बड़ा सत्य नहीं व्यस्य निरलेषण। विस्मय गणित है यह विश्वता विचार भारत बन गया है! साधोनी ने सत्य को धन्य, दुःख, दल और सत्ता सत्के मुक्त निःशय या और अनतरात्मा को उमगा सागी बनाया था। उन्होंने 'अन्तिम व्यक्ति' को इस देश के सत्य का माध्यात बनाने माना था। उन्होंने कहा था कि अन्तिम व्यक्ति हमारे सामने रहता तो सत्य के बारे में सत्य नहीं रहता। लेकिन कुछ सन्नेह है कि आज भी हम सब के हृदय इस राष्ट्रीय सत्य को नहीं स्वीकार कर रहे हैं। परिणाम यह है कि साधो-परिवार भी 'एक' नहीं दिखाई देता।

५. 'गरीबी हटाओ'

गरीबी को गये २४ साल बीत गये। इन २४ वर्षों में हमने क्या प्रगति की? गरीबी की मूल्य के ३ वर्ष बाद अर्जून १९५१ का महीना देश के लिए अत्यन्त निर्धारक महीना था। उस महीने की १ तारीख को पहली पंचवर्षीय योजना का मूल्यांकन हुआ। दलीन सासन और सरकारी योजना-निष्कर्षक देश के दक्षिण का एक नया प्रसून कर दिना और सभी के अनुसार योजना ने देश को बना दिया। १७ दिन बाद १८ अर्जून ५१ को विनीता को प्रधान-यात्रा शुरू हुई। साथ एक, महीना एक, केवल १७ दिन आने-पैने को समालोचन धाराओं का मूल्यांकन हुआ—एक राज्य मन्त्रिण को, दूसरी मोर-सक्ति को। विन्ने बर्षों में कहीं पहुँचो है राज्य-मन्त्रिण और कहीं पहुँचो है मोर-सक्ति? इसका हम योना सेना-जोषा में। मात्र मध्यम पूरे देश में एक दल का मान्य है। 'बन पाटी, बन मोहर' का बीजकाला है। विरोधी दल मध्यम समाज है। सरकार के हाथ में कर्कर-वे-मन्त्रिण मन्त्रिण केन्द्रित है। अपने हाथ में

पूरी सन्त निन्दित कर अब उसने 'गरीबी हटाओ' का नारा दिया है। बहुत बड़ा नारा है यह। यह एक आश्वासन है जो देश के विविध व्यक्ति, सामान्य व्यक्ति और अन्तिम व्यक्ति को दे रहे हैं। जिस गरीबी को लेकर इतिहास में एक के बाद दूसरी हितक क्रान्तियाँ हुई हैं उसके अन्त का आश्वासन भारत में स्वयं सत्ता की ओर से दिया जा रहा है। घन और सत्ता रखनेवाले विविध व्यक्ति समग्र का मन्त्रिण पहुँचते और अपनी ओर से सामान्य तथा अन्तिम व्यक्ति को समस्याओं को हल करने के लिए आने दें। यह एक नवी बात है। अथर उन्होंने नेवनीयती का परिचय दिया और उनके प्रयत्न यथत रूप से वेग स्तपान से बन जायगा। विन अथर उन्होंने इस नारे को भी अपनी सत्ता मन्त्रिण करने का ही हथ-पन्ना बनाया तो निश्चित रूप से गरीबी हटाओ उनके ओर उनके साथ सायर देश के गले की धाँसी बन जायगा।

हमारे बड़े ऐसे साथी हैं त्रिनेत्र राजनीति के आश्वासनों में विश्वास नहीं होता। इसमें वास्तविकता की बात नहीं है। आज तक सत्ता की हमारी राजनीति ने देश को हर समस्या को, जवता के हर शोष को, अपनी बहूत में साकर बताया है। क्या गरीबी की गरीबी, क्या जवता की बेरोजगारी और क्या कोई दूसरा सभान, हर चीज का इस्तेमाल देना अपनी सत्ता के लिए ही करने लह है। वे पाठ के सिवाय दूसरी कोई चीज पहुँचाने ही नहीं। इसलिए हो सकता है कि 'गरीबी हटाओ' के नारे का भी इस्तेमाल गरीबी के बीट के लिए किया जा रहा हो। गरीब को गरीबी को सत्ता का हथकण्डा बनाना इतिहास में कोई नवी बात नहीं है। इस प्रकार के दो नारा मन्त्रिण हैं। एक यह है कि गरीबी हटाने के साथ साथ नया समाज बनाने का दान नहीं कही जा रही है। क्या हमारे नेता यह कहना चाहते हैं कि आज की भूँज और उत्पादन की सामन्तवादी - पूँजीवादी व्यवस्था, अन्तमशाही का प्रशासन, दलकारी की

राजनीति, और नौबरी को पिछा ज्यों-की-त्यों बनी रहेगी और गरीब की गरीबी मिट जायगी? आखिर, योजना किस बात की है? गरीब को 'कूल वर्ग' के व्यापक कार्यक्रम में राहत के तौर पर काम और मजदूरी देने की या गरीब की हिसाब बदलने की तथा भारत के हर निवासी को ईमान की रोटी और इन्जत की त्रिन्दो देने की, और ऐसा समाज बनाने की उममें दरिद्रता और विपयता हमेशा के लिए खत्म हो जायँ? पंट को रोटी और तन को रक्का जरूर चाहिए, लेकिन मनुष्य को नया समाज और नया जीवन चाहिए जिसमें समता और नौबत हो, जिसमें राज्य का दमन और पूँजी का शोषण न हो। गरीबी हटाओ के साथ साथ इस तरह की दूसरी, भी कोई बात नहीं कही जा रही है। क्यों?

दूसरी बात है साधन बनाम मजदूरी की। हमें गरीबी को जीविका के स्थारी साधन देने हैं, उन्हें उत्पादक बनाना है या उन्हें साधनों से बचित रखकर सिर्फ काम और मजदूरी देनी है और मजदूर बनने रकता है? क्या इस तरह भारत के गरीबों को स्थानी जीविका की गारण्ठी मिल सकेगी, और दूसरों के साथ समान धरातल पर उनकी नागरिकता प्रष्ट हो सकेगी? 'कूल वर्ग' से कुछ दिनों के लिए मजदूरी को राहत देने ही मिले लेकिन घेड़ी और उद्योग द्वारा घर-घर को जीविका का आधार दिने बिना गरीब को न स्थारी जीविका मिलेगी, न उसकी उम्मीदों में धुनर आयेगा, और न उसका व्यक्तिगत निष्पेक्षा। योजना सरकारी हो या सरकारी, उनमें सब कल्पनेवाले मजदूर, मजदूर ही रहेंगे। उनको सत्ता दिनों दिन बढ़ेगी। सरकार सबको कभी मजदूरी दे नहीं सकती। मजदूरी का आश्वासन बल में कोरा धम सिद्ध होता।

मोरो-विचार में विशाल रक्षनेवाले को हम बाज की चिन्ता है—होनी भी चाहिए—कि भारत के निर्माण में काँफ

भक्ति की, जो कुछ जनसंख्या का १० प्रतिशत है, क्या स्थिति रहनेवाली है। हम 'गरीबी हटाओ' के उदाहरण में करोड़ों नम हित, जिसमें देश और समाज का भी स्थायी हित है, नहीं धुना सकते।

१. बामन मैन और लास्ट मैन

हम सामान्य व्यक्ति (बामन मैन) और अन्तिम व्यक्ति (लास्ट मैन) में भेद मानते हैं। वह भेद स्पष्ट है। समाज का अन्तिम व्यक्ति यही नहीं है जो राजनीति और सरकार का 'बामन मैन' है। दोनों दो हैं। मोटे तौर पर बड़े तो सामान्य व्यक्ति बड़े हैं जिसकी समस्याएँ जो हैं लेकिन जो अपनी समस्याओं को जानता है, समझता है, और उन्हें दूर करने के लिए शायद-पर पढ़ता है। इसके विपरीत अन्तिम व्यक्ति यह है जो बटि-नाइसों को खोजता है समझता नहीं, जिसे यह आशा नहीं है कि उसकी समस्याएँ कभी हल हो सकेंगी। यह यह भी नहीं जानता कि हाथ-पैर कैसे पढ़ना जाता है। हमारी चेतावा बामन मैन तक तो पहुँची है, लेकिन अन्तिम व्यक्ति अभी उस पहुँच के बाहर है। अन्याय में ही सही, हमने मान लिया है कि यह जमाना बामन मैन का है, अन्तिम व्यक्ति ना नहीं। इसलिए आर्थिक प्रगति के बीसत बीसवें बताये जाते हैं। बामन मैन के बीच-बस्तर की बात नहीं आती है। राजनीति का नारा है—बामन मैन। राजनीति में सत्ता और सम्पत्ति के स्रोत विशिष्ट व्यक्ति के हाथों में रखकर राजनीति योद्धाएँ सामान्य व्यक्ति को बनाती है और नारे अन्तिम व्यक्ति को लगाती है। क्या हम सर्वोदय के सोच भी 'सर्व' में अन्तिम व्यक्ति को, जिसे गरीबी ने दखिनासपण पड़ा, यही स्थान देकर सर्वोदय मान लेंगे ?

७. भूमिहीनतावतार

आज देश में हमारा अन्तिम व्यक्ति चक्रव्यूह में पड़ गया है इसका विराट दर्शन एक महीने के अभियान में हमें एहतरा म हुआ। जानते हम पहले से भी थे, लेकिन यही हमें एक नया दर्शन हुआ—

दलियुगी भूमिहीनतावतार का। बात ऐसी है। एक दिन शाम वा समय था। हमलोग जमीन के एक बड़े गाँविक के दरवाजे पर पहुँचे। आलोचनात्मक मनन, सामने बड़ा-छा छाटा, एक ओर अर्ध-तकले बेल, चारों, भैसे, पैंरेज में जीप, ट्रेक्टर, चारों ओर विजली की फिटिंग, एक कमरे में सोफा सेट, जादि शानीय वैभव की प्रायः सभी चीजें वहाँ मौजूद थी, नौकर ने बताया 'गाँविक के पास हाथी भी है।' शामको सामने के मैदान में सभा हुई। मीने प्रानधान की बात वही और बोधा-बदल भूमि माँगे। हमारे अधिये बोले—'मैं तो भूमिहीन हूँ।' यह सुनकर हम जितने कार्यकर्ता थे हस्त-बन्धा रह गये। वहाँ यह वैभव और वहाँ यह भूमिहीनता ? अथवा भूमिहीन वा यह हास है ही पचबर्षीय योजना को क्या करना रह गया ? मीने पूछा, 'आप भूमिहीन कैसे हो गये ?' बोले 'मेरे मुद अपने नाम बहुत थोड़ी जमीन है। ज्यादातर जमीन बीबी के नाम है, बच्चों आदि के नाम है। अपने रिश्ते की भूमि से बीपा-बदल जब बहिष्कृत हूँ।' 'रिहाया होगा ?' मीने पूछा। उत्तर मिला : 'ज्यादा-से-ज्यादा दस बीघे का दस बट्टा।' वाक की गाँववासी ने बताया कि इस विपत्तय भूमिहीन के घर में पूरे पाँच सौ बीघे का अनाज आता है। बड़े पैमाने पर महा-ज्वरी होती है। पचास के मुहिया है। टोके भी लेते हैं। एयर-अपर और बर्द तरह का बारोबार है।

एला भूमिहीनतावतार देश के हर भाग में हो गया है। पत्रा में भी ! यह 'अवतार' 'बामन मैन' के दमन की० एन० सी० (श्रीस नेशनल प्रोडक्ट) और ओलट आय की अर्धनीति के कारण हुआ है ! यह देश है सरकार की योजनावादी और उसके 'समाजवादी' बान्दों की !

पूरे देशो पात्र पर यह भूमिहीन हाथो है। वे पचास के मुहिया है, स्कूल के मैनेजर हैं, जोर्जाईन्टिव के बाइरेक्टर है। जनीनी जमीन की बदीनत वे अपने बेटादारा, मचदूर, कर्मचारों

को मुट्टी में रखते हैं। यानेदार बीर की० डी० जो० उनके वहाँ चाय पीते हैं, छाता छाते है। येचारा स्कूल का मास्टर तो बरबाहिल की तरह उनके दरवाजे पर रहता ही है। ये नुनाय की राजनीति का पूरा लेत खेचते है। उन्हे समाज-वाद की राजनीति पसन्द है। पिछले भुताव मे उन्होने अपने उम्मीदवारो को जिताने के लिए लच्छारियो को भेजकर नुय के नुय केन्वर बना लिये थे। पटना तक उनकी पहुँच है। दिखी भी जाते रहते हैं। विचार, बान्दुन, राजनीति तथा समा-त्रिक जीवन के बारे नुयो को मुट्टी में रखनेवाले ये भूमिहीन बान्दुन से हारे नहीं, बल्कि से दरे नहीं, बरगा से विपक्ष नहीं। उन्होने भुदान में भून भी दी है, लेकिन इसके लिए वे हरगिज ठेकार नहीं है कि मजदूर की हेशियत बरते। उन्होने अरुंओ जमाने का सामन्तवाद देखा है, समाज भाटा का पूँजीवादी समाजवाद देख रहे है, हरिज व्यक्ति के मुख्य नायक होने के ताते अब वे आगे बढ़ार गरीबी हटाओ का नारा भी लगा रहे है।

८. सर्वो पी सत्ता

गांधी वा सविदानारायण उनके चक्र-व्यूह में पंजा हुआ है। यह भूमि से बचत है, शिक्षा में संरहित है; समाज में किररुत है, विचार की दुनिया में बहिष्कृत है। अब उसका बोट भी उनरे में पड़ गया है।

नेहरू ने भारत की खोज की थी, लेकिन गांधी ने भारत के अन्तिम व्यक्ति की खोज की। हमें भूदान-सामर्थन आन्दोलन के पिछले खरीब वर्ष लग गये उत आ-उत व्यक्ति के पात्र पहुँचने में, उते पहुँचाने में, उसके लिए कुछ करने में, और 'सर्व' के बीच उतरा समाज उभर करने में। भारतीय समाज के परम अन्त 'अन्तिम व्यक्ति' को अब हमने समझ लिया है, लेकिन प्रश्न है कि उन्हा से उत सर्व को सिद्ध करने का।

क्या यह छात्र की विधिदियुपनै जमाने की चर्च-अवस्था से होगो जिसमें दिनी की सत्ता थी, और मुद सम्पत्ता की

परिधि से बहिष्कृत था ? क्या उसकी विद्धि ऐसी पूर्वीवादी व्यवस्था में होगी जिसमें मालिकी की सत्ता है, और मजदूर बाहे छक्की जो मजदूरी ही मजदूर ही बना रहता है ? क्या साम्यवाद को सर्वहारा की सत्ता में होगी जिसमें स्वामियों का ध्यात सहूर करने के बाद सर्वहारा अपने ही धर्म-धिवारी राज्य के नीचे दब जाता है ? इस सत्य की विद्धि इनमें से किसी में नहीं होगी। आज के लोकतन्त्र में भी नहीं होगी जिसमें मतदाताओं की सत्ता बनायी जाती है।

इन सबसे अलग पायी ने 'सर्व की सत्ता' की बात कही जिसमें न कोई मालिक है, न मजदूर; सब उत्पादक है। यह एक नयी बात थी जो धारे इतिहास में पहली बार कही गयी। ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य-आन्दोलन के निष्ठे इन विषय वार्ता में हमने प्रयोग करके अच्छी तरह देख लिया कि सर्व का सत्ता की सबसे नीचे की इनाई गांव से बन सकती है जिसे गांधीजी ने 'गांव-गणराज्य' कहा था। आज की राजनीति और आज की सरकार के लोग गांधी को इस रूप में गही देखते। उनके लिए गांव मात्र घरों का समूह है जिनमें बोटर (मतदाता) और टैक्सपेयर (करदाता) रहते हैं। व्यापारी के लिए गांववाले 'कस्बदार' (पाहक) हैं, नेता के लिए 'बोटर'। विधुद्ध मानव से जिसके लिए हैं ? वह गौन है जो गांव पर एक इनाई मानता हा, और गांव पर एक विासुद्ध भक्तिर दखता हो ? हमारे लिए ता गांव लोकभक्ति (पीपुलस पावर) की बुनियादी छोटी है जो प्रथम, जित, और राज्य से बड़ी-बड़ी किसा बनन राज्य बन पहुँचिया।

९. राज्य की भी हिंसा समाप्त हो

अन्तिम व्यक्ति को जीवित के साधन मिले, उसकी हैसियत बसके, और लोकभक्ति वा विकास हो, यह आज के सामाजिक दावे में जिसका आगार निजी स्वामित्व (प्राइवेट या कंभनी आनर-निर) है, सम्भव नहीं है। दुनिया बाली

है कि अगर निजी स्वामित्व ने बर्न-हिंसा (क्लास वायलेन्स) को बन्म दिया है, तो साम्यवाद के सरकार-स्वामित्व (स्टेट ओनरशिप) ने भयकर राज्य-हिंसा (स्टेट वायलेन्स) पैदा की है। हिंसा कोई भी हो, अन्तिम व्यक्ति को शत्रु है। इसलिए हमने ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य-आन्दोलन में न परिवार-स्वामित्व की बात मानी है, न सरकार-स्वामित्व की, इनके स्थान पर हमने ग्रामस्वामित्व को मान्य विचा है।

हम इस बात पर यहाँ सन्तोष प्रकट कर चाहते हैं कि हमने गांव-गणराज्य यानी ग्रामस्वराज्य के भय विषय की रूप-रेखाएँ स्थिर कर ली हैं, और अपने प्रयोग-क्षेत्रों में यह भी दख लिया है कि लोक-मानव इस विचार से विमुक्त गही है, यर्थात् अभी कठिनाइयाँ एक-से-एक बढ़कर पार करती हैं।

१०. मुक्ति की शक्ति

यहाँ प्रश्न उठता है शक्ति का। वह कौन-सी शक्ति होगी जिसके दल पर समाज बसकेगा, नयी व्यवस्था कायम होगी, नये मूल्य मान्य होंगे, और गांव राज्य-हिंसा से मुक्त होकर एक गणराज्य के रूप में आन-विनता बनेगा ? क्या यह नाम राज्य की शक्ति से होगा ? या, उस शक्ति से होगा जिसकी बलना गांधीजी के अन्तिम बनीयनाने और बिनोबाने के ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य आंदोलन में है ? गांधीजी ने 'पावर नॅक्चर' करने की बात नहीं, 'पावर जेनरेट' करने की बात कही थी। पावर जिनका ? निरसह जनता का। वही लोकशक्ति है। अपर जनता का पावर नीचे से 'जेनरेट' नहीं होगा जो अन्तिम व्यक्ति अपनी मुक्ति की लड़ाई कैसे लड़ेगा ? क्या हम उसे अपनी ही मुक्ति के लिए पुहवायें करने से भी अलग रखना चाहते हैं ?

इसकीच नयो तक हमने लगातार लोकशक्ति का जप किया है। हम इतना ही कह सकते हैं कि हमने बुनियाद की ईंटें डाल दी हैं। हम मानते हैं कि ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य का भाव अती व्यापक

नहीं हो सता है। उसमें अनेक कमियाँ और बमजोरियाँ हैं। लेकिन बिहार, तमिलनाडु तथा अन्य राज्यों के कुछ चुने हुए क्षेत्रों में इतना काम हुआ और हो रहा है कि सम्भावनाएँ स्पष्ट होती जा रही हैं। जहाँ ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य की प्रक्रियाएँ लागू होती हैं वहाँ लोगों को अपनी संगठित सामूहिक शक्ति का भाव होता है। अन्त्या और अनीति के प्रति लोग 'नहीं' (नो) कहना सीख रहे हैं— वह अनीति चाहे भूमि के मालिक की हो, और चाहे सरकार के अधिकारी की। लोकशक्ति से नये सत्य की स्थापना की जा सकती है, और अहिंसा की शक्ति विवसित की जा सकती है, इसका तात्पर्य ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य में खोज दिया है।

११. चार सभ्य

स्वतंत्रता के बाद देश में चार मुख्य घटनाएँ हुई हैं जिनकी अहिंसा की दृष्टि से महत्व है। वे हैं (१) माणिक मताधिकार और सविधान में नागरिक के मूल अधिकार; (२) भागना देण, (३) ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य का आन्दोलन; (४) चम्बल घाटी में बाणियों का आन-समर्पण। हमारे सविधान के कारण देश में यह स्थिति बनी हुई है कि सरकार लोक-सम्मति से बन सती है, उसके लिए हितक विद्रोह आवश्यक नहीं है। बागना देण के मुक्ति-समर्थन का निर्यम अन्तिम परण में यद्यपि सशस्त्र कार्रवाई से हुआ फिर भी भागना देण की स्वतंत्रता लोक-शक्ति का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। चम्बल घाटी के बाणियों के आन-समर्पण ने यह मिद्ध कर दिया है कि अवराधो के दमन में जो सरकार का सामाज्य कर्तव्य है, दण्ड-शक्ति कितनी अपूर्ण है। इसके अलावा इस कौतुक से यह बात हमने या गयी कि व्यक्तियों के समाज-विरोधी आचरण का सीउ बरसर समाज के जीवन में है, न कि अराष्ट्री के मन में। समाज की व्यवस्था, तथा जन-जन के जीवन में परिवर्तन और सुधार लाये बिना अराध-भूति को खल करना बर्तन है। यह भी सिद्ध हो गया कि निर्याता भी बड़ा

अपघो हो वह अहिंसा के प्रभाव के परे नहीं है।

अहिंसक समाज-परिवर्तन की दृष्टि से सबसे अधिक महत्त्व ग्रामराज-ग्रामसं- राज्य आन्दोलन का है। उसने सामान्य व्यक्ति के सामान्य गुणों पर भरोसा किया है, और समाज-परिवर्तन के क्षेत्र में हिया और धर्म का एक सम्पूर्ण विकल्प प्रस्तुत किया है। जेसने देश के सामने स्वामित्व और प्रतिनिधित्व की एक विस्तृत नयी पद्धति रखी है। उसने ग्राम-स्वायत्तता द्वारा राज्य का बाधना सीमित करने की बात की है। उसकी ग्रामस्वराज्य की गीतना जनता के दैन- न्दिन जीवन को राज्य के हस्तक्षेप से मुक्त करने की दिशा में एक साहसपूर्ण कदम है।

१२. लोक की अहिंसा से लोकशाक्ति विचार और प्रयोग के स्तर पर हमने पायी जान कर लिया है। हमने जान लिया है कि लोकशाक्ति के स्रोत क्या है, एवं की संस्था का स्वरूप क्या है, उसका प्रारम्भ विन्दु कहाँ है, तथा ग्रामदान में इनकी सम्भावनाएँ क्या हैं। लेकिन हमें मानना पड़ेगा कि जिस लोक- शाक्ति से समाज-परिवर्तन तथा सम्प्रदा- परिवर्तन का काम दूर होवेनाला है वह अभी हमारे हाथ नहीं आयी है। जब कि परिवर्तन की वास्तविक गतिशीलता उसी में है। वह लोकशाक्ति बंध बनेगी ?

पाण्डेजी ने लोक की जिस व्याव- हारिक अहिंसा की बोधा हमें दी थी उसके तीन तत्व थे— (१) सविचार का उपहार (२) डरार्थ से अवहकार, (३) अत्याय का प्रतिहार। प्रसन्न- भावस्वरूप-आशुसौजन्य के पिछले ऐतरीय वर्णों में हमने मुझ 'सविचार के उपहार' का प्रयोग किया है, असहकार का प्रति- कार का नहीं। भूमि को हम नार्थकर्मियों ने ही मारी है, भूमिहीनों ने नहीं। धर्मो मार्ग-अर्थ में प्रहरण के एक महीने के अभियान में हमने देखा कि चढ़ी के गाँवों में ९० से ९५ प्रतिशत

तक भूमिहीन हैं ! जनश्रम का इतना बड़ा भाग भूमिहीन होते हुए भी हमारे आन्दोलन से अलग है। ऐसी हालत में कोई आशय नहीं कि लोकशाक्ति को पणित नहीं बैठ रही है। इतने 'लोक' को ढाँड़कर मोनशाक्ति बंधे बनेगी ? स्पष्ट है कि इतने प्रयोग और अनुभव के बाद हमें अपने आन्दोलन में 'अहिंसक लोक- क्रिया' (नामवाचक शब्द गोपुस्तक संवयन) के लिए तैयार होना चाहिए। केवल कार्यकर्ताओं के 'संयतन' से हम जहाँ तक जा सकते थे जा चुके। अब प्रयत्न जनता का एकत्रण चाहिए। लेकिन इसके परि- धान हमें समझ लेना चाहिए। हमारे संयतन के साथ हमारा विचार युद्ध युवा था। विचार को लेकर हम इकरीस बणों तक प्रतीक्षा कर सकते थे। इसके अधिक प्रतीक्षा करनी ही तो कर सकते हैं। लेकिन अब हमारी-बाधों की संख्या में जनता भूमि मांगने निकलेगी तो उसके साथ उसकी भूत जुड़ी होगी। वह प्रतीक्षा नहीं कर सकेगी, उसे बैठे-जुड़ी होगी। प्रतीक्षा बितरनी कर सकती थी वह कर चुकी। साक्षरी, बिधेपक्षी, सन्तो और मुधारवने, सबको वह देख चुकी।

अगर हमें यह नया संकलन करना हो तो उसकी पद्धति, संयतन, नेतृत्व, सुनि- यत्रके बारे में अच्छी तरह सोच लेना होगा। एक बात जो पक्की है वह यह है कि अहिंसक लोक-क्रिया में शरीर होने के लिए जो हथौड़े-बाधों को गमने आरंभे उनमें से एक-एक व्यक्ति को गहने स्वयं ग्रामदान की भूमि में 'दाता' बन जाना होगा। ऐसे दाता अपनी सगठित मितिक शक्ति लेकर निरचंगे-भूमिहीनता मिटाने, ग्रामकोष विकसलवाने, ग्रामस्वराज्य-संसा- दनाने, ग्राम-व्यक्तिगत खड़ी करने। एक बार लोक-नेतृता, लोक-शाक्ति, और लोक- शक्ति गौरव-संयतन, का का से लेगी तो भूमि को समस्याओं तथा उनके साध- साध गाँव की अन्य समस्याओं को हल करने के मूख हल आ जायेंगे। तबना उपहार, बितना अवहकार किना प्रति- कार, प्रहार किना बरिस्विति को अग्रहार

होगा। तपशील की बातें हम यहाँ था अपने क्षेत्र में बैठकर तय करें किन्तु मेरा अग्रोध है कि अब हम 'नामवाचक गोपुस्तक संवयन' से बंध की बात न सोचें। भूमि शार्वादिच समस्या है, उसका छोर पकड़कर ही हम आगे बढ़ सकते हैं। वीर अह-अह-जग जो 'संयतन' होगा, उसके राष्ट्रीय स्तर पर भाषक-संयतन की भूमि-व्य- बनेगी। गाँव की शक्ति से राज्य की बर्धनों हुई दिशा या मुकाबला करना होगा।

१३. रचनात्मक कार्य

'गोपुस्तक संवयन' की ही पद्धति से दूसरे रचनात्मक बलों के शक्तिरूप भी हल होंगे। लोकशाक्ति के अभाव में हम नब तक सराबन्दगी और नवी शांति के लिए बरनी विनय पत्रिका सरकार के दरबार में देते रहते ? सत्य वा साम्य, अहिंसा वा साधन, बनता की शक्ति, हल तान के नेत के बिना अब हमारा काम नहीं बनेगा। शहीद की जनश्रमता का सत्य बाधी नहीं है, उसे बनता वा 'नन्वे-सस' चाहिए, शैवक की सामना की अहिंसा काभी नहीं है, उसे लोक ना समझ चाहिए। नया समाज और नवी सम्प्रदा यवाने के नाम में सरकार की शक्ति के विरुद्ध नया प्रयत्न नहीं है। हमारी सरकार की लोक-सम्मति प्रायः है इसलिए उसके श्रद्धे सहकार का सदा स्वागत है, स्वागत ही नहीं, अपेक्षा भी रहेगी। लेकिन गहने सरकार-शक्ति से हाथ मिलायेनामी मोनशाक्ति बननी चाहिए।

१४. मधुर चित्र

पिछले वर्षों के अटक चित्रपट से हमने समय की शिला पर शक्ति के कुछ मधुर चित्र बनाये हैं। चित्र में रंग नहीं है, शब्द रेखाएँ बनी हैं। शक्ति, देखा है, ये रेखाएँ बड़ी मिट न जायें। अगर ये रेखाएँ मिट गयी तो हल मिट जायेंगे, और हमारे साथ भावद नया समाज बनाने की नवी बाधा भी।

(नेप पृष्ठ २६९ पर)

समग्र मनुष्य के निर्माण से ही अहिंसक समाज-रचना सम्भव

२० वें सर्वोदय सम्मेलन में सुश्री सरला बहन का उद्घाटन भाषण

समस्या प्रेरणा का स्रोत बनी

बागी सरदार माधोसिंह कुछ वर्षों से इस जीवन से परेशान थे। वह समझ गये थे कि बागी और पुलिस दोनों ने इन हलाकें में हजारों महिलाओं का सुश्रम मूट लिया है। यह पोर पाप है—उसे छोड़ना है तथा बीरो को भी इससे छुटकारा दिववाना है। कुछ वर्षों तक वे तीर्थों में घूमते रहे और १९७० ई० के जुलाई में उन्होंने विनोबाजी से सम्पर्क करने के लिये आवागमन दिया कि उनका जीवन इस काम के लिए समर्पित है और उन्होंने विनोबाजी से इस में कुछ समय देने की प्रार्थना की। शेष-संशय भी बचक से विनोबाजी ने उन्हें जयपराग बाबू से सम्पर्क करने का सुझाव दिया था। काम के धार के नीचे दबे हुए होने पर भी जयपरागजी ने माधोसिंह की तीव्रता को समझकर उन काम को उठाना स्वीकार किया, बसते कि तीनों शक्तियों (मान्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और राजस्थान) तथा केंद्रीय सरकार का सहयोग मिले। वे सरदारों अनुसूच भी थीं, लेकिन सहाजोत भी थीं। जयपराग-जी की सभ्यता, धीरज और हिम्मत से धीरे-धीरे अनुसूचता बढ़ती गयी, सदा बढ़ती गयी। बागियों पर प्रभाव डालने की दृष्टि से उत्तर प्रदेश सरकार ने २७० वर्ष की सजा बाट रहे तहसीलदार सिंह को छोड़ दिया। अब बड़े वर्षाने पर बंधुओं का दौर फिर शुरू हो गया। पवित्र तीर्थभ्रम, भूदहीनदार सिंह, देव सिंह, इत्यादि, आत्मसिंह दिन-रात एक करते आते दुःखने सार्थिकता को समझाने के लिए मोहड़ों में दौड़ते गये। उनके साथ बास के १९६० ई० केपुराने अहिंसक कानी भादारी भाई और हेनदर भाई के

साथ-साथ चरण सिंहजी और भगवत सिंहजी भी दौड़ रहे थे। आत्मिक और शरणात्मक बीमारी के बावजूद भी दिल्ली में तथा शान्तीय सरदारों के साथ जयपराग बाबू का सान्तिरक्षण और पारस्परिक विश्वास बढ़ाने का काम बराबर जारी था।

कार्य आगे बढ़ता है बागी भादारी से सम्पर्क करना आसान नहीं था। वर्षों से वे पुलिस से छिपने में निपुण रहे। हमारे सार्थिकों से छिपना उनके लिए बन्वों का खेल था। लेकिन साक्षर थे सबसे गुंठार बागी सरदार मोहड़ सिंह से सम्पर्क हो पाया था। सबसे पूंछार, लेकिन इसके साथ सबसे मन्न और उदार। चम्बल घाटी के तोपों के हृदय में राम-रावण युद्ध देखकर आश्चर्य होता है कि जो सबसे पूंछार है वह सबसे मन्न, सरल और उदार भी हो सकता है। डाटा डालने में जितना उल्लाह, रामायण और धरती में भी उजना ही उल्लाह। अब मोहड़ सिंह ने विचार समझ कर अपने दम से मलाह ली और सबसे आध-सम्पर्क में शामिल होने का आश्वासन देकर शर्त लगायी कि सर्व-प्रथम उनका आम सम्पर्क होगा तब कार्यकर्ताओं की विजय निश्चय होगी सन्ती। इनका अलत सब गिरोहों पर पड़नेवाला था।

अब सान्तिमय समाधान पर सरकार का विश्वास बढ़ने लगा और मान्य प्रदेश-सरकार ने एक महीने के लिए एक सान्ति-संघ की घोषणा की, जिसमें बागियों तथा पुलिस दोनों की तरफ से कोई अहिंसक घटना नहीं होगी। अब विजय-जुलने का काम और आसान हो गया और सर्वमान्य बागी सरदार भी इस कार्य के लिए चलने लगे। सरकार ने जब काम

के लिए कुछ जीपें उपलब्ध कराईं और दौड़-धूप की रफ्तार बढ़ती गयी। धम-स्वरूप, गोपीजी और विनोबाजी भी तस्वीरो के नामने आते गये तो समर्पित करके जनता से समा मांग कर जयपरागजी तथा मुख्यमंत्री श्री सेठोजी के चरणों को छूकर, तथा अपने हाथों में रामायण-गीता को पढ़ते १५ अप्रैल को २२, १६ अप्रैल को २२, २१ अप्रैल को २२ तथा १ मई को २१ बागी भादरों ने स्वेच्छा से जेल में प्रवेश किया। यह आश्चर्यजनक हृदयस्पर्शी घटना थी। सबसे कष्ट भर आये। धी सेठी ने हर एक को सहला-कर उनके घर की परिस्थिति पूछी और १५ वर्षीय कुट्टासिंह को एक जिता, जैसे अपने बँतान परन्तु प्रिय बेटे को थपकू लगाया है, एक थपकू लगायी। सम्पर्क की तैयारी में पगार सोंध पर जो शिविर हुआ, उसमें एक अनुसूच दृश्य देखने को मिला। लगभग १५० बागी कच्चे पर बन्दूक लगाये आदारी से घूमते थे, बँडकर मजबूत गति थे। हजारों की संख्या में रिश्तेदार, मित्र और पड़ोसी उन लोगों से मिलने के लिए या उनके दर्शन करने के लिए दिन भर घूमते रहे। वहाँ पर एक भी पुलिस बल विपरीत मोहड़ नहीं था। जब वे सम्पर्क समारोह के लिए पहुँचे तो सबसे सब अपनी बन्दूकें लिए हुए थे। वहाँ कोई सख्त पुलिस नहीं थी। सिर्फ सम्पर्क बन्दूकों की सुरक्षा के लिए तीन-चार सख्त पुलिस के विपरीत थे। यह बारा के समय को पुष्टि करता है कि मनुष्य नहीं, बन्दूक ही बल बढती है। अब बन्दूकों पर ही पहरा लगाया जाहिए।

अविष्य की चुनौती चम्बल घाटी में काम जारी है। हुदयसंग्रह में भी साथ शुरू हो गया है।

दोनों शान्ति-वैभव हैं। बागी और पुलिस दोनों ने शान्ति को प्राप्ति पुरी तरह मानी है। सरकार के सहयोग से यह काम सम्भव हुआ है। भूखपूर्व बागियों तथा वर्तमान बागियों की सूझबूझ और सच्चे परचात्ताप की भावना बढ़ी बनी। अब उनकी कृष्ण-भवन की यात्रा को साधना-यात्रा बनाने में उन्हें मदद देना हम लोगों का परम कर्तव्य हो गया है। उनकी पीरखी को ब्यवस्था करना, उनके घरों की देख-रेख करना, और उनके साथ-साथ चम्बल घाटी के जन-जन में शान्ति-स्थापना का दृढ़ संकल्प कीजें हो, यह हिमाचल-सा आतुरोह्य हमारे सामने है। भौतिक कठिनाइयों को जीतकर, यश, साक्षरित और पीढ़ल पाना करके गाँव-गाँव में पहुँचना और बागियों से मिलना, गाँववालों से मिलकर शान्ति-स्थापना के लिए जन-शक्ति को जाबूत करना, गाँव-गाँव में प्रामसभार्थ बनाना ताकि वे अपने गाँव की शान्ति की जिम्मेदारी खुद उठा सकें—आदि काम, गौरीधर की चढ़ाई से कम हिम्मत और दुइता का नहीं है। लेकिन यह काम नहीं हो पाता तो बागियों का आत्म-समर्पण अर्थ हो जायगा। समाज उन बागियों को डाकू के नाम से पुकारता है और 'डाकू' शब्द एक घृणित शब्द माना जाता है। लेकिन हमें इस बात का सतर्क भाव रहना चाहिये कि सिर्फ बन्दूक विधि हुए संप्रतिष्ठ बागी डाकू नहीं हैं। समाज में सफेद पीशाक पहने हुए ऐसे सम्मानित लोग भी रहते हैं जो उल्टे भी ज्यादा डाकू पहलते के योग्य हैं जिनकी काशी करतुओं से, निर्यय वृत्ति से, दमन, भोग्य और अत्याचार से ये प्रकट डाकू अवहाय होकर कोई हूषर मार्ग न मिलने से ये पैदा होते हैं। समाज को अन्तरात्मा को सफेदपोग डाकू-वर्ग के विशुद्ध जगाना है ताकि अब, जब आतंक का बाहावरण कम हो जायगा, आम जनता अपने गाँव के समस्त डाटा इस प्रकार के मार्गकों को रोक्ने का शान्ति-सय कर्तव्य-निरपेक्ष मार्ग खोज सके।

इस समय इस नाम की सफलता से जनता में एक अपूर्व थडूर, कौतूहन और उल्फाह की लहर पैदा हुई है। यदि इसके पूरा लाभ उठा कर उसे सृजनात्मक दिशा देनी है तो यह एक ऐसा राष्ट्रिय मोर्चा है, जो उल्लूख के मोर्चे से कम महत्व का नहीं है लेकिन उससे कई गुना और ज्यादा कठिन भी है।

साधियों से

यहाँ हमारे देश भर में बिखरे हुए साथी इस सहज-आपत अवसर को स्वीकार कर, काम को सफल बनाने के लिए बम-से-नम एक वर्ग की शैल को स्वीकार करने को तैयार होंगे ? मैं देख के नौजवान साधियों का आह्वान करता चाहती हूँ क्योंकि उरुको का स्वभाव सामाजिक और भोग-लिक कठिनाइयों से निकले का होता है और उन्हे एक अपूर्व आनन्द आता है। उनके भावी जीवन के लिए उसमें एक अपूर्व शक्ति पैदा हो सकती है। बुझों के लिए भी कई समस्याओं का हल ढोचकर ढूँढ़ने का एक अपूर्व मौका मिलेगा। क्या हमारे देश में बम-से-नम तीव्र, और ज्यादा-से-ज्यादा पचाउ साथी, इन कठिन परिस्थितियों में प्रामस्वरूप्य की जन-शक्ति की भावना को स्थापित करने के लिए समय नहीं दे सकते ? क्या सिरपर ककल बांधकर आने आने के लिए तैयार नहीं हो सकते हैं ? बागियों ने हिम्मत और दुइता से आत्म-समर्पण कर नये समाज के निर्माण के लिए रास्ता खूला है। क्या हम अभी सारे समाज को इस दिशा में बढ़ने के लिए प्रोत्साहन दे सकते ? क्या हम अपने भाइयों को पीशा देकर बैठ रहे हैं और परिस्थिति को ग्यो-का-इयो बने रहने देंगे ? इसके साथ ही साथ, मैं सर्वोच्च समाज की ओर से मध्य प्रदेश सरकार का आह्वान करना चाहती हूँ कि दण्ड-प्रथा के सुधार के लिए उन्हे एक अनमोल अवसर मिला है। जेल में निरा प्रकाश उन बागों भाइयों की हिम्मत और गौरीधर शक्ति को एक रचनात्मक

दिशा मिल सकती है ? क्या इस दरम्यान भी उनकी शक्ति का उपयोग चम्बल घाटी की समस्या का हल करने में सम्भव नहीं है ? बौद्धों को समतल करने का प्रयास प्राण्य हुआ है ताकि छापाकार युद्ध की सम्भावनाएँ घट जायँ और आबाद करने लायक भूमि बढ़ जाय। बागियों के सुटने पर उन्हे आजीविका का साधन देना अति आवश्यक है। क्या यह सम्भव नहीं है कि बन्द जेल के बंदों से धुनि धिबिर में बौद्धों को बाँध में रक्ष कर बौद्धों को समतल बनाने का काम करें और उनकी रिहाई के बाद उन्हे उस समतल की हुई भूमि पर बसाया जाय ? ताकि उनके भविष्य की आजीविका की ब्यवस्था में खुद उनका भी परिश्रम शामिल रहे।

चम्बल का सवक

चम्बल के बागियों के समर्पण से सारी दुनिया को सोचने की एक नयी दिशा मिली है। यदि इस प्रयास में सरकार, जनता तथा समाज बिरोधी तरबों से इस दूसार दलाके में एक शान्तिमय समाज की स्थापना होती है तो सारी दुनिया के सामने अहिंसक समाज-रचना का सम्भावना स्पष्ट रूप से प्रकट होती है। बन्दूक का स्थान शत्य, प्रेम और कल्या की भावना ले सकती है, जो बन्दूक की मोक से नहीं हो सकती। दण्ड-शक्ति को जीतने की शक्ति प्रेम-शक्ति में है। स्वराज्य प्राप्ति के बाद ही प्रथम बार दुनिया को व्याव-हारिक तरीके से अहिंसा की शक्ति प्रकट करने का अपूर्व मौका मिला है। समस्याओं को पैदा करनेवालों के डाटा ही समस्या का हल होना—यह अहिंसक प्रक्रिया की अद्भुत शक्ति है। छोटे पैमाने पर चम्बल घाटी में दुनिया की सब समस्याएँ भोबूद हैं। इन सब समस्याओं का रपायी हल खोजने में यदि हम सफल हो सकें तो दुनिया के सामने एक नया व्यावहारिक मार्ग खुलता है।

इन सारी घटनाओं से दो-तीन बातें स्पष्ट होती हैं। एक, जब हम बिना अन्तत समस्या (बर्निंग प्रॉब्लेम) का व्याव-

हारिक हल खोजने का प्रयत्न करते हैं तो जनता तथा सरकार दोनों का श्रेष्ठ और सहयोग प्राप्त होता है। दो, यह सफलता तब सम्भव होती है, जब समस्या का हल करने की इच्छा समस्या से पीड़ित लोगों में तीव्रता से उठती है और ये उसके लिए प्रायश्चित्त करने को तैयार रहते हैं। तीन, अति-दृष्ट-मानव की असफलता सिद्ध होने पर यह हल सम्भव हुआ, लेकिन अन्य दिशाओं में भी अति का इन्तजार नहीं करना चाहिए। पहले से आत्म-विश्वास के साथ आगे बढ़ने की हिम्मत पैदा होनी चाहिए।

सामाजिक क्रान्ति के क्षेत्र में स्त्री-शक्ति

गांधीजी, विनोबाजी सजावार स्त्री-शक्ति को जागृत करने की पुकार करते रहे हैं। उत्तराखण्ड में पहले से घर-घर में स्त्री-शक्ति जागृत थी वही लेकिन इस दस वर्षों से कुंसांही की सार्वी-भूति के विरुद्ध यह बाजार सघ-ठिल रूप में प्रकट होती रही है। यह हमारे देश की शिक्षित महिलाओं के लिए खुरीती है कि वे अपनी शिक्षित दृष्टि को छोड़कर अपनी शक्ति की सही दिशा को मसखे। घर में ये एक प्रेममय और सेवामय वाता-वरण बनाती रही, और इसके द्वारा देश की हस्तुति मुर्छित रही है। लेकिन अब बाजार के दुसखारो का प्रभाव घर में पहुँच रहा है और महिनायें बहुत जल्दी से अपना शिमार बनती जा रही हैं। अभी चेतना के लिए समय है। महि-नायें मरना हैं, अथना नहीं हैं। जिम सार अर्थात् यह वे अपने परिवार को कुसखारो से बचाने की कोशिश करती रहीं, बिना के पुत्र में उन्ह संपठित होकर सनाज में प्रवेश करके, समान की भी कुस-खारो से बचना पड़ेगा। सखरसाहसिक, आर्थिक और राजनेतिक मूयों के प्रकोप से दुनिया भर का बचाव करना पड़ेगा, सम्बन्धों को मुखाटना पड़ेगा। पारिवारिक, सामाजिक तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ये धारे सम्बन्ध सख, प्रेम और करुणा पर

आधारित रहते चाहिए। अभी तक सन्तो की दस पुवार को हमने किफ पारिवारिक सम्बन्धो के सिलसिले में ही मुना पा। भविष्य में हमें इन सब सम्बन्धों में उसका विस्तार करना पड़ेगा। नये सम्बन्धो को स्थापित करने में महिलाओं का एक महत्वपूर्ण स्थान होता है। नागियों के परिवारो के सम्पर्क में आने से एक दर्शन हुआ कि उनमें स्त्री-शक्ति का सम्पूर्ण अभाव है। पनत तरीके से रमाये हुए अना, धन और जेवर का उपयोग करने में कोई मर्रांन नहीं है। सकेरपोशवाने डाकुओं के परिवारो में भी यह परिस्थिति है। यदि उनमें सच्चे मूष्य होते तो मायद समरसा इतनी नहीं बढ़ती। लेकिन निश्चित है कि सकेरपोशवाने डाकुओं के हृदय-परिवर्तन के लिए स्त्री-समाज के समय सहयोग की आवश्यकता है। इसके लिए आवश्यक है कि स्त्री-समाज मसखे कि उसकी सच्चे मोभा मजबज आभूणो तथा अन्य शारीरिक प्रदर्शनों में सही, बलिज अपने हृदय के सरल और सच्चे तथा व्यापक सुनारमक प्रेमभाव में है। मातृ-शक्ति का विस्तार करके उसे सम्पूर्ण समाज पर लागू करने में है।

सहरसा की प्रेरणा

महरसा में व्यापक काम ने हमें दिखाया कि पुराने मूल्यों को जब से बदलने में जितने परिश्रम और साहस की आवश्यकता है। लेकिन जब राष्ट्रीय पैमाने पर हम उसे उठाने हैं तो एक शक्ति पैदा होगी है। यह छोटी टोनी, जो दो मान से बर्षों पर मातल से खी हुई है, हमारी बचाई की पाष है। आगा है कि मायं, अर्देन में हुए अधिमान स देशभर के सार्थियो ने उम काम का महसस समझा होगा और अब प्रान्त-प्रान्त में ऐसे एक सखन क्षेत्र को उठाने की हिम्मत होगी। जब मारे भारत की शक्ति को बीच-बीच में हनटा करने की शक्ति हुई। अब आगा है कि प्रान्त-प्रान्त में भी, चाहे छोटे पैमाने पर क्यों न हो, एक सखन क्षेत्र में समय काम को उठाने की प्रेरणा मिली होगी।

नयी तालीम का नया स्वरूप

इन वर्षों में तरण-मान्दितेना और आचार्यबुल के द्वारा शिक्षा की समस्या को और जनता की रचनात्मक दृष्टि को खीचने का प्रयास प्रारम्भ हुआ है, विद्यार्थी और शिक्षक वर्ष, दोनों में प्रवेश शुरू हुआ है। कई वर्षों से सभी विचारशील नागरिकों में वर्तमान निष्क्रिय शिक्षा-पद्धति के विरुद्ध अमन्तोप रहा है—लेकिन यह अमन्तोप निष्क्रिय ही था। जहाँ भी सर्वोदय के मार्ग को व्यापक पैमाने पर आगे बढ़ाने का प्रयास हो रहा है—वहाँ पर जनता और शिक्षाक्षेत्र में, शिक्षा में कर्म और ज्ञान के समुपन तथा सरकारी हस्त-क्षेप के निराकरण की एक व्यापक भावना पैदा करने की आवश्यकता है। मेरी मसख राय में महरसा और चम्बल घाटी में जागृत जन-शक्ति के द्वारा, स्थानीय जनता अपनी समझी हुई आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आगे बढ़कर स्थानीय शिक्षा की योजना अपने हाथ में ले ले, तब यहाँ का गम अन्त में अपना पुरा स्वरूप ले सकेगा। केन्द्रित ध्यवस्था से निष्क्रिय शिक्षा, विके-ग्रित स्वावलम्बी समाज को बिकार में बाधक तत्व होगा। कम-से-कम इन दो क्षेत्रों में शिक्षकों तथा जनता को मिलकर स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार स्वाव-लम्बी शिक्षा के द्वारा अपने हानो की समस्याओं का हल करने का एक व्यापक प्रयत्न करना चाहिए। यह पारम्परिक की भावना को जागृत रखकर आगे बढ़ने के लिए एजबाज तरीका है। बहुत धुवी की बात है कि सहरसा में इस और एक विलुत प्रयास सार्थी लोसक्रिय हो रहा है।

उत्तराखण्ड तथा राजस्थान के सक्रिय मजाबन्दी आन्दोलन हमें सचेत करते हैं कि राष्ट्रीय बिकार में अबरोधक मसा के विरुद्ध कदम उठाने में हमें जतना/का/का केसा व्यापक सहयोग मिल सकता है। जमाना हमारे लिए अनुसूत है। जनता निराशा की मीमा पर पहुँच रही है और एक नये मार्ग के लिए मार्गदर्शन चाहती है। बिषयवस्तु है कि यदि हम सक्रिय होंगे,

तो उसका सहयोग हमें मिल सकता है। सज्जन-शक्ति प्रबल करके विजय की ओर बढ़ना है।

यू.ए. में मैंने आपसे कहा है कि मैं आपसे सामने कोई वंचिता राजनैतिक या आर्थिक विचार नहीं रखती। इसलिए मैंने अन्तराष्ट्रीय समस्याओं, मजदूर विद्यतनाम, बांग्ला देश, इजरायल इत्यादि की ओर आपका ध्यान नहीं खीना, क्योंकि मैं मानती हूँ कि जैसे-जैसे हमारे आन्दोलन की अर्थसूचक शक्ति प्रकट होती जायगी—वैसे-वैसे उसका प्रभाव अन्तराष्ट्रीय क्षेत्रों में भी पड़ सकेगा। क्या यह सम्भव है कि चम्बल भाटी का यह जापान इस युग में दुनिया पर अपना प्रभाव डाल पायगा ?

सन्दूपाय

आजकल दुनिया भर में तेजी से बढ़ते हुए यशोकरण के द्वारा उत्पन्न सन्दूपाय की ओर जनता और जापानिक नैतिकानिती का ध्यान जा रहा है। विकासशील देशों में भी आन्दोलन यह समस्या बहुत तेजी से तथा अनियोजित तरीके से बढ़ रही है। आजकल भारत के औद्योगिक नगरो तथा बन्दरगाहों में सन्दूपाय एक अमानवीय स्वर तक पहुँच रहा है। इस ओर विचार करके, सर्वोदय समाज की दृष्टि क्या है, और इस सिद्धिसे मैं हम समाज को क्या मार्गदर्शन दे सकती हूँ ? मैं जाना करती हूँ कि इस सम्मेलन में उस समस्या के हल लिए हम कुछ उपायत्मक नतीजे पर पहुँच पायेंगे। बढ़ते हुए सन्दूपाय को देखकर परिपक्व के आधुनिक विचारक एक विकेंद्रित सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक समाज की आवश्यकता समझने लगे हैं। हालाँकि लंबेबातों के पीछों की दंतक एंसा लग सकता है कि यह जमाना हमारे लिए बहुत प्रतिकूल है, तथापि मैं कहना चाहती हूँ कि जब दुना अपनी ऊँचाई की परम सीमा तक पहुँचना है तो वह अपने आप गिरने लगता है। अब केन्द्रीकरण और यशोकरण अपनी परम सीमा पर पहुँच रहे हैं—और पश्चिमी समाज में सन्दूपाय आर्थिकों से लेकर हिंस्रियों तक सब विचारशील लोगों में एक प्रति-

सहकार, संगठन और सत्याग्रह हमारे आन्दोलन का मूलभूत अङ्ग है।

• प्रा० डा.कु. दास यंग

बाबा की चिन्ता

बहुनो ओर भइयो।

घामदान घामस्वराज्य के बारे में विषय प्रवेश कराने के लिए मैं यहाँ पर उदात्त हुआ हूँ। मैं आपकी तीन सप्ताह पूर्व २५ अप्रैल के एक प्रश्न की याद दिखाना चाहता हूँ। २५ अप्रैल के ३। बने घाम दो परधाम में बाबा के सम्मुख हम सब लोग बैठे हुए थे और आन्दोलन के बारे में उनके निर्देश और आदेश को सुनने के लिए आदुर थे। उन्होंने जोनना प्रारम्भ किया—“विच्छेद एक साल से मैं कोविश कर रहा हूँ कि सूर्य में रहते हुए भी कार्यकर्ताओं के पनो द्वारा उनके सम्पर्क रखें। उत्तर नहीं लिखता हूँ, लेकिन थैड ही जिले से जिला सर्वोदय मण्डलों की ओर से या प्रमुखों की ओर से मुझे पत्र माते हैं। उन पत्रों में प्रतिमा भाती है, माह भर के काम का विवरण लिखा हुआ रहता है। मैं जब उन पत्रों को देखता हूँ तो मुझे लगता है कि देश में कुछ अनचाहो को छोड़कर घामस्वराज्य आन्दोलन समाप्त हो गया। उन पत्रों में खाने-पीने की चर्चाएँ रहती हैं। कभी उपवास हो गया इसको चर्चाएँ होती हैं। कवाई की चर्चा होती है, सफाई की चर्चा होती है। शर्पना करता हूँ यह भी लिखा जाता है। वे सब अच्छी बातें हैं। लेकिन घामदान आन्दोलन के बारे में कुछ हो रहा है ऐसा ९० प्रतिशत पत्रों से कुछ

किता उत्पन्न हो रही है—जो विकेंद्रित अर्थिक समाज के लिए अनुरूप है। इस बालिग अवस्था में हम एक अव्यक्त अनु-नूल युग में प्रवेश कर रहे हैं। ईश्वर हमें इस स्वर्ण अवसर का पचयवा उठाने की शक्ति प्रदान करे। ●

होता नहीं देखता।” तब हम सबको सोचना चाहिए कि २५ अप्रैल १९७२ को बाबा ने जो बात कही है वह हमारे जिले पर, हमारे प्रदेश पर, जहाँ हम काम कर रहे हैं कितना लागू होता है। आज हम सबको आत्म पर ध्यान करने का अवसर प्राप्त हुआ है। आज दिन भर जोर आगे भी हमें जितना समय हो अपना आत्म-परोक्ष करे।

हमारा राष्ट्रीय मोर्चा

इस तरह यह बात है, दूसरी तरह अवसर स्वल्प ही बयो त हो कुछ प्रयोग हुए हैं। हमने यह माना कि सहृदय, मुश-हरी और नजोरे हमारे तीन अधिम मोर्चे रहेंगे। यह हमने अपना सर्वोपरि कार्यक्रम माना था। उन तीन मोर्चों पर कुछ प्रयोग हमारे साधियों ने किया है। तजोर में वैसाइन में क्या हुआ ? वहाँ सत्याग्रह कैसे करना पड़ा ? कोर्ट में कैसे जाना पड़ा ? बहुनो को शक्ति यहाँ किस प्रकार से पैदा हुई ? और उसमें प्रश्न का हल किस प्रकार से निकला ? आगे हम किस प्रकार से काम करना चाहते हैं ? इस बारे में मेरे बाद यहाँ एक दो तीन चतुरान्नु बादि बोलनेवाले हैं। जगन्नादन्नी भी बोलनेवाले हैं। मैं तपखोल में नहीं आऊँगा, लेकिन यहाँ एक प्रयोग चल रहा है और काफी आगे बढ़ रहे हैं। मुशहरी में क्या ही रहा है ? आप सब जानते हैं। जे० पी० की अनुस्थिति के बावजूद यहाँ काम आगे बढ़ रहा है। सहृदय में बिधे हमने अपना अधिम मोर्चा माना है वहाँ एक-एक साल तक साधियों ने सोर उरसना की, लेकिन वह तपना व्यर्थ नहीं गयो। १८ मार्च से १८ अप्रैल तक बाबा के निर्देशानुसार यहाँ एक माह का सपन अधिपान बना उसमें ३०० साधियों

हिस्सा लिया। कबीर १०० साथी बिहार के बाहर के थे। बाकी सब साथी बिहार के ही थे। अभियान की अवधि में नजर आया कि कुछ प्रखण्डों में काम हुआ ही नहीं। कुछ साथियों की कमी के कारण कुछ प्रखण्डों में काम कम हुआ, और कुछ प्रखण्डों में अधिक काम हुआ। बुद्ध मित्राकर कुछ प्रखण्डों को बारों में अच्छे धारणा बनी है। लोगों ने जो धरान में जमीन की जो और बँटी नहीं थी उसके बारे में उन लोगों को याद है और जब हम जमीन मानने के लिए जाते थे तो अकबर वाला इलाका नहीं करते थे। कभी-कभी एक-दो बार जाते पर जमीन का खाता-खतरा मिल जाता था। कभी-कभी प्रेम का आग्रह भी करना पड़ता था। प्रेम-पत्निय भी (मैं उसे सत्याग्रह तो नहीं कहूँगा) करना पड़ता था।

तीन मोर्चे हैं जो प्रखण्ड सर्जिस्ट में आते थे: सहरसा, मुसहरी और तजोर। इस नाम को हमें प्राथमिकता देनी चाहिए और देश भर में इस नाम को सबको मिलकर प्रुथ करना चाहिए। ये मोर्चा बिहार का ही नहीं, सहरसा जिले का ही नहीं, तजोर का ही नहीं, मुसहरी का ही नहीं, यह हमारा राष्ट्रीय मोर्चा है। यहाँ कुछ प्रयोग हो रहे हैं। इन प्रयोगों से सारे भारत को लाभ मिलेगा। सामस्वराज्य को दिया स्पष्ट होपी। ये तीनों हमारे शक्ति मोर्चे हैं। इसमें सब लोगों को साथ देना चाहिए। क्या जल्द है मुसहरी के लिए? सहरसा जिले के लोगों ने यह माँग की है। यह विस्तार से बात की जायगा। धीरे-धीरे मोर्चा में अतिम प्राण्य करते हुए कहा था कि सहरसा जिला का चुनाव बहुत ही ठीक है। प्रामस्वराज्य का विभ-विभाजन करने की दृष्टि से यहाँ रथ-से-नम लोगों को पाँच साल देने चाहिए। भारत भर से सशक्त कार्यकर्ताओं की माँग की जा रही है। पाँच साल देनेवाले जितने कार्यकर्ता हैं। केवल हमको १०० कार्यकर्ता चाहिए, हज़ी

गलतने के लिए नहीं। पहले हड़्डी गलतने की बात थी। लेकिन दम रथ-से-नम पाँच साल के लिए आप समय दें। ऐसे वे कार्यकर्ता होने चाहिए जो रथ-से-नम २० स्थानीय कार्यकर्ताओं को निकाल सकें। फिर मुद को नाम करना नहीं है। जानाकर हमें करवाना है और स्थानीय जन-शक्ति लड़नी करनी है। इसलिए २० स्थानीय कार्यकर्ताओं को निकाल सकें ऐसे समता रखनेवाले १०० साथी बाहर से सहरसा के लिए चाहिए। यह माँग है और उसके पहले सान में किस्त के तौर पर सा आठ अभी चलिये। जितने ही साथी इतने लम्बे समय के लिए नहीं जा सकते। उनके लिए यह माँग की गयी है कि मई १५ से, जब मई सम्मेलन हो गयी लेकिन जितना जरी सम्भव हो सके उतना जल्दी, बल-बलसे जब हमारा सम्मेलन सम्पन्न हो जायगा तबसे शुरुआत। चूँकि सना बंद महीने में चार प्रखण्ड जिले गये है वहाँ का काम पूरा करने के लिए काम को आगे बढ़ाने के लिए जितने सशक्त साथी आगे जाते उन लोगों को सहरसा जाना चाहिए। अतः हमने जो अपना राष्ट्रीय मोर्चा बना है उसकी माँग है और उस माँग की पूर्ति अवश्य होनी चाहिए। इसलिए आप के सम्मुख इस आशा से अपनी बात रख रहा हूँ। यह हमारा पहला कार्यक्रम हुआ।

प्रामदान-प्राप्ति का काम जारी रहे दूसरा कार्यक्रम हमारा यह होगा कि अवलियत प्रामदान-प्राप्ति का नाम जो चल रहा था देश भर में बंद ठपटा हो गया है, वह काम आगे पूर्ववत् जारी रहना चाहिए। उसमें जितना सुधार-समीक्षण हम कर सकें उतना प्रकर करें। बंद न कर सकें थे कोई चिन्ता नहीं। लेकिन उस नाम का निषेध नहीं भी नहीं हो। नाविक में हमने प्रामदान की परिभाषा बदनी। लेकिन उसमें भी यह कहा गया है कि अवलियत प्रामदान की प्राप्ति के लिए प्रयास बराबर जारी रहनी चाहिए। हमारा दूसरा कार्यक्रम होगा, अवलियत प्रामदानों की प्राप्ति।

पहले जित प्रकार से हम किया करते थे वह आज भी और आगे भी जारी रखें। हमारी नयी प्रयोगशाखाएँ
तीनरा हमारा कार्यक्रम यह है कि क्या प्रामदान प्राप्ति और पुष्टि सार-साथ हो सकती है? पूर्व तैयारी के बाद एक सप्ताह में या एक दिन में भी की जा सकती है? इसका प्रयोग करने के लिए, सर्वप्रथम आन्ध्र जिले के महबूब नगर के जड़चलता प्रखण्ड में हुआ। मैं आप को नवम्बर, '५१ ई० में ले जा रहा हूँ। जड़चलता में वहाँ के जिला सर्वो-दय मण्डल के अध्यक्ष श्री सुरभि शर्मा के कहने पर तथा वहाँ के प्रदेश सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष पर प्रदेश के सब सर्वोदय कार्यकर्ता इन्टरे हुए और उन्होंने कोई अनुभव नहीं रखते हुए भी इसके लिए कोशिश की। क्या प्राप्ति और पुष्टि सम्भव है? क्योंकि उनके सामने यह तर्क रखा गया कि भारी, मुसहरी में, सहरसा में, तजोर में कुछ तकलीफ हो रही है। अब तो कुछ तकलीफ कम हो गयी है रिजन्ट की दृष्टि से। लेकिन वहाँ तकलीफ जारी है। इसका क्या कारण है? उन्होंने कहा कि तवा ठपटा हो गया है। तो मैंने उनसे कहा कि जब पेंकू (तवा) बरम हो, जब हस्ताक्षर किये जा रहे हो, तब प्रामदान क्या है? प्रामस्वराज्य क्या है? समझाया जा रहा हो तो उड़ी समय उन चार सतों पर अवल करने की कोशिश क्यों नहीं की जाती? प्रामस्व-राज्य-समा का गठन क्यों नहीं किया जाता? जितनी जमीन आप बाँट सकते हैं उसका बँटवारा क्यों नहीं किया जाता? आगे का काम करने के लिए प्राम-शक्ति-वेना का गठन क्यों नहीं किया जाता? कोशिश तो की जाय। बिस्वी को कोई अनुभव नहीं रहते हुए भी उनकी मदद के लिए मैं गया। हमने भी कोशिश की। नतीजा आश्चर्यजनक निस्तर। बाबा की जब मैंने १५ दिसम्बर को रिपोर्ट की, सारी चटनाओं की जानकारी दी, तो बाबा ने निम्न बातें कही—“एक चमत्कार आनम में हुआ।” क्या चमत्कार

हुआ? ५०-५० गांव सुवर्णित ग्रामदान हुए। तीन सप्ताह में उनके हीन बोपाई गांवों में ग्रामसभाएं बन चुकी हैं। १८९ एकड़ जमीन मिली। ७८९ एकड़ दूसरे सप्ताह में। मेरे बड़ा दत्ता अन्ध संस्कारों का मी नहीं होता। मैं बना जाऊंगा लेकिन आप 'गोला' को लिए। मैं तो व्यापकी भाषा जानता नहीं हूँ। मेरा कोई खास उपयोग भी नहीं है। लेकिन आप इस काम को आगे बढ़ाएँ। एक-दो सप्ताह में १८९ एकड़ जमीन मिली। ६००-७०० एकड़ जमीन बा बंट-बारा उसी अवधि में हो गया और जन-जन सह ग्राम-गणितेना बना दी गयी।

ऐसे कई प्रयोग हुए इसलिए आप को भिन्न बड़ा कि आपको १९५२-५३ के पुराने जमाने में वं ना रहा है या १९७१ की बात कह रहा हूँ मुझे आश्चर्य नहीं। लेकिन पटनाएँ एंटी कई जगहों में हुई हैं। उड़ीसा में भी गया। उस गांव का नाम मैं भूल गया हूँ। वहाँ के एक भाई ने बड़ा कि ६ महीने में जो ६-७ प्रांतों में पदयात्राएँ हुईं, ग्रामदान-प्राति-गुष्टि की दृष्टि से। उड़ीसा की पदयात्रा सर्वश्रेष्ठ रही। आन्ध्र का तम्बर पट्टा है भूँक उसने दरवाजा खोला। उड़ीसा का तम्बर भी बहुत अच्छा है। सबसे अच्छा है बहुत माने में क्योंकि १३३ भूदान दाताओं ने भूदान में दात दिया। एक सप्ताह में, जो सबसे ज्यादा है। वहाँ के एक भाई ने बड़ा 'जि अत्याचार राजदारे रोई अत्याचारों आजी उद्वेग में वहाँ पहले देवावत राजा का राज्य था। भूँक राजा का राज्य था उसमें अत्याचार घटान करना पटना था वही अत्याचार आज भी दुर्ग सहन करना पड़ रहा है। 'जेई वरीन सुबरे रोई गरीब आमी' बहुत सरल है आप समझ सकते हैं। जो मैंने कहा, 'किर आप क्या चाहते हैं? क्या परिस्थिति है आपकी? क्या दुख है?' यह तो थोपरिदिव्य वाक्यम होगा। जो 'साव दुष्प्रावनी ता आजी कई गुन बनने साव' रिखत पहले फसती थी वह

आज भी और अधिक रूप में चल रही है। तो आप बाहते क्या है? जाति मूल्या, समाज मूल्या। कृषि और मूल्य समान होने चाहिए। यानी किसान और मूल्य समान होने चाहिए, यही हमारी मासक्षा है। तो ग्रामस्वराज्य उसी के लिए है। वहाँ के हमारे निज हरनब पटनामक ने उसके कर्ण पर हाथ रखा और पड़ा कि गांधी राज्य गरीबों का है। हमें गांधी राज्य स्थापित करना है वहाँ बर्गोंक हनुने लड़ाई गांधी राज्य प्राप्त करने के लिए लड़ी है। २५ साल पहले देशी राज्य था। उन्होंने बड़ा- गांधी-गण्य स्थापित करना है। ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य गांधी राज्य का रास्ता है। मैंने बड़ा-चार लतें हैं। आप दात दीजिए। उन्होंने हस्ताक्षर किया और दात दिया। गरह इस को कई घटनाएँ घटी। इसलिए ५२-५३ की या ५४-५५ की घटनाएँ बही कम बही अधिक आज भी घटित हो सती हैं। इसलिए ग्रामदान प्राति-गुष्टि एक सप्ताह में ही सम्भव है। १५ दिन पहले आन्ध्र में मैं फिर गया था जो कोल्हापुर नाम के एक अक्षर में प्राति-गुष्टि पदयात्राएँ चलती गयी। अब हमें और आगे बढ़ाना चाहिए। आन्ध्र में पोचपल्ली द्वारा एारे देश का मार्ग खोला है। फिर पकुरला ने जो मार्ग खोला है उसे हमें आगे बढ़ाना चाहिए। कार्यकर्ता केवल पदयात्रा नहीं करेंगे बल्कि लोक-पदयात्राएँ निकलनी चाहिए। उन्होंने बड़ा कि जरूर लोक-पदयात्राएँ निकलने और उस गांव का नाम ली मैं भूल गया। उस गांव की पदयात्रा में मैं पहुँचा तो रास्ते में २५० लोग हमको वापस वाते हुए मिले। बड़ा गये थे? आप तो इस गांव से उस गांव में गये थे। हमारे गांव का ग्रामदान किया, उसकी प्रसंथा बनायी। उस गांव की मिलनी जमीन एक दिन में बंटना सम्भव था उसनी बाँट दी। ग्राम-गणितेना बनायी। वही सत्येय सुबरे गांव को पहुँचाने के लिए हथ ना रहे है। कोल्हापुर प्रणय में मेरे कन्ह

दिन पहले यह दुष्प देखा। तेलगू भाषा मेरी समझ में आती नहीं थी, मेरे साथी रहते थे वही समझते थे। ने प्रमे कहते थे—'आप बोलिये।' मैं बड़ता था कि क्या बोलूँगा। मैं दत्ता ही बड़ता था उतते—ग्रामदान अर्थात् 'नव तरि दुख, अन्धरी दुख'—एक का दुख सबका दुख। अब तो समझ सके हैं? दत्ता ही मैं पूछता था। भाष्य भी चतुर्ता था और लोग कहते थे कि समझ गया, समझ गया। और ग्रामदान पत्र पर हस्ताक्षर कर देते थे। ग्रामसभा गठन और गुष्टि की कार्यवाही वहाँ होती थी। ऐसे दुष्प उन कई गांवों में हुए तो मुझे ऐसा लगा कि वहाँ की भूमि तुमी है वहाँ यदि हथ सब लोग, प्रथेय सर्वोदय मण्डलो के अध्यक्ष, मभी और जिम्मेदार कार्यकर्ता १० दिन के लिए पहुँच जायें, वहाँ जरा जोर लगायें, कुछ पद्धति में सघोधन करें, कुछ कमियों को पूरि करें; क्योंकि हममें बहुत कमियाँ हैं। और वहाँ के कार्य-कर्ताओं में भी काफ़ी कमियाँ रह जाती हैं। अब हम सब मिलकर सघोधन करें और एक पद्धति को परिपूर्ण बनाने की चेष्टा करें। जून १ से जून १० तक इस प्रकार ना एक जायोजन वहाँ के कार्यकर्ताओं ने किया है और सर्व सेवा सध के मभी ने सभी प्रथेय सर्वोदय मण्डल के अध्यक्षों और सचिवों को एक बिट्टी भेजी है कि जो भाई उहुरता नहीं जा रहे हैं निती वारप से वे कुपा-पूर्वक २४ दिनों के लिए यहाँ आवें। सर्व सेवा सध उनलोगों से प्रासंन करता है कि हम सब मिलकर प्राति और गुष्टि की सुदन्वित पद्धति ना सघोधन करें जो लोक-पदयात्रा की दिशा में जानेवाली हो। आगे के कार्यक्रम भी विस्तार वथा हो इस विषय में आपके सम्मुख राम-मुँडरी विस्तार से बोलनेवाले हैं। इव-निए में उद्यम अधिक समय नहीं लूँगा। भाषा के सुझाव

जो हमारा यह तीसरा कार्यक्रम ग्रामदान प्राति और गुष्टि समन्वित पद-

यात्रा या चौथी बात छप हुई कि ६ हजार अनाथ हैं हमारे भारत-वर्ष में। बितने प्रसन्नो में काम चलता होगा ? तो हम लोगों ने कहा कि करीब ३००-४०० प्रसन्नो में चलता होगा। तो उन्होंने कहा कि तब भर में आ। बितने प्रसन्नो में इस प्रकार के काम कर जेगे जिनमें दो कार्यवर्ता रहें। एक कार्यालय को सम्भालनेवाला जिसमें प्रसन्न-सभा या दफ्तर रहे दूसरा और सभी-को पहला दोनो मिलकर पदयात्रा करने जाये। पदयात्रा मेव्या करता है ? आचार्यकुल या पंजाब करना है, ग्रामस्वराज्य वा सन्देश पहुँचाना है ऐसी कार्य बितने ब्लाज में कर सवेंगे ? हम सबने सोचा और आप सब की ओर से जवाब दिया। हम प्रयत्न करेंगे कि एक साल में ऐसे १००० प्रसन्न हो जायें। कामनिय हो। यहाँ सब के बारे में क्या होगा ? तो बाबा ने कहा कि मुताबिक है, सर्वोदय यात्रा है, सर्वोदय मित्र हैं और हम लोगों ने यह भी सोचा कि १११ ह० देनेवाले लोग देश-भर में इकट्ठा किये जा सकते हैं, उनसे सम्पर्क किया जा सकता है। ऐसी एक केन्द्रीय योजना सर्व सेवा छप बनाये। जिसपर अन्न आप और हम सब मिलकर प्रसन्नो में, प्रदेशों में, जिलों में करें। जैसे ही हम एक पत्रकारिता बनायें कि जिसमें ५ लाख या १० लाख सर्वोदय मित्र बनाने जायें उससे हमारा कुछ सम्पर्क भी बढ़ेगा, लोगों से पड़वाना भी अधिक होगी। जैन मदद कर सकेगा इस काम में ? यह भी पता चलेगा तथा दक्षिणा के रूप में कुछ पैसा भी मिलेगा। संगठन, सहकार और सत्याग्रह की त्रिभुजों का कार्यनिष्पन्न हो।

हमारा पंचव्या कार्यक्रम यह है कि इस काम को करते-करते हरे ऐसे १५-२० पानेदस-गवन क्षेत्र हमारे देश भर में बनाने चाहिए। सहस्रा, मुसहरी, अंगोर अथिग क्षेत्र हैं लेकिन हर भावनी यो सहस्रा, मुसहरी, तजोर वा नहीं सकेगा। तजोर में भाषा भी ही दिखल है। इसलिए जहाँ-जहाँ सामयिक

समस्याएँ हो, जो भी हो, उनसे इन सामस्वराज्य-सभाओं वा अनुबन्ध होना चाहिए। मैं आपकी ओर बोझा धीरे ले जाता हूँ। अक्तूबर, '७१ में बम्बल के लोग गोपुरी में इकट्ठा हुए। उस समय उन्होंने अंत-बन्धोस काम के काम वा सिंहावलोकन किया और उन्होंने कहा कि बहुत अच्छा काम हम लोगों ने किया है। दान द्वारा लोगों को समझा-बुझाकर काम किया। अब उस पट्टी को छोड़ना नहीं है लेकिन वह नई जगह अपर्याप्त है इसी में से हमें आगे बढ़ना चाहिए। इसी दान में से दाताओं वा संगठन होना चाहिए श्रम देनेवाले, पैसा देनेवाले, मजदूरी वा अन्न देनेवाले, जो भी दान देनेवाले हों उनका एक संगठन बने। उसमें दाताओं की शक्ति बिखरी न रहकर एक संगठित शक्ति बने। जिन दिशा में हमको काम करना है उनके सम्बन्ध में रामभूतिजी विस्तार से आपको बतायेंगे। आखिरी बात वहकर मैं समाप्त करूँगा मैं दो-तीन मिनट और लेता हूँ। समय उदाता हो गया है इसका मुझे भान है।

२५ अंग्रेजों को परधाम में हम सब लोग बंटें थे। वाराणसी-एक प्रदेश में क्या चल रहा है उसका वर्णन कर रहे थे। इस प्रान्त में कुछ नहीं हुआ, उस प्रान्त में कुछ नहीं हुआ, उस प्रान्त में रतना-दा ही हुआ है। कुल मिलाकर मतलब यह है कि ग्रामदान वा मैनेस्ट्रीम (मुख्य धारा) समाप्त हो गया। इन अपवादों के रहने हुए भी सामान्य नियमों की दृष्टि से ग्रामदान-प्राप्ति का, ग्रामस्वराज्य की पुष्टि वा, मैनेस्ट्रीम समाप्त हो गया है, कुछ हो गया है। फिर वे हँसते-हँसते कहते लगे, मराठी की एक कहावत है। उसकी जन्मोने थाद दिताई 'अति झाले राँगुं याले'—बहुत ज्यादा मुझे दुख हो गया इसलिए रो भी नहीं सकता इसलिए हँस रहा हूँ।

भाइयो, बहनो ! जो हमारा नेता १४ साल तक पैरल चले, ठण्डी ब गरमी में, बारिश में और उसकी इस वृद्धावस्था में मृत्यु में जाने पर यह कहना पड़े—

“मुझे इनका दुख हो गया है कि मैं रो भी नहीं सकता हूँ, इन पर मुझे हँसी आ रही है।” क्या आपका और हमारा यही फल है कि जीवित अवस्था में उनको यह दुख देखना पड़े ? जोर आगे मैं क्या न हूँ आपसे। इसलिए वाबाने जो यह अत्यन्त गम्भीर चेतावनी दी कि मुझे हँसी आती है क्योंकि मैं रो भी नहीं सकता। क्या इसका हमारे चित्त पर कोई स्पर्श नहीं होगा ? भगवान बुद्ध की यह कहानी रहकर मैं समाप्त करूँगा। भगवान बुद्ध जब निर्वाण को जाने लगे तब वहाँ पर परम शिष्य, साधो आनन्द बैठे हुए आया था। वहाँ उसने भगवान से रोते हुए पूछा “भगवान आप जा रहे हैं, हमारा क्या होगा और कौन हमको मार्ग-दर्शन करेगा ?” तो बुद्ध भगवान ने जो बात कही वह हम सब पर भी लागू होती है। अगोदीगी आग भव। अर्थ है अगता दीप आगही बानिये। यह पानी भापा है। हमारा दीप हम खुद बनें। हम सब अधिक अच्छी तरह से अनुराग करें परस्पर विचारों की पूर्ण सहाई हो लेकिन साथ साथ उसाह हो, पूर्ण अनुराग भी हो। इस प्रकार से हम काम करें तो चित्तने सानभर में प्रयोगशालाओं में जो प्रयोग किये गये हैं, और जो दिखाएँ सुनी हैं, उससे अघकार दूर होगा। मुझे विश्वास है कि जब हम अगले साल मिलेंगे, इस प्रकार से काम करेंगे कि बाबा नो यह कहने भी जरूरत नहीं रहे जायगी कि मुझे इनका दुख हुआ कि मैं रो भी नहीं सकता। धन्यवाद।

(सर्व सेवा सभ के महासत्री श्री ठाकुर दास बग द्वारा दिनांक १८-२-७२ को सर्व सेवा सभ अधिवेशन में दिये गये भाषण से।)

भूदान-तहरीक
उर्दू पाठिक
मातामा चंडा : चार दाये
पत्रिका विभाग
1 में सेवा सभ, राध्यात, बाराबंसी-१

दान अभियान गुण से अधिक गणना पर आश्रित

• जैनेन्द्र कुमार

[सहासा (बिहार) में एक महोत्सव की व्यवस्था के बाद "कल्प" के सम्पादनक भी अमृताराम साहूने ने श्री जैनेन्द्र कुमार से चर्चा की और उनसे कुछ प्रश्न पूछे। पहले प्रत्योत्तर यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है।]

प्रश्न—आपके विचार में भारत में योग्यव्यक्त समाज के निर्माण के लिए गांधीजी के बाद आज उनके कार्य में अपने जैसे बढ़ावा या उत्तरता है ?

उत्तर—योग्यव्यक्त भारत की बनाने के पहले खुद को बनाना होगा। हर कोई देखे कि उसकी उम्रों का परिणाम क्या है। वह बचोटी मुद्रित नहीं होनी चाहिए। हर शकष पायेगा कि अगर वह धर्म, यानी शारीरिक श्रम, से दूर है तो जाने-अनजाने किसी के भ्रम का शोषण भी कर रहा है। यानी हर किसी को जीवित या जोड़ पश्चिमि-शांति-रूपक उत्पन्नक धर्म से बड़े, रक्ष पर ध्यान होना चाहिए। उन शोषण अपने अर्थ कम होगा। शोषण के रचना बढते जाने में सुखे लगता है कि बुद्धिजीवी-वर्ग सबसे बड़ा बपरणी है। कुर्सी और नलम के नाम को वह रचना महत्व दे लेता है कि उसके एज में हर एक दुर्भीते पर उसका हक हो जाना हो। हम लोग पूँजीवाज में शोषण की मूल देख लेते हैं, नेता तथा बूझके ध्वस्वर्णापक जन का शोषण हमारे ध्यान में हो नहीं जाता। इसीलिए, राज-नीतिक या दूसरे उपदेशको भी भ्रमण होती जाती है। वे आदर्श या ज्ञानि के कम किसी उगाने-बगाने के नाम में उत्तरना हो गयी चोहते। उन मापक-ज्ञानि-नर्म के विभे-पण में जाय हो वहाँ भी शोषण दिखाई देता। चुनाव अभी हुए हैं और पून-भाम की ठस हद न थी। हो-हुन्ना वह धन किस चीज का था ? राज-नीतिक दलों के घोषों, वक्तव्यों और दम-दस्तावेजों का ही ना। क्या आप बहँसे कि दूसरे वोट के फले की चिन्ता थी ? वोट के प्रति क्या था ? उन्हें क्या नहीं शोषण हो न था ? तो शोषण का प्रश्न अर्थ

सीमित ही नहीं है, वह गहरा और वैदिक है। और सुखे लगता है कि विचारवादिता और ज्ञानि-वार्ताता के नाम पर चलनेवाली प्रवृत्ति को भी इस नसौटी पर परखा-वसा जाना चाहिए।

प्रश्न—तो फिर क्या प्रामस्वराज अन्दोलन आज की आवश्यकता नहीं ?

उत्तर—आन्दोलन के साथ और पहले, कार्यकर्तियों के चित्त में आ-स्व-स्वराज्य चाहिए। सामस्वराज्य की त कुरे ? नाम बस शोषण-विरोधी का ही होगा न। और अगर नाम बस हो जाय किसी बाहरी समिति-सभ का तो सामस्वराज्य एक अभिमत बना रहता है और ज्ञान-रचना के नौतिक नाम से वह भ्रमण एव अज्ञान पट जाता है। स्वा-सन्धी प्रामस्वराज्यकी परिवारों के आधार पर बनीया अर्थात् स्वा-सन्धीता का भाव उत्तर से नीचे, हर दशाई के लिए आवश्यक है। यही उत्पन्न-धम जीवन का मौलिक मूल्य है। धमाधारित जीवन के लक्ष्य से किसी ज्ञानिकारी अथवा व्यवसायिक अथवा उपदेशक को छोटी समी हो ? वरखा इसीलिए मरते दम तक गांधी से नहीं छोड़ा। कम्युनिस्ट का धर्मवाद सत्ता पाने के साथ ही जैसे नीचे छोटा रहे जाता है। इस अन्तर पर सबकी नीर करना है। तभी न गांधी को साम्प्रदाय से अर्थ का नश्य मानना पड़ता है।

साम्प्रदाय में निजी स्वयं का शोष करना चाहें। नतीजे में एक स्वयं चुन-पण समाज के नाम पर राज में आ-दिना। अतः देखा गया कि स्वयं के भाव अथवा जमान से बनी विषमता की समस्या उससे कट नहीं पायी। 'अप-रिह' उसमें अग्रिम विचार है। उनमें

स्वयं की धारणा ही निराधार ठहर जाती है। पता चलता है कि व्यवस्था जोर उपयोग से अलग स्वयं वास्तव में कुछ होता ही नहीं।

अधिजाय सोमतिस्टिक विचार-पद्धति स्वयं के सम या पुनर्विचार पर केन्द्रित रहती है, इतनी कि जैसे स्वयं सबकुछ ही कुछ ही। अतः उस विचार धारा में स्वयं या अग्रिमक अथवा स्वयं का अर्थ, विस्तार होने में अक्षम नहीं। फल होता है सुद्ध और बुद्धि-व्यक्त उत्पन्न-उद्योग। उस पक्ष से अगर विचरना हो तो स्वयं की धारणा के मूल से ही अग्रिम देख लेना होगा। फिर इस सदर्शन के प्रष्ठा-जनों की स्वयं-रक्षण के आधारों को अपने जीवन में उतार कर दिखाना होगा। यह अम भारत में अभी उठवा दिय नहीं था। सन्तो, श्रमियों, सुनिमी की परम्परा एव से यही रहती आयी है। पर अगर गांधी के बाद उसकी बड़ी दृष्टि दीखती है। आज का सन्त जैसे शोषण के समय विरामण और निस्तंज हो गया है। क्या मैं वही कि भारत के अपने स्वराज्य में भारतीयता मानी इस अर्थ में अस्तप्राय हुई जा रही है। परतन्त्रता के दिनों में भारत इतना शुद्ध नहीं था। सम्राट के सामने बचना महान्ता अधिका शोषणवाली जचती था। आज के जिसे, प्रान्त और केन्द्र के अन-विगत राज्यों के समझ मना कीम दूसरा है जो तनिक भी टिकता देख सकता हो यह स्थिति सोचनीय है, भय-कर है। और हुँ इसीलिए है कि हमने धर्म और धर्म को, नीति और राज को, अलग छानने में बैठ जाने दिया है। उसी कारण शरीर धर्म और प्रवृद्ध-नैतिक, जीवन के दो अलग स्तर बन गये हैं। यह विभेद दृष्टता चाहिए और गांधी-वादीवर्गों को इस अर्थ में अपनी जीवन-विधि में सिद्ध करके दिखाना देना चाहिए।

प्रश्न—उप-इस तरह ही प्राम्प्रदाय-अभियान का कोई महत्व ही नहीं रह जाता। क्या आप इसे गांधीजी द्वारा जारी या अलग नदम नहीं मानते ?

उत्तर—धामदान नामकी उगादा हुआ, ऐसा जयप्रकाशजी अगर कह पाये तो बने ? आर्थिक दृष्टि-गोंधी से सगल नहीं है। परिणाम के माप में अन्वयित नाम आ सकता है, मूल प्रेरणा में उसके लिए स्थान नहीं है। दान-अभियान कदाचित् गुण से गणना पर अधिक बाधित हो रहा। इसमें नहीं जानना कि मनुष्य से निरपेक्ष भूमि या धाम का विचार नहीं कर ज्ञाता गया। यही हो जास करवा है। दोनराएँ सर्वेदन से स्वतंत्र हो जाती हैं। बंसी मोलना जयवा इति निष्फल न रहे तो बस हो ? अगर धामदान का अभियान सोच-भावना के अर्थ में फलीभूत नहीं हुआ, या कम हुआ, तो कारण में सहस्रम्बेदन की यह मुष्टि ही रही होगी। दिनोंका दो भी ज्योतीं सत्य है, परिवारिक वह है भी वहाँ ?

प्रश्न—तो फिर गांधी के सपने के भारत के निर्माण को दिना में किस कार्य-क्रम को हाथ में लेना चाहिए ?

उत्तर—स्वतंत्रता गांधी के समय राजनीतिक ही भिन्नी। आशय, देश 'पर की अयोगिता' से स्वतंत्र हुआ। बाकी अपने स्वतंत्रता और अयोगिता का निर्माण धेप रह गया था। वह निर्माण इन २३ वर्षों के बाद उगे का स्वों ही दोष बना है। अपना सन नहीं बना है, अपना अनुपासन नहीं उजना है। पर से स्वतंत्र होता स्वतंत्रता का तट मात्र था। अपने में स्वतंत्र होने की यात्रा के लिए सन्ने रचनात्मक पुराणों की आवश्यकता थी और आत्मन्यता है। राज तो यत्र मात्र है। समाज आपनों सम्बन्ध पर टिकता है और आपनों सम्बन्ध अनन्तरय हैतुनी और भावनाओं के अनुसर बनते हैं। आवश्यकताओं भी श्रुद्धि और सहायता है। गांधी ने कहा कि राज पर दूसरे आदमी को भेरो तुम दम की निगाह में पढ़ने हो। तुम लोक-जीवन की तरह से पृथ्वी और बहूँ के उस उत्कर्ष को। पर यह धृष्ट दृष्टि बाधितियों को निवृत्त न पायी। वे राज पर आखीन हुए और दखा गया कि देश सब के उत्कर्ष निरुद्ध से भोज्य हो आता गया है। उन्नी हुई है, पर वह

बेरोजगारी व विपमता के सन्दर्भ में ग्राम्य नियोजन

• कृपि कुमार गोविल

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री गुनार मिर्झान ने अपनी पुस्तक 'एशियन ड्रामा' में यह विचार व्यक्त किया है कि आर्थिक नियोजन का सर्वोच्च कार्य यह है कि अर्द्ध-विधमित देशों में पायी जानेवाली अतिरिक्त श्रम-शक्ति को नलीन उत्पादक रोजगार में लगा सके, जिससे कि बेरोजगारी और अर्द्ध-बेरोजगारी को समस्या दूर की जा सक। इसी प्रकार की विचार धारा भारत की प्रथम व द्वितीय पंच-वर्षीय योजनाओं में भी व्यक्त की गयी है। प्रथम योजना के शब्दों में 'एक विकास योजना मूलतः पूर्ण रोजगार प्राप्त करने की दशा आता निर्माण करने का प्रयास है।' ऐसा अनुमान था कि १९५१ में शान्तिग धरों में २० प्रतिशत के लगभग बेरोजगारी थी परन्तु इसके साथ अर्द्ध-बेरोजगारी की अतिन दशा भी विद्यमान थी। कृषि एवं उद्योग की आवश्यकता की तुलना में विवेक की मात्रा कम होने के कारण बेरोजगारी की समस्या के समाधान में प्रथम योजना कोई प्रभाव न डाल सकी।

सर्वप्रथम द्वितीय पंचवर्षीय योजना में बेरोजगारी की विसृन्त व्यापका की गयी। योजना के आरम्भ में लगभग २३ लाख लोग बेरोजगार थे। २२ लाख सहरी संना में और २८ लाख प्राचीन धरों में। इसके अतिरिक्त ५ करोड़ की बर्ध में रोजगार चाहतेवालों की

संख्या भर लाख है। अनुपूर्विक के तब पर तो यह उन्नि-अन्वयित-जो नन आती है। यन का येन गांच है, काय से हाथ छाती है और सहरो की रणरिनिनी कीन-मुषियो को स्वर्ग-नी-सो क्या लगती है, उन्हें बिझाती जान पड़ती है। घन बड़ा है, उजवा हा चिना अनरुप बड़ा है। तो यह पथण है कि स्वतंत्रता राज्यों को मिली है और एक गयी है। प्रजातन उजके लिए तरस

सध्या में १ करोड़ की वृद्धि हुई। मंडालनवीड माडल के आधार पर दूत-ओद्योगीकरण और बेरोजगारी को सम-स्थानो का एक ही साथ समाधान करने का प्रयास किया गया। आर्थिक विकास की नीव मजबूत करने के हेतु स्थान, सीमण्ड मशीन, विद्युतीकरण आदि भारी एवं मूल्यवत उद्योगों को प्राथमिकता दी गयी। उद्योगों की वस्तुओं की वृद्धि को यथा-सम्भव विकेंद्रित क्षेत्रों के लिए छोड़ दिया गया। परन्तु औद्योगीकरण की यह दोहरी श्रिंखा सफल न हो सकी और तीसरी योजना के आरम्भ में ९० लाख लोगों का 'बेकनान' पादा गया। इसके साथ में अर्द्ध-रोजगारी का स्थिति शान्तिग-अर्ध-अवस्था पर और भी अधिक कुप्रभाव डाल रही थी। १९६९ में जन चतुर्थ पंचवर्षीय योजना आरम्भ हुई तो उस समय बेरोजगारों की कुल संख्या १ करोड़ २० लाख पायी गयी।

उपरोक्त सक्षिप्त विवरण से यह ज्ञात होता है कि भारत में योजना का आर्थिक विकास अपने को प्रमुख उद्देश्यों को पूरा नहीं कर पाया है। प्रथम, प्रत्येक बेरोजगार नागरिक को साधन व उन्नतक रोजगार प्रदान करना व द्वितीय, निर्धन वर्ग के जीवन स्तर का मूलतम आधार प्रदान करना। राष्ट्रीय सर्वेक्षण के आँकों से इन दोनों निष्कर्षों को पूर्णतः प्रतिबर्धनी की जा सकती है। दूसरे

रहे हैं, पर उजवा उजाव होगा नहीं दीखता। आर्थिक, सामाजिक और शान्तिग क्षेत्रों में एक ओर प्रयुज है तो दूसरी ओर परमुत्पापेता है। गांधी का अनीष्ट वृष्ट होनाका हो तो कुछ समर्थ और कुचन जनो को सजा के स्वानो से मीठ कर जनता में अना स्थान बनाना होगा। और वह स्थान, निधक अपका ज-दमक का न होगा, बल्कि जननी तरह धनिक, सहयोगी शान्तिग सेवक का होगा। ●

विचार करने पर एका प्रतीत होता है कि भारतीय सामाजिक समाज में गरीबी का भूत नररूप रोजगार के अन्वेषणों का पर्वान माना भी उ नन्ध न होता ही है। यदि ऐसी व अन्य सहायक बाधाओं में सामाजिक समाज को मर्यादित करने के पूर्ण रोजगार की स्थिति प्राप्त की जा सके तो गाँव के औसत नागरिक को अधिक अल्प प्राप्त हो सकेगी और उसके लाभों में सुधार होगा। १९६०-६१ में प्राचीण क्षेत्रों के ६२० प्रतिशत विद्यार्थी निम्नवर्ग लोगों का सर्व आठ सप्ताह प्रतिमास भर्षा २० वैसे प्रतिदिन था। कृषिय अन्व निम्न क्षेत्रों को मिलाकर लगभग ४० प्रतिशत सामाजिक जनता ऐसी थी जो ५० वैसे से कम से गुजर करती थी। क्या कारण है कि २० वर्षों के अधिक विद्यार्थन के उपरान्त भी भारत में सामाजिक विद्योन्नयन पर्याप्त धन-उत्पन्न को सम्भालना उन्नयन नहीं कर पा रहा है और गाँव के एक बहुत बड़े वर्ग, जिसमें कि भूमिहीन व साधन-हीन नागरिक पये जाते हैं, उनका जीवन-स्तार और आवश्यक वस्तुओं का उपयोग स्वस्थ व सामाजिक जीवन के लिए अपर्याप्त है? ऐसी में नयी तकनीक के विचार के उत्पन्न में भूमिहीन, छोटे किसान तथा छोटे किसान के बीच विपत्तियों की खाई गहरी होती जा रही है। सामाजिक क्षेत्रों में ऐसे समाजार्थिक पक्षय पड़ रहे हैं जिनके सफल समाधान को जल्द न दूँड जाने पर न केवल आर्थिक अल्पता होगी अपितु प्रजासत्ताक समाजवाद का आधार भी हमारे बहुत दूर हट जायगा।

प्राचीण क्षेत्रों में बेरोजगारी व अल्प-बेरोजगारी को दूर करने के लिए धन-प्रदान तकनीक का विकास करना होगा; परन्तु-एसा करने के लिए यह आवश्यक होगा कि उन्नयन भूमि, पशुओं व पूँजी का समाप्तिकारी इन्वेन्टरी के उपयोग किया जाय। भूमि और पूँजी, दोनों का ही अभाव प्राचीण क्षेत्रों में पाया जाता है। भारतीय अर्थव्यवस्था

इस प्रश्न पर एक मत नहीं है कि भूमि-गुण्य तथा पूँजी के वितरण के द्वारा भारतीय समाज में विपत्तियों को दूर किया जाय अथवा केवल उत्पन्नित साम-प्रदों का तुल्य वितरण ही समाधान हो। धारणा में इस लेख में हमें इन्ही प्रश्नों पर विचार करना है कि हमारा सामाजिक निवोन्नयन (इन्वेन्टरी प्लानिंग) क्या हो जिनके द्वारा भूमि और पूँजी के सन्तुल्य उपयोग पर सफल और न्यायपूर्ण उपयोग करते हुए बेरोजगारी और विपत्तियों को गहरी सुरक्षाओं पर रोशनी की जा सके। यहाँ यह कह देना भी अनवश्यक नहीं होगा कि सामाजिक निवोन्नयन के इस पंचोदये कार्य के हेतु गाँव के विद्यालय, उन्नयन वर्ग, गैर-शुद्धि व भूमिहीन धार्मिक, समाज-शास्त्री भादि को जलित संगठन में बांधना होगा जिससे कि गाँव के समस्त उत्पन्न के सधनों का अधिनियोन्नयन आर्थिक इन्वेन्टरी के द्वारा जा सके और सामाजिक योजना को उन्नयन तथा जिनके स्तर की योजनाओं से सम्बन्धित किया जा सके। पिछले योजना-काल में सरकारी रिपोर्टों में इस विचारों को अन्तर्गत धरम किया गया है परन्तु वास्तविकता करते समय केन्द्रीय व प्रांतीय सरकारों द्वारा दिये गये अनुदान को पथामम्भन उपयोग करने मात्र से ही सन्तोष किया गया है। इसलिए अल्प व पूँजी-निर्माण योजनाओं को भी गाँव में अल्प प्रथय नहीं मिला गया है। सर्वत्र यह कहा जा सकता है कि भारतीय सामाजिक समाज में भूमि, पूँजी व सम्पत्ति का पर्याप्त एकत्रीकरण है और उनका उपयोग भी होता है। इस परिस्थिति के कारण प्राचीण बेरोजगारी, अल्प-बेरोजगारी, विपत्तियों व सोपन भादि का जन्य होता है। अन्तर्गत में यह सामाजिक-रचना को संशोधित करना है कि उत्पन्न अथवा आय के वितरण में कुछ परिवर्तन करने मात्र से इस ठीक नहीं किया जा सकता, बल्कि जो-० सम्बन्धित और भी नीचतक रूप में अपने क्षेत्र "पावर्टी दन एलिमिनेशन" में प्रवृत्त किया है।

विपत्तियों और तकनीक

इतिहासिक के सन्ध में अर्थव्यवस्थाओं के सम्बन्ध में कुछ नवीन प्रश्न उठे हैं। पहला, क्या ऐसी में तकनीकी प्रवृत्तियों की आवश्यकता के वितरण में विपत्तियों का समाधान है? दूसरा, क्या उन्नयन नररूप क्षेत्रों में नयी इन्वेन्टरी की जा सकती है? अन्तर्गत जोड़ना के लिए आय वित्तों में भूमि आवश्यक है उद्योग कम की आवश्यकता है? तीसरा, क्या नयी तकनीक से ऐसी में रोजगार की सम्भालना बढ़नी चाहिए भूमिहीन को अल्प ही भूमि न मिले परन्तु उद्योगों में पर्याप्त काम मिल जाय?

सर्वप्रथम विचार और हरितगाया में इतिहासिक के देश के राज-व्यवस्था, विदेशी निवेश एवं कुछ अर्थशास्त्री बहुत प्रभावित हुए हैं और यह भी नहीं है कि इतिहासिक के कृषि-उत्पादन बढ़ने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, फिर भी एसा अनुमान लगाया जाता है कि २० प्रतिशत अथवा अधिक-से-अधिक २० प्रतिशत कृषक परिवार ऐसी ही इस उन्नयन के प्रायोगिक हो सके हैं। भारत में अन्य अल्प-विकसित देशों की भाँति ही कृषि-उन्नयन का एकनीकरण है और शोके-ने अर्थव्यवस्था के पास देश की अधिकांश वस्तुएँ भूमि विद्यमान हैं। इसके साथ गैर-कृषि रोजगार की कमी के कारण सीमित भूमिगत पर अल्पधन जन्यता का कारण है। ऐसी परिस्थिति में प्राचीण समाज में अल्पतम स्वस्थ भूमि के मासिक अथवा भूमिहीन धार्मिक व अल्पतम है। लगभग २२ प्रतिशत भूमि एक परिवार आरम्भों के पास है और १६ प्रतिशत भूमि पर लगभग ७० प्रतिशत आरम्भों गुजर कर रहे हैं। यह पूरे देश का स्थिति है। अल्प-उन्नयन राज्यों का विचार हमारा नहीं है। १९६०-६१ में केवल में २४ प्रतिशत प्राचीण परिवार भूमिहीन थे या उनके पास आधा एकड़ से कम भूमि थी। लगभग नहीं हान समित्तन्त्रता का भी था। विचार, हरितगाया में ४२ प्रतिशत से अधिक प्राचीण परिवार भूमिहीन और अल्पतम एकड़ से कम भूमि-

वाले थे। राष्ट्रीय सर्वेक्षण के आंकड़ों के अनुसार लगभग ३० प्रतिशत ग्रामीण परिवारों के पास १५ एकड़ तक की जोड़ है और हम प्रकार के निर्जन विद्यालय समस्त भूमि का केवल १७.५६ प्रतिशत उपयोग कर रहे हैं। पूरे देश में विद्यमान का यही हाल है, भूमि का बड़ा भाग छोटे लोगों के हाथ में है और अधिकांश संसिद्ध परिवारों के पास छोटे टुकड़े हैं या वे भूमिहीन हैं। वे भूमिहीन और अन्यायिक जीवनवाले हैं हमारे संसिद्ध वर्गों की मुख्य समस्या है। ऐसे लोगों के लिए पूरा काम नहीं है। वे मनवादी, बेदखली, कम मजदूरी और जोषण के शिकार होते हैं।

ग्रामीण समाज का भूमि-सम्पन्न वर्ग सम्पूर्ण कृषि-व्यवस्था पर एकाधिकारी की दशा में होता है और इसलिए समस्त उत्पादन के साधनों और सम्भाव्यताओं को प्रभावित करने का सामर्थ्य उन्हीं में होता है। यही कारण है कि खेती में सभी तकनीक के प्रयोग में बड़े किसान को सहकारी व अन्य लोगों से अधिक विशेष प्राप्त हो सके हैं और उसकी आमदनी में यथेष्ट वृद्धि भी हुई है। हरि-परायणों के मुहों में वृद्धि के कारण भी इन वर्षों की आमदनी में विचार हुआ है और छोटे व अन्यायिक जोतीवाले किसानों की तुलना में सम्पन्न किसानों की आर्थिक दशा अधिक सुदृढ़ हो गयी है। इस व्यवस्थितिक के कारण समाज में कमजोर और भूमि के प्रति लगाव बढ़ा है। छोटे किसानों का एक बृहत्तम सङ्घ इस बात के लिए इच्छुक है कि वह खेती की इस नयी तकनीक में भागीदार बने व अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार कर सके।

दूसरा ध्यान मिलान के कानून से सम्बन्धित है। यह दो निमित्तों से सम्बन्धित है। यह दो निमित्तों से सम्बन्धित है कि खेती में नयी तकनीक के प्रभाव से स्थिति क्षेत्र में वृद्धि हुई है और किसान खेती में अधिक पूँजी लगाने लगे हैं। इससे उत्पादन को अत्यन्त बढ़ा है लेकिन उत्पादन के साधन बाँटने लोगों के हाथों में केन्द्रित होते जा रहे हैं। निवारण के

साधन बनते हैं समाज के खर्चों, परन्तु उसका लाभ बोटें से लोगों को ही प्राप्त हो रहा है। ऐसी परिस्थिति में जांचक विश्वास और व्यापक विश्वास में तात्कालिक बैठाने की आवश्यकता है। न केवल भूमि पर सौलिया की सीमा पर की जा सकती है, औरतें बड़ी हुई संसिद्ध आयवनिधियों पर यथेष्ट आयकर लगाकर बेरोजगारी और निर्जनता को दूर करने की दिशा में भी सरकार कदम बढ़ा सकती है अर्थात् कि जापान, यूगो-स्लाविया के आर्थिक विकास के इतिहास से विदित होता है। योजना आयोग में 'सहकारी ग्रामीण व्यवस्था' की बात बड़ी गयी है, जिसके अन्तर्गत भूमिहीन मजदूरों की हात सुधारेगी और उन्हें ज्यादा रोजगार प्राप्त होगा। यह सही है कि हम सहकारी ग्रामीण व्यवस्था में अथवा मजदूर सहकारी कृषि की दिशा में, भारत में कोई बाजार कदम नहीं उठाये जा सके हैं, फिर भी किसी अल्प-निर्बन्धित ढंग के औद्योगिकरण की अवधि में एक सुगमता भूमि-नीति की आवश्यकता है जिससे शासन व बच्चे मतलों का पर्याप्त विपणन अनिरेक प्राप्त हो सके और ग्रामीण क्षेत्र में असमानता और पूँजीवादी खेती की प्रक्रिया को बढ़ावा न मिले। इसी अर्थ में विनोबाजी डारग रिये गये श्रमदान समाज का भी यही महत्त्व है।

तोसारा प्रश्न यह था कि हरित क्रांति अथवा खेती में नयी तकनीक के सम्बन्ध में रोजगार की सम्भावना बढ़ेगी अथवा नहीं? नयी खेती खपन खती है। उसमें भूमि व मनुष्य-मूल्य दोनों का खपन इतना होता है। इसके साथ ही यथो-क्त कृषक बड़ता है और मनुष्य-मूल्य का इतिहास कम हाता जाता है। अब तक के अनुभव के आधार पर यह कहा जा सकता है कि खेती में खेती की तकनीकी विकास के कारण रोजगार घटेगा, बढ़ेगा नहीं। परिवार का नाम बढ़ेगा, कार्योप मजदूरों की मजदूरी भी बढ़ेगी, लेकिन खेती में काम न पाने

वालों की संख्या भी बढ़ेगी। सोदा-मिक क्षमता के अभाव में तथा खेती में अल्प रोजगार न प्राप्त होने के कारण संसिद्ध मजदूरों के शोषण की सम्भावना होना पूँजीवादी मनो का अनिवार्य परि-णाम है। भूमिहीन वर्ग की बड़ी संख्या होने हुए भी तथा कृषि-उत्पादन में पचास व हरियाणा की तुलना में उत्पादन की वृद्धि-दर छोटी होने हुए भी संसिद्ध वास्तविक मजदूरी की दरें उत्तर-पश्चिम भारत की तुलना में केरल में अधिक तेजी से बढ़ी हैं। वस्तुतः इस भेद का कारण यह है कि केरल में किसानों के संगठन यथेष्ट रूप से शक्ति-माली हैं अर्थात् कि देश के अन्य भागों में नहीं है तथा १९६० ई० के बाद केरल राज्य में कामगारों मजदूरों कृषि-संगठनों की भांग की तरफ अधिक संवेदन-शील रही है।

वास्तव में आवश्यकता इस बात की है कि भारतीय ग्रामीण समाज को अपनी परम्परागत पिछड़ी अवस्था से निम्नले के लिए समष्टिवादी योजना (मैक्रो-रिटर्नली) उद्बुद्ध की जाय। जैजाजी, गैरिंगन, वागिनर आदि अर्थ-शास्त्रियों ने इस बात पर बल दिया है। इसी परिदृश्य में श्रमदान प्रजातांत्रिक ग्राम-संयोजन का एक नमूना प्रदान करता है। इन, चीन व अन्य समाजवादी देशों ने ग्रामीण समूह के विचार हेतु लक्ष्मी प्रक्रिया अपनायी है। एक सख्त अथवा ग्राम-समाज बनाकर खेती विद्याओं में एक साथ बढ़ना होगा। पहला, कृषि-पद्धतियों में सुधार करके उत्पादनता को बढ़ाना होगा जो कि बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए गाँव व शहर में योजना-सामग्री उपलब्ध कर सके। इसके ग्रामीण आय, स्तर भी उंचा उठेगा जिससे लघु व कुटीर उद्योगों के दाने सामानों को खरीदने की शक्ति बढ़ेगी। दूसरा भूमि-सुधार योजनाओं को और अधिक सक्रिय रूप से लागू किया जायगा। सौलिया की कम विद्या जाय, पट्टे की सुरक्षा और स्टार्ट-अप पर नियंत्रण किया जाय। →

बांगला देश के गांधीवादी

• त्रयदीप घबानी

'बांगला-भारत-मुवा सम्प्रति-सध' के अध्यक्ष श्री मजबूत आज़म कुटुंबी के निमेषण पर अर्ध-सहस्रक में मेने हीनार बांगला की यात्रा की।' अर्धसिंह हथार देण सोनार बांगला न हलाका है, तयसि हीना अभी यहाँ पैदा नहीं हुआ, अभी सो कम भूषा बांगला है। बनता गृहीन, बनहीन, अगहीन है, उसरी हर जरूरत बाकी है, लातो परिवारो की यह वला है। गांधीजी हमें क्या करते थे, कि मुझे आधमी के सामने भगवान की बात मत करो। उसना भगवानतो रोटी है"— श्री चाण चौधरी ने रामकृष्ण मिशन, डाका से अपने पत्र में मुझे लिखा था। बाग्ला इन्हतर वर्ष के हैं, बांगला देण के सबसे पुराने गांधीवादी। नोआआली में बाघर गांधी-आश्रम था, जहाँ इन्दु, दबाआना, वीए एनडू का फार्म, संकुच राजाआरो के बच्चे में अभी है। अनेक वसिण-इतरक बेकार हो गये, वे आश्रम वा पुनराश्रम चाहते हैं, तिनु सब साधन तो मल हो गये, पूँजी कहीं से लाये ? बाह आश्रम-कार्यकर्ता मारे गये; एक श्री अजीत दे मत माह राजाआरो द्वारा मारे गये। मल्ल राजा-वार गाँवों में भूमते रहते हैं और हिन्दुओं के पीछे पड़ रहे हैं। स्वयं को सुवि-वाहिनी प्रोपित कर वे शासक दम "अवा-मो-नीम" तथा प्रभाव में पड़ गये हैं।

—तीसरा आधिक विनियम न प्रमतिशोत बाणीय हमार के दृष्टिकोण से गाँव अथवा गाँव के निरट ई-उपनि-वासी व हारार्य मोन-दानी के कार्यक्रम को छोड़ना होगा। 'विनेत्र प्वाणिग' में बाणीय भूमि, धन व पूँजी वा सधन उद्योग महत्वपूर्ण है। रत समस्त नारी के सम्पदन में सामाजिक नार्पनर्ता वा एक वर्ष (ईतर) चाँदर। केवल सरकारी मिशनरी द्वारा 'विनेत्र प्वाणिग' वा नार्प अर्था ही होगा। •

प्रधानमंत्री सुजीव इन्ही प्रणामको के हापो में हैं। चीन आगता है, गांधी को तरह सुजीव की भी हत्या हो जाय। सुजीव पूजे जाते हैं, परन्तु उनके क्रानिकारी विचारों पर अयल नहीं होता जेठा सब महापुरुषों के गाप हुआ है, जो दुर्भक्ति हमलोगों ने गांधीजी की की है वर्षभूँ उन्हे भन्द मरवाओ में केंद्र कर लिया है। बाह चौधरी नो वर्ष जेन में तूफर धव भव हुए हैं। रिनी-नार्प करते हैं। बांगला देण में 'सर्वोदय समाज' स्थापित करने को उत्सुक है।

ईसाई मिशनरी, शमडूग मिशन और 'भारत सेवाश्रम सघ' यहाँ कुन बांगला देण की स्वयंसेवी संस्थाएँ हैं। परन, शम्बल, दुध, ओरसि, अकार बोटना और गृह निर्माण आदि एनके कार्य हैं। डावा में रामकृष्ण मिशन एक हाईस्कूल, दबा-आना और विनेत्र के छात्रों के लिए होस्टल चलाता है। इन्दु गांधीवादी सुनील कुमार इणु सात वर्ष जेन बाटरन अब रामकृष्ण मिशन में रहते हैं।

सिंहहट में कर्मो-सध नामक पुरानी रचनात्मक संस्था है, तिनु सन् ६१ के युद्ध में धरवा नाम लभय बन्द कर दिया। श्री मुनीन्दु सेनगुत महाँ है। एक कार्यकर्ता की हत्या हो गयी।

राजभाड़ी में राज कुमार दल धरनात्मक छात्रो-नार्प कर रहे थे, वह नार्प सुवि-संप्राप में बन्द हो गया। कार्यकर्ता अभी भी आगतिक हैं, अतएव यह तब नहीं कर पा रहे हैं कि नार्प पुन आरम्भ करें या नहीं।

बरीसल वा गांधी आश्रम भी बन्द हो गया है।

बदपचारिया में पुराने गांधीवादी श्री विश्वर जनदास रिनीक और पुनर्भल वा अण्डा नाम कर रहे हैं।

बोमिल्ला में 'अभय आश्रम' की दो-

तीन लाख रुपये की सम्पति मल कर दी गयी और कार्यकर्ता पीटा गया। आश्रम-मनो प्रबोध दात मुक्त, राजेन्द्र चक्रवर्ती, परिमल दल, गणेश घोष अयोयुद्ध गांधी वादी हैं, शमी बलवाचारी हैं। गत पचास वर्षों से यहाँ मेवास्त है। "गांधी ने हमें आशा दी, "सिडक डु मोर पाशड", सो हम यही मंडे हुए हैं। साधन हमें मुनसिवा के लिए अक्षर नहीं देता। 'रिनीक नहीं, नाम दीसिए', वे मुझे भारियत पिलाने हुए बहते हैं। उभय आश्रम वा गोशो में कंठा हुआ छात्रो-नार्प, पूँजी के अभाव में स-ना मया है।" पूण नो दुष्टियों में वासिद के छात्रों के लिए होस्टल बना रहे हैं। प्रीज क्रानि साहा बी० काम० के विद्यार्थी हैं, बपडे की मिल में काम भी करते हैं, सुविवाहिनी के बोद्धा थे। 'रह क्षेत्र से मरहू ह्वाक नवयुवक र्थिक-प्रमिषण मेने हेतु देहरादून भेजे गये थे। मुक्ति के अर्थ पचास प्रतिशत र्थिको ने अपने-अपने धान सम्पति कर दिजे। रीप र्थिक 'गृहदुध' कर रहे हैं, ओरज ने मुझे बताया। सरनाथियों को न उनके धर बापस मिले हैं, न उनके पास पर्याप्त बपडे हैं, प्रीर न पर्याप्त छात्र। रिनीक सामर्थी अधिशासको द्वारा सही डग से कितरि नहीं हो पाती। 'सुजीव सधने हैं, पर वे अनेके क्या कर लेये ?' रिण-सन-लेत डाई हरना डेर, चीनी आठ राना, सराओ तेल नी धरवा, बाबल दो गपा, मनवाइत वाइन देड रनग, कपडा पाँच गपा नर, आमत में बिाते हैं। चढ़ी हुई नोकरों के लिए जनता भारत को रीप डेओ है, कसोफि प्राव. सर्वा बसुएँ भारत से आयात को नारी हैं। चावल, मछनी, रिनीक शापरी (टीन की पारटें) समानर आदत ले जाते हैं—एगा साधन है। सुविनतधाम के समय वा देशमें बहूँ क्या क्या ? अभी स्वामें, पूण, अण्डाचार वा मोनसगा है, भारत से कई गुना अर्धक। भारत के बाहर जाने पर सगता है कि भाँड इतना कपडा है। बोमिल्ला में ऐसे परि-वादी से मिला गया उनके घरों में दर्श,

जिनके पुत्र अन्वया पाँच पारे गये हैं।

उत्तराखण्ड में, 'प्रबुद्ध कथ' नामक पुरानी खत्या कुमायी कीरा सिन्हा और कुमायी हारना चौधरी बना रही हैं। स्वमात्र यही गांधीवादी सरखा बागलादेश में एक समय भोजित है, जब कि अन्य सरखाएँ मृतमरण हैं। यह आश्रम भी गूट कर दिया गया था, मगर वह काये-वर्तमानों की हत्या हुई। कृपि एव उद्योग को विद्या के साथ चार सौ छात्रों व शिक्षकों का परिवार आश्रम-विद्यालय में रहता है। आश्रम के अभावनाम में १९०० बन्ने हैं।

श्री मन्दाकरन घर बरविण दल के आत्मकवारी हैं, अब गांधीवादी राजकीय हैं, बाबू धरत जेल भुगत चुके हैं। उन्होंने मुझे बताया - "पश्चिम बंगाल का साम्प्रदायिक यहाँ तोरतय लाभोना जा कि भारत भी यही बेल है। वस्तु विचारों का आदान-प्रदान रहती जकृत है। व्यभिचारिक लक्ष, जयबन्ध, एतवार जो साक्ष्य वादों में भागिन हो गये हैं, गाँवों में साम्प्रदायिक तनाव पैदा कर रहे हैं। कई जगह पोस्टर लगाये हैं 'हिन्दू भारत वास्तु जामो'।" अन्ध हैं ईश्वर विभवरी (लगभग डाईयो) (जिनकी लालो जोपो की बात बताया। "कितनी शमे की बात है कि हमारे मुनि बुद्ध को भी जय-शकास माराजण ने 'गाँवो-बन्धो' साम्प्रदायिक कहा, जो कि वास्तव में था नहीं!"

बांगला देश के वनारस गांधीवादी 'बाहारा' से कुछ प्रश्न :

प्रश्न - बांगला देश के मुनि-संस्थापक के प्रथम चरण में अहिंसक गांधीवादी तरीका अपनाया गया था, ऐसा हमने पढ़ा-सुना। इस तरीके के लिए क्या व्यवस्था है (क) मुनि मरागों से, (ख) वार्षिक प्रश्न मुचलाने में ?

उत्तर : भारत के गांधीवादीनों की यह एकरचरणी भी कि बांगला देश ने गांधी-वादी अपनाया। बहु हिंसक-अहिंसक-योग आन्दोलन था। हमारी कर्मचारण गांधी-वादी से हो मुनि मरागों हैं किन्तु पाठन को हमें बताया नहीं है।

प्रश्न : भारत बांगला देश में स्थायी मेरी कंठ हो ?

उत्तर - अन्धतरकारी जो 'अध्यायी कीरा' और आश्रम में पुत्र गये हैं, वे इस मेरी को लौट रहे हैं। आप जैन गांधी-वादी परिष्कार अधिनाधिक नहीं जानें।

प्रश्न साम्प्रदायिकता को रोक्ने के उपाय ?

उत्तर बांगला देश में जो पचास वर्ष से अफिक बाबू के हैं साम्प्रदायिक हैं, पंतीस से पचास वर्ष के निरपेक्ष हैं, नमस्तुक निर्मल है।

प्रश्न - दक्षिण एशिया-महाद्वीप की सम्भावना ?

उत्तर - है।

प्रश्न : भारत के लिए संदेश ?

उत्तर भारत स्वयं को 'मुन्तर-पावर' नहीं समझे, मित्र की तरह बांगला-देश के विकास में मदद करे, अन्धरुनी भावनों में रहस्योपन न करे। भावी विश्व के लिए सर्वोपर्य ही एवमात्र संदेश है।

यहिसा बरविण की विविध हुली-बारा मुझे प्रधानमन्त्री से मिलाने से यही। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, बहीव भूपथेन और बिनासगर के विधान बिना 'बग-भवन' में लदके हुए थे, जहाँ पर प्रधान मन्त्री 'बबन्धु' देश मुनीबुद्ध-हमाल को मेरे सर्वोपर्य साहित्य भेंट किया। अमेरी साक्षिक "सर्वोपर्य" के बागला देश-विशेष-पाठको पढ़ने हुए वे बोले, "यदि न मैं भी भवाँम में शामिल हो जाऊँ ?"

मेरे बहू "आज तो सर्वोपर्य का काम कर ही रहे हैं।

किर मेरे उत्तरे पुत्रा—"दश वर्ष पूर्व विचारों जब बांगला देश से गुजरे थे, आप मिले ?"

जुबोब : 'मैं बाहारा था, तेरिब जेल में था।'

मैं - 'भारतीय जनता पार्टी प्यार और अन्धता करती है। मुझे इस हल मत कर दे कि अन्धता भारतको मुन्तरमाल बांगला देश के सम्पर्क नहीं है।'

जुबोब : 'गाँव से पाकिस्तानी सेना के अन्धता को नहीं जानते।'

मैं : 'जानते हैं।'
जुबोब : 'बे अन्वयी भूल मनुष्य करिये।'

मठोले, लम्हे, मुन्तर, मुन्कराणे, एकेद मुन्त-बागला और कावी वाकेट में 'बगबन्धु' रोड टेलीविजन में देखे जाते हैं। 'बगबन्धु' ने यह स्पष्ट कर दिया है कि अन्धता बांगला देश के चार विद्वानों-राष्ट्रीप्रता, धीनतय, उमाजवाव और धर्मनिरपेक्षा के अनुकूल है और उत्तरी सरकार 'मजहब को राजनीति से दूरने नहीं देगी।' मजहब का दुष्प्रयोग व शोषण तथा समन का अन्ध कंधे पाठ शासन ने पन्वीक कर और पाठ लेना ने हाल ही में किया, इसका अन्धत्व बांगला देश को है। 'मानस-परिवर्तन' भी आवश्यकता यहाँ प्रत्येक के लिए है। मुनाफालावों, रिश्वत, भ्रष्टाचार बन्द होने चाहिए। व्यापारी और इकाजदार, जो परिस्थिति का नाजामब फायदा उठा रहे हैं और बीमते बढ़ा रहे हैं, उन्हें चोकाती हो जानो दे' (विन्तु परिधान ?) ●

(पृष्ठ ५५६ का गेट)

हम सब और अहिंसा का मानने वाले गांधी-परिष्कार के साथ यहाँ रह रहा है। दो दिन तक हम अपने रा, अपने अब तक के काम को, और आगे की योजना को गलत और अहिंसा को तराहू में लाने। 'मर्द' हमारा ब्रह्म, और 'सर्व' हो हमारी जगलानी हो, मर्द हमारी प्रेरणा, और मर्द ही हमारी शक्ति हो।

नवीर,
१९-५-७२

साम्प्रदायिक समाज : रूप और चिन्तन
 लेखक—उपप्रकाश नारायण
 दस गुल्फ में सेकल ने जकी दीर्घादीन अनुभवों के आधार पर नारायण, पचासवीं दान, भूतल-पत्र आन्दोलन, उमाजवाव आदि का पुत्र और पुनिवादी विवेकन किया है। सीप प्रकाशित हुयो।
 मूल्य रु= ५-००
 सभ सेकल रूप प्रकाशन ए.आर.दा, बाराबन्की-५

ग्रामदान के द्वारा ग्राम-शक्ति खड़ी करें और अन्यायों का डटकर मुकाबला किया जाय

श्री एस० जगन्नाथन् का कार्यकर्ता साथियों से आवाहन

जब सुब्रह्मण्यम्बूजी ने नगणन्दी के लिए अनशन शुरू किया तो मैंने सुब्रह्मण्यम्बूजी से कहा कि अनशन छोड़ दोबिग। हमारा मूख काम है, प्रत्यक्ष काररेवाई (आन्दोलन एवम्भान)। सुब्रह्मण्य का आन्दोलन शुरू करना है इतलिए अनशन को छोड़ दोबिग। श्री नगमराज ने भी ऐसी ही प्रार्थना उनके की थी। सुब्रह्मण्यम्बूजी ने अनशन छोड़ दिया। उसके बाद सुब्रह्मण्यम्बूजी और सर्वोप्य मण्डलवाले मिले। हम सब लोगों ने तय किया कि सुब्रह्मण्यम्बूजी तमिलनाडु में नगणन्दी का आशावरण पैवार करेंगे। हमारे जैसे कार्यकर्ता जो ग्रामदान पाकेट में काम कर रहे हैं, हम उस पाकेट को इस बात के लिए पैवार करेंगे। मैंने सुब्रह्मण्यम्बूजी से कहा—'मान लीजिए नगणन्दी रो हुनार कार्यकर्ता बाहिए, मैं आपका एक भ्राता हूँ, वहाँ हम ग्रामदान का काम कर रहे हैं, वहाँ की ग्रामसभा द्वारा हम एक हुनार सरकायही पैवार कर देंगे।' उसके बाद हमने पूरे तमिलनाडु में राज्य-स्तर पर माथा की भीड़ का प्रतिक्रिया के पदमायाएँ हो रही हैं, यह आप जानते ही हैं। इतलिए डाक्टर मुयिता नावर से मैं हुनार हो चुकनेवाला हूँ कि कौन सरकायह करेनेवाला है? १९१० में सोवियती की विवेकिय शुरू हुई। मैं तमिल में पढ़ाया था। एक दिन ग्राम को विवेकिय देखने गया। वहाँ मैंने देखा कि सारी बाने हुनार। रिडी का विर पुटा, और मूख बहने लया। उसे देखकर सब में बहुत खुश हुया। बकीन, डाक्टर और आशापियो ने एचकेवरक के रूप में भाग लिया। बबिस के द्वारा यह हुनार था। मेरा आन्दोलन बाब भी खड़ा करना चाहते हैं क्या? सर्वोप्ययि करेने नया? मेरा मतलब यही है कि जनता को करना है, जो इस कदर गया मैं

हूवती जा रही है। काम जनता को बाकर उसमें भाग लेना बाहिए। मुझे उम्मीद है कि ग्रामदान का जित रनाह में जोर है, वहाँ पुष्टि का काम हो रहा है, वहाँ इस बात पर जोर देंगे। एचके ज्ञानदान की पुष्टि के काम में सहयोग मिलता है और इस आन्दोलन के ग्रामसभा बनयुत बनती है। जो भी समस्या हो, आर्थिक हो, सामाजिक हो, नगणन्दी को हम में लेने के जनता में जागृति हो सकती है, जन-शक्ति वहाँ प्रकट हो सकती है। इतलिए मैं इस भाग खूना तमिल ग्रामदान को छोड़कर नहीं। पैदान में बड़ा रहूँगा और उस धर्म में जन-जागृति और जन-शक्ति बहने कथेबा। एक धर्म में आन्दोलन खड़ा करने से बहुत बकर लीयेगा। उसका अयत पढ़ेगा। हमारे केरल के नेता मगमन्बूजी ने एक अच्छा भाषण किया। उन्होंने 'पोलिटिकल एवम्भान' की बात कही। 'पोलिटिकल एवम्भान' नगणन्दी के मामले में भी हो सकता है। तमिल 'पोलिटिकल एवम्भान' राजनीतिक दल से ही सरकाय है क्या? वहाँ हुनार ग्रामदान का काम होता है, पुष्टि का काम होता है, वहाँ की जनता की शक्ति प्रकट हो सकती है। इसके बारे में तमिलनाडु में प्रभाव हो रहा है।

ग्रामसुवित्री ने हमारे आन्दोलन की विवा कया हो सकती है, इस पर प्रकाश डाला। बाब जानते हैं कि रामनाथ त्रिने (तमिलनाडु) में उसी तरह का काम चलाने से हो रहा है। ग्राम-ग्रामदान-आन्दोलन के धतारा और भी हुनार इतिहास होना बाहिए। वहाँ-वहाँ लोगों पर भगवत होश है वहाँ पर लोगों को न्यान दिखाने के लिए हमारे प्रयास होने बाहिए। बाब जानते हैं कि देखनी हुई,

ग्राम की जनता पर कुछ शक्तियाँ हुईं, जनताओं ने देने का बाधा किया, फिर भी उन्होंने बाधा-विताकी की। उस भी के पर हम लोगों ने प्रत्यक्ष काररेवाई की।

ग्रामदान में ही 'पोलिटिकल एवम्भान' है

मन्मथम्बूजी से चिन्ती कराया हूँ कि मैं 'पोलिटिकल एवम्भान' को मतलब हूँ, सरकाय करता हूँ। जो ग्रामदान का सब विनोयारी ने हमको दिया है उसमें 'पोलिटिकल एवम्भान' के लिए गुजाराह है। उसमें 'पोलिटिकल एवम्भान' के लिए पत्र बाहिए? गांधीजी ने 'पोलिटिकल एवम्भान' किया, उसके लिए एक एजण्ड—गांधी से, बिना में, प्रान्त-स्तर पर पूरे देश में खड़ा किया और उसके द्वारा उन्होंने आन्दोलन किया। अब मन्मथम्बूजी 'पोलिटिकल एवम्भान' चाहते हैं। किये करें? सर्वोप्य मन्मथ करेया क्या? गांधी सरकाय विधि करेगा या वो सरकाय है के करेगा? 'पोलिटिकल एवम्भान' के सरकाय क्या है? बाबका एजण्ड कहीं है? मन्मथम्बूजी ने कहा, "विकेन्ट्रीकरण हुनारो यार्थ है। ग्रामस्वयंसेव का उद्देश्य यही है। तमिल विकेन्ट्रल राजनीतिक काररेवाई के लिए कोई एजण्ड बाबके पास है क्या? सर्वोप्य तय यह करारता है क्या? एक विकेन्ट्रल राजनीतिक काररेवाई के लिए विकेन्ट्रल एजण्ड बाहिए न। जो विकेन्ट्रीकरण की बाबकी भाग है उस, बाब को कोन दूर करेगा? मैं भाग करता हूँ, मन्मथम्बूजी करते हैं और सर्वोप्य के पाद-बहन भाग करते हैं लेकिन इसके लिए विकेन्ट्रल संघठन की जरूरत है या नहीं? इतलिए मेरे मन में यह बाधा है कि यह ग्रामदान-ग्रामसभा 'पोलिटिकल एवम्भान' के लिए एक बनहुत विकेन्ट्रल संघठन है।

विनोबाजी एक आध्यात्मिक नैतिक सगठन हमको दे रहे हैं। बिनावा जल्द-से-जल्द हम पाम-स्तर पर, प्रकृष्व-स्तर पर, ग्रामदान का विचार फैलायेंगे, प्राय-सभा को स्थापित करेंगे, उसका ही जल्दी ध्यान जो एवशन चाहते हैं, वह हो सकता है; नहीं तो हमारी बात हवा में ही रहेगी। बाबा ने राजनीति-विज्ञान के रूप में ग्रामदान को रखा है। गांव के लोगो का कर्तव्य है कि वह ग्रामसभा को सब कुछ दे दे। बीस दिन में एक दिन दे दो ग्राम-सभा को, पानीसवा हिस्सा अपनी आमदनी का दे दो। ऐसी कुछ नैतिक सम्मति बाबा ने बनायी है। विनोबाजी ने पूरे भारत को घेरेल यात्रा करते-करते एक बड़ा सुन्दर क्राण्टिकारी आर्थिक, राज-नीतिक, साहित्यिक विचार हमको दिया है ग्रामदान के रूप में। ग्रामदान के द्वारा जो कुछ 'एवशन' हम चाहते हैं वह सम्भव है। हम लोग जो 'एवशन' कर रहे हैं वह ग्रामसभा द्वारा तथा लोगों द्वारा कर रहे हैं। इससे काफी बल मिलता है; उसीके एक स्लाक में हम काम करते। दो-तीन स्लाक में हम मन्दिर की ३ हजार एकड़ जमीन निरालनेवाले हैं। उससे एक बड़ा एवशन शुरू होनेवाला है। हमको उम्मीद है कि काफी सध्या में भारी-बहन नहीं खड़े हो जायेंगे।

हमें जगह-जगह स्थानीय क्षेत्र में जन-पचित जगाने का कार्य करना चाहिए। यह हमारा राष्ट्रीय मोर्चा बन जायेगा। गांधीजी का आन्दोलन भी स्थानीय क्षेत्र में शुरू हुआ और वही बार में राष्ट्रीय मोर्चा बन गया। सम्भारण और बारदोली उसके नमूने हैं। हम भी उसी में, बिहार में, जो कुछ भी कर रहे हैं वही हमारा राष्ट्रीय मोर्चा बन जायेगा।

में आप भारी-बहन से विनयी करता हूँ कि स्थानीय क्षेत्र में प्रत्यक्ष कार्रवाई के लिए लोगों को तैयार कीजिए।

पंजाब में क्या हो ?

पंजाब में विलस उद्योग बड़ा है

लेकिन भूमिहीन बहुत हैं। बंटवारे के बाद काफी मुस्लिम पाकिस्तान गये। उनकी छोड़ी हुई जमीन किसके पास है ? पुष्टिए यहाँ के सर्वोदय कार्यकर्ताओं से कि पाकिस्तान से आये नागरिकों के पास है क्या ? हम लोगों ने उसके लिए कोई जांच-कमिटी नियुक्त की है। इस प्रश्न पर आन्दोलन खड़ा करने के लिए पंजाब के लोग तैयार हैं ? भूदान नहीं मिलता है, ग्रामदान नहीं मिलता है, तो क्या करना चाहिए ? यह राष्ट्रीय समस्या है, आखिर यह जमीन किसकी मिलनी चाहिए ? देशकीनवानों को मिलनी चाहिए न ? कहीं मिली ? मैं मानता हूँ कि यह अन्याय है। इस अन्याय का अन्त करने के लिए जन-गरिष्ठ खड़े करनी है या नहीं ?

पंजाब सर्वोदय मण्डल सत्याग्रह करने के लिए तैयार नहीं है तो किस काम के लिए तैयार है ? सिर्फ भूदान मांगने के लिए तैयार है ? ग्रामदान मांगने के लिए तैयार है ? और वह नहीं मिलता है तो क्या करना है ? मुश्किलान जो जमीन छोड़कर पाकिस्तान चले गये वह जमीन सरकार की है न ? फिर तो किसी को मिलनी ही चाहिए ? हरिजन को मिलनी चाहिए ? वह उन्हें नहीं मिली और बड़े जमीनदारों के पास चली गयी है।

तबोरे में जमीन की समस्या है वह पंजाब में नहीं है। पंजाब विकसित प्रान्त है फिर भी विपन्नता है और मानसता बहुत बढ़ि है। आप जानते हैं यहाँ सरकार ने भूमिहस्तियों को भी लाने की कोशिश की। अनी क्या हुआ ? भूमिहस्तियों का जो बिल पार होना उलके बारे में क्या होगा ? भूमि मालिक का इस कानून के प्रति क्या रुठ है ? वे बहुत कमबोर नहीं हैं। ये भूमि मालिक देशकीनवानों के साथ बहुत-सी नासामय हरकतें करते हैं।

पंजाब में भूदान-ग्रामदान का काम नहीं चलता है तो उसकी कोई बिन्ता नहीं। लेकिन हमको यह समस्या हाथ में लेनी चाहिए ताकि भूमिहीनों को भूमि मिल सके। यहाँ यह कहना चाहिए कि किसके

पाव जमान नहाने उसका इवकय लम्ब मितनी चाहिए। हम सत्य को बात करते हैं; कहीं है सत्य ? सब कुछ एकदम अक्षय है। आपके सामने मेरा यही निवेदन है। आप ग्रामदान के आ-रोलन में डटे रहेंगे और अन्याय तथा अत्याचार के लिए जन-आन्दोलन खड़ा करने और जन-सगठन खड़ा करने का काम ग्रामदान और ग्रामसभा के द्वारा करेंगे। अगर हम ग्रामसभा को मजबूत बनायेंगे तो जन-कतिन दंडा होगी और हमारा राजनीतिक कदम स्पष्ट होगा।

हम एक होकर ग्रामसृष्टि जगायें

सब सेवा सत्य में व्यपेक्ष पद से मुझे मुक्ति देकर क्षेत्र में काम करने का मोर्चा दिया है। मैं अपने क्षेत्र में जा कर ग्राम-स्तरस्थ के काम में जुट जाऊँगा। मैं ग्रामदान का काम करूँगा, सत्याग्रह भी करूँगा, पुष्टि का भी काम करूँगा। वो रामचन्द्र को मैंने कहा, "आप पापल हैं खारी के काम का, मैं पापल हूँ ग्रामदान के काम का। हम दोनों मिलें और क्षेत्र चुनकर काम करें। आइए आप भी काम कीजिए मैं भी काम करूँगा। दोनों मिलकर, जुटकर काम करेंगे।" अभी अरणाचलप्रदेश भी बैठे हैं। हम सब साथ मिलकर काम कर सकते हैं। विनोबाजी के दिल में दुःख है। रोना आता है, उससे हमारा दिल भी रोता है। दुःख होता है कि जनता के लिए आजादी के इतने वर्षों के बाद भी यह क्या हो रहा है ? हमारा दिल रोता है तो हमको रोते-रोते बैठे रहना है क्या ? हम सब अपने क्षेत्र में काम करेंगे, लेकिन जो कार्रवाई हम लोग चाहते हैं वह किस तरह का होगा ? वह जनता का होगा, या राजनीतिक होगा ? ग्रामसभा को हमें मजबूत बनाया है तब आन्दोलन मजबूत बनेगा। ग्रामसभा द्वारा चाहे जगुत् कर समस्या को हाथ में ले। एंठा लोक-राज्य जगते देश में होने दें। एंठा हो सकता है, मुझे इसकी पूरी उम्मीद है।

अब जगुत् !

नकोर, १०-२-५२

२० वाँ सर्वोदय सम्मेलन

[पिछले अंक में हमने सच-अभियेष्ठान की रिपोर्ट प्रकाशित की है। पढ़ा हम सर्वोदय सम्मेलन की रिपोर्टें देखें हूँ। सं०]

१९ मई की पार बने शान को २० वाँ सर्वोदय-समाज सम्मेलन आचार्य राम-मूर्तिजी की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम दादा धर्माधिकारी ने इस सम्मेलन के अध्यक्ष तथा उद्घाटनकर्त्ता सुधी सरला बहन का परिचय कराया। बाबा ने परिचय में उनके जीवन के उन सारे सुखों का वर्णन कराया जिनकी तरफ हमारा ध्यान आमतौर पर नहीं जाता।

सुधी सरला बहन का लिखित और छपा उद्घाटन भाषण पहले ही वितरित कर या दिया या, परन्तु उन्होंने अपना भाषण पढ़ा नहीं बल्कि उन्हीं मुखों पर अपनी भाषण किया। (उनका भाषण पिछले अंक में दिया गया था, इस अंक में पूरा हो रहा है।) इसके बाद सम्मेलन के अध्यक्ष आचार्य राममूर्ति ने अपना अध्यक्षीय भाषण किया। उन्होंने अपने एक पन्थे के भाषण में सर्वोदय आन्दोलन के नये आयाम की खोज में लोचरहित के पद उद्घाटित करने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि इस सम्मेलन में एक ही विषय पर हम चर्चा करेंगे और वह विषय होगा—सत्य और अहिंसा। इस विषय में वे सारी बातें या प्रायोगी जिनका हम जप और तप कर रहे हैं।

श्री नरेन्द्र बुने ने चर्चा के लिए विषय-प्रवेश कराया और तदुपरांत चर्चा का प्रारम्भ हुआ।

श्री आक्षरान चन्दायार ने गोपण और दमन के विशुद्ध अक्षययोग आन्दोलन शुरू करने की सलाह दी। उनका मानना है कि दमन और गोपण के उन्मूलन में धीरे-धीरे बहुत हिंसा हो जाय तो उसे हम हिंसा न मानें, उधरा हमारे मन में भय न हो।

डा० आरम् ने नागालैण्ड में अब तक हुए कार्यों की चर्चा की और बताया कि वहाँ अहिंसा की दिशा में सन्तोषजनक

प्रगति हुई है। वहाँ के लोग यह महसूस करने लगे हैं कि हिंसा से समस्या का समाधान नहीं होगा। प्रान्तस्वराज्य की चर्चा करते हुए आपने कहा कि नागालैण्ड के गांव पहले से ही आत्मनिर्भर है, वहाँ प्रान्तस्वराज्य की भूमिगत मौजूद है और इस छीटे-के राज्य में अहिंसक आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक पुनर्रचना भी सम्भावना है।

श्री जगतयाम साहू ने सहरसा के अपने अनुभव के आधार पर कुछ मुद्दे उठाये। (इनका अनुभव १५ मई के भूदान-पत्र में छपा है।)

शारी ब्राम्होजोग वमीशन के अध्यक्ष श्री जी. रामचन्द्र पिछले अनेक सर्वोदय सम्मेलनों में दिखाई नहीं पड़े परन्तु इस सम्मेलन में आपने भाग लिया। आपने अपने भाषण में माधी परिधाय को एक होने और भावधारा कायम करने की आकांक्षा व्यक्त की।

श्री प्रेमभाई ने रामदान के बाद विकास-कार्य की चर्चा की और आपने कहा कि रामदान की पुष्टि के बाद काम बन्द न हो, बल्कि विवास की आगे बढ़ना चाहिए। आपने साक्षरता और प्रौढ़-शिक्षण पर भी जोर दिया। श्री प्रेम भाई गोविन्दपुर (मिर्जापुर, उ० प्र०) में कार्य कर रहे हैं।

श्री जगन्नाथजी ने कहा कि हमें एक हजार ज्वाले के एक हजार सौते में नाम करना चाहिए और एक ऐसी परिस्थिति सृष्टि करनी चाहिए जिनमें विवास-नाम, शाब्द-नाम हो और जाव-पाव के भेद-भाव न उन्मूलन हो।

श्री पारह्वर भण्डारी ने बताया कि आज के जमाने में सत्याग्रह का स्वरूप भिन्न होगा। अब पुराने मूल्य बताने और नये सामाजिक मूल्यों की स्थापना होगी तो समाज-परिवर्तन होगा। अतः उन्होंने

जोर दिया कि मनुष्य की मान्यता को पहले बदलने का काम किया जाय।

श्री पञ्चराय नारंगोत्कर ने भी अपना मत प्रकट किया। वह एक ही बात पर जोर देते रहे कि सर्वोदय के लोगों ने सत्याग्रह का रास्ता छोड़ दिया, गांधी का मार्ग छोड़ दिया, उन्हें उपर पुनः लौटना चाहिए। श्री नारंगोत्कर की एक बिलिप्ट दृष्टि है और वे उस दृष्टि से अलग हटकर कभी सोचने का प्रयत्न नहीं करते तथा उनकी बात अन्य लोगों के सके उतरी भी नहीं और नतीजा यह होता है कि वह अपनी बात बहते रहते हैं, लोग सुन भी लेते हैं। इसके आगे कोई चर्चा होती नहीं।

श्री लक्ष्मण पिछले चुनाव में पञ्च-मुख जनसभ के लिए स्वतन्त्र उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़े थे। उन्होंने अपना अनुभव बताया। उन्होंने कहा कि आन राजनीति में जो राजनीतिक जातिवाद को बढ़ावा मिला है उसे समाप्त किया जाय।

श्री चारुचन्द्र चौधरी बागला देव से आये थे। उन्होंने भी अपना विचार सम्मेलन में रखा। इसके अलावा अनेक लोगों ने भी चर्चा में भाग लिया। जयपुर शरावन्धी सत्याग्रह की भी चर्चा हुई।

गनीर की स्थानीय जनता में यह बात फैली थी कि इस सर्वोदय सम्मेलन में कुछ झूठे माने-बाने हैं। श्री तटुशीलदार सिंह और पण्डित लोचमन १९ मई को सम्मेलन में आये। जनता इन्हें देखने के लिए बहुत उत्सुक थी। मन्थे, औरतें पुप, सभी आते थे और उनकी आँखें उनकी ही दृष्टी में और उनकी आँखें लोग दूर से इधारा करते पहचान पाते थे। बोधित होने की कि वे सच पर ऐसी जगह बैठें जहाँ से लोग उन्हें देख सकें। इनका स्वागत सम्मेलन के स्वागतसमय और पत्र-विधानसभा के अध्यक्ष सरदार दरबारा सिंह ने किया।

श्री महावीरसिंह और श्री हेमदेव शर्मा ने पम्बल पाटी में बागियों के आत्म-समर्पण की चर्चा की और अपने अनुभव सुनाये।

ग्रामस्वराज्य का दूसरा अभियान

सहरसा में १४ मई को फिर से अभियान शुरू हो और ३० जून तक ४ प्रखण्डों में काम पूरा किया जाय, ऐसा पंचनाम में धाना के साथ चर्चा होने के बाद तय हुआ था। उसके अनुसार सुधी निर्मला बहन तथा सर्वश्री विद्याभारती, बाबूताल मीतल, अजमोहन शर्मा, डा० द्वारकादास ज्योशी, राजा बाबू भादि लोग १४ मई से पहले ही यहाँ पहुँच गये।

घोषा गया कि जिन प्रखण्डों में स्थानीय लोगों वा विशेष उस्ताह दे उन्हीं प्रखण्डों में काम किया जाय। पिछले अभियान में जहाँ विशेष काम हुआ था उन प्रखण्डों से सम्पर्क किया गया। सलजुआ तथा महिषी में प्रखण्ड स्तर पर बैठकें हुईं, जिनमें प्रखण्ड की पंचायतों से प्रमुख आवित आये थे, सबने अभियान के लिए अपना समय देना तथा अभियान के खर्च के लिए हार पंचायत से वनाज इच्छा करना स्वीकार किया। छातापुर से भी सम्पर्क किया गया। वहाँ के

शिद्या पदाधिकारी ने अभियान के दिनों में शिद्यनो वा सहकार मिल सके हुए दृष्टि से छुट्टियाँ बरखात के दिनों में देना प्रारंभ किया। मुरलीगज के शिद्या पदाधिकारी ने भी यही निर्णय किया। मुरलीगज में प्रखण्ड के काम की दृष्टि से सोचने के लिए एक सभा हुई जिसमें शिद्यनो ने विशेष दिलचस्पी ली। सहरसा शहर में बम्बई की मंगला बहन, महाराष्ट्र की लक्ष्मी बहन, उ० प्र० की तरोज बहन तथा आसाम के श्री सुधी भाई ने सम्पर्क का काम जारी रखा था।

सहरसा खादी भण्डार में ता० २१ मई को आदरणीय श्री राजा बाबू को अध्यक्षता में जिलास्तरीय बैठक हुई। चारों प्रखण्डों के प्रमुख स्थानीय व्यक्ति व कार्यकर्ता उपस्थित थे। इहाँ चार प्रखण्डों को अभियान की दृष्टि से चुना गया। चारों प्रखण्डों में प्रखण्ड कार्यलय कायम हो चुके हैं। रात को प्रायःना-सभा में अलग-अलग प्रखण्डों के लिए कार्यकर्ताओं की नियुक्ति की गयी। उसके

अनुसार ता० २२ मई को सुबह सभी लोग अपने-अपने क्षेत्र में खाना हो गये।

गुजरात के डा० जोशे, अणु भट्ट, मीरा बहन छातापुर गये हैं। सर्वश्री अनासाल माह, लीसाधर दास्य, रावतजी चौहान भी सम्मेलन से सहरसा पहुँचे और छातापुर के लिए खाना हो गये। महाराष्ट्र की दीपाबहन व उ० प्र० की तरोजबहन वहीं जा रही हैं। जिले के कार्यकर्ताओं में से सर्वथा टेक नारायणजी, भादेष्वर पोद्दार, गजानन सिंह तथा तपेश्वरजी छातापुर में हैं। श्री धीरेन्द्र भाई की पदावधि ता० २९ मई से उसी प्रखण्ड में शुरू होगी व जून के अन्त तक चलेगी। दरभंगा के श्री बाबेश्वरजी, मुजफ्फरपुर के मधुसूदन भाई तथा उ० प्र० के श्री नारायण भाई तथा उनकी पत्नी बिन्दा बहन दादा के साथ हैं।

महाराष्ट्र के श्री अण्णा जाधव, श्री कानूराम गरुड व उ० प्र० के श्री प्रभुनाथ दास पिछले अभियान के समय के मुरलीगज में सये हैं। अब श्री विद्या शरणजी मुजफ्फरपुर के श्री हरिचण्ड मिश्र तथा दरभंगा के श्री दुर्गादेवजी बहाँ पहुँचे हैं। सम्मेलन से लौटकर गुजरात की सुधी कान्ता बहन, हर विलास बहन तथा सर्वश्री कान्ति शाह, वपदीय लखिया, नानु भाई मजूमदार, प्रताप सिंह परभार भी मुरलीगज के लिए खाना हो गये। सर्वश्री नारायण प्रसाद दास, लक्ष्मीनारायण शर्मा व रामायणो भाई स्थानीय निज वहाँ काम में लगे हैं।

केरल के स्वामी सत्यानन्दजी, निर्मला बहन तथा महाराष्ट्र की लक्ष्मी बहन सलजुआ गये हैं। मुगैर के श्री ब्रजमोहन शर्मा, रामनारायण सिंह तथा हेमनाथ सिंह, दरभंगा के श्री कृष्ण शक्ति व सहरसा के श्री भद्रेश्वर भाई, श्री लक्ष्मीनारायण, श्री रामकरनजी, श्री रामदेव दास, श्री कृष्णदेव, श्री सुरेश भाई उसी प्रखण्ड में पहुँच गये हैं।

महिषी में उत्तर प्रदेश के सर्वश्री अलखनारायण भाई हैं। श्री रामलक्ष्मण

(ता० २६ १७५ पर)

→ पण्डित लोकमन से लोगों ने आग्रह किया कि वह भी कुछ कहे। उन्हें बोलने में संकोच होता था। इसलिए कुछ प्रश्नों के उत्तर देने की वह राजी हुए। सब पर जब वह खड़े हुए तो प्रश्नों की सड़ी सग गयी। उनके बगो बोलने के अनेक प्रश्न पूछे गये और उन्होंने एक-एक प्रश्न का उत्तर देनी शुरू की, सजीदगी और बिना लाग-लपेट के साथ दिया। उनके जवाब से लोग हँसते-हँसते मोट-पोट हो गये। १५-२० मिनट का यह अच्छा कार्यक्रम रहा। ये लोग विचार भी आते लोग इन्हें घेरे रहते और उनसे बातें करते।

गोविन्दरावजी ने सम्मेलन की ओर से सम्मेलन की व्यवस्था करनेवालों के प्रति आभार प्रकट किया। सम्मेलन में

ठहरने, पानी, सफाई, भोजन की काफ़ी व्यवस्था थी। गर्मी बहुत ज्यादा थी। बतः टेम्पे में ठहरनेवाले लोगों को दोपहर में गर्मी के कारण बहुत परेशानी होती थी। सभा मध्य भी धूर से जलता रहता था। तेज हवा के साथ धूल भी उड़ती रहती थी।

अन्ते शर्वादय सम्मेलन के लिए हरियाणा की तरफ से श्री सोमभाई ने नियंत्रण दिया।

शरा सवारीय भाषण करनेवाले थे। काफ़ी देर हो चुकी थी। दादा ने ५ मिनट का समारोह पाषण किया। अध्यक्ष ने सम्मेलन समाप्त की सूचना भी और सम्मेलन समाप्त हुआ। सम्मेलन में लगभग ५ हजार प्रतिनिधियों ने भाग लिया। ●

सर्वोदय साहित्य पर विशेष रियायत : कुछ निश्चय

सर्वोदय-सम्मेलन के अवसर पर नकोदर (जालंधर) में दिनांक १७-५-७२ को केन्द्रीय सर्वोदय-साहित्य समन्वय समिति की बैठक हुई थी। उसमें खादी भण्डारी पर खादी खरीदी के अनुपात में या विभिन्न रूप में सर्वोदय-साहित्य पर रियायत के सम्बन्ध में निम्न प्रस्ताव पारित हुए हैं

प्रस्ताव १—विभिन्न प्रदेशों में साहित्य पर रियायत

श्री राधाकृष्णजी ने विभिन्न राज्यों की खादी सस्थाओं की एवं साहित्य योजना की रिपिन या बिनेचन करने हुए बताया कि समन्वय समिति की चर्चा की बैठक में प्रस्ताव नं० ९, १०, ११ के अनुसार रियायती साहित्य के समन्वय में विभिन्न प्रदेश की समन्वय समितियों ने निम्नलिखित निर्णय लिये हैं।

(अ) प्राकृत जितनी कीमत की खादी खरीदें उतने तक का साहित्य ५० प्रतिशत रियायत पर दिया जाय (१-महाराष्ट्र, २-मध्य प्रदेश)

(भा) प्राकृत यदि खादी वा खरीदार है तो बिना किसी अनुपात के वह निम्नोक्तना साहित्य ५० प्रतिशत रियायत पर दिया जाय। (१-पंजाब, २-हरियाणा)

(इ) खादी भण्डार में से हर एक को मान्य सर्वोदय साहित्य २५ प्रतिशत रियायत पर दिया जाय।

खादी-खरीद की शर्त न रहे। (१-तमिलनाडु, २-आंध्र, ३-कर्नाटक, ४-केरल, ५-राजस्थान)।

प्रस्ताव १९-खादी-खरीद पर छव-प्रतिशत साहित्य-रियायत से

यह प्रश्न उठाना गया कि जिन प्रदेशों में समन्वय समितियाँ नहीं बनी हैं या जिन समितियों ने अन्य कोई निर्णय नहीं किया है उनके बारे में क्या नीति रहे ? तब हुआ कि खादी-खरीद पर १० प्रतिशत तक मान्य साहित्य ५० प्रतिशत

रियायत से देने की बात तक जो सामान्य नीति रही है उसकी जगह खादी-खरीद पर अब १०० प्रतिशत तक मान्य साहित्य ५० प्रतिशत रियायत से देने की नीति रहे। यानी १०.०० की खादी-खरीदने वाले को १०.०० तक का साहित्य आधि मूल्य पर दिया जा सकेगा। चर्चाई प्रस्ताव नं० ९, १०, ११ के अनुसार प्रदेश समन्वय समितियों का इस्म बंदत करने का बर्धकार बना रहेगा।

जिन प्रदेशों ने भिन्न निर्णय लिया है उन्हें छोड़कर निम्न प्रदेशों के लिए यह प्रस्ताव लागू रहना है। १—महाराष्ट्र, २—मध्य प्रदेश, ३—उत्तर प्रदेश, ४—बिहार, ५—गुजरात, ६—जम्मू-कश्मीर, ७—हिमाचल प्रदेश, ८—दिल्ली, ९—मासाम, १०—बंगाल, ११—उड़ीसा।

उक्त प्रस्तावों के अनुसार
१—दक्षिण के चार राज्यों तथा

राजस्थान में बिना खादी की शर्त के हर एक को मान्य सर्वोदय-साहित्य २५ प्रतिशत रियायत से मिलेगा।

२—अन्य सभी प्रदेशों में खादी खरीदनेवालों को ही सर्वोदय साहित्य पर ५० प्रतिशत रियायत मिल सकेगा। अब तक १० ५० की खादी खरीदने पर १ ५० मूल्य का साहित्य आधि मूल्य पर देने का नियम था। अब खादी के मूल्य के बराबर यानी १० ५० की खादी लेनेवालों को ५० १०.०० का साहित्य आधि मूल्य पर मिलेगा। पंजाब तथा हरियाणा में खादी से अधिक मूल्य का साहित्य भी ५० प्रतिशत रियायत पर मिलेगा।

सर्वोदय साहित्य के पाठकों को इस सुविधा का लाभ उठाना चाहिए।

समस्त खादी सथाओं से अनुरोध है कि वे अपने भण्डारों पर मान्य सर्वोदय साहित्य-बिक्री के लिए खतें और नियमानुसार रियायत दें।

— राधाकृष्ण बजाज

उत्तर प्रदेश कार्यकर्ता-शिविर

नकोदर सर्वोदय सम्मेलन के अवसर पर १९ व २० मई को उ० प्र० सर्वोदय मण्डल के माध्यम स्वामी दुष्मानन्द की उपरिपिठ में प्रदेश के कार्यकर्ताओं की बैठकें प्रदेश में चल रहे सर्वोदय आन्दोलन पर चर्चा करने के लिए आयोजित की गयी थीं। उक्त बैठकों में वहाँ पर उपरिपिठ प्रदेश के सभी कार्यकर्तों ने वीज्जा से यह महसूस किया कि एकमुचला के अभाव में प्रदेश का आन्दोलन अर्धशुद्ध गति नहीं पाइए पा रहा है। यहाँ काम करनेवाले उद्यम और निष्ठावान कार्यकर्तों को प्रदेश में कमी नहीं है। जगह-जगह काठी महसूस रूप काम हो रहे हैं, लेकिन उनमें आगम की एकमुचला न होने के कारण दूरे काम की उपरिपिठ वेगबिबदा नहीं प्रकट हो पा रही है। यह स्थिति प्रदेश और देश के आन्दोलन को दृष्टि से काकी चिन्ताजनक है।

इस स्थिति को बदलने और प्रदेशों

आन्दोलन की अधिक वेगवही बनाने की दृष्टि से वहाँ सबसे चर्चा करके यह तय किया कि प्रदेश भर के सक्रिय कार्यकर्तों का बिम्बन-बर्षा-सहस्रसंघर्ष आठ दिवसीय शिविर का आयोजन किया जाय।

उक्त संघर्ष में भाग्यी २३ जून से ३० जून तक बुलन्दशहर जिन के बलरुची नरीट में शिविर आयोजित किया जा रहा है। मोटे तौर पर शिविर के दो उद्देश्य माने गये हैं—१—उद्देश के सक्रिय कार्यकर्ता सभी आगम में जुड़ें, जो निष्क्रिय हो गये हैं के सक्रिय हों। २—बना कर, बिखरे आन्दोलन गति से चल रहा है यह महसूस हो।

दिनांक २३-२४ को बुलन्दशहर नरीट में आगमो चर्चा होगी, २५-२६ तक एक साथ या टोनिनों में घूमना होगा और फिर २९-३० को बुलन्दशहर में शिविर होगा। शिविर में निवास, भोजनार्थ की व्यवस्था स्थानीय होगी और जाने-जाने—

सर्व सेवा संघ के मंत्री का पत्र

विषय बंधु,

नकोदर सर्व सेवा संघ अधिवेशन समाप्त हुआ। उन्में से पंचविध कार्यक्रम निरवना। इसकी ओर में आपका ध्यान आकर्षित करने के लिए यह पत्र आपकी सेवा में भेज रहा हूँ।

१—भारत भर में १००० प्रसङ्गों में १००० सम्पर्क-नेट-जमाने हैं। इनमें से दुरा समय देनेवाले कार्यक्रमों से दोनो प्रसङ्ग भर में कामस्वराज्य-मभा का प्रचार करेंगे एवं केन्द्र भी सहा-लेगे। सर्वोत्प-गान, शान्तिसेना, मूवा-जति, लोडवेवक आदि को भी प्रसङ्ग में से बाहरा देंगे। एमसे अनेक सहयोगी मिलने। इन कार्यक्रमों के द्वारा काम के लिए सतनैवाता अर्थ-नवह भी होगा। रचनात्मक कार्यक्रमों एवं अन्य लोगों के सहयोग से सारे कार्य करते हैं।

२—इन प्रसङ्गों के अन्वावा अन्वय देश भर में व्यापक रूप जारी रहना है।

३—ग्रामदान-शक्ति एवं पुष्टि की समन्वित परम्पराएँ निरालनी हैं। इन परम्पराओं को निरालने समय जलना वा इत्यादि-भेद हो इसलिये लोक-परम्पराओं को अन्वयना चर्चाएँ। इस विषय में संघ अधिवेशन में प्रस्ताव भी हुआ है। इसे अन्वय में रखकर हमारी कार्य-यत्नित बरतनी होगी। जहाँ ऐसी प्रावि-पुष्टि परम्पराएँ सम्भव न हो वहाँ सक्रियत ग्रामदानों को संचाल करने का काम भी जारी रहना चर्चाएँ। यह भी लोक-परम्पराओं के द्वारा आधिकारिक विद्या प्राप्त।

→ का मार्ग-पथ विना बा नगर सर्वोदय सम्मेलनों को करना होगा।

निर्दिष्ट-रूप में वृद्धि के लिए असी-रक्ष, इन्वय-रक्ष, समुच्चै से सम्बन्ध टैनेवे एंटेकर के लिए बर्से मिलेंगी—राजबाट एंटेकर असी-रक्ष-कोती मार्ग पर विवत है। राजबाट से निर्दिष्ट-रूप कनकली कोती के लिए तर्हि मिलते हैं।

—दृष्ट-रूप सहाय

४—दिसम्बर में बीस-मन्त्रीय मूचन धोने का नियोग निरव राय, जहाँ ग्राम-दान-शक्ति-पुष्टि के बाद का ग्रामस्वराज्य का काम चले। इस काम को करने-करने आवश्यकता पड़े तो अन्वय एवं शोषण के विरुद्ध अमहयोग एवं सत्याग्रह के भी प्रयोग भी किये जायें। नकोदर अधि-वेदन के प्रस्ताव में इसका उल्लेख है।

५—सह-सा, मुसहरी, एवं तबोर को संघ ने अपना अधिम घोषा माना है। वहाँ आवश्यकता अनुसार कार्यक्रमों की सृष्टि सहायी जाय।

एक सामयिक काम यानी राजस्वदान के लिए सत्याग्रहियों को तैयार रखा जाय। इस बारे में आगरी परिपत्र भेजा जा रहा है।

इन विषयों में आप क्या करते जा रहे हैं उसकी सूचना गोपुरी मार्गान्त भी भेजने का सच उठावें।

—शुक्रवार रात

कार्यकर्ताओं से निवेदन

राज्य सरकार के बचतभंड और भी गोपुर भाई के अग्रगत से सार्वजनिक धर्मों में, लाइकर सर्वोदय कार्यक्रमों में शोष पैदा होना स्वाभाविक था। ता- १९ से २१ मई तक नकोदर (पंजाब) में सर्व सेवा संघ के अधिवेशन तथा सर्वोदय सम्मेलन के निमित्त एकत्रित विभिन्न प्रदेशों के कई भाई-बहनों ने राज-स्थान के सत्याग्रह में शामिल होने के लिए अपने नाम निराले थे। इस बीच प्रधान मन्त्री भीमजो इन्दिरा गांधी द्वारा मास-रपटा के आराधन पर श्री गोपुरभाई मट्ट ने अन्वय अन्वयन तोड़ दिया है और शोष हो ने इस प्रसंग के इन के लिए प्रधानमन्त्री से निवेदनवाले हैं।

अतः चिन्तना राजस्वदान में सत्या-ग्रह किये जाने की आवश्यकता नहीं होगी। बिन भाई-बहनों ने अन्वय नाम सत्याग्रह के लिए दिया था, उनके प्रति सर्वसेवा संघ का प्रत्येक प्रसन्न है।

विश्वास है कि भविष्य में भी आवश्यकता पड़ने पर इसी प्रकार सर्वोदय कार्यक्रमों भाई-बहन अन्वय के प्रतिहार के लिए उत्तर रहेगे।

३०-२-१९७२ —तिरुवाण इन्द्रा,
बच्चस, सर्व सेवा संघ

(पृष्ठ ५५० का विषय)

सम्मेलन की विश्वास है कि यदि उपयुक्त विन्दुओं को ध्यान में रखकर भारतीय स्वतंत्रता की रक्षा-यत्नियों के नरें में राष्ट्रीय शिक्षा की राष्ट्र की आवश्यकता के अनुसार आने का नियम किया जायगा तो उन अनेकानेक जटिल समस्याओं के हल धोयें जा सकेंगे, जो आज इस स्तर के शिक्षा-यत्न के सामने गम्भीर चुनौती के रूप में खड़ी हैं।

सम्मेलन देश की सभी सरकारों से और समाज नागरिकों से अनुरोध करता है कि वे शिक्षा के क्षेत्र में सामूहिक-शक्ति का हृदय से स्वागत करें और उसके लिए सब प्रकार की आवश्यक सहायों में लगें। ●

(पृष्ठ ५५३ का विषय)

धोने, धी-धोनी भाई सम्बर्द्ध के एनी भाई तथा मुन्ना के हृदय भाई शुक से काम में लगे हैं। सर्वश्री रघुनाथ सा, श्री दत्तात्रय सा, श्री भोला प्रसाद सिंह आदि स्थानीय मित्र भी बर्ष काम में लगे हैं।

सह-सा एली पहरकर
२०/२/७२

समायाचना

गाठको से हम सारा चाहते हैं कि यह अरु बार-बार काफ़ी नियम से प्राप्त हो रहा है। हमारी तप-म कीर्तियों के बावजूद भी त्रेष की बर्दिनाई के बावजूद हम यह अरु समय से नहीं निराल सके। २ और १२ दून का सहायता विना पूर्व सूचना के एनी-एने विना-एने का नियम किया गया ताकि अरु समय से निराल सके परन्तु एममें सच-वता नहीं मिली। अन्वय दो अरु भी मुन्ना नियम से प्रभावित होने को सम्भावना है। बाबा है-प्राज्ञ हमारी नर-रुपी की समसदर धारा करेंगे। ५०

प्रधानमंत्री के आश्वासन और अनुरोध पर श्री गोकुलभाई ने उपवास तोड़ा

स्व० राष्ट्रपिता श्री जवाहरलाल नेहरू की पुण्यतिथि के अवसर पर २७ मई '७२ को जयपुर में प्रातः ९ बजे रामनिवास बाग स्थित अलबर्ट हॉल में गांधीजी के चित्र के सामने सर्वोदय नेता श्री गोकुलभाई श्रद्धा ने अपना उपवास तोड़ा। प्रार्थना और रामधुन के वातावरण में ७५ वर्षीय स्वतंत्रता सपना के रोमांती को राज्य के मुख्यमंत्री श्री नरनगुल्लाबा सन्तरे का यह दिया।

शराबबन्दी के लिए भी गोकुलभाई के अनशन का आज बारहवां दिन था। ज्ञातव्य है कि प्रधानमंत्री के आश्वासन और अनुरोध पर ही उन्होंने उपवास खाने का निश्चय किया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री बरकतुल्लाखा ने कहा कि प्रधानमंत्री ने इस सम्बन्ध में बहुत की, यह अन्त्योष का विषय है। आपने कहा कि राजाजान सरकार पूरी तागत से प्रदेश में शराबबन्दी लागू करेंगे। वित्तमंत्री श्री चन्दनमल बंद ने विस्वास दिलाया कि मन्दिर, धर्मशाला, विद्यालय आदि से २०० मीटर के भीतर दियत शराब की दुकानों को हटाने के नियम का बड़ा से पालन किया जायेगा।

डा० सुधीरा नामर ने कहा कि श्री गोकुलभाई के उपवास ने देश के स्वतन्त्रता कार्यकर्ताओं को नवसूचित प्रदान की है। आपने आन्दोलन की सफलता के लिए राजनैतिक, धार्मिक तथा सामाजिक सभी संगठनों का सहयोग एक जुट होकर करने की आवश्यकता पर बल दिया। श्री सिद्धराज बद्दा ने बताया कि देश के गांधीजनों की वेदना श्री गोकुलभाई के उपवास के रूप में प्रकट हुई। उन्होंने

कहा कि गोकुलभाई का उपवास ही समाप्त हुआ है, लेकिन प्रदेश को शराब-मुक्त बनाने का हमारा काम अभी समाप्त नहीं हुआ है। श्री कल्याणभाई ने आशा व्यक्त की कि राजस्थान का यह नदम देशों का मार्गदर्शन करेगा।

जन्म में श्री गोकुलभाई ने सब लोगों के प्रति कामार ब्रह्म करते हुए कहा कि अहिंसक सत्याग्रही को सबपर विभवात रस कर चलना पड़ता है। उन्होंने बताया कि केवल अंगन ही हटा है, उनका जन जाग्रति का काम नहीं छूट सकता।

खादी-ग्रामोद्योग विद्यालय का सत्र

द्वितीय, ८ मई। सर्वोदय शिक्षण समिति द्वारा खादी-आयोग की सहायता से संचालित खादी ग्रामोद्योग विद्यालय, माधवा (द्वितीय) में नवीन खादी-कार्यकर्ता (सत्रावधि ६ माह) और खादी-ग्रामोद्योग संगठक एवं ग्रामसहायक पाठ्यक्रम (सत्रावधि ११ माह) के तबीन-सत्र क्रमशः आगामी १ अगस्त व १५ अगस्त, १९७२ से प्रारम्भ होंगे। इन पाठ्यक्रमों का उद्देश्य खादी ग्रामोद्योग-संस्थाओं, पचायतों तथा अन्य समाजसेवी कार्यकर्ताओं का बढाई-बढाई के नये साधनों में प्रेरित-प्रवृत्त करना है। सत्र-काल में प्रत्येक प्रतिभागियों को ६० ६० मासिक की छात्रवृत्ति एवं प्रवास-व्यय दिया जायगा। सैधनिक योग्यता हारने सेकेन्दरी व्यवसाय करने के समर्थ हों। अधिक जानकारी के लिए इच्छुक स्थिति—श्रावण, खादी ग्रामोद्योग विद्यालय, पोस्ट-माधवा (नरसुरवाग्राम) जिला द्वितीय, मं० प्र० के पते पर सम्पर्क कर सकते हैं।—अधेश

पत्र-व्यवहार का पता : सर्व सेवा सच, पत्रिका-विभाग राजघाट, पार.पत्तो-१

गार, सर्वसेवा फोन: ६४३९१ सम्पादक

रामभूति

इस अंक में

- हमारा भारतगण ५५६
- बागी नहीं बनाने चाहिए —समादकीय ५५७
- विधान और जमीन का महत्ता —श्री दारा धर्मशिरारी ५५८
- हृदय-परिवर्तन का परिवर्तार सम्मेलन में अल्पक्षीय भाषण —आचार्य रामभूति ५५९
- समग्र मनुष्य के निर्माण से ही अहिंसक समाज-रचना सम्भव —श्री सरला बहन ५६०
- सहकार, सफल और सत्याग्रह हमारे आन्दोलन का अन्तर्भाव —श्री० ठाकुर दास बग ५६०
- दान-आभयान गुण से गुणता पर अधिक साधन —श्री जैनेन्द्र कुमार ५६५
- बेरोजगारी व विपयता के सम्बन्ध में प्राय्य निबन्ध —श्री श्रीराम कुमार ५६६
- गंगादा देश के गांधीवादी —श्री जगदीश यशवती ५६८
- धर्मदान द्वारा धर्मवर्धन..... —श्री एच० जगन्नाथन ५७०
- बीसवीं संवोदय सम्मेलन —ड० गु० ५७२
- अन्य स्तम्भ
- आन्दोलन के उम्मावार, ३० भा० न० ता० सम्मेलन का निवेदन

आधिक मुद्रा: १० ६० (सर्वेद कागज: १२ ६०, एक प्रति २५ पैसे), बिस्ते से २५ ६०; या ३० विविध या ४ आकर। इस अंक का मूल्य ४० पैसे। श्रीहरमवत भद्र द्वारा सर्व सेवा सच के लिए प्रकाशन एवं मनोहर प्रेष, पार.पत्तो से मुद्रित।

सर्वोदय

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

भद्रान-यज्ञ

भद्रान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अतिरिक्त क्रांति का संस्कारात्मक-सांस्कृतिक

सच के महासच की ओर से

साथियों से

पिछले महीने नरहोदर (पंजाब) में जो सर्व सेवा सच का अग्रिमण हुआ था उसमें सच के अध्यक्ष की जिम्मेदारी उठाने के लिए मुझे बड़ा मया। आन्दोलन में लगे हुए मित्र और साथी, या पू० बिन्दोबारी तथा जयप्रकाशजी जैसे नेताओं ने जब कभी मुझे किसी काम के लिए कहा, मैंने उसे अपना कर्तव्य तथा आन्दोलन में अपना योगदान देने के एक अवसर के रूप में स्वीकार किया है। इस नवी जिम्मेदारी को भी मैंने बहुत मजतपूर्वक उसी भावना से स्वीकार किया है।

देश के विभिन्न हिस्सों में हमारा कार्यकर्ता भार्द-बहन हैं जो सर्वोदय में निष्ठा रखते हैं और, चाहे पूरा समय, चाहे कम कामों के साथ, वे सर्वोदय की विधि के लिए काम करते रहते हैं। हम लोग सब एक विनाश आन्दोलन के अंग हैं, एक ऐसी मयी तपान के, जो सामूहिक तरीके से सामाजिक परिवर्तन लाना चाहते हैं। हम में से हर एक अपने क्षेत्र में, या कार्य-विशेष में लगा हुआ है। लेकिन इस प्रकार के तमाम प्रयत्न करने ही के बिना-अपने-आपके क्षेत्रों में कितने भी उत्साह तथा अक्षयताके हों, अगर वे आत्म में उभरे हुए नहीं हों तो परिस्थिति पर उनका बहुत असर नहीं होता। अलग अलग रहने पर वे पानी की उन बूँदों की तरह हैं जो गूब जाती हैं। कितने पर मही बूँदें एक प्रवाह का रूप

धारण कर लेती हैं जो चारों ओर जीवन तथा पोषण देता बनता है। इसलिए इस बात की अत्यन्त आवश्यकता है कि हम लोग अपने विचारों तथा अनुभवों का आदान-प्रदान करते रहें। मैं अपनी ओर से हिन्दी मूदान-पत्र तथा अंग्रेजी पीपुल्स एक्शन के जरिये समय समय पर अपने विचार और अनुभव व्यक्त करता रहा हूँ और नये संदर्भ में अधिक नियमितता से इन पत्रिकाओं के जरिये साथियों तक इन्हें पहुँचाने की कोशिश करूँगा। मुझे विश्वास है कि आन्दोलन में लगे हुए अन्य मित्र और साथी भी या तो सीधे मुझे लिखकर या इन पत्रिकाओं के जरिये, अपना हिसा पुरा करते रहेंगे।

बहु कहना एक साधारण-सी बात बाबूम् होती है, लेकिन अक्सर ऐसी साधारण बातें सचराने में बहुत मदद देती हैं कि हर आन्दोलन के तीन अंग होते हैं—(१) विचार, (२) उस विचार को अमल में लानेवाले जोरार और, (३) कार्यक्रम। जोरार या विचार के बाहक भी दो होते हैं—एक कार्यकर्ता और दूसरे उस विचार को जाने बढ़ानेवाला सज्जन। सर्वोदय आन्दोलन के सम्बन्ध में ये दोनों एक ओर तो हम लोकसेवक और दूसरी ओर सर्वोदय मन्चन तथा सर्व सेवा संघ हैं। हालाँकि आन्दोलन के अन्व दो अंग-विचार और कार्यक्रम के बारे में भी समय-समय पर हमें अवश्य चर्चा करते रहना

‘अंग्रेजी शराब’

हादों में, और देहाती बाजारों में भी, जगह-जगह दूकानों पर अंग्रेजी शराब के साइनबोर्ड देखने को मिलते हैं। उन दिन दिल्ली में एक दिन ने एक मजेदार बात बलायी। उसने कहा कि एक राज्य सरकार एक ऐसी ‘मधुशाला’ बनवा रही है जिसकी शरब बाहर से देख। मैं अंग्रेजी शराब की बिक्री बोलस-तो-सी होगी। ठीक भी है, जब सरकार को शराब पिलाना है तो वह झोपड़ी में क्यों पिलाने ? जैसी संभव-मिथ सरकार है, उन्ही तरह वैभवपूर्ण उसकी मधुशाला भी होगी चाहिए।

अंग्रेजी राज, अंग्रेजी प्रशासन, अंग्रेजी भाषा, अंग्रेजी भाषा, अंग्रेजी न्याय, अंग्रेजी शासक, अंग्रेजी लीट-जरी, आदि अंग्रेजी चीजों में से सिर्फ अंग्रेजी राज समाप्त हुआ, लेकिन दूसरी सब चीजें बनी हुई हैं और बढ रही हैं। और, यह बुद्धि जनता के पासने से नहीं हो रही है, बल्कि नेताओं की मर्जी से ही रही है। उन्हें हर चीज अंग्रेजी पसन्द है—शराब भी। अंग्रेजी शासक भये, लेकिन भारतीय शासकों का विभाग अंग्रेजी बना हुआ है।

शराबबन्दी सम्बन्ध में है, ब्रांस के तन्त्रे इतिहास में है, इस देश की परम्परा में है; जनता के मन में है फिर भी शराब-बन्दी होगी नहीं। उन्हे सरकार की ओर से पीने की आशा-सं-ज्यादा प्रोत्साहन दिया जा रहा है। कई राज्यों में बस के अड्डों पर अंग्रेजी के लिए शराब को मुक्ति दी जा रही है ताकि वे जब चाहें उत्तरकर भी सकें।

सरकार कहती है कि शराब से उन्हे हाड़ी बनी आभयनी होगी है जिसे वह जनता के कल्याण में सब करती है। बोर्ड अना-मान्य यह बने नहीं सोचना कि शराब पीनेवाले गरीब की आधी बर्बादशराब में मिलत जाती है, वह और उन्के बच्चे खाने-पाने से बचि-त हो जाते हैं, बुद्धि बुद्धि होशो है, शारीरिक क्षति का काम होता है, आपकी बर्बादशराब जा भी है। शराब पीने की आशाओं के बन्दूक में डाल देती है, और समाज में गुहाशीली का आसारक संभावो है। लेकिन ये सारे सामाजिक, नैतिक और आर्थिक दुष्प्रभाव सरकार की नजर में महत्त्व नहीं रखते। उन्हे देश चाहिए, और डीकेंडर को मुक्त चाहिए, यहाँ शराब की बिक्री से सरकार को बिना टैक्स मिलना है उससे अधिक देश

उन्हे दूसरे मात की बिक्री से मिलेगा क्योंकि शराब का पैसा बनेगा तो दूसरी चीजों पर खर्च होगा।

क्या यह माना जाय कि गरीब के कल्याण के लिए गरीब का बर्बाद होना जरूरी है ? सरकारों ने शायद ऐसा ही मान रखा है। क्या गरीबों ने भी मान रखा है ? क्या ये भी नहीं सोचते कि उनकी कमाई बढ़कर भी क्या करेगी जब वे उसका एक बड़ा भाग नशे में गँवा देंगे ?

भारत की सरकारों गरीब बोटरो को सरकारों हैं। गरीबों के प्रतिनिधि गरीबों के बितने हितों को ही रखते हैं, यह देखना ही तो भारत के गरीब अपने प्रतिनिधियों और उनकी शराब-नीति को देखें।

शराब का प्रश्न केवल नैतिकता का प्रश्न नहीं है, नागरिक की नागरिकता का प्रश्न भी है। सरकार को यह अधिकार किस नाज़ से मिला है कि वह अपने नागरिकों को दरिद्र बना सकती है, तथा लाखों युवकों-युवतियों और श्रमिकों के बौद्धिक, नैतिक, आर्थिक और शारीरिक ह्रास को बढ़ावा दे सकती है ?

कोई नहीं कहता कि सरकार शराब नहीं पिलानेगी तो पीने-वाने पीना बन्द कर देगे। जो पीना चाहते हैं वे पीयेंगे। जिनके लिए पीना जरूरी होगा उन्हें परमिट भी दे दिया जायगा। शराब-बन्दी की माँग सिर्फ़ इतनी है कि सरकार अपनी ओर से शराब की दूकानें न खोले, ठीके न दे, विश्राम न करे, शराब को सम्मल न दे। सरकार की ओर से इतना ही जाय तो बाकी काम सुधारक कर लेते। समाजवादी सरकार समाज का इतना ध्यान तो रखे कि अपनी ओर से बर्बादी न फैलाये।

परिभाषा की माँग

पंजाब के कुछ बड़े किसानों ने प्रश्न उठाया है कि समाजवाद की परिभाषा होगी चाहिए। वे कहते हैं कि यह कैसा समाजवाद है जिसमें जोन पर इतनी नीची सीमाएँ लगायी जा रही है ? बड़े सहरो लोगों ने भी आवाज उठायी है कि रहने के मतानों पर या ऐसे मतानों पर विचार विचारना ही महान् माँग की जीविका का सहारा है, सिर्फ़ नहीं लगनी चाहिए। इस तरह वा समाज-वाद न्यायपूर्ण नहीं है। इसी तरह अगर इतना चाहें तो मजदूर भी कह सकते हैं कि पूँजीवारी व्यवस्था में वे अपनी येदुत बेच-कर मुजर करते हैं, लेकिन अगर सरकार भी ‘समाजवादी’ योजना में भी उन्हें मजदूरी के लिए अपनी येदुत डोरेदार के हाथ बेचनी ही पड़ी तो उनके लिए पूँजीवाद और समाजवाद में क्या अन्तर हुआ, बिनाए रखे कि जो वा पूँजीवाद उन्हें भूलो मरने की छूट देता है, अर्थात् ‘समाजवादी’ सरकार नहीं बरकर बनाये या मरू-सोने में उन्हें काम दे देते वा आशाजनक दे रही है।

समाजवाद का नारा जब एक बार चन पड़ा तो यह स्वा-भाविक है कि उसकी परिभाषा भी माँग हो। नातिक यह जानना चाहते कि उनके पास किसकी सम्पत्ति रहती, तथा बौद्धिक-स-

शरावन्दो के लिए आखिरी मौका

• मिद्वारा डट्टा

राजस्थान के न्योनूद्ध नेत्र और जननेवक भी गोबुलभाई भट्ट ने २० मई को ११ दिन का अथवा अन्ततः समाप्त करते समय जो शत्रुत्व दिना उद्योगे जाहिर किया था कि "मेरा अन्ततः समाप्त हुआ है पर आन्दोलन जारी है। राज-पात के नाराजकरी आन्दोलन को एक विशेष पृष्ठभूमि और इतिहास है। अब ठीक प्रकार इसके साथ धार देना भी नगार-री का प्रश्न उठ गया है, उसे यथासंभव समाप्त कराएँ।

भाजवादी के आन्दोलन के समय राष्ट्र के नेताओं ने भारत की जनता को उत्तर-उत्तर के अशासन और आजादी मिल जाने पर उसके उत्थान और विकास के लिए कुछ विशिष्ट काम सम्पन्न करने के बचन दिये थे। इनमें से कई महत्वपूर्ण बातों को भारतीय संविधान में भी दखिल किया गया जिनमें सम्पूर्ण महाजन्यी—केवल शरावन्दी नहीं—प्रमुख थी। इस प्रकार सम्भारतापूर्वक किये गये वारों में बहुत-से ठो गेठे थे जिनमें कुछ-न-कुछ काम आने बड़े हैं और जिनके बारे में कुछ प्रयत्न भी हुए हैं, पर महाजन्यी हा। चायद एक ऐसा विषय है जिसमें

विच्छेद २३ वर्षों में प्रगति होने के बजाय संविधान में दिये गये आशासन से उन्दी दिशा में बड़े बचन हैं बरिक्त जनता या सांख्यिक बहुमत—केवल दिल्ली, बम्बई जैसे शहरों में रहनेवाले कुल देश के दो-चार प्रतिशत लोगों का नहीं—आज भी शराव और नशे के सिनाक है और उद्योग प्रस्त है। इसलिए चायद शरावबन्दी के प्रश्न को लेकर समय-समय पर राष्ट्र के विभिन्न राज्यों में छोटे बड़े आन्दोलन और सत्याग्रह विच्छेद वरों में होते रहे हैं।

राजस्थान में भी सन् १९६० में शरावबन्दी के लिए एक व्यापक सत्याग्रह हुआ था। वहाँकी कार्यकर्ताओं, नागरिकों और गाँव-रहने वालों ने इस आन्दोलन में भाग लिया। आखिरकार राजस्थान सरकार ने समझौता किया और १ अक्टूबर १९७२ से प्रदेश में पूर्ण शरावबन्दी करने की घोषणा की। इस नीति को कार्यान्वित करने के लिए उन्होंने कुछ काम भी उठाये। आज राजस्थान के २६ जिलों में से करीब साठ छ जिलों में शरावबन्दी है।

पर प्रदेश में पूर्ण शरावबन्दी लागू

करने की उररीतज विधि से तीन दिन पहले ही अन्ततः राजस्थान सरकार ने आधिक तनी का शरण बताते हुए आजा बचन निमा करने की अद्यमर्षता जाहिर की और शरावबन्दी के आगे के बदलो को अनिश्चित भाल के लिए एर्पाज करने की घोषणा कर दी। जिन जनप्रतिनिधियों या संघटनों के साथ सन् १९६० में उन्होंने शार्वजनिक रूप से पूर्ण शरावबन्दी का इशारा किया था उनके भी यह घोषणा करने से पहले किसी प्रकार का विचार-विनिमय करना उन्होंने बल्की नहीं समझा। जनआन्दोलन और सत्याग्रह के फलस्वरूप दिये गये अपने बचन का पालन न करना और इस प्रकार का पंथवा एकरस्य कर लेना जनता को पद्धति, प्रक्रिया और भावना के प्रतिवृत्त बाधरण है, इसकी गम्भीरता राजस्थान सरकार के ध्यान में नहीं आयी यह दुर्भाग्य की बात है। राजस्थान सरकार द्वारा अपने बचन से मुकरने में केवल शरावबन्दी का संवात नहीं है, बरिक्त संवात जनता में जनता के विश्वास का है।

जिम्मेदारी के साथ दिये हुए बचन का पालन न कर सवने के लिए राजस्थान सरकार ने एवमात्र दलील आधिक तनी की दी है। चाहे यह राजस्थान सरकार हो या भारत सरकार शरावबन्दी जैसे

→ अधिक उन्हें विदनी बमाई और विदना धर्म करने को सट्ट रहेगी। इसी तरह मजदूर भी जानता चाहेगी कि जिन परिस्थितियों में वे आज तक काम करते रहे हैं, उद्योग नवी परिस्थितियों जिनकी भिन्न होगी। उन्हें जीवित के रपायी धायन भी कभी मिलेगे या नहीं? या, समाजवाद का महल बनाने में पचीसा बहाने तो जिम्मेदारी तो उनकी रहेगी, मगर उस महल में रहने का अवसर उन्हें नहीं मिलेगा।

समाजवाद के बारे के साथ-साथ कई प्रश्नों का उठना अनिवार्य है। उन प्रश्नों में तीन मुख्य हैं—पहला प्रश्न है अफिरा के साथनों के इशार्मक का। किसकी? हेगो जमीन, बिच्छे रहेगे कल-कारखाने, और बिच्छा होगा धोक व्यापार? क्या सरकार और काज के मालिक मिलो-जुपी अर्थनीति के नाम में स्वाभिरव को अपने ही हाथों में रखेंगे या स्वाभिरव में जनता का भी स्थान होगा? दूसरा सवाल है अर्थवस्था का। क्या समाजवाद में सारा काम सरकार की योजना और उसके आदेश के अनुसार ही होगा

या निर्णय का कुछ अधिकार जनता को भी मिलेगा? तीसरा प्रश्न है मजदूर की हैसियत का। क्या वह उत्पादन का साधन पाकर उत्पादक भी बनेगा, या सदा मेटून बेचनेवाला मजदूर ही बना रहेगा? यह सम्भव नहीं है कि समाजवाद का सिर्फ छत्रा अर्थ मान लिया जाय कि भूमि और मकान पर सीमित लग जाय, और समाजवादी अर्थवस्था, या समाजवाद के मूल्यों के प्रश्न न उठाने जायें। वास्तव में स्वाभिरव, निर्णय और हैसियत, ये तीन प्रश्न ऐसे हैं जिनकी बचीटी पर समाजवाद सत्ता चाहेगा। समाजवाद का नारा तपावेवालो को बताना होगा कि उनका समाज-वाद कितने अर्थों में, किन गुणों में प्रचलित सरकारी और मर-मर-कारी पूँजीवाद से भिन्न है। सैठ हो तो पूँजीवाद, मासक हो जाय तो समाजवाद, यह समाजवाद की परिभाषा नहीं हो सकती। पूँजीवाद और समाजवाद का भेद गुण और पद्धति में प्रकट होता चाहेगा। •

नैतिक और सर्वजनहित के नाम को न कर अपने के लिए आर्थिक तगती भी दलील बहुत ही भ्रामक और भ्रमोत्पन्नीय है। यह जनता को गुमराह करने की बात है। स्वर्गीय पण्डित जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में "शराबबन्दी के खिलाफ आर्थिक दलील देना निरी मूर्खता, शिथर गोनसेन्ट है।" इससे अग्रिक एज चारे में कुछ भी बहने की आवश्यकता नहीं है, हालाँकि तथ्यों और तर्कों के आधार पर भी अनेक बार यह बताया जा चुका है कि शराबबन्दी से आर्थिक फायदा होने की बात में कोई शक नहीं है।

यह पृष्ठभूमि थी जिसमें राजस्थान के जनता की शोकुलभाई को, जो १९६८ के सत्याग्रह नेता भी थे और राजस्थान सरकार से पूर्ण शराबबन्दी की नीति शोचकार वराने में विन्ता प्रदत्त हाप था, आनरण अनशन का निश्चय करना पडा। गोकुलभाई का अनशन शायद अन्त करवाने के लिए नहीं था। शराबबन्दी की नीति तो पिछले सत्याग्रह के पत्तस्वरूप राजस्थान सरकार हीनार वर पुरी थी। यह अनशन तो अचन-अच और विश्वासघात के कारण बंदा हुई अन्त-वेदना की अभिभ्यति के रूप में था, और इसलिए कि राजस्थान सरकार अपनी गलती महसूस करके शायद शराबबन्दी के लिए बरम उठाने।

गोकुलभाई ने ता० ८ अप्रैल को अपने अनशन का निश्चय जाहिर किया और एक माह की मोहलत सरकार को दी। ता० ६-७ मई को प्रदत्त सर्वोच्च सम्मेलन हुआ था और तब तक सरकार ने शायद शराबबन्दी के लिए बरम न उठया तो ८ मई से उनका आवरण अनशन शुरू होया ऐसी घोषणा गोकुलभाई ने की।

गोकुलभाई के इस निश्चय से न सिर्फ राजस्थान में बल्कि सारे गांधी परिवार और देश प्रेमियों में बरबा, शोष और कुछ चिन्ता का भी भाव प्रकट होना स्वाभाविक था। अतिरिक्त भारतीय नशाबन्दी परिवार की अन्धधरा ता० सुनोला

नैयर तथा परिपद के अन्य मित्रगण व थी जयप्रकाश नारायण आदि ने राजस्थान सरकार और भारत सरकार से विचार-विनिमय किया। बातचीत के लिए पुरा मौजा देने की दृष्टि से श्री जयप्रकाशजी के अनुरोध पर गोकुलभाई ने अपना अनशन एक सप्ताह के लिए स्थगित भी किया, पर आखिरकार कोई नतीजा न निकलता देखकर ता० १६ से उन्होंने आमरण अनशन प्रारम्भ कर दिया।

सभ्यो से दही दिन से नकोदर (पञ्जाब) में सर्व शेषा सघ के अधिवेशन और सर्वोच्च सम्मेलन के निमित्त देश भर से गांधी विचार में आस्था रखने वाले हजारों भाई-बहिन्ने पत्र टूट थे। गोकुलभाई के अनशन और दूसरे ही दिन आत्महत्या के आरोप में राजस्थान सरकार द्वारा उनकी पुरिपत्तारी के समाचार से नकोदर अधिवेशन और सम्मेलन में विन्ता की भावना व्याप्त होना स्वाभाविक था। गोकुलभाई के साथ भावनात्मक तादात्म्य और उनके समर्थन की अभिव्यक्ति के स्वरूप नकोदर में शर्वकर्ता और स्वयंसेवक मिलावर करीब एक हजार व्यक्तियों ने ता० १७ को उपवास रखा। देश के विभिन्न हिस्सों से आये हुए कई भाई-बहिन्ने ने राजस्थान के सत्याग्रह में शामिल होने के लिए अपने नाम दिये, क्योंकि राजस्थान सरकार द्वारा दी गयी चुनौती केवल राजस्थान के लिए ही नहीं थी बल्कि जनता में विश्वास और अनहित की आशा रखनेवाले देश के हर नागरिक के लिए थी। अन्याय नहीं भी हो, उसके प्रतिचार के लिए भारत के सर्वोच्च शर्ववर्तियों की एकात्मता का नकोदर में बहुत स्पष्ट दर्शन हुआ।

गोकुलभाई के अनशन से सिर्फ सर्वोच्च शर्ववर्तियों का ही नहीं बल्कि देश में सरकारी, वर-सरकारी सभी लोगों में शराबबन्दी के प्रश्न पर लोगों का ध्यान आकृष्ट हुआ। यह ध्यान फिर से देश में जोरन्त हो उठा—यह गोकुलभाई की उपस्था का सबसे बड़ा

योगदान मानना चाहिए। अनशन प्रारम्भ करते ही गोकुलभाई ने उत्तरी सूचना प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को भी दी थी। उत्तर में प्रधानमंत्री को और से जो पत्र आया वह शायद इस देश के शराबबन्दी इतिहास में एक नये अध्याय का आरम्भ साबित हो सकता है। पिछले कुछ असे से देश में ऐसा वातावरण बन गया है कि केन्द्रीय सरकार शराबबन्दी के लिए तत्पर नहीं है। पर इन्दिराजी के पत्र से इस बात का संकेत मिलता है, और उसके बाद भी हाल ही में लोकसभा में भी सरकार की ओर से यह जाहिर किया गया कि सविधान में दखिल की गयी नशाबन्दी की नीति से पीछे हटने का या उसे बरतने का सरकार का इरादा नहीं है। अपने पत्र में प्रधानमंत्री ने गोकुलभाई से यह अनुरोध भी किया कि वे अनशन छोड़ दें और मिलजुलकर नशाबन्दी के राष्ट्रीय तत्प को पूरा करने में मदद करें। पूरे देश में नशाबन्दी के तदव को आगे बढ़ाने की प्रधानमंत्री की भावना का स्वागत करते हुए गोकुलभाई ने यह आशा व्यक्त की कि वे राजस्थान के प्रश्न को ह्याप में लेकर उठे सुनना देंगे। प्रधानमंत्री के इस आश्वासन पर कि वे इसकी कोशिश करेंगे, गोकुलभाई ने ता० २७ मई को अपना अनशन छोड़ा।

राजस्थान सरकार द्वारा किये गये वचन भंग के फलस्वरूप श्री गोकुलभाई के अनशन के साथ-साथ राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में शराबबन्दी के लिए साप्ताहिक उपवास, प्रदमन तथा पिट्टिज आदि शुरू हुए। यह न केवल गोकुलभाई के प्रति श्रद्धा और उनका जीवन सतरे में आने से अत्यन्त चिन्ता का साक्षक था, बल्कि राजस्थान की हराय-मुहत्त कराने की तीव्र भावना का भी सूचक था। ये शर्वजन और जनता की भावना की अभिव्यक्ति अनशन के बाद भी बन रही है। कानून द्वारा पूर्ण शराबबन्दी हो जाने पर भी उसकी सफलता जागृत और सशक्ति जनता पर निर्भर है।

(देव पृष्ठ २९१ पर)

बुन्देलखण्ड के दस्युओं का भी आत्म-समर्पण

• प्रा० गुरुवरण

१५ मई को छतरपुर में बुन्देलखण्ड के १९ दस्युओं के आत्म-समर्पण के बाद हवा का रस विषय ही खोर हो जाता है। दस्यु सरदारों के हार्जिर न होने के पीछे केवल एक ही कारण है कि वे अपने सभी सगो-साथियों को बटोरने में लगे हैं। उधर शांति-निश्चान का काम भी देर से शुरू हुआ और मुख्यमंत्री की धमकियों के साथ ७ मई को छतरपुर में विद्याल पंमाने के साथ-साथ-दरशन हुआ। श्री जय-प्रकाशजी से बात करने के बाद उनके मन में विश्वास बना और अपने-अपने दल के कुछ सागियों को १५ मई के दिन हार्जिर कराके उन्होंने उस विश्वास की पुष्टि की।

जटाशंकर कहीं हैं ?

बिजावर से बारह मील दूर एक गांव है जो बढ़गांव कहलाता है। वहाँ पानी के दो बड़े-बड़े कुण्ड हैं। एक में गर्म और दूसरे में ठण्डा पानी रहता है। इन कुण्डों में भीजे के जल सोतो से मनुष्यों जैसे बाल यदा-कदा निकला करते हैं जिससे इस क्षेत्र के लोगों की आम धारणा बन गयी है कि वे शकरजी की जटायू हैं और वह स्थान जटाशंकर कहलाते सगा। वहाँ क्षेत्र के सबसे बड़े दस्युराज श्री मूरतसिंह ने भवधान शकर का निवृत्त स्थान स्थापित करा दिया और वह स्थान पूजा-अर्चना का स्थान बन गया। ५ वर्ष पहले श्री मूरतसिंह ने जब दल स्थान पर २ लाख रुपये खर्च कर यज्ञ कराया तो यह स्थान बृहत्कचित हो गया। जय-जयकार सुनकर श्री मूरतसिंह ने भ्रातृवान रामाङ्गण्य का मन्दिर भी वहाँ स्थापित करा दिया। नये मन्दिर की प्राण-प्रतिष्ठा के उपरान्त श्री मूरतसिंह ने जगल से वेल जाना स्वीकार किया। अभी तक आत्म-समर्पण की प्रक्रिया राधो-विनोद के क्षेत्र के चरणों में और फिर अब पर उपस्थित सभी छोटे-बड़े के चरणस्पर्श से जती है वहाँ तक कि दल

पक्षियों के लेखक ने जोरा में देखा कि आई० जी० पुलिस और उनके साथ उनके अन्य अधिकारी स्पष्ट हेतु चरण बढ़ाये लड़े थे और एक-दो नो छोड़कर सभी उनके पैर छू रहे थे। आत्म-समर्पण के बाद पुलिस अधिकारियों के चरणों का इतना दिखन हो जाता महत्त्वपूर्ण माना जाना चाहिए।

श्री मूरतसिंह का आग्रह था कि भग-यान जटाशंकर के चरणों में सगुन-साक्ष से प्रवेश-समर्पण की विधि हो, जो मान्य कर ली गयी। इसमें बंसे कोई सुराई नहीं समती क्योंकि महान आश्रय की बात है कि श्री मूरत सिंह के विरोध से पुलिस-मुठभेड़ मत २० वर्षों में एक बार भी नहीं हुई। श्री मूरत सिंह की मूरत बेलकर लगा कि कोई प्रौढ़ पुलिस अधिकारी सामने बैठा है। अत्यन्त मितभागी पर बात को सहारा दे खनसनेवाला। श्री देवीसिंह डाऊ नी मूल्य के बाद उसका गिरोह बिकरकर बई छोटे-बड़े गिरोहों में बंट गया, फिर भी श्री मूरत सिंह की सभी अपना मुस्त्रिया मानते हैं। मैंने श्री मूरतसिंह, श्री मोनो, श्री रामसहाय, श्री शकरसिंह और श्री फई राजा से छतर-पुर से २० किलोमीटर दूर स्थित डाकबगल पर १० और ११ मई को भेट नो जबकि वे श्री जयप्रकाश नारायण से यार्न करने के लिए आये थे। बुन्देलखण्ड के आधुनिक क्षेत्र में साार, दमोड़, पना और टीक-भगड़ के जिनै शामिल है जिनका क्षेत्रफल १४१७६ वर्गमील है और ३३॥ लाख जनता इस समस्या से प्रसिद्ध है। मैंने इस सम्बन्ध में दो धारणाएँ हैं—पुलिस इसे डाकू-समस्या कहती है और जनता पुलिस-समस्या। इस क्षेत्र में चम्बल के समान वेहड़ और डोंग नहीं हैं बरिच पने दूधों में आन्ध्रप्रिय जगल हैं। प्रमुख अवहाय तेंदू-पत्ती के ठेके और जगल की सबकी का निर्यात है। छतरपुर से सगर बस-

मार्ग पर जाने समय रातों में भीलों तक कोई गांव नहीं मिलता, है भी तो वह अत्यन्त दीन-हीन अवस्था में। पुलिस मुखों के अनुसार इस क्षेत्र में ८ प्रमुख गिरोह हैं जिनकी कुल संख्या अभी भी के लगभग बतायी जाती है। इनमें श्री मूरत सिंह पर सर्वाधिक तीस हजार, श्री पूरतसिंह पर २५ हजार, श्री भीनी और श्री रामसहाय पर सात-सात हजार, श्री फई राजा पर तीन हजार रुपये के पुरस्कार घोषित हैं। कहा जाता है कि इन लोगों ने आम जनता को चम्बल घाटी की अर्पणा बहुत ही कम लोगों को जान से मारा है इसलिए पुरस्कारों की संख्या भी कम है। इनका नाम तो बड़े-बड़े ठेकेदारों से घन वसूल करना और सारे ठेकों पर अपना आधि-पाय कायम रखना है। वहाँ की स्थिति बई अर्णों में चम्बल से भिन्न है और यहाँ की समस्याएँ भी अलग हैं।

मोसेरे भाई

मौली बकबगले पर भीड़ का पार नहीं। ब्यादो हो ब्यादमो। अब भी कोई जीप आती सभी नो आते उस खोर छठ जाती। श्री तहसीलदार सिंह, श्री पण्डित लोकमन और श्री लोकेशभाई जब भी मौली, श्री रामसहाय को लेकर आये तो सगा पुलिस के बरिष्ठ अधिकारीगण आ गये। उची तरह की ट्रैक, स्टार आदि तब कुछ, बस फई या तो नारपुसो को परटी के पट्टे में, मुँछो की नोक में और गले की तुलसी बाता में। ये दोनो मोसेरे भाई हैं। बुधियो पर बंठे मुसियाँ हो टूट गयी। भोमकाय स्वयं-पुष्ट करीर, बनरगा ५० के लगभग। बहने लगे "तसलन (तासो) पुलिस हूँगी फिर पर नहीं या सखती देविन आप सबके प्रेम में जने आये। हम भी जानते हैं कि यह काम अच्छा नहीं है पर दूसरा कोई रास्ता नहीं इसलिए इसमें हैं। हमने जो आवाजो मिलने के बाद स्वतंत्र भारत में १९५० में ही आत्म-समर्पण कर दिया था। उस समय शूष में तो कुछ नहीं, पर ६ महोने के भीतर पुलिस ने इतना आवाचार किया कि उनका वर्णन आप

सुन नहीं सारोने। मुँह में टट्टी (पाखाना) भरी घबो और परिणाम स्वरूप हम जेल लोकर हवा-डो पहने ही भाग निकले और तभी से यारी हैं। चम्बल में बागी कहे जाते हैं और यहाँ की जनता हमें राजा कहती है और हम भी उनके साथ राजा जैसा अच्छा सलूक करते हैं। हमारी बन्दूकें से जो मारे हैं वे पुलिसवाले दा फ़िराजत के ठंकेदार।" मैं बड़े ध्यान से उनकी बातें सुन रहा था और जनता द्वारा उनका अभिनन्दन खुली आँखों से देख रहा था।

फरदूदे राजा

बागी बने १ साल ही हुए हैं। आगे थाकर बोले कि यहाँ मलहारा के पास मुझ अकेले को ८०० पुलिसवालों ने घेर लिया था और फिर भी एक सिपाही को मारकर भाग निकले। श्री फरदूदे राजा को औरतो-जैसे बड़े बड़े बान हैं उनका माता-पिता द्वारा रखा नाम तो नाहर सिंह है पर सभी उनको फरदूदे राजा के नाम से जानते-मानते हैं। ये भी जबलपुर जेल से भागे थे। इनके एक और साथी गजबली कहलाते हैं, जैसे हैं वे हथप्रदा। रामफन मिश्र अपनी टापी घन टांगे मुसरो बाट रहे थे। ये मोदी और रामसहाय के भाजरे हैं।

पूजा बन्धा

श्री मूरत सिंह जि-ठ पूजा बन्धा कहा जाता है उनके बंध के मुहर्द आनी राफन बाने टहल रहे थे। पूजा, 'फरदूदे श्री बाग ?' बोने "हम फरदूदे नहीं हम तो मारक हैं, गंग में तो साधा जाति के लोग हैं। बन्धा तो बटुन बीमार हैं। नौरथ करे जाई पाहा हैं। हमें जे, सब दरबे को पडानो है" जना और बागी अमने-साभने मिन-बेठकर बाज कर रहे हैं। पुलिस का कोई सिपाही बरों में नहीं था, कोई गांटे फरदूदे में ही तो हो। कनवटर भयभाषा में आउठे थे। जनहानी घटना होने जा रही थी। धोत्र के विभाषणपथ भी यह बलघु धोत्रे में लगे हैं। श्री दक्षतर जैन तो भातिडेना का कार्करी बने धुन रहे हैं। श्री जयप्रकाशजी नहीं

हैं यह तो अब अपने हो गये। धीमती विद्यावती चतुर्वेदी (राज्यसभा सदस्या) भी आ गयी हैं। उनके पति बाबू रामजी भी सहयोग में लगे हैं। श्री चतुर्भुज पाठक और श्री लोकेन्द्र भाई सारे कार्यक्रम के मूत्रधार हैं। गोवर्धन ठाठने में सबके हाथ लगे थे। अब श्री जयप्रकाश नारायण के शब्दों में इस नैतिक पुनरुत्थान के काम में सभी का योगदान अव्यक्त है। एक वीर जहाँ सारे देश में नैतिक ह्रास की बाल बड़े-छोटे सभी स्तरों पर बड़ी जाती है वहाँ नैतिक उत्थान की पहल बाबुजों की ओर से शुरू हुई है, यह एक अदुन्य बात है।

मूरत सिंह

मोदी जीपलेवर श्री मूरत सिंह को लेने चल पडे तो लोगों के बँहरे इस चमत्कार से हर्षित हो उठे। वे मूरत सिंह के प्रतिनिधि शल्लू राजा को निवा लाये जो मूरत बाबू देवीसिंह के भाई हैं। उन्होंने बताया कि उन्हें मुहूर्त का बडा बराल है इसलिए बन सवेरे १० बजे पूरे गंग के साथ आयेगे। श्री मूरत सिंह दूसरा १०० एकड़ खेतों कराते हैं डोजन पम्प, ट्रैक्टर, मोदी जीप, ट्रक सभी कुछ हैं। मलहारा के पात्र जैन तीर्थ मेंवा में डेड लास की लातन का मजान बनबाया है। राजाओं के यहाँ जैसा जसवा फाटक है त्रिममेंसे हाथी निदान सरता है। रहते छत्रपुर में हैं पर कर्ण-धोत्र सागर और पयोही है।

श्री मूरत सिंह एक ट्रक में आने सभी बंध के लोगोंको लेकर आ गये और श्री जयप्रकाशजी से गले मिले। जयनकाशजी कह रहे हैं, "आग ही तो इन्तबार पर।" उनका उत्तर है "नैज साव हाजिर है आग बहो तो अबही तैयार है।" इस समय की बातें रामबर्षित मानस के राम-केवट-सुबाब का स्मरण दिना रही थी। "मुनि वैन सपटे अटपटे...." श्री जयप्रकाशजी ने कहा, "आग सींग विचार करने, हमें जतरो नहीं है। आग बानीके लिए आये यह अट्टा बन्धो बाण है।" श्री मूरतसिंह ने विचार से कुछ दूर बटासकर नामक स्थान पर शिव-मन्दिर में हाथमार-समर्पण करने को कहा तो

श्री जयप्रकाश जी ने स्वीकृति दे दी और तब हो गया कि ३१ मई को जटासकर पर भगवान जाकर के चरणों में बुन्देलखण्ड को बन्दूकों समर्पित होकर इस देश के बागी अपने जीवन की राह बदलेंगे। इन्हें भी चम्बल के बागियों-जैसी ही सुविधाएँ प्रदान की जायेंगी। जब वहाँ बहू गवा नि बाघ वे सुविधाएँ देखना चाहे तो खासियर जाकर देख सकते हैं, तो मूरतसिंह ने कहा "वा देखना हम तो आप के वचन मानते है।" इतना सुनकर श्री जयप्रकाशजी का गला भर आया और उन्होंने चम्बल में कहे वाचन यहाँ भी दुहराये— "मैं अपने शत्रुओं को बानी लगा दूँगा। आप लोगों को फाँसी नहीं होंगी।" उन्होंने धीर भी कहा, "यदि पहले की तरह आप के साथ कोई वीर-राजूनी बे-दस्ताफी हुई तो छत्रपुर आकर उपवास करूँगा और भूख मर जाऊँगा पर जोसत्रो आप के साथ इनसतक के खिलाफ कुछ नहीं होगा।"

मोदी, रामसहाय और मूरत सिंह की तरह जाकरसिंह से भी वार्ता बडे ही प्रेम-पूर्ण वातावरण में हुई और विश्वास से विश्वास बढ़ने की बात दोनों ओर से हुई। जाकरसिंह को लाने के लिए संनद-बादस्थ श्री रिछागियाकेसहाय भाईश्री प्रेमनारायण गर्मा गये और हँड ही नाये।

मूरतसिंह (पूजा बन्धा) तक भी उनके प्रतिनिधि क माधम से सभावार पहुँच चुके हैं और भी छाटे-बडु शायिने तक धोत्रे-धोत्रे गांनि। मिजन के कार्यकर्ता पहुँच रहे हैं। इन तक बिना दनके खास विश्वस्त ध्यवित के कोई दूसरा सहज ही नहीं पहुँच सकता। हाल ही में ७ मई को छत्रपुर में शासन ने जो घोषे का विश्वनाद किया उसका इन लोग के मन पर अच्छा प्रभाव नहीं पडा। उनके शब्द हैं "गांनि को बाज दण्डे से करना टिक नदा है।"

यह इन धन में सर्वत्र प्रसन्नता की बात समझी जा रही है जो बार-बार दुहरायी जानी जा रहा है।

घूलिया जिले में लोकयात्रा

● लक्ष्मी सहज

गुजरात की १ महीने की यात्रा समाप्त कर पिछले २ सत्रों को हमने महाराष्ट्र के घूलिया जिले के नवापुर में प्रवेश किया। दृष्टान्ति पर्यटनमाताओं के निगारे का यह रमणीय प्रदेश, आदिवासीयो का निवास स्थान था। शत्रु-राज बल्लभ वा जगन्मन हो गया था, फिर भी बनो में, जंगलो में उसका दर्शन नहीं होता था, मानो उसने पूरी क्षमता लगाकर भी एक महामातृत्व को ही संभाला था—नये पत्तवो से, फूलो से।

गुजरात धार-नाथ बने ह्यारी थाया मुक्त होती थी। चलो तरफ की मुष्टि में अन्धेरा छाया रहता था। जंगलो में जगह-जगह थाय का प्रकाश दीखता था। समता था जैसे आदिवासियो के घर का प्रकाश ही लेकिन मुजह होते ही मेरा यह प्रेम मिट जाता था, पचोकि वहाँ पर उनके घर नहीं थे। वे क्षीय मनुष्यो के फूलो की रखवाली के लिए इसी तरह आग जलाकर सारी रात वहाँ रहते हैं। मनुष्य उनका आहार तो हे ही थाय ही वे लोग उठते से जराय भी बर्मा लेते हैं। गुजरात होते-होते मनुष्य धूलवर पुरय, शिशयो, बाल-बच्चे सिर पर छोडो रये पाणल पर चले जाते हैं। इस भोग्य में यह उनका नित्य का पार्यक्रम है।

एक दिन एक लड़की को महुजा ना पूत धूलते समय साँप ने काटा। बँतवाड़ी में मुलाकर उसे घर ही ले जाये, लेकिन दवाज के लिए नजदीक में न हो अस्पताल था, न डॉक्टर ही। बाकिर घर में ही जड़ी-बूटियो से बांध कर उस लड़की को भयवान प्ररोसे रख दिया। १२ में मुजब आ गई थी, पूत बह रहा था और लड़की रो रही थी। लेकिन माता-पिता तो मातृस पा कि

दस-बारह मील बँतवाड़ी में ले जाकर दवाज कराया उनके लिए नाममुक्ति है।

एक सभा में हमने भीतातो से पूछा— "अपने देस का नाम क्या है, जानते हो?" किसी ने कोई जबाब नहीं दिया। फिर पूछा—"महात्मा गांधी एक बड़े महान पुरुष ही गये, जानते हो?" इस बार भी मौन। बाकिर मैं पूछा—"नोट किसको दिया?" जबाब मिला "गांधी को।" शिक्षण का प्रकार नहीं, बीमारियों के लिए इलाज की व्यवस्था नहीं, छेती का नया विज्ञान नहीं, और पानी की व्यवस्था नहीं, उन्हें गले लगातेवाले, सेवा द्वारा उन्हें बचाकर के आसन पर बैठावैवाले नहीं। अभी भी मानवाकृति में अवहेलित जीवन के भोग बिता रहे हैं। सेवा-क्षेत्र और केव्य दोनों हैं लेकिन केवक नहीं। एक छोटे आदिवासी गाँव में खीस्ती लोग मिले। पता चला छुद्र अमेरिका के भाई-बहनो ने उनकी सेवा की और उन्हें बले लगाया। मुँगा हे इस देश में ३० हजार खीस्ता बस-बाकिरणी बहनें सेवा में मग्न हैं। क्या भाई-बहन धर्म, पन्थ, जाति, पध, भाषा, प्रांत इस सब सेरो से परे होकर मानव भाव की सेवा के लिए धाने नहीं था सजते? कधिबर १९वींशताय की भाषा में—"सबारा सेपे सवार नीचे, सब ह्यारोदेर अर्थात् मातो" सबसे आकिर, सबसे नीचे और बिसने सब कुछ छोया है ऐसे उपेक्षित जनो में अनेक राय को झाँकने की दृष्टा करेगे?

गुजरात आदिवासी क्षेत्रो में भी ह्यारो देर जाया चली थी। वहाँ हमने देखा, शिल्पक के द्वारा नयी चेतना आया, नव संस्कार देने का नाम एक-दो साव से नहीं चात्तिस-चवास जातो से थी जगताराम से एनादवातुनक कर रहे हैं। ब्रह्मचर्य

धन से पत्नी उन लक्ष्मी के कारण नहीं अनेक नार्यकर्ता दिखते, जो गाँव-गाँव में क्षामयथायाय चीनकर नयी पीढी को बनाने का काम कर रहे हैं, जहाँ सेवा के द्वारा उन उपेक्षित जनता को गले लगाया, वहाँ विदेशी मिशनरो जैसे धर्मो? इसलिए उस क्षेत्र में खीस्ती लोग मिले नहीं, जिन्हें अवहेलित, उपेक्षित होने के कारण धर्म छोडना पडा हो। देवाँव। नह था आदिवासी गाँव। सम्पूर्ण गाँव स्वच्छ। वही भी कचरा दीखता नहीं था। पूरा गाँव भाष के पत्तो से मजारा गया था। गाँव परीय था, लेकिन लोचद्वंद धीमाय, इसलिए आदिप्य में वही भी नयी नहीं रखी गयी थी।

आदिवासी क्षेत्र समाप्त हुआ। साय ही साय, स्वाम्त करते समय 'बानोबा तुकाराम, बानोबा-तुकाराम' का उद्घोष सुनने को मिला। गाँव के मूरय रास्ते की आग के पत्ते तथा फूलो से सजाते थे, घर-द्वार तीय-नीतकर अल्पना चित्रण कर, भारतो की याती लेकर स्वाम्त के लिए बहनें सडी रहनी थी। हमारे सजात हस्ती-कुमुज से भर जाते थे और हाय गरियल से। गाँव-गाँव के अल्पना पत्तयाई दीखता था मानो उस दिन पूरे गाँव से उत्सव हुआ हो। हजार से भी अधिक पुरय-स्त्रया समा में एकत्रित होते थे। रोज एक बार स्वागत होता था, लेकिन एक दिन तो दो बार स्वागत-पार्यक्रम चलत। सोरो की भक्ति-भावना देखकर हम दंग रह जाते थे। इतनी भक्ति, इतना प्रेम! फिर भी गरीबी क्यों? सोचने पर पता चलता है कि रोज जिससे रास्ता पडता है उनका गुण-वोध नजर आता है और दवाँवप उनसे प्रेम करता कटित ही जाता है।

गुजरात-यात्रा के बार हमने महाराष्ट्र में प्रवेश किया। समग्र प्रान्त है सुदशत, दलमुप यहाँ गरीबी छाकर देखने की जरूरत नहीं पडती। लोगो का रहन-सहन पधना-भोग्या, सामान, पर बार स्वच ही गरीबी बता देते

चार-छः नमूने बनाये गये तथा परीक्षण के बाद अल्पमूल्यम प्रेम वा पेटीपाला नमूना प्रवास एवं यज्ञस्मरण के लिए निर्धारित किया। इन चारों वा पेटी सहित अक्टूबर २६०० मिली है। अरुणा चालू करने में किसी पुत्र की जोड़ा नहीं पड़ता। इस चारों में सभी दांतचक्र एवं धारीवेवन नायलीन पदार्थ के ही समाये गये हैं।

प्रयोग—१. अनुभव प्राप्त करने की दृष्टि से प्रवाल अथवा यज्ञ-स्मरण के नमूने देना में अलग-अलग व्यक्तियों को विदे गये हैं। बालन-सम्बन्धी क्षेत्रों में अनुभव प्राप्त चिये जा रहे हैं।

२. उच्च गुणक के प्रयोग (एक्टूबर में) यह अनुभव वा रहा है कि बताई करना सरल है किन्तु कलाई के लिए अच्छी क्षमता कच्ची प्राप्त नहीं होती है।

सादी-जगत् में ही नहीं, मिल जगत् में भी उत्पादन की दृष्टि से पूर्व-प्रक्रिया के समय में बचत कर कलाई में अधिक समय देने वा आयोगन चल रहा है। पूर्व-प्रक्रिया में समय एवं श्रम बचाने का एक ही मार्ग है और वह है कलाई के गुणक में मृद्धि करना। इसके लिए मिल-जगत् में ६०० तक का गुणक कलाई में लिया जा रहा है।

अन्तर चरखे में तेज गुणक की मान्यता के बावत प्रयोग शुरू किये गये हैं। कलाई में तेज गुणक के उपयोग से यह लाभ होगा कि केवल गुणित-पट्टी से कलाई की जा सकेगी एवं उसके द्वारा पूर्व-प्रक्रिया की दृष्टि से अधिक अथवा समुह-स्वावलम्बनता आ सकेगी।

(अ) ५० गुणक चार वेलन : कलाई में उच्च गुणक लेने की दृष्टि से प्रथम रूप से एक्टूबर चरखे चार वेलन के उपयोग से ५० गुणक लिया गया। इस चरखे पर नया एक अक की गुणित पट्टी से ५० नया अक का सूत कोता जा सकता है। किन्तु यह देखा गया कि नया एक अक की गुणित पट्टी बनाने में तथा खनी पट्टी पट्टी को स्थानान्तर-

में समय व तज्ज्ञता लगती है। फिर भी इस चरखे का अनुभव किया जा रहा है।

(आ) ११३ गुणक का चरखा : पनादर तेज गुणक का लाभ लेकर अधिक मोटी गुणित पट्टी से कलाई करने की दृष्टि से एक्टूबर चरखे में चार ही वेलन के उपयोग से ११३ गुणक की व्यवस्था की गयी। अरुणा बनाने में काफी हद तक है तथा साथ ही अधिक अक नया से कम की गुणित पट्टी से कलाई करना अब आसान हुआ है। हिसार की दृष्टि से गुणित पट्टी बनाने में केवल १० मिनट का समय तुनाई बेवनी पर लगता है तथा उतने समय में तयार गुणित पट्टी से ५० मिनट तक कलाई की जा सकती है। अर्थात् अब पूर्व प्रक्रिया में केवल २० प्रतिशत समय लगता है, जब कि ८० प्रतिशत समय कलाई के लिए मिल जाता है। इस साधन के बावत पनादर उपकील से अम्प्रास एवं सञ्चोवन का काम चल रहा है।

(इ) स्लिप क्लिप चरखा—एप्रन पद्धति के लाभ को प्राप्त करने की दृष्टि से कलाई के बेवनी में स्लिप-क्लिप-पद्धति का उपयोग कर चरखे की रचना की गयी है। इन साधन में चार वेलन हैं, दो स्लिपखोल रखे गये हैं। छोटें रेशे एवं लम्बे रेशे हई की कलाई इनमें की जा सकती है। अभी चरखा प्रयोग-अवस्था में है। अलग-अलग रेशे की हई से विविध अंक का सूत काटकर अनुभव लेने का काम चल रहा है।

(ई) समय मरखा—उच्च गुणक के नारण गुणित पट्टी से कलाई सम्भव हो सही है, उच्च अनुभव भी उत्पादक आ रहा है। इस अनुभव का लाभ लेकर हई से कलाई तक की समय प्रक्रियाएँ एक ही साधन पर करने वा आयोजना किया जा रहा है। उच्च गुणक की मर्वावा ४२१ तक रखने का नमूना उप हुआ है तथा साथ-साथ ही तुनाई के दोन के पट्टे से ही सीधे कलाई कर सके, यह इस साधन का सुधा ध्येय है।

हमारे नये प्रकाशन

तरुण-विद्रोह

लेखक—प्रो० सुरेश पाठरीपाण्डे

विद्वान् लेखक ने आज की उन्नत समस्या छात्र-विद्रोह या शिक्षण में उदात्त को विश्व के सन्धर्भ में देखने का प्रयास किया है। विभिन्न देशों के मनीषियों के हवाले देकर लेखक ने माधो प्रवर्तित अहिंसक क्रान्ति के मार्ग की विवेचना व उपयोगिता बतायी है।

मूल्य रु० १.००

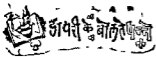
पथ-दीप

लेखक—बालकृष्ण भावे

इस पुस्तक में मानकीयों के कुछ पक्षों का संतुलन है। इन पक्षों में साधना की जिहादा रखनेवाले लोगों के लिए परमार्थ आध्यात्मिक पाठ्य है। साधना, वैराग्य, ब्रह्मचर्य, व्रत, जन्मभाव आदि पर व्यावहारिक मुताव है। पत्रों में विद्वत्ता की अपेक्षा हार्दिकता ज्यादा है।

मूल्य रु० १.५०

सर्वे सेवा संघ प्रकाशन, राजवाट, वाराणसी-१



सर्वोदय सम्मेलन

बधाई है पंजाब के मित्रों को जिन्होंने सर्वोदय सम्मेलन हुलाया और लिट्टा-पूर्वक उसका सजीवन किया। हम शारीक करने सरदार उजागर सिंह बिल्या की, जिन्होंने यह हिम्मत की। उनके हाथ लग गये डा० घीर और गोयल साहब। इस प्रकार इस विभूति की मेहनत और लगन से यह सम्मेलन हो सना। आनन्द का विषय है कि इसकी अध्यक्षता आचार्य रामभूति ने की और उद्घाटन किया सरला बहन ने।

सगर सम्मेलन में ज्यादा जान नजर आ रही थी। ऐसा लगता था कि लोगों का मन कहीं और है और चाहते यह हो कि जल्दी से खत्म हो। शायद इसी वजह से दूसरे ही दिन से ता० २० मई को अनेक भाई चले गये और प्रबन्ध समिति तक के अधिनाम सदस्य नहीं रहे। निवेदन पठा गया २१ ता० को, सम्मेलन की उपासित के समय, जिस पर न कोई चर्चा हो सकी और व मुद्दाब ही आ गये। अब आप इसे उदासीनता कहिए या मजबूरी, यह है बिनाशजनक।

मई १९५० में पंजाब में जब सर्वोदय सम्मेलन हुआ था तो बिलोबा ने उसे स्नेह-मिलन नाम दिया था। चर्चार्थों से ज्यादा बड़ी चीज है भास के प्यार का धारा, एक से दूसरे का लगाव और उसके हमदर्दी। चौधव बरख में यह धारा मजबूत होने की बजाय कमजोर पड़ता जा रहा है। नई साधियों ने हमसे कहा—“बिछो की फिरर ही नहीं है कि कोई क्या करता है, क्या नहीं करता, उसकी अड़बने क्या है और काम कैसे आगे बढ़े।” एक अनाप-बंसी हानत!

इसके अनेक कारण ही सन्ने हैं। लेकिन हमारी समझ में मुख्य है ऊपर बताओ वा (शिक के हाथ में तत्र है) नीचे जाने से (जो धेव में मुनीबल्लं सहे है) अलगाव। और जाने-अनजाने तत्र वा सम्बन्ध बढ़ रहा है वैसे से। पत्नी में तन-मुक्ति और बिजि-मुक्ति वा जो मौलिक सुव विरोधा ने मई १९५६ में दिया था, वह मानो पुराने वाग के सुपुई हो गया हो।

अभिन्नद करतो हैं हम जगनापनूजी वा, जिन्होंने यष के अध्यास १४ पर तीन साल से ज्यादा असे तक बने रहने से इन्-कार कर दिया। नहीं तो, छ-छ साल वा रिवाज-आ पड़ता जा रहा था, त्रिकका नतीजा यह है कि अन्य सस्थाओं वा सग-टनों में लोग दम-दम साल वा चगादा असे तक डटे रहते और अपने साधियों से ही विमुख हो जाते हैं। जहाँ राजनीति में हर पंचने साल जनता के सामने आना पड़ता और सही वा गलत उसके सामने सफाई देना होता है, और मुफ्तके की भीषण भाग में से इजरना होता है, वहाँ गांधी बाबा के नाम पर हम हटने का नाम ही नहीं लेते। तब फिर हमारे नाम में तेजस्विता कैसे आ सकती है?

पंजाब

आज वा पंजाब विषय जा रहा है? इनकी झाँकी हमें मिली बागमी सफर में। नकोदर से हम जालधर वा रह थे अपने मित्र रवीन्द्र सिंह बोझली, उनकी धर्म-पत्नी महेन्द्र नीर और बहुत मन्तोप के साथ। बीच में किसी स्टेज पर गाड़ी रुकी। रोपहर वा बकन था। दो हटे-नट्टे जबान उस बिन्ने में पड़े। शीट पर धुप आ जाने के कारण भाभी महेन्द्र ने हटकर सात्ती जगह (जहाँ धूप नहीं थी) ले ली। भाई रवीन्द्र की थोड़ा शिसक गये। यह देखते ही एक जवान तुल्य भद्र्या पर टूट पडा और दूसरे ने उनके सीने पर लात जमायी। भाई गोवि-न्दजी (केवल) भी घाम थे, जा स्वर्णिय

बेलपनूमी के अतिन सणो वा मागि ६ विवरण मुगा रहे थे। अचानक यह मार-पीट देखकर हय नमी दग रह गये। उनको सपजाने की नोसिख की तो दोनो जवानों का पाग और भी चढ़ गया।

बोफ। देता कि दोनो पीये हुए थे, छोटा, जितने लात मारी उसकी अंखें तो बहुत ही चढी हुई थी।.. कुछ असे बाद उन दो में से जो बडा था उनने भद्र्या रवीन्द्र से माफी मांगी और मिलते करते सवा। फिर, मेरी तरफ धूमकर कहा—“जबसे मैं देता ही होगा है, इसका इलाज आर बताइये।” मैंने कहा—“इसी कारण से नो सर्वोदय सम्मेलन हमने यहाँ किया। नये की दवा करनी होगी और विवास के बीच होग वा सम्मानकर रखना होगा।”

गोविन्दजी से उभने कहा, ‘वापसे भो हव भाकी चाहते हैं। आपकी क्या खातिर करे?’

“आपको अपना हीग दुखत रखना चाहिए, जैसा इन्होंने बताया”—गोविन्द-जी बोने।

“नही, नही। जालधर स्टेजान आ रहा है, अरर कुछ चाय-पानी कर लीजिए।”

“चाय तो हम पीते नहीं, आप हमें कभूतसर की गाडी में सवाग करा दें, इतग काफी है।”

जालधर स्टेजान उतरकर गोविन्द-जी उसके माय कपनोवाड़ी पकड़ने चले गये, हय रवीन्द्र परिवार के साथ उनके घर की तरफ बढ़े।

आदमी और कुत्ता

अपने देग की गरीबो बिबो से छिनी नहीं है। और गरीबो की जो दुईका है वह भी सभो जावते हैं। उरफा रोना यह नहीं है कि उसकी हासन मुधाती नहीं जाती, बरिफ यह है कि उसे “आदमी” नहीं समझा जाता। उसे अनीरो से विभावत यह नहीं है कि जोन विभावत वा शोषन बिभावत है, (जवा नम दिगाते) बरिफ यह है कि ०

जायबर तह को उगारा चाहते और महार देते हैं।

इसकी निवारणकारी सरकारी संस्थाएँ भी हैं। दिल्ली का उपद्रवग्रस्त अल्पजल मगदू है। उसका बहा जाता है कि यरवीनी की छानी की बाँध के लिए एखरे फ्लोटो की कमी है। जेबिन वहाँ पर रविवार २८ मई १९७२ को एक कुत्ते की सेना के लिए सारे माध्यम प्रयुक्त कर दिये गये। पता चला कि वह कुत्ता स्वास्थ्यमंत्रालय के किसी उच्च अधिकार का पाला हुआ था। बलिहारी है उस अस्पताल की जहाँ अधिकारियों के कुत्ते के लिए गुबार्डन है लेकिन जाम आधमी के लिए नहीं। क्या यही समाजवाद है? नमूना राजधानी पंज कर रही है ?

राजा राममोहन राय

हाल ही में मारे देश में मुस्लिम देश-भारत और राष्ट्र-निन्दा राजा राम मोहन राय को दूसरी जन्म-जाताधी मनायी गयी। २०० साल पहले, २२ मई १७७२ को उनका जन्म हुआ था। उनका देहान्त १८३३ में दमलेपुत्र में हुआ था। गुदरेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शब्दों में "बहु देश के महान पण-प्रदत्तक हैं जिन्होंने हमारी प्रगति के रास्ते में हर कदम पर अनेकाली बड़ी-बड़ी बाधाओं को दूर किया और मानव सभ्यता के चिर-स्थायी सहयोग के आधुनिक युग के लिए हमको प्रारम्भिक दीक्षा दी।"

यह जायकर कहा जायचर्च और हर्ष होता है कि राजा राममोहन राय ने उस जमाने में दो सवालों को और-और से उठाया था—बेहिन्दु मजदूरों का और नमक का। उन्होंने कहा था 'जमींदारी ही या रैयतदारी, दोनों पद्धतियों में सरकार और जमींदार या भूमिदान की तो मोन है, लेकिन भूमिहीन मजदूर की हालत बद सेबदतर होजी या रही है।' उन्होंने कहा कि इसमें सुधार होना चाहिए और उस दृष्टि के दो मुद्दाय रखें।

कलकत्ता की मंत्रिमंडल के अधिकार

मही मिलने चाहिए।

(२) रामस्व अधिकारियों के विनायक कोई सिंहासन हो वा न्याय अदालतों द्वारा उनकी मुक्ति जाँच करानी चाहिए।

अपनी दुष्प्रवृत्त ने उनकी बात नहीं मानी और हमारे देहायो ना शोषण दिन-दूनी रात चौगुनी गति से चला। क्या स्वराज्य की सरकारों भी उही निजाने में पड़ी रहेंगी या उसके ब हूर नालहर राजाराममोहनरायके दूरदर्शी सुझावों को जमल में तले की क्षिप्त करेगी!

इसी प्रकार नमक पर सरकारी ढीके के राजा राममोहन राय सख खिलाफ थे। १८२१ में उन्होंने अपने एक वक्ताव्य में दुःखपूर्वक कहा, "नमक जैसी आम जरूरत का चीज कलकत्ते में मँडो है, मिट्टी मिला नमक मिलता है रुपये का मात्र से बाठ सेर और छात्रिय नमक चार से पाँच सेर।" राजा ने कहा कि नमक की मिश्रण्ट खत्म होनी चाहिए और उसके दान बग होना चाहिए ताकि

हर आदमी उसे खरोर सके। उन्होंने सरकार से कहा कि उसपर से अपना एकधिकार हटा देना चाहिए। यही चीज अपने बलकर इस भाग में बदल गयी कि नमक पर वे टैड (कर) खत्म कर दिया जाय जिसे वेडर महात्मा गांधी न स्वराज्य के लिए सत्याग्रह का जवरदस्त और मानवाट आन्दोलन चलाया। राजा-तम मोहन राय की दूरदृष्टिता और दृष्टि नारायण के हितों की चिन्ता पर उनका कोटिख अभिमान-न्दन।

— दलू

शोक-समाचार

श्री प्रद्युम्न मिश्र (गुधरी) गाहा-बाद जिले के पुत्रने सर्वोच्च सेवक का ५ जून '७२ को दिल्ली-आन-सीन के अस्पताल में स्वर्गवास हो गया। उनकी उम्र ९५ वर्ष की। बाबा ने साहाय्य की याचा के समय उनकी सर्वोच्च आधम जम्हूर में ही रहने की बड़ा था। पण-योग उनकी आत्मा की शक्ति थे।

—रामेश्वर राय

चम्बल घाटी के नागरिकों से श्री जयप्रकाश नारायण की अपील

चम्बल घाटी शान्ति मिशन के अध्यक्ष एवं सर्वोच्च नेता श्री जयप्रकाश नारायण ने चम्बल घाटी के सरनधारी नागरिकों से निम्नलिखित अपील की है :

"आज जब चम्बल घाटी में दायियों ने अल्प-समर्पण कर दिया है और एक नया युग शान्ति और समृद्धि का प्रारम्भ होने आ रहा है, आम नागरिक जो बाधी गुस्ता के लिए हथियार रखते थे उनकी भी अपने हथियार अपने पास न रखकर पुलिस वालों की सौंप देने चाहिए। इस क्षण में छोटी बायो पर भी बड़े सण्डे हो जाते हैं जो बाद में हत्या और फाटार होने के साथ शान्ति-समत्ता तक पहुँच जाते हैं। अगर राते क्षण में बन्दूकों समाप्त करने का कार्य सब मिलकर करें तो बाएसी सण्डे भी बड़ नहीं पावेंगे और शान्ति वा वातावरण बनावे रखने में सहायता मिलेगी। बन्दूक से समाज कभी भयमुक्त नहीं हो पाया है और न उसके साथ से शान्ति वा सुरता ही मिल पायी है। अब बन्दूक पर बरोला रखने के बजाय हर छोटी-बड़ी बस्ती में शान्ति-धर्मिय बने जो बाएसी सण्डे और मनमुटाव मुनसाने के रास्ते निनाके। हमारी श्रेणी है कि आजादी की पन्चीसवी वर्षगांठ को यह दशास बन्दूक-स्वाम-सवारोह के रूप में मनाने और जो एक ढड वास लाइसेंस की बन्दूकों शान्तिवर सम्भाव में हूँ वे बानी न जवा करतार शान्ति और आतमों भाईदारी वा पत्रं मनास्य बाने। हमें पूरी आत्मा है कि जिस भूमिका से बानी भाइयो ने नाथो के चरणों में अपनी बन्दूकें रख दी हैं उहीरी जनता भी जलो उड़ावेगी। इसके लिए १५ अप्रैल, १९७२ तक सभी की वाकत सगे तो अवसर यह काय पूरा होना और सबकी नवी जिन्दगी वा आसरा और उजवाह प्राप्त होना।"

तमिलनाडु में सर्वोदय कार्य

अक्टूबर ७१ से मार्च ७२ तक का कार्य-विवरण

श्री एस० आर० मुद्दल्लुगम् तमिलनाडु सर्वोदय आन्दोलन के एक मुख्य कार्यकर्ता नन्दावनदी कार्यसमिति के मंत्री हैं। उन्होंने मद्रास से कन्याशुमारो तक १०० दिनों की पदयात्रा की। उन्होंने अपनी पदयात्रा २ अक्टूबर को शुरू की और १ जनवरी ७२ को वह कन्याशुमारो पहुँचे। मद्रास शहर को सर्वोदय पाथ की १० महिला कार्यकर्ता पूरी यात्रा में साथ रखी। उनकी विरक्त से महिलाओं से रास्ते में सम्पर्क स्थापित करने में बड़ी सहायता मिली। रास्ते में और सभी गाँवों में इस उद्देश्य के लिए सहानुभूति प्राप्त हुई।

कन्याशुमारो में तमिलनाडु रचनात्मक कार्यकर्ताओं का सम्मेलन हुआ और यह निश्चय किया गया कि हर जिले में पदयात्रा की जाए, ताकि जनता में नन्दावनदी के समर्थन में वातावरण पैदा हो और प्रत्यक्ष कार्यवाही के कार्यक्रम के लिए स्वयंसेवक भी सक्रिय।

एक दूसरे नेता आर० टी० पी० मुद्दल्लुगम् ने मुख्यमंत्री को लिखा कि सभी शराब को दूकानें बन्द की जाएँ या कम-से-कम राज्य भर में छह पर नोकरत प्राप्त किया जाए ताकि जनमत मान्य हो। ऐसा न होने पर वह धनवान करके मर जायेंगे। पूर्वाक उन्हे १४ अर्थम तक मुख्यमंत्री से कोई सुधना नहीं मिली, उन्होंने विधुत्तयार में अनशन आरम्भ कर दिया। खेलम के भी मंत्री अम्बर ने भी खेलम में त्रिवाचीय के कार्यालय के सामने अनशन किया।

राज्याजी ने अपना एक बसठम जारो किया जिसमें उन्होंने ऐसे अनशनो के बारे में अपना विचार प्रकट किया। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि वे लोग अनशन फोरस छोड़ दें और आत्मसमर्पण हो तो किसी मरार को दूरन पर परीकटिय करे और

जेल जाने के लिए तैयार रहे। पपेटन मन्त्री श्री रात्राराम ने श्री आर० टी० पी० एस० से भेंट की और उनसे बातें की जो राज्याजी के तार को प्रकृष्टम में हुई। इसका अंगनन करनेवाले आर० टी० पी० एस० पर अच्छा प्रभाव पड़ा। उन्होंने २४ अर्थम ७२ को ८ वें दिन अनशन बन्द कर दिया।

सर्वोदय कार्यकर्ताओं द्वारा खेलम, वनौर, तिरुची, तिरुनेलवेली जिलों में पदयात्रा चलानी गयी।

तञ्जीर का काम

पूर्वो तञ्जीर में वनोवलम गाँव के लोग अपने कठिन परिश्रम के द्वारा पैदा की हुई फसल काटने के लिए इलाजार कर रहे थे।

जब कि मन्दिर की भूमि के रयैनी ने फसल काटना शुरू किया तो नगनाटीनम के न्यायाधीश का भारेश जाया कि वे फसल को न काटें। फसल कटवाने के लिए एक कमिश्नर नियुक्त हुआ और निश्चय हुआ कि वह फसल काटे और न्यायालय में धान जमा करे जब तक कि जांच होकर कोई फंसलाना न हो जाय।

न्यायालय ने जो फैसला दिया उससे शरीब किसानों को बड़ा सदया पहुँचा। वे फसल काटने का बहुत परेशानी से इत्तजार कर रहे थे। मन्दिर के व्यवस्थापकों ने अपना मुकदमा पैब करने के लिए वकील रखा। परन्तु यह बेकार रहा। वलिवलम मन्दिर के वकील को ४ फरवरी को शाम में यह सूचना मिली कि न्यायाधीश ने एक कमिश्नर नियुक्त कर दिया है जो फसल कटना लेगा। वलिवलम गाँव की धामसभा तुरन्त मिली और उसने फैसला किया कि पिकेटिय करके न्यायालय के आरेश का उल्लंघन किया जाये और बाहर के मजदूरों को फसल न काटने दिया जाय। धाम सलिवेला सक्रिय हो गयी। दिन-रात

धान के खेतों को निगरानी करने के लिए घुप बनाये गये। शरीब लोग बिनके पास शरीर बाँकने की कपड़े नहीं थे रात को ठण्डक में लिजुदते रहे और अपने अधिकारों की रक्षा में सज्जन रहे।

५ फरवरी को सबेरे धामसभा के सचिव ने यह सूचना दी कि बाहर के मजदूर नीवीलाकू खेत में फसल काटने आ रहे हैं। गाँव में यह खबर जान की तरह फैल गयी। इसली के पंढके की चे पुण्य और स्त्री एवात्रत हुए, उन्हे यह निर्देश दिया गया कि वे 'पीसेटिंग' करें और बाहर के मजदूरों को बिना शारीरिक दबाव के फसल काटने से रोकें। कुछ मिनटों के अन्दर ही महिलाओं का एक जत्था भजन गाता और नारे लगाता हुआ नीवीलाकू धंघ को और रवाना हुआ।

इस बीच नीवीलाकू गाँव के लोग फसल के स्थान पर तेजी से दीधे और बाहर के मजदूरों से यह अनुरोध किया कि वे फसल के खंड में प्रवेश न करें। परन्तु यह अनुरोध बारबार साबित नहीं हुआ, तो नीवीलाकू और निरुणुगु की महिलाओं नीचे के खेतों में उतर गयी ताकि बाहर के मजदूरों को फसल काटने से रोक सकें। उन्होंने केवल अपनी बाहें फैला दी और आत्मन्यायकारियों से कहा कि वे उनके तिरों को काटने के बार ही फसल काट सकते हैं। बीने-नी उन्हे फसल न काटने देंगी। नीवीलाकू को निरक्षर हरिजन महिलाओं का यह ब्रह्मिनरु नार्थ एक गलितशाली कार्यवाही सिद्ध हुआ। वलिवलम, देवीधार के एनेन्द और बाहर के मजदूर न समझ सके कि आये क्या करें और पुन छटे घंटे तकते रहे। अगर उनका हितक प्रतिकार किया जाता तो वे दूसरी कार्यवाही कर सकते पर महिला की रन-नीति ने उन्हे जीत लिया।

फिर कुछ देर बाद जयोदर के लोगों ने दन मजदूरों को फसल काटने के लिए आये बंगना चाहा, परन्तु यह सब व्यर्थ रहा। मजदूरों ने जयोदर के एनेन्दों के चिन्ताते पर भी ध्यान नहीं

वागियों के आत्म-समर्पण से विनोबा प्रसन्न

दिया। वे पुनः प्राप्त होते हैं चले गये, ताकि पर जाने के लिए गहनी बस पकड़ सकें। सेत पूरे तौर से लोगों के वस्त्रोत्त में था। जमींदार के हारे हुए 'अनरस' किए धुनाये जमींदार के गतिहास की ओर चले गये।

१८ अर्बों को निरुत्तर में सभी दलों की एक सभा हुई और उसमें यह फैसला हुआ कि जमींदार के पास जाया जाये और यह कहा जाये कि वह सौमित्र से ऊपर की वधि हुई सभी जमीन और मन्दिर की वह जमीन जो उनके कम्प्लेक्स में है उन्हें जलता को समर्पण कर दें। लोग जमींदारों और सम्बन्धित पदाधिकारियों से मिलेंगे, अगर जरूरत हो तो वे प्रत्यक्ष कार्रवाई भी करेंगे। यह निश्चय एक सभा में किया गया। सभा के बाद एक नाटक खेला गया जिसमें धनी जमींदारों द्वारा किसानों का शोषण दिखाया गया। क्षेत्र के महत्वपूर्ण केन्द्रों में यह नाटक दिखाया जाना है।

सर्वे-कार्य

उस क्षेत्र में बड़े पैमाने पर सर्वे किया गया। यह सर्वे दिसम्बर, '७१ में हुआ इसमें गांधी निवेदन कम्प्यूटिटी आर्गनाइजर सेक्टर के ३३ प्रतिधार्मि, १४ पुराने प्रतिधार्मि और ४-४ स्थानीय लोगों ने भाग लिया। सर्वे टीम ने यह पाया कि ३३०१ एकड़ मन्दिर और मठ की जमीन, बड़े जमींदारों के नावायज कब्जे में है। गांधी शान्ति केन्द्र के कार्यकर्ता इस कार्य को अपने हाथ में लेंगे।

दक्षिणी क्षेत्रों में पुष्टि कार्य

यह निश्चय किया गया था कि १८ मार्च से १८ अर्बों तक वजौर, तिखी, मडुराई, रामनाथ और तिरनेलवेली जिलों में बड़े पैमाने पर पुष्टि-कार्य किया जाये। कम्प्यूटिटी आर्गनाइजर के प्रतिधार्मि, महत्वपूर्ण कार्यकर्ता और स्थानीय लोग इस कार्य में लगे हुए थे।

तिरनेलवेली जिले के नामदुरैरी ब्लॉक में ५० गांव तैयार किये गये हैं, जो ग्राम-दान की परिभाषा पर पूरे उतरते हैं।

नयी दिल्ली, १७ जून। चम्पल घाटी और वृन्देसखण्ड के चौदह नार तो बाहुजों के आत्म समर्पण की अभूतपूर्व घटना से सन्त विनोबा बहुत लुग हैं।

सत्रेस ट्रायल ली गयी एक भेंट में उन्होंने कहा है कि यह एक बहुत बड़ी घटना हुई है। ऐसी घटनाएँ जब-जब होती हैं तब-अहिंसा की पवित्र को जब मिलता है और अहिंसा के कार्य में लगे कार्यकर्ताओं की शक्ति बढ़ती है। उन्होंने आगे कहा कि इन घटना से देश में जो ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य आन्दोलन चल रहा है, उसे भी बल मिलेगा।

सन् १९६० और '७२ में हुए बागी आत्म-समर्पण के अन्तर को स्पष्ट करते हुए विनोबा ने कहा कि, उस तार सरकार और पुलिस का फल अनुकूल नहीं था, इसलिए उस समय नाम नहीं हो पाया। अगर सरकार और पुलिस का हथ-बन्द होता तो उसी समय यह बागी-समस्या बहुत कुछ हल हो जाती और फिर उस समय में तर्क हतो कार्य

के लिए आकृष्टल क्षेत्रों में गया नहीं था। मैं तो अपनी ग्रामदान-यात्रा के दौरान उस क्षेत्र में गया था और इस समस्या को सहज ही उठा लिया था। इन समय स्थिति विपरीत है, जब सरकारों को छोटी राज्ज सरकारों और केन्द्र सरकार का भी सहयोग प्राप्त है। इसलिए इस तार काम अच्छा हुआ।

क्षेत्र सन्वासे छोड़कर बागियों से मिलने स्थायित्व जाने की सम्भावना से डकार करते हुए उन्होंने हँसते हुए उत्तर दिया, "बागियों और हमारे बीच टैलीपंजी का धोधा सम्बन्ध है, इसलिए वहाँ जाने की जरूरत ही नहीं है। हम उनसे यहाँ बैठे हुए जो जुड़ें हैं।"

विनोबाजी ने प्रवचन व्यक्त की है कि जेल में बागी 'गोता-प्रवचन' का अध्ययन कर रहे हैं। यह विनोबा का ही सुझाव था कि समर्पणकारी बागियों की 'गोता प्रवचन' व 'रामायण' की एक-एक प्रतिवर्षी दी जानी चाहिए।

भूमिहीनो में बांटने के लिए ७५ एकड़ जमीन प्राप्त की गयी है। इसमें से २५ एकड़ १५ भूमिहीन परिवारों में बांट दी गयी। ५ गांवों में ग्रामकोष द्राष्टज किया गया है जो १० रुपये से लेकर ५०० रुपये तक है और पीस्ट-आफिजन के सेविंग बैंक में जमा किया गया है। रामनाथजिले के मुद्रापुरापुर जिले में पुष्टि के कार्य में १७ कार्यकर्ता लगे हुए हैं। वे १४४ गांवों में गये और १० गांवों में ग्रामदान के विरुद्ध हस्ताक्षर दृष्टज किये ताकि धर्मो पुरो हो सकें। १३ ग्रामधार्मि बनायी गयी। १३ गांव ग्रामदान के 'वन्दारमेज' के लिए चुन लिये गये हैं मुद्रे जिले के मगारपरती ब्लॉक के ४० गांव के कम्प्लेक्स के लिए तैयार हैं। ५४ ग्रामधार्मि बना दी गयी हैं। भूमि के ११२० वं भाग के

तौर पर १० से ५२ एकड़ भूमि प्राप्त की गयी है।

तिखी जिले के मनीकन्दम ब्लॉक में १० ग्रामधार्मि बनाये। भूमि का ११२० वं भाग के तौर पर १९ एकड़ जमीन प्राप्त की गयी है।

कृषि की राष्ट्रीय कमीशन का निरीक्षण

कृषि की राष्ट्रीय कमीशन का अध्ययन ग्रुप २८, २९, ३० मार्च को उदरन नोन और नामदुरैरी ब्लॉक के क्षेत्र में गया, और तमिलनाडु के मुद्रा कार्यकर्ताओं और तिलापदाधिकारियों से बात-चीत की। यह सम्भाषना है कि इस पूरे क्षेत्र को ग्राम-विकास कार्य के लिए चुना जाये।

—के० एम० नटराज्ज्

अन्तर्राज्यीय छात्र-शिविर शुरू

दुन्दौर, १२ जून। प्रायतः ज्ञानवापी के अनुसार महात्मा गांधी मेवा जाग्रम, जोरा (मुरना) में सत ७ जून से मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और दिल्ली के महाविद्यालयों के १० छात्र-छात्राओं का एक शिविर शुरू हुआ है, जो आगामी २२ जून तक चलेगा। चम्बल घाटी में केंद्रीय शिक्षा मन्त्रालय के सुवर्ण-कार्यक्रम विभाग तथा गांधी शान्ति प्रतिष्ठान के सहयोग से आयोजित शिविरों की श्रृंखला में यह एक महत्वपूर्ण शिविर है, जो हाल ही में चम्बल घाटी में ४० से अधिक गांधियों के आत्म-समर्पण के परिप्रेक्ष्य में उनके परिवारों तथा उनके द्वारा पीड़ित परिवारों के पुनर्वास-कार्यक्रम में छात्रों के योगदान की दृष्टि से आयोजित है। ये छात्रमण जोरा के निकटवर्ती २० गांवों में ४ दिन के लिए जायेंगे और वापसी तथा वाणी-पीड़ित परिवारों से सम्पर्क करेंगे और शिविर से जाने के बाद भी उन परिवारों के प्रति उनका भाईचारा वायम रहेगा। शिविर का संचालन भी एस० एन० मुन्बाराव कर रहे हैं।

महदूप नगर में अभियान

आन्ध्र प्रदेश के महदूप नगर जिले में शासन नगर प्रखण्ड में सत ४ जून से

(पृष्ठ २२१ का योग)

राजस्थान के मामले में अब प्रधान मंत्री से बाधित चल रही है। आया है, एक बार राजस्थान का विलोप मसला हल हो जाने पर सविधान द्वारा दण्ड की जनता को दिये गये पूर्ण तथा-बन्दी के वचन को पूरा करने के मामले में भी व्यावहारिक बदल टटायें जायेंगे। देश में जो परिस्थिति बन गयी है तथा बनती जा रही है उन्हे यह न्याय रहते हुए शासकबन्दी के लिए यह बाधकारी भौता है ऐसा मान्य होता है।

१३ जून तक पदवाजाएँ बायोजित की गयी, जिसमें १७ टोलियों में ५० कार्य-वर्ताओं ने भाग लिया। लोकप्रदाया इस कार्यक्रम की एक विशेष बात थी, यानी अपने गाँव के ग्रामदान-पत्र पर हस्ताक्षर करने, ग्रामसभा का गठन करने और अपने गाँव में भूमि वितरण करने के बाद उस गाँव के लोग दूसरे गाँव में पदवाजा करते हुए ग्रामदान कार्यक्रम का प्रचार करने के लिए जाते थे। ४६ गाँवों में इस तरह की पदवाजाएँ बायोजित की गयी और उनमें ४३२५ लोगों ने हिस्सा लिया। फलस्वरूप पदवाजा के १५ गाँवों में से ६१ गाँवों का ग्रामदान घोषित हुआ और उनमें से ५९ गाँवों में ग्रामसभाएँ गठित की गयीं। १७३ दाताओं से १२०० एकड़ भूमि प्राप्त हुई, इसमें से करीब आधी जमीन मालिकों की थी हुई रहित देनपट्ट की थी। इसमें से ८३२ एकड़ जमीन इन गाँवों के २१६ आदातलों को दी गयी। पुरानो भूदान की २८० एकड़ जमीन का भी वितरण हुआ। ७१ गाँवों में ग्रामशान्ति-सेनाएँ गठित की गयीं। शासन नगर के अभियान में आन्ध्र प्रदेश के बाहर से भी टाकुटरदास बग, भीमती सुभन बग, सर्वधो यशपाल मिलन, सेठुपीकर, अच्युतभाई, तन्वलात वाकर, तथा श्रीआचार्य ने भाग लिया। आठवें दिन आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री की उपस्थिति में समारोह सम्पन्न हुआ, जिसमें उन्होंने अभियान को आगे बढ़ाने के लिए कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित किया और उपस्थित जनता को सम्बोधित कर कहा कि मैं भी अपने को एक भूदान कार्यकर्ता मानता हूँ।

इलाहाबाद नगर में सर्वोदय कार्य

विज्जे कुछ महीनों से इलाहाबाद के सर्वोदय प्रेमी मित्रों ने सर्वोदय विचार-प्रचार समिति कायम की है। इस समिति के माध्यम नगर में सर्वोदय विचार के प्रचार का कार्य हो रहा है। इस समय समिति के द्वारा नीचे लिखे काम चल रहे हैं—

१—इलाहाबाद रेलवे स्टेशन पर सर्वोदय माहिर्य का स्टाल भी चन्द्र-प्रकाशजी की देख-रेख में चल रहा है। श्री चन्द्रप्रकाशजी के अलावा और दो पुरा समय देनेवाले छात्री स्टाल पर काम कर रहे हैं। विभिन्न विद्यालयों और मसवाओं में भी माहिर्य पहुँचाने का प्रयत्न चलता रहना है।

२—भूदान-मज, मैत्री, पीपुल्स एजान, सर्वोदय, तथ्यमन आदि पत्रिकाएँ लगभग २०० की संख्या में नियमित रूप से बाहरी के पास पहुँचायी जाती हैं।

३—मार्च १९७२ से एक चत पुस्तकालय प्रारम्भ हुआ है, पुस्तकालय में करीब ५०० पुस्तकें हैं। पुस्तकालय के टम समय १०० सदस्य हैं जिनको हर हफ्ते पुस्तकें घर पर पहुँचायी जाती हैं। चल पुस्तकालय भी पुस्तकों की सूची भी प्रकाशित की गयी है।

४—हर शनिवार को साप्ताहिक सर्वोदय गोष्ठी होती है जिसमें विभिन्न विषयों पर चर्चा होती है।

५—इलाहाबाद नगर के ४ मूहल्लों में सर्वोदय नेत्र शुरु किये गये हैं जिनके माध्यम से पुस्तकालय, पाचनालय, सफाई, खेलकूद, नारी-मण्डल, मोहल्ले का सर्वे, पानी-शिवली आदि की अनु-विधाओं के सम्बन्ध में कार्यवाही, स्कूल के जरिये छात्रों से सम्पर्क-इत्यादि काम हुए में लिये गये हैं। इन नेत्रों की साप्ताहिक अथवा पाक्षिक गोष्ठीएँ होती रहती हैं। मूहल्ला सभाएँ बनाने का प्रयत्न चल रहा है।

नाम करने की इच्छा रखनेवाले घोड़े-से लोग भी मिनकर नशा कर सकते हैं उसका अन्धा उदाहरण इलाहा-बाद के मित्रों ने पंग किया है। बाहरी में रहनेवाले भाई-बहन अन्नर पूजा करते हैं कि हम नशा नाम हाय में ले सकते हैं? क्या जन्म अनेक हो सकते हैं, उनको नहीं नहीं है। कमी सिर्फ मूह-बल, लयन और काम करने की है।

—सि० रा०

मुसहरी प्रखण्ड स्वराज्य सभा की बैठक

दिनांक ९ जून, '७२ को मुसहरी प्रखण्ड में स्वराज्य सभा की बैठक ३ घण्टे लिए में सम्मोचन आयन स्मारक भवन, सर्वोदयग्राम में हुई।

भीषण गर्मी का मौसम होने के बावजूद शान्तस्वराज्य सभाओं के प्रति-निधियों एवं सर्वोदय कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त श्री गीताप्रसाद सिंह, परि-जोत्रवा पदाधिकाारी, ग्रामीण उद्योग, नवगाम (गण) ग्राम स्वामीय उद्योग निदेशक के अतिरिक्त विभिन्न जतिधियों के रूप में आज की बैठक में उपस्थित थे। इन अतिथियों ने, जो ग्रामीण औद्योगिक योजनाओं में सहरी विस्तारशील रहते हैं; विगत ३ जून से ही प्रखण्ड के विभिन्न परिक्षेत्रों में घूम-घूमकर ग्राम-स्वराज्य सभाओं के पदाधिकारियों से सघन सम्पर्क किया और स्थानीय परि-स्थितियों का अध्ययन करते हुए ग्रामीण उद्योगों की सम्भावनाओं का अवलोकन किया। क्षेत्र-परिभ्रमण के प्रथम में आये अनुभवों से मुसहरी के विभाग के लिए आने के कार्यक्रमों को दृष्ट करके के कार्यक्रमों को ध्यान में रखते हुए तालमेलपूर्ण विचारों के आदान-प्रदान हेतु स्थानीय वर्षों के रूप में आज की बैठक का विशेष महत्व था। आज की बैठक की अध्यक्षता श्री ब्रह्मनारायण सिंह, सम्मोचन-सदस्य भूदान सभा समेटी कर रहे थे। बैठक के कार्यक्रम का प्रारम्भ सर्वोदय ग्राम में उमावतल टाकुर के आगमन मात्र से हुआ। फिर गत बैठक की कार्यवाही पढ़ी गयी और सम्पुष्ट की गयी। कार्य-श्रुति का विवरण सप्ताहिक महोदय ने प्रस्तुत किया। वर्षान्त गत बैठक में लिये गये निर्णयों के अनुशासित स्थिति नगरी ने आचारण एवं सम्मोचन विस्तार की अवधि के लिए

अधिकाय विद्यालय उपभोक्ताओं के अद्यतन हिसाब की शीघ्रता में उन्हें सुधेया करने में तत्परता रखी है फिर भी कुछ वर्षों का हिसाब अत्यन्त (अद्यतन होकर) विभागों के पास नहीं पहुँच सका, जिससे सम्बद्ध लोगों में काफी चिन्ता दीक्ष पड़ी। अण की व्यापकी विधायित समय पर न किये जाने से सम्बद्ध बैंक बाधे लेन-देन करने में काफी उल्लाह गयी रहिस रहा है। कई सदस्यों ने महभूत किया कि इससे प्रखण्ड स्वराज्य सभा की शास में गिरावट का खतरा है। अतः प्रखण्ड सभा ने इस पर ढेर तक चर्चा की और विवक्षित अण-समुची और अदायगी में काफी सुधेयी बढाने का निश्चय किया ताकि आगे बैंक से लेन-देन में कोई काम रके नहीं। श्री गीताप्रसाद सिंह ने, जो आज की बैठक के मुख्य अतिथि भी थे, विस्तार से औद्योगिक योजनाओं एवं सम्भावनाओं के बारे में प्रवचन किया।

मुसहरी के कार्यकर्ताओं की बैठक

४ जून को नगरपाल ४ घण्टे मुसहरी अधिमान में लने कार्यकर्ताओं की एक बैठक सम्मोचनारायण स्मारक भवन में हुई। बैठक में श्री गीता प्रसाद सिंह विशेष रूप से उपस्थित थे। मुसहरी प्रखण्ड के आगे के कार्यक्रम पर चर्चा हुई। निम्नरूप किया गया कि निम्न वर्षों में ग्रामस्वराज्य सभा का गठन तही हुआ है, वही पर गठन करना जाय, परन्तु गति ग्रामस्वराज्य सभाओं की बैठकों नियमित हो, उनका अधिक-से-अधिक बोधा-भद्रता बँट जाय और ग्रामरोप सहज हो, इस दिशा में ग्राम-स्वराज्य सभाओं को तबिय करने का प्रयत्न ज्यादा महत्वपूर्ण है। इस दृष्टि से अधिमान में सर्वे कार्यकर्ताओं को अत्यन्त-अवगत पचायती की कामकाजों से सतत सम्पर्क रखने की सिन्धेयगी लीयी गयी।

पत्र-व्यवहार का पता :
सर्वे सेवा संघ; पत्रिका-विभाग
राजधानी, वाराणसी-१
गद, सर्वसेवा कौन : ६४३९१
सम्पादक

रामभूति

इस अंक में

बर्षकी शरार,
परिभाषा की भाषा
—सम्पादक १७९

शरारबन्दी के लिए प्राप्ति की
मोहर —श्री सिद्धराजबद्रुदा १८०

सुदैनसख के दरपुनों का भी
आत्मध्वनिग
—श्री० गुरुवरण १८२

पूर्विया जिले में लोकवादी
—गुप्ती लरनी बहन १८४

सारी शान्तिप्रयोग प्रयोग
कर्मिणि १८५

विपिनानु में सर्वोदय कार्य
की के० एम० नटराज १८९

अन्वय सम्म

आपके पत्र, डाकरी के पते, आदी-लन के संभावना

सर्वसेवा



सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

भारतीय मूलक समाजवादी प्रधान अहिंसक क्रांति का नन्दरवाहक साप्ताहिक

लोकतंत्र कैसे वचे ?

में बहुत तीव्रता से अपने अन्दर में यह महसूस कर रहा है, कि अपनी देश की राजनीति में बहुत बड़ा परिवर्तन आ रहा है। और, ऐसी सम्भावना हमें दिख पड़ती है कि लोकतंत्र का बीजा बोधमान रहे और फिर भी उस बीजे के अन्दर लोकतंत्र खत्म हो जाय। ऐसा लगना है कि अगर हम लोगों ने इस पर ध्यान नहीं दिया और कोई उपाय नहीं सोचा तो आपस में बातें कहा बीजा रहेगा, मगर भीतर मुदा नहीं रहेगा, 'हम्सटर्स' मही रहेगा। आप से लें चुनाव की, हमो की प्रथा भी। दलों के अन्दर यह लोकतंत्र चल नहीं सकता—शासन करनेवाला इस और विरोधी इस। इस पद्धति का आधार जनता का मतदान है। अब आप देखिए कि किस प्रकार से चुनाव में खर्च बढ़ते जाते हैं। किस प्रकार से हिंसा बढ़ती जाती है। किस प्रकार से झूठ बढ़ता जाता है। जिन लोगों के हाथों में सत्ता है, शासक दलियों की सत्ता, उनके लिए आसान है रथ्या इच्छा करना। जो लोग टैक्स की बोरी करते हैं, जो बाता बाजार करते हैं, जो ब्लैक मनी है, वे तो मुक्त हस्त वे सकते हैं, जिनके हाथों में सत्ता है उनको, अपने बचाव के लिए। इस प्रकार से करोड़ों रथ्या इच्छा होता है। दूसरी पार्टियाँ भी करती हैं, लेकिन उनके हाथों में सत्ता नहीं है इसलिए वे अधिक नहीं कर पाती हैं। सिद्धान्त में कोई भी मतभेद नहीं है। जब समाजवाद किस प्रकार से बन सकेगा यह बात से चुनाव कराने और करने से यह बेरी धनक्ष में नहीं आता है, क्योंकि यह सारा रथयो या खिल हो जाता है। हिंसा की बात भीजिए। जिनके हाथ में ताकत है वे पूरे 'बुध' पर चढ़ा कर लेते हैं और स्टैम्प लगाकर वोट हाव देते हैं, वोटर को आने नहीं देते। दूसरे का वोट हलवा दिया

जाता है और बहा जाता है कि गुम्फारा वोट हलवा दिया गया। केवल यही एक बात से तो आप, तो आप सुनिए कि कैसे सम्भव होगा कि लोकतंत्र चले, कायम रहे, बढ़े ? विरोधी दलों के नेताओं से बेरी बात होती है तो वे कहते हैं कि अब 'कोई उपाय नहीं है कि अब हम लोकतान्त्रिक सपाय से जोड़ें।

आज दिल्ली में एक भय का वातावरण रहता है। जो मंत्री है वे भी खानों में कंठे कि ऐसा वातावरण कभी नहीं था कि हम सुबल भाव से, प्रष्टण भाव से जो हमारा विचार है वह बैठकर हम अपने मित्रों से न करें, क्योंकि पला नहीं वैन हमारी बात (इन्दिराजी तक) पहुँचा देना और फिर हमें उसका मूल्य देना पड़ेगा। प्रेस है। प्रेस भी हमारे देश में इसी सविधान के अन्दर और इसी प्रेस ऐक्ट के तहत चले हुए भी जितना स्वतंत्र वह जायेगा इसमें हमें सन्देह है। दुःखीजी है। इन्दिराजीसों से जो शक्त भय है कि वे अन्तम इच्छा विचार प्रकाशित न्य सके, क्योंकि सभी विज्ञान-विज्ञानी रूप में चाहे वे किसी सम्झान में फास करते हों, विधिविधानतय में काम करते हों, और कही पास करते हों सरकार के वंसों से उनका नेतन मिलता है। तो यह निश्चित है देश में और इतका एहसास नहीं है और चिन्तन भी नहीं है कि क्या करना चाहिए। मुझे बहना इतना हो कि इस विषय पर सोचना चाहिए, क्योंकि लोकतंत्र मिट जाता है तो हमारे आन्दोलन को पताना, जो क्रांति हुए करना चाहते हैं यह करना, असम्भव तो नहीं बहुत कठिन होगा, अब जितना कठिन है उससे कई गुना कठिन हो जायगा।

—बदप्रकाश नारायण
(भावी रचनात्मक सत्ता सम्मेलन में दिने गये भाषण के नवी - दिल्ली, १२-५-७२)

कवीर का शहर सचमुच बदनाम हो गया

जब वाराणसी में दंगा शुरू हुआ तब शान्ति सेनिकों ने शान्ति स्थापन-कार्य में काफी महत्त्वपूर्ण भूमिका भरी थी। युवा सर्वोदय कार्यकर्ता श्री श्यामबहादुर 'नम्र' दूसरे दिन से शान्ति स्थापना के काम में अपने चन्द साथियों के साथ जुट गये। श्री श्यामबहादुर 'नम्र' एक कर्मठ और चिन्तनशील युवक हैं। कर्मठता इनकी जीवनी शक्ति है और चिन्तनशीलता इनके कर्म में तेजस्विता और प्रखरता लाती है। जब इनके दिमाग में किसी काम का निश्चय हो जाता है तब उस काम को करने में बिना आगा-पीछा किये लगन से जुट जाते हैं और उस क्षण तक दम नहीं लेते जब तक उस काम को पूरा न कर लें। वाराणसी के दंगे में उन्होंने जो कुछ देखा, समझा और किया उसे हम यहाँ उनसे हुई एक मुलाकात के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं।



श्री श्यामबहादुर 'नम्र'

प्रश्न : आपसे दंगे की सूचना कब मिली और आपने उसके बाद क्या किया ? क्या हो जाएगा इस सम्भावना को क्या आप पहिले से मानते थे ?

उत्तर : मैं नगर में सर्वोदय का कार्य करता हूँ। अतः नगर के मानस का कुछ परिचय तो अवश्य हुआ है। १६ जून को काला दिवस मनाने की सूचना से वाराणसी नगर में ११ जून के ही लक्ष १४४ लागू हो गयी थी और चप्पा, जुलून बादि पर प्रशासन ने रोक लगा दी थी। इसके स्थिति की सम्भोरता कुछ समय में जायो थी लेकिन दंगे की सम्भावना मुझे विशुक्त नहीं थी। मैं मानता था कि लोग काला दिवस मनारहे और जितना प्रशासन दया का रूपा नहीं लेने देगा। प्रशासन को और से इस प्रकार का अत्याचार भी मिला था। काला दिवस हिसक स्वरूप न ले, इसलिए यहाँ क प्रतिष्ठित हिन्दू-मुसलमानों के साथ हमने एक बरतम्ब में मुसलमानों से यह अपील की थी कि वे क्वीगड मुस्लिम निगरनिद्यालय अधि-निषम का स्वागत करें और काला दिवस का समर्थन न करें। हिन्दुओं से भी अपील की गयी थी कि काला दिवस को वह सम्पूर्ण बहावस्वकी द्वारा

मनाया जानेवाला दिवस न समझें और उनके प्रति अपने मन में श्रद्धा का भाव न लायें।

१६ जून को शाम ७ो मुझे दंगे की सूचना मिली। पूरी जलकारी के लिए मैंने शाम को स्थानीय अखबार देखा। दूसरे दिन सुबह इस सम्बन्ध में मेरी जिलाश्री श्री महेश प्रसाद से और नगर कौतवाल श्री बोरेंद्र कुमार श्रीवास्तव से फोन पर बात हुई। नगर के उपप्रवक्ता दोनों में चुँक कर्ण्य लागू हो गया था अत मैंने निश्चय किया कि कर्ण्य पास लेकर, जहर के प्रभावशाली नागरिकों से मिलकर, उनके सम्मिलित प्रयास द्वारा शान्ति-स्थापना का कार्य किया जाना चाहिए। शुरू में मैं, नगर सर्वोदय मण्डल के मंत्री श्री मोहन भाई और श्री कालीनाथजी कर्ण्य पास लेकर श्री रोहित मेहता से मिले। उनके बात करके दगादलत धंको का दौरा किया और श्री रोहित मेहता, नगर स्वयंसेवक समिति के अध्यक्ष श्री ० उधेश्वर शर्मा, मंत्री श्री गोरगोपाल बनर्जी से मुलाकात की। पहले हमने श्री मोहन भाई के साथ दगादलत धंको में, मुश्मल से मदनपुरा, रेवड़ीतालवा व नवी मड़क, दातमण्डी आदि धंको का दौरा किया और शाम को श्री रोहित मेहता

की अध्यक्षता में एक सर्वदलीय नगर शान्ति समिति गठित की गयी। समिति को और से एक बरतम्ब में शान्ति बनाये रखने की क्वीस की गयी। १८ जून को इस समिति को और से जब काम शुरू हुआ तो हमें शान्तिसेना मण्डल के साथी सर्वोदय भगवान बजाज, अमरनाथ भाई, उत्तमारायण भाई, और स्वयं-शान्तिसेना के श्री अशोक भार्यन, नगर सर्वोदय मण्डल के मंत्री श्री कृष्ण कुमार भाई का सक्रिय सहयोग मिला। शान्ति समिति के सदस्य और शान्ति सेनिकों को चार टुकड़ियों में बाँटकर शान्ति-स्थापना के कार्य का आयोजन किया गया। पूरे दंगे की अवधि में दिन भर काम करने के बाद शाम ७ो हम एक बार मिलते थे और अपने दिन की कार्य-वीक्षना बजाते थे।

प्रश्न : आपके कार्य में प्रशासन का सहयोग प्राप्त हुआ ? अपने कर्ण्य-काल में कौन-सा कर्म अपने हाथ में किया ? नगर के नागरिकों ने भी बाराता सहयोग किया ?

उत्तर : प्रशासन की ओर से और दातम्ब अवे अधिकाधिक से काफी सहयोग प्राप्त हुआ। मई के प्रारम्भ में नगर सर्वोदय मण्डल की ओर से गुणित-नागरिक सम्बन्ध पर एक गोष्ठी आयोजित

हुई थी जिसके कारण अधिकांशों से विश्वासपूर्वक परिचय हो गया था। अतः अधिकांशों ने हमें कपट-नाथ देने में पूरा विश्वास किया और जो सूचनाएँ हम उन्हें देने से अनुरोध के तुरत वारंवार देती थीं वे। बाराणसी के वरिष्ठ पुजित अध्यापक ने तो भाषाजिक में हम लोगों की शरणा के प्रति थूला भी अवगत की, लेकिन प्रशासन में गोप्य के अधिकांश उक्तने सक्रिय अथवा क्रिमेदार नहीं दिखाई पड़े किन्तु कि इन तमाम के समग्र दिखाई पड़ना चाहिए था, किन्तु हमें काफी धैर्य था। वही-वही तो किसी प्रसंगिक के दृष्टि पर ऊँचे अधिकांशों के माते के फलन में भी छोटे अधिकांशों के दिखाई की। एक जगह तो भी ०००००० की एक टुकड़ी दो दलों के शरत की भी-भावात् सुकर भी पंथ के नीचे लीपी और बैठी रही, और बाद में रिपयि इतनी तनावपूर्ण हुई कि एक भाकि वा मरान कुं कर दिया गया और साम को पुजित की लीपी भी पतानी पड़ी। वही-वही तो पुजित के छोटे अधिकांशों भी साम्राजिक भावना...।

प्रश्न : (बीच में ही दोहराकर) क्या आपने लोगों की पीठ और मार को असाह्य मुनी तो आता उन स्थान पर क्यों नहीं गये ?

उत्तर : मार्ग-सैनिक के नाते हमें नहीं जाना चाहिए था परन्तु न तो वह हमारा परिचय-लेख था और न तो वह के साथ मार्ग-उत्तरा देते समर्थिताय समझने से परिचित हो थे। उचित-पंथ के मोके पर हमें पुजित वा ही सुचित करना आता उचित मान्य हुआ। पंथ-सौरीय के दवाके में हमारी एक टुकड़ी असाह्य ही से दलों की बनेबासी के बीच पकड़ ली और उन लोगों के बीच में बाँटे ही देते रह गये तथा मोव आने-माने थोपों में बराम बने गये। वही कपट-नाथ के नाते था।

है, तो बाद अपने पूरे इत्त पर आते। आपने पूछा है कि हमने कपट-नाथ-नाथ में क्या किया।

हमारी शक्ति बहुत कम थी। हमारे हाथ काम करनेवाले मित्रों ने अपनी सीमित शक्ति से काम भी बहुत छोड़े गये हैं, फिर भी मैं आपको एक-एक काम गिना देता हूँ :

१. परिचित या विरोधक और अल्पजन-जिसमें तुट-नाथ जिये और जलाने गये परसे को देखने तथा आशक्ति परिवारों से मिलने का काम भी शामिल था।

२. गये उपद्रवों का पता होने पर वहाँ याकर लोगों को समझाना तथा स्थिति पर बाह्य न होने पर प्रशासन को सुचित करना।

३. अफवाहों का खण्डन करना।

४. कपट में पड़े हुए और पड़े हुए लोगों को सूचना उनके परिवारों को देना।

५. दगाप्रल दलों में सतत पूजते रहना।

६. आशक्ति परिवारों के आतक का दूर करना तथा पीड़ितों को सान्त्वना देना।

७. आशक्ति कर्णों पृष्ठ के समग्र दूरानों पर भीड़ का नियंत्रण।

आपने नगर के नागरिकों के सहयोग को बात पूछी है। नगर में अलग-अलग मोव अपने-अपने इय से अपने-आपने लानों में काम कर रहे थे। नगर प्रमुख की अध्यक्षता में गठित एक समिति का कार्य भी हो रहा था। अगर सर्वोच्च मण्डल के तमाम मण्डल में शक्ति नगर स्वयंसेवक समिति को मुहूर्त समितियों ने आशक्ति कर्णों पृष्ठ में आने-आने लानों में भीड़-व्यवस्था का काम किया। विशेषकर आशक्ति कर्णों की मुहूर्त समिति ने अल्पसंख्यक लोगों को सान्त्वना पहुँचाना जिसके कारण इस समिति के संबोधक श्री सिवाजी राव देवचर की भी मुहूर्त के कुछ साम्प्रदायिक लोगों को समझने का मिशन भी होना पड़ा।

प्रतिपक्ष कई भावर भी नबीर बनारसी के सहयोग से मद्रास के अल्पसंख्यकों की शक्ति को आशक्ति प्राल करने में बाधते सहयोग देते हैं। कई असाह्य मित्रों ने नरे उपद्रवों को सूचना देते थे बहुत मुसीबतें दिनाती।

अतः - दवा के शूक-होने के कारणों-

को कुछ स्पष्ट करेंगे ? काला दिवस ने दगा का रूप कैसे धारण किया ?

उत्तर : बाराणसी के हिन्दू-मुसलमान एक दूसरे के प्रति प्रणयपूर्ण बर्ताववात् बने ही रहते थे लेकिन किसी भी साम्प्रदायिक दम के वा स्वगत वह नहीं करना चाहते। अल्पसंख्यकों के एक छोटे-से पूष का काला दिवस मगाने की कुछ अवसर भी गयी होती और पुजित का पूरा नियंत्रण रखा गया होता तो यह हिन्दू-मुसलमान दगा नहीं हुआ होता। एक और काला दिवस मगाने की छूट नहीं मिली और दूसरी ओर पुजित का पूरा स्वतन्त्रता नहीं हुआ। काला दिवस काटो सगठित रूप से मनाया जा रहा था और उसके आस-पास भी सगठित थे। कहा जाता है कि काले शब्दे मगाने और जुलूम निकालने में वे कम संख्यावासी पुजित के विरोध में पणपण करने में बीज पड़ गये और कपटोर पड़ी हुई पुजित की मदद में हिन्दू शामिल हो गये। हिन्दूओं के शामिल होने पर इस दिवस में हिन्दू-मुसलमान दम के रूप में लिया और तब तो उन मुसलमानों की भी धर्म पृथुओं की बाने दिवस का मगथेन नही कर रहे थे।

बाराणसी के अक्षरारों ने भी अपनी लबरों में अल्पसंख्यक-व्यवस्था का हिन्दू-मुसलमान के नाम से या लबरों प्रभावित की उपरते हिन्दू मान्य काफो उत्पन्न हो गया और यह दगा नगर के ब्यापक धंसे में फैल गया। इस दम में हमारा कम हुई और तुट-नाथ तथा आशक्ति असाह्य हुई। अनेक परिवारों को अपने घर छोड़कर दूसरी जगह सरण लेनी पड़ी। वही-वही तो लोगों को पकड़ा हुआ माना, पकड़ा हुआ पकड़ा हुआ हुआ नभ, बंधो हुई बर्तनी, पीठ में ठाते, छोड़कर असाह्य मानना पड़ा है। वही-वही आशक्ति और तुट-नाथ में साम्प्रदायिक युक्ति के अधिक पुरानी रविम और तुट की युक्ति ने काम किया है।

प्रश्न : आपने का मुहूर्त-मुहूर्तों में पुन-व्यवस्था देखा है, संतोष से आपने (पृष्ठ १०३ पर)

आधुनिक जीवन की शोकांतिका कृत्रिम गर्भाधान

● विनोबा

[गुजरत के भी सिवाभाई पड़ेछ में अपनी लिखी "प्रेत कान्ति" नामक किताब पू० विनोबाजी की मंत्र की और माओं के कृत्रिम गर्भाधान तथा माओं का दूध बढ़ाने के सम्बन्ध में उनके सम्बन्ध करने विचार रहे। उनके साथ पू० विनोबाजी को जो चर्चा हुई उसका वृत्त हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।]

विनोबा : हिन्दुत्वान में जो जीवन है उसे सुधारना होता और अधिक दूध भी योजना करनी होगी। आपने जो लिखा है उसमें बाहर से मनुष्य का दूध लाकर चरनी से करके मनुष्य के दूध और ज्यादा दूध देनेवाली माओं पैदा करेंगे, उससे दूध बनना होगा यह मुख्य विचार है। इस विचार को गर्भाधान प्रत्येक में लें, तो भी इस विचार से प्रभावित हूँ। लेकिन मैं इसके खिलाफ हूँ कि उसमें बिल का बोरे का दूध बहुत गाव की बोरे में "इलेक्ट" करना, एक बिल के बोरे का एक लाख बोरे को साथ होगा, मजदूर बिल भी पंजा होगा, और दूध भी ज्यादा होगा। बाहर का बिल लाने में खर्च ज्यादा होगा, बोरे लाने में खर्च कम होगा और प्रत्येक बोरे का बाउंडर भी होगा है, वह लाने में खर्च और कम होगा—यह सब कुछ खर्च नहीं। गाव की बिल छोड़िए, मानव की बाव लीजिए। मानव में भी पैदा किया जाय कि बाहर के किसी बन-बान मनुष्य का बोरे लाकर किसी स्त्री को बोरे में डाल दिया जाय, तो जो प्रभाव होगी वह मनुष्य होगी, लेकिन माता-पिता को अच्छी तरह समझना पड़ेगा कि वह मनुष्य तो नहीं जाय। ऐसी हालत में जो प्रभाव प्रभाव होगी, वह मनुष्य होगी। उसमें न हाव रहेगा, न प्रेम रहेगा, न स्नेह रहेगा। जो त्याग मनुष्य के लिए लाय है वह माय के लिए है। लेकिन माय के बारे में तो लोग कहते हैं कि वह भी पशु है। बाउंडर में माय पशु नहीं है, वह मनुष्य है। बोरावा

की ज्यादा बेटों के जमाने से नवी जाती है, इसलिए दूध बढ़ाने के लिए इस तरह की प्रक्रिया की जायेगी तो यह आध्यात्मिक अवस्था का कारण होगा। बहुतों ने वर्णन किया है और बंश-निको ने भी बताया है कि गाव-बिल का जब सगम होता है, तब दोनों को इतनी लगभग होती है कि जो नवन प्रामे हटा रग रखा जाय तो चढ़े का रग हटा होगा और लाल रग रखा जाय तो चढ़े का रग लाल होगा।

आज तक लोग दूध (मनुष्य) को खूब तो खाते हैं। जलेश्वरी में उपमा दी है। लेकिन गोरक्षा का ही प्रत्येक नहीं है। लेकिन उसमें दुग्धदान दिया है। जब उपस्था करते हैं, तब तकरीफ हीती है। लेकिन जब बोरावों का प्रभाव है, तब मानव होता है। यह विचार समझने के लिए दुग्धदान दे रहे हैं। जैसे "कौशी दूध पालने" दूध की बोरे को दूध जला तो भरी गया, पैदा लगा। लेकिन जब "कृत्रिम परिवर्तनीय बिल" जब कृत्रिम बना, तब जानव हुआ। दोषणा है कि जलेश्वर के जमाने में दूध को दूध की साथ देते होंगे। पैदा कीलता है कि दूध का दूध उस जमाने में होगा। जब हम बोरे मजूर हैं, तो खूब देते हैं। यह भी हमें दुग्धदान दिया।

अपनाय को छोड़ हमारा जलेश्वर भौतिक जल बढ़ाया, तो हम नहीं के भी नहीं रहेंगे।

आज बला की जो फलना है वह "प्रेत कान्ति" का तो नहीं है। हिन्दु-

स्तान में आज ५५ करोड़ जनसंख्या है। प्रति व्यक्ति एक एक प्रभाव है। जो जो और भी मनुष्य बढ़ेगी। फिर जमीन कम पड़ेगी। तो बिना बिल को खेती करनी होगी। दूध पीने से मुक्त होना पड़ेगा। बिना दूध पीने से, शिका प्रयोग करना होगा। जापान में यह प्रयोग चला है। हमें भी यहाँ खेती में से बिल को खेती देनी होगी और दूध से गाव को खेती देनी होगी। इन्फेक्ट में एक प्रयोग करना है। वहाँ बाव से दूध बनाते हैं—गाव को हटाकर बाव का दूध। मनुष्य मनुष्य को गाव, बिल के साथ रहना होगा, तो सत्य से रहना होगा। बलावर्ष को सापना करनी होगी। अगर वह नहीं करनी है, तो गाव को खाना होगा। "सहस्रधारा पवना महि यो।"

वेद में वर्णन लाया है। एक-एक गाव सहस्रधारा दूध देनेवाली थी। सहस्रधारा वाली एक हजार बोरे से ज्यादा होगा। २५-२० रघव (बोव) दूध वाली माँ उस वकन थी। बर्दोक प्रभाव था, खूब बाव लाने होगी। आज वर्णन नष्ट गया है। मनुष्य मायों को बलावर्ष करने का प्रयोग होता है। उसकी इच्छा तो नहीं थी। मानव को भी बलावर्ष करने की प्रक्रिया तो चली ही है। अगर यह प्रक्रिया जारी रही, तो मानव "मायों" को रोने में। भावी गर्भ में बलावर्ष लाने पड़ेगी है, भाव तो मानव नहीं। उसी गर्भ से मायों दूध, मानव, मानव, सुन्दर दूध। जो न वह सजा है पैदा महान् नई पुत्र पैदा होता ? लेकिन मानव को भी ही रोना। मानव गर्भ हवा-भूक-हवा है। भूक-हवा से बकर पाल गती। बल्ले की गर्भ में ही हवा, यह महापात्र है, बर्दोक भावी जो महान् मानवलाय का जो मानव रोना। बनेक महान्दुःखों को मान रोने की और ५०० पीपलसने मनुष्य को खेती, जो इन्फेक्ट गर्भाधान से पैदा होगी, यह मान के प्रभाव को "मोहाविदा" है। इसलिए भीदा ने बलावर्ष और बर्दोक को एक साथ रखा है। बलावर्ष का प्रभाव

नहीं करेगे, तो हिंसा आवेगी, मार-पाट होगी।

शिवाभाई : आज की परिस्थिति में बल की खिंची करते हैं, यह तो पाप हुआ ही। भंस के पाड़े की भी मारते हो हैं। कृत्रिम गर्भधारण में एक बाल के बीरों से एक लाख गायों को एक वर्ष में गर्भ-धारण होता है। तो गाय को बचाने के लिए यह क्यों न किया जाय ?

विनोबा : भंस को खत्म करना, बल को बध्ना करना और कमजोर गायों को भी बध्ना करना, इतना पाप तो करते ही हैं तो और पाप क्यों न किया जाय ? ऐसा ही क्षाप पूछते हैं। "बा या अधिक्त्स्य अधिक्ं फलन्" ऐसी मन्त्रक स्थिति में दूध छोड़ने का ही प्रयोग क्यों न किया जाय ? इसीलिए बाबा ने तीन साल दूध छोड़ा था। उस बाबा कमजोर हो गया। उस समय बापू थे। बापू ने बाबा को लिखा, "तुम्हारे जीवन का उद्देश्य क्या है, वह तुमको निश्चित करना होगा। अभी तो तुम नयी वालीम, शादी वर्षरह का नाम कर रहे हो। अगर दूध के बिना मानव-जीवन संसे चलता है यह देखना, यही तुम्हारे जीवन का उद्देश्य हो, तो फिर बाकी सारे नाम छोड़कर उधरी के पीछे चलना होगा। उस विषय ना साहित्य पढ़ना होगा। 'शास्त्रों से बर्ना करनी होनी।' वह पत्र बाबा ने पत्र और उधरी दिन से दूध पीना आरम्भ कर दिया। मेरी स्मृतिगत शत छोड़ दीजिए। मानव को दूध छोड़ने का प्रयोग करना होगा य तो फिर इच्छार्थ का प्राप्त करना होगा। मुझे उद्यम संदेह नहीं कि यह कृत्रिम इतान चलते रहने, तो मानव इस पर आनेगा कि मानव की छाता मलत नहीं। मानव को मारना तो नहीं, लेकिन मारना, एक पाप तो किया; अर इतना साया विटामिन ऐसा ही व्यर्थ जाने देना यह दूसरा पाप होगा। इस पर मैंने विशदग्रन्थ रचाने में लिखा है। प्रसिद्ध भीनी लेखक तिन पुत्राप ने लिखा है—

"मेरे रेट का 'बापरेखान' करवाना हो तो मैं चीनी बाबटर को पसन्द नहीं करूँगा उससे 'बापरेखान' नहीं करवाऊँगा, क्योंकि चीनी लोग चाहे जो चीज खाते हैं, तो मेरा 'बापरेखान' करते-करते मेरा कोई ऐसा अवयव उसे दीक्ष जाये, तो बीसों बाबटर वह खा जायेगा। इसलिए मैं यूरोपियन डाक्टर के हाथ से ही 'बापरेखान' करवाऊँगा।" इतने सुटिल-टैरियन (उपयोगितावादी) होते हैं, चीनी लोग।

शिवाभाई : अपने यहाँ ऐसा नीति-शास्त्र है, बंसा क्या चीन में नहीं है ?

विनोबा : चीन में भी नीतिशास्त्र है। लेकिन अपना नीतिशास्त्र होते हुए भी उग्र-उग्र के पाप करते हैं कि नहीं ? और दबील भी करते हैं कि इतने पाप करते ही हैं तो और पाप क्यों न कर ?

शिवाभाई : ब्रह्मचर्य-पालन आज कलित होगा। दूध बढ़ाना आसान है। विज्ञान का दुग है।

विनोबा : आज ब्रह्मचर्य-पालन क्षाण्य है।

"वशास्या पुत्रान् आधि हि पति एकादश भुष्ट"

यह वेद में आया है। इसका अर्थ है तुम दस पुत्रों को जन्म देना और भ्याःद्वार अपना पति संवत्सवा। आज तो दस पुत्र चीन मणिया ? आज २-४ पुत्र भीते हैं। मतलब, प्राचीन काल में ब्रह्मचर्य का आध्यात्मिक मूल्य था। इसलिए प्राचीनकाल में ब्रह्मचर्य-पालन से ही लोग करते थे, जिनको कोई आध्यात्मिक धर्मों करनी थी, जिनको कायस्थान्नाकार करना था। लेकिन आज ब्रह्मचर्य तो सामाजिक मूल्य (सोशल वैल्यू) है। इसलिए आज तो ब्रह्मचर्य-पालन करना आसान हो गया। दुगुण मूल्य (बलत वैल्यू) उभे आनी है। शिवाभाई : आज टेम्पेटान्स (आकर्षण) इतने बढ़े हैं कि स्वयं अवग्रम है। विनोबा, बल्लील साहित्य प्रभावित बहुत बढ़ा है।

विनोबा : टेम्पेटान्स (आकर्षण)

विनये पैदा किये ? ईश्वर ने ? वह तो अपने पैदा किये हैं। आपके हाथ में है। आप उसे बन्द करें। कोई भी विद्यालय क्या ऐसा ही व्यर्थ बीज बोदेगा ? क्या यह यह चाहेगा कि बीज तो बोऊँ, लेकिन वह जगे नहीं, संकुचित न हो ? क्या इस तरह वह नाहक अपना बीज फेंकेगा ? अगर इस बीज का इतना महत्व है, तो फिर मनुष्य-बीज का—बीरों का—तो उतने कई गुना अधिक महत्व है ! किताब तो मूडर्न और समय देखकर बोता है। जैसे ही प्राचीन अधियो ने समझाया है। इसलिए योग्य समय और उम्र देखकर, शास्त्रों को हलाकर, उनका साधोपान लेकर 'गर्भाधान-विधि' होती है। सबको मान्य होता है कि आज 'गर्भाधान' होनेवाला है। प्रहा है बत्ती और बीरों है तेल। जिनके बीरों को इनमें हुई उसकी प्रजा की हाजि हुई। तो ऐसे कृत्रिम दलायो से भारकी सम्पत्ति भी नहीं बढ़ेगी और प्रजा की हाजि होगी।

शिवाभाई : आपके साथ मैं सहमत हूँ। लेकिन आज क्या चल रहा है, यह बता रहा हूँ।

विनोबा : जो चला है उसे रोकना कैसे ? मेरे सामने यही सराल है। एक शका पुना के नरदीक गायों की प्रवर्तनी थी। मयनतात भाई मुझे ले गये थे। वहाँ बड़ी मोटी गाय थी और दूध का स्तन बढ़ा था। यह देखकर मुझे अच्छा लगी लगा। ऐसा बताया गया कि एक गाव ८० पीछे दूध देती है। मैंने पूछा, "यह ये गावें चौकती हैं ?" बोले, "नहीं।" मैंने कहा, "इस गाव का दूध पीने से मैं ताकत आवेगी, न आध्यात्मिकता।" बंशास्त्र में कहा है कि गाव का मानव का दूध सर्वोत्तम होता है, क्योंकि "गामामानि-पुत्रेणाम्" जयन में जाती हैं, सौती हैं तो अच्छा भ्यापान भी होता है और अच्छी हवा भी मिलती है। उसके बाद का दूध अच्छा होता है। पुरानी प्रजा थी, गाव से उठा लेती है, तो उसके बड़के को

उसका दूध गहले पीने देते थे। बाद में अपने लिए दूध दुहते थे। आज तो मशीन से दूध निदाते हैं। गाय वा दूध बचड़ा पीता है, तो उससे गाय को प्रशंसा होती है। उसके बचाव गतीन सगाना, इससे अधिक कठोरता और बचा हो सकती है।

“मैं ‘आउ वीडिंग’ के खिलाफ नहीं हूँ। उसकी मर्यादाएँ देखनी होतीं। ‘सीड’ धीरे-धीरे ‘डिस्ट्रीब्यूट’ (ताम) न हो यह देखना होता।

धेरती धर्मधारण के बाद धेर तो नजदीक आने नहीं देती, लेकिन मानव में यह धनदा है। फिर कई प्रकार की तकलीफें होती हैं। यदि दो धेर एक धेरती के पीछे लगे हो धेरती बचा करती है? दूर रहकर उन दोनों को लड़ने देती है। दो में से जो बचता है, उसे धरना करती है—“नलसमपत्त स्वयंवर”। कमजोर धेर को बरण नहीं करेगी। नयो? क्योंकि सन्धि मन्वृत, पचाकनी कौसे पैसा हो, धरना विशान उसे मातुम है।

शिवाभार्दः धाव विप्रान (साधन) इतना विशिष्ट हुआ है कि अनाज में भी लघुशक्ति (एटामिक एनर्जी) का उपयोग करते हैं।

विनोबा : और इतना सारा होने के बाद क्या होगा? पृथ्वी टपकी हो रही है और २०० करोड़ सात के बाद एक भी आदमी बचेगा नहीं। कोयला (महाराष्ट्र) में भूस्फुरण हुआ। वही है, ईशान से लेकर मलाबार के विनारे तक सघुट ६०० मील जमीन के नीचे धँसा है। यानी उतना जमीन का हिस्सा पानी पर है। नय वह सारा हिस्सा पानी में डूरेगा, वह नहीं सने। ये ही राह देत रहा है कि जैते पैरु हवा से पीनप सेते हैं वैसे हन भी हवा से बच पीनप लेवे और खाता कब बन्द होगा। इतना जबर विशान ने नियम तो पैसा माना जायगा कि महिला की रिता में विशान धामे बढ़ा।

कुनिम पर्याधान नो विनोबा को

‘यह ईश्वर की लीला है’

● जयप्रकाश नारायण

[ग्वातिपर में १ जून '७२ को बागियों के आत्म-समर्पण के समय तमा में दिया गया श्री जयप्रकाशजी का पूरा भाषण हम यहाँ दे रहे हैं। इस भाषण में बागो-समस्या, अपनी कठिनाई और नागरिक-कर्तव्यों पर श्री जयप्रकाशजी ने प्रकाश डाला है। स०]

मैं अपना बड़ा सीमाभा मानता हूँ कि यह कार्य आसमान से मेरे कंधों पर उतर पड़ा। १९६० में जब विनोबाजी भिष्ण-पुरना को गाना पर आये थे उस समय जो आत्म-समर्पण हुआ था, आत्म-समर्पण के बाद जो कुछ कार्य हुआ था या जो नहीं हुआ था उस सबसे मेरा बहुत ही पीड़ा सम्बन्ध रहा। उस समय केवल एक बार भिष्ण की एक तमा के लिए आया था। मैं दूसरे रामों में था, सर्वोदय के ही, और दूसरे लोग ये काम नहीं कर रहे थे। इस बार भी मेरे मन में, अपने में भी, कभी यह बात नहीं आयी थी कि चम्पसपाटी या दुन्देसखण्ड की बाकु-समस्या के हल का काम मैं अपने कंधों पर लूँगा। वैसे ही नयनोर कथे है। उन्न भी हो चुकी है। स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहता। जीवन का नाम समाप्त हो चुका है, ऐसा ही मैं मानता हूँ। जो काम पहले के हैं वे भी छोड़ रहा था, अब भी छोड़ ही रहा हूँ। और इस छात के अननूबर से बहुत कुछ कार्यो से मुक्त हो जाऊँगा। यही मेरी मनो-भावना थी कि जो प्रसिद्ध बागी हूँ वे समर्पण कर दें। हम तो उन्हें बागी ही कहते हैं, वे भी अपने तो बागी कहते हैं, इस हलाक के लोग भी उन्हें बागी कहते हैं। केवल एक बागी है चितरा आत्म-समर्पण आज होगा जो अपने आप ही ठाकू कहते हैं। उनका पत्र मुझे मिला, पिछली बार जब मैं आया था। तिसा सहस्रति नहीं—कोई इज्जत काने तो इजाजत भी नहीं। क्योंकि उस प्रकिया से जो दूध पैदा होगा, उसकी आध्यात्मिक नीमत नहीं रहेगी, यह प्रेक्षयुव दूध होगा। ●

हुवा था श्री श्री श्री जगत निवाही बाकू ठाकुर मलरान सिंह पंचार।

ईश्वर की यह लीला है। मैं गुल से ही यह रट लगा रहा हूँ। इसमें कोई भी धैर्य मुझे है, ऐसा मैं मानता नहीं हूँ। इस सारे नाटक में मेरा पार्ट किस कारण से है, मैं जानता नहीं। इन सभी बागो माद्यों ने कहा कि हमारा विश्वास था तो विनोबाजी पर है या आप पर है। वार मध्यस्थता करें और जिस विधो के धामने समर्पण करने को बने, हम करेंगे। बस इतना ही भर रहा कि उनका किसी कारण से हम पर विश्वास रहा और हमें वह विश्वास खीच लाया और मेरे हाथो से यह काम हुआ। नहीं, तो मैंने बराबर अपने वो पीछे रखा, गांधी और विनोबा वा नाम लेता रहा। विनोबा ने यह बात बोया, उसका पीछा हुआ, पैरु हुआ, उसके वे फल सने। २० के दरले में ४०० के करीब अब हो जायेंगे। यह सारा हुआ है। जैसा सेठीजी ने कहा, बार-बार मैं भी कहता हूँ, विदेशो पचकार भी कहते हैं कि भारत ही ऐसा देश है जहाँ सब हो सकता है।

अब इस देश की यह क्या महिमा है? आज हमारे नवनवान लोग हैं, वहाँ तक इतना समझ रहे हैं, हमारे पुराने लोग हैं, रात्रनीतिवाले हैं, ध्ववसायवाले हैं; पयान-केनी खोम हैं, किसी भी क्षेत्र के लोग हैं, यकीन हैं, डाक्टर हैं। अपने देश की यह महिमा है, यह बात तो हम कहते हैं, लेकिन उसकी जिम्मेदारी हमारे ऊपर पन देय के पुत्र ही हैसियत से, नागरिक ही हैसियत से, बना होती है यह हम नहीं समझते। नहीं तो आज दूध देय का हास यह नहीं होता जो आज है। नह-

हाल यहाँ का काम जब काफ़ी हो चुका था तो सेठीजी ने बहूा कि कुन्देलखण्ड का काम भी आप लोग लें। तो सेठीजी भी आज यहाँ बैठे हुए हैं, मैं बहूना चाहता हूँ कि कुन्देलखण्ड की डाकू-समस्या क्या है और यहाँ राजनीति आदि की क्या संबंध-विशय हैं, सर्वोदय बान्दोलन की भूमिका किन्तनी कमजोर है। इन बातों का पूरा-पूरा पता होता तो बहू काम हरमिज में अपने हाथों में नहीं लेता। वह काम हो गया, लेकिन मुझे बहुत शय है इस बात का कि उसके आगे का काम जो होनेवाला है वह ठीक से हो पायेगा। जो कुछ वहाँ हुआ उसका मुझे भेद है। सेठीजी से मैं अलग बात कहूँगा, उनको बतल मियेगा तो, नहीं तो पत्र लिखकर ही सन्तोष कर लूँगा। जिस रीति से बहू काम चला, उस रीति से जो आगे नहीं चल सकता है। अब मेरा स्थान है कि शांतिवादी के आत्म-समर्पण का या बाहुओं के आत्म-समर्पण का यह एक पहला अध्याय समाप्त हुआ।

अब मैं एक निवेदन आप सबसे करना चाहता हूँ कि आगे समर्पण के लिए मैं नहीं आऊँगा चाहे वह सोबरानसिंह हो चाहे कोई सिद्ध हो। उनकी मैं आत्म-सन्तान नहीं समझता। वहाँ एक ऐसा वातावरण पैदा हो गया है, मैंने कुन्देलखण्ड में महसूस किया, छतरपुर में जाकर, कि जैसे कुछ सेठी बनाम अमरनाथ का मामला है। अब क्या मुझामना। बला-घर। देना था जो सबसे बड़ा प्रेश है उससे वे मुझमयी हैं और मैं एक साधारण नागरिक हूँ। लेकिन ऐसी कुछ परिस्थिति पैदा हो गयी है। उस परिस्थिति के कारण भी और स्वाभाविक के कारण भी। अब मैं मद्रास पहुँचा और पहाड़ पर पहुँचा, काफ़ी दूर, मद्रास से भी कोई २५० मील दूर गया। मेरी लंबीयत अच्छी नहीं रही। बाइरों ने कहा कि आज जिनका रहना चाहते हैं वो सफ़र बन्द कीजिए। तो मैंने पहले सेठीजी को यह तार दे दिया कि मैं नहीं आऊँगा आप समर्पण लीजिये, मेरी तरफ़ से काम कीजिए और मूलसिद्ध और उनके हाथियों के नाम बिन्दो लिखकर

भेज दी थी कि मैं नहीं आ सकता हूँ इस कारण से आप सबसे मेरी प्रार्थना है कि आप सेठीजी के घामने आत्म-समर्पण करें। मेरे प्रतिनिधि स्वरूप देवेन्द्रभाई (देवेन्द्र कुमार गुप्त) वहाँ रहेंगे, जो कुछ कहना करना होगा वहाँ बहू करेंगे। लेकिन अकरमात हूँ सबर मिली कि वे लोग बहू रहे हैं कि हम समर्पण नहीं करेंगे, जयत्रकाश नहीं आयेगे तो नहीं करेंगे। मजदूर में दोड़कर वहाँ से वापस आया, क्योंकि मैं जानता था कि ३१ को अगर समर्पण नहीं हुआ और पहली जून से अगर पुलिस की कार्यवाही शुरू हुई तो जो कुछ हम लोगों ने काम किया है, कराया है पिछले छत-आठ महीनों में, सब पर पानी फिर जायेगा, बेकार हो जायेगा। तो जोखिम लेकर मैं आया। हृदययोग वा तो कुछ पता नहीं, यह आप देख रहे हैं कब क्या हो जायेगा। कमल-नयनजी रात को अच्छे भले सोते गये, सुबह उनकी लाल निकली, विक्रम सराभाई का भी यही हाल हुआ। फिर वहाँ वापस जाना है हमें। तो मैं अब समर्पण के लिए तो हार्जिज नहीं जाने-वाला हूँ। सेठीजी समर्पण लें। नहीं समर्पण हो, पुलिस कार्यवाही करे, जो कुछ करना हो करे।

दूसरी बात यह है, अब तक हम लीग सेठीजी से सबक माँगते रहे हैं और उन्होंने बहुत क्षमा करके हमारे काम के लिए ३१ मई तक का समय दिया था। अब ३१ मई के बाद यह पहली जून है—अब आगे के लिए हम एक दिन का समय माँगते नहीं। यह भी नहीं बहते कि हम अपना काम बन्द कर देंगे। हम अपनी पद्धति से, हमारे जो मुद्री भर साथी हैं, हम करते रहेंगे अपना काम। प्रशासन अगर पुलिस-कार्यवाही चाहे तो उसके पास सब कुछ है, धत की नदियाँ भी बहाना चाहे तो बहा सकता है, जो भी करना चाहे करे। अपनी तरफ़ से हम समय माँगते नहीं, अपना काम करते रहेंगे, जो राजी हो जायेगा, सेठीजी के घरों में लाकर हम पंश कर देंगे—यह

उनको गले से लगाएँ, वह उनको जेल भेजें, जो करना हो सो करे।

तीसरी बात मैं यह बहना चाहता हूँ कि मैं तो एक अरुदा आरमी हूँ विनोबाजी का और मेरा कोई मुकाबला नहीं है। लेकिन जो विनोबाजी के बक्त में, हस्त प्रचार और प्रोपेण्डा हुआ उसे मुनते-मुनते मेरे काम तक गये कि सर्वोदयवालों के बाहुओं को हीरो बनाया। पन्तजी ने पालियामेण्ट में कहा कि 'लेमराइज' किया। ये शब्द इस्तेमाल होते हैं। १२ मई की सभा में सेठीजी ने भी बहूा कि बखारों में जो कुछ हुआ, इन सर्वोदय वालों ने उनको हीरो बनाया, ये शब्द हैं। तो मैं यह निवेदन करना चाहता हूँ कि जो लोग हमारे कारण में आते हैं, हमारे पंरों पर पड़ते हैं उन्हें हम उठाकर अपने भले लगाते हैं। हमारे लिए उस दिन से ये डाकू नहीं रह गये। हमने उनको कोई वादा नहीं किया है कि आपके अगर मुकदमा नहीं चलेगा। माधवरावजी सिधिया ने उनको कहा कि हम तुमको बांधी कर देंगे। माफ़ी ही नहीं जमीन भी दी और जिन लोगों ने उनको हाजिर कराया था उन्हें जागो दी उन्होंने। तो हमने 'एननेस्टी' की बात उठायी नहीं, मरुहोने की। ये खुद बेचारे बहते हैं कि हम अपने किये पाप का फल सुपद्रवों, सिर्फ़ हमारी भोत की सजा अगर हो तो हमें फाँसी न मये, इतना ही है। हमारे साथ अच्छा व्यवहार हो। यह न हो कि जैसे वे मीनी बोरह ने, देवीसिंह ने, उम बकत समर्पण किया था तो मनुष्य का मेला उनके घुँ में डाला था पुलिस ने, सन् '४० में। अब उसी का भय है उनके मन में आज तक कि हम समर्पण नहीं करेंगे। हमको बल निवृत्त दिया कि हमको पुलिस के हाथ में नहीं दिया था, हमें सीधे जेल भेजा जाय। हमने कहा कि यहाँ हो रहा है भाई, आप इरिये नहीं, सीधे जेल भेजा जायेगा। तो हमने किसी को हीरो नहीं बनाया है, भाई बनाया है, गांधी-परिवार में उनको शामिल किया है। मूलसिद्ध की बिंदी में हमने

लिखा था, हमारी विद्युत् यह है कि आप मेरे सामने समर्पण करें, चाहे सेटी साहब के सामने, करें चाहे अन्य किसी के सामने करें, आप इस भाव के साथ करें कि आप ईश्वर के चरणों में समर्पण कर रहे हैं। इस भाव से करेंगे तो आपको पिन्टा करने का कोई कारण नहीं है। फिर वह कल्पानिष्ठान सारी फिक्र आपकी करेगा—इस भाव से आप समर्पण करें। मैं नहीं समझता हूँ कि हमारे लिए तथा सर्वोदयवालों के लिए कोई जन्म से डाकु बनकर भाग्य है, जो डाकु है उसका भी गुधार हो सकता है, उसे गुधारना चाही तो जेल में गुधार सकते हो। मेरी जो पत्नजी से पहली मुलाकात हुई तो उन्होंने पूछा कि बिनोबाजी के सामने जिन लोगों ने समर्पण किया था, उनमें से कोई डाकु फिर न भगा, डाकु फिर बना, फिर कोई जंगलों में, बहेड़ों में गया? मैंने कहा कि कृष्णनन्दजी जहाँ तक मुझे मालूम है, कोई गया नहीं। दरियाफत करके ठीक-ठीक आपको सबर दूंगा क्योंकि मैं उस काम में नहीं था। मैंने दरियाफत कर मालूम किया कि कोई नहीं गया। एक आदमी भी बचक नहीं गया। लेकिन मैंने पत्नजी से यह पूछा कि आप बताइये कि आप जिन्हे आजन्म सजा देते हैं, वह १२ बरस की सजा काफ़ूर धाता है तो वह फिर बाना नहीं आसता है? फिर बदमाशी नहीं करता है? जेल तो कारखाने बने हुए हैं जहाँ कि ये अपराधी तैयार होते हैं। हम तो चाहते हैं कि जिनका गुधार हो। इसलिए हमने सेटीजी से भी निवेदन किया है, भारत सरकार से भी। बाकी दोनों सरकारों से भी किया है कि सजा हो, पाप, जो भी सजा हो, चाहे आजीवन नाराजगी भी, उस सजा के बाद उनको मामूली जेलों में आप न रखें, धुले हुए जेलों में रखें उनको वैसे सगुणानन्दजी के पमाने से जेल, उस जमाने में राजस्थान में दररतुल्लाहा साहब की मासूम है, वे धुएँ ही मुझे यह रहे थे कि दिन की जहाँ चाहे जा सकते हैं, परिवार के साथ रह सकते हैं, रात को उनको चापत भाग्य

होता है। उन्हें पनीज दी जाती है, खैती करते हैं। ये लोग अपने इन बहेड़ों के विकास, इन पिच्छे हुए इलाकों के विकास में अगर मोहसिद्द का, माधोसिद्द का, इन लोगों का सहयोग मिलता है, तो इनको मोवा देना चाहिए। तस्वीरें ली गयी पगारा में तो हमने किसी को बुलाया नहीं था। मैं समझता हूँ कि नल्मना-शक्ति भी बहुत बढ़ी अभी जो भारत सरकार की, आपकी नहीं वह रहा हूँ, आप तो वह देते कि हम इसके विरोध में नहीं थे (कि) दुनिया के इतिहास में—इस घटना में मैं पढ़ा हूँ इसलिए नहीं कह रहा हूँ—ऐसी घटना पटी नहीं कभी, यह एक ऐतिहासिक घटना घट रही थी, तो पूरा इसका ऐतिहासिक लेना था, सारी मुलाकातें होनी चाहिए थी, तो अंतर होता उसका, सारा दिखाया जाय। सारे देश के ऊपर जो अपनाय हो रहा है, बढ़ता जा रहा है, 'ला एण्ड वाटेर' की विधि-विधान की परिस्थिति, व्यवस्था की परिस्थिति, विगडती जा रही है, देश में—उस पर असर होता। 'उत्सोर् छत्र जायेगी तो शिनास्त करने में कठिनाई पैदा होगी।' बाबा! बीस हजार को भीड़ के सामने जो समर्पण कर रहा है, तो फिर शिनास्त की कौन-सी बात रह जाती है। हमने उनको राजी कर लिया है—कि वे अपना अपनाय स्वीकार कर लेंगे और अगर कुछ धरना पुलिस लायी तो मही करने, सच्चा मुदमा होगा तो बहेड़ों कि हों, हमने यह बतल दिया है। जाकर मोहुर सिद्द से बात करिए। कच वे गणेशजी, गंगा-देवजी मुखले मुद्दी ही वह रहे थे कि मैं तो उससे मिलकर बड़ा प्रभावित हुआ। दूना कि बतल किया? तो नहा कि—हाँ किमा, नयो, नहीं, बरुए—हम? हमारे साथ ऐसा हुआ था। तो ये तो वहाँ जाकर अदास्त के सामने अपने अपनाय बतल करनेवाले हैं, तो हम बिलकुल इस बात से इनकार करते हैं चाहे सेटीजी नाराज हो, इन्दिराजी नाराज हो, उनके पुलिसवाले नाराज हो—बिनोबाजी के जमाने में दस्तमजी ने जो बयान दिया था

वह कोई बिनोबाजी की धान के मुलाकिक नहीं था। कभी हम मानते नहीं इस बात को कि हमने उनको हीरो बनाया है। हमने उनको भाई बनाया, आदमी बनाया है। मंत्री पत्नी ने उनके मापे में तितक लगाया और हाथ में राखी बाँधी है और अगर यह देह खोलते में नुकसान न हो पाय हमारे कमिन्गर साहब का, बी० आई० जी० साहब का तो उनकी पत्नियों ने भी अकार राखी बाँधी है पगारा में। मानवता का काम हो रहा है। मानव-मानव को कैसे बनायेंगे? उसको कहते रहना कि तुम डाकु हो, तुम डाकु हो, डाकु हो!

अन्तिम बात मुझे यह बहनी है आपसे कि ठीक है, सेटीजी के लिए बहिष्ता और शक्ति का समन्वय, शान्ति और शक्ति का समन्वय, आप देखते हैं... मैं तो समझता हूँ कि गांधीजी के देश में, तो हमारे मुख्य मंत्री और प्रधानमंत्री उनको भी बहना चाहिए कि पुलिस का रवैया कुछ दूसरा भी हो सकता है, दूसरे प्रकार से भी जो दुनिया की पुलिस काम करती है, करती रही है उससे भिन्न प्रकार से भारत की पुलिस काम कर सकती है। जब दुनिया पहचो है कि भारत (टाइम मीगजीनवाले ने लिखा) हो एक देश है जहाँ इस प्रकार की घटना घट सकती है, तो गहाँ की पुलिस जो इन्तेश की पुलिस करती है, जो अमेरिका की पुलिस करती है उससे कुछ भिन्न नहीं कर सकती? ये भी कोई बहिष्ता का काम नहीं कर सकते हैं? ये भी लोगों का मानव-परिवर्तन नहीं कर सकते हैं? हृदय-परिवर्तन नहीं कर सकते हैं? आज शुभका साहब, माणू साहब एक डाकु को अपने सामने बँटाकर आदर से उसका सत्कार करते हैं—तुम भाई, तुमने यह काम किया है। अपना गुनाह मानो, अच जागे के लिए तुम्हारी जिम्मेगी ठीक रहेगी, यह जरूर उनकी बात मानेगा। हमारे आदर कौन-सी शक्ति है कि हमने मान लिया? तो पिछले जितने महीनों में हमारा काम चल रहा था उनमें मैं नहीं समझता हूँ कि शक्ति-प्रदर्शन कोई आवश्यक था, उसका उपयोग नहीं हुआ था।

बाज की छपा है। जागे जो आप करना चाहें करें, मैंने वह दिया है कि आपसे जब समय में मांगता नहीं हूँ। हम लोगों को जो करना होगा करेंगे। हमें चिन्ता इस बात की है कि जो कुछ मैं गहराई में बना कि इस समस्या, दस्यु-समस्या को जड़ें बहुत गहरी हैं, इतिहास में भी हैं, भूगोल में भी हैं, मनोविज्ञान में भी हैं, समाज की रचना में भी है और प्रशासन की रचना में भी है, राजनीति में भी हैं।

काम शुरू हो जाने के छः महीने बाद पहला बजान मैंने १० अप्रैल को दिया, जिसको पढ़कर प्रधानमन्त्रीजी ने कहा कि आपने तो इसमें आवश्यकता से अधिक नम्रता दिखायी है। आप तो वहाँ बैठे ही हुए थे। वही मेरा भाव है। मैंने कोई भाव इस भाव से सिखा ही नहीं। मैं मानता हूँ नहीं कि जादू हुआ, क्या हुआ, जादू करनेवाला वह होगा। हमने तो कोई जादू किया नहीं। हमने क्या किया ? हम जो नेहरूं में गये भी नहीं। तीन दिन वहाँ पगारा में बैठे थे। उन लोगों से मिले हम नच, यहाँ एक दिन १० तारीख को और फिर ११ तारीख को मौतों मिले। १० को सकरसिंह मिले, और ११ तारीख को बातीं ये पूरत सिंह और फिर ये मौतों महाराज, राम-सहाय और उनके संग के लोग मिले। मेरी जो इसकी ही शान्ति उनके साथ हुई।

तो चिन्ता। जागे हूँ भय है इस बात का जो १० अप्रैल के मयाग में कहा था हमने नहीं कि उस वक्त २०० फी बाट गुनी थी हमने कि लोग समरंग करके अप्रैल १४, १६ को। तो इतने बागियों के आत्म-समरंग कर देने से यह समस्या हल नहीं होगी या कुछ भी-कार थी और हो जाये; समरंग कर देने से हल नहीं होवे है यह समस्या। इस समस्या का हल करना कोई सर्वोपयुक्त का, अत्यन्त मात्तण का अकेले देने के बाहर की बात है, यह अस्पष्ट बात है। हमारी ऐसी शक्ति नहीं है। कुछ भी शक्ति हमारी नहीं

है। जो शक्ति है, वह बाह्यता की शक्ति है, प्रेम की शक्ति है हमारी क्या शक्ति है ? और उस शक्ति से दुनिया में कोई नहीं शक्ति नहीं है, मैं मानता हूँ—प्रेम की शक्ति से दुनिया में कोई शक्ति नहीं है। चाहे बड़े-से-बड़े हथियार बना लें ये लोग, बाहिर निरसन की और ब्रेजनेव को, अमेरिका को और रूस को मिलाकरके शक्ति करती पढ़ी। बाहिर उनके पास कम हथियार हैं ? उन हथियारों के भय से करना पड़ा। इन हथियारों से हमारी समस्या नहीं हल होगी, शक्ति नहीं स्थापित होगी। मनुष्य-याम शक्ति चाहता है, जोद-मात्र शक्ति चाहता है। हम समाज में इसी शक्ति कायम रख सकते हैं ? यह तो वहाँ जो आरके माउण्टआउट में पुलिस स्टून कायम है वहाँ सिखाना चाहिए आप लोगों को।

यह माधो का देश है, महाश्वर का देश है, बुद्ध का देश है। यह कोई साम्राज्य देश हमारा नहीं है। आज हम गिर गये हैं, ठीक है, बहुत पतित हो गये हैं हम, लेकिन फिर भी कुछ दूसरा ढग हमारा हो सकता है और होना चाहिए। हमारा दावा कभी नहीं रहा नया मैंने कहा, मैंने बराबर आपने को पीछे रखा, बराबर मैंने धन्यवाद दिया है सेठोनी को। भ्रि-भ्रि प्रशास्य और धन्यवाद। हर मभा से और हर संघ से, धन्य देना है, हृदयपूर्वक देना है। इनके सहयोग, इनके अधिकारियों के सहयोग के बगैर यह काम होना नहीं। इनके अधिकारियों के हथियार नहीं, इनका यह हेवीकाउटर नहीं, इनकी बायोमेटिक मशीनपन नहीं, उनका सहयोग मिला है। बार-बार दौड़कर सेठोनी जाये हैं, गर्मी के दिनों में कहीं-कहीं गये हैं, यह तो हम शुरू से करते हैं। यह हमारी मिली-जुली चीज है। हमको तो बीच में खीच साये हैं ये लोग, और मैं बिनकर भा गया। अन्ध काय, भला काय ना, ठीक है, अगर मैं निमित्त बना लिया गया किशो

कारण से तो भगवान जाते वह नाम सिद्ध हुआ; नहीं हुआ तो भगवान जाने क्यों नहीं हुआ ? हम मितकर इस नाम को करते रहे हैं। इतना मैं जरूर कहूँगा कि अधिकारियों का, चाहे वह आपके शक्ति हो, चाहे आपके वह शक्ति साहब आई० जी० पुलिस हों, विरोध आई० जी० पुलिस नागरी हो, टो० आई० जी० साहबान हों, कलेक्टर साहबान हों, एस० पी० साहबान हो, इन सबकी मदद नहीं होती, वो मैं मुख्यतः से कहता हूँ कि सफलता हम लोगों की नहीं होती। लेकिन सेठोनी को यह भी मान्य होना चाहिए कि इन्हीं के अन्दर ऐसे उत्सो को खोजना चाहिए, जिन लोगों ने काम बिगाड़े तो कोशिश को, और जागे भी काम बिगाड़ेंगे, क्योंकि निहित स्वार्थ है उनका स्वप्न में, इस प्रकार के स्वप्न में, अन्ध-से-अन्ध इन इलाकों की उपाई होनी चाहिए। १४ टा० को आपने जो कहा कि अफसरो का तबादला करेंगे, यानी एस० पी० और कलेक्टर के नीचे के जो लोग हैं, पुलिस के अधिकारी हैं, पटवारो हैं उनकी और अन्ध लोगों को भेजे तो और अन्ध होगा। यह अन्ध करना बर्हिष्ट। हथियार देनेवाले लोगों में पुलिस और फौज के लोग थे, इसी इलाके के लोग थे, इसकी सैदागोरी करनेवाले लोग हैं, वे लोग गांव में इनकी शकैतो का मान रखते थे (और जो इसकी व्यापार करते थे) वे लोग हैं जो हिरसे लेते हैं, जो डेके लेते हैं, वे सारे लोग निहित स्वार्थवाले लोग हैं। ये लोग देखते हैं कि बिबनेश हमारा खत्म हो गया, यह कहाँ से आ गया मानता। और इसरो वे फिर पैदा नरेंगे। इसलिए इसमें जल्दी होनी चाहिए। आप कह चुके हैं। बल जेज में जाता है। हमारे साथी कहते हैं कि जेज में जाना हमारे लिए सुनिश्च हो गया है। यही वे पूछते हैं कि भाई हमारे दुश्मनों को जो हथियार दिये थे, उनको लेते की बात थी तो निठाना नाम हुआ, क्या हुआ, कुछ हथियार लिये गये हैं, लेकिन

ये भीतर की

हमारी मिशन थी, लेकिन आज तक हम लोगों को भी ४००-५०० वी० साठव नै सूची नहीं दी है। जिन-जिन से हथियार लिये गये हैं, हम जाकर वह सक्ते, मोहरसिंह या और लोगों से, जो पूछें कि साठव इतने बगल ही गये हैं, काम हो रहा है। इसमें जानकी बदनन है, वे लोग सुधीम कोर्ट तक जा सकते हैं जिनको लास्टेज दिया गया है। तो सरकार की बात आज समझिये। यह तो नहीं है कि दे दिया और छीन लिया। समझा-बुझाकर उस काम को भी किया जा सकता है। समय लगेगा, लेकिन जो भी हो, इसमें उनकी आवश्यक हम कर सकेंगे। उनकी रक्षा का भार सरकार के ऊपर भी है, हम क्या कर सकते हैं उनकी रक्षा, लेकिन भगवान उनकी रक्षा करे, हुक्मूच करे। सेवा कर सकते हैं हम उनकी, उसे हम करेंगे।

वो मित्रो, कुछ दुरी दूर से मैंने आज बात कही है बावसे कि यहाँ का वो हायड ठीक हो जाय, लेकिन दुन्दुसखण्ड का मुझे भय है कि जो वातावरण वहाँ का है वह शुद्ध नहीं होता है जो काम बिगड़ सकता है। यहाँ का भी वातावरण बिगड़ सकता है, लेकिन बिगड़ नहीं है। यह हमारे सोभाय की बात है। जमी धामे का काम है। एयेंवातो का अजब हाल है। कोई पकड़कर ले जायेगा उनके पर से, एक लाख मंगिया तो एक लाख यह हाजिर कर देंगे। जब पहली बार माया यहाँ तो इतनी तारीफें सुनी, कोई चम्बरवाले आये, म्युनिशिपलिटिपाले आये, कोई वकील आये, कोई नै आये, कोई नै आये कि साहब बड़े राहत हो गयी। सबलोग मुल की नीद सो बकेगे। मुना कि रपमा दृष्टा कर रहे हैं कुछ लोग, नगरपालिका देनेवाली है, कुछ चम्बर और बाइस देनेवाला है-अभी तक एक शैला नहीं दिया किसी ने। अब यह काम चले तो वहाँ से चले, कोई जयप्रभाक के पास, विनोबा के पास जाऊँ का बगला है ? ३ तारीख को जाने के पहले एक शपील स्कूल में, बाधिर सबसे ज्यया

जिम्मेदारी तो आप पर है न ? अभी मान लीजिए ४००-५०० हो जाते हैं वे लोग, फरार लोग हैं उनकी सूची हो जाये तो, उनके ऊपर कोई वास्तविक जुर्म है, तो उन पर भी मुहरमा चले और नहीं तो छोड़ दिये जायें। पुतिश दंस से, हमको इसमें कुछ कहना नहीं है। अब इनके परिवार हुए, इनके द्वारा पीड़ित परिवार हैं, जिनको रूढ़ा है, भारा है, बाल किया है, उसमें बहुत बढ़ा-बढ़ाकर बात कही जाती है, लेकिन जो भी हो उसमें मैं नहीं जाना चाहता हूँ। अब इनकी देखरेख का, बच्चों के लिए पढाई का जिम्मा आपने लिया है और भी वे वंशे दंभे (सहवार) लेकिन जलवा का भी तो है। मान लीजिए कि हम सारे नामों पर पचास लाख रुपया खर्च करते हैं तो २५ लाख सरकार दे और २५ लाख जनता को देना चाहिए और उसका अधिग्रह देना चाहिए मालियर डिपोजन और दुन्दुसखण्ड क्रिपियन को और बाकी प्रदेश के लोगों के लिए और दूसरे प्रदेशों का भी कुछ

होना चाहिए। मद्रास के लोग मुझे पूछ रहे थे, हम लोग भी कुछ चन्दा देना चाहते हैं। हमने कहा, पहले वहाँ चन्दा तो होने दीजिये तब आप दीजियेगा। यह काम कंठे आगे बढ़ें। लोग भूखे हैं, गरीब है, कपड़ा नहीं है उनको। अब हम उनको कहाँ से खाना देंगे ? क्या उनको लेकर हम बर्मिन्गहम साहब के पास जायेंगे कि आप अपना दीजिये हमको, हम कपड़ा देंगे उनको, यह सरकार ही जिम्मेदार है, आप नहीं हैं ? अगर इस इलाके को जनता की ताभ हुआ है, राज्य मिली है आप लोगों को, तो आपकी भी जिम्मेदारी है कि नहीं ? आप सोइ-से लोग हैं यहाँ और ऐसे लोग होंगे जिनके पास कोई बहुत ज्यादा कमाई नहीं होगी, तथा मैं मध्यम वर्ग के लोग आये होंगे लेकिन आप बातें तो करें, आप भी सोइ-सोइ दें, दृष्टा करें तो बूँद-बूँद से सागर भर जाता है, ताताभ भर जाता है, तो (आप भी) कर सकते हैं इसे। आज यह मौका है।
मालियर : १ जून, '७२

हमारे नये प्रकाशन
मेरीघोष या धर्मघोष
 लेखक-पु० य० देशपाण्डे
 मराठी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री पु० य० देशपाण्डे का यह नवीनतम उपन्यास रामाद्र अण्णिक के अन्तर्गम जीवन का विश्लेषण करनेवाला और हिंसा पर अहिंसा की विजय की एक सशक्त रचना है। भावार्थ हठारी प्रसाद द्विवेदीजी ने लिखा है प्रस्तावना।
 हिन्दी अनुवाद लेखक की विदुषी सुधुनी सुधी निर्मला देशपाण्डे ने किया है।
 मूल्य रु० ५.००

धम्मपदं नव-संहिता
 सम्पादक-विनोबा
 भगवान बुद्ध की पाचन देश की विरव-प्रसिद्ध धंयधम्मय्यं का विनोबाजी ने नये रूप में संकलन किया था। उलमें तीन खण्ड तथा १८ अध्याय बनाकर अलग-अलग विषयों में विभाजित किया है। अब यह ग्रन्थ हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित किया गया है। बड़िया छपाई, पक्की जित्त।
 मूल्य रु० ४.००

सबे सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी-१

एक ऐतिहासिक प्रयोग

• डाकुरदास वंग

"मेरा ३० एकड़ का दान लिख तोजिए।" श्री देवदानम् ने आमसभा में ही घोषणा की। "कितनी जमीन है आपके पास?" कार्यकर्ता ने प्रश्न पूछा। "कुल साठ एकड़।" उत्तर मिला।

शुक्र की विगाह देवदानम् की ओर लगी हुई थी। दान सभी बाँटें मुक्त रहे थे।

"हम तो पाँच प्रतिशत मांगते हैं। आपको पचास प्रतिशत देने की प्रेरणा कैसे हुई?" कार्यकर्ता ने सोचा था यद्यपि शराब पीया हुआ होगा।

देवदानम् ने उत्तर दिया, "अपने धायण में आपने कहा कि बाबा विनोबा कहते हैं कि 'भूमि अपना एक बेटा मानकर अपनी भूमि का हिस्सा दीजिए। मैं भूमि-हीन के लिए भूमि की भीस नहीं माँगता, आपका बेटा बनकर हिस्सा माँगता हूँ। मुझे एक सड़का है। दूसरा बेटा मैंने विनोबा को माला और जाधी भूमि उपहार देने का संकल्प लिया। हमारे गाँव में बहुत लोग भूमिहीन हैं। आप उन्हें बेरी यह भूमि बाँट दीजिए।"

इस वचन के लिए मर मिटनेवाला किसान अपनी जाधी भूमि अपनी गुणों से, समझ-बुझकर दान में दे रहा था अपने से गरीब गाँव में रहनेवाले भूमिहीन भाइयों के लिए। नँसी उदात्त भावना और कँसा अनोखा त्याग! सारी मना स्तम्भ रह गयी घड़ी भर। और, फिर तो एन-सी-ए-एक दास्यों ने दान की बौछार कर दी।

आन्ध्र के महदुवनगर जिले में आद-नगर प्रखण्ड में ता० ४ से १२ जून तक पदयात्रा हुई। ता० १, २ और ३ जून तक कार्यकर्ताओं का तथा प्रखण्ड के प्रमुख नागरिकों का शिबिर हुआ श्री शारदाभारती देवार्थी की अध्यक्षता में, और ता० १३ जून को समारोह हुआ। आन्ध्र के भिन्न-भिन्न जिलों से करीब ४०-५५ नवजवान, नवसिधिया कार्यकर्ता आये थे।

आन्ध्र प्रदेश सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष श्री आर० के० राम तथा मंत्री श्री चारी एस पदयात्रा में पूरा समय थे। दूसरे प्रदेशों से सर्वथी संयुक्तिकर, मसपाल मिसल, अन्ध्रप्रदेशी देशपाण्डे, नन्दलाल बाबरा, तिवरतन आचार्य, सुभन बग तथा मै था। ता० १२ व १३ जून को श्री रा० क० पाटील भी उपस्थित थे। अन्य स्थानीय नरिण्ड साथी बीच-बीच में आते थे।

पदयात्रा की सफलता काफ़ी अंश में पूर्व तैयारी पर निर्भर करती है। अब तक का अनुभव इस विषय में अच्छा न रहने से इस बार पूर्व तैयारी पर विशेष ध्यान दिया गया था। महदुवनगर जिला सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष श्री सुरेशि चर्मा तथा मंत्री श्री परशुराम और श्री सुव्याराव इन तीनों ने इसके लिए नवीकर सर्वोदय सम्मेलन में आने का मोह खराब किया और भिड़ गये कटकर पूर्वतयारी करने में। पूर्वतयारी में स्थानीय लोगों का विशेष श्री रामदेव रेड्डी (ए०० ९५० सी०) और अध्यक्ष एपीचन्वर मुनिवासीटी) का बहुत अच्छा सहयोग मिला। ता० १७ मई से ही दान चारों ने पूर्वतयारी का काम जोर-शोर से शुरू कर दिया।

परिणामतः पूर्वतयारी में ही १०० में से करीब पचास गाँवों में आमसभाएँ की गयी और बिना धास प्रयत्न किये सबा ही एकड़ भूमि मिली एवं अनेक गाँवों में शायदान पत्र पर हस्ताक्षरों का प्रारम्भ हुआ।

आन्ध्र के अन्य जिलों से आये हुए ज्यादातर कार्यकर्ता बिलकुल नये थे। ना विचारों की पकड़ थी, ना काम का ज़ुहू अनुभव था। अब मन में डर था कि शायद नाम ठीक नहीं होगा। पर नव-जवान जब किसी काम को मत छे उठा लेते हैं तो वे क्या नहीं कर सकते! इन नवजवान साथियों ने जो दिन में जो नाम किया वह उल्लाहवर्षक रहा। नाम में आसानी हो अब पूरे प्रखण्ड को तीन विभागों में विभाजित किया गया और तीन समर्थ साथियों को एक-एक विभाग की जिम्मेदारी दी गयी। उनकी मदद के लिए हरेक को एक-एक जीप भी दी गयी। इन तीनों विभाग-प्रमुखों की मदद के लिए एक सम्पर्क टोली भी बनायी गयी। इस ब्यूहरचना के कारण हर रोज साधारणतः हर टोली के पास प्रमुख साथी मदद के लिए जा सके जिससे उनका मनोबल तथा उत्साह बढ़ा और नटाना-द्वारा चट से दूर होती गयी।

शाननगर की पदयात्राओं की दो



सोक पर यात्रा का एक दृश्य

विशेषतः धी—एक, लोकरूपदयागार ।
 दो, प्राप्ति-मुक्ति साधन में करता । अब
 तक हमारा बान्धोत्सव प्रमुखतः कार्यकर्ता-
 व्यापारित रहा । लोगों का सहयोग गीण
 रहा । इस बार पदयात्रा-टोली को सह-
 योग देकर अपने गाँव का काम पूरा कर-
 के लोग उस टोली को छोड़ने दूसरे गाँव
 जायें और उस गाँव के लोगों को धामदान
 करने की बड़े यानी लोकरूपदयागार निवर्त्त
 ऐसा प्रयत्न हुआ । और, सुधी की बात
 है कि इसमें काफी सफलता मिली ।
 लोकरूपदयागारों में सैनिकों भाई-बहन
 शामिल होते थे । एक गाँव से दूसरे गाँव
 तक भजन गाते हुए, गाने लगाते हुए, खोल
 पीटते हुए सुधी-सुधी जाते थे । इसमें
 क्या शामिल, क्या मजदूर, क्या दाता,
 क्या नाचता सब शामिल होते थे । बह
 रम्य दृश्य बाँधों के सामने से हटता ही
 नहीं । अपनी समस्याएँ सुनसाने के लिए एक
 और चलनेवाला मार-काट, घुन-सरायी
 का रास्ता, एक और जबरदस्ती से, कानून
 से छीनने का रास्ता और एक और यह
 मगत, पवित्र, उच्च भावनाओं से भरा,
 भक्तिपूर्ण तथा कर्तव्य को स्मरण कर
 देने की बात करनेवाला मार्ग—जमीन
 धामदान का अन्दर । एक में आतक और
 भाव छाया है तो दूसरे में बान्धव, जराह
 भरता है । किस रास्ते की आदमी
 अपनायेगा ?

इन लोकरूपदयागारों में प्राय
 पूँजना होगा । धामदान में पहला ही
 प्रयोग होने से उधमें कुछ बमिनी रहना
 स्वाभाविक था । इन लोकरूपदयागारों
 का सर्वम अच्छा अवर हुआ । ये ही
 लोकरूपदयागारें धाने चलकर सत्काराह
 का भी धामन, भावस्पर्शका पत्नी वो, बन
 सकती हैं । एक गाँव में जब लोकरूपदयागार
 आयी, तब उसके भीतर छिपी शक्ति
 का एहसास जमींदारों को शायद
 हुआ और इसीलिए एक प्रकार से
 उन्होंने सचछित अहङ्कार हलसे किया ।
 वे बहने लगे—“धामस्वरूप्य वो हमारे
 यहाँ चले ही रहा है । हमारे
 यहाँ ना कोई दुखी है ना कोई
 समदा । आप दूसरे गाँव पते

बाएँ ।” यह सुनकर कुछ गरीब लोग
 उभा में से उठकर चले गये और बहने
 लगे—“ब्या धायदा है इन लोगों के
 साथ बँटकर बात करने से ? गरीब
 और गरीब दोनों की बकालत येही
 करते हैं । हमें अदर ही नहीं देते हैं
 सोचने का ।” लोकरूपदयागार के कारण
 यह हिम्मत उनमें आयी ।

बैसे पदयात्रा के लिए यह बड़ा ही
 प्रतिकूल समय था क्योंकि खूब शारिदा
 थी । लेकिन लोगों में भक्तिभाव और
 उदारता होने से बाकी अच्छा काम हो
 सका । गाँव-गाँव में राजनीय दलबन्दिनी
 बहुत दिखाई दी । उसके कारण एक
 का सहकार लेने जाते तो दूसरा भाग
 जाता । काफी कोषियों के बाबजूद भी
 एक रुप काम काफी जागे बढ़ाने में
 उपासीन ही हो गया, नहीं तो और भी
 अच्छा काम बनता । इस दलबन्दी से
 गाँववाले तग आ गये हैं । अतः धाम-
 दान की सर्वसम्पत्ति की बात उन्हें एक-
 दम पसन्द आयी है ।

श्रीलिंग और टेनेन्डी ऐक्ट के कारण
 भी नहीं-नहीं कुछ बड़े जमींदार कुछ
 सरसता से दान दे देते थे । जो भूमि
 मिली उसमें करीब आधी ‘शेडेक्ट
 टेनेन्डी लैण्ड’ है । उनकाभाव में कई बड़े
 जमींदारों के पास हम पहुँच नहीं
 पाये अपनी और ज्यादा भूमि
 मिली होती । आप ४-६ दिव के बाद
 वाद्ये, में अपना रेकार्ड देकर फवाने
 गाँव की अपनी प्रुपी की प्रुपी भूमि
 (टेनेन्डी की) आपकी देता है । ज्यादातर
 बड़े जमींदार ऐसा ही बहनेवाले मिले ।

इस पदयात्रा की आँकड़ों में पत्र-
 निप्यति निम्न प्रकार है :

- (१) मिली हुई भूमि—१२०० एकड़
- (२) बँटी हुई भूमि—८३३ ”
- (३) धामदान — ६१ ”
- (४) धामसभार — ५९
- (५) लोकरूपदयागारें— ४६
- गाँवों में ४३२५ लोगों द्वारा
- (६) शान्ति केन्द्र— ७१
- (७) शान्ति संनिक— १७४
- (८) टोलियाँ — १६

- (९) कार्यवर्ती — ५०
- (१०) शाहिल्य-मित्रो— १०० ३०
- (११) दाता — १७३
- (१२) धायता — २१६

आत्म के मुख्यमत्री श्री पी० बी०
 नरसिंहराव तथा आबकारी विभाग के
 मंत्री और पुटने भूदान कार्यकर्ता
 भी महेश्वरनारायण ता० १३ केसरीहू के
 कार्यक्रम में उपस्थित थे । धामदान
 गाँवों के संकटों भाई-बहन तथा नयी
 मछित धामदानों के पराधिकारी, धाम-
 शान्तिसंनिक भी बड़ी तादात में
 आये थे । मुख्यमत्री ने कहा—“मैं तो
 पुटना भूदान कार्यकर्ता हूँ । कितना
 ने यह भूदान का बहुत अच्छा काम
 शुरू किया है । आप हिम्मत से आये
 बकिये । अपना आपके साथ है ।
 जमींदारों को उन्होंने सलाह दी कि अपने
 लिए श्रीलिंग के बाजु से कितनी रख
 सकते हैं उतनी ही भूमि रखकर बाकी
 बची हुई भूमि बन्द-से-बन्द आप
 भूदान में दे दीजिए । इससे गरीबों का
 प्रेम आपकी मिलेगा और दान देने का
 पुण्य भी सगेगा । नहीं, तो कानून से
 हम आपकी भूमि छीनने ही चले हैं ।
 फिर क्यों नहीं आप अपनी इच्छा से
 देकर दित जोड़ने का और भाईबाप
 बढ़ाने का पवित्र कार्य करते हैं ?” आबकारी
 मत्री श्री महेश्वरनारायण ने भी कहा—
 “धामदात राज जिस उद्देश्य से वाजु
 किया था वह उद्देश्य सफल न
 होने से वह बन्द किया जा रहा है ।
 उसके बाद विवाय आपकी धामदानों
 के हमारे पास दूसरी कोई ऐन्डी नहीं
 है जिससे कि सत्कार देहता से सम्पर्क
 कर सके । अतः धामस्वराम्य का नाम
 धाम बागे बढ़ाएँ, सरसर आपकी
 पूरा सहयोग देगी । आपको जागे बढ़ने
 के लिए यह एकदम योग्य समय और
 अवसर है ।

शुरू से ही स्थानीय लोगों का बापह
 था और हम सब स्थानी भी मद्दुमूष
 करते थे कि जो काम हुआ है वह जाने
 बढ़वा रहे, छिपित न हो । अतः एक

है। विधानों के यहाँ मुख्यतः होनी, और देश के कृषि उत्पादन पर प्रभाव पड़ेगा।

संबन्धी विधान मुख्यतः वे गाम तक व्यापन में पूछ-ताछ करने जाते हैं। इसके समन्वयन के लिए बन्धनशील सेवायन के अन्तर्गत श्री हरिवन्धन परीक्ष बन्धन श्रेणी तो स्वयं श्री आदरकर, बैंक के कम्पोजिशन से सुनाकरती की। गुजरात के उन क्षेत्रीय मैनेजर श्री छोटे भाई पटेल भी उपस्थित थे। बातचीत के बाद बैंक ने २२ लाख के बढाये १७ लाख रुपये देने की अनुमति दी। १२ लाख रुपये भंड सरोवरे के लिए और पाँच लाख रुपये अनाज के लिए। भंड सरोवरे के लिए सॉलिकिटेड प्राय करवा सम्भव नहीं है। इसलिए बैंक ने हेल्थ सॉलिकिटेड फौरन देने पर बायह नही किया। बात यह तब पायी कि आश्रम और बैंक की सहमति से जानकरी के लिए एक बान्दर भी नियुक्त किया जान। बैंक के बढाये से यह भी तब किया गया कि भंड के लिए कर्ज की मुदा से १० प्रतिशत 'रिस्क' कण्ट काट लिया जाय। बैंकि भंडों का बीमा नही हो सकता इसलिए यह बीमा का विधान होगा। श्री हरिवन्धन भाई परीक्ष भी इससे सहमत हुए। यह भी तब गया कि ४ लोगों की एक समिति बने, जो भंडों का मुआयना करे। इस समिति से दो प्रतिनिधि विधानों के हो, एक बंध का पराधिकारी और एक आश्रम का वायंरता हो। इस बातचीत का अन्तिम सल्लिषदा भी तैयार कर दिया गया। श्री हरिवन्धन परीक्ष इस विषय के साथ लोटे थे कि बैंक स्वीकार की हुई योजना की क्षेत्रीय कार्यालय में फौरन भेज देना। १२ ता० तक कोई मुचना न मिलने पर उही दिन बैंक के बन्धनशिल के पास गए भेजा गया। १२ ता० की बंधन के फिर वही मुचना उपर भेजा।

बस्तीविधान ने इन योजना को अपने अन्तर्गत सल्लिषदा से सहाय देने के बाद

स्वीकार किया था। अन्तिम क्षण में इस विषयसम्बन्धित ने एक पम्भीर परिस्थिति पैदा कर दी है। १४ जून को एक परिस्थिति पर मोर करने के लिए बनवासी सेवा समाय और क्षेत्रीय प्रदेश शासनकारण सर्वोदय मण्डल की एक सभा श्री हरिवन्धन परीक्ष की अध्यक्षता में हुई। सदस्यों ने आदिवासीयों की पेशवाणी व्यक्त की। कुछ लोगों ने तो बैंक के कर्ज को उम्मीद पर भंसे भी छोड़ दी थीं। कुछ लोगों ने यह बताया कि रुपये मिलने पर ही खार और बीर छोड़ पायेगे। वहाँ होने के बाद लोगों की परेशानियाँ बढ़ जायेंगी। ये सारी बातें सुनकर श्री हरिवन्धन परीक्ष ने बैंक से दूर पताचार और बन्धन में हुई बात की उपकील बताया। बस्ती समिती ने निम्नलिखित प्रस्ताव पास किये :

१—साढ़े बारह हजार एकड़ खेत में समय से बीज बीजा और जोलना सम्भव नहीं होगा इसलिए सरकार को उन पर्याप्तपरिधो के बिना कर्म उठाना चाहिए—नयी मर्तें बनाकर।

२—बैंक के कार्यालयों का यह पक्ष अक्षयनीय है। यह फँसना किया गया कि समय और प्रश्न में ऐसे लोगों के बिना एक कार्यालयी भी प्राय जो सरकारी नीति का उत्पन्न कर रहे हैं।

३—बीजना को बाधे बढ़ने के लिए और जारी रखने के लिए सरकार पौरन हस्तगत करे। एक दिन देर होने से भी संबन्धी परिवार का नया मुनसान होगा और बैंक की कर्जमुत्पत्ति पर भी उत्पन्न बंधन पड़ेगा।

४—यह समिति आन्तक निवेदन आश्रम के कार्यालयों को इस बात पर मुनारतबाह देती है कि इन लोगों ने बड़ी लगन और मेहनत से पिछले ४ महीनों में १७ छी अजियाँ तैयार की। अर्थात् वे लोगों के रहने और खाने का इन्तजाम आश्रम में किया है, और इसके लिए आश्रम कुछ मुनाबना नहीं लेता।

५—समिति की भी हरिवन्धन भाई

परीक्ष के द्वारा किये जायेवाले आभरण व्यवधान को सुनकर दुःख हुआ। उन्हें ऐसा बैंक के विषयसम्बन्धित के कारण करना पड़ रहा है।

६—यह समिति सरकार के राष्ट्रीयकरण की नीति का समर्थन करती है। और इसलिए वह कोई भी ऐसा कदम नहीं उठायेगी जो सरकार की नीति के रास्ते में आ जाय।

७—समिति ने यह तय किया कि श्री सुभाई अंबानी और एनतकुमार मेहता से २० जून के पहले सम्पर्क किया जाय। उसने यह भी फैसला किया कि रिजर्व बैंक काँव दृष्टिवा के सम्भर और भारत के वित्तमन्त्री के पास एक प्रतिनिधि मण्डल जाय ताकि वे इसमें कुछ मदद दे सकें।

८—उसके कर्ज देने का यह तरीका पिछले दो साल से इस क्षेत्र में लागू है। गुजरात और देश में यह बात जानी जाती है। इसकी काफी प्रशंसा भी हुई है। इसमें २० प्रतिशत न्यूती हुई है। बैंक ने अपने प्रधान कार्यालय को इसकी मुचना दे दी है। बैंक की रिपोर्ट में भी यह बात छपी है। इसलिए २९ ता० को १ लाख १७ हजार अर्थात् बँट जाने के बाद रिफित में नया परिवर्तन आया पता नहीं। घोष-विचार के बाद समिति को भी सम्भावनाएँ नजर आनी :

क—भंड के बेचनेवालों से भंड सरोवरे को क्षीयत चेरु के रूप में अदा करती होगी। चेरु से पैसे अदा करने की मुदा में किमान के पास कोई विकल्प नहीं होगा। बिना क्षीयत पर भी भंड मिलने उन्हें छोड़नी ही होगी है। इस तरह से केवल भंड के लोकार्थ का फायदा होता है। इसलिए यह भी सम्भव है कि बैंक के पर्याप्तपरिधो से लोकार्थो ने हाथ मिला लिया है।

ख—यह सम्भव है कि बैंक योजना बैंक के कार्यालयों के विहित स्थान में कोई फायदा नहीं मुना रही है इसलिए वे नहीं चाहते हैं कि यह उलट हो।

९—यह तय किया जाय है कि (देव पृष्ठ १०० पर)

की है, बाप इस दया के दरम्यान दोनों सम्प्रदायों की मनोभावना का कुछ चित्रण करेंगे ?

उत्तर—आप पहले हिन्दू मानस को देखिए। इस दंगे में अल्पमंडवको द्वारा वो हिन्दू सभ्यियों को भगा ले जाने की अकवाहि तथा बसवार से प्रकाशित एक घटी मुसलमान की गोबी से मरे हुए एक हिन्दू बालक के चित्र ने हिन्दू मानस की काफी उर्तर्जित कर दि। और सदियों से दबा हुआ मुसलमानों के प्रति अविश्वासपूर्ण भय उभरकर सामने आ गया। बाबला देव के मुक्ति-मार्ग में भारतीय मुसलमानों के दख से हिन्दू पहिले से नाराज थे और इस दंगे में कुछ बदमाशों द्वारा पविस्ताल जिन्दानाद के बारे सपाये गये तथा जिलाधीश द्वारा आग्नेय मन्त्रों को जमा करने के आदेश पर मुसलमानों की तरफ से एक भी बन्दूक जमा नहीं की गयी जिससे हिन्दू मानस की नाराजगी और बढ़ गयी। बहुसंख्यकों द्वारा की गयी आगजनी और लूट-याद में निम्न-स्तरीय पुलिस अधिचारियों का भी हिन्दू मानस उन्नी उदासीनता और तुरन्त वारंवारई न करने की प्रक्रिया में स्पष्ट दिखाई दे रहा था। जहाँ तक मुसलमानों के मानस का प्रश्न है, एक मुसलमान के घर में छत पर हमें दोकरी में रखी हुई इंटें मिली। यह तही कड़ा जा सकता कि वे इंटें उलने आक्रमण के लिए रखी थी या सुरक्षा के लिए। बदनापुर में कुछ मुसलमानों ने पुलिसवालों को दगादपों के ऊपर सोनी चलाने के लिए धनकरा भी था और अपने घरों में दगादपों को पनाह भी नहीं दी थी, लेकिन जब पी० ए० सी० के सामने उन्होंने हिन्दुओं द्वारा अपनी इमारतें लूटती हुईं देखीं तो उन्हें दगादपों से उन्हें मदद मागनी पड़ी।

शे-वीन रात एक रात में 'अल्फा हो अखबर' और 'हर हर महादेव' के

नारे जगह-जगह सुनाई पड़े। हिन्दू-मुसलमान एक-दूसरे से इतने भयभीत थे कि बजरजीहा में शान्ति समिति के गठन हेतु इकट्ठा हुए लोगों को एक समुदाय ने उधे दंगे की तैयारी समझा और उनके द्वारा दी गयी सूचना के आधार पर पुलिस की एक टुकड़ी को निरर्थक दौड़ना पडा। देवनापपुर में भी एक मृत बूद्धा की लाश फूँकने की तैयारी को दूसरे समुदाय के लोगों ने आक्रमण की तैयारी समझकर पुलिस को सबर कर दी और पी० ए० सी० की अनावश्यक रे-मान होता पड़ा। वही-वही दो रात में पी० ए० सी० को परेकान करने के लिए ही गणत सूचनाएँ देकर दौड़ाया गया।

एक बात मैं आपको और बताना चाहता हूँ। बनारस कबीर का गहर है और कबीर के गहर में जब हमने बने और टूटे हुए करवे देखे, तो लगा कि कबीर का गहर सबकुच बदनाम हो गया। तबाबुपुर्ण क्षेत्रों में बिल बलियों में पी० ए० सी० जाने में मय छावों को, बहाँ जाकर शान्ति समितियों ने निर्भयता-पूर्वक मुस्लिम-परिवारों से मुनाफाव की। शान्ति-समितियों की भूमिका तो कबीर की भूमिका की कबिरा लड़ा बजार में दोनों एक की वरी। ना काहू से दोस्ती, ना काहू से बैर ॥ इस भूमिका में काम करने के नाते कुछ हिन्दू भाई हमसे नाचाय भी रहे; कुछ हिन्दू मित्रों को हमारी जान की भी चिता रही लेकिन हमें वही भी कुछ खतरा मुसलमानों के मुसल्लों में अपनी जान के लिए नहीं दिखाई पड़ा। कुछ मुसलमानों ने यह भी बताया कि उनके घर के लूट-याद में उनके पक्षीय हिन्दुओं का नहीं, बल्कि दूर से आये हुए लोगों का हाथ था। विन-विन के घर लूटे या जलाये गये थे वे आना कुछ शांति समितियों को सुनाकर मन हनरा करना चाहते थे, वह भी इसलिए नहीं कि हम सरकार से कहकर उन्हें कुछ दिलवाये बल्कि मात्र इसलिए कि हमारी निष्पक्षता और मानवता के प्रति प्रेम का उन्हें भाषाव हो गया था।

बाराणसी में एक ओर जहाँ हिन्दू-मुस्लिम मानस में तनाव चल रहा था वही दूसरी ओर औद्योगिक और व्यापारिक दृष्टि से उठे हिन्दू-मुसलमान फोन पर एक दूसरे का कुशल-खेय भी पूछ रहे थे। एक मुस्लिम परिवार जब पर छोड़कर भाग रहा था तो उसके छुटे हुए एक किगोर बालक को एक हिन्दू महिला ने तीन दिन तक अपने घर में छिपाकर रखा। और जब मैं रामपुर में अपने मित्र श्री जमील अहमद से मिलने गया तो वे बुहार से पीड़ित थे और काजी विश्वनाथलव के एक हिन्दू लेखकर को उन्नी येवा करते हुए भी देखा। बाराणसी के एक मुहल्ले में प्रसिद्धि हिन्दू-मुसलमानों ने शान्ति बनाये रखने के लिए प्रयासन की शिथिल आवासन दिया और किसी भी प्रकार के उपद्रव हों जाने पर स्वयं को गिरफ्तार कराने की उन्हीने आना तैयारी बतायी। प्रह्लादपाद में उग्रव की आकाका से क्षेत्रीय शान्ति समिति के २०-२५ सदस्य रातभर पहरा देते हुए दिखाई पड़े।

प्रश्न अभी आपने अपने कार्ड की क्या योजना बनायी है ?

उत्तर अभी हम दगा-पीड़ित शोनों का सर्वे कर रहे हैं। इस कार्य में मुख्य रूप से सर्वधी भगवान भाई, उष्ण कुमार, सत्यनारायण भाई, गोरागौराव बनर्जी और प्रो० रामेश्वराम तर्मा काफी सक्रिय हैं। इसके साथ ही हम लोग पर छोड़कर बने गये लोगों को अपने घरों में बापख लाने, मुहल्ले-मुहल्ले जाकर शोनों वगैरे के लोगों को एक जगह बँडोकर साम्प्रदायिक सम्मान कायम करने का काम कर रहे हैं। राहत का काम बढ़ा है लेकिन बापिक अभाव में हम एक कार्यक्रम को अभी नहीं उठा पाये हैं। वैसे राहत का कार्य तीव्र हो सके इसके लिए हम सरकार और नगर के घनी-मानों लोगों से सम्पर्क कर रहे हैं।

—सोनबन्धु

२२-६-७१
बाराणसी

आन्दोलन के समाचार

रीवाँ सर्वोदय मण्डल की बैठक

रीवाँ १५ जून। जिला सर्वोदय मण्डल की बैठक श्री बृन्गज सिंह खिचारी की अध्यक्षता में स्थानीय गांधी आन्ति केन्द्र में पूर्वाह्न हुई। बैठक में प्रदेश सर्वोदय मण्डल के मंत्री श्री इन्द्रपाल मिश्र उपस्थित थे। बैठक में सर्वसम्मति से श्री जग-मोहनलाल निगम से जिला सर्वोदय मण्डल का अध्यक्ष तथा गिरीश भाई श्री मंत्री निर्वाचित किया गया, साथ ही डा० मंगल प्रसाद को गांधी स्वाध्याय मण्डल (आन्ति केन्द्र) का सर्वोत्तरक मनोवीत किया गया। श्री रोहिणी प्रसाद बिपाठी को बिला रामदास रामस्वरज्य समिति का सग-ठक नियुक्त किया गया।

बैठक में सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पारित कर प्रदेश में सराल की दूकानों को बढ़ाते की घोषणा पर हादिक दुःख व्यक्त किया गया और मानवीय मुख्यमंत्री से यह प्रार्थना की गयी कि वे प्रदेश को "शाल-मुक्त" बनाने का प्रयत्न करें।

बैठक में रामस्वरज्य की स्थापना के

(पृष्ठ ६०६ का टोप)

आखिरी हृषियार के तौर पर बैंक के कस्टोडियन के पास एक पत्र भेजा जाय जिसमें उसको परिस्थिति समझाया जाय।

१०—समिति ने यह फैसला किया है कि इन बातों से निपटने के लिए एक कार्य उप-समितियाँ बनायी जाय। परिणाम के बारे में बहुत सोच-विचार करने के बाद यह फैसला किया गया है।

मंत्री,
जानन्द निरेतन आथम

लिए जिला के १९२ ग्रामदानी गाँवों से सम्पर्क करने और वहाँ प्रारम्भिक रूप से सर्वोदय मित्र बनाकर स्वावलम्बन समितियाँ कायम करने तथा सर्वोदय-प्राप्तिय एव पत्र पहुँचाने व एवता, प्रेम, भाई-चाय हेतु प्रयत्न करने के सम्बन्ध में उद्घोषणा गया।

शराबबन्दी सत्याग्रह समिति द्वारा आन्दोलन तेज करने व निश्चय

ज पुर २० जून। राशरगल शराब-बन्दी सत्याग्रह समिति ने यहाँ दो विचलित बैठक के अन्तिम दिन प्रदेश में शराबबन्दी आन्दोलन को तेजी और अधिक उत्साह से चलाने का निश्चय किया है। मध्य-निदेश के लिए लोक-समितियाँ जागरण तथा सरकार को पोषित नीति के विपरीत चलनेवाली अवैध शराब की दूकानों को हटाने हेतु आन्दोलन सगठित करने का उद्योग हुआ है। समिति ने बीकानेर तथा फतेही में शराब के गोदाम आदि पर जागे रिडेन्टिंग के अवरोधक कार्यक्रम का समर्पण किया है। बैठक की अध्यक्षता श्री मोकुलभाई मट्ट ने की।

सर्व सेवा संघ के सहमंत्री

सर्व सेवा संघ के व्यापक काम की एक टोल की विचारलता को देखते हुए तथा संघ के कार्य-सञ्चालन के लिए समर्थक शक्तियों के सहयोग की आवश्यकता थी। इसे ध्यान में रखते हुए श्री नरेन्द्र पुजे एव श्री यश-पाल मिश्रन को संघ के सहमंत्री तथा श्री उत्पल (श्री गुप्ताचार्य) को संघ का कार्यनिदेशक नियुक्त किया गया है। प्रथम समिति के एक तिहाई स्थापन पर उत्तर प्रदेश सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष स्वामी इण्डानन्दजी को संघ की प्रथम समिति का सदस्य मनोनीत किया गया है।

पत्र-व्यवहार का पता :
सर्व सेवा संघ, पत्रिका-विभाग
राजघ.ट, वाराणसी-१
पता, सर्वसेवा फोन : ६५३९१

सम्पादक राम मूर्ति

इस अंक में

- वकीर का सहर सचमुच बदनाम हो गया —दीनबन्धु ५९५
- भाषुनिक जीवन्त की शोहरति का उत्तम गणनादान —विनोबा ५९६
- 'यह ईश्वर की सीला है' —श्री अय्यप्राज्ञ नारायण ५९८
- एक ऐतिहासिक प्रयोग —श्री० ठापुरदास बग ६०३
- आदिवासी किसानों की समस्या हृषियलाल परीत का अन्वयन ६०५
- अन्य स्तम्भ
- आन्दोलन के समाचार

सर्वोदय

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

भारत-यह

सर्वोदय के माध्यम से समाज के प्रगतिशील विचारों का प्रसारण करना - समाज के

विभिन्नता में एकरूपता लायें

एक मुसलमान है और वह भला है। अब वह भला है तो भला ही है। मुसलमान है, यह हम क्यों याद रखें ? इसी तरह एक हिन्दू भला है तो उसे भला ही समझें। हिन्दू क्यों समझें ? हिन्दू का अर्थ है कि वह किस तरह पर-मेस्वर की प्रार्थना करता है और मुसलमान है तो किस तरह करता है ? पर-मेस्वर व्यापक है, अनन्तरूप है तो उसकी प्रार्थना भी अलग-अलग प्रकार से हो सकती है। उसमें सोचने की बात ही क्या ? ठीक है, जिसे जिस प्रकार प्रार्थना, उपासना करनी हो, करे। उस चीज को हम कोई सामाजिक मूल्या नहीं देते। यही हमारे सर्वोदय की विचार-पद्धति है। हम मानते हैं कि जय तक एक-एक जाति के ही हित का विचार करेंगे, वय तक किसी जाति का भला नहीं होगा और न समाज का ही।

हमें दूसरों के सुख-दुःख का विचार करना चाहिए, अपने सुख-दुःख का नहीं। इसी तरह जातियों के बारे में सोचना हो, तो दूसरी जाति के सुख-दुःख का विचार करना चाहिए। एक देश को दूसरे देश की भलाई का विचार करना चाहिए। अभी तो यह सारा बिलकुल अभावहारिक-ता मालूम देगा, देखते-देखते व्यावहारिक हो जायेगा। कारण, आज विज्ञान तेजी से बढ़ रहा है। वह सबको इतना नज़दीक ला रहा है कि एक दूसरे के बारे में सोचने की आदत पड़ रही है। उसके बिना हम टिक ही न पायेंगे। राष्ट्रीय पैमाने पर भी इसी ढंग से सोचना पड़ेगा। गांधीजी यही कहते थे, 'सारे जिव की चिन्ता करने के लिए ही हमें आजादी चाहिए। स्वातंत्र्य एक ऐसी मूलभूत वस्तु है कि वह न हो तो हम दुनिया की क्या सेवा कर सकेंगे ?'

दोष किसका है ?

● सत्यद्वय दुस्वप्ना कयाल

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय विधेयक ने भारत में मुस्लिम समाज में क्रमशः पैदा कर दिया है। सामान्य मुख्यमाल प्रवेशक और भ्रमणीत है। उसका नेतृत्व करनेवाले उन्हें हिस्ट्री का शिक्षार बना रहे हैं। वे उन्हे एक समस्या (एयू) बनाकर अपनी 'लौकरी' पदकाने के चक्रर में हैं। यद्यपि देश और मुस्लिम समुदाय को दूसरी समस्याको का न उन्हे कोई जन्माजा है और न उनको हल करने के लिए उनके पास कोई कार्यक्रम है, दृष्टिकोण है, नही धर्म में उन समस्याको को हल करने के लिए पहल करने को हिम्मत या योग्यता है।

दोष की कौन ? सर सत्यद्वय के बाद मुख्यमाली के यहाँ कोई रचनात्मक सुधारक हुआ ही नहीं। हिन्दुत्वानी मुख्यमालो का इतिहास यह बताता है कि वे बन्द समाल बनाने के चक्रर में रहे। उन्हे हमेशा यह चिन्ता रही कि वे डेट को हमारी एक अलग गरिब हो। पिछले दो ही साल में मुख्यमालो के बीच कोई बड़ा वैज्ञानिक, दर्शनिक, विचारक, इंडीपेंडेंट, इतिहासकार पैदा नहीं हुना। 'नाबेल प्राइज' कोई बड़ी जीज नहीं है लेकिन साहित्य, शान्ति और विज्ञान के तमाम खेती में 'नाबेल प्राइज' लेनेवालो की तुली देख जाने पर एक भी मुख्यमाल का नाम नहीं मिलता जब कि प्रती हिन्दुस्तान में सुलामी की हलचल में भी सादर्य और सहृदिय में यह नाम आया। और यूरोप के छोटे-छोटे मुक में भी नाबेल पुरस्कार पानेवाले कप-के-कप एक बर्तन भील दो लिफ्त हो जायेंगे।

आधुनिक विज्ञान, टेक्नालोजी, दर्शन और विचार से अपरिचित होने के कारण, और आधुनिक ऐतिहासिक तथित्तो की कोई जानकारी न होने से मुख्यमालो को हलचल बड़ी ही अजीब हो गयी है।

उनमें राजनीतिक एगस-नूना भी कमी है— और वे यह नहीं समझ पाते कि उनका भला किसमें है और उन्हे अपने जायज उद्देश्यों के लिए किस तरह कोशिल करनी चाहिए।

१. अलीगढ़ विश्वविद्यालय विधेयक के अध्यक्षन से पता लगता है कि उसका स्थानीय चरित्र कायम रहेगा।

२. विश्वविद्यालय की विभाजने और भस्त्रिदें को-वी-यो रहेंगी।

३. इस्लामी दर्शन, विचार, कानून और इस्लाम धर्म को शिक्षा दी जाती रहेगी।

४. मुख्यमालो की सस्था-अध्यापको या विद्यापिणों-में कमी करने की कोई नीतिज नहीं की जायगी।

५. परिणामस्वरूप शूद्रव्यथ कोशिल, एकैधमिक कोशिल और एक-वी-स्यूटिव कोशिल में बरतत मुख्यमालो का ही रहेगा।

६.—विश्वविद्यालय की व्यवस्था और प्रशासन में लोकतन्त्रात्मक पद्धति अपनायी जायगी अर्थात् पहले की राजनीति पर मुख्यमालो वा कन्ट्रोल को-मान-स्यो रहेगा।

७—अलीगढ़ का घोभाय है कि यहाँ विद्यार्थी कोशिल होगी और उसकी राय एकैधमिक कोशिल और एन-से-स्यूटिव कोशिल के फैसलो को प्रभावित करेगी।

अलीगढ़ के विद्यापिणो की चिरन-विद्यालय की व्यवस्था और प्रशासन में प्रतिनिधित्व मिश्र है, यह बड़ा बात है। पेंसिल से सम्बन्धितको, म्युचरल से टैकिंगो, नॉशन से म्युलेश अग्रत और रोम से रिप्रेजेंटेटिवो तक हर स्थान पर विद्यार्थियो वा ब्रान्दोवल पर रहा है कि विश्वविद्यालय के प्रशासन और व्यवस्था में उन्हे प्रतिनिधित्व दिया जाय ताकि वे शिक्षा के पद्धति को

एक नयी दिशा दे सकें। यूरोप और अमेरिका के विश्वविद्यालयो के विद्यापिणो के ब्रान्दोवल के उद्देश्य रहे:

१.—शिक्षा की व्यवस्था में विद्यापिणो को बराबर का प्रतिनिधित्व मिले,

२.—विश्वविद्यालय के प्रशासन में उनको राय दी जाय और विश्वविद्यालय के परमविचारो उस राय के पालन हो और

३—उन्हे विश्वविद्यालय के रैमस के अन्दर नही गुविद्याएँ दी जायें जो समय में दूसरो को हासिल है।

साखोल, जलन, बर्तने और बनारस विश्वविद्यालय के विद्यार्थी ऐसी शिक्षा से मन्सुख नहीं हैं जो सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन की वास्तविकताओं और आवश्यकताओं से अलग हो। वे ऐसी शिक्षा चाहते हैं जो समाजी उत्तरदायित्व को विभाजने और सांस्कृतिक उत्पत्ति में ठोस मदद दे सके। वे नये विचार, मूल्य और रूढ़न-रूढ़न, पढाई और नीकरी के नये तरीको की खोज में हैं।

कोनसेण्ट्रष, साहित्य जली, एड्युकोलन के नेतृत्व में बहुतेवाते अधोरोवन यह मानते हैं कि समाज रोमी और वे विश्वविद्यालय इस रोमी समाज के प्रतिनिधन है। थ्रुकि फ्रॉडि पर से मुफ होती है इसलिए उन्होके दन विश्वविद्यालयो की कोशिल वा केन्द्र बना दिया है ताकि समाज के रोम पर पहली थोट यही की जाय।

एतद्वे कि विधेयक के अन्तर्गत विश्वविद्यालय के विद्यापिणो की समाज के रोम को दूर करने में मदद मिलेगी— समाज के वे मूच जिन्हे सत्कार के दूधरे विद्यार्थी अन्वीकार न कर सके हैं अलीगढ़ के उद्देश्ये आग्र चाहते हैं उनका नेतृत्व कर सकते हैं और विद्यार्थी ब्रान्दोवल को एक दिशा दे सकते हैं।

एतद्वेक ना विरोध करके मुख्यमालो और अलीगढ़ के विद्यापिणो की पारी के दिशा और मुक ल होगा। अलीगढ़ को अग्रतस्वरूप संस्था बनानो पर और देने का लक्ष्य होगा कि दन आधुनिक और पर दूधरे विश्वविद्यालयो में शिक्षा

शोध करने के अधिकार से स्वयं वंचित होना चाहते हैं। यह मांग कुछ ऐसी ही मांग है जैसी पाकिस्तान की मांग थी। आज बहुत जगह मुसलमानों को यह कहा जाता है कि तुमने अपना 'होम लैंड' मांगा था जो मिल गया, अब यहाँ क्या कर रहे हो पाकिस्तान बनाओ। इसी तरह अगर जनीसद विश्व-विद्यालय विवेक में फिर से सशोधन करने इसे बलपूर्वक अपना मान लिया या तो फिर मुसलमान विद्यार्थियों को हिन्दुस्तान के दूसरे विश्वविद्यालयों में यह उससे मिन स्फुटा है कि बलीगद जाइये, बाबाबा विद्यालय यदी है।

मुस्लिम नेतृत्व के भोलेपन पर बड़ा साम्य होना है और इस बात का बहुत बरफ़ोस होता है कि इसे आज की परिस्थितियों का कोई भी अन्दाजा नहीं है। पिछले पश्चिम खाल की घटनाएँ उसे सदादि न दे सको, और उसने उनसे कोई सबक नहीं सीखा।

जनीसद ऐक्ट के विरोध में योमे-स्पाह (बाबा विवम) बनाया गया। योमेस्पाह से क्या मिला? साम्प्रदायिक दूरे-दूरीवादा, बाराणसी के दूरे। इन दूरे में मुसलमानों को जानी और मानी की अधिक शक्ति हुई। गिरफ्तार भी वही बनाया हुए। उन्हें वही से भी नैतिक सम्पन्न तक नहीं मिला। वे साम्प्रदायिक और जगदी बहलामे। मेकनल ग्रंथ ने उनके विप्लव सक्त सम्पदारीय लिला। रिशो ने इस विरोध को 'डेन्वर मिस्त्री' कहा, विरोध में 'डेन्वर गेम'।

यह धन देखते हुए हमें कुछ दूरी बलपूर्वक बाबासिना धार वाली है, यह बलपूर्वक आरती जो हनरते ईसा को काँसत थी, यह जो पूरे यूरोप और अमेरिका में बरनाम थी। पिछले घुमा म्परा करने के लिए अरबी दुआ ने सामनाक जेसा बरिद तिथा। साम्प्रदायिक को पूरिने के बरिद का सम्भन है।

नेतिन वीर ने उसे हनरते ईसा का पूरि मात्र कर दिया। जम्नी के पावल

गानेसाह हिन्दु ने उनके साथ जो ग्वाद-तियाँ की थी उसने एवज के तौर पर पश्चिमी सभार के लोगों ने उन्हें एक देव दे दिया जो इब्राहम के नाम से जाना जाता है। परन्तु यह सब हुआ क्यों? इसलिए कि (१) यूरोप और अमेरिका में यहूदियों का योगदान स्वयं यूरोप और अमेरिकावालों से अधिक है। (२) यूरोप और अमेरिका की सभी सामाजिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक, साहित्यिक और टेकनीकी आन्दोलनों का नेतृत्व यहूदियों ने किया और बनने वाबादी को तुलना में वे इन आन्दोलनों में अधिक थे। (३) यूरोप और अमेरिका के बड़े-बड़े कलाकार, कवि, मशीनकार, वैज्ञानिक, स्टेज निर्देशक यहूदी हैं। और, आधुनिक विचार के जननीता मार्क्स, फ्रायड, स्पिनोसा, यहूदी थे। प्रसिद्ध जीवन लेखक आइजक डिस्कर और वैज्ञानिक आइन्स्टाइन यहूदी थे। (४) यहूदियों ने बड़ेसिमत एक समुदाय की यूरोप और अमेरिका में कभी कोई मांग नहीं की। कभी सविधान की दोहाई नहीं दी। कोई अधिकार नहीं जगाया। परन्तु हाँ, पश्चिमी दुनिया के अधिनत जन-आन्दोलनों और ट्रेड यूनियनों का नेतृत्व उन्होंने किया। केवल इतना साम्प्रदायिक दृष्टिगत में ही ट्रायस्की नहीं मिनना। बरिद हर आन्दोलन में कोई न कोई ट्रायस्की मिल ही जाता है। ट्रायस्की का बनने नाम ब्राउन स्टान दन था और वह यहूदी था।

दूर क्यों जाइये अपने ही यहाँ एक छोटी-सी अहास्यक है जिसे पारसी कहा जाता है। वे बननी सभी विरोध-ताजों के धन हिन्दुस्तान में रखे हैं। ज-होने भी कोई बनना धन नहीं बनाया, न मांग की। अगर भारत में अणुविज्ञान की तरफकी वा सविदाय निष्ठा जायगा, और उसमें डा० धामा और डा० सेचना का जिक्र न जायेगा जो यह सविदाय बरूा हाया। हिन्दुस्तान की सैनिक तरफकी में मानिक साह का नाम उठने के हरफो से लिला जायगा। कोई बड़े

सोच सकता है कि भारत में उद्योग के विकास का विक्र हो और टाटा का नाम न जाये।

क्या हिन्दुस्तान के इसलमान इस बलपूर्वक को का मुकामवा कर सकते हैं? शायद नहीं! वे प्रपविशील तरफो और जन-आन्दोलनों का नेतृत्व करने के बजाय शक्तिवादी तरफो को टाकन पहुँचा रहे हैं।

इन्दोनेशिया, मलेसिया, पाकिस्तान, इरान, ईराक, बल्गेरिया, मोरक्को, दूनोशिया, सीरिया, मूदान, मिथ, विवनाम आदि देशों ने मुस्लिम पर्वतल तों में सुधार कर लिये हैं। परन्तु तुर्की और अल्बानिया ने उसे रद्द कर दिया है। लेविन भारत के मुसलमानों को एंठा करने में शरीकत सतरे में नबर जाती है। इस परिस्थिति के लिए उत्तरदायी कौन है? क्या वे उत्तरदायी नहीं हैं जो मुसलमानों की वास्तविक समस्याओं की ओर से जेहन हटकर काल्पनिक समस्याओं की ओर लगा देते हैं? अर्थात् उनका लोडरक्षण जो उन्हें बलकार की ओर ले जा रही है। क्या वे भी दोषी नहीं हैं जो अपने आपको राष्ट्रवादी कहते हैं और जिन्होंने पिछले २४ वर्षों में मुसलमानों के बीच किसी प्रकार का कोई ठीक काम नहीं किया है? क्या वे समाजी कार्यकर्ता इसके लिए उत्तरदायी नहीं हैं जो समाजी परिष्कार और समाज सेवा की बात करते हैं, परन्तु जिन्हें यह नहीं मानूँ कि समाज के क कोड़ लोगों का मानस विष तरह नाम करता है? उनकी समस्याएँ क्या हैं? उनकी शिकायतें कहीं तक जायज हैं? और जायज शिकायतें कैसे दूर हो सकती हैं? *

नयी तालीम

हिन्दी-मासिक

वार्षिक चन्द्रा : ६ रुपये

सर्व सेवा संघ, परिष्कार विभाग

राजघाट, बाराणसी-१

भारत के कुछ संगठनों का तुलनात्मक अध्ययन

[भारत में कुछ संगठन ऐसे हैं जिनकी गतिविधियाँ बहुत प्रकट नहीं होतीं । इन संगठनों में से कुछ बड़े संगठनों का एक अध्ययन हम यहाँ पाठकों की सेवा में प्रस्तुत कर रहे हैं । सं०]

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आर० एच० एच०) के नेता जो पहले हैं, और उनका संगठन जो करता है, उनमें कोई सम्बन्ध नहीं है। संगठन का कहना है कि यह धार्मिक कार्यों को करता है। इसकी योजनाओं की कार्य-वाही दिव्य समाज और दिव्य सस्कृति को उत्पन्न के लिए है। परन्तु संस्कृति का ऐतिक तथा धार्मिक आधार से क्या सम्बन्ध है, यह बात समझ में नहीं आती। आर० एच० एच० के लोग इन दोनों का सम्बन्ध अब उक्त नाम लोगों को समझा नहीं पाते हैं।

शाखाओं में होनेवाले भाषणों और वार्ताओं को सुनकर यह अन्दाजा होता है कि इस संगठन का संस्कृति से कोई सम्बन्ध नहीं है। वहाँ कभी भी दर्शन, साहित्य, कला, इतिहास या जीवन के मूल्यों पर बात नहीं की जाती। अगर कभी उनका बिक्र होता भी है तो क्रोध जमाने के लिए। आर० एच० एच० का संस्कृतिक दर्शन राज-नीतिक है। वे राष्ट्रीयता की बातें करते हैं और अन्तः राष्ट्रीय मानने के लिए शर्तें लगाते हैं। वे ससद में बनने-वाले कानूनों और राष्ट्रीय नैतिकता की आलोचना करते हैं। वे भारत के दूसरे देशों से सम्बन्ध बना ही, इस पर भी बातें करते हैं। आर० एच० एच० के बारे में वे भी अन्वेषण करते हैं, जिन्होंने धुली आँसू से उसे देखा है। आर० एच० एच० के लोग प्रश्नों का उत्तर नहीं देते और उन्हें जान जाते हैं।

संगठन की दृष्टि से आर० एच० एच० एक फासिस्ट दल है। दल के सबसे बड़े नेता जो बहुत सारे गुणों वाले आदमी के रूप में पेश किया जाता

है। कुछ उन्हे संग्रहो भी नहते हैं। मुक्को को यह गजपा जाता है कि कुछ गोलबर्कर को अखबार नहीं पढ़ना पड़ता। वे अपनी साधना द्वारा सब कुछ जान जाते हैं। आर० एच० एच० के सदस्यों के लिए गोवर्धकर का मान अन्तिम मान्य है। उनसे न कोई बहुत कर सकता है, न उनसे द्वेष हुए वक्तव्यों के सिलसिले में प्रश्न पूछ सकता है, और इस बात को अनुशासन कहा जाता है।

विचार की दृष्टि से भी आर० एच० एच० एक फासिस्ट दल है। राष्ट्रीयकरण के मुद्दावले पर भारतीयकरण की बात आर० एच० एच० विचार-धारा की शासक बात है।

वे सदा हिन्दू नस्ल और हिन्दू धर्म को आदर करते हैं परन्तु उनकी इस बात का हिन्दुत्व के आध्यात्मिक पहलुओं से कोई सम्बन्ध नहीं होता। आर० एच० एच० चाय की पूजा, बनेक पहनना जैसी अन्य चीजों पर जोर देता है।

देश के अन्दर आर० एच० एच० हिन्दुओं और गैर-हिन्दुओं के बीच बड़ाई करना है। बड़ाई करने के लिए यह चाय की पूजा, हिन्दी भाषा, युतीकरण, सिविल कोड इत्यादि की समस्या पर लोगों में खोप वंदा करता है। यह सब करने का उद्देश्य यह है कि गैर-हिन्दुओं को बलम किया जाय और उन्हें निवेशी करार दिया जाय। इस बात के बहुत सारे उदाहरण मिलते हैं कि इनके बड़े अन्वेषण विधायनीय लोगों के विच्छेद अफसहे पीनाओ और उनके बारे में आम लोगों में अन्वेषण किया। साम्प्रदायिक दलों के पीछे भी आर० एच० एच० का हाथ होता है।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध में आर० एच० एच० का रुझान भी अजीब है। इसके अनुसार केवल हिन्दू ही यह ज्ञान और आध्यात्मिक शक्ति रखता है जो मानवता को बना सके। आर० एच० एच० एक संगठित सेना बनाना चाहता है जो सारे संसार पर कानू पावे।

लगभग २० लाख लोग आर० एच० एच० के सदस्य हैं। संगठन उनकी सत्ता नहीं बताता। एक बार पूछने पर यह उत्तर मिला, "क्या तुम गंगा के पानी के बतरी को गिन सकते हो?" सदस्यों का न तो कोई रजिस्टर है न कुछ और। वही कारण है कि आर० एच० एच० के सदस्य पर कोई जिम्मेदारी नहीं घोषित जा सकती। मान लीजिए कि आर० एच० एच० या एक सदस्य अफनाह फेलाता हुआ, हिंसक कार्यवाही को उन्हासा हुआ, और बल्ले-धाम करता हुआ बड़ा जाता है, लेकिन यह सिद्ध करने का कोई तरीका नहीं है कि यह सदस्य आर० एच० एच० ना है। नाशुआम गोडसे ने गांधीजी की हत्या की। कहा जाता है कि वह आर० एच० एच० का आदमी था। आर० एच० एच० ने इससे इनकार किया और यह बात सदाई में बड़ी रही। चार साल पहले बंग वानस्टर ने अपनी पुस्तक जनसभ में यह राज पोला कि गोडसे उन युवकों में से था, जिसने सबसे पहले आर० एच० एच० में शिरकत की थी और वह १९३० में डाक्टर हेमोवार के साथ महाराष्ट्र के प्रभाव में शामिल था। इस पर भी आर० एच० एच० ना यह कहता है कि गोडसे ने जय गांधीजी की हत्या की, उस समय उसका आर० एच० एच० से कोई सम्बन्ध नहीं था। जब कोई रिटार्न नहीं, वो इसे रिज लागू साबित किया जाय। यह बर्किनाई उस समय सामने भाड़ी है जब उन्हावारी नर्मधारी पर पाबन्दी लगाने की बात घोषी जाती है। आर० एच० एच० ने भारतीय सरकार के पास जो शिकायत पेश किया है, उसमें लिखा है कि नाशुआम को अगर अधिभावक की आशा के सदस्य नहीं बताया जायेगा। परन्तु बाह्य-

विना टोक उरही है।

आर० ए० ए० में नूँक सदस्यता वा कोई रजिस्टर नहीं है, इसलिए कोई नियमित फीस भी नहीं है। किसी भी कन्दा या दान देनेवाले को कोई रसीद नहीं दी जाती। इस संगठन के पास काफी पैसे हैं; और इसमें बहुत सारे स्थानों में सम्पत्ति प्राप्त कर रखी है। यद्यपि अभी उस पर एकमात्र टैक्स नहीं लगाया गया है।

बच्चा मुद्राक्षिणा की शसन में मिलता है। हर शासा में साल का एक ऐसा दिन होता है जब कि सभी सदस्य पैसे का एक वसत में रखते हैं जो आर० ए० ए० के हाथे ठले रखा जाता है। कोई नहीं जानता है कि दूसरे ने कितना दिया। महाने भर पहले एक मापण रिया जाता है जिसमें लोगो से अधिक-से-अधिक प-रा देने की बान को जाती है।

सभी बस दिन हेडक्वार्टर में जवा हाँते हैं, जहाँ वे सोले जाते हैं और पैसे जिने जाते हैं। जवा की हुई रकम प्राचीय हेडक्वार्टर में भेज दी जाती है और फिर सभी प्रातो से प्राप्त पैसे हेडक्वार्टर नागपुर भेज दिये जाते हैं। नाथे के लोग यह नहीं जानते कि कुन कितनी रकम जमा हुई है। (छबं के लिए पैसे केन्द्र से दिये जाते हैं।) विश्वास के साथ यह बहना कठिन है कि सभी धर्चं मुद्राक्षिणा से ही पूरे होते हैं और आर्थात्जनक स्वयं विश्वा-न-विश्वे स्तर पर वेग के अन्दर या बाहर से उसे प्राप्त नहीं होगी।

रक्षक परित्र और दूसरी ना-राम्यो द्वारा यह जान होता है कि यह एक मुक्त संगठन है। इसके कार्यो में जाठी, धूरा और दूसरे हेथियार चलाने की ट्रेनिंग दी जाती है।

आर० ए० ए० और अन्ध्रप कय बहुत सहारा सम्बन्ध है। यह कहीं जाता है कि वनस्पत भन्ते समय आर० ए० ए० ने बहुत सारे लोगों को महेत्सपूर्ण स्थानो पर रखा था। भी दीवस्थाल उपाध्याय वनस्पत के भन्नी होने से पहले उत्तर प्रदेश आर० ए० ए० के संगठक

थे। बहुत दिनों तक वे इसके बारे में इनकार करते रहे, परन्तु उनकी मृत्यु पर आर० ए० ए० के मन्त्री वाला साहब ने उनकी एक स्वपसेवक के नाते बड़ी प्रशंसा की, और यह दावा किया कि उनकी प्रपन वधादारी आर० ए० ए० के साथ था।

जमसय आर० ए० ए० का राज-नैतिक अंग है। दूसरे दायरो में भी आर० ए० ए० के अंग मिलते हैं—जैसे छात्रो का विद्यार्थी परिषद, मजदूरो में भारतीय मजदूर संघ, धार्मिक दायरो में काम करने के लिए विरय हिन्दू परिषद।

ये सब एक दूसरे से जुड़ा और स्वतंत्र है और ये केवल आर० ए० ए० के नेतृत्व के सामने उत्तरदायी हैं, जो उनकी कार्रवाइयो का निरीक्षण और नियंत्रण करता है।

जमायते इस्लामी

यह जमायत बहन आना मौजूदी ने अगस्त १९४१ में कायम की थी। उनकी पुनार पर ७५ आरमी लाहौर में जमा हुए थे, जिनमें उलमा विश्वविद्यालय के शिक्षक, मजदूर, कारीगर और पंसेबर लोग भी थे। इसका उद्देश्य 'दीन' को स्थापित करना था जिसका अर्थ था इस्लामी आदर्शा और मूल्यो को रोजाना जीवन में जीना।

जमायते इस्लामी समाजवाद, राष्ट्रीयता और धर्मनिरपेक्षता में विश्वास नहीं रखती। यह जमायत मानती है कि इस्लाम-आधारित राज्य ही मुसलमानो का राज्य हो सकता है। उस राज्य का वास्तु शरीकत पर आधारित होगा। शरीकत, जो अटल और रपाया है तथा जिसमें सहोपन्न नहीं हो सकता।

इसके अनुसार मनुष्य का सारा जीवन धार्मिक मूल्यो पर आधारित होना चाहिए। महिलाएँ परदे में रहती हैं ताकि वे सड़ धरती पर नरकन इन जायँ और सैतानी स्वतंत्रता के केन्द्र न हो जायँ। महिला जिस बाज्यादी की

धोज में है वह सारी सम्पत्ता को भसन करनेवाली है। इस सामाजिक वाना-वरण में फाइन वार्ट (सलित्तालाओ) का कोई स्थान नहीं है।

इस पृष्ठभूमि में जमायत ने कांग्रेस और मुस्लिम लीग का बड़ा विरोध किया है। जमायत का कांग्रेस के बारे में यह दयात था कि यह हिन्दुओं को जमायत है, और इसमें कुछ भम्पूनिस्ट भी शामिल हैं तथा दोनों ही इस्लाम के लिए खतरनाक हैं। जमायत के दृष्टि-बोध से मुस्लिम लीग उन लोगों का समूह था जिन्हें इस्लाम और इस्लामो सम्पत्ता से कोई सम्बन्ध नहीं था और पारिपरता न बन जाना मुस्लिम राष्ट्रीयता और लोकतंत्र की जीत थी, इस्लाम और इस्लामी राज्य की नहीं।

देश के बंटवारे के बाद मोनाना मौजूदी पानिस्तान चले गये। उन्होंने पानिस्तान के लोगो को यह बताया कि इस्लामो राज्य पानिस्तान में स्थापित किया जाय। लोगों की धार्मिक भावना को जमाकर उन्होंने राजनैतिक कठिना-इयो पर बड़ी सफलता से राजू पा लिया, पानिस्तानी नेतृत्व ने लोगों को धर्म-निरपेक्षता में ट्रेनिंग नहीं दी थी। इस कमचोरी से फायदा जमायत ने उठाया।

भारत में परिस्थिति निम्न थी। इसका यह अर्थ नहीं कि भारत में धर्म-निरपेक्षता की जड़ें गहरी थी बल्कि नेहरू के धार्मिक बटुगा को बेमसर बना दिया था।

भारतीय मुसलमानो के धार्मिक पिच्छेवन और धार्मिक कट्टरपन ने जमायत को इस धान का अवसर दिया कि वह दृष्टिकोण के लेट्टेज से आक्रमण-कारी बन जाये। देश के बंटवारे से जमायत के बरिष या नीति में कोई अन्तर नहीं हुआ।

जमायत के नेतृत्व ने इस्लाम को मनुष्यो की सभी समस्याओ का हल बताया। आज के सवार में जो नैतिक पतन है, उसे इस्लाम ही दूर कर सकता

है। एक धार्मिक ज्ञानि की आवश्यकता है, और आप ही तब लोगों में धार्मिक जागृति लाने की भी आवश्यकता है। यह आध्यात्मिक ज्ञानि वे लार्से के विद्यार्थी मुदा ने इस नाम के लिए चुना है।

इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए जमायत ने यह फैसला किया है कि वह कभी ऐसा रास्ता न चरित्याप करेगी जो नैतिक सीमा से बाहर हो, सन्वाई तथा दमनकारी के विरुद्ध हो, जिससे साम्प्रदायिकता फैले, वर्ग-समर्थन बढ़े या घरेली पर फसाद फैले। जमायत रचनात्मक और शान्ति-मय तरीकों से इस्लामी विचारों द्वारा मानसिक दृष्टि और चरित्र बदलने का प्रयास करती है, ठाकि देव का सामाजिक और नैतिक जीवन सुधर सके। इसलिए जमायत इस्लामी का दावा है कि वह एक नैतिक-साम्प्रदायिक दल है जो लोकतन्त्रात्मक पद्धति से दृष्टिकोण में नैतिक और आध्यात्मिक परिवर्तन लाना चाहती है। जमायत यह जानती थी कि देव के बँटवारे के बाद सबसे बड़ी समस्या साम्प्रदायिकता और आबादी-निरपेक्षता की थी। जमायत ने मुसलमानों को यह सलाह दी कि वे धैर्य रखें। भारत के मुसलमान जो बँटवारे के बाद बिलकुल दूढ़ गये थे, उनमें जमायत ने हिम्मत पैदा की। इसने मुसलमानों से कहा कि वे अस्वाह पर विश्वास रखें और भविष्य के बारे में उदासीन न हों।

जमायत राष्ट्रीयता, समानवाद, धर्म-निरपेक्षता और लोकतन्त्र में विश्वास नहीं रखती। राष्ट्रीयता के विरुद्ध गायद मोलाना मौदूदी से अधिक किसी भी मुसलमान लेखक ने नहीं लिखा है। अबुल क़ास इखलाही का कहना है कि राष्ट्रीयता स्वार्थी का दूसरा नाम है। यह भ्रमिस्तव स्वार्थी से भी अधिक खराब है। जमायत यह मानती है कि धर्म-निरपेक्षता वास्तव में धर्म का अभाव है। इस्लाम को धर्म से अलग

नहीं लिया जा सकता। जमायत धर्म-निरपेक्षता की इतनी विरोधी है कि यह एक हिन्दू भारत को धर्म-निरपेक्ष भारत से अच्छा मानती है।

जमायत सभी मुसलमानों को सही मुसलमान नहीं समझती। आम मुसलमानों को वह भटका हुआ मुसलमान मानती है। जमायत इस्लामी भारतीय मुसलमानों के लिए ३ बातों पर जोर देती है।

(१) इस्लाम के आधार पर मुसलमानों को एक इनाई।

(२) देस की राजनीति से अलग रहना।

(३) मुसलमानों का एक अलग संगठन।

जमायत यह मानती है कि साम्प्रदायिकता को दूर करने के लिए अलग-अलग हिन्दुओं, मुसलमानों, सिखों, बौद्धों और जैनियों का मजबूत संगठन होना चाहिए। हिन्दू-मुस्लिम एकता दोनों सम्प्रदायों के समुन्नत संगठन द्वारा नहीं प्राप्त की जा सकती। प्रत्येक धार्मिक सम्प्रदाय का अपना अलग राजनैतिक संगठन होना चाहिए और प्रत्येक समस्या पर हर सम्प्रदाय के प्रतिनिधियों द्वारा आपसी बातों में सौख-विचार होना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि जमायत-इस्लामी राज्य के अन्दर एक मुस्लिम समाज स्थापित करना चाहती है।

जमायत यह मानती है कि इस्लाम कोई धर्म नहीं है, बल्कि एक आन्दोलन है जो मनुष्य और मनुष्य के बीच के सम्बन्धों को निर्धारित करने के बाद एक सकारात्मक राज्य (वर्ल्ड स्टेट) बनाना चाहती है।

जमायत-इस्लामी यह नहीं मानती कि सभी धर्म एक ही हैं। यह इस्लाम को सबसे अच्छा धर्म और मुसलमानों को सब लोगों से अच्छा मानती है। जमायत का संगठन बहुत ठोस है और इसमें अनुशासन प्रथम दर्जे का है। इसमें अधि-चरित्र सम्पन्न वर्ग के लोग शामिल हैं,

यद्यपि इतने यह बंधिधम को है कि इसे मुसलमानों के सभी वर्गों का समर्थन प्राप्त हो सके। जमायत इस्लामी का मुसलमानों पर जबरन प्रभाव है, यद्यपि इसके सख्य कुल पन्डह से लोग हैं। इसका कारण यह है कि यह साम्प्रदायिक दलों में धीव्रित लोगों की बड़ी सेवा करती है। इनने मुसलमानों को यह विश्वास बिना रखा है कि मुसलमानों को भलाई और साम्प्रदायिक हिंसा से मुक्ति के लिए मुसलमानों का एक होना अनिवार्य है।

आनन्द मार्ग

आनन्द मार्ग के मर्यापक श्री प्रभात रज्ज सरकार हैं। वे जमायतपुर देवदे परकीषण के बाकिदे थे। यह संगठन उन्होंने आज से १५ साल पहले १ जनवरी १९५५ को बनाया था। आनन्द मार्ग के लोग धी वी० आर० सरकार को एक नयी सभ्यता की लानेवाला और दुक मानते हैं। उन्हें आमतौर से लोग बामा कहते हैं और उन्हें भगवान का घोसरा अवतार माना जाता है। पहला अवतार शिव और दूसरा अवतार कृष्ण को माना जाता है। आनन्द-वृद्धि का दर्शन मनुष्य को सदा रहने-बातों आध्यात्मिक प्रसन्नता देता है। यह मनुष्य की भौतिकवाद से अलग रखता चाहता है। आनन्द मार्ग का उद्देश्य सर्वप्रिय समाज स्थापित करना है। एक आनन्द मार्ग के लिए भानव परीर एक जाली वर्तन के समान है और मनुष्य की अपने विश्वास अर्थात् आनन्द मार्ग के लिए अपना जीवन बलिदान करने से द्विपकिचिना नहीं चाहिए। आनन्द मार्ग का चाहिये पढ़ने से यह पता चलता है कि आनन्द-वृद्धि की वा बताया हुआ मार्ग सततव में ताकि पूजा है। श्री सरकार ने अभिमत में लिखा है, 'यद्यपि आधुनिक भारतीय महद्वि वैदिक मानुष' होवी है, यह मूल में ताकि है। अगर भारतीय यस्वृति सोने के जेवर की तरह है तो ताकि सोना है।'

उनके अधुआर लोहृतन 'मूसों' की सरकार है, जो मूसों द्वारा, मूसों के लिए पलायी जाती है। आनन्दमूर्तिजी का विचार है कि एक आध्यात्मिक ताना-शाही या नैतिक तानाशाही ही मुक्ति का एक मात्र मार्ग है।

प्राजटिस्ट प्लाक ऑव इण्डिया आनन्द मार्ग का राजनैतिक अंग है। जिसका उद्देश्य बाबा की तानाशाही स्थापित करना है। आनन्द मार्ग के माननेवालों में डाक्टर, प्रोफेसर, विद्यार्थी, सरकारी नोक़र, सैनिक, पुलिस के बड़े-बड़े पदाधिकारी सभी हैं। सारे भारत में इसकी २,००० शाखाएँ हैं। एक हजार पुरे समय के कार्यकर्ता हैं जो अवधूत बहुलाते हैं और ५० लाख चुस्त कार्यकर्ता हैं। आनन्द मार्ग एक दार्शनिक और व्यवस्थित संगठन है। इसके हर विभाग के अलग-अलग मन्त्री हैं। संगठन के कार्यों के लिए मार्ग को ९ भागों में बाँट दिया गया है। बर्लिन, पूर्ण यूरोप, ह्यूबानग, लन्दन, मनीला, नैरोबी, नयी दिल्ली, म्यूम्बई तथा सिडनी।

आनन्द मार्ग के मुख्य अंग की आनन्द मार्ग प्रचारक छप कहा जाता है। इसके अध्यक्ष स्वयं श्री सरकार हैं। प्राजटिस्ट प्लाक का सबसे बड़ा उद्देश्य साम्यवाद को बचने से रोकना है। प्राजटिस्ट प्लाक का केन्द्रीय सचद या राज्य विधानसभाओं में कोई प्रतिनिधित्व नहीं है।

आनन्द मार्ग के विद्यार्थी चल का नाम प्राजटिस्ट विद्यार्थी फेडरेशन है, जोर उसके सचद्वर अंग का नाम यूनि-वर्सल प्राजटिस्ट सेवर फेडरेशन है। इन सभी अंगों के मुख्य अ्यक्ति अवधूत ही हैं। इन अवधूतों की नियुक्ति सभी जांच-पड़ताल के बाद होती है। आनन्द मार्गों छात्रों के ५ अंज हैं। साधक, साधिन, आचार्य, अवधूत, पुरोधा। पहला सबसे नीचा ओहदा है और आखिरी सबसे ऊँचा। आनन्द मार्गों छात्रों केसदिया रंग का कपड़ा पहनते हैं और एक बड़ा धूरा अपनी कमर से बाँध रखते हैं।

हर रविवार को धर्मचक्र होता है जिसमें हर जगह मार्गों छात्रों को भाग लेना आवश्यक होता है। इसमें पुरे समय काम करनेवाले अ्यक्ति महद्वरपूर्ण मुद्दों पर वाजचीत करते हैं। साल में एक बार धर्म सभायज्ञ होता है, जिनमें केवल चुने हुए लोगों को बरीक होने की आशा दी जाती है। आनन्दमूर्तिजी के बारे में बहुत-सी मनगड़बड़ कहानियाँ महद्वर हैं, जिनसे उनकी वजुर्गी जाहिर होती है।

आनन्द मार्ग एक साप्ताहिक और तीन दैनिक अखबार निकालता है। इस संगठन के पास बहुत सारे प्रेस हैं जिनके द्वारा यह प्रचार-साहित्य, अर्बुजी और अपने देश की अ्य धूसरी भाषाओं में छपवाता है।

आनन्द मार्ग के काम करने का तरीका अनोखा है। यह बाजों के गुप्त रखने पर जोर देता है। आनन्द मार्ग के माननेवाले एक तरह के मानसिक उन्माद की स्थिति में रहते हैं। वह हमेशा इस तरह सतर्क रहा करते हैं जैसे किसी धनु का सामना कर रहे हो। इस संगठन में बाजों इतनी गुप्त होती हैं कि एक अवधूत को यह पता नहीं होता कि दूसरा अवधूत क्या कर रहा है। संगठन में शामिल होने पर अवधूत का नाम बदल दिया जाता है।

आनन्द मार्ग का दफ्तर या निवास स्थान शहर से बाहर होता है—हर जगह ऐसा ही है, पुषलिया, राची, पटना, कलकत्ता और दिल्ली में। इन स्थानों पर कोई आसानी से नहीं जा सकता। बाबा आनन्दमूर्ति लोगों के सामने कम ही आते हैं। आनन्दमूर्ति जहाँ नहीं जाते हैं, सभ्य बाँडीगाईं उनके साथ होते हैं। उनका मामूली चेला भी बडी होगियारी से भूमता-फिरता है। सम्मेलन और सभाएँ गुप्त रखी जाती हैं। एक अवधूत नगर में उजनी ही देर ठहरता है जितनी देर वहाँ उसका काम होता है। आनन्द मार्गों के सदस्य बहुत सारे स्कूल चलते

हैं, और शहर के दूसरे कार्य भी करते हैं। शिक्षण-संस्थाओं के द्वारा आनन्द मार्ग को बेचे मिलते हैं तथा शहर के बाजों द्वारा गुप्त रूप से मिलनेवाले हर्गों के लिए एक परदा मिल जाता है।

आनन्द मार्ग द्वारा २०० शिक्षा की संस्थाएँ चलायी जाती हैं, जिनमें कुछ सेपेण्डरी स्कूल हैं जोर एक नालेज है। इनसे दोहरा काम होता है। एक तो यह कि इनके माध्यम से समाज में ये मभाव-सेवक के रूप में जाते हैं। दूसरे, इन्हें छोटे-छोटे बच्चों मिल जाते हैं जो कच्चे मास के तौर पर प्रयोग में लाये जाते हैं। नालियों को तरह आनन्द मार्ग भी छोटे बच्चों को पछन्द करता है। यह सभी स्कूल दिग्गज बदलते को केन्द्र है। इन बच्चों से बाबा की भगवान की तरह पूजा करायी जाती है। आनन्द मार्ग ने अपने संगठन में बहुत सारे सेना, पुलिस और प्रवासन के पदाधिकारियों को भर रखा है। इस कारण मार्ग अपनी नारैवाज्यों को अधिक स्वतंत्रता के साथ करता है। मई १९७१ में राची सम्मेलन में एक आई० ए० ए० संघ पदाधिकारियों ने एक प्रेस कान्फेंस को भी सम्बोधित किया था। अपनी नोकरी छोड़कर बहुत सारे सैनिक भाग अ्ये है जो अवधूतों को सैनिक प्रशिक्षण देते हैं।

आनन्दमार्ग का चरित्र मूलतः साम्प्रदायिक है। पुषलिया में आदिवासियों से टकराव के बाद आनन्द मार्गियों ने इसे साम्प्रदायिकता का रंग दे दिया। वक्ताभ्य में यह कहने के बजाय कि आनन्द मार्गियों और स्थानीय लोगों में टकराव हुई। यह कहा गया कि हत्या घुसलमान मुण्डों ने की थी। इस वक्ताभ्य के बँटने के एक सताह बाद ही जमान-पुर के हिंदू मन्दिर में बाब का पोश पाया गया।

जहाँ कहीं भी आनन्द मार्ग का चेला लगता है वहाँ दगा हो जाता है। यही पुषलिया में हुआ और राची में भी हुआ। विहार सरकार की दरखास्त पर सी० बी० आई० ने इस सम्बन्ध में धूरान-यज्ञ : सोमवार, ३ जुलाई, '७३

जोध धुकू की। जोध में पटना, बलबत्ता, दिल्ली, बाराणसी में जो चाणक्य पत्रके गये उनसे पता चला कि यह सगळ एक समानान्तर सरकार चला रही थी।

इसके अलग-अलग शिक्षा, सामाजिक भलाई, वित्त, और न्यायालय थे। प्रशासक एनरोनमुरिष और न्यायालयों के प्रधान स्वयं भी सरकार थे। जिन्हें 'विदो' प्राप्त है। कैबिनेट के दूपरे मंत्री या न्यायाधीश केवल सलाह दे सकते हैं, परन्तु स्वयं कोई फैसला नहीं कर सकते। यह न्यायालय बँत लगाने से लेकर फौजों तक की सभा दे सकता है। जो लोग सगळ से गद्दारी करते हैं, उन्हें फाँसी की सजा दी जाती है।

आत्मन्दमूर्तिजी अबधूतो को छोटी-सी बलती पर कड़ी सजाएँ देने थे। ५०० बँत एक दिन में लगाये जाते थे। नई दिनों तक अकेले कमरे में बन्द रहता जाता था। सी० बी० आई० का कहना है कि आत्मन्द मार्ग के प्रधानमंत्री थे इन्द्रिया गांधी को भी बल करने का पक्षधर किया था। सितम्बर १९६९ में बाराणसी में आधे दर्जन साधू इस जिलखिले में गिरफ्तार हुए थे। हाल की तहकीकात ने ऋत के पक्षधर पर कुछ और रोगवी डाली है, जिस पर सी० बी० आई० फिर तहकीकात शुरू करेगी।

कागजातों से यह भी पता चला कि सगळ को नियमित रूप से कुछ लोगों द्वारा देश के अन्दर और बाहर से रुपये मिल रहे थे। सी० बी० आई० की इन तहकीकात ने आत्मन्द मार्ग को तोड़कर रख दिया। यहाँ तक कि मार्ग-माना श्रीमती उमा सरकार ने और आत्मन्दमूर्ति के निजी सचिव अवधूत विद्योताकर ने भी सगळ को छोड़ दिया।

इन अवधूत और अवधूतियों ने बताया कि आत्मन्दमूर्ति ने दर्जनों अवधूत सन्ध्यासियों को बल किया है और अपने बेटों के साथ समन्वित मैथुन करते रहे हैं, उन्हें यह निश्चय है कि

कर कि वे पहले जन्म में लड़की थे। श्रीमती सरकार के अनुसार मार्ग की ऊँची श्रेणी के लोगों में समन्वित मैथुन आम बात है।

शिव सेना

शिव सेना स्वामी प्रबा पर आधारित एक सगळ है। यह बम्बई और उसके पड़ोस के नगरो तक ही सीमित है। इसका आधार मराठ राष्ट्रीयता है। बड़ोते हुई बेकारी और भारी सख्या में बाहर से आनेवाले लोगों के कारण इसे बढावा मिला। इसके सम्पादक नारदनिर्गत बाल ठोकरे हैं।

शिवाजी को आर० एच० एस० और जनसभ ने हिन्दू राष्ट्रीयता का प्रतीक माना। शिव सेना ने उन्हें राष्ट्रीय माना, यद्यपि इसका आधार भी हिन्दू राष्ट्रीयता है। शिव सेना शिवाजी से प्रेरणा प्राप्त करती है। उनकी सफरता की कहानी उन मराठों की सफरता की कहानी है, जिन्होंने एक बड़े साम्राज्य का विरोध किया और भारत में सबसे बड़ी संतुिक सन्धि की कुछ दिनों के लिए बुनियाद डाली। मई १९७० के शिवगुडी के पगे के पहले, शिवाजी किस रूप में देखे जाते थे, उसका अनुमान टाट्टस 'शिव इण्डिया' के निम्नलिखित वक्तव्य से होता है।

शिव जयन्ती के पुरख वाद ही शिवगुडी में एक नया सगळ उत्पन्न हुआ, जिसका नेतृत्व स्थानीय जनगणनी और आर० एच० एस० के नेता कर रहे थे। एक राष्ट्रीय उत्सव मण्डल बना जिमने अपने दफतर के सामने एक बडा बोर्ड रख छोडा था, जिसका नाम हिन्दू साम्प्रदायिक भावनाओं को पमाना था। १९७० के मार्च महीने में राष्ट्रीय उत्सव मण्डल ने मुहर्रम के जुलूस में उखन डाला। फिर पुलिस भी हिदायत के विरुद्ध होली के खोहार के अवसर पर आग का बडा गद्दा छोडा गया। मुहर्रम के जुलूस के दिन उन गद्दों में आग

लगा दी गयी ताकि ताजिया वा जुलूस न निकाला जा सके और उन जुलूस का रास्ता रोका जा सके, यद्यपि होली अभी तीन दिन बाद होनेवाली थी।

५ मई को शिव-जयन्ती के अवसर पर जो वक्ता बुलाये गये थे उनमें एक आर० एस० एस० के नेता भी थे। शान्ति-समिति के हिन्दू और मुसलमान नेताओं ने उन्हें यह कहा था कि परिस्थिति नाजुक है, इसलिए अपना भाषण नर्म दें। परन्तु उन्होंने अपने भाषण में कहा कि शिवाजी मस्जिदों की इम्कत करते थे परन्तु राज्य के विरुद्ध नार-धाइयो की बर्दास्त नहीं करते थे।

६ मई को रात के कार्यक्रम में एक नाटक शामिल किया गया जिसमें एक मुगल सरकार द्वारा अपहरण की हुई हिन्दू सज्जियों की बेइश्वती दिखायी गयी थी।

ये कुछ सॉफिया हैं कि किस तरह शिव-जयन्ती मनायी गयी।

शिव सेना ने क्षेत्रवाद (रिवनसिम्भ) को जागृत किया है और मराठी भावनाओं का रिखा उन दिनों से जोड़ा है जब मराठा साम्राज्य स्थापित था। इसने मराठा और नैर-मराठा का अन्तर उड़ा दिया है।

प्रभा और नरसमझराती की बुनियाद पर इसने लोगों में गलतफहमी पैदा की है। वे नगर की सभी सुपक्ष्यों का कारण बाहरवालों को मानते हैं। शिव सेना का मुख्य काम टूंड यूनिटन धान्दोलन को हर प्रकार से खोजना रहा है। इन मिलजुलने में सभार्य भग की जाती रही है, दफतरो पर आक्रमण किया जाता रहा है।

यह भात्मन्दवादियों और सभी प्रकार के साम्प्रदायिकों का विरोध करती है और बम्बई नगर की तात सतरो से पवित्र रखना चाहती है।

वाल टाकरे ने स्पष्ट कहा है कि टाटा और बिड़डा मराठों के मित्र और अप्रदाता हैं।

(म.सं. ७३ के 'संविदाद के आधार पर')

केन्द्रीय आचार्यकुल : विवरण

[नकोदर के सच अधिवेशन में १७ मई को केन्द्रीय आचार्यकुल समिति के संयोजक ने यह विवरण प्रस्तुत किया । सं०]

इस विवरण अधिष्ठित में मुख्य प्रवेक, अक्षय और दिल्ली के तीन प्रदेशों में आचार्यकुल का सक्रिय काम हुआ है। दूसरे प्रदेशों में भी काम आगे बढ़ा है और आचार्यकुल के सदस्य शिक्षा और समाज में समय-कालि करने के प्रयास में सहयोग कर रहे हैं।

गत १२-१३ सितम्बर १९३१ को केन्द्रीय आचार्यकुल समिति की तीसरी बैठक विनोबाजी के सावित्र्य में पवनार में सम्पन्न हुई जिसमें दो महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये। एक तो रामस्वराम्य के माध्यम से जिस समाज की रचना ना प्रयास किया जा रहा है उसके अद्वय विज्ञान-नीति तैयार करके उसे सर्वसम्पत्ति से स्वीकार किया गया।

दूसरा महत्व का निर्णय यह हुआ कि आचार्यकुल ना एक संविधान बनाकर स्वीकृत किया गया है।

प्रदेशों में आचार्यकुल की प्रगति

अक्षय : इस साल अक्षय में भी आचार्यकुल का काम आरम्भ हुआ है। लखीमपुर जिले में भाई श्री अविच्छेदी ने मात्रावी, पानीवाँव में दस वेद कायम किये हैं। वहाँ अब तक कुल ७७ सदस्यों ने निष्ठागमन पर हस्ताक्षर किये हैं और हर क्षेत्र पर एक संयोजक की नियुक्ति की गयी है।

गुजरात : गुजरात में आचार्यकुल का आरम्भ हो गया है। यद्योय में आचार्यकुल की प्रस्तावना के लिए १३ फरवरी को गृह के प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा से सम्बन्धित शिक्षकों का सम्मेलन गुजरात प्रदेश के आचार्यकुल के संयोजक श्री ईश्वरभाई शेटे के सावित्र्य में आयोजित किया गया था। ईश्वरभाई ने शिक्षकों को सम्मोहित करने हुए कहा—'आज की घण्टीनुच राजनीति की छाया बीजक के

सभी बीजों में पड़ी है। इस छाया में कुछ उगेगा ऐसी स्थिति नहीं है। जिस प्रकार पौधे की उगने के लिए सूर्य के प्रकाश की जरूरत है, उसी तरह व्यक्ति और समाज आगे बढ़े, इसे दूर करने के लिए राजनीति की छाह का दूर करना आवश्यक है। आचार्यकुल का एक प्रमुख लक्ष्य इस छाया को दूर करना है।'

इसके पहले जनवरी में अहमदाबाद में भी श्री ईश्वरभाई की अध्यक्षता में शिक्षकों का सम्मेलन हुआ जिसे प्रसिद्ध विद्वान श्री रोहित मेहता ने सम्मोहित किया था।

उत्तर प्रदेश : यहाँ आचार्यकुल अधिक सक्रिय है। इनकी नियमित बैठकें होती हैं और शिक्षा, शिक्षक व समाज की समस्याओं पर विचार-विनिमय होता है।

इस आस्था-अधिम में बागला देश के घरणाधियों की सेवा और सहायता के नाम में वाराणसी, अजीमगढ़, मुद्रावादा, आगरा और बरेली के आचार्यकुलों ने चन्दा और वस्त्र एकत्र कर भेजे हैं। बागला से लगभग ७० हजार वस्त्र भेजे गये हैं और धारापत्ती नगर से लगभग १३,००० रुपये के वस्त्र और वर्तन। आगरा में आचार्यकुल ने छात्रों और शिक्षकों के सहयोग से इस वर्ष की परीक्षाओं शान्तिपूर्वक ढंग से कराने में सफलता प्राप्त की है। दमालबाग (आगरा) में इन्जीनियरिंग के छात्रों, अध्यापकों और व्यक्तियों के बीच एक विवाद को सभी पक्षों के लिए समझौताकारक तरीके से हल करने में आचार्यकुल की सफलता मिली है।

आगरा के आचार्यकुल के सदस्यों ने अपनी ओर से समाज विज्ञान, विद्यार्थी के सोच-तुष्टार की उसकी अन्य विस्तार के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की है।

देवरिया, बस्ती, गोडा, बहराच और गोरखपुर में पिछले माहों में अनेक सह-शोधन विचार लगेये गये हैं और इनका अनुभव बहुत अच्छा रहा है।

बस्ती जिले की उपलब्धि : उत्तर प्रदेश में आचार्यकुल का काम माध्यमिक कालेजों और विश्वविद्यालयों से ही आरम्भ हुआ और वह उन्हीं में चल रहा था। किन्तु इस साल बस्ती में वह प्राथमिक शिक्षकों तक ही पहुँचा है। वहाँ गत ६-७ मार्च को जिला प्राथमिक शिक्षकों के हेतुमास्टर्स की जनपदीय गोष्ठी हुई, जिसमें प्रधानाध्यापकों ने आचार्यकुल का विचार मान्य किया और प्राथमिक विद्यालय-स्तरी पर आचार्यकुल की स्थापना हुई।

नियमित बैठकें करने के अलावा जगह-जगह आचार्यकुलों ने छात्र और शिक्षक-कल्याण के कार्य भी हाथ में लिये हैं। समाज-सुधार के लिए भी अनेक स्थानों में प्रयास किये गये हैं। गोरखपुर आचार्यकुल के प्रयास में इस वर्ष बहाँ दयानन्द कालेज में हस्ताक्षर नहीं हुई। कालेज के नये भवन के निर्माण-कार्य में छात्रों और अध्यापकों का सक्रिय सहयोग भी इस साल बहाँ मिला है। बहराच में आचार्यकुल ने छात्रों के गवनों में सम्पर्क ना सिविलिटा आरम्भ किया है और इसके फलस्वरूप कालेज के निर्माण में पहले से अधिक जन-सहयोग मिला है। देवरिया में फाजिल नगर कालेज के आचार्यकुल ने गवनों में वधानों बँदने का काम हाथ में लिया है और पञ्चोत्तम में हरिजन दलितों में भ्रमदात और सफाई-कार्य सम्पन्न किया गया है। वहाँ पर एक मामले में सामाजिक न्याय के लिए आचार्यकुल के संयोजक श्री परमुराम शिष्टजी ने जनजन् भी किया और फलस्वरूप यह मामला सही ढंग से हल हो गया। सरावकरी के लिए भी आचार्यकुल काम कर रहा है तथा धर्मदान-पुष्टि-कार्य में तो वह लगा ही है। परदेवा (देवरिया) में आचार्यकुल ने पुष्टि-कार्य हाथ में लिया है।

बिहार : बिहार के कुल १७ जिलों में से १० जिलों में आचार्यकुल का संगठन बना है। अधिपतिर नाम गोविन्द्यो द्वारा बिहार-प्रचार और तर्क-शान्तिसेना के साथ सह-जीवन सिविल सभा के द्वारा है। किन्तु पूर्णिया (स्त्री और भवानीपुर), सहरसा, विरोल (बरभगा) और सुपहरी (मुजफ्फरपुर) में आचार्यकुल ग्रामस्वराज्य के प्रत्यक्ष कार्य में लगा है। सहरसा में, जो ग्रामस्वराज्य का राष्ट्रीय प्रयोग-क्षेत्र माना गया है, आचार्यकुल ने सारे अधिमान में सहृदी जिम्मेदारियाँ निभायी हैं।

ग्रामस्वराज्य के काम को करने के साथ-साथ मुष्टि-क्षेत्रों में आचार्यकुल ने शिक्षा में सुधार का काम भी हाथ में लिया है। जहाँ प्रखण्डसभाएँ बन गयी हैं और ग्राम-विकास का काम प्रारम्भ हुआ है वहाँ सुरती शिक्षा-पद्धति नहीं चलनी चाहिए। सुपहरी प्रखण्ड में अथप्रकाशजी ने नये वातावरण के अनुकूल नयी शिक्षा देनी ही; इस काम को भी अपने हाथ में लिया है और वहाँ का नाम गुजरात स्नातक प्रविधाय महाविद्यालय, गांधी विद्यापीठ वेदुछी के प्राचार्य श्री ज्योति-भाई देसाई के निर्देशन में चल रहा है। स्त्रीशिक्षा में भी श्री वैजनाथ प्रसाद चौधरी के नेतृत्व में शिक्षा में सुधार की एक पंचवर्षीय योजना बनायी गयी है जिसे आचार्यकुल के माध्यम से संपन्न किया जायगा। उसी प्रकार सहरसा में श्री धीरेन्द्रभाई के मार्गदर्शन में और श्री यथाधर पाटणकर के सहयोग से शिक्षा में सुधार की एक योजना आरम्भ की गयी है जिस पर जिला आचार्यकुल की शिक्षा-सुधार जन-समिति नाम कर रही है। इस योजना का उद्देश्य दो-तरफा है। एक तो बिहार के प्रचलित पाठ्यक्रम को सही ढंग से द्दिमान्वित करने के लिए शिक्षकों और शिक्षा-विभाग को उत्सुक करना और उसके लिए कुछ मांडल विद्यालय को बन चयन करना। दूसरे जिले में श्री धीरेन्द्रभाई की ग्राम-मुक्तुल की योजना

के अनुसार कुछ नये प्रयोग-क्षेत्र नाम करना।

सहरसा में आचार्यकुल के नाम की रति देने के लिए जिले में लगभग २५० केन्द्र नाम किये गये हैं जो आचार्यकुल, तर्क-शान्तिसेना और ग्रामस्वराज्य का त्रिविध कार्यक्रम संपन्न करने का प्रयास कर रहे हैं।

अभी तक सहरसा का काम हार्डस्कूल तक ही सीमित रहा, किन्तु अब बालेजी में भी आरम्भ किया जा रहा है और सुपहरी डिग्री कालेज में आचार्यकुल की एक इकाई गठित हुई है। शिक्षकों के अलावा सहरसा के अन्य सामाजिक कार्य-कर्तियों का सहयोग भी इस कार्य के लिए प्राप्त है और शिक्षा-सुधार जन-समिति में कम्पनी एंसे लोग हैं जो प्रत्यक्ष विद्यालयों में पढ़ाने का काम कर चुके हैं, किन्तु अभी अवकाश पर हैं।

महाराष्ट्र : महाराष्ट्र के २६ में से २४ जिलों में आचार्यकुल का संगठन बना है। इस वर्ष १००० सदस्य पूरा करने का निश्चय किया गया है और इस रिपोर्ट के सिद्धांत के समय तक ७५६ सदस्य बने हैं। महाराष्ट्र के नाम की एक विशेषता यह है कि वहाँ पर आचार्यकुल के साथ-साथ तर्क-शान्तिसेना का नाम भी आचार्यकुल ने हाथ में लिया है। यह बात यद्यपि अत्यन्त ही होखी है, किन्तु महाराष्ट्र में इस ओर अच्छी प्रगति हुई है। महाराष्ट्र में उत्तरयो या सदस्यता-मुक्त जमा करने का काम बन्दो की चीज दिया गया है।

मध्य प्रदेश : मध्य प्रदेश में इस साल आचार्यकुल का नाम गांधी आगे बढ़ा है। वहाँ भाई श्री गुरुचरण जी (जो मध्य प्रदेश आचार्यकुल के संयोजक हैं) के प्रयास से अब प्रदेशीय तदर्थ समिति का गठन हो गया है जिसका पहला सम्मेलन पिछली नवम्बर की सप्त-अधिवेशन के समय ही भोपाल में संपन्न हुआ है। वहाँ भी अब तक प्रान्त के ४४ जिलों में से २२ में आचार्यकुल का संगठन बना है। कुल १६५ सदस्य बने हैं। १४ मार्च को सिवनी और

छिटावाड़ा के आचार्यकुलों का सम्मेलन भी नरेन्द्र गुप्ते की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। मध्य प्रदेश के भूतपूर्व शिक्षामंत्री श्री काशिनाराय त्रिवेदी ने सम्मेलन का उद्बोधन किया।

दिल्ली : दिल्ली में अब तक १० इकायाँ स्थापित हुई हैं और ४१ सदस्य बने हैं। गत २९ नवम्बर को दिल्ली प्रदेश आचार्यकुल का सम्मेलन श्री जेनेन्द्रगुप्त की अध्यक्षता में गांधी भवन में संपन्न हुआ है। श्री चिन्मयानि देशमुख और डॉ० शान्तिनारायणजी और गांधी भवन के निदेशक डॉ० एन० एन० रावटे आदि लोग उपस्थित थे। दिल्ली में भी आचार्यकुल ने तर्क-शान्तिसेना का काम उठाया है और योनों के प्रयास से सफाई और एक हरिजन बस्ती का सर्वे का काम हाथ में लिया गया है। कुछ छोटी बन्धायों की पढ़ाई का भी प्रयास किया जा रहा है जिनकी पढ़ाई करीबी या अन्य धरलू बालकों से छूट गयी है। गत १५ फरवरी को डॉ० शान्तिनारायणजी की अध्यक्षता में प्रदेशीय तर्क-शान्तिसेना का सिविल भी संपन्न हुआ है।

सदस्य-संख्या : अब तक देश के कुल ५ प्रदेशों में आचार्यकुल का नाम संगठित रूप से हुआ है। कुल ३१५५ सदस्य बने हैं। इनका प्रास्तावक आँकड़ा इस प्रकार है

१. अयम	७७
२. बिहार	१२४४
३. उत्तर प्रदेश	८०२
४. दिल्ली	४१
५. मध्य प्रदेश	१६५
६. महाराष्ट्र	७५६

भूदान-सहरीक
उर्दू पाठिक
सालाना खंडा : चार दरये
पत्रिका विभाग
७८० देगा संघ, राजबाट, बाराबन्की-१

दंगा या रिहर्सल ?

“यह मेरा लड्डा अठारह बरस का है।—एक बयोबूद्ध खां साहेब ने अपनी जवान औलाद का परिचय देते हुए कहा।

“बहुत घुणो हुई बाप दोनों से मिलकर”—मैने कहा।

“मुमिये तो, हम तो हमकी उम्मीद ही छोड़ बैठे थे। जब हमारे घर पर चढ़ाई होनेवाली थी उसके शायद आठ मण्टे पहले छोटे, बच्चे-बल्पियो और औरतो को लेकर हम तो भाग निवले, यह भीखे रह गया। और जब तीन रोज तक उसका कोई पता नहीं चला तो हमने समझा कि उसे हमलाबरो ने खत्म कर दिया। मगर हुआ यह कि पचोस में एक घोबिन रहती है, उसने तीन दिन तक अपने घर में उनलो के बीच इसे छिपाये रखा और किसीको खबर नहीं होने दी।”

“आप उन घोबिन का नाम बतला उनके हैं।” हमारी टोली के मुखिया, गेफेखर राधेप्रयाग शर्मा ने पूछा।

“नहीं, उसने अपना नाम इस तरहके एक को नहीं बताया, बहती थी कि अगर सात चल गया तो मुहल्ले के लोग उसका हो कष्टाया कर देंगे।”

“यह पत्त है। अब ऐसी डर नहीं है। उस घोबिन ने तो बंभाल कर दिया। उसे विशेष पुरस्कार मिलना चाहिए। अपनी जान को खतरे में डालकर उसने साम्प्रदायिक एतना का शानदार नमूना पेश किया।

× × ×

“हो, मैं राधेप्रयाग शर्मा बोल रहा हूँ। आप कौन हैं ?”

“हलो, मैं (इन्डियन) बोल रहा हूँ।”

“देखिये अमुक मुहल्ले में एक मस्जिद होती जा रही है, वहाँ पुलिस चौक भेजिए।”

“पहले हम मुद पता कर लें और फिर जैसा बकरी होगा बिचा जायगा।

आपका नाम्बर क्या है ?”

भाई साहब राधेप्रयागजी ने अपना नाम्बर दे दिया। तीन घण्टे गुजर गये, कोई नहीं पहुँचा। इतनी देर में फोन आया—“हलो, प्रोफेसर साहब। हमने पता करवाया, बापशी भेदी इतना गलत थी, मस्जिद सलामत है, किसी फोर्त की दरकार नहीं है।”

भाई साहब के नाटो तो खून बही। रात के जाठ बने थे, सारे महर में बचपू या। जहाँ उधे मस्जिद के बचने की खूणो थी, वहाँ अपने पर खालि थी कि मैंने सुड़ी इतना पर बंसे यकीन कर लिया और अखिबारियो को बयो माहक परेगाल किया। अब आबे मेरी बात का क्या बजान है। क्या मानाबादगा ? उनकी पत्नी थी सोसा भाभीजी (जो बख्त महिला डिप्टी नायिज की प्रधानाचार्या हैं) ने भी कहा कि इस तरह बिना सोंचे-समजे कुछ नहीं करना चाहिए। रात भर भाई साहब ने शैबेनी में काटी।

गुदह हुई। उस भाई के पास पहुँचे जिसने इतना दी थी। देखते ही उस पर बरस पड़े..... वह हँसता रहा। इ-ह और भी गुस्सा आया। फिर उसने बड़ी नम्रता से कहा—“प्रॉफेसर साहब मुझे सब माफ़ूम है, मेरी इच्छता एख्दम सही है। पत्तिद आन वह मस्जिद देख लीजिए।”

भाई साहब ने उस भाई को अपनी यादी में बिठाया। वह उन्हें मस्जिद पर ले गया और बोला—“दखिए, यह है।”

भाई साहब हैरत में रह गये। “सूझने लगे...” तो फिर अमुक अखि-कारी ने यह बयो कहा कि कुछ हुआ ही नहीं है।”

यह सबकन हँसने लगे और बोले, “खान यह है कि पुलिस के दरोगा साहब भाये थे दर्पांश करने; तो दूर से ही मुहल्ले के लोगों ने उन्हें घेर लिया और

दूसरी मस्जिद ले जाकर दिखा दी जो सही-सलामत थी।”

भाई साहब ने घर जाकर फिर फोन किया और अधिचारी को सब बताया। दो घण्टे बाद उनका फोन आया, “प्रोफेसर साहब, आपने बिनखुन सही बतलाया। हमें क्या अपमांस है कि आपकी कल की इतना को हमने गलत मान लिया। हमें क्षमा कर दें। अब हमें सब ठीक पता चल गया है। फोर्स जा रहो है। आपके हम बहुत आभारी है।”

× × ×

हनुमानजी के मन्दिर का दरवाजा टूटा हुआ था। पुजारीजी से हमने पूछा, “यह कैसे टूटा ?”

“मिर्जा लोग भाये थे, बड़ा भारी हजूम था। पहले उन्होंने गोलो चनाथो और फिर आस-पास चवाई कर दी। उसके बाद हम मन्दिर की परफ बड़े।”

“तब क्या हुआ ?”

वहाँ सडे एच जेड उमर के बादमो ने कहा, “साहब। हमारी बस्ती में हिन्दू ज्यादा हैं और जाठ-गाल में मुस्लिम आबादी है। अब हम सोमो के घर छुटे जाने लगे वो मन्दिर के इन पुजारीजी ने ही उन लोमो नो हमलाया और हगरी जान बचावी। इस वारते जब इनके मन्दिर पर हमला हुआ तो हमने रोहा और बढ़ा यह गलत काय नहीं होना चाहिए। सिर्फ दरवाजा जरा-सा ठोड़ कर सब चले गये थे।”

उस गोली से एक बादमो मारा गया था। पूत के छोटे हमने एक मकान पर देखे।

× × ×

मे लोमो प्रसंग बायो नवरो के है वहाँ १९ इत को दुर्भाग्यपूर्ण बाग मड़क उठी। अधिचारी दुर में तो भ्रम में थे, लेकिन बाद में उनमें जागृति बायो और फिर बड़ी शर्मा से सिफति को बज्जोत में किया। इस विवट समय में

मुसल-पत्र : सोमवार, ३ जुलाई, '७२

राहू का काम किया नगर सर्वोदय मण्डल की मार्केट शान्ति सैनिक भाइयों ने और नगर प्रमुख द्वारा बनायी शान्ति कमिटी के कुछ सदस्यों ने।

बने की सुन्ते ही शान्ति सेना मण्डल (राजपाट) के मिन बिन्दा में पड़ गये। मण्डल के सयोजक श्री नारायण देवार्दी बाहर गये हुए थे। तबाल वा क्या किया जाय। तब पाया कि अधिकारियों से सम्पर्क कर वपई-पास लिये जर्म और जो कुछ सेना बन पड़े नी जाय। तदनुसार सर्वथी स्वाम वहादुर तत्र, (अध्यक्ष नगर सर्वोदय मण्डल) मोहन भार्दी टपा कृष्ण कुमार (सत्री), सत्यनारायण भार्दी, अनरनाथ भार्दी और भगवान बजाज तथा जसोक भागंभ निकल पड़े। हाथ में लिया नगर के तरण नेता श्री गौर सोपाल बनर्जी को और नगर की दो पयोग्य विभूतियों को श्रद्धंय श्री रोहित मेहता और आदरणीय प्रोफेसर राधेश्याम शर्मा।

इन आठों ने रात-दिन एक कर दिया और जगह-जगह पहुँच कर लोगों का शीघ्र बंधाया और उनकी मदद की। बाईस घण्टी को जिन मजिस्ट्रेट महोदय ने जलपट्टी में बुलायी नागरिक परिषद की मीटिंग में इनके काम की शारीक की। वहाँ एक शान्ति समिति बनायी गयी, जिसके सयोजक नगर प्रमुख श्री पूर्णचन्द्र पाठक मनोनीत किये गये। पाठकजी ने दगा शुरू होते ही एक जेटी-सी शान्ति समिति बना ली थी, जब उसका और विस्तार कर लिया गया। उन्होंने भी शान्ति सैनिकों की सराहना की। मुद्दी भर आरभी भी निष्ठापूर्वक समने पर बिजना कुछ कर सके हैं, इसका प्रभाव है नाशी में लिया शान्ति सेना का पुकारा।

श्री रोहितजी को जने प्रोशम के बदलार २१ तारीख को बसन चले गये थे, लेकिन भार्दी टाडेश्यामजी सगातार साथ रहे। उन्होंने जितनी मदद की उसने

हम कभी उच्छ्रण नहीं हो सके। अपनी पार में हम साथियों को बिठाकर वह खुद झाड़व करते और मुझ से रात तक पूरते रहते।

× × ×
मस्जिद के प्रान्त को लेकर बहुर के मिन भार्दी साहब से ताराज भी हो गये। लेकिन उन्होंने उनके गुस्ते की कोई परवाह नहीं की और अपने आदर्श पर बटल रह कर सेवा में जुटे रहे। एक ने कहा—
“आपकी इन बातों की वजह से आपकी जान से हाथ धोना पड़ जायेगा।”

“हाथ हर्में क्या धोना पड़ेगा, हम तो आराम से चले जायेंगे। हाथ धोना

पड़ेगा आरभी जो हर्में पड़ेंगे।..... लेकिन नहीं, हम इनसे लाभक नहीं हैं कि कुर्तानी दे सकें। यह दर्जी तो नहीं पुग्गई से मिलता है।”

भार्दी राधेश्यामजी का मेरा इतलीस बरत पुराना साथ है। उनसे सबसे पहली मुलाकात नैनी जेल में करिजपत उध्या-यह के दौरान १९४१ में हुई थी। तभी से उनकी आदर्शवादिता, सत्परिजता और निष्ठा का मैं कायल रहा हूँ। उनकी सबसे खास खूबी है—मस्ती, हँसना और हँवाना। यद्यपि वह भूमिबस्ति से रिटायर हो गये हैं और बासठ वर्ष के हैं फिर भी उनकी मस्ती और जवानी सगा-

समृद्धि की जिम्मेदारी सब पर

सामाजिक, धार्मिक शान्ति के लिए

आवश्यक है कि

भूमि-उपबन्धा में समुचित सुधार हो।

उत्तर-प्रदेश सरकार ने इस दिशा में

जमींदारी-विनाश अधिनियम पारित कर

पहला महत्त्वपूर्ण कदम उठाया था और अब

उक्त अधिनियम में उपयुक्त संशोधन कर

मातृगुजारी की द्रों की विपमवार समाप्त की

जा रही है

साथ ही

प्रत्येक परिवार के लिए जोत की अधिकतम सीमाएँ

निर्धारित कर प्राचीन क्षेत्र में समाजवाद की नीति

लागू करने का प्रयास शुरू हो चुका है।

आर्थिक समृद्धि लाने का दायित्व सबको समान

रूप से लेना है।

विज्ञापन :—१ सूचना-विभाग उत्तर प्रदेश द्वारा प्रसारित—

गांधी-परिवार में कौटुम्बिक भावना का विकास हो

सर्वोदय सम्मेलन में जी. रामचन्द्रन् की आकांक्षा

यह भारत का गांधी-परिवार है। दुनिया में भी एक विराचरी है जो गांधी की है। हम लोगों का रिश्ता नब्बदीक का होना चाहिए, रिश्ता-पुत्र, पति-पत्नी को तरह। कौटुम्बिक सम्बन्ध खूब के कारण है लेकिन यह सम्बन्ध विचारों का है, भाई-भारत का है। यह परिवारिकता का सम्बन्ध दत्ता मुद्रा हो जितना होगा चाहिए। भारत जैसे देश में यह मुश्किल काम नहीं कि हम एक परिवार होकर काम करें। अगर हम एक परिवार के नाते काम करें तो भारत सरकार या राज्य सरकार हमारे पास आयेंगी। आज हम अपने काम के लिए सरकार के पास जाकर काम का निवेदन करते हैं। अगर हम सब, जो गांधीजी की आत्मा और परीर है, की ओर से कोई बिल्ली जायेंगी—यादा जाँ और कहे—तो यह जरूर करने के लिए मजबूर होगी। मेरे बच्चे का मतलब यह है कि हमारे बीच जो एकता

चाहिए वह नहीं है। आनेवाले दिनों में यह एकता हम कैसे बनायें? मेरे पास कोई एक जगह नहीं है। सभी अपने दिल में जोचें और जगह ढूँँ। यह जो जगह है, उसमें उच्चतम मेधावी भी भूत हैं। भारत में अच्छे लोग हैं, लेकिन कोई एक अच्छी चीज नहीं दे रहे हैं।

छादी कमीशन के अध्यक्ष के नाते २४ घण्टे कुपन-कुपन विचार चलता ही रहता है। स्पष्ट है कि छादी और ग्रामोद्योग के विषय में गांधीजी के सारे कार्यक्रमों से जलन नहीं सोचा जा सकता है। सत्य के बारे में सोचते हैं, अहिंसा के बारे में सोचते हैं। इन्हे हम दूर नहीं कर सकते। सत्य और अहिंसा का विचार मानव के जितना पुष्टाना और नया भी है। लेकिन जमाने के साथ सत्य और अहिंसा विभिन्न रूपों में आते रहते हैं। गांधीजी के विचार को जितना मैं समझता हूँ सत्य, अहिंसा के साथ छादी जुड़ी हुई है। गैरक ने छादी की आवादी की

वरी कहा था। उन दिनों उन्होंने यह बड़ी बात कही थी। लेकिन हमारे लिए इसका मूल्य खत और अहिंसा की वर्यी है। अगर सत्य और अहिंसा विचार के रूप में रहे तो जलन बात है, लेकिन व्यवहार में तो हम छादी में ही दू-हू देखेंगे।

सत्य और अहिंसा का सम्बन्ध क्या हो, मैं सोचता हूँ। छादी ग्रामोद्योग उद्योग पूर्णरूपक है। स्पून स्वरूप जमाने के अनुसार बदलेगा। छादी ग्रामोद्योग का काम मुझे सीखा गया तो कमीशन के कार्यक्रमों ने कहा कि छादी पहनने के लिए मजबूर न किया जाय। इस सम्बन्ध में हमने कहा कि हम इस पर सोचें। लेकिन यह भी कहा कि छादी का काम करनेवालों में छादी के प्रति विरवाह नहीं होगा तो छादी कैसे चलेंगी? उन्हें नशाबन्दी की ब्रिहल दो। नशाबन्दी के कार्यक्रमों अरने लिए एक माँ में सीने के लिए, कैदी ब्रिहगर्हि है वह? उन्हें समझाया और उनसे कहा कि अगर मैं माँगको नहीं समझा सका तो मुझे कमीशन की छोड़ देना चाहिए।

मुझे आगये कच्चे में सरोच नहीं—लोग कहते हैं कि छादी गलत रास्ते पर है। मैं भी इसे बचू कर रहा हूँ। कमीशन के साथी सदस्य जो यहाँ हैं वे मुझे माफ करें। छादी ग्रामोद्योग का काफी पैसा दरिदरारायण को नहीं मिलता, परन्तु मुझे माफ पर ध्यान देंगे तो आप देखेंगे कि बेरोजगारों की रोजी देने का काम छादी ग्रामोद्योग कमीशन ने किया है। दूसरा कोई सफल नहीं है जो रोजी-रोटी दत्ता दे सके। इसे आगे और बढ़ाने की जरूरत है।

मुझे शान्तिसेवा का विचार पसन्द है। शान्तिसेवा की छादी ग्रामोद्योग का दिज्ञक बनना चाहिए। जाति-नाति को मिटाने के लिए शिवालय की तरह लगाना चाहिए। अगर कम्युनिस्ट के पास गांधी जगह से आधी सक्ता भी होती तो वे इस देश को कम्युनिस्ट बना देते।

देवेन्द्र भाई सक्की जोइने की कोशिश कर रहे हैं लेकिन सफल नहीं हो पा रहे हैं।→

→चार नाम है और सर्वोदय के लिए एक पड़ा नरतान है। नैनी जेज से ही मुझे उन्होंने अनुप्राणपूर्वक अपना विषय और भाई का वास्तव्य सदा दिया है।

× × ×

आश्चर्य है कि बासों में साम्प्रदायिक दमो के लिए जो पुराने मुद्दले बंदनाम हैं—बैते सालभैरो, हनुमान फाटक, पाखे हवेवी, सन्नापुरा, वहाँ इस बार पूरी शान्ति रही। उनके बजाय मुहसान दुआ मदनपुरा, रमापुरा, रेवड़ीतालाब, बसोषिन्ना, देवनागपुरा, नयमा, नरिपा, सर्वेश, सहरताप, बबलरहा बादि क्षेत्रों में।

बबरसोहा जैवी मुहूर नली में "योग स्याह" (काला दिन) बनाने के इशतहार दीवारो पर बड़ी तादाद में देखे जाते हैं आपाज हुआ कि तितनी जबरसतत तैरगी थी। सब तो यह है कि अन्तोग

शान्तिसेवा दिन के विरोध की जाह में खल कुछ दूतरा ही है। वह है मुस्लिम नग्नो को फिर से उरसाकर और "हलाम खदरे वे" का होना खडाकर एक तहरीक चलाने। और कृष्क चुनाव, जनसक्या अनुराती प्रतिनिधियर आदि की प्रतिनिध्यादीन माँन करला।

इस तरह स्पष्ट सकेन किया है डा+ अन्दन जतील फरीदो ने अने उर पावण में जो ६ माई की उन्होंने मुस्लिम मबलित के प्रन्वीद सम्मेलन की जम्ब-छाटा करते हुए इलाहाबाद में दिया। उन्होंने साफ कहा कि हमारे सब का प्याता लबरंज हो चुका है और जुलाई से हम अपनी तहरीक शुरू कर दंगे।

क्या अलीगढ़, फिरोजाबाद और फाको के दंगे उसी के तहरीक तो नहीं है?

—राहु

आपके पुत्र

सर्वोदय और राजनीति

समाधानशी,

२९ मई १९७२ के भूदान-पत्र को देखने का अवसर मिला। उसके यह पत्रा पत्रा कि तप अधिवेशन तथा सम्मेलन में भाग्यार्थकृत, साहित्य-प्रकाशन, सारासन्दरी, प्रागदान-प्रागसारास, भूमि-सुदन्दरी, साहित्येया तथा डाकुनो का धामन-सम-पंन आदि सभी विषयों पर चर्चा हुई। कुछ प्रस्ताव पास किये गये तथा कुछ निर्णय किये गये। मेरा ख्याल है कि यह जो कुछ हो रहा है उसके कुछ कठोर का धामन-समन्वय भले ही प्राप्त हो लेकिन अनुभव से यह साफ जाहिर है कि इसके न तो जनता में कुछ करने के लिए प्रेरणा प्राप्त हो रही है न नवयुवकों को वीर-भूति के विचार के लिए कोई आधार बन रहा है। यह तो जाहिर है कि आज का नवयुवक अधिसूत्र अपनी रीटी की फिकर में है। उसके अलावा वह यदि किसी तरह व्यरहित हो तो केवल वर्तमान राजनीति की ओर। इसका भी कारण है। कारण यह है कि 'पार्टी-पॉलिटीक्स' के कारण नवयुवकों को अपनी बात कहने का अवसर प्राप्त होता है और सभी-नमो स्थानीय व्यवस्थापक स्तर पर विरोध करने का उनको मौका मिलता है। अपने व्यक्तिगत के सम्मान अथवा सम्मान के

विरोध में ते एक दूसरे के विरुद्ध खड़े हो जाते हैं और एक प्रकार की निष्क्रियता घमास हो जाती है। यदि ऐसा न होता तो उनकी हालत उन हितियों की हो जाती जिन्हें कभी भी संयोग नहीं है तथा घुटा के कारण केवल आत्महत्या ही उनके पहले पड़ती। यदि लोगों का यह ख्याल हो कि आज की 'पार्टी-पॉलिटीक्स' बेकार है, उसके कुछ होनेवाला नहीं है, तो किसी हद तक यह बात विचारणीय हो सकती है। लेकिन केवल इतना भर कह देने से काम चलेवाला नहीं है। क्योंकि अभी पार्टी-पॉलिटीक्स का कोई विकल्प सामने नहीं आया है। सर्वसम्मत और दलमुख्य राजनीति का विकास नहीं हो पा रहा है। क्योंकि जो लोग सर्व-सम्मत विषयों और दलमुख्य राजनीति का विचार करते हैं वे जाहिर तौर पर राजनीति से अलग हैं लेकिन कुछ धर्म-संघों द्वारा वे राजनीति को पूरी तरह से छतला दिये हैं। उसका फल यह है कि उनकी अपनी तो कोई राजनीति बन नहीं जाती है लेकिन राजनीतिक पार्टियों और सरकार द्वारा प्रतिपादित राजनीति के वे विचार हो जाते हैं। चाहे शरास-वन्दी हो, चाहे डाकु-समस्या हो, चाहे भूमि-सुदन्दरी हो, इन सबका समाधान राजनीति से है। सर्व सेना सघ और उसके नेता चाहे 'सो दावा करें लेकिन तत्समन्वयो मायलो में वे सीधे राजनीति में जा जाते हैं। इन सभी राज्यों का निर्णय जनता द्वारा न होकर सरकार द्वारा होता है। अतः सरकार अपनी बात पर कायम

भी नहीं रह पाती है क्योंकि मन्त्र था यही वह खोचती है कि जनशक्ति अथवा जनमत उसके साथ है। और यह बात भी वह केवल राजनीतिक पार्टियों को दृष्टि में रखकर कहती और करती है। क्योंकि राजनीतिक पार्टियाँ सभी पराजित हैं। लेकिन पराजय का यह तात्पर्य नहीं है कि वे शक्तिहीन हैं अथवा उनकी उर्ध्वा की जा सकती है। अगर विरोधी पार्टियाँ न होती तो सत्ताधारी पार्टी आज विलम्बिता के घोर संभव में फँसी होती और देश रक्षात्मक को नला गया होता। लेकिन विभिन्न पार्टियों के कारण कुछ संयुक्त बनाये रखने में सह्यता अवसर प्राप्त होती है। जैसे इतनी अधिक पार्टियाँ न होकर २ या ३ पार्टियाँ होती तो देश का ख़तरा देश में आज के विषय में प्रचलित लोकतन्त्र के विकास के लिए अधिक व्य-सर प्राप्त होता। जहाँ तक सर्वोदय का सम्बन्ध है उसे राजनीति की उपाय नहीं करनी चाहिए, बने ही पद और प्रविष्ट्य वाली राजनीति से अलग रहे। बिना इसके सर्वोदय के लिए कोई कार्यक्रम होगा, न वीर-भूति के परिचय का अन्वय मिलेगा। यह केवल बौद्धिक विचारविद्या का प्रतीक होकर रह जायगा; क्योंकि आज के उसके प्रस्ताव पर जनता की कोई प्रतिक्रिया नहीं होती।

—सिधार्थ

शरासवन्दी समिति के शिष्ट मण्डल की विचरमन्त्री से मेट

नवपुर २० रू। शरौद देश थी गोकुलमार्थि घट्ट के नेवुर में बाब यहाँ राज्य के वित्तमन्त्री थी पन्धमन नंद वे शरासवन्दी सत्याग्रह समिति का शिष्ट मण्डल मिला। उनके सरकार की शीरित नीति के विपरीत चलनेवाली सर्वैय सारास की दुबाराओं को हटाने जाने की माँग की। शिष्ट मण्डल ने राज्य के मुखमन्त्री द्वारा मिनर, मन्त्रिम विद्यालय, अखलाय तथा मन्डूर बरिदियों के समीप की दुबाराओं को नुरल हटाने जाने की माँग की थी और आगवा ध्यान साहित्य किया। ●

→ हम इस सम्मेलन में केन्द्र भाई को बहूँ कि आज इस क्षण में पूरा समय लगाये। छात्री प्राथमिक सम्मेलन की संकट से ही समस्याओं को जोड़ने के काम में मदद करने के लिए कहेंगे।

यह रजत जयन्ती का वर्ष है। आजादी दिवस के बड़े लोगों के प्रयास से नहीं, देश की वोट-पॉलि जनता की कुर्बानी से आती है। अतः इस रजत जयन्ती वर्ष में हमने विभिन्न कार्यक्रम सोचा है :

हम एक लाख परिवारों के नाम खादी के राष्ट्रीय रिजिस्टर पर दर्ज करेंगे। हर एक राज्य में छात्री प्राथमिक बोर्ड के कार्टेक्टर इस नाम को करेंगे। इस रिजिस्टर पर दर्ज परिवारों के समीप सदास खादी पहनें, उसके साथ और स्वयं भी करें। वे परिवार आदि-नाति भी रहेंगे।

नकाँदर,
२०-५-७२

हान ही में बिहार के सहरसा जिले में जो शर्मन्तराज्य महायुग का अभियान हुआ, उसमें भाग लेने का भोक्ता मिला। वहाँ जाँ देखा उसके आघात पर एक प्रकट चिन्तन लिख रहा हूँ।

सहरसा में हमने देखा कि बहुत से गाँवों में ग्रामदान के पत्र पर हस्ताक्षर नहीं हुए हैं। लोगों को पूरी जानकारी भी नहीं है। ऐसी परिस्थिति देखकर मन में अविश्वास पैदा हो गया है। बिजना हुआ उसके बड़ा-बड़ा कर जाहिर करने से हमारे काम को ही घबरा लगा है।

हमने देखा और सुना कि भूदान में मिली जमीन का बंटवारा नहीं हो सके कागजी ही रहा है और जसमें भूदान बोर्ड मोर्टेन-बहरी भी कर रही है। एक ओर तो हम गाँव में कोई झण्डा न हो, और हो तो गाँव में ही उसका निपटारा हो, ऐसा कर रहे हैं। और दूसरी ओर हम ही मोर्टेन-बहरी करें, यह क्या ठीक है? साथ ही यह है कि ऐसे विषयों में हमको सत्याग्रह का ही सहारा देना चाहिए, लेकिन मोर्टेन-बहरी नहीं करने चाहिए।

भूदान बोर्ड के कार्यकर्ताओं ने भी पूछ लिया है और भूदान में मिले पैसे का व्यवस्था किया है, ऐसा भी हमने देखा। जहाँ-जहाँ भूदान हुआ वहाँ-वहाँ हमने गाँव की समिती न बनाकर भोक्ता करनेवाले कार्यकर्ताओं को रखा, उनसे गाँव के लोगों को काम में अग्रगण्य नहीं लगाता है।

बिहार में भूदान में बहुत जमीन मिली है, जिससे उसके बंटवारे में कुछ पड़सक हो सके, यह स्वाभाविक है लेकिन यही भी भूदान मिले १०-१५ वर्ष हुए छिद्र भी बहुत जमीन बिना बंटवारा जिनके पड़े रही है और नहीं बड़ी तो ऐसी जमीन पर गाँव के कुछ जाने-जाने लोगों का कब्जा हो गया है। तो अब ऐसा कार्य-कर्म घोषणा चाहिए कि बहुत धरमिक में सभी भूदान का बंटवारा होना चाहिए

या यदि अगर न हो घना तो जितनी भूमि वा बंटवारा हुआ इसके सन्तोष मानकर बचे हुए शानतन का नाश कर देना चाहिए।

जाने-अनजाने आज सर्वोदय-कार्य में वही दुर्लभताएँ फँसो हुई हैं उसको साफ करने के लिए और सही रास्ते पर जाने के लिए हमको नये विरे से कुछ घोषणा चाहिए।

१—सारे देश में सभी सर्वोदय-कार्य-कर्ताओं को शुद्ध आन्दोलन करना चाहिए और सार्वत्रिक २४ घण्टे के जनमन से उसको शुरूवात करनी चाहिए।

२—सर्वोदय-कार्य में शामिल होने-वाले कार्यकर्ताओं का नैतिक स्तर उँचा होना चाहिए, उनका जीवन शुद्ध और सार्विक होना चाहिए।

३—कोई भी काम पर पूरा अमल नहीं हो जाय तब तक उसकी जाहिरात नहीं करनी चाहिए। भूदान मिलने के बाद उसका सही बंटवारा हो और भूमि-हीन को उसका कम्पा निव जाय उसके बाद ही उसकी जाहिरात होनी चाहिए।

४—जहाँ-जहाँ भूदान मिले वहाँ गाँव की समिती बनाकर उसको जिम्मे-वारी दी जाय तो अच्छा काम होगा और लोगों को दिलचस्पी रहेगी तथा अपनी जवाबदारी का मान भी पैदा होगा।

—बल्लभराज दोषी

आवश्यकता, गुजरात
२-५-७२

नाम-प्लेट पत्रवाह्य

जीवन के निमित्तदार प्लेट-‘गाम्भ-हैमिक’, ‘जय जगत’, ‘सर्वोदय-मित्र’, ‘लोकसेवक’, ‘तल्प-साहित्यसंजिका’, ‘ग्रामसेवक’, आदि हर प्रदेसीय भाषा में—बनवाने के लिए श्री रामगोपाल बाबाद सर्वोदय कामन्वर्ता, सराय मन्नासिद्ध, बलीगढ़ (उ० प्र०) से सलक करे।

ग्रामदानी कार्य

ग्रामदान की पुष्टि और प्राप्ति के लिए कर्नाटक सर्वोदय मण्डल ने जनवरी के दूसरे सप्ताह में एक अभियान आयोजित किया था, जिसमें बचगाँव ताजुबा में बजोली गाँव के नजदीक ३२ में से २० गाँवों का ग्रामदान हुआ। २० एकड़ जमीन भूमि के २० वें भाग के तौर पर प्राप्ति हुई। ३ एकड़ जमीन वही पर बंटे दी गयी।

१० गाँवों में एडहाक समितियाँ बनायी गयी। अब तक एक से अधिक विद्यालयों में वैज्ञानिक और महत्त्वपूर्ण उन्नति हुई। एडहाक समितियों ने ग्राम-कोष के लिए अनाज जमा किया। १० गाँवों ने ग्रामकोष में १५५२ गोरों अनाज जैसे धान और रागी जमा किया।

ग्रामकोष : बजोली सहित तीन गाँवों में ग्रामकोष इकट्ठा किया जा रहा था। एडहाक समिति के अध्यक्ष के नेतृत्व में मोरो ना जल्दा परिवारों में जा-जाकर ग्रामकोष माँग रहा था। उन्हें यह बात भी नहीं जा रही थी कि वे जो २० वहाँ अपनी आर्थिक स्थिति और उत्पादन के अनुपात में हो। बूँक पसल पुरान हो कटो धी और जो ग्रामकोष इकट्ठा कर रहे थे वे सभी परिवारों को जानते थे। इसलिए वह यह निश्चित कर सके कि किसकी विजना देना है। किसी परिवार ने उसका विरोध नहीं किया। इसलिए ग्रामकोष का कार्य तेजी से चलता रहा। अब तक जो कुछ इकट्ठा हुआ उसको कीमत १०, ००० रुपये है। यह कोई मामूली बात नहीं है। श्री सदा-शिवराज भोमवे का हवाल था कि और बहुत कुछ इकट्ठा किया जा सकता था। मनोकैरी में पुष्टि-कार्य के लिए एक और केंद्र खोला गया। धी-धी-धी १००० भूमा दूसरे शानतनी गाँवों का दोष कर रहे हैं और गाँवों को पैसा रहे हैं।

माम-शान्तिसेना शिविर : वाम-
वेरिज और हान्दीगनोर गांव में ग्राम-
शान्तिसेना शिविर पचासे गये। तृतीक
होनेवालो की संख्या १० और ७० थी।
शिविर में हरिजन भी शामिल हुए।

अनदान : ४ गांवों के लोगो ने
स्वेच्छा से एक बुंदा बनाने, दूसरे में गांव
का साधन साफ करने, तीसरे गांव में
एक नहर खोदने, चौथे गांव में ६ फलांग
लम्बी झक बनाने के लिए समयदान
दिया।

अलतमे के युवको ने अनदान की
योजना की, और नवो जोश से उन्होंने
पूरे दिन बिरगत थी। बहुत सारे लोग
जिन्हे पीने की भाव्य भी बराब से दूर
रहे।

एक वार्धकको से एक बड़ा लाभ यह
हुवा कि एक युवक ने आन्दोलन के लिए
पूरा समय देने का निश्चय किया।

मुष्टि-नाम के लिए जो श्रेय बुना
गया, वह सत्रिय और प्रगतिशील है और
ग्रामदान को वास्तविकता बनाने की
दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है।

—सत्यवत
**राष्ट्र-सेवा और क्रान्ति के
लिए एक साल**

प्रचलित शिक्षा निपटकार का जोड़कर
राष्ट्र-सेवा और क्रान्ति के लिए एक साल
को-बहुत तरुण-शक्तिसेना का एक महत्वपूर्ण
वार्धक है। १९७१ में महामरादा और
हन्दोर शिविर से १ साल देनेवाले तरुण
आने ला रहे हैं, और इस कार्य के लिए
पूरा समय अर्पित करने के कार्यक्रम को
गति मिल रही है।

एक दोम्बावहाल में राष्ट्रीय-स्तर का
एक शिविर तथा सम्मेलन एवं महाराष्ट्र
में प्रांतीय स्तर के ३ शिविर हुए। इन
शिविरों में कई विश्वविद्यालयीन स्तर के

नवयवानो ने अपना एक साल देने की
घोषणा की है—

(क) दिल्ली १ एवं या उससे भी
अधिक समय से पूरा समय देकर नाम
करनेवाले तरुणों में से निम्न तरुणो ने
आगे भी यही काम करने की घोषणा
की है :

सखन 'देव' (सहरसा, बिहार),
मदाविनी दवे (बहमदावाद, गुजरात),
दिनकर चौधरी (बर्धा, महाराष्ट्र),
त्रिभोर देशपाण्डे (अमरावती, महाराष्ट्र),
नरेश बदनोरे (बबलनाल, महाराष्ट्र),
अशोक वग (बर्धा, महाराष्ट्र), सन्तोष
भारतीय (उ० प्र०), विजय भोसले
(हन्दोर, मध्य प्रदेश)।

(घ) दिल्ली कुछ महीनो से पूरा
समय देकर नाम कर रहे निम्न साधियो
ने अपना एक साल भी देने की घोषणा
की है।

अशोक भागवं (उ० प्र०, रायस्थान),
गतिनी भोसले (नबीली, मैसूर), अशोक
वीरले (म० प्र०, महाराष्ट्र), नचिषिता
देसाई (वाराणसी, उ० प्र०)।

(ग) गर्मी की छुट्टियाँ समाप्त होते
ही इस साल में पूरा एक साल देने की
घोषणा निम्न साधियो की है—

विनायक भाडाडे (बोहापुर, महा-
राष्ट्र), माया देशपाण्डे (अमरावती,
महाराष्ट्र), राजीव पनके (बर्धा, महा-
राष्ट्र), आशा भागवं (रायस्थान),
सुधांरि यानो (उ० प्र०), जमिता मराडे
(बेलगाँव, मैसूर) विनायो वागनोरकर
(नबीली, मैसूर), महेश बादल (रोवा,
म० प्र०), पुष्पनिन्द कुमार (अजमे),

एनके अलावा यन-उम कुछ साथी
संके भी है जो पूरा समय देकर नाम
कर रहे हैं विन्तु उन्होंने अभी घोषणा
भी तक नहीं की है।

—अशोक वग

एन-श्वयवहार का पता :
सर्व सेवा संघ, पत्रिका-विभाग
राजघाट, वाराणसी-१
तार, सर्वसेवा फोन : ६४३९१
सम्पादक

राममूर्ति

इस अंक में



दोष निश्चय ?

—श्री मुस्तका वमान ६१०

भारत के गुप्त सगठनों का
गुलनारतक अध्ययन ६१२

केन्द्रीय भाषार्थगुप्त विवरण ६१७

गांधी परिवार में कौटुंबिक
भावना का विरासत हो

—श्री जी० रामधन्व ६२१

सहरसा के अनुभव: कुछ प्रबल विचार
—श्री बन्धुप्रदाय दोगी ६२३

अन्य स्तम्भ

बापरी के पन्ने, धारक पत्र,
जात-रोजन के समाचार

सर्व

साम्योद्यम

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञ मूलक साम्योद्यम प्रधान। इति सत्क क्रान्ति का संकेतवाचकः साम्योद्यमः

करुणामूलक प्रक्रिया से ही साम्ययोग

साम्य करुणामूलक हो, तभी उसका साम्ययोग बनता है, वरना वह यांत्रिक प्रकृति से बाया हुआ स्थूल साम्य हो जाता है, जो वास्तव में साम्य है ही नहीं। दुनिया का सारा पानी नीचे की ओर दौड़ता रहता है। सबसे नीचे समुद्र नाम का जो गड्ढा है, वैसे भरने के लिए सारी नदियों करुणावश उसकी ओर दौड़ती हैं। नदी यहनेवाली करुणा ही है। साम्य करुणामूलक न हो तो वैषम्य, अगड़े पैदा होते हैं। इस साम्ययोग को साने की एक व्यावहारिक प्रक्रिया बुद्ध और महावीर ने उपस्थित की। कुर्से में घड़ा-भर पानी निकालें तो पानी में घड़े के आकार का गड्ढा नहीं पड़ता, बल्कि पानी की ही सतह कुछ नीचे जाती है, क्योंकि पानी के बिन्दु चारों ओर से गड्ढा भरने के लिए दौड़ पड़ते हैं। लेकिन चावल के डेर से एक सेर चावल निकालें तो गड्ढा पड़ जाता है। सिर्फ दो-चार महात्मा चावल वह गड्ढा भरने के लिए दौड़ते हैं, बाकी सभी अपनी ही अगड़ बैठे रहते हैं। स्नेह और अनुराग के कारण पानी में साम्य की स्थापना का गुण आता है। इस प्रकार की करुणा-वृत्ति ही तभी साम्ययोग सिद्ध होगा।

इन निर्णो अर्थ-शाब्दक, साम्यवादी आदि कृत्रिम और भौतिक प्रक्रिया से साम्य स्थापित करने की कोशिश करते हैं, लेकिन वे साम्य के बजाय वैषम्य ही पैदा करते हैं। सबसे मानसिक वैषम्य तो होता ही है बाह्य वैषम्य भी आता है। हस्त में साम्य की स्थापना की कोशिश की गयी फिर भी वहाँ बेतनों में ७०-८० गुना अंधे हैं, ऐसा कहा जाता है। वहाँ साम्य की स्थापना इसलिए नहीं हो सकी कि इनकी प्रक्रिया करुणामूलक नहीं थी। करुणामूलक प्रक्रिया से ही साम्ययोग की स्थापना हो सकती है।

—विनोबा

सिन्ध का दंगा : उर्दू-सिन्धी

आज से २५ साल पहले हिन्दुस्तान के मुसलमानों ने एक स्वप्न देखा था— मधुर और सुहृद्भा स्वप्न। वह स्वप्न था "दक्षिण होमलेण्ड" का। अंग्रेजी राज-नीति ने उसे कारतविक बनाया। पाकिस्तान—एक कवि की कल्पना और एक विचारार्थी का अतिरिक्त कल्पना-स्वाप्नित दुःख।

मुख्यमान गलत धोर पर यह समझ बैठे थे कि धार्मिक इनाई एक जीवित शक्ति है। जबकि भाषा और संस्कृति की एकाई, राष्ट्रीयता और आर्थिक विकास को अभिलाषा वे शक्तियों हैं जिनके पुराने पर धार्मिक इनाई नहीं टिक सकती। कोई भी आबादी यह नहीं बदलाव कर सकती है कि उसका धार्मिक भाइयों के हाथों शोषण हो और उसकी भाषा और संस्कृति के उचित अधिकार छीन लिये जायें। इससे इनाई नहीं किया जा सकता है कि इस्लाम एक ऐसी सोसाइटी स्थापित करना चाहता है जो व्यापिक, सांस्कृतिक और भाषाओं की छंभा से परे हो। लेकिन इतिहास में ऐसी कोई सोसाइटी स्थापित नहीं हुई है। ईरानियों और अरबों, बरबों और तुर्कों, तुर्कों और अरबों के बीच का सघर्ष हमें यह बताता है कि धर्म में अब इतनी शक्ति नहीं रही है कि वह विभिन्न भाषाओं और संस्कृति के लोगों को बांध कर रख सके।

"इस्लामो बहुमत" की इतिहास पर बना दुःख पाकिस्तान टूट चुका है। उसे टूटना ही था। २५ साल की बेर हमजिए हुई कि यथा गहरा था और हिन्दुत्वानी दुःखों के होते ने पाकिस्तानी इलाकों में रहनेवालों की बाँधों से उनका हिव छिया दिया था।

अभी पाकिस्तान के दुर्घो हिसे का आजाव हुए बहुत दिन नहीं हुए हैं कि

● सैयद मुसफा कमाळ

सिन्ध की धरती पल में गहरा गयी है। यह गूत नये और पुराने सिन्धियों का है। नये सिन्धियों, हिन्दुस्तान से गये हुए उर्दू बोलने वाले लोग हैं और पुराने सिन्धी, सिन्ध के अबकी रहने वाले हैं। दोनों एक दूसरे के पल के प्यासे हैं।

'इस्लामो बहुमत और क्यूवत' आज नापये-आजम मुहम्मद अली जिना की मजार पर शरमवार बैठे हैं।

सिन्ध की भाषा सिन्धी करार पा गयी है। उर्दू भाषा के होने से नये सिन्धी जो पुराने सिन्धियों पर हावी हो गये थे अब हावी नहीं रह पायेंगे। सिन्धियों ने अपनी ओ सघर्ष समिति, (सिन्ध युनाइटेड एक्शन कमिटी) बनायी है उसके प्रस्ताव निम्नलिखित हैं :—

- १—सिन्ध की भाषा सिन्धी ही हो सकती है। कोई दूसरी (उर्दू) नहीं।
- २—सिन्ध में अब कोई दूसरा संर-सिन्धियों न बगाना जाय।
- ३—बागला देश के विहारियों को सिन्धी भी कोमत पर सिन्ध में लाकर आबाव न किया जाय।

हम हिन्दुस्तान के लोगों को सिन्ध में इस पल-सरासे पर किञ्चा है। हम दुःखनों का भी दुःख नहीं चाहते। पाकिस्तान तो हमारी दोस्ती की दिशा में आगे बढ़ रहा है। हम उसका शुरा क्यों चाहेंगे! हमें उसकी बदनधियों पर अच्छी तरह है। हमारी सहायशुक्ति दोनों, नये और पुराने, सिन्धियों के साथ है। हम यह चाहते हैं कि पुराने सिन्धियों को उनका प्रायज अधिकार मिले और नये सिन्धियों, सिन्धी-समाज में मुझों और प्रतिष्ठित रहें।

लेकिन क्या सिन्धी समाज में मुझों और प्रतिष्ठित रहने का यही तरीका है। नये सिन्धियों बागलाने के बिहारीयों की गलतियों को सोहरा रहे हैं? उर्दू की सिन्ध की भाषा घोषित करने की मांग

गलत है। करंची और उसके हर्द-गिर्द के लोगों को नये के अधीन एक प्रायज बनाने की मांग और भी अहमकाना थी।

अल्पसंख्यकों का हित क्या इसमें है कि वे अपनी को बहुसंख्यकों से जगल न करें। उनकी आवाज बहुसंख्यक आवाज में इस कदर मिल जाय कि सुननेवाले को कोई अन्तर न नजर आये। उन्हें चाहिए कि वे हर स्थानीय और जन-आंदोलन में आगे बढ़कर हिस्सा लें। सचर के बिन अल्पसंख्यकों ने इस बात की समझा है उनको कोई समस्या नहीं है। वे मुझों हैं और उनकी आशेदिष्टी भी सुरक्षित है। जिन अल्पसंख्यकों ने इस भेद को नहीं समझा है वे परेशान-दुःख हैं। हिन्दुत्वान के मुख्यमान इसके उदाहरण हैं और बागला देश के बिहारी इस उदाहरण के निरक्षित रूप।

हिन्दुस्तान के मुख्यमानों, सिन्ध के नये सिन्धियों, और बागला देश के उन बिहारियों को जो अभी सोचने और समझने की स्थिति में है, यह समझना चाहिए कि हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और बागला देश में सोचतन है। इन देशों के सोचतन-रमक जीवन में गयी उपरती हुई राज-नीतिक परिस्थितियों के हस्त में एक वास्तविक, गतिशील, और विधासक रोल बगलाना ही उनकी समस्याओं का हल है। ●

संघ के अध्यक्ष श्री सिद्धरामजी का कार्यक्रम

जुलाई २३ से २४	बाराबंसी
जुलाई २५ से २६	मुहुरी (बिहार)
जुलाई २९ से ३ अगस्त	उहरवा
अगस्त ५	दिल्ली
अगस्त ६ से ९	जयपुर
अगस्त १० से १०	राजस्थान के जिलों में
	प्रो० टाकुरावाड बग
	के छाव भ्रमण

विलकुल नयी जागतिक क्रान्ति

● काका कालेकर

बाइबल सब लोग क्रान्ति की ही बातें करते हैं। क्रान्ति को दूधका हो या न हो, तैयारी हो या न हो, बोलने में, लिखने में और योजनाएँ बनाने में, क्रान्ति शब्द बार-बार लाने की आशय ही लोगों को पड़ गयी है। नतीजा यह हुआ कि लोग केवल क्रान्ति शब्द के आदी बन गये हैं और भुन गये हैं कि क्रान्ति का अर्थ है जल्दी-से-जल्दी जीवन में और परिस्थिति में आमूल परिवर्तन करना। पुरानी बातें चाहे जितनी रिश्त हो, मजबूत हों, अगर वे लाइन्हा नाम की नहीं हैं, तो उन्हें तोड़ने के लिए हिम्मत बताना, यह है क्रान्ति का स्वरूप।

विद्यो भी शैव में हम नाम करते होंगे, बोद्धे ही अनुभव से हम देख सकते हैं कि पुरानी बातें, चकती आयी हुई बातें, आदिवा सचमुच बाम नहीं दे सकती। अगर सचमुच पूर्वक जीना है, और जोने का प्रयोजन सिद्ध करना है तो पुरानी रचना और पुरानी व्यवस्था तो बदलनी ही होगी। इसके अलावा, पुरानी रचना और व्यवस्था से आदी बना हुआ मन भी, बड़ी तेजी से बदलना होगा।

जब तक इसी तैयारी नहीं हुई है क्रान्ति शब्द का उपयोग करना, क्रान्ति के लिए बेवफा बनना है।

सारी दुनिया के "मानवता के सेवक" खेवा करते-करते इस नतीजे पर आ गये हैं कि पुरानी-भारतिय थर बाम नहीं दे सती। "या तो हम बसते या नष्ट हो जायें" यह है क्रान्ति का प्रश्न और बहोर सूच।

क्रान्ति के बाधक तत्व

इनमें बहिनाद चीन-सी है? बाहर की कठिनायों चाहे जितनी हो, उनके साथ हम लड़ सकते हैं लेकिन जब मानवी मन पुरानी बातों का (रिवाजों

का, रचना का, अवस्था का या संस्कृति का) भारी बन जाता है, तब मन ही परिवर्तन के लिए तैयार नहीं होता। आदि के कारण मन अपना सचोला-पद से बँठा है। (किसी ने ठीक कहा है, यौन का लक्षण है सजीवान। इसे छो दिया तो हम बुद्ध बन गये।) ऐसे लोग भी समाज में पाये जाते हैं जो शरीर में और कार्यक्षम में बुद्ध नहीं बने हैं किन्तु जिनका बनी हुई आदतें छोड़ने का दिल हो नहीं करता। यह स्वभाव एकदम डरा है तो भी नहीं। हर एक संस्कृति में मजबूती के लिए और सफ़ाता के लिए स्वैयं की आवश्यकता होती ही है। हर एक संस्कृति को विजय पाने के लिए भी स्वैयं की उपासना करनी पड़ती है। दुनिया भर की समान संस्कृतियाँ सफलता पाते ही स्वैयं की ही उपासना करती आयी है। जमानों और दुआा दन दोनों के बीच हर एक मनुष्य को जो दीर्घकाल मिलना है, उसके पुरुषार्थ के लिए स्वैयं की ही साध आवश्यकता होती है।)

लेकिन मानव जाति ने स्वैयं की उपासना बनि चलायी, दीर्घकाल तक चलायी। जब यह स्वैयं प्रगति के लिए बाधक है अगर आदिवा केवल जिन्द्या रहना है तो पुरानी बाजों का स्वैयं छोड़ ही देना पड़ता।

आज हम जिस क्रान्ति की बात करता चाहते हैं वह केवल धर्म-क्रान्ति नहीं, राष्ट्रिय क्रान्ति नहीं, हम तो समस्त मानव जाति के जीवन ऋम में और जीवन-व्यवस्था में क्रान्ति करने की बात सुना रहे हैं। इसका आधार केवल धारत का इतिहास नहीं है, केवल यूरोप, अमेरिका का इतिहास नहीं है। समस्त मानव जाति का इतिहास और अनुभव

देखकर हम इस निर्णय पर आये हैं कि आज तक जो व्यवस्था चली थी चली। उसकी उपयोगिता सिद्ध हो चुकी थी, इसलिए वह चली और उसने अपने लिए एक मन्थ और गम्भीर नाम भी धारण किया "मानवी संस्कृति"। अब इस मानवी-संस्कृति में एक महत्त्व का आमूल परिवर्तन करना है।

इस परिवर्तन का विचार समझाने के लिए अनेक क्रियाएँ लिखनी पड़ेंगी। पुस्तक-र-पुस्तक उसी क्रान्ति का नाम करना पड़ेगा। आज हम इस केवल दुआन्तर-वारी परिवर्तन का केन्द्रीय स्वरूप समझायेंगे। हमारी अपेक्षा नहीं है कि मानव इस क्रान्ति का स्वरूप समझते ही उसकी स्वीकार करेगा। स्वीकार हो या विरोध, वह बाद की बात है। आज इस क्रान्ति का स्वरूप केवल समझ में आया तो बस है। चन्द हृदय उसका स्वीकार तुरन्त करेंगे। इसके अधिक संख्या के हृदय उसका जोरो से विरोध करेंगे। जिनके हृदय में यह नयी क्रान्ति करने आ रहे हैं वे ही शायद इस क्रान्ति का जोरो से विरोध करने को तैयार हो जायेंगे। लेकिन मानव जाति अन्तर्मुख होकर अपने अनुभव पर विचार करेगा तब उसे नकूल करना पड़ेगा कि यह परिवर्तन आवश्यक है, समायोजित है। इसके बिना दुआन्तर हो नहीं सता। और यह दुग क्रान्ति न की तो मानवजाति नामयोग हो जायेगी।

इतनी सम्बो-बोझ प्रस्तावना अत्यावश्यक नहीं होगी तो इसके पीछे हम इतना समय भी नहीं देते। जो बातें करनी हैं, उसी से प्रारम्भ करते।

सो पुरुष समानाधिकार

प्राणी-जगत में नर-मादा के समान के नयी पुस्तक तैयार होगी है, और जीवन-परम्परा अक्षिणित चकनी है। प्राणी-जगत में शुरू से नर और मादा यह विभाग प्राप्त है। इन दोनों के सहयोग के बिना नये प्राणियों की उत्पत्ति हो नहीं सकती। प्राणी-जगत में कहीं-कहीं नर की श्रेष्ठता पायी जाती है, कहीं-

भूदान-पत्र : सोमवार १७ जुलाई,

वही माया की। जहाँ जैसी व्यवस्था पायी जाती है उसमें परिवर्तन की कोई गुंजाईश ही नहीं बौध पड़ती।

प्राणियों में मनुष्य ही एक ऐसी कृति है जिसमें बुद्धि का तब तेज होने से, परिवर्तन, प्रगति, विकास और उदरार्थ के लिए अवकाश है। मनुष्य-जन्मी भी नर और मादा में विभक्त है। (फर्क इतना ही है कि हृष अपने लिए नर और मादा जैसे शत्रु का प्रयोग नहीं करते। पुरुष और स्त्री शत्रु से ही हम बना नाम बना लेते हैं।)

दिल्ली भी देश भी, दिव्य भी पशु भी, और किसी भी जमाने की मनुष्य-जाति को सोचिए। एक बात स्पष्ट पायी जाती है कि स्त्री-पुरुष दोनों के बीच पुरुष-जाति श्रेष्ठ मानी जाती है और स्त्री-जाति क्षत्र स्थिति को स्वीकार करते ही पसती आयी है। श्रेष्ठत्व के लिए जान तक स्त्री-पुरुष में नर्भी सपथ हुआ ही नहीं। पुरुष ने जिस स्वाभाविकता से अपना श्रेष्ठत्व मान लिया और व्यवहार में चलाया, उसी स्वाभाविकता से स्त्री-जाति ने पुरुषों का श्रेष्ठत्व मान्य रखा है। अब दुनिया भर को सब माताएँ अपनी सङ्कियों को जो शिक्षा या संस्कारों प्रदान करती हैं जसमें यह बात अवश्य होती ही है कि "स्त्रियों को पुरुषों का श्रेष्ठत्व मान्य करने ही चलना चाहिए।"

जस तक यह बात सार्वभौम की और स्वाभाविक मानी जानी थी। स्त्रियों को और पुरुषों को यह बात पर-ही मान्य होने के कारण जसमें मतभेद या चर्चा के लिए स्थान ही नहीं था। मनुष्य ने मान लिया था कि यह कुदरती व्यवस्था है इसे मानकर ही चलना चाहिए।

अब स्त्रियों में नहीं-पक्षी इस पुद्गल व्यवस्था के प्रति अक्षन्तोष जाग उठा है। वे रहती हैं, "कुदरती वीर पर हम दोनों समान हैं। पुरुष स्त्री-जाति पर राज्य चलाये यह हमें अब मन्द नहीं है। दोनों क्षम बँडकर साथें, समानता से अपनी-अपनी बुद्धि समझाएँ और दोनों को सम्मति से परस्पर अनुभूत नयी

संस्कृति की स्थापना करें।"

यह देखा गया है कि समान व्यवस्था अपना समान-रचना वा चिन्मन करनेवाले पुरुष (इसकी सहाय भले कम हो) शत्रुता से बचल करते हैं कि स्त्री-पुरुष दोनों के हक समान होने चाहिए। एक-दूसरे की राय पुछकर सर्वानुमति से जो तय होगा उसी का अमल होना चाहिए। पुरुष और स्त्री के अधिकार समान हों, दोनों को प्रतिष्ठा एक-सी हो और दोनों को अपने-आपने विकास के लिए एक-सी अवकाश मिले।

स्त्री-पुरुष में श्रेष्ठ पौन।

कुदरत ने स्त्री-पुरुषों के शरीर में और जीवन-चार्य में जो फर्क रखा है वह तो रक्षक ही लेकिन इसके कारण न पुरुषों की श्रेष्ठता सिद्ध होती है, न स्त्री की हीनता साबित होती है। अगर फर्क करना ही है तो मात्रा अपने बच्चे को भी महीने अपने पेट में अपने धूल के द्वारा पोषण पहुँचाती है, बच्चे के जन्म के बाद अपनी छाती का दूध मिलाती है। बच्चों को प्राचांभिक संस्कार देने का काम भी ज्यादातर स्त्रियाँ ही करती हैं। इसलिए स्त्रियाँ अपने श्रेष्ठत्व की बात जरूर कर सकती हैं। लेकिन पुरुषों का श्रेष्ठत्व कुदरती नहीं है।

पुरुषों ने ऐंसी चर्चा में आज तक दिव्य भाग नहीं लिया होगा। लेकिन बच्चों की परवरिश में स्त्रियों का भाग अधिक है और उन्नति के सब शुभ संस्कार बच्चों को माया से ही मिलते हैं, पुरुष दाँडो मुक्त पथ से स्वीकार करते आये हैं।

जब सजान यह पूछा जाता है कि साठी दुनिया में आज तक सर्वत्र पुरुष का ही श्रेष्ठत्व मान्य हुआ है, इसका जरूर कुछ कारण होगा।

कारण स्पष्ट है। इतिहास ही बताता है कि मनुष्य जानी छोटी-बड़ी जमानें बनाकर रहता है। इस कलम-अवल जमानों में सहयोग शुरू होने के पहले जमीन के बारे में और नुदरत से मिली सृष्टिपणों के बारे में क्षणमा शुरू हो

जाता है। "जोना है तो सपथें बिदे बिना चल नहीं संरठा।" जीने के लिए मनुष्य को पशु-शत्रियों से, सब प्राणियों से सपथें करना ही पड़ता है। और उनी तरह मानवी जमानों भी आपस में लड़ती आयी हैं। हर जमाना बहता आया है कि लड़ाई करके दूसरे को मारे बिना हम अपने को और अपने बाल-बच्चों को बचा नहीं सकते।

मनुष्येतर प्राणियों में आने बच्चों को बचाने के लिए नर और मादा दोनों लड़ते हैं।

मनुष्यों में बच्चों को जन्म देना, उनका पालन करना आदि सेवा स्त्री को ही देनी पड़ती है। इसलिए मनुष्य-जाति ने तप लिया कि आपस में लड़ना हो तो पुरुष से लड़े और स्त्रियों को लड़ने के कर्तव्य से मुक्त रखे यह है मानव-जाति की सार्व-भौम व्यवस्था। स्त्रियों और बच्चों की रक्षा का भार पुरुषों ने अपने सिर पर ले लिया। इसलिए पुरुषों की श्रेष्ठता सिद्ध हो गयी और स्त्री-जाति को रक्षित प्राणी होने से पुरुषों की जासा में रहने की तैयारी बतानी पड़ी। स्त्री-पुरुषों में भेद का यह एक बड़ा तब पुरुषों की श्रेष्ठता के चुन।

बाद में दूसरा तब इसमें शामिल हो गया।

जोना है तो आजीविका प्राप्य बिदे बिना चारा नहीं। जब बच्चों को सम्भालना और आजीविका ढूँढ़ने के लिए पृथक् रहना, दोनों जान करना स्त्रियों के लिए कठिन हो गया। तब पुरुषों ने आजीविका ढूँढ़ने का काम अपने सिर पर ले लिया। पुरुष शिकार करने जायें या प्राचीन उद्योग-दुधर पचायें, आजीविका चलाने का भार पुरुषों ने अपने सिर पर ले लिया। इस कारण भी पुरुष-जाति की श्रेष्ठता कुदरती वीर पर सिद्ध हो चुकी। रक्षा और आजीविका दोनों का भार पुरुषों ने लेकर स्त्री-जाति को आजीविका चलाया। यही व्यवस्था समस्त मानव-जाति में दुनिया के सब देशों में और इतिहास के सब युगों में सर्वमान्य हो चुकी। ●

भूमि-समस्या और भूमि-हृदयन्दी

● एस० जगन्नाथन्

देश के लाखों भूमिहीन पिछले बहुत वर्षों से अतिरिक्त जमीन पर अपने जायज अधिकार से वंचित रहे हैं। यह अतिरिक्त जमीन मन्दिर, मठ और दूसरे समुदाय के पास है। बड़े बड़े जमींदारों ने जमीन पर कब्जा किया है। राजनैतिक दलों का कहना है कि भूमि जोतनेवालों को है। परन्तु उनकी यह आवाज केवल एक नारा साबित हुई है। और, इसके कारण निराम भूमिहीन बिलकुल ही निराश हो गये हैं।

भूमि के कानून के अमफन होने के मुख्य कारण ये रहे जा सकते हैं।

१—भूमि के कानून का उचित न होना। भूमि पर सोनिंग का ज़ंका होना और अपवाद के नियमों का होना जिनके द्वारा कानून से बचा जा सके।

२—जमींदारों का अध्यात्मिक व्यवहार, जिनके कारण भूमि का बिना किसी सिद्धान्त के ठबावला होना है और वे अपने लिए मठ, मन्दिर और सामान्य भूमि भी अपनाते हैं।

३—कानून के नाशनिष्ठ करने से पराधिकारियों की दिनचरसी का न होना।

४—भूमिहीनों का संगठित न होना और लाचार होना।

५—राजनैतिक दलों द्वारा भूमिहीन मजदूरों की हवाई का भय किंदा जाना और घोषण करना।

कुछ राज्यों—बंबे उ० प्र०, बिहार, उड़ीसा में भूमिहीन बड़ी गरीबी और बेकारी का जीवन बिता रहे हैं। भूमि-दानों ने अपनी जमीनें बड़ा ली हैं। स्वतंत्रता के बाद गरीब वर्ग की पूरी जमीन बड़े जमींदारों के पास चली गयी है। सोनिंग से बचकर अपनी मायकाज को कायम रखने हुए सामान्य भूमि भी उनके कब्जे में आ गयी है। प्रगतिशील प्रान्तों में भी समस्या कोई स-त्य बन

नही है। उमिलनाडु में अपने स्वार्थ के लिए कई मन्दिरों की ३-४ साल एतद जमीन जमींदारों ने कब्जा कर लिया है। पंजाब में भी जो अपने देश का प्रगतिशील भाग है बंटवारे के बाद पाकिस्तान चले गये लोगों की जमीन केन्द्राप सरकार से सस्ते दामों पर बड़े भूमि-मानिकों ने खरीदी ली है। एनसे से कुछ जमीन सलज के किनारे हैं जिसे प्रभावशाली जमींदारों और सोनिंग परदाधिकारियों द्वारा कब्जा कर ली गयी। श्री जैतसिंह की सरकार इसकी तहकोकात के लिए एक कमीटी नियुक्त कर रही है। इसी तरह पंजाब के राजनैतिक दलों ने, विशेष तौर से हरिजन आगारी ने, सोनिंग परदाधिकारियों और प्रभावशाली जमींदारों जिन्होंने शासन के बड़े हथार एतद कब्जा कर लिये हैं, के विरुद्ध जांच की मांग की है। शासन की यह जमीन रैर-नाशनी किसान मालिकों के हाथ में है, जिनका गाँव की पंचायत पर कब्जा है।

अपने पद और प्रभाव से नाजायज साध उठाने का रिवाज ऊपर से नीचे तक पाया जाता है। बहुत सारे लोग जो सत्ता में हैं या सत्ताकूट दल में हैं जमीन हड़पने में लग हुए हैं। यह केवल उच्च पराधिकारियों तक सीमित नहीं है बल्कि एम० पी०, एम० एल० ए० और एम० एल० सी० और सत्ताकूट दल तक के बड़े लोग दली में लगे हुए हैं। जो सत्ता में है वे अपनी भूमि बढ़ाने का कोई बखतर हाथ से नहीं जाने देते। इस तरह से अपने देश में भूमिदानों, राजनीतिकों और पराधिकारियों ने सत्ता प्राप्त करके भूमिहीन किसानों को गुलाम बना लिया है और रैर-नाशनी तौर से सामान्य सरकारी, मन्दिर और समुदाय की भूमि पर कब्जा कर रखा है।

राज्य सरकारों के 'लैण्ड सोनिंग' के कानून सामग्री मानस के प्रतिकूल है क्योंकि

इस बात का ध्यान नहीं रखा गया है कि अपने देश की सीमित भूमि प्रति एतद प्रति व्यक्ति भी नहीं पड़ती, सभी राज्यों में सीनिंग बहुत ऊँची रही है। स्वतंत्रता के बाद पहली कृषि-सुधार कमीटी (जो अर्धशासकीय डा० जे० सी० कुमारस्वामी की अध्यक्षता में बनो थी) कि सिफारिशों कोल्ड स्टोरेज में डाल दी गयी। उसी कांग्रेस सरकार ने राज्यों और केन्द्र में अपनी समितियों की सिफारिशों भी नजर अन्दाज की और एक व्यक्ति के लिए ६० से १०० एकर तक की सीनिंग तय की। इससे पता लगता है कि लाखों मेहनतकशों के प्रति कितना कम ध्यान है। अधिक-से-अधिक 'होल्डिंग' नियुक्त करके इसका रास्ता खोल दिया गया कि अपवाद के अधिनियमों द्वारा बचा जाये। यह नाटक इतना पूर्ण था कि सभी राज्यों में भूमि का सीनिंग-कानून एक घोखा सिद्ध हुआ। 'लैण्ड सोनिंग' की यह बेविली और हल्की बोशिस ने किसानों को एक विचित्र परिस्थिति में डाल दिया है।

यह प्रश्नवत्ता की बात है कि हम लोगों की प्रभावशाली भूमि-समस्या पर अधिक ध्यान दे रही हैं और केन्द्रीय सरकार राज्यों की यह निवेदन दे रही है कि सीनिंग नीचे लायी जाये, अन्वार्द रद्द किये जायें, और दूसरे भूमि के कानून रद्द किये जायें। सामान्य लोगों में एक नया जोश आया है। एक नयी भावना जगो है और कई सरकारें सत्ता में आ गयी हैं। पूरी भूमि-समस्या को समझने के सिनसिले में हन केन्द्रीय और राज्य सरकारों की सम्मोक्षा का स्वागत करते हैं।

यह दुर्भाग्य है कि कुछ राज मन्दिर की जमीन के लेने की केन्द्र की बोशिस का विरोध कर रहे हैं। मन्दिर की दैनिक आवश्यकताएँ लोगों के चपटे से पूरी हनी चाहिए। मन्दिर को अच्छी तरह समझकर रखना भयों और लोगों का कर्तव्य होगा चाहिए। मन्दिर के नाम जमीन होने के कारण लोग अपने वर्तव्य

नहीं समझते। भारत के लोग अपने ईतिक चन्दे से मन्दिर को बाधम रखने के लिए आये आयेने इतलिए मन्दिर की जमीन के लेने में सरकार को सुकीचन करना चाहिए।

जाबोरदारी के समय शिक्षा, दवाई और सामाजिक कामों का काम दान (शिफ्ट) द्वारा होता था, और उस समय पैसे सभ्याओ को जमीनों से जाती थी। परन्तु आज सोवतय के जमाने में इन सब देवाओ का उत्तरदायित्व स्वयं सरकार ने ले लिया है। दुभाय सं 'लेण्ड सोलिंग एक्ट' में शिक्षा, दवाई और सामाजिक कामों के लिए कुछ अपवाद माने गये थे, और बहुत से भूमिवासी ने इसका लाभ उठया। पुरानी जाबोरदारी प्रथा के कारण जमीन की जाय से स्वल्न,नालेज और अस्पताल चलाये जाते हैं, जबकि इन जमीनों में काम करनेवाले विद्यान भूल मर रहे हैं। इसलिए सोवतयािक सरकार का यह बतव्य हो जाता है कि ये जमीनें ले ली जायें और शिक्षा तथा ओपयि के पार्श्व संघे सरकार द्वारा निये जायें।

संजड सोलिंग : डा० जे० सी० कुमारस्वय, काबंस के द्वारा स्थापित की हुई पहली कृषि समिति के अध्यक्ष ने सिफारिश की थी कि एक परिवार पर अधिन-से-अधिक संलिंग प्रति परिवार के जोतने की छमटा की विदुनी से जती चाहिए। जिसे भी हासल में एक परिवार के पास सिबाई की जमीन १० एकड़ से अधिक नहीं होना चाहिए।

भूदानकी प्रभाव : पिछले वर्षों में जमीन की जाती तोर पर दूसरो के नाम करने के हजारे उदाहरण मिलते हैं। एंसा इसलिए विद्या गया कि कानून से बचा जाये और जमीन का विभाजन लगभग हर बड़ जमींदार ने रिदा। प्रधानमंत्री का भूमि-मुधार के सभी प्रयास और लोगों का उत्साह, लैण्ड सोलिंग में अजर भूलसकी प्रभाव से बचा नहीं गया तो, बेकार होया।

स्वेच्छया जन-आन्दोलन : पिछले बीस वर्षों के भूमि-मुधार के कानूनों के समानांतर विनोबाजी के मार्गदर्शन में एक स्वेच्छया जन-आन्दोलन भी चल रहा है। इस आन्दोलन के कारण लोग भूदान और ग्रामदान के द्वारा अपनी जमीनें भूमिहीनों को दे रहे हैं। एउठे बहुत कुछ प्राप्ति हुई और उसार भर का ध्यान इसने आकषित किया और यश प्राप्त किया। भूदान ने जितनी जमीनें बाँटी, वही सभी राजन सरकारो द्वारा बाँटी हुई जमीन से अधिक है।

भूदान आन्दोलन के पहले दोर में क्यारि १९५१ से १९५७ तक ४२ लाख एकड़ जमीन जमा की गयी जिसमें ते २२ लाख एकड़ जमीन १३ साल लोगो में बाँटी गयी। जमीन बाँटने की प्रक्रिया अब भी जारी है यद्यपि इसकी गति धीमी है। जो भी जमीन दान में मिली है वह भूदान आन्दोलन का वैयल भौतिक उप-प्राप्ति (बाई प्रोडक्ट) है। जबकि विनोबाजी की सगानार शिक्षण-प्रक्रिया से १९५५ से ७१ तक के प्रयास के कारण सोह-भाषना इस प्रकार की गयी कि जमीन की मालिकी समाज की है न कि व्यक्ति की यानी ग्रामदान का वातावरण बना। एंठे हजारो ग्रामदानी गांव देस भर में फैले हुए हैं। बिहार, तमिलनाडु, उड़ीसा राज्यों में जिला और ब्लॉक स्तर पर बहुत सारे ग्रामदानी गांव के धांन हैं।

कुछ राज्य-सरकारों ने ग्रामदान को कानूनी मान्यता दे दी है। गांव-समाज ग्रामदान की कल्पना का ऊजरो छोट है। गांव के नालिओ भी ग्राम-सभा होगी और ग्रामसभा की सार-क्रियत होगी। हम सोसो की भयप्रता है कि योजना-महालय ने ग्रामदान को मान्यता दे दी है, और देश के कुछ ग्रामदानी हिस्सो के लिए पूर्ण विनास की योजना बनायी है।

हजारो देस के राजनैतिक नेताओ और अध्यापकियों को ग्रामदान के विचार पर गम्भीरतापूर्वक ध्यान देना चाहिए और राष्ट्रीय संमाने पर काम करने की

योजना बनानी चाहिए। ग्रामदान केवल भूमि की समस्या के लिए ही नहीं, बल्कि गांव के स्तर से ब्लाक और जिला तक के स्तर पर एक सोवतयात्मक जन-संगठन, सोवतयात्मक इनिबाद उपसव्य करता है, ताकि विकास की योजना कार्यान्वित हो सके और उसमें भाग लिया जा सके।

कृषि में दिवाणवलीका प्रभाव : मैयूर के मुख्यमंत्री डा० देवराज उस ने एक बड़ी कल्पनी बात कही है। स्वतयता के बाद रिषी मुख्यमंत्री की यह पहली आवाज है। वह यह कि एक आदमी, जो दूसरे पैसे में है, और उसके काम के दूसरे साधन हैं, उसे जमीन रखने का अधिकार नहीं होना चाहिए। जमीन केवल उनके लिए होनी चाहिए जिनकी जाय का मुख्य सोन भूमि है। वेतरी से दिवचरसी रोज-ब-रोज कम होती जा रही है। सात-ब-सात शिक्षा फल रही है। कार्यालयो द्वारा नोकरी बड़ रही है, उद्योग और व्यापार बड़े पैमाने पर बड़ रहे हैं। कृषि से दिवचरसी न होना देख के लिए विरोधाभास है, और परिणाम-स्वरूप भूमिहीनो की संख्या बड़ रही है। विद्यान, लिपिक, सिपाही का मध्यम वर्ग और व्यापारी, राबटर, इजीनिपर, तकल, उच्च पदाधिकारी, बिनके पास जमीन है, ग्राम की अर्थ-व्यवस्था और भूमिहीनो की समस्या का संबंधीता बना रहे हैं। इसलए जमींदारी के छाया की तरह इसका भी जन्म होना आवश्यक है। यह व्यापारी और पैसाबराता जमींदारी भूमिहीन विचारों को, भूमिहीनो को, जमींदारी से ज्यादा गुपच रही है, जो कि हजारो पादो की संख्या में बड़ रही है। इसलिए एंठे कानून बनाये जा सकते हैं, जिससे जमीन इन लोगों के पैसे में निकल कर वास्तविक वेतलर को मिले।

रैयती और अथ मजदूरी : रैयती का मोरर होना, बँदायारी, मजानों की मानविद्यन, उचित इयक मजदूरी पर भी खरिहरों को भनाई के लिए (दिए पृष्ठ १२१ पर)

स्वतंत्रता के मूल्य, लोकतंत्र के आधार और सर्वोदय-क्रान्ति

सर्वोदय-आन्दोलन स्वतंत्रता-आन्दोलन के उद्देश्यों को साकार करनेवाला आन्दोलन है। लेकिन क्या स्वतंत्रता-आन्दोलन के उद्देश्यों तक पहुँचने की क्षमता सर्वोदय आन्दोलन में आयी है? यदि वह क्षमता आयी है तो उसका रूप दर्शन कुछ होना चाहिए। यदि वह क्षमता नहीं आयी है तो क्यों नहीं आयी इसका तटस्थता से विश्लेषण किया जाना चाहिए।

स्वराज्य का अर्थगुण क्या है।

आज विश्व प्रकार की गिणितता सर्वोदय-आन्दोलन में आयी है वह बहुत ही घुमनेवाला चीज है। गिणितता किन्तु ही कार्यकर्तव्यों के मन को घुमती है। लेकिन उन कार्यकर्तव्यों के मन को तथा उनकी भावनाओं को समझने की कोशिश सर्वोदय आन्दोलन में करीब करीब नहीं के बराबर विकसित है। ऐसा ही कुछ आज का दृश्य है। यह दृश्य बहुत ही भरा है। इसलिए आपद यह आन्दोलन बिसर रहा है। लेकिन इस आन्दोलन के बिसरने से स्वतंत्रता-आन्दोलन ही समान्य हो जायगा। स्वतंत्रता-आन्दोलन का समान्य होना मानव-द्रोह माना जायगा। लेकिन इस द्रोह का आरोप सर्वोदय आन्दोलन पर नहीं आना चाहिए। इसीलिए सम्मिलित से सोचना होगा। इस द्रोह के आरोप से सर्वोदय मुक्त रहना चाहिए। किन्तु राष्ट्र को राजनीतिक स्वतंत्रता मिलने से स्वतंत्रता का मूल्य प्रतिष्ठित हुआ ऐसा नहीं माना जा सकता। क्योंकि राष्ट्र की स्वतंत्रता एक अत्यन्त सन्निध्य चीज है। यह स्वतंत्रता केवल विही साक्षात् से प्राप्त होता है। लेकिन इस प्रकार की स्वतंत्रता राष्ट्र की स्वतंत्रता में अथोक्त सम्पूर्ण नहीं हुई है। इसीलिए भारत की स्वतंत्रता का सही अर्थ क्या था इसे समझने की आवश्यकता है। 'हिन्दुस्व-

● बाबूराव चन्दावार
राज्य' में महात्मा गांधी ने स्वराज की भूमिका (गोल) दुनिया को समझायी है। इस भूमिका को स्वतंत्रता या क्रांति-कारी कदम ही मानना होगा। क्योंकि इस भूमिका में भारत देश में मूलतः परिवर्तन लाने का और इस देश की तथा देश के मानव की नयी रचना करने का संकल्प है। लेकिन यह संकल्प लगता है अभी तक अधूरा-स्त ही रहा है। स्वतंत्रता को महात्मा गांधी ने सम्पत्ता से जोड़ा था। एक ऐसी सम्पत्ता, जिसमें मानवों के सम्बन्ध मानवों-से ही रहते। मानवता का विकास होगा। जिन कारणों से मानव के सम्बन्ध मानवीय रहते हैं बाधा आयी और मनुष्य साम्राज्य या राज्य का दास बना, तथा मनुष्य-साम्राज्य अनेक भेदों से आपस में भेदा और दूरा, उन कारणों को वरमूल से हटाकर लाने का सकल स्वतंत्रता की भूमिका में महात्मा गांधी ने देखा था। इसीलिए उन्होंने सम्पत्ता से स्वतंत्रता को जोड़ा था। औद्योगिक सम्पत्ता ने साम्राज्यवाद को जन्म दिया है। इसी सम्पत्ता का साम्राज्य भारत पर डारि हो साल तक रहा। ब्रिटिश साम्राज्य से गांधी ने सघर्ष किया था, लेकिन सघर्ष ब्रिटिशों के विरुद्ध नहीं था, उनकी औद्योगिक सम्पत्ता के विरुद्ध था। अर्थात् यह सघर्ष एक मानवीय सम्पत्ता को इस देश में बनाने के लिए था। इसे यहाँ के लोगों ने अभी तक समझा नहीं है। और जिस अर्थहीन स्वतंत्रता से आज यह राष्ट्र मुक्त रहा है, वह मानवीय सम्पत्ता को बनाने की क्षमता रखता है या नहीं, इसे समझने की कोशिश भी नहीं हो रही है।

स्वतंत्रता की भूमिका मानवीय सम्पत्ता के निर्माण की भूमिका है। लेकिन इस भूमिका का अर्थ भारत की जनता के हितों-विचारों पर अभी नहीं के बराबर है।

ब्रिटिश साम्राज्य के अस्त के साथ जो राजनीतिक क्षता का हस्तान्तरण इस देश में हुआ, और स्वदेशी राज्यक्षता का निर्माण हुआ, यह स्वतंत्रता की भूमिका भूल बैठा। यह स्वाभाविक ही था। क्योंकि राजनीतिको को राजनीतिक हस्तान्तरण से स्वतंत्रता-प्राप्ति का समान्य माना था। वस्तुतः इन राजनीतिकों में स्वतंत्रता की भूमिका से कम आस्था थी, करीब-करीब आस्था थी ही नहीं। इसलिए राजनीतिक सत्ता-हस्तांतरण को ही उन्होंने स्वतंत्रता मान लिया था और इसी वजह से यहाँ की राजनीतिक आगतक स्वतंत्रता की मूल भूमिका से अनभिज्ञ रही है। स्वतंत्रता की भूमिका से जो परम्परा हमेशा विरोधी रही, उनी ब्रिटिश सदीय परम्परा को यहाँ के राजनीतिकों ने अपना लिया। इसलिए राजनीतिकों पर स्वतंत्रता की मूल भूमिका विकसित करने की, मानवीय सम्पत्ता की दृष्टि से ठोस परिणाम निकालने की जिम्मेदारी नहीं थी। लेकिन स्वतंत्रता की भूमिका समझनेवाले, और वह भूमिका बनाने में जिन्होंने मूल-मूल के साथ हिस्सा लिया था उनपर जिम्मेदारी थी। सर्वोदय-आन्दोलन का साम्राज्य उस जिम्मेदारी को पूरा करने के लिए ही हुआ है।

औद्योगिक सम्पत्ता और औपचारिक लोकतंत्र

स्वतंत्रता की भूमिका में मानवीय सम्पत्ता को बनाने का प्रयास करना जैसे सम्भव था, इसपर विचार करने की आवश्यकता है। आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थितिके परिणामों से व्यवस्था बनती है। इस परिस्थितिकी जड़ में मनुष्य तथा समाज के धर्मिक को प्रभावित करनेवाली प्रेरणाएँ मुख्य रूप से काम करती हैं। इन प्रेरणाओं को मनुष्य-प्रतिष्ठा या मनुष्य बनाना ही तो मनुष्य तथा समाज का धर्मिक उद्देश्य बनाता है। लेकिन मानवीय प्रतिष्ठा के मूल्य बनाने का उद्देश्य इन प्रेरणाओं का न हो तो मनुष्य तथा समाज के धर्मिक में अ-व्यार फँसता है। तो आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थितिके

जड़मूल में जो प्रेरणाएँ दी वे औद्योगिक की दृष्टिपूर्वक से मानवीय प्रतिष्ठा के मूल्य बनाने-वाली नहीं थी। ऐसा एक रूप व्यवस्था के सामने आया। क्योंकि इस व्यवस्था ने मनुष्य की प्रतिष्ठा को बढ़ाया नहीं, पताना है। यानी औद्योगिक प्रेरणा से जो व्यवस्था बनी, उसमें मानवीय सम्बन्धों को बनाने की समझ या नहीं पायी, बल्कि मानवीय सम्बन्ध विघटने की दिशा में बढ़ा हुई। मनुष्य को भोग-विवाह की तालम में औद्योगिक परिस्थिति इस प्रकार से घेरे रखी है कि मनुष्य अपनी स्वतन्त्रता सहजता से भूल बैठे। आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थिति की जड़ में जो औद्योगिक प्रेरणा थी, उससे मनुष्य तथा समाज का उज्ज्वल भविष्य बनाने में बाधा आयी और स्वतन्त्रता का अर्थ हीने लगा। इसलिए स्वतन्त्रता का अर्थ हुआ औद्योगिक प्रेरणा से दने आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थिति से छुटकारा पाना। यानी स्वतन्त्रता की भूमिका मनुष्य-सुवित की भूमिका है। इसे जानने के लिए औद्योगिक प्रेरणा की सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थिति के स्वरूप को आँसों के सामने लाना जरूरी है। क्योंकि इससे औद्योगिक समाज अपना जीवन-नन्तर ऊपर उठाने की जो योजना बनाता है, उससे मनुष्य की स्वतन्त्रता का सवाल बड़ा तक हल होता है, इसे समझने में मदद होगी।

औद्योगिक प्रेरणा से बनी सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थिति ने ही ससदीय व्यवस्था को बनाया है। इसलिए ससदीय व्यवस्था औद्योगिक प्रेरणा से अलग नहीं हो सकती। इसीलिए ससदीय व्यवस्था का अस्तित्व औपचारिकता से नियंत्रित होता है। यही वजह है कि ससदीय लोकतन्त्र में औपचारिकता का महत्व है। इस औपचारिकता ने लोकतन्त्र को रक्षित बना दिया है। लोकतन्त्र परिणामों को दृष्टि से आज वकाशवाद दिखाई देता है, उसका सारा अर्थ औपचारिकता को है। औपचारिकता से सम्बन्ध बनते नहीं, सम्बन्ध बनने का केवल विवादा-साध होता है। इन दिशाओं को ही लोकतन्त्र में आज

प्रतिष्ठा मिलती है। लेकिन इससे लोकतन्त्र के अन्दरूत परिणाम निरन्तरता कभी भी सम्भव नहीं हुआ, और आगे भी सम्भव नहीं होगा। क्योंकि केवल औपचारिकता से सम्बन्धों के निर्माण में बाधा पैदा हो गयी। इसीलिए ससदीय लोकतन्त्र में लोगों को साक्षेदार बनना सम्भव नहीं हुआ, सम्भव नहीं होगा। औद्योगिक सम्प्रदाय ने जनसुख को अपनाकर मनुष्यों को मनुष्यों से अलग कर दिया और मानवीय सम्बन्धों को नष्ट करके मशीनी सम्बन्धों को जन्म दिया। उसकी पुष्टि करने के लिए ही ससदीय लोकतन्त्र का स्वरूप औपचारिकता का बनाया गया है। यत्र सृष्टिकृति मानवीय सम्बन्धों के बिना नैतिक अभिव्यक्त हुई है, वैसे ही मानवीय सम्बन्धों के बिना केवल औपचारिकता से ही लोकतन्त्र के ससदीय स्वरूप को बनाने का तत्त्व औद्योगिक सम्प्रदाय का है। इसका महत्व यही है कि लोकतन्त्र में लोगों की साक्षेदारी यानी मानवीय प्रेरणाओं की साक्षेदारी औद्योगिक सम्प्रदाय नहीं चाहती है। यह मनुष्य-सम्प्रदाय को समाप्त करने का ही प्रयास है। इसीलिए मनुष्य को उसकी सम्प्रदाय बनाने के लिए स्वतन्त्रता चाहिए।

सामन्वय या समझौता ?

सर्वोच्च आन्दोलन की आन्तिव्यक्ति उसके मानवीय सम्बन्धों को बनाने का स्वरूप में है। और, सम्बन्धों की कृति की परिणाम इस आन्दोलन से बढ़ाकर नूतन पड़ती है। लेकिन इस कृति के लिए सर्वोच्च आन्दोलन को समझौते की प्रतिष्ठा से सर्वप्रथम बाहर निकलना होगा। सर्वोच्च आन्दोलन जटिल इसलिए हुआ है कि समझौते में वह अधिक फँसता जा रहा है। इसका एक कारण सम्बन्ध का दृष्टिकोण भी है। सम्बन्ध की समझौता मान बैठना प्रायः सम्बन्ध को नहीं समझ पाने की ही दिशा में है। सम्बन्ध को दृष्टान्तकता मानने के लिए है लेकिन समझौते से दृष्टान्तकता लागू

कभी भी सम्भव नहीं होता। समझौते से आन्दोलन में जो गुण हैं उन्हें समाप्त करने की ही प्रक्रिया शुरू हो जाती है। इसे कुछ विस्तार से बताना जरूरी है।

महात्मा गांधी द्वारा प्रोचित स्वतन्त्रता की भूमिका राजनैतिक स्वतन्त्रता के बाद १९५७ तक दुर्लक्षित रही थी। लेकिन वेतनागना के परिणामस्वरूप ने स्वतन्त्रता की यह भूमिका बनाकर उसे बना लिया। सत्य पुस्तकालय के स्वतन्त्रता अभिग (भगन होनेवाले गीत) नदी में डुबाने गये थे। लेकिन कहते हैं विनोबा ने (भगवान ने) उसे उठा लिया था। इसलिए वह बचे। ऐसा ही कुछ गांधी तथा उनकी स्वतन्त्रता की भूमिका के सम्बन्ध में भी हुआ है। विनोबा को प्रारम्भ से अलग तक ध्यान में ही रहे। विनोबा का मूल्य गांधी के अहिंसदीय एतर के पीछे विनोबा का ध्यान लगाने से बढ़ा, ऐसा विनोबा अपने बारे में 'अभिग प्रती' की प्रस्तावना में लिखते हुए कहते हैं। (आन्दोलन वि एतर शुरू हो चुके हैं, विनोबा ध्यान प्राप्त करवाया गया। मण्डली रचना।) इसीलिए स्वतन्त्रता-आन्दोलन चलाने के लिए विनोबा को ही गांधी के बाद पदनामा करनी पड़ी। इसे वह भगवतकृपा मानते हैं। अब वे ध्यान में प्रवेश कर गये। उनका ध्यान-प्रवेश दुनिया में सर्वोच्च आन्दोलन का मूल्य बनने के लिए सहायक ही होगा, क्योंकि आन्दोलन पर उनका ध्यान चढ़ गया है।

स्वामित्व-विस्तार की कृति

ए.सी. जर्नल १९५७ से स्वतन्त्रता-आन्दोलन फिर शुरू हुआ, ऐसा मैं मानता हूँ। इस आन्दोलन ने भूदान का निर्मित साक्षर स्वामित्व-विस्तार को महत्व दिया। क्योंकि सम्बन्धों का निर्माण स्वामित्व-विस्तार से ही होता है, यह उसके पीछे सही धारणा थी। मनुष्य अहंकार से विरक्त होकर ही दुर्लक्षित मनुष्य से निकल सकता है। मनुष्यों के दुर्लक्षों को जोड़ने के लिए स्वामित्व-विस्तार की भूमिका सर्वोच्च भूमिका

थी। लेकिन स्वामित्व-विसर्जन को मान्य, जिसे १९५७ तक सतयावन कहा गया था, हो नहीं पायी। इसके जो निराशा सर्वोदय आन्दोलन में आयी, उसके केवल विरोध ही नये रहे, और कोई नहीं बच पाया। यही से आन्दोलन के विस्फोट का प्रारम्भ हुआ। '५७ के बाद प्रामदान ने आन्दोलन को मान्य के आरोहण तक आने के लिए प्रेरित किया है। लेकिन प्रामदान से स्वामित्व-विसर्जन का शक्तिशाली रूप अभी तक सामने नहीं आया है। तो '५७ से आन्दोलन को जो मोड़ मिला, वह स्वतन्त्रता की भूमिका में बहुत कुछ गड़बड़ी पैदा करने का ही सिद्ध हुआ है। वह कैसे हुआ यह समझने की आवश्यकता है।

एक भारी भ्रम

सम्बन्धों की जड़ें खानार करने में राज्यशासित की छाया हो सकती है, एसी धारणा हम आन्दोलन में प्रवेश कर गयी। इसलिए राज्यशासित से समझना करना उचित माना गया। इनसे सर्वोदय-आन्दोलन का तेज नष्ट होने लगा। राज्यशासित ने इस आन्दोलन के घोषण की प्रक्रिया शुरू कर दी। राज्यशासित की सहायता लेते रहने की चलनी ने लोकशासित को आन्दोलन से अलग कर दिया, और आन्दोलन का कानूनी रूप प्रकट होने लगा। सर्वोदय-आन्दोलन ने लानारी से ही राज्यशासित से सम्बन्ध बना लिया है। लेकिन यह लानारी क्रान्ति के रास्ते में बाधा बन गयी। इस लानारी ने ही राज्यशासित को आन्दोलन का घोषण करने के लिए अवरुध्द रिये। राज्यशासित की किसी भी प्रकार की सहायता उपलब्ध नहीं करती होगी है। राज्यशासित ने ऐसा ही सहायक सर्वोदय-आन्दोलन का किया है। दुर्भाग्य से अभी तक इस अनुविधान पर और नहीं किया जाता। इसका एक कारण यह भी है कि राज्यशासित को सहायता लेने से इनकार कर देने ही यह आन्दोलन उसका विरोधी बनना। किसी का विरोधी बनना यह

आन्दोलन का उद्देश्य नहीं है लेकिन किसी आचरण से आन्दोलन क्रान्ति की भूमिका से हट जाता है तो क्या उसे हटाने देना चाहिए? इसके आन्दोलन क्रान्ति-विरोधी नहीं बनता है क्या? राज्यशासित को विरोधी नहीं बनने देने की भूमिका ने सर्वोदय-आन्दोलन को क्रान्ति-विरोधी बनने की परिस्थित पैदा की है। इसीलिए सर्वोदय-आन्दोलन क्रान्ति का आन्दोलन नहीं है, क्योंकि उसने क्रान्ति का भूमिका ही छोड़ दी है संसा प्रभाव युक्तों के मन पर हुआ है। क्रान्ति का आन्दोलन मानव-विरोधी नहीं रहेगा, नहीं रहना चाहिए क्योंकि मनुष्यों में सम्बन्ध बनना ही उसका प्रयोजन है। लेकिन यह सम्बन्ध बनाने की प्रक्रिया चलती है तो आन्दोलन को राज्यशासित-विरोधी बनना अनिवार्य होगा है। क्योंकि प्रतिगामी, जगजड़ें मूल्यों का रक्षण राज्यशासित की दृष्टिकोण से हो हुआ करता है। इन मूल्यों को जगह पर नये प्रगतिशील मूल्यों को स्थापित करना यानी राज्यशासित तथा उसकी दृष्टिकोण को एक प्रकार से चुनौती देना ही होता है। राज्यशासित तथा उसकी दृष्टिकोण को लक्ष्यारे बिना नये प्रगतिशील मूल्यों को समाज में प्रस्थापित करना अभी भी सम्भव नहीं हुआ, आगे भी सम्भव नहीं होगा। इसलिए दृष्टिकोण से भिन्न तीसरी शक्ति बनाने की बात सोची जाती है, वह क्रान्ति की प्रक्रिया को चलाने में वहाँ तक उपयोगी होगी है, उसे ठीक से समझना होगा।

तीसरी शक्ति का निर्माण

हिंसा-विरोधी दृष्टिकोण से भिन्न तीसरी शक्ति को प्रकट करने का संकल्प सर्वोदय-आन्दोलन को पूरा करना है; बिनाबा बाध-बाध इसकी याद दिनाते रहे हैं। लेकिन दृष्टिकोण से भिन्न तीसरी शक्ति स्वतन्त्र रूप से बँधे प्रकट होगी इसका उपाय किसी की समझ में नहीं आता। क्योंकि दृष्टिकोण से समाज इतना प्रभावित है कि उससे भिन्न तीसरा शक्ति स्वतन्त्र रूप से प्रकट होने की

सम्भावना करीब-करीब नहीं देखनी। प्रामदान से तीसरी शक्ति के लिए संकल्प लड़ा करने की एक प्रक्रिया शुरू की गयी। लेकिन सम्बन्धों के निर्माण में प्रामदान की सफलता लोकोपकार के रूप में अभी प्रकट नहीं हुई। प्रामदान तथा उसकी पुष्टि से प्रामसमार्पें बनेंगी। भूमि का बीसवाँ हिस्सा विवरित होगा। प्रामकोय कार्यक्रम में लागू जानना। लेकिन इससे गाँव के आपसी सम्बन्धों में नये परिवर्तन आयेगा? जो परिवर्तन आयेगा, वह भेदों को धूनकर मनुषीय सम्बन्धों को बनानेवाला होगा या नहीं? इन सन्देहों से बाहर अभी हम नहीं निकल पाये हैं। लेकिन यह स्वाभाविक भी है, क्योंकि दृष्टिकोण से एक प्रक्रिया चलती है—राज्यशासित को बनाने की। उस पर प्रामदानों का, भूमि-वितरण का तथा प्रामकोय का क्या असर होगा, यह अभी देना नहीं गया है। लेकिन राज्यशासित बनाने की प्रक्रिया पर असर डालनेवाला भीज प्रामसभा बनती है तो वहाँ दृष्टिकोण से सफल होकर रहेगा। इसमें सन्देह नहीं होना चाहिए। इसलिए दृष्टिकोण के अस्तित्व की प्रामसभा प्रक्रिया से जहाँ तक बाधा नहीं पहुँचती है, वही तक दृष्टिकोण का उपयोग प्रामदान में सम्भव होगा। केवल इसी कारण से मात्र की चलती गयी प्रामदान की प्रक्रिया क्रान्ति की प्रक्रिया नहीं बन पायी। इसका एक निष्कर्ष ऐसा निकलता है कि प्रामदान दृष्टिकोण के लिए सहायक बन सकती है। लेकिन दृष्टिकोण अपना अस्तित्व खोकर प्रामदान को अपना सहायक नहीं मान सकती। लेकिन प्रामदान दृष्टिकोण का अस्तित्व बनाये रखने के लिए नहीं है। दृष्टिकोण से भिन्न तीसरी शक्ति बनाने के लिए है। तो यह तीसरी शक्ति लड़ी करने का प्रयास, मुझे लगता है, केवल दिव्यशासित से ही नहीं बल्कि दृष्टिकोण से भी विरोधी बनने से सफल हो सकेगा।

सर्वोदय आन्दोलन की और परिदृश्य

को बनाने के लिए दम्भशक्ति का आज उपयोग किया जाता है। क्योंकि इसी सदसीय लोचनत्रय में राज्यशक्ति का प्रभाव बना रहता सम्भव है। आज सदसीय लोचनत्रय राज्यशक्ति से प्रभावित है। इसलिए सदसीय लोचनत्रय की भूमिका राज्यशक्ति वा मूल्य बनाने की रही है। इसके एक बात जाहिर होती है कि सदसीय लोचनत्रय तीसरी शक्ति की विरोधी है। क्योंकि वह दम्भशक्ति से भिन्न नहीं रह सकता। तो ग्रामदान से तीसरी शक्ति बनाकर एक नया विचार सृष्टे होते देसना सदसीय लोचनत्रय के लिए सम्भव नहीं है। क्योंकि वह उतना सहजनीय नहीं है। राज्यशक्ति के दबाव से सदसीय लोचनत्रय दबा हुआ है। यह उसके सहजनीय नहीं होने की वजह है। इसलिए तीसरी शक्ति बनाने में राज्यशक्ति बाधक बनती है, यह बात स्पष्ट है। इसीलिए कहना पड़ता है कि राज्यशक्ति से समक्षीय करके सर्वोच्च आन्दोलन ने भ्रान्ति की भूमिका छोड़ दी है। और यह वाक्य दिखता है कि इस आन्दोलन का राज्यशक्ति ने सम्पूर्ण रूप से शोषण ही किया है। क्योंकि सर्वोच्च आन्दोलन को राज्यशक्ति ने अपना विरोधी नहीं बनने दिया।

गाँवों की स्वतंत्रता और अर्धतंत्र

१९५१ में स्वतंत्रता-आन्दोलन का नया चरण विरोधी की तेलगुभाषा-पदवादा से प्रारम्भ हुआ था। वह आन्दोलन राज्यशक्ति से समक्षीय करने के कारण स्वतंत्रता की मूल भूमिका से हटते दिखायी दे रहा है। इसके विचारवादी पंदा ही गया है। यह विचारवादी स्वतंत्रता-आन्दोलन की ही विचारवादी रस देगा। इसलिए नये रूप से सोचना होगा।

स्वतंत्रता का अनुभव इस देश के लोगों को प्राप्त करने लिए, औद्योगिक सम्भन्धों के प्रति जो भी वापस दिखाई देता है, उसकी समाप्ति की प्रक्रिया चलानी होगी। इसका प्रारम्भ गाँवों की स्वतंत्रता से ही होता है। गाँवों की स्वतंत्रता यानी सम्बन्धों में मानवता मानने के लिए आवश्यक

शक सामाजिक तथा आर्थिक रचना की स्वतंत्रता औद्योगिक सम्भन्धों में जीवन-स्तर को ऊँचा उठाने का आकर्षण होता है। मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ाकर उनकी दृष्टि के लिए प्रयास करना यानी जीवन-स्तर ऊँचा उठाना माना जाता है। लेकिन मनुष्य की आवश्यकताएँ मानवता की बनाये रखने में उपयोगी रहेगी या नहीं, इसका जीवन-स्तर उठाने की प्रक्रिया में ध्यान नहीं दिया जाता। तो मानवता से जीवन-स्तर का सम्बन्ध करीब-करीब नहीं के बराबर होता है। इसलिए जीवन-स्तर की बचपना और उसकी प्रक्रिया मानवता से अलग पड़ जाती है। यानी मानवीय सम्बन्धों की जिम्मेदारी या मानवीय सम्भन्धों की शुरू से आरंभ तक नहीं रहता है। इस दृष्टि से गाँवों की स्वतंत्रता यानी मानवीय सम्बन्धों की स्वतंत्रता है। इसलिए गाँवों में स्वतंत्रता की प्राण-प्रतिष्ठा करनी चाहिए। गाँवों की आर्थिक तथा सामाजिक रचना में मानवीय सम्बन्धों को बनाये रखने का प्रयास होना चाहिए। यह गाँवों में सम्भव है। क्योंकि गाँव एक समाज के रूप से सामने आता है तो वह मनुष्यों के सम्बन्धों का ही होता है। लेकिन जब गाँव टूटते हैं तो उब मनुष्यों के सम्बन्ध टूटते हुए होते हैं। सम्बन्ध बनते हैं तो गाँव बनता है, गाँवों में समाज बना हुआ होता है। सम्बन्ध विगड़ते हैं तो गाँव टूटता है, समाज बिखरता है। इसलिए सम्बन्ध बनने, विगड़ने नहीं और गाँव-समाज रहेगा। ऐंगो - स्थाित जिस आर्थिक तथा सामाजिक रचना से बनेगी उसी को अपनाया होगा। लोगों की आवश्यकताएँ आपस में पूरा करने की जिम्मेदारी उठानेवाली अर्धरचना गाँवों की होगी। गाँवों या गाँव के प्रत्येक की आवश्यकताएँ पूरी होने के लिए गाँव पर तथा पड़ोसी गाँव पर ही निर्भर रहना होगा। लेकिन आवश्यकताएँ पूरी करनेवाला कोई दूसरा है वह बाहर पर उस पर निर्भर रहना छोड़ना होगा। इस निर्भरता से आपस की दूरी बढ़ती है।

दूरी बढ़ानेवाले उत्पादन से आवश्यकताएँ पूरी होगी भी, लेकिन सम्बन्ध नहीं बनेंगे। जिसमें पराक्रमश्रिता ही नहीं है, बल्कि एक दूसरे को भूलता है। गाँव का समाज आपसो सम्बन्धों का होगा। यह सम्बन्ध नहीं बनानेवाले उत्पादन को समाज छोड़े नहीं। सम्बन्धों में दूरी पैदा करनेवाला उत्पादन किसी उपयोग का नहीं। वह तो समाज को बिगाड़ने वाला है। यह गाँववाले समझने लय जायेगी तो ही स्वतंत्रता की भूमिका में कुछ प्राण बना सम्भव होगा। इसकी एक पृष्ठभूमि सर्वोच्च आन्दोलन बनाता है। इसे कोई भी भूल नहीं पायेगा। यही एक बड़ी उपस्थिति मानकर आगे की दृष्टि से सोचना होगा। सर्वोच्च आन्दोलन को बिखरवा से बचाने की शक्ति इस पृष्ठभूमि में है। लेकिन गाँवों के प्राण डालने के लिए शहरों के आवश्यकता का घातक स्वरूप गाँव के लेंग समाज पायेगे ऐसी परिस्थिति बनानी होगी। इसके लिए गाँवों को एक दूसरे के सम्पर्क में लाना होगा। गाँवों को संगठित करना होगा। यह संगठन औद्योगिक सम्भन्धों से बने शहरों की अनावश्यकता को तथा भारत की दूरी को मिटाने के लिए होगा। यह करते समय कुछ बहिष्कारों या सखती है, बल्कि व्यर्थों ही बहाना ठीक होगा। इन बहिष्कारों का समाज सत्वाग्रह-शक्ति से करना होगा। गाँवों के निर्माण में बाधा डालनेवाली शक्तियों का प्रतिरोध उत्पादक के द्वारा ही किया जा सकता है। इन शक्तियों के अहयोग करना आवश्यक होगा। सत्वाग्रह अहयोग के रूप में नहीं प्रवृत्त होगा। लेकिन यह सत्वाग्रह केवल प्रतीकारण का कार्यक्रम की चलानेवाला नहीं होगा बल्कि सम्बन्धों के निर्माण का साधक भी बनेगा। इसके औद्योगिक सम्भन्धों से बने सदसीय लोचनत्रय के स्वरूप में फल पड़ेगा। लोचनत्रय में लोगों की यही अर्थ में साधेदारी, बढ़ती। सम्भन्धों के दबाव से लोचनत्रय मुक्त होगा। सम्भन्ध

ग्राम स्वराज्य गोष्ठी-सहयात्रा

सन्धर्भ . नवींर सरबोदय सम्मेलन के अवसर पर मय १९, २० मई को उत्तर प्रदेश सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष स्वामी कृष्णानन्दजी की उपस्थिति में प्रदेश के कार्यकर्ताओं की बैठकें प्रदेश में चल रहे सर्वोदय-आन्दोलन पर चर्चा करने के लिए आयोजित की गयी थी। इन बैठकों में यहाँ पर उपस्थित प्रदेश के सभी कार्यियों ने तीव्रता से यह महत्त्वपूर्ण विषय कि 'एन-सुवरा के अभाव में प्रदेश का आन्दोलन अशक्तिशाली नहीं बन पा रहा है, यद्यपि काम करनेवाले सक्षम और निष्ठावान कार्यियों की प्रदेश में कमी नहीं है, जगह-जगह काफी महत्त्वपूर्ण काम हो रहे हैं, लेकिन इनमें आपस की एकता न होने के कारण पूरे काम की सम्यक्ता तेजस्विता नहीं प्रकट हो पा रही है। यह स्थिति प्रदेश और देश के आन्दोलन की दृष्टि से काफी चिन्ताजनक है।'

इस विवेक को बदलने और प्रकट में आन्दोलन को अधिक तेजस्वी बनाने की दृष्टि से यहाँ सबसे चर्चा करते यह तय किया कि प्रत्यक्ष के सक्रिय कार्यियों की विस्तृत-चर्चा सत्रकर्म-युवन आठ दिवसीय विविध सुन्दरपुर में २३ से ३० जून तक आयोजित किया जाय। स्वामीजी (अध्यक्ष, उ० प्र० सर्वोदय मण्डल) का इस बात पर विशेष जोर था, और यहाँ उपस्थित प्रदेश के कार्यकर्ता कार्यियों ने इसको महत्ता को महत्त्व दिया कि प्रदेश के सक्रिय कार्यकर्ता कार्यियों में एक सामूहिक विस्तृत, अनुभव और भाई-भ्रातृ का विभाज्य इस विविध में हो, तथा पूरे

→ यद्यपि विभिन्न श्रेणीय शक्ति अपने प्रभाव की बनेगी। सभी सर्वोदय आन्दोलन में स्वतन्त्रता-आन्दोलन के उद्देश्यों तक पहुँचने की सज्जा बानेगी। मानव-द्रोह के आरोप से यह आन्दोलन निश्चित रूप से मुक्त होगा।

आन्दोलन को इससे शक्ति मिले, ऐसी शीर्षिका की जाय।

स्वस्थ : तदनुसार प्रदेश सर्वोदय मण्डल की ओर से कुल ५१ व्यक्तियों की क्षामित किया गया, जिनमें से २५ व्यक्तियों ने बुन-दशहर में आयोजित इस शीर्षिका में भाग लिया। शुक्र में दो दिन हम कलकत्ता-नरौरा में रहे। उनके बाद शमश वेलेन, डिबाई, अष्टमदण्ड और शिवारपुर पदयात्रा करते हुए पहुँचे और आखिर में २ दिन बुन-दशहर में रहे। यो इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य तो हमारा आपसी सह-चिन्तन और एक दूसरे के करीब आना था, लेकिन पदयात्रा के कारण सहज ही पड़ावों पर जन-सम्पर्क और आमसमाज हुई, जिन्हें हम उप-उपस्थि मानते हैं। बुन-दशहर में हमने कचहरी में चलनेवाले प्रशासन को 'बैक' करने की प्रतीकारमक छोटी बार्खाई तथा गराबकरी सत्याग्रह में भी भाग लिया और लोगों के अच्छे अनुभव दिये। हमने यह अनुभव किया कि किसी एक स्थान पर बैठकर चिन्तन-चर्चा करने की अपेक्षा यह जगमग छोटी अपने तथ्य की प्राप्ति में अधिक अनुभूत मिद्ध हुई और पूरे आयोजन में एक प्रकार की गत्यागमता दिखाई पड़ी।

एक छोटी सी ज जो कोई पूर्व निर्धारित रूपरेखा थी, न चर्चा के पूर्वनिश्चित हुई थे। सचालन को भी कोई आरोपित प्रक्रिया नहीं आनायी गयी थी। श्रुत मन से सुनी चर्चा में अपने भाग लिया और पूरे समय हम लोग एक स्वयंश्रेष्ठ और स्व-शक्ति प्रक्रिया से होकर गुजरे। इसके कारण हम लोग क्षामित दिशा में बढ़ सकें और इस कार्यक्रम की सफलता का अनुभव कर सकें।

सहस्रान्तन . नरौरा की प्रमंशाला में हमारी गोष्ठी २३ जून को सुबह साँ

आठ बजे शुरू हुई। शायी कृष्णानन्दजी ने गोष्ठी का सत्रमं प्रस्तुत करते हुए कहा, "विभिन्न दिशाओं से आकर हम आन्दोलन में लग गये। आज आन्दोलन में एक स्थितिता महत्त्व हो रही है इसलिए यह सोचा गया कि हम काम करनेवाले ही बने न इसका सहस्रान्तन करें, कोई रास्ता लों। जिसकी मजबूत तक जाना है, वही मार्ग का भी सोच करे। ऊपर से योजना बने और नीचे के स्तर पर उसके अनुसार काम हो। इस पद्धति का सर्वोदय-विचार-क्षण से मेल नहीं है। यह हमारे कार्यियों की चेतना का प्रतीक है कि हम स्व-समर्थन से सोचने के लिए बंटे हैं, कोई पूर्व निर्धारित स्वरूप नहीं है। हम खुले दिल-दिमाग से सहचिन्तन करेंगे तो कोई अफ़ोही चीज निकलेगी।"

आत्मनिश्चय, आन्दोलन और चर्चा के विस्तृत

सबसे पहले यह सोचा गया कि हम अपने आपसी आन्दोलन के सन्दर्भ में अभिव्यक्त करें। इस प्रकार सक्षिप्त अभिमत परियण (परिहार की सीमा तक), आन्दोलन से लगाव, सामूहिक और छोटी में चर्चा के लिए अपनी दृष्टि से महत्त्वपूर्ण मुद्दे प्रस्तुत करने का लिखिता बना, जो २४ की सुबह तक चलता रहा।

गोष्ठी में भाग ले रहे लोगों में करीब आठों सत्या एसे लोगों को जो स्वराज्य-आन्दोलन में भी सक्रिय रूप से भाग ले चुके थे, और मय '१२ से '५५ के बीच सर्वोदय-आन्दोलन में लग गये थे। तीव्र तथ्य थे, जो दो-तीन साल के बाद ही इस आन्दोलन से जुड़े थे, दोष एसे लोग थे, जो मय '५३ से '५५ के बीच आन्दोलन में सक्रिय हुए थे, इसलिए करीब-करीब शकनी आन्दोलन का सभी अनुभव था।

चर्चा के लिए कुल २४ मुद्दे गुमाये गये, जिन्हें समित्त करके निम्नलिखित विषयों के अन्तर्गत लिया गया:

(१) आन्दोलन की समीक्षा-
मूल्यांकन, (२) विचार-संलग्नः क्रांति
की परिष्करण, (३) कार्य-मूल्यांकन, (४)
कार्यकर्ता, (५) कार्यक्रम, (६) सफल,
और (७) मुलाकात।

इस प्रकार चर्चा के पहले दौर में
से गोष्ठी की सुरक्षा प्रकट हुई और
तदनुसार चर्चाईं चलीं। इनमें से क्रम १,
२, ३ की चर्चाओं का सार भूदान-यज्ञ
के पाठों के लिए प्रस्तुत किया जा
रहा है।

आन्दोलन की समीक्षा

करीब-करीब सभी साथी सर्वोच्च
आन्दोलन में पिछले कई वर्षों का
अनुभव लिये हुए थे, आन्दोलन के प्रति
समाप्त वृत्ति के थे, इसलिए काफी
गम्भीरतापूर्वक उन्होंने इसका मूल्यांकन
प्रस्तुत किया। चूंकि सही के अन्त आन्दो-
लन की स्वरा भी है, इसलिए सर्वमान्यता
के प्रति निश्चित अवस्था थी, जिस में उसकी
बेवैधी भी थी, लेकिन चिन्ता और प्रति-
क्रिया में नहीं, बल्कि वैज्ञानिक वृत्ति और
तटस्थता के साथ सबसे मूल्यांकन करने
की नीति बनायी।

करोड़ १२ घण्टों की चर्चा में वे
महत्त्व ने कुछ विन्दु निम्न प्रकार साबने
आये (१) भूदान-आन्दोलन के रूप में,
विनाश के निमित्त थे, इतिहास का अन्त-
प्रवृत्ति केसमाना में प्रकट हुआ, वही
बढ़ते समय आशो की बटिलवाएँ थी और
उनके कारण तदनुभव थी। वही इस
युग की क्रांति का विनाशकत्व था।
(२) विनोद उद्योग से प्रेरित
होकर क्रांतिपथ पर चल पड़े, स्वयंप्रेरित
लोग इसमें आसक्ति होने लगे, और एक
स्वतः सृष्टि आलोचन देश में दिखाई
देने लगा। (३) तब तक जिसों को
राजनीतिक दम ने (मासिकवादियों को
छोड़कर) या सरकार ने भूमि की समस्या
पर अपना ध्यान नैमित्तिक नहीं किया था।
देश में एक नयी सचेत और क्रांतिकारी
भावित के निर्माण की सम्भावना प्रकट
हुई। (४) इसी बीच वेवापुरी में

(गांधी-विचार में श्रद्धा रखनेवालों के
भाईभारे के रूप में पूर्वगठित) सर्व
वेवा सच ने भूदान-आन्दोलन को अपना
मुख्य कार्यक्रम घोषित किया। अपने
नैतिक प्रभाव से उसने देश की रचनात्मक
संस्थाओं को इसमें पूर्ण सहयोग देने की
अपील की। कांग्रेस ने भी इसे अपने
प्रस्ताव द्वारा समर्थन दिया।

(५) भूमि-प्राप्ति के अवधान
घोषित किये जाने लगे, निश्चित अवधि
में उसकी पूर्ति के प्रयत्न किये जाने लगे
और इस प्रकार एक स्वयंप्रवृत्त आन्दोलन
जन-आन्दोलन की राह पर कुछ दूर
चलकर सफलतापूर्वक प्रवृत्ति का रूप लेने
लगा। निश्चित अवधि में लक्ष्यपूर्ति करने
पर प्राप्त होनेवाले श्रेय का सोच भी
इसमें दायित्व हुआ और साध्य के साथ
साधन की परिशुद्धता पर पर्याप्त ध्यान
नहीं दिया जा सका। बलिष्ठ वृत्ति हो
धीम हो गई। (६) भूदान से शासन
और राज्यदायक तक पूरी प्रक्रिया में—हम
करानेवाले हैं, करनेवाले नहीं, इस
चिन्ता और स्पष्टीकरण के बावजूद—
करानेवाले हम ही रहे। यह नहीं हो
सका कि भूदान में दाता-दायता के बीच
सीधा सम्पर्क हो, आयना-सायना हो,
घाम में भी हम ही बीच में पुरोहित बने
रहे। परिणामस्वरूप आन्दोलन समत-
पत लोगों को आन्दोलित नहीं कर सका।
ये इसे हज पुरोहितों का नाम समझते
रहे।

(७) इस प्रक्रिया में हम बिहारदायक
तक पहुँचकर ठिठक गये। विचार की
शक्ति पर हम थक्या रखते हैं, लेकिन
स्वयंप्रवृत्ति के मोहवश विचार-विद्युत की
प्रक्रिया अगूरी रही। जिस क्षण पर
समाप्त है, उसकी पश्च में जाने लायक
विचार-विद्युत की प्रक्रिया का शोध नहीं
हुआ। आमतौर पर कार्यकर्तियों ने अपनी
मताभिव्यक्ति से विचार-विद्युत के प्रयत्न
किये। (८) सामान्य मनुष्य की अज्ञानता
और निष्कृताता को तोड़ने के लिए
स्वराज्य आन्दोलन में साथीओं ने

प्रतीकार के प्रतीकारमक आन्दोलन लिये,
जिनके कारण एक व्यापक जन-चेतना
पैदा हुई। हमने उस प्रक्रिया को नहीं
अनगनाया, यहाँ तक कि इस आन्दोलन के
गर्भ से पैदा हुई समस्याओं को भी हल
करने के लिए हमने अनतर्कित तैयार करने
की जगह पाठना या सहारा लिया।

(९) शासनस्वराज्य के लिए शासन-
पद्धति यह मानी गयी कि जनता अपने
अधिकार से अपनी समस्याओं को हल
करे, लेकिन हमारे प्रयत्न जनता का
कार्यक्रम बनाने की जगह अपने लक्ष्यक
पूरे करने तक, जाने-अनजाने संमित रहे।
इसी प्रक्रिया में हमने समाज की मौजूदा
शक्तियों का सहारा लिया, जिनके आधार
वही थे, जिन्हें हम तोड़ना चाहते थे।
अन-आधिकार के अभाव में हम उन
शक्तियों पर इस प्रक्रिया के मूल्यों का
सीधा प्रभाव नहीं बन पाये, बल्कि अधि-
स्तर ऐसा हुआ कि हमारे प्रयत्नों पर उन
कद और अव्यतिरिक्तियों मूल्यों का प्रभाव
पड़ा। इसके कारण कार्यकर्तियों का नीति-
धर्म निर्बल हुआ।

(१०) हमने गणसंघर्ष की बात
सोची, लेकिन हम उसका कोई ठोस स्वरु-
प नहीं विचारित कर पाये। विचार-
विद्युत पर अक्षित/अनिच्छा हाजी रही।

(११) श्रद्धावृत्ति हमारे अन्दर
भरपूर रही लेकिन वैज्ञानिक वृत्ति का
बहुत अभाव रहा, जिसके कारण आन्दो-
लन के मूल्यांकन और उस क्षण में क्रांति
की प्रक्रिया विचारित करने का काम नहीं
हो पाया। हम मूल्यांकन की नीरायण के
भय से डालते रहे।

(१२) लेकिन बावजूद इन सभी
अनुभवों के हमारा इस विचार-संलग्न
में पूर्ण विश्वास है। क्रांति में पराजय
नहीं होती, प्रयोग क अनुभव में पर से
आगे का मार्ग ढूँढना होता है, और हम
इसी क्षण में पर तक जहाँ पहुँचे हैं,
उसने आगे बढ़ने के सामूहिक प्रयत्न-
मैत्री एतद्वय है।

विचार-दर्शन : क्रान्ति की परिकल्पना : कार्य-पद्धति

मुल्यांकन करते-करते हमने इन बातों की आवश्यकता महसूस की, कि क्रान्ति की ज़रूरी-जगती परिवर्तनार्थ हम स्पष्ट करें। इस तरह क्रान्ति यानी क्या? क्रान्ति का दर्शन, उसकी प्रक्रिया, व्यूह-रचना और कसौटी पर सबसे ज़रूरी-अवश्य विचार व्यक्त किसे, जिनका सार निम्न प्रकार है :

(१) क्रान्ति, इतिहास-ज्ञान का एक शाश्वत प्रवाह है जो निरन्तर गति-शील है, जिसके परिणामस्वरूप मानव की विज्ञान-यात्रा निरन्तर होती है।

(२) लेकिन आमतौर पर जिस युग-विशेष में, बाल-विशेष में, समाज की घुटन का कारण बन रही समस्या-विशेष से मुक्ति का एक प्रयत्न होता है, उसे आन्दोलन के रूप में, उसका शाश्वत प्रवाह की उठती-गिरती लहरों के रूप में हम देखते हैं।

(३) समस्या के दबाव की परा-नाश, ऐतिहासिक अनुभूतता का संयोग और उस समस्या से मुक्ति चाहनेवालों का पुष्पांश एक साथ होता है, तो क्रान्ति का एक विशेष स्वरूप प्रकट होता है।

(४) इस युग की क्रान्ति मानव की जागृत चेतना और विचार-शक्ति से ही निरूपित होगी। शासन और पूँजी के शोषण-दमन से मुक्ति और स्वावलम्बी समाज के निर्माण को दिशा में मानव व चेष्टा, उसका प्रकट स्वरूप होगा।

(५) इतिहास में पिछली जो क्रान्तियाँ हुई हैं, उनके दायरे सीमित रहे हैं। समस्याओं का स्वरूप सीमित रहा है, उनसे मुक्ति का चिन्तन भी सीमित दायरे से प्रभावित रहा है। लेकिन पिछले २५-३० वर्षों में दुनिया विशाल की नवीनतम उपलब्धियों—आमदर संचार की दृष्टिगत के कारण छोटी हुई है। इस सम्बन्ध में क्रान्ति को पाँच बातें सामने आती हैं :

(क) क्रान्ति का आधार वर्ग-मुक्त सर्वांगीण चिन्तन होगा।

(ख) प्रामाणिकता का आधार

परम्परा, पुस्तक या पुख्त नहीं, सामयिक सहचिन्तन होगा। सम्बन्ध के रूप में ही—उक्त तीनों का दस्तमाल होगा।

(ग) प्रेरणा भय या लोभमूलक नहीं होगी, आत्मनिश्चयित होगी, अपने पूर्णत्व को प्रकट करने की होगी, जो मनुष्य का अन्तर्निहित स्वभाव है।

(घ) मूल्यांकन उपाधियों से नहीं, मनुष्य के आन्तरिक गुणों से होगा कि मनुष्य मनुष्य से जितना जुड़ा, एकलुप हुआ। बान लो सत्ता और सम्पत्ति की कुर्सी मनुष्य को मुगोभित करती है, उसकी जगह मनुष्य उसकी सुगोभित करने लगेगा, यानी मनुष्य ही सर्वोपरि मूल्य बन जायगा।

(ङ) समाज की नसों में घेरने की या ठोंकी में जकड़ने की कोशिश नहीं की जायगी, सहज स्फूर्त मानवीय सम्बन्धों का विनाश होगा।

(६) सर्वोपर्य इस युग की क्रान्ति का एक विशेषण है, शासनराज्य उसका आन्दोलन है, हिन्दुस्तान की अपूर्णता को पूर्ण करने का कार्यक्रम है।

(७) शोषण और दमन से मुक्ति का अभिधान इस युग की क्रान्ति का स्वरूप स्वरूप है। इसके लिए जीविता के साधनों का समाजीकरण और सत्ता का छोटी-छोटी इकाइयों में विकेन्द्रिकण अवि-वार्य है।

(८) भारत में सबसे बड़ा और सबसे अधिक लोगों के लिए जीविता का स्रोत कृषि है। इसीलिए उपाधिक सहज इनाई गाँव नो हमने क्रान्ति को प्राथमिक इनाई माना है। इसमें अन्तिम व्यक्ति सबसे अधिक प्रभावित है। सामदान को चार शतों के माध्यम से हमने भूमि-नेत्रित ग्राम-शक्ति जगती का कार्यक्रम तिया था, जिसको लेकर हम आज जहाँ पहुँचे हैं, वहाँ से आगे बढ़ने में कठिनाई का अनुभव कर रहे हैं।

(९) शासन में जिन जन की शक्ति, अधिकतम को हम जगाना चाहते हैं, उन्हीं प्रथमतः उच्च शिक्षा से होनी चाहिए जो लोगों की स्थूल और उत्सा-

हित अनुभूति का हो। जो उनकी मुक्त चेतना को जगा सके, उनके प्रथमार्थ को प्रसन्न कर सके। इसे हम अर्थिक क्रान्ति की 'परेड' कह सकते हैं। इसका स्वरूप गाँवों में मुख्यतः भूमि-नेत्रित हो सकता है, और नगरों में नागरिक जीवन को स्पष्ट करनेवाले अन्य प्रकार के अन्यायों के प्रतिकारमूलक कार्यक्रमों के रूप में हो सकता है। एक दिशा में हनुमन्दाहर के शराबबन्दी, नगर-सफाई और कपहरी में श्रद्धाचार को आगरिक-शक्ति से बेक करनेवाले अभियानों के अनुभव महत्वपूर्ण रहे हैं।

(१०) सत्ता और सम्पत्तिमूलक सभी प्रकार की शक्तियों से जनशक्ति ऊपर है, इसे क्रियात्मक रूप में सिद्ध करनेवाले प्रतिकारत्मक कार्यक्रमों से जो जनशक्ति जागृत होगी, वह आम-स-राज्य का व्यापक आन्दोलन लड़ा करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी।

(११) जैसे-जैसे व्यापक जन-चेतना क्रान्ति के सम्बन्ध में जागृत और सशक्ति होती जायगी, अलग से शक्ति करनेवाली अजात की आवश्यकता समाप्त होती जायगी। और इस प्रकार प्रतिक्रान्ति के खतरों से भी मुक्ति मिलती जायगी।

(१२) इन सारे प्रयत्नों में, चूँकि हमारी दिशा मानव की सर्वोपरि मूल्य मानकर होगी, इसलिए सहज ही उसकी प्रक्रिया विघटनकारी नहीं, रचनात्मक होगी।

(१३) अहिंसा की मूलभूतम व्याख्या हमारी दृष्टि में होगी, लेकिन उसका अन्वयण सामाज्य मनुष्य जहाँ है, वही न हो सकेगा।

(गोष्ठी में कथन लेनेवाले साधियों को और से)

नयी तालीम
हिन्दी मासिक
वार्षिक चन्दा : ६ रुपये
सर्व सेवा सघ, पत्रिका विभाग
राजपाठ, राधापत्नी—१

नागालैण्ड में राजनैतिक तनाव और समाज-परिवर्तन

● डा० एम० चारम्

केवल कुछ ही वर्षों में नागालैण्ड में सामाजिक परिवर्तन स्थायी रूप में रहा है। १९३२ से पहले जब कि अंग्रेज चापा हिल्स आये थे, उस समय वहाँ के लोग बाइबली बुनिया से मिलकुल अलग थे। १९३२ और १९४७ के बीच जबकि अंग्रेजों ने नागा हिल्स और भारत छोड़ दिया तो नागा-संघान में तीन बड़े परिवर्तन आये : (१) प्रशासन, (२) इकाई धर्म का फैलाव और (३) आधुनिक शिक्षा। १९४७ से आज तक नागालैण्ड में बड़े-बड़े परिवर्तन हुए हैं। राजनैतिक आन्दोलन, जो आरम्भ में १९४७ से पहले शुरू हुआ था, १९५६ से अण्डर प्राउण्ड संपर्क तथा १९६१ में राज्य का गठन और १९६४ में शान्ति, ये पिछले २५ वर्षों के ४ बड़े परिवर्तन हैं। राज्य के गठन और शान्ति ने सामाजिक विवाह और परिवर्तन की रफ्तार बढ़ा दी है।

अगर आज के नागा संघान की स्थिति देखी जाय तो स्पष्ट रूप से और ज़ादा है कि १९३२ और उसके बाद यह कितना बड़ा परिवर्तन हुआ है। वास्तव में एक सामाजिक प्रगति हुई है। इतनी जल्दी इतना परिवर्तन हुआ है, और शान्ति जब तक जारी है।

अंग्रेजों से पहले के जमाने में विभिन्न नागा कबीले-अंग्रेज, अगामी, सेमा, लोचा, जोसीबाप, आसम में लड़ रहे थे। गाँव एक आत्मनिर्भर इकाई था। एक गाँव दूसरे गाँव के विरुद्ध लड़ता था, एक कबीला दूसरे कबीले के विरुद्ध लड़ता था। उनके बीच एकता नहीं थी, कोई परस्पर जागृति नहीं थी।

परिव्रम में अंग्रेज, दक्षिण में मनी-पुरी और दक्षिण-पश्चिम में हाकारो, नागाओं से अन्तर्गत सम्पर्क करते रहे। परन्तु आम तौर से शान्तिमय सह

अस्तित्व रहा। नागा अपना जीवन अलग बिताते रहे। उनके जीवन की शान्ति विषयी भी प्रचार भय नहीं होती थी।

१९३२ से अंग्रेज नागा हिल्स में आने लगे। १९६१ में पहला प्रशासकीय नेत्र अगामी क्षेत्र के हेमपुण्डरिंग में खोला गया। १९७६ में एक प्रशासनिक केंद्र कोहिया में खोला गया, बोडुमा भी अगामी क्षेत्र में है, परन्तु माथ में है। १९८१ में नागर हिल्स जिला स्थापित किया गया, फिर श्री ट्रान्सलान्ड क्षेत्र प्रशासन से स्थापन रहा।

प्रशासन ने ज्बोसो और गाँव के समझे खतम कर दिये। पहले सर मिचलर करने की प्रथा भी खतम कर दी। परिणामस्वरूप स्वतंत्रता और सुरक्षा का नया वातावरण बना। बीच बिना डर के घूम-फिर सकते थे। पहले एक धार्मिक नागा सदा बौद्ध रहा करता था। जब वह अपने गाँव से निवृत्तता था तो बीचघरा रहता था। कोई धार्मिक कर्म उस पर स्पष्टकर उलझा सर लेकर भाग सकता था। प्रशासन स्थापित होने से यह सब खतम हो गया। पहले हर गाँव में सुरक्षा का विशेष एजन्स था। विशेष तौर से बरनाजे पर सतरी लुका करते थे। मौरग होते थे जहाँ युवकों को युद्ध करना सिखाया जाता था। सर वा शिकार समाज में प्रतिष्ठा बढ़ाता था। दुश्मन के सर आने पर सापा गाँव सूची मंगता था। गाँव के लोग नाचते और गाते थे। प्रशासन के स्थापित होने से यह सब खतम हो गया। सापा से द्रिष्टिभ्र के नये आवास सामने आये। अंग्रेजों प्रशासन की नीति थी कि लोगों के जीवन में इन-से-इन हस्तक्षेप बिना जाय।

नागा संस्कृति को बचाने की चिन्ता में, प्रशासन ने शिक्षा या विचार के लिए

कुछ नहीं किया। साधनों का प्रश्न आसद दूसरा कारण था।

इसकी मिशनरी वा रचना, जो १९७२ में नागालैण्ड में आये, ठीक इसके विपरीत था। इस साल डा० बलार्क नाम के एक अगामी ने 'आओ' गाँव में काम शुरू कर दिया, जो आराम के मैदानों के अगुरी नामक स्थान से दूर नहीं था। १९५४ में यह मिशन हापुर चला आया जो आओ क्षेत्र के बीच में था। हापुर अभी भी नागालैण्ड का प्राथमिक शिक्षण-केंद्र है।

एक साल के अन्त में नागालैण्ड में मिशन के कार्य की शताब्दी मनायी जा रही है। इन दो वर्षों में इसकी धर्म बोले-नीने में फैल गया है। लगभग हर गाँव में एक गिरजा है। कुछ गाँव में एक से अधिक गिरजे हैं। नागालैण्ड में ८५४ गाँव हैं, और इनमें ही गिरजे हैं। अमेरिकी मिशन ने सेवा और प्रेम के जरिये बहुत जोर बोले-तगन से काम किया। इस नये धर्म ने लोगों के दृष्टिकोण में बड़ा अन्तर लाया है। उनकी भूमिका व्यापक बनती है।

इसकी मिशन ने नागाओं को इस बात का उत्साह दिया कि वे विलकुल ही नया जीवन आरम्भ करें। इसमें परन्तु संस्कृति की कुछ अच्छी बातें भूल गयीं। जैसे कि नागा विवाह जो अधिक रमणी और स्थापित करने-वाला था, छोड़कर पश्चिमी विवाह पहले जाने लगे। इसीदर के साथ परिवर्तन संस्कृति भी अपनायी जाने लगी। नागाओं की जो सबसे बड़ी सेवा मिशन ने की वह उनके बीच आधुनिक शिक्षा देना था। इनमें से कुछ को शिक्षा देने के काम में प्रगतिशय किया गया। पहला स्कूल १९७७ में पुनःपुनीन्दन में खोला गया। ठीक ५ साल बाद मिशन ने उड़ी बगल काम करना शुरू कर दिया। १९८६ में कोहिया में भी शिक्षण-केंद्र शुरू किया गया।

डा० बलार्क, जो पहले मिशनरी थे,

उन्होंने ने नागालैण्ड में प्रेष वा प्रवेश कराया। इस को शोचनमिमसेन में बताया गया और नागा-इतिहास में पहली बार छापाई गुरु हुई।

दूसरी ही 'नागो' भाषा रोपन लिपि में लिखी जाने लगी। ग्रन्थों की सुविधा देवार भी गयी। इतनों के लिए प्रथमिक किताबें लिखी जाने लगीं।

श्व प्रशासन ने स्कूल के मूल को समझा। जिससे नागा छोटे-छोटे सरकारी कानों में नामी जा सके थे। सरकार ने अपनी ओर से कई प्राथमिक स्कूल स्थापित किये ताकि स्कूली शिक्षा दी जा सके। उन्होंने मिशन-प्रतिष्ठान-केन्द्र को भी सहमत की।

शिक्षा सामाजिक सुधार वा नागा-संघ में एक बड़ा पाठ्यक्रम बन गया। नागालो ने शिक्षा के काम को समझा। लोगो ने बड़ी सहाय में बच्चों को स्कूल भेजना शुरू किया। सामाजिक जीवन प्रगति करने का शिक्षा एव नया साधन बनने। प्रौढिक इनके कारण सरकार में बच्चे-बच्चों बाहरे मिलने लगे।

१९४४ में द्वितीय विश्व युद्ध कोहिया एक फुल गया। दुश्मना नागों हिस्से पर बड़ा प्रभाव पड़ा। लगभग पूरा कोहिया गाँव और नगर तगह हो गया। नागा बहल नवदेव के नये विदेशियों, अमेरिकियों और जापानियों को देख सकते थे। उन्होंने आधुनिक युद्ध की प्रगति देखी— शीप, वायुयान, बम, टैंक और जोर।

नागा राष्ट्रीय कॉमिन्स को एक दलायतन में बिसा गया है कि इन सब परनामो से नागा लोग इनका परेक्षण शुरू थे कि अदरे अदारी सही शक्ति करने के लिए शुरू करना थे।

युद्ध के बाद निर्माण को बहुत बड़ी समस्याएँ थी। पुरानी शान्ति-व्यवस्था सदा के लिए खत्म हो गयी थी। युद्ध के कारण अदरे बन गये। बाहरी सत्तार से संपर्क बन गया। जीवन का अभाव बन्द गया।

नागालो ने यह जाना कि अदरे

भारत से जा रहे हैं। ये यह देख रहे थे कि परिवर्तन आ रहा है। नागा हिस्से में राजनैतिक जागृति शुरू हुई।

१९४५ में युद्ध के एक साल बाद नागा हिस्से जिना द्वाइयक कॉमिन्स बनी। एक साल बाद १९४६ में उसका नाम नागा नेतृत्व कॉमिन्स कर दिया गया। यह संस्था नागा राजनैतिक आन्दोलन का वाहन बनी। १९४७ में नागाम के गवर्नर सर अकरर हैदरी कोहिया भोगे और नागा नेतृत्व कॉमिन्स के नेताओं से बातचीत की। यह बातचीत स्वयं भारत में नागा हिस्से के राजनैतिक स्थान के बारे में हुई। समिती हुई, परन्तु एक मुद्दे पर चार-विचार शुरू हुआ। नागालो से इन शिष्टामिले में उनकी राय छुड़ी गयी।

नागा परेक्षण से और उनकी परेशानी के शील कारण थे— (१) समुदाय के अन्विष्टन वा मोरन, (२) शोषण वा भ्रम, (३) स्वतंत्रता का प्रेम। समुदाय के अन्विष्टन की शील शायद राजनैतिक आन्दोलन के पीछे मुख्य चरित्र था। भारतीय शिक्षा की छठी अनुसूची के पढ़ाई लोगों के लिए गृष्ट नियम थे। वरन्तु यह नागालो की आशा के बहुत कम था। इसलिए उन्होंने १९४९ के चुनाव का बाहुरंगार किया।

युद्ध वर्षों तक परिस्मिति ठीक थी, परन्तु अन्विष्टन थी। १९४६ में गुल अन्विष्टन शुरू हुआ और नागा समाजिक परेक्षण बनी। यह चुनाव की पर्यटन पर आधारित था। नागा राष्ट्रवादीयों और भारतीय मुस्ता सेवा में लड़ाई छिड़ गयी। हिंसा और अदारी हिंसा हुई। तनाव बढ़ा। नागालैण्ड एक असाध्य बीम बना। सामान्य लोगों को चानी तकलीफ हुई।

१९४७ में पहला नागा सन्वेगन हुआ। इसके बाद दो और सन्वेगन हुए। १९६० में पश्चिम नेहरू नागालो के एक प्रतिनिधि मन्डल से मिले और नागालैण्ड को प्रदेश बनाने के लिए सहमत हो गये।

१९९३ में यह कार्यन्वित हुआ। प्रदेश बनने से पहले यह एक राष्ट्रीय सीमा थी।

नागालो के इतिहास में प्रदेश का बनना एक बड़ी बात थी। इसके जनता में बड़ी सन्तुष्टि आयी, फिर्त भी इसके अभाव परिस्मिति खत्म नहीं हुई। इसलिए वर्ष कॉमिन्स ने पहल काके १९६४ में एक कानिन्स समिति बनायी। कानिन्स समिति लडाई रोकने में सफल हुई। छिपे हुए नागालो और सुस्ता सेना को लडाई बनी। इसके सभी को राहब बिनो और शमी ने द्वाइयक स्थापन किया। कानिन्स के कारण सन्वेगन और कानिन्स का नया जनता शुरू हुआ। १९६४-६५ में सधायक नेतृत्वो ने भारत सरकार के प्रतिनिधियों से बातचीत की। १९६६-६७ में उन्होंने नयी दिल्ली के प्रधानमंत्री से ६ बार बात की। दुर्भाग्य से कोई हल नहीं बिचवा। १९६७ में बातें रुक गयी। यह भय था कि परिचित और सख्त हो मकड़ी है। सीपाम से बनना की पद्य बन्दूक की और शान्ति हो गयी। कानिन्स रहने और समझना वा समझाने न होने से नये राजनैतिक उतान पैदा हुए। विभिन्न दुष्टिजन उभरे—कंठरल, रिबोकूनवरी और हौनग। ये दुष्टिकोय गुल राजनैतिक के हैं।

इसी परार से कुली राजनीति में भी नागा राष्ट्रिय संघ, तलाकह दल, दो घुपों में बँट गया। विरोधी दल का नाम युवाइडेड फ्रॉन्ट काँक नागालैण्ड है। हाल में ए० एन० ओ० और यू० एफ० एन० ने नागालैण्ड टेट ऐश्व्यती में युवाइडेड कानिन्समैटरी अन्विष्टन बनाये का निरपय किया है। ह्यारी असा है कि विभिन्न राजनैतिक घुपों के बीच सहमति होनी और समझना वा सामायन हो सकेगा। परिपरिपरि के सामान्य और मान्य होने के बावजूद यह सबको इच्छा है कि राजनैतिक समझना हल हो और स्थायी शान्ति कायम रहे।

शान्तिसेना की परिधि

(नज्देर में १९ मई को शान्तिसेना विषय की ख़ास का प्रारम्भ करते हुए थी मारवाण देसाई ने जो भाषण किया उसे हम यहाँ दे रहे हैं। सं०)

शान्तिसेना वा मतलब सिर्फ़ निष्ठा-पन भरना नहीं है। जहाँ पर लोफ़त पेट के निर्माण का काम चल रहा हो तथा शान्तिसेना की स्पर्श कम्ता हो, अलबत्ता उसका प्रयोग अपने लिए नहीं होता है, वरन् उसका प्रयोग भाषा और राष्ट्रों की सीमा साधकर विषय की परिधि तक पहुँचता है। और पट्टला वदम के तौर पर पकौसिबो को हमारे काम का स्पर्श हो, इसका भी हम प्रयोग करेंगे।

घड़ी दृष्टि से पिछनी बार हम लोग इबट्टा हुए थे और अभी भी इबट्टा हो रहे हैं। इस बीच जो मुख्य प्रवाह शान्तिसेना में धाये हैं उनके बारे में प्रारम्भ में मैं निवेदन कर देना चाहता हूँ।

बांगला देश में जो घटना हुई, उनमें शान्तिसेना ने बड़ी सहयोग दिया। अंग लोण जानते हैं कि जब पाकिस्तानी शासक था और यहाँ पर ल.सो बरणायाँ आये तो सर्व सेवा सघ की ओर से तीस शरणार्थी विविरो में करीब ८-९ लाख परणार्थी के बीच सेवा का काम हुआ और उसमें सबसे बड़ी बात यह हुई कि हिन्दुस्तानवालों को यह विश्वास हुआ कि राष्ट्रीय आश्रत के समय में हम सड़ें हो सके हैं और दुनिया के शरीर लोगो के हृदय में प्रवेश करते हैं। यह अनुभव मायला देश की राजधोना से पहुँचे हुआ। बांगला देश के स्वाधीन होने के बाद यहाँ पर कुछ प्रवृत्तियों का प्रारम्भ सर्व सेवा सघ की ओर से हुआ है।

श्री जयप्रकाशजी ने अभी हम कुछ मित्रों को बांगला देश की परिधिपरिधि का अध्ययन करने के लिए भेजा था। वहाँ के बारे में बहुत अधिक लच्छोख से रिपोर्ट नहीं दूँगा। लेकिन वहाँ जाने पर हमारे मन पर जो असर पड़ा उसके बारे में कहना चाहता हूँ।

गांधी के अपने आन्दोलन की जो एक

विशेषता थी उस विशेषता का महत्व बांगला देश में जाकर हमारी समझ में और अधिक आया। स्वराज्य होने के बाद गांधी के आन्दोलन के कारण इस देश के पास स्वराज्य का मोमें जुड़ा हुआ एक नेतृत्व वा शिक्षक वहाँ पर अविभाजित अभाव पाया जा रहा है। इसलिए यह देश एक बड़ी आश्रत में से बच गया। स्वराज्य का नेतृत्व के कारण यह विशेष अवृत्ति वहाँ जाकर हुई। दूसरी चीज जो हमको सगी कि बांगला नेतृत्व वहाँ पर था उसका बहुत महत्व वहाँ पर प्रकट हुआ। हासकि सधाम में कम और निष्ठा में अधिक है, इसके कारण उसका प्रभाव वहाँ हुआ। बांगला देश के ऊपर परिधिपरिधि सारी हुई थी, परिणामतः अंतिम प्रयास हिंसक हुआ जिसका प्रारम्भ अशहयोग आन्दोलन से हुआ था। उसकी कुछ प्रतिक्रियाएँ आज भी देखने को मिलती हैं। वह दो प्रकार से विशेष तौर पर मिलती हैं। एक तो सामान्य लोगों के हृदय में था तो असाधारण लोगों के हृदय में, तथा गुणधो के हृदयों में प्रवेश कर रहा पड़े हुए है जिसके कारण सारे समाज में एक प्रकार का सत्रात छाया हुआ है और जिस समय सामाजिक कानूनों का भंग होगा वह विचारात नहीं है। तो यह भाव कि समाज में शान्ति से अवर बढ़ना हो, तो जाने बढ़ने का साधन भी शान्ति-मय होना चाहिये, यह एक बार विचारात दिमागी है वहाँ की परिधिपरिधि—जो हम वहाँ देखते हैं। दूसरा तथ्य जो उधो में से पैदा होता है—विद्रोह। विद्रोह की भावना वहाँ दीपनी है जिससे कि हम लोग स्वराज्य के बाद बच रहे थे। स्वराज्य के बाद हम लोगों ने जो कुछ गतिवृत्ति की है उनमें से कुछ गतिवृत्तियाँ दुर्भाग्य से यहाँ भी हो रही हैं—

संत शाण की शान्ति और प्रदेत निर्माण के आठ साल सामाजिक परिवर्तन और विकास हुआ है। पदाधिनारियों और ऐन्थोपक लोगों के लिए यह सम्भव हुआ है कि स्वतंत्रतापूर्वक धूम सकेँ और लगन के साथ काम कर सकें। परिणाम भी बहुत अच्छा आया है।

आज १००० से अधिक शिष्या-केन्द्र हैं। उनमें एक लाख विद्यार्थी पढ़ते हैं। १९७१ की जनगणना के अनुसार नामालेख में शिष्या २७.३ प्रतिशत है। यह लगभग राष्ट्रीय औसत के बराबर है। मुख्यतः जिले में तो २८.८ प्रतिशत है।

सबसे में भी काफी उन्नति हुई है। आज वहाँ २००० किलोमीटर से अधिक सौटर चलाने लायक सड़कें हैं। सनी यह सड़को से जुड़े हुए हैं, जिससे यह सम्भव हो सका कि आदमी एक केन्द्र से दूसरे केन्द्र उधो दिन जा सके। सबसे बड़ी बात यह है कि नामालेख के अस्ती गैर और नगरो में बिजली है। ९ नगरो में टेलीफोन है।

उद्योग के क्षेत्र में भी नये कदम उठाये गये हैं। रुद्रि की भी उन्नति हुई है। जलधरो को सेवारी भी दी गयी है।

शान्ति के कारण नामालेख में आधुनिकता भी आयी है। घर, निवास, फर्नीचर सनी में आधुनिकता देखी जा सकती है। पहले यहाँ केवल ईर्वाई धर्म के वैप-टिस्क मनुदायवाले थे। परन्तु अब यहाँ क्रैयोलिक और नगामो के अने धर्म के माननेवाले भी हैं। धार्मिक दृष्टिकोण में कट्टा नहीं है। आधुनिक शिक्षा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ वहाँ धर्म-निर-पेक्षता वा भी प्रवेश हुआ है।

इतिहास में एक शासनी कम समय है। परन्तु इनके ही समय में नामालेख प्राथमिक युग से आधुनिक युग में आ गया। इतने कम समय में नामालेख ने जितनी तरक्की की, उस पर उनका गौरव करना उचित है। ●

सारी चीजों का आधार रखना शासन पर, शासन आधार रहेगा नौकरशाही पर, नौकरशाही आधार रखेगी वस्तु विषयो पर, और कुल मिलाकर सारी जनता में इस भावना का निर्माण हो रहा है कि नौकरशाही अत्युक्त अत्युक्त काम नहीं कर रही है। इसकी भी गिरावट मुझे की मिली। ऐसा अपने देश में भी हुआ और बांग्ला देश में भी। उसमें से वे चित्तना जल्द मुक्त हो सकें जवना अच्छा है। इस विषय में अगर हम लोग कुछ मदद कर सकते हों तो मदद करने की हमारी तैयारी अवश्य होनी चाहिए। इसका ही बांग्ला देश के सम्बन्ध में मैं कहूँगा।

प्रतिज्ञा के साथ-साथ निरहकारिता और अदुता इन दोनों के रूप में हमारे आन्दोलन को भी व्यपकाशवाक्य ने एसी चीज दी है जो हमें मुलभूता से प्राप्त नहीं होती। शान्तिसेना के संघटन का जो प्रश्न है जिसका दूरी नत्सेल कर देना चाहिए—एक है, तरण-शान्तिसेना का संघटन। संघटन ने एक रूप लिया। दूसरा, ग्राम-शान्तिसेना के संघटन ने एक स्वरूप लेने का आरम्भ किया। तरण-शान्तिसेना का रूप यह है कि उसकी अधिकांश जिम्मेदारी लक्ष्मणों ने ले ली और मैं यह मानता हूँ कि यह एक बहुत अच्छी चीज हुई। मैं हमेशा यह भी अनुभव कर रहा हूँ कि अधिकांश विषय में हमें ये लक्षण मार्गदर्शन देते रहते हैं और आगे दे सकते हैं। भागे यह मानना है कि इस आन्दोलन को नया प्राण दे सके इसकी एक नयी कड़ी लक्षण-शान्तिसेना ने पंदा कर दी।

तरण सहरसा के आन्दोलन में या और भी जिस क्षेत्र में क्रान्ति के रूप में लगे हैं वहाँ एक नया आयाम आरम्भ हुआ—शान्तिसेना का। यह था, ग्राम-शान्तिसेना का संघटन और उस ग्राम-शान्तिसेना के संघटन के बारे में मुझे इतना ही निवेदन करना है कि सर्व सेवा संघ को अपने साथ की योजना में ग्राम-शान्तिसेना पर बाध तक चित्तना ध्यान दिया है उससे जनादा ध्यान

देना चाहिए। ग्रामदान आन्दोलन को पुष्ट और मजबूत करने के लिए, ग्रामदान आन्दोलन को भागे बढ़ाने के लिए दोनों दृष्टियों से ग्राम-शान्तिसेना पर विशेष ध्यान देना चाहिए। ग्रामि सेना मण्डल प्रतिक्षण आदि जितना सहमता दे सकेगा, देगा। सर्व सेवा संघ अपने प्रमुख कार्यक्रम के तौर पर ग्राम-शान्तिसेना को ले ले। उसे इस मंच से निवेदन करता हूँ। मुझे ऐसा लगता है कि पूरे आन्दोलन में वैसे लोगों की जरूरत है जो लोग अहिंसा के विषय में बराबर चिन्तन करते रहेंगे और अपने सारे काम को अहिंसा की कसौटी पर बसते रहेंगे। यह शरत करनी तो शान्तिसेना का निष्ठा-पत्र भरा है या नहीं वह प्रश्न गौण हो जाता है यह तो संघटन की जिम्मेदारी है, निष्ठा-पत्र अगर भर सकते हैं तो उसका हम स्वागत ही करेंगे लेकिन फिर भी प्रधान चीज ही ठी वही शान्ति सैनिक माने जायेंगे।

मुझे फिर भी लगता है कि सारे आन्दोलन में पद्धति की अपेक्षा तत्त्व प्रधान है। अपनी शान्तिसेना में तत्त्व अहिंसा का है, अहिंसक लोक-शासित का है। पद्धतियाँ

देश और काल के अनुसार बदलती रहेंगी। श्री जयप्रकाशजी ने कहा है और स्वत एम्बेस्सर के नाम से एक पत्र लिखा है कि प्रतिनिधि मण्डल को पाकिस्तान भेजना चाहते हैं। भूँक हम देखते रहे हैं कि बांग्ला देश में जो समस्या है उसका हल केवल बांग्ला देश में सम्भव नहीं, लेकिन पूरे भारत के महाद्वीप का है इसलिए वहाँ भी हम भेजना चाहते हैं, पठा नहीं हमें इजाजत मिलेगी या नहीं। वह यह चाहते हैं कि सरकार की ओर से जो प्रयत्न हुआ है वह तो हो लेकिन जनता की ओर से भी इस प्रश्न के प्रयत्न होने चाहिए। इसलिए यह प्रयत्न आरम्भ हुआ।

मैं यह कहना चाहता था कि यहाँ से शुरू करके हम जय जगत तक पहुँचेंगे लेकिन वहाँ तक पहुँचने के लिए अगर हमको कोई बुनियाद चाहिए तो अहिंसा के विषय में निष्ठा रखना चाहिए तथा क्रान्तिनिष्ठ कार्यकर्ता हो। ऐसे कार्यकर्ता अपने आन्दोलन को अधिनासिक मिलते रहे इनकी ही प्रार्थना करके आना प्रस्ताविक निवेदन समाप्त करता हूँ।

हमारे नये प्रकाशन

गांधी बोध

संकलनकर्ता—बालकृष्ण भावे

इस पुस्तक में बालकृष्णजी ने गांधीजी के प्रेरक तथ्यों का संकलन जिज्ञानु जनों के लिए किया है। इन तथ्यों के संकलन के पीछे एक ऐसी दृष्टि रही, जिससे जीवन प्रेरित होता है। निम्न मननीय है।

मूल्य : ₹ २.००

क्रान्ति का समय दर्शन

लेखिका : इन्दु टिटेकर

मुभी इन्दु टिटेकर सर्वोदय जगत की निष्ठावान लेखिका है। आपने सर्वोदय-विचार का गहराई से अध्ययन किया है और इष्टिप्रल रिबोन्गुन नाम से एक अग्रणी ग्रन्थ लिखा है। उसी का यह हिन्दी संस्करण स्वयं लेखिका ने तैयार किया है। इसमें क्रान्ति के विचारों को कथा ऐतिहासिक संदर्भ में दी गयी है और बताया है कि अहिंसक क्रान्ति का सम्पूर्ण दर्शन क्या चीज है।

मूल्य : ₹ ३.००

सर्वे सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी-१

‘धर्मघोष या भेरीघोष’

[श्री दादा धर्माधिकारी ने ‘भेरीघोष या धर्मघोष’ पुस्तक का विमोचन सर्वोच्च सम्मेलन के अवसर पर नकोबर, पंजाब में किया था। यह पूरा भाषण हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।—सं०]

जिस पुस्तक का आप लोगों के सामने यहाँ विमोचन करना है उसका नाम है ‘भेरीघोष या धर्मघोष’*। पुस्तक का विषय नहीं है जिसकी चर्चा आप यहाँ कर रहे हैं। यह पुस्तक लिखी है निर्मला देवगण्डे के पिता श्री पुण्योत्तम यशवंत देवगण्डे ने। १० वीं वार्ड देशगण्डे महाराष्ट्र के हैं। वह सिर्फ अर्थी और मराठी में लिखते हैं। हिन्दी के सिद्धहस्त लेखक नहीं हैं। मराठी में उन्होंने बहुत-सी पुस्तकें लिखी हैं। वे एक प्रतिभाशाली, स्वयं-प्रज्ञ और विचारशील साधक हैं। स्वयं-प्रज्ञ, भौतिक स्वतंत्रता जनरल विरोधता है। किसी एक मत को या किसी एक दर्शन को नहीं उन्हे माना नहीं। इसलिए उनकी प्रतिभा के उन्मेष निरन्तर रहे हैं। जब जिस दर्शन से अभिभूत होते हैं, उसे तत्-प्रतिफल मानते हैं तो बहुत शूद्र और अनादय तक से उसका प्रतिपादन करते हैं। कस्तीदुष्-घान को उन्हे कभी बुद्धि का लक्षण नहीं माना है। ऐसे एक प्रतिभाशाली व्यक्ति ने जिसने कई विषयों पर पुस्तकें लिखी हैं, काव्य-ग्रन्थ लिखे हैं, दार्शनिक ग्रन्थ लिखे हैं, अपनी आत्मनशा भी लिखी है, जिसे साहित्य अकादमी से पारितोषिक मिला है। बरीय-करीब मेरी उम्र के है, ७० साल से ज्यादा। बाल कुछ घटते हो गये हैं। ‘मन तेज यूँही चञ्चल ये भास्ये पतितं शिरः’ बाल घटते हो गये हैं, इसलिए ये बूढ़ नही हुए। उम्र बढ़ गयी है।

इस पुस्तक में जिसमें सम्राट अशोक की विभूति का वर्णन है एक उपन्यास

* प्रकाशक :— इन्हें सिखा सघ प्रकाशन, राजघट, बाराणसी-१

मूल्य :—पति रुपये।

है, ‘धर्मघोष या भेरीघोष’? धर्मघोष एक मानवीय जीवन की सत्ता है। इन दोनों के टकराव में मानवीय जीवन की सत्ता क्या नहीं निजयी हो सकती है? क्या शरत्-सत्ता समाज-व्यापक होते हुए भी कोई समय ऐसा आ सकता है कि शरत्-सत्ता को जगह मानवीय जीवन की आत्मसत्ता ले ले? यह प्रतिपाद्य विषय है। यह एक दार्शनिक उपन्यास है, जिसकी भूमिका हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार पं० हुजूमि प्रसाद त्रिवेदी ने लिखी है और उन्हे यह कहा है कि इसमें जिस प्रतिभा का दर्शन है वह अद्भुत है, आश्चर्यजनक है और यह बहुत सजक उपन्यास है। सजक उपन्यास दर्शाते हैं कि इसमें इतिहास की एक नयी व्याख्या करने का प्रयास है। इतिहास की कई व्याख्याएँ हुईं। मार्क्स की एक व्याख्या हुई कि इतिहास में ही एक नियतिवाद है। दूसरी व्याख्या समाजवादिनों ने की कि इतिहास के जो बहुत प्रभावशाली व्यक्ति होते हैं उनकी विभूतियों और जीवितियों का रोमांटिक इतिहास है। यह इतिहास को मानवमय बना देते हैं, अद्भुत रूप इतिहास। १० वीं वार्ड की इस पुस्तक में इतिहास की एक नयी व्याख्या का प्रयास है जिसे आप ‘सिन्धुनल इन्टरप्रिटेसन’ कह सकते हैं—इतिहास की मानव निष्ठ व्याख्या। इसमें नहीं यह कहा है कि निश्च-नेतृता जब मनुष्यों के सम्बन्धों में और मनुष्यों से ज्यादा विभूतियों में अभिव्यक्त होना है और जब उनका आविष्कार करने का प्रयास होना है तब जो शचीय पटनाएँ पड़ती हैं उनमें से नये इतिहास का निर्माण होना है। परम्परा का इतिहास, पार्य-पारल्य सम्बन्ध नहीं, इस इतिहास में केवल बदायत्त पटनाओं की सूची नहीं। इतिहास व्यक्त-

गत जीवन, सामाजिक जीवन और वैश्विक जीवन के सामन्त्य में से घटित होता है। एक नया टकराव है, नया युग है। इसमें कई इस तरह के भाषण और संवाद हैं जो बठ बनने की योग्यता के हैं। इसकी हिन्दी भाषा, ऊनरी सुषुप्ती निर्मला की है जो किसी मनुष्य की हिन्दी नहीं है, किसी पंडित की नहीं है। इस शैली में एहमूदता है।

में दो-एक बातों का और उल्लेख करने, क्योंकि मैं इस पर बहुत लम्बा भाषण कर सकता हूँ। लेकिन केवल आपकी रचि इस विषय में बहाने के लिए दो-तीन बात इस विषय में बूढ़ेगा।

इसमें सबसे अधिक प्रभावशाली पात्र एक स्त्री पात्र है। यह है तिल्यरक्षिता। दूसरा स्त्री पात्र है ईशान देवी-सम्राट अशोक की बहू है, उनके पुत्र की पत्नी, जो पुत्र जानता नहीं था कि मैं अशोक का बेटा हूँ। उनकी जो भ्रूज राती थी, जिससे विधिवत् विवाह नहीं हुआ था उसका बेटा, उसकी पत्नी ईशान देवी। ईशान देवी शक्ति-मूलक है—शक्ति। भौतिक शक्ति के ‘संभरन’ के बिना शक्ति राजशक्ति के सेवक से समाज में धार्मिक आचरण, नैतिक समाचार और सांस्कृतिक उत्पत्ति अशक्य है। इसका प्रतिनिधि है इस उपन्यास का अमात्य राधागुप्त। यह राधागुप्त आचार्य चाणक्य का अनुयायी है—यह आचार्य चाणक्य, आचार्य बौद्धिधय, जिसने राज्यशासन सिखा है और जो मौर्य राज्य का प्रस्थापक माना जाता है। ईशान देवी शक्ति की उपासिका, शक्ति की बधिष्ठात्री है। मनु ने कहा है ‘न सत्कल्प हि यमान् जनतु भोलाय कर्तते’ सारे संसार के लोगों को और आपको कुल-धाम्नि देनी है ही उसे दण्ड या अधिष्ठातन चाहिए। क्या दण्ड जीवन का अधिष्ठातन पर समाज-जीवन चल सकता है? यह प्रश्न अशोक के सामने आया क्योंकि के युद्ध के बाद। जब उसे शस्त्रों से विरहित हुई, तब यह प्रश्न उसके सामने आया। तब यह धर्म क्या है? इस धर्म की व्याख्या

की है निरुपाधिक, अर्थात् निष्कारण मान-
वीय सम्पत्ति। समाज-प्रवृत्त दो मनुष्यों के
बीच सम्बन्ध में कोई उपाधि नहीं, कोई
लगाव नहीं, भौतिक बाधाएँ नहीं, फिर
भी दोनों एव-दूहारे के लिए अत्यन्त-सम्पर्क
करने के लिए तैयार, आत्मोत्सर्ग करने के
लिए तैयार हैं, यह जीवन है। और यह
जीवन सभी अर्थ-रहित नहीं होता है। इस
जीवन का कोई दर्शन प्रयोजन लौकिकों की
बाधकता नहीं।

इसमें एक पात्र है जामुक, जो अर्थों का
बा वेदा है और श्रीक रानी से पैदा हुआ
था। उसकी पत्नी है ईशान देवी। दूधरा
या छोटा बेटा कुपाल। कुपाल क्या होता
है मुझे पता नहीं। उन्होंने लिखा है कि
कुपाल परी होता है जिम्मेदारों बहूत
सुन्दर होती है। सुन्दर आँसू राजपुत्र की
पत्नी, इतिहास-समाप्त नाम रखा कुपाल।
ईशान देवी, तिसरखिता और यह जामुक,
इन दोनों के नामने बुद्धिवाच में अशोक वार-
वार परास्त हो जाता है। फिर भी सप्राप्त
अशोक भारतवर्ष की ही नहीं, दुष्टार की
अद्वैत विभूति क्यों है? एव० जी०
बेल्स ने ससारा बा इतिहास लिखा है।
एन इतिहास में धर्म-सायापनों में से निर-
गोतम बुद्ध का नाम है और इतिहास के
पाठकों में शिर्ष अणुके का नाम है।
उन्नेस तो बहूतों के हैं, लेकिन राजा
हुंवा है अशोक, एक ही राजा, जिसने
बहुत कि 'मत्त' विरोधी दण्ड निरपरा
समाप्त-अवस्था' सम्मन है और इसने
बाधाएँ किया सपाल बुद्ध का। यथागत
और सपालगत, इन दोनों में सानन्वय
हो सता है और यह सानन्वय सम्भव
हुवा अशोक के शासन-काल में। इतिहास
ए० बार्ड० ने लिखा है कि सपाल के
दौर में 'असम्भव' शब्द ही नहीं है।
यथा उन्दी बहूतों का सार ही है, असम्भव
सम्भव हो सता है, लेकिन वह किसी
दर्शन से नहीं, किसी उपसमाप्त से नहीं,
किसी बुद्धिवाच से नहीं, बल्कि मनुष्य के
समीप सम्बन्धों में से जो घटनाएँ घटित
होनी हैं उनके कारण ही। वे दोनों घट-

नाएँ इसमें हैं।

यह जो ईशान देवी है, वह शक्ति
की उपनिष्ठा है और दूधरा पति जामुक
है। यह चाहती है कि मेरा पति जामुक
अशोक के बाद राजा बने। अशोक को
कोई अपाधि नहीं। लेकिन अशोक स्वयं
मानता है कि धर्मशक्ति श्रेष्ठ है और दण्ड-
शक्ति वृत्ति। और इस अर्थपर शक्ति
के आधार पर, उसके अतिव्यक्त पर समाप्त
की रचना होती है। इसमें जो जामुक
विश्वास करता नहीं। यह अशोक के
सामने समस्या है। इस समस्या की वृत्त
कुपाल जाता है और कुपाल जब जाता
है तो ईशान देवी उससे बहूतों है कि मेरा
पति सुवर्ण पर से त्यागपत्र दे सता है,
लेकिन उसकी कुछ शक्ति है। और वह शक्ति
यह कि अशोक के बाद कोई उसका और
दावेदार न निकल जाये, कुपाल ही हो
सता था। बहूतों है कि जिसने उसे
पत्नी की हो, यह राजा नहीं बन सता,
यह शासन-मर्त्या है। मेरी आँसू बहूत
सुन्दर हैं, ऐसा तुमने बर्षों वार बहूत है।
इतिहास मैंने अब यह सम्भव कर लिया है
कि अशोक को निजान कर फँक दूंगा।
इसको दे दूंगा, तो फिर कोई सम्भावना
नहीं रहेगी कि मैं राजा बन सकूँ। इस,
इसमें कोई विचार नहीं, कोई त्याग की
भावना नहीं। जिस घटितता से कुपाल यह
बहूत है, उससे उसके हृदय का परिवर्तन
हो जाता है और वह बहूती है कि यह दर-
मिद नहीं होगा। लेकिन इस वृत्त बहूत रही
है, इतने में वह आरत आँसू निजान देता
है। ए० बार्ड० बहूतों है कि इतिहास में
देखा ही हुआ है। इतिहास में हमने जान
ना, समय का विचार किया, धन का
विचार सभी नहीं किया। हम चाहते हैं
कि दीर्घ काल तक अन्त काल तक हमारी
असहायता रहे। हम धन का विचार
छोड़ देते हैं। जिस धन को सुख-दुःख
उपरिचय होता है, उसका सामना अगर
हम उसी धन करके तो उसका धार्मिक
दर्शन आ जाता है जीवन-धन-भयूर नहीं,
जीवन शक्ति है। धार्मिक का मतलब

साधन नहीं, सत्य है। सत्य और
शाश्वत का यह भेद बहूत अच्छी तरह
से इसमें उपस्थित किया गया है, प्रकट
किया गया है।

उसके बाद अशोक निर्णय करता
है कि अब क्या हो। कुपाल की आँसू
के बारे में क्या अब कुछ नहीं किया
या सता? अन्वय से पूटना है
कि क्या बुद्धिवाच वैदिक शासन में इनका
कोई उत्प्रेषण है कि किसी की आँसू
अलग हो गयी तो उसे फिर से अपनी
जगह पर बँटा दिया जाय और उसमें
दृष्टि द्या जाय। यह बहूत है कि आँसू
बँटायी तो जा सती है, लेकिन उसमें
दृष्टि नहीं आ सती है। तो फिर
क्या हो? भरी सभा में सब लोग बैठे
रूप हैं। सबके पास एव-एक दोना दिया
जाता है और इस घटना का वर्णन
होता है। लोगों की आँसू में अशुद्धता
बहूती है। दोने उससे भर जाते हैं।
उस पवित्र जन से कुपाल की आँसू
फिर से बँटायी जाती है और घोषी
जाती है। उससे उसे दृष्टि प्राप्त हो जाती
है। यह है मानवीय सम्बन्धों की समी-
पता और विज्ञान की मर्त्या।

अन्त में तिसरखिता, जिसने अपने
जीवन भर धर्म-जीवन का अध्ययन किया
है, अन्तिमगत जीवन और विश्व जीवन
के सामन्वय का प्रयोग किया है—
प्रयोग से मतलब बुद्धिपूर्वक नहीं, सहज
प्रेरणा से घटित हुआ प्रयोग—अन्त में
क्या करनी है? अब जीवन हो गया।
लेकिन जीवनदान के बिना इस भवे
कर्मदूष का उल्लेख नहीं होगा, इनका
आरम्भ नहीं होगा, इतिहास अन्त में
अपने मरीचक का उल्लेख अन्त में कर
दनी है, और यही उल्लेख समाप्त होता
है। बुद्धिवाच में अशोक हृदय परास्त
होना है। घटनाओं के समय उसकी
मर्त्य बुद्धि हा जाती है। यह अपने
'इद-पुत्र' से मार्गदर्शन पाता था।
मतलब एक 'दृष्टिगत' है। जहाङ्गनाजी

ने विश्वास है अपनी जीवनों में कि इस गांधी में क्या है, हमको पता नहीं। बुद्धिमत्ता इसके अधिक बहुत लोगों में है और जिसे "बर्मयोगी" कहते हैं उससे भी थोड़ा बर्मयोगी हमारे देश में हैं। वही अधिक बढ़े तपस्वी, त्यागवीर रहे हैं। कहीं अधिक बलेश सहन क्रिया है, ऐसे कई लोग हैं। लेकिन कोई एक ऐसी चीज इसमें है, इस जमीन में गद्य छिपी हुई है, कोई एक अलंकार एतको उपलब्ध है, जिसके कारण घटनाओं में यह सही निर्णय कर सकता है। यह जो निर्णय-शक्ति है, आत्मशक्ति है, वह बुद्धि से परे कोई शक्ति है। मैं जानता नहीं, मेरे में है नहीं लेकिन उसको खोज है। यह निर्णय अशोक में भी, जो इनमें से किसी में नहीं था—सम्यक् निर्णय-शक्ति, जिसको कोई वारण्य नहीं दे सकता था। इस शक्ति के आधार पर अशोक निर्णय कर लेता है और इसी में अशोक की थोप्टता है। इस शक्ति का अभिप्रेतन कहीं है, स्वरूप क्या है, यह खोज है। दार्शनिकों, साधु-संतों और मुमुक्षुओं को इस खोज के मुकाम पर लाकर यह उपन्यास छोड़ देता है। इतना स्विकर, इतना उबाव और सुन्दर हिन्दी भाषा में लिखे गये उपन्यास का मैं विनोचन करता हूँ।

पिछले दो महीनों में मैंने जो पुस्तकें पढ़ी हैं उनमें एक तो श्री० वार्डे० देशपाण्डे की "भेरीभोग वा धर्मभोग" है और दूसरी "बाजा, बाण और विनोबा" के बारे में लिखी पुस्तक बमलनयन बजाज की है। इन दोनों पुस्तकों में अपनी अनुपम शैली में, बहुत सधेप में, लेकिन संक्षेप रूप से दिनसी अनपढ़ भाषा, लेकिन बहुत सुन्दर भाषा, सहज सरलता उसमें है। एक तरह का पशुत्व उसकी भाषा में है। उसमें एक पुस्तक श्री० वार्डे० देशपाण्डे की विनोचन करने में मुझे बड़ा हर्ष होता है और मैं अपने-आपकी गौरवान्वित मानता हूँ।

सप.सपरगना-पुस्टि-लोकवाचा से :

भूल

भूल।

यस्योकि काय नही।

यस्योकि जल नही।

यत दो माह से सधालपरगना (विहार) के पुराने ग्रामदानी गाँवो को जगाने का प्रयास कर रहा हूँ। लेकिन 'ग्रामदान' नाम से नहीं, बल्कि 'शामदान' नाम से ये लोग भडकते हैं। दोब हमारा भी है, तीन बरस पहले सैकड़ों ग्रामदान कराये, तूफान आया, गया। हमने समझा, लोग इसे उठा लेंगे। अस्तु।

हा० वाजिदखली सर्वोदय कार्यकर्ता के साथ दस मीन पैदल चलकर गंग डा (भेथपुर पासकुड़) गाँव पहुँचता हूँ। लगभग एक सौ लोग, अधिक भूमिहीन मुहलमान, श्री मोहम्मद जलील के 'वरवाजे' पर जुटे हुए हैं। वालटेन की रोजनी में सभा शुरू हुई। इस गाँव का बाधा भाग बगाल में है। बनस में, सरकारी राहत-योजना के अन्तर्गत मिट्टी खोदकर सड़क बनाने में हजारी बेजार, जिनमें प्रेजुएंट भी शामिल है, लगे हुए हैं। सधालपरगना में यहाँ 'पहाड़िया'—आदिवासी भूल से भरे हैं, यहाँ सरकार ने राहत-योजना चलायी है—योग जबह वह भी नहीं। समस्या की जड़ यहाँ है? जनसख्या का आधिपत्य। मैं उम्मे समझता हूँ, गांधी देर से करो, बच्चे कम पैदा करो, बाहे लुप-निरोध आदि वा प्रयोग करो। शामसधा, शानकीय, छाथी, प्रामोयोग

"यह वो हुई भविष्य की बात। अभी क्या?" वे पूछते हैं।

"आठान में नाम मिलेगा। गारव पीते हो?"

"पैट खाती है, गाराज यहाँ से आयेगी?"

"हुम्हारे बच्चे स्वल्प जाते हैं?"

"गाय-बकरी चरायेंगे, या खून

जायेंगे?"

एक बात देखो। इन्हे न भूमिदान पर विश्वास है, न नेता पर। "इन्दिरा-विनोबा पर हमें विश्वास नहीं" वे साफ कहते हैं।

'बच्छी बात है। अपने पर विश्वास करो', मैं कहता हूँ। लोग वाग रहे हैं। चरखे बैठ गये। भूदान-वितरण में शकड़की हुई। अब कहाँ जायें, किससे कहे?

"हम रैडियो सुनते हैं—बंगाला देश को अनाज दिया गया, इधर हम भूखें मर रहे हैं", वे कहते हैं।

मैं उन्हें सरकार का 'रोल' समझाता हूँ कि वह आपके आधार से टिकी हुई है। आप हथके से पकड़े हुए हैं तभी छाता आपकी बचाता है। अपनी शक्ति को पहचानिए। उनसे सर्वोदय की बातें कहता तो हूँ, लेकिन मेरा मन नहीं मानता बातों के पुखाव से। पलटा के मौलाना मोहम्मदुद्दीन हमें खीर खिलाते हैं, गले में अटवने लगते हैं। पारों ओर भुलसरी है। लोग छुपि-छुपि 'लोन-पेंटीशन' लिखवा रहे हैं। 'पेंटीशन' ब्लांक में देंगे, 'क्रिपानी' घूँस दिगा।

रद्रीरुर के मुखिया ब्रममुलदुदा (मो० जलील खीर ब्रममुलदुदा 'लोक-सेवक' हैं) रहते हैं, 'लोग विरोध नहीं करयेंगे तब तक सरकार का ध्यान नहीं जायेगा।' बिरकिटो के शिक्षक मोहम्मद मुसा भी कहते हैं, 'बच्चा जब तक रोवा नहीं, उसकी माँ दूध पितालो नहीं।' लोग धीरज खो रहे हैं। हमारे सम्बन्धन से अधिक उन्हें नमसलवाव आश्रित कर रहा है। ग्रामदान, जिससे विनोबा 'हर मर्ज की खदा' यलाते हैं, नयो नहीं सफल हो रहा है? अथर उसमें कमी है तो क्या उसे 'गिवाइज' नहीं करना चाहिए? ग्र.दान से मुलभ ग्रामदान और मुलभ-ग्रामदान से?

—जगदीश खानी

शान्ति मिशन को तहस-नहस करने को साजिश

पुलिस रिमाण्ड १२ ग्वालियर जेल में बन्दी मूरतसिंह, रामसहाय, नथुआ और बाबूतिसिंह-चार आत्म-समर्पणकारी दिनांक २७-६-७२ को रात्रि ९ बजे छत्रपुर पहुँचे। श्री मूरतसिंह और श्री रामसहाय के आग्रह के कारण शान्ति मिशन के दो-तीन कार्यकर्ता (लोकेन्द्र भार्द, हरि भाई व पशुभुंज पाठक) ग्वालियर से आये। दिनांक २८-२९ जून को श्री मूरतसिंह ने अपने गाँव चँपपा से तीन-चार मील दूर पाटन के द्वार में बलवाये मन्दिर में शिवजी की मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा की। यहाँ पुलिस के करीब सौ जवान और ५-६ गाड़ियों की व्यवस्था रही। जैत ही मन्दिर का घाम पूरा हुआ श्री सान साहब डी० ए० पी० ने कहा कि हमें आदेश है कि आपको हम छत्रपुर रात को ही ले जायें और वे रात्रि १२ बजे रवाना होकर २ बजे फोंगें सहित आये। मार्ग में भी भारी पुलिस तैनात रही। छत्रपुर आते ही स्पष्ट मान्य होने लगा कि पुलिस बलबो एव बन्दूकों से खोज में शायद अकेले में पूछताछ करना चाहती है, क्योंकि पुलिस ने रिमाण्ड में यह लिखाया कि हम इन लोगों से गलन के सम्बन्ध में हथियारों की बरामती कराने के लिए इन्हें ले जा रहे हैं। डी० ए० पी० ने वहाँ स्थित शान्ति मिशन के कार्यकर्ताओं को आदेश भेजवाया कि मिशन के लोग हट जायें। गांधी भवन में भी डी० ए० पी० व ए० पी० आये और कार्यकर्ताओं की श्री पाठकजी से बापिस हटाने की माँग करने लगे। शान्ति मिशन (इन्द्रेलक्ष्मण शर्मा) के अध्यक्ष भी पाठकजी ने अपनी अवसमर्पण प्रकट की। कार्यकर्ताओं ने तब किया कि चाहे कुछ हो हम नहीं हटेंगे। स्थिति यह है कि शान्ति मिशन के कार्यकर्ताओं के बनेरधी मूरतसिंह, श्री रामसहाय आदि यहाँ बाने के लिए तैनात नहीं थे, इसलिए ग्वालियर से बलबो समय हो यह उत्तरदायित्व मिशन

के कार्यकर्ताओं पर आ गया था कि उन्हें सुरक्षित बापिस ग्वालियर सेप्टल जेल पहुँचायें। पुलिस के वर्तमान आग्रह के कारण पुलिस अधिकारियों के समने शान्ति मिशन को यह स्पष्ट करना पड़ा कि मिशन के बापबर्ता इन समर्पण-कारियों का ग्वालियर सेप्टल जेल पहुँचाने तक किसी भी हाजत में साथ नहीं छोड़ेंगे और शान्ति मिशन के तीनों बापबर्ता (लोकेन्द्र भार्द, दुर्गासाध आर्य, व द्वारिका प्रसाद तिवारी) वहाँ से दस-से-सठ नहीं हुए, यहाँ तक कि श्री लोकेन्द्र भार्द व दोनों सापियों ने उचित समायोजन न होने तक भोजन न लेने का निर्णय किया और उनकी सहानुभूति में स्थानीय सर्वोदय बापबर्ता सुरेश कुमार ने भी एक दिन के भोजन का त्याग किया व पुलिस लाइन में रात्रि का समय बिताया। डी० ए० पी० सान सा० ने श्री मूरतसिंह, रामसहाय आदि से चर्चा के दौरान शान्ति मिशन के बापबर्ताओं व अन्य उपस्थित जनों के सामने यह कहा, "बताते हैं कि आप लोग जो शान्ति मिशन का सहयोग लेते हैं, उनका मतलब यह होगा कि आपका शासन व हम पर विश्वास नहीं है। यदि विश्वास होगा तो इन सान पट्टी वालों को साथ में रखने का इतना आग्रह न रखते। मेरा मुझब मानें तो इन्हें अपने पास से हटा दें। यदि आप इन्हें नहीं हटायेगे तो आरका नहल सुरक्षा हो सकता है। इसका दुपरिणाम यहाँ तक निकल सकता है कि आपको जान से हो मार दिया जाये।" इस पर मूरतसिंह ने कहा कि जब हम जगलों में थे तब जान रहेथी पर रखकर घूमने थे और अब जब हाजिर हो गये हैं, तब भी मार दिये जायें तो क्या फर्क पड़ता है। इस पर श्री मूरतसिंह का छोटा लड़का रामसिंह पीने लगा, जिससे दबित होकर श्री मूरतसिंह भी बरबस रो पड़े।

शान्ति मिशन के पास दब रही चारों जीप सापियों को मिशन द्वारा सुपुर्द किये जाने के बजाय, डी० ए० पी० सान साहब के आदेश से आर० आई० दुबे ने उस जीप के ड्राइवर को उतार लिया। जिस जीप द्वारा, फोन सखार हो जाने से उपरोक्त समायोजन श्री पाठकजी तक भेजवाने की व्यवस्था की जा रही थी, पुन दूसरी जीप बँगायी तो वह भी जन्म कर ली गयी। पुलिस अधिकारियों ने दोष दो जीपें भी ले ली : नरते हैं कि मुख्यमन्त्री का आदेश प्राप्त हुआ है कि इन्द्रेलक्ष्मण शर्मा में मिशन का नाम समाप्त हो गया है, इसलिए उनको जीपें वापस करा ली जायें। अभी भी शान्ति मिशन के समने निम्न आलातकिक कार्य करने को रोष है (१) बाकी बचे हुए बापियों का शकूओं से सम्पर्क करके उनको आत्म-समर्पण के लिए राजी करना, (२) जो समर्पण कर चुके हैं उनके वापसी बचाव के लिए प्रबन्ध करना, (३) जो जेल में हैं उनके साथ पवित्र सम्पर्क बनाये रखकर उनके सुपरिहारों को बलवान बनाने के प्रयास को जारी रखना, (४) बापियों के तथा उनके द्वारा पीठिन परिवारों के पुनर्वास और सहायता का प्रबन्ध करना, (५) बागों परिवारों और उनके दुम्ननों के बीच समझौता कराकर सीहार्द पैदा करना और (६) सम्बन्धित दासों में शान्ति-और सहारा का वातावरण बनाना। इन्हीं को ध्यान में रखकर चारा दया था कि फिनहान दो गाड़ियाँ शान्ति मिशन के पास रह जायें। किन्तु, जीव बापस कराने के पीछे रहलब कुछ दूसरा ही है। जब वे अहम समर्पणकारी ग्वालियर से आते थे तो ग्वालियर को ही कोतें और गाड़ी दी गयी थी। एक सेतोय विधायक भी उस गाड़ी में पुलित्तबासी पर राज डालकर आना चाहते थे, किन्तु शान्ति मिशन ने इन्हें अपने साथ न लाने का तय किया था। गुना जाता है कि मुख्यमन्त्री श्री प्रकाशचन्द

तरी उचित विधायक से भारत प्रभावित है।

मुना नातू है कि पुलिस इन बागियों का उपयोग छोटे राजा के विरोध को समर्थन कराने में करना चाहती है, जबकि श्री मूरतसिंह, श्री राममहाय आदि ने लिखकर बिना है कि छोटे राजा से हमारी पैमानना बल रही है और इसके उपाय व उनके कुटुम्बियों का जीवन खतरे में है। इन्होंने यह भी सूचित किया है कि न तो कोई क्षमिषार इन्हें देना है और न ही किसी प्रकार का बयान ही पुलिस को देना है।

शांति मित्रों के कार्यकर्ताओं की वहाँ से हटाने का तो यही मतलब हो सकता है कि या तो पुलिस इनके विच्छेद सम्बन्धों के सिद्धिसे में कुछ बड़ी नार-बाई करना चाहती है या उनके जीवन को किसी भयानक संकट में डालना चाहती है।

इन परिस्थितियों में एक और रिश्ता जो 5 जुलाई तक का था, उसे जल्दी खूद कराने का प्रयत्न हुआ और दूसरी ओर पुलिस अधिकाधिकों ने मिशन के साधनों की उनके साथ जाने देने के लिए अपना सब जतन बनाया। परिणामतः 1 दिसम्बर को काम को 5-20 बजे श्री मूरतसिंह तथा श्री राममहाय आदि को शांति मित्रों के कार्यकर्ताओं एवं पुलिस गार्डों के साथ गंगालिखर घेराव जेल को वापस होना पड़ा।

— सुरेश कुमार

साप्ताहिक समाज रूप और चिन्तन

लेखक—जयप्रकाश नारायण

इन पुस्तक में लेखक ने अपने शीर्षकालीन अनुभवों के आधार पर लोकतंत्र, पंचायती राज, भूदान-युक्त व्यवस्था, समाजवाद आदि का मूल्य और सुविधाओं विवेक किया है। सोम प्रकाशित होगी।

मूल्य रु० ५-००

सबसे तेरा सब प्रकाशन
र. जवाहर, आराजाली-१

शिमला शिखर-वार्ता : कुछ निर्णय

भारत व पाकिस्तान ने 3 जुलाई को द्वािप समझौते पर हस्ताक्षर किये उसके कुछ महत्वपूर्ण अंग ये हैं :

१. भारत व पाकिस्तान की सरकारों ने संकल्प है कि वे दोनों देशों के बीच अब तक चले आ रहे मनमुटाव और विवादों को खत्म करके पारस्परिक मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध व आवागमन में स्थायी शांति की स्थापना के लिए बान करेंगे, साथ ही दोनों देश अपने साधनों व शक्ति का उपयोग अपनी जनता के हित में कर सकेंगे।

इन सन्धियों की प्राप्ति के लिए भारत व पाकिस्तान की सरकारें इन बातों पर सहमत हैं कि :

(क) दोनों देशों का शासन है कि वे अपने नवभेदों को द्विपक्षीय वार्ता द्वारा शांतिपूर्ण उपायों से या ऐसे शांतिपूर्ण उपायों से जिनके बारे में दोनों देशों के बीच सहमति हो गयी हो, हल करेंगे। जब तक दोनों देशों की समस्या का अन्तिम हल न निश्चल जाये, कोई भी एक पक्ष स्थिति को नहीं बदलेगा और दोनों देश इस बात पर प्रयत्न करेंगे कि ऐसा कोई पक्ष न हो जिससे शांतिपूर्ण सम्बन्धों को क्षति पहुँचे।

(ख) समुद्र राज्य संधि की घोषणा के अनुसार दोनों राष्ट्र एक दूसरे की सीमाओं का अतिक्रमण तथा राजनैतिक स्वतन्त्रता में किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करेंगे।

२. दोनों ही सरकारें अपनी सामर्थ्य के अनुसार एक-दूसरे के प्रति सुनिश्चित प्रचार नहीं करेंगीं। दोनों राष्ट्र उन सभी समाचारों को प्रोत्साहन देने जिनके माध्यम से आपसी सम्बन्धों में सुधार की आशा हो।

३. अपनी सम्बन्धों में समानता पाने की दृष्टि से (क) दोनों राष्ट्रों के बीच आन्तरिक-संधियाँ तथा जन, धन, नाइ, नाली द्वारा पुन. संचार-सम्बन्ध

स्थापित की जायेगीं। (ख) एक-दूसरे देश के नागरिक और विद्वत् जयें इसलिये नागरिकों को जाने-जाने की सुविधाएँ दी जायेंगीं। (ग) जहाँ तक सम्भव हो सके व्यापारिक एवं शोध आदि सम्बन्धों में सहयोग का शिखरिणा जल्द-से-जल्द बल हो। (घ) विमान एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में आदान-प्रदान बढ़ाया जायेगा।

४. स्थायी शांति स्थापन करने की प्रक्रिया का शिखरिणा कार्यक्रम करने के लिए दोनों सरकारें सहमत हैं कि (क) भारतीय और पाकिस्तानी सेनाएँ अपनी अन्तर्देशीय सीमा में तैनात जायेंगीं। (ख) दोनों देश बिना एक-दूसरे की स्थिति को क्षति पहुँचाने सम्बन्धीय में 1७ दिसम्बर 1९५1 को हुए अन्त-विश्राम के फलस्वरूप नियन्त्रण-रेखा को मान्य रखेंगे। (ग) सेनाओं की वापसी इस समझौते के लागू होने के 10 दिन के भीतर पूरी हो जायेंगीं।

५. दोनों देशों की सरकारें इस बात पर सहमत हैं कि उनके राष्ट्रपतियों की भविष्य में फिर अट होगी और ऐसे अवसर पर होगी जो दोनों के लिए सुविधाकरक हो। इन बीच दोनों देशों के प्रति नहि स्थानीय शांति की स्थापना और सम्बन्धों की सामान्य करने के लिए आश्चर्य प्रकटों के बारे में विचार-विमर्श-नहीं। इनमें मुद्राबन्धियों एवं नागरिकों की वापसी, सम्बन्धीय के अन्तिम हल व दृष्टान्तिक सम्बन्ध स्थापित करने के प्रयत्न शामिल हैं। ●

गया परिवर्तन

नारायणी नगर सर्वोच्च मण्डल का कार्यलय सङ्घ विभागाध्यक्ष मार्ग से शायना केन्द्र, राखपाट स्थानागत किया गया है और नगर स्वराज्य समिति के अध्यक्ष श्री राजेश्वरान शर्मा की नगर सर्वोच्च मण्डल में पदेन स्थायी आवेष्टित मनीचीव किया गया है।

समर्पित वागियों के बीच काका कालेलकर

काका साहब बलिलकर चम्बल घाटी शांति मिशन की ओर से श्रीकाशिनाथ त्रिवेदी के निमंत्रण पर २९ व ३० जून और १ जुलाई, '७२ को तीन दिन का समय आत्मसमर्पणकारी बन्दी वागियों के बीच दिया। इस बीच उनकी श्री जेक, सरस्व रास्व आयोग, म० प्र०, तथा श्री दीवान, डी० आई० जी० पुर्णित, श्री अयोध्या नाथ पाठक, ए० पी० ग्वालियर, श्री सुरजीतसिंह ए० पी० मुर्दाना और श्री गंगासेवक त्रिवेदी बीच इन्वेस्टीगेशन आफीसर ज़िमिनल हाउस के साथ गम्भीर चर्चाएँ हुईं। शिक्षा महाविद्यालय, नगरनिगम और पचा ३० मा० विद्यालय में उनके सार्वजनिक प्रश्नोत्तर कार्यक्रम चले। अग्रिहाय स्न में उन्होंने प्रश्नों के उत्तर के माध्यम से अपनी बात प्रोत्साहित कर पहुँचाये। वह प्रश्नोत्तर हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

प्रश्न: आपने बन्दी वागियों के दर्शन की यात्रा नाम दिया वह कैसे?

उत्तर: भगवद्गीता में भगवान ने कहा है कि मन गुणहार भो हो तो भी गुणाद् का यात्रा जीवन छोड़कर कोई व्यक्ति अच्छे रास्ते जाता है तो उसे सधु मानना चाहिए। सधु-जीवन के रास्ते आये सोभो ना दर्शन एक यात्रा ही है।

प्रश्न: आपके जेन-रोवन का अनुभव गुना चाहते हैं।

उत्तर: मैंने गांधीजी के सह-परवरा जेन में 'स्टेट प्रिन्टर' की तरह भी जेन घाटी और सन्त कैंप, सी बनास और वह भी उस सबब की खारब से खारब बीसापुर जेन में। गांधीजी की जब स्टेट प्रिन्टर की तरह रखा गया तो उन्हें एक सभो देने की दृष्टि से मुझे साबरमती जेन से परवरा जेन हून वा पया। महात्माजी परवरा जेन की परवरा मन्दिर बहते थे। पर कुछ समय बाद खारब एंसी नाराज हुई कि मुझे 'सी' बनास में बीसापुर भेज दिना और

वहाँ खारब से खारब कैदियों के बीच रखा। पर मैंने कहा कि गांधी वा आदमी हूँ इसलिए यहाँ भी वायुमण्डल बनाऊँगा। बीसापुर जेन को मन्दिर बनाने में काफी तपशील उठाती पडी। लेकिन उसमें सछन हुआ। बुरे-से-बुरे आदमी के अन्दर भी भलाई होओ है, उमे सोजने का नाम हमारा है। हम सबने मिलकर सरकार से कहा कि हमें ईमानदारी से जीना है इसलिए हम काम मांगते हैं। हाय म काम दिने बिना किसी को भी यहाँ तो क्या भगवान के यहाँ भी अधिकार नहीं है। एक नहीं दो-दो हाय इसलिए दिने है कि 'कर काम रे'।

आप चाहे तो इस जेल को भी मन्दिर बना सकते हैं। इसके लिए (१) आपका रहन सहन सरावा हो। आपमें से किसी के पास चाहे त्रितनी दीवत सजाति हो पर यहाँ सरावो का जीवन जीना है। (२) हाय से सेवा का वाव अवश्य करें। एकदम पूरे-पूरे गांधीजी के रास्ते नहीं आयोग पर चन्द दिल से बूढ़े और कुछ भेरे जैसे जवान आगम वा सरात छोड़कर जब सेवा का काम करेंगे तो यह जेल भी मन्दिर बन जायेगा। (३) बुराई में आँसू मूँद कर भलाई वा हो सोचेंगे तो मन धीरे-धीरे पबित्र बनता जायेगा। जिनका आपके हाथों अहित हुआ है उनही सेवा आपका धर्म बन जाय ता आप भगवान के सच्चे भक्त बन जायें। भगवान वा आदेश है कि पिना वा भी किसी ने घृत किया हो और यदि वह बीमार है तो उसकी सेवा करना भक्त का धर्म है।

प्रश्न: बन्दी-जीवन के बाद सरा-बना काम करने चाहिए?

उत्तर: मैं चाहता हूँ कि सरा सभो में से चन्द सौप एंजे मन्वृत त्रिवेदी कि उत्तरी सरा से ह्यन चीन वा कपुन सवा-मर्दान के लिए सभात हो जाय। गुज्ज दिन से सेवा करनेवासा

वभी भुसो नहीं सरा है। कठिन दिना व, दुख के दिना में आदमी रोये नहीं तो शक्ति प्राप्त होगी है। सेवा करने-करते ही आपमें तेजस्विता आयेगी, आप बड़े रनेगे। मैं आपको बिरासत से बहता हूँ कि फाँसी नहीं होगी। आपके मन में भलाई पहुँच गयी तो भगवान की ओर से आपको सेवा वा अवसर मिलना ही चाहिए।

जेल में रहकर आप उत्तम सेवा और उत्तम शिक्षा प्राप्त करें। उन्नत से नहीं, बल्कि दिल से जवान बनें। यहाँ से जाने के बाद दो तरह के आश्रम पलायें— एक पुराने के लिए, दूसरा स्थितो के लिए। पुराने-नये मिलकर काम करें। चन्द लोगो को प्रय करना चाहिए कि जेल से छूटने के बाद सेवा ही करेंगे त्रेशा आपके बीच श्री काशिनाथ त्रिवेदी ने तथा श्री हेयदेव शर्मा ने बत लिया है कि जिन्दगी भर सेवा करेंगे। चम्बल नदी वा गुनाता नाम चर्मगतती है। इनके किनारे सेवा आश्रम सुर्ने। यहाँ तीन राजो की सीमा मिलती है तो त्रिस तरह गुनहारो को सुविधा थी उसी तरह सेवा करनेवाले सबको भी सुविधा हो। आपके सेवा के जीवन की देखो दुनिया भर के लोग आयोगें। मैं गांधीजी ना आदमी हूँ। मैं आपकी बहता हूँ कि आप सब उत्तम सेवा करते-करते सन्त बनते जायेंगे। सेवा करना जीवन वा सुदुपदीय है। सुध है जीवन के लिए और दुख है विद्या पाने के लिए। मेरा अवसे सब यही बहता है कि बापता जीवन सेवामय हो।

प्रश्न: आप जेन में बना-नया करते थे?

उत्तर: जेन में किसी नीकर की मेरा नहीं नेते थे। गांधीजी के कम्परे में खार बहते उनका कम्पड रखा था। फिर ऊह जगाने खारा था। ने टट्टी गने ही उनके हाय-भूह धोने का साधन पया-स्वाय रख देता था। फिर कम्पड अच्छी तरह धोकर रख देता था। मुझे महात्माजी के साथ रहने का मौदा मिना

तो मैं सेवा का मोरा क्यों छोड़ूँ ! वे मना भी करते थे तो भी मैं अपना काम करता रहता था ।

गांधीजी के बपूड़े धो डालता था । उन्होंने कहा बाबा तुमको सरकृत आती है मोता के श्लोकों का उच्चारण सिखाओ तो मैं वह भी करता था । वे कहते थे इस काम में खुश हो तो गवती नहीं रहनी चाहिए । मैंने सारी भगवद्गीता का उन्हें उच्चारण सिखाया । उनके पास बैठकर संकटों बार उसका पाठायण किया ।

उनको ही नहीं एक यूरोपियन बन्दी या बीतर । मेरी उससे दोस्ती हो गयी मैंने उसे भी जेल में मोता सिखायी । वह घोड़ा-घोड़ा समझता तो खुश हो जाता था । उसकी खुशी से मुझे भी खुशी होती थी ।

मैंने जेल-बीतन में रती भर समय की बर्बादी नहीं की, उसका पूरा सदुपयोग किया । अच्छे-बच्छे ग्रन्थ पढ़े । हाथ के काम सीखे । पुस्तकें भी लिखी ।

भजन : आपके दर्शन होते रहें जिससे आपके सत्संग का लाभ मिलता रहे ।

उत्तर : मेरे दर्शन नहीं, बल्कि वह दिन आये कि आपके सत्संग के लिए लोग आये । ऐसा करनेवालों का भगवान् के यहाँ उत्तम स्थान है । वह सब होगा जब आप सत्ता और सम्पत्ति के पीछे नहीं पड़ेंगे । पिछले गुनाहों को डालने के लिए दूसरों का भला करने का प्रयत्न सर्वोत्तम मार्ग है । यहाँ जेल में आपको कुछ सहायित्व मिली है । जेलवाले भाप पर विश्वास करते हैं । आपका भी उनके अनुकूल मानरण होगा तो एक अच्छा वायुमण्डल बनेगा । सब जीना है तो सेवा के लिए, दूसरों के उद्धार के लिए । आपके हाथी अब बुरा काम नहीं होगा तो फिर देखिए पगवान का बमलकार । आपने जेल में अपने हाथ से कते सुत की माला जो मुझे दी है उसकी योग्य मेरे दिल में बँटते हैं ।

जेल में दूसरे दिन थोड़े दुखी मन से सभा शुरू हुई । दो बान्नी सरदारों ने

पिछले दस वर्षों से गहरी दुःखनी थी । अब वे दोनों अपने साथियों सहित एक साथ हैं तो साथियों की ओर से कुछ शगड़ा हुआ तो थोड़ी वार्तिकनाथ त्रिवेदी ने उस सबद पर रोशनी डालने के लिए काफ़ा साहब से प्रार्थना की ।

काफ़ा साहब : बाहर का बान्नी होकर नहीं बल्कि आपके भाई के नाते कह रहा हूँ कि घर के अन्दर और बाजार के अन्दर के शगड़ें में कुछ फर्क होता है । बाहर अपनी आवश्यक सम्भालनी होती है ।

सबसे प्रेम-भाव रहे । आने से जो छोटे हैं, हरिजन हैं उनके साथ हमारा और भी प्रेम-भरा व्यवहार हो । भगवद्गीता में कहा है "विद्या विनय सगन्धे ब्राह्मणं . . . पण्डित सनदंशना "

चरण-स्पर्श भी करता हो तो मैं पहले हरिजन का बर्हंगा । उसके अन्दर भी भगवान् है । भगवान् के आदर्शों के निरन्वार करने से भगवान् का धाम होगा । मैंने हरिजन लडकी और ब्राह्मण लड़के को शादी अपने हाथों गांधीजी के आश्रम में करायी है । गांधीजी ने आशीर्वाद दिया । गांधीजी जाति से बंश और श्री चक्रवर्ती राज-गोपालाचारी ब्राह्मण । उनकी पत्नी ने गांधीजी के लड़के से शादी के बारे में पूछा तो उनकी भी शादी बरकर आतीवादि दिया । मैं तो कहना हूँ कि अब एक जाति में शादी करना ही नहीं चाहिए । मेरे लड़के ने जैन बन्धा से शादी की । आप में जो अभी तक दुस्साहस या उसकी बगड़ साहस जाये और आप सरार रुफियाँ तोड़ें । अपना धर्म सतता धर्म है उसे सनातन रहना है । पुराना अकर है तो उतना ही कबरा उमाना है, उस कबरे को निकालें । धर्म सनातन रहना चाहिए तभी भविष्य के लिए मजबूत होगा । हय अगर आपस में लड़ें, रहे तो हमारी जीमन यही ।

प्रश्न : प्रायश्चित्त और मुधार के

लिए आपकी क्या सलाह है ?

उत्तर : सला पावेवाला सुघर जाय जाने मन की तानत से, किन्ती डर और भय से नहीं । वहकार न रहे ।

जोरवाला मार सकता है पर जोर-धाले के पाप सत्य ज्यादा नहीं होता । जिसकी भूत है वह बमूल करे और फिर आइया बभी न करे । अपना मित्राज बभी न सोये । कोई अयर एक गाती देता है तो उसके मुँह में एक नरक और एक गुनी गातिर्या वे तो दस नरक । गाती देनेवाले का मुँह पहले गन्दा होता है । वह तय करे कि आइया गाती नहीं बने ।

प्रश्न : जिस पर मार पडेँ उसकी तो सब के बीच इज्जत चली गयी फिर दूसरे के भाँपों मारने से क्या लाभ ?

उत्तर : मार से दर्द होगा, इज्जत कैसे चली जायगी ? मैंने गाती नहीं दी, अपना मुँह गन्दा नहीं किया तो दर्दमें इज्जत क्या गयी ? सिर मोना नहीं किया । डर के घारे पाँव नहीं टुना तो इज्जत बनी, गयी नहीं । मार पडने पर दर्द होगा, इज्जत नहीं बायगी । इज्जत मारनेवाले की जायेगी । निडर भक्ति को इज्जत हुयेबा वापस-पहनी है ।

तीसरे दिन आखिरी भेट-बाशी में मन्दिरो की रक्षा व व्यान-पूजन की बात चल निबली कि अभी तक बाणियों द्वारा बनाये मन्दिरो की वे मदद करते थे अब सरदार उनको देखभाल करे ।

काफ़ा साहब : मैंने आज देवों के मज का जार किया है । देवी का भजन हूँ । यह देवी आज भी मेरी जेब में माना है पर भारत सरकार सबकी सरकार है इसलिए वह अगर मन्दिर लेना भी चाहे तो मैं नहीं लेने दूँगा । मन्दिर में ईमानदारी से बमाई आनन्दी और वह भी अपने परिवार के पोषण के वाड बची हुई खन नरनी चाहिए, दूसरों की छोपना नहीं है । भगवान् के नाम से मन्दिरो के पुजारी धन से उतावर है । धर्म और पूजा धन से नहीं मन से होती है । धन का तो रियाज चल गया है । →

विनोबा निवास से

'कोशालन्द'

हूरी-हूरी कोश, जाननी-मराठी कोश, फ्रेंच कोश, चीनी कोश एक के बाद एक कोश बाबा की चारपाई पर ढोखने लगे। जब वे हूरी-हूरी में तल्लीन थे, तारी को बहुत हँसी आयी। गूढ हँसने लगी, अपनी हँसी रोक नहीं सकी, आँखें लोट-भोट हो गयीं। उनकी हँसी देख बाबा भी हँसने लगे। हँसी के कारण वा बाबा को पता नहीं था, पर हँसने लगे; मस ! गुटी में हँसी। हँसी !! हँसी !!! ब्यो, बग हुवा, अरपधिक हँसी के मारे अँखो में आया पानी पोछते हुए तारी कहने लगी, कहते हैं धन्य-मुक्ति, अध्वयन-मुक्ति और सारा दिन बाल बो बहते रहते हैं, यह कोश लाओ, यह कोश लाओ। तुनाराम ने कहा है न, 'मूल स्वभाव जाईना' (मूल स्वभाव जाता नही)। तो अध्वयन वा आपका स्वभाव। बाबा हँसने-हँसते बहने लगे, "अरे, अध्वयन-मुक्ति यानी वेद, उपनिषद् ऐसे ग्रन्थों का अध्वयन नहीं करना। यह कोश ठीक मैं मनोरंजन के लिए देखना

रहता हूँ। आध्यात्मिक अध्ययन नहीं। कोश, व्याकरण, गणित, विज्ञान, यह तो पढ़ सकते हैं।"

बाबाई ! बाबा की कोश पढ़ने में बहुत रस आता है। एक दिन कहते लगे, "बाबा अगर सन्यास लेगा तो कौन-सा नया नाम लेगा ? कोशालन्द।"

आन्दोलन के मोर्चे

सहरसा के मोर्चे से सिद्धराजजी आये थे। हात ही में वे सर्व सेवा नभ के अध्वयन चुने गये हैं। उन्होंने बाबा के हाथ में तन्मा पत्र रखा, जिसमें उनको अध्वयन पद की जिम्मेदारी विल परिस्थिति में उठाओ यही इशारा निकल था, राजस्थान में शासन-बन्दी के आन्दोलन को कैसे उठाया गया इसका वर्णन था तथा सहरसा के मोर्चे की अद्ययन जानकारी थी। सबको लगा कि बाबा कुछ बोलेंगे, सावधान हो गये। लेकिन बाबा ने शांति से पत्र पढ़ना पुरा किया और पँखिल से पत्र पर दो जगह कुछ लिखा। पत्र सिद्धराजजी के हाथ में देने हुए कहा, 'समाप्तम्'। सिद्धराजजी के साथ

बगसाहब, मुपनताई बग, यशपाल भित्तल (पजाब), नरेन्द्र दुबे (म० प्र०) भी आये थे। सब हँसने लगे। सिद्धराजजी के पत्र में जहाँ सहरसा के तथा राजस्थान के शराबबन्दी की बात लिखी थी उन दो स्थानों के मार्जिन में बाबा ने अँखर लिख दिया था। 'समाप्तम्' का अर्थ वह विषय समाप्त हुआ यह लें या बैठक ही समाप्त। फिर भी साथी बैठ रहे। बाबा ने इतना ही कहा थाप लोग सर्व-सम्पत्ति से जो भी तप करते हैं, बाबा को मजूर है। दूसरी बात यह है कि दादा समाधिचारी ने आपकी सम्मेलन में आँखि में मूचना दे रखी है। 'अगर फकीरत नही होना है तो मोर्चे ध्यादा मत बढ़ाओ।' वह ध्यान में रखकर जो उचित है किया जाये।

इतना नदूने के बाद उन्होंने नागरी लिपि का विषय छेड़ा। नागरी के सिवान्नी ठीक उच्चारण दूसरी लिपि में नहीं हो सकता है, यह बताया। अन्त में कहा, अगर आपके प्रयत्नों से भारत भर में नागरी-लिपि चली तो लोग दूसरों साल बाद भी आने यात्र रखेंगे। भारत के अलावा, चीन, जापान, मलेशिया वगैरह देशों को भी इस लिपि से लाभ होगा।

डाक्टर को मंत्र

बम्बई के डा० निखन-कोटेरा बलकला से बापठ जाते हुए दर्शन-धरम हेतु एक दिन के लिए आये थे। उन्होंने गर्भपात, आत्महत्या, डाकुओं का आत्म-समर्पण आदि कई विषयों पर बाबा से उवाच विद्दे थे और बताया कि उनकी विस्तृत चर्चा भी की। उनका पहला प्रश्न था, "मेरे जैसे अव्यवस्थित को भारत कोल-सा मन देने ?"

बाबा. "निष्कलापत बुद्धि से बीमारों को उत्तम सेवा करें, यह बहुत अच्छा उपाय है। बीमार को मुक्त सेवा करें। दुस्तुत होने के बाद बीमार प्रसन्न-चित्त से जो देश, वह लें। कोई लसखरी

→ इसके लिए सरकार के पास मत जाइये। आपमें अपहरण को हिम्मत कहाँ से आये ? क्या वह समाज को मान्य था ? जब आप में अधर्म की हिम्मत थी तो अब धर्म की हिम्मत क्यों नहीं आ सकती ? अगर हिम्मत वाले परित्रवान बनें। निवृत्त साफ हुई वा पाप छुन जाता है। भगवान हृदय को पृथक्ता है और म्यायालय म्याय को। हम बच्चे से डरे क्यों ? मन में मैत्री का गयी धोपन मिलेगा ही। भय होना बन्धो का धन नहीं है। भय मानता है कि भयवान दंष्ट्रा रखेगा रूँगा। भयवान मेरे पास है तो समाज चाहे जितनी निन्दा करे। आपके हृदय में पुष्प का पना तो भयवान के आशीर्वाद की वार पर क्या होने और आप यही

से नेक हृदय लेकर आये।

प्रश्न विनोबाजी का दर्शन हमें मिलना चाहिए।

उत्तर : आप उनके दर्शन के अधिकारी हैं। उनके दर्शन भी होंगे। आशीर्वाद भी मिलेगा। आप अच्छे बनने को हिम्मत करें। मैं हिमात्म्य में गया तो अपने साथ मुक्ति नहीं ले गया। आद्य माता देवी हृदय में दर्शन देती थी। मैंने साक्षात् की कभी कामना नहीं की। मैंने किसी परमत्पार की मक्ति भी नहीं चाही। बस हृदय में सतता का जाग और मात्पुत्री सेवक बना रहूँ यही हमेशा चाहा है। निर्भयता और उत्तम चारित्र्य नहीं सम्भवता की सबसे बड़ी कसौटी है।

— प्रस्तुतकर्ता : प्रो० गुणधर

हो और पुस्तक होने पर ५ रुपये देगा है तो खुशी से लें और कोई गरीब को आना दे तो बह भी लें। मतलब 'को न लें।' आपने मन्त्र मीणा। मन्त्र हमेशा बचिन होता है।"

चारुदा

बाबू की मोबालाजी ने यात्रा की व्यवस्था का भार उठानेवाले पूर्व बंगाल के चारुदा (चारुचन्द्र घोषरी) बाबा की, पाकिस्तान-यात्रा के भी उद्योग-जक थे। जून के प्रथम सप्ताह में जब वे बाबा से बहुत प्यार से मिले तब उन्होंने लुधिये के बाँसुओं को बहने दिया और कहा, "हथी की प्रतीक्षा में था। मुझे आपसे कुछ भी कहना नहीं है। ठिक मीन से आपके पास बंठने से मुझे सन्तोष होगा।" बाबा ने उनकी पूछ-पछ की। पूछने पर बाबा को मालूम हुआ कि ढाका से बर्बा जाने का खर्चा लग-भग १७५ रु. है। बाबा ने चारुदा को सुझावा, "द्वारा स्नान (ब्रह्मविद्या-मन्दिर) आपके स्थान से लगभग १७५ रु. के फासते पर है। तो वाप यहाँ हट यात्रा बाया कीजिय, चन्द रोज वहाँ बिताइये। आबनो अपने दो घर बनाते चाहिए एक ढाका में और दूसरा ब्रह्मविद्या मन्दिर में।"

चारुदा ने सुझाव को स्वीकार किया। दूसरे दिन चर्चा के बोधन बाबा ने कहा, "बांगलादेश में अपार दारिद्र्य है। वार मनुष्य के पीछे एक एकड़ जमीन है। नदियों में अपार बाढ़ आती रहती है। पूजन होता है। और, लगातार २५ साल पाकिस्तान ने उसका शोषण किया है। इस बास्ते वहाँ की जनता आज आधा से मुसीब की तरह देखती है। आज मुसीब हैं, बन नहीं होगे, वो जनता क्या करेगी? लोगों का विश्वास तथा श्रद्धा जागृत रखना हो तो गाँव-गाँव की अपनी गाँव से उठ सड़ें होकर काम करना होगा।

नहीं तो हिन्दुस्तान-जैसी हालत होगी। यहाँ बाबाजी मिले २५ साल हुए पर आर्थिक दृष्टि से खास कुछ हुआ नहीं। हिन्दुस्तान बागे बढ़ा नहीं। इसलिए देश को उठाने के लिए यारे धामीणो को उठाना चाहिए। आज गाँवों में मिलाकित है, छोटे लोगों का बड़े लोगों द्वारा शोषण होता रहता है। अबतक गाँवों की शक्ति सड़ी नहीं होनी, तबतक देश खड़ा नहीं होगा।"

चारुदा—“जो हैं! आपकी बात सही है। मैं वहाँ यह कोशिश करूँगा। कुछ नये जवानों को, छात्रों को संगठित कर रहा हूँ।"

बाबा—“आप जेल में कितने साल से ?"

चारुदा—“छाड़ें आठ साल।"

बाबा—“शोचनार्थ जिलक जेल में छठ साल थे। उन्होंने वहाँ गीता-रहस्य लिखा। धरविन्द को जेल में भगवद्-दर्शन हुआ। जेल अनेकों को लाभदायी होता है।"

चारुदा—“मैंने तो यह कुछ नहीं किया। मैंने जेल में ठिक सन्धी और फूलों का बगीचा लगाया और बच्चों को पढ़ाना था।"

बाबा—“और जानन्द में रहता था, है कि नहीं? जानन्द भगवान का रूप है।"

बाबा का सूक्ष्म प्रवेश

७ जून १९१६ को बाबा बापू से पहली बार मिले थे। ७ जून १९६३ को बाबा ने मृत्युप्रवेश जाहिर किया। ७ जून १९७० को बाबा ब्रह्मविद्यामन्दिर में आये—“गुरुमातृ गुरुमतरम्" बहुरूप। अब इस साल ७ जून को क्या जाहिर होता है इस तरह सबका ज्ञान था। लेकिन ७ के बन्ते ६ जून की रात काल ५ घण्टे के पूर्व अनपेक्षित ही बाबा ने कहा—

“दो साल पहले ७ जून को मैं वहाँ जाया था मृत्यु प्रवेश करके। एक साल जो मैं इधर-उधर भौटर वगैरह में जाता रहा, लेकिन एक साल पहले शोचन-सन्धा

जाहिर किया, तब से आज तक इसी संन में रहा। अब कल नया साल शुरू होता है मेरे लिए शोचन-सन्धा का। इसलिए अधिक मृत्यु में प्रवेश करना स्वाभाविक है। दो साल मैं यहाँ पर सफाई के काम में काफी समय देता रहा, फिर कुछ दिन यहाँ कुटी के सामने सफाई करता था, वह सफाई करना कल से मैं बन्द करूँगा। दूसरी बात, गीता प्रवचन आदि पुस्तकों पर मैं हस्ताक्षर देता था। लाखों गीता प्रवचनों पर मेरे हस्ताक्षर हुए हैं। कल से हस्ताक्षर देना भी बन्द होगा। उसका प्रचार ४० साल तक चलता—१९२२ के प्रवचन हैं और आज १९७२ है; इसके आगे लोग अपनी शक्ति से जो करेंगे, वह करें। अब उसके प्रचार की वासना मुझे नहीं रहनी चाहिए। अच्छी वाचना है लेकिन वह कार्यकर्ताओं पर छोड़ देता हूँ। तीसरी बात, डाक्टर महोदय रोज मुझे मात्स्य करते थे, वह मानिस कल से बन्द होगा। उसके अलावा और भी कुछ निर्णय होंगे, लेकिन वह धीरे-धीरे प्रकट होंगे।

जयप्रकाश नारायण

जयप्रकाशजी की क्षति वगैरह के पाठ एक सरोवर के विचारों आराधन कर रहे हैं। जुलाई के प्रारम्भ में सर्व सेवा सभ के कुछ साम्यो उनसे वहाँ भेंट कर चर्चा करेंगे। (६ से १२ जुलाई तक चर्चा हुई—५०) चर्चा के लिए चार-पाँच विषय रखे गये हैं। इसकी जानकारी विद्वद्राज्यजी तथा बगलाह्व ने बाबा को दी और पूछा, “और किस विषय पर उनसे हम चर्चा करें ?"

बाबा—“कम-से-कम विषयों पर चर्चा हो। इस साल अनुरूप में उनको विन्दनी के ७० साल पूरे हो रहे हैं। तब से एक साल ने शुरू नाम छोड़कर आराधन करेंगे। हमने उनको सुझाया था कि आपका अज्ञान साल 'फुन स्टॉप' (पूर्ण विराम) होगा तो इस साल 'शिविरोज' (अर्ध-विराम) हो। वाणी इसी साल से—

सहरसा जिला ग्रामस्वराज्य आरोहण : एक प्रतिवेदन

(१४ मई से ३० जून १९२२)

विगत ग्रामस्वराज्य महायज्ञ अभियान—१५ मार्च से १८ अप्रैल—के प्रवृत्ति-विवरण के आधार पर सत २९-३० अप्रैल को मुख्य बाबा से अभियान के आयोजकों को सहरसा के काम के सम्बन्ध में हुई चर्चा में से नये अभियान की रूपरेखा का आविर्भाव हुआ। नये अभियान का नामकरण—सहरसा जिला ग्रामस्वराज्य आरोहण—क्रिया गया। बाबा ने स्वयं इसकी अध्यक्ष १४ मई से ३० जून निर्धारित की।

पूर्व तैयारी

प्रारम्भिक बैठक : बिहार ग्रामस्वराज्य समिति की ९ मई की पटना बैठक में सहरसा के काम के सिलसिले में विगत २९ अप्रैल को ब्रह्मविद्या मन्दिर पवनार में किया गया बाबा का प्रवचन पढ़कर मुनाया गया तथा उसका गम्भीरता से विचार हुआ। बिहार के विभिन्न जिला सर्वोदय मण्डलों तथा यथार्थक सस्थाओं की ओर से कुल १० कार्यकर्ता सहरसा-अभियान के लिए भेजना तय हुआ।

क्षेत्र निर्धारण : १५ से ३० मई तक

→ काम करना शुरू करें। लेकिन वह नहीं हो सका। उनकी बहुत ज्यादा मेहनत हुई—बागियों के काम के कारण। इसलिए बेरा मुयाव है कि ये जो तीन महीने इधर काम के गये हैं वे अब अगले साल के बाराम में जोड़ दिये जायें और बाराम यथो से शुरू हो। जुलाई में बाग लोगों से चर्चा होने के बाद वे १५ महीना पूर्ण बाराम करें।"

बाबा का स्वास्थ्य

विद्युत्वाजनों : "बापका स्वास्थ्य कैसा है ?"

बाबा : "नये साल मुझे तीनों मोसम

सर्वश्री डा० डारकादास जीयो, निर्मला बहन, विद्यासागर भाई, ब्रजमोहन शर्मा और महेश्वर भाई, श्री याग छातापुर, सुरलीगज, विसुनगज, सनसुआ, महिषि, विसुनपुर आदि प्रसन्नो में अभियान के लिए उपयुक्त ४ प्रसन्नो का चुनाव करने हेतु हुई। विगत अभियान के दौरान उन प्रसन्नो में सहयोग देने वाले स्थानीय सहयोगियों, गदर्ष प्रवण्ड, ग्रामस्वराज्य समिति के पराधिकारियों, शिक्षकों, सरकारी सेवकों आदि की बैठक में विचार-विमर्श कर धर्म का चुनाव करने का प्रयास किया गया। फलस्वरूप छातापुर, सुरलीगज, महिषि और सनसुआ ये ४ प्रसन्नो पिछले अभियान की निष्पत्ति तथा स्थानीय सहयोगियों के उत्साह एवं सहयोग के आश्वासन को देखते हुए, अभियान के लिए अंशोच्छेद अनुमूल प्रदीत हुए।

जिला बैठक २२ मई को सहरसा में जिला ग्रामस्वराज्य अभियान समिति की बैठक में अभियान को सफल बनाने पर गम्भीरतापूर्वक विचार हुआ। उपयुक्त ४ प्रसन्नो की बैठक में नये

में तीन रोग हुये थे। इस साल तीनों मोसम में कुछ भी नहीं हुआ। सिर में थोडा बबरुन का पास रहता है फिर भी रोज एक मील चलता हूँ। सुनहू आधा मील और बाबा में दो बार पाव-पाव मील। रोज नयी फजर १५-२० मिनट चलान, प्राणायाम आदि करता हूँ। स्वभूमित हो जाहिर ही भी है। बागानी रोज इन दिनों देख रहा हूँ—बैदिक सत्त्वित के साथ जापानी शब्दों का नहीं तक सम्बन्ध है यह देखने के लयान से। यथा भर समयम शतरंज खेलता हूँ। रात और दिन मिलकर दस घण्टे पढ़ा पढ़ता हूँ, जिसमें पाठ पढ़ते भी आती है। नींद निस्वल्प होती है।"

'मैत्री' से धामार

अभियान के लिए प्रयोग-क्षेत्र मान्य किया। अभियान में लगनेवाले स्थानीय कार्यकर्ताओं को सूची तैयार की गयी। ऐसे कार्यकर्ताओं की कुल संख्या १४ हुई। पूरे बिहार प्रदेश से लगभग ७० व्यक्तियों ने अभियान में शरीक होने की अपनी तैयारी बतायी।

सर्वोदय सम्मेलन नकोदर में सर्वोदय सभ अधिवेशन तथा सम्मेलन में जाये देश के सर्वोदय सेवकों का बाबा की मार्ग के आधार पर सहरसा अभियान में भाग लेने के लिए सभ के अध्यक्ष और मंत्रीने आवाहन किया। साथ ही सुभो हर्दितलास बहन (गुजरात) एवं श्री कलाश प्रसाद शर्मा, मंत्री, बिहार गांधी स्मारक निधि ने इस निमित्त विधिवत् अपीत की। परिणामतः गुजरात, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश आदि राज्यों से कार्यकर्ताओं के आने का आश्वासन मिला।

बिहार भूदान यज्ञ समिती का आश्वासन बिहार भूदान यज्ञ समिती के अध्यक्ष-मंत्री से अभियान के ४ प्रसन्नो के क्षेत्र में भूदान को जमीन-सम्पत्ती समस्याओं के समाधान हेतु ८ कार्यकर्ताओं की सहायता मिलने का आश्वासन मिला।

आवश्यक कामकाज सम्बन्धित ४ प्रसन्नो की भूदान की बितरित तथा ब्यवस्थित जमीन का तालवार विवरण तैयार कराया गया। इसी प्रकार पिछले अभियान तथा पुराने जिलाग्राम अभियान के दौरान उन प्रसन्नो में ग्रामदान के बारे में धर्मनग-नग भी प्रसन्नो से श्रेयते हेतु याँव एवं पंचायतवार व्यवस्थित करवाये गये। अभियान का अदर्ष, उद्वेग और कार्यक्रम की जानकारी देनेवाला चर्चा क्षेत्र में वितरण-हेतु छपनाया गया।

कार्यक्रम : २२ मई को अभियान-समिति की बैठक के अन्तर तक सहरसा बाये हुए स्थानीय प्रारंभिक तथा राष्ट्रीय स्तर के कुल २९ कार्यकर्ताओं की एक-

एक टोली निम्नांकित सज्जनों के नामान्वय में ४ प्रखण्डों में भेज दी गयी। हर टोली को अपने क्षेत्र के लिए आवश्यक कामनाय दिया गया।

प्रखण्ड	प्रभारी
छातापुर	डा० टारका दास जॉशी
मुरलीगंज	श्री देवनारायण सिंह
महिय	श्री विद्यालाल भार्गव
सलखुआ	श्री अण्णा दादव
	निर्मला देव्याष्टे और मल्लनारायण
	रामनारायण सिंह और
	स्वामी अण्णानन्द

उत्तरांचल कार्यकर्ता छिट-पुट इन से १५ जून तक बारी-बारी से आते रहे और उन्हें क्षेत्र की आवश्यकता और कार्यकर्ता की अनुसूचता को देख कर उध-उध प्रखण्ड में भेजा जात रहा। अन्ततः आनेवाले कुल कार्यकर्ताओं की सूचना २३ हुई।

कार्य-पद्धति
सामान्यतः प्रति पचास एक कार्यकर्ता लगाने की योजना थी। परन्तु अधिनतर पत्रों में पचासों के दो कार्यकर्ता एक टोली बनाकर दोनो पचासों में काम करने रहे। वहीं-वहीं ५-६ कार्यकर्ताओं ने एक साथ जुड़कर एक ही पचास में केन्द्र स्थापित कर कुछ समय तक समय रूप से कार्य सम्पन्न करने का प्रयोग किया। इस प्रकार बारी-बारी से आने लिए निर्धारित अन्य पचासों में भी केन्द्र स्थापित कर कार्य-सम्पादन का यत्न करते रहे।

सामस्वराज्य को प्राथमिकता : प्रत्यक्ष कार्य में सामस्वराज्य की मानना को जनमानस में प्रतिष्ठित करने पर विशेष धन देने की और ध्यान रहा। इस दृष्टि से कामदान की दोहों सों की प्रति के आवश्यक कामनाय तैयार करके सामसभा के मंडल का प्रकाश रहा। सौपा-व-दुर्गा-व-तरण सामान्यतः सामसभा के माध्यम से ही कराने की दृष्टि रही; परन्तु हल्गासर करने के क्रम में तिनके सौपा-व-दुर्गा जमीन का

निवारण प्राप्त हो जाता था उसे प्रमाण-पत्र पर दर्ज कर बीच में भी वितरित किया गया।

सुरान की जमीन व बासगाँव का पत्रा : सुरान की जमीन की विविध समस्या की छानबीन पर भी बहुत शक्ति लगानी पड़ी, क्योंकि जगह-जगह लोग उसका सवाल उठाकर सामस्वराज्य के नाम में वाधा उपस्थित करते थे। इसी प्रकार बासगाँव के पत्रों का सवाल भी जगह-जगह सहज ही खड़ा होता था। इस दिशा में भी यत्न-तन्त्र कार्य किया।

कार्यान्वयण
कार्यकर्ता-विहार के बाहर से आनेवाले कार्यकर्ताओं में मुख्य शक्ति सुरासत से आनेवाले एक दर्जन प्रथम शक्ति मुयोग कार्यकर्ताओं की थी जिसका नेतृत्व डा० टारकादास जोशी कर रहे थे। इनके अलावा चम्पई से श्री कान्तिनाथ बोस तथा श्रीराम दत्तात्रेय, मध्य प्रदेश से श्री पुष्पागिराय तथा उत्तर प्रदेश से श्री हरि सिंह आये। महागण्ट से दो शरण मानि-सैनिक, मुषी दीरमाना पुरे और श्री जिनय कुमार पटना आये। दिन जो कार्यकर्ता पहले से यहाँ कार्यरत थे वे तो रह ही।

विहार के अन्य जिला से आनेवाले कार्यकर्ताओं में सुौर जिला से धा रामनारायण बाबू के नेतृत्व में ९ कार्यकर्ता आये। पूर्णिया में दो, मुजरहपुर से दो, चम्पारण से एक, गयातरलना से एक, पटना से दो, सुरान जल समिती से दो और दरभंगा से श्री देवानन्द मिश्र के नेतृत्व में ६ कार्यकर्ता आये। जो कार्यकर्ता पहले से कार्यरत थे, वे तो रह ही।

सहला जिला के पुराने तथा नये कार्यकर्ता १४ की संख्या में श्री शशा बाबू और श्री महेश्वर झाँके नेतृत्व में अविभाजित में गये रहे। इनके अलावा अम्बेडकर प्रखण्ड में निष्ठासैन्य स्थानीय सज्जनों ने अपने अधिभूत व बहूत ही महासूचीय कार्य किया। मुर्शीदाबाद में सर्वथी परमानारायण वर्मा, नारायण प्रसाद दादव, केशरनाथ

सिंह—दोषीय सगठक खादी भण्डार—राजनन्दन प्रसाद दादव विद्याचक्र—स्वामि-सुन्दर प्रसाद मण्डल, मुखिया तबोर परसा, महेश्वर मण्डल आदि; छातापुर प्रखण्ड में सर्वथी महाबोर गेल्लामी, स्वामिनन्दन मिश्र, मारुण्डे झा आदि; मांझि प्रखण्ड में सर्वथी भोजा प्रसाद सिंह, शशुदत्त झा आदि; सलखुआ प्रखण्ड में सर्वथी सुर्यनारायण मंडल, गीताराम दादव आदि।

विशिष्ट योगार्थ—पूज्य धीरेन्द्र भार्गव की लोचन-मया यात्रा २३ मई से २० जून तक छातापुर में चलती रही। उनकी यात्रा से उस प्रखण्ड में खल रहे आभयान-कार्य का मन निता तथा कामावस्था उत्पन्न की।

सर्वे संसाधन के अभाव में विद्युत्-पान उर्द्धा भंगना धनरत्नी धामता उवा बहूत क साथ इस जबाब में ९ जून से १४ जून तक सहस्रता में रहे। १५ रात आने छातापुर और मुरलीगंज प्रखण्ड के बीनयान-पान का दौरा किया। बाबू बीनयान तथा सहस्रता की भावी स्तर-रता एवं अन्वया जौर के सम्बन्ध में यहाँ के मुख्य ध्यातव्य से आने १४ जून का अन्वया आनम में विचार-विमर्श किया।

विहार सुरान जल समिती क मन्दा धा स्वाम प्रसाद सिंह तथा बिहार प्राम-स्वराज्य समिति क यन्त्रकार श्री मर्दानापायण शर्मा भी साम-साव विगत १० जून का सहस्रता आर और मुरलीगंज जल म गये।

चम्पुनि बाँहण्डों में : अधिकांश में भाव जनमानस जून २३ भार्गव-बहूत, बिबला व-दिना स-रकर २० १२० तक का समय उत्तम हुआ, क प्रकाश क उपर-रक्त या अन्वया हुई बहूत बाँहण्डों में निम्न प्रकार है :

६ प्रखण्डों क २० १५५० में १५५ गाँवों से सम्बन्ध स्थापित हुआ। गाँव-गाँव में निम्नलिखित छोटे-बहू १०६ स्थानीय सज्जनों की सहस्रता से १०६६

भूमिवाशे के तथा १५६३ भूमिहीनो के नये समय-युग भराये गये। इसके आधार पर ३३ गाँवों में ग्रामसभा गठित की गयी तथा १३४ गावाओं से १६६ बीघे ६ धूर जमीन प्राप्त हुई। इसमें से ९६ गावाओं से प्राप्त ७४ बीघे २ कट्ठे १२ धूर जमीन १३० गावाओं के बीच वितरित की गयी। भूदान की जमीन में से ५६ गावाओं से प्राप्त ५५ बीघे १४ कट्ठे १८ धूर जमीन ९० गावाओं के बीच वितरित की गयी। वामगोत्र के ३०५ पर्वों भी दिये गये। ८१२ ६० की साहित्य-विज्ञानी हुई तथा भूदान-यज्ञ के चार बोर मैत्री के दो प्राहक बनाये गये।

अनुभव

रघुनीय प्रभारी सहयोगी प्रवृत्ति से : समय से समय साथी के जी-तोड़ प्रयास से भी जहाँ कार्य नहीं बढ़ पाया वहाँ स्थानीय प्रभारी सहयोगी के मिलते ही काम देखते-देखते सहजता से सम्पन्न हो गया।

सर्वोदय सेवक सम्प्रदायी ग्रामीण माधवता : ग्रामीणों की निगाह में सर्वोदय सेवकों को देखते ही जमीन मगिनेवाले सेवकों की तरफ ही मान रहती है। प्रायःद्वाराय की अन्य बातों को वे मान ज्यारी भूमि। मान लेते हैं और जमीन लेना और बाँटना, हलना ही मुख्य उद्देश्य समझते हैं। फलतः सामान्यतया ग्रामीण सर्वोदय-सेवकों से कतराते, बचते और टाल-मटोच कर विच्छेद जुड़ने का ही प्रयास करते हैं।

कार्यकर्ता समित का अभाव नकोदर सम्मेलन के कारण धर्मियान में समिमिलित होनेवाले कार्यकर्ता बहुत वितम्ब से और भारी भारी से सहसा पहुँचते रहे। बिहार से तथा अन्य प्रदेशों से प्राप्त आस्थासमो की तुलना में बहुत कम कार्यकर्ता पहुँच पाये।

इस प्रकार कार्यकर्ता-सम्बन्ध कम रहते एक भारी-भारी से १५ दिन तक भाते रहने के कारण इस बार के प्रयास को अभियान का रूप नहीं आ सका।

शेषण यमों और गाँवों-विभाह :

शेषण यमों के दौर के ५०० दिन के अधिवास समय में कार्यकर्ताओं के लिए काम करना कठिन होता था और सुबह-शाम ग्रामीण मिलने में अपनी कठिनाई

भाते थे। इस बीच गाँवियों की धून की अवधि रहने के कारण लोग आसानी से कार्यकर्ताओं को टाल दिया करते थे।

—गजानन

उत्तर प्रदेश आगे बढ़ रहा है

वर्ष १९७०-७१ में १६३.५२ लाख मी० टन

खाद्यान्न का उत्पादन

एक नया कीर्तिमान

१४ जिलों में कृषि-सेवा केंद्रों की स्थापना और ट्रैक्टरों की संख्या में लगभग ५ हज़ार की वृद्धि

सङ्कारिता के क्षेत्र में चावल वर्ष में ११ नयी सहकारी दुग्धशालाओं की स्थापना होगी

१५५१-५२ में राज्य की सिंचन-क्षमता बढ़कर १०५८३ लाख हेक्टेयर होने की सम्भावना और नलकूपों की संख्या ११,०६४

विद्युत् की अधिष्ठापित क्षमता में इस वर्ष १३८ मेगावाट की वृद्धि और प्रतिवर्ष ५०,००० नित्री

नलकूपों के विद्युतीकरण का लक्ष्य औद्योगिक प्रगति के लिए उत्तर प्रदेश वित्तीय निगम द्वारा लघु यंत्रागों को चावल वर्ष में

१० करोड़ रुपये का ऋण तथा प्रदेशीय इण्डस्ट्रियल एण्ड इनव्हेस्टमेण्ट कॉर्पोरेशन ऑफ़ यू० पी० द्वारा मध्य श्रेणी के उद्योगप्रतिष्ठानों को

धन एवं सहाय देने की व्यवस्था

वि० सं०-२ सूचना विभाग उत्तर प्रदेश द्वारा प्रसारित

फीरोजावाद की त्वाही

“आप बाहर के हैं। आपकी मातृ-
 ही क्या है? इस्लामिज्म का क्षेत्र पाकिस्तान-
 नियो की अड्डा था और इसलिए इसके
 जन जाने से हमें बहुत खुशी है।”—एक
 अंधे उमर के मुसलमान उषन्न ने
 फीरोजावाद में मुझे कहा।

“आपने देखा था है कि उसकी क्या
 हाव-भाव करती गयी है?” वहाँ न तो
 साइडरो में एक किताब-बन्दी है, न दफ्तर
 में एक रजिस्टर या बाय, न सेमोरेटरी
 में एक ट्रयल या स्टैण्ड और न कोई नमरा
 ऐसा छोड़ा जो मस्जिद या नदी तमोरे
 के साथ न हो।”

“मैंने वहाँ गया तो नहीं, लेकिन जब
 आप देखकर जाये हैं और यह सब बता
 रहे हैं तो हमें और भी ज्यादा इत्मीनान
 हो गया कि जो हुआ, वो ठीक हुआ।”

“लेकिन मैं आपसे यह जानना
 चाहता हूँ कि क्या भारतीय जनतन्त्र
 को बलवान बनाने का यही तरीका है?”

“बहु भाई कुछ इशर-उशर की दृष्टि
 वाला बनने लगे। मैंने आग्रह किया,
 “आप मेरे सवाल पर आइये कि क्या एक
 तरह की इस्लामिज्म के हिन्दुत्व-मनून
 होना और वहाँ के बासिन्दों के आधी
 सामुदायिक मुसलमानों?”

“बहु कुछ जवाब नहीं दे सके और
 बात टालकर रूठ गये।

× × ×

मुहल्ला। बहुमद-नगर में एक बाराखा
 है। उसकी सीमा में एक रोत-मदान है।
 फीरोजावाद के प्रतिष्ठित नागरिक और
 जनसेवक, श्री जलमाल तहरीबी ने बहु
 श्रेणी विचारणा और कहा, “एक रोत-मदान
 में वे अतिरिक्त निवास (ए० सी० एम०)
 महापुत्र ने कृती देर ही मुज्तमान भाई
 विचारनाये। जबर उषन्न के मोके पर न
 पहुँच जाते और लोगों की न निजानते तो
 सबके सब खान हो जाते और पता नहीं
 फीरोजावाद की क्या हालत होगी?”

बगल में खड़े एक मुस्लिम युवक ने
 कहा, “हाँ साहब, ए० सी० एम० साहब ने
 तो सबमूक जान बन्धा दी, वहाँ हम जो
 समझे थे कि बिगड़ नहीं निकल पाये।
 उनके हम बहुत अहम नमक हैं। अन्त
 उनकी उन्न में बरकत दे।”

तहरीबी ने बातचीत के दौरान में
 बाद में कहा कि अगर अतिरिक्तों ने
 इतनी सफलता और छावनीकी बन्धु श्रेणी
 में भी बरती होती तो यह क्या इज्जा
 बिकराल रूप न लेता।

× × ×

‘सुना है कि तुमने अपनी बाँह पर
 धीमी पट्टी लगायी थी’—एक उषन्न से
 मैंने पूछा।

‘यह बात है। जब मुसलमानों ने
 वाली पट्टी बाँधी तो हमने बसतिया रय
 की बाँधी।’

‘यह क्यों?’

‘बहु अनीक मुनिवर्तितो बिन का
 बातल मना रहे थे, हम खुशी मना
 रहे थे।’

‘यस जनतन्त्र में किसी नागरिक
 को यह ब्यथार नहीं है कि पाकिस्तान
 उनको से पट्टी बाँधकर, छमा कर, दुरुप
 निजात कर किसी बिन या बानुन के
 बिरुद्ध अपना मन-प्रदर्शन करे?’

‘है क्यों नहीं? और अगर नहीं है,
 तो होकर पाटिए।’

‘जब फिर तुम ऐसे लोगों ने उनमें
 बाण नहीं देना की?’

‘हमने बाण नहीं दिये? हमने
 ऊपर भी जाली का खोब-का पना
 और केन्द्रित पट्टी मचा ली। एक भाई
 सजोरा के बिन। उन्हें ने कहा “मैं लोगों
 पर ही नहीं मरना, मैं गांव दोरीबाण
 हूँ। तो उनको हमने तान पर ही बाँध
 दी और एक तरह की बलौं तान पर ही
 पक गये।’

‘मैंने सुना है कि चोराहे के पास
 एक बड़ी-सा बलन लाकर रख दिया गया
 था। तुम जानते हो कि मस्जिद से लौटते
 हुए जब पोंग इशर से गुजरते तो यह
 बीच में पड़ेगा और खाला रहेगा, तो
 तुम लोगों ने वह बलन क्यों रखा?’

उस युवक को तैसा बा शया। मुझ पर
 बाण-बहुना होकर बोला, “भाई
 साहब! आप नहीं जानते कि इन लोगों
 की पहले से बसा-बसा तैसा-रिवाज की? और
 खरको मातृ न है कि इन्होंने नारे क्या-
 क्या लगाये थे?”

‘बल्ला हो-अबबर का तो मैंने
 सुना है।’

‘जी नहीं, इससे नहीं ज्यादा
 लज्जाजनक नारे लगे। उन्होंने भारत
 माता की और इन्दिराजी की मासी
 देखाये नारे लगाये थे।’

मुसलमान बिनो से मैंने मुष्टि की कि
 सपमूक पासीवाले नारे लगे थे।।

× × ×

‘फीरोजावाद में हुआ क्या?’ यह
 खाल जब मैंने वहाँ के गुरु शिखर निवासी
 और लेखक, श्री रजत भाव बगल की से
 किया तो उन्होंने कहा—“वहाँ जो हुआ
 वह एक प्रयोग से मापनी समझ में आ
 जायगा। मात-नीतिष्क का रक्षण पर
 उतर। आपने बहुत जगह के लिए रिश्ता
 किया। रिश्ता-जाते ने देखी से रिश्ता
 सौदाया। मजिद पर पहुँचकर बाद उसकी
 चार भागें बँटने लगे। उनमें कहा—

‘नहीं बाबूरी, एक रचना हुआ, इससे कम
 नहीं हुआ। आपने आठ भागें
 दिये, एक भी यह नहीं माना।
 उनके बाणका हाव-भाव मुझ
 आधी आ गया मुझ। आपके हाव में
 मोह का रखा था। बहु आपने उषन्न
 और से जना दिया और रिश्ता-बाणा बड़ी
 खर हो गया। यह है यही जो घटना
 का सार बरकत।’

‘हाँ! दर-बदर यह कहते मये,
 ‘दरमद-एक दगा नहीं बहता बाहिर,
 क्या का एक कहते जब एक तरह से

'बस्ता हो अबर' वाले होते और दूसरी तरफ से 'जय बजरंग बली' वाले और दोनों आपस में बट-भरते। यह तो हुआ नहीं। एक तरफा ही सब कुछ हुआ।"

× × ×

ठाकुर बजरंग सिंह भी फीरोजाबाद के प्रभावशाली हैं और सत्ता के बड़े नेताओं में उनको गिनती है। पांच साल तक लोचनमा में फीरोजाबाद का प्रतिनिधित्व भी कर चुके हैं।

उनसे जब बातचीत हुई तो उन्होंने कहा—“फीरोजाबाद में इस तरह का काण्ड कभी नहीं हुआ था। सरकारी रिपोर्ट है कि बोबील आदमी मारे गये। कहा जाता है कि मुसलमानों की तरफ से अग्निकें चली और जवान में फायर हुआ तो उनका मारा जाना सुदरती था। अब मैं नहीं जानता कि गोली किसने पहले चलायी था नहीं चलायी, लेकिन जब गोली चली है और लोग मारे गये हैं तो इसकी 'जुदीशियल इन्क्वायरी' सरकार क्यों नहीं कराती ?”

“यह तो डाक्टर लोहियावासी बात है वहाँ नहीं 'पुलिस फायरिंग' हो वहाँ न्यायिक जांच करा जाननी चाहिए।”

“जी हाँ, मैं उसे ठीक और बरूरी समझता हूँ।”

जरा टहरकर वह बहते सगे—
“मुझे सबसे ज्यादा दुख एक और बात का है।”

“वह क्या ?”

“अब मैंने मुला कि मुसलमानों की दूकानें बनायी जा रही हैं तो मैंने अपने एक मुस्लिम दोस्त को फोन किया। भेरे पास तो फोन है नहीं, इसलिए बोबील दूर पर एक जगह जाकर फोन करने की कोशिश की। देखा कि कोई जवान नहीं। दूकानें को किया, कोई जवान नहीं। तीसरे का भी वही हान... बाद में पता चला कि तीन रोज तक घारे मुस्लिम निवासियों के टेलीफोन उधर कर दिये गये थे।”

“यह तो बहुत गजब है।”

“और मुनिये। इसलामिया वाले बूँटा गया, या मस्जिद के इमाम को बंद में बाँधकर जला दिया गया, ईदगाह के चौकीदार को छुपा-भोना गया। यह सब नाम हुए कब हैं ? आरतों मुनकर ताजुब होगा कि यह कण्ड के दौरान हुए हैं। शहर में कण्ड है और यह सब हो रहा है। घमं लगती है बहने हुए, भगर बताया मुझे यह था कि जिन दूकानों को लूटा गया, वहाँ जो भगद पैसा था वह पुलिसवालों ने ले लिया और माल से गये लूटनेवाले। निश्चित जानिए कि अगर 'बोर्डर सिक्कुरिटी फोर्स' न आया होता तो नहीं घराया तबही बरपा हो गयी होती। बी० एम० एफ० के आगे से शहर बच गया।”

धी जगजाप सहरीजी के साथ तीन दिन मुहल्लों में घूमकर और लोगों से मिलकर फीरोजाबाद की स्थिति को जानकारी मैंने ली। वहाँ के वकीलपुरा, मैनपुरी गेट, अहमदनगर, मुस्लिमाबाद, फाबूहान, सदर बाजार और सन्जी मण्डो—नामक मुहल्लों में बहुत बरबादी हुई। वहाँ एक शान्त नमिठी द्वारा कुछ राहत-कार्य किया जा रहा है। उस कमेटी में सहरोजी नहीं है।

उनसे मैंने पूछा कि आप हमें क्यों शामिल नहीं हुए ?

उन्होंने कहा, “ऐसी परिस्थिति सरकार के घारे पर बनती है और कुछ होना-बाता है नहीं। मैं जानबूझकर अलग रहा हूँ।”

“इसका कोई कारण तो होगा ?”

“आपसे क्या छिपाया ? बात स्पष्ट है। आप जानते हैं कि हमारा यह फीरोजाबाद पड़ियों के कारखानों के लिए मशहूर है। सारे देश को पड़ियाँ यहाँ से जाती हैं। इन कारखानों में से ज्यादातर हिन्दू धीमालों के हैं, और कारीगर विशेषकर ऊँचे दर्जे के और बारीक काम करनेवाले विविध शारीर, बगदा-सर मुसलमान हैं। अब आप यह भी

जानते हैं कि शहर में कोई भी दगा या जगानि बिना पंखेवालों के इशारे के नहीं हो सकती। बन्दाम बिचे जाते हैं गुब्बे लीप, नैनन उनको दोष देना ज्यादा है। उनके पीछे अमीर लोग रहते हैं जो उन्हें बढावा देते हैं।”

“यह आप सही कह रहे हैं। ऐसा बरीब-करीब सभी जगह देखने में आया।”

“हाँ, तो होता यह है कि दगा शुरू होने के बाद जब कारखाने बन्द पड़ जाते हैं तो इन मालिकों का मुकसान होने लगता है। तब वे मानिब, हिन्दू और मुसलमान, दोनों मिल जाते हैं और अधिकांशियों से मिलकर सारा चीज उधवा देते हैं। नतीजा यह है कि जो बाल्ब में अनामानिब ठहरा है वे फिर मुन हो जाते हैं और उन्हे आगे के लिए रास्ता खुल जाता है। वही इस बार भी किया जा रहा है और इस वाले मैंने अलग रहने का फैसला किया है।”

उार के प्रथम से फीरोजाबाद में १६-१७-१८ जून को जो हुआ उसकी छाँकी सामने जा जाती है। माँग है कि न्यायिक जांच होनी चाहिए। और अगर यह न हो सके तो अन्य उच्च-स्तरिय जांच हो, केवल मैनेस्टीरियल जांच से कुछ लाभ नहीं होगा।

फीरोजाबाद में भी मैंने अलौग मुस्लिम यूनिवर्सिटी बिल के विरोध में १६ जून को नार्यक्रम करने की नीतियाँ बढी तादाद में देखी। एक मुस्लिम सञ्जन से पूछा कि क्या उनकी बिल की कुछ जानकारी है तो उनके पास कोई जवान नहीं था। एक हसा बह रही है—उगी के सिद्धार वे लोग फीरोजाबाद में भी है। और बनारस में नयी मेरी वह राय बिल पर और भी पक्की हो गया कि बिल के विरोध की जाइ में दूसरा आन्दोलन बनाने की चेष्टा है। यू० पी० मुस्लिम सञ्जिव के सरर, डा० फीदी ने ऐनान भी कर दिया है कि आगामी ६ अक्टूबर के वह अपनी तहरीक शुरू करेंगे।

—ठाकुर

आन्दोलन के समाचार

उ० प्र० सर्वोदय मण्डल

उ० प्र० सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष स्वामी वृष्णाकन्दकी ने श्री रामचन्द्र राहो, श्री अमरनाथ भाई, श्री नरेश भाई तथा श्री सत्य प्रसाद बाजपेयी को प्रदेशीय कार्य समिति का उत्तर मन्त्री नियत किया है।

श्री हरिवल्लभ परीस का उपवास छूटा

बड़ौदा। शाल ज्ञानशाली के अनुसार त्रिवे के रघुवर शंभु के सर्वोदय सेवक श्री हरिवल्लभ परीस ने २७ दिन को अपना उपवास समाप्त किया। वे शंभुल बंक शक्ति इणिया द्वारा स्वीकृत योगदान के अन्त में अतिथारिषो को मनवाने और छापी लया शय के विधानों का उचित बर्तन देने के प्रसन्न हो निकल गए २० दिन के उपवास कर रहे थे। शंभुल बंक बाण्ड इणिया ने रघुवर शंभु से अपनी तर्प शोभा ले ली।

वागी एवं वागी पीड़ित परिवारों के बालकों के लिए छात्रावास

दूरी। सम्बन्धित युवों के अनुसार महारना काशी देवा बापय, बीध (विना-पुरीना) में काशी तथा बली-पीड़ित परिवारों के बच्चों के लिए एक छात्रावास की व्यवस्था की गयी है। जिसकी जिम्मेदारी बापय के यकी धी पी० बी० चक्रवर्तीरुतु भी लीयी गयी है।

यह समझीय है कि उाउ बहो बापय है जहाँ पर १४ व १६ बर्तन, '७२ की सम्बन्ध पाटी के प्रमुख काशी छात्राशाली के साथ ही उनके दन क लेक सदस्यो ने सर्वोदय सेवा भी जग-ब्राम नरारन के छात्रो अन्त-सम्पन्न किया था।

पूजना

छेद के साथ हमें पूजित करना यह रहा है कि विभिन्न ब्रह्माचारों के कारण मगधव का महीने व दश दिवस उपवास से पाठको को नहीं मिल रही है। काया है अपने जक सेकट-बिनिमिडा दुर्ग होयो। पाठकण शमा करेगे।

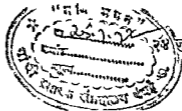
गहन कर पित है बर्तिकाये बहुत छात्र काको व विस्तर हुए है और उनको ब्रह्मा-मता और महीको से धर्मोचित दान पूज माध उता यह है। प्रायशमा ए बापयान की भाभा वा सबसे अभा मर्तक है जिसके द्वारा को के को को बिना प्रीन या दन को पाठना के मर्तक विवा वा उत्तरण है। पूज-हीन मयदुर को, अवर पुत्र है जो वम से-वम व शमा और बहूरा है जो वम से-वम व शमा मर्तक विवदा पर्युत। यह पाठकण के लिए की कर्म को काउ है कि हमारी पूजना परिवारों को रहने का जगह भी नरा है। राज-उररर को काको वनी पर्युत और दन दुग्धो को बर्तिकाय करना पर्युत।

एन-व्यवहार का पता : सर सेवा सघ, प्रतिभा-विभाग राऊपट, वार, पानी-१ वार, सर्वसेवा फोन : १४१११ सम्पादक राममूर्ति

इस अंक में

वि० का दगा उद्-विन्धी	
--भी पु० ब्रामर	१२९
विस्तृत नवी जगतिज भाति	
श्री राधा राधेवर	१२७
पूजि समाजा और पूजि-द्वय	
-- श्री पु० अण्णायन्	१३१
पत्रपत्र के मूय ..	
श्री कादुमर च-वारा	१३१
दामाकछा पोरी-वृत्ताना	१३२
नामोदर में शर्मोचित प्रभाव	
--डा० एम० जाल्	१३०
श्री-मना की पोरी	
-- श्री माराधन दवाई	१४०
'सर्वोदय का अर्थ'	
-- श्री राधाधर्मोदारी	१४१
पुन -- श्री जगदीश कवानी	१४४
श-उ-विमल का मय-वृत्त	
वनी की शर्मिज	
-- श्री पु० प्रभुमाट	१४६
विम शर्मिज-काउ	१४६
उपदिन काको के बीच शमा	
वम-वम -- श्री पु० राधा	१४७
विन-वा विम-व	१४९
दुग्धोका विम-वम-वम-वम	
वम-वम -- श्री वम-वम	१४९

→ (पृष्ठ १३० का लेख)
 अन्त देना पर्युत। एक राज के दुग्धे राज मे बर्तिकायो का क-र बरता जा रहा है। जमीन के शोभनेवाको वा एतम विन्धी विमाने का छात्र जग-सन्ध करवा पर्युत, जो शमायार का वम-वम-वम उर पर्युत हो। बर्तो यह वम-वम वम आशयगत है जो मयु लीर है। और १०-२० के म-परा में है, और यह भी बहुत शर शमाके में वाप-विम नही हो हुआ है। देवा भूतवको का विमर होना है और कर्म लने दना रहता है। इति-मयदुर पर काई अन्त नही विवा जाया, मोर कुउ राजो में उपरी म-दुो १२ जाम के एक वम-वम है। भूमिरीन मयदुर उर कोय को मय-वम



सर्व सेवा संघ

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञ मूलक आन्दोलन (प्रधान) आरिस्तक क्रांति का नये संसाधन - साप्ताहिक

करुणा साम्राज्ञी बने

आज विज्ञान के युग में बहुत बड़ी माँग यह है कि करुणा का स्रोत फूट निकले और अहिंसा एक दासी नहीं, साम्राज्ञी बने। दण्डशास्त्रिक के राज्य में अहिंसा रहे, यह तो आज तक चला ही। राज्य दण्डशास्त्रिक का ही रहा है, भले ही उसके रूप अलग-अलग हों। अभी 'लोकतंत्र' का रूप आया, फिर भी राज्य दण्डशास्त्रिक का ही है। अहिंसा पहले धी और आज भी है, लेकिन है वह दासी ही। मैं बहुत बार कहता रहता हूँ कि 'युद्ध में सेना ही सेवा करने के लिए जानेवालों में करुणा और दया दोनों हैं। किंतु वह करुणा युद्ध को समाप्त नहीं कर सकती। युद्ध में रुचि पैदा कर सकती है। युद्ध का वाप घटाकर एक तरह से वह युद्ध को बल ही देती है।' वह करुणा तो पहले भी थी और आज तक है। यदि वह भी न होती तो हम जानवर ही होते।

गांधीजी जो करुणा चाहते थे, वह यह नहीं। वे ऐसी करुणा चाहते थे, जो साम्राज्ञी हो, उसी के आधार पर मानव समाज बने। वह बन सकता है और हम बना सकते हैं, ऐसा विदवांस मानव को हो। धीरे-धीरे दण्डशास्त्रिक क्षीण हो जाय और आखिर उसका परिवर्तन दूसरे रूप में हो—करुणा-मूलक, सन्ध पर आधारित स्वतंत्र लोकशास्त्रिक के रूप में वह बढ़े। आगे एक जमाना आयेगा, जब कि करुणा साम्राज्ञी बनेगी। वह उत्तरी आना ही चाहता है। यदि हम शीघ्र उसके योग्य नहीं बनते, तो आज ही नष्ट हो जाने की नीबत है। विज्ञान ने जो साधन पैदा किये हैं, उनके साथ अहिंसा जुट जाय तो स्वर्ग उतर आयेगा। इसके विपरीत उनके साथ हिंसा जुड़ जाय तो मानव-जाति का विनाश हो जायगा। हम ऐसी गलतफहमी में न रहें कि हम विज्ञान को नहीं चाहते। मेरा दावा है कि विज्ञान को अधिक-से-अधिक चाहने का मुझे हक है। दूसरे जो विज्ञान को चाहते हैं, नाहक चाहते हैं। सर्वोदय सेवक का ही विज्ञान पर सच्चा हक है। विज्ञान पर अहिंसा का ही अधिकार है। इसलिए हम विज्ञान को लूँ चाहते हैं।

आपके पुत्र

पुलिस का भी हृदय परिवर्तन हो

वाकू परिवर्तित हो गये। सरकार, वस्तुतः अपना किसी दण्ड के दबाव में आकर नहीं, बल्कि उस विशुद्ध मानवीय विचार से अनुप्राणित होकर जो उनकी आत्मा में गहरा पैठ गया, जिसने उनकी आत्माओं के तारों को स्पन्दित कर उन्हें आत्म-समर्पण के लिए विवश कर दिया। यह मानवता पर मानवता की एक संपूर्ण विजय हुई। सरकार, कामना-व्यवस्था दण्ड-व्यवस्था जिस काम को अपनी मानव से नहीं करा पायी वह मानव-हृदय से निकले निरपेक्ष स्नेह ने पलक बापकते ही कर दिया।

वाकू अपना काम पूरा कर चुके हैं। अब समाज तथा सरकार की अपना दायित्व निमाना है। वह शक्ति जो किसी समय समाज के इस शासन कार्यों में लगी हुई थी अब उसे रचनात्मक बनाना है।

विचारणीय बात यह है कि इन चौकड़े-से डाकुओं के आत्म-समर्पण से क्या हम यह मान लें कि सम्पूर्ण डाकू-बन्ध नष्ट हो गया अथवा यह विचार और धरातल ही मिट गया जिसके कारण अथवा जिस पर वाकू जन्म लेते हैं? जिन डाकुओं का अब तक समर्पण हुआ है वे थे वाकू थे जो समाज की सूखते और जगती भी बनते थे। उनकी सभ्यता भी अज्ञानियों पर निर्भर आ सकती है। किन्तु जिस समाज में हम सब रहते हैं उसी में असंख्य अपराधीत ऐसे डाकू भी मौजूद हैं जो समाज में रहकर ही समाज को सूखते हैं। अब उनके भी आत्म-समर्पण कराते की आवश्यकता है।

इस प्रकार के कार्य में जहाँ तक पुलिस का प्रश्न है बहुत सम्भव है कि उसे यह अधिदान ठीक न जंचे, और वह हममें अधिदान भी पैदा करे; क्योंकि

इस प्रकार के आत्म-समर्पणों से पुलिस, पंजिन और दण्ड-व्यवस्था ही असफलता सिद्ध होती है और बड़ों की मिसी-जुनी रोमी-रोटी भी समाप्त हो जाती है।

वाकू-पंदा करने में जहाँ सामाजिक अव्याय और विधमता मूल रूप से नाम करती हैं वहाँ पुलिस का बदलावारी दण्ड भी एक बहुत बड़ी भूमिका निभाता है। अतएव जहाँ सामाजिक अव्याय, और विधमता को समाप्त करने के लिए समाज में बसे उन अवश्य उपकरणों से डाकुओं को आत्म-समर्पण कराते की बात है वहाँ पुलिस के हृदय-परिवर्तन की बात भी कम महत्व की नहीं है। यदि ऐसा न हो सफा ठो जितने डाकुओं का अब तक समर्पण हो चुका है उसके दस गुना अधिक डाकू पैदा हो जायेंगे।

—निर्मल गुप्ता प्रेमो

सर्वोदय कार्य की नयी दिशा

नकोदर के सर्वोदय सम्मेलन में आपाची राममूर्तिजी ने सर्वोदय क्रान्ति के लिए 'सोमूला एक्शन' के द्वारा 'बुराई के अन्वहवार और अत्याय का प्रतिकार' का प्रोग्राम अपनाते की बात कही थी। उन्होंने यह भी कहा था कि 'यदि हमें एक्शन करना हो तो उसकी पद्धति सगठन, ट्रेनिंग एन सब के बारे में अच्छी तरह सोच लेना होगा।'

श्री धीरेन्द्र मजूमदार का कार्यक्रम

तिथि	स्थान	पत्र-सम्बन्धित था या
२१ जुलाई से २७ जुलाई	कोलकोटा	सायो मन्दिर, कोलकोटा (राक्षसान)
२८ से ३१ जुलाई	जोधपुर	बाल निकेतन, जोधपुर (राक्षसान)
१ अगस्त से ३ अगस्त	भाजपुरी	मार्शल श्री रामेश्वरदत्तपाल श्री अश्वनाथ, पाम भाजपुरी
४ एवं ५ अगस्त	अबनेर	पाण्डे मार्शल प्रविष्टान, हाजी, भाटा (अबनेर) राक्षसान
६ से १२ अगस्त	मीनवाड़ा	पेडा एवन, मानवाड़ा
१४ से १९ अगस्त	उदयपुर	श्री दीनदयालजी दशालर; १ ए फजलपुरा (उदयपुर)

* २० अगस्त को प्रातः अहमदाबाद के लिए प्रस्थान।

हमारा विचार है कि यही एक मात्र कार्यक्रम है जो सर्वोदय आन्दोलन को क्रान्ति के मार्ग पर अग्रसर कर सकता है और इसी को बन्धी भी बजह से अयो तक सर्वोदय आन्दोलन से क्रान्ति की चिन्ता-गारियां न निकलकर छोटे-छोटे स्थानीय सुधार ही सम्भव हो सकें जो बाने में बन्दे तो है किन्तु अस्विकारी नहीं।

सुखे मान्य नहीं कि नकोदर सम्मेलन में इस कार्यक्रम पर विचार विचार हुआ। सर्वोदय (भूदान-पत्र) पढ़ने से मान्य होता है कि न केवल विवेक में ही इसका पूर्ण अभाव है बल्कि वहाँ दस पर अधिक चर्चा भी नहीं हुई, कोई कुरकरा तैयार करता तो दूर रहा।

आचार्य राममूर्तिजी के प्रार्थना है कि वे हो इसकी पद्धति, सगठन, ट्रेनिंग व ट्रेनिंग की एक रूपरेखा बनाकर 'भूदान पत्र' में प्रकाशित करें और एक सम्मेलन वाराणसी, पटना अथवा किसी अन्य स्थान पर जो प्रस्तावित कार्यक्रमों से समीक्षा हो अथवा मुसद्दी सहायता से भी अधिक दूर न हो इत्यादि को कार्य क ने के लिए उपयोग होगा। और इस सम्मेलन के निरवयों के बाद सम्भवतः सितम्बर १९७२ से मार्च, प्रारम्भ हो जाये।

धारावाहक

—जीवाशम

परोक्षा

फिरने दिनों अपने दो सीनियर साथियों से मुलाकात हुई। साथियों से मुलाकात होने पर चर्चा का अक्सर मुख्य विषय होता है अपना प्रामदान-प्रामस्वरान्ध्र मान्योलन। उस दिन दो घण्टे का पूरा समय इसी विषय की छान-बीन में बीता।

'बाने सब दिमाग में साफ हैं, लेकिन नितान भी करो गांधी माने नहीं बढती,' स भी ने कहा।

'भारके ही यहाँ नहीं, पूरे देश में रही हाल है। बिहार में भी काफी विविधता है, जहाँ हम लोगों ने प्रामदान में इतनी शक्ति समायी, और अब भी दूसरे राज्यों से गांधी इच्छा कर पुष्टि में सगा रहे हैं,' मैंने कहा।

इसी तरह चर्चा केर तक चलती रही। साथी नहीं है, साधन नहीं है, परिस्थिति बेहद उतसी हुई है, अमोर के दिल में शरीर के लिए उदारता नहीं है, और शरीर के दिल में अमोर के लिए कोई स्थान नहीं रहे गया है, हमारा संयुक्त ठस नहीं है, हमारा विचार जनता के मन में स्पष्ट नहीं है, लोग हर चीज के लिए सरकार पर भरोसा करते हैं, और सरकारी तन् दिने-दिन अस-मर्थ होता घना जा रहा है, यदि बाँते बारबार सामने आती रही। लेकिन एक बात उन्होंने जो कही वह मेरे दिमाग को कुरेद गयी। चर्चा के दौरान वह बोले, 'लेकिन मैं देखता हूँ कि कुछ युवक जो सोचने विचारते हैं, गांधी की तर्क शुरु रहे हैं— बलकृता जैसे गहर में भी। अब ये शधी वा विरोध छेडकर गांधी को समझना चाहते हैं।' यह सुनकर मैंने कहा, 'अगर सही है, तो आशा की बात है यह। लेकिन क्या आपका यह क्यात नहीं है कि युवक अब तर्क अपने दिमाग में परिस्थिति को धालते थे, जब परिस्थिति में दिमाग की धालने लगे हैं? उनके जो प्रश्न हैं उनका उत्तर और कही न देखकर गांधी में देखने लगे होंगे।' बोले, 'हाँ ऐसा ही बात है। कई युवकों को येने यह कहने हुए सुना है कि जब गांधी का धनना नाम है तो वह पागन तो नहीं हो रहा होगा!'

परिस्थिति को धीम देती है वह सबसे पनती होती है। परिस्थिति से बड़ा कोई दुष नहीं। परिस्थिति से ही सम्भवविदियों की शिखा या कि देन 'हिंसा की क्रान्ति' के लिए तैयार नहीं है, इसलिए उन्हें भी बर्णशक्ति से अक्रिय भरोसा नोकरान की शक्ति पर कला चाहिए। परिस्थिति सभी दलो को विस्तार रही है कि हमारे राष्ट्रीय जीवन में दलो के रड' पर मात्र राजनैतिक विरोध का कोई स्थान बर्ण नहीं रह गया है। परिस्थिति के ही कारण हमारे कुछ नेता और विचारक भी बहने लगे हैं कि हर चीज में परिचय की नरत करने से भारत के सदान नहीं हन होने।

परिस्थिति सबके लिए एह है। जो परिस्थिति दूसरो को यह मिया रही है वह हन सम्बन्ध के साथियों को क्या विस्तार रही है? क्या परिस्थिति का सकने हमें यह नहीं पजाता कि हमारी दिशा ठीक है? क्या हम देत नहीं रहे हैं कि हमारे देत में कोई गांधी का नाम ले या न ले, अगर वह चलना चाहता है तो उसे गांधी की ही दिशा में चलना पड़ेगा? क्या सबसे हमारा बारम्-विश्वास नहीं बढ़ता? क्या यह विवाद की बात रह गयी है कि हमारी समझदारि किंकी बर्ण या समुदाय की समुचित शक्ति से नहीं हन होगी अगर हन होगी तो जनता की अदाय शक्ति से ही हन होगी। जनता को ब्यपक शक्ति जगाये बिना दूसरा कोई रास्ता नहीं है। गांधी ने बार-बार नोकरेक और नोकरेकन की बात कही थी।

कोई क्रान्ति दैनन्दिन जीवन के धरातल पर नहीं होती। क्रान्ति के लिए सोचने और काम करने का धरातल रोब के मोचने और काम करने के धरातल से कुछ ऊँचा होना चाहिए। धरातल को ऊँचा उठाना, परिस्थिति की प्रतीति जगाना, सामने के अंधेरे में प्रकाश की रेखा विस्तार आदि क्रान्ति का काम है जिसे वह धैर्य और मेहनत के साथ करना जाता है। कई बार उसे 'बनवास' में उठना पड़ना है, किन्तु बढ़ाते रहने के लिए उसे योजना बनानी पडती है। बनवास में भी वह सक्रिय रहना है उस प्रतीक्षा में कि कोई ऐसी घटना घटेगी जो परिस्थिति को पकाकर क्रान्ति का विस्फोट करा देगी। वह पटना कम होगी, कंसे होगी, वह नहीं जानता, जतना ही जानता है कि होगा अक्षर। माँ जैसे बच्चे की पालती है उसी तरह क्रान्तिकारी क्रान्ति को पालता है।

अभी ६ से १२ जुलाई तक सर्व सेवा संघ के कुछ बरिष्ठ साथियों की भी अग्रप्रकाशको के साथ भगवोर में एक हफ्ते तक चर्चा हुई, विस्तार के साथ दिव साधक चर्चा हुई। विस्तार भी प्रकट हुई, और आशाओं भी समस्त में आयी। अन्त में सब अन्य कई बातों के साथ-साथ इन बातों पर सहमत हुए कि (१) हमें दम भर में प्रामदान-प्रामस्वरान्ध्र क प्रचोड प्ररोध-धीन बनाने चाहिए जिनमें एक-एक निर्वाचन-प्रश्न का विस्तार हो तर्किक भाषे के निर्वाचन में भोकरेकनितितव का प्रयोग किया जा सके (२) आचार्यकुल और तर्कन साहित्येना 'निवर्ण में क्रान्ति' का काम उठाया लेवी के साथ उठाये, (३) हम तारातलक अतीति या नाबन्धक सन्ध के प्रति उदासीन न रहे। इन नामों को करने के लिए हमें माँसे में भूच-समया का छोर पकड़ना होगा, सहरो का काम हाथ में लेना होगा, तथा समान के दूसरे सक्रिय तरको का भी, ब्रह्मी तक संभव हो सके, सहयोग प्राप्त करना होगा, या उन्ह अपना सहयोग देना होगा। इन कार्य में हमारे धैर्य, विवेक, और समझता की परीक्षा होगी। उनी परोक्षा में हमें उत्तर्ण होता है। देन गांधी-विचार की ब्यरहरारिना का प्रमाय आहता है। यह उसे बाधशान से नहीं उदाहरण से बहक करेगा। हम जानें कि इस समय हमारे लिए परोक्षा को घड़ी है। ●

आचार्य-संवाद

(७ जुलाई, ७२ को सर्वोच्च आन्दोलन के लक्ष्यप्रतिष्ठ नेता और विचारक श्री धीरेन्द्र मजूमदार ने अपने दिल्ली प्रवास के दौरान प्रसिद्ध गांधीवादी विचारक श्री कृष्णासाहब कातेलाकर से भेंट की। दो पुराने मित्रों में हुई अनौपचारिक चर्चागत यहाँ प्रस्तुत है- स.०)

काका साहब : आये, आये, स्वागत है।

धीरेन्द्रदा : आप ही तबियत में ही है ?

काका साहब : मेरी तबियत अच्छी है। कुछ समय पहले खिर में चक्कर आया पर भूल से और माफ करने लायक। मेरी कठिनाई दूसरी है। राज के नजदीक और जोर से मोतने पर मुनाई पड़ता है। नही तो कोई कहता कुछ है और मैं सफा दूसरा वेदा हूँ। इसलिए मुझे के बार खानो करनी पड़ती है। आरकल मुघानी सभी बातें भूलने लगा है। उम्र ८७ साल की हो गयी है। ८५ तक स्मृति ठीक थी। अभी एक भाई आये थे और उन्होंने मुझे गद दिलाया कि वे मेरे साथ जबलपुर जेल में थे। मैं वहाँ भी भूल गया था कि मैं जबलपुर जेल में रहा। इसका ज्ञान कुछ नहीं। यह बीमारी नहीं हड़पाया है। अभी मैं कुछ दिनों के लिए प्रवास पर जाऊँगा। राधान भी जाऊँगा। हाँ, अब आप कहिये।

धीरेन्द्रदा : हम तो आपके दर्शन के लिए आये हैं।

काका साहब : अंग्रेजों का 'स्वतन्त्रता' होती है। यो कहिये कि दर्शन देने व देने वाले हैं।

धीरेन्द्रदा : हम अपना-अपना समय लें।

काका साहब : (हँसते हुए) हाँ, यह ठीक है। अब कहिये।

धीरेन्द्रदा : अभी सबसे निवृत्त होकर फिरता शुरू किया है। अपनी यात्रा का नाम लोका-गंगा यात्रा रखा है।

काका साहब : लोका-गंगा जैसे शब्दों के साथ निवृत्ति नहीं जोड़ना चाहिए।

धीरेन्द्रदा : अपने वे निवृत्ति नहीं लोगों से, तब से। भव संकटा नहीं, इस लिए अंतर्गादी पर भेद जाता है। एक

गाँव में दो दिन।

काका साहब : जहाँ-जहाँ लोगों ने बुलाया वहाँ जाते हैं ?

धीरेन्द्रदा : नहीं, हर गाँव लगातार।

काका साहब : सबसे शुरू किरा ?

धीरेन्द्रदा : पिछले साल दिसम्बर से।

चोपरा में धारा स्थिति रखने का तय किया है।

काका साहब : 'बोल्ड लाइन' भी बनूँ किया ! दिल्ली क्या कर रहे ?

धीरेन्द्रदा : कल आया, पल वापस जाऊँगा।

काका साहब : आपकी दिल्ली गानों पचास गाँव ऐसा मानकर करना चाहिए।

धीरेन्द्रदा : दिल्ली यानी 'माइल' गाँव : यहाँ लोक नहीं है, लोक-सेवक है। हमारी लोक-यात्रा चल रही है।

काका साहब : यहाँ 'लोक' है पर हाथ नहीं आता।

धीरेन्द्रदा : ये हमसे भी बेसी से भाषा करते हैं।

काका साहब : चिनोबा ने दोन-सत्यास ले लिया।

धीरेन्द्रदा : तो हम लोगों को निकलना चाहिए। मुझे खतर घात से ऊपर हुए, अब वास्तव्य खतम करके परिष्कारक बन गया।

काका साहब : 'आर यू लायल टू लाएक आफ ओल्ड एज' ?

धीरेन्द्रदा : लोगों के बीच ही पूरूंगा। चातुर्मास में भी यानी नापाक से आन्वित वरु चार महीना पूरता रहूँगा—एक-एक महीना एक-एक प्रदेश में। दस-दस दिन एक जगह रहूँगा।

काका साहब : अभी अभी मेरे एक लेख निकल, उसका 'सम्प्रेषण' सुनाता हूँ। वेद से पुराणों तक भारतीय सङ्कट के

जनसत् विचार लोगों ने बीच-बीच उन पहुँचा दिये और इन विचारों को उन्होंने पकड़ रखा है, वे छोड़ते नहीं। और आधुनिक विचार गाँव तक नहीं पहुँचा पाया।

धीरेन्द्रदा : पर गाँववालों ने उन चीजों को छोड़ दिया है : बढ़ है आधम व्यवस्था।

काका साहब : हमारी गीता में नहीं आधम शब्द है ? जबकि गीता के सगण में आधम था। गीता ने सगण-वृत्ति को प्रतिष्ठा पत्र बढ़ायो पर आधम का नाम भी नहीं लिया।

धीरेन्द्रदा : और, वास्तव्य आधम के बारे में ?

काका साहब : वास्तव्य को तो मैं कच्चा मानता हूँ—दृष्टाभास और संस्था के बीच की टाजीचाव आधम। तो हमारे सत्यो ने, आचार्यों ने जो समाज-व्यवस्था की वह गवियों तक पहुँचा दी, वह लोगों ने नहीं छोड़ी। गाँव के लोगों ने कहेने कि महात्मा गांधी नहते हैं कि दुखास्त गड बरतो तो वे कहेने कि कलि-सुग बा गया है इसलिए महात्मा भी यही रहेगा। मेरा ऐसा मानना है कि आनेवाले वर्षों में एक नवीन सङ्कट गाँवों के गहरों में आनेवाली है। आज कहेने हैं कि गाँव पिछते हैं व गहर आधुनिक हैं, पर बोझें समय वाव गाँव कहेने कि 'बो भार लीकव, बो भार लायल टू लाश्क' हम जाकर गहर को मुघारने। 'सुख ड्राव-करमेगन' जानेवाला है। गाँववाले नहते कि हम 'माइल' हैं। यही 'मिटेड' बात है, सोचा आपके बानों तक पहुँचा हूँ। गाँव के लोग प्राचीन बालें पहले भूल जाने के लिए 'लिब्रेशन' करेंगे।

धीरेन्द्रदा : भुलना तो शुरू किया है, पर पूरा नहीं हुआ।

काका साहब : ये जो गहरों में 'माइल युव' नहते रहते हैं कि 'गांधीज एज हेज गोन'। 'बेस गाँव के लोग नहते अर्थ सङ्कट से बच पुराना। मैं तो कहता हूँ कि गांधी शुरू नहीं हुआ। गांधीवाद को 'लिब्रेशन' करनेवाले पुराने हो जायेंगे

फिर गांधी शूक होगा। गांधी आये और गये। 'शीटिंग आफ द सिचुएशन' कहता है।

धोरेन्द्रा : पहले समय होगा। आज गाँव में समय हो रहा है। गंगा का पानी व यमुना का पानी अलग-अलग बँधता है।

काका साहब . हाँ, 'द कलर्स ऑफ द डिफरेंसिएट'।

धोरेन्द्रा : गाँव में दोनो चल रहा है, गाहर में एक ही। गाँव में एक दूसरे को 'लिवबीडेट' करेगा। गाँव में जाने पर उनके उठने-बैठने, चलने-फिरने का ढंग हर पहलू के दो रूप बँधते।

काका साहब : जैसे धम्मल और यमुना जब मिलते हैं भीतो तक दोनों के पानी का रंग अलग-अलग। 'नो हरी टू थुगाइट'।

धोरेन्द्रा : मैं इसलिए कहता हूँ कि एक दूसरे को 'लिवबीडेट' करें। क्योंकि दोनों एक दूसरे से थुगा करते हैं। थुगा से एक दूसरे को 'लिवबीडेट' करेंगे।

काका साहब : आपने बिलकुल 'करेन्ट एनेलाइज' किया। पर 'कलर लिवबीडेट' होगा, पानी नहीं; क्योंकि वह दो 'लिवबीडेट' ही है।

धोरेन्द्रा : आज जो मन स्थिति है उसमें दोनों (आधुनिक व पुरानी संस्कृति) का समन्वय नहीं होगा। क्योंकि 'म्यूचुअल रिस्पेक्ट' नहीं है, 'रेस्पेक्ट' है।

काका साहब . दो 'करेण्ट' है एक—आर्यन और एक आधुनिक। गाँवों में पुराने का 'वार्ट' पहुँचा और नये का 'वार्ट' पहुँचा।

धोरेन्द्रा : नही पुराने का वार्ट बचा और नये का वार्ट पहुँचा।

काका साहब . बराबर है।

धोरेन्द्रा : अच्छा तो बचा नहीं।

काका साहब : गाँव की 'बायटेलिटी' नया 'किण्ट' करेगा—'विष रिस्पेक्ट पर नाइदर'।

धोरेन्द्रा : 'सेलफ प्रिवर्बेशन' का 'इन्फ्लेण्ट' भीतर से निरासने जिसकी हम बचपना भी नहीं कर सकते। हमारा काम 'रिएलाइजेशन' करना है कि किन्दा रहना है, तो सोचिए।

काका साहब—लोग मुझे पूछते हैं कि विनोबा तो आप से दस वर्ष छोटे हैं, उनको सूझ में जाने का क्या हक था ? उनका 'उबसेसर' बोन होगा ? 'लिटरेचर' है पर उससे नहीं चलेगा। गांधी के बाद विनोबा और विनोबा के बाद कोय ? गांधी ने दो नाम अपने उत्तराधिकारियों के बड़े—जवाहरलाल और विनोबा। हम दोनों के पीछे चले। अब विनोबा सूझ में गये। विनोबा भी अपने दो उत्तराधिकारी कहे।

धोरेन्द्रा विनोबा को तो लोगो ने खोजा, नाम लेकर तो जवाहरलाल को ही उत्तराधिकारी बनाया।

काका साहब नहीं दोनो का ही नाम लिया। शायनीतिक क्षेत्र में जवाहरलाल और दूसरे सब नामों में विनोबा। और, फिर गांधी के बाद मारे लोग विनोबा के पास ही गये।

धोरेन्द्रा आप लोगो का जैसा 'थीसिस' होगा है वैसा विनोबा का है कि अब कोई नेता नहीं होगा।

काका साहब गांधी ने तो बताया, लोग गये उनके पास।

धोरेन्द्रा 'लोग ही खोजें।

काका साहब लोग तो दस खोजेंगे। खोजने से दस होगे। 'नेम्ब' करने से एक मिलेगा। लोग एक को चाहते हैं जिसके पीछे वे चलें। पर भारत की परम्परा है कि कोई आयेगा।

धोरेन्द्रा यह परम्परा अवश्य है और यह 'नेम्ब' करने की परम्परा नहीं है। काका साहब हे भी और नहीं भी। दोनों है। शक्यतायन ने तो 'नेम्ब' ही किया। दोनों में लाभ है।

धोरेन्द्रा लाभ-हानि सबम है। विनोबा तो कहते हैं कि उसका थंड थंड-सन्वास ना लोग है, सब टूट जायगा पता नहीं।

काका साहब . हाँ—बराबर है। सूझ में भी अब गये तो कहा कि मैं गून्व में नहीं जा रहा हूँ, सूझ में जा रहा हूँ। दोनों का धुधे अच्छा लगा। यह ठीक है लेकिन उनमें इतनी 'बायटेलिटी' है, इसलिए उनको बहना चाहिए।

यह इतना घुम चुके हैं कि उनसे हम निरास मुँह से बहे।

धोरेन्द्रा . विनोबा कहने हैं कि अब जो कुछ करना है, लोग करें। हमसे कुछ पूछना है तो हम 'एवेलेबल' हैं।

काका साहब . लोगों को दस बात को तो शिकायत भी नहीं है।

धोरेन्द्रा . विनोबा ने तो यह भी कई बार कहा कि कर ईश्वर का संकेत होगा और कब निकल पडेगे, पता नहीं।

काका साहब : ईश्वर का संकेत होगा तो दूसरा भी करेगे, यह ठीक है। विनोबा में अच्छा नहीं कि जब को पकड़ कर बँध जायें। अब गाँवों में से 'बायटेलिटी' आयेगी क्योंकि 'एवेलेबल' आया, बोट आया। लोग उनकी पुशामद करते हैं, पर 'एक्केट' नहीं करते। इससे 'सीनोसिज्म' आयेगा।

धोरेन्द्रा . गाँव में अब खुशामद से बोट नहीं लेते। उराना, धमकाना और तालव होता है। इससे सीनोसिज्म बढी आयेगा। 'ईगो' के 'संशयन' में से फोड़कर निकलेगा। 'ईनो इन्फ्लेण्ट' है।

काका साहब वह अच्छी 'बायटेलिटी' होगी। मेरी आत्मिकता बहती है कि गाँव से 'बायटेलिटी' आयेगी। 'एज ए रिएबन' छूब 'बायटेलिटी' आयेगी।

धोरेन्द्रा उसी का डर है। 'रिएबन' से पहले एक्केन का 'प्रोसेस' हो तो 'रिएबन' 'पैनेलाइज' होगा नहीं तो विस्फोट होगा।

काका साहब : मुझे डर है कि 'विस्फोट' के बाद ही नया 'क्रिएशन' होगा।

धोरेन्द्रा . तब पूछना पडेगा कि क्या वे सर्वनाश से सर्वोदय चाहते हैं ? सर्वोदय ही होगा ही, टाटकर हीमा कि लान कर होगा।

काका साहब : 'बूज' करने की बात नहीं है। वह बहेगा कि जो भाग्य में होगा वह होगा। भाग्यवाला 'बूज' नहीं करेगा।

धोरेन्द्रा : हृष्याय देव भाग्यवाला ही है।

काका साहब : हाँ आप बराबर कहते हैं।—प्रस्तुतकर्ता, ध्यान कुप्रार लर्न

क्या सयानी स्वतंत्रता हमें सयाना बनायेगी ?

● काफ़ियानाथ त्रिवेदी

१५ अगस्त, १९७२ के दिन हम भारतवासी अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता को रजत-जयन्ती मनाने जा रहे हैं। उस दिन हमें अपने इस प्राचीन देश में स्वतंत्र हुए २५ वर्ष पूरे हो चुके हैं। कोई १९० सालों तक हमने अंग्रेजों की गुलामी भुगती। लगभग १०० मातों तक हम अपनी आजादी के लिए जी-जान से लूते। कठिन-से-कठिन तप-स्याग और महान् संघर्षों से हमने अपने देश पर-पद-दलित, पीड़ित, शोषित और पराधीन देश में राजनीतिक स्वतंत्रता के दर्शन एवं १९४७ के अगस्त महिने की १५ तारीख के दिन पहली बार किये। यह दिन हमारे देश के वर्तमान इतिहास का एक धन्य और पुण्य दिन बना। एक पराधीन राष्ट्र को उस दिन स्वाधीन बनने का मुख और सौभाग्य प्राप्त हुआ। करोड़ों भारतवासियों के जीवन में उस दिन एक नयी आशा का संचार हुआ। लोगों ने उस दिन की अपनी धन्यता और इतर-धर्मता को अनेकानेक रूपों में प्रकट किया। भारतमाता के धोर महत्त्वात्मा पाषाण के पत्र-व्यकार से इस देश की दसो दिशाएँ खूब उठी। लोगों के हृदय और आनन्द का पार न रहा। उस दिन इस देश की करोड़ों-करोड़ पुत्री और प्यासी आँखों ने अपने भावी जीवन के जो सुनहले सपने छोड़े थे, २५ वर्षों की लोकतांत्रिक स्वतंत्रता के बाद भी वे अपने अधिपतिर तो सपने ही बने रहें हैं, इतकी क्वॉट आज हममें से बित्तों के दिवो और विभागों को वसधरा रही है, कोय वह संकटा है ?

औसत आदमी : स्वतंत्रता की उमंग

२५ वर्षों में इस देश की स्वतंत्रता तो सपनी हो गयी, पर क्या इस देश का औसत नागरिक, जिसे परिधान ने स्वतंत्र और प्रभुता-सम्पन्न नागरिक

बनाया है, उसी मानों में स्वतंत्र और सयाना बन पाया है ? क्या उसे स्वतंत्र और सयाना बनाने का कोई ध्वरिपित और सुव्योचित प्रयत्न और पुष्पाय करने का बीड़ा इन २५ वर्षों में किसी ने सकल्पपूर्वक-मातृसंपूर्वक, उठाया है ? सब तो यह है कि स्वतंत्रता के इन २५ वर्षों में इस देश के करोड़ों-करोड़ नागरिकों के दरवाजे दरवाजे पहुँचकर उनको स्वतंत्रता का और सोकतव का छोटी बर्ष समझाने-बैठाने का कोई भारतव्यापी काम हम अपने इस पुण्यदेश में लाखों-करोड़ों समसंधार लोगों के सक्रिय सहयोग से लगातार कर ही नहीं पाये। जो काम पूरी लगन, मेहनत और समसंधारी के साथ १५ अगस्त, १९४७ के दिन से ही समूचे देश में शुरू हो जाना चाहिए था, वह आजादी के २५ वर्षों साल बीत जाने पर भी कहीं ठिकाने से शुरू नहीं हो पाया है। यही कारण है कि हमारी आजादी तो सयानी बन गयी, पर आजाद माना जानेवला औद्योगिक-हिन्दुस्तानी घारी सरकारी और बैंक-सारकारी फिट-फुट बोधिशो के बावजूद न स्वतंत्र और सयाना बन पाया, और न उसमें दानापन ही था पाया। इस देश का यह औसत आदमी, क्या गया और क्या पुराना, अपनी आजादी की रजत-जयन्ती के मोके पर क्या सोचकर चुप हो और क्या देकर तथा क्या लेकर मन में चुप और अज्ञानता का अनुभव करे ? रजत-जयन्ती मताने की छुट्टी में लगे लोगों के सामने आज सब सयानों में सबसे बड़ा सवाल मौई है, तो यही है कि इस देश के करोड़ों भूखे, प्यासे, नगरे, बेकार देशज, बे-आशा और निवृत्तों को लेकर अपने प्यारे देश की आजादी की २५ वीं छान-गिरह आँखों में हीवी और दिवो में उमंग और उत्साह

लेकर मनायें ?

रजत-जयन्ती का स्वरूप कैसा हो ?

यह सब है कि १५ अगस्त, १९७२ के दिन भारतीय स्वतंत्रता की रजत-जयन्ती के नाम से सारे देश में वीर दुनिया के उन सब देशों में भी जहाँ-जहाँ भारतवासी जाकर बसे हैं, वीर जहाँ भारत की चाहनेवाले लोग बसे हैं, एक-एक और त्योहार के-से नाचाकरना में तरह-तरह के आंगाननों द्वारा सहरो और बरानों में बसे खुशहाल लोगों के बीच भुधियाँ मना ली जायेंगी, मिठा-दुर्गाँ बँट जायेंगी और वही रात के अँधियारे में आँखों की शोधियानेवाली रोशनी की जगमगाहट भी हो जायेगी, पर उवाव यह है कि क्या इतने भर से इस देश की आजादी की रजत-जयन्ती प्रतीतिभि नवा ली जा सकेगी ? क्या इस वाहरी जगमगाहट से वे करोड़ों बुद्धे दिव और दिमाग जदमगा पायेंगे, जिन्होंने अपने जीवन के आरम्भ से आज तक अपने को सब प्रकार के अभावों और अभिशातों से ही पिरा पाया है ? रजत-जयन्ती का नाम सुनकर उनके मुरझाने दिव बने कर लिलेंगे ? उस दिन हम उन्हें वीर-सा दिताया दे पायेंगे ? वह कौन-सी सँचीवनी होगी, जो उस दिन उनमें नयी आशा का, नये जीवन का और नये पुष्पाय का संचार करेगी ?

यथा उस दिन इस देश का औसत नागरिक एक स्वतंत्र और सोकतवो देश के प्रभुता सम्पन्न नागरिक की सब प्रति-पदाओं से मण्डित होकर समान भूमिवा पर बमाने, खाने और छाने की स्थिति में जा सकेगा ? क्या उसे समान और समता-पूषक सम्बोधन से हर्नोयित करने की कोई उत्पत्त बतना इन देश के बुद्धिबोधियों और सुखी-सम्पन्न तथा सत्तासारी लोगों के विषय में प्रकट होगी ? क्या उस दिन मनुष्य को मनुष्य के रूप में देखने और उसके साथ मान-यता का ध्वरिपित करने की शक्ति-बुद्धि इस देश के आम और साध लोगों के

धीन में जागेगी ? क्या उस दिन हमारा सुखी और सम्पन्न समान अपने को पीछे रखकर, जो बोटि-फोटि भारतवासी बर ठक दलित, पीड़ित, शोषित और वंचित बनकर जीते आ रहे हैं, उनके दलन, पीड़न, शोषण और धमामन को सकल्पपूर्वक समाप्त करने के लिए पत्थर फुसकर मैदान में उतरने की तैयारी दिखायेगा ? यदि अपनी स्वतंत्रता की रजत-जयन्ती के दिन भी हम अपने देश में इन सब कामों के लिए कोई व्यापक चेतना नहीं जगा सके, तो निरश्चय समझिए कि जिस तरह स्वतंत्रता के बाद १५ अगस्त, २६ जनवरी और २ अक्टूबर की तिथियों को हम इस देश में सुने दित-दिमाग से और मूर्खी रीति से सिर्फ एक रस्म-ब्यादाई के तौर पर मनाते चले आ रहे हैं, उसी तरह रजत-जयन्ती का दिन और साल भी सुनो-जने मातामरण में ही मना लिया जायेगा और फिर हम सबके देखते वह हमारे हितदायक की एक बीच बनकर रह जायेगा। उनसे न देश बनेगा, न देश का अक्षय आदमी ही बनेगा।

पर्वों और त्योहारों की तो भारत में कभी कोई कमी नहीं रही। साल के ३६५ दिन भी आज तो इनके लिए काम पड़ रहे हैं। पर सदियों से इन पर्वों और त्योहारों को सदा मनाते रहने पर भी भारतमाता की गोद में जन्म लेकर जीनेवाले मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षी और पंख-पौधे भी आज तो इस मनाते की आशुषि सम्पत्ति और सत्ता के मद से मत्त आचार सौम्यो की सहार-लीला के सिंघार बनते जा रहे हैं। हममें नोन हैं, जो सहार भी इस अग्यो बाढ़-को अपनी छाती अड़ाकर या बाँह फँसाकर रोने की भाँस भी क्षणभर के लिए सोचते हो ? क्या भारत जैसे पुण्यदेश और पुराणदेश की स्वतंत्रता की रजत-जयन्ती करोड़ों-करोड़ भारतीयों के हहाकार, चींकार, बिलाप और सन्तान की उल्लासपूर्ण आहों और

सिमकियों के बीच मनाने का कोई उपयोग होगा ? सोचने की बात है; समझने की बात भी है। कोई सोचना चाहेगा ? समझना चाहेगा ?

रजत-जयन्ती और सर्वोदय-जमात

और कोई चाहें सोचें, या न सोचें, इस देश में जिनकी आन्तरिक निष्ठा और आस्था सर्वोदय के विचार में और उसके कार्यक्रम में दृढ़ हुई है, जो अन्तपोदय के रास्ते सर्वोदय की मजिल तक बढ़ने की कोशिश में सचेत हैं, उन्हें तो गम्भीरता और उत्कृष्टता के साथ इस सम्बन्ध में सोचना ही होगा। वे तो किसी प्रवाह-पणित और प्रवर्णन-प्रधान काम के फेर में पड़कर अपने असल रास्ते से दूर हटना और भटकना पसन्द नहीं करेंगे। रजत-जयन्ती के निमित्त से उनका अपना चिन्तन और दर्शन तो मूल्यवामी ही होगा चाहिए। बाल-वचन की छिटाई में या उनके साज-सिंहार में भला उन्हें क्या दिलचस्पी हो सकती है ? उन्हें तो इन निमित्त से सीधे देश के धरिद्वारायणों के पास ही पहुँचने और उनके नामाविधि दारिद्र्य को समाप्त करने के प्रतीक काम में ही जुटने-जुलने की बात सोचनी चाहिए। हमारे मन में रजत-जयन्ती का असल काम तो यही है। पर हम हैं कितने ? और आज हमारी स्थिति क्या है ? दूसरों की तरह देखने से पहले हमें अपनी तरह देखना होगा और अपने को ठीक-ठाक करके फिर दूसरों की सेवा-सहायता के लिए चमर नसनी होगी। आज हमारे अपने बीच भी तो अनागत सवाल छपड़े हो गये हैं। जब तक उन्हें हम अपने ही अन्दर ठीक से हल नहीं कर लेते, दूसरों के हमसे भी अधिक उनसे सवालियों को हल करने की शक्ति और मुमुक्षु हममें बँधे वा पायेगी ?

आज हमारे सामने खड़े सब प्रश्नों में सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि हम अपने बीच के असमान, बिभार, अकरार और मन मुटाव की निच तरह दूर

करें ? वह बौल-सी विधि और युक्ति हो, जिससे सर्वोदय-विचार में निष्ठा रखनेवाले हम सब साथी एक रस और एक जीव होकर सोचने और काम करने की अपनी व्यक्तिगत और सामूहिक शक्ति का समुचित विकास कर सकें ? यह स्पष्ट है कि आज ऐसी मुखद स्थिति हमारे बीच नहीं है। हम सब अपनी-अपनी मर्यादाओं से बँधकर और अपनी अपनी रधि-अरधि से प्रभावित एवं प्रेरित होकर सर्वोदय के इस विशाल क्षेत्र में काम कर रहे हैं। हमारे बीच मुखद, सीहार्द, और सद्भाव की दिव्यी सदा बहती रहे और हम कियप्रति उभरें नहा करके नवजीवन और नवचेतन प्राप्त करते चलते जायें, ऐसी सीमाव्यपन्न स्थिति हमारी अब तक बन नहीं सकी है। इससे हमारे सफलता कामों की गति कुम्भित हो रही है और हम अपने लक्ष्य से दूर हटते जा रहे हैं। हमारे अन्दर इनमें अवक्षरों छड़ी हो गयी हैं कि उनसे सुमुक्षकर कान्ति-कार्य के लिए अपने को होम देने की हमारी भावना प्रबल ही नहीं हो पा रही है। रजत-जयन्ती का अवसर अवश्य ही एक ऐसा शुभ अवसर है, जो हमें पुन अन्तमुख बनने और आत्मशोधन करने की प्रेरणा दे सकता है।

माना गया है कि सर्वोदय-विचार में आस्था रखनेवालों का सगठन रुढ़ अर्थों में सगठन नहीं, एक मुखद भाई-भाय-सा होता है, जिसकी मदद से हमें अपने मूल लक्ष्य की दिशा में आगे बढ़ने का बल मिलता है। इस सगठन में न कोई दावे-दारी होती है, न उम्मीदवारी। यह सत्ता और सम्पत्ति का बाहक नहीं, सेवा, साधना और समर्पण का सम्बल है। इसमें जुड़े सब लोग आस में एक-दूसरे के साथी हैं, सहयोगी हैं, परस्पर पूरक हैं, पोषक हैं। उनके बीच प होड़ की बात जाती है, न शोष-शोड़ की। उनमें न कोई मैदा है न अनुयायी। सबकी एक समान श्रमना है, और यह है सेवक की, साधक

की, तथा समाप्त जीवन जीनेवालों की। नेतृत्व का विस्तर और धनसंचयन का सूत्र हमारी अपनी साक्षात् का एक मुख्य नक्षत्र है। इस तथ्य की भाँति है कि हम स्वेच्छा से नष्ट बनें, स्वयं अपने लिए गौणता स्वीकार करें, अपनी अविनाशिता को भुँजें, अपनी बाणी को समझ बनायें तथा अपने आचार, विचार और उच्चारण को सतत परिष्कृत करते रहने की दृष्टता बरतें। सहज भाव से अपने सामो-सहयोगी बनकर अपने हितों में आपो विन्मोचारी को अपनी दूरी भक्ति और शक्ति के साथ निबाहने में जुटे रहें। हमारी मूल प्रेरणा देवी सम्पद की है, धामुरी की नहीं। वात्म-जय हमारा बसल लक्ष्य है, दिनिक्रय या विश्व-विजय नहीं। हमारा मिशन सब पर छा जाने का नहीं, बल्कि सबके बीच छि जाणे और सबके हित-विभाग में छप जाने का है। हमारी मूल प्रेरणा बन्धुमूल जीवन जीने की है, बहिर्मुख जीवन की नहीं। निर्भयता, नसबा, निर्मलता, निरच्छलता, निरभिमानता, सरलता और सरलता में हमारी शोभा है। इनमें ही हमारी शक्ति छिपी है। मास विद्रवा हमारा बसल वैभव नहीं। विरहित और अनासक्ति हमारा मूल धन है। सत्ता के सहारे हम जाने बड़ सकते हैं और ऊपर उठ सकते हैं। हमारे लिए विद्रता या पाण्डित्य की बन्नी, बन्नी नहीं, पर यदि हममें से सरलता सरलता और सहजता पत्नी जाती है, तो हमारा सबकुछ पत्ता जाता है। सर्वोदय की मूल प्रेरणा बन्नी की, सरलता की, समता की और सहृदयता की प्रेरणा है। उसके हटकर चलने में हम अपने 'स्व' को खो बैठते हैं। हम अपनी मूल श्रमिका से ही दूर भटक जाते हैं।

हमें लगता है कि भारतीय स्वतंत्रता की रजत-जयन्ती को निमित्त बनाकर हम सब अन्तर्मुख बनें। सोरु-सेवक के नाते हम अपने रूप-स्वरूप के बारे में उत्तर माव से सोच सकें, और अपनी व्यक्तित्व और सामूहिक दुर्बलताओं से ऊपर उठने का कोई रास्ता खोज सकें; जो उसके हम

अपनी सेवा-शक्ति और कार्य-शक्ति में तथा निवारण का करने और अपने मिशन को मजबूत बनाने की दिशा में हमारे पैर भी मजबूती से उठ और बड़ सकेंगे।

आज तो हममें तीव्रता, एताव्रता, एतत्त्व और उत्सीनता की कमी स्पष्ट ही दिख रही है। हमारी निष्ठाएँ भी बहुत दुर्ग और सुस्पष्ट नहीं हैं। साधना-मय और शुद्ध-बुद्ध जीवन जीने की रवि-भक्ति को भी हम अपने अन्दर पुष्ट नहीं कर पा रहे हैं। हमारा चिन्तन और जीवन भी खण्डित होकर रह गया है। वैचारिक क्षेत्र में इन श्रमणों की बात कहते-मुनते जरूर है, पर समग्र क्रान्ति को पुष्ट करनेवाला जीवन जीने की उत्कण्ठा और सजगता हम अपने में ला नहीं पाते। खान-पान, रहन-सहन, बोल-चाल, वेश-भूषा, पर-स्वोद्धार, व्याह-शारी आदि के मामलों में क्रान्ति की पुच्छित करनेवाले मन्त्रों से चिपटकर सोवने और जीने की जिस प्रवृत्ति को हम अपने बीच बढ़ाते चले जा रहे हैं, उसके कारण समग्र और अधिक्रान्ति-सम्बन्धी हमारा सारा चिन्तन ही असंगत बनता जा रहा है। हमें लगता है कि प्रश्न के इत पहेलू पर भी हमें अन्तर्मुख होकर सोचना ही चाहिए। इस सम्बन्ध में हम अपना कोई पैशाना तय नहीं करेंगे, तो जिस समग्र और शान्त-क्रान्ति की ओर सोरु-क्रान्ति की बात हम कहते-सोचते हैं, वह कभी सिद्ध हो ही नहीं सकेगी और न हम अपने को सही बर्षों में स्वतंत्र भारत

की रजत-जयन्ती के अपने सन्देशवाहक ही बना पायेंगे।

भारत की स्वतंत्रता की रजत-जयन्ती का महापर्व हम देश को भूखी, प्यासी, नयी, बेकार, बीमार, बे-तारार और बे-असरा बनकर जीनेवाली दीन-दुःखी जनता की नि स्वार्थ और नि सग सेवा-सहायता का, शिशा-दीक्षा का, भीर सम्मान-महत्कार का महापर्व बन सके, इसके लिए हम सर्वोदयवालों को तो प्राथमिकतापूर्वक सोचना ही चाहिए। इसे हम अपना विशेष दायित्व मानें और रजत जयन्ती वर्ष को इस तरह मनाने की तैयारी में लगे कि जिससे गाँव-गाँव और नगर-नगर में उस इत-उतड़ा जीवन जीने-वाने अपने उपधित और क्षमा-प्रस्त भाद्यों, बहनों और बच्चों के नेहरो पर नया जीवन जी लेने की एक आवा छनक सके और विश्वास गढ़ सके। रजत जयन्ती-वर्ष के चलते हम अपनी शक्ति-शक्ति के अनुसार अपने सेवा-क्षेत्र में बसे परिष्कारवाचकों से कुछ के नेहरो पर भी नया और सही जीवन जी लेने की शक्त और दक्षक पैदा कर सकें, तो हमें विश्वास है कि हम अपने पुष्यव्यव की स्वतंत्रता की सच्ची उत्तर-जयन्ती मनाने का भरपूर मुक्त और सन्तोष अवश्य ही लूट सकेंगे। तभी हम छाती पर हाथ रख-कर यह कहने की स्थिति में होंगे कि हमारी स्वतंत्रता ही छपानी गयी हुई है, मार्गिक के नाते हम में भी सत्तागत आया है। ●

हमारा नया प्रकाशन

क्रान्ति का समग्र दर्शन
लेखिका : इन्दु टिकेकर

सुभी इन्दु टिकेकर सर्वोदय जगत की निष्ठावान सेविता है। अपने सर्वोदय-विचार का महदाई से अध्ययन किया है और 'दृष्टीगत रिबोत्वान' नाम से एक अंग्रेजी ग्रन्थ लिखा है। उद्यो का यह द्वितीय संस्करण स्वयं लेखिका ने तैयार किया है। इसमें क्रान्ति के विचारों की कथा ऐतिहासिक ग्रन्थों में दी गयी है और बताया है कि अहितक क्रान्ति का सम्पूर्ण दर्शन क्या चीज है।

मूल्य : रु २.००

सर्वे सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी-१

वागियों का आत्म-समर्पण : विवाद और स्पष्टीकरण

● देवेन्द्र कुमार गुप्त

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री प्रकृष्णचन्द सेठी ने अपने एक बयान में वागियों के आत्म समर्पण को लेकर कुछ ऐसे अशोभनीय प्रसंगों का उल्लेख किया जिससे सर्वोदय के कार्यकर्ताओं और सरकार के बीच के भेद अलवारों में चर्चा के विषय बने और इसपर कई दैनिक अखबारों ने अप्रतिश भी लिखे। इस प्रसंग पर दामित मिशन के उप पद्वत श्री देवेन्द्र कुमार गुप्त ने इस आशय से एक प्रेस वक्तव्य में स्पष्टीकरण किया है ताकि गलतफहमीयें दूर हो सकें।—स०]

समर्पणकारी डाकुओं को सभ्य समाज में लाने, उनके और उनके द्वारा छताये गये परिवारों की पुनर्स्थापना करने और वाणी-समस्या की ऐंठिटासिन, भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक और मनो-बैधानिक जड़ों को समाप्त करने वा कर्ष्य ह्यना बढ़ा हे कि उसमें छोटे-मोटे विवादों को कोई जगह नहीं है। सचिवों पुरानी इस समस्या के हल की एक प्रस्थान हुई है और भारत की इस महान जन-तन्त्रि, जो केन्द्रीय शासन तथा सम्बन्धित राज्य शासनो और सामाजिक कार्य-कर्ताओं के सहयुक्त प्रयास से सम्भन्न हुई है, निम्न प्रकार विगड जाय यह बड़े खेद का विषय होगा। इस-सारे कार्य में परस्पर विश्वास का ही आधार है। एक ओर डाकुओ और सर्वोदय कार्यकर्ताओं के बीच वचन वा विश्वास और दूसरी ओर वानु-कायकों की परम्पराओं से बंधे शासन के चाननों का नये प्रयोग में विश्वास, इस वातावरण में कोई भी अविश्वास वा वचन बंठी गहरी प्रति-क्रियाएँ पैदा कर सरता है।

मध्य-प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री प्रकाश-चन्द सेठी और सर्वोदय नेता श्री जय-प्रकाश नारायण ने इस सहयुक्त सफलता के लिए एक-दूसरे को बार-बार बधाई दी है। श्री जयप्रकाशजी दोहराते रहे हैं कि सेठीजी, मध्य प्रदेश पुलिस तथा उनके शासन की दूरदर्शिता और समय का ही नतीजा है कि यह कार्य सर्वोदय सेवकों के सहयोग से सम्पन्न हो सरा। फिर भी जो गलतफहमी पिछले दिनों श्री सेठीजी

के अलवारों में छपे बयानों से पैदा हो गयी है उसके कारण सवा चार सौ के करीब ऐसे मानव जिन्होंने सभ्य नागरिक जीवन वा रास्ता स्वय ही बन्द कर लिया था और जो आज प्रार्थयित करके वानुन के सामने अपने को समर्पित कर चुके हैं, वे अपने तथा अपने परिवार के भविष्य के प्रति चिन्तित हो सकने हैं। उनके प्रति सहायभूति रखते हुए सेठीजी के वक्त-यो में कुछ तथ्य गलत जानकारी के कारण आ गये हैं इसलिए उनका स्पष्टीकरण आवश्यक हो गया है। निम्न-लिखित मुद्दों वा स्पष्टीकरण इस प्रकार है।

विश्वास का उल्लापन—अलवारों में श्री सेठीजी वा यह आरोप प्रवाशित हुआ है कि मिशन के कार्यकर्ता 'बी० बी० सी०' और 'दाइम' पत्रिका के सवाद-दाताओं को के शक्तियां र्माल पहनाकर चोरी-छिपे पगारा, ले गये और बी० बी० सी० के लिए टेलीविजन फिल्म खीचने में मदद की और इस तरह गृह-मन्त्रालय के तलावधान में हुई मुख्य-मंत्रियों की बैठक के करार का उल्लापन किया। तथ्य इस प्रकार है :

'बी० बी० सी०' और 'दाइम' पत्रिका के सवाददाता १५ अग्रेल १९७२ को अन्य पत्रकारों की तरह ही अपनी मर्जी से जोरा आये थे जबकि २२ डाकुओं का पहला दान १४ अग्रेल को आत्म-समर्पण कर चुका था और इसकी तबर्न और फोटो दक्षिण के अलवारों में छप चुके थे। १६ अलवारों के सवाददाता, फोटो-

ग्राफर और ग्यालियर तथा आगरा के व्यव-सायी फोटोग्राफर श्री जयप्रकाश नारा-यण के ११ अग्रेल के पगारा पहुँचने के पहले ही धोरेरा गाँव हो आये थे जहाँ के शान्ति-शोध में डाकू समर्पण के लिए इकट्ठे हो रहे थे। इन सवाददाताओं और फोटोग्राफरों को 'मिशन ने नहीं बुलाया था न पगारा पहुँचने में कोई मदद की थी और न इनको रोखने वा कोई साधन उनके पास था। दिल्ली, ग्यालियर और भोपाल के पत्रकार इस तथ्य से परिचित हैं। पगारा में चारो दिन हजारो लोग आ-या रहे थे और उन्हे रोचना पुलिस के लिए भी सम्भव नहीं था। वहाँ किसी को चोरी-छुपे ले जाने की जरूरत ही नहीं थी।

'बी० बी० सी०' और 'दाइम' पत्रिका के सवाददाता जब १५ अग्रेल को पगारा पहुँचे तो माघीसिंह से नई पत्रकारों वात कर रहे थे। दूसरे नई पत्रकारों के साथ 'बी० बी० सी०' और 'दाइम' के सवाददाता ने माघीसिंह से वातचीत की और बाद में फोटो खीचे। इन सवाददाताओं के पास कोई कैमरिया र्माल नहीं था। १६ अग्रेल को डाकुओं के दूसरे दान के समर्पण के बाद श्री सेठीजी ने श्री जयप्रकाश नारायण की उपस्थिति में जब जोरा के सर्वोट हाउस में पत्रकार परिपद को सम्बोधित किया था तब 'बी० बी० सी०' द्वारा टेलीविजन फिल्म लिये जाने का मामला उठा था और 'बी० बी० सी०' के सवाददाता ने वही उठकर कहा था कि उसने 'बी० बी० सी०' के लिए कोई फिल्म नहीं ली है।

१७ अग्रेल के 'दाइम आठ सप्टिमा' में यह प्रकाशित भी हुआ कि 'बी० बी० सी०' ने कोई फिल्म नहीं ली है। इस पर भी जब सेठीजी का यह कथन अलवारों में छपता रहा कि फिल्म ली गयी है तो 'बी० बी० सी०' के दिल्ली कार्यालय ने मध्य प्रदेश के मूचना सचालक और बाद में स्वयं श्री सेठीजी को सूचित किया कि 'बी० बी० सी०' ने न कोई फिल्म खींची है न प्रसारित की है।

श्री जयप्रकाश नारायण और प्रधान मंत्री : भारतवर्ष में श्री सेठीजी की यह पहलें बढाया गया है कि ग्वालिपर की एक आमसभा में श्री जयप्रकाश नारायण ने कहा, "बिस्मि पटना के प्रकार-प्रसार को रोकने वाली प्रधान मंत्री कौन होती हैं?" तब यह है कि जे० पी० ने हर आत्म-समर्पण के समय केंद्रीय शासन और प्रधानमंत्री के सह-चुम्बितपूर्ण रख की सराहना की है और ने जब भी इस सम्बन्ध में प्रस्ताव बना रख रखते हैं।

श्री जयप्रकाश नारायण का १ जून '७२ का भाषण जो टेपरेकॉर्ड किया गया है और उसकी अधिकतम प्रतियाँ स्वयं जे० पी० ने श्री सेठीजी और राज्य गृहमंत्री श्री पन्तजी को ७ जून की भेज दी थी। श्री जयप्रकाश नारायण इन आरोपों का उत्तर दे रहे थे कि सर्वोच्च वातो ने बाहुओं को हीरो बनाया है और वह रहे थे कि सन् १९६० में विनोबाजी को भी इसी आरोप का सामना करना पड़ा था। जे० पी० ने कहा, "हम यह नहीं मानते कि हमने बाहुओं को हीरो बनाया। बारह साल पहले जब विनोबाजी ने २० हातुओं का आत्म-समर्पण कराया तब से यह आरोप लगातार लगाया जा रहा है।" और इसी विविध सम्बन्ध में बड़े दर्द के साथ उन्होंने भागे कहा, "जो हथ हथ बाह से बिलकुल इनकार करते हैं—चाहे सेठीजी नारायण हो, इन्दिराजी नारायण हो, चाहे पुलिसवाले नारायण हो—विनोबाजी के जमाने में हस्तमन्त्री ने जो बयान दिया था वह कोई विनोबाजी की मान के सुवार्तिक नहीं था। नभी हम मानते नहीं कि हमने उनको नैमिषादक किया है, हीरो बनाया है। हमने उनको आंदमी बनाया है, भाई बनाया है। हमारी पहली ने उनके माथे पर तिलक लगाया है और हाथ में राखों बाँधी है तथा अगर यह भेद खोलेने से दूरखान न हो जाये, हमारे अस्मिन्तर साहब का, जो

आई० जी० नाहब या, तो इतनी पतियों ने आकर राखी बाँधी है पगार में।"

मुकद्दमों : श्री सेठीजी ने यह भी कहा बताते हैं कि 'सर्वोच्चवाले अब यह रहे हैं कि समर्पणकारी हाकुओ पर मुरसमें न फलये जायें।' इस सम्बन्ध में तब यह है कि श्री जयप्रकाश नारायण से लेकर छोटे-से-छोटा चाहे-चर्चा समर्पणकारी हाकुओ को समझा रहा है कि वे बदावत में अपने अपराध बतूल करें। इसके पुलिस का काम तो आसान होना ही आत्म-समर्पण की प्रक्रिया का सही परिणाम भी लियेगा। कानून से जो कार्यवाही उन पर होनी चाहिए उसके लिए उनकी सैपार करने की कोशिश हो रही है। यह जे० पी० के १४ अर्पण के भाषण से स्पष्ट है।

"आत्म-समर्पण कर दिया। यह जानकर नहीं कि उनको माफी मिल जायेगी। यह जानते हुए कि वे जेल जायेंगे, उन पर मूकभया बलवा, उन्हें सजा मिलेगी। वे कहते हैं कि हमने जो किया है उसका फल भुगतेंगे। मैंने अपनी तरफ से आत्मो तरफ से नहीं, अपनी तरफ से, आत्मदातन दिया है कि चाहे कोई भी बदावत, सेगन जब, हार्डकोट, उनको मोत की सजा दे, मेरा आत्मदातन है कि उनको फाँसी नहीं होगी।" इस नीति में आज भी कोई अन्तर नहीं आया है।

सरकारों की भूमिका : सरकारों और शासक मध्य प्रदेश की सरकार और पुलिस के सहयोग की श्री जयप्रकाश नारायण से लेकर निगम के सभी लोगों ने सराहना की है। माधोबिहू जब पिछले सात पक्षों मन्तूर को जे० पी० से पटना में मिले तो उन्हें भी जे० पी० ने यही कहा था कि बन्दक सरकारों का सहयोग नहीं मिलेगा वे यह बतल नहीं सटायेंगे। इस बात की मन्तूर करने के पहले जे० पी० मूह राज्य-मंत्री श्री पन्तजी, उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री कृपतापति जिताई और मध्य प्रदेश

के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री श्यामाप्रकाश मुखर्ज से मिल चुके थे और उनके सहयोग के आश्वासन पर ही काम शुरू किया था। ग्वालिपर के जित भाषण में कहा गया है कि जे० पी० ने सरकारों को आलोचना की उली में उल्टे कहते हैं, "मैंने अपने को बराबर पकड़े रखा है, बराबर मैंने सम्बन्ध दिया है सेठीजी को। भूरि-भूरि प्रस्ताव और धन्यवाद। हर सभा में और हर मध्य से, आत्म देता हूँ, हृदयपूर्वक देता हूँ। इनके सहयोग, इनके अधिकारियों के सहयोग के बिना यह काम होता नहीं। इनके अधिकारियों के हथियार नहीं, इनकी बाटोनेटिक मशीनगर्लें नहीं, इनका सहयोग मिला है। यह तो हम शुरू से कहते हैं कि 'ज्वाइंट बॅरर' है, यह हमारा मिला-जुला काम है।"

आशा है यह स्वयंसेवक सही प्रकार में लिया जाएगा और बिस्मि भी नरार की दुर्भावना बनने न पाये इस सम्बन्ध में पूरा प्रयास होना तथा शासन और सर्वोच्च का यह सहयोग मोर्बा सफल नतीजे ला सकेगा।

नवी दिल्ली, १९ जुलाई, '७२

सर्वोच्च मित्र मण्डल की बैठक

दिनांक २७/७/७२ को रात्रि ८-१० बजे देवनागर-को सामाजिक कार्यकर्ताजीवजब लक्ष्मी मर्मा के निवास स्थान पर नरीव बाग सर्वोच्च मित्र मण्डल की दूसरी मासिक बैठक हरिश्चन्द्र जी की अध्यक्षता में हुई। बैठक में इस क्षेत्र के शिक्षा, सामाजिक सेवा और मन्तूर क्षेत्र के विभिन्न १८ मार्ग-बद्ध उत्पिषड रहे।

प्रारम्भ में दिल्ली प्रदेश सर्वोच्च मन्डल के संयोजक श्री जयन्त ध्यात्र ने सामीप्य क्षेत्र और सहृदी धैर्य में बतलने वाले सर्वोच्च कार्यकर्ताओं की रूपरेखा बताया। तत्पश्चात् नाने के बार्मन्त्रम की पचर्ची की गयी। ●

गांधी और विनोबा

● भारती दास चतुर्वेदी

महामा गांधीजी के विषय में बहुत-सी किताबें लिखी हैं और भविष्य में भी लिखती रहेगी, लेकिन आचार्य विनोबाजी की पुस्तक 'गांधी : जैसा देखा समझा' बनना अलग ही महत्व रखती है। इस पुस्तक का सफल और सम्पादन मुबारकपुर में श्री आनंद भाई गार्ह ने किया है। यह पुस्तक छरसरी निगाह से पढ़ने की नहीं है, बल्कि स्वाध्याय के तौर पर अध्ययन करने की है। एक बात ध्यान देने योग्य है, यह यह, कि विनोबाजी किसी के भी कथ्य भंगत नहीं। वे स्वतंत्र चिन्तन करते हैं और अपना एक स्वतंत्र व्यक्तित्व भी रखते हैं। एकाध जगह उन्होंने महामामो की स्पष्ट आलोचना भी की है। उदाहरण, के लिए उन्होंने यह बात लिखी है कि अन्य ग्यारह शता के साथ बापू ने 'स्वाध्याय' पर जोर नहीं दिया। उनके कार्यक्रम को यह ग्लूतवा विनोबाजी की विशेष दृष्टि से बच नहीं सकी। विनोबाजी यह नहीं चाहते कि हम लोग बिना सोच-समझे गांधीजी का अध्यात्मकरण करते रहें। जमाना बदल रहा है और देवी से बदलता जाया। एसी स्थिति में गांधीजी के सिद्धान्तों की खूँटी से बंधे रहना ठीक नहीं। विनोबाजी ने एक और बात भी स्पष्ट कर दी है कि गांधीजी निरन्तर प्रवर्तित होते थे और जो लोग यह कहते हैं कि 'यदि आज गांधीजी जीवित रहते तो यह करते, यह करते वे भयंकर भूत करते हैं। विनोबाजी लिखते हैं : "यह भतीभाई सफल होने की बात है कि गांधीजी पल-पल विश्वासि हो रहे। अगर इसे हम नहीं समझते तो गांधीजी को जरा भी नहीं समझ सकते। वे तो, रोड-रोड बदलते, पल-पल विश्वासि हो रहे हैं। वह भाषा भी ऐसा नहीं था कि पुरानी विश्वास के संस्करण ही निरामता रहे। कोई नहीं वह सचता कि आज

वे होते तो कंठा मोड़ लेते। उन्होंने अमुक समय अमुक बात नहीं की, इसलिए आज भी बंसे काम को आगेवाँर ही देंगे, ऐसा अनुमान लगाना अपने मतलब की बात होगी। मैं नहना चाहता हूँ कि ऐसा अनुमान लगाने का किसी को हक नहीं। 'लोकेश्वरशाशा चलासि वो हि विशासु-महंति'—लोकेश्वर पूरप के पति को याह कोन पा सस्ता है ? इसलिए गांधीजी आज होत तो नवा करते और नवा न करने, इस तरह नहीं सोचना चाहिए।'

विनोबाजी बापू के तितने सगी थे। यह बात इस ग्रंथ में भली प्रकार स्पष्ट कर दी गयी है। यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि विनोबाजी ने उस कण को चम्कड़ा श्वाज सहित पुनः दिया। यदि आज भारतवर्ष में बापू के 'सच्चा नाम-लेवा' हैं तो वे विनोबाजी, काका कालेलकर और जयप्रकाशजी जैसे अलग अलग व्यक्ति ही हैं। विनोबाजी ने इस बात पर जोर दिया है कि बापू में बासव-भाव की प्रधानता थी। शायंकराचार्य के वे पिता ही नहीं, माता भी थे।

इस ग्रंथ में अनेक प्रेरणादायक वाक्य यज्ञ-तन छिपे पड़े हैं। विनोबाजी ने जो कुछ पढ़ा है उसे उन्होंने भलीभाँति हृदय-गम भी कर लिया है, और वे अपने स्वाध्याय से निराते हुए रत्नों को दूसरों को भी दिखलाते हैं। एक जगह पर उन्होंने लिखा है—'शंकराचार्य का वाच्य मुझे हमेशा याद आता है कि मनुष्य के परम भाव तीन होते हैं—१-मानव-देह की प्राप्ति, २-मुमुक्षुत्व-मुक्ति की छत्पाहट और ३-क्रिडो महापुरुष के भाषन का सामः मनुष्यत्व मुमुक्षुत्व-महापुरुष-सकल।'

'शंकराचार्य के इस वाचन पर विचार करता हूँ तो मेरा हृदय आनन्द से उड्डने

लगता है। मैं परम धन्य हूँ कि मानव-देह मिली, मुक्ति की धुन लगी और महापुरुष का सत्य मिला। तत्त्व-महात्माओं को बापी पुस्तकों में पढ़ना एक बात है और उसका प्रत्यक्ष सत्यन करना, उनके भाष-दर्शन में काम करना, प्रत्यक्ष उनका जीवन देखना अलग मान है। मुझे यह भाग्य प्राप्त हुआ, इससे मैं धन्य हो गया।'

कई जगह विनोबाजी ने बड़े भौतिक विचार प्रस्तुत किये हैं। सत्यार्थ विषय प्रकार निष्पन्न और निरंजन बनती जाती है, इस पर उनके विचार बड़े उत्तमक हैं। उदाहरण के लिए उन्होंने नवीन के शांति-निर्देसन, मानवीयों के हिन्दू विश्वविद्यालय और रामकरण परमहंस के आधम तथा गुरुकुलो का जिक्र किया है और महामामो की सत्याग्रो का मूल रख कंसे सूत्र रहा है इनका भी उल्लेख किया है। उन्होंने एक जगह लिखा है—'अब मेरे सामने सवा न उठता है कि क्या स्तु-विशय कालानुक्रम से होना रहता है ? इसमें कोई शक नहीं कि वेगधवचारी सामर्थ्य कात में होती है, इसलिए बार-बार शक्ति देनी पड़ती है। शैतन का सर्व बार-बार होना चाहिए तभी शक्ति मिलती है। पत्नी को बार-बार चाभी देनी पड़ती है। इससे यह समझ सकते हैं कि नातानु-क्रमेण शक्ति का क्षय होगा। लेकिन वह क्षयान जल्दी अनंदिता नहीं था। यह तो २०-२५ वर्ष के अग्रर ही पहले की शक्ति एकदम मुक्त हो रही है।

इसके कारणों पर विचार करने पर दो-तीन बातें ध्यान में आती हैं। हमारी संस्थाओं का देखते-देखते बाधन-रुध मुसुदा जा रहा है, इसका कारण है स्वाध्याय का अभाव। हम कर्मयोग में पड़े हैं। कर्मयोग में उसके लाभ के साथ-साथ हानि भी होती है। शंकराचार्य, रामानुज, बुद्ध, महाश्वर आदि के अनुशासियों के जो कुछ शोध थे, वे हमने गुमाए, यह बात सही है। हमने कर्मयोग पर अधिक धार दिया। यह मुशर नकरी था। लेकिन ये लोग आत्मज्ञान में तितने गहरे उतरते

थे, उतने गहरे हम नहीं उतरते। एखे नायके विचित्र के साथ-साथ हमारी विचार-निष्ठा और तत्त्व-निष्ठा गहरी जाती है। हमारे कानों की गहरी भारी बनती जाती है, लेकिन उसका तत्व उड़ रहा है। मनुष्य चला जाता है, सरपा रह जाती है। फिर वह निस्तेज, फीकी पड़ती जाती है, दृष्टि छिल्ली बनती जाती है।'

इस पुस्तक का 'गांधी-विचाराव या आत्म-विवेक' नामक अध्याय अत्यन्त महत्वपूर्ण है। विनोबाजी परमुखापंथी नहीं हैं। वे स्वतन्त्र विचार तथा आत्म-विश्वास, स्वाध्याय और चिन्तन को बहुत महत्त्व देते हैं। वे यह नहीं चाहते कि हम लोक को पीड़ते रहे। आत्मक सर्वोच्च विचारधारा में शिथिलता आ गयी है। उसके कारण भी उन्होंने बतलाये हैं। इसकी मुख्य वजह उन्होंने यह बतलायी है कि हम लोगो के स्वाध्याय का अभाव है और हम प्रश्नों की महत्ता में नहीं उतर सकते। मिल-जुलकर सामूहिक रूप से कार्य करने की प्रवृत्ति हम लोगो में जागृत नहीं हुई। विनोबाजी ने लिखा है—'पदि बुद्ध भगवान ने जीने-जी यह कह दिया होता कि अब बाब लोग एक समुदाय बनाओ और विचार करो। जिस विषय में सब एक मत हो, यह करो। मैं केवल मार्गोत्पन्न रहूँगा। कभी मेरी सलाह पूछो आधुनी वो आर्जना अन्तर, लेकिन वह अन्तःकारक न होगा। आर्य जननी ही मिल-जुलकर करता है।' उन्होंने ऐसा किया होता तो उनके

बाद चार सिद्ध बुद्ध के नाम पर ही जिस तरह एकदम भिन्न-भिन्न चार सम्प्रदायों में बँट गये, उस तरह वे बराबित न बँटे होते।

बुद्ध ने ऐसा नहीं किया, एखे उनके निर्वाण के बाद उनके शिष्यों के बीच तीव्र मतभेद पैदा हो गये—चार पन्थ खड़े हो गये। चारों बहते कि 'मूठे भगवान् बुद्ध ने एंठा सिखाया है।' एक ने कहा, 'दुनिया पूर्ण सत्य है।' दूसरे ने कहा, 'नही पूर्ण है।' तीसरे ने कहा, 'विज्ञान है।' चारों वा शारा शनैला बुद्ध के नाम पर चला। हबहार वष तक उनके बीच झगड़े चले। इसलिये निर्वसता आयी और बाद में सरकारनायके प्रहार से तो एकदम शारा टूट गया।

विनोबाजी ने यह पुस्तक अत्यन्त अद्भुतपूर्वक लिखी है। उनका एक वाक्य पाठ लीजिए—'कुछ निमित्तों से मैं उनके पास पहुँच गया। उन्होंने मुझ जैसे अल्पम मनुष्य को सम्प हो गये, लेकिन खेवक जरूर बना दिया। मेरे भीतर के कोप के ज्वालामुखों का और दूसरी अनेक वाचनाओं की बहवागिन का समन कर देनेवाले तो बापू ही थे। आज मैं जो कुछ हूँ, यह सब बापू के वासीय का फलवार है। बहुत-बहुत बातें मैंने बापू के चलने में रहकर सीखी।'

सिद्धो विचारणीय पाठक के लिए इस ग्रन्थ से अनेक प्रेरणाएँ मिल सकती हैं। सन् १९२८ में विनोबाजी का प्रारंभ अत्यन्त धीन हो गया और वरन किं

८८ पीछ रह गया था। उस समय बापू ने उनको दुःखा भेजा और बहुत-सी बातचीत करने के परचात् बढ़ा—'तुम्हें शारा चिन्तन बन्द करना पड़ेगा। सारे विचार छोड़ देने पड़ेंगे। आधम, काम अथवा सिद्धो भी विषय वा विचार नहीं करना।' विनोबाजी ने उनकी आज्ञा का बराबर पालन किया और पीछिक आहार लिया तथा शारा सम्प बान्त एवं प्रशमनित से विवाया। तबीजा यह हुआ कि एत महीने में उनका वजन ८८ पीछ से बढ़कर १२८ पीछ हो गया।

यह ग्रन्थ विनोबाजी के सर्वोत्तम सिद्धो तथा प्रवचनों से लेकर बनाया गया है। पहले गुजराती में छपा था और अब हिन्दी में आ गया है। ग्रन्थ की हिन्दी भाषा में प्रवाह है। यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि आचार्य विनोबाजी ने इसे संसार मान्यता प्रदान कर दी है। गांधी और विनोबा दोनों के विचारों को समझने में यह पुस्तक अत्यन्त सहायक है। इसका अत्यन्त निराशा वा गहरी आशा वा है। अन्त में विनोबाजी का एक वाक्य उद्धृत किया जाता है—'विचारों की हमेशा ध्यानबीन होती रहनी चाहिए। सभी प्रकार विचारों का अध्ययन हो। उनमें अविचार, दुविचार के जो अब हों, उनका निवारण किया जाय। इस तरह विचारों का अनुशीलन होगा रहेगा, जो जो प्रगतिशय मात्स्य पढ़ रहा है, वह मानस नहीं पड़ेगा।' हमारी समझ में यही इस पुस्तक का महत्वपूर्ण शार है। ●

सहरसा में २३ जून से ३१ जुलाई तक अभियान की फलश्रुतियाँ

प्रत्यक्ष नामनिर्वात कार्यक्षेत्र	आम-सामनभाएँ समरंगणव	बीपा बट्टा	भूयन	राता आराता साहित्य	कविता								
सहयोगी पचापर्व	सभाएँ	प्राप्त	वितरित	वितरण	बिक्री के प्राप्क								
		प्रतिमान	प्रतिहीन	को०क०पू०	को०क०पू०	को०क०पू०	र०	प०					
मुरलीगज २०/५/३	२४	३	४०६	१२०	१२०	५४-१४-१८	८१	१२०	४६	३०	२		
छातापुर २३	८	३१	१	१८८	१४३	१२-१८-१४	४४-०६-१०	२३-००-००	६६	११६	४९	९०	
सलमुवा ११	६	१४	१९	२२४	१२०	१४-००-००							
महिषी ३	१	२	४०	१०	१०-००-००	१०-००-००			३०	६०	६२४	००	३

६४ ३१९ ८० ४८ ३१ १८८ १२९३ ११००३०२ ७६०६१८ ८२-१४-१८ १८० ३१९ ७२० १० २

मध्य प्रदेश का छह घण्टी कार्यक्रम

इन्दौर, ६ जुलाई। मध्य प्रदेश गांधी स्मारक निधि के उद्घाटन में दिनांक २ और ३ जुलाई को मध्य प्रदेश की प्रमुख रचनात्मक संस्थाओं का एक सम्मेलन इन्दौर में किया गया। सम्मेलन में स्व. धो-लदा की रजत-वर्षा-ती के खिलविले में व्यापक विचार-विमर्श के बाद छह-घण्टी कार्यक्रम सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया, जो इस प्रकार है :

(१) चम्बलघाटी और कुन्देलखण्ड क्षेत्र में गांधियों के आत्म-समर्पण से अहिंसा की शक्ति का दर्शन हुआ है। लेकिन इस महान उपन्यास के सफल और सर्वज्ञ के लिए बागी और बागी-नीहित परिवारों के पुनर्वास और क्षेत्र में स्वामी भावित के लिए व्यक्त परिश्रम करने की आवश्यकता है। क्षेत्र में स्वामी भावित के लिए ग्राम-समाजों की गठन और उनके द्वारा सामन्त-राज, बागियों के परिवारों के पुनर्वास आदि का कार्य करने के लिए कार्यक्रमों की ओर आर्थिक सहायता की बहुत आवश्यकता है। प्रदेश की सभी रचनात्मक संस्थाओं की इस महत्वपूर्ण कार्य को अपना कार्य मानना चाहिए और शान्ति-मिशन को नग्न प्रहार की सहायता प्रदान करनी चाहिए।

(२) रचनात्मक संस्थाओं को अपनी सम्मिलित और संगठित शक्ति लगाकर प्रदेश में रचनात्मक कार्य का स्वरूप प्रस्तुत करना चाहिए। प्रदेश की सभी प्रमुख संस्थाएँ मिलकर इन्दौर क्षेत्र को दंडा सदन क्षेत्र विस्तार करें और योजना-बद्ध रूप से ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य, खारी-दामनीयों, भगी-मुक्ति, मध्य-निषेध, शान्ति-सेना, स्त्री-शक्ति-जागरण आदि रचनात्मक कार्य उठावें। इसके लिए रजत-वर्षा-ती वर्ष में योजनाबद्ध रूप से कार्य किया जाना चाहिए।

(३) खारी-ग्रामों द्वारा प्रस्तावित खारी पहलूनावाले परिवारों के पजीकरण और ऐसे परिवारों की सहायता करने की योजना सब लोग स्वीकार करते हैं। जामा है, रजत-वर्षा-ती वर्ष में प्रदेश के लिए निर्धारित ५,००० खारी-परिवारों को बनाने का लक्ष्य सब लोग मिलकर पूरा कर सकेंगे और अगले ऐसा प्रयत्न कर सकेंगे तब प्रदेश के प्रत्येक गाँव में नग्न-से-नग्न एक खारीवासी परिवार बन सके।

(४) प्रदेश भर में गाँव-गाँव ग्राम-स्वराज्य का विचार पहुँचाने के लिए व्यापक कार्यक्रम आयोजित करना चाहिए। इसके लिए प्रदेश के प्रत्येक-जिले में "ग्राम स्वराज्य-सम्मेलन" आयोजित किये जायें और सभी जिलों में परामर्शों द्वारा गाँव-गाँव विचार पहुँचाया जाय।

(५) प्रदेश के बाहरी क्षेत्र में खारी, शान्तिसेना और भगी-मुक्ति तथा दामनीय क्षेत्र में ग्रामदान, खारी-ग्रामोद्योग और मध्य-निषेध के कार्य को प्राथमिकता देनी चाहिए। और रजत-वर्षा-ती वर्ष में "अपना गाँव अपना राज" की भाँति देश के सामने रखनी चाहिए। अर्थात् नोड स्वयं जानी शक्ति से प्रथम बागे-बार चलायें ऐसा कार्यक्रम जनता में पंटा करना चाहिए।

(६) प्रदेश में ग्रामस्वराज्य के लिए लोक चेतना जाग्रत करने के लिए "ग्राम-स्वराज्य-उद्योग" लेकर परचालना करने का सुझाव है।

ये सारे कार्यक्रम जिना सर्वोदय मण्डल, नगर सर्वोदय मण्डल, ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य समितियों और रचनात्मक संस्थाओं के सेना-केन्द्रों के माध्यम से चलाये जायेंगे। इसके लिए सब रचनात्मक संस्थाओं के सेना-केन्द्र समय दृष्टि से काम करेंगे और अयोग्य विविध प्रवृत्त बनाते हुए अन्य रचनात्मक कार्यों में भी म्हा-यंशत पूरी-पूरी मदद करेंगे।

जनत सम्मेलन की प्रथम दिन की अत्यन्तता सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष

श्री सिद्धराज ढङ्गा ने तथा दूसरे दिन श्री दाद भाई नाईक ने की। चम्बलघाटी शान्ति मिशन की ओर से श्री एम० एन० सुभाराव ने विदोय रूप से भाग लिया।

चम्बल घाटी शान्ति मिशन के साधियों का स्वागत

कानपुर : स्वामीकुण्डालन्ध, श्री महा-वीर सिंह, श्री तहसीलदार सिंह तथा श्री लोकमन दीक्षित का १५ जून को प्रातः कानपुर में शान्ति सेनिकों ने स्वागत किया।

प्रातः ८-३० बजे लायन्स क्लब में स्वागत किया गया। क्लब की ओर से ५०१५० की धोली भेंट की गयी। सर्वोदय मण्डल आदि नगर की संस्थाओं की ओर से १०१५० की धोली भेंट की गयी। प्रातः ४ बजे पत्रकारों के बीच में भेष्य में चर्चा की तथा सभी प्रमंशाता में कार्यक्रमों के साथ चर्चा की। प्रातः ६ बजे मानाराव पार्क में आयोजित विद्यालयों में जनता अभिनन्दन किया गया। वहाँ पर चौर व्यापारी उप की ओर से १०१५० भेंट दिये गये।

रात्रि में रोटीरी क्लब तथा रोटीरी क्लब ऑफ कानपुर के उद्युक्त कार्यक्रम में स्वागत दिया गया। ११०० रुपये की धोली भेंट की गयी। इसके पूर्व स्वागत आधम की ओर से १०१५० भेंट किये गये। इन सारे कार्यक्रम का आयोजन गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान तथा नगर सर्वो-दय मण्डल के उद्युक्त प्रयास से किया गया था।

१९ को सतनज में लगभग ५०० लोगों ने स्टेशन पर स्वागत किया।

प्रातः ४ बजे प्रेम कम शक्ति हाउस में पत्रकारों के बालवीर की तथा प्रातः ७ बजे अयोग्यता पार्क में नगर प्रमुख श्री अजयलता में नागरिक-अभिनन्दन किया गया। आयुष्मा में जिना एव नगर सर्वोदय मण्डल की ओर से ५००५० की धोली भेंट की गयी। इन अवसर पर नगर प्रमुख ने १०१५० तथा श्री हरीमू व्यास दास ने १०१५० भेंट किये।

• नखनऊ में यह घारा आयोजन गांधी गान्धि प्रतिष्ठान, जिला एवं नगर सर्वोदय मण्डल के मधुल प्रयास से हुआ था।

दुआबा में स्टेशन पर हजारों लोगो ने स्वागत किया।

१ बजे कलकत्ती कचहरी पर बड-कडाती धूप में उनका स्वागत किया गया। ३ बजे महाबल नगर में आयोजित विद्यालय सभा में उनका अभिनन्दन किया गया। ५ बजे पत्रकारों से चर्चा हुई तथा साय ७ बजे नगरपालिका, दुआबा द्वारा नेचरमैन की अध्यक्षता में नागरिक अभिनन्दन किया गया। इस छोटे शहर में १५ हजार की उपस्थिति थी। सभा में जिला सर्वोदय मण्डल की ओर से १ हजार की पैली मेट की गयी। जिला सर्वोदय मण्डल की ओर से कार्यक्रम बना था।

उ० प्र० सर्वोदय मण्डल की ओर से हीनो जिलो का कार्यक्रम बनाया गया था। —कृष्णचन्द्र सहाय

जुड़वी बम्बई का विरोध

बम्बई जैसा एक नया महानगर निर्माण करने का निर्णय महाराष्ट्र शासन ने लिया जिसे जुड़वी बम्बई कहते हैं। बम्बई के पास कुलाबा जिले के पनवेल उरण प्रखण्डों के करीब अट्टावन गाँवों की 'मि' सरदीने का प्रयास शासन कर रहा है। लेकिन इन गाँवों ने विरोध प्रकट किया है। शासन ने महानगर-निर्माण के लिए जो 'सिडनी' (सिडि एण्ड इन्डस्ट्रीज डेवलपमेण्ट कॉर्पोरेशन) नाम से एजेंसी खरीने पर रकी है उसका नाम गुरु तो हुआ है, लेकिन गाँव के सब लोग इस नाम का बड़ा विरोध कर रहे हैं। इस विरोध का कुछ भद्रा प्रदर्शन भी हुआ है। अतः यहाँ पर हिंसक परिस्थिति खड़ी न हो और परिस्थिति का अध्ययन करने की दृष्टि से एक अध्ययन-पदाज्ञा महाराष्ट्र सर्वोदय मण्डल के प्रस्ताव के अनुसार तथा कुलाबा जिला सर्वोदय मण्डल के समीक्षण में आयोजित की गयी। पदयात्रा में महाराष्ट्र से आये

दस मित्र थे। २ जुलाई को उरण में शिविर हुआ। ३ जुलाई से ७ जुलाई तक करीब पचपन गाँवों में अलग-अलग टोलियों में पदयात्री गये। पदयत्रा में गाँव के लोगो का विरोध किसलिए हो रहा है, यह जानने की कोशिश पदयात्रियों ने की तथा ग्रामस्वराज्य का दृष्टिकोण समझाया गया। महानगर की परिस्थिति को टालने का 'ग्रामस्वराज्य ही एवमात्र उपाय' है, यह समझाया गया। लोगो को ग्रामस्वराज्य की बात समझ में आनी है, यह पदयात्रियों को दिखाना। लेकिन दुआबा की परिस्थिति टालने के लिए तथा महानगर का विरोध सघटित करने के लिए विरोध प्रयत्नों की आवश्यकता है। महाराष्ट्र में उसकी चर्चा बहुत हो रही है। महाराष्ट्र के बुद्धिवादी तथा मित्रों का एक चर्चा-शिविर ९ जुलाई को पूना में गोखले इन्स्टीट्यूट के सचसक प्रसिद्ध अध्यक्षता की हुयी। एम० दाण्डेकर की अध्यक्षता में हुआ। सर्वोदय मण्डल की तरफ से श्री बाबूराव भन्दावार, श्री गोविन्द राव शिन्डे, श्री अजयल भाई, तथा श्याम कुसवणी ने हिस्सा लिया। अनियमित औद्योगीकरण का विरोध तथा उद्योगों का प्रायोगीकरण हो, आदि बातों पर सर्वोदय के मित्रों ने अत्यह रखा। गाँवों का शोषण रोना जाय इस बात का आवश्यक शिविर में हुआ। बम्बूनिस्ट, सोशलिस्ट, जनसच आदि राशनीतिक पार्टी के प्रमुख नेता इस शिविर में आये। श्री हवी० एम० दाण्डेकर ने चर्चा-शिविर का समारोह करते हुए कहा कि सर्वोदयमित्रों की तरफ से श्री बाबूराव भन्दावार ने तथा बम्बूनिस्ट मित्रों की तरफ से श्रीमती नमनताई भाग उ ने जो दृष्टिकोण रखे वे बहुत विचारणीय हैं। बम्बूनिस्ट मित्रों ने औद्योगीकरण का विरोध नहीं किया, लेकिन औद्योगीकरण में पूँजीवाद का जो नियंत्रण है उसे तोड़ने को कहा गया। जुड़वी बम्बई के निर्माण में पूँजीपतियों की प्रेरणा मुख्य रूप से काम कर रही है। इसलिए उन्होंने जुड़वी

बम्बई का विरोध किया। सोशलिस्ट मित्रों का नेतृत्व विधायक श्री मृगाल मोरे तथा श्री पन्नालाल सुराणा ने किया। उनका कहना था कि शासन का आन्तरिक हेतु कुछ है और लोगो को भुगवने में डालकर शासन जुड़वी बम्बई का निर्माण करना चाहता है। इससे आदि ६ सन्तुलन बिगड़ेंगा और महाराष्ट्र में शारीय माँगों के लिए आन्दोलन सदा होगा। 'सिडनी' की तरफ से मुख्य अंधकारी श्री कोपड़ेंका भी आये थे। लेकिन शासन का समर्थन करने में वे कामयाब नहीं रहे। मराठवाड़ा, विदर्भ, बम्बई, बरौच इन सब क्षेत्रों से करीब एक सौ विद्वान पूना के एम० पी० बालेज में एकत्र हुए। दिवंगत श्री धनत्रयराव माडगिल के नाम पर दिवंगत शकरी वजीर स्मारक की तरफ से इसका आयोजन किया गया था।

सर्वोदय मण्डल की तरफ से जुड़वी बम्बई का विरोध करने का निश्चय किया गया है। आगे किस तरह से काम किया जाय यह सेतकरी कामकरी दल तथा गाँवों के श्रमूत नेताओं की एक सभा में तय किया जायगा। यहाँ सेतकरी कामकरी दल का बहुत प्रभाव है। उनके नेता विद्यालसभा में विरोधी दल का नेतृत्व करते हैं। यह पक्ष अहिंसा तथा गान्धि के उपायों को स्वीकार करे ऐसा सर्वोदय मण्डल का प्रयास हो रहा है।

— २३.५.५६ बाबा

पुणिया जिला सर्वोदय सम्मेलन

श्री बहादुर मण्डवकी के मगत पान से २४, २५ मई, '७२ को पुणिया जिले के ठाकुरगंज प्रखण्ड में आठवाँ पुणिया जिला सर्वोदय सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। सम्मेलन की अध्यक्षता भाबार्थ रामपुत्रिनी ने की। सम्मेलन में गोविन्द सर्वोदय सम्मेलन के स्वीकृत लोहदंडिका का निर्माण तथा साक्षिक सम्बन्धों प्रस्ताव पर चर्चा हुई। श्री रामकृष्ण सिंह जिला सर्वोदय मण्डल ने गये।

सरकार का रुख अच्छा नहीं रहा तो आगे और नये ढांकू बन सकते हैं !

—विनोबा की चेतावनी—

गुजरात के राज्यपाल श्री श्रीमन्ना-रायण गत १२ जुलाई को अपने ६० वें जन्म-दिवस पर वर्षों से छ मील दूर पवनार आश्रम में आचार्य विनोबा भावे की प्रभाव करने पहुँचे तो उन अवसर पर उनकी अनेक विषयों पर विनोबाजी से चर्चा हुई। पिछले दिनों सम्भव पाटी में डाकू आत्म-समर्पण का विषय विद्वान् तो बाबा (विनोबा) ने कहा—“जब मैं पन्धरी में था तब तहसीलदार सिंह का जेल से मुझे पत्र आया था कि अगर आज मिड-पूरन का आदेश तो डाकू आपके सामने आत्म-समर्पण करेंगे। पन्धरी में यदुनाथ सिंह मेरे साथ थे। यदुनाथ सिंह यही के (मिड-पूरन) थे। ये उन डाकूओं से मिले। मैं वहाँ गया। मुख्य-मुख्य और बाणियों ने आत्म-समर्पण किया। लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया कि यहाँ की सरकार को लगा कि उनकी 'प्रैस्टिज' जा रही है। मैं तो वहाँ अपनी यात्रा के दौरान गया था। वह क्षेत्र मुझे छोड़ना ही था। तो मैंने वह क्षेत्र छोड़ा, पुलिस और सरकार, दोनों प्रतिवृत्त थे।

अभी जो जागी सम्पर्ण में आये उनमें मोघोसिंह मुख्य है। वे गुजरात मिलने आये थे। मैंने उनकी जयप्रकाशजी का नाम बताया, तो वे उत्तेजित मिले।

इस सबन जयप्रकाशजी पन्त, प्रधान (प्रधानमंत्री) से मिले, माध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान के मुख्यमंत्रियों से मिले। उनके अधिकाधिक वर्ष रह सबसे मिले। उन लोगों ने सहयोग का आश्वासन दिया। जयप्रकाशजी वहाँ गये। घटना बहुत बढ़ी हुई। जयप्रकाशजी ने सगम्भ अपना जीवन उस मार्ग में डाला। क्योंकि स्वतन्त्र्य उनका हीक

नहीं है। अरुणत जीर्ण हो गये हैं। फिर भी वे वहाँ गये और एक बड़ा काम बना।

लेकिन अब वहाँ की सरकार का रुख बदलता है। उनको लगता है कि उनकी सरकार भी 'प्रैस्टिज' जा रही है। सरकार का रुख अच्छा नहीं रहा तो आगे और नये ढांकू बन सकते हैं।

अभी तहसीलदार सिंह और लोकमन मेरे पास आये थे। दस दिन रहे। यहाँ के काम से उन्होंने काम किया। मैंने उनसे कहा, अब बागी सरद का अर्थ "बगानत करनेवाला"। पुराना हो गया। अब नया अर्थ है "बागी यानी बा"—बागिये लगानेवाला।"

साधियों से एक अनुरोध

सर्वोदय की समग्र क्रान्ति में लगे हुए साधियों में अनेक ऐसे हैं जो अपनी पारी में जाति-भ्रमप्रदाय, निन्दन तथा झूठे दिखावे आदि कृत्रिमों को तोड़ चुके हैं, अन्य अनेक ऐसे भी हैं जो इन कृत्रिमों को दूरतः पूर्वक जल्दीगार करते हैं और उनकी लंघनी है कि उनकी सत्ताओं की पारी में जाति-पारित या प्रथम न उठें, निन्दन का नाम न हो और बिसह में किसी प्रकार का टोम टाम का दिखावा न किया-जाय, ये विषय अपनी सन्तानों पर भी यही सरकार आने में प्रवृत्तगी है।

देशभर में फैले हुए ऐसे आठ विभिन्न साधियों का परस्पर सवेह सम्पर्क बढ़े तो उन्हें अपनी निष्ठाओं पर दृढ़ रहने और स-य मित्रों को उन्हें अपनाते के लिए प्रेरित करने में प्रोत्साहन मिलेगा, अतः निवेदन है कि अपना नाम व पता निम्न पते पर हमें सूचित करें। —विनय भाई गाँधी शांति-प्रतिष्ठान केन्द्र, १३/२/२९, विविन लाएन्ड, बनपुर। (उ० प०)

पत्र-सम्बन्धकार का पता :
सर्व सेवा सच, पश्चिम-विभाग
राजघ.ट, नारायणी-१
तार, सर्वसेवा फोन : ६४२११

सम्पादक

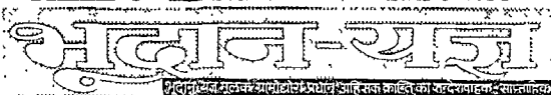
राममूर्ति

इस अंक में

परीक्षा—सम्पादकीय	१२९
आचार्य संवाद	
—श्री धरम सुमार	१६०
क्या क्यानी स्वतंत्रता हूँ सम्पादक बनायेगी ?	
—श्री बाणियाय त्रिवेदी	१६५
बाणियों का आत्म-समर्पण :	
सिंहास और स्पष्टीकरण	
—श्री देवेन्द्रसुमार सुन्द	१६५
गादी-विनोबा	
—श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	१६७
"मृती को गये शिखा दीविए"	
—श्री रामचन्द्र नवात	१६९
अभ्य रासम्भ	
आपके पत्र, आन्दोलन के समाचार	

सत्याग्रह

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र



सत्याग्रह की प्रक्रिया क्या हो ?

कुल लोग कहते हैं कि 'सूक्ष्म, सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम प्रक्रिया निकालकर बाबा ने सत्याग्रह-विचार ही हवा में उड़ा दिया।' लेकिन सोचना चाहिए कि लोक-शाही में, जहाँ मत-प्रचार की पूरी स्वतंत्रता है, पूरा अधिकार है, वहाँ विचार-प्रचार की स्वतंत्रता, नम्बर एक में इंग्लैण्ड में है, और नम्बर दो में भारत में है। विचार-प्रचार की जहाँ इतनी स्वतंत्रता हो, उस वातावरण में हमें सत्याग्रह-प्रक्रिया पर अवश्य सोचना चाहिए और उसकी छानबीन करनी चाहिए।

दूसरी बात यह कि विधान और अणुशक्ति के इस जमाने में जैसे शास्त्रात्मक बदलते जाते हैं, वैसे ही सत्याग्रह का रूप भी बदलेगा या नहीं? गांधीजी बड़े संवेदनशील थे। इतने लचीले कि परिस्थिति को देखकर झट परिवर्तन कर देते थे। तो, हमें भी सोचना होगा कि अन्ताराष्ट्रीय क्षेत्र में हम क्या कर सकते हैं ?

मैं यह नहीं कहना चाहता कि इस विषय का कोई निर्णायक रूप हमारे हाथ लग गया है। यही कहना चाहता हूँ कि इस पर तटस्थ भाव से चिन्तन हो। यह नहीं मानना चाहिए कि विनोबा ने सत्याग्रह का विचार ही उड़ा दिया। उद्देश्य यह है कि सत्याग्रह का ठीक संशोधन हो। उसकी शक्ति अकुण्ठित रहे इसके लिए विचारों का संशोधन करना ही होगा।

अन्ताराष्ट्रीय क्षेत्र में मगड़े उठते हैं, अशान्ति होती है, उस समय हमें क्या करना चाहिए, इसकी कोई मिसाल गांधीजी के जीवन में नहीं मिलेगी। वह तो आपको ही सोचना होगा। ऊपर-ऊपर सोचने से नहीं चलेगा, नये ढंग से सोचना होगा। मैं उसकी तकलीफ़ में नहीं जाता। वह तो बर्षों का विषय है। लेकिन आममणकारी भाये तो मैं उससे बर्हूंगा कि 'तुम प्रेम से आओ। बातचीत के लिए आओ। हमारे बच्चे, हमारी बहन तुमसे मिलने आयेंगी, दरंजी नहीं। हम तुम्हें प्रेम से गुलाबेंगे, लेकिन कोई गलत काम हमसे करवाना चाहो, वो साफ़ कहेंगे कि इसे मान नहीं सकते, चाहे हमें समाप्त ही कर दो।'

गरीबी : जीवन-पद्धति

गरीबी केवल गरीबी नहीं होती। कुछ पीढ़ियों तक गरीबी और भोपण में रहने के बाद, गरीबी गरीब की जीवन-पद्धति बन जाती है। तब वह सिर्फ आर्थिक न रहकर मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक भी बन जाती है। ऐसी समय गरीबी जीवन की निच घटावक पर पहुँचा देती है, उसी पर गरीब के जीवन वा 'एंडजस्टमेण्ट' हो जाता है, और वह उसी पर जीने लगता है। बच्चर उसे जलनाशन भी नहीं होगा। उदाहरण के लिए गाँव में मुसहरी को देखिए। वे सेलिहर मजदूर हैं; पैसे के रूप में मिट्टी खोदने का काम करते हैं। लोग कहते हैं—और बात बिलकुल सही है—कि जबतक मुसहूर के घर में जल वा पेंसा रहता है वह काम पर नहीं जाता। अगर जिसे जिन उसे मजदूरी में कुछ अधिक खपवा मिल गया तो मुसहूर, मुसहूरिन और बच्चे डटकर माँस और भाव खाँवें, शराज पीवेंगे, और मत्स होकर पड़े रहेंगे। जो नमाई उस दिन चल सकती हो उसे दो दिन में खूँक डालेंगे, और जब घर में कुछ नहीं रह जावगा तो फाकामस्त हालत में मात्तिक या ठीकेदार के पास आवेंगे, पेट दिखावेंगे, और वहीने 'मात्तिक, काज दो न।' दो-चार वर्ष नहीं, पीढ़ी-दर-पीढ़ी, मुसहुरों की सारी जिन्दगी इसी तरह बीत रही है। बकेने मुसहूर का ही नहीं, सारे सेलिहर थमिक समुदाय का समथन वही हाल है। गरीबी जिन लोगों को जीवन-पद्धति बन गयी है उनकी खपवा बहुत बड़ी है।

मुसहूर एक विपम उदाहरण है उस जीवन और चरित्र का जो सदियों में विनशित हुआ है। उसके विनाश की जड़ में जो कारण रहे हैं उनमें मनुष्य का मनुष्य द्वारा होनेवाला भोपण मुख्य है। एक प्रकार का चरित्र बनता है भोपण होनेवाले का, दूसरे प्रकार का चरित्र बनता है भोपण करनेवाले का। चरित्र के बनने में बहुत बड़ा हाथ रहता है उस भौतिक तथा सामाजिक-आर्थिक परिस्थिति का जिसमें मनुष्य जीता है।

तीन-चार सदीने तक भारत के गाँवों में पूँज लेने के बाद उस दिन जर्मन के आये हुए एक युवक ने कहा: "आपके देश को गरीबी कोई विरोध स्थिति नहीं, जीवन की पद्धति है।

एक 'समथ समस्या' (रोटल प्राँवदेन) है। यह समस्या सिर्फ आर्थिक कार्यक्रम से नहीं हल होगी। जायिक कार्यक्रम बहुत महत्वपूर्ण है, किन्तु सफ़ी नहीं है। कार्यक्रम समथ होना चाहिए, आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक, जो एक साथ पेट भर सके, दिमाग बदन सके, सम्बन्ध सुधार सके, और लोगों की आँसों को अनीत से हटाकर भविष्य की ओर ला सके, जीवन का सम्पूर्ण सन्धर्ष बदल सके।"

फौन बदेगा कि इस युवक की वही हुई याँँ गलत है। हमारी योजनाओं की सबसे बड़ी बमी रही है कि ये समथ नहीं हैं, एराणी हैं। वे सम्पूर्ण जीवन को नहीं छुनी। गिलग तो उनमें है ही नहीं।

गायीबी ने अपने रचनात्मक कार्यक्रम में इतनी चीजें बपो रखीं? क्या इनसे कम में काम नहीं चल सकता था! क्या इसके अधिक भी नहीं हो सकते थे। रचनात्मक कार्यक्रम में बारीकी की विविधता वा अर्थ यह है कि उन्होंने सम्पूर्ण मानव को समन रखा था तथा जीवन की समस्याओं और उनके समाधान की समथता में देखा था। यह दृष्टि हमारी आन थी बिका-नियोजनाओं और समाज-सुधार के कार्यों में नहीं है। परिणाम यह है कि योजनाएँ चतनी जा रही हैं, और सुधार-कार्य होते जा रहे हैं, किन्तु जीवन का घराजल नहीं उठ रहा है, कोई समस्या खूरी-खूरी हल नहीं हो रही है, और अगर एक समस्या हल होती भी है तो तीन नयी समस्याएँ पैदा हो जाती हैं। अब जब कि हम गरीबी हटाने की बात सोच रहे हैं तो गरीबी के साथ-साथ भोपण की जीवन-पद्धति भी मिटाने की बात सोचना चाहिए—वह चाहे भोपण करने की हो, चाहे शोषित होने की।

साम्यवाद : शासन की पद्धति

जब हम मानव, लेनिन या मार्सो की किताबें पढ़ते हैं तो हमें साम्य के सिद्धान्त का दर्शन होता है, और हम मानव की मुक्ति की प्रेरणा के प्रभाव में अपने को ऊँचा महसूस करने लगते हैं। लेनिन जब हम रूस या चीन की राजनीतिक हीनप्रिन्स सुनिया में देखते हैं तो साम्यवादो सरकार वा रररर सामने आता है। साम्यवाद सिद्धान्त के रूप में जो होता है उसके बहुत भिन्न हो जाता है सरकार के रूप में। सरकार साम्यवाद से बड़ी अधिक साम्यवादी के रूप में होती है, जो मनुष्य होता है—पैसा मनुष्य, जो दूसरे मनुष्यों पर सत्ता चलाता है, और अपनी सत्ता की बरतन रखने के लिए जो कुछ कर सकता है वह सब करता है।

वंगलोर में क्या चर्चा हुई

● सिद्धराज दड्डा

अभी एक ही में (६ जुलाई से १२ जुलाई) सर्वोच्च न्यायाधीशों का एक छोटा-सा समूह बंगलोर में एक सप्ताह के लिए मिला था, जजराजजी कुछ दिनों से स्वास्थ्य-सम के लिए वहाँ बाधे हुए थे, और बंगलोर से २० मील दूर एकान्त स्थान में एक सरोवर के किनारे उनका निवास था। बिना किसी विराम की दोड़-भाग के दिन की परिस्थिति और आन्दोलन की चर्चा के लिए अनुकूल वातावरण था।

सर्वोच्च के प्रश्न और विचार दोनों को प्राचीनी समाज-परिवर्तन की एक नयी प्रतिरोध प्रक्रिया के रूप में समझे लाने और परदेखित, शोषित लोगों को सबसे एक नयी आशा की झलक मिली। आजादी मिलने पर जब इस विचार और प्रक्रिया को धमक में लाने का मोटा काम तभी समय से बाधू तो चने गये, लेकिन बिना उनकी कलापी हुई मजान को लेकर जाने बड़े, और आजादी मिलने पर भी ज़रूरी रही हुई कानि को पूरा करने की

समस्या रखनेवाले नये-पुराने लोगों का समूह विनोदा के साथ इस यात्रा पर चल पड़ा।

इस बात को इकतीस बरस से ऊपर हो गये। हममें से बहुत-से लोगो ने इन बरसों में अपने जीवन का एक अच्छा-खासा हिस्सा इस काम में लगाया है। अब पिछले बरसों के काम का विहाय-बल-बल और जाने के काम के बारे में विचार-विनिमय करने की दृष्टि स्वाभाविक थी। देश की परिस्थिति भी, आर्थिक, और राजनैतिक दोनों, पिछले कुछ समय से एक नयी दिशा ले रही है। इस नयी दिशा को आशा और आश्चर्य दोनों दृष्टियों से देखा जा रहा है, हालाँकि बंगलोर में एकन करीब-करीब सबके मन में आश्चर्य का भाव अधिक था। सर्वोच्च-आन्दोलन का एक प्रमुख विन्दु है सोशलिज्म का विस्तार। आम जनता उत्तरोत्तर उगदा श्वास-लम्बी हो, श्वाश्वती हो, उसका अल्प-विकारा अधिकारिक जगे, उसका अधि-क्रम बर्बर और शक्ति बड़े, उठके

रोजमर्रा के जीवन का नियंत्रण उसके अपने हाथ में हो, वह स्वयं सीधे स्व-राज्य का सन्धा उपभोग कर सके यह सर्वोच्च आन्दोलन का मुख्य लक्ष्य है। इस दृष्टि से देखा जाय तो देश की आज की राजनैतिक, और आर्थिक धारा या एक गहरी चिन्ता का विषय जरूर है। आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, हर क्षेत्र में राज्य का दखल और नियंत्रण तेजी से बढ़ता जा रहा है, लोग स्मह्राय हो रहे हैं। इस चुनौती का मुकाबला करने के लिए हमारी अपनी अग्र-रचना में, काम की पद्धति या कार्यक्रम में कोई परिवर्तन जरूरी है क्या? यह सवाल भी बंगलोर की संगति में सबके मन में था।

इन चर्चाओं में हम लोगों को मदद करने के लिए दिन के करीब एक दर्जन विद्वान मित्रों और चिन्तनशील जनसेवकों को भी बुलाया था। अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, राजनीतिज्ञ—अपने-अपने क्षेत्र में इन विषयों का प्रमुख स्थान रखा है। आन्दोलन से बाहर होने के कारण वे तटस्थता से हमारे काम के बारे में क्या सोचते हैं? देश की मौजूदा परिस्थिति में हमारे लिए उनकी क्या सलाह है?

→हमें आश्चर्य होता है जब हम देखते हैं कि कृषि और श्रमिकों की शक्ति के बावजूद किसानों में निरान की महार, चीना पहिने से इहाँ जमाया बड़ा गया। ऐसा लगता है जैसे अमेरिका शिष्टनाम या जिनका ही समालोचन कर देने पर उगार हो गया है। चीन के पद्यों में अमेरिकी बम एक साधनकारी दल को समाप्त कर रहे हैं लेकिन चीन युद्ध है। एशिया की सामूहिक मुद्रा को बाध करने वाला एक निवहन से हाथ मिलाकर मालो यह कह रहा है कि हमारी ओर से निवहन रहे। सामन्तार के विद्वान्त में वर्ष दो ही थे—स्वामी और सर्वद्वार। लेकिन राष्ट्रवादी राजनीति में नानि विद्वान्त का नया रूप दिखाई दे रहा है। आन्दव वर्ग-सिद्धांत पर वर्ग-निर्द्धारण का रूप बढ गया है, और अमेरिका, एक और चीन की सरकारों का एक 'वर्ग' बनव बन गया है। यह उन्व वर्ग में देवारे विद्वान्त को स्थान बड़ा?

सरकार सरकार होती है, उसका कोई स्थायी विचार

नहीं होता। इसनाम, ईसाई, और बौद्ध धर्म को माननेवाली सरकारें हुई हैं, फासिस्टवादी और साम्यवादी सरकारें हुई हैं, लेकिन गुणों की दृष्टि से एक सरकार और दूसरी सरकार में क्या अन्तर हुआ है? विचार सरकार नहीं समाज की चीज है। इसलिए ऐसी सरकार मनोमन है जिसमें सत्ताधारी कम से कम बदलते ही रहते हैं। किसी 'बाद' का नाम लेने वाले सरकार में जाइर स्वतन्त्रता दक्षिण होती है क्योंकि वे अपने से मित विचारवादी को धनु उल्लसने लगते हैं, और एक बार सत्ता हाथ में आ जाती है तो उसमें उचित-अनुचित हर सम्भव उपाय से बने रहते ही ही शोषण करते हैं। साम्यवाद में मानव मुक्ति की प्रस्था बाहे विनोद हो, राष्ट्र, दल और शासक की विधि सत्ता से जुड़कर उसने अपनी मूल प्रेरणा ली थी। इसलिए अब मनुष्य के सामने राज्य की सत्ता से मुक्ति का उठना ही बड़ा प्रश्न है विनोद बड़ा प्रश्न शोषण से मुक्ति का है।

जब कभी किसी काम के बारे में भी भूलकाल पर नजर डालने बैठते हैं तो स्वाभाविक ही छोटी-मोटी कई ऐसी बातें ध्यान में आती हैं जो बंद लगती हैं कि करने या न करने से काम के तरीकों में और परिस्थिति में फरक पड़ा होता है। भूदान-ग्रामदान जैसे आन्दोलन के बारे में भी, जिसमें हमने व्यापक पैमाने पर देशभर के हजारों कार्यकर्तानों ने बराबरी तक काम किया ही, ऐसी बातें ध्यान में आये, यह ताज्जुब की बात नहीं है। बल्कि ऐसा न ही तो ताज्जुब होगा। इन सब बातों को गिनती करने या ज़बुद उपभोग नहीं है, पर बंगलौर की चर्चाओं में एक बात सभी को लगी कि एक ही काम पर ध्यान केंद्रित करने का लाभ होते हुए भी इसके कारण भूदान-ग्रामदान आन्दोलन में लगे लोगों के बारे में आम तौर पर यह धारणा बन गयी है कि वे लोग एशानी और सक्रिय हैं। हमारा काम आग्रह-शक्ति और देश की परिस्थिति से बड़ा हुआ चलता है और इसलिए लोग इसे दूरपामी दृष्टि से अच्छा मानते हुए भी इसमें उनका दिल-पस्पी नहीं लेते, क्योंकि उनको तत्काल की समस्याओं और मुसीबतों का उन्हें इसमें कोई हल नजर नहीं आता।

बंगलौर में दो बातें फोड़ी सार्वजनिक लेकिन सख्त धोखा देनेवाली सामने आयी। सर्वोदय-कार्यकर्ताओं को एक सवाल का सामना बनकर करना पड़ा है कि वे राजनीति में काली चुनावों में हिस्सा क्यों नहीं लेते? राजनीति से दूर क्यों भागते हैं? जयप्रकाशजी को खास तौर से सावधान या सार्वजनिक रूप में एक सवाल का जवाब देते-देते कई बार परेशान होना पड़ा है। हममें से नयी पीढ़ी धारणा थी कि देश की बिल्कुल जा रही परिस्थिति के सम्पर्क में इस तरह बाहर के विचारों की ओर से, खास तौर से हमें भूलकाल के लिए, यह उताहना और आगे के लिए सलाह सुनने की मिलेगी कि हम लोगों को

चुनाव की राजनीति में हिस्सा लेना चाहिए। लेकिन सितारा एफ के बारे में उन्होंने भी बाद में इसपर जोर नहीं दिया—किसी ने भी मूढ़ बात नहीं कही, बल्कि इस बारे में सर्वोदय-आन्दोलन की नीति का समर्थन ही किया। दूसरे, उन्होंने इन बात का भी समर्थन किया कि हम लोग ग्रामस्वराज्य के, नीचे से बुनियादी सामाजिक दशाओं को मजबूत करने के, जिस काम में लगे हुए हैं वही आम की परिस्थिति में उपयोगी और आवश्यक काम है।

बंगलौर की चर्चाओं से हमारे आगे के काम के बारे में दो-तीन बातें स्पष्ट हुईं। ग्रामस्वराज्य का काम बुनियादी और मुख्य काम है। देशभर में जगह-जगह जहाँ भी सम्भव हो, सबन सैन लेकर उनमें ग्रामस्वराज्य के काम में शक्ति लक्ष्मी चाहिए। जहाँ तक हो सके सबन शोको का विचार एक, दो या अधिक धारासभाई चुनाव शोको के विस्तार से मिलता हुआ हो जिसमें संगठित ग्रामसभाई समय आने पर इन चुनाव शोको में वे अपने प्रतिनिधि लड़े कर सकें। ग्रामस्वराज्य के काम की सौदी यही है कि उस क्षेत्र के आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, सारे जीवन पर सशक्ति जनता का नियंत्रण हो।

लेकिन ग्रामस्वराज्य के इस बुनियादी काम को करते हुए हमें देश की मौजूदा राजनीतिक, आर्थिक शक्तियों तथा शक्तिविधियों के प्रति उर्ध्वा नही बरतनी चाहिए। हमें जागरूक और सावधान रहकर इन बातों के बारे में समय-समय पर अपनी निगरान राय बाहर करनी चाहिए। इसका हो नहीं, लोकासन में वास्तव रखनेवाले अन्य भागिरीको, शासक गण-विचार की दृष्टि से जीवन के विभिन्न शोको में काम कर रहे व्यक्तियों के साथ मिलकर बिलकुल ही परिस्थिति पर रोक लगाने और उठे मुद्दामें के लिए काम करत चाहिए। ये काम बिलकुल भारतीय और प्रयोग, दोहा शर्तों पर

करने चाहिए। देश के शक्ति विचार और राजनीतिक जीवन पर असर डालने की कोशिशों के बारे में हमें उदासीन नहीं रहना चाहिए। जन-जीवन के रोषमरों के प्रकोपों में भी हमें सक्रिय लक्ष्मी लेनी चाहिए, शासक के अन्याय के प्रतिहार में। ग्रामस्वराज्य के काम के लिए जो सभ्य शक्ति चुने जायें उनमें तो इन कामों की हमें करना ही होगा, दूसरी जगहों में सर्वोदय कार्यकर्ताओं को इस बारे में सक्रिय होना चाहिए। इन कामों के कारण जनता से हमारा सम्पर्क बढ़ेगा, उनका विश्वास प्राप्त होगा और ग्रामस्वराज्य के काम में उनकी दिलचस्पी बढ़ेगी। जहाँ से सर्वोदय-कार्य की सम्भार उद्योग-व्यवहार और मजबूत शोको में दृष्टीकरण के विचार को, आगे बढ़ाने पर विशेष ध्यान देना चाहिए, एक पर-भी बंगलौर की चर्चाओं में जोर दिया गया।

जिस तरह बंगलौर में बिलकुल भारतीय स्तर से चर्चा हुई उसी तरह प्रश्नस्तर पर आन्दोलन में लगे हुए कार्यकर्ता तथा दूसरे तक विचारों के साथ समय समय पर हमारे काम का सिद्धांत-तार्किक हो तो उभरे आन्दोलन में प्राण आयेगा और उठे शक्ति मिलेगी यह सबने महसूस किया। हम मुद बनकर अपने काम और उठके बसर के बारे में शक्ति रहते हैं पर परिस्थितियों ऐसा बनती जा रही है कि आगेवाक दिनों में लोग का ध्यान सर्वोदय-आन्दोलन को और अधिक आकर्षित होगा। हमें सर्वोदय के इस ऐतिहासिक 'रोज' की पुष्टि में वास्तव, विश्वास और साहस के साथ जुटे रहना चाहिए। ●

नयी तालीम

हिंदी मासिक

वार्षिक चन्द्रा : ८ रुपये

सर्व संस्था सच, पत्रिका विभाग
राज्यदा, बाराणसी - १

गरीबी दूर करने की आर्थिक योजना कृषि और ग्रामीण उद्योग

● के० अरुणाचलम्

देश ने पिछले २५ वर्षों में कृषि और उद्योग के क्षेत्र में बड़ी उर्ध्व गति की है। परन्तु विकास का फल गरीब के घनी लोगों तक सीमित ही रहा है। ग्रामीणों और गरीब लोगों को यह छू तक नहीं गया है। इन वर्षों में गरीबी और बेकारी बढ़ी है। श्री अटलजी और नीलकण्ठ राय के अध्यक्षता में इसका उल्लेख है। उन्होंने यह अध्ययन पूना के 'इंस्टीटयूट ऑफ पॉपुलेशन स्टडीज' की ओर से किया था। उनके अनुसार १९६०-६१ में, ग्रामीण संख्या के ४० प्रतिशत लोग, और नागरिक आबादी के १० प्रतिशत लोग गरीबी की शक्ति के नीचे थे अर्थात् एक सप्ताह उन्हें मिल रहा था जो कैलेंडर की दृष्टि से भी कम था।

राष्ट्रीय आय १२ वर्षों में १९६०-६१-८०-८१ में दुगुनी हो जायेगी और प्रति व्यक्ति आय ५२ प्रतिशत बढ़ जायेगी। अगर यह होता भी है तो विकास का साथ बढ़कर तब से गरीब और अमीर को नहीं मिलेगा। वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि देश में योजना की आधुनिक पद्धति से घनी और घनी होये, गरीब और गरीब होंगे। दूसरे अर्थशास्त्री डा० महबूबलहक ने हाल ही में यह दृष्टिकोण दिया है कि आरम्भ के नमूने जिनमें अधिक ध्यान जी० एन० पी० पर दिया गया था आवश्यक उत्पादन की बढ़ोतरी के उठने अतिरिक्त देशों में उत्पाद और बेचनी पंजा की। उनका दृष्टिकोण है कि उत्पादन और विभाजन की उलटी नीति एक धोखा और अन्तर्-भेद है, अतः विभाजन की नीति उत्पादन की नीति के अनुसार हो। डा० हक ने चार महत्वपूर्ण बातें अपने लेख में लिखी हैं जो जनवरी में "इनाइट" में

में छपा है, बिन्हे अन्तर स्कोर और बायॉमिन्स किया गया तो गरीबी और बेकारी की समस्या में दरार पैदा कर देंगे। ये विचार नये नहीं हैं। श्री जे० वी० कुमाराजनी ने सितम्बर १९५६ में लोकसभा में ये विचार व्यक्त किये थे। ये 'सर्वोदय और समोजन' नामक सर्व संघा सभ की पुस्तिका में भी है। उन्होंने कहा है कि "आमतौर से जैसा कि समझा जाता है भारत में प्रश्न केवल राष्ट्रीय प्रति व्यक्ति आमदनी बढ़ाने का नहीं है।"

जबकि इस बात की है कि कम-से-कम आयवालों की आय बढ़ायी जाय, गाँव के रहनेवालों को जिस चीज की सुरक्षा जरूरत हो उन्हें दो जाय या उनकी मदद की जाय कि वे ये चीजें स्वयं बना सकें। उन्होंने योजना के हर उद्देश्य का विश्लेषण किया है।

चेंडे :

(१) रहन-सहन का स्तर बढ़ाने के लिए।

(२) कृषिवादी और शारी उद्योगों का तेजी से औद्योगीकरण—विनाश पर विशेष जोर दिया जाय।

(३) काम देने का बड़े पैमाने पर अवसर।

(४) आय और सम्पत्ति की समता में कमी करना तथा आर्थिक शक्ति का और अच्छा विभाजन। उन्होंने दिखाया है कि उचित राजनीतिक कार्यक्रम और परिवर्तन के दृष्टिकोण के अभाव में बेकारी और गरीबी को दूर करना असम्भव है।

श्री त्रयप्रकाश नारायण ने भी कई बार यह बात कही है कि लाखों ग़रीबों की कोई भलाई नहीं हो रही है। १९६१ में आगम प्रवेश के अगस्त सर्वोदय

सम्मेलन में उन्होंने अपने भाषण में औद्योगीकरण, विदेशी सहायता, शोध-कार्य अर्थात् पूरे विकास-पद्धति पर गये विचारों से सोचने की सलाह दी थी। इस पर अगरी स्तर पर विचार किया गया, और कुछ ज्यादा नहीं किया जा सका। एक ग्रामीण उद्योग योजना समिति बनायी गयी, परन्तु निश्चित स्पष्ट नीति के न होने के कारण इसका कोई नतीजा नहीं निकला। कुछ आलोचकों का कहना है कि सारी प्राथमिकता आयोग और दूसरी संस्थाओं को एक अवसर मिला था कि स्वयंसेवक और विकेंद्रीकरण के द्वारा अर्थव्यवस्था में अपना रोल अर्थ करें, परन्तु वे अपना उत्तरदायित्व निभा देने में अक्षम रहें। ये मित्र पूरी कहानी नहीं जानते। कई मामलों ने तत्कालीन सिफारिशों के साथ विभिन्न क्षेत्रों में परस्पर उत्पादन का कार्यक्रम बनाया था। इसे सरकारी स्तर पर नीति-निर्धारण और आर्थिक सहायता की आवश्यकता थी। चूँकि यह नहीं हो सका इसलिए परिणाम न मिल सका। विकेंद्रीकरण किये हुए क्षेत्र समर्थित क्षेत्र की शर्त-बारी में नहीं आ सकते। कमियों के होते हुए भी सारी और ग्रामीण उद्योग ने २० लाख लोगों को काम दिया जो १०३ करोड़ के इस्तेमाल के सामान और ९० करोड़ के बाजार के सामान तैयार करते हैं। यह सब ७३ करोड़ के उस कर्ज से हुआ जो ३१ मार्च १९७० को खत होनेवाले साल में मिला था। सारी ग्रामीण उद्योग ने चौबी योजना में उठते दुगुना लोगों को काम देने की तैयारी की थी, परन्तु उसके लिए पूँजी और नीति की आवश्यकता थी, जो नहीं हो सका।

एक दूसरे अर्थशास्त्री डा० लोकनाथ ग्रामीण उद्योग का प्रचार करते रहे हैं, इसलिए कि उसके गाँव को काम मिलता है। इसके कारण गाँव के लोग गरीबों में जाने से बच जाते हैं, जहाँ कि उन्हें बड़ी शक्ति प्राप्त है। इसमें रहना पड़ता है, और जहाँ रहने की कोई आसानी नहीं होती। ग्रामीण उद्योग से जो लाभ मिलते हैं उनका उपयोग

के कम-से-कम सर्वे से मुकाबला किया जाना चाहिए। वास्तव में प्राचीन, गृह उद्योग के समर्थन में सबसे बड़ी बात यह कड़ी बाजी है कि इसके कारण लोग गांव से उखड़ने से बच जाते हैं और उन्हें खराब वातावरण में नहीं रहना पड़ता। नगर के औद्योगीकरण के सामाजिक मूल्य भयकर हैं, और किसी भी ऐसी नीति में जिसमें लोगों की आमदनी बढ़ाने की बात की जाय, उसमें इस बात पर ध्यान दिया जाय कि बड़ी हुई आमदनी की प्राप्ति बिना अधिक सामाजिक मूल्य चुकाये हो। इसलिए गरीबी हटाने और भौतिक विकास के निम्न मांश के औद्योगीकरण की बात में काफ़ी जाय है। परन्तु गरीबी दूर करने के रास्ते में कौन-सी बाँटें स्वीकार हैं? जैसा कि बताया जा चुका है यह उद्देश्य महत्त्वपूर्ण है और उसे नजरअन्दाय नहीं किया जा सकता। दूसरी बात यह है कि केवल क्षेत्र मध्य ही न की जाय बरिन्त कुछ क्षुद्र और गृह उद्योगों के क्षेत्र सुरक्षित रखे जायें। जहाँ दोनों क्षेत्रों को काम करना हो, और वह भी विभिन्न शिष्य में तो वहाँ कर्षे आयोग का उद्घाटन नार्पकम स्वीकार कर दिया जाय।

कुछ अर्थशास्त्रियों और राजनीतिज्ञों का क्यात है कि छादी के वार्पकर्ता विज्ञान और तकनीकी के प्रयोग के विरुद्ध हैं, यह खतर है। हर औद्योग छादी वार्पकर्ता देश के साधनों से हिंसा चाहता है, और वह यह भी चाहता है कि राष्ट्र के आर्थिक कार्यों में हर व्यक्ति भाग ले।

हाल ही में प्रधान मंत्री और योजना मन्त्री ने सामाजिक न्याय की बातें की हैं। उन्हें देश से गरीबी दूर करने की जरूरी है। हमें इसका स्वागत करना चाहिए और प्रशासन के सभी भागों में सहयोग करना चाहिए ताकि देश के हर भागों की मौलिक आवश्यकताएँ पूरी हों और लोग कृषि-औद्योगिक विकास की योजना के अन्तर्गत स्वयं जीवन बिता सकें। ●

सन् १९७१ का वस्तु हुआ और भारत के पूर्वी सिंथिज पर चार नये राज्यों का उदय हुआ। अरुण के पांच टुकड़े हुए। राज्यों के टुकड़े होना, नये नगर बसाना, इस बात के नगाड़े अपने-अपने तरीके से बड़े जोरों से बजते हैं। बम्बई और चंडीगढ़ उसके उदाहरण-स्वरूप मौजूद हैं। लेकिन भारत के इस पूर्वी क्षेत्र में हुए स्थितियों के बारे में सभी क्षेत्रों में आम तौर पर उदासीनता ही देखी गयी।

यह उदासीनता प्राचीन है। अरुण के पांच टुकड़े होने के पहले भी इतनी ही उदासीनता थी। उसमें कोई फरक पड़ा नहीं। इन राज्यों में अरुणाचल प्रदेश केन्द्रशासित प्रदेश बना है। पहले इली विभाग को 'नार्थ ईस्ट कांथियर एरेंज्यो' के नाम से (नेडा) पहचाना जाता था। हम लोग भी यह मानते थे कि वह सीमावर्ती हिस्सा है और यहाँ की कुछ समस्याएँ होंगी तो वह सीमा से सम्बन्धित और विशेषतः सेना से सम्बन्ध रखनेवाली होंगी। उसके बारे में हमें विचार करने जैसी कोई चीज होगी इसकी जरूरत भी नहीं होती थी।

१९६२ के भारत-चीन-टुट्टे ने हम पर कई उपहार किये हैं। उनमें यह भी एक है कि एथाप ध्यान भारत के इस हिस्से पर पया। आज शान्तिसेना मण्डल के ६ केन्द्र यहाँ हैं और निष्ठावान २० वार्पकर्ता काम कर रहे हैं। आरम्भ की बात है कि इस क्षेत्र में ईसाई मिशनरियों ने प्रवेश नहीं पाया और शायद सर्वोदय चालों के लिए यह क्षेत्र सुरक्षित रहा।

इस प्रदेश की आबादी चार लाख पंचासी हजार तथा भूमि ३१,६०० वर्गमील (सपथय) है एंसा कहा जाता है (भूमि के बारे में अविशुद्ध रूप से आकड़े उपलब्ध नहीं हैं)। १६में पाँच जिले हैं जिनमें चार को उत्तरी भागों,

मुखतः तिनज (चीन) की सीमा है और एक को दक्षिण की ओर है यह बर्मा की सीमा है। ऐसे आम तौर पर अज्ञान प्रवेश की समस्याएँ कौन-सी हैं? अरुणाचल की समस्याएँ अपेक्षित की समझाएँ

सभी प्रकार से उपेक्षित ऐसा मह प्रदेश है। इस प्रदेश में १७ वीं शदी की औद्योगिक क्रांति अब तक हुई नहीं-इस अणुयुग में भी। ये लोग अभी भी ४०० वर्ष पीछे हैं।

भाषा और संस्कृति

अत्यन्त छोटे-से इस प्रदेश में (भारत के मध्यम दर्जे के किसी नगर को जनसंख्या से आसानी से तुलना हो सकती है) ४९ भाषाएँ हैं। इसका मतलब यह है कि ४९ सरकड़ियों का उदय यहाँ हुआ। उनके रीति-रिवाज अलग, सामाजिक व्यवस्था अलग, सामाजिक संगठन के प्रकार भी अलग-अलग हैं। इनको रंगेर जाने अरुणाचल को समझना मुश्किल है। किसी एक ही जमात में कुछ रीति-रिवाज अत्यन्त सुघरे हुए-आधुनिकतायुक्त होते हैं तो उसी में कुछ बहुत ही पिछड़े हुए। लेकिन उन सभी से बने हैं, उस समय की विचार-पूर्वक माँग के अनुसार बने हैं, एंसा लगता है। आज भले ही उसकी उपयुक्तता नालबाह्य हो। इनकी भाषा तिब्बती, आसामी तथा संस्कृत शब्दों से बनी है। अर्थात् जहाँ-जहाँ जिस भाषा की सीमा है, उसका अरुण भाषा और संस्कृति दोनों पर होना अनिवार्य है। एंसा होते हुए भी इस क्षेत्र में इस प्रकार का अरुण रूप हुआ है। इसका कारण मुख्यतः आशाजनक की परिणामस्वी तथा अपनी सीमा से बाहरवाला अरुण दुश्मन ही होगा इस तरह की भावना। इस भावना के कारण हमेशा इनमें छोटे-मोटे संघर्ष, मायाकृती हुआ करती थी।

नरहत्या का लक्षण प्रविष्टा का लक्षण !!

विरप जिले में सेतुवा गाँव में गाँव बूढ़े के नियंत्रण पर उसके घर गया। घर में श्लेष करते ही बरामदे में बाँस की रक थी जिसमें नर-गुण्डों को (खोपड़ी) रखा कर रखा था। अन्याय ही उसके बारे में मैंने सवाल पूछा तो गाँव बूढ़े ने शोना तन कर कहा कि यह सबसे ऊपर कतार है— हमारे परदास पराक्रम से २० सन्तुओं के विर नाटक कर लिये थे और दूसरी कतार हमारे दादा लामे हुए हैं—जब हमारा नम्बर लगा नहीं कि यह सरकार कापी और यह सब बन्द कर दिया। मैंने कहा, चलिए हम सरकार से बहते हैं कि हमें एक-दूसरे को मारने के लिए इजाजत दें। गाँव-बूढ़ा मोटा विचार में पड़ा, बाद में उठने लहा, "नहीं जी, वैसे तो मनुष्य मनुष्य को मारे वह कोई अज्जी बात सोहू ही है ?" उसके मन में इन दोनों चीजों का आदर देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। और ! इस प्रवृत्ति के कारण नदी का मोड़ और पहाड़ की सोमा यवाकर उठे इन लोगों ने कभी पार नहीं किया। कई सालों से क्या कई युगों से उनका एक अपना ही विश्व, अपना समाज, और जर्मों ने घुलमिलकर सुख से, बँस से, आराम से, चिन्ता रहित, जीवन व्यतीत करते हैं। किसी जाति में तो एक युवक को पाँच लियों २५ पुत्र-पुत्रियाँ; २५ में से किसी को पशु उठा ले गया, कोई चट्टान पार करते समय लुटक गया, कोई किसी रोल से मरा, तो भी आठ-दस तो जीवित रहते ही हैं। फिर रोग हो तो क्यों चिन्ता घर में अनाज नहीं हो तो क्यों चिन्ता और धनडाँ तो, सोचो-न्याह में कभी लिया जाता है, अपनी लपेटो रहनी हो है। मुख्य प्रश्न पेट का !

दूसरी जिले में मैंने देखा कि लोगो का मुख्य भोजन पशु है (बाँस) अनाज तो पूरक है। स्थिति यह है कि निर्बद्ध अस्थियों और पहाड़ो-भस्त्रियों के होते हुए आश्चर्यक पशु (बाँस, विह

बादि) तो हैं ही नहीं। शेरुवा गाँव में तो गाय या बैल या ही नहीं। मैंने पंख चतले हुए गायों के घुंघरू देखे थे (यहाँ की गाय बहुत ही छोटी होती है)। इसलिए पूछ बंटा तो जवाब मिला कि वह पशुधारी गाँव की है और वह भी बहुत कम है। यहाँ गाय, बैल एवं बछड़े को खाया जाता है।

सेवाग्राम में गो-धेबा या अन्धास करते समय हमने धरुदापूर्वक गुना था कि "गाय इवेत परसस एनिमस" है। हमारी पुनीत तथा अत्यन्त प्राचीन संस्कृति में गाय को जो स्थान है वह इस कारण है। मेरे भारतीय गाय विपर्यक प्राचीन संस्कारों पर यह पहना आयात था।

लेकिन विचार करता हूँ तो अन्धा-पल के बारे में "जीवो जीवन्त्य जीवन्तम्" यही जीवन का आधार भावम पठता है। और ! पशु-संख्या घट रही है मनुष्य-संख्या बढ़ रही है, खेती सिर्फ मनुष्य-शक्ति से तथा अत्यन्त पुराने औजारों द्वारा (सूक्ष्म औजार तो हाथ पर ही हैं।) होती है। धान मुख्य पसल होता है, फल, सब्जो आदि होने लगा है लेकिन असम से लगे प्रदेशों में या जहाँ प्रचल-पूर्वक कुछ किया गया है वहाँ, मिलिटरी सैन्यों के समीप आदि क्षेत्रों में इन चीजों का प्रभाव बच्चों के भरण-पोषण पर हो रहा है। प्रोटीन, विटामिन, फैट आदि की कमी से होनेवाले रोग प्रचुर मात्रा में हैं।

दूध उदय वस्तु नहीं बच्चों की दूध से ही सभी प्रकार की भरण-पोषण की चीजें प्राप्त होती हैं लेकिन यहाँ भी परम्परा और संस्कृति में दूध तो स्वच्छान का विषय, माँ-बेटे के बीच का विषय होता है। असम से किसी गाय का या पशु या दूध नहीं निकाला जाता। हमारे मुँही केन्द्र में (अस्माचल) जब गाय रक्षी और बछड़ा होने पर दूध निकालना शुरू किया तो गाँव का 'केवांग' (पंचायत)

हुआ और कार्यकर्ता को बेताबनी से पयो कि बछड़ा दुबला दोष रहा है, भाग लोप उभरा दूध पीते हैं अगर बछड़े को कुछ हुआ तो माप जिम्मेदार होने और इसके लिए कम-से-कम एक मिथुन (अस्माचल की गाय और भेड़ के बीच का प्राणी-समय प्रत्येक की ६० १२०० से १५००) देना होगा और निर्णय तो केवांग में ही होगा। तथा इसके भी बड़ सकती है। वाज यहाँ सफलतापूर्वक दो गाँव पायी जाती हैं, और इनका दूध भी शिकता जाता है। लेकिन इसके लिए काफी लम्बे समय तक इन्तजार करना पड़ा।

अस्माचल की गायों से दूध प्राप्त करना हो तो पार्यों की दो पीढ़ी बिना दूध की पालनी होगी तब दूध मिलना शुरू होगा।

अस्माचल प्रदेश में बराह और कुतुर के शिवा और किसी की पशु को पाला नहीं जाता।

क्या अस्माचल नागालैण्ड जैसे समस्या येनेगा ?

इन सारी चीजों को देखते हुए लगता है कि कुछ प्रयत्न नहीं किये गये तो विरप जिले का यह भाग अभावग्रस्त होगा, बहुत ही नजदीक भविष्य में अभावग्रस्त होगा। यहाँ छात्रावासों में आदिवासी लड़के पढ़ रहे हैं, उनमें जागृति आयी है। अपने अधिकारों के लिए 'हुड़ताल' करने की आनकारी जगह हुई है। स्त्रियों से बाहर आने के बाद शहें कोई काम नहीं मिलेगा फिर किसी हिसक संगठन का कोई बुरका पहनकर ये लोग असम के सघन क्षेत्रों पर जाके नहोे डालेंगे तो क्या करेंगे ?

कम-उशादा मात्रा में पूरे प्रदेश में यही स्थिति है।

सरकार इस बारे में प्रयत्नशील जरूर है, लेकिन लोगो तक कई कठिना-दसों के कारण पहुँच नहीं पायी है, समस्या के मुकाबले में प्रयत्न दरगो में बहुत बड़े दीखते हैं, समस्यायुक्ति के लिए नाप्य है।

मुख्य समस्या की जागरूकी न होना अरणाचल प्रदेश में जहाँ भी मैं गया यह सवाल पुछता रहता कि आपकी अड़चन क्या है ? क्या करने से आपको सुख मिलेगा ?

बिभी गाँव ने कहा, हमें स्कूल चाहिए तो किछो ने कहा, पानी का नल । एक गाँव की सभा में इस माँग को सुनकर मैं आश्चर्यचकित हुआ कि उन्हें तीन भाषा शिक्षा के लिए स्कूलों में शिक्षक चाहिए : अरेंजी, असमी, हिन्दी । इनका रहन-सहन, पोसाक, पर आदि यहाँ ४०० वर्ष पुराने जमाने के तरीके के हैं, लेकिन बुद्धि कम नहीं भाग्य भूरे । सवाल सिर्फ यही है कि इसे दृढ़ता ही सख्त रखकर उपयुक्त तथा रचनात्मक कैसे बनायें ।

करीब तीन माह के अरणाचल के मेरे भ्रमण में जिन्से ने यह नहीं कहा कि हमें सनातन की कमी है या परत की । (यहाँ तो रिपब्लिक भी बहुत कम ही बरत पहनती हैं, बमर में छोट-सा बरत होगा है बाकी पूरा शरीर-छाती भी निर्वस्व ही होती है) । भारत के करीब सभी आदिवासियों के बरत के बारे में यह स्थिति कम अधिक-मात्रा में पायी जाती है । लेकिन अरणाचल प्रदेश के उम्हें यहाँति वायुमण्डल में बरत की आवश्यकता अधिक महसूस होती है । फिर सस्कार का भी सवाल है । कपड़ा किन्सा हो ? किन्सा शरीर ढँका रहे ? अरणाचल प्रदेश ने इस प्रकार के सवालों को, जो कम-आयाद-मात्रा में सेवा-कार्य करने-वालों के सामने आते ही हैं, नम रूप में सामने रसा है ।

शिक्षा की समस्या—कुत्तों की पूँछ !

एते प्रदेश में जहाँ एक भी उद्योग नहीं है, (उद्योग की मोडरन म्यासार्थ के बनुसार) मातायात के साथन नगण्य है तथा भौगोलिक स्थिति और जनसङ्ख्या-आधन्य विरल होने तथा पहाड़ी दलके के कारण 'व्यापार' के लिए बहुत कम गुनाइस है । नल कारखानों की जो

पुछता ही गया । उनको तो बौर-रास्ता-भोट के चलेगा ही नहीं । एते स्थान पर भी नगरी शिक्षा-प्रणाली धड़ल्ले के साथ चालू है । अरणाचल में शिक्षा पर काफी धनराशि खर्च हो रही है लेकिन यह उपयोगी सिद्ध नहीं होगी ।

उत्करोते खर्च पर आधुनिक हाइस्को में १५-१६ वर्ष तक रहने के बाद, विद्यार्थी-पीयन से मुक्त होने पर कितने छात्रों को नोकरी मिलेगी ? अरणाचल में तो बहुत कम गुनाइस है । गिनती में तो नगण्य ही मानी जायेगी । छात्र-जीवन से मुक्त होने पर वह अपने घर में मदद करने की मानसिक शक्ति लां बँटवा है और शरीर को तो वादत ही नहीं होगी । फिर, पिता के साथ विनार में हाँकता फिरना, खेतों से उखे पूणा होनी, क्योंकि छाय से काम कैसे करेगा ? यह चाहिए-नल चाहिए ? अब नैष्ठ में यह उखे साथ फन जायेगा ? नल वा हृष अरणाचल में चलने के लिए बहुत प्रयत्न करने पर भी अभी दो पीढ़ी गुजरेंगी । मोडुबा पीढ़ी वा क्या होगा ? स्कूलों में तो जीवन की समस्त बनाने की सारी शक्तियाँ छोड़ी जाती हैं, भुलाई जाती हैं, और फिर उनसे पूणा भी होती है । हमारे यहाँ शिक्षा की समस्या भी ऐसी ही है । अरणाचल में नये सिरे से शिक्षा शुरू हो रही है । वहाँ भी विज्ञानी शिक्षा ही शुरू की गयी है । अन्त्यासक्रमों में या छात्रावासों में कुछ सस्कार देने की 'जीवन-शिक्षा' तो वात सिखो है लेकिन उखे शिक्षक और शिक्षाप्रदायी ही समझे नहीं तो वह छात्रों तक कैसे पहुँचेंगे ?

अरणाचल एते प्रदेश में जो अभी प्रारंभ से अभावग्रस्त है और प्रकृति ने जहाँ अपनी सम्पत्ति दोनों हाथों से खर्चली है वहाँ की शिक्षा इस प्राकृतिक सम्पत्ति वा उपयोग मनुष्य जीवन को स्वावलम्बी तथा सम्पन्न बनाने में कैसे कर सक्ती है, इस उद्देश्य को लेकर अभी प्रवृत्तियाँ शिक्षा—प्रवृत्ति भी चलनी चाहिए ।

अरणाचल में भूमि-समस्या नहीं है—

भूमिहीन कोई नहीं है । ऐसी स्थिति में समस्या की जानकारी देना तथा रचनात्मक, और सनातनिक पराक्रम-जाग्रत करने का कार्य है । समाज-रचना ऐसी है कि लोग एकत्रित हो सकते हैं ।

पामदान स्कूल रूप से हो चुका है । नगरी सक्रिय का प्रेरक बरतन नहीं है, इसलिए आदिवासी 'पामामिमुन' खो हैं ही । उनकी इस प्रामामिमुनता को संगठित और बलिशील बनाने की चुनौती है । इस चुनौती को स्वीकार कर बिनापूर्वक युवक पहुँचेंगे तो (वे अपने को आदिवासी नहूँते है) 'आदि-स्वराज्य का धीरणीय उनके धीरज तथा पराक्रम के हाथों में रहेगा । सोना पर काम कर रहे विची भी हीनक से यह कार्य महत्व का है, उपयोगी है, और आवश्यक है ।

दल सीमावाधियों की अभी हमारे बारे में अनजान नहीं है । होगा भी कैसे ? प्रचलित देश-धर्म की भावना से वे लोग परे है । उन्हें अपना बनाना चाहिए, स्वावलम्बी, संगठित बनावा चाहिए । उनकी भुवालों में अभी बल है उखे रचनात्मक प्रेरणा की आवश्यकता है । सर्वोदय जगत को, विधेयन, सर्वोदय प्रेमी युवकों को यह चुनौती है ।

सौराष्ट्र में सर्वोदय साहित्य-प्रचार

सौराष्ट्र रचनात्मक समिति ने सर्वोदय साहित्य-विज्ञानी-योजना को सौराष्ट्र में कार्यन्वित करने के लिए अपने यहाँ एक युवक विभाग प्रारम्भ किया, और विज्ञानी को बड़ासा देने हेतु एक वार्षिकता की नियुक्त किया, जिन्होंने अलग-अलग जिले में जाकर सम्पत्त करके सरकारी, स्वायत्त एवं अतिगत मालिकी की सत्यानों से आर्हर प्राप्त किया । कुल छ. जिलों में किताब ४३०३३१५४०० वा साहित्य बिबा । इस अभियान की सफलता से उत्साहित होकर समिति ने सुरुमाहित्य प्रचार की योजना आगे भी जारी रखने वा निर्णय किया है ।

सेवाग्राम का खादी सम्मेलन

छोटी सस्था नहीं होनी चाहिए, चाहे यह सरकारी सहकारी समिति हो अथवा सस्थागत ।

(ख) सघन कार्य के रूप में जिने का कार्य विकसित हुआ हो तो वहाँ विकास खाद्य स्तर की सस्थाओं का जिला स्तर का फेडरेशन हो ।

(ग) प्रांतीय स्तर के फेडरेशन बनाये जायें ।

(घ) जहाँ ग्रामदान हुआ हो और ग्रामसभा हो वहाँ संगठन की क्षमता बढ़ाई ग्रामसभा भागी जानी चाहिए । पारम्परिक चरखा तथा अम्बर चरखा कार्यक्रम

(ङ) देश में चानू पारम्परिक चरखों को चानू रखा जाना चाहिए । इसके लिए प्रयत्न यह किया जाय कि कस्बों को मजदूरी अधिक मिले । इस दृष्टि से एक ठकुवा अम्बर चरखे को दो ठकुवा चरखे में परिवर्तन किया जाय ।

(च) पुराने अम्बर चरखे जो चल रहे हैं उनके प्रोत्सेसिंग यूनिट से पूर्वी बनाकर दी जाय तथा जिन क्षेत्रों में नये चरखे चलाने हो वहाँ नये मॉडल के चरखे ही दिये जायें ।

(ज) नये मॉडल के छ ठकुवा के चरखे की यूनिटें सारे देश में अच्छे ढंग से चल रही हैं । इसमें मुख्य रूप से गुजरात, ओर दक्षिण में ये चरखे पुरी क्षमता से चल रहे हैं । उत्तरी भारत में इनकी उत्पादन क्षमता कम है, क्योंकि मोटे धून को अधिक माँग है । इसलिए उत्तर भारत में मोटी कटाई के लिए न्यू मॉडल यूनिट दी जानी चाहिए ।

(झ) बारह ठकुवा के चरखों को धानू करने के लिए सस्थाओं की माँग नहीं है फिर भी धानू र्थ में क्षमता न हो कार्यक्रम स्वीकार किया है अथवा परीक्षण शक्ति भारत में किया जाय ।

जुलाई के सुघरे ओजारों का उपयोग और अंकों का अनुष्ठान

जुलाई की दृष्टि से सेवाग्राम को जुलाई-माला में निम्न कई वर्षों से काफ़ी प्रयोग हुए हैं । इसमें देकर मोतल, कुम्भी

दिनांक २९, ३० जून व १ जुलाई '७२ को अखिल भारतीय खादी ग्रामोद्योग कमीशन की ओर से ५ लाख से अधिक धुती खादी उत्पादन करनेवाली सस्थाओं का सम्मेलन सेवाग्राम में आयोजित किया गया था ।

दिनांक २९-६-'७२ को प्रातः १० बजे महादेव भाई सभा भवन में कमीशन के अध्यक्ष श्री जी० रामचन्द्रजी अध्यक्षता में सम्मेलन आरम्भ हुआ । अतिथियों का स्वागत करते हुए श्री शारदागण सेले ने कहा कि सेवाग्राम की इस जुलाई प्रयोगशाला में आपका आखिरी बार स्वागत किया जा रहा है । सर्व सेवा सघ और खादी कमीशन ने इसको बन्द करने का निर्णय किया है, फलस्वरूप सारी व्यवस्था नये सिरे से करनी पड़ी है । फिर भी मैं मानता हूँ कि कमियों व कठिनाइयों के नावजूद कार्यक्रम को निभा लेंगे ।

सभा की कार्यवाही का आरम्भ करते हुए कमीशन के सदस्य सचिव श्री खोमभाई ने सेवाग्राम में सम्मेलन बुलाने की भूमिका पर प्रस्ताव डालते हुए बताया कि सेवाग्राम का अपने आग में खादी कार्य की दृष्टि से बहुत बड़ा महत्त्व है । गांधीजी, जवाहरजी, तथा आचार्य विनोबा भावे जैसे युग इच्छाओं से प्रेरणा एवं मार्गदर्शन लेते रहे हैं और इन काम में आगे बढ़ते रहे हैं । आज भी विनोबा जी से मार्गदर्शन ले लें, इसी उद्देश्य से यह सम्मेलन यहाँ बुलाया गया है ।

सारी कमीशन के अध्यक्ष ने अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए कहा कि खादी कमीशन सारी प्राथमोद्योग के कार्य को गांधी के बताये मार्ग से गाँव-गाँव तक पहुँचाना चाहता है और इस दृष्टि को ध्यान में रखते हुए धुती खादी के उत्पादन-कार्यक्रम पर तीन-तीन तक सभी पट्टुधारों के विचार किया जाना । इसी उद्देश्य में

अध्यक्ष ने स्वतंत्रता की रजत-जयन्ती तथा खादी की स्वर्ण-जयन्ती मनाने का उल्लेख करते हुए कमीशन की ओर से उठाये गये विशेष कार्यक्रम की घोषणा की ।

अध्यक्षीय भाषण के बाद सम्मेलन अपने निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार चला और विषयानुसार विभिन्न पट्टुधारों पर चर्चा हुई ।

विनोबा का मार्गदर्शन

दिनांक ३०-६-'७२ को सायंकाल ३ से ४ बजे तक पवनार आश्रम पर पूज्य विनोबाजी के सानिध्य में भीटिंग चली । उनके सामने अध्यक्षजी ने सम्मेलन की भूमिका व चर्चा का सार बताया और इस पर उनका मार्गदर्शन पाहा । नाना ने कहा कि खादी के कार्य के बारे में मैंने अनेक बार कहा है । अब मुझे कुछ बहना नहीं है । जो योजना एक साल परिवार को खादीधारी बनाने की रखी है, वह एक अच्छी योजना है । इस योजना में यह सुधार करें कि भारतभर में एक गाँव में एक खादीधारी परिवार बने इस प्रकार एक लाख गाँवों में ऐसे एक लाख परिवार होने चाहिए । अगर इस प्रकार इस योजना को चलायेंगे तो जो गाँवधारी चाहते थे कि हमारे गाँवधरतों भारत के ५ लाख गाँवों में होने चाहिए, उस दिना में यह कार्य हो सकेगा ।

तीन दिन के गहरे विचार-विमर्श के बाद सम्मेलन ने निम्न सिफारिशें स्वीकार कीं -

संगठन—

सम्मेलन में यह अनुभव किया गया कि खादी के कार्य में कस्बे, कालेज और कार्यकर्ताओं की अधिक-से-अधिक कार्य के नवरीक सजे तथा गाँवों तक कार्य को पहुँचाने के लिए मोहूदा व ज्ञाने बननेवाले संगठन को किछ प्रचार बढ़ा किया जाय ।

(क) विकास खाद्य स्तर से कम की

रजत-जयन्ती वर्ष में खादी कमीशन की योजना

● जी० रामचन्द्र

सारा भारत इस समय आजादी की रजत-जयन्ती मनाने के प्रयत्नों में संलग्न है। इन सबके साथ खादी और ग्रामोद्योग कमीशन का भी अपने उद्देश्यों और कार्य-प्रणाली के अनुसार रजत-जयन्ती मनाने का एक विशेष कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम का केन्द्र बिन्दु है वास्तव खादी पहननेवाले और कपड़े की जरूरतों के हिसाब से अन्य चीजों को आवश्यकता के लिए स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करने का यत्न लेनेवाले एक साक्ष परिवारों की सूची तैयार करने का राष्ट्रीय अभियान। इस अन्तर्ग में स्वदेशी का अर्थ है जहाँ तक सम्भव हो ग्रामोद्योगी वस्तुओं का उपयोग।

एक लाख खादी परिवारों की सूची तैयार करने के राष्ट्रीय अभियान को दो अन्य प्रारम्भ, परन्तु महत्त्वपूर्ण अभियान - कान्ति प्रदान करेंगे। इनमें पहला होगा खादी और ग्रामोद्योग को प्रदर्शनियों की आयोजन, जो कि भारत के घुने हुए दो ही स्थानों में लगायी जायेंगी और जिनमें ग्रामीण क्षेत्रों में आवश्यक वस्तुओं के विकेंद्रित उत्पादन की महत्ता एवं वास्तविकता पर जोर डाला जायेगा। इन प्रदर्शनियों में यह भी दर्शाया जायेगा कि उत्पादन के क्षेत्रों, सरजामों में खादी

की ग्रामोद्योग कमीशन के अनुसारवालों और उनके लागू करने के कार्यक्रमों के अन्तर्गत कितनी अधिक उन्नति हुई है और कि किस प्रकार गाँवों के शायदियों से सम्बन्ध को अन्तर्गत उत्पादन प्राप्त हुए हैं। इन प्रदर्शनियों से जनता को बातों, नवनों, शिल्पकीय सामग्री, चित्रों व उत्पत्तियों के जरिये खादी और ग्रामोद्योग की अर्थ-आवस्था के बारे में जानकारी देने में सहायता मिलेगी।

दूसरा कार्यक्रम होगा—पुस्तिकाओं, फिल्मों, रेडियो प्रसारणों, विचार-भोजनियों, व्ययमन-नेत्रों व प्रतिष्ठित सुयोग्य वक्ताओं के भाषणों के जरिये जनता का प्रबोधन।

लगभग ५००० खादी भण्डारों के जरिये विभिन्न उच्च के लोगों के लिए व विभिन्न क्षेत्रों के अनुसूचित ७ करोड़ रुपये के तैयार (रेडिओ) वस्तु इस वर्ष के दरम्यान तैयार करने व बेचने की भी योजना है।

एक लाख खादी परिवारों की सूची तैयार करने के हिसाबसे विभिन्न राज्यों में बाँटने के लिए एक लाख से कुछ अधिक परिवार-पर छापे जायेंगे। ये पर कार्यक्रम डग के बनाये जायेंगे और इन पर अग्रगण्य भी पड़ी होगी। हर परि-

वार को जिसका नाम सूची में लिख लिया गया है, एक पत्र कमीशन की ओर से मिलेगा और उस परिवार को इस पत्र पर अपनी खरीद करनी होगी। हर परिवार को कम-से-कम १० पीटर सूती खादी खरीदनी होगी और कोई भी परिवार एक पत्र पर २०० वर्गमीटर से अधिक की खादी नहीं खरीद सकेगा। इस तरह की हर खरीद पर आम तौर पर मिलनेवाली छूट के बजाय ५ प्रतिशत अतिरिक्त छूट वर्ष के दरम्यान मिलेगी और इस प्रकार इनाई-उत्पादन शक्ति कुल छूट २५ प्रतिशत होगी। उस पत्र पर गांधीजी का चित्र होगा। उसमें पार पृष्ठ होगा; वह जेब में रखा जा सकता है। अन्तिम पृष्ठ पर 'हमारी निष्ठा' लिखी होगी, जिसके अन्तर्गत निम्न पाँच बातें होंगी—

१—स्वदेशी का उपयोग और ग्रामोद्योगी वस्तुओं के उपयोग को प्रोत्साहित।

२—शराब से परहेज और शराब-बन्दी को सख्त समर्थन।

३—जातिवाद और उन्मत्तता का पूर्ण तरह परित्याग।

४—अगर परिवार के पास जमीन हो तो उसका सीध में पाग या अपनी पट्ट के भूमिहीन अधिकों को दात।

५—बापसी शिष्टाचार केवल अहिंसक तरीकों से दूर करना।

इस प्रकार आप यह देखेंगे कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य केवल खादी और ग्रामोद्योगी वस्तुओं की अधिक मात्रा में तैयार करना और बेचना ही नहीं है बल्कि गांधीवादो कान्ति की भावना और दुष्ट-मौज को पुनर्जात करना और खादी-ग्रामोद्योगी को राष्ट्रीय निर्माण सम्बन्धी कार्यक्रमों से सम्बन्धित करना है। इस प्रकार खादी और ग्रामोद्योग को अधिक सम्मान, सम्पूर्ण व प्रगतिशील समाज-व्यवस्था की स्थापना के लिए एक विस्तृत एवं राष्ट्रीयवादी आन्दोलन के रूप में फिर से सर्वोच्च भूमिका निभानी होगी।

प्रस्तुतकर्ता—सम्बन्धित पत्रकार

→प्राई, सम्बन्धी ताना की पद्धति मुख्य रूप से अच्छी समझी हुई है। इससे उत्पादन बढ़ता है, इनकर को सुविधा होती है और रोजगार की अधिक मिलता है। इन प्रयोगों का लाभ दक्षिण की संस्थाओं में उठाना है परन्तु उत्तर भारत की संस्थाओं में इसका लाभ नहीं उठाना है। अतः सम्बन्धन की सिफारिश है कि देश की सभी खादी-संस्थाओं को इनाई के बारे में इन सुधरी हुई पद्धतियों का उपयोग करना चाहिए।

संघर्षपूर्ण योजना में खादी का स्थान सम्बन्धन में जोरदार कार्यकारी सूची

के स्वरूप व कास्ट चार्ट पर चर्चा हुई और यह तय रहा कि एक समिती बनायी जाय जो इसके सभी पहलुओं पर गहराई से विचार करके तीन माह में अपनी रिपोर्ट सम्बन्धन को दे दे, जिससे विचार करने निर्णय लिया जा सके। इस निर्णय के अनुसार एक समिती बनायी गयी। यह काफी महत्त्वपूर्ण विषय था परन्तु सम्बन्धन के कारण इस पर चर्चा होकर निर्णय नहीं लिया जा सका।

इस प्रकार सम्बन्धन बढ़े उत्पादन में वातावरण में उपरोक्त सिफारिशों के साथ समाप्त हुआ।

—स० प्र०

तेरहवाँ अखिल भारत तरुण-शान्ति-सेना शिविर कडोली

१३ वाँ अखिल भारत तरुण-शान्ति-सेना शिविर १६ मई से २७ मई तक बेलगाँव (मैयूर) के निकट कडोली गाँव में हुआ ।

कभी कदाच टेण्ट-उत्साह हुआ, टेण्ट खीरकर बिस्तार बोला कर देनेवाली बरखात, खीर टेण्ट के इर्द-गिर्द हुआ से टूटे हुए ऋण्ये धाम—एँसे में भारत के विभिन्न कोनों से (कश्मीर, गुवाँल व केरल को छोड़कर) आये युवक-युवतियों का यह शिविर बड़ी ही गम्भीर समस्याओं पर चर्चा करने के लिए आरम्भ हुआ ।

उत्कर्षों ने प्रथम बार अखिल भारतीय स्तर के शिविर एवं सम्मेलन के आयोजन का निम्ना उदाहरण, जैसे गुन्नापाव भाई और नारायण भाई ने कभी साथ और कभी एक-दूसरे के पूरक होकर इन उत्कर्षों को मदद की ।

शिविर में आगे का निम्नलिखित स्वीकार करने के बावजूद प्रो० श्री तु० धी० पाण्डरीपाण्ये और श्री यमुनाच पत्ते के अलावा अन्य कोई वक्ता उपस्थित नहीं हुए । वरतमान हैं । फिर भी गुन्नापाव भाई, नारायण भाई और हमारे तरुण छात्रियों ने शिविर-जीवन का उद्देश्य, छात्राधिक परिवर्तन और चित्त-सुद्धि की आवश्यकता, आज की जागतिक समस्या में सर्वप्रथम शिक्षा-प्रश्नों, चम्बल की बागी समस्या और उनका समर्पण, रंध और मानव, युवा-विद्रोह, भूमि-समस्या, अहिंसा, नये संदर्भ में शिक्षा में क्रान्ति, समय क्रान्ति, धामस्वराम्य की भूमिका में प्रश्न और विशाल उष्ण तरुण-शान्तिसेना आदि गम्भीर विषयों पर चर्चा करने में काफी मदद की । आस्थाओं के अलावा चर्चा-मोर्चियों से सीधे में बहुत सहायता मिली ।

कडोली में शिविर-स्थान के आस-पास की धर्माल शक्ति के पानी से

कट-कट कर तप हो रही थी । बारिश का पानी बाँध द्वारा रोक्कर उसे एक नाली के जरिये एक निश्चित मार्ग देकर जमीन के बटाव की योजना हमारे धम-नायों का प्रोजेक्ट था ।

कई बरसाती रातों के बावजूद पानी के पानी की तगी ने लोगों से अल का काम लिया । शिविरार्थी सुषी-युसी बेल का नाम करते थे और चन्द घण्टों में पूरे शिविर के लिए पानी निकल जाता था । मजबूती की किस प्रकार जानन्द का विषय बना दिया जा सकता है इसका यह अच्छा उदाहरण था ।

एक टोली शिविर-स्पल की सफाई एवं सजावट में, एक राखी पर की मदद में, दो टोलियाँ पानी लाने में और बाकी की टोलियाँ धम-नायों में पूर आई घण्टे पट्टी रहती थी ।

शिविर-जीवन पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का काफी प्रभाव पड़ा । २४ मई को बेलगाँव के नत्ता मन्दिर रथमच पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करना था । समय कम था और तैयारी काफी करनी थी । शिविर के अन्तर्गत जीवन से समय निकालकर ६० लोग अलग-अलग ढंग से अलग जगहों पर तैयारी में लग जाते थे । कम समय और रथमच के तयामि लाटम्बरो की न अपनाते हुए शिविरार्थियों के अपने प्रयास से तैयार किया हुआ यह सांस्कृतिक कार्यक्रम निर्धारित दिन को बेलगाँव के नायकों के सम्मुख प्रस्तुत किया गया । कभी-कभी तो लगता था कि इस सांस्कृतिक कार्यक्रम ने शिविर-जीवन को ही नाटकमय बना दिया । इन तयाम अतिरिक्त प्रकृतिगत के बावजूद इस शिविर की कुछ उपलब्धियाँ रही जो उदय-शान्तिसेना के इतिहास में अमूल्यपूर्ण थीं । जैसे :

४० युवक-युवतियों ने पंच सभ्यता के हक को छोड़ने की झण्डा ध्वज की तया सब लड़के-लड़कियों ने वहेन न लेने-देने का सक्कन किया ।

एक्शन प्रोग्राम

शिविर-सम्मेलन के दौरान व्यक्तिगत, सामूहिक एवं राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम साल भर में बना हो वह भी तय किया गया । जैसे—

व्यक्तिगत कार्यक्रम

पंच सभ्यता का त्याग, (दूस्ती बनो या बनार्यो) ।

विकेंद्रित जयोग की चीजों का उपयोग ।

दैनिक जीवन में एक घण्टा उत्साहक, यम ।

वहेन नही लेगे, नही देंगे ।

जाति या सम्प्रदाय से मिलनेवाले लाभ का भी त्याग करेंगे ।

शिष्टी को प्रतिष्ठा नहीं देंगे ।

सामूहिक कार्यक्रम

स्थानीय क्षेत्रों में युवकों को समा (आस्था) चर्चा-मोर्चों द्वारा प्रतिष्ठित करेंगे ।

अपने विशेष कौशल का उपयोग निर्माण-कार्य में करेंगे । सामूहिक धम से धम की प्रतिष्ठा प्रस्थापित करेंगे ।

बालवादी, प्रोड शिक्षा, लोपशिक्षण के कार्य से समाज में व्याप्त अज्ञान मिटावेंगे ।

समाज में सेवा-कार्य प्रवर्गावृत्त करते रहेंगे ।

कानेज-युनाव में जाति, सम्प्रदाय या क्षेत्र के भेद को मिटाने तथा भय और भाग्य को नाशमय बना देने का प्रयास करेंगे ।

योग सम्मोदवार को सर्वानुभूति से युना जाय ।

कालेज के युनियन में पार्लमन्टिय चित्तों को ही शामिल करके और उसके पास महीने में एक बार कार्य एवं पंचे सम्बन्धी हिसाब माँगा जाय ।

कानेज-संवालय में विद्यार्थियों की भाषीदारी (पार्लियमन्ट) हो इस्तिए महीने में एक बार एक्सेम्बली की बैठक को माँग नी जाय ।

तरुण-शान्ति सेना का कार्यक्रम

वर्तमान शिक्षा-पद्धति व आबादी के २५ वर्षों की प्रगति के खोलने के बारे में जन-जागरण के लिए तरुण-शान्ति-सेना ने ६ अगस्त से १५ अगस्त तक एक कार्यक्रम करने का निश्चय किया है।

इस दौरान ६ अगस्त को तरुण-शान्तिदिवस से कार्यक्रम का आरम्भ कर ७, ८, ९ अगस्त को शिक्षा में क्रांति के लिए 'रेली' एवं 'शिक्षण-संस्थाएँ' बन्द कर एक दिवसीय श्रम-स्वाध्याय शिविर का आयोजन तथा ११ से १५ अगस्त तक आजादी की रजत-जयन्ती मनाते के लिए हम गाँवों को पदयात्रा करेंगे यह हमसे के लिए कि पिछले २५ वर्षों में अबली भारत ने क्या प्रगति की है।

प्रस्तावित कार्यक्रम निम्नानुसार है :

६ अगस्त

प्रतिपद की शान्ति हिरोशिमा दिवस एवं तरुण-शान्ति दिवस के रूप में हम इसे मनायेंगे। इस अवसर पर 'आणविक हथियार और भारत', 'नि:शस्त्रीकरण' एवं 'शक्ति सन्तुलन' बन्दि विषयों पर गोष्ठियों का आयोजन किया जा सकता है। शान्ति-दिवस-बिस्ता एवं साहित्य-बिम्बो करें।

→ राष्ट्रीय फायरकम

६ अगस्त से १५ अगस्त शिक्षा में क्रांति—स्वास्थ्य-प्राप्ति का उत्सव।

१५ अगस्त से २६ अक्टूबर

स्वातन्त्र्यी गाँव, स्वातन्त्र्यी भारत का कार्यक्रम उत्थापन।

ऐसाप्राम से राजघाट दिल्ली तक प्रचार के लिए पदयात्रा।

विदेशी बीजों का बहिष्कार, श्रम-स्वातन्त्र्य के लिए शान्तिपूर्ण विद्रोह उद्योग और उत्पादक श्रम को सहयोग।

—निवेदिता

७ अगस्त

विद्यार्थियों में छात्रों से सम्पर्क कीजिए। शिक्षा में क्रांति एवं अपने आगामी दिनों के कार्यक्रम के बारे में चर्चा कीजिए। अपने कार्यक्रम की सूचना देनेवाले पोस्टर्स तैयार करें। ८ अगस्त की 'रेली' में भागल्लो की आनभित कीजिए।

८ अगस्त

'शिक्षा-पद्धति में आमूल परिवर्तन, पीछ के बदले काम लो' की भाँसे को लेकर मौन जुलूस का आयोजन कीजिए। अपने नारे स्नेनाईयू पर लिख लें। 'रेली' का समापन आमसभा के रूप में भी किया जा सकता है, 'रेली' के साथ भी कोई श्रम-कार्य, यदि किया जा सकता हो लो, अवश्य करें। उदाहरण के लिए मृधारोषण, गद्याई आदि। 'रेली' में श्रम-साधन (फावड़ा, कुदात आदि) हाथ में लेकर चलें।

९ अगस्त

शिक्षण-संस्था बन्द करवाकर एक पिल का श्रम-स्वाध्याय शिविर आयोजित करें। यदि शिक्षण-संस्था बन्द न करवा सकें लो तितने भी समी विद्यालय न जाने को सँवार लो लकी लो लेकर आयोजित करें।

शिविर में २१-२ घण्टे का एक घण्टा का कार्य अवश्य हो, लफला शिविर एवं

धन का स्वतन्त्र विद्यालय के विद्रोह लो हो। शिविर में जागतिक समस्याओ पर चर्चा करें। काम को कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी करें।

१० अगस्त

इस दिन पिछले दिनों किये गये कार्यक्रमों का मूल्यांकन करके आगे का कार्यक्रम तैयार करें। अपने आस-पास के कुछ गाँव इस कार्य के लिए चुन लीजिए। अपने साथ ले जाने की सामग्री रखी, टाई, मग, चाकू, टायरी, साहित्य-बिम्बो, एवं प्रचार-साहित्य की व्यवस्था कर लीजिए। अपने साथ ले जाने के लिए हल्का विस्तर और दो जोड़े कपडों को हाथ में लजने या पीठ पर लाने लायक बण्डल बना लीजिए।

११ से १५ अगस्त पंच दिवसीय पदयात्रा

उप-काल में पदयात्रा करना सुविधाजनक रहेगा। सुबह से दोपहर तक खेडो पर आकर गाँववालो से मिलने का कार्यक्रम रखा जा सकता है। दोपहर को विभाजन करके सध्या एवं रात्रि को गाँववालों से पिछले २५ वर्षों की प्रगति के बारे में जानिए, समा आयोजित कीजिए, मित्रों में क्रांति एवं लोकीनीति और स्वतन्त्रराज्य के बारे में लजेंगे बताइए।

श्रमस्वराज्य से सम्बन्धित चिन्तों की प्रदर्शनी भी लो जा सकती है (चित्र चाराणसी कार्यलय से लंगाने जा सकते हैं)। सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया जा सकता है। एक दिन में एक-दो गाँवों को घांसा करें।

हमारा नया प्रकाशन

धम्मपदं नव-संहिता

सम्पादक-विनोबा

धम्मपदं बुद्ध की पावन देहना का विश्व-प्रसिद्ध पंच धम्मपद का विनोबाजी ने नये रूप में सन्ततन किया था। उल्लेखनीय सन् १८ अध्याय बनाकर अल्प-अल्प विषयों में विभाजित किया है। अब यह प्रथम हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित किया गया है। बड़िया छापी, पन्ती निहद।

मूल्य रु० ४.००

सर्व सेना संप्रकाशन, राजघाट, धाराणसी—१

ग्रामस्वराज्य के बढ़ते चरण

मैने महिषी प्रखण्ड में बीरगाम पंचायत को लेकर काम करना प्रारम्भ किया। आगरा (उत्तर प्रदेश) के एक दूसरे साथी श्री विजयनागयण दुबे १०-१२ दिनों के बाद मेरे साथ हो गये।

हम लोगों ने घर-घर जाकर सम्पर्क शुरू किया। गुरु-गुरु में गांववाले नहूँ थे कि बात ठो अन्धी है, लेकिन इससे क्या होनेवाला है? आजकल भाषण देनेवालों को कोई बर्मी नहो है। बाप भी अपने ही माथ के लिए घूम रहे हैं। इस प्रकार गांव के लोग सर्वोद्यम कार्यकर्ताओं को घेँटे भी नहो देते थे।

हम लोग भूमिहीनों से मिले। उन्हें यह बात समझायो कि आठ लोग अर्द्ध-साप्ताहिक तरीके से अपना सगठन बनाइये, ताकि भूमिवालों पर कुछ प्रभाव पड़े। भूमिहीन हलते-देते हुए थे कि अपने मामलों के सामने कुछ बोलना उनके लिए असम्भव था। उन्हें लगता था कि मासिक उन्हें काम भी नहो देंगे और गांव से भगा देंगे। इस हालत में वे मामलों से त्रमीन नवा मांगते। गांव में हर क्षेत्र में पत्नी हुई असमानता तथा वर्णभेद की बीमारी, अमीर-गरीब, भूमिवाला-भूमिहीन में जो अमीन आसमान का अन्तर है, उसना निराकरण उन्हें स्वयं-या प्रतीत हो रहा था।

एक गांव में एक ही व्यक्ति बड़ा भूमिवाला है, दोप १०१ लोगों के पास १ बीघा से लेकर १० बीघा तक जमीन है, तथा उनके परिवारों में १० से लेकर ३० तक सदस्य हैं।

आधी दिनों की चर्चा के बाद गांववालों ने हमना कि ग्रामसेवाराज्य के विचार में गांव की पूर्ण सुरक्षा है, जिसे बना सामन्तशाही शासन टूटने का कर लगता है वे हमें दृढ़ता होने नहो देते हैं। धीरे-धीरे अधिकतर लोग ग्रामस्वराज्य के विचार के अनुकूल बने। सर्व-

सम्पत्ति से ग्रामसभा का गठन हुआ। सर्वथी बिलटाराजजी अग्रज, तारिणी झा मंत्री तथा दूरविणोरीजी कीषाध्वंस चुने गये। ये सभी पढ़-लिखे गौश्रवान लोग हैं। सबसे पहले अध्यक्ष श्री बिलटाराजजी ने अपनी १० बीघा जमीन में से १० कूट्टा जमीन का प्रमाण-पत्र भरा। इस प्रकार भूमिवाला भूमिहीन के दिल जोड़ने के तथा भूमिहीन को धरती का देता बनाने के कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ और दानगवा बहने लगे। अब गांववाले स्वयं भूमिहीनों के लिए जमीन निजालने के प्रयास में जुट गये।

श्री बिलटाराजजी तथा अन्य ५-७ लोगों ने इस काम में काफी समय दिया। लोक-शक्ति का दर्शन हुआ। गांव-बाजे के साथ बड़ी धूमधाम से ता० २५ फरवरी को गांव का भूमि-वितरण-कारोह सम्पन्न हुआ। एक स्पेहोर का रूप उस दिन गांव में बनाया गया। दोहर को दो बजे रामभूत गाने हुए, नारे गगाते हुए फेरी निकली। जिन भूमिवालों ने जमीन गही दी थी, उनको निवेदन करते हुए तथा सबसे सभा का निमन्त्रण देते हुए सभी लोग अध्यक्ष महोदय के दरवाजे पर एकत्रित हुए। राष्ट्रीय गीत, क्रान्तिगीत तथा जयजयकारो के बाद ७०० लोगों की उपस्थिति में कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। कार्यक्रम के लिए चक्रम्भावहन, लक्ष्मी बहन, नीलकण्ठ स्वामीजी, अलखनारायण, राममणि सुल आदि सर्वोद्यम के साथियों को खास तौर पर निमन्त्रित किया गया था। गांववालों ने बस्ताजो के विचार शान्तिपूर्वक सुने। भूमिवालों ने भूमिहीनों को तिलक लगाया। भूमिहीनों ने भूमिवालों को पुष्पमाला पहनायी तथा भूमि का प्रमाण-पत्र प्राप्त किया। 'शेडभाव छोड़ दो, दिल से दिल को जोड़ दो', 'हमारे गांव में बिना जमीन कीर्द न रहना' आदि

नारो ने आवाज को गुंवा दिया। १७ बस्ताजो ने ३० बादबस्ताजो को १० बीघा ३ कूट्टा ६। घूर जमीन दी। इसमें ४ बीघा २ कूट्टा भूदान की जमीन भी शामिल है। इसी सभा में गांव की योजना बनाने की दृष्टि से ध्यान देकर ग्रामस्वराज्य-कोष का प्रारम्भ किया गया। सभी गांववालों ने सहकर विद्या कि गांव की आबादी को मजबूत बनाकर भाई चारे के तरीके से गांव का नवीनीकरण करेंगे। इस प्रकार नयी प्रेरणा लेकर प्रार्थना के बाद कार्य-क्रम सम्पन्न हुआ। गांव के शान्ति सैनिकों ने व्यवस्था की पूरी जिम्मेदारी उठायी थी।

ग्रामसभा के अध्यक्ष सर्वोद्यम-विचारो में पूरी निष्ठा रखते हैं, तथा दलीय सम्बन्धों से मुक्त हो गये हैं। समय-समय पर ग्रामसभा करवाना गरीबों की दिक्कतें समझ लेना, गांव के मुकदमों को कोर्ट से हटाना आपस में मुनसाला इत दिशा में उनका प्रयास सतत जारी है।

ग्रामस्वराज्य की चर्चा के साथ में गांववालों को नैतिक कृति, गंगाधर, रामोचोग, खाद बनाना, ग्रामसभा, सामूहिक प्रार्थना, भजन-कीर्तन, नड़कियों की शिर्षा, अमविष्टा, मजदूरों पर अवलम्बित न रहना, शिष्यो का जेली आदि कामों से हाथ बँटाना आदि विषयों का महत्व समझाना रहा। लोग बहुत दिनचरसी से ये सारी बातें मुनते थे तथा इनके कारण उन में कुछ जागृति भी दिखायी देने लगी। साथ-साथ हम पंचायत के दूसरे गांव से सम्पर्क करने लगे। तब तक बीरगामवालों ने ग्राम-कोष में २ मन अनाज का सग्रह कर लिया।

नया टोल बीरगाम का एक टोला है। अभिधान शुरू होने पर २० मार्च को हम इस गांव में जाये। मामलों के प्रश्न को लेकर कुछ लोगों ने नया टोल वालों को बहाने की कौत्सक की, लेकिन नया टोल के लोगों ने बीरगाम का आदर्श अपने सामने रखा था। उन्होंने

बिलटराज्यो को ही बनाया अर्थात् मुना। दूसरे ही दिन ९ दाताओं के २ बीघा १ कट्ठा १६। धूर जमीन का वितरण १० आदाताओं के बीच धूमधाम से किया गया। गाँव में ५ शान्तिसेनिक बने। ग्रामस्वराज्य-कोष का शुभारम्भ ५ क्रित्तो अनाज से किया गया।

तस्वी वीरगम पचासत का दूसरा बड़ा गाँव है। उस गाँव में भी सर्व-सम्पत्ति से ग्रामसभा का गठन किया गया। श्री महेशप्रभुमार अध्यक्ष मनोनीत हुए। गाँववालों की सभा में निश्चय हुआ कि वीरगाम पचासत में ग्राम-स्वराज्य का जो कार्यक्रम शुरू हो गया है वही गाँव को बचाने का एवमान तरीका है। ५-६ दिनों के प्रयास के बाद ही श्री बसदेवजी ने १४ धूर का पहला प्रमाण-पत्र भरा। तब गाँव के अन्य लोग भी बढ़े। ता० ४ अश्विन को अनेको गाये-बाजे के साथ २२० व्यक्तियों की उपस्थिति में जूनियर स्कूल-के मैदान में गाँव का वितरण-समारोह सम्पन्न हुआ। १३ दाताओं ने २४ आदाताओं में ४ बीघा ३ कट्ठा ७।। धूर जमीन बाँटी। समारोह में उत्तर प्रदेश के साधो श्री प्रकाशमहर्षि पधारे थे। उन्होंने ग्राम-स्वराज्य का विचार अपनी समझाया। वीरगाम के अध्यक्ष बिलट राजजी तथा श्री चारिणी धामी ने अपने गाँव की प्रगति की रिपोर्ट पेश की। इस गाँव में १० शान्तिसेनिक तथा २ सर्वोदय पत्रिका के साहक बने। ग्रामस्वराज्य-कोष का उद्घाटन हुआ। नुरत सभा-स्थल पर १० बिलो अनाज का मण्ड हुआ।

तस्वी के बाद पक्ष के बरतिया गाँव में सभा होकर सर्वसम्मति से ग्राम-स्वराज्य का कार्यक्रम प्रारम्भ किया तथा ग्रामसभा का नियमित हुआ। अध्यक्ष श्री बद्रीराय बने। २०० लोगों की उपस्थिति में ता० ७-४-७२ को गाये-बाजे तथा ग्राम-केरी के साथ धूमधाम

से ७ दाताओं ने १७ आदाताओं के बीच ३ बीघा १२ कट्ठा जमीन का वितरण किया।

वीरगाम पचासत में अब एक ही गाँव बचा हुआ या अबाही। इस गाँव की ग्रामसभा का गठन सर्वसम्मति से दि० १-४-७२ को किया गया। श्री धूर्तगाराज्य सिंह अध्यक्ष चुने गये। साथ-साथ धूमधाम से वितरण-समारोह हुआ। ३ दाताओं ने ७ आदाताओं के लिए १२ कट्ठा १४ धूर जमीन दी। गाँव के लोगों ने सबल्य किया कि वे गाँव के लिए सच्ची खाजारी प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। तस्वी, चतरिया तथा अमाही में अब एक ही भूमिहीन नहीं रहा।

वीरगाम का दूसरा छोटा-ठा टोला है—सहुरवा। इस गाँव के निवासी भी समूह साहू ग्रामस्वराज्य के विचार से ओत-प्रोत हैं। उनकी विशेष सहायता से ग्रामसभा का गठन हुआ। लोगों ने उन्हें ही अध्यक्ष मनोनीत किया। श्री सैनी मुखिया मंत्री तथा श्री महावीर साहू कोषाध्यक्ष बने। सभा में ग्रामस्वराज्य के

विचार या जगड़ी तरह मंजूर हुआ। दूसरे दिन सभी मिलकर दरवाजे-दरवाजे गये और मानकों से बीघा कट्टा देने के लिए निवेदन किया। हनु दोमो उनके साथ रहे—केवल विचार मजालों की दृष्टि से। दो ही दिनों में काम पूरा हुआ। तीन-चार लोगों ने करीब ३० बिलो अनाज ग्रामस्वराज्य-कोष में जमा किया। जिस गाँव में पिछा नहीं के बराबर है जिसमें एक पद-पिछे पुत्रक ने राति पाठशाला के लिए समय देने का सकल्य किया। भूमि-कालि के दिन १० अश्विन की रात सभी गाँववालों ने गाये-बाजे, मजद के साथ गाँव की परिक्रमा की। लोगों ने इकट्ठा होकर उस्ताह से भूमि-वितरण समारोह मनाया। गाँव में अधिकतर जमीन कामत-वालों की है। अतः ७ दाताओं की १६ कट्टा १० धूर जमीन ८ भूमिहीनों में बाँटी गयी। इस तरह महायज्ञ अधिवास की सम्पत्ति के साथ वीरगाम पचासत का कार्य सफलतापूर्वक समाप्त हुआ।

— रामस्वहृष छोडे मधुर (३० प्र०)

सभी राज्य-भूदान घोड़ों की सेवा में

प्रिय महोदय,
यह पत्र आपकी सेवा में विशेष निमित्त से लिख रहा हूँ। पिछले कुछ समय से सर्व सेवा सच को कार्यालय के साथ कुछ भूदान मण्डलों का सम्पर्क नहीं के बराबर है। कुछ मण्डलों की तो अत्यन्त स्थिति की जानकारी भी सच कार्यालय में नहीं है। वास्तविक की दृष्टि से आज यह स्वीकार करे कि राज्य भूदान मण्डलों और सर्व सेवा सच का जीवन्त सम्बन्ध अत्यन्त आवश्यक है। आपकी ओर से मासिक तथा त्रैमासिक रिपोर्ट निरन्तर मिलती रहे तो सारे देश की भूदान-प्रगति और वितरण आदि का सबल्य करने में सुविधा होगी और उस पर से भावी कार्यक्रम के चिन्तन में भी मदद मिलेगी।

अतः मेरी आशा प्रार्थना है कि आप कृपया अपने प्रदेश की अब तक की भूदान प्राप्ति तथा वितरण (एक

में), दाता-भावाका सख्या, वितरित जमीन में से वितरण लापक जमीन, शगड़ों की जमीन, अन्य बारणों से वितरण के अयोग्य भूमि के बहारों तथा-सोत्र भूमिप करने की कृपा करें और भविष्य में भी शेरवाते रहें। इसके अति-रिक्त अपने मण्डल के सम्बन्ध में भी निर्मा-लिखित जानकारी देने की कृपा करें।

१-वर्तमान मण्डल का गठन जब हुआ ? २-सदस्य की और से पण्डत हुआ क्या ? ३-सदस्यों की नामावली ? ४-आर्थिक व्यवस्था ? ५-पुरे समय के कार्यक्रमों की योजना ? ६-कार्ययोगिता ? ७-अन्य कोई विशेष उल्लेखनीय बात हो तो।

पत्रोत्तर, प्रस्थान बायम पो० बा० न० १६ पठानकोट, के पते पर दे तो सुविधा होगी।

आपका,
प्रसाद मिश्र,
सहस्री, सर्व सेवा सच

उत्तर प्रदेश तरुण शान्तिसेना समिति

उत्तर प्रदेश तरुण-शान्तिसेना की तदर्थ समिति की एक आवश्यक बैठक २३ जुलाई १९७२ को प्रातः ८ बजे जिला तरुण-शान्तिसेना शिविर-स्थल (बागमोपा अतिथिगृह) हरदोई में हुई।

तदर्थ समिति का पुनर्गठन

प्रथम प्रांतीय सम्मेलन में बनायी गयी प्रदेशीय तदर्थ समिति का वायव्याल विगत ३० जनवरी को समाप्त हो चुका था, अतः सगठन की ध्यातक करने एवं तीव्रता से काम करने के लिए यह आवश्यक था कि तदर्थ समिति का पुनर्गठन किया जाय-पुनर्गठित समिति के सदस्य हैं - (१) सर्वश्री विनय भाई, अध्यक्ष, २. अरुण कुमार, ३. रमेशचन्द्र श्रीवास्तव, ४. शिवसहाय मिश्र, ५. अमरनाथ मिश्र, ६. प्रो० सत्येन्द्र कुमार शान्ती, ७. अक्षय, उत्तर प्रदेश सर्वोदय मण्डल-पदेन, ८. संयोजक-उत्तर प्रदेश व्यापारिक (सर्वोदय मण्डल) पदेन, ९. संयोजक प्रदेश शान्तिसेना समिति पदेन, १०. रामचन्द्र राही, विधेय नियमित, ११. सन्तोष भारतीय-संयोजक

त्रिंशत् संयोजकों का मनोनयन

बरेली सम्मेलन में ही तदर्थ जिला संयोजकों का मनोनयन हुआ था, परन्तु कुछ जिलों में सद्यःकाल तक कुछ भी काम नहीं हुआ। अतः जिला संयोजकों का भी पुनर्गठन हुआ। इटावा-सर्वश्री मुनान सिंह, गोरखपुर-भागवत प्रसाद, बानसपुर-देवप्रिय, फर्रुखाबाद-रविचंद्र रवि, पटनाहानाद-ब्रह्म भोषठी, लखनऊ-राम प्रकाश अनुवंदी, मथुरा-महेशचन्द्र पाण्डेय, शाही-रामकुमार शर्मा, टिहरी-हुंजर प्रभू, वाराणसी-अरुण कुमार, मुरादाबाद-किशोरी सिंह, बाराबंकी-शिवनाथ दुबे, हरदोई-रमेशचन्द्र श्रीवास्तव, अलीगढ़-मुनील कुमार, उज्जैन-अनोप पाण्डेय, कानपुर-ब्रह्मदीन प्रसाद।

नये सत्र का कार्यक्रम

नये सत्र के लिए प्रमुख कार्यक्रमों के रूप में १. सदस्य बनाना तथा २. इवाचनों का गठन करना एवं प्रांतीय सम्मेलन से पैसे अधिक-से-अधिक शिबिर करना व सभाओं करना निश्चित हुआ। यह कार्यक्रम अक्तूबर के प्रांतीय सम्मेलन तक के लिए ही सोचा गया है। आगे का कार्यक्रम सम्मेलन तय करेगा।

राष्ट्रीय पखवारा

अभी प्रदेश में सगठन अपने मजबूत रूप में प्रकट नहीं हुआ है। अतः राष्ट्रीय पखवारे को परिवर्तित रूप में मनाने का निश्चय हुआ। सगठन को मजबूत करने के लिए सभी सम्भव प्रयास दिये जायेंगे। परन्तु जिन केंद्रों पर राष्ट्रीय कार्यक्रम सम्भव हो सकता है उनमें अखरदार तरीके से करने का निश्चय हुआ।

धार्मिक संयोजन

प्रदेश तरुण-शान्तिसेना का बहुत ज्यादा काम आर्थिक कमी के कारण ही नहीं हो पाता। अतः इसका संयोजन करने का भी महत्त्वपूर्ण निश्चय हुआ। आय के निम्नलिखित साधन मुहाराये गये :-

१. शिबिरों और अन्य कार्यक्रमों में जनता से मोलक अभियान द्वारा प्राप्त सहायता
२. सांस्कृतिक कार्यक्रमों के द्वारा प्राप्त सहायता।
३. साहित्य-बिक्री से प्राप्त सहायता।
४. अर्ध-भारतीय शान्तिसेना मण्डल से सहायता। (एक बंद देनेय भी योजना के माध्यम से)।
५. उत्तर प्रदेश सर्वोदय मण्डल द्वारा प्राप्त सहायता।
६. प्रदेश शान्तिसेना द्वारा प्राप्त सहायता।
७. शान्तिसेना एवं उत्तर-शान्तिसेना दोनों की बिक्री से प्राप्त सहायता।

प्रांतीय शिबिर तथा सम्मेलन

दसहरे की छुट्टियों में प्रांतीय शिबिर व सम्मेलन इटावा में करने का निश्चय किया गया, यदि किसी कारणवश यह सम्भव न हो सके तो इसे कानपुर में करने का निश्चय हुआ। जिलों के तथा क्षेत्रीय शिबिरों के सम्भावित कार्यक्रम

- (अ) क्षेत्रीय शिबिर-वाराणसी १९ से २३ अगस्त।
- (ब) क्षेत्रीय शिबिर जरदई-२५, २६, २७ अगस्त।
- (स) क्षेत्रीय शिबिर-मथुरा-१, २, ३ सितम्बर।
- (द) उत्तराखण्ड क्षेत्रीय शिबिर-२३ सितम्बर से ७ अक्तूबर।

जिम्मेदारियाँ

सारा काम विकेंद्रित ढंग से तथा नियोजित तरीके से हो सके इसके लिए प्रदेश समिति के सदस्यों ने निम्न कामों की जिम्मेवारी स्वीकार की है

१. साहित्य-बिक्री व बैंक-बिक्री-श्री विनय भाई
२. शिबिर-सभाओं-बनरनाथ भाई, विनय भाई।
३. वायव्य-शिवसहाय मिश्र।
४. कार्य-संयोजन-सन्तोष भारतीय और अरुण कुमार।
५. सांस्कृतिक कार्य-संयोजन-अरुण कुमार।

एक बड़े राष्ट्र सेवर के लिए

प्रदेश तरुण-शान्तिसेना समिति द्वारा अनुसूचित युवकों को एक वर्ष की योजना में शामिल किया जाय ऐसी ७० भा० शान्तिसेना मण्डल से प्रदेश तरुण-शान्तिसेना की वर्षशा है।

—सन्तोष भारतीय

तरुण मन

तरुणों की मासिक पत्रिका
वार्षिक शुल्क : ५ रुपये
शान्तिसेना महल

सर्व सेवा सभ, राजघाट, बाराबंकी-१

कठिन समस्या, कठोर तपस्या

३० जुलाई को सहरसा में वन्यजित ग्रामस्वराज्य समिति की बैठक हुई। सर्व सेवा सच के अध्यक्ष के अतिरिक्त जिले के मुख्य कार्यकर्ता और नागरिक-सहयोगी उपस्थित थे। विचारणीय प्रश्न तो नहीं थे, विन्तु सब प्रश्नों का एक प्रश्न सबसे ऊपर था—गुफ्टि के क्षेत्र कैसे बढ़ाये जायें, गुफ्टि को सचन कैसे बनाया जाय, पूरे जिले में जल्द-से-जल्द कैसे गुफ्टि पूरी की जाय। रिल भर की चर्चा के बाद काम की कुछ नयी भूमिका स्पष्ट हुई, कुछ योजना बनी, छापी और छात्रन जुटाने के कुछ उपाय सोचे गये। नागरिक-मित्रों का जसाहद देखकर हमारा उत्साह भी कुछ बढ़ा।

बयाँ सहरसा, बयाँ मुसहरा, और बयाँ कोई दुसरा क्षेत्र, जहाँ नहीं भी हमारे साथी जानें, लगे हुए हैं, या अब लग रहे हैं, वे मस्यूस करते हैं कि गुफ्टि की समस्या विचयी कठिन है, और इसके लिए कितनी कठोर तपस्या की जरूरत है। गुफ्टि का कार्य सरल है, यह धन किसी को नहीं होना चाहिए; आर्थिक गुफ्टि सीमित समय में भी सम्भव और साध्य है, यह विचार हर एक को होता चाहिए। अपने काम में व्यक्ति विनयास होगा तो हिम्मत चायेगी, और हिम्मत होगी तो हिक्मत बूझेगी। क्रान्ति में संशय और पराजय के लिए स्थान नहीं है। साथ ही यह बात भी है कि इस जमाने में क्रान्ति भी उठी तरह सुनियोजित होगी वैसे और कोई भी; हमारा काम यही न हो वो शहीद होना बाकी नहीं है।

गुफ्टि का तात्कालिक लक्ष्य स्पष्ट है। ग्रामदान की शर्तों के आधार पर ग्रामस्वराज्य-समाप्त करें, और सक्रिय हो। उनके प्रतिनिधियों को लेकर प्रखण्ड (ब्लॉक) स्वराज्य-सभा गठित हो, यह सक्रिय हो। सब और प्रखण्ड के स्तर की ये दोनो समाप्त हलकी सक्रिय हो जायें कि अगले चुनाव में जनता 'अपने' उम्मीदवार विधान सभा में भेज सके। यह है गुफ्टि का अगले साल-दो साल का कार्यक्रम। देश में अधिक नहीं तो बीस-पचास दोनो में यह करके दिखाता है कि राजनीतिक व्यवस्था के लिए प्रचलित से भिन्न एक नया विकल्प सम्भव है, आर्थिक है, और आर्थिक उपयोगी है, और लोकतंत्र में सरकार बनाने के लिए काबू की तरह बली की जरूरत नहीं है। अगर हम इसका भी न दिखा सके तो देश को 'ग्रामस्वराज्य' की आर्थिक-विकास में कैसे विनयास होगा, और उसके पुनर्वास की वैसे प्रेरणा मिलेगी? आदर्श तो व्यवहार में उतारने की पहली जिम्मेदारी हमारी ही है।

ग्रामस्वराज्य की विधि के लिए 'भास ऐंजल' चाहिए, 'स्वायं ऐंजल' नहीं; समग्र जनता का चाहिए, दली का नहीं।

'भास ऐंजल' में विचार, असहकार, प्रतिहार सबके लिए स्थान है। अधिक क्रान्ति को समय पद्धति में कम, किंस 'व्यय' को आवश्यकता है इसका विवेक अतिवारी को होना चाहिए। हमारे साथियों द्वारा इस दिशा में सचन प्रयोग होने चाहिए। आर्थिक प्रयोग, और एनामी विधा से काम नहीं बनता। हमने नकोदर में जो प्रस्ताव मान्य किया वह इस प्रश्न पर स्पष्ट है।

जिस शोषण-मुक्ति और दमन-मुक्ति की कल्पना और कामना सामाजिक क्रान्तिवारियों ने, मनुष्य मात्र ने छाडी की है, उसका नाम हमने 'ग्रामस्वराज्य' माना है। सामन्तवाद, पूँजीवाद, सरकारवाद और संविक्रवाद का अंत हमने अपने 'विशिष्ट कार्यक्रम' में देखा था; इन सबसे भूतित ग्रामस्वराज्य में है। ग्रामस्वराज्य के आरोहण को सीधिया इतनी स्पष्ट हो गयी है कि सब दिशों को बरा भी धन में रहने की गुजाइश नहीं है। इन सीधियों को बनाने में 'सर्वोदय मित्र' हमारी पहली ईंट है, और ग्रामस्वराज्य-सभा पहली सीढ़ी। इतना सब जानते हुए भी यह मानकर चलना पड़ेगा कि गुफ्टि की समस्या कठिन है जो कठोर परिश्रम से ही हल होगी। हमारे साथी कम हैं, साधन बरबन्त सीमित हैं। लेकिन हम ऐसे निम्नु पर हैं कि साहस परके बाने बढ़ने पर ही हमें साथी भी मिलेंगे, और छात्रन भी मिलेंगे। उनकी प्रतीक्षा में बैठ रहने से हम अपनी बची-बचायी पूँजी भी गवा देंगे। कोई दूसरा साथी ही या न हो, क्रान्ति तो हमारी साथी है ही।

पेट के लिए !

'मजदूरी मत चीन्पणा, पेट के लिए जो चाहिएगा दे दीन्पणा !'

आज जगह-जगह उन लोगों की आर्त पुकार सुनने को मिल रही है जो अपनी मेहनत बेचकर रोज चमाते, रोज खाते हैं। पानी नहीं बरस रहा है। पानी न बरसे तो पेट में काम क्या हो, और काम ही न हो तो मालिक बग काम दे और मजदूर बना काम करे? मालिक, मजदूर दोनों अलहाय हैं।

उतले, लोटे, घाय, बकरी का बिना गुरू हो गया है। जमीन के छोटे टुकड़े बिरबी रखे जाने लगे हैं। मजदूरों के मुँह के मुँह बिल्लू होकर पेट भर व्यय के लिए काम की तलाश में पूल रहे हैं। सरकार बहोती है अन्न की कमी नहीं है। बाजार में दान बेइतहा बड़ों का रहे है। अन्न धो है पर खीरों वैसे? जेब में पंशा नहीं बचाये?

राजनीतिक दल बाने प्रयत्न कर रहे हैं लेकिन अल्प-जलय, छाप मिलकर नहीं। भूख-नाने को अपने प्रेम या प्रयास देने का सबसे अच्छा दूसरा अवसर क्या मिलेगा ?

रुद्ध के लिए सरकारों रखर का अन्धकार जुटाकर रखती है, लेकिन अधिनाथ परिवार ऐसे सरकों के लिए कुछ नहीं रखे—

कामगरो से प्रारम्भ हुआ जिसमें कि आज ११ लाख के आसपास कामगरे और बुनने-वाले तथा दूसरे कामगरे भगे हुए हैं। कुछ साल पहिले बड़ा था कि यह संस्था १२.५२ लाख के ऊपर चला गयी है। लेकिन ऐसा बहना इसलिए हास्यास्पद लगा क्योंकि इस तरह प्रत्येक कामगरे की वार्षिक आय सिर्फ २०-२५ ६० ठहर रही थी जो कि बहुत ही कम है। इसलिए कामगरो की संस्था स्वयं लीच कर नहीं उठ आ गयी जहाँ प्रति व्यक्ति आमदनी विपद्यमानी लगे। इसी तरह गाँवों की जितनी संस्था में खादी प्रामोद्योग-कार्य हो रहा है उसके सम्बन्ध में भी सत्य कुछ अधिक ही है। कदा तो यह जाता है कि करीब एक लाख गाँवों में हमारा यह कार्य चल रहा है, लेकिन मेरा क्याल है कि सिर्फ परम्परागत क्षेत्रों में ही खादी-कार्य हो रहा है। और ग्रामोद्योग-कार्य भी केवल ऐसे ही क्षेत्रों में हो रहा है, क्योंकि कच्चा माल, प्रशिक्षण, रत्नान, प्रेरणा और जीविका के अल्प विकल्पों की कमी आदि से अनेक बाधाएँ उत्पन्न हो जाती हैं। यहाँ १९६० की 'खादी मूल्यान समिति' की रिपोर्ट से, जो कि अब एक पुरानी रिपोर्ट ही नहीं जायगी,

इतना हट गये हैं कि हमें 'डेविप्लान्टरम्प' यानी पद्यप्रद बहना आ सकता है। ऐसा बहने पर मेरे ही सहकर्मियों में से नई छुटे रुझिवादी कहेंगे। इस तरह, गांधी-विचार माननेवालों में से भी आपकी 'पवित्रतावादी', रुझिवादी या न बदलने वाले और प्रोटेस्टेण्ट, पद्यप्रद या परि-वर्तनशील लोग मिल जायेंगे। इसलिए, हम लोग अब एक सामान्य उद्देश्य को लेकर चलनेवाली जमात नहीं रह गये हैं। संस्थावादी ज्यादातर लोगों के लिए खादी-कार्य वा उद्देश्य केवल प्रामोद्य जनता की 'बेरोजगारी और न्यूनरोजगारी' ही कम करना है। लेकिन जब अर्थशास्त्री उच्च विचार और तर्कों की बखौती पर कसता है तो रुझिवादी धीरे धीरे यह मान लेता है कि खादी-कार्य चालनेवाले को केवल अपनी मजदूरी दिव्यता है जिससे उसका पंट भी नहीं भरता, यानी उच्च कृषि-कार्य में मिलनेवाली सामान्य मजदूरी से भी नहीं कम मिलता है। इस तरह मिलने वाली रोजगारी सिर्फ आत्मिक या कुछ समय की रोजगारी रहती है।

गांधीजी ने 'नवनीचन ट्रस्ट' की अर्पने साहित्य के प्रकाशन सम्बन्धी सभी अधिकार देते हुए एक बाल विशेष रूप से स्पष्ट कर दी थी कि 'यदि किसी को किसी अमूल्य विषय पर उनके दो या दो से अधिक अर्थव्यक्तियों या विचारों में कोई विरोध या विरोधाभास प्रतीत हो तो उनका दोनों में से बादबाला या सबसे अन्तिम अर्थव्यक्त या विचार स्वीकार किया जाय और उसके पहिले के विचार छोड़ दिये जायें। लेकिन जहाँ तक खादी का सम्बन्ध है, लोगों को एक लम्बी-बौद्धि संस्था इस विचार के विपरीत कार्य करने के लिए अनुसन्धान कर रही है। सम्भवतः खादी और ग्रामोद्योगों के पुनर्संगठन पर गांधीजी की आज्ञा थी जो चर्चाएँ हुईं, जिसे सामान्यतः 'नवसंस्करण' नाम से जाना जाता है, उन्होंने खादी और ग्रामोद्योग-कार्य पर उनकी कही हुई पूर्व की सभी बातों को पीछे छोड़ दिया है। आत्मनिरीक्षण के लिए यदि हम आर्थ-वादी शब्दावली का प्रयोग करें तो यहाँ आ सकता है कि हम निश्चित मार्ग से

→ पाइें। बाजारों के भ्रष्टार व्यापारियों की मुनाफाखोरी के काम आ रहे हैं।

कारों और मूछा है, लेकिन नदिनी भरी हुई है। उनका पानी रिनारे के क्षेत्रों की भी नहीं मिल पाता। सब पानी सफ़्त में आ रहा है। निगल कितना पुष्पायं करे? मजदूर, छोटे रिस्त्रान और दल्लार का एक-एक दिन सपथ से मरना हुआ है। वह चाले हुए भी पुष्पायं नहीं कर सकता।

गर्भ में जाएँ, लोग यह कहते हुए भिन्ने कि अगर सरकार ने और कुछ न करके सबसे पहिले खेत-क्षेत्र में नदियों का प्रदूषण के नीचे का पानी पहुँचा दिया होता तो विज्ञान एक बार भगवान का भी मुनवाला कर लेता। इसमें कोई शक नहीं कि अन्तों गलत विज्ञान-नीति के कारण सरकार ने ग्रामोद्योग समाप्त वा भयंकर बढ़ित किया है। विज्ञान से हम अपने देश के लोगों को उठा सकते थे, उसे एक नया भव्य दे सकते थे, लेकिन ऐसा न कर हमने उन्हें शोषण की शक्तियों के हाथ में अशहाय छोड़ दिया जो उसकी हर मुसीबत की अपने लिए मोका बना

रही है। क्या कोई यह हिंसाव लगायेगा—सगा भी सकेगा?— कि सुख के इस सकट के कारण कितने जान से हाथ धोयेंगे, रिचनी जमीन गरीबों के हाथ से निहल कर अमीरों के हाथ जायेगी, गरीबों पर कितना नर्भ लदेगा जिसे बचा करने के लिए वे और उनके अन्धे महाजनो के हाथ बिकेंगे, ऐसे के लिए कितनी युवतियाँ अपनी इज्जत बेचने पर विवश होगी, और बिचने परो की छोटी-छोटी चीजें तक बिक जायेंगी? ऐसे सनट में मनुष्य भगवान पर न भरोसा करे तो बिच पर करे? यह ऐसा सकट है जो मनुष्य की आस्थाएँ हिला देता है उसकी जीविका को अस्त-व्यस्त कर देता है, मनुष्य में मनुष्य के प्रति सहानुभूति नहीं रहने देता; बर्ष-उप नो उपाधकर सहकार के लोगों को मुखा देता है; मनुष्य को मनुष्य नहीं रहने देता।

बौद्धिकता उस आर्थिक, सामाजिक, और नैतिक शक्ति को जो विज्ञान के होते हुए भी मनुष्य को प्रकृति के ऐसे सकट में उठानी पड़ रही है? क्या पानी का एक बार न बरसना विज्ञान के जमाने में भी असाध्य संकट माना जायेगा?

कुछ उद्धार देना उपयुक्त होगा।

‘१३६ प्रमाणित संस्थाओं में से २३३, ५०,००० मूल्य से भी कम की छादी प्रतिवर्ष उत्पन्न करती हैं। ५ लाख या उससे अधिक की छादी प्रतिवर्ष उत्पन्न करनेवाली संस्थाओं की संख्या सिर्फ २० है। ५ और ५० लाख रुपये के बीच के मूल्य की छादी प्रतिवर्ष उत्पन्न करनेवाली बड़ी संस्थाओं की संख्या १३ है जिनमें से आंध्र, बिहार, राजस्थान, पंजाब और उत्तर प्रदेश में से प्रत्येक में ऐसी एक-एक संस्था है, जबकि मद्रास में २ हैं। भी गांधी आश्रम ससनऊ और बिहार छादी प्रामोद्योग संघ, मुजफ्फरपुर शर्मा में एक करोड़ से भी ऊपर की छादी का उत्पादन करते हैं, हैदराबाद छादी समिति, तमिल-नाडु सर्वोदय संघ और राजस्थान छादीसंघ प्रत्येक ५० लाख रुपये प्रतिवर्ष का छादी-उत्पादन करता है और ये संस्थाएँ भी गांधी आश्रम व बिहार छादी प्रामोद्योग संघ के साथ मिलकर कुल छादी-उत्पादन का ८० प्रतिशत उत्पादन करती हैं। यह विस्मयजनक स्थिति है कि ६ राज्यों वाली उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब, राजस्थान, आंध्र और मद्रास की १९ बड़ी और १३ मध्यम संस्थाएँ छारे देण के छादी-कार्य पर हावी हैं।

‘परम्परागत रूप से छादी उत्पादन करनेवाले इन राज्यों में भी नये क्षेत्रों में छादी-कार्य का संगठन नहीं हुआ है। पिछले ६ वर्षों में इन संस्थाओं ने कुछ नये क्षेत्रों में सतही स्तर पर कुछ काम की छोरकर, छादी-कार्य को फैलाने के बजाय परम्परागत क्षेत्रों में ही अपने कार्य को और सघन किया है।’ १९५८ में छादी संस्थाओं की स्थिति पर ‘अग्रिम पेशवा कमिटी’ ने निम्न प्रमाण डाला है : ‘ऐति-हासिक रूप से देण नाम की पञ्जीकृत संस्थाएँ ही छादी-कार्य का आधार रहती हैं। छादी वनीकरण के अनुष्ठान ऐसी संस्थाओं की संख्या १०३७ है। इनमें से कमिशन ने ३५९ बड़ी संस्थाओं की, जो कि शारे छादी-उत्पादन का ८० प्रतिशत उत्पादन करती हैं, सहमता प्राप्त

संस्थाओं की पहली सूची में रखा है। इनमें से कई संस्थाएँ भी रीय २० प्रतिशत का उत्पादन करती हैं, नहीं हैं। अतः उन्हें काफी सहाये की जरूरत है।’

‘इन वर्षों में जो मुद्दे निकलते हैं वे इस प्रकार हैं : १—छादी और प्रामोद्योग कार्य सभी राज्यों और क्षेत्रों में समान रूप से नहीं फैला है, २—यह जयेशाकृत प्रति व्यक्ति औसत कम आमदनीवाले राज्यों और पिछड़े क्षेत्रों के रूप की दृष्टि से भी विस्तारित नहीं किया गया है, ३—किस राज्यों या क्षेत्रों में छादी और प्रामोद्योग कार्य काफी फैला, कहा जाता है उनमें भी यह पूरे राज्य या बड़े क्षेत्रों में व फैलकर कुछ चुने हुए सीमित क्षेत्रों में ही फैला हुआ है, ४—छादी और प्रामोद्योग-कार्य ने भी अन्य उद्योगों की तरह काफी क्षेत्रीय अग्रगुण उत्पन्न कर दिया है।

वहाँ तक प्रामोद्योगों का सम्बन्ध है, उनको भी स्थिति कुछ बहुत भिन्न नहीं है। यह अच्छा ही है कि अखिल भारतीय छादी और प्रामोद्योग बोर्ड ने १९५३ में अपना कार्य जिन संस्थाओं को नकर प्रारम्भ किया उनकी संख्या उपलब्ध नहीं है। लेकिन १९६८ में रजिस्टर्ड संस्थाओं की संख्या १९९२ और देण भर में विभिन्न प्रामोद्योगों के विभाग में लग्गी कोऑरेटिव सोसाइटियों की संख्या करीब २२,२४१ थी, जो कि देश भर के औद्योगिक-सहकारी समितियों की संख्या का लगभग ३० प्रतिशत थी।

इस तरह छादी तथा अन्य प्रामोद्योगों ने १९६९-७० में जिन लोगों की मोटी-रोटी की व्यवस्था की उनकी कुल मिलाकर संख्या करीब २० लाख रहती है, जिनको कुल कमाई २७१५.०८ रु० अंश है। इस कमाई में नये प्रामोद्योगों से की गयी कमाई भी शामिल है। इस प्रकार हिसाब बँटाने पर प्रति व्यक्ति वार्षिक औसत आमदनी १३५.७ रु० जाती है। इन लोगों में से लगभग ११ लाख व्यक्ति केवल छादी-कार्य में लगे हैं जो १५९२.९८ रुपये वार्षिक औसत प्रति व्यक्ति

१३५.७२ रुपये की कमाई करते हैं। प्रामोद्योगों में लगे हुए कामगर जिनकी संख्या लगभग ९ लाख है, १२९१.१० लाख रुपये वार्षिक प्रति-व्यक्ति १४०.१ वार्षिक कमाई करते हैं, जो कि छादी में लगे हुए कामगारों की कमाई से कुछ अधिक है। लेकिन गरीब एक दूसरी कठिनाई खड़ी हो जाती है। छादी के क्षेत्र में लगे हुए कामगारों की कमाई से कुछ अधिक है, जबकि इन्हीं कमाई करने-वालों की संख्या इस क्षेत्र में प्रति व्यक्ति वार्षिक औसत आमदनी ५०६ रु० है, व्यवस्था-कार्य में लगे प्रति व्यक्ति की ११८० रु० जबकि कानूनवादी की मात्र ८५ रु० है। इस तरह इस क्षेत्र में लगे सबसे कम और सबसे अधिक मानेवाले व्यक्ति की आमदनी में १२.१३ गुने का फर्क है और यदि इस क्षेत्र में लगे राज्यों तथा क्षेत्रीय सरकार और सर्व-सहकारी संस्थाओं के लोगों की आमदनी का भी ध्यान रखा जाय तो यह फर्क ३० गुने का हो जाता है। स्पष्ट है कि सबसे गरीब तबकों के लोगों की गरीबी और भ्रमणता में भी बितनी वृद्धि हुई है।

यह एक बड़ी संख्या है जिसमें हम आन रह रहे हैं। अब जहाँ इस तथ्य पर विचार कीजिए कि जिसमें भी वास्तविक, सार्विक, और समाजिक जीवन की लो-एरार्थ बना है। कम-से-कम वे लोग नहीं जा सकते हैं। (१) व्यक्ति की स्वयं अपने बारे में क्या मान्यता हो, (२) अपने सामर्थ्य के बारे में क्या मान्यता हो, और, (३) प्रकृति, जल और खर के बारे में उपरोक्त क्या मान्यता है। अपने बारे में उपरोक्त की दृष्टि में रखें तो हम पावेंगे कि हमारी जागतिकी और चिन्तनीयता का हमें हर है उनमें एक मूलभूत चिन्तना है; उन्हीं उन्हीं उन्हीं उन्हीं और इन्हीं में पर्याप्त अन्तर प्रतीत होता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि हम अपने अपने से अलग-थलग हैं। प्रामोद्योग, ग्राम-स्वावलम्बन, समाज विकास कार्यक्रम, सघन क्षेत्र-विकास, ये सभी हमारी प्रतीति

से ही उत्पन्न हुए थे। लेकिन फिर भी हम अपनी ही पथभ्रष्टता और वस्तु-पगुता के शिकार बन गये हैं। जो कुछ कोशिशें हमने की भी हैं वे नाकामयाब रही। जैसे, ग्युनतम और अधिकतम आमदनियों के बीच का फर्क हमने देकना-लोंकी वी मदद से कम करने की कोशिश की, जो कि सागत और कार्यान्वयन दोनों ही दृष्टियों से महंगी पड़ी। चन्चे मास की बढ़ती भीमती और वास्तविक मजदूरी में गिरावट ने परम्परागत साधनों से बचाई करनेवालों की निम्नमा बना दिया। मधेन में आठ जो विधित है वह यही है, जहाँ हम अपने पिछले काम का लेखा जोखा और आगे की शिक्षा के सम्बन्ध में विचार करने के लिए बैठे हुए हैं।

इन सभी प्रामोद्योगी का अर्थ और उनकी सीमाएँ ऐसी हैं कि उनमें से अधि-वाग अपने अन्तः-से-अन्तः रूप में सिधे मौमयी, किसी अन्य पक्ष की सहायक या किसी समूह सम्बन्ध में एक दूसरे की पूरक मात्र हो सकती हैं। इन्हे किसी राष्ट्रीय स्तर के स्टैण्डर्ड परमाना पठित है क्योंकि इनके उत्पादन-रूपों और प्रक्रियाओं में इतनी भिन्नताएँ हैं कि इन्हे समान स्तर पर नहीं रखा जा सकता। इनकी क्वा-लिटी, शौ-च्य और इनके बाजार में बिक्र करनेवाले रूपों में विभिन्नता की काफी सीमा तक सुराईय तो है लेकिन उनकी निर्माण विधि का कोई स्टैण्डर्ड तय नहीं किया जा सकता। धारी के बारे में भी ये बातें सत्य हैं, जो में उसके नवीनी-करण, उसकी तननीक और उसके बड़े उत्पादन का काफी शायल हैं। इसलिए इन उद्योगों का डिनाउपन आर्थिक सहा-यता के मुताबिले स्थानीय सामुदायिक तन्पों पर अधिक निर्भर है। ये समुदाय द्वारा तो रक्षित हो सकते हैं लेकिन राज्य द्वारा नहीं। इसलिए हमें देग में उस आवश्यक नैतिक वातावरण का निर्माण करना है जिसमें ये उद्योग बढ़ और फल-फूल सकें।

अब हम बरा भारत सरकार द्वारा जनवरी १९५३ में स्थापित अखिल भार-

तीय खादी एवं प्रामोद्योग बोर्ड तथा १९५६ में स्वयं गांधीजी के निर्देश में अखिल भारतीय चरखा सघ द्वारा खादी एवं प्रामोद्योगी सम्बन्धित निर्धारित सिद्धान्तों और धर्मों के सम्पूर्ण आर्थिक जीवन के पुनर्गठन सम्बन्धी स्वयं गांधी के कथन पर विचार करें तो जिस सोमा तक हमने उन्हें स्वीकार किया है और जिस हद तक हम उनसे अलग रहे हैं उसे देखकर हमें स्वयं आश्चर्य होगा। जो बातें सामने आती हैं उनमें इन तथ्यों का भी समावेश होता है (१) खादी-उत्पा-दन का ४० प्रतिशत से भी कम आत्म-निर्भरता के लिए उद्धारित होता है, (२) विकेन्द्रीकरण अब भी दूर, बहुत दूर है, (३) हमने शुरुआत तो आत्म-निर्भरता के लिए की थी लेकिन पछिले किसी भी समय भी अर्थशा हम अधिक निर्भर बन गये हैं, (४) प्रामोद्योगी और गांधी से सम्बन्ध की बात छोड़िए, कार्यकर्ताओं का स्वयं पारस्परिक सम्पर्क शून्य तक पहुँच रहा है, (५) कई दूसरे राज्यों तक ये भी नहीं बिक्र अब विदेशों से मंगाई जा रही है, (६) जिस दिन यह बची-सुबकी सख्तियों कारण हुई उसी दिन यह सब खादी-कार्य बह जायगा, (७) सरकारी मदद तकनीकी मार्गदर्शन के अभाव पसा देने पर अधिक जोर दे रही है, (८) खादी की सहकारी समितियाँ बहुत ही कम संख्या में बनायी या प्रोत्साहित की जा रही हैं या उत्पादन की द्वाइ के रूप में चलायी जा रही हैं। लाखों रुपये की हैसियत वाली संस्थाएँ अभी भी सगठन की इका-इयाँ बनी हुई हैं, और, (९) पड़ोस या अपने ही राज्य में खादी बेचने की प्राय-मिन्नता देने के बजाय दूर-दूर जगहों में खादी भेजने के लिए किसी केन्द्रीय सगठन से परामर्श की आवश्यकता नहीं समझी जाती। केन्द्रीय सगठन तक की भी दिल-पसरी खादी विदेशों तक में अधिक-से-अधिक भेजवाने में ही है। खादी अब समाप्तता की प्रतीक नहीं रही। यह वर्ग-भेद विधानों की ओर ही उन्मुख रही है। इससे ही अब स्वयं चलना भी बन्द हो

गया है। इसने अब पद और प्रविष्टा का प्रतीक बना प्रारम्भ कर दिया है।

बात यह नहीं कि समय समय पर सुधार के प्रयास नहीं हुए। १९६० की पहली खादी मूल्यांकन रिपोर्ट, उसके बाद इस सम्बन्ध में बहिन धुप की एक दूसरी रिपोर्ट, फिर 'अर्थिक मेहुता कमिटी' की रिपोर्ट, अपनी जगह सभी इसी प्रयास के प्रमाण हैं। हाँ, इतना जरूर है कि इन सभी रिपोर्टों में बिक्र खादी तथा अन्य प्रामोद्योग-कार्य में आनेवाली वटिनाद्यों और उनके निराकरण के उपायों की चर्चा है लेकिन सामाजिक, आर्थिक और सगठ-नात्मक समस्याओं के मुलदाव के लिए अधिक गठित कार्यक्रमों को कौन पूरा करेगा? यही एक पूण्यता की-सी स्थिति सामने आ जाती है, क्योंकि इन समस्याओं के मुलदाव की तरफ कोई प्रयत्नशील नहीं है। ऐसी स्थिति में हमारे सामने रास्ता क्या है ?

स्थानीय स्तर पर खादी प्रामोद्योगी का कामगार सहकारी समितियों या काम-गार सगठनों के रूप में सगठन किया जाय जो कि ब्लॉक स्तर से बड़ा न हो। सभी प्रकार की आर्थिक या राजकीय सहायता बिक्र स्तर की औद्योगिक सहकारी समिति या पचायत या पचायत समिति की मार्फत दी जाय। राष्ट्रीय स्तर के सगठन इन छोटे स्तर के सगठनों को केवल तकनीकी मार्गदर्शन व प्रशिक्षण और उद्यम सम्बन्धी हुनर प्रदान करें। इन छोटी इकाइयों का सगठन, समुदाय, पूँबी, सरस्वों की संस्था, भौगोलिक स्थिति तथा उत्पादन का ध्यान रखकर किया जा सकता है। किसी बकिले नार्नरुम को पूरा करने के लिए न तो कोई सगठन बनाया जाय न एसे किसी सगठन को प्रोत्साहित किया जाय, क्योंकि इसका सामाजिक, आर्थिक व ध्याार्थिक नया ही दुष्परिणाम होता है। इसलिए किसी ब्लॉक के कन्दर की सभी प्रामोद्योगी सहकारी समितियों को एक दूसरे से सम्बन्ध करके या एक दूसरे में मिलानकर या उन्हें आपस में

(पेग पृष्ठ ७०३ पर) →

गांधी-मार्ग और समाज-परिवर्तन

● आर० आर० दिवाकर

[दिल्ली में रचनात्मक संस्थानों के सम्मेलन में दिखे गये उद्घाटन भाषण के आधार पर यह लेख यहाँ प्रस्तुत है । सं०]

रचनात्मक संगठनों और सरकारों के आग्रह में बहुत गहरा सम्बन्ध है । परन्तु भारतीय जीवन की सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन के लिए और अधिक शक्ति लगाने की आवश्यकता है । सरकार और भारत की समस्याओं के सम्बन्ध में गांधीजी का विचार था कि केवल राजनैतिक स्वराज्य काफी नहीं है । शिक्षण बगैरका में भी जब वह भारतवासियों के लिए सफाई कर रहे थे तो वहाँ भी उन्होंने वह कार्य शुरू कर रखा था, जिसे सामाजिक कार्य का पहला कदम कह सकते हैं । उन्होंने इस तरह का काम चम्पारन में भी शुरू कर रखा था । इस खिलड़िले में उन्होंने स्कूल खोलवाये, और प्राणीय दोनों में स्वास्थ्य, बीर सफाई के विचार फैलाये । भारत में इस प्रकार के रचनात्मक कार्य और समाज-सेवा के कार्यक्रम के १४ सूत्रों का अभियान चमाने के बाद बढ़ते गये । ये सूत्र बाद में बढ़ाकर १८ कर दिये गये । वैसे कोई यह कह सकता है कि रचनात्मक कार्यक्रम का कोई प्रश्न नहीं है । वास्तव में ये कार्यक्रम भारत की पूरी सामाजिक-आर्थिक पुनर्जीवन के हैं, जिनमें सबसे पहला काम गरीबों को ऊपर उठाना है—अर्थात् सर्वोदय । परन्तु इसके अन्वयोदय से शुरू होना चाहिए, गरीबों से होना चाहिए जो समाज का सबसे नीचले और बुरा दुर्गम हैं ।

यह याद रखने की बात है कि गांधीजी का सामाजिक-आर्थिक कार्यक्रम और काम केवल सुधार के लिए ही नहीं था, यह जनियार्थतः विपमता दूर करने और उन लोगों को सहित पहुँचाने के लिए था जिनके साथ इस सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था में न्याय नहीं होता और इसी रूपदोषों के ने विचार रहते हैं । उनके

उद्देश्य क्रान्तिकारी थे । उनका उद्देश्य आधुनिक समाज को बर्गहीन और जातिहीन समाज में बदलना था । इसका अर्थ था क्रान्ति, और क्रान्ति का अर्थ होता है निर्माण और रचना के मूल्य में परिवर्तन । वह अपने उद्देश्य में क्रान्तिकारी थे और अपनी पद्धति में विकासवादी थे । इसका अर्थ यह है कि वह सदा शान्तिमय, अहिंसक और शैक्षिक प्रक्रिया से क्रान्ति लाने की बात सोचते थे । ये ऐसी पद्धति चाहते थे जिससे सामाजिक चिन्ते की जागृति हो और समाज शक्तिशाली बने तथा सामाजिक क्रान्ति की प्रक्रिया जारी रहे । वह यह नहीं चाहते थे कि केवल राजनैतिक शक्ति या सत्ता के रूप से परिवर्तन हो, बल्कि परिवर्तन इस विश्वास के साथ हो कि परिवर्तन मनुष्य की उन्नति और विश्वास के लिए जरूरी है ।

यद्यपि स्वतंत्रता के समय के बीच गांधीजी ने कौशल या विधान सभाओं में जाना पसन्द नहीं किया था । वह उस समय भी इस बात के विरोधी नहीं थे कि चुनावों के हटाने के लिए बालूत का प्रयोग किया जाय । अंग्रेजों राज्य में भी कुछ व्यवस्थागत सुधार लाने के लिए यह बालूत के विरुद्ध नहीं थे । इस बात पर जोर बहुत स्पष्ट है कि बालूत और राजनैतिक शक्ति का प्रयोग किया जा सकता है जबकि जनमत बहुत मजबूत है और बालूत का पूरा-पूरा उपयोग करता है ।

स्वतंत्रता के बाद हमारे पास एक सोशलिस्टिक पद्धति थी सरकार है । हमारे यहाँ आम चुनाव हुए और केन्द्र एवं राज्य में सोशलिस्टिक सरकारें काम कर रही हैं । भारत की सभी सरकारें 'सत्यागकारी राज्य' की वास्तव हैं । सरकारें भी लोकशिक्षण द्वारा सभावाद लाने की बात करती हैं । ये जनमत द्वारा

एक समाजवादी और लोकतन्त्रात्मक राज्य बनाने के लिए बालूत का उपयोग करेंगी ।

इसलिए जितनी भी गांधीवादी संस्थाएँ काम कर रही हैं, अगर उनका परस्पर उद्देश्य विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रम हैं और उनमें देर रही है तो सरकार को भी चाहिए कि सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन को गुरे तीर से शक्ति पहुँचाये । क्योंकि सरकार भी सोशलिस्टिक है, इस लिए बहुत सारे ऐसे विन्दु होते जिनमें रचनात्मक संगठन, मंत्रालय और विभाग न केवल एक दूसरे के मित्र हो सकते हैं बल्कि वे अधिप-ये-अधिक सहयोग आपस में कर सकते हैं, ताकि जहाँ तक जन्दी हो सके परिवर्तन वाये ।

सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन या तो राजनैतिक रबाव और कार्य के द्वारा लाया जाता है या नीच से, या दोनों बलियों के एक ही समय में लगाने से । पिछले २५ वर्षों से भारतीय समाज की मौलिक आंधारों, अन्धता और अज्ञान तथा सोशलिस्ट और रहन-सहन के उच्च स्तर की शिक्षा की जा रही है । उस छोमा तक यह अपने अधिभार से परिचित है । जनमत सम्बन्धी हमारी शिक्षा में यह कमजोरी है कि लंग अपने इस उत्तरदायित्व से परिचित नहीं है कि समाज के प्रति उनका क्या वर्तन है । उन्हें पत्रिची राष्ट्र-प्रेमी और व्यभिक्तता तोर पर सोचनेवाला होना चाहिए । त्रिभ प्रकार की भी जागृति हो, सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन में उसी स्पष्ट भूमिका होनी चाहिए । इसी प्रकार केन्द्रीय और राज्य सरकारें अपने उत्तरदायित्व को समझें और स्थितना करती हो उनके सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन लाने के सम्बन्ध में कदम बढ़ायें । ●

नयी तालीम

हिन्दी मासिक

वार्षिक चन्दा : ८ रुपये

सर्व सेवा सम, पत्रिका विभाग

राजघाट, पाराणसी—१

हिंसा की जड़ें : कितनी गहरी

● विद्या

समाज में हिंसा के अनेक रूप हैं। कुछ ऐसे हैं जिनकी तरफ हमारा ध्यान भी नहीं जाया। धर्म, राजनीति, उद्योग, शिक्षा, सभी स्थान हिंसा के केन्द्र बने हुए हैं। वे सभी स्थान ऐसे हैं जिनकी तरफ हमारा ध्यान सदा ही चला जाता है, और सरकार तथा समाज का हस्तक्षेप होता है, बन्धन भी सुधार करने की कोशिश करता है। लेकिन हिंसा का एक सुरक्षित क्षेत्र है। यह है अपना घर, जहाँ सरकार, समाज, और कानून की पहुँच नहीं है। परिवार मानव की पहली पाठशाला है, सुख-सुविधाओं और शान्ति का केन्द्र तथा सामाजिक जीवन का मूलधार है। परिवार में हिंसा होने से हिंसा जीवन पर एक अनिवार्य अंग बन गयी है।

समाज में पिन्धूलक परिवार है, जिनमें पुरुषों की सत्ता है। सत्तामूलक समाज में व्यक्ति की भवोक्ति ऐसी बन गयी है कि वह हर अंग अपनी सत्ता कायम रखना चाहता है। इस सत्ता के प्रयत्न को लेकर जीवन का हर क्षण संघर्ष-मय होता जा रहा है। परिवार मालह का केन्द्र बना हुआ है। उमदा वातावरण ऐसा दमपोट्ट होता जा रहा है कि बच्चे की साँस लेना कठिन हो रहा है।

परिवार और बच्चे

परिवार में हिंसा बिल्के साथ होगी है। यह सोचने पर मुहबलू से बच्चे, पत्नी, विधवा और गौहर सामने आते हैं। बच्चा परिवार में जन्म लेता है। वहाँ उसके पालन-पोषण होता है। परिवार उसके जीवन की प्रथम पाठशाला और माँ उसकी प्रथम गुरु मानी जाती है। लेकिन परिवार ही वह स्थान है जहाँ बच्चों को दण्डाओं और अनोखताओं की अपेक्षा भी जाती है और माता-पिता अपनी दण्डाओं को उन पर थोपते हैं। यह कोई नहीं सीखा कि बच्चे का भी

एक रवतम अस्तित्व है, उसकी भी अपनी एक निराश्री दुनिया है। उसका मन हमसे अधिक संवेदनशील है। यदि इस ओर ध्यान दिया जाय तो बच्चों में हीन चरित्रों, आक्रोश और माता-पिता के प्रति अनादर की भावना पैदा नहीं होगी और हम बच्चों के बड़े अर्थ से मुक्त हो सकेंगे। बच्चों के साथ दमन का व्यवहार तो होता ही है, दण्ड और हिंसा का भी भरपूर प्रयोग होता है। यातनाएँ तक दी जाती हैं। अनादर ही नहीं, इस तरह का व्यवहार समझदार माता-पिता भी करते हैं। बसंत में हमारे बच्चे हमारी हिंसा के पहले शिकार हैं।

श्री की भूमिकाएँ

परिवार में श्री की अनेक भूमिकाएँ हैं, बेटे बेटों, बहन, पत्नी, और माँ। सभार में जन्म लेते ही उसके साथ सुराज शुरू हो जाता है। कुछ परिवारों में लड़की पैदा होते ही मार डाली जाती है। यह आज ही नहीं पहले से होता आ रहा है, लेकिन इस ओर न समाज का ध्यान जाता है न सरकार का। भो तो हर परिवार में लड़के और लड़कियों में अन्तर माना जाता है किन्तु कुछ परिवारों में लड़की की अधिक उम्मीद होती है। इन सके मूल में दहेज-प्रथा है जो परिवार बकूली या रही है। दहेज सरकार का कानून बन्द नहीं कर सकता। जलजक समाज की मान्यताओं द्वारा पोषण मिलता रहेगा, दहेज-प्रथा कायम रहेगी। दहेज न मिलने पर स्त्रियों को कितनी यातनाएँ सहनी पड़नी हैं और उसका कोई स्थान परिवार में नहीं बन पाता, वह उपेक्षित रहती है। इसी प्रकार विधवा होना भी एक अप्रियण है। विधवा का समाज और परिवार में जो स्थान है उसे आज और हम बकूली लख जाते हैं। उसके जीवन में याचना, प्रताड़ना, और लाज

के सिवाय रह ही क्या जाता है? परिवार में वह धृगा की दृष्टि से देखी जाती है और उसके लिए समाज ने ऐसे कठोर नियम बनाये हैं जिनका पालन करना तयमम असम्भव है।

परिवार में जो हिंसा होती है उसमें ऐसा नहीं है कि कोई एक व्यक्ति सबके साथ हिंसा करता हो। इसके अन्तर्गत अपने सभी रिश्ते और सम्बन्ध प्राते हैं जिनको हम मधुर भी मानते हैं, जैसे-सास-बहू के सम्बन्ध, नन्द-भाभी के सम्बन्ध, देवर-भाभी के सम्बन्ध और पति-पत्नी के सम्बन्ध। इन सम्बन्धों की कल्पना कितनी मधुर है और वास्तविकता कितनी कठोर है, यह प्रत्यक्ष अनुभव से ज्ञात जा सकता है। परिवार में पुरुष ही स्त्रियों पर अत्याचार करते हो, ऐसा नहीं है, बल्कि स्त्रियों द्वारा स्त्रियों पर अधिक जुल्म किये जाते हैं। पति-पत्नी के सम्बन्ध को देखा जाय तो वाज कितने सौम्य हैं जिनका सुधी वास्तव्य जीवन बड़ा जा सकता है? श्री जिस पति को परमेस्वर समझते हैं और जिसे पाकर अपने जीवन की सफलता मद्दुस करती है क्या वह उसके साथ वास्तव में परमेस्वर का व्यवहार करता है? परिवार में पुरुष की सत्ता होगी है, उसी को महत्ता रहेगी है, श्री का कोई महत्त्व नहीं रहेगा, श्री का स्वतंत्र अस्तित्व ही नहीं माना जाता। घरेलू नीकर

घर में नीकर के साथ जो व्यवहार किया जाता है, क्या इस लोकतंत्र के युग में एक व्यक्ति का दूसरे से यही होना चाहिए? क्या आज हम उसकी सेवाओं का उचित मूल्य आँकते हैं और उसे भी एक व्यक्ति का मधुर मानकर उचित सम्मान देते हैं? उसके साने-पीने, सोने-जापने और उसकी इच्छाओं का जरा भी ध्यान नहीं रखा जाता, वह सर्वे हमारे अविचार का पात्र बना रहता है। ऐसी स्थिति में नीकर का भी मालिक के प्रति जो विचार, तपान, ईमानदारी होगी चाहिए, नहीं रह पाती है। ऐसा लगता है कि उसकी सेवाओं के बदले में उसे

उत्तमों दिये जाते हैं, उसके हम उसका समय ही नहीं बलिहारी उसकी आस्था तक की खरीद लेते हैं। इतना ही नहीं, बात-बात में उस पर इन्हीं की बरखाते हैं। सभ्यता की ये मर्यादाएँ

ये हिसाएँ ऐसी हैं जिनको हम हिसा नहीं समझते बल्कि यह मानते हैं कि ये समाज की पारम्परिक मान्यताएँ, मर्यादाएँ तथा रीति-रिवाज हैं जिनका हम पातन करते रहते हैं। इनके साथ किसी के अविचार और किसी के वर्तमान की भावना जोड़ दो मयी है, और हमने भी इस ल्यबि की खोज कर लिया है। सभ्य समाज ने जो मान्यताएँ, मर्यादाएँ बना रखी हैं, सभ्यता का सवादा ओदन-पालो में उसे तोड़ने का साहस नहीं है। व जाने वच तक हम इस घुटन में संतुलित रहेंगे? इस प्रकार समाज की पारम्परिक मान्यताओं द्वारा हिसा की पीपण मिल रहा है और परिवार में हिसा होने से हमने मान लिया है कि हिसा हमारे जीवन में अनिवार्य है।

प्रत्यक्ष हिसा : अप्रत्यक्ष हिसा

हिसा के दो रूप हैं - एक वह जो मनुष्य के शरीर को समाप्त कर देता है, और दूसरा वह जो मनुष्य के शरीर को समाप्त तो नहीं करता बल्कि उसके जीवन को निराशा, अपमान, विरक्तकार तथा भ्रमों का आम में जलावा रहता है, और उसे घुट-घुट कर जीने की विवश बिते रहता है। एक हिसा होती है जिसमें पूरा की तबियाँ बहती हैं तो दूसरी हिसा ऐसी होती है जिसमें पूरा शरीर के अन्दर ही सूखता रहता है। इसी हिसा के अन्तर्गत परेसू हिसा आती है जिसे हम हिसा नहीं मानते हैं।

समस्याएँ एक युग से दूसरे युग में बदलती रहती हैं, क्योंकि लोगों की बचननाएँ, भावनाएँ, आवश्यकताएँ, आशा-छाएँ बदलती रहती हैं। हम अपने युग के प्रभाव से पूरा-पूरा असम नहीं हो पाते हैं। यह परिस्थिति की विवशता है। जैसे गांधी ने 'सर्व' को बात कही, इसलिए उस और अहिंसा की बात कही।

मानस में 'सर्व' की भावना तो थी, लेकिन यह पारंपरिक से अलग की प्रकृति नहीं निकल सका, उसके अंदर से बर्बाद ही निकल सका। गांधी ने 'सर्व' की स्पष्ट योजना की जिसमें एक-एक नागरिक सक्रिय हो सकता है, जिसे क्रान्ति स्वयं 'सर्व' ने ही जाती है। इसलिए यह मानना चाहिए कि समय के साथ हमें अपनी सामाजिक मान्यताएँ और मर्यादाएँ भी बदलते रहना है, क्योंकि इसी मान्यताओं और मर्यादाओं के अन्तर्गत परेसू हिसा की पीपण मिलता है।

आज के चीजें समाज में इसलिए व्याप्त हैं कि मनुष्य का विशुद्ध मानवीय विकास नहीं हुआ है। लोकतंत्र तार्थिक दृष्टि से शान्ति की प्रकृति पर आधारित है लेकिन उसकी वृत्तियाँ लोकतंत्र के विपरीत हो जाती हैं। लोकतंत्र में व्यक्ति की महत्ता है किन्तु हिसा के वातावरण में व्यक्ति की महत्ता नहीं रह जाती है। विज्ञान और लोकतंत्र के युग में

विज्ञान में सत्य की सत्ता होती है। सत्य पक्षरहित, वस्तुनिष्ठ, आग्रहमुक्त होता है। अगर विज्ञान किसी पक्ष या विचार के आग्रह से जुड़ जाय तो वह विज्ञान नहीं रह जायगा। उसी तरह अगर लोकतंत्र बहिष्कार का आधार छोड़ दे तो वह संस्थागत या अधिष्ठित बन जायगा। आज हर जगह हिसा की सत्ता दिखाई देती है। विद्यार्थी नरते हैं कि विज्ञान और आत्मशासन का मेल होना चाहिए। अगर ऐसा नहीं होगा तो विज्ञान ने जो शान्तिवादी पैदा की हैं, जो साधन बनाये हैं उनसे मनुष्य-जाति अपना सर्वनाश कर डालेगी। इसलिए अगर विज्ञान को मनुष्य-जाति के अभाव, अज्ञान और बलाघात से मुक्ति का साधन बनाया हो तो समाज में अनुकूल मानवीय सम्बन्ध स्थापित होने चाहिए। मनुष्य-मनुष्य के बीच मनुष्य होने के बाने मूलभूत एतता है। मनुष्य 'एक' होकर ही रह सकता है तथा अपना विकास कर सकता है।

लोकतंत्र और विज्ञान इन दोनों के विपरीत समाज का सत्य बनाने में

परिवार की हिसा का बहुत बड़ा हाथ है। आज आवश्यकता है कि लोकतंत्र और विज्ञान दोनों का उपयोग हमारे घरेलू जीवन में भी हो। परिवार समाज की बुनियादी ईकाई है। बच्चा परिवार में ही जन्म लेता है, वहीं उसका पालन-पोषण होता है, वहीं उसके अर्थात्त्व की रचना होती है, वहीं उसकी भावनाएँ और मनोवृत्तियाँ बनती हैं। व्यक्ति और समाज एक दूसरे के पूरक हैं। व्यक्ति से समाज बनता है और व्यक्ति दो समाज को सही दिशा में ले जाता है या दिशा-हीन कर देता है, इसके अनेक उदाहरण हमारे सामने हैं। अनेक महापुरुषों ने समय-समय पर समाज को नयी दिशा दी है और देते रहेंगे। इस प्रकार व्यक्ति और समाज का अन्वेष-प्राथित सम्बन्ध है। व्यक्ति का प्रभाव समाज पर और समाज का प्रभाव व्यक्ति पर पड़ेगा। इसलिए हम सबसे पहले उस स्थान पर ध्यान देना चाहिए जहाँ उसके शरीर, निष्ठ और वृत्तियों की रचना होती है अर्थात् परिवार। परिवार के वातावरण का प्रभाव व्यक्ति पर पड़ेगा। इसलिए हम तभी से पड़ता है। यह तो भाविज्ञान से माना जाता है और इसके उदाहरण भी अपने-अपने-अपने में मिलते हैं जैसे-प्रह्लाद और अविमन्थु।

हिसासुक्ति के लिए मूल्य-परिवर्तन सबसे महत्वपूर्ण होता है कि समाज में व्याप्त हिसा खत्म करने के लिए तात्कालिक समाधान के रूप में हम भले ही यह सोचें कि सरकार की दम्ब-शक्ति समाज की हिसा को मिटा सकती है, किन्तु यह हिसा को मिटाने का स्थायी और बारम्बार तरीका नहीं हो सकता। यदि सरकार हिसा को मिटाना चाहेगी तो उसके लिए वह हिसात्मक, दमनात्मक कार्य करेगी। उससे हिसा घटेगी नहीं बढ़ेगी। इसी तरह समाज के हस्तक्षेप से कभी-नभी तात्कालिक शान्ति हो जाती है, लेकिन दम्बराज की स्थिति भी पैदा हो सकती है।

हम विश्व समाज की कल्पना करते हैं

शिमला-वार्ता: उद्देश्य को ओर पहला कदम

● जयपकाश नारायण

उठे बनाने में हमें सदाश की पारम्परिक मान्यता, मर्णाशत्रो, रीति-रिवाजों और मूल्यों को बदलना होगा। इसके लिए हमें आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा शिक्षा के क्षेत्रों में अपना दृष्टिकोण बदलना होगा, नये मूल्य स्थापित करने होंगे। यह युग वैज्ञानिक ही नहीं मनोवैज्ञानिक भी है। इसमें व्यक्ति और उसके मन को महत्ता माननी होगी। व्यक्ति का विशुद्ध मानवीय विकास हो इसके लिए परिवार में दस्य मन्वन्ध तथा समुचित आशावरण अनिवार्य है। परिवार के आशावरण को स्वस्थ और शुद्ध बनाना हर स्त्री और पुरुष की जिम्मेदारी है। स्त्री और पुरुष के विशुद्ध प्रेम ने ही मानव के अस्तित्व का आना-बाना बना है। प्रेम सार्वभौम है विन्दु प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने विशुद्ध सम्बन्ध-सूत्रों से उसमें नये जीवन, नये उत्साह तथा उत्कृष्टता का संचार कर सकता है। इस प्रकार हमें अपने घर में विज्ञान, सोचन, तथा आत्मगान, तीनों को अलगना होगा। जैसे, ए-छोटे से बीज-में एक विशाल वृक्ष का अस्तित्व समाया रहता है उसी प्रकार समाज में ध्यात हिंसा का अस्तित्व अपने घर में छिपा हुआ है। परेन्स हिंसा ही समाज में फँसी हिंसा का उद्गम स्थान है। मनुष्य में मुख्य बहनु मन है। भावना, वासना, धामना, प्रेरणा, अशा, निराशा आदि की धारी मानसिक वृत्तियाँ मनुष्य में काम करती हैं। भय, घाहल, अधिमान, मानापमान, प्रेम, आसक्ति, द्वेष, विरक्तार, पूषा ये सब मानव की मनोवृत्तियों के धेर हैं। मनुष्य को इन वृत्तियों का विकास, समन और दमन परिवार से शुरू होता है। परेन्स हिंसा को खत्म करने के लिए हमें अपने जीवन का आशा-वाता-वाता बदलना पड़ेगा। सभी वर्षों में सोचन, विज्ञान, तथा आत्मज्ञान, इन तीनों के अन्तर्गत आशा-व्यक्त परिवार को बनाना होगा तब ही समाज में मनुष्य का मनुष्य से विशुद्ध मानवीय सम्बन्ध देख सकेंगे। ●

भारत की प्रधान मंत्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति द्वारा किये जानेवाले सन्धि में दोष निवारना सम्भव है। परन्तु हरेक हिन्दुस्तानी को जो इस उप महाद्वीप में शान्ति का इच्छुक है उसे दिल से इस सन्धि का समर्थन करना चाहिए। परिस्थिति के कारण दो सरकारों के प्रधानों के द्वारा पहली मुलाकात में की हुई सन्धि अन्तिम रूप की दिशा में केवल पहला कदम ही है। आरम्भ में ही पूर्ण रूप से सद्भाव की आशा रखना अवास्तविक था। मैं पुनः कहूँ कि कई दोष और अवलोक्य कथम उठाने के सिलसिले में बाधा हो गया है। मुझे यकीन है कि अगर उन्हें ईमानदारी से बाधित किया गया तो भविष्य में कदम उठाने के लिए रास्ता साफ हो जायगा। मैं प्रधान मंत्री श्रीमती गांधी और राष्ट्रपति भुट्टो, दोनों के सम्बन्धों और सहयोगियों की प्रशंसा करता हूँ। बड़े अफसोस की बात है कि एक ही व्यक्ति, जिसने इसके लिए बड़ी सख्त मेहनत की थी वह एकाएक बीमार पड़ गया और वार्ता में अन्त तक भाग न ले सका।

यह आवश्यक मान्यता ही है कि पाकिस्तान और उसके मित्रों को याद दिलावें जाय कि बिना बागला देश को पाकिस्तान द्वारा मान्यता दिये उप-महाद्वीप में स्थायी शान्ति की दिशा में कदम बजाना असम्भव है। बागला देश में कंठ होनेवाले १० हजार विप्राद्वियों और मानविकों के प्रति भुट्टो को चिन्ता ठीक है और बागला देश की सरकार ने जनपद (यूद्ध-बन्धियों पर) को मुकदमा चलाने का फैसला किया है, उस पर भी उनकी चिन्ता ठीक है। यह स्पष्ट है, परन्तु इसे पुनरा बहने की आवश्यकता है कि यह धरती बिना पाकिस्तान द्वारा बागला देश को मान्यता दिये मुकदमा नहीं चलती। ऐसा होने से मुझे

कि प्रधान मंत्री शेर मुजीबुर्रहमान को इस बात पर राजी करना आसान हो जायगा कि वह पाकिस्तानी नागरिकों एवं कोशियों पर मुद्राशा चलाने का विचार छोड़ दें। मैं कम-से-कम इसी बात की कोशिश करूँगा कि शेर मुजीबुर्रहमान ऐसा न करें।

एक दूसरी समस्या भी है जिसकी हल किये बिना तीनों देशों की सरकारों के बीच माईवारा नहीं हो सकता। यह २० लाख (बागला देश में रहनेवाले) बिहारी मुसलमानों की समस्या है जिनकी परिस्थिति अब्ध चिन्ताजनक है। इसी तरह ४ लाख बंगालियों को भी समस्या है जो पाकिस्तान में हैं। इस समस्या के कारण बड़े पैमाने पर केवल इससे इनसान पीछित ही नहीं हो रहा है बल्कि सम्बन्धित देशों के सम्बन्ध भी खराब हो रहे हैं। मैं उम्मीद करता हूँ कि सद्द भुट्टो, जिन्होंने दूरदर्शी राजनीतिज्ञ होने का सबूत दिया है, इस परिस्थिति का सामना करेंगे और वह काम करेंगे जो सही है और उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए जरूरी है। इस बात की ओर भी सकेत कर देना चाहिए कि भविष्य में बागला देश और पाकिस्तान के बीच जो सम्बन्ध बनने से इस बात पर निर्भर करेंगे कि पाकिस्तान बागला देश की स्वतन्त्र हैसियत स्वीकार कर ले और उसे मान्यता दे दे।

कश्मीर के बारे में भी एक बात कहना सही होगा। यह बड़ी चुनौती की बात है कि प्रधान मंत्री और शेर मुजिबुर्रहमान, हाल ही में मिले हैं और दोनों एक बातपर सहमत हो गये हैं कि कश्मीर की पुरानी और दीमक खापी हुई किताब न गवा बनें उलटा जाय। भारत और पाकिस्तान में इस युद्ध-विचार रेखा को स्थायी शान्ति और अन्तर्राष्ट्रीय सीमा मानने के सिलसिले में जो भी सन्धि हो, पहला कदम यह होगा चाहिए। ●

स्वतंत्रता की रजत-जयन्ती मनानेवालों हमें आपसे कुछ पूछना है, कुछ कहना है !

हम देश के लाखों दूटे हुए गाँव हैं। एक जमाना था, जब हम सचमुच गाँव थे। हमारे ग्रामवासी एक दूसरे से मिल-जुलकर रहते थे, दुख-सुख में एक-दूसरे का हाथ बँटाते थे, अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए हमें सहृदय और सरकार का मुँह नहीं ताकना पड़ता था। हम लड़ने-झगड़ते भी थे, लेकिन पच परमेश्वर के सामने मामले निपटा भी लेते थे। आज तो हम कचहरियाँ में दौड़ते-दौड़ते बर्बाद हो जाते हैं, लेकिन प्यास नहीं मिलता। हमारे उद्योग-पन्थे चौपट हो गये। गाँव दिनो-दिन कगाल हो रहे हैं, बाजार दिनो-दिन मालामाल हो रहे हैं ! नेता आते हैं, चुनाव लाते हैं, वारे दे जाते हैं, वोट ले जाते हैं, और एक कलह की आग हमारे बीच धधका जाते हैं। हम भारत के गाँव हैं। कहा जाता है कि भारत गाँवों का देश है ! तो विनाश की आग में धू-धू कर, जलनेवाले गाँवों का देश क्या हमारी बर्बादी की खुशी मना रहा है ?

मैं एक खेतिहर मजदूर हूँ

सुनता हूँ कि देश में अपना राज है। अंग्रेजों की घुनामी को खत्म हुए २५ साल ही गये। २५ साल ! इतने सालों में तो एक लड़का पैदा होकर जवान बन जाता है। बल्कि हम-सोसा के लड़के तो २५ साल में अब बूढ़े होने लगते हैं। यह भी सुनता हूँ कि दिल्ली में इस बात की बड़ी खुशी मनायी जा रही है कि अपना राज आये २५ साल ही गये।

जब नेता लोग वोट मांगने आते हैं तो कहते भी हैं कि यह देश की जनता का राज है। हमसे भी वोट मांगते हैं। कहते हैं यह राज तुम्हारा ही है। बाबू लोग बने-बने मजाक हम गरीबों से करते हैं ? जिसकी गिर छिद्राने के लिए अपनी एक सोपड़ी नहीं, जो अधभूखा हो जिन्दगी गुज़ारता है, जिसके तन पर लाज डकने नायक बरत भी नहीं, गूल-मछीना एक करके भी जो इज्जत और मुँह की जिन्दगी के लिए उड़ना ही मर जाता है, मरने पर

जिसके कफन का भी जोगाड़ नहीं हो पाता, उससे कहा जाता है कि यह तुम्हारा राज है। वाह रे हमारा राज !

हमें हरिजन कहा जाता है

गांधी बाबा के सुराजी लोगो ने हमारी बस्ती में आकर कहा था, "रंगरेजों का राज अब खतम हो रहा है, सुराज आनेवाला है। सुराज में ऊँच-नीच का भेद नहीं रहेगा। कोई भी छोटा-बड़ा नहीं माना जायगा। सबयुग आयेगा। जमाना बीत गया, इस बात को सुने, लेकिन हम तो जहाँ के वहाँ हैं। आज भी हमारे लिए भाग्य म नरक भोगना ही लिखा है। सुराज हुआ तो गांधी बाबा के चेलों की चाँदी बट्टी। पहले के बाबू बड़का लोग अब नेता कहलाने लगे हैं। लेकिन हमारे लिए तो अब भी वही वेगारी, उपर से गाँवी-गालीज, भारपौठ, हर समय बस्ती से खदेड़े जाने की धमकी !"

धरती का एक टुकड़ा अपना नहीं, पीने के लिए पानी का एक बूँदा तक नहीं ! हम क्या जलने सुराज क्या होता है ! जिनका सुराज होगा, वे मनायें इसकी खुशी !

सारी मार किसान ही पर ?

चारों ओर से हमारे उपर ही आफत है। सरकार जमीन को मिस्त्रिकत पर अपना कब्जा जमाना चाहती है, नेता लोग हम ही कोषा हैं, गाँव के हरिजन, मजदूर सब हमारे ही हिन्दोसर होना चाहते हैं, लेकिन हमारी हालत पर भी कोई नजर दौड़ाता है ?

तन, मन, धन लगाकर किसी तरह दखल बचायें रखने के लिए खेती करते-करते हैं, और पंदावार हुई नहीं, कि बाजार में भाव गिर जाते हैं। निजता खर्च लगाया, कितनी उपज हुई, इस पर मे हमारी उपज का भाव नहीं लगाया जाता। बीज, गाद, मिचारी, मजदूरी सबके भाव बढ़ते जा रहे हैं। जब पंदावार हमारे घरों में बाजारों में पहुँच जाती है तो फिर भाव आकाश छूने लगते हैं ! उपर बाजार की चँचों के भाव एक बार बढ़ गये तो फिर घटने का नाम नहीं लेते। हम पर दुष्टों

मार पड़ती है। हम क्या मनाये स्वराज्य की खुशी ?
 पृथी मनाये वे, जिनकी पांचो अँगुलियाँ भी मे हैं, वे सेठ-
 माहूकार, नेता-अफसर, ठीकदार-दलाल ! जिनकी कमाई
 सूने-पाले, बाढ-नूफान मे जोर भी बढ जाती है ।

हमारी जिन्दगी भी क्या है ?

विद्युत्की वार जब बोट पडा था, तो बडा शोर था
 कि इन्दिरा गांधी का राज हो गया है। औरत के राज मे
 औरतो का जीवन सुखी होगा। यही सोचकर हम सब
 औरतो ने इन्दिरा गांधी को ही बोट दिया था। लेकिन
 वहाँ कुछ फल पडा ? इन्दिराजी भले ही देश की
 मालकिन बन गयी हो, हमें तो घर मे भी कोई नही
 पूछना। हमारी जिन्दगी तो मर्दों की इच्छा पर है।
 सड़की थी, तूब पढना चाहती थी, घरवालो ने पढने
 नही दिया। चाहती थी अपने पैसे पर खड़ा होना,
 लेकिन बाप ने हमारा जीवन सुखी बनाने के लिए हमारा
 रुपया मे हमारे लिए सुखी-समृद्ध घर और बरखरीद दिया,
 और हम वहाँ सुख भोगने के लिए रख दी गयी। वहाँ
 हमारा सुख यही था कि साध-ससुर मे लेकर घर के सब
 लोगो को खुद रखने को हर कोशिश कर्हे, पति की
 इच्छानुसार चर्नू, मां बनकर चाहे जितने बच्चों का
 पास्तन-पोषण कर्हे, हर तरह की दुख-तकलीफ सहूँ, घुट-
 घुटकर मर्हे, और सबको खुश रखूँ। यही जिन्दगी मेरी
 मां ने, सास ने बितायी, पीढियों से लोग यही जिन्दगी
 बितायी और आनेवाली बेटी-बहू पर उधका भार सोपती
 आयी है, मे भी शायद यही करके चली जाऊँगी। क्या
 अंग्रेजो राज, क्या सुराज्य और क्या इन्दिरा राज, सब
 हमारे लेखे बराबर है। सोचती हूँ क्या कभी हम भी
 मर्दों की तरह समाज के नागरिक बनकर जी सकेंगी ?

कौरववादी समाज के हम अभिमन्यु कौरे क्या ?

नेता जब हमारे बीच भाषण करते हैं तो कहते हैं,
 तुम भारत के भविष्य का निर्माता हो। देश की बागडोर
 तुम्हारे हाथो मे आनेवाली है। मुम्हें रूमे सम्भालने योग्य
 बनना चाहिए। तुम देश की नयी जिन्दगी के प्रतीक हो,
 देश का नव-निर्माण तुम्हारे हाथो मे है। वही नेता जब
 वही जोर भाषण देते हैं तो कहते हैं, देश का भविष्य अन्ध-
 कार में है। तरण पोर्षा उच्छ्वसन, आवाज और गैर-जिम्मेदार
 हो गयी है। उसके अन्दर विध्वंसक वृत्ति पैदा हो गयी है।

देश का भविष्य खतरे मे है। यही नेता जब अपनी
 पार्टी के लिए हमारा इस्तेमाल करते हैं तो इन विध्वंसक
 प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन देते हैं, इतना ही नही, उसकी हमें
 ट्रेनिंग भी देने हैं। देश की ससद तक मे उठा-पटक होती
 है तो क्या हम उसे शिष्टाचार कहेंगे ? देश का भविष्य
 सन्मुख अन्धकारमय है, हम खुद उस अन्धकार के भय से
 चीखते-चिल्लाते हैं, छ पटाते हैं, तो हम गैर-जिम्मेदार
 कहा जाता है। आखिर भविष्य-निर्माता हम हैं, इतना
 कहने मे धर्ममान के निर्माता अपने काले-कारतामो से
 मुक्त हो जायेंगे ? ऐसा लगता है कि परिवार, विद्यालय
 और समाज के सत्तावादी चक्र-ग्रह में हम अभिमन्यु फँस
 गये है और इस कौरववादी समाज के भीष्म, द्रौण भी
 हमारे ही उपर प्रहार कर रहे हैं। स्वतंत्रता की रजत-
 जयन्ती आ गयी है। शहीदों की याद करके हमें कुछ
 प्रेरणा भी मिलती है, लेकिन इस चक्र-ग्रह में फँसे हम
 अभिमन्यु कौरे क्या ?

हम भारत के निर्माता, या कोल्हू के बैल ?

बच्चो को हम इतिहास पढाते हैं, अंग्रेजो ने भारत
 को सदियों तक गुलाम बनाये रखने के लिए यहाँ की
 शिक्षा, संस्कृति को नष्ट कर डाला और एक ऐसा तथ
 र झा किया जिनमें मे उनके शासन के गुलाम पैदा हो जो
 उनकी भरी राजगद्दी को भारत मे टिकाये रखने के लिए
 आधार, बुनियाद बने। लार्ड मेकाले ने इसके लायक शिक्षा-
 प्रणाली देश में लागू की थी। "स्वराज्य के यत्नो १५
 अगस्त १९४७ के बाद मे यही पाठ हम दुहराते जा रहे
 हैं। २५ वर्ष हो गये ये बाने दुहराते। अब स्वराज्य की
 रजत-जयन्ती मनायी जा रही है। हमें तो कभी-कभी
 शर्म आती है, इस छलना से जब यह ध्यान मे आता है
 कि मेकाले तो आज भी शिक्षा में कायम है ! शासक
 बदले, शासन के ढाँचे में कुछ पैर-झर हुए, देश का झण्डा
 बदला, लेकिन क्या शिक्षा भी बदनी ? गुलाम बनाने-
 वाली मेकाले की शिक्षा वी निन्दा हम रोज करते हैं,
 और कोन्हू के बैल की तरह उसी के चारो तरफ स्वराज्य
 के भूदले की तरह ही चक्कर भी लगाते हैं, क्या गुलाम
 बनानेवाली शिक्षा मे हम आजाद भारत की संस्कृति का
 निर्माण कर सकेंगे ? यह वही विडम्बना है कि मेकाले के
 कोल्हू में जुते हम बैलो से कहा जाता है कि तुम नये
 भारत के निर्माता हो !

—रामकाश राहो

हड़्डी गलानेवाले कार्यकर्ता आगे आयें

श्री भीरेन्द्र मजूमदार की जयपुर में खादी-कार्यकर्ताओं से चर्चा

राजस्थान के सादी जगत की जो परिस्थिति है, नहीं करीब-करीब धारे देक की है। फर्क इतना ही है कि ऊनी उत्पादन व साधु उद्योग राजस्थान की संस्थानों को बाध दिनाये हैं। पर ये तात्कालिक बाधें आन्दोलन की नहीं हिया एनपी, संस्था के कुछ कार्यवाही कुछ समय के लिए उससे भले ही टिक जायें। यदि आपकी प्रकृति करनी है, तो दुनियाप में जाना होगा, नहीं तो आपकी अपनी मर्दाना मानकर केवल मदद करने की दृष्टि तक ही सोचना होगा।

१९४४ में गांधीजी ने चरखा सघ को विवेचन कर देने की सलाह दी थी और चाहा था कि अब तक सादी का काम राहत या काम रहा पर अब उन्हें यह हिन्दू करना है कि चरखा सोपन व शासन-मुक्ति का प्रतीक है। गांधीजी की सलाह उस समय नहीं मानी गयी, हालांकि उस समय परिस्थिति इसके लिए अनुकूल थी पर मनःस्थिति अनुकूल नहीं थी। आज तो परिस्थिति भी अनुकूल नहीं। एवी स्थिति से धारे काम की नया मोड़ देना बल्लि है अतः नया धोर ही निभासने का प्रयत्न करना होगा।

इसलिए हमें अपना निश्चित रीत समझ लेना चाहिए। सादी के द्वारा हम छोटे पैमाने पर राहत देने का कार्य चाहे भले ही कर सकें पर बेरोजगारी दूर कर सकेंगे, यह सम्भव नहीं। कार्य उसी संकेत से दिया जा सकता है जिसका स्वामित्विक 'मार्केट' हो। सादी के लिए ऐसा नहीं कहा जा सकता। अतः इसके द्वारा तो राहत के काम में बहुत ब क्रान्ति के काम में मदद ही दी जा सकती है।

आजकल 'क्रान्ति' शब्द बहुत प्रचलित है। अनाज प्यारा पंथा हो जाय तो 'हस्त क्रान्ति' हो गयी। वहीं औद्योगिक

ही गयी तो क्रान्ति हो गयी। हमारी आजादी की लड़ाई में जो लोग म म बर्बर फेरते थे उनको हम क्रान्तिकारी कहते थे परन्तु दुनिया में जहाँ-जहाँ भी स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी गयी उधर उन्हीने 'क्रान्ति' शब्द से सम्बोधित न कर बार जाँच इण्डियेन्डिपेंडेंस (स्वातन्त्र्य युद्ध) ही कहा। हमें शोक से समझ लेना है कि युद्ध, क्रिडा और क्रान्ति ये सब शब्द अलग-अलग अर्थ रखते हैं। गांधीजी ने हमें 'युद्ध' से 'क्रान्ति' की ओर चलने की प्रेरणा दी, इसीलिए उन्हीने कहा कि कड़वा राज्य से विद्रोह स्वतंत्रता का पहला चरण है।

गांधीजी ने हमें बताया कि सन्तित और वंश में परिवर्तन होने पर क्रान्ति होती है। नैतिक शक्ति या धर्म के चालक बनना जाने से क्रान्ति नहीं होती। गांधी ने समुद्र की लहरों के समान भारतीय समाज की रचना का गुहाय विद्या था और कहा था कि चरखे के द्वारा अब राहत नागरी, प्रान्ति व कार्य सम्पन्न किया जाना चाहिए। उन्हीने स्पष्ट कहा कि प्रान्ति व कार्य सरकारी मदद के सहारे नहीं हो सकता। अतः सादी-कार्य को सरकारी सहायता से मुक्त रहना चाहिए।

आजादी मिलते ही सरकार ने अन्न-स्वावलम्बन की दृष्टि से सादी-कार्य चलाये की अब योजना बनानी तो गांधी ने उसे अव्योहार कर दिया और कहा कि यदि सरकार यह कार्य मुद करता चाहती है तो हमारे लोगों को उधमें नहीं पड़ना चाहिए। जो काम वह नहीं कर सकता, नहीं हमें उधना चाहिए।

पर धेर है कि गांधी ने हमें जो गाँव-गाँव में बिखरकर सामन्तशास्य की सघना करने का आदेश दिया उसरों को बिना नहीं बल्लि करते उन्हीने जो नहीं करने की बर्बर कहिया। सरकार को साधे का

काम सौकर हम बनना नहीं हटे बल्लि सादी-कार्य के लिए सरकारी सहायता व धन प्राप्त करने लगे।

विनोबा ने मुद्रा-प्रामदान के द्वारा हमें दूसरी दिशा की ओर मुझे जो प्रेरित किया है। जगह-जगह प्रामदानों की पोषण के साथ धन विचार वा उद्योग व प्रदर्शन हुआ, देश व विदेश तक वा ध्यान आरपित हुआ, पर अब कुछ लोगों की चुनकर इस विचार को अपनी रूप देकर, प्रयोग से सिद्धकर चलताना होगा, तब ही लोगों का धर्म 'पार्लियामेंट' होगा। पहली स्टेज के कार्य में तो पाहें जिस प्रकार के लोगों द्वारा कार्य कराया जा सकता था पर दूसरी स्टेज में- निम्नी एक निश्चित बिन्दु तक ध्यान-वाहियों को ले जाने का कार्य अत्यन्त बल्लि है, यह 'साद विज्ञान' से नहीं हो सकता। जिनकी हड़्डी गलाने की लैवारी हो, ऐसे लोगों द्वारा ही यह कार्य सम्पन्न हो सकेगा।

खादीवाले प्राव. कहा करते हैं कि धारी कपड़ा नहीं, विचार है। इसके पीछे बहुत बड़ी चर्चा है। कपड़े की हस्तियत में सादी टिक नहीं सकती। एव अर्थ-शास्त्री ने सादा हिसाब निगाहकर बताया कि सादी-कार्य के निमित्त से सरकार व जनता जो खर्च कर रही है उतनी राशि यदि सामील दिव्यार्थ के साधनों में खर्च की जाती तो सादी से बसाया रोजगार दिया जा सकता था। अतः उसके आधार पर धार टिक नहीं करते। नैतिक धारणा के आधार पर धार नहीं मिल सकता। अतः सादी-कार्य करनेवालों को अपनी मर्दानगी स्पष्ट समझ लेनी चाहिए और अ.प. की अन्तिमारी कार्य कर रहे हैं, यह बल्लि भी मन में नहीं रहना चाहिए।

आज जो प्रामदान की श्रुति हुकर हमलकराउर समारं गलित हो रही है, यह लक्ष्य धानलकाउर नहीं। यह तो बाधों की तरह ही एक संस्था-भाव वा स्थिती उद्भव विशेष के लिए जाने की गलतिय करना मात्र है। सामन्तशास्य का ही एक एक कदम धाने बड़कर धारे (१९४४ ७-२२) →

कार्यकर्ताओं एवं रचनात्मक संस्थाओं के प्रतिनिधियों की बैठक : कुल्ल निश्चय

बिहार के जिला सर्वोदय मण्डल एवं जिला ग्रामस्वराज्य समिति के अध्यक्ष, मंत्री एवं सचिव, रचनात्मक संस्थाओं के प्रतिनिधियों एवं प्रमुख सर्वोदय कार्यकर्ताओं की द्विदिवसीय बैठक १९ और २० जुलाई को मुंगेर जिला के खडगपुर में श्री परमेश्वरी दत्त झा के सभापतित्व में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। इस बैठक के पहले बिहार के लगभग दो दर्जन प्रमुख सर्वोदय कार्यकर्ताओं की पचदिवसीय बैठक १५ जुलाई से १९ जुलाई तक खडगपुर श्रौत पर हुई। श्रौत की बैठक को स्नेह-मिलन का नाम दिया गया और यास्तव में यह स्नेह-मिलन बैठक के प्रारम्भ से अन्त तक स्नेह पूर्ण रहा।

समग्र एक वर्ष पहले, इस प्रकार की बैठक का आयोजन हजारीबाग जिला के प्रसिद्ध जैन तीर्थस्थान मधुवन में किया गया था जिसमें निर्णय तो स्नेह उत्पन्न करनेवाला किया गया था, लेकिन पाठ्योत्त एवं भाषण ने वातावरण में बहुत दृढ़ता पैदा की थी।

जन १५ जुलाई को बैठक प्रारम्भ हुई, तब इस बैठक के संवादन के लिए कोई अध्यक्ष नहीं था। स्नेह-मिलन में सर्वोदय आन्दोलन की आध्यात्मिक भूमिका एवं भागे वा कार्यक्रम, भूमि-सुधार कानून एवं सर्वोदय आन्दोलन, सभ्य एवं आन्दोलन का मूल्यांकन आदि विषय पर चर्चा हुई और सर्वसम्मति से कुछ कार्यक्रम स्वीकार किये गये, जिन्हें १९ जुलाई की बैठक में विचारार्थ रखा गया।

१९ और २० जुलाई को सर्वोदय कार्यकर्ताओं की बैठक में, जिसे सर्वोदय सच की बैठक के नाम से हमलोग पुरारते हैं, सर्व सेवा सच के सम्मेलन, नबोर (पञ्जाब) में स्वीकृत प्रस्ताव, ग्रामस्वराज्य पुष्टि-अभियान के बिहार के राष्ट्रीय

मोर्चा सहरसा एवं मुसहरी के चयन का स्वागत किया तथा इन क्षेत्रों में ग्रामस्वराज्य की स्थापना, ग्रामस्वराज्य पुष्टि-अभियान की सफलता के लिए एक योजना स्वीकार की गयी। स्वीकृत योजना-सुधार इन क्षेत्रों में दो दर्जन पुरा समय देनेवाले समर्पित कार्यकर्ता कम-से-कम दो वर्ष सप्ताहार नाम करेंगे और प्रत्येक गाँव महीने के बाद एक महीने के लिए विरोध आन्दोलन वा आयोजन किया जायगा जिसमें राज्य एवं देश के विभिन्न स्थानों से कार्यकर्ताओं का लगातार समूह हममें उतरना से जुट जायगा।

इस अभियान में ग्रामीणों को, विशेष कर बेतनयौन शोषित व्यक्तियों को सग-ठिठ कर कार्यक्रम की सफलता के लिए आगे करने की दिशा में प्रशिक्षित करने की योजना है। ऐसे प्रशिक्षित व्यक्तियों का संगठन खड़ा कर ग्रामस्वराज्य एवं पुष्टि अभियान खड़ा करने का कार्यक्रम बनाया गया है जिसमें भूमि-सुधार कानून को कार्यान्वित करने एवं सभी तरह के अत्याय का अघातक विरोध कराने का प्रयास किया जायगा।

इस राष्ट्रीय मोर्चा के अतिरिक्त प्रत्येक जिले में कम-से-कम एक विधान सभा चुनाव-क्षेत्र को द्वाई मासकर सर्वोदय आन्दोलन के विभिन्न कार्यक्रम को कार्यान्वित करने का प्रयास रहेगा। इस प्रकार के क्षेत्र चयन करने वा एक प्रमुख कारण आगामी आम चुनाव के अवसर पर ग्रामस्वराज्य मोर्चा के विभिन्न क्षेत्रों से ग्रामस्वराज्य के प्रतिनिधियों द्वारा सर्वसम्मति से पक्ष-मुक्त लोक-प्रतिनिधि सम्मेलन वा चयन करने एवं उन्हें सचद एवं विधान सभा में भेजने की योजना भी शामिल है। लोक-प्रतिनिधि वा अल्प से पहले चुनाव क्षेत्र के गाँवों में ग्रामस्वराज्य की स्थापना करना तो आवश्यक है ही, लोगों

को निर्माक बनाने, ग्रामस्वरा एवं ग्राम-कोष वा गठन, मालकियत का स्वामित्व-विचयन एवं गाँव के प्रत्येक भूमिदान द्वारा अपनी जमीन वा बौंसर्वा अण, बीघे में कट्टा भूमिहीनों के बीच बिलरव कराने वा कार्यक्रम भी आवश्यक है।

बैठक में सर्व सेवा सच के मंत्री श्री ठाकुरदास नम के सुभाष पर इस राज्य में कम-से-कम एक सौ सम्पर्क-क्षेत्र बनाने का निश्चय किया है और प्रत्येक जिले के सर्वोदय कार्यकर्ताओं को इस सम्पर्क-क्षेत्र के चयन से लेकर लोक-प्रतिनिधि के चयन तक कार्य करने की दिशा में त्तन जाते की अपील की है।

बैठक में उपस्थित व्यक्तियों में आचार्य श्री राममूर्तिजी ने बगलोर में हुई चर्चा से अवगत कराया। सर्वोदय सच की बैठक ने बिहार में बिहार सर्वोदय मण्डल की स्थापना करने का निर्णय लिया तथा बिहार सर्वोदय मण्डल के कार्य को कार्यान्वित करने के लिए सर्वोदय विद्या-संगणकी, कैलाश प्र० शर्मा, सर्वनारायण दास, प्रधान प्रशासक सिंह, गोपालजी झा शरनी, रामनारायण सिंह, रामनन्दन सिंह, सच्चिदानन्द, त्रिपुरारी शरण, बँदनाय प्र० चौधरी एवं महेंद्र नारायण ११ व्यक्तियों की तत्पर समिति वा गठन किया। बैठक ने बिहार सर्वोदय मण्डल तत्पर समिति से निवेदन किया कि जद-से-जद मण्डल के विधान की स्वी-रेखा तैयार कर प्रस्तावित सर्वोदय मण्डल से स्वीकृत करा से तथा स्वीकृत विधान के आधार पर बिहार सर्वोदय मण्डल के गठन होने तक आवश्यक कार्य की जिम्मे-वारी उठावें। तत्पर समिति की प्रथम बैठक बनाने की जिम्मेवारी श्री नैताश प्रसाद शर्मा को सौरी गयी।

बैठक में सर्वोदय कार्यक्रम में तीव्रता प्रदान करने हेतु घन-नगह करने की बिहार ग्रामस्वराज्य समिति द्वारा पठित बिहार सर्वोदय कोष समिति को मान्यता प्रदान की गयी तथा इस समिति के अध्यक्ष, दो मंत्री एवं कोषाध्यक्ष को आवश्यकता अनुसार अल्प सदस्य की मनो-→

तरुण-शान्तिसेना, आचार्यकुल शिविर

जिना तरुण-शान्तिसेना हरदोई का विधिवत शिविर दिनांक २१ जुलाई से श्री रामेशचन्द्रजी के सपोजन में हरदोई शहर में प्रारम्भ हुआ। शिविर का संचालन श्री सन्तोष भारतीय ने किया। शिविर में शिविराधिकारियों को उपस्थिति ५६ थी, जिनमें फर्रुखवादा, इलाहाबाद, बाराबंकी और बाराणसी के ४ तरुणों ने भी भाग लिया था। शिविर में तरुण शान्तिसेना के उद्देश्य तथा कार्यक्रम पर भी अमरनाथ भारद्वाज, समान-परिचर्या की आवश्यकता तथा उसमें प्रतिहार के स्थान पर श्री विनय भारद्वाज शिक्षा में रूचि पर श्री रामचन्द्र राहोड़ी ने प्रवचन दिया। इन विषयों पर हुई परीक्षा में शिविराधिकारियों ने काफी उत्सुकता से भाग लिया।

शिविर के दूसरे दिन २२ जुलाई को शिविराधिकारियों ने शराब के विरोध में जुलूस निकालने का निश्चय किया। जुलूस में सय्यकान नगर की मुख्य सड़क पर से शराब-विरोधी नारे लगाते हुए शराब की दुकान के सामने धरना दिया। शराब की तीन दुकानों के सामने धरना दिया गया। इस जुलूस का समर्थन नाग रिफोर्मेस भी किया। नागरिकों ने भी शराब-
→ नीत करने का अधिकार माँगा गया।

बैठक ने सर्वोच्च विद्यालय विह, कैलाश प्रसाद शर्मा, सर्वनारायण दास एवं श्याम प्रकाश सिद्ध को सम्मिलित अधिकार दिया कि वे हिंसा-रिहाज-संग्रह एवं पुन-व्यवस्था का प्रयास करें जिसमें सर्वोच्च के विभिन्न अधिशासक अस्म-सत्य का व्यवहार शामिल है। बैठक ने वाचस्पतिकाद्वारा चामुनी फार्मार्ड करने का अधिकार भी बिहार प्राम-स्वराज्य समिति तदर्थ समिति के सचिव र

विरोधी नारे लगाने में उरबाह से भला लिया। यहाँ तक कि शराब की दुकान से जो पीनेवाले बाहर निकले उन्हें भी इस कार्य में भाग दिया। इसी ही पूर्व सूचना जिलाधीश को दे दी गयी थी।

शिविर में ७ शिक्षिकाओं ने भी भाग लिया था। उन्होंने चर्चाओं में तथा शिविर के दैनिक कार्यक्रम में अह् ही उरबाह से भाग लिया। भविष्य में तरुण शान्तिसेना के कार्यक्रम को आगे चलाया जान, इसका उन्होंने तत्पर किया।

हरदोई के तरुणों पर, जिसमें हाई-स्कूल से लेकर एम० ए० तक के विद्यार्थी थे, शिविर के दैनिक वातावरण तथा तरुण-शान्तिसेना के कार्यक्रमों का प्रभाव पड़ा और वे भविष्य में इसके संगठन तथा प्रचार एवं प्रव्यन्चार के विरोध में कार्य करने में ऐसा संकल्प लिया।

दूसरे शिविर को सफल बनाने में शहर के ही ६० के० एल० गुप्ता, श्री शरकर नाथ गुप्ता, रामहित भारद्वाज, मुँडोवाले बकरील शाह्य का नाम उल्लेखनीय है।

शिविर के समावर्तन में बीतान्त भाषण करते हुए ७० प्र० सर्वोच्च मण्डल के अध्यक्ष स्वामी लुप्यानन्दजी ने कहा कि यदि अब भी धर्म के ठोकेदार, शिक्षा के ठोकेदार नहीं होते, जनता और विद्यालयों के प्रति धरने कर्तव्य को नहीं समझे तो जनता उन्हें माफ नहीं करेगी और यदि वे स्वयं नहीं बदले तो समय उन्हें बदल दालेगा। इस समारोह में श्री सर्वनारायण दास को दिया।

बैठक ने भूमि दूरबन्दी कानून का स्थापन किया तथा इस कानून को कार्यान्वित करने की दिशा में प्रयास करनेवाले सरदार एवं समाज-सेवियों को नैतिक समर्थन देने का आश्वासन दिया। बैठक ने इसे कार्यान्वित करने के लिए सर्वदलीय समिति बनाने का सुझाव दिया। रक्षक-सेवी सदस्यों को सम्मिलित करने का सुझाव भी दिया।

—रामचन्द्र सिद्ध

नगर के प्रमुख लोग भी उपस्थित थे। समारोह का आयोजन नगर के ही नाग-विहार विद्यालय में हुआ था।

—अरुण कुमार

मन्दसौर जिला शिविर सम्पन्न

मन्दसौर जिला सर्वोच्च मण्डल के उरबाहधरान में दो दिवसीय मित्र-मित्र शिविर सफलपूर्वक सम्पन्न हुआ। जिले के विभिन्न स्थानों से आये हुए नारी-कार्यियों ने उन्नत अभिनव आयोजन की महत्ता प्रतिपादित करते हुए विषय, सामाजिक, आर्थिक व व्यक्तिगत समस्याओं पर उन्मुक्त रूप से विचार किया। परस्पर गुण-विकास और एकात्मक शक्ति-साधना, सहयोग, सौहार्द बढ़ाने तथा मिलकर गव-समाज-निर्माण के विभिन्न पहलुओं पर समीक्षित हुई।

म० प्र० जेवक सच के मन्त्री श्री बलवारी लाल चौधरी ने मित्र-मित्र शिविर को उपयोगिता और आचार्यता को सिद्ध करने हुए प्रेरणादायक विचार व्यक्त किये। प्रदेश सर्वोच्च मण्डल के के मन्त्री दुर्जिता मिश्र ने उन्पादन करते हुए सम्बोधित किया। अध्यक्षता मानव मुनि ने तथा संचालन सुन्दर लाल शर्मा-वाल ने किया। श्री मधुस एव मदन कुमार चौधे के सपोजन में रात्रि की बनि-मोठी का सख आयोजन किया गया। अन्त में जिना सर्वोच्च मण्डल के मन्त्री राम गोपाल शर्मा ने खनना अप्कार मानते हुए शिविराधिकारियों को बधाई दी। मण्डल के सचिव श्री दुर्तीचन्द शर्मा का सहयोग सराहनीय रहा। जिले में इस प्रकार का यह पहला सख था।

जयप्रकाशजी का कार्यक्रम

व्यस	दिनांक
१२ से १५	शान्तिपर
१६ से २२	बर्धा
२३	बर्धा से प्रयाग
२४	अम्हई
सितम्बर	
४ से ६	दिन्दी

प्रादेशिक ग्रामस्वराज्य-पदयात्रा

इन्दौर, २७ जुलाई। मध्यप्रदेश-सर्वोदय मण्डल द्वारा प्रसारित एक जन-कारी के अनुसार आगामी १५ अगस्त, १९७२ से भ्रातियर से मध्यप्रदेशीय ग्रामस्वराज्य-पदयात्रा प्रारम्भ होने जा रही है।

पदयात्रा-योजना को गांधी स्मारक निधि, चम्बल घाटी सामाजिक मिशन, कस्तूरबा ट्रस्ट, हरिजन सेवक सच आदि प्चनात्मक संस्थाओं का सहयोग प्राप्त है। पदयात्रा थोली का नैतृत्व प्रदेश के वयोवृद्ध सर्वोदय सेवक श्री दादाभाई नारईक (संचालक, विसर्जन आग्रम, इन्दौर) करेंगे। इसके लिए १० विनोदों को का आगोवांदि भी उन्हें मिल चुका है। उन्नत-व्यवस्था बर्ष में पदयात्रा का यह कार्यक्रम मुख्य रूप से भ्रातियर सम्भाग (चम्बल घाटी) और छतरपुर-भुवनेश्वर क्षेत्र में चलेगा। इन क्षेत्रों में सर्वोदय नेता श्री जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में भ्रातियर-मिशन के प्रवासों और मासहीय सहयोग से शकुनों के सामूहिक आला-समर्पण द्वारा अहिंसा की जो प्रतिष्ठित प्रकट हुई है उसे ग्रामस्वराज्य का आधार मिन सके—इसके लिए प्रयत्न होगा। वैसे समूह प्रदेश में उन्नत पदयात्रा का उद्देश्य गांव-गांव में ग्रामस्वराज्य का

(पृष्ठ १९३ का लेख)

विस्तार करके जनकी स्वार्थ स्तर की एक अकेलो बहुपक्षीय ग्रामपर संस्था बना दी जायगी जो कि सभी उद्योगों, कलाओं और दस्तकारियों के सम्बन्ध में पारस्परिक हित की दृष्टि से आगोबन करेगी।

मात्र यही उपाय मरीची के उन्मुनन, ग्राम-समुदाय की एकता और गर्वों के लक्षों भुगत दस्तकारों और सरल उत्पादकों के लिए एक सार्थक जीवन के निर्माण में सहाय रूप से कोई सहस्त्रवृत्त भूमिका बदा कर सक्ता है। अब तक हमने जो मजदूर रास्ता बनाया है उसे छोड़कर सही मार्ग अपनाने का भी यही एक उपाय है।

—प्रस्तुतकर्ता : रामपूज्य

सन्देश व्यापक रूप से फैलाना है। जब तक हिन्द-स्वराज्य की परिष्कृत ग्राम-स्वराज्य में नहीं होती तब तक देश में लोकतन्त्र को स्वरूप आधार नहीं मिल सकता।

हरियाणा में पदयात्रा

हरियाणा प्रान्त के सभी जिलों के सर्वोदय मण्डल अगले वर्ष (१९७३) होनेवाले अ० भा० सर्वोदय सम्मेलन की पूर्वतयारी में जुट गये हैं।

करनाल जिला सर्वोदय मण्डल के सयोजक श्री काशा लाल सिंहजी अपने साथी सोहसेवक श्री भीम सिंहजी के साथ मिलकर सम्मेलन के समय तक अक्षय-पदयात्रा अपने जिले में शुरू कर रहे हैं।

गशौर ब्लॉक जिला रोहतक में श्री महावीर त्यागीजी वमंड सोहसेवक श्री छत्रराम दुधाजी के साथ १०

दिन की पदयात्रा पर निकल रहे हैं।

दोनों यात्राओं का उद्देश्य स्कूल, कालेजो एवं ग्रामीणों में सभा तथा विचार-मोडिणो द्वारा जन-जन विचार-सन्देश पहुँचाना, साहित्य-विक्री करना एवं सम्मेलन हेतु अर्थ-संग्रह करना होगा।

—माणेराम शोन्ल

पाठकों से

हमारी पत्रिकाओं की व्यवस्था तथा प्रकाशन के स्थान आदि में नई परिवर्तन हो रहे हैं। इस क्रम में 'गाँव की आवाज' गुजराई के अरु से वर्ष पूरा करके फिनहाल स्थगित रहेगी। इसलिए हमारा अरने पाठकों और शुभचिन्तकों से विवेदन है कि वे 'गाँव की आवाज' के नये चाहक अभी न बनें वा बनावें। नयी व्यवस्था ही जाने पर हम सूचित करेंगे।

—सम्पादक

सभी ग्रामदान समिति, बोर्ड एवं प्रादेशिक सर्वोदय मण्डलों के नाम

प्रिय मन्त्र,

यह पत्र आपको एक विशेष महत्त्व के काम के लिए लिख रहा हूँ। अपने देश में पिछले वर्षों में ग्रामदान-प्रतिष्ठ का काम हुआ है और कुछ विशेष क्षेत्रों में पुष्टि तथा फौलीअप और उनके निर्माण के प्रयास भी चल रहे हैं, लेकिन उनकी जानवारी सन्तुष्ट नहीं हो पाती। कुछ राज्यों में ग्रामदान-कानून पास हो चुके हैं और तदनुसार ग्रामदानों गाँवों को कानूनी मान्यता दिलवाने के लिए भी कोशिश जारी है, लेकिन कुछ प्रान्तों में अभी ग्रामदान अधिनियम भी पास नहीं हो सके हैं।

मेरी आपसे प्रार्थना है कि कृपया सूचित करें कि आपके राज्य में ग्रामदान अधिनियम पास करवाने की दिशा में क्या प्रयास हो रहा है? क्या मान्य ग्रामदान एक्ट पर मसविदा तैयार हो गया है? सरकार से शतचीत पत्र रही है? इस दिशा में अब तक की क्या प्रगति है? कब तक कानून स्वीकृत हो जाने की

आशा है? इस सम्बन्ध में आपको सर्व सेवा मंच से किसी सहयोग की अपेक्षा हो तो वह भी सूचित कीजियेगा।

ग्रामदान अधिनियम के सम्बन्ध में उचरीकृत जानकारी तो आप देश ही इसके अतिरिक्त कृपया सूचित कीजिए कि आपके यहाँ अब तक बिलानार बितने ग्रामदान हुए हैं। पुष्टि के मिलावले में अब तक क्या कार्य हुआ है? कितनी ग्रामसभाएँ बनीं? कितने ग्रामों में बीसवें हिस्से की भूमि का वितरण हुआ? क्या ग्रामसोप शुरू हुआ? बितने ग्रामों में?

एक सबको शोधव्य में भी अरने यहाँ के ग्रामदान की मासिक अवस्था नैमासिक रिपोर्ट सर्व सेवा मंच की भेजवाते रहेंगे तो छाा होगी। रिपोर्ट प्रेषन आग्रम, पठानकोट (पंजाब) के पते पर भेजेवे तो अधिक सुविधा होगी।

सधन्ववाव !

सदाजल विसाल
सहृदयी,
सर्व सेवा मंच

सिन्धी शरणार्थियों को बलपूर्वक पाकिस्तान भेजना दुर्भाग्यपूर्ण

ब० भा० पाटिल सेना मण्डल के अधीन-
जक भी नारायण देवदाई ने एक पत्राचार में
पढ़ा है "भारत, राजस्थान और गुजरात
की सरकारों का यह निर्णय कि सिन्धी
शरणार्थियों को बलपूर्वक पाकिस्तान भेजा
जायेगा, यदि सही है तो दुर्भाग्यपूर्ण है।

"सिन्धी शरणार्थियों को देश को
मुक्तता प्राप्त करने के शरणार्थियों के साथ
नहीं जा सकती। बांग्ला देश से
आये लोग स्वदेश छोड़ सकते थे क्योंकि
उसका देश स्वतंत्र हो चुका था, और
यहाँ उस देश का शासन था जिसकी
उन्होंने १९७० में उखाड़ के साथ सम्-
बंध दिया था। परिचय से आये इन शर-
णार्थियों पर यह बात लागू नहीं होती।

"परिचय में युद्ध और राजनीति ने
पूरा और भय का वातावरण पैदा कर
दिया है, जबकि यह स्वाभाविक है कि
दोनों देशों द्वारा सन्धि पर हस्ताक्षर
हो जाने के बाद दोनों ओर से शरणार्-
थियों को अपने घरों को वापस जाना
चाहिए और उनकी सरकारें उनकी सुरक्षा
और उनके पुनर्वास की जिम्मेवारी लें।
उसी प्रकार बेचारे शरणार्थियों का वापस

जाने से सिद्धान्त मानवता मुक्त है।
बलपूर्वक शरणार्थियों को वापस भेज देने
से कोई भयानक नहीं होगा।

"सिन्धीयों को वापस जाने पर
मजबूर करना उन्हें युद्ध द्वारा पूर्वा-
धिकार दूना और भय के वातावरण में
बैठके देना होगा। इन शरणार्थियों को एक
बड़ी संख्या गरीब और बेनिश्चिन्त मेघ-
वासी, सीमा गन्तव्य इत्यादि की है,
जिनकी निराशा की कल्पना करना
सिन्धीयों को वर्तमान राजनीति के हलके में
नहीं सुनी जायेगी।

"किसी भी कारण नहीं है कि,
जबकि हजारों सिन्धीयों को हिन्दुस्तानी
नागरिकता अभी हाल तक दी गयी है,
इन मेहनतगार भूमिधरों को देश में
एक शान्तिपूर्ण वातावरण जीवन बिताने
का अवसर न दिया जाय।"

मैं आशा रखता हूँ कि इस उर-
महद्वेष की समस्याओं को सुझाने में
दोनों देशों के नेता सङ्घिन्त राजनीति
की मानवता के विचार से गरिमा नहीं
देंगे और राजनैतिक नीतियों को विवेक
के ऊपर हावी होने देंगे।

हमें सिद्ध करके बताना है।
बाजार-मुक्ति के लिए वापस चलना
बड़ा मददगार साबित हो सकता है।
वापसी समस्याओं से भी जिन लोगों को
एक काम के लिए हटाने की संशयि-
ता है, उनको सादी-नार्थ से मुक्त कर, पूरी
मदद व-सहयोग का आश्वासन देकर वाप-
स हलमें लगने की प्रेरित कर सकते हैं। जब
तक ऐसे लोग नहीं निकलेंगे, अहित का
कार्य जितना नहीं चलनेवाला है। अतः
ऐसे उदासी (वेस्ट टैलेन्ट्स) को
आगे आना है, जो गाँव-गाँव बैठकर
जलवा दो मोबिलाइज (पतिशोज) कर
सकें।

पत्र-व्यवहार का पता :
सर्ज सेवा तप, पत्रिका-विभाग
राजघर, बाराणसी-१
घर, सर्वसेवा फोन : ६४३९१

सम्पादक रामभूति

इस अंक में

- गठित समस्या, जदोर समस्या,
पंठ के लिए। — इन्द्रादीय ९९०
- ग्रामीणोद्योग और खादी
— श्री बी० रामचन्द्र ९९१
- गांधी-मार्ग और समाज-
परिवर्तन
— श्री आर० आर० दिवाकर ९९४
- हिंसा की उड़- कितनी गहरी
— श्रीमती दिवा ९९५
- उद्देश्य की ओर पहला कदम
— श्री व्यक्तांत नारायण ९९७
- स्वतंत्रता की रजत-जयन्ती...
— श्री रामचन्द्र राहो ९९८
- हृदय की गलतियाँ काव्य-
आगे आये
— श्री धीरेन्द्र मजूमदार ७००
- विहार से
— श्री रामचन्द्र सिंह ७०१
- अन्य स्वप्न
आन्दोलन के समाचार

(पृष्ठ ७०० का लेख)
ग्राम की 'शामसुखा' की दिशा में ले-
जाता होगा और इसके लिए ग्राम की
शासन व जोषण से मुक्त करना होगा।
यानी सरकार-मुक्त गाँव व बाजार-मुक्त
गाँव की दिशा में जाने बढ़ना होगा। अब
इस दिशा में उनका मार्गदर्शन कौन करे ?
मार्गदर्शन तो बड़ी कर सकता है जो मार्ग
जानता हो, पर यह तो एचएम नया मार्ग
है, इसके लिए मार्गदर्शन नहीं, मार्ग
खोजनेवाला, मार्ग पर चलकर बतायेवाले
चाहिए। गाँव निरा तरतु सरकार व
सम्पा मुक्त रहकर अपने बलबूते पर काम
चला सकते हैं व आगे बढ़ सकते हैं—यह

समादित्त

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

१. दिनांक १४ अगस्त १९७२ को प्रकाशित किया गया है।

संसदीय शासन-व्यवस्था

स्वराज्य से मेरा अभिप्राय है लोक-सम्मति के अनुसार होनेवाला भारतवर्ष का शासन। लोक-सम्मति का निश्चय देश के बालिग लोगों की बड़ी-से-बड़ी संख्या के मत द्वारा होगा, फिर वे त्रिवर्षों ही या पुरुष, इसी देश के ही या इस देश में आकर बस गये हों। वे लोग ऐसे होने चाहिये, जिन्होंने अपने शारीरिक श्रम के द्वारा राज्य की कुछ सेवा की हो और जिन्होंने मजदूरावर्गों की सूची में अपना नाम लिखवा लिया हो।...

फिल्हाल मेरे स्वराज्य का अर्थ होगा भारत की आधुनिक व्याख्यावादी संसदीय शासन-व्यवस्था।

आज मेरी सामूहिक प्रवृत्ति का ध्येय तो हिन्दुस्तान की प्रजा की इच्छा के अनुसार चलनेवाला पार्लियामेण्टरी पद्धति का स्वराज्य पाना है।

यह हमारी संसद क्या करेगी? जब हमारी संसद ही जायगी तब हमें महान भूलें बरने और उन्हें सुधारने का अधिकार होगा। प्राथमिक अवस्थाओं में बड़ी-बड़ी भूलें हमसे होगी ही।.. ब्रिटेन की लोकसभा का इतिहास बड़ी-बड़ी भूलों का इतिहास है। एक अरबी कहावत कहते हैं, "मनुष्य भूलों का अवतार है।" स्वराज्य की परिभाषा है भूल करने की स्वतंत्रता और ही हुई भूलों की सुधारने का वर्तव्य। और ऐसा स्वराज्य पार्लियामेण्ट—संसद—में ही निहित है। उसी पार्लियामेण्ट ही हमें ज़रूरत है। आज हम उसके योग्य हैं।

मैं कौन हूँ, क्या हूँ, क्यों हूँ, हम असफल क्यों ?

● जगदीश धवानी

आदिवासीयों की समस्याएँ हर जगह वही हैं—पर्याप्त भूमि के मासिक होते हुए भी वे कंगाल हैं। कानून उनकी जमीन न बिक्री हो सकती है, न बंधक रखी जा सकती है। फिर क्यों उनकी जमीन महाजन जीत रहे हैं ? कारण है, जब फसल जाती है तब आदिवासी शराब-मास खाकर लुटा देते हैं, भविष्य को नहीं सोचते। फिर भुखमरी के समय महाजन के जागे हुए भोजन हैं। महाजन या हथ बाहर बाचों को आदिवासी 'दीकू' कहते हैं। 'दीकू' यानी जो 'बिक' बरटा है, परेशान करता है। बाहरवालों ने आदिवासीयों को परेशान किया है, सजाया है। किन्तु महाजनो के बिना इनका गुजर भी तो नहीं होता। बीने भी बीज तक इनके पास नहीं रहते, ऐसे आड़े बक्त इन्हो बदनमा महाजन काम आते हैं। महाजनानी होने के कारण आदिवासी गरीब हैं और महाजनो के कारण आदिवासी जीवित हैं। भगवान ने उन्हें गरीब नहीं बनाया, अपने पर्याप्त भूमि से। अपनी बलती से ये गरीब हैं, ये अपनी आवत और उत्कार के गुलाम हैं। महाजनो के चपुल से इनकी भूमि छुड़वायें, तो शराब पीकर आदिवासी फिर से अपनी जमीन बंधक रख देंगे। वैसे बचावें इन्हें ? और क्यों ? समस्या का एक मास हल है—'लोकशिक्षण'। हन इन्हें बदल नहीं सकते, और बदलनेवाले होते भी कौन है ? क्या हमने ठीका लिया है ? वस, इनके सामने प्रश्न उठे हैं, इन्हें सोचने का मौना दें, ये स्वयं अपने को बदल सकते हैं—अपनी आदतो और सकारो से लड़कर। गुन प्रश्न है यह जानना कि मैं कौन हूँ, क्या हूँ ?

सघातपरगना (बिहार) की लोकशिक्षण-यात्रा के दौरान रामनाथपुर

गाँव में आदिवासीयों की सभा हो रही है। बीज बोने का वक़्त बीत रहा है, लेकिन बीज नहीं है। 'ज्याँक' के 'पंनगोवा' या महाजन से नहीं मिला, क्योंकि पिछला नोटापा नहीं। जिसके पास साठ बीघा भूमि है, वह भी हताश बैठा है, शरीर में गर-भास में खर्च कर चुका है। तीन बार्ते मुख्य रूप से ऊँहे समझाता हूँ। गाँव में 'पंनगोवा' (धम-कोच) बताना, बच्चे राम पढ़ा करता, थोर शराब बन्द। सब लोग 'पंनगोवा' का निर्णय लेते हैं। दो माह बाद मन्से होगा तो मन्सेरा निवासकर रामकोच में जमा करेये ताकि भविष्य में बीज की समस्या खड़ी न हो। लेकिन अभी क्या ? चारो ओर भुखमरी है। मुझे खिलाने को किसी के घर भात नहीं। चरण टूट के घर बटाई पर लो जाता हूँ।

बेलियाडेगल की परिस्थिति भिन्न नहीं है। 'पहाड़िया' आदिवासी भूख बैठे हैं, काम नहीं मिलता। बर्पा होने पर खेतों में नाम मिलेगा। तब तक घरकार बपास की तरह, सबके बराने का काम इन्हें से खन्ती है (गुप्त रिखीए नहीं)। दो 'बठोर थम-भोजनार्थ' महेशपुर ब्यांक के निरु स्वीकृत है, लेकिन बी० बी० ओ० (प्रखण्ड विकास परामर्शकार) योजना वहाँ शुरू करेंगे जहाँ लोग मरने लगेंगे। सरकार उनके मरने की राह देख रही है। तब वह जागेगी, रोकण लेगी। मूखें शरीर, पिणके पेट, लटके स्तर। साग-पत्ती उबालकर खाकर प्राण रखा करते हैं, उभी बापे पेट, बभी उपवास। चेहरा देखने से लपटा है मानो जीवित-मृत हो। आजादों की पचबीसवी बर्षगाठ मनायी जा रही है, 'गरीबी हटावो' के नारे लगाये जा रहे हैं। गरीब को ही क्यों दुनिया से हटा दें ? उसमें चिन्त्वाने की भी बलित

नहीं रह गयी, जो वह अपनी तरफ नेताओं का ध्यान आर्षित कर सके। नेताओं को केवल उसके बीट से मतलब है, उस प्रादमी से नहीं। वह बोये, चाहे मरे। आजादों के पहले क्या ये अधिक सुनी नहीं ये ?

रामपुर की सभा में भी वही तीन बार्ते समझाता हूँ—शराब, बच्चे, पैन-गोला। उत्तर मिला कि 'पंनगोला' बनाया था, पर हियाब ठोक से नहीं ख सकने के कारण टूट गया। शिक्षा निहायक जरूरी है। स्कूल या यह हल है कि मास्टर हुले में तीन-चार दिन आता है। शुरू है, आटा तो है। कई जगह आटा ही नहीं। स्कूल-इन्स्पेक्टर को घूम देकर, घर बैठा रहता है। जिससे गिनायत करें, जिस जिस की गिनायत करें ? गिनायत है तो स्वयं से, कि नाहक एस प्रवेन में पंत गये। लेकिन बंटे पैन ही नहीं जाता। कम्बख्त नमा। आदिवासी शराब पीने की सीन दिविन सखत देते हैं। एक, धनको बरको से पीते आ रहे हैं, हमारे पुररे गलत नहीं हो सकते। दो, हमारे देवता भी पीते हैं देवता को भीष सपाकर फिर हम पीते हैं। तीन, हम हजम कर सकते हैं इसलिए पीते हैं। इधर छात्रे को नहीं, तिख पर भी पर-पर में 'हड़िया' (चावल की शराब) या 'महुआ'। लम्बी बहस के बाद (मुझे सुनी होगी है कि वे मेरी बात जल्दी गद्दी मान लेते) वे निर्णय लेते हैं कि पर्व-स्योहार की बात बचन है, लेकिन रोज नहीं पीना चाहिए।

चन्द्रपुरा-मिशनवालो से बात होनी है, तो वे आधी नीमत पर बीज देने की तैयार हो जाते हैं। मिशन की बड़िया होती है, पंजुटी है, स्कूल है, अस्पताल है। धर्म-प्रचार के साम टोच सेवा है। या यह बहें, कि सेवा के द्वारा धर्म-प्रचार है। और हमारे पास नीरा प्रचार। इस विरु वे सफल हैं, हम अशफल ! ●

लौटो, अब भी लौटो

स्वतन्त्रता के दलने वर्षों बाद दिल्ली को गरीबी हटाने की सूरज। जब अंधे देश में मुखा पडा तो झल-झंते में पानी न पहुँचाने की भूत मनस में आयी। जब राजघाँवों की योजना अपार धन खर्च करने और सरकारी दमंचारियों वा जाल बिछा देने के बाद भी गाँव-गाँव में नहीं पहुँच सकी तो याद आया कि योजना तो गाँव से बनकर ऊपर की ओर जानी चाहिए थी। योजना की बुनियाद सचमुच वहाँ होनी चाहिए थी जहाँ पास उगती है। इसलिए अब 'ग्राम हट प्लानिंग' की बात बही जा रही है। भाखि, आनडो का पर्दा अँखों पर ध्व नक डाला जा सकता था ?

बायबूट 'हरी अन्वित' के देश को खेती में जीवन्ती-जन्वित नहीं है। बायबूट कुछ बड़े बल-कारखानों के देश का उद्योगीकरण नहीं हुआ है। बायबूट विकास के बरीबी, बेरोजगारी और विपयता से मुक्ति पाने की कुजी हाथ नहीं आयी है। बायबूट समाजवादी नारी और घोषणाओं के समाजवाद की शूरवात नहीं हुई है। इसलिए बुरा नहीं होगा अगर अब भी मह समस में आ जाय कि जब हमें अपनी राह पर चलने का मोजा मिला तो हम मालत राह पर चल पडे, और चलते-चलते हम वहाँ पहुँचि जहाँ आज पहुँच गये हैं। हम वहाँ पहुँचि है ? हम वहाँ हैं जहाँ विद्यास दुभा, पंत नहीं घरा, तन नहीं उतरा, बहल दल बने, लोवतन नहीं बडा, जहाँ स्कून बडे, बुद्धि और विवेक नहीं बडा जहाँ पुलित बरी घुंसा नहीं बकी, जहाँ अडासतें बड़ी, इनसाफ नहीं बडा, जहाँ विज्ञान फँगा, इनमान नहीं बना : हम वहाँ है जहाँ देश अन्विरोधो का मिशार होकर रह गया है।

गांधी ने बहुरा वा कि देश गाँवों में रहता है—अत्र भी वर प्रांतघन लोग बही रहते है—इसलिए गाँवों को सामने रखकर विकास की बात सोचनी चाहिए। विरास, व्यवस्था, शिक्षण, सबको गाँवों को ओम अँधमुख होना चाहिए। और, गाँव को योजना भी गाँव के अन्तिम अन्वित से शुरू होनी चाहिए। गाँव को 'घास हट प्लानिंग' अन्तिम अन्वित से शुरू होकर देश और दुनिया तक पहुँचती। इस खयोजन वा नाम गाँवों के 'स्वदेसी' रगा। गाँव की मनुष्य-कथित तथा बहल पाने बानेबाने साधनों वा पूरा पूरा इस्तेमाल हो तो गाँव येँदमात्र नही होगा—बम-से-बम रोज के जीवन की चीजों के लिए। इसे गांधी ने 'घामत्वावम्भन' कहा। आज जब हम यह देश रहे हैं कि गाँवों में रहनेवाले बरोड़ो लोगों के लिए—बायबूट वर्मा हो तर भी—प्रसु खाने और कपडे वा ही

है तो बात समस में आ रही है कि खेती, उद्योग, पशुपालन यानि 'एगोइण्डस्ट्रीमल इवामनीं' द्वारा गाँवों को 'स्वावलम्बी' बनाना कितना आवश्यक था ? कितना आवश्यक था सारे प्रशासन, विवास और शिक्षा को उध ओर मोडना ?

स्वतन्त्रता की रजत-जयन्ती का यह वर्ष देश के इतिहास में एक नया मोड लामेगा अगर हम नैकनीयती के साथ अब भी अपनी भूलें स्वीकार करें, और लौटकर सही रास्ते पर चलने के लिए अपने कदमों को मोडें। स्वतन्त्रता मात्र यहीदो और शासकों की चीज नहीं है, उसकी सार्थकता इसमें है कि जन जन को सन्तुष से मुक्ति मिले—खेती मुक्ति कितने जन-जन का पुरापार्थ प्रबत हो। त्रिस राह पर हम बेतहाशा चले जा रहे हैं वह राह हमें मुक्ति की ओर नहीं ले जा सकती। इसलिए लौटने, जव लौटने, में ही बर्याण है।

छोटी हिंसा, बड़ी हिंसा

इसी महीने के एक अंक में हिंदी के एक सुप्रसिद्ध साप्ताहिक ने मुक्यूट पर एक चित्र छापा है। चित्र में कुछ गोल-गोल रेखाएँ हैं, कोई आकृति नहीं है। रेखाओं का सनेत कुछ शीर्षक लिखकर प्रकट किया गया है। शँदक ये हैं 'कराची में गूट एंट साइट वा आर्डर', 'हत्या बरते हुए नमनालवादियों को गोली मारने वा आदेश', 'फिरोजाबाद व बारगली में उप-द्रवियों को गोली से उडाने वा आदेश।' चित्रकार और पत्रकार ने ये रेखाएँ खींचकर और ये शीर्षक लिखकर भ्रात ही नहीं पूरे उा-मराठीप का एक चित्र प्रस्तुत किया है। क्या भारत, क्या पाकिस्तान, और क्या बांगला देश, हर जगह ऐसे लोग हैं जिन्हे उडाने के लिए सरकार सहाय का सहारा लिया है। यह बहली है कि अब दूसरा उपाय नहीं रह गया है: समाज की रक्षा के लिए समाज के शत्रुओं का मयाया करनाही होगा।

ये तीन लोग हैं जिनके विरुद्ध राज ने अपनी पूरी हिंसा-मन्वित वा प्रयोग करने का निश्चय किया है ? क्या वे खोर-डाकू और हत्यारे हैं ? कराची में भापा के आन्दोलनकारी बनान सरकार वा प्रसु है। त्रिण के साथ सिन्धी भापा चाहते हैं, अपने घर में स्वावलम्बी और सम्मान चाहते हैं। भारत वा नमनालवादी गरीब के लिए न्याय चाहता है, समता वा नया समाज चाहता है। बांगला देश वा विप्लवकारी भी दमते चित्र क्या चाहता है ? कोई नहीं बहता कि ये आवासाएँ कियों सरकारी बडूत के विरुद्ध हैं, या समाज की मयाया का उल्लंघन करती हैं। लेकिन सरकार यह बहली है कि बाड कुछ भी हो और माँग कोई हो, जब उसके ऊपर प्रहार होया तो वह अपने सारों वा पूरा इस्तेमाल करेगा और उरुत पकने पर सहाय से भी उबार देवी, बरोकि सरकार की हिंसा समाज की रक्षा के लिए आवश्यक है। प्रसु यह है कि यदि वर-सरकारी छोटी हिंसा वा एक ही जमान रह गया है सरकार की

बड़ी हिंसा, तो देश का सारा वायव्य-लानून, नागरिक का मूल अधिकार, और लम्बी-नींदी न्याय-व्यवस्था किस लिए है ? तब तो यह मानना पड़ेगा कि बानी सब नीचे ज़ारी हैं, निर्णय की वास्तविक शक्ति हिंसा के ही हाथों में है। हिंसा में भी बड़ी हिंसा, उससे बड़ी हिंसा, सबसे बड़ी हिंसा के हाथों में सबसे बड़ा निर्णय है।

हिंसा-प्रतिहिंसा की बढ़ती हुई इस परिधि में सामान्य, सभ्य, शान्तिवादी, नागरिक और उसके जीवन-मूल्यों का स्थापन कहाँ है ? क्या हिंसा द्वारा भारत की परम्परा को रक्षा सम्भव है ? क्या हिंसा में उसकी प्रतिभा की अभिव्यक्ति हो सकती है ? हर एक जानता है कि आज समाज में जो समस्याएँ पैदा हो गयी हैं वे आज की समाज-व्यवस्था में हल नहीं हो सकती। हर एक मानता है कि समाज को बदलना चाहिए और नयी व्यवस्था कायम होनी चाहिए। फिर भी हम देखते हैं कि परिवर्तन होना नहीं; होने दिया जाता नहीं। परिवर्तन न होने से समस्याएँ गम्भीर होती जाती हैं, लगाव बढ़ते जाते हैं, और समय बीतते जाते हैं। सरकार सहज नागरिक प्रश्नों को, और उनसे जुड़ी हुई मानवीय परिस्थितियों को भी शांति और सुव्यवस्था

(चाँ ऐन्ड आर्ट) का प्रश्न बना लेती है। वह मान लेती है कि उसका निर्णय समाज के हित में है; उससे समाज वा बहिष्कृत हो ही नहीं सकता। वज, इन मान्यता से आन्दोलन और 'आर्ट' का, हिंसा और प्रतिहिंसा का, क्रम शुरू हो गया है, और धारा समाज हिंसा के दुष्क्रम में फँस जाता है।

हिंसा सारी मानव-सम्भवा का सफ़ट बन गयी है। राज्य की हिंसा के सामने नागरिक दिनों दिन निष्प्राय होता जा रहा है। निष्प्राय नागरिक अल्प में समाज के लिए खतरा ही सिद्ध होता है। क्या भारत के नागरिक को निष्प्राय बनाकर भारत के सत्ताधारी भारत का प्रभाव करना चाहते हैं ? क्या आजादी की लुप्तियों के बीच हम जन-जन की आजादी के लिए पैदा होनेवाले इस खतरे के प्रति बेखबर रहेंगे ? देश की स्वतन्त्रता बनी रहे, और देशवासियों को स्वतन्त्रता बड़ी जाय, यह स्वतन्त्रता की माँग है। यह माँग नहीं पूरी हो रही है, इसलिए निन्ता है। छोटी हिंसा और बड़ी हिंसा के बीच नागरिक विरक्त, इतना, पिछला जा रहा है।

हिंसक राज्य का एक ही उतर है—निर्णय, समझौता, किन्तु अहिंसक नागरिक।

कुछ सुझाव

नगरों में सर्वोदय-कार्य की दिशा

सर्वोदय-कार्य की दृष्टि से नगरों में क्या-क्या काम हो सकते हैं, इस विषय पर कुछ सुझाव नीचे दिये जा रहे हैं।

१. उद्योग तथा व्यापार के क्षेत्र में लगे हुए शालिक, सचालक, मजदूर आदि सब लोगों के ध्यान में यह बात आये कि इन प्रवृत्तियों का मुख्य हेतु समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करना है, इसलिए उनका सचालन समाज के हित में होना चाहिए। व्यक्तित्व तथा किसी वर्ष के मुनाफे के लिए नहीं।

२. व्यापार के क्षेत्र में भी व्यापार-संगठनों के जरिये सामाजिक उत्तरदायित्व का दाय्य दाखिल करने की कोशिश की जाय। इस सम्बन्ध में फेदर ट्रेड प्रवृत्तियों से एधोसिमेसन, बम्बई कुछ प्रयत्न कर रहा है।

३. जिस तरह प्राचीन क्षेत्रों में धाम-समाजों के जरिये लोकनीति के कम्पुनिटे-रियन पोस्टिटी विकसित करने का कार्यक्रम है, उसी प्रकार नगरों की व्यवस्था में कोन्युनिटी और लोगों के प्रत्यक्ष सहभाग

का कार्यक्रम धोचना और उठाया चाहिए।

✓ छोटे-छोटे मुद्दों में या पड़ोस में सामूहिक शक्ति से जहाँ समस्याओं के हल करने के और परस्पर सहयोग के कार्यक्रम उठाये जा सकते हैं।

४. नगरों में शान्तिसेना, सहज-शान्तिसेना आदि के उगठन की आर विधेय ध्यान देना चाहिए। सहज-शान्तिसेना के अन्तर्गत श्रम, सेवा, स्वाध्याय के कार्यक्रम तथा अन्तरात्मक निर्दर नगरों में चलाये जा सकते हैं। नगरों में शांति बनाये रखने की जिम्मेदारी शान्तिवैज्ञानिक उठा सकें, ऐसा प्रयत्न करना चाहिए। शहरो में जा शान्ति-प्रतिपत्तन-केन्द्र है वे इन मामलों में पहल कर सकते हैं।

५. सर्वोदय-यात्र का कार्यक्रम अथवा एक प्रभावशाली ढंग से नहीं ही सदा ही पर यह कार्यक्रम शहरों के लिए बहुत उपयोगी है। सम्भव हो, तो कुछ जगह सर्वोदय-यात्र का सघन प्रयोग करना चाहिए।

७. भूदान की उद्देश्य नगरों में धर्म-सं-

धान का कार्यक्रम उठाना चाहिए। आगे आकर इसकी परिणति ट्रस्टीशिप में हो सकती है।

८. शहरों में आजादी के केन्द्रीकरण के कारण कुछ विशेष समस्याएँ, जैसे—आनागणन भी रिकरड, गन्दी बस्तियाँ, सफाई आदि नागरिक सुविधाओं का अभाव बढ़ा हो जाता है। इन प्रश्नों के बारे में लोक-मानस को जागृत करना चाहिए।

९. शहरों में, साक्षर विद्यापीठों और बुद्धिजीवी वर्गों में सर्वोदय-विचार तथा आन्दोलन की जानकारी पहुँचाना जरूरी है। शान्ति-प्रतिपत्तन केन्द्रों की मदद से सभाएँ, गोष्ठियाँ आदि की जायें। सर्वोदय सचने सर्वोदय-संघवन (सर्वोदय) की हाथों-हाथ शहरों के पुने हुए प्रमुख लोगों के पास पहुँचाने की योजना बनायी है, उसका पूरा लाभ उठाना चाहिए। प्रोफेसर वर्ग, मैनेजियरियल वर्ग, समाज-सेवी संस्थाएँ, रोटरी क्लब आदि से सम्पर्क।

१०. शिक्षक वर्ग में आचार्यकुल का कार्यक्रम।

११. साहित्य-प्रचार, साहित्य-प्रदर्शनियों का आयोजन।

बाबा जैसा विश्वास करता है, बोलता है

[सुधी निर्मला बहन हाथ ही मे तोन रोह बाबा के साथ ब्रह्मविद्या मन्दिर मे रह्यो । अपने बाबा से विभिन्न विषयों पर चर्चा की । उस चर्चा का कुछ अंश यहाँ दिया जा रहा है ।—सं०]

निर्मला बहन : सहरसा में अभी १४ मई से ३० जून का जो आश्रयान हुआ उसकी रिपोर्ट आपके पास आयी होगी । इस बार अपेक्षा की थी उससे बहुत कम परिणाम निकला । कुछ लोग निरुत्साह भी हुए । लेकिन धीरे-धीरे ने कहा, "जिनको शक्ति लगी, उस दिशा से जो परिणाम आया, उससे मुझे सन्तोष है । इस बार सबसे अधिक होगा, ऐसी आशा भी ही नहीं । लेकिन सातत्य बना रहा, यह बहुत बड़ी बात है ।" जैसे कहीं-कहीं अच्छा अनुभव रहा । दैनिक लोग कुछ अच्छे, प्रभावी मिल रहे हैं । महीने प्रसन्न में १० प्रतिशत काम पूरा हुआ । नये लोग निराले हैं । आश्रम जायत हो रहा है । फिर भी कुछ लोगों को लगता है कि 'सहरसा' हा बस चुना ? इस चुनाव में कहीं गलती तो नहीं हुई ?

दिसम्बर के अन्त तक काम पूरा करने का आशय रहा है । उस विषय में आप मार्गदर्शन देंगे ?

बाबा : सहरसा के बारे में धीरे-धीरे की जो राय है, वही मेरी राय है । जिसकी शक्ति लगी उस दिशा से काम अच्छा हुआ है । अब दिसम्बर में काम पूरा होगा उसके लिए पु १ शक्ति लगानी चाहिए । सबका जोर लगाकर दिसम्बर के अन्त तक पूर्ण करता ।

'शब्द' शब्द अविच्छिन्नता' शब्द की शक्ति अविच्छिन्न होती है । 'सहस्र' यह एक शब्द निम्न । अब वह सत्य है या मोघ है इसकी चर्चा विवादी करते नहीं । विवादी कहते हैं, हमें पच्छ पर जाना है, बस ! वह जिना अच्छा है ऐसा मने रहा । अच्छा यानी कठिन । कठिन यानी अत्योद्योग का । कम-से-कम शक्ति से काम होगा ऐसा वह जिना है ।

आप पूरा शक्ति लगाए तो अनुभव आयेगा ।

तुलसी रामायण में एक वाक्य है, 'सौ धन धन्य प्रथम गति जाकी ।' जिस धन की प्रथम गति है वह धन धन्य है । धन्य यानी धनज्ञान । 'प्रथमगति' शब्द तुलसीदासजी ने भक्तु'हरि के एक श्लोक से लिखा है । धन की तीन गतियाँ बतायी हैं ।

"धो न दवाँल न भुङ्गते, तस्य तृतीया गतिर्भवति" धन की तीन गतियाँ हैं—दान, भोग, नाग । प्रथम गति यानी दान । जो देता नहीं, भोग भी नहीं लेता उसका नाक होता है । हमें जीना क्रितना है ? चार दिन । अगर हम दान देंगे तो मरते समय वह पुण्य काम उपभोगी होता है । नहीं देते हैं तो वह धन यहाँ उपभोगी होता है ।

निर्मला बहन प्राणिके साथ पुष्टि की होती तो क्या ठीक नहीं होता ? प्राणिके कुछ शक्तियाँ रह गयी हैं ।

जला अगर मुझे बुझा बनाना होता तो अल्पतः निर्मल यानी का बनाता । लेकिन मुझे समुद्र बनाना था । समुद्र में गया भी यानी है और मरे नाते भी जाने हैं । इसलिए कुछ गन्तगी हममें रही होगी । उसकी परवाह नहीं करनी चाहिए । कुछ लोग कहते हैं इसके बजाय, श्रमश्रमा देने, जमीन बँटें, इस तरह पुष्टि होने के बाद सामदान-बाहिर करना चाहिए । बाबा विगिनस विष 'बो', बिहार विगिनस विष 'बो', बीरानी बोला । लेकिन हमें अगर लगता कि प्राणिके का काम करने में १० साल लगना तो हम साधन साम पुष्टि करते । लेकिन प्राणिके तो १-२ साल में ही गयी । उसके बाद तुलसी पुष्टि के नाम में लगना चाहिए ।

या । मैं वहाँ से निबला तो बहकर निकला था कि प्राणिके का तूफान नियम, अब पुष्टि के लिए कति तूफान करो । मुझे बिहार छोड़ें, योने तीन साल हो गये, कति तूफान तो हुआ ही नहीं, तूफान भी नहीं हुआ । मतभेद से आपस में । वह जेब में रखो ऐसा बहकर में आया । लेकिन बैसा हुआ नहीं । बैदनाथ बाबू ने कहा, 'मतभेद जेब में भी नहीं रखेंगे' । वे काम में लग गये । जबानो ने मतभेद नाशक रखे । बाबा आया, उल्लाह आया, बाबा गया, जयगह गया । ऐसा होता है । वह नहीं होगा चाहिए । 'सातत्य योगो नाम' गीता का आठवाँ अध्याय है । सातत्य टिकता नहीं । वह रहेगा तो काम होगा ।

आपका काम करना है तो योदी अनुद्धि उसमें रहेगी । योदा-सा नाम करना होता तो मुद्धि रहती । इस बास्ते बाबा ने जो पद्धति अपनायी उस पद्धतिके बारे में बाबा को पश्चात्ताप नहीं है ।

निर्मला बहन कुछ लोग कहते हैं कि बाबा तो कहते हैं कि यतने समय में काम पूरा होगा, पूरा होगा । लेकिन होगा तो नहीं । क्या इसके बारे में शक्ति हीन नहीं होंगे ?

बाबा बाबा जैसा विश्वास करता है वंसा बोलता है । बाबा जानता है कि पूरी ताकत लगी तो काम हो सकता है ।

बाबा ने कहा था कि इतनी-इतनी ताकत लगानी चाहिए । इतनी ताकत लगती तो काम होगा । लेकिन इतनी ताकत लगी नहीं । बाबा जानता होता कि काम पूरा होनेवाला नहीं है फिर भी कहना रहकर कि काम होगा, तो अल्प काज भी । ऐसा बाबा कहना नहीं । इसके अन्दे बाबा को यह विश्वास है कि जिनकी इच्छाशक्ति लिये हैं उनमें से १० प्रतिशत देंगे । देते समय थोड़ा मोह होगा है वह क्षम्य बात । इसलिए ताकत पूरी लगती तो काम कठिन नहीं था, अल्पक भी नहीं था । लेकिन ताकत लगी नहीं । जिनकी ताकत लगी उस दिशा से काम

पच्छ हुआ।

गोश्री ने कहा था एक सत्र में स्वरारण होगा। हुआ तो नहीं, लेकिन वे जैसा मानते थे; वैसा कहते थे। २६ साल के बाद स्वरारण हुआ।

निर्मला बहन : श्रीगोश्री कहते हैं कि काम ५ साल में पूरा होगा।

बाबा : 'काम' की व्याख्या पर आधारित है। क्या हुआ तो काम पूरा होगा ? सामान्य मनुष्य का परिवार का काम ५० साल तक पूरा नहीं होता, लड़के को शादी, फिर नाती की चिन्ता। परिवार का काम जबकी पूरा नहीं होता। आप जो चाहते हैं रामस्वरारण का पूरा चित्र वह ५ साल में, ऐसा वे मानते होंगे। हमने अपना ही माना है कि जमीन नोटना, आमदनी का ५० वां हिस्सा देना, जमीन का २० वां हिस्सा देना, प्रायश्चात बनाना, मायकियत-वियजन्त बनाना ही पाय। रामस्वरारण ही स्थापना के लिए और काम करना होगा। उसके लिए १० साल भी लग सकते हैं। ५ साल में परिस्थिति कितनी बदलेगी इसका अन्धाज निसको है ?

निर्मला बहन : कुछ लोगों की उमरा है, आज प्रजातन्त्र खतरे में है। सत्ता का केन्द्रीकरण हुआ है।

बाबा : सत्ता का केन्द्रीकरण हुआ है, उसके लिए रामस्वरारण यही उपाय है। दूसरा उपाय नहीं। गाँव को उनकी अपनी ताकत पर सड़ा करना चाहिए।

प्रजातन्त्र खतरे में है ऐसा नहीं कह सकते। आज जनसंघ शिमला-कारार का हमना विरोध कर रहा है। 'बेल को बेल डाला' ऐसा कह रहा है। फिर भी जनसंघ पर सरकार ने प्रतिबन्ध नहीं लगाया है। इससे बेहतर प्रजातन्त्र का उत्तम उदाहरण और कोनसा हो सकता है ?

राजनीतिक परिस्थिति आज हमारे लिए यानी हमारे काम के लिए बहुत बनसूज है। बागला देश रक्षक तथा है। बड़ी प्रजातन्त्र तथा सेक्सुअलिज्म मान्य किया है। यह बहुत बड़ी बात है। अपने जैसे कार्यकर्ताओं का बहुत स्वरारण

अलीगढ़ विश्वविद्यालय : संशोधित अधिनियम

• डॉ० पत्नीक अंजुम

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय का आरम्भ एक छोट्टे-से हार्ड स्कूल के रूप में हुआ, जिसे १९७५ में सर सैयद अहमद साने ने अलीगढ़ में स्थापित किया था। १९७७ में इस स्कूल ने मोहम्मदन एंग्लो थोरिपेप्टल कालेज का रूप धारण कर लिया।

इस क्षय से इत्कार नहीं किया जा सकता कि सर सैयद का उद्देश्य हिन्दुस्तानी मुसलमानों को नवीन शिक्षा से अवगत कराना था। चूंकि हिन्दुस्तान में रहनेवाले सभी जातियों के लोग सर सैयद की दृष्टि में समान थे, इसलिए उन्होंने इस संस्था के द्वारा जानि-धर्म का भेदभाव बिचे बिना प्रत्येक हिन्दुस्तानी विद्यार्थी के लिए खोल रखा था। केवल यही नहीं कि कालेज में नैर-मुस्लिम विद्यार्थियों का स्वागत किया जाता था वरन् सर सैयद ने इस महत्वपूर्ण काम में जिन लोगों से आर्थिक और नैतिक सहायता ली थी, उनमें राजा जयकिशन दास, राजा सम्भू नारायण, राजा किशन कुमार, महाराजा पटियाला और महाराजा बदारस के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। पटियाला के महाराजा सर महेन्द्र सिंह बहादुर की सेवा में मानपत्र प्रस्तुत करते हुए सर सैयद ने कहा था : "इस मन्त्राले में शिक्षा के जो नियम तय बिचे गये हैं, उनके अनुसार हिन्दू और मुसलमान दोनों इस मन्त्राले में शिक्षा पावेंगे। इसके

सम्पापको ना उद्देश्य शिक्षा और आरम-ज्ञान को फैलाना है और इसका उद्देश्य यह है कि हिन्दुस्तान की दोनों नोर्मि भर्षाएँ हिन्दू और मुसलमान बराबर प्रगति करें और शिक्षा एवं दक्षता से लाभान्वित हों।"

सर सैयद और उनके सहयोगियों के निरन्तर परिश्रम ने इस कालेज को अदि-तीय स्थिति प्रदान की। इस कालेज की विश्वविद्यालय बनाने का स्वप्न सर सैयद के जीवन काल में पूरा नहीं हो सका। परन्तु उनके स्वर्गवास के बाद १९१० में 'मुस्लिम विश्वविद्यालय फाउण्डेशन समिति' स्थापित हुई, जिसे १९०६ ए० ओ० बालेज की विश्वविद्यालय बनाने का प्रयास आरम्भ किया। १९९० में विश्वविद्यालय से सम्बन्धित एक अधिनियम पास हुआ, जिसकी धारा-२ (५) में कहा गया कि विश्वविद्यालय में पूर्वी तथा इस्लामी विषयों के अध्ययन के लिए मुविद्यार्थी उप-सन्ध्य की जावेंगी।

धारा २३ के अनुसार मुविद्यार्थी कोर्ट सुयोग्य बनविन बांटी होगी जिस पर विश्वविद्यालय के संचालन की पूरी जिम्मेदारी होगी। यह बांटी एग्ज्यूटिव बोर्ड और एकेडमिक बोर्ड के बायाँ की देखभाल भी करेगी। इस धारा के भाग-१ में यह भी कहा गया है कि कोर्ट के सदस्य केवल मुसलमान हो सकेंगे।

धारा ८ में कहा गया है कि विश्वविद्यालय में जाति और धर्म का भेद

होगा, ऐसे परिस्थिति वहाँ है।

निर्मला बहन : दुनिया का प्रविण्य केशा है ?

बाबा : दुनिया का प्रविण्य अन्ध है। दक्षिण तथा उत्तर कोरिया एक ही रहे हैं। चीन तथा जापान को चीनी ही रहा है, मिथ और इजरायल के बीच जान या कूज वातचीत होने की सम्पा-

बना है। यूरोप में कॉपन मार्शड बना है। पूर्व और पश्चिम जर्मनी को चीनी तम रही है। इस तरह से सारी दुनिया बांग रीति से प्रगति कर रही है। योश्री-लो मारामारी खद-खद होगी है, यह कोई बिरोध नहीं।

२३-७-७२

—गुजुम

किये बिना प्रत्येक हिन्दुस्तानी विद्यार्थी को दाखिला देने वा अधिवार हासिल होगा।

शिक्षा-प्रणाली

स्वतंत्रता से पहले हमारी शिक्षा-प्रणालि पर अर्ध-ब्रह्मण्ड की राजनीतिक नीति की गहरी छाप थी। जहाँ-जहाँ सम्भव हो संस्था था, वह हिन्दुओं और मुसलमानों के मनमुटार से राजनीतिक लाभ उठाती थी और प्रयास करती थी कि किसी एक मज पर वह दोनों एकत्र न हो सकें। १९४७ के पश्चात् जब हमने अपनी शिक्षा-प्रणालि वा विवेचन किया तो बहुत-से मुद्धार और सशोधनों को आवश्यकता महसूस हुई। अतीतक विश्वविद्यालय के १९२० के अधिनियम में भी आंशिक सशोधन किये गये। जिसमें एक सशोधन यह था कि धारा—२३ (१) के अनुसार जो कर्त लगाये गयी थी कि बोर्ड के सदस्य केवल मुसलमान हो सकते हैं, उसे निराल दिया गया। यह १९३१ की बात है। इसके विरुद्ध कुछ आचार्य उठायी गयी, लेकिन हिन्दुस्तान के धर्म-निरपेक्ष सविधान के सामने उन्हें चुन हो जाना पड़ा।

अचानक १९५१ में एक लगभगक घटना घटी, जिसका विवरण यह है कि बरकतुल लंबकनी, जो दो साल अतीतक में वाइसचांसलर रह थे, जाने-बूझे मुनिवर्सिटी बोर्ड से यह फंजला करा गये कि उनकीनी वानिजो के ७९ प्रतिशत दाखिले वही के विद्यापियों के लिए सुरक्षित रहने। यह बहुत भावनात्मक और लक्ष्मीन कदम था। क्योंकि उसका अर्थ था कि इन्वीनिर्सिटी और मेडिकल कालेजों में ७५ प्रतिशत दाखिले उन विद्यापियों को मिलेंगे, किन्हीने प्रारम्भक शिक्षा अतीतक में प्राप्त की है, चाहे वे हमके योग्य हो या न हों। वे दोनों पाठ्यक्रम ऐसे हैं, जिन पर सरलाए हर साल करोडों रुपये खर्च करती है, ताकि योग्य छात्र और इन्वीनिवर पंदा हो सकें। भारत में कोई विश्वविद्यालय ऐसा नहीं है जिसने इतनी

बड़ी खर्चा में स्थान सुरक्षित किये हो। अधिकतर विश्वविद्यालय अपने विद्यापियों के लिए कोई स्थान सुरक्षित नहीं करते और जो करते हैं वह १० या १५ प्रतिशत। भारत के समस्त तकनीकी कालेजों में दाखिले के लिए बड़ा खर्च मुकाबला होगा है। केवल उन विद्यापियों को निराला जाना है जो उसके योग्य होते हैं। ७५ प्रतिशत स्थान सुरक्षित कराने वा अर्थ यह था कि लगभग ७० प्रतिशत ऐसे विद्यापियों को दाखिल मिलता जो किसी तरह भी उनके योग्य नहीं थे। परिणाम-स्वरूप ये विद्यार्थी परीक्षाओं में किसी भी तरह उत्तीर्ण न होते और यदि हो भी जाते तो उन्हें नौकरी मिलना बर्जित और कभी-कभी तो अलग्गन होता। क्योंकि रोजगार के मैदान में मुकाबला होने पर ये दूसरे विश्वविद्यालयों के विद्यापियों वा मुकाबला नहीं कर सकते थे और फिर अतीतक विश्वविद्यालय के स्तर के विरुद्ध एक ऐसा विचार बन जाता कि लोग यहाँ के विद्यापियों को अयोग्य समझकर रोजगार न देते। इस तरह एक तरफ राष्ट्र के करोड़ों रुपये व्यर्थ जाते और दूसरी तरफ अतीतक मुस्लिम विश्वविद्यालय के विद्यार्थी नागानी और हीनता के शिकार रहते।

१९६५ में जब अतीतक वावर जन उद्बुलपति हुए तो उन्होंने यह सख्या ७५ प्रसिद्ध कर घटाकर ५० प्रतिशत कर दी और मुनिवर्सिटी बोर्ड से इतनी मजूरी ले ली। उन्हें ऐसा अवश्य करना चाहिए था लेकिन वाडावरण अनुमूल बनाने के बाद... इसके बाद जो कुछ हुआ और जिस प्रकार विद्यापियों ने उपकुलपति को मारा-पीटा, उससे अतीतक से प्रेम और जादर करनेवाले लोगों के सिर सज्जा से झुक गये। इस घटना वा दुखद पहलू यह था कि मुनिवर्सिटी बोर्ड बिलकुल बेअसर रही। पहले लंबकनी ने जो बाह्य बह स्वीकार करा लिखा और फिर अतीतक वावरजम ने जो निर्णय किया बोर्ड ने उसे भी मजूर कर लिया। ऐसी दशा में सर-

वार के सामने इसके अतिरिक्त और कोई रास्ता नहीं था कि बोर्ड के अधिकारों को समाप्त कर दिया जाय। इसीलिए एक समाधि अधिनियम द्वारा बोर्ड की हैसियत केवल एक एडवाइसरी बोर्ड को कर दी गयी और एक इम्बेन्सी आर्टिक्ल लागू कर दिया गया। १९६५ से अबतक मुनिवर्सिटी इसी इम्बेन्सी आर्टिक्ल के अधीन काम कर रही है।

पिछले दिनों कुछ मुस्लिम राजनीतिक दलों ने अपने फायदे के लिए इस समस्या को खूब उठाता। विधान-सभाओं के गठ चुनावों के दौरान मुस्लिम लीग ने विशेष रूप से इस समस्या वा पापवा उठाकर मुस्लिम जनता के जजबात को भडकाया। अणमोड है कि एक शुद्ध रीतिक मतला ऐसे राजनीतिकों के हाथ में पला गया किन्हीं शिक्षा-प्रणालि से कभी दूर का भी वास्ता नहीं रहा।

संशोधित अधिनियम की विशेषताएँ २९ मई, १९७२ को पार्लियामेण्ट में मुस्लिम मुनिवर्सिटी संशोधित बिल पेश किया गया। अगर सङ्कुचित दृष्टिकोण और निजी फायदे से ऊपर उठकर देखा जाय तो यह संशोधित बिल विश्वविद्यालय की सचालन प्रणालि में बहूँ के शिखरों और विद्यापियों को जो अधिवार देता है वह भारत के सभी विश्वविद्यालयों के लिए ईर्ष्या का विषय है। एक बिल ने मुनिवर्सिटी बोर्ड वा पूरा ढाँचा बदल दिया है। अब तक इसके सरस्य आमतौर पर वे लोग जाने थे जिनका शिता से कोई सम्बन्ध नहीं होगा था। जो राजनीति अपना धन के सहारे कंट के सदस्य बनते थे। अब पहली बार विश्वविद्यालय के शिक्षक इतनी बड़ी संख्या में बोर्ड के सदस्य होने और विश्वविद्यालय के इतिहास में पहली बार विद्यापियों को यह महत्त्व दिया गया है कि वे बोर्ड के सदस्य बनें। १०४ सख्या में केवल २६ सदस्य नामजद होये अर्थात् अब विश्वविद्यालय वा भाग्य हाथ उठानेवालों के नहीं बरज् बहूँ के विद्यापियों और शिक्षकों के हाथों में होगा।

संघोषित अधिनियम की धारा—२४ (१) के अन्तर्गत विश्वविद्यालय में एक विद्यार्थी परिवार होगी जो विद्यार्थियों के पौष्टिक मामलों, संचालन, कल्याण और छात्रावास के संचालन के बारे में विश्व-विद्यालय के कर्ता-वर्तमानों को अपनी सिफारिशें पेश करेगी। विश्व-विद्यालय के इतिहास में पहली बार विद्यार्थियों को यह महत्व मिला है। १९४३ के एक संघोषित बिल के अन्तर्गत कौटुंबिक विभाग को अनुसूचित विश्वविद्यालय या आभासीय कैम्पस बना रहेगा और किसी भी स्थानीय कालेज को विश्वविद्यालय से सम्बन्धित नहीं किया जायगा। अलीगढ़ विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों और मुस्लिम राजनीतिक दलों की माँग थी थी

(१) अलीगढ़ विश्वविद्यालय या आभासीय कैम्पस वाली रखा जाय अर्थात् अलीगढ़ के अन्तर्गत स्थानीय कालेजों या विश्वविद्यालय से सम्बन्ध न होने दिया जाय।

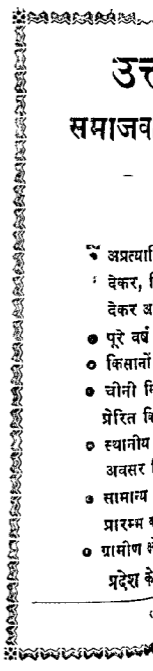
(२) अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के नाम से मुस्लिम शब्द न बिनाला जाय।

(३) अलीगढ़ विश्वविद्यालय को सविधान की धारा-३० के अन्तर्गत अल्पसंख्यक नस्था घोषित किया जाय।

सरकार ने पहली दोनो माँग स्वीकृत कर ली है परन्तु तीसरी माँग नहीं मानी।
शैक्षिक समस्या और राजनीति

राजनीतिक मंच से बार-बार यह बात दोहरायी जाती रही है कि अलीगढ़ का अल्पसंख्यक कैम्पस बना रखा जाय। अल्पसंख्यक कैम्पस से क्या तात्पर्य है, इसको धारणा सभी किसी ने नहीं की। यद्यपि किसी-किसी मुस्लिम राजनीतिज्ञ ने इसे शब्दों में यह अन्वय कहा है कि समस्त भारत में केवल एक

ही तो विश्वविद्यालय है जहाँ मुसलमान नवीन शिक्षा पाते हैं अथवा पढ़े-लिखे मुसलमानों को रोजगार मिलता है। यदि अल्पसंख्यक कैम्पस से यही तात्पर्य है तो यह वास्तविकता से अन्यायपूर्ण है। अलीगढ़ में इस समय ८ हजार विद्यार्थी हैं। जिनमें ६ हजार से अधिक मुसलमान नहीं हैं। तो क्या समस्त देश में केवल इतने ही मुस्लिम विद्यार्थी शिक्षा पा रहे हैं? फिर अलीगढ़ में विद्यार्थी बहुधा उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश से आते हैं। किसी अन्य प्रदेश के विद्यार्थी यहाँ नहीं आते ही आते हैं। यदि मुसलमानों के लिए इस विश्वविद्यालय को सुरक्षित कर दिया गया तो जम्मू-कश्मीर, आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, मेरठ, केरल इत्यादि के विद्यार्थियों का क्या होगा? अलीगढ़ विश्वविद्यालय में शिक्षा पाने का लक्ष्य कम-से-कम २००-२०० मासिक है। भारत में जितने परिवार हैं जो यह लक्ष्य बर्दास्त कर सकते हैं। वास्तव में यह एक राजनीतिक मारा है, जो बहुत ही हानिकारक है। भारतीय मुसलमानों की शिक्षा या अलीगढ़ विश्वविद्यालय से पूर्णरूप से सम्बन्ध नहीं है। अलीगढ़ की समस्या पर जिन राजनीतिको को आज तक बहुत चिन्ता है उन्हें मुसलमानों की शैक्षिक समस्या का कोई ज्ञान नहीं है। क्या उन्होंने अभी यह सोचा है कि अल्प विश्वविद्यालयों में मुस्लिम विद्यार्थियों की संख्या आसपास तक सीमा तक कम क्यों है? क्या सभी उत्तरी इण्डिया क्षेत्र पर गयी है कि मुवाकले की परीक्षाओं में इतने कम मुसलमान क्यों बैठते हैं? और जितने बैठते हैं उनमें से उत्तीर्ण होनेवालों, की संख्या कम क्यों है? नवीन शिक्षा या विशेष उद्देश्य रोजगार प्राप्त करना है। यदि अलीगढ़ विश्वविद्यालय पर मुसलमान की ध्यान लग गयी तो क्या इसके विद्यार्थियों के विरुद्ध भेदभाव उत्पन्न नहीं हो जायेगा?



उत्तर समाजवादी

- अल्पसंख्यक, विवेक, विवेक अ
- पूरे वर्ष
- किसानों
- चीनी मि
- प्रेरित वि
- स्थानीय
- अवसर
- सामान्य
- प्रारम्भ
- ग्रामीण सं
- प्रदेश के

रोजगार देने का काम गैर-मुसलमान के हाथ में है जोर यदि उनके हैं, यह बात बैठ गयी तो सरकार भी जातिभेद के द्वारा उनका मन नहीं कर सकेगी। क्या हमारे अलीगढ़

प्रदेश की वर्तमान सरकार ने गरीबों और निर्बल वर्ग की सहायता करने का दृढ़ निश्चय कर रखा है

शासन की बागडोर सम्भालते ही उसने

बड़े से पीड़ितों की, सरकारी पावनो की वसूली स्थगित कर, आर्थिक सहायता
गरीबों पर अथवा निःशुल्क गल्ले का वितरण कर तथा उदारतापूर्वक तकावी
अधिक सहायता की ।

खिले की खरीद की व्यवस्था की ।

शिक्षा के लिए कृषि सेवा-केन्द्र खोले ।

श्रमिकों को सरकारी करों तथा किसानों के बकाये का भुगतान करने के लिए

पंचायतों और पंचायतों के चुनाव कराकर जनता को अपना मत प्रकट करने का

को परिवहन की और अधिक सुविधाएँ देने के लिए रोडवेज की रात्रि सेवाएँ

दिए,

सैन्य प्राथमिक स्वास्थ्य-केन्द्रों पर एक के स्थान पर दो डाक्टरों की तैनाती की ।

धनहीन लोगों का हित-साधन ही सरकार का सर्वोपरि लक्ष्य है ।

विज्ञापन संख्या-३, सूचना विभाग उत्तर प्रदेश, द्वारा प्रसारित

विद्यार्थियों को आजीवन कारावास का
एक देना चाहते हैं ?

मुम्बईवासी की मुख्य समस्या यह
है कि अन्तर्गत विश्वविद्यालय का
निर्माण बनाया जाय । मुख्य समस्या

यह है कि एक ओर जहाँ यह कोमिट
करती चाहिए कि राष्ट्र के अन्य लोग
उनकी समस्याओं को समझें और उनके
सहायता का रस्ता ढूँढें हो ।
दूसरी ओर यदि उनके विरुद्ध किसी

की विश्वविद्यालय में भेदभाव बरत
जाता है तो वे आन्दोलन करें । और
सबसे बड़ी बात यह है कि वे स्वयं हर
तरह के भेदभाव से ऊपर हों ।

—दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रथम मुसहरी ग्रामस्वराज्य-सम्मेलन : 'तीसरी शक्ति' का संकेत

गुरु ३० और ३१ जुलाई को जे० पी० की मुसहरी मोर्चे पर एक विशेष चहल-पहल रही। यो जयप्रवेशको अपनी लक्ष्मी बीमारी, बागला देव और चम्बलपाटी की ध्वस्तताओं के कारण रिछते आउ-सड़ते-आउ महोदये से मुसहरी में समय नहीं दे पाये थे, लेकिन यहाँ के काम का छिलखिला बराबर चलता रहा है। सर्वश्री कैलाश प्रसाद शर्मा, कामेश्वर बाबू आदि लोग मोर्चे पर बटे रहे हैं। 'याम-सेवा-संगम' की ओर से विचार-निर्माण-कार्य भी चलता रहा है, लेकिन प्रखण्ड में जिस प्रकार की हतबल जे० पी० के रहने के कारण बनी रहती थी, उसका अभाव तो महसूस होता ही था, उनके अभाव को पूरित बना बोन कर सनता है? इस सम्मेलन के सन्दर्भ में एक ग्रामस्वराज्य-सभा के प्रतिनिधि ने यह भाव व्यक्त करते हुए कहा, "इसीलिए तो सोचा गया कि जे० पी० इतने दिली बाद आ रहे हैं, और कोई दिनों के लिए आ रहे हैं, तो क्यों न एक साथ मिलने का कार्यक्रम बनाया जाय? और यही एक यात्रा मिलने का कार्यक्रम मुसहरी का प्रथम ग्रामस्वराज्य-सम्मेलन हो गया। जब आपसे हैं सब लोग, तो अपने काम का लेवा-जोधा भी कर लेंगे, कुछ जागे की योजना भी बना लेंगे, जे० पी० का मार्गदर्शन भी मिल जायगा।"

मुजफ्फरपुर शहर से तीन मील दूर सुस्ता गाँव में यह सम्मेलन आयोजित था, जिसमें भाग लेने के लिए इस प्रखण्ड की ८१ ग्रामस्वराज्य-सभानों के २५३ प्रतिनिधि एक चरवा प्रतिनिधि चुनकर सहित आये थे, जिन्होंने सम्मेलन के दिग्दर्शन कार्यक्रम में अपना नाम दर्ज कराया था। बहुत से ऐसे

लोग भी दोती दिव सम्मेलन में आकर भाग लेते रहे थे, जिन्होंने विधिवत् मुक्त जमा कराकर अपना नाम गही दर्ज कराया था। करीब ३१ लोग जिले के अन्य प्रखण्डों से भी आये थे। ३१ जुलाई को विशेष रूप से प्रखण्ड के ३५ शिक्षारों ने भी भाग लिया, क्योंकि मुसहरी की शिक्षा के बारे में भी विचार-विमर्श किया जाता था।

सम्मेलन की अध्यक्षता श्री क्षेत्र के प्रमुख सर्वोदय कार्यकर्ता श्री वीरो बाबू ने की। ३० जुलाई को जब २ बजे से सम्मेलन की कार्यवाही शुरू हुई तो पूरा सम्मेलन-गण्डाल भरा हुआ था। मंच पर भी काफी भीड़ थी। मुजफ्फरपुर के तीन विधायक, छपि-मंजी श्री सलितेवर प्रसाद शाही तथा सरकारी अधिकारी, क्षेत्र के गणमान्य नागरिक और सर्वोदय कार्यकर्ता जसाह के साथ सम्मेलन में उपस्थित थे।

अधिकांश के आश्रन-ग्रहण की जीव-चरित्रता के बाद स्वागत समिति के अध्यक्ष श्री रामदेव प्रसाद वर्मा का उपा हुआ भाषण एक दूसरे व्यक्ति ने पढ़कर सुनाया; क्योंकि स्वागतप्रवचन महोदय अपनी अस्वस्थता के कारण सम्मेलन में उपस्थित नहीं हो पाये थे। स्वागत भाषण में दो-हाई साज पहले की क्षेत्र की आन-रूप स्थिति, उसमें जे० पी० का समाधान ढूँढने के लिए आकर जुड़ने और सर्वोदय कार्यकर्ताओं का जो यात्र से जे० पी० के प्रयत्न में शामिल होने के प्रति संज्ञा की जनता की ओर से आभार व्यक्त किया गया था। यह जादरारी दी गयी थी कि प्रखण्ड में १०० ग्रामस्वराज्य-सभाएँ बन चुकी हैं। (बाद में एक और प्रवचन के गठन की सूचना दी गयी) जे० पी० के स्वास्थ्य की दिशा पर चिन्ता व्यक्त करते हुए उनके मुलाख्त्य

और बतायु होने की शुभकामना भी सहज ही स्वागत-भाषण में प्रकट की गयी थी।

जे० पी० की अनुपस्थिति में मुसहरी का मोर्चा सम्भालनेवालों में से एक प्रमुख व्यक्ति श्री कैलाश बाबू ने प्रखण्ड में हुए काम की लम्बी रिपोर्ट पेश करते हुए कुछ नयी जानकारी भी दी। आपने बताया कि प्रखण्ड में पुतिह-बदावत मुक्ति-विधायक की दिशा में काफी सफलता मिली है, और ईकडो मामलो-मुकदमों का निपटारा ग्रामस्वराज्य-सभानों द्वारा किया गया है तथा प्रचल निरन्तर जारी है। विहार रिजोफ कमिटी की ओर से २४५ पंचजल के तथा ६६३ सिचाई हेतु डेड इंच ब्यास के चापावत इस प्रखण्ड में लगवाये जा चुके हैं। याम-सेवा-संगम की ओर से ६ पोखरों का जोगीन्द्रार कराया गया है, जिनमें करीब ५९ एकड़ जमीन में सिचाई हो सकेगी। ४४ छोटे पैमाने के उद्योगों का निबन्धन भी ग्रामीण औद्योगिक परि-योदता, नवदा (मया) के परिपोदता अधिकारी श्री गीता प्रसाद सिंह के प्रयत्नों से हो चुका है।

स्वयंवर की ओर से अब तक ४ गाँवों का, बावूनी दुर्घि से, पुष्ट ग्रामदात के रूप में गजट हो चुका है। कुल ३१ ग्रामस्थानों गाँवों के कुल १५१ आदातानों में कुल २९ बोया १७ बट्टा १९। दूर जमीन का वितरण हुआ है; जिस पर सभी आदातानों का दखल हो चुका है।

काम की रिपोर्टिंग के बाद विधायकों ने एक-एककर अपनी बात सम्मेलन के समक्ष रखी। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के विधायक श्री रामदेव वर्मा ने प्रखण्ड में चल रहे भूदान-ग्रामदान के काम की गतिथो की ओर लोगों का ध्यान स्तीचा। समाजवादी विधायक श्री रमई राम ने जे० पी० से अनुरोध किया कि वे अन्य प्रखण्डों की ओर भी ध्यान दें। समाजवादी विधायक श्री साधुचरण शाही ने आशा व्यक्त की कि जित्त तरह चम्बल के बाँगीवों में जे० पी० के घरघों में अपने हृदयार शाल दिये, वैसे ही समाज के

अन्वयी लोग भी एक-न-एक दिन जे० पी० के चरणों में हथियार डालेंगे ही। श्री ललितेश्वर प्रसाद शाही कृपि र श्री (बिहार राज्य) ने विवास के मार्ग की रक्षाओं को सृष्ट करने हुए यह कहा कि विवास के लिए पूँजे लगाने की भावना का अभाव आज देश में पाया जा रहा है। लोग बल नहीं करते।... अन्त में आपने मन्त्री के सहजों में हमारे 'समाज की सहायता यहाँ के काम में हमें क्या उपलब्ध रहेगी' का आश्वासन दिया।

अपने भाषण में श्री जयप्रकाश नारायण ने पिछले आठ-साढ़े षट् महीने क्षेत्र से बाहर रहने का दुःख व्यक्त करते हुए अपने स्वास्थ्य के बारे में सशिष्ट जानकारी दी, जिसे जानने के लिए सम्मेलन में उपस्थित करीब २००० लोग आनुर थे। जो इस समय उनका स्वास्थ्य नहीं सुधरा है। देखने से ही एह-दो माह पूर्व की स्थिति में और आन की हालत में काफी सुधार नजर आया है।

जे० पी० का पूरा भाषण किसी नेता का मधीय भाषण नहीं, एक बड़े परिवार के दुर्गम को पारिवारिक चर्चा थी। आपने कहा कि, "यहाँ से दूर रहने पर भी मुझे काम की जानकारी बराबर मिलती रही है। काम यहाँ बराबर चलता रहा है, इसका मुझे सन्तोष है, लेकिन यहाँ कुछ चीजों हैं। स्थानीय नया नैदानिक विज्ञान हो रहा है, ग्रामसभा, पंचायत-आदि संस्था, और ग्राम मानिस्यता की सक्रियता से काम आगे बढ़ रहा है, लेकिन अभी पूरे क्षेत्र में गतिनीयता नहीं आयी है। ग्रामरान की चारों तरफों की पूर्ण रूपी ठक नहीं हुई है। इन चारों की पूर्ण रूपी पर ही ग्रामसभाओं की क्षेत्र गतिगाय बन सकेगी।"

ग्राम-स्वच्छता की पुगानी भारतीय परम्परा और उन पर अर्थों की राज के विचारक प्रसार की चर्चा करते हुए जे० पी० ने कहा कि, "समय आन नगरों में जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है, लेकिन यहाँ से भी यह बढ़ाओ की जाती है, भारत में नगर और गाँव का जो अन्तर्गत है,

उसके कारण गाँवों की जनसंख्या बराबर अत्यधिक ही रहनेवाली है। इसलिए भारत के विचार की योजना कृपि-जीवो-गिक ही हो सकती है। इसी आधार पर गाँवों को मजबूत बनाया जा सकता है और गाँव मजबूत बनने, तभी देश मजबूत होगा।" आपने ग्रामसंरक्षण-सभा की ही वास्तविक 'लोकसभा' की सहाई बधाई इसी सभा में गाँव का हर व्यक्ति-व्यक्ति भाग ले सकता है। चारों ओर ऊपर के जितने मजदूर हैं, सब प्रातिनिधिक हैं। यह लोकसभा जितनी मजबूत होगी, देश का लोकतन्त्र उतना ही गतिगायी होगा।

प्रथम देश के हर पिछड़े इलाके में गुरुसोरी की समस्या भीषण है। पिछले दिनों सर्व सेवा समूह के अध्यक्ष श्री विद्वरान दंडा मुम्बई में दौरा कर रहे थे, उहाँ दक्षिण एक गाँव की ग्रामसभा में एक शरीर आदमी ने यह बयान कि ५०० रुपये उसने बँत के लिए बर्बाद किये थे, ३ प्रतिशत प्रतिमास चक्रवृद्धि ब्याज की दर से बढ़ते-बढ़ते थोड़े ही दिनों में बर्बाद हो गया कि १६ कड़दा जमीन उसे देह १५०० की और अब उसके पास सिर्फ ७ कड़दा जमीन बच रही है। वह आदमी दो दिनों से भ्रूणा था।

श्री सिद्धांतजी ने जे० पी० को इस घटना की जानकारी देते हुए पत्र लिखा था, जिसे उन्होंने सभा में पढ़कर सुनाया और बड़ ही भाविक लक्ष्यों में लोगों के समझ यह सजात पत्र किता, "क्या ये अन्याय चलते ही रहेंगे?"

दूसरे दिन यही ३१ जनवरी, '७२ को पुनर्हित में अलग-अलग माहसूरों में बर्बाद हुईं। लोगों ने मुन्कर चर्चा की और सर्वसम्पन्न गुस्ताव सम्मेलन के समझ पत्र करने के लिए तैयार किये गये। माहसूर में भाग लेनेवालों की चर्चा काका मुम्बईवासी और आवा-हारिक हुईं, कड़ी भी मजदूर ने मजदूर का रूप नहीं किता, एक-दूसरे की बात को समझने-समझाने का ही दौर चलता।

आशातु में गोपिणी के मन्त्रों

ने अपनी-अपनी रिपोर्ट सम्मेलन में पेश की।

सबसे पहले मिश्रा में कानि विषयक गोष्ठी की रिपोर्ट थी देवेन्द्र अलत, एक शिक्षक ने पेश की। इस गोष्ठी में जिन लोगों ने भाग लिया, उनमें अधिवात शिक्षक थे। केन्द्रीय आचार्यकुल समिति के सचिवक भी बसोध्य अधिवात ने भी इस गोष्ठी में भाग लिया और अपने मुताव दिये। इस गोष्ठी की रिपोर्ट के अनुसार प्रसङ्ग में ६८ प्राथमिक, १० माध्यमिक, ५ उच्च और १ प्राथमिक शिक्षक महाविद्यालय हैं। गोष्ठी की निष्कारिमें मुख्य रूप से ये थी:

(१) परीक्षा-पद्धति में कानि-तारी परिवर्तन हो।

(२) नौकरी से बिधी का सम्बन्ध न रहे। जित तरह का काम हो, उसके लिए उही समय परीक्षा ली जाय।

(३) १ रुपये की पाठगताएँ गाँव-गाँव में चलें।

(४) दो तरह की शिक्षण-अवस्था (एक उच्च और सम्मल वर्ग के लोगों के लिए और सामान्य लोगों के लिए) बन्द हो।

(५) सामुदायिक प्रवृत्तियों की शिक्षण का माध्यम बनाया जाय।

(६) शिक्षा का सचानन परस्य स्वराज्य समिति द्वारा हो।

(७) शिक्षक, मिश्राओं और अधि-वात इसके लिए प्रयत्नशील हो।

समाज के अन्तिम अर्थसत्त की स्थिति में गुस्ताव के विशेष प्रकाश दिये जायें। इन विषय पर चर्चा करनेवालों की और से प्रसङ्ग-स्वरूप समिति के सचिवक भी रामरुन महंतो ने नगर गुस्ताव रखें:

(१) अब आमजोर पर लोग मजदूरों की मजदूरी रीतों में देखें हैं, इसमें उनके लिए सन्तोष-न-ले की दुर्गम ग्रामसंरक्षण-सभाओं की और से अधि-वात में सोचो जायें।

(२) मजदूरों में बड़ी अन्तर्गत रिने जायें, जो क्षेत्र में देखा हुए हैं। जान-सुन

कर पटिया भनाम मन्डूरी में न दिया जाय ।

(३) सरकार द्वारा निम्नतम मन्डूरी की दर फिनहाल लागू का जाय ।

(४) छप्ताह में १ दिन का अवकाश मन्डूरी को मन्डूरी सहित दिया जाय ताकि दससे कार्यक्षमता भी बढ़ेगी और मन्डूरी को एक-दिन का भाराम भी मिलेगा ।

(५) बासमीत के पत्तों में जो पुटियां रह गयी है, उन्हें गुजारा जाय । जिन्हे पत्तों अमी तक नहीं मिला है, उन्हें दिववाया जाय ।

(६) भूदान की जमीन के मानले दाता-आदाता को आमने सामने बैठकर मुतसाये जायें ।

(७) धरमो मीमो की दुग्गा के साथ पेश करनेवालों को लग 'नवाना बादी' बत्ताकर पुजिस के पनधर में पँताते हैं । धामसभा इसका प्रतिकार करे ।

(८) सड़को-बाँवों पर क्षोपड़ों डालकर रह रहे मन्डूरी को वीरनबधना जमीनों पर बसाया जाय ।

(९) धामयथा ऐसे व्यक्तियों की अतिमत्त जमानत पर रोजगार के लिए १०० रुपये से १००० तक का कर्ज दिलाये ।

धाम-विनास-भोष्टो के समोजक श्री कामेश्वर सिंह ने, एक गोष्ठी के द्वारा सुझावी यथी निम्न बातें रखी :

(१) धामसभा बनवन्दी कराये । इसके पूर्व देहन की जमीन की दुहाया जाय ।

(२) सिंघाई के लिए नवदूष ही लगाये जायें । नहर की चरुते नही, उसमें जमीन बहुत धली जायेगी । पहले ही नेशनल हाईवे में बाकी जमीन निकल गयी है । (नवी से नहर निगलने की योजना चल रही है, निठका विरोध मोमो ने किया ।

(३) कृषि-बँक खोला जाय, जिसका संचालन प्रखण्ड स्वराज्य-सभा द्वारा उन्नत बीज, छात्र, निरक्षित बीजारी की मदद मिले ।

(४) शी बँक से जुड़ी हुई एक अपनी मण्डी होनी चाहिए ।

(५) उदात्त कृषि मान के आधार पर प्राथोयोग लक्ष्य रिये जायें ।

(६) सांस्कृतिक विकास के लिए अधिक विभाग जरूरी है । लोच-सिखण और वैज्ञानिक मूख-बुल के नामो से क्षेत्र का सांस्कृतिक विचार हो सकेगा ।

(७) अब तक जो बज्र लोपी ने बँको आदि से लिये हैं, उनको नमूनी के लिए धामस्वराज्य-सभा के लोच अधिक पालन दें ।

चौथी और अन्तिम गोष्ठी धामसभा की सपियता की रिपोर्ट सयोजक श्री देवेश पाठक ने पेश की

(१) धामस्वराज्य-सभा के पदाधिनारी पट्टेले अपनी जमीन का बीपा-बट्टा निशाकर फिर दूसरी से निरलवाने का प्रयास करें ।

(२) जो भूमिदान अपना बोधा-नट्टा निराल चुके हैं, वे दूसरे भूमिदानों से निरलवायें ।

(३) जो भूमिहीन अपने धम का हिरसा धामसभा की समपित करते हो, वे सामूहिक रूप से भूमिदानों के यहाँ आकर बीपा-बट्टा निगलने का निवेदन करें ।

(४) अधिपान बत्ताकर भूमिदानों को धामसभा में शामिल किया जाय ।

(५) विकास के नाम उन्ही गाँवों में लिये जायें जिनमें धामकोप निरुलता हो ।

(६) धामकोप का दिवार धाम-स्वराज्य-सभा में पेश किया जाय । ज-व-वय को बाँटें सर्वसम्मति से लय हो ।

(७) विनास के नाम प्रखण्ड स्वराज्य-सभा की आमसभा की राय से हो, इसके मनमूदाव नहीं होगा ।

(८) साल में दो बार धाम-मानि-सेना की विरोध रंतिगाँ और सिबिर हो ।

(९) धामसभा और धाम-मानि-सेना की हर पाठ बैठकें हो ।

(१०) धाम-मानि-सर्विनिको को रोज-

गार देने के लिए उद्योग-धन्धे शुरू किये जायें ।

(११) धामसभा में ऐसा नाजाररम बनाया जाय कि गरीब अपनी बात भव-गुण होकर कह सकें ।

(१२) बैठकें रात में हो, ताकि सब लोग उद्यम भाग ले सकें ।

(१३) धामस्वराज्य-सभा या प्रखण्ड-स्वराज्य-सभा के पदाधिनारी राजनीतिक दलों में न रहे, ताकि गाँव में एतदा बनी रह सके ।

(१४) प्रखण्डस्वराज्य-सभा अपने निर्णयों की जानकारी धामस्वराज्य सभाओं को भेजे ।

सम्मेलन का समारोह करते हुए श्री जयप्रताप तारावण ने इस बात पर सन्तोष व्यक्त किया कि गोष्ठीयां बहुत ही ऊँचे स्तर की और व्यावहारिक हुईं। आपने भारत के अनेक गाँवों को व्यावहारिक सुखसुवधाती दृष्टि के प्रति आस्था व्यक्त करते हुए कहा, कि "यदि तिसरे देश के नेताओं की लोचसभा में या विधान सभाओं में तो उदात्त-पटक की नीवत आ जाती है। फिर जे० पी० ने देश की सारी राजनीतिक शक्ति एक पार्टी और एक नेता के हाथ में सिमटने पर विरता व्यक्त करते हुए इस बात की व्यावश्यकता बतवाई, कि "हम जिस लोचनीति की बात करते हैं उसका व्यावहारिक दर्शन अतः अगले आम चुनावों में कुछ क्षेत्रों में ही सफलतापूर्वक करा सकें यानी लोक-प्रतिनिधि सबै फर उन्हे क्षेत्र की जनता द्वारा चुनाव में विजयी बना सकें, जो दलीय प्रतिनिधित्व की जगह लोक-प्रतिनिधित्व के विचल्प का एक प्रररध दर्शन लोगों को हो सकेगा और देश की जनता जाने पस कर रहे अपना सर्वेगी ।"

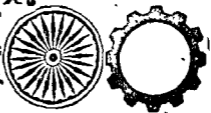
सम्मेलन के अन्त में बत्री बाबू ने इसे एक मूहमात्र बढाते हुए माने की महत्वपूर्ण सम्भावनाओं की और सर्वेश किया और कोपकारिक धारवाद के आदान-प्रदान के साथ सम्मेलन समाप्त हुआ ।

—रामचन्द्र राठी



इन्होंने स्वतंत्रता संग्राम
में विजय पाई

आइये ! हम राष्ट्र निर्माणा
के युद्ध में विजय
प्राप्त करें



चाहे। क्या मजदूरी रोज मिल जाती है? इन प्रश्न के उत्तर में यह कहा जा सकता है कि यहाँ के मजदूर रोज दम स्थिति में रहते और खाते हैं। उन स मापतया रोज मजदूरी प्राप्त हो जाती है। जहाँ तक काम का प्रश्न है वह प्रति-दिन मिलना सम्भव नहीं। खंगी एक ऐसा काम है जिसमें सालभर काम मिलना सम्भव नहीं। उदाहरण जमीन रहने के कारण हमेशा कोई-न-कोई फल लगे रहती है। सर्वेक्षण के बाद इन बात की पुष्टि हुई कि यहाँ मजदूरों को साल में ६ माह काम मिल जाता है। दोष दिनों में या तो काम नहीं मिलता या आधे समय तक काम मिलता है। मजदूरों की इस प्रकार की स्थिति, रहती है कि कुछ मजदूर ऐसे रहते हैं जिन्हें आसानी से काम मिलता है और इनका किसानों से निश्चय का सम्बन्ध रहता है। पर ऐसे मजदूरों की संख्या काफ़ी है जिन्हें नियमित काम नहीं मिलता है। फिर परिवार के प्रत्येक सदस्य को काम मिल सकना सम्भव नहीं। मजदूर परिवार के स्त्री-

परिश्रम करने पड़ते हैं। कार्य की दम परिस्थिति में इन वर्ग की महिलाएँ छोटे बच्चों को माथ में रखकर कार्य का पूरा करती हैं।

मजदूर को जो भी मजदूरी मिलती है उसका उन्नीसवाँ परिवार का प्रत्येक सदस्य बाँट कर करता है। बिना मजदूरी मिलती है उसमें परिवार के प्रत्येक सदस्य का पेट भरना सम्भव नहीं। भोजन की इस छाना छाटी के कारण संयुक्त परिवार नहीं टिक पाता। यही कारण है कि इस वर्ग में संयुक्त परिवार नहीं के बराबर संकेत को मिलने है। प्राय एक पीढ़ी एक माथ रहता है, लड़का बढ़ा होता है, शादी होती है और अनाथ को प्रकिया प्रारम्भ हो जाती है। भोजन चोरी भी कमी आपसी सम्बन्धों को बिखर कर प्रभावित करती है इसका एक नमूना इसमें देखा जा सकता है। ●

पॉसवाड़ा जिले में साहित्य विज्ञान-योजना

श्री अण्णावकी कनारा अक्षर वासवाड़ा जिला सर्वोदय मण्डल परनापुर ने जन-अ.घोषित साहित्य-विज्ञान की योजना बनाकर १२ व्यक्तिों से ४०० ५ जिना सर्वोदय मण्डल परनापुर से २५० रुपये वापस देने की शर्त पर इकट्ठा कर १५ अप्रैल १९७१ से साहित्य-विज्ञान शुरु की। वर्ष भर में ११३९ रुपये की साहित्य-विज्ञान हुई है। साहित्य-विज्ञान के लिए रोज एक पन्ना निर्माण समय देते हैं।

इन योजना के सहयोगी सदस्यों की बैठक १-८-७२ को जिला सर्वोदय मण्डल के कार्यालय में हुई। बैठक में इस योजना को पुन जांच रखने का निर्णय लिया गया। साहित्य-विज्ञान से १७५ रुपये का लाभ हुआ। बैठक में इस वर्ष अधिक सदस्य बनाने का भी निश्चय लिया गया। — तोषा, लहरि वर्मा

पुरुष दोनों सदस्य काम करने की स्थिति में होते हैं। ऐसा पार्या गया कि प्राय पुरुष, काम मिलने पर, अपेक्षाकृत अधिक काम पर जाते हैं। जबकि महिलाओं की स्थिति यह होती है कि काम के प्रकार एवं पारिवारिक कारणवश अपेक्षाकृत कम काम मिलता है। महिलाएँ हर प्रकार के काम को करने की स्थिति में नहीं होती हैं।

महिलाओं के कार्य को भी परिस्थिति होती है उसे देखते हुए यह कहा जाना आवश्यक है कि उनकी कठिन शारीरिक परिश्रम करना पड़ता है। महिलाओं का बिना शारीरिक हिंसा या सामना करना पड़ता है उससे उनके स्वास्थ्य को काफी नुकसान पहुँचता है। कठिन शारीरिक काम करने और अपूर्ण आहार के कारण कम उम्र में ही शरीर कमजोर हो जाता है। फिर किसान उनके साथ कोई रियायत नहीं करता है। मिट्टी बोने से लेकर धरने, चारों तरफ, सब में कठिन

शिमला-सन्धि

सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री सिद्धराज ढड्डा का वक्तव्य

स्वतंत्रता के बाद दुर्भाग्य से भारत और पाकिस्तान के सम्बन्ध भय, अविश्वास, और सन्देश पर आधारित रहे हैं। इसके कारण विद्यमान पन्चीव वर्षों में केवल सतत युद्ध ही नहीं हुए, बल्कि बढ़ती हुई सैन्य खर्च भी जारी रही। परिणामस्वरूप विकास और भलाई के लिए बिन साधनों की आवश्यकता थी उन्हें अनुत्पादक उद्देश्यों में लगाया गया, जिससे पराधीन लोगों को बढ़ी कठिनाई हुई।

शिमला सन्धि भारत-पाक सम्बन्धों में एक नये दौर की शुरुआत है और इसे जनता को भलाई चाहनेवाले, विशेष तौर से मरीचों से सहामुभीति रखनेवालों का पूरा समर्थन मिलना चाहिए। जो लोग इस सन्धि में दोष निदान रहे हैं उन्हें यह समझना चाहिए कि कोई भी

सन्धि इस बुनियाद पर नहीं की जा सकती कि 'तब हमारा, हम दुश्मनी'। अगर कोई दो पक्ष युद्ध को दानना, खेप करना चाहते हैं तो उन्हें यह मुकदम 'लो और दो' की बुनियाद पर करनी पड़ती है।

हमें यह भी याद रखना चाहिए कि भाषणा दश के बन जाने से पूरी परिस्थिति बदल गयी है। हमें वास्तविकता को सामने रखते हुए इस उन्मत्ताद्वीप में शांति के किष्कू, या अक्षर को, हृष से नहीं जाने देना चाहिए। इसलिए मैं विराधी दलों से अपील करता हूँ कि वे परमात्मत राजनीति से ऊपर उठें और परिस्थिति को एक बड़े राजनीतिक की हैसियत से देखें। हम लोग अपने आस को छुटा को राजनीति का यत्र न बनने दें, जो कि बढ़ी साक्षरता गरीब 'देनों की नीमत पर हमें बनाना चाहती है।

भूदान-यज्ञ के समाचार

२१६३ एकड़ भूदान-भूमि ५०१ भूमिहीनों में वितरित

भोपाल, २७ जुलाई। मध्य प्रदेश भूदान यज्ञ बोर्ड द्वारा प्रसारित एक जानकारी में बताया गया है कि यज्ञ में गृहीणों—मर्दान व लाल—में जिला सुरैया में १४११ एकड़, दुमना में ७६३ एकड़, धाराम में ५,४० एकड़ तथा जमशेदपुर में ३५९ एकड़, इस प्रकार कुल २१६३ १/२ एकड़ भूदान-भूमि ५०१ भूमिहीन परिवारों में वितरित की गयी। आदाता परिवारों में १६७ हरिजन, ६० आदिवासी, २२२ खसबं एवं २२ पिछड़ी जातियों के लोग सम्मिलित हैं।

यह सर्वेक्षणों से है कि जल माह में दुर्ग जिले में एक दाता से ६.३२ एकड़ का नया भूदान भी मिला।

भूमि-वितरण

रतलाम जिले के ग्राम केरवाला तथा ग्राम बिरमावल में ६० प्र० भूदान यज्ञ बोर्ड के द्वारा छ भूदान धारक को २३ बीघा भूमि के परके पट्टे दिये गये।

तरुण-शान्तिसेना

तरुण-शान्तिसेना की प्रथम स्तर की, पश्चिमी अंगाल की पहली स्टेड्युम जिले में द्वापुता में हुई। बंठक में ३५० से अधिक युवक और युवतियों ने भाग लिया। यह बंठक थी दिनेश मुखर्जी ने हलाने की। प्रसिद्ध लोगो में श्री जंतुण आरदीन से श्री बिनो के युवक नेता हैं तथा मृणालिनी दास गुप्ता, स्वाध्यायीन, एश० पी० मित्रा, प्रो० सुविद प्रह्लादायं और श्री मरानी पदार्थों ने भी बंठक में भाग लिया। वरदाभा ने इस बात पर जोर दिया कि संगठों को बुर करनी ना अन्ध तरीका यह

है कि गांधीजी की सीख और जीवन-पद्धति के अनुसार जिनकी विवाही नाम।

जमशेदपुर नगर सर्वोदय मण्डल का चुनाव

जमशेदपुर नगर सर्वोदय मण्डल का सर्वसम्मत चुनाव ११० ७-७-७२ को हुआ। निम्नलिखित व्यक्तिय मण्डल के सदस्य चुने गये

- १ श्री लक्ष्मी मिश्र, एडवोकेट—अध्यक्ष
- २ ,, अश्विन मन्नाण— मंत्री
- ३ ,, आरिफ गद्दी— सहाय
- ४ ,, अश्विनी शर्मा— ,,
- ५ ,, चन्द्र मोहन मिह— ,,
- ६ ,, नामोदय नाथ मरण्डी— ,,
- ७ ,, राम सेवन वाण्डी— ,,

—अच्छलु प्रन्नान, मंत्री जमशेदपुर (विहार)

पुष्टि-अभियान-गोष्ठी

२६ और २७ फुल '७२ को बनमण्डी (पूजिया) में विहार के पुष्टि-अभियान में नये कार्यकर्ताओं की एक द्विविद्यीय गोष्ठी हुई। गोष्ठी में सर्वथी बंठकान्तर प्रचार भीषरी, आभाई जन्मभोजन, निर्मला देवराष्ट्रे, मि. एच झा, मृगे नारायण सिंह, लक्ष्मण सिंह, विन्देशी प्रचार मिह, महेश मिश्र, रामेश्वर टाकुर उपस्थित थे।

शोक-समाचार

विहार के अरिष्ट सर्वोदय कार्यकर्ता श्री राम नारायण झा के पिता श्री रोहण मिह का ७५ वर्ष की उम्र में १ अक्टूबर '७२ को देहान्त हो गया। उन्होंने स्वराज्य की लड़ाई में सक्रिय भाग लिया था और जेल गये थे। भाग भी उनके दो लड़के श्री रामनारायण झा और श्री विमल झा के सर्वोदय आन्दोलन में सक्रिय हैं। शोकस्य परिचार उनके प्रति अपनी धन्यजाञ्जल अर्पित करना है।

पर-व्यवहार का पता : सर्व सेवा संघ, पत्रिका-विभाग राउपट, वाराणसी-१ तार, सर्वसेवा फोन : ६४३११

सम्पादक रामभूमि

इस अंक में

- नम बलपत्त क्यों ? —श्री जगदीश शर्मा ७०६
- लौरी, अब भी लौरी, छोटी हिंसा, बड़ी हिंसा —एम्बार्कोय ७०७
- जाना जंहा विस्वास करता है, सोचता है —सुधी सुपुत्र ७०९
- अजीबकू : सकोशित अग्रिमियम —डा० बालीक अजूम ७१०
- लौरी शक्ति का संकेत —श्री रामचन्द्र शर्मा ७१४
- आर्थिक जीवन में दिशा तथा अग्रे के रूप —डा० जगन् प्रसाद ७१६
- अध्य स्तम्भ
- आन्दोलन के समाचार

सर्व

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

भद्रान्तरा

भद्रान्तरा एक असाधारण प्रधान अतिरिक्त क्रांति का सन्देशवाहक-साप्ताहिक

सच्चा स्वराज्य

जब राजसत्ता जनता के हाथ में आ जाती है, तब प्रजा की भाषाहीने होनेवाले हस्तक्षेप की यात्रा कम-से-कम हो जाती है। दूसरे शब्दों में जो राष्ट्र अपना काम राज्य के हस्तक्षेप के बिना ही शान्तिपूर्वक और प्रभावपूर्ण ढंग से कर दिखाता है, उसे ही सच्चे अर्थों में लोकतन्त्रात्मक कहा जा सकता है। जहाँ ऐसी स्थिति न हो, वहाँ सरकार का बाहरी रूप लोकतन्त्रात्मक भले हो, परन्तु वह नाम के लिए ही लोकतन्त्रात्मक है।...सच्ची लोकशाही केन्द्र में बैठे हुए दस-बीस आदमी नहीं चला सकते। वह दो नीचे से हर एक गाँव के लोगों द्वारा चलायी जानो चादिए।

स्वराज्य का अर्थ है सरकारी नियंत्रण से मुक्त होने के लिए लगातार प्रयत्न करना, फिर वह नियंत्रण विदेशी सरकार का हो या स्वदेशी सरकार का। यदि स्वराज्य हो जाने पर लोग अपने जीवन की हर छोटी बात के नियमन के लिए सरकार का मुँह ताकना शुरू कर दें, तो वह स्वराज्य-नाकार किमी. काम की नहीं होगी।

—मो० क० गांधी

साथियों से

जून के उत्तरार्द्ध में 'भ्रतान-यन्' सर्वोप छात्राधिक के अरिपे सर्वोप आन्दोलन के सम्बन्ध में मैंने कुछ बातें साथियों के सामने रखी थी। उस पत्र में मैंने इस बात पर जोर दिया था कि आन्दोलन को आगे बढ़ाने के लिए जो दो बाजार, कार्यकर्ता और संगठन हैं उनकी धार तेज होनी चाहिए और उनमें चुस्ती तथा बसावट बानी चाहिए, क्योंकि आन्दोलन के तत्पश्चात् उसने कार्यक्रम को आगे बढ़ाने का काम कार्यकर्ता और संगठन पर ही निर्भर करता है। अगर ये बाजार काम के अनुकूल तेज और चुस्ती न हों तो स्वाभाविक ही काम जँसा चाहे जँसा आगे नहीं बढ़ सकेगा।

हमारे संगठन की बुनियादी इकाई लोक-सेवक है। लोक-सेवकों से ही सर्व सेवा सभ बना है। लोक-सेवकों के लिए हमने कुछ निष्कारणें मानी हैं। उन निष्कारणों के अनुरूप और उन निष्कारणों को जीवन में प्रतिबिम्बित करनेवाला जनाक आचरण हो, ऐसी उनसे अपेक्षा है। हम चाहते हैं कि देशभर में अधिक-से-अधिक लोक-सेवक बनें, पर साथ ही हमें इस बात पर पूरा ध्यान रखना चाहिए कि वे ऐसे ही र्थांतर हो जो निष्कारणों और आचरण को बसोटी पर खड़े उजड़ते हों। सच्चा अगर बड़े लेकिन गुणवत्ता की कीमत पर नहीं।

लोक-सेवकों के लिए जो अग्रगण्य बातें सर्व सेवा सभ के ध्यान की हैं उनके अनुसार अब यह भी जरूरी नहीं है कि लोक-सेवक आन्दोलन के काम में ही पूरा समय देनेवाला हो। आजीविका के लिए काम करना जरूरी है, उनमें तब अग्रगण्य जरूरी क्षणों में जो समय जाय हो जाय, लेकिन बचे हुए समय का उपयोग वह आन्दोलन के लिए करे। नये लोक-सेवक

बनाने समय इस बात को सावधानी से पालन करना चाहिए, ऐसा मेरा मन्त्र सुझाव है। जो किसी-न-किसी रूप में आन्दोलन में सक्रिय हो वे ही लोक-सेवक बनें या ऊँची चो बनाया जाय, इसका हमें आग्रह रखना चाहिए। ऐसा हम नहीं करेंगे तो उद्देश्य सफल नहीं होगा। इसी दृष्टि से जहाँ एक ओर सर्व सेवा सभ के लोक-सेवक के लिए पूरा समय आन्दोलन में लगाने की बात को छोड़कर आर्थिक समय देनेवालों को भी स्वीकार किया है, वहाँ दूसरी ओर पहले जो यह मान लिया जाता था कि खारी आदि किसी भी रचनात्मक काम में लगे हुए सभी लोग 'पूरा समय और सर्वस्व चिन्तन' आन्दोलन में ही दे रहे हैं, उसे छोड़ दिया। जब सवान पुरे समय या आर्थिक समय का उलना नहीं है बिना इस बात का कि लोक-सेवक ऐसे ही स्थिति हों जो आन्दोलन के किसी-न-किसी काम में सक्रिय हों।

सर्वोप के क्षेत्र में बिना या प्रदेश मण्डल तथा सभ सेवा सभ आदि को संगठन हमने बनाये हैं उनमें मुख्य दृष्टि आर्थिक की रहे, यह हमने माना है। यह उचित है और जरूरी है। हमें उड़ी और बड़ना है, लेकिन इसका मतलब बिलाई का नहीं होना चाहिए। संगठन वा कुछ उद्देश्य होना है और कुछ नियम भी होते हैं। हम अक्सर इन नियमों के पालन में कितनाई होने देते हैं क्योंकि हम समझते हैं कि नियमों के पालन का अर्थ है करने तो उसके दूसरे को बुरा समझा और आर्थिक में बर्बाद करेगी। मेरी राय में यह ठीक नहीं है। इस प्रकार की बिनाई से उद्देश्य की पूर्ति में भी बाधा पहुँचती है। प्रदेशों में, जिलों में, और जगह-जगह नये लोक-सेवक बनाने और सर्वोप मण्डलों के गठन में हम इस बातों

का ध्यान रखने और संगठन को रूढ़ बनायेंगे तो अग्रगण्य होगा, तो संगठन आन्दोलन को आगे बढ़ाने में सफल हो सकेगा। होता संगठन अलग-अलग नहीं होता।

—सिद्धराज इड्डा

अखिल भारत राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन

नयी तालीम समिति (सर्व सेवा सभ) और शिक्षा मण्डल, वर्धा के संयुक्त तरावधार में अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन देवागाम में दिनांक २२, २३ अक्टूबर १९७२ को समाप्त होने जा रहा है। सम्मेलन में उन महत्त्वपूर्ण नैदानिक समस्याओं की ओर, जो राष्ट्र के सम्मुख हैं, ध्यान खींचा जाएगा। बुनियादी शिक्षा के शिक्षक, सर्वोप विचार के तज, शिक्षण के काम में लगे हुए रचनात्मक कार्यकर्ता तथा जो गांधी जी द्वारा बतायी गयी शिक्षण-पद्धति में रुचि रखते हैं, उन सबको सम्मेलन में भाग लेने हेतु आमन्त्रित किया जा रहा है।

केन्द्र तथा राज्यों के शिक्षामंत्री, विश्वविद्यालयों के एक-दो अन्य मुख्याध्यक्ष शिक्षा-शास्त्रियों को भी चर्चाओं में भाग लेने हेतु आमन्त्रित किया जायेगा। इस सम्मेलन के उत्पादन के लिए प्रचारमन्त्रों से अनुसंधान किया जा रहा है। श्री धीमन्नासतवन, राजनाल (गुजरात) सम्मेलन की अध्यक्षता करेंगे।

अन्य जानकारी के लिए कृपया निम्न पते पर पत्र-व्यवहार करें।

—के० एच० अण्णा

मन्त्री, नयी तालीम समिति, देवागाम, वर्धा (महाराष्ट्र,)

नयी तालीम
हिन्दी मासिक

वांगिक चन्द्रा : ८ रुपये
सर्व सेवा सभ, शिक्षा विभाग
राजवाड़ा, करावसको—१

नया साम्राज्यवाद

जाज टाउन में होनेवाले इष्टस्य देशों के विदेश मंत्रियों के सम्मेलन का यह बहना कि दुनिया के बड़े और समृद्ध देश विदेश देशों पर आर्थिक दबाव डालकर अपनी साम्राज्यवादी मनोवृत्त का नये ढंग से परिचय दे रहे हैं इस बात का प्रमाण है कि अब उन्हें अपनी सही स्थिति का भान हो रहा है। उन्हें अब यह प्रतीति हो रही है कि छोड़े विदेशी शासन के अन्तर्गत दूसरी भी गुलामी होती है जो कम भयकर नहीं होती। उन्नत देश सहायता, व्यापार, और तकनीक आदि के माध्यम से गरीब देशों को जकड़ते जा रहे हैं, और विदेश होकर गरीब देश को धनी और शक्तिशाली देशों की श्रेणी में लाने का प्रयत्न कर रहे हैं—केवल आर्थिक मामलों में नहीं, बल्कि विदेश-नीति आदि मामलों में भी। एशिया और अफ्रीका के देशों को सब निश्चित रूप से जान लेना चाहिए कि पश्चिम की दुनिया की नकल करने में उनकी मुक्ति नहीं है। पश्चिम का विकास गुलाम देशों के मानवीय तथा भौतिक साधनों के शोषण के बल पर हुआ है। क्या हम भी पश्चिम की ही राह पर चलना चाहते हैं? क्या हम चल भी सकते हैं? अगर नहीं, तो हमें अपने लिए नयी राह निकालनी चाहिए। हर देश को अपने लिए अलग राह निकालनी होगी। जिस देश के लिए कौन सा राजनैतिक समूह, कौन सा विकासनीति, और किस तरह की शिक्षा अद्वय होनी चाहिए, यह उसकी परम्परा, राष्ट्रीय प्रतिभा और परिस्थिति पर निर्भर है। उद्योग और नकल गुलामी का दूसरा नाम है। मुक्ति स्वदेशी में है। स्वावलम्बन परस्परस्वतन्त्रता की पहली सीढ़ी है। भारत मुक्ति की नयी लड़ाई में अग्रगण्य कर सकता है क्योंकि उसने स्वदेशी और स्वावलम्बन का पाठ सीधे गांधी से पढ़ा है। स्वदेशी की दुनिया पर बनी सच्चे स्वराज्य का 'जु रिट' जिसे विनोबा ने सवार का व्यावहारिक और शाहू बना दिया है गांधी की विरासत के रूप में हमारे पास मौजूद है। जरूरत है उसे समझने की, और अपनाने की। यही रास्ता है हमारी मुक्ति का। यही हमारी शक्ति का उत्तराधिकारी है जो जिसे हमें पूरा करना है।

एक नया प्रयोग

सबसे पहले तो यह जानना है कि विदेश में एक नया प्रयोग की क्या विचारणा है। अगर यह बात सही हो तो मानना पड़ेगा कि बहुत दिनों के बाद शिक्षा-युग में एक नया प्रयोग हुआ है। विदेशी शिक्षा-संस्थाओं की व्यवस्था में नयी

समाधानार्थ प्रयत्न की हैं। शिक्षा की समस्या विचारणीय नहीं है। मूल दो समस्याएँ दूसरी हैं—एक, स्वयं शिक्षा जो निरालम्ब निकाय है, और दूसरी, व्यवस्था जो प्रयत्न और व्यय है। विद्यार्थी और शिक्षक दोनों निकायों शिक्षा और प्रयत्न व्यवस्था के विचार हैं, यहाँ तक विचार हैं कि वे अब स्वयं अपने विद्यालय को प्रयत्न और निरालम्ब बनाने में शरीक हो गये हैं। इतना स्पष्ट है कि आज जिन हाथों में शिक्षा और विशालता को व्यवस्था है वे सर्वथा अयोग्य सिद्ध हो चुके हैं। उनकी अयोग्यता का दण्ड सबसे अधिक विद्यार्थियों को ही भोगना पड़ रहा है, इसलिए स्वाभाविक है कि वे आत्म परिचय में शीघ्र कर रहे और स्वयं जिम्मेदारी लेने के लिए आगे बढ़ें। विदेश में उन्होंने सम्भवतः उसी तरह का एक प्रयोग उठाया है। लेकिन विद्यार्थी विद्यालय की इकाई के केवल एक अंग हैं, उनके दूसरे दो अंग शिक्षक और अभिभावक हैं। हर विद्यालय की व्यवस्था शिक्षक, विद्यार्थी, अभिभावक को एक सम्मिलित समिति के द्वारा ही होनी चाहिए। यह व्यवस्था स्थापित हो। सरकार धन से उस व्यवस्था को सहायता करे, लेकिन उसकी स्थापना में हस्तक्षेप न करे। उसे अन्तर्गत कम, परीक्षा, आन्तरिक जीवन आदि सब में पूरी सूट होनी चाहिए। विद्यालय की समिति अपने कामों के लिए विद्यालय की आत्मशक्ति और समान के प्रति उत्तरदायी होगी। आज की घोर अव्यवस्था का उत्तर स्थापित व्यवस्था है, न कि सरकार का नियंत्रण।

चाँदो आजादी की, सोना खादी का

स्वतंत्रता की रक्त-यज्ञों और खादी की स्वर्ण-यज्ञों : स्वतंत्रता और खादी दोनों के प्रयोगों के जीवन में सोने-चाँदी की ऐसी गंगा-वसुन्ती पहिले कभी नहीं प्रयत्न हुई थी। स्वतंत्रता पचीस वर्ष की हो गयी, खादी पचास वर्ष की। गुलामों के दिनों में खादी 'आजादी की खादी' थी। लेकिन जिस खादी ने देश को आजादी की वह खादी पहनायी थी उसने खादी को 'गरीब की आजादी' के रूप में भी देखा था। उसकी नजर में खादी के बिना गरीब की आजादी का कोई अर्थ नहीं था। खादी खादी के लिए नहीं, गरीब के लिए थी, जैसे आजादी शासन के लिए नहीं, देश के लिए थी। पचीस साल हो गये, आजादी गरीब के लिए नहीं हुई, पचास साल हो गये, खादी गरीब के लिए नहीं हुई। इसलिए गरीब आज यह सोचता है कि आजादी की खुशी बह गयी है जो आजादी की चाँदी काट रहा हो, और खादी भी वह पहने जिसके घर में सोने की नमी न हो। अगर भारत के गरीबों को यह भावना है तो चाहिए कि आजादी और खादी दोनों अपना सही रास्ता छोड़कर अलग गयी हैं, दोनों के वास्तविक गुणों का इन्तहा हो गया है। सोचना चाहिए कि देश क्यों हुआ। जिस देश में गरीबों का प्रयत्न बटुमा है, उनमें कौन आजादी और खादी—

चीन का कम्यून

वेकिन से बल द्वारा ६ घण्टे चलने पर शा-शी-यू नाम का गाँव मिलता है। ६ मी ७० व्यक्तिगों के इस गाँव में दो या तीन कमरों के कुल १३० घर हैं जो मक्के के खेतों में बीर पहाड़ के ढाल पर सेब के वृक्षों के बीच बने हुए हैं। गाँव के तीन ओर पहाड़ हैं। एक पहाड़ी ढाल पर तीस फीट ऊँचे खेतों में निष्कल हुआ है : 'माओसे तुंग बनर हों'।

चीनकी ७५ करोड़ जनसंख्या में अस्सी फीसदी लोग गाँवों में रहते हैं। लगभग २५ हजार की आबादी के अनेक गाँवों को मिलाकर एक कम्यून कहा जाता है। कम्यून के भीतर जितनी भूमि होती है उसका स्वामित्व सामूहिक होता है; उहाँ तरह पशुओं, खेती के औजारों, हथारथ तथा अन्य कल्याण-सुखाओं का भी स्वामित्व सामूहिक ही होता है।

घर के साथ एक गृह-वाटिका जुड़ी होती है जिसमें विद्यालय अपनी मर्जी की फसलें उगा लेते हैं, और गुबर पातते हैं। शा-शी-यू में लोग दो सी सब दूर के पुरे

से पानी लाकर दरवाजे पर रखे एक ड्रम में भर लेते हैं। बन्दर लोग ईंट के चौड़े चकलतों पर सोते हैं। चकलते इतने मोड़े होते हैं कि पूरा परिवार बाँस तो पटाई बिछाकर साथ सो सके। जाड़े में गरमों के लिए खंभीठी जलायी जाती है।

शा-शी-यू में बिजली पहुँच गयी है। वहाँ के लोग उच्च जमाने को याद करते हैं जब जमींदार गाँव का मालिक होता था। शा-शी-यू का जमींदार गाँव से ६ मील दूर रहता था। गाँव के लोग उसी से जमीन लेकर खेती करते थे। उपज का आधा मालिक ले लेता था, और बची हुई आधी उपज का आधा हिस्सा टैक्स में सरकार को दे देना पड़ता था। गाँव के मजदूरों का पुरा हाल था। जमींदार अपने मजदूरों को चावल भी पतली तिचरी के सिन्ध और कुछ नही देना था, उसे भी उसकी पत्नी एल्लो डाककर पतली कर देती थी।

१९४७ में कम्यूनियों के बाने के पहले इस गाँव में ७० घर थे—पर नया

पे, चुंगियाँ थीं; जमोन पहाड़ी ओर खेतों के लिए बिलबुल निचम्मी थी। जो कुछ गाँव के लोगों की मेहनत से पैदा होता था वह दो जमींदारों और दस खनी विसानों के घर चला जाता था। जमींदार पहाड़ी के दूसरे ओर उपशाला पाटी में रहते थे, बाकी ३० परिवार वेहद गरीब और भूमिहीन थे। जमीन विच्छेद दस परिवारों के पास थी। उन्हीं की जमीन पर काम पाने के लिए मजदूरों में होड़ लगी रहनी थी और मजदूरी करके भी कमी पेट नहो भरता था। २१ परिवारों को गाव में कुछ महीने भोष मांगकर खिना पड़ता था और १७ परिवार पुरे साथ निष्ठा मांगते थे। बच्चे बचपन में ही जमींदार के हाथ बिरु जाते थे और सारी बिरुगी मजदूरी करने के बाद जब शरीर थक जाता था, तो कोई पूछनेआता महीँ होता था। दिग्ने ही बच्चे भूख और बीमारी से मर जाते थे।

जब कम्यूनियों का राज हुआ, तो गाँव की पूरी जमीन ७० परिवारों में लगभग बराबर-बराबर बाँट दी गयी। खनीओर निष्ठा मांगने वाले परिवारों

→दोनों गरीबों को छोड़कर विनियमों की बन गयी ? देश की सत्ता, देश की सम्पत्ति, देश को शिक्षा, नोकियाँ, मुक्त-मुविद्याएँ, बादि सभी पर विनियम जन का इस तरह अधिकार हो गया है जैसे इस देश में सामान्य-जन रहते ही नहीं, और जनता इस देश पर कोई अधिकार ही नहीं है। अबजो ने अपने जमाने में जो कुछ किया वह किया, लेकिन स्वतंत्रता ने उस अन्धकार और खनीति को मिटाने के लिए जितना किया, बना किया ? ये श्रुत और खर्चित पुनार, ये पन्निग रहल, और यह हतो कान्ति, सब इस बात के प्रमाण हैं कि 'विनियम जन' ने जान-बूझकर 'सामान्य जन' को अलग रखने का 'पद्धत' बर रखा है। लोग पूछते हैं कि खारी गरीब से भन्न नरों है ! उजो बलियम ब्यक्ति तक पहुँचने की कोशिश क्यों नहीं की ?

हमारे शंकाओं (शादी-ब्याहार चलते हैं। उनमें अच्छे-बे-अच्छे कपड़े बिकते हैं। बरा यह सम्भव नहीं है कि उनके साथ दस-बीस अन्नर घरों के जीविका-नेत्र भी नरें जहाँ गरीब जाकर कह सके : 'मैं नाठ घण्टे काम करने को तैयार हूँ; मुझे काम दो', और उसके उत्तर में खारी का हमारा साथी कह सके : 'नो, दस बराखे पर सूत काती। ताम को चलने बकत दो रुपये

ले लेना।' ऐसे मूल की खारी बरायी जान और नखार में जन-पाउण्डर पर बेची जाय—उह वटार बेचो जाव कि यह गरीब की खारी है, महीँगे बिकेगी। गरीब की खारी का बहपन ही इसमें है कि महीँगे बिके, खोसिं वह मूख खारी है, पविग खारी है, माओवी खारी है। खण्डार का 'गरीबो हतबो' नाम पवि ब्यक्तिगों के लिए एक ही दाये मालिक से बधिया भी बाज नही रहना। खारी देग भर में दस-बीस हजार को साठ रुपये दो देकर बियाये। अगर बाज के नरों में हय दटना भी नहीं बर खण्डे तो क्या खारी की दाय-बन्दी, और क्या 'बाजारी की रकत-ज-जंजी, फिर तो महीँ मानना पड़ना कि खोने-खारी की पूजा नके घटा हुई है उगी तरह भाज भी हा खी है। लेकिन हय यह जान ले कि 'दरिद्रनाशयण' का विस्तार करने खानी खोने-खारी की पूजा खोने के भाज को गरीब के भाज से तेरी के साथ बजव करनी जा रही है। क्या हय देख नहीं रहे हैं कि बाजारी की दजत अन्धी ओर खारी की स्वर्ण-जन्दी के प्रति सामान्य जनता का क्या रस है ! क्या हय दव रस का संकेत नहीं समज पा रहे हैं ? जनता का बेशक हीना आबादी ओर खारी दोनों के विरुद्वीक गजब है। ●

को बराबर जमीन मिली। गाँव की जमीन बेहद खराब थी। मनुष्य के घोषण और प्रवृत्ति की प्रतिबन्धता, दोनों का सामना करना था। गाँव में एक ही विद्यालय था जिसके पास सबसे ज्यादा तो १३ एकड़ जमीन थी। उसकी जमीन बंट चुकी है, लेकिन अभी तक उसने तभी व्यवस्था को मन से नहीं स्वीकार किया है। १९१५ तक वह बराबर सोचता रहता था कि ही सफ़ा है, किसी दिन च्याग भाई शेक वैशाल से लोटे आये। उसके रख के बावजूद उसे राजनैतिक अक्षिप्रायों से बचिब कर दिया गया है। वह गाँव के सबसे छोटे घर में रहता है और गाँव की आमसभा में शामिल होने का अधिकार उसे प्राप्त नहीं है। उसके ६ लड़कों में से पाँच का विवाह हो चुका है और वे गाँव के दूसरे लोगों की तरह सामान्य जीवन बिता रहे हैं।

यह गाँव भूमि-वितरण के बाद भी बहुत दिनों तक गरीब बना रहा और संवत्सय दस वर्षों तक सरकार उसे अन्न को सहायता देती रही। जैसी जमीन थी उससे गाँव भर के लिए भोजन पंदा करना एक सपना था। १९५३ में यह ठग हुआ कि पंके लगाये जायें ताकि जमीन कटाव से बचे। आज गाँव में लगभग डेढ़ बी एकड़ जमीन पर जंगल छाया है। दूसरी समस्या पानी की थी। १९५३ तक सबसे नजदीक पानी की सोल दूर था, जहाँ एक पहाड़ी पर चढ़ कर पहुँचना पड़ता था। तिसाई के लिए भी पानी बहुत कम मिलता था। १९५३ में गाँववालों ने अपनी मेहनत से एक घासीह फीट गहरा तालाब खोया। १९६६ में पड़ोसी गाँव की मदद से पहाड़ पर एक कुआँ खोया। इस कुएँ से पानी पम्प करके तालाब में डकड़टा करने लगे। १९६८ में २७० फीट गहरा एक दूसरा कुआँ खोया।

१९५८ में बीन में कम्प्यून-व्यवस्था लागू हुई। जमीन का सामूहिक स्वामित्व हुआ। हर गाँव एक 'प्रोडक्शन त्रिगेम' उत्पादन दोली बन गया। ऐसे बीघ गाँवों या उत्पादन टोतियों को मिलाकर

बन्धून बना। यह बन्धून देहाती क्षेत्र का मुख्य संगठन माना गया।

१९६३ में शा-बी-यू गाँव ने पत्र की खेती करने का निर्णय लिया। धारे पहाड़ के ढाल पर पाँच हजार सान सौ गहूँ खोदे गये। लोगों ने उन्हें दूर से मिट्टी लाकर भरा और हर एक में एक सेब का पंके लगाया। इस वकत गाँव में भनो सेब होता है, मसके और गहूँ की खेती होती है और अभी हाल में अगूर जगना शुरू किया है। घट्टानों की तोड़-तोड़कर खेत बना लिये गये हैं। ये खेत हाप की मेहनत से बने हैं। गाँव में पानी के पम्प, हाप का एक ट्रैक्टर और यूँगर के सिवाय दूसरे कोई यन्त्र नहीं है। मुख्य भरोसा मनुष्य-शक्ति पर था। गाँव के काम करनेवाले २७० पुरुषों और स्त्रियों ने एक ही बीघ एकड़ नये खेत बनाये हैं और ७० एकड़ में बान लगाया है और पहाड़ी ढाल पर मसके और नपास की खेती की है। यह सब मेहनत से हुआ है। हर खेत के किनारे एक परपर गढ़ा हुआ है जिस पर उन लोगों के नाम लिखे हुए हैं जिनकी मेहनत से खेत बना है। कुछ पर तो यह भी लिखा है कि कितनी टोकरियाँ मिट्टी की निबाली गयीं और कुल कितने घण्टे की मेहनत से खेत बना। गाँव में अब १०० छाया पर बने हुए हैं। भूमि-सुधार के पहले स्थायी पर नहीं थे। गाँव में अब बार्डसिजिल हैं और सामान्य आदि होने के लिए घरों की पार्किंग। ३० स्त्रियों को कम्प्यून की ओर से तिलाली की मशीनें मिली हुई हैं जिनसे वे बपड़े तैयार करती हैं और कम्प्यून के हाथ बेचती हैं। गाँव की सब स्त्रियाँ काम करती हैं, उनके बच्चे नर्सरी में रहते हैं। बीन में कोई स्त्री केवल गृहिणी नहीं होती।

अस्ति के पहले स्त्रियाँ पुरुषों की गुलाम थीं। उनकी शुलामी के बिगूधे, उनके छोटे घर, जिन्हें बाब-बाँधकर उन्हें छोटा रखना पड़ता था। आज भी बीन में कुछ बूढ़ी स्त्रियाँ हैं जो अपने छोटे घरों पर संगठित बचती हैं।

शा-बी-यू गाँव में फलन के समय अनाज का बँटवारा होता है। प्यार, मक्का, एकलकद, सोयाबीन, कपाम, तेल-हन, ईंधन आदि परिवारों में हर एक की सदस्य-संख्या के आधार पर बाँट दी जाती है। कुछ भाग गाँव में जमा कर रख दिया जाता है—खनट को स्विनि के लिए। पशुओं के लिए चारा अन्न इकट्ठा किया जाता है। जो बच जाता है वह निरिपव मूल्य पर कम्प्यून के द्वारा सरकार के हाथ बेच दिया जाता है। जिन्हीं से, जो पैसा मिलता है वह गाँववालों में बाँट दिया जाता है। बँटवारे का आधार काम के घण्टे हैं। हर पुरुष-स्त्री या बच्चा काम के घण्टों के अनुसार अपना हिस्सा पायेगा। बच्चे हस्त में एक दिन या छुट्टी के दिनों में खेतों में पुरा काम करते हैं। १९७० में प्रति परिवार लगभग केडु हजार से बाँट तो सपने तक मिले थे। यह रकम अन्न तथा अन्य चीजों के अलावा मिली थी।

गाँव की आम्दनी में जो भाग मिलता है, उसके अलावा पीनी क्रिपान के पास आम्दनी का एक दूसरा स्रोत भी है—उजगा निजी प्लांट, जिस पर वह सस्ती उगा लेता है और सुपर फालता है। यानी बीन में सुपर का बहुत महत्व है। सुपर से मांस के अलावा चाट मिलती है। सुपर और मनुष्य का मत-मूत्र ही कम्प्यून की मुख्य खाद है। गृह-बाटिका हर परिवार की लगभग बराबर होती है। शा-बी-यू में दो सौ से अधिक एकड़ में खेती होती है, जिनमें सिर्फ़ तो एकड़ गृह बाटिका में है।

दूसरे शब्द अमेरिका के किसान की आम्दनी भी तुलना चीनी किसान की आम्दनी से करना निरर्थक है। पीनी विमान की समृद्धि इसमें है कि उसके जीवन में पैसे की जरूरत बहुत कम कर दी गयी है। पैसे की जरूरत उसे बहुत छोटी बीजों के लिए पड़ती है—जैसे, साबुन, चूना, हैट, टूथपेस्ट आदि, जो गाँव की दुकान में मिल जाता है। गाँव की दुकान कम्प्यून की ओर से चलती

है। उसके लिए सबसे अधिक खर्चीली चीज है—मकान बनाना। ग़रब और चकड़ी भंगर यह खुद इकट्ठा कर ले तो बढ़ई और कारीगर उसे नमून की ओर से काम चुनने पर मिल् जाते हैं। कारीगर, बढ़ई, दूधानदार और शिक्षक ऐसे हैं, जिन्हें मासिक नकद परिश्रमिक मिलता है। इसके अलावा विज्ञान की तरह अपने हिस्से का जमान और ईंधन भी मिलता है। ये लोग विज्ञान से कुछ अच्छी हालत में रहते हैं। लेकिन आर्थिक अर्थ हर एक को अपना पड़ता है। चीन में सामूहिक क्रान्ति के बाद आर्थिक अर्थ से किसी को मुक्ति नहीं है। हज़ने में छह दिन और हर दिन आठ घण्टे का काम चीन में सामान्य नियम है। लेकिन सबसे अधिक भी काम करना पड़ता है। नौ बच्चा बढ़ा होकर पचास करेगा, यह स्कूल में या विश्वविद्यालय में तब होगा है। ७ से १४ साल तक की शिक्षा सब बच्चों के लिए अनिवार्य है। पढ़ाई में सफलता परीक्षा और शिक्षक की जांच दोनों को भिनाकर होती है। १४ साल के बाद मिडिल स्कूल की पढ़ाई होती है। जो कारीगर विजली के मिस्त्री या ग्राम-शिक्षक होना चाहते हैं वे मिडिल स्कूल में जाते हैं। हर बच्चे में बचपन से राजन-प्रभित और उमानवादी उमान के प्रति निष्ठा की भावना भर दी जाती है।

सांस्कृतिक क्रान्ति के बाद सुनिश्चिती की पूर्ण केवल परीक्षा के परिणाम पर नहीं होती है। मिडिल स्कूल के बाद जो विश्वविद्यालय में जाना चाहते हैं उन्हें कम-से-कम तीन साल तक धैर्य या शार-घाने में काम करना पड़ता है। उसके बाद गाँव के विज्ञान या कारखाने के मजदूर मिल्कर तब करते हैं कि वह सुनिश्चिती की निष्ठा पाने सारक है या नहीं। सरकार बता देती है कि किस नमून से निम्नो विद्यार्थी विश्वविद्यालय में लिखे जा सकते हैं। सांस्कृतिक क्रान्ति में लिखे जा सकते हैं। सांस्कृतिक क्रान्ति के पहले मा-सी-यू जैसे गाँव से कोई विद्यार्थी विश्वविद्यालय तक पहुँचने की शक्त भी नहीं सोच सकता था। सारे

चीन में भयंकर विरधारा थी। वान स्थिति बहुत बदल गयी है। सामान्य लोगों में भी राजनैतिक चेतना बहुत बढ़ गयी है। लोग देश-दुनिया की पूरी जान-कारी रखते हैं। सांस्कृतिक क्रान्ति के बाद से हर गाँव, नमून, हर सगठन का काम क्रान्तिकारी समितियों के द्वारा संचालित होता है, जिसे स्वयं विज्ञान चुगती है। इस व्यवस्था के कारण गाँव-गाँव में जान-कार और जिम्मेदार लोग बढ़ी संख्या में पैदा हो गये हैं। दैनन्दिन कार्य का निर्णय समितियाँ करती हैं और बड़े निर्णय गाँव की आमसभा। नमून की क्रान्तिकारी समिति में नमून के हर गाँव से भेजे हुए प्रतिनिधि होते हैं। नमून की समिति गाँव की उत्पादन टोली के लिए उत्पादन या वार्षिक लक्ष्यक तय करती है। नमून की समिति दूराने चलाती है और कारी-गरों के काम की व्यवस्था करती है। नमून से ऊपर के तहरी के शिक्षकों और डाक्टरों का वेतन सरकार की ओर से मिलता है। गाँव-गाँव के स्वास्थ्य के लिए शिक्षान-डाक्टर हैं। गाँव के कुछ विज्ञानों की एक साल की मेडिकल ट्रेनिंग दी जाती है। हज़ने में वे तीन दिन खेत पर काम करते हैं और तीन दिन गाँव की विजिनक

में। इनकी नगे-गाँव (बेयर-पुट) डाक्टर रहता जाता है। नमून के अर्थशास्त्र में प्रशिक्षित डाक्टर रहते हैं। बहो दना के लिए खोड़ा पंखा देना पड़ता है। गाँव की विजिनक द्वारा परिवार-नियोजन का भी काम होता है। माओं के इस विचार को लोग मानते हैं कि २६-२७ वर्ष के पहले विवाह नहीं करना चाहिए।

चीन के देहाती क्षेत्रों में कानून और व्यवस्था की समस्या नहीं के बराबर है। बहुत कम अपराध होते हैं। गाँवों में एक प्रचलित शब्द यह है कि अपराधों गाँव की आमसभा में देखने के अधिहार से बचि-कर दिना जाता है। देहातो में स्वामी पुलिस नहीं है। गाँव-गाँव में विज्ञानों की मुस्तहा समितियाँ हैं।

जो व्यवस्था मा-सी-यू में है वही लगभग सभी गाँव में है। जीवन इतना बदल गया है कि आज चीनी विज्ञान को यह विश्वास नहीं होता कि ऐसे भी देश होंगे जिनमें लोगों के पास संकड़ों एक जमीन होती और एक दूसरे का शोषण करता होगा। मा-सी-यू में हर एक अपने काम में लगा हुआ है और पुरु है।

—'इम्प्रेस' के एक लेख के आधार पर

नया प्रकाशन

सामुदायिक समाज : रूप और चिन्तन

लेखक—अय्यप्रकाश नारायण

सामुदायिक समाज या निर्माण और विचार तभी सम्भव है, जब गाँव-गाँव में सामुदायिक भावना की मूर्ति होगी। आज जिसे हम गाँव बूढ़े हैं, वह बापू के बनों के समान बिखरे हुए भक्तियों का आडिपिहीन उपह्म मान है।

सामुदायिक समाज, सामुदायिक लोकतन्त्र और सामुदायिक राजन्यवस्था के निर्माण के लिए बुनियादी मर्त यह है कि गाँव एक सांस्कृतिक समाज बने। गाँव एक समाज तभी बनेगा, जब गाँव के सभी लोगों के हितों में समानता होगी और उनमें टकराव नहीं होगा।

अविष्य का हमारा लोकतन्त्र को धर्ममूख और सामाजिक होगा।

मूल्य—चार रुपये

पुस्तकालय धर्मरथ—वात १११

सर्वे सेवा संघ प्रकाशन

राजघाट, भारत-सी—१

अभिव्यक्ति और आस्था : पत्रकार और पत्रकारिता

राही : अपनी अभिव्यक्ति (एक्स-प्रेसन) और आस्था (फेथ) में संतुलन रहे ऐसी कोशिश रही है। लेकिन कभी-कभी इन दोनों में असंतुलन और अन्तरविरोध भी महसूस करता हूँ। यह स्थिति न आये, इसके लिए क्या करना चाहिए ?

बाबा : जितने साहित्यिक और कवि बोरह है उनके सामने यह समस्या होती है। 'एक्सप्रेसन' बिकने लिए होता है उनको सामने रखकर 'एक्सप्रेसन' बँधे करना यह सोचना पड़ता है और उस मुझाबिक 'एक्सप्रेसन' होता है। बाबा के सामने भी के साथ ही वो बाबा एक प्रकार का बोलेगा, अगर बिना उठे हो वो बाबा का 'एक्सप्रेसन' बनता होगा। युनिवर्सिटी के विद्यार्थी हो वो 'एक्सप्रेसन और अलग होगा। 'एक्सप्रेसन' परिस्थिति पर निर्भर करता है और 'फेथ' है कन्सेन्ट्रिबल। यह हृदय के अन्दर होता है। हृदय से बड़े होता है। उसे हृदय की जखन नहीं होती। और तो वो बड़ी भयावह होती है— बड़े-बड़े डॉक्टर, नायब, लेकिन उसके बच्चे भी उसका भय नहीं मानते होगा है। दूसरे लोग भले दोस्तों से डरे। लेकिन उसके बच्चों के मन में उसके लिए भय है, भय है और उसके भी मन में बच्चों के लिए प्रेम होता है। उसके बच्चे सब प्रेम से उसके पास जाते हैं। वह वा 'फेथ' है मन में, उसके लिए हृदय की जरूरत नहीं होती है। मैंने दोस्तों का उदाहरण इसलिए दिया है कि दोस्तों के पास आता नहीं है। हमारे पास 'फेथ' भी है और भय भी है। परन्तु 'फेथ' भारतीय, अन्त-कीर्ण, होता है। 'एक्सप्रेसन', बाह्य परिस्थिति पर प्रभाव है, उसे हृदय

में रखकर होता है। दोनों के बीच अन्तर रहना, लेकिन विरोध नहीं रहेगा। विचार-प्रकाशन और मानसिक चिन्तन में विरोध न हो, अन्तर भले हो। कोई यह नहीं कह सकता कि भावना यूरोपीय की हृदय में जाती है। यूरोपीय टैपों ने इतना धारा लिखा। वे धारा की परिस्थिति में होते तो उनका 'एक्सप्रेसन' बनता होता है। वे जिन्हें परिस्थिति में वे उसका अन्तर उनके साहित्य पर है। कालिदास उद्भवेन भे था। वो हमारा साथ पहने जो परिस्थिति थी वही, उसका अन्तर उसके 'एक्सप्रेसन' पर है। एक प्रकार परिस्थिति, बाह्य और सामाजिक स्थिति इस पर 'एक्सप्रेसन' निर्भर करता है। दोनो 'फेथ' और 'एक्सप्रेसन' में विरोध नहीं होगा, अन्तर जरूर रहेगा, और वह अन्तर उस दिशा में होगा जिस दिशा में 'फेथ' है।

राही : रिपोर्टिंग के काम में प्रत्यक्ष जो दर्शन होता है उसी को पाठकों तक पहुँचाने की कोशिश करता हूँ। इससे गुण-योग, दोनों का जाते हैं। केवल अभिव्यक्ति नहीं हो पाता, आलोचना भी हो जाती है। गुण-दर्शन की दृष्टि के साथ इसका बँधे में बिना आता ?

बाबा : रिपोर्टिंग फोटो के जैसा होता है। मान लीजिए कोई मनुष्य किसी की बजत कर रहा है देखी थी तो, उसका बिना बँधा आयेगा ? कुरा करती या ही पोटो खानेगा, प्रेम करने का नहीं, कन्सेन्ट्रिबल में अन्तर्गत चाहिए। इसका ही उदाहरण खाते कि किसी को सम्मान पहुँचें। इससे मनुष्य शब्द में चिन्ता आये। कन्सेन्ट्रिबल का सर दर्शन ही रखता ही चाहिए। केवल एक बाउ रखना, अच्छा ही अच्छा लिखना भी ठीक नहीं होगा। इसलि

आलोचना जरूर आयेगी। परन्तु वह मनुष्य शब्दों में होनी चाहिए। एक ज्योतिषी ने एक आदिमी से कहा, 'तुम्हारे सारे रिश्तेदार तुम्हारे सामने मरेंगे।' दूसरे ज्योतिषी ने कहा, 'तुम्हें तुम्हारे आसपास के लोगों की आँखों की धपका जगाया जाय है' इस तरह कहते वर भी एक बय होना है।

राजनीति जो होती है वह दोड़ने-वाले होती है, जोड़नेवाली नहीं। अपने चिन्तन में शक्ति कितनी है बिना करने की, सर भर है कि पाप भर ? वह जो थोड़ी-सी शक्ति है वह शीघ्र होगी, अगर हम राजनीति का चिन्तन करने या अन्य कई प्रकार के काम में लगेंगे। हमारा जो सोचनीति का काम है उसमें चिन्तन जगाता चले। राजनीति का निरीक्षण जरूर करें, वहाँ भी, लेकिन यहाँ (फिर पर हाथ रखकर) उसका चिन्तन-बन्धन नहीं चलना चाहिए। कई साथ हमसे सवाल पूछते हैं कि राजनीति को ऊपरी समस्या पर अपनी धार दीजिए। मैं कहता हूँ यों बहकर आप मुझ पर तीन बिम्बेवापियाँ आते हैं : (१) मैं सब पढ़ूँ, जानूँ। (२) उस पर सोचूँ, चिन्तन करूँ। (३) बिना पूछे सवाल, राय दूँ। बाबा की पूछता बात है ? (हँसी) हाँ, अभी राजनीति के जैन। बाबा ने नहीं किया है। वे कहते थे, पेंपर का पूछने से बिना बाधना बड़ी है। बाबा पेंपर को पूछता है, पूछकर भी मनुष्य रहता है। यह भी तो भूमिका है। उसको सम्मान की भूमिका थी।

अभी हमने एक मूक बताया है : 'शुद्ध विवेकपूर्ण ज्ञान शक्ति न धारणें', सुद विचार में अन्तर्-निहित शक्ति न करें।

पत्रकारिता मन्दि, पत्रकार,
१२ २-७२

खादी का आधार ग्रामस्वराज्य

■ धीरेन्द्र मजूमदार

[श्री धीरेन्द्र मजूमदार ने ग्राम सेवा मण्डल, भजनपुर में खादी कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए गांधी के क्रान्तिकारी स्वरूप की चर्चा की और आपने बताया कि खादी को ग्रामस्वराज्य का आधार मिलना चाहिए। हम उनके भाषण का सारांश यहाँ दे रहे हैं।—सं०]

गांधीजी के व्यक्तित्व के दो पहलू थे। वे योद्धा भी थे और क्रान्तिकारी भी। उन्होंने आजादी की लड़ाई योद्धा के रूप में लड़ी और स्वराज्य का भावी चित्र क्रान्तिकारी के नाते एतनात्मक कार्यों द्वारा प्रकट किया।

दुनिया में तीन प्रकार के काम होते हैं—पुण्यकार्य, मुक्तिकार्य, एवं क्रान्तिकार्य।

पुण्य-कार्य : समाज में सर्वमान्य विकृति को संशुद्धि में परिवर्तन करने का प्रयास पुण्य-कार्य है। ऐसा कार्य करना समाज के प्रत्येक नागरिक का फर्ज और दायित्व है।

मुक्ति-कार्य : परदेशी राज से छुटकारा पाने के लिए जो प्रयास किया जाता है वह मुक्ति-कार्य है। गुलामी कोई भी समाज नहीं चाहता। समाज में गुलामी से मुक्ति सर्वमान्य सिद्धान्त है।

क्रान्ति-कार्य : समाज के वे प्रचलित मूल्य जो समाज के लिए घातक हैं परन्तु जिनके लिए लाक-मायता बनी हुई है कि वे कार्य समाज के लिए पावन हैं—एक प्रकार के मूल्यों को बदलने का कार्य क्रान्ति-कार्य है।

आमतौर से भ्रम हो जाता है कि मुक्ति-कार्य ही क्रान्ति-कार्य है। इसलिए जब फौजवाले क्रान्तिकारी माने गये जब कि वस्तुतः वे मुक्ति-कार्य के योद्धा थे। तत्ता वा हुलातमरक मुक्ति-कार्य है और समाज की माय्य पद्धति का स्वप्नान्तर क्रान्ति-कार्य है। गांधीजी ने आज के दौर वैश्वान्तर युग में चरखे की बात रखी, यह मुक्ति-कार्य के लिए नहीं, क्रान्ति के लिए थी। गांधीजी ने खादी कार्यकर्ताओं को

कभी मुक्ति-कार्य में नहीं लगाया। गांधीजी उन्हें छावनी के विप्राही कहते थे। इसलिए चरखा सध का जन्म क्रान्ति-कार्य के लिए हुआ था (पुण्य-कार्य या मुक्ति-कार्य के लिए नहीं) यह बात कार्यकर्ताओं के ध्यान में रहना आवश्यक है।

प्राचीन काल में समाज वा दायरा बहुत ही छोटा था। व्यक्ति बहुत छोटा था, समस्याएँ स्थानीय थी। व्यक्ति अपनी समस्याएँ सुलझा लेते थे। विज्ञान से चेतना का क्षेत्र बढ़ा। राजा-पुरोहित सब छोटे पड़ गये। समाज के काम को अब में चलकर सस्था ने सम्भाला। गांधी ने देखा कि विज्ञान राष्ट्रीय दायरों को तोड़ रहा है, विश्व एक परिवार बन रहा है। इसलिए नेशनल-स्टेट के दायरे से विश्व के दायरे में सोचने लगे। वे समझ गये कि राज-संस्था, धर्म-संस्था आदि समाज को अब नहीं चला सकती, ये छोटी पड़ गयी हैं। जिस समाज की सेवा करने के लिए संस्था अस्तित्व में आयी वह निहित स्वार्थ वा धर बन गयी है। अब निहित स्वार्थ ही तो सेवा नीति का मध्यम बनेगा। आज वाजार और राज-संस्था पूरे समाज को घाट रहे हैं। दोनों से मुक्ति वा मार्ग गांधी की क्रान्ति थी। वाजार-मुक्ति वा आसप है—वाजार-निरपेक्ष समाज वर्षाज्य स्वयम्भवी समाज। इसलिए वाजार के लिए हम चरखा चलायेंगे तो वाजार में उसके लिए कोई स्थान है नहीं। यह सही है कि ऊतानेवाला कोई मन आज के वैज्ञानिक युग में नहीं बनसिया। उसना अन्धे-रे-अण्डा रक्कष बनासै, जो धर-धर में आवससकताजो की पुनि कर सके।

विज्ञान एक तरह का घाघन है, इनसान उसे कंठे नाम में ले, यह उसकी मर्जी पर निर्भर है। उत्पादन के क्षेत्र में विज्ञान का काम का भार हुका करना है; पर यह बीटोनेसन और साइवरनेसन तक पहुँचा। ऑटोमेशन में डाइरेक्शन के लिए मनुष्य को जरूरत थी। साइवरनेसन ने वह काम भी कम्प्यूटर को सौंप दिया इसलिए चरखा यदि पिछड़े बनाने वा यत्र है तो कम्प्यूटर को स्वीकृति देनी होगी। फिर लोग धानी और बेकार हो जायेंगे। इसलिए यत्र इस प्रकार के वनाये जायें कि वे हाथ को खाती ग करे बरिज उनका इस्तेमाल हाथ को बाराय देने के लिए हो।

गांधी ने कहा था कि ग्रामस्वराज्य वा काम करने के लिए ७ लाख कार्यकर्ताओं को ७ लाख गाँवों में बैठना होगा। ग्रामस्वराज्य का काम केवल राज बदलने से नहीं होगा, उसके लिए राज की डिवाइज बदलनी होगी। कोयलो से बतनेवाले इकितोरो जोबल से नहीं चलता जा सकता, उसकी डिवाइज बदलनी होगी।

ग्रामस्वराज्य की प्रकृति को हम चार स्तरों में विभाजित कर सकते हैं :

१. डिवाइजेशन (चोपणा)।
२. डिमन्डेशन (प्रयोगद्वारा सम्भावना के प्रकार)।
३. मोबिल इजेशन (लोचसपह)।
४. ऑर्गेनाइजेशन (संगठन)।

आज की स्थानी-संस्थाओं ने ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य के विचार को चोपणाओं के रूप में धर-धर पहुँचाया। बीस साल की अल्पवयि में कोई क्रान्ति-विचार टवनी जतरी जनता में प्रवेश नहीं कर पाया इसलिए खादी को संस्थाएँ अद्यई को पात्र हैं। परिस्थितियों की प्रतिक्रिया के वाचबूद भी कुछ गाँवों में पुष्टि-कार्य पूरा करके इस विचार के सिद्ध होते हैं। सम्भावना सिद्ध की जा चुकी है। अब अने लोचसपह के लिए मेरी बरील है कि राजस्थान की परसार्थ एंठे कार्य-वर्तनी को ग्रामस्वराज्य-कार्य के लिए

(देख पृष्ठ ७३६ पर)

लाल फीताशाही

[रजत-नयती के अक्षर पर गायत्री की चेतावनियों की ओर एक नजर उठाकर देखना चाहिए। इसी नीयत से उनका यह विचार यहाँ प्रस्तुत है।—छ०]

मन्त्री, दखरी पिचबिच में इस तरह बहते हुए हैं कि उन्हें सोचने-विचारने का समय ही नहीं मिलता। उन्हें तो इतनी भी धुंमल नहीं कि वे मुझसे मुना-नात और विचार विनिमय करें कि क्या अच्छा है और क्या बुरा। उनकी स्थिति जानते हुए मुझे भी यह हिम्मत नहीं होगी कि उन्हें पत्र ही लिख दूँ। 'हरिजन' के स्तम्भों द्वारा तो मुझे उनसे बात ही नहीं करनी चाहिए।।।।।

अगर मन्त्री अपने नयी जिम्मेदारियों से निपटना चाहते हैं, तो उन्हें दखरी तरीक़े—लाल फीताशाही—की श्रम करने की कला सीखनी चाहिए। पुरानी शासन-व्यवस्था लाल फीताशाही के द्वारा और उस पर ही जीवित रह सकती थी। लेकिन यह नयी व्यवस्था का गला घोट देगी। मन्त्रियों को लोगों से अक्षर मिलना चाहिए, जिनकी सम्भावना से ही वे इन पत्रों पर आश्रीत रह सकते हैं। उन्हें छोटी-छोटी और बड़ी-छोटी सिद्धान्तों पर मुनता चाहिए। लेकिन उनके पास जिनकी सिद्धान्तों और बट्टियों जाती हैं उन सबका और अपने फँसलो का रिकार्ड रखने की जरूरत नहीं। उन्हें अपने पास केवल अपने ही कामकाज रखने चाहिए, जिनसे उनकी भावदायक ताकत रहे और काम का विचारना बचा रहे। विभागीय पत्र-व्यवहार बहुत कम हो जाना चाहिए। वे अपने उन ताकत मालिकों के प्रति जवाबदार हैं, जो न तो यह जानते हैं कि दखरी शरारतों का क्या क्या है और जिन्हें उनके जानने की चिन्ता है। उनमें से कितने ही लोग तो तिस और पत्र भी नहीं सकत। पर वे चाहते हैं कि उनकी भाषणिक भाषणकारणें पूरी हो। वास्तव-जनों में उन्हें सोचना सिखा दिया है कि शासन-व्यवस्था कावेंस के हाथ में जाते ही हिन्दुस्तान पर वे न तो कोई दृष्ट

रहेगा और न उन तकने की दृष्टा रखनेवाला कोई नगा रहेगा। यदि मन्त्री उस विचार के माथ ग्याय करना चाहते हैं, जिसका उन्होंने अपने अक्षर भार लिया, तो उन्हें इस प्रकार की समझाएँ मुनसाने के लिए सोचने विचारने में समय देना चाहिए।

अगर वे तथाकथित गायत्रीवाद की मानते हैं, तो उन्हें जानना चाहिए कि वह 'वाद' क्या है; इसका पता उन्हें मुझसे नहीं, बल्कि आत्म-निरीक्षण करके लगाना चाहिए। भाष्य में भी हमेशा यह नहीं जान सकता कि वह क्या है। लेकिन मैं इतना जरूर यादता हूँ कि अगर उसकी उचित रूप में धोरण की जाय और उसका अनुसरण किया जाय, तो वह इतना मौलिक और क्रान्तिकारी है कि भारत की सभी भावमयकलाओं को पूरा कर सकता है।

वावेंस एक क्रान्तिकारी सत्य है। लेकिन उसकी क्रान्ति उन सभी राजनैतिक क्रान्तियों से बलग, जिनका हाल इतिहास में देखकर है। जहाँ पहली क्रान्तियों का आधार हिंसा थी, वहाँ वावेंस की क्रान्ति का आधार आन-व्यसकर अहिंसात्मक सत्य गथा है। अगर यह भी अहिंसात्मक होगी, तो भाष्य क्रान्ति का पुराना का और रिवाज बहुत कुछ उसी तरह कायम रह जाना। लेकिन कावेंस ने बहुत-से पुराने तरीक़ों को निपिद्ध मान लिया है। सबसे बड़ा परिवर्तन पुलिस और सेना का है। मैंने यह स्वानार किया है कि जब तक कावेंस जन पराधीन है और वे व्यवस्था की सुरक्षा के लिए शान्तिपूर्ण उपाय नहीं सोच लेते, तब तक इन दोनों का प्रयोग उन्हें क ना हो होगा। लेकिन मन्त्रियों के सामने धर हो यह प्रश्न रहना चाहिए कि क्या इन दोनों चीजों के प्रयोग का परिणाम नहीं किया

जा सकता? अगर नहीं तो क्यों? यदि जाय करने पर भी—यह जांच पुराने तरीक़ों से नहीं की जानी चाहिए, जो कि खचित्त और प्रायः व्यर्थ सिद्ध होते हैं, बल्कि बिना खच के और साथ ही पूर्ण तथा परिणामकारी दम से होती चाहिए। उन्हें पता थले कि पुलिस और सेना का प्रयोग किये बिना वे राज-काज नहीं चला सकते तो अहिंसा का यह तराजा है कि कावेंस को मन्त्री-वद त्याग देना चाहिए और पुनः बनवास में जाकर उस दुर्लभ 'अमृत' की खोज करनी चाहिए।

गरीबी उज्जा की घात नहीं

लोग बहते हैं कि पहले कावेंस को एक लाख रुपये जमा करने में भी मूढीबत होती थी। लोग देते तो थे, मगर हम मिलारी थे। आज करोड़ों रुपये हमारे हाथ में आ गये हैं। करोड़ों लेने की ताकत भले आयी, पर खर्च तो हमारा वही अर्धजी जमानेवाला है। कुछ लोग यह मानते हैं कि जितना खया उड़ाना है उड़ानें और घान से रहे तब उसका अक्षर देज से बाहर भी पड़ेगा। लेकिन उन्हें समझना चाहिए कि पंथा शोर के लिए खर्च करना चाहिए या देज के काम के लिए? यह शरत ठीक है कि हम दलेंद के साथ मुनाबता करें तो कर सकते हैं। पर वहाँ एक बादमी की जो कामदनी है उससे यहाँ बहुत कम है। पंथा गरीब देज दूसरे देजों के साथ पंथे का मुनाबता करे तो वह मर जायगा।

फिर लोग बहते हैं कि मन्त्री लोग इतने पंथे लेते हैं, और हम सरकार को नोबरी करें तो हमें भी ज्यादा पंथे मिलने चाहिए। सरकार पंथे को अगर १५०० रुपये मिलें तो हमें ५०० ही मिलने ही चाहिए। यह हिन्दुस्तान में रहने का तरीका नहीं है। जब हर एक बादमी आत्म-वृद्धि का प्रयत्न करता हो, तब यह सब सोचना पंथा? पंथे के कितने को कीमत नहीं होगी।

पाकिस्तान के विखराव का दोषी कौन ?

पाकिस्तान की राष्ट्रीय एसेम्बली में श्री भुट्टो का भाषण

[श्री बुकिरुल्लाह खान भुट्टो का यह भाषण हम यहाँ इतिवृत्त दे रहे हैं ताकि पाठक भी भुट्टो के विचारों से अवगत हों। भुट्टो ने स्पष्टीकरण दिया है कि जांगला बना अस्तित्व में आया, उस का दोषी वह (यदि नहीं है) — १०]

अब हम पूर्व पाकिस्तान की अवस्था होने की बात पर आते हैं। यह सच है कि क्या इसका मैं एक सही और आसान जवाब आपनों हूँ? एक ऐसा उत्तर, जो मेरे बहुत सारे दोस्तों को प्यार करेगा? क्या आज यह समझते हैं कि पूर्व पाकिस्तान के जूदा होने का उत्तरदायित्व सरकाराना के मुक्तिवार अमीर भुट्टो पर है? वह आदमी, जो १९५४ तक पाकिस्तान की राजनीति में नहीं था, जो कॉलेजों में, हार्बर में और बन्दों में पढ़ रहा था। क्या वह पूर्व पाकिस्तान के अलग होने के लिए उत्तरदायी है?

अगर आप ऐसा चाहते हैं और आपको इससे सन्तोष होता है तो मैंने जहाँ बहुत सारे बोझ अपने ऊपर लिये हैं वहाँ यह बोझ भी अपने ऊपर ले लिया है। मैंने दो किया किया, यहिया खान ने ऐसा नहीं किया, अयूब खान ने यह नहीं किया, घोषण की राजनीति ने नहीं किया, यह एक हजार मील की दूरी ने नहीं किया, पूर्व पाकिस्तान बहुसंख्यक का और विभिन्न भाषा बोलता था, इस वास्तविकता ने नहीं किया। इस वास्तविकता ने की कि १९५७-५८ में सुदूरपश्चिमी प्रायद्वीप शासन विद्रोह के पास आये जो एक विद्यालय बंगाल के लिए लड़ने जा रहे थे, और सचमुचे थाबन ने यह उत्तर दिया कि जाओ और विद्यालय बंगाल के लिए लड़ो, अगर हिन्दू सुदूरपश्चिमी प्रायद्वीप की भाषी के साथ काम करने के लिए चले गये, और फिर भी वह उत्तरदायी नहीं है। १९५० में अलावुद्दुल्लाह ने हारा में एक मोर्चा की और कहा कि

ये साथ नहीं रहना चाहते; फिर भी वे उत्तरदायी नहीं हैं।

यह मेरा दोष है। यह मेरा दोष कैसे है? चूंकि मैंने कहा कि १५ फरवरी के बाद २१ मार्च को एसेम्बली बुलायी जाय या यहिया के द्वारा किये गये आर्डर में, जिसमें १२५ दिन का अवकाश है, उसे हटा लिया जाय और इसके कारण पूर्व पाकिस्तान टूट-टुकड़े हो गया। मैं आपसे यह चाहता हूँ कि आप निरपेक्ष होकर सोचें। अगर एसेम्बली की बैठक १५ दिन बढ़ा देने का प्रस्ताव किया जाता है तो वह एक गैर-सहमततात्मक वादों को रद्द करने के लिए कहा जाता है। तो क्या उम्माक यह कार्य होता है कि देश अलग हो जाय? क्या वह इस्लामी इकाई के विरुद्ध है? क्या वह राष्ट्रीयता की कल्पना के विरुद्ध है?

यह हमारा निरन्तर का कसूर है। जून में १९६० में पूर्व पाकिस्तान गया था तो वहाँ से वापसी के बाद मैंने अपने दोस्तों से कहा था कि हम लोग ऐसे मोर्च पर पहुँच गये हैं, जहाँ से मुड़ा नहीं जा सकता। वे हमसे देखना नहीं चाहते हैं। वे हमसे दूर रहना चाहते हैं। हम लोगों को सचवाई का उत्तरदायित्व है। अगर आप खुले दमके लिए फौजी देना चाहें तो वे सकते हैं, लेकिन मैं इसके लिए जिम्मेदार नहीं हूँ। मैं अग्रह हात से एक पाकिस्तान में विभागाय रखता हूँ। मैंने इसके लिए सचवाई की है। मैंने पूरे कोषित की कि दोस मुजीब के मांगता निरन्तर जाय।

अब मुजीबुद्दुल्लाह १९६९ में कराची आये तो कुछ दिन्दी नेताओं ने उन्हें निमन्त्रण दिया। मैंने उन्हें फोन किया

और कहा कि आप मुझसे क्यों नहीं मिलते। उन्होंने कहा कि मैं तुमसे मिलना नहीं चाहता। २७ दिसम्बर और ७ जनवरी को उन्होंने मुझसे कहा, 'मैं जानता हूँ कि एक ही आदमी है जो पूर्वी पाकिस्तान को अलग होने से रोक सकता है, और वह तुम हो। इसलिए मुझे तुमसे कोई सरोकार नहीं है।'

बहुत से लोग मुजीब को दोस्ती का दम भरते हैं। मुजीब ने एक पाकिस्तान को कभी नहीं बनाया। उन्होंने पाकिस्तान के लिए कभी सपने नहीं किया। १९५३ में जब मुजीब से मेरी मुलाकात सुदूरपश्चिमी के घर पर हुई तो वह पाकिस्तान के नाम से शान्ति बक रहे थे और मैंने उसी समय यह निष्कर्ष निकाला कि इस आदमी पर विश्वास नहीं किया जा सकता। अब आप इस आदमी की प्रशंसा कर रहे हैं। मुजीब तो एक स्वतंत्र बांगला देश चाहते थे। जब वह जनवरी में पास गये तो उन्होंने कहा कि उनके २५ साल का स्वप्न पूरा हो गया है। वह ५५ महीने जेल में रहे। फोन करता है कि मुजीबुद्दुल्लाह को पाकिस्तान में ही विश्वास था? फोन करता है कि वे सशक्त पाकिस्तान चाहते थे? अगर वह एक सशक्त पाकिस्तान चाहते तो कोई समस्या ही नहीं आती। कोई भी देश से अलग होनेवाला यह नहीं कहता कि वह देश से अलग होगा चाहता है। बहुत दिनों तक हम लोगों से अलग होने का कारण बतें रहे और अब अन्त में उत्तरदायी में हूँ। अगर आप मुझ पर दखलाना देना चाहते हैं तो अपना निर्णय दें। मैं जनता में जाऊँगा और उनसे पूछूँगा। आप इतिहास देखें और इस तरह निर्णय न दें। ऐसा न बने कि गोपुरा पार्टी ने ऐसा किया या अल्पसंख्यक ने ऐसा किया। पश्चिमी पाकिस्तान में शीतल पार्टी का कोई सदस्य भी ६ मूलों पर नहीं पुनः गया। हम अब ६ मूलों पर वैसे सहमत हो सकते हैं। ६ मूलों के माने अलग होना था। हम लोगों ने यह भी कहा कि अगर आप सपे चाहते हैं तो

ज० पी० और वागी

तमनी हो जाती। पाकिस्तान के ही हो जाए। वहिमा ने भी उन्हें प्रयास-तमन किया था। मैंने मुलान से कहा ? मैंने कहा, "मैं खुश हूँ। उन्हें संयुक्त पाकिस्तान का प्रयासमयी ण चाहिए।" परन्तु अमर कन्वेन्शन को फिर देखने से हिलने से बल्कि श्रान्त भी थे। एफ युनिट ने कृपया ता दी। ५ प्राणों के अतिरिक्त थे थे थे। और नम कन्वेन्शन के थे थे ही तो बहुदलक को इंचे दंगे ? सो दोनो ही हवादी को प्रतिनिधित्व होना। एमैजिस्ट्रेट को सयुक्त सरकार लिए कहा था। यहाँ कारण था कि। यह था कि अमर बाप शप वाहिवं तो बाप दंगर ने लें। उध सुबत में। मोर विरोधी दल होते और वह वागी लपए और सिन्ध-समेता भी कनो। के कनो पर होती। हम मोर उन्हें प्रलमनी कथना चाहते थे कभीक लते थे कि वे ६ महीने के अधिक नहीं को। कोर्र को बादमें ६ से ९ महीने अधिक नहीं दिख सकता।

इसविट-हम मुबीर के प्रयासमयी ने में कोई एवराज नहीं था। परन्तु ह एक कन्वेन्शन के प्रयासमयी नहीं। (कन्वे से कोर बदलकर दल को परिवर्ती पाकिस्तान को) बाहर नहीं ल सकते थे। अमर पूर्वी पाकिस्तान के अग्र होमके लिए परिवर्ती पाकिस्तानी तरादी को या ही नह महिमा घा। नह एक धूर्त थे, मारी थे, और पुत्र को के ह्राप का विनोता थे। जो ल वाक्चर में अमर पूर्वी पाकिस्तान के लए होने का कोई कारण था तो वह एर को थे।

३ जनवरी १९५० को जब साहीर नेहामो को बंठक हुई तो हामें सभी लय मोउद से। यहाँ क्या हुआ ? मुबीर ने ह्राप होर से पूर्वी पाकिस्तान से माया था। उन्हें हमारे चहाव नेत्रकच हुआ था। परिवर्ती के उन्हें दोग माहक हुआ एक दिन। रोष बाहर होर बाये। यहाँ जाने के क्षण

'मोडम पार्टी' ने अपने ह्राप के अरु में लिखा है:

"अमरमल नारायण अपने पुत्र में सोचते होये, 'अमर दल तरह के सिन सिन जामे तो कनो को क्या कहलत रह जलमरी।' मोशान में १० जुलाई को, मर प्रदेश के मुम्बमी धी सेठी, जिन्हे मद्रास के भुषमनी थी पञ्जाबिगत ने 'दुवी विरुद्धी के रेडिमेड पुम्बमीरुवी में से एक कहा है, 'अमरक ज० पी० कीर उनके मह-योगियों पर दूट पड़े और उन्हें बागियो के वात-वमर्षण के सम्बन्ध में विमर्षण-पाठ का बोनी इहाया। धी सेठी ने अमरिप कार्यकर्ता पर यह बोध भी कथना कि उन्होंने राज-सकार, प्रकृष क्त से पुत्रिप के प्रत्यो को हलका करके दिखाने की कोशिस की है। सेप्रेयो का ज० पी० पर अतिवम आरोप यह था कि उन्होंने प्रयासमयी भी सत्ता को कुचीती देने का बीडापन दिखारा है। इतना क्या अर्थ होता है, सेठी भी ही जालें।

यह पूरा प्रसेन दुष का है। धी सेठी ने बागियो के वात-वमर्षण से वेनी के हाप अलन सहयोग दिया था उनका धंन उन्हें सिन चुका था। अत-समर्षण पर पूर देण से खुशी अहिर की थी। अलतोप है कि धी सेठी ने अपने किये हुए अमर माप पर पानी फेर दिया।

उन्होंने ६ मूत्र देहल पर पठक दिया। हमारे दोनो ने क्या किया ? नसलला ने क्या किया ? सको ने उके देलने से हलकार किया। अमर अर धोरो ने उके देखा होना तो क्या किना करता ?

उन लोगों ने उके नहीं देखा और आर ने सुभवे पूछते हैं कि मार १९०१ में कृष्णलो में कयो नहीं लये ? अघट में यहाँ क्या होता तो अमर बाप यहाँ नहीं होये। बिस्तर मुबीर पूर्वी पाकिस्तान लने। उनके समान कार्यकम नहीं कृष्णा और प्रचार संभारण ने दल किये।

इसविप एमर्षण में अपनी उगादीयो में लिखा है : "उनके जैसे नवप्रतिषिप के लिए ज० पी० देते सम्वातिन राष्ट्रीय नेवा के लिए अमरमल की सेवी बलें नहते अत्यन्त धुंर विषय को धृष्टवा है। सम्वाकीर के अनुसार मुम्बमीरुवी ने एंसा अमो हन आरत के वादल किया है कि नह अर-अर लीलो का अमर कनो कीर लीकता चाहते हैं।" पर ने ठीक कहा है कि उनकी हल प्रकार की धोरो प्रवर्त-अभियन का ज० पी० या उनके सवर्षण आनो ल पर कोई अमर नहीं पडेकाल्य है।

आचार्य विरोधा धामि ने बागियों के अत-वमर्षण के धेय का बेटबाप दिया है। मुम्बमीरुवी का धेय भी बहुत अधिक बिना रह्य है। विरोधी के अनुसार ३३ प्रतिशत धेय म्बय बागियो को है जिन्हे वात-वमर्षण किया, ३३ प्रतिशत दुर्गिन को अिसने सवर्षण किया, और ३३ प्रतिशत सवर्षण कार्यकर्ता को क्या मद्र प्रदेश को बनता हो है। १ प्रतिशत धेय जो बय पया किन्हीं जिलेण ? यह १ प्रतिशत विरोधी ने अपने लिए रखर वा कयोकि काम उन्हें ही एक किना था, लेकिन अब उन्हीं से ही परनेपर के धरणी में समापन कर दिया है। परमेवर को १ प्रतिशत ही भंय मिला।

ज १९५६ से मैंने अयुव कां से कहा कि अयुव कां, क्या अयुव कां को नहीं देलते ? आधी का रह्य है। मुबीर का राजकीय होर से युवालय कोकि है। एसे उन्के धरणी करते दीकि। ६ धुको पर एक राष्ट्रीय स्तर पर कर्वा, वाकि है उन्के बोधो को बदा सके। उन्हे सुभवे बहू कि मैं हृदिदार की मारण अमेमाल कथेण। मैंने कहा, बापको भयण का हृदिपार इलेदाव करण। पराहै।

— 'इतिवम एमर्षण' के

आप क्या सहयोग कर सकते हैं ?

● श्री रामचन्द्र नन्दा

४१४ नागो स्वाविर जेल में बन्द है। दुनिया का सबसे बड़ा इस तरह का न्यायालय प्रायः तैयार है। घोष हो मुजरमें आरम्भ होने और समर्पण के एक कार्यक्रम में एक अग्र्याय आरम्भ होगा।

आरम्भ-समर्पण के इस कार्यक्रम को लगभग चार महीने हो गये। आसन अभी तक पुनर्वास की दिशा में जिस तेजी से उसे अग्रसर होना था, नहीं हो सका। विद्या के लिए शासन के आदेश आ गये हैं; परन्तु पुनर्वास में शिक्षा एक बाध है। गिरे उन्हे या पुलिस द्वारा उनको मजबूत हैं, बंजर पड़े खेत हैं। उनके लिए बीज चाहिए, बंट चाहिए, नये हल-बखरर चाहिए और खड़ी फल्लो को उरुमन परा नहीं सके, ऐसा वातावरण चाहिए। धरो में आनन्दनी के शासन चार महीने से बन्द हो गये। यहाँ गेहूँ चाहिए, कपड़ा चाहिए, बीमारी के उपचार, दवा-दाक के लिए रुपये चाहिए; नमक, तेल, लकड़ी, पर-गृहस्थी के लिए पूरे शासन चाहिए।

सना चार तो नागो और उनके द्वारा सहाये गये परिवार अलग-तुल एक हजार परिवारो का पुनर्वास करना है। इनके लिए मजल चाहिए, बंट चाहिए, कुंफ के लिए कुंफ चाहिए, इटे तनकूपो को ठीक करने लिए धन चाहिए।

इसके अलावा आये की योजना चाहिए। अनेक प्राई जेल से चार-छः महीने में छूटेंगे। उनके लिए पुनर्वास की पूरी योजना बनानी है। पक्षपालन में भारी खर्च है, इति है, अन्य काम हैं, नोकरी की वातसा भी है।

पशुपालन में यहाँ भैंसो की पस्त-मुधार का काम साधन नै किया है। जगल है, पानी है। क्या इस क्षेत्र में 'बमूल' को बगुल रूप नहीं दिया जा

सकता है? अभी से उनकी तैयारी हो। कुछ पूने हुए युवकों को वहाँ भेजकर काम का रूप, बलना दिखाई-समसाई जाय। उस महीने को वे देखें, तो उन्हें पता लगेगा कि कुछ का निवना बड़ा व्यापार है।

भेड़ो का भी यही हाल है। अनुरूपता है, परन्तु सवाल है, प्राथमिकता बेकर इस पथ पर तेजी से विचारपूर्वक आयोजन करके बढ़ने को।

मुरैना, मिण्ड जिले में रायो पूर होता है। क्या वह 'होमइण्डस्ट्रीज' बन सकते की स्थिति में है ?

यह तो कुछ बड़ी बातें हैं, परन्तु हमारे लिए क्या ? हम क्या कर करते हैं ?

(१) कुछ गरीब नागो परिवारों के बच्चो को मासिक गृहपता दी जा सकती है। उन्हें या उनके परिवारो को दत्तक लिखा जा सकता है।

(२) कुछ अच्छे छात्रो को उच्च शिक्षा के लिए व्यवस्था की जाय।

(३) कुछ बड़ो गरीब परिवारो के लिए वस्त्र-व्यवस्था की जाय।

(४) इन परिवारो को स्वोहारों पर मिटाई के लिए रुपये भेजे जायें। रसा-व्ययन के अग्रसर पर पूरे नागो परिवारों को उनके धरो पर मनीबाँडर भेजे जायें।

कई बातें सम्भव हैं। समाज से

चर्चित अलग-अलग पढ़े लोगों को समाज में सम्मानजनक स्थान पर लाता है। उनके बच्चो को हीन-मनोबन्ध से निवान कर उज्ज्वल पथ पर अग्रसर करता है। उन छात्रों, दबो-बौद्धि भोली बहानो के मन में जागावद प्रविष्टि के जीवन की ज्योति प्रकट करता है। आप तन-मन-धन दें। भयवान सबको इस मजल पथ पर अग्रसर करे। यह प्रार्थना तो अवश्य करें। समर्पण करनेवालों के परिवार के सामने भूख का भय न रहे, उनके बच्चे शिक्षित हो जायें, गाँवों में भय का वातावरण न हो, समाज में उनका उपहास न हो। वे समायाचना कर रहे हैं। प्राणप्यार हृषियार उन्होंने स्वाम दिये हैं, वे पम्नासाप कर चुके हैं और उनसे आप क्या चाहते ?

उनको जो करना था, वे कर चुके। अब तो हमें हमारे देश के लिए, देश के गौरव के लिए अग्रसर होना है। अगर पूर गये तो हयें इतिहास धमा नहीं करेगा। पाद्रे बह पुलिस हो, पाद्रे मुख्यमंत्री, चाहे सर्वोपयतो बन्दको करना है। यह व्यक्ति वा नहीं, तयो वेचना का सवाल है। कानून का नहीं, उससे ऊँचे दर्जे का सवाल है।

वे धमा मीग चुके हैं। अब उनका उत्तरदायित्व समाज का है, हमारा है। हमारे पूर्व और स्वोहार निबट माने, ईशने, शैतने के स्वोहार हैं। उन्हें इसमें बपने छाप नीलिये, नये परिवार बनाएय नये निज बुनिय ।

हमारा नया प्रकाशन

धम्मपदं नव-संहिता

. सम्पादक-विनोबा

भगवान बुद्ध की शानन वेचना का निचन-प्रसिद्ध ग्रन्थ धम्मपदं का विनोबाजी ने नये रूप में सम्पन्न किया है। उसमें तीन सफ़ेद छापा रच अग्र्याय बनाकर अलग-अलग विषयों में विभाजित किया है। अब यह ग्रन्थ हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित किया गया है। वडिमा छपारं, पक्की जिरद ।

मूल्य रु० ४.००

सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राखवाट, बाराणसी-१

रजत-जयन्ती

रजत-जयन्ती मनायेगा कौन ? देश की उस पचास-छाठ फीसदी आबादी से— जिसे भर पेट भोजन पीढ़ी दर-पीढ़ी कभी मसीख नहीं हुआ और आज भी जिसे एक रुपये (जो आन्ध्रों के बज्र के रुपये के मुकाबले ब्यालीस पैसे या लगभग छः आने रह गया है) रोज से कम पर गुजर करनी पड़ती है—जान तक दयवी भनक भी नहीं पहुँचती। गंदे बालीख, जन्म से ज्यादातर अपनी रोखी-रोटी बचाने में लगे हैं और जयन्ती का सुनकर एक "ऊँह" करके रह जायेंगे। हाँ, एक-दो फीसदी ऐसे जकर होते जिनकी मुस्तफिल आम्दनियाँ हैं, जो हुनूमत में हैं या अपने उद्योग ब हुनान की कद्री पर या कपूर की बुकी पर शान से बैठे हैं, जिनको रजत-जयन्ती में काफ़ी दिलचस्पी है, जन्म से कुछ छोड़े होंगे जो इस मौके पर कुछ देवी बमाई नर ही लेंगे, या तो नाम की या पैसे की। उनके लिए रजत-जयन्ती एक धन्या है जिससे उनको मुताफा मिलना ही चाहिए। और इस उमरा का बोल पड़ना किस पर ? जहाँ दीन हीन भूमिगत मजदूरों और उनके बाल-बच्चों पर निम्के नाश पर आबादी की लड़ाई लड़ी गयी या अब रजत-जयन्ती मनायी जा रही है। क्या चक है कि जो सिखा पला जा रहा है। गरी और उगाश पिछड़ा है !

बड़े कुछ और आश्चर्य की बात है कि स्वराज्य के पहले जो पूँजीवाद उद्योग के क्षेत्र तक सीमित था वह स्वराज्य के बाद इति के क्षेत्र में भी हावी हो गया है। "छाहक बढ़ाहुद कासफाये" को एक नवी और लड़ी हो गयी है। इन दिनों भूमि-मुआर की बहूत शर्मा है और जोन की हद जादि के नियम पर बहा बिचार बना है और फाँस से प्रस्ताव भी पास दिये हैं,

लेकिन वे कमल में बितना जाते हैं और उनसे भूमिहीनों को वास्तविक न्याय बितना होगा है, यह देखना है।

अमेरिका के सुप्रसिद्ध श्रुति शास्त्री प्रोफेसर लाइन्सकी ने कहा है कि एशिया में रूपायि बड़े-बड़े कारखाने खुल रहे हैं और मशीनों का वैभव दीख रहा है लेकिन वहाँ की आर्थिक समस्या की खुनी अभी देहात में ही है। अगर एशिया के देशवासी अपने ही प्रचल से आर्थिक बिचार करना चाहते हैं, अगर वे अपनी छोले बालियाँ को भरना चाहते हैं या खासी परखी हुई की पूरा करना चाहते हैं तो खेती और जमीन पर ही इस सवाल का हल ढूँढना होगा। पश्चिम जवाहरलात नेहरू की इच्छा थी कि शारे भारत के नरने का केन्द्र-बिन्दु विमान बन जाय लेकिन उनका यह सपना पूरा नहीं हो सका।

यूरोप के प्रस्ताव अर्थशास्त्री प्रोफेसर ईनियल पार्नर ने भारत की खेती का गहन अध्ययन किया है और बड़े कुछ के साथ कहा है कि छपर पूँजीवादी खतिहरी का एक वर्ष बन रहा है जो प्रगति के नाम पर खेती में पूँजीवाद फैला रहा है। उन्होंने चेतावनी दी है कि अगर मजदूरों की रजिस्ट्रार्यों की और उचित ध्यान नहीं दिया गया तो आने चलकर बड़ी समस्या खड़ी हो ज.गयी और उन पूँजीपति खतिहरी को अनुभव कायेका कि शामीप भारत बहुत बेचैन और अचानक है।

बानोस छान हुए महात्मा गाजी से किसी ने पूजा कि भारतीय अर्थनीति का स्वरूप क्या है ? उन्होंने मुलत जबाब दिया, "जो ऊपर है उनका बोल नीचे बालों की दबाये दात रहा है।" स्वराज्य के पचीस छान बाद भी इस त्पिति में कोई फर्क नहीं आना है।

यही हालत आज भी बरखुर कायम

है। "उन का पचीस बढ़ाने" के लिए उनकी उँवारी होने पर भी क्या समान, क्या खरवार, कोई भी उन्हें काम नहीं दे सका है। सन् १९३१ में प्लानिंग कमीशन के मानने बिनोदा ने माँग रखी कि बाहर से अनाज मंगाना बन्द कीजिए और हर बालिय को नाम दीजिए। मगर हमारे योजनाकारों ने उनकी बात नहीं मानी। बिनोदा के शब्दों में :

'प्लानिंग कमीशन से मेरा दो पहलवपुन बातों में मतभेद रहा। पहली यह कि मैं चाहता था कि अनाज का बायात मिलकुल बन्द कर दिया जाय, लेकिन प्लानिंग कमीशन का बिचार था कि यह अर्थबिभव का ल तक बनेगा। दूसरी यह कि मैंने आग्रह किया कि हर बालिय को पूरा नाम या रोजदार मिलना चाहिए। अपने कर्तव्य के तोर पर तो प्लानिंग कमीशन ने इसे मान लिया है, बिनतु वर्तमान परिस्थिति में इसे उठाने की उँवारी उहाँने नहीं दिखायी। जब वे यह त्रिभेदायी उठा लेंगे तभी शोको के बिचार में और उनके स्वावगमी होने में सहायक हो सकेंगे।"

पंजा हातल में दश में अगर वे आरो बरनी रही तो काई अक्षरों नहीं बिना जा सकता। केवल बेरोजगारी ही नहीं बडी, महँगाई भी बड़ी है। स्वराज्य के बाद से बीसों के दाम नगाजार चढ़े, और सन् १८ के बाद से गो तेनी से चढ़े। उाभोजन मूल्य मूयनाक ऊपर उठता गया और शरीर की दीमन गिरती पची गयी। मज ४ कमल की भारत के बित्तमयी ने भी दर्दनाक आकड़े छवट में पेश दिये थे इस प्रकार हैं

वर्ष	उ.भोजन मूल्य मूयनाक	रुपे की	रूपे प्रति
१९८९	१००		१००
१९९०	१०१		१९१
१९९१	१०५		१५.२
१९९२	१३०		३६६
१९९३	१३८		३४६
१९९६	२०९		४३.५
१९९०	२१५		४६५

वेद प्रकट करते हैं। आचार्यकुल की शिक्षा नीति में, अथवा बातों के साथ-साथ गुरुक वा समान ढाँचा बनाने पर जोर दिया गया है। एम प्रकार हम निस्सन्देह के रूप सरकार की इस माँग का समर्थन करते हैं कि सभी निजी या सरकार द्वारा चलाये जानेवाले शिक्षालयों में गुरुक वा एक ही ढाँचा हो। हम सभी स्तरों पर शिक्षा का स्तर उँचा उठाने के हरे प्रयास का स्वभावतः समर्थन करते हैं। हम विश्वास करते हैं कि समान गुरुक के अन्तर्गत के साथ-साथ शिक्षा-उपकरण के अन्वय घटकों—शिक्षकों के वेतन, शिक्षक-छात्र अनुपात, और शिक्षा के उपकरण आदि का ढाँचा भी समान होना चाहिए। इस उद्देश्य की पूर्ति में समय लग सकता है। अतः एक अन्तरिम व्यवस्था के तौर पर राज्य द्वारा सहायता पानेवाले सभी शिक्षण-संस्थानों में गुरुक के समान ढाँचे की इस माँग का हम समर्थन करते हैं। हम अनुभव करते हैं कि राजकीय सहायता में अनुदान आदि के उद्देश्यों पर राज्य की आवश्यक देखरेख भी अस्तित्व में है। विन्तु इसका अर्थ शिक्षालयों में प्रौद्योगिक मामलों पर राज्य का नियंत्रण नहीं होना चाहिए। हमें यह देखना पड़ेगा कि केवल सरकार की ओर से इसी क्षेत्र में समान गुरुक के उभरे की लागू करने जैसा महत्त्वपूर्ण कदम उठाने में सम्भवतः कुछ अन्धी बाकी हुई है। इसलिए हमारी नम्र सलाह है कि शिक्षा में इस तरह के क्रांतिवादी सुधार करने से पूर्व पर्याप्त जन-संवाद, विचार-विनिमय और शिक्षा-कार्मिकों से व्यापक सलाह महाविरा आदि जाना चाहिए।

(३) उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा नगरपालिकाओं और स्थानीय संस्थाओं के द्वारा से प्राथमिक शिक्षा के प्रबन्ध को अपने हाथ में लेने का यह कदम वाञ्छित है, जिससे माँग सब और से सतत होती रहती है। परन्तु हम चाहते हैं कि इसका अर्थ विद्यालयों की दिन-प्रतिदिन वा वैशेषिक और प्रशासनिक स्वतन्त्रता में सरकार का किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं

आन्दोलन के समाचार

जिला ग्रामस्वराज्य समिति सदरसा की मासिक बैठक

जिला ग्रामस्वराज्य समिति सदरसा की मासिक बैठक ३० जुलाई को समिति के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र मिश्र के सभापतित्व में हुई। बैठक बिहार खादी प्रावीण्य सभ, सदरसा के प्राण में हुई। बैठक में समिति के सदस्यों के अतिरिक्त सर्व-संबंध के अध्यक्ष श्री सिद्धराज बड़वा भी उपस्थित थे। सदरसा ग्रामस्वराज्य-अभियान समिति के क्षेत्र के अंतर्गत सदरसा जिला के २३ प्रखण्ड, पूर्णिया जिला के हरीली एवं भवानीपुर तथा दरभंगा जिला के बिरौत प्रखण्ड, इस तरह कुल २६ प्रखण्ड शामिल हैं।

बैठक में सर्वसम्मति से सदरसा जिला के महिषी, मरौता, किशनगञ्ज, मुरलीगञ्ज, राधेपुर तथा पूर्णिया जिला के रणौली एवं भवानीपुर कुल सात प्रखण्डों को ग्रामस्वराज्य अभियान का सघन क्षेत्र बनाया गया। इस क्षेत्र में ३०-से-४० सर्वोदय मित्र बनाने, सर्वोदय आन्दोलन का प्रचार-कार्य करने, तथा प्रखण्ड के सभी गाँवों में ग्रामसभा बनाने का निश्चय किया गया है। इन सघन क्षेत्रों में ग्रामदान की घोषणा के साथ ही प्रत्येक भूमिदान से बंधा में एक बट्टा लेकर भूमिहीनों में किराण कराना, ग्राम-सभा का गठन, ग्रामशोध का निर्माण,

होना चाहिए। इसलिए हम इन विद्यालयों के संचालन के लिए बनाये गये प्रयासन प्रबन्ध से, जो सरकारी अफसरों के बोझ से अत्यधिक घोरित है, प्रसन्न नहीं हैं। हमारा यह दृढ़ विचार है कि राज्य सरकार द्वारा प्राथमिक शिक्षा को, हमने हाथ में लेने के इस कदम को प्रशंसक समितियों में प्रबुद्ध शिक्षा-कार्मिकों को अधिकारिण सहमिलित कर मजबूत बनाने की आवश्यकता है। विभिन्न विद्यालयों में हमारा

पोषित ग्रामदानों गाँवों के दस्तावेज पुष्ट करने की दृष्टि से पुष्टि पदाधिकारियों के नामालय में वासगीत की जमीन का पत्र लिखाना एवं ग्राम-कार्मिकों का गठन करना, आदि कार्यक्रम शामिल हैं।

बैठक में २० नवम्बर से २० दिसम्बर तक एक महीने का सामूहिक अभियान चलाने का निश्चय किया गया है, जिसमें शामिल होने के लिये सदरसा जिला के कार्यकर्ताओं के अनिश्चित बिहार एवं देश के अन्य सर्वोदय कार्यकर्ता, उपन्यासक मस्था एवं सर्वोदय कार्य में रुचि लेनेवाले व्यक्तिगणों को आवाहन किया गया है। बैठक में उपस्थित व्यक्तियों से स्थानीय व्यक्तियों को इस कार्यक्रम में शामिल करने की आवश्यकता पर जोर दिया। आचार्य श्री रामभूतिजी ने सर्व-संघ सभ के अधिवेशन एवं २० वें अखिल भारत सर्वोदय सभा सम्मेलन, नकोदर का प्रस्ताव, श्री सिद्धराज बड़वा ने श्री अवप्रकाश नारायण की उप-दिशि में बगलोर में हुए सर्वोदय आन्दोलन एवं विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ व्यक्तियों की सहमिलित बैठक में हुई चर्चा, श्री निर्मला देशपांडे ने श्री किनोराजी द्वारा ग्रामस्वराज्य अभियान सदरसा के सम्बन्ध में दी गयी सलाह और श्री सर्वनारायण दास ने बिहार के सर्वोदय कार्यकर्ताओं की सदापुर बैठक के सुझाव की जानकारी दी।

बैठक ने इस भूमि में ग्रामस्वराज्य-अभियान एवं सर्वोदय आन्दोलन को सफल बनाने के लिए स्थानीय व्यक्तियों को

और जिला के अन्य उपकरण भी, या निस्सन्देह दृष्टि अवस्था में है और त्रिनमें पर्याप्त सुधार करके अचल बनाने की आवश्यकता है, उसे स कार द्वारा अधिकृत किये जाने चाहिए। हमारा यह भी सुझाव है कि यदि सरकार प्राथमिक शिक्षा का द्वितीय शिक्षा के नाम से ही पुकारना चाहती है तो राज्य के हर प्राथमिक स्कूल के हर किराफनाथों से द्वितीय शिक्षा की अन्तर्गत प्रकट होनी चाहिए।

प्राप्तिल करने की आवश्यकता की स्वीकार किया तथा अधिपति को सफल बनाने की वृत्ति से स्थानीय नेतृत्व के विकास की आवश्यकता पर बल दिया।

विश्वभारतवादी मराठीय प्रसन्न या नेतृत्व थी नारायण प्रसाद यादव, और थी लक्ष्मीनारायण वर्मा की दीया गया। दूसरी सहायता में महाराष्ट्र के अन्य प्रतिष्ठित सर्वोदय कार्यकर्ता भी अन्तः-यात्रा में रहने का निवेदन किया गया। महिला प्रसन्न के लिए सर्वथी खुशाल झा, भोजा प्रसाद सिंह एवं नृपति नारायण सिंह, मनोना प्रसन्न के लिए सर्वथी रामचरण मण्डल, मिर्जानवी एवं रामबिहारीजी, विभवपत्र प्रसन्न के लिए सर्वथी केशर-नाथ मण्डल एवं सुभद्रा प्रसाद सिंह, राधोपुर प्रसन्न के लिए सर्वथी बसोपर बंधवान, दशानिधि झा एवं राम साहू, भवानीपुर प्रसाद के लिए थी रामप्रसाद सिंह तथा श्री श्री प्रसन्न के लिए सर्वथी सुभद्रा मण्डल एवं शिव भोग भोसली की सुभद्रा मण्डल। उन पर बहुविधियोंवादी की सुभद्रा मण्डल के अन्तः-यात्रा में आया-आने करने तथा वापस-आने के विचार को मूर्च्छा प्रसाद करने का प्रयास करें।

अभिप्रेत की सफलता के लिए उप-उपह करने के लिए थी राधेव विप के भारतीयों में लोक अभिप्रेतों सर्वथी सुभ-द्रा मण्डल सिंह, बापुरा प्रसाद सिंह एवं ब्रजबोहरा प्रसाद वर्मा की एक तथैव वा प्रसाद किया गया। समिति के सदस्य भी बापुरा प्रसाद सिंह बनाने करें। समिति की आवश्यकतापूर्ण कार्य-कारणों को मनोनीत करने का अधिपति दिया गया। — रामचरण सिंह

सर्वोदय साहित्य स्टा, कानपुर की प्रगति

साहित्य के प्रसार के लिए सर्वोदय मण्डल प्रकाशन की ओर लक्ष्य करने का निर्णय करने के उपरान्त वे

कानपुर सेन्ट्रल स्टेशन के जेटपार्क नं० १ पर पूर्व प्रकाशनालय मुरारोजीवाल के सोवियत नितिव 'सर्वोदय साहित्य स्टा' ने पत्र ३ अर्ध, ७२ से बनाया वापस किया था। अर्ध में १९७०-७१, मई में २२७०, ४१६, और जून में २२९१, ४० रु., इस प्रकार प्रथम तिमाही में मुल १९१८, ६८ रुपये की साहित्य-बिक्री स्टा में हुई। सर्वोदय साहित्य के व्यक्तित्व रामचरण, विवेकानन्द, प्रकाशन विभाग का नाम साहित्य व प्राकृतिक विविध साहित्य स्टा के प्रमुख आधार हैं।

श्री धोरेन्द्र भाई का कार्यक्रम

- २२ अगस्त से २६ अगस्त तक राष्ट्रीय सर्वोदय मण्डल, प्रयोग, (मुम्बई)
- २७ अगस्त से ३० अगस्त तक, राष्ट्रीय सर्वोदय मण्डल, हरियाणा आराम भद्रमहाबाद, (गुजरात)।
- ३१ अगस्त की रात मुम्बई के लिए प्रयाण।
- १ सितंबर से २ सितंबर तक विष्णोपुर, बंदा, गुजरात।
- ३ सितंबर की रात से अन्तर्गत।

(७२० का विषय)

मुम्बई कर हं, सागरसिद्धि सागर मुम्बई करने की उपयुक्त है। उनके परिचारक भवभोग्य की विधियों की सहायता पूर्वक सम्पन्न हो रहा था उनके लिए विन-पुनर्करण व्यवस्था कर दें। अनेक कार्यकर्ता एमई व्यवस्था का कार्य है पर भारतीयों के विचारों को सर्वोदय के जड़ कार्य-कार्य में सुदृढ़ बनाने की है। एमई, एमई, एमई, एमई का यह कार्य है कि वे उनका कार्य करें। यदि वे व्यवस्था का कार्य करवाए होगा है तो वे लक्ष्य का कार्य है व्यवस्था का कार्य के सागर में उदर व है मुम्बई है।

प्रका. मद्रास मुम्बई

पत्र-व्यवहार का पता :
 सर्वोदय मण्डल, पत्रिका-विभाग
 रा.म.प. ४, वा.म.प. १-१
 गार, सर्वोदय फोन : ९४१९१

**सम्पादक
 रामचरण सिंह**

इस अंक में

मनो-साधना, एन-नया प्रयोग, पत्रिका-विभाग की, ज्ञान-प्राप्ति का — मद्रास ७२१

पत्रिका-विभाग	७२६
अभिप्रेत-विभाग	७२६
पत्रिका-विभाग	७२६
पत्रिका-विभाग	७२६
— श्री मद्रास मद्रास	७२६
पत्रिका-विभाग	७२६
— श्री मद्रास	७२६
पत्रिका-विभाग	७२६
— श्री मद्रास	७२६
पत्रिका-विभाग	७२६
— श्री मद्रास	७२६
पत्रिका-विभाग	७२६
— श्री मद्रास	७२६

सर्व

सेवा

संघ

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

भारत-राज

भारत-राज का मुख पत्र है। यह पत्र भारत-राज के द्वारा प्रकाशित होता है।

भारतीय सांस्कृतिक क्रान्ति

युग की अड़वा के खिलाफ
 एक इनकलाब है,
 दिव के जवानों का
 एक मुनहरा धराब है,
 भारतीय सांस्कृतिक क्रान्ति...
 व्योम में हमारी पहुँच बढ़ रही है आत्र, पर
 दूर हो रहा है पर पत्नीसी का।
 आदमी को आदमी के करीब लायेगी,
 भारतीय सांस्कृतिक — क्रान्ति...
 आदमी भविष्य में यंत्र कान हो गुलाम
 मानवीय गुण बढ़ेंगे काम से
 ऐसे योग-युक्त काम
 हर उग्ह चलायेगी,
 भारतीय सांस्कृतिक क्रान्ति...
 ले के हाथ हल-कुदाब
 भीर ज्ञान की मसाल
 आओ चले साथ-साथ गाँवों को
 क्योंकि गाँव-गाँव से हीनवा मिटायेगी
 भारतीय सांस्कृतिक क्रान्ति...

ग्रामदान के लिए राष्ट्रीय सामूहिक-अभियान

अध्यक्ष एवं मंत्री, अ० भा० रचनात्मक संस्थाएँ; प्रादेशिक सर्वोद्यम मण्डल, एवं सदस्य, सर्व सेवा संघ प्रबन्ध समिति के नाम पत्र

महोदय,
आपको विदित ही है कि देश में ग्रामस्वराज्य की स्थापना के लिए ग्रामदान में निहित सम्भावनाओं को प्रकट करने के उद्देश्य से सहरसा (बिहार) को प्रयोग-क्षेत्र के रूप में चुना गया है। गत दो वर्षों से यहाँ ग्रामदान-युक्ति के लिए सतत कार्य चरु रहा है और समय-समय पर देश के कार्यकर्ताओं को सामूहिक शक्ति भी यहाँ लगायी गयी है। सामूहिक शक्ति लगाने से काम तो आपे बढ़ता ही है साथ ही आपसे भारीभारत और गण-सेवकत्व भी विकसित होता है।

अतः संघ ने यह निश्चय किया है कि सारे देश के सेवक दिनांक २० नवम्बर '७२ से २० दिसम्बर, १९७२ तक एक माह का समय सहरसा में सामूहिक अभियान के लिए दें।

आपसे सादर प्रार्थना है कि इस अभियान के लिए अपनी संस्था और प्रदेश के सफल समर्थियों से समय देने का अनुरोध करें। कृपया सूचित कर अनुमोदित करें कि आपकी संस्था और प्रदेश से कौन-कौन मित्र इस अभियान में सम्मिलित होंगे ?

आपको यह भी याद ही होगा कि गत दो वर्षों से ग्रामदान-प्राप्ति और युक्ति स्थापन करने के उद्देश्य से सकलित अभियान चलाने के प्रयोग क्षेत्र के अनेक प्रदेशों में सफलतापूर्वक हुए हैं। सभी प्रदेशों में एक साथ ऐसे प्रयोग करने की आवश्यकता है जिससे यह कार्य एक पद्धति के रूप में विकसित हो जाय। यह तभी सम्भव है जब भिन्न-भिन्न प्रदेशों के प्रमुख कार्यकर्ता जो अपने-अपने प्रदेशों में अभियानों का संयोजन और सफल करते हैं, ग्रामदान-प्राप्ति और युक्ति स्थापन करनेवाली पद्धति को समझें और नाम-रूप में परिचित करें। इस उद्देश्य की पूर्ति

के लिए आन्ध्र प्रदेश सर्वोद्यम मण्डल की सहमति से दिनांक १६ से ३१ अक्टूबर, '७२ तक महबूबनगर जिले में सामूहिक अभियान चलाने का निश्चय संघ ने किया है।

अतः आपसे प्रार्थना है कि अपनी संस्था और प्रदेश के कम-से-कम तीन प्रमुख कार्यकर्ता साथी आन्ध्र प्रदेश के अभियान के लिए भी अवश्य भेजें।

सर्व सेवा संघ प्रबन्ध समिति के सव-

रसे तथा निमंत्रितों से भी यह जवाब है कि इस वर्ष दल दो में से किसी एक अभियान में वे अवसर समय दें। कृपया सूचित करने का कष्ट करें कि आप किस अभियान में किसने दिन का समय देंगे।

संघ की आर्थिक मर्यादा को देखते हुए यह अर्थसा तथाभाषिक है कि अभियानों में भाग लेनेवाले समर्थियों का यात्रा-व्यय सम्बन्धित संस्था या प्रदेश सर्वोद्यम मण्डल ही वहन करे।

आशा है, इन अभियानों की सफलता के लिए हर सम्भव प्रयत्न करेंगे।

—तरेडु दुवे

सहमती, सर्व सेवा संघ

नये प्रकाशन

सामुदायिक समाज : रूप और चिन्तन

लेखक—जयप्रकाश नारायण

सामुदायिक समाज का निर्माण और विकास सभी सम्भव है, जब गाँव में सामुदायिक भावना की सृष्टि होगी। आज जिसे हम गाँव कहते हैं, यह गाँव के रूपों के समान बिहारे हुए व्यक्तियों का अशक्तिहीन समूह मात्र है।

सामुदायिक समाज, सामुदायिक लोकतंत्र और सामुदायिक राज्यव्यवस्था के निर्माण के लिए बुनियादी शर्तें यह हैं कि गाँव एक वाल्यिक समाज बने। गाँव एक समाज तभी बनेगा, जब गाँव के सभी लोगों के हितों में समानता होगी और उनमें टकराव नहीं होगा।

भविष्य का द्वार लोकतंत्र लोभाभिमुख और प्रानाभिमुख होगा।

मूल्य : चार रुपये

पुस्तकालय संरक्षण : सात रुपये

धम्मपदं (नवसंहिता)

सम्पादक—विनोबा

धम्मपद बौद्धधर्म का शीर्षस्थ ग्रन्थ-ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ का विनोबाजी ने पुनर्संशोधन-संस्कृत करके इसे १ पाठ, १८ अध्याय तथा प्रकरणों में विभक्त करके हर विषय की समझने में बलान्त कर दिया है। जो काम पिछले दो हजार वर्षों में नहीं हुआ, वह अब हुआ है।

पत्र की जिम्मे, वाकर्षक छपाई।

मूल्य : चार रुपये

सर्व सेवा संघ प्रकाशन

राजघाट, बाराबन्सी—१

युवकों का भी सरकारीकरण ?

सरकार को और से धोपपा हुई है कि उसकी ओर से देश भर में एक ही नेहरू युवक केन्द्र चुनें। इन केन्द्रों में क्या होगा ? खेल के मैदान होंगे, खेल के सामान होंगे। इसके अलावा और क्या-क्या होगा ? और, ये युवक कौन होंगे ? कहा गया है कि इन केन्द्रों में खेल के साथ-साथ कुछ युवक-नेता भी प्रशिक्षित विधे जायेंगे। इन 'नेताओं' को क्या प्रशिक्षण मिलेगा, और ये क्या प्रशिक्षित होंगे क्या करेंगे ?

युवकों को बमाने, लाने, खेले, और सीखने की जितनी सुविधाएँ मिल सकें, मिलनी चाहिए। लेकिन युवक स्वतंत्र, निर्भय, नागरिक बनें, यह चिन्ता सबसे पहिले होनी चाहिए। क्या नेहरू युवक केन्द्र की इस योजना से यह उद्देश्य पूरा होगा ?

हमें ऐसा लगता है कि अब सरकार युवकों को भी सरकारीकरण की अपनी दूरगामी योजना में सम्मिलित करने जा रही है। अगर हमारे युवक भी सरकार के हो जायेंगे तो क्या बचेगा जो समाज का होगा ?

सोचतत्र स्वयत्न रहे, इसके लिए वो चीजें आवश्यक होती हैं : एक, राजनीति में सभी दलों को बराबर स्वतंत्रता हो, और दो, गिना स्वयत्न हो। लेकिन हम देखते हैं कि दोनों दृष्टियों से हमारा लोकतंत्र कमजोर हो रहा है। सरकार अधिभ-से-अधिक अधिभार अपने हाथ में करती जा रही है। विरोधी दलों की दिव्यति दिनोदिन बिगड़ रही है। जो विरोधी दल अगर से धरे-पूरे दिखाई देते हैं वे भी अन्दर-अन्दर सोखते होने जा रहे हैं। अनेक 'विरोधी' सदस्य बमाई और सुविधाओं तथा भाई भतीभो के लिए नोकरी की लालच में मजबूत से उपभूत रहने हैं जिसके फलस्वरूप उनके विरोध में कोई दम नहीं रहता। राजनीति के बाजार में वोट और नेता दोनों बिकाऊ माल हो गये हैं। जब राजनैतिक दल भी सरकारीकरण के प्रवाह के सामने नहीं खड़े हो सकते तो दूसरी-सत्पाएँ क्या खड़ी होंगी ? सरकार अन्धकार की तरह अनाय नई रचनाएँ जा रही है, और व्यापार, उद्योग, खेती, गिना, स्वास्थ्य, यहाँ तक कि भादमी का रोज का खाना-कपड़ा भी उसके पेट में समाया जा रहा है। बिनाही पहा जानेवाला युवक भी उठी और रोझता दिखाई दे रहा है। सत्ता के फँके हुए चारे को न चुपनेवाला चिड़िया आत्र देन के तांत्रिकनिक जीवन में बिरले ही मिलेगी। हमारे नेता इस सत्ता में निपुण हो गये हैं कि भूख की भूख और जवान भी जवान हो सत्ता की तरफ में फँसे लामा जाता है। उनके पास सरकार के अन्ध साधन हैं, और सामने गरीबी-बेरोजगारी

की भारी हुई असहाय जनता है, और 'सुशिक्षित' युवकों-युवतियों की सेना है। कुल मिलाकर ऐसी परिस्थिति बन गयी है कि देश सरकार की शरण में जाने के लिए विवश है।

यह बढ़ता हुआ सरकारीकरण शक्ति की दृष्टि से अत्यन्त अशुभ है। हमारी रहन-सहन का परिवर्तन हो, राजनैतिक और आर्थिक शक्ति का केन्द्रीकरण हो, देश के जीवन का सरकारीकरण हो, तो क्या बचेगा जिसे जनता अपना कह सकेगी ? निश्चित रूप से अगर सरकारीकरण का यह खिलसिला जारी रहा तो लोक-जीवन का लोप होगा, और हम संशिक और शासक की मजदूरी पर जीने के लिए विवश होंगे। क्या इस देश के करोड़ों नर-नारियों के लिए, स्वतंत्रता का अर्थ सरकारीकरण ही होगा ? क्या हमारे युवक स्वतंत्रता का यह अर्थ स्वीकार करेंगे कि लोकतंत्र में लोक की सत्ता न होकर शासक की सत्ता हो, और अन्य चीजों को तरह उनका भी सरकारीकरण हो जाय ?

पहिले क्या ?

मेहनत बागू गति के एक अच्छे विमान है। मेहनत से खेती करते हैं। पूरी कोशिश करते हैं कि उत्पादन अधिक-से-अधिक हो। लेकिन क्या करें जब पानी ही नहीं बरसता ! मेहनत बागू आत्र सुबह कहते लगे "सरकार को अब भी यह भाव क्यों नहीं समझ में आती कि हमारे सब काम बन्द करके सबसे पहिले खेत-खेत में पानी पहुँचा दे ? पंच साल, दस साल, यह काम कर ले, उसके बाद दूसरे काम करे। बिहार की नदियों में पानी बह रहा है लेकिन दुख यह है कि हमारे खेतों में पानी नहीं है।"

अगर हमारे सरकारी लोग भी चीन, जापान के सरकारी लोगों की तरह धान-रोपाई में शरीक होते तो उन्हें क्या होना कि खतियार देना में विराय की जिस शोच पर ध्यान सबसे पहिले देना चाहिए। इतने वर्ष हो गये लेकिन आज तक हमारे विराय की प्राथमिकताएँ नहीं तय हो पायीं। कैसे तय हो जब हमारे मजिधों, योजनाकारों और अधिकारियों के हाथ में मिट्टी नहीं लगती, और उनके दिमाग में विराय और व्यवस्था से अधिक सत्ता और शासन पुटा हुआ है ? गाँवों में निर्माण का सारा काम मुँसवा और डोकेवार करते हैं। अष्टाक्षर जोधे से अन्धकार का भाव है। दिमाग दिल्ली में है, मुदाय गाँव में। कहीं किसी चीज का वास्तविकता से मेल नहीं है। योजना सरकार के दरजदों में बन्द है, निदान बाजार में। किसी को जीवन से मतलब नहीं है।

यही देन है कि अपने पेट और भाग के साथ विराय के नाम में इतना भूख खेनकाइ निरीह, निविकार, मर से बर्बाद कर सकता है।

विनोवा-संवाद

[भी तहसीलदार सिंह उ जुलाई को विनोवाको से मिले थे। उनको उनसे हुई बातचीत हम यहाँ दे रहे हैं।—सं०]

प्रश्न : मैं आपका धार्मिकवाद चाहता हूँ।

उत्तर : वह तो आपकी मिला चुका है और मिलता रहेगा, जब तक आप स्वयं के रास्ते चलते रहेंगे।

प्रश्न : मैं जब-जब ध्यान या भजन करने बैठता हूँ, तब-तब मन अधिक चंचल हो उठता है।

उत्तर : यह प्रश्न भगवान से जर्नल ने भी पूछा है। मन चंचल है। लेकिन जब तक हम चित्त को शुद्ध नहीं करते तब तक भगवान में ध्यान नहीं सध सकता है। बहुत-से लोग चित्त के मल शुद्ध किये बिना ध्यान की कोशिश करते हैं, एकाग्र होने की, वो चित्त दीपक है।

जैसे, हम भगवान की पूजा के लिए बैठते हैं, वो स्नान करने बैठते हैं, बिना स्नान किये बैठते नहीं, जैसे ध्यान के पहले चित्त का स्नान होना चाहिए। चित्त के जो मल हैं, वे साफ कर लेना चाहिए। तब ध्यान सधेगा? जब तक चित्त शुद्ध हुआ नहीं, तब तक ध्यान सधता नहीं, वह हमारे लिए अच्छी बात है, लाभदायी है। क्योंकि तब चित्त शुद्ध करने के लिए हम प्रयत्नशील रहेंगे और धीरे-धीरे चित्त शुद्ध होगा। चित्त शुद्ध हुए बिना ध्यान सधा, बीर सध भी सकता है किसी को, वो अपने परिणाम भयानक आयेंगे। उल्लेख नृपसाल पढ़ेंगेगा, अपने को भी और दुनिया को भी। जैसे रावण ने चित्रको का ध्यान किया था। उसे साक्षात्कार हुआ और उसने क्या माँग लिया? ऐसा वर माँग लिया जिससे उसका भी और दुनिया का भी नाश हुआ। इसलिए भित बुद्धि के बिना ध्यान सध भी जाये, वो लाभदायी नहीं होगा। परमात्मा अपने बाहर नहीं है। कभी ध्यान के लिए दीपक,

पानी की घाटा बरकर रह लेते हैं, वह बालम्बन है। वास्तव में परमात्मा अन्दर है, हृदय में। उस पर आवरण है बुद्धि का, हृदय का। ऊपर यह आवरण है बीर अन्दर वह दीपक है। अन्दर ज्योति है लेकिन ऊपर जो आवरण है उस पर मल है, जैसे लालटेन होता है। लालटेन के अन्दर ज्योति होती है। बाँच पर मल हो तो अन्दर की ज्योति साफ दीखती नहीं। अगर मल साफ कर दो तो ज्योति दीपक हो। जैसे परमात्मा की ज्योति अन्दर है, वह दीखती नहीं, क्योंकि बुद्धि पर मल है। मल को साफ कर लें तो एकदम परमात्मा दीखेगा। यह ध्यान की मुख्य प्रक्रिया है।

प्रश्न मेरे पापों का अन्त कैसे होगा?

उत्तर पापों का अन्त करने के लिए एक तो नये पाप न करने का नियन्त्रण करना चाहिए। दूसरा, पुराने पापों का इन्हें हटाना चाहिए, बाहिरा तोर है। लोगों में यह देना चाहिए। तीसरा, पश्चात्ताप यानी प्रायश्चित्त करना चाहिए। उसके लिए जाने की दृष्टि करना चाहिए। दृष्टि करना यानी उपवास करना, समर्पित छोड़ना, आदि। बीर, मोक्ष नाम स्मरण। मैं पुनः दुहराता हूँ (१) आगे पाप न करने का नियन्त्रण, (२) उसको बाहिर करना, (३) पश्चात्तापपूर्वक प्रायश्चित्त और (४) नाम स्मरण, जिससे पाप छलम हो जायेंगे।

प्रश्न . क्या एक ही जन्म में मोक्ष मिल सकता है?

उत्तर : अवश्य मिल सकता है। बभोक्ति मानवदेह ऐसी है कि उसमें चिन्तन शक्ति पकी है। यह शक्ति पीटी की नहीं। पीटी चिन्तन करती तो खाने की चीजें इकट्ठा करके खाना खाती, खाने के बाद चिन्तन उससे नहीं होता।

परमात्मा का चिन्तन करने की शक्ति मानवदेह में है। लेकिन परमात्मा का निरन्तर ध्यान और हलम करने हुए भी मोक्ष नहीं सधा इस जन्म में, तो अगला जन्म मानव-जन्म मिलेगा और मोक्ष सधेगा। लेकिन प्रयत्न करना चाहिए इसी जन्म में प्राप्त करने का, वो साधक अगले जन्म में प्राप्त होगा। अगले जन्म में प्राप्त करेंगे ऐसा सोचेंगे, वो साधक वस जन्म लग जायेंगे।

प्रश्न : गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए ईश्वर की प्राप्ति हो सकेगी?

उत्तर गृहस्थ धर्म यानी क्या समझना चाहिए। हम सोचते हैं, तो क्या हलम रखते हैं? उराम मोसम हो, अच्छी ऋतु हो, पानी हो, तो बीज बोया जाये। जैसे ही परिणती-समय केवल सन्तान-उत्पत्ति के लिए हो। इसका नाम गृहस्था-धर्म है। गृहस्थ से पूजा जाये कि निजने दफा संगम हुआ, कहेगा कि आठ सड़के हुए बीर हवार दफा संगम हुआ। यह हास्य है। उससे मोक्ष सधेगा नहीं। लेकिन केवल सन्तान-उत्पत्ति के लिए ही संगम होता है, वो सन्तान है और वो ही बार संगम हुआ, वो वह गृहस्था-धर्म। इससे तो ब्रह्मचर्य आगत है। गृहस्थाधर्म में दो-तीन बार संगम करने फिर अपने पर जन्म रखना यह ब्रह्मचर्य से आधिक कठिन है। लेकिन जब बार वो वानप्रस्थाधर्म में प्रवेश करेंगे, करें।

प्रश्न : सब शांति भाइयों ने आपसे श्रांतिना की है कि आप उनको दर्शन दें।

उत्तर : हमारा, दर्शन हमारा एक विचार्य में होता है। उसका नाम है 'बीरवा प्रवचन'। वह विचार्य हर एक की मिल जाये। जो पढ़ना नहीं जानते वे पढ़ना सीखें और उसे पढ़ें, जो पढ़ना जानते हैं वे बार-बार पढ़ें। नहीं तो क्या होगा? जो दर्शन करेगा, यानी जो देखेगा शान्त को, उसको क्या दीखेगा? दो आँसों के बीच में नाक है और उस नाक को दो छेद हैं इससे अधिक तो कुछ दीखना नहीं।

[१०-७-७२ को भी बर्ट हार्टमन,

प्राध्यापक बरटन विश्वविद्यालय (अमेरिका) से निम्न ख़ादा हुआ था। मूल अर्थवेत्ता।

प्रश्न : पश्चिम की संस्कृति का प्रायः के मानों पर, और उसी प्रकार सर्वोच्च आन्दोलन पर मुख्यतः क्या अक्षर रहा है ? पश्चिम के मूल्य तथा भारतीय पारम्परिक मूल्य इनके बीच किसी प्रकार का समन्वय सम्भव है ? और है तो पूर्व और पश्चिम के मूल्यों के बीच-से पहलू जतन करने योग्य माने जायेंगे ?

उत्तर : इन दोनों सवालों के जवाब मैं एक साथ दूँगा। पूर्व की संस्कृति और पश्चिम की संस्कृति, इस तरह कोई फरक मैं नहीं करता। दोनों संस्कृतियाँ खेती पर अवलम्बित हैं, इसलिए मूलतः वे एक ही हैं। लेकिन पश्चिम के देशों में आधुनिक जमाने में विज्ञान ने प्रगति की है। इसलिए हमें अपने को आधुनिक विज्ञान की आवश्यकताओं के मुताबिक बनाना होगा। चाहे हम भारत में हों, जापान, चीन, अमेरिका, रूस, इन्ग्लैण्ड किसी भी देश में हों, विज्ञान ने जो वातावरण बनाया है उसके मुताबिक हमें अपने को बनाना होगा। इसलिए पूर्व और पश्चिम में ऐसा भेद करने के बदले हमें यह समझना चाहिए कि इस नवन युग में दो सार्वत्रिक विचारों की है—विज्ञान और धार्मिकता। पूर्व और पश्चिम के देशों को, दोनों को विज्ञान और धार्मिकता दोनों की आवश्यकता है। मुख्यतः जो धर्म में रहने से यह यह है कि धार्मिकता के मार्गदर्शन में विज्ञान काम करे। विज्ञान मति देनेवाला कर्तव्य है, वह अपना खुद का मार्गदर्शन नहीं कर सकता। आधुनिक विज्ञान राजनीति के मार्गदर्शन में काम कर रहा है और राजनीति के मार्गदर्शन में चलने-बनना विज्ञान विनाश ले आता है। विज्ञान को चाहिए कि राजनीति का मार्गदर्शन लेने से वह दूराद करे और व्यापार के मार्गदर्शन लेना स्वीकार करे। अगर विज्ञान अध्यात्म के मार्गदर्शन में चलेगा और जन पर अध्यात्म का नियन्त्रण रहेगा,

तो वह भूमि पर स्वयं सायेगा।

प्रश्न : अपनी स्वतन्त्रता के पचीस वर्षों में भारत की सर्वोत्तम सफलता कौन-सी मानी जायेगी और सबसे बुरी असफलता कौन-सी ?

उत्तर : भारत की सबसे बड़ी असफलता यह है कि वह अपनी अर्थ-रचना प्रणम की बुनियाद पर खड़ी करने में असमर्थ रहा। भारत की सफलता राजनीतिक है। उसकी उत्कृष्ट सफलता है, स्वतन्त्रता प्राप्त करना। और मेरा ध्यान है, दूसरी प्रमुख सफलता है पाकिस्तान और भारत का बन्धोबान्धु फार्मूला (समझौते का सूत्र)।

प्रश्न : गांधी, आंध्र और श्री नारायण चंसे देवी शक्तिवाले नेतृत्व पर सर्वोच्च आन्दोलन किसे हद तक निर्भर है और किसे हद तक उसे जनाता या आन्दोलन कहा जायेगा ?

उत्तर : अगर जानते हैं, पहाड़ों को भीड़ों बाधित की केवल खीच लाती है। वेहे ही बड़े नेता हमेशा वायुमण्डल का निर्माण करते हैं। ईसा के बिना ईश्वरत्व को बरतना बाध कर नहीं सकते, मुहम्मद के बिना इस्लाम की। परन्तु, आधुनिक विज्ञान के इस युग में देवी शक्तिवाले नेतृत्व को अपनी मर्यादाएँ होंगी। जहाँ तक बाबा का सम्बन्ध है, बाबा महामुक्त करता है कि उसमें कोई देवी शक्तिवाला अस्तित्व नहीं है, सिवाय इसके कि उसे एक छोटी-सी दाड़ी है। मेरे भिन्न (श्री गान्धी) भोये, जिनकी लम्बी दाड़ी है, नज़रोंक डेटे ये) को तो और बड़ी दाड़ी है। अगर आपद जानते होंगे कि मैंने धूम में प्रवेश किया है—किरा का परिष्कार कर अपने को ध्यान-चिन्तन में लगाया। इसलिए, अब एक तरह से बाबा जिन के बाहर है।

प्रश्न : हमारे पाठक हमारे लेख में सर्वोच्च के बारे में पढ़ेंगे, उनके लिए जानना क्या अर्थ है ?

उत्तर : चाहे अमेरिका हो या रूस, चीन हो या भारत, समाजवादी राज्य

हो, लोकशाही हो या पशिन्म हो, सभी में दो बातें समान हैं। एक, जनता का अपने नेताओं पर विश्वास है, अन्धे पर विश्वास नहीं है। निरसन, जानसन और ऐसे दूसरे अनेक 'उन' हमारे जीवन को आहार देंगे, और वे चाहेंगे उन आहार में हम डलेगे। सभी राष्ट्रों में यह बात समान है, फिर वह देश समाजवाद का प्रचार करता हो या और किसी नाद का। यह 'वे' इन्म ('वे' बाद) है—'वे हमारे लिए सब कुछ करेंगे'। हमें सिर्फ बच्चे पैदा करना है, क्योंकि यह काम प्रतिनिधियों को सोपान नहीं जा सकता। हमारा साथ जीवन उन सरकारी लोगों से नियमित होगा। इसलिए हमारी कोशिश है लोकनीति (पीपुल्स पालिटिक्स) प्रस्थापित करने की। दूसरी समान बात है सेवा पर जनता अन्तिम आधार। वही जनता मत है। इन तरह दो बातें समान हैं—'वे' इन्म ('वे' बाद) और मिलिटरीज्म (संविचार)। हमारी कोशिश इन दोनों से छुटकारा पाने की है। अपने 'जय जगत' गुना होगा। दुनिया की जय! काम परिवार हो और दुनिया राष्ट्र हो। और बाबा को सारे राष्ट्र हैं वे प्राप्त हों। आपका 'गुनाटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका (अमेरिका का सफल राज्य) है। हम चाहते हैं 'गुनाटेड स्टेट्स ऑफ वर्ल्ड' (दुनिया का सफल राज्य)। हमें स्केल (मापदण्ड) बढ़ानी होगी—

धाम—परिवार
भारत—प्रान्त
जगत—राष्ट्र

इस स्केल (मापदण्ड) में स्थिर रहे।

प्रश्न : हम चाहते हैं कि आज और कम हम आपके साथ रहें और आपके दैनिक कार्यक्रम की तस्वीरें खींचें। क्या बाबा की इलाज है ?

उत्तर : एक छोटी लेने की मैं सम्मति दूँगा। परमात्मा एक है। अन्यथा, अगर मैं आपके 'धूम' (पद) को सम्मत् हूँ, तो वह हमें 'पसतन' (पदी) कर्त (अभिप्रेत) की और से जायेगा।

—'मैं भी' से सम्पन्न

समाज का नेतृत्व : शिक्षक की भूमिका

● धीरे-धीरे मजूमदार

एत दुग की सबसे बड़ी उपलब्धि विज्ञान और लोकतन्त्र है। विज्ञान ने जो परिस्थिति पैदा की है उसमें शिक्षक की भी भूमिका बदली है। लोकतन्त्र शिक्षक से क्या अपेक्षा रखता है इस पर विचार करना चाहिए।

विज्ञान व टेक्नॉलॉजी के जो जे प्रगति कर रही है। इसमें समाज-परिवर्तन की रफ्तार बहुत बढ़ गयी है। इसलिए 'जेन-रेशन गैप' बहुत बढ़ गया है। आज की पीढ़ी का अनुभव अतीत पीढ़ी के काम नहीं आया। आज का बच्चा १५ वर्ष बाद जीवन में प्रवेश करेगा तब तक आज की भूमिका की शिक्षा प्राप्त करने में वह किम्बदन्तियुक्त हो जायगा। इसलिए आवश्यक है कि दूर-दूरता बनकर आगे के सन्दर्भ में शिक्षा को योजना और सम्पादन करना जाना जाय। आज की पाठ्यपुस्तक जिस शिक्षण की उम्र है वह १५-२० वर्ष पुराने अनुभव के आधार पर तैयार की गयी है। वह आज की एव आगे की बदती हुई परिस्थिति के सन्दर्भ में अनुपयोगी हो जायगी। इसलिए शिक्षा को अब पुस्तकों के दायरे में बांधकर नहीं रत सकते हैं। समाज व परिवर्तन के सन्दर्भ में शिक्षा का अनुभव करना होगा।

शिक्षा की दूसरी चुनौती है—समाज-संचालन के लिए धीरे-धीरे तैयार या हस्तगत किया जाय? अब तक संस्था-केंद्रित एव दण्ड-केंद्रित से ही समाज का संचालन हुआ है। धर्म-व्यवस्था-केन्द्रित अथवा धर्म के हाथ में भी संस्था रखा है। अहिंसा के प्रचारक महावीर और बुद्ध ने भी राजाओं को शासन-केंद्रित और दण्ड-केंद्रित का नियंत्रण नहीं दिया। वे भी नहीं समझ सकते कि दण्डकेंद्रित का नियंत्रण करने से समाज कैसे चलेगा? पर विज्ञान ने आज का इस्तेमाल बतल दिया है। आज दुनिया के सामने खड़ा है कि दल शासकों से कैसे मुक्त हो?

महावीर, बुद्ध और ईसा जो नहीं कह सकते वह बात आज निःशर्तीयकरण की माँग द्वारा रखी जा रही है। निःशर्तीयकरण आज दुनिया की अविचार्य आवश्यकता बन गयी है। निःशर्तीयकरण में सिपाही की भूमिका समाप्त होती है। वयक्ति जो दण्ड-केंद्रित रखा करती है उसके स्थान पर रखा कौन करेगा? आज शास्त्र रखें तो सर्वनाश (चिकित्सा के अभाव में), न रखें तो संवत्सा। परिणामस्वरूप दुनिया की आशासा निःशर्तीयकरण की है और आधुनिक संस्थाकरण का ही रखा है; क्योंकि विश्व नहीं है।

राज्यीय ने ध्यान दिलाया कि यह वास्तविक ही सही आवश्यक भी है कि सम्मति से समाज चले, क्योंकि लोकतन्त्र की अन्तर्नीय सम्मति की शक्ति है। उसका साधन शिक्षा है। आज जो स्थान वैकिक का है भविष्य में शिक्षक का बने।

समाज को दण्ड-केंद्रित से चलाने की एक पद्धति है। यदि सम्मति-केंद्रित से समाज को चलाना हो तो पद्धति बदलनी होगी। इसके लिए आज परिस्थिति और मन स्थिति, दोनों अनुकूल हैं। विज्ञान में रोमनी और केतना दोनों बढ़े हैं। प्रकृति का नियम है कि अधकार में आरम्भ को मज्य होता है। रोमनी हिम्मत दिमागी है। इसलिए आज मज्य कम हुआ है और स्वाधिमान बढ़ा है। आज यातक मज्यकर को, शिक्षक छात्र को मज्य से नहीं चला सकते। पहले के जमाने का ५० वर्ष की उम्र का बेटा बाप के सामने घर-घर नाँसता था, पर आज का ३ साल का पुत्र जान नहीं पाड़ने देता। पहले शिक्षक बच्चा में दण्ड लेकर पढ़ाने जाता था, आज दण्ड लेकर जाने तो वह दण्ड उठी की पीठ पर पड़ सकता है। इसलिए आज के शिक्षक की आयोजना में योजना होगा कि अधिशासक के सहायक कैसे तैयार? परस्पर सहकार से समाज कैसे चले? यह खोज करनी

होगी क्योंकि यह पीढ़ी खो जायगी।

लोकतन्त्र को पढ़ती चर्च मज्यवान है। मज्यवान को हलकी मज्यवान शिक्षा तो मिलनी ही चाहिए कि जिससे वह चुनाव-घोषणा-पत्र को समझकर मत दे सके। आज के स्तर के अनुसार हायर सेकण्डरी की शिक्षा न्यूनतम माँग है। हाथ प्रधान देना भारत में प्रौढ़ों, स्त्रियों एव बच्चों के काम के दायरे में ही है। जो बच्चे विज्ञान के घर में काम करते हैं उन्हें शिक्षित करना हो तो उनके बाबों की शिक्षा का माध्यम बनाना होगा।

लोकतन्त्र में शिक्षा का स्वरूप बुद्धि-पारी शिक्षा का होगा। सामाजिक और प्राकृतिक परिस्थिति के अनुसारों द्वारा शिक्षा देनी होगी।

आज लोकतन्त्र में नेतृत्व का अर्थ ही गया। क्योंकि या तो नेता जन-प्रतिनिधि बन गया है या जन-प्रतिनिधि को गलती से नेता समझा जाने लगा है। प्रतिनिधि सदा जनमत के पीछे चलनेवाला होता है। आज जनता को कोई मार्गदर्शन करनेवाला नहीं है। यदि भविष्य में जनता को मार्ग दिखाना हो तो नेतृत्व का अर्थ ही बनना होगा। वह अर्थ ही शिक्षक है। शिक्षक को समाज का नेतृत्व अपने हाथ में लेना होगा। यह सभी सम्भव है जब कि शिक्षक की भूमिका ऊँची हो। उसे जन-प्रतिनिधि से 'उदासीन' रहना होगा। उदासीन अर्थ ही उदासीन—ऊँचा आसन बनाया हुआ—अर्थ ही नहीं। जब का जो स्थान आज के प्रभाव में है; वही स्थान शिक्षक का होगा चाहिए।

आज शिक्षकों के अतिव्यक्त भारतीय संज्ञान है लेकिन वे अत्यन्त सीमित दायरे में सीधे हैं। वे जाने वेन बढ़ाने की माँग हेतु हड़ताल करते हैं। यदि हड़ताल करना ही हो तो वह शिक्षा के विषय को न्याय के समान स्तर बनने में ही विषय पर होनी चाहिए। 'आचार्यकुल' के रूप में दास्ता खोला है।

श्रेयक : मज्य कुमार
—शिक्षक प्रगति-संस्थान, दीरवाली, जम्मू के भाषण का सारांश

शिमला-समझौता

यह बहा जाता है कि छोटे विभाग और बड़े साम्राज्य का मेल नहीं बैठता। इस देश में शिमला समझौता के मिलसिधे में जो प्रतिक्रिया हुई है, उससे पता चलता है कि छोटे विभाग उन लोगों के हैं जो हिन्दुस्तान की विशालता की बात करते हैं। वे धर्म की लाभ और हानि के रूप में अंकित हैं। उनका इतिहास गलत है और दक्षिणी एशिया में भारत के रोल के बारे में उनका दृष्टिकोण भी सही नहीं है।

वे अज्ञान की मूर्खता में भारत की प्रधानता की भीमती भाषाओं और पाकिस्तान के राष्ट्रपति श्री भुट्टो ने जिस सन्धि पर हस्ताक्षर किये, यह पहिले की हुई सन्धियों के भिन्न है। नवम्बर जनमत संग्रह समझौता, जो ५ जनवरी १९४९ के यू० एन० सी० आई० जी० के प्रस्ताव में मिलता है और १९६५ में बच्छ के सम्बन्ध में होनेवाली सन्धियों का उद्देश्य उन क्षणों की निपटाना था जिनके कारण सीमित युद्ध हुए थे। जनवरी १९६६ में होनेवाले तागकन्द समझौता का उद्देश्य भी पश्चिमी भारत-पाक सीमा, जहाँ सिट-एर १९६५ का युद्ध हुआ था, पर ज्यों की त्यों परिस्थिति बनाये रखना था। उसमें आगे बाधा के लिए सुविधा थी, लेकिन दोनों ही जायते थे कि उनके हित की दृष्टि से यह उचित था। तागकन्द सन्धि कार्यान्वित होने के बाद और जम्मू-कश्मीर के सिविलिये में भारत-पाक सम्बन्ध बिगड़ने के बाद सबसे ज्यादा फायदा रुस को हुआ। हर बखर पर किसहाल तक, उसने तागकन्द समझौते की वाद की और अपने रोल (भूमिका) को जताया। जब ये सब पुरानी बातें हैं।

२० अगस्त १९४३ की कश्मीर के सिलसिले में होनेवाले नेहरू-मुहम्मद अली समझौते के बाद शिमला-समझौता पहला बड़ा राजनैतिक समझौता है, जो भारत और पाकिस्तान के शान्ति प्रयास से हुआ। नेहरू-मुहम्मद अली समझौता

इसलिए बसफल रहा कि पाकिस्तान ने समझौता के तुरत बाद ही अमेरिकी हथियार प्राप्त करने शुरू किये। परन्तु अब भारत-पाक की स्थिति बिलकुल भिन्न है। पूर्वी और पश्चिमी, दोनों सीमाओं पर एक सड़ाई बढ़ी गयी और इसमें भी निर्णायक हार हुई। यही नहीं, इसका पूर्वी बाजू भी कट गया। परिणामस्वरूप, दक्षिण एशिया में भारत एक क्षिप्त के रूप में उभरा है। किसी भी समझौते से दो उद्देश्य पूरे होते हैं, एक तो यह कि युद्ध के बाद जो परिस्थिति पैदा हुई है उसमें सुधार लाये और दूसरे यह कि एक स्वामी शान्ति के लिए स्पष्ट और ठोस निर्देशक सिद्धान्त मिलने चाहिए।

राष्ट्रपति श्री भुट्टो का यह कथन सही है कि स्वामी शान्ति और मनवाची हुई शान्ति में विरोधाभास है। दिसम्बर १९७१ में भारत का सबसे बड़ा उद्देश्य बांग्ला देश को मुक्त कराना था, अब वह उद्देश्य पूरा हो चुका है। अच्छा होगा कि अब हम वर्तनीय के समझौते के शब्दों में सोचकर विस्मार्क समझौते के शब्दों में सोचें। जैसा कि डा० हेनरी ए० किस्सोर ने कहा है, "विस्मार्क निजी स्वार्थ के दर्शन पर आरम्भियत्रण रत सरना था। उसके उत्तराधिकारियों ने उसके युद्ध को तो याद रखा परन्तु उसकी उदास्ता से जो फल प्राप्त हुए थे, उसे भूल गये।"

निःसन्देह कश्मीर समस्या का हल ढूँढ़ने का यह सर्वोत्तम समय है। परन्तु जो लोग विजयी होने के नाते अधिकृत हल की बात करते हैं उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय अनुशासन की वास्तविकताओं या सही ध्यान नहीं है। एक मनवाची हुई शान्ति संग्रह की यह विज्ञापिणी और उपपक्षीय समझौते की सम्भावना को समाप्त कर देगी।

अलोकचर्चा के गणित पर गौर कीजिये,

उनमें से किसी ने भी २१ दिसम्बर १९७१ के मुम्बई परिवर्तन के प्रस्ताव पर ध्यान नहीं दिया है। इसके अनुसार तो युद्ध-क्षेत्र में स्थायी युद्धबन्दी होनी चाहिए। यह उठ समय तक रहनी चाहिए जब तक समग्र सेनाएं अपनी बसती सीमाओं में वापस न चली जायें और जम्मू-कश्मीर में उस स्थान पर, जहाँ कि सशस्त्र राष्ट्र संघ के पर्यवेक्षक नियमना करते हैं।

पाकिस्तानी सीमाओं से भारत का पीछे हटना कीमत के प्रस्ताव के अनुसार है और इसकी अपनी घोषित नीति के अनुसार भी। भारत ने यह कहा था कि पाकिस्तान ने वह लाभ प्राप्त कर लिया है जिसका प्रस्ताव में जिक्त है और युद्ध विराम-रेखा की मौजूदा स्थिति से सहमत हो गया है। अन्तिम हल न होने तक यही स्थिति रहेगी।

यह इसके भी सहमत है कि भारत-पाक दो में से कोई भी कानूनी-व्याख्या और आपसी मतभेद के बावजूद इसे अपने तौर पर बदलने की कोशिश नहीं करेंगे। साथ ही, दोनों देश अपने मतभेद की शान्तिमय साधनों से हल करेंगे। यह शान्तिमय साधन उपपक्षीय होगा या दोनों की सहमति से तय किया गया कोई दूसरा शान्तिमय साधन। दोनों देशों के बीच आखिरी हल न होने तक दो में से कोई भी परिस्थिति को नहीं बदलेगा और दोनों ही अच्छे सम्बन्ध और शान्ति के रास्ते के रोडों को, जो किसी सगठन, सहजता या प्रोत्साहन के कारण होगा, को हटावेंगे।

परिवर्तन के प्रस्ताव में यह कहा गया है कि महामंत्री से यह निवेदन किया गया है कि प्रस्ताव के कार्यान्वित होने के मिलसिधे की सभी बातों से सदस्यों को सूचित करेंगे। ये सारी बातें उपपक्षीय बाधा के कारण कमजोर पड़ गयी हैं। इस पर सहमत होने में पाकिस्तान निःस्वार्थ व्यवहार रहा है। इसने केवल वास्तविकता को समझा है कि उपमहादीय के गन्दे कपड़े को सशस्त्र राष्ट्र संघ में धोने से कोई लाभ नहीं जहाँ कि आज हल किसी भी

लोकयात्रा से

[लोकयात्री बहनों नम्बर में ४० दिन रहें। २० जुलाई को वे नम्बर से बिदा हुईं। अगले दिनको यात्रा पुनः जिते में शुरू हुई है। बहुविध सभ्यता की सुधी उपाय बहल लोकयात्री बहनों के साथ ४ दिन नम्बर में रहें। उनका यह सारभरण यहाँ प्रस्तुत है।—सं०]

— नम्बर महानगरी में लोकयात्रा चल रही थी। एक ओर मयनचुम्बी इमारतों में रहनेवाले इन्दि-पिने लोग तो दूसरी ओर क्षीपकी, पट्टी तथा घुट्टयाय पर सोनेवाले हजारी-द्वारा लोग। और इनके बीच, जीवन-आवश्यकता की चीजों के आसपास भावों के साथ विपरीत बसर करनेवाले, सामाजिक प्रतिष्ठा के छटागलों से दबे जानेवाले अनपिचत मध्यमवर्गीय परिवार। हर एक वर्ग की अपनी-अपनी समस्याएँ हैं। और सब वर्गों की समस्या से बाध, होनेवाली इस महानगरी की भी अपनी समस्याएँ हैं। मातापिता के शासन की विपुलता, समय के साथ होड़ लगाता भाषा-भाषा-या फिरया गायरिक जाने-अनजाने वह वेग के आवेग का गिहार बना हुआ है। हर क्षण, हर स्थान, भीड़ ही भीड़। बस के समूह 'बस', मनुष्यों से सघनरूप बरी बसें, दुर्गें... और इन सबके बीच गान्धे से पैदल चलनेवाली ये चार बहनों। लोगों को समझ में ही नहीं आता कि ये बहनों पदयात्रा क्यों कर रही हैं? उन्हें पूछा जाता है—'बहनों का उपयोग क कर आर पैदल क्यों बसती हैं?'

'आज सुबह हमने देखा। आसपास छोटा बम्बरा बस के लिए 'बस' में खड़ा

था। बस नहीं आ रही थी। बायीं तरफ भी उस बम्बरे का नम्बर नहीं लगा। फिर से वह अपनी बारी की प्रतीक्षा करते खड़ा रहा। ऐसी घटनाएँ इस महानगरी के सारतो लोगों के जीवन में रोज घटती हैं। जहाँ देखो वहाँ भीड़, जल्पबायो... इन सबके कारण चित्त पर एक तनाव निर्माण होता है, इसका भान उनकी नहीं। और इस पर क्षीपने की जरूरत है यह भी वे महसूस नहीं करते। हमें भी अपना रास्ता तय करना है। हर रोज नियत समय पर हम निकल पड़ती हैं, पल्पु हमारे चित्त पर कोई बोधा नहीं, कोई तनाव नहीं। मजिल हमारी सम्बी है किन्तु पैरों के सामने दिशा है और चित्त मुक्त है। और यह मुक्त चित्त ही स्वस्थ मानव की महत्त्व की आवश्यकता है...।'

लोकयात्रा का एक उद्देश्य है स्वो-चरित-आवरण। और उन दुष्ट से जगह-जगह बहनों से मिलना होता है। बहनों की छास समाजो का आवोजन भी होता है। यहाँ लोकयात्रियों से पूछनी है—'आर चारों अवेली पूम रही हैं?' अने मायनों में लोकयात्री जबाब देती हैं—'हम तो चार हैं। चार होने के बाद भी अवेली। यवो-कि खुद हियवो ने अपने को अवला माता

है। अपने समाज में दो नीतियाँ चलती हैं। पुरुष के लिए एक नीति और स्त्री के लिए दूसरी नीति। खुद बहनों ही बहनों की प्रतिष्ठा नहीं समझती। नो को एक लड़की हुई तो ठीक है, दूसरी हुई तो माँ दुखी होती है और तीसरी हुई तो रो देती है। लड़के को एक तरह से पालेगी, लड़की को दुमरी तरह से। अब तक इस प्रकार की दो नीतियाँ चलती हैं, स्त्री अबला ही रहेगी।'

लड़की की शादी माता-पिता के लिए एक समस्या बनो रहती है। इसका चिक्र करते हुए वे कहती हैं—'लड़की का मुख्य इतना कम बनो? बाजार का नियम है कि जो चीज कम है, उसका दाम ज्यादा होता है। १९७१ की जनगणना के अनुसार भारत में कुल जनसंख्या ४४,७३,९७,९२३ है। इसमें प्रति १००० पुरुष पर ९३२ स्त्रियाँ हैं, यानी ६८ स्त्रियाँ कम हैं। तो उनका मूल्य ज्यादा होता चाहिए। लेकिन स्थिति इससे उल्टी है। शादी के बाजार में लड़के के साथ बाँटे जाते हैं, हजारों रुपये के दहेज की बात चलती है। देश की प्रधानमन्त्री बनने से यानी सत्ता हाथ में आने मात्र से या हाथ में बन्दूक यानी सशस्त्र जाने से स्त्री महान नहीं बनती। सत्ता और शक्ति होते हुए भी दिल में डर बना रह सकता है। आत्मसत्त के आधार पर ही स्त्री आत्मनिर्भर बन सकती है। स्त्रियों को सुरक्षित हो नहीं रहता है, स्व-रक्षित भी होता है। प्रखर छात्रविद्यार्थी आधार रहेगा तभी यह सम्भव होगा...।

नम्बर की बहनों वकी जगुकाता और कीदूहल से अपनी बार्ने गुनने जाती हैं। जिव धेय में पड़ाव होगा, यहाँ के महिला-सम्बन्धों के द्वारा ही अधिराज्य सभारों का भावोजन होता है। जालविद्य के आधार पर बहनों को शक्ति जगाने के विचार का उन्हे आकर्षण होता है। बहनों स्वयं नहीं हैं, योग्य-शासिकी का नारस आर पयन्त नहीं। जालविद्य के आधार पर ही हमें यन्त्रित होना होगा।

'शादी के बाजार में लड़कियाँ खरी न रहे, दहेज माँगनेवाले से शादी न करे,

→समस्या का हल निकलता।

अधर पाकिस्तान पर छली थी यकी वो जमजमकीम सनरकें दूट जायगा। यह उसी हालत में बायम रह सकता है जबकि उसे समझौते का अवसर दिया जाय। सिमला समझौता नहीं करता है और इसके आगे कुछ नहीं। भारत, पाकिस्तान और बांगला देश के बीच सुद्ध ने जो सम्झौता छोड़े हैं उन्हे साफ करते और उनके बीच एक समझौता होने और

कम्पौर की कोई न कोई हल निकल जाने का यह मोहा देता है ताकि इस उपमहा-द्वीप में स्वोचो चालित स्थापित हो सके।

नम्बर का हल और इन तीनों देशों के बीच समझौता हो जाने की सम्भावना बाकी है। चान यह है कि अभी शीक 'तो और दो' की भावना को राह दे, जो विमल-जमझौते में पालो जाती है।

—'दीडम फर्ट' से धारा

आँसुकी ये सब बातें ठीक हैं, पर हम सड़कियों के यह कहने से क्या होनेवाला है, हमारे भाई-पिताजी से कहना चाहिए। सोफिया बालेज भी सड़की समा में सड़ी होकर शवा उपस्थित कर रही थी। परतपत्रा की टूटारी बेड़ी हम गद्दी तोड़ सक्ती, वह तोहने की सामग्र्य पुष्पों में है, पढ़ी-लिखी अपने को स्वतंत्र मानने-वाली बहनों से भी अगर ऐसी ही इबनि निकसेगी, तो यह बेड़ी टूटेगी नहीं, बल्कि बर्तनवाँ अधिकधिक दुलाम बनती पत्नी जायगी। पुराण प्रथान समाज-रचना में जजोर की मजबूती के बीच पड़ें हैं। रिशयो को समाज को नैतृत्व अपने हाथ में लेना है। समाज-जीवन के नये गारण बनाने हैं। ये सारे विचार काम रमो के लिए अभी नये-नये-से ही हैं, किन्तु विचार मुनकर उनमें एक प्रकार की अस्तित्विक सलबती जरूर मच जाती है।

बम्बई का पेंडर रोड। उच्च मध्यम-वर्गीय समाज का-का निवास स्थान। सर्वोदय-मित्र ममोरमा बहन का घर भी वहीं है। लोकरायिनी ने कुछ घण्टे उनके घर पर बिताये। छहज ही आसपास की परिचित बहनें इकट्ठी हो गयी। उनकी भी अपनी समस्याएँ थी-दुःख जिस 'सोसा-एटी' में रहती हैं, उसके मूलाधिक रहन-सहन रखनी पड़ती है। खेल पाटियों में जाना पड़ता है, वहाँ साधवी से नहीं जा सकती। आपकी बान अवय है, आर कुछ मूल्य लेकर निकली है। अपना जीवन मूल्यविहीन, खोखला महसूस करनेवाली ये बहनें जानती नहीं थी कि उनके धुद के इस नयन में उनके प्रस्न के उत्तर पड़ें हैं।

कभी एक युवती अपनी समस्या कहती है-"मे सारा सेवानय जीवन चाहती हूँ। बचपन से ही शादी न करने की इच्छा है। मुझे सपना था, मैं माता-पिता को समझा पाऊँगी, पार-पार सारों से समझा रही हूँ, पर वे नहीं समझ पा रहे हैं। वे कहते हैं, तुम बिना शादी के रहोगी तो समाज हमें क्या बहेगा?"

"माता-पिता सम्मति दोगे नहीं। अभी चार दिन पहले ही हमें एक बहन से परिचय हुआ। वह भी चाहती थी अन्तः स्वतंत्र जीवन जीना। माता-पिता इजाजत नहीं दे रहे थे। उसने तय कर लिया कि अब अपना मार्ग अपने हाथ में। घर छोड़ दिया। स्कूल में नौकरी करने लगी। जैसे ही पंसा इकट्ठा हुआ चल पड़ी अस्विकृत आश्रम में।" लक्ष्मीबाहन ने अपने व्यापक सोचसम्पर्क का एक अनुभव उस युवती को सुनाया।

"और एक उदाहरण। बल की ही बात। बालेज में पढ़नेवाली एक बहन। सर्वोदय विचार की ओर काफी आनुरित है। वह रहीं थी, मैं अपने को तैयार कर रही हूँ। जिस दिन भी पूरी तैयारी हो जायेगी, पर छोड़ निकल पड़ूंगी। तब तक इस सम्बन्ध में किसी से एक शब्द न कहूँगी, ताकि नाहक विरोधी बाधावर्ध पंदा न हो।" निर्मलबहन ने दूसरी मिसाल सामने रखी।

बमाठीपुरा की चारंगनारण। १२-१५ का एक समूह। लोकरायिनी बहनें उनके बीच भी पहुँच गयीं। स्पष्ट ही है, एक ही मुलाकात में उनसे दिल की बात समझना सम्भव नहीं था। समाज बहुचकृत इस वर्ग की मिलने का एक सांकेतिक मूल्य अवश्य था। किन्तु इस सामाजिक सन्दर्भ के अनाया, अपनी उस दुर्भाग्य बहनों के साथ सहजभूति के लिए जोड़ने की भावना लोकरायिनी बहनों के हृदय में थी। उनके साथ बात करते हुए निर्वचनबहन ने कहा-"हम आपके पास क्यों आयी हैं? तुलसीदासजी ने कहा है-तुलसी या सवार में सब से मिलिये घाय। ना आने किस बेच में नारायण मिल जाय। हम यही ढूँढ़ने निकले हैं कि वहाँ किस रूप में नारायण मिल पाता है आप तो मजदूरन इस परिस्थिति में पँसी हैं। एक ही बार में आपके अधिक शार्डों तो भंडो हो सकती। हमें तो आँसू जाना है, किन्तु

हमारी बम्बई की साथी मगलाबहन बम्बई में काम करती हैं। भगवान ने चाहूँ तो वे आपसे मिलती रहेगी। आप एक बात अवश्य करें। किसी एक सदस्य को लेकर, जैसे रामायण, बाइबिल रोज़ बोटा पढ़ें। उसके आपके आन्तकिक बल मिलेगा।

आमतौर पर बहनों में लोकयाना के शार्पक्रम के प्रति विशेष आकर्षण पाया। बारह साल की पदयात्रा पर निकली इन बहनों का समाज के हर तबके के साथ सम्पर्क आता है, फिर वह कार्यरत रोड के चारागृह के कैंडी हो, नोलाबा के 'दाग' मेन्स क्लिबियन एसो-सिएशन (क्लिबियन युवकों का मण्डल) का समूह हो, प्रार्थना समाज के या जैन युवक सच के उत्साही कार्यकर्ता हो, स्कूल-बालेज के विद्यार्थी हो, मजदूर सच हो या बमाठीपुरा की चारंगनारण हो तबके सामने वे आत्मबल के आधार पर अक्षिन्-निर्माण तथा साम्ब-बल के आधार पर समाज-निर्माण के रुनिपादी पदसू को बढ़ी से निर्भीकता से पेश करती हैं।

आखिरी दिन, जब मैं उन्हें मिली तब मिल-मजदूर सच की पाँच मजिल की बड़ी इमारत में लोकयाना बहनों का पकाव था। परेन-नालवान की मजदूर बहनें। काफ़ी तादाद में मजदूर भाई-बहनें इकट्ठा हुई थी।

प्रारम्भ में गुवराट की सर्वोदय-सेविता कात्याबहन ने मराठी में लोक-याना बहनों का परिचय कराया। उसके बाद "तुम्ही प्रचरानी भगिनीची मराठी ऐकली, आता ऐंश अवधीया भगिनीची मराठी....." कहकर अठम की लक्ष्मी बहन ने सक्षित मराठी में करीब दोन पन्ना भाषण दिया। भारत के पूर्व छोर की वह अग्रम-कथा परिवच छोर के शिवायियों के साथ उनको भाषा में बात कर अपने दिल के तार उनके दिल से बाँध रही थी।

'मैत्री' से

आत्म-समर्पणकारी बागियों की समस्याएँ

एक धुंधली तस्वीर

● राम चन्द्र नवाँ

मध्य प्रदेश में सैबड़ों बागियों ने आत्म-समर्पण किया। समर्पण की बात तो अब बाकी हो गयी। अब शवाल है इनकी समस्याओं को वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करके इसके निराकरण को योजना बनाने का।

हमारे देश में एक तो योजना बनती है वैज्ञानिक ढंग से (बहुत कम इस प्रकार बनती है), दूसरी बनती है आरतों से प्रेरित होकर भावुकता या भावनात्मक। हमारा अहम तो उससे तुष्ट हो जाता है, परन्तु चीप्ट ही यकान शुरू होती है और योजना, योजना के कामज हमारे लिए भार बनकर रह जाते हैं, तथा निराशा हमें दबोचती है।

समर्पण जब हुआ, अन्धाज था १५० तक आँकड़ा पहुँचा। १५० से २०० हुआ, बढ़ते-बढ़ते यह ४१४ तक पहुँचा। आग्रज ने जो समर्पण कराया, यह मिलाकर ४५० के आसपास आँकड़ा जा रहा है।

हमने वही प्रारण पर कार्य आरम्भ किया। हमारा सोचान्य है कि गांधीजी की अग्रज शिवाय सख्तानहन ने मोनापी राजवाड़े को साप नेकर इस विधा में पहल की। लगन से इस उद्यम में उन्होंने परिश्रमपूर्वक एक धुंधली तस्वीर तैयार कर ली।

मध्य प्रदेश के चम्पल पाटी के इस क्षेत्र में समस्यायुक्त दो जिले हैं, पुरैना एव मिण्ड, और इनमें भी दो तहसील हैं। मिण्ड जिले में लहार एवं पुरैना जिले में बम्बाह। टेबुलेशन में कुछ मुद्दे इस प्रकार सामने आये हैं :

मिण्ड जिले में ११८ बागियों ने आत्म-समर्पण किया है।

मिण्ड जिले में बारह हजार लोगों के पास बन्दूकों के साहस्य हैं। सभी साद-

सँघ दिये जा रहे हैं, बिना साहस्यवाले शस्त्र भी अवश्य होये हों। यानी ११८ बागियों के भय से (इन ११८ में अनेक बिना बन्दूकवाले भी हैं) बजारह हजार व्यक्तियों को बन्दूकें दी गयीं। इसका क्या अर्थ समझाया जाय ? मेरी मान्यता है कि डाकुओं के भय के या आतक की आड़ में मूँड पर ताब देकर, बन्दूक रखकर दूसरों को आतकित करने का यह व्यापार है और इसे स्वार्थी तत्वों ने बढ़ावा दिया है तथा अधिकारियों ने इस लाभप्रद व्यापार की पहली गमा में हाथ धोये हैं, बन्ध्या आँकड़े कहते हैं कि एक बागी के पीछे १०० से १२५ बन्दूकें जनता की, और साधन की बन्दूकों का तो हिसाब ही क्या ? इस असफलता के दोन आज भी उच्चाधिकारी बजाने में शौरज मान रहे हैं। इस दुर्भाग्य को क्या कहा जाये ?

समस्या डाकुओं की नहीं जाती है। समस्या बन्दूकों की है, जिससे आज भी, अभी भी आत्मसमर्पणकारी जा रहे हैं—यह नैसा दुर्बल है हमारा ?

८८ बागियों ने दुरमनी के जो वारण बताया, वे इस प्रकार हैं :

दुष्मनी १९ ने प्रणत को (ज म-वात)।

जमीन दवाने के दोन प्रकरण हैं। पर छोड़ने को विवण होने के, २० प्रकरण हैं।

मराल और जमीन बेषकर बागी बनने के सात प्रकरण हैं।

पाइयो पर पुलिस द्वारा मामला बनाने के पांच प्रकरण हैं।

पुलिस उस समय दो को सदा रही थी (अरकसत्या में घासी वृद्धि हुई है)।

कल करके बागी बनना आठ ने स्वीकार किया है।

७. व्यक्तियों ने पुलिस-गाई का

संरक्षण वाह्य है।

पुलिस ने तीन मकान गिराये हैं।

दो परिवारों की पुलिस ने कुर्छी को है।

एक व्यक्ति कर्ज के वारण बागी बना है।

जमीन की मांग ४५ ने की है।

यानी जमीन की मांग के विषय अन्य तस्वीर वार्दकताओं के मानस में भी हो नहीं, यहाँ की प्राकृतिक सम्भावना और कर्ज की मनोरथा को ध्यान ही नहीं गया। ५० बच्चों का शैक्षणिक स्तर इस प्रकार है :

प्राइमरी २७, मिडिल २, हाईस्कूल ४, कालेज १, छात्रावास २, कुल ३६। छोटे बच्चे १४, इस प्रकार कुल ३०। अविबहित २६ अविध है।

कर्ज के कारण बागी बने भाई की कहानी इस प्रकार है : २३ वर्ष का जवान हरिजन है। एक हजार का बर्न एक ब्राह्मण से लिया। उसके ब्याज वह में उसके यहाँ शाली का काम करता रहा। भाज में पुरे वर्ष काम करता रहा। कर्ज, उतराने की समस्या सामने थी। वृद्ध पिता, जवान पत्नी, नन्हा बालक, एक दिन कर्जेदार ब्राह्मण ने कहा, "मैं तुझे बन्दूक देता हूँ, मेरे दुरमन को मार दे, चाये माफ कर दूँगा।"

हरिजन युक्त के लिए प्रथम तालब एक हजार के कर्ज से मुक्ति थी। दूसरी तालब बन्दूक मुक्त मिलने का। उसने तैयारी प्रणत की और डांग में चला गया—चम्बल के वेहड़ में। ब्राह्मण ने बन्दूक नहीं दी और बर्न के पत्र में उसके युद्ध बाग से काम करवाने लगा। यह तथ्य एक गंव में मिलकर परिश्रम, काफे, हत्या आदि करके उठ ब्राह्मण को तीन हजार दे चुका है, परन्तु उसके नाम पर एक हजार लिखे ही है, और बाप से मजदूरी मुक्त में करवाया रहा है।

एक वास्तविकता है। मैं कुछ भी टिप्पणी करना नहीं चाहता। पुनर्जीव का आचरण को बरेग, उन्हे इन आदे-देई रास्ते पर चलना है, मार्ग तो बनना है,

और योजना बनानी है, ताकि आगे टाकू न बने। सामन भी यही चाहता है, मिशन भी यही चाहता है।

मैं जब इस काम में पड़ा, मेरी मह तैयारी नहीं थी, पुनर्जात का काम अगर उही ढंग से हो, भेदे इस दिशा में बिपारा, कुछ अपने ढंग से तैयारी की, परन्तु उसमें कई बिपत्तियाँ हैं, तथ्यों का वैज्ञानिक ढंग से चयन करने में कार्यकर्ताओं ने लगन प्रकट नहीं की। भावनाओं में बह गये। अखिल में भूसे बहना है, वे इस कार्य के लिए तैयार ही नहीं थे या योग्य ही नहीं थे।

दूसरी कमी है धन के लोगों की पहुँच। माया की सुविधा, इस महत्त्वपूर्ण कार्य की एक महत्त्व की आवश्यकता में मानता हूँ, उस महत्त्व की आवश्यकता ने इस काम का महत्त्व ही नहीं माना।

मनोदत्ता बदलने का दायित्व जिन्हे दिया गया वे स्वयं सोचियों में बन्द थे। मनोविज्ञान की या आयोगजन के वैज्ञानिक पक्ष की उन्होंने गीण माना। जैन-अधिकारियों ने शरीर-भ्रम का महत्त्व भुला दिया। वे अपने पुराने कवच में ही मुस्कराते रहे और यह इतना बड़ा मनो-वैज्ञानिक ढंग से तैयारी का काम, चार महीने हो गये, विचकता रहा, उपेक्षित रहा, उबासियाँ लेता रहा, तस्वीर चाहे छुँवली हो। हम नूटने में मगन हैं, समस्या बाणियों की है, समस्या छोड़ो है, हम बगलें झार रहे हैं। तस्वीर कुछ छुँवली चाहे हो, एक छोटी कदम है, चुनौती है, इस क्षेत्र के उन भाई बहनों के लिए जो समाज-शास्त्र के रक्षक हैं या प्रेमी हैं। वे अथर इस क्षण में मोठा लगार्ये, बड़ा उपकार करेंगे, इस क्षेत्र में मोठाखोर मोठी ला चुनने, अथवा बन्दूकें तो मोड़द है और मैं मानता हूँ कि अब समस्या टाकू नहीं है, समस्या बन्दूकें हैं।

बन्दूकें दोषी-निर्दोषी को पहचानने में असमर्थ हैं। उन्होंने अवश्य मुद्रापवती बहनों के मुद्राम की लाली को बाठा है, अवश्य पंरो के धुरो के अथर रदन में परिणित हो है। अक्षय बहनों की

दायरो के पन्ने

दो महान विभूतियाँ

हाल ही में सारे सर्वोप जपन को अपने परिवार के दो बच्चों के चले जाने से बड़ा भारी सदमा पहुँचा है। वे हैं, वितामह सरीसे बिलफेड बेलाँह और अपने बड़ भाई जँसे डोनाल्ड यूम। बेलाँ-कनी का स्वर्गवास २३ जुलाई को इंग्लैण्ड में अपने घर पर हुआ और लोडबन्धु मुम का १२ अगस्त को। लोडबन्धु भारत आये हुए थे और हवाई जहाज द्वारा भोगल से दिल्ली आ रहे थे। पलम पर उतरते-उतरते वह जहाज बिस्ती पहलडों से टकरा कर चकनाचूर हो गया और उसमें बड़े सभी १०वह मुसाफिर और चालक दल के चारों व्यक्ति इस भीषण दुर्घटना के शिकार हो गये।

बेलाँह की अवस्था भी के आत-यास पहुँच रही थी। वह इंग्लैण्ड के उन शान्तिवादियों में से थे, जिन्होंने अपने विचार सातिर अपने को कुबिन कर दिया और फिल-डिल कर अपने को चुनते रहे। उन्होंने हिम्मत के साथ पट्टी जग में भर्ती होने से इन्कार किया। इसकी बजह से उनको सन् १९१७ में दो साल की जेल मुद्रणी पडी थी। इन्हीं क्षम होने पर वह दुबा १ गिरफ्तार हुए और सुयो-सुयो डेङ बरत की सजा काटे। इसके बाद से वह ब्रिटिश शान्ति-आन्दोलन के अग्रणी नेता हो गये और सदा उसका म.ग.दर्शन करते रहे।

ब्रिटेन के इतिहास में बिलफेड बेलाँह वलाई की सनक हमेशा हमेशा के लिए गण्य की है। तस्वीर चाहे छुँवली हो, तस्वीर है। इसे नया फा, नवी रोक सम्राजशासन के इस क्षेत्र के भाई-बहनों को देना है।

मेरी मान्यता है की समस्या इस क्षेत्र की बन्दूकें हैं और समस्या का अन्तिम यु कौरवों से विरा है। सवाल है क्या अन्ति-मन्धु का फिर बंध होगा? कौरव फिर अट्टहास करेंगे?

सायद अकेले व्यक्ति थे जो युद्ध-विरोधी टिकट पर १९२७ में ब्रिटिश-पालियामेन्ट के सदस्य चुने गये। चार साल तक वह पालियामेन्ट में रहे। लेकिन वहाँ उन्हें जो अनुभव आया उसके वे इस नतीजे पर पहुँचे कि दलगत राजनीति के माध्यम से शान्तिपूर्ण समाज की स्थापना नहीं हो सकती और उसके लिए जनता के बीच काम करते हुए शान्ति-आन्दोलन की ही मजबूत बनाना होगा। अपने विचारों के अनुसार उन्होंने अपने जीवन को बालना शुरू किया, जिसमें उनकी पत्नी थीमवी फेनी बेलाँह ने पूरा साथ दिया। उन्होंने अपनी आमदनी घटाकर इतनी कम कर ली कि सन्धार को आवकर देने का सवाल ही खरम हो गया और अपना बगला छोड़-कर वह एक काटेज में रहने लगे, जहाँ वे अपनी मेहनत से साण-सन्नी और फल पैदा करते थे। वह ऊन भी काठने लगे और अपने सायक ऊनी कपडा तैयार कर लेते थे।

आधार और व्यवहार का ऐसा अद्भुत संगम बहुत कम देखने को मिलता है। बेलाँहकी उत्तम सत्याग्रही होने के साथ-साथ बलम के भी जबरदस्त धनी व्यक्ति थे। परन्तु वर्ष की उम्र से उन्होंने लिखना शुरू कर दिया और बातिर तक लिखते ही रहे। सौभाग्य से हमारे बरिष्ठ छाया और अग्रणी मासिक "सर्वोदय" के मुर्मिच्छु सम्पादक अन्ना रामास्वामी ने उनका स्नेह और विश्वास प्राप्त किया और उन्होंने अपनी रचनाएँ "मनोदय" में प्रकाशन के लिए उनके पास तस्वीर भेजते रहे। "सर्वोदय" में ही उनकी आत्म-बहानी क्रमच. छपती रही, जो बाद में "आँव रिट बोटेन ट्रेक" नाम से पुस्तक के रूप में निरली। उसमें उन्होंने कहा है कि "परिचिति के कारण जीवन के अर्थ का विचार करने के लिए मैं अपने बचपन में ही मजबूर हो गया और तेईस साल की

दम में मुझे यह अनुभव हुआ कि ज्वलन्त सत्य को एक चिनगारी मेरी वात्मा में प्रवेश कर गयी है और अब से वह सचा-तार मेरे साथ रहती है। इस अनुभव के आधार पर ही मैंने अपनी जीवन-महानी को पिटी लकीर से भिन्न बना है। मेरा जीवन जीने की बन्ना में प्रयोगों की एक अदृष्ट शृंखला है और हर प्रयोग मुझे पिटी लकीर से दूर ले गया है। आज भी वही हालत है और वह बना रहेगा। "बारह साल पहले क्या हुआ उनका यह कल्पन धारित तक नहीं उतरा।

आज से कोई साठे गी बरस पहले जनवरी १९६३ में जब बड़का की सर्दी पड़ रही थी, मुझे उनके घर पर उनकी साय टहरने का छोमाय प्राप्त हुआ। ८८ वर्ष की उम्र में यह टेंड मीन पंदल चलकर प्रेस्टन टेंगन पर मुझे लेने आये और अपने साथ घर ले गये। माताजी धनी ने विशेषकर शाकाहारी भोजन तैयार किया था और रात को ओले-पिठाते का पूरा हस्तजाम भी। रात को भोजन के बाद बेलक आराम करने चले गये, लेकिन सुबह उठके उठकर दो घण्टे तक बातचीत करते रहे। उन्होंने कहा कि आज भौतिक मृत्यु की तरफ लीग व्यवस्था आकर्षित कीरते हैं, मगर यह 'केज' चन्दरीजा है और वह दिन दूर नहीं जब नैतिक मृत्यु समाप्त में प्रयाण होगे।

इस अनुभव पृथक-बोरी के रग-रग से वास्तव्य टपकता था। माताजी धनी की बुद्धिबल में सारी दुनिया के शान्ति-वापियों की सहाय्युक्ति उन्हे मिलेगी। और ईश्वर से हम सबकी आर्पणा है कि उनके धीरज व साहस प्रयास करे और विचारमूढ वैज्ञानिकों की आत्मा को शान्ति दे।

अपने बन्पु डोनाल्ड ग्रुम को पूरा तरह अपने थे और भारत में उनकी मृत्यु होना सिद्ध करता है कि वह इस भारत भूमि से विरक्तुल्य क्षयरत हो गये थे और उनकी शारी भावनाएँ, अगर जल समय तक कुछ योग रही होगी, भारत को अर्पित हो गयी थी।

करीब तीस बरस पहले वह सेवा

के दरादे से हिन्दुस्तान आये और बापू से मिले। बापू ने उनको सलाह दी कि गाँव में बैठकर श्रामोण सेवा में लग जायें। जिता होशपावार के रमूनिश राय को उन्होंने पसन्द किया और अपनी जवाबी के पन्द्रह-बीस वर्ष बही सेवा में बिदा दिये। अपने और उनकी पत्नी एटिका ने देहात की सारी यातनाएँ सही और अपने को एकदम भुला दिया। उनकी जीने छत्तापो में से, दो डेरे राबर्ट और क्रियाज और प्यारी विटिया ऐलेन, दो का जन्म भी यही हुआ और आज भी रमूनिश ग्रुम परिवार को याद करता है।

भूवात आन्दोलन के शुरु होने पर डोनाल्ड को बड़ा आनन्द हुआ और उन्होंने मध्य प्रदेश की पदयात्रा की। जहाँ भूदान में जमीन मिली, जिसे भूमिहीनों में बँट जाने पर उनकी अहिंसा की खति का दर्शन हुआ। बाद में उन्होंने अमेरिका का दौरा किया और फिर इन्डोनेशिया गये। १६४ थोड़ा दिन से अपने बड़े पुत्र राबर्ट के आस्ट्रेलिया में बस जाने पर वह भी आस्ट्रेलिया चले गये थे और वहाँ भी नागरिकता ग्रहण कर ली थी।

लेकिन बीच-बीच में भारत आते रहते थे। १९४९ की दिसम्बर में बड़े दिन पूर्व के जवतर पर वह विनोदानी से पंचाब में मिले और पचीस दिन तक पदयात्रा में साथ रहे। इस पर उन्होंने एक पुस्तक 'विद विनोदा' लिखी है। डोनाल्ड अपनीपद (विनोदा इत टीका) का भी उन्होंने अर्पणी में अनुवाद किया। इसके अलावा अनेक लेख व निबन्ध लिखे।

विनोदानी ने उनको प्यार का नाम दिया-लोडबन्पु ग्रुम। इसके उन्होंने शर्क किया और वह सचमुच लोडबन्पु ही गये थे। साथ आत्म उनका पर था और जन-सेवा उनका एक मात्र धर्म। वह सच्चे माने में विश्व नागरिक थे और हृदय के बड़े सरल व उदार। अतिथि-सत्कार को उनमें और भावी एशिया में बूट-बूट कर भरा था। पितामह वैज्ञानिक

के दर्शन करने के पूर्व में घुम-दर्शानि के साथ सन्दन में रहा और जेरेक विपणो पर उनसे चर्चा होती रही।

लोडबन्पु अपनी यात्रा के दौरान एक बार एलाहबाद आये। मैं उनके साथ घूमने निकता। सड़क पर एक युवती भयन झाड़ू लगा रही थी। लोडबन्पु ने उसकी तरफ शारा करके कहा— "जानते हो, भारत की गरीबी की मेरी बचीटी क्या है?" मैंने पूछा—"आप क्या करते हैं?" तो वह बोले—"भारत के भविष्य की रक्षा। जब भी छोटी-छोटी साड़ू, हाथ में लिये शर्दे बमर सुबा-कर सफाई करने पड़ती है। आपकी कई योजनाएँ निरस्त गयी, लेकिन क्या आपके योजनावार इनकी साड़ुओं में शर्दे (या हैजिल) गही लगवा सकते जिससे वे बपर सिधो गिये साड़ू लगा सकें?"

आज स्वाधीनता की रजत-जयन्ती के शरद में लोडबन्पु ग्रुम का यह दर्द का वाक्य एक चुनौती बनकर सामने आता है। क्या हम सफलतापूर्वक इसका जबाब दे सकेंगे?

दिलकोर वैज्ञानिक और लोकबन्पु ग्रुम, दोनों महान विभूतियों की पावन स्मृति को सतत प्रणाम। —बापू

लोकबन्पु डोनाल्ड ग्रुम के निधन-पर शोक-सन्देश

सर्वे सेवा सच के अध्यायी थी सिद्धराज उद्वा ने ११ अगस्त को दिव्यो के पास हुआई शर्दे के पास हुई वान दुर्घटना में लोडबन्पु डोनाल्ड ग्रुम के सहाय्यिक निदान पर हार्दिक शोक प्रकट किया है। घुम-परिवार के प्रति सहानुभूति का तार त-तय भेजते हुए धी उद्वा ने कहा है कि बरशे तक भारत में सेवा करनेवाले कोसलक घुम को दुःख मृत्यु से भारत के सर्वोदय कार्यकर्ताओं को गहरा धनका लगा है। धी ग्रुम को दोहरा विश्व-शान्ति-आन्दोलन अनाप-सा हो गया है।

एसी आशय का सहानुभूति-सन्देश स्वाधिवर से तार द्वारा सर्वोदय-नीति की जयन्तीका सायापन ने भी भेजा है।

सर्वोदय-मित्र अभियान : संयोजन के लिए कुछ सुझाव

सर्वोदय-मित्र और सर्वोदय सहयोगी

देश में सर्वोदय विचार के लिए व्यापक लोक-सम्मति हासिल करने तथा आन्दोलन को सुदृढ़ आर्थिक लोकाधार प्रदान करने के लिए ३० जनवरी, १९७३ एक देश भर से दस लाख सर्वोदय-मित्र और बड़ी संख्या में सर्वोदय सहयोगी बनाने का निर्णय सर्व सेवा सच के किया है।

अपेक्षा यह है कि इस वर्ष ११ सितम्बर से सर्वोदय-मित्र बनाने का गुणारम्भ किया जाय और सद्योंक पूर्व के लिए १५ जनवरी से ३० जनवरी तक छारे देश में सामूहिक-अभिप्राय लेते।

भाषा है, दस वर्ष के लिए निर्धारित यह लक्ष्य हम लोग अवश्य प्राप्त कर सकेंगे और आगामी वर्षों के लिए ऐसी परम्परा की नींव डाल सकेंगे जिससे प्रतिवर्ष १५ दिन के सामूहिक प्रयास से आन्दोलन को पक्का साधन प्राप्त हो जाय।

अभियान के संयोजन के लिए आवश्यक सूचनाएँ तथा लक्ष्यों का प्रवेशानुसार विभाजन विमानानुसार है।

इस अभियान के सम्बन्ध में आप क्या कार्यवाई कर रहे हैं, सूचित कर अनुग्रहीत करें।

सर्वोदय मित्र : सर्वोदय विचार और आन्दोलन को सम्मति-स्वरूप प्रतिवर्ष एक रूपका प्रदान करनेवाले सर्वोदय-मित्र होंगे।

सर्वोदय-सहयोगी . सर्वोदय विचार और आन्दोलन के लिए प्रतिवर्ष ६० (११) (एक सौ ग्यारह रुपये) प्रदान करनेवाले सर्वोदय-सहयोगी होंगे।

सर्वोदय-संगठन : प्रदेश स्तर पर प्रदेश सर्वोदय मण्डल तथा जिला और नगर स्तर पर जिला एव नगर सर्वोदय मण्डल ही अभियान का संयोजन करेगा। जहाँ आवश्यक संख्या में लोकसेवक न बनने से ऐसे संगठन न हों वहाँ प्रदेश सर्वोदय मण्डल द्वारा अधिकृत सर्वोदय-केन्द्र और

कार्यालय अभियान का संयोजन करेंगे। मामान्यतः तीन से पाँच तक लोकसेवक बनकर सर्वोदय-केन्द्र बनाया जा सकता है, तथापि एक केन्द्र को प्रदेश सर्वोदय मण्डल द्वारा भाष्य और अधिकृत किया जाना आवश्यक है।

रतीर-बही अभियान के लिए सर्वोदय-मित्र और सहयोगी की रतीर-बहियाँ प्रदेश सर्वोदय मण्डल की ओर से ही छाना चाहिए तथा जिला और नगर के लिए निर्धारित लक्ष्यका के आधार पर वहाँ भेजना चाहिए। रतीर-बही के कट्टे या नीचे की प्रति में सर्वोदय मित्र और सहयोगी का नाम और पता स्पष्ट लिखा जाना चाहिए।

रजिस्टर सर्वोदय-मित्र और सर्वोदय-सहयोगी के रजिस्टर जिला, नगर और प्रदेश स्तर पर रखना आवश्यक है। इन रजिस्टर में मित्र और सहयोगी का नाम, पता, तारीख तथा वर्ष इत्यादि स्पष्ट लिखना चाहिए।

अशुभान राष्ट्रीय कार्य-हेतु मद्रह का १० प्रतिशत सर्व सेवा सच को भेजना अनिवार्य है। प्रदेश, जिला और नगर में संग्रह का विभाजन निम्न प्रकार हो यह प्रदेश सर्वोदय मण्डल निर्दिष्ट करे।

बम्बई, दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास, हैदराबाद आदि महानगरों से प्रायः संग्रह की राशि का ५० प्रतिशत राष्ट्रीय कार्य में लगे, यह अवहित है।

अभियान के लिए कुछ कदम

१. सर्व सेवा सच के अध्यापक की अपील सच के अध्यापक इसके लिए अपील प्रगति करे। इस अपील को प्रांतीय भाषाओं में अनुदित कर अर्थात् किया जायगा।

२. प्रादेशिक स्तर को अपील : प्रदेश स्तर पर स्थित सर्वोदय कार्य का उत्प्रेक्ष करके हुए तथा आन्दोलन का मदय और कार्यक्रम स्पष्ट करते हुए एक

अपील जारी करना चाहिए।

३. सर्वोदय का घोषणा-पत्र : शीघ्र ही प्रसारित किये जानेवाले इस घोषणा-पत्र का प्रांतीय भाषाओं में अनुवाद कर इसे प्रकाशित किया जाय और इसे सर्वोदय-मित्र और सहयोगी को दिया जाय।

४. रचनात्मक सहायता से सम्पर्क : गांधी-निधि, वस्तु-व्या द्रष्ट, हरिजन सेवक सच, आदिवासी, सर्व सेवा सत्याई, खादी-भारत चौक सत्याई आदि के केन्द्रों पर कार्यकर्ता-सभा आयोजित की जाय। आन्दोलन के वृद्धि स्पष्ट किये जाय, कार्यक्रमों को सर्वोदय-मित्र बनाया जाय तथा उनसे सामूहिक अभियान के लिए समय-दान माँगा जाय।

५. छात्री-ग्रामीणोद्योग सत्यायों से विशेष अपेक्षा इन सत्यायों के माध्यम से नस्लिन, डूनकर, दर्नी, रगरेज, तथा अन्य कारीगरों तक पहुँचा जाय। इनकी सहायता की जाय, विचार समझाया जाय और उन्हें सर्वोदय-मित्र बनाया जाय।

६. आचार्यकुल, उरण-आदिसेना, और शिक्षक संगठन के माध्यम से विद्यार्थी और शिक्षक-समाज तक पहुँचा जाय।

७. शासकीय एव अर्द्ध-शासकीय विभागों के कर्मचारियों तक विमानानुसंध और कर्मचारी-मण्डलों के माध्यम से पहुँचा जाय।

८. धर्मिकों के बीच उनके संगठनों के माध्यम से पहुँचा जाय। रात्रतिक पत्रों द्वारा निमणित अलग-अलग धर्मिक संगठनों से अलग-अलग सम्पर्क करना होगा।

९. भाषाओं और उद्योगपरियों को सर्वोदय-सहयोगी बनाना सरल है। अतः इनसे इसी के लिए प्रयत्न करना चाहिए।

१०. नगरों में अनेक प्रकार के दीर्घकालिक एवं धार्मिक दृष्ट होते हैं। इन दृष्टों से भी सम्पर्क स्थापित करना चाहिए और दृष्ट सहयोगी बनाना चाहिए।

११. प्रायदायी-गाँवों की प्राथमिकी को सर्वोदय-सहयोगी तथा भ्रूतन दादा और आदादा की सर्वोदय-मित्र बनाया

प्राहित।

रिपोर्ट : जाने काम की रिपोर्ट
 और अभियान-सम्बन्धी जानकारी धप के
 प्रधान कार्यालय तथा सर्वोच्च प्रेश एजेंस
 १२८, निलयाप, एन्डो-४ (म० प्र०)
 को अवश्य भेजिए ।

सर्वोच्च-मित्र-अभियान

(११ सितम्बर, १९७२ से ३० जनवरी,
 १९७३) वर्षाका प्रादेशवार विभाजन

१. महाराष्ट्र	१,५०,०००
२. मध्य प्रदेश	१,००,०००
३. उत्तर प्रदेश	१,००,०००
४. गुजरात	१,००,०००
५. बिहार	१,००,०००
६. आन्ध्र	२०,०००
७. कर्नाटक	५०,०००
८. तमिलनाडु	५०,०००
९. पंजाब	५०,०००
१०. हरियाणा	५०,०००
११. राजस्थान	५०,०००
१२. उत्तराखण्ड	५०,०००
१३. दिल्ली	१२,०००
१४. हिमाचल	२५,०००
१५. बंगाल	२५,०००
१६. असम	२५,०००
१७. केरल	२५,०००
१८. जम्मू-काश्मीर	१०,०००
१९. नागालैण्ड	१०,०००
२०. मीमा	१०,०००
२१. गोविन्दपुरी	५,०००
२२. मेघालय	५,०००
२३. पकिस्तान-पठान	५,०००
२४. अण्डमान	१,०००
२५. अरुण केन्द्र शासित प्रदेश	२,०००

नोट : यह विभाजन मात्र सूचक है ।
 प्रदेश सर्वोच्च मण्डल द्वारा आवश्यक
 समायोजन कर सकते हैं। यथाभित्त यथायोग्य
 के बारे में हमें सूचित करने की कृपा
 करें ।

नरेन्द्र कुंभे

सदस्य, सर्वोच्च धप

आन्दोलन के असाधारण

नशाबन्दी कार्यकर्ता सम्मेलन

दुबौर, १८ अगस्त । प्रायः जान-
 कारी के अनुसार आगामी ९-१० सितम्बर
 को जबपुर (राजस्थान) में ४० भा०
 नशाबन्दी कार्यकर्ता सम्मेलन होगा निश्चित
 हुआ है । यह सम्मेलन नशाबन्दी आन्दो-
 लन के इतिहास के अत्यन्त नाजुक अवसर
 पर हो रहा है । गुजरात राज्य के अति-
 रिक्त क्षेत्र सभी राज्य सरकारों ने
 नशाबन्दी नीति की धोरण-सूचना की
 है और अपने प्रदेश की शर्तों जनता
 का आर्थिक एवं सामाजिक स्तर ऊँचा
 उठाने के बजाय जानकारी कर (आन्दोलन)
 के मोह में शराब की दुकानों के द्वार
 उनके लिए खोल दिये हैं । राज्य सरकारों
 एवं राजनैतिक दलों के नशाबन्दी की
 नीति के प्रति उदासीनता दुर्भाग्यवश
 नयी पीढ़ी को भी मार्क यों एव नवीति
 पदायों के क्षेत्र के लिए प्रेरणाहित
 किया है । ऐसी विवट परिस्थिति में
 नशाबन्दी विचार-विमर्श होगा ।

सम्मेलन में भाग लेनेवाले प्रति-
 निधियों के लिए रेलवे-कटेशन प्राप्त
 करने के लिए रेलवे विभाग से सम्पर्क
 किया जा रहा है ।

दरभंगा जिला सर्वोच्च कार्य- कर्ताओं का आदिवासी शिविर

सङ्कलित पाठशाला कल्पितेश्वर स्थान
 में दिनांक ५, ६, ७ अगस्त '७२ को
 जिले के प्राथम्य कार्यकर्ताओं का
 एक त्रिदिनीय शिविर किया गया ।
 इसमें ४४ कार्यकर्ताओं ने भाग
 लिया । शिविर-कार्यों के दायित्व नकोदर
 सम्मेलन के निरन्तर के अन्तर्ध में
 निर्णय हुए । एतदर्थ रहे सर्वे
 प्रथम सहस्रा बैठक के निरन्तर, बाद
 में लुहेली सङ्गपुर, खादीधाम और फरदा
 की पंचों के मुलाकिक ही यह शिविर

आयोजित हुआ । शिविर की अध्यक्षता
 श्रीमन्तराम मिश्र ने की । जरायाहित
 आयोजन व्यवस्था में मुख्य आयोजक
 श्री मदन शास्त्री रहे । श्री उदित नाया-
 यणको, श्री रमचन्द्रो श्री देवानन्दो,
 श्री रामगुलब ठाकुरजी ने सहयोग
 दिया ।

बैठक में सर्वसम्मति से यह उप-
 थाया गया कि—

(१) आन्दोलन के जिला स्तरीय
 सङ्गठनों को सक्रिय व सहम बनाया
 जाय । सर्वोच्च मंत्री मण्डल की स्थापना
 की गयी ।

(२) सर्वोच्च-कार्यकर्ता क्षेत्र तय करें
 और उनमें सघन कर से काम करें ।

(३) सर्वे की अवधि में भूदान की
 जमीन बनाने के लिए भूदान यज्ञ समितियों
 के साथ सहयोग करें ।

—श्री शकुन भण्डारी

चम्बल घाटी पुनर्वासि बोर्ड

भोपाल, १८ अगस्त । मध्यप्रदेश
 सरकार ने चम्बल घाटी पुनर्वासि बोर्ड
 की घोषणा कर दी है । इस बोर्ड के
 अध्यक्ष मुख्यमंत्री श्री प्रकाशचन्द्र ठेठो
 होंगे तथा इसमें कुल ४० अन्य सदस्य
 रहेंगे ।

सरकार ने चम्बल घाटी शान्ति
 मिसन के दो व्यक्तियों को बोर्ड में
 उपाध्यक्ष पद दिया है । कुल तीन उपाध्यक्ष
 होंगे, जिनमें मिसन की ओर से दो व्यक्ति
 स्वामी कृष्णानन्द एवं श्री देवेन्द्रकुमार
 गुड्ड तथा तीसरे शासन की ओर से
 विधिमंत्री रहेंगे । इसके प्रतिरिक्त मिसन
 के भी सुभाषराय बोर्ड के एक मंत्री होंगे ।
 राज्यमंत्री श्री बाबू राम चतुर्वेदी को
 सदस्यों में सम्मिलित किया गया है ।

सदस्यों में उच्चआधिकारियों, विद्या-
 यको, पत्रकारों तथा निरन्तर-कार्यकर्ताओं
 एवं प्रमुख समाज-सेवियों को सम्मिलित
 किया गया है । सदस्यों में, जो नायकीय
 प्रतिनिधि सदस्य के रूप में सम्मिलित

किये गये हैं, वे हैं—मुख्य सचिव, पुलिस महानिरीक्षक, विशेष पुलिस महानिरीक्षक तथा विस, गृह, राक्षस, समाज-तत्त्वाण, शिक्षा-विभागों के सचिव, उस्तादन मायुक्त, विशेष सचिव गृह व विशेष सचिव उद्योग, सभामायुक्त रीवां व ग्वालियर। ग्वालियर व रीवां में हॉन्ने-वाली बैठकों में वहाँ के जिलाधीश व पुलिस अधीक्षक विशेष आमंत्रित होंगे। बसासकीय सदस्यों में सर्वथी पहाडसिंह, रघुवरदास, परसाईया, शीतलासहाय, महेशकुमार मानव, दशरथ जैन, मरदार-शिव, चौधरी राधोगम, भागवत साहू, चन्द्रकला सहाय, चोटीक्या वाद हैं। इनके अतिरिक्त मिशन के बार प्रमुख कार्यकर्ताओं सर्वथी चतुर्भुज पाठक, तहसीलदारसिंह, महावीर सिंह, रामचन्द्र नवाल को लिया गया है। तिन दो पत्र-पत्रों को बोर्ड में प्रतिनिधित्व मिला है, वे दैनिक नवप्रभात, ग्वालियर एव दैनिक भास्कर के संपादक हैं।

शिक्षा में क्रान्ति दिवस

नयी दिल्ली, १० अगस्त। ९ अगस्त के ऐतिहासिक दिन को राष्ट्रीय राजघाट अहिंसा विद्यालय से सम्बद्ध दिल्ली विश्व-विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने शिक्षा में क्रान्ति दिवस के रूप में मनाया। लगभग ६० छात्र-छात्राओं का एक ही नुसल राजघाट स्थित गांधी समाधि से प्रारम्भ होकर नगर के विभिन्न मार्गों से होता हुआ बोट क्लब पहुँचा। सभी छात्र-छात्राएँ अपने हाथों में तल्लिमाँ लिये हुए थे तिनपर आज की प्रचलित शिक्षा-प्रणाली को बदलने की माँग सम्बन्धी चारप लिखे हुए थे। छात्र-छात्राओं की राजघाट से बोट क्लब तक की अपनी ७ मल की यात्रा के दौरान हजारों लोगों की शिक्षा-नीति में परिवर्तन की माँग सम्बन्धी परचे बाँटे। जब जुलूस बोट क्लब के निकट पहुँचा तब प्रसिद्ध सर्वोदय नेता श्री जयप्रकाश नारायण ने जुलूस में भाग लेनेवाले साधियों को अपना आशीर्वाद दिया और आशीर्वाद

के प्रति अपनी शुभकामना प्रकट की। बोट क्लब पर विचारियों की ओर से एक माँग-पत्र पठा गया जिसमें माँग की गयी कि शिक्षा-नीति में तुरन्त परिवर्तन किया जाये, नयी पीढी के लिए नयी शिक्षा दी जाये, शिक्षा उत्पादक हो और उसका सम्बन्ध जीवन से हो, शिक्षा शिक्षा प्रधान न हो, तथा धरकारों नियन्त्रण से मुक्त हो। सभा के बाद चार लोगों का एक प्रतिनिधि मण्डल अपना माँग-पत्र प्रस्तुत करने के लिए शिक्षा मन्त्रालय भी गया।

जयप्रकाश बाबू कानपुर सर्वोदय साहित्य स्टाल पर

कानपुर ७, अगस्त '७२। श्रीजयप्रकाश नारायण बाबू से दिल्ली होकर चम्बल-घाटी जाते हुए काज रात कानपुर स्टेशन से मुजरे, नगर सर्वोदय कार्य-कर्ताओं, शान्ति सैनिकों और तक्ष्य शान्ति सैनिकों ने सर्वोदय साहित्य स्टाल पर उनसे भेंट की। विनयभाई ने उनसे सभी भाई-बहनों का परिचय कराया और स्टाल आदि प्रवृत्तियों का विवरण बताया। नगर सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष श्री इरवाल बहादुर सिन्हा ने नगर के नाम की जानकारी दी।

स्मरण रहे कि सर्व सेवा सच प्रकाशन के उस्तादघान में गांधी शान्ति प्रतिष्ठान केन्द्र द्वारा कानपुर सेटुल स्टेशन पर फर्म प्रज्ञादरपण द्वारा विमित इस स्टाल का कार्यात्मक गत अक्टूबर से हुआ है। गत चार माह में स्टाल में कुल ८,९२६ ७७ ६० का साहित्य बिका।

पदपात्रा

हरिद्वारा प्रान्तीय सर्वोदय मण्डल के उस्तादघान में दिनांक १ अगस्त '७२ की बयोबुद्ध सर्वोदय नेता श्री शोमरकाय विद्या के मार्गदर्शन में दो पदपात्रा टोलियों का गठन किया गया। ये टोलियाँ काशीवासी २१ अं अलित भारत सर्वोदय समान सम्मेलन तक पदपात्रा करती रहेंगी।

अन्य कार्यकर्ताओं तथा प्रामसाधियों

के अतिरिक्त सच के सहस्रंश्री श्री यशपाल मित्तल, श्री हरयप्रकाश शर्मा कार्यकारी अध्यक्ष, हरिद्वारा सर्वोदय मण्डल एवं माता श्रीमती लक्ष्मी विद्या भी धीरु रहें।

रतलाम जिले में ग्रामसभाओं का गठन

रतलाम जिले के रतलाम विनास खण्ड में २९ जुलाई से ५ अगस्त तक ग्रामसभा गौ व विरमावल के पटेल श्री तुलसीराम के नेतृत्व में ग्रामस्वराज्य-पद्यात्रा सम्पन्न हुई। परिणामस्वरूप कुशानगर, रसासोडा, विरमावल, जावडा, तलगाध, बडतपुर, भैलोडा, मुडोला ग्रामसभा गौ व ग्रामसभाओं का गठन किया गया व कार्य भी योजना बनायी गयी। विशेषता यह रही कि ग्राम में रतलाम नगर के सर्वोदय प्रेमी प्रतिष्ठित व्यापारी श्री चम्पालाल गिरीदिया और श्रीमती सुलोभाई के अतिरिक्त अन्य छ सदस्य ग्रामसभा गौ के थे। पद्यात्रा का अन्ध प्रभाव हुआ, प्रेरणा मिली व उत्साह बढ़ा। गौ के अन्ध निरास भाये भाँदें तो ग्रामस्वराज्य का काम जारी बड़गा, यह अनुभव हम यात्रा से हुआ है।

काम चाहनेवाले को काम मिलेगा

९ अगस्त को सेवासाम में आश्रम प्रतिष्ठान तथा सर्व सेवा सच की कार्य-कारिणी की मिली-जुली बैठक में रजत-जयपी तमाराह में सेवासाम कायम का ७७ योगदान हो, इस पर बातचीत करते हुए संकला लिया गया है कि १५ अगस्त से ग्राम-पत्र के संतो में आश्रम के योग पुन-पुनकर एते व्यक्तियों को एक वेहरित बनायेंगे किनके पास जीविका या तो है ही नहीं और यदि है भी तो बहुत अधूरी। निर्णय किया गया है कि जो भी व्यक्ति काम चाहता है उसे एक कम्बर परछा दिया जायेगा तथा बिना इस बात पर विचार किये कि उस क्लब के माध्यम से वह बिना मूत बाउला है उसे दो रुपया रोज दिया जायेगा।

इसी तरह त्रिसे वातना नहीं जाता उसे प्रसिद्धि विना जानेगा। प्रसिद्धि के दौरान उसे भी दो दरवा मजदूरी मिलती रहेगी तथा ऐसे व्यक्ति जो दिन भर में दो रुपये के व्याज का मूल वातेंगे उन्हें उसी हिसाब से मजदूरी दी जायेगी। समाधान आधम प्रविष्टान ने यह भी हम दिना है कि स्वाध्म और स्वच्छता के विचार से आस-पास के गांवों में सर्वोपयोग विना आय और जहाँ सम्भव हो वहाँ प्रामाण्यता की मदद से और नहीं जो सुविधानों की मदद से गांव-गांव में सार्वजनिक सुविधानों का निर्माण किया जायेगा।

जयप्रकाशजी द्वारा पूर्ण खादी के उपयोग का प्रण

नई दिल्ली, ९ अगस्त। भारतीय स्वाधीनता की २५ वी वर्षगांठ पर देश भर में एक साथ खादी पहननेवाले परिवारों को दब कराने की खादी कमिशन की योजना का स्वागत करते हुए प्रसिद्ध सर्वोपयोग नेता श्री जयप्रकाश नारायण ने यह प्रण व्यक्त किया है कि वे अपना स्वच्छ खादी के अतिरिक्त भी निज कुछ वस्त्रों का उपयोग कर लेते वे अपना त्याग कर जब पूर्णतः खादी का ही उपयोग करेंगे।

खादी कमिशन की प्रेषित अपने संदेश में श्री जयप्रकाशजी ने कहा कि खादी सामाजिक कमिशन के नये अध्यक्ष श्री जी० रामचन्द्रजी की अनील-किं स्वराज्य की रजत जयन्ती के वर्तमान अवसर पर भारत के कम-से-कम एक लाख परिवार केवल खादी के वस्त्र का व्यवहार करने का प्रण करें—ता में हृदय से स्वागत करता हूँ। मेरी पत्नी प्रभावती तो इस बात का पालन पिछले २५-२० सालों से कर रही हैं। मैं कुछ ऊनी या नायलन के वस्त्र, रैपेटर आदि जैसे वस्त्रों का व्यवहार करता रहा हूँ जो अवसर खादी के नहीं होते। विदेश

यात्राओं में भी केवल खादी के ही कपड़े पहनूँ, ऐसा नहीं हो पाता। तो जब रामचन्द्रजी की अनील पर मैं भी प्रण करता हूँ कि वेवल खादी के वस्त्रों का ही उपयोग जीवन भर करूँगा चाहे स्वदेश या विदेश में। मैं अपने देशवासियों से अनील करने का अपेक्षारी नहीं हूँ। मेरे अपने प्रण मात्र से किसी की मदि प्रेरणा मिले तो मुझे प्रसन्नता होगी।

तरुण शान्ति सेना की सदस्यता

प्रतिवर्ष आठ माह से तरुण शान्ति सेनियों की सदस्यता का नवीनीकरण होता है। तरुण शान्तिसेना की सदस्यता के प्रयुक्तों से अपेक्षा है कि वे सदस्यता के लिए आवेदन-पत्र भरकर एक रुपये के डाक टिकट या मनोआर्डर के साथ तरुण शान्तिसेना, राजघाट, वाराणसी-१ (उ० प्र०) को भेजें।

यदि आवेदन-पत्र न हो तो उपयुक्त पत्र से भेगाया जा सकता है।

जिन मित्रों ने जनवरी १९७२ के बाद आवेदन-पत्र भरकर भेजे हैं, उन्हें धुआर भेजने की आवश्यकता नहीं है।

वेतगांव के अखिल भारतीय तरुण शान्तिसेना सम्मेलन में :

(१) तरुण शान्ति सेना के लिए सदस्यता की बालू-डीमा वडाकर १६ से २० रुपये कर दी गयी है।

(२) सदस्यता-शुल्क का विभाजन अब स्थानीय केन्द्र, जिला व राज्य में म किया जाकर पूरा वाराणसी राज्यतन को ही भेजा जायगा।

नयी तालीम

हिन्दी मासिक

वार्षिक चन्द्रा : ८ रुपये

सर्व सेवा सच, पत्रिका विभाग
राजघाट, वाराणसी-१

वन-व्यवहार का पता :
सर्व सेवा सच, पत्रिका-विभाग
राजघाट, वाराणसी-१
घर, सर्वसेवा फोन : ६४१९९

सम्पादक राममूर्ति

इस अंक में

ग्रामदान के लिए राष्ट्रीय सामूहिक-अभियान	
—श्री नरेन्द्र दुबे	७३८
युवकों का भी सरकारीकरण, पहिने क्या ? —सम्पादकीय	७३९
विनोबा-संवाद	७४०
समाज का नेतृत्व : शिक्षक की भूमिका	
—श्री धीरेन्द्र मन्मथार	७४२
शिमला-समझौता	७४२
लोकयात्रा से	
—सुधी उपानहन	७४४
नरक-समर्पणकारी कार्यक्रमों की समस्याएँ : एक धुंधली तस्वीर	
—श्री रामचन्द्र नवाल	७४६
सर्वोपयोग मित्र-अभियान	
—श्री नरेन्द्र दुबे	७४९
अन्य शतम्भ	
आन्दोलन के समाचार, छापीरी के पत्रे।	

सत्यग्रह

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र



सत्याग्रह का मूलभूत सिद्धान्त

१. मनुष्य कितना ही स्वार्थान्ध क्यों न बन गया हो और चाहे जैसे घातक अथवा कुटिल उपायों से काम लेने की वनकी तैयारी क्यों न हो, फिर भी अपने दिल की गहराई में उसे यह प्रतीति होती है कि सत्य ही सबसे श्रेष्ठ है और इसी कारण उसके मन में सत्य के लिए आदर और भय भी रहता ही है। मनुष्य मात्र के हृदय में सत्य के लिए यह जो सुन्दर प्रतीति, आदर और भय पाये जाते हैं, वे सत्याग्रह के ऋक्ष की बुनियाद हैं। इसीको मनुष्य के हृदय में विद्यमान 'अन्तःकरण की आवाज' कहा जा सकता है।

२. स्वार्थ के वश होनेवाला मनुष्य कुछ समय तक अन्तःकरण की इस आवाज की उपेक्षा करता है अथवा इसे दबा देने की कोशिश में रहता है; किन्तु यदि उसका विरोधी सच्चा सत्याग्रही सिद्ध हो, तो अन्त में उसे इस आवाज को सुनना ही पड़ता है।

३. उसके सामने यह आवाज अनेक रूप में प्रकट होती है : उसे अपने अन्याय का विद्वान्त हो जाना और उसके लिए परपाताप हो, वह उसका श्रेष्ठ प्रकार है। इसीका नाम 'हृदय-परिवर्तन' है।

४. किन्तु इससे कम तीव्रता के साथ भी यह आवाज उठ सकती है ! उदाहरण के लिए, लोक-लाज के रूप में अथवा सर्वनाश के भय के रूप में।

५. जब सत्याग्रही का विरोधी कोई एक व्यक्ति नहीं, पर एक राष्ट्र, कौम या संघ होता है, तब ऐसी अन्तर्नाद उसके किसी अधिक चरित्रवान मनुष्य को पहले सुनाई पड़ता है और पहले उसका हृदय परिवर्तन होता है। बाद में वह मनुष्य अपने लोगों को यह आवाज सुनाता है और सत्य का पक्ष लेकर उनका विरोध भी करता है।

६. प्रत्येक सत्याग्रह का साध्य यह है कि विरोधी के हृदय को अन्तःकरण की आवाज के प्रति जागृत किया जाय। अन्याय को दूर करने के लिए विरोधी को जो-जो भी कदम उठाने चाहिए, वे सब इस साध्य में से, इसके परिणाम-स्वरूप, अपने-आप ही उठते हैं।

'जायें तो जायें कहाँ ?'

५ किदारबाई साह

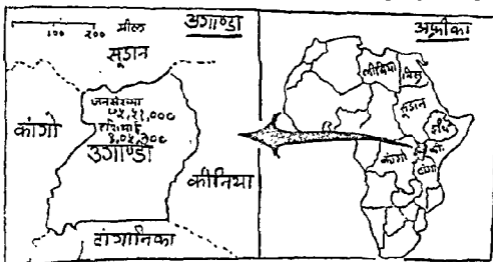
१९६८ में ब्रिटेन की पार्लियामेण्ट ने एक ऐक्ट पास करके ब्रिटेन में रंग-भेद पर आधारित दो दर्जे की नागरिकता-नीति को स्वीकृति दे दी। पूर्वी अफ्रीका से बचने के लिए जा रहे एशियाई ब्रिटिश नागरिकों का प्रवाह रोकने के लिए उस समय की लेबर सरकार को ऐसे धर्मनाक नदम उठाने की आवश्यकता पड़ी। दो तरह के नागरिकों के बीच में एक बुनियादी अंतरमानता का तत्व साक्षित करके हजारों लोगों को नागरिक होने हुए भी स्टेटनेसनेस (अनागरिकता) की अजीब परिस्थिति में एनाएक डाल दिया। इससे दी की छठी दशक के पहले वर्षों में पूर्वी अफ्रीकी देशों की स्वतंत्रता के बाद की व्यवस्था के लिए जब सत्ता-महाभारत चल रहा था, तब इन देशों में बस रहे ब्रितानी और एशियाई मूल के लोगों के भविष्य का प्रश्न सामने आया। ये प्रवासी अपने-आप को असुरक्षित महसूस कर रहे थे। और उनके, पास कर गोरे लोगों को, निश्चिन्त करने के लिए ब्रिटिश नागरिकता का बिलन्य दिया। एशियाईको को दिया

नागरिक अधिकार प्रायद एडॉलए था कि ब्रिटिश सरकार को यह अंधा नहीं थी कि वे लोग ब्रिटेन में बचना पसन्द करेंगे, तथा गोरे और एशियाईको के बीच भेद करने की आवश्यकता नहीं देखी। लेकिन यह अपेक्षा समत निवृत्ती और बड़ी संख्या में कीनिया के एशियाई ब्रिटेन में अपना घर बनाने लगे। नतीजा यह हुआ कि २३ फरवरी १९६८ के दिन ब्रिटिश पार्लियामेण्ट में इमाइजेशन बिल का प्रवेश हुआ, ऐक्ट बना। और एक देश ने अपने ही नागरिकों को मुक्त प्रवेश देने से इनकार किया। बिल-अंश होते और ऐक्ट बनने के बीच ब्रिटिश जनता और प्रेश ने एक जयवंत आवाज उठायी। लेकिन यह आवाज असफल रही। ब्रिटिश जनता ने रंगभेद-नीति को इस आधुनिक युग में सत्कारी तौर पर स्वीकार कर लिया।

इस ऐक्ट के फलस्वरूप हजारों ऐशियाई "ब्रितानी पारपत्रधारियों" की मानसिक स्थिति शरणाधी की-सी हो गयी। और, हर देश उनको स्थान देने से चकराने लगा। यह एक ऐसी जमात सड़ी

हो गयी, जिनको पूर्वी अफ्रीकी देशों ने बाम करने की परवानगी देना बन्द करवा चुक कर दिया, ब्रिटेन और अन्य देशों ने सीमित संख्या में प्रवेश दिया और जिन देशों ने मुक्त प्रवेश दिया उन्होंने भीविता का साधन नहीं दिया। यह जमात दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही गयी।

इस बीच उगाण्डा के राष्ट्रपति ईडी अमीन पर "दुदा की मेहरबानी" हुई और ८० हजार उगाण्डा के एशियाईको का भविष्य एकाएक अंधकारमय हो गया। अमीन को "दुदा ने एक स्थान में बताया कि ब्रिगानो पारपत्रधारियों का उगाण्डा से निष्कासन उगाण्डा की प्रगति के लिए आवश्यक है।" राष्ट्रपति ने घोषणा की कि ९० दिन के भीतर वहाँ के १७ हजार ब्रितानी पारपत्रधारियों को देश छोड़ना होगा, अब वे जायें तो कहाँ जायें ? ब्रिटेन ने देरी से "उरास्ता" के साथ अपने वादा को निभाना शुरू किया, अपने नागरिकों को अपने देश में प्रवेश देना स्वीकार किया। यह स्वीकृति मिली ही थी कि एक नवी समस्या सड़ी हो गयी। अमीन ने ब्रिटेन के १९६४ के कानून से भी एक नदम आये बढ़ने की धमकी दी। उगाण्डा में बसनेवाले २३,००० उगाण्डा के एशियाई नागरिकों को भी देश छोड़ने [रोप पृष्ठ ७६७ पर]



क्या कोई राष्ट्र नैतिक गुणों के विना भी जीवित रह सकता है ?

● जयप्रकाश नारायण

विसी अविश्वसित और विच्छेदने मुक्त में यहाँ विशाल और ज्यादातर निरक्षर आबादी हो, अनगिनत भिन्नताएँ और सामाजिक तथा धार्मिक विरतुल अस्मानताएँ हो, लोचन सचमुच एक अपूर्व घटना है। और यह सत्य कि, यह उन २५ वर्षों तक जीवित रहा हो, जिसमें तीन-तीन बड़ी लड़ाइयाँ लड़ी जा चुकी हो, वम-से-वम दो भयंकर अभाव पड़ चुके हों, अमीर गरीब के बीच की खाई खड़ी गयी हो, बरीब आधी आबादी जीवन-निर्वाह स्तर के भी नीचे रह चुकी हो, अनेकानेक राजनीतिक पादियाँ रही हो, जिनका नेतृत्व देश के बजाय स्वयं अपने से अधिक मतलब रखनेवाले झगड़ानू राजनीतियों द्वारा होता रहा हो; राजनीति और सरकार के सभी स्तरों को दूषित करनेवाला हुनगामी प्रयत्नार रहा हो, बढ़ती बेरोजगारी रही हो, शिक्षा के क्षेत्र में निपट अस्पष्टता और दिशा तथा उद्देश्य का अभाव रहा हो जिसके परिणामस्वरूप गलत ढंग से शिक्षित प्रमादी युवकों की मस्या भोकानेवाले ढंग से बढ़ती रही हो और, जिसमें एसी तरह की अनेक दुराइयाँ रही हो, एक नौतुक के सिवाय और, कुछ नहीं है।

इस नौतुक को नई तरह से समझाने की कोशिशें की गयी हैं। यहाँ उन सरका जिक्र करने की जगह नहीं है। मेरा स्वयं अपना स्पष्टीकरण ठेहरा है। पहली बात तो यह है कि आमतौर पर हिन्दुस्तान की आजादी गांधीजी द्वारा बताये गये धार्मिकपूर्ण सामूहिक प्रयास द्वारा पायी गयी, जिससे कि बना-बनाया लोचनिय एक एंठा आधार तैयार हो गया जो लोचन के लिए बरूरी है। मुझे कोई शक नहीं है कि

यदि हिन्दुस्तान ने अपनी आजादी हिंसा के जरिये पायी होती तो ऊपर से ढाँचे के बावजूद लोचनय विसी-न-विसी प्रकार की तानाशाही का महज एक आवरण मात्र ही रहता।

दूसरी आस्था जो मुझे सुझती है वह गांधीजी के नेतृत्व में एक सुविधा-सम्पन्न सहरी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उस सार्वजनिक सामूहिक संगठन के रूप में बदल जाने में निहित है जिसकी लारों मदस्य-सध्या और शास्ताएँ सारे देश में और दूर-दूर गाँवों तक पहुँच गयी हों। आजादी मिलने पर लोकतंत्र की मकान चलाने के लिए हमसे जनता की एक बनी-बनायी पार्टी मिल गयी। इसके अलावा उन दिनों कांग्रेस अपनी सबसे निचली कमेटी से लेकर सबसे ऊँची कमेटी तक जिस तरीके से काम करती थी वह स्वयं अपने में सर्वसाधारण व हजबारे राजनीतिक आन्दोलन वारिधे के लिए लोकतंत्र के प्रशिक्षण का एक माध्यम थी। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की ये कई जीवन्त और कभी-कभी नूतानी बहनें मुने अभी तक याव हैं जब उस समय के हम युवा वामिनी-समाजवादी न केवल सत्कार पटेल जैसे दिग्गजों से ही झड़पते थे बल्कि स्वयं गांधीजी के विचारों और कार्यक्रमों तक की निशक चुनौती दिया करते थे। और हयलोगो जैसे अने बालो-पक्षों से भी गांधीजी जैसा आ्यवहार करते थे वह लोचनय का एक एंठा पाठ है जिसे भूला नहीं जा सगटा। इस पाठ की अपेक्षा है कि विरोध की न केवल बढ़ाईज किया जाय बल्कि उसे पूरी आजादी दी जाय और उसके साथ सम्मान का आ्यवहार किया जाय।

मेरी तीसरी आस्था जो मान्य सबसे

आजाद महत्वपूर्ण है, उस सार्वजनिक आ्यवहार और लोकतांत्रिक मूल्या में प्राप्त की जा सकती है जो बाद भाई नौरोजी से लेकर महात्मा गांधी तक के राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान प्रस्थापित हुए थे। आजकल यह कहना एक फंजन हो गया है कि राजनीति में नैतिकता के लिए कोई स्थान नहीं है और लक्ष्य की प्राप्ति में जो कुछ भी सहायक हो जाय वह नैतिक ही है। लेकिन लोचनय और उसके भी कहीं अधिक तौर पर लोकतांत्रिक समाजवाद, जीवन और सार्वजनिक आ्यवहार के कुछ पारस्परिक रूप से स्वीकृत मूल्या के आधार के विना और विसी रूप में ठीक से चल नहीं सकता।

अधत्तसे के साथ रहना पड़ता है कि इन तीनों पहलुओं की दृष्टि से पिछली चौथाई शती में निरन्तर 'झिझ हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप हमारे लोकतंत्र का भविष्य सम्भीर रूप से सम्बद्धान्यद बन गया है। १९४७ में उता में आने के पीछे ही बाद कांग्रेस का आन्दोलनात्मक रूप समाप्त हो गया (यों इसके सम्बन्ध में गांधीजी के अत्य विचार थे)। फिर भी, इन्होंने अपना लोकतांत्रिक स्वरूप, सार्वजनिक सगटनात्मक ढाँचा और आन्तरिक जीवनी तन्त्रि काफ़ी सीमा तक बनाये रलो। यह सब पिछले दो या तीन सालों में एकरम बदल गया है। कहने में यह जरा विरोधाभास जरूर लग सकता है, फिर भी, १९७१-७२ की चुनाव सम्बन्धी अपनी भारी विजयों के बावजूद कांग्रेस आज एक खोखले आवरण से कुछ थोड़ा ही अधिक रह गयी है। एवमें कोई अन्दरूनी तावत या पाटा नहीं है। आज यह वंश और अपने नेता के लोक-आकर्षक व्यक्तित्व के सहारे चलानी जा रही है। एवमें अज महज नाम मात्र का वा कहिये कोई अन्दरूनी लोचनय वेप नहीं रह गया है। इसके राजनेता या मुख्यमन्त्री आयातार इतने बरने किने गये नोग हैं जराय एनके, कि वे स्वयंनेता के रूप में जाने-माने लोग हो। अन्वार्द तो यह है कि ऐसे राष्ट्रीय और राज्यस्तर के

नेताओं के, जिनका कि पार्टी और लोगो के बीच अपना कोई आधार है, पर के नीचे से धरती खिसकाने को एक व्यवस्थित कोशिश की गयी है। यहाँ तक कि, जब नेहरूजी का पालियामेंट में उनकी बेटी के भाज के मुकाबले कही अधिक बहुमत था, फिर भी, संगठन के ऊँचे व महत्त्व रखनेवाले लोभो को छोट देने की ताकत उनमें नहीं थी। उन्हें भी तयानकित कामरार योजना जैसे किसी टैंके तरीके का ही सहारा लेना पड़ा।

आज जो स्थिति है वह इन्दिराजी मार्की नेतृत्व के अनुभूत हो सकती है, लेकिन एक लोकतांत्रिक संगठन के रूप में प्रतिष्ठ और एक पूछा आज तो स्वय भारतीय लोकतंत्र के लिए यह बरबादी का दुस्सा है। क्योंकि जो संगठन खुद अपने अन्दरूनी मामलों में लोकतंत्र का प्रयोग नहीं करता वह राष्ट्र के मामलों में लोकतंत्र के संरक्षण से अपना बड़ा सपना महसूस करेगा, यह उम्मीद रखना संकल्पित नहीं है। 'लोकतांत्रिक केन्द्रीय शासनवाद' को जो नेता के अधिनायकवाद के लिए बहाने का एक सरल रूसी ढंग है और जिसकी संरक्ष इन्दिराजी की काग्रंश जानबूझकर ले जायी जाती लग रही है, यदि बेरोक-रोक छोड़ दिया गया तो वह भारतीय लोकतंत्र को विचलित हो अपने सीधे में डाल लेगा।

इस प्रेरणा का बहाव के—मुझे पहली ही चीज लग रही है—दो परिणाम हैं, पहला, लोकतंत्र के लिए और दूसरा, समाजवाद के लिए। जहाँ तक पहले का सम्बन्ध है, परिणाम यह हुआ है कि अहममति का अर्थ न कोई मूल्य है न कोई स्वागत। यहाँ इस बात पर जोर देने को जरूरत है कि अहममति वाली दूसरे मन्थों में 'विचार की स्वतंत्रता' केवल एक 'बौद्धिक विनाश' नहीं है जैसा कि हमारे कम्युनिस्ट मित्र कहना पसन्द करेंगे, बल्कि एक भावसम्पन्न उत्प्रेरक माध्यम है जिसके प्रति समाज अपनी उन्नति, अपनी क्षमताओं और अपनी तकनीकों तथा वैज्ञानिक प्रगतिशील के लिए

श्रमणी है। बिना अहममति के समाज अवश्य ही गतिहीन और मूलप्रयत्न बन जायगा। लेकिन दुर्भाग्य से हमारी आज की बौद्धिक दुनिया में भय का एक प्रकार का धातक वातावरण बन रहा है। सभी विश्वविद्यालयों और शोध-संस्थानों के पूर्णतया या अधिनायक: सरकारी अनुदानों पर निर्भर रहने के कारण इस व्यापक वातावरण में शिक्षक या शोधकर्ता अपनी स्वतंत्र राय व्यक्त करने में समान रूप से बाधा अनुभव करते हैं। फोड़े-से लोग जो हिम्मत करते भी हैं उन्हें किसी न किसी रूप में चुगलना ही पड़ता है। दूसरी ओर, जो सरकार के अनुगामी हैं, वे सरकार द्वारा अनेक प्रकार से पुरस्कृत हो सकते हैं। इस स्थिति को एक निजी बातचीत में एक विद्वान ने बड़े ही मेधावी ढंग से इस प्रकार व्यक्त किया: 'बौद्धिक व्यक्ति के सामने आज जो विकल्प है: (अ) यदि वह अपनी बौद्धिक प्रामाणिकता सुधसित रखना चाहता है तो उसे पुराने शास्त्रों की तरह सादे जीवन का आदर्श अपनाना होगा। (बिना के सम्भवतः अन्तिम उक्तकल्प उदाहरण भारतरत्न स्वर्गीय डॉ० पांडुरंग रामन काने से जिन्होंने धर्मशास्त्रों पर ज्ञानो प्रसिद्ध रचना बर्म्सर्ड के ए० १० 'X' १२' आधार के मासुगी बनने में बैठकर ही जोर जिन्होंने बर्म्सर्ड विश्वविद्यालय के उपकुलपति होने हुए और होटलवार के इस्तेमाल का अधिनार रखते हुए भी ट्रान्स्मिटर हो दस्तर जाना ठीक समझा। (ब) यदि वह विश्वविद्यालय अनुदान-आधारी के वेतनमान द्वारा प्रत्येक सामान्य मुविषाओं की सामता रखता है तो देर-सवेर उसे सरकार के अनुकूल चलने की भी तैयारी रखनी चाहिए।

अंत के सम्बन्ध में तो स्थिति और भी खराब है। समाचार पत्रों की स्वतंत्रता में जैसे कम्युनिस्टों को कोई बन्नी नहीं हो जाती, फिर भी, सरकार के पास हस्तनिष्ठ उम्मात्रों को न छोड़ी लेकिन मन्त्रियों व प्रकाशकों को अनुशासन में रखने के बनेक अन्दरूनी

तरीके हैं। इन तरीकों का इस्तेमाल बढ़ता ही जा रहा है, और इसका परिणाम समाचार-पत्रों व पत्र-संविदाओं के स्तेवर पर देखा जा सकता है। कुछ साक्ष्यों अपवाद नवतक चल पायेंगे, यह इस बात पर निर्भर है कि जिन लोगो का स्वतंत्र चिन्तन व विचार में विश्वास है वे करते क्या हैं। प्रयोजन अभी ट्रान्स्मिटर एवम निकल नहीं गया है। लेकिन उसे एक सुचेत, साक्षरपूर्ण और बुद्ध-निश्चय सम्पन्न लड़ाई के बिना बचाया भी नहीं जा सकता। फोड़े-से स्वतंत्र व धीरे व्यक्तित्व यदि सतर्क रहकर सम्मिलित रूप से विरोध करते हैं तो वे इसकी ओर इसके साथ-साथ भारतीय लोकतंत्र को भी रक्षा कर सकते हैं।

समाजवाद के परिप्रेक्ष्य में देखा जाय तो एक लोकतांत्रिक समाजवादी दल की नीमत पर 'लोकतांत्रिक शासनवाद' या वैदमितिक नेतृत्व की तरफ से जाने का परिणाम यह हुआ है कि राजनीतिक शक्ति तो इस संघर्षस्थित 'वचनबद्ध' व सुविधा सम्पन्न मोकरशाही के पास है ही, आर्थिक शक्ति भी उसीके हाथों में चली जा रही है और इस वर्ग का सर्वोच्च शासन-विभाग स्वाभाविकतः प्रधान मंत्री का सचिवालय ही है। प्रकार के तोर पर तो लोकतांत्रिक समाजवाद का शोर हमें अभी भी सुनाई पड़ता है। लेकिन वर्तमान नीकरशाहीवाले समाजवाद में ऐसा कुछ भी नहीं है जो किसी ऐसे लोकतांत्रिक समाजवाद से मिलता-जुलता हो, जिसके लिए विकेंद्रोकरण, औद्योगिक लोकतंत्र, लोगों विशेषकर सुविधा-सम्पन्न—आकाशों के समाजवादी मूल्यों और इन्हें जीवन में प्रयुक्त करने की आवश्यकता की दृष्टि से शिक्षा तथा अन्य बर्से चीजों की जरूरत है। साक्ष्य है कि यह एक बटिन रास्ता है और इसका प्रधान मंत्रीवादी राजनीति से मेल नहीं बैठता। हजार यह है कि क्या नीकरशाहीवादी समाजवाद सफल हो सकता है? मुझे पंजा

लगत है यह नहीं हो सकता, जब तक कि इसका पूरा तर्क न स्वीकार कर लिया जाय; यानी सर्वव्यवस्था को ही अनिवार्य न मान लिया जाय। क्या यह देश यह होने देगा? क्या प्रधान मंत्री स्वयं इसका पूरा अर्थ समझती हैं? या क्या पुराने कुछ सदस्यों या कुछ अन्य दून-गिने लोगों को छोड़कर बायेंस के उनके सहजर्मी ही इसे समझते हैं?

अब अन्ततः स्वातन्त्र्य आन्दोलन के दौरान विकसित लोकतांत्रिक मूल्यों और सीध-व्यवहार के प्रतिमानों, जिन्होंने मेरी दृष्टि से अपना लोभतन बचाये रखने में बड़ी मदद की है, वी और रख करने पर वर्तमान स्थिति बड़ी ही निराशाजनक लगती है। इसमें शक नहीं कि स्वतन्त्रता के बाद इन मूल्यों में बराबर गिरावट आयी है लेकिन सधर आकर तो भयकर पतन हुआ है। अब तो स्थिति यह है कि जब तक कोई भी साधन साध्य की पूर्ति में महायत्न करना है तब तक वह ठीक माला जाता है। यानी किसी भी बात की अब मनाही नहीं है।

हमारे जैसे पिछड़े समाज में जहाँ लोकतन्त्र का कोई दृढ़ रूप न विकसित हुआ हो तथा जिसमें किसी विकसित समाज को बराबरी करने की प्रक्रिया न हो, निपट वृत्तीय के परिणाम देश के लिए विनाशकारी ही होंगे। श्री माण्डव्य जैसी घटना—यह तो कोई नहीं कहेंगे कि हिन्दुस्तान के मुकाबले ब्रिटेन की राजनीति कम आधुनिक है—एक देश में कोई सोच नहीं सकता। इस प्रकार राजनीतिक और प्रशासनिक भ्रष्टाचारों की भी बात यहाँ कोई सोच नहीं सकता। उदाहरण के लिए एक एम्बरसन केस सीजिए, जैसा कि पश्चिमो प्रेस समय-समय पर उद्घाटित करता रहता है। मित्राल के तौर पर, क्या कोई पत्रकार "नागरवाला बेस" की तह तक पहुँच कर उसे लोगों के सामने उद्घाटित करने की उम्मीद कर सकता है?

हाल के वर्षों में चुनाव-फण्ड जिस तरह इकट्ठा किये गये हैं, चुनाव में जो

पैसा बहाया गया है, सम्भो-चौड़े पैमाने पर फर्जी नाम छुसेड़ देने की जो प्रथायियाँ हुई हैं, "चुनाव-दूषण" पर कब्जा कर लेने की जो घटनाएँ हुई हैं, ये और ऐसे ही अन्य तरीके चुनाव को मान ओषचारिता बना देने पर तुले हुए हैं।

यह दुरगमनी राजनीतिक प्रथाचार दूसरों को भी प्रभावित करनेवाला व पतनकारी है, क्योंकि किसी भी अवि-वसित समाज में राजनीति का तो दब-दबा रहता ही है। राष्ट्रीय जीवन के सारे विस्तार, यानी व्यापार वा शान, यह

चाहे प्राइवेट हो या पब्लिक, प्रशासन पंथे, शिक्षा, यहाँ तक कि रीति-रिवाज, तौर-तरीके और वैयक्तिक सम्बन्ध, सभी पर यह हावी रहती है। लोकतन्त्र और समाजवाद की बात छोड़िए, सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या कोई राष्ट्र नैतिक गुणों के बिना भी जीवित रह सकता है? सिर्फ राजनीतियों को ही नहीं, हम सभी को इसका जवाब देना है।

श्रीमान्य 'द रीडिकल ह्यूमैलिस्ट'
अगस्त, १९७२
रुपामन्तरण रामभूषण

‘लोकवन्द्यु चारित्र्यवान व्यक्ति थे’

● विनोबा

हमारे साथी अग्रज भाई किशिनयन होते हुए भी सब धर्मों के लिए समान आदर रखनेवाले डोनाल्ड युम, जिनको हमने 'लोकवन्द्यु' नाम दिया था, जैसे एम्बूज की गांधीजी 'दीनबन्धु' कहते थे। वह 'लोकवन्द्यु' शब्द-रोज हमारे स्मरण में होता है—'लोकवन्द्यु' लोकनाथी माधवोभक्तवत्सल-विष्णुसहस्रनाम में है। उनकी मूल्य हुई, एक दुर्घटना में। दिल्ली के नजदीक हवाई जहाज गिर गया, जसमें कई लोग मरे, उनमें डोनाल्ड युम भी थे।

वे बहुत ही चारित्र्यवान व्यक्ति थे। मेरे मुझाब पर बसतूर में काम करते थे। परन्तु फिर उनको इन्सैड बना जकरी हुआ तो वे वहाँ गये। लेकिन वहाँ भी भूदान, रामदान-विचार का प्रचार किया, फिर अमेरिका गये थे। वहाँ भी इसी विचार का प्रचार उन्होंने किया। नाद में वे आस्ट्रेलिया गये थे, और वहाँ रहने लगे थे। वहाँ से उनके पत्र आते थे। उससे पता चलता था कि वे वहाँ भी सर्वोदय के विचार का ही प्रचार कर रहे थे। अभी अक्सर वे जीवित रहते तो यहाँ मुझे मिलने आते।

उन्होंने 'ईतावात्य उपनिषद' का

अभोजी से अनुवाद किया है। उसका प्रचार भी वे करते थे। वे बहुत लोकप्रिय हो गये थे। वे मुझसे दस साल छोटे होंगे।

अब यह सवाल आता है कि ऐसे लोग चले जाते हैं, उनकी मूल्य होती है तो उनका काम खरब होता है क्या? अगर वे भगवान थे लीन हुए हों तो कुछ दुनिया में छा जायेंगे। कुल दुनिया पर उनका अत्यन्त परिणाम होगा। अगर वे भगवान में लीन नहीं हुए होते तो अपना काम पूरा करने के लिए देहधारण करेंगे। मैं तो उम्मीद करता हूँ कि वे भारत में जन्म लेंगे।

उनका स्मरण सबको होगा। नाबा को तो रोज ही रहेगा। यहाँ विष्णु-सहस्रनाम रोज बोला जाता है। उससे उनका स्मरण रहेगा।

वे मुझे हिन्दो में पत्र लिखते थे। नीचे 'लोकवन्द्यु' ऐसा हस्ताक्षर करते थे।

ऐसे व्यक्ति की मूल्य का दुःख करना व्यर्थ है। बल्कि उनकी आत्मा को शान्ति मिले ऐसी हम प्रभु से प्रार्थना करें।

श्रीमान्य मन्तर

ता १२-८-७२

ग्रामीण राजनीति में हिंसा

● डा० अक्षय प्रसाद

[डा० अक्षय प्रसाद ने मुमहुरी (मुजफ्फरपुर) प्रखण्ड का पिछले दिनों ग्रामीण हिंसा के कारणों का विधिगत शास्त्रीय अध्ययन किया है। उसी अध्ययन का एक अंश हम यहाँ दे रहे हैं जिसमें यह दिखाया गया है कि ग्रामीण राजनीति को कौन-कौन से तत्व प्रभावित करते हैं।—स०]

ग्रामीण जीवन में राजनीति के नाम पर होनेवाली हलचलों को राजनीति शास्त्र की परिभाषा में परिभाषित करना कठिन है। ग्राम-राजनीति का आधुनिक राजनीतिशास्त्र की परिभाषा के अनुरूप न तो संगठन ही है और न क्रियाएँ ही। यहाँ की राजनीतिक सक्रियता में इन तत्वों का समावेश पाया जाता है

१. जातिगत भेद ।
२. परम्परागत रुढ़ियाँ ।
३. ग्रामीण समस्याएँ ।
४. राजनीतिक विचारधारा ।
५. आपसी सम्बन्ध ।
६. स्वार्थ ।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर ही ग्रामीण राजनीति पर विचार किया जा सकता है। पहले इस बात पर विचार करें कि ग्रामीण राजनीति को उपरोक्त बातों किस रूप में प्रभावित करती हैं।

जातिगत भेद

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, ग्रामीण जीवन में, या यो वहाँ कि पूरी समाज व्यवस्था में, जातिगत सकीर्णता की जड़ें काफी मजबूत हैं। और ये मजबूत तथा गहरी जड़ें गाँव की राजनीति को हर स्तर पर प्रभावित करती हैं। इसका प्रकट प्रभाव मतदान के सबसे आसानी से देखा जाता है, जबकि एक ही जाति के कई उम्मीदवार हों। तब उच्चजातीय समीपता का ध्यान रखा जाता है। वैसे जाति के आधार पर कोई संगठन इस क्षेत्र में सक्रिय नहीं है, परन्तु क्रियाएँ इसी सकीर्णता से प्रभावित होती हैं। इस क्षेत्र में ग्रामीण राजनीति पर राजपूत तथा भूमिहार जाति का प्रभाव है, इस कारण दो बातें देखने में

आयीं। राजपूत तथा भूमिहार जाति हर स्तर पर विभाजित है। अन्य जातियों उपरोक्त जातियों के प्रभाव के अनुरार विभाजित होती हैं। अन्य जातियाँ जिसके प्रभाव में हैं वह व्यवस्था के अस्तित्व पर निर्भर करता है।

जाति के सम्बन्ध में ग्रामीण हलचलों की देखने पर दो प्रकार की हलचलें देखी जा सकती हैं। एक, ग्राम-स्तर पर या यो वहाँ बाहर की राजनीति से प्रभावित हलचल। दो, पूर्णरूप से एक जाति तक सीमित राजनीतिक हलचल। इस क्षेत्र में दोनों स्तर पर उद्विगल संगठन नहीं हैं। कुछ लोगों का जातिगत संगठन से सम्बन्ध अवश्य है। जहाँ तक जातिगत भेद के कारण राजनीतिक तनाव को बढ़ावा देने का प्रश्न है, उच्च जाति के लोग इसमें नेतृत्व करते हैं। ये लोग उच्च तथा निम्न सभी स्तर की जातियों को विभाजित कर स्वार्थ साधना चाहते हैं।

ग्राम-स्तर के संगठन की जाति रोजमर्रा के नायों की प्रभावित करती है। गाँव में कई प्रकार की प्रवृत्तियाँ पचती हैं। इन प्रवृत्तियों में पंचायत का प्रमुख स्थान है। इसके अनावा विद्यालय, सरकारी सुविधाओं की प्राप्ति के लिए बने संगठन तथा स्वेच्छा से बने संगठन मुख्य हैं। मुजहुरी तथा पारो प्रखण्ड में पंचायत, विद्यालय तथा अन्य संगठनों पर जातिगत दबाव को आसानी से देखा जा सकता है। यहाँ संगठन में जाति के प्रवेश (पदाधिकारी-सदस्य) के संख्यात्मक पहलू छोड़कर एक बात को जानने का प्रयास किया गया कि

संगठन पर जाति का दबाव कितना है। क्योंकि यह देखने को मिलता कि बने लाभ के लिए अन्य जाति के लोगों को भी आगे बढ़ाया जाता है। प्रयास यह रहता है कि हरिजन वर्ग विभिन्न संगठनों में नहीं आये। इसके लिए हरिजनों को दवाने का हर सम्भव प्रयास किया जाता है। पहले तो सङ्घीत सरकार से हरिजन आगे आते नहीं; फिर, यदि आगे आने का प्रयास करते भी हैं तो उच्च जाति के लोग दृढ़ आगे नहीं देते। हरिजनों को संगठन में न आने देने के लिए कई उपाय किये जाते हैं। इनमें मुख्य ये हैं :

१. जाति का दबाव डाला जाता है।

२. यदि उनमें जागृति आ गयी है तो विधी-न-विधी प्रकार से परेशान किया जाता है, उनके ऊपर गलत मुद्दामा चलाया जाता है, तथा आगम में लड़ाया जाता है।

३. प्रतीपन दिया जाता है।

वर्तमान व्यवस्था का जो रूप है, उसमें सामान्य ढंग से निम्न वर्गीय लोग संगठन में नहीं आ पाते। पंचायत के चुनाव तथा विद्यालय आदि की कार्य-कारिणी में शामिल होने की बात भी ही थी। इन सबमें आगे आने के लिए पैसा तथा प्रतिष्ठा आवश्यक तत्व हैं, क्योंकि जाति के आधार पर ये लोग पहुँच नहीं सकते। परिस्थिति के अध्ययन से इस बात की पुष्टि हुई कि वर्तमान ढाँचे में हरिजन तथा अन्य निम्न मध्यम-वर्गीय लोगों को गाँव की राजनीति के संगठन में प्रवेश आसान नहीं है; अस्म्भव है, पैसा नहीं बढ़ सकता। इस क्षेत्र में निम्न मध्यम वर्ग तथा हरिजनों को जो स्थिति है, उसपर से कुछ बातें साधने आती हैं।

एक बात में जागृति आ रही है।

ये यह समझने लगे हैं कि हमारी जाति का भयपूर दौपण किया गया है। इस अमानवीय स्थिति को दूर करने के लिए प्रयास की आवश्यकता को भी वे समझते हैं। जागृति आयी है। इस कारण वे गाँव की राजनीति में हिस्सा लेने लगे हैं।

इस स्थिति में दोनों वर्गों में सघर्ष तथा सम्बन्ध की दूरी बढ़ती जाती है। निम्न मध्यम वर्ग तथा हरिजन दो प्रसार के प्रयास करते हैं :

एक, वर्तमान सगठन में प्रवेश के लिए प्रयास।

दो, हिमक मान्योलन की ओर मुड़ाव।

सर्वेक्षित क्षेत्र में पिछले २-४ वर्षों में राजनीति इस रूप में बदली है कि निम्न मध्यम वर्ग तथा हरिजन वर्तमान व्यवस्था से ऊपर गये हैं। यह विश्वास बलवती होती जा रही है कि वर्तमान ढाँचे में उनका हित नहीं है। हित की खोज में इस क्षेत्र के हरिजन तथा कुछ उच्च विचार के युवकों का सम्पर्क द्विस्तक विचार से हुआ। हाल के वर्षों में, द्विस्तक पटनाओं का जो दौर प्रारम्भ हुआ है इससे साफ जाहिर होता है कि इनके मन में हिंसा के प्रति विश्वास मजबूत होना जा रहा है। क्षेत्र में घटी घटनाओं का विश्लेषण अन्यत्र किया गया है।

परम्परागत रुढ़ियों

ग्रामीण राजनीति परम्परागत रुढ़ियों से सीधा प्रभावित होती है, हालाँकि युवा वर्ग उन रुढ़ियों को स्वीकार करने की स्थिति में नहीं है। रुढ़िगत दृष्टि से उच्च जाति के लोग निम्न वर्ग पर दबाव डालते हैं। इस प्रश्न को लेकर दोनों (उच्च तथा निम्न वर्ग) में भावनात्मक स्तर पर तनाव उत्पन्न होता है। इसका एक उदाहरण यथास्त है। क्षेत्र में ग्रामदान धारोत्पन्न के विषयमिले में ग्रामसभ, के पण्डों की बात आती है। इसमें हर जाति तथा स्तर के लोग समान स्तर पर आ जाते हैं। उच्च जाति के लोगों में यह भय है कि ग्रामसभा में हरिजन भी हमारे बराबर आ ही जायेंगे। यह भय इस स्तर तक है कि उच्च वर्गीय प्रतिष्ठित विद्यालय हरिजनों को भूमि देने तथा बीघा-पट्टा दिखाने के लिए तो तैयार हो जाते हैं पर ग्रामसभा में शामिल नहीं होते। देखने में यह आभा कि ग्रामदान की एक शक्ति—ग्रामसभा का पटन—उच्च जाति के लोगों की अतिरिक्त

भयभीत करता है। इस भय के पीछे पारम्परिक रुढ़ियाँ हैं। उच्च वर्ग के लोग गाँव का नेतृत्व अपने हाथ से निरन्तर हरिजनों में जाने देने की मानसिक स्थिति में नहीं हैं। परन्तु हरिजन तथा निम्न मध्यम वर्ग के लोग नेतृत्व-प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील हैं। परम्परागत रुढ़ियाँ भी डीली हो रही हैं। ग्रामीण समस्याएँ

गाँव की समस्याओं को सुलझाने के लिए राजनीतिक समस्याओं का निर्माण किया जाता है। ग्राम-राजनीति को ग्राम-समस्या के साथ विचार करने पर इस बात की पुष्टि होती है कि समस्या गौण और अगौरी सम्बन्ध तथा स्वार्थ मुख्य नियमिक तत्व बन जाते हैं। आपसी सम्बन्ध तथा स्वार्थ को लेकर गाँव कई गुटों में बँट जाता है और यह सीधे गाँव की राजनीति को प्रभावित करता है। इन दोनों बातों को लेकर बनेवाले गुटों में आपसी प्रतिस्पर्धा के कारण ग्राम-स्तर पर किसे जानेवाले वर्गों में भ्रष्टक क्रायट बनने का प्रयास किया जाता है। हर गुट अपने स्वार्थ के लिए सगठन पर दबाव डालना चाहता है और उसका उपयोग करना चाहता है।

राजनीतिक विचारधारा

जहाँ तक राजनीतिक विचारधारा का प्रश्न है, ग्राम-स्तर पर उनका प्रभाव चित्र अवश्य दीपना है, परन्तु उस विचारधारा पर जाति, गुट तथा स्वार्थ का रण चलना महारा है कि मूल रण दिशाई नहीं देता। ऐसा लगता है कि जिस राजनीतिक विचार से स्वार्थ सृष्टि उभरे स्वीकार कर लिया जाय। ग्रामदान के समय विभिन्न वर्गों के मिते मतों को उनके विचार के समर्थकों को सुझा का अन्वय नहीं लगाया जा सकता है।

हर विचार के लोग इस क्षेत्र में हैं। वारंसेल, लो-पाठ, अन्वय, नरन्तित समर्थक लोग भी मिलेगे। मासवारी तैनिनवादिनों को यस्या भी (गुट रूप से) अण्डो मानी जा सकती है। श्रायंत्रित मह राजनीतिक विचार

ग्राम-जीवन में हिंसा फैलाने में काफी सहायक होती है। सर्वेक्षण के बाद यह बात सामने आयी कि एक भी राजनीतिक दल ऐसा नहीं है जो अपने विचार का प्रचार मान्य लोकतांत्रिक पद्धति से करे। सभी दल मठान के समय मुचर होते हैं। मासवारी तैनिनवादी विचार के लोग भूमिगत होकर अपने दम से काम करते हैं।

आपसी सम्बन्ध

आज भी गाँव का नेतृत्व उच्च जाति के हाथों में है। गाँव में पचासत, विद्यालय, पुस्तकालय तथा आर्थिक बापों को लेकर जित प्रचार के सम्बन्ध बनते हैं उनसे ये समस्याएँ सीधे प्रभावित होती हैं। गाँव का राजनीतिक जीवन जिन तरकों से प्रभावित होता है उस पर गौर करने से इस बात का अन्वय सहज ही लग जाता है कि ग्रामराजनीति अस्वस्थ स्थित में है। राजनीति गाँव को जोड़ने के बजाय तोड़ने में अधिक सहायक है। एक बात यह भी देखने को मिली कि जिन लोगों का सम्बन्ध बाहर की राजनीति से है, तथा जो ग्राम-राजनीति को सही दिशा दे सकते हैं, वे या तो गाँव में रहते ही नहीं या वनिपय नारणों से उसमें रूचि नहीं लेते। फल-स्वरूप गाँव की राजनीति तीसरे दर्जे के लोगों के हाथों में है।

गाँव के बुजुर्ग मत्ता एवं सगठन से दूर नहीं हैं, जैसा कि जिला, प्रान्त या राष्ट्र-स्तर पर भी देखा जाय है कि बुजुर्ग सत्कारमक नेतृत्व नहीं छोड़ना चाहते। पचासत, आर्थिक एंजेंसियाँ तथा अन्य रिश्तों भी सगठन में वे युवकों से बाध नहीं करते। यहाँ यह कहना जा सकता है कि यहाँ बुजुर्गों या युवा का प्रश्न बरा अर्थ रखता है। अन्य बातों को छोड़ भी दें तो एक कारण से इस पर विचार किया जा सकता है। ग्रामीण समाज में सामाजिक पारस्परिक भोग्य तथा हिंसा का अपना स्थान है। नवी पीढ़ी तथा युवाओं पीढ़ी के बीच सामाजिक दृष्टि से मानस में काफी फर्क है। उच्च, मध्यम तथा निम्न—

अभाव से आत्म-निभरता की ओर

● श्री फखरुद्दीन अली अहमद

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के २५ वर्षों में कृषि में जो प्रगति हुई है उस पर भारत को निरन्वय ही गर्व हो सकता है। २५ वर्षों में ऐसे भी भौके आये हैं जब प्रगति हुई और ऐसे भी भौके आये हैं जब कुछ रुकावटें भी आयी हैं। लेकिन यदि सरकारी तौर पर देखा जाय तो उत्पीर लच्छी ही गजर जाती है। स्वतंत्रता के बाद का समय छायाओं के अभाव, कोमलता के निमग्न और रात का समय था, उस समय हमारे कारखानों के लिए पटसन और नपाय भी पूरा नहीं मिल पाता था। बाजार स्थिति यह है कि हून काफ़ी बरामा से हैं। अनपेक्षा में वृद्धि के बावजूद प्रति व्यक्ति उपयोग की दर में वृद्धि हुई है।

यह तो सभी जानते हैं कि भारत में छायाओं की कमी हमेशा रही है। १९ वीं शती के अन्तिम चरण में देश में जबरदस्त अभाव पड़ा था। उससे मनुष्यो और जानवरों की अपार क्षति हुई थी। वर्तमान शती में भी, १९४१ में बर्मा से बाबर की आपूर्ति बन्द हो जाने से छायाओं की बृहद कमी महसूस की जाने लगी थी। १९४३ में बंगाल में भयकर सूखा पड़ा। सरकार को एक ओर छायाओं की सप्लाई को नियंत्रित करने के लिए कदम उठाने पड़े और दूसरी ओर 'अधिक अन्न उत्पादकों' अभियान के द्वारा छायाओं का उत्पादन बढ़ाने पर ध्यान देना पड़ा।

१९४७ में आजादी मिलने के बाद

देश के कुल छिद्रित क्षेत्र का ३० प्रतिशत भाग पानिस्तान में चला गया, जिसमें अविभक्त भारत की कुल जनसंख्या का १८ प्रतिशत भाग निवास करता था। इससे छायाओं की कमी और भी बढ़ गयी। इसके अलावा पटसन पैदा करनेवाले अधिकांश क्षेत्रों को १५५५ पैदा करनेवाले उत्तम इलाके भी भारत से अलग हो गये। पटसन, मिल्स और सूती कारखानों को कच्चे माल का आपूर्ति जारी रखने के लिए यह जरूरी हो गया कि देश में फ़ास और पटसन के उत्पादन को बढ़ाने की चेष्टा की जाय, साथ ही 'अधिक अन्न उत्पादकों' अभियान भी जारी रहा।

१९५१-५२ के बाद से हर पंचवर्षीय योजना में छायाओं में आत्म-निभरता प्राप्त करने और फ़ास, पटसन, तिलहन तथा गन्ने का उत्पादन बढ़ाने पर जोर दिया जाता रहा है। १९६०-६१ तक छायाओं का जो उत्पादन बढ़ा, वह विचार्ड, नयी भूमि को खेती योग्य बनाने, खेती के सुधरे तरीके अपनाने, पौध उत्पादन के उपायों पर अमल करने और किसानों को उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन देने से बढ़ा है। इसके बाद उत्पादन बढ़ाने के लिए अथक प्रयत्न करने पर जोर दिया जाता रहा है। भारत में, विभिन्न राज्यों में नूने हुए १६ जिलों में सघन कृषि जिला कार्यक्रम (आई० ए० डी० पी०) शुरू किये गये। इससे उत्तम बीजों, पर्याप्त मात्रा

रहित बीजों मिले गये। युवकों का ग्राम-नेतृत्व से अलग रहने के कुछ कारण निम्न हैं: समझदार तथा शिक्षित युवक गाँव में रहना ही नहीं, बाहर रहने पर गाँव से सम्बन्ध पटता जाता है, गाँव के कल्याण में रूचि नहीं और सब अपने-अपने घरों में व्यस्त हैं, आदि। (जमश.)

में उर्वरकों के इस्तेमाल और पौध संरक्षण के उपायों पर अमल, आदि बातों पर एक साथ ध्यान दिया गया। १९६५-६६ और १९६६-६७ के वर्षों में देश में सूखा पड़ने के कारण छायाओं की बहुत कमी महसूस की गयी और उसे दूर करने के लिए कृषि-विकास के लिए एक नयी नीति तैयार की गयी। उस नीति के मुताबिक उत्पादन बढ़ाने के लिए जोरदार प्रयास किये गये।

कृषि-विकास की नयी नीति के अनुसार कृषि-उत्पादन बढ़ाने के लिए विज्ञान और औद्योगिकी का अधिकारिक उपयोग किया जाता है। खेती में सुधरे किसके कीचड़ों का उपयोग किया जाता है। विचार्ड की अन्धों अन्वेषण की जाती है। उर्वरक सही मात्रा में दिये जाते हैं और पौधों को सुरक्षित रखने के उपायों पर अमल किया जाता है। व्यापारिक फलों के लिए भी सघन खेती के कार्यक्रम अपनाये जा रहे हैं। तिलहन के लिए सोयाबीन और गुरजनुली की खेती को बढ़ावा देने की कोशिश की जा रही है।

हमारे प्रयत्नों के फलस्वरूप उत्पादन का क्षेत्रफल काफी बढ़ा है। फलतः बोधे जानेवाले क्षेत्र में १९४७-४८ की तुलना में लगभग ४० प्रतिशत की वृद्धि हुई है। १९४७-४८ में फलतः बोधे जानेवाला क्षेत्र कुल ११ करोड़ ३० लाख हेक्टेयर था, जो कि वर्तमान समय में १७ करोड़ हेक्टेयर है। सभी फसलों के अन्तर्गत छिद्रित क्षेत्र लगभग दुगुना हो गया है। पहले छिद्रित क्षेत्र ९ करोड़ हेक्टेयर था, जो अब ४ करोड़ हेक्टेयर है। विचार्ड के विकास के सम्बन्ध में एक विशेष बात यह है कि इसमें नवयुवों और वधुवधुओं से भूमिगत जल का काफी उपयोग किया गया है। ये नवयुव या वधु निजी बचत के धन से तथा कृषि देनेवाली सस्थाओं की सहायता से लगाने गये हैं। इस क्षेत्र में गत कुछ वर्षों में बहुत प्रयत्न किये गये हैं। इस अवधि में निजी नवयुवों की संख्या पाँचसूती बढ़कर ४ लाख ७० हजार हो गयी है तथा बिजली से चलनेवाले पम्प-सेटों की संख्या लगभग

तिगुनी बढ़कर १९ लाख तक पहुँच गयी है।

सुघरे स्त्रिम के बीजों का उपयोग हमारे किसानों में बहुत लोकप्रिय हो रहा है। १९६६-६७ के बाद से गेहूँ और धान की अधिक पैदावार देनेवाली किस्मों तथा ज्वार, बाजरा और मक्का की सकर किस्मों के बाजार में आ जाने से बहुत अधिक किसान उत्तम बीजों का उपयोग करने लगे हैं। १९७०-७१ में अनाजों की अधिक पैदावार देनेवाली किस्मों में १ करोड़ ८० लाख हेक्टेयर भूमि में बोयी गयी थी। गेहूँ बोये जानेवाले सम्पूर्ण क्षेत्र के लगभग २० प्रतिशत क्षेत्र में अब गेहूँ की अधिक पैदावार देनेवाली किस्मों की खेती होती है और इसी प्रकार धान पैदा करनेवाले कुछ क्षेत्र के लगभग २० प्रतिशत भाग में धान की अधिक पैदावार देनेवाली किस्मों बोयी जाती हैं।

ज्वरकों का उपयोग कृषि के क्षेत्र में आधुनिक तरीके अपनाये जाने का प्रतीक माना जाता है। हमारे देश में १९५०-५१ में १ लाख टन से भी कम रासायनिक खादों का प्रयोग होता था, लेकिन व्यापक प्रचार एवं प्रदर्शनों के कारण खादों का उपयोग बढ़ा, और १९६५-६६ में ८ लाख टन खाद की खपत हुई। उसके बाद उन्नत बीजों के प्रचार के कारण खादों की खपत और भी बढ़ी। पीट-सरक्षण के लिए बीटनासक दवाओं का उपयोग भी काफी लोकप्रिय होगा जा रहा है। १९७०-७१ में ५ करोड़ हेक्टेयर भूमि में पीट-सरक्षण के उपाय किये गये।

सघन खेती का आधार निरन्तरित करने में काफी प्रगति हुई है। कृषि प्रसार सेवा का आज देश भर में फैलाया गया है। कृषि अनुसंधान और शिक्षा के क्षेत्र में कई नयी प्रगति हुई है। सहायरी समितियों के माध्यम से कृषि के लिए दी जानेवाली राशि में ३० गुनी वृद्धि हुई है। व्यापारिक बंकों ने भी कृषि-विकास के लिए काफी धन देना शुरू कर दिया है।

स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद से उत्पादन

में उन्मेषकीय वृद्धि हुई है। हमारे सामने बड़ी कठिन समस्या है और इनका सामना करने के लिए हमने जो सघर्ष छोड़ा, यह भी बहुत कठिन पड़ा। हाँकि १९६४-६५ तक हमारी वार्षिक प्रगति ३ प्रतिशत की दर से होती रही, परन्तु जन-संख्या की वृद्धि और मुनिवोजित विकास के फलस्वरूप लोगों की आमदनी बढ़ने और तदनुसार माँग में वृद्धि होने से यह वृद्धि व्यर्थगत रही। लेकिन १९६७-६८ के बाद से खाद्यान्नों के उत्पादन में स्थिर वृद्धि से इन चुनौती का सामना कर लिया गया। १९४७-४८ की तुलना में खाद्यान्नों के उत्पादन में १९७०-७१ में ८० प्रतिशत की वृद्धि हुई।

स्वतंत्रता के समय ३६ करोड़ लोगों के लिए भी हमारे पास पर्याप्त अनाज नहीं था। आज हमारे पास ५५ करोड़ लोगों के लिए पर्याप्त अन्न मौजूद है जो कि १९४७ के समय की जनसंख्या से डेढ़गुना से अधिक है। मजे की बात तो यह है कि प्रति व्यक्ति वार्षिक अन्न की उपलब्धि १९४८ में १५६ किलोग्राम से बढ़कर अब १७० किलोग्राम हो गयी है। अनाज और कमी की समस्या अब खत्म हो गयी है। खाद्यान्नों का आयात १९६६ में १ करोड़ ४ लाख टन से घटकर १९७१ में २० लाख टन रह गया और अब आयात नहीं के बराबर रह गया है। सरकारी खरीद के अन्त में अब लोगों की जरूरतें पूरी की जा सकती हैं। सरकार आने पाठ ६० लाख टन अन्न

का भण्डार रखती है, इसके अब खाद्यान्न के अभाव की समस्या हमारे पास फटाने भी नहीं पायेगी।

व्यापारिक फसलों का उत्पादन भी काफी बढ़ा है। कपास का उत्पादन, जो १९४७-४८ में २२ लाख गाँठ था, १९७१-७२ में बढ़कर ६० लाख गाँठ हो गया है। इस प्रकार, इसके उत्पादन में १७० प्रतिशत की वृद्धि हुई है। पटसन का उत्पादन जो १९४७-४८ में १९ लाख गाँठ था, १९७१-७२ में २०० प्रतिशत बढ़कर ५७ लाख गाँठ हो गया है। पाँच प्रमुख विलहनों का उत्पादन स्वतंत्रता के समय के ५२ लाख टन से बढ़कर १९७०-७१ में ९२ लाख टन हो गया। गन्ने का उत्पादन इसी अवधि में ७३ लाख टन से बढ़कर १२२ लाख टन हो गया। पहले हमारे देश में चीनी बाहर से मंगायी जाती थी, परन्तु अब पिछले कुछ वर्षों से हम कई देशों को चीनी का निर्यात करने लगे हैं। इन आँकड़ों से पता लगता है कि भारतीय कृषि में उन्मेषकीय प्रगति हुई है। केन्द्र व राज्य सरकारें, वैज्ञानिक व व्यापारिक विज्ञान तथा जनता सभी ने आत्म-निर्भरता के कठिन पथ पर पाँच बड़ाकर जो सफलता प्राप्त की है; उस पर वे निश्चय ही गर्व कर सकते हैं। हमारी अर्थ व्यवस्था के लिए एक मजबूत आधार अब तैयार हो चुका है।

पत्र सूचना कार्यालय भारत सरकार के सौम्य से

हमारा नया प्रकाशन

धम्मपदं नव-संहिता

सम्पादक-विनोबा

महान बुद्ध की पावन देवता का विश्व-अधिष्ठित धम्मधम्मपद का विनोबाजी ने नये रूप में सज्जन किया है। उसमें तीन सप्क तथा १८ अध्याय बनाकर अलग-अलग विषयों में विभाजित किया है। अब यह धम्म हिन्दी अनुवाद पहिल प्रकाशित किया गया है। बड़िया छानाई, पक्की मित्त ।

मूल्य : ३० ४.००

सर्व सेवा संप्रकाशन, राजपाट, वाराणसी-१

शान्ति-सैनिकों का अशान्ति-शमन का प्रयास

● पद्मोप्रसाद स्वामी

[ह.स. हो में चुरू ज़िले में आचार्य तुलसी की पुस्तक 'अग्नि-परीक्षा' को लेकर जैन-अजैन मत-मतान्तर में हिंसक चरवाटों का एतदर्थ ले लिया और इस जिले का वात-वरण इससे बिधाबत हो गया। इस आन्दोलन को समाप्त करने व वात-वरण को शांत बनाने में राजस्थान के सर्वोच्च कार्यकर्ताओं ने काफी प्रयत्न किया। उस प्रयत्न की एक शांकी यही दी जा रही है। — सं०]

श्री आचार्य तुलसी की 'अग्नि-परीक्षा' पुस्तक को लेकर रामपुर में जो भयकर उपद्रव व अशांति पैदा हुई थी, वही स्थिति दो वर्ष बाद राजस्थान में भी पैदा हो गयी, और ऐसे क्षेत्र में यह स्थिति बनी है जो इनका पूर्ण परिचित, प्रभाव-घावो व पारिवारिक क्षेप रहा है। इस बार आचार्यश्री का चोगासा राजस्थान के चुरू नगर में है। चुरू नगर की ओर बढ़ते हुए जून ई के आरम्भ से ही रतन-गढ़ शहर में उन्नत पुस्तक को लेकर विवाद शुरू हो गया था और सनातनियों द्वारा विरोध प्रारम्भ कर दिया गया था। आचार्यश्री ने इस विवाद को समाप्त करने के लिए 'अग्नि-परीक्षा' का सतोषित संस्करण प्रकाशित करवा दिया, जिसमें विवादयुक्त प्रकरण हटा दिया गया, ऐसा बताया गया। फिर भी, सनातनियों का समाधान नहीं हुआ और उनका विरोध जारी रहा। उन्नीसवीं आचार्यश्री चुरू के नजदीक पहुँचते गये, शो-शो विरोध उग्र रूप धारण करता गया और इसी समय जगद्वेष भी शकराचार्य महाराज भी यहाँ पहुँच गये।

चुरू में प्रवेश के पहले दिन वाले सप्ते से उनका सख्त विरोध किया गया और इसी दिन प्रातः बापस में काफी पथराव भी हुआ, जिससे कुछ लोगों को चोटें भी आयीं। आचार्यश्री ने इस दिन नगर-प्रवेश स्थगित रखा तथा दूसरे दिन २२ जुलाई को आर० ए० सी० पुस्तिक के संस्थापक में प्रवेश किया और अपने पड़ान स्थान पर सुरक्षित पहुँच गये। इन्हीं दिनों चुरू के

जिलाधीश महोदय एवं अन्य कुछ सज्जनों के अथक प्रयत्नों से शकराचार्य व तुलसी महाराज का मिलन हो सका, और आपस में बातचीत हुई। बातचीत के दौरान जो नतीजा निकला उसके अनुसार समझौता-पत्र तैयार किया गया। परन्तु, दुर्भाग्यवश हस्ताक्षर के प्रश्न को लेकर समझौता भंग हो गया। जगद्वेष श्री शकराचार्य वैरा-वाद चले गये और इधर अग्नि-परीक्षा विरोधी आन्दोलन पुनः आरम्भ हो गया।

इन दिनों में श्री धीरेन्द्रभाई के कार्यक्रम में व्यस्त था। उस कार्यक्रम से मुक्त होकर जूनो ही २७ जुलाई को मकराना पहुँचा, मेरे साथी कार्यकर्ता, गान्धितान्त्रिक श्री मालचन्द बोधरा (लोडगु विवासी) का मुझे पत्र मिला जिसमें उन्होंने चुरू की स्थिति की जानकारी देते हुए मुझे गौध्र नहीं जाने के लिए लिखा। मैं सरकारल दुसरे दिन लाडगु पहुँचा। उनसे सारी स्थिति की समझा। 'अग्नि-परीक्षा' पुस्तक के पुराने व नये संस्करणों को देना और सरासरी मातृकजी व अन्य तीन छात्रियों को लेकर चुरू पहुँचा। मार्ग में चुरू की चारदातें सुनने को मिलीं। वहाँ चारों जलायी गयी थी एवं पथराव हुआ था, बहु स्थान देखे। नगर में पहुँचते परहम पाँचों स्थिति का अध्ययन करने के लिए अलग-अलग शोषों में चले गये। हनु चुरू जिले के गौधी आश्रम के छात्री-नेत्र पर टहरे। एक हाथिवाले मुस्लिम भाई ने हमें बताया कि इन बड़ों की लड़ाई में हम चर्कोई की भाव है। हमने जगद्वेष-वगद्वेष आचार्य तुलसी-विरोधी अथक वाक्य दीवारों पर लिखे हुए देखे।

छात्री-नेत्र पर पहुँचते ही वहाँ के मुख्य व्यवस्थापक से स्थिति की व्यवस्था जानकारी ली। इसके बाद नाम को हनु अग्नि-परीक्षा-विरोधी सचप संमिति के अधिकारियों से मिलने गये। उनसे अपना परिचय देकर दो घण्टे तक उनके सारे दृष्टिकोण को समझा। उन्होंने बताया, कि हमें राम के बहुपत्नी वाले प्रकरण पर सख्त एतदाव है। हम तो अहिंसक विरोध ही कर रहे हैं। समझौते पर आचार्यश्री सुधरी ने हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया, अतः समझौता भंग हो गया। इसमें हमारी कोई गलती नहीं है। इन लोगों से बातचीत करने के बाद हम आचार्य तुलसी से मिले एवं उनसे सारी जानकारी प्राप्त की। उन्होंने हस्ताक्षर के सम्बन्ध में बताया कि हमारी तरफ से हमारे प्रति-निधियों ने हस्ताक्षर कर दिये थे। हमारे जैन साधु-सन्तानियों में हस्ताक्षर करने की परम्परा नहीं है।

दूसरे दिन हम जिलाधीश महोदय से मिले। उन्होंने सारी स्थिति से हमें अवगत कराया और समस्या के हल के लिए कई अच्छे सुझाव दिये। उन सुझावों को लेकर हम पुनः सचप संमिति के अधिकारियों से मिले और उनसे विवाद को हमेशा के लिए समाप्त करने के लिए परस्पर मुझे पर बात की, जो कि जिनाधीश से चर्चा करते समय सामने आये थे दोनों तरफ के प्रतिनिधि ही समझौते पर हस्ताक्षर कर दें वा राजस्थान सरकार अपना वैश्र, पुस्तक के सम्बन्ध में पयोगन कायम कर दे वा समझौते की शर्तों के सम्बन्ध में दोनों आचार्यों के अन्ततः टंकराई कर लिये जायें; उप-दलों को रोहने के लिए गान्धितान्त्रिक का गठन किया जाय। शकराचार्यश्री की अनुपस्थिति में सचप संमिति के प्रति-निधियों ने गान्धितान्त्रिक के प्रस्ताव को स्वीकार, अन्य प्रस्तावों को मान्य नहीं किया। इस सारी चर्चा से हमने आचार्यश्री तुलसी को अवगत कराया और नगर की सम्पूर्ण परिस्थितियों को व्यान में रखते हुए उनसे निवेदन कराया कि उन्हें अपनी

और से इस दिवाद्य को समाप्त करने के लिए कोई बरफ बरही-से प्रवृत्ति उठाना चाहिए। अगर ऐसा नहीं किया गया तो नगर के वातावरण को देखते हुए १ दशमक को 'यूरे बन्ध दिवस' पर भयकर अग्रान्ति व उपद्रव होगा। हमने उन्हें बताया कि नगर में जैन व अजैन दो स्पष्ट धर्म वन गये हैं। बन्ध से बड़े तक के दिवाद्य में अग्नि-परीक्षा के विरोध वा उन्माद छाया हुआ है, जिसे भयकर परिणाम निबल सकते हैं। मैंने सहज ही वाद्य-वीथ के दोषान उनसे निवेदन किया कि अगदुग शकराचार्य द्वारा प्रस्तुत समझौते के मुद्दे व्यापको मान्य हैं ही तो जीध उन्हें बार्दकर में परिणित कर दें। उन्होंने कहा कि मेरा भी इस दिवाद्य में चिन्तन चल रहा है। दो-तीन घण्टे तक उन्होंने गम्भीरता से इस पर विचार किया और अन्त में तीन बजे अपने प्रमुख लोगों को बुलाकर अपने निश्चय की जानकारी देते हुए उन्होंने छ. बजे एक सम्मिलित सभा की व्यवस्था करने का आदेश दिया, जिसमें प्रेक्ष-प्रतिनिधि, सरकारी अधिकारीगण एवं सधर्म्य समिति के प्रतिनिधि भी सम्मिलित हुए।

ठीक छ बजे एक संयुक्त सभा का आयोजन किया गया, जिसमें सभी पक्षों के लोग उपस्थित हुए और उनके समक्ष आचार्यश्री तुलसी ने सारी परिस्थिति पर वेदना प्रकट करते हुए अगदुग शकराचार्य द्वारा प्रस्तावित शर्तों को मान्य करने की घोषणा की और साथ ही यह भी जाहिर किया कि ३१ तारीख को दोपहर के एक बजे से अग्नि-परीक्षा पुस्तक का प्रकाशन, प्रचार और विक्रय तब तक बन्द रहेगा जब तक कि शकराचार्यजी राम का बहु-पत्नीत्व समाप्त धर्म के ग्रन्थों से ५ वर्ष के भीतर साबित न कर दें।

रा० ३१ को प्रातः ५ तथा धी 'मासन्दव्यो एक हायर मेंकेण्टी स्कूल में वहाँ के प्रधानाचार्य के निमन्त्रण पर सर्वोदय विचार पर भाषण देने गये। वही घण्टे तक सभा पूर्ण शान्ति के साथ चली, जिसमें सर्वोदय-आन्दोलन के सम्बन्ध में जानकारी

देते हुए दुनिया में आज बड़े-से-बड़े मुक्त शांतिमय तरीके से समझौते के जरिये, आपसी समझौते को हल करने वा जो प्रयत्न कर रहे हैं, उसना जिक्र करते हुए मैंने जब यह कहा कि प्यारे बालबो, अपने नि-ए अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि आपके नगर में जो नई शिरो से अग्रान्ति व भय वा वातावरण बन रहा था, उसको बल आचार्यश्री तुलसी ने शकराचार्यजी द्वारा प्रस्तुत समझौते की शर्तों को मान्य करते हुए समाप्त कर दिया है तथा आज १ बजे से विवादग्रस्त 'अग्नि-परीक्षा' पुस्तक का प्रचार, प्रकाशन व विक्रय बन्द हो जायगा। ज्योही मैंने यह जानकारी दी, एक तरफ से आवाज भायी-मूठ है, धोखा है। मेरा भावण समाप्त होने पर त्रिधर से आवाज आयी थी उधर के एक छात्र ने छठ होकर प्रश्न किया कि आपने यह झूठी जानकारी किस आधार पर दी? बालबो की ३० तारीख की शाम के आयोजन की जानकारी देते हुए समाधान कराया और सभा समाप्त हुई। बालक बच्चानों में गये और प्रधानाचार्य कार्यालय से बाहर निकले।

ज्योही हम स्कूल से रवाना होकर पचीस-तीस कदम आगे बढ़े थे कि हमें दस-पन्द्रह छात्रों ने घेर लिया। न हमें आगे बढ़ने दिया गया और न पीछे हटने दिया गया। हमने पूछा कि आप हमें क्यों रोक रहे हो? क्या चाहते हो? उस पर उन्होंने कहा, कि तुम धर्म-विरोधी तुलसी के दूत यहाँ क्यों आये? हमने उन्हें समझाने का प्रयत्न किया। सधर्म्य समिति के कार्यालय व प्रधानाचार्यक के कार्यालय में चलने को कहा, परन्तु कौन किसकी मुद्रता? धर्माध्यता और अज्ञान के नये में पूर नचपुचको न 'धर्म-विरोधी गद्गारों को मारो' के नारे लगाकर हम दोनों को पकड़ लिया और धक्का-मुक्की तथा धूम्रों से मारना शुरू कर दिया। हम दोनों को मारते-मारते वे अलग-अलग गलियों में ले गये। कपड़े पाड़ डाले, चप्पला तोड़ दिया और अन्त में, दोनों में चोट लगने से मैं नीचे गिर पडा। तब

एक बूढ़े ने रहम करके मुझे उठाकर दूर ले जाकर एक तामे पर लिटाकर रवाना किया। दूसरी तरफ श्री माल-चन्दजी ने एक घर में शरण ली तो उसमें से भी बाहर निकाल कर उन्हें पीटा गया। जब वे भी गिर पड़े, तब उन्हें छोडा। किसी तरह वे अपने स्थान पर पहुँचे। इस घटना की खबर सारी तरफ फैल गयी। आचार्यश्री, सधर्म्य छात्र, जिलाधीश महोदय, एस० पी० साहब एवं अन्य अधिकारीगण हमें सम्भालने आये। डाक्टरजी जाँच ली, और इलाज हुआ। सभी ने काफी पश्चात्ताप किया। नगर में यह चर्चा का विषय बन गया। इस घटना के प्रायश्चित्त-स्वरूप पहली तारीख को आचार्यश्री ने सामूहिक उपवास की घोषणा की। नतीजा यह हुआ कि १ तारीख के बन्द दिवस पर चूक मे कोई घटना नहीं घटी और वातावरण भी काफी मान्य रहा। मुझे विश्वास है कि आचार्यश्री की घोषणा व सामूहिक उपवास के बाद नगर व आसपास के क्षेत्रों में अब किसी प्रकार का उपद्रव व अग्रान्ति नहीं होगी और सधर्म्य समिति तथा अगदुग श्री शकराचार्य स्वामी शान्ति के लिए पूर्ण प्रयत्न व सहयोग करेंगे ताकि जैन-अजैन की साईं पुनः पट सके और भाई-भाई की तरह सब मिलजुल कर रह सकें। ●

शिक्षा में क्रान्ति-दिवस

सहरसा में दिनांक ९ अगस्त को शिक्षा में क्रान्ति दिवस मनाया गया। छात्रों वा एक जुलूस निकला तथा आम-सभा हुई। इस अवसर पर आयोजित 'निबन्ध प्रतियोगिता' में ७६ तथा 'व्याख्यान-प्रतियोगिता' में २० छात्र सम्मिलित हुए थे। कार्यक्रमों की विशेषता यह थी कि मनोजन, प्रचार आदि कुल कार्य धीलखन-माई के नेतृत्व में छात्रों ने ही किया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने का सारा ध्येय

दा साहब

गांधी-परिवार के वयोवृद्ध वितामह, थर्ड्स हाथिभाऊजी उपाध्याय का २४-२५ अगस्त की रात को अचानक देहान्त हो गया। दा साहब के नाम से वह घारे देग में प्रतिष्ठित थे और उनकी गिनती बड़े मनोविदों और जन-सेवकों में की जाती थी। पिछले तीन बरस से वह बीमार थे, लेकिन इधर उबीघत सुधर गयी थी और बिसुने-मड़ने का अपना नाम करने लगे थे। श्रावण उसी में जोर उपादा पड़ा और वे चिर-निद्रा में विलीन हो गये।

दा साहब गांधीजी के भक्त थे और सोलह आने गांधीवादी थे। लेकिन उनके अन्दर कुछ विशेषता थी जो उन्हें दूसरों से अलग करती थी और यही पत्र है कि वह सदा प्रसन्न रहा करते थे। उनके चेहरे की मुस्कराहट सभी भुलायी नहीं जा सकती—जिससे टपकती थी उनकी बल्लभ्यपरायणता, उनका आत्मविश्वास, और उनकी नम्रता।

ये तीनों गुण बहुत हद तक उनके अन्दर प्रवेश कर गये थे। इसी चलक १९२२ के एक प्रसंग से मिलती है। बापू साबरमती बाधम में थे और उनका स्वस्थ कुछ छत्राव था। दा साहब देखने गये तो मन हुआ कि बापू के अर्थ होने तक वही एक जायें। साप में सेठ जमाना-खाल बजाव भी थे। दा साहब ने बापू से कहा, "आपकी तबोयत देखकर हम अपना प्रोशाष बचलने का खोच रहे थे। पीछे सोचा कि एक दिन वो एंवा आने ही वाला है जब आपका बियोग हमको सहन करना होगा, तो हमें उसको तैयारी रखनी चाहिए। हमारा धर्म है कि आपके नाम का बोझ जितना हो सके, हल्का करें और रखलिए हमने जाने का ही निरन्धय किया है।"

सुननेवालों को लगा कि हरिभाऊ बहुत बलिष्ठतपूर्ण और ब्रह्मकार मरी

बात कह रहा है। लेकिन बापू यह सुनकर बड़े सुग हुए और बोले "हाँ, तुम ठीक कहते हो। तुम लोग निश्चित होकर जाओ।"

हम लोगों ने यह भी निश्चय किया है कि मामूली सलाह-मसविरे के अलावा आपकी बट्ट म्ही देंगे। आपका सिद्धांत भरसक समझ लिया है। अदली बात तो उसका अमल करना है।

इस प्रकार बापू के वाचोवांद नेकर दा साहब और जमानाखालजी अपने नाम पर चले गये।

दा साहब नर्मठ सेतानी थे, अद्वितीय पत्रकार थे, और इन सबसे ज्यादा "दा साहब" थे, न केवल अपने परवालों के लिए बल्कि घारे गांधी-परिवार के लिए। राजस्थान के सार्वजनिक जीवन को एक उन्नत रूप देने का ध्येय बिन तीन-चार विभूतियों को ही, उनमें उनकी गिनती है। पत्रारविश की गिता-दीक्षा उन्होंने तो वाचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदीजी से, प्रयाग में "धरस्वती" में काम करके, अमर साहीद गणेशकर विचारपीठी से, कानपुर में "प्रठाप" में काम करके, और स्वयं बापू से अहमदाबाद में "नवजीवन" में काम करके। उन्हें हम सिद्ध सम्पादक कह सकते हैं। यही कारण है कि पिछले तीस साल से "जीवन साहित्य" बुधलता-पूर्वक निरत रहा है और माई राधापाल जी देव ने दा साहब को बीमारी के बाद-जुद उसमें कोई कमी नहीं आने दी। और

हमें यकीन है आने भी नहीं आने देंगे।

आज से संतालीस बरस पहले, १९२५ में सस्ता साहित्य मण्डल की स्थापना दा साहब ने अजमेर में की थी। बाद में इसका कार्यालय दिल्ली आ गया और तब से इसके मन्त्री का दायित्व मार्तण्डजी उपाध्याय (दा साहब के छोटे भाई) बड़ी योग्यता और मनोयोग से सम्भाल रहे हैं। एक साक्षात्साहाय्य में भी खोली गयी, जिसका संचालन तीसरे भाई, वृहस्पतिजी उपाध्याय निष्ठापूर्वक करते हैं। इस प्रकार पूरे खानदान ने अपने को हिन्दी की सेवा के लिए समर्पित कर दिया है।

कुछ दिन पहले दा साहब को मैंने अजमेर एक चिट्ठी भेजी, जिसमें कुशल-खेम पूछा। कुछ अर्थों के बाद थि० सन्तोष (वृहस्पतिजी के सबसे बड़े पुत्र) यहाँ गये तो दा साहब ने मेरी चिट्ठी भी चर्चा की और बोले—"तबोयत ठीक होने पर साहाय्य आजाँगा और उनसे यह देना कि सब भेंट बल्लेगा।" उनका यह वास्तव्य हम तच्छों के लिए बड़ा बरदान था।

दा साहब चले गये। लेकिन नहीं, अपनी रचनाओं के रूप में वह अमर रहेगे और उनकी उपस्था की सुगन्ध जन-जीवन को सदा प्रफुल्लित करती रहेगी। माता भगीरथी देवी को, उनकी तीनों पुत्रियों को, बहन शकुन्तला, शोला और पुष्पा को, और सबसे ज्यादा मार्तण्डजी को हम अपनी सवेदनाएँ भेजते हैं और थर्दथ दा साहब की पावन आत्मा को शतधः प्रणाम।

—दाहू

विनोबाजी के ७७ वें जन्मदिन पर प्रकाशित

भूदान वाले पावा'

(विनोबाजी की जीवनी और सर्वांगीय आन्दोलन की संक्षिप्त शोड़ी)

मै० : रामबहादुर 'नम्र'

मूल्य : ४० पैसे

यह पुस्तक आप त्रिन्ध पते से र्गानें

सर्वे सेवा संघ प्रकाशन, रात्रपाट, वाराणसी—१

अनोखा प्रयोग

आन्ध्र वा कर्णाटका जिला स्वामी बीरब्रह्म की कर्मभूमि है। भविष्य वा दयान करनेवाला यह व्यक्ति चार सौ साल पहले ही हुआ था, परन्तु कर्णाटका के जन-मानस पर अब भी उसका असर है। यहाँ के मन्दिरों में सबको प्रवेश मिलता है। भूदान का जन्म इसी आन्ध्र प्रदेश में हुआ था। कर्णाटका जिले के जो गाँव हमने देखे उन्हें गाँव बहने के बजाय टोने बहना ज्यादा उचित होगा। गाँव में रहनेवाले गरीब तथा पिछड़ी जाति के लोगों में अपनी तरफकी करने की भावना अभी। भूमिदान के सन्देश में उन्हें आधा-की किरण दिखाई पड़ी, परन्तु जो लोग समझ हैं, मुसो हैं, उनमें भूमिदान की प्रेरणा कब जगोगी और पूरा गाँव भूमिदान होने पर कब विश्वसित होगा? ऐसा इस विषय में सकारा होने से हीन, दीन, पतित माने जाने-वाले इन लोगों ने भले ही वे सत्य में कम हो, अलग से अपनी वर्तव्यता बसायी। जो भूमि अपने पास थी वह समाज को अर्पण किया, और भूमिदान की दिशा में कदम बढ़ाने लगे। इन्हें सरकार से मिली हुई इनामी भूमि का दर्जा हल्का था। साधन भी पास नहीं था। अतः परिस्थिति तथा सत्कारण इन लोगों ने सहकारी कृषि करने का निर्णय किया। नया विचार, नयी बस्ती और नया जोश होने से अच्छा काम हुआ है। भूमिदान का विचार पढ़ने के पहले भी इन्हें सहकार का कुछ अभ्यास था ही। अब साथ में सर्वोदय धार्मिकता का मार्गदर्शन मिलने लगा।

सा. १४ से १६ जुलाई तक के तीन दिनों के दौर में हमने करीब १-१० गाँव देखे। सा. १४ में आन्ध्र प्रदेश सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष श्री आर. ० के. राम व मंत्री श्री चारी, मद्रास नगर जिला सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष श्री गुरुधि धर्मा, कर्णाटका के प्रमुख कार्यकर्ता श्री नरसिंहनु साय थे। जिन लोगों में भूमिदानोत्तर, विकास-कार्य हुआ है वे

लोग ज्यादातर हरिजन तथा क्रिश्चियन हैं। आज जो क्रिश्चियन हैं एक जगह में वे हरिजन थे। उनके दुःख-दायिद्र्य में 'मिशनरीज' ने उन्हें स्नेह तथा इज्जत दी, आर्थिक मदद की और धर्म-परिवर्तन करवाया। यद्यपि पहले से इनकी आर्थिक स्थिति कुछ अच्छी है, फिर भी वे लोग काफी गरीब हैं।

बम्बई मल्लायपल्ली गाँव के बारह क्रिश्चियन परिवारों ने अलग से अपना गाँव बसाया है। सरकारी समिति बनाया है। बारह हजार रुपये का नया कुर्वा के लिए संधारण से उन्हें मिला है। हर घर में आठ से बारह बच्चे हैं। "आपने परिवार-विभोजन नहीं किया?" हमसे एक ने प्रश्न पूछा। "नहीं, नहीं, हमारे पोषण ही इसके लिए मरता है!" जवाब मिला। धर्म के नाम पर कसा यह राजनीति का खेल? विचार इन गरीबों को बन्धों के बोझ से बेकार में परेशान होना पड़ता है। हम ग्राम को करीब ६ बजे उनके पास गये थे। "बहनों को खुलाशे न।" मैंने उनके विनती की। सुबह से हमारे बारह घरों में से एक भी घर में खूदना नहीं जला है। आज दिन भर नाम मिला, और बहने अब पकाने में लगी हैं। सुबह से आनाल-चूल्हा सब भूलें हैं। वे काम करना चाहते हैं, गाँव भी है, पर उनके लिए काम नहीं जबकि देश को काम की आवश्यकता भी है। यह कौड़ी विचित्रता!

"मान लीजिए आपके स्वप्न में प्रभु ईशु आये तो आप उनसे क्या माँगेंगे?" श्री बग ने प्रश्न पूछा। "हमारी फसल अच्छी होने दे, बस इतना ही।" जवाब मिला। भूला इससे ज्यादा क्या माँग सकता है? फिर वे अपने-आम ही बोलने लगे, "हमारे सीमांत से सर्वोदयकार्यकर्ता यहाँ आये, उन्होंने राह दिखायी, मदद की। अतः पहले साल में जो आठ माह आधा पेट रहना पड़ता था, अब सिर्फ

तीन माह और, यदि एक कुर्वा बनाने के लिए वहाँ से केवल पाँच हजार रुपये कर्ज मिल जाय तो हम पूरे साल भर-पेट खा सकते हैं।" क्या इन बारह परिवारों की यह माँग गैरवाञ्छित है? पूँजी के अभाव में जितने लोगों को भूला सोना पड़ता है। ऐसी स्थिति में विलास की चीजों में पूँजी लगाने का क्या हमें नैतिक हक है? जिन-जिन गाँवों में हम गये सबने एक ही माँग की—"हमें पूँजी दीजिये, नर्ज के रूप में ही क्यों न हो, हम मेहनत करके पेट भरेंगे और धीरे-धीरे कर्ज भी बटा करेंगे।"

चर्च में सब लोग झकड़ता हुए। गाँव छोटा-सा था। "प्रभु ईशु स्वप्न में आये और तुम्हें भगवान्हा घर माँगने के लिए बन्दे तो क्या माँगेंगे?" श्री बग ने प्रश्न पूछा। "हमें मुक्ति दे, धार्मिक दे। यहाँ माँगेंगे।" जवाब मिला। "नाम न होने से आनन्द भूखें रहना पड़ता है तो क्या प्रभु ईशु से खाना नहीं माँगेंगे?" मैंने प्रश्न पूछा। "रोजमर्रा की ये छोटी-मोटी समस्याएँ तो चलती ही रहेंगी। इनके लिए प्रभु से क्या माँगना।" एक प्रोड भाई ने जवाब दिया। हमारे देश के यून में ही अध्यात्म रम गया है। इसका यह फलान्त उदाहरण था।

कर्णाटका जिले में अस्सी गाँवों में सहकारी समितियों के माफ़त सहकारी खेती का यह प्रयोग चल रहा है। आपस में कोई लड़ाई-झगडा नहीं है। पूँजी न होने से प्रगति बहुत धीमी हो रही है। ये साधनहीन गरीब लोग रात-दिन मेहनत करते हैं। पिछले तीन सालों में यहाँ अकाल होने से दरिद्रता भी सीमा नहीं है। बेकारी की समस्या हल करने की दृष्टि से इन गाँवों में पहले काफ़ी चरखे चलते थे, लेकिन वर्गों के अभाव में वे फटाफट बंद नहीं कर सके। पूनी खरीद कर कटाई करना आर्थिक दृष्टि से इन्हें सुलाता नहीं। अतः कटीन-कटीन सारे चरखे आज बन्द पड़े हैं। कुछ प्रमाण में रोनी-रोटी देनेवाला और बेकारी की समस्या हल करनेवाला यह एक ही

उद्योग भी बन्द हो जाने से बेकारी ने भीषण स्वरूप धारण कर लिया है। चमड़े का उद्योग काफी बड़े पैमाने पर चल सकता है। प्लास्टिक तथा बाटा के बपल-जूतो ने इनका बाजार सीमित कर दिया है, भूमि हल्के एजें की है। अतः पास अच्छी पैदा होती है, डेपरी का अच्छा उद्योग खेती के साथ विकसित हो सकता है। पर पूँजी की समस्या खड़ी हो जाती है। जहाँ दो जून भर पेट खाना ही नहीं मिलता है वहाँ ये मुद्द पर्वान्त पूँजी भँचे सड़ो कर सकते हैं !

सोशलिस्टिक समाजवाद की हम बात बरकर करते हैं, सहकारी खेती की अनिवार्यता हमें बरकर महसूस होती है। पर विवाय बातों के हम क्या अधिक कर रहे हैं ? हमारे देश की अधिकांश जनता गरीब है। उसके नाम पर सारे काम जिये जाते हैं। पर छत्र में वे उसके भति के लिए बितने सही साबित होते हैं ? समाजवाद आज के गुण की माँग है, राष्ट्र ना यह नारा है। बिन लोगों ने अपने पास जो भी था उसका सामाजिकरण किया है, अपनी भूमि और धन समाज को अर्पण किये हैं, समाजवाद की ओर सही रुतम बढ़ाया है। भारत भर में सहकारी खेती ना इतना अच्छा नाम थायव ही कही हुआ होगा। लेकिन इतना अच्छा काम करने के लिए इताम के तौर पर उन्हें क्या मिला है ? सामान्य किसान को जो सहूलियतें कर्न जादिक के रूप में आज मिलनी हैं उनकी वे भी सहूलियत बन्द कर दी गयी है। इस तरह प्रोत्साहित करने के बजाय शासन ने उन्हें दण्डित किया है, निरुत्साहित किया है।

अपल-बगल खेती-योग्य जितनी सारी भूमि पड़ी है, पर बार-बार माँग और प्रयत्न करने पर भी वह उन्हें सरकार से अभी तक नहीं मिल पायी है।

प्रगति की प्रेरणा एवं सुबयविक के कारण रात-दिन शराब में डूबे रहनेवाले इन लोगों ने अपने यहाँ स्वेच्छा से सम्पूर्णतः शराबबन्दी की है। नई गाँव ऐसे

हैं जो गाँव के बाहर के शराब पीये हुए आदमी को अपने यहाँ प्रवेश भी नहीं करने देते हैं। पुस्त-र-पुरत चली आयी शराब से मुक्ति पाना क्या सामान्य बात है ? जीवन में इन नये मूल्यों को प्रतिष्ठित करना क्या क्रांति नहीं है ? लोगों की जिन्दगी कंसी बदल रही है इसका यह एक अच्छा नमूना है। देश में हरित क्रांति हुई है, लेकिन किसने उससे लाभ उठाया ? बड़े शिक्षित किसानों ने। पर यहाँ इन छोटे-छोटे लोगों ने जो किया है वह अत्योद्यम का काम है। पहले चोरी-करी, गूना-खराबी का काम करनेवाले यहाँ के कई लोगों ने उससे मुक्ति पायी है। जब वे उभय तार्किक बनकर काम कर रहे हैं। इस तरह जीवन की दिया बदलने का यह काम क्या कम अमिषकारी है ? बड़ेज और शायियों में होनेवाले अन्याय-अनार सबके कारण सुस्थित, उभय बहुमानेवाले हमारे समाज में किन्ती सड़कियों के पालक बर्बाद हुए हैं और रात-दिन हुए जा रहे हैं। पर अनाड़ी बहुमानेवाले इन लोगों ने सामूहिक शायियों को स्वीकार करके इन धुरार्यों से अपना पिच्छ छुड़ाया है, और यह नाम दी-भार लोग कर रहे हैं। ऐसी बात नहीं है, करीब पचपन हजार लोग इस काम में जुटे हुए हैं। पार्थिवताओं का नियम निरमित सम्पत्ति जितना अधिक बढ़ाया उतना यहाँ ना काम अधिक उभरेगा। यथोक्ति मूल बात जो है बाँट-बाँटकर साने की एव सहकार की वह यहाँ है और साथ में जुड़ गयी बिनास की प्रेरणा। अतः योग्य, सम्बोधित और आवश्यक

मार्ग-दर्शन और मदद मिलना यहाँ तो अच्छा काम यहाँ हो सकेगा। यहाँ आज जो काम केवल दलित, पीछड़े, पिछड़े हुए लोगों में हो रहा है, वह व्यापक होना चाहिए, अन्यथा इन लोगों को अपने मार्ग से विचलित करने का प्रयास दूसरे लोग कर सकते हैं, और जाति के आधार पर वे नए इन लोगों के समुदायों को अपने समुचित दायरों से बाहर निकालने का और जो खुद को उनसे थोछ मानते हैं उनका थोछत्व वा जातीय भाव सारम होने के लिए मौका नहीं मिलेगा।

यहाँ की सहकारी समितियों में शुक्र में जो पदाधिकारी बने थे वे ही बरतों तार आज भी चल रहे हैं। एक से अधिक बार एक ही व्यक्ति पदाधिकारी न बनने की परिपाटी होना अधिक उपयुक्त होता है। उससे नये-नये लोगों की बुद्धि, शक्ति और विशेषताओं का लाभ मिलता है। सम्ये समय तक पद पर रहने से स्थापित स्वार्थ-निर्माण होने की सम्भावना रहती है।

देश के सामान्यतः विनास-नार्थ अनेक गाँवों में हो रहा है। परन्तु पिछड़े हुए गाँव माने जानेवाले इन मुट्टी पर लोगों ने सहकारिता का जो प्रयोग किया है वह अनोखा है। अधिक ध्यान दिया जाय तो बहुत अच्छा नाम यहाँ हो सकता है। यह प्रयत्न क्रिश्चियन एव हरिजनो का होने से इनका महत्व विशेष हो जाता है। सारे भारत का ध्यान इसकी ओर आकर्षित होना चाहिए।

—मुमन मग

जयप्रकाशजी का कार्यक्रम

सितम्बर

३ से ५ तक—मेरठ में छाडी पर चर्चा।

२१ प्रतिक्रिस्तन कचुबी, पो० दिव्यपुर, जिला कोशीख परगना (५० बगल) में सर्व सेवा सभ की समितियों और उपसमितियों के पदाधिकारियों की बैठक।

२२ से २४ तक—सर्व सेवा सभ की प्रबन्ध समिति की बैठक।

२४—सभी प्राणों के सर्वोदय पण्डितों के अध्वर्यों और मंत्रियों की बैठक, रामचन्द्रास्य समिति की बैठक।

का आदेश मिन सरता है ऐसा अभी तो ने एक बखत में बताया। इस जमात को आभर देने के लिए ब्रिटिश सरकार भी बचनबद्ध नहीं है। दुनिया का दबाव पड़ने पर अमीन ने अपनी धनहीनता से लोहे के तैलिन एक बार धमकी मिन देने के बाद उगाष्ठा के एगिपार्द नागरिकों की बेनी अवश्य बद्ध नहीं है। उगाष्ठा की अन्ततः पच्छा-अविच्छा से इस पूरे समाजे को देखा रही है।

भारत सरकार ने १९९८ में और १९७२ में भी यह एक अनगना कि ब्रिटिश नागरिकों की मूल-मुरादा और मानव-अधिकार के लिए ब्रिटेन जिम्मेदार है और उगाष्ठा के नागरिकों के लिए उगाष्ठा। मिन ब्रिटेन को अपनी जिम्मेदारी का एहसास करवाने के लिए भारत सरकार ने जो कदम उठाया वह ब्रिटेन की रंगभेद-नीति का समर्थन करना है। १९९८ में कीनिया के एगिपार्द, ब्रिटिश पारधनधारी और १९७२ में उगाष्ठा के एगिपार्द पारधनधारी पर बोझा रेशु-लेखन लागू कर दिया जो सामान्य ब्रिटिश नागरिकों पर लागू नहीं होते हैं। जो भेद ब्रिटेन ने किया वही भेद भारत ने किया। बोझा रेशुलेखन करना ही या तो यह वितामी नागरिकों पर क्यों नहीं किया ?

अब इन प्रशासितों को तो उगाष्ठा से जाना ही है। ४ नवम्बर के बाद वहाँ एगिपार्द वितामी पारधनधारी रह सन्ने इसकी कोई उम्मीद नहीं दी जाती है। ये लोग नहीं और जाकर बर्गों, प्रवासी ही बनकर रहेगे। क्या नहीं जगह पर ही वे नहीं चलती दुहरायेगे ? किस देश में वे बनेंगे उस देश की संरक्षित, जीवन और सम्पत्तियों से परे रहने ? और सवाल केवल इन एगिपार्दों के लिए ही नहीं है, बल्कि दुनिया के सब प्रवासियों के लिए है। प्रवासी क्या, देशी की अन्तर अपने को निष्ठी के साथ मिला नहीं सखा, तो आज नहीं ही बल, अन्ततः भी नहीं हल होने वाला है। दूसरा प्रश्न यह उठता है कि क्या एगिपार्दों के निवासन से उगाष्ठा

सिबिल नास्तमार्ती

बेल भाषा और संरक्षित को बचाने के लिए ब्रिटेन में एक बड़ा अन्वेलन चलाया जा रहा है। यह गतिवि नागरिक-मार्ती का आन्दोलन है।

आज बेल भाषा को सिबिल संरक्षित का सामना करना है, उसे कुछ ही लोग जानते हैं। बेल पर प्रामाण्य करनेवालों ने इस भाषा की धूना को निगाह से रखा। सभी शाखायों अन्ततः प्यायानवी को कार्यवाही और सड़कों के बिजु केवल अर्थों भाषा में मिलते थे। इस भाषा में रेशियो और टी० बी० के भी बच-ये-बच शोषण थे। इन सभी चीजों से यह प्रभाव पड़ता था कि बेल भाषा एक निम्न स्तर की भाषा है। जिसे उत्तरी और दक्षिणी बेल भाषा के बोझ से लोग बोलते हैं।

सबट का सामना करने के लिए १९६२ में बेल लोन्डन छोड़ा ही नी। उस समय से अब तक इसे अर्थों के बराबर स्थान दिखाने के लिए बल में कई

की समस्याओं का हल हो जायगा ? क्या शोषण निदान के लिए उगाष्ठा से एगिपार्दों की निवासन जरूरी था ? यदि त्रिध अन्ततः के कारण एगिपार्द एक शोषक बर्ग बने रहे उसे नहीं बदलते है तो एगिपार्दों की जगह पर या तो दूसरे विदेशी आ अर्थों या वहाँ के निवासियों का एक नया शोषक बर्ग छाड़ा हो जायगा। उगाष्ठा से किसी को निवासने की जरूरत नहीं, जरूरत थी अन्ततः बदलने को। तीसरा प्रश्न यह है कि जब भी और जहाँ भी मानवता का अन्मान हो, जैसे ब्रिटेन ने १९९८ में किया और उगाष्ठा अब कर रहा है, तब बाकी दुनिया क्या जैसे ही बँधती रहेगी ? ऐसे मौके पर समुदाय राष्ट्र सच भी चुन रहता है तो जनता के पास विरोध करने का नील-सा मंच रह जायगा ?

अहिंसक दारैकट 'बंभव' आन्दोलन चलाये गये।

आजकल यह छोटासी शाखाता और पन्ना पर अधिक ध्यान दे रही है और अर्थों में पाये जानेवाले पोस्टर को शान्तियों से निहाल रही है। इसने इस बात के लिए भी कहा है कि टी० बी० का तात्संघ उस समय तक नहीं दिया जाय जब तक कि बी० बी० सी० बेल भाषा में इसके लिए प्रयत्न करे।

बेल भाषा की यह भी जानती है कि बेल का आधिकार और राजनितिक शोषण ही रहा है। इस बात के लिए भी आन्दोलन चलाया जा रहा है कि लन्दन और बनिष्क के लोगों को बेल में रहने को इजाजत न दी जाय।

दिल्ली-विस्था के शान्ति सुदरे

युद्ध ने मरुत को एक गरीब और भयभीत शत्रु बना रखा है। हम इसके जल से निरत नहीं पा रहे हैं। इसका सबसे बड़ा उदाहरण इन्डोचीन के लोगों के विस्थापन चल रहा युद्ध है। अभी जो हवाई और शार्पिंग में बमबारी हुई, इसके पता लगता है कि अमेरिकी सरकार दक्षिण वियतनाम को छोड़ने के लिए तैयार नहीं है।

अर्थों के नहीं में संमान और अमेरिका की सेनाओं ने, जो एक दूसरे को भारा था, उसका अन्ततः ८३१, सम्पन्न १००१ है। इसमें मरनेवाले नागरिकों की गिनती शामिल नहीं है। जमिन के उनाने में प्रतिमाह मरने वालों का औसत ९५ हजार था। निस्सन के जमाने में यह बढ़कर १ लाख ३० हजार है। शान्ति चाहनेवालों को इसके नहीं निराशा होनी जा रही है।

अमेरिका के युद्ध-विरोधी लोगों ने अमेरिका के द्वारा विमजनाम को भेजे जाने वाले हथियारों के विरोध में अन्वेलन शुरू कर दिया है। २४ अर्थों को निष्ठी नायक जहाँ युद्ध का सामना सेकर विमजनाम जानेवाला था। जब यह खाना हुआ तो जन सेना के शान्ति

चाहनेवाले सिपाहियों ने विरोध किया और ७ मल्लाहों ने जाने से इनकार कर दिया। यह कोशिश मने, समान के लिए आन्दोलन चलावनेवाले लोगों नी और से संगठित किया गया था तथा इसमें फिलाडेल्फिया रेसिस्टेन्ट, फिलाडेल्फिया वेदूष और लाइफ सेक्टर के लोग भी शामिल थे।

यह जहाज खाना तो ही गया, परन्तु अहिंसक सौधी चार्ल्सवाइ के द्वारा युद्ध में भाग लेने के पूरे प्रश्न को मने सिरे से उठाया गया। इस चार्ल्सवाही से सैनिक वाद को चुनौती दी गयी है।

वातावरण का संदूषण

यह आमतौर से माना जाने लगा है कि अगर अग्दी ही दूषित वातावरण को सफाई के लिए पदम न उठाया गया तो मनुष्यता पर बहुत बड़ा खतरा पैदा होगा। मानव वातावरण की नयी पत्रिका 'अम्बियो' ने इस बात पर बहुत जोर दिया है। यह एक इंभारिक पत्रिका है, जिसमें वातावरण से सम्बन्धित विज्ञान, टेक्नालॉजी, प्रकृति-विज्ञान आदि विषयों पर बोधपूर्ण निबन्ध होते हैं।

'अम्बियो' के दो उद्देश्य हैं -

१-वातावरण के बारे में वैज्ञानिक सूचनाएँ इकट्ठा करना।

२-इन सूचनाओं से दिलचस्पी रखने-वालों को परिचित कराना।

अभी 'अम्बियो' में मुख्य रूप से डेनमार्क, फिलिपिन्स, आस्ट्रेलिया, नार्वे और स्वीडन आदि देशों में होनेवाली वातावरण से सम्बन्धित शोधपूर्ण लेखों की मुख्य स्थान दिया जायगा। साथ ही, इसमें वातावरण के बोध के अन्तरराष्ट्रीय पहलू भी शामिल किये जायेंगे। यह वातावरण के संदूषण से सम्बन्धित एक अच्छी पत्रिका है।

सेना पर होनेवाला यह असीमित व्यय !

युद्ध में होनेवाले खर्च को छोड़ भी रें जो भी संसार में सेनाओं और सैनिक साज-सामानों पर होनेवाले खर्च का सही-सही अनुमान लगाना मुश्किल है। हबिवागे की दौड़ और सैनिक खर्चों के सामाजिक आर्थिक प्रभावों की चर्चा के सन्दर्भ में मनुष्य राष्ट्र की अन्तरराष्ट्रीय भूमिति ने यह रोचक जानकारी प्रस्तुत की है।

प्रस्तुत जानकारी के साथ विश्व की सेनाओं में लगभग २३० लाख लोगों पर लगभग १,४६,००० करोड़ रुपया प्रतिवर्ष खर्च किया जाता है। यह खर्च १,३००,०००,००० की बायादी के अमीन, एशिया व सुदूर पूर्व की सीसेरे विश्व की संयुक्त आय से भी अधिक है। अस्त्रों व सेना से सम्बद्ध लोगों व सैनिक शोध पर होनेवाला विश्व-व्यापी व्यय विश्व के कुल उत्पादन वा साझे छः प्रतिशत है, शिक्षा पर होनेवाले व्यय का ढाई गुना है व विनसशील देशों की प्रत्यक्ष मिलने-वाली कुल आर्थिक मदद वा ३० प्रतिशत है। विश्व सरकारें १६,२५० करोड़ रुपया सिर्फ सैनिक शोध पर खर्च करती हैं जबकि विविधा-सम्बन्धी शोध पर होने-वाला कुल व्यय २९७० करोड़ है।

सेना सम्बन्धी व्ययों पर होनेवाले इस महान खर्च का भार अलग-अलग भय व प्रतिशत) अमेरिका, रूस, फ्रांस, यू०के०, चीन, जर्मनी आदि बहुत किया जाता है। प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूप से सेना सम्बन्धी कार्यों में सलमन व्यक्तियों की संख्या ५०० लाख मूली गयी है जो कि धरा की कुल आबादी के तुल्य है।

ये आंकड़े तो वे हैं जिन्हें सरकारों से सरकारी तौर पर जाना जा सकता है पर, सैनिक कार्यों पर होनेवाला सही खर्च जान पाना तो मुश्किल ही है।

पत्र-व्यवहार का पता :
 सर्व सेवा सभ, पत्रिका-विभाग
 राजघाट, वाराणसी-१
 तार, सर्वसेवा फोन : ६४३१२

सम्पादक राममूर्ति

इस अंक में

'जायें तो जायें वहाँ ?'

—श्री विचोरभाई साहू ७५४

क्या कोई राष्ट्र नैतिक गुणों के बिना भी जीवित रह सकता है ?

—श्री जगप्रकाश नारायण ७५५

प्राचीन राजनीति में हिंसा

—डा० बबध प्रसाद ७५८

अभाव से आरम-निर्भरता की ओर

—श्री फलकहीन अली इक़मद ७६०

शास्त्र-संनिर्णय का असांख्य-गुमन का प्रयास

—श्री मदी प्रसाद स्वामी ७६२

अनीला प्रयोग

—श्रीमती सुमन बग ७६५

अन्य स्तम्भ

झावरी के पत्रे, शान्ति समाचार

सर्वोदय



सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

भूदान-ग्रन्थ

भूदान-ग्रन्थ के लेखकों का परिचय



११ सितम्बर, १९७२ को विनोबाजी की ७८वीं जन्मदिन के अवसर पर दीर्घायु होने की हमारी शुभकामना।

हरी क्रान्ति : लाल या पीली ?

उस दिन एक मित्र वही लगे। "मैंने अपनी एड की खेती बन्द कर दी है और संत बंटाई पर लगा दिया है।" मैंने पूछा : "क्यों ?" बोले : "हरी क्रान्ति करने की हिम्मत नहीं रह गयी है।"

एक ही नहीं, ऐसे अनेक लोग हैं जो हरी क्रान्ति से हिम्मत हारते जा रहे हैं। छोटे खेतिहर ने तो मान लिया है कि यह क्रान्ति उनके बगल की नहीं है। खेती को हरी क्रान्ति को लोग एड तरह हार कर छोड़े इससे बड़ी हार दूसरी क्या होगी ? वितने जमाने के बाद एक ऐसी क्रान्ति हुई थी जिसने खेतिहर भारत को हितनाशना था, जगाया था; जिसने विज्ञान को गाँव-गाँव पहुंचाने का क्रम शुरू किया था, और जिसके कारण यह सम्भावना प्रकट हुई थी कि जब देश का सम्मान बचेगा, और देश-वासियों का पेट भरेगा : यह कोई नहीं कह सकता कि हमारे खेतिहरों ने हरी क्रान्ति को उसाह के साथ नहीं अपनाया था। उन्होंने दिल खोलकर अपनाया था, और अपनाये रहना चाहते भी हैं, लेकिन क्या करें वे अपने को बेवश पा रहे हैं।

क्या बेवशी है उनकी ? हमारे चित्र ने बताया कि बीरिंग, बीज, खाद आदि के लिए लिया गया कर्ज खेती को आधुनिकी से अलग नहीं हो पा रहा है। नतीजा यह है कि सरकार हो या साहूकार, जिसान धोनों के कर्ज के नीचे बसा जा रहा है। बीज, खाद, दवा, जोनार और यंत्र आदि सबके दाम दनोदिन बढ़ते जा रहे हैं। सरकार उन्हें सस्ते दाम पर न सप्लाई कर पाती है, और न मूठ्यो पर नियंत्रण रख पाती है। खेती मात्र भी ज्यादातर भगवान् के ही परोखे चल रही है। वसतार तीन साल अच्छी फसल नहीं होती। और जब उपज होती भी है, तो उसका बाजार में क्या भाव रहेगा इसका ठिकाना नहीं रहता। बकसूर लागत भर भी लाभ नहीं मिलता। सरकार कोई गारन्टी नहीं दे पाती। अधिकांश लोगों को पेट काटकर अनाज सस्ते बाजार में बेच देना पड़ता है।

सोम पत्राज और हरियाणा की मिशाल देखते हैं। जकर उन राज्यो ने खेतों में बहुत अच्छा काम किया है। लेकिन यह मान लेना गलत होगा कि पत्राज या हरियाणा ने करोड़ों, बेरोजगारों, विधवाओं आदि के आर्थिक सवाल हल कर लिये हैं। फिर भी जो काम हुआ है वह अच्छा हुआ है। वहाँ खेतों की

परकाम्यो है। अन्तर किसान को खेती के लिए कर्ज नहीं लेना पड़ता। उसके पास वेतन और पेंशन के रूप में पौत्र पाँसा ही पैसा है। खेती के साथ चलनेवाये उद्योग हैं। अनेक परों के एक-दो आधुनिकी नहीं बाहर देश-विदेश में नमाई करते हैं। इसके बलवा पत्राज में मुद्रापाय तो है ही।

बिहार जैसे क्षेत्र में इनमें से कोई बात मौजूद नहीं है। वहाँ के ही खेतिहर परिवार तुणहास है। जो खेती पर ही निर्भर नहीं हैं, बल्कि बिनके पट्टा महाकनी, नोकरी, या व्यापार का भी पैसा धाता है। बंटाई की खेती में मुनाफा ही मुनाफा है क्योंकि उसमें विशुद्ध शोषण है।

हरी क्रान्ति वा अभी तक न तो संप्रति वाणिज्य आधार बना है, और न सामाजिक। अगर वे आधार तैयार नहीं होते तो हरी क्रान्ति ही नहीं रह जायेगी; वह या तो लाल होगी या पीली पड़ जायेगी। यह बात स्पष्ट होती जा रही है कि भारत जैसे देश में सामाजिक क्रान्ति के बिना दूसरी कोई क्रान्ति, चाहे वह किसी भी रूप की हो, टिकाऊ नहीं हो सकती। कठिनार्थ यह है कि यह बात हमारे हितैषियों की समझ में अभी तक नहीं आ रही है।

'नहीं' की शक्ति

अगर कल्याण चाहते ही तो कल्याणकारी प्रणाली में शरीक हो। जहाँ देने की जरूरत हो दो, जहाँ लेने का मोवा हो लो। चुनाव के लिए पन्दा दलदल करना हो, बोटा-परमिट-लाइसेंस लेना हो, रेल के स्लीपर डिब्बे में जगह पानी हो, मुरदमे में फँसा दिये जाने पर किसी तरह मान चुकानी हो, आदि कोई भी स्थिति हो, हमारे देश के लोगों ने प्रणाली को सिध्दाचार मानकर स्वीकार कर लिया है, और जनम-जनम से बने सदाचार के संस्कारों में समय देकर सहोदर कर लिया है। बिन्हीने अभी तक नहीं किया है उनकी उम्मा विनोबिल पट रही है। वे बुरद और पुराने ज्वाल के माने जाने लगे हैं। वे व्यय में 'धर्मराज' बने जाते हैं। सरकारी कार्यालयों, संस्थाओं, राजनैतिक दलों, या बाजारों में जो ईमानदारी बरतने की कोशिश करते हैं उनका तिरस्कार होता है, कई बार वे सदाये जाते हैं, और उनको दुनसाल पहुँचामा जाता है। प्रणाली और अनाचार जब धोड़ और छोटे लोगों की बीज नहीं रह गया है, नोन बढ़ा दनसे विलना मुक्त है, नहना कठिन है।

समाज के मुख्य गये; सरकार कर्तव्य के प्युज हुई; संस्थाओं और उनके सेवकों की अन्तरात्मा मुक्त हुई। ऐसी स्थिति में नैतिकता का क्या नाम दिया जाय ? फिर भी प्रश्न केवल नैतिकता का नहीं रह गया है। प्रणाली पर दस देख के करोड़ों

लोगों के जीवन-मरण का प्रश्न बन गया है। एफेड बाजार के समानांतर एक देश-व्यापी, सुगठित, चीर-बाजार तैयार हो गया है। उसमें ३० अरब रुपया है या ७० अरब, यह अलग बात है। लेकिन यह स्पष्ट है कि उसका सरकार और बाजार दोनों पर नज़र है; समाज का गत्ता उसके हाथों में है। लोग क्या खायें, क्या पहनें, कैसे जीयें यह बहुत कुछ वहीं तय कर रहा है। नागरिक की बाजार के शोषण से रक्षा करने की शक्ति सरकार में होती है, होनी चाहिए, लेकिन अनवरतमक ही नमकीन न रह जाये तो वह दास में जाकर बदा करेगा? दत्याण का भ्रष्टा नागरिक दत्याण का शिकार हो गया है।

पिछले चुनावों के बाद राजगोपालाचारीजी ने बड़े भारके की एक बात बही थी। उन्होंने कहा था कि अब देश को अहिंसात्मक बगावत (गान्धायनैट इनसुरेक्शन) के लिए तैयार होना चाहिए। बगावत के प्रश्न पर मतभेद हो सकता है, किन्तु प्रतिहार, व्यापक और संप्रतिष्ठित प्रतिकार की आवश्यकता में शायद दो रायें नहीं होगी। प्रतिहार के स्वरूप के बारे में अलग-अलग रायें हो सकती हैं।

सरकार के लोग खुद यह रहे हैं कि चोखावारी और मुताफाखोरी से बचने के लिए जनता को संगठित होना चाहिए और बटकर रहना चाहिए कि हम उचित से अधिक मूल्य नहीं देंगे। ठीक है, ऐसा जरूर होना चाहिए। लेकिन स्वयं सरकार के दमन और भ्रष्टाचार के लिए क्या हो ? दिखाई तो यह देता है कि जनता बाजार से जितनी परीक्षण है, उधेसे नम परीक्षण सरकार के आदमियों और बगमनों से नहीं है। जब देश की सरकार ही अनोखि और अन्याय पर उतावली हो जय तो मान लेना चाहिए कि सीमा के पार हो जाने में देर नहीं है। तब लोकशक्ति द्वारा प्रतिहार के सिवाय दूसरे उपाय भी नहीं है।

गांधी ने हमें बुराई के सामने 'नहीं' बहना सिखाया था। पचीस वर्षों में हम 'नहीं' बहना भूल गये। हम भूल गये कि 'नहीं' मुनिउ का मन्त्र है। 'नहीं' सत्य के साथ कुडकर सत्याग्रह का अस्त्र बन जाता है। अगर हम बुराई को अस्वीकार नहीं कर सकते तो अन्धैई को स्वीकार करने की शक्ति नहीं से आयेगी ? आज स्थिति ऐसी है कि समाज की प्रतिहार-शक्ति जवनी हो चाहिए। प्रतिहार अविश्वस्य हो या सामूहिक, और निस्त डण से हो, यह विवेक का प्रश्न है, लेकिन अनाथों की दलितों को सामुह्य होना चाहिए कि अब हम उनके सामने 'हां' बहने, डा धुप -हने के लिए तैयार नहीं हैं। अन्याय का प्रतिहार हमारे जान्दोलन में शामिल के बाद का एक मुख्य काम है। हमारी शामन्वराज्य सम्पत्तों तथा शाम शान्तिसेना, श्रम शान्तिसेना की घोषणा

चाहिए कि वे वहां किस तरह सक्रिय और प्रभावी सिद्ध हो सकती हैं। अन्याय को स्वीकार करना अत्याय करने से नहीं ज्यादा बुरा है।

प्रमाण दीजिए

'योजना असफल रही।' 'हम जब तक नहीं पहुँच सके।' 'योजना किसी एक पल के नहीं, पूरे राष्ट्र के पुष्पाय की चीज है।'

हमें कृतज्ञ होना चाहिए कि हमारे नये योजना-मंत्रों की ३०-५० धर ने सरकार की ओर से उत सत्य को स्वीकार किया जिसे देश की जनता ने बहुत पहिले ही जान लिया था। योजना-मंत्रों की यह स्वीकृति इस बात का प्रमाण है कि सरकार और जनता के शोचने-समझने में समय का अंतर है। इतने वर्षों तक जनता भोग्गी रही, और सरकार भ्रम में पड़ी रही। अब सरकार का भ्रम टूट रहा है, लेकिन क्या जनता के भोगने का अन्त भी होगा ?

अन्त कैसे होगा, यह भी धर और उनकी सरकार ने अभी नहीं बताया है। जोर, केवल बताते से काम भी नहीं चलेगा, अब तो करके दिखाना होगा। फोटा हुआ विन्वाण आसानी से वापस नहीं आता। बातें बहुत हुई हैं, और होती जा रही हैं। लालो की हुई हैं, करोड़ों भी हुई हैं, अब अरबों की हो रही हैं। जनता बड़ी-बड़ी बातों, वादों, और अंकड़ों को रोटी और रोझार की मकल में देखना चाहती है। सरकार भी ऐसा ही सोचनी है, इसके साथेक सनेत अभी तक नहीं मिले है।

योजना जब तक कैसे पहुँचेगी ? क्या हमारे योजनाकार दाय-माँव के लोगों को अपनी योजना खुद बनाने देंगे ? या, अब भी विचार के अधिारियों, नेताओं और मुखियों की ही सब कुछ मानकर उनके द्वारा दूर दूरों में बचायी हुई उसली-सीधी स्त्रीमें जनता के मन उतारने की कोशिश करते रहेंगे ?

योजना राष्ट्रीय कैसे बनेगी ? अभी तक योजना सरकार की रही है, सर्वदलीय भी नहीं। योजना राष्ट्रीय तब मानो जायेगी जब हर गाँव, हर तगर, हर स्मून, हर कारखाना, हर कार्यालय, हर सत्यान, जममें अपना स्वान देखेगा, जब हर नागरिक योजना के साथ अपना पुष्पाय जोड़ेगा, और उसकी सफलता में अपना भाग्य देखेगा।

योजना की विकेंद्रित नीति। गाँव तक ले जाए। उसे मनुष्य केन्द्रित बनाए। मनुष्य को जीवित से नहीं, बालों से देखिए। इतना कीजिए, जल्द कीजिए। अगर यह हो जाय तो जनता अब भी विश्वास करने की तैयार देवेगी; विश्वास का प्रमाण देना, भी धर, आपका काम है। ●

हम सब परमेश्वर के ही अंग

● विनोबा

अभी परमेश्वर के अस्तित्व के विषय में एक लेख देखा। उस लेख के अन्त में लेखक ने 'विचार-शीली' में से एक वचन लिखा है और उन्हीसे लेख समाप्त किया है। 'विचार-शीली' में मैंने एक विचार लिखा है कि 'विनोबा मुझे पूछ, सामने के दीपक को जितना नाम निश्चित कह सकते हैं, उतना ही क्या बाप ईश्वर के अस्तित्व के विषय में मानते हैं ? मैंने उत्तर दिया, परमेश्वर के अस्तित्व के विषय में तो निश्चित हूँ, मुझे तो इस बात का यकीन नहीं है, मैं मैं यकीन नहीं करता कि सामने जो दीपक है, उसका अस्तित्व है या नहीं। उस दीपक के अस्तित्व की कोई गारण्ठी मैं नहीं दे सकता हूँ।' 'विचार-शीली' का मेरा यह वचन बहुत पुराना, सन् १९२८ का है। इस बात को २० साल हो चुके। ईश्वर को साक्षात् देखने का भाभाव मुझे कितनी ही बार हुआ है। कुछ शब्दों के कारण भी ऐसा होगा, जो दुःख से मुझे मिली थी। कुछ प्रश्नों पर जित्वास है, उसका कारण भी होगा, परन्तु उठने पर मेरी श्रद्धा निर्भर नहीं है, यन्कि वह शब्दों से देखती है कि सामने ईश्वर है। बाकी जो भिन्न-भिन्न प्राणी, जीव, मनुष्य हमारे सामने खड़े हैं, वे सारे उस ईश्वर के अनेक स्वरूप हैं। मैंने ईश्वर-स्वरूप को इस तरह समझा है कि वह एक चैतन्य समुद्र है और उसमें तहरें उठती और मिलती हैं, उछलती हैं और समुद्र के अन्दर ही फिर घुलमिल जाती हैं। फिर वे नयी तहरें उठती हैं और फिर वे घुलमिल जाती हैं। एक जीवात्मा यानी ईश्वर को एक तहर उठी। एक जन्म, दो जन्म, तीन जन्म उछलती रहती और अन्त में उठके अन्तर तीन हो गयीं, तीनों जीवात्मा मुक्त हो गयीं। उसमें कोई

अंध नहीं, कोई नीच नहीं, शिष्ट उरह-वरह के स्वरूप उठते हैं। सृष्टि-उत्पत्ति का संकल्प उठा और हमने उसको ब्रह्मदेव नाम दिया और सब से उत्पत्ति होती ही रहती है। ब्रह्मदेव-रूप सत्त्व्य बाटी ही है। उसको अभी मुक्ति नहीं मिली। एक दिन आयेगा, जब उसको मुक्ति मिलेगी और वह समुद्र में लीन हो जायगा। यह तो ईश्वर का एक बहुत बड़ा स्वरूप है। ऐसे अनेकविध स्वरूप, अनेक शक्तिधरो से भरे उठते हैं। वे पूर्ण होते हैं और फिर समुद्र में लीन हो जाते हैं। इनमें ऊँच-नीच कुछ नहीं है, ये भिन्न-भिन्न हैं। यह भिन्न है, वह भिन्न है। किसी कारण से कोई जीव हमें आकर्षक मान्य होता है, तो दुनिया उसको लिर पर उठाती है, कोई जीव हमको अत्यधिक आकर्षक मान्य होता है, तो दुनिया उसको भूल जाती है, यह सब चलता है।

चैतन्य ही संकल्पकर्ता

चैतन्य स्वरूप करता है और वह जीवात्मा के स्वरूप में तहर के प्रभाविक अन्तर उठता है और अपना स्वरूप पूरा करने पुन. चैतन्य में लीन हो जाता है। जैसे समुद्र में तहर पानी से ऊपर उठती है, परन्तु समुद्र का पानी और तहर के पानी के बीच कुछ मध्य (हाजे) निर्माण नहीं होता है, तहरें भी पानी ही हैं, वंशा ही जीवात्मा और परमात्मा के बीच कोई भ्रूत्यावकाश नहीं है। वे दोनों जुड़े हुए हैं। चैतन्य को सृष्टि-निर्माण, सृष्टि-रक्षण और सृष्टि-संहार के स्वरूप प्रभाव्य, दोषो हो सकता है; बड़ा-छोटा भी हो सकता है—जैसे समुद्र की तहर बड़ी भी हो सकती है, छोटी भी हो सकती है। एक दफा वह तहर उठी और पानी में मिल गयीं। अब वह अन्तर पुन. उठी, तो वह वही पानी

लेकर उठेगी, ऐसा हम निश्चित नहीं कह सकते हैं। एक बरतन का पानी समुद्र के पानी में जाता जाय और फिर वे बरतन से भर जाय, तो वही पानी उस बरतन में आयेगा, ऐसा नहीं कह सकते हैं। ऐसा ही जीवात्मा के बारे में है। हाँ, अगर सोलबन्ध बरतन पानी में डूबा जाय, तो उस बरतन में वही पानी रहेगा, जो पहले था। जैसे अगर कोई बर्तन-युक्त जीवात्मा अपनी उत्पत्ति के साथ ही मरता है, तो वह चैतन्य में लीन हुआ, ऐसा नहीं कह सकते हैं।

कुछ लोग कहते हैं कि हम प्रति-पत्नी चारह-चारह जन्म तक प्रति-पत्नी बनकर ही जन्म लेते, यह गलत विचार है। एक दफा वो तहरें एक साथ उठती, थोड़े अन्तर के बाद मानो मिल भी गयीं, तो उसके माली यह नहीं है कि वे तहरें उछलकर नीचे आयेगीं, समुद्र में मिल जायेंगीं और पुनः वे ही तहरें एक साथ उठेंगीं—सहरो में एक-दूसरी तहर का पानी आ सकता है। मकराचार्य ने जन्म लिया उन्ही का कुछ अंश लेकर ज्ञान-देव देता हुए। मकराचार्य और ज्ञानदेव दोनों के कुछ-कुछ अंश लेकर एकनाथ पैदा हुए, ऐसा ही सकता है। मेरी दृष्टि से चैतन्य समुद्र-स्वरूप है और जीवात्मा उस चैतन्य में स्वरूप-स्वरूप है।

परमेश्वर का अंग होना ही मुख्य

मैं जब अपने लिए सोचता हूँ कि मैं कौन हूँ और मेरा भाग क्या है, तो कुछ स्थूल भाग्य भी याद आ जाते हैं और उचका बहुत बड़ा डेर हो जाता है। मुझे जो माता-पिता मिले, वे कुछ विशेष ही थे, ऐसा लोग मानते हैं। मुझे जो भाई मिले, उनकी भी अपनी विशेषता है, वंशा मान सकते हैं। मुझे जो मार्गदर्शक मिले, वे तो नि सद्य ही जोरदृष्टि में महात्मा ही माने गये। मुझे जो स्नेही पिता मिले, वे भी सबके सब लोगों के प्रेम-पान ही गये। मुझे जो विद्यापति मिले, उन पर ही मैं स्वयं ही मुग्ध हूँ। जो, यह सब भाग्य का डेर लग जाता है। तबवर भी

मुझे अनेक भाषाओं का ज्ञान होने के कारण अनेक कृतपुत्रों और धर्मपुत्रों का विचार-रस सेवन करने का लिखत भोजन मिला और मिलता ही रहता है। यह भी एक बड़ा भाग्य ही है। इस तरह एक भाग्य-रसि बन जाती है। लेकिन वह सबकी सब भाग्यरसि वात्सलिक ही है। मुख्य भाग्य बड़ी है जो मेरा है, आपका है और सबका है कि हम परमेश्वर के अंग, हिस्से, अवयव, तरंग है। ऐसे मनुष्यों को मैं जानता हूँ जो महत्त्वा की सगति में रहकर भी बहुत नहीं पा सकें। मुख्य भाग्य तो यही है कि हम परमेश्वर के अन्दर समाविष्ट हैं—यह अगर हम महसूस करें, तो हमारा देहा पार है।

रामकृष्ण परमहंस का चित्र

ईश्वर के अस्तित्व का अनुभव तो अनेक लोगों को होता ही है। अभी हमारी यह यात्रा ही एक अनुभव है। रोड वह हमें विश तह बचाता है, मदद करता है, यह अनुभव तो हम सबको होता है, परन्तु यह बहुत स्थूल अनुभव है। इसमें ईश्वर-रस चखने को नहीं मिलता है। यह अनुभव भी शीघ्र है। मैं अभी स्वामी विवेकानन्द का चरित्र पढ़ रहा था। बचपन में तो वह चरित्र बड़ी-बड़ा पढ़ा है—मराठी, हिन्दी, बंगाली में। लेकिन इस समय शूबरात्री में पढ़ा। बर्नाटक में एक गुजरानी भाई ने, जो रामकृष्ण परमहंस आश्रम के सन्यासी थे, वह विस्तार लिखी है और मुझे वह भेजी तो फिर से पढ़ना ठीक समझा और पढ़ लो। उसमें विवेकानन्द ने भावावती आश्रम में रामकृष्ण परमहंस का चित्र भी नहीं रखने दिया। बाकी सबत्र, सब आश्रमों में रामकृष्ण की मूर्ति रहती है। उसकी पूजा, आरती चलती है। उनको भगवान के स्वरूप में ही भजते हैं। विवेकानन्द भी उनको भगवान् के स्वरूप में भजते थे। रामकृष्ण की पूजा के लिए स्वामी विवेकानन्द ने स्कोर भी बनाये हैं। लेकिन उस यात्रावती आश्रम में उन्होंने कहा कि 'दसरो अर्द्ध आश्रम ही रमा जाय। एक भा तो स्थान ऐसा होना

चाहिए, जहाँ पूर्ण अर्द्ध हो।' फिर भी उनकी गैरहाजिरी में किंगी ने रामकृष्ण का चित्र लगा दिया, तो विवेकानन्द ने कहा, 'उस चित्र को मैं यहाँ नहीं चाहता हूँ।' मैं नहीं जानता हूँ कि भावावती आश्रम में अब वह चित्र है या नहीं। परन्तु उस चित्र में ऐसा लिखा है कि विवेकानन्द ने कहा कि 'कम-से-कम एक स्थान तो रहे, जहाँ केवल अर्द्ध रहे।' उनमें रामकृष्ण के लिए अत्यन्त गहरी भक्ति थी, तो भी उसे उन्होंने अर्द्धानुभव में गणन माना। और, यह तो बहुत जैनी बात है।

विद्वान्ना की प्रबल शक्ति

हम छोटी-सा चीज समझ लें कि हम जो भूदान, ग्रामदान के नाम में लगे हैं, उसमें हमको उत्तम से उत्तम साधो मिले हैं। मैं जब एक-एक के बारे में सोचना हूँ तो मुझे सब हीरों और रत्न मालुम होते हैं। जवानी में बितनी तफलीक उठाते हैं, वह भी केवल निष्काम भावना से। उसमें दूसरी कोई अपेक्षा नहीं है। पचासो नाम मेरे सामने आते हैं। इतनी सुन्दर मूर्ति मुझे मिली है। सब दुनिया की परमेश्वरपद देखने का भाग्य तो जब प्राप्त होगा, तभी होगा, परन्तु हमें जो भाग्यो-मित्र मिले हैं, उनको आपस में एक-दूसरे के लिए कोई शबा न रहे, तो परमेश्वर ने हम पर पूर्ण कृपा की, ऐसा हमें मानना चाहिए। इतने से हमारा नाम होगा। अग्रे सर्वत्र हरि दिखगा। लेकिन प्रथम इनका हरि-दर्शन होना चाहिए, आशिक हरिदर्शन। ओ साधो हैं, एकत्र काम करते हैं, एक उर्द्व-सं-कर दायें हुए हैं, हम सब एक जीव हैं। इतना अंगर हो जाय, तो फिलहाल 'एक उग्रुत सब साथ' (बन रटेय इज एक फार मं) इतना हमारे लिए पर्याप्त हो जायेगा। उसके आशे जो कुछ होता है, वह होगा। स्थूल ग्रामदान-ग्रामस्वराज्यादि और धूम हरिदर्शनारि आगे होना है और मेरा मानना है कि यह होनेवाला ही है। मैं भगवान से आज प्रार्थना करता हूँ कि प्रभो, हम सबको अन्वोन्य विद्याय दे।

मैं इन दिनों विश्वास की शक्ति बताता हूँ। वैसे आज तक वेदान्त और विज्ञान की शक्ति का नाम क्यों से लेता था, परन्तु इन दो शक्तियों के अलावा एक तीसरी शक्ति की जरूरत है। यद्यपि वह चीज वेदान्त में आती है, फिर भी उसको असंग करके सामने रखने की जरूरत है। वह शक्ति है विश्वास। हम जब कुछ दुनिया पर विश्वास रखने की बात कर रहे हैं तब तो आपस के लिए परस्पर विश्वास होना ही चाहिए और ऐसी प्राप्ति हमको ही यही प्रार्थना करके आपस तक मनो का अत्यन्त उपकार मानता हूँ। आपके बिना मैं कुछ भी नहीं हूँ, मैं सतत अनुभव करता हूँ। वैसे तो मुझे अनेक दोष स्वयं करते हैं, परन्तु मैंने अपने में एक दोष नहीं पाया जो बहुतों ने मुझमें पाया। यह एक अजीब-नी बात है कि दूसरे लोग मुझमें जो दोष पाते हैं, उन्हें मैं खुद अपने में नहीं पा रहा हूँ और वह दोष अपने लिए अभिमान है। मुझे अपने लिए अभिमान रखने का कोई कारण ही नहीं मिला। यह ठीक है कि मेरी बुद्धि उत्तम काम करती है, परन्तु वह मेरी बजह से नहीं है। उसको उद्यम बनाने में क्रियो जा उपकार है यह देखा जाय तो उसकी 'मेरो' कहने का अधिकार ही मुझे प्राप्त नहीं होता है।

आजकल मैं कृत्रिम दाँत नहीं लगाता। इनके शोच्यर्ष की प्रशंसा भी हुई है। लेकिन मैं जानता हूँ कि इन दाँतों के शोच्यर्ष के साथ 'मेरा' वाचक नहीं है। जैसा दाँत के बारे में मुझे स्पष्ट अनुभव होता था, वैसे ही मुझे अपनी बुद्धि के बारे में महसूस होता है कि मुझमें जो बुद्धि-प्रकाश दिखता है वह मेरा नहीं है। उसमें शास्त्र-शय्य की मदद, गुणवत्ता की मदद, जिन, विद्वानों, साधियों की मदद मिली है। अनेक लोगों की मदद से जो चीज बनती है, उसके लिए अपने को अभिमान हो कि मुझमें बुद्धि-प्रकाश है, तो वह उच्छिन्ना नहीं है, एंगा ही सिद्ध होगा।

(११-९-१९५६)

भारतीय संस्कृति की उदारता की रक्षा को जाय

● जयप्रकाश नारायण

[आचार्यश्री मुलसी को पुस्तक 'अग्नि-पर्यटन' के विवाद के कारण चुरू में जो उपद्रव हुआ, उसमें श्री जयप्रकाशजी को बीच-बचाव करना पड़ा। समसोते के नव उन्हेने सार्वजनिक सभा में जो भाषण दिया, वह यहाँ प्रस्तुत है।—स०]

आज का यह अवसर बहुत शुभ है। बहुत ही सुन्दर वार्ये आप लोगों ने आपस में मिलकर, आपस की खर्चाओं द्वारा नल और आज में सम्पन्न किया है। पुरानी बातें नहने की जरूरत नहीं है। जो बातें बीत चुकी हैं, उसका स्मरण हमें नहीं रहे, यही हम सबकी कामना है; क्योंकि जो कुछ हुआ है, जिसने भी किया है, जिस कारण से भी हुआ है, वह अच्छा नहीं हुआ है। लेकिन अब जो हुआ है, हर रीति से, हर विचार से, बहुत ही उत्तम हुआ है। इसके लिए मैं यहाँ के जैन समाज को, हिन्दू समाज को धन्यवाद देता हूँ।

पता नहीं मेरे जैसा एक व्यक्ति, जिसमें अनेक दोष हैं और उन दोषों को मैं जानता हूँ, अन्तर्प्राप्ति मानता है, एक निमित्त बना लेता है। अभी-अभी चम्पल घाटी में मुझे निमित्त बना लिया गया और यहाँ भी मैं निमित्त बन गया। लेकिन मैं तो केवल निमित्त मात्र हूँ। जो कुछ भी हुआ है, वह सब ईश्वर की कृपा से हुआ है।

विजय अहिंसा की हुई

आप सब जिन भाइयों ने नल आचार्यश्री का 'भाषण सुना होगा, उन्हें स्मरण होगा कि जिन शब्दों में उन्होंने अपने विचार व्यक्त किये और अपना निर्णय आपके और समाज के सामने पेश किया। आपमें से कोई सनातनी भाई, चाहे वह सपर्य समिति का ही बने न हो, अगर यह मानता है कि उसकी विजय हुई है तो यह भूल होगी। विजय अहिंसा की हुई है, श्रम की हुई है, मानव की हुई है और मानवता की हुई है। परमों जब मैं आचार्यश्री का भाषण सुना तो उन्होंने कहा कि मुझे अब कोई खूछा है कि

तुम कौन हो? तो मैं बहता हूँ कि मनुष्य हूँ। फिर पूछता है कि कौन हो, तब बहता हूँ कि धार्मिक हूँ और जब फिर पूछता है कि शैल हो, तब उत्तर देता हूँ कि जैन हूँ।

जो व्यक्ति (आचार्यश्री) अपना परिचय सर्वप्रथम मनुष्य के नाते देना चाहता हो, उस मनुष्य को, उस मनुष्यता की ओर उस मानवता की विजय हुई है। आपकी मानवता सबकी मानवता है, शारे समाज की मानवता है। मुझे इस बात का पूरा-पूरा विश्वास है। आचार्यश्री ने बार-बार इस बात की अपने हृदय की वेदना के साथ व्यक्त किया। उन्होंने स्पष्ट कहा कि मेरे चित्त में, मेरे हृदय में, स्वप्न में भी राम और सीता के प्रति कोई दुर्भावना हो, कोई साधन लगाने की नीयत हो, ऐसा बभी सम्भव नहीं है। सीता के लिए उन्होंने उचितों में थंछा यदि सब कुछ बहा। भाव्य में अन्तर होता है। कुछ लोगों को लगा कि इसमें ऐसा नहीं है और आप लोगों ने आन्दोलन शुरू कर दिया। आचार्यश्री ने बल ही कहा था कि मेरे हृदय में राम और सीता के प्रति वैशेषी भावना नहीं है, जैसा मेरे विपक्ष प्रचार किया आ रहा है। फिर भी अगर दुश्मनों को ऐसा लगता है तो भी, मैं इसे धरती साधना, अपनी तपस्या में कोई बचर है, ऐसा मानता हूँ।

खमूष, आचार्यश्री ने जो कुछ कहा है, वैसा कोई महापुरुष ही कह सकता है, साधारण व्यक्ति नहीं कह सकता। 'यह मेरा ही दोष होगा, मेरी ही बर्षा होगी, जिसके कारण हमारे कुछ भाइयों को दुःख हुआ।' आचार्यश्री के इन शब्दों को सुनकर तो मुझे महात्मा गांधीजी याद आ गये।

अहिंसा विनिमय नहीं है

आचार्यश्री ने बल एक ओर बहुत ऊंची बात कही, वह यह कि अहिंसा में विनिमय नहीं होता, सीधा नहीं होता। अहिंसा विनिमय नहीं है। यह बहुत ऊंची बात है। आप मानें या न मानें जागे जागेवासी बुनिया, मानव-समाज, इस पृथ्वी पर बचेगा नहीं अगर वह अहिंसा के मार्ग को नहीं अपन लेगा। भाई-भाई के बीच, हमारे बीच हमारे बन्धुओं के बीच हिंसा फूट पड़े, क्या यह कम दुःख की बात है! चाहे वह मुसल-मान हो, हिन्दू हो, ईसाई हो या जैन हो, अहिंसा या मार्ग सबके लिए उपयोगी था। इसलिए कि हिंसा की कतिपयों का ऐसा विकास हुआ है, ऐसा विराट रूप हिंसा के शशो का हुआ है कि ईश्वर न करे कि कभी विषम-मुद्र हो; और अगर हो गया तो मानवमान नहीं बचेगा, निट जायगा, ऐसे विषम-सहारी शन्य हैं।

हिन्दू धर्म क्या है?

मैंने प० मोक्षिचन्द्रजी शर्मा से पूछा कि आपके पिताजी सनातन समाज के ऊँचे व्यक्ति थे, नेता थे और महापण्डित थे। ये हिन्दू धर्म की क्या परिभाषा करते थे? आपने कहा, 'परिभाषा क्या? जितने धर्म, जितनी संस्कृतियाँ भारत में पैदा हुईं, उनके माननेवाले सब हिन्दू हैं। पिताश्री कहते थे कि यह तोष चालीस बरोड़ हिन्दू क्या, अरसो नये कनोड़ हिन्दू हैं। ये भीन में नीन हैं? बरमा से लेकर चित्तलाम तक फौन हैं? बोद्ध है तो हिन्दू ही हैं।' हिन्दू की यह परिभाषा है। कलकत्ता में हमारे विठने मिश्र हैं जिनकी हिन्दू पत्नी है तो जैन पति हैं, हिन्दू पति है तो जैन पत्नी है। इतना मिल जुला समाज है, जिसकी हन बरपना भी नहीं कर सकते हैं।

आज हमारा देन स्वतन्त्रता की रजत-मन्थनी मना रहा है। हम राष्ट्रीय एकाता की, राष्ट्रीय एकीकरण के बात कह रहे हैं, यह ठीक है। पशुनु अभी आपने अलखारो में पढ़ा होगा कि फिटने हरिबो की रिश्या जला दिया, हरिजन

भारियो को नंगा करके गाँव के रास्ते पर घुमाया गया। आप तो शायद भूल गये होंगे अपना इतिहास! हमारी पुरानी परम्परा तो बली गयी।

मित्रो, नारे लगाना एक बात है और धर्म का अध्ययन करना, उसको समझना दूसरी बात है। उसे जीवन में उतारना अलग बात है। वह धर्म की बात न व्यापारी के जीवन में उतरती है, न वृषक के जीवन में, न मंत्री के जीवन में, न बकील के जवन में, न डाक्टर के जीवन में, और न राजनीतिज्ञ के जीवन में। अगर वह बात जीवन में उतरती तो इतनी दरिद्रता नहीं होती। एक तरफ गणतन्त्र की अटर्गलिसार्ड और दूसरी तरफ क्षोण्डिया नहीं होती। अगर हम सत्य पर चलते तो समाजवाद की आवश्यकता नहीं होती, साम्यवाद की आवश्यकता नहीं होती।

आप लोग सलियाँ लो बजा देते हैं परन्तु बात को समझते नहीं हैं। मैं समझाने के लिए आया हूँ। हमें कोई प्रसन्नता नहीं चाहिए। मैं तो सलियाँ भी मुस्ता रहता हूँ, प्रसन्नता भी मुगटा रहता हूँ। परन्तु दोनों में एक जैसा रहता हूँ। एक बात तो हमने बस आचार्यजी से सीखी कि इन्हें मनुष्य को चाहिए कि वह अपना आत्म-निरीक्षण करे, अपने को बमोटी पर बंधे कि हम कैसे हैं?

मैकरोमन साहब ने अवार्ड किया कि हरिजन हिन्दू-समाज से पदक हैं। महात्मा गांधी ने यह सुनते ही २१ दिन का उपवास किया, तब रवीन्द्रनाथ टागोर वहाँ आये। आसिर, उन्होंने अवार्ड वापिस ले लिया। लेकिन उन्ही समय महात्मा गांधी पर पत्थर फेंके गये। यह बड़ा गयार कि बायोजी तो हरिजनों को मन्दिर में प्रवेश कराने जा रहे थे। गांधीजी पर प्रहार हुआ, साठी का प्रहार हुआ। यह प्रहार किसने किया? हिन्दू ने किया, मुसलमान या ईसाई ने नहीं किया। यह है हमारा हिन्दू समाज।

बस ही प्रहासवीर शास्त्री ने बताया कि आज रामपुत्र रामपुत्र को चोट देगा,

अहीर अहीर को चोट देगा, ब्राह्मण ब्राह्मण को चोट देगा और फिर अब उसमें भी गोन निवाल लिया गया है। गोन गोन को चोट देगा। जितने टुकड़े हो गये हैं समाज के। इस राष्ट्र में अब कोई शक्ति नहीं है। मैं गुरु गोलवलकरजी को सब बातों से सहमत नहीं हूँ, परन्तु इस राष्ट्र को एक करें, हममें शक्ति आये, चारित्र्य हो हमारे युवकों में, इसके लिए उन्होंने जो उद्यम किया है उसका मैं अवश्य प्रशंसा हूँ। और भी कई बातें हैं, जिनका मैं प्रशंसा हूँ। अगर आज भी हम नहीं केतने तो हमारे अन्दर बहार पकती जायगी और हम टूटते जायेंगे।

हिन्दू धर्म और धर्म परिवर्तन

मैंने सुना कि अलीगढ़ में जितने भी मलकाने रामपुत्र मुसलमान हुए थे, आज वे सबके सब हिन्दू बनने के लिए तैयार हैं। उम्र बस के नयाव छवारी हैं। उनके परो में आज भी आप जाइए, वे मलकाने तो नहीं हैं, मुसलमान हैं किन्तु शादी-ब्याह, रस्म-रीति आज भी वही चलती है। मुसलमान रामपुत्रों ने कहा कि हम अपने परिवार में बापिस तो बना चाहते हैं, परन्तु स्नेच्छ होकर नहीं आयेगे मुम्बारे यहाँ। एक जमाना वह भी था जबकि हमारे राष्ट्र के जीवन में, हमारी सत्कृति में इतनी शक्ति थी कि बाहर से जो भी आया, उसको हमने हजम कर लिया। चाहे हुए आये, चहे शक आये, चाहे कोई भी आया, हमारी सत्कृति में पुनर्मिल गया।

परन्तु जो बल बिरुद्ध हैं, और आज बापिस आना चाहते हैं, उनको हम मनुष्य मानने के लिए भी तैयार नहीं हैं, उनको ईश्वर के मन्दिरो में भी नहीं जाने देंगे। जितने दुःख की बात है।

हम कहते हैं कि ईसाई लोग धर्म-परिवर्तन करते हैं। धर्म-परिवर्तन का मैं कोई पक्षपाती नहीं हूँ। परन्तु अपने ही एक भाई को हम अस्पृश्य मानें, यह बर्दाशनी क्या है? इतना पद-दलित, गोपित और उपेक्षित होने के बाद भी आज वे हिन्दू ही हैं। उन्होंने बहुत धीरे-धीरे

किया कि हम फिर जायें? उन्में में वे बौद्ध धर्म में रहे यानी भारतीय सत्कृति के अन्दर ही। यह इतनी महानता थी। लेकिन महाराष्ट्र के जो नव-बौद्ध हैं, उनका हिन्दू जाति से सघर्ष क्यों चलता है? वे क्यों नव बौद्ध हो गये? उन्होंने कहा कि हममें स्थापित आया है। अब हम अस्पृश्य नहीं हैं। जो ईसाई हो जाने में भावना होती है, मुसलमान हो जाने में होती है, ऐसी भावना हो नहीं है। वे समाज में अपना बराबरी का दर्जा चाहते हैं। वे कहते हैं हम मरें हुए दोरों की चमकी नहीं उठारेंगे। क्यों नहीं उठारेंगे? यह हमारा काम नहीं है। तुम्हारी टट्टी साफ करना हमारा काम नहीं है। एक जाति-विशेष का काम टट्टी उठाना नहीं है। तुम भी करो, हम भी करेंगे। आपमें से जो हिन्दू भाई हैं, उनसे मेरा निवेदन है कि हिन्दू-समाज में जो प्राण था, जो शक्ति थी उसको आरम्भसात् किया जाय।

भाईचारा कायम हो

अब आप सबकी उदारता से, जैन समाज की उदारता से, हिन्दू समाज की उदारता से यह एक महान कार्य हो गया है, हममें कोई विषय नहीं आना चाहिए। अब आपकी सघर्ष-समिति का कोई स्थान नहीं रह गया है। अगर सघर्ष समाप्त हो गया है तो समिति भी समाप्त हो जानी चाहिए। वह फँसला आप स्वयं ही करेंगे। दूसरी बात यह है कि जिनने भाई जेल में हैं, उन्हें भी छोड़ देना चाहिए, यह मुजदमे उठा लेने चाहिए। यह मेरा निवेदन सरकार से है। मैंने तो यह मुझाव भी दिया था कि हिन्दू की जमानत जैन भाई वं और जैन की जमानत हिन्दू भाई वं तो एक भाईचारे का विषय मानने आयेगा।

मैंने देखा तो नहीं, मुझा है कि साहू के अन्दर बीजाती पर गन्दे नारे लिखवाये गये हैं, गन्दे विष बनवाये गये हैं, अब जाकर उन्हें धो डालिये। अपने हाथों से मिटा डालिये। यह कतुब है। ऊपर करके बच्चों को न धोयिए आपकी सगई में। राजनीतिवाले जो करते हैं, ' 1 ->

चुरू की अग्नि-परीक्षा

आजादी की राजत-जयन्ती के अवसर पर देश में जो कुछ प्रमुख घटनाएँ हुईं उनमें एक घटना राजस्थान के चुरू जिले में उत्पन्न हुई साम्प्रदायिक तनाव थी है। इस घटना की विरोधवा यह रही कि विस्फोट की चरम स्थिति पर पहुँचा हुआ पूरा तनाव थी जयप्रकाश नारायण के पहुँचते ही शान्त हो गया। चम्बल के बीहड़ों में जयप्रकाशजी के अहिंसामक प्रयासों की सफलता के तुरन्त बाद मिली इस सफलता ने लोगों के इस विश्वास पर अपनी मुहर लगायी कि बड़ो से-बड़ो समस्याओं के हल प्रेमपूर्वक समझा-कर हृदय-परिवर्तन कर देने से ही सकते हैं।

चुरू राजस्थान के कुछ प्रमुख जिलों में से है जो दिल्ली से १७६ मील की दूरी पर दिल्ली-बीछपुर रेलमार्ग पर स्थित है। चुरू नगर की आबादी ५१ हजार के लगभग है। इसमें ज्यादातर

सूफा हिन्दुओं की है जिनकी सूफा करीब ३० हजार है, १५ हजार मुसलमान हैं। ३ हजार जेनी है जिनमें से आधे लोग अधिकांश समय बम्बई, कलकत्ता और दिल्ली में रहते हैं। चुरू में उत्पन्न तनाव जैनियों और हिन्दुओं के बीच का था।

८ अगस्त को जे० पी० (धी जय प्रकाश नारायण) दिल्ली में थे और दिल्ली का कुछ काम समाप्त कर १२ को आज़िपर जा रहे थे जहाँ १९ अपरात तक रहकर विनोबाजी से मिलने बर्धा जाने का कार्यक्रम था। १० अगस्त को उनके एक मित्र श्री प्रमुदयाल डाबरोवाला उनके मिलने जाये और चुरू की दुखद स्थिति का वर्णन किया। डाबरो-वाला का दिल्ली और कलकत्ता में व्यापार है और चुरू से पारिवारिक सम्बन्ध। ११ की रात में जे० पी० ने आचार्य तुलसी के लिए एक पत्र लिखा। १२ को पूर्व

→कीजिए। बच्चे मासूम होते हैं। आप उनके आज़ सकराचार्य की जय बुलवा लीजिए तो नत्त आचार्य तुलसी की जय बुलवा ल जिए। इसलिये मैं कहता हूँ कि बच्चों की हज़ार उन्हें गन्दी राजनीति में मत भसोटिए। आप बच्चों को अच्छी चीज सिखायें। अगर उन्हे माली देना सिखाये तो वे आपकी भी माली दिये। आपके बच्चे आपके लिए ही भस्मासुर बन जायेंगे। हम और आप को जो कल्पना था, कर चुके हैं। जो जवान है, उनके हाथों में यह बंधो पीछी है। अगर उनके सत्कार अच्छे नहीं होंगे तो देश का भविष्य अंधकारमय बन जायेगा। भाई प्रमुदयालजी डाबरोवाला का पत्र मुझे मिला था। वे स्वयं मुझसे मिले थे। मेरे जाने की आवश्यकता हुई। एक अहिंसा के सिपाही के नाते मेरा धर्म है इसलिये मैं आ गया। सारी बातें हो चुकी। बहुत पढ़ा काम हो गया है। समाज में जो

प्रबुद्ध लोग हैं, भले लोग हैं, उन्हें जागे नाकर नाम करना चाहिए। समाज में जब कुछ गलत बातें हो जाती हैं तो बसामाजिक तरीकों को भीतरा मिल जाता है। असामाजिक तरीकों की कोई राजनीति नहीं है, उनका कोई सिद्धांत नहीं है, कोई भावना नहीं, कोई धेतना नहीं, कुछ भी नहीं। वे तो ऐसी बाजों से लान उड़ाते हैं। वे हमेंसा यही बाहने हैं कि समाज का चुरा होजा रहे। क्योंकि इसमें ही उनका लाभ है।

मैं आप सबको बहुत-बहुत बधाई देना चाहता हूँ और विश्वास करता हूँ कि अब यहाँ जो शांति कायम हुई है, वह हमेंसा कायम रहेगी। हमारे विचारों में सहिष्णुता होनी चाहिए। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह जाय सबको सद्व्यक्ति द।"

प्रेमकः कमलेश चतुर्वेदी

निश्चित कार्यक्रम के अनुसार जे० पी० आज़िपर रवाना हो गये और श्री डाबरो-वाला उनका पत्र लेकर चुरू चल पडे।

१५ अगस्त को जे० पी० आज़िपर के सचिव-हाउस में थे और समर्थकपत्ती बागियों के पुनर्वास एव उनके मुकदमों की परीक्षा आदि के प्रश्नों से चिन्वित थे। ए. सव बायों के लिए लाखों रुपयों की आवश्यकता वे महसूस कर रहे थे और पैसा वही से प्राप्त नहीं हो रहा था। इसी दिन श्री डाबरोवाला यहाँ आये और जे० पी० से निवेदन किया कि वे तुरन्त चुरू चलकर स्थिति समझें, करना सब कुछ बाबू से बाहर हो जायेगा और हिन्दु-जैन संपर्क पहले राजस्थान में फिर सम्पूर्ण देश में फैल जायेगा। जे० पी० ने पाँच मिनट में निर्णय कर लिया और चुरू के लिए निकल पडे।

चुरू का साथ विवाद व्युत्पन्न आन्दोलन के प्रवक्ता आचार्य तुलसी की पुस्तक 'अग्नि-परीक्षा' को लेकर था। १९६० में यह पुस्तक आचार्य तुलसी ने जैन समाजियों को कथावस्तु के आधार पर लिखी थी। यह पुस्तक १९६१ में प्रकाशित हुई। ९ वर्षों बाद १९७० में कुछ सनातनियों ने पुस्तक का प्रतिवाद किया। उनका आरोप था कि इसमें सीताजी के प्रति अहिंसक शब्दों का प्रयोग किया गया है और उनकी निन्दा भी की है। आचार्य तुलसी ने आरोप का स्पष्टन किया कि उक्त कृति सीताजी की महिमा के लिए लिखी गयी है और कृति में जो बनासरा का वर्णन है, उसके अन्तर्भूत पक्षों को लेकर ऐंठी धारणा बनना नहीं है। आचार्य तुलसी के एप्टीकरण का कोई प्रभाव नहीं हुआ और रामपुर साम्प्रदायिकता की भाव में जितना दुर्घट सकता था, झुलसा। पुस्तक को लेकर उत्तेजना के कारण मध्यप्रदेश सरकार ने पुस्तक पर प्रतिबन्ध लगा दिया, जिसके विरुद्ध न्यायालय में याचिका दर्ज की गयी। अन्ततोगत्वा, मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय से पुस्तक को निर्दोष घोषित कर

उसे प्रतिबन्ध से मुक्त कर दिया गया। पर तब तक रायपुर में बहुत कुछ भट चुका था जो बड़ी मुश्किल से सम्भाला जा सका।

मध्यप्रदेश से आचार्य तुलसी राजस्थान आ गये और उनके पीछे-पीछे रायपुर में ठण्डा हुआ। तनाव भी रायस्थान में आ गया।

१४ और १५ जुलाई की रात जगद्गुरु बोकानेर गेल से चुरू आये। १५ जुलाई की उनका पहला प्रवचन हुआ जिसमें उन्होंने कहा कि 'अग्नि-परीक्षा' नामक पुस्तक में सनातन धर्म पर आक्षेप लगाये गये हैं। अतः श्री तुलसी पुस्तक वापस ले लें। जगद्गुरु ने यह भी कहा कि अगर आचार्य तुलसी पुस्तक वापस ले लेंगे तो वे पहले ब्यापक होंगे जो उनका स्वागत करेंगे। इसके बाद हजारों लोग भी उपस्थित थे उनके रोजाना टीका प्रवचन होने लगे। १९ वी रात को एक सभा आयोजित हुई जिसमें २० जुलाई को एक जुद्ध निकालने का आवाहन किया गया। काले शत्रु के साथ २० को जुद्ध निकला। जुद्ध में हजारों लोग थे, जगद्गुरु जुद्ध में नहीं थे। सहर में तनाव था हिंसा की आशंका से जिलाधीश एवं अन्य लोगों ने प्रयास किया कि मामला शांति से सुलझ जाये। ये लोग जगद्गुरु के पास गये और उनसे निवेदन किया कि वे और आचार्य तुलसी बिनाधीश-नायकिय में अगले दिन आपसी पक्षों से मामला सुलझा लें। जगद्गुरु ने स्वीकार कर लिया और जुद्ध आदि पक्षों से वापस लौट आया। २० तारीख को आचार्य तुलसी १६ मील दूर स्थित घातडा नामक स्थान से चुरू गहर में बने 'जिलोक बाजार सिंघार' में आ गये थे और पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार २१ जुलाई को सहर में प्रवेश करनेवाले थे।

जिलाधीश-नायकिय में २१ जुलाई को होनेवाला सवाद २० की सारांश ही आयोजित हुआ। एक घण्टे तक जगद्गुरु सरकाराचार्य व आचार्य तुलसी के बीच पचाई हुई। बाजारिय में जगद्गुरु

ने पुस्तक में वर्णित राम के बहुपत्नित्ववाद पर आपत्ति प्रकट की। आचार्य तुलसी ने कहा कि यह बात जैन रामायणों में है, कुछ सनातन ग्रंथों में भी ही खती है। इस पर जगद्गुरु ने कहा कि यदि आचार्य तुलसी पाँच वर्ष की अवधि में सनातन धर्म ग्रन्थ के आधार पर राम की बहुपत्नियों सिद्ध कर देंगे तो पुस्तक पर उन्हें कोई आपत्ति नहीं होगी और अगर आचार्य तुलसी इसे सिद्ध नहीं कर पाये तो पुस्तक बन्द रहेगी। इस समझौते पर दोनों को सहमति हुई। समझौते के प्रस्ताव का प्रारूप भी बना पर एंसा 'कुठ' हुआ कि दोनों के हस्ताक्षर उध पर नहीं हो पाये। बनती हुई बात बिगड़ गयी और बिगड़नी चली गयी।

१६ अगस्त को सुबह जे० पी० चुरू पहुँच गये। १० प्रकाशवीर शास्त्री व १० मौलीचन्द्र शर्मा भी जे० पी० के अग्रपंथी पर इस समय तक चुरू पहुँच गये थे। इस समय तक भी दोनो पक्षों में तनाव कायम था। इसका जीता-जागता प्रमाण सहर की बीबारे घो जिन पर सरह-सरह के गण्डे चिब और पोस्टर चिपके हुए थे। एक पोस्टर हजारों की संख्या में चिपका हुआ था जिस पर छपा था—'२० अगस्त रविवार को चुरू चलो। तेरापथी श्री लखी की अग्नि-परीक्षा पुस्तक के विरोध में एक लाख का प्रदर्शन।'।

साढ़ नौ बजे जे० पी० तैयार होकर उस पंथाल में पहुँच गये जहाँ आचार्य तुलसी के प्रवचन होते थे। श्री प्रकाशवीर शास्त्री व १० मौलीचन्द्र शर्मा भी जे० पी० के साथ थे। इस सभा में जे० पी० कुछ नहीं बोले। कुछ भी बोलने से पहले वे दोनों पक्षों से बातचीत कर लेना चाहते थे। प्रकाशवीरजी ने अपने भाषण में कहा कि आज देश को राजनीति ने आपसी घट्टापनना की समझा कर दिया है। चुरू की घटनाओं के पीछे भी राजनीति ही काम कर रही है। लड़ने के लिए और भी मसले हैं जिनसे लड़ सकते हैं। लड़ना है तो हम समाज की सुरीलियों से लड़ें।

जे० पी० की उपस्थिति की खर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा नेता चुरू आया है जिसके पीछे कोई सरकारी पुछलता या ओहदा नहीं है। जिसने अपने तप से भारत के १५ करोड़ लोगों के मन में अपना स्थान बनाया है। जयप्रकाशजी की तपस्या के कारण ही मध्यप्रदेश के जातुओं ने अपने शासन उनके चरणों में डाल दिये। चुरू के लोग भी अपने सारे झगड़े उनकी सोपी में डाल दें।

लगभग साढ़ दस बजे जे० पी० की आचार्य तुलसी से चर्चा प्रारम्भ हुई। शास्त्रीजी व शर्माजी भी चर्चा में मौजूद रहे। चर्चा में आचार्य तुलसी ने जगद्गुरु सरकाराचार्य के साथ हुई चर्चा के बारे में बताया। सभी ने यह बहुसूत्र किया कि मौजूदा स्थिति का अन्त होना चाहिए। मौलीचन्द्रजी ने कहा कि समस्या का समाधान इस प्रकार होना चाहिए कि जयप्रकाशजी की बात टल नहीं सके। दोनों ही पक्ष उसे मान्य करें।

साढ़ ११ बजे रेस्ट हाउस पहुँचकर जे० पी० ने क्षमर्ष समिति के प्रतिनिधियों से चर्चा की और उनकी माँग सुनी। प्र प्रतिनिधियों ने कहा कि अगर आचार्य तुलसी अपनी पुस्तक वापस ले लेंगे तो वे भी अपना आन्दोलन समाप्त कर देंगे। जे० पी० ने उनसे कहा कि वे तीन बजे आचार्य तुलसी से चर्चा करेंगे। चर्चा के बाद सभा होगी उसमें वे भी बोलेंगे। इस अवसर पर सनातन धर्म के लोग भी यहाँ इकट्ठे हो सकते हैं।

तीन बजे के कुछ देर बाद जे० पी० आचार्य तुलसी के पास पहुँच गये। लगभग तीन घण्टे तक दोनों में चर्चा हुई। चर्चा-समाप्ति के १५ मिनट पूर्व श्री मौलीचन्द्र शर्मा व जयप्रकाशजी को धर्मपत्नी प्रभावतीजी चर्चा में सम्मिलित हुईं। चर्चा के बाद जब जे० पी० अन्दर से निकले तो उनके चेहरे पर सन्तोष का भाव था। बाहर पंथाल में हजारों लोग बैठकर चर्चा का परिणाम जानने के लिए बैठे थे।

ग्रामीण राजनीति में हिंसा-२

● डा० अवध प्रसाद

['ग्रामीण राजनीति में हिंसा' की यह दूसरी और अन्तिम किश्त यहाँ दो जा रही है। ग्रामीण हिंसा के कारणों का अध्ययन डा० अवध प्रसाद ने मुसहरी प्रकाशक को केन्द्र मानकर किया है। उस अध्ययन में से राजनीतिक कारणों को हमने पाठकों के सामने रखा है। अन्ते अर्थों में आर्थिक, सामाजिक कारणों को भी हम पाठकों के सामने रखनेवाले हैं। —स०]

निम्न वग में चेतना हिंसा का कारण

गाँव की वर्तमान राजनीति किसी भी मुद्दावली नहीं। फिर भी रवि सभी लेते हैं। वर्तमान से सन्तोष किसी को नहीं, पर उसे बदलने की कोशिश भी नहीं। हिंसा-अहिंसा का विचार मन में नहीं है, पर व्यवहार का परिणाम हिंसा को बढ़ानेवाला होता है, घटाने-बासा नहीं। वर्तमान राजनीति का विश्लेषण तत्कालीन वा प्रभाव भी नहीं हो रहा है। एक बात दिखाई दे रही है कि परम्परागत समाज-व्यवस्था का स्वरूप बदल रहा है और इसका प्रभाव-राजनीति पर पड़ता है। सामाजिक स्तर के अनुसार ग्राम-राजनीति पर पड़नेवाले तनावपूर्ण प्रभाव को देखने पर यह स्पष्ट होता है कि उच्च जाति के विरुद्ध निम्न मध्यम तथा हरिजन जातियों समासाम्प्रदाय में खड़ी होने के लिए प्रयत्नशील हैं। इस प्रयत्न में इन जातियों को व्यवहारगत क्रियाओं में विरोध वा सामना करना पड़ना है। इन जातियों को मुख्य रूप से निम्न-लिखित स्थिति में उच्च जातियों के लोगों के मुँहासा तथा उनके द्वारा की गयी हिंसा वा सामना करना पड़ता है :

१. काम के समय जाने-आने तथा काम करने के समय बिदे जानेवाले व्यवहार तथा बातचीत।

२. उठाना-बैठाना तथा अन्य निल के व्यवहार के समय।

३. मजदूरी तथा अन्य अर्द्ध-व्यवहार के समय।

४. बास की जमीन के प्रश्न पर।

५ पशु के चराने के समय।

६ ग्रामीण गुटबन्दी तथा मतदान के समय।

इन अवसरों पर उच्च जाति के लोग, सासु-ससुरा मजदूर किसान, उनसे अपने पक्ष में मददगार नियुक्त करना चाहते हैं। फिर युवा सभुदाय (हरिजन, पिछड़ा) व्यवहार में यह प्रतिष्ठा तथा होनता का भाव नहीं जताता तथा कि उनके पूर्वज जनाते आये हैं। सरो स्वीकारने की स्थिति अभी नहीं आयी है। राजनीतिक दल, सरकारी पंसा और ग्रामपंचायत की भूमिका

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद ग्रामीण जीवन में लोचरतरावक पद्धति वा विरासत करने का प्रयास किया गया। इस प्रयास में ग्राम राजनीति में सरकारी पंसा, राजनीतिक दलों तथा पंचायत की राजनीति का प्रवेश हुआ। पंसा, दल और पंचायत की प्राप्ति के लिए आवश्यक है कि सत्ता हाथ में आये। परिणाम-स्वरूप हर स्तर पर हिलो वा टकराव उत्पन्न हो गया। यहाँ वही भी किसी वा हिंसा टकरावता है वही तनाव आ जाता है। गाँव में बनी सभी संस्थाएँ पंसा और सत्ता की प्राप्ति के चरे में फिर गयी हैं। सरकारी ग्राम-विकास के लिए सभी महापत्ता गाँव में बनी सार्वजनिक मरचाओं के माध्यम से देती हैं। पंचायत इसकी मुख्य संस्था है। इसके अतिरिक्त सर्वरिठा के विद्वान्त पर बनी सरचाएँ भी हैं। पिछले दो दशकों में सरकारी तथा अर्ध सरकारी एंजिनिंग से प्राप्त मुविघाएँ पावनों

को मुनभ हुई हैं। इन मुविघाओं में आर्थिक तथा राजनीतिक शोषण निश्च सोमा तक हुआ है तथा हिंसा को निश्च अन्त तक प्रथम मिला है इसको प्रामाणिक अध्ययन नहीं किया जा सका है। लेकिन यहाँ दो बातों पर विचार करेंगे—

(क) राजनीतिक तथा आर्थिक मुविघाएँ किन्हे मिन पाती हैं ?

(ख) इसमें हिंसा की विधा क्या है ?

वर्तमान राजनीति में बिन्हे स्थान मिलता है तथा नीच लोग गाँव के लाभ के लिए बनी संस्थाओं से अधिक लभान्वित होते हैं, इस प्रश्न के उत्तर में जो बागों बड़ी गयी उससे ये तथ्य सामने आते हैं

१ जो गलत वग से पंसा देने की स्थिति में होते हैं।

२ अधिचारियों के सम्बन्धी।

३ नेता तथा उनके सम्बन्धी।

४ गाँव की राजनीति चिन्ने के हाथ में है।

स्पष्ट है कि जिन लोगों को राजनीतिक लाभ मिलता है उनकी संख्या काफी कम है। सामान्य जन इसमें हिंसा नहीं लेता; जिन लोगों को लाभ मिलता है तथा जिस प्रक्रिया से लाभ मिलता है उसने ग्रामीण भैतित्वता की सीधे प्रभावित किया है। सामान्य किसान तथा निम्न स्तर के लोगों का यह विश्वास बड़ हुआ है कि यदि राजनीतिक संस्थाओं से लाभ लेना है तो उपयुक्त में से एक वा अधिक रास्ते अपनाते होते। देखने में यह आया कि माध्यम तथा सम्पन्न किसान अपनी समझाएँ सुँच के अनुसार सचत-सही रास्ते से लाभ ले लेते हैं। निम्न मध्यम तथा हरिजन सभुदाय को लाभ नहीं मिल पाता। वर्तमान राजनीति की इस परिस्थिति पर हरिजन तथा निम्न मध्यम वर्ग के लोगों से चर्चा करने पर उनकी शिकायतें इस प्रकार रही —

५१ हरिजनों ने इस बात की शिकायत की कि पिछले दो दशकों में

श्रीगांधी आश्रम का स्तुत्य कार्य

सरकार या गाँव की पंचायत की ओर से किसी प्रकार की सुविधा नहीं मिली। ५ लोगों ने कहा कि बीच-बीच में कुछ वैसे वीर-चालीस रुपये मिले हैं। अरब के समय प्राप्त भोजन-वस्त्र से कमीशन लाभ सबको मिला। इनके मन में यह धारणा है कि सरकार या पंचायत बड़े लोगों के लिए है। हाँ, इतना जरूर समझते हैं कि थोट के समय थोट मंगी जाते हैं और बन्धी-बन्धार कुछ मदद भी मिल जाती है। सामान्यतः गाँव की राजनीति से इन्हें कोई मतलब नहीं है। निम्न मध्यम वर्ग के लोग अधिक जागरूक हैं। इस जागरूकता का लाभ उन्हें नहीं मिल पाता। हाँ परिवर्धित या जान होने के कारण विरोध तथा विद्रोह का मानस सहज ही बनता है। वैसे जातिगत सन्तोषिता इतनी बढित है कि हरिजन तथा निम्न मध्यम वर्ग की सभी जातियाँ जिनकी आधिकारिक सामाजिक स्थिति प्रायः एन-सी है, राजनीतिक हिसल के नाम पर एक नहीं हो पाती। पिछली हिलक पटनाओ से नाजाबरण में आधिकारिक परिवर्तन आया है। इन पटनाओ के प्रति सहायभूति देखी गयी।

राजनीतिक सगठनों से जिस प्रक्रिया से लोगों को लाभ मिलता है उसके मुख्य दो प्रकार के लोको के बीच तनाव बकला है तथा हिंसा को प्रथम मिलता है—

१. लाभ प्राप्ति विभिन्न गुटों के बीच।

२. जिन्हें लाभ नहीं मिल पाता है।

सत्ता-प्राप्ति के लिए बने गुटों में एक स्थापित करने का प्रयास प्रायः नहीं किया जाता है। फलस्वरूप हर गुट का स्वार्थ बकला जाता है तथा दूरी भी बढ़ती जाती है। इस दूरी का मुखर रूप चुनाव के समय देखा जा सकता है। सामान्य स्थिति में ये गुट गाँव में गुट बनने तथा आर्थिक लाभ प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं।

राजनीतिक गुटों का निर्माण किसी उद्देश्य को लेकर नहीं किया जाता है। चतुर्ध्व में विक्षिप्त मनमुटाव बाद में

आचार्य कृपावानी के सभातन में श्रीगांधी आश्रम लगभग ५४ वर्षों से खादी जगत की जो सेवा कर रहा है, वह किसी से छिपी नहीं है। आजकल श्री-गांधी आश्रम का प्रधान कार्यालय लखनऊ में है। मेरठ, सहारनपुर, मथुरा, मुरादाबाद, अमृतसर, अकबरपुर, फेरना, मगहर, प्रयाग में क्षेत्रीय कार्यालय हैं। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब, कश्मीर और असम, इतने राज्यों में आश्रम का काम चलता है। उसमें मूवी और जनी काम विशेषकर से चलता है, रेडियो कुछ बम बनता है। १९७१-७२ की कुल उत्पत्ति करीब १ करोड़ ६० को है और बिक्री ११ करोड़ ६० की। आश्रम का धाम २० हजार गजों में चलता है। ६२४ उत्पत्ति नेत्र एव ४०३ बिक्री घण्टार है। कस्तिन १ लाख २३ हजार, सुन्दर २ हजार, अन्य १-गीगर ५ हजार व कार्यकर्ता ३,५००, कुल १ लाख ४० हजार लोगों को आर्थिक व पुरी रोजी मिलती है।

जिसका इतना विशाल काम है उस श्रीगांधी आश्रम की वार्षिक घणा गत ता० २२ से २४ अगस्त को मुम्बई-दर-दर में आश्रम के प्रधानमंत्री श्री विन्धि मारामेन मार्मा की अध्यक्षता में हुई। उसने सर्वोदय साहित्य-बिक्री में पुरी ताकत लगाने का संकल्प लिया है और अपने कार्यकर्ताओं से असील की है कि वे स्वयं तो सर्वोदय साहित्य का अद्ययन करें हों, पाहों को भी अधिक-जाकर विरोधात्मक गुट बन जाने है। वैसे गुटों के निर्माण में सहायक परिस्थिति को खोज की जाय तो ये बातें सामने आती हैं—(१) प्रधान संश्लेष, (२) किसी प्रकार का संश्लेष, (३) जाति, (४) आर्थिक लाभ की आकांक्षा (५) सत्ता प्राप्ति की आकांक्षा। एक ही गाँव में कई नेता होने पर इन परिस्थितियों को अधिक बन मिलता है।

से-अधिक साहित्य है। श्रीगांधी आश्रम ने साहित्य-प्रचार के लिए खास रियासतें प्दान की हैं—

१. हर सादी के सदीदरार को, जितने भी खादी खरीदेगा उतना मान्य साहित्य गांधी कीमत पर दिया जायगा।

२. सर्वोदय साहित्य सेट, जिसमें ६० ११-०० का साहित्य है, वह ६०४-०० में हर पाठक को दिया जायगा। इसके लिए खादी-सरोर का बन्धन सादी-स्वर्ण जयन्ती तक नहीं रहेगा।

सर्वोदय साहित्य सेट में निम्न पुस्तकें रहती हैं। १—आत्मरक्षा : गांधीजी २—शत्रुघ्न ३—वीरवी कस्तिल : विनीता ४ गौता प्रबन्धन और ५—मेरे सपनों का भारत या अन्य साहित्य ६० ६-०० मूल्य का। इस प्रकार ११ ६० में ११०० पुस्तकें कीये ५ रितावें केवल चार रुपये में दी जायेंगी। साहित्य पर दी जनेयली रियासत का पूरा भार श्रीगांधी आश्रम का प्रधान कार्यालय उठायेगा।

श्रीगांधी आश्रम के इन स्तुत्य निर्णय के लिए हम शर्मा देते हैं और आशा करते हैं कि उसके विभिन्न नेत्र-अध्यक्षों का साहित्य-प्रचार के कार्य में दिलचस्पी लेकर इसे आगे बढ़ायेगे।

शाहाजुम्हल ब्रजाल
अध्यक्ष

सर्व सेवा सघ अनामन, बाराणसी

सरपंचाही गिरफ्तार

तार द्वारा प्राप्त सूचनानुसार ११ अगस्त को लखनऊ जिले (तमिलनाडु) के शतबलम् दुष्ट को २६० एफ जमीन के पट्टे के सगठों को लेकर ५४ विद्यार्थी ने श्री जगन्नाथन के नेतृत्व में हथारू किया और सभी गिरफ्तार कर लिये गये।

१ दिनभर के एक अन्य तार द्वारा दूसरी सूचना आयी है कि श्री मणिनाथ के नेतृत्व में ४० विद्यार्थी ने सरदाग्रह में भाग लिया और ये भी सभी गिरफ्तार कर लिये गये।

क्षेत्रीय आचार्यकुल-तरुण शान्तिसेना - शिविर-प्रतिवेदन

(२० अगस्त से २४ अगस्त १९७२)

उत्तर प्रदेश में तरुण शान्ति सेना के काम को तेज करने की जरूरत बहुत दिनों से महसूस की जा रही थी। साथ ही यह भी अनुभव आ रहा था कि आचार्यकुल और तरुण शान्तिसेना यदि साथ-साथ मिलकर तरुण अभिक्रम आगूत करने का काम करे तो सफलता की कड़ी अधिक सम्भावना है। इस दृष्टि की सामने रखकर वाराणसी में आचार्यकुल और तरुण शान्तिसेना का यह क्षेत्रीय शिविर आयोजित किया गया। पूर्व तैयारी

वाराणसी में तरुण शान्तिसेना का सघटन व उसकी शक्ति नाम-मात्र की थी। सभी शिक्षण-मस्थाओं, सामाजिक क्षेत्र में लगे मित्रों तथा नागरिकों से शिविर के आधिक सयोजन व शिविरा-यियों की प्राप्ति हेतु सम्पर्क करने का निश्चय किया गया। विश्वविद्यालय के साथियों ने छात्रावास में रहनेवाले अपने मित्रों से इस सम्बन्ध में सम्पर्क करने का निर्णय किया। पूर्व तैयारी में क्षेत्रीय आचार्यकुल समिति के सयोजक श्री वंशी-धर श्रीवास्तव, प्रसिद्ध विचारक श्री रोहित मेहता, व अ० प्रा० शान्तिसेना मण्डल के प्रतिपादक श्री अमरनाथ भार्गव का सक्रिय सहयोग मिला। तरुण साथियों में श्री किशोर शाह व कुमार प्रज्ञान ने बाहर से आकर इस शिविर आयोजन में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। उत्तर प्रदेश तरुण शान्तिसेना के अध्यक्ष श्री विनय भार्गव भी शिविर में उपस्थित थे।

बायो हिन्दू विश्वविद्यालय, वसन्त कन्या महाविद्यालय कमन्स, से धूल गर्ल स्कूल, काशी विद्यापीठ, उदयप्रताप कालेज, बाशी हिन्दू विश्वविद्यालय एन० एच० सी०, आचार्यकुल बाशी हिन्दू विश्वविद्यालय, अक्षय कन्या महाविद्यालय, हरिश्चन्द्र एक्टर कालेज, सनातन

धर्म एक्टर कालेज, सुभाष एक्टर कालेज चोबेपुर, वसन्त महिला महाविद्यालय से व्यापिक व शिविराधिकों की सहायता प्राप्त हुई। शिविर के आयोजन में शिक्षण-सस्थाओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं व नागरिकों ने सयोजक की भूमिका निभायी।

शिविर

शिविर में मिर्जापुर-१०, गाजीपुर-७ बलिया-३, देवरिया-१, जौनपुर-४, हरदोई-५, व वाराणसी-८२; कुल ११२ आचार्यों व तरुणों ने भाग लिया।

इस प्रकार ५६ विद्यार्थी, ३८ छात्रा-ओं, १२ आचार्यों एवं ६ शिक्षिकाओं ने भाग लिया। इसके अलावा १० आयोजक कार्यकर्ता भी थे। इस तरह कुल संख्या १२२ रही।

शिविर का उद्घाटन

शिविर का उद्घाटन २० अगस्त को आचार्य रामभूति ने किया। उन्होंने शिविराधिकों को बताया कि सत्ता के विरोध का अर्थ अन्ति नहीं होता। सत्ता के विरोध में सत्ता की भूल छोड़ी रह सकती है। अन्ति का अर्थ है सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन। इस परिवर्तन का काम जो करे, वही तरुण है। इस शिविर में आचार्य और तरुण एका हुए। यह बहुत अच्छी चीज हुई। क्योंकि हमको अन्ति तरह से समझ लेना चाहिए कि आज के युग में परिवर्तन विचार-शक्ति से ही हो सकता है और आचार्य तथा तरुण दोनों इन पथ के पथिक हैं। उन्होंने कहा कि स्वतन्त्रता के २५ वर्षों के बाद भी आज का समान अन्त राष्ट्रनीति और अन्तिक व्यवसाय एवं निकम्मी शिक्षा भी भूदाओं से बना हुआ निरुत्तर है। तरुण इस निरुत्तर का आधार है। आचार्य और तरुण इस निरुत्तर के आधार को तोड़ दें तो निरुत्तर नही बनेगा और सामाजिक अन्ति होगी।

उद्घाटन समारोह के अंशशोय पर से बोले हुए बाशी विद्यापीठ के कुलपति श्री रघुकुल तिलकजी ने कहा कि यह शिविर सरकार तथा दल दोनों से मुक्त है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस शिविर में आक्रामक अन्ति को खान की जायगी और अन्तिक दंग से सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन की चर्चा होगी। उन्होंने कहा कि में तरुण विद्रोह का हमेशा स्वागत करता हूँ। लेकिन विद्रोह की दिशा ठीक होनी चाहिए, जिससे सृजनत्मक शक्ति पैदा हो।

व्याख्यानों के विषय

शिविर में व्याख्यानों के विषय निम्नलिखित थे

- १ आचार्य, तरुण और परिवार।
 - २ आचार्य, तरुण और विद्यालय।
 - ३ आचार्य, तरुण और समाज।
 - ४ अत्यात्म और विद्यालय।
 ५. तरुण शान्तिसेना और आचार्यकुल।
- इन्के अलावा "शान्ति" भी एक विषय था। इन विषयों पर डा० बी० जी० चटर्जी, आचार्य वशीधर श्रीवास्तव, डा० गगुली, श्री नारायण देसाई, निमंला देशपाण्डे, आचार्य रामभूति, शुभादा तैलम, डा० रमेशचन्द्र तिवारी, श्री रोहित मेहता एवं अमरनाथ भार्गव के व्याख्यान हुए। इन्होंने विषयों पर शिविरार्थी अलग-अलग समूहों में चर्चा करते थे। इन गोष्ठियों में सभी शिविरार्थी भाग लेते थे। इसके उनमें विशेषण प्रातिन का अच्छा विकास हुआ। शिविरोत्तर कार्यक्रम

शिविराधिकों ने साथ-साथ बैठकर इस शिविर के बाद तरुण शान्तिसेना व आचार्यकुल को मजबूत करने का निर्णय किया। साप्ताहिक गोष्ठियाँ, सेवाकार्य, नियमित अध्ययन, धर्म का कुछ काम, सप्ताहान्त शिविर व अन्त्याय के प्रतिकार के कार्यक्रमों को करने का भी निश्चय किया गया। दामोदर खेचो में जाना, चिकित्सा-तपों में सेवाकार्य, हरिनन्दन बरिचो की खपाई व जन-सिखन के काम में भी शिविराधिकों ने अपना पूरा सहयोग देने का निश्चय किया।



समारोह समारोह में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति श्री काकुत्सात श्रीमती मंस पर बैठे हुए श्री और श्री रोहित मेहता बोलते हुए दिखाई दे रहे हैं ।

समयगत प्रतिभात शिविरार्थी दक्ष-प्रथा के विरोधी थे । उन्होंने दक्ष न लेने, न देने व न लेने-देने का निश्चय किया । कुछ लोगों का यह भी कहना था कि हम पंद्रह सम्पत्ति क्यों लें ?

सहजीवन

शिविर की सबसे बड़ी विशेषता सहजीवन थी । छात्र एवं छात्राएँ ५ दिन तक साथ-साथ रहे एवं उन्होंने प्रत्येक कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया । अन्तिम दिन अनुभव मुनासे हुए एक बहाने ने कहा कि "मैं पहले सोचती थी कि अलग रहने से ही अच्छा होता है लेकिन इस शिविर में पता चला कि साथ-साथ रहने से ज्यादा स्वस्थ वातावरण बनता है ।" इसी प्रकार एक प्रतिक्रिया थी कि यहाँ पर हुए भावना का तो सवाल ही नहीं उठा, जब कि दूरी सम्बन्धों के शिविरों में यह सामान्य बात होती है ।"

राष्ट्र के सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने भी शिविरार्थियों पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है । शिविरार्थियों ने इसमें उत्साह से भाग लिया । सभी शिविरार्थी मुखर छात्रे वार वरने राष्ट्रिय नये तक के सभी कार्यक्रमों में साथ-साथ हिस्सा लेते थे । इनमें सफाई, धर्म, प्रोजन परीक्षण, खेल, वर्ष आदि कार्यक्रम सामिल थे ।

शिविर-समापन

शिविर का समापन काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० बान्नाल श्रीमती ने किया । डॉ० श्रीमती ने

अपने समापन भाषण में प्रसन्नता व्यक्त की कि इस प्रकार की एक शिविर-योजना वाराणसी में की गयी । तथापि प्रमुख काम शिक्षा ग्रहण करना है । वस्तु समाज-सेवा के नाम से ये विरत न हो । इन दोनों कामों से अधिक महत्त्व का काम है स्वयं दृष्टिकोण और आदर्श को लेकर चलना ।

अध्यक्षीय भाषण देते हुए श्री रोहित मेहता ने कहा कि डॉ० श्रीमती ने अभी जो दृष्टिकोण बदलने की बात कही है वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है । अगर किसी भी काम के पीछे स्वयं और रचनात्मक दृष्टिकोण नहीं रहा तो सज्जन नहीं विद्यमान होगा । जानार्थ और छात्रों

ने एक साथ ईडकर विचार किया और इस तरह एक स्वयं परम्परा का प्रादुर्भाव हुआ है । यह शिविर का समापन नहीं है यह तो प्रारम्भ है । एक के बाद दूसरा शिविर और दूसरे के बाद तीसरा शिविर होगा और सतत हमारा चिन्तन चर्चा तथा चिन्तन का कार्यक्रम-व्ययन ही तो सत्य का हल निकलेगा ।

अन्त में डॉ० भा० शान्तिदेवा मण्डल ने प्रसिद्धक श्री धर्मराज भाई ने, किसीने इस शिविर का संचालन किया था, उसके धन्यवाद किया और वाराणसी जिला तहसील शान्तिदेवा के सचिवक श्री धरम कुमार ने शिविर के आय-व्यय का हिसाब प्रस्तुत किया ।

अन्त में रतैह-मिलन का समारोह सम्पन्न हुआ जिसमें छात्राओं ने शिविरार्थी छात्रों, आचार्यों और समारोह में आये हुए सम्जनों को राखी बाँधी । यह समारोह कु० पंडित, प्रतिभात सेम्टर हिन्दू मन्स स्कूल की कक्षा में सम्पन्न हुआ ।

शिक्षण-सहायकों तथा नागरिकों द्वारा इस शिविर खर्च के लिए ३, ३२० रु० प्राप्त हुए और ५ दिन के इस शिविर में कुल २, ३५०.९० रु० खर्च हुए ।

—अरुण कुमार



शिविर में शामिल छात्र-छात्राएँ समारोह-समारोह में; नगर के अन्य नागरिकों ने भी साथ-साथ में भाग लिया ।

मध्यप्रदेश ग्रामस्वराज्य पदयात्रा

पूज्य विनोबाजी के आगोश में तथा सम्मति से मध्यप्रदेश के बयोवृद्ध सर्वोदय सोशलसेवक श्री वादाभाई नाईक ने समस्त प्रदेश में ग्रामस्वराज्य सर्वोदय विचार-प्रचार के उद्देश्य से समूचे प्रदेश में पदयात्रा पर निरलसे का सफल क्रिया और १५ अगस्त, १९७२ को ग्वालियर से श्रद्धेय जयप्रकाश नारायण के आशीर्वादन के साथ उनकी पदयात्रा आरम्भ हो गयी है। उनके साथ पदयात्रा में बीच-बीच में थोमसो अल्फोर्नाई नाईक, और पूर्ण बर्ष भर श्री प्रमोद उपाध्याय (छिन्दवाड़ा) श्रीराम (बालाघाट) तथा कुमारी सध्या (मिन्दनापुर) रहेंगी।

यह यात्रा ग्वालियर से आरम्भ होकर चम्बलघाटी के बागी पीड़ित क्षेत्रों शिवपुरी, मुरैना, भिण्ड, दतिया, टीकमगढ़, सागर, दम्भीह, छतरपुर, पन्ना आदि जिलों से होते हुए गुजरेगी।

पदयात्रा में गाँव-गाँव में सभाएँ, गोष्ठियाँ और जपारि कराने, ग्रामस्वराज्य का विचार फैलाने (प्राससमा बनाने), पापकरोप कायम करने, गाँव के सगडे और अन्य समस्याएँ गाँव में ही तय करने और ग्रामशांतिसेना बनाने ग्राममित्रता खादी) के कार्यक्रम शामिल हैं। अब तक ग्वालियर जिले में ७ गाँव में सभाएँ हुईं। पहाड़ पर ग्रामीणों के बनावे घुबकें, छात्रों और शिक्षकों से भी सम्पर्क किया जाता है। यात्रा में अब तक १२१ रुपये की पुस्तक-विक्री हुई है।

आचार्यकुल का योगदान

चम्बलघाटी में बागी-समर्पण की भी चम्बलघाटी घटना हुई है, उसको एक सामाजिक शक्ति के रूप में सगठित और सक्रिय बनाना बहुत आवश्यक है, तभी यह घटना सार्थक बन पायेगी।

इस दृष्टि से मध्यप्रदेश सर्वोदय मण्डल और आचार्यकुल के आयुष्य पर केन्द्रीय आचार्यकुल के सगठक श्री कामेश्वर बहुगुणा भी इस पदयात्रा में वादाभाई नाईक के साथ मूढ रहे हैं। वे जगह-जगह शिक्षकों से सम्पर्क करके आचार्य-कुल के विचार समझाते हैं और उसे सगठित रूप देने का प्रयास कर रहे हैं। इससे आशा की जाती है कि क्षेत्र की परिस्थिति के तन्म में आचार्यकुल कोई कार्यक्रम विकसित कर सकेगा।

—प्रमोद उपाध्याय

हरियाणा में पदयात्रा

हरियाणा के लोगों में आगामी सर्वोदय सम्मेलन को लक्षित करते हुए विचार-गुष्ठि-गायों को सुचारु रूप से चलाने के लिए पदयात्राओं का ताँता शुरू कर दिया है। दो अलग-अलग पदयात्राएँ प्रसंगे पहले शुरू हो चुकी हैं। अब एक तीसरी पदयात्रा ता. १७-८-७२ को प्रा. वा. बने ग्रामीण-विद्यार्थी, हरियाणा (रा.स्थान) के मंचालक स्वामी केशवानन्दजी महाराज के आशीर्वाद से आरम्भ हो गयी है।

इस यात्रा में बालब्रह्मचारी श्री सूरत बाबाजी, व्यवस्थापक गांधी हरिजन सेवा आश्रम रोहताक, फूलिया भगतजी महाराज मुत्तारामजी बयोवृद्ध समाज

सेवक शामिल हैं। ये २१वें सर्वोदय सम्मेलन के शुरू होने तक अलग-अलग रूप से चलते रहेंगे।

यात्रा आरम्भ के समय ग्रामीण-विद्यार्थी का ग्वा. ग्वालियर जिला सर्वोदय मण्डल के सदस्यों और शिक्षार्थियों से सँदूको की सहायता में उपस्थित होकर भाषितों को भावपूर्ण विदाई दी।

सर्वोदय सम्मेलन की तैयारी

हरियाणा सर्वोदय मण्डल के तत्वावधान में ता. १५-८-७२ की रात की हरियाणा के प्रमुख सर्वोदय कार्यकर्ता और राजनैतिक नेताओं गान्धी स्मारक भवन सँवटर १६ ए चण्डोगढ़ में एकट्टे हुए। हरियाणा में होनेवाले २१ वें अखिल भारत सर्वोदय समाज सम्मेलन को पूर्ण तैयारी के लिए एडहोक स्वायत्त समिति का गठन निम्न प्रकार किया गया है

- आयुर्वर्धक—प. ओम्प्रकाश त्रिवा।
- अध्यक्ष—श्री बनारसी दास गुप्ता,
- स्पीकर हरियाणा विधान सभा।
- उपाध्यक्ष—माता सुचवती।
- नगरी श्री श्रीमदत्त वेदालकर।
- सहमयी—श्री मणोरम धीमल।
- सभा में यह तय पाया कि प्रचार और सग्रहणों को भाषक रूप से चलाना जाय।

हमारा नया प्रकाशन

धम्मपद (नवसंहिता)

सम्पादक—विनोवा

धम्मपद बौद्धधर्म का शीर्षक ग्रन्थ-संग्रह है। इस ग्रन्थ का विनोबाजी ने पुनर्संशोधन-संकलन करते हुए ३ खण्ड, १८ अध्याय तथा प्रकरणों में विभक्त करके हर बिपय को समझने में आसान कर दिया है। जो काम पिछले दो हजार वर्षों में नशी हुआ, वह अब हुआ है।

परी की, अकर्मक छपाई।

मूल्य : चार रुपये

सर्व सेवा संघ प्रकाशन

राजघाट, बाराणसी—१

रजत-जयन्ती और शिमला-सन्धि पर विनोबा के विचार

"गांधीजी की रजत-जयन्ती मनायी जा रही है। जापरी, दृष्टि से इन जयन्ती-कार्यक्रम की क्या विशेषताएँ होना हितकर होगी?" अभी हाल में ब्रह्म-विद्या-मन्दिर, पबनार (बर्मा) में गुजरात के राज्यपाल श्री भीमसागराम शास्त्री पुणे गये उनका प्रश्न का उत्तर देते हुए आचार्य विनोबा भावे ने कहा :—

"रजत-जयन्ती पर अपना विश्वास नहीं है। अभी गांधीजी की सत्यवत्सरी मनायी गयी। मैंने कहा कि यह गांधीजी की महिमा नहीं है, गणित की महिमा है, १०० साल हुए फिर १०१ साल हो जायेंगे और फिर १०२ साल। पूरे उद्यम मचाया गया साल भर। गांधी-शांति में एक बहल ने उत्तम प्रोग्राम किया। उसने कहा था कि इस अवधि में तो गांधी-वादिनों को भरना चाहिए। मैंने गिनती भी की तो भरनेवाले गांधीवादियों में से ३०-३५ मित्र मिल गये मुझे।

अभी हाल ही में महावीर की सत्यवत्सरीवाले आये थे। मैंने उनसे कहा कि देखो महावीर ने कहा था, 'मुझे याद मत रखो, मेरे विचार बपत में जायेंगे।' इसलिए गांधीजी की तरह महावीर की भी हालत क्यों करते हो?" शिमला-सन्धि के बारे में आधी

क्या राय है? आगे होनेवाली शिखर घाटी में भारत को विंग बाली की ओर विशेष ध्यान रखना चाहिए? राज्यपाल महोदय के इस दूसरे सवाल का जवाब देते हुए विनोबाजी ने कहा—

बाबा ने अपना चित्त राजनीति में हटा लिया है। मैं रोड अक्षर पढ़कर उसे उत्तर रख देता हूँ। कच्चे को जपकर रखना चाहिए।

"इन्दिराजी की जो राय है वही राय मेरी भी है। दोनों देशों की अपनी सेना पर बम लक्ष्य करने की सृष्टिवत् मिलेगी। पाकिस्तान अपने कुछ बजट का सत्तर प्रतिशत सेना पर खर्च करता है, दोष ३० प्रतिशत अन्य और चीजों पर। यदि सेना में बम लक्ष्य हो जायेगा तो उसका उपयोग अन्य विवाह-कार्यों पर किया जा सकता है।

'मेरी राय यह है कि लेन-देन में भारत को बज्जी नहीं करनी चाहिए। भारत एक बड़ा देश है। दोनों देशों के बीच में एक्ता, सीपी करने का बोधा मिलता है तो ध्यावा देने में पड़ना नहीं चाहिए। भारत में उदारता होनी चाहिए, यह एक बड़ा देश है। लेकिन मुख्य बात यह है कि जपन सोनी नहीं चाहिए। मेरा ख्याल है कि इन्दिरा अकल छोड़ेंगी नहीं।"

संघ की प्रबन्ध समिति की बैठक

सर्व सेवा संघ की प्रबन्ध समिति तथा अन्य उपसमितियों की बैठकों की तारीखों में कुछ अनिवार्य कारणों से परिवर्तन हुआ है। बैठकें उसी स्थान (प्रकृति निवेदन, कनौजी, पो० बिजुनपुर, जिला २५ परगना, ५० म्याल) पर होंगी। परिशुद्ध तारीखें निम्न प्रकार हैं :

२१ सितम्बर	सुबह १० बजे	संघ की विभिन्न समितियों के पदाधिकारियों की बैठक होगी
२२ से २४ सितम्बर	सुबह १० बजे	प्रबन्ध समिति की बैठक
२५ से २६ सितम्बर	सुबह ९ बजे	प्रदेश सचिव महोदय के अध्यक्षता और मंत्रियों की बैठक
२६ सितम्बर	सुबह ९ बजे	साम्प्रदायिक समिति की बैठक

संघ-सचिवद्वारा का पता :

सर्व सेवा संघ, परिशुद्ध-विभाग
राजघाट, नारायणी-१

हरार, सर्वसेवा कोष : ६४२९६

सम्पादक

रामश्रुति

इस अंक में

हरि श्रुति : लाल या शीली ?
'नही' की शक्ति,
प्रमाण दीजिए ?

—सम्पादकीय ७७०

हम सब परमेस्वर के ही अंग

—विनोबा ७७२

भारतीय सभ्रुति की उदारता
की रक्षा की जाय

—श्री जयप्रकाश नारायण ७७५

पुरु की अर्धा-परीक्षा

—श्री अरुण कुमार गर्ग ७७६

धार्मिक राजनीति में शिक्षा—२

डा० वरध मयाद— ७७९

संश्लेष आचार्यकुल-उद्यम

शान्ति सेना विनिर-प्रतिवेदन

—श्री अरुण कुमार ७८१

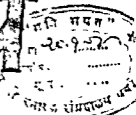
—श्री अरुण कुमार

अध्यक्ष स्वप्न

आन्दोलन के समाचार

भूतना-पत्र

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र



भूतना-पत्र

दस शणिकाएँ

● भशानीप्रसाद मिश्र

भ्रम

अपने प्रति कठोर लो
नाम बन सको जिससे
दूसरों के प्रति !
अवि
अकड़ी है यही
जोर कहीं नहीं !!

मार्ज्य

बाँध सक्ता है
गुम्हारे स्वर का
मीठा आरोह
किटना विरोध, किटना विद्रोह !
बाँध सक्ता है गुम्हारी
एक भिन्न-सी धिक्कर
किठने बिलदे भाव
किठने दूँटे मर !!

मार्ज्य

आज ही देखो ढोंककर
अपने गुण के फनाक को
और आज ही देखो जोड़कर
अपने दर काम को
दुमरों के गुण से
देगोगे फिर तुम
भीतर-बाहर यहाँ तक
बाड़ी है निगाह
बन गयी है अपने-आप
एक शत्रु, सारन, सीधी
राह !

श्रीच

अवचेतन की प्रतिबृल धाराएँ,
पेदा कर बेती है जय भँवर
भिन्नकर आवन में
तैर आता है जीवन में तप
मटमेलापन !

और तब हमारा चेतन
निर्मल प्रार्थना के अविरिक्त
और कुछ नहीं कर सकता
यह भी हमसे तब बनेगा
जय हमारा चेतन शुचिता से
कुशलता सम्भाल कर
अवचेतन की
गहरे से गह्रा खनेगा !!

सत्य

जितना और जो
सच मानता हूँ उसे कहूँ
चारों तरफ उसी सच को
अपनी सोंतों से !
और पड़े यह धारा बनकर
ऐसी गहरी और ऐसी सम
कि न कहीं ब्यादा, न नहीं कम
और फिर थाही न जा सके वह
बेचारी कल्पना के बोंतों से !!

संयम

जो जितना ऊँचा चढ़ता है
पनना पड़ता है उसे
उठना ही सावित कदम !
ऊँचाई पर लखरवाही
राही की नीव सिद्ध हो सकती है
ऊर्ध्वता चाहे पार्थिव हो
चाहे अपार्थिव
यम-नियम संयम से ही
निद्र हो सकती है !!

तप

उद्देश्य तुम्हारे होने का
तुम्हारे ही पङ्के-से-पङ्के अभाव
और करुणा और पीड़ा से
गढ़ा जाना है
जाना है तप पथ पर धीरज से
तुम्हें अपने तक !
यह तप ही है
जो पहुँचाता है आदमी को
आदमीयत के सपने तक ! !

त्याग

इतना अगर कहूँ तो उतना मिले
त्यागी नहीं बनाता मन में
सच्चे अथवा शूटे ऐसे किले !
भाव नहीं होता त्यागी को त्याग
उसमें लेश नहीं होता
इस इच्छा, उस अनुराग का ! !

आकिंचन्य

सुबह हो गयी है
हम सब मुकें
कि चुके हैं जिस तरह हमारे
अंधियारे
उजाले भी हमारे
वसी तरह चुकें
क्योंकि गण्य तो दिव्य का प्रभाव ही है
नगण्य हैं हम और हमारा व्यक्तिगत उजाला
अखिल के लिए तो वह रात ही है !

प्रहास्य

धरती पर कणों की गिनती नहीं है
न कमी है आसमान पर तारों की
इनमें भटक कर
स्थिर नहीं हो पाता मैं
अरुने भीतर के केन्द्र के सिवा
अपने को
कहीं नहीं खो पाता मैं ! •

—घो•नि•चि•सेवा के सौजन्य से

खेल : खेल या और कुछ

जब 1८९६ में बर्लिन गेम्स द वर्ल्डिंग ने ऑलिम्पिक खेलों की स्थापना की तो उसने यही सोचा होगा कि खेल खेल के लिए खेले जायेंगे। उसके मन में यह मान आया भी नहीं होगा कि जैसे जैसे समय बीतता जायेगा इन खेलों में मिलावट बढ़नी जायेगी, और एक दिन ये खेल हत्या और आक्रमण तक के बराबर बन जायेंगे।

इस वक्त म्यूनिख में खेल चल रहे हैं। इसी मौके पर म्यूनिख में ही बजारहू से बंझानिको, समाजशास्त्रिया, डाक्टरों और पारदर्शियों की एक सभा हुई जिसके विचार का विषय था 'आज के समाज में खेल-बूढ़ का स्थान।' उस सभा में परिवर्तनीय खेलों के सिद्धा और विज्ञान के मन्त्री ने यह विचार प्रकट किया कि खेल-बूढ़ में वैज्ञानिक ज्ञान और शक्ति के इस्तेमाल होने के कारण कई अशुभ परिणाम प्रकट हो रहे हैं।

पहिले बड़ा जाता था कि खेल में स्वस्थ प्रतियोगिता होती है जिसके कारण मन के तनाव निवृत्त जाते हैं, और शरीर होनेवालों के बीच सम्बन्ध बनती है। लेकिन आज यह सिद्धाई दे रहा है कि परिणाम ठीक इसके विपरीत आ रहा है। हमारे खेल उत्तेजना, प्रतिद्वन्द्विता, और आक्रमण के माध्यम बन गये हैं। तनाव और संपर्क को कम करने की बात तो दूर है, खेल के मैदान की प्रतिद्वन्द्विता आगे बढ़कर राष्ट्रीय सन्तुष्टा का रूप ले लेती है।

खेलाड़ी और बीझक शक्ति और स्पर्ध बढ़ाने के लिए जिन औपचारिकों का प्रयोग करते हैं तथा जहरीली चीजों की सुइयों से हैं उनसे उनके शरीर को स्वाभाविक क्षति पहुँचती है। कई खेलाड़ी निजर और प्रास्टेट आदि के रोगी हो जाते हैं; कई स्त्री-सैन्यवाहिनियों बंझ हो जाती हैं।

इतना ही नहीं, खेलों का शोषण राजनीति के मोग और मृदाघातों भी कर रहे हैं। कई जगह यह बात साफ-साफ नहीं जाने लगी है कि राजनीति और खेल साध-साध चलनेवालों चीजें हैं। खेलों द्वारा बृहतीति के प्रयोग होते हैं, खेलों को साधन बनाकर दूसरे साधन सिद्ध किये जाते हैं। उदाहरण के लिए पीने से करोड़ों की जम्बखदा का सम्बन्धित देश पूर्वी जर्मनी अपने खेल-बूढ़ों को अन्तरराष्ट्रीय उद्देश्यों का साधन बना रहा है। वह खेलों पर लगभग डार्ड अरब रुपये सालाना खर्च कर रहा है। खेल-बूढ़ की दृष्टि से छ-सान हाल के होनहार मन्चें खुल लिये जाते हैं। वे मुझ बढ़ने हैं, और तीसरे पहर खेल-बूढ़ की दुर्भाग्य पाने हैं। उन्हें सिलाया जाता है : 'यह सब समाजवाद के लिए

है।' बड़ा होने पर इन खेल-वाहिनियों को कई सुविधाएँ दी जाती हैं जो अन्य नागरिकों को नहीं मिलती। पूर्वी जर्मनी में एक बड़े खेलाड़ी का वह स्थान है जो एक प्रोफेसर का है।

इस बार म्यूनिख में पहली बार पूर्वी जर्मनी को एक सर्वाधिकार प्राप्त राष्ट्र का सम्मान मिला है। उसका अपना झण्डा और राष्ट्रगीत है। और, यह सम्मान उसे अपने प्रतिद्वन्द्वी पश्चिमी जर्मनी की धरती पर मिन रहा है जो उसके लिए विशेष सन्तोष का विषय है।

जब सत्ता की शक्तियों ने हर चीज को धरना साधन बना रखा है, तो खेल ही क्यों बूढ़ें? बात यह है कि खेल सिधे खेल नहीं रहे, वे बहुत-कुछ और बन चुके हैं।

जवान बनाम जवान

पटना में पुलिस के जवान बनाम कालेज के जवान, दिल्ली में कांग्रेस के जवान बनाम जनसंघ के जवान, वाराणसी में हिन्दू जवान बनाम मुसलमान जवान, तमिलनाडु में वाइस जवान बनाम ल-वाइस जवान, मध्य प्रदेश में आदिवासी जवान बनाम गैर-आदिवासी जवान जहाँ देखिए वहाँ जवानों की जवानों से भिन्नता है। लोग बहते हैं कि आजकल पुलिस पीड़ी और नयी पीड़ी के बीच साईं (जेन्डरमैन नैप) है जो दिनेदिन बढ़ रही है। लेकिन ये भिन्नताएँ सब नयी पीड़ी के हैं, इनमें कौन-सा 'नैप' है जो एक को दूसरे से मिटा रहा है?

क्या यह मान लेना चाहिए कि हमारे जवान हिंसा के सिवाय दूसरी कोई भाषा जानते ही नहीं? युनियन का चुराव लड़ना हो, इन्सुलान देना हो, मैच खेचना हो, सिनेमा देलना हो, या रिपोर्टों से निराशा तय करना हो, हर जगह वह एक ही भाषा का प्रयोग करता है—उठने को। क्या हमारी जिंदा का प्रतीक बगदा ही रह गया है?

विद्यार्थियों का जवान रिताय पढ़ते-पढ़ते बगडे पर पहुँच गया है। लेकिन पुलिस के जवान को तो शुरू से बगडा ही सिलाया गया है। जल्द उसने भी उन्नत की है, और अब गोली से कम में उसका काम नहीं चल रहा है। पुलिस का बगडा सरकार का बगडा है। तो, क्या सरकार ने भी वही भाषा सीखी है जो दूसरे जवानों ने सीख ली है? सरकार के पास इस बात का क्या जवान है कि सरकार लोक-फोड़ के सिवाय दूसरी कोई भाषा समझती ही नहीं? सरकार के सामने उपद्रव से बड़ा कोई तर्क नहीं। लेकिन सरकार केवल पुलिस नहीं है, उसमें जनता के मोठ से चुने हुए नेता हैं जिनके आदेश पर पुलिस चलती है। क्या सरकार के नेता, पुलिस के जवान, और कालेजों के जवान, सबने एक ही भाषा बोलने और समझने का निर्णय कर लिया है? →

विचार-निष्ठा के बिना आचार-निष्ठा सम्भव नहीं

● विनोबा

अध्ययन न करने का मायोबाधों वा लक्षण में बरसों से देख रहा हूँ। वे तत्त्व-विचार नहीं करना चाहते, गहराई में नहीं जाया चाहते, कुछ रचनात्मक कार्य जो उनके जिम्मे होते हैं, कर लिये तो उनका उत्प्रेय हो जाता है। इस दृष्टि के साथ मैं कभी भी सहमत नहीं हो सका। यह दीर्घदृष्टि नहीं है, ह्रस्वदृष्टि है। आचार का मूल, उसकी प्रेरणा, उसका समर्थन, उसके विनाश का विनाश-सूचन, विचार में ही होता है। वेंक के नीचे जमीन में परमा बहुता रहता है। उसके पानी से वेंक हरे-भरे दीखते हैं, गर्मों की सूख में भी। इतना ही नहीं,

लेकिन बाहर से धूप अन्दर से पानी का प्रवाह, दोनों मिलकर वह विशेष ही परिपुष्ट होते हैं। अन्दर का प्रवाह सूख जाय, तो वृक्ष सूख जायगा। लेकिन हम इस बात को न समझ रहे हैं। मैं तो रामदास रामों के विचार से सहमत हूँ कि जिस २. न पर और लाख बातें मिलती हों, पिन तिल धन्यमनन का अवसर नहीं मिलता, वहाँ साधक भी नहीं रहना चाहिए, एक क्षण भी।

लेकिन मायोबाधे बहुत हुए बुने प्राते है कि बिचारों की गहराई में क्यों जाना चाहिए। उसके उन्हे समय वा

क्षय होता दीखता है। जोर से मिताव पेश करते हैं--बुद्ध भगवान की, जो इन लोगों के स्वात में विचार की गहराई की दावते थे। लेकिन जहाँ तक मैं बुद्ध को समझ सता हूँ, बुद्ध के बारे में यह कयाल मतल है। बुद्ध भगवान विचार की गहराई में जाते थे, और इतनी नूतमता में प्रवेश करते थे कि उनके शिष्य उनके आशय को समझ नहीं पाते थे। और आखिर दुःखी बना बोधे इस विषय में उनका मतभेद हो गया था। परिभाषा-तत्त्व बुद्ध के नाम परस्पर विरोधी बार तत्त्व-विचार उनके शिष्यों ने रक लिये। अगर बुद्ध भगवान केवल आचार बयन तक ही सीमित रहे होते तो इस तरह विचार की विविध शाखाओं और ऐसे मतभेद उनके शिष्यों में नहीं होते। इतनी ही बात है कि बुद्ध

→ राज्य की सरकारों द्वारा और समाज की मंड-सरकारी दृष्टि में जनोप-आशयान का अन्तर है। जब शिक्षा सरकार के हाथ में है, और विनोदिव शिक्षा पर सरकार का नियन्त्रण बढ़ता जा रहा है, तो विद्यालयों के जवानों को नये भाषा, जो लोक-फोड़ की भाषा से भिन्न हो, सिखावे की जिम्मेदारी सरकार पर है। सरकार इस जिम्मेदारी को निभाये या शिक्षा को अपने नियन्त्रण से मुक्त करे। विद्यालयों को उनमें पढ़नेवाले विद्यार्थी, उनके अभिभावक, तथा पढ़ानेवाले शिक्षक मिलकर बना सकते हैं; उन्हें चलाया चाहिए। शिक्षा हो या क्या कोई भी, जोरतन को भाषा शिक्षा की नहीं हो सकती। जोरतन में हर नागरिक को मतभेद प्रकट करने, विरोध करने, यहाँ तक कि प्रचलित सरकार के स्वात पर (राज्य नहीं, सरकार) नयी सरकार बनाने करने का अधिकार है। इसलिए हमारी शिक्षा-संस्थाओं में यह सिखाया जाना चाहिए कि लोकतन्त्र में मतभेद, विरोध, और विरोध की भाषा बना होनी चाहिए; नया वह भाषा शिक्षा की नहीं हो सकती।

सरकार की शिक्षा करने का अधिकार समाज ने दिया है। समाज पुलिस और सेना के लिए टैक्स देता है। आज का समाज चाहता है कि सरकार अपनी शिक्षा-वर्षित वा प्रयोग भौतरी बरदाशिष्यो तथा बाहरी जासूसियारियों के विरुद्ध करे। लेकिन हम देखते हैं कि सरकार ने शिक्षा-वर्षित के प्रयोग का दावता बहुत बढ़ा लिया है। जो दल वा पट्टा-पट्टा में होता है वह अपने विरोधियों के विरुद्ध पुलिस का सहयोग करता है। चुनावों में हमारे राजनीतिक दल गुरुतमपुत्रवा लक्ष्यशायियों का प्रयोग कर रहे हैं। ऐसा लगता है जैसे सत्ता को प्राप्त करना

और सत्ता को बचाना, दोनों का आधार शिक्षा को ही शक्ति है। सात-बत्वाणकारी राज्य पुलिस-राज्य बनता जा रहा है। सरकार और समाज के बीच पुलिस के विषय सम्बन्ध के पूर्व में माध्यम स्थाप्य होने वा रहे हैं।

राज्यशासि में एक महाविचारन के प्राचार्य पर प्रहार होता है। सहर में शोभ की तदुर रोक जाती है। ७० प्र० के पुलिस नवी और शिक्षावनी (दोना एक ही है) राज्याण्टी के निवासी है। फिर भी वह अपने नगर के नागरिकों से शीथे-शीथे बन करे की चकन नहीं समझता। उन्हे भरोसा है अपनी पुलिस पर, नागरिकों का पुलिस पर भरोसा नहीं है। मतीरा यह होता है कि मार्गट और उजरी अपनी सरकार के बीच उतान पैदा होता है, साई बन जाती है। इस परिधि वा अन्ततम नाम अत्याचारिक नवी वा होता है।

नागरिक-शोषन के हट लेन में पुलिस का पड़ना हुआ हल-धेर, सरकार तथा राजनीतिक दलों का सत्ता के लिए अधिकारिक शिक्षा पर भरोसा, तथा नागरिकों का सुभर शोषन की सत्ता के लिए विनोदिव पुलिस पर अधिन मुहाराशी; वे शोषों स्थितिों कावतन ही नहीं, सय्य शोषन के लिए गरीबी कावतन है। अगर इस तरह से बनना हो तो एक ही उपाय है: नागरिक जासूसकों को (अ) संगठित हा। उन्हे अपने दैनिक शोषन से सरकार, पुलिस और राजनीति का जनन अपने की बाउ छोपनी ही हानी। जबकि क्या नती होता सरकारी बवान बनाय मीर-सरकारी बवान, तथा एक मीर-सरकारी बवान बनाय मीर-सरकारी बवान की (मि-र-हाडा हा), और उपाय की शोषन बवान-अवर्षित, बना रहता। ●

भारत का मेरा आकर्षण : गांधी-विनोवा

● दोनाल्ड मुम

[लोकप्रिय दोनाल्ड मुम दिल्ली की हास को ही एक हवाई जहाज-घुंटांग के सिकार हो गये। हिन्दुस्तान में दिया हुआ उनका यह अन्तिम भाषण प्रस्तुत किया जा रहा है। —स०]

मैं मोचता हूँ, अपना परिचय खुद ही देना पड़ेगा। कई वर्षों बाद यहाँ आया हूँ। यहाँ के समाजसेवी ग्रुप से मेरी अभी मुलाकात नहीं हुई है। मुझे अभी पता नहीं कि यहाँ कौन-कौन से लोग नाम कर रहे हैं, क्योंकि कई वर्षों से मुझे लोगों से मिले हुए।

सच पूछिये तो मैंने हिन्दुस्तान, जो लगभग मेरा घर ही हो गया था, १९६१ में छोड़ा। वैसे हिन्दुस्तान में तो १९४० से ही था और गांधीजी के साथ तो मेरा नजदीकी सम्बन्ध १९४० से ४६ तक रहा। गांधीजी से सेवादास में मैं बख़तर मिलता था। वहाँ मेरा विशेष सम्पर्क आर्यनायक मन्त्री और आगा देवी से था। वे लोग मेरे घर, मध्य प्रदेश में भी आया करते थे। और तब हम सभी जगल में जाकर भारतीय आजादी का झण्डा पहनाया करते थे। हिन्दुस्तान को आजादी की लड़ाई में अपने को शामिल करने की बात तो मुझे हमेशा याद रहेगी, और मेरा स्थान है कि यह भीड़ मुझे हिन्दुस्तान के लोगों के, और चीजों के मुकाबले ज्यादा नजदीक ले आयी। कोई भी मुझसे ये स्मृतिवाची नहीं

मनन, निदिशासन, साधक-नाथक धर्मा करते रहना चाहिए।

यह नहीं कि कर्मयोग को छोड़कर यह सब किया जाय, बहिक कर्मयोग के साथ किया जाय। मैं तो मानता हूँ कि कर्मयोग आदर्शवादी का ही यह साधक अधिकार है कि वे ऐसी चर्चा करें। दूसरे जो कर्मयोग नहीं आभरते और मान-वर्षा करते रहते हैं, वे वास्तव में उसके अधिपति नहीं हैं।

महिला आभग, वर्षा
८-९-४९

छीन सकता, चाहे मैं इस देश में रहूँ या उस देश में।

मैंने हिन्दुस्तान १९६१ में छोड़ा जरूर, लेकिन तब से यहाँ कई बार आ चुका हूँ। मेरा स्थान है, जिन्दगी में मेरा जो दूसरा बड़ा चीन्हा है, वह है विनोवाजी के सम्पर्क में आना, या यों कहिए १९५६ से '६१ पाँच सालों तक विनोवाजी के साथ एकत्र हो जाना। १९५६ में मैं दाराभाई नाइक के साथ पूरे मध्यप्रदेश में एक वर्ष तक घूमा, करीब ३६०० मील पैदल चला। यही पहला मोका था जब मैं विनोवाजी के नाम के साथ लोगों की जिन्दगी में गहराई से घुस सका। पदयात्रा के पूरे समय हम लोग गाँववालों की हवा पर निर्भर थे। पैसा मेरे पास था नहीं, लेकिन एक अमेन होने हुए भी मुझे गाँववाले अपने मित्र की तरह ही खोना-पकाते थे, उसी तरह जैसे मेरे साथ किसी भी दूसरे आश्रमी को। मैं हमेशा कहता हूँ कि मुझे हिन्दुस्तानी लोगों की सङ्कति पर यही सबसे जोरदार टिप्पणी करनी है कि सचमुच वे किसी रग या चमड़ी या ऊँच-नीच में कोई भेद नहीं करते। गाँव में यह बिलकुल सही है और भारतीय सङ्कति और जहाँ के गाँवों की यह एक नहुल बड़ी मजबूती भी है।

मैं विनोवाजी के साथ चार साल यानी १९६१ तक रहा और उन्हें जहाँ के कहने पर छोड़ा। उन्होंने मुझे नाम भी दिया 'लोडरगु'। यह था श्हे थे, जैसे कि वे हमेशा करते हैं 'लोडरगु लोडरगु... विष्णुहस्तमन,' और एक दिन उन्होंने यह ही तो दिया। 'यही तुम्हारा नाम है।' और जब-जब मैं विनोवाजी के पास गया हूँ उन्होंने मुझे रोब

मनवान लेखक नहीं थे, उन्होंने लिख नहीं रखा। इसके उनका निश्चित विचार मानस होने में बढिनाई हुई है। जिस भूमि में उनसे पहिले उपनिषद हो गये, उस भूमि में बिना तत्व-विचार के वे सड़े ही नहीं हो सकते थे। इसलिए उन्होंने गहरा तत्व-विचार किया था महावीर ने भी किया था।

जैसे उनके विषय में गलतफहमी है, वैसे सत्ता के विषय में भी है। बहुते हैं कि वे सारे भक्तिभाव पर सन्तुष्ट रहे और विचार की गहराई में गढ़ी गये। मैं मानता हूँ कि यह स्थान भी गलत है। हाँ, ध्यकियत कुछ सत जरूर ऐसे थे जो विचार को उत्तमन में उतरना नहीं म्मन्द करते थे, ध्युसा से काम लेते थे। लेकिन जब समूचे भक्ति-सम्प्रदाय को देखते हैं तो यह नहीं कह सकते कि वे विचारार्थिष्ठ नहीं थे। भक्ति और उपासना के मध्यमगीन सम्प्रदाय काकर, रामानुज आदि के विचारों की दृढभूमि पर सजे हैं। कोई सन्त रामानुजी, कोई शाकर और कोई माधव है, और वे सारे तत्व-विचारक थे।

इस चर्चा में पडने की वैसे हमें साथ जरूरत नहीं होनी चाहिए। मेरे लिए यह जरूर स्पष्ट है कि वैसे बीज बिना फल नहीं, वैसे विचार-निष्ठा के बिना आचार-निष्ठा सम्भव नहीं है। आधुनिक जमाने में साम्यवादी तत्व-निष्ठा का आधार छोड़ने नहीं। वैसे तो रजिजन कान्ति का उन्हें बल मिला है। वह न मिला होता तो वे उनसे आगे न बढ़े होते। फिर भी केवल रजिजन कान्ति के कारण ही वे आगे नहीं बढ़े। मार्क्स के तत्व-ज्ञान के बल से टिक पाये हैं। रजिजन कान्ति भी मार्क्स के उत्सर्जन के बिना सम्भव नहीं हो पाती। मैं अभी विस्तार नहीं करूँगा। मैं कई बार कह चुका हूँ कि गांधी के बह-बेबाब जड़ ध्युसा से और श्थितिक अन्वय से हम दुनिया के विचार-प्रवाह के सिखाक नहीं टिक पायेंगे। इसलिए विचार का चिन्तन-

याद किया है, क्योंकि वह रोज ही विप्लवहस्ताना पहते हैं और मुझे वो ऐसा लगता है कि इस नाम में बड़ी ताकत छिपी है। लेकिन उन्होंने मुझे कहा कि मैं हिन्दुस्तान छूटूँ और यदि हिन्दुस्तान से मैंने कुछ भी सीखा है और सर्वोदय आन्दोलन से कुछ सीखा है तो मैं पश्चिमी देशों में जाऊँ, हार्लेण्ड जाऊँ, अमेरिका जाऊँ, जहाँ चाहे वहाँ जाऊँ और मैं देखूँगा कि जैसा हिन्दुस्तान में जोय इस 'चतुर्थ आयाग' के प्रति प्रतिक्रिया दिखाते हैं वैसी ही प्रतिक्रिया मुझे सर्वत्र मिलेगी। उन्होंने इन शब्दों का अस्तेमान किया। जैसा कि आप सभी जानते हैं। 'चतुर्थ आयाग' मनुष्य मात्र के बीच क्रियाशील नये युग को पहलें हैं।

मैं तो यही कह सकता हूँ कि इन्डिअन में इस तरह की कई वर्षों की जिन्दगी बिताने के बाद और अमेरिका में काफी यात्रा करने और कई वर्षों तक सान्ति आन्दोलन में काम करने के बाद (मैं नेशनल पीपल कोलिस का सेक्रेटरी था। यह संगठन सभी सान्ति आन्दोलन में समन्वय स्थापित करता है। मैं चार साल तक सेक्रेटरी रहा, और इन्डिअन की कनेक्शन पीपल समिती का भी चार साल तक सेक्रेटरी रहा।) मैं विच्छिन्न तीन सालों से उस अदृश्य देश में रहा जिसे आस्ट्रेलिया कहते हैं।

विनोबाजी कहते थे, आस्ट्रेलिया में जमीन तो बहुत बरफ़ी है जिसमें भूदान के लिए बड़ी गुंजाइश है। लेकिन आस्ट्रेलिया में आकाश और जमीन एसी है जिसे लोग लेना नहीं चाहेंगे। जब पूछिये तो, वे सचचाह पहिले मीने जब आस्ट्रेलिया छोड़ा तबन् चाने के लिए, तो मैं छिन्नी से एक जाम्बोनेट में रवाना हुआ। उसमें ४०० आरामो बैठे थे। जाम्बोनेट ९०० मील प्रतिघण्टे की रणगार से चल रहा था और ४ घण्टे तक हम आस्ट्रेलिया के रिकतान के ऊपर से ही चले रहे। मीने देखा कि इस रिकतानो

जमीन की कोई भीमेष नहीं है। और, आस्ट्रेलिया के बारे में एक जमीन बाप यह है कि वो साल पहिले उन्होंने १९७० में अमेज बलान कुक द्वारा आस्ट्रेलिया की लीज का उत्सव मनाया। आस्ट्रेलिया की साज तो अंग्रेजो ने ही की थी और अमेज लोगो की यही मनोवृत्ति भी बनी हुई है। आस्ट्रेलिया के आदिवासी तो यहाँ इस दुबार वर्षों से रहते चले आ रहे हैं और आस्ट्रेलिया में रहनेवाले आदिवासी चायद हिन्दुस्तान से आये। आस्ट्रेलिया में लोगों के मन में यह बड़ा तगड़ा मुजवा है कि वहाँ के आदिवासी मूलतः यहाँ भारत के ही प्रबिध थे। आर्यों के पहिले के युग में समुद्र यात्रा करनेवाले लोगों ने ही आस्ट्रेलिया बसाया। दुनिया के लोगों और आस्ट्रेलिया के आदिवासियों में यही सम्बन्ध है कि वे आदिवासी दक्षिणी भारत के लोग लोग हैं। वे हिन्दुस्तानी पढ़ाई आदिवासियों के ही वंशज हैं। ये टोटा लोग आस्ट्रेलिया के आदिवासियों की तरह ही लगते हैं। और उनको जो सङ्कृति है, जो परम्परा है वह विनोबा की चरन्ना का सर्वोदय ही है, याने जमीन भगवान के शिवाय और किसी की नहीं है और वे भूमि और भगवान के पुत्र हैं। आस्ट्रेलिया के आदिवासी एसा ही मानते हैं अर एसा न हमेसा मानते आये हैं। हम लोग यह तब अब जात पाये हैं। हम इन आदिवासियों के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे। आस्ट्रेलिया में अंग्रेजो ने शारे आस्ट्रेलियाई आदिवासियों की ही सहायता करना चाहा और मैं समझता हूँ यह मनुष्य-माराण था एक घोर पाप है। और अन्ते आस्ट्रेलियाई निवास-कार में मीने माना भी कि इस पाप पाप को बिताने के लिए मैं कुछ करूँ। उनके ऊपर ये शारे दुःख सिद्धं एव रिष्ट है। मैं उन के आत्मिक नहीं हूँ, मुक्ति के मानते हैं कि वे पुष्पित हैं और भूमि सक्ती हैं। सिद्धं एसीनिर उन्हें मनुष्य नहीं माना या रहा है और एसीनिर उन्हें जीने भा नहीं दिया या रहा है। आस्ट्रेलिया के आदिवासियों को कही भी

कोई छविहार नहीं है। यह एक जमीन रिपति है। वे न भूमि खरीद सकते हैं न रख सकते हैं। लेकिन नो हमार या दस हमार वर्षों तक वहाँ की जमीन उन्ही की थी और तब कॅन्टेन कुक और उनके आदमी वहाँ आये और लन्दन का शासन वहाँ भी जम गया या जमने के लिए भेज दिया गया।

आस्ट्रेलिया हिन्दुस्तान से काफी बड़ा है। उत्तर दक्षिण बड़ा करीब तीन हजार मील लम्बा है और पूरब पश्चिम भी उतना ही है। वहाँ सिर्फ एक बरोड़ तीस लाख लोग रह रहे हैं जबकि हिन्दुस्तान में पचपन करोड़ लोग रह रहे हैं। आस्ट्रेलिया के बारे में यह एक जमीन बात है।

लेकिन सचमुच जो चीज मैं बहुत चाहता था वह यह है कि मैंने जयसे हिन्दुस्तान छोड़ा मैं सर्वोदय और विनोबाजी का संस्था अपने साथ ले गया, सभी से यह संदेश भेरी चेतना में बस पाया है। मैं जहाँ कहीं भी गया मीने हमेसा प्रेरणा और मार्गदर्शन के लिए हिन्दुस्तान की ओर देता है। मुझे हमेसा उल्लास रहती है यह जानने की कि यहाँ क्या हो रहा है, अहाँ यानी सब जगह वहाँ के लोगों को दुनिया के दो बड़ लोगों-गान्धीजी और विनोबाजी ने कुछ करने के लिए पुनोनी वो है। मैं एसा बसो सोचता हूँ? उरहा कारण यही है कि गान्धीजी और विनोबाजी का जो संदेश है वह आज के समय में पश्चिमी दुनिया के लिए सबसे प्रभाव जनपुत्र है। इस संदेश की उज्ज्वलता के बारे में कोई प्रश्न नहीं है। बरन सिर्फ १९७१ है कि इस संदेश को लेते रिक्त प्रसार है; जयसी क्रिया में, एनएन को रि-ली के शाने-जाते में, एनएन को प्रसार है। मैं समझता हूँ यही वह क्षेत्र है जहाँ हम गंगाधर देव हो मने है, बाह हिन्दुस्तान हा या पश्चिम की दुनिया।

हम अभी एक बात की सोच करती है कि गान्धीजी और विनोबाजी के दर्शन और संदेश को समान में लागू देना दिया बाय। ऐसे जीवन में एक मनुष्य

मजदूरी

● डा० अवध प्रसाद

[प्राचीन हिंसा के क एषों के अध्ययन को यह तीसरी किस्त यहाँ प्रस्तुत है। यह अध्ययन मुसहरी प्रबन्ध को ही केन्द्र मानकर किया गया है। इस लेख में आप पावेंगे कि गाँवों में मजदूरी-निर्धारण में कौन-से तत्व काम करते हैं और क्या मजदूरी दी जाती है।—स०]

किया जाय और इसे समाज में एक ताकत कैसे बनाया जाय। इसे सिर्फ़ एक चीज़ की तरह न रखा जाय जिसका आने पास रहना या जिसका जानना हमें थोड़ा सुन देना है बल्कि इसे उस चीज़ की तरह रखा जाय जिसमें समाज और लोगों के जोने के तरीके को बदल देने की ताकत है, जिसमें सारे समाज की नीतियों और लोगों के विचारों को भी बदल देने की ताकत है। मैं अभी थोफोल्ड (इर्लैण्ड) की बार ऐसिस्टेंट इन्स्पेक्शनल से आया हूँ। इस कान्फ़ेस में शामिल होने के लिए ही मैं मैलबॉर्न से इर्लैण्ड, १३,५०० मील उड़कर आया। इस सम्मेलन के बाद शान्ति आन्दोलन के बारे में मेरा यह मत बना है कि हम लोगों ने अभी यह नहीं सीखा है कि गाँवों के सिद्धान्तों को दुनिया में कैसे लागू किया जाय ताकि गाँवों की नमाज़ में शक्ति-शाली और आधिकारी शक्ति ख़त्म जाय। हम अभी विचारों के साथ ही चल रहे हैं और दुनिया के मामलों पर अंतर राजने को ठाठव अभी हममें नहीं है, जिससे कि हम एक ऐसे समाज का निर्माण कर सकते जिससे यह दमन और ये सिद्धान्त प्रबल हो सके हैं। पश्चिम में रहनेवाले हम लोग हम जहाँ नहीं भी हैं, उनसे ही कमजोर या मजदूर हैं जिनका कि हिन्दुस्तान है। यहाँ की स्थिति में कोई अंतर नहीं है। मेरा स्वाल है कि हिन्दुस्तान में भी सर्वोप आन्दोलन के सामने अब भी यह मूलभूत धुनोड़ी है कि वह एक ऐसी ताकत कैसे बने जो लोगों के जीवन और सरकार की नीतियों को प्रभावित कर सके और इन सिद्धान्तों पर आधारित एक समाज का निर्माण कर सके। जिनकुल यही चीज़ यहाँ भी है, चाहे इर्लैण्ड हो, अमेरिका हो, आस्ट्रेलिया हो या यूरोप हो। संसार को युवागोत्री बेसरी के साथ जिनकी के इसी रास्ते की ओर देख रही है।

{ इस भूमिका के साथ श्री बीगान्ड एम ने प्रश्न कायमिन किया थे। }

बम्बई, ३-६-३२ — प्र० रामभूषण

पिछले दो शहरों में प्राचीन जीवन की वार्षिक परिस्थितियाँ बदली हैं। इन बदलावों में परम्परागत आर्थिक परिस्थितियों में भी परिवर्तन आया है। अनेक प्रयासों के बावजूद आज भी प्राचीन जीवन का आश्रय कृषि तथा उसके सम्बन्ध अन्य कार्य हैं। शहर के समीप होने के कारण इस क्षेत्र में अन्य सहायक धन्धे भी हैं। शहरी जीवन का सीधा प्रभाव पड़ा है जिससे पुटकर दूकानें, रिक्शा चलाना, शहर में जाकर दूकानें में विभिन्न प्रकार के कार्य करना और साथ ही नौशरी करनेवालों की संख्या भी अर्थात् अधिक है। आज की बदली आर्थिक परिस्थिति में इस क्षेत्र में अर्थ-व्यवस्था का जो स्वरूप है उसे देखते हुए विभिन्न कार्यों को इस रूप में विभक्त कर सकते हैं

- १-कृषि
- क-कृषक मजदूर।
- ख-निर्माण।
- २-प्रार्थन, व्यापार।
- ३-घातीय उद्योग।
- ४-नौशरी।
- ५-अन्य कार्य।

इन कार्यों में दो प्रकार के एकाग्रता का विकास होता है : एक, प्रत्येक कार्य को अपनी कार्य-पद्धति है, और इस कार्य-पद्धति के कारण उसकी अपनी समस्याएँ एक समाधानार्थ हैं। दो, एक कार्य का दूसरे कार्य के साथ सम्बन्ध ऐसा है कि प्रत्येक कार्य का कृषि के साथ सम्बन्ध रहना है। नौशरी, व्यवसाय, उद्योग तथा अन्य पुटकर कार्य करनेवालों का भी कृषि से सीधा सम्बन्ध रहता है। फर्क

द्वारा रहना है कि एक का मुख्य धन्धा कृषि है जो दूसरे का पुटक-धन्धा कृषि है। आर्थिक कार्यों की प्रकृति एवं परिणाम पर विचार करने पर यह स्पष्ट पाना गया कि आज कृषि का जो रूप है उसमें शोषण एवं हिंसा का विकास होता है। कृषि में भी जो व्यवस्था आज प्रचलन में है उसमें आर्थिक तनाव की बच मिलती है। फिर भूमि-व्यवस्था तो ग्राम्य-हिंसा का एक प्रमुख तत्व है, जिस पर अलग से विचार किया गया है। कृषि-कार्यों को पूरा करने में दो प्रकार की मानवीय शक्ति लगती है

१-हिरायें पर तो सभी मजदूरों की श्रम-शक्ति।

२-भू-स्वामित्व की अपनी शक्ति। मजदूरी को प्रभावित करनेवाले उल्टे पहले मजदूर एवं उसकी श्रम-शक्ति पर विचार करें। प्राचीन जीवन में सामन्ती मानस का पूर्ण समावेश है। बदली परिस्थितियों के बावजूद मानव-मजदूर पर आपसी सम्बन्ध बढना है, फिर भी पुराना सामन्ती मानस आज भी मानव-मजदूर के बीच भौतिक सम्बन्धों को फट बनाता है। परम्परा से मास्कि, हरिजन मजदूर को गुनाह-सा समझता रहा है। इन परिस्थिति में मास्कि उल्टे कम-से-कम देकर अर्थ से-अधिक लेने का प्रयास करता है। हालाँकि अब मजदूर भी, जो दिया, वही ले लेने की मानसिक स्थिति में नहीं है। इस विरोधी मानस के कारण ही मजदूरी एवं कार्य को लेकर तनाव आता है। धार जो मजदूरों की जाती है वह मान्य तथा मान्य सम्बन्ध नहीं बल्कि बासन्ती है।

किं पूरे संज्ञ में एक-ही मजदूरी भी नहीं है। स्थिति तो ऐसी देखने में आये कि एक पचासवत के दो गाँवों में भी कोई एक मान्य मजदूरी की दर नहीं है। कभी-कभी एक ही गाँव में एक ही नाम के लिए भिन्न-भिन्न लोग अलग-अलग मजदूरी देते हैं। ऐसी स्थिति में सर्वसामान्य मजदूरी का निश्चित आँकड़ा प्रस्तुत करना कठिन है। सर्वेक्षण से इस बात की पुष्टि हुई कि मालिक-मजदूर परिस्थिति एवं आवश्यकता को देखकर मजदूरी तय करते हैं। मजदूरी-निर्धारण में इन तत्वों का समावेश पाया गया।

१-मजदूरी को माँग एवं पूति।

२-काम का स्वरूप।

३-कार्य की परिस्थिति।

४-आपसी सम्बन्ध।

५-मजदूरी का समय।

६-क्षेत्र में मजदूरी की परम्परा।

वहाँ भी माँग एवं पूति का सिद्धान्त प्रभावी है। परन्तु ऐसा नहीं कि माँग एवं पूति के सिद्धान्त के आधार पर ही मजदूरी की मजदूरी तय होती है। जैसा कि ऊपर कहा गया है कि ६ तत्वों के प्रभाव से मजदूरी तय होती पायी गयी है। ये सभी तत्व मजदूरी-निर्धारण में प्रभावी होते हैं। एतना कहा जा सकता है कि माँग एवं पूति इसके निर्धारण में अधिक मजबूत तत्व हैं। आगामी की दृष्टि से यह एक अन्तर्-क्षेत्र है, और प्रति वर्ष मोल एक हजार से अधिक आगामी है। गहर सन्धीय होते हुए भी आगामी की संख्या घटती है। इसका एक प्रमुख कारण यह है कि पूरा जिला या दो बड़े पूरे उत्तरी विहार में ही जनसंख्या का घनत्व अधिक है। इसी कारण वहाँ मजदूरी की पूति अधिक है, फिर भूमि के केंद्रीकरण एवं कार्य-विभाजन की दृष्टि से ऐसे लोगों की संख्या अधिक है, जिनके पास ऐसा स्वामी धन्य, जिससे पूरे जीविका चल सके, कम है। कृषि के अतिरिक्त ऐसे शिल्पी नहीं के बराबर हैं जिनसे सालभर जीविका चल सके। हाँ, जो लोग नियमित तौर से काम प्राप्त करते हैं, उनका

जीविका चल जाती है। ऊँकर कार्य मिल जाने के बावजूद भूमि आज भी जीविका का मुख्य आधार है। और यहाँ इस भूमि का इतना केंद्रीकरण है कि आगामी का बड़ा हिस्सा भूमिहीन या अतामकर जोड़ की सोमा में आ जाता है।

इस क्षेत्र में मजदूरी करनेवालों की संख्या माँग से अधिक है। परिणामस्वरूप मजदूरी की अधिक संख्या भी नम मजदूरी को प्रथम देती है। नम मजदूरी को प्रथम देने के अन्त में भी है। परन्तु स्थिति यह नहीं है कि जब चाहे कम मजदूरी पर मजदूर प्राप्ति हो जाय। कभी-कभी तो ऐसी स्थिति भी होती है जब मजदूर भिन्ना नहीं। खेती एक ऐसा उद्योग है जिसमें सभी विद्याएँ एक साथ खेती करते हैं। अतः खेती के मौसम में मजदूरी की तगो ही जाती है। मजदूरी की दो बार हस्तगत हुई जिनसे प्रह्लादपुर पचासवत में ५० पैसे से लेकर ७५ पैसे तक वार्षिक मजदूरी में वृद्धि हुई। इस संघटन ने मालिकों से इस बात का एहसास कराया कि मजदूरी में भी संज्ञ है और इनसे मनमाने ढंग से काम नहीं कराया जा सकता है।

मजदूरी की दर

मजदूरी की दर काफी हद तक क्षेत्रीय सामाजिक परम्परा पर निर्भर करती है। मातृक-मजदूर दोनों परम्परागत मान्यताओं को स्वीकार करने की मानसिक स्थिति में होते हैं। एक तरफ मातृक परम्परागत सामाजिक स्वीकृति एवं मान्यताओं के अनुसार ही मजदूरी देने की मानसिक स्थिति में होता है तो दूसरी ओर मजदूर भी उन स्वीकृति एवं मान्यताओं का कड़ा विरोध करने की स्थिति में नहीं होता है। युवा मजदूर अवश्य इनके खिलाफ आवाज उठाने की उत्सुक रहता है। इस प्रकार दोनों ओर से दुरानी मान्यताओं को नाश करने में मदद पहुँचानी जाती है। परिणामस्वरूप जो मजदूरी की दर पहले से तय है उसमें

परिवर्तन के लिए तेज प्रयास की गति को घोसा किया जाता है।

मजदूरी-निर्धारण के जो भी तत्व पाये गये उसे एकाकी रूप से मापना बाधा नहीं मानना जा सकता है। सभी तत्वों के अभाव से ही मजदूरी तय होती है। इस निर्धारण में तात्कालिक कारण भी काफी महत्व का होता है। मजदूरी हुई महंगाई, समाजवाद का विचार एवं युवा मानस इसे सीधा प्रभावित करते हैं। महंगाई के चपेट में जाया शक्ति रोजमर्रा की जिवगी को गुजारने में अनेकों अवसर पाता है तो मजदूर अधिक मजदूरी की माँग के लिए समर्थित हो जाता है।

उपरोक्त पृष्ठभूमि में यह देखना आवश्यक है कि इस क्षेत्र में मजदूरी को क्या स्थिति है।

मजदूरी की स्थिति

वर्ष	मात्रा (दिनों में)
हल चलाना	२-२५ और नाश
अन्य कृषि-कार्य	२-२५ भांसा
	आवश्यक नहीं,
अन्य कार्य	२-२५
फल-बटाई	५ वीं हिस्सा
एषामो मजदूर	२-२५ + ५ बिस्वा
	रट्टा लेती की जमीन
	(एक एवं मुख्य दोनों को प्रायः समान मजदूरी दी जाती है।)

मजदूरी तत्पु वषा नगद दोनों रूप में दी जाती है। नगद मजदूरी देने की स्थिति में स्त्री-मुख्य ही मजदूरी में पोड़ा फले पाया गया। परन्तु नगद मजदूरी में नगद-भेद का स्थान कम है। प्रायः सभी प्रकार के गाँवों में २०० के आस-पास मजदूरी दी जाती है। महिलाओं को नगद मजदूरी १-२०० रु० से १-७५ रु० तक दी जाती है। नगद मजदूरी के साथ भांसा देना आवश्यक नहीं है। कुछ लोग भांसा देते हैं। १९६० से पूर्व नगद मजदूरी पायी कम थी। १ से १-५० रु० में लोग दिनभर मजदूरी कराते थे। हाल के वर्षों में मजदूरी बढ़ी है। यह वृद्धि नगद मजदूरी में हुई है। तत्पु के रूप में मज-

दूरी को माया प्रियं. जब का उस है। नगद मजदूरी में वृद्धि अब से १०० से भी आगे बढ़ रही है। घाहरी प्रभाव के कारण नगद मजदूरी में वृद्धि को सहज ही प्रोत्साहन मिल जाता है।

किसान सामान्यतया आज भी वस्तु में ही मजदूरी का भुगतान करते हैं। वस्तु में भुगतान मजदूरी के लिए लाभकर है; क्योंकि माया की दृष्टि से उसनी ही मजदूरी है जितनी की पहले थी और उससे उनकी आवश्यकता का जो अंश इससे पूरा होता था वही आज भी पूरा होता है। लेकिन नगद लेने पर प्रायः एक से उसनी वस्तु नहीं खरीदी जा सकती है। यही कारण है कि गाँवों में नगद मजदूरी का रिवाज है वहाँ मालिक-मजदूर के बीच मजदूरी के प्रश्न पर टनाइ अधिक है।

पारो सचक के बड़ादाइद संघ में नगद मजदूरी का प्रचलन कुछ अधिक है। पारो तथा मुझुही दोनों धानो में आधे समय काम करने की भी परम्परा है। सामान्य दिनों में, जबकि आदर्शक काम नहीं रहता है, किसान आधे समय मजदूरी कराना चाहते हैं। इससे किसानों को काफी लाभ पहुँचता है, और मजदूरों को उसनी ही हानि होती है। आधे समय के काम का यह रूप होता है -

क-पूरे दिन की बिनानी मजदूरी मिलती उसकी आधी मजदूरी दो जाती है।

ख-नास्ता आमतौर से नहीं दिया जाता है।

ग-धीपहर एक काम कराना जाता है।

ध-बहार में जो परिस्थिति बनती है उसमें मजदूरों को स्थित इस प्रकार की हो जाती है—

१. आधी मजदूरी मिलनी है और नास्ता भी नहीं मिलता है।

२. किसान प्रातःकाल से ही काम शरम्भ करने को उत्तर रहता है।

३. गाँव में दोपहर का निपारण घरी देखकर नहीं किया जाता है। परि-

कमाई का काम करने का अधिकार

[भारत में शरीयो, इसमें मे हम एक लेखमाला 'भूदान-यज्ञ' में देते आये हैं। कुछ कारणों से यह लेखमाला अधूरी रह गयी है। १५ मई ७२, अंक ३३ में १४ वीं किस्त को गये है। इस अंक में हम उसके आगे यह लेख शुरू कर रहे हैं।—स ०]

१. उत्पादन के साधनों का निम्नो स्वामित्व रखते हुए तुल्य वितरण के दो उपाय हो सकते हैं। एक यह कि साधनों का ही वितरण किया जाय, दूसरा यह कि साधनों का वितरण न कर उनसे होने वाली केवल आमदनी का वितरण किया जाय। जो लोग पहले उपाय को मानते हैं वे कहते हैं कि सबसे पहले खेती की भूमि का वितरण होना चाहिए। उसके साथ-साथ ऐसी यांत्रिकी भी अपनायी जानी चाहिए जो हमारे लिए उपयुक्त हो। जहाँ तक भूमि का प्रश्न है उसके वितरण को बात प्रथम पंचवर्षीय योजना से हो बढ़ी जाती रही है। और अब उग्रा जोरों के साथ बढ़ी जा रही है। लेकिन भूमि के साथ यंत्रिाई यह है कि वह काफी मात्रा में उपलब्ध नहीं है, और उसके वितरण की सीमा भी है। एक सीमा के बाद उसके टुकड़े धेती लाभक नहीं रह जाते। जहाँ तक उपयुक्त यांत्रिकी का प्रश्न है, पहली पंचवर्षीय योजना

से ही इस बात पर जोर है कि गाँवों की परम्परागत यांत्रिकी का विकास होना चाहिए। लेकिन अनुभव यह बताया है कि अगर शारीयो यांत्रिकी नयी यांत्रिकी के मुकाबले जोड़ दी जाती है तो वह टिक नहीं पानी, क्योंकि आज का प्रवाह उसके विरुद्ध है। ऐसी हानत में दूसरा कोई विकल्प नहीं रह जाना सिवाय इसके कि साधनों के वितरण की बात छोड़कर केवल उनसे होनेवाली आमदनी बाँटने की बात सोची जाय। लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि हर शक्ति को जो काम करने के लिए तैयार हो, उसे न्यूनतम मजदूरी पर काम की शारथ्य दी जाय।

२. काम की ऐसी शारथ्य की नीति हाथ रख से तीसरी पंचवर्षीय योजना में अपनायी गयी थी, और कहा गया था कि ऐसा करने के लिए दो तरह की योजनाएँ बनानी पड़ेंगी—एक, जनाक और गाँव के स्तर पर, दो, बड़े काम जिनमें संयोजन और तकनीकी निरीक्षण की ज़रूरत

पामस्वरूप दिन के दो बने तक काम करना पड़ता है। स्पष्ट है कि इस स्थिति में शक्ति को अधिक देर तक काम करना पड़ता है।

देखा यह जाता है कि उपरोक्त लाभ को देखकर किसान आधे समय तक काम करने को उत्पन्न रहता है। जबकि मजदूर पूरे समय काम करने के प्रयास में रहता है।

ज़ार हमने वस्तु में प्राप्त होने वाली मजदूरी को दर से सम्बन्धित अंकड़े दिये हैं। मजदूरी को दर सामान्यतया प्रतिदिन २-२५ तक है। नागरे को माया में थोड़ा फर्क है। इति-गव-गो

गाँवों में प्रायः मजदूरी के साथ-साथ नास्ता भी दिया जाता है। फलन-गटाई में मजदूरी की दर निम्न है। जो बिनना फलत शरतता है उसी अनुसार मजदूरी मिलती है। धान एवं रबी की बटाई में ८ हिस्सा में एक हिस्सा आमतौर से काटनेवाले मजदूर को प्राप्त होता है। यह हिस्सा बोते के रूप में प्राप्त होता है। यदि किसी ने ८ बोते फलत काटी है तो ९ वां बोता उगगा होगा। कौन-सा बोता मजदूर का होगा इसका निर्णय विधान करना है। इससे सभी बोते समान बोते जाते हैं। यहाँ फलत काटने का टालपन काटकर जनाक पर में पहुँचाने तक है।

म्यूनिख की दुस्मान्त घटना

हो। अर्थात् स्तर पर खेती, पशुपालन, सहकारिता, सिंचाई, सड़क आदि की योजनाएँ बनायी जा सकती हैं। फिर इसी आधार पर गाँव की योजनाएँ तैयार की जा सकती हैं। इन सब योजनाओं में मजदूरी गाँव में प्रचलित दर पर दी जाय। ज्योंही स्तर पर निर्माण के आद-यक संगठन और श्रमिकों की सहकारी समितियाँ बनायी जायें। ये संगठन जोखार रहे, ठीकें लें, तकनीकी और व्यवस्था-सम्बन्धी सलाह प्राप्त करें, नारीगर रहे, आदि। गैर-सरकारी सेवा-सुधारों जैसे स्थानीय सपठनों को नेतृत्व प्रदान कर सकते हैं।

तीसरी पंचवर्षीय योजना में यह बात स्पष्ट हो गयी थी कि बड़े पैमाने पर काम निर्माण के क्षेत्र में मजदूरी पर ही देना सम्भव है, न कि उत्पादन के साधन बाँटकर घर-घर में। यह सोचकर तीसरी योजना में १ अरब १० करोड़ की व्यवस्था की गयी। लेकिन होते-होते कुल १९ बरोड़ रुपये ही खर्च किये जा सके। अन्तिम वर्ष में कुल मात्र ८ करोड़ खर्च किये जा सके, और शेष ४ लाख लोगों को साल में एक ही दिन २ रुपये रोज की मजदूरी पर काम दिया जा सका।

चौथी योजना में तीसरी योजना की बात और अधिक जोरदार उग सं बनी गयी। यह बताया गया कि देश भर में अपनी शक्ति उन क्षेत्रों में केन्द्रित की जानी चाहिए जहाँ जनसंख्या का वर्गीकृत पर दबाव बहुत अधिक हो, बेरोजगारी और अल्प-बेरोजगारी अधिक हो, और भूमिहीन भी अधिक हों।

३ तीसरी और चौथी योजनाओं के विचारों को सामने रखकर १९६९ में महाराष्ट्र सरकार ने 'राइट एम-प्लानमेंट गारंटी स्कीम' चलाया। इस योजना का पुत्र उद्देश्य पेटिटर मजदूरों को बेरोजगारी के दिनों में काम देने का था - यंहा काम जिसमें नारीगरी या हुवर की जरूरत न हो। जो काम छोड़े गये वे तीन तरह के थे :

अल्पमिक्त लोगों के बीच म्यूनिख में जो दुस्मान्त दुर्घटना हुई है उसके प्रति पीडा की अभिव्यक्ति शब्दों में सम्भव नहीं है, न उसी-मिन्हा के लिए कोई भी शब्द शब्दा शब्द माने जायेंगे। अभी कुछ ही घण्टा पहले सिन्डिका के हवाई अड्डे पर २६ निर्दोष लोगों की जाने इसी प्रकार की घटना में जा चुकी है। समय आया है जबकि दुनिया की जनसंख्या की आवाज ऐसे धुनिन कावों के खिताफ उठनी चाहिए।

इस प्रकार की घटनाएँ राष्ट्रीयता के नाम पर या किसी एक मूलक के खिताफ दूसरे मूलक के हितों के नाम पर की जाती हैं। वह और भी खतरनाक और निन्दनीय है, क्योंकि इन कारणों से ऐसे जघन्य अपराधों को कुछ लोगों की निगाह में इतरत और चीगा वा स्थान मिल जाता है। अपने किसी भी मस्यद के लिए, चाहे वह विनाश भी बचटा या व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर हो, इस प्रकार निर्दोष नागरिकों को जानें खतरे में डालना शक्य नहीं माना जा सकता। हवाई जहाज उड़ा लेना, लोगों को या बच्चों को जबरदस्ती उठाकर ले जाना, और बदले में अपनी शर्तों की पूर्ति चाहना, इत्यादि घटनाओं के कारण किसी भी नागरिक का जीवन आज सुरक्षित नहीं है। कोई भी व्यक्ति इस प्रकार के खतरे से बितना ही अल्पिष्ट नहीं हो, किसी भी समय उसका शिकार हो सकता है।

यह कहना श्राप्य अन्धभावहारिक या भोलेपन की बात मान्य हो, पर ऐसी घटनाओं को रोपने के लिए जो कम-से-

कम किया जा सकता है वह यह है कि कोई भी सरकार या राष्ट्र ऐसे दख से समझौते की बातचीत न करे। ऐसी इन-नारी कुछ निर्दोष लोगों की जान जाने के खतरे से खाली नहीं है, लेकिन म्यूनिख की तारी घटना ने शक्ति कर दिया है कि समझौते की बातचीत पत्ताने से भी अन्तिम दुर्घटना या शोषणिका टाली नहीं जा सकती। इस प्रकार की घटनाओं का दूसरा पहलू भी विचारणीय है। आज की सरकारें या सत्तासूत्र लोग हुवरों की भावनाओं के प्रति उत्तरदायक संवेदन-हीन होते जा रहे हैं, और दुर्भाग्य से लोगों को यह आन धारणा बन गयी है कि राष्ट्रीय या अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र में सत्तासूत्र लोगों की वेदनाहीन अन्तरात्मा को इस प्रकार झन्झोर कर ही बायुत किया जा सकता है। लेकिन अनुभव से यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि यह धारणा भी प्रायक ही है। इस प्रकार की हिंसा-प्रतिहिंसा का कोई अन्त नहीं जा सकता। इसके अलावा, अज्ञान के भाव के युग में सरकारें और सत्ताधारी लोग जिस प्रकार की हिंसा-प्रति हिंसा से, अस्त्र-बस्तों से, सज्जित हैं वंसा कोई भी गैर-सरकारी गिराव नहीं हो सकता। इस प्रकार की अर्पहीन कार्रवाइयों से केवल निर्दोष व्यक्तियों का शक्ति और समाज के जीवन और उसकी प्रगति में बाधा ही पड़ सकती है। विचारपालन लोगों की सम्भोषणा से इस बात पर सोचना होगा कि समाज के व्यापारिक या अन्तरराष्ट्रीय संपर्क मान्यत्व तगोते से किस प्रकार हल किये जायें।

—सिद्धराज इन्ड्रा

(१) खेती के बाँध, सिंचाई, (२) सड़क, जंगल, नूअ, नारागाह, (३) ग्रामीणोप, विशेष रूप से नलाई। सारे काम की योजना बनाने का नाम गाँव-पंचायत का था और उसी की देखरेख में उसे चलाया जाता था। मजदूरी तद्वृत्तितदार तथा करता, लेकिन वह सामान्य मजदूरी से १० प्रतिशत कम होती। जिनके की

सब योजनाओं के लिए एक इन्डिस्ट्रियल कोऑरडिनेशन कमिटी होती जिसमें विपरीत वा प्रतिनिधित्व होता। पुनरागत की सरकार ने भी एक 'राइट टू वर्क' स्कीम चलायी है। इसका भी वही उद्देश्य है जो महाराष्ट्र-योजना का था।

—रामशुक्ति

भारतीय मंत्रिपरिषद् की सामाजिक पृष्ठभूमि

● मन्तव्य के अराढ़ा

सहस्रीय लोकतन्त्र में मंत्रिपरिषद् का बड़ा स्थान होता है। यह राष्ट्रीय सत्ता की सबसे ऊँची और सत्त्वशाही मण्डली होती है। नीति-निर्धारण और किये हुए फैसलों को कार्यान्वित करना इसका मुख्य काम होता है। सक्षिप्त में यह किसी भी लोकतन्त्रात्मक राज्य में सबसे अधिक प्रभावशाली व्यक्तियों का मूष (संगठन) होता है। १९६२ से लेकर १९७२ तक भारतीय मंत्रिपरिषद् में जो लोग नजर आते हैं वे अपनी शिक्षा, पंसा एव आयु के लेहान से जिस हैसियत के मालिक हैं और जिस वर्ग से उनका सम्बन्ध है, इसका एक अध्ययन निम्न-लिखित है। इसके यह भी अन्दासा होगा कि भारत के आम लोगों की पृष्ठभूमि और उनकी पृष्ठभूमि में बितना वासमेल है।

जबकि भारत की ८० प्रतिशत से ज्यादा आबादी गाँवों में रहती है। १९६२ से १९७२ तक बनी हवाई मंत्रिपरिषदों के अधिकतर सदस्य नगर के रहनेवाले थे। आधे से अधिक ऐसे थे जो गाँवों में नहीं पंचा हुए थे। १९६२ से लेकर १९७२ तक हिन्दुस्तान की सहरी आबादी ने अधिक-से-अधिक सत्रों हूँ दिया जबकि सहरी आबादी भारत की पूरी आबादी का २० प्रतिशत है। इसमें से दो तिहाई ऐसे सहरो के रहनेवाले थे जिनकी आबादी १ लाख से अधिक है। दो ऐसे भी मन्त्री थे जो विदेश में पैदा हुए थे: एक पाक में, दूसरे लन्दन में। जाहिर है कि ऐसे लोग पाक के समाज और उनकी समस्याओं से अर्थात्चित होते।

श्रीमन् प्रतिनिधित्व, आयुतोर से यह माना नहीं जायी है कि अधिक-से-अधिक लोग उत्तर प्रदेश के थे, परन्तु यह मानत है। भारत के सभी भागों की मंत्रिपरिषद् में उचित प्रतिनिधित्व प्राप्त

रहा। उत्तर प्रदेश की आबादी कुल आबादी का १७ प्रतिशत है। मंत्रिपरिषद् के सदस्य भी उसी अनुपात में थे। पूर्वी क्षेत्र के प्रतिनिधि भी अपने अनुपात में ही थे। उत्तरी क्षेत्र का भी वही हाल था। दक्षिणी क्षेत्र के लोगों को कुछ अधिक प्रतिनिधित्व प्राप्त रहा है, और सबसे अधिक प्रतिनिधित्व मंत्रिपरिषद् के सदस्यों में पश्चिमी क्षेत्र के लोगों को मिला है। मुसलमानों का प्रतिनिधित्व भी उनकी आम आबादी के अनुपात में ही रहा है।

शिक्षा संसार की सभी मंत्रिपरिषदों की देखने के बाद यह कहना पड़ता है कि भारत की मंत्रिपरिषद् में सबसे ज्यादा पढ़े-लिखे लोग रहे हैं। इस दस साल में केवल २ से ४ प्रतिशत ऐसे लोग थे

जिन्हें निम्नविद्यालय की शिक्षा नहीं प्राप्त हुई थी। प्रत्येक मंत्रिपरिषद् (कोसिल ऑफ मिनिस्टर्स) और मंत्रिपरिषद् (कैबिनेट) में दो तिहाई सदस्य स्नातकोत्तर थे। पिछले मंत्रिमण्डल में हर पाँच में से ४ सदस्य स्नातकोत्तर थे, और मंत्रिपरिषद् के आधे सदस्यों के पास विश्वविद्यालय की उच्चरी के अलावा कानून की डिग्री भी थी। श्रीमती गांधी की आखिरी मंत्रिपरिषद् में हर चार में से तीन सदस्य बरीन थे। लोकसभा के सदस्यों में से लोक-नीयार्ड के पास विश्व-विद्यालय की डिग्री रही है। मंत्रिपरिषद् के २० प्रतिशत से कम लोगों ने विदेश में शिक्षा प्राप्त की थी। चौदह में से ग्यारह विनायत पड़े हुए थे, दो अमेरिका के और, एक पश्चिमी जर्मनी के। मंत्रिपरिषद् के सदस्यों में चार ऐसे थे जिनकी कानून में ट्रेनिंग लगन में हुई थी। दो की लन्दन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में हुई थी।

मंत्रिपरिषद् और मंत्रिमण्डल के सदस्यों की शिक्षा

मंत्रिपरिषद् :

जिनके पास कोई डिग्री नहीं	जिनके पास डिग्री थी	प्रतिशत में	बो० ए०, एम० ए०, पी० एच० डी०, कानून	
(१) नेहरूजी—	१३	१७	४	६२
(२) शास्त्रीजी—	२३	१२	—	६५
(३) इन्दिराजी—(प्रथम) २५	१२	—	—	६३
(४) „ (द्वितीय) ८	१७	६	१७	५०
(५) „ (तृतीय) १३	७	—	७	७३

मंत्रिमण्डल

(१) नेहरूजी—	११	१९	१४	७	४९
(२) शास्त्रीजी—	१४	२०	११	५	५०
(३) इन्दिराजी—(प्रथम) १९	२१	१५	६	५३	
(४) „ (द्वितीय) १०	१२	१७	१०	५२	
(५) „ (तृतीय) ९	१५	१८	९	५१	

अन्वसाय : ध्यनसाय की दृष्टि से भारतीय मंत्रिपरिषद् पर बकीलों का एक मात्र आधिपत्य रहा। कृषि से सम्बन्धित लोगों की संख्या १७ प्रतिशत बनाकर रही, और देय दूसर सदस्य शिक्षा, स्वास्थ्य, और इन्डिस्ट्रिय के

पक्ष के रहे हैं। श्रीमती गांधी के दूसरे मंत्रिमण्डल में लोकसभा के सदस्यों के अनुपात से १२ प्रतिशत बरीन अधिक थे, और वरह प्रतिशत बुराई की संख्या में बनी जायी। इन्दिराजी और अन्वसाय सम्बन्धित बरी से संयत्न १० प्रतिशत

सदस्य मन्त्रिमण्डल में थे और ३६ प्रतिशत लोकसभा में थे। १९७१ तक मन्त्रपरिषद में १३ से १८ प्रतिशत तक ऐसे स्थित थे जिनका व्यवसाय कृषि था। परन्तु, १९७१ में जो मन्त्रपरिषद बनो उसमें उनका प्रतिनिधित्व गून्घ था। उसमें वकीलो की तादाद न घटी न बढ़ी, और रोष दूसरे व्यवसायवाले या तो पड़े या बिस्सुत सत्य हो गये।

मन्त्रपरिषद में वकीलो का बहुत अधिक संख्या में होना भारत के लिए कोई अनोखी बात नहीं है। अमेरिका की मन्त्रपरिषद में ७० प्रतिशत और ब्रिटेन की मन्त्रपरिषद में ६० प्रतिशत वकील बराबर रहे हैं। जर्मनी में नाजियों से पहले, उनके बाद और उनके प्रासन-काल में, मन्त्रपरिषद के आधे सदस्य वकील थे। (वैशे सारणी १-२)

अवस्था :

नेहरू और आरजी के मन्त्रिमण्डल में एक चौथाई लोग ५० साल से नीचे के थे। जबकि इन्दिरा गांधी के मन्त्रिमण्डल में एक तिहाई से कम लोग ५० साल से कम उम्र के थे, और उनके अन्तिम दो मन्त्रिमण्डलो में आधे से अधिक सदस्य ५० साल से कम थे। मन्त्रपरिषद और मन्त्रिमण्डल के हनुगत में सबसे ज्यादा कम उम्र के लोग उप-मन्त्री रहे हैं। इन्दिरा गांधी के आखिरी मन्त्रिमण्डल में उप-मन्त्रियों में से एक तिहाई तीस और चालीस वर्ष के नीचे थे। उनमें मन्त्रपरिषद में कोई भी सदस्य ४० से कम नहीं है।

श्रीमती गांधी आमतौर से कम उम्र के लोगों को नियुक्त करती हैं। ऐसे लोग जिनकी उम्र ५० साल से कम हो, नेहरू और आरजी के जमाने में मन्त्रिमण्डल में आधे से कम थे। परन्तु इन्दिरा गांधी के तीसरे मन्त्रिमण्डल में ये लगभग ७० प्रतिशत थे। इन्दिरा गांधी के जमाने में आरजी के मुताबिक में ऐसे लोग जिनकी उम्र ५० से कम है उनका संख्या दुगुनी हो गयी है। (दोनों सारणी नं० ३)

सारणी नं० १

मन्त्रपरिषद् और मन्त्रिमण्डल में सदस्यों का व्यवसाय

मन्त्रपरिषद :	कृषि व्यापार	इंजी- डाक्टरों	कानून	शिक्षा	सामाजिक	व्यवसाय	अन्य	वकील	सूचना	नहीं
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
१. नेहरूजी	२७	४	—	—	३०	४	३४	९	—	—
२ आरजीजी	१८	६	—	—	३५	—	२९	१२	—	—
३. इन्दिराजी(प्रथम)	१३	—	—	—	३८	—	५०	—	—	—
४. ,, (द्वितीय)	१३	—	—	—	३८	१३	२९	—	—	—
५ ,, (तृतीय)	—	—	—	—	६०	—	२७	७	७	—
मन्त्रिमण्डल :										
१. नेहरूजी	१६	७	३	७	३३	५	१८	७	५	२
२ आरजीजी	१८	७	४	७	३२	४	१४	६	४	२
३ इन्दिराजी(प्रथम)	१७	—	४	४	३२	—	२५	४	४	—
४. ,, (द्वितीय)	१८	१३	३	—	२९	१०	१९	१	७	—
५. ,, (तृतीय)	१५	९	४	१	३७	१५	१५	४	४	—

सारणी नं० २

तुलनात्मक व्यवसाय वितरण

वकीलो लोकसभा	मन्त्रिमण्डल (१९६७-७०)	प्रतिशत
१—वकील	१७	२५
२—अध्यक्ष और शिक्षा-विशेषज्ञ	७	१०
३—पत्रकार	५	१
४—इन्जिनियर, डाक्टर और पुराने सरकारी और सैनिक सेवक	७	३
५—व्यापारी	—	१३
६—इयत्त	३१	१८
७—राजनैतिक और सामाजिक कार्यकर्ता	२३	१९
८—अन्य	२	७

सारणी नं० ३

मन्त्रपरिषद् में पहली बार प्रवेश करनेवाले की अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर अवस्था का तुलनात्मक अध्ययन

राष्ट्र	(३० - ३९)	(४०-४९)	(५०-५९)	(६० और ऊपर के)
भारत (१९६२-७२)	२	२२	४७	२९
अमेरिका (१९००-५०)	२	३३	३७	२८
ब्रिटेन (१९६६-७७)	५	४३	३४	१८
फ्रेंच (१९२२-९०)	७	२९	४९	१५
प्राय (१९४५-५८)	१९	४२	२८	७
काङ्गोलिया (१९४६-५७)	११	४८	३७	४

चीन का बीटो

दुम्बारा, २५ अगस्त १९७२ का दिन समुक्त राष्ट्रसंघ के इतिहास में अमर रहेगा और साथ ही साथ चीन, भारत, बांग्ला देश और पाकिस्तान को भी इसकी याद तरहू-तरहू से सताती रहेगी। उन दिन जब संयुक्त राष्ट्रसंघ की सुरक्षा-परिषद में बांग्ला देश को मान्यता देने का प्रस्ताव आया तो चीन ने अपना बीटो प्रदर्शन कर उसे धारित कर दिया और इस प्रकार बांग्ला देश के लिए संयुक्त राष्ट्र का दरवाजा एक अनिश्चित काल तक के लिए बन्द हो गया।

संयुक्त राष्ट्रसंघ की सुरक्षा-परिषद के पांच स्थायी सदस्य जिनके जन्म से (१९४५ से) ही चले आते हैं—अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस और चीन। पचीस साल तक एक बोर अन्याय चला कि चीन की जगह पर ताईवान (फ़ांग्सा) का प्रतिनिधि बैठना था, मगर एक बरस हुए जब चीन की प्रजातंत्री सरकार (पीपिंग) को यह स्थान मिला। इन पांच के अलावा, रूस अस्थायी सदस्य होते हैं जो हर दो साल बाद बदल जाते हैं। आजकल वे दस थे हैं—अर्जेंटाइना, इटली, गिनी, जपान, पनामा, बेल्जियम, भारत, यूपोस्लाविया, मूरान और सोमा-लिया। अध्यक्ष हर महीने बदलता रहता है। अगस्त में बेल्जियम का प्रतिनिधि उस भावन को मुखोभिन्न कर रहा था।

→ मंत्रिपरिषद तक पहुँचने का रास्ता

१९६२ से लेकर १९७२ तक सभी मंत्रिपरिषदों में १२ प्रतिगल मनो लोच-सथा के सदस्य थे, और १२ प्रतिगल राज्यसथा के। मंत्रिपरिषद में हर तीन में से एक सदस्य या तो उनमें रहे चुके थे या राज्य मनो थे। और, ४० प्रतिगल डेविट मंत्री ऐसे लोग थे जो। कभी पौष्टिक के सदस्य थे और न कभी राज्य-सथा के।

बांग्ला देश की सदस्यता के लिए यह प्रस्ताव रखा था बार सदस्यों में—भारत, ब्रिटेन, यूपोस्लाविया और रूस। इसका समर्थन किया सात अन्य राष्ट्रों ने—अमेरिका, फ्रांस, जपान, बेल्जियम, इटली, अर्जेंटाइना और पनामा ने। तीन लक्ष्य रहे—यूरोप, गिनी, सोमालिया। विशेष केवल एक सदस्य, चीन ने किया और बीटो के साथ किया, जिससे यह प्रस्ताव गिर गया।

जैसाकि सर्वविदित है, स्वायत्त गणतंत्री बांग्ला देश का जन्म १७ दिसम्बर १९७१ को हुआ। वहाँ की अजादी साइं सात करोड़ है और मनुष्य राष्ट्रसंघ के १२२ सदस्य-देशों में से ६६ में उसे मान्यता दे रखी है। इसमें शामिल हैं भारत, रूस, ब्रिटेन, अमेरिका आदि। न माननेवालों में हैं—पाकिस्तान, चीन, और मिश्र आदि।

गल २४ अगस्त को बांग्ला देश सरकार ने मुद्रा परिषद को एक पत्र भेजा कि संयुक्त राष्ट्रसंघ की हमारी सदस्यता के आवेदन पत्र पर "योद्धासुप्रेमक और सहानुभूतिसुप्रेमक" विचार किया जाना चाहिए। उसमें पाकिस्तान सरकार पर आशेष लगाया गया था कि वह गुटे बनाने का प्रचारक रहे उसकी सदस्यता में बाधा डाल रही है। यह भी उल्लेखनीय है कि १० अगस्त को ही राष्ट्रपति भूटो

मिजुनिन का मंत्रिपरिषद के प्रतिगल मनो सदस्य

१. मंत्रिमण्डल से तरफती ३२ १
पाकर
२. सदस्य से छोड़े गये गये २४ ४
लोचसथा (११-२)
राज्य सथा (१२-२)
३. सदस्य या मंत्रिमण्डल के बाहर से ४२ १
'होनासिक एक्ट पोसिटिवन बाकनी' के विशेष अंक से

वे अपने एक भाषयान में प्रधानमन्त्री मुजीबुर्रहमान को यह चेतावनी दी थी कि "अगर वह समझते हैं कि भारत में बन्द पाकिस्तानी युद्धविद्रोहों की बापसी में वह रोटा लगा सकते हैं तो हम भी संयुक्त राष्ट्रसंघ में बांग्ला देश के प्रवेश पर चीन के बीटो का उपयोग कर सकते हैं।" वही हुआ।

चीन का यह बीटो जाज गरी दुनिया में राजनितिक चर्चा का विषय बन गया है। शकमुक्त, यह बड़ा दुर्भाग्य है कि जो चीन अमेरिका के बीटो तथा अन्य प्रयत्नों के कारण संयुक्त राष्ट्रसंघ में पचीस साल तक प्रवेश नहीं पा सका, उसी चीन ने स्वयं अपने प्रथम बीटो के अजिबारा का इन्तेमान बांग्ला देश जैसे मान्यता प्राप्त देश के खिलाफ किया। चीन ने मुद्रा परिषद में अपने इस दुःखद रदम उठाते के दो कारण बताये—एक बांग्ला देश में विदेशी सैनिक मौजूद हैं, दूसरा पकिस्तान के नये हुजूर सैनिक अन्नी तक बन्द पड़े हैं। बांग्ला देश के निरप्रस्ताववालों ने पहले वाण्य का विग्राधार और दूसरे को अवगणन बताया है। स्वयं बांग्ला देश से पोषण की है कि उसकी धरती पर एक भी परदेशी सैनिक नहीं है।

चीन के मानव का अन्दार दो और बातों से भी भिन्ना है। गल २० अगस्त को जब चीन के उप-विजल मनो श्री चियो कुयान हुयान, प्रस्तावमात्र दो दिन की वार्ता के लिए बसे जा उठेने बड़ा, "एक बड़ी ताकत बनने गुँगे का प्रोत्साहन दे रही है ताकि चीन और पाकिस्तान के आने मुसीबत खदी करे।" इसक अलावा, २९ अगस्त को पॉरिष के प्रमुख सग्वारी डेविट, "चीनी पीगुल्य डेनी" में अल्पको गणसरोय लेख छान, जिसमें बड़ा गया कि रूस और भारत ने मिलकर "गद-बन्दन" किया है। आने चउकर उसने लिखा कि भारत ने अपने सैनिक नहीं हटाने हैं और नन्ने हवार से अधिक विग्राही वे नापेरिक पाकिस्तान के खिलाफ धमकी देने का एक छाने हैं। और, रूस तो भी संयुक्त राष्ट्र में इस

वास्तो पगोट लेना चाहता है ताकि उसका 'मगदूम मनुमा' पूरा हो। वह यह कि दक्षिण-एशियाई उप-महाद्वीप और हिन्द महासागर में अपना प्रभाव-क्षेत्र बढ़ाता जाये और प्रबल-हृद पैदा करके अपना उत्कृष्ट लोधा कर ले।"

इसके पना चकता है कि चीन द्वारा बीजों के उपयोग के तीन मुख्य कारण हैं—प्राविशान का समर्थन, भारत के प्रति नाराजगी और रूस का अविश्वास का डर। जाहिर है कि वैचारिक या संस्कृतिक दृष्टि से प्राविशान का चीन से कोई नाता या साम्य नहीं है, लेकिन रिशले दस-बारह वर्षों से जो दोस्ती बनो आ रही है उसे वह निभा रहा है। भारत से उसका मुस्ता भी उलता ही पुराना है; दस सित्तिये में महत्व की एक बात यह है कि यत् २५ दिसम्बर १९७१ को जब फ्रांस के प्रधान मंत्री, श्री मैरेलस फ्रांस पोलिस में प्रधानमंत्री चाउ एन साई से मिले तो चीनी नेता ने कहा कि "भारत ने एक ऐसी जादू जसायी है जो उसे जना ऊँचो।" (स्रोत: भारत-प्राविशान युद्ध १७ दिसम्बर से जनर हुजा या और एक दिन पहले वापना देव वा कम हुआ था)। चीन को यह भी क्या है कि आज अगर वह बगल देव को मान्यता देता है तो कल भारत चीन के निरन्तर विजयन में या रूसी सोमा के निरन्तर निकषाण, मशौव जाये क्षेत्रों में अल्पसंख्यक भी स्वाधीनता की भाण कर सकते हैं। जहाँ तक रूस की बात है, वह तो चीन के निरन्तर विरुद्ध और भय का विषय बना है। जो भी हो, चीन ने यह जख्खा नहीं किया। हमें विश्वास है कि एक दिन आयेगा जब चीन अपनी दम नानी पर पछानेगा।

चीन के इस बीटी का बाधना देव में विरोध किया जाना स्वाभाविक है। लेकिन एक अजबदार ऐसा भी है जिसने स्वागत किया है—वह है मोलाना भसानी का "हूक क्या" (सत्य बान)। उहाँनें एक लेख में कह्य गया है कि चीन बगल के सिनाइ नहीं है, लेकिन वह चाहता

है कि हम अपनी भाजायी का सच्चा सख्त दें। बकोटी के लिए यह हमसे पटखन घरीदना चाहता था, मगर भारत के बीच में पड़ने से बागला देव ने यह चीखा सारिज कर दिया। बड़े दुर्भाग्य की बात है कि हम अपना पटखन जिसे चाहें नहीं देव सकते। न जाने यह बात कितना सही है और कितना गलत।

हमें यह भी नहीं भूलना है कि मोलाना भक्ती चीन के पन्ने समर्थक हैं और हल हो में उन्होंने "मयुक्त वापना" का नारा भी लगाया है, और अपने समर्थन में स्वर्गीय श्री भारत चन्द्र बनु और सुहरा-परी साठक के नाम उछाले है। मोलाना भसानी का यह रवैदा निहान्त खतरनाक है जिसे साम्रान्य रहने की जरूरत है, न सिर्फ बागला देव को, बरिक्त भारत की भी।

सवान है अब जब चीन ने बा-ना देव को सख्त राटुसष की सदस्यता पाने में बाधा डाल दी, तो भारत क्या करे ? इगला जवाब एक ही है—अपने को सक्षम बनाये और अपने पंरो पर खड़ा हो। आज वह लभग साठे साठ हज़ार करोड़ रुपये का विवेधो वा चर्चदार है और विरोधकर अमेरिका का, जबकि चीन पर किसी का भी एक डबल तक उधार नहीं है। स्वावलम्बी होने पर ही भारत को विदेशी नीति में ताकत लायेगी और परदेव में उसकी आबरू बढ़ेगी। मनेरिवा के दस करज के रहते हमारी कोई इज्जत नहीं है। २५ अगस्त को ही जब मुडल ने यह प्रस्ताव रखा कि बागला देव के प्रश्न को कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया जाय तो अमेरिका ने उसका समर्थन

किया। यह और बात है कि बाद में जब भारत युगोस्लाविया का प्रस्ताव थाया तो उसका समर्थन किया—बशकि बायद वह बागला रहा होगा कि चीन का बीटी आ ही रहा है।

चित्ती भी देव को विदेश नीति उसही आन्तरिक प्रकृति पर निर्भर करती है। आज माटल को रूस का मुँहलाज समझा जाता है और यद्यपि १९ दिसम्बर को युद्धबन्दी की घोषणा प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने स्वयं की। लेकिन किसी ने कहा कि रूस के इशारे पर की, और किसी ने कहा कि मनेरिवा के डर से ऐसा हुआ। सवाल यह है कि ऐसे भयुनि-याद सन्देश पैदा हो क्यों होते हैं ? जवाब है—हमारी वचनबोली और अकर्मण्यता। इसका रर्थन देव के अन्दर अनेक मोर्चों पर मिलता है—विद्योवन, भूमि-वितरण, शिक्षा, आदि। यह स-सुबहो तभी दूर होये जब सरकार मजबूती से कदम उठायेगी और यह तब सम्भव होगा जब उसके सामने कोई परिपूर्ण वैचारिक आदर्श (जार्जिथिथोथी) होगी। समाजवाद, जितना नाम बहुत लिया जाता है, इस रमो की कुछ हद तक दूर करता है, लेकिन पूरी तरह नहीं, क्योंकि वह एक प्रतिक्रिया का परिणाम है। स्वयं सम्पन्न, सम्पूर्ण और संपूर्ण आदर्श गांधी विचार या सर्वोदय का ही हो सकता है जिसे अपनाये बिना भारत को सकार हो, या भारत की जनता ही, किसी की मुश्कल नहीं होनेवाली है। चीन के बीटी का यही एक माप जवाब है।

—राहु

विनोबाजी के ७८ वें जन्मदिन पर प्रकाशित

'भूदानवाले बाबा'

(विनोबाजी की जीवनी और सर्वोदय आन्दोलन की संक्षिप्त शक्ति)

ले० : ११, मन्महाबुर 'नक्ष'

मूल्य : ४० पैसे

यह पुस्तक आप निम्न पते से मंगाये

सर्वे सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी—१

सर्वोदय साहित्य भण्डार, इन्दौर

१९७१-७२ का वित्तिय विवरण

सर्वोदय साहित्य भण्डार, इन्दौर द्वारा पिछले वर्ष ७१-७२ में कुल ₹, ३९, ०६४ ०० के साहित्य की बिक्री हुई। इसमें आधी यात्री-वर्षोदय साहित्य को तथा आधी व्यापारिक, बाल-साहित्य एवं अन्य विभिन्न विषयों पर उल्लेख साहित्य की बिक्री सम्मिलित है। 'भण्डार' द्वारा ११ वर्षों में ₹ ० ७२ (पौने ग्यारह लाख) साल रुपये का साहित्य-विक्रय किया जा चुका है।

उक्त बिक्री में लगभग ६० प्रतिशत विक्रय 'भण्डार' पर पुस्तक बिक्री के रूप में हुआ जो नगर एवं प्रान्त के दबबुजकों, शिक्षार्थियों, अध्यापकों, महिलाओं एवं ग्रामीणों आदि द्वारा स्वेच्छापूर्वक रूप की जाती है। यह विशेष समाधानजनक है कि इनकी सहाय्य एवं निरन्तरता सतत् वृद्धि पर है; रोप ४० प्रतिशत में वृद्धि-कारण २० प्र० शासन के विभागों में तथा शासकीय एवं अशासकीय शिक्षण-मण्डलों में हुआ।

इस प्रकार के सहयोग के कारण पिछले ग्यारह वर्षों से यह 'भण्डार' स्वावलम्बन के आधार पर चल रहा है। पिछले वर्ष मध्य प्रदेश शासन द्वारा 'भण्डार' को उमराव वर्तमान स्थान नाम प्राप्त के रवाही लीज पर प्रदान कर दिया गया है। यह स्थान गहर में अत्यन्त सौके का है तथा इसपर स्थानीय जनता के अनुदान से ही ३०' X ३०' के भवन का तथा उसमें उपयुक्त फर्नीचर का निर्माण हो चुका है।

गत दिसम्बर में सर्व सेवा सप प्रकाशन, बाराणसी के उपवाचन में 'भण्डार' के द्वारा दो 'सर्वोदय साहित्य प्रचार-प्रशिक्षण शिविरों' का संचालन किया गया जिसमें कुल ३२ शिक्षार्थियों ने भाग लिया।

एक विशेष प्रयोग 'भण्डार' द्वारा गत जनवरी '७२ से आरम्भ किया गया। 'भण्डार' के उल्लाही सरयय सहयोगी श्रीश जैन की रभूति में एक अद्विराम पुस्तक-माला शुरू की गयी। इसके अन्तर्गत कुछ चुनी हुई पुस्तकों नि गुरुक जिज्ञामु पाठकों को वितरित की जाती है ताकि वे निरन्तर अद्विराम रूप से एक के आगे एक पाठकों तक पहुँचती रहे।

'खादी भण्डारों' के माध्यम से खादी के साथ-साथ साहित्य-विक्रय एवं प्रचार पर विशेष जोर दिया गया। इस हेतु मुख्यतः स्थानीय खादी भण्डारों में तथा कुछ प्रान्तों की खादी सस्त्राओं में भी प्रयत्न किया गया। साथ ही २० भा० समन्वय समिति की योजनानुसार कुछ खादी भण्डारों में नियमित प्रचारक नियुक्त कर 'हॉकर' योजना आरम्भ की गयी है। इस हेतु मध्य प्रदेश खादी सस्त्रा सभ द्वारा एक आवर्षक पोस्टर भी छापाया गया।

गत ६ माह से भोपाल रेलवे स्टेशन पर सर्वोदय साहित्य की दुकानें शुरू कर दी गयी है और वहाँ स्थायी स्टाल हेतु उपयुक्त स्थान प्राप्त करने का प्रयत्न किया जा रहा है। रतनाम ना स्टाल पहले से काफी अच्छा और अब नियमित चलने लगा है एवं बहलपुर स्टाल के निर्माण की कार्यवाही जारी है।

गांधी शान्ति प्रतिष्ठान सेवा-कार्य

गांधी शान्ति प्रतिष्ठान, केन्द्र बनारस ने पन्द्रह अगस्त '७२ के दिन गहर के गन्दी बरियों में सेवा का काम आरम्भ किया है। इसका उद्घाटन कलकत्ता हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश श्री एच० पी० मिश्रा ने किया। इसके अन्तर्गत बच्चों का स्कूल, पॉस्टिक भाजन ला बॉटना, बन्स स्वास्थ्य केन्द्र और वपसू किया, आदि कामों को आरम्भ करने का सोचा गया है। इस योजना को बलबता नेट्रोपॉलिटन डेवलपमेंट आथॉरिटी और पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा संरक्षण प्राप्त है।

बाकुड़ा में ग्रामदान

आन्दोलन

पश्चिमी बंगाल सर्वोदय मण्डल ने बाकुड़ा जिले के गणजला घाटी प्रखण्ड में ग्रामदान आन्दोलन को गतिशील बनाने की दृष्टि से एक अभियान चलाने का निश्चय किया है। यह २४ अक्टूबर से आरम्भ होकर दो सप्ताह तक लगातार चलता रहेगा। इसमें करीब एक सौ कार्यकर्ता रहेंगे।

गत फरवरी माह से ही श्री चार चन्द्र मण्डारी के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं को एक टोली अनुकूल पुष्टभूम तैयार करने में लगी हुई है। इन टोलियों के अथक परिश्रम का ही यह फल था कि गोविन्द-ग्राम नामक गाँव के कुछ किसानों ने अपनी जमीन दान में दी जिसे भूमिहीनों में वितरित कर दिया गया।

खादीग्राम से भ्रमजयन्ती

१० सितम्बर '७२ की खादीग्राम में श्री धीरेन्द्र भाई की ७२ वीं वर्षगांठ भ्रम जयन्ती के रूप में मनायी गयी।

इस अवसर पर भ्रम-प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में गाँवों के मजदूर सम्मिलित हुए थे। प्रतियोगिता विजेताओं को पुस्तकार दिया गया। पुरस्कार-वितरण श्रीमती पार्वती बहन के हाथों सम्पन्न हुआ।

गांधी की सभा में गाँव के लोगों से धीरेन्द्र भाई के अमनिक जीवन से प्रेरणा ग्रहण करने की अपील की गयी।

—नरेन्द्र कुमार

बाढ़ पीड़ितों के बीच जिला सर्वोदय मण्डल आगरा का सहायता-कार्य

११ अगस्त से १७ अगस्त के बीच हुई भयकर वर्षा से आये बाढ़ ने आगरा, भरतपुर, बगाना के बीच के क्षेत्र को जल-प्लावित कर दिया। इस जन-म्लान्न के परिणामस्वरूप, २००० जानवर बह गये, ४५ प्राणियों मर गये, सड़कें टूटी, पर निर्धन और लोग दाने-दाने से

इस अवसर पर कागरा जिला सर्वोदय मण्डल के श्री गणेश भाई, श्री लोचन प्रसाद, श्री रामलाल वर्मा, श्री शिव नारायणजी तथा श्री विजय नारायण दूरे आदि कार्यकर्ताओं ने पीड़ित लोगों की सहायता के लिए दो सहायता विपिर सौन रखा है।

शहर के व्यापारी वर्ग के लोगों ने भी इस अवसर पर मुक्त हस्त से पीड़ितों के लिए दान देना प्रारम्भ कर दिया है।

—श्री जी० एम० शिरोमणि

चक्रवन्दी में धौधली

पटना जिला के रतनपुरा गाँव में चक्रवन्दी का कार्य हो रहा है। इस कार्य में चक्रवन्दी वर्मचारी से मिलकर कुछ लोग आना लाभ सया दूधरे का नुस्सान करने पर तुले हैं। गाँव के धनी एच बरिष्ठ व्यक्ति वंशे सचं करने के अनिश्चित अपना रोष प्रदर्शित कर अपने घर में लाभ करा रहे हैं जिसके परिणामस्वरूप गरीब एच निरीह जनता का गला बट रहा है।

सर्वोदय कार्यकर्ता श्री जयमंगल सिंह ने कर्मचारी एवं उनके बतान के इस कार्य का सख्त विरोध किया जिससे रंज होकर गाँव के कुछ स्वामी एवं दुष्ट लोगों ने उन्हें बोरी का इस्तेमाल लगाकर जेल भेजवा दिया है। पुलिस एवं स्वामी शायीपों ने उन्हें छुड़ पीटा भी है।

इस सम्बन्ध में प्रखण्ड सर्वोदय मण्डल ने बिहार सरकार के उच्च अधिकारियों द्वारा इसकी जांच की माँग की है।

—कपिलदेव कुमार

विनोबा-जयन्ती

वाराणसी। स्थानीय टाउनहल स्थित गांधी शान्ति प्रतिष्ठान के न्यायालय में वाराणसी की सभी रचनात्मक संस्थाओं के तत्वावधान में ११ सितम्बर को विनोबा-जयन्ती के अवसर पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी की अध्यक्षता श्री नारायण देसाई ने की।

गोष्ठी का विषय था, 'भारत की भूमि-समस्या के हल में विनोबा का योगदान।' नगर के नागरिकों ने इन अवसर पर भूमि समस्या के हल में विनोबा के योगदान की प्रशंसा की और उन्हें महान सत्य के साधन-साधक प्राणिकारी के रूप में श्रद्धांजलि अर्पित की।

अन्त में भावार्थ रामभूति ने कहा कि विनोबा ने भूमि-समस्या के हल के लिए निजी स्वामित्व और राजस्वामित्व के स्थान पर एक छोटा विकल्प 'ग्राम-स्वामित्व' का प्रस्तुत किया है। भूमि का प्रश्न गाँव की अन्य समस्याओं के साथ हो हल किया जा सकता है। श्री नारायण देसाई के अध्यक्षीय भाषण से गोष्ठी समाप्त हुई।

श्री सिद्धराज डड्डा का कार्यक्रम

-सितम्बर:

- २० से २७ कलकत्ता, प्रबन्ध समिति तथा अन्य मीटिंगें
- २१ से २६, प्रकृति निकेतन।
- २८ पटना।
- २९ से १ अक्टूबर वाराणसी, रेणुहट-वाराणसी सेवा धारण।

अक्तूबर:

- ३ से ७ जयपुर।
- ८ से १२ सर्वोदय केन्द्र, जॉर्जिया।
- १४ से १७ यर्षा, राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन, सेवाग्राम-१ से १६
- १८ से १ नवम्बर मद्रासनगर, राममन्दायन अभियान।

पत्र-व्यवहार का पता :

सर्ज सेवा सघ, पत्रिका-विभाग
राजघाट, वाराणसी-१

तार, सर्वसेवा फोन : ६४३९१

सम्पादक

रामभूति

०

इस अंक में

दस शान्तिवाएँ

—श्री भवानीप्रसाद मिश्र ७८१

सेल सेल, या और कुछ,
जबान बनाम जवान

—सम्पादकीय ७८७

विचार-निष्ठा के बिना जाचार-

निष्ठा सम्भव नहीं -विनोबा ७८८

भारत का मेरा आदर्श:

शायी-विनोबा-श्री डोरालड एम ७८९

शायीय हिला—३

—डा० अबध प्रसाद ७९१

भारत में गरीबी—१५

—आचार्य रामभूति ७९३

मृगिन्स की दुखान्त घटना

—श्री सिद्धराज डड्डा ७९४

भारतीय मजदूरों पर भी

सामाजिक दृष्टिभूमि

—श्री जलील जे० जरीड्दा ७९५

अन्य स्तम्भ

शायी के पत्र, आदीलत के समानार

आजादी

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र



भारत-पाकिस्तान

शेख मुजीबुर रहमान को श्री भुट्टो से मिलना स्वीकार करना चाहिए

श्री जयप्रकाश नारायण ने एक बयान में बांग्ला देश के प्रधान मंत्री शेख मुजीबुर रहमान से अपील की है कि मान्यता देने की प्रयत्नितता का आवह छोड़कर उन्हें श्री भुट्टो से बातचीत करने के लिए तैयार होना चाहिए। इससे इस उपमहादीप में अनुत्पन्न परिस्थिति बनेगी जिसके चलते वह आज लाखों लोगों के बन्धन का कारण बना हुआ है।

श्री जयप्रकाशजी का बयान्य निम्न प्रकार है :

“बापू गम्भीर चिन्तन के बाद, और सन्तोक के साथ, मैंने निश्चय लिया है कि शेख मुजीब से मैं कहूँ कि वे श्री भुट्टो के विवेक के प्रति बड़ा दखन न कपनायें। मैंने सुना है कि श्री भुट्टो ने शेख मुजीब से श्रीयो में फोन पर अपना विवेक दुइराया है कि वह 'चभी और बहो घो' उनके मिल सकते हैं। मैं महसूस करता हूँ कि इसमें बांग्ला देश का कुछ भी नुकसान नहीं होगा अगर बांग्ला देश के प्रधान मंत्री श्री भुट्टो से बांग्ला देश के एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उनकी मान्यता से पहले मिलते हैं। इन दोनों नेताओं के बीच बातचीत होती है तो बांग्ला देश की सम्भ्रमा पर क्या भी असर नहीं पड़नेवासा है।

भारत, बांग्ला देश, और पाकिस्तान को शान्तिपूर्वक, पारस्परिक सहभावना और सहकार के साथ रहना सीपना चाहिए। हमारे क्षमते केवल बड़े राष्ट्रों को हमारे आधी भागलों में हस्तक्षेप करने में मदद करेंगे, और वह भी हमारे धते के लिए नहीं बल्कि उनके अपने विराम्पयी उद्देश्य को पिक्रि के लिए।

जैसा कि ऐसे में समझ रहा हूँ, अब यह चीज शेख मुजीबुर रहमान के ह्राप में है। उन्हें चाहिए कि यह उदार बनें, और रिची चीज के लिए मही, तो बम-बे-बम दो महत्वपूर्ण कारणों के लिए - एक, श्री भुट्टो की उदारता का उपदान जिनके कारण शेख की जान बची, तथा दो, इस उपमहादीप में जो कठिन परिस्थिति बनी है उसको समाप्त करने के लिए, जिसके चलते आज इसके लाखों निवासी त्वचीक धेल रहे हैं।

यह सच है कि श्री भुट्टो यह चाहते हैं कि ९० हजार और उसके पूर्व के युद्ध-बन्दी सीधे अपने घरों को वापस लौटें। और, श्री शेख मुजीबुर रहमान भी उतनी ही जल्दी चाहते हैं कि चार-पांच लाख बंगाली, जो पाकिस्तान में त्वचीक धेल रहे हैं, वापस आयें।

इसके अतिरिक्त, एक बात और है कि बांग्ला देश में लाखों गैरबंगाली मुसलमान हैं जिनकी राजबन्धित पाकिस्तान के लिए हैं उन्हें अपने नये राष्ट्र के नागरिक के धते अपने धर्तव्यों को समझना। यह उन मुसलमानों, जो पुरानी पीढ़ी के हैं और जिन्होंने इस उपमहादीप में मुस्लिम राष्ट्र बनाने के लिए अपना सब कुछ खोखार कर दिया था, की जिम्मेदारी है। गैर-बंगाली मुस्लिमों की नयी पीढ़ी, जो बांग्ला देश में है, सम्भवतः वह जीवन की इस नयी वास्तविकता के साथ धुन-मिल जायेंगी। यह सबके हित में होगा जिनका इसके साथ सम्बन्ध है, और

(ये पृष्ठ ००९ पर)

आन्दोलन का दायरा व्यापक बनायें

देशभर में चल रहे सर्वोदय, काम से तथा कार्यकर्ताओं से सम्पर्क रखना, उनके बीच कड़ी का काम करना और काम को गति देने में मदद करना, यह सर्व सेवा संघ का मुख्य काम है। इस दृष्टि से संघ के मन्त्रियों ने तथा मीने खेती वा तथा कार्यों का बंटवारा किया है, फिर भी हमारा देश इतना बड़ा है कि सब जगह प्रत्यक्ष पहुँचकर सम्पर्क बनाये रखना सम्भव नहीं होता। अतः नकोदर के बाद शुरू से ही मेरी यह इच्छा रही कि 'भूदान-यज्ञ' तथा अन्य हिन्दी अर्थों की पत्रिकाओं के जरिये आन्दोलन में काम कर रहे मित्रों से परस्पर सम्पर्क तथा सन्नाह बनाये रखें। मुझे खेद है कि यह सितसिता अभी तक निम्नलिख नहीं हो पाया है, लेकिन मेरा प्रयत्न चालू है और आशा है कि अब धीरे धीरे-धीरे-धीरे माह में एक बार, इस प्रकार यह संवाद चल सकेगा।

सर्वोदय आन्दोलन वा मुख्य जोर ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य के कार्यक्रम पर है, और वह सही है। जनतंत्र में जनसहित ही सर्वोदय होनी चाहिए, और वह भी प्रतिनिधियों के जरिये अपरोक्ष रूप से नहीं, बल्कि सीधे स्वयं लोगों के अभिक्रम और अनुभव के माध्यम पर। ग्रामदान आन्दोलन जनता की इस सीधी हुई सहित को जगाने का आन्दोलन है और इसलिए वह दुनियावो कार्यक्रम है।

पर, ग्रामदान के जरिये जगानी गयी और संचालित की गयी जनसहित का उपरोक्त ग्रामस्वराज्य की स्थापना में, यानी जनता द्वारा स्वयं सीधे अपनी व्यवस्था को चलाने में, होना चाहिए। बल्कि उससे भी आगे बढ़कर सर्वोदय समाज-रचना के लिए अर्थात् ऐसी समाज-रचना के लिए होना चाहिए जिसमें सबको अपने विकास का पूरा मौका मिले और किसी के द्वारा किसी

का सोपान न हो। ग्रामदान केवल तंत्र या साधन है, हमारे सारे आन्दोलन वा मंत्र या साध्य तो ग्रामस्वराज्य और सर्वोदय है, यह पूर्व नहीं खूनना चाहिए।

निगोदरजी ने यह बरख पहले रामपुर सम्मेलन में ग्रामदान के साथ ग्रामाभिमुख छावी और शान्तिसेना पर जोर दिया था। इस विविध कार्यक्रम में यह संकेत था कि हमारी दृष्टि व्यापक रहनी चाहिए। हम किसी कार्यक्रम पर एकाग्र हो लेकिन संकुचित नहीं। अब तक ग्रामदान के विचार को फैलाने में हम सबकी सहित लगी, पर अब इस प्रचारार्थक काम को जारी बढ़ाने के साथ-साथ हमारा ध्यान खुले हुए पची-पचास क्षेत्रों में समग्र दृष्टि से ग्रामस्वराज्य के विकास में लगना चाहिए। भूदान के बाद ग्रामदान, और ग्रामदान के बाद अब ग्रामस्वराज्य, इस प्रकार तीसरे दौर में हमारा आन्दोलन प्रवेश कर रहा है।

ग्रामस्वराज्य का वा सर्वोदय समाज-रचना का काम जीवन के मात्र के सारे प्रवाह को और मूल्यों की बदलने का काम है। इस काम में जीवन के किसी क्षण को हम धरूना नहीं छोड़ सकते। सर्वोदय-वर्जन एक समय जीवन-दरतन है, इसलिए ग्रामस्वराज्य की रचना में हमें जीवन के एक पहलुओं पर ध्यान देना होगा। इसीलिए गांधीजी एक के बाद एक विविध रचनात्मक काम अपने कार्यक्रम में जोड़ते रहे। शुरू में 'पार-ध', फिर 'चौध' और बाद में 'बटार-ध' उक्त इन नामों की संख्या पढ़ें। परिस्थिति के अनुसार इन कामों में जोर भी जुड़ सकते हैं, कुछ छूट भी सकते हैं।

कपू ने इन रचनात्मक प्रवृत्तियों को जारी बढ़ाने के लिए समग्र-समय पर कई रचनात्मक क्षमों की स्थापना की थी, जैसे ७० भा० चरखा संघ, ७० भा०

ग्रामीण संघ, गो सेवा सं, तालीभी संघ आदि। पर ये प्रवृत्तियाँ अलग-अलग और संकुचित न हो जायें इसलिए आजादी के तत्काल बाद उनका ध्यान इतक रखा कि इन सब प्रवृत्तियों को इस प्रकार परस्पर आपस में जोड़ा जाय कि सबका काम समग्र दृष्टि से पले। सर्व सेवा संघ वा प्रारम्भ एही बल्पना में से हुआ था। सर्व सेवा संघ इन सभी प्रवृत्तियों का उत्तराधिकारी है। इसके अलावा, जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है, सर्वोदय आन्दोलन अपने आप में व्यापक और समग्र है। यतः हमारे नाम के बावरे में सभी रचनात्मक प्रवृत्तियाँ जाती हैं जो गांधी-विचार से अनुप्राणित हैं। गांधीजी द्वारा स्थापित या उनके विचारों से प्रेरित कुछ रचनात्मक संघ जो सर्व सेवा संघ में विलीन हो गये, कुछ अभी स्वतन्त्र रूप से काम कर रहे हैं।

कपू की बल्पना थी कि अपनी अपनी विविध प्रवृत्तियों में लगे हुए होने पर भी ये सब संस्थाएँ सर्वोदय के महान संघ की सिद्धि के लिए समग्रदृष्टि से काम करें। पिछले २५ वर्षों में विभिन्न रचनात्मक संस्थाओं ने यथासहित अपने अपने कार्यों को बढ़ाया है, लेकिन कुल मिलाकर गांधी-विचार वा जो प्रभाव परिस्थिति पर डकना चाहिए वा उठते बनाय देश उत्तरोत्तर गांधी-विचार से दूर गया है। अलग-अलग रहकर हम सबको रोक नहीं पा रहे हैं। दूसरी ओर, देश और दुनिया की परिस्थितियाँ एही बनती जा रही हैं कि वातावरण गांधी-विचार के अनुकूल बन रहा है। इस परिस्थिति का लाभ उठाने के लिए सहमिति प्रयत्नों की क्षात्र अवश्य आवश्यकता है। अपने-अपने सीमित कार्य अच्छे तरह कर खाने के लिए भी एक दूसरे के काम की जानकारी होना तथा परस्पर कठिनाइयों में अनुपमों से लाभ उठाना जरूरी है।

वह मुनी की बात है कि सर्व सेवा (संघ पृष्ठ २६२ पर)

बाबा का अभिध्यान चलता है

● विनोय

हृय लोगों में यह बाहिर हुआ है कि बाबा ने मूढम-प्रवेश किया है, और उल्टा अभिध्यान चलता है। यह जो अभिध्यान शब्द बाबा ने लिया है वह शास्त्रों में से लिया है। लेकिन, जैसाकि त्रिकाय है हमारी संस्कृति का, उद्यम नया अर्थ भर दिया है : समाज के अभिमुख रह करके अन्तर में ध्यान करना। जितनी अन्तर में शून्यता आवेगी उतना, उतना अक्षय बुनिया पर पहुँगा। गणित की भाषा में मैंने कहा था कि मनुष्य के जीवन का मूल्य उसकी सेवा वितनी है उसके परिमाण पर निर्भर नहीं है, उसका बहूकार कितना कम है, उस पर निर्भर है। मानवीयज्ञान किसी को सेवा है ५०० और बहूकार है १५० तो २५० से विभाजित होगा। २५०० यानी कीमत आवेगी २। मान-वीयज्ञान किसी को सेवा ५ है और बहूकार १ है तो २५ यानी कीमत ५। अर्थात् यह नीच का छेद (हर) मूल्य होयगा जो गणित भाषण कहता है कि कोई भी संख्या डिवाइडेड बाई जीरो, शून्य से विभाजित करने पर इन एक्सप्रेसन इन्फेनिटी, अनन्त होती है। सेवा बापकी कितनी भी कम हो अन्तर बहूकार-मूल्य हो तो उसका परिणाम अनन्त होता, मूल्य अनन्त होगा। और, गणित-भाषण की दृष्टि यह है कि इन्फेनिटी के लिए चिह्न जो है वह भी दो शून्य। उसके लिए स्वतंत्र संज्ञा नहीं है। संस्कृत में अनन्त को धहर कहा है। शस्त्रोक्त काल में भारत में गणित विद्या विकसित हुई थी और साधारण शून्य का काफ़ी उपयोग हुआ था। स्वामी बाबाका। शून्य से विभाजित करते पर अनन्त जाता है। इमगिण्ड अभिध्यान करनेवाले का अर्थ अन्तर शून्य हो जाय तो केवल ध्यान मात्र से विरत हो सेवा होगी। कर्म में अकर्म रह सकता है यह बाबा ने प्रयोग करके जाना, ३०-४०

साल तक उसका प्रयोग किया। अब अकर्म में कर्म का प्रयोग चल रहा है। अकर्म करते जाओ और कर्म होता जाय, इसका प्रयोग है अभिध्यान। अभिध्यान के कुछ विषय होते हैं। जिन विषयों में प्रेरणा देनी है उन विषयों की तरफ चित्त खोलकर अन्तर परमात्मा का ध्यान करना। तो इन दिनों बाबा का अभिध्यान किन विषयों पर चल रहा है उसका पोटो-ता जिक्र करेंगे।

अभिध्यान का पहला विषय : प्रह्लाद-विद्यामन्दिर

बाबा के अभिध्यान का पहला विषय है—प्रह्लादविद्या मन्दिर। इसे १२-१३ साल हुए है, लेकिन १२ साल में मैं बाहर घूमता ही रहा। कुछ पत्र-स्थलद्वारा के द्वारा मार्गदर्शन किया, लेकिन उसके बाद मैंने जब पत्र-स्थलद्वारा भी छोड़ दिया तो वह मार्गदर्शन भी समाप्त हुआ। अब दो साल से मैं पहाड़ हूँ। उसमें आखिरी एक साल संत-सत्याल यानी २४ स्थान को छोड़कर इधर-उधर जाना बन्द किया है। तोपुत्री, सेवासाम वगैरह भी नहीं जाता हूँ। १२से गाएन में बहते हैं—शेन-संस्था। परिणाम यह है कि इस संस्था में जो सामूहिक साधना का प्रयोग चल रहा है उसका अभिध्यान किया जाता है। बाबा के अभिध्यान का वह पहला विषय है।

दूसरी है—दिनों की सामूहिक साधना। प्राचीन काल में भी सामूहिक साधना हुई है लेकिन जहाँ तक हृय जानते हैं पुरानों की हुई है। बहनों की व्यक्तिगत साधना की हुई। कामवीर की सहला, राजस्थान की भीरा, महाराष्ट्र की सुभद्रा, कर्नाटक की अक्षता और तमिलनाडु की बांडाल, ये ब्रह्मशास्त्रियों लिखाई संविदाधिक काल में ही पयो। ईंसे वेद में भी ब्रह्म-वादिनी का जिक्र है। लेकिन बीच के

काल में यह उदाहरण है। इन सबकी समाज के खिलाफ बनावत करके काम करता पढ़ा। समाज की तरफ से, माता-पिता की तरफ से न-कीई सहयोग मिला न सहायदुश्चि मिनी, बरिफ़ विरोध हो मिला। 'माता छोड़े, पिता छोड़े, छोड़े सपा सोई, कपुवन बल लोच-लोच में बेलि बोई। मोरा प्रभु गिरिधर नापर, होनी होय सो हीरई।' अब जो होना होगा, होगा। राजा भेजा जहर का प्यास, मैं अमृत बन पीया। क्रिया में फासा नाग भेजा, और किसी ने नहीं, प्रवृत्त बाप ने भेजा। मैं शातिराम पहचाना। इस तरह समाज का पूर्ण विरोध करने, घरवालों का पूर्ण विरोध करके उनकी साधना करनी पड़ी। बीच के जमाने में दिनों को ब्रह्मचर्य का अधिकार नहीं था तो ब्रह्मचारी रहना यानी सामाजिक परम्परा का विरोध करना। जो भी ब्रह्मचरिणी रहने की योग्य करेगी सारा समाज उसकी तरफ घुका की निगाह से देखेगा। बीच के जमाने में स्त्रियों को ब्रह्मचर्य का अधिकार क्यों रोके रखा, इसका एक सामाजिक कारण भी है। हिन्दुस्तान में १,००० पुरुषों के पीछे १५० स्त्रियाँ हैं। कभी वह माँका १३० पर १२० की होता है। इसका मतलब यह होता है कि एक पुरुष को एक स्त्री मानें तो समाज में से ८० पुरुषों की अधिकारि रहना पड़ेगा। इस हालत में अन्तर शून्य होना सामाजिक कारण है। लेकिन इन प्रथा को तोड़कर भीरा, सुभद्रा, अक्षता ब्रह्मचरिणी रही, तो समाज का पूरा बहिष्कार हुआ।

प्राचीन काल में पुरानों की सामूहिक साधना हुई है लेकिन अब यह स्त्रियों की सामूहिक साधना चल रही है। सामूहिक साधना एक नया विषय है। जब मैं बचाल में घूमता था तब मुझे उस घरोर के पास ले गये जहाँ रामकृष्ण परमहंस की स्थापित ली थी। वहाँ बैठकर

मिन्द ध्यान किया और उसके बाद मेरा व्याख्यान हुआ। उसमें मैंने कहा कि राम-कृष्ण की समाधि लग गयी लेकिन अब हमको सामूहिक समाधि लगानी है, ध्वनिगत समाधि तो लग गयी। लेकिन सामूहिक साधना के द्वारा सामूहिक समाधि लगानी है। यह शब्द मैंने वहाँ पर इस्तेमाल किया। पूरा समूह का समूह-समाधि में मग्न हो, केवल सामूहिक साधना नहीं बल्कि सामूहिक समाधि; पूरे समूह की समाधि। पूरा समूह ब्रह्मचर्यपूर्वक रहे और भक्ति के द्वारा साधना करे यह सब नया विषय है। इसलिए मेरे अधिध्यान का यह पहला विषय है।

यहाँ पर इन लोगों को पाठाना-सफाई, मल-मूत्र को सफाई से लेकर खाना पचाना खादि कुल-के-कुल काम करने होते हैं। दूसरी बात है कि खेती, सफाई आदि काम करने होते हैं। धीरे, तीसरी बात है कि स्वभावस्वरूप के लिए प्रेम आदि का काम करना होता है। छया साईं छः घण्टे काम करना होता है। हमने कहा कि इसविधा की दो दिनों मजदूरी के क्षेत्र में काम करना होगा। मजदूरी के क्षेत्र में ब्रह्मविद्या प्रकट होनी चाहिए, इस वाले स्वाभावस्वरूप का प्रयोग करना है। ब्रह्मविद्या के क्षेत्र में मजदूरी यह शब्द हमें सूझा था लेकिन-क्रान्ति के समय। १९१७ में रूस में क्रान्ति हुई। यह जब हमने सुना तो उस वक़्त में यहाँ यहाँ में रहता था। उस दिन मेरा व्याख्यान हुआ। मैंने कहा कि अब 'एर-युग' का आरम्भ हुआ है। एक जमाना था प्राचीन काल में जब श्रमण-युग था। श्राद्धों में विश्वास था और उसने उसके द्वारा समाज पर शासन चलाया, समाज का नेतृत्व किया। फिर क्षत्रियों का युग आया। क्षत्रिय ही राजा-महाराजा थे, धूर पुरुष थे। समाज को बनाना या विगाड़ना उनके हाथ में था। क्षत्रिय-युग के बाद वैश्य-युग आया। दुनिया भर में वैश्यों की बाढ़ पत्थी। ईस्ट इन्डिया कम्पनी आयी। व्यापार किया, नालीनीय श्यामी तो दुनिया भर में वैश्य-युग बना।

लेकिन जो क्रान्ति के दिन मैंने कहा कि अब एर-युग आ रहा है। शूद्र पानी सबदूर। तब से मेरे ध्यान में था कि अब ब्रह्मविद्या को मजदूरी के क्षेत्र में सबसे पहले सफल होना होगा, विजय पाना होगा। यहाँ पर दो साल में जो प्रगति हुई है वह मेरी जितनी अपेक्षा की थी, उतने ज्यादा है।

अधिध्यान का दूसरा विषय : नागरी-लिपि का प्रचार

मेरे अधिध्यान का जो दूसरा विषय है वह बर्तमान है। मुझे १० साल पहले यह सूझा और उस पर सोचना-लिखना मैंने शुरू किया। लेकिन इस वक़्त में उस बारे में सीधे नहीं। यह है देवनागरी लिपि का प्रचार। यूरोप में बाज कॉमन मार्केट हो रहा है। यूरोपियन इकोनामिक कम्युनिटी, ई० ई० सी० बन रही है। कॉमन मार्केट उनके लिए ब्यापार बन गया, क्योंकि वहाँ पर लिपि एक ही। मैंने इंग्लिश, फ्रेंच, रोमो भाषाएँ जालिज में छोटी थी इसके बजावा जर्मन, लैटिन और स्पेनशेण्टो सीखी—जर्मन तो १५-२० दिन में, लैटिन सवा महीने में और स्पेनशेण्टो १८ दिन में। मुझे वह याद रह गया क्योंकि गीता के १८ अध्याय हैं। उस वक़्त पेंडोस्लाविकिया का मनुष्य मुझे स्पेनशेण्टो सिखाने के लिए हमारी यात्रा में आया था। मैंने उससे कहा कि यात्रा मेरी जरूरी रहेगी, आपकी मेरे साथ घूमना पड़ेगा जो वह भूभा। रोज एक पन्ना हम सीखते थे। यह सब आसानी से गयी ही सवा इसलिए कि लिपि एक थी। भारत में वह चीज है जो यूरोप में नहीं है। भारत १५-१६ भाषाओं का एक देश है। यूरोप में हर एक भाषा का अलग-अलग देश है। मैंने उसे ट्रेनिंगजम नाम दिया है। समाजशास्त्र में योरोप हमसे पीछे है, बिमान में हमसे आगे है लेकिन अब वे धीरे-धीरे एक हो रहे हैं। भारत में हमने १५ भाषाओं का एक देश बनाया जो बड़ी बात है। पहले संस्कृत भाषा थी, जो जोड़ती थी। घटकाचार्य केरल से लेकर

कन्नोर तक घूमे जो संस्कृत भाषा का आधार लेकर घूमे। रामानुजाचार्य भी संस्कृत का आधार लेकर सारे भारत में घूमे। उन दिनों संस्कृत ही चलती थी। इसलिए एक ही लिपि चलती थी ब्राह्मी लिपि। बाद में नागरी लिपि आयी। उसके बाद अब अलग-अलग भाषाएँ बनीं तो अलग-अलग लिपियाँ आयी। बाज भिन्न-भिन्न प्रदेश के लोग लिपि-भेद के कारण अलग हुए हैं। देशिय की चार भाषाओं की चार लिपियाँ हैं। अगर एक लिपि हो तो चारों प्रायोजकाले एक दूसरे की भाषा १५ दिन में सीख सकते हैं। उनकी भाषाओं में बहुत से शब्द समान हैं और संस्कृत के शब्द तो समान ही हैं। लेकिन लिपियाँ चार हैं इसलिए एक दूसरे की भाषा सीखना कठिन है। इसलिए इन दिनों मेरा अधिध्यान इस विषय पर बना है।

इंग्लिश भाषा के लिए रोमन लिपि बरतना सराब है। उस लिपि में बिलकुल बराबर चलता है। एक नगर लॉन्डन एन-यो-नी। एन से शुरू हुआ। दूसरा के एन भी एम्बू, के रो शुरू हुआ। तीसरा जो एन जो डम्बू जो से शुरू हुआ और निमीनिया में भी से शुरू होता है। यानी एक नगर एन में, के में, जो में, यो में। बिलकुल बराबर है। अत्यन्त अन्धबराह है। एक बेवारा 'न' पार जगह बँटा रहेगा। इसके बजाय नागरी लिपि में इतलक दिक्कत नरी लानी जाय जो क्रान्ति हो जायेगी, बहुत आसान होगा। रोमन लिपि से तग जाकर बर्ताने में आनी तब में पैसा रखा या नयी लिपि को सीख करने के लिए। वह ऐसी लिपि पाहूँगा या जिसके प्रत्येक अक्षर के लिए एक उच्चारण हो। उसे १२५ लोगों ने अलग-अलग लिपियों के नमूने पैग दिये। उनमें से एक माय्य हुआ। वह लिपि चलती नहीं, क्योंकि रोमन लिपि में साधा पुस्तकें लिखी गयी थीं। लेकिन यहाँ का वह यन्त्रा फंड था। वह लिपि 'पन्थ टाइम्स' में छपी है। उनमें एक

वहानी आंग्लिसि और लयन की छवी
 कोर लाहूरे प्रंयर छपी। उउको एक
 प्रति मेरे पास भेजी थी।

अभी मेरे पास एक किताब आयी
 है—जापानी भाषा का बीस नागरी में।
 जापानी भाषा वाक्यो सरल है और
 उसकी रचना हमारी भाषाओं के समान
 है। उसमें 'प्रिपोसीसमूय' नहीं है। पोस्ट-
 पोसीसमूय है। एन द रुम, ऐसा नहीं
 है: कोठी में, ऐसा चलता है। वाक्य
 में प्रथम कर्ता फिर कर्म और फिर
 क्रिया ऐसा चलता है। मतलब यन्त्रणः
 जापानी का तर्जुना कर के तो हिन्दी-
 मराठी में हो सकता है। जापानियों की
 ल बोतना कठिन होता है। हम र बोतना
 कठिन होता है। बचपन में राम राम
 बोलेने के लिए बहते तो मैं धाम धाम
 बहता कि 'माँ सिद्धाति राम बोतना।
 इन्धिस के कारण जापानी शब्द गलत
 ढग से हमारे पास आते हैं। टोकियो
 का उच्चारण है तोषो। जापानी
 लोग में पढ़ता शब्द है भाई। मराठी
 में वह शब्द है। उसका मतलब है माता
 और जापानी में उसका अर्थ है प्रेम।
 छो बहुत समानता है। पहला शब्द ही
 समान मिला। गो माता की जापानी
 में गिउ बहते हैं और इन्धिस में काऊ
 बहते हैं। इसका अर्थ यह है कि माय
 भारत की भी कोर भारत से सब दूर
 फंकी। धेनु वाचक शब्द साकृत में
 अनेक हैं। लेकिन यह स्वाभाविक है कि
 जापान में इसकी वारिशा होती है तो
 पहाई भाषों का रहना सुविशत होता
 होगा। वहाँ भैंसे उपाया रहती होगी।

अब इन्धिस भाषा नागरी लिपि
 में बने, ऐसी कोई कपेला हम नहीं
 रखते। वह तो युरोन के लोग देलें।
 लेकिन सारे भारत में नागरी बलेगी तो
 जापान के लिए वह लिपि केना छह
 दो जायेगा। अभी उनको दो हजार
 पक्षर पड़ने पड़ते हैं। इसलिए वह रोमन
 लिपि की तरफ जा रहे हैं। चीनी की
 भी बड़ी हालत है। दोनों के लिए
 नागरी आधान है। अगर भारत में थले

तो वे भी ले सकते हैं। फिर जाया,
 मुमाया वगैरह देशों में भी यह बल
 मुकड़ो है। यह सबका सब नागरी का
 क्षेत्र है। वह आये की बात है। लेकिन
 कम-से-कम भारत का क्षेत्र तो नागरी
 में आये।

इसका आरम्भ वहाँ से हो? हमने
 सोचा कि हमारी पत्रिकाएँ नागरी में
 छपें। अभी ११ तारीख से वजाओ
 पत्रिका नागरी में छपेगी। नमूदा अकू-
 वर से छपेगी। गुजराती और तेलगू
 छप रहे हैं। इस तरह शुरू हुआ है।
 यह बले तो भारत का पला है। सब
 श्राव्य नबदीक आयेगे। नेपाली भाषा
 नागरी में लिखी जाती है इसलिए बाबा
 ने घर अठे-बैठे नेपाली सीख ली।
 नेपाली का एक बगली शेष (पाकेट
 दिक्कतारी) ले ली और पुस्तक पढ़ना शुरू
 किया। यह पढ़ना आसान हुआ क्योंकि
 लिपि एक थी। बाबा ने हिन्दुस्तान की
 सब भाषाएँ सीख लीं। उसके लिए
 उधे बितनी तबलीक हुई वह बड़ी
 जानता है। वे अल्ले आधी पली गयी।
 दानी आधी आध भाषाओं को समर्पण
 हुईं। लेकिन भाषा सीखने के लिए
 अल्ले मयाना बाली 'ताहे वारण मूल
 भवानो', ऐसा होगा।

चीन में मुसलमान लोग हमारे पास
 आये। उन्होंने कहा कि बिहार में उर्दू
 को सरकार राज्य-भाषा के तौर पर
 माने। मैंने कहा कि मैं इसके लिए
 तैयार हूँ बस कि उर्दू को नागरी में
 लिखो। अगर नागरी में नहीं लिखोगे
 तो मुझे मजूर नहीं है। इतने बड़े राजे-
 बाद और उनके मित्र मौतान्य आनाद,
 लेकिन मोनता साहब राजेग्य नहीं
 मोन सकते थे। राजेदर परखाद, वह
 कल्ले हुए हमने मुना है। क्योंकि लिपि
 उनकी ऐसी है। उस लिपि में 'अबनेर
 गये' या 'आज मर गये' दोनों समान है।
 इसलिए उस लिपि से तग आकर बमाल
 पाना वे रोमन लिपि कर ली और
 रोमन लिपि में कुरान छापा। वह कुरान
 मेरे पास आयी है। उसके लिए कापी

बशाएँ अकन करनी पड़ी। इस तरह
 हमारे अधिग्रहण का यह दूसरा विषय है।
 अधिग्रहण का तीसरा विषयः
 व्याचार्यकुल

हमारे अधिग्रहण का तीसरा विषय
 है—व्याचार्यकुल। हम चाहते हैं कि
 व्याचार्यों की शक्ति बने। बाल सबके
 सब पार्लोवानो के गुलाम बन गये हैं—
 बहते हैं कि अमुक कानेज जनसम का
 है। अमुक कम्पुविस्टो का है। इस मानेज
 में आधे प्रोफेसर इस पद के हैं और
 आधे उस पद के। परिणाम यह हुआ है
 कि व्याचार्य गुलाम बन गये हैं। शास्त्र में
 आचार्यों को नेतृत्व करना चाहिए। आज
 व्याचार्यकुल का काम वेपार एक बुद्धा
 (थी वशीधर श्रीभास्कर) करता है। सारे
 भारत में कितना काम हुआ ? ? ? प्रतिबल।
 उस बुद्धे की मदद में सुरेशराम भाई
 अमें, जवान लोग मदद में लमें तो
 नाम बहुत होगा। प्रोफेसरों को राज-
 नीति से मुक्त करा है। इन्दिराजी से
 पूछो कि तुम्हारे पूर्वज कौन हैं—
 कहा जायेगा कि समुद्राध्व, की है—
 अकबर की वंशज हैं। भाषाओं के पूर्वज
 कौन हैं—अकूर, राजादुन, यरुलम। तो
 उनसे कहना चाहिए कि अपने पूर्वज
 कौन हैं—उसे जरा याद रखो। व्याचार्य
 का महत्त्व यह था कि व्याचार्य राजाओं
 से अलग रहते थे। राजाओं की सत्ता
 अभी व्याचार्य पर नहीं चलती थी।
 व्याचार्य हमेशा उनके पार्यवर्धक थे।
 प्रोफेसरों से कहा जाय कि इसे याद
 रखिए कि आज उन व्याचार्यों के वंशज हैं।
 अधिग्रहण का चौथा विषयः
 धामदान मूखक, मासोयोग्यप्रधान
 अदिसक क्रान्ति

हमारे अधिग्रहण का चौथा विषय
 है—अपना नाम, जो हम हमेशा एटते
 हैं—धामदानमूलक, धामोयोग्यप्रधान
 अदिसक क्रान्ति। जब यह युव बन तो
 नारायण और धीरेन भाई हमारे पोछे
 पडे थे कि उधमें नवी मालीम कही है।
 मैंने कहा कि 'अदिसक' वह दो शब्द है
 उधमें बड़ी तात्वीम आती है। अदिसक-
 यानी भनी तात्वीम के- डा

→ भाइयों से पूछा गया कि सामनेवाले को तुम माफ़ करोगे फिर भी वह हमला करेगा तो क्या करोगे। उसने कहा, दुबारा माफ़ करूँगा। उससे पूछा गया कि इस तरह बिल्ली बार माफ़ करोगे, जो उसने कहा कि सेबन्दी टाएज सेवेन। तुम गिन्ते चले जाओ। अपना राय "क्षमा" है। वह गारता चना जाम, हन क्षमा करते चले जायें। प्रकराचार्य ने ठीक यही कहा था कि मैं एक दफा एममाऊंजा और समझाने से नहीं समझता तो दुबारा समझाऊँगा। मैं समझाया ही जाऊँगा। जब एक वह नहीं समझता है सब एक समझाता रहूँगा। नद नहीं समझने में हारता नहीं तो मैं समझाने में क्यों हारूँ? लेकिन अंकराचार्य ने उससे भी बड़ी बात बतानी है कि हम हैं साधक, कारक नहीं। 'कारण शापकम् न कारकम्' हम साधक हृद्य पकड़ कर से नहीं जायेंगे। सामने घोषा है, खतरा है, बड़ा दैत्य, लिख देंगे कि खतरा-नाक रास्ता है। फिर भी तुम जाना पाओ तो जाओ। हम गुप्ताय हाव पकड़ कर छोड़ेंगे नहीं, हम बता देंगे। करना न करना आपके हाथ में है। हमारा काम है सन्देश पहुँचाना, सतत बोलते चले जाना, बहते जाना, यह हमारा चौपा काम है। अपना काम है अहिंसक-क्रान्ति। उसके लिए एक भीषणदान पर्याप्त नहीं हो सकता है। उसके लिए अनेक जीवनदान करने पड़ेंगे। एक जीवन नहीं खतम होया दो-बार खतम के अन्दर तो अनेक जीवन देंगे। गीता में कहा है, 'अनेक जन्म सर्वादि' एक जन्म में सर्वादि नहीं मिली तो अनेक जन्म लेगे। इसी तरह हमें सामान्य-मूलक भासोद्योग प्रयाण अहिंसक क्रान्ति करनी है। हमें इस तरह ही जान करना है कि गांधी के इनके नहीं पकड़ें चाहिए और गांधी का सहरो पर असर होना चाहिए। बार सहरो का गांधी पर असर होता है। उससे उसता होना चाहिए।

हमने कार्यकर्ताओं से कहा है कि

पूज्य-पद: उपचार, २५ सितम्बर, '७२

(प्रथम पृष्ठ का टोप)

सबसे ज्यादा बागला देश के हित में होगा। अगर ये तयानवित बिहारी मुस्लिम, जो बागला देश के प्रति अपनी बफादारी नहीं प्रकट करते हैं, उन्हें धार्मिक-स्तान जाने का अधिकार देना चाहिए।

यह सब सब तक सम्भव नहीं होगा जब तक कि बागला देश और पाकिस्तान के दोनों नेता निजी और पर गिन्ते नहीं। श्री करविया की रिपोर्ट के अनुसार भी भूटो ने इसे निस्सन्देह स्पष्ट किया है कि टोप मुजीबुर रहमान उनसे इसलिए मिलें ताकि बागला देश को मोर-से-मोर मान्यता मिले।

यह सम्भव है कि राष्ट्रपति भूटो अपने राज्य से गुजर जायें, परन्तु वह एक जोसिम है कि इस कलहपूर्ण उपमहाद्वीप में गान्ति की सम्भावना चल ही जाय जबकि गरीबों और सामाजिक न्याय की पुकार है कि इस समस्या का घोषाति-

महीने में कम से-कम-एक दफा जाना को पत्र लिखना चाहिए। उत्तर नहीं मिलेगा। तुम लिखोगे तो अधिध्यान होगा। सालदेश के हमारे पुराने छापी है चामगाण, जो २२ साल से हमको हर महीने को १० वारीय को पत्र लिखते हैं। दो-बार बार भावक लिख देते हैं और फिर राम-राम-राम लिखते हैं। हमने कहा कि लिखने लायक कुछ सख काम न हुआ हो तो ऐसा लिखो कि कुछ धास नाम नहीं हुआ इस महीने में। राम-राम.. जाना की लिपता है इसलिए एक नाम होना ही चाहिए ऐसा छोड़ो।

—प्रजाविद्या मन्दिर,
पथनार, १४-५-७२

मोहर कोई क्षण ही। बेर-सुबेर इस उप-महाद्वीप के नेता अपने मतभेदों को उपय-पक्षीय या निपक्षीय तरीके से दूर करना सोचेंगे। मोर ही दुनिया के इस भाग के गरीब और अशिक्षित लाखों लोगों के लिए नये दिन का उदय होनेवाला है।

यह सख दृष्टाओं की प्रतिद्विष्टता का नहीं, बल्कि सामान्य वेतना, समझौता और पुनर्मेत्री का है। इस उपमहाद्वीप के तीनो राष्ट्रों के लिए हर चीज अपने ही रास्ते नहीं प्राप्त हो सकती। उन्हें अपने मतभेदों और हिंदी की परस्पर सबके सामान्य लाभ के लिए अनुकूल बनाना होगा।

अतः मैं वास्तव नम्रतापूर्वक प्रयाण सभी देश मुजीबुर रहमान से निवेदन करता हूँ कि इस परीक्षा की पड़ी में वे राजनीतिज्ञा और दूरबिधा विद्यायें। मैंने बागला देश के उद्देश्य के लिए जो भी अच्छी-बे-अच्छी सेवा हो सकती है, वह उसके इतिहास के वाले क्षण में की है। अतः मैं बागला देश के एक मित्र के नाते यह निवेदन कर रहा हूँ। मुझे यह पूछा जा सकता है कि राष्ट्रपति भूटो से यह नहीं पूछा जा सकता कि वह राजनी-तिज्ञता विद्यायें और बागला देश की वास्तविकता को बिना रिती पूर्वग्रह के रबीनार करें? यह सही सवाल है। मेरा उत्तर है कि थो भूटो इस रिधि में है, वह स्वयं अपने आपको इस रिधि में पाते हैं। क्या भारत और बागला देश उनकी इस वास्तविकता को पहचानने में मदद करेंगे? भारत ने वह अवसर पंजा किया है। मुझे आशा है—कि बागला देश भी वैसा ही करेगा। (मून अयेजी से)

धम्मपदं नय-संहिता

सम्पादक-विनोद

भगवान बुद्ध की पावन देसना का विरच-प्रथित प्रथम धम्मपदं का किंठोरात्री ने नये रूप में सज्जन किया है। उसमें तीन सख दफा १० अध्याय बनाकर अलग-अलग लिपियों में विभाजित किया है। अब यह प्रथम हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित किया गया है। बड़िया छपाई, पक्की लिपि।

मूल्य : ६० ४.००

सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी—१

भोजन

● डा० अवध प्रसाद

[पिछले अंक में मजदूरी की चर्चा की गयी है—मजदूरी कितनी मिलती है, क्या मिलती है। इस अंक में आप देखिए कि गाँव के लोग क्या खाते हैं और कितना खाते हैं और इसका सामाजिक सम्बन्धों पर असर क्या है।—स०]

गाँव में उच्च स्तरीय उपभोग की उदाहरण सम्भव नहीं। फिर भी उपभोग दो स्तर का मान सकते हैं—(१) सामान्य उपभोग स्तर और (२) निम्न उपभोग स्तर।

गरीबों का भोजन किस स्तर का है इसकी जाँच करने पर जो तथ्य सामने आये। उस पर विचार करने ही न हो पर वास्तविकता यही है। मोसम के अनुसार पारो क्षेत्र के गरीबों का भोजन इस प्रकार का पाया गया :

घरों में : सत्तू, महुआ, मजदूरी में प्राप्त अन्न

बरसान में : मक्का, मजदूरी में मिला अन्न, मछली, आदि

जाड़े में : शकरकंद, मक्का, मजदूरी में मिला अन्न

(इसमें उच्च जाति ब्राह्मण, राज-पूत, भूमिहार आदि—को छोड़कर दोष जातियों शामिल हैं। १ एकड़ या उखड़े कम जमीनवाले परिवार गरीब माने गये हैं। मजदूरी में सामान्यतया खेसारी, मक्का, जौ, शकरकंद आदि दिया जाता है।)

जिस परिवार का पुरुष बाहर काम करता है उसे प्रतिमाह प्राय २० से ३० रुपये प्राप्त होता है। इस क्षेत्र से कुछ लोग अक्षय की ओर जाकर मजदूरी करते हैं। बाहर रहनेवालों का

भोजन स्तर भी प्राय यही है।

गाँव में मिलनेवाले भोजन का गरीब नगद के रूप में करना उनके प्रति न्याय नहीं होता। साथ कर इस वर्ग के लोगों को मजदूरी अन्न में मिलती है। यहाँ एक बात स्पष्ट रूप से समझने की है कि भोजन पर कितना व्यय किया जाता है या कितनी मात्रा ली जाती है, इसका माप निश्चय करना सम्भव नहीं। उसका अनुमान ही लगाया जा सकता है। इसी क्षेत्र के गरीबों को भोजन में निम्नलिखित मात्रा प्राप्त होती है।

इस सम्भावित मात्रा में वस्तु का प्रकार काफी सीमित होता है। सामान्यतया मक्का, जौ, खेसारी, चना, शकरकंद आदि वस्तुओं का उपयोग किया जाता है। गरीब परिवारों में वस्तु की मात्रा में फर्क पाया गया परन्तु वस्तु के प्रकार में समानता पायी गयी।

अमीर का भोजन

उच्च वर्गीय भोजन को वस्तु की दृष्टि से देखने पर मात्रा से अधिक वस्तु के प्रकार में फर्क मिलता है। उच्च वर्गीय लोगों के भोजन की मात्रा ५०० से ६०० ग्राम प्रति व्यक्ति प्रति दिन पाया गया। अन्न की पर्याप्तता के कारण मात्रा प्रायः समी परिवारों में समान पायी गयी। वस्तु के प्रकार में भी विभिन्न

उच्च परिवारों में शरादा फर्क नहीं है। उच्च वर्गीय भोजन में चावल, गेहूँ, मक्का, दाल तथा सब्जियों का उपयोग किया जाता है। इस वर्ग में जिस समय जिस वस्तु का उपयोग किया जायगा यह उत्पादन पर निर्भर करता है।

इस वर्ग में उच्च जाति तथा अच्छी आर्थिक स्थितिवाले किसान आते हैं। आर्थिक स्थिति के विचार से देखें तो ५ एकड़ से अधिक जमीनवाले लोग इस स्तर का भोजन प्राप्त करने में समर्थ होते हैं। कौन व्यक्ति किस समय कौन-सी वस्तु का उपयोग करेगा यह तो तारकालिक परिस्थिति पर निर्भर करता है। करीब दूगने का फर्क देखा जा सकता है। हाँ, घर के बाहर जाने पर चाय आदि पर जो व्यय किया जाता है वह इसमें शामिल नहीं है। घर पर भोजन में जिन चीजों का उपयोग होता है उसकी सम्भावित कीमत माननी चाहिए। दूध-बही, फल-सब्जियों तो घर में उपलब्ध होने पर ही उपयोग में लाया जाता है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि गाँव के कुछ सम्पन्न परिवारों का भोजन-स्तर इससे काफी ऊँचा है। इस प्रकार के परिवारों को इसमें शामिल नहीं किया गया है।

भोजन में अन्न के परिणाम

भोजन की इस स्थिति में गाँव का गरीब वर्ग अपने भविष्य के प्रति कितना उदासोदास है तथा उसकी जीवन की क्या दिशा है इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। उनके बच्चों के पालन-पोषण एवं शिक्षण का क्या स्वरूप है तथा वे किस पर्यावरण में रहते हैं इसका अनुमान नीचे की तालिका से लगाया जा सकता है।

गरीबी से बच्चों का पालन-पोषण जीवन का दंग प्रतिशत दिन भर गन्दगी में खेलते हैं— ७२ १५५ बराते तथा प्राय निदानते हैं— २४ पहलने के कपड़े नहीं हैं— ७३८८

* भोजन की मात्रा

परिवार संख्या	सम्भावित प्रति व्यक्ति प्रतिदिन प्राप्त मात्रा (ग्राम में)
परिवार संख्या १	२५०
परिवार संख्या २	५००
परिवार संख्या ३	३००
परिवार संख्या ४	२५०
परिवार संख्या ५	६००

अहिंसक कार्य-कक्ष : एक अभिनव प्रयोग

गांधी शान्ति प्रविष्टान द्वारा संचालित राजघाट अहिंसा विद्यालय (दिल्ली) के सम्पर्क में आये वालीस कार्नेजो के तीन सौ पच्चीस छात्र-छात्राओं ने अवसर यह प्रदान किया है कि अहिंसा-विचार अपने में एक क्रान्तिकारी और चिरनूतन विचार है, किन्तु इसे क्रियात्मक रूप देने के लिए; एक साधारण विचारों (जो कई प्रकार की परिस्थितियों में जड़ता युक्त है) अपनी सीमित शक्त से क्या कर सकता है ।

अहिंसा को व्यवहार में लाने और जनसाधारण तक पहुँचाने के लिए एक अहिंसक कार्य-कक्ष की योजना बनायी गयी है । इस योजना के उद्देश्य निम्न हैं .

१—उस नगर या मुहल्ले में, जहाँ कदा खोला गया है, युवक-युवतियाँ, छात्र-छात्राएँ एक मंच पर आयेँ और उनमें ऐसी पारिवारिक सदस्य-भावना का विकास हो जिससे वे परिवार को रुढ़िवादी परम्पराओं की तोड़कर समता और मानव-नैतिक के नये मूल्यों की स्थापना कर सकें । साथ ही, अपना लक्ष्य बनायें कि यह नया परिवार अहिंसा और स्नेह द्वारा समाज-परिवर्तन की दिशा में अग्रसर हो ।

२—नगर या मुहल्ले की स्थायीय समस्याओं का अध्ययन करें और जहाँ

तक हो उनके अपने-अपने सामर्थ्य और शक्ति के अनुसार उन समस्याओं के अहिंसक हल ढूँँ ।

३—जब कदा इस कदर मजबूत हो जाय कि उसके सदस्यों में परिवार-भावना और स्थानीय समस्याओं के प्रति पूर्ण रूप से जागृति आ जाये तब वे सदस्य उन मूल्यों के प्रति, जो समाज-को परम्परावादी और रुढ़िवादी बनाने में सहायक हो, के विरुद्ध अहिंसक कदम उठावें । समाज के अन्दर पृथी द्वारादो के प्रति जनमानस को जागृत करने के प्रत्येक कार्यक्रमों में वे भाग लें ।

प्रयोगात्मक रूप में दिल्ली की तीन बस्तियों में अहिंसक कार्य-कक्ष की स्थापना की गयी है । अनुभव के आधार पर कहा जा सकता है कि यदि योजना को स्थानीय सहयोग मिले और युवक वर्ग इस और विलचस्पी दिखायें तो यह सफल हो सकती है । मुना पीढ़ी को इससे नयी राह मिल सकती है ।

सबसे पहला अहिंसक कार्य-कक्ष दिल्ली के निकट के एक गाँव (धोंडा) में आज से चार माह पूर्व खोला गया था । इसका आरम्भ भी वहीं के नव-युवकों द्वारा ही हुआ । वे नवयुवक पिछले षेड वर्षों से अहिंसा विद्यालय के कार्यक्रमों में सक्रिय भाग लेते रहे हैं ।

ये नगर चार करने की होती है । वे क्षेत्र में मजदूरी करने की जगहा शहर में कुनीपिरी या रिशहा, ठेका चलाना अच्छा समझते हैं । शहर की भीड़ में सोकर कठिन श्रम करना उनके लिए अधिक प्रविष्ट एवं सम्मान का कार्य है । इस प्रवृत्ति ने उन्हे गाँव में-रहते हुए भी दूर किया है । लेकिन शहर में सरकारी खपना सम्भव नहीं है । गाँव की अर्ध-व्यवस्था में ही आसानी सम्झनों का जो रूप बनता है उसमें उताव, शोषण एवं बढ़ता की जगह-किपाएँ कम्यः बढ़ती जाती हैं । ●

इस कक्ष के अभी तक ७२ सदस्य बन चुके हैं, जिसमें नवयुवकों के अलावा गाँव के जर्मन नागरिक भी हैं । कक्ष ने उद्देश्य के अनुरूप धाम की तीन मुख्य समस्याओं पर ध्यान केंद्रित किया—यातायात (परिवहन), शिक्षा और बढ़ती हुई भू-भागीरों ।

बसों की कमी के कारण प्रायः रोज ही बस-व्यवस्थापकों और बस-यात्रियों में सुषर्ण होये थे, उन्हें दूर करने के लिए चार जर्मन शान्ति सैनिक दिल्ली परिवहन के उच्च अधिकारियों से मिले । परिणाम-स्वरूप अथ बस का कोई भी यात्री बस-सेवा से अवस्तुष्ट नजर नहीं आता । कक्ष के सदस्यों ने शिक्षक-वर्ग में बढ़ रही दृष्टान्तरी, भेद-भेदभाव और अन्य प्रकार के अनेकिक कार्यों के विरुद्ध भी आवाज उठायी और शिक्षकों को अपनी कमजोरियों पर विचार करने के लिए मजबूर होना पड़ा । शराबखोरी की समस्या इस गाँव की स्थानीय समस्याओं में मुख्य है । शराबो ने शराब पीनेवाले जन जाइयों की शराब की हुरादो से अवगत कराया और दो दिवसीय सभासन्धी अभियान चलाया । जब कद्यों ने शराब त्याग दी है और ऐसा अनुभव आ रहा है कि शराबी जब कार्यकर्ताओं के सामने आता है तो वह अपने ऊपर एक नैतिक दबाव महसूस करता है ।

दूसरा कक्ष दरियागज में शुरू किया गया है जिसमें २० सदस्य हैं । सफाई कर्मचारियों की हड़ताल के दौरान यहाँ मोहनल-सफाई-अभियान चलाया गया ।

तीसरा कक्ष घात पाक में है । यहाँ छात्रों ने यातायात की समस्या हल करने के लिए और बसों की सन्धो-प्रतीक्षा से बचने के लिए रॉय के साधन-सम्पन्न निजी साहजवाली से चार आ-नाकर सम्पर्क किया है और उन्हें बस-उतरी निजी वाहनों में निरुद्ध मिलने लगी है । दिल्ली की अन्य बस्तियों में कस्तूरबा नगर और शाहदरा में भी-ऐसे कक्ष खोले जा रहे हैं । ●

→भारपेट खातर नही मिलता है— ७५
गावी-मनोर करते हैं— ९८
माएपीठ करते हैं— ९०

उत्प्रेरित जीवन के दधि में उनका आर्थिक भविष्य क्या होगा इसका अन्दाज सहज लगाया जा सकता है । इस वर्ग में शिखा के प्रति रचि नहीं दिखाई दी । ये लोग शिक्षा की आवश्यकता नहीं समझते । मानस ऐसा है कि पढ़कर क्या करना, काम जो आज करते हैं वहीं जागे करता है । बच्चा ११-१२ वर्ष की उम्र से कुछ-न-कुछ करने लगता है । आज के किशोर एवं युवकों की आकांक्षा शहर

राजस्थान में शराबबन्दी की तैयारी

नहोदर सम्मेलन में विभिन्न प्रांतों के कई भाई-बहनों ने राजस्थान के शराबबन्दी आन्दोलन में हिस्सा लेने की तैयारी जाहिर की थी। इस आन्दोलन के सम्बन्ध में कुछ बातों की स्पष्टता कर लेना जरूरी है। चार साल पहले सफल सत्याग्रह तथा जनमत के दबाव के कारण राजस्थान सरकार ने सन् १९७२ तक पूर्ण नशाबन्दी करने की अन्तिम नीति की विधिवत घोषणा की थी। सरकार ने इस नीति पर अमल भी शुरू कर दिया था, हालांकि उसकी यदि उत्तरी तैरा नही थी जितनी अपेक्षित थी। राजस्थान के २६ जिलों में से करीब साठे छ. जिलों में इस बीच शराबबन्दी लागू की गयी।

पूरे प्रदेश में शराबबन्दी लागू करने की विधि से तीन दिन पहले अन्ततक राजस्थान सरकार ने यह घोषणा कर दी कि विपक्षी कठिनाइयों के कारण वह शाश्वतबन्दी के सिद्धांतों में आगे कदम उठाने में असमर्थ है। इस बचन भंग की तैकर प्रदेश नशाबन्दी आन्दोलन के नेता श्री मोहनभाई भट्ट ने आभरण अलखन करने की घोषणा की। बार-बार याद दिलाने के बावजूद भी जब प्रदेश सरकार ने इस बारे में कोई समाधानकाक उत्तर नही दिया तो अब [पृष्ठ १९ मई की बाध्य होकर मोहनभाई को अग्रा जनसभा प्रारम्भ करना पडा और प्रदेशभर में सरकार के पचन भंग के विरुद्ध सत्याग्रह चालू हो गया। प्रधान मंत्री धीमजी द्विवेदा चौधो द्वारा मध्यस्थता के आश्वासन पर ११ दिन बाद २७ मई को मोहनभाई ने अनशन छोडा।

इस बात को तीन महीने से अर भीत थुके, लेकिन प्रधान मंत्री की ओर से अभी तक कोई निर्णय सामने नही आया। हालांकि प्रदेश नशाबन्दी समिति ने मोहनभाई के अनशन की समाप्ति के अवसर पर यह कहा था कि मोहनभाई का

अनशन समाप्त हुआ है, लेकिन आन्दोलन जारी है, फिर भी वस्तुस्थिति यह है कि एक बार प्रधान मंत्री के निर्णय के लिए मामला सोा दिये जाने के कारण अनिश्चितता का वातावरण बन गया। यह सवाल भी पैदा हुआ कि प्रधान मंत्री के निर्णय पर कबतक प्रतीक्षा की जाय ? क्या इस प्रतीक्षा की कोई मर्यादा नही है ? आखिरकार इसी सप्ताह जयपुर में हुए अखिल भारतीय नशाबन्दी सम्मेलन के अवसर पर सब लोगों की सलाह से यह तय रहा कि प्रधान मंत्री के निर्णय के लिए आखिरी मर्यादा वालामी १४ नवम्बर तक की मानी जाय।

लेकिन १४ नवम्बर को यह अवधि प्रधान मंत्री के लिए तथा राज्य सरकार के लिए है। प्रधानमंत्री इस विधि के पहले अपना निर्णय दे दें कि राजस्थान सरकार पूर्ण शराबबन्दी की नीति को आगे विश प्रकाश बढायेगी। पर राजस्थान के कार्यकर्ताओं के सामने दो काम बिनतुल स्पष्ट हैं। पहला तो यह कि प्रदेश के अधिक से-अधिक गांवों में इस बात का प्रचार करके कि देश में बड़ी जा रही शराबखोरी के कारण कौसी विपय परिस्थिति पैदा हो रही है। ग्राम-नवाचनों के प्रस्ताव और उनके समर्थन में गांव के तमाम लोगों के हस्ताक्षर कराये जायें कि वे अपने क्षेत्र में शराब नही चलने देना चाहते। अर

अगर यहाँ शराब की दुकान हो तो वह उठा ली जाय। दूसरी ओर, गहरो में राज्य सरकार के नियमों के विरुद्ध जो अंधा-सुन्ध भरोख को ठूकानें चल रही है उन्हें बन्द कराने के लिए जनमत को जागृत, संगठित और सक्रिय किया जाय। इन कामों के लिए हमें १४ नवम्बर की बात देखने नही बैठना है। प्रधान मंत्री के निर्णय या किसी प्रकार की बातचीत के कारण इन कामों के लिए रुकने की आवश्यकता मही है। हमें पूरी आशा रखनी चाहिए कि प्रधान मंत्री १४ नवम्बर से पहले अपना निर्णय देंगे और पूर्ण नशाबन्दी के बारे में रुके हुए सरकारी कदम भी फिर से आगे बढेंगे। लेकिन उस दशा में भी उररोत्त दनों काम आवश्यक होंगे, क्योंकि शराबबन्दी जैसा कठिन काम केवल कागुन से सम्भव नही है। कागुन के साथ साथ व्यापक लोक-विशेष हर हालत में आवश्यक होंगा।

किसी कारणवश निश्चित अवधि के भीतर प्रधान मंत्री का निर्णय न मिला या प्रतिकूल गया तब भी इन कामों के जरिये प्रदेश में एसा वातावरण तैयार हुआ होगा कि चागे का कदम उठने से सहज ही निकलेगा।

उपरोक्त दोनों कामों के साथ-साथ बड़े पैमाने पर लोगों से शराबबन्दी के पक्ष में सफल-भव भरणे और नशाबन्दी सघटन को मजबूत करने वा काम चलाने का भी तय हुआ है।

—सिद्धांत द्विवेदा

बिनोबाजी के ७८ वें जन्मदिन पर प्रकाशित
‘भूदानवाले पाया’
 (बिनोबाजी की जीवनी और सर्वोदय आन्दोलन की सक्षिप्त झॉकी)

ले० : राममहापुर 'नम्र'

मूल्य : ४० पैसे

यह पुस्तक आर निम्न पने से मंगाये

सर्वे सेवा संघ प्रकाशन, रात्रघाट, वाराणसी—१

ब्रह्मविद्या मन्दिर में विनोबा-जयन्ती

१९७२, ११ मिनट, सोमवार का दिन। सुबहे ६ बजे से ही मिल-बाली का, दर्शन-विद्यो का ताजा लय गया। लोग आते और लिपि-भाष से प्रणम करते। इन्दी ने वरण धुए, विद्यो ने मूला की माला दी और विद्यो ने एक पूत अर्चना कर शोभित किया।

विनोबा ने हाथ 'ओङ्कार' 'अनन्य' कहा। घर पर हवा टार, छेद दाड़ो और प्रवण विम। अलो से ज्योति टपकती और तापनी हूमेता से जगाता।

विनोबा जयन्ती का कार्यक्रम सोच-वारे हान में करना तय था। शुरू होने का ही रहा था कि विनोबा ने चुटकी बजायी कि बाहर बंठ जाये। स्वर्णित बरतप्रदायी की शमाधि के पास या बंठे और वही गाथा समूह जमा हो गया। पीने दस बजनेवाले थे।

सब धर्म से प्रार्थना हुई। ओम्ह मिनट उठने लगे। सब पूरा बंठे थे और इतनाकार था कि बाबा कुछ बहने। यह उठने लगे तो शहीदेको सार्दे ने टोका और मंचेत किया, कुछ बोंरे। वगन में ही मौजूद थे दादा प्रभाविचारी। बाबा ने उनसे बोलेने का इशारा किया। दादा ने उत्तर दिया—'मैं तो रोड ही बोलता हूँ, बाबा आरता दिवह है।'

बई मिनट प्राद-मुद्रा में निरुत गये। फिर बाबा बहने लगे कि बाबा गैने बोलेने का कुछ साबा नहीं था। विचार था कि सब धर्मों की प्रार्थना से परमात्मा का स्मरण होगा फिर विष्णु शहस्रनाम का पाठ और सब समाश्रम। लेकिन आग्रह होता है कि बोलना चाहिए।

उपनिषद की क्या याद आती है। एक श्रावि से पूछा गया कि आत्मा रंघी है तो वह कुछ बोले नहीं। फिर प्रश्न किया तब भी नहीं बोले। तीसरी बार पूछने पर भी वह चुप रहे। तो

थोपी बार जब प्रश्न किया तो कहा कि उत्तम-ये उत्तम उत्तर दिया गैने, लेकिन आर समझे नहीं, तो फिर मासूरी भाषा में बोलना पड़ता है कि आत्मा जान है।

इसके बाद मासूरीपासं का वचन पाठ किया—'श्रीगार्गी विचित्रते मन रहे, मोन परं सम्भाम्।

हम कौन है' न हम डूँट है, न अडूँट। हम सब अलग है एंवा भी नहीं। हम सब एक रिह हा गये, एंवा भी नहीं' तो क्या है सम्भ्रम ? समरा। न डूँट, न अडूँट। कनेकर नहीं, एकर नहीं'। एकरा नाम है गबरगडा एंवी अरथा बहो हा बहो बग करना पड़गा ? बहो के लिए बगारा है 'मोने'। समरस बरथा में मोन परं सम्भ्रम—मोन ही हो सता है। श्याकवान नहीं हो सता। मोन माने मुनि कृति धारण करना, मनन करना, सुणी सापना नहीं। इस वास्ते हम सब दो मिनट मोन रहने।

श्रीमू सांति सांति सांति के साथ दो मिनट का मोन शुरू हुआ और इसी से समाधि भी। उसके बाद ब्रह्मविद्या मन्दिर की बहोने में विष्णु शहस्रनाम का मधुर बठ में पाठ किया—

× × ×

सबं सेबा साथ के कर्मानय मनी श्रीगुणानार ने नाबा की खबर दी कि तबोरत्रिने में श्री स्वराज्यन्वी का सत्याग्रह चल रहा है। विस्मय रिपोर्ट देलखर विनोबा ने कहा कि वह बहुत अच्छा काम हा रहा है। विनाबा-जयन्ती पर इसके बड़कर मनानार बग हो सता था ? रात को ही एक ठार बहो से बाबा कि जमीदार ने अपना वचन-धन किया जिसके कारण श्री स्वराज्यन्वी ने सात दिन के लिए उपवास शुरू कर दिया है और सत्याग्रह छोड़ी है। अब तक ४२ सत्याग्रहो गिरपार हो चुके हैं।

× × ×

तीसरे पहर को लगभग एक घण्टा समय बाबा देते हैं। एक दिन पहले गैने उनको अपनी पुस्तक 'वीनोबाय रामानुजन् भेट की थी। विनो ने कहा कि रक्षित के लोग गणित में बहुत निपुण हान है।

बाबा बोले 'इसका कारण गैने गोर निबासा है। फिर वह गिनती बताने लगे। 'अपने पहा है—११, १० १९, २०। उसके बाद २१, २२...२८, २९ उसके पीछे ३०'। लेकिन रक्षित के पार्श्व प्रदेसों में बहोने—दस एक, दस दो, दस नौ, दस दस'। उसके बाद नीम एक, बीस दो, 'बीस' नौ, दस दस। इन तरह विष्णु-तुल जम से चलना है। २९, ३०, २९, ३० जैसी बहोने नहीं'। इसलिये बहो के बचने गानिन में जगादा अच्छे होते हैं।

बाबा एकर बाबा बहने लगे, 'अनर के सोन बड़े आलखो होने हैं। जनरी भाषा है सत्यभाषा और इस बाबने कोई दूसरी भाषा गैकने नहीं। अब हिन्दी में देखो, क्या है—मैं आया हूँ, तुम आने दो, वह आती है, वे आते हैं, 'एक अलग अलग। मनपातम में क्या है—एक 'वेकु-नू। मैं पोरोगु, तुम पोरुगो, वह पाउगो, सब पउगो' और देखो बंसा समेत है निय बा। पत्ता पुनिम है, उसरी बनी दीवार स्त्रीलिय और जो मजन सखा हुआ वहु पुनिम' बहो जिाने ज्येन पदार्थ है वे सब एक ही निय में 'दना सरल है फिर भी दूसरी भाषा नहीं बोलते।'

पाठ में ही ठाको शक से बाया एक सरकट दैनिक अन्वार रखा था। बाबा ने कहा, 'देते देखो, दैनिक पत्र है सत्य भाषा का। मैरु से निरुक्ता है, तीन साव से चल रहा है।' 'रिदनी मेटलन करते हैं' उत्तरवालो को अपना आत्म्य ओङ्कार मेहनत करनी चाहिए।

बीच-बीच में मिलनेवाले आते और दर्शन कर चले जाते। इन तरह दिन भर चलता रहा। पीने छहः बजे प्रार्थना हुई और उसके बाद

→ (पृष्ठ ८०२ का योग)

संघ के निमंत्रण पर ६ सितम्बर को दिल्ली में गांधी स्मारक विधि, गांधी शान्ति प्रतिष्ठान, हरिजन सेवक संघ, वस्तुव्या द्रष्ट, कृषि सो सेवा संघ, नयाबन्दी परिषद आदि के प्रमुख लोग मिले थे। सबसे इस प्रकार के सम्पर्क और विचारों के आदान-प्रदान को आवश्यकता महसूस की, और यह सिलसिला हर तिमाही जारी रखने का उप विचार।

सर्व सेवा संघ में जो प्रवृत्तियाँ विलीन हुईं उन विविध नामों को जाने बढ़ाने के लिए भी संघ ने अपनी-अपनी समितियाँ बना रखी हैं। सर्व सेवा संघ की इन विभिन्न उप-समितियों के संचालकों की बैठक सितम्बर के तीसरे सप्ताह में चलने में सुचारु गयी है। कुछ मित्रों की यह विचारणा रही है, और उसमें कुछ तथ्य भी हैं, कि सर्व सेवा संघ जगत-जगत नामों के लिए समितियाँ या विभाग बनाकर (एक उप-उप विभागीय) से चलना ही गया। जब यह सीधा है कि संघ की विभिन्न समितियों तथा विभागों के संचालकों की बैठक प्रत्येक समिति की हर बैठक से एक दिन पहले ही आम निवेदन संघ का भी एक मिलकर अपनी-अपनी विभागीय के नामों की प्रवृत्ति, उनमें जानेवानी इतिहासों, आगे की योजना, आदि के बारे में परस्पर विचार-विनिमय करें। सर्व सेवा संघ के प्रधान कार्यालय को भी सर्व प्रवृत्तियों के साथ व्याप्त निवृत्त सन्तुष्ट रखने में इससे मदद मिलेगी। भाग्य है कि प्रत्येक-एक पर भी इस प्रकार समन्वित बनने से और समन्वित से काम करने की कोशिश की जायगी।

—सिद्धराज कर्मा

१२ सितम्बर, १९७२

→ बहुहर टोक ६ बजे विनोबाजी को घरे। सारे आश्रमवासियों बड़े मगन थे, आज के कार्यालयों आयोजन पर, और इससे भी ज्यादा एक बात पर कि कबसे दिन बारह जारी रखे भी प्रत्येक दिन बारह जारी रखे भी प्रत्येक दिन जारी रखे हैं और तीन दिन जारी रखे हैं।

—बाबू

देश के कोने-कोने में विनोबा-जयन्ती

बम्बई

बम्बई में छुट्टी का दिन सबसे व्यस्त दिन होगा है, जिसकी राह बहुत पहले से देखी जाती है। ११ सितम्बर को गणेशचतुर्थी की ओर विनोबा-जयन्ती भी। अतः एक-दो-तीनों छाड़ी भोजन जोपाटी स्थित भारतीय विद्या भवन के गीता हॉल में झटपट हो गयी तो सुखद आश्चर्य हुआ।

हल्दी-नी सजावट थी। दूत का माला से विनोबा की तस्वीर सजायी गयी थी और एक रक्षा पोस्टर बस्ताबो के पार्श्व में लगा था, जिसपर 'सर्व भूमि गोपाल की' का मंत्र देते हुए विनोबा का चित्र था।

दो-तीन बहिलाओं के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। मराठी नहीं जानेवाला मैं बहिलाओं के प्रवाह को समझकर आनन्द में था। अन्धश्रम महोदय ने तीनो बहिलाओं—धीरेन्द्र मन्मदार, एच० एन० जोशी तथा जयराम गारावण का परिचय समानुक्त दिया और फिर मन्दर बुधों पर डेटे लाई टा के सामने रख दिया गया।

धीरेन्द्र दा

“... विनोबा का जन्मदिन मनाने हम यहाँ १९२६ हुए हैं। बहुत लोग विनोबा की गांधी का उत्तराधिकारी कहते हैं। और भी बड़े लोग हैं जो गांधी के उत्तराधिकारी कहते हैं। तो फिर ये विनोबा किसके उत्तराधिकारी हैं?...”

“... मैं मानता हूँ कि गांधी के अविनाश के तीन पक्ष हैं। एक तो वह था 'महत्वा' गांधी, दूसरा था 'विरोधी' गांधी और तीसरा था 'अतिशयोक्ति' गांधी। अतिशयोक्ति पक्षों की संख्या तीन है। पर गांधी से पहले भी विरोधी तो बहुत हुए थे। गांधी ने विरोधी को प्रक्रिया में शामिल का स्थान बनाया।” पर भाव तो ऐसे मानते नहीं हैं। अतः यह भी बात कहते हैं,

उसने-अपने इस विचार की सम्भावना प्रकट कर दी। जब सम्भावना प्रकट होती है तब लोग मानते हैं।

“... इतिहास के प्रारम्भ से हीला से संचालित समाज के समाज हैं। समाज संचालन से चलता है, संहार से नहीं, इसके पक्ष में दर्शन भी है।” पर जब हम कहते हैं कि लोकतन्त्र है तो लोक-तन्त्र से क्या... और लोकतन्त्र हमेशा अद्विष्टक होती है। समाज विश्व शक्ति से चालित होता है उसी तरह का रहता है। हिंसा से क्या गांधी हिंसक समाज, अहिंसा से क्या गांधी अहिंसक समाज। शासन चाहे विचारों बाद पर आधारित ही, विचार-शक्ति से चलता है। अतः समाज हिंसक समाजों से नियमित हो रहा है।” अब आज इस दृष्टि को बदलना चाहते हैं तो उस अनुसार उसी-उसी बदलनी होगी।”

लोकतन्त्र का धारण गूढ़ विचार हुआ तो 'पाठित्तिपंटी केमोमेंसी' एक निवृत्त गया है। विनोबा इसका उत्तराधिकारी हैं। वह एक 'पाठित्तिपंटी केमोमेंसी' की बलना से आगे गया। विनोबा-गांधी की इस विचार-प्रक्रिया का उत्तराधिकारी है। “...देम के लोग कहते हैं कि वह सम्भव है क्या? आधुनिक समय की समाजों के साथ 'रेलिंग' बहती है? टोक है, 'पुलिंग' नहीं है तो काम नहीं आयेगा। पर इतिहास से आज की समाज का उत्तर मिल रहा है? बड़े उत्तर-निश्चय का विचार की माँग है?...” जिसे क्या से भीतर ही हास्य मिश्रित विचार है, उन जन की भाव अब इसे से मानना चाहते हैं। बँट मनना या गयेगा? ...

कोई उत्तराधिकारी अतिशयोक्ति नहीं मानता है। अतिशयोक्ति समाज पर नहीं चलता है। सम्भावना प्रकट करता है। विनोबा जी ने यह किया है।

आपसे प्रार्थना है कि जहाँ तक सम्भव हो उनके काम में सहयोग करें।”
एस० एम० जोशी

“विनोबाजी का जन्मदिन मनाते दृष्टकृते हुए हैं तो मेरे मन में जो विचार है उन्हें सशेष में रखता हूँ। - छोटे-मोटे नौ जो कहा वही हमें सोचना है कि विनोबाजी जो कह रहे हैं उसका ‘रेलिवेंस’ क्या है? पिछले दिनों राजधानी में एक अहवालवाले ने मुझसे पूछा कि गोधी आज की परिस्थिति में बिदना ‘रेलिवेंस’ है? मैंने कहा कि आज वह बिदना ‘रेलिवेंस’ है उतना तो उब भी नहीं था जब वह था। एंवा में मानता हूँ।” स्थिति दिन-प्रति दिन खराब होनी जा रही है। विरभोटक अवस्था है। आज यदि कुछ नहीं हुआ तो क्या है विनोबा का ‘रेलिवेंस’?”

“मैंने विनोबाजी को बोधा समझा है, पूरा समझा है यह बाबा तो नहीं करता, पर बिदना समझा है उसके में पहना चाहता हूँ कि जब स्थिति इतनी बुरी है, जब जनता सबको पर उत्तर जाती है तब हम अलग काम करते रहे, यह क्या ‘रेलिवेंस’ है? [भीड़ कि कोनो से छिट-पुट तावियां बनीं।] आज तो उदासीनों को भी उदासीनता छोड़कर नेतृत्व करने आना चाहिए।” मैं सर्वोदयवालों को घुंताज लड़के के लिए नहीं कहता।” मैं तो उस राजनीति में रहा हूँ... ‘स्वाउन्डरुस’ की जमात में रहा हूँ। जब आपसे कहता हूँ कि बिदना नैतिक अविप्लान है समाज में, उन्हें आगे माना चाहिए। विनोबाजी की उम्र ज्यादा हो गयी है। अब वे नहीं कर सकते, मार्गदर्शन दे सकते हैं। पर क्या दूसरे लोग जो हैं वे भी बँडे रहेंगे? [तावियां] लोगों का प्रबोधन नहीं होगा तो क्या होगा?”

“... जब हम बमरो में बैठकर गांधी के ‘रेलिवेंस’ की चर्चा करते हैं तो हम खुद ‘इररेलिवेंस’ हो जाते हैं।” अच्छे लोगों को मैदान में आना चाहिए और उदासीनो को जाना चाहिए।”

अपभ्रंश मारपयण

“इस पुनीत अवसर पर इनके लोग दृष्टकृते हुए हैं यह उरसाहबदंड है। .. इतने लोगों की आशा मुझे नहीं थी।

“पूरा विनोबाजी से मैं आठ वर्ष छोटा हूँ। मेरे सामने बहुत बड़ी समस्या है आज। उत्तर देने का समय नहीं है। जीवन के अन्तिम दिन हैं।”
दशविण, कुछ घर-गृहस्थों को भी इसमें लगा देखता हूँ तो मुझे इतना समाधान होता है कि भविष्य अच्छा है।”
परिस्थिति का ठोस मुनासबा हो ऐसा लोग आपसे, सर्वोदय-जमान से चाहते हैं, संस्था एस० एम० मॉई की बात से और छिटपुट हुई हवाध्वनि से लगता है।

.. कहते हैं कि गांधी मर चुका है आज की परिस्थिति में। मुझसे पिछले दिनों ‘इलेस्ट्रेटड बिक्ली’ ने इन्टरव्यू में यही पूछा। जंगला तो आप पढ़ेंगे।” समस्याएँ बहुत हैं—आर्थिक, सामाजिक, मनोबैज्ञानिक, आध्यात्मिक और भी बहुत सारी बातें हैं।” अब गांधी को बँडे लोग जन-विरोधी बढते हैं, कि वह तो सिर्फ चरखा-खनसीवाला था। तो यह तो बिलकुल गलत बात है।”
विज्ञान और यांत्रिकी का जहाँ मूढ़ विचार हुआ है, वहाँ सङ्गणक की दृष्टी भयकर परिस्थिति पैदा हुई है।” वहाँ गांधी याद आ रहा है। जमाने तो बहुत पहले कहा था कि मशीनों पर बल्पाणकारी नियंत्रण नहीं रहा तो मनुष्य के लिए कोई उपाय नहीं रहेगा। आज जो स्थिति है उसमें वैज्ञानिकों का अनुमान है कि ५० नही तो १०० वर्षों में मनुष्य का रहना असम्भव हो जायगा।”

आज सबेरे एस० एम० से देर तक चर्चा हुई। आज वह पशु-मुक्त हैं। जिस दल में जायें इसके लिए बहुत-और पढ़ रहा है इन पर। मैंने उन्हें सलाह दी है कि जो सक्रिय राजनीति में हैं उन्हें ६५ वर्ष के बाद तो रिटायर होना ही चाहिए।” अनुभव की कमाई के साथ जन-जागरण के काम में सक्रिय लगानी चाहिए।” एस० एम० मुखसे तीन घण्टे

छोटे हैं। तो मुझे आभा है कि एस० एम० फिर से उस मोह-भाव में नहीं पड़ेंगे।

“... समाजवादी पार्टी में जब मैं था तो ‘गरीबी मिटाओ’ पर पुस्तक लिखी थी मिलकर। ‘गरीबी हटाओ’ से ‘गरीबी मिटाओ’ ज्यादा ‘रेलिवेंस’ है। हटाने से अच्छा तो मिटाना ही है, खत्म करना है।” पर हमने तो यह बात में कहा। गांधी ने कहा था कि इसकी शुरुआत तो अन्तर्द्वेष से ही होगी। नेहरू के नेतृत्व में देश ठीक इसी उदरी दिशा में गया। गांधी के बडे बडे मित्र सरदार, राजेन्द्र बाबू और वन राजाजी भी थे, कोई गांधी के रास्ते पर तो नहीं चला।” नारा गुंजता रहा, पर नाम नहीं हुआ। ‘विश्विय मॉन विनो’ कहते हैं तो विचार से दूर करना है? स्वतन्त्र ऊपर से अलग है और ऊपर ही चला जाता है। मोचिवाले स तो पूछा ही नहीं। ‘पावर्टी सेक्स’ (गरीबी की मोसा) से नीचे बरौज आने लोग आज हैं इस देश के।” अब हम परिस्थिति में रास्ता क्या है?

“एक तो हर्ष-व्यतिवाला मार्ग अपनाकर, राज्य पसन्दे और वहाँ जाकर बँडने का रास्ता है। तो क्या होगा? क्या किया वहाँ रहकर सरदार और राजेन्द्र बाबू ने? मैं उनके अधिक गांधी को समझना हूँ यह तो वह नहीं सकता। हम ही वहाँ पहुँचकर क्या करेंगे?”

“... अब हर पार्टी अपनी हमदर्दी जतानी है मजदूरो से। हड़ताल होगी है। मजदूरी बढ़ती है। फिर दाम बढ़ता है। फिर मजदूरो बढ़नी है। फिर दाम बढ़ता है। नोट छपता है।” आखिर दल रास्ते से कहाँ जा रहे हैं हम! ... ठीक है कि मजदूर की और दख्खिनीयो की मजदूरी बराबर हो। अम का मूल्य एक माना जाय।” पर जरा, लोग के उस मजदूर की मजदूरी से तुलना कीजिये। बिदना मिलता है उसे? मो मजदूरो की मजदूरी में किनना बढ़ा अंतर है? गांधी का एक विचार था की साम्यवाद और समाजवाद से भी आगे से जानेवाला था, टूटती-

शिव का सिद्धान्त । मजदूर अपनी मेहनत का डस्टी, मासिक अपने घन का डस्टी ।... पर बात समझ में आती नहीं है ।...

“काम बहुत है । वे छुम्पोवाले हैं । आदमी के रहने की जगह है वे ? अब एक आदमी खाये खाये । उनसे वही कि अपने लिए एक घण्टा निकालो । अपनी सहायता प्राप्त करो तो हम पुष्पारी सहायता करेंगे ।...

“अरविंद मण्डलता ये बातें हुईं । वे कुशल ध्यात्री हैं, उसाही हैं और उभ्र भी कम है । उनकी बातें सुनकर मैं दग रह गया । उन्होंने कहा कि वे गाँवों के लिए योजना बना रहे हैं और ऐसी स्थिति बना देंगे कि लोग यहाँ से गाँवों को जाने के लिये नबधर हो जायेंगे । इन्हे यहाँ रहना कठिन हो जायगा ।

“...वे नम-से-नम २० लाख लोगों को यहाँ से ले जाने की योजना रखते हैं । अब गाँवों की योजना बने, उनके यहाँ जो सम्भावनाएँ हैं उनका दुरु उपयोग हो तो वे उल्टे हो सकेंगे । हम गाँव के विश्वास को समस्या में उलझ जाते हैं, पूँकि वह काम आपका है । आप उसके जानकार हैं ।...अब जरूरत ऐसी हो स्वयंसेवा लोगों की है जो कुछ करने की सोचें और उसे पूरा करें ।”

हल में साहित्य-विकी की व्यवस्था थी, यहाँ से छोटे छोटे से जगदा न साहित्य मिला । — कुमार प्रसांत

दिल्ली

दिल्ली सर्वोदय मण्डल के उरदा-बधान में विनोबा-समर्थन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ । इस समारोह में श्रीमती कीमलया मणिक, सरदार और दर्शन सिंह, श्रीमती पद्मा, श्रीपासतय, श्री साहित्य-साहजजी, श्री कृष्ण चन्द्र महापात्र, इहानी ससम की मालाबी, श्री सुदरीत सिंह, श्री वल्लभ भागत ने विनोबाजी के मान-स्वराज्य-विचार के लिए अपनी प्रस्ताव को और उन्हें प्रोत्साहित किया । उवा-रोह के अध्यक्ष एड से बोलेते हुए मुमसिद्ध विचारक श्री जैनेन्द्र कुमार ने विनोबा को वर्तमान विषय की दीविक धारित वा प्रति-

निधि बताया । स्थिति परिवर्तन के लिए मानस परिवर्तन की आवश्यकता बताते हुए उन्होंने कहा कि विनोबाजी ने रही को क्रांति का मुख्य साधन माना है । विनोबाजी के कई विचार और कार्य आने-वाली नयी समाज-रचना को आधार शिलाएँ बनेंगी । थी हरिकिणनलात ने अन्त में ग्रन्थवाच किया और श्रीमती तया वहन तथा सरदारीसाल ने सबका आति-थ्य किया ।

ग्वालियर

ग्वालियर । जिला सर्वोदय मण्डल ग्वालियर के उरदाबधान में आयोजित विनोबा-जयन्ती के अवसर पर ११ सित-म्बर को संघा को विचार संगोष्ठी में प्रमूख बनता के रूप में बोलेते हुए येछी भाषम, गुजरात के तपस्वी साधक श्री बननभाई मेहता ने भूदान-ग्रामदान मान्यो-लन व त्रिविध कार्यक्रम की पृष्ठभूमिवा प्रस्तुत की ।

इस अवसर पर जिला सरोजक थी गुजरात ने मात वर्ष के काम का विवरण देते हुए कहा कि ११ सितम्बर से विधिवत बागलिय शुरू हो जाने से अब काम में गति आयेगी । नागलिय पर सर्वोदय स्वाध्याय योजना तथा सर्वोदय सहयोगी एव सर्वोदय मित्र बनाने का अभियान सधन रूप से चलेगा । आचार्यकुण और तपन शास्त्रिसेना आदि सभी सर्वोदय प्रवृत्तियों पर यह केन्द्र रहेगा । सर्वोदय-साहित्य की विक्री और पर-पर चले-छिरी पुस्तकालय को भी व्यवस्था कार्या-लय से की गयी है ।

सर्वोदय सहयोगी के रूप में वर्ष मर के लिए १११ रु० थी भूमिखोरजी ने भी बचनभाई को भेंट किया । घना में उपस्थितजनों ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये । श्री तहसूलदार सिंह भी घना में उपस्थित थे ।

मन्त्रप्रदेश सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष श्री कालिनाथ निवेदी ने भी बचन भाई का परिचय दिया और जयश्रीय भाषण के रूप में सर्वोदय विचार की व्याख्यान की । अन्त में एडवोकेट श्री यम-

वीरचन्द्र नटियार ने आचार्य प्रस्ट विचा पटना

पटना । स्थानीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन भवन में ११ सितम्बर को सत विनोबा की ७० वी जयन्ती मनायी गयी । इस अवसर पर आयोजित समारोह को सध्यधला थी ध्वजा प्रदाय साधु ने की । समारोह का उद्घाटन ५० भा० घायी घानीयोग भाषण के उपाध्यक्ष थी टी० एस० भारदे ने किया ।

सामारोह में अध्यक्षता देते हुए निहार के मुख्यवर्षी थी केदार पाण्डेय ने कहा कि देश की ५० प्रतिशत जनता और बिहार की ६० प्रतिशत जनता गरीबों की संमा देला से नीचे की जिन्दगी जी रही है । मदर की सबसे ज्यादा जरूरत एदें है, सेविन मूक होने के कारण वे उपेक्षित हैं । गरीबों की सीमा के ऊपर के जीवन वाले लोग वापस होने के कारण योजना और विकास का जगदा से जगदा लाभ स्वयं उठा लेते हैं और अन्तिम भागित को चिन्ता नहीं करते । इस दुःसद स्थिति को बदलना आवश्यक है ।

इस अवसर पर बिहार सर्वोदय बोध का शुभारम्भ हुआ । मुख्यमंत्री श्री केदार पाण्डेय ने बोध में १,००१ रुपये का दान दिया । इनके अतिरिक्त सर्वोदय सेवकों ने अपनी ओर से ५५१ रुपये का दान अर्पित किया । यह बोध बिहार के सर्वोदय जालदोलन के लिए है । सप्रह-नाय की अवधि नवदूरा पुष्पतिथि ०० २२ फरवरी '७३ तक मानी गयी है । पाँच लाख रुपये सप्रह करने का निश्चय बिहार सर्वोदय बोध समिति ने किया है ।

रांची

रांची । जिला ग्राम स्वराज्य समिति के उरदाबधान में करबन टंक रोड स्थित कार्यालय भवन में ११ सितम्बर को संघ विनोबा का ७० वी जयन्ति उरदरी के साथ से सम्पन्न हुआ ।

सर्वोदयमित्र और सर्वोदय सहयोगी बनाने का उद्घन किया गया ।

विहार में आन्दोलन की

गतिविधि

मुजफ्फरपुर

मुजफ्फरी प्रखण्ड ग्रामस्वराज्य सभा की कार्यसमिति की बैठक ता० ३ अगस्त को हुई। इसमें जे० पी० भी शामिल थे। बैठक में अग्रतक के हुए कार्यों की समीक्षा आगे के कार्य के स्वरूप तथा उसकी योजना एवं विकास-समन्वयो कार्यक्रमों पर विचार किया गया। विहार तहसन शान्ति सेना समिति के मंत्री श्री नवल विश्वोदर सिंह के नेतृत्व में ता० १५ अगस्त से ३१ अगस्त तक पदयात्रा टोली का कार्यक्रम इसी क्षेत्र में चला। टोली में तहसन शान्ति सैनिक और शान्ति सैनिक भी शामिल थे। ग्रामसभाओं के शिक्षण, ग्रामकोषप विकासने तथा ग्रामसभा के रजिस्टर व्यवस्थित रखने के सम्बन्ध में जानकारी दी गयी। इस पदयात्रा का एक विशेष उल्लेखनीय अनुभव यह रहा कि महिलाएँ भी बैठकों में भाग लेती थीं। महिला-मण्डल का गठन किया गया है।

→ छतरपुर

विनोदवादी के ७० वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में गांधी स्मारक भवन एवं जिला प्राथमिक-प्राथमिक-स्वयं-समिति, छतरपुर (म० प्र०) के सयुक्त तरवा-वर्षाण में प्रभातफेरी, धनदान सफाई, सामूहिक प्रार्थना एवं सभा का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। गांधी-सेवा-समिति के कम्पाउण्ड की सफाई की गयी। कई विद्वान बहताओं ने विनोद के जीवन एवं भूदान, ग्राम-दान ग्रामस्वराज्य आन्दोलन तथा अहिंसक क्रान्ति के सम्बन्ध में विचार व्यक्त करते हुए सन्त के प्रति अपनी श्रद्धा समर्पित की।

ता० ८, ९ और १० अगस्त को छात्री सदन नरसिंहपुर में विद्यासागर भारी के अधिष्ठाता से आध्यात्मिक चर्चा गोष्ठी हुई। १० श्री रामचन्द्र मिश्रजी का उद्बोधक मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। गोष्ठी में ३० व्यक्ति शामिल हुए।

दरभंगा

ता० ५, ६ और ७ अगस्त को कलेश्वर स्वामि ने जिला के कार्यकर्ताओं का सहजीवन शिविर आयोजित किया। विद्युते बावों की समीक्षा की गयी। सगठन को सबल बनाने, भाईचारा का विकास करने तथा प्रखण्ड स्तर की कार्य-योजना पर विचार हुआ और उदुमुगार कार्य-प्रारम्भ किया गया है।

शहर अनुभवक में २९ रुपये की साहित्य-बिक्री हुई।

गया

कीर्त्तव्य प्रखण्ड के अन्तर्गत तहसन पुष्टि-कार्य चल रहा है। ग्राम मधुरापुर उत्तरी धमनी में २ एकड़ ५५ इंचसहित जमीन बीघा-कट्टा मजदूरी में बंटी और मननपुर में ग्रामसभा का गठन हुआ।

बाराचट्टी प्रखण्ड में ९५.७०.०० का साहित्य बिका। उच्च माध्यमिक विद्यालय, सरकारदास, नवादा में जिला

तहसन शान्तिसेना का शिविर हुआ। बोध तहसन शान्ति सैनिकों ने भाग लिया। गया में ता० २७ अगस्त को तहसन शान्ति सेना की बैठक हुई।

सारण

ता० २७ अगस्त को जिले के कार्य-कर्ताओं की बैठक हुई, जिसमें जिला में हुए अवतक के कार्यों पर चर्चा की गयी। बैठक में श्री सर्वनाथप्रसाद दास तथा कल्याणप्रसाद शर्मा ने प्रांतीय सगठन के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया।

पटना

श्री परमेश्वरी दत्त शा द्वारा भूदान पत्र में से गयी १९ एकड़ जमीन का १२ आदाताओं में वितरण किया गया। भूदान की वितरित भूमि पर हुई धेदखनी के निराकरण की कोशिश हुई।

पटना नगर

विहार सर्वोदय मण्डल गठन समिति की बैठक २० अगस्त को पटना में श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी की अध्यक्षता में हुई। बैठक में प्रांतीय विहार सर्वोदय मण्डल के स्वरूप पर चर्चा हुई और इसके लिए एक विधान-निर्माण-समिति गठित की गयी।

विहार सर्वोदय बोध समिति की बैठक श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी की अध्यक्षता में ता० २१ अगस्त को हुई। कोष-नगद की योजना स्वीकृत हुई। तब पता कि विनोदवा जगती ता० ११ सितम्बर से कोष-समूह का शुभारम्भ किया जाय और समूह की अधि-कम्यून्डवा पुष्प-नीति ता० २२ फरवरी ७३ तक निरवत हुई। रात्रि रात्रि रुपये समूह करने का निश्चय किया गया। तदनुसार योजना एक हो गयी है।

वाणी मन्दिर का रजत-

जयन्ती समारोह

जयपुर, १३ सितम्बर। स्थानीय वाणी मन्दिर द्वारा साहित्य-सेवा के पथोत्तर कार्य पूर्ण करने के उपलक्ष्य में वाणी

दस अवसर पर जिले के गुस्तारी गांव के एक भाई ने २.३५ एकड़ का भूदान उसी गांव के एक हरिजन भाई को देकर पोषण की और लिखित दान-पत्र घर लिये गये। —शिवनाथ शर्मा

मथुरा

मद्यु (उत्तर प्रदेश) में विनोदवा-जगती मनायी गयी। प्रभातफेरी, सामूहिक प्रार्थना, सामूहिक मूत्रदान, मानस प्रवचन का आयोजन किया गया। इसके अलावा चम्पा अक्षराल इन्टर कालेज में एक गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें विनोदवादी के कार्यों की चर्चा हुई। गोष्ठी की अध्यक्षता श्रीवा० ब्रह्मगोपालजी भाटिया ने की। —शिवनाथप्रसाद साहू

माह रजत-जयन्ती-समारोह बनाने का निरन्तर किया गया है। इस समारोह के अन्तर्गत साहित्य प्रदर्शनी, स्मारिका प्रकाशन विचार-मोटी तथा सभा-सम्मेलन के आयोजन विधे गये है। समारोह समिति के सचिवश्री जवाहरलाल जैन हैं।

थाना जिले में सघन ग्रामदान-कार्य

हाल हुआ है कि महाराष्ट्र राज्य सरकार की कार्यकारिणी ने राज्य के थाना जिले की सघन ग्रामदान-कार्य के लिए चुना है। आचार्य विनोबा भावे ने सलाह दी है कि महाराष्ट्र के नये प्रतिष्ठित कार्यकर्ता अपनी सामूहिक शक्ति जिले थाना में ग्राम-दानोत्तर पुष्टि-कार्य में लगावें। महाराष्ट्र सर्वोदय मण्डल ने दावा की सलाह मांग ली है और उक्त विद्या में कार्य की शुद्धता भी कर दी है।

लोकयात्रा

अब तक १२,३०० मील की पदयात्रा सम्पन्न

अखिल भारत महिला सोशलाओ दल द्वारा अब तक १२,३०० मील की पदयात्रा सम्पन्न हो चुकी है। आचार्य विनोबा भावे की प्रेरणा और काशीबाद से सुधी श्रेष्ठ भ्रमारी, लक्ष्मी पुत्रन, निर्मल देव और नवी, तिलानी ने २५ अक्टूबर, १९५५ को बरतुरमाश्रम (दण्डी) से इस महिला सोशलाओ की शुरुआत की थी। महिला सोशलाओ का उद्देश्य १२ वर्ष तक भारत-भ्रमण करते हुए स्वी-घरित जागरण एवं अभ्युत्थान के लिए सन्देश देना है। यह उल्लेखनीय है कि ३

राज्यों में भ्रमण पूरा करने के बाद लोन्पात्रा आजकल महाराष्ट्र राज्य में चल रही है। महाराष्ट्र में श्री घुलिया, नासिक, पाना, बम्बई, कोलाबा, पुना और अहमदनगर जिलों की पदयात्रा पूरी करते हुए लोक-यात्री दल आगामी १८ सितम्बर को बीड जिले में प्रवेश करेगा। प्राप्त जानकारी के अनुसार महिला लोकयात्री बहनों का उत्साह बढ़ता जा रहा है।

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन : सेवाग्राम में

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन का आयोजन दिनांक १४, १५ और १६ अक्टूबर १९७२ को नयी तालीम समिति (सर्व सेवा सघ) और वर्धा शिक्षा मण्डल के संयुक्त उदात्तवाचन में सेवाग्राम, वर्धा (महाराष्ट्र) में किया जा रहा है।

प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने १४ अक्टूबर को ११-२० बजे इस सम्मेलन का उद्घाटन करना स्वीकार किया है। सम्मेलन के समय आचार्य विनोबा भावे के भी शैक्षणिक विचारों को सुनने का अवसर प्राप्त होगा। केन्द्र के शिक्षा नहीं, सभी राज्यों के शिक्षा मंत्रियों, अधिपति उपकुलपतियों, प्रमुख शिक्षा-कारिणियों, मूलमाध्य सर्वोदय विचारक एवं युनिवर्सिटी शिक्षा के क्षेत्र में काम करनेवाले प्रमुख कार्यकर्ताओं को इस सम्मेलन में भाग लेने और चर्चा करने के लिए आमन्त्रित किया गया है। इस सम्मेलन का प्रथम उद्देश्य प्राथमरी स्तर से लेकर विद्यालय स्तर तक की वर्तमान शिक्षा-प्रणाली में व्याप्त परि-वर्तन करने के बारे में विचार-विमर्श करना है जिससे इसे राष्ट्रीय कायदा के अनुरूप अधिक उद्देश्यपूर्ण और उत्तर-दायी बनाया जा सके।

पत्र-ध्वयहार का पता : सर्व सेवा सघ, पत्रिका-विभाग राजघाट, वाराणसी-१ तार, सर्वसेवा फोन: ६४३९१

सम्पादक रामभूति

इस बंक में

- देस मुनीश्वर वर्मान को भी मुझे से मिलना स्वीकार करना चाहिए
- श्री जयप्रकाश नारायण ५०१
- बाबा वा अधिभान
- विनोबा ५०३
- ग्रामीय शिक्षा—४
- डा० जयप्रकाश ५०७
- राजस्थान में शराबबन्दी की तैयारी
- श्री सिद्धराज वर्मा ५०९
- नशाबन्दी को दब की विहाल-योजनाओं का अधिभाग अग माना जाय—
- ५१०
- देव के बोरे-बोने में विनोबा-पत्र-पत्री—
- ५१२
- अध्यय (सम्भ)
- उप अध्याय को खोर से, शायरी के पत्र, आयोजन के समाचार, सुचनाएँ

नयी तालीम

हिन्दी मासिक

वार्षिक चन्द्रा : = रुपये

सर्व सेवा सघ, पत्रिका विभाग राजघाट, वाराणसी-१